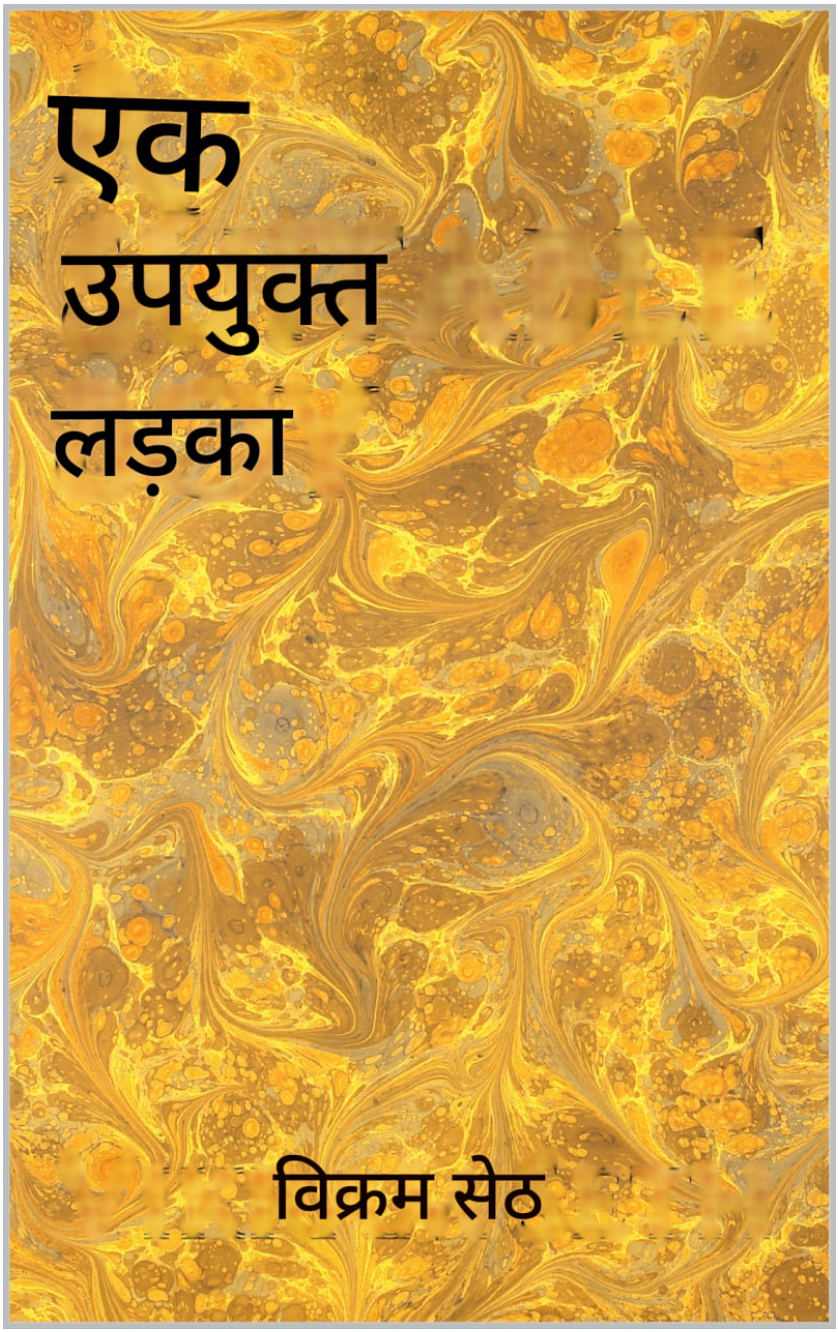

Table of Contents

भाग एक
भाग दो
भाग तीन
भाग चार
भाग पाँच
भाग छह
भाग सात
भाग आठ
भाग नौ
भाग दस
भाग ग्यारह
भाग बारह
भाग तेरह
भाग चौदह
भाग पंद्रह
भाग सोलह
भाग सत्रह
भाग अठारह
भाग उन्नीस

एक उपयुक्त लड़का

उसी लेखक द्वारा
कल्पना

स्वर्ण द्वार: पद्य में लिखा गया एक उपन्यास
एक समान संगीत
कविता
मानचित्रण
विनम्र प्रशासक का बगीचा
आज रात सोने वाले सभी लोग
तीन चीनी कवि (अनुवाद), इधर-उधर की जानवरों की कहानियाँ (कहानियाँ), एरियन और डॉल्फ़िन (लिब्रेटो)
नदी से ग्रस्त पृथ्वी (गीत और निबंध) ग्रीष्म शोकगीत
इतिहास
दो जिंदगियां
नॉन-फिक्शन
हेवन लेक से: सिंकियांग और तिब्बत की यात्रा

एक उपयुक्त लड़का
विक्रम सेठ

कॉपीराइट © विक्रम सेठ 1993, 2020
सर्वाधिकार सुरक्षित
पहली बार पेंगुइन इंडिया द्वारा 1993 में प्रकाशित।
हरसिंगार द्वारा ईबुक के रूप में प्रकाशित, 2020
यह एक काल्पनिक रचना है। नाम, पात्र, स्थान और घटनाएँ या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से प्रयुक्त की गई हैं, और किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति, घटना या स्थान से कोई भी समानता पूरी तरह से संयोगवश है।

इस प्रकाशन के किसी भी भाग को लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से पुनरुत्पादित, प्रसारित या किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत नहीं किया जा सकता है।
ISBN: 978-1-80077-001-0
केवल अमेरिका और कनाडा में बिक्री के लिए।

को
पापा और मामा
और
अम्मा की स्मृति

धन्यवाद का एक शब्द

मैं इन लोगों का इतना ऋणी हूँ कि शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता:
मेरी अनेक प्रेरणास्रोत, कठोर और दयालु;
मेरे माता-पिता, जिन्होंने मेरी रूठ और चीख-पुकार को सहन किया,
और (अंततः) उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी;
मृत विधायक, जिनके भाषण
मैंने अपनी खुद की चाय बनाने के लिए कुछ सामग्री चुराई है;
वास्तव में, मैंने जिन सभी लोगों के दिमाग पर जोर डाला है,
निर्मम, क्योंकि जुनून सवार था;
मेरी अपनी मूक आत्मा, जो तुच्छ धन पर निर्भर है
इस काल्पनिक जादू को बुनने के लिए जीवित रहा;
और, प्रिय पाठक, आप भी,
सभी प्रकार के प्रेषण का मूल स्रोत।
इससे पहले कि समझदारी कुछ कहे, मुझे खरीद लो।

इससे आपके पर्स पर बोझ पड़ेगा और आपकी कलाई में मोच आ जाएगी।

अंतर्वस्तु

1.
किताबें देखते-देखते एक दिन दो छात्र मिलते हैं। एक माँ उदास है; एक पदक पिघल रहा है।
2.
एक वेश्या भीषण गर्मी में भी शांत भाव से गा रही है।
एक आशावान प्रेमी एक तोता खरीदता है।
3.
एक दंपत्ति नाव में बैठकर नदी में आगे बढ़ रहे हैं।
एक मां को पता चलता है कि कुछ गड़बड़ होने वाली है।
4.
दो व्यक्ति ब्रह्मपुर के चमड़े के व्यापार पर चर्चा कर रहे हैं।
मैरून रंग के ब्रोग्स जूतों की एक जोड़ी की योजना बनाई गई और उसे तैयार किया गया।
5.
सड़क खून से लथपथ है और गोलियां छिटक रही हैं।
एक चालाक विधायी महिला अपने शिकार को फंसाने की कोशिश करती है।
6.
एक बच्चा लात मारता है; खून से लाल हुआ राजा जोर से चिल्लाता है।
एक युवक तेजी से ढलान से नीचे उतरता है; एक पिता गुर्राता है।

7.
कलकत्ता में चर्चाओं का शोरगुल छाया हुआ है।
कब्रिस्तान में टहलना सुखद अनुभव होता है।
8.
नीम के पेड़ों के नीचे गांव के बच्चे खेलते हैं।
थके-हारे मवेशी जलती हुई धरती को मिट्टी में बदल देते हैं।
9.
एक हताश माँ जोखिम उठाकर तैनाती करती है
किसी उपयुक्त लड़के को पाने के लिए चाहे सही तरीका हो या गलत, उसी का इस्तेमाल किया जाता है।
10.
बैतर किले में भेड़ियों के शिकार का आयोजन किया गया है।
एक ठगा हुआ निशानेबाज आगे के खेल की तलाश करता है।
11.
पुराने जमींदार अपनी जमीनों को बचाने के लिए राज्य पर मुकदमा करते हैं। कुचले हुए शव पवित्र रेत पर सड़ रहे हैं।
12.
एक चुंबन क्रोध को भड़का देता है, ट्वेल्थ नाइट एक तिरस्कार को जन्म देता है, और यहां तक कि ब्रिज का खेल भी क्लब में हंगामा खड़ा कर देता है।
13.
एक बच्चे का जन्म हुआ; बुद्धिमान महिलाएं उसे देखने आईं।
एक मोची लिखता है। एक कवि अपनी किताब डाक से भेजता है।
14.
प्रधानमंत्री संघर्ष करते हैं और अपना धैर्य बनाए रखते हैं। दुखी पुत्र अपने

मृत प्रियजनों की आत्माओं को शांति प्रदान करते हैं।
15.
कर्बला और लंका की ज्वालाएं धधक रही हैं।
शहर की भूलभुलैया में पागलपन की आग भड़काते हुए।
16.
कोलकाता में क्रिसमस की रोशनी से पार्क स्ट्रीट जगमगा उठी;
और एक क्रिकेट मैच में तीन प्रेमी मिलते हैं।
17.
ब्रह्मपुर में किसी को चाकू मारा जाता है, किसी की मौत हो जाती है, जबकि निजी शर्मिंदगी को जनता की निगाहों से देखा जाता है।
18.
एक व्यक्ति, पाँच और चालीस हजार लोग चुनते हैं;
कुछ जीतते हैं, कुछ ड्रॉ करते हैं, और—जैसा कि होना ही है—कुछ हारते हैं। 19.
पर्दा गिरता है; कलाकार दर्शकों का अभिवादन करते हैं।
और मंच से चले जाएं—कम से कम अभी के लिए।

आभार

लेखक और प्रकाशक कॉपीराइट सामग्री उद्धृत करने की अनुमति देने के लिए निम्नलिखित के प्रति आभार व्यक्त करना चाहते हैं:
भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जवाहरलाल नेहरू द्वारा लिखित मुख्यमंत्रियों को लिखे पत्रों के खंड 2, 1950-1952 से उद्धरणों के लिए, सामान्य संपादक जी. पार्थसारथी (जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल फंड, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा वितरित, 1986)

हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स लिमिटेड द्वारा ए.जे. आर्बेरी द्वारा व्याख्या की गई कुरान (जॉर्ज एलन एंड अनविन लिमिटेड और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1964) के अंशों के लिए।
सुकांता चौधरी द्वारा अनुवादित सुकुमार रे की चुनिंदा बकवासों के एक अंश के लिए ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1987) का धन्यवाद।
एडवर्ड मेंडेलसन द्वारा संपादित डब्ल्यू.एच. ऑडन: कलेक्टेड पोएम्स (फेबर एंड फेबर) में प्रकाशित कविता 'लॉ, से द गार्डनर्स' के एक अंश के लिए फेबर एंड फेबर का धन्यवाद।
विलियम रेडिस द्वारा अनुवादित रवींद्रनाथ टैगोर की चुनिंदा कविताओं के अंशों के लिए पेंगुइन बुक्स लिमिटेड (पेंगुइन बुक्स, 1985)
बैंटम बुक्स इंक. द्वारा बारबरा स्टोलर मिलर द्वारा अनुवादित भगवद-गीता के अंशों के लिए (बैंटम बुक्स, 1986)
साहित्य अकादमी द्वारा अली जवाद जैदी की पुस्तक 'मीर अनीस' के अंशों के लिए 'भारतीय साहित्य के निर्माता' श्रृंखला में प्रकाशित अंशों के लिए (साहित्य अकादमी, 1986) पुरस्कार प्रदान किया गया।
श्री रामचरितमानस के अंशों के अंग्रेजी अनुवाद के लिए गीता प्रेस, गोरखपुर (गीता प्रेस, 1968)
कॉपीराइट धारकों का पता लगाने और अनुमति प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है, लेकिन सभी मामलों में यह संभव नहीं हो पाया है; हमारी जानकारी में आई किसी भी चूक को भविष्य के संस्करणों में दूर कर दिया जाएगा।
अनावश्यक वस्तु, वही अत्यंत आवश्यक वस्तु... वोल्टेयर

उबाऊ होने का रहस्य यह है कि आप सब कुछ कह देते हैं। - वोल्टेयर

भाग एक

1.1

'तुम भी उसी लड़के से शादी करोगी जिसे मैं चुनूंगी,' श्रीमती रूपा मेहरा ने अपनी छोटी बेटी से दृढ़ता से कहा।

लता ने प्रेम निवास के विशाल, रोशनी से जगमगाते बगीचे में चारों ओर देखकर मातृत्व की ज़िम्मेदारी से बचने की कोशिश की। शादी के मेहमान लॉन में जमा थे। 'हम्म,' उसने कहा। इससे उसकी माँ और भी नाराज़ हो गई।

'मैं जानती हूँ तुम्हारी हम्म का क्या मतलब है, युवती, और मैं तुम्हें बता दूँ कि इस मामले में मैं हम्म बर्दाश्त नहीं करूँगी। मुझे पता है कि क्या बेहतर है। मैं यह सब तुम्हारे लिए कर रही हूँ। क्या तुम्हें लगता है कि मेरे लिए यह आसान है कि मैं अपने चारों बच्चों के लिए बिना उनकी मदद के सब कुछ संभालूँ?' अपने पति के ख्याल से उनकी नाक लाल होने लगी, जिन्हें वह पूरा यकीन करती थीं कि वे ऊपर कहीं से उनकी इस खुशी में शामिल होंगे। श्रीमती रूपा मेहरा पुनर्जन्म में विश्वास करती थीं, लेकिन भावुक क्षणों में, वह कल्पना करती थीं कि स्वर्गीय रघुबीर मेहरा अभी भी उसी रूप में हैं जैसा उन्होंने उन्हें जीवित रहते देखा था: द्वितीय विश्व युद्ध के चरम पर अत्यधिक काम के कारण दिल का दौरा पड़ने से पहले, चालीस वर्ष की आयु के आसपास का उनका स्वस्थ, हंसमुख रूप। आठ साल पहले, आठ साल, श्रीमती रूपा मेहरा ने दुखी मन से सोचा।

'अरे नहीं, मां, आप सविता की शादी के दिन रो नहीं सकतीं,' लता ने अपनी मां के कंधे पर धीरे से लेकिन बिना किसी चिंता के अपना हाथ

रखते हुए कहा।
‘अगर वह यहाँ होते, तो मैं अपनी शादी में पहनी हुई टिशू-पटोला साड़ी पहन सकती थी,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने आह भरते हुए कहा। ‘लेकिन एक विधवा के लिए इसे पहनना बहुत महंगा है।’
‘माँ!’ लता ने थोड़ी झुंझलाहट के साथ कहा, क्योंकि उसकी माँ हर परिस्थिति को भावनात्मक रूप से भुनाने पर तुली हुई थी। ‘लोग आपको देख रहे हैं। वे आपको बधाई देना चाहते हैं, और अगर वे आपको इस तरह रोते हुए देखेंगे तो उन्हें बहुत अजीब लगेगा।’
कई मेहमान वास्तव में श्रीमती रूपा मेहरा को नमस्ते कर रहे थे और उन पर मुस्कुरा रहे थे; उन्होंने यह देखकर प्रसन्नता व्यक्त की कि वे ब्रह्मपुर समाज के उच्चवर्गीय लोग थे।
'देखने दो मुझे!' श्रीमती रूपा मेहरा ने चुनौती भरे लहजे में कहा और 4711 इत्र से महके रूमाल से अपनी आँखों को जल्दी से पोंछा। 'वे तो यही सोचेंगे कि यह सविता की शादी की खुशी की वजह से है। मैं जो कुछ भी करती हूँ, तुम्हारे लिए करती हूँ, और कोई मेरी सराहना नहीं करता। मैंने सविता के लिए इतना अच्छा लड़का चुना है, और सब लोग बस शिकायत करते रहते हैं।'
लता ने सोचा कि उन चार भाई-बहनों में से एकमात्र ऐसी थीं जिन्होंने इस रिश्ते पर कोई शिकायत नहीं की थी, और वह थीं मधुर स्वभाव वाली, गोरे रंग की, खूबसूरत सविता।
‘माँ, वो थोड़ा दुबला है,’ लता ने थोड़ी बेपरवाही से कहा। यह तो बस एक हल्की बात थी। प्राण कपूर, जो जल्द ही उनके देवर बनने वाले थे, दुबले-पतले, सांवले, लंबे और अस्थमा के मरीज़ थे।
‘पतला? पतला होना क्या होता है? आजकल तो हर कोई पतला होने की कोशिश कर रहा है। मुझे भी पूरे दिन उपवास रखना पड़ा और ये मेरे

मधुमेह के लिए अच्छा नहीं है। और अगर सविता को कोई शिकायत नहीं है, तो सबको उससे खुश होना चाहिए। अरुण और वरुण तो हमेशा शिकायत करते रहते हैं: फिर उन्होंने अपनी बहन के लिए लड़का क्यों नहीं चुना? प्राण एक अच्छा, सभ्य, संस्कारी खत्री लड़का है।'

इसमें कोई शक नहीं था कि तीस साल का प्राण एक अच्छा लड़का था, एक सभ्य लड़का था और सही जाति का था। और सच में, लता प्राण को पसंद करती थी। अजीब बात यह थी कि वह उसे अपनी बहन से ज़्यादा जानती थी—या कम से कम, अपनी बहन से ज़्यादा समय से उसे जानती थी। लता ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी की पढ़ाई कर रही थी, और प्राण कपूर वहाँ एक लोकप्रिय व्याख्याता थे। लता ने एलिज़ाबेथ काल के उनके व्याख्यान में भाग लिया था, जबकि दुल्हन सविता उनसे केवल एक घंटे के लिए मिली थी, और वह भी अपनी माँ की मौजूदगी में।

और सविता उसे खूब खिलाएगी,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। 'जब मैं इतनी खुश हूँ तो आप मुझे क्यों परेशान करने की कोशिश कर रही हैं? और प्राण और सविता खुश होंगे, आप देखना। वे खुश होंगे,' उन्होंने ज़ोर देकर कहा। 'धन्यवाद, धन्यवाद,' अब वह उन लोगों को देखकर मुस्कुराईं जो उनका अभिवादन करने आ रहे थे। 'यह कितना अद्भुत है—मेरे सपनों का लड़का, और इतना अच्छा परिवार। मंत्री साहब हम पर बहुत मेहरबान रहे हैं। और सविता बहुत खुश है। कृपया कुछ खा लीजिए, कृपया खा लीजिए: उन्होंने इतने स्वादिष्ट गुलाब जामुन बनाए हैं, लेकिन मेरी मधुमेह की वजह से मैं रस्मों के बाद भी उन्हें नहीं खा सकती। मुझे गजक भी खाने की इजाज़त नहीं है, जिसका सर्दियों में विरोध करना बहुत मुश्किल होता है। लेकिन कृपया खा लीजिए, कृपया खा लीजिए। मुझे अंदर जाकर देखना होगा कि क्या हो रहा है: पंडितों द्वारा दिया गया समय नज़दीक आ रहा है, और दूल्हा-दुल्हन का कोई अता-पता नहीं है!' उन्होंने लता की

ओर देखा, भौंहें चढ़ाते हुए। उन्होंने तय कर लिया कि उनकी छोटी बेटी अपनी बड़ी बेटी से ज़्यादा मुश्किल साबित होने वाली है।

'मैंने तुम्हें जो बताया है उसे मत भूलना,' उसने चेतावनी भरे स्वर में कहा।

'हम्म,' लता ने कहा। 'माँ, आपका रूमाल आपके ब्लाउज से बाहर निकला हुआ है।'

'ओह!' श्रीमती रूपा मेहरा ने चिंता से उसे अंदर दबाते हुए कहा। 'और अरुण से कहो कि वह अपने कर्तव्यों को गंभीरता से निभाए। वह बस एक कोने में खड़ा मीनाक्षी और कलकत्ता से आए अपने बेवकूफ दोस्त से बातें कर रहा है। उसे देखना चाहिए कि सब लोग ठीक से खा-पी रहे हैं और खूब मजे कर रहे हैं।'

'वह मीनाक्षी' अरुण की आकर्षक पत्नी और उनकी ही उद्दंड बहू थी। चार साल के वैवाहिक जीवन में, श्रीमती रूपा मेहरा की नज़र में मीनाक्षी का एकमात्र सराहनीय कार्य उनकी प्यारी पोती अपर्णा को जन्म देना था, जो अब भी अपनी दादी की भूरी रेशमी साड़ी तक पहुँच गई थी और ध्यान आकर्षित करने के लिए उसे खींच रही थी। श्रीमती रूपा मेहरा प्रसन्न हुईं। उन्होंने उसे चूमा और कहा:

अपर्णा, तुम्हें अपनी मम्मी या लता बुआ के साथ रहना चाहिए, नहीं तो तुम खो जाओगी। और फिर हम कहाँ होंगे?'

तीन साल की अपर्णा ने पूछा, 'क्या मैं आपके साथ नहीं आ सकती?' स्वाभाविक रूप से अपर्णा के अपने विचार और पसंद थे।

'प्रियतम, काश तुम आ पाते,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'लेकिन मुझे यह सुनिश्चित करना है कि तुम्हारी सविता बुआ शादी के लिए तैयार हों। उन्हें पहले ही बहुत देर हो चुकी है।' और श्रीमती रूपा मेहरा ने एक बार फिर उस छोटी सोने की घड़ी को देखा जो उनके पति ने उन्हें सबसे पहले उपहार में दी थी और जो ढाई दशकों से बिना किसी रुकावट के चल रही

थी।

‘मैं सविता बुआ को देखना चाहती हूँ!’ अपर्णा ने अपनी बात पर अड़े रहते हुए कहा।

श्रीमती रूपा मेहरा थोड़ी परेशान लग रही थीं और उन्होंने अपर्णा की ओर अस्पष्ट रूप से सिर हिलाया।

लता ने अपर्णा को गोद में उठा लिया। ‘जब सविता बुआ बाहर आएंगी, तो हम साथ में वहां चलेंगे, ठीक है? मैं तुम्हें ऐसे ही पकड़े रहूंगी, और हम दोनों को अच्छा नज़ारा मिल जाएगा। इस बीच, क्या हम जाकर आइसक्रीम खा सकते हैं? मुझे भी खाने का मन कर रहा है।’

अपर्णा को यह बात पसंद आई, जैसे लता के ज़्यादातर सुझाव उसे पसंद आते थे। आइसक्रीम के लिए कभी ज़्यादा ठंड नहीं होती थी। तीन साल की बच्ची और उन्नीस साल की लड़की हाथ में हाथ डाले बुफे टेबल की ओर चल पड़ीं। कहीं से कुछ गुलाब की पंखुड़ियाँ उन पर गिरीं।

'जो तुम्हारी बहन के लिए अच्छा है, वही तुम्हारे लिए भी अच्छा है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने लता से विदाई के तौर पर कहा।

लता ने हंसते हुए कहा, 'हम दोनों प्राण से शादी नहीं कर सकते।'

1.2

शादी के दूसरे मुख्य आयोजक दूल्हे के पिता श्री महेश कपूर थे, जो पूर्व प्रदेश राज्य के राजस्व मंत्री थे। दरअसल, शादी उनके विशाल, सी-आकार के, क्रीम रंग के, दो मंजिला पारिवारिक घर प्रेम निवास में हो रही थी, जो प्राचीन और अधिकतर घनी आबादी वाले शहर ब्रह्मपुर के सबसे शांत और हरे-भरे आवासीय क्षेत्र में स्थित है।

यह घटना इतनी असामान्य थी कि कई दिनों तक पूरे ब्रह्मपुर में इसकी चर्चा होती रही। श्रीमती रूपा मेहरा के पिता, जिन्हें मेज़बान बनना था, शादी से दो सप्ताह पहले अचानक नाराज़ हो गए, अपना घर बंद कर

लिया और गायब हो गए। श्रीमती रूपा मेहरा बहुत परेशान थीं। मंत्री साहब ने हस्तक्षेप किया ('आपकी इज़्ज़त हमारी इज़्ज़त है') और खुद शादी करवाने पर ज़ोर दिया। इसके बाद फैली अफवाहों को उन्होंने नज़रअंदाज़ कर दिया।

श्रीमती रूपा मेहरा द्वारा शादी के खर्च में मदद करने का तो सवाल ही नहीं था। मंत्री साहब इस बारे में सुनना ही नहीं चाहते थे। उन्होंने कभी दहेज भी नहीं मांगा था। वे श्रीमती रूपा मेहरा के पिता के पुराने मित्र और ब्रिज पार्टनर थे और उन्हें उनकी बेटी सविता (हालांकि उन्हें लड़की का नाम याद नहीं रहता था) बहुत पसंद आई थी। वे आर्थिक तंगी को समझते थे, क्योंकि उन्होंने खुद भी इसका सामना किया था। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ब्रिटिश जेलों में बिताए कई वर्षों में, उनके खेत या कपड़े के व्यवसाय को संभालने वाला कोई नहीं था। परिणामस्वरूप, आमदनी बहुत कम थी और उनकी पत्नी और परिवार ने बड़ी मुश्किल से गुजारा किया था।

लेकिन वो दुखद समय उस सक्षम, अधीर और शक्तिशाली मंत्री के लिए महज एक स्मृति बनकर रह गया था। 1950 की शुरुआती सर्दी थी और भारत को आज़ाद हुए तीन साल से ज़्यादा हो चुके थे। लेकिन देश की आज़ादी का मतलब उनके छोटे बेटे मान की आज़ादी नहीं था, जिसे आज भी उसके पिता यही कह रहे थे:

जो तुम्हारे भाई के लिए अच्छा है, वही तुम्हारे लिए भी अच्छा है।

'हाँ, बाओजी,' मान ने मुस्कुराते हुए कहा।

श्री महेश कपूर ने माथे पर शिकन डाली। उनका छोटा बेटा, अपने पिता की तरह अच्छे कपड़े पहनने की आदत तो अपना लेता था, लेकिन मेहनत करने की उनकी लगन को नहीं अपना पाया था। न ही उसमें कोई महत्वाकांक्षा नज़र आती थी।

“हमेशा एक सुंदर, आवारा नौजवान बनकर रहने का कोई फायदा नहीं,” उसके पिता ने कहा। “और शादी तुम्हें जीवन में स्थिर होने और चीजों को गंभीरता से लेने के लिए मजबूर करेगी। मैंने बनारस वालों को पत्र लिखा है, और मुझे किसी दिन अनुकूल उत्तर मिलने की उम्मीद है।”

मान के मन में शादी का ख्याल बिल्कुल नहीं था; भीड़ में उसकी नज़र एक दोस्त पर पड़ी और वह उसे हाथ हिलाकर इशारा कर रहा था। झाड़ियों में लटकी सैकड़ों रंगीन बत्तियाँ एक साथ जल उठीं और महिलाओं की रेशमी साड़ियाँ और गहने और भी ज़्यादा चमकने लगे। ऊँची, मधुर शहनाई की धुन तेज़ और चमकदार लय में बजने लगी। मान मंत्रमुग्ध हो गया। उसने लता को मेहमानों के बीच से रास्ता बनाते देखा। सविता की बहन, कितनी आकर्षक लड़की है, उसने सोचा। ज़्यादा लंबी नहीं और ज़्यादा गोरी भी नहीं, लेकिन आकर्षक, अंडाकार चेहरे वाली, गहरी आँखों में एक शर्मीली चमक और जिस बच्चे का हाथ पकड़कर वह चल रही थी, उसके प्रति स्नेहपूर्ण भाव।

'जी, बाओजी,' मान ने आज्ञाकारी भाव से कहा।

‘मैंने क्या कहा?’ उसके पिता ने पूछा।

'शादी के बारे में, बाओजी,' मान ने कहा।

‘शादी के बारे में क्या?’

मान अचंभित रह गया।

महेश कपूर ने मान का कान मरोड़ते हुए पूछा, ‘क्या तुम सुनते नहीं? तुम राजस्व विभाग के क्लर्कों जितने ही निकम्मे हो। तुम ध्यान नहीं दे रहे थे, फिरोज को हाथ हिला रहे थे।’

मान थोड़ा शर्मिंदा लग रहा था। वह जानता था कि उसके पिता उसके बारे में क्या सोचते हैं। लेकिन कुछ मिनट पहले तक वह खूब मजे कर रहा था, और बाओजी का आकर उसकी खुशी को भंग करना बिल्कुल उसकी

आदत के मुताबिक ही था।
“तो अब सब ठीक हो गया,” उसके पिता ने आगे कहा। “बाद में मुझसे यह मत कहना कि मैंने तुम्हें चेतावनी नहीं दी थी। और अपनी उस कमज़ोर इरादों वाली माँ को अपना मन बदलने और मुझसे यह कहने के लिए मत उकसाना कि तुम अभी एक पुरुष की ज़िम्मेदारियाँ उठाने के लिए तैयार नहीं हो।”
'नहीं, बाओजी,' मान ने बात समझकर और थोड़ा उदास होकर कहा।
'हमने वीना के लिए अच्छा चुनाव किया है, हमने प्राण के लिए भी अच्छा चुनाव किया है, और आपको हमारे द्वारा आपके लिए चुनी गई दुल्हन के बारे में शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं है।'
मान ने कुछ नहीं कहा। वह सोच रहा था कि पंचर को कैसे ठीक किया जाए। उसके कमरे में ऊपर स्कॉच की एक बोतल रखी थी, और शायद समारोह से पहले या उसके दौरान भी कुछ मिनटों के लिए वह और फ़िरोज़ ताज़गी पाने के लिए वहाँ जा सकते थे।
उनके पिता कुछ शुभचिंतकों को देखकर रूखेपन से मुस्कुराए और फिर मान की ओर मुड़ गए।
‘आज मैं तुम्हारे साथ और समय बर्बाद नहीं करना चाहता। भगवान जानता है कि मेरे पास पहले से ही बहुत काम है। प्राण और उस लड़की को क्या हुआ, उसका नाम क्या है? बहुत देर हो रही है। उन्हें पांच मिनट पहले घर के विपरीत छोर से निकलकर यहां जयमाला के लिए मिलना था।’
'सविता,' मान ने पूछा।
‘जी हां,’ उसके पिता ने अधीरता से कहा। ‘सविता। तुम्हारी अंधविश्वासी मां तारों की सही स्थिति न होने पर घबरा जाएगी। जाओ और उसे शांत करो। जाओ! कुछ अच्छा करो।’

और महेश कपूर मेजबान के तौर पर अपने कर्तव्यों में वापस लौट गए। उन्होंने समारोह में शामिल एक पुजारी पर अधीरता से भौंहें चढ़ाईं, जिसने हल्की सी मुस्कान के साथ जवाब दिया। तीन बच्चे, जो उनके ग्रामीण रिश्तेदारों के बच्चे थे और बगीचे में ऐसे उछल-कूद कर रहे थे मानो वह पराली का खेत हो, उन्होंने बाल-बाल उन्हें पेट में धक्का मारकर गिराने से बचाया। दस कदम चलने से पहले ही उन्होंने साहित्य के एक प्रोफेसर (जो प्राण के करियर के लिए उपयोगी साबित हो सकते थे); कांग्रेस पार्टी के राज्य विधानमंडल के दो प्रभावशाली सदस्यों (जो गृह मंत्री के साथ उनके लंबे समय से चल रहे सत्ता संघर्ष में उनका साथ देने के लिए सहमत हो सकते थे); एक न्यायाधीश, जो स्वतंत्रता के बाद ब्रह्मपुर उच्च न्यायालय की पीठ पर रहने वाले अंतिम अंग्रेज थे; और अपने पुराने मित्र बैतर के नवाब साहब, जो राज्य के सबसे बड़े जमींदारों में से एक थे, का अभिवादन किया।

1.3

लता, जिसने मान और उसके पिता के बीच हुई बातचीत का कुछ हिस्सा सुना था, वहां से गुजरते हुए खुद ही मुस्कुराने से खुद को रोक नहीं पाई।

'मुझे लगता है कि तुम आनंद ले रही हो,' मान ने उससे अंग्रेजी में कहा।

उसके पिता से उसकी बातचीत हिंदी में हुई थी, जबकि उसकी माँ से उसकी बातचीत अंग्रेजी में हुई थी। मान दोनों भाषाएँ अच्छी तरह बोलता था।

लता को शर्म आ गई, जैसा कि कभी-कभी अजनबियों के सामने होता था, खासकर उन लोगों के सामने जो मान की तरह खुलकर मुस्कुराते थे। उसने सोचा, चलो हम दोनों की तरफ से वही मुस्कुरा दे।

'हां,' उसने सरलता से कहा, उसकी निगाहें एक पल के लिए उसके चेहरे पर टिक गईं। अपर्णा ने उसका हाथ खींचा।

'अच्छा, अब तो हम लगभग परिवार जैसे हो गए हैं,' मान ने शायद उसकी असहजता को भांपते हुए कहा। 'कुछ ही मिनट और, फिर रस्में शुरू हो जाएंगी।'

“हां,” लता ने अधिक आत्मविश्वास से उसकी ओर देखते हुए सहमति जताई। वह थोड़ी देर रुकी और भौंहें सिकोड़ीं। “मेरी मां को चिंता है कि वे समय पर शुरू नहीं करेंगे।”

‘मेरे पिता भी ऐसे ही हैं,’ मान ने कहा।

लता दोबारा मुस्कुराने लगी, लेकिन जब मान ने उससे पूछा कि क्यों, तो उसने अपना सिर हिला दिया।

‘अच्छा,’ मान ने अपनी खूबसूरत सफेद अचकन से गुलाब की पंखुड़ी हटाते हुए कहा, ‘तुम मुझ पर हंस तो नहीं रहे हो ना?’

लता ने कहा, 'मैं बिल्कुल भी नहीं हंस रही हूं।'

मेरा मतलब मुस्कुराने से था।

‘नहीं, तुम पर नहीं,’ लता ने कहा। ‘खुद पर।’

'यह तो बहुत रहस्यमय है,' मान ने कहा। उनके सौम्य चेहरे पर अतिशय हैरानी के भाव उभर आए।

‘मुझे डर है कि ऐसा ही रहेगा,’ लता ने लगभग हंसते हुए कहा। ‘अपर्णा को आइसक्रीम चाहिए, और मुझे उसे आइसक्रीम देनी ही होगी।’

‘पिस्ता आइसक्रीम ट्राई करो,’ मान ने सुझाव दिया। उसकी नज़रें कुछ पलों के लिए उसकी गुलाबी साड़ी पर टिकी रहीं। खूबसूरत लड़की—एक तरह से, उसने फिर सोचा। वैसे, गुलाबी रंग उसके रंग पर जंच नहीं रहा। उसे गहरे हरे या गहरे नीले रंग के कपड़े पहनने चाहिए... उस औरत की तरह। उसका ध्यान एक नए विषय पर केंद्रित हो गया।

कुछ ही सेकंड बाद लता की मुलाकात अपनी सबसे अच्छी दोस्त मालती से हुई, जो मेडिकल की छात्रा थी और हॉस्टल में उसके साथ कमरा शेयर

करती थी। मालती बहुत ही मिलनसार थी और अजनबियों से बात करते समय कभी भी झिझकती नहीं थी। हालांकि, अजनबी उसकी प्यारी हरी आंखों में देखते ही कभी-कभी उससे बात करने में असमर्थ हो जाते थे।

‘तुम जिस बदमाश से बात कर रही थी, वह कौन था?’ उसने लता से उत्सुकता से पूछा।

यह सुनने में जितना बुरा लग रहा था, उतना बुरा नहीं था। ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय की लड़कियों की बोलचाल की भाषा में, एक सुंदर युवक को 'कैड' कहा जाता था। यह शब्द कैडबरी चॉकलेट से लिया गया था।

‘अरे, ये तो मान है, ये प्राण का छोटा भाई है।’

'सच में! लेकिन वो तो बहुत ही सुंदर है और प्राण, खैर, बदसूरत तो नहीं है, लेकिन, आप जानते हैं, सांवला है, और उसमें कुछ खास नहीं है।'

‘शायद वह एक कुटिल बदमाश है,’ लता ने सुझाव दिया। ‘कड़वा लेकिन टिकाऊ।’ मलाती ने इस पर विचार किया।

और,’ लता ने आगे कहा, ‘जैसा कि मेरी चाचियों ने पिछले एक घंटे में मुझे पांच बार याद दिलाया है, मैं उतनी सुंदर भी नहीं हूँ, और इसलिए मेरे लिए एक उपयुक्त पति मिलना असंभव होगा।’

‘लता, तुम उन्हें कैसे बर्दाश्त कर लेती हो?’ मालती ने पूछा, जिसका पालन-पोषण पिता और भाई के बिना, बेहद सहायक महिलाओं के बीच हुआ था।

लता ने कहा, 'ओह, मुझे उनमें से ज़्यादातर पसंद हैं। और अगर इस तरह की अटकलें न होतीं तो उनकी शादी कुछ खास नहीं होती। दूल्हा-दुल्हन को एक साथ देखने के बाद तो उन्हें और भी मज़ा आएगा। ब्यूटी एंड द बीस्ट।'

'जब भी मैंने उसे विश्वविद्यालय परिसर में देखा है, वह काफी खूंखार सा दिखता है,' मलाती ने कहा। 'जैसे कोई काला जिराफ।'

‘इतनी बुरी बातें मत करो,’ लता हंसते हुए बोली। ‘वैसे भी, प्राण एक लेक्चरर के तौर पर बहुत लोकप्रिय हैं,’ उसने आगे कहा। ‘और मुझे वो पसंद हैं। और जब मैं हॉस्टल छोड़कर उनके घर रहने लगूँगी, तो तुम्हें उनसे मिलने आना पड़ेगा। और चूंकि वो मेरे जीजा होंगे, तो तुम्हें भी उन्हें पसंद करना होगा। मुझसे वादा करो कि तुम उन्हें पसंद करोगे।’

‘मैं ऐसा नहीं करूंगी,’ मलाती ने दृढ़ता से कहा। ‘वह तुम्हें मुझसे छीन रहा है।’

‘वह ऐसा कुछ नहीं कर रहा है, मलाती,’ लता ने कहा। ‘मेरी माँ, अपने बेहतरीन घरेलू खर्चों को लेकर, मुझे उसके पास छोड़ रही है।’

‘खैर, मुझे नहीं लगता कि तुम्हें अपनी माँ की बात माननी चाहिए। उनसे कह दो कि तुम मुझसे अलग होने का दर्द सहन नहीं कर सकते।’

लता ने कहा, ‘मैं हमेशा अपनी माँ की बात मानती हूँ। और वैसे भी, अगर वो फीस नहीं देंगी तो मेरी हॉस्टल की फीस कौन भरेगा? और कुछ समय के लिए सविता के साथ रहना मेरे लिए बहुत अच्छा रहेगा। मैं तुम्हें खोना नहीं चाहती। तुम्हें हमसे मिलने ज़रूर आना चाहिए—तुम्हें नियमित रूप से आना चाहिए। अगर तुम नहीं आओगी, तो मुझे पता चल जाएगा कि तुम्हारी दोस्ती की कितनी कीमत है।’

मालती एक-दो पल के लिए नाखुश दिखी, फिर संभल गई। 'यह कौन है?' उसने पूछा। अपर्णा उसे सख्त और कठोर नज़रों से देख रही थी।

लता ने कहा, ‘मेरी भतीजी, अपर्णा। अपर्णा, मालती आंटी को मेरा नमस्कार कहो।’

‘हेलो,’ अपर्णा ने कहा, जिसका सब्र खत्म हो चुका था। ‘क्या मुझे एक पिस्ता आइसक्रीम मिल सकती है?’

‘हां, कुचुक, बिल्कुल, मुझे माफ करना,’ लता ने कहा। ‘चलो, हम सब साथ चलते हैं और कुछ लाते हैं।’

1.4

लता जल्द ही मालती को कॉलेज के कुछ दोस्तों के हाथों खो बैठी, लेकिन इससे पहले कि वह और अपर्णा कुछ और आगे बढ़ पातीं, उन्हें अपर्णा के माता-पिता ने पकड़ लिया।

‘तो ये रही तुम, नन्ही सी भगोड़ी,’ तेजस्वी मीनाक्षी ने अपनी बेटी के माथे पर चुंबन देते हुए कहा। ‘अरुण, ये कितनी प्यारी है! अब तुम कहाँ थे, नन्हे से स्कूल से भागे हुए बच्चे?’

‘मैं दादी को ढूंढने गई थी,’ अपर्णा ने कहना शुरू किया। ‘और फिर मुझे वो मिल गईं, लेकिन सविता बुआ की वजह से उन्हें घर के अंदर जाना पड़ा, मैं उनके साथ नहीं जा सकी, और फिर लता बुआ मुझे आइसक्रीम खिलाने ले गईं, लेकिन हम नहीं खा सके क्योंकि—’

लेकिन मीनाक्षी की रुचि खत्म हो गई थी और वह लता की ओर मुड़ गई थी।

‘लुट्स, ये गुलाबी रंग तुम पर जंच नहीं रहा,’ मीनाक्षी ने कहा। ‘इसमें कुछ कमी सी लग रही है—कुछ कमी सी—’

'जे ने से क्वाई?' पास ही खड़े उसके पति के एक विनम्र मित्र ने पूछा।

मीनाक्षी ने इतनी मोहक अदाओं से कहा, 'धन्यवाद,' कि वह युवक कुछ देर के लिए दूर चला गया और तारों को घूरने का नाटक करने लगा।

'नहीं, गुलाबी रंग तुम पर जंचता नहीं है, लुट्स,' मीनाक्षी ने अपनी लंबी, भूरी गर्दन को एक आरामदेह बिल्ली की तरह फैलाते हुए और अपनी भाभी का आकलन करते हुए फिर से कहा।

उन्होंने खुद बनारस रेशम की हरे और सुनहरे रंग की साड़ी पहनी हुई थी, जिसके साथ एक हरी चोली थी जो उनके पेट के उस हिस्से को उजागर कर रही थी जिसे ब्रह्मपुर समाज आमतौर पर देखने के लिए विशेषाधिकार प्राप्त या तैयार नहीं होता था।

‘ओह,’ लता ने अचानक संकोच से कहा। वह जानती थी कि उसे कपड़ों की ज्यादा समझ नहीं है, और उसे लगा कि इस खूबसूरत पक्षी के बगल में खड़ी वह काफी भद्दी लग रही है।

‘तुम किससे बात कर रही थी?’ लता के भाई अरुण ने पूछा, जिसने अपनी पत्नी के विपरीत, लता को मान से बात करते हुए देख लिया था। अरुण पच्चीस साल का था, लंबा, गोरा, बुद्धिमान, आकर्षक दिखने वाला दबंग जो अपने भाई-बहनों के अहंकार को ठेस पहुँचाकर उन्हें काबू में रखता था। वह उन्हें यह याद दिलाना पसंद करता था कि उनके पिता की मृत्यु के बाद, वह ‘एक तरह से’ उनके लिए अभिभावक की भूमिका निभा रहा है।

‘वह प्राण का भाई मान था।’

आह।’ इस शब्द में घोर असहमति झलक रही थी।

अरुण और मीनाक्षी आज सुबह ही कलकत्ता से रात भर की ट्रेन से आए थे। कलकत्ता में अरुण प्रतिष्ठित और ज्यादातर श्वेत-बहुल फर्म बेंटसन एंड प्राइस में कुछ गिने-चुने भारतीय अधिकारियों में से एक के रूप में काम करते थे। उनके पास कपूर परिवार—या कहें कि खानदान—से जान-पहचान करने का न तो समय था और न ही इच्छा, जिनके साथ उनकी मां ने उनकी बहन के लिए रिश्ता तय किया था। उन्होंने गुस्से भरी नजरों से चारों ओर देखा। उन्होंने सोचा, "हर चीज में अति करना तो उनकी आदत है," और झाड़ियों में लगी रंगीन बत्तियों को देखा। सफेद टोपी पहने और भावुक राज्य के राजनेताओं और महेश कपूर के देहाती रिश्तेदारों के समूह की अशिष्टता ने उनके गहरे तिरस्कार को और भड़का दिया। और यह तथ्य कि आमंत्रित लोगों की भीड़ में न तो ब्रह्मपुर छावनी के ब्रिगेडियर थे और न ही बर्मा शेल, इंपीरियल टोबैको और कैल्टेक्स जैसी कंपनियों के ब्रह्मपुर प्रतिनिधि मौजूद थे, ब्रह्मपुर के पेशेवर अभिजात वर्ग के बड़े हिस्से

की उपस्थिति को उनकी नजरों से ओझल कर रहा था।
अरुण ने कहा, 'मैं कहूंगा कि वह थोड़ा आवारा टाइप का है,' जिसने देखा था कि मान की निगाहें लता का पीछा कर रही थीं, इससे पहले कि उसने अपनी निगाहें कहीं और घुमा लीं।
लता मुस्कुराईं, और उनका शांत स्वभाव वाला भाई वरुण, जो अरुण और मीनाक्षी के सामने हमेशा सहमा हुआ रहता था, भी दबी हुई मिलीभगत के भाव से मुस्कुराया। वरुण कलकत्ता विश्वविद्यालय में गणित पढ़ रहा था—या पढ़ने की कोशिश कर रहा था—और वह अरुण और मीनाक्षी के साथ उनके छोटे से भूतल वाले फ्लैट में रहता था। वह दुबला-पतला, आत्मविश्वास से रहित, मधुर स्वभाव का और चंचल आँखों वाला था; और लता का लाडला था। हालाँकि वह उससे एक साल बड़ा था, फिर भी लता को उसकी बहुत परवाह थी। वरुण अरुण और मीनाक्षी, दोनों से अलग-अलग तरीकों से डरा हुआ था, और कुछ मायनों में होशियार अपर्णा से भी। गणित में उसकी रुचि मुख्य रूप से घुड़दौड़ के फॉर्म पर ऑड्स और हैंडीकैप की गणना तक ही सीमित थी। सर्दियों में, जैसे-जैसे घुड़दौड़ का मौसम शुरू होता था, वरुण का उत्साह बढ़ता जाता था, वैसे ही उसके बड़े भाई का गुस्सा भी बढ़ता जाता था। अरुण उसे बदतमीज़ कहकर चिढ़ाता भी था।
अरुण भाई, आपको उछल-कूद के बारे में क्या पता होगा? लता ने मन ही मन सोचा। फिर उसने ज़ोर से कहा, 'वह तो काफी अच्छे इंसान लगते थे।'
‘हमारी मुलाकात एक आंटी से हुई जिन्होंने उसे बदमाश कहा,’ अपर्णा ने बताया।
‘क्या उसने देखा, प्यारे?’ मीनाक्षी ने उत्सुकता से पूछा। ‘उसे दिखाओ, अरुण।’ लेकिन मान अब कहीं नज़र नहीं आ रहा था।
‘मैं कुछ हद तक खुद को दोषी मानता हूँ,’ अरुण ने ऐसी आवाज़ में कहा

जिससे ऐसा कुछ भी नहीं झलक रहा था; अरुण किसी भी बात के लिए खुद को दोषी मानने की स्थिति में नहीं था। 'मुझे सच में कुछ करना चाहिए था,' उसने आगे कहा। 'अगर मैं काम में इतना व्यस्त न होता, तो शायद मैं इस पूरे बवाल को रोक सकता था। लेकिन एक बार जब माँ के मन में यह बात बैठ गई कि यह कपूर लड़का ठीक है, तो उन्हें मनाना नामुमकिन था। माँ से तर्क करना नामुमकिन है; वह बस रोने लगती हैं।'

अरुण के संदेह को दूर करने में इस बात ने भी मदद की थी कि डॉ. प्राण कपूर अंग्रेजी पढ़ाते थे। फिर भी, अरुण को इस बात से बेहद निराशा हुई कि इस पूरे प्रांतीय समूह में शायद ही कोई अंग्रेज चेहरा था।

कितनी भद्दी लग रही हो! मीनाक्षी ने थकी हुई आवाज़ में अपने पति के विचारों को व्यक्त करते हुए मन ही मन कहा। 'और कलकत्ता से बिलकुल अलग। प्यारी, तुम्हारी नाक पर कालिख लगी है,' उसने अपर्णा से कहा, मानो किसी काल्पनिक आया को रुमाल से कालिख पोंछने का इशारा कर रही हो।

लता को दुखी देखकर वरुण ने कहा, 'मुझे यहाँ अच्छा लग रहा है।' वह जानता था कि लता को ब्रह्मपुर पसंद है, हालाँकि यह कोई महानगर नहीं था।

'चुप रहो,' अरुण ने कठोर स्वर में कहा। उसके अधीनस्थ द्वारा उसके निर्णय को चुनौती दी जा रही थी, और वह इसे बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर सकता था।

वरुण खुद से जूझ रहा था; उसने घूरकर देखा, फिर नीचे देखने लगा।

अरुण ने तीखा प्रहार करते हुए कहा, 'जिस बात को आप नहीं समझते, उसके बारे में बात मत करो।'

वरुण चुपचाप गुस्से से घूर रहा था।

'तुमनें मुझे सुना?'

‘हां,’ वरुण ने कहा।
‘हाँ, क्या?’
‘जी हां, अरुण भाई,’ वरुण ने धीरे से कहा।
वरुण के लिए यह मार-पीट आम बात थी, और लता को इस बात पर कोई हैरानी नहीं हुई। लेकिन उसे वरुण के लिए बहुत बुरा लगा और अरुण पर गुस्सा आया। उसे न तो इसमें वरुण को आनंद आ रहा था और न ही अरुण का कोई मकसद समझ आ रहा था।
उसने फैसला किया कि शादी के तुरंत बाद वह वरुण से बात करेगी ताकि उसे कम से कम आंतरिक रूप से, उसके मन पर हो रहे ऐसे हमलों को सहने में मदद कर सके। लता ने सोचा, भले ही मैं खुद इन्हें सहने में उतनी सक्षम न होऊं।
‘खैर, अरुण भाई,’ उसने मासूमियत से कहा, ‘मुझे लगता है अब बहुत देर हो चुकी है। हम सब अब एक बड़ा खुशहाल परिवार हैं, और हमें एक-दूसरे के साथ जितना हो सके उतना तालमेल बिठाना होगा।’
लेकिन यह मुहावरा निर्दोष नहीं था। 'एक बड़ा खुशहाल परिवार' चटर्जी परिवार का एक व्यंग्यात्मक मुहावरा था। मीनाक्षी मेहरा चटर्जी परिवार से थीं, इससे पहले कि उनकी और अरुण की मुलाकात एक कॉकटेल पार्टी में हुई, जहाँ वे एक-दूसरे के प्यार में पागल हो गए और एक महीने के भीतर ही दोनों परिवारों के लिए हैरानी की बात यह थी कि उनकी शादी हो गई। कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति चटर्जी और उनकी पत्नी अपने पांच बच्चों (और साथ में कडल्स नाम का कुत्ता) के परिवार में गैर-बंगाली अरुण का स्वागत करके खुश थे या नहीं, और श्रीमती रूपा मेहरा अपने पहले बच्चे, अपनी आँखों के तारे, की शादी खत्री जाति से बाहर (और वह भी मीनाक्षी जैसी बिगड़ी हुई और अति परिष्कृत महिला से) होने की बात से प्रसन्न थीं या नहीं, अरुण चटर्जी परिवार के साथ अपने

संबंध को बहुत महत्व देता था। चटर्जी परिवार धन और प्रतिष्ठा से भरपूर था और उनके पास कलकत्ता में एक भव्य घर था जहाँ वे बड़ी (लेकिन सुरुचिपूर्ण) पार्टियाँ देते थे। और भले ही वह बड़ा खुशहाल परिवार, खासकर मीनाक्षी के भाई-बहन, कभी-कभी अपनी अंतहीन, बेतुकी हास्य-व्यंग्य और तात्कालिक तुकबंदी वाले दोहों से उसे परेशान करते थे, फिर भी वह इसे स्वीकार कर लेता था क्योंकि यह उसे निर्विवाद रूप से सभ्य लगता था। यह इस प्रांतीय राजधानी, कपूर परिवार और दिखावटी समारोहों से बिलकुल अलग था—जहां शराब की जगह अनार का रस परोसा जाता था!

'तुम्हारा इससे क्या मतलब है?' अरुण ने लता से पूछा। 'क्या तुम्हें लगता है कि अगर पापा जीवित होते तो हम इस तरह के परिवार में शादी करते?'

अरुण को इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं थी कि उनकी बातें कोई सुन सकता है। लता शर्म से लाल हो गई। लेकिन उसने अपनी बात को बखूबी कह दिया था। अगर रघुबीर मेहरा चालीस साल की उम्र में न मरते और रेलवे सेवा में अपनी तेज़ी से तरक्की जारी रखते, तो 1947 में जब अंग्रेज़ बड़ी संख्या में भारतीय सरकारी नौकरी छोड़कर जा रहे थे, तब वे निश्चित रूप से रेलवे बोर्ड के सदस्य बन जाते। उनकी काबिलियत और अनुभव उन्हें चेयरमैन तक भी पहुंचा सकते थे। परिवार को सालों से चल रहे संघर्षों, जो अब भी श्रीमती रूपा मेहरा की कम होती बचत, दोस्तों की मदद और हाल ही में उनके बड़े बेटे की तनख्वाह पर निर्भर हैं, से जूझना नहीं पड़ता। उन्हें अपने बच्चों को वह शिक्षा दिलाने के लिए अपने ज़्यादातर गहने और दार्जिलिंग में अपना छोटा सा घर भी नहीं बेचना पड़ता, जो उनके लिए सबसे ज़रूरी थी। उनकी व्यापक भावुकता और अपने प्रिय पति की याद दिलाने वाली भौतिक वस्तुओं के प्रति उनके

लगाव के भीतर त्याग और मूल्यों की भावना छिपी थी, जिसने उन्हें उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम के बोर्डिंग स्कूल की शिक्षा के अनिश्चित और अमूर्त लाभों में दृढ़ता से विलीन कर दिया था। और इसीलिए अरुण और वरुण सेंट जॉर्ज स्कूल जाते रहे, और सविता और लता को सेंट सोफिया कॉन्वेंट से नहीं निकाला गया।

अरुण ने सोचा, कपूर परिवार ब्रह्मपुर के समाज के लिए तो ठीक-ठाक हो सकता है, लेकिन अगर पिताजी जीवित होते, तो मेहरा परिवार के लिए कई शानदार रिश्ते तय हो चुके होते। कम से कम उन्होंने तो अपनी परिस्थितियों से ऊपर उठकर ससुराल के मामले में अच्छा जीवन पाया था। प्राण के भाई, वह घूरने वाला आदमी जिससे लता अभी बात कर रही थी—जो अरुण के अनुसार बनारस में कपड़े की दुकान चलाता था—और मीनाक्षी के बड़े भाई, जो ऑक्सफोर्ड से पढ़े थे, लिंकन इन में कानून की पढ़ाई कर रहे थे और साथ ही एक प्रकाशित कवि भी थे, इन दोनों में भला क्या तुलना हो सकती है?

अरुण की अटकलों को उसकी बेटी ने धराशायी कर दिया, जिसने धमकी दी कि अगर उसे आइसक्रीम नहीं मिली तो वह चिल्लाएगी। उसे अपने अनुभव से पता था कि चिल्लाने (या चिल्लाने की धमकी देने) से उसके माता-पिता पर बहुत असर पड़ता है। और वैसे भी, वे कभी-कभी एक-दूसरे पर और अक्सर नौकरों पर चिल्लाते थे।

लता को अपराधबोध हो रहा था। उसने अपर्णा से कहा, 'यह मेरी गलती है, जान। चलो, इससे पहले कि हम किसी और बात में उलझ जाएं, तुरंत चलते हैं। लेकिन रोना या चिल्लाना मत, मुझसे वादा करो। मुझ पर इसका कोई असर नहीं होगा।'

अपर्णा, जो जानती थी कि ऐसा नहीं होगा, चुप रही।

लेकिन ठीक उसी क्षण दूल्हा घर के एक तरफ से निकला, पूरी तरह

सफेद कपड़ों में, उसका सांवला, कुछ घबराया हुआ चेहरा सफेद फूलों की लटकती मालाओं से ढका हुआ था; सभी लोग उस दरवाजे की ओर बढ़ गए जहाँ से दुल्हन निकलने वाली थी; और अपर्णा, अपनी लता बुआ की बाहों में उठी हुई, एक बार फिर से धमकी और प्रस्ताव दोनों को टालने के लिए विवश हो गई।

1.5

लता को लगा कि प्राण का अपने छोटे भतीजे को आगे बिठाकर और दूल्हे के बारात को साथ लेकर सफेद घोड़े पर सवार होकर द्वार तक न आना थोड़ा अस्वाभाविक था; लेकिन आखिर प्रेम निवास दूल्हे का घर था। और अगर वह परंपरा का पालन करता, तो अरुण को उसका और मज़ाक उड़ाने का मौका मिल जाता। वैसे भी, लता के लिए एलिज़ाबेथन ड्रामा के व्याख्याता को कंदगुला के उस घूंघट में देखना मुश्किल था। वह अब अपनी बहन सविता के गले में गहरे लाल, सुगंधित गुलाबों की माला पहना रहे थे—और सविता भी उन्हें वही पहना रही थी। लाल और सुनहरी शादी की साड़ी में वह बहुत सुंदर लग रही थी, और काफी शांत थी; लता को लगा कि शायद वह रो भी रही हो। उसका सिर ढका हुआ था, और वह ज़मीन की ओर देख रही थी, जैसा कि उसकी माँ ने उसे करने के लिए कहा होगा। यहाँ तक कि जब वह उनके गले में माला पहना रही थी, तब भी उसके लिए उस व्यक्ति के चेहरे की ओर देखना उचित नहीं था जिसके साथ उसे अपना जीवन बिताना था।

स्वागत समारोह संपन्न होने के बाद, दूल्हा और दुल्हन एक साथ बगीचे के मध्य में गए, जहाँ सफेद फूलों से सजा एक छोटा चबूतरा बनाया गया था और शुभ नक्षत्रों की ओर खुला हुआ था। यहाँ दोनों परिवारों से एक-एक पुजारी, श्रीमती रूपा मेहरा और दूल्हे के माता-पिता उस छोटी सी अग्नि के चारों ओर बैठे थे जो उनके वचनों की साक्षी बनेगी।

श्रीमती रूपा मेहरा के भाई, जिनसे परिवार के लोग बहुत कम मिलते थे, ने दिन में पहले चूड़ी की रस्म का जिम्मा संभाला था। अरुण इस बात से नाराज़ था कि उसे किसी भी चीज़ का जिम्मा लेने की अनुमति नहीं दी गई थी। दादाजी के अप्रत्याशित कार्यों से उत्पन्न संकट के बाद उसने अपनी माँ से सुझाव दिया था कि शादी कलकत्ता में कर ली जाए। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी, और माँ ने उसकी बात नहीं मानी।

मालाओं का आदान-प्रदान समाप्त हो जाने के बाद, भीड़ ने शादी की रस्मों पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। ये रस्में करीब एक घंटे तक चलती रहीं, इस दौरान मेहमान प्रेम निवास के लॉन में इधर-उधर घूमते और बातें करते रहे। वे हँसे; उन्होंने हाथ मिलाए या माथे पर हाथ रखे; वे छोटे-छोटे समूहों में बँट गए, पुरुष इधर, महिलाएँ उधर; उन्होंने बगीचे में जगह-जगह रखे कोयले से भरे मिट्टी के चूल्हों पर खुद को गर्म किया, जबकि उनकी ठंडी, गपशप से भरी साँसें हवा में फैल रही थीं; उन्होंने रंग-बिरंगी रोशनी की प्रशंसा की; उन्होंने फोटोग्राफर के लिए मुस्कुराया, जब उसने अंग्रेज़ी में धीरे से कहा, 'कृपया स्थिर रहें!'; उन्होंने फूलों, इत्र और पके मसालों की सुगंध को गहरी साँस लेकर महसूस किया; उन्होंने बगीचे के पिछले हिस्से में रंगीन कपड़े की छतरी के नीचे जन्म-मृत्यु, राजनीति और घोटालों पर चर्चा की, जिसके नीचे खाने की लंबी मेजें लगाई गई थीं; वे थके-हारे कुर्सियों पर बैठ गए, उनकी प्लेटें भरी हुई थीं और वे उन्हें लगातार खाते जा रहे थे। नौकर, कुछ सफेद वर्दी में, कुछ खाकी वर्दी में, बगीचे में खड़े लोगों के लिए फलों का रस, चाय, कॉफी और नाश्ता लेकर आए: समोसे, कचौरी, लड्डू, गुलाब जामुन, बर्फी, गजक और आइसक्रीम, पूरियों और छह तरह की सब्जियों के साथ, सबने जमकर खाया और परोसा। महीनों से एक-दूसरे से न मिले दोस्त जोर-जोर से रोने लगे, जो रिश्तेदार सिर्फ शादियों और अंत्येष्टि में मिलते थे, वे आँसू भरी आँखों से गले मिले

और अपने दूर के रिश्तेदारों के बारे में ताजा खबरें साझा कीं। कानपुर से लता की मौसी, दूल्हे के रंग को देखकर भयभीत होकर, लखनऊ से आई मौसी से 'रूपा के काले पोते-पोतियों' के बारे में बात कर रही थीं, मानो वे पहले से ही मौजूद हों। उन्होंने अपर्णा की खूब तारीफ की, जो जाहिर तौर पर रूपा की आखिरी गोरी पोती होने वाली थी, और उसकी प्रशंसा तब भी की जब उसने अपने हल्के पीले कश्मीरी स्वेटर पर पिस्ता आइसक्रीम गिरा दी। ग्रामीण रुधिया के उद्दंड बच्चे इधर-उधर दौड़ते हुए ऐसे चिल्ला रहे थे मानो खेत में पिट्ठू खेल रहे हों। शहनाई का उदास, उत्सवपूर्ण संगीत भले ही अब थम गया था, लेकिन सौहार्दपूर्ण आवाजों का एक खुशनुमा कोलाहल आसमान में गूंज उठा और समारोहों के निरर्थक मंत्रों को पूरी तरह से दबा दिया।

लता पास ही खड़ी होकर उत्सुकता और हैरानी के मिले-जुले भाव से सब देख रही थी। दो नंगे बदन पुजारी, एक बहुत मोटा और दूसरा दुबला-पतला, दोनों ही ठंड से बेअसर लग रहे थे, और वे इस बात पर हल्की-फुल्की होड़ में लगे थे कि कौन पूजा-पाठ का अधिक विस्तृत रूप जानता है। इसलिए, जब तक शुभ मुहूर्त को बनाए रखने के लिए तारे अपनी गति पर स्थिर रहे, संस्कृत पाठ लगातार चलता रहा। यहाँ तक कि मोटे पुजारी ने दूल्हे के माता-पिता से भी अपने पीछे कुछ दोहराने को कहा। महेश कपूर की भौहें फड़क रही थीं; उनका गुस्सा फूटने ही वाला था।

लता यह समझने की कोशिश कर रही थी कि सविता क्या सोच रही होगी। इस आदमी को जाने बिना वह शादी के लिए कैसे राजी हो गई? दयालु और मिलनसार होने के बावजूद, उसके अपने विचार तो थे ही। लता उससे बहुत प्यार करती थी और उसके उदार, शांत स्वभाव की प्रशंसा करती थी; उसका शांत स्वभाव उसके अपने बदलते मिजाज से बिलकुल अलग था। सविता को अपनी सुंदरता और ताजगी पर ज़रा भी

घमंड नहीं था; लेकिन क्या वह इस बात से नाराज़ नहीं थी कि प्राण सुंदरता की सबसे आसान कसौटी पर भी खरा नहीं उतरेगा? क्या सविता सचमुच यह मानती थी कि माँ ही सब जानती है? सविता से बात करना मुश्किल था, और कभी-कभी तो यह भी अंदाज़ा लगाना मुश्किल था कि वह क्या सोच रही है। जब से लता कॉलेज गई थी, उसकी बहन की जगह मालती उसकी सबसे बड़ी राज़दार बन गई थी। और लता जानती थी कि मालती दुनिया की सारी माताओं के हाथों भी इस तरह जल्दबाजी में शादी करने के लिए कभी राजी नहीं होती।

कुछ ही मिनटों में सविता प्राण को अपना नाम तक सौंप देगी। वह बाकी सब की तरह मेहरा नहीं रहेगी, बल्कि कपूर बन जाएगी। शुक्र है, अरुण को कभी ऐसा नहीं करना पड़ा। लता ने 'सविता कपूर' नाम ज़बान पर लाकर देखा, और उसे यह नाम बिल्कुल पसंद नहीं आया।

आग से निकलने वाला धुआँ—या शायद फूलों का पराग—प्राण को परेशान करने लगा था, और उसने थोड़ा खांसते हुए अपना मुँह हाथ से ढक लिया। उसकी माँ ने धीमी आवाज़ में उससे कुछ कहा। सविता ने भी बहुत जल्दी उसकी ओर देखा, लता को लगा कि उसकी नज़र में कोमल चिंता थी। यह सच था कि सविता किसी भी पीड़ित व्यक्ति के लिए चिंतित होती; लेकिन यहाँ एक विशेष कोमलता थी जिसने लता को चिढ़ाया और उलझन में डाल दिया। सविता इस आदमी से सिर्फ़ एक घंटे के लिए मिली थी! और अब वह उसकी स्नेह भरी नज़र का जवाब दे रहा था। यह बहुत ज़्यादा था।

लता यह भूल गई कि कुछ ही समय पहले वह मालती के सामने प्राण का बचाव कर रही थी, और उसे खुद को परेशान करने वाली बातें मिलने लगीं।

'प्रेम निवास' से ही शुरुआत होती है: प्रेम का निवास। लता ने चिढ़कर

सोचा, यह नाम कितना मूर्खतापूर्ण है, इस घर के लिए जहाँ शादियाँ तय होती हैं। और अनावश्यक रूप से आडंबरपूर्ण भी: मानो यह ब्रह्मांड का केंद्र हो और इस पर दार्शनिक कथन देना अनिवार्य समझता हो। और वस्तुनिष्ठ रूप से देखा जाए तो यह दृश्य बेतुका था: सात जीवित लोग, जिनमें से कोई भी मूर्ख नहीं था, आग के चारों ओर बैठे एक ऐसी भाषा का जाप कर रहे थे जिसे उनमें से केवल तीन ही समझते थे। फिर भी, लता ने सोचा, उसका मन एक विचार से दूसरे विचार पर भटक रहा था, शायद यह छोटी सी आग ही वास्तव में ब्रह्मांड का केंद्र थी। क्योंकि यह यहाँ जल रही थी, इस सुगंधित बगीचे के बीचोंबीच, जो स्वयं पसंद बाग के हृदय में स्थित था, ब्रह्मपुर का सबसे रमणीय इलाका, जो पूर्व प्रदेश राज्य की राजधानी थी, जो गंगा के मैदानों के केंद्र में स्थित था, जो स्वयं भारत का हृदयस्थल था... और इसी तरह आकाशगंगाओं के माध्यम से बोध और ज्ञान की चरम सीमाओं तक। लता को यह विचार जरा भी तुच्छ नहीं लगा; इससे उसे प्राण के प्रति अपनी झुंझलाहट, बल्कि कहें तो उसके प्रति अपनी नाराजगी को नियंत्रित करने में मदद मिली।

'जोर से बोलो! जोर से बोलो! अगर तुम्हारी मां तुम्हारी तरह बुदबुदाती, तो हमारी शादी कभी नहीं होती।'

महेश कपूर अधीरता से अपनी दुबली-पतली पत्नी की ओर मुड़े, जिसके परिणामस्वरूप उनकी पत्नी और भी ज्यादा चुप हो गईं।

प्राण ने मुड़कर अपनी माँ को प्रोत्साहन भरी मुस्कान दी और लता की नज़र में उसकी प्रतिष्ठा फिर से तेज़ी से बढ़ गई।

महेश कपूर ने भौंहें चढ़ाईं, लेकिन कुछ मिनटों तक चुप रहे, जिसके बाद वे फूट पड़े, इस बार परिवार के पुजारी के सामने:

क्या यह सब बकवास हमेशा चलती रहेगी?

पुजारी ने संस्कृत में कुछ शांत करने वाले शब्द कहे, मानो महेश कपूर को

आशीर्वाद दे रहे हों, और महेश कपूर को झुंझलाहट भरी चुप्पी साधनी पड़ी। उनकी झुंझलाहट के कई कारण थे, जिनमें से एक यह था कि उनके कट्टर राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी, गृह मंत्री, विशाल और आदरणीय मुख्यमंत्री एस.एस. शर्मा के साथ गहरी बातचीत में मशगूल थे। वे क्या साजिश रच रहे हैं? उन्होंने सोचा। मेरी मूर्ख पत्नी ने अग्रवाल को आमंत्रित करने पर जोर दिया क्योंकि हमारी बेटियाँ दोस्त हैं, जबकि वह जानती थी कि इससे मेरे लिए चीजें खराब हो जाएँगी। और अब मुख्यमंत्री उनसे ऐसे बात कर रहे हैं जैसे कोई और है ही नहीं। और वह भी मेरे बगीचे में!

उनकी दूसरी बड़ी नाराज़गी श्रीमती रूपा मेहरा को लेकर थी। महेश कपूर ने जब शादी की तैयारियों का जिम्मा संभाला, तो उन्होंने प्रेम निवास में ग़ज़लों की एक खूबसूरत और मशहूर गायिका को आमंत्रित करने का पक्का इरादा कर लिया था, जैसा कि उनके परिवार में किसी की भी शादी होने पर परंपरा थी। लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा, हालांकि शादी का खर्च वह नहीं उठा रही थीं, फिर भी उन्होंने साफ मना कर दिया। वह अपनी बेटी की शादी में 'उस तरह की' गायिका को प्रेम गीत गाते हुए बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं। 'उस तरह की' गायिका से उनका मतलब था एक मुस्लिम और एक वेश्या।

महेश कपूर के जवाब अस्पष्ट थे, और पुजारी ने उन्हें विनम्रता से दोहराया।

‘हां, हां, करते रहो, करते रहो,’ महेश कपूर ने कहा। उन्होंने आग को घूरकर देखा।

लेकिन अब सविता को उसकी मां गुलाब की पंखुड़ियों का एक गुच्छा देकर विदा कर रही थी, और तीनों महिलाएं रो रही थीं।

सचमुच! महेश कपूर ने सोचा। वे आग बुझा देंगे। उन्होंने झुंझलाहट से मुख्य दोषी की ओर देखा, जिसकी सिसकियाँ सबसे अधिक शोर मचा रही थीं।

लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा ने अपना रुमाल ब्लाउज में वापस रखने की भी जहमत नहीं उठाई। उनकी आँखें लाल थीं और नाक-गाल आँसुओं से लाल हो गए थे। वह अपनी शादी के बारे में सोच रही थीं। 4711 ईओ डे कोलोन की खुशबू ने उनके दिवंगत पति की असहनीय सुखद यादें ताजा कर दीं। फिर उन्होंने एक पीढ़ी नीचे अपनी प्रिय सविता के बारे में सोचा, जो जल्द ही प्राण के साथ इस अग्नि के चारों ओर घूमकर अपना वैवाहिक जीवन शुरू करने वाली थीं। श्रीमती रूपा मेहरा ने प्रार्थना की, "काश उनका वैवाहिक जीवन मेरे वैवाहिक जीवन से भी लंबा हो। काश वह अपनी बेटी की शादी में यही साड़ी पहनें।"

उसने अपने पिता की पीढ़ी के बारे में भी सोचा, और इससे उसकी आँखों से फिर से आँसू बहने लगे। सत्तर वर्षीय रेडियोलॉजिस्ट डॉ. किशन चंद सेठ किस बात से नाराज़ थे, यह कोई नहीं जानता था: शायद उनके मित्र महेश कपूर ने कुछ कहा या किया हो, लेकिन यह भी संभव था कि उनकी अपनी बेटी ने ही कुछ कहा हो; कोई निश्चित रूप से नहीं कह सकता था। मेज़बान के रूप में अपने कर्तव्यों को निभाने से इनकार करने के अलावा, उन्होंने अपनी पोती की शादी में भी न आने का फैसला किया था, और जैसा कि उन्होंने दावा किया, 'हृदय रोग विशेषज्ञों के सम्मेलन' के लिए गुस्से में दिल्ली चले गए थे। वह अपने साथ अपनी असहनीय पत्नी पार्वती को भी ले गए थे, जो पैंतीस साल की थीं और श्रीमती रूपा मेहरा से दस साल छोटी थीं।

यह भी संभव था, हालांकि उनकी बेटी के मन में यह बात नहीं आई, कि अगर डॉ. किशन चंद सेठ शादी में शामिल होते तो शायद पागल हो जाते और इसीलिए वे उस स्थिति से बचने के लिए भाग गए थे। वैसे तो वे हमेशा से ही कद में छोटे और दुबले-पतले थे, लेकिन उन्हें खाने का बहुत शौक था; लेकिन पाचन संबंधी विकार और मधुमेह के कारण अब उनका

आहार उबले अंडे, हल्की चाय, नींबू का रस और अरारोट बिस्कुट तक ही सीमित था।

मुझे परवाह नहीं कि कौन मुझे घूर रहा है, मेरे पास रोने के कई कारण हैं, श्रीमती रूपा मेहरा ने मन ही मन चुनौती भरे लहजे में कहा। मैं आज बहुत खुश भी हूँ और मेरा दिल भी टूटा हुआ है। लेकिन उनका यह दुख कुछ ही मिनटों तक रहा। दूल्हा और दुल्हन ने अग्नि के चारों ओर सात चक्कर लगाए, सविता ने अपना सिर नम्रता से नीचे झुकाए रखा, उसकी पलकें आंसुओं से भीगी हुई थीं; और प्राण और वह पति-पत्नी बन गए।

पुरोहितों के कुछ समापन शब्दों के बाद, सभी लोग खड़े हो गए। नवविवाहित जोड़े को सफेद और नारंगी रंग के फूलों से लदे, सुगंधित, खुरदुरे पत्तों वाले हरसिंगार के पेड़ के पास फूलों से ढकी एक बेंच पर ले जाया गया; और उन पर, उनके माता-पिता पर और उपस्थित सभी मेहरा और कपूर परिवार के सदस्यों पर उतनी ही प्रचुर मात्रा में बधाईयों की वर्षा हुई, जैसे भोर में वे नाज़ुक फूल धरती पर गिरते हैं।

श्रीमती रूपा मेहरा की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। उन्होंने बधाईयों को ऐसे गटक लिया जैसे कोई मना किए हुए गुलाबजामुन। उन्होंने अपनी छोटी बेटी को थोड़ा संदेह भरी नजरों से देखा, जो दूर से उन पर हंसती हुई प्रतीत हो रही थी। या क्या वह अपनी बहन पर हंस रही थी? खैर, उन्हें जल्द ही पता चल जाएगा कि शादी की खुशी के ये आंसुओं का क्या मतलब था!

प्राण की माँ, जिन पर खूब चिल्लाया गया था, अपने बेटे और बहू को आशीर्वाद देने के बाद शांत लेकिन प्रसन्न थीं। अपने छोटे बेटे मान को कहीं न देखकर वे अपनी बेटी वीना के पास गईं। वीना ने उन्हें गले लगाया; श्रीमती महेश कपूर, क्षण भर के लिए भावुक हो गईं, कुछ नहीं बोलीं, लेकिन साथ ही रो भी रही थीं और मुस्कुरा भी रही थीं। खौफनाक

गृह मंत्री और उनकी बेटी प्रिया कुछ मिनटों के लिए उनके साथ शामिल हुए, और उनकी बधाई के बदले में, श्रीमती महेश कपूर ने उन दोनों से कुछ स्नेह भरे शब्द कहे। प्रिया, जिनकी शादी हो चुकी थी और जिन्हें उनके ससुराल वालों ने ब्रह्मपुर के पुराने, तंग इलाके में एक घर में लगभग कैद कर रखा था, ने कुछ उदास भाव से कहा कि बगीचा सुंदर लग रहा है। और यह सच था, श्रीमती महेश कपूर ने शांत गर्व के साथ सोचा: बगीचा वास्तव में सुंदर लग रहा था। घास हरी-भरी थी, गार्डेनिया के फूल मलाईदार और सुगंधित थे, और कुछ गुलदाउदी और गुलाब पहले ही खिल चुके थे। और यद्यपि वह हरसिंगार वृक्ष के अचानक और प्रचुर मात्रा में खिलने का श्रेय नहीं ले सकती थी, लेकिन यह निश्चित रूप से उन देवताओं की कृपा थी जिनकी पौराणिक काल में यह बहुमूल्य और विवादित संपत्ति हुआ करती थी।

1.6

इस बीच, राजस्व मंत्री श्री एस.एस. शर्मा पूर्व प्रदेश के मुख्यमंत्री से बधाई स्वीकार कर रहे थे। शर्मा जी काफी हट्टे-कट्टे थे, लंगड़ाकर चलते थे और उनका सिर हल्का-हल्का हिलता रहता था, जो दिनभर के काम के बाद और भी बढ़ जाता था। वे चतुराई, करिश्मा और दयालुता के मिश्रण से राज्य का संचालन करते थे। दिल्ली उनसे बहुत दूर थी और उनके विधायी और प्रशासनिक क्षेत्र में उनकी कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। हालांकि वे गृह मंत्री के साथ हुई बातचीत के बारे में ज्यादा कुछ नहीं बता रहे थे, फिर भी वे खुश थे।

रुधिया के उन शोर मचाने वाले बच्चों को देखकर उन्होंने अपनी थोड़ी नाक से निकलने वाली आवाज में महेश कपूर से कहा:

तो आप आगामी चुनावों के लिए ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्र तैयार कर रहे हैं?

महेश कपूर मुस्कुराए। 1937 से वे पुराने ब्रह्मपुर के मध्य में स्थित उसी

शहरी निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ते आ रहे थे—इस निर्वाचन क्षेत्र में मिसरी मंडी का बड़ा हिस्सा शामिल था, जो शहर के जूता व्यापार का केंद्र था। अपने खेत और ग्रामीण मामलों की जानकारी के बावजूद—राज्य में बड़े और अनुत्पादक भू-जोतों को समाप्त करने वाले विधेयक के वे प्रमुख प्रणेता थे—यह अकल्पनीय था कि वे अपने चुनावी क्षेत्र को छोड़कर किसी ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ेंगे। जवाब में उन्होंने अपने कपड़ों की ओर इशारा किया; उनके द्वारा पहनी गई सुंदर काली अचकन, तंग ऑफ-व्हाइट पजामा और ऊपर की ओर मुड़ी हुई उंगलियों वाली शानदार कढ़ाई वाली सफेद जूतियाँ धान के खेत में एक बेमेल दृश्य प्रस्तुत करतीं।

“अरे, राजनीति में तो कुछ भी असंभव नहीं है,” शर्माजी ने धीरे से कहा। “जब आपका ज़मींदारी उन्मूलन विधेयक पारित हो जाएगा, तो आप पूरे इलाके में हीरो बन जाएंगे। अगर आप चाहें, तो मुख्यमंत्री भी बन सकते हैं। क्यों नहीं?” शर्माजी ने उदारता और सावधानी से कहा। उन्होंने चारों ओर देखा और उनकी नज़र बैतर के नवाब साहब पर पड़ी, जो अपनी दाढ़ी सहलाते हुए असमंजस में इधर-उधर देख रहे थे। “हाँ, इस प्रक्रिया में आप एक-दो दोस्त खो सकते हैं,” उन्होंने आगे कहा।

महेश कपूर, जिन्होंने बिना सिर घुमाए उनकी नज़र का पीछा किया था, धीरे से बोले: ‘ज़मींदार कई तरह के होते हैं। सभी ज़मींदार ज़मीन से दोस्ती नहीं रखते। नवाब साहब जानते हैं कि मैं सिद्धांतों के आधार पर काम कर रहा हूँ।’ वे रुके और फिर बोले: ‘रुधिया में मेरे कुछ रिश्तेदार अपनी ज़मीन खो सकते हैं।’

मुख्यमंत्री ने प्रवचन सुनकर सिर हिलाया, फिर अपने ठंडे हाथों को मलते हुए कहा, ‘खैर, वह एक अच्छा आदमी है।’ उन्होंने आगे कहा, ‘और उसका पिता भी अच्छा था।’

महेश कपूर चुप रहे। शर्माजी के बारे में एक बात जो कभी कही नहीं जा सकती थी, वह थी जल्दबाज़ी; और फिर भी यह एक बेहद जल्दबाज़ी भरा बयान था। यह सर्वविदित था कि नवाब साहब के पिता, स्वर्गीय नवाब साहब बैतर, मुस्लिम लीग के सक्रिय सदस्य थे; और यद्यपि वे पाकिस्तान के जन्म को देखने के लिए जीवित नहीं रहे, फिर भी उन्होंने अपना पूरा जीवन इसी उद्देश्य के लिए समर्पित कर दिया था।

लंबे कद के, सफ़ेद दाढ़ी वाले नवाब साहब ने अपने ऊपर टकटकी लगाए चार निगाहों को देखकर गंभीरता से अपने हाथ को माथे पर रखकर विनम्रतापूर्वक अभिवादन किया, फिर अपने पुराने मित्र को बधाई देते हुए एक शांत मुस्कान के साथ अपना सिर एक तरफ झुकाया।

'फिरोज और इम्तियाज को आपने कहीं नहीं देखा, है ना?' धीरे-धीरे चलकर उन्होंने महेश कपूर से पूछा।

नहीं, नहीं—लेकिन मैंने भी अपने बेटे को नहीं देखा है, इसलिए मैं यही मानती हूँ।

नवाब साहब ने बेबसी का भाव दर्शाते हुए अपने हाथ थोड़े से ऊपर उठाए, हथेलियाँ आगे की ओर थीं।

कुछ देर बाद उन्होंने कहा: 'तो प्राण की शादी हो गई है, और मान की बारी है। मुझे लगता है कि वह आपको थोड़ा कम आज्ञाकारी लगेगा।'

महेश कपूर ने दृढ़ स्वर में कहा, "खैर, बात बने तो नहीं, लेकिन बनारस में कुछ लोग हैं जिनसे मैं बात कर रहा हूँ। मान पिता से मिल चुका है। वह भी कपड़े के कारोबार में हैं। हम पूछताछ कर रहे हैं। देखते हैं क्या होता है। और आपके जुड़वा बच्चों का क्या? क्या दोनों बहनों से एक साथ शादी होगी?"

नवाब साहब ने अपनी पत्नी के बारे में उदास मन से सोचते हुए कहा, "देखते हैं, देखते हैं; इंशाल्लाह, ये सब जल्द ही बस जाएंगे।"

1.7

‘कानून का हवाला दो,’ मान ने स्कॉच का अपना तीसरा गिलास फिरोज की ओर उठाते हुए कहा, जो अपने बिस्तर पर एक गिलास लेकर बैठा था। इम्तियाज एक गद्देदार कुर्सी पर आराम से बैठा बोतल को देख रहा था।

फिरोज ने कहा, 'धन्यवाद। लेकिन उम्मीद है कि नए कानूनों के लिए नहीं।'

‘अरे, चिंता मत करो, चिंता मत करो, मेरे पिताजी का बिल कभी पास नहीं होगा,’ मान ने कहा। ‘और अगर पास हो भी गया, तो तुम मुझसे कहीं ज्यादा अमीर होगे। मुझे देखो,’ उसने उदास स्वर में कहा। ‘मुझे तो गुजारा करने के लिए काम करना पड़ता है।’

चूंकि फिरोज एक वकील थे और उनके भाई एक डॉक्टर थे, इसलिए वे अभिजात वर्ग के आलसी बेटों की लोकप्रिय छवि में फिट नहीं बैठते थे।

और जल्द ही,’ मान ने आगे कहा, ‘अगर मेरे पिता की मर्ज़ी चली तो मुझे दो लोगों के लिए काम करना पड़ेगा। और बाद में और भी लोगों के लिए। हे भगवान!’

‘क्या—तुम्हारे पिता तुम्हारी शादी नहीं करवा रहे हैं?’ फ़िरोज़ ने मुस्कुराते और भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।

‘आज रात तो बफर जोन गायब ही हो गया,’ मान ने हताशा से कहा। ‘एक और लो।’

‘नहीं, नहीं धन्यवाद, मेरे पास अभी बहुत है,’ फ़िरोज़ ने कहा। फ़िरोज़ ने अपनी ड्रिंक का आनंद लिया, लेकिन मन में थोड़ी सी अपराधबोध भी था; उसके पिता तो मान से भी ज़्यादा नाराज़ होते। ‘तो हैप्पी आवर कब है?’ उसने अनिश्चितता से पूछा।

‘भगवान ही जाने। मामला अभी जांच के चरण में है,’ मान ने कहा।

इम्तियाज ने आगे कहा, 'पहली बार पढ़ने पर।'
किसी कारणवश, इससे मान को बहुत खुशी हुई। 'पहली बार में ही!' उसने दोहराया। 'अच्छा, उम्मीद है कि यह तीसरी बार तक न पहुंचे! और अगर पहुंच भी जाए, तो राष्ट्रपति अपनी सहमति न दें!'
वह हँसा और दो-चार घूंट पी लिए। फिरोज से उसने पूछा, 'तुम्हारी शादी का क्या हुआ?'
फ़िरोज़ ने थोड़ा टालमटोल भरे अंदाज़ में कमरे में चारों ओर देखा। प्रेम निवास के ज़्यादातर कमरों की तरह यह कमरा भी बिल्कुल सादा और कामचलाऊ था—ऐसा लग रहा था मानो यहाँ मतदाताओं की भीड़ के आने की उम्मीद हो। 'मेरी शादी!' उसने हंसते हुए कहा।
मान ने ज़ोर से सिर हिलाया।
फिरोज ने कहा, 'विषय बदल दो।'
'क्यों, अगर तुम यहाँ एकांत में पीने के बजाय बगीचे में चले जाओ—'
'यह बिल्कुल भी एकांत नहीं है।'
'बीच में मत बोलो,' मान ने उसे गले लगाते हुए कहा। 'अगर तुम बगीचे में जाओगे, तो तुम्हारे जैसे सुंदर, आकर्षक युवक को पल भर में ही सुंदर युवतियाँ घेर लेंगी। और कुछ तो नाकाबिल भी होंगी। वे कमल पर मधुमक्खियों की तरह तुमसे चिपक जाएँगी। घुंघराले बाल, घुंघराले बाल, क्या तुम मेरे बनोगे?'
फ़िरोज़ का चेहरा लाल हो गया। उसने कहा, 'तुमने उपमा को थोड़ा गलत समझा है। पुरुष मधुमक्खियाँ हैं, औरतें कमल।'
मान ने उर्दू ग़ज़ल की एक पंक्ति सुनाई जिसका अर्थ था कि शिकारी खुद शिकार बन सकता है, और इम्तियाज़ हंस पड़ा।
फिरोज ने जानबूझकर नाराज़गी जताते हुए कहा, "तुम दोनों चुप रहो।" वह इस तरह की बकवास से तंग आ चुका था। "मैं नीचे जा रहा हूँ। अब्बा

सोच रहे होंगे कि हम कहाँ आ गए हैं। और तुम्हारे पिता भी। और वैसे भी, हमें यह पता लगाना चाहिए कि तुम्हारे भाई की शादी हुई है या नहीं —और क्या सच में तुम्हारी कोई खूबसूरत भाभी है जो तुम्हें डांटेगी और तुम्हारी मनमानी पर लगाम लगाएगी।”

ठीक है, ठीक है, हम सब नीचे चलते हैं,’ मान ने सौहार्दपूर्वक कहा। ‘हो सकता है कुछ मधुमक्खियाँ हम पर भी चिपक जाएँ। और अगर दिल में डंक लग जाए तो यहाँ डॉक्टर साहब हमारा इलाज कर सकते हैं। है ना, इम्तियाज़? आपको बस घाव पर गुलाब की पंखुड़ी लगानी होगी, है ना?’

इम्तियाज ने गंभीरता से कहा, 'जब तक कोई विपरीत संकेत न हों, तब तक ठीक है।'

'कोई विपरीत संकेत नहीं हैं,' मान ने हंसते हुए कहा और सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा।

इम्तियाज ने कहा, 'आप हंस सकते हैं, लेकिन कुछ लोगों को गुलाब की पंखुड़ियों से भी एलर्जी होती है। वैसे, आपके टोपी पर एक पंखुड़ी चिपकी हुई है।'

‘क्या सच में?’ मान ने पूछा। ‘ये चीजें कहीं से भी उड़कर आ जाती हैं।’

‘हाँ, वे ऐसा करते हैं,’ उसके ठीक पीछे चल रहे फ़िरोज़ ने कहा। उसने उसे धीरे से हटा दिया।

1.8

नवाब साहब अपने बेटों के बिना कुछ उदास से लग रहे थे, इसलिए महेश कपूर की बेटी वीना ने उन्हें अपने पारिवारिक दायरे में शामिल कर लिया। उसने उनसे उनकी सबसे बड़ी बेटी ज़ैनब के बारे में पूछा, जो बचपन से उनकी दोस्त थी, लेकिन शादी के बाद पर्दा प्रथा में लीन हो गई थी। बूढ़े ने ज़ैनब के बारे में तो बड़ी सावधानी से बात की, लेकिन उसके दोनों बच्चों के बारे में खुलकर खुशी से बताया। उनके पोते-पोती ही दुनिया में

एकमात्र ऐसे दो प्राणी थे जिन्हें पुस्तकालय में पढ़ाई करते समय उन्हें टोकने का अधिकार था। लेकिन अब प्रेम निवास से कुछ ही मिनटों की दूरी पर स्थित पीले रंग का विशाल पैतृक घर बैतर हाउस कुछ जर्जर हो चुका था, और पुस्तकालय की हालत भी खराब हो गई थी। नवाब साहब ने कहा, 'सिल्वरफ़िश, आप जानते ही हैं।' 'और मुझे कैटलॉगिंग में मदद चाहिए। यह एक बहुत बड़ा काम है, और कुछ मायनों में उत्साहजनक नहीं है। ग़ालिब के कुछ शुरुआती संस्करण अब नहीं मिल रहे हैं; और हमारे अपने कवि मस्त की कुछ बहुमूल्य पांडुलिपियाँ भी। मेरे भाई ने कभी यह सूची नहीं बनाई कि वह पाकिस्तान अपने साथ क्या ले गया था...' .'

पाकिस्तान शब्द सुनते ही वीना की सास, बूढ़ी और कमजोर श्रीमती टंडन सहम गईं। तीन साल पहले, उनके पूरे परिवार को लाहौर के खून-खराबे, आग और भयानक आतंक से भागना पड़ा था। वे धनी और संपत्ति संपन्न थे, लेकिन उनकी लगभग सारी संपत्ति नष्ट हो गई थी और वे सौभाग्य से अपनी जान बचा पाए थे। उनके बेटे केदारनाथ, वीना के पति, के हाथों पर आज भी दंगाइयों द्वारा उनके शरणार्थी काफिले पर किए गए हमले के निशान थे। उनके कई दोस्तों की बेरहमी से हत्या कर दी गई थी।

युवा और बूढ़ी श्रीमती टंडन ने कड़वे स्वर में सोचा, वे बहुत सहनशील हैं: उनके पोते भास्कर उस समय केवल छह वर्ष के थे; लेकिन वीना और केदारनाथ ने भी उन घटनाओं को अपने जीवन में कड़वाहट नहीं आने दी। वे वीना के पैतृक शहर लौट आए थे, और केदारनाथ ने जूते के व्यापार में, जो कि एक घिनौना और सड़ा हुआ काम था, अपना छोटा-सा व्यवसाय स्थापित कर लिया था। बूढ़ी श्रीमती टंडन के लिए, एक सभ्य समृद्धि से पतन इससे अधिक दर्दनाक नहीं हो सकता था। नवाब साहब से बात करना तो उन्हें बर्दाश्त था, भले ही वे मुसलमान थे, लेकिन जब उन्होंने

पाकिस्तान से आने-जाने की बात की, तो उनकी कल्पना शक्ति से परे हो गया। वे बीमार पड़ गईं। ब्रह्मपुर के बगीचे की सुखद बातचीत लाहौर की सड़कों पर खून से लथपथ भीड़ की चीखों में बदल गई, रोशनी आग में बदल गई। प्रतिदिन, कभी-कभी हर घंटे, उनकी कल्पना में वह उस शहर और घर में लौट आती थीं जिसे वे अब भी अपना शहर और घर मानती थीं। यह अचानक इतना भयानक होने से पहले सुंदर था; हमेशा के लिए खो जाने से कुछ ही समय पहले यह पूरी तरह सुरक्षित प्रतीत होता था।

नवाब साहब को तो कुछ पता ही नहीं चला, लेकिन वीना को पता चल गया और उसने तुरंत बात बदल दी, भले ही इससे वह असभ्य लग रही हो। उसने अपने पति से पूछा, 'भास्कर कहाँ है?'

‘मुझे नहीं पता। मुझे लगता है मैंने उसे खाने के पास देखा था, वह छोटा मेंढक,’ केदारनाथ ने कहा।

‘काश आप उसे उस नाम से न पुकारें,’ वीना ने कहा। ‘वह आपका बेटा है। यह शुभ नहीं है...’

‘यह नाम मैंने उसे नहीं दिया है, यह मान ने दिया है,’ केदारनाथ ने मुस्कुराते हुए कहा। उसे थोड़ा-बहुत अपनी पत्नी के दबाव में रहना अच्छा लगता था। ‘लेकिन आप जो चाहें, मैं उसे उसी नाम से बुलाऊंगा।’

वीना अपनी सास को वहाँ से ले गई। बुढ़िया का ध्यान भटकाने के लिए वह खुद भी अपने बेटे को ढूंढने में जुट गई। आखिरकार उन्हें भास्कर मिल गया। वह कुछ खा नहीं रहा था, बस खाने की मेजों को ढकने वाले बड़े रंग-बिरंगे कपड़े के चंदवा के नीचे खड़ा था और ऊपर की ओर उस चंदवा पर बनी जटिल ज्यामितीय आकृतियों—लाल समचतुर्भुज, हरे समलंब चतुर्भुज, पीले वर्ग और नीले त्रिभुज—को प्रसन्नता और विस्मय से निहार रहा था।

भीड़ कम हो गई थी; कुछ मेहमान पान चबाते हुए द्वार से विदा हो रहे थे; प्राण और सविता जिस बेंच पर बैठे थे, उसके किनारे उपहारों का ढेर लग गया था। अंत में केवल वे दोनों और परिवार के कुछ सदस्य ही बचे थे—और जम्हाई लेते नौकर जो श्रीमती रूपा मेहरा की निगरानी में कीमती फर्नीचर को रात के लिए समेट रहे थे या उपहारों को संदूक में पैक कर रहे थे।

दूल्हा और दुल्हन अपने विचारों में खोए हुए थे। वे अब एक-दूसरे की ओर देखने से बच रहे थे। वे प्रेम निवास के एक सावधानीपूर्वक तैयार किए गए कमरे में रात बिताएंगे और कल शिमला में एक सप्ताह के हनीमून के लिए रवाना होंगे।

लता ने शादी के कमरे की कल्पना करने की कोशिश की। शायद वह कमरा कंदगुला की खुशबू से महक रहा होगा; कम से कम मालती का तो यही मानना था। लता ने सोचा, मैं हमेशा कंदगुला को प्राण से जोड़कर देखूंगी। अपनी कल्पना को आगे बढ़ाना उसे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। आज रात सविता प्राण के साथ सोएगी, यह सोचना भी उसके लिए असहनीय था। उसे इसमें ज़रा भी रोमांस नज़र नहीं आया। शायद वे दोनों बहुत थके हुए होंगे, उसने आशावादी होकर सोचा।

'लता, तुम क्या सोच रही हो?' उसकी माँ ने पूछा। 'ओह, कुछ नहीं, माँ,' लता ने सहज भाव से कहा।

'तुमने नाक-भौं सिकोड़ी। मैंने देखा।'

लता के चेहरे पर शर्म आ गई।

उन्होंने दृढ़ता से कहा, 'मुझे नहीं लगता कि मैं कभी शादी करना चाहूंगी।'

श्रीमती रूपा मेहरा शादी की तैयारियों से इतनी थकी हुई थीं, भावनाओं से इतनी व्याकुल थीं, संस्कृत के शब्दों से इतनी भावुक हो गई थीं, बधाइयों से इतनी बोझिल थीं, इतनी परेशान थीं कि दस सेकंड तक लता को घूरने

के अलावा कुछ नहीं कर पा रही थीं। आखिर उस लड़की को क्या हो गया था? जो उसकी माँ, उसकी नानी और उसकी नानी की नानी के लिए अच्छा था, वह उसके लिए भी अच्छा होना चाहिए था। हालाँकि, लता हमेशा से ही जिद्दी थी, उसकी अपनी एक अलग ही इच्छा थी, शांत लेकिन अप्रत्याशित—जैसे सेंट सोफिया अस्पताल में वह समय जब वह नन बनना चाहती थी! लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा की भी अपनी इच्छा थी, और वह अपनी बात मनवाने के लिए दृढ़ थीं, भले ही उन्हें लता के लचीलेपन के बारे में कोई भ्रम न हो।

फिर भी, लता का नाम उस सबसे लचीली चीज़, एक लता के नाम पर रखा गया था, जिसे जकड़ने के लिए प्रशिक्षित किया गया था: पहले अपने परिवार से, फिर अपने पति से। वास्तव में, जब वह बच्ची थी, लता की उंगलियों की पकड़ इतनी मजबूत और कुंडलित थी कि वह आज भी अपनी माँ को मीठी जीवंतता के साथ याद आती है। अचानक श्रीमती रूपा मेहरा ने प्रेरणादायक टिप्पणी की:

'लता, तुम एक लता हो, तुम्हें अपने पति से चिपके रहना चाहिए!'

यह सफल नहीं रहा।

'चिपकना?' लता ने कहा। 'चिपकना?' यह शब्द उसने इतनी धीमी आवाज़ में बोला।

उसकी माँ को इतना गुस्सा आया कि वह फूट-फूटकर रोने लगी। एक कृतघ्न बेटी का होना कितना भयानक होता है। और एक बच्चा कितना अप्रत्याशित हो सकता है।

अब जब रूपा मेहरा की आँखों से आँसू बह रहे थे, तो उन्होंने बड़ी सहजता से एक बेटी से दूसरी बेटी को आँसू बहाने दिए। उन्होंने सविता को अपने सीने से लगा लिया और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं। "तुम्हें मुझे पत्र लिखना होगा, मेरी प्यारी सविता," उन्होंने कहा। "तुम्हें शिमला से हर दिन पत्र

लिखना होगा। प्राण, तुम अब मेरे अपने बेटे जैसे हो, तुम्हें ज़िम्मेदारी निभानी होगी और इस बात का ध्यान रखना होगा। जल्द ही मैं कलकत्ता में बिल्कुल अकेली रह जाऊँगी—बिल्कुल अकेली।"

यह बात बिल्कुल असत्य थी। अरुण, वरुण, मीनाक्षी और अपर्णा सभी सनी पार्क स्थित अरुण के छोटे से फ्लैट में उसके साथ ठसाठस भरे माहौल में रहते। लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा उन लोगों में से थीं जो स्पष्ट रूप से नहीं, बल्कि पूर्ण दृढ़ विश्वास के साथ वस्तुनिष्ठ सत्य पर व्यक्तिपरक सत्य की श्रेष्ठता को मानती थीं।

1.10

तांगा सड़क पर सरपट दौड़ता हुआ जा रहा था, और तांगा वाला गा रहा था:

'दिल के टुकड़े-टुकड़े हो गए—एक यहाँ गिरा, एक वहाँ गिरा. . . .'

वरुण ने पहले गुनगुनाना शुरू किया, फिर जोर से गाने लगा, और फिर अचानक रुक गया।

'अरे, रुको मत,' मालती ने लता को धीरे से धक्का देते हुए कहा। 'तुम्हारी आवाज बहुत अच्छी है। बुलबुल जैसी।'

'एक चीनी मिट्टी के बर्तनों की दुकान में,' उसने लता से फुसफुसाते हुए कहा।

'हेह, हेह, हेह।' वरुण की हंसी घबराहट भरी थी। यह महसूस करते हुए कि उसकी हंसी कमजोर लग रही है, उसने उसे थोड़ा शरारती बनाने की कोशिश की। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। वह बहुत दुखी महसूस कर रहा था। और मालती, अपनी हरी आंखों और व्यंग्य से—क्योंकि यह व्यंग्य ही होना था—उसकी हालत और खराब कर रही थी।

तांगा काफी भरा हुआ था: वरुण युवा भास्कर के साथ आगे तांगावाले के बगल में बैठा था; और उनके पीछे-पीछे लता और मालती बैठी थीं—दोनों

सलवार-कमीज़ पहने हुए—और अपर्णा अपने आइसक्रीम से सने स्वेटर और फ्रॉक में बैठी थी। यह एक धूप भरी सर्दी की सुबह थी।

सफेद पगड़ी पहने बूढ़े तांगेवाले को कस्बे के इस हिस्से में चौड़ी, अपेक्षाकृत कम भीड़ वाली सड़कों पर तेज़ी से तांगा चलाना बहुत पसंद था—पुराने ब्रह्मपुर की भीड़भाड़ और अराजकता के बिल्कुल विपरीत। वह अपने घोड़े से बातें करने लगा और उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने लगा।

अब मालती खुद उस मशहूर फिल्मी गाने के बोल गाने लगी। उसका इरादा वरुण को हतोत्साहित करने का नहीं था। साफ आसमान के नीचे टूटे दिलों के बारे में सोचना उसे अच्छा लग रहा था।

वरुण ने इसमें हिस्सा नहीं लिया। लेकिन थोड़ी देर बाद उसने अपनी जान जोखिम में डालकर पीछे मुड़कर कहा:

'आपकी आवाज बहुत ही शानदार है।'

यह सच था। मालती को संगीत से बेहद प्यार था और उन्होंने उत्तर भारत के सर्वश्रेष्ठ गायकों में से एक उस्ताद मजीद खान से शास्त्रीय गायन की शिक्षा ली थी। छात्र छात्रावास में साथ रहने के दौरान मालती ने लता को भी भारतीय शास्त्रीय संगीत में रुचि जगा दी थी। परिणामस्वरूप, लता अक्सर अपने पसंदीदा रागों में से कोई न कोई धुन गुनगुनाती रहती थीं।

मालती ने वरुण की तारीफ को अस्वीकार नहीं किया।

'क्या आपको ऐसा लगता है?' उसने मुड़कर उसकी आँखों में गहराई से देखते हुए कहा। 'ऐसा कहना बहुत अच्छा है।'

वरुण शर्म से लाल हो गया और कुछ मिनटों तक कुछ बोल नहीं पाया। लेकिन जैसे ही वे ब्रह्मपुर रेसकोर्स से गुज़रे, उसने तांगे वाले का हाथ कसकर पकड़ लिया और रो पड़ा:

'रुकना!'

‘क्या बात है?’ लता ने पूछा।
‘अरे—कुछ नहीं—कुछ नहीं—अगर हमें जल्दी है तो चलिए चलते हैं। हाँ, चलिए चलते हैं।’
‘बिल्कुल नहीं, वरुण भाई,’ उसने कहा। ‘हम तो बस चिड़ियाघर जा रहे हैं। अगर आप चाहें तो हम रुक सकते हैं।’
उनके नीचे उतरने के बाद, वरुण, लगभग अनियंत्रित रूप से उत्साहित होकर, सफेद बाड़ की ओर चला गया और उसके पार देखने लगा।
‘लखनऊ के अलावा भारत में यह एकमात्र ऐसा रेसकोर्स है जो वामावर्त दिशा में घूमता है,’ उसने विस्मय से लगभग खुद से कहा। ‘लोग कहते हैं कि यह डर्बी पर आधारित है,’ उसने अपने बगल में खड़े युवा भास्कर से कहा।
भास्कर ने पूछा, 'लेकिन फर्क क्या है? दूरी तो उतनी ही रहती है, चाहे आप घड़ी की दिशा में दौड़ें या घड़ी की विपरीत दिशा में?'
वरुण ने भास्कर के सवाल पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह धीरे-धीरे, सपनों में खोए हुए, अकेले ही बाड़ के किनारे-किनारे घड़ी की विपरीत दिशा में चलने लगा। मानो वह ज़मीन को अपने पंजों से खरोंच रहा हो।
लता ने उससे पूछा, ‘वरुण भाई?’
‘अह—हाँ? हाँ?’
‘कल शाम के बारे में।’
‘कल शाम?’ वरुण खुद को घसीटते हुए दो पैरों वाली दुनिया में वापस ले आया। ‘क्या हुआ था?’
‘हमारी बहन की शादी हो गई।’
‘आह। ओह। हाँ, हाँ, मुझे पता है। सविता,’ उन्होंने विशिष्टता का संकेत देकर सतर्कता दर्शाने की कोशिश करते हुए कहा।
लता ने कहा, ‘अच्छा, अरुण भाई से दबने मत देना। बिलकुल मत देना।’

उसकी मुस्कान गायब हो गई और उसने वरुण भाई की ओर देखा, जिसके चेहरे पर उदासी छा गई थी। 'मुझे सच में बहुत बुरा लगता है, वरुण भाई, मुझे उसे आप पर धौंस जमाते देखना बिल्कुल पसंद नहीं है। मेरा मतलब यह नहीं है कि आप उससे बदतमीजी करें या उसे जवाब दें, बस इतना है कि आप उसे अपने ऊपर इतना गहरा आघात न लगने दें जितना—हाँ, मुझे दिख रहा है कि वह आपको पहुंचा रहा है।'

'नहीं, नहीं—' उसने अनिश्चितता से कहा।

'सिर्फ इसलिए कि वह आपसे कुछ साल बड़ा है, इसका मतलब यह नहीं है कि वह आपका पिता, शिक्षक और सार्जेंट मेजर सब कुछ एक साथ है।'

वरुण ने नाखुशी से सिर हिलाया। वह भली-भांति जानता था कि जब तक वह अपने बड़े भाई के घर में रहता है, तब तक वह अपने बड़े भाई की इच्छा के अधीन है।

'खैर, मुझे लगता है कि तुम्हें और अधिक आत्मविश्वासी होना चाहिए,' लता ने आगे कहा। 'अरुण भाई अपने आस-पास के सभी लोगों को स्टीमरोलर की तरह कुचलने की कोशिश करते हैं, और यह हम पर निर्भर है कि हम अपने अहंकार को उनके रास्ते से हटा दें। मुझे पहले से ही बहुत मुश्किल हो रही है, और मैं तो कोलकाता में भी नहीं हूँ। मैंने सोचा कि अभी कह दूँ, क्योंकि घर पर मुझे तुमसे अकेले बात करने का मौका मुश्किल से ही मिलेगा। और कल तो तुम चली जाओगी।'

वरुण को यह बात अच्छी तरह पता थी, और लता अपने अनुभव से बोल रही थी। अरुण गुस्से में आकर क्या बोलता है, उसे परवाह ही नहीं होती थी। जब लता ने नन बनने का मन बना लिया था—एक बचकाना, किशोरावस्था का विचार, पर उसका अपना—तो अरुण, उसे समझाने की अपनी तमाम कोशिशों में नाकाम रहने से तंग आकर बोला था: 'ठीक है,

जाओ नन बन जाओ, अपनी जिंदगी बर्बाद कर लो, वैसे भी तुमसे कोई शादी नहीं करता, तुम बिल्कुल बाइबिल जैसी दिखती हो—आगे से भी चपटी और पीछे से भी चपटी।' लता ने भगवान का शुक्र अदा किया कि वह कलकत्ता विश्वविद्यालय में नहीं पढ़ रही थी; कम से कम साल के ज्यादातर समय तो वह अरुण के तीखे हमलों से बची रहती थी। हालांकि अब ये शब्द सच नहीं थे, फिर भी उनकी याद चुभती थी।

वरुण ने कहा, 'काश तुम कलकत्ता में होते।'

'तुम्हारे कुछ दोस्त तो जरूर होंगे—' लता ने कहा।

वरुण ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, "शाम को अक्सर अरुण भाई और मीनाक्षी भाभी बाहर होते हैं और मुझे अपर्णा का ध्यान रखना पड़ता है। मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है।"

'वरुण, ये ठीक नहीं चलेगा,' लता ने कहा। उन्होंने अपना हाथ उसके झुके हुए कंधे पर मजबूती से रखते हुए कहा: 'मैं चाहती हूँ कि तुम अपने दोस्तों के साथ बाहर जाओ—उन लोगों के साथ जिन्हें तुम सच में पसंद करते हो और जो तुम्हें पसंद करते हैं—हफ्ते में कम से कम दो शाम। बहाना बनाओ कि तुम्हें किसी कोचिंग सेशन में जाना है।' लता को छल पसंद नहीं था, और उन्हें पता भी नहीं था कि वरुण इसमें कितना माहिर होगा, लेकिन वह नहीं चाहती थीं कि हालात ऐसे ही चलते रहें। उन्हें वरुण की चिंता थी। शादी में वह कुछ महीने पहले की तुलना में और भी ज्यादा घबराया हुआ लग रहा था।

अचानक बहुत करीब से एक ट्रेन ने हॉर्न बजाया, और तांगा घोड़ा डर के मारे सहम गया।

'कितना अद्भुत है,' वरुण ने मन ही मन कहा, बाकी सभी विचारों का उसके मन से पूरी तरह से मिट जाना।

जब वे वापस तांगे में पहुंचे तो उसने घोड़े को थपथपाया।

‘स्टेशन यहाँ से कितनी दूर है?’ उसने तांगा बेचने वाले से पूछा।
‘ओह, वो तो बस वहीं है,’ तांगा बेचने वाले ने कहा, और रेसकोर्स के सुव्यवस्थित बगीचों के पार बसे हुए इलाके की ओर अस्पष्ट रूप से इशारा किया। ‘चिड़ियाघर से ज्यादा दूर नहीं।’
वरुण ने मन ही मन सोचा, "पता नहीं इससे स्थानीय घोड़ों को फायदा होगा या नहीं। क्या बाकी घोड़े भागने लगेंगे? इससे जीत-हार की संभावनाओं में क्या फर्क पड़ेगा?"

1.11

चिड़ियाघर पहुँचकर भास्कर और अपर्णा ने मिलकर बच्चों की रेलगाड़ी में बैठने की ज़िद की, जो भास्कर के अनुसार, घड़ी की विपरीत दिशा में घूमती थी। लता और मालती तांगे की सवारी के बाद टहलना चाहती थीं, लेकिन उनकी बात नहीं मानी गई। वे पाँचों एक छोटे से, पोस्टबॉक्स जैसे लाल डिब्बे में एक-दूसरे से सटकर बैठ गए, जबकि छोटा हरा भाप का इंजन अपने एक फुट चौड़े ट्रैक पर धीरे-धीरे चल रहा था। वरुण मालती के सामने बैठा था, उनके घुटने लगभग छू रहे थे। मालती को इसमें मज़ा आ रहा था, लेकिन वरुण इतना असहज था कि वह बेचैनी से जिराफ़ों को इधर-उधर देख रहा था, और स्कूली बच्चों की भीड़ को भी ध्यान से घूर रहा था, जिनमें से कुछ गुलाबी रंग की कैंडी से भरी बड़ी-बड़ी बाल्टियाँ चाट रहे थे। अपर्णा की आँखों में उत्सुकता की चमक आ गई।
भास्कर नौ साल का था और अपर्णा उसकी उम्र की एक तिहाई, इसलिए दोनों के बीच ज्यादा बातचीत नहीं होती थी। वे अपने सबसे प्रिय बड़ों से ही जुड़े रहते थे। अपर्णा, जिसे उसके संभ्रांत माता-पिता ने कभी लाड़-प्यार तो कभी चिढ़ाकर पाला था, लता के स्नेह में आश्वस्त और आश्वस्त महसूस करती थी। लता की संगति में वह कम नखरे दिखाती थी। भास्कर और वरुण की खूब बनती थी, खासकर जब भास्कर उसे ध्यान केंद्रित

करने में सफल हो जाता था। वे गणित पर चर्चा करते थे, विशेष रूप से घुड़दौड़ की संभावनाओं पर।

उन्होंने हाथी, ऊंट, एमू, चमगादड़, भूरा पेलिकन, लाल लोमड़ी और सभी बड़ी बिल्लियाँ देखीं। उन्होंने एक छोटी बिल्ली, काले धब्बे वाली तेंदुआ-बिल्ली को भी देखा, जो अपने पिंजरे के फर्श पर उन्मादपूर्वक इधर-उधर घूम रही थी।

लेकिन सबसे बेहतरीन जगह सरीसृपों का बाड़ा था। दोनों बच्चे सांपों का गड्ढा देखने के लिए बेताब थे, जो काफी सुस्त अजगरों से भरा हुआ था, और कांच के पिंजरों में रखे घातक सांप, करैत और कोबरा भी। और हां, ठंडे, खुरदुरे मगरमच्छ भी थे, जिनकी पीठ पर कुछ स्कूली बच्चे और घूमने आए ग्रामीण सिक्के फेंक रहे थे—जबकि कुछ लोग, नीचे धीरे-धीरे खुलते सफेद, दांतेदार मुंह को देखकर, रेलिंग पर झुककर इशारा कर रहे थे, चीख रहे थे और कांप रहे थे। सौभाग्य से वरुण को डरावनी चीजों में दिलचस्पी थी, और वह बच्चों को अंदर ले गया। लता और मालती ने अंदर जाने से इनकार कर दिया।

'मेडिकल की छात्रा होने के नाते मैंने काफी भयावह चीजें देखी हैं,' मलाती ने कहा।

कुछ देर बाद लता ने कहा, 'काश तुम वरुण को चिढ़ाते न।'

‘अरे, मैं उसे चिढ़ा नहीं रही थी,’ मालती ने कहा। ‘बस ध्यान से उसकी बातें सुन रही थी। यह उसके लिए अच्छा है।’ वह हंस पड़ी।

‘हम्म—तुम उसे घबरा देते हो।’

आप अपने बड़े भाई के प्रति बहुत सुरक्षात्मक हैं।

‘वो नहीं है—ओह, मैं समझ गई—हाँ, मेरा छोटा बड़ा भाई। खैर, क्योंकि मेरा कोई छोटा भाई नहीं है, इसलिए मैंने उसे ये भूमिका दे दी है। लेकिन सच में, मालती, मुझे उसकी चिंता है। और मेरी माँ को भी। हमें नहीं पता

कि कुछ महीनों में जब वो ग्रेजुएट हो जाएगा तो क्या करेगा। उसने किसी भी चीज़ में कोई खास रुचि नहीं दिखाई है। और अरुण उसे बुरी तरह तंग करता है। काश कोई अच्छी लड़की उसकी ज़िम्मेदारी ले ले।'

'और मैं वो नहीं हूँ? मुझे कहना पड़ेगा, उसमें एक खास तरह का भद्दा आकर्षण है। हा हा!' मालती ने वरुण की हंसी की नकल की।

'मजाक मत करो, मालती। मुझे वरुण के बारे में तो नहीं पता, लेकिन मेरी माँ को तो बहुत गुस्सा आएगा,' लता ने कहा।

यह बात बिलकुल सच थी। भौगोलिक दृष्टि से भले ही यह असंभव था, लेकिन इसके बारे में सोचकर ही श्रीमती रूपा मेहरा को बुरे सपने आने लगते। मालती त्रिवेदी, प्रिंस ऑफ वेल्स मेडिकल कॉलेज में लगभग पाँच सौ लड़कों के बीच मौजूद कुछ गिनी-चुनी लड़कियों में से एक होने के साथ-साथ, अपने बेबाक विचारों, समाजवादी पार्टी की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी और प्रेम प्रसंगों के लिए कुख्यात थीं—हालाँकि उनमें से किसी के साथ उनका प्रेम प्रसंग नहीं था, बल्कि वे उन पाँच सौ लड़कों को ही तुच्छ समझती थीं।

'तुम्हारी माँ मुझे पसंद करती है, मैं बता सकती हूँ,' मलाती ने कहा।

'यह बात मायने नहीं रखती,' लता ने कहा। 'और सच कहूँ तो, मुझे इस बात पर बहुत हैरानी है कि वह ऐसा करती है। वह आमतौर पर दूसरों के प्रभाव से चीजों का आकलन करती है। मुझे तो लगता था कि तुम मुझ पर बुरा प्रभाव डाल रही हो।'

लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा के नज़रिए से भी यह बात पूरी तरह सच नहीं थी। मालती ने लता को सेंट सोफिया अस्पताल से भीगी-भीगी हुई अवस्था में निकलने के समय की तुलना में कहीं अधिक आत्मविश्वास दिया था। और मालती लता को भारतीय शास्त्रीय संगीत का आनंद दिलाने में सफल रही थी, जिसे (ग़ज़लों के विपरीत) श्रीमती रूपा मेहरा

पसंद करती थीं। उनके एक ही कमरे में रहने का कारण यह था कि सरकारी मेडिकल कॉलेज (जिसे आमतौर पर उसके शाही नाम से जाना जाता है) में महिलाओं के छोटे समूह के लिए आवास की कोई व्यवस्था नहीं थी और उसने विश्वविद्यालय को उन्हें अपने छात्रावासों में ठहराने के लिए मना लिया था।

मालती आकर्षक थीं, शालीन लेकिन सुंदर वस्त्र पहनती थीं और श्रीमती रूपा मेहरा से धार्मिक व्रतों से लेकर खाना पकाने और वंश-विज्ञान तक, हर विषय पर बात कर सकती थीं, जिन विषयों में उनके पश्चिमी सभ्यता से ग्रस्त बच्चों की ज़रा भी रुचि नहीं थी। उनका रंग भी गोरा था, जो श्रीमती रूपा मेहरा के लिए एक बहुत बड़ा सकारात्मक पहलू था। श्रीमती रूपा मेहरा को पूरा विश्वास था कि मालती त्रिवेदी, अपनी बेहद आकर्षक हरी आँखों के साथ, कश्मीरी या सिंधी वंश की होंगी। हालाँकि, अभी तक उन्हें ऐसा कोई वंश-प्रधान अंश नहीं मिला था।

हालांकि वे इसके बारे में अक्सर बात नहीं करती थीं, लेकिन पिता को खोने का दुख भी लता और मालती को एक साथ बांधे रखता था।

मालती ने आठ साल की उम्र में अपने प्रिय पिता को खो दिया था, जो आगरा के एक सर्जन थे। वे एक सफल और आकर्षक व्यक्ति थे, जिनका व्यापक परिचय और विविध कार्य अनुभव था: वे कुछ समय के लिए सेना में रहे और अफगानिस्तान भी गए; उन्होंने लखनऊ के मेडिकल कॉलेज में पढ़ाया; और निजी प्रैक्टिस भी की। उनकी मृत्यु के समय, हालांकि वे पैसे बचाने में बहुत अच्छे नहीं थे, उनके पास काफी संपत्ति थी—मुख्य रूप से मकानों के रूप में। लगभग हर पांच साल में वे अपना घर छोड़कर उत्तर प्रदेश के किसी दूसरे शहर में चले जाते थे—मेरठ, बरेली, लखनऊ, आगरा। वे जहाँ भी रहते, नया घर बनवाते, लेकिन पुराने घर नहीं बेचते। उनकी मृत्यु के बाद, मालती की माँ गहरे अवसाद में चली गईं, जो मानो

कभी दूर नहीं हो सकता था, और दो साल तक उसी अवस्था में रहीं।
फिर उसने खुद को संभाला। उसे एक बड़े परिवार की देखभाल करनी थी, और उसके लिए व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाना अत्यंत आवश्यक था। वह एक सरल, आदर्शवादी और ईमानदार महिला थी, और वह सुविधा, स्वीकृति या आर्थिक लाभ से अधिक सही बातों को महत्व देती थी। इसी सोच के साथ उसने अपने परिवार का पालन-पोषण करने का निश्चय किया।

और क्या गजब का परिवार था!—लगभग सभी बेटियाँ। सबसे बड़ी बेटी पक्की टॉमबॉय थी, सोलह साल की उम्र में उसके पिता का देहांत हो गया था और उसकी शादी एक ग्रामीण जमींदार के बेटे से हो चुकी थी; वह आगरा से लगभग बीस मील दूर एक विशाल घर में बीस नौकरों, लीची के बागों और विशाल खेतों के बीच रहती थी, लेकिन शादी के बाद भी वह महीनों तक अपनी बहनों के साथ आगरा आती रहती थी। इस बेटी के बाद दो बेटे हुए, लेकिन दोनों की बचपन में ही मृत्यु हो गई, एक की उम्र पाँच साल और दूसरे की तीन साल थी। लड़कों के बाद मालती का जन्म हुआ, जो अपनी बहन से आठ साल छोटी थी। वह भी एक तरह से लड़के की तरह पली-बढ़ी—हालाँकि अपनी बहन की तरह टॉमबॉय बिल्कुल नहीं—बचपन से जुड़े कई कारणों से: उसकी अनोखी आँखों की सीधी नज़र, उसका लड़कों जैसा रूप, लड़कों के कपड़े आसानी से उपलब्ध होना, और अपने दो बेटों की मृत्यु पर माता-पिता का दुख। मालती के बाद एक के बाद एक तीन बेटियाँ हुईं; फिर एक और बेटा; और फिर उसके पिता का देहांत हो गया।

मलाती का पालन-पोषण लगभग पूरी तरह से महिलाओं के बीच ही हुआ था; यहाँ तक कि उसका छोटा भाई भी उसके लिए छोटी बहन जैसा था; वह इतना छोटा था कि उसके साथ कोई अलग व्यवहार नहीं किया जा

सकता था। (कुछ समय बाद, शायद उलझन में पड़कर, वह भी अपने भाइयों की राह पर चल पड़ा।) लड़कियाँ ऐसे माहौल में पली-बढ़ीं जहाँ पुरुषों को शोषक और खतरनाक समझा जाने लगा; मलाती के संपर्क में आए कई पुरुष ठीक वैसे ही थे। उसके पिता की यादों को कोई छू नहीं सकता था। मलाती ने उनके जैसा डॉक्टर बनने का पक्का इरादा कर लिया था और उनके औजारों को कभी जंग नहीं लगने देती थी। वह एक दिन उनका इस्तेमाल करना चाहती थी।

ये लोग कौन थे? इनमें से एक उसका चचेरा भाई था, जिसने उसके पिता द्वारा जमा की गई और इस्तेमाल की गई कई चीज़ों में से सामान निकाला, जो उनकी मृत्यु के बाद भंडारण में पड़ी थीं। मालती की माँ ने अपने जीवन से उन चीज़ों को हटा दिया था जिन्हें वह अनावश्यक समझती थी। अब दो रसोईघरों की कोई आवश्यकता नहीं थी, एक यूरोपीय और एक भारतीय। पश्चिमी भोजन के लिए चीनी मिट्टी के बर्तन और बढ़िया छुरी-कांटे, बहुत सारे फर्नीचर के साथ, एक गैरेज में रख दिए गए थे। चचेरा भाई आया, शोकग्रस्त विधवा से चाबियाँ लीं, उससे कहा कि वह सब कुछ संभाल लेगा, और जो कुछ भी भंडारण में था, उसे निकाल लिया। मालती की माँ को उस सामान से एक रुपया भी नहीं मिला। उसने दार्शनिक लहजे में कहा, 'चलो, कम से कम मेरे पाप तो कम हो गए।'

एक अन्य व्यक्ति नौकर था जो मकानों की बिक्री में मध्यस्थ की भूमिका निभाता था। वह उन शहरों में संपत्ति एजेंटों या अन्य संभावित खरीदारों से संपर्क करता था जहां मकान स्थित थे और उनके साथ सौदे करता था। उसकी छवि कुछ हद तक धोखेबाज के रूप में थी।

एक और व्यक्ति उनके पिता का छोटा भाई था, जो अभी भी लखनऊ वाले घर में रहता था, जहाँ उसकी पत्नी नीचे और एक नर्तकी ऊपर रहती

थी। अगर वह ऐसा कर पाता, तो वह खुशी-खुशी उस घर की बिक्री में उन्हें धोखा दे देता। उसे नर्तकी पर खर्च करने के लिए पैसों की ज़रूरत थी।

फिर एक युवा—लगभग छब्बीस साल का—लेकिन कुछ हद तक घटिया किस्म का कॉलेज शिक्षक था, जो मलाती के पंद्रह साल की उम्र के आसपास से ही नीचे किराए के कमरे में रहता था। मलाती की माँ चाहती थी कि वह अंग्रेज़ी सीखे, और पड़ोसियों की बातों की परवाह किए बिना (और पड़ोसियों ने बहुत कुछ कहा, जिनमें से ज़्यादातर बातें अच्छी नहीं थीं) मलाती को उससे पढ़ने के लिए भेजने में उन्हें कोई हिचक नहीं थी—भले ही वह अविवाहित था। शायद इस मामले में पड़ोसी सही थे। वह बहुत जल्द मलाती के प्यार में पागल हो गया, और उसकी माँ से उससे शादी करने की अनुमति माँगी। जब मलाती की माँ ने उससे इस बारे में उसकी राय पूछी, तो वह हैरान और स्तब्ध रह गई, और उसने साफ इनकार कर दिया।

ब्रह्मपुर के मेडिकल कॉलेज में और उससे पहले आगरा में इंटरमीडिएट साइंस की पढ़ाई के दौरान मालती को बहुत कुछ सहना पड़ा था: ताने, गपशप, गले में बंधी हल्की चुनरी को खींचना और 'वह लड़का बनना चाहती है' जैसी टिप्पणियां। यह बात कतई सच नहीं थी। ये टिप्पणियां असहनीय थीं और तब जाकर कुछ कम हुईं जब एक लड़के के हद से ज्यादा उकसावे पर उसने उसके दोस्तों के सामने उसके चेहरे पर ज़ोरदार थप्पड़ मारा था।

पुरुष उस पर जल्दी ही मोहित हो जाते थे, लेकिन वह उन्हें अपने लायक नहीं समझती थी। ऐसा नहीं था कि वह पुरुषों से सचमुच नफरत करती थी; ज्यादातर समय तो ऐसा ही होता था। बात बस इतनी थी कि उसके मापदंड बहुत ऊंचे थे। कोई भी पुरुष उसके और उसकी बहनों के मन में

अपने पिता की छवि के करीब भी नहीं आता था, और ज्यादातर पुरुष उसे अपरिपक्व लगते थे। इसके अलावा, जिसने डॉक्टर बनने का सपना देखा था, उसके लिए शादी एक तरह का भटकाव था, और अगर उसकी शादी न भी हो तो उसे कोई खास चिंता नहीं थी।

उसने हर पल को भर दिया। बारह-तेरह साल की उम्र में, वह अपने भरे-पूरे परिवार में भी अकेली रहती थी। उसे पढ़ना बहुत पसंद था, और लोग जानते थे कि जब उसके हाथों में किताब होती थी तो उससे बात करना ठीक नहीं होता था। ऐसा होने पर, उसकी माँ उसे खाना बनाने और घर के कामों में मदद करने के लिए ज़ोर नहीं देती थी। 'मलाती का पढ़ना' ही लोगों के लिए उस कमरे से दूर रहने के लिए काफी था जहाँ वह लेटी या बैठी रहती थी, क्योंकि जो भी उसे परेशान करने की हिम्मत करता, वह उस पर गुस्से से झपट पड़ती थी। कभी-कभी वह सचमुच लोगों से छिप जाती थी, किसी ऐसे कोने में जहाँ उसे कोई ढूंढ न सके। लोगों को जल्द ही यह बात समझ आ जाती थी। जैसे-जैसे साल बीतते गए, उसने अपनी छोटी बहनों की शिक्षा का मार्गदर्शन किया। उसकी बड़ी बहन, जो लड़कों जैसी थी, बाकी मामलों में उन सभी का मार्गदर्शन करती थी—या यूँ कहें कि उन पर हुकुम चलाती थी।

मालती की माँ की खासियत यह थी कि वे अपनी बेटियों को आत्मनिर्भर बनाना चाहती थीं। वे चाहती थीं कि हिंदी माध्यम के स्कूल में पढ़ाई के अलावा, वे संगीत, नृत्य और भाषाएँ सीखें (और विशेष रूप से अंग्रेज़ी में अच्छी हों); और अगर इसके लिए उन्हें किसी के घर जाकर सीखना पड़े, तो वे लोगों की बातों की परवाह किए बिना जाती थीं। अगर छह महिलाओं के घर में किसी शिक्षक को बुलाना पड़ता, तो उसे बुलाया जाता था। जब पाँच लड़कियाँ बेझिझक एक साथ गाती थीं, तो युवक घर की पहली मंज़िल की ओर बड़े चाव से देखते थे। अगर लड़कियों को

कभी-कभार आइसक्रीम खाने का मन होता, तो उन्हें अकेले दुकान जाकर खाने की इजाज़त दी जाती थी। जब पड़ोसियों ने आगरा में छोटी लड़कियों को अकेले घूमने देने की इस बेशर्मी पर आपत्ति जताई, तो उन्हें कभी-कभी रात में दुकान जाने की इजाज़त दे दी जाती थी—जो शायद ज़्यादा बुरा था, हालाँकि कम ही पता चलता था। मालती की माँ ने लड़कियों को साफ-साफ कह दिया था कि वे उन्हें सर्वोत्तम शिक्षा देंगी, लेकिन उन्हें अपने पति खुद चुनने होंगे।

ब्रह्मपुर आने के कुछ ही समय बाद मालती को एक विवाहित संगीतकार से प्रेम हो गया, जो समाजवादी विचारधारा का समर्थक था। प्रेम संबंध समाप्त होने के बाद भी वह समाजवादी पार्टी से जुड़ी रहीं। फिर उनका एक और प्रेम प्रसंग चला, जो कुछ खास सफल नहीं रहा। फिलहाल वह अविवाहित थीं।

हालांकि मालती ज्यादातर समय ऊर्जा से भरपूर रहती थी, फिर भी वह कुछ महीनों में बीमार पड़ जाती थी, और उसकी मां आगरा से ब्रह्मपुर आकर उसका बुरी नजर का इलाज करती थी, जो पश्चिमी चिकित्सा के दायरे से बाहर था। मालती की आंखें इतनी खूबसूरत थीं कि बुरी नजर का उस पर विशेष प्रभाव पड़ता था।

एक मैला-कुचैला, भूरे रंग का, गुलाबी टांगों वाला सारस अपनी छोटी, तीव्र लाल आँखों से मालती और लता का अवलोकन कर रहा था; फिर उसकी प्रत्येक आँख की पुतली पर एक भूरी परत तिरछी होकर झपकती हुई दिखाई दी, और वह सावधानीपूर्वक वहाँ से चला गया।

‘चलो बच्चों को सरप्राइज देते हैं, उनके लिए कुछ मिठाई खरीदते हैं,’ लता ने कहा जब एक विक्रेता पास से गुजरा। ‘पता नहीं उन्हें क्या हो गया है। क्या बात है, मालती? तुम क्या सोच रही हो?’

'प्यार,' मलाती ने कहा।

‘ओह, प्यार, कितना उबाऊ विषय है,’ लता ने कहा। ‘मैं कभी प्यार में नहीं पड़ूँगी। मुझे पता है कि तुम कभी-कभार प्यार में पड़ जाती हो। लेकिन—’ वह चुप हो गई, शिमला जा चुके सविता और प्राण के बारे में एक बार फिर कुछ अरुचि के साथ सोचने लगी। शायद वे पहाड़ों से प्यार में डूबे हुए लौटेंगे। यह असहनीय था।

'अच्छा, तो फिर सेक्स।'

‘अरे नहीं, मलाती,’ लता ने जल्दी से इधर-उधर देखते हुए कहा। ‘मुझे उसमें भी कोई दिलचस्पी नहीं है,’ उसने शरमाते हुए कहा।

अच्छा, तो फिर शादी की बात करते हैं। मुझे आश्चर्य है कि तुम किससे शादी करोगे। मुझे पूरा यकीन है कि तुम्हारी माँ एक साल के अंदर तुम्हारी शादी करवा देगी। और एक आज्ञाकारी छोटे चूहे की तरह, तुम उसकी बात मानोगे।

'बिल्कुल सही,' लता ने कहा।

इससे मलाती को काफी गुस्सा आया और वह झुकी और "फूल न तोड़ें" लिखे बोर्ड के ठीक सामने उगे तीन नरगिस के फूल तोड़ लिए। एक फूल उसने अपने पास रख लिया और दो लता को दे दिए, जिसे इस तरह अवैध रूप से प्राप्त की गई चीज़ों को पकड़ने में बहुत असहजता महसूस हुई। फिर मलाती ने गुलाबी रंग की पांच चमकदार कैंडी खरीदीं, उनमें से चार लता को उसके दो नरगिस के फूलों के साथ रखने के लिए दे दीं और पांचवीं खुद खाने लगी।

लता हंसने लगी।

'फिर गरीब बच्चों के लिए एक छोटे से स्कूल में पढ़ाने की आपकी योजना का क्या होगा?' मलाती ने पूछा।

लता ने कहा, 'देखो, वे आ रहे हैं।'

अपर्णा एकदम सहमी हुई लग रही थी और वरुण का हाथ कसकर पकड़े

हुए थी। कुछ मिनटों तक वे सब अपनी मिठाई खाते हुए बाहर निकलने की ओर चल पड़े। गेट पर एक फटेहाल बच्चा उन्हें बड़ी उम्मीद से देख रहा था, और लता ने झट से उसे एक छोटा सा सिक्का दे दिया। वह भीख मांगने ही वाला था, लेकिन अभी तक उसने भीख नहीं मांगी थी, और वह हैरान दिख रहा था।

उसके नरगिस के फूलों में से एक घोड़े की गर्दन के बालों में फंस गया। तांगा वाला फिर से अपने टूटे हुए दिल का गीत गाने लगा। इस बार सब लोग उसके साथ गाने लगे। राहगीरों ने तांगे के गुजरते ही मुड़कर देखा।

मगरमच्छों ने वरुण पर मुक्तिदायक प्रभाव डाला था। लेकिन जब वे विश्वविद्यालय परिसर में प्राण के घर लौटे, जहाँ अरुण, मीनाक्षी और श्रीमती रूपा मेहरा ठहरे हुए थे, तो वरुण को एक घंटा देर से लौटने के परिणामों का सामना करना पड़ा। अपर्णा की माँ और दादी चिंतित दिख रही थीं।

'तुम बिलकुल गैरजिम्मेदार मूर्ख हो,' अरुण ने सबके सामने उसे फटकार लगाते हुए कहा। 'तुम ही मुखिया हो, और अगर तुमने साढ़े बारह बजे कहा है, तो ठीक साढ़े बारह बजे ही आना चाहिए, खासकर तब जब मेरी बेटी तुम्हारे साथ है। और मेरी बहन भी। मुझे कोई बहाना नहीं सुनना। बिलकुल बेवकूफ हो।' वह गुस्से से आग बबूला था। 'और तुम—' उसने लता से कहा, 'तुम्हें पता होना चाहिए था कि उसे समय का ध्यान नहीं रखने देना चाहिए था। तुम जानती हो कि वह कैसा है।'

वरुण ने अपना सिर झुकाया और तिरछी निगाहों से अपने पैरों की ओर देखा। वह सोच रहा था कि अपने बड़े भाई को, सिर के बल, सबसे बड़े मगरमच्छ को खिलाना कितना संतोषजनक होगा।

1.12

लता के ब्रह्मपुर में पढ़ने का एक कारण यह था कि यहीं उसके दादा, डॉ.

किशन चंद सेठ रहते थे। जब लता पहली बार यहाँ पढ़ने आई थी, तब उन्होंने अपनी बेटी रूपा से वादा किया था कि वे उसका बहुत अच्छे से ख्याल रखेंगे। लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। डॉ. किशन चंद सेठ या तो सब्ज़ीपुर क्लब में ब्रिज खेलने में, या राजस्व मंत्री जैसे लोगों से झगड़ने में, या अपनी युवा पत्नी पार्वती के प्रति प्रेम में इतने मशगूल रहते थे कि लता के प्रति अभिभावक जैसी कोई भूमिका निभाने में असमर्थ थे। चूंकि अरुण को अपना गुस्सैल स्वभाव अपने दादा से ही विरासत में मिला था, शायद कुल मिलाकर यह कोई बुरी बात नहीं थी। खैर, लता को विश्वविद्यालय के छात्रावास में रहने में कोई आपत्ति नहीं थी। उसे लगता था कि पढ़ाई के लिए यह उसके चिड़चिड़े नाना की देखरेख से कहीं बेहतर था।

रघुबीर मेहरा की मृत्यु के तुरंत बाद, श्रीमती रूपा मेहरा और उनका परिवार अपने पिता के साथ रहने चले गए, जिन्होंने उस समय तक पुनर्विवाह नहीं किया था। आर्थिक तंगी को देखते हुए, यही एकमात्र उपाय प्रतीत हुआ; उन्हें यह भी लगा कि वे अकेलेपन का अनुभव कर रहे होंगे, और उन्होंने उनके घरेलू कामों में मदद करने की उम्मीद की। यह प्रयोग कुछ महीनों तक चला और पूरी तरह विफल रहा। डॉ. किशन चंद सेठ के साथ रहना असंभव था। कद में छोटे होने के बावजूद, उनका दबदबा न केवल मेडिकल कॉलेज में था, जहाँ से वे प्रधानाचार्य के पद से सेवानिवृत्त हुए थे, बल्कि पूरे ब्रह्मपुर में था: हर कोई उनसे डरता था और दबे पांव उनकी बात मानता था। वे अपने घरेलू जीवन को भी इसी तरह चलाना चाहते थे। उन्होंने अपने बच्चों के मामले में रूपा मेहरा के आदेशों को अनसुना कर दिया। वे अचानक हफ्तों तक बिना पैसे या कर्मचारियों के लिए निर्देश छोड़े घर से चले जाते थे। अंत में, उन्होंने अपनी बेटी पर, जिसकी सुंदरता विधवा होने के बाद भी बरकरार थी, अपने सहकर्मियों

को घर बुलाने पर उन पर बुरी नज़र डालने का आरोप लगाया - यह आरोप दुखी लेकिन मिलनसार रूपा के लिए बेहद चौंकाने वाला था। किशोर अरुण ने अपने दादा को पीटने की धमकी दी थी। रोना-धोना और चीख-पुकार मच गई थी और डॉक्टर किशन चंद सेठ ने अपनी लाठी से ज़मीन पर ज़ोर-ज़ोर से मारा था। फिर श्रीमती रूपा मेहरा अपने चार बच्चों के साथ रोते हुए और दृढ़ निश्चय के साथ वहाँ से चली गईं और दार्जिलिंग में हमदर्द दोस्तों के पास शरण ली।

एक साल बाद, फूट-फूटकर रोने के बाद सुलह हो पाई। तब से हालात उथल-पुथल भरे रहे। पार्वती से विवाह (जिसने न केवल उनके परिवार को बल्कि उम्र के अंतर के कारण पूरे ब्रह्मपुर को चौंका दिया था), लता का ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय में दाखिला, सविता की सगाई (जिसे डॉ. किशन चंद सेठ ने आयोजित करने में मदद की थी), सविता की शादी (जिसे उन्होंने लगभग बर्बाद कर दिया था और जिसमें वे जानबूझकर अनुपस्थित रहे थे): ये सभी एक बेहद उतार-चढ़ाव भरे सफर के पड़ाव थे। लेकिन परिवार तो परिवार होता है, और जैसा कि श्रीमती रूपा मेहरा खुद को लगातार समझाती रहती थीं, सुख-दुख दोनों को सहना पड़ता है।

सविता की शादी को अब कई महीने बीत चुके थे। सर्दी का मौसम बीत चुका था और चिड़ियाघर के अजगर शीतनिद्रा से जाग चुके थे। नरगिस के फूलों की जगह गुलाब खिल चुके थे, और उनकी जगह बैंगनी रंग की लता ने ले ली थी, जिसके पांच पंखुड़ियों वाले फूल गर्म हवा में धीरे-धीरे ज़मीन पर गिर रहे थे। चौड़ी, मटमैली भूरी गंगा, जो पूर्व दिशा में चमड़ा कारखाने की बदसूरत चिमनियों और बरसात महल की संगमरमर की इमारत के पास से, भीड़भाड़ वाले बाज़ारों और गलियों, मंदिरों और मस्जिदों वाले पुराने ब्रह्मपुर के पास से, स्नान घाटों और श्मशान घाट और ब्रह्मपुर किले के पास से, सब्ज़ीपुर क्लब के सफेदी किए हुए स्तंभों और विश्वविद्यालय

के विशाल परिसर के पास से बहती थी, गर्मी के कारण सिकुड़ गई थी, लेकिन नावें और स्टीमर अब भी इसकी पूरी लंबाई में व्यस्तता से चल रहे थे, साथ ही ब्रह्मपुर को दक्षिण से घेरने वाली समानांतर रेलवे लाइन पर ट्रेनें भी चल रही थीं।

लता ने छात्रावास छोड़ दिया था और सविता और प्राण के साथ रहने चली गई थी, जो शिमला से प्रेम में डूबे मैदानी इलाकों में आए थे। मालती अक्सर लता से मिलने जाती थी और लंबे-पतले प्राण को पसंद करने लगी थी, जिसके बारे में उसकी पहली राय अच्छी नहीं थी। लता को भी प्राण का सभ्य और स्नेही स्वभाव अच्छा लगा और सविता के गर्भवती होने की खबर सुनकर उसे ज्यादा दुख नहीं हुआ। श्रीमती रूपा मेहरा कलकत्ता में अरुण के फ्लैट से अपनी बेटियों को लंबे-लंबे पत्र लिखती थीं और बार-बार शिकायत करती थीं कि कोई भी उनके पत्रों का जवाब न तो जल्दी देता है और न ही अक्सर देता है।

हालांकि उन्होंने अपनी बेटी को नाराज़ करने के डर से अपने किसी भी पत्र में इसका ज़िक्र नहीं किया, श्रीमती रूपा मेहरा ने कलकत्ता में लता के लिए वर खोजने की कोशिश की थी—लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। शायद उन्होंने पर्याप्त प्रयास नहीं किया, उन्होंने खुद से कहा: आख़िरकार, वह अभी भी सविता की शादी की उत्तेजना और थकान से उबर रही थीं। लेकिन अब आखिरकार वह तीन महीने के लिए ब्रह्मपुर लौट रही थीं, जिसे उन्होंने अपना दूसरा घर कहना शुरू कर दिया था: उनकी बेटी का घर, उनके पिता का नहीं। जैसे ही ट्रेन ब्रह्मपुर की ओर बढ़ी, उस शुभ शहर की ओर जहाँ से उन्हें पहले ही एक दामाद मिल चुका था, श्रीमती रूपा मेहरा ने खुद से वादा किया कि वह एक और प्रयास करेंगी। वहाँ पहुँचने के एक-दो दिन के भीतर वह सलाह लेने के लिए अपने पिता के पास जाएँगी।

1.13

असल में, डॉक्टर किशन चंद सेठ से सलाह लेने की कोई आवश्यकता नहीं थी। वह अगले दिन गुस्से में विश्वविद्यालय गए और प्राण कपूर के घर पहुंचे।

दोपहर के तीन बज रहे थे और बहुत गर्मी थी। प्राण विभाग में था। लता आध्यात्मिक कवियों पर व्याख्यान सुन रही थी। सविता खरीदारी करने गई थी। युवा नौकर मंसूर ने डॉ. किशन चंद सेठ को चाय, कॉफी या नींबू का रस देकर शांत करने की कोशिश की। लेकिन डॉ. ने उनकी हर पेशकश को बेरुखी से ठुकरा दिया।

'क्या घर पर कोई है? सब लोग कहाँ हैं?' डॉ. किशन चंद सेठ ने गुस्से में पूछा। उनका छोटा कद, गठीला शरीर और झुर्रीदार गाल उन्हें किसी खूंखार और झुर्रियों वाले तिब्बती चौकीदार कुत्ते जैसा दिखाते थे। (श्रीमती रूपा मेहरा की खूबसूरती उनकी माँ की देन थी।) वे अपने हाथ में एक नक्काशीदार कश्मीरी छड़ी लिए हुए थे, जिसका इस्तेमाल वे सहारे से ज़्यादा ज़ोर देने के लिए करते थे। मंसूर जल्दी से अंदर चला गया।

'बुर्री मेमसाहिब?' उसने श्रीमती रूपा मेहरा के कमरे का दरवाजा खटखटाते हुए पुकारा।

'कौन क्या?'

'बुर्री मेमसाहिब, आपके पिता यहाँ हैं।'

'ओह। ओह।' दोपहर की झपकी का आनंद ले रही श्रीमती रूपा मेहरा एक बुरे सपने से जाग उठीं। 'उन्हें बता दो कि मैं तुरंत उनके पास आ रही हूँ, और उन्हें चाय पिलाओ।'

जी हां, मेमसाहिब।

मंसूर ड्राइंग रूम में दाखिल हुआ। डॉ. सेठ एक ऐशट्रे को घूर रहे थे।

'तो? क्या तुम मंदबुद्धि होने के साथ-साथ मूर्ख भी हो?' डॉ. किशन चंद

सेठ ने पूछा।
‘वह अभी आ ही रही है, साहब।’
‘अभी कौन आ रहा है? मूर्ख!’
'बुरी मेमसाहब, साहब। वह आराम कर रही थी।'
डॉ. सेठ इस बात से हैरान और नाराज थे कि उनकी नन्ही सी बेटी रूपा को न सिर्फ मेमसाहिब बल्कि बुर्री मेमसाहिब के पद तक कैसे पहुंचाया जा सकता था।
मंसूर ने कहा, ‘क्या आप चाय लेंगे, साहब? या कॉफी?’
अभी आपने मुझे नींबू पानी दिया।
जी साहब।
एक गिलास नींबू पानी।
जी साहब, अभी।’ मंसूर जाने लगा।
और ओह—’
जी साहब?
क्या इस घर में अरारोट बिस्कुट हैं?
‘मुझे ऐसा ही लगता है, साहब।’
मंसूर कुछ नींबू तोड़ने के लिए पीछे के बगीचे में गया, फिर उन्हें निचोड़कर रस निकालने के लिए रसोई में लौट आया।
डॉ. किशन चंद सेठ ने उस दिन के ब्रह्मपुर क्रॉनिकल के बजाय एक दिन पुराना स्टेट्समैन अखबार उठाया और आरामकुर्सी पर बैठकर पढ़ने लगे।
इस घर में सब लोग मंदबुद्धि थे।
श्रीमती रूपा मेहरा ने जल्दी से काले-सफेद सूती साड़ी पहनी और अपने कमरे से बाहर निकलीं। वह ड्राइंग रूम में दाखिल हुईं और माफी मांगने लगीं।
‘अरे, बस करो, बस करो, यह सब बकवास बंद करो,’ डॉ. किशन चंद

सेठ ने हिंदी में अधीरता से कहा।
हाँ, बाओजी।
एक हफ्ते इंतजार करने के बाद मैंने तुमसे मिलने का फैसला किया। तुम किस तरह की बेटी हो?
'एक हफ्ता?' श्रीमती रूपा मेहरा ने फीके स्वर में कहा।
'जी हां, एक हफ्ता। आपने सही सुना, बुर्री मेमसाहिब।'
श्रीमती रूपा मेहरा को यह नहीं पता था कि उनके पिता का गुस्सा ज्यादा बुरा था या उनका व्यंग्य।
लेकिन मैं तो कल ही कलकत्ता से आया हूँ।
उसके पिता इस सरासर झूठ पर भड़कने ही वाले थे कि तभी मंसूर नींबू पानी और अरारोट बिस्कुट की प्लेट लेकर अंदर आया। उन्होंने डॉ. सेठ के चेहरे के भाव देखे और हिचकिचाते हुए दरवाजे के पास खड़े हो गए।
'जी हां, इसे यहीं रख दो, किस बात का इंतजार कर रहे हो?'
मंसूर ने ट्रे को कांच के ऊपरी हिस्से वाली एक छोटी मेज पर रखा और जाने के लिए मुड़ गया। डॉ. सेठ ने एक घूंट लिया और गुस्से में चिल्ला उठे—
'बदमाश!'
मंसूर कांपते हुए मुड़ा। वह केवल सोलह वर्ष का था और अपने पिता की जगह स्कूल में बैठा था, जो कुछ दिनों की छुट्टी पर गए थे। गाँव के स्कूल में पाँच वर्षों के दौरान उसके किसी भी शिक्षक ने उसके मन में बुर्री मेमसाहिब के पागल पिता जैसा भय नहीं जगाया था।
'तुम बदमाश हो—क्या तुम मुझे जहर देना चाहते हो?'
नहीं, साहब।
'तुमने मुझे क्या दिया है?'
'Nimbu pani, Sahib.'

डॉ. सेठ के गाल कांप रहे थे, उन्होंने मंसूर को गौर से देखा। क्या वह उन्हें चिढ़ाने की कोशिश कर रहा था?

‘बेशक ये नींबू पानी है। क्या आपको लगा कि मैंने इसे व्हिस्की समझा था?’

‘साहिब।’ मंसूर अचंभित रह गया।

‘आपने इसमें क्या डाला है?’

‘Sugar, Sahib.’

‘अरे मूर्ख! मैं अपना नींबू पानी नमक से बनाता हूँ, चीनी से नहीं,’ डॉ. किशन चंद सेठ दहाड़े बोले। ‘चीनी मेरे लिए ज़हर है। मुझे मधुमेह है, तुम्हारी बुर्री मेमसाहिब की तरह। मैंने तुम्हें कितनी बार बताया है?’

मंसूर का मन हुआ कि वह जवाब दे, 'कभी नहीं,' लेकिन उसने ऐसा न करने का फैसला किया। आमतौर पर डॉ. सेठ चाय पीते थे और दूध और चीनी अलग से लाते थे।

डॉ. किशन चंद सेठ ने अपनी छड़ी ज़मीन पर पटकी। 'जाओ। उल्लू की तरह मुझे क्यों घूर रहे हो?'

जी साहब, मैं एक और गिलास बना देता हूँ।

'इसे छोड़ दो। नहीं। हाँ—एक और गिलास बनाओ।'

‘नमक के साथ, साहब।’ मंसूर ने मुस्कुराने की हिम्मत की। उसकी मुस्कान काफी प्यारी थी।

डॉ. सेठ ने पूछा, 'गधे की तरह किस बात पर हंस रहे हो?' 'नमक पर, बिल्कुल।'

जी साहब।

और, बेवकूफ—’

जी साहब?

‘साथ में काली मिर्च भी।’

जी साहब।

डॉ. किशन चंद सेठ अपनी बेटी की ओर मुड़े। वह उनके सामने मुरझा गई।

'मेरी बेटी कैसी है?' उन्होंने व्यंग्यात्मक लहजे में पूछा। रूपा मेहरा जवाब का इंतज़ार कर रही थी, और जवाब जल्द ही आ गया। 'अकृतज्ञ!' उनके पिता ने ज़ोर देने के लिए अरारोट बिस्कुट का एक टुकड़ा चबाया। 'गीला!' उन्होंने घृणा से कहा।

श्रीमती रूपा मेहरा जानती थीं कि विरोध करना व्यर्थ है।

डॉ. किशन चंद सेठ ने आगे कहा:

'तुम कलकत्ता से लौटे हुए एक हफ्ता हो गया है और तुमने मुझसे एक बार भी मुलाकात नहीं की। क्या तुम मुझसे इतनी नफरत करते हो या अपनी सौतेली माँ से?'

क्योंकि उनकी सौतेली माँ पार्वती उनसे काफी छोटी थीं, इसलिए श्रीमती रूपा मेहरा के लिए उन्हें अपने पिता की नर्स और बाद में रखैल के अलावा किसी और रूप में देखना बहुत मुश्किल था। हालांकि श्रीमती रूपा मेहरा बहुत ही साफ-सफाई पसंद करती थीं, लेकिन पार्वती से उन्हें पूरी तरह कोई शिकायत नहीं थी। उनकी माँ के निधन के बाद उनके पिता तीन दशकों से अकेले थे। पार्वती उनके प्रति अच्छी थीं और (उनके विचार में) उनके लिए अच्छी भी थीं। खैर, श्रीमती रूपा मेहरा सोचती थीं, दुनिया में ऐसा ही होता है। सबके साथ अच्छे संबंध रखना ही सबसे अच्छा है।

'लेकिन मैं तो कल ही यहाँ आई हूँ,' उसने कहा। उसने एक मिनट पहले ही उसे यह बात बताई थी, लेकिन जाहिर तौर पर उसने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया।

'हंह!' डॉ. सेठ ने उपेक्षापूर्वक कहा।

'ब्रह्मपुर मेल द्वारा।'

आपने अपने पत्र में लिखा था कि आप पिछले सप्ताह आएंगे।
‘लेकिन मुझे रिजर्वेशन नहीं मिल पाया, बाओजी, इसलिए मैंने कलकत्ता में एक और हफ्ता रुकने का फैसला किया।’ यह बात सच थी, लेकिन अपनी तीन साल की पोती अपर्णा के साथ समय बिताने की खुशी भी उनके इस विलंब का एक कारण थी।
क्या आपने टेलीग्राम के बारे में सुना है?
‘मैंने सोचा था कि तुम्हें एक भेज दूं, बाओजी, लेकिन मुझे लगा कि यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है। फिर, खर्चा...’
‘जब से तुम मेहरा बने हो, तब से तुम पूरी तरह से टालमटोल करने लगे हो।’
यह एक असहनीय आघात था, और इससे घाव लगना तय था। श्रीमती रूपा मेहरा ने अपना सिर झुका लिया।
‘लो, ये बिस्किट खा लो,’ उसके पिता ने नरम लहजे में कहा। श्रीमती रूपा मेहरा ने सिर हिला दिया।
‘खाओ, मूर्ख!’ उसके पिता ने रूखे स्नेह से कहा। ‘या फिर तुम अभी भी उन बेवकूफी भरे उपवासों का पालन कर रही हो जो तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए इतने हानिकारक हैं?’
'आज एकादशी है।' श्रीमती रूपा मेहरा अपने पति की याद में प्रत्येक चंद्र पखवाड़े के ग्यारहवें दिन उपवास रखती हैं।
‘मुझे परवाह नहीं कि दस एकादशी हों,’ उसके पिता ने कुछ तीखे स्वर में कहा। ‘जब से तुम मेहरा परिवार के प्रभाव में आई हो, तब से अपनी अभागी माँ की तरह ही धार्मिक हो गई हो। इस परिवार में बहुत सारी बेमेल शादियाँ हुई हैं।’
इन दो वाक्यों का मेल, जो कई संभावित पीड़ादायक व्याख्याओं में उलझे हुए थे, श्रीमती रूपा मेहरा के लिए असहनीय था। उनकी नाक लाल होने

लगी। उनके पति का परिवार जितना धार्मिक था, उतना ही टालमटोल करने वाला भी था। रघुबीर के भाई-बहनों ने सोलह वर्षीय दुल्हन के लिए स्नेह और सांत्वना से भरा स्नेहपूर्ण व्यवहार किया था, और अपने पति की मृत्यु के आठ साल बाद भी, वह अपने बच्चों द्वारा 'वार्षिक भारत-पार रेल तीर्थयात्रा' कहे जाने वाले क्रम में यथासंभव अपने परिवार के सदस्यों से मिलने जाती थीं। यदि वह 'अपनी माँ की तरह धार्मिक' बन रही थीं (जो वह नहीं थीं - कम से कम अभी तक तो नहीं), तो इसका मुख्य प्रभाव शायद उनकी माँ का ही था, जिनकी मृत्यु प्रथम विश्व युद्ध के बाद फैले इन्फ्लूएंजा महामारी में हुई थी, जब रूपा बहुत छोटी थीं। अब उनकी आँखों के सामने एक धुंधली छवि उभर आई: डॉ. किशन चंद सेठ की पहली पत्नी की कोमल आत्मा उनके स्वतंत्र विचारक, एलोपैथिक स्वभाव से कितनी दूर थी। विवाहों के बीच बेमेल संबंधों के बारे में उनकी टिप्पणी ने दो प्रिय आत्माओं की स्मृति को ठेस पहुँचाई, और संभवतः यह अस्थमा से पीड़ित प्राण का अपमान करने के इरादे से भी की गई थी।

‘अरे, इतनी संवेदनशील मत बनो!’ डॉ. किशन चंद सेठ ने कठोर स्वर में कहा। उन्होंने निष्कर्ष निकाला था कि अधिकांश महिलाएं अपना दो-तिहाई समय रोने-धोने में व्यतीत करती हैं। उन्हें इससे क्या लाभ होता है? अंत में उन्होंने कहा, ‘लता की शादी जल्द करवा देनी चाहिए।’

श्रीमती रूपा मेहरा का सिर अचानक ऊपर उठा। 'ओह? क्या आपको ऐसा लगता है?' उन्होंने कहा। उनके पिता हमेशा की तरह और भी ज्यादा आश्चर्यचकित लग रहे थे।

'हां। उसकी उम्र लगभग बीस साल होगी। बहुत देर हो चुकी है। पार्वती की शादी तीस साल की उम्र में हुई थी, और देखो उसे क्या मिला। लता के लिए एक अच्छा लड़का ढूंढना होगा।'

‘जी हां, मैं भी यही सोच रही थी,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। ‘लेकिन

मुझे नहीं पता कि लता क्या कहेंगी।'
डॉ. किशन चंद सेठ ने इस अप्रासंगिकता पर नाराजगी जताई।
और मुझे एक उपयुक्त लड़का कहाँ मिलेगा?' उसने आगे कहा। 'हम सविता के मामले में भाग्यशाली रहे।'
'किस्मत अच्छी है—कुछ नहीं! मैंने ही परिचय कराया था। क्या वह गर्भवती है? मुझे कोई कुछ नहीं बताता,' डॉ. किशन चंद सेठ ने कहा।
हाँ, बाओजी।
डॉ. सेठ ने 'हाँ' का अर्थ समझने के लिए कुछ देर रुककर सोचा। फिर उन्होंने कहा, 'आखिरकार समय आ ही गया। आशा है इस बार मुझे एक परपोता मिलेगा।' वे फिर रुके। 'वह कैसी है?'
'खैर, थोड़ी सी मॉर्निंग सिकनेस है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने बात शुरू की।
'नहीं, बेवकूफ, मेरा मतलब मेरी परपोती, अरुण की बच्ची से है,' डॉ. किशन चंद सेठ ने अधीरता से कहा।
'ओह, अपर्णा? वह बहुत प्यारी है। वह मुझसे बहुत लगाव रखती है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने खुशी से कहा। 'अरुण और मीनाक्षी अपना प्यार भेज रहे हैं।'
इससे डॉ. सेठ को फिलहाल तसल्ली हो गई और उन्होंने सावधानी से अपना अरारोट बिस्किट खाया। 'नरम है,' उन्होंने शिकायत की। 'नरम।'
श्रीमती रूपा मेहरा जानती थीं कि उनके पिता के लिए हर चीज़ बिल्कुल तयशुदा होनी चाहिए थी। बचपन में उन्हें खाने के साथ पानी पीने की इजाज़त नहीं थी। पाचन में सहायता के लिए हर निवाले को चौबीस बार चबाना पड़ता था। खाने के प्रति इतने सजग और इतने शौकीन व्यक्ति को बिस्कुट और उबले अंडे खाते देखना दुखद था।
लता के पिता ने आगे कहा, 'मैं देखता हूँ कि लता के लिए क्या कर सकता हूँ। प्रिंस ऑफ वेल्स अस्पताल में एक युवा रेडियोलॉजिस्ट है। मुझे

उसका नाम याद नहीं आ रहा। अगर हमने पहले ही सोच लिया होता और अपनी कल्पना का इस्तेमाल किया होता, तो हम प्राण के छोटे भाई को बुलाकर दोहरी शादी करवा सकते थे। लेकिन अब लोग कहते हैं कि उसकी सगाई बनारस की उस लड़की से हो गई है। शायद यह अच्छा ही हुआ,' उन्होंने मंत्री से अपने झगड़े को याद करते हुए कहा।

'लेकिन आप अभी नहीं जा सकते, बाओजी। सब लोग जल्द ही वापस आ जाएंगे,' श्रीमती रूपा मेहरा ने विरोध जताते हुए कहा।

'नहीं आ सकते? नहीं आ सकते? जब मुझे सबकी ज़रूरत होती है, तब सब कहाँ होते हैं?' डॉ. किशन चंद सेठ ने तीखे स्वर में कहा। उन्होंने अधीरता से अपनी जीभ चटकाई। 'अगले हफ्ते अपनी सौतेली माँ का जन्मदिन मत भूलना,' और दरवाज़े की ओर चल दिए।

श्रीमती रूपा मेहरा दरवाजे से अपने पिता की पीठ को उदास और चिंतित निगाहों से देख रही थीं। अपनी कार की ओर जाते हुए वे प्राण के सामने वाले बगीचे में लाल और पीले रंग के कैना के फूलों के पास रुके, और रूपा ने देखा कि वे और भी ज़्यादा बेचैन हो रहे थे। नौकरशाही के नाम पर रखे जाने वाले ये फूल (जिनमें उन्होंने गेंदा, बोगनविलिया और पेटूनिया को भी शामिल किया था) उन्हें बहुत परेशान करते थे। जब तक प्रिंस ऑफ वेल्स मेडिकल कॉलेज में उनका सर्वोच्च अधिकार था, उन्होंने इन फूलों पर प्रतिबंध लगा रखा था; अब ये फूल फिर से उगने लगे थे। अपनी कश्मीरी छड़ी से उन्होंने एक ही झटके में पीले कैना के फूल का ऊपरी हिस्सा काट दिया। उनकी बेटी कांपते हुए उन्हें देखती रही, और वे अपनी पुरानी ग्रे रंग की ब्यूक कार में बैठ गए। यह शानदार गाड़ी, जो भारतीय सड़कों पर चलने वाली ऑस्टिन और मॉरिस जैसी गाड़ियों के बीच एक राजा की तरह थी, दस साल पहले अरुण (सेंट जॉर्ज से छुट्टी के दौरान) द्वारा चलाई गई एक भयानक ड्राइव के कारण अभी भी थोड़ी क्षतिग्रस्त

थी। अरुण ही परिवार में इकलौता ऐसा व्यक्ति था जो अपने दादाजी की बात न मानकर बच निकलता था, और इसी वजह से उसे और भी ज़्यादा प्यार मिलता था। जब डॉ. किशन चंद सेठ गाड़ी चलाकर चले गए, तो उन्होंने मन ही मन सोचा कि यह मुलाक़ात संतोषजनक रही। इससे उन्हें सोचने और योजना बनाने के लिए कुछ मिला।

श्रीमती रूपा मेहरा को अपने पिता के स्नेहपूर्ण साथ से उबरने में कुछ पल लगे। अचानक उन्हें अपनी भूख का एहसास हुआ और वे अपने अंतिम भोजन के बारे में सोचने लगीं। वे अनाज से अपना व्रत नहीं तोड़ सकती थीं, इसलिए युवा मंसूर को कटलेट बनाने के लिए कच्चे केले लाने बाजार भेजा गया। जब वह साइकिल की चाबी और खरीदारी का थैला लेने के लिए रसोई से गुजरा, तो उसकी नज़र काउंटर पर रखे एक गिलास पर पड़ी, जिसे किसी ने अस्वीकार कर दिया था: ठंडा, खट्टा, लुभावना।

उसने झटपट उसे पी लिया।

1.14

श्रीमती रूपा मेहरा को जानने वाले सभी लोग जानते थे कि उन्हें गुलाब कितने पसंद थे, और विशेष रूप से गुलाबों की तस्वीरें। इसीलिए उन्हें मिलने वाले अधिकांश जन्मदिन कार्डों पर विभिन्न रंगों और आकारों के गुलाब बने होते थे, और उनकी संख्या और दिखावटीपन में भी भिन्नता होती थी। आज दोपहर, लता के साथ साझा किए गए कमरे में डेस्क पर चश्मा लगाए बैठी, वह एक व्यावहारिक उद्देश्य से पुराने कार्ड देख रही थीं, हालाँकि इस काम में प्राचीन भावनाओं की गूंज उन्हें अभिभूत करने का खतरा था। लाल गुलाब, पीले गुलाब, यहाँ तक कि कहीं-कहीं एक नीला गुलाब भी रिबन, बिल्ली के बच्चों की तस्वीरों और एक दोषी दिखने वाले कुत्ते के बच्चे की तस्वीर के साथ मिला हुआ था। एक टोकरी में सेब, अंगूर और गुलाब; गुलाबों की पृष्ठभूमि के साथ खेत में भेड़ें; पास में

स्ट्रॉबेरी के कटोरे के साथ धुंधले पीतल के मग में गुलाब; बैंगनी रंग से खिले गुलाब, जिन पर गुलाबों जैसी न दिखने वाली, चिकनी पत्तियाँ और कोमल, यहाँ तक कि लुभावने हरे कांटे लगे थे: परिवार, दोस्तों और भारत भर के विभिन्न शुभचिंतकों से, और यहाँ तक कि विदेशों से भी, जन्मदिन के कार्ड—हर चीज़ उसे हर चीज़ की याद दिलाती थी, जैसा कि उसका बड़ा बेटा अक्सर कहा करता था।

श्रीमती रूपा मेहरा ने जन्मदिन के गुलाबों की ओर लौटने से पहले पुराने नव वर्ष कार्डों के ढेर पर सरसरी नज़र डाली। उन्होंने अपने बड़े काले हैंडबैग के कोने से एक छोटी कैंची निकाली और सोचने लगीं कि किस कार्ड को कुर्बान करना है। श्रीमती रूपा मेहरा बहुत कम ही किसी के लिए कार्ड खरीदती थीं, चाहे वह व्यक्ति कितना भी करीबी या प्रिय क्यों न हो। मितव्ययिता की आदत उनके मन में गहराई से बैठ गई थी, लेकिन आठ साल तक छोटी-छोटी विलासिताओं से वंचित रहने के बावजूद जन्मदिन की शुभकामनाओं का महत्व उनके लिए कम नहीं हुआ था। कार्ड खरीदने की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, इसलिए वे उन्हें खुद बनाती थीं। वास्तव में, उन्हें कार्ड बनाने की रचनात्मक चुनौती का आनंद आता था। गत्ते के टुकड़े, रिबन के कतरन, रंगीन कागज के टुकड़े, छोटे चांदी के सितारे और चिपकने वाले सुनहरे अंक उनके तीन सूटकेसों में से सबसे बड़े के नीचे एक तरह से ढेर में पड़े थे, और अब उन्हें काम में लगाया गया। कैंची तैयार थी, फिर नीचे उतारी गई। तीन चांदी के सितारों को उनके साथियों से अलग किया गया और (उधार लिए गए गोंद की मदद से - यह एकमात्र ऐसी चीज थी जिसे श्रीमती रूपा मेहरा रिसाव के डर से अपने साथ नहीं ले गई थीं) मोड़े हुए खाली सफेद गत्ते के सामने के तीन कोनों पर चिपकाया गया। चौथा कोना, उत्तर-पश्चिम कोना, प्राप्तकर्ता की आयु दर्शाने वाले दो सुनहरे अंकों को दर्शा सकता था।

लेकिन अब श्रीमती रूपा मेहरा रुक गईं—क्योंकि इस मामले में प्राप्तकर्ता की उम्र एक विवादास्पद तथ्य साबित हो सकती थी। उनकी सौतेली माँ, जैसा कि उन्हें हमेशा याद रहता था, उनसे पूरे दस साल छोटी थीं, और आरोप लगाने वाला '35', भले ही सोने के अक्षरों में हो—या शायद विशेष रूप से—एक अस्वीकार्य असमानता, और संभवतः एक अस्वीकार्य उद्देश्य का संकेत देता हुआ प्रतीत होता था। सोने के अंकों को एक तरफ रख दिया गया, और एक चौथा चांदी का तारा बाकी तारों के साथ एक सरल समरूपता के रूप में जुड़ गया।

चित्र के चयन का निर्णय स्थगित करते हुए, श्रीमती रूपा मेहरा ने अपने कार्ड के लिए तुकबंदी वाला पाठ तैयार करने में सहायता की तलाश की। गुलाब और पीतल से बने उस कार्ड में निम्नलिखित पंक्तियाँ थीं:

आपने जो आनंद बिखेरा है, वह बना रहे।
जीवन के उज्ज्वल मार्ग पर
और दयालुता के छोटे-छोटे कार्य
जो आपके रोजमर्रा के काम हैं
और जो खुशियाँ आपने बरसाई हैं
दूसरों पर जीवन भर
अपनी खुशियों को बढ़ाने के लिए लौटें
आपके जन्मदिन के इस खास मौके पर।

श्रीमती रूपा मेहरा ने फैसला किया कि पार्वती के लिए यह ठीक नहीं रहेगा। उन्होंने अंगूर और सेब के चित्रों वाले कार्ड की ओर रुख किया।

आज का दिन गले लगाने और चुंबन करने का दिन है।
केक और मोमबत्तियों के लिए भी,
यह दिन उन सभी के लिए है जो आपसे प्यार करते हैं।

अपने प्यार को फिर से जीवंत करने के लिए,
मधुर चिंतन का दिन
जीवन के उज्ज्वल मार्ग पर,
और एक दिन जब हम सभी आपको यह बताएंगे:
आपका दिन शानदार हो।

इसमें कुछ उम्मीद तो थी, लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा को सहज ही महसूस हुआ कि चौथी पंक्ति में कुछ गड़बड़ है। साथ ही, उन्हें 'गले लगाना और चुंबन' को 'विशेष अभिवादन' में बदलना होगा; पार्वती शायद गले लगाने और चुंबन की हकदार थी, लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा उसे ये देने में असमर्थ थीं।

यह कार्ड किसने भेजा था? क्वीनी और पुसी कपाडिया, चालीस वर्ष की दो अविवाहित बहनें जिनसे वह वर्षों से नहीं मिली थीं। अविवाहित! यह शब्द सुनते ही मानो शोक की घंटी बज गई। श्रीमती रूपा मेहरा एक पल के लिए सोच में लीन हो गईं, और फिर दृढ़ता से आगे बढ़ीं।

पिल्ले ने बिना तुकबंदी वाला और इसलिए अनुपयोगी पाठ दोहराया—महज 'जन्मदिन मुबारक हो और बहुत-बहुत शुभकामनाएं'—लेकिन भेड़ ने तुकबंदी में मिमियाया, हालांकि उसकी भावना बाकी भेड़ों से थोड़ी अलग थी:

यह एक मानक अभिवादन नहीं है
सिर्फ एक आनंदमय दिन के लिए
लेकिन एक ऐसी इच्छा जिसका उद्देश्य ढकना है
जीवन का उज्ज्वल और शानदार मार्ग—
आपको सभी विशेष चीजों की शुभकामनाएं।
जो आपके लिए सबसे ज्यादा मायने रखता है
ताकि इस साल और हर साल

आपके सबसे प्यारे सपने सच हो जाएं।

जी हाँ! जीवन का उज्ज्वल मार्ग, श्रीमती रूपा मेहरा के लिए एक प्रिय अवधारणा, यहाँ और भी अधिक निखर कर सामने आया। न ही इन पंक्तियों में उन्होंने अपने पिता की दूसरी पत्नी के प्रति किसी गहरे स्नेह का इज़हार किया। साथ ही, अभिवादन में कोई अनुचित दूरी भी नहीं थी। उन्होंने अपना काला-सुनहरा मोंट ब्लैंक फाउंटेन पेन निकाला, जो रघुबीर ने उन्हें अरुण के जन्म पर उपहार में दिया था—पच्चीस साल पुराना और अब भी दमदार, उन्होंने उदास मुस्कान के साथ याद किया—और लिखना शुरू किया।

श्रीमती रूपा मेहरा की लिखावट बहुत छोटी और सुस्पष्ट थी, और इस मामले में यही उनके लिए एक समस्या बन गई। उन्होंने अपने स्नेह के अनुपात में कार्ड का आकार बहुत बड़ा चुन लिया था, लेकिन चांदी के सितारे चिपक चुके थे और अब इसे बदलना संभव नहीं था। अब वे चाहती थीं कि संदेश में यथासंभव अधिक से अधिक जगह भर जाए ताकि उन्हें कविता के पूरक के रूप में अपने कुछ ही शब्द लिखने पड़ें। इसलिए पहले तीन दोहे बाईं ओर इस प्रकार लिखे गए कि उनके बीच पर्याप्त खाली जगह रहे, ताकि वे स्पष्ट रूप से दिखाई न दें; सात बिंदुओं की एक पंक्ति सस्पेंस का आभास कराती हुई पृष्ठ पर बनाई गई; और अंतिम दोहा दाईं ओर गरजते हुए नीरसता के साथ लिखा गया।

‘प्रिय पार्वती को जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ, ढेर सारा प्यार, रूपा,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कर्तव्यपरायण भाव से लिखा। फिर, पश्चाताप करते हुए, उन्होंने ‘प्रिय’ के स्थान पर ‘est’ जोड़ दिया। अब यह थोड़ा अटपटा लग रहा था, लेकिन ध्यान से देखने पर ही पता चलेगा कि यह बाद में जोड़ा गया था।

अब सबसे दुखद हिस्सा सामने आया: केवल एक श्लोक की नकल करना

नहीं, बल्कि एक पुराने कार्ड का वास्तविक बलिदान। किन गुलाबों को रोपना पड़ेगा? कुछ सोचने के बाद, श्रीमती रूपा मेहरा ने फैसला किया कि वह उनमें से किसी को भी अपने से अलग नहीं कर सकतीं। तो फिर कुत्ते को? वह उदास, यहाँ तक कि दोषी भी लग रहा था—इसके अलावा, कुत्ते की तस्वीर, चाहे वह देखने में कितनी भी आकर्षक क्यों न हो, गलत व्याख्या का शिकार हो सकती थी। शायद भेड़ें—हाँ, वे ठीक रहेंगी। वे मुलायम और भावहीन थीं। उन्हें उनसे अलग होने में कोई आपत्ति नहीं थी। श्रीमती रूपा मेहरा शाकाहारी थीं, जबकि उनके पिता और पार्वती दोनों मांसाहारी थे। पुराने कार्ड के अग्रभाग में मौजूद गुलाबों को भविष्य के लिए सुरक्षित रख लिया गया, और ऊन उतारी हुई तीनों भेड़ों को सावधानीपूर्वक नए चरागाहों की ओर ले जाया गया।

लिफाफा बंद करने से पहले श्रीमती रूपा मेहरा ने एक छोटी सी नोटबुक निकाली और अपने पिता के लिए कुछ पंक्तियाँ लिखीं:

सबसे प्रिय बाओजी,

आपको देखकर मुझे जो खुशी मिली, उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता।

कल। प्राण, सविता और लता बहुत निराश थे। उन्हें वहाँ आने का मौका नहीं मिला, पर ज़िंदगी ऐसी ही होती है। रेडियोलॉजिस्ट या लता के लिए किसी और संभावित रिश्ते के बारे में, कृपया जानकारी जुटाएँ। एक अच्छा खत्री लड़का सबसे अच्छा रहेगा, लेकिन अरुण की शादी के बाद मैं दूसरे लड़कों के बारे में भी सोच सकती हूँ। गोरा हो या सांवला, जैसा कि आप जानते हैं, कोई भी चुनने में नखरे नहीं कर सकता।

मैं अपनी यात्रा से उबर चुकी हूँ और अत्यंत स्नेह के साथ, आपकी सदा प्रिय पुत्री बनी रहूँगी।

रूपा

घर में सन्नाटा था। उसने मंसूर से एक कप चाय माँगी और अरुण को पत्र लिखने का फैसला किया। उसने हरे रंग का एक पत्र खोला, उस पर अपनी साफ-सुथरी लिखावट में सावधानीपूर्वक तारीख लिखी और लिखना शुरू किया।

मेरे प्यारे अरुण,

मुझे उम्मीद है कि अब आप काफी बेहतर महसूस कर रहे होंगे और आपकी पीठ का दर्द भी ठीक हो गया होगा।

दांत का दर्द काफी कम हो गया है। कलकत्ता में मैं बहुत उदास और परेशान थी क्योंकि स्ट्रैंड और हावड़ा ब्रिज पर ट्रैफिक जाम की वजह से हमें स्टेशन पर साथ बिताने का ज्यादा समय नहीं मिला और मीनाक्षी चाहती थी कि तुम जल्दी घर आ जाओ, इसलिए तुम्हें ट्रेन छूटने से पहले ही निकलना पड़ा। तुम नहीं जानती कि तुम मेरे विचारों में कितनी छाई हुई हो—शब्दों से कहीं ज्यादा। मैंने सोचा था कि पार्टी की तैयारियों को शायद दस मिनट के लिए टाला जा सकता था, लेकिन ऐसा नहीं हो सका। मीनाक्षी को सब पता है। खैर, जो भी हुआ, नतीजा यही निकला कि हमें स्टेशन पर ज्यादा समय नहीं मिला और निराशा के मारे मेरी आंखों से आंसू बहने लगे। मेरे प्यारे वरुण को भी वापस जाना पड़ा क्योंकि वह मुझे छोड़ने तुम्हारी कार से आया था। जिंदगी ऐसी ही है, मनचाही चीजें अक्सर नहीं मिलतीं। अब मैं बस यही प्रार्थना करती हूं कि तुम जल्दी ठीक हो जाओ और जहां भी रहो, स्वस्थ रहो और तुम्हारी पीठ का दर्द ठीक हो जाए ताकि तुम फिर से गोल्फ खेल सको, जो तुम्हें बहुत पसंद है। अगर भगवान की इच्छा हुई तो हम बहुत जल्द फिर मिलेंगे। मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूं और तुम्हें वह सारी खुशियां और सफलता मिले जिसकी तुम हकदार हो। आपके पापा आपको बेंटसेन एंड प्राइस में और अब पत्नी और बच्चे के साथ देखकर बहुत गर्व महसूस करते। प्यारी

अपर्णा, आपको ढेर सारा प्यार और चुंबन।

यात्रा शांतिपूर्ण और योजना के अनुसार संपन्न हुई, लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैं

बर्दवान में मिहिदाना खाने से खुद को रोक नहीं पाई। अगर तुम वहाँ होतीं तो मुझे डाँटतीं, लेकिन मैं अपने मीठे के लालच को रोक नहीं पाई। मेरे लेडीज़ रिज़र्व कंपार्टमेंट में महिलाएँ बहुत मिलनसार थीं और हमने रमी और थ्री-टू-फाइव खेला और खूब बातें कीं। उनमें से एक महिला मिस पाल को जानती थी, जिनसे हम दार्जिलिंग में मिलने जाया करते थे, वही जो सेना के कप्तान से सगाई कर चुकी थीं, लेकिन युद्ध में उनकी मृत्यु हो गई थी। मेरे बैग में वो ताश के पत्ते थे जो वरुण ने मुझे मेरे पिछले जन्मदिन पर दिए थे, और उनसे सफ़र का समय आसानी से कट गया। जब भी मैं यात्रा करती हूँ, मुझे तुम्हारे पापा के साथ सैलून में बिताए वो दिन याद आ जाते हैं। कृपया उन्हें मेरा प्यार देना और उनसे कहना कि वे अपने पिता की अच्छी परंपराओं को अपनाते हुए मन लगाकर पढ़ाई करें।

सविता बहुत अच्छी लग रही हैं, और प्राण एक बेहतरीन पति हैं, सिवाय इसके कि...

उन्हें अस्थमा है और वे बहुत ख्याल रखते हैं। मुझे लगता है कि उन्हें अपने पेट में कुछ तकलीफ है, लेकिन वे इसके बारे में बात करना पसंद नहीं करते। आपके दादाजी कल आए थे और उन्हें कुछ चिकित्सीय सलाह दे सकते थे, लेकिन दुर्भाग्य से घर पर सिर्फ मैं ही थी। वैसे, अगले हफ्ते आपकी सौतेली दादी का जन्मदिन है, शायद आपको उन्हें एक कार्ड भेजना चाहिए। देर से ही सही, कुछ करना तो चाहिए।

मेरे पैर में थोड़ा दर्द हो रहा है, लेकिन यह तो अपेक्षित ही था। मानसून आ जाएगा।

दो-तीन महीने में यहाँ आ जाऊँगी और फिर मेरे जोड़ों में दर्द होने लगेगा।

दुर्भाग्य से प्राण अपनी लेक्चरर की तनख्वाह से कार नहीं खरीद सकता और परिवहन की स्थिति भी अच्छी नहीं है। मैं इधर-उधर जाने के लिए बस या तांगा लेती हूँ और कभी-कभी पैदल भी चलती हूँ। जैसा कि आप जानते हैं, गंगा नदी घर से ज़्यादा दूर नहीं है और लता भी काफ़ी पैदल चलती है, उसे अच्छा लगता है। विश्वविद्यालय के पास धोबी घाट तक का इलाका काफ़ी सुरक्षित है, हालाँकि वहाँ बंदरों का थोड़ा सा आतंक है।
क्या मीनाक्षी ने पापा के गोल्ड मेडल सेट करवा लिए हैं? मुझे यह विचार पसंद आया।
एक के लिए गले का हार और दूसरे के लिए इलायची के छोटे डिब्बे का ढक्कन। इस तरह आप पदक के दोनों तरफ लिखी हुई बातें पढ़ सकेंगे।
अब अरुण, मेरी बातों पर मुझसे नाराज़ मत होना, लेकिन मेरे पास
मैं आजकल लता के बारे में बहुत सोच रही हूँ, और मुझे लगता है कि आपको उसका आत्मविश्वास बढ़ाना चाहिए, जो उसकी पढ़ाई में शानदार प्रदर्शन के बावजूद उसमें कमी है। वह आपकी बातों से बहुत डरती है, कभी-कभी तो मैं भी डर जाती हूँ। मुझे पता है कि आपका इरादा कठोर होने का नहीं है, लेकिन वह एक संवेदनशील लड़की है और अब जब वह शादी की उम्र की हो गई है, तो वह और भी ज़्यादा संवेदनशील हो गई है। मैं दिल्ली में श्री गौर की बेटी कल्पना को पत्र लिखने जा रही हूँ—वह सबको जानती है, और शायद लता के लिए एक अच्छा रिश्ता ढूंढने में हमारी मदद कर सके। मुझे लगता है कि अब आपको भी इस मामले में मदद करनी चाहिए। मैंने देखा कि आप काम में कितनी व्यस्त थीं, इसलिए जब मैं कलकत्ता में थी तो मैंने इस बारे में बहुत कम बात की, लेकिन यह हमेशा मेरे मन में था। एक अच्छे परिवार का एक और रिश्ता बना हुआ लड़का, ज़रूरी नहीं कि खत्री हो, एक सपने के सच होने जैसा होगा। अब जब कॉलेज का साल लगभग खत्म हो गया है, तो लता के

पास समय होगा। मुझमें कई कमियाँ हो सकती हैं, लेकिन मुझे लगता है कि मैं एक प्यार करने वाली माँ हूँ, और मैं अपने सभी बच्चों को अच्छी तरह से बसते हुए देखना चाहती हूँ।

जल्द ही अप्रैल आ जाएगा और मुझे डर है कि मैं फिर से बहुत उदास हो जाऊंगी।

मेरा मन उदास है क्योंकि वह महीना तुम्हारे पिता की बीमारी और मृत्यु की यादें ताजा कर देगा, मानो कल ही की बात हो, जबकि आठ साल बीत चुके हैं और इस दौरान बहुत कुछ घटित हो चुका है। मैं जानती हूँ कि हजारों लोग इससे कहीं अधिक पीड़ा झेल चुके हैं और झेल रहे हैं, लेकिन हर इंसान को अपनी पीड़ा सबसे अधिक लगती है और मैं भी एक इंसान हूँ और आम दुख और निराशा की भावनाओं से पूरी तरह उबर नहीं पाई हूँ। लेकिन विश्वास करो, मैं इन सब से ऊपर उठने की पूरी कोशिश कर रही हूँ और (ईश्वर की कृपा से) मैं ऐसा कर पाऊँगी।

यहां अंतर्देशीय पत्र का प्रारूप समाप्त हुआ, और श्रीमती रूपा मेहरा ने पत्र के शीर्ष के पास खाली छोड़ी गई जगह को आड़ा-तिरछा भरना शुरू किया:

वैसे जगह कम है, इसलिए मेरे प्यारे अरुण, मैं अब यहीं समाप्त करती हूँ। चिंता मत करो।

जहां तक मेरी बात है, मेरा ब्लड शुगर लेवल ठीक है, मुझे पूरा यकीन है। प्राण मुझे कल सुबह यूनिवर्सिटी क्लिनिक में टेस्ट करवाने ले जा रहा है, और मैंने अपने खान-पान का पूरा ध्यान रखा है, सिवाय उस एक गिलास बहुत मीठे नींबू पानी के जो मैंने यात्रा के बाद थककर पहुँचने पर पिया था।

इसके बाद उन्होंने नॉन-एडहेसिव फ्लैप पर लिखना शुरू किया:

कल्पना को पत्र लिखने के बाद मैं धैर्य का खेल खेलूंगा।

वरुण के कार्ड। आप दोनों को ढेर सारा प्यार, वरुण को भी और मेरी प्यारी अपर्णा को भी ढेर सारा प्यार और चुंबन, और हां मीनाक्षी को भी।
आपका सदा प्रेम करने वाला,
एमए
अगले पत्र लिखते समय कलम की स्याही खत्म हो जाने के डर से श्रीमती रूपा मेहरा ने अपना पर्स खोला और उसमें से पहले से खुली स्याही की बोतल निकाली—पार्कर की क्विंक रॉयल वॉशेबल ब्लू—जो पर्स के बाकी सामान से कई परतों वाले कपड़े और सेलोफेन से अलग रखी हुई थी। एक बार उनकी आदत के अनुसार रखी गोंद की बोतल के रबर के ढक्कन से स्याही रिस गई थी, जिसके भयानक परिणाम हुए थे, और तब से उन्होंने गोंद को अपने पर्स से निकाल दिया था, लेकिन स्याही से उन्हें अब तक केवल मामूली परेशानियाँ ही हुई थीं।
श्रीमती रूपा मेहरा ने एक और अंतर्देशीय पत्र प्रपत्र निकाला, फिर निर्णय लिया कि वर्तमान मामले में यह एक अनुचित बचत होगी, और क्रीम रंग के कैम्ब्रिक बॉन्ड के एक अच्छी तरह से सजे हुए पैड पर लिखना शुरू किया:
प्रिय कल्पना,
तुम हमेशा से मेरी बेटी जैसी रही हो, इसलिए मैं तुम्हारे बारे में बात करूंगी।
दिल। तुम जानती हो कि पिछले एक साल से मैं लता को लेकर कितनी चिंतित रही हूँ। जैसा कि तुम जानती हो, तुम्हारे चाचा रघुबीर के निधन के बाद से मेरा समय कई मायनों में कठिन रहा है, और तुम्हारे पिता—जो अपने जीवनकाल में चाचा के बहुत करीब थे—उनके दुखद निधन के बाद से मेरे प्रति बहुत ही स्नेहपूर्ण रहे हैं। जब भी मैं दिल्ली आती हूँ, जो दुर्भाग्यवश आजकल बहुत कम होता है, तुम्हारे साथ रहकर मुझे खुशी

मिलती है, भले ही तुम्हारे घर के पीछे रात भर सियार भौंकते रहते हों, और तुम्हारी प्यारी माँ के देहांत के बाद से मैं तुम्हारे लिए माँ जैसी हो गई हूँ।

अब लता को अच्छी तरह से व्यवस्थित करने का समय आ गया है, और मुझे पूरी सावधानी बरतनी होगी।

एक अच्छा लड़का चाहिए। अरुण को इस मामले में कुछ ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए, लेकिन आप जानती ही हैं, वो काम और परिवार में इतना व्यस्त रहता है। वरुण मदद करने के लिए बहुत छोटा है और थोड़ा अस्थिर भी है। मेरी प्यारी कल्पना, आप लता से कुछ साल बड़ी हैं और मुझे उम्मीद है कि आप अपने पुराने कॉलेज के दोस्तों या दिल्ली में रहने वाले अन्य लोगों में से कुछ अच्छे नाम सुझा सकती हैं। शायद अक्टूबर में दिवाली की छुट्टियों में—या दिसंबर में क्रिसमस-नए साल की छुट्टियों में—लता और मैं दिल्ली आकर इस बारे में बात कर सकें? मैं बस यूं ही कह रही हूं। कृपया अपनी राय जरूर बताएं।

आपके प्यारे पिताजी कैसे हैं? मैं ब्रह्मपुर से लिख रही हूँ।

मैं सविता और प्राण के साथ रह रही हूँ। सब ठीक है, लेकिन गर्मी बहुत ज़्यादा है और अप्रैल-मई-जून का मौसम मुझे डरावना लग रहा है। काश तुम उनकी शादी में आ पातीं, लेकिन पिम्मी के अपेंडिक्स ऑपरेशन की वजह से मैं समझ सकती हूँ। मुझे यह जानकर चिंता हुई कि उसकी तबीयत ठीक नहीं थी। उम्मीद है अब सब ठीक हो गया होगा। मैं स्वस्थ हूँ और मेरा ब्लड शुगर भी ठीक है। मैंने तुम्हारी सलाह मानकर नए चश्मे बनवा लिए हैं और अब मैं बिना किसी परेशानी के पढ़ और लिख सकती हूँ।

कृपया जल्द से जल्द इस पते पर लिखें। मैं मार्च महीने के पूरे समय यहीं रहूंगा।

अप्रैल में, शायद मई में भी, जब तक लता के इस साल के नतीजे नहीं आ जाते।

अत्यंत स्नेह के साथ,

आपका सदा,

(श्रीमती रूपा मेहरा द्वारा)

पुनश्च: लता कभी-कभी यह सोचती है कि वह शादी नहीं करेगी। आशा है आप उसकी ऐसी सोच को दूर कर देंगे। मैं समझती हूँ कि सगाई टूटने के बाद आप जल्दी शादी के बारे में कैसा महसूस करते हैं, लेकिन एक अलग तरीके से मैं यह भी मानती हूँ कि प्यार करके खो देना बेहतर है। हालाँकि, प्यार हमेशा सुखद नहीं होता।

पी.एस. हमारे लिए दिल्ली आने के लिए नव वर्ष की तुलना में दिवाली बेहतर रहेगी, क्योंकि यह मेरी वार्षिक यात्रा योजनाओं के साथ बेहतर तालमेल बिठाती है, लेकिन आप जो भी समय बताएं, वह ठीक है।

प्यार से,

एमए

श्रीमती रूपा मेहरा ने अपना पत्र (और अपने हस्ताक्षर—वह चाहती थीं कि सभी युवा उन्हें 'माँ' कहकर पुकारें) देखा, उसे करीने से चार हिस्सों में मोड़ा और उसी रंग के लिफाफे में बंद कर दिया। उन्होंने अपने बैग से एक डाक टिकट निकाला, उसे ध्यान से चाटा, लिफाफे पर चिपकाया और पीछे की तरफ कल्पना और प्राण का पता (याद से) लिख दिया। फिर उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं और कुछ मिनटों तक एकदम शांत बैठी रहीं। दोपहर का मौसम सुहावना था। थोड़ी देर बाद उन्होंने अपने बैग से ताश के पत्तों का पैकेट निकाला। जब मंसूर चाय लेने और हिसाब-किताब करने आया, तो उसने देखा कि श्रीमती रूपा मेहरा धैर्य का खेल खेलते-खेलते सो गई थीं।

1.15

इम्पीरियल बुक डिपो शहर की दो बेहतरीन किताबों की दुकानों में से एक थी और यह नबीगंज में स्थित थी, जो पुराने ब्रह्मपुर की भूलभुलैयानुमा गलियों और प्राचीन, भीड़भाड़ वाले इलाकों से पहले आधुनिकता का आखिरी गढ़ थी। हालांकि यह विश्वविद्यालय परिसर से कुछ मील दूर थी, फिर भी छात्रों और शिक्षकों के बीच इसकी लोकप्रियता यूनिवर्सिटी एंड एलाइड बुकशॉप से कहीं अधिक थी, जो परिसर से कुछ ही मिनटों की दूरी पर थी। इम्पीरियल बुक डिपो को दो भाई, यशवंत और बलवंत चलाते थे, जो अंग्रेजी में लगभग अनपढ़ थे, लेकिन (अपनी समृद्ध पृष्ठभूमि के बावजूद) इतने ऊर्जावान और उद्यमी थे कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। उनके पास शहर का सबसे अच्छा संग्रह था और वे अपने ग्राहकों के प्रति बेहद मददगार थे। अगर कोई किताब दुकान में उपलब्ध नहीं होती थी, तो वे ग्राहक से ही ऑर्डर फॉर्म पर उसका नाम लिखने को कहते थे।

सप्ताह में दो बार, एक गरीब विश्वविद्यालय के छात्र को नई आई किताबों को निर्धारित अलमारियों पर लगाने के लिए वेतन दिया जाता था। और चूंकि किताबों की दुकान अपने अकादमिक और सामान्य संग्रह पर गर्व करती थी, इसलिए दुकानदार बेझिझक इधर-उधर घूमने आए विश्वविद्यालय के शिक्षकों को रोकते, उन्हें चाय पिलाते और प्रकाशकों की सूचियाँ देते, और उनसे उन किताबों के नाम लिखवाते जिन्हें वे दुकान को मंगवाना चाहते थे। ये शिक्षक इस बात से खुश थे कि उनके पाठ्यक्रमों के लिए आवश्यक किताबें उनके छात्रों को आसानी से उपलब्ध हो सकेंगी। उनमें से कई विश्वविद्यालय और संबद्ध किताबों की दुकान के पुराने, सुस्त, अनुत्तरदायी और मनमानी भरे रवैये से नाराज़ थे।

क्लास खत्म होने के बाद, लता और मालती, दोनों अपने रोज़ाना के सलवार-कमीज़ में, नबीगंज घूमने और ब्लू डेन्यूब कॉफ़ी हाउस में एक

कप कॉफ़ी पीने चली गईं। विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच 'गंजिंग' के नाम से मशहूर इस गतिविधि का आनंद वे लगभग हफ्ते में एक बार ही ले पाती थीं। इंपीरियल बुक डिपो के पास से गुज़रते हुए, वे उसकी ओर खिंची चली गईं। दोनों अपनी-अपनी पसंदीदा अलमारियों और विषयों की ओर चल पड़ीं। मालती सीधे उपन्यासों की ओर बढ़ीं, लता कविता की ओर। हालांकि, रास्ते में वे विज्ञान की अलमारियों के पास रुक गईं, इसलिए नहीं कि उन्हें विज्ञान की ज़्यादा समझ थी, बल्कि इसलिए कि उन्हें विज्ञान की ज़्यादा समझ नहीं थी। जब भी वे कोई वैज्ञानिक किताब खोलतीं और समझ से परे शब्दों और प्रतीकों से भरे पूरे पैराग्राफ देखतीं, तो उन्हें ज्ञान के उस विशाल क्षेत्र को देखकर आश्चर्य होता जो उनकी समझ से परे था—दुनिया को वस्तुनिष्ठ अर्थ देने के इतने सारे नेक और उद्देश्यपूर्ण प्रयासों का सार। उन्हें यह एहसास अच्छा लगता था; यह उनके गंभीर मिजाज के अनुकूल था; और आज दोपहर वे गंभीर मूड में थीं। उन्होंने एक किताब उठाई और एक पैराग्राफ पढ़ा:

डी मोइवर के सूत्र से यह सिद्ध होता है कि zn = rn (cos n + i sin n)□ अतः, यदि हम एक जटिल संख्या z को मूल बिंदु के चारों ओर त्रिज्या r के एक वृत्त का वर्णन करने दें, तो zn त्रिज्या rn के एक वृत्त का n बार पूर्ण वर्णन करेगा, क्योंकि z अपने वृत्त का एक बार वर्णन करता है। हमें यह भी याद है कि r, z का मापांक, जिसे |z| लिखा जाता है, O से z की दूरी बताता है, और यदि z'=x'+iy', तो |z-z'| z और z' के बीच की दूरी है। इन प्रारंभिक जानकारियों के साथ हम प्रमेय के प्रमाण की ओर बढ़ सकते हैं।

इन वाक्यों में ऐसी कौन सी बात थी जो उसे प्रसन्न कर रही थी, यह वह स्वयं नहीं जानती थी, लेकिन उनमें गंभीरता, सुकून और अनिवार्यता का भाव था। उसका मन वरुण और उसकी गणित की पढ़ाई की ओर चला

गया। उसे उम्मीद थी कि शादी के अगले दिन उससे कही गई उसकी संक्षिप्त बातें उसके लिए कुछ सकारात्मक रही होंगी। उसे उसका हौसला बढ़ाने के लिए उसे अक्सर पत्र लिखने चाहिए थे, लेकिन परीक्षाएँ नज़दीक होने के कारण उसके पास किसी भी चीज़ के लिए समय नहीं था। मालती के आग्रह पर ही, जो उससे भी ज़्यादा व्यस्त थी, वह गंजिंग करने गई थी।

उसने गंभीरता से उस अनुच्छेद को दोबारा पढ़ा। 'हम यह भी याद करते हैं' और 'इन प्रारंभिक बातों के साथ' शब्दों ने उसे इन सच्चाइयों और रहस्यों के रचयिता के साथ एक समझौते में बांध दिया। शब्द आश्वस्त करने वाले थे, और इसलिए आश्वस्त करने वाले थे: इस अनिश्चित दुनिया में भी चीजें वैसी ही थीं जैसी वे थीं, और वह वहीं से आगे बढ़ सकती थी। वह अपने आस-पास की चीजों से बेखबर होकर खुद ही मुस्कुरा उठी। किताब को पकड़े हुए उसने ऊपर देखा। और इसी तरह एक युवक, जो उससे कुछ ही दूरी पर खड़ा था, अनजाने में उसकी मुस्कान में शामिल हो गया। वह सुखद रूप से चौंक गया और उसने भी लता को देखकर मुस्कुरा दिया। लता ने उसे घूरकर देखा और फिर से पन्ने पर ध्यान केंद्रित कर लिया। लेकिन वह उस पर ध्यान नहीं दे पा रही थी, और कुछ क्षणों बाद, उसने किताब को शेल्फ पर वापस रख दिया और कविता अनुभाग की ओर चल पड़ी।

लता, प्रेम के बारे में चाहे जो भी सोचती हो, उसे प्रेम कविताएँ पसंद थीं। 'मॉड' उसकी पसंदीदा कविताओं में से एक थी। उसने टेनीसन की एक किताब के पन्ने पलटने शुरू किए।

लता ने गौर किया कि लंबे कद के उस युवक के बाल हल्के घुंघराले और काले थे, और उसकी नज़रें बेहद आकर्षक थीं, मानो उसकी नज़रें बाज की तरह नुकीली हों। ऐसा लग रहा था कि उसे गणित के साथ-साथ

कविता में भी उतनी ही दिलचस्पी थी, क्योंकि कुछ मिनट बाद ही लता ने देखा कि उसका ध्यान कविता की अलमारियों की ओर चला गया था और वह संकलनों को पलट रहा था। लता को महसूस हुआ कि उसकी नज़रें बीच-बीच में उस पर पड़ रही थीं। इससे उसे चिढ़ हुई और उसने ऊपर नहीं देखा। जब उसने खुद को रोक नहीं पाई, तब उसने देखा कि वह मासूमियत से अपनी पढ़ाई में मग्न था। वह उसकी किताब के कवर पर नज़र डालने से खुद को रोक नहीं पाई। वह पेंगुइन पत्रिका की 'समकालीन कविता' थी। अब उसने ऊपर देखा, और स्थिति उलट गई। इससे पहले कि वह दोबारा नीचे देख पाती, उसने कहा: 'किसी का कविता और गणित दोनों में दिलचस्पी रखना असामान्य बात है।'

‘क्या ऐसा है?’ लता ने तीखे स्वर में कहा।

‘कौरेंट और रॉबिन्स—यह एक उत्कृष्ट कृति है।’

‘ओह?’ लता ने कहा। फिर, यह समझते हुए कि वह युवक उस गणित की किताब की बात कर रहा था जिसे उसने यूं ही शेल्फ से उठा लिया था, उसने बात खत्म करते हुए कहा, ‘क्या सच में?’

लेकिन वह युवक बातचीत जारी रखने के लिए उत्सुक था।

उन्होंने आगे कहा, 'मेरे पिता ऐसा कहते हैं। पाठ्यपुस्तक के रूप में नहीं, बल्कि विषय के विभिन्न पहलुओं के व्यापक परिचय के रूप में। वे विश्वविद्यालय में गणित पढ़ाते हैं।'

लता ने चारों ओर देखा कि क्या मालती सुन रही है। लेकिन मालती दुकान के सामने अपनी चीज़ें देखने में मग्न थी। और कोई भी छुपकर नहीं सुन रहा था; साल के इस समय—या दिन के इस समय—दुकान में ज़्यादा भीड़ नहीं थी।

लता ने दृढ़ता से कहा, 'सच कहूँ तो, मुझे गणित में कोई दिलचस्पी नहीं है।' युवक थोड़ा उदास हो गया, फिर उसने हिम्मत जुटाई और

सौहार्दपूर्वक कहा, 'आप जानती हैं, मुझे भी नहीं। मैं खुद इतिहास का छात्र हूँ।'

लता उसकी दृढ़ता देखकर चकित रह गई और सीधे उसकी ओर देखते हुए बोली, 'मुझे अब जाना होगा। मेरी दोस्त मेरा इंतज़ार कर रही है।' हालाँकि, यह कहते हुए भी, वह इस बात पर ध्यान दिए बिना नहीं रह सकी कि लहराते बालों वाला यह युवक कितना संवेदनशील, यहाँ तक कि कमज़ोर भी लग रहा था। यह एक किताबों की दुकान में एक अनजान, अपरिचित लड़की से बात करने के उसके दृढ़ और साहसी व्यवहार के विपरीत प्रतीत हो रहा था।

'मुझे माफ करना, शायद मैंने आपको परेशान किया?' उसने माफी मांगते हुए कहा, मानो वह उसके मन की बात पढ़ रहा हो।

'नहीं,' लता ने कहा। वह दुकान के सामने जाने ही वाली थी कि उसने घबराई हुई मुस्कान के साथ जल्दी से कहा, 'तो क्या मैं आपका नाम पूछ सकता हूँ?'

लता ने संक्षेप में कहा, 'लता,' हालांकि उसे 'उस स्थिति में' कहने का तर्क समझ में नहीं आया।

'क्या तुम मुझसे मेरा नहीं पूछोगे?' युवक ने मुस्कुराते हुए दोस्ताना अंदाज में पूछा।

'नहीं,' लता ने बड़ी विनम्रता से कहा और मालती के पास लौट गई, जिसके हाथ में कुछ पेपरबैक उपन्यास थे।

'वह कौन है?' मलाती ने रहस्यमयी स्वर में फुसफुसाते हुए पूछा।

लता ने थोड़ी घबराहट से पीछे मुड़कर देखते हुए कहा, 'बस कोई था। मुझे नहीं पता। वो मेरे पास आया और बातचीत शुरू कर दी। जल्दी करो। चलो चलते हैं। मुझे भूख लग रही है। और प्यास भी। यहाँ बहुत गर्मी है।'

काउंटर पर बैठा आदमी लता और मालती को उसी जोश और दोस्ताना

अंदाज़ से देख रहा था, जैसा वह नियमित ग्राहकों के साथ करता था। उसकी बाईं हथेली की छोटी उंगली उसके कान के अंदर मैल ढूंढ रही थी। उसने विनम्रता से सिर हिलाया और मालती से हिंदी में कहा:

'मालती जी, परीक्षाएं नजदीक आ रही हैं और आप अभी भी उपन्यास खरीद रही हैं? बारह आना और एक रुपया, चार आना मिलाकर दो रुपये होते हैं। मुझे ऐसा नहीं होने देना चाहिए। आप मेरे लिए बेटियों के समान हैं।'

'बलवंतजी, अगर हम आपके उपन्यास नहीं पढ़ेंगे तो आपका धंधा चौपट हो जाएगा। हम आपकी समृद्धि के लिए अपने परीक्षा परिणामों की बलि दे रहे हैं,' मालती ने कहा।

'मैं नहीं हूँ,' लता ने कहा। वह युवक शायद किताबों की अलमारी के पीछे गायब हो गया था, क्योंकि वह उसे कहीं भी नहीं देख पा रही थी।

'शाबाश बच्ची, शाबाश बच्ची,' बलवंत ने कहा, संभवतः दोनों का जिक्र करते हुए।

दरअसल, हम कॉफी लेने जा रहे थे और अनजाने में आपकी दुकान में आ गए,' मालती ने कहा, 'इसलिए मैं कुछ नहीं लाई—' उसने वाक्य अधूरा छोड़ दिया और बलवंत पर एक मनमोहक मुस्कान बिखेर दी।

'नहीं, नहीं, इसकी ज़रूरत नहीं है—आप इसे बाद में दे सकते हैं,' बलवंत ने कहा। उन्होंने और उनके भाई ने कई छात्रों को आसानी से ऋण दिया। जब उनसे पूछा गया कि क्या इससे उनके व्यवसाय पर बुरा असर नहीं पड़ रहा है, तो वे जवाब देते कि उन्होंने कभी भी किसी ऐसे व्यक्ति पर भरोसा करके किताबें नहीं खरीदीं, जिससे उन्हें नुकसान हुआ हो। और, निश्चित रूप से, वे खुद भी अच्छा कर रहे थे। लता को वे एक समृद्ध मंदिर के पुजारियों की याद दिलाते थे। जिस श्रद्धा से वे अपने पुस्तकों का ध्यान रखते थे, उससे यह तुलना और भी पुष्ट होती थी।

दुकान से बाहर निकलते ही मलाती ने दृढ़ता से कहा, 'चूंकि तुम्हें अचानक भूख लग रही है, हम सीधे नीले डेन्यूब नदी पर चल रहे हैं। और वहाँ तुम मुझे ठीक-ठीक बताओगी कि उस बदमाश और तुम्हारे बीच क्या हुआ था।'

'कुछ नहीं,' लता ने कहा।

'हा!' मलाती ने स्नेहपूर्ण तिरस्कार के साथ कहा। 'तो तुम दोनों ने किस बारे में बात की?'

लता ने कहा, 'कुछ नहीं। सच में, मालती, वो बस आया और बकवास करने लगा, और मैंने जवाब में कुछ नहीं कहा। या एक-एक शब्द भी नहीं। उबले हुए आलू में मिर्च मत डालो।'

वे नबीगंज में टहलते रहे।

कुछ मिनट बाद मलाती ने कहा, 'काफी लंबा है।'

लता ने कुछ नहीं कहा।

'बिल्कुल अंधेरा नहीं,' मलाती ने कहा।

लता को इसका जवाब देना भी उचित नहीं लगा। उपन्यासों में 'अंधेरा' शब्द का अर्थ बालों से होता था, त्वचा से नहीं।

'लेकिन बहुत ही सुंदर,' मालती ने दृढ़ता से कहा।

लता ने अपनी सहेली की ओर व्यंग्यात्मक चेहरा बनाया, लेकिन खुद को आश्चर्यचकित करते हुए, उसे उसका वर्णन काफी पसंद आ रहा था।

'उसका नाम क्या है?' मलाती ने आगे पूछा।

'मुझे नहीं पता,' लता ने जूते की दुकान के कांच के सामने खुद को देखते हुए कहा।

मलाती लता की अज्ञानता पर चकित थी। 'तुमने उससे पंद्रह मिनट बात की और तुम्हें उसका नाम नहीं पता?'

लता ने कहा, 'हमने पंद्रह मिनट तक बात नहीं की। और मैंने तो लगभग

कुछ भी नहीं बोला। अगर तुम उससे इतनी ही प्रभावित हो, तो क्यों न तुम वापस इंपीरियल बुक डिपो जाओ और उससे उसका नाम पूछ लो? तुम्हारी तरह, उसे भी किसी से भी बात करने में कोई झिझक नहीं है।'
तो आपको वो पसंद नहीं है?
लता चुप रही। फिर उसने कहा, 'नहीं, मुझे वह पसंद नहीं है। मुझे उसे पसंद करने का कोई कारण नहीं है।'
'पुरुषों के लिए हमसे बात करना इतना आसान नहीं होता,' मलाती ने कहा। 'हमें उनके प्रति इतना कठोर नहीं होना चाहिए।'
‘मलाती कमजोर लिंग की रक्षा कर रही है!’ लता ने कहा। ‘मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं यह दिन देखूंगी।’
‘विषय मत बदलो,’ मलाती ने कहा। ‘वह ढीठ किस्म का नहीं लग रहा था। मुझे पता है। मेरे पांच सौ गुना अनुभव पर भरोसा करो।’
लता का चेहरा लाल हो गया। उसने कहा, 'उसे मुझसे बात करना काफी आसान लग रहा था। मानो मैं उस तरह की लड़की हूँ जो...'
‘कौन क्या?’
लता ने अनिश्चितता से कहा, 'किससे बात की जा सकती है?' उसकी माँ की नाराज़गी के ख्याल उसके मन में कौंध गए। उसने इन ख्यालों को मन से निकालने की कोशिश की।
ब्लू डेन्यूब में प्रवेश करते हुए मलाती ने सामान्य से थोड़ा शांत स्वर में कहा, "खैर, वह वाकई देखने में बहुत अच्छा है।"
वे नीचे बैठ गए।
'बाल तो अच्छे हैं,' मलाती ने मेनू पर नजर डालते हुए कहा।
लता ने कहा, 'चलो ऑर्डर करते हैं।' मलाती को 'अच्छा' शब्द बहुत पसंद था। उन्होंने कॉफी और पेस्ट्री का ऑर्डर दिया।
पांच मिनट बाद, मलाती ने हंसते हुए कहा, 'खूबसूरत आंखें हैं।' अब वह

लता की जानबूझकर की गई अनुत्तरदायी मुद्रा पर हंस रही थी।
लता को याद था कि जब उसने सीधे उसकी ओर देखा था तो वह युवक कुछ समय के लिए घबरा गया था।
'हां,' उसने सहमति जताते हुए कहा। 'लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता है? मेरी आंखें भी खूबसूरत हैं, और एक जोड़ी ही काफी है।'

1.16

जहां एक ओर उनकी सास धैर्य की भूमिका निभा रही थीं और उनकी साली मालती के भ्रामक प्रश्नों का उत्तर दे रही थीं, वहीं दूसरी ओर एक आदर्श पति और दामाद, डॉ. प्राण कपूर, विभागीय समस्याओं से जूझ रहे थे, जिन्हें लेकर वे अपने परिवार पर बोझ डालने से हिचकिचा रहे थे।
प्राण, वैसे तो आमतौर पर शांत और दयालु स्वभाव का व्यक्ति था, लेकिन अंग्रेजी विभाग के प्रमुख प्रोफेसर मिश्रा से उसकी घृणा इतनी गहरी थी कि वह लगभग बीमार पड़ जाता था। प्रोफेसर ओ.पी. मिश्रा एक विशालकाय, पीले रंग का, चिकना-चुपड़ा व्यक्ति था, जो अपने स्वभाव से ही राजनीतिक और चालाक था। अंग्रेजी विभाग की पाठ्यक्रम समिति के चार सदस्य आज दोपहर स्टाफ रूम में एक अंडाकार मेज के चारों ओर बैठे थे। आज का दिन असामान्य रूप से गर्म था। एकमात्र खिड़की खुली थी (जिससे एक धूल से ढका लेबर्नम का पेड़ दिखाई दे रहा था), लेकिन हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी; सभी असहज लग रहे थे, लेकिन प्रोफेसर मिश्रा को पसीना आ रहा था जो उनके माथे पर जमा होकर उनकी पतली भौहों को गीला कर रहा था और उनकी बड़ी नाक के किनारों से टपक रहा था। उनके होंठ मधुरता से दबे हुए थे और वे अपनी सौम्य, ऊँची आवाज़ में कह रहे थे, 'डॉ. कपूर, आपकी बात सही है, लेकिन मुझे लगता है कि हमें थोड़ा समझाने की ज़रूरत होगी।'
मुद्दा आधुनिक ब्रिटिश साहित्य पर आधारित शोध पत्र के पाठ्यक्रम में

जेम्स जॉयस को शामिल करने का था। प्राण कपूर दो सत्रों से पाठ्यक्रम समिति पर इस बात के लिए दबाव डाल रहे थे—जबसे उन्हें सदस्य नियुक्त किया गया था—और अंततः समिति ने इस पर विचार करने का निर्णय लिया।

प्राण सोचने लगा कि आखिर उसे प्रोफेसर मिश्रा से इतनी नफरत क्यों थी? हालांकि प्राण को पांच साल पहले उनके पूर्ववर्ती प्रोफेसर मिश्रा के नेतृत्व में व्याख्याता पद पर नियुक्त किया गया था, लेकिन विभाग के वरिष्ठ सदस्य होने के नाते प्रोफेसर मिश्रा की नियुक्ति में ज़रूर भूमिका रही होगी। जब प्राण पहली बार विभाग में आए थे, तो प्रोफेसर मिश्रा ने उनके प्रति विशेष स्नेह दिखाया था, यहां तक कि उन्हें अपने घर चाय पर भी आमंत्रित किया था। श्रीमती मिश्रा एक छोटी कद-काठी की, व्यस्त और चिंतित महिला थीं, और प्राण उन्हें पसंद करता था। लेकिन प्रोफेसर मिश्रा के खुले दिल से स्नेह करने, उनके भारी-भरकम शरीर और आकर्षक व्यक्तित्व के बावजूद, प्राण को कुछ खतरनाक सा महसूस हुआ: उनकी पत्नी और दो छोटे बेटे, जैसा कि उसे लगता था, अपने पिता से डरे हुए थे।

प्राण कभी समझ नहीं पाए कि लोग सत्ता से इतना प्रेम क्यों करते हैं, पर उन्होंने इसे जीवन की एक सच्चाई के रूप में स्वीकार कर लिया था। उदाहरण के लिए, उनके पिता सत्ता के प्रति अत्यधिक आकर्षित थे: सत्ता के प्रयोग में उन्हें जो आनंद मिलता था, वह उनके वैचारिक सिद्धांतों को साकार करने की खुशी से कहीं अधिक था। महेश कपूर राजस्व मंत्री बनकर खुश थे, और शायद वे पूर्व प्रदेश के मुख्यमंत्री या दिल्ली में प्रधानमंत्री नेहरू के मंत्रिमंडल में मंत्री बनकर भी प्रसन्न होते। सिरदर्द, अत्यधिक काम, ज़िम्मेदारी, अपने समय पर नियंत्रण का अभाव, शांत मन से दुनिया का चिंतन करने के अवसर का पूर्ण अभाव: ये सब बातें

उनके लिए महत्वहीन थीं। शायद यह कहना सही होगा कि महेश कपूर ने ब्रिटिश भारत की जेल में अपनी कोठरी के शांत वातावरण में दुनिया का पर्याप्त चिंतन कर लिया था, और अब उन्हें वही चाहिए था जो वास्तव में उन्हें प्राप्त था: सत्ता चलाने में एक सक्रिय भूमिका। ऐसा लग रहा था मानो पिता और पुत्र ने हिंदू जीवन योजना के दूसरे और तीसरे चरण का आपस में आदान-प्रदान कर लिया हो: पिता दुनिया में उलझे हुए थे, पुत्र दार्शनिक वैराग्य के जीवन में स्वयं को अलग करना चाहते थे।

प्राण, चाहे उसे पसंद हो या न हो, शास्त्रों के अनुसार गृहस्थ था। वह सविता की संगति का आनंद लेता था, उसकी स्नेह, स्नेह और सुंदरता में डूबा रहता था, और अपने बच्चे के जन्म की प्रतीक्षा करता था। उसने अपने पिता पर आर्थिक सहायता के लिए निर्भर न रहने का दृढ़ निश्चय कर लिया था, यद्यपि विभागीय व्याख्याता का छोटा वेतन—200 रुपये प्रति माह—मुश्किल से गुजारा कर पाता था—जैसा कि वह कभी-कभी निराशा में खुद से कहता था, 'गुज़ारा करना मुश्किल'। लेकिन उसने विभाग में हाल ही में रिक्त हुए एक पाठशास्त्री पद के लिए आवेदन किया था; उस पद का वेतन इतना कम नहीं था, और यह शैक्षणिक पदानुक्रम में एक उन्नति होती। प्राण को पदवी की प्रतिष्ठा की परवाह नहीं थी, लेकिन वह जानता था कि पदनाम से कार्यों में सहायता मिलती है। वह कुछ कार्यों को पूरा होते देखना चाहता था, और पाठशास्त्री होने से उसे उन्हें पूरा करने में मदद मिलेगी। उसे विश्वास था कि वह इस पद के योग्य है, लेकिन उसने यह भी जान लिया था कि योग्यता कई मानदंडों में से केवल एक है।

बचपन से ही उन्हें बार-बार अस्थमा की बीमारी होती रही थी, जिसके कारण वे शांत स्वभाव के हो गए थे। उत्तेजना से उनकी सांस फूल जाती थी, दर्द होता था और कमजोरी महसूस होती थी, इसलिए उन्होंने उत्तेजना

को लगभग त्याग दिया था। यह इसका सीधा-सा तर्क था, लेकिन यह रास्ता आसान नहीं था। उन्होंने धैर्य का अध्ययन किया था और धीरे-धीरे अभ्यास करके वे धैर्यवान बन गए थे। लेकिन प्रोफेसर ओ.पी. मिश्रा ने प्राण के मन पर इस तरह गहरा प्रभाव डाला था जिसकी कल्पना प्राण ने कभी नहीं की थी।

'प्रोफेसर मिश्रा,' प्राण ने कहा, 'मुझे खुशी है कि समिति ने इस प्रस्ताव पर विचार करने का निर्णय लिया है, और मुझे इस बात की अत्यंत प्रसन्नता है कि इसे आज के एजेंडा में दूसरे स्थान पर रखा गया है और अंततः इस पर चर्चा हो रही है। मेरा मुख्य तर्क बहुत सरल है। आपने इस विषय पर मेरा नोट पढ़ा है'—उन्होंने मेज के चारों ओर डॉ. गुप्ता और डॉ. नारायणन की ओर इशारा करते हुए कहा—'और मुझे पूरा विश्वास है कि आप समझेंगे कि मेरे सुझाव में कुछ भी क्रांतिकारी नहीं है।' उन्होंने अपने सामने साइक्लोस्टाइल किए गए पन्नों के हल्के नीले रंग के अक्षरों पर नज़र डाली। 'जैसा कि आप देख सकते हैं, हमारे पास इक्कीस लेखक हैं जिनकी रचनाएँ हम अपने बी.ए. छात्रों के लिए आधुनिक ब्रिटिश साहित्य की उचित समझ प्राप्त करने के लिए पढ़ना आवश्यक मानते हैं। लेकिन इनमें जॉयस का नाम नहीं है। और, मैं यह भी कहना चाहूँगा, लॉरेंस का भी नाम नहीं है। ये दो लेखक—'

'क्या यह बेहतर नहीं होगा,' प्रोफेसर मिश्रा ने अपनी आंख के कोने से एक पलक हटाते हुए बीच में ही टोकते हुए कहा, 'क्या यह बेहतर नहीं होगा कि हम फिलहाल जॉयस पर ध्यान केंद्रित करें? हम अगले महीने अपने सत्र में लॉरेंस पर चर्चा करेंगे—ग्रीष्मकालीन अवकाश के लिए स्थगित होने से पहले।'

प्राण ने मेज पर बैठे लोगों से समर्थन की तलाश करते हुए कहा, 'ये दोनों मामले आपस में जुड़े हुए हैं, निश्चित रूप से।' डॉ. नारायणन कुछ कहने ही

वाले थे कि प्रोफेसर मिश्रा ने यह बात कही:

'लेकिन इस एजेंडा पर नहीं, डॉ. कपूर, इस एजेंडा पर नहीं।' उन्होंने प्राण की ओर मीठी मुस्कान के साथ देखा और उनकी आँखों में चमक आ गई। फिर उन्होंने अपने विशाल सफेद हाथों को हथेलियाँ नीचे की ओर करके मेज पर रखा और कहा, 'लेकिन जब मैंने इतनी बेरुखी से आपको टोका, तब आप क्या कह रहे थे?'

प्राण ने प्रोफेसर मिश्रा के गोल-मटोल शरीर से निकलते हुए विशाल सफेद हाथों को देखा और सोचा, मैं भले ही पतला और तंदुरुस्त दिखता हूँ, पर ऐसा नहीं हूँ, और यह आदमी, अपने सुस्त पीलेपन और भारी-भरकम शरीर के बावजूद, बहुत ही सहनशक्ति वाला है। अगर मुझे इस नाप पर सहमति लेनी है तो मुझे शांत और संयमित रहना होगा।

उन्होंने मेज के चारों ओर मुस्कुराते हुए कहा: 'जॉयस एक महान लेखक हैं। यह अब सर्वमान्य है। उदाहरण के लिए, अमेरिका में उन पर अकादमिक अध्ययन लगातार बढ़ रहा है। मुझे लगता है कि उन्हें हमारे पाठ्यक्रम में भी शामिल किया जाना चाहिए।'

'डॉ. कपूर,' ऊँची आवाज़ ने जवाब दिया, 'ब्रह्मांड के प्रत्येक बिंदु को मान्यता के प्रश्न पर स्वयं निर्णय लेना होगा, तभी किसी मान्यता को सार्वभौमिक माना जा सकता है। भारत में हमें अपनी स्वतंत्रता पर गर्व है —यह स्वतंत्रता कई पीढ़ियों के सर्वश्रेष्ठ पुरुषों द्वारा भारी बलिदान से प्राप्त की गई है, और इस तथ्य को मुझे एक और भी महान पिता के इस महान पुत्र के सामने दोहराने की आवश्यकता नहीं है। हमें अमेरिकी शोध-पत्रों की अंधाधुंध व्याख्या को अपनी प्राथमिकताओं को निर्धारित करने देने से पहले संकोच करना चाहिए। आपका क्या कहना है, डॉ. नारायणन?'

डॉ. नारायणन, जो एक रोमांटिक पुनरुत्थानवादी थे, कुछ क्षणों के लिए

अपने अंतर्मन में गहराई से झांकते हुए प्रतीत हुए। उन्होंने सोच-समझकर कहा, 'यह एक अच्छा मुद्दा है,' और जोर देने के लिए अपना सिर एक तरफ हिलाया।

प्रोफेसर मिश्रा ने आगे कहा, 'अगर हम अपने साथियों के साथ कदम मिलाकर नहीं चल पाते हैं, तो शायद इसका कारण यह है कि हम एक अलग ही धुन सुन रहे हैं। आइए, हम भारत में जो संगीत सुन रहे हैं, उसी की धुन पर चलें। एक अमेरिकी के शब्दों में कहें तो,' उन्होंने कहा।

प्राण ने मेज की ओर देखा और धीमी आवाज़ में कहा: 'मैं जॉयस को महान लेखक इसलिए कहता हूँ क्योंकि मैं मानता हूँ कि वे महान लेखक हैं, न कि इसलिए कि अमेरिकी क्या कहते हैं।' उन्हें जॉयस से अपनी पहली मुलाकात याद आई: इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पीएचडी की मौखिक परीक्षा से एक महीने पहले एक मित्र ने उन्हें यूलिसिस पढ़ने के लिए दिया था और परिणामस्वरूप उन्होंने अपने विषय को इस हद तक नज़रअंदाज़ कर दिया था कि उनका अकादमिक करियर खतरे में पड़ गया था।

डॉ. नारायणन ने उनकी ओर देखा और अचानक अप्रत्याशित रूप से उनका समर्थन करते हुए बोले, "'द डेड' एक बेहतरीन कहानी है। मैंने इसे दो बार पढ़ा है।"

प्राण ने कृतज्ञता भरी नजरों से उसकी ओर देखा।

प्रोफेसर मिश्रा ने डॉ. नारायणन के छोटे, गंजे सिर को लगभग प्रशंसा भरी निगाहों से देखा। 'बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया,' उन्होंने कहा, मानो किसी छोटे बच्चे की सराहना कर रहे हों। 'लेकिन'—और उनकी आवाज़ में तीखापन आ गया—'जॉयस की रचनाओं में "द डेड" से कहीं अधिक है। उनकी रचना है "यूलिसिस", जिसे पढ़ना असंभव है। उनकी रचना है "फिनिगन्स वेक", जो पढ़ने से भी कहीं अधिक कठिन है। इस तरह का

लेखन हमारे छात्रों के लिए अच्छा नहीं है। यह उन्हें एक तरह से लापरवाही और व्याकरण की गलतियों से भरी लेखन शैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। और "यूलिसिस" के अंत के बारे में क्या? हमारे पाठ्यक्रमों में ऐसी युवा और भावुक महिलाएं हैं जिन्हें जीवन की उच्चतर बातों से परिचित कराना हमारा दायित्व है, डॉ. कपूर—उदाहरण के लिए आपकी प्यारी भाभी। क्या आप "यूलिसिस" जैसी किताब उनके हाथों में देंगे?' प्रोफेसर मिश्रा ने सौम्य मुस्कान के साथ जवाब दिया।

'हां,' प्राण ने सरलता से कहा।

डॉ. नारायणन रुचि दिखाते हुए दिखे। डॉ. गुप्ता, जिनकी मुख्य रुचि एंग्लो-सैक्सन और मध्यकालीन अंग्रेजी में थी, अपने नाखूनों को देख रहे थे।

'एक युवा शिक्षक—एक युवा व्याख्याता—से मिलकर बहुत खुशी हुई'—प्रोफेसर मिश्रा ने पद के प्रति सजग पाठक डॉ. गुप्ता की ओर देखा—'जो अपने विचारों में इतने, क्या कहूँ, इतने, स्पष्टवादी हैं और अपने सहयोगियों के साथ, चाहे वे कितने भी वरिष्ठ क्यों न हों, उन्हें साझा करने के लिए इतने इच्छुक हैं। यह उत्साहजनक है। बेशक, हम असहमत हो सकते हैं; लेकिन भारत एक लोकतंत्र है और हम अपने मन की बात कह सकते हैं। . . .' वे कुछ क्षणों के लिए रुके और खिड़की से बाहर धूल से भरे लेबर्नम के पेड़ को देखने लगे। 'एक लोकतंत्र। हाँ। लेकिन लोकतंत्रों को भी कठिन विकल्पों का सामना करना पड़ता है। उदाहरण के लिए, विभाग का केवल एक ही प्रमुख हो सकता है। और जब कोई पद रिक्त होता है, तो सभी योग्य उम्मीदवारों में से केवल एक का ही चयन किया जा सकता है। इस पेपर के लिए आवंटित समय में हमें पहले से ही इक्कीस लेखकों को पढ़ाना मुश्किल हो रहा है। अगर जॉयस को शामिल किया जाता है, तो परिणाम क्या होगा?'

प्राण ने बिना एक पल भी हिचकिचाए कहा, 'फ्लेकर।'
प्रोफेसर मिश्रा ने प्यार से हंसते हुए कहा, 'आह, डॉ. कपूर, डॉ. कपूर...'
'हे कारवां, नीचे से मत गुजरो, न ही गाते हुए गुजरो। क्या तुमने सुना है? वह सन्नाटा जहाँ पक्षी मर चुके हैं फिर भी कुछ पक्षी की तरह चहचहा रहा है?
'जेम्स एलरोय फ्लेकर, जेम्स एलरोय फ्लेकर।' ऐसा लगता था कि इससे उनके मन में बात पक्की हो गई।
प्राण का चेहरा एकदम भावहीन हो गया। क्या वह सच में ऐसा मानता है? उसने सोचा। क्या वह सचमुच वही मानता है जो वह कहना चाह रहा है? उसने ज़ोर से कहा, 'अगर फ्लेचर—फ्लेकर—अपरिहार्य है, तो मेरा सुझाव है कि हम जॉयस को अपने बाईसवें लेखक के रूप में शामिल करें। मैं इसे समिति के समक्ष मतदान के लिए प्रस्तुत करने में प्रसन्न हूँ।' प्राण ने सोचा, जॉयस को अस्वीकार करने (केवल निर्णय को अनिश्चित काल के लिए टालने के बजाय) की बदनामी का सामना समिति ज़रूर नहीं करना चाहेगी।
'अरे, डॉ. कपूर, आप नाराज़ हैं। नाराज़ मत होइए। आप हमें फंसाना चाहते हैं,' प्रोफेसर मिश्रा ने मज़ाकिया अंदाज़ में कहा। उन्होंने अपनी बेबसी दिखाने के लिए मेज पर हथेलियाँ ऊपर कर दीं। 'लेकिन हमने इस बैठक में मामले का फैसला करने पर सहमति नहीं जताई थी, बल्कि सिर्फ यह तय करने पर सहमति जताई थी कि फैसला करना है या नहीं।'
प्राण के वर्तमान मनोदशा में यह बात उसके लिए बहुत अधिक थी, हालांकि वह जानता था कि यह सच है।
उन्होंने कहा, 'कृपया मुझे गलत न समझें, प्रोफेसर मिश्रा, लेकिन संसदीय दांव-पेच की बारीकियों से अच्छी तरह वाकिफ न होने वाले हम जैसे लोग इस तर्क को एक प्रकार की व्यथित बहस समझ सकते हैं।'

‘एक तरह की मीन-मेख... एक तरह की मीन-मेख।’ प्रोफेसर मिश्रा इस वाक्यांश से प्रसन्न दिखे, जबकि उनके दोनों सहकर्मी प्राण की अवज्ञा देखकर स्तब्ध रह गए। (प्राण ने सोचा, ये तो दो बेवकूफों के साथ ब्रिज खेलने जैसा है।) प्रोफेसर मिश्रा ने आगे कहा: ‘अब मैं कॉफी मंगवाता हूँ, और हम सब शांत होकर मुद्दों पर विचार करेंगे।’

कॉफी की संभावना से डॉ. नारायणन उत्साहित हो गए। प्रोफेसर मिश्रा ने ताली बजाई, और एक दुबला-पतला चपरासी फटी हुई हरी वर्दी में अंदर आया।

प्रोफेसर मिश्रा ने हिंदी में पूछा, 'कॉफी तैयार है?'

जी साहब।

‘अच्छा।’ प्रोफेसर मिश्रा ने इशारा किया कि इसे परोसा जाना चाहिए।

चपरासी एक ट्रे लेकर आया जिस पर कॉफी पॉट, गर्म दूध का एक छोटा जग, चीनी का एक कटोरा और चार कप रखे थे। प्रोफेसर मिश्रा ने इशारा किया कि उन्हें पहले दूसरों को कॉफी परोसनी चाहिए। चपरासी ने हमेशा की तरह ऐसा ही किया। फिर प्रोफेसर मिश्रा को कॉफी पेश की गई। जैसे ही प्रोफेसर मिश्रा ने अपने कप में कॉफी डाली, चपरासी ने सम्मानपूर्वक ट्रे को पीछे सरका दिया। प्रोफेसर मिश्रा ने कॉफी पॉट रखने के लिए हाथ बढ़ाया, तो चपरासी ने ट्रे को आगे कर दिया। प्रोफेसर मिश्रा ने दूध का जग उठाया और अपनी कॉफी में दूध डालने लगे, तो चपरासी ने ट्रे को पीछे सरका दिया। और इसी तरह हर बार तीन चम्मच चीनी के लिए भी यही होता रहा। यह एक हास्य नृत्य जैसा था। प्राण ने सोचा कि विभाग प्रमुख और चपरासी के बीच सत्ता और चापलूसी के इस खुले प्रदर्शन को अगर किसी अन्य विश्वविद्यालय के किसी अन्य विभाग में दिखाया जाता तो यह महज़ हास्यास्पद होता। लेकिन यह ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय का अंग्रेजी विभाग था—और इसी व्यक्ति के माध्यम से प्राण को चयन

समिति के समक्ष उस पाठक पद के लिए आवेदन करना था जिसकी उन्हें चाहत और आवश्यकता दोनों थी।

प्राण अपने प्याले में देखते हुए सोचने लगा, "यही आदमी जिसे मैंने अपने पहले कार्यकाल में हंसमुख, धूर्त, उदार और आकर्षक समझा था, मैंने उसे अपने मन में एक खलनायक के ऐसे विकृत रूप में क्यों बदल दिया है? क्या वह मुझसे नफरत करता है? नहीं, यही तो उसकी ताकत है: वह नफरत नहीं करता। वह बस अपनी मनमानी करना चाहता है। प्रभावी राजनीति में नफरत का कोई उपयोग नहीं होता। उसके लिए यह सब शतरंज के खेल जैसा है—एक हल्के से हिलते हुए बोर्ड पर। वह अठ्ठावन वर्ष का है—उसके सेवानिवृत्त होने में अभी दो साल और बाकी हैं। मैं इतने लंबे समय तक उसे कैसे सहन कर पाऊंगा?" प्राण को अचानक एक हत्यारा आवेग आ गया, जिसे हत्यारा आवेग कभी नहीं आता था, और उसने महसूस किया कि उसके हाथ हल्के से कांप रहे हैं। और यह सब जॉयस के लिए, उसने खुद से कहा। कम से कम मुझे खांसी तो नहीं आई। उसने उस पैड पर नीचे देखा जिस पर वह, समिति के कनिष्ठ सदस्य के रूप में, बैठक का विवरण लिख रहा था। उस पर बस इतना लिखा था:

उपस्थित: प्रोफेसर ओ.पी. मिश्रा (प्रमुख); डॉ. आर.बी. गुप्ता; डॉ. टी.आर. नारायणन; डॉ. पी. कपूर।

1. पिछली बैठक का कार्यवृत्त पढ़ा गया और अनुमोदित किया गया।

उसने सोचा, हम कहीं नहीं पहुंचे हैं, और हम कहीं नहीं पहुंच पाएंगे।

टैगोर की कुछ प्रसिद्ध पंक्तियाँ उनके मन में टैगोर के स्वयं के अंग्रेजी अनुवाद के रूप में आईं:

जहां तर्क की निर्मल धारा मृत आदतों के नीरस रेगिस्तानी रेत में अपना रास्ता नहीं खोती;

जहां हे प्रभु, मन को निरंतर विस्तृत विचार और कर्म की ओर अग्रसर

किया जाता है—
हे मेरे पिता, मेरे देश को स्वतंत्रता के उस स्वर्ग में जागृत होने दो।
प्राण ने सोचा, कम से कम उसके नश्वर पिता ने तो उसे सिद्धांत सिखाए थे, भले ही बचपन में उन्होंने उसे लगभग समय और साथ नहीं दिया था। उसका मन घर की ओर भटक गया, उस छोटे से सफेदी किए हुए घर की ओर, सविता, उसकी बहन, उसकी माँ—उस परिवार की ओर जिसे उसने अपने दिल में बसाया था और जिसने उसे अपने दिल में जगह दी थी; और फिर घर के पास बहती गंगा की ओर। (जब वह अंग्रेज़ी में सोचता था, तो वह उसे 'गंगा' नहीं, बल्कि 'द गंगा' कहता था।) उसने पहले पटना और कलकत्ता तक उसके अनुप्रवाह का अनुसरण किया, फिर बनारस से आगे इलाहाबाद में नदी के दो भागों में बँटने तक उसके अनुप्रवाह का; वहाँ उसने यमुना को चुना और दिल्ली तक उसका अनुसरण किया। क्या राजधानी में भी लोग इतने ही संकीर्ण सोच वाले हैं? उसने खुद से पूछा। क्या वे इतने ही पागल, इतने ही नीच, इतने ही मूर्ख, इतने ही कठोर हैं? मैं ब्रह्मपुर में अपना पूरा जीवन कैसे जी पाऊँगा? और मिश्रा मुझे यहाँ से जाते हुए देखकर मेरी खूब तारीफ़ ज़रूर करेगा।
1.17
लेकिन अब डॉ. गुप्ता, डॉ. नारायणन की एक टिप्पणी पर हंस रहे थे, और प्रोफेसर मिश्रा कह रहे थे, 'सर्वसम्मति—सर्वसम्मति ही लक्ष्य है, सभ्य लक्ष्य—हम कैसे मतदान कर सकते हैं जब हम दो-दो वोटों के मुकाबले दो वोटों में बंट सकते हैं? पांच पांडव थे, वे चाहें तो मतदान कर सकते थे, लेकिन उन्होंने भी सब कुछ सर्वसम्मति से किया। उन्होंने तो सर्वसम्मति से ही पत्नी चुनी, हा हा हा! और डॉ. वर्मा हमेशा की तरह अस्वस्थ हैं, इसलिए हम सिर्फ चार ही हैं।'
प्राण ने उन चमकती आँखों, बड़ी नाक और मधुरता से सिकोड़े होठों को

अनिच्छा से प्रशंसा भरी निगाहों से देखा। विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार, पाठ्यक्रम समिति, किसी भी विभागीय समिति की तरह, विषम संख्या में सदस्यों की होनी चाहिए। लेकिन विभाग के प्रमुख के रूप में प्रोफेसर मिश्रा, अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाली प्रत्येक समिति के सदस्यों की नियुक्ति इस प्रकार करते थे कि उनमें हमेशा कोई न कोई ऐसा सदस्य शामिल हो जो स्वास्थ्य या शोध कारणों से अस्वस्थ या अनुपस्थित रहने की संभावना रखता हो। सम संख्या में सदस्यों की उपस्थिति में, समितियाँ पहले से कहीं अधिक मतदान के अंतिम चरण तक पहुँचने में हिचकिचाती थीं। और विभागाध्यक्ष, एजेंडा और बैठक की गति पर अपने नियंत्रण के साथ, ऐसी परिस्थितियों में और भी अधिक प्रभावी शक्ति अपने हाथों में ले सकते थे।

प्रोफेसर मिश्रा ने कहा, 'मुझे लगता है कि हमने दूसरे विषय पर काफी समय बिता दिया है। क्या हम चियास्मस और एनाकोलुथिया पर आगे बढ़ें?' उनका इशारा खुद उनके द्वारा दिए गए एक प्रस्ताव की ओर था, जिसमें उन्होंने साहित्यिक सिद्धांत और आलोचना पर लिखे जाने वाले शोध पत्र के लिए पारंपरिक अलंकारिक भाषा के अत्यधिक विस्तृत अध्ययन को हटाने की बात कही थी। 'इसके बाद समिति के कनिष्ठ सदस्य द्वारा प्रस्तावित सममित सहायक क्रियाओं का प्रश्न है। हालांकि, यह निश्चित रूप से अन्य विभागों द्वारा हमारे प्रस्तावों पर सहमति पर निर्भर करेगा।'

और अंत में, चूंकि रात का अंधेरा छा रहा है,' प्रोफेसर मिश्रा ने आगे कहा, 'मुझे लगता है कि हमें पांचवें, छठे और सातवें बिंदुओं पर बिना किसी पूर्वाग्रह के बैठक समाप्त कर देनी चाहिए। हम उन बिंदुओं पर अगले महीने चर्चा कर सकते हैं।'

लेकिन प्राण जॉयस के अनसुलझे सवाल पर आगे बढ़ने से पीछे हटने को

तैयार नहीं थे। उन्होंने कहा, ‘मुझे लगता है कि अब हमने स्थिति को संभाल लिया है और हम इस मुद्दे पर शांति से विचार कर सकते हैं। अगर मैं यह मान लूँ कि यूलिसिस बी.ए. के छात्रों के लिए थोड़ा मुश्किल हो सकता है, तो क्या समिति पहले कदम के तौर पर डब्लिनर्स को पाठ्यक्रम में शामिल करने पर सहमत होगी? डॉ. गुप्ता, आपका क्या विचार है?’

डॉ. गुप्ता ने धीरे-धीरे घूमते पंखे की ओर देखा। विभागीय संगोष्ठी में पुरानी और मध्यकालीन अंग्रेज़ी पर वक्ताओं को आमंत्रित करवाने की उनकी क्षमता प्रोफ़ेसर मिश्रा की सद्भावना पर निर्भर थी: बाहरी वक्ताओं के लिए अतिरिक्त खर्च होता था, और धनराशि विभाग प्रमुख द्वारा स्वीकृत होनी आवश्यक थी। डॉ. गुप्ता अच्छी तरह जानते थे कि 'पहले कदम के रूप में' का क्या अर्थ होता है। उन्होंने प्राण की ओर देखा और कहा, 'मैं तैयार हूँ—'

लेकिन उनकी बात बीच में ही काट दी गई, चाहे वो कुछ भी कह रहे हों। प्रोफेसर मिश्रा ने बीच में टोकते हुए कहा, ‘हम एक ऐसी बात भूल रहे हैं, जिसे मैंने भी इस चर्चा में पहले ध्यान में नहीं रखा था। मेरा मतलब है कि परंपरा के अनुसार, आधुनिक ब्रिटिश साहित्य के पाठ्यक्रम में द्वितीय विश्व युद्ध के समय के लेखकों को शामिल नहीं किया जाता।’ प्राण के लिए यह एक नई बात थी, जो शायद आश्चर्यचकित रह गए होंगे, क्योंकि प्रोफेसर मिश्रा को समझाना पड़ा: ‘यह पूरी तरह से आश्चर्य की बात नहीं है। आधुनिक लेखकों के कद का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करने के लिए, उन्हें अपने साहित्य में शामिल करने के लिए, हमें समय के अंतराल की आवश्यकता होती है। कृपया मुझे याद दिलाएं, डॉ. कपूर... जॉयस की मृत्यु कब हुई थी?’

प्राण ने तीखे स्वर में कहा, '1941।' यह स्पष्ट था कि विशाल सफेद व्हेल

को यह बात पहले से ही पता थी।
‘अच्छा, तो लीजिए...’ प्रोफेसर मिश्रा ने बेबसी से कहा। उनकी उंगली एजेंडा पर नीचे की ओर चली गई।
'एलियट तो अभी भी जीवित हैं,' प्राण ने निर्धारित लेखकों की सूची को देखते हुए धीरे से कहा।
विभाग प्रमुख का चेहरा ऐसा लग रहा था मानो किसी ने उन्हें ज़ोरदार थप्पड़ मारा हो। उन्होंने अपना मुँह थोड़ा सा खोला, फिर होंठ सिकोड़ लिए। उनकी आँखों में फिर से वही चंचल चमक आ गई। 'लेकिन एलियट, एलियट, निश्चित रूप से—हमारे पास उसके मामले में पर्याप्त वस्तुनिष्ठ मापदंड हैं—क्यों, यहाँ तक कि डॉ. लीविस भी—'
प्राण ने कहा कि प्रोफेसर मिश्रा ने अमेरिकियों से बिल्कुल अलग रुख अपनाया। उन्होंने जोर से कहा, 'जैसा कि हम जानते हैं, डॉ. लीविस भी लॉरेंस को बहुत पसंद करते हैं...'
प्रोफेसर मिश्रा ने स्पष्ट करते हुए कहा, 'हम अगली बार लॉरेंस पर चर्चा करने के लिए सहमत हो गए हैं।'
प्राण खिड़की से बाहर देखने लगा। अंधेरा हो रहा था और लेबर्नम के पत्ते अब ठंडे लग रहे थे, धूल भरे नहीं। उसने प्रोफेसर मिश्रा की ओर देखे बिना बोलना जारी रखा: ‘...और वैसे भी, आधुनिक ब्रिटिश साहित्य में एक ब्रिटिश लेखक के रूप में एलियट की तुलना में जॉयस का दावा कहीं बेहतर है। तो अगर हम—’
‘मेरे युवा मित्र, अगर मैं कहूँ तो,’ प्रोफ़ेसर मिश्रा ने बीच में ही टोकते हुए कहा, ‘इसे एक प्रकार का तर्कहीन तर्क माना जा सकता है।’ वे अपने सदमे से जल्दी ही उबर रहे थे। एक मिनट में वे प्रूफ़्रॉक का हवाला देने वाले थे।
प्राण ने विषय से भटकते हुए सोचा, "एलिअट में ऐसी क्या बात है जो

उन्हें हम भारतीय बुद्धिजीवियों के लिए इतना पवित्र बनाती है?" उन्होंने ज़ोर से कहा, "आइए आशा करें कि टी.एस. एलिअट का जीवन कई वर्षों तक फलदायी और सार्थक रहे। मुझे खुशी है कि जॉयस की तरह उनकी मृत्यु 1941 में नहीं हुई। लेकिन हम अब 1951 में जी रहे हैं, जिसका अर्थ है कि आपने जिस युद्ध-पूर्व नियम का उल्लेख किया है, भले ही वह एक परंपरा हो, बहुत पुराना नहीं हो सकता। यदि हम इसे समाप्त नहीं कर सकते, तो क्यों न इसे अद्यतन कर दें? निश्चित रूप से इसका उद्देश्य यह है कि हम जीवितों से ऊपर मृतकों का सम्मान करें—या, कम संशयवादी होकर कहें तो, जीवितों से पहले मृतकों का मूल्यांकन करें। जीवित एलिअट को छूट दी गई है। मेरा प्रस्ताव है कि हम जॉयस को भी छूट दें। एक सौहार्दपूर्ण समझौता।" प्राण रुके, फिर बोले, "मानो ऐसा ही हो।" वे मुस्कुराए। "डॉ. नारायणन, क्या आप 'द डेड' के पक्ष में हैं?"

'हां, मुझे ऐसा ही लगता है,' प्रोफेसर मिश्रा के टोकने से पहले ही डॉ. नारायणन ने हल्की सी मुस्कान के साथ जवाब दिया।

प्राण ने पूछा, 'डॉक्टर गुप्ता?'

डॉ. गुप्ता प्रोफेसर मिश्रा की आंखों में आंखें मिलाकर बात नहीं कर सके।

प्रोफेसर गुप्ता ने कहा, 'मैं डॉ. नारायणन से सहमत हूं।'

कुछ सेकंड के लिए सन्नाटा छा गया। प्राण सोचने लगा, मुझे विश्वास नहीं हो रहा। मैं जीत गया। मैं जीत गया। मुझे यकीन नहीं हो रहा।

और वास्तव में, ऐसा प्रतीत होता था कि उसने ऐसा कर लिया था। सभी जानते थे कि किसी विभाग की पाठ्यक्रम समिति द्वारा निर्णय लेने के बाद विश्वविद्यालय की अकादमिक परिषद की स्वीकृति आमतौर पर एक औपचारिकता ही रह जाती है।

मानो कुछ भी अप्रिय घटना न हुई हो, विभाग के प्रमुख ने बैठक की बागडोर अपने हाथों में ले ली। उनके कोमल हाथ साइक्लोस्टाइल किए

गए पन्नों पर तेज़ी से चलने लगे। 'अगला विषय...' प्रोफेसर मिश्रा ने मुस्कुराते हुए कहा, फिर रुके और दोबारा बोलना शुरू किया: 'लेकिन अगले विषय पर जाने से पहले, मैं यह कहना चाहूंगा कि मैं व्यक्तिगत रूप से जेम्स जॉयस को एक लेखक के रूप में हमेशा से बहुत पसंद करता आया हूं। मुझे यह जानकर बेहद खुशी हुई है—'

प्राण के मन में अचानक ही कविता की कुछ पंक्तियाँ आ गईं, जो बेहद भयावह थीं:

शालीमार नदी के किनारे जिन पीले हाथों से मुझे प्यार था,
तुम अब कहाँ हो? तुम्हारे जादू के असर में कौन है?

और वह अचानक ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा, जो खुद उसे भी समझ नहीं आ रहा था। यह हंसी बीस सेकंड तक चली और अंत में उसे खांसी आने लगी। उसने अपना सिर झुकाया और उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। प्रोफेसर मिश्रा ने उसे घोर क्रोध और घृणा भरी निगाहों से देखा।

'माफ़ कीजिए, माफ़ कीजिए,' प्राण ने संभलते हुए धीरे से कहा। डॉक्टर गुप्ता उसकी पीठ पर ज़ोर-ज़ोर से थपथपा रहे थे, जिससे कोई फ़ायदा नहीं हो रहा था। 'कृपया जारी रखिए—मैं भावुक हो गया था—कभी-कभी ऐसा हो जाता है...' लेकिन आगे कोई स्पष्टीकरण देना असंभव था। बैठक फिर से शुरू हुई और अगले दो बिंदुओं पर जल्दी से चर्चा हुई। कोई खास असहमति नहीं थी। अब अंधेरा हो चुका था; बैठक स्थगित कर दी गई। प्राण के कमरे से निकलते ही प्रोफेसर मिश्रा ने उसके कंधे पर हाथ रखा। 'मेरे प्यारे बच्चे, क्या शानदार प्रदर्शन था!' प्राण उस याद से सिहर उठा। 'तुम वाकई बहुत ईमानदार हो, बौद्धिक और अन्य मामलों में भी।' अरे बाप रे, अब ये क्या करने वाले हैं? प्राण ने सोचा। प्रोफेसर मिश्रा ने आगे कहा: 'पिछले मंगलवार से ही प्रॉक्टर मुझे परेशान कर रहे हैं कि मैं अपने विभाग के किसी सदस्य का नाम विश्वविद्यालय की छात्र कल्याण

समिति में लिखवाऊं—हमारी बारी है ना—...' अरे नहीं, प्राण ने सोचा, अब तो हर हफ्ते का एक दिन ऐसे ही चला जाएगा। '...और मैंने तुम्हारा नाम लिखने का फैसला किया है।' प्राण ने सोचा, मुझे नहीं पता था कि क्रिया सकर्मक होती है। अंधेरे में—वे अब कैंपस में चल रहे थे—प्रोफेसर मिश्रा के लिए अपनी ऊंची आवाज में छिपी हुई नापसंदगी को पूरी तरह छिपाना मुश्किल था। प्राण को लगभग उनके सिकुड़े हुए होंठ और दिखावटी चमक दिखाई दे रही थी। वह चुप रहा, और अंग्रेजी विभाग के प्रमुख के लिए इसका अर्थ स्वीकृति था।

'मुझे पता है आप बहुत व्यस्त हैं, मेरे प्रिय डॉ. कपूर, अतिरिक्त ट्यूटोरियल, डिबेटिंग सोसाइटी, संगोष्ठी, नाटक मंचन आदि के कारण...' प्रोफेसर मिश्रा ने कहा। 'ये सब चीजें आपको छात्रों के बीच स्वाभाविक रूप से लोकप्रिय बनाती हैं। लेकिन आप यहाँ अपेक्षाकृत नए हैं, मेरे प्रिय साथी—मुझ जैसे पुराने ख्यालों वाले व्यक्ति के लिए पाँच साल कोई लंबा समय नहीं है—और आपको मुझे एक सलाह देने की अनुमति देनी चाहिए। अपनी गैर-शैक्षणिक गतिविधियों को कम करें। खुद को अनावश्यक रूप से थकाएँ नहीं। चीजों को इतनी गंभीरता से न लें। येट्स की वे अद्भुत पंक्तियाँ क्या थीं?'

उसने मुझे पेड़ पर उगने वाली पत्तियों की तरह जीवन को सहजता से जीने के लिए कहा।

लेकिन मैं जवान और नासमझ होने के कारण उससे सहमत नहीं था।

मुझे पूरा यकीन है कि आपकी प्यारी पत्नी भी इस बात से सहमत होंगी। खुद पर इतना दबाव मत डालिए—आपकी सेहत इस पर निर्भर करती है। और आपका भविष्य भी, मैं कह सकता हूँ... कुछ मायनों में आप खुद ही अपने सबसे बड़े दुश्मन हैं।

प्राण ने सोचा, मैं तो केवल अपने ही नाम का शत्रु हूँ। और मेरी हठधर्मिता

ने मुझे शक्तिशाली प्रोफेसर मिश्रा की वास्तविक शत्रुता दिला दी है। लेकिन क्या प्रोफेसर मिश्रा उसके लिए पहले से अधिक खतरनाक थे या कम खतरनाक—उदाहरण के लिए, पाठकों के इस मामले में, अब जब प्राण ने उनकी घृणा जीत ली थी?

प्राण सोचने लगा कि प्रोफेसर मिश्रा क्या सोच रहे होंगे। उसने कल्पना की कि उनके विचार कुछ इस तरह रहे होंगे: मुझे इस अभिमानी नौजवान लेक्चरर को पाठ्यक्रम समिति में शामिल ही नहीं करना चाहिए था। खैर, अब पछताने का कोई फायदा नहीं। लेकिन कम से कम उनकी मौजूदगी ने उन्हें प्रवेश समिति में गड़बड़ी करने से तो रोक दिया है; वहाँ वे उन छात्रों के खिलाफ तरह-तरह की आपत्तियाँ उठा सकते थे जिन्हें मैं दाखिला देना चाहता था, अगर उनका चयन पूरी तरह से योग्यता के आधार पर नहीं होता। जहाँ तक अंग्रेजी में पढ़ने के लिए विश्वविद्यालय की चयन समिति की बात है, मुझे इसे किसी न किसी तरह से ठीक करना होगा, इससे पहले कि मैं इसकी बैठक होने दूं।

लेकिन प्राण को उस रहस्यमय बुद्धि की आंतरिक कार्यप्रणाली के बारे में और कोई सुराग नहीं मिला। क्योंकि इस बिंदु पर दोनों सहयोगियों के रास्ते अलग हो गए और एक-दूसरे के प्रति गहरा सम्मान व्यक्त करते हुए वे विदा हो गए।

1.18

अरुण की पत्नी मीनाक्षी बेहद ऊब रही थी, इसलिए उसने अपनी बेटी अपर्णा को अपने पास बुलाने का फैसला किया। अपर्णा हमेशा से भी ज़्यादा सुंदर लग रही थी: गोल-मटोल, गोरी, काले बालों वाली, खूबसूरत आँखों वाली, जो उसकी माँ की तरह ही तेज़ थीं। मीनाक्षी ने बिजली का बजर दो बार दबाया (बच्चे की आया के लिए संकेत) और अपनी गोद में रखी किताब पर नज़र डाली। यह थॉमस मान की 'बुडेनब्रूक्स' थी, और

यह बेहद उबाऊ थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह इसके और पाँच पन्ने कैसे पढ़ पाएगी। अरुण, जो आम तौर पर उससे बहुत खुश रहता था, उसकी एक चिड़चिड़ी आदत थी कि वह कभी-कभी उसे कोई बेहतर किताब थमा देता था, और मीनाक्षी को लगता था कि उसके सुझाव एक तरह के अप्रत्यक्ष आदेश थे। 'एक अद्भुत किताब...' अरुण एक शाम को हँसते हुए कहता, उस अजीब से चंचल समूह के साथ, जिसके साथ वे घुलते-मिलते थे, एक ऐसा समूह जिसके बारे में मीनाक्षी को पूरा यकीन था कि वह 'बुडेनब्रूक्स' या किसी अन्य ऐसे ही घिसे-पिटे जर्मन साहित्य में उससे ज़्यादा दिलचस्पी नहीं ले सकता। '... मैं मान की यह अद्भुत किताब पढ़ रहा हूँ, और अब मैं मीनाक्षी को भी इसमें शामिल कर रहा हूँ।' कुछ अन्य लोग, विशेषकर सुस्त बिली ईरानी, क्षणिक आश्चर्य से अरुण से मीनाक्षी की ओर देखते, और बातचीत दफ्तर के मामलों, सामाजिक जगत, रेसिंग, डांसिंग, गोल्फ, कलकत्ता क्लब, या 'इन निकम्मे राजनेताओं' या 'इन बेवकूफ नौकरशाहों' की शिकायतों पर चली जाती, और थॉमस मान का ज़िक्र पूरी तरह से भुला दिया जाता। लेकिन मीनाक्षी अब किताब को इतना पढ़ने के लिए बाध्य महसूस करती कि वह उसके विषयवस्तु से परिचित हो सके, और उसे ऐसा करते देखकर अरुण प्रसन्न होता प्रतीत होता था।

मीनाक्षी सोचती थी, अरुण कितना अच्छा था, और सनी पार्क में इस अच्छे फ्लैट में रहना कितना सुखद था, जो उसके पिता के घर से ज्यादा दूर नहीं था, जो बालीगंज सर्कुलर रोड पर था, और आखिर इन दोनों के बीच इतनी तीखी नोकझोंक क्यों होती थी? अरुण बेहद गुस्सैल और ईर्ष्यालु था, और मीनाक्षी को बस सुस्त बिली को एक नजर देखना होता था, और अरुण के अंदर कहीं गहरी आग भड़क उठती थी। मीनाक्षी ने सोचा, बिस्तर पर एक जोशीला पति होना कितना अच्छा हो सकता है,

लेकिन ऐसे फायदे बिना किसी नुकसान के नहीं मिलते। कभी-कभी अरुण रूठकर बैठ जाता था, और प्रेम-प्रसंग के मामले में तो वह बिल्कुल ही नखरेबाज़ था। बिली ईरानी की एक प्रेमिका थी, शिरीन, लेकिन इससे अरुण को कोई फर्क नहीं पड़ता था, जिसे शक था (बिल्कुल सही) कि मीनाक्षी उसके दोस्त के प्रति आसक्त है। शिरीन कभी-कभी कॉकटेल पीते हुए आह भरती और कहती कि बिली सुधरने वाला नहीं है।

घंटी बजने पर जब आया आई के पास पहुँची, तो मीनाक्षी ने टूटी-फूटी हिंदी में कहा, 'बेबी लाओ!' बूढ़ी आया, जिसकी प्रतिक्रियाएँ अक्सर धीमी होती थीं, अपनी मालकिन के कहने पर लड़खड़ाते हुए मुड़ी। अपर्णा को लाया गया। वह दोपहर की नींद ले रही थी और अपनी माँ के पास लाए जाने पर जम्हाई लेने लगी। उसकी छोटी मुट्ठियाँ उसकी आँखों को मल रही थीं।

'मम्मी!' अपर्णा ने अंग्रेजी में कहा। 'मुझे नींद आ रही है, और मरियम ने मुझे जगा दिया।' अपना नाम सुनकर आया मरियम, हालांकि वह अंग्रेजी नहीं समझ सकती थी, बच्चे की ओर देखकर बिना दांतों वाली मुस्कान के साथ मुस्कुराई।

'मुझे पता है, मेरी प्यारी गुड़िया,' मीनाक्षी ने कहा, 'लेकिन मम्मी को तुमसे मिलना ही था, वो बहुत ऊब गई थीं। आओ और दो—हाँ—और अब दूसरी तरफ।'

अपर्णा ने हल्के बैंगनी रंग की झालरदार और मुलायम कपड़े की पोशाक पहनी हुई थी और उसकी माँ को लगा कि वह बेहद मनमोहक लग रही थी। मीनाक्षी की नज़र ड्रेसिंग टेबल के शीशे पर पड़ी और उसने खुशी से देखा कि माँ-बेटी की जोड़ी कितनी प्यारी लग रही थी। उसने अपर्णा से कहा, 'तुम इतनी प्यारी लग रही हो कि मुझे लगता है कि मैं छोटी बच्चियों की पूरी कतार पैदा करूँगी... अपर्णा, बिबेका, चारुलता, और—'

तभी अपर्णा की तीखी निगाहों ने उसकी बात काट दी। अपर्णा ने ऐलान किया, 'अगर इस घर में एक और बच्चा आया, तो मैं उसे सीधे कूड़ेदान में फेंक दूंगी।'

'ओह,' मीनाक्षी ने थोड़ा चौंकते हुए कहा। इतने सारे मुखर व्यक्तित्वों के बीच रहते हुए अपर्णा ने बहुत कम उम्र में ही अच्छी शब्दावली विकसित कर ली थी। लेकिन तीन साल के बच्चों से इतनी स्पष्टता से, और वह भी सशर्त वाक्यों में, अपनी बात कहने की उम्मीद नहीं की जाती। मीनाक्षी ने अपर्णा की ओर देखा और आह भरी।

'तुम बहुत प्यारी हो,' उसने अपर्णा से कहा। 'अब दूध पी लो।' आया से उसने कहा, 'दूध लाओ। एकदम दूध!' और मरियम छोटी बच्ची के लिए एक गिलास दूध लेने चली गई।

पता नहीं क्यों आया की धीमी कमर मीनाक्षी को परेशान कर रही थी और उसने सोचा: हमें टी.सी. को बदल देना चाहिए। ये तो बेवजह बुढ़ापे की वजह से सुस्त हो गई हैं। ये आया के लिए मीनाक्षी और अरुण का निजी छोटा नाम था और नाश्ते की मेज पर हुई उस घटना को याद करके मीनाक्षी खुशी से हंस पड़ी, जब अरुण ने स्टेट्समैन का क्रॉसवर्ड देखते हुए कहा था, 'अरे, इस बिना दांत वाली बुढ़िया को कमरे से बाहर निकालो। ये तो मेरा ऑमलेट खाने का मन ही नहीं करता।' तब से मिरियम ही टी.सी. थीं। मीनाक्षी सोचती थी कि अरुण के साथ रहना ऐसे ही अचानक मिलने वाले सुखद पलों से भरा था। काश, सब कुछ ऐसा ही होता।

लेकिन परेशानी यह थी कि उसे घर का सारा काम भी संभालना पड़ता था, और उसे यह बिल्कुल पसंद नहीं था। न्यायमूर्ति चटर्जी की बड़ी बेटी होने के नाते, उसके लिए हमेशा सब कुछ किया जाता था—और अब उसे पता चल रहा था कि अकेले सब कुछ संभालना कितना मुश्किल हो

सकता है। नौकरों का प्रबंधन करना (आया, नौकर-सह-रसोइया, अंशकालिक सफाईकर्मी, अंशकालिक माली; अरुण कंपनी के वेतन पर काम करने वाले ड्राइवर की देखरेख करता था); हिसाब-किताब रखना; उन चीजों की खरीदारी करना जिन्हें खरीदने के लिए नौकर या आया पर भरोसा नहीं किया जा सकता था; और यह सुनिश्चित करना कि सब कुछ बजट के भीतर रहे। यह आखिरी काम उसे विशेष रूप से कठिन लगता था। उसका पालन-पोषण कुछ हद तक विलासिता में हुआ था, और हालांकि उसने (अपने माता-पिता की सलाह के खिलाफ) शादी के बाद पूरी तरह से अपने पैरों पर खड़े होने के रोमांटिक सपने को साकार करने की जिद की थी, लेकिन कुछ ऐसी चीजों (विदेशी साबुन, विदेशी मक्खन आदि) के प्रति अपने लगाव को रोकना उसके लिए असंभव था जो एक सभ्य जीवन का अभिन्न अंग थीं। वह इस बात से भली-भांति अवगत थी कि अरुण अपने परिवार के सभी सदस्यों का भरण-पोषण करता है और वह अक्सर उससे इस बारे में बात करती थी।

‘खैर,’ अरुण ने अभी कुछ देर पहले कहा था, ‘अब जब सविता की शादी हो गई है, तो एक कम हो गया, तुम भी मानोगी ना, प्रिय।’ मीनाक्षी ने आह भरते हुए दोहे में जवाब दिया:

'अगर मैं किसी एक से शादी कर लूं तो मेरा क्या हश्र होगा?'

मेरी थाली में हर मेहरा।

अरुण ने माथे पर शिकन डाली। उसे एक बार फिर याद आ गया था कि मीनाक्षी का बड़ा भाई कवि था। तुकबंदी से लंबे समय से परिचित होने के कारण—लगभग जुनून की वजह से—अधिकांश छोटे चटर्जी दोहे बनाना सीख गए थे, जो कभी-कभी बेहद बचकाने होते थे।

आया दूध लेकर चली गई। मीनाक्षी ने अपनी प्यारी निगाहें फिर से बुडेनब्रूक्स की ओर घुमाईं, जबकि अपर्णा बिस्तर पर बैठकर दूध पी रही

थी। अधीरता भरी आवाज में मीनाक्षी ने थॉमस मान को बिस्तर पर धकेल दिया और खुद भी उसके पीछे बिस्तर पर लेट गई, अपनी आँखें बंद कीं और सो गई। बीस मिनट बाद अपर्णा के स्तन को चुटकी काटने से वह चौंककर जाग उठी।

‘प्यारी अपर्णा, ज्यादा नखरे मत करो। मम्मी सोने की कोशिश कर रही हैं,’ मीनाक्षी ने कहा।

‘सोना मत,’ अपर्णा ने कहा। ‘मैं खेलना चाहती हूँ।’ अपनी उम्र के अन्य बच्चों के विपरीत, अपर्णा कभी भी अपने नाम का प्रयोग सिजेरियन के तीसरे व्यक्ति के रूप में नहीं करती थी, हालाँकि उसकी माँ ऐसा करती थी।

‘मेरी प्यारी बच्ची, मम्मी थक गई हैं, वो किताब पढ़ रही थीं और खेलना नहीं चाहतीं। अभी तो बिल्कुल नहीं। बाद में, जब पापा घर आएंगे, तो तुम उनके साथ खेल सकती हो। या फिर अंकल वरुण के साथ खेल सकती हो जब वो कॉलेज से लौटेंगे। तुमने अपना गिलास कहाँ रखा है?’

‘पापा घर कब आएंगे?’

मीनाक्षी ने जवाब दिया, 'लगभग एक घंटे में।'

‘लगभग एक घंटे में,’ अपर्णा ने अनुमान लगाते हुए कहा, मानो उसे यह वाक्यांश पसंद आया हो। ‘मुझे एक हार भी चाहिए,’ उसने आगे कहा और अपनी माँ की सोने की चेन को खींचने लगी।

मीनाक्षी ने अपनी बेटी को गले लगाया। ‘और तुम्हें भी एक मिलेगा,’ उसने कहा और बात को टाल दिया। ‘अब मरियम के पास जाओ।’

'नहीं।'

‘तो अगर तुम चाहो तो यहीं रहो। लेकिन चुप रहना, प्रिय।’

अपर्णा कुछ देर चुप रही। उसने बुडेनब्रूक्स को, अपने खाली गिलास को, सो रही माँ को, रजाई को, दर्पण को, छत को देखा। फिर उसने

हिचकिचाते हुए कहा, 'मम्मी?' कोई जवाब नहीं मिला।
‘मम्मी?’ अपर्णा ने कुछ ऊँची आवाज़ में पूछने की कोशिश की।
‘हम्म?’
‘मम्मी!’ अपर्णा ने अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया।
मीनाक्षी एकदम सीधी बैठ गई और अपर्णा को हिलाते हुए बोली, 'क्या तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें थप्पड़ मारूँ?' उसने पूछा।
‘नहीं,’ अपर्णा ने दृढ़ता से उत्तर दिया।
‘तो फिर बात क्या है? तुम क्यों चिल्ला रहे हो? तुम क्या कहना चाहते थे?’
'क्या तुम्हारा दिन कठिन रहा, प्रिये?' अपर्णा ने अपनी अनुकरणात्मक आकर्षण से प्रतिक्रिया पाने की उम्मीद में पूछा।
‘जी हां,’ मीनाक्षी ने संक्षिप्त जवाब दिया। ‘अब प्यारे, वह गिलास उठाओ और तुरंत मरियम के पास जाओ।’
‘क्या मैं आपके बाल संवार दूं?’
'नहीं।'
अपर्णा अनिच्छा से बिस्तर से उठी और दरवाजे की ओर चल पड़ी। वह सोच रही थी कि क्या कहे, ‘मैं पापा को बता दूंगी!’ हालाँकि वह क्या शिकायत करना चाहती थी, यह वह तय नहीं कर पाई। इस बीच, उसकी माँ एक बार फिर मीठी नींद में सो रही थी, उसके होंठ हल्के से खुले थे, उसके लंबे काले बाल तकिए पर फैले हुए थे। दोपहर में बहुत गर्मी थी, और सब कुछ उसे लंबी और आरामदायक नींद की ओर खींच रहा था। उसके स्तन धीरे-धीरे ऊपर-नीचे हो रहे थे, और वह अरुण के बारे में सपने देख रही थी, जो सुंदर, आकर्षक और विवाहित था, और जो एक घंटे में घर आने वाला था। और थोड़ी देर बाद वह बिली ईरानी के बारे में सपने देखने लगी, जिससे वे उसी शाम मिलने वाले थे।

अरुण जब आया, तो उसने अपना ब्रीफकेस ड्राइंग रूम में रखा, बेडरूम में गया और दरवाजा बंद कर लिया। मीनाक्षी को सोते हुए देखकर वह थोड़ी देर इधर-उधर टहला, फिर अपना कोट और टाई उतारकर उसकी नींद में खलल डाले बिना उसके बगल में लेट गया। लेकिन थोड़ी देर बाद उसका हाथ उसके माथे पर गया और फिर चेहरे से होते हुए उसके स्तनों तक पहुँच गया। मीनाक्षी ने आँखें खोलीं और कहा, 'ओह।' वह पल भर के लिए अचंभित रह गई। थोड़ी देर बाद उसने पूछा, 'समय क्या हुआ है?'
साढ़े पाँच बजे। मैंने जैसा वादा किया था, मैं जल्दी घर आ गया—और मैंने तुम्हें सोते हुए पाया।
'डार्लिंग, मुझे पहले नींद नहीं आ रही थी। अपर्णा मुझे हर कुछ मिनट में जगा देती थी।'
आज शाम का कार्यक्रम क्या है?
बिली और शिरीन के साथ डिनर और डांस।
‘हाँ, बिल्कुल।’ थोड़ी देर रुककर अरुण ने आगे कहा: ‘सच कहूँ तो, प्रिये, मैं काफी थका हुआ हूँ। मुझे लगता है कि हमें आज रात ही इसे रद्द कर देना चाहिए?’
‘अरे, एक ड्रिंक पीने के बाद तुम जल्दी ही तरोताज़ा हो जाओगे,’ मीनाक्षी ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘और शिरीन की एक-दो नज़रें भी,’ उसने आगे कहा।
‘मुझे लगता है तुम सही कह रही हो, प्रिय।’ अरुण ने उसकी ओर हाथ बढ़ाया। उसे एक महीने पहले पीठ में थोड़ी तकलीफ हुई थी, लेकिन वह पूरी तरह ठीक हो चुका था।
‘शरारती लड़का,’ मीनाक्षी ने कहा और उसका हाथ झटक दिया। थोड़ी देर बाद उसने आगे कहा, ‘टी.सी. हमें ऑस्टरमिल्क के नाम पर धोखा दे रहा है।’

‘अरे? क्या उसने ऐसा किया है?’ अरुण ने बेपरवाही से कहा, फिर अचानक एक ऐसे विषय पर बात करने लगा जिसमें उसकी दिलचस्पी थी —‘आज मुझे पता चला कि हमारे एक स्थानीय व्यापारी ने नए कागज़ के प्रोजेक्ट में हमसे साठ हज़ार रुपये ज़्यादा वसूल लिए हैं। हमने उससे अपने अनुमानों पर पुनर्विचार करने को कहा है, लेकिन यह वाकई चौंकाने वाली बात है... उसमें व्यापारिक नैतिकता का नामोनिशान नहीं है—न ही व्यक्तिगत नैतिकता का। वह कुछ दिन पहले कार्यालय में आया था और उसने मुझे आश्वासन दिया कि वह हमारे बीच के पुराने संबंधों के कारण हमें एक विशेष प्रस्ताव दे रहा है। अब जॉक मैके से बात करने के बाद मुझे पता चला है कि उसने उनके साथ भी यही बात कही थी—लेकिन उनसे हमसे साठ हज़ार रुपये कम लिए।’

‘तुम क्या करोगी?’ मीनाक्षी ने कर्तव्यनिष्ठा से पूछा। उसने कुछ वाक्य पहले ही फोन बंद किया था।

अरुण लगभग पाँच मिनट तक बोलता रहा, जबकि मीनाक्षी का ध्यान कहीं और भटक रहा था। जब वह रुका और उसने प्रश्नवाचक दृष्टि से उसकी ओर देखा, तो उसने थोड़ी सी नींद से भरी जम्हाई लेते हुए कहा:

‘इस सब पर आपके बॉस की क्या प्रतिक्रिया रही है?’

‘कहना मुश्किल है। बेसिल कॉक्स के साथ कुछ भी कहना मुश्किल होता है, चाहे वो कितने भी खुश क्यों न हों। इस मामले में मुझे लगता है कि वो संभावित देरी से उतने ही नाराज़ हैं जितना कि निश्चित बचत से खुश।’

अरुण ने अगले पाँच मिनट तक अपने मन की बात कही, इस दौरान मीनाक्षी अपने नाखूनों को चमकाने लगीं।

कमरे का दरवाजा अंदर आने से रोकने के लिए कुंडी से बंद कर दिया गया था, लेकिन जब अपर्णा ने अपने पिता का ब्रीफकेस देखा तो वह समझ गई कि वे लौट आए हैं और अंदर आने की जिद करने लगी। अरुण ने

दरवाजा खोला और उसे गले लगा लिया, और अगले एक घंटे तक वे जिराफ की पहेली सुलझाते रहे, जिसे अपर्णा ने ब्रह्मपुर चिड़ियाघर जाने के एक हफ्ते बाद एक खिलौने की दुकान में देखा था। उन्होंने यह पहेली पहले भी कई बार सुलझाई थी, लेकिन अपर्णा अभी तक इससे ऊबी नहीं थी। न ही अरुण। वह अपनी बेटी से बहुत प्यार करता था और कभी-कभी उसे अफसोस होता था कि वह और मीनाक्षी लगभग हर शाम बाहर जाते हैं। लेकिन एक बच्चे के होने से कोई अपनी जिंदगी को रोक नहीं सकता। आखिर आयाएं किस काम की होती हैं? और वैसे भी, छोटे भाई किस काम के होते हैं?

'मम्मी ने मुझे एक हार देने का वादा किया है,' अपर्णा ने कहा।

'क्या उसने सच में खरीद लिया है, डार्लिंग?' अरुण ने कहा। 'वह इसे कैसे खरीदने की सोच रही है? अभी तो हमारे पास इतने पैसे नहीं हैं।'

इस ताजा जानकारी से अपर्णा इतनी निराश दिखीं कि अरुण और मीनाक्षी ने एक-दूसरे की ओर स्नेह भरी नजरों से देखा।

'लेकिन वो कर लेगी,' अपर्णा ने शांत और दृढ़ स्वर में कहा। 'अब मैं एक पहेली सुलझाना चाहती हूँ।'

'लेकिन हमने तो अभी एक ही किया है,' अरुण ने विरोध जताते हुए कहा।

मैं एक और करना चाहता हूँ।

'मीनाक्षी, तुम उसे संभालो,' अरुण ने कहा।

'तुम इसे संभालो, डार्लिंग,' मीनाक्षी ने कहा। 'मुझे तैयार होना है। और कृपया बेडरूम का फर्श साफ कर दो।'

इसलिए कुछ देर के लिए अरुण और अपर्णा, जिन्हें इस बार ड्राइंग रूम में भेज दिया गया था, कालीन पर लेटकर विक्टोरिया मेमोरियल की पहेलियाँ सुलझाने में लगे रहे, जबकि मीनाक्षी ने स्नान किया, कपड़े

पहने, इत्र लगाया और खुद को सजाया।

वरुण कॉलेज से लौटा, अरुण के बगल से सरकते हुए अपने छोटे से कमरे में घुस गया और अपनी किताबें लेकर बैठ गया। लेकिन वह घबराया हुआ लग रहा था और पढ़ाई में मन नहीं लगा पा रहा था। जब अरुण तैयार होने गया, तो अपर्णा को उसके पास भेज दिया गया; और वरुण ने अपनी बाकी शाम घर पर अपर्णा का मनोरंजन करने में बिताई।

लंबी गर्दन वाली मीनाक्षी ने जब अपने चार लोगों के समूह के साथ फिरपो के रेस्तरां में रात के खाने के लिए प्रवेश किया, तो सबका ध्यान अपनी ओर खींच लिया। अरुण ने शिरीन से कहा कि वह बेहद खूबसूरत लग रही है और बिली ने मीनाक्षी को भावपूर्ण निगाहों से देखते हुए कहा कि वह दिव्य लग रही है। सब कुछ बहुत बढ़िया रहा और इसके बाद 300 क्लब में उन्होंने मनमोहक नृत्य किया। मीनाक्षी और अरुण वास्तव में इन सब खर्चों को वहन करने में सक्षम नहीं थे—बिली ईरानी के पास अपने स्वयं के साधन थे—लेकिन यह असहनीय लग रहा था कि वे, जिनके लिए इस तरह का जीवन स्पष्ट रूप से नियत था, केवल धन की कमी के कारण इससे वंचित रह जाएं। मीनाक्षी रात के खाने के दौरान और उसके बाद भी, शिरीन के छोटे-छोटे सोने के झुमकों को देखने से खुद को रोक नहीं पाई, जो उसके मखमली कानों में बेहद आकर्षक लग रहे थे।

वह एक सुहावनी शाम थी। घर लौटते समय कार में अरुण ने मीनाक्षी से कहा, 'मुझे अपना हाथ दो, प्रिये,' और मीनाक्षी ने अपनी लाल नेल पॉलिश लगी उंगली का सिरा उसके हाथ के पिछले हिस्से पर रखते हुए कहा, 'लो!' अरुण को यह बहुत ही सुंदर और चंचल लगा। लेकिन मीनाक्षी के मन में कुछ और ही चल रहा था।

बाद में, जब अरुण सो गया, तो मीनाक्षी ने अपने गहनों का डिब्बा खोला (चटर्जी परिवार अपनी बेटी को बहुत सारे गहने देने में विश्वास नहीं करता

था, लेकिन उसे उसकी संभावित ज़रूरतों के लिए पर्याप्त गहने दिए गए थे) और श्रीमती रूपा मेहरा के दिल के बेहद करीब दो स्वर्ण पदक निकाले। उन्होंने ये पदक मीनाक्षी को उसकी शादी के समय अपने बड़े बेटे की दुल्हन को उपहार में दिए थे। उन्हें लगा कि यही उचित था; उनके पास देने के लिए और कुछ नहीं था, और उन्हें लगा कि उनके पति को यह पसंद आता। पदकों के पीछे क्रमशः 'थॉमसन इंजीनियरिंग कॉलेज, रुड़की, रघुबीर मेहरा, सिविल इंजीनियरिंग, प्रथम, 1916' और 'भौतिकी, प्रथम, 1916' खुदा हुआ था। प्रत्येक पदक पर दो शेर आसन पर गंभीर मुद्रा में बैठे हुए थे। मीनाक्षी ने पदकों को देखा, फिर उन्हें अपने हाथों में संतुलित किया, फिर उन ठंडे और कीमती पदकों को अपने गालों से लगाया। वह सोच रही थी कि उनका वजन कितना होगा। उसे अपर्णा को देने का वादा की गई सोने की चेन और खुद को देने का वादा किए गए सोने के झुमकों की याद आई। उसने शिरीन के छोटे कानों में लटकते हुए उन्हें बड़ी सावधानी से देखा था। वे झुमके छोटे नाशपाती के आकार के थे।

जब अरुण ने अधीरता से उसे बिस्तर पर बुलाया, तो उसने धीरे से कहा, 'बस आ रही हूँ।' लेकिन एक-दो मिनट बाद ही वह उसके पास पहुँची। 'क्या सोच रही हो, प्रिय?' उसने उससे पूछा। 'तुम कुछ ज्यादा ही परेशान लग रही हो।' लेकिन मीनाक्षी सहज रूप से समझ गई कि उसके मन में जो चल रहा था - उन पुराने पदकों का क्या करने की उसकी योजना - उसका ज़िक्र करना ठीक नहीं होगा, और उसने अरुण के बाएँ कान के निचले हिस्से को कुतरकर बात टाल दी।

1.19

अगली सुबह दस बजे मीनाक्षी ने अपनी छोटी बहन काकोली को फोन किया।

‘मेरी दोस्त कुकू, जो शेडी लेडीज़ क्लब की सदस्य है—आप जानते ही हैं —जानती है कि वह कहाँ चुपके से सोना पिघलवा सकती है। क्या आप किसी अच्छे जौहरी को जानते हैं?’

‘अच्छा, सतराम दास या लीलाराम, मुझे लगता है,’ कुकु ने जम्हाई लेते हुए कहा, जो मुश्किल से ही जाग पाया था।

‘नहीं, मैं पार्क स्ट्रीट के ज्वैलर्स की बात नहीं कर रही हूँ—या उस तरह के किसी भी ज्वैलर की,’ मीनाक्षी ने आह भरते हुए कहा। ‘मैं ऐसी जगह जाना चाहती हूँ जहाँ वे मुझे न जानते हों।’

‘क्या तुम कहीं जाना चाहते हो?’

दूसरी तरफ से थोड़ी देर सन्नाटा छा गया। मीनाक्षी ने कहा, 'अच्छा, तो जान ही लो: मुझे झुमके बहुत पसंद आ गए हैं—ये बहुत प्यारे हैं—बिल्कुल छोटे नाशपाती जैसे—और मैं अरुण की मां द्वारा शादी में दिए गए उन मोटे, बदसूरत मेडलों को पिघलाना चाहती हूं।'

'ओह, ऐसा मत करो,' काकोली ने घबराई हुई सी आवाज में कहा।

'कुकू, मुझे जगह के बारे में तुम्हारी सलाह चाहिए, फैसले के बारे में नहीं।'

‘अच्छा, तुम सरकार के यहाँ जा सकते हो। नहीं—राशबेहारी एवेन्यू पर जौहरी की दुकान पर कोशिश करो। क्या अरुण को पता है?’

मीनाक्षी ने कहा, 'ये पदक मुझे दिए गए थे। अगर अरुण अपने गोल्फ क्लबों को पिघलाकर बैक ब्रेस बनाना चाहता है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।'

जब वह जौहरी की दुकान पर पहुंची, तो वहां भी विरोध देखकर वह आश्चर्यचकित रह गई।

श्री जौहरी ने बंगाली में कहा, "महोदया, ये पदक बहुत सुंदर हैं।" उन्होंने अपने ससुर द्वारा जीते गए पदकों को देखा। उनकी उंगलियाँ, जो खुरदरी और सांवली थीं, इतनी बारीकी और सुंदरता के काम को संभालने और

उसकी देखरेख करने वाले व्यक्ति के लिए थोड़ी अटपटी लग रही थीं। उन्होंने उभरे हुए शेरों को प्यार से छुआ और चिकने, बिना घिसे किनारों पर फिराया।

मीनाक्षी ने अपने दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली के लंबे, लाल रंग से पॉलिश किए हुए नाखून से अपनी गर्दन के किनारे को सहलाया।

'हां,' उसने उदासीनता से कहा।

'महोदया, अगर मैं आपको सलाह दूं, तो क्यों न आप ये झुमके और ये चेन अलग-अलग ऑर्डर करके भुगतान कर दें? इन पदकों को पिघलाने की कोई ज़रूरत नहीं है।' एक सलीके से सजी-धजी और जाहिर तौर पर धनी महिला को इस सुझाव में शायद कोई आपत्ति नहीं होगी।

मीनाक्षी ने शांत आश्चर्य से जौहरी की ओर देखा। उसने कहा, 'अब जब मुझे पदकों का अनुमानित वजन पता चल गया है, तो मैं दोनों नहीं, बल्कि एक पदक पिघलाना चाहती हूँ।' उसकी धृष्टता से कुछ नाराज़ होकर—ये दुकानदार कभी-कभी हद पार कर देते हैं—वह आगे बोली, 'मैं यहाँ काम करवाने आई हूँ; मैं आमतौर पर अपने नियमित जौहरी के पास जाती। आपको क्या लगता है इसमें कितना समय लगेगा?'

श्री जौहरी ने इस मुद्दे पर आगे कोई आपत्ति नहीं जताई। उन्होंने कहा, 'इसमें दो सप्ताह लगेंगे।'

'यह तो काफी लंबा समय है।'

'खैर, आप जानती ही हैं कि स्थिति कैसी है, महोदया। आवश्यक कौशल वाले कारीगर दुर्लभ हैं, और हमारे पास कई ऑर्डर हैं।'

लेकिन यह मार्च का महीना है। शादियों का सीजन लगभग खत्म हो चुका है।

फिर भी, महोदया।

‘ठीक है, मुझे लगता है कि इसी से काम चल जाएगा,’ मीनाक्षी ने कहा।

उसने एक पदक उठाया—जो संयोगवश भौतिकी का था—और उसे वापस अपने पर्स में रख लिया। जौहरी ने अपनी मेज पर रखे एक छोटे से मखमली चौकोर टुकड़े पर पड़े इंजीनियरिंग पदक को कुछ अफसोस भरी निगाहों से देखा। उसने पूछने की हिम्मत नहीं की थी कि यह किसका है, लेकिन जब मीनाक्षी ने तराजू पर पदक का सही वजन करवाकर रसीद ली, तो उसने मीनाक्षी के नाम से अनुमान लगा लिया कि यह उसके ससुर को मिला होगा। उसे यह नहीं पता था कि मीनाक्षी अपने ससुर को कभी जानती ही नहीं थी और उनसे उसका कोई खास लगाव भी नहीं था।

जैसे ही मीनाक्षी जाने के लिए मुड़ी, उसने कहा, 'मैडम, अगर आपका मन बदल जाए तो...'

मीनाक्षी ने उसकी ओर मुड़कर झल्लाकर कहा, 'श्री जौहरी, अगर मुझे आपकी सलाह चाहिए होगी तो मैं खुद मांग लूंगी। मैं खास तौर पर आपके पास इसलिए आई हूं क्योंकि किसी ने मुझे आपके बारे में बताया था।'

'बिल्कुल सही, महोदया, बिल्कुल सही। बेशक यह पूरी तरह से आप पर निर्भर है। तो दो सप्ताह में।' श्री जौहरी ने पदक को देखकर उदास भाव से भौंहें चढ़ाईं और फिर अपने मुख्य कारीगर को बुलाया।

दो सप्ताह बाद, एक अनौपचारिक बातचीत के दौरान अरुण को पता चला कि मीनाक्षी ने क्या किया था। वह बेहद क्रोधित हुआ।

मीनाक्षी ने आह भरी। उसने कहा, 'जब तुम इतनी नाराज़ हो तो तुमसे बात करने का कोई फायदा नहीं। तुम बिल्कुल निर्दयी व्यवहार कर रही हो। आओ, प्यारी अपर्णा, पापा हमसे नाराज़ हैं, चलो दूसरे कमरे में चलते हैं।'

कुछ दिनों बाद अरुण ने अपनी माँ को एक पत्र लिखा—या यूँ कहें कि टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में लिखा—:

प्रिय माँ,

लता के बारे में आपके पत्र के जवाब में पहले न लिख पाने के लिए क्षमा करें।

जी हाँ, ज़रूर, किसी को ढूँढ़ूँगा। लेकिन ज़्यादा उम्मीद मत रखना, सगाईशुदा लोग तो मानो सौतन होते हैं और उन्हें लाखों-करोड़ों का दहेज मिलता है। फिर भी, हालात पूरी तरह से निराशाजनक नहीं हैं। कोशिश करूँगा, लेकिन मेरा सुझाव है कि लता गर्मियों में कलकत्ता आ जाएँ। परिचय वगैरह करवा दूँगा। लेकिन उन्हें सहयोग करना होगा। वरुण आलसी है, पढ़ाई में तभी मन लगाता है जब मैं मदद करता हूँ। लड़कियों में कोई दिलचस्पी नहीं, हमेशा की तरह सिर्फ़ चार पैरों वाले जानवरों और घटिया गानों में ही लगा रहता है। अपर्णा ठीक है, अपनी दादी के बारे में लगातार पूछती रहती है, तो यकीन मानो वो तुम्हें याद करती है। पापा का इंजीनियरिंग मेडल एम ने कान की बाली और चेन बनाने के लिए पिघला दिया, लेकिन मैंने फ़िज़िक्स पर रोक लगा दी है, चिंता मत करो। बाकी सब ठीक है, सब ठीक है, चटर्जी भी वैसे ही हैं, समय मिलने पर विस्तार से लिखूँगा।

आप सभी की ओर से ढेर सारा प्यार और xxx

अरुण

अरुण की अस्पष्ट लिखावट में लिखा यह छोटा सा पत्र (जिसमें अक्षर तीस डिग्री के कोण पर बेतरतीब ढंग से बाएँ या दाएँ झुके हुए थे), एक दोपहर ब्रह्मपुर में दूसरे डाकघर के पास एक बम की तरह गिरा। जब श्रीमती रूपा मेहरा ने इसे पढ़ा, तो वे फूट-फूटकर रोने लगीं, यहाँ तक कि (जैसा कि अरुण वहाँ होते तो शायद टिप्पणी करते) नाक लाल होने जैसी सामान्य औपचारिकता भी नहीं निभाई। वास्तव में, इस मामले को हल्के में न लेते हुए, वे बहुत दुखी थीं, और इसके स्पष्ट कारण थे।

पिघले हुए पदक का भयावह दृश्य, बहू की निर्ममता, और इस खोखले

दिखावे से ज़ाहिर हुई उसकी हर कोमल भावना की अनदेखी ने श्रीमती रूपा मेहरा को वर्षों में किसी भी चीज़ से ज़्यादा परेशान कर दिया था, यहाँ तक कि अरुण की मीनाक्षी से शादी से भी ज़्यादा। उन्होंने अपनी आँखों के सामने अपने पति का सुनहरा नाम भट्टी में पिघलते हुए देखा। श्रीमती रूपा मेहरा अपने पति से हद से ज़्यादा प्यार करती थीं और उनकी बहुत इज़्ज़त करती थीं, और यह सोचकर कि उनकी उपस्थिति को धरती से जोड़ने वाली कुछ चीज़ों में से एक अब दुर्भावनापूर्ण ढंग से - क्योंकि ऐसी पीड़ादायक उदासीनता एक प्रकार की दुर्भावना ही थी - और हमेशा के लिए खो गई है, उन्हें कड़वाहट, क्रोध और निराशा के आँसू बहाने पर मजबूर कर दिया। वह रुड़की कॉलेज में एक प्रतिभाशाली छात्र थे और उनके छात्र जीवन की यादें सुखद थीं। उन्होंने ज़्यादा पढ़ाई नहीं की थी, फिर भी बहुत अच्छा प्रदर्शन किया था। उन्हें उनके सहपाठियों और शिक्षकों दोनों ने पसंद किया था। एकमात्र विषय जिसमें वह कमज़ोर थे, वह था चित्रकारी। उसमें भी वह मुश्किल से पास हुए थे। श्रीमती रूपा मेहरा को बच्चों की ऑटोग्राफ बुक में बने उनके छोटे-छोटे रेखाचित्र याद आए और उन्हें लगा कि परीक्षकों ने अज्ञानता और अन्याय किया है।

कुछ देर बाद खुद को संभालकर और माथे पर इत्र छिड़ककर वह बगीचे में चली गई। दिन गर्म था, लेकिन नदी से ठंडी हवा चल रही थी। सविता सो रही थी और बाकी सब बाहर गए हुए थे। उसने कन्ना के फूलों की क्यारी के पास से गुजरने वाले बिना साफ किए रास्ते पर नजर डाली। शहतूत के पेड़ की छांव में एक युवा सफाईकर्मी माली से बात कर रही थी। श्रीमती रूपा मेहरा ने अनमने ढंग से सोचा, मुझे उससे इस बारे में बात करनी चाहिए।

मंसूर के पिता, जो कहीं अधिक चतुर मतीन थे, हिसाब-किताब की किताब लेकर बरामदे में आए। श्रीमती रूपा मेहरा का हिसाब-किताब

करने का मन नहीं था, पर उन्होंने इसे अपना कर्तव्य समझा। थकी हुई सी वह बरामदे में लौटीं, अपने काले बैग से चश्मा निकाला और हिसाब-किताब की किताब देखने लगीं।

सफाईकर्मी ने झाड़ू उठाई और रास्ते से धूल, सूखे पत्ते, टहनियाँ और गिरे हुए फूल साफ करने लगी। श्रीमती रूपा मेहरा ने खाते की किताब के खुले पन्ने पर अनमने ढंग से नज़र डाली।

मतीन ने पूछा, 'क्या मुझे बाद में आना चाहिए?'

‘नहीं, मैं अभी कर देती हूँ। एक मिनट रुको।’ उसने एक नीली पेंसिल निकाली और खरीदारी की सूचियों को देखा। मतीन के गाँव से लौटने के बाद से हिसाब-किताब करना बहुत मुश्किल हो गया था। हिंदी लिपि के अपने अटपटे रूप के अलावा, मतीन हिसाब-किताब में हेराफेरी करने में अपने बेटे से कहीं ज़्यादा माहिर था।

‘यह क्या है?’ श्रीमती रूपा मेहरा ने पूछा। ‘घी का एक और चार सीर का डिब्बा? क्या आपको लगता है कि हम करोड़पति हैं? हमने आखिरी डिब्बा कब मंगवाया था?’

'बुर्री मेमसाहिब, यह दो महीने पहले की बात होगी।'

जब तुम गांव में घूमने गए थे, तब क्या मंसूर ने एक टिन नहीं खरीदा था?

'हो सकता है उसने किया हो, बुर्री मेमसाहिब। मुझे नहीं पता; मैंने तो नहीं देखा।'

श्रीमती रूपा मेहरा हिसाब-किताब की किताब के पन्ने पलटने लगीं, जब तक कि उन्हें मंसूर की साफ लिखावट में लिखी प्रविष्टि नहीं मिल गई।

'उसने एक महीना पहले एक खरीदा था। लगभग बीस रुपये। उसका क्या हुआ? हम बारह लोगों का परिवार नहीं हैं कि इतनी जल्दी एक डिब्बा खत्म कर दें।'

‘मैं भी अभी-अभी लौटा हूँ,’ मतीन ने सफाईकर्मी महिला की ओर देखते

हुए कहा।
'अगर आपको मौका मिले तो आप हमें हर हफ्ते सोलह सेर घी का एक डिब्बा खरीद कर देंगे,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। 'पता लगाइए कि बाकी घी का क्या हुआ।'
मतीन ने कहना शुरू किया, 'यह पूरियों और पराठों में और दाल पर डाला जाता है - और मेमसाहिब चाहती हैं कि साहब अपनी चपाती और चावल पर हर दिन थोड़ा घी डालें।'
'जी हां,' श्रीमती रूपा मेहरा ने बीच में ही टोकते हुए कहा। 'मैं हिसाब लगा सकती हूं कि इसमें कितना पैसा लगेगा। मैं यह पता लगाना चाहती हूं कि बाकी का क्या हुआ। हम खुलेआम ग्राहकों को नहीं रखते—और न ही यह किसी मिठाई विक्रेता की दुकान बन गई है।'
'जी हां, बुर्री मेमसाहिब।'
हालांकि युवा मंसूर इसे एक चीज़ की तरह ही मानता प्रतीत होता है।
मतीन ने कुछ नहीं कहा, लेकिन उसने भौंहें चढ़ा लीं, मानो वह असहमति जता रहा हो।
'वह मेहमानों के लिए अलग से रखी गई मिठाई खाता है और नींबू पानी पीता है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने आगे कहा।
मैं उनसे बात करूंगा, बुर्री मेमसाहिब से।
श्रीमती रूपा मेहरा ने बड़ी सावधानी से कहा, 'मुझे मिठाई के बारे में पक्का पता नहीं है। वह बहुत मनमौजी लड़का है। और तुम—तुम तो कभी नियमित रूप से मेरे लिए चाय नहीं लाते। इस घर में कोई मेरी देखभाल क्यों नहीं करता? जब मैं कलकत्ता में अरुण साहब के घर पर होती हूँ, तो उनका नौकर हमेशा मेरे लिए चाय लाता है। यहाँ तो कोई पूछता तक नहीं। अगर मेरा अपना घर होता, तो बात अलग होती।'
मतीन को समझ आ गया था कि हिसाब-किताब का सत्र समाप्त हो गया

है, इसलिए वह श्रीमती रूपा मेहरा के लिए चाय लेने चला गया। लगभग पंद्रह मिनट बाद, दोपहर की नींद से जागकर खूबसूरत सी दिखने वाली सविता बरामदे में आई तो उसने देखा कि उसकी माँ अरुण का पत्र आँसू बहाते हुए दोबारा पढ़ रही थी और कह रही थी, 'कान में डालने वाली दवा! वो तो उसे कान में डालने वाली दवा भी कहता है!' जब सविता को बात समझ आई तो उसे अपनी माँ के प्रति सहानुभूति और मीनाक्षी के प्रति आक्रोश का अनुभव हुआ।

'वह ऐसा कैसे कर सकती है?' उसने पूछा। अपने प्रियजनों के प्रति सविता का तीव्र रक्षात्मक रवैया उसके कोमल स्वभाव के पीछे छिपा रहता था। वह स्वतंत्र विचारों वाली थी, लेकिन इतने शांत स्वभाव की कि केवल वही लोग जो उसे अच्छी तरह जानते थे, यह समझ पाते थे कि उसका जीवन और इच्छाएँ केवल परिस्थितियों के बहकावे में नहीं थीं। उसने अपनी माँ को गले लगाया और कहा, 'मैं मीनाक्षी पर हैरान हूँ। मैं ध्यान रखूँगी कि दूसरे पदक को कुछ न हो। पापा की यादें उसकी छोटी सोच वाली सनक से कहीं अधिक मूल्यवान हैं। रोइए मत, माँ। मैं तुरंत एक पत्र भेज देती हूँ। या अगर आप चाहें तो हम साथ मिलकर एक पत्र लिख सकते हैं।'

'नहीं, नहीं।' श्रीमती रूपा मेहरा ने उदास होकर अपने खाली कप की ओर देखा।

जब लता लौटी और उसे यह खबर मिली, तो वह भी सदमे में थी। वह अपने पिता की लाडली थी और उनके शैक्षणिक पदकों को देखना उसे बहुत प्रिय था; वास्तव में, जब वे पदक मीनाक्षी को दिए गए थे, तो वह बहुत दुखी हुई थी। लता सोच रही थी कि उनकी बेटियों के लिए उनका क्या महत्व होगा, उसके मुकाबले मीनाक्षी के लिए उनका क्या महत्व होगा? अब उसका यह अनुमान बेहद अप्रिय रूप से सही साबित हो रहा

था। वह अरुण पर भी क्रोधित थी, जिसे वह मानती थी कि उसने अपनी सहमति या उदारता से इस दुखद घटना को होने दिया और जिसने अब अपने मूर्खतापूर्ण और लापरवाही भरे पत्र में इस घटना को हल्के में लिया। अपनी माँ को चिढ़ाने या अपमानित करने के उसके क्रूर प्रयासों ने लता को क्रोधित कर दिया। जहाँ तक उसके इस सुझाव की बात है कि वह कलकत्ता जाए और उसके परिचय में सहयोग करे—लता ने निश्चय किया कि वह ऐसा कभी नहीं करेगी।

प्राण विद्यार्थी कल्याण समिति की अपनी पहली बैठक से देर से लौटे और घर का माहौल बिल्कुल बदल गया था। वे इतने थके हुए थे कि तुरंत पूछताछ करने की हिम्मत नहीं हुई। वे अपनी पसंदीदा कुर्सी—प्रेम निवास से मंगाई गई एक झूला कुर्सी—पर बैठ गए और कुछ मिनट पढ़े। थोड़ी देर बाद उन्होंने सविता से पूछा कि क्या वह टहलने जाना चाहती हैं, और टहलते हुए उन्हें सारी समस्या के बारे में पता चला। उन्होंने सविता से पूछा कि क्या वे मीनाक्षी को लिखे उनके पत्र को देख सकते हैं। ऐसा नहीं था कि उन्हें अपनी पत्नी के फैसले पर भरोसा नहीं था—बल्कि इसके विपरीत था। लेकिन उन्हें उम्मीद थी कि मेहरा न होने के कारण और इसलिए कम आहत होने के कारण, वे कुछ ऐसे शब्दों को रोकने में मदद कर सकते हैं जो विनाशकारी कार्यों में तब्दील हो सकते हैं। पारिवारिक झगड़े, चाहे संपत्ति को लेकर हों या भावनाओं को लेकर, बहुत कड़वे होते हैं; उन्हें रोकना लगभग जन कर्तव्य है।

सविता ने खुशी-खुशी उसे पत्र दिखाया। प्राण ने उसे ध्यान से पढ़ा और बीच-बीच में सिर हिलाता रहा। 'यह ठीक है,' उसने कुछ गंभीर स्वर में कहा, मानो किसी छात्र के निबंध की सराहना कर रहा हो। 'कूटनीतिक लेकिन घातक! नरम लोहे जैसा,' उसने अलग लहजे में कहा। उसने अपनी पत्नी की ओर उत्सुकता भरी नज़रों से देखा। 'ठीक है, मैं देख लूंगा

कि यह कल चला जाए।’
बाद में मालती आई। लता ने उसे पदक के बारे में बताया। मालती ने मेडिकल कॉलेज में किए जाने वाले कुछ प्रयोगों का वर्णन किया, और श्रीमती रूपा मेहरा यह सुनकर इतनी परेशान हो गईं कि उनका ध्यान कुछ समय के लिए भटक गया।
रात के खाने के दौरान सविता ने पहली बार गौर किया कि मालती उसके पति को पसंद करती है। सूप के दौरान जिस तरह से मालती उसे देखती रही और मुख्य भोजन के दौरान उससे नज़रें नहीं मिलाती रही, उससे यह बात साफ़ ज़ाहिर थी। सविता को ज़रा भी गुस्सा नहीं आया। उसने मान लिया कि प्राण को जानना ही उससे प्यार करना है; मालती का स्नेह स्वाभाविक और हानिरहित था। प्राण को इस बात का पता नहीं था; वह पिछले साल वार्षिक दिवस पर मंचित नाटक 'जूलियस सीज़र' के बारे में बात कर रहा था - विश्वविद्यालय में यह एक आम पसंद थी (प्राण कह रहा था) क्योंकि बहुत कम माता-पिता अपनी बेटियों को मंच पर अभिनय करते देखना चाहते थे... लेकिन दूसरी ओर, हिंसा, देशभक्ति और सत्ता परिवर्तन जैसे विषयों ने इसे वर्तमान ऐतिहासिक संदर्भ में एक ऐसी ताजगी दी थी जो अन्यथा नहीं होती।
सविता मुस्कुराते हुए सोचने लगी, बुद्धिमान पुरुषों की नासमझी ही तो उन्हें इतना प्यारा बनाती है। उसने एक पल के लिए आंखें बंद कर लीं और उसकी, अपनी और अपने अजन्मे बच्चे की सेहत के लिए प्रार्थना की।

भाग दो

2.1

होली की सुबह मान मुस्कुराते हुए उठा। उसने भांग मिली हुई ठंडाई के

कई गिलास पिए और देखते ही देखते नशे में चूर हो गया। उसे लगा जैसे छत उसकी ओर तैरती हुई आ रही हो—या शायद वह छत की ओर तैर रहा हो? मानो धुंध में उसने अपने दोस्तों फ़िरोज़ और इम्तियाज़ को नवाब साहब के साथ प्रेम निवास पर परिवार को होली की बधाई देते हुए देखा। वह उन्हें होली की शुभकामनाएँ देने के लिए आगे बढ़ा। लेकिन उसके मुँह से बस हँसी की एक धारा ही बह रही थी। उन्होंने उसके चेहरे पर रंग पोत दिया और वह हँसता ही रहा। उन्होंने उसे एक कोने में बिठा दिया और वह तब तक हँसता रहा जब तक उसकी आँखों से आँसू नहीं बहने लगे। छत अब पूरी तरह गायब हो चुकी थी, और दीवारें एक बेहद रहस्यमय तरीके से अंदर-बाहर हो रही थीं। अचानक वह उठा और फ़िरोज़ और इम्तियाज़ को बाहों में भरकर दरवाज़े की ओर चल पड़ा, उन्हें भी अपने साथ धकेलते हुए।

‘हम कहाँ जा रहे हैं?’ फ़िरोज़ ने पूछा।

‘प्राण के यहाँ,’ मान ने जवाब दिया। ‘मुझे अपनी भाभी के साथ होली खेलनी है।’ उसने रंगीन पाउडर के कुछ पैकेट उठाए और उन्हें अपने कुर्ते की जेब में रख लिया।

फिरोज ने कहा, 'इस हालत में अपने पिता की कार मत चलाना।'

‘ओह, हम एक तांगा लेंगे, एक तांगा,’ मान ने अपने हाथ लहराते हुए कहा और फिर फ़िरोज़ को गले लगा लिया। ‘लेकिन पहले थोड़ी ठंडाई पी लो। इसमें ज़बरदस्त किक है।’

वे खुशकिस्मत थे। आज सुबह ज़्यादा तांगे नहीं थे, लेकिन जैसे ही वे कॉर्नवालिस रोड पर पहुँचे, एक तांगा उनके सामने आ गया। विश्वविद्यालय जा रहे रंग-बिरंगे कपड़ों में सजे और शोर मचाते जश्न मनाने वालों की भीड़ को देखकर घोड़ा घबरा गया। उन्होंने तांगे वाले को उसके तय किराए से दुगुना पैसा दिया और उसके माथे पर गुलाबी रंग और घोड़े

के माथे पर हरा रंग लगा दिया। प्राण ने उन्हें उतरते देखा तो वह उनके पास गया और बगीचे में उनका स्वागत किया। घर के बरामदे में दरवाजे के ठीक बाहर गुलाबी रंग से भरा एक बड़ा टब और कई फुट लंबी तांबे की सीरिंजें रखी थीं। प्राण का कुर्ता और पायजामा पूरी तरह भीग गया था और उसका चेहरा और बाल पीले और गुलाबी पाउडर से सने हुए थे।

'मेरी भाभी कहाँ है?' मान चिल्लाया।

'मैं बाहर नहीं आ रही—' सविता ने अंदर से कहा।

'कोई बात नहीं,' मान चिल्लाया, 'हम अंदर आ जाएंगे।'

'अरे नहीं, तुम ऐसा नहीं करोगे,' सविता ने कहा। 'जब तक तुम मेरे लिए साड़ी नहीं लाओगे, तब तक नहीं।'

'तुम्हें तुम्हारी साड़ी मिल जाएगी, अब मुझे बस अपना बदला चाहिए,' मान ने कहा। 'बहुत मज़ाकिया,' सविता ने कहा। 'तुम मेरे पति के साथ जितनी चाहो होली खेल सकती हो, लेकिन मुझसे वादा करो कि तुम मुझ पर बस थोड़ा सा रंग लगाओगी।'

'जी हां, जी हां, मैं वादा करती हूं! बस थोड़ा सा पाउडर, इससे ज्यादा नहीं—और फिर तुम्हारी प्यारी छोटी बहन के चेहरे पर थोड़ा सा—और मैं संतुष्ट हो जाऊंगी—अगले साल तक।' सविता ने सावधानी से दरवाजा खोला। उसने एक पुराना और फीका सलवार-कमीज पहना हुआ था और वह प्यारी लग रही थी: हंसती हुई और सतर्क, मानो उड़ने के लिए तैयार हो।

मान ने गुलाबी पाउडर का पैकेट अपने बाएं हाथ में पकड़ रखा था। उसने थोड़ा सा पाउडर अपनी भाभी के माथे पर लगाया। भाभी ने भी पैकेट में हाथ डालकर उसके माथे पर पाउडर लगाया।

'—और दोनों गालों पर थोड़ा-थोड़ा—' मान ने उसके चेहरे पर और पाउडर मलते हुए कहा।

‘अच्छा, बढ़िया,’ सविता ने कहा। ‘बहुत अच्छा। होली की शुभकामनाएं!’
‘और थोड़ा सा यहाँ भी—’ मान ने कहा, और उसकी गर्दन, कंधों और पीठ पर और अधिक रगड़ते हुए, उसे कसकर पकड़े हुए और थोड़ा सा सहलाते हुए, जबकि वह दूर जाने के लिए संघर्ष कर रही थी।
‘तुम तो बिल्कुल बदमाश हो, मैं अब कभी तुम पर भरोसा नहीं करूंगी,’ सविता ने कहा। ‘कृपया मुझे जाने दो, कृपया इसे रोक दो, नहीं, मान, कृपया—मेरी इस हालत में नहीं...’
'तो मैं बदमाश हूँ, है ना?' मान ने एक मग उठाते हुए और उसे टब में डुबोते हुए कहा।
‘नहीं, नहीं, नहीं—’ सविता बोली। ‘मेरा ऐसा इरादा नहीं था। प्राण, मेरी मदद करो,’ सविता ने हंसते-रोते हुए कहा। श्रीमती रूपा मेहरा खिड़की से घबराकर झाँक रही थीं। ‘नहीं, गीला रंग मत लगाओ, मान, प्लीज़—’ सविता चीखते हुए बोली।
लेकिन उसकी तमाम मिन्नतों के बावजूद मान ने उसके सिर पर तीन-चार मग ठंडा गुलाबी पानी डाल दिया और हंसते हुए गीले पाउडर को उसकी कमीज पर, उसके स्तनों के ऊपर मल दिया।
लता भी खिड़की से बाहर देख रही थी, मान के इस दुस्साहसी और अनैतिक कृत्य को देखकर वह दंग रह गई थी—संभवतः दिन के उजाले ने उसे यह स्वतंत्रता प्रदान की थी। उसे लगभग अपने ऊपर मान के हाथों का स्पर्श महसूस हो रहा था और फिर पानी की ठंडी लहर का झटका लगा। अपनी और अपनी माँ की हैरानी के बीच, जो उसके बगल में खड़ी थी, उसने एक गहरी साँस ली और कंपकंपी छूट गई। लेकिन कुछ भी उसे बाहर जाने के लिए विवश नहीं कर सका, जहाँ मान अपने रंगीन सुखों का आनंद ले रहा था।
‘रुको—’ सविता गुस्से से चिल्लाई। ‘तुम किस तरह के कायर हो? मेरी

मदद क्यों नहीं करते? उसने भांग ली है, मैं देख सकती हूँ—बस उसकी आँखों को देखो—' फ़िरोज़ और प्राण ने रंगीन पानी से भरी कई सीरिंजें मान पर छिड़ककर उसका ध्यान भटका दिया और वह बगीचे में भाग गया। वह

वैसे तो वह अपने पैरों पर बहुत स्थिर था, फिर भी लड़खड़ाकर पीले कन्ना के फूलों की क्यारी में गिर पड़ा। उसने फूलों के बीच से अपना सिर उठाकर बस एक पंक्ति गाई: 'ओ उत्सव मनाने वालों, ब्रज की धरती पर होली है!' और फिर बैठ गया, नज़रों से ओझल हो गया। एक मिनट बाद, जैसे कोयल की घड़ी, वह उठा और वही पंक्ति दोहराई और फिर बैठ गया। बदला लेने पर तुली सविता ने एक छोटे पीतल के बर्तन में रंगीन पानी भरा और सीढ़ियों से उतरकर बगीचे में आ गई। वह चुपके से कन्ना के फूलों की क्यारी की ओर बढ़ी। ठीक उसी क्षण मान फिर से गाने के लिए उठा। जैसे ही उसका सिर कन्ना के फूलों के ऊपर से निकला, उसने सविता और पानी का लोटा देखा। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। उग्र और दृढ़ निश्चयी सविता ने सारा पानी उसके चेहरे और सीने पर उड़ेल दिया। मान के अचंभित चेहरे को देखकर वह हंसने लगी। लेकिन मान फिर से बैठ गया था और अब रोते हुए कह रहा था, 'भाभी मुझसे प्यार नहीं करती, मेरी भाभी मुझसे प्यार नहीं करती।'

'बिल्कुल नहीं,' सविता ने कहा। 'मुझे क्यों करना चाहिए?'

मान की आंखों से आंसू बह रहे थे और वह बेहाल था। जब फ़िरोज़ ने उसे उठाने की कोशिश की तो वह उससे लिपट गया। रोते हुए बोला, 'तुम ही मेरे सच्चे दोस्त हो। मिठाई कहां है?'

मान के शांत हो जाने के बाद, लता ने बाहर निकलकर प्राण, फिरोज और सविता के साथ थोड़ी-बहुत होली खेली। श्रीमती रूपा मेहरा के चेहरे पर भी थोड़ा रंग लग गया।

लेकिन लता लगातार सोचती रही कि सबके सामने इतने अंतरंग तरीके से हंसमुख मान के हाथों से मालिश और लेप करवाना कैसा लगता। और ये तो सगाईशुदा आदमी था! उसने मान जैसा व्यवहार करने वाला कोई कभी नहीं देखा था—और प्राण तो बिलकुल भी गुस्से में नहीं था। कपूर परिवार कितना अजीब है, उसने सोचा।

इसी बीच इम्तियाज़, मान की तरह, अपनी ठंडाई में भांग मिलाकर खूब नशे में चूर हो गया था और सीढ़ियों पर बैठा दुनिया को देखकर मुस्कुरा रहा था तथा बार-बार अपने आप से एक शब्द बुदबुदा रहा था जो 'मायोकार्डियल' जैसा लग रहा था। कभी वह उसे गुनगुनाता, कभी गाता, और कभी वह एक गहरा और अनुत्तरित प्रश्न प्रतीत होता था। कभी-कभी वह सोच-विचार करते हुए अपने गाल पर मौजूद छोटे तिल को छूता था।

लगभग बीस विद्यार्थियों का एक समूह—रंग-बिरंगे कपड़ों में, जिन्हें पहचानना लगभग असंभव था—सड़क पर दिखाई दिया। समूह में कुछ लड़कियाँ भी थीं—और उनमें से एक थी मालती, जिसकी त्वचा अब बैंगनी हो गई थी (लेकिन आँखें अभी भी हरी थीं)। उन्होंने प्रोफेसर मिश्रा को अपने साथ शामिल होने के लिए मना लिया था; वे कुछ ही घरों की दूरी पर रहते थे। उनका विशालकाय शरीर आसानी से पहचाना जा सकता था, और इसके अलावा, उनके शरीर पर रंग भी बहुत कम था।

‘कितना बड़ा सम्मान, कितना बड़ा सम्मान,’ प्राण ने कहा, ‘लेकिन मुझे आपके घर आना चाहिए था, महोदय, न कि आपको मेरे घर।’

‘ओह, मैं ऐसे मामलों में औपचारिकता नहीं बरतता,’ प्रोफेसर मिश्रा ने होंठ सिकोड़ते हुए और आँखों में चमक लाते हुए कहा। ‘अब बताइए, मनमोहक श्रीमती कपूर कहाँ हैं?’

‘हेलो, प्रोफेसर मिश्रा, हमारे साथ होली खेलने आए हैं, यह बहुत अच्छा लगा,’ सविता ने हाथ में थोड़ा सा पाउडर लिए आगे बढ़ते हुए कहा।

‘आप सभी का स्वागत है। हेलो, मालती, हम सोच रहे थे कि तुम्हें क्या हो गया है। लगभग दोपहर हो गई है। स्वागत है, स्वागत है—’

जब प्रोफेसर नीचे झुके तो उनके चौड़े माथे पर थोड़ा सा रंग लग गया। लेकिन मान, जो उदास होकर फिरोज के कंधे पर झुका हुआ था, उसने अपने हाथ में पकड़ी हुई कैना (एक प्रकार की चिक्की) नीचे रख दी और खुले दिल से मुस्कुराते हुए प्रोफेसर मिश्रा की ओर बढ़ा। “तो आप हैं कुख्यात प्रोफेसर मिश्रा,” उसने खुशी से उनका स्वागत करते हुए कहा। “इतने कुख्यात व्यक्ति से मिलकर कितना अच्छा लगा।” उसने उन्हें गर्मजोशी से गले लगाया। “बताइए, क्या आप सचमुच जनता के दुश्मन हैं?” उसने उत्साह से पूछा। “क्या अद्भुत चेहरा है, क्या भावपूर्ण अभिव्यक्ति है!” प्रोफेसर मिश्रा का मुंह खुला रह गया, यह देखकर मान विस्मय से भर उठा।

प्राण चौंककर बोला, 'मान।'

‘कितना घिनौना!’ मान ने पूरे मन से सहमति जताते हुए कहा।

प्रोफेसर मिश्रा ने उन्हें घूर कर देखा।

‘मेरा भाई तुम्हें मोबी-डिक, यानी विशाल सफेद व्हेल कहता है,’ उसने आगे कहा।

मान ने दोस्ताना लहजे में कहा, 'अब समझ में आया क्यों। आइए, तैरने चलें!' उन्होंने गुलाबी पानी से भरे टब की ओर इशारा करते हुए प्रोफेसर मिश्रा को उदारतापूर्वक आमंत्रित किया।

‘नहीं, नहीं, मुझे नहीं लगता—’ प्रोफेसर मिश्रा ने कमजोर आवाज में कहना शुरू किया।

‘इम्तियाज, मेरी मदद करो,’ मान ने कहा।

इम्तियाज़ ने अपनी सहमति जताते हुए कहा, 'मायोकार्डियल।' उन्होंने प्रोफेसर मिश्रा को कंधों से उठाया और उन्हें जबरदस्ती टब तक ले गए।

‘नहीं, नहीं, मुझे निमोनिया हो जाएगा!’ प्रोफेसर मिश्रा ने गुस्से और हैरानी से चिल्लाकर कहा।

‘बस करो, मान!’ प्राण ने तीखे स्वर में कहा।

‘आप क्या कहते हैं, डॉक्टर साहब?’ मान ने इम्तियाज से पूछा।

इम्तियाज़ ने कहा, 'कोई विपरीत संकेत नहीं हैं,' और दोनों ने बिना तैयारी के प्रोफेसर को टब में धकेल दिया। वह पूरी तरह भीगकर, गुलाबी रंग में डूबे हुए, गुस्से और उलझन से बेहाल होकर छटपटाने लगे। मान यह सब देखकर हंसते-हंसते बेबस हो गया, जबकि इम्तियाज़ दयालुता से मुस्कुरा रहा था। प्राण सिर हाथों में लिए एक सीढ़ी पर बैठ गया। बाकी सब लोग भयभीत होकर देख रहे थे।

जब प्रोफेसर मिश्रा टब से बाहर निकले तो वे एक पल के लिए बरामदे में खड़े रहे, गीलेपन और भावनाओं से कांपते हुए। फिर उन्होंने चारों ओर ऐसे देखा जैसे कोई बैल बाड़े में फंसा हो, और टपकते हुए सीढ़ियों से नीचे उतरकर बगीचे से बाहर चले गए। प्राण इतना अचंभित था कि माफी भी नहीं मांग सका। आक्रोशित गरिमा के साथ वह विशाल गुलाबी आकृति द्वार से बाहर निकली और सड़क पर ओझल हो गई।

मान ने सहमति पाने के लिए उपस्थित लोगों की ओर देखा। सविता ने उसकी ओर देखने से परहेज किया, और बाकी सभी शांत और संयमित थे, और मान को लगा कि किसी कारणवश वह फिर से मुसीबत में फंस गया है।

2.2

लंबे स्नान के बाद साफ-सुथरे कुर्ते-पायजामे में लिपटा, भांग के नशे और सुहावनी दोपहर के आनंद में डूबा मान प्रेम निवास में सो गया था। उसने एक अजीब सपना देखा: वह अपनी मंगेतर से मिलने बनारस जाने वाली ट्रेन पकड़ने ही वाला था। उसे एहसास हुआ कि अगर वह यह ट्रेन नहीं

पकड़ पाया तो उसे जेल हो जाएगी, लेकिन किस आरोप में, यह उसे नहीं पता था। पूर्व प्रदेश के महानिरीक्षक से लेकर एक दर्जन कांस्टेबल तक, पुलिसकर्मियों की एक बड़ी टुकड़ी ने उसके चारों ओर घेरा बना लिया था, और उसे, कीचड़ से सने कई ग्रामीणों और उत्सव के कपड़े पहने लगभग बीस छात्राओं के साथ, एक डिब्बे में ठूंसा जा रहा था। लेकिन वह कुछ भूल गया था और उसे वापस लाने के लिए जाने की अनुमति मांग रहा था। कोई उसकी बात नहीं सुन रहा था और वह दिन-प्रतिदिन और अधिक उग्र और परेशान होता जा रहा था। वह पुलिसकर्मियों और टिकट परीक्षक के पैरों में गिरकर गिड़गिड़ा रहा था कि उसे बाहर जाने दिया जाए: उसने कहीं कुछ छोड़ दिया था, शायद घर पर, शायद किसी दूसरे प्लेटफार्म पर, और उसके लिए यह बहुत ज़रूरी था कि उसे जाकर उसे लाने दिया जाए। लेकिन अब सीटी बज चुकी थी और उसे जबरदस्ती ट्रेन में चढ़ा दिया गया था। जैसे-जैसे वह और ज़्यादा बेचैन होता गया, कुछ औरतें उस पर हंसने लगीं। 'कृपया मुझे बाहर जाने दीजिए,' वह बार-बार कहता रहा, लेकिन ट्रेन स्टेशन से निकल चुकी थी और उसकी रफ़्तार बढ़ रही थी। उसने ऊपर देखा और उसे एक छोटा सा लाल-सफेद बोर्ड दिखाई दिया: ट्रेन रोकने के लिए चेन खींचें। गलत इस्तेमाल पर 50 रुपये का जुर्माना। वह एक बर्थ पर कूद गया। गांव वालों ने उसे रोकने की कोशिश की क्योंकि उन्होंने देख लिया था कि वह क्या करने वाला है, लेकिन उसने उनसे संघर्ष किया और चेन को पकड़कर पूरी ताकत से नीचे खींच दिया। लेकिन इसका कोई असर नहीं हुआ। ट्रेन की रफ़्तार बढ़ती ही जा रही थी, और अब औरतें उस पर और भी खुलकर हंसने लगीं। ‘मैंने वहाँ कुछ छोड़ दिया है,’ वह बार-बार यही दोहराता रहा, उस दिशा की ओर इशारा करते हुए जहाँ से वे आए थे, मानो किसी तरह ट्रेन उसकी बात सुन लेगी और रुक जाएगी। उसने अपना बटुआ निकाला और टिकट परीक्षक से विनती

की: 'ये लीजिए पचास रुपये। ट्रेन रोक दीजिए। मैं आपसे विनती करता हूँ —मुझे वापस कर दीजिए। मुझे जेल जाने से कोई आपत्ति नहीं है।' लेकिन वह व्यक्ति बाकी सभी के टिकट जाँचता रहा और मान को ऐसे नज़रअंदाज़ करता रहा जैसे वह कोई मामूली पागल हो।

मान पसीने से तरबतर होकर उठा और प्रेम निवास में अपने कमरे की परिचित वस्तुओं - गद्देदार कुर्सी, ऊपर लगा पंखा, लाल कालीन और पांच या छह पेपरबैक थ्रिलर किताबों - को देखकर राहत महसूस की।

सपने को झट से भुलाकर वह चेहरा धोने चला गया। पर जैसे ही उसने आईने में अपना हैरान चेहरा देखा, सपने में दिखी औरतों की तस्वीर उसके सामने एकदम साफ हो गई। वे मुझ पर क्यों हंस रही थीं? उसने खुद से पूछा। क्या उनकी हंसी बेरहमी भरी थी...? यह तो बस एक सपना था, उसने खुद को दिलासा देते हुए कहा। लेकिन चेहरे पर पानी छिड़कते रहने के बावजूद, उसके मन से यह ख्याल नहीं निकल रहा था कि इसका कोई कारण जरूर है, और वह उसकी पहुंच से थोड़ा बाहर है। उसने सपने को फिर से याद करने के लिए आंखें बंद कर लीं, पर अब सब कुछ बेहद धुंधला था, और सिर्फ उसकी बेचैनी, यह एहसास कि उसने कुछ पीछे छोड़ दिया है, बाकी रह गया था। औरतों के चेहरे, गांव वालों के चेहरे, टिकट वसूलने वाले के चेहरे, पुलिसवालों के चेहरे, सब धुंधले पड़ गए थे। मैंने क्या पीछे छोड़ दिया होगा? उसने सोचा। वे मुझ पर क्यों हंस रही थीं?

घर में कहीं से उसे अपने पिता की तेज़ आवाज़ सुनाई दी: 'मान, मान— क्या तुम जाग रहे हो? आधे घंटे में संगीत कार्यक्रम के लिए मेहमान आने लगेंगे।' उसने कोई जवाब नहीं दिया और आईने में खुद को देखा। उसने सोचा, चेहरा बुरा नहीं है: जीवंत, तरोताज़ा, मज़बूत चेहरे वाला, लेकिन कनपटी पर हल्के बाल झड़ रहे थे—जो उसे थोड़ा अजीब लगा, क्योंकि

उसकी उम्र केवल पच्चीस साल थी। कुछ मिनट बाद एक नौकर उसे यह बताने आया कि उसके पिता उससे आंगन में मिलना चाहते हैं। मान ने नौकर से पूछा कि क्या उसकी बहन वीना आ गई है, और उसे पता चला कि वह और उसका परिवार आए और चले गए। वीना वास्तव में उसके कमरे में आई थी, लेकिन उसे सोते हुए पाकर उसने अपने बेटे भास्कर को उसे परेशान नहीं करने दिया।

मान ने माथे पर शिकन डाली, जम्हाई ली और कपड़ों की अलमारी की ओर चला गया। उसे मेहमानों और संगीत कार्यक्रमों में कोई दिलचस्पी नहीं थी और वह फिर से सोना चाहता था, इस बार बिना सपने देखे। बनारस में होली की शाम वह अक्सर इसी तरह बिताता था—भांग का नशा उतारने के लिए सोता था।

नीचे मेहमानों का आना शुरू हो गया था। उनमें से अधिकतर ने नए कपड़े पहने हुए थे और नाखूनों और बालों में थोड़ी सी लालिमा के अलावा, सुबह की मौज-मस्ती से उन पर कोई बाहरी रंग नहीं आया था। लेकिन वे सभी बहुत खुश थे और मुस्कुरा रहे थे, और यह मुस्कान सिर्फ भांग के असर से नहीं थी।

महेश कपूर के होली कॉन्सर्ट एक वार्षिक परंपरा थी, और प्रेम निवास में ये कार्यक्रम सदियों से चले आ रहे थे। उनके पिता और दादा भी इनकी मेजबानी करते थे, और केवल वही वर्ष याद हैं जब ये कार्यक्रम आयोजित नहीं हुए थे, जब इनके मेजबान जेल में थे।

आज रात गायिका सईदा बाई फ़िरोज़ाबादी थीं, जैसा कि पिछले दो वर्षों से होता आ रहा था। वे प्रेम निवास से कुछ ही दूरी पर रहती थीं, गायकों और दरबारी महिलाओं के परिवार से थीं, और उनकी आवाज़ सुरीली, मधुर और भावपूर्ण थी। उनकी उम्र लगभग पैंतीस वर्ष थी, लेकिन एक गायिका के रूप में उनकी ख्याति ब्रह्मपुर से बाहर तक फैल चुकी थी और

आजकल उन्हें मुंबई और कलकत्ता जैसे दूर-दराज के शहरों में भी गायन के लिए बुलाया जाता था। आज शाम महेश कपूर के कई मेहमान अपने मेज़बान—या यूँ कहें कि उनकी विनम्र मेज़बान—के उत्कृष्ट आतिथ्य का आनंद लेने के बजाय सईदा बाई को सुनने के लिए आए थे। मान, जिन्होंने अपनी पिछली दो होली बनारस में बिताई थीं, उनकी प्रसिद्धि से तो परिचित थे, लेकिन उन्होंने उन्हें गाते हुए नहीं सुना था।

अर्धवृत्ताकार आंगन में कालीन और सफेद चादरें बिछी हुई थीं। घुमावदार हिस्से में सफेदी किए हुए कमरे और खुले गलियारे थे, और सीधा हिस्सा बगीचे की ओर खुलता था। न कोई मंच था, न माइक्रोफोन, न ही गायक और श्रोताओं के बैठने की जगह को अलग करने वाली कोई स्पष्ट दीवार थी। कुर्सियाँ नहीं थीं, बस टेक लगाने के लिए तकिए और गद्दी थीं, और बैठने की जगह के किनारे कुछ गमले वाले पौधे रखे थे। पहले कुछ मेहमान खड़े होकर फलों का रस या ठंडाई पी रहे थे और कबाब, मेवे या होली की पारंपरिक मिठाइयाँ खा रहे थे। महेश कपूर आंगन में आने वाले मेहमानों का स्वागत कर रहे थे, लेकिन वे मान के नीचे आने का इंतज़ार कर रहे थे ताकि वे कुछ मेहमानों से औपचारिक शिष्टाचार निभाने के बजाय उनसे थोड़ी देर बात कर सकें। महेश कपूर ने मन ही मन कहा, "अगर वह पाँच मिनट में नीचे नहीं आया, तो मैं ऊपर जाकर उसे खुद जगा दूँगा। उसकी उपयोगिता के हिसाब से तो वह बनारस में ही है। लड़का कहाँ है?" सईदा बाई के लिए गाड़ी पहले ही भेजी जा चुकी है।

2.3

दरअसल, सईदा बाई और उनके संगीतकारों के लिए गाड़ी आधे घंटे से भी अधिक समय पहले भेजी जा चुकी थी, और महेश कपूर को अब जाकर चिंता होने लगी थी।

अब तक अधिकांश श्रोता बैठ चुके थे, लेकिन कुछ लोग अभी भी खड़े

होकर बातें कर रहे थे। सईदा बाई कभी-कभी कहीं गाने का वादा करके अचानक कहीं और चली जाती थीं— शायद किसी पुराने या नए प्रेमी से मिलने, किसी रिश्तेदार से मिलने, या फिर दोस्तों के छोटे समूह के लिए गाने के लिए। उनका व्यवहार पूरी तरह से उनकी अपनी मर्जी के मुताबिक था। यह नीति, या यूं कहें कि उनकी प्रवृत्ति, उनके पेशेवर करियर के लिए बहुत नुकसानदायक साबित हो सकती थी, अगर उनकी आवाज़ और उनका अंदाज़ इतना मोहक न होता। एक खास नज़रिए से देखा जाए तो उनकी इस बेपरवाही में एक रहस्य भी छिपा था। हालांकि, महेश कपूर के लिए यह रहस्य धुंधलाने लगा था, तभी उन्हें दरवाजे से एक दबी हुई आवाज़ सुनाई दी: सईदा बाई और उनके तीन साथी आखिरकार आ गए थे।

वह बेहद खूबसूरत लग रही थी। अगर वह पूरी शाम एक शब्द भी न गाती, बल्कि परिचित चेहरों को देखकर मुस्कुराती रहती और कमरे में चारों ओर प्रशंसा भरी निगाहों से देखती रहती, और जब भी उसे कोई सुंदर पुरुष या आकर्षक (आधुनिक) महिला दिखाई देती, तो रुक जाती, तो भी वहाँ मौजूद अधिकांश पुरुषों के लिए इतना ही काफी होता। लेकिन थोड़ी ही देर में वह आँगन के खुले हिस्से—बगीचे से सटे हुए भाग—की ओर बढ़ी और अपने हारमोनियम के पास बैठ गई, जिसे घर के एक नौकर ने गाड़ी से लाकर रखा था। उसने अपनी रेशमी साड़ी का पल्लू थोड़ा आगे खिसकाया: वह अक्सर नीचे खिसक जाता था, और उसकी सबसे मनमोहक अदाओं में से एक—जो उसने पूरी शाम दोहराई—अपनी साड़ी को ठीक करना था ताकि उसका सिर ढका न रहे। संगीतकार—एक तबला वादक, एक सारंगी वादक और एक तानपुरा वादक—बैठ गए और अपने वाद्ययंत्रों को ट्यून करने लगे, तभी उसने अपने भारी अंगूठियों से सजे दाहिने हाथ से एक काली कुंजी दबाई और उतने ही गहनों से सजे

बाएं हाथ से धीरे से धौंकनी में हवा भरी। तबला वादक ने अपने दाहिने हाथ के तबले की चमड़े की पट्टियों को कसने के लिए एक छोटे चांदी के हथौड़े का इस्तेमाल किया, सारंगी वादक ने अपने तख़्तों को समायोजित किया और तारों पर कुछ धुनें बजाईं। दर्शक अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए और नए आने वालों के लिए जगह बना ली। कई लड़के, जिनमें से कुछ छह साल के भी थे, अपने पिता या चाचा के पास बैठ गए। वहाँ एक सुखद उम्मीद का माहौल था। गुलाब और चमेली की पंखुड़ियों से भरे उथले कटोरे बाँटे गए: जो लोग, इम्तियाज़ की तरह, भांग के नशे में अभी भी थोड़े मदहोश थे, उनकी बढ़ी हुई सुगंध का आनंद लेते हुए कुछ देर रुके रहे।

ऊपर बालकनी में बैठी दो (कम आधुनिक) महिलाएं बेंत की स्क्रीन में बनी दरारों से नीचे देख रही थीं और सईदा बाई के पहनावे, आभूषण, चेहरे, तौर-तरीकों, पृष्ठभूमि और आवाज पर चर्चा कर रही थीं।

'साड़ी अच्छी है, पर कुछ खास नहीं। वह हमेशा बनारसी रेशम की साड़ी पहनती है। आज रात लाल रंग की पहनी है। पिछले साल हरे रंग की पहनी थी। कभी हरी, कभी हरी।'

‘इस साड़ी में जरी का काम तो देखो।’

'बहुत ही दिखावटी, बहुत ही दिखावटी—लेकिन मुझे लगता है कि उसके पेशे में यही सब जरूरी है, बेचारी।'

मैं उसे "बेचारी" नहीं कहूंगी। उसके गहने देखो। वो भारी सोने का हार जिस पर तामचीनी का काम है—

‘यह मेरी पसंद के हिसाब से थोड़ा ज्यादा नीचे आता है—’

“खैर, वैसे भी, लोग कहते हैं कि यह उसे सीतागढ़ के लोगों ने दिया था!”

'ओह।'

और मुझे लगता है कि उनमें से कई अंगूठियां भी उन्हीं की हैं। वो

सीतागढ़ के नवाब की चहेती हैं। कहते हैं कि उन्हें संगीत बहुत पसंद है।
और संगीतकारों के बारे में?
‘स्वाभाविक रूप से। अब वह महेशजी और उनके बेटे मान का अभिवादन कर रही हैं। वह खुद से बहुत खुश लग रहे हैं। क्या वह वही राज्यपाल हैं जो—’
'जी हां, जी हां, ये सारे कांग्रेसी एक जैसे ही हैं। सादगी और सरल जीवन की बातें तो करते हैं, लेकिन फिर अपने दोस्तों के मनोरंजन के लिए इस तरह के लोगों को घर पर बुला लेते हैं।'
‘खैर, वो कोई डांसर या ऐसी कोई चीज नहीं है।’ ‘नहीं, लेकिन आप इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि वो क्या है!’
लेकिन आपके पति भी आ गए हैं।
‘मेरे पति!’
दोनों महिलाएं—एक कान, नाक और गले के विशेषज्ञ की पत्नी और दूसरी जूते के व्यापार में एक महत्वपूर्ण बिचौलिए की पत्नी—पुरुषों के तौर-तरीकों पर हताशा और निराशा के साथ एक-दूसरे को देखने लगीं।
‘वह अभी राज्यपाल से अभिवादन कर रही है। देखो वह कैसे मुस्कुरा रहा है। कितना मोटा-सा आदमी है—लेकिन लोग कहते हैं कि वह बहुत काबिल है।’
अरे, एक गवर्नर को इधर-उधर कुछ रिबन काटने और गवर्नमेंट हाउस की विलासिता का आनंद लेने के अलावा और क्या करना होता है? क्या तुम सुन पा रही हो कि वह क्या कह रही है?
'नहीं।'
जब भी वह अपना सिर हिलाती है, उसकी नाक की नथनी पर लगा हीरा चमकता है। यह किसी कार की हेडलाइट की तरह है।
'एक ऐसी कार जिसने अपने जीवनकाल में कई यात्रियों को सफर कराया

है।'

'कितने बजे? वो तो अभी सिर्फ पैंतीस साल की है। अभी तो वो बहुत लंबा सफर तय करेगी। और इतनी सारी अंगूठियां! इसीलिए तो वो हर किसी को देखकर आदाब जताती है।' 'ज़्यादातर हीरे और नीलम, हालांकि मुझे यहां से ठीक से दिखाई नहीं दे रहा।'

उसके दाहिने हाथ पर कितना बड़ा हीरा है—

'नहीं, वह सफेद रंग की कोई चीज है—मैं सफेद नीलम कहने वाला था, लेकिन वह नहीं है—मुझे बताया गया था कि यह हीरे से भी ज्यादा महंगा है, लेकिन मुझे याद नहीं आ रहा कि उसे क्या कहते हैं।'

'सोने की चूड़ियों के बीच उसे ये चमकीली कांच की चूड़ियां पहनने की क्या जरूरत है? ये थोड़ी सस्ती लग रही हैं!'

'खैर, उसे फिरोजाबादी यूं ही नहीं कहा जाता। भले ही उसके पूर्वज—उसकी पूर्वमाताएं—फिरोजाबाद से न हों, कम से कम उसकी कांच की चूड़ियां तो वहीं से हैं। ओह-हो, देखो वो नौजवानों को कैसे निगाहों से देख रही है!'

'बेशर्म।'

उस बेचारे युवक को समझ नहीं आ रहा कि वह कहाँ देखे।

'कौन है ये?'

'डॉ. दुर्रानी का छोटा बेटा, हाशिम। वह महज अठारह साल का है।'

'हम्म। । । ।'

'बहुत ही सुंदर है। देखो तो सही, वह शरमा रहा है।'

'शर्म आ गई! ये सारे मुस्लिम लड़के भले ही मासूम दिखते हों, लेकिन दिल में बड़े हवस भरे हैं, मैं आपको बता दूं। जब हम कराची में रहते थे —' लेकिन तभी सईदा बाई फ़िरोज़ाबादी ने दर्शकों से अभिवादन करने के बाद, अपने संगीतकारों से धीमी आवाज़ में बात करने के बाद, अपने

दाहिने गाल के कोने में पान रखकर और गला साफ़ करने के लिए दो बार खांसने के बाद गाना शुरू कर दिया।

2.4

उस सुरीली आवाज़ से अभी कुछ ही शब्द निकले थे कि दर्शकों की वाह-वाह और अन्य प्रशंसा भरी टिप्पणियों ने सईदा बाई के चेहरे पर एक मुस्कान ला दी। वह सचमुच सुंदर थीं, लेकिन उनकी सुंदरता किसमें छिपी थी? वहाँ मौजूद अधिकांश पुरुषों के लिए इसे समझाना मुश्किल होता; ऊपर बैठी महिलाएं शायद अधिक समझदार होतीं। वह केवल देखने में ही सुंदर नहीं थीं, बल्कि उनमें एक प्रतिष्ठित दरबारी की सारी अदाएं थीं—कृपा के छोटे-छोटे संकेत, सिर झुकाने का अंदाज़, नथनी की चमक, जिन लोगों की ओर वह आकर्षित होती थीं, उनके प्रति उनके व्यवहार में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह की मनमोहक शैली, उर्दू कविता, विशेषकर ग़ज़ल का ऐसा ज्ञान जिसे जानकार श्रोताओं के बीच भी सतही नहीं माना जाता था। लेकिन इन सबसे बढ़कर, और उनके कपड़ों, गहनों, यहाँ तक कि उनकी असाधारण प्रतिभा और संगीत प्रशिक्षण से भी बढ़कर, उनकी आवाज़ में एक दर्द सा था। यह उदासी कहाँ से आई, यह कोई निश्चित रूप से नहीं जानता था, हालाँकि ब्रह्मपुर में उसके अतीत के बारे में अफवाहें आम थीं। यहाँ तक कि महिलाएँ भी यह नहीं कह सकती थीं कि यह उदासी दिखावा थी। वह किसी न किसी तरह साहसी और संवेदनशील दोनों प्रतीत होती थी, और यही संयोजन उसे मोहक बनाता था।

होली होने के कारण उन्होंने अपने गायन की शुरुआत कुछ होली गीतों से की। सईदा बाई फ़िरोज़ाबादी मुस्लिम थीं, लेकिन उन्होंने कृष्ण के अपने पालक पिता के गाँव की गोपियों के साथ होली खेलने के इन आनंदमय वर्णनों को इतने मनमोहक और ऊर्जावान ढंग से गाया कि मानो उन्होंने यह दृश्य अपनी आँखों से देखा हो। श्रोताओं में बैठे छोटे बच्चे उन्हें आश्चर्य

से देख रहे थे। यहाँ तक कि सविता, जिनकी यह अपने सास-ससुर के घर में पहली होली थी और जो आनंद की अपेक्षा कर्तव्यवश आई थीं, उन्हें भी आनंद आने लगा।

श्रीमती रूपा मेहरा, अपनी छोटी बेटी की रक्षा करने की ज़रूरत और अपनी पीढ़ी की किसी महिला, विशेषकर एक विधवा, के नीचे बैठे लोगों के बीच में फंसी हुई थीं। (प्राण को लता पर नज़र रखने की सख्त हिदायत देकर) वह ऊपर चली गईं। वह बेंत के पर्दे के एक छेद से श्रीमती महेश कपूर को देख रही थीं और कह रही थीं, 'मेरे ज़माने में ऐसी शाम के लिए किसी भी महिला को आँगन में आने की इजाज़त नहीं होती थी।' श्रीमती रूपा मेहरा का अपनी शांत, बेहद दबी हुई मेज़बान से इस तरह की आपत्ति जताना थोड़ा अनुचित था, जिन्होंने वास्तव में इस बारे में अपने पति से बात की थी, और उनके पति ने बदलते समय के आधार पर उनकी बात को जल्दबाज़ी में खारिज कर दिया था।

गायन के दौरान लोग आंगन में आते-जाते रहे, और जैसे ही सईदा बाई की नज़र दर्शकों में कहीं किसी हलचल पर पड़ी, उन्होंने अपने हारमोनियम वादन को तोड़ते हुए हाथ के इशारे से नए अतिथि का अभिवादन किया। लेकिन सारंगी के उदास स्वर उनकी आवाज़ के लिए पर्याप्त थे, और वे अक्सर किसी उत्कृष्ट नकल या सुधार के लिए सारंगी वादक की ओर प्रशंसा भरी नज़र से देखती थीं। हालाँकि, उनका अधिकांश ध्यान युवा हाशिम दुर्रानी पर था, जो पहली पंक्ति में बैठे थे और जब भी सईदा बाई गायन रोककर कोई तीखी टिप्पणी करतीं या कोई अनौपचारिक शेर उन्हें समर्पित करतीं, तो उनका चेहरा लाल हो जाता था। सईदा बाई शाम की शुरुआत में ही दर्शकों में से किसी एक व्यक्ति को चुनकर अपने सभी गीत उसी को समर्पित करने के लिए प्रसिद्ध थीं—वह उनके लिए क्रूर, हत्यारा, शिकारी, जल्लाद आदि बन जाता था—वास्तव में, उनकी ग़ज़लों

का आधार।
सईदा बाई को मीर और ग़ालिब की ग़ज़लें गाना सबसे ज़्यादा पसंद था, लेकिन उन्हें वली दक्कनी और मस्त की ग़ज़लों का भी शौक था। मस्त की शायरी भले ही उतनी उत्कृष्ट न हो, लेकिन स्थानीय लोगों में वे बहुत लोकप्रिय थे क्योंकि उन्होंने अपने दुख भरे जीवन का अधिकांश समय ब्रह्मपुर में बिताया था। उन्होंने अपनी कई ग़ज़लें पहली बार बरसात महल में संस्कृति से विमुख ब्रह्मपुर के नवाब के सामने सुनाई थीं, इससे पहले कि उनका अयोग्य, दिवालिया और निःसंतान राज्य अंग्रेजों द्वारा अपने अधीन कर लिया गया। इसलिए उनकी पहली ग़ज़ल मस्त की ही थी, और जैसे ही पहला वाक्य गाया गया, मंत्रमुग्ध श्रोतागण प्रशंसा की गर्जना से गूंज उठे।
'मैं झुकती भी नहीं, फिर भी मेरा कॉलर फटा हुआ पाती हूँ...' उसने कहना शुरू किया और अपनी आँखें आधी बंद कर लीं।
मैं झुकता नहीं हूँ, फिर भी मेरा कॉलर फटा हुआ पाता हूँ।
कांटे यहाँ थे, मेरे पैरों के नीचे, वहाँ नहीं।
'आह,' न्यायमूर्ति माहेश्वरी ने असहाय भाव से कहा, उनका सिर उनकी गोल-मटोल गर्दन पर आनंद से कांप रहा था। सईदा बाई ने आगे कहा:
'जब कोई मुझे दोषी नहीं ठहराएगा तो क्या मैं निर्दोष हो सकता हूँ?'
मुझे इस जाल में फंसाने वाला शिकारी कौन है?

यहां सईदा बाई ने उस बेचारे अठारह वर्षीय लड़के को आधी पिघलती हुई, आधी आरोप भरी निगाहों से देखा। वह तुरंत नज़रें नीचे करने लगा, और उसके एक दोस्त ने उसे कोहनी मारी और खुशी से दोहराया, 'क्या तुम निर्दोष हो सकते हो?' जिससे वह और भी शर्मिंदा हो गया।
लता ने उस नौजवान को सहानुभूति से देखा और सईदा बाई को हैरानी

से। वह ये सब कैसे कर सकती है? उसने सोचा, प्रशंसा और थोड़ी सी हैरानी के साथ—ये तो उनके भावों को मिट्टी की तरह ढाल रही है, और ये सारे मर्द बस मुस्कुरा रहे हैं और आहें भर रहे हैं! और मान तो सबसे बुरा है! लता को आमतौर पर गंभीर शास्त्रीय संगीत पसंद था। लेकिन अब—अपनी बहन की तरह—उसे ग़ज़ल भी अच्छी लगने लगी थी, और साथ ही —हालाँकि ये उसके लिए अजीब था—प्रेम निवास का बदला हुआ, रोमांटिक माहौल भी। उसे खुशी थी कि उसकी माँ ऊपर थी।

इसी बीच, सईदा बाई ने मेहमानों की ओर हाथ बढ़ाते हुए गाना जारी रखा:

'धर्मनिष्ठ लोग सराय के द्वार से दूर रहते हैं—

लेकिन मुझे उनकी निगाहों का सामना करने के लिए साहस की जरूरत है।'

'वाह! वाह!' इम्तियाज़ ने पीछे से ज़ोर से आवाज़ लगाई। सईदा बाई ने उसे एक चमकदार मुस्कान दी, फिर जैसे चौंक गई हो, वैसे ही भौंहें चढ़ा लीं। हालाँकि, खुद को संभालते हुए, उसने आगे कहा:

उस गली के बाहर एक जागती रात के बाद,

सुबह की हल्की हवा सुगंधित वातावरण को हिला देती है।

व्याख्या का द्वार बंद और अवरुद्ध है।

लेकिन मैं बस ऐसे ही चलता रहता हूँ और न तो मुझे कुछ पता है और न ही मुझे परवाह है।'

'और न तो जानते हैं, न ही परवाह करते हैं' यह गीत बीस आवाजों ने एक साथ गाया। सईदा बाई ने उनके उत्साह को सिर झुकाकर सराहा। लेकिन इस दोहे की अपरंपरागतता को अगले दोहे की अपरंपरागतता ने मात दे दी:

मैं अपने हृदय के काबा में घुटने टेकता हूँ

और मैं अपने ईश्वर के सामने अपना चेहरा उठाकर प्रार्थना करता हूँ।
श्रोता आहें भरने लगे और कराहने लगे; 'प्रार्थना' शब्द पर उसकी आवाज लगभग टूट गई; जो व्यक्ति इस बात से असहमत होता, वह स्वयं एक भावनाहीन मूर्ति ही होता।
'यद्यपि सूर्य की रोशनी से मेरी आँखें चौंधिया जाती हैं, फिर भी मैं देख पाता हूँ, हे मस्त,
चेहरे पर चांदनी, बालों के बादल।
सईदा बाई द्वारा अंतिम शेर के पाठ से मान इतना भावुक हो गया कि उसने असहाय होकर अपनी बाहें उसकी ओर उठा दीं। सईदा बाई ने खांसकर अपना गला साफ किया और रहस्यमय ढंग से उसकी ओर देखा। मान को पूरे शरीर में गर्मी और कंपकंपी महसूस हुई और वह कुछ देर तक अवाक रहा, लेकिन फिर उसने अपने सात वर्षीय देहाती भतीजे के सिर पर तबला थपथपाया।
'अब आप क्या सुनेंगे, महेशजी?' सईदा बाई ने उनके पिता से पूछा। 'आपके घर में तो हमेशा ही बहुत अच्छे श्रोता आते हैं। और आप इतने ज्ञानी हैं कि कभी-कभी मुझे लगता है कि मेरी बात अनावश्यक है। मुझे बस दो शब्द गाने होते हैं और आप लोग ग़ज़ल पूरी कर देते हैं।'
'नहीं, नहीं!', 'आप क्या कह रही हैं?' और 'हम तो आपकी महफ़ परछाईं हैं, सईदा बेगम!' की चीखें सुनाई दीं।
उन्होंने आगे कहा, 'मैं जानती हूँ कि यह मेरी आवाज़ की वजह से नहीं, बल्कि आपकी और ऊपर वाले की कृपा से है कि मैं आज रात यहाँ हूँ। मैं देख रही हूँ कि आपका बेटा मेरे साधारण प्रयासों की उतनी ही सराहना करता है जितनी आप कई वर्षों से करते आ रहे हैं। ये गुण तो खून में ही होते हैं। आपके पिता, जिनकी आत्मा को शांति मिले, मेरी माँ के प्रति अत्यंत दयालु थे। और अब मैं आपकी कृपा की पात्र हूँ।'

महेश कपूर ने बड़े ही सलीके से जवाब दिया, 'किसने किसको अनुग्रहित किया है?'

लता ने कुछ हैरानी से उसकी तरफ देखा। मान ने उसकी नज़र पकड़ी और आँख मारी— और लता भी मुस्कुराए बिना नहीं रह सकी। अब जब वह रिश्तेदार था, तो उसे उसके साथ ज़्यादा सहजता महसूस हो रही थी। उसके मन में आज सुबह का उसका व्यवहार कौंध गया, और एक बार फिर उसके होंठों पर मुस्कान आ गई। लता अब कभी भी प्रोफ़ेसर मिश्रा का व्याख्यान सुने बिना उसे टब से भीगे हुए, गुलाबी और असहाय बच्चे की तरह निकलते हुए नहीं देख पाएगी।

“लेकिन कुछ नौजवान इतने चुप रहते हैं,” सईदा बाई ने आगे कहा, “कि मानो वे मंदिर में रखी मूर्तियाँ ही हों। शायद उन्होंने इतनी बार अपनी नसें चीर दी हैं कि उनमें खून ही नहीं बचा है। है ना?” वह खुशी से हंस पड़ी।

उन्होंने कहा, ‘मेरा दिल उससे क्यों न जुड़े?’

आज उन्होंने रंगीन कपड़े पहने हैं।

युवा हाशिम ने शर्मिंदगी से अपने नीले, कढ़ाईदार कुर्ते की ओर देखा। लेकिन सईदा बाई निर्दयता से बोलती रहीं:

मैं उनके पहनावे के बेहतरीन स्वाद की प्रशंसा कैसे कर सकता हूँ?

देखने में वह किसी राजकुमार जैसा लगता है।

चूंकि उर्दू कविता का अधिकांश भाग, उससे पहले की फारसी और अरबी कविताओं की तरह, कवियों द्वारा युवा पुरुषों को संबोधित किया गया था, इसलिए सईदा बाई को पुरुषों के पहनावे और व्यवहार के ऐसे संदर्भ ढूंढना बड़ी आसानी से हो गया जिससे यह स्पष्ट हो जाए कि वह किसे निशाना बना रही हैं। हाशिम चाहे शर्म से लाल हो जाए, अपने होंठ दबा ले, लेकिन सईदा बाई के पास दोहों की कमी नहीं होने वाली थी। उन्होंने उसकी ओर देखा और सुनाना शुरू किया:

तुम्हारे लाल होंठ अमृत से भरे हुए हैं।
आपको अमृत लाल नाम देना कितना सही है!
हाशिम के दोस्त अब ठहाकों से लोटपोट हो रहे थे। लेकिन शायद सईदा बाई समझ गई थीं कि वह फिलहाल और अधिक प्रेम भरी बातों को सहन नहीं कर सकते, इसलिए उन्होंने कृपापूर्वक उन्हें थोड़ी देर के लिए आराम करने दिया। अब श्रोतागण भी अपने सुझाव देने के लिए पर्याप्त रूप से साहसी हो गए थे, और सईदा बाई द्वारा ग़ालिब की एक जटिल और संदर्भों से भरी ग़ज़ल गाने के बाद—जो इतने भावुक गायक के लिए एक बौद्धिक रुचि थी—किसी ने ग़ालिब की एक सरल और पसंदीदा ग़ज़ल, 'वे मुलाकातें और वे बिछड़ना कहाँ चले गए?' का सुझाव दिया।
सईदा बाई ने सारंगी और तबला वादकों की ओर मुड़कर कुछ शब्द बुदबुदाते हुए सहमति दी। सारंगी ने धीमी, उदास और भावुक ग़ज़ल की प्रस्तावना बजानी शुरू की, जिसे ग़ालिब ने बुढ़ापे में नहीं, बल्कि गायिका से कुछ ही उम्र में लिखा था। सईदा बाई ने इसके हर प्रश्नवाचक शेर में ऐसी कड़वाहट और मिठास भर दी कि श्रोताओं में सबसे बुजुर्ग लोगों का भी दिल पिघल गया। जब वे किसी परिचित भावुक पंक्ति के अंत में उनके साथ गाने लगे, तो ऐसा लगा मानो वे अपने ज्ञान का प्रदर्शन करने के बजाय स्वयं से ही कोई प्रश्न पूछ रहे हों। और इस ध्यान ने गायिका से और भी गहरी प्रतिक्रिया उत्पन्न की, जिससे ग़ालिब के आध्यात्मिक विचारों की ओर लौटने वाला कठिन अंतिम शेर भी ग़ज़ल से विलीन होने के बजाय चरम पर पहुँच गया।
इस शानदार प्रस्तुति के बाद, श्रोता सईदा बाई के वश में हो गए। जो लोग ग्यारह बजे तक निकलने की योजना बना रहे थे, वे भी वहां से जाने में असमर्थ रहे और जल्द ही आधी रात हो गई।
मान का छोटा भतीजा, बाकी कई लड़कों की तरह, उसकी गोद में सो

गया था, और नौकर उन्हें बिस्तर पर ले गए थे। मान, जो अतीत में कई बार प्रेम में पड़ चुका था और इसलिए एक प्रकार की खुशनुमा पुरानी यादों में खोया रहता था, सईदा बाई की आखिरी ग़ज़ल से भावुक हो गया और सोच-विचार करते हुए एक काजू अपने मुंह में डाल लिया। वह क्या कर सकता था?—उसे लग रहा था कि वह उससे बेकाबू होकर प्यार करने लगा है। सईदा बाई अब हाशिम के साथ अपने चंचल अंदाज़ में लौट आई थीं, और जब उन्होंने लड़के से कोई प्रतिक्रिया पाने की कोशिश की तो मान को थोड़ी जलन हुई।

'ट्यूलिप और गुलाब, उनकी तुलना आपसे कैसे की जा सकती है?'

वे अपूर्ण रूपकों से अधिक कुछ नहीं हैं।

जब इससे केवल बेचैनी से करवट बदलने के अलावा कोई परिणाम नहीं निकला, तो उसने अधिक साहसी दोहे का प्रयास किया:

'तुम्हारी सुंदरता ने एक समय दुनिया को मोहित कर लिया था—
जब पहली गेंद आपके गालों पर लगी, तब भी यह एक चमत्कार था।

यह बात सटीक बैठ गई। यहाँ दो शब्द-खेल थे, एक सौम्य और दूसरा उतना सौम्य नहीं: 'विश्व' और 'आश्चर्य' एक ही शब्द थे—आलम—और 'पहला नीचे' का अर्थ संभवतः 'एक पत्र' भी हो सकता था। हाशिम, जिसके चेहरे पर हल्के-हल्के बाल थे, ने पूरी कोशिश की कि मानो 'खत' का अर्थ केवल पत्र ही हो, लेकिन इससे उसे बहुत असहजता हुई। उसने अपने पिता से अपने दुख में सहारा पाने के लिए उनकी ओर देखा—उसके अपने दोस्त तो बिलकुल भी मददगार नहीं थे, क्योंकि वे बहुत पहले ही उसे चिढ़ाने में शामिल हो चुके थे—लेकिन अन्यमनस्क डॉ. दुर्रानी कहीं पीछे आधे सोए हुए थे। उनके एक दोस्त ने धीरे से हाशिम के गाल पर हाथ फेरा और आह भरी। शर्म से लाल होकर हाशिम आंगन से बाहर निकलकर बगीचे में टहलने के लिए उठ खड़ा हुआ। वह अभी आधा

ही खड़ा हुआ था कि सईदा बाई ने उस पर ग़ालिब की गोलियों की बौछार कर दी:
सभा में मेरा नाम सुनते ही वह उठकर जाने लगी...
हाशिम लगभग रोते हुए सईदा बाई को आदाब करके आंगन से बाहर चला गया। लता, जिसकी आँखों में शांत उत्साह की चमक थी, को उस पर थोड़ी दया आई; लेकिन जल्द ही उसे भी अपनी माँ, सविता और प्राण के साथ जाना पड़ा।
2.5
दूसरी ओर, मान को अपने डरपोक प्रतिद्वंद्वी के लिए ज़रा भी अफ़सोस नहीं हुआ। वह आगे आया, बाएँ और दाएँ सिर हिलाकर और गायक को आदरपूर्वक अभिवादन करके हाशिम की जगह बैठ गया। सईदा बाई, शाम के बाकी समय के लिए प्रेरणा के स्रोत के रूप में एक आकर्षक, भले ही उतना कोमल न हो, स्वयंसेवक पाकर खुश थीं, उन्होंने हाशिम की ओर मुस्कुराते हुए कहा:

हे हृदय, किसी भी हालत में दृढ़ता का त्याग मत करो।
क्योंकि बिना स्थिरता के प्रेम की नींव कमजोर होती है।
जिस पर मान ने तुरंत और दृढ़ता से उत्तर दिया:
'दाघ जहां भी बैठा है, वहीं बैठा है।'
दूसरे लोग आपकी सभा छोड़ सकते हैं, लेकिन वह नहीं!
इस पर दर्शकों में हंसी गूंज उठी, लेकिन सईदा बाई ने अपनी कविता के माध्यम से उन्हें जवाब देकर अंतिम बात कहने का फैसला किया:
'दाग एक बार फिर ताक-झांक कर रहा है।'
वह ठोकर खाकर कहीं न कहीं फंस जाएगा।'
इस सटीक प्रतिक्रिया पर श्रोतागण स्वतःस्फूर्त तालियों से गूंज उठे। मान

भी उतना ही प्रसन्न था जितना कोई और कि सईदा बाई फ़िरोज़ाबादी ने उसके तुरुप के पत्ते को मात दे दी थी, या यूं कहें कि उसके नौ को दस से भी बड़ा तुरुप का पत्ता बना दिया था। वह भी बाकी सब की तरह ज़ोर-ज़ोर से हंस रही थी, और उसके साथी, मोटा तबला वादक और उसका दुबला-पतला सारंगी वादक भी। थोड़ी देर बाद, सईदा बाई ने मौन का इशारा करते हुए हाथ उठाया और कहा, 'मुझे उम्मीद है कि इस तालियों का आधा हिस्सा मेरे इस चतुर युवा मित्र के लिए था।'

मान ने शरारती अंदाज़ में पश्चाताप व्यक्त करते हुए उत्तर दिया: 'आह, सईदा बेगम, मैंने आपसे मजाक करने की हिम्मत तो की, लेकिन मेरी सारी व्यवस्था व्यर्थ हो गई।'

दर्शक फिर हँस पड़े, और सईदा बाई फ़िरोज़ाबादी ने मीर के इस उद्धरण को उपयुक्त ग़ज़ल की एक सुंदर प्रस्तुति से पुरस्कृत किया:

मेरे सारे प्रयास व्यर्थ गए, कोई दवा मेरी बीमारी को ठीक नहीं कर सकी।

मेरे दिल की बीमारी ने ही अंततः मेरी जान ले ली।

मैंने अपनी जवानी आंसुओं में बिताई, बुढ़ापे में अंत में मैंने अपनी आंखें थमाईं;

यानी: मैं रात भर जागता रहा, भोर होने तक और अंत में नींद आई।

मान उसे मंत्रमुग्ध, मोहित और मोहक अंदाज़ में देखता रहा। भोर तक लंबी रातों तक जागते रहना और उसके कानों में उसकी आवाज़ सुनना कैसा लगेगा?

'हम जैसे असहाय लोगों पर स्वतंत्र विचार और कर्म करने का आरोप लगाया गया।'

उन्होंने अपनी मनमर्जी की और हम पर झूठे आरोप लगाए।

अंधकार और प्रकाश के इस संसार में मेरी यही एकमात्र भूमिका है:

किसी तरह दुख में दिन से रात और रात से दिन गुजारना।

आप यह क्यों पूछ रहे हैं कि मीर के धर्म, उसके इस्लाम का क्या हुआ? ब्राह्मण का चिन्ह धारण करके वह मूर्तिपूजा के मंदिरों में विचरण करता है।
रात हंसी-मजाक और संगीत के बीच चलती रही। काफी रात हो चुकी थी; सौ लोगों की भीड़ घटकर बारह रह गई थी। लेकिन सईदा बाई संगीत में इतनी मग्न थीं कि जो लोग बचे थे, वे मंत्रमुग्ध हो गए। वे आगे बढ़कर एक छोटे समूह में बैठ गए। मान को समझ नहीं आ रहा था कि वह वहां अपने कानों से रुका हुआ था या अपनी आंखों से। सईदा बाई बीच-बीच में गाते-गाते रुककर बचे हुए लोगों से बातें करती रहीं। उन्होंने सारंगी और तानपुरा बजाने वालों को जाने दिया। अंत में उन्होंने अपने तबला वादक को भी जाने दिया, जो मुश्किल से अपनी आंखें खुली रख पा रहा था। उनकी आवाज और हारमोनियम ही बचे थे, और वे ही काफी जादू बिखेर रहे थे। भोर होने ही वाली थी जब उन्होंने जम्हाई ली और उठ खड़ी हुईं।
मान ने आधी लालसा और आधी हंसी भरी निगाहों से उसकी ओर देखा। उसने कहा, 'मैं गाड़ी का इंतजाम कर दूंगा।'
‘तब तक मैं बगीचे में टहल लूँगी,’ सईदा बाई ने कहा। ‘रात का यह सबसे खूबसूरत समय है। बस इसे’—उन्होंने हारमोनियम की ओर इशारा करते हुए कहा—‘और बाकी चीजें—कल सुबह मेरे घर वापस भेज देना। ठीक है,’ उन्होंने आँगन में बचे पाँच-छह लोगों से आगे कहा:
अब मीर मूर्तियों के मंदिर से विदा लेता है—
हम फिर मिलेंगे...
मान ने दोहे को पूरा किया: ‘...अगर यह ईश्वर की इच्छा हो।’
उसने सहमति में सिर हिलाने की उम्मीद में उसकी ओर देखा, लेकिन वह पहले ही बगीचे की ओर मुड़ चुकी थी।
सईदा बाई फ़िरोज़ाबादी, अचानक 'इन सब' से ऊबकर (पर ये सब क्या था?), प्रेम निवास के बगीचे में एक-दो मिनट टहलीं। उन्होंने एक पोमेलो

के पेड़ की चमकदार पत्तियों को छुआ। हरसिंगार के फूल अब खिले नहीं थे, लेकिन एक जैकारांडा का फूल अंधेरे में नीचे की ओर झुका हुआ था। उन्होंने ऊपर देखा और थोड़ी उदास मुस्कान के साथ खुद को समझाया। सब कुछ शांत था: न कोई चौकीदार, न कोई कुत्ता। एक छोटे कवि, मिनाई की कुछ पसंदीदा पंक्तियाँ उनके मन में आईं, और उन्होंने उन्हें गाने के बजाय ज़ोर से सुनाया।

‘बैठक समाप्त हो गई है; पतंगे
मोमबत्ती की रोशनी को अलविदा कहो।
प्रस्थान का समय आकाश में अंकित है।
रात में बस कुछ ही तारे चमकते हैं. . .

उसे हल्की खांसी आई—क्योंकि रात अचानक ठंडी हो गई थी—उसने अपनी हल्की शॉल को अपने चारों ओर और कसकर लपेट लिया, और किसी के उसे उसके अपने घर तक ले जाने का इंतजार करने लगी, जो पसंद बाग में ही था और कुछ ही मिनटों की दूरी पर था।

2.6

प्रेम निवास में सईदा बाई के गाने के अगले दिन रविवार था। होली का खुशनुमा माहौल अभी भी चारों ओर छाया हुआ था। मान उसे अपने मन से निकाल ही नहीं पा रहा था।

वह स्तब्ध होकर इधर-उधर भटक रहा था। उसने दोपहर के शुरुआती समय में सईदा बाई का हारमोनियम उसके घर भिजवाने का इंतज़ाम किया और खुद भी गाड़ी में बैठने का मन कर रहा था। लेकिन सईदा बाई से मिलने का यह सही समय नहीं था—वैसे भी, सईदा ने उसे ऐसा कोई संकेत नहीं दिया था कि वह उससे दोबारा मिलकर खुश होंगी। मान के पास करने के लिए कुछ खास नहीं था। यही उसकी समस्या का एक हिस्सा था। बनारस में उसे व्यस्त रखने के लिए कुछ न कुछ काम तो था;

ब्रह्मपुर में वह हमेशा खुद को खाली-खाली सा महसूस करता था। हालांकि, उसे इससे कोई खास फ़र्क नहीं पड़ता था। उसे पढ़ना उतना पसंद नहीं था, लेकिन दोस्तों के साथ घूमना उसे अच्छा लगता था। शायद उसे फ़िरोज़ से मिलना चाहिए, उसने सोचा।

फिर, मस्त की ग़ज़लों के बारे में सोचते हुए, वह एक तांगे में बैठ गया और तांगे वाले से उसे बरसात महल ले जाने को कहा। मान को वहाँ गए कई साल हो गए थे, और आज उसे उसे देखने की इच्छा हुई।

तांगा ब्रह्मपुर के पूर्वी भाग की हरी-भरी आवासीय बस्तियों से गुज़रता हुआ नबीगंज पहुँचा, जो एक व्यावसायिक सड़क थी और जहाँ से खुलेपन का अंत और भीड़भाड़ और अव्यवस्था का आरंभ होता था। इसके आगे पुराना ब्रह्मपुर था, और पुराने शहर के लगभग पश्चिमी छोर पर, गंगा नदी के किनारे, बरसात महल का सुंदर परिसर और उससे भी अधिक सुंदर संगमरमर की इमारत खड़ी थी।

नबीगंज एक फैशनेबल शॉपिंग स्ट्रीट थी, जहाँ शाम के समय ब्रह्मपुर के संभ्रांत लोग टहलते हुए देखे जा सकते थे। दोपहर की तेज गर्मी में, इस समय वहाँ ज्यादा खरीदार नहीं थे, बस कुछ ही कारें, तांगे और साइकिलें दिखाई दे रही थीं। नबीगंज के साइनबोर्ड अंग्रेजी में लिखे थे और कीमतें भी साइनबोर्ड के अनुसार ही थीं। इंपीरियल बुक डिपो जैसी किताबों की दुकानें, डॉवलिंग एंड स्नैप (अब भारतीय प्रबंधन के अधीन) जैसे अच्छी तरह से सुसज्जित जनरल स्टोर, मैगौरियन जैसे बढ़िया दर्जी जहाँ फ़िरोज़ अपने सारे कपड़े (सूट से लेकर अचकन तक) सिलवाता था, प्राहा जूतों की दुकान, एक शानदार ज्वैलरी की दुकान, रेड फॉक्स, चेज़ यास्मीन और ब्लू डेन्यूब जैसे रेस्तरां और कॉफी हाउस, और दो सिनेमा हॉल—मनोर्मा टॉकीज़ (जहाँ हिंदी फिल्में दिखाई जाती थीं) और रियाल्टो (जहाँ हॉलीवुड और ईलिंग की फिल्में दिखाई जाती थीं): इनमें से प्रत्येक स्थान

ने मान के किसी न किसी प्रेम प्रसंग में कोई न कोई छोटी या बड़ी भूमिका निभाई थी। लेकिन आज, जब तांगा चौड़ी सड़क से गुजर रहा था, मान ने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया। तांगा एक छोटी सड़क पर मुड़ा, और लगभग तुरंत ही एक और भी छोटी सड़क पर, और अब वे एक बिल्कुल अलग दुनिया में थे।

बैलगाड़ियों, रिक्शा, साइकिलों और पैदल चलने वालों की भीड़ के बीच से तांगे के निकलने के लिए मुश्किल से ही जगह थी, जो सड़क और फुटपाथ दोनों पर उमड़ पड़े थे—और जिनके साथ नाई खुले में अपना धंधा चला रहे थे, ज्योतिषी, अस्थायी चाय की दुकानें, सब्जी के स्टॉल, बंदरों को प्रशिक्षित करने वाले, कान साफ करने वाले, जेबकतरे, आवारा पशु, फीकी खाकी वर्दी में टहलते हुए इक्का-दुक्का ऊंघते पुलिसकर्मी, और पसीने से लथपथ लोग अपनी पीठ पर तांबा, स्टील की छड़ें, कांच या कागज के बेकार टुकड़ों का भारी बोझ ढोते हुए चिल्ला रहे थे, 'सावधान रहो!' 'सावधान!' की आवाज़ें किसी तरह शोरगुल को चीरती हुई सुनाई देती थीं, पीतल और कपड़े की दुकानें (मालिक चिल्लाकर और इशारों से अनिश्चित ग्राहकों को अंदर खींचने की कोशिश करते थे), टिनी टॉट्स (अंग्रेजी माध्यम) स्कूल का छोटा नक्काशीदार पत्थर का प्रवेश द्वार जो एक दिवालिया रईस की पुनर्निर्मित हवेली के आंगन में खुलता था, और भिखारी—युवा और बूढ़े, आक्रामक और विनम्र, कुष्ठ रोगी, अपंग या अंधे—जो शाम ढलते ही चुपचाप नबीगंज में घुस आते थे, सिनेमा हॉल के सामने कतारों में काम कर रही पुलिस से बचने की कोशिश करते थे। कौवे कांव-कांव कर रहे थे, फटे-पुराने कपड़ों में छोटे लड़के इधर-उधर भाग-दौड़ कर रहे थे (एक लड़का भीड़ के बीच से निकलते हुए एक सस्ती टिन की ट्रे पर चाय के छह छोटे गंदे गिलास संभाले हुए था), बंदर चहचहाते हुए एक बड़े कांपते पत्तों वाले पीपल के पेड़ पर उछल-कूद कर

रहे थे और अच्छी तरह से सुरक्षित फल की दुकान से निकलते हुए अनजान ग्राहकों पर हमला करने की कोशिश कर रहे थे, महिलाएं गुमनाम बुर्के या चमकीली साड़ियों में अपने पुरुषों के साथ या उनके बिना इधर-उधर घूम रही थीं, विश्वविद्यालय के कुछ छात्र एक चाट की दुकान के आसपास बैठे हुए एक-दूसरे पर एक फुट की दूरी से चिल्ला रहे थे, शायद आदत के कारण या अपनी बात सुनाने के लिए, बीमार कुत्ते भौंक रहे थे और उन्हें लात मारी जा रही थी, कंकाल जैसी बिल्लियां म्याऊं कर रही थीं और उन पर पत्थर फेंके जा रहे थे, और मक्खियां हर जगह बैठी थीं: बदबूदार, सड़े हुए कूड़े के ढेर पर, मिठाई विक्रेता की खुली मिठाइयों पर, जिसके घी के बड़े घुमावदार बर्तनों में स्वादिष्ट जलेबियां तल रही थीं, साड़ी पहने महिलाओं के चेहरों पर, लेकिन बुर्का पहने महिलाओं के चेहरों पर नहीं, और घोड़े के नथुनों को हिलाते हुए उसने अपना सिर हिलाया और बरसात महल की दिशा में पुराने ब्रह्मपुर से होते हुए अपना रास्ता बनाने की कोशिश की।

मान के विचारों में अचानक तब खलल पड़ा जब उसकी नज़र फुटपाथ पर एक स्टॉल के पास खड़े फ़िरोज़ पर पड़ी। उसने तुरंत तांगा रोका और नीचे उतर गया।

‘फिरोज, तुम्हारी उम्र लंबी हो—मैं अभी तुम्हारे बारे में ही सोच रहा था। खैर, आधे घंटे पहले!’

फ़िरोज़ ने कहा कि वह यूँ ही घूम रहा था और उसने चलने के लिए एक छड़ी खरीदने का फैसला किया था।

‘अपने लिए या अपने पिता के लिए?’

'अपने आप के लिए।'

'जो व्यक्ति बीस साल की उम्र में ही अपने लिए चलने की छड़ी खरीद ले, शायद उसकी उम्र उतनी लंबी न हो,' मान ने कहा।

फिरोज ने कई छड़ियों पर अलग-अलग कोणों से झुकने के बाद एक छड़ी को चुना और कीमत को लेकर मोलभाव किए बिना उसे खरीद लिया।
'और तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तरबूज का बाजार घूमने आए हो?' उसने पूछा।
'गंदी बातें मत करो,' मान ने हंसते हुए कहा। तरबूज का बाजार गायिकाओं और वेश्याओं की गली थी।
'अरे, मैं भूल ही गया था,' फ़िरोज़ ने शरारती अंदाज़ में कहा: 'जब आप समरकंद के आड़ू का स्वाद चख सकते हैं, तो आप केवल खरबूजों के साथ क्यों संगति करें?'
मान ने भौंहें चढ़ाईं।
'सईदा बाई के बारे में और क्या खबर है?' फिरोज ने पूछा, जो दर्शकों के पीछे बैठकर पिछली रात का आनंद ले रहा था। हालांकि वह आधी रात तक चला गया था, लेकिन उसे यह आभास हो गया था कि मान की सगाई के बावजूद, उसके दोस्त के जीवन में रोमांस एक बार फिर लौट रहा है। शायद किसी और से ज़्यादा, वह मान को जानता और समझता था।
'तुम क्या उम्मीद करते हो?' मान ने थोड़ी उदास होकर पूछा। 'जो होना है वो होकर रहेगा। उसने तो मुझे उसे वापस छोड़ने तक की इजाजत नहीं दी।'
फ़िरोज़ ने सोचा कि यह मान के स्वभाव के बिल्कुल विपरीत था, क्योंकि उसने अपने दोस्त को बहुत कम ही उदास देखा था। 'तो तुम कहाँ जा रहे हो?' उसने उससे पूछा।
'To the Barsaat Mahal.'
'क्या सब कुछ खत्म करने के लिए?' फ़िरोज़ ने कोमल स्वर में पूछा। बरसात महल की प्राचीर गंगा नदी की ओर थी और हर साल कई प्रेमपूर्ण

आत्महत्याओं का स्थल हुआ करती थी।
'हां, हां, सब कुछ खत्म कर देना चाहिए,' मान ने अधीरता से कहा। 'अब बताओ, फ़िरोज़, तुम क्या सलाह देते हो?'
फिरोज हँस पड़ा। 'फिर से कहो। मुझे विश्वास नहीं हो रहा,' उसने कहा। 'ब्रह्मपुर का चहेता मान कपूर, जिसके चरणों में अच्छे परिवारों की युवतियाँ, प्रतिष्ठा की परवाह किए बिना, कमल पर मधुमक्खियों की तरह तड़पती हैं, प्रेम के मामले में कठोर और निष्कलंक फिरोज से सलाह माँग रहा है। कहीं तुम मुझसे कानूनी सलाह तो नहीं माँग रहे?'
'अगर तुम ऐसे ही बर्ताव करोगे तो—' मान ने नाराज़गी से कहना शुरू किया। अचानक उसके मन में एक विचार आया। 'फिरोज, सईदा बाई को फिरोजाबादी क्यों कहते हैं? मुझे लगा था कि वह यहीं की रहने वाली हैं।'
फिरोज ने जवाब दिया: "खैर, उनके लोग असल में मूल रूप से फिरोजाबाद से ही आए थे। लेकिन ये सब इतिहास की बात है। दरअसल, उनकी मां मोहसिना बाई तरबूज का बाजार में बस गई थीं, और सईदा बाई का पालन-पोषण शहर के इसी हिस्से में हुआ था।" उन्होंने अपनी छड़ी उस बदनाम इलाके की ओर इशारा करते हुए कहा, "लेकिन स्वाभाविक रूप से सईदा बाई खुद, अब जब उन्होंने तरक्की कर ली है और पसंद बाग में रहती हैं—और हम सब की तरह एक ही हवा में सांस लेती हैं—तो उन्हें यह पसंद नहीं है कि लोग उनके स्थानीय मूल के बारे में बात करें।"
मान कुछ पल इस बारे में सोचता रहा। उसने हैरानी से पूछा, 'तुम्हें उसके बारे में इतना सब कैसे पता है?'
"अरे, मुझे नहीं पता," फ़िरोज़ ने एक मक्खी को भगाते हुए कहा। "इस तरह की जानकारी हवा में तैरती रहती है।" मान के आश्चर्य भरे चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया न देते हुए, वह आगे बोला, "लेकिन मुझे अब जाना होगा।

मेरे पिताजी चाहते हैं कि मैं किसी उबाऊ व्यक्ति से मिलूँ जो चाय पर आ रहा है।" फ़िरोज़ मान के तांगे में कूद पड़ा। "पुराने ब्रह्मपुर में तांगे पर सवारी करना बहुत भीड़भाड़ वाला है; पैदल चलना बेहतर होगा," उसने मान से कहा और तांगा लेकर चल पड़ा।

मान इधर-उधर घूमता रहा, फ़िरोज़ की कही बातों पर विचार करता रहा —लेकिन ज़्यादा देर तक नहीं। उसने अपने मन में बसी ग़ज़ल की कुछ पंक्तियाँ गुनगुनाईं, पान खरीदने के लिए रुका (उसे बनारसी पान के हल्के रंग के बजाय देसी पान के गहरे हरे पत्ते ज़्यादा पसंद थे), साइकिलों, रिक्शाओं, ठेलागाड़ियों, आदमियों और मवेशियों की भीड़ के बीच से रास्ता बनाते हुए सड़क पार की और खुद को मिसरी मंडी में पाया, एक छोटी सी सब्जी की दुकान के पास, जहाँ उसकी बहन वीना रहती थी।

पिछली दोपहर प्रेम निवास आने पर सोए रहने के कारण मान को अपराधबोध हुआ और उसने अचानक उससे मिलने का फैसला किया— साथ ही अपने बहनोई केदारनाथ और भतीजे भास्कर से भी। मान भास्कर को बहुत पसंद करता था और उसे गणित के सवाल ऐसे फेंकता था जैसे किसी सील को गेंद फेंक रहा हो।

जैसे ही वह मिसरी मंडी के रिहायशी इलाकों में दाखिल हुआ, गलियाँ संकरी, ठंडी और कुछ हद तक शांत होती गईं, हालाँकि अभी भी बहुत से लोग इधर-उधर आ-जा रहे थे और कुछ लोग राधाकृष्ण मंदिर के पास चबूतरे पर आराम कर रहे थे या शतरंज खेल रहे थे, जिसकी दीवारें अभी भी होली के रंगों से चमक रही थीं। उसके सिर के ऊपर पड़ रही तेज़ धूप अब पतली और हल्की थी, और मक्खियाँ भी कम थीं। तीन फुट चौड़ी एक और संकरी गली में मुड़ने और पेशाब करती हुई गाय से बचते हुए, वह अपनी बहन के घर पहुँचा।

यह एक बहुत ही संकरा घर था: तीन मंजिल और एक सपाट छत, हर मंजिल पर लगभग डेढ़ कमरा और सीढ़ियों के बीचोंबीच एक जाली थी जिससे ऊपर से रोशनी नीचे तक आती थी। मान बिना ताला लगे दरवाजे से अंदर गया और उसने वीना की सास, बूढ़ी श्रीमती टंडन को एक बर्तन में कुछ पकाते हुए देखा। बूढ़ी श्रीमती टंडन को वीना का संगीत का शौक पसंद नहीं था, और उन्हीं की वजह से परिवार को पिछली शाम सईदा बाई का संगीत सुने बिना वापस लौटना पड़ा था। वह हमेशा मान को डरा देती थीं; इसलिए, औपचारिक अभिवादन के बाद, वह सीढ़ियों से ऊपर गया और जल्द ही उसने वीना और केदारनाथ को छत पर पाया—एक जाली की छाया में चौपर बजाते हुए और स्पष्ट रूप से किसी बात पर बहस करते हुए।

2.7

वीना मान से कुछ साल बड़ी थी और कद-काठी में अपनी माँ जैसी थी—वह छोटी और थोड़ी मोटी थी। जब मान छत पर आया, तो उसकी आवाज़ ऊंची हो गई थी और उसका गोल-मटोल, हंसमुख चेहरा उदास लग रहा था, लेकिन मान को देखते ही वह मुस्कुरा उठी। फिर उसे कुछ याद आया और उसका चेहरा फिर से उदास हो गया।

तो तुम माफी मांगने आए हो। अच्छा! और बिलकुल सही समय पर आए हो। कल हम सब तुमसे बहुत नाराज थे। तुम किस तरह के भाई हो, घंटों सोते रहते हो जबकि तुम्हें पता है कि हमें प्रेम निवास जाना ही है?

'लेकिन मुझे लगा था कि तुम गाने के लिए रुकोगे—' मान ने कहा।

'जी हां,' वीना ने सिर हिलाते हुए कहा। 'मुझे पूरा यकीन है कि जब तुम सो गए थे तो तुमने इन सब बातों के बारे में सोचा होगा। उदाहरण के लिए, इसका भांग से कोई लेना-देना नहीं था। और तुम बस यह भूल गए थे कि संगीत शुरू होने से पहले हमें केदारनाथ की मां को घर पहुंचाना

था। कम से कम प्राण तो जल्दी आ गया और प्रेम निवास में हमसे मिला, सविता, उसकी सास और लता के साथ—'

'ओह, प्राण, प्राण, प्राण—' मान ने झुंझलाहट में कहा। 'वह हमेशा हीरो होता है और मैं हमेशा विलेन।'

'यह सच नहीं है, बातों को बढ़ा-चढ़ाकर मत बताओ,' वीना ने कहा, वह मान को एक छोटे लड़के के रूप में याद कर रही थी जो बगीचे में गुलेल से कबूतरों को मारने की कोशिश कर रहा था और महाभारत का धनुर्धर होने का दावा कर रहा था। 'बस बात यह है कि तुममें जिम्मेदारी की भावना नहीं है।'

'खैर, जब मैं सीढ़ियों से ऊपर आया तो तुम लोग किस बात पर झगड़ रहे थे? और भास्कर कहाँ है?' मान ने अपने पिता की हालिया टिप्पणियों के बारे में सोचते हुए और विषय बदलने की कोशिश करते हुए पूछा।

'वो अपने दोस्तों के साथ पतंग उड़ा रहा है। हाँ, उसे भी गुस्सा आ रहा था। वो तुम्हें जगाना चाहता था। आज तुम्हें हमारे साथ खाना खाना पड़ेगा ताकि उसकी गलती की भरपाई हो सके।'

'ओह—उह—' मान ने अनिश्चितता से कहा, यह सोचते हुए कि क्या उसे शाम को सईदा बाई के घर जाना जोखिम भरा हो सकता है। उसने खांसा। 'लेकिन तुम लोग किस बात पर झगड़ रहे थे?'

'हम झगड़ नहीं रहे थे,' सौम्य स्वभाव वाले केदारनाथ ने मान की ओर मुस्कुराते हुए कहा। उनकी उम्र तीस के आसपास थी, लेकिन बाल सफ़ेद होने लगे थे। एक चिंतित लेकिन आशावादी व्यक्ति, मान के विपरीत, उनमें अपनी ज़िम्मेदारियों का बहुत गहरा एहसास था, और विभाजन के बाद ब्रह्मपुर में नए सिरे से शुरुआत करने की कठिनाइयों ने उन्हें समय से पहले ही बूढ़ा कर दिया था। जब वे दक्षिण भारत में कहीं ऑर्डर जुटाने के लिए यात्रा पर नहीं होते थे, तो वे मिसरी मंडी में अपनी दुकान में देर रात

तक काम करते थे। वहाँ शाम के समय ही कारोबार होता था, जब उनके जैसे बिचौलिए मोचियों से जूतों की टोकरियाँ खरीदते थे। हालाँकि, उनकी दोपहरें काफ़ी हद तक खाली रहती थीं।

'नहीं, झगड़ा नहीं, बिलकुल भी झगड़ा नहीं। बस चौपर को लेकर बहस हो रही है, बस इतना ही,' वीना ने जल्दी से कहा, कौड़ी के खोल एक बार फिर नीचे फेंकते हुए, अपनी गिनती करते हुए और क्रॉस के आकार के कपड़े के बोर्ड पर अपने मोहरों को आगे बढ़ाते हुए।

'हां, हां, मुझे पूरा यकीन है,' मान ने कहा।

वह चटाई पर बैठ गया और चारों ओर फूलों से भरे गमलों को देखने लगा, जो श्रीमती महेश कपूर ने अपनी बेटी के छत पर बने बगीचे के लिए दिए थे। वीना की साड़ियाँ छत के एक तरफ सूखने के लिए टंगी थीं और पूरी छत पर होली के चमकीले रंग बिखरे हुए थे। छत के उस पार छतों, मीनारों, टावरों और मंदिरों की चोटियों का एक समूह 'नए' ब्रह्मपुर के रेलवे स्टेशन तक फैला हुआ था। होली के रंगों की तरह गुलाबी, हरे और पीले रंग की कुछ कागज़ की पतंगें साफ आसमान में एक-दूसरे से लड़ रही थीं।

'क्या आपको कुछ पीने के लिए चाहिए?' वीना ने झटपट पूछा। 'मैं आपके लिए शरबत लाती हूँ—या फिर चाय? मुझे खेद है कि हमारे पास ठंडाई नहीं है,' उसने बिना किसी कारण के कहा।

'नहीं, धन्यवाद। . . . लेकिन आप मेरे सवाल का जवाब दे सकते हैं। बहस किस बारे में थी?' मान ने पूछा। 'मुझे अंदाज़ा लगाने दीजिए। केदारनाथ दूसरी पत्नी रखना चाहता है, और स्वाभाविक रूप से उसे आपकी सहमति चाहिए।'

'बेवकूफी मत करो,' वीना ने थोड़ी सख्ती से कहा। 'मुझे दूसरा बच्चा चाहिए और स्वाभाविक रूप से मुझे उसकी सहमति चाहिए। ओह!' उसने

अपनी गलती का एहसास करते हुए और अपने पति की ओर देखते हुए कहा। 'मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था—वैसे भी, वह मेरा भाई है—हम उससे सलाह ले सकते हैं, ज़रूर।'

'लेकिन इस मामले में आप मेरी मां की सलाह नहीं लेना चाहते, है ना?' केदारनाथ ने पलटवार किया।

'अब तो बहुत देर हो चुकी है,' मान ने सौम्य भाव से कहा। 'तुम्हें दूसरा बच्चा क्यों चाहिए? भास्कर ही काफी नहीं है क्या?'

'हम दूसरे बच्चे का खर्च नहीं उठा सकते,' केदारनाथ ने आंखें बंद करते हुए कहा—यह आदत वीना को अब भी परेशान करती थी। 'फिलहाल तो बिल्कुल नहीं। मेरा कारोबार—खैर, आप तो जानते ही हैं। और अब तो मोचियों की हड़ताल की भी संभावना है।' फिर उन्होंने आंखें खोलीं। 'और भास्कर इतना होशियार है कि हम उसे सबसे अच्छे स्कूलों में भेजना चाहते हैं। और वे सस्ते नहीं होते।'

'हां, हम चाहते हैं कि वह बेवकूफ हो, लेकिन दुर्भाग्यवश—'

केदारनाथ ने कहा, "वीना हमेशा की तरह हाजिरजवाब है। होली से ठीक दो दिन पहले उसने मुझे याद दिलाया कि किराया, खाने-पीने की बढ़ती कीमतों और बाकी सब चीजों के चलते घर चलाना कितना मुश्किल है। उसके संगीत की पढ़ाई, मेरी माँ की दवाइयाँ, भास्कर की गणित की खास किताबें और मेरी सिगरेट का खर्च भी है। फिर उसने कहा कि हमें रुपये गिनने पड़ते हैं, और अब वो कह रही है कि हमें एक और बच्चा पैदा करना चाहिए क्योंकि वो जो भी चावल खाएगा, उस पर उसका नाम लिखा होगा। औरतों की सोच! वो खुद तीन बच्चों वाले परिवार में पैदा हुई है, इसलिए उसे लगता है कि तीन बच्चे होना कुदरत का नियम है। सोचो, अगर सारे बच्चे भास्कर जैसे होशियार हुए तो हम कैसे गुजारा करेंगे?"

केदारनाथ, जो आमतौर पर काफी जोरू के अधीन रहता था, इस बार

जमकर मुकाबला कर रहा था।

'आम तौर पर सिर्फ पहला बच्चा ही होशियार होता है,' वीना ने कहा। 'मैं गारंटी देती हूँ कि मेरे अगले दो बच्चे प्राण और मान जितने ही मूर्ख होंगे।' उसने फिर से सिलाई शुरू कर दी।

केदारनाथ मुस्कुराया, अपनी चोटिल हथेली में चित्तीदार कौड़ियाँ उठाईं और उन्हें बोर्ड पर फेंक दिया। आम तौर पर वह बहुत ही विनम्र व्यक्ति था और मान पर पूरा ध्यान देता, लेकिन चौपर तो चौपर था, और एक बार खेल शुरू हो जाने पर इसे रोकना लगभग नामुमकिन था। यह शतरंज से भी ज़्यादा लत लगाने वाला था। मिसरी मंडी में खाना ठंडा पड़ जाता, मेहमान चले जाते, लेनदार हंगामा करते, लेकिन चौपर खेलने वाले बस एक और खेल खेलने की गुहार लगाते। बूढ़ी श्रीमती टंडन ने एक बार कपड़े का बोर्ड और उन कौड़ियों को पास की गली के एक बंद पड़े कुएँ में फेंक दिया था, लेकिन परिवार की आर्थिक तंगी के बावजूद, दूसरा सेट मंगवा लिया गया, और अब यह पति-पत्नी छत पर खेलते थे, भले ही वहाँ ज़्यादा गर्मी होती थी। इस तरह वे केदारनाथ की माँ से बच जाते थे, जिन्हें पेट और गठिया की समस्या के कारण सीढ़ियाँ चढ़ना मुश्किल होता था। लाहौर में, घर की भौगोलिक स्थिति और एक समृद्ध एवं अविभाजित परिवार की आत्मविश्वासी मुखिया के रूप में अपनी भूमिका के कारण, उन्होंने कड़ा, यहाँ तक कि निरंकुश नियंत्रण बनाए रखा था। विभाजन के आघात से उनका संसार स्तब्ध हो गया था।

उनकी बातचीत पड़ोस की छत से आती एक चीख से बाधित हो गई। लाल सूती साड़ी पहने एक लंबी, अधेड़ उम्र की महिला अपनी छत से एक अदृश्य शत्रु पर चिल्ला रही थी:

'ये लोग मेरा खून चूसना चाहते हैं, ये तो साफ है! न कहीं लेट सकता हूँ, न कहीं चैन से बैठ सकता हूँ। गेंदों की धमक से मेरा दिमाग खराब हो रहा

है... ज़ाहिर है, छत पर जो कुछ भी होता है, नीचे सुनाई देता है! तुम निकम्मे लोग, तुम निकम्मे बर्तन धोने वाले, क्या अपने बच्चों को काबू में नहीं रख सकते?'

वीना और केदारनाथ को छत पर देखकर, वह दोनों छतों को जोड़ते हुए दूर की दीवार में बने एक छोटे से छेद से अंदर घुस गई। अपनी तीखी आवाज, नुकीले दांतों और बड़े, फैले हुए, लटके हुए स्तनों से उसने मान पर गहरा प्रभाव छोड़ा।

वीना द्वारा उनका परिचय कराने के बाद, उस महिला ने तीखी मुस्कान के साथ कहा: 'ओह, तो यह वह है जिसकी शादी नहीं हो रही है।'

'वही मेरा जीवनसाथी है,' वीना ने स्वीकार किया। उसने इस बारे में कुछ भी कहकर जोखिम नहीं उठाया।

मान की बनारस की लड़की से सगाई की अस्थायी संभावना।

लेकिन क्या आपने मुझे यह नहीं बताया था कि आपने उसे उस लड़की से मिलवाया था—उसका नाम क्या है, याद दिलाओ—वह जो अपने भाई से मिलने इलाहाबाद से यहाँ आई थी?

मान ने कहा: 'कुछ लोगों के साथ ऐसा ही होता है, यह देखकर आश्चर्य होता है। आप "A" लिखते हैं और वे "Z" पढ़ते हैं।'

'खैर, यह तो बिल्कुल स्वाभाविक है,' उस महिला ने शिकारी भाव से कहा। 'एक युवक, एक युवती...'

वीना ने कहा, 'वह बहुत सुंदर थी। उसकी आंखें हिरण जैसी थीं।'

'लेकिन सौभाग्य से उसकी नाक उसके भाई जैसी नहीं है,' महिला ने आगे कहा। 'नहीं—यह उससे कहीं अधिक सुंदर है। और यह हिरण की नाक की तरह थोड़ी सी हिलती भी है।' चौपर के खेल से निराश होकर केदारनाथ नीचे जाने के लिए उठ खड़ा हुआ।

उसे इस अति-दोस्ताना पड़ोसी का आना-जाना बिल्कुल पसंद नहीं था।

जब से उसके पति ने घर में टेलीफोन लगवाया था, तब से वह और भी ज्यादा आत्मविश्वासी और मुखर हो गई थी।

‘मैं आपको क्या कहकर बुलाऊं?’ मान ने उस महिला से पूछा। ‘भाभी। बस भाभी,’ वीना ने कहा।

‘तो वो तुम्हें कैसी लगी?’ महिला ने पूछा। ‘ठीक थी,’ मान ने कहा।

'ठीक है?' महिला ने उस शब्द पर खुशी से झपट्टा मारते हुए कहा।

मेरा मतलब था, ठीक है कि मैं आपको भाभी कहूँ।

'वह बहुत चालाक है,' वीना ने कहा।

‘मैं भी कुछ कम नहीं हूँ,’ उसकी पड़ोसी ने ज़ोर देकर कहा। ‘तुम्हें यहाँ आना चाहिए, लोगों से मिलना चाहिए, अच्छी महिलाओं से मिलना चाहिए,’ उसने मान से कहा। ‘कॉलोनियों में रहने का क्या ही मज़ा है? मैं तुम्हें बताती हूँ, जब मैं पसंद बाग या सिविल लाइंस जाती हूँ तो चार घंटे में मेरा दिमाग सुन्न हो जाता है। जब मैं अपने मोहल्ले की गलियों में लौटती हूँ तो वह फिर से चलने लगता है। यहाँ लोग एक-दूसरे का ख्याल रखते हैं; अगर कोई बीमार पड़ जाता है तो पूरा मोहल्ला उसका हालचाल पूछता है। लेकिन तुम्हारी शादी करवाना मुश्किल हो सकता है। तुम्हें औसत से थोड़ी लंबी लड़की ढूंढनी चाहिए—’

‘मुझे इन सब बातों की कोई चिंता नहीं है,’ मान ने हंसते हुए कहा। ‘एक छोटा वाला ही मेरे लिए काफी है।’

तो आपको इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह लंबी है या छोटी, सांवली है या गोरी, पतली है या मोटी, बदसूरत है या खूबसूरत?

‘फिर से A की जगह Z,’ मान ने अपनी छत की ओर देखते हुए कहा। ‘वैसे, मुझे तुम्हारे ब्लाउज़ सुखाने का तरीका पसंद आया।’

महिला ने हल्की सी ठहाका लगाई, जो अगर इतनी तेज़ न होती तो शायद आत्म-निंदा जैसी होती। उसने अपने पानी के टैंक के ऊपर स्टील की रैक

जैसी संरचना की ओर देखा।

'मेरी छत पर और कोई जगह नहीं है,' उसने कहा। 'तुम्हारे बगल में हर जगह लकीरें हैं... तुम्हें पता है,' महिला ने बात बदलते हुए आगे कहा, 'शादी अजीब होती है। मैंने 'स्टार-गेज़र' में पढ़ा था कि मद्रास की एक लड़की, जिसकी अच्छी शादी हुई थी और दो बच्चे थे, ने 'हुलचुल' फिल्म पाँच बार देखी—पाँच बार!—और दलीप कुमार पर पूरी तरह फिदा हो गई —इस हद तक कि उसका दिमाग खराब हो गया। वह मुंबई चली गई, जाहिर तौर पर उसे पता नहीं था कि वह क्या कर रही है, क्योंकि उसके पास उसका पता तक नहीं था। फिर उसने एक फिल्मी फैन मैगज़ीन की मदद से पता ढूंढा, टैक्सी ली और दलीप कुमार के सामने तरह-तरह की पागलपन भरी बातें कहीं। आखिरकार उसने उसे वापस जाने में मदद के लिए सौ रुपये दिए और उसे बाहर निकाल दिया। लेकिन वह लौट आई।'

'दलीप कुमार!' वीना ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। 'मुझे उसकी एक्टिंग कुछ खास पसंद नहीं है। मुझे लगता है उसने पब्लिसिटी के लिए ये सब नाटक किया होगा।'

'अरे नहीं, नहीं! क्या तुमने उसे दीदार में देखा है? वो तो कमाल का है! और ज्योतिषी कहता है कि वो बहुत अच्छा आदमी है—वो कभी शोहरत के पीछे नहीं भागेगा। तुम्हें केदारनाथ को मद्रासी औरतों से सावधान रहने के लिए कहना चाहिए, वो वहाँ बहुत समय बिताता है, वे बहुत गुस्सैल होती हैं... मैंने सुना है कि वे अपनी रेशमी साड़ियाँ भी धीरे से नहीं धोतीं, बस धोती हैं जैसे धोबी धोती हैं— ओह! मेरा दूध!' औरत अचानक घबराकर चिल्लाई। 'मुझे जाना होगा—उम्मीद है ऐसा नहीं हुआ होगा— मेरे पति—' और वह छतों पर एक विशाल लाल प्रेत की तरह दौड़ पड़ी।

मान जोर से हंस पड़ा।

उन्होंने कहा, 'अब मैं भी जा रहा हूँ। उपनिवेशों के बाहर की जिंदगी से मेरा

मन भर गया है। मेरा दिमाग बहुत ज्यादा चल रहा है।'
वीना ने सख्ती और प्यार से कहा, 'तुम नहीं जा सकती। अभी-अभी तो आई हो। उन्होंने बताया कि तुमने प्राण, उसके प्रोफेसर, सविता और लता के साथ पूरी सुबह होली खेली, इसलिए तुम आज दोपहर हमारे साथ बिता सकती हो। और भास्कर बहुत नाराज़ होगा अगर वो फिर से तुमसे नहीं मिला। तुम्हें उसे कल देखना चाहिए था। वो बिल्कुल शैतान लग रहा था।'
'क्या वह आज शाम दुकान पर होगा?' मान ने थोड़ा खांसते हुए पूछा।
'हां। मुझे लगता है ऐसा ही है। जूतों के डिब्बों के पैटर्न के बारे में सोचकर। अजीब लड़का है,' वीना ने कहा।
'तो मैं वापस आते समय उनसे मिलूंगा।'
'आप कहाँ से वापस आ रहे हैं?' वीना ने पूछा। 'और क्या आप रात के खाने पर नहीं आ रहे हैं?'
'मैं कोशिश करूंगा—मैं वादा करता हूं,' मान ने कहा।
'तुम्हारे गले में क्या हुआ है?' वीना ने पूछा। 'तुम देर रात तक जाग रही थी, है ना? कितनी देर तक? या होली में भीगने की वजह से? मैं तुम्हें दुशंदा देती हूँ, इससे ठीक हो जाएगा।'
'नहीं—वह घिनौनी चीज! इसे खुद ही एहतियात के तौर पर ले लो,' मान ने कहा।
'तो—गायन कैसा था? और गायक कैसा था?' वीना ने पूछा।
मान ने इतनी बेपरवाही से कंधे उचकाए कि वीना चिंतित हो गई।
'सावधान रहना, मान,' उसने उसे चेतावनी दी।
मान अपनी बहन को इतनी अच्छी तरह जानता था कि वह अपनी बेगुनाही साबित करने की कोशिश भी नहीं कर सकता था। इसके अलावा, वीना को जल्द ही उसके सार्वजनिक रूप से इश्कबाजी करने के बारे में पता

चल ही जाता।

‘क्या तुम उससे मिलने जा रहे हो?’ वीना ने तीखे स्वर में पूछा। ‘नहीं—भगवान न करे,’ मान ने कहा।

'जी हां, भगवान न करे। तो आप कहां जा रहे हैं?'

‘बरसात महल चलते हैं,’ मान ने कहा। ‘मेरे साथ आओ! याद है हम बचपन में वहाँ पिकनिक मनाने जाया करते थे? चलो। तुम बस चौपर खेलोगे।’

तो आपको लगता है कि मैं अपना दिन ऐसे ही बिताती हूँ? सच कहूँ तो, मैं अम्माजी जितनी ही मेहनत करती हूँ। और हाँ, मुझे याद आया, मैंने कल देखा कि उन्होंने नीम के पेड़ का ऊपरी हिस्सा काट दिया है, वही पेड़ जिस पर चढ़कर आप ऊपर वाली खिड़की तक जाती थीं। इससे प्रेम निवास पर बहुत फर्क पड़ता है।

‘हां, वो बहुत गुस्से में थीं,’ मान ने अपनी मां के बारे में सोचते हुए कहा। ‘लोक निर्माण विभाग को तो बस गिद्धों के घोंसले को हटाने के लिए पेड़ों की छंटाई करनी थी, लेकिन उन्होंने एक ठेकेदार को काम पर रख लिया जिसने जितना हो सके उतनी लकड़ी काट डाली और उसे लेकर भाग गया। लेकिन आप अम्माजी को तो जानते ही हैं। उन्होंने बस इतना कहा, “तुमने जो किया है वो बिल्कुल गलत है।”’

वीना ने कहा, ‘अगर बाओजी को इन मामलों की ज़रा भी परवाह होती, तो उन्होंने उस आदमी के साथ भी वही किया होता जो उन्होंने उस पेड़ के साथ किया।’ ‘इस इलाके में हरियाली इतनी कम है कि जब आप उसे देखते हैं तो उसकी अहमियत समझ में आती है। जब मेरी दोस्त प्रिया प्राण की शादी में आई, तो बगीचा इतना खूबसूरत लग रहा था कि उसने मुझसे कहा: “मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं पिंजरे से बाहर निकल आई हूँ।” बेचारी, उसके पास तो छत पर बगीचा भी नहीं है। और उसे घर से

बाहर निकलने की इजाज़त भी बहुत कम मिलती है। “पालकी में आओ, अर्थी पर जाओ”: उस घर में बहुओं के साथ यही हाल है।’ वीना ने उदास निगाहों से छतों के ऊपर से पड़ोस में अपनी दोस्त के घर की तरफ देखा। उसके मन में एक ख्याल आया। ‘क्या बाओजी ने कल शाम प्राण की नौकरी के बारे में किसी से बात की थी? क्या इन नियुक्तियों में राज्यपाल का कुछ हाथ है? विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के तौर पर?’

'अगर उसने कुछ कहा भी तो मैंने नहीं सुना,' मान ने कहा।

‘हम्म,’ वीना ने नाराज़गी से कहा। ‘अगर मैं बाओजी को जानती हूँ, तो उन्होंने शायद इसके बारे में सोचा होगा, और फिर इसे अपने लिए अनुचित समझकर छोड़ दिया होगा। लाहौर में हमारे कारोबार के नुकसान के लिए हमें भी उस मामूली मुआवज़े के लिए लाइन में लगना पड़ा था। और वो भी तब जब अम्माजी शरणार्थी शिविरों में दिन-रात काम कर रही थीं। मुझे कभी-कभी लगता है कि उन्हें राजनीति के सिवा किसी चीज़ की परवाह नहीं है। प्रिया कहती है कि उसके पिता भी उतने ही बुरे हैं। ठीक है, आठ बजे। मैं तुम्हारा पसंदीदा आलू पराठा बना दूँगी।’

'तुम केदारनाथ को धमका सकते हो, लेकिन मुझे नहीं,' मान ने मुस्कुराते हुए कहा।

‘ठीक है, चलो, चलो!’ वीना ने सिर हिलाते हुए कहा। ‘तुम्हें इतनी बार देखने को मिलता है कि लगता है हम अभी भी लाहौर में ही हैं।’

मान ने विनम्रतापूर्वक एक ध्वनि निकाली, जीभ से एक क्लिक की आवाज आई और फिर एक हल्की सी आह भरी।

वीना ने आगे कहा, “उसके इतने सारे सेल्स ट्रिप्स की वजह से, मुझे कभी-कभी ऐसा लगता है जैसे मेरे पास एक चौथाई पति है, और एक-एक करके भाई भी।” उसने चौपर बोर्ड समेटते हुए पूछा, “आप ईमानदारी से काम करने के लिए बनारस कब लौट रहे हैं?”

‘आह, बनारस,’ मान ने मुस्कुराते हुए कहा, मानो वीना ने शनि ग्रह का नाम सुझाया हो। और वीना ने बात यहीं खत्म कर दी।

2.8

जब मान बरसात महल पहुँचा तब शाम हो चुकी थी और वहाँ ज़्यादा भीड़ नहीं थी। वह चारदीवारी में बने मेहराबदार प्रवेश द्वार से अंदर गया और बाहरी मैदान से होते हुए आगे बढ़ा, जो एक तरह का पार्क था और ज़्यादातर सूखी घास और झाड़ियों से ढका हुआ था। एक बड़े नीम के पेड़ के नीचे कुछ हिरण चर रहे थे, जो मान के पास आते ही आलस से उछलते हुए दूर चले गए।

भीतरी दीवार नीची थी, मेहराबदार प्रवेश द्वार कम भव्य और अधिक कोमल था। इसके संगमरमरी अग्रभाग पर काले पत्थर में कुरान की आयतें और रंगीन पत्थर में आकर्षक ज्यामितीय आकृतियाँ उकेरी गई थीं। बाहरी दीवार की तरह, भीतरी दीवार भी एक आयत की तीन भुजाओं के साथ फैली हुई थी। चौथी भुजा दोनों दीवारों में समान थी: एक पत्थर के चबूतरे से नीचे गंगा के जल तक सीधी ढलान—जो केवल एक रेलिंग से सुरक्षित थी।

भीतरी प्रवेश द्वार और नदी के बीच प्रसिद्ध उद्यान और छोटा लेकिन बेहद खूबसूरत महल स्थित था। उद्यान स्वयं ज्यामिति और बागवानी दोनों का उत्कृष्ट नमूना था। वास्तव में, चमेली और गहरे लाल रंग के, मनमोहक भारतीय गुलाब को छोड़कर, अब इसमें लगाए गए फूल शायद वही नहीं थे जिनके लिए दो शताब्दियों से भी अधिक समय पहले इसकी योजना बनाई गई थी। अब जो कुछ फूल बचे थे, वे दिन भर की गर्मी से मुरझाए हुए प्रतीत होते थे। लेकिन सुव्यवस्थित, अच्छी तरह से सींचे गए लॉन, मैदान में समरूप रूप से फैले विशाल, छायादार नीम के पेड़, और फूलों की क्यारियों और लॉन को अष्टकोणीय और वर्गाकार आकृतियों में

विभाजित करने वाली बलुआ पत्थर की संकरी पट्टियाँ, एक अशांत और भीड़भाड़ वाले शहर में शांति का एक द्वीप प्रदान करती थीं। सबसे सुंदर ब्रह्मपुर के नवाबों का छोटा, उत्तम आकार का आनंद महल था, जो भीतरी उद्यानों के ठीक बीच में स्थित था, सफेद संगमरमर का एक अलंकृत रत्न-पेटी जैसा, जिसकी आत्मा असाधारण विलासिता और स्थापत्य संयम का समान रूप से मिश्रण थी।

नवाबों के दिनों में, मोर मैदानों में घूमते हुआ करते थे, और उनकी कर्कश आवाजें कभी-कभी उन आराम करते और ढलते शासकों के लिए आयोजित संगीतमय मनोरंजन के साथ प्रतिस्पर्धा करती थीं: नर्तकियों का प्रदर्शन, दरबारी संगीतकार द्वारा ख्याल का अधिक गंभीर प्रदर्शन, एक कविता प्रतियोगिता, कवि मस्त द्वारा एक नई ग़ज़ल।

मस्त के ख्याल से मान के मन में पिछली शाम की सारी यादें ताज़ा हो गईं। ग़ज़ल की स्पष्ट पंक्तियाँ, सईदा बाई के चेहरे की कोमल रेखाएँ, उनकी बातें, जो अब मान को जीवंत और कोमल लग रही थीं, जिस तरह से वह अपनी साड़ी को सिर से फिसलने से बचाते हुए ऊपर खींच लेती थीं, मान को दिया गया उनका विशेष ध्यान, ये सब बातें उसे याद आ गईं जब वह आत्महत्या के विचारों से बिल्कुल दूर, मुंडेर पर इधर-उधर घूम रहा था। नदी की हवा सुहावनी थी, और मान को कुछ उम्मीद जगी। वह सोच रहा था कि शाम को सईदा बाई के घर जाए या नहीं, और अचानक उसे आशा की किरण दिखाई दी।

विशाल लाल आकाश ने चमकीले गंगा नदी को एक प्रज्वलित कटोरे की तरह ढक लिया था। दूर किनारे पर रेत अनंत तक फैली हुई थी।

नदी को देखते हुए उसे अपनी मंगेतर की माँ की कही एक बात याद आ गई। वह धर्मपरायण महिला इस बात से आश्वस्त थी कि गंगा दशहरा के त्योहार पर शांत नदी फिर से उफान पर आ जाएगी और उस दिन उसके

पैतृक शहर बनारस के घाटों की एक सीढ़ी को अपने जलमग्न कर लेगी। मान अपनी मंगेतर और उसके परिवार के बारे में सोचने लगा और अपनी सगाई को लेकर उदास हो गया, जैसा कि वह अक्सर तब होता था जब वह इसके बारे में सोचता था। उसके पिता ने ही सगाई तय की थी, जैसा कि उन्होंने धमकी दी थी; मान ने आसान रास्ता चुनते हुए उनकी बात मान ली थी; और अब यह जीवन का एक अशुभ सत्य बन चुका था। उसे देर-सवेर उससे शादी करनी ही थी। मान को उससे कोई लगाव नहीं था—वे अपने परिवारों के साथ ही मिले थे—और वह वास्तव में उसके बारे में सोचना भी नहीं चाहता था। वह सामिया के बारे में सोचकर बहुत खुश होता था, जो अब अपने परिवार के साथ पाकिस्तान में थी, लेकिन मान से मिलने के लिए ब्रह्मपुर लौटना चाहती थी, या पूर्व पुलिस महानिरीक्षक की बेटी सरला के बारे में, या अपनी किसी भी पुरानी प्रेमिका के बारे में। बाद में आई कोई भी लौ, चाहे कितनी भी तेज़ क्यों न जल रही हो, मान के दिल में जल रही पुरानी लौ को बुझा नहीं पाई। उनमें से लगभग किसी के भी बारे में सोचते ही उसके दिल में अचानक गर्मजोशी और सद्भावना की लहर दौड़ जाती थी।

2.9

जब मान भीड़भाड़ वाले कस्बे में वापस लौटा, तब तक अंधेरा हो चुका था। वह एक बार फिर असमंजस में था कि सईदा बाई की दुकान पर अपनी किस्मत आजमाए या नहीं। कुछ ही मिनटों में वह मिसरी मंडी पहुँच गया। रविवार का दिन था, पर यहाँ कोई छुट्टी नहीं थी। जूता बाजार चहल-पहल, रोशनी और शोर से भरा हुआ था: केदारनाथ टंडन की दुकान खुली थी, साथ ही मुख्य सड़क से कुछ ही दूरी पर स्थित ब्रह्मपुर जूता बाजार के नाम से मशहूर गलियारे की सभी दुकानें भी खुली थीं। तथाकथित टोकरीवाले अपने सिर पर टोकरियाँ लिए दुकानों पर तेजी से

दौड़ रहे थे और थोक विक्रेताओं को अपना सामान बेच रहे थे: वे जूते जो उन्होंने और उनके परिवारों ने दिन भर में बनाए थे और जिन्हें उन्हें अगले दिन के काम के लिए भोजन, चमड़ा और अन्य सामग्री खरीदने के लिए बेचना था। ये जूता बनाने वाले, जो मुख्य रूप से 'अछूत' जाटव जाति के सदस्य या कुछ निचली जाति के मुसलमान थे, जिनमें से बड़ी संख्या में लोग विभाजन के बाद ब्रह्मपुर में ही रह गए थे, दुबले-पतले और फटेहाल थे, और उनमें से कई हताश दिख रहे थे। दुकानें सड़क के स्तर से लगभग तीन फीट ऊपर बनी होती थीं ताकि खरीदार उन्हें देखने के लिए अपनी टोकरियाँ कपड़े से ढके फर्श के किनारे पर रख सकें। उदाहरण के लिए, केदारनाथ निरीक्षण के लिए रखी गई टोकरी में से जूतों का एक जोड़ा निकाल सकते थे। अगर उन्हें टोकरी पसंद नहीं आती, तो विक्रेता को अगले थोक विक्रेता या किसी दूसरी गली के थोक विक्रेता के पास जाना पड़ता। या केदारनाथ कम कीमत की पेशकश कर सकते थे, जिसे जूता बेचने वाला स्वीकार करे या न करे। या केदारनाथ अपने पैसों की बचत करते हुए जूता बेचने वाले को वही कीमत कम नकद में दे सकते थे और बाकी रकम किसी डिस्काउंट एजेंट या कच्चे माल के विक्रेता से उधार नोट या पर्ची के रूप में दे सकते थे। जूते बिक जाने के बाद भी अगले दिन के लिए कच्चा माल खरीदना बाकी रहता था, और टोकरी बेचने वालों को शाम को देर से पहले किसी को भी सामान बेचना ही पड़ता था, चाहे शर्तें अनुकूल न हों।

मान को यह व्यवस्था समझ नहीं आती थी, जिसका बड़ा कारोबार एक प्रभावी ऋण नेटवर्क पर निर्भर था, जिसमें पर्ची ही सब कुछ थी और बैंकों की भूमिका न के बराबर थी। ऐसा नहीं था कि वह इसे समझना चाहता था; बनारस में कपड़े का कारोबार तो अलग ही वित्तीय ढांचों पर आधारित था। वह तो बस सामाजिक बातचीत, चाय पीने और अपने भतीजे से

मिलने के लिए आया था। भास्कर, जो अपने पिता की तरह सफेद कुर्ता-पायजामा पहने हुए था, दुकान के फर्श पर बिछे सफेद कपड़े पर नंगे पैर बैठा था। केदारनाथ कभी-कभी उसकी ओर मुड़कर उससे कुछ हिसाब-किताब करने को कहते—कभी लड़के का मनोरंजन करने के लिए, कभी इसलिए कि वह सचमुच मददगार था। भास्कर को दुकान बहुत रोमांचक लगती थी—दूर के ऑर्डरों के लिए छूट दरें या डाक दरें निकालने में उसे बहुत आनंद आता था, और जूतों के डिब्बों के बीच के दिलचस्प ज्यामितीय और अंकगणितीय संबंधों को देखकर भी। वह अपने पिता के साथ रहने के लिए सोने में जितना हो सके देरी करता था, और वीना को कभी-कभी उसे घर आने के लिए एक से अधिक बार संदेश भेजना पड़ता था।

मान ने भास्कर की नाक पकड़ते हुए पूछा, 'मेंढक कैसा है? क्या वह जाग गया है? आज तो वह बहुत साफ-सुथरा दिख रहा है।'

केदारनाथ ने कहा, 'तुम्हें उसे कल सुबह देखना चाहिए था। उसकी सिर्फ आंखें ही दिखाई दे रही थीं।'

भास्कर का चेहरा खिल उठा। उसने मान से पूछा, 'तुम मेरे लिए क्या लाए हो?' मान ने जवाब दिया, 'तुम ही सो रहे थे। तुम्हें मुझे इसका हर्जाना देना होगा।'

'बेटा—' उसके पिता ने फटकारते हुए कहना शुरू किया।

'कुछ नहीं,' मान ने गंभीर स्वर में कहा, अपनी नाक छोड़ते हुए और मुंह पर हाथ रखते हुए। 'लेकिन बताओ—तुम्हें क्या चाहिए? जल्दी!'

भास्कर सोच में डूबे हुए अपने माथे पर शिकन डालने लगे।

दो आदमी टोकरी बेचने वालों की संभावित हड़ताल के बारे में बातें करते हुए पास से गुज़रे। रेडियो ज़ोर से बज रहा था। एक पुलिसकर्मी चिल्लाया। दुकान का लड़का बाज़ार से चाय के दो गिलास लेकर आया

और एक मिनट तक पानी में फूँक मारने के बाद मान ने चाय पीना शुरू कर दिया।
‘क्या सब ठीक चल रहा है?’ उसने केदारनाथ से पूछा। ‘आज दोपहर हमें ज्यादा बात करने का मौका नहीं मिला।’
केदारनाथ ने कंधे उचकाए, फिर सिर हिलाया।
सब ठीक है। लेकिन आप कुछ चिंतित लग रहे हैं।
‘व्यस्त? मैं? अरे नहीं, नहीं—’ मान ने विरोध किया। ‘लेकिन मैंने ये क्या सुना है कि बास्केटबॉल खिलाड़ी हड़ताल पर जाने की धमकी दे रहे हैं?’
‘अच्छा—’ केदारनाथ ने कहा।
वह इस संभावित हड़ताल से होने वाली तबाही की कल्पना कर सकता था, और वह इस विषय पर बात नहीं करना चाहता था। उसने चिंता भरे अंदाज़ में अपने सफ़ेद होते बालों में हाथ फेरा और आँखें बंद कर लीं।
भास्कर ने कहा, 'मैं अभी भी सोच रहा हूं।'
‘यह अच्छी आदत है,’ मान ने कहा। ‘अच्छा, अगली बार मुझे अपना फैसला बता देना— या फिर मुझे एक पोस्टकार्ड भेज देना।’
भास्कर ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा, 'ठीक है।'
'अलविदा।'
अलविदा, मान मामा... ओह, क्या आपको पता था कि अगर आपके पास एक त्रिभुज है तो
भास्कर ने इशारे से समझाया, 'और अगर आप किनारों पर इस तरह वर्ग बनाते हैं, और फिर इन दोनों वर्गों को जोड़ते हैं, तो आपको वह वर्ग मिलता है।' उन्होंने आगे कहा, 'हर बार।'
‘हां, मुझे पता है।’ मान ने मन ही मन सोचा, ‘यह तो घमंडी मेंढक है।’
भास्कर निराश दिखे, फिर उनका चेहरा खिल उठा। उन्होंने मान से पूछा, 'क्या मैं तुम्हें वजह बताऊं?'

'आज नहीं। मुझे जाना होगा। क्या आपको विदाई के लिए कुछ पैसे चाहिए?'

भास्कर का मन हुआ कि वह कहे, 'आज नहीं,' लेकिन उसने अपना इरादा बदल लिया। 'हाँ,' उसने कहा।

'256 को 512 से गुणा करने पर क्या आता है?' मान ने पूछा, जिसने इसे पहले ही हल कर लिया था।

भास्कर ने कहा, 'यह तो बहुत आसान है। मुझसे एक और सवाल पूछो।'

'तो फिर जवाब क्या है?'

'एक लाख इकतीस हजार बहत्तर।' 'हम्म। 400 गुना 400 कितना होता है?'

भास्कर आहत होकर मुंह फेर लिया।

'ठीक है, ठीक है,' मान ने कहा। '789 को 987 से गुणा करने पर क्या आता है?'

कुछ सेकंड के विराम के बाद भास्कर ने कहा, 'सात लाख अठहत्तर हजार सात सौ तैंतालीस।'

'मैं तुम्हारी बात मान लेता हूँ,' मान ने कहा। अचानक उसके मन में यह ख्याल आया कि शायद सईदा बाई के साथ अपनी किस्मत आज़माना ठीक नहीं होगा, क्योंकि वह अपने गुस्सैल स्वभाव के लिए कुख्यात थी।

भास्कर ने पूछा, 'क्या आप जांच नहीं करेंगे?'

'नहीं, मेरे होशियार, मुझे जाना होगा।' उसने अपने भतीजे के बालों को सहलाया, अपने बहनोई को सिर हिलाकर इशारा किया और मिसरी मंडी की मुख्य सड़क पर निकल गया। वहाँ उसने घर वापस जाने के लिए एक तांगा रोका।

रास्ते में उसने एक बार फिर अपना इरादा बदल लिया और सीधे सईदा बाई के घर चला गया।

प्रवेश द्वार पर खाकी पगड़ी पहने चौकीदार ने एक पल के लिए उसे देखा और बताया कि सईदा बाई यहाँ नहीं हैं। मान ने उन्हें एक पत्र लिखने का सोचा, लेकिन उसके सामने एक दुविधा खड़ी हो गई। वह किस भाषा में पत्र लिखे? सईदा बाई निश्चित रूप से अंग्रेजी नहीं पढ़ सकती थीं और हिंदी तो लगभग निश्चित ही नहीं पढ़ सकती थीं, और मान उर्दू लिखना नहीं जानता था। उसने चौकीदार को एक रुपया दिया और कहा, 'कृपया उन्हें बता दीजिए कि मैं श्रद्धांजलि देने आया हूँ।'

चौकीदार ने सलाम करते हुए अपना दाहिना हाथ अपनी पगड़ी पर उठाया और पूछा: 'और साहब का नाम?'

मान अपना नाम बताने ही वाला था कि तभी उसे कुछ बेहतर सूझा। उसने कहा, 'उसे बता देना कि मैं प्रेम में जीने वाला इंसान हूँ।' यह प्रेम निवास पर एक भद्दा व्यंग्य था।

चौकीदार ने भावहीनता से सिर हिलाया।

मान ने गुलाबी रंग के छोटे, दो मंजिला मकान को देखा। अंदर कुछ बत्तियाँ जल रही थीं, लेकिन शायद इसका कोई खास मतलब नहीं था। उदास मन और गहरी निराशा के साथ वह मुड़ गया और घर की ओर चल पड़ा। लेकिन फिर उसने वही किया जो वह अक्सर उदास या खाली समय में करता था—दोस्तों का साथ ढूँढ़ने लगा। उसने तांगे वाले को बैतर के नवाब साहब के घर ले जाने को कहा। जब उसे पता चला कि फ़िरोज़ और इम्तियाज़ देर रात तक बाहर हैं, तो उसने प्राण से मिलने का फैसला किया। प्राण व्हेल को डुबाने की घटना से खुश नहीं था, और मान को लगा कि उसे प्राण को शांत करना चाहिए। उसका भाई उसे एक नेक इंसान लगा, लेकिन भावनाओं को खुलकर ज़ाहिर न करने वाला। मान ने मन ही मन सोचा कि प्राण में उसके जैसा प्रेम में डूबकर दुखी होने की क्षमता नहीं है।

2.10

बाद में बदहाल हालत में मौजूद बैतर हाउस की हवेली में लौटकर, मान ने फिरोज और इम्तियाज के साथ देर रात तक बातचीत की और फिर वहीं रात बिताई।

इम्तियाज जम्हाई लेते हुए और अपने पेशे को कोसते हुए, फोन पर बात करने के लिए बहुत सुबह ही बाहर चला गया।

फिरोज को एक ग्राहक के साथ कुछ जरूरी काम था, इसलिए वह अपने पिता के विशाल पुस्तकालय के उस हिस्से में गया जो उनके कक्ष के रूप में काम करता था, वहां कुछ घंटों तक बंद रहा और देर से नाश्ते के समय सीटी बजाते हुए बाहर निकला।

मान, जिसने फिरोज के साथ नाश्ता करने तक अपना नाश्ता टाल दिया था, अभी भी अपने अतिथि शयनकक्ष में बैठा ब्रह्मपुर क्रॉनिकल पढ़ रहा था और जम्हाई ले रहा था। उसे हल्का सा हैंगओवर था।

नवाब साहब के परिवार का एक प्राचीन सेवक उनके सामने प्रकट हुआ और प्रणाम व अभिवादन करने के बाद घोषणा की कि छोटे साहब नाश्ते के लिए तुरंत आ रहे हैं, और क्या मान साहब कृपया नीचे जाएँगे? यह सब उन्होंने गरिमापूर्ण और संयमित उर्दू में कहा।

मान ने सिर हिलाया। लगभग आधे मिनट बाद उसने देखा कि बूढ़ा नौकर अभी भी थोड़ी दूरी पर खड़ा है और आशा भरी निगाहों से उसे देख रहा है। मान ने उसे हैरानी से देखा।

'कोई और आदेश?' नौकर ने पूछा, जो—मान ने गौर किया—कम से कम सत्तर वर्ष का लग रहा था, लेकिन काफी फुर्तीला था। मान ने सोचा कि नवाब साहब के घर की सीढ़ियाँ दिन में कई बार चढ़ने-उतरने के लिए उसे इतना चुस्त-दुरुस्त होना ही पड़ेगा। मान को आश्चर्य हुआ कि उसने उसे पहले कभी क्यों नहीं देखा था।

‘नहीं,’ मान ने कहा। ‘आप जा सकते हैं। मैं थोड़ी देर में नीचे आ रहा हूँ।’
फिर, जब बूढ़े व्यक्ति ने विनम्रतापूर्वक अभिवादन करते हुए अपनी हथेली माथे पर रखी और जाने के लिए मुड़े, तो मान ने कहा, ‘अरे, रुकिए...’
बूढ़ा आदमी मुड़ा और मान की बात सुनने के लिए इंतज़ार करने लगा।
मान ने कहा, 'तुम नवाब साहब के साथ कई सालों से रहे होगे।' 'जी हुजूर, मैं रहा हूँ। मैं परिवार का पुराना सेवक हूँ। मैंने अपनी ज़िंदगी का ज़्यादातर हिस्सा बैतर किले में काम करते हुए बिताया है, लेकिन अब बुढ़ापे में उन्होंने मुझे यहाँ बुलाना उचित समझा है।'
मान यह देखकर मुस्कुराया कि बूढ़ा व्यक्ति कितनी सहजता से और कितने शांत गर्व के साथ खुद को उन्हीं शब्दों—‘पुराना खिदमतगार’—से संबोधित कर रहा था, जिनका प्रयोग मान ने मन ही मन उसे वर्गीकृत करने के लिए किया था।
मान को चुप देखकर बूढ़ा आदमी बोलता रहा। ‘मैंने नौकरानी का काम तब शुरू किया जब मैं शायद दस साल का था। मैं नवाब साहब के गाँव रायपुर से आया था, जो बैतर एस्टेट में था। उन दिनों मुझे महीने में एक रुपया मिलता था, जो मेरी ज़रूरतों के लिए काफ़ी था। हुज़ूर, इस युद्ध ने चीज़ों की कीमतें इतनी बढ़ा दी हैं कि इससे कई गुना ज़्यादा तनख्वाह पाने वाले लोगों को भी गुज़ारा करना मुश्किल हो रहा है। और अब बँटवारे —और उसकी तमाम परेशानियों, नवाब साहब के भाई के पाकिस्तान चले जाने और संपत्ति को खतरे में डालने वाले इन सभी कानूनों—के चलते हालात बहुत अनिश्चित हैं’—वह दूसरा शब्द ढूंढने के लिए रुका, लेकिन अंत में उसने वही बात दोहराई—‘बहुत अनिश्चित।’
मान ने अपना सिर हिलाकर भ्रम दूर करने की कोशिश की और पूछा, 'क्या यहाँ एस्पिरिन मिल सकती है?'
बूढ़े व्यक्ति को यह देखकर प्रसन्नता हुई कि वह कुछ काम आ सकता है,

और उसने कहा, 'जी हां, मुझे ऐसा ही लगता है, हुजूर। मैं जाकर आपके लिए कुछ ले आता हूं।'

‘बहुत बढ़िया,’ मान ने कहा। ‘नहीं, मेरे लिए मत लाना,’ उसने बूढ़े आदमी को इतनी मेहनत करवाने के बारे में दोबारा सोचते हुए कहा। ‘जब मैं नाश्ते के लिए नीचे आऊँ तो मेरी थाली के पास दो-तीन गोलियाँ रख देना। वैसे,’ उसने अपनी थाली के किनारे रखी दो छोटी गोलियों की कल्पना करते हुए कहा, ‘फिरोज को छोटे साहब क्यों कहते हैं, जबकि वह और इम्तियाज एक ही समय में पैदा हुए थे?’

बूढ़े व्यक्ति ने खिड़की से बाहर फैले हुए मैग्नोलिया के पेड़ को देखा, जिसे जुड़वा बच्चों के जन्म के कुछ दिनों बाद लगाया गया था। वह एक पल के लिए खांसा और बोला, 'छोटे साहब, यानी फ़िरोज़ साहब, बुरे साहब के सात मिनट बाद पैदा हुए थे।'

‘आह,’ मान ने कहा।

‘इसीलिए वह बुर्रे साहब से अधिक नाजुक और कम हृष्ट-पुष्ट दिखते हैं।’

मान इस शारीरिक सिद्धांत पर विचार करते हुए चुप रहा।

‘उसके चेहरे की बनावट उसकी मां जैसी सुंदर है,’ बूढ़े व्यक्ति ने कहा, फिर रुक गया, मानो उसने स्पष्टीकरण की किसी सीमा का उल्लंघन किया हो।

मान को याद आया कि बेगम साहिबा—बैतर के नवाब की पत्नी और उनकी बेटी और जुड़वां बेटों की माँ—ने जीवन भर कड़ाई से पर्दा प्रथा का पालन किया था। उसे आश्चर्य हुआ कि एक पुरुष नौकर को उनका चेहरा कैसे पता चल गया होगा, लेकिन उसने बूढ़े आदमी की झिझक को भांप लिया और पूछा नहीं। शायद किसी तस्वीर से पता चला होगा, या शायद नौकरों के बीच हुई बातचीत से, उसने सोचा।

‘ऐसा लोग कहते हैं,’ बूढ़े आदमी ने आगे कहा। फिर वह रुका और बोला,

‘वह बहुत अच्छी महिला थीं, ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे। वह हम सबके लिए बहुत अच्छी थीं। उनका दृढ़ संकल्प था।’

मान उस बूढ़े व्यक्ति की झिझक भरी लेकिन उत्सुकता से भरी बातों से प्रभावित था, जो उस परिवार के इतिहास में झाँक रहा था जिसके लिए उसने अपना जीवन समर्पित कर दिया था। लेकिन सिरदर्द के बावजूद उसे अब काफी भूख लग रही थी, और उसने सोचा कि अभी बात करने का समय नहीं है। इसलिए उसने कहा, 'छोटे साहब को बता देना कि मैं सात मिनट में नीचे आ रहा हूँ।'

यदि बूढ़ा व्यक्ति मान के समय के अचूक ज्ञान से चकित था, तो उसने इसे ज़ाहिर नहीं किया। उसने सिर हिलाया और जाने ही वाला था।

‘वे तुम्हें क्या कहकर बुलाते हैं?’ मान ने पूछा।

‘गुलाम रसूल, हुजूर,’ बूढ़े नौकर ने कहा। मान ने सिर हिलाया और चला गया।

2.11

‘क्या तुम अच्छे से सोए?’ फिरोज ने मान की ओर मुस्कुराते हुए पूछा।

'बिल्कुल। लेकिन आप तो जल्दी उठ गए थे।'

‘सामान्य से पहले नहीं। मुझे नाश्ते से पहले काफी काम निपटाना पसंद है। अगर कोई क्लाइंट न होता, तो मैं अपने प्रोजेक्ट्स पूरे कर लेता। मुझे लगता है कि आप बिल्कुल काम नहीं करते।’

मान ने अपनी प्लेट में पड़ी दो छोटी गोलियों को देखा, लेकिन कुछ नहीं कहा, इसलिए फिरोज ने बोलना जारी रखा।

‘मुझे कपड़े के बारे में कुछ भी नहीं पता—’ फ़िरोज़ ने कहना शुरू किया।

मान ने आह भरी। उसने पूछा, 'क्या यह कोई गंभीर बातचीत है?'

‘जी हां, बिल्कुल,’ फ़िरोज़ ने हंसते हुए कहा। ‘मैं कम से कम दो घंटे से जागा हुआ हूं।’

‘खैर, मुझे हैंगओवर है,’ मान ने कहा। ‘थोड़ा रहम करो।’
फिरोज ने थोड़ा शरमाते हुए कहा, 'हाँ, मैं कर सकता हूँ।' 'मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूँ।' उसने देखा...
दीवार पर लगी घड़ी। ‘लेकिन मुझे घुड़सवारी क्लब जाना है। एक दिन मैं तुम्हें पोलो सिखाऊंगा, जानते हो ना, मान, चाहे तुम कितना भी विरोध करो।’ वह उठा और गलियारे की ओर चल पड़ा।
‘ओह, अच्छा,’ मान ने अधिक प्रसन्नता से कहा। ‘यह तो मेरे काम का है।’
एक आमलेट आया। बैतर हाउस में रसोई और नाश्ते के कमरे के बीच की लंबी दूरी तय करने के कारण वह हल्का गर्म था। मान ने उसे कुछ देर देखा, फिर धीरे से बिना मक्खन लगे टोस्ट का एक टुकड़ा खाया। उसकी भूख फिर से गायब हो गई थी। उसने एस्पिरिन की गोलियां निगल लीं।
फिरोज अभी दरवाजे पर ही पहुंचा था कि उसने देखा कि उसके पिता के निजी सचिव मुर्तजा अली प्रवेश द्वार पर एक युवक से बहस कर रहे हैं। युवक नवाब साहब से मिलना चाहता था। मुर्तजा अली, जो उम्र में कुछ ही बड़े थे, अपनी सहानुभूतिपूर्ण और परेशान मुद्रा में उसे ऐसा करने से रोकने की कोशिश कर रहे थे। युवक ने अच्छे कपड़े नहीं पहने थे—उसका कुर्ता सूती कपड़े का था—लेकिन उसकी उर्दू लहजे और अभिव्यक्ति दोनों में परिष्कृत थी। वह कह रहा था: 'लेकिन उन्होंने मुझे इस समय आने को कहा था, और मैं यहाँ आ गया हूँ।'
उसके दुबले-पतले चेहरे पर भावों की तीव्रता देखकर फ़िरोज़ रुक गया। 'क्या बात है?' फ़िरोज़ ने पूछा।
मुर्तजा अली ने मुड़कर कहा: 'छोटे साहब, ऐसा लगता है कि यह आदमी पुस्तकालय में नौकरी के सिलसिले में आपके पिता से मिलना चाहता है। वह कहता है कि उसकी मुलाकात तय है।'

‘क्या आपको इसके बारे में कुछ पता है?’ फ़िरोज़ ने मुर्तज़ा अली से पूछा।

‘मुझे खेद है, छोटे साहब, ऐसा नहीं है।’

उस युवक ने कहा: ‘मैं काफी दूर से और कुछ कठिनाई से आया हूँ। नवाब साहब ने मुझे स्पष्ट रूप से कहा था कि मुझे उनसे मिलने के लिए दस बजे यहाँ उपस्थित रहना चाहिए।’

फिरोज ने विनम्र स्वर में कहा: 'क्या आपको यकीन है कि उसका मतलब आज ही था?' 'हां, बिल्कुल यकीन है।'

फ़िरोज़ ने कहा, “अगर मेरे पिता ने कहा होता कि उन्हें परेशान किया जाना है, तो वे संदेश छोड़ देते। समस्या यह है कि एक बार मेरे पिता पुस्तकालय में चले जाते हैं, तो वे एक अलग ही दुनिया में चले जाते हैं। मुझे खेद है कि आपको उनके बाहर आने तक इंतजार करना पड़ेगा। या क्या आप बाद में आ सकते हैं?”

युवक के होंठों पर गहरी भावना उभरने लगी। ज़ाहिर है उसे नौकरी से होने वाली आमदनी की ज़रूरत थी, लेकिन साथ ही साथ उसमें स्वाभिमान की भावना भी थी। उसने स्पष्ट लेकिन धीमी आवाज़ में कहा, 'मैं इस तरह इधर-उधर भाग-दौड़ करने को तैयार नहीं हूँ।'

फ़िरोज़ हैरान था। उसे लगा कि यह दृढ़ता असभ्यता की सीमा पर है। उसने उदाहरण के तौर पर यह नहीं कहा था: 'नवाबज़ादा समझेंगे कि मेरे लिए यह मुश्किल है...' या ऐसा कोई नरम वाक्य। उसने बस इतना कहा था: 'मैं तैयार नहीं हूँ...'

‘खैर, यह तो आप पर निर्भर करता है,’ फ़िरोज़ ने सहजता से कहा। ‘अब मुझे माफ़ करना, मुझे बहुत जल्दी कहीं जाना है।’ कार में बैठते हुए उसने थोड़ा सा माथा सिकोड़ा।

2.12

पिछली शाम, जब मान वहाँ आया था, सईदा बाई अपने एक पुराने लेकिन बदतमीज़ ग्राहक का मनोरंजन कर रही थीं: मध्य भारत की एक छोटी रियासत, मरह के राजा। राजा कुछ दिनों के लिए ब्रह्मपुर में थे, आंशिक रूप से अपनी कुछ ब्रह्मपुर भूमि के प्रबंधन की देखरेख करने के लिए और आंशिक रूप से पुराने ब्रह्मपुर में आलमगिरी मस्जिद के पास अपनी ज़मीन पर शिव के एक नए मंदिर के निर्माण में सहायता करने के लिए। राजा बीस साल पहले अपने छात्र जीवन से ब्रह्मपुर से परिचित थे; जब मोहसिना बाई अपनी बेटी सईदा के साथ तरबूज का बाज़ार की कुख्यात गली में रहती थीं, तब वे अक्सर उनके प्रतिष्ठान में आते थे।

सईदा बाई के बचपन के दौरान, वह और उनकी माँ एक घर की ऊपरी मंजिल पर तीन अन्य वेश्याओं के साथ रहती थीं। उनमें से सबसे बड़ी वेश्या, घर की मालकिन होने के नाते, कई वर्षों तक उनकी मालकिन की भूमिका निभाती रही। सईदा बाई की माँ को यह व्यवस्था पसंद नहीं थी, और जैसे-जैसे उनकी बेटी की प्रसिद्धि और आकर्षण बढ़ता गया, उन्हें अपनी स्वतंत्रता का दावा करने का अवसर मिला। लगभग सत्रह वर्ष की उम्र में, सईदा बाई राजस्थान के एक बड़े राज्य के महाराजा और बाद में सीतागढ़ के नवाब की नज़र में आईं; और उसके बाद से उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

समय बीतने के साथ, सईदा बाई ने पसंद बाग में अपना वर्तमान घर खरीदने की क्षमता हासिल कर ली थी और अपनी माँ और छोटी बहन के साथ वहाँ रहने चली गई थीं। तीनों महिलाएँ, जिनके बीच क्रमशः लगभग बीस और पंद्रह वर्ष का अंतर था, अपनी-अपनी तरह से आकर्षक थीं। जहाँ माँ में पीतल जैसी मज़बूती और चमक थी, वहीं सईदा बाई में चाँदी जैसी कभी न मिटने वाली चमक थी, और जन्नत के एक झरने के नाम पर रखा गया नाम, युवा और कोमल हृदय वाली तसनीम, जिसे माँ और

बहन ने अपने पूर्वजों के पेशे से बचाया था, पारे जैसी चंचल और मायावी थी।

मोहसिना बाई का देहांत दो साल पहले हो गया था। यह सईदा बाई के लिए एक गहरा आघात था, जो कभी-कभी कब्रिस्तान जाकर अपनी मां की कब्र पर लेटकर रोती थीं। सईदा बाई और तसनीम अब पसंद बाग स्थित घर में दो नौकरानियों - एक नौकरानी और एक रसोइया - के साथ अकेली रहती थीं। रात में शांत स्वभाव का चौकीदार द्वार की रखवाली करता था। आज रात सईदा बाई को किसी मेहमान के आने की उम्मीद नहीं थी; वह अपने तबला वादक और सारंगी वादक के साथ बैठी गपशप और संगीत में मग्न थीं।

सईदा बाई के साथ संगत करने वाले दोनों एक-दूसरे से बिलकुल अलग थे। दोनों की उम्र लगभग पच्चीस वर्ष थी और दोनों ही समर्पित और कुशल संगीतकार थे। दोनों एक-दूसरे को बहुत पसंद करते थे और आर्थिक और भावनात्मक रूप से सईदा बाई से बहुत जुड़े हुए थे। लेकिन इसके अलावा उनमें समानता यहीं खत्म हो जाती थी। इशाक खान, जो अपनी सारंगी को इतनी सहजता और सामंजस्य से बजाते थे, मानो मानो खुद को ही नकार रहे हों, थोड़े व्यंग्यपूर्ण स्वभाव के अविवाहित व्यक्ति थे। मोटेपन के कारण मोटू चंद के नाम से मशहूर मोटू चंद एक संतुष्ट व्यक्ति थे, जो पहले से ही चार बच्चों के पिता थे। अपनी बड़ी-बड़ी आँखों और सूंघते हुए मुँह के कारण वे कुछ हद तक बुलडॉग जैसे दिखते थे और अपने तबले को उन्मादपूर्वक बजाने के अलावा वे शांत और सुस्त स्वभाव के थे।

वे भारत के सबसे प्रसिद्ध शास्त्रीय गायकों में से एक, उस्ताद मजीद खान के बारे में चर्चा कर रहे थे, जो अपनी एकांतप्रियता के लिए कुख्यात थे और पुराने शहर में रहते थे, जो उस जगह से ज्यादा दूर नहीं था जहां

सईदा बाई पली-बढ़ी थीं।

‘लेकिन सईदा बेगम, मुझे यह समझ नहीं आता,’ मोटू चंद ने अपने बढ़े हुए पेट के कारण अजीब तरह से पीछे की ओर झुकते हुए कहा, ‘कि वह हम जैसे छोटे लोगों की इतनी आलोचना क्यों करते हैं। वह तो कैलाश पर भगवान शिव की तरह बादलों के ऊपर सिर रखकर बैठे हैं। उन्हें अपनी तीसरी आंख खोलकर हमें जलाने की क्या जरूरत है?’

‘महान लोगों के मिजाज का कोई हिसाब नहीं होता,’ इशाक खान ने कहा। उन्होंने अपने बाएं हाथ से अपनी सारंगी को छुआ और आगे कहा, ‘अब इस सारंगी को देखिए—यह एक उत्कृष्ट वाद्ययंत्र है—फिर भी महान मजीद खान इससे नफरत करते हैं। वे इसे कभी अपने साथ नहीं ले जाने देते।’

सईदा बाई ने सिर हिलाया; मोटू चंद ने आश्वस्त करने वाली आवाजें निकालीं। उन्होंने कहा, 'यह सभी वाद्ययंत्रों में सबसे सुंदर है।'

‘अरे काफ़िर!’ इशाक खान ने अपने दोस्त की ओर देखकर टेढ़ी मुस्कान के साथ कहा। ‘तुम इस वाद्य यंत्र को पसंद करने का नाटक कैसे कर सकते हो? यह किस चीज़ से बना है?’

‘खैर, लकड़ी ही तो,’ मोटू चंद ने आगे की ओर झुकते हुए कहा।

‘इस छोटे पहलवान को देखो,’ सईदा बाई हंसते हुए बोलीं। ‘हमें इसे कुछ लड्डू खिलाने चाहिए।’ उन्होंने अपनी नौकरानी को बुलाया और मिठाई लाने के लिए भेज दिया। इशाक संघर्षरत पहलवान के इर्द-गिर्द अपनी दलीलें घुमाता रहा।

मोटू चंद।

‘लकड़ी!’ वह चिल्लाया। ‘और क्या?’

‘ओह, खैर, आप जानते ही हैं, खान साहब—तार वगैरह,’ मोटू चंद ने ईशाक के इरादे को लेकर हताश होकर कहा।

‘और ये तार किस चीज़ के बने हैं?’ इशाक खान ने लगातार पूछा। ‘आह!’ मोटू चंद ने कहा, उसे इशाक का मतलब समझ आ गया था। इशाक बुरा आदमी नहीं था, लेकिन बहस में मोटू चंद को हराने में उसे एक तरह का क्रूर आनंद मिलता था।

इशाक ने कहा, ‘आंत। ये डोरियाँ आंत की बनी हैं। जैसा कि आप भली-भांति जानते हैं। और सारंगी का अगला भाग चमड़े का बना होता है। किसी मृत जानवर की खाल का। अब अगर ब्रह्मपुर के आपके ब्राह्मणों को इसे छूने के लिए मजबूर किया जाए तो वे क्या कहेंगे? क्या वे इससे अपवित्र नहीं हो जाएँगे?’

मोटू चंद उदास दिखे, फिर उन्होंने हिम्मत जुटाई। ‘खैर, मैं ब्राह्मण नहीं हूँ, आप जानते ही हैं...’ उन्होंने कहना शुरू किया।

सईदा बाई ने इशाक खान से कहा, 'उसे चिढ़ाओ मत।'

‘मैं उस मोटे काफ़िर से इतना प्यार करता हूँ कि उसे चिढ़ाने का मन ही नहीं करता,’ इशाक खान ने कहा। यह सच नहीं था। मोटू चंद स्वभाव से बेहद शांत था, इसलिए इशाक खान को सबसे ज़्यादा उसकी शांति भंग करना पसंद था। लेकिन इस बार मोटू चंद ने चिढ़कर दार्शनिक अंदाज़ में प्रतिक्रिया दी।

‘खान साहब बहुत दयालु हैं,’ उन्होंने कहा। ‘लेकिन कभी-कभी अज्ञानी भी ज्ञानी होते हैं, और वे इस बात को सबसे पहले स्वीकार करेंगे। मेरे लिए सारंगी की बनावट मायने नहीं रखती, बल्कि उससे निकलने वाली दिव्य ध्वनियाँ मायने रखती हैं। एक कलाकार के हाथों में तो यह शरीर और त्वचा भी गीत गा सकती है।’ उनके चेहरे पर एक संतुष्ट, लगभग सूफी मुस्कान थी। ‘आखिर हम सब शरीर और त्वचा के सिवा और क्या हैं? और फिर भी’—उनका माथा एकाग्रता से सिकुड़ा हुआ था—‘एक ऐसे व्यक्ति के हाथों में जो—एक ही है...’

लेकिन तभी नौकरानी मिठाई लेकर अंदर आई और मोटू चंद के धार्मिक चिंतन में विराम लग गया। उनकी गोल-मटोल और लचीली उंगलियां झट से अपने ही आकार के लड्डू की ओर बढ़ीं और उसे पूरा का पूरा मुंह में डाल लिया।

कुछ देर बाद सईदा बाई ने कहा, 'लेकिन हम ऊपर वाले की बात नहीं कर रहे थे'—उन्होंने ऊपर की ओर इशारा किया—'बल्कि पश्चिम की ओर वाले की बात कर रहे थे।' उन्होंने पुराने ब्रह्मपुर की दिशा में इशारा किया।

'ये दोनों एक ही हैं,' इशाक खान ने कहा। 'हम पश्चिम की ओर और ऊपर की ओर, दोनों दिशाओं में प्रार्थना करते हैं। मुझे पूरा यकीन है कि अगर हम गलती से किसी शाम उस्ताद मजीद खान से प्रार्थना करने लगें तो उन्हें बुरा नहीं लगेगा। और क्यों नहीं?' उन्होंने अस्पष्ट लहजे में अपनी बात समाप्त की। 'जब हम ऐसी महान कला से प्रार्थना करते हैं, तो हम स्वयं ईश्वर से प्रार्थना कर रहे होते हैं।' उन्होंने मोटू चंद की ओर सहमति के लिए देखा, लेकिन मोटू या तो रूठे हुए लग रहे थे या अपने लड्डू पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे।

नौकरानी वापस अंदर आई और बोली: 'द्वार पर कुछ गड़बड़ है।' सईदा बाई घबराई हुई लगने के बजाय अधिक उत्सुक दिखीं।

'क्या मुसीबत है, बिब्बो?' उसने पूछा।

नौकरानी ने शरारती अंदाज़ में उसकी ओर देखा और कहा, 'लगता है कोई युवक चौकीदार से झगड़ा कर रहा है।'

'बेशर्म हो, अपने चेहरे से वो भाव हटाओ,' सईदा बाई ने कहा।

'हम्म,' उसने आगे कहा, 'वह कैसा दिखता है?'

'मुझे कैसे पता चलेगा, बेगम साहिबा?' नौकरानी ने विरोध करते हुए कहा।

'बिब्बो, ज्यादा झंझट मत करो। क्या वह सभ्य दिखता है?'

‘हां,’ नौकरानी ने स्वीकार किया। ‘लेकिन स्ट्रीटलाइट इतनी तेज नहीं थीं कि मैं कुछ और देख सकूं।’

सईदा बाई ने कहा, 'चौकीदार को बुलाओ।' नौकरानी के हिचकिचाते हुए देखने पर उन्होंने आगे कहा, 'यहां सिर्फ हम ही हैं।'

‘लेकिन वह युवक?’ नौकरानी ने पूछा।

'अगर वह उतना ही सम्मानित व्यक्ति है जितना तुम कहते हो, बिब्बो, तो वह बाहर ही रहेगा।'

‘जी हां, बेगम साहिबा,’ दासी ने कहा और उनकी आज्ञा का पालन करने चली गई।

‘तुम्हें क्या लगता है कि यह कौन हो सकता है?’ सईदा बाई ने मन ही मन सोचा और एक मिनट के लिए चुप हो गई।

चौकीदार घर में दाखिल हुआ, अपना भाला मुख्य द्वार पर छोड़कर भारी कदमों से सीढ़ियाँ चढ़कर गैलरी में चला गया। वह उस कमरे के द्वार पर खड़ा हुआ जहाँ वे बैठे थे और उसने सलाम किया। खाकी पगड़ी, खाकी वर्दी, मोटे जूते और घनी मूंछों के साथ वह उस स्त्री-प्रधान ढंग से सजे कमरे में बिलकुल बेमेल लग रहा था। लेकिन वह जरा भी असहज नहीं लग रहा था।

‘यह आदमी कौन है और यह क्या चाहता है?’ सईदा बाई ने पूछा।

चौकीदार ने शांत भाव से कहा, 'वह अंदर आकर आपसे बात करना चाहता है।'

'हां, हां, मुझे भी ऐसा ही लगा था—लेकिन उसका नाम क्या है?'

‘वह बेगम साहिबा नहीं कहेंगे। न ही वे ना सुनने को तैयार हैं। कल भी वे आए थे और मुझसे कहा था कि मैं आपको संदेश दूं, लेकिन उनका संदेश इतना अभद्र था कि मैंने न देने का फैसला किया।’

सईदा बाई की आँखों में चमक आ गई। उन्होंने पूछा, 'आपने मना कर

दिया?'
चौकीदार ने शांत भाव से कहा, 'राजा साहब यहाँ आए थे।'
‘हम्मह। और संदेश क्या है?’
‘वह ऐसा व्यक्ति है जो प्रेम में जीता है,’ चौकीदार ने भावहीनता से कहा। उन्होंने प्रेम के लिए एक अलग शब्द का प्रयोग किया था और इस प्रकार प्रेम निवास पर किए गए व्यंग्य का अर्थ खो दिया था।
‘जो प्रेम में जीता है? उसका क्या मतलब हो सकता है?’ सईदा बाई ने मोटू और इशाक से कहा। दोनों ने एक-दूसरे को देखा, इशाक खान के चेहरे पर तिरस्कार भरी हल्की मुस्कान थी।
सईदा बाई ने कहा, 'इस दुनिया में तो गधे ही भरे पड़े हैं,' लेकिन उनका इशारा किसके बारे में था, यह स्पष्ट नहीं था। 'उसने कोई नोट क्यों नहीं छोड़ा? तो क्या ये उसके ठीक वही शब्द थे? न तो मुहावरेदार थे और न ही हास्यपूर्ण।'
चौकीदार ने अपनी याददाश्त खंगाली और पिछली शाम मान द्वारा बोले गए शब्दों के लगभग सटीक अर्थ बता दिए। खैर, उसके वाक्य में 'प्रेम' और 'निवास' दोनों शब्द मौजूद थे।
तीनों संगीतकारों ने तुरंत ही पहेली को सुलझा लिया।
‘आह!’ सईदा बाई ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘मुझे लगता है मेरा एक चाहने वाला है। आपका क्या कहना है? क्या हम उसे अंदर आने दें? क्यों नहीं?’
बाकी दोनों में से किसी ने भी आपत्ति नहीं जताई—वैसे भी, वे कैसे जता सकते थे? चौकीदार को युवक को अंदर आने देने का आदेश दिया गया। और बिब्बो को तसनीम से अपने कमरे में रहने के लिए कहने का आदेश दिया गया।
2.13
द्वार पर बेचैनी से खड़े मान को इतनी जल्दी अंदर आने की अनुमति मिलने

पर अपनी किस्मत पर मुश्किल से ही यकीन हो रहा था। उसके मन में चौकीदार के प्रति कृतज्ञता का भाव जागा और उसने उसके हाथ में एक रुपया थमा दिया। चौकीदार उसे घर के दरवाजे पर छोड़कर चला गया और नौकरानी ने उसे कमरे की ओर इशारा किया।

सईदा बाई के कमरे के बाहर गैलरी में मान के कदमों की आहट सुनाई देते ही, सईदा ने पुकारा, 'अंदर आइए, अंदर आइए, दाग साहब। बैठिए और हमारी सभा को रोशन कीजिए।'

मान एक पल के लिए दरवाजे के बाहर खड़ा रहा और सईदा बाई को देखा। वह खुशी से मुस्कुरा रहा था, और सईदा बाई भी मुस्कुराए बिना नहीं रह सकीं। उसने सादे और साफ-सुथरे ढंग से इस्त्री किए हुए सफेद कुर्ते-पायजामे पहने हुए थे। उसके कुर्ते पर की गई बारीक चिकन कढ़ाई उसकी सफेद सूती टोपी की कढ़ाई से मेल खा रही थी। उसके जूते—मुलायम चमड़े की स्लिप-ऑन जूतियाँ, आगे से नुकीली—भी सफेद थीं।

‘आप कैसे आए?’ सईदा बाई ने पूछा।

मैं पैदल चला।

'धूल में इन कपड़ों को पहनने का जोखिम उठाना ठीक नहीं है।'

मान ने सरल शब्दों में कहा, 'यह बस कुछ ही मिनटों की दूरी पर है।'

'कृपया बैठ जाओ।'

मान सफेद चादर से ढकी फर्श पर पालथी मारकर बैठ गया।

सईदा बाई पान बनाने में व्यस्त हो गईं। मान उन्हें आश्चर्य भरी निगाहों से देखता रहा।

मैं भी कल आया था, लेकिन मेरी किस्मत इतनी अच्छी नहीं थी।

‘मुझे पता है, मुझे पता है,’ सईदा बाई ने कहा। ‘मेरे मूर्ख चौकीदार ने तुम्हें भगा दिया। मैं क्या कहूँ? हम सभी को विवेक की शक्ति प्राप्त नहीं होती…’

'लेकिन मैं आज यहां हूं,' मान ने काफी स्पष्ट रूप से कहा।
‘दाग जहाँ भी बैठा है, वहीं बैठा है?’ सईदा बाई ने मुस्कुराते हुए पूछा। उनका सिर झुका हुआ था और वह पान के पत्तों पर थोड़ा सा चूने का सफेद भाग फैला रही थीं।
'हो सकता है कि वह इस बार आपकी सभा से बिल्कुल भी इस्तीफा न दे,' मान ने कहा।
चूंकि वह सीधे उसकी ओर नहीं देख रही थी, इसलिए मान बिना किसी झिझक के उसे देख सका। उसके आने से पहले उसने अपने सिर को साड़ी से ढक लिया था। लेकिन उसकी गर्दन और कंधों की कोमल, चिकनी त्वचा दिखाई दे रही थी, और मान को काम करते समय उसकी गर्दन का झुकाव बेहद आकर्षक लगा।
सईदा बाई ने दो पान बनाकर उन्हें लटकन लगी एक छोटी चांदी की टूथपिक पर पिरोया और उन्हें पान के लिए पेश किया। पान के बाद पान लेकर उसने उसे मुंह में डाला और नारियल के स्वाद से सुखद आश्चर्यचकित हुआ, जो सईदा बाई को अपने पान में डालना बहुत पसंद था।
सईदा बाई ने दो पान मुंह में डालते हुए कहा, 'देखा, आपने अपने ही अंदाज़ में गांधी टोपी पहनी है।' उन्होंने इशाक खान या मोटू चंद को पान नहीं दिया, लेकिन ऐसा लग रहा था मानो वे दोनों पृष्ठभूमि में गुम हो गए हों।
मान ने घबराहट में अपनी कढ़ाई वाली सफेद टोपी के किनारे को छुआ, वह खुद को लेकर अनिश्चित था।
‘नहीं, नहीं, दाग साहब, आप परेशान न हों। यह कोई गिरजाघर नहीं है, आप जानते ही हैं।’ सईदा बाई ने उनकी ओर देखा और कहा, ‘मुझे ब्रह्मपुर में दिखने वाली दूसरी सफेद टोपियों की याद आ गई। उन्हें पहनने

वालों के सिर हाल ही में लंबे हो गए हैं।'
'मुझे डर है कि आप मुझ पर मेरे जन्म की दुर्घटना का आरोप लगाने वाले हैं,' मान ने कहा।
'नहीं, नहीं,' सईदा बाई ने कहा। 'आपके पिता कला के पुराने संरक्षक रहे हैं। मैं तो दूसरे कांग्रेसी नेताओं के बारे में सोच रही थी।'
'शायद अगली बार जब मैं आऊं तो मुझे अलग रंग की टोपी पहननी चाहिए,' मान ने कहा।
सईदा बाई ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।
'यदि मुझे आपके समक्ष पेश किया जाता है,' मान ने विनम्रतापूर्वक कहा।
सईदा बाई ने मन ही मन सोचा: कितना सभ्य युवक है! उन्होंने मोटू चंद को इशारा किया कि वह कमरे के कोने में पड़े तबले और हारमोनियम ले आए।
उसने मान से कहा, 'और अब हजरत दाग हमें क्या गाने का हुक्म देते हैं?'
'क्यों, कुछ भी,' मान ने मजाक को दरकिनार करते हुए कहा।
'उम्मीद है यह ग़ज़ल नहीं है,' सईदा बाई ने कहा और तबला और सारंगी को सही सुर में लाने में मदद करने के लिए हारमोनियम की एक कुंजी दबाई।
'नहीं?' मान ने निराश होकर पूछा।
सईदा बाई ने कहा, 'ग़ज़लें खुले समारोहों या प्रेमियों के अंतरंग पलों के लिए होती हैं। मैं वही गाऊंगी जिसके लिए मेरा परिवार सबसे ज़्यादा जाना जाता है और जो मेरे उस्ताद ने मुझे सबसे अच्छी तरह सिखाया है।'
उसने राग पिलू में ठुमरी शुरू की, 'तो फिर तुम मुझसे बात क्यों नहीं कर रहे हो?' और मान का चेहरा खिल उठा। जैसे-जैसे वह गाती गई, वह मदहोशी में डूबता चला गया। उसके चेहरे का नज़ारा, उसकी आवाज़ और उसके इत्र की खुशबू उसकी खुशी में घुलमिल गई।

दो-तीन ठुमरी और एक दादरा गाने के बाद, सईदा बाई ने इशारा किया कि वह थक गई है और मान को चले जाना चाहिए।

वह अनिच्छा से चला गया, लेकिन अनिच्छा से अधिक उसने सौहार्दपूर्ण भाव दिखाया। नीचे चौकीदार को उसके हाथ में पाँच रुपये का नोट थमा हुआ मिला।

सड़क पर मान हवा में पैर पटक रहा था।

उसने मन ही मन वादा किया कि वह कभी न कभी मेरे लिए ग़ज़ल गाएगी। वह गाएगी, ज़रूर गाएगी।

2.14

रविवार की सुबह थी। आसमान बिल्कुल साफ और चमकदार था। बरसात महल के पास लगने वाला साप्ताहिक पक्षी बाजार पूरे चहल-पहल से भरा था। हजारों पक्षी— मैना, तीतर, कबूतर, तोते— लड़ाकू पक्षी, खाने वाले पक्षी, दौड़ लगाने वाले पक्षी, बोलने वाले पक्षी—लोहे या बेंत के पिंजरों में छोटी-छोटी दुकानों में बैठे या फड़फड़ा रहे थे। इन दुकानों से शोर मचाते फेरीवाले अपने सामान की गुणवत्ता और सस्ते दामों का बखान कर रहे थे। फुटपाथ पर पक्षी बाजार का कब्जा था, और इशाक जैसे खरीदारों या राहगीरों को सड़क पर चलना पड़ता था, जहाँ उन्हें रिक्शा, साइकिल और कभी-कभार तांगे से टकराना पड़ता था।

वहाँ फुटपाथ पर पक्षियों के बारे में किताबों की एक छोटी सी दुकान भी थी। इशाक ने उल्लुओं और जादू-टोने के बारे में एक पतली, बेढंगी छपी किताब उठाई और यूँ ही पन्ने पलटने लगा कि इस मनहूस पक्षी का क्या उपयोग हो सकता है। यह हिंदू काला जादू की किताब लग रही थी, 'उल्लुओं का तंत्र', हालाँकि यह उर्दू में छपी थी। उसने पढ़ा:

रोजगार प्राप्त करने के लिए संप्रभु उपाय

उल्लू और कौवे के पूंछ के पंख लें और उन्हें आम की लकड़ी से बनी आग

में तब तक जलाएं जब तक वे राख न बन जाएं। जब आप नौकरी के लिए जाएं तो इस राख को अपने माथे पर जाति चिह्न की तरह लगाएं, और आपको निश्चित रूप से नौकरी मिल जाएगी।

उसने भौंहें चढ़ाकर पढ़ना जारी रखा:

किसी महिला को अपने वश में रखने का तरीका

यदि आप किसी महिला को अपने वश में रखना चाहते हैं और उसे किसी और के प्रभाव में आने से रोकना चाहते हैं, तो नीचे वर्णित तकनीक का उपयोग करें:

एक उल्लू का खून, एक जंगली मुर्गे का खून और एक चमगादड़ का खून बराबर मात्रा में लें, और इस मिश्रण को अपने लिंग पर मलकर उस स्त्री के साथ संभोग करें। फिर वह कभी किसी दूसरे पुरुष की इच्छा नहीं करेगी।

इशाक को लगभग उल्टी आने लगी। ये हिंदू! उसने सोचा। अचानक ही उसने वह किताब खरीद ली, यह सोचकर कि यह उसके मित्र मोटू चंद को उकसाने का एक बेहतरीन तरीका है।

'मेरे पास गिद्धों पर भी एक किताब है,' पुस्तक विक्रेता ने मदद करते हुए कहा।

'नहीं, मुझे बस यही चाहिए,' इशाक ने कहा और आगे बढ़ गया।

वह एक स्टॉल पर रुका जहाँ खुरदुरे मांस के छोटे-छोटे, लगभग आकारहीन, भूरे-हरे रंग के गोले एक घेरेदार पिंजरे में कैद थे। 'आह!' उसने कहा।

उसकी उत्सुकता भरी नजर का तुरंत ही सफेद टोपी पहने दुकानदार पर असर हुआ, जिसने उसके हाथ में मौजूद किताब पर नजर डालते हुए उसे गौर से देखा।

'हुजूर, ये साधारण तोते नहीं हैं, ये पहाड़ी तोते हैं, अंग्रेज साहब इन्हें

अलेक्जेंड्राइन तोते कहते हैं।’
अंग्रेज तीन साल से भी ज्यादा समय पहले चले गए थे, लेकिन इशाक ने इसे नजरअंदाज कर दिया।
‘मुझे पता है, मुझे पता है,’ उसने कहा।
दुकानदार ने बड़े ही दोस्ताना अंदाज़ में कहा, 'मैं किसी माहिर को देखते ही पहचान लेता हूँ। अब, क्यों न इसे ही ले लें? सिर्फ़ दो रुपये में—और यह तो देवदूत की तरह गाएगी।'
'पुरुष देवदूत या स्त्री देवदूत?' इशाक ने गंभीर स्वर में कहा।
दुकानदार अचानक चापलूसी करने लगा।
“ओह, मुझे माफ़ कर दीजिए, मुझे माफ़ कर दीजिए। यहाँ के लोग इतने अज्ञानी हैं कि अपने सबसे प्यारे पक्षी को भी उनसे अलग करना मुश्किल हो जाता है, लेकिन तोतों के जानकार के लिए मैं कुछ भी करूँगा, कुछ भी। इसे ले लीजिए, हुज़ूर।” और उन्होंने एक बड़े सिर वाला नर तोता चुन लिया।
इशाक ने उसे कुछ सेकंड तक पकड़े रखा, फिर वापस पिंजरे में रख दिया। उस आदमी ने अपना सिर हिलाया, फिर कहा:
अब एक सच्चे पक्षी प्रेमी के लिए, मैं इससे बेहतर क्या दे सकता हूँ? क्या आपको रुधिया जिले का पक्षी चाहिए? या होर्शाना की तलहटी का? वे मैना से भी बेहतर बोलते हैं।
इशाक ने बस इतना कहा, 'चलो कुछ देखने लायक देखते हैं।'
वह आदमी दुकान के पीछे गया और एक पिंजरा खोला जिसमें तीन नन्हे-मुन्ने पक्षी एक साथ huddled बैठे थे। इशाक ने चुपचाप उन्हें देखा, फिर उनमें से एक को देखने की इच्छा जताई।
वह मुस्कुराया, उसे अपने जाने-पहचाने तोतों की याद आ गई। उसकी चाची को तोते बहुत पसंद थे, और उनके पास एक तोता था जो सत्रह

साल की उम्र में भी जीवित था। उसने उस आदमी से कहा, 'यही वाला। और अब तक तो तुम जान ही गए होगे कि मैं कीमत के मामले में धोखा नहीं खाऊंगा।'

वे कुछ देर तक मोलभाव करते रहे। जब तक पैसों का लेन-देन नहीं हुआ, दुकानदार थोड़ा नाराज़ सा लग रहा था। फिर, जब इशाक अपना सामान रुमाल में लपेटकर जाने ही वाला था, तब दुकानदार ने चिंतित स्वर में कहा, 'अगली बार जब आप आएं तो मुझे बताइएगा कि वह कैसा है।'

इशाक ने पूछा, 'वे तुम्हें क्या कहकर बुलाते हैं?'

'मुहम्मद इस्माइल, हुजूर। और आपको किस नाम से संबोधित किया जाता है?'

'इशाक खान।'

'तो फिर हम भाई हैं!' दुकानदार ने मुस्कुराते हुए कहा। 'तुम्हें हमेशा मेरी दुकान से ही पक्षी खरीदने चाहिए।'

'जी हां,' इशाक ने सहमति जताते हुए जल्दी से वहां से चला गया। उसे एक बढ़िया पक्षी मिला था, जिससे युवा तसनीम का दिल खुश हो जाएगा।

2.15

इशाक घर गया, दोपहर का भोजन किया और चिड़िया को पानी में मिला हुआ थोड़ा आटा खिलाया। बाद में, तोते को अपने रुमाल में लेकर वह सईदा बाई के घर की ओर चल पड़ा। बीच-बीच में वह उसे निहारता और प्रशंसा से देखता रहा, यह कल्पना करते हुए कि वह कितना उत्कृष्ट और बुद्धिमान पक्षी हो सकता है। वह बहुत प्रसन्न था। एक अच्छा अलेक्जेंड्राइन तोता उसका पसंदीदा तोता था। नबीगंज की ओर चलते हुए वह लगभग एक हाथगाड़ी से टकरा गया।

वह करीब चार बजे सईदा बाई के घर पहुंचा और तसनीम से कहा कि वह

उसके लिए कुछ लाया है। उसे अंदाज़ा लगाना था कि वह क्या है।
‘मुझे चिढ़ाओ मत, इशाक भाई,’ उसने अपनी खूबसूरत बड़ी-बड़ी आँखों से उसके चेहरे को घूरते हुए कहा। ‘कृपया मुझे बताइए कि क्या बात है।’
इशाक ने उसे देखा और सोचा कि तसनीम पर 'हिरणी जैसी' शब्द वाकई सटीक बैठता है। कोमल नैन-नक्श वाली, लंबी और दुबली-पतली, वह अपनी बड़ी बहन से बहुत कम मिलती-जुलती थी। उसकी आँखें नम थीं और चेहरे पर कोमलता झलकती थी। वह चंचल थी, लेकिन हमेशा उड़ने के लिए बेताब सी लगती थी।
‘तुम मुझे भाई कहकर क्यों बुलाते हो?’ उसने पूछा।
‘क्योंकि तुम मेरे भाई जैसे हो,’ तसनीम ने कहा। ‘मुझे भी एक भाई की ज़रूरत है। और तुम्हारा यह उपहार लाना इस बात का सबूत है। अब मुझे सस्पेंस में मत रखो। क्या यह पहनने के लिए कुछ है?’
'अरे नहीं—यह तो तुम्हारी खूबसूरती के लिए अनावश्यक होगा,' इशाक ने मुस्कुराते हुए कहा।
‘कृपया इस तरह बात मत करो,’ तसनीम ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। ‘आपा सुन सकती हैं, और फिर मुसीबत हो जाएगी।’
‘अच्छा, ये रहा...’ और इशाक ने रूमाल में लिपटी हुई मुलायम, रोएँदार सामग्री की एक गेंद जैसी दिखने वाली चीज़ निकाली।
‘ऊन का गोला! तुम मुझसे मोजे बुनवाना चाहते हो? खैर, मैं नहीं बुनूंगी। मेरे पास इससे भी ज़रूरी काम हैं।’
‘जैसे क्या?’ इशाक ने कहा।
‘जैसे...’ तसनीम ने कहना शुरू किया, फिर चुप हो गई। उसने दीवार पर लगे लंबे शीशे पर असहज नज़र डाली। वह क्या करती थी? रसोइए की मदद के लिए सब्ज़ियाँ काटती, अपनी बहन से बातें करती, उपन्यास पढ़ती, नौकरानी से गपशप करती, जीवन के बारे में सोचती। लेकिन

इससे पहले कि वह इस विषय पर गहराई से विचार कर पाती, गेंद हिली और उसकी आँखें खुशी से चमक उठीं।

‘तो आप देख सकते हैं—’ इशाक ने कहा, ‘यह एक चूहा है।’

‘यह नहीं है—’ तसनीम ने तिरस्कार भरे लहजे में कहा। ‘यह एक पक्षी है। मैं बच्ची नहीं हूँ, तुम्हें पता है।’

‘और मैं तुम्हारा भाई तो नहीं हूँ,’ इशाक ने कहा। उसने तोते को खोला और दोनों ने मिलकर उसे देखा। फिर उसने उसे लाल लाख के फूलदान के पास एक मेज पर रख दिया। खुरदरी त्वचा वाला मांस का गोला देखने में बेहद घिनौना लग रहा था।

‘कितना प्यारा है,’ तसनीम ने कहा।

इशाक ने कहा, 'मैंने आज सुबह ही उसका चयन किया है। इसमें मुझे घंटों लग गए, लेकिन मैं तुम्हारे लिए बिल्कुल सही व्यक्ति ढूंढना चाहता था।'

तसनीम ने चिड़िया को देखा, फिर अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ। उस पर रोएँ होने के बावजूद वह बहुत कोमल थी। उसका रंग हल्का हरा था, क्योंकि उसके पंख अभी-अभी निकलने शुरू हुए थे।

‘एक तोता?’

'हां, लेकिन आम तोता नहीं। वह एक पहाड़ी तोता है। वह मैना की तरह ही बोलता है।'

मोहसिना बाई की मृत्यु के बाद, उनकी बातूनी मैना भी उनके पीछे-पीछे चली गई। उस चिड़िया के बिना तसनीम और भी अकेली हो गई थी, लेकिन उसे खुशी थी कि इशाक ने उसके लिए दूसरी मैना नहीं बल्कि कुछ बिल्कुल अलग चिड़िया लाकर दी थी। यह इशाक की ओर से दुगनी उदारता थी।

'उसे क्या कहते हैं?'

इशाक हँस पड़ा। 'तुम उसे कुछ क्यों कहना चाहते हो? बस "तोता" ही

काफी है। वह कोई युद्ध-घोड़ा तो नहीं है कि उसे रुक्श या बुसेफलस कहा जाए।'

दोनों खड़ी होकर तोते के बच्चे को देख रही थीं। एक ही क्षण दोनों ने उसे छूने के लिए हाथ बढ़ाया। तसनीम ने झट से अपना हाथ पीछे खींच लिया।

'तुम जाओ,' इशाक ने कहा। 'मैंने उसे पूरे दिन संभाला है।' 'क्या उसने कुछ खाया है?'

'थोड़ा सा आटा पानी में मिलाकर,' इशाक ने कहा।

'इतने छोटे पक्षी उन्हें कैसे मिलते हैं?' तसनीम ने पूछा।

उनकी निगाहें एक-दूसरे से मिली हुई थीं, और इशाक, पीले रंग के स्कार्फ से ढके उसके सिर को देखते हुए, खुद को बिना अपने शब्दों पर ध्यान दिए बोलते हुए पाया।

'ओह, इन्हें बहुत छोटी उम्र में ही इनके घोंसलों से निकाल लिया जाता है —अगर इन्हें छोटी उम्र में न लिया जाए तो ये बोलना नहीं सीखते—और आपको एक नर लेना चाहिए—उसकी गर्दन के चारों ओर एक सुंदर गुलाबी और काले रंग का छल्ला बन जाएगा—और नर ज़्यादा बुद्धिमान होते हैं। सबसे अच्छे बोलने वाले पहाड़ की तलहटी से आते हैं, आपको पता है। एक ही घोंसले से तीन चूजे बाड़े में थे, और मुझे फैसला करने से पहले काफी सोचना पड़ा—'

'तुम्हारा मतलब है, वह अपने भाई-बहनों से अलग हो गया है?' तसनीम ने बीच में टोकते हुए कहा।

'बिल्कुल,' इशाक ने कहा। 'उसे ऐसा होना ही था। अगर आपको ऐसे दो लोग मिल जाएं, तो वे हमारी कही हुई किसी भी बात की नकल करना नहीं सीखते।'

'कितनी क्रूरता है,' तसनीम ने कहा। उसकी आँखें नम हो गईं।

‘लेकिन जब मैंने उसे खरीदा था, तब वह अपने घोंसले से पहले ही अलग हो चुका था,’ इशाक ने दुखी होकर कहा, क्योंकि उसे इस बात का दुख था कि उसने उसे तकलीफ पहुंचाई थी। ‘आप उन्हें वापस नहीं रख सकते, वरना उनके माता-पिता उन्हें ठुकरा देंगे।’ उसने अपना हाथ उसके हाथ पर रखा—वह तुरंत पीछे नहीं हटी—और कहा: ‘अब यह तुम पर निर्भर है कि तुम उसे एक अच्छा जीवन दो। उसे कपड़े के घोंसले में उस पिंजरे में रख दो जिसमें तुम्हारी मां की मैना रहती थी। और पहले कुछ दिनों तक उसे पानी में भिगोया हुआ थोड़ा भुना हुआ बेसन या रात भर भिगोई हुई थोड़ी दाल खिलाओ। अगर उसे वह पिंजरा पसंद नहीं आया, तो मैं उसके लिए दूसरा पिंजरा ले आऊंगा।’

तसनीम ने अपना हाथ धीरे से इशाक के हाथ से हटा लिया। बेचारा तोता, प्यारा पर आज़ाद नहीं! वह एक पिंजरे से दूसरे पिंजरे में जा सकता था। और वह भी इन चार दीवारों को किसी और चार दीवारों से बदल देगी। उसकी बहन, जो उससे पंद्रह साल बड़ी थी और दुनियादारी में माहिर थी, जल्द ही यह सब कर देगी। और फिर—

‘कभी-कभी मेरी इच्छा होती है कि मैं उड़ सकूँ...’ वह शर्मिंदा होकर रुक गई।

इशाक ने गंभीरता से उसकी ओर देखा। 'अच्छा हुआ कि हम उड़ नहीं सकते, तसनीम— वरना तुम उस अफरा-तफरी की कल्पना कर सकती हो? चौक में पुलिस को यातायात नियंत्रित करने में ही काफी मशक्कत करनी पड़ती है—लेकिन अगर हम उड़ने के साथ-साथ चल भी सकते तो हालात सौ गुना बदतर हो जाते।'

तसनीम ने मुस्कुराने की कोशिश नहीं की।

‘लेकिन अगर पक्षी भी हमारी तरह सिर्फ चल पाते तो और भी बुरा होता,’ इशाक ने आगे कहा। ‘ज़रा सोचिए, वे शाम के समय अपनी छड़ियों के

सहारे नबीगंज में इधर-उधर टहल रहे हों।'
अब वो हंसने लगी। इशाक भी हंसने लगा, और दोनों उस दृश्य को याद करके इतने खुश हुए कि उनकी आंखों से आंसू बहने लगे। इशाक ने अपने हाथ से आंसू पोंछे, तसनीम ने अपने पीले दुपट्टे से। उनकी हंसी पूरे घर में गूंज उठी।
लाल लाख के फूलदान के पास मेज पर नन्हा तोता बिल्कुल शांत बैठा था; उसका पारदर्शी गला ऊपर-नीचे हिल रहा था।
दोपहर की नींद से जागकर सईदा बाई कमरे में आईं और आश्चर्यचकित स्वर में, कुछ सख्ती के साथ बोलीं: 'इशाक—ये सब क्या है? क्या दोपहर में भी आराम करने की अनुमति नहीं है?' फिर उनकी नज़र तोते के बच्चे पर पड़ी और उन्होंने झुंझलाहट में अपनी जीभ चटकाई।
'नहीं—इस घर में अब और पक्षी नहीं। मेरी माँ की उस बदकिस्मत मैना ने मुझे बहुत परेशान किया है।' वह थोड़ी देर रुकी, फिर बोली: 'किसी भी जगह पर एक ही गायक काफी है। इसे भगा दो।'

2.16

किसी ने कुछ नहीं कहा। थोड़ी देर बाद सईदा बाई ने चुप्पी तोड़ी। उन्होंने कहा, 'इशाक, तुम जल्दी आ गए।'
इशाक दोषी लग रहा था। तसनीम सिसकते हुए नीचे देखने लगी। तोते ने हिलने की कमज़ोर कोशिश की। सईदा बाई ने एक-एक करके सबको देखते हुए अचानक कहा:
'वैसे तुम्हारी सारंगी कहाँ है?'
इशाक को एहसास हुआ कि वह तो उसे लाया ही नहीं था। वह शर्म से लाल हो गया।
'मैं भूल गया था। मैं तोते के बारे में सोच रहा था।'
'कुंआ?'

मैं तुरंत जाकर उसे ले आऊंगा।
'मरह के राजा ने संदेश भेजा है कि वह आज शाम को आ रहे हैं।'
'मैं बस जा रहा हूँ,' इशाक ने कहा। फिर उसने तसनीम की ओर देखते हुए कहा, 'क्या...'
मैं तोता ले जाऊं?
'नहीं, नहीं—' सईदा बाई ने कहा, 'तुम्हें इसे लेने की क्या ज़रूरत है? बस अपनी सारंगी ले लो। और इसके बारे में सारा दिन मत सोचो।'
इशाक जल्दी से वहां से चला गया।
आंसू बहाने के करीब पहुंच चुकी तसनीम ने कृतज्ञता भरी नजरों से अपनी बहन को देखा।
लेकिन सईदा बाई बहुत दूर थीं। पक्षी के मामले ने उन्हें एक भयावह और विचित्र सपने से जगा दिया था, जिसमें उनकी मां की मृत्यु और उनके अपने अतीत का जिक्र था—और जब इशाक चला गया, तो उस सपने का भय और अपराधबोध का माहौल उन पर फिर से हावी हो गया।
अपनी बहन को अचानक उदास देखकर तसनीम ने उसका हाथ थाम लिया।
'क्या बात है, आपा?' उसने अपनी बड़ी बहन के लिए हमेशा इस्तेमाल किए जाने वाले स्नेह और सम्मान के शब्द का प्रयोग करते हुए पूछा।
सईदा बाई सिसकने लगीं और तसनीम को गले लगाकर उसके माथे और गालों पर चुंबन करने लगीं।
उसने कहा, 'दुनिया में मुझे सिर्फ तुम्हारी ही परवाह है। भगवान तुम्हें खुश रखे...'
तसनीम ने उसे गले लगाया और कहा, 'अरे, आपा, आप क्यों रो रही हैं? आप इतनी परेशान क्यों हैं? क्या आप अम्मी-जान की कब्र के बारे में सोच रही हैं?'

‘जी हाँ,’ सईदा बाई ने झटपट कहा और मुँह फेर लिया। ‘अब अंदर जाओ, अम्मी-जान के पुराने कमरे में पड़ा पिंजरा ले आओ। उसे चमकाकर यहाँ ले आओ। और उसके लिए थोड़ी दाल—चने की दाल—भिगोकर रख दो ताकि वह बाद में खा सके।’

तसनीम रसोई की ओर चली गई। सईदा बाई कुछ स्तब्ध सी बैठी रहीं। फिर उन्होंने छोटे तोते को गर्म रखने के लिए अपनी गोद में उठा लिया। वह इसी तरह बैठी थीं कि नौकरानी अंदर आकर बोली कि नवाब साहब के घर से कोई आया है और बाहर इंतज़ार कर रहा है।

सईदा बाई ने खुद को संभाला और अपनी आँखें पोंछीं। उन्होंने कहा, 'उसे अंदर आने दो।'

लेकिन जब फिरोज मुस्कुराते हुए, अपने दाहिने हाथ में अपनी सुरुचिपूर्ण छड़ी को हल्के से पकड़े हुए अंदर आया, तो वह चौंक कर हांफ उठी।

'आप?'

‘जी हां,’ फिरोज ने कहा। ‘मैं अपने पिता की तरफ से एक लिफाफा लाया हूं।’

‘आप देर से आए हैं... मतलब, वह आमतौर पर सुबह किसी को भेजते हैं,’ सईदा बाई ने अपने मन की उलझन को शांत करने की कोशिश करते हुए धीरे से कहा। ‘कृपया बैठ जाइए, कृपया बैठ जाइए।’

अब तक नवाब साहब मासिक लिफाफा लेकर नौकर को भेजते थे। सईदा बाई को याद था कि पिछले दो महीनों से यह उनके मासिक धर्म के कुछ ही दिनों बाद आता था। और इस महीने भी, बिल्कुल...

उसके विचारों में फिरोज ने दखल देते हुए कहा: 'मैं संयोगवश अपने पिता के निजी सचिव से टकरा गया, जो आ रहे थे—'

‘जी हां।’ सईदा बाई परेशान लग रही थीं। फ़िरोज़ को आश्चर्य हुआ कि उनके आने से सईदा इतनी परेशान क्यों हो गईं। इतने साल पहले नवाब

साहब और सईदा बाई की मां के बीच ज़रूर कुछ रहा होगा—और उनके पिता परिवार के भरण-पोषण के लिए हर महीने कुछ न कुछ पैसे भेजते रहते थे—यकीनन इसमें ऐसी कोई बात नहीं थी जिससे सईदा इतनी बेचैन हो जाएं। फिर उन्हें एहसास हुआ कि उनके आने से पहले भी सईदा किसी और बात से परेशान रही होंगी।

उसने सोचा, मैं गलत समय पर आया हूँ, और उसने जाने का फैसला किया।

तसनीम तांबे का पिंजरा लेकर अंदर आई और उसे देखकर अचानक रुक गई।

उन्होंने एक-दूसरे को देखा। तसनीम के लिए, फ़िरोज़ उसकी बहन का एक और आकर्षक प्रशंसक था—लेकिन बेहद खूबसूरत। उसने जल्दी से अपनी नज़रें नीचे कर लीं, फिर उसे दोबारा देखा।

वह पीले दुपट्टे में लिपटी, दाहिने हाथ में चिड़िया का पिंजरा लिए, आश्चर्य से थोड़ा मुंह खोले खड़ी थी—शायद उसके आश्चर्य को देखकर। फ़िरोज़ उसे टकटकी लगाकर देख रहा था।

'क्या हम पहले मिल चुके हैं?' उसने धीरे से पूछा, उसका दिल तेजी से धड़क रहा था।

तसनीम जवाब देने ही वाली थी कि सईदा बाई ने कहा, "मेरी बहन जब भी घर से बाहर जाती है, पर्दा करती है। और नवाबजादा ने पहली बार मेरे इस साधारण से कमरे में आकर मुझे सम्मानित किया है। इसलिए मुमकिन ही नहीं कि आप दोनों मिले हों। तसनीम, पिंजरा नीचे रख दो और अरबी की पढ़ाई पर ध्यान दो। मैंने तुम्हारे लिए नया शिक्षक यूं ही नहीं रखा है।"

'लेकिन । . ." तसनीम ने शुरुआत की।

'तुरंत अपने कमरे में वापस जाओ। मैं चिड़िया का ख्याल रख लूंगी। क्या

तुमने दाल भिगो दी है?'

'मैं । । ।'

'जाओ और तुरंत ऐसा करो। क्या तुम चाहते हो कि पक्षी भूखा मर जाए?'

जब व्याकुल तसनीम चली गई, तो फ़िरोज़ ने अपने विचारों को व्यवस्थित करने की कोशिश की। उसका मुंह सूख रहा था। वह अजीब तरह से बेचैन महसूस कर रहा था। उसे लगा, निश्चित रूप से, भले ही हम इस नश्वर दुनिया में न मिले हों, लेकिन किसी पिछले जन्म में ज़रूर मिले होंगे। यह विचार, जिस धर्म का वह नाममात्र का अनुयायी था, उसके विपरीत था, फिर भी उस पर गहरा प्रभाव डाल रहा था। पिंजरे वाली लड़की ने कुछ ही पलों में उस पर बेहद गहरा और विचलित कर देने वाला प्रभाव डाल दिया था।

सईदा बाई से संक्षिप्त शिष्टाचार की बातें करने के बाद, जो उनकी बातों पर उतना ही ध्यान दे रही थीं जितना कि वे उनकी बातों पर, वे धीरे-धीरे दरवाजे से बाहर चले गए। सईदा बाई कुछ मिनटों तक सोफे पर बिल्कुल स्थिर बैठी रहीं। उनके हाथ अब भी नन्हे तोते को कोमलता से थामे हुए थे। ऐसा लग रहा था कि वह सो गया है। उन्होंने उसे एक कपड़े में अच्छे से लपेटा और लाल फूलदान के पास फिर से रख दिया। बाहर से उन्हें शाम की नमाज़ की आवाज़ सुनाई दी, और उन्होंने अपना सिर ढँक लिया।

पूरे भारत में, पूरी दुनिया में, जैसे ही सूर्य या अंधकार की छाया पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़ती है, प्रार्थना की पुकार भी उसके साथ चलती है, और लोग एक लहर की तरह घुटने टेककर ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। प्रतिदिन पाँच लहरें—प्रत्येक नमाज़ के लिए एक—देशांतर से देशांतर तक पूरी दुनिया में फैलती हैं। इसके घटक, चुंबक के पास लोहे के कणों की तरह,

दिशा बदलते हैं—मक्का में स्थित ईश्वर के घर की ओर। सईदा बाई एक भीतरी कमरे में जाने के लिए उठीं जहाँ उन्होंने स्नान किया और अपनी प्रार्थनाएँ शुरू कीं।

ईश्वर के नाम से, जो अत्यंत दयालु और कृपालु है।
समस्त प्राणियों के स्वामी, ईश्वर की स्तुति हो।
अत्यंत दयालु, अत्यंत करुणामय,
विनाश के दिन का स्वामी।
हम केवल तेरी ही सेवा करते हैं; केवल तुझसे ही सहायता की प्रार्थना करते हैं।
हमें सीधे मार्ग पर चलाइए।
उन लोगों का मार्ग जिन्हें तूने आशीर्वाद दिया है,
वे नहीं जिन पर तू क्रोधित है,
और न ही उन लोगों के बारे में जो गुमराह हैं।

लेकिन इस दौरान, और उसके बाद के घुटने टेकने और साष्टांग प्रणाम करने के दौरान, पवित्र ग्रंथ की एक भयावह पंक्ति बार-बार उसके मन में गूंजती रही:

और केवल ईश्वर ही जानता है कि आप क्या गुप्त रखते हैं और क्या प्रकाशित करते हैं।

2.17

सईदा बाई की सुंदर युवा नौकरानी बिब्बो ने अपनी मालकिन को दुखी देखकर सोचा कि वह उन्हें खुश करने के लिए उस शाम आने वाले मारह के राजा के बारे में बात करेगी। बाघों के शिकार, पर्वतीय किलों, मंदिर निर्माण और अत्याचारी शासक के रूप में उनकी प्रतिष्ठा और यौन संबंधी विचित्र रुचियों के कारण राजा हास्य का पात्र नहीं थे। वे पुराने शहर के

केंद्र में अपने नवीनतम प्रोजेक्ट, शिव मंदिर की नींव रखने आए थे। यह मंदिर ढाई शताब्दी पहले सम्राट औरंगजेब के आदेश पर शिव मंदिर के खंडहरों पर निर्मित भव्य मस्जिद के ठीक बगल में बनना था। अगर मारह के राजा की मर्ज़ी चलती, तो उनके मंदिर की नींव मस्जिद के मलबे पर ही रखी जाती।

इस पृष्ठभूमि को देखते हुए, यह रोचक तथ्य था कि मारह के राजा सईदा बाई पर इस कदर मोहित थे कि उन्होंने कुछ वर्ष पूर्व उनसे विवाह का प्रस्ताव रखा था, जबकि उनके मुस्लिम धर्म को त्यागने का कोई सवाल ही नहीं था। उनकी पत्नी बनने के विचार से सईदा बाई इतनी बेचैन हो गईं कि उन्होंने राजा के सामने असंभव शर्तें रख दीं। राजा की वर्तमान पत्नी के सभी संभावित उत्तराधिकारियों को बेदखल कर दिया जाना था, और सईदा बाई का सबसे बड़ा पुत्र—यदि उनका कोई पुत्र होता—मारह का उत्तराधिकारी होना था। सईदा बाई ने राजा से यह मांग तब भी रखी, जबकि मारह की रानी और महारानी दोनों ने राजा की बहन के विवाह समारोह में शामिल होने के लिए बुलाए जाने पर उनके साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार किया था; वह रानियों को पसंद करती थीं और जानती थीं कि उनकी शर्तें स्वीकार होने की कोई संभावना नहीं है। लेकिन राजा ने अपनी बुद्धि की बजाय अपनी वासना से काम लिया। उसने इन मांगों को स्वीकार कर लिया, और फंसी हुई सईदा बाई को गंभीर रूप से बीमार पड़ना पड़ा और आज्ञाकारी डॉक्टरों ने उसे बताया कि उसे शहर से दूर किसी पहाड़ी रियासत में ले जाना उसकी जान ले सकता है।

राजा, जिसका रूप-रंग किसी विशालकाय भैंस जैसा था, कुछ देर तक खतरनाक ढंग से ज़मीन पर पैर पटकता रहा। उसे छल का संदेह हुआ और वह नशे में चूर होकर गुस्से से लाल हो गया; संभवतः सईदा बाई से छुटकारा पाने के लिए किसी को काम पर न रखने का मुख्य कारण यह

था कि उसे पता था कि अगर अंग्रेजों को सच्चाई का पता चल गया, तो वे उसे गद्दी से हटा देंगे—जैसा कि उन्होंने इसी तरह के घोटालों और हत्याओं के लिए अन्य राजाओं और यहाँ तक कि महाराजाओं को भी हटाया था।

इस बात की जानकारी नौकरानी बिब्बो को ज़्यादा नहीं थी, लेकिन उसे इस बात की जानकारी ज़रूर थी कि राजा ने कुछ साल पहले उसकी प्रेमिका को शादी का प्रस्ताव दिया था। सईदा बाई तसनीम के पक्षी से बात कर रही थीं—उसकी छोटी सी काया को देखते हुए यह थोड़ा जल्दबाजी थी, लेकिन सईदा बाई को लगता था कि पक्षी इसी तरह सबसे अच्छी तरह सीखते हैं—तभी बिब्बो वहाँ आ गई।

‘क्या राजा साहब के लिए कोई विशेष व्यवस्था की जाएगी?’ उसने पूछा।

‘क्यों? नहीं, बिलकुल नहीं,’ सईदा बाई ने कहा।

‘शायद मुझे गेंदे के फूलों की माला ले लेनी चाहिए—’

‘क्या तुम पागल हो, बिब्बो?’

‘—ताकि वह खा सके।’

सईदा बाई मुस्कुराईं।

बिब्बो ने आगे कहा, 'क्या हमें मरह जाना पड़ेगा, रानी साहिबा?'

‘अरे चुप रहो,’ सईदा बाई ने कहा।

लेकिन किसी राज्य पर शासन करना—

‘अब वास्तव में कोई भी अपने राज्यों पर शासन नहीं करता; दिल्ली ही शासन करती है,’ सईदा बाई ने कहा।

और सुनो, बिब्बो, मुझे ताज से नहीं, बल्कि उसके नीचे दबी भैंस से शादी करनी होगी। अब जाओ—तुम इस तोते की शिक्षा बर्बाद कर रहे हो।

नौकरानी जाने के लिए मुड़ी।

'ओह, हाँ, और मुझे थोड़ी चीनी भी ला दो, और देख लो कि जो दाल

तुमने पहले भिगोई थी, वो नरम हुई है या नहीं। शायद नहीं हुई होगी।'
सईदा बाई उस तोते से बातें करती रहीं, जो पीतल के पिंजरे के बीच में साफ-सुथरे कपड़ों से बने एक छोटे से घोंसले पर बैठा था, जिस पिंजरे में कभी मोहसिना बाई की मैना रहती थी।
सईदा बाई ने तोते से कुछ उदास स्वर में कहा, "मियां मिट्ठू, बचपन से ही अच्छी और शुभ बातें सीख लो, वरना उस बदज़ुबान मैना की तरह तुम्हारा भी जीवन बर्बाद हो जाएगा। कहते हैं, अगर तुम अलिफ़-बे-पे-ते ठीक से नहीं सीखोगे, तो कभी सुलेखक नहीं बन पाओगे। तुम्हारा क्या कहना है? क्या तुम सीखना चाहते हो?"
मांस का वह छोटा, पंखरहित गोला जवाब देने की स्थिति में नहीं था, और उसने जवाब नहीं दिया।
'अब मुझे देखो,' सईदा बाई ने कहा। 'मैं अब भी जवान महसूस करती हूँ, हालाँकि मैं मानती हूँ कि मैं तुम्हारी तरह स्वाभाविक रूप से जवान नहीं हूँ। मैं इस बेहद बदसूरत, पचपन साल के आदमी के साथ शाम बिताने का इंतज़ार कर रही हूँ, जो नाक कुरेदता है, डकारता है और यहाँ पहुँचने से पहले ही नशे में धुत हो जाएगा। फिर वो मुझसे प्रेम गीत गाने को कहेगा। सब मुझे रोमांस की साक्षात मूर्ति समझते हैं, मियाँ मिठ्ठू, लेकिन मेरी भावनाओं का क्या? मैं इन बूढ़े जानवरों के लिए कैसे कुछ महसूस कर सकती हूँ, जिनकी खाल उनके जबड़ों से लटकती है—चौक के आसपास भटकते बूढ़े मवेशियों की तरह?'
तोते ने अपना मुंह खोला।
'Miya Mitthu,' said Saeeda Bai.
तोता थोड़ा इधर-उधर हिल रहा था। उसका बड़ा सिर अस्थिर लग रहा था।
सईदा बाई ने 'मिया मिठ्ठू' दोहराया, और उन अक्षरों को उसके दिमाग में

अंकित करने की कोशिश की।
तोते ने अपना मुंह बंद कर लिया।
उन्होंने आगे कहा, 'आज रात मैं वास्तव में मनोरंजन करना नहीं बल्कि मनोरंजन प्राप्त करना चाहती हूं। किसी युवा और आकर्षक व्यक्ति द्वारा।'
सईदा बाई मान के बारे में सोचकर मुस्कुरा उठीं।
'मिया मिठू, आप उसके बारे में क्या सोचते हैं?' सईदा बाई ने आगे पूछा।
'ओह,
मुझे खेद है, आप अभी तक दाग साहब से नहीं मिले हैं, आप तो आज ही यहाँ आए हैं। और आप भूखे होंगे, इसीलिए मुझसे बात करने से मना कर रहे हैं—खाली पेट भजन नहीं गाए जा सकते। मुझे खेद है कि इस जगह पर सेवा इतनी धीमी है, लेकिन बिब्बो बहुत ही भुलक्कड़ लड़की है।
लेकिन थोड़ी देर बाद बिब्बो आया और तोते को खाना खिलाया गया।
बूढ़ी रसोइया ने तय किया था कि पक्षी के लिए दाल को केवल भिगोने के बजाय उबालकर ठंडा किया जाए। अब वह भी उसे देखने आई।
इशाक खान अपनी सारंगी पहने हुए आए, उनके चेहरे पर थोड़ी शर्मिंदगी झलक रही थी।
मोटू चंद अंदर आया और तोते की प्रशंसा करने लगा।
तसनीम ने अपना उपन्यास नीचे रख दिया और अंदर आकर तोते को बार-बार 'मिया मिट्ठू' और 'मिट्ठू मिया' कहने लगी, जिससे हर बार ईशाक खुश हो जाता था। कम से कम वह उसके पक्षी से प्यार तो करती थी।
और उचित समय पर मारह के राजा की घोषणा की गई।

2.18

मारह के राजा आम तौर पर जितने नशे में होते थे, उससे कम नशे में थे, लेकिन उन्होंने तुरंत स्थिति को संभाल लिया। वे अपने साथ अपनी पसंदीदा व्हिस्की, ब्लैक डॉग की एक बोतल लाए थे। इससे सईदा बाई

को उनकी एक अप्रिय आदत याद आ गई - कि वे कुत्तों को मैथुन करते देख बेहद उत्तेजित हो जाते थे। मारह में, जब सईदा बाई वहाँ गई थीं, तो उन्होंने दो बार कुत्तों को मदमस्त कुतिया पर चढ़ाया था। यही घटना सईदा बाई पर अपना घिनौना शरीर फेंकने की घटना की प्रस्तावना थी।

यह घटना स्वतंत्रता से कुछ वर्ष पूर्व घटी थी; सईदा बाई को भले ही मारह से घृणा थी, लेकिन वे तुरंत वहाँ से भाग नहीं पाईं, जहाँ क्रूर राजा, जिसे कई असंतुष्ट लेकिन चतुर ब्रिटिश रेजिडेंट्स ने नियंत्रित कर रखा था, का पूर्ण वर्चस्व था। बाद में, वे उस सुस्त और क्रूर व्यक्ति तथा उसके भाड़े के गुंडों से इतनी भयभीत हो गईं कि उससे पूरी तरह संबंध तोड़ना उनके लिए संभव नहीं हो पाया। वे केवल यही आशा कर सकती थीं कि समय के साथ ब्रह्मपुर में उसकी यात्राएँ कम हो जाएँगी।

ब्रह्मपुर में विद्यार्थी जीवन के दिनों से ही राजा का चरित्र काफी बिगड़ चुका था, जबकि उस समय वह देखने में कुछ हद तक सभ्य और शालीन प्रतीत होता था। रानी और महारानी द्वारा पिता की जीवनशैली से बचाए गए उनके पुत्र अब स्वयं ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय में विद्यार्थी थे; निःसंदेह, वयस्क होकर जब वह सामंती मार लौटेंगे, तो वे भी माता के प्रभाव से मुक्त होकर अपने पिता की तरह ही तामसिक बन जाएंगे: अज्ञानी, क्रूर, आलसी और नीच।

शहर में रहने के दौरान पिता ने बेटे की उपेक्षा की और कई वेश्याओं और दरबारी महिलाओं के पास गए। आज एक बार फिर सईदा बाई की बारी थी। वह हीरे के झुमके और रेशमी पगड़ी में माणिक जड़े हुए, कस्तूरी के इत्र की तेज़ खुशबू लिए हुए पहुंचे। उन्होंने सईदा बाई के ऊपर वाले कमरे के दरवाजे के पास एक मेज पर पाँच सौ रुपये से भरा एक छोटा रेशमी थैला रख दिया। फिर राजा सफेद चादर से ढके फर्श पर एक लंबे सफेद तकिये पर लेट गए और गिलास ढूंढने लगे। गिलास उस छोटी मेज पर

रखे थे जहाँ तबला और हारमोनियम रखे थे। 'ब्लैक डॉग' की बोतल खोली गई और दो गिलासों में व्हिस्की डाली गई। संगीतकार नीचे ही रहे।

‘कितने समय से इन आँखों ने तुम्हें आखिरी बार नहीं देखा था—’ सईदा बाई ने अपनी व्हिस्की की चुस्की लेते हुए और उसके तेज स्वाद पर मुंह बनाने से खुद को रोकते हुए कहा।

राजा शराब में इतना डूबा हुआ था कि उसे जवाब देने का ख्याल ही नहीं आया।

‘तुम्हें देखना ईद के चांद की तरह मुश्किल हो गया है।’ राजा ने इस मज़ाक पर हल्की सी नाराज़गी जताई। कुछ व्हिस्की पीने के बाद वह थोड़ा नरम पड़ गया और उसे बताया कि वह कितनी खूबसूरत लग रही है — फिर उसे ज़बरदस्ती धकेलते हुए बेडरूम के दरवाज़े की ओर ले गया।

आधे घंटे बाद वे बाहर आए और संगीतकारों को बुलाया गया। सईदा बाई थोड़ी बीमार लग रही थीं।

उसने उसे वही ग़ज़लें गाने को कहा जो वह हमेशा गाता था; उसने उन्हीं भावपूर्ण पंक्तियों को उसी लय में गाया— यह सब उसने बिना किसी कठिनाई के सीख लिया था। वह अपने व्हिस्की के गिलास को धीरे-धीरे पी रही थी। राजा अपनी बोतल का एक तिहाई हिस्सा खत्म कर चुका था और उसकी आँखें लाल हो रही थीं। बीच-बीच में वह बेतहाशा प्रशंसा में 'वाह! वाह!' चिल्लाता, डकारता, नाक से आवाज़ निकालता, मुँह खोलता या अपने गुप्तांग को खुजलाता।

2.19

ग़ज़लें ऊपर जा रही थीं, तभी मान घर की ओर चल पड़ा। गली से उसे गाने की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। उसने चौकीदार से कहा कि वह सईदा बाई से मिलने आया है, लेकिन चौकीदार ने बताया कि सईदा बाई की तबीयत ठीक नहीं है।

‘ओह,’ मान ने चिंता से भरी आवाज में कहा। ‘मुझे अंदर जाने दो—मैं देखता हूँ कि वह कैसी है—शायद मैं डॉक्टर को बुला सकूँ।’
‘बेगम साहिबा आज किसी को भी अंदर नहीं आने दे रही हैं।’
‘लेकिन मेरे पास उसके लिए कुछ है,’ मान ने कहा। उसके बाएं हाथ में एक बड़ी किताब थी। उसने अपने दाहिने हाथ से जेब में हाथ डाला और अपना बटुआ निकाला। ‘देखा कर उसे मिल जाए?’
‘जी हां, हुजूर,’ चौकीदार ने पांच रुपये का नोट लेते हुए कहा।
‘अच्छा, तो फिर—’ मान ने कहा और छोटे हरे गेट के उस पार गुलाबी रंग के घर को निराशा भरी नजरों से देखते हुए धीरे-धीरे चला गया।
कुछ मिनट बाद चौकीदार किताब को सामने के दरवाजे तक ले गया और बिब्बो को दे दिया।
‘क्या—मेरे लिए?’ बिब्बो ने शरारती अंदाज़ में कहा।
चौकीदार ने उसे इस कदर भावहीनता से देखा कि मानो वह भाव स्वयं में ही एक अभिव्यक्ति हो।
नहीं। और बेगम साहिबा को बता देना कि यह उस युवक की ओर से था जो परसों आया था।
‘वही जिसने तुम्हें बेगम साहिबा के साथ इतनी मुसीबत में डाला?’
मैं किसी मुसीबत में नहीं था।
और चौकीदार वापस फाटक की ओर चल पड़ा।
बिब्बो खिलखिलाकर हंस पड़ी और दरवाजा बंद कर दिया। उसने कुछ मिनटों तक किताब को देखा। वह बहुत सुंदर थी और छपाई के अलावा उसमें विभिन्न रोमांटिक दृश्यों में सुस्त पुरुषों और महिलाओं के चित्र थे। एक खास चित्र ने उसका ध्यान खींचा। काले वस्त्र पहने एक महिला एक कब्र के पास घुटनों के बल बैठी थी। उसकी आंखें बंद थीं। पृष्ठभूमि में एक ऊंची दीवार के पीछे आकाश में तारे चमक रहे थे। अग्रभूमि में एक छोटा,

टेढ़ा-मेढ़ा, पत्तों रहित पेड़ था, जिसकी जड़ें बड़े-बड़े पत्थरों में उलझी हुई थीं। बिब्बो कुछ क्षणों तक सोचती रही। फिर, मारह के राजा के बारे में सोचे बिना, उसने किताब बंद की और उसे सईदा बाई के पास ले गई।

जैसे धीमी गति से जलती हुई मशाल से चिंगारी निकलती है, वैसे ही किताब फाटक से मुख्य द्वार तक, गलियारे से होते हुए सीढ़ियों से ऊपर और दीर्घा से गुजरते हुए उस कमरे के खुले द्वार तक पहुँची जहाँ सईदा बाई राजा का मनोरंजन कर रही थीं। राजा को देखते ही बिब्बो अचानक रुक गई और दीर्घा से पीछे हटने की कोशिश करने लगी। लेकिन सईदा बाई ने उसे देख लिया था। उन्होंने गा रही ग़ज़ल बीच में ही रोक दी।

'बिब्बो, क्या बात है? अंदर आओ।'

'कुछ नहीं, सईदा बेगम। मैं बाद में आऊंगा।'

"लड़की को क्या हुआ है? पहले तो वो बीच में टोकती है, फिर "कुछ नहीं,"

सईदा बेगम, मैं बाद में आऊंगा! तुम्हारे हाथों में क्या है?

'कुछ नहीं, बेगम साहिबा।'

'चलिए उस खालीपन को देखते हैं,' सईदा बाई ने कहा।

बिब्बो ने भयभीत होकर सलाम किया और किताब उसे सौंप दी।

भूरे रंग के आवरण पर सुनहरे अक्षरों में उर्दू में लिखा था: ग़ालिब की काव्य रचनाएँ। चुगताई द्वारा चित्रों का एक एल्बम।

यह ग़ालिब की कोई साधारण कविता संग्रह नहीं थी। सईदा बाई खुद को इसे खोलने से रोक नहीं पाईं। उन्होंने पन्ने पलटे। किताब में कलाकार चुगताई की कुछ प्रस्तावनाएँ और एक निबंध, महान ग़ालिब की संपूर्ण उर्दू कविताएँ, फ़ारसी शैली में बनी कुछ बेहद खूबसूरत पेंटिंग्स (जिनमें ग़ालिब की एक-दो पंक्तियाँ चित्रित थीं) और कुछ अंग्रेज़ी पाठ था। सईदा बाई को लगा कि दूसरी तरफ से देखने पर यह अंग्रेज़ी पाठ शायद प्रस्तावना ही

है। उन्हें अब भी इस बात पर हंसी आ रही थी कि अंग्रेज़ी की किताबें उल्टे सिरे से खुलती हैं।

उपहार पाकर वह इतनी प्रसन्न हुई कि उसने उसे हारमोनियम पर रख दिया और चित्रों को देखने लगी। जब उसने देखा कि उस पर कोई शिलालेख नहीं है, तो उसने पूछा, 'यह किसने भेजा है?' अपनी प्रसन्नता में वह राजा की उपस्थिति को भूल गई थी, जो क्रोध और ईर्ष्या से उबल रहा था।

बिब्बो ने प्रेरणा के लिए कमरे में एक सरसरी नजर डालते हुए कहा, 'यह चौकीदार के साथ आया था।'

उसे राजा के खतरनाक क्रोध का आभास हो गया था, और वह नहीं चाहती थी कि उसकी मालकिन अनजाने में वह खुशी ज़ाहिर करे जो उसके प्रशंसक का नाम सीधे तौर पर लिए जाने पर ज़ाहिर हो सकती थी। इसके अलावा, राजा पुस्तक भेजने वाले के प्रति दयालु नहीं होगा; और बिब्बो, हालांकि शरारती थी, मान का बुरा नहीं चाहती थी। बल्कि, सच तो यह है कि वह मान का बुरा नहीं चाहती थी।

इसी बीच, सईदा बाई सिर झुकाए, सूर्यास्त के समय नए चाँद की ओर खिड़की के सामने प्रार्थना करते एक बूढ़ी औरत, एक जवान औरत और एक लड़के की तस्वीर देख रही थीं। ‘हाँ, हाँ—’ उन्होंने कहा ‘—लेकिन इसे किसने भेजा?’ उन्होंने ऊपर देखा और भौंहें चढ़ा लीं।

अब दबाव में आकर बिब्बो ने जितना हो सके घुमा-फिराकर मान का नाम लेने की कोशिश की। राजा के ध्यान न जाने की उम्मीद में उसने सफेद चादर से ढके फर्श पर उस जगह की ओर इशारा किया जहाँ मान ने अपनी थोड़ी सी व्हिस्की गिरा दी थी। उसने ज़ोर से कहा, 'मुझे नहीं पता। कोई नाम नहीं बचा। क्या मैं जा सकती हूँ?'

‘हां, हां—कितना मूर्ख है—’ बिब्बो के रहस्यमय व्यवहार से चिढ़कर

उसकी मालकिन ने कहा।
लेकिन मारह के राजा को यह उद्दंड हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं हो रहा था। गुस्से से गुर्राते हुए वह सईदा बाई के हाथों से किताब छीनने के लिए आगे बढ़ा। अगर सईदा ने आखिरी क्षण में फुर्ती से किताब को दूर न हटाया होता तो वह उसे उसके हाथों से छीन लेता।
अब हांफते हुए उसने कहा: 'वह कौन है? उसके जीवन का कितना मूल्य है? उसका नाम क्या है? क्या यह प्रदर्शनी मेरे मनोरंजन का हिस्सा है?'
'नहीं—नहीं—' सईदा बाई ने कहा, 'कृपया उस नासमझ लड़की को क्षमा कर दीजिए। इन नासमझों को शिष्टाचार और विवेक सिखाना असंभव है।' फिर, उसे शांत करने के लिए, उसने आगे कहा: 'लेकिन इस तस्वीर को देखिए—यह कितनी सुंदर है—उनके हाथ प्रार्थना में उठे हुए हैं—सूर्यास्त, मस्जिद का सफेद गुंबद और मीनार—'
यह शब्द गलत था। क्रोध से भरी एक कर्कश आवाज के साथ, मारह के राजा ने वह पन्ना फाड़ दिया जो सईदा बाई उसे दिखा रही थी। सईदा बाई भयभीत होकर उसे देखती रह गई।
'बजाओ!' उसने मोटू और इशाक पर गरजते हुए कहा। और सईदा बाई से धमकी भरे लहजे में चेहरा आगे करते हुए कहा: 'गाओ! ग़ज़ल पूरी करो —नहीं! फिर से शुरू करो। याद रखो कि आज शाम के लिए तुम्हें किसने बुक किया है।'
सईदा बाई ने किताब का फटा हुआ पन्ना वापस रखा, उसे बंद किया और हारमोनियम के पास रख दिया। फिर, आँखें बंद करके, उन्होंने प्रेम के गीत फिर से गाने शुरू किए। उनकी आवाज़ काँप रही थी और शब्दों में कोई जान नहीं थी। वास्तव में, वह उनके बारे में सोच भी नहीं रही थीं। आँसुओं के नीचे वह भयंकर क्रोध में थीं। अगर उन्हें आज़ादी होती, तो वह राजा पर टूट पड़तीं— उनकी उभरी हुई लाल आँखों पर अपनी व्हिस्की फेंक

देतीं, उनका चेहरा काट देतीं, उन्हें सड़क पर फेंक देतीं। लेकिन वह जानती थीं कि अपने सारे सांसारिक ज्ञान के बावजूद, वह पूरी तरह से शक्तिहीन थीं। इन विचारों से बचने के लिए उनका मन बिब्बो के हाव-भाव में खो गया।

व्हिस्की? शराब? फर्श? चादर? उसने मन ही मन सोचा।

फिर अचानक उसे समझ आया कि बिब्बो उससे क्या कहना चाह रहा था। वह शब्द था दाग के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द—'दाग'।

अब दिल में भी गीत गूंज रहा था, सिर्फ जुबान पर नहीं। सईदा बाई ने आंखें खोलीं और व्हिस्की के दाग को देखकर मुस्कुराई। मानो किसी काले कुत्ते ने पेशाब कर दिया हो! उसने सोचा। मुझे इस समझदार लड़की को तोहफा जरूर देना चाहिए।

उसने मान के बारे में सोचा, एक ऐसा आदमी—वास्तव में इकलौता आदमी—जिसे वह पसंद भी करती थी और जिस पर उसे लगभग पूरा नियंत्रण महसूस होता था। शायद उसने उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया था—शायद उसने उसके प्रति उसके आकर्षण को लेकर कुछ ज्यादा ही लापरवाही बरती थी।

वह ग़ज़ल जो वह गा रही थी, उसमें अचानक जान आ गई। इशाक खान चौंक गए और उन्हें कुछ समझ नहीं आया। यहां तक कि मोटू चंद भी हैरान रह गए।

इसमें निश्चित रूप से उस क्रूर हृदय को शांत करने का भी जादू था। मारह के राजा का सिर धीरे से उसकी छाती पर टिक गया, और थोड़ी देर में वह खर्राटे लेने लगा।

2.20

अगली शाम जब मान ने चौकीदार से सईदा बाई के स्वास्थ्य के बारे में पूछा, तो उसे बताया गया कि सईदा ने निर्देश दिए थे कि उसे ऊपर भेजा

जाए। यह बहुत आश्चर्यजनक था, क्योंकि उसने न तो कोई सूचना छोड़ी थी और न ही कोई पत्र भेजकर अपने आने की सूचना दी थी।

हॉल के अंत में सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते हुए वे दर्पण में खुद को निहारने के लिए रुके और धीमी आवाज़ में 'अदाब अर्ज़, दाग साहब' कहते हुए प्रसन्नतापूर्वक अपना हाथ माथे पर रखकर अभिवादन किया। वे हमेशा की तरह कड़क और बेदाग कुर्ता-पायजामा पहने हुए थे; उन्होंने वही सफेद टोपी पहनी हुई थी जिस पर सईदा बाई ने टिप्पणी की थी।

जब वह नीचे के हॉल से सटी ऊपरी गैलरी में पहुँचा, तो रुक गया। वहाँ न संगीत की आवाज़ थी, न बातचीत की। सईदा बाई शायद अकेली होंगी। वह सुखद आशा से भर गया; उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा।

उसने उसके कदमों की आहट जरूर सुनी होगी: उसने वह पतली सी किताब नीचे रख दी थी जिसे वह पढ़ रही थी—कम से कम कवर पर बने चित्र से तो ऐसा ही लग रहा था—और उसका अभिवादन करने के लिए खड़ी हो गई थी।

जैसे ही वह दरवाजे से अंदर दाखिल हुआ, उसने कहा, 'दाग साहब, दाग साहब, आपको ऐसा करने की जरूरत नहीं थी।'

मान ने उसकी ओर देखा—वह थोड़ी थकी हुई लग रही थी। उसने वही लाल रेशमी साड़ी पहनी हुई थी जो उसने प्रेम निवास में पहनी थी। वह मुस्कुराया और बोला: 'हर वस्तु अपना उचित स्थान पाने के लिए तरसती है। एक किताब अपने सच्चे प्रशंसक के पास रहना चाहती है। ठीक वैसे ही जैसे यह असहाय पतंगा उस मोमबत्ती के पास रहना चाहता है जो उसे मोहित कर लेती है।'

"पर, मान साहब, किताबें बड़े ध्यान से चुनी जाती हैं और प्यार से रखी जाती हैं," सईदा बाई ने उन्हें उनके नाम से पुकारते हुए कहा—क्या यह पहली बार था?—और उनकी पारंपरिक शिष्टाचार भरी टिप्पणी को पूरी

तरह से अनदेखा कर दिया। “यह किताब आपके पुस्तकालय में कई वर्षों से रही होगी। आपको इसे नहीं देना चाहिए था।”

मान के पास वह किताब दरअसल बनारस में उसकी किताबों की अलमारी में थी। उसे किसी कारणवश याद आ गई, तुरंत सईदा बाई की याद आ गई, और कुछ खोजबीन के बाद चौक के एक किताबवाले से उसे एक बिल्कुल सही हालत वाली पुरानी प्रति मिल गई। लेकिन अपने आप को इतने प्यार से संबोधित किए जाने की खुशी में उसने बस इतना ही कहा, 'उर्दू, यहाँ तक कि वे कविताएँ भी जो मुझे कंठस्थ हैं, मेरे लिए बेकार हैं। मैं लिपि नहीं पढ़ सकता। क्या आपको पसंद आई?'

‘जी हां,’ सईदा बाई ने बहुत धीमी आवाज़ में कहा। ‘हर कोई मुझे गहने और दूसरी चमकीली चीज़ें देता है, लेकिन आपके उपहार की तरह किसी और चीज़ ने मेरी आंखों और दिल को इतना आकर्षित नहीं किया। लेकिन हम खड़े क्यों हैं? कृपया बैठ जाइए।’

मान बैठ गया। इस कमरे में वही हल्की सी खुशबू थी जो उसने पहले भी महसूस की थी। लेकिन आज गुलाब के इत्र में कस्तूरी की खुशबू भी मिली हुई थी, इस मिश्रण ने मजबूत मान को भी लालसा से लगभग कमजोर कर दिया।

‘दाग साहब, क्या आप थोड़ी व्हिस्की लेंगे?’ सईदा बाई ने पूछा। ‘मुझे खेद है कि हमारे पास बस यही एक किस्म है,’ उन्होंने आधी खाली ब्लैक डॉग की बोतल की ओर इशारा करते हुए कहा।

‘लेकिन यह बहुत ही बढ़िया व्हिस्की है, सईदा बेगम,’ मान ने कहा।

'यह हमारे पास कुछ समय से है,' उसने गिलास उसे देते हुए कहा।

मान कुछ देर चुपचाप बैठा रहा, एक लंबे बेलनाकार तकिये से टेक लगाकर अपनी स्कॉच की चुस्कियाँ लेता रहा। फिर उसने कहा, ‘मैंने अक्सर उन दोहों के बारे में सोचा है जिनसे चुगताई की चित्रकलाएँ प्रेरित

हुई थीं, लेकिन कभी किसी उर्दू भाषी से उन्हें पढ़वाने का मौका नहीं मिला। उदाहरण के लिए, एक चित्र है जो मुझे हमेशा से आकर्षित करता रहा है। मैं किताब खोले बिना भी उसका वर्णन कर सकता हूँ। उसमें नारंगी और भूरे रंग का एक जलमय परिदृश्य है, जिसमें एक सूखा पेड़ पानी से उगता हुआ दिखाई देता है। और पानी के बीचोंबीच कहीं एक कमल तैर रहा है जिस पर एक छोटा, धुएँ वाला तेल का दीपक रखा है। क्या आप जानते हैं कि मैं किस चित्र की बात कर रहा हूँ? मुझे लगता है कि यह किताब के शुरू में कहीं है। उसे ढकने वाले कागज़ के पन्ने पर केवल एक शब्द लिखा है "जीवन!" अंग्रेज़ी में बस इतना ही है, और यह बहुत रहस्यमय है—क्योंकि इसके नीचे पूरा एक दोहा उर्दू में लिखा है। शायद आप मुझे बता सकें कि वह क्या है?'

सईदा बाई किताब लेकर आईं। वह मान के बाईं ओर बैठ गईं, और जैसे ही मान ने अपने अनमोल उपहार के पन्ने पलटने शुरू किए, उन्होंने प्रार्थना की कि कहीं उनकी नज़र उस फटे हुए पन्ने पर न पड़ जाए जिसे उन्होंने बड़ी सावधानी से सिला था। अंग्रेज़ी शीर्षक अजीब तरह से संक्षिप्त थे। 'अराउंड द बिलव्ड', 'द ब्रिमिंग कप' और 'द वेस्टेड विजिल' के पन्ने पलटने के बाद, मान को 'लाइफ!' शीर्षक मिला।

'यही वह चित्र है,' उन्होंने रहस्यमय चित्र का दोबारा निरीक्षण करते हुए कहा। 'ग़ालिब ने कई दोहे लिखे हैं जिनमें दीपों का जिक्र है। मुझे आश्चर्य है कि यह कौन सा दोहा है।'

सईदा बाई ने टिशू पेपर की ओर रुख किया और ऐसा करते समय उनके हाथ एक पल के लिए छू गए। एक गहरी सांस लेते हुए, सईदा बाई ने उर्दू शेर पर नज़र डाली और फिर उसे पढ़ा:

समय का घोड़ा तेजी से दौड़ रहा है: देखते हैं वह कहाँ रुकता है।
न तो हाथ लगाम पर है और न ही पैर रकाब में।

मान जोर से हंस पड़ा। उसने कहा, 'अच्छा, इससे मुझे यह सीख मिल गई कि कमजोर धारणाओं के आधार पर निष्कर्ष निकालना कितना खतरनाक होता है।'

उन्होंने कुछ और दोहे पढ़े, और फिर सईदा बाई ने कहा: 'आज सुबह जब मैंने कविताओं को देखा, तो मुझे आश्चर्य हुआ कि किताब के अंत में अंग्रेजी में लिखे कुछ पन्ने किस बारे में हैं।'

मान मुस्कुराते हुए सोचने लगा, "मेरी नज़र से किताब की शुरुआत..." उसने ज़ोर से कहा, "मुझे लगता है कि यह दूसरे छोर पर मौजूद उर्दू पन्नों का अनुवाद है—लेकिन क्यों न हम इसकी पुष्टि कर लें?"

'ज़रूर,' सईदा बाई ने कहा। 'लेकिन इसके लिए आपको मेरे साथ जगह बदलनी होगी और मेरे बाईं ओर बैठना होगा। तब आप अंग्रेज़ी में एक वाक्य पढ़ सकते हैं और मैं उसका उर्दू अनुवाद पढ़ सकती हूँ। यह एक निजी शिक्षक होने जैसा होगा,' उन्होंने अपने होठों पर हल्की सी मुस्कान लाते हुए कहा।

पिछले कुछ पलों में सईदा बाई की निकटता, जो पहले तो सुखद थी, अब मान के लिए एक छोटी सी समस्या खड़ी कर दी। उनके साथ जगह बदलने के लिए उठने से पहले, उसे अपने कपड़ों में थोड़ा सा बदलाव करना पड़ा ताकि सईदा बाई उसकी उत्तेजना को न देख सकें। लेकिन जब वह वापस बैठा, तो उसे लगा कि सईदा बाई पहले से कहीं ज़्यादा खुश थीं। वह मन ही मन सोचती हैं, "सचमुच एक तानाशाह, लेकिन मुस्कुराती हुई।"

'तो, उस्ताद साहब, चलिए पाठ शुरू करते हैं,' उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। 'ठीक है,' मान ने उसकी ओर देखे बिना, लेकिन उसकी निकटता को भलीभांति महसूस करते हुए कहा। 'पहला भाग जेम्स कजिन्स द्वारा चुगताई के चित्रों का परिचय है।'

‘ओह,’ सईदा बाई ने कहा, ‘उर्दू पक्ष की ओर से पहली चीज तो स्वयं कलाकार द्वारा यह स्पष्टीकरण है कि इस पुस्तक को छपवाकर वह क्या करना चाहते थे।’

‘और,’ मान ने आगे कहा, ‘मेरी दूसरी वस्तु कवि इकबाल द्वारा पुस्तक के लिए लिखी गई एक प्रस्तावना है।’

सईदा बाई ने कहा, 'और मेरी रचना भी चुगताई द्वारा स्वयं लिखा गया एक लंबा निबंध है, जिसमें कला पर उनके विचारों सहित विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई है।'

‘इसे देखो,’ मान अचानक अपनी पढ़ाई में मग्न हो गया। ‘मैं भूल ही गया था कि इकबाल ने कितनी आडंबरपूर्ण प्रस्तावना लिखी है। ऐसा लगता है जैसे वह सिर्फ अपनी किताबों के बारे में बात कर रहा है, उस किताब के बारे में नहीं जिसका वह परिचय दे रहा है। “मेरी इस किताब में मैंने यह कहा, मेरी उस किताब में मैंने वह कहा”—और चुगताई और उसकी कम उम्र के बारे में बस कुछ ही उपहासपूर्ण टिप्पणियाँ—’

वह आक्रोश से रुक गया।

सईदा बाई ने कहा, 'दाग साहब, आप तो काफी उत्तेजित हो रहे हैं।'

दोनों ने एक-दूसरे को देखा, सईदा बाई की सीधी बात सुनकर मान थोड़ा असहज हो गया। उसे लगा कि सईदा खुलकर हंसने से खुद को रोक रही है। सईदा बाई ने आगे कहा, 'शायद मुझे आपको एक उदास ग़ज़ल सुनाकर शांत करना चाहिए।'

‘जी हां, तुम कोशिश क्यों नहीं करती?’ मान ने ग़ज़लों के बारे में उसकी कही बात याद करते हुए कहा। ‘देखते हैं इसका मुझ पर क्या असर होता है।’

सईदा बाई ने कहा, 'मुझे अपने संगीतकारों को बुलाने दीजिए।'

‘नहीं,’ मान ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा। ‘बस तुम और हारमोनियम,

इतना ही काफी होगा।’
‘कम से कम तबला वादक तो?’
'मैं अपने दिल की धड़कन से ताल मिलाऊंगा,' मान ने कहा।
सिर को थोड़ा झुकाते हुए—जिस हावभाव से मान का दिल लगभग धड़कना भूल गया—सईदा बाई मान गईं। उन्होंने शरारती अंदाज़ में पूछा, 'क्या आप खड़े होकर मेरे लिए इसे ला सकते हैं?'
‘हम्म,’ मान ने कहा, लेकिन बैठा रहा।
‘और मैं यह भी देख रही हूं कि आपका गिलास खाली है,’ सईदा बाई ने आगे कहा।
इस बार किसी भी बात से शर्मिंदा न होते हुए, मान उठ खड़ा हुआ। वह सईदा बाई के लिए हारमोनियम और अपने लिए एक और पेय लेकर आया। सईदा बाई कुछ सेकंड तक गुनगुनाती रहीं और बोलीं, 'हाँ, मुझे पता है कौन सा ठीक रहेगा।' फिर उन्होंने रहस्यमयी पंक्तियाँ गाना शुरू किया:

बगीचे में धूल का एक भी कण व्यर्थ नहीं जाता।
यह रास्ता भी ट्यूलिप के दाग के लिए दीपक की तरह है।
‘दाग’ शब्द सुनते ही सईदा बाई ने मान को एक त्वरित और मनोरंजक नज़र से देखा। अगला शेर काफी नीरस था। लेकिन उसके बाद ये आया:
‘गुलाब बुलबुल की हरकतों पर हंसता है’—
जिसे वे प्रेम कहते हैं, वह मन की एक कमी है।
मान, जो इन पंक्तियों को भलीभांति जानता था, ने स्पष्ट रूप से अपनी व्याकुलता प्रदर्शित की होगी; क्योंकि सईदा बाई ने जैसे ही उसकी ओर देखा, उसने अपना सिर पीछे की ओर झुकाया और आनंद से खिलखिला उठी। उसके कोमल श्वेत गले का खुला होना, उसकी अचानक, थोड़ी

कर्कश हंसी, और यह अनिश्चितता कि वह उसके साथ हंस रही थी या उस पर, मान को पूरी तरह से बेसुध कर दिया। इससे पहले कि उसे पता चलता और हारमोनियम की बाधा के बावजूद, वह झुक गया और उसने सईदा बाई के गले पर चुंबन कर दिया, और इससे पहले कि सईदा बाई कुछ समझ पाती, सईदा बाई ने भी जवाब में चुंबन किया।
‘अभी नहीं, अभी नहीं, दाग साहब,’ उसने हाँफते हुए कहा। ‘अभी—अभी —’ मान ने कहा।
‘तो बेहतर होगा कि हम दूसरे कमरे में चलें,’ सईदा बाई ने कहा। ‘तुम्हें मेरी ग़ज़लों में दखल देने की आदत पड़ रही है।’
'मैंने आपकी ग़ज़लों में और कब दखल दिया है?' मान ने पूछा, जब वह उसे अपने बेडरूम में ले जा रही थी।
‘मैं आपको किसी और समय बताऊंगी,’ सईदा बाई ने कहा।

भाग तीन

3.1

प्राण के घर पर रविवार का नाश्ता आम तौर पर सप्ताह के दिनों की तुलना में थोड़ा देर से होता था। ब्रह्मपुर क्रॉनिकल आ चुका था और प्राण संडे सप्लीमेंट में मग्न था। सविता एक तरफ बैठकर अपना टोस्ट खा रही थी और प्राण के टोस्ट पर मक्खन लगा रही थी। श्रीमती रूपा मेहरा कमरे में आईं और चिंतित स्वर में पूछा, 'क्या आपने लता को कहीं देखा है?'
प्राण ने अखबार के पीछे छिपकर अपना सिर हिलाया।
‘नहीं, माँ,’ सविता ने कहा।
श्रीमती रूपा मेहरा ने चिंता से कहा, 'उम्मीद है वो ठीक होंगी।' उन्होंने चारों ओर देखा और मतीन से कहा, 'मसाला पाउडर कहाँ है? खाना

लगाते समय आप हमेशा मुझे भूल जाते हैं।'
प्राण ने कहा, 'माँ, वो ठीक क्यों नहीं होगी? ये ब्रह्मपुर है, कलकत्ता नहीं।'
'कलकत्ता बहुत सुरक्षित है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने अपनी इकलौती पोती के शहर का बचाव करते हुए कहा। 'यह एक बड़ा शहर हो सकता है, लेकिन यहाँ के लोग बहुत अच्छे हैं। किसी भी लड़की के लिए यहाँ किसी भी समय घूमना-फिरना बिल्कुल सुरक्षित है।'
'माँ, आपको अरुण की याद सता रही है,' सविता ने कहा। 'सब जानते हैं कि आपका पसंदीदा बच्चा कौन है।'
'मेरी कोई पसंदीदा नहीं है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।
फोन की घंटी बजी। प्राण ने लापरवाही से कहा, 'मैं उठा लेता हूँ। शायद आज रात की वाद-विवाद प्रतियोगिता से संबंधित कुछ होगा। मैं इन सभी घटिया गतिविधियों को आयोजित करने के लिए क्यों सहमत होता हूँ?'
'अपने छात्रों की आंखों में दिखने वाली श्रद्धा की झलक के लिए,' सविता ने कहा।
प्राण ने फोन उठाया। बाकी दोनों नाश्ता करते रहे। प्राण की आवाज़ में तीखापन और हैरानी थी, जिससे सविता समझ गई कि मामला गंभीर है। प्राण चौंक गया और उसने चिंता से श्रीमती रूपा मेहरा की ओर देखा।
'माँ—' प्राण ने कहा, लेकिन वह आगे कुछ नहीं कह सका।
रूपा मेहरा ने उनके चेहरे के भावों को पढ़कर कहा, 'यह लता के बारे में है। उसका एक्सीडेंट हो गया है।'
'नहीं—' प्राण ने कहा।
'भगवान का शुक्र है।'
'वह भाग गई है—' प्राण ने कहा।
'हे भगवान!' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।
'किसके साथ?' सविता ने टकटकी लगाए हुए पूछा, उसके हाथ में अभी

भी टोस्ट का एक टुकड़ा था।
‘मान के साथ,’ प्राण ने अविश्वास से अपना सिर धीरे-धीरे हिलाते हुए कहा। ‘कैसे—’ वह आगे बोला, लेकिन कुछ पल के लिए बोल नहीं पाया।
'हे भगवान!' सविता और उसकी मां ने लगभग एक साथ कहा।
कुछ सेकंड के लिए सन्नाटा छा गया।
प्राण ने सिर हिलाते हुए आगे कहा, ‘उसने रेलवे स्टेशन से मेरे पिता को फोन किया था। उसने मुझसे इस बारे में बात क्यों नहीं की? मुझे इस रिश्ते पर कोई आपत्ति नहीं दिखती, सिवाय मान की पिछली व्यस्तता के —’
‘कोई आपत्ति नहीं—’ श्रीमती रूपा मेहरा ने आश्चर्य से फुसफुसाते हुए कहा। उनकी नाक लाल हो गई थी और दो आंसू बेबस होकर गालों पर बहने लगे थे। उनके हाथ प्रार्थना की मुद्रा में जुड़े हुए थे।
‘तुम्हारा भाई—’ सविता ने तीखे स्वर में कहना शुरू किया, ‘शायद खुद को सबसे श्रेष्ठ समझता हो, लेकिन तुम यह कैसे सोच सकते हो कि हम —’
‘ओह मेरी बेचारी बेटी, ओह मेरी बेचारी बेटी,’ श्रीमती रूपा मेहरा रोते हुए बोलीं।
दरवाजा खुला और लता अंदर आ गई।
‘जी हां, मां?’ लता ने कहा। ‘क्या आप मुझे बुला रही थीं?’ उसने उस नाटकीय दृश्य को हैरानी से देखा और अपनी मां को दिलासा देने के लिए उनके पास गई। ‘अब क्या बात है?’ उसने मेज के चारों ओर देखते हुए पूछा। ‘उम्मीद है, दूसरे पदक की बात नहीं है।’
‘मान लो, यह सच नहीं है, यह सच नहीं है,’ श्रीमती रूपा मेहरा रोते हुए बोलीं। ‘तुम ऐसा करने की सोच भी कैसे सकती हो? और मान के साथ!

तुम मेरा दिल ऐसे कैसे तोड़ सकती हो?' अचानक उनके मन में एक विचार आया। 'लेकिन—यह सच नहीं हो सकता। रेलवे स्टेशन?'

लता ने कहा, 'मैं किसी स्टेशन पर नहीं गई। क्या बात है माँ? प्राण ने मुझे बताया था कि आप लोग मेरे भविष्य की योजनाओं और संभावनाओं पर अकेले में लंबी बातचीत करने वाले हैं'—वह थोड़ा भौंहें चढ़ाते हुए बोली —'और यहाँ रहना मेरे लिए शर्मिंदगी का कारण बनेगा। उसने मुझे नाश्ते के लिए देर से आने को कहा है। मैंने ऐसा क्या कर दिया है जिससे आप सब इतने नाराज़ हैं?'

सविता ने क्रोध और आश्चर्य से प्राण की ओर देखा; अब, उसके आक्रोश के बावजूद, प्राण ने केवल जम्हाई ली।

प्राण ने अखबार के शीर्ष पृष्ठ पर उंगली मारते हुए कहा, 'जो लोग तारीख के प्रति सचेत नहीं हैं, उन्हें इसके परिणाम भुगतने होंगे।'

यह 1 अप्रैल का दिन था।

श्रीमती रूपा मेहरा का रोना बंद हो गया था, लेकिन वह अब भी असमंजस में थीं। सविता ने अपने पति और बहन को कड़ी फटकार लगाते हुए कहा, 'माँ, यह प्राण और लता का अप्रैल फूल का मज़ाक है।'

'मेरा नहीं,' लता ने कहा, उसे धीरे-धीरे समझ आ रहा था कि उसकी अनुपस्थिति में क्या हुआ था। वह हंसने लगी। फिर वह बैठ गई और दूसरों की ओर देखने लगी। 'सच में, प्राण,' सविता ने कहा। उसने अपनी बहन की ओर मुड़कर कहा: 'यह इतना मजेदार नहीं है, लता।'

'जी हां,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। 'और परीक्षा के समय—इससे आपकी पढ़ाई में बाधा आएगी—और आपका सारा समय और पैसा बर्बाद हो जाएगा। हंसिए मत।'

'खुश हो जाओ, खुश हो जाओ, सब लोग। लता अभी भी अविवाहित है। भगवान स्वर्ग में हैं,' प्राण ने बेपरवाही से कहा और फिर से अपने अखबार

के पीछे छिप गया। वह भी मन ही मन हंस रहा था, लेकिन चुपचाप। सविता और श्रीमती रूपा मेहरा ने ब्रह्मपुर क्रॉनिकल को गुस्से से देखा।
सविता के मन में अचानक एक विचार आया। उसने कहा, 'मेरा गर्भपात हो सकता था।'
'अरे नहीं,' प्राण ने बेपरवाही से कहा। 'तुम तो तंदुरुस्त हो। मैं तो कमज़ोर हूँ। वैसे भी, यह सब तुम्हारे लिए ही किया गया था: तुम्हारी रविवार की सुबह को खुशनुमा बनाने के लिए। तुम तो हमेशा शिकायत करते रहते हो कि रविवार कितना नीरस होता है।'
'खैर, मुझे इससे बेहतर बोरियत ही पसंद है। क्या आप कम से कम हमसे माफी नहीं मांगेंगे?'
'ज़रूर,' प्राण ने तुरंत कहा। हालाँकि वह अपनी सास को रुलाने से खुद पर बहुत खुश नहीं था, लेकिन उसे इस बात की बहुत खुशी थी कि उसकी चाल कामयाब हो गई थी। और कम से कम लता को तो मज़ा आया था।
'माफ़ करना माँ। माफ़ करना प्यारे।'
'मुझे उम्मीद है ऐसा ही होगा। लता से भी माफी मांग लेना,' सविता ने कहा।
'माफ़ करना, लता,' प्राण ने हंसते हुए कहा। 'तुम्हें भूख लगी होगी। क्यों न तुम अपना अंडा ऑर्डर कर दो?'
'वैसे तो,' प्राण ने अपनी बची-खुची सद्भावना को लगभग पूरी तरह से खोते हुए आगे कहा, 'मुझे नहीं लगता कि मुझे माफी मांगनी चाहिए। मुझे ये अप्रैल फूल के मज़ाक पसंद नहीं हैं। मेरी शादी एक पश्चिमी सभ्यता से ग्रसित परिवार में हुई है, इसलिए मैंने तय किया है कि प्राण, तुम्हें अपनी ज़िम्मेदारी निभानी ही होगी, वरना वे तुम्हें गंवार समझेंगे और तुम फिर कभी अरुण मेहरा का सामना नहीं कर पाओगे।'
सविता ने कहा, 'मेरे भाई के बारे में ताने मारना बंद करो। शादी के बाद से

ही तुम ऐसा कर रही हो। तुम्हारा भाई भी उतना ही नाजुक है। बल्कि उससे भी ज्यादा नाजुक।'

प्राण ने एक पल के लिए इस पर विचार किया। लोग मान के बारे में बातें करने लगे थे।

'चलो, जान, मुझे माफ कर दो,' उसने अपनी आवाज में थोड़ी और सच्ची पश्चाताप की भावना के साथ कहा। 'मुझे भरपाई करने के लिए क्या करना होगा?'

'चलो हमें फिल्म दिखाने ले चलो,' सविता ने तुरंत कहा। 'आज मैं एक हिंदी फिल्म देखना चाहती हूँ—सिर्फ यह दिखाने के लिए कि मैं कितनी पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित हूँ।' सविता को हिंदी फिल्में पसंद थीं (जितनी भावुक हों, उतना अच्छा); वह यह भी जानती थी कि प्राण को ज्यादातर हिंदी फिल्में नापसंद थीं।

प्राण ने कहा, 'एक हिंदी फिल्म?' 'मुझे लगा था कि गर्भवती महिलाओं की अजीबोगरीब पसंद सिर्फ खाने-पीने तक ही सीमित होती है।'

'ठीक है, तो यह तय हो गया,' सविता ने कहा। 'हमें कौन सा देखना चाहिए?'

प्राण ने कहा, 'माफ़ कीजिए, यह असंभव है। इस पर आज शाम बहस है।'

'तो फिर दोपहर का शो देखते हैं,' सविता ने अपने टोस्ट के किनारे से मक्खन को निर्णायक ढंग से झटकते हुए कहा।

'ओह, ठीक है, ठीक है, लगता है मैंने खुद ही ये मुसीबत मोल ली है,' प्राण ने कहा। उसने अखबार का सही पन्ना खोला। 'यह कैसा रहेगा? संग्राम। ओडियन में। "सभी द्वारा प्रशंसित—फिल्मों का एक बेहतरीन नमूना। केवल वयस्कों के लिए।" इसमें अशोक कुमार का अभिनय—वह माँ के दिल की धड़कनें तेज़ कर देता है।'

‘आप मुझे चिढ़ा रही हैं,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कुछ हद तक शांत होते हुए कहा। ‘लेकिन मुझे उनकी एक्टिंग पसंद है। फिर भी, आप जानती हैं, इन सभी एडल्ट फिल्मों को देखकर मुझे लगता है—’

‘ठीक है,’ प्राण ने कहा। ‘अगला वाला। नहीं—उसके लिए दोपहर का कोई शो नहीं है। उम्म, उम्म, ये कुछ दिलचस्प लग रहा है। काले बादल। प्रेम और रोमांस की एक महागाथा। मीना, श्याम, गुलाब, जीवन, इत्यादि, इत्यादि, यहाँ तक कि नन्ही तबस्सुम भी! तुम्हारी वर्तमान स्थिति में बिल्कुल सही है,’ उसने सविता से कहा।

‘नहीं,’ सविता ने कहा। ‘मुझे इनमें से कोई भी अभिनेता पसंद नहीं है।’

प्राण ने कहा, 'यह परिवार बहुत ही नखरे वाला है। पहले वे एक फिल्म चाहते हैं, फिर वे सभी विकल्पों को खारिज कर देते हैं।'

'पढ़ते रहो,' सविता ने कुछ सख्ती से कहा।

‘जी हां, मेमसाहिब,’ प्राण ने कहा। ‘अच्छा, तो फिर हमारे पास हलचल है। भव्य उद्घाटन समारोह। नरगिस—’

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'मुझे वह पसंद है। उसके चेहरे के भाव बहुत ही अभिव्यंजक हैं—'

‘दलीप कुमार—’

‘आह!’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।

प्राण ने कहा, ‘माँ, खुद को संभालो। सितारा, याकूब, के.एन. सिंह और जीवन। कहानी शानदार है। सितारे शानदार हैं। संगीत शानदार है। भारतीय सिनेमा के 30 सालों में ऐसी कोई फिल्म नहीं बनी।’ तो फिर?

‘यह कहाँ दिखाया जा रहा है?’

‘द मैजेस्टिक में। “नवीनीकृत, शानदार ढंग से सुसज्जित और आरामदायक ठंडक के लिए ताजी हवा संचारित करने वाले उपकरण से युक्त।”’

'यह हर तरह से सही लगता है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने सावधानीपूर्वक आशावाद के साथ कहा, मानो वह लता के लिए संभावित रिश्ते पर चर्चा कर रही हों।

'लेकिन रुको!' प्राण ने कहा। 'यहाँ एक विज्ञापन है जो इतना बड़ा है कि मुझसे छूट गया: यह दीदार का विज्ञापन है। यह, चलो देखते हैं, उतने ही शानदार मनोरमा टॉकीज में दिखाया जा रहा है, जिसमें ताजी हवा के संचार का उपकरण भी लगा है। इसमें लिखा है: "यह सितारों से सजी फिल्म है! पाँचवें सप्ताह चल रही है। दिल को छू लेने वाले जोशीले गानों और रोमांस से भरपूर। नरगिस, अशोक कुमार—""

वह अपनी सास की संभावित प्रतिक्रिया के लिए कुछ देर रुका।

'प्राण, तुम हमेशा मुझे चिढ़ाते रहते हो,' श्रीमती रूपा मेहरा ने खुशी से कहा, उनके सारे आंसू गायब हो गए थे।

"—निम्मी, दलीप कुमार—" (अद्भुत किस्मत, माँ) "—याकूब, बेबी तबस्सुम—" (हमें जैकपॉट मिल गया) "—संगीत से भरपूर चमत्कारिक गीत जो शहर की हर गली में गाए जाते हैं। सभी द्वारा सराहे गए, सराहे गए, प्रशंसित। परिवारों के लिए एकमात्र फिल्म। एक तूफानी फिल्म। मधुर संगीत की वर्षा। फिल्मकारों की दीदार! सितारों से सजी फिल्मों में एक अनमोल रत्न! इतने सालों में इससे बेहतर फिल्म आपको नहीं मिलेगी।" तो, आपका क्या कहना है?

उसने अपने चारों ओर तीन अचंभित चेहरों की ओर देखा। प्राण ने संतुष्टि से कहा, 'हैरान! एक ही सुबह में दो बार!'

3.2

उस दोपहर चारों मनोरमा टॉकीज़ में धूप सेंकने गए। उन्होंने आम लोगों से काफी ऊपर, बालकनी सेक्शन में सबसे अच्छी टिकटें खरीदीं और कैडबरी चॉकलेट का एक बार भी खरीदा, जिसका अधिकांश हिस्सा लता और

सविता ने खा लिया। श्रीमती रूपा मेहरा को मधुमेह होने के बावजूद एक टुकड़ा खाने की अनुमति दी गई और प्राण ने एक से अधिक नहीं खाया। प्राण और लता की आँखें लगभग सूखी थीं, सविता सिसक रही थी और श्रीमती रूपा मेहरा फूट-फूट कर रो रही थीं। फिल्म वाकई बहुत दुखद थी, और गाने भी दुख भरे थे, और यह स्पष्ट नहीं था कि नेत्रहीन गायक की दयनीय स्थिति ने या प्रेम कहानी की कोमलता ने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया था। सभी का समय बहुत अच्छा बीतता अगर उनके पीछे एक या दो पंक्ति में बैठा एक आदमी न होता, जो हर बार जब नेत्रहीन दलीप कुमार स्क्रीन पर दिखाई देता, तो भयानक रूप से रोने लगता और एक-दो बार तो उसने अपनी छड़ी ज़मीन पर पटक कर शायद भाग्य या निर्देशक के खिलाफ आक्रोश व्यक्त किया। अंततः प्राण इसे और सहन नहीं कर सका, मुड़कर बोला: 'महोदय, क्या आप उसे खटखटाने से खुद को रोक सकते हैं—'

जब उसने देखा कि अपराधी श्रीमती रूपा मेहरा के पिता हैं, तो वह अचानक रुक गया। 'हे भगवान!' उसने सविता से कहा, 'ये तो तुम्हारे दादाजी हैं! मुझे बहुत खेद है, महोदय! कृपया मेरी बातों का बुरा न मानें, महोदय। माँ भी यहाँ हैं, महोदय, मेरा मतलब श्रीमती रूपा मेहरा से है। मुझे बहुत खेद है। और सविता और लता भी यहाँ हैं। हमें उम्मीद है कि फिल्म खत्म होने के बाद आप हमसे मिलेंगे।'

इस समय तक प्राण को दर्शकों में बैठे अन्य लोगों द्वारा चुप कराया जा रहा था, और वह सिर हिलाते हुए स्क्रीन की ओर मुड़ गए। बाकी लोग भी उतने ही भयभीत थे। इन सब बातों का डॉ. किशन चंद सेठ की भावनाओं पर कोई असर नहीं पड़ा, जो फिल्म के अंतिम आधे घंटे में भी पहले की तरह ही जोर-जोर से रोते रहे।

'अंतराल के दौरान हमारी मुलाकात कैसे नहीं हुई?' प्राण ने खुद से पूछा।

‘और क्या उन्होंने हमें देखा भी नहीं? हम तो उनके सामने ही बैठे थे।’ प्राण को यह पता नहीं था कि फिल्म में व्यस्त होने के बाद डॉ. किशन चंद सेठ किसी भी बाहरी दृश्य या श्रव्य उत्तेजना से अप्रभावित रहते थे। जहाँ तक अंतराल की बात है, वह एक रहस्य ही बना रहा, और हमेशा के लिए रहस्य ही रहा, खासकर तब से जब डॉ. किशन चंद सेठ और उनकी पत्नी पार्वती एक साथ आए थे।

फिल्म खत्म होने के बाद जब उन्हें बाकी दर्शकों की तरह हॉल से बाहर निकाल दिया गया, तो सभी लोग लॉबी में इकट्ठा हुए। डॉ. किशन चंद सेठ अभी भी फूट-फूटकर रो रहे थे, जबकि बाकी लोग रुमाल से अपनी आंखें पोंछ रहे थे।

पार्वती और श्रीमती रूपा मेहरा ने एक-दूसरे के प्रति पसंद का दिखावा करने के कुछ साहसी लेकिन नाकाम प्रयास किए। पार्वती पैंतीस साल की एक मजबूत, दुबली-पतली और कुछ हद तक कठोर स्वभाव की महिला थीं। उनकी त्वचा धूप से झुलसी हुई भूरी थी और दुनिया के प्रति उनका रवैया उनके कमजोर मरीजों के प्रति उनके रवैये का ही विस्तार प्रतीत होता था: मानो उन्होंने अचानक तय कर लिया हो कि अब वे किसी के भी बिस्तर साफ नहीं करेंगी। उन्होंने जॉर्जेट की साड़ी पहनी हुई थी जिस पर गुलाबी रंग के चीड़ के शंकुओं जैसे प्रिंट बने हुए थे। हालांकि, उनकी लिपस्टिक गुलाबी नहीं बल्कि नारंगी रंग की थी।

इस प्रभावशाली दृश्य से घबराते हुए श्रीमती रूपा मेहता ने यह समझाने की कोशिश की कि वह पार्वती के जन्मदिन पर उनसे मिलने क्यों नहीं जा सकीं।

उन्होंने आगे कहा, 'आपसे यहां मिलकर बहुत अच्छा लगा।'

‘जी हां, है ना?’ पार्वती ने कहा। ‘मैं तो अभी कुछ दिन पहले ही किशी से यही कह रही थी...’

लेकिन वाक्य का बाकी हिस्सा श्रीमती रूपा मेहरा को समझ नहीं आया, जिन्होंने अपने सत्तर वर्षीय पिता को कभी भी इस तरह के घृणित और तुच्छ शब्दों में संबोधित होते नहीं सुना था। 'मेरे पति' कहना ही काफी बुरा था; लेकिन 'किशी'? उन्होंने उनकी ओर देखा, लेकिन ऐसा लग रहा था मानो वे अभी भी फिल्मी दुनिया में खोए हुए हों।

डॉ. किशन चंद सेठ एक-दो मिनट में इस भावुक माहौल से बाहर आ गए। उन्होंने घोषणा की, 'हमें घर जाना चाहिए।'

प्राण ने सुझाव दिया, 'कृपया हमारे घर चाय पीने आइए और फिर वापस चले जाइए।'

नहीं, नहीं, असंभव, आज तो असंभव है। किसी और समय। हाँ। अपने पिताजी को बता देना कि हम कल शाम को ब्रिज खेलने के लिए उनका इंतज़ार कर रहे हैं। ठीक साढ़े सात बजे। सर्जन के समय पर, राजनेता के समय पर नहीं।

'ओह,' प्राण ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मुझे खुशी होगी। मुझे खुशी है कि आपकी गलतफहमी दूर हो गई है।'

डॉ. किशन चंद सेठ को अचानक एहसास हुआ कि ऐसा बिल्कुल नहीं हुआ था। फिल्मी धुंध में डूबे रहने के कारण—क्योंकि दीदार में अच्छे दोस्तों ने एक-दूसरे से कड़वी बातें कही थीं—वे महेश कपूर के साथ हुए अपने झगड़े को भूल चुके थे। उन्होंने प्राण को झुंझलाहट भरी नजरों से देखा। पार्वती ने अचानक एक फैसला लिया।

जी हां, मेरे पति के मन में सब कुछ सुलझ गया है। कृपया उन्हें बता दीजिए कि हम उनसे मिलने के लिए उत्सुक हैं।' उसने पुष्टि के लिए डॉ. सेठ की ओर देखा; उन्होंने घृणा से एक हल्की सी आवाज़ निकाली, लेकिन उन्हें लगा कि मामले को यहीं छोड़ देना ही बेहतर है। अचानक उनका ध्यान भटक गया।

‘कब?’ उसने अपनी छड़ी के हैंडल से सविता के पेट की ओर इशारा करते हुए पूछा।

प्राण ने कुछ अस्पष्ट ढंग से कहा, 'अगस्त या सितंबर, हमें यही बताया गया है,' मानो उसे डर हो कि डॉ. किशन चंद सेठ फिर से कार्यभार संभालने का फैसला कर सकते हैं।

डॉ. किशन चंद सेठ ने लता की ओर मुड़कर पूछा, ‘तुम्हारी अभी तक शादी क्यों नहीं हुई? क्या तुम्हें मेरा रेडियोलॉजिस्ट पसंद नहीं है?’

लता ने उसकी ओर देखा और अपनी हैरानी छिपाने की कोशिश की। उसके गाल लाल हो गए।

'आपने अभी तक उसे रेडियोलॉजिस्ट से मिलवाया नहीं है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने तुरंत बीच में टोकते हुए कहा। 'और अब तो उसकी परीक्षा का समय भी लगभग आ गया है।'

लता ने पूछा, 'कौन सा रेडियोलॉजिस्ट? अभी भी 1 अप्रैल ही है। क्या बस इतना ही?'

‘जी हां, रेडियोलॉजिस्ट। मुझे कल फोन करना,’ डॉ. किशन चंद सेठ ने अपनी बेटी से कहा। ‘मुझे याद दिला देना, पार्वती। अब हमें जाना होगा। मुझे अगले हफ्ते यह फिल्म फिर से देखनी है। बहुत दुखद है,’ उन्होंने सहमति जताते हुए कहा।

अपनी ग्रे रंग की ब्यूक कार की ओर जाते समय डॉ. किशन चंद सेठ ने एक गलत तरीके से खड़ी कार देखी। उन्होंने व्यस्त चौराहे पर तैनात पुलिसकर्मी पर चिल्लाया। पुलिसकर्मी, जिसने खौफनाक डॉ. सेठ को पहचान लिया था, जैसा कि ब्रह्मपुर के अधिकांश व्यवस्था और अव्यवस्था बलों ने किया था, ने यातायात को अपने हाल पर छोड़ दिया, तुरंत आया और कार का नंबर नोट कर लिया। एक भिखारी लंगड़ाते हुए उनके पास आया और कुछ पैसे मांगे। डॉ. किशन चंद सेठ ने गुस्से से उसे देखा और

अपनी लाठी से उसकी टांग पर जोरदार प्रहार किया। वे और पार्वती कार में बैठ गए और पुलिसकर्मी ने उनके लिए यातायात साफ कर दिया।

3.3

निरीक्षक ने कहा, 'कृपया बात न करें।'

‘मैं तो बस एक रूलर उधार ले रहा था, महोदय।’

'अगर आपको ऐसा करना ही है, तो मेरे माध्यम से ही करें।'

'जी श्रीमान।'

लड़का बैठ गया और अपने सामने रखे प्रश्न पत्र को हल करने में एक बार फिर जुट गया।

परीक्षा कक्ष की खिड़की पर एक मक्खी भिनभिना रही थी। खिड़की के बाहर पत्थर की सीढ़ियों के नीचे गुलमोहर के पेड़ का लाल मुकुट दिखाई दे रहा था। पंखे धीरे-धीरे घूम रहे थे। कतारों में सिर, कतारों में हाथ, स्याही की बूँदें, शब्द और बस शब्द। कोई निकास द्वार के पास रखे मिट्टी के घड़े से पानी पीने के लिए उठा। कोई अपनी कुर्सी पर पीछे झुककर आह भरी।

लता ने लगभग आधे घंटे पहले लिखना बंद कर दिया था और तब से वह अपनी कागज़ को बिना पलक झपकाए घूर रही थी। वह कांप रही थी। उसे सवाल बिल्कुल भी याद नहीं आ रहे थे। वह गहरी सांसें ले रही थी और उसके माथे पर पसीना साफ दिख रहा था। उसके दोनों ओर बैठी लड़कियों ने इस पर ध्यान नहीं दिया। वे कौन थीं? अंग्रेजी की कक्षाओं में तो वह उन्हें पहचानती ही नहीं थी।

इन सवालों का क्या मतलब है? उसने खुद से पूछा। और मैं कुछ देर पहले तक इनका जवाब कैसे दे पा रही थी? क्या शेक्सपियर के दुखद नायक अपने भाग्य के हकदार हैं? क्या कोई अपने भाग्य का हकदार है? उसने फिर चारों ओर देखा। मुझमें क्या खराबी है, मैं जो परीक्षा देने में इतनी

अच्छी हूँ? मुझे सिरदर्द नहीं है, मुझे मासिक धर्म नहीं है, मेरा बहाना क्या है? माँ क्या कहेंगी?

प्राण के घर में स्थित अपने शयनकक्ष की छवि उसके मन में उभर आई। उसमें उसने अपनी माँ के तीन सूटकेस देखे, जो उनकी दुनिया भर की अधिकांश वस्तुओं से भरे हुए थे। उनकी वार्षिक रेल यात्रा के दौरान साथ ले जाने वाले ये सूटकेस एक कोने में पड़े थे, और उनके ऊपर उनका बड़ा हैंडबैग एक आत्मविश्वासी काले हंस की तरह टिका हुआ था। पास ही भगवद् गीता की एक छोटी, वर्गाकार, गहरे हरे रंग की प्रति और एक गिलास पड़ा था जिसमें उनके नकली दांत रखे थे। दस साल पहले एक कार दुर्घटना के बाद से ही उन्होंने इन्हें पहन रखा था।

लता ने सोचा, "मेरे पिता क्या सोचते? उनके शानदार रिकॉर्ड, उनके स्वर्ण पदकों के बावजूद, मैं उन्हें इस तरह कैसे निराश कर सकती हूँ?" उनका निधन अप्रैल में हुआ था। उस समय भी गुलमोहर खिले हुए थे। ... मुझे ध्यान केंद्रित करना होगा। मुझे ध्यान लगाना होगा। मेरे साथ कुछ हुआ है और मुझे घबराना नहीं चाहिए। मुझे शांत रहना होगा और सब ठीक हो जाएगा।

वह एक बार फिर ख्यालों में खो गई। मक्खी लगातार भिनभिना रही थी। 'गुनगुनाना मना है। कृपया शांत रहें।'

लता को अचानक एहसास हुआ कि वह खुद ही धीरे-धीरे गुनगुना रही थी और उसके दोनों पड़ोसी अब उसे देख रहे थे: एक हैरान लग रहा था, दूसरा नाराज़। उसने अपना सिर अपनी उत्तर पुस्तिका की ओर झुकाया। खाली पन्ने पर हल्की नीली रेखाएँ बिना किसी अर्थ के फैली हुई थीं।

‘अगर पहली बार में सफलता नहीं मिली तो—’ उसने अपनी माँ की आवाज सुनी।

वह तुरंत उस प्रश्न की ओर मुड़ी जिसका उत्तर वह पहले ही दे चुकी थी,

लेकिन उसने जो लिखा था वह उसे समझ में नहीं आ रहा था।
‘जूलियस सीज़र का अपने ही नाटक से तीसरे अंक में ही गायब हो जाना इस बात का संकेत देता प्रतीत होता है कि...’
लता ने अपना सिर अपने हाथों पर टिका लिया।
‘क्या आप ठीक महसूस कर रहे हैं?’
उसने अपना सिर उठाया और दर्शनशास्त्र विभाग के एक युवा व्याख्याता के परेशान चेहरे की ओर देखा, जो संयोगवश उस दिन निरीक्षण ड्यूटी पर था।
'हाँ।'
‘क्या आपको पूरा यकीन है?’ उसने धीमी आवाज़ में कहा।
लता ने सिर हिलाया।
उसने कलम उठाई और अपनी उत्तर पुस्तिका में कुछ लिखने लगी। कुछ मिनट बीत गए और निरीक्षक ने घोषणा की: 'आधा घंटा शेष है।'
लता को एहसास हुआ कि उसके तीन घंटे के पेपर का कम से कम एक घंटा यूं ही बीत चुका है। उसने अब तक केवल दो प्रश्नों के उत्तर दिए थे। अचानक घबराहट से प्रेरित होकर, उसने शेष दो प्रश्नों के उत्तर लिखना शुरू कर दिया— उसने उन्हें लगभग बेतरतीब ढंग से चुना—तेजी से, घबराहट में, स्याही से अपनी उंगलियों को लपेटते हुए, उत्तर पुस्तिका को गंदा करते हुए, वह लगभग इस बात से बेखबर थी कि वह क्या लिख रही है। उसे ऐसा लग रहा था मानो मक्खी की भिनभिनाहट उसके दिमाग में घुस गई हो। उसकी आमतौर पर सुंदर लिखावट अब अरुण की लिखावट से भी बदतर लग रही थी, और इस विचार से वह लगभग फिर से कांप उठी।
‘पांच मिनट शेष हैं।’
लता लिखती रही, उसे इस बात का शायद ही एहसास था कि वह क्या

लिख रही है।
'कृपया कलम नीचे रख दें।'
लता का हाथ पन्ने पर लगातार चलता रहा।
'अब और मत लिखिए। समय समाप्त हो गया है।'
लता ने अपना पेन नीचे रख दिया और अपना सिर अपने हाथों में छिपा लिया।
कृपया अपने कागजात हॉल के सामने ले आएं। कृपया सुनिश्चित करें कि आपके रोल नंबर सामने सही ढंग से अंकित हैं और यदि आपके पास कोई पूरक पुस्तिकाएं हैं, तो वे सही क्रम में रखी हैं। कृपया हॉल छोड़ने तक बात न करें।
लता ने अपनी पुस्तिका जमा कर दी। बाहर जाते समय उसने कुछ सेकंड के लिए अपनी दाहिनी कलाई ठंडे मिट्टी के घड़े पर टिका दी।
उसे पता नहीं था कि उस पर क्या बीत रहा है।
3.4
लता एक मिनट के लिए हॉल के बाहर खड़ी रही। सूरज की रोशनी पत्थर की सीढ़ियों पर पड़ रही थी। उसकी मध्यमा उंगली के किनारे पर गहरे नीले रंग की स्याही लगी हुई थी, और वह उसे देखते हुए भौंहें सिकोड़ रही थी। वह रोने ही वाली थी।
अन्य अंग्रेजी के छात्र सीढ़ियों पर खड़े होकर बातें कर रहे थे। प्रश्नपत्र का विश्लेषण चल रहा था, और उसमें एक आशावादी और गोल-मटोल लड़की का दबदबा था जो अपनी उंगलियों पर उन विभिन्न बिंदुओं को गिन रही थी जिनका उसने सही उत्तर दिया था।
'यह एक ऐसा पेपर है जिसे मैंने वाकई बहुत अच्छा किया है,' उसने कहा। 'खासकर किंग लियर वाला सवाल। मुझे लगता है कि जवाब "हाँ" था।'
बाकी लोग उत्साहित या उदास दिख रहे थे। सभी इस बात से सहमत थे

कि कई सवाल ज़रूरत से ज़्यादा कठिन थे। इतिहास के छात्रों का एक समूह पास ही खड़ा अपने पेपर पर चर्चा कर रहा था, जो उसी इमारत में एक साथ आयोजित किया गया था। उनमें से एक वह युवक था जिसने इंपीरियल बुक डिपो में लता का ध्यान अपनी ओर खींचा था, और वह थोड़ा चिंतित दिख रहा था। उसने पिछले कुछ महीनों में पाठ्येतर गतिविधियों—खासकर क्रिकेट—में काफी समय बिताया था, और इसका असर उसके प्रदर्शन पर पड़ा था।

लता गुलमोहर के पेड़ के नीचे एक बेंच तक गई और खुद को संभालने के लिए बैठ गई। दोपहर के भोजन के लिए घर पहुँचने पर उससे सौ सवाल पूछे जाएँगे कि उसने कैसा प्रदर्शन किया। उसने अपने पैरों के पास बिखरे लाल फूलों को देखा। उसके मन में अभी भी मक्खी की भिनभिनाहट सुनाई दे रही थी।

हालांकि वह युवक अपने सहपाठियों से बात कर रहा था, फिर भी उसने उसे सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए देख लिया। जब वह पेड़ के नीचे दूर वाली बेंच पर बैठ गई, तो उसने उससे बात करने का फैसला किया। उसने अपने दोस्तों से कहा कि उसे दोपहर के भोजन के लिए घर जाना है—कि उसके पिता उसका इंतजार कर रहे होंगे—और गुलमोहर के पास से गुजरते हुए रास्ते पर तेजी से चल पड़ा। बेंच के पास पहुँचते ही वह आश्चर्य से चिल्ला उठा और रुक गया।

‘हैलो,’ उसने कहा।

लता ने अपना सिर उठाया और उसे पहचान लिया। उसे इस बात से शर्मिंदगी महसूस हुई कि उसने उसे इस समय इतनी परेशान हालत में देख लिया है।

‘मुझे लगता है कि आपको मैं याद नहीं हूँ?’ उसने कहा।

लता ने हैरानी से कहा, 'हाँ, मैं करती हूँ।' उसकी इच्छा स्पष्ट थी कि वह

आगे बढ़ जाए, फिर भी वह उससे बात करता रहा। लता ने आगे कुछ नहीं कहा, और न ही वह कुछ सेकंड तक चुप रहा।

उन्होंने कहा, 'हम किताबों की दुकान पर मिले थे।'

'हां,' लता ने कहा। फिर जल्दी से उसने आगे कहा: 'कृपया मुझे अकेला छोड़ दीजिए। मुझे किसी से बात करने का मन नहीं है।'

'यह परीक्षा है, है ना?'

'हाँ।'

उन्होंने कहा, 'चिंता मत करो। पांच साल में तुम सब कुछ भूल जाओगे।'

लता क्रोधित हो उठी। उसे उसकी खोखली दार्शनिक बातों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। आखिर वह खुद को क्या समझता है? वह उस बदकिस्मत मक्खी की तरह वहां से क्यों नहीं चला जाता?

उन्होंने आगे कहा, 'मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूं क्योंकि मेरे पिता के एक छात्र ने अंतिम परीक्षा में खराब प्रदर्शन करने के बाद आत्महत्या करने की कोशिश की थी। यह अच्छी बात है कि वह सफल नहीं हुआ, क्योंकि जब परिणाम घोषित हुए तो उसे पता चला कि उसे प्रथम श्रेणी मिली है।'

लता ने उत्सुकतावश पूछा, 'जब तुमने गणित में अच्छा प्रदर्शन किया है, तो तुम कैसे सोच सकते हो कि तुमने खराब किया है?' 'तुम्हारे उत्तर या तो सही होते हैं या गलत। इतिहास या अंग्रेजी में तो मैं यह समझ सकती हूँ, लेकिन...'

"वाह, यह तो उत्साहवर्धक बात है," युवक ने प्रसन्न होकर कहा कि उसे उसके बारे में कुछ याद था। "हम दोनों ने शायद उतना बुरा नहीं किया जितना हम सोचते हैं।"

'तो तुमने भी खराब प्रदर्शन किया है?' लता ने पूछा।

'हां,' उसने बस इतना ही कहा।

लता को उस पर विश्वास करना मुश्किल लगा, क्योंकि वह जरा भी

परेशान नहीं दिख रहा था।

कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया। युवक के कुछ मित्र बेंच के पास से गुजरे, लेकिन उन्होंने बड़ी चतुराई से उसे नमस्कार नहीं किया। हालांकि, वह जानता था कि इससे वे बाद में उससे उसके प्रेम की शुरुआत के बारे में सवाल पूछने से नहीं रुकेंगे।

‘लेकिन देखो, चिंता मत करो...’ उसने आगे कहा। ‘छह में से एक पेपर तो मुश्किल होगा ही। क्या तुम्हें एक सूखा रुमाल चाहिए?’

'नहीं, धन्यवाद।' उसने उसे घूरकर देखा, फिर नज़रें हटा लीं।

‘जब मैं वहाँ उदास खड़ा था,’ उसने सीढ़ियों के शीर्ष की ओर इशारा करते हुए कहा, ‘मैंने तुम्हें यहाँ और भी बदतर हालत में देखा, और इससे मुझे थोड़ी राहत मिली। क्या मैं बैठ सकता हूँ?’

‘प्लीज़ ऐसा मत करो,’ लता ने कहा। फिर, यह महसूस करते हुए कि उसके शब्द कितने असभ्य लग रहे थे, उसने कहा, ‘नहीं, करो। लेकिन मुझे जाना होगा। मुझे उम्मीद है कि तुमने उम्मीद से बेहतर किया होगा।’

‘मुझे उम्मीद है कि आप पहले से बेहतर महसूस करेंगे,’ युवक ने बैठते हुए कहा। ‘क्या मुझसे बात करने से आपको कुछ मदद मिली?’

‘नहीं,’ लता ने कहा। ‘बिल्कुल नहीं।’

“ओह,” युवक थोड़ा झिझकते हुए बोला। “खैर, याद रखना,” उसने आगे कहा, “दुनिया में परीक्षाओं से भी ज़्यादा ज़रूरी चीज़ें हैं।” वह बेंच पर पीछे की ओर झुक गया और लाल-नारंगी फूलों की ओर देखने लगा।

‘जैसे क्या?’ लता ने पूछा।

'जैसे दोस्ती,' उसने थोड़ी सख्ती से कहा।

‘सच में?’ लता ने अनजाने में ही थोड़ा मुस्कुराते हुए कहा।

‘सचमुच,’ उसने कहा। ‘आपसे बात करके मेरा मूड वाकई अच्छा हो गया है।’ लेकिन उसका चेहरा गंभीर बना रहा।

लता खड़ी हुई और बेंच से दूर जाने लगी।
‘क्या आपको मेरे साथ थोड़ी देर चलने में कोई आपत्ति नहीं है?’ उसने उठते हुए कहा।
लता ने कहा, 'मैं तुम्हें रोक नहीं सकती। भारत अब एक स्वतंत्र देश है।'
‘ठीक है। मैं इस बेंच पर बैठूंगा और तुम्हारे बारे में सोचूंगा,’ उसने नाटकीय अंदाज़ में कहा और फिर से बैठ गया। ‘और तुम्हारी नाक के पास उस आकर्षक और रहस्यमय स्याही के धब्बे के बारे में भी। होली को बीते कुछ दिन हो गए हैं।’
लता ने अधीरता भरी आवाज़ निकाली और चली गई। युवक की निगाहें उसका पीछा कर रही थीं, और वह इस बात से भलीभांति अवगत थी। उसने अपनी असहजता को नियंत्रित करने के लिए अपने दाग लगे मध्यमा अंगूठे को अंगूठे से रगड़ा। वह उससे और खुद से नाराज़ थी, और उसकी अप्रत्याशित संगति से उसे जो आनंद मिल रहा था, उससे वह बेचैन थी। लेकिन इन विचारों ने नाटक पर लिखे गए प्रश्नपत्र में अपने खराब प्रदर्शन को लेकर उसकी चिंता—वास्तव में, घबराहट—को एक पल के लिए दर्पण में देखने की इच्छा में बदल दिया।

3.5

उसी दोपहर बाद, लता और मालती और उनकी कुछ सहेलियाँ—ज़ाहिर है, सभी लड़कियाँ—एक साथ जैकारांडा के बाग में टहलने जा रही थीं, जहाँ वे बैठकर पढ़ना पसंद करती थीं। परंपरा के अनुसार, जैकारांडा का बाग केवल लड़कियों के लिए खुला था। मालती अपने साथ एक बेमेल मोटी चिकित्सा की पाठ्यपुस्तक लिए हुए थी।
वह एक गर्म दिन था। दोनों जैकारांडा के पेड़ों के बीच हाथ में हाथ डालकर घूम रहे थे। कुछ हल्के बैंगनी रंग के फूल ज़मीन पर गिर रहे थे। जब वे दूसरों की सुनने की सीमा से बाहर निकल गए, तो मालती ने शांत

भाव से मुस्कुराते हुए कहा:
'तुम्हारे दिमाग में क्या चल रहा है?'
जब लता ने उसे हैरानी से देखा, तो मालती ने बिना विचलित हुए कहा, 'नहीं, नहीं, मुझे इस तरह देखने का कोई फायदा नहीं है, मुझे पता है कि कोई बात तुम्हें परेशान कर रही है। दरअसल, मुझे पता है कि क्या बात तुम्हें परेशान कर रही है। मेरे पास जानकारी के स्रोत हैं।'
लता ने जवाब दिया: 'मुझे पता है कि तुम क्या कहने वाले हो, और यह सच नहीं है।'
मलाती ने अपनी सहेली की ओर देखा और कहा: 'सेंट सोफिया में मिली उस ईसाई शिक्षा का तुम पर बुरा असर पड़ा है, लता। इसने तुम्हें एक भयानक झूठी बना दिया है। नहीं, मेरा मतलब यह नहीं है। मेरा मतलब यह है कि जब तुम झूठ बोलती हो, तो बहुत बुरी तरह झूठ बोलती हो।'
'ठीक है, तो फिर तुम क्या कहने वाली थी?' लता ने कहा।
'मैं अब भूल चुकी हूँ,' मलाती ने कहा।
लता ने कहा, 'कृपया, मैं इसके लिए अपनी किताबों से नहीं उठी। बुरा बर्ताव मत करो, घुमा-फिराकर बात मत करो, और मुझे चिढ़ाओ मत। पहले से ही बहुत बुरा है।'
'क्यों?' मलाती ने कहा। 'क्या तुम्हें अभी से प्यार हो गया है? अब तो समय आ गया है, बसंत का मौसम खत्म हो गया है।'
'बिल्कुल नहीं,' लता ने गुस्से से कहा। 'क्या तुम पागल हो?'
'नहीं,' मलाती ने कहा।
तो फिर आपको ऐसे चौंकाने वाले सवाल पूछने की क्या जरूरत है?
'मैंने सुना था कि परीक्षा के बाद जब तुम बेंच पर बैठी थीं, तो वह तुम्हारे पास बड़ी सहजता से आया था,' मलाती ने कहा, 'इसलिए मैंने मान लिया कि तुम दोनों इंपीरियल बुक डिपो के बाद से कभी-कभार मिलती रही

होगी।' अपने मुखबिर के विवरण से मलाती ने अनुमान लगाया था कि वह वही व्यक्ति था। और उसे खुशी हुई कि उसका अनुमान सही निकला।
लता ने स्नेह से अधिक झुंझलाहट भरी निगाहों से अपनी सहेली को देखा। उसने सोचा, खबरें बहुत तेजी से फैलती हैं, और मालती हर बात सुन लेती है।
'हमारी मुलाकात न तो कभी हुई है, न कभी हुई है,' उसने कहा। 'मुझे नहीं पता कि तुम्हें ये जानकारी कहाँ से मिलती है, मलाती। काश तुम संगीत, समाचार या किसी काम की बात करतीं। यहाँ तक कि अपने समाजवाद के बारे में भी। हम दूसरी बार ही मिले हैं, और मुझे उसका नाम तक नहीं पता। लो, मुझे अपनी पाठ्यपुस्तक दो, और चलो बैठते हैं। अगर मैं एक-दो पैराग्राफ पढ़ भी लूँ जो मुझे समझ न आए, तो कोई बात नहीं।'
'तुम्हें उसका नाम तक नहीं पता?' मलाती ने लता को ऐसे देखते हुए कहा मानो वही पागल हो। 'बेचारा! क्या उसे तुम्हारा नाम पता है?'
'मुझे लगता है मैंने उसे किताबों की दुकान पर बताया था। हाँ, मैंने बताया था। और फिर उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं उससे उसका नाम पूछने वाला हूँ—और मैंने कहा नहीं।'
'और अब तुम्हें पछतावा हो रहा होगा,' मलाती ने उसके चेहरे को ध्यान से देखते हुए कहा।
लता चुप रही। वह बैठ गई और एक जैकारांडा पेड़ से टेक लगाकर खड़ी हो गई।
'और मुझे लगता है कि वह आपको बताना चाहता होगा,' मलाती ने भी बैठते हुए कहा।
'मुझे लगता है कि वह ऐसा ही करेगा,' लता ने हंसते हुए कहा।
'बेचारे उबले हुए आलू,' मलाती ने कहा।

‘उबला हुआ—क्या?’
‘तुम्हें पता है ना—उबले हुए आलू पर मिर्च मत डालो।’ मालती ने लता की नकल करते हुए कहा।
लता के चेहरे पर शर्म आ गई।
‘तुम उसे पसंद करती हो, है ना?’ मलाती ने कहा। ‘अगर तुम झूठ बोल रही हो, तो मुझे पता चल जाएगा।’
लता ने तुरंत कोई जवाब नहीं दिया। दोपहर के भोजन के समय, नाटक के उस अजीबोगरीब, सम्मोहन जैसी घटना के बावजूद, वह अपनी माँ का सामना काफी शांति से कर पाई थी। फिर उसने कहा:
‘उन्हें समझ आ गया था कि अखबार छपने के बाद मैं परेशान थी। मुझे नहीं लगता कि उनके लिए आकर मुझसे बात करना आसान था, खासकर तब जब मैंने एक तरह से किताबों की दुकान पर उन्हें ठुकरा दिया था।’
‘अरे, मुझे नहीं पता,’ मालती ने लापरवाही से कहा। ‘लड़के बड़े बदतमीज़ होते हैं। हो सकता है उसने चुनौती के लिए ही ऐसा किया हो। वे हमेशा एक-दूसरे को बेवकूफी भरी हरकतें करने के लिए उकसाते रहते हैं—जैसे होली पर महिला छात्रावास पर धावा बोलना। वे खुद को हीरो समझते हैं।’
लता ने चिढ़ते हुए कहा, 'वह कोई बदतमीज़ नहीं है। और जहाँ तक वीरता की बात है, मुझे लगता है कि जब आपको पता हो कि इसका परिणाम आपकी जान से हाथ धोना पड़ सकता है, तब भी कुछ करने के लिए थोड़ी हिम्मत तो चाहिए ही। आपने ब्लू डेन्यूब में भी कुछ ऐसा ही कहा था।'
‘हिम्मत नहीं, दिलेरी,’ मालती ने कहा, जो अपनी सहेली की प्रतिक्रियाओं का भरपूर आनंद ले रही थी। ‘लड़के प्यार में नहीं पड़ते, वे बस दिलेरी दिखाते हैं। अभी जब हम चारों बाग की ओर जा रहे थे, तो मैंने देखा कि कुछ लड़के साइकिल पर हमारा पीछा कर रहे थे, बड़े दयनीय ढंग से।

उनमें से कोई भी हमसे आमना-सामना करने की हिम्मत नहीं कर रहा था, लेकिन वे कह भी नहीं सकते थे। इसलिए जब हम बाग में दाखिल हुए और बात खत्म हो गई, तो उन्हें काफी राहत मिली।'

लता चुप थी। वह घास पर लेट गई और जैकारांडा की शाखाओं के बीच से आसमान की ओर देखने लगी। वह अपनी नाक पर लगे उस धब्बे के बारे में सोच रही थी, जिसे उसने दोपहर के भोजन से पहले धो दिया था।

'कभी-कभी वे एक साथ आपके पास आते हैं,' मलाती ने आगे कहा, 'और आपकी बजाय एक-दूसरे को देखकर ज़्यादा मुस्कुराते हैं। कभी-कभी उन्हें इतना डर लगता है कि उनके दोस्त उनसे बेहतर कोई बात न कह दें, इसलिए वे अपनी जान जोखिम में डालकर अकेले ही आपके पास आ जाते हैं। और उनकी बातें क्या होती हैं? दस में से नौ बार यही होता है, "क्या मैं आपके नोट्स उधार ले सकता हूँ?"—शायद बेमन से, कमज़ोर दिमाग से "नमस्ते" भी कह देते हैं। वैसे, आलू वाले आदमी की शुरुआती लाइन क्या थी?'

लता ने मालती को लात मारी।

'माफ़ कीजिए—मेरा मतलब था आपके दिल का तारा।'

'उसने क्या कहा?' लता ने लगभग खुद से कहा। जब उसने याद करने की कोशिश की कि बातचीत कैसे शुरू हुई थी, तो उसे एहसास हुआ कि हालांकि यह कुछ ही घंटे पहले हुई थी, लेकिन उसके दिमाग में धुंधली सी हो गई थी। फिर भी, उसे याद रहा कि उस युवक की मौजूदगी से उसकी शुरुआती घबराहट एक अजीब सी गर्माहट में बदल गई थी: कम से कम किसी ने, भले ही वह एक सुंदर अजनबी ही क्यों न हो, यह समझा था कि वह उलझन में और परेशान थी, और उसकी परवाह करते हुए उसका हौसला बढ़ाने की कोशिश की थी।

कुछ दिनों बाद शहर के दो सबसे बड़े सभागारों में से एक, भारतेंदु सभागार में एक संगीत कार्यक्रम आयोजित किया गया। कलाकारों में से एक उस्ताद मजीद खान थे।

लता और मालती दोनों को टिकट मिल गए। उनकी लंबी, पतली और हंसमुख सहेली हेमा को भी टिकट मिल गया, जो नबीगंज से कुछ ही दूरी पर एक घर में अपने अनगिनत चचेरे भाई-बहनों (लड़के और लड़कियां) के साथ रहती थी। वे सभी परिवार के एक सख्त बुजुर्ग सदस्य की देखरेख में थे, जिन्हें सब 'ताऊजी' कहकर बुलाते थे। हेमा के ताऊजी की ज़िम्मेदारी बहुत बड़ी थी, क्योंकि वे न केवल परिवार की लड़कियों की भलाई और प्रतिष्ठा के लिए ज़िम्मेदार थे, बल्कि उन्हें यह भी सुनिश्चित करना था कि लड़के तरह-तरह की शरारतें न करें। वे अक्सर अपनी किस्मत को कोसते थे कि एक विश्वविद्यालय शहर में इतने बड़े और दूर-दूर तक फैले परिवार के वे इकलौते प्रतिनिधि हैं। कई बार तो उन्होंने धमकी भी दी थी कि जब वे उन्हें हद से ज़्यादा परेशान कर देते थे, तो वे सबको सीधे घर वापस भेज देंगे। लेकिन उनकी पत्नी, जिन्हें सब 'ताईजी' कहते थे, हालांकि खुद लगभग बिना किसी आज़ादी या छूट के पली-बढ़ी थीं, उन्हें इस बात का बहुत दुख था कि उनकी भतीजियों और पोतियों को भी इसी तरह पाबंदियों में रहना पड़ रहा था। वह लड़कियों के लिए वह हासिल करने में कामयाब रही जो वे अधिक प्रत्यक्ष दृष्टिकोण से हासिल नहीं कर सकती थीं।

आज शाम हेमा और उसकी चचेरी बहनें ताऊजी की बड़ी मैरून रंग की पैकार्ड कार आरक्षित करवाने में कामयाब हो गईं और संगीत कार्यक्रम के लिए अपने दोस्तों को शहर में इकट्ठा करने निकल पड़ीं। ताऊजी के नज़रों से ओझल होते ही वे उनकी नाराज़गी भरी विदाई टिप्पणी पूरी तरह भूल गईं: 'फूल? बालों में फूल? परीक्षा के समय में भागदौड़ करना और ये सब

संगीत सुनना! सब सोचेंगे कि तुम पूरी तरह से बिगड़ी हुई हो - तुम्हारी कभी शादी नहीं होगी।'

भारतेंदु सभागार में लता और मालती समेत ग्यारह लड़कियाँ पैकर्ड कार से बाहर निकलीं। हैरानी की बात यह थी कि उनकी साड़ियाँ सिकुड़ी हुई नहीं थीं, हालाँकि शायद वे थोड़ी अस्त-व्यस्त लग रही थीं। वे सभागार के बाहर खड़ी होकर अपने और एक-दूसरे के बालों को संवार रही थीं और उत्साह से बातें कर रही थीं। फिर रंगों की चकाचौंध में वे अंदर चली गईं। वहाँ उन सभी के लिए एक साथ बैठने की जगह नहीं थी, इसलिए वे दो-तीन के समूहों में बँट गईं और बैठ गईं, मंत्रमुग्ध थीं लेकिन उनकी बातें कम नहीं हुईं। ऊपर कुछ पंखे चल रहे थे, लेकिन दिन बहुत गर्म था और सभागार उमस भरा था। लता और उसकी सहेलियाँ अपने कार्यक्रमों से खुद को हवा देने लगीं और गायन शुरू होने का इंतजार करने लगीं।

पहले भाग में एक जाने-माने संगीतकार द्वारा प्रस्तुत सितार वादन बेहद नीरस था। मध्यांतर के दौरान, लता और मालती लॉबी में सीढ़ियों के पास खड़ी थीं, तभी आलू वाला आदमी उनकी ओर बढ़ा।

मलाती ने उसे सबसे पहले देखा, लता का ध्यान उसकी ओर दिलाया और कहा:

'तीसरी बैठक। मैं अब कुछ समय के लिए गायब होने जा रहा हूँ।'

‘मलाती, कृपया यहीं रुक जाओ,’ लता ने अचानक हताशा में कहा, लेकिन मलाती यह चेतावनी देते हुए गायब हो गई: ‘चूहे मत बनो। शेरनी बनो।’

वह युवक काफी आत्मविश्वास से भरे कदमों से उसके पास पहुंचा।

‘क्या मैं आपको बीच में टोक सकता हूँ?’ उसने धीमी आवाज़ में कहा।

भीड़भाड़ वाली लॉबी के शोर में लता को उसकी बात समझ नहीं आ रही थी, और उसने इस बात का इशारा भी किया।

इस बात को युवक ने पास आने की अनुमति समझ लिया। वह करीब आया, उस लड़की को देखकर मुस्कुराया और बोला:
मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या आपको बीच में टोकना ठीक रहेगा।
'मुझे परेशान करने के लिए?' लता ने कहा। 'लेकिन मैं कुछ नहीं कर रही थी।' उसका दिल तेजी से धड़क रहा था।
मेरा मतलब था, आपके विचारों में बाधा डालना।
'मैं ये सब बर्दाश्त नहीं कर रही थी,' लता ने अचानक उमड़े विचारों को नियंत्रित करने की कोशिश करते हुए कहा। उसे मालती की वह टिप्पणी याद आई जिसमें उसने उसे झूठ बोलने में कमज़ोर बताया था और उसके गालों पर खून दौड़ गया।
'अंदर तो काफी घुटन है,' युवक ने कहा। 'यहाँ भी, बिल्कुल।' लता ने सिर हिलाया। मैं चूहा या बाघिन नहीं हूँ, उसने सोचा, मैं तो एक हेजहॉग हूँ।
उन्होंने कहा, 'बहुत ही प्यारा संगीत।'
"हाँ," लता ने सहमति जताई, हालाँकि उसने ऐसा सोचा नहीं था। उसकी इतनी नज़दीक मौजूदगी से उसे रोमांच हो रहा था। इसके अलावा, एक युवक के साथ देखे जाने पर उसे शर्म भी आ रही थी। वह जानती थी कि अगर वह आस-पास देखेगी तो उसे कोई न कोई जाना-पहचाना चेहरा नज़र आ जाएगा। लेकिन दो बार उससे नाराज़गी जताने के बाद उसने ठान लिया था कि वह उसे दोबारा नाराज़ नहीं करेगी। हालाँकि, जब उसका ध्यान इतना भटक रहा था, तो बातचीत में अपनी बात रखना मुश्किल हो रहा था। उसकी आँखों में आँखें मिलाना उसके लिए मुश्किल था, इसलिए उसने नज़रें नीचे कर लीं।
युवक कह रहा था: '...हालांकि, मैं वहां अक्सर नहीं जाता। आपका क्या ख्याल है?'

लता, जो पहले हुई बातों को या तो सुन नहीं पाई थी या समझ नहीं पाई थी, अचंभित होकर कोई जवाब नहीं दिया।
उन्होंने कहा, 'तुम बहुत शांत हो।'
लता ने कहा, 'मैं हमेशा बहुत शांत रहती हूं। इससे संतुलन बना रहता है।'
‘नहीं, तुम नहीं हो,’ युवक ने हल्की मुस्कान के साथ कहा। ‘जब तुम अंदर आए थे तो तुम और तुम्हारे दोस्त जंगली चिड़ियों के झुंड की तरह बकबक कर रहे थे—और तुममें से कुछ लोग तब भी बकबक करते रहे जब सितार वादक उसे ठीक कर रहा था।’
लता ने थोड़ा तीखे अंदाज़ में ऊपर देखते हुए कहा, 'क्या आपको लगता है कि पुरुष महिलाओं की तरह बकबक और बातें नहीं करते?'
‘हाँ,’ युवक ने बड़ी सहजता से कहा, उसे खुशी थी कि आखिरकार वह बोल रही है। ‘यह प्रकृति का नियम है। क्या मैं आपको अकबर और बीरबल की एक लोककथा सुनाऊँ? यह इस विषय से बहुत प्रासंगिक है।’
लता ने कहा, 'मुझे नहीं पता। एक बार सुन लेने के बाद मैं आपको बता दूंगी कि आपको यह बात बतानी चाहिए थी या नहीं।'
'अच्छा, शायद हमारी अगली बैठक में?'
लता ने इस टिप्पणी को काफी सहजता से लिया।
'मुझे लगता है कि कोई न कोई तो होगा ही,' उसने कहा। 'लगता है हम अक्सर संयोग से ही मिलते रहते हैं।'
‘क्या यह महज़ संयोग ही होना चाहिए?’ युवक ने पूछा। ‘जब मैंने तुम्हारे और तुम्हारे दोस्तों के बारे में बात की, तो सच यह है कि मेरी निगाहें ज़्यादातर तुम पर ही टिकी थीं। जैसे ही मैंने तुम्हें अंदर आते देखा, मुझे लगा कि तुम कितनी प्यारी लग रही हो—एक साधारण हरी साड़ी में, बस बालों में एक सफेद गुलाब।’
‘ज्यादातर’ शब्द से लता को थोड़ी परेशानी हुई, लेकिन बाकी सब उसे

संगीत जैसा लगा। वह मुस्कुराई।
उसने भी मुस्कुराकर जवाब दिया और अचानक बहुत स्पष्ट रूप से बोलने लगा।
शुक्रवार शाम पांच बजे श्री नवरोजी के घर (20 हेस्टिंग्स रोड) पर ब्रह्मपुर साहित्यिक सोसायटी की बैठक है। यह दिलचस्प होनी चाहिए और इसमें कोई भी आ सकता है। विश्वविद्यालय की छुट्टियां आने वाली हैं, इसलिए वे सदस्यों की संख्या बढ़ाने के लिए बाहरी लोगों का स्वागत करना चाहते हैं।
लता ने सोचा, विश्वविद्यालय की छुट्टियां। शायद अब हम कभी दोबारा न मिलें। इस विचार से वह उदास हो गई।
‘ओह, मुझे पता है कि मैं आपसे क्या पूछना चाहती थी,’ उसने कहा।
‘जी?’ युवक ने हैरानी से पूछा। ‘आगे बढ़ो।’
लता ने पूछा, ‘तुम्हारा नाम क्या है?’
युवक के चेहरे पर खुशी की मुस्कान खिल उठी। ‘अरे!’ उसने कहा, ‘मुझे लगा था कि आप कभी पूछेंगे ही नहीं। मेरा नाम कबीर है, लेकिन हाल ही में मेरे दोस्तों ने मुझे गालाहद कहना शुरू कर दिया है।’
‘क्यों?’ लता ने आश्चर्य से पूछा।
क्योंकि उन्हें लगता है कि मैं अपना समय संकट में फंसी युवतियों को बचाने में बिताता हूं।
लता ने कहा, 'मैं इतनी संकट की स्थिति में नहीं थी कि मुझे बचाने की जरूरत पड़े।'
कबीर हँस पड़ा। उसने कहा, 'मुझे पता है कि तुम नहीं थे, तुम्हें भी पता है कि तुम नहीं थे, लेकिन मेरे दोस्त तो बिल्कुल बेवकूफ हैं।'
'मेरी भी,' लता ने बेवफाई से कहा। आखिरकार, मालती ने उसे अधर में छोड़ दिया था।

‘क्यों न हम अपने उपनाम भी बदल लें?’ युवक ने अपना फायदा उठाते हुए कहा।

आत्मरक्षा की भावना ने लता को कुछ पल के लिए रोक दिया। वह उसे पसंद करती थी और उसे पूरी उम्मीद थी कि वह उससे दोबारा मिलेगी—लेकिन अगली बार वह उससे उसका पता भी पूछ सकता था। श्रीमती रूपा मेहरा की पूछताछ की यादें उसके मन में कौंध गईं।

‘नहीं, रहने दो,’ लता ने कहा। फिर, अपनी जल्दबाजी और उसे पहुँचाई गई संभावित चोट को महसूस करते हुए, उसने झट से वही बात कह दी जो उसके दिमाग में आई। ‘क्या आपके कोई भाई-बहन हैं?’

'हां, एक छोटा भाई।'

‘कोई बहन नहीं?’ लता मुस्कुराई, हालांकि उसे खुद भी ठीक से पता नहीं था कि वह क्यों मुस्कुराई।

'पिछले साल तक मेरी एक छोटी बहन थी।'

‘ओह—मुझे बहुत खेद है,’ लता ने निराशा से कहा। ‘यह आपके लिए—और आपके माता-पिता के लिए कितना भयानक रहा होगा।’

कबीर ने धीमी आवाज़ में कहा, 'खैर, मेरे पिता के लिए। लेकिन लगता है उस्ताद मजीद खान ने शुरू कर दिया है। शायद हमें अंदर जाना चाहिए?'

सहानुभूति और कोमलता से अभिभूत लता ने उनकी बात मुश्किल से सुनी; लेकिन जैसे ही वे दरवाजे की ओर बढ़े, लता भी उनके पीछे-पीछे चल पड़ीं। हॉल के अंदर उस्ताद ने राग श्री का अपना धीमा और भव्य वादन शुरू कर दिया था। वे अलग हुए, अपनी-अपनी जगह पर वापस बैठ गए और सुनने लगे।

3.7

आम तौर पर लता उस्ताद मजीद खान के संगीत में खोई रहतीं। उनके बगल में बैठी मालती भी खोई हुई थीं। लेकिन कबीर से हुई मुलाक़ात ने

उनके मन को इतने अलग-अलग विचारों में उलझा दिया था, अक्सर एक साथ, कि मानो वह सन्नाटे में ही खोई हों। उन्हें अचानक हल्कापन महसूस हुआ और अपने बालों में लगे गुलाब के ख्याल से वह मन ही मन मुस्कुराने लगीं। एक मिनट बाद, अपनी बातचीत के आखिरी हिस्से को याद करके उन्होंने खुद को इतना भावहीन होने के लिए फटकारा। उन्होंने यह समझने की कोशिश की कि कबीर ने इतनी धीमी आवाज़ में 'खैर, मेरे पिता के लिए' कहकर क्या मतलब निकाला था। क्या इसका मतलब यह था कि उनकी माँ का निधन हो चुका था? इससे कबीर और लता एक अजीब तरह से समरूप स्थिति में आ जाते। या क्या उनकी माँ परिवार से इतनी अलग-थलग थीं कि उन्हें अपनी बेटी के खोने का एहसास ही नहीं था या उन्हें ज़्यादा दुख नहीं हुआ था? मैं ऐसे असंभव विचार क्यों सोच रही हूँ? लता ने सोचा। वाकई, जब कबीर ने कहा था, 'पिछले साल तक मेरी एक छोटी बहन थी,' तो क्या इसका मतलब वही था जिस निष्कर्ष पर लता अपने आप पहुँच गई थीं? लेकिन बेचारा, उनके बीच हुई आखिरी कुछ बातों से वह इतना तनावग्रस्त और उदास हो गया था कि उसने खुद ही सुझाव दिया कि वे हॉल में वापस चले जाएं।

मालती इतनी दयालु और समझदार थी कि उसने न तो लता की ओर देखा और न ही उसे धक्का दिया। और जल्द ही लता भी संगीत में डूब गई और उसमें खो गई।

3.8

अगली बार जब लता ने कबीर को देखा, तो वह बिल्कुल तनावग्रस्त और उदास नहीं लग रहा था। वह कैंपस में एक किताब और एक फाइल बगल में दबाए टहल रही थी, तभी उसने कबीर और एक अन्य छात्र को क्रिकेट की वर्दी पहने हुए खेल के मैदान की ओर जाने वाले रास्ते पर टहलते देखा। कबीर चलते-चलते आराम से बल्ला घुमा रहा था और दोनों आराम

से कभी-कभार बातचीत कर रहे थे। लता उनसे काफी पीछे थी, इसलिए उन्हें कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वे क्या कह रहे हैं। अचानक कबीर ने अपना सिर पीछे झुकाया और जोर से हंस पड़ा। सुबह की धूप में वह इतना सुंदर लग रहा था और उसकी हंसी इतनी दिल खोलकर और तनावमुक्त थी कि लता, जो पुस्तकालय की ओर मुड़ने ही वाली थी, खुद को उसके पीछे चलते हुए पाई। वह इस बात से हैरान थी, लेकिन उसने खुद को डांटा नहीं। खैर, मैं क्यों न चलूँ? उसने सोचा। जब वह मुझसे तीन बार बात कर चुका है, तो मुझे नहीं लगता कि मुझे एक बार उसके पीछे क्यों नहीं जाना चाहिए। लेकिन मुझे लगा था कि क्रिकेट का सीजन खत्म हो गया है। मुझे नहीं पता था कि परीक्षा के बीच में भी मैच है।

संयोगवश, कबीर और उसका दोस्त नेट पर अभ्यास करने गए थे। पढ़ाई से थोड़ा आराम पाने का यह उनका तरीका था। खेल के मैदान का वह आखिरी छोर, जहाँ अभ्यास के लिए नेट लगे थे, बाँस के छोटे से झुरमुट के पास था। लता छाँव में बैठ गई और किसी की नज़र में आए बिना, उन दोनों को बारी-बारी से बल्ले और गेंद से खेलते हुए देखने लगी। उसे क्रिकेट के बारे में कुछ भी नहीं पता था—यहाँ तक कि प्राण का उत्साह भी उस पर कोई असर नहीं डालता था—लेकिन कबीर को देखकर वह ऊँघती रह गई। कबीर पूरी तरह सफेद कपड़ों में था, कमीज़ के कॉलर खुले थे, टोपी नहीं पहनी थी और उसके बाल बिखरे हुए थे। वह या तो गेंदबाज़ी करने के लिए दौड़ रहा था या क्रीज़ पर खड़े होकर बड़ी कुशलता से बल्ला चला रहा था। कबीर की लंबाई छह फुट से एक-दो इंच कम थी, वह दुबला-पतला और फुर्तीला था, उसका रंग गोरा से गेहुँआ जैसा था, उसकी नाक नुकीली थी और उसके बाल काले और लहराते हुए थे। लता को नहीं पता कि वह कितनी देर वहाँ बैठी रही, लेकिन आधे घंटे से ज़्यादा तो ज़रूर रही होगी। बल्ले और गेंद की आवाज़, बांस में हल्की हवा की

सरसराहट, कुछ गौरैयों की चहचाहट, कुछ मैनाओं की पुकार और सबसे बढ़कर, युवकों की सहज हंसी और अस्पष्ट बातचीत की आवाज़ें मिलकर उसे लगभग बेसुध कर रही थीं। काफी देर बाद उसे होश आया।

मैं तो एक मोहित गोपी की तरह व्यवहार कर रही हूँ, उसने सोचा। जल्द ही, कृष्ण की बांसुरी से ईर्ष्या करने के बजाय, मैं कबीर के बल्ले से ईर्ष्या करने लगूँगी! इस विचार पर वह मुस्कुराई, फिर उठी, अपने सलवार-कमीज़ से कुछ सूखे पत्ते झाड़े और - बिना किसी का ध्यान खींचे - उसी रास्ते से वापस चली गई जिससे वह आई थी।

उस दोपहर उसने मलाती से कहा, 'तुम्हें पता लगाना होगा कि वह कौन है,' और उसने एक पत्ता तोड़ा और अनमने ढंग से उसे अपनी बांह पर ऊपर-नीचे फेरा।

‘कौन?’ मालती ने कहा। वह बेहद खुश थी।

लता ने झुंझलाहट भरी आवाज निकाली।

‘खैर, अगर आपने मुझे कॉन्सर्ट के बाद अनुमति दी होती, तो मैं आपको उसके बारे में कुछ बता सकती थी,’ मलाती ने कहा।

‘जैसे क्या?’ लता ने उत्सुकता से पूछा।

‘अच्छा, तो चलिए शुरू करते हैं,’ मालती ने उत्सुकता जगाते हुए कहा। ‘उसका नाम कबीर है, और वह क्रिकेट खेलता है।’

‘लेकिन मुझे यह पहले से ही पता है,’ लता ने विरोध करते हुए कहा। ‘और मुझे बस इतना ही पता है। क्या आपको इसके अलावा कुछ और नहीं पता?’

'नहीं,' मलाती ने कहा। उसने उसके परिवार में आपराधिक प्रवृत्ति की कहानी गढ़ने के विचार पर विचार किया, लेकिन फैसला किया कि यह बहुत क्रूर होगा।

लेकिन आपने कहा "शुरुआत में"। इसका मतलब है कि आपके पास कुछ

और भी होना चाहिए।
‘नहीं,’ मलाती ने कहा। ‘जैसे ही मैं अपने मुखबिर से कुछ और सवाल पूछने वाली थी, कॉन्सर्ट का दूसरा भाग शुरू हो गया।’
‘मुझे पूरा यकीन है कि अगर तुम ठान लो तो उसके बारे में सब कुछ पता लगा सकती हो।’ लता का अपनी दोस्त पर भरोसा दिल को छू लेने वाला था।
मालती को शक था। उसके जान-पहचान वालों का दायरा काफी बड़ा था। लेकिन सत्र लगभग खत्म होने वाला था और उसे समझ नहीं आ रहा था कि पूछताछ कहां से शुरू करे। कुछ छात्र—जिनकी परीक्षाएं खत्म हो चुकी थीं—ब्रह्मपुर छोड़ चुके थे; इनमें संगीत कार्यक्रम में मिली उसकी सूचना देने वाली भी शामिल थी। वह खुद भी कुछ दिनों में आगरा वापस जाने वाली थी।
उन्होंने कहा, 'त्रिवेदी डिटेक्टिव एजेंसी को शुरुआत करने के लिए एक-दो सुराग चाहिए। और समय कम है। आपको अपनी बातचीत को याद करना होगा। क्या आपको उसके बारे में कुछ और पता है जो मेरी मदद कर सके?'
लता ने कुछ देर सोचा लेकिन उसे कुछ समझ नहीं आया। 'कुछ नहीं,' उसने कहा। 'अरे, रुको—उसके पिता गणित पढ़ाते हैं।'
'ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय में?' मालती ने पूछा।
लता ने कहा, 'मुझे नहीं पता। और एक बात और: मुझे लगता है कि उन्हें साहित्य से बहुत लगाव है। वह चाहते थे कि मैं कल लिट सोसायटी की बैठक में आऊं।'
‘तो फिर आप वहां जाकर उनसे उनके बारे में क्यों नहीं पूछते,’ मलाती ने कहा, जो ‘साहसी दृष्टिकोण’ में विश्वास रखते थे। ‘उदाहरण के लिए, क्या वे कोलिनोस से अपने दांत साफ करते हैं? “कोलिनोस की मुस्कान में

जादू है।"'
'मैं नहीं कर सकती,' लता ने इतनी दृढ़ता से कहा कि मालती थोड़ी हैरान रह गई।
'यकीन मानिए, आप उसके प्यार में नहीं पड़ रही होंगी!' उसने कहा। 'आप उसके बारे में कुछ भी नहीं जानतीं—उसके परिवार के बारे में, या उसका पूरा नाम तक।'
लता ने कहा, 'मुझे लगता है कि मैं उसके बारे में पहली बात से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण बातें जानती हूं।'
'हाँ, हाँ,' मलाती ने कहा, 'जैसे उसके दाँतों की सफेदी और उसके बालों का कालापन। वह आकाश में एक जादुई बादल पर तैर रही थी, अपने पूरे अस्तित्व में उसकी प्रबल उपस्थिति को महसूस कर रही थी। वह उसका संपूर्ण ब्रह्मांड था। वह उसके अस्तित्व का सार, अंत, अंत और आधार था। मैं इस अनुभूति को समझ सकती हूँ।'
'अगर तुम बकवास करने वाले हो तो—' लता ने कहा, उसके चेहरे पर गर्मी महसूस हो रही थी।
'नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं,' मलाती ने हंसते हुए कहा। 'मैं जो भी पता लगा सकती हूँ, पता लगाऊंगी।'
उसके मन में कई विचार आए: विश्वविद्यालय की पत्रिका में क्रिकेट की रिपोर्ट? गणित विभाग? रजिस्ट्रार का कार्यालय?
उसने ऊँची आवाज़ में कहा, 'उबले आलू मेरे लिए छोड़ दो। मैं उसे मिर्चों से लपेटकर थाली में सजाकर तुम्हें परोस दूँगी। वैसे भी, लता, तुम्हारे चेहरे को देखकर तो किसी को पता ही नहीं चलेगा कि तुम्हारे पास अभी भी कागज़ बचा है। प्यार में होना तुम्हारे लिए अच्छा है। तुम्हें और भी बार प्यार करना चाहिए।'
'हां, मैं करूंगी,' लता ने कहा। 'जब तुम डॉक्टर बन जाओ, तो इसे अपने

सभी मरीजों को लिखो।'

3.9

अगले दिन लता शाम पांच बजे 20 हेस्टिंग्स रोड पहुंची। उसने सुबह अपना आखिरी पेपर पूरा कर लिया था। उसे पूरा यकीन था कि उसने उसमें अच्छा प्रदर्शन नहीं किया है, लेकिन जब वह उदास होने लगी, तो उसे कबीर की याद आई और उसका मन तुरंत खुश हो गया। अब वह बूढ़े श्री नौरोजी के ड्राइंग रूम में बैठे लगभग पंद्रह पुरुषों और महिलाओं के समूह में कबीर को ढूंढने लगी—वही कमरा जिसमें ब्रह्मपुर साहित्यिक समाज की साप्ताहिक बैठकें सदियों से होती आ रही थीं। लेकिन या तो कबीर अभी तक नहीं आया था या फिर उसने आने का इरादा बदल दिया था।

कमरा फूलों के प्रिंट वाली गद्देदार कुर्सियों और फूलों के प्रिंट वाले मोटे गद्देदार कुशनों से भरा हुआ था।

श्री नौरोजी, दुबले-पतले, छोटे कद के और सज्जन पुरुष, जिनकी सफेद दाढ़ी एकदम साफ-सुथरी थी और उन्होंने हल्के भूरे रंग का सूट पहना हुआ था, समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे। लता को नया चेहरा देखकर उन्होंने अपना परिचय दिया और उनका स्वागत किया। बाकी लोग, जो छोटे-छोटे समूहों में बैठे या खड़े थे, उन पर ध्यान नहीं दे रहे थे। पहले तो उन्हें थोड़ी असहजता महसूस हुई, फिर वे एक खिड़की के पास गईं और बाहर एक छोटे, सुव्यवस्थित बगीचे की ओर देखने लगीं, जिसके बीच में एक धूपघड़ी लगी हुई थी। वे उनसे मिलने के लिए इतनी उत्सुक थीं कि उन्होंने इस विचार को पूरी तरह से नकार दिया कि शायद वे न आएं।

'शुभ दोपहर, कबीर।'

'शुभ दोपहर, श्रीमान नवरोजी।'

कबीर का नाम सुनते ही और उसकी मधुर, धीमी आवाज सुनकर लता

मुड़ी और उसे इतनी प्रसन्नता भरी मुस्कान दी कि कबीर ने अपना हाथ माथे पर रख लिया और कुछ कदम पीछे हट गया।

लता को उसकी इस मसखरेपन का कुछ समझ नहीं आ रहा था, जिसे सौभाग्य से किसी और ने नहीं देखा था। श्री नवरोजी कमरे के आखिरी छोर पर स्थित आयताकार मेज पर बैठे थे और ध्यान आकर्षित करने के लिए धीरे-धीरे खांस रहे थे। लता और कबीर मेज से सबसे दूर वाली दीवार के पास एक खाली सोफे पर बैठ गए। इससे पहले कि वे एक-दूसरे से कुछ कह पाते, एक मोटे, चमकदार आंखों वाले, हंसमुख चेहरे वाले अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने उन दोनों को कार्बन कॉपी का एक-एक बंडल थमा दिया, जो देखने में कविता से ढका हुआ लग रहा था।

गुजरते हुए उसने रहस्यमय ढंग से कहा, 'मखीजानी।'

श्री नौरोजी ने अपने सामने रखे तीन गिलासों में से एक से पानी का एक घूंट लिया। उन्होंने लता और कबीर के पास मुश्किल से सुनाई देने वाली आवाज़ में कहा, “ब्रह्मपुर साहित्यकार मंडली के साथियों और मित्रों, हम अपनी मंडली की 1698वीं बैठक के लिए यहाँ एकत्रित हुए हैं। मैं अब इस बैठक को खुला घोषित करता हूँ।”

उन्होंने खिड़की से बाहर उदास निगाहों से देखा और रूमाल से अपने चश्मे को पोंछा। फिर उन्होंने आगे कहा: 'मुझे याद है जब एडमंड ब्लंडन ने हमें संबोधित किया था। उन्होंने कहा था—और मुझे उनके शब्द आज तक याद हैं—उन्होंने कहा था—'

श्री नौरोजी रुके, खांसे और अपने सामने रखे कागज पर नज़र डाली। उनकी त्वचा कागज जितनी पतली प्रतीत हो रही थी।

उन्होंने आगे कहा: ‘1698वीं बैठक। सोसाइटी के सदस्यों द्वारा अपनी ही कविताओं का पाठ। मुझे लगता है कि प्रतियां बांटी जा चुकी हैं। अगले सप्ताह अंग्रेजी विभाग के प्रोफेसर ओ.पी. मिश्रा हमें “एलियट: किधर?”

विषय पर एक शोधपत्र प्रस्तुत करेंगे।'

लता, जिसे प्रोफेसर मिश्रा के व्याख्यान पसंद थे, भले ही अब उसके मन में उनके बारे में गुलाबी रंग की धारणा बन चुकी थी, दिलचस्पी दिखा रही थी, हालांकि शीर्षक थोड़ा रहस्यमय था।

श्री नौरोजी ने आगे कहा, "आज तीन कवि अपनी-अपनी रचनाएँ पढ़ेंगे, जिसके बाद मुझे आशा है कि आप हमारे साथ चाय पर शामिल होंगे। मुझे खेद है कि मेरे युवा मित्र श्री सोराबजी समय निकालकर नहीं आ सके।" उन्होंने सौम्य फटकार भरे लहजे में यह बात जोड़ी।

श्री सोराबजी, जिनकी उम्र सत्तावन वर्ष थी और जो श्री नौरोजी की ही तरह पारसी थे, ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय के प्रॉक्टर थे। वे विश्वविद्यालय या शहर की साहित्यिक समितियों की बैठकों में शायद ही कभी अनुपस्थित रहते थे। लेकिन वे हमेशा ऐसी बैठकों से दूर रहते थे जहाँ सदस्य अपनी साहित्यिक रचनाएँ पढ़कर सुनाते थे।

श्री नौरोजी अनिर्णय भरी मुस्कान के साथ बोले, 'आज कविता पाठ करने वाले कवि हैं डॉ. विकास मखीजानी, श्रीमती सुप्रिया जोशी—'

'श्रीमती सुप्रिया जोशी,' एक बुलंद महिला आवाज ने कहा। चौड़े सीने वाली श्रीमती जोशी सुधार करने के लिए खड़ी हो गईं।

"जी हाँ, हमारी प्रतिभाशाली कवयित्री श्रीमती सुप्रिया जोशी—और हाँ, मैं स्वयं, श्री आर.पी. नौरोजी। चूंकि मैं पहले से ही मेज पर बैठा हूँ, इसलिए मैं अध्यक्ष के विशेषाधिकार का लाभ उठाते हुए सबसे पहले अपनी कविताएँ पढ़ूँगा—आगे आने वाले मुख्य भोजन से पहले एक हल्की सी शुरुआत के तौर पर। भोजन का आनंद लें।" उन्होंने उदास, बल्कि सर्द मौसम वाली हल्की सी हंसी हंसते हुए अपना गला साफ किया और पानी का एक और घूंट लिया।

श्री नौरोजी ने शालीनता से कहा, "मैं जो पहली कविता पढ़ना चाहूंगा,

उसका शीर्षक है 'दिल दहला देने वाला जुनून'।" और उन्होंने निम्नलिखित कविता पढ़ी:

मैं एक कोमल भावना से ग्रस्त हूँ,
जिसका भूत कभी नहीं मरेगा।
शरद ऋतु के पत्ते राख जैसे हो गए हैं:
मैं एक कोमल भावना से ग्रस्त हूँ।
और वसंत ऋतु भी, अपने ही अंदाज में,
प्रेम के मधुर गीत से मुझे जल उठता है—इसलिए मैं—
मैं एक कोमल भावना से ग्रस्त हूँ,
जिसका भूत कभी नहीं मरेगा।

जैसे ही श्री नवरोजी ने अपनी कविता पूरी की, ऐसा लगा मानो वे अपने आँसू रोकने की पूरी कोशिश कर रहे हों। उन्होंने बगीचे की ओर, धूपघड़ी की ओर देखा और खुद को संभालते हुए कहा:

'यह एक ट्रायोलेट है। अब मैं आपको एक बैलेड पढ़कर सुनाऊंगा। इसका नाम है "बर्ड फ्लेम्स"।'

इस कविता और इसी तरह की तीन अन्य कविताओं को धीरे-धीरे कम होते हुए पढ़ने के बाद, वे रुक गए, मानो उनकी सारी भावनाएँ समाप्त हो गई हों। फिर वे ऐसे उठे जैसे उन्होंने कोई अनंत दूरी की थका देने वाली यात्रा पूरी कर ली हो, और वक्ता की मेज से कुछ ही दूरी पर रखी एक गद्देदार कुर्सी पर बैठ गए।

कबीर और अगले पाठक के बीच के थोड़े से अंतराल में कबीर ने लता की ओर जिज्ञासा भरी निगाहों से देखा और लता ने भी हैरानी से उसकी ओर देखा। दोनों अपनी हंसी रोकने की कोशिश कर रहे थे, और एक-दूसरे को देखना इसमें उनकी मदद नहीं कर पा रहा था।

सौभाग्यवश, हंसमुख, गोल-मटोल चेहरे वाला वह व्यक्ति जिसने उन्हें वे

कविताएँ सौंपी थीं जिन्हें वह पढ़ने वाला था, अब वक्ता की मेज की ओर ऊर्जापूर्वक दौड़ा और बैठने से पहले, केवल एक शब्द कहा:

'Makhijani.'

अपना नाम घोषित करने के बाद, वे पहले से भी अधिक प्रसन्न दिखे। उन्होंने गहन और सुखद एकाग्रता के भाव से अपने कागजों के पन्ने पलटे, फिर श्री नौरोजी की ओर मुस्कुराए, जो आंधी से पहले किसी कोने में दुबकी चिड़िया की तरह अपनी कुर्सी पर सिकुड़ गए। श्री नौरोजी ने एक समय डॉ. मखीजानी को पढ़ने से रोकने की कोशिश की थी, लेकिन उन्हें इतने सौम्य ढंग से विरोध का सामना करना पड़ा कि उन्हें हार माननी पड़ी। लेकिन दिन में पहले कविताओं की एक प्रति पढ़ने के बाद, वे यह सोचे बिना नहीं रह सके कि भोज का समापन एपेरिटिफ के साथ ही हो जाना चाहिए था।

डॉ. मखीजानी ने गंभीर स्वर में कहा, 'भारत माता को समर्पित एक स्तुतिगान', और फिर अपने श्रोताओं की ओर मुस्कुराते हुए देखा। वे एक तगड़े लोहार की एकाग्रता से आगे झुके और अपनी कविता को छंदों की संख्या सहित पूरा पढ़ा, जिसे वे घोड़े की नाल की तरह उकेर रहे थे।

1.

ऐसा कौन सा बच्चा है जिसने दूध पीते हुए नहीं देखा हो?
माँ की चमकीली छातियों पर, क्या उसने चिथड़े पहने हैं या रेशम?
कोमल माता का प्रेम वर्षा से भीगे बादल के उपहार के समान है।
कवि के शब्दों में, हे माता, मैं तुम्हें नमन करता हूँ।

2.

जब डॉक्टर ही मरीज का इलाज करे तो यह कितना घटिया उपहार है!
वह दिलों की धड़कनें तो सुनता है, लेकिन उसका दिल इतना क्यों सिसकता है?

मुझे दर्द से राहत दिलाने वाला डॉक्टर कहाँ है?
माँ को इतना कष्ट क्यों सहना पड़ता है? दोष किसका है?
3.
उसके वस्त्र मई या मानसून की बारिश से भीग गए थे।
जैसे मीठी सावित्री यमराज से अपने पुत्रों को जीत लेती है,
लाखों की आबादी के साथ मौत को चकमा देना,
जिससे एक पवित्र और सदाचारी राष्ट्र का निर्माण होता है।
4.
कन्याकुमारी के तट से लेकर कश्मीर तक,
असम के बाघ से लेकर गिर के उत्पात मचाने वाले दरिंदे तक,
स्वतंत्रता की सुबह अब नहा रही है, अपना चेहरा धो रही है,
जेटी लॉकों का कंपन गंगा की कृपा है।
5.
पवित्र माता के बंधन का वर्णन कैसे करें
क्या ये विकृत मानसिकता वाले तुच्छ लोगों द्वारा कानून की बेड़ियों में जकड़े जाने के कारण संभव हुआ है?
ब्रिटिश क्रूर, भारतीय मुस्कुराता हुआ और गुलाम:
ऐसी शर्मिंदगी पसीने से तर कब्र तक पीछा नहीं छोड़ती।
उपरोक्त श्लोक को पढ़ते समय डॉ. मखीजानी अत्यधिक विचलित हो गए, लेकिन अगले श्लोक ने उन्हें शांत कर दिया:
6.
मुझे गौरवशाली नायकों के इतिहास को याद करने दीजिए।
जिन महिलाओं ने सिर नहीं झुकाया, उनके स्तनों को मां के दूध से पोषण मिला।
उन्होंने भारी बोझ उठाते हुए, जमकर लड़ाई लड़ी।

भारतीय राज्य की सुदृढ़ नींव स्थापित करना।
घबराए हुए श्री नौरोजी को सिर हिलाकर अभिवादन करते हुए, डॉ. मखीजानी ने अब अपने हमनाम, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के संस्थापकों में से एक, की प्रशंसा की:

7.

दादाभाई नौरोजी ने संसद में प्रवेश किया,
फिन्सबरी से सांसद के रूप में, कृपा किसी वरदान से कम नहीं थी।
लेकिन वह मां के भरे-भरे स्तनों को नहीं भूला:
पश्चिम में रहते हुए, सपने भारत के थे।
लता और कबीर ने एक दूसरे को मिली-जुली खुशी और भय भरी नजरों से देखा।

8.

महाराष्ट्र के बी.जी. तिलक का यही नाम था।
वह अक्सर विलाप करते हुए कहते थे, 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।'
लेकिन क्रूर कैदियों ने उसे उमस भरी जेल में भेज दिया।
मांडले के किलों में, छह साल की समुद्री यात्रा।

9.

बंगाल की निडर मातृभूमि को कलंकित करने का कलंक लगा।
काली नाम की बच्ची के हाथ में आतंकवादी पिस्तौल।
द्रौपदी की साड़ी बार-बार घूमती हुई उतर रही थी—
श्वेत दुर्योधन उपहास और उपहास करते हुए हंसते हैं।

इन सजीव पंक्तियों पर डॉ. मखीजानी की आवाज आक्रामकता से कांप उठी। कुछ छंदों के बाद वे तात्कालिक अतीत और वर्तमान के पहलुओं पर आसीन हुए:

26.

महात्मा गांधी हमारे लिए ग्रीष्म ऋतु की आंधी की तरह आए।
गोबर और गंदगी साफ करने का काम एम.के. गांधी कर रहे थे।
हत्या ने शांति को इस हद तक भंग कर दिया है कि उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।
सम्मान और दुःख मुझे कलंकित और खड़ा छोड़ जाते हैं।
इस बिंदु पर डॉ. मखीजानी श्रद्धा के प्रतीक के रूप में खड़े हो गए और अंतिम तीन छंदों के दौरान खड़े ही रहे:

27.

फिर जब आखिरकार अंग्रेज चले गए,
हमारे प्रधानमंत्री जवाहरलाल हमारे अपने थे।
वह गुलाबी चमक की तरह सिंहासन की ओर आया,
और हमारे भारत को गौरवशाली नाम दिया।

28.

मुसलमान, हिंदू, सिख, ईसाई, सभी उनका आदर करते हैं।
पारसी, जैन और बौद्ध भी उन्हें प्रिय मानते हैं।
सबकी निगाहों का केंद्र, वह राजसी अंदाज में शान से आगे बढ़ता है।
एक शानदार दृश्य की जीवंत आत्मा।

29.

हम सब स्वामी हैं, हममें से प्रत्येक राजा या रानी है।
मखीजानी कहते हैं, न कोई गुलाम, न ऊँचा न नीचा।
संविधान में वर्णित स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और न्याय।
हम माता को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सभी समस्याओं का समाधान ढूंढेंगे।
उर्दू या हिंदी कविता की परंपरा के अनुसार, कवि ने अंतिम छंद में अपना

नाम लिख दिया था। अब वह बैठ गया, अपने माथे से पसीना पोंछते हुए और मुस्कुराते हुए।
कबीर एक नोट लिख रहा था। उसने वह नोट लता को दे दिया; अनजाने में उनके हाथ छू गए। हालांकि लता अपनी हंसी रोकने की कोशिश में दर्द महसूस कर रही थी, लेकिन उसके स्पर्श से उसे रोमांच का एक झटका लगा। कुछ सेकंड बाद कबीर ने अपना हाथ हटा लिया, और लता ने देखा कि उसने क्या लिखा था:
20 हेस्टिंग्स रोड से तुरंत भाग निकलना
क्या मेरी यही इच्छा है, हालांकि यह कवियों का पसंदीदा निवास स्थान है।
दोस्ती नहीं, रेगिस्तान। मेरे साथ बागी बनो।
श्री नवरोजी के आनंदमय लोक से।
यह डॉ. मखीजानी के प्रयासों जितना सफल तो नहीं हुआ, लेकिन इसने अपना संदेश ज़रूर पहुँचा दिया। लता और कबीर, मानो किसी इशारे पर, तेज़ी से उठे और ठगे हुए डॉ. मखीजानी के रोकने से पहले ही मुख्य द्वार तक पहुँच गए।
शांत सड़क पर निकलकर वे कुछ मिनटों तक खुशी से हँसते रहे और एक-दूसरे को डॉ. मखीजानी के देशभक्ति गीत के कुछ अंश सुनाते रहे। जब हँसी थम गई, तो कबीर ने उससे कहा:
'कॉफी कैसी रहेगी? हम ब्लू डेन्यूब जा सकते हैं।'
लता को डर था कि कहीं उसकी मुलाकात किसी परिचित से न हो जाए और वह पहले से ही श्रीमती रूपा मेहरा के बारे में सोच रही थी, इसलिए उसने कहा, 'नहीं, मैं सच में नहीं जा सकती। मुझे घर वापस जाना है। अपनी माँ के पास,' उसने शरारती अंदाज़ में कहा।
कबीर उससे अपनी निगाहें नहीं हटा पा रहा था।

‘लेकिन तुम्हारी परीक्षाएं तो खत्म हो चुकी हैं,’ उसने कहा। ‘तुम्हें जश्न मनाना चाहिए। सिर्फ मेरे दो पेपर बचे हैं।’

'काश मैं कर पाता। लेकिन आपसे यहां मिलना मेरे लिए काफी साहसिक कदम रहा है।'

‘अच्छा, क्या हम अगले हफ्ते कम से कम यहीं दोबारा नहीं मिलेंगे? “एलियट: किधर?” के लिए’ कबीर ने एक दिखावटी दरबारी की तरह हवा में एक इशारा किया और लता मुस्कुराईं।

‘लेकिन क्या आप अगले शुक्रवार को ब्रह्मपुर में होंगे?’ उसने पूछा। ‘छुट्टियाँ हैं...’

‘हां,’ कबीर ने कहा। ‘मैं यहीं रहता हूं।’

वह अलविदा कहना नहीं चाहता था, लेकिन अंततः उसने ऐसा कर ही दिया।

‘तो फिर अगले शुक्रवार को मिलते हैं—या उससे पहले,’ उसने अपनी साइकिल पर बैठते हुए कहा। ‘क्या आप सच में ऐसा कर सकती हैं कि मैं आपको अपनी दो लोगों के लिए बनी साइकिल पर कहीं छोड़ न सकूँ? चाहे दाग लगे हों या न लगे हों, आप बेहद खूबसूरत दिखती हैं।’

लता ने शरमाते हुए चारों ओर देखा।

‘नहीं, मुझे यकीन है। अलविदा,’ उसने कहा। ‘और—अच्छा—धन्यवाद।’

3.10

जब लता घर पहुँची तो उसने अपनी माँ और बहन से बचते हुए सीधे बेडरूम में चली गई। वह बिस्तर पर लेट गई और छत को घूरने लगी, ठीक वैसे ही जैसे कुछ दिन पहले वह घास पर लेटकर जैकारांडा की शाखाओं के बीच से आसमान को घूर रही थी। उसे सबसे ज़्यादा याद आ रहा था जब उसने उसे चिट्ठी देते समय उसके हाथ का वह आकस्मिक स्पर्श।

बाद में, रात के खाने के दौरान, फोन की घंटी बजी। टेलीफोन के सबसे

करीब बैठी लता ने रिसीवर उठाने के लिए गई।
‘हेलो?’ लता ने कहा।
'हैलो-लता?' मालती ने कहा।
‘हां,’ लता ने खुशी से कहा।
‘मुझे कुछ बातें पता चली हैं। मैं आज रात दो सप्ताह के लिए जा रही हूँ, इसलिए मैंने सोचा कि आपको अभी बता देना बेहतर होगा। क्या आप अकेले हैं?’ मलाती ने सावधानी से पूछा।
‘नहीं,’ लता ने कहा।
क्या आप अगले आधे घंटे के भीतर अकेले होंगे?
‘नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता,’ लता ने कहा।
‘यह अच्छी खबर नहीं है, लता,’ मलाती ने गंभीरता से कहा। ‘तुम्हें उसे छोड़ देना चाहिए।’
लता ने कुछ नहीं कहा।
‘क्या तुम अभी भी वहीं हो?’ मालती ने चिंता से पूछा।
‘जी हां,’ लता ने खाने की मेज के चारों ओर बैठे बाकी तीन लोगों की ओर देखते हुए कहा। ‘आगे बोलो।’
‘अच्छा, वो विश्वविद्यालय की क्रिकेट टीम में है,’ मालती ने अपनी सहेली को यह बुरी खबर सुनाने में हिचकिचाते हुए कहा। ‘विश्वविद्यालय की पत्रिका में टीम की एक तस्वीर छपी है।’
‘जी?’ लता ने हैरानी से कहा। ‘लेकिन क्या—’
‘लता,’ मलाती ने आगे बात को घुमा-फिराकर कहने में असमर्थ होकर कहा। ‘उसका उपनाम दुर्रानी है।’
तो क्या हुआ? लता ने सोचा। इससे वो क्या बनता है? क्या वो सिंधी है या कुछ और? जैसे—खैर—चेतवानी या आडवाणी—या...या मखीजानी?
‘वह मुसलमान है,’ मलाती ने उसकी सोच को बीच में रोकते हुए कहा।

‘क्या तुम अभी भी वहीं हो?’
लता सीधे सामने देख रही थी। सविता ने अपना चाकू और कांटा नीचे रख दिया और अपनी बहन की ओर चिंता से देखने लगी।
मलाती ने आगे कहा: ‘तुम्हारे पास कोई मौका नहीं है। तुम्हारा परिवार उसके सख्त खिलाफ होगा। उसे भूल जाओ। इसे एक सबक समझो। और जिसका पहला नाम अस्पष्ट हो, उसका अंतिम नाम हमेशा पता कर लो। . . . तुम कुछ क्यों नहीं कहती? क्या तुम सुन रही हो?’
'हां,' लता ने कहा, उसका दिल उथल-पुथल से भरा हुआ था।
उसके मन में सौ सवाल थे, और उसे पहले से कहीं ज़्यादा अपनी दोस्त की सलाह, सहानुभूति और मदद की ज़रूरत थी। उसने धीरे-धीरे और शांत स्वर में कहा, 'मुझे अब जाना चाहिए। हम खाना खा रहे हैं।'
मालती ने कहा, 'मुझे तो यह ख्याल ही नहीं आया—बिल्कुल भी नहीं आया—लेकिन क्या आपको भी नहीं आया? ऐसे नाम के साथ—हालांकि मैं जितने भी कबीर को जानती हूँ वे सब हिंदू हैं—कबीर भंडारे, कबीर सोन्धी—'
‘मुझे तो यह ख्याल ही नहीं आया,’ लता ने कहा। ‘शुक्रिया, मालू,’ उसने आगे कहा, मालती के नाम का वह रूप इस्तेमाल करते हुए जो वह कभी-कभी स्नेहवश इस्तेमाल करती थी। ‘धन्यवाद— खैर—’
मुझे बहुत खेद है। बेचारी लता।
नहीं। आपके लौटने पर मिलते हैं।
‘पी.जी. वोडहाउस की एक-दो किताबें पढ़ लो,’ मलाती ने विदाई के तौर पर सलाह दी। ‘अलविदा।’
'बाय,' लता ने कहा और सावधानी से रिसीवर नीचे रख दिया।
वह वापस मेज़ पर लौटी, लेकिन खाना नहीं खा सकी। श्रीमती रूपा मेहरा ने तुरंत पता लगाने की कोशिश की कि क्या बात है। सविता ने फिलहाल

कुछ न कहने का फैसला किया। प्राण उसे हैरानी से देखता रहा।
'कुछ नहीं है,' लता ने अपनी मां के चिंतित चेहरे को देखते हुए कहा।
रात के खाने के बाद, वह अपने कमरे में चली गई। वह परिवार से बात करने या रेडियो पर देर रात की खबरें सुनने में असमर्थ थी। वह अपने बिस्तर पर औंधे मुंह लेट गई और जितना हो सके चुपचाप रोने लगी—प्यार और गुस्से से उसका नाम दोहराती रही।

3.11

मलाती को यह बताने की ज़रूरत नहीं थी कि यह असंभव है। लता खुद यह बात अच्छी तरह जानती थी। वह अपनी माँ को जानती थी और यह भी जानती थी कि अगर उसकी माँ को पता चलता कि उसकी बेटी किसी मुस्लिम लड़के से मिल रही है, तो उसे कितना गहरा दुख और सदमा लगेगा।
किसी भी लड़के का होना चिंताजनक था, लेकिन यह इतना शर्मनाक, इतना दर्दनाक था कि इस पर विश्वास करना मुश्किल था। लता को श्रीमती रूपा मेहरा की आवाज़ सुनाई दे रही थी: 'मैंने पिछले जन्म में ऐसा क्या किया था कि मुझे यह सब सहना पड़ रहा है?' और वह अपनी माँ के आँसू देख सकती थी, जब वह अपनी प्यारी बेटी को उन अनाम लोगों के हवाले किए जाने के भयानक मंजर का सामना कर रही थी। बुढ़ापा उनके लिए कड़वाहट से भरा होगा और उन्हें सांत्वना देना असंभव होगा।
लता पलंग पर लेटी थी। उजाला हो रहा था। उसकी माँ गीता के दो अध्याय पढ़ चुकी थी, जिनका पाठ वह प्रतिदिन सूर्योदय से पहले करती थी। गीता में अनासक्ति, शांत ज्ञान और कर्मों के फल के प्रति उदासीनता का आह्वान किया गया है। यह एक ऐसा पाठ था जिसे श्रीमती रूपा मेहरा कभी नहीं सीख सकती थीं, कभी सीख ही नहीं सकती थीं। यह पाठ उनके स्वभाव के अनुकूल नहीं था, भले ही इसका पाठ उन्हें भाता हो।

जिस दिन वह अनासक्त, उदासीन और शांत रहना सीख लेंगी, उस दिन वह स्वयं नहीं रहेंगी।

लता जानती थी कि उसकी माँ उसके बारे में चिंतित है। लेकिन शायद अगले कुछ दिनों में लता की स्पष्ट उदासी को उसकी माँ ने परीक्षा परिणामों की चिंता से जोड़ दिया।

काश, मालती यहाँ होती, लता ने मन ही मन कहा।

काश, वह उससे मिली ही न होती। काश, उनके हाथ एक-दूसरे को न छुए होते। काश!

काश, मैं ये बेवकूफी करना बंद कर पाती! लता ने मन ही मन कहा। मालती हमेशा यही कहती थी कि प्यार में लड़के ही बेवकूफों जैसी हरकतें करते हैं, हॉस्टल के कमरों में आहें भरते हैं और शेली की ग़ज़लों की मीठी-मीठी धुन में डूबे रहते हैं। कबीर से दोबारा मिलने में अभी एक हफ़्ता बाकी था। अगर उसे उससे पहले संपर्क करने का तरीका पता होता, तो वो और भी ज़्यादा असमंजस में होती।

कल श्री नवरोजी के घर के बाहर हुई हंसी की याद आते ही उसकी आंखों में फिर से गुस्से के आंसू आ गए। वह प्राण की किताबों की अलमारी के पास गई और वहां जो पहली पी.जी. वोडहाउस की किताब दिखी, उसे उठा लिया: 'पिग्स हैव विंग्स'। मालती का व्यवहार भले ही हल्का-फुल्का था, लेकिन उसकी बात में दम था और उसने सही सलाह दी थी।

‘क्या तुम ठीक हो?’ सविता ने पूछा।

‘हां,’ लता ने कहा। ‘क्या इसने कल रात लात मारी थी?’

मुझे ऐसा नहीं लगता। कम से कम मैं तो नहीं जागा।

लता ने अचानक कहा, 'पुरुषों को ही ये सब सहना चाहिए।' 'मैं नदी किनारे टहलने जा रही हूँ।' उसका अनुमान सही था कि सविता उस खड़ी चढ़ाई वाले रास्ते पर उसके साथ चलने की हालत में नहीं थी जो कैंपस से

रेत की ओर जाता था।

उसने चप्पलों की जगह सैंडल पहन लीं, जिससे चलना आसान हो गया। जैसे ही वह मिट्टी की ढलान से, जो लगभग एक चट्टान जैसी थी, गंगा के किनारे की ओर उतरी, उसने बरगद के दो पेड़ों पर बंदरों के एक झुंड को खेलते हुए देखा—ये दो पेड़ अपनी शाखाओं के आपस में गुंथने से एक हो गए थे। बीच के तनों के बीच एक देवता की नारंगी रंग से रंगी छोटी सी मूर्ति रखी थी। बंदर आमतौर पर उसे देखकर खुश होते थे—जब भी उसे याद आता, वह उनके लिए फल और मेवे लाती थी। आज वह भूल गई थी, और उन्होंने अपनी नाराज़गी ज़ाहिर कर दी। कुछ छोटे बंदरों ने उसकी कोहनी को खींचकर विनती की, जबकि एक बड़ा, गुस्सैल नर बंदर, दूर से ही गुस्से में अपने दांत दिखा रहा था।

उसे अपना ध्यान भटकाने की ज़रूरत थी। अचानक उसे पशु जगत के प्रति बहुत स्नेह महसूस हुआ—जो उसे, शायद गलत तरीके से, मानव जगत से कहीं अधिक सरल प्रतीत होता था। हालाँकि वह चट्टान से आधी दूर नीचे आ चुकी थी, फिर भी वह वापस ऊपर चढ़ी, रसोई में गई और बंदरों के लिए मूंगफली से भरा एक थैला और तीन बड़े मुसम्मी से भरा दूसरा थैला ले आई। वह जानती थी कि बंदरों को संतरे जितने मुसम्मी पसंद नहीं आते, लेकिन गर्मियों में केवल मोटे छिलके वाले हरे मीठे नींबू ही उपलब्ध होते थे।

लेकिन वे बेहद खुश थे। लता के 'आ! आ!' कहने से पहले ही—जो उसने एक बार एक बूढ़े साधु को उन्हें लुभाने के लिए कहते सुना था—बंदरों ने कागज़ के थैलों को देख लिया। वे चारों ओर जमा हो गए, पकड़ने लगे, गिड़गिड़ाने लगे, उत्साह से पेड़ों पर चढ़ने-उतरने लगे, यहाँ तक कि शाखाओं और लटकती जड़ों से लटककर अपनी बाहें फैलाने लगे। छोटे बंदर चीखने लगे, बड़े गुर्राने लगे। एक क्रूर बंदर, शायद वही जिसने पहले

उस पर अपने दाँत दिखाए थे, कुछ मूंगफली अपने गालों की थैलियों में रख लीं और ज़्यादा लेने की कोशिश करने लगा। लता ने कुछ मूंगफली बिखेर दीं, लेकिन ज़्यादातर उन्हें अपने हाथों से खिलाईं। उसने खुद भी दो-तीन मूंगफली खाईं। पहले की तरह, दो सबसे छोटे बंदरों ने ध्यान आकर्षित करने के लिए उसकी कोहनी पकड़ी और सहलाया भी। जब उसने उन्हें चिढ़ाने के लिए अपने हाथ बंद रखे, तो उन्होंने उन्हें बड़े प्यार से खोला, दाँतों से नहीं बल्कि उंगलियों से।

जब उसने मुसम्मी छीलने की कोशिश की, तो सबसे बड़े बंदरों ने उसे ऐसा करने से मना कर दिया। आमतौर पर वह सबको बराबर बांटने में सफल हो जाती थी, लेकिन इस बार तीनों मुसम्मी बड़े-बड़े बंदरों ने छीन लीं। एक बंदर ढलान पर थोड़ा और नीचे गया और एक बड़ी जड़ पर बैठकर उसे खाने लगा: उसने आधा छीला, फिर अंदर से खा लिया। दूसरा बंदर, जो इतना नखरे वाला नहीं था, उसने छिलके समेत पूरा मुसम्मी खा लिया।

हंसते हुए लता ने मूंगफली के थैले के बचे हुए हिस्से को अपने सिर के चारों ओर घुमाया और वह उड़कर पेड़ पर जा गिरा; वह एक ऊँची शाखा में अटक गया, लेकिन फिर छूट गया, थोड़ा और नीचे गिरा और फिर एक शाखा में अटक गया। एक बड़ा लाल पूंछ वाला बंदर उसकी ओर बढ़ा, बीच-बीच में मुड़कर बरगद के मुख्य तने से लटकती हुई दूसरी शाखाओं पर चढ़ रहे एक-दो बंदरों को धमकाता रहा। उसने पूरा पैकेट उठा लिया और अपनी शान का आनंद लेने के लिए और ऊपर चढ़ गया। लेकिन अचानक थैले का मुंह खुल गया और मूंगफली चारों ओर बिखर गईं। यह देखकर एक पतला सा नन्हा बंदर उत्साह में एक शाखा से दूसरी शाखा पर उछला, उसकी पकड़ छूट गई, उसका सिर पेड़ के तने से टकराया और वह जमीन पर गिर गया। वह चीखता हुआ भाग गया।

अपनी योजना के अनुसार नदी की ओर जाने के बजाय, लता अब उस उखड़ी हुई जड़ पर बैठ गई जहाँ बंदर अभी-अभी अपना मुसम्मी खा रहा था, और अपने हाथों में पकड़ी किताब में ध्यान लगाने की कोशिश करने लगी। लेकिन इससे उसके विचार नहीं भटके। वह उठी, फिर से ढलान पर बने रास्ते पर चढ़ी, और फिर पुस्तकालय की ओर चल पड़ी।

उसने विश्वविद्यालय पत्रिका के पिछले सत्र के अंक देखे और उन चीज़ों को बड़े चाव से पढ़ा जिन पर उसने पहले कभी नज़र भी नहीं डाली थी: क्रिकेट रिपोर्ट और टीम की तस्वीरों के नीचे लिखे नाम। रिपोर्ट लिखने वाले, जिन्होंने अपने हस्ताक्षर 'एस.के.' से किए थे, की लेखन शैली में एक जीवंत औपचारिकता झलकती थी। उदाहरण के लिए, उन्होंने अखिलेश और कबीर के बारे में नहीं, बल्कि श्री मित्तल और श्री दुर्रानी और उनकी सातवें विकेट की शानदार साझेदारी के बारे में लिखा था।

ऐसा प्रतीत होता था कि कबीर एक अच्छे गेंदबाज और एक ठीक-ठाक बल्लेबाज थे। हालाँकि उन्हें आमतौर पर बल्लेबाजी क्रम में निचले क्रम पर रखा जाता था, लेकिन उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी शांत रहकर कई मैचों को बचाया था। और वे निश्चित रूप से अविश्वसनीय रूप से तेज धावक रहे होंगे, क्योंकि उन्होंने कई बार तीन रन बनाए थे, और एक बार तो वास्तव में चार रन बनाए थे। एस.के. के शब्दों में:

इस रिपोर्टर ने ऐसा पहले कभी नहीं देखा। यह सच है कि सुबह की बारिश के कारण आउटफील्ड न केवल सुस्त थी, बल्कि बिल्कुल बेजान थी। यह निर्विवाद है कि हमारे विरोधियों के मैदान पर मिड-विकेट बाउंड्री सामान्य से कहीं अधिक दूर थी। यह भी निर्विवाद है कि उनके फील्डरों में भ्रम की स्थिति थी, और उनमें से एक गेंद का पीछा करते हुए फिसलकर गिर भी गया। लेकिन जो बात याद रखी जाएगी, वह ये नकारात्मक परिस्थितियाँ नहीं होंगी। ब्रह्मपुर के लोग आने वाले समय में दो तेज

धावकों की उस फुर्तीली दौड़ को याद रखेंगे, जो क्रीज से क्रीज होते हुए वापस क्रीज तक गए, और उनकी दौड़ पिच की गति से कहीं अधिक पिच के अनुरूप थी, और यहाँ तक कि पिच पर भी असामान्य थी। श्री दुर्रानी और श्री मित्तल ने चार रन बनाए, जहाँ चौका लगाना असंभव था, उस गेंद पर जो बाउंड्री पार भी नहीं की; और उनका एक गज से अधिक की दूरी से क्रीज तक पहुँच जाना इस बात का प्रमाण है कि उनका यह प्रयास कोई दिखावटी या अनुभवहीन जोखिम नहीं था।

लता ने उन मैचों को पढ़ा और फिर से जिया, जो हाल ही में घटे थे और प्रतिभागियों पर भी उनका गहरा प्रभाव था। जितना अधिक वह पढ़ती गई, उतना ही वह कबीर के प्रति प्रेम महसूस करने लगी - एक तो उस रूप में जैसा वह उसे जानती थी और दूसरा उस रूप में जैसा एस.के. की विवेकपूर्ण दृष्टि से उसके सामने प्रकट हुआ था।

उसने सोचा, श्री दुर्रानी, यह एक अलग ही दुनिया होनी चाहिए थी।

यदि कबीर के कहे अनुसार वह कस्बे में रहता था, तो संभवतः उसके पिता ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय में ही पढ़ाते थे। लता, जिसमें शोध करने की ऐसी प्रतिभा थी जिसका उसे स्वयं भी पता नहीं था, ने ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय के कैलेंडर की मोटी किताब देखी और 'कला संकाय: गणित विभाग' के अंतर्गत उसे वह जानकारी मिल गई जिसकी उसे तलाश थी। डॉ. दुर्रानी अपने विभाग के प्रमुख नहीं थे, लेकिन उनके नाम के आगे लिखे तीन विशेष अक्षर, जो यह दर्शाते थे कि वे रॉयल सोसाइटी के फेलो हैं, बीस 'प्रोफेसरों' से कहीं अधिक गौरवशाली थे।

और श्रीमती दुर्रानी? लता ने ये दो शब्द ज़ोर से कहे, उनका आकलन करते हुए। उनका क्या? कबीर के भाई और उस बहन का क्या, जो 'पिछले साल तक' उसके साथ थी? पिछले कुछ दिनों से उसका मन बार-बार इन रहस्यमय लोगों और उन कुछ अस्पष्ट टिप्पणियों की ओर लौट

रहा था। लेकिन अगर उसने श्री नवरोजी के घर के बाहर हुई खुशनुमा बातचीत के दौरान उनके बारे में सोचा भी होता—और उसने नहीं सोचा था—तो भी उस समय वह उनसे उनके बारे में पूछने की हिम्मत नहीं जुटा पाती। अब, ज़ाहिर है, बहुत देर हो चुकी थी। अगर वह अपने परिवार को खोना नहीं चाहती थी, तो उसे अपने जीवन में अचानक आई उस तेज़ धूप से खुद को बचाना होगा।

पुस्तकालय के बाहर उसने स्थिति का जायजा लेने की कोशिश की। उसे एहसास हुआ कि अब वह अगले शुक्रवार को ब्रह्मपुर साहित्यिक समाज की बैठक में शामिल नहीं हो पाएगी।

'लता: किधर?' उसने मन ही मन कहा, एक-दो पल के लिए हंसी और फिर उसकी आंखों में आंसू आ गए।

नहीं! उसने मन ही मन सोचा। कहीं तुम किसी और गैलाहैड को आकर्षित न कर लो। इस बात पर उसे एक बार फिर हंसी आ गई। लेकिन यह हंसी कुछ भी दूर नहीं कर पाई और उसे और भी बेचैन कर दिया।

3.12

अगले शनिवार की सुबह कबीर का सामना उसके घर से कुछ ही दूरी पर हुआ। वह टहलने निकली थी। कबीर अपनी साइकिल पर एक पेड़ से टिका हुआ था। वह देखने में किसी घुड़सवार जैसा लग रहा था। उसका चेहरा गंभीर था। उसे देखते ही उसकी जान निकल गई।

उससे बचना नामुमकिन था। वह साफ तौर पर उसका इंतजार कर रहा था। उसने हिम्मत दिखाई।

'हैलो कबीर।'

'हैलो। मुझे लगा था कि तुम कभी घर से बाहर नहीं निकलोगे।'

'आपको कैसे पता चला कि मैं कहाँ रहता हूँ?'

उन्होंने बिना मुस्कुराए कहा, 'मैंने जांच शुरू करवाई।'

'आपने किससे पूछा?' लता ने कहा, खुद द्वारा शुरू की गई पूछताछ के लिए थोड़ा दोषी महसूस करते हुए।
कबीर ने सिर हिलाते हुए कहा, 'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।'
लता ने चिंता भरी निगाहों से उसकी ओर देखा। 'क्या तुम्हारी परीक्षाएं खत्म हो गईं?' उसने पूछा, उसकी आवाज़ में थोड़ी कोमलता झलक रही थी।
'हां। कल।' उन्होंने इस बारे में और कुछ नहीं बताया।
लता ने उसकी साइकिल को उदास निगाहों से देखा। वह उससे कहना चाहती थी: 'तुमने मुझे क्यों नहीं बताया? किताबों की दुकान में हमारी पहली बातचीत होते ही तुमने मुझे अपने बारे में क्यों नहीं बताया, ताकि मैं यह पक्का कर लेती कि मेरे मन में तुम्हारे लिए कोई भावना नहीं है?' लेकिन वे कितनी बार मिले थे, और क्या वे इतने करीब थे कि इस तरह का सीधा, लगभग निराशा भरा सवाल पूछ सकें? क्या वह भी उसके लिए वही महसूस करता था जो वह उसके लिए करती थी? वह जानती थी कि वह उसे पसंद करता है। लेकिन इसमें और क्या जोड़ा जा सकता था?
उन्होंने उसके किसी भी संभावित प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा:
'तुम कल क्यों नहीं आए?'
'मैं नहीं कर सकी,' उसने बेबसी से कहा।
'अपने दुपट्टे के किनारे को मत मोड़ो, इससे वह सिकुड़ जाएगा।'
'ओह, माफ कीजिए।' लता ने हैरानी से अपने हाथों की ओर देखा।
'मैंने तुम्हारा इंतजार किया। मैं जल्दी आ गई थी। मैंने पूरा लेक्चर सुना। मैंने श्रीमती नवरोजी के सख्त छोटे केक भी खा लिए। तब तक मुझे अच्छी भूख लग चुकी थी।'
'अरे—मुझे पता ही नहीं था कि श्रीमती नवरोजी भी हैं,' लता ने तुरंत कहा। 'मैं उनकी कविता की प्रेरणा के बारे में सोच रही थी, उसका नाम

क्या था—"हॉन्टेड पैशन"? क्या आप कल्पना कर सकती हैं कि उस पर उनकी क्या प्रतिक्रिया रही होगी? वह कैसी दिखती होंगी?'

'लता—' कबीर ने कुछ दर्द भरे स्वर में कहा, 'अब तुम मुझसे यही पूछोगी कि प्रोफेसर मिश्रा का लेक्चर कैसा था। अच्छा था, पर मुझे परवाह नहीं। श्रीमती नवरोजी मोटी और गोरी हैं, पर मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। तुम क्यों नहीं आईं?'

लता ने धीमी आवाज़ में कहा, 'मैं नहीं कर सकी।' उसने सोचा कि अगर वह उसके सवालों का जवाब देने के लिए थोड़ा गुस्सा जुटा पाती तो सब कुछ बेहतर होता। लेकिन वह केवल निराशा ही जुटा पाई।

'तो फिर आइए और मेरे साथ विश्वविद्यालय के कॉफी हाउस में कॉफी पीजिए।'

'मैं नहीं कर सकती,' उसने कहा। उसने आश्चर्य से सिर हिलाया। 'मैं सचमुच नहीं कर सकती,' उसने दोहराया। 'कृपया मुझे जाने दो।'

उन्होंने कहा, 'मैं तुम्हें रोक नहीं रहा हूं।'

लता ने उसकी ओर देखा और आह भरी: 'हम यहाँ खड़े नहीं रह सकते।'

कबीर ने इन सभी 'नहीं कर सकते' और 'नहीं कर सकते' वाली बातों से प्रभावित होने से इनकार कर दिया।

'अच्छा, तो चलिए कहीं और खड़े हो जाते हैं। चलिए कर्ज़न पार्क में टहलने चलते हैं।'

'अरे नहीं,' लता ने कहा। आधी दुनिया कर्ज़न पार्क में घूम रही है।

'तो फिर कहाँ?'

वे नदी के किनारे रेत की ओर जाने वाली ढलान पर बरगद के पेड़ों की ओर चले। कबीर ने अपनी साइकिल को रास्ते के शीर्ष पर एक पेड़ से बांध दिया। बंदर कहीं नज़र नहीं आ रहे थे। टेढ़े-मेढ़े पेड़ों की मुश्किल से हिलती पत्तियों के बीच से उन्होंने गंगा नदी को देखा। चौड़ी भूरी नदी धूप

में चमक रही थी। दोनों में से किसी ने कुछ नहीं कहा। लता उठी हुई जड़ पर बैठ गई, और कबीर भी उसके पीछे बैठ गया।

'यह जगह कितनी खूबसूरत है,' उसने कहा।

कबीर ने सिर हिलाया। उसके चेहरे पर कड़वाहट थी। अगर वह कुछ बोलता, तो उसकी आवाज़ में वह कड़वाहट झलक जाती।

हालांकि मालती ने उसे उससे दूर रहने की सख्त चेतावनी दी थी, लता बस कुछ देर उसके साथ रहना चाहती थी। उसे लगा कि अगर वह अब उठकर चला जाए, तो वह उसे रोकने की कोशिश करेगी। भले ही वे बात न कर रहे हों, उसकी मौजूदा मनोदशा में भी, वह उसके साथ यहीं बैठना चाहती थी।

कबीर नदी की ओर देख रहा था। अचानक उत्साह से, मानो वह कुछ पल पहले की अपनी उदासी को भूल गया हो, उसने कहा: 'चलो नाव में सैर करने चलते हैं।'

लता को विंडरमेयर झील याद आई, जो हाई कोर्ट के पास थी, जहाँ कभी-कभी विभागीय पार्टियाँ होती थीं। दोस्त वहाँ नाव किराए पर लेते थे और साथ में नौका विहार करने जाते थे। शनिवार को वह झील विवाहित जोड़ों और उनके बच्चों से भरी रहती थी।

लता ने कहा, 'हर कोई विंडरमेयर जाता है। कोई न कोई हमें पहचान लेगा।'

'मेरा मतलब विंडरमेयर नहीं था। मेरा मतलब गंगा नदी के ऊपर की ओर था। मुझे हमेशा आश्चर्य होता है कि लोग उस बेकार झील में नौका विहार या सैर करने क्यों जाते हैं, जबकि दुनिया की सबसे महान नदी उनके दरवाजे पर ही है। हम गंगा नदी के ऊपर बरसात महल तक जाएंगे। रात में यह एक अद्भुत दृश्य होता है। हम एक नाविक को बुलाकर नाव को बीच धारा में स्थिर रखेंगे, और आप चांदनी में उसका प्रतिबिंब देखेंगे।' वह

उसकी ओर मुड़ा।
लता उसे देखना बर्दाश्त नहीं कर पा रही थी।
कबीर को समझ नहीं आ रहा था कि वह इतनी अलग-थलग और उदास क्यों थी। न ही उसे समझ आ रहा था कि वह अचानक उसकी नजरों से क्यों गिर गया था।
'तुम मुझसे इतनी दूर क्यों हो? क्या इसका मुझसे कोई लेना-देना है?' उसने पूछा। 'क्या मैंने कुछ कहा है?'
लता ने अपना सिर हिलाया।
'तो क्या मैंने कुछ किया है?'
पता नहीं क्यों, उसके मन में ये ख्याल आया कि वो असंभव चार रन कैसे बना पाएगा। उसने फिर से अपना सिर हिलाया।
'पांच साल में तुम यह सब भूल जाओगे,' उसने कहा।
कबीर ने घबराते हुए कहा, 'यह कैसा जवाब है?'
'यही बात तुमने मुझसे एक बार कही थी।'
'क्या मैंने?' कबीर आश्चर्यचकित रह गया।
"हां, बेंच पर, जब तुम मुझे बचा रहे थे। मैं सचमुच तुम्हारे साथ नहीं आ सकती, कबीर, मैं सचमुच नहीं आ सकती," लता ने अचानक तीखे स्वर में कहा। "तुम्हें यह बात भली-भांति समझनी चाहिए कि आधी रात को मुझे नाव में अपने साथ चलने के लिए कहना ठीक नहीं है।" आह, यही था वो पवित्र क्रोध।
कबीर भी उसी तरह जवाब देने ही वाले थे, लेकिन खुद को रोक लिया। वे रुके, फिर आश्चर्यजनक शांति से बोले:
मैं आपको ये नहीं बताऊँगी कि मैं हमारी एक मुलाकात से दूसरी मुलाकात तक ही जीती हूँ। आप शायद ये जानते ही होंगे। चांदनी रात में ही होना ज़रूरी नहीं। भोर भी ठीक है। अगर आपको दूसरे लोगों की चिंता

है, तो परेशान न हों। हमें कोई नहीं देखेगा; हमारे जान-पहचान वाले लोग भोर में नाव पर नहीं निकलते। अपने साथ एक दोस्त को ले आइए। चाहें तो दस दोस्तों को भी ले आइए। मैं बस आपको पानी में बरसात महल का प्रतिबिंब दिखाना चाहती थी। अगर आपका मूड मुझसे जुड़ा नहीं है, तो आपको ज़रूर आना चाहिए।

'भोर—' लता ने मन ही मन सोचते हुए कहा। 'भोर होने में कोई बुराई नहीं है।'

'नुकसान?' कबीर ने अविश्वास से उसकी ओर देखा। 'क्या तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं है?'

लता ने कुछ नहीं कहा। कबीर ने बोलना जारी रखा:

क्या तुम्हें मेरी बिल्कुल भी परवाह नहीं है?

वह चुप रही।

कबीर ने कहा, "सुनो, अगर कोई तुमसे पूछे तो कहना कि ये महज़ एक ज्ञानवर्धक यात्रा थी। दिन के उजाले में। एक दोस्त के साथ, या जितने चाहें उतने दोस्तों के साथ। मैं तुम्हें बरसात महल का इतिहास बताऊँगा। बैतर के नवाब साहब ने मुझे अपनी लाइब्रेरी इस्तेमाल करने की इजाज़त दी है, और मुझे उस जगह के बारे में कई चौंकाने वाली बातें पता चली हैं। तुम छात्र बनोगे। मैं तुम्हारा मार्गदर्शक बनूँगा: "एक युवा इतिहास का छात्र, मुझे अब उसका नाम याद नहीं आ रहा—वो हमारे साथ आया था और उसने ऐतिहासिक महत्व के स्थानों को दिखाया—काफी अच्छी व्याख्या की—सच में बहुत अच्छा लड़का था।""

लता ने उदास मुस्कान के साथ कहा।

कबीर को ऐसा महसूस हो रहा था मानो उसने किसी अदृश्य सुरक्षा कवच को लगभग भेद दिया हो, और उसने कहा:

'सोमवार की सुबह ठीक छह बजे मैं आप और आपके दोस्तों से यहीं इसी

जगह मिलूंगा। स्वेटर पहनकर आना; नदी की ठंडी हवा चलेगी।' यह कहते ही वह मखीजान की तुकबंदी में गाने लगा:

'ओह मिस लता, मुझसे यहीं मिलिए'
विंडरमेयर नदी के किनारों से बहुत दूर।
हम गंगा पर सरकते हुए आगे बढ़ेंगे—
उसके कई और वह अकेला।

लता हंस पड़ी।

कबीर ने कहा, 'कहो कि तुम मेरे साथ आओगे।'

'ठीक है,' लता ने सिर हिलाते हुए कहा, कबीर को जैसा लगा, वैसा अपने फैसले को आंशिक रूप से नकारने में नहीं, बल्कि अपनी कमजोरी पर आंशिक रूप से पछतावा जताने में।

3.13

लता नहीं चाहती थी कि उसके साथ दस दोस्त जाएं, और अगर वह चाहती भी तो आधी संख्या भी नहीं जुटा पाती। एक ही काफी थी। दुर्भाग्य से मालती ब्रह्मपुर छोड़कर जा चुकी थी। लता ने हेमा के घर जाकर उसे आने के लिए मनाने का फैसला किया। हेमा इस बात से बहुत उत्साहित हुई और तुरंत मान गई। यह बात रोमांटिक और रहस्यमयी लग रही थी। उसने कहा, 'मैं इसे गुप्त रखूंगी,' लेकिन उसने यह बात अपने अनगिनत चचेरे भाइयों में से एक को बताकर गलती कर दी, क्योंकि ऐसा करने पर उसे आजीवन शत्रुता का सामना करना पड़ता। उस चचेरे भाई ने भी इसे दूसरे चचेरे भाई को उतनी ही सख्ती से बता दिया। एक ही दिन में यह बात ताईजी के कानों तक पहुंच गई। ताईजी, जो आमतौर पर नरम दिल थीं, ने इस काम में गंभीर खतरे देखे। उन्हें नहीं पता था - और न ही हेमा को - कि कबीर मुसलमान थे। लेकिन सुबह छह बजे किसी लड़के के साथ नाव में जाना: यहां तक कि वह भी हिचकिचाईं। उन्होंने हेमा से कहा

कि उन्हें बाहर जाने की इजाजत नहीं दी जाएगी। हेमा रूठीं लेकिन मान गईं और रविवार शाम को लता को फोन किया। लता बहुत चिंता में बिस्तर पर गई, लेकिन मन बना लेने के कारण उसे नींद में कोई परेशानी नहीं हुई।

वह कबीर को दोबारा निराश नहीं कर सकती थी। उसने कल्पना की कि कबीर बरगद के झुरमुट में खड़ा है, ठंड से कांप रहा है, श्रीमती नौरोजी के छोटे-छोटे केक भी उसके पेट में नहीं हैं, और वह उसका इंतज़ार कर रहा है। समय बीतता जा रहा था और वह नहीं आ रही थी। अगली सुबह पौने छह बजे वह बिस्तर से उठी, जल्दी से कपड़े पहने, अपने पिता का पुराना ढीला-ढाला ग्रे स्वेटर पहना, अपनी माँ से कहा कि वह विश्वविद्यालय परिसर में लंबी सैर पर जा रही है, और कबीर से तय स्थान पर मिलने चली गई।

वह उसका इंतजार कर रहा था। उजाला हो चुका था और पूरा बाग जागते हुए पक्षियों की आवाज से गूंज रहा था।

उन्होंने प्रशंसा करते हुए कहा, 'आप उस स्वेटर में बहुत ही अलग दिख रहे हैं।'

'तुम पहले की तरह ही दिख रहे हो,' उसने भी प्रशंसा करते हुए कहा। 'क्या तुम लंबे समय से इंतजार कर रहे थे?'

उसने उसके सिर को हिलाकर रख दिया।

उसने उसे हेमा के साथ हुई गलतफहमी के बारे में बताया।

उन्होंने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि आप इसे इसलिए रद्द नहीं करेंगे क्योंकि आपके साथ कोई संरक्षक नहीं है।'

'नहीं,' लता ने कहा। वह मालती की तरह ही आत्मविश्वास से भरी हुई थी। आज सुबह उसे चीजों के बारे में सोचने का ज्यादा समय नहीं मिला था, और वह सोचना भी नहीं चाहती थी। शाम की चिंता के बावजूद,

उसका अंडाकार चेहरा तरोताजा और आकर्षक लग रहा था, और उसकी जीवंत आँखें अब नींद से भरी नहीं थीं।

वे नदी किनारे उतरे और कुछ दूर तक रेत पर चलते रहे, जब तक कि वे कुछ पत्थर की सीढ़ियों तक नहीं पहुँच गए। कुछ धोबी पानी में खड़े होकर सीढ़ियों पर कपड़े पीट रहे थे। इस जगह पर ढलान पर ऊपर की ओर जाने वाले एक छोटे रास्ते पर कपड़ों के गट्ठों से लदे कुछ ऊबे हुए छोटे गधे खड़े थे। एक धोबी का कुत्ता उन पर अनिश्चित, रुक-रुक कर भौंक रहा था।

लता ने कहा, 'क्या आपको यकीन है कि हमें नाव मिल जाएगी?'

'ओह, हाँ, हमेशा कोई न कोई मिल ही जाता है। मैंने यह काम कई बार किया है।'

लता के मन में दर्द की एक छोटी, तीखी लहर दौड़ गई, हालांकि कबीर का मतलब केवल इतना था कि उन्हें भोर में गंगा में सैर करना अच्छा लगता था।

‘अरे, एक दिख रही है,’ उसने कहा। एक नाविक अपनी नाव लेकर नदी के बीचोंबीच इधर-उधर खोजबीन कर रहा था। अप्रैल का महीना था, इसलिए नदी में पानी कम था और धारा धीमी थी। कबीर ने हाथ जोड़कर चिल्लाया:

‘जी हां, मल्लाह!’

हालांकि, नाविक ने उनकी ओर नाव चलाने का कोई प्रयास नहीं किया।

‘क्या बात है?’ उसने ब्रह्मपुरी लहजे वाली हिंदी में चिल्लाकर कहा; उसने ‘है’ क्रिया पर असामान्य रूप से जोर दिया।

कबीर ने कहा, 'क्या आप हमें उस स्थान तक ले जा सकते हैं जहाँ से हम बरसात महल और उसका प्रतिबिंब देख सकें?'

'ज़रूर!'

'कितना?'
‘दो रुपये।’ वह अब अपनी पुरानी, चपटी तल वाली नाव में किनारे की ओर बढ़ रहा था।
कबीर चिढ़ गया। उसने गुस्से से कहा, 'इतने सवाल पूछने में तुम्हें शर्म नहीं आती?'
‘साहिब, सब लोग यही शुल्क लेते हैं।’
कबीर ने कहा, 'मैं कोई बाहरी व्यक्ति नहीं हूं जिसे तुम धोखा दे सको।'
‘ओह,’ लता ने कहा, ‘कृपया छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा मत करो—’
वह अचानक रुक गई; संभवतः कबीर भुगतान करने पर जोर देगा, और उसकी तरह उसके पास भी शायद ज्यादा पैसे नहीं होंगे।
कबीर क्रोधित होकर चिल्लाता रहा, घाट की सीढ़ियों पर कपड़ों के गिरने की तेज आवाज के बीच भी उसकी आवाज सुनाई देने की कोशिश कर रही थी:
हम इस दुनिया में खाली हाथ आते हैं और खाली हाथ ही चले जाते हैं। क्या तुम्हें सुबह-सुबह इतना झूठ बोलना जरूरी है? क्या तुम जाते समय ये पैसे अपने साथ ले जाओगे?
नाविक, संभवतः दार्शनिक ढंग से संबोधित किए जाने पर उत्सुक होकर बोला:
‘साहिब, नीचे आइए। आपको जो उचित लगे, मैं मान लूँगा।’ उन्होंने कबीर को कुछ सौ गज दूर एक ऐसी जगह की ओर इशारा किया जहाँ नाव किनारे के करीब आ सकती थी। जब तक लता और कबीर उस जगह पहुँचे, तब तक वह नदी में आगे जा चुके थे।
लता ने कहा, 'वह चला गया है। शायद हमें कोई दूसरा मिल जाए।'
कबीर ने अपना सिर हिलाया। उसने कहा:
हमने बात कर ली है। वह वापस आ जाएगा।

नाविक ने नदी की विपरीत दिशा में और दूर किनारे तक नाव चलाने के बाद, किनारे से कुछ लिया और वापस नाव चलाकर लौट आया।
उन्होंने उनसे पूछा, 'क्या आप तैरना जानते हैं?'
‘हां,’ कबीर ने कहा और लता की ओर मुड़ गया।
‘नहीं,’ लता ने कहा, ‘मैं नहीं करती।’
कबीर हैरान दिख रहा था।
लता ने बताया, 'मैंने कभी सीखा ही नहीं। दार्जिलिंग और मसूरी में।'
कबीर ने नाविक से कहा, “मुझे तुम्हारी नाव चलाने की कला पर पूरा भरोसा है। नाविक भूरे रंग का, दाढ़ीदार चेहरे वाला आदमी था, जिसने कमीज और लुंगी पहनी हुई थी और सीने को ऊनी बुंदी से ढका हुआ था। अगर कोई दुर्घटना हो जाए, तो तुम खुद संभाल लेना, मैं नाव को संभाल लूंगा।”
‘ठीक है,’ नाविक ने कहा।
‘अब, कितना?’
‘ठीक है, जो भी तुम चाहो—’
कबीर ने कहा, 'नहीं, चलो कीमत तय कर लेते हैं। मैंने नाविकों के साथ कभी कोई और तरीका नहीं अपनाया।'
‘ठीक है,’ नाविक ने कहा, ‘आपके अनुसार सही क्या है?’
एक रुपया चार आना।
'अच्छा।'
कबीर नाव पर चढ़ा और लता की ओर हाथ बढ़ाया। उसने मजबूती से लता को नाव पर खींच लिया। लता का चेहरा लाल हो गया था और वह बहुत खुश थी। एक पल के लिए उसने उसका हाथ नहीं छोड़ा। फिर, जब उसे लगा कि लता अपना हाथ छुड़ाने वाली है, तो उसने उसे छोड़ दिया।
नदी पर अब भी हल्की धुंध छाई हुई थी। कबीर और लता नाविक के

सामने बैठे थे, जो चप्पू चला रहा था। वे धोबी घाट से दो सौ गज से अधिक दूर थे, लेकिन कपड़ों के पीटने की आवाज़, हालांकि धीमी थी, फिर भी सुनाई दे रही थी। नदी के किनारे की बारीकियाँ धुंध में गायब हो गईं।

'आह,' कबीर ने कहा। 'नदी के किनारे धुंध से घिरे इस नजारे में होना कितना अद्भुत है—और साल के इस समय ऐसा नजारा बहुत कम देखने को मिलता है। इससे मुझे शिमला में बिताई वो छुट्टियाँ याद आ गईं। दुनिया की सारी परेशानियाँ दूर हो गईं। ऐसा लगा जैसे हम एक अलग ही परिवार बन गए हों।'

लता ने पूछा, 'क्या आप हर गर्मी में हिल स्टेशन जाते हैं?' हालाँकि उसने मसूरी के सेंट सोफिया स्कूल में पढ़ाई की थी, लेकिन अब जब वे चाहें तब पहाड़ों में घर खरीदने का खर्च उठाना उनके लिए संभव नहीं था।

'हाँ,' कबीर ने कहा। 'मेरे पिताजी इस पर ज़ोर देते हैं। हम आमतौर पर हर साल एक अलग पहाड़ी इलाके में जाते हैं—अल्मोड़ा, नैनीताल, रानीखेत, मसूरी, शिमला, यहाँ तक कि दार्जिलिंग भी। उनका कहना है कि ताज़ी हवा उनकी सोच को खोल देती है, चाहे इसका जो भी मतलब हो। एक बार जब वे पहाड़ों से नीचे आए, तो उन्होंने कहा कि ज़रथुस्त्र की तरह उन्होंने छह हफ़्तों में पहाड़ों पर इतना गणितीय ज्ञान प्राप्त कर लिया है जो जीवन भर के लिए काफ़ी है। लेकिन ज़ाहिर है, हम अगले साल हमेशा की तरह पहाड़ों पर चले गए।'

'और आप?' लता ने पूछा। 'आपका क्या हाल है?'

कबीर ने कहा, 'मेरा क्या?' वह किसी याद से परेशान लग रहा था।

'क्या आपको पहाड़ियाँ पसंद हैं? क्या आप हमेशा की तरह इस साल भी जाएँगे?'

कबीर ने कहा, 'मुझे इस साल के बारे में पता नहीं। मुझे वहां ऊपर रहना

अच्छा लगता है। यह तैरने जैसा है।'
'तैराकी?' लता ने पानी में हाथ घुमाते हुए पूछा।
कबीर के मन में अचानक एक विचार आया। उन्होंने नाविक से पूछा, "धोबी घाट के पास से बरसात महल तक स्थानीय लोगों को ले जाने के लिए आप कितना शुल्क लेते हैं?"
नाविक ने कहा, 'चार आने प्रति व्यक्ति।'
'तो फिर,' कबीर ने कहा, 'हमें आपको ज़्यादा से ज़्यादा एक रुपया ही देना चाहिए, क्योंकि आपकी आधी यात्रा नदी के बहाव की दिशा में है। और मैं आपको एक रुपया और चार आना दे रहा हूँ। तो यह अनुचित नहीं है।'
नाविक ने आश्चर्य से कहा, 'मुझे कोई शिकायत नहीं है।'
कोहरा छंट चुका था, और अब उनके सामने नदी के किनारे ब्रह्मपुर किले की भव्य भूरी इमारत खड़ी थी, जिसके सामने रेत का एक विशाल मैदान फैला हुआ था। उसके पास ही, और रेत की ओर नीचे जाती हुई, एक विशाल मिट्टी की सीढ़ी थी, और उसके ऊपर एक बड़ा पीपल का पेड़ था, जिसकी पत्तियाँ सुबह की हवा में झिलमिला रही थीं।
लता ने पूछा, 'तैराकी से तुम्हारा क्या मतलब था?'
'हाँ,' कबीर ने कहा। 'मेरा मतलब था कि आप बिल्कुल अलग ही माहौल में होते हैं। आपकी हर हरकत अलग होती है—और नतीजतन, आपके सारे विचार भी। एक बार जब मैं गुलमर्ग में स्लेज पर फिसल रहा था, मुझे याद है कि मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं है। बस स्वच्छ, शुद्ध हवा, बर्फ की ऊँची-ऊँची चोटियाँ और तेज़ गति का यह रोमांच ही मौजूद था। सपाट, नीरस मैदान आपको फिर से आपके असली रूप में ले आते हैं। सिवाय, शायद, जैसे कि अभी नदी पर।'
'क्या तुम्हें संगीत पसंद है?' लता ने पूछा।

यह प्रश्न जितना कबीर से पूछा गया था, उतना ही स्वयं उनसे भी पूछा गया था।

'हम्म, हाँ, मुझे लगता है, एक तरह से,' कबीर ने सोचा। 'नहीं, वास्तव में नहीं,' उसने फैसला किया।

वह शारीरिक गतिविधि में बदलाव के कारण मन में आए परिवर्तन के बारे में सोच रहा था।

'लेकिन,' लता ने अपने विचारों को आगे बढ़ाते हुए कहा, 'संगीत मुझ पर सचमुच ऐसा ही असर करता है। तानपुरा बजाने मात्र से ही, भले ही मैं एक भी सुर न गाऊं, मैं समाधि जैसी अवस्था में पहुंच जाती हूं। कभी-कभी मैं पंद्रह मिनट तक ऐसा करती रहती हूं, फिर कहीं जाकर होश में आती हूं। जब चीजें मेरे लिए असहनीय हो जाती हैं, तो सबसे पहले मैं संगीत का सहारा लेती हूं। और जब मैं सोचती हूं कि मैंने पिछले साल ही मालती के प्रभाव में गाना शुरू किया था, तो मुझे एहसास होता है कि मैं कितनी भाग्यशाली रही हूं। क्या आप जानते हैं कि मेरी मां को संगीत की बिल्कुल भी समझ नहीं है, कि जब मैं बच्ची थी और वो मुझे लोरी सुनाती थीं, तो मैं उनसे विनती करती थी कि वो रुक जाएं और मेरी आया गाएं?'

कबीर मुस्कुरा रहा था। उसने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा और उसने विरोध करने के बजाय उसे रहने दिया। मानो वह हाथ सही जगह पर था।

'तुम कुछ क्यों नहीं कह रहे हो?' उसने कहा।

मुझे बस यही उम्मीद थी कि आप बोलना जारी रखेंगी। आपको अपने बारे में बात करते हुए सुनना असामान्य है। कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं आपके बारे में कुछ भी नहीं जानती। उदाहरण के लिए, यह मलाती कौन है?

'सबसे पहली बात?' लता ने मलाती के साथ हुई बातचीत के एक अंश को याद करते हुए कहा। 'आपने जितनी भी पूछताछ शुरू की है, उसके

बाद भी?'
'जी हां,' कबीर ने कहा। 'अपने बारे में कुछ बताइए।'
'यह अनुरोध ज्यादा उपयोगी नहीं है। कृपया अधिक स्पष्ट बताएं। मुझे कहां से शुरू करना चाहिए?'
'कहीं से भी। शुरुआत से शुरू करो, अंत तक चलते रहो और फिर रुक जाओ।'
लता ने कहा, 'अच्छा, नाश्ते से पहले का समय है, इसलिए आपको कम से कम छह असंभव बातें सुननी होंगी।'
'अच्छा,' कबीर ने हंसते हुए कहा।
'सिवाय इसके कि मेरे जीवन में शायद छह असंभव चीजें नहीं हैं। यह काफी नीरस है।'
कबीर ने कहा, 'परिवार से शुरुआत करो।'
लता अपने परिवार के बारे में बात करने लगीं—उनके प्यारे पिता, जो आज भी उन पर एक सुरक्षात्मक आभा बनाए हुए थे, खासकर उनके भूरे स्वेटर के रूप में; उनकी माँ, जो गीता पाठ, भावुक आँसुओं और स्नेहपूर्ण वाचालता के लिए जानी जाती थीं; कलकत्ता में अरुण, मीनाक्षी, अपर्णा और वरुण; और निश्चित रूप से सविता, प्राण और होने वाला बच्चा। वह खुलकर बातें करती रहीं, यहाँ तक कि कबीर के थोड़ा करीब भी आ गईं। हैरानी की बात यह थी कि जो कभी-कभी खुद पर इतना संदेह करती थीं, उन्हें कबीर के स्नेह पर ज़रा भी संदेह नहीं था।
किला और रेत पीछे छूट गए थे, श्मशान घाट और पुराने ब्रह्मपुर के मंदिरों की झलक तथा आलमगिरी मस्जिद की मीनारें भी दिखाई दी थीं। अब नदी के एक हल्के मोड़ पर आते ही उन्हें बरसात महल की नाजुक सफेद इमारत दिखाई दी, पहले एक कोण से, और फिर धीरे-धीरे पूरा दृश्य उनके सामने आ गया।

पानी साफ तो नहीं था, लेकिन एकदम शांत था और उसकी सतह धुंधले शीशे जैसी थी। नाविक चप्पू चलाते हुए नदी के बीचोंबीच आ गया। फिर उसने नाव को बरसात महल की समरूपता की सीधी रेखा में बिल्कुल बीचोंबीच खड़ा किया और किनारे से लाई हुई लंबी छड़ी को नदी के मध्य में गहराई तक गाड़ दिया। छड़ी तल से टकराई और नाव थम गई।

नाविक ने कहा, 'अब बैठो और पांच मिनट देखो। यह ऐसा नजारा है जिसे तुम जीवन भर नहीं भूलोगे।'

सचमुच ऐसा ही था, और वे दोनों इसे कभी नहीं भूल सकते थे। बरसात महल, जो राजनीतिज्ञता और षड्यंत्र, प्रेम और अनैतिक भोग-विलास, वैभव और धीरे-धीरे पतन का प्रतीक था, एक अमूर्त और शाश्वत सौंदर्य में परिवर्तित हो गया था। नदी की विशाल दीवार के ऊपर वह उठ खड़ा था, पानी में उसका प्रतिबिंब लगभग पूर्ण, लगभग लहर रहित था। वे नदी के ऐसे हिस्से में थे जहाँ पुराने शहर की आवाज़ें भी मंद पड़ गई थीं। कुछ मिनटों तक वे बिल्कुल चुप रहे।

3.14

कुछ देर बाद, बिना किसी के कहे, नाविक ने नदी की तलहटी में कीचड़ से अपना डंडा बाहर निकाल लिया। वह बरसात महल के पास से होते हुए नदी के विपरीत दिशा में आगे बढ़ता रहा। नदी थोड़ी संकरी हो गई क्योंकि सामने वाले किनारे से रेत का एक टीला लगभग मध्य तक निकला हुआ था। एक जूता कारखाने, एक चमड़ा कारखाने और एक आटा चक्की की चिमनियां दिखाई देने लगीं। कबीर ने अंगड़ाई ली और जम्हाई लेते हुए लता का कंधा छोड़ दिया।

‘अब मैं मुड़ जाऊंगा और हम धीरे-धीरे इसके पास से गुजर जाएंगे,’ नाविक ने कहा।

कबीर ने सिर हिलाया।

‘अब तो मेरे लिए आसान हिस्सा शुरू होता है,’ नाविक ने नाव को घुमाते हुए कहा। ‘अच्छा है कि अभी ज्यादा गर्मी नहीं है।’ चप्पू से बीच-बीच में हल्के झटके देते हुए, उसने नाव को धारा के साथ बहने दिया।

बरसात महल से पानी की ओर खड़ी खाई की ओर इशारा करते हुए उन्होंने हंसते हुए कहा, “वहाँ से बहुत से लोग आत्महत्या करते हैं। पिछले हफ्ते ही एक आत्महत्या हुई थी। गर्मी जितनी बढ़ती है, लोग उतने ही पागल हो जाते हैं। पागल लोग, पागल लोग।” उन्होंने किनारे की ओर इशारा किया। स्पष्ट रूप से, उनके मन में यही था कि जो लोग हमेशा ज़मीन पर ही रहते हैं, वे कभी भी पूरी तरह से समझदार नहीं हो सकते।

बरसात महल के पास से दोबारा गुजरते समय कबीर ने अपनी जेब से 'ब्रह्मपुर के लिए हीरा गाइड' नामक एक छोटी पुस्तिका निकाली। उसने लता को निम्नलिखित पढ़कर सुनाया:

हालाँकि फातिमा जान नवाब खुशवक्त की केवल तीसरी पत्नी थीं, फिर भी उन्होंने उन्हीं के लिए बरसात महल की भव्य इमारत बनवाई थी। उनकी नारीत्व, गरिमा और बुद्धिमत्ता इतनी प्रभावशाली थी कि नवाब खुशवक्त का सारा स्नेह शीघ्र ही अपनी नई दुल्हन पर आ गया। उनके अगाध प्रेम ने उन्हें महलों और दरबार दोनों में अटूट साथी बना दिया। उन्होंने उन्हीं के लिए बरसात महल का निर्माण करवाया, जो संगमरमर की नक्काशी का एक अद्भुत नमूना है, उनके जीवन और सुख-सुविधाओं के लिए।

एक बार वह भी उनके साथ अभियान में गई थीं। उस समय उन्होंने एक कमजोर बेटे को जन्म दिया और दुर्भाग्यवश, शरीर में किसी गड़बड़ी के कारण, उन्होंने अपने स्वामी को निराशा भरी निगाहों से देखा। यह देखकर नवाब को गहरा सदमा लगा। उनका हृदय दुःख से भर गया और चेहरा पीला पड़ गया। . . . हाय! 23 अप्रैल, 1735 को फातिमा जान ने अपने

दुखी प्रेमी के सामने मात्र 33 वर्ष की आयु में अपनी आँखें थमा लीं।
'लेकिन क्या यह सब सच है?' लता ने हंसते हुए कहा।
कबीर ने कहा, 'हर एक शब्द पर भरोसा रखो। अपने इतिहासकार पर विश्वास करो।' उन्होंने आगे कहा:
नवाब खुशवाक्त इतने गहरे शोक में डूबे हुए थे कि उनका मन व्याकुल हो गया था; यहाँ तक कि वे मरने को भी तैयार थे, जो कि संभव नहीं था। तमाम कोशिशों के बावजूद वे लंबे समय तक उन्हें भुला नहीं पाए। हर शुक्रवार को वे पैदल चलकर अपनी प्रियतम की कब्र पर जाते और स्वयं उनकी अस्थियों के अंतिम विश्राम स्थल पर फातिहा पढ़ते थे।
लता ने कहा, 'कृपया रुक जाइए। आप बरसात महल को मेरे लिए बर्बाद कर देंगे।' लेकिन कबीर निर्दयतापूर्वक पढ़ते रहे:
उनकी मृत्यु के बाद महल बदहाल और उदास हो गया। सुनहरी और चांदी जैसी मछलियों से भरे तालाब अब नवाब के मनोरंजन का साधन नहीं रहे। वह विलासितापूर्ण और व्यभिचारी हो गया। उसने एक अंधेरा कमरा बनवाया जहाँ हरम की अवज्ञाकारी महिलाओं को फाँसी दी जाती थी और उनके शव नदी में बहा दिए जाते थे। इससे उसके व्यक्तित्व पर कलंक लग गया। उन दिनों ये सजाएँ लिंग भेद के बिना आम थीं। नवाब के आदेशों के सिवा कोई कानून नहीं था और सजाएँ कठोर और क्रूर होती थीं।
फव्वारे अभी भी सुगंधित पानी से भरे हुए थे और फर्श पर पानी लगातार बह रहा था। महल किसी स्वर्ग से कम नहीं था, जहाँ सुंदरता और आकर्षण का कोई सामर्थ्य नहीं था। लेकिन अपने जीवन के एकमात्र क्षण के बीत जाने के बाद, उनके लिए उन अनगिनत सुंदर महिलाओं का क्या महत्व था? 14 जनवरी को उन्होंने एफ. जान की तस्वीर को टकटकी लगाकर देखते हुए अंतिम सांस ली।

लता ने पूछा, 'उनकी मृत्यु किस वर्ष हुई थी?'
'मेरा मानना है कि ब्रह्मपुर डायमंड गाइड इस विषय पर मौन है, लेकिन मैं स्वयं तिथि बता सकता हूँ। यह 1766 थी। और न ही यह हमें बताता है कि इसे शुरू में बरसात महल क्यों कहा जाता था।'
'ऐसा क्यों था?' लता ने पूछा। 'क्या इसलिए कि पानी लगातार बेरोक-टोक बह रहा था?' उसने अनुमान लगाया।
कबीर ने कहा, 'दरअसल इसका संबंध कवि मस्त से है। इसे पहले फातिमा महल कहा जाता था। मस्त ने वहां अपने एक पाठ के दौरान खुशवाक्त के निरंतर आंसुओं और मानसून की बारिश के बीच एक काव्यात्मक तुलना की थी। उस विशेष शेर वाली ग़ज़ल लोकप्रिय हो गई।'
'आह,' लता ने कहा और अपनी आँखें बंद कर लीं।
कबीर ने आगे कहा, "इसके अलावा, नवाब के उत्तराधिकारी—जिनमें उनका कमज़ोर बेटा भी शामिल था—मानसून के दौरान फातिमा महल के मनोरंजन स्थलों में अन्य किसी भी समय की तुलना में अधिक बार देखे जाते थे। बारिश के दौरान मनोरंजन को छोड़कर लगभग सभी काम रुक जाते थे। और इसलिए इसका लोकप्रिय नाम बदल गया।"
'और अकबर और बीरबल के बारे में वह दूसरी कहानी क्या थी जो आप मुझे बताने वाले थे?' लता ने पूछा।
कबीर ने पूछा, 'अकबर और बीरबल के बारे में?'
'आज नहीं; कॉन्सर्ट में।'
'ओह,' कबीर ने कहा। 'क्या मैंने ऐसा कहा था? लेकिन इतनी सारी कहानियां हैं। मैं किस कहानी की बात कर रहा था? मेरा मतलब है, संदर्भ क्या था?'
लता ने सोचा, ऐसा कैसे हो सकता है कि उसे अपनी ये बातें याद न हों जो मुझे इतनी अच्छी तरह याद हैं?

मुझे लगता है कि यह मेरे और मेरे दोस्तों के बारे में था जो आपको जंगल में रहने वाले बब्बलर पक्षियों की याद दिलाते थे।

'ओह, हाँ।' कबीर का चेहरा याद आते ही चमक उठा। 'बात कुछ इस तरह है। अकबर ऊब गया था, इसलिए उसने अपने दरबारियों से कुछ सचमुच चौंकाने वाली बात बताने को कहा—लेकिन ऐसी बात नहीं जो उन्होंने सुनी हो, बल्कि ऐसी बात जो उन्होंने खुद देखी हो। सबसे चौंकाने वाली कहानी सुनाने वाले को इनाम मिलेगा। उसके सभी दरबारी और मंत्री अलग-अलग और चौंकाने वाली बातें लेकर आए—सब वही आम बातें। एक ने कहा कि उसने एक हाथी को चींटी के सामने डर से चिंघाड़ते देखा था। दूसरे ने कहा कि उसने एक जहाज को आकाश में उड़ते देखा था। तीसरे ने कहा कि वह एक ऐसे शेख से मिला था जो धरती में दबा खजाना देख सकता था। चौथे ने कहा कि उसने तीन सिर वाली भैंस देखी थी। और इसी तरह कई और कहानियां। जब बीरबल की बारी आई, तो उसने कुछ नहीं कहा। आखिर में, उसने माना कि उस दिन दरबार जाते समय उसने कुछ असामान्य देखा था: लगभग पचास औरतें एक पेड़ के नीचे चुपचाप बैठी थीं। और सबने तुरंत तय कर लिया कि इनाम बीरबल को मिलना चाहिए।' कबीर ने सिर पीछे करके हँस दिया।

लता को यह कहानी पसंद नहीं आई और वह उसे यह बताने ही वाली थी कि तभी उसे श्रीमती रूपा मेहरा की याद आ गई, जिनके लिए दुख, खुशी, बीमारी या स्वास्थ्य, चाहे रेलगाड़ी के डिब्बे में हों, संगीत कार्यक्रम में हों या कहीं भी हों, कुछ मिनटों के लिए भी चुप रहना असंभव था।

लता ने पूछा, 'तुम मुझे हमेशा मेरी मां की याद क्यों दिलाते हो?'

'क्या मैंने ऐसा किया?' कबीर ने कहा। 'मेरा ऐसा करने का इरादा नहीं था।' और उसने फिर से अपना हाथ उसके कंधे पर रख दिया।

वह चुप हो गया; उसके विचार अपने परिवार की ओर चले गए थे। लता

भी चुप थी; उसे अभी भी समझ नहीं आ रहा था कि परीक्षा में उसे घबराहट क्यों हुई थी, और यह बात उसे फिर से परेशान कर रही थी।

ब्रह्मपुर का तट फिर से पीछे छूट गया, लेकिन अब पानी के किनारे पर अधिक हलचल थी। नाविक ने किनारे के करीब रहना चुना था। उन्हें अन्य नावों के चप्पू की आवाज़, नहाने वालों के छपछपाने, गला साफ करने, खांसने और नाक पोंछने की आवाज़, कौवों की कांव-कांव, लाउडस्पीकर पर शास्त्रों के पाठ और रेत के पार मंदिर की घंटियों और शंखों की आवाज़ अधिक स्पष्ट रूप से सुनाई दे रही थी।

इस बिंदु पर नदी पूर्व दिशा की ओर बह रही थी, और उगते सूरज की रोशनी विश्वविद्यालय से बहुत दूर तक उसकी सतह पर प्रतिबिंबित हो रही थी। पानी में गेंदे के फूलों की एक माला तैर रही थी। श्मशान घाट पर चिताएं जल रही थीं। किले से जुलूस के आदेश सुनाई दे रहे थे। जैसे-जैसे वे नदी में आगे बढ़ते गए, उन्हें एक बार फिर धोबियों की लगातार आवाजें और उनके गधों की कभी-कभार सुनाई देने वाली रेंकने की आवाज सुनाई दी।

नाव सीढ़ियों तक पहुँच गई। कबीर ने नाविक को दो रुपये दिए।

उन्होंने गरिमापूर्ण ढंग से इसे अस्वीकार कर दिया।

'हमने पहले ही समझौता कर लिया था। अगली बार तुम मेरा ध्यान रखना,' उसने कहा।

जब नाव रुकी तो लता को अफ़सोस हुआ। उसे कबीर की तैराकी या स्लेजिंग के बारे में कही बातें याद आईं—एक नए तत्व, एक अलग शारीरिक गति से मिलने वाली सहजता के बारे में। उसे लगा कि नाव की गति, दुनिया से उनकी आज़ादी और दूरी का एहसास जल्द ही खत्म हो जाएगा। लेकिन जब कबीर ने उसे किनारे तक पहुँचाया, तो उसने अपना हाथ नहीं छुड़ाया और वे नदी के किनारे-किनारे बरगद के झुरमुट और छोटे

मंदिर की ओर हाथ में हाथ डालकर चलने लगे। उन्होंने ज़्यादा कुछ नहीं कहा।

चप्पलों में ऊपर चढ़ना नीचे उतरने से ज़्यादा मुश्किल था, लेकिन उसने उसे ऊपर खींचने में मदद की। उसने सोचा, वह भले ही कोमल हो, पर निश्चित रूप से बलवान भी है। उसे आश्चर्य हुआ कि उन्होंने विश्वविद्यालय, अपनी परीक्षाओं, क्रिकेट, शिक्षकों, योजनाओं और चट्टानों के ठीक ऊपर की दुनिया के बारे में शायद ही कोई बात की थी। उसने हेमा के ताइजी अभ्यास के प्रति चिंता को समझा।

वे जुड़वां बरगद के पेड़ों की मुड़ी हुई जड़ों पर बैठ गए। लता को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। उसने खुद को कहते हुए सुना:

‘कबीर, क्या आपको राजनीति में दिलचस्पी है?’

उसने अप्रत्याशित प्रश्न सुनकर आश्चर्य से उसकी ओर देखा, फिर बस 'नहीं' कहा और उसे चूम लिया।

उसका दिल पूरी तरह से बदल गया। उसने बिना कुछ सोचे-समझे उसके चुंबन का जवाब दिया—लेकिन खुद पर आश्चर्य के साथ—कि वह इतनी बेपरवाह और खुश कैसे हो सकती है।

चुंबन समाप्त होने के बाद, लता अचानक फिर से सोचने लगी, और पहले से कहीं अधिक उग्रता से।

कबीर ने कहा, 'मैं तुमसे प्यार करता हूँ।'

जब वह चुप रही, तो उसने कहा:

‘तो क्या तुम कुछ नहीं कहोगे?’

‘ओह, मैं भी तुमसे प्यार करती हूँ,’ लता ने कहा, एक ऐसी बात कहते हुए जो उसके लिए पूरी तरह से स्पष्ट थी और इसलिए उसके लिए भी स्पष्ट होनी चाहिए थी। ‘लेकिन ऐसा कहने का कोई फायदा नहीं है, इसलिए इसे वापस ले लो।’

कबीर ने बोलना शुरू किया। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, लता ने कहा:
‘कबीर, तुमने मुझे अपना अंतिम नाम क्यों नहीं बताया?’
‘यह दुर्रानी है।’
‘मुझे पता है।’ उसके इस सहजता से कहे गए शब्दों को सुनकर दुनिया भर की चिंताएँ फिर से उसके सिर पर आ गईं।
‘तुम्हें पता है?’ कबीर हैरान रह गया। ‘लेकिन मुझे याद है कि कॉन्सर्ट में तुमने मुझसे अपना सरनेम बताने से इनकार कर दिया था।’
लता मुस्कुराई; उसकी याददाश्त काफी चुनिंदा थी। फिर वह दोबारा गंभीर हो गई।
‘तुम मुसलमान हो,’ उसने धीमी आवाज़ में कहा।
'जी हां, लेकिन यह सब आपके लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों है? क्या यही कारण है कि आप कभी-कभी इतने अजीब और दूर-दूर से रहते हैं?' उनकी आंखों में एक शरारती चमक थी।
‘महत्वपूर्ण?’ अब लता के आश्चर्यचकित होने की बारी थी। ‘यह बहुत महत्वपूर्ण है। क्या आप नहीं जानते कि मेरे परिवार में इसका क्या महत्व है?’ लता सोचने लगी कि क्या वह जानबूझकर कठिनाइयों को अनदेखा कर रहा था, या क्या वह सचमुच मानता था कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता?
कबीर ने उसका हाथ पकड़कर कहा, 'तुम मुझसे प्यार करती हो। और मैं तुमसे प्यार करता हूं। बस यही मायने रखता है।'
लता ने ज़िद करते हुए कहा: 'क्या तुम्हारे पिता को कोई परवाह नहीं है?'
नहीं। कई मुस्लिम परिवारों के विपरीत, मुझे लगता है कि विभाजन के दौरान और उससे पहले भी हमें सुरक्षा मिली थी। वह अपने मापदंडों और सीमाओं के अलावा शायद ही किसी और चीज़ के बारे में सोचता है। और

समीकरण वही रहता है चाहे उसे लाल स्याही से लिखा जाए या हरी स्याही से। मुझे नहीं लगता कि हमें इस बारे में बात करने की ज़रूरत है।
लता ने अपनी ग्रे स्वेटर कमर पर बाँधी और वे रास्ते के शीर्ष तक चले गए। उन्होंने तीन दिन बाद उसी जगह और उसी समय फिर से मिलने का वादा किया। कबीर अपने पिता के लिए कुछ काम करने में कुछ दिनों के लिए व्यस्त रहने वाला था। उसने अपनी साइकिल की चेन खोली और चारों ओर जल्दी से देखते हुए उसे फिर से चूमा। जब वह साइकिल चलाने ही वाला था, तब उसने उससे कहा:
क्या तुमने किसी और को चूमा है?
'यह क्या था?' वह मुस्कुराता हुआ सा लग रहा था।
वह उसके चेहरे की ओर देख रही थी; उसने सवाल नहीं दोहराया।
'क्या तुम्हारा मतलब कभी से है?' उसने पूछा। 'नहीं। मुझे नहीं लगता। गंभीरता से तो नहीं।'
और वह घोड़े पर सवार होकर चला गया।

3.15

उसी दिन बाद में, श्रीमती रूपा मेहरा अपनी बेटियों के साथ बैठी थीं और नन्हे बच्चे के लिए एक छोटे से रुमाल पर गुलाब की कढ़ाई कर रही थीं। सफेद रंग को लैंगिक रूप से तटस्थ रंग माना जाता है, लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा को सफेद पर सफेद रंग कुछ फीका लगता था, इसलिए उन्होंने पीले रंग को चुना। अपनी प्यारी पोती अपर्णा के बाद, वे एक पोते की कामना करती थीं और उन्होंने भविष्यवाणी भी की थी। वे रुमाल पर नीले रंग की कढ़ाई कर सकती थीं, लेकिन ऐसा करने से गर्भ में पल रहे बच्चे का लिंग निश्चित रूप से बदल जाता।
केंद्रीय संचार मंत्री रफी अहमद किदवई ने डाक शुल्क बढ़ाने की घोषणा की थी। श्रीमती रूपा मेहरा का लगभग एक तिहाई समय उनके ढेरों पत्रों

का जवाब देने में ही व्यतीत होता था, इसलिए यह घोषणा उनके लिए बेहद कष्टदायक साबित हुई। रफी साहब अत्यंत धर्मनिरपेक्ष और सांप्रदायिक भावनाओं से रहित व्यक्ति थे, लेकिन संयोगवश वे मुसलमान थे। श्रीमती रूपा मेहरा को लगा कि उन्हें पलटवार करना चाहिए, और रफी साहब एक सीधा निशाना थे। उन्होंने कहा:

'नेहरू उन्हें बहुत ज्यादा लाड़-प्यार करते हैं, वो सिर्फ आज़ाद और किदवई से बात करते हैं, क्या उन्हें लगता है कि वो पाकिस्तान के प्रधानमंत्री हैं? फिर देखो ये क्या करते हैं।' लता और सविता आमतौर पर अपनी मां को बोलने देती थीं, लेकिन आज लता ने विरोध किया:

'माँ, मैं बिल्कुल सहमत नहीं हूँ। वह भारत के प्रधानमंत्री हैं, सिर्फ हिंदुओं के नहीं। उनके मंत्रिमंडल में दो मुस्लिम मंत्री होने से क्या नुकसान है?'

'आपके पास बहुत सारे शिक्षित विचार हैं,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, जो आमतौर पर शिक्षा का सम्मान करती थीं।

श्रीमती रूपा मेहरा शायद इसलिए भी परेशान थीं क्योंकि बुजुर्ग महिलाएं महेश कपूर को रामनवमी के अवसर पर प्रेम निवास में रामचरितमानस का पाठ करने के लिए राजी करने में कोई सफलता नहीं पा रही थीं। चौक स्थित शिव मंदिर की समस्या महेश कपूर के मन में दबी हुई थी, और उनके जमींदारी उन्मूलन विधेयक से जिन बड़े जमींदारों को बेदखल किया जाना था, उनमें से कई मुस्लिम थे। उन्हें लगा कि कम से कम उन्हें स्थिति को और बिगाड़ने से बचना चाहिए।

श्रीमती रूपा मेहरा ने गंभीर स्वर में, लगभग स्वयं से कहा, 'मैं इन सभी मुसलमानों के बारे में जानती हूँ।' उस क्षण उन्हें चाचा शफी और तलत खाला, जो परिवार के पुराने मित्र थे, का ख्याल नहीं आया।

लता ने गुस्से से उसकी ओर देखा लेकिन कुछ नहीं कहा। सविता ने भी लता की ओर देखा, लेकिन कुछ नहीं कहा।

रूपा मेहरा ने अपनी छोटी बेटी से गुस्से से कहा, 'मुझे घूर-घूर कर मत देखो। मुझे तथ्यों की जानकारी है। तुम्हें मेरी तरह तथ्यों का ज्ञान नहीं है। तुम्हें जीवन का कोई अनुभव नहीं है।'

लता ने कहा, 'मैं पढ़ाई करने जा रही हूँ।' वह प्राण की झूला कुर्सी से उठ खड़ी हुई, जहाँ वह बैठी हुई थी।

श्रीमती रूपा मेहरा बेहद आक्रामक मूड में थीं। उन्होंने पूछा, 'क्यों? तुम्हें पढ़ना ही क्यों है? तुम्हारी परीक्षाएँ खत्म हो चुकी हैं। क्या तुम अगले साल भी पढ़ते रहोगे? सिर्फ काम करने और खेलने का कोई मौका न मिलने से जैक सुस्त हो जाता है। बैठो और मुझसे बात करो। या फिर टहलने जाओ। इससे तुम्हारी त्वचा में निखार आएगा।'

लता ने कहा, 'मैं आज सुबह टहलने गई थी। मैं हमेशा टहलने जाती रहती हूं।'

'तुम बहुत जिद्दी लड़की हो,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।

हां, लता ने सोचा और अपने चेहरे पर हल्की सी मुस्कान लिए अपने कमरे में चली गई।

सविता ने इस मामूली सी हलचल को देखा था और उसे लगा कि यह उकसावा इतना छोटा और मामूली था कि आम तौर पर लता को इतना परेशान नहीं कर सकता था। ज़ाहिर है, उसके मन में कुछ खटक रहा था। मालती का वह फ़ोन कॉल भी सविता के दिमाग में आया, जिसका उस पर इतना गहरा असर हुआ था। उसने जो दो और दो को जोड़ा, वह पूरी तरह से चार तो नहीं था, लेकिन हंस जैसी दिखने वाली दो उंगलियां अगल-बगल बैठी हुई थीं, जो उसे काफी बेचैन कर रही थीं। वह अपनी बहन के लिए चिंतित थी। लता इन दिनों बहुत उत्तेजित और अस्थिर लग रही थी, लेकिन किसी से भी अपने मन की बात कहना नहीं चाहती थी। न ही उसकी दोस्त और विश्वासपात्र मालती शहर में थी। सविता लता से

अकेले में बात करने के अवसर का इंतज़ार कर रही थी, जो आसान नहीं था। और जब उसे मौका मिला, तो उसने उसे तुरंत लपक लिया।

लता बिस्तर पर लेटी हुई थी, अपने हाथों से चेहरा ढके हुए, पढ़ रही थी। उसने 'पिग्स हैव विंग्स' खत्म कर ली थी और अब 'गलाद एट ब्लैंडिंग्स' पढ़ रही थी। उसे लगा कि अब जब वह और कबीर प्यार में हैं, तो यह शीर्षक बिल्कुल सही है। जुदाई के ये तीन दिन एक महीने जैसे लगेंगे, और उसे जितना हो सके वोडहाउस की रचनाएँ पढ़कर अपना ध्यान भटकाना होगा।

लता को अपनी बहन द्वारा भी परेशान किए जाने पर खुशी नहीं होती थी।

‘क्या मैं यहाँ पलंग पर बैठ सकती हूँ?’ सविता ने पूछा।

लता ने सिर हिलाया और सविता बैठ गई।

‘तुम क्या पढ़ रहे हो?’ सविता ने पूछा।

लता ने जल्दी से निरीक्षण करने के लिए कवर को ऊपर उठाया, फिर अपनी पढ़ाई में वापस लग गई।

'आज मुझे थोड़ा उदास महसूस हो रहा है,' सविता ने कहा।

‘ओह।’ लता झट से उठ बैठी और अपनी बहन की तरफ देखा। ‘क्या तुम्हें मासिक धर्म हो रहा है या कुछ और?’

सविता हंस पड़ी। ‘गर्भावस्था में मासिक धर्म नहीं होता।’ उसने आश्चर्य से लता की ओर देखा। ‘क्या तुम्हें यह नहीं पता था?’ सविता को लगा जैसे उसे यह बुनियादी बात बहुत पहले से पता थी, लेकिन शायद ऐसा नहीं था।

‘नहीं,’ लता ने कहा। मालती के साथ उनकी बातचीत काफी व्यापक थी, इसलिए यह हैरानी की बात थी कि इस मुद्दे पर पहले कभी चर्चा नहीं हुई थी। लेकिन उन्हें लगा कि सविता को एक साथ दो शारीरिक समस्याओं से जूझना पड़े, यह बिल्कुल सही है। ‘तो फिर क्या बात है?’

‘अरे, कुछ नहीं, मुझे नहीं पता क्या है। बस कभी-कभी ऐसा महसूस होता है— आजकल तो काफी ज्यादा। शायद प्राण की सेहत की वजह से हो।’ उसने अपना हाथ धीरे से लता के हाथ पर रख दिया।

सविता चिड़चिड़ी स्वभाव की नहीं थी, और लता यह बात जानती थी। उसने अपनी बहन को स्नेह से देखा और पूछा, 'क्या तुम प्राण से प्यार करती हो?' यह बात अचानक बहुत महत्वपूर्ण लगने लगी।

'बिल्कुल,' सविता ने आश्चर्य से कहा।

‘क्यों “बिल्कुल”, दीदी?’

‘मुझे नहीं पता,’ सविता ने कहा। ‘मैं उससे प्यार करती हूँ। जब वह यहाँ होता है तो मुझे अच्छा लगता है। मुझे उसकी चिंता होती है। और कभी-कभी मुझे उसके बच्चे की भी चिंता होती है।’

लता ने कहा, "ओह, वह ठीक हो जाएगा, उसके लात मारने के तरीके को देखकर तो यही लगता है।"

वह फिर लेट गई और अपनी किताब पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करने लगी। लेकिन वह वोडहाउस पर भी ध्यान नहीं लगा पा रही थी। कुछ देर रुकने के बाद उसने कहा:

क्या आपको गर्भावस्था पसंद है?

'हां,' सविता ने मुस्कुराते हुए कहा।

क्या आपको शादीशुदा जीवन पसंद है?

'हां,' सविता ने मुस्कुराते हुए कहा।

‘क्या आप उस आदमी से शादी करेंगी जिसे आपके लिए चुना गया था— जिसे आप शादी से पहले वास्तव में नहीं जानती थीं?’

‘प्राण के बारे में इस तरह बात मत करो, ऐसा लग रहा है जैसे तुम किसी अजनबी के बारे में बात कर रही हो,’ सविता ने अचंभित होकर कहा। ‘लता, तुम कभी-कभी बहुत मजाकिया हो। क्या तुम भी उससे प्यार नहीं

करती?'

'हाँ,' लता ने इस बेतुकी बात पर भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'लेकिन मुझे उसके साथ उसी तरह से करीबी रिश्ता रखने की ज़रूरत नहीं है। मुझे समझ नहीं आता कि—खैर, यह तो दूसरे लोगों ने तय किया कि वह तुम्हारे लिए उपयुक्त है—लेकिन अगर तुम्हें वह आकर्षक नहीं लगा—'

वह सोच रही थी कि प्राण सुंदर नहीं था, और उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसकी अच्छाई किसी चीज का विकल्प हो सकती है—किसलिए?—एक चिंगारी का।

'तुम मुझसे ये सब सवाल क्यों पूछ रही हो?' सविता ने अपनी बहन के बालों पर हाथ फेरते हुए पूछा।

'खैर, मुझे भी शायद किसी दिन ऐसी ही समस्या का सामना करना पड़ सकता है।'

'क्या तुम प्यार में हो, लता?'

सविता के हाथ के नीचे सिर हल्का सा ऊपर उठा और फिर ऐसा लगा जैसे कुछ हुआ ही न हो। सविता को अपना जवाब मिल गया था, और आधे घंटे में उसे कबीर और लता तथा उनकी विभिन्न मुलाकातों के बारे में लगभग सारी जानकारी मिल गई थी। लता को किसी ऐसे व्यक्ति से बात करके इतनी राहत मिली जो उससे प्यार करता था और उसे समझता था कि उसने अपनी सारी आशाएँ और सुख की कल्पनाएँ उड़ेल दीं। सविता तुरंत समझ गई कि ये सब असंभव था, लेकिन उसने लता को बोलने दिया। जैसे-जैसे लता की खुशी बढ़ती गई, सविता को और अधिक उदासी महसूस होने लगी।

'लेकिन मुझे क्या करना चाहिए?' लता ने कहा।

'क्या?' सविता ने दोहराया। उसके मन में जो उत्तर आया वह यह था कि लता को कबीर को तुरंत छोड़ देना चाहिए इससे पहले कि उनका प्रेम और

आगे बढ़े, लेकिन वह जानती थी कि लता से ऐसा कहना उचित नहीं होगा, क्योंकि लता बहुत अड़ियल हो सकती थी।

‘क्या मुझे माँ को बताना चाहिए?’ लता ने कहा।

‘नहीं!’ सविता ने कहा। ‘नहीं। चाहे कुछ भी हो जाए, माँ को मत बताना।’ वह अपनी माँ के सदमे और दर्द की कल्पना कर सकती थी।

‘प्लीज किसी को मत बताना, दीदी। किसी को भी नहीं,’ लता ने कहा।

'मैं प्राण से कोई भी रहस्य नहीं छिपा सकती,' सविता ने कहा।

‘कृपया इसे अपने पास ही रखें,’ लता ने कहा। ‘अफवाहें बहुत आसानी से फैल जाती हैं। तुम मेरी बहन हो। तुम इस आदमी को एक साल से भी कम समय से जानती हो।’ ये शब्द उसके मुंह से निकलते ही, लता को प्राण के बारे में कही गई अपनी बात पर पछतावा हुआ, जिसे वह अब बहुत प्यार करती थी। उसे अपनी बात बेहतर ढंग से कहनी चाहिए थी।

सविता ने थोड़ी नाखुशी से सिर हिलाया।

हालांकि वह अपने सवाल से पैदा होने वाले षड्यंत्र के माहौल से नफरत करती थी, सविता को लगा कि उसे अपनी बहन की मदद करनी होगी, यहां तक कि किसी न किसी तरह से उसकी रक्षा भी करनी होगी।

‘क्या मुझे कबीर से नहीं मिलना चाहिए?’ उसने पूछा।

लता ने कहा, 'मैं उससे पूछ लूँगी।' उसे पूरा यकीन था कि कबीर को किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने में कोई झिझक नहीं होगी जो मूल रूप से सहानुभूति रखता हो, लेकिन उसे नहीं लगता था कि उसे इसमें कोई खास आनंद आएगा। और न ही वह चाहती थी कि कबीर अभी कुछ समय तक उसके परिवार के किसी सदस्य से मिले। उसे आभास था कि सब कुछ अस्त-व्यस्त और उलझन भरा हो जाएगा, और उनकी नाव यात्रा का बेफिक्र माहौल जल्द ही गायब हो जाएगा।

‘कृपया सावधान रहना, लता,’ सविता ने कहा। ‘वह देखने में बहुत सुंदर

और अच्छे परिवार से हो सकता है, लेकिन—'
उसने अपने वाक्य का दूसरा भाग अधूरा छोड़ दिया, और बाद में लता ने उसमें विभिन्न अंत जोड़ने की कोशिश की।

3.16

उस शाम, जब दिन की गर्मी कुछ कम हो गई थी, सविता अपनी सास से मिलने गई, जिनसे उसका बहुत लगाव हो गया था। लगभग एक हफ़्ता हो गया था जब वे एक-दूसरे से मिली थीं। श्रीमती महेश कपूर बगीचे में थीं और तांगा आते देख सविता के पास दौड़ पड़ीं। उन्हें देखकर खुशी हुई, लेकिन इस बात की चिंता भी हुई कि गर्भावस्था में उन्हें तांगे में सफर करना पड़ रहा है। उन्होंने सविता से उसके और प्राण के स्वास्थ्य के बारे में पूछा; शिकायत की कि प्राण बहुत कम आते हैं; श्रीमती रूपा मेहरा के बारे में पूछा, जो अगले दिन प्रेम निवास आने वाली थीं; और सविता से पूछा कि क्या उनके भाइयों में से कोई शहर में है। इस आखिरी सवाल से थोड़ी उलझन में पड़ी सविता ने कहा कि वे नहीं हैं। फिर श्रीमती महेश कपूर और वह बगीचे में चली गईं।

कुछ दिन पहले पानी दिए जाने के बावजूद बगीचा थोड़ा सूखा लग रहा था; लेकिन गुलमोहर का पेड़ खिला हुआ था: उसकी पंखुड़ियाँ आम लाल-नारंगी रंग के बजाय लगभग गहरे लाल रंग की थीं। सविता ने सोचा, प्रेम निवास के बगीचे में सब कुछ अधिक जीवंत लग रहा था। ऐसा लग रहा था मानो पौधे समझ गए हों कि उनकी मालकिन, भले ही कमज़ोर प्रदर्शन की खुलकर शिकायत न करे, लेकिन उनके सर्वोत्तम प्रदर्शन से कम पर प्रसन्न नहीं होगी।

मुख्य माली गजराज और श्रीमती महेश कपूर के बीच कुछ दिनों से अनबन चल रही थी। वे इस बात पर सहमत थे कि किन पौधों की कलमों से नए पौधे उगाए जाएं, किन किस्मों के बीज एकत्र किए जाएं, किन झाड़ियों

की छंटाई की जाए और छोटे गुलदाउदी के पौधों को बड़े गमलों में कब लगाया जाए। लेकिन जब से नए लॉन की बुवाई के लिए ज़मीन तैयार की जाने लगी थी, तब से उनके बीच एक ऐसा मतभेद पैदा हो गया था जिसे सुलझाना नामुमकिन लग रहा था।

इस वर्ष, प्रयोग के तौर पर, श्रीमती महेश कपूर ने प्रस्ताव रखा कि बुवाई से पहले लॉन के एक हिस्से को समतल न किया जाए। माली को यह बात बेहद अटपटी लगी और श्रीमती महेश कपूर के सामान्य निर्देशों से बिलकुल उलट थी। उन्होंने शिकायत की कि लॉन में ठीक से पानी देना असंभव होगा, घास काटना मुश्किल होगा, मानसून और सर्दियों की बारिश में कीचड़ भरे गड्ढे बन जाएँगे, बगीचा पानी के भृंगों और अन्य कीड़ों को खाने वाले तालाब बगुले से भर जाएगा, और पुष्प प्रदर्शनी निर्णायक समिति इस असमान समतलता को सौंदर्य की दृष्टि से असंतुलन का संकेत समझेगी।

श्रीमती महेश कपूर ने उत्तर दिया कि उन्होंने केवल बगल वाले लॉन में असमानता का प्रस्ताव रखा था, सामने वाले लॉन में नहीं; कि उनके द्वारा प्रस्तावित असमानता मामूली थी; कि वे ऊंचे हिस्सों में नली से पानी डाल सकते थे; कि लोक निर्माण विभाग के शांत सफेद बैल द्वारा खींचे जाने वाले बड़े, कुंद लॉनमॉवर से घास काटने में जो थोड़ी सी कठिनाई होती थी, उसे एक छोटे विदेशी लॉनमॉवर से किया जा सकता था, जिसे वे एक दोस्त से उधार लेंगी; कि पुष्प प्रदर्शनी निर्णायक समिति फरवरी में बगीचे को एक घंटे के लिए देख सकती है, लेकिन यह उन्हें पूरे साल आनंद देता है; कि समतल का संतुलन से कोई संबंध नहीं है; और अंत में, यह प्रयोग उन्होंने विशेष रूप से पानी के गड्ढों और तालाब के बगुले के कारण ही प्रस्तावित किया था।

दिसंबर के अंत में एक दिन, सविता की शादी के कुछ महीनों बाद, जब

शहद जैसी सुगंध वाले हरसिंगार के फूल अभी भी खिले हुए थे, जब गुलाब अपने पहले पूर्ण खिलने पर थे, जब स्वीट एलिसम और स्वीट विलियम खिलने लगे थे, जब पंखनुमा पत्तियों वाले लार्कस्पर के वे क्यारियां जिन्हें तीतरों ने जड़ तक चट नहीं किया था, पंखनुमा पत्तियों वाले लेकिन अरुचिकर कॉसमॉस की लंबी कतारों के सामने फिर से पनपने की पूरी कोशिश कर रहे थे, तभी एक जबरदस्त, लगभग मूसलाधार बारिश हुई थी। मौसम उदास, तेज़ हवाओं वाला और सर्द था, दो दिनों से सूरज नहीं निकला था, लेकिन बगीचा पक्षियों से भरा हुआ था: तालाब के बगुले, तीतर, मैना, सात-सात के समूह में चहचहाते छोटे-छोटे भूरे रंग के बब्बलर, हूपो और तोते, जिनका संयोजन उन्हें कांग्रेस के झंडे के रंगों की याद दिलाता था, लाल वॉटल वाले लैपविंग का एक जोड़ा, और नीम के पेड़ की ओर मुंह में बड़ी-बड़ी टहनियाँ लिए उड़ते हुए गिद्धों का एक जोड़ा। रामायण में उनकी वीरता के बावजूद, श्रीमती महेश कपूर कभी भी गिद्धों को स्वीकार नहीं कर पाई थीं। लेकिन जिस चीज़ ने उन्हें सचमुच प्रसन्न किया था, वे थे तीन गोल-मटोल, सादे तालाब के बगुले, जो अलग-अलग छोटे तालाबों के पास खड़े थे, लगभग पूरी तरह स्थिर होकर पानी को निहार रहे थे, हर कदम पर एक मिनट का ध्यान दे रहे थे, और अपने वातावरण की कीचड़ भरी स्थिति से पूरी तरह संतुष्ट थे। लेकिन समतल लॉन पर बने तालाब सूरज निकलते ही जल्दी सूख गए। श्रीमती महेश कपूर इस वर्ष अपने लॉन में कुछ और तालाब बगुले को आतिथ्य प्रदान करना चाहती थीं, और वह इस मामले को भाग्य के भरोसे नहीं छोड़ना चाहती थीं।

ये सब बातें उन्होंने अपनी बहू को समझाईं, नीम के फूलों से एलर्जी होने के कारण बोलते समय उनकी सांस थोड़ी फूल रही थी। सविता ने सोचा कि श्रीमती महेश कपूर खुद भी कुछ-कुछ तालाब के बगुले जैसी दिखती

थीं। सादी, मिट्टी जैसे भूरे रंग की, बाकी प्रजातियों से अलग, भद्दी, झुकी हुई लेकिन चौकस, और असीम धैर्य वाली, और उड़ान भरते समय अचानक अपने चमकीले सफेद पंख फड़फड़ाने में सक्षम।

सविता को उसकी उपमा अच्छी लगी और वह मुस्कुराने लगी। लेकिन श्रीमती महेश कपूर ने भी मुस्कुराकर जवाब दिया, पर उन्होंने यह जानने की कोशिश नहीं की कि सविता इतनी खुश क्यों थी।

सविता मन ही मन सोच रही थी, "ये तो माँ से बिल्कुल अलग है!" और दोनों बगीचे में घूमती रहीं। उसे श्रीमती महेश कपूर और प्राण में समानताएँ नज़र आ रही थीं, और शारीरिक रूप से भी वो काफी जीवंत वीणा से मिलती-जुलती थीं। लेकिन माँ ने मान जैसा बेटा कैसे पैदा किया, ये बात सविता के लिए अब भी हैरानी और अचरज का विषय थी।

3.17

अगली सुबह श्रीमती रूपा मेहरा, बुजुर्ग श्रीमती टंडन और श्रीमती महेश कपूर प्रेम निवास में बातचीत के लिए मिलीं। यह उचित ही था कि दयालु और सौम्य श्रीमती महेश कपूर ने मेज़बानी की। वह दोनों की सह-सास थीं, परिवार की कड़ी थीं। इसके अलावा, वह इकलौती ऐसी महिला थीं जिनके पति अभी जीवित थे, इकलौती ऐसी महिला जो अभी भी अपने घर की मालकिन थीं।

श्रीमती रूपा मेहरा को हर तरह की संगति पसंद थी, और यह संगति उनके लिए आदर्श थी। पहले उन्होंने चाय पी, और श्रीमती महेश कपूर द्वारा स्वयं तैयार की गई आम की अचार के साथ मठरी खाई। सभी ने इसे स्वादिष्ट बताया। अचार की विधि का विश्लेषण किया गया और उसकी तुलना सात-आठ अन्य प्रकार के आम के अचारों से की गई। मठरी के बारे में श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा:

'यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा होना चाहिए: कुरकुरा और परतदार, लेकिन

यह बहुत अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।'

'मेरी पाचन क्रिया ठीक नहीं है, इसलिए मैं ज्यादा नहीं खा सकती,' बूढ़ी श्रीमती टंडन ने कहा और खुद के लिए एक और टुकड़ा ले लिया।

'बुढ़ापे में इंसान क्या कर सकता है?' श्रीमती रूपा मेहरा ने सहानुभूति जताते हुए कहा। उनकी उम्र अभी चालीस के आसपास ही थी, लेकिन वे खुद को बुजुर्गों की संगति में बूढ़ा महसूस करना पसंद करती थीं; और वास्तव में, कई वर्षों से विधवा होने के कारण, उन्हें लगता था कि उन्होंने बुढ़ापे के कुछ अनुभवों को जी लिया है।

पूरी बातचीत हिंदी में हुई, बीच-बीच में कुछ अंग्रेज़ी शब्द भी निकल आए। उदाहरण के लिए, श्रीमती महेश कपूर अपने पति का ज़िक्र करते समय अक्सर उन्हें 'मंत्री साहब' कहकर पुकारती थीं। कभी-कभी हिंदी में वे उन्हें 'प्राण के पिता' भी कह देती थीं। उनका नाम लेकर पुकारना तो उनके लिए नामुमकिन था। यहाँ तक कि 'मेरे पति' कहना भी उन्हें मंज़ूर नहीं था, लेकिन 'मेरा यह' कहना उन्हें ठीक लगता था।

उन्होंने सब्जियों की कीमतों की तुलना पिछले वर्ष के इसी समय की कीमतों से की। मंत्री साहब को अपने खाने से ज़्यादा अपने बिल की शर्तों की चिंता थी, लेकिन कभी-कभी उन्हें बहुत गुस्सा आता था जब खाने में नमक कम या ज़्यादा होता था—या खाना बहुत ज़्यादा मसालेदार होता था। उन्हें करेला विशेष रूप से पसंद था, जो सभी सब्जियों में सबसे कड़वा होता है—और जितना कड़वा हो उतना ही अच्छा।

श्रीमती रूपा मेहरा, श्रीमती टंडन से बहुत आत्मीय थीं। उनका मानना था कि रेलगाड़ी के डिब्बे में हर कोई केवल जान-पहचान के जाल में शामिल होने के लिए ही होता है, इसलिए उनके लिए एक समधीन की समधीन लगभग बहन के समान थीं। दोनों विधवा थीं और दोनों की बहुएँ समस्याएँ पैदा करने वाली थीं।

श्रीमती रूपा मेहरा ने मीनाक्षी के बारे में शिकायत की; उन्होंने कुछ सप्ताह पहले ही उन्हें उस पदक के बारे में बताया था जिसे इतनी बेरहमी से पिघला दिया गया था। लेकिन, स्वाभाविक रूप से, बूढ़ी श्रीमती टंडन श्रीमती महेश कपूर के सामने वीणा और नास्तिक संगीत के प्रति उनके लगाव के बारे में शिकायत नहीं कर सकती थीं।

पोते-पोतियों के बारे में भी चर्चा हुई: भास्कर और अपर्णा और सविता के अजन्मे बच्चे भी चर्चा में शामिल हुए।

फिर बातचीत का रुख बदल गया।

'क्या हम रामनवमी के बारे में कुछ नहीं कर सकते? क्या मंत्री साहब अपना मन नहीं बदलेंगे?' तीनों में सबसे ज्यादा धार्मिक स्वभाव वाली बुजुर्ग श्रीमती टंडन ने पूछा।

'उफ़! मैं क्या कहूँ, वो कितने ज़िद्दी हैं,' श्रीमती महेश कपूर ने कहा। 'और आजकल उन पर इतना दबाव है कि मेरी हर छोटी बात पर वो चिढ़ जाते हैं। मुझे भी आजकल दर्द होता है, लेकिन मैं उसकी चिंता नहीं करती, मुझे उनकी इतनी चिंता होती है।' वो मुस्कुराईं। 'मैं आपको साफ़-साफ़ बताऊँ,' उन्होंने अपनी शांत आवाज़ में आगे कहा, 'मुझे उनसे कुछ भी कहने में डर लगता है। मैंने उनसे कहा, ठीक है, अगर आप पूरा रामचरितमानस पाठ नहीं करवाना चाहतीं, तो कम से कम किसी पुजारी से उसका कुछ हिस्सा, शायद सिर्फ़ सुंदर कांड, पढ़वा लें, और उन्होंने बस इतना कहा, "तुम औरतें इस शहर को जला दोगी। जो चाहो करो!" और कमरे से बाहर चले गए।'

श्रीमती रूपा मेहरा और बुजुर्ग श्रीमती टंडन ने सहानुभूति भरी आवाजें निकालीं।

बाद में वो गर्मी में बगीचे में इधर-उधर चक्कर लगा रहा था, जो न तो उसके लिए अच्छा था और न ही पौधों के लिए। मैंने उससे कहा, हम मान

के होने वाले सास-ससुर को बनारस से बुला सकते हैं ताकि वो भी हमारे साथ इसका आनंद उठा सकें। उन्हें भी कविता पाठ बहुत पसंद है। इससे रिश्ते और मजबूत होंगे। मान तो आजकल बहुत ही बेकाबू हो रहा है...' (उचित शब्द ढूंढते हुए उसने कहा)।

ब्रह्मपुर में मान और सईदा बाई की अफवाहें अब तेजी से फैल रही थीं।

'उन्होंने क्या कहा?' श्रीमती रूपा मेहरा ने उत्सुकता से पूछा।

उन्होंने मुझे बस हाथ हिलाकर यह कहते हुए दूर कर दिया, "ये सब साजिशें और योजनाएँ हैं!"

बूढ़ी श्रीमती टंडन ने अपना सिर हिलाया और कहा:

जब जैदी के बेटे ने सिविल सेवा परीक्षा उत्तीर्ण की, तो उसकी पत्नी ने अपने घर में पूरे कुरान के पाठ का आयोजन किया: तीस महिलाएं आईं, और उन्होंने बारी-बारी से एक-एक पाठ किया—इसे क्या कहते हैं? पारा; हाँ, पारा।' यह शब्द उसे अप्रिय लगा।

'सचमुच?' श्रीमती रूपा मेहरा ने अन्याय को भांपते हुए कहा। 'क्या मुझे मंत्री साहब से बात करनी चाहिए?' उन्हें हल्का सा आभास था कि इससे शायद कुछ मदद मिलेगी।

'नहीं, नहीं, नहीं—' श्रीमती महेश कपूर ने इन दो शक्तिशाली इरादों के टकराव की आशंका से चिंतित होकर कहा। 'वह तो बस इधर-उधर की बातें ही करेंगे। एक बार जब मैंने इस विषय पर बात की तो उन्होंने यहाँ तक कह दिया: "अगर तुम्हें यह चाहिए ही तो अपने खास दोस्त गृह मंत्री के पास जाओ—वह इस तरह की गड़बड़ी का ज़रूर समर्थन करेंगे।" उसके बाद मैं इतनी डर गई कि कुछ बोल ही नहीं पाई।'

वे सभी सच्ची धार्मिकता में आई सामान्य गिरावट पर शोक व्यक्त कर रहे थे।

बुजुर्ग श्रीमती टंडन ने कहा: 'आजकल हर कोई मंदिरों में बड़े-बड़े समारोह

आयोजित करता है—मंत्रोच्चार, भजन, पाठ, प्रवचन और पूजा—लेकिन घर में उचित रीति-रिवाज नहीं अपनाता।'

‘सच है,’ बाकी दोनों ने कहा।

बुजुर्ग श्रीमती टंडन ने आगे कहा, 'कम से कम हमारे पड़ोस में छह महीने बाद हमारी अपनी रामलीला होगी। भास्कर मुख्य किरदारों में से एक बनने के लिए बहुत छोटा है, लेकिन वह निश्चित रूप से एक वानर योद्धा बन सकता है।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने अस्पष्ट रूप से याद करते हुए कहा, 'लता को बंदर बहुत पसंद थे।'

बुजुर्ग श्रीमती टंडन और श्रीमती महेश कपूर ने एक-दूसरे की ओर देखा।

श्रीमती रूपा मेहरा अपनी असमंजस से बाहर निकलीं और दूसरों की ओर देखा। उन्होंने पूछा, 'क्या कोई बात है?'

'आपके आने से पहले हम बस यूं ही बातें कर रहे थे—बस यूं ही,' बूढ़ी श्रीमती टंडन ने स्नेहपूर्वक कहा।

'क्या यह लता के बारे में है?' श्रीमती रूपा मेहरा ने उनकी आवाज के लहजे को उतनी ही सटीकता से समझते हुए कहा, जितनी सटीकता से उन्होंने उनकी नजरों को समझा था।

दोनों महिलाओं ने एक-दूसरे की ओर देखा और गंभीरता से सिर हिलाया।

'मुझे बताओ, जल्दी बताओ,' श्रीमती रूपा मेहरा ने पूरी तरह से घबराकर कहा।

श्रीमती महेश कपूर ने विनम्रता से कहा, 'देखिए, बात ऐसी है, कृपया अपनी बेटी का ख्याल रखिएगा, क्योंकि कल सुबह किसी ने उसे धोबी घाट के पास गंगा के किनारे एक लड़के के साथ घूमते हुए देखा था।'

'कौन - सा लड़का?'

मुझे यह नहीं पता। लेकिन वे हाथ में हाथ डालकर चल रहे थे।

‘उन्हें किसने देखा?’

श्रीमती महेश कपूर ने सहानुभूति जताते हुए कहा, 'मैं आपसे क्या छुपाऊं?' 'वह अवतार भाई के बहनोई थे। उन्होंने लता को तो पहचान लिया, लेकिन लड़के को नहीं पहचाना। मैंने उनसे कहा कि वह आपके बेटों में से ही कोई होगा, लेकिन मुझे सविता से पता चला है कि वे कलकत्ता में हैं।'

श्रीमती रूपा मेहरा की नाक दुख और शर्म से लाल होने लगी। उनकी आँखों से दो आँसू बह निकले और उन्होंने अपने बड़े से पर्स में से कढ़ाई वाला रूमाल निकाला।

‘कल सुबह?’ उसने कांपती हुई आवाज में कहा।

उसने याद करने की कोशिश की कि लता कहाँ गई थी। यही होता है जब आप अपने बच्चों पर भरोसा करते हैं, जब आप उन्हें इधर-उधर घूमने देते हैं, हर जगह सैर करने देते हैं। कहीं भी सुरक्षित नहीं रहता।

'उसने यही कहा था,' श्रीमती महेश कपूर ने नरमी से कहा। 'चाय पी लीजिए। ज्यादा घबराइए मत। ये सारी लड़कियां आजकल की प्रेम फिल्में देखती हैं और उनका इन पर असर पड़ता है, लेकिन लता अच्छी लड़की है। बस उससे बात कीजिए।'

लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा बहुत घबरा गईं, उन्होंने जल्दी से अपनी चाय पी ली, गलती से उसमें चीनी भी डाल दी, और जितनी जल्दी हो सके शिष्टाचारवश घर चली गईं।

3.18

श्रीमती रूपा मेहरा हांफते हुए दरवाजे से अंदर आईं।

वह तांगे में बैठकर रो रही थी। तांगे वाले को चिंता हुई कि इतनी सलीके से कपड़े पहनी महिला खुलेआम रो रही है, इसलिए उसने यह जताने की कोशिश में खुद से बात करना शुरू कर दिया कि उसने ध्यान ही नहीं

दिया, लेकिन तब तक वह न केवल अपना कढ़ाई वाला रूमाल बल्कि अपना अतिरिक्त रूमाल भी इस्तेमाल कर चुकी थी।

‘ओह मेरी बेटी!’ उसने कहा, ‘ओह, मेरी बेटी।’

सविता ने कहा, 'जी मां?' वह अपनी मां का आंसुओं से भीगा चेहरा देखकर स्तब्ध रह गई।

‘तुम नहीं,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। ‘वह बेशर्म लता कहाँ है?’

सविता को आभास हो गया कि उनकी माँ को कुछ पता चल गया है। लेकिन क्या? और कितना? वह सहज रूप से उनकी ओर बढ़ी ताकि उन्हें शांत कर सके।

'मां, बैठ जाइए, शांत हो जाइए, चाय पी लीजिए,' सविता ने श्रीमती रूपा मेहरा को, जो काफी विचलित लग रही थीं, उनकी पसंदीदा कुर्सी की ओर ले जाते हुए कहा।

'चाय! चाय! और ज़्यादा चाय!' श्रीमती रूपा मेहरा ने अपनी दुर्भावना और प्रतिरोध के साथ कहा।

सविता गई और मतीन से कहा कि उन दोनों के लिए चाय ले आए।

‘वह कहाँ है? हम सबका क्या होगा? अब उससे कौन शादी करेगा?’

‘माँ, बातों को इतना बढ़ा-चढ़ाकर मत बताओ,’ सविता ने शांत भाव से कहा। ‘सब ठीक हो जाएगा।’

श्रीमती रूपा मेहरा अचानक उठ बैठीं। ‘तो आपको पता था! आपको पता था! और आपने मुझे बताया भी नहीं। और मुझे यह बात अजनबियों से पता चली।’ इस नए धोखे ने उन्हें फिर से रोने पर मजबूर कर दिया। सविता ने अपनी माँ के कंधों को दबाया और उन्हें एक और रुमाल दिया। कुछ मिनट बाद सविता ने कहा:

‘माँ, रो मत, रो मत। तुमने क्या सुना?’

‘ओह, मेरी बेचारी लता—क्या वह अच्छे परिवार से है? मुझे पहले से ही

कुछ गड़बड़ लग रही थी। हे भगवान! अगर उसके पिता जीवित होते तो क्या कहते? ओह, मेरी बेटी।'

'माँ, उसके पिता विश्वविद्यालय में गणित पढ़ाते हैं। वह एक अच्छा लड़का है। और लता एक समझदार लड़की है।'

मतीन चाय लेकर आया, उसने पूरे दृश्य को विनम्रतापूर्वक देखा और रसोई की ओर वापस चला गया।

कुछ ही सेकंड बाद लता अंदर आई। वह बरगद के पेड़ों के झुरमुट में एक किताब लेकर गई थी, जहाँ वह कुछ देर तक बिना किसी बाधा के बैठी रही, वोडहाउस की रचनाओं और अपने ही जादुई विचारों में खोई हुई। दो दिन और, बस एक दिन और, और वह कबीर से फिर मिलेगी।

वह अपने सामने के दृश्य के लिए तैयार नहीं थी और दरवाजे पर ही रुक गई।

'तुम कहाँ थीं, युवती?' श्रीमती रूपा मेहरा ने गुस्से से कांपती आवाज में पूछा।

'टहलने के लिए,' लता हिचकिचाते हुए बोली।

'चलना? चलना?' श्रीमती रूपा मेहरा की आवाज बुलंद होती चली गई। 'मैं तुम्हें चलने दूंगी।'

लता का मुंह खुला रह गया और उसने सविता की ओर देखा। सविता ने अपना सिर और दाहिना हाथ थोड़ा सा हिलाया, मानो यह कहना चाह रही हो कि उसे धोखा देने वाली वह नहीं थी।

'यह कौन है?' श्रीमती रूपा मेहरा ने पूछा। 'इधर आओ। तुरंत इधर आओ।'

लता ने सविता की ओर देखा। सविता ने सिर हिलाया।

लता ने अपनी मां के पास जाते हुए कहा, 'बस एक दोस्त।'

'बस एक दोस्त! एक दोस्त! और दोस्त तो हाथ पकड़ने के लिए होते हैं?

क्या मैंने तुम्हें इसी के लिए पाला-पोसा था? तुम सबको—और क्या यही —'

'मां, बैठ जाइए,' सविता ने कहा, क्योंकि श्रीमती रूपा मेहरा अपनी कुर्सी से आधी उठ चुकी थीं।

लता ने पूछा, 'तुम्हें किसने बताया?' 'हेमा के ताइजी से?'

'हेमा की ताईजी? हेमा की ताईजी? क्या वो भी इसमें शामिल है?' श्रीमती रूपा मेहरा ने नए गुस्से के साथ कहा। 'वो उन लड़कियों को शाम को बालों में फूल लगाकर इधर-उधर घूमने देती है। मुझे किसने बताया? वो बदनसीब लड़की मुझसे पूछती है कि मुझे किसने बताया। मुझे किसी ने नहीं बताया। ये पूरे शहर में चर्चा का विषय है, सबको पता है। सब तुम्हें अच्छी लड़की समझते थे, तुम्हारी अच्छी प्रतिष्ठा थी—और अब बहुत देर हो चुकी है। बहुत देर हो चुकी है,' वो सिसकते हुए बोलीं।

'माँ, आप हमेशा कहती हैं कि मालती कितनी अच्छी लड़की है,' लता ने आत्मरक्षा करते हुए कहा। 'और उसके ऐसे दोस्त भी हैं—आप जानती हैं —सब जानते हैं।'

'चुप रहो! मुझे जवाब मत दो! मैं तुम्हें दो जोरदार थप्पड़ मारूंगा। धोबी घाट के पास बेशर्मी से घूम रहे हो और मौज-मस्ती कर रहे हो।'

लेकिन मालती—

'मालती! मालती! मैं तुम्हारे बारे में बात कर रही हूँ, मालती के बारे में नहीं। दवाइयाँ पढ़ना और मेंढक काटना—' श्रीमती रूपा मेहरा की आवाज़ एक बार फिर तेज़ हो गई। 'क्या तुम उसके जैसी बनना चाहती हो? और अपनी माँ से झूठ बोल रही हो। मैं तुम्हें फिर कभी सैर पर नहीं जाने दूँगी। तुम इसी घर में रहोगी, समझी? समझी?' श्रीमती रूपा मेहरा खड़ी हो गईं।

"जी माँ," लता ने शर्मिंदगी के साथ कहा, उसे याद आया कि कबीर से

मिलने के लिए उसे अपनी माँ से झूठ बोलना पड़ा था। जादू टूट रहा था; वह घबराई हुई और दुखी महसूस कर रही थी।

'उसका नाम क्या है?'

लता का चेहरा पीला पड़ गया और उसने कहा, 'कबीर।'

'कबीर क्या?'

लता चुपचाप खड़ी रही और उसने कोई जवाब नहीं दिया। उसकी गाल पर एक आंसू लुढ़क गया।

श्रीमती रूपा मेहरा सहानुभूति दिखाने के मूड में नहीं थीं। ये सारे बेतुके आंसू क्या थे? उन्होंने लता का कान पकड़कर मरोड़ दिया। लता हांफ उठी।

'उसका कोई नाम तो है ना? वो क्या है—कबीर लाल, कबीर मेहरा—या कुछ और? क्या तुम चाय के ठंडा होने का इंतज़ार कर रहे हो? या भूल ही गए हो?'

लता ने अपनी आंखें बंद कर लीं।

'कबीर दुर्रानी,' उसने कहा और घर के ढहने का इंतजार करने लगी।

उन तीन घातक शब्दों का असर हुआ। श्रीमती रूपा मेहरा ने अपना दिल थाम लिया, खामोश खौफ से मुंह खोल दिया, कमरे में इधर-उधर बेपरवाह नजरों से देखा और बैठ गईं।

सविता तुरंत उसके पास दौड़ी। उसका अपना दिल भी बहुत तेजी से धड़क रहा था।

श्रीमती रूपा मेहरा के मन में एक आखिरी धुंधली सी संभावना आई। उन्होंने कमजोर स्वर में, लगभग विनती भरे अंदाज़ में पूछा, 'क्या वह पारसी है?' यह विचार घृणित था, लेकिन इतना भयावह नहीं था। लेकिन सविता के चेहरे को देखकर उन्हें सच्चाई पता चल गई।

'एक मुसलमान!' श्रीमती रूपा मेहरा ने अब किसी और से ज्यादा खुद से

कहा। ‘मैंने पिछले जन्म में ऐसा क्या किया था कि मैंने अपनी प्यारी बेटी पर यह विपत्ति ला दी?’

सविता उसके पास खड़ी थी और उसका हाथ पकड़े हुए थी। श्रीमती रूपा मेहरा का हाथ बेजान पड़ा था और वह सामने घूर रही थीं। अचानक उन्हें सविता के पेट की हल्की सी गोलाई का एहसास हुआ और उनके मन में नए भयानक विचार उमड़ आए।

वह फिर खड़ी हो गई। 'कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं—' उसने कहा।

अब तक लता ने अपने मन में कबीर की छवि उकेर ली थी और उसे थोड़ी हिम्मत आ गई थी। उसने अपनी आँखें खोलीं। उसके आँसू रुक गए थे और उसके होंठों पर दृढ़ता का भाव था।

‘कभी नहीं, कभी नहीं, बिलकुल नहीं—गंदा, हिंसक, क्रूर, व्यभिचारी—’

‘तलत खाला की तरह?’ लता ने पूछा। ‘चाचा शफी की तरह? बैतर के नवाब साहब की तरह? फिरोज और इम्तियाज की तरह?’

'क्या तुम उससे शादी करना चाहती हो?' श्रीमती रूपा मेहरा ने क्रोध में चिल्लाकर कहा।

‘हाँ!’ लता ने जोश में आकर कहा, और हर पल उसका गुस्सा बढ़ता जा रहा था।

‘वो तुमसे शादी करेगा—और अगले साल वो कहेगा “तलाक तलाक तलाक” और तुम सड़क पर आ जाओगी। हे जिद्दी, मूर्ख लड़की! शर्म से तुम खुद को मुट्ठी भर पानी में डुबो लो।’

लता ने एकतरफा फैसला लेते हुए कहा, 'मैं उससे शादी करूंगी।'

‘मैं तुम्हें कैद कर दूंगी। ठीक वैसे ही जैसे तुमने नन बनने की इच्छा जताई थी।’ सविता ने बीच-बचाव करने की कोशिश की।

‘तुम अपने कमरे में जाओ!’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। ‘यह तुम्हारे लिए अच्छा नहीं है।’ उन्होंने उंगली से इशारा किया, और सविता, जिसे अपने

ही घर में इस तरह के आदेश सुनने की आदत नहीं थी, ने विनम्रतापूर्वक उनकी बात मान ली।

लता ने कहा, 'काश मैं नन बन गई होती। मुझे याद है पापा हमसे कहा करते थे कि हमें अपने दिल की सुननी चाहिए।'

'अब भी जवाब दे रहे हो?' पापा का नाम सुनते ही श्रीमती रूपा मेहरा भड़क उठीं। 'मैं तुम्हें दो जोरदार थप्पड़ मारूंगी।'

उसने अपनी बेटी को दो बार जोर से थप्पड़ मारा और तुरंत रोने लगी।

3.19

श्रीमती रूपा मेहरा मुसलमानों के प्रति उतनी पूर्वाग्रही नहीं थीं जितनी उनकी उम्र और पृष्ठभूमि की अधिकांश उच्च जाति की हिंदू महिलाएं थीं। जैसा कि लता ने संयोगवश बताया था, उनके कुछ मुस्लिम मित्र भी थे, हालांकि उनमें से लगभग सभी कट्टरपंथी नहीं थे। नवाब साहब शायद काफी कट्टरपंथी थे, लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा के लिए वे मित्र से अधिक एक सामाजिक परिचित थे।

श्रीमती रूपा मेहरा जितना ज्यादा सोचतीं, उतनी ही ज्यादा बेचैन होती जातीं। किसी गैर-खत्री हिंदू से शादी करना भी काफी बुरा था। लेकिन यह तो असहनीय था। मुसलमानों के साथ सामाजिक मेलजोल रखना एक बात थी, और अपने खून को दूषित करने और अपनी बेटी की बलि देने का सपना देखना बिलकुल अलग बात थी।

अंधकार के इस क्षण में वह किसका सहारा ले सकती थी? जब प्राण दोपहर के भोजन के लिए घर आया और उसने पूरी कहानी सुनी, तो उसने हल्के से सुझाव दिया कि वे उस लड़के से मिलें। श्रीमती रूपा मेहरा फिर भड़क उठीं। यह बिल्कुल असंभव था। प्राण ने तब मामले से दूर रहने और उसे शांत होने देने का फैसला किया। उसे इस बात का एहसास होने पर कोई दुख नहीं हुआ था कि सविता ने अपनी बहन का विश्वास

उससे छुपाया था, और सविता इस बात के लिए उससे और भी अधिक प्रेम करती थी। उसने अपनी माँ को शांत करने, लता को सांत्वना देने और उन्हें कम से कम दिन के समय अलग-अलग कमरों में रखने की कोशिश की।

लता ने बेडरूम में चारों ओर देखा और सोचने लगी कि जब उसका दिल पूरी तरह कहीं और था, तो वह अपनी माँ के साथ इस घर में क्या कर रही थी—एक नाव, एक क्रिकेट मैदान, एक संगीत कार्यक्रम, एक बरगद का बाग, पहाड़ियों में एक कुटिया, ब्लैंडिंग्स महल, कहीं भी, कहीं भी, बस वह कबीर के साथ थी। चाहे कुछ भी हो जाए, वह उससे कल तय समय पर मिलेगी। उसने खुद को बार-बार समझाया कि सच्चे प्यार का रास्ता कभी आसान नहीं होता।

श्रीमती रूपा मेहरा ने कलकत्ता में अरुण को एक पत्र लिखा। उनके आंसू पत्र पर गिरे और स्याही फैल गई। उन्होंने आगे लिखा: 'पुनश्च: मेरे आंसू इस पत्र पर गिरे हैं, पर क्या करूँ? मेरा दिल टूट गया है और केवल भगवान ही मुझे रास्ता दिखा सकते हैं। लेकिन उनकी इच्छा पूरी हो।' डाक शुल्क बढ़ने के कारण उन्हें प्रीपेड फॉर्म पर एक अतिरिक्त टिकट लगाना पड़ा।

बेहद कड़वाहट भरे मन से वह अपने पिता से मिलने गई। यह एक अपमानजनक मुलाकात साबित होने वाली थी। सलाह लेने के लिए उसे उनके क्रोध का सामना करना ही पड़ेगा। उसके पिता ने भले ही अपनी आधी उम्र की एक असभ्य महिला से शादी की हो, लेकिन लता को जिस खतरे का सामना करना पड़ रहा था, उसकी तुलना में वह शादी स्वर्ग में बनी जोड़ी जैसी थी।

जैसा कि उम्मीद थी, डॉक्टर किशन चंद सेठ ने भयानक पार्वती के सामने श्रीमती रूपा मेहरा को जमकर फटकारा और कहा कि वह कितनी

निकम्मी माँ हैं। लेकिन फिर उन्होंने आगे कहा, आजकल तो सब लोग बेवकूफ हो गए हैं। पिछले ही हफ्ते उन्होंने अस्पताल में आए एक मरीज से कहा था: 'तुम मूर्ख हो। दस-पंद्रह दिनों में तुम्हारी मौत हो जाएगी। ऑपरेशन पर पैसे बर्बाद करना चाहो तो कर लो, इससे तुम्हारी मौत और जल्दी हो जाएगी।' वह मूर्ख मरीज काफी परेशान हो गया था। यह साफ था कि आजकल किसी को सलाह देना और लेना नहीं आता। और न ही किसी को अपने बच्चों को अनुशासन सिखाना आता है; दुनिया की सारी मुसीबतें यहीं से शुरू होती हैं।

'महेश कपूर को देखो!' उन्होंने संतुष्टि भरे लहजे में कहा।

श्रीमती रूपा मेहरा ने सिर हिलाया।

और तुम उससे भी बदतर हो।

श्रीमती रूपा मेहरा फूट-फूटकर रोने लगीं।

'तुमने बड़े बेटे को बिगाड़ दिया'—अरुण की कार में सैर की याद करके वह हँस पड़ा—'और अब तुमने छोटे बेटे को भी बिगाड़ दिया है, और इसके लिए तुम खुद ही जिम्मेदार हो। और अब तुम मुझसे सलाह लेने तब आते हो जब बहुत देर हो चुकी होती है।'

उनकी बेटी ने कुछ नहीं कहा।

उन्होंने बड़े चाव से कहा, 'और आपके प्यारे चटर्जी भी बिलकुल वैसे ही हैं।' 'मैंने कलकत्ता के सूत्रों से सुना है कि उनका अपने बच्चों पर कोई नियंत्रण नहीं है। बिलकुल भी नहीं।' इस विचार से उन्हें एक विचार आया।

श्रीमती रूपा मेहरा अब संतोषजनक रूप से रो रही थीं, इसलिए उन्होंने उन्हें कुछ सलाह दी और उसे तुरंत अमल में लाने के लिए कहा।

श्रीमती रूपा मेहरा घर गईं, कुछ पैसे निकाले और सीधे ब्रह्मपुर जंक्शन रेलवे स्टेशन चली गईं। उन्होंने अगली शाम की ट्रेन से कलकत्ता के लिए

दो टिकट खरीदे।
अरुण को पत्र भेजने के बजाय, उसने उसे टेलीग्राम भेजा।
सविता ने अपनी मां को समझाने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। उसने कहा, 'कम से कम मई की शुरुआत तक तो इंतजार कर लीजिए, जब परीक्षा परिणाम आएंगे। लता बेवजह ही परेशान होंगी।'
श्रीमती रूपा मेहरा ने सविता से कहा कि अगर किसी लड़की का चरित्र खराब हो जाए तो परीक्षा परिणाम का कोई महत्व नहीं है, और ये परिणाम डाक से भेजे जा सकते हैं। वह लता की चिंता को भली-भांति समझती थीं। फिर उन्होंने भावनात्मक रूप से सविता पर पलटवार करते हुए कहा कि लता और उनके बीच कोई भी बातचीत कहीं और होनी चाहिए, सविता के सामने नहीं। सविता गर्भवती थी और उसे शांत रहना चाहिए। 'शांत रहो, यही सही शब्द है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने ज़ोर देकर दोहराया।
लता ने अपनी माँ से कुछ नहीं कहा, बस जब उसे यात्रा के लिए अपना सामान पैक करने को कहा गया तो वह चुप रही। श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'हम कल शाम 6:22 बजे वाली ट्रेन से कलकत्ता जा रहे हैं—बस यही बात है। कुछ भी कहने की हिम्मत मत करना।'
लता ने कुछ नहीं कहा। उसने अपनी माँ के प्रति कोई भावना व्यक्त करने से इनकार कर दिया।
उसने बड़े ध्यान से सामान पैक किया। उसने रात के खाने में कुछ खाया भी। कबीर की तस्वीर उसके मन में बसी रही।
रात के खाने के बाद वह छत पर बैठकर सोचने लगी। जब वह सोने आई, तो उसने बगल वाले बिस्तर पर लेटी हुई श्रीमती रूपा मेहरा को शुभ रात्रि नहीं कहा। श्रीमती रूपा मेहरा बहुत दुखी हुईं, लेकिन लता को उन पर दया नहीं आई। वह जल्दी ही सो गई और सपने में उसने देखा कि एक

धोबी का गधा, जिसका चेहरा डॉ. मखीजानी जैसा था, श्रीमती रूपा मेहरा का काला पर्स और उसके सारे छोटे-छोटे चांदी के सितारे चबा रहा था।

3.20

वह उठी, आराम किया। अभी भी अंधेरा था। उसने कबीर से छह बजे मिलने का वादा किया था। वह बाथरूम गई, अंदर से दरवाजा बंद किया, फिर पीछे के रास्ते से निकलकर बगीचे में चली गई। उसने स्वेटर ले जाने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि इससे उसकी माँ को शक हो जाता। वैसे भी, ज़्यादा ठंड नहीं थी।

लेकिन वह कांप रही थी। वह मिट्टी की चट्टानों की ओर नीचे उतरी, फिर पगडंडी पर आगे बढ़ी। कबीर बरगद के पेड़ों के झुरमुट में उनकी जड़ पर बैठा उसका इंतज़ार कर रहा था। उसके आने की आहट सुनकर वह उठ गया। उसके बाल बिखरे हुए थे और वह नींद में लग रहा था। जब वह उसकी ओर बढ़ी तो उसने जम्हाई भी ली। भोर की रोशनी में उसका चेहरा क्रिकेट मैदान के पास सिर पीछे करके हंसने के समय से भी ज़्यादा सुंदर लग रहा था।

उसे वह बहुत तनावग्रस्त और उत्साहित लग रही थी, लेकिन दुखी नहीं। उन्होंने चुंबन किया। फिर कबीर ने कहा:

'शुभ प्रभात।'

'शुभ प्रभात।'

'क्या आपको अच्छी नींद आई?'

‘बहुत अच्छा, धन्यवाद,’ लता ने कहा। ‘मैंने गधे का सपना देखा था।’

‘ओह, मुझसे नहीं?’

'नहीं।'

कबीर ने कहा, 'मुझे याद नहीं कि मैंने क्या सपना देखा, लेकिन मुझे रात को चैन की नींद नहीं आई।'

लता ने कहा, 'मुझे सोना बहुत पसंद है। मैं दिन में नौ या दस घंटे सो सकती हूं।'

‘अरे... तुम्हें ठंड तो नहीं लग रही? इसे क्यों नहीं पहन लेते?’ कबीर ने अपना स्वेटर उतारने की कोशिश की।

लता ने कहा, 'मैं तुमसे दोबारा मिलने के लिए तरस रही थी।'

‘लता?’ कबीर ने कहा। ‘तुम्हें क्या बात परेशान कर रही है?’ उसकी आँखें असामान्य रूप से चमक रही थीं।

‘कुछ नहीं,’ लता ने आंसू रोकते हुए कहा। ‘मुझे नहीं पता कि मैं तुमसे दोबारा कब मिल पाऊंगी।’

‘क्या हुआ है?’

मैं आज रात कलकत्ता जा रहा हूँ। मेरी माँ को हमारे बारे में पता चल गया है। जब उन्होंने तुम्हारा नाम सुना तो वे भड़क उठीं—मैंने तुम्हें बताया था कि मेरा परिवार कैसा है।’

कबीर जड़ पर बैठ गया और बोला, 'अरे नहीं।'

लता भी बैठ गई। कुछ देर बाद उसने कहा, 'क्या तुम अब भी मुझसे प्यार करते हो?'

‘अभी भी?’ कबीर ने कड़वी हंसी हंसते हुए कहा। ‘तुम्हें क्या हुआ है?’

'तुम्हें याद है तुमने पिछली बार क्या कहा था: कि हम एक दूसरे से प्यार करते थे और बस यही मायने रखता था?'

‘हां,’ कबीर ने कहा। ‘यही है।’

'चलो दूर चलते हैं-'

कबीर ने उदास होकर कहा, 'दूर। कहाँ?'

‘कहीं भी—पहाड़ों तक—वास्तव में कहीं भी।’

‘और सब कुछ छोड़ दूं?’

‘सब कुछ। मुझे परवाह नहीं। मैंने कुछ सामान पैक भी कर लिया है।’

व्यवहारिकता की इस झलक ने उन्हें चिंतित करने के बजाय मुस्कुराने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने कहा, 'लता, अगर हम चले गए तो हमारे पास कोई मौका नहीं बचेगा। चलो देखते हैं कि चीजें कैसे सुलझती हैं। हम उन्हें सुलझा लेंगे।'

मुझे लगा था कि तुम हमारी एक मुलाकात से दूसरी मुलाकात तक ही जीते हो।

कबीर ने उसके कंधे पर हाथ रख दिया।

'हाँ, मैं करता हूँ। लेकिन हम सब कुछ तय नहीं कर सकते। मैं आपको निराश नहीं करना चाहता, लेकिन—'

'तुम मुझे निराश कर रहे हो। हमें कब तक इंतजार करना पड़ेगा?'

'दो साल, मुझे लगता है। पहले मुझे अपनी डिग्री पूरी करनी होगी। उसके बाद मैं कैम्ब्रिज में दाखिले के लिए आवेदन करूंगा—या शायद भारतीय विदेश सेवा की परीक्षा दूंगा—'

'आह—' यह लगभग शारीरिक पीड़ा से भरी एक धीमी सी चीख थी।

उसे एहसास हुआ कि उसकी बातें कितनी स्वार्थी लग रही होंगी, और फिर वह रुक गया।

लता ने अपने हाथों से अपना चेहरा ढकते हुए कहा, 'दो साल में मेरी शादी हो जाएगी। तुम लड़की नहीं हो। तुम समझ नहीं सकती। मेरी माँ शायद मुझे ब्रह्मपुर वापस आने भी न दे।'

उनकी मुलाकातों में से एक की दो पंक्तियाँ उसके दिमाग में आईं:

दोस्ती नहीं, रेगिस्तान। मेरे साथ बागी बनो।

श्री नवरोजी के आनंदमय लोक से।

वह उठ खड़ी हुई। उसने अपने आँसू छिपाने की कोई कोशिश नहीं की। उसने कहा, 'मैं जा रही हूँ।'

'लता, ऐसा मत करो। मेरी बात सुनो,' कबीर ने कहा। 'हम फिर कब

एक-दूसरे से बात कर पाएंगे? अगर हम अभी बात नहीं करेंगे तो—’
लता तेजी से रास्ते पर चल रही थी, अब वह उससे पीछा छुड़ाने की कोशिश कर रही थी।
‘लता, समझदारी से काम लो।’
वह रास्ते के समतल शीर्ष पर पहुँच चुकी थी। कबीर उसके पीछे-पीछे चल रहा था। वह उससे इतनी दूर हटी हुई लग रही थी कि कबीर ने उसे छुआ तक नहीं। उसे आभास हुआ कि वह उसे ठुकरा देगी, शायद किसी और चुभने वाली बात से।
घर के आधे रास्ते में सबसे सुगंधित कामिनी की झाड़ियाँ थीं, जिनमें से कुछ पेड़ जितनी ऊँची हो गई थीं। हवा उनकी सुगंध से महक रही थी, शाखाएँ गहरे हरे पत्तों के बीच छोटे-छोटे सफेद फूलों से लदी थीं, और ज़मीन पंखुड़ियों से ढकी हुई थी। जब वे नीचे से गुज़रे, तो उसने धीरे से पत्तों को छुआ, और सुगंधित पंखुड़ियों की बौछार उसके बालों पर गिरी। अगर उसने इसे महसूस भी किया, तो उसने इसका कोई संकेत नहीं दिया।
वे बिना कुछ बोले आगे बढ़ते रहे। फिर लता मुड़ी।
‘वो मेरी बहन का पति है, ड्रेसिंग गाउन पहने हुए। वे मुझे ढूंढ रहे थे। वापस जाओ। अभी तक किसी ने हमें नहीं देखा है।’
'जी हां; डॉ. कपूर। मैं जानता हूं। मैं उनसे बात करूंगा। मैं उन्हें मना लूंगा —'
लता ने कहा, 'आप हर दिन चार दौड़ नहीं लगा सकते।'
कबीर अचानक रुक गया, उसके चेहरे पर दर्द की बजाय हैरानी के भाव थे। लता पीछे मुड़े बिना आगे बढ़ गई।
वह उसे फिर कभी नहीं देखना चाहती थी।
घर पर रूपा मेहरा को हिस्टीरिया हो रहा था। प्राण गंभीर था। सविता रो

रही थी। लता ने किसी भी सवाल का जवाब देने से इनकार कर दिया।
श्रीमती रूपा मेहरा और लता उसी शाम कलकत्ता के लिए रवाना हो गईं। श्रीमती रूपा मेहरा लगातार लता की शर्मनाक और गैरजिम्मेदाराना हरकतों का ब्योरा देती रहीं; कि कैसे वह अपनी मां को रामनवमी से पहले ब्रह्मपुर छोड़ने के लिए मजबूर कर रही थी; और कैसे वह अनावश्यक व्यवधान और खर्च का कारण बनी थी।
कोई जवाब न मिलने पर, उसने अंततः हार मान ली। पहली बार, उसने अन्य यात्रियों से मुश्किल से ही बात की।
लता चुप रही। वह पूरी तरह अंधेरा होने तक ट्रेन की खिड़की से बाहर देखती रही। उसका दिल टूट गया था और वह अपमानित महसूस कर रही थी। वह अपनी माँ से, कबीर से और इस उलझी हुई ज़िंदगी से तंग आ चुकी थी।

भाग चार

4.1

जब लता कबीर के प्यार में पड़ रही थी, उसी दौरान पुराने ब्रह्मपुर में बिल्कुल अलग तरह की घटनाएँ घट रही थीं, जो लता की कहानी से अप्रभावित नहीं थीं। इन घटनाओं में प्राण की बहन वीना और उसका परिवार शामिल था।
वीना टंडन मिसरी मंडी स्थित अपने घर में दाखिल हुईं, जहां उनके बेटे भास्कर ने चुंबन से उनका स्वागत किया। सर्दी होने के बावजूद उन्होंने खुशी-खुशी चुंबन स्वीकार किया। इसके बाद भास्कर दौड़कर उस छोटे सोफे पर वापस बैठ गया, जहां वह बैठा था—एक तरफ उसके पिता और दूसरी तरफ उसका मेहमान—और दस की घातों के बारे में अपनी व्याख्या

जारी रखी।

केदारनाथ टंडन अपने बेटे को स्नेह से देख रहे थे, लेकिन भास्कर की प्रतिभा से प्रसन्न होकर उन्होंने उसकी बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। उनके पिता के अतिथि, हरीश खन्ना, जिनका परिचय जूते के व्यापार में एक आपसी परिचित के माध्यम से केदारनाथ से हुआ था, ब्रह्मपुर के चमड़े और जूते के व्यापार के बारे में बात करना ज्यादा पसंद करते, लेकिन उन्होंने अपने मेज़बान के बेटे की बातों को ही प्राथमिकता देना उचित समझा—खासकर इसलिए कि भास्कर अपने उत्साह में इतना डूबा हुआ था कि पतंग उड़ाने के लिए बाहर जाने की अनुमति न मिलने पर उसे अपने श्रोताओं से विदा लेना बहुत निराशाजनक होता। उन्होंने भास्कर की बातों पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया।

“देखिए, हरीश चाचा, बात कुछ इस तरह है। पहले दस है, यानी दस की पहली घात। फिर सौ है, जो दस गुना दस है, यानी दस की दूसरी घात। फिर हज़ार है, जो दस की तीसरी घात है। फिर दस हज़ार है, जो दस की चौथी घात है—लेकिन यहीं से समस्या शुरू होती है, समझे? इसके लिए हमारे पास कोई विशेष शब्द नहीं है—और होना भी चाहिए। इसका दस गुना दस की पाँचवीं घात है, यानी एक लाख। फिर दस की छठी घात है, यानी दस लाख, दस की सातवीं घात है, यानी एक करोड़, और फिर एक और घात है जिसके लिए हमारे पास कोई शब्द नहीं है—दस की आठवीं घात। इसके लिए भी शब्द होना चाहिए। फिर दस की नौवीं घात है, यानी एक अरब, और फिर आती है दस की दसवीं घात। अब यह आश्चर्य की बात है कि दस की दसवीं घात जैसी महत्वपूर्ण संख्या के लिए न तो अंग्रेजी में और न ही हिंदी में कोई शब्द है।” “क्या आप मुझसे सहमत नहीं हैं, हरेश चाचा?” उसने अपनी चमकदार आँखों को हरेश के चेहरे पर टिकाए हुए कहा।

लेकिन आप जानते हैं,' हरेश ने उत्साही भास्कर को अपनी हाल की याद दिलाते हुए कहा, 'मुझे लगता है कि दस हजार के लिए एक विशेष शब्द है। कलकत्ता के चीनी चमड़ा व्यापारी, जिनके साथ हमारा कुछ लेन-देन है, ने एक बार मुझे बताया था कि वे दस हजार को गिनती की मानक इकाई के रूप में इस्तेमाल करते हैं। वे इसे क्या कहते हैं, मुझे याद नहीं है, लेकिन जैसे हम एक लाख को एक सामान्य मापक बिंदु के रूप में इस्तेमाल करते हैं, वैसे ही वे दस हजार का इस्तेमाल करते हैं।'

भास्कर एकदम उत्तेजित हो गया। 'लेकिन हरीश चाचा, आपको मेरे लिए वह नंबर ढूंढना ही होगा,' उसने कहा। 'आपको पता लगाना होगा कि उसे क्या कहते हैं। मुझे जानना ही होगा,' उसकी आँखों में एक रहस्यमयी चमक थी और उसके छोटे, मेंढक जैसे चेहरे पर एक अद्भुत आभा उभर आई थी।

'ठीक है,' हरेश ने कहा। 'मैं आपको बताता हूँ। जब मैं कानपुर वापस जाऊँगा, तो मैं पूछताछ करूँगा, और जैसे ही मुझे वह संख्या पता चलेगी, मैं आपको एक पत्र भेजूँगा। कौन जानता है, शायद उनके पास दस की आठवीं घात का भी कोई अंक हो।'

भास्कर ने हैरानी से पूछा, 'क्या आप सचमुच ऐसा सोचते हैं?' उनकी खुशी वैसी ही थी जैसे किसी डाक टिकट संग्राहक को किसी अजनबी से अचानक अधूरी श्रृंखला में से दो गुमशुदा डाक टिकट मिल जाएं। 'आप कानपुर कब लौट रहे हैं?'

चाय के प्याले लेकर आई वीना ने भास्कर को उसकी असभ्य टिप्पणी के लिए फटकारा और हरेश से पूछा कि उसने कितनी चम्मच चीनी ली।

हरेश ने गौर किया कि कुछ मिनट पहले जब उसने वीना को देखा था तो उसका सिर ढका हुआ नहीं था, लेकिन रसोई से लौटने के बाद उसने अपना सिर साड़ी से ढक लिया था। उसका अनुमान सही निकला कि

उसने ऐसा अपनी सास के कहने पर किया था। हालांकि वीना उससे थोड़ी बड़ी और कुछ हद तक गोल-मटोल थी, फिर भी वह उसके चेहरे की जीवंतता देखकर मंत्रमुग्ध हो गया। उसकी आँखों में हल्की सी चिंता झलक रही थी, जिससे उसके व्यक्तित्व में और भी जीवंतता आ गई थी।
वीना ने गौर किया कि उसके पति का मेहमान एक सुंदर युवक था। हरेश कद में छोटा, गठीला लेकिन गठीला नहीं, गोरा रंग का था और उसका चेहरा अंडाकार की बजाय चौकोर था। उसकी आँखें बड़ी नहीं थीं, लेकिन उनमें एक ऐसी प्रत्यक्ष दृष्टि थी जो उसके सरल स्वभाव की निशानी थी। उसने मन ही मन सोचा, रेशमी कमीज़ और अगेट के कफ़लिंक।
‘अब भास्कर, जाओ और अपनी दादी से बात करो,’ वीना ने कहा। ‘पापा के दोस्त उनसे कुछ महत्वपूर्ण मामलों पर बात करना चाहते हैं।’
भास्कर ने उन दोनों आदमियों को जिज्ञासा भरी नज़रों से देखा। हालाँकि उसके पिता ने अपनी आँखें बंद कर रखी थीं, फिर भी उन्हें एहसास हो गया था कि भास्कर उनके शब्दों का इंतज़ार कर रहा है।
‘जी हां। अपनी मां की बात मानो,’ केदारनाथ ने कहा। हरेश ने कुछ नहीं कहा, बस मुस्कुरा दिया। भास्कर नाराज़ होकर चला गया क्योंकि उसे अलग कर दिया गया था।
वीना ने माफी मांगते हुए कहा, 'उसकी परवाह मत करो, वह ज्यादा देर तक नाराज नहीं रहता। उसे अपनी पसंद की चीजों से बाहर रहना पसंद नहीं है। जब हम साथ में चौपर खेलते हैं—केदारनाथ और मैं—तो हमें यह सुनिश्चित करना पड़ता है कि भास्कर घर में न हो, नहीं तो वह खेलने की जिद करता है और हम दोनों को हरा देता है। बहुत परेशान करता है।'
'मैं इसकी कल्पना कर सकता हूं,' हरेश ने कहा।
समस्या यह है कि गणित के बारे में बात करने के लिए उसके पास कोई नहीं है, और कभी-कभी वह बहुत ही अंतर्मुखी हो जाता है। स्कूल में

उसके शिक्षक उस पर गर्व करने के बजाय उसके बारे में चिंतित रहते हैं। कभी-कभी ऐसा लगता है कि वह जानबूझकर गणित में खराब प्रदर्शन करता है—उदाहरण के लिए, अगर कोई प्रश्न उसे परेशान करता है। एक बार, जब वह बहुत छोटा था, मुझे याद है कि मेरे भाई मान ने उससे 17 में से 6 घटाने को कहा था। जब उसे 11 मिला, तो मान ने उससे फिर से 6 घटाने को कहा। जब उसे 5 मिला, तो मान ने उससे फिर से 6 घटाने को कहा। और भास्कर सचमुच रोने लगा! “नहीं, नहीं,” उसने कहा, “मान मामा मेरे साथ शरारत कर रहे हैं। उन्हें रोकिए!” और उसने एक हफ्ते तक उनसे बात नहीं की।

“हाँ, कम से कम एक-दो दिन तो ऐसा ही रहा,” केदारनाथ ने कहा। “लेकिन यह तब की बात है जब उसे ऋणात्मक संख्याओं के बारे में पता नहीं था। एक बार जब उसे पता चल गया, तो वह पूरे दिन छोटी चीज़ों में से बड़ी चीज़ें घटाने की ज़िद करता रहा। मुझे लगता है, जिस तरह से मेरा काम चल रहा है, उसे इस क्षेत्र में खूब अभ्यास मिल जाएगा।”

‘वैसे,’ वीना ने अपने पति से चिंतित होकर कहा, ‘मुझे लगता है कि आपको आज दोपहर बाहर जाना चाहिए। बजाज आज सुबह आया था और जब उसने आपको घर पर नहीं पाया, तो उसने कहा कि वह लगभग तीन बजे आएगा।’

उसके और उसके चेहरे के हावभाव से, हरेश ने अनुमान लगाया कि बजाज एक लेनदार हो सकता है।

केदारनाथ ने थोड़ी माफी मांगते हुए हरीश से कहा, 'हड़ताल खत्म होने के बाद हालात सुधर जाएंगे। फिलहाल मुझ पर काम का बोझ थोड़ा ज्यादा है।'

वीना ने कहा, “समस्या यह है कि अविश्वास बहुत ज़्यादा है। और स्थानीय नेता इसे और भी बदतर बना देते हैं। मेरे पिता अपने विभाग और

विधानसभा में बहुत व्यस्त रहते हैं, इसलिए केदारनाथ उनके निर्वाचन क्षेत्र के लोगों से संपर्क बनाए रखकर उनकी मदद करने की कोशिश करते हैं। इसलिए जब भी कोई समस्या आती है, लोग अक्सर उनके पास आते हैं। लेकिन इस बार जब केदारनाथ ने मध्यस्थता करने की कोशिश की, तो हालांकि—मुझे पता है कि मुझे यह नहीं कहना चाहिए और उन्हें यह पसंद नहीं आएगा, लेकिन यह बिल्कुल सच है—हालांकि दोनों पक्षों के लोग उन्हें काफी पसंद करते हैं और उनका सम्मान करते हैं, लेकिन मोचियों के नेताओं ने उनके सभी प्रयासों को विफल कर दिया—सिर्फ इसलिए कि वह एक व्यापारी हैं।"

"खैर, बात इतनी सीधी नहीं है," केदारनाथ ने कहा, लेकिन उन्होंने अपनी बात को तब तक टालने का फैसला किया जब तक कि वे और हरेश अकेले न हो जाएं। उन्होंने अपनी आँखें फिर से बंद कर लीं। हरेश थोड़ा चिंतित लग रहा था।

वीना ने हरीश से कहा, 'चिंता मत करो। वह न तो सो रहा है, न ऊब रहा है और न ही दोपहर के भोजन से पहले प्रार्थना कर रहा है।' उसके पति ने झट से अपनी आँखें खोलीं। उसने समझाया, 'वह हमेशा ऐसा करता है। हमारी शादी में भी—लेकिन फूलों की उन मालाओं के पीछे यह इतना स्पष्ट नहीं था।'

वह चावल तैयार है या नहीं यह देखने के लिए उठीं। पुरुषों को खाना परोसकर खा लेने के बाद, बूढ़ी श्रीमती टंडन कुछ देर के लिए कुछ बातें करने आईं। यह सुनकर कि हरेश खन्ना मूल रूप से दिल्ली के हैं, उन्होंने उनसे पूछा कि क्या वे नील दरवाजा के खन्ना परिवार से हैं या लखी कोठी में रहने वाले खन्ना परिवार से। जब हरेश ने कहा कि वे नील दरवाजा से हैं, तो उन्होंने बताया कि वह बचपन में एक बार वहाँ गई थीं।

हरेश ने कुछ बदलावों का वर्णन किया, कुछ व्यक्तिगत किस्से सुनाए,

दोनों महिलाओं द्वारा तैयार किए गए सरल लेकिन स्वादिष्ट शाकाहारी भोजन की प्रशंसा की, और वह बुजुर्ग महिला का पसंदीदा बन गया।

'मेरे बेटे को बहुत यात्रा करनी पड़ती है,' उसने हरेश से कहा, 'और रास्ते में कोई उसे ठीक से खाना नहीं खिलाता। यहाँ भी, अगर मैं न होती तो —'

'बिल्कुल सही,' वीना ने उसकी बात को दबाने की कोशिश करते हुए कहा। 'पुरुष के साथ बच्चे जैसा व्यवहार करना कितना ज़रूरी है। खाने-पीने के मामले में तो बिल्कुल। केदारनाथ—मेरा मतलब भास्कर के पिता से है'—उसने अपनी बात सुधारी क्योंकि उसकी सास ने उसे घूरकर देखा —'अपनी माँ के हाथ का खाना बहुत पसंद करते हैं। ये तो दुख की बात है कि पुरुषों को लोरी गाकर सुलाना पसंद नहीं होता।'

हरेश की आंखें झिलमिला उठीं और पलकों के बीच लगभग गायब हो गईं, लेकिन उसने अपने होंठों को स्थिर रखा।

वीना ने आगे कहा, 'मुझे आश्चर्य है कि भास्कर को मेरा बनाया खाना पसंद आता रहेगा या नहीं। शायद नहीं। जब उसकी शादी हो जाएगी तो...'

केदारनाथ ने अपना हाथ उठाया। उन्होंने हल्के से फटकार लगाते हुए कहा, 'सचमुच?'

हरेश ने देखा कि केदारनाथ की हथेली पर गहरे घाव थे।

'अब मैंने क्या कर दिया?' वीना ने मासूमियत से पूछा, लेकिन उसने बात बदल दी। उसके पति में एक ऐसी शालीनता थी जिससे वह थोड़ा डरती थी, और वह नहीं चाहती थी कि वह उसे गलत समझे।

'आप जानते हैं, भास्कर के गणित के प्रति जुनून के लिए मैं खुद को ही दोषी मानती हूँ,' उसने आगे कहा। 'मैंने उसका नाम सूर्य के नाम पर भास्कर रखा था। फिर, जब वह एक साल का हुआ, तो किसी ने मुझे

बताया कि हमारे प्राचीन गणितज्ञों में से एक का नाम भास्कर था, और अब हमारा भास्कर गणित के बिना नहीं रह सकता। नाम बहुत मायने रखते हैं। जब मेरा जन्म हुआ तब मेरे पिता शहर में नहीं थे, और मेरी माँ ने मेरा नाम वीणा रखा, यह सोचकर कि उन्हें यह पसंद आएगा क्योंकि उन्हें संगीत बहुत पसंद है। लेकिन इसके परिणामस्वरूप मैं भी संगीत के प्रति जुनूनी हो गई हूँ, और मैं भी इसके बिना नहीं रह सकती।'

'सच में?' हरेश ने कहा। 'और क्या आप वीणा बजाते हैं?'

'नहीं,' वीना खिलखिलाकर हंस पड़ी, उसकी आंखें चमक उठीं। 'मैं गाती हूं। मैं गाती हूं। मैं गाने के बिना नहीं रह सकती।'

बुजुर्ग श्रीमती टंडन उठीं और कमरे से बाहर चली गईं।

कुछ देर बाद, वीना ने कंधे उचकाते हुए उसके पीछे-पीछे चली गई।

4.2

जब दोनों आदमी अकेले रह गए, तो हरीश—जिसे उसके मालिक, कानपुर लेदर एंड फुटवियर कंपनी ने कुछ सामान खरीदने के लिए कुछ दिनों के लिए ब्रह्मपुर भेजा था—केदारनाथ की ओर मुड़ा और बोला: "खैर, मैं पिछले कुछ दिनों से बाज़ारों में घूम रहा हूँ और वहाँ क्या चल रहा है, या कम से कम क्या होना चाहिए, इसका कुछ अंदाज़ा लगा लिया है। लेकिन इतनी भागदौड़ के बावजूद, मुझे नहीं लगता कि मैं इसे पूरी तरह समझ पाया हूँ। खासकर आपकी उधार प्रणाली—ये सारे पर्ची और वचन पत्र वगैरह। और छोटे निर्माता—जो अपने घरों में जूते बनाते हैं—हड़ताल पर क्यों चले गए हैं? यकीनन इससे उन्हें बहुत परेशानी हो रही होगी। और आप जैसे व्यापारियों के लिए तो यह बहुत बुरा होगा जो सीधे उनसे खरीदते हैं।"

'अच्छा,' केदारनाथ ने अपने हल्के भूरे बालों में हाथ फेरते हुए कहा, 'चिट प्रणाली के बारे में—शुरुआत में तो मुझे भी समझ नहीं आया था। जैसा

कि मैंने बताया, विभाजन के समय हमें लाहौर से बाहर निकाल दिया गया था और तब भी मैं जूते-चप्पल के व्यापार में नहीं था। यहाँ आते समय मैं आगरा और कानपुर से होकर गुजरा था और आप बिल्कुल सही कह रहे हैं, कानपुर में हमारे यहाँ जैसी व्यवस्था नहीं है। लेकिन क्या आप आगरा गए हैं?'

'हां,' हरीश ने कहा। 'मैंने देखा है। लेकिन यह तब की बात है जब मैंने इंडस्ट्री में कदम नहीं रखा था।'

'खैर, आगरा में भी कुछ हद तक हमारी जैसी ही व्यवस्था है।' और केदारनाथ ने इसका संक्षिप्त विवरण दिया।

क्योंकि व्यापारियों के पास हमेशा नकदी की कमी रहती थी, इसलिए वे जूते बनाने वालों को आंशिक रूप से बाद की तारीख वाली पर्चीयाँ देकर भुगतान करते थे। जूते बनाने वाले कच्चे माल खरीदने के लिए नकदी तभी जुटा पाते थे जब वे इन पर्चीयों को कहीं और भुनाते थे। उन्हें वर्षों से यह आशंका सता रही थी कि व्यापारी उनसे अनुचित रूप से ऋण वसूल रहे हैं। अंततः, जब व्यापारियों ने सामूहिक रूप से पर्ची और नकदी का अनुपात बढ़ाने का प्रयास किया, तो जूते बनाने वालों ने हड़ताल कर दी।

'और बेशक, आप सही कह रहे हैं,' केदारनाथ ने आगे कहा, 'हड़ताल से सभी को नुकसान होता है—वे भूखे मर सकते हैं और हम बर्बाद हो सकते हैं।'

'मुझे लगता है कि मोची दावा करेंगे,' हरेश ने चिंतनशील भाव से कहा, 'कि चिट प्रणाली के परिणामस्वरूप वे ही आपके विस्तार के लिए वित्तपोषण कर रहे हैं।'

हरेश की आवाज़ में आरोप का कोई स्वर नहीं था, बल्कि एक व्यावहारिक व्यक्ति की जिज्ञासा थी जो तथ्यों और दृष्टिकोणों को स्पष्ट करना चाहता था। केदारनाथ ने उसकी जिज्ञासा का जवाब दिया और आगे बढ़े:

‘वे यही दावा करते हैं,’ उन्होंने सहमति जताते हुए कहा। ‘लेकिन वे अपने खुद के विस्तार, पूरे बाजार के विस्तार के लिए भी धन जुटा रहे हैं,’ उन्होंने आगे कहा। ‘इसके अलावा, उनके भुगतान का केवल एक हिस्सा ही पोस्ट-डेटेड चिटों से किया जाता है। अधिकांश भुगतान अभी भी नकद में होता है। मुझे डर है कि हर कोई मामले को काले और सफेद रंग में देखने लगा है, और व्यापारियों को ही अक्सर काला रंग दिया जाता है। यह अच्छी बात है कि गृह मंत्री एल.एन. अग्रवाल एक व्यापारी समुदाय से आते हैं। वे इस क्षेत्र के एक हिस्से से विधायक हैं, और वे कम से कम हमारी बात को समझते हैं। मेरी पत्नी के पिता के साथ राजनीतिक रूप से —या व्यक्तिगत रूप से भी—बिल्कुल भी अच्छे संबंध नहीं हैं, लेकिन जैसा कि मैं वीना को बताता हूं जब वह सुनने के मूड में होती है, अग्रवाल व्यापार के तौर-तरीकों को उसके पिता से बेहतर समझते हैं।’

“अच्छा, क्या आप मुझे दोपहर में मिसरी मंडी घुमा सकते हैं?” हरेश ने पूछा। “इससे मुझे बेहतर जानकारी मिलेगी।”

हरेश ने सोचा कि यह दिलचस्प बात है कि दो शक्तिशाली और प्रतिद्वंद्वी मंत्री पड़ोसी निर्वाचन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

केदारनाथ दुविधा में थे कि सहमत हों या नहीं, और हरेश ने उनके चेहरे पर यह स्पष्ट देख लिया होगा। केदारनाथ, हरेश के जूते बनाने के तकनीकी ज्ञान और उद्यमशीलता की भावना से प्रभावित थे और व्यापारिक संबंध स्थापित करने का प्रस्ताव रखने की सोच रहे थे। शायद, उन्होंने सोचा, कानपुर लेदर एंड फुटवियर कंपनी सीधे उनसे जूते खरीदने में रुचि रखेगी। आखिरकार, कई बार ऐसा होता था कि सीएलएफसी जैसी कंपनियों को जूतों की दुकानों से छोटे ऑर्डर मिलते थे, जैसे किसी विशेष प्रकार के 5,000 जोड़ी जूते, और ऐसे ऑर्डर पूरे करने के लिए अपने कारखाने को नए उपकरणों से लैस करना उनके लिए फायदेमंद

नहीं होता था। ऐसे में, अगर केदारनाथ यह सुनिश्चित कर सकें कि उन्हें ब्रह्मपुर के स्थानीय जूता निर्माताओं से सीएलएफसी की गुणवत्ता संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने वाले जूते मिलें और उन्हें कानपुर भेज दिया जाए, तो यह उनके और हरेश के नियोक्ताओं दोनों के लिए लाभदायक साबित हो सकता है।

हालांकि, ये अशांत दिन थे, हर कोई भारी आर्थिक दबाव में था, और हरेश को ब्रह्मपुर में जूते के व्यापार की विश्वसनीयता या दक्षता के बारे में जो धारणा मिल सकती थी, वह अनुकूल नहीं थी।

लेकिन हरेश की अपने बेटे के प्रति छोटी सी दयालुता और अपनी माँ के प्रति सम्मानजनक रवैये ने स्थिति को बदल दिया। 'ठीक है, हम चलते हैं,' उसने कहा। 'लेकिन बाज़ार वास्तव में बाद में, शाम के समय ही खुलेगा —भले ही हड़ताल के कारण यह कितना भी कम क्यों न हो गया हो। ब्रह्मपुर शू मार्ट, जहाँ मेरा स्टॉल है, छह बजे खुलता है। लेकिन इस बीच मेरे पास एक सुझाव है। मैं तुम्हें कुछ ऐसी जगहें दिखाऊँगा जहाँ जूते वास्तव में बनाए जाते हैं। यह तुम्हारे लिए इंग्लैंड में—या कानपुर के कारखाने में—निर्माण की उन स्थितियों से बिल्कुल अलग होगा जो तुमने देखी हैं।'

हरेश तुरंत सहमत हो गया।

जैसे ही वे सीढ़ियों से नीचे उतरे, ऊपर से जालीदार खिड़कियों से छनकर आती दोपहर की धूप उन पर पड़ रही थी, तब हरेश ने सोचा कि यह घर डिजाइन में नील दरवाजा में उसके पालक पिता के घर से कितना मिलता-जुलता है - हालांकि, निश्चित रूप से, यह उससे काफी छोटा है।

गली के कोने पर, जहाँ से वह थोड़ी चौड़ी और अधिक भीड़भाड़ वाली गली में खुलती थी, एक पान की दुकान थी। वे रुक गए। केदारनाथ ने पूछा, 'सादा या मीठा?'

‘सादा, तंबाकू के साथ।’

अगले पाँच मिनट तक, जब वे साथ-साथ चल रहे थे, हरेश ने कुछ नहीं कहा क्योंकि उसने पान को निगले बिना ही मुँह में रखा हुआ था। वह बाद में उसे गली के किनारे बहने वाली छोटी नाली के एक छेद में थूक देगा। लेकिन उस पल, तंबाकू के सुखद नशे में, अपने चारों ओर की हलचल, चिल्लाहट, बातचीत और साइकिल की घंटियों, गाय की घंटियों और राधाकृष्ण मंदिर की घंटियों की आवाज़ के बीच, उसे फिर से पुरानी दिल्ली में अपने पालक पिता के घर के पास वाली गली की याद आ गई, जहाँ उसके माता-पिता की मृत्यु के बाद उसका पालन-पोषण हुआ था।

केदारनाथ की बात करें तो, हालांकि उन्होंने अपने लिए एक सादा पान लिया था, वे भी ज्यादा नहीं बोले। वे रेशमी कमीज पहने इस युवक को शहर के सबसे गरीब इलाकों में से एक में ले जा रहे थे, जहाँ जाटव मोची दयनीय हालत में रहते और काम करते थे, और वे सोच रहे थे कि उनका बेटा कैसा व्यवहार करेगा। उन्होंने लाहौर में अपनी अचानक अमीरी से 1947 की लगभग कंगाली में गिरने के बारे में सोचा; पिछले कुछ वर्षों में वीणा और भास्कर के लिए बड़ी मुश्किल से हासिल की गई सुरक्षा; मौजूदा हड़ताल की समस्याएँ और इससे उनके लिए पैदा होने वाले खतरे। उन्हें पूरा यकीन था कि उनके बेटे में प्रतिभा की कोई खास चिंगारी है। उन्होंने उसे दून जैसे किसी स्कूल में भेजने का सपना देखा था, और शायद बाद में ऑक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज भी। लेकिन समय कठिन था, और क्या भास्कर को वह विशेष शिक्षा मिल पाएगी जिसका वह हकदार था, क्या वीणा संगीत की अपनी चाहत को बरकरार रख पाएगी, क्या वे अपना मामूली किराया भी चुका पाएंगे, ये ऐसे सवाल थे जो उन्हें परेशान करते रहे और उनकी उम्र बढ़ाते रहे।

लेकिन ये तो प्रेम के बंधक हैं, उसने मन ही मन कहा, और खुद से यह

पूछना व्यर्थ है कि क्या मैं अपनी पत्नी और बच्चे के बदले अपने बेफिक्र बालों का सौदा करूंगा।

4.3

वे एक और चौड़ी गली में निकले, और फिर चौक के ऊँचे स्थान से कुछ ही दूरी पर स्थित एक गर्म, धूल भरी सड़क पर आ गए। इस भीड़भाड़ वाले इलाके के दो प्रमुख स्थलों में से एक विशाल, गुलाबी रंग की तीन मंजिला इमारत थी। यह कोतवाली या शहर का पुलिस स्टेशन था, जो पूर्व प्रदेश का सबसे बड़ा पुलिस स्टेशन था। दूसरा प्रमुख स्थल, जो सौ गज की दूरी पर था, सुंदर और सादगीपूर्ण आलमगिरी मस्जिद थी, जिसे सम्राट औरंगजेब ने एक विशाल मंदिर के खंडहरों पर शहर के मध्य में बनवाने का आदेश दिया था।

मुगल काल के उत्तरार्ध और ब्रिटिश अभिलेखों में इस स्थान के आसपास हिंदू-मुस्लिम दंगों की एक श्रृंखला का उल्लेख मिलता है। यह स्पष्ट नहीं है कि सम्राट के क्रोध का वास्तविक कारण क्या था। यह सच है कि वह अपने वंश के महान सम्राटों में सबसे कम सहिष्णु था, लेकिन ब्रह्मपुर के आसपास का क्षेत्र उसके सबसे बुरे अत्याचारों से बचा रहा। उसके परदादा अकबर द्वारा निरस्त किए गए गैर-मुस्लिमों पर कर की पुनः प्रयोज्यता ने ब्रह्मपुर के नागरिकों को उसी प्रकार प्रभावित किया जैसे पूरे साम्राज्य के नागरिकों को। लेकिन मंदिरों को ध्वस्त करने के लिए आमतौर पर किसी असाधारण कारण की आवश्यकता होती थी, जैसे कि यह संकेत कि इसका उपयोग सशस्त्र या राजनीतिक प्रतिरोध के केंद्र के रूप में किया जा रहा था। औरंगजेब के समर्थक अक्सर यह दावा करते थे कि असहिष्णुता के लिए उसकी बदनामी उसकी योग्यता से कहीं अधिक थी और वह शियाओं के प्रति उतना ही कठोर था जितना हिंदुओं के प्रति। लेकिन ब्रह्मपुर के अधिक रूढ़िवादी हिंदू नागरिकों के लिए, पिछले 250

वर्षों के इतिहास ने उस व्यक्ति के प्रति उनकी घृणा को कम नहीं किया था जिसने स्वयं महान संहारक शिव के सबसे पवित्र मंदिरों में से एक को नष्ट करने का साहस किया था।

मंदिर के गर्भगृह में स्थित विशाल शिवलिंग के बारे में अफवाह थी कि चंद्रचूड़ मंदिर के पुजारियों ने उसके ध्वस्त होने से ठीक एक रात पहले उसे सुरक्षित रख लिया था। उन्होंने उसे गहरे कुएं में नहीं डुबोया, जैसा कि उन दिनों अक्सर होता था, बल्कि गंगा के किनारे श्मशान घाट के पास उथले पानी और रेत में डुबो दिया था। उस विशाल पत्थर को वहां कैसे ले जाया गया, यह अज्ञात है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसके स्थान की जानकारी गुप्त रखी गई थी और दस से अधिक पीढ़ियों तक एक पुजारी से दूसरे पुजारी को वंशानुगत रूप से सौंपी जाती रही। हिंदू पूजा की सभी सामान्य मूर्तियों में से, संभवतः पवित्र शिवलिंग ही वह मूर्ति थी जिसे इस्लाम के कट्टरपंथी धर्मशास्त्रियों ने सबसे अधिक तिरस्कृत किया था। जहां भी संभव हुआ, उन्होंने इसे धार्मिक घृणा की विशेष भावना के साथ नष्ट कर दिया। हालांकि मुस्लिम खतरे के फिर से उभरने की कोई संभावना थी, पुजारियों ने अपने पारिवारिक ज्ञान पर अमल नहीं किया। लेकिन स्वतंत्रता और पाकिस्तान-भारत के विभाजन के बाद, चंद्रचूड़ मंदिर के पुजारी, जो श्मशान घाट के पास एक झोपड़ी में गरीबी में रहते थे, ने महसूस किया कि अब सामने आकर अपनी पहचान बताना सुरक्षित है। उन्होंने अपने मंदिर का पुनर्निर्माण करवाने और शिवलिंग को खुदाई करवाकर पुनः स्थापित करवाने का प्रयास किया। पहले तो पुरातत्व सर्वेक्षण ने उनके द्वारा दिए गए शिवलिंग के स्थान संबंधी विवरण पर विश्वास करने से इनकार कर दिया। शिवलिंग के संरक्षित होने की अफवाह अन्य अभिलेखों से समर्थित नहीं थी। और यदि यह सच भी होता, तो गंगा नदी का मार्ग बदल चुका था, रेत और उथले पानी में

बदलाव आ चुका था, और शिवलिंग के स्थान का वर्णन करने वाले अलिखित श्लोक या मंत्र बार-बार प्रसारित होने के कारण स्वयं ही गलत हो गए होंगे। यह भी संभव है कि पुरातत्व सर्वेक्षण के अधिकारी शिवलिंग को खुदाई से होने वाले संभावित प्रभावों से अवगत थे या उन्हें सूचित किया गया था और उन्होंने जन शांति के लिए इसे गर्भगृह में ऊर्ध्वाधर रखने की तुलना में रेत के नीचे क्षैतिज रखना अधिक सुरक्षित समझा हो। किसी भी स्थिति में, पुजारी को उनसे कोई सहायता नहीं मिली।

मस्जिद की लाल दीवारों के नीचे से गुज़रते हुए, हरेश, जो ब्रह्मपुर का निवासी नहीं था, ने पूछा कि बाहरी द्वारों पर काले झंडे क्यों लगे हैं। केदारनाथ ने उदासीन स्वर में उत्तर दिया कि ये झंडे पिछले सप्ताह ही लगाए गए थे, जब पास की ज़मीन पर मंदिर के लिए भूमि पूजन हुआ था। लाहौर में अपना घर, ज़मीन और आजीविका खो चुके केदारनाथ मुसलमानों के प्रति द्वेष रखने के बजाय धार्मिक कट्टरपंथियों से तंग आ चुके थे। उनकी माँ उनके इस निष्पक्ष रवैये से बहुत नाराज़ थीं।

केदारनाथ ने कहा, “किसी स्थानीय पुजारी को गंगा में एक शिवलिंग मिला है। ऐसा माना जाता है कि यह चंद्रचूड़ मंदिर से आया है, वही महान शिव मंदिर जिसे औरंगजेब ने नष्ट कर दिया था। मस्जिद के स्तंभों पर हिंदू नक्काशी के कुछ अंश हैं, इसलिए यह किसी खंडहर मंदिर से ही बना होगा, पता नहीं कितने समय पहले। संभलकर चलें!”

हरेश बाल-बाल कुत्ते की गंदगी पर पैर रखने से बच गया। उसने गहरे लाल रंग के स्टाइलिश जूते पहने हुए थे और उसे पहले से चेतावनी मिलने पर बहुत खुशी हुई।

“खैर,” हरेश की फुर्ती पर मुस्कुराते हुए केदारनाथ ने आगे कहा, “मर्ह के राजा का उस घर पर अधिकार है जो मस्जिद की पश्चिमी दीवार के उस पार स्थित था—या यूँ कहें कि स्थित था। उसने उसे तुड़वा दिया है और

वहाँ एक मंदिर बनवा रहा है। एक नया चंद्रचूड़ मंदिर। वह सचमुच पागल है। चूंकि वह मस्जिद को तोड़कर मूल स्थान पर निर्माण नहीं कर सकता, इसलिए उसने ठीक पश्चिम की ओर निर्माण करने और वहाँ गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित करने का फैसला किया है। उसके लिए यह सोचना एक बड़ा मजाक है कि मुसलमान दिन में पाँच बार उसके शिवलिंग की दिशा में सिर झुकाएँगे।"

एक खाली साइकिल रिक्शा देखकर केदारनाथ ने उसे रोका और वे उसमें बैठ गए। उन्होंने कहा, 'रविदासपुर चलते हैं,' और फिर आगे बोले, 'देखो, हम जैसे लोग खुद को शांत और आध्यात्मिक मानते हैं, लेकिन दूसरों को नीचा दिखाने में हमें मजा आता है, है ना? मैं मारह के राजा जैसे लोगों को समझ ही नहीं पाता। वह खुद को नया गणेश समझता है, जिसका जीवन का दिव्य उद्देश्य शिव की सेनाओं को राक्षसों पर विजय दिलाना है। और फिर भी वह शहर की आधी मुस्लिम वेश्याओं पर मोहित है। जब उसने मंदिर की नींव रखी, तब दो लोगों की मौत हो गई। हालांकि इससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ा, शायद उसने अपने समय में अपने राज्य में इससे बीस गुना ज्यादा लोगों की हत्या करवाई होगी। खैर, उन दो लोगों में से एक मुस्लिम था और तभी मुल्लाओं ने मस्जिद के गेट पर काले झंडे फहरा दिए। और अगर तुम ध्यान से देखोगे, तो तुम्हें मीनारों पर भी कुछ छोटे झंडे दिखाई देंगे।'

हरेश पीछे मुड़कर देखने लगा, लेकिन अचानक ढलान पर तेज़ी से नीचे उतर रहा साइकिल रिक्शा एक धीमी गति से चल रही कार से टकरा गया और दोनों अचानक रुक गए। कार भीड़भाड़ वाली सड़क पर धीरे-धीरे चल रही थी, किसी को कोई चोट नहीं आई, लेकिन साइकिल के कुछ पहिये मुड़ गए थे। दुबला-पतला और कमज़ोर दिखने वाला रिक्शा चालक साइकिल से कूदा, जल्दी से अपने आगे के पहिये पर नज़र डाली और

गुस्से में कार की खिड़की पर हाथ मारा।
‘मुझे पैसे दो! फटाफट! तुरंत!’ वह चिल्लाया।
वर्दी पहने ड्राइवर और दो अधेड़ उम्र की महिला यात्री इस अचानक मांग पर आश्चर्यचकित रह गए। ड्राइवर ने जैसे-तैसे संभलाते हुए खिड़की से अपना सिर बाहर निकाला।
‘क्यों?’ वह चिल्लाया। ‘तुम बिना नियंत्रण के ढलान से नीचे आ रहे थे। हम तो हिल भी नहीं रहे थे। अगर तुम आत्महत्या करना चाहते हो तो क्या मुझे तुम्हारे अंतिम संस्कार का खर्च उठाना पड़ेगा?’
‘पैसे! जल्दी! तीन तीलियाँ—तीन रुपये!’ रिक्शावाले ने एक लुटेरे की तरह रूखेपन से कहा।
ड्राइवर ने अपना चेहरा दूसरी तरफ मोड़ लिया। रिक्शावाले का गुस्सा और बढ़ गया।
'तुम हरामखोर! मेरे पास पूरा दिन नहीं है। अगर तुमने मेरे नुकसान की भरपाई नहीं की, तो मैं तुम्हारी कार को ही कुछ नुकसान पहुंचा दूंगा।'
ड्राइवर शायद बदले में कुछ अपमानजनक बातें कह देता, लेकिन चूंकि वह अपने मालिकों के साथ था, जो घबरा रहे थे, इसलिए वह चुप रहा।
एक और रिक्शावाला वहाँ से गुजरा और हौसला बढ़ाते हुए चिल्लाया: ‘बिल्कुल सही, भाई, डरो मत।’ तब तक लगभग बीस लोग खेल देखने के लिए इकट्ठा हो चुके थे।
पीछे बैठी महिलाओं में से एक ने कहा, 'अरे, उसे पैसे दे दो और चलो चलते हैं। इतनी गर्मी है कि बहस करने का मन नहीं कर रहा।'
‘तीन रुपये!’ रिक्शावाले ने दोहराया।
हरेश इस जबरन वसूली को रोकने के लिए रिक्शा से कूदने ही वाला था कि तभी रिक्शा चालक ने अचानक रिक्शावाले पर आठ आना का सिक्का फेंक दिया। अपनी बेबसी से क्रोधित होकर चालक ने कहा, 'यह

लो और दफा हो जाओ!'
जब गाड़ी चली गई और भीड़ छंट गई, तो रिक्शावाला खुशी से गाने लगा। उसने झुककर बीस सेकंड में रिक्शा के दो मुड़े हुए पहिये सीधे कर दिए और रिक्शा फिर से चल पड़ा।
4.4
केदारनाथ ने कहा, 'मैं जगत राम के घर केवल दो बार ही गया हूं, इसलिए रविदासपुर पहुंचने के बाद मुझे पूछताछ करनी होगी।'
'जगत राम?' हरेश ने पूछा, वह अभी भी तीलियों वाली घटना के बारे में सोच रहा था और रिक्शावाले पर गुस्सा था।
'जिस मोची की कार्यशाला को हम देखने जा रहे हैं। वह एक मोची है, एक जाटव है। वह मूल रूप से उन टोकरी बेचने वालों में से एक था जिनके बारे में मैंने आपको बताया था, जो अपने जूते मिसरी मंडी में लाते हैं और उन्हें किसी भी व्यापारी को बेच देते हैं जो उन्हें खरीदना चाहता है।'
और अब?
अब उसकी अपनी कार्यशाला है। वह भरोसेमंद है, इन अधिकांश मोचियों के विपरीत, जो जेब में थोड़ा पैसा आ जाने पर समयसीमा या वादों की परवाह नहीं करते। और वह कुशल भी है। और वह शराब नहीं पीता—ज़्यादा नहीं। मैंने उसे कुछ दर्जन जोड़ी जूतों का छोटा सा ऑर्डर देकर शुरुआत की, और उसने अच्छा काम किया। जल्द ही मैं उससे नियमित रूप से ऑर्डर देने लगा। अब वह अपने परिवार के अलावा दो-तीन लोगों को काम पर रख सकता है। इससे उसे और मुझे दोनों को फायदा हुआ है। और शायद आप यह देखना चाहें कि क्या उसके काम की गुणवत्ता सीएलएफसी में आपके लोगों की ज़रूरतों के अनुरूप है। अगर ऐसा है तो...' केदारनाथ ने वाक्य का बाकी हिस्सा अधूरा छोड़ दिया।
हरेश ने सिर हिलाया और उसे दिलासा भरी मुस्कान दी। थोड़ी देर रुककर

हरेश ने कहा, “अब जब हम गलियों से बाहर आ गए हैं, तो बहुत गर्मी है। और यहाँ चमड़ा कारखाने से भी बदतर बदबू आ रही है। अब हम कहाँ हैं? रविदासपुर में?’

‘अभी नहीं। वो रेलवे लाइन के दूसरी तरफ है। वहाँ इतनी बदबू नहीं आती। हाँ, यहाँ एक जगह है जहाँ चमड़ा तैयार किया जाता है, लेकिन वो गंगा किनारे वाले कारखाने जैसी कोई बढ़िया चमड़ा फैक्ट्री नहीं है—’

'शायद हमें नीचे जाकर इसे देखना चाहिए,' हरेश ने रुचि दिखाते हुए कहा।

‘लेकिन यहाँ देखने लायक कुछ नहीं है,’ केदारनाथ ने अपनी नाक ढकते हुए विरोध जताया।

'क्या आप पहले भी यहां आ चुके हैं?' हरेश ने पूछा।

'नहीं!'

हरेश हँसा। उसने रिक्शावाले पर चिल्लाते हुए कहा, 'यहीं रुको!' केदारनाथ के विरोध के बावजूद, उसने उसे रिक्शा से उतरने के लिए मना लिया, और वे दोनों बदबूदार रास्तों और नीची झोपड़ियों के जाल में घुस गए, मानो अपनी नाक के सहारे चमड़े के कारखानों की ओर चल पड़े हों। कच्ची पगडंडियाँ अचानक एक बड़े खुले मैदान में आकर रुक गईं, जो झोपड़ियों से घिरा हुआ था और ज़मीन में खोदे गए गोल गड्ढों से भरा हुआ था, जिनमें सख्त मिट्टी भरी हुई थी। पूरे इलाके से भयानक दुर्गंध आ रही थी। हरेश को उल्टी जैसा महसूस हुआ; केदारनाथ को घिन से लगभग उल्टी आ गई। सूरज की तेज़ धूप पड़ रही थी और गर्मी से दुर्गंध और भी बढ़ गई थी। कुछ गड्ढे सफेद तरल से भरे थे, तो कुछ में भूरा कसैला घोल भरा था। काले, दुबले-पतले आदमी, जिन्होंने सिर्फ लुंगी पहनी हुई थी, गड्ढों के एक किनारे खड़े होकर खालों के ढेर से चर्बी और बाल खुरच रहे थे। उनमें से एक गड्ढे में खड़ा था और किसी बड़ी खाल से जूझता हुआ

प्रतीत हो रहा था। एक सुअर रुके हुए काले पानी से भरी खाई में पानी पी रहा था। गंदे उलझे बालों वाले दो बच्चे गड्ढों के पास धूल में खेल रहे थे। अजनबियों को देखकर वे अचानक रुक गए और उन्हें घूरने लगे।

‘अगर आप शुरू से पूरी प्रक्रिया देखना चाहते तो मैं आपको वह जगह दिखा सकता था जहाँ मृत भैंसों की खाल उतारकर गिद्धों के लिए छोड़ दी जाती है,’ केदारनाथ ने व्यंग्यपूर्वक कहा। ‘यह अधूरे बाईपास के पास ही है।’

अपने साथी को यहाँ आने के लिए मजबूर करने पर हरेश को थोड़ा अफ़सोस हुआ और उसने सिर हिलाया। उसने पास की झोपड़ी की ओर देखा, जो एक साधारण सी मांस छीलने वाली मशीन के अलावा खाली थी। हरेश पास गया और उसका मुआयना किया। अगली झोपड़ी में एक पुरानी चीरने वाली मशीन और एक गड्ढा था। तीन युवक ज़मीन पर पड़ी भैंस की खाल पर काला पेस्ट लगा रहे थे। उनके पास नमकीन भेड़ की खालों का एक सफेद ढेर था। अजनबियों को देखकर उन्होंने काम रोक दिया और उनकी ओर देखने लगे।

किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा, न बच्चों ने, न उन तीन युवकों ने, न ही उन दो अजनबियों ने।

अंततः केदारनाथ ने चुप्पी तोड़ी। उन्होंने तीन युवकों में से एक को संबोधित करते हुए कहा, 'भाई, हम तो बस यह देखने आए हैं कि चमड़ा कैसे तैयार किया जाता है। क्या आप हमें थोड़ा दिखाएंगे?'

उस आदमी ने उसे गौर से देखा, और फिर हरेश को घूरने लगा, उसकी ऑफ-व्हाइट सिल्क की कमीज, उसके जूते, उसका ब्रीफकेस और उसका व्यावसायिक अंदाज़ को ध्यान से देखा।

उन्होंने केदारनाथ से पूछा, 'आप कहाँ से हैं?'

‘हम इसी कस्बे के रहने वाले हैं। हम रविदासपुर जा रहे हैं। वहां एक

स्थानीय व्यक्ति है जिसके साथ मैं काम करता हूं।'
रविदासपुर लगभग पूरी तरह से मोचियों का इलाका था। लेकिन अगर केदारनाथ ने यह सोचा था कि किसी दूसरे चमड़े के कारीगर को अपना सहकर्मी बताकर वह यहाँ के चमड़ा कारीगरों के बीच स्वीकार्यता हासिल कर लेगा, तो वह गलत था। चमड़ा कारीगरों या चमारों के बीच भी एक ऊँच-नीच का क्रम था। मोची—जिस आदमी से वे मिलने जा रहे थे, उसकी तरह—चमड़ा छीलने वालों और चमड़ा बनाने वालों को नीचा समझते थे। बदले में, जिन्हें नीचा समझा जाता था, वे मोचियों के प्रति अपनी नापसंदगी ज़ाहिर करते थे।
'वह एक ऐसा इलाका है जहां हम जाना पसंद नहीं करते,' युवकों में से एक ने संक्षेप में कहा।
कुछ देर रुकने के बाद हरेश ने पूछा, 'यह पेस्ट कहाँ से आता है?'
'ब्रह्मपुर से,' उस युवक ने स्पष्ट जवाब देने से इनकार करते हुए कहा।
फिर काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा।
फिर एक बूढ़ा आदमी प्रकट हुआ जिसके हाथ किसी गहरे चिपचिपे तरल पदार्थ से गीले और टपक रहे थे। वह झोपड़ी के प्रवेश द्वार पर खड़ा होकर उन्हें देखने लगा।
'अरे! ये घटिया पानी!' उसने अंग्रेज़ी में कहा और फिर से टूटी-फूटी हिंदी बोलने लगा। उसकी आवाज़ फटी हुई थी और वह नशे में था। उसने ज़मीन से खुरदुरा, लाल रंग का चमड़ा उठाया और बोला, 'ये जापान के चेरी लेदर से भी बेहतर है! क्या तुमने जापान के बारे में सुना है? मैंने उनसे लड़ाई की थी और उन्हें हरा दिया था। चीन का पेटेंट लेदर? मैं उन सबका मुकाबला कर सकता हूँ। मैं साठ साल का हूँ और मुझे सभी तरह के पेस्ट, सभी तरह के मसाले, सभी तरह की तकनीकें पता हैं।'
केदारनाथ चिंतित होने लगा और झोपड़ी से बाहर निकलने की कोशिश

करने लगा। बूढ़े आदमी ने अपने हाथ अगल-बगल फैलाकर, आक्रामक हावभाव दिखाते हुए उसका रास्ता रोक दिया। 'तुम्हें गड्ढे दिखाई नहीं दे रहे। तुम सीआईडी के जासूस हो, पुलिस के जासूस हो, बैंक के जासूस हो—' उसने शर्मिंदगी से अपने कान पकड़ लिए और फिर अंग्रेज़ी में बोला: 'नहीं, नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं!'

अब तक दुर्गंध और तनाव ने केदारनाथ को कुछ हद तक हताश कर दिया था। उसका चेहरा उतरा हुआ था, वह गर्मी के साथ-साथ चिंता से भी पसीने से तरबतर था। 'चलो चलते हैं, हमें रविदासपुर पहुंचना है,' उसने कहा।

बूढ़ा आदमी उसकी ओर बढ़ा और अपना मैला और टपकता हुआ हाथ आगे बढ़ाते हुए बोला, 'पैसे! फीस! पीने के लिए—नहीं तो तुम गड्ढे नहीं देख पाओगे। तुम रविदासपुर जाओ। हमें जाटव पसंद नहीं हैं, हम उनके जैसे नहीं हैं, वे भैंस का मांस खाते हैं। छी!' उसने घृणा से एक शब्द थूका। 'हम तो सिर्फ बकरी और भेड़ खाते हैं।'

Kedarnath shrank back. Haresh began to get annoyed.

बूढ़े आदमी को एहसास हुआ कि उसने उसे चिढ़ा दिया है। इससे उसे एक अजीब सी हिम्मत मिली। लालची, शक्की और शेखीबाज़, वह अब उन्हें खानों की ओर ले गया। 'हमें सरकार से कोई पैसा नहीं मिलता,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'हमें, हर परिवार को, सामान और रसायन खरीदने के लिए पैसे चाहिए। सरकार हमें बहुत कम पैसा देती है। तुम मेरे हिंदू भाई हो,' उसने मज़ाक उड़ाते हुए कहा। 'मुझे एक बोतल लाओ—मैं तुम्हें सबसे अच्छे रंगों, सबसे अच्छी शराब, सबसे अच्छी दवाइयों के नमूने दूंगा!' वह अपने ही मज़ाक पर हँसा। 'देखो!' उसने एक गड्ढे में लाल रंग के तरल की ओर इशारा किया।

उनमें से एक युवक, जो कद में छोटा था और एक आंख से अंधा था, बोला, “वे हमें कच्चा माल लाने से रोकते हैं, रसायन लाने से रोकते हैं। हमें सहायक दस्तावेज़ और पंजीकरण दिखाना पड़ता है। रास्ते में हमें परेशान किया जाता है। आप अपने सरकारी विभाग से कहिए कि हमें शुल्क से छूट दें और हमें पैसे दें। हमारे बच्चों को देखिए। देखिए—” उसने कूड़े के ढेर पर शौच कर रहे एक बच्चे की ओर इशारा किया।

केदारनाथ को वह पूरी झुग्गी बस्ती बेहद घिनौनी लगी। उसने धीमी आवाज़ में कहा: 'हम किसी सरकारी विभाग से नहीं हैं।'

वह युवक अचानक चिढ़ गया। उसके होंठ कस गए और उसने कहा, 'तो तुम कहाँ से आए हो?' उसकी अंधी आँख की पलक फड़कने लगी। 'तुम कहाँ से आए हो? यहाँ क्यों आए हो? इस जगह से तुम्हें क्या चाहिए?'

केदारनाथ समझ गया था कि हरेश भड़कने वाला है। उसने महसूस किया कि हरेश का स्वभाव अचानक और निडर था, लेकिन उसका मानना था कि जब डरने की कोई वजह हो तो निडर होने का कोई फायदा नहीं। वह जानता था कि कैसे छोटी-छोटी बातों पर भी अचानक हिंसा भड़क सकती है। उसने हरेश के कंधे पर हाथ रखा और उसे गड्ढों के बीच वापस ले गया। ज़मीन से कीचड़ बह रहा था और हरेश के जूतों के निचले हिस्से पर काली गंदगी के छींटे पड़े हुए थे।

वह युवक उनके पीछे-पीछे आया और एक क्षण ऐसा लगा मानो वह केदारनाथ पर हमला करने ही वाला हो। उसने कहा, ‘मैं तुम्हें पहचान लूंगा। वापस मत आना। तुम हमारे खून से पैसा कमाना चाहते हो। चांदी और सोने से ज्यादा पैसा चमड़े में है—वरना तुम इस बदबूदार जगह पर नहीं आते।’

‘नहीं—नहीं—’ शराब के नशे में धुत बूढ़े व्यक्ति ने आक्रामक लहजे में कहा, ‘बिल्कुल नहीं!’

केदारनाथ और हरेश पास की गलियों में फिर से दाखिल हुए; बदबू में कोई खास सुधार नहीं हुआ था। एक गली के मुहाने पर, खुले, गड्ढों से भरे मैदान के किनारे पर, हरेश ने एक बड़ा लाल पत्थर देखा, जो ऊपर से सपाट था। उस पर लगभग सत्रह साल के एक लड़के ने भेड़ की खाल का एक टुकड़ा रखा हुआ था, जिस पर से ऊन और चर्बी काफी हद तक साफ कर दी गई थी। वह एक चाकू से खाल से बचे हुए मांस के टुकड़े निकाल रहा था। वह अपने काम में पूरी तरह मग्न था। पास में ढेर की गई खालें इतनी साफ थीं कि अगर उन्हें मशीन से साफ किया जाता तो भी वे इतनी साफ नहीं हो पातीं। पहले जो कुछ हुआ था, उसके बावजूद हरेश मोहित हो गया था। आम तौर पर वह रुककर कुछ सवाल पूछता, लेकिन केदारनाथ ने उसे जल्दी करने को कहा।

चमड़ा बनाने वाले उन्हें छोड़कर जा चुके थे। धूल से सने और पसीने से तरबतर हरेश और केदारनाथ कच्चे रास्तों से होते हुए वापस लौटे। सड़क पर अपने रिक्शा तक पहुँचकर उन्होंने राहत की साँस ली, जो पहले असहनीय रूप से दुर्गंधयुक्त लग रही थी। और सचमुच, पिछले आधे घंटे में उन्होंने जो दुर्गंध झेली थी, उसकी तुलना में यह स्वर्ग की साँस थी।

4.5

पंद्रह मिनट तक भीषण गर्मी में एक मालगाड़ी का इंतज़ार करने के बाद, जो देर से आई, लंबी और बहुत धीमी थी, वे आखिरकार रविदासपुर पहुँचे। यह इलाका ब्रह्मपुर के पुराने इलाके की तुलना में कुछ कम भीड़भाड़ वाला था, जहाँ केदारनाथ रहते थे, लेकिन कहीं ज़्यादा अस्वच्छ था, जहाँ गंदा पानी गलियों में रिसता रहता था। पिस्सू से भरे कुत्तों, घुरघुराते, गंदगी से सने सूअरों और कई अप्रिय स्थिर वस्तुओं के बीच से रास्ता बनाते हुए और एक जर्जर लकड़ी के पुल से खुले नाले को पार करते हुए, वे जगत राम की छोटी, आयताकार, बिना खिड़की वाली ईंट

और मिट्टी की कार्यशाला तक पहुँचे। रात में काम खत्म होने के बाद, यहीं उनके छह बच्चे सोते थे; वे और उनकी पत्नी आमतौर पर ईंट की दीवारों वाले एक कमरे में सोते थे जिसकी छत नालीदार लोहे की थी और जिसे उन्होंने कार्यशाला की सपाट छत के ऊपर बनवाया था।

दरवाजे से आती धूप और कुछ मंद, नंगे बिजली के बल्बों की रोशनी में कई पुरुष और दो लड़के अंदर काम कर रहे थे। उनमें से अधिकतर ने लुंगी पहनी हुई थी, सिवाय एक पुरुष के, जिसने कुर्ता-पायजामा पहना था, और जगत राम के, जिसने कमीज और पतलून पहनी थी। वे धूसर पत्थर से बने चौकोर चबूतरे के सामने पालथी मारकर बैठे थे, जिन पर उनका सामान रखा था। वे अपने काम में मग्न थे—काटना, छीलना, चिपकाना, मोड़ना, ट्रिम करना या हथौड़ा चलाना—और उनके सिर झुके हुए थे, लेकिन समय-समय पर कोई न कोई कुछ न कुछ कह देता—काम के बारे में, निजी गपशप के बारे में, राजनीति के बारे में या दुनिया के बारे में—और इससे हथौड़ों, चाकुओं और एक पैडल से चलने वाली सिंगर सिलाई मशीन की आवाज़ों के बीच हल्की-सी बातचीत शुरू हो जाती।

केदारनाथ और हरीश को देखकर जगत राम अचंभित रह गए। उन्होंने अनजाने में अपनी मूंछों को छुआ। उन्हें अन्य आगंतुकों की उम्मीद थी।

‘स्वागत है,’ उन्होंने शांत भाव से कहा। ‘अंदर आइए। आप यहाँ किसलिए आए हैं? मैंने आपको बताया है कि हड़ताल आपके आदेश को पूरा करने में बाधा नहीं बनेगी,’ उन्होंने केदारनाथ की उपस्थिति के संभावित कारण का अनुमान लगाते हुए कहा।

जगत राम की लगभग पाँच साल की बेटी सीढ़ी पर बैठी थी। अब वह 'लवली वाले आ गए! लवली वाले आ गए!' गाना गाने लगी और ताली बजाने लगी।

अब केदारनाथ की बारी थी आश्चर्यचकित होने की—और वह पूरी तरह से

खुश भी नहीं थी। उसके पिता, थोड़े परेशान होकर, उसे टोकते हुए बोले: 'ये लवली वाले लोग नहीं हैं, मीरा—अब जाओ और अपनी माँ से कहो कि हमें चाय चाहिए।'

उन्होंने केदारनाथ की ओर मुड़कर कहा, 'दरअसल, मैं लवली से आने वाले लोगों की उम्मीद कर रहा था।' उन्हें आगे कोई जानकारी देने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई।

केदारनाथ ने सिर हिलाया। नाबीगंज के पास हाल ही में खुली 'लवली शू शॉप' में महिलाओं के जूतों का अच्छा संग्रह था। आम तौर पर दुकान चलाने वाला व्यक्ति बॉम्बे के बिचौलियों से माल मंगवाता था, क्योंकि देश में महिलाओं के अधिकांश जूते बॉम्बे में ही बनते थे। अब वह स्पष्ट रूप से अपने घर के पास ही माल की तलाश कर रहा था, और एक ऐसे स्रोत से माल ले रहा था जिससे केदारनाथ खुद माल लेना या कम से कम मध्यस्थता करना ज़्यादा पसंद करता।

फिलहाल इस विषय को दरकिनार करते हुए उन्होंने कहा, 'ये श्री हरीश खन्ना हैं, जो मूल रूप से दिल्ली के रहने वाले हैं, लेकिन कानपुर में सीएलएफसी के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने इंग्लैंड में जूते बनाने का अध्ययन किया है। और, मैं उन्हें यहाँ इसलिए लाया हूँ ताकि उन्हें दिखा सकूँ कि हमारे ब्रह्मपुर के जूता बनाने वाले अपने साधारण औजारों से भी क्या कमाल कर सकते हैं।'

जगत राम ने बड़ी प्रसन्नता से सिर हिलाया।

कार्यशाला के प्रवेश द्वार के पास एक छोटी लकड़ी की चौकी थी, और जगत राम ने केदारनाथ को बैठने के लिए कहा। केदारनाथ ने हरेश को बैठने के लिए आमंत्रित किया, लेकिन हरेश ने विनम्रतापूर्वक मना कर दिया। इसके बजाय वह एक छोटे पत्थर के चबूतरे पर बैठ गया, जहाँ कोई काम नहीं कर रहा था। कारीगर उसे देखकर अचंभित और

आश्चर्यचकित रह गए। उनकी प्रतिक्रिया इतनी स्पष्ट थी कि हरेश तुरंत उठ खड़ा हुआ। स्पष्ट रूप से उसने कुछ गलती की थी और अपने सीधे स्वभाव के कारण उसने जगत राम की ओर मुड़कर कहा, 'क्या बात है? क्या इन पर नहीं बैठ सकते?'

जब हरेश बैठा था तब जगत राम ने भी इसी तरह की नाराजगी दिखाई थी, लेकिन हरेश के सीधे-सादे सवाल और किसी को ठेस पहुंचाने के उसके स्पष्ट इरादे की कमी के कारण जगत राम ने सौम्य तरीके से जवाब दिया।

उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा, “एक मज़दूर अपने काम करने के चबूतरे को अपनी रोज़ी या “रोज़गार” कहता है; वह उस पर बैठता नहीं है।” उन्होंने यह ज़िक्र नहीं किया कि हर मज़दूर अपनी रोज़ी को बड़े करीने से चमकाकर रखता है और दिन का काम शुरू करने से पहले उसके लिए एक छोटी सी प्रार्थना भी करता है। अपने बेटे से उन्होंने कहा, “उठो—हरेश साहब को बैठने दो।”

सिलाई मशीन के पास वाली कुर्सी से पंद्रह साल का एक लड़का उठा, और हरीश के यह कहने के बावजूद कि वह किसी के काम में बाधा नहीं डालना चाहता, उसे वापस बैठा दिया गया। जगत राम का सबसे छोटा बेटा, जो सात साल का था, तीन कप चाय लेकर अंदर आया।

प्याले मोटे और छोटे थे, उनकी सफेद सतह पर जगह-जगह खरोंचें थीं, लेकिन वे साफ थे। इधर-उधर की कुछ बातें चल रही थीं, जैसे मिसरी मंडी में हड़ताल, एक अखबार का यह दावा कि चमड़ा कारखाने और प्राहा जूता कारखाने से निकलने वाला धुआं बरसात महल को नुकसान पहुंचा रहा है, नए नगरपालिका बाजार कर और विभिन्न स्थानीय हस्तियों के बारे में।

कुछ देर बाद, हरेश अधीर हो गया, जैसा कि खाली बैठे रहने पर अक्सर

होता था। वह उठकर कार्यशाला में इधर-उधर देखने लगा कि सब लोग क्या कर रहे हैं। महिलाओं की सैंडल का एक बैच बनाया जा रहा था; हरे और काले रंग की बुनी हुई चमड़े की पट्टियों वाली ये सैंडल देखने में बेहद आकर्षक लग रही थीं।

हरेश कारीगरों के कौशल को देखकर वाकई आश्चर्यचकित रह गया। साधारण औजारों—छेनी, चाकू, सुई, हथौड़ा और पैर से चलने वाली सिलाई मशीन—से वे ऐसे जूते बना रहे थे जिनकी गुणवत्ता सीएलएफसी की मशीनों से बने जूतों से कुछ ही कम नहीं थी। उसने कारीगरों को उनकी कुशलता और उनके उत्पाद की गुणवत्ता के बारे में बताया, खासकर उनकी सीमित कार्यक्षमता को देखते हुए; और वे उससे प्रभावित हो गए।

कुछ साहसी कामगारों में से एक—जगत राम का छोटा भाई, जो मिलनसार और गोल चेहरे वाला था—ने हरेश के जूते देखने की इच्छा जताई, जो उसने गहरे लाल रंग के पहने हुए थे। हरेश ने उन्हें उतारते हुए कहा कि वे ज़्यादा साफ़ नहीं हैं। वास्तव में, वे पूरी तरह से कीचड़ से सने हुए थे। उन्हें सबने एक-दूसरे को दिखाया और उनकी तारीफ़ की।

जगत राम ने बड़ी मेहनत से अक्षर पढ़े और 'सैक्सोन' लिखा। उन्होंने कुछ गर्व के साथ समझाया, 'इंग्लैंड से सक्सेना।'

'मैं देख सकता हूँ कि आप पुरुषों के जूते भी बनाते हैं,' हरेश ने कहा। उसने कमरे के एक अंधेरे कोने में छत से अंगूर की तरह लटके हुए पुरुषों के लिए लकड़ी के सांचों का एक बड़ा गुच्छा देखा था।

'बिल्कुल,' जगत राम के भाई ने हंसमुख मुस्कान के साथ कहा। 'लेकिन जो काम कुछ ही लोग कर सकते हैं, उसमें ज़्यादा मुनाफा है। हमारे लिए महिलाओं के जूते बनाना कहीं बेहतर है—'

'ज़रूरी नहीं,' हरेश ने कहा और सबके, यहाँ तक कि केदारनाथ के आश्चर्य

के बीच, अपने ब्रीफ़केस से कागज़ के पैटर्नों का एक सेट निकाला। 'अब, जगत राम, मुझे बताइए, क्या आपके कारीगर इतने कुशल हैं कि इन पैटर्नों के आधार पर मुझे एक जूता—वह भी ब्रोग शू—बना सकें?'

'हां,' जगत राम ने लगभग बिना सोचे समझे कहा।

'इतनी जल्दी हाँ मत कहो,' हरेश ने कहा, हालाँकि वह इस सहज और आत्मविश्वासपूर्ण प्रतिक्रिया से प्रसन्न था। उसे भी चुनौतियों का सामना करने में उतना ही आनंद आता था जितना उन्हें विफल करने में।

जगत राम बड़ी दिलचस्पी से उन पैटर्न को देख रहे थे—ये सात नंबर के विंग्ड ब्रोग शूज़ के पैटर्न थे। पतले कार्डबोर्ड के सपाट टुकड़ों को देखकर ही, जिनसे ये पैटर्न बने थे—बारीक पंच किए गए डिज़ाइन, टो का आकार, वैम्प, क्वार्टर्स—पूरा जूता उनकी आँखों के सामने एक जीवंत, त्रि-आयामी आकृति में उभर आया।

'ये जूते कौन बना रहा है?' उसने जिज्ञासा से माथे पर शिकन लिए पूछा।

'ये आपके पहने हुए जूतों से कुछ अलग हैं।'

'हम सीएलएफसी में हैं। और अगर आप अच्छा काम करते हैं, तो आप भी हमारे लिए हो सकते हैं।'

जगत राम, हालांकि हरेश के बयान से स्पष्ट रूप से बहुत आश्चर्यचकित और उत्सुक थे, लेकिन उन्होंने कुछ देर तक कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, बल्कि पैटर्न का अध्ययन करना जारी रखा।

पैटर्न के अचानक तैयार होने के नाटकीय प्रभाव से प्रसन्न होकर हरेश ने कहा: 'इन्हें रख लो। आज इन्हें देख लो। मुझे दिख रहा है कि वहाँ लटके हुए सांचे मानक नहीं हैं, इसलिए मैं तुम्हें कल सात नंबर के मानक सांचों का एक जोड़ा भेज दूँगा। मैं ब्रह्मपुर में दो-तीन जोड़े लाया हूँ। अब, सांचों के अलावा, तुम्हें और क्या चाहिए? मान लो, तीन वर्ग फुट चमड़ा, बछड़े का चमड़ा—इसे भी मैरून रंग का बना दो—'

जगत राम ने कहा, 'और अंदर चमड़े की लाइनिंग है।'
‘ठीक है; मान लीजिए हम प्राकृतिक गाय की बात करें, साथ ही तीन वर्ग फुट भी—मैं इसे शहर से ले आऊंगा।’
‘और सोल और इनसोल के लिए चमड़ा?’ जगत राम ने पूछा।
‘नहीं, वो आसानी से मिल जाता है और ज़्यादा महंगा भी नहीं है। तुम ये कर सकती हो। मैं तुम्हें खर्च और समय के लिए बीस रुपये दे दूँगी—और हील्स के लिए कपड़ा तुम खुद ले आओगी। मैं कुछ अच्छी क्वालिटी के काउंटर और टो-पफ्स लाई हूँ—ये हमेशा एक समस्या होते हैं—और कुछ धागा भी; लेकिन वो उस घर में हैं जहाँ मैं ठहरी हुई हूँ।’
केदारनाथ ने आँखें बंद होते हुए भी, उस उद्यमी व्यक्ति की प्रशंसा में अपनी भौहें उठाईं, जिसने मुख्य रूप से सामान खरीदने के लिए शहर से बाहर की संक्षिप्त यात्रा पर जाने से पहले इन सभी बातों का ध्यान रखा था। हालाँकि, उन्हें इस बात की चिंता थी कि कहीं जगत राम पर हरेश का कब्ज़ा न हो जाए और उन्हें खुद किनारे न कर दिया जाए। लवली शू शॉप का ज़िक्र भी उन्हें फिर से परेशान करने लगा।
'अब, अगर मैं कल सुबह ये चीजें लेकर आऊं,' हरेश कह रहा था, 'तो आप मुझे जूते कब दे सकते हैं?'
जगत राम ने कहा, 'मुझे लगता है कि मैं इन्हें पांच दिनों में तैयार कर सकता हूं।'
हरेश ने अधीरता से अपना सिर हिलाया।
‘मैं सिर्फ एक जोड़ी जूतों के लिए पांच दिन शहर में नहीं रुक सकता। तीन दिन के बारे में क्या ख्याल है?’
जगत राम ने कहा, 'मुझे इन्हें सांचे पर कम से कम बहत्तर घंटे के लिए छोड़ना होगा। अगर आप मुझसे ऐसे जूते बनवाना चाहते हैं जो अपना आकार बनाए रखें, तो आप जानते हैं कि यह न्यूनतम समय है।'

अब जब दोनों खड़े हो गए थे, तो वह हरेश से काफी लंबा दिख रहा था। लेकिन हरेश, जो हमेशा अपनी कम लंबाई को एक असुविधाजनक लेकिन मनोवैज्ञानिक रूप से महत्वहीन तथ्य मानकर चिढ़ता था, जरा भी क्षीण नहीं हुआ। इसके अलावा, जूते तो उसी ने ऑर्डर किए थे।

'चार।'

'ठीक है, अगर आप मुझे आज रात चमड़ा भेज दें, ताकि हम कल सुबह सबसे पहले उसकी कटाई शुरू कर सकें—'

'हो गया,' हरेश ने कहा। 'चार दिन। मैं कल बाकी पुर्जों के साथ खुद आकर देखूंगा कि आपका काम कैसा चल रहा है। अब हमें चलना चाहिए।'

'एक और बात मेरे मन में आई है, हरीश साहब,' जगत राम ने जाते समय कहा। 'मैं चाहता हूँ कि मुझे उस जूते का एक नमूना मिल जाए जिसे आप मुझसे बनवाने के लिए कह रहे हैं।'

'जी हां,' केदारनाथ ने मुस्कुराते हुए कहा। 'आप इन अंग्रेजी जूतों के बजाय अपनी ही कंपनी के बने ब्रोक्स क्यों नहीं पहन रहे हैं? इन्हें तुरंत उतार दीजिए, मैं आपको रिक्शा तक वापस ले चलता हूं।'

"मुझे लगता है मेरे पैर इनकी आदत डाल चुके हैं," हरेश ने मुस्कुराते हुए कहा, हालाँकि वह अच्छी तरह जानता था कि यह उसके पैरों से ज़्यादा उसके दिल की बात थी। उसे अच्छे कपड़े और अच्छे जूते बहुत पसंद थे, और उसे इस बात का दुख था कि सीएलएफसी के उत्पाद गुणवत्ता के उन अंतरराष्ट्रीय मानकों को पूरा नहीं करते थे, जिनकी वह सहजता और प्रशिक्षण दोनों से बहुत प्रशंसा करता था।

'ठीक है, मैं किसी न किसी तरह से आपको उनका एक नमूना दिलाने की कोशिश करूंगा,' उन्होंने जगत राम के हाथों में मौजूद कागज के पैटर्न की ओर इशारा करते हुए कहा।

उसने अपने पुराने कॉलेज के दोस्त को, जिसके साथ वह रह रहा था, सीएलएफसी विंग्ड ब्रोग्स जूते तोहफे में दिए थे। अब उसे अपना ही तोहफा कुछ दिनों के लिए वापस लेना पड़ेगा। पर उसे ऐसा करने में कोई हिचक नहीं थी। काम के मामले में, उसे कभी भी किसी बात में झिझक नहीं होती थी। असल में, हरीश को आम तौर पर झिझक महसूस करने की आदत ही नहीं थी।

जब वे इंतज़ार कर रहे रिक्शा की ओर वापस जा रहे थे, तो हरेश को सब कुछ ठीक चल रहा देखकर बहुत खुशी हुई। ब्रह्मपुर की शुरुआत सुस्त रही थी, लेकिन यह बहुत ही दिलचस्प, बल्कि अप्रत्याशित साबित हो रहा था। उसने अपनी जेब से एक छोटा सा कार्ड निकाला और उस पर अंग्रेजी में लिखा:

कार्रवाई के बिंदु-

1. मिसरी मंडी—व्यापार देखें।
2. चमड़ा खरीदें।
3. जगत राम को चमड़ा भेजें।
4. सुनील के यहाँ रात का खाना खाएँ; उससे अपने लहजे वापस ले लें।
5. Tmro: Jagat Ram/Ravidaspur.
6. टेलीग्राम—कानपुर लौटने में देरी।

अपनी सूची बनाने के बाद, उसने उसे सरसरी तौर पर पढ़ा और महसूस किया कि जगत राम तक चमड़ा पहुँचाना मुश्किल होगा, क्योंकि कोई भी उसका पता नहीं लगा पाएगा, खासकर रात में। उसने सोचा कि रिक्शावाले को जगत राम का पता देखने के लिए कहा जाए और उसे बाद में चमड़ा वहाँ पहुँचाने के लिए किराए पर लिया जाए। तभी उसे एक बेहतर उपाय सूझा। वह कार्यशाला में वापस गया और जगत राम से कहा कि वह किसी को उसी रात ठीक नौ बजे मिसरी मंडी के ब्रह्मपुर जूता मंडी

में केदारनाथ टंडन की दुकान पर भेज दे। चमड़ा वहाँ उसका इंतज़ार कर रहा होगा। उसे बस उसे लेना था और अगले दिन सुबह होते ही काम शुरू करना था।

4.6

रात के दस बज रहे थे, और हरेश और विश्वविद्यालय के पास सुनील पटवर्धन के कमरे के आसपास बैठे और खड़े अन्य युवक शराब और मादक पेय के मिश्रण से मदहोश थे।

सुनील पटवर्धन ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय में गणित के व्याख्याता थे। दिल्ली के सेंट स्टीफंस कॉलेज में वे हरेश के मित्र थे; उसके बाद, हरेश के जूते बनाने के कोर्स के लिए इंग्लैंड चले जाने के कारण, कई वर्षों तक उनका संपर्क टूट गया था और वे एक-दूसरे के बारे में केवल आपसी मित्रों के माध्यम से ही जानते थे। हालांकि वे एक गणितज्ञ थे, सुनील की सेंट स्टीफंस में एक बिंदास लड़के के रूप में छवि थी। वे कद-काठी में बड़े और थोड़े मोटे थे, लेकिन अपनी सुस्त ऊर्जा, सहज हास्य-विनोद, उर्दू ग़ज़लों और शेक्सपियर के उद्धरणों से भरे होने के कारण कई महिलाएं उन्हें आकर्षक मानती थीं। उन्हें शराब पीने का भी शौक था और कॉलेज के दिनों में उन्होंने हरेश को शराब पीने के लिए मनाने की कोशिश की थी - लेकिन सफल नहीं हुए, क्योंकि हरेश उस समय शराब नहीं पीते थे।

सुनील पटवर्धन का छात्र जीवन में यह मानना था कि गणित की एक सच्ची समझ प्राप्त करने के लिए दो सप्ताह का समय पर्याप्त होता है; बाकी समय वे अपनी पढ़ाई पर ध्यान नहीं देते थे और फिर भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करते थे। अब जब वे छात्रों को पढ़ा रहे थे, तो उन्हें उन पर एक ऐसा अकादमिक अनुशासन थोपना कठिन लग रहा था जिसमें उनका स्वयं कोई विश्वास नहीं था।

कई वर्षों बाद हरेश को देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। हरेश ने हमेशा की

तरह उसे बताया नहीं था कि वह काम के सिलसिले में ब्रह्मपुर आ रहा है, बल्कि दो-तीन दिन पहले ही उसके घर पर आ पहुँचा था, अपना सामान ड्राइंग रूम में रखा, आधे घंटे तक बातें कीं और फिर माइक्रो-शीट और लेदरबोर्ड की खरीद के बारे में कुछ अस्पष्ट बातें कहते हुए कहीं चला गया। विदाई लेते हुए उसने ड्राइंग रूम की मेज पर एक गत्ते का डिब्बा रखते हुए कहा, 'ये आपके लिए हैं।'

सुनील ने उसे खोला और बहुत खुश हुआ। हरेश ने कहा:

मुझे पता है कि तुम ब्रोग्स के अलावा कभी कुछ नहीं पहनते।

लेकिन आपको मेरा कद कैसे याद रहा?

हरेश हँसते हुए बोला, 'लोगों के पैर मेरे लिए कारों की तरह हैं। मुझे बस उनका आकार याद रहता है—मुझसे यह मत पूछो कि मैं यह कैसे करता हूँ। और तुम्हारे पैर तो रोल्स-रॉयस की तरह हैं।'

सुनील को वह समय याद आया जब उसने और उसके कुछ दोस्तों ने हरेश को चुनौती दी थी—जो हमेशा की तरह बेहद आत्मविश्वासी था—कि कॉलेज के बाहर एक आधिकारिक समारोह के अवसर पर खड़ी लगभग पचास कारों में से प्रत्येक को दूर से पहचानें। हरेश ने सभी कारों को सही पहचाना था। वस्तुओं को पहचानने की उसकी लगभग अचूक क्षमता को देखते हुए, यह अजीब था कि उसने अंग्रेजी में बी.ए. ऑनर्स कोर्स में तीसरा स्थान प्राप्त किया था और कविता के पेपर में अनगिनत गलत उद्धरणों से गड़बड़ कर दी थी।

सुनील ने सोचा, न जाने कैसे वह जूतों के व्यापार में आ गया, लेकिन शायद यह उसे रास आता है। अगर वह मेरी तरह अकादमिक बन जाता तो दुनिया और उसके लिए यह एक त्रासदी होती। हैरानी की बात तो यह है कि उसने शुरू में अंग्रेजी को विषय के रूप में चुना ही क्यों।

‘अच्छा! अब जब आप आ ही गए हैं, तो हम पार्टी करेंगे,’ सुनील ने कहा

था। 'यह पुराने दिनों की तरह होगी। मैं ब्रह्मपुर में रहने वाले कुछ पुराने स्टीफनियनों को अपने कुछ उत्साही अकादमिक सहयोगियों के साथ शामिल होने के लिए बुलाऊंगा। लेकिन अगर आपको शीतल पेय चाहिए तो आपको खुद लाना होगा।'

हरेश ने वादा किया था कि अगर काम की अनुमति मिली तो वह आने की कोशिश करेगा। सुनील ने उसे धमकी दी थी कि अगर वह नहीं आया तो उसे समाज से बहिष्कृत कर दिया जाएगा।

अब वह यहाँ था, लेकिन अपने दिन भर के प्रयासों के बारे में लगातार और उत्साहपूर्वक बातें कर रहा था।

'अरे बस करो, हरेश, हमें चमार और माइक्रो-शीट के बारे में मत बताओ,' सुनील ने कहा। 'हमें इन सब में कोई दिलचस्पी नहीं है। उस सिख लड़की का क्या हुआ जिसके पीछे तुम अपने सुनहरे दिनों में भागते थे?'

'वह कोई सरदारनी नहीं, बल्कि अद्वितीय कल्पना गौर थीं,' एक युवा इतिहासकार ने कहा। उन्होंने कल्पना गौर की उस भावपूर्ण दृष्टि की नकल करते हुए अपना सिर बाईं ओर झुकाया, जिस तरह वह बायरन पर व्याख्यानों के दौरान कमरे के दूसरे कोने से हरेश को निहारती थीं। कल्पना सेंट स्टीफंस की कुछ गिनी-चुनी महिला छात्राओं में से एक थीं।

'उह—' सुनील ने तिरस्कारपूर्ण लहजे में कहा। 'तुम्हें मामले की सच्चाई नहीं पता। कल्पना गौर उसका पीछा कर रही थी, और वह सरदारनी का पीछा कर रहा था। वह उसके परिवार के घर की चारदीवारी के बाहर उसे रिझाने के लिए गीत गाता था और बिचौलियों के ज़रिए उसे चिट्ठियाँ भेजता था। सिख परिवार अपनी प्यारी बेटी की शादी एक लाला से होते देख नहीं पा रहा था। अगर तुम्हें और जानकारी चाहिए—'

'वह अपनी ही आवाज के नशे में चूर है,' हरेश ने कहा।

सुनील ने कहा, 'मैं तो ऐसा ही हूँ। लेकिन तुमने गलत रास्ता चुना। तुम्हें

लड़की को नहीं, बल्कि माँ और दादी को रिझाने की कोशिश करनी चाहिए थी।'

'Thanks,' said Haresh.

'तो क्या आप अब भी उससे संपर्क में हैं? उसका नाम क्या था—'

हरेश ने कोई जानकारी देने से इनकार कर दिया। वह इन सीधे-सादे मूर्खों को यह बताने के मूड में नहीं था कि इतने वर्षों बाद भी वह उससे बहुत प्यार करता है—और यह कि अपने जूतों और काउंटरों के साथ-साथ उसने अपने सूटकेस में उसकी चांदी के फ्रेम वाली एक तस्वीर भी रखी हुई है।

'ये जूते उतारो,' उसने सुनील से कहा। 'मुझे ये वापस चाहिए।'

सुनील ने कहा, 'अरे सूअर! सिर्फ इसलिए कि मैंने गलती से सबसे पवित्र चीज़ का ज़िक्र कर दिया...'

'अरे गधे,' हरेश ने जवाब दिया। 'मैं इन्हें खाने वाला नहीं हूँ—मैं इन्हें कुछ दिनों में तुम्हें वापस दे दूंगा।'

आप इनका क्या करेंगे?

'अगर मैंने तुम्हें बताया तो तुम बोर हो जाओगे। चलो, इन्हें उतार दो।'

अब क्या?

'हाँ, क्यों नहीं? कुछ ड्रिंक्स के बाद मैं भूल जाऊँगा और तुम उन्हें पहने हुए ही सो जाओगे।'

'ओह, ठीक है!' सुनील ने विनम्रतापूर्वक कहा और अपने जूते उतार दिए।

"अब ठीक है," हरेश ने कहा। "तुम मेरी लंबाई के एक इंच और करीब आ गए हो।" सुनील के चमकीले लाल सूती टार्टन मोजे पूरी तरह से दिखाई देने पर उसने आगे कहा, "वाह, कितने शानदार मोजे हैं!"

वाह! वाह! चारों ओर से प्रशंसा की आवाजें गूंज उठीं।

'कितने खूबसूरत टखने हैं!' हरेश ने आगे कहा। 'चलो एक परफॉर्मेंस

करते हैं!'
किसी ने चिल्लाकर कहा, 'झूमर जलाओ।'
'पन्ना रंग के प्याले निकालो।'
'गुलाबों का इत्र छिड़को।'
'फर्श पर एक सफेद चादर बिछा दो और प्रवेश शुल्क वसूलो!'
युवा इतिहासकार ने आधिकारिक उद्घोषक के बनावटी लहजे में दर्शकों को सूचित किया: "प्रसिद्ध दरबारी सुनील पटवर्धन अब हमारे लिए कथक नृत्य की अपनी उत्कृष्ट प्रस्तुति देंगी। भगवान कृष्ण गोपियों के साथ नृत्य कर रहे हैं। वे गोपियों से कहते हैं, "आओ, मेरे पास आओ। डरने की क्या बात है?""
एक नशे में धुत भौतिक विज्ञानी ने नृत्य की नकल करते हुए कहा, 'था-था-थाई-थाई!'
'वेश्या नहीं, अशिष्ट व्यक्ति, कलाकार!'
'आर्टिस्ट!' इतिहासकार ने अंतिम स्वर को लंबा खींचते हुए कहा।
'चलो सुनील—हम इंतजार कर रहे हैं।'
सुनील, जो अपनी मिलनसारिता के लिए जाने जाते थे, अपने दोस्तों के हंसते-हंसते लोटपोट होने पर कुछ बेढंगे कथक नृत्य करने लगे। कमरे में इधर-उधर घूमते हुए, कभी कोई किताब गिराते तो कभी किसी का पेय पदार्थ फैलाते हुए, वे शरमाते हुए मुस्कुरा रहे थे। फिर वे अपने नृत्य में पूरी तरह मग्न हो गए और कृष्ण और गोपियों के अपने प्रदर्शन (जिसमें उन्होंने दोनों भूमिकाएँ निभाईं) के बाद, ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय के कुलपति (जो एक कुख्यात और अय्याश व्यक्ति थे) द्वारा कवयित्री सरोजिनी नायडू का वार्षिक दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आने पर चिकनी-चुपड़ी बातें करते हुए अभिवादन करने का एक दृश्य प्रस्तुत किया। उनके कुछ दोस्त, हंसी से बेहाल होकर, उन्हें रुकने के लिए कहने

लगे, और कुछ अन्य, उतने ही बेहाल होकर, उनसे लगातार नाचते रहने की विनती करने लगे।

4.7

इसी बीच एक लंबे, सफेद बालों वाले सज्जन, डॉ. दुर्रानी, अंदर आए। अंदर चल रही हलचल देखकर उन्हें थोड़ी हैरानी हुई। सुनील नाचते-नाचते बीच में ही रुक गया, बल्कि अपनी मुद्रा में ही जम गया—लेकिन फिर अपने अप्रत्याशित मेहमान का स्वागत करने के लिए आगे बढ़ा।

डॉ. दुर्रानी को उतना आश्चर्य नहीं हुआ जितना उन्हें होना चाहिए था; उनके मस्तिष्क का अधिकांश भाग एक गणितीय समस्या में उलझा हुआ था। उन्होंने अपने युवा सहकर्मी से इस बारे में चर्चा करने के लिए उनके पास जाने का फैसला किया था। दरअसल, सुनील ने ही उन्हें इस विचार के लिए प्रेरित किया था।

'अह, क्या मैंने, अह, गलत समय चुना है—अह—?' उसने अपनी बेहद धीमी आवाज में पूछा।

'खैर, नहीं—ठीक ऐसा नहीं—' सुनील ने कहा। वह डॉ. दुर्रानी को पसंद करते थे और उनके प्रति कुछ हद तक आदर का भाव रखते थे। डॉ. दुर्रानी उन दो फेलो में से एक थे जिन्हें ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय रॉयल सोसाइटी का सदस्य होने का गौरव रखता था, दूसरे थे प्रोफेसर रामास्वामी, जो एक प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी थे।

डॉ. दुर्रानी ने इस बात पर ध्यान भी नहीं दिया कि सुनील उनके बोलने के तरीके की नकल कर रहा था; सुनील खुद भी कथक प्रदर्शन के बाद नकल करने की अवस्था में था, और उसने खुद भी प्रदर्शन करने के बाद ही इस बात को महसूस किया।

'अह, खैर, पटवर्धन, अह, मुझे लगता है कि शायद मैं, अह, दखल दे रहा हूँ?' डॉ. दुर्रानी ने आगे कहा। उनका चेहरा चौकोर और मजबूत था, उन

पर सुंदर सफेद मूंछें थीं, लेकिन हर बार 'अह' कहते समय वे अपनी आँखें सिकोड़ लेते थे। इस शब्द से उनकी भौहें और माथे की निचली त्वचा ऊपर-नीचे हिलती थी।

'नहीं, नहीं, डॉक्टर दुर्रानी, बिल्कुल नहीं। कृपया हमारे साथ बैठिए।' सुनील डॉक्टर दुर्रानी को कमरे के बीच में ले गया, ताकि उन्हें अन्य मेहमानों से मिलवा सके। डॉक्टर दुर्रानी और सुनील पटवर्धन कद में काफी अलग थे, हालांकि दोनों ही काफी लंबे थे।

'अच्छा, अगर आपको, अह, यकीन है कि मैं, अह, अह, रास्ते में नहीं आऊँगा। देखिए,' डॉ. दुर्रानी ने अधिक धाराप्रवाह लेकिन उतनी ही धीमी गति से बोलना जारी रखा, 'पिछले एक-दो दिनों से जो बात मुझे परेशान कर रही है, वह है, अह, सुपर-ऑपरेशन का सवाल। मैं—अच्छा, मैं—आप देखिए, मैंने, उम, सोचा था कि इन सब के आधार पर, हम कई आश्चर्यजनक श्रृंखलाएँ लेकर आ सकते हैं: आप देखिए, अह—'

डॉ. दुर्रानी का अपनी जादुई दुनिया में इतना सहज जुड़ाव था, और वे अपने कनिष्ठों की अभद्र हरकतों के प्रति इतने निर्भीक थे, कि ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि उन्हें इस बात से कोई खास आपत्ति हुई हो कि उन्होंने उनकी शाम में दखल दिया था।

'अब देखो, पटवर्धन,'—डॉ. दुर्रानी ने पूरी दुनिया को एक सौम्य दूरी के नज़रिए से देखा—'यह सिर्फ़ 1, 3, 6, 10, 15 का सवाल नहीं है—जो कि प्राथमिक संयोजन क्रिया पर आधारित एक साधारण श्रृंखला होगी—या फिर 1, 2, 6, 24, 120 का—जो कि द्वितीयक संयोजन क्रिया पर आधारित होगी। यह इससे कहीं आगे जा सकता है। तृतीय संयोजन क्रिया से 1, 2, 9, 262144 और फिर 5 की घात 262144 प्राप्त होंगे। और निश्चित रूप से यह हमें केवल तीसरी ऐसी क्रिया के पाँचवें पद तक ले जाता है। यह तीव्र ढलान कहाँ जाकर समाप्त होगी?' वे उत्साहित और

व्याकुल दोनों लग रहे थे।
‘आह,’ सुनील ने कहा, व्हिस्की के नशे में चूर उसका दिमाग समस्या पर पूरी तरह से केंद्रित नहीं था।
‘लेकिन जो मैं कह रहा हूँ, वो तो बिलकुल स्पष्ट है। मेरा इरादा आपको परेशान करने का नहीं था। लेकिन मैंने सोचा कि मैं,’—उन्होंने कमरे में चारों ओर देखा, उनकी नज़र दीवार पर लगी एक कोयल वाली घड़ी पर पड़ी—‘कि मैं आपसे किसी ऐसी बात पर राय लूँ जो शायद थोड़ी अटपटी लगे। अब 1, 4, 216, 72576 और आगे के अंक लीजिए। क्या ये आपको हैरान करते हैं?’
‘अच्छा—’ सुनील ने कहा।
‘अरे!’ डॉ. दुर्रानी ने कहा, ‘मुझे तो लगा ही नहीं था।’ उन्होंने अपने युवा सहकर्मी की ओर प्रशंसा भरी नज़र से देखा, जिनसे वे अक्सर इसी तरह सलाह लेते थे। ‘वाह, वाह, वाह! अब मैं आपको बताऊँ कि इन सब बातों की प्रेरणा, मतलब, उत्प्रेरक क्या थी?’
‘ओह, कृपया ऐसा करें,’ सुनील ने कहा।
'यह एक, अह, एक टिप्पणी थी—आपकी एक बहुत ही, अह, दूरदर्शी टिप्पणी थी।'
‘आह!’
आपने पेर्गोलेसी लेम्मा के संदर्भ में कहा, "अवधारणा एक वृक्ष का निर्माण करेगी।" यह एक, उह, एक शानदार टिप्पणी थी - मैंने पहले कभी इसके बारे में इस तरह नहीं सोचा था।
‘ओह—’ सुनील ने कहा।
हरेश ने उसे आँख मारी, लेकिन सुनील ने तेवर चढ़ा लिए। डॉ. दुर्रानी का जानबूझकर मजाक उड़ाना उसकी नज़र में राजद्रोह था।
डॉ. दुर्रानी ने उदारतापूर्वक आगे कहा, ‘और वास्तव में, हालांकि मैं उस

समय, अह, इस बात से अनजान था'—उन्होंने अनजाने में अपनी गहरी धंसी हुई आँखों को लगभग शून्य में सिकोड़ लिया—'यह, वास्तव में, एक पेड़ का आकार लेता है। एक ऐसा पेड़ जिसे काटा नहीं जा सकता।'

उनके मन में एक विशाल, तेजी से फैलने वाला और सबसे बुरी बात यह थी कि अनियंत्रित बरगद का पेड़ एक समतल भूभाग पर फैल रहा था, और वे बढ़ती हुई बेचैनी और उत्तेजना के साथ आगे बोले: 'क्योंकि सुपर-ऑपरेटिंग की जो भी विधि चुनी जाए—अर्थात् टाइप 1 या टाइप 2—उसे हर चरण पर निश्चित रूप से लागू नहीं किया जा सकता। किसी विशेष प्रकार के समूह को चुनना... हाँ, इससे शाखाओं की छंटाई तो हो सकती है, लेकिन यह बहुत मनमाना होगा। दूसरा विकल्प एक सुसंगत एल्गोरिदम नहीं देगा। इसलिए मेरे मन में यह प्रश्न उठा: उच्चतर संक्रियाओं की ओर बढ़ते हुए इसे सामान्यीकृत कैसे किया जा सकता है?'

डॉ. दुर्रानी, जो थोड़ा झुके रहने की प्रवृत्ति रखते थे, अब सीधे खड़े हो गए। स्पष्ट रूप से, इन भयानक अनिश्चितताओं के सामने कार्रवाई की आवश्यकता थी।

सुनील थोड़ा लड़खड़ाते हुए बोला, 'तुम किस निष्कर्ष पर पहुंचे?'

"अरे, बात तो यही है। मैंने ऐसा नहीं किया। बेशक, सुपर-ऑपरेशन n +1 को सुपर-ऑपरेशन n के साथ उसी तरह काम करना चाहिए जैसे n, n–1 के साथ काम करता है। यह तो स्पष्ट है। मुझे जो बात परेशान कर रही है, वह है पुनरावृति का प्रश्न। क्या वही सब-ऑपरेशन, वही सब-सुपर-ऑपरेशन, अगर मैं इसे ऐसा कहूँ तो"—अपनी शब्दावली के बारे में सोचकर वह मुस्कुराया—"क्या यह—क्या यह—"

प्रोफेसर दुर्रानी ने कमरे में चारों ओर देखा, और सुखद आश्चर्य से भर गए, जिससे वाक्य अधूरा ही रह गया।

सुनील ने कहा, 'डॉ. दुर्रानी, कृपया हमारे साथ रात के खाने पर शामिल

हों। यह सबके लिए खुला घर है। और क्या मैं आपको कुछ पीने के लिए पेश करूँ?'

'ओह, नहीं, नहीं, उह, नहीं,' डॉ. दुर्रानी ने विनम्रता से कहा। 'आप युवा लोग आगे बढ़िए। मेरी चिंता मत कीजिए।'

भास्कर के बारे में अचानक सोचते हुए, हरेश ने डॉक्टर दुर्रानी के पास जाकर कहा, "क्षमा कीजिए महोदय, लेकिन मैं सोच रहा हूँ कि क्या मैं एक बहुत ही प्रतिभाशाली युवक को आपकी ओर आकर्षित कर सकता हूँ। मुझे लगता है कि उसे आपसे मिलकर बहुत खुशी होगी और मुझे आशा है कि आपको भी उससे मिलकर खुशी होगी।"

डॉ. दुर्रानी ने हरेश की ओर जिज्ञासा भरी निगाहों से देखा, लेकिन कुछ नहीं कहा। उन्होंने सोचा, युवाओं का इससे क्या लेना-देना है? (या यूं कहें कि लोगों का।)

"पिछले दिनों वह दस की घातों के बारे में बात कर रहा था," हरेश ने कहा, "और उसने अफसोस जताया कि न तो अंग्रेजी में और न ही हिंदी में दस की घात चार या दस की घात आठ के लिए कोई शब्द है।"

'जी हाँ, खैर, यह तो बहुत दुख की बात है,' डॉ. दुर्रानी ने कुछ भावुकता के साथ कहा। 'बेशक, अल-बिरूनी के वृत्तांतों में तो यही मिलता है...'

उन्हें ऐसा लगता था कि इस बारे में कुछ किया जाना चाहिए।

डॉ. दुर्रानी ने बड़ी उत्सुकता से पूछा, 'यह युवक कितने साल का है?'

'नौ।'

डॉ. दुर्रानी ने हरेश से बातचीत शुरू करने के लिए एक बार फिर झुककर कहा, 'आह,' 'अच्छा, उह, उह, उसे भेज दीजिए। आपको पता है मैं कहाँ रहता हूँ,' उन्होंने आगे कहा और जाने के लिए मुड़ गए।

चूंकि हरेश और डॉ. दुर्रानी ने पहले कभी एक-दूसरे को नहीं देखा था, इसलिए ऐसा होना असंभव था। लेकिन हरेश ने उन्हें धन्यवाद दिया, दो

समान विचारधारा वाले लोगों को एक-दूसरे से मिलवाने में सक्षम होने पर वह बहुत प्रसन्न थे। उन्हें इस बात का ज़रा भी अफसोस नहीं था कि वह उस महान व्यक्ति के समय और ऊर्जा का हनन कर रहे हैं। वास्तव में, यह विचार उनके मन में आया ही नहीं।

4.8

प्राण, जो कुछ देर बाद आए, कोई पुराने स्टीफ़नियन नहीं थे। उन्हें सुनील ने एक मित्र और सहकर्मी के रूप में आमंत्रित किया था। वे डॉ. दुर्रानी को देखने से चूक गए थे, जिनसे उनकी जान-पहचान थी, और भास्कर के बारे में सुनने से भी चूक गए थे। परिवार के लगभग सभी सदस्यों की तरह, वे भी अपने भतीजे से थोड़ा प्रभावित थे, जो कुछ मायनों में किसी भी अन्य बच्चे जैसा ही लगता था—पतंग उड़ाने का शौकीन, स्कूल से बंक मारने का शौकीन, और सबसे बढ़कर अपनी दादी के प्रति स्नेही।

सुनील ने थोड़ा चिढ़कर पूछा, 'तुम इतनी देर से क्यों आए?' 'और सविता यहाँ क्यों नहीं है? हमें उम्मीद थी कि वो हमारी इस बेढंगी टोली में कुछ रौनक लाएगी। या फिर वो तुम्हारे पीछे दस कदम चल रही है? नहीं—मुझे तो वो कहीं नज़र नहीं आ रही। क्या उसे लगा कि वो हमारे मजे में खलल डालेगी?'

प्राण ने कहा, 'मैं दो सवालों के जवाब दूंगा जो जवाब देने लायक हैं। पहला—सविता ने कहा कि उसे बहुत थकान महसूस हो रही है; वह आपसे माफ़ी मांगती है। दूसरा—मुझे देर हो गई है क्योंकि मैं आने से पहले खाना खा चुका हूँ। मुझे पता है आपके घर में क्या होता है। खाना आधी रात तक नहीं परोसा जाता—अगर आप परोसना याद भी रखें तो —और तब भी वह खाने लायक नहीं होता। हमें अक्सर घर लौटते समय रास्ते में किसी ठेले से कबाब लेकर पेट भरना पड़ता है। सुनील, आपको खुद शादी कर लेनी चाहिए—फिर आपका घर इतना अव्यवस्थित नहीं

चलेगा। और वैसे भी, कोई तो उन भद्दे मोजों की मरम्मत कर देगा। खैर, आपने जूते क्यों नहीं पहने हैं?'

सुनील ने आह भरी। 'ऐसा इसलिए है क्योंकि हरेश ने अपने लिए दो जोड़ी जूते लेने का फैसला किया। "मेरी ज़रूरत तुम्हारी ज़रूरत से ज़्यादा है।" वे कोने में पड़े हैं, और मुझे पता है कि मैं उन्हें फिर कभी नहीं देख पाऊंगा। अरे, लेकिन आप दोनों मिले नहीं हैं,' सुनील ने अब हिंदी में बात करते हुए कहा। 'हरेश खन्ना—प्राण कपूर। आप दोनों ने अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया है, और मैंने आज तक किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं देखा जो इस विषय में आप दोनों से ज़्यादा जानता हो, या आप दोनों से कम।'

दोनों पुरुषों ने हाथ मिलाया।

'अच्छा,' प्राण ने मुस्कुराते हुए कहा। 'आपको दो जोड़ी जूतों की क्या जरूरत है?'

'यह आदमी रहस्य पैदा करने में आनंद लेता है,' हरेश ने कहा, 'लेकिन इसका एक सरल स्पष्टीकरण है। मैं इसे एक नमूने के रूप में इस्तेमाल कर रहा हूं ताकि दूसरा जोड़ा बनवाया जा सके।'

'खुद के लिए ?'

'ओह, नहीं। मैं सीएलएफसी के साथ काम करता हूं और काम के सिलसिले में कुछ दिनों के लिए ब्रह्मपुर में हूं।'

हरेश को लगता था कि वह जिन संक्षिप्ताक्षरों का अक्सर इस्तेमाल करता था, वे बाकी सभी लोगों के लिए पूरी तरह से परिचित थे।

'सीएलएफसी?' प्राण ने पूछा।

'कानपुर लेदर एंड फुटवियर कंपनी।'

'ओह। तो आप जूते के व्यापार में काम करते हैं,' प्राण ने कहा। 'यह तो अंग्रेजी साहित्य से बिलकुल अलग है।'

'मैं सिर्फ सुई से ही अपना गुजारा करता हूँ,' हरेश ने हल्के-फुल्के अंदाज में कहा और इसके बाद उसने कोई और स्पष्टीकरण या गलत उद्धरण नहीं दिया।

प्राण ने कहा, 'मेरे जीजाजी भी जूतों का व्यापार करते हैं। शायद आप उनसे मिले होंगे। वे ब्रह्मपुर शू मार्ट में व्यापारी हैं।'

'हो सकता है,' हरेश ने कहा, 'हालांकि हड़ताल की वजह से सभी व्यापारियों के स्टॉल खुले नहीं हैं। उसका नाम क्या है?'

'Kedarnath Tandon.'

'केदारनाथ टंडन! अरे हाँ, मैं उन्हें जानता हूँ। वो मुझे कई जगहें घुमाते रहे हैं—' हरेश बहुत खुश हुआ। 'दरअसल, एक तरह से उन्हीं की वजह से सुनील के जूते खो गए हैं। तो आप उनके साला—माफ़ कीजिएगा, मेरा मतलब वीना के भाई हैं। आप बड़े हैं या छोटे?'

सुनील पटवर्धन फिर से बातचीत में शामिल हो गए। उन्होंने कहा, 'बड़े वाले। छोटे वाले - मान - को भी आमंत्रित किया गया था, लेकिन आजकल उनकी शामें किसी और काम में व्यस्त रहती हैं।'

'अच्छा, बताओ तो सही,' प्राण ने सुनील की ओर दृढ़ता से मुड़ते हुए कहा, 'क्या इस पार्टी का कोई खास अवसर है? आज तुम्हारा जन्मदिन तो नहीं है?'

नहीं, ऐसा नहीं है। और आप विषय बदलने में माहिर नहीं हैं। लेकिन मैं आपको इस बार छूट दे रहा हूँ क्योंकि मुझे आपसे एक सवाल पूछना है, डॉ. कपूर। मेरे सबसे अच्छे छात्रों में से एक आपकी वजह से परेशान है। होली पर थोड़ी मौज-मस्ती करने वाले लड़कों के साथ आप और आपकी अनुशासन समिति—उसे क्या कहते हैं? छात्र कल्याण समिति?—इतने कठोर क्यों थे?

'कुछ ज्यादा ही जोश में थे?' प्राण ने हैरानी से कहा। 'वो लड़कियाँ तो

लाल और नीली स्याही से रंगी हुई लग रही थीं। शुक्र है कि उन्हें निमोनिया नहीं हुआ। और सच में, जगह-जगह बेवजह रंग रगड़ा गया था।' लेकिन लड़कों को उनके छात्रावासों से बाहर निकाल देना और उन्हें निष्कासन की धमकी देना?

'क्या आप इसे कठोरता कहते हैं?' प्राण ने कहा।

'बिल्कुल। उस समय जब वे अपनी अंतिम परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हों?'

'होली के दिन जब उन्होंने यह फैसला किया - ऐसा लगता है कि उनमें से कुछ ने भांग भी ली थी - कि वे अपनी परीक्षाओं की तैयारी नहीं कर रही थीं, तभी उन्होंने महिला छात्रावास पर धावा बोल दिया और वार्डन को कॉमन रूम में बंद कर दिया।'

'अरे, ये तो पत्थर दिल औरत है!' सुनील ने तिरस्कार भरे लहजे में कहा, फिर महिला वार्डन की बंद कमरे में शायद कैरम बोर्ड पर झपटने की कल्पना करके ज़ोर से हंस पड़ा। वार्डन एक कठोर स्वभाव की, लेकिन दिखने में काफी खूबसूरत महिला थी, जो अपने अधीन काम करने वाली लड़कियों पर कड़ा नियंत्रण रखती थी, खूब मेकअप करती थी और मेकअप करने वाली किसी भी लड़की को घूरती थी।

'अरे सुनील, वो काफी आकर्षक है—मुझे लगता है कि तुम भी उसे पसंद करते हो।'

सुनील ने इस बेतुके विचार पर नाक-भौं सिकोड़ी।

मुझे यकीन है कि उसने उन्हें तुरंत निष्कासित करने की मांग की होगी। या फिर कॉलेज से निकाल दिया जाए। या फिर बिजली का झटका देकर मार दिया जाए। ठीक वैसे ही जैसे कुछ दिन पहले अमेरिका में उन रूसी जासूसों को मारा गया था। दिक्कत ये है कि एक बार जब कोई दूसरी तरफ चला जाता है तो उसे अपने छात्र जीवन के दिन याद नहीं रहते।

प्राण ने पूछा, ‘उसकी जगह तुम क्या करते? या हमारी जगह होते तो क्या करते? अगर हमने कोई कार्रवाई नहीं की होती तो लड़कियों के माता-पिता हंगामा खड़ा कर देते। और, ऐसे नतीजों के सवाल को छोड़ दें तो मुझे नहीं लगता कि सजा अनुचित थी। समिति के कुछ सदस्य तो उन्हें निष्कासित करना चाहते थे।’

‘कौन? प्रॉक्टर?’

‘खैर—कुछ सदस्य,’ प्राण ने कहा।

‘अरे, अरे, कुछ छुपाने की कोशिश मत करो, तुम दोस्तों के बीच हो—’ सुनील ने प्राण के दुबले-पतले कंधों पर अपना चौड़ा हाथ रखते हुए कहा।

‘नहीं, सुनील, मैंने पहले ही बहुत कुछ कह दिया है।’

‘आपने तो निश्चित रूप से नरमी के पक्ष में मतदान किया था।’

प्राण ने उस मज़ाकिया व्यंग्य का गंभीरता से जवाब दिया। “जी हाँ, मैंने नरमी बरतने का सुझाव दिया था। वैसे भी, मुझे पता है कि हालात कैसे बिगड़ सकते हैं। मैंने उस घटना के बारे में सोचा जब मान ने मोबी-डिक के साथ होली खेलने का फैसला किया था।” प्रोफ़ेसर मिश्रा वाली घटना अब तक पूरे विश्वविद्यालय में कुख्यात हो चुकी थी।

‘ओह, हाँ,’ इधर-उधर भटकते हुए आए भौतिक विज्ञानी ने कहा, ‘आपके पाठकों को क्या हुआ है?’

प्राण ने धीरे से गहरी सांस ली। 'कुछ नहीं,' उसने कहा।

लेकिन यह पोस्ट कई महीनों से खाली पड़ी है।

प्राण ने कहा, 'मुझे पता है। इसका विज्ञापन भी हो चुका है, लेकिन वे चयन समिति की बैठक की तारीख तय नहीं करना चाहते।'

‘यह सही नहीं है। मैं ब्रह्मपुर क्रॉनिकल में किसी से बात करूंगा,’ युवा भौतिक विज्ञानी ने कहा।

‘जी हाँ,’ सुनील ने उत्साहपूर्वक कहा। ‘हमें यह जानकारी मिली है कि

हमारे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में कर्मचारियों की भारी कमी के बावजूद और रीडर के पद के लिए एक अत्यंत उपयुक्त स्थानीय उम्मीदवार की उपलब्धता के बावजूद, जो अब एक अनुचित रूप से लंबे समय से खाली पड़ा है—'

प्राण ने बिल्कुल भी शांत स्वर में नहीं कहा, "कृपया—। चीजों को स्वाभाविक रूप से होने दीजिए। अखबारों को इसमें शामिल मत कीजिए।"

सुनील कुछ देर तक चिंतनशील मुद्रा में रहा, मानो किसी बात पर विचार कर रहा हो। अचानक बोला, 'ठीक है, ठीक है, एक घूंट पी लो!' 'क्यों न तुम अपने हाथ में एक घूंट ले लो?'

'पहले तो वह मुझे आधे घंटे तक बिना कुछ पीने को दिए सवाल पूछता रहा, फिर मुझसे पूछता रहा कि मैं क्यों नहीं पी रहा। मैं व्हिस्की लूंगा—पानी के साथ,' प्राण ने कुछ शांत स्वर में कहा।

जैसे-जैसे शाम ढलती गई, पार्टी में चर्चा शहर की खबरों, अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में भारत के लगातार खराब प्रदर्शन (प्राण ने आत्मविश्वास से भरे निराशावाद के साथ कहा, 'मुझे शक है कि हम कभी टेस्ट मैच जीत पाएंगे'), पूर्व प्रदेश और दुनिया भर की राजनीति, और ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय और दिल्ली के सेंट स्टीफंस विश्वविद्यालय (स्टीफंस के छात्रों के लिए) के विभिन्न शिक्षकों की विचित्रताओं की ओर मुड़ गई। गैर-स्टीफंस छात्रों को आश्चर्यचकित करते हुए, उन्होंने एक साथ शिकायत भरे लहजे में कहा: 'मेरी कक्षा में मैं एक बात कहूंगा: हो सकता है कि आप न समझें, हो सकता है कि आप समझना न चाहें, लेकिन आप समझ जाएंगे!'

खाना परोसा गया, और यह उतना ही साधारण था जितना प्राण ने अनुमान लगाया था। सुनील, अपने दोस्तों को भले ही अच्छे स्वभाव से

तंग करता था, लेकिन खुद एक बूढ़े नौकर से तंग हो जाता था, जिसका अपने मालिक के प्रति स्नेह (जिसकी वह सुनील के बचपन से सेवा कर रहा था) केवल काम करने की उसकी अनिच्छा के बराबर ही था।

रात के खाने के दौरान अर्थव्यवस्था और राजनीतिक स्थिति पर चर्चा हुई —कुछ हद तक अटपटी, क्योंकि कुछ प्रतिभागी या तो झगड़ालू थे या व्हिस्की के नशे में बेकाबू हो गए थे। इसे पूरी तरह समझना मुश्किल था, लेकिन इसका एक हिस्सा इस प्रकार था:

'देखिए, नेहरू के प्रधानमंत्री बनने का एकमात्र कारण यह था कि वे गांधी जी के चहेते थे। यह बात तो सब जानते हैं। उन्हें बस लंबे-लंबे भाषण देने आते हैं जिनका कोई मतलब नहीं होता। वे कभी किसी मुद्दे पर कोई रुख नहीं अपनाते। ज़रा सोचिए। कांग्रेस पार्टी में भी, जहाँ टंडन और उनके साथी उन्हें किनारे धकेल रहे हैं, वे क्या करते हैं? वे बस उनके साथ चलते रहते हैं, और हमें भी—'

लेकिन वह क्या कर सकता है? वह तानाशाह तो नहीं है।

"क्या आप बीच में टोकना नहीं चाहेंगे? मेरा मतलब है, क्या मैं अपनी बात कह सकता हूँ? उसके बाद आप जो चाहें, जितनी देर चाहें कह सकते हैं। तो नेहरू क्या करते हैं? मेरा मतलब है, वे क्या करते हैं? वे किसी समाज को संबोधित करते हैं, जिसे संबोधित करने के लिए उन्हें कहा गया है, और वे कहते हैं, "हम अक्सर अंधकार का अनुभव करते हैं।" अंधकार —उनकी अंधकारमय छवि या उनके दिमाग में क्या चल रहा है, इसकी परवाह कौन करता है? उनका चेहरा भले ही आकर्षक हो और उनकी बटनहोल में लगा लाल गुलाब सुंदर लगे, लेकिन हमें एक मजबूत दिल वाले व्यक्ति की ज़रूरत है, न कि संवेदनशील व्यक्ति की। प्रधानमंत्री के रूप में देश को नेतृत्व देना उनका कर्तव्य है, और उनमें यह करने के लिए चरित्र की दृढ़ता नहीं है।"

'कुंआ-'
'अच्छी तरह से क्या?'
‘आप बस एक देश चलाने की कोशिश करें। शुरुआत में लोगों को खाना खिलाने की कोशिश करें। हिंदुओं को मुसलमानों का नरसंहार करने से रोकें—’
'या विपरीत।'
‘ठीक है, या इसके विपरीत। और जब जमींदार हर कदम पर आपका विरोध करें, तो उनकी जागीरों को समाप्त करने का प्रयास करें।’
‘प्रधानमंत्री रहते हुए वे ऐसा नहीं कर रहे हैं—भू-राजस्व केंद्र सरकार का विषय नहीं है—यह राज्य सरकार का विषय है। नेहरू अपने अस्पष्ट भाषण देंगे, लेकिन प्राण से पूछिए कि हमारे जमींदारी उन्मूलन विधेयक के पीछे असली दिमाग किसका है।’
‘हां,’ प्राण ने स्वीकार किया, ‘ये मेरे पिता हैं। खैर, मेरी मां कहती हैं कि वो बहुत देर तक काम करते हैं और कभी-कभी सचिवालय से आधी रात के बाद थके-हारे घर लौटते हैं, फिर पूरी रात पढ़ते रहते हैं ताकि अगले दिन विधानसभा में होने वाली बहस की तैयारी कर सकें।’ वो थोड़ी देर हंसे और सिर हिलाया। ‘मेरी मां चिंतित हैं क्योंकि वो अपनी सेहत खराब कर रहे हैं। उन्हें लगता है, दो सौ धाराएं, दो सौ अल्सर। और अब जब बिहार में जमींदारी कानून को असंवैधानिक घोषित कर दिया गया है, तो हर कोई घबराया हुआ है। मानो चौक में हुई गड़बड़ी के कारण पहले से ही घबराने की कोई वजह न हो।’
‘चौक में क्या गड़बड़ है?’ किसी ने पूछा, यह सोचते हुए कि प्राण शायद उस दिन हुई किसी घटना का जिक्र कर रहा था।
“मर्ह का राजा और उसका शापित शिव मंदिर,” हरेश ने तुरंत कहा। हालाँकि वह शहर के बाहर से आया हुआ इकलौता व्यक्ति था, लेकिन

केदारनाथ ने उसे सारी जानकारी दे दी थी और उसने उसे अपना लिया था।

इतिहासकार ने कहा, 'इसे शिव मंदिर मत कहो।'

‘यह एक शापित शिव मंदिर है, इसने पहले ही बहुत मौतें कर दी हैं।’ ‘तुम हिंदू हो और इसे शापित मंदिर कहते हो—तुम्हें आईने में खुद को देखना चाहिए। अगर तुम्हें याद दिलाने की ज़रूरत हो तो बता दूं, अंग्रेज जा चुके हैं, इसलिए उनकी तरह नखरे मत दिखाओ। शापित मंदिर, शापित आदिवासी—’

‘हे भगवान! मैं आखिरकार एक और ड्रिंक ले ही लूंगा,’ हरीश ने सुनील से कहा।

जैसे-जैसे रात के खाने के दौरान और उसके बाद चर्चा तेज और धीमी होती गई, और लोग छोटे-छोटे गुटों में बंटते गए या और भी बड़े गुटों में बंधते गए, प्राण ने सुनील को एक तरफ खींचकर अनायास ही पूछा, 'क्या वह हरेश नाम का लड़का शादीशुदा है या उसकी सगाई हो गई है या कुछ और?'

'कुछ भी।'

‘क्या?’ प्राण ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

सुनील ने कहा, 'उसकी शादी या सगाई नहीं हुई है, लेकिन वह निश्चित रूप से "कुछ भी" है।'

सुनील, पहेलियों में बात मत करो। आधी रात हो चुकी है।

‘मेरी पार्टी में देर से आने का यही नतीजा होता है। तुम्हारे आने से पहले हम उसके और उस सरदारनी सिमरन कौर के बारे में काफी देर तक बात कर रहे थे, जिससे वो अब भी मोहित है। अब एक घंटे पहले मुझे उसका नाम याद क्यों नहीं आया? कॉलेज में उसके बारे में एक शेर भी था।’

गौर द्वारा पीछा किया जा रहा था और कौर उसका पीछा कर रही थी;

पहले पवित्र थी, लेकिन अब नहीं!
मैं दूसरी पंक्ति के तथ्यों की पुष्टि नहीं कर सकता। लेकिन, फिर भी, आज उसके चेहरे से साफ था कि वह अब भी उससे प्यार करता है। और मैं उसे दोष नहीं दे सकता। मैं उससे एक बार मिला था और वह सचमुच बहुत खूबसूरत थी।
सुनील पटवर्धन ने उनके बालों के काले मानसूनी बादलों के बारे में उर्दू में एक शेर सुनाया।
'वाह, वाह, वाह,' प्राण ने कहा।
लेकिन आप यह क्यों जानना चाहते हैं?
'कुछ नहीं,' प्राण ने कंधे उचकाते हुए कहा। 'मुझे लगता है कि वह एक ऐसा व्यक्ति है जो अपने मन की बात जानता है, और मैं बस उत्सुक था।'
कुछ देर बाद मेहमान जाने लगे। सुनील ने सुझाव दिया कि वे सभी पुराने ब्रह्मपुर जाकर देखें कि वहां कुछ चल रहा है या नहीं।
'आज रात आधी रात के समय,' उन्होंने नेहरूवादी लहजे में लयबद्ध ढंग से कहा, 'जब दुनिया सो रही होगी, तब ब्रह्मपुर जीवन और स्वतंत्रता के साथ जाग उठेगा।'
जब सुनील अपने मेहमानों को दरवाजे तक छोड़ने गए तो अचानक उनका मन उदास हो गया। उन्होंने धीरे से कहा, 'शुभ रात्रि'; फिर और भी उदास स्वर में बोले, 'शुभ रात्रि देवियों, शुभ रात्रि प्यारी देवियों, शुभ रात्रि, शुभ रात्रि।' और थोड़ी देर बाद, जब उन्होंने दरवाजा बंद किया, तो उन्होंने खुद से ही कहा, नेहरू के हिंदी भाषणों के अंत में इस्तेमाल होने वाले उसी लयबद्ध और अपूर्ण स्वर में: 'भाइयों और बहनों—जय हिंद!'
लेकिन प्राण बेहद खुश होकर घर लौटा। उसने पार्टी का खूब आनंद लिया था, काम से दूर रहने का और - उसे यह स्वीकार करना पड़ा - पत्नी, सास और ननद के पारिवारिक दायरे से बाहर निकलने का भी उसे बहुत

अच्छा लगा था।

कितना अफ़सोस की बात है, उसने सोचा, कि हरेश की शादी पहले ही तय हो चुकी है। अपनी गलत बातों के बावजूद, प्राण उसे पसंद करता था और सोचता था कि क्या वह लता के लिए एक संभावित 'भावुक' हो सकता है। प्राण को लता की चिंता थी। कुछ दिन पहले रात के खाने के समय जब उसे फ़ोन आया था, तब से वह बदल गई थी। लेकिन अब तो सविता से भी अपनी बहन के बारे में बात करना मुश्किल हो गया था। कभी-कभी, प्राण सोचता है, मुझे लगता है कि वे सब मुझे एक बाहरी व्यक्ति समझते हैं—मेहरा परिवार में एक मामूली दखलंदाज़।

4.9

सिरदर्द के बावजूद हरेश बड़ी मुश्किल से सुबह जल्दी उठा और रिक्शा लेकर रविदासपुर चला गया। उसके पास सांचे के सांचे, वादा किया हुआ सारा सामान और सुनील के जूते थे। मिट्टी की झोपड़ियों के बीच गलियों में फटे-पुराने कपड़े पहने लोग घूम रहे थे। एक लड़का रस्सी से लकड़ी का एक टुकड़ा खींच रहा था और दूसरा उसे डंडे से मारने की कोशिश कर रहा था। जैसे ही वह अस्थिर पुल पार कर रहा था, उसने देखा कि खुले नाले के काले पानी के ऊपर एक गाढ़ा, सफ़ेद धुआँ छाया हुआ था, जहाँ लोग सुबह की सफाई कर रहे थे। ये लोग ऐसे कैसे जी सकते हैं? उसने मन ही मन सोचा।

कुछ बिजली के तार खंभों से लापरवाही से लटक रहे थे या धूल भरे पेड़ की शाखाओं में उलझे हुए थे। कुछ घरों ने मुख्य लाइन के ऊपर तार डालकर इस सीमित बिजली स्रोत का अवैध रूप से इस्तेमाल किया था। बाकी झोपड़ियों के अँधेरे कमरों से कामचलाऊ दीयों की टिमटिमाहट सुनाई दे रही थी: मिट्टी के तेल से भरे टिन, जिनका धुआँ झोपड़ियों में भर जाता था। किसी बच्चे, कुत्ते या बछड़े के लिए इन्हें गिराना आसान था,

और कभी-कभी इसी तरह आग लग जाती थी, जो एक झोपड़ी से दूसरी झोपड़ी में फैलती थी और छप्पर में सुरक्षित रखी हर चीज़ को जला देती थी, जिसमें कीमती राशन कार्ड भी शामिल थे। हरेश ने इस सब बर्बादी पर अपना सिर हिलाया।

वह कार्यशाला में पहुँचा और देखा कि जगत राम सीढ़ी पर अकेले बैठे हैं, उनकी छोटी बेटी ही उन्हें देख रही है। लेकिन हरेश को यह देखकर झुंझलाहट हुई कि वे जूतों पर नहीं, बल्कि लकड़ी के खिलौने पर काम कर रहे थे: एक बिल्ली। वे बड़े ध्यान से उसे तराश रहे थे और हरेश को देखकर आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने अधूरी बिल्ली को सीढ़ी पर रख दिया और खड़े हो गए।

उन्होंने कहा, 'तुम जल्दी आ गए हो।'

'मैंने किया है,' हरेश ने रूखेपन से कहा। 'और मुझे पता चला है कि आप किसी और काम में लगे हुए हैं। मैं आपको जल्द से जल्द सामग्री उपलब्ध कराने के लिए अपनी ओर से हर संभव प्रयास कर रहा हूं, लेकिन मेरा किसी अविश्वसनीय व्यक्ति के साथ काम करने का कोई इरादा नहीं है।'

जगत राम ने अपनी मूंछों को छुआ। उनकी आँखों की चमक फीकी पड़ गई और उनकी वाणी रुक-रुक कर निकलने लगी।

'मेरा मतलब यह है कि—' उसने कहना शुरू किया, '—क्या तुमने मुझसे पूछा भी है? मेरा मतलब यह है कि—क्या तुम्हें लगता है कि मैं अपनी बात का पक्का नहीं हूँ?'

वह उठा, अंदर गया और हरेष द्वारा दिए गए पैटर्न के अनुसार काटे गए टुकड़ों को उस खूबसूरत मैरून चमड़े से ले आया जिसे वह पिछली रात लाया था। जब हरेष उनकी जांच कर रहा था, उसने कहा:

'मैंने अभी तक ब्रोग शूज़ पर ब्रोग डिज़ाइन नहीं बनाया है—लेकिन मैंने सोचा कि मैं खुद ही कटिंग कर लूँगा, इसे अपने कटर पर नहीं छोड़ूँगा। मैं

सुबह से जागा हुआ हूँ।'
'अच्छा, अच्छा,' हरेश ने सिर हिलाते हुए और नरम लहजे में कहा। 'चलो, वह चमड़े का टुकड़ा देखते हैं जो मैंने तुम्हारे लिए छोड़ा है।'
जगत राम ने बड़ी अनिच्छा से उसे छोटे से कमरे की दीवार में बनी ईंटों की अलमारियों में से एक से निकाला। उसका काफी हिस्सा अभी भी अप्रयुक्त था। हरेश ने उसे ध्यान से देखा और वापस कर दिया। जगत राम राहत महसूस कर रहे थे। उन्होंने अपना हाथ अपनी सफ़ेद हो रही मूंछों पर रखा और बिना कुछ कहे, ध्यानमग्न भाव से उन्हें सहलाया।
"उत्कृष्ट," हरेश ने भरपूर उत्साह से कहा। जगत राम की कटाई आश्चर्यजनक रूप से तेज और चमड़े की बेहद किफायती खपत वाली थी। वास्तव में, उनमें एक सहज स्थानिक निपुणता थी जो वर्षों के अनुभवी जूता बनाने वालों में भी दुर्लभ थी। कल उनके विचारों में इसका संकेत मिला था जब उन्होंने पैटर्न के घटकों पर सरसरी नजर डालने के बाद मन ही मन जूते की आकृति बना ली थी।
'आपकी बेटी कहां गायब हो गई है?'
जगत राम ने हल्की सी मुस्कान बिखेरी। उन्होंने कहा, 'वह स्कूल के लिए देर हो गई थी।'
'क्या कल लवली शू शॉप वाले लोग आए थे?' हरेश ने पूछा।
'हां और ना,' जगत राम ने कहा और आगे कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया।
चूंकि हरेश की लवली परिवार में कोई सीधी दिलचस्पी नहीं थी, इसलिए उसने इस सवाल पर ज़ोर नहीं दिया। उसने सोचा कि शायद जगत राम केदारनाथ के मित्र के सामने केदारनाथ के किसी प्रतिद्वंदी के बारे में बात नहीं करना चाहते।
"ठीक है," हरेश ने कहा। "ये रहा बाकी सारा सामान जिसकी आपको ज़रूरत है।" उसने अपना ब्रीफ़केस खोला और धागा, पुर्जे, सांचे और जूते

निकाले। जगत राम ने सांचों को अपने हाथों में घुमाकर प्रशंसा की, तो हरेश ने आगे कहा: “मैं आज से तीन दिन बाद दोपहर दो बजे आपसे मिलूंगा, और तब तक मुझे उम्मीद है कि ब्रोग्स तैयार हो जाएंगे। मैंने उसी शाम छह बजकर साढ़े छह बजे कानपुर वापस जाने वाली ट्रेन का टिकट खरीद लिया है। अगर जूते अच्छे बने हैं, तो मुझे उम्मीद है कि मैं आपको ऑर्डर दिलवा पाऊंगा। अगर नहीं बने, तो मैं अपनी वापसी की यात्रा में देरी नहीं करूंगा।”

जगत राम ने कहा, 'अगर सब कुछ ठीक रहा तो मुझे आपके साथ सीधे काम करने का अवसर मिलेगा।'

हरेश ने सिर हिलाया। उसने जवाब दिया, 'मैं तुमसे केदारनाथ के रास्ते मिला था और तुमसे केदारनाथ के रास्ते ही निपटूंगा।'

जगत राम ने थोड़ा उदास भाव से सिर हिलाया और हरेश को दरवाजे तक छोड़ दिया। इन खून चूसने वाले दलालों से छुटकारा पाना नामुमकिन लग रहा था। पहले मुसलमान, अब ये पंजाबी जिन्होंने उनकी जगह ले ली थी। हालांकि, केदारनाथ ने ही उसे पहला मौका दिया था, और हरेश इतना बुरा आदमी भी नहीं था—जैसा कि आम तौर पर होता है। शायद वह सिर्फ खून चूसने वाला था।

'अच्छा,' हरेश ने कहा। 'बहुत बढ़िया। खैर, मुझे बहुत सारे काम करने हैं। मुझे अब जाना होगा।'

और वह अपनी हमेशा की तरह उमंग से भरे अंदाज़ में रविदासपुर की गंदी गलियों से होते हुए निकल पड़ा। आज उसने साधारण काले ऑक्सफ़ोर्ड जूते पहने थे। एक छोटे से सफेद मंदिर के पास एक खुली लेकिन गंदी जगह में उसने कुछ छोटे लड़कों को ताश के पत्तों के फटे-पुराने बंडल से जुआ खेलते देखा—उनमें से एक जगत राम का सबसे छोटा बेटा था—और उसने अपनी जीभ चटकाई, नैतिक रूप से नापसंद होने से ज़्यादा इस

बात से झुंझलाहट हुई कि हालात ऐसे क्यों हैं। अशिक्षा, गरीबी, अनुशासनहीनता, गंदगी! ऐसा नहीं था कि यहाँ के लोगों में क्षमता नहीं थी। अगर उसकी मर्ज़ी चलती और उसे धन और श्रम मिलता, तो वह छह महीने में इस मोहल्ले को अपने पैरों पर खड़ा कर देता। स्वच्छता, पीने का पानी, बिजली, पक्की सड़कें, नागरिक भावना—यह सब बस समझदारी भरे फैसले लेने और उन्हें लागू करने के लिए ज़रूरी सुविधाएं उपलब्ध कराने की बात थी। हरीश को 'ज़रूरी सुविधाओं' की उतनी ही चिंता थी जितनी अपनी 'करने योग्य' कामों की सूची की। अगर पहले में कुछ कमी रह जाती या दूसरे में कुछ अधूरा रह जाता, तो वह खुद से नाराज़ हो जाता। उनका यह भी मानना था कि किसी भी काम को पूरा करना जरूरी है।

ओह हाँ; केदारनाथ का बेटा, उसका नाम क्या है, भास्कर! उसने मन ही मन कहा। मुझे कल रात सुनील से डॉ. दुर्रानी का पता ले लेना चाहिए था। उसने अपनी दूरदर्शिता की कमी पर खेद व्यक्त किया।

लेकिन दोपहर के भोजन के बाद भी वह भास्कर को साथ लेकर सुनील के घर तांगा लेकर गया। हरेश ने सोचा कि डॉ. दुर्रानी सुनील के घर तक पैदल चलकर आए थे, इसलिए वे ज्यादा दूर नहीं रहते होंगे।

भास्कर चुपचाप हरेश के साथ-साथ चला, और हरेश भी इस बात से खुश था कि वह इस बात के अलावा कुछ नहीं कह रहा था कि वे कहाँ जा रहे हैं।

सुनील के वफादार, आलसी नौकर ने डॉक्टर दुर्रानी का घर दिखाया, जो कुछ ही दरवाजों की दूरी पर था। हरेश ने तांगे का किराया चुकाया और भास्कर के साथ पैदल चलकर वहाँ गया।

4.10

क्रिकेट की सफेद वर्दी पहने एक लंबे, आकर्षक युवक ने दरवाजा खोला।

'हम डॉक्टर दुर्रानी से मिलने आए हैं,' हरेश ने कहा। 'क्या आपको लगता है कि वह रिहा हो सकते हैं?'

“मैं बस देखता हूँ कि मेरे पिताजी क्या कर रहे हैं,” युवक ने धीमी, मधुर और थोड़ी खुरदरी आवाज़ में कहा। “कृपया अंदर आइए।”

एक-दो मिनट बाद वह बाहर आया और बोला, 'मेरे पिताजी एक मिनट में बाहर आ रहे हैं। उन्होंने मुझसे पूछा कि आप कौन हैं, और मुझे एहसास हुआ कि मैंने पूछा ही नहीं था। मुझे माफ़ करना, मुझे पहले अपना परिचय देना चाहिए। मेरा नाम कबीर है।'

हरेश, उस युवक के रूप-रंग और व्यवहार से प्रभावित होकर, अपना हाथ आगे बढ़ाया, एक संक्षिप्त मुस्कान के साथ अपना परिचय दिया। 'और ये भास्कर हैं, मेरे एक मित्र के पुत्र।'

वह युवक किसी बात को लेकर थोड़ा परेशान लग रहा था, लेकिन उसने बातचीत करने की पूरी कोशिश की।

‘हेलो भास्कर,’ कबीर ने कहा। ‘तुम्हारी उम्र कितनी है?’

भास्कर ने इस सबसे सरल प्रश्न पर आपत्ति जताते हुए कहा, 'नौ।' वह सोच रहा था कि आखिर यह सब किस बारे में है।

कुछ देर बाद कबीर ने कहा, 'पता नहीं मेरे पिताजी को यहाँ क्या रोके हुए है,' और वह वापस अंदर चला गया।

जब डॉ. दुर्रानी अंततः ड्राइंग रूम में आए, तो वे अपने आगंतुकों को देखकर काफी आश्चर्यचकित हुए। भास्कर को देखकर उन्होंने हरेश से पूछा:

‘क्या आप मेरे किसी बेटे से मिलने आए हैं?’

भास्कर की आँखें इस असामान्य वयस्क व्यवहार को देखकर चमक उठीं। उन्हें डॉ. दुर्रानी का मजबूत, चौकोर चेहरा और विशेष रूप से उनकी शानदार सफेद मूंछों का संतुलन और समरूपता पसंद आई। खड़े हुए हरेश

ने कहा:
जी जी, डॉ. दुर्रानी, हम आपसे ही मिलने आए हैं। मुझे नहीं पता कि आपको याद है या नहीं—हम सुनील की पार्टी में मिले थे...।
'सुनील?' डॉ. दुर्रानी ने हैरानी से आँखें सिकोड़ते हुए कहा, उनकी भौहें ऊपर-नीचे हो रही थीं। 'सुनील... सुनील...' वे किसी बात पर गंभीरता से विचार कर रहे थे और किसी निष्कर्ष के करीब पहुँच रहे थे। 'पटवर्धन,' उन्होंने गहरी समझ प्राप्त करने के भाव से कहा। उन्होंने चुपचाप इस नए विचार का कई पहलुओं से विश्लेषण किया।
हरेश ने प्रक्रिया को तेज करने का फैसला किया। उन्होंने फुर्ती से कहा:
'डॉ. दुर्रानी, आपने कहा था कि हम आपसे मिलने आ सकते हैं। यह मेरा युवा मित्र भास्कर है, जिसके बारे में मैंने आपको बताया था। मुझे लगता है कि गणित में उसकी रुचि सराहनीय है, और मुझे लगा कि उसे आपसे मिलना चाहिए।'
डॉ. दुर्रानी काफी खुश दिखे और उन्होंने भास्कर से पूछा कि दो और दो कितने होते हैं।
हरेश चौंक गया, लेकिन भास्कर—हालांकि वह आम तौर पर कहीं अधिक जटिल सवालों को भी अपने ध्यान के लायक नहीं समझता था—ज़ाहिर तौर पर अपमानित नहीं हुआ। उसने बहुत ही संकोच भरी आवाज़ में उत्तर दिया:
'चार?'
डॉक्टर दुर्रानी चुप रहे। ऐसा लग रहा था कि वे इस जवाब पर विचार कर रहे हैं। हरेश असहज महसूस करने लगा।
'जी हां, आप उसे कुछ देर के लिए यहां छोड़ सकते हैं,' डॉ. दुर्रानी ने कहा।
'क्या मैं उसे लेने के लिए चार बजे वापस आऊं?' हरेश ने पूछा।

डॉ. दुर्रानी ने कहा, 'लगभग ऐसा ही है।'
जब वह और भास्कर अकेले रह गए, तो दोनों चुप रहे। थोड़ी देर बाद भास्कर ने कहा:
क्या यह सही उत्तर था?
‘लगभग,’ डॉ. दुर्रानी ने कहा। ‘देखिए,’ उन्होंने खाने की मेज पर रखे कटोरे से एक मुसम्मी उठाते हुए कहा, ‘यह कुछ-कुछ त्रिभुज के कोणों के योग के प्रश्न जैसा है। उन्होंने आपको क्या सिखाया है?’
भास्कर ने कहा, '180 डिग्री।'
‘खैर, लगभग,’ डॉ. दुर्रानी ने कहा। ‘कम से कम ऊपरी तौर पर तो ऐसा ही लगता है। लेकिन इस मुसम्मी के मामले में, उदाहरण के लिए—’
कुछ देर तक वह हरे नींबू को निहारता रहा, मानो किसी रहस्यमय विचार में खोया हुआ हो। जब उसका उद्देश्य पूरा हो गया, तो उसने आश्चर्य से उसे देखा, मानो वह समझ ही नहीं पा रहा था कि वह उसके हाथ में क्या कर रहा है। मोटी त्वचा के कारण उसने बड़ी मुश्किल से उसे छीला और खाने लगा।
‘क्या आप, उह, कुछ लेना चाहेंगे?’ उसने भास्कर से सहज भाव से पूछा।
'जी हां, कृपया,' भास्कर ने कहा और एक क्षण के लिए दोनों हाथ आगे बढ़ा दिए, मानो वह किसी मंदिर से कोई पवित्र भेंट प्राप्त कर रहा हो।
एक घंटे बाद जब हरेश लौटा, तो उसे लगा कि उसका आना अवांछित था। वे दोनों अब खाने की मेज पर बैठे थे, जिस पर कई चीजें पड़ी थीं - कई मुसम्मी, मुसम्मी के कई छिलके, अलग-अलग तरह से रखी हुई ढेर सारी टूथपिक्स, एक उलटी ऐशट्रे, अखबार की कुछ पट्टियाँ जो अजीबोगरीब ढंग से मुड़ी हुई थीं, और एक बैंगनी पतंग। खाने की मेज की बाकी सतह पीले चाक से लिखे समीकरणों से ढकी हुई थी।
भास्कर हरेश के साथ जाने से पहले अखबार के लूप, बैंगनी पतंग और

ठीक सोलह टूथपिक्स अपने साथ ले गया। डॉ. दुर्रानी और भास्कर दोनों ने ही साथ बिताए समय के लिए एक-दूसरे को धन्यवाद नहीं दिया। मिसरी मंडी वापस जाते हुए तांगे में, हरेश भास्कर से पूछे बिना नहीं रह सका:

‘क्या आपको वे सभी समीकरण समझ में आ गए?’

भास्कर ने कहा, 'नहीं।' हालांकि, उनके जवाब के लहजे से यह स्पष्ट था कि उन्हें यह बात मायने नहीं रखती थी।

घर पहुँचकर भास्कर ने कुछ नहीं कहा, लेकिन उसकी माँ ने उसके चेहरे को देखकर ही समझ लिया कि उसका समय बहुत ही आनंददायक बीता है। उसने भास्कर से उसकी सारी चीज़ें ले लीं और उसे अपने चिपचिपे हाथ धोने को कहा। फिर, लगभग आँखों में आँसू लिए, उसने हरीश को धन्यवाद दिया।

'हरेश भाई, आपने जो कष्ट उठाया उसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं समझ सकती हूं कि यह उनके लिए कितना मायने रखता है,' वीना ने कहा।

‘खैर,’ हरेश ने मुस्कुराते हुए कहा, ‘यह मेरी क्षमता से कहीं अधिक है।’

4.11

इस बीच, जगतराम की कार्यशाला में जूतों को सांचों पर रखा गया था। दो दिन बीत गए। तय समय पर ठीक दो बजे, हरेश जूते और सांचे लेने आया। जगतराम की छोटी बेटी ने उसे पहचान लिया और उसके आने पर ताली बजाई। वह गाना गा रही थी और चूंकि हरेश भी वहाँ था, इसलिए उसने हरेश का भी मनोरंजन किया। गाना कुछ इस प्रकार था:

राम राम शाह,

आपका स्वागत है, आपको ऐसा महसूस होता है।

Mendaki ki chatni—

Aa gaya nasha!
राम राम शाह,
आलू से बनी ग्रेवी,
मादा मेंढक से बनी चटनी—
इसे पियो, और तुम नशे में हो जाओगे!
हरेश ने बड़ी सावधानी से जूतों का निरीक्षण किया। वे बढ़िया बने थे। ऊपरी हिस्सा बेहतरीन ढंग से सिला गया था, हालाँकि उसके सामने रखी साधारण सिलाई मशीन पर ही सिलाई हुई थी। चमड़ा भी सावधानीपूर्वक बनाया गया था—उसमें न तो कोई उभार था और न ही कोई सिलवट। फिनिशिंग भी शानदार थी, यहाँ तक कि पंच्ड ब्रोग के चमड़े का रंग भी एकदम सटीक था। वह बहुत खुश था। उसने अपनी माँगों में सख्ती बरती थी, लेकिन अब उसने जगत राम को भुगतान के रूप में वादा की गई राशि से डेढ़ गुना अधिक दिया।
उन्होंने वादा किया, 'आप मुझसे जल्द ही संपर्क करेंगे।'
‘खैर, हरीश साहब, मुझे पूरी उम्मीद है,’ जगत राम ने कहा। ‘आप सचमुच आज जा रहे हैं? अफसोस की बात है।’
'जी हां, मुझे लगता है ऐसा ही है।'
‘और आप सिर्फ इसी के लिए रुके रहे?’
'हां, अगर ऐसा नहीं होता तो मैं चार दिन के बजाय दो दिन में ही निकल जाता।'
'खैर, मुझे उम्मीद है कि सीएलएफसी में उन्हें यह जोड़ी पसंद आएगी।'
इसके साथ ही वे अलग हो गए। हरीश ने कुछ काम निपटाए, कुछ छोटी-मोटी खरीदारी की, सुनील के घर वापस गया, उसके जूते लौटाए, सामान पैक किया, अलविदा कहा और कानपुर जाने वाली शाम की ट्रेन पकड़ने के लिए तांगा लेकर स्टेशन चला गया। रास्ते में वह केदारनाथ के यहाँ

रुका और उन्हें धन्यवाद दिया।
'मुझे उम्मीद है कि मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूं,' हरेश ने गर्मजोशी से हाथ मिलाते हुए कहा।
'तुम्हारे पास पहले से ही है,' वीना ने मुझे बताया।
मेरा मतलब था, व्यापार के लिहाज से।
'मुझे पूरी उम्मीद है,' केदारनाथ ने कहा, 'और, अगर मैं किसी भी तरह से आपकी मदद कर सकूँ तो—'
उन्होंने हाथ मिलाया।
'बताओ—' हरेश ने अचानक कहा। 'मैं तुमसे कई दिनों से यही पूछना चाह रहा था—तुम्हारे हाथों के अंदरूनी हिस्से पर ये सारे निशान कैसे आए? ये किसी मशीन में फंसने जैसे नहीं लगते—अगर मशीन में फंसे होते तो दोनों तरफ निशान होते।'
केदारनाथ कुछ सेकंड के लिए चुप रहे, मानो अपने विचारों में आए बदलाव को समझने की कोशिश कर रहे हों। उन्होंने कहा, 'ये चोटें मुझे बंटवारे के दौरान लगीं।' वे रुके और फिर बोले, 'जब हमें लाहौर से भागने पर मजबूर होना पड़ा, तो मुझे सेना के ट्रकों के काफिले में जगह मिल गई और हम पहले ट्रक में बैठ गए—मैं और मेरा छोटा भाई। मैंने सोचा, इससे ज़्यादा सुरक्षित और कुछ नहीं हो सकता। लेकिन, वह बलूची रेजिमेंट थी। वे रावी पुल से ठीक पहले रुके, और वहाँ लकड़ी के गोदामों के पीछे से मुस्लिम गुंडे आए और अपने भालों से हम पर बेरहमी से हमला करने लगे। मेरे छोटे भाई की पीठ पर निशान हैं और मेरी हथेलियों और कलाई पर—मैंने भाले की नोक को पकड़ने की कोशिश की थी... मैं एक महीने तक अस्पताल में रहा।'
हरेश के चेहरे पर सदमे के भाव स्पष्ट थे। केदारनाथ ने आंखें बंद करते हुए, लेकिन शांत स्वर में बोलना जारी रखा:

‘दो मिनट में बीस-तीस लोग मारे गए—किसी का बाप, किसी की बेटी... बड़े ही सौभाग्य से दूसरी तरफ से एक गोरखा रेजिमेंट आ रही थी और उन्होंने गोलीबारी शुरू कर दी। और, खैर, लुटेरे भाग गए, और मैं आपको यह कहानी सुनाने के लिए यहाँ हूँ।’

'परिवार कहाँ था?' हरेश ने पूछा। 'क्या वे दूसरे ट्रकों में थे?'

नहीं—मैंने उन्हें थोड़ी देर पहले ही ट्रेन से भेज दिया था। भास्कर उस समय केवल छह साल का था। वैसे भी, जैसा कि आप जानते हैं, ट्रेनें भी सुरक्षित नहीं थीं।

'मुझे नहीं पता कि मुझे ये सवाल पूछने चाहिए थे या नहीं,' हरेश ने असामान्य रूप से शर्मिंदा महसूस करते हुए कहा।

‘नहीं, नहीं—कोई बात नहीं। हम खुशकिस्मत थे, जैसा कि अक्सर होता है। ब्रह्मपुर में मेरी दुकान का मालिक रहा मुस्लिम व्यापारी—खैर... अजीब बात है—वहाँ जो कुछ भी हुआ उसके बाद भी मुझे लाहौर की याद आती है,’ केदारनाथ ने कहा। ‘लेकिन आपको जल्दी करनी चाहिए वरना आपकी ट्रेन छूट जाएगी।’

ब्रह्मपुर जंक्शन हमेशा की तरह भीड़भाड़ वाला, शोरगुल भरा और बदबूदार था: भाप के बादल, आती ट्रेनों की सीटियाँ, फेरीवालों का शोर, मछली की दुर्गंध, मक्खियों की भिनभिनाहट और यात्रियों की भागदौड़ भरी आवाज़ें। हरीश थका हुआ महसूस कर रहा था। छह बज चुके थे फिर भी बहुत गर्मी थी। उसने एक अगेट कफ़लिंक को छुआ और उसकी ठंडक पर आश्चर्य किया।

भीड़ पर नज़र डालते हुए, हरेश ने देखा कि एक युवती हल्के नीले सूती साड़ी में अपनी माँ के पास खड़ी है। सुनील की पार्टी में मिले अंग्रेज़ी शिक्षक उन्हें कलकत्ता जाने वाली ट्रेन में विदा कर रहे थे। माँ की पीठ हरेश की तरफ थी, इसलिए वह उन्हें ठीक से देख नहीं पाए। बेटी का

चेहरा बेहद आकर्षक था। वह पारंपरिक रूप से सुंदर तो नहीं थी—उसने हरेश के दिल को उस तरह नहीं छुआ जैसे उसकी तस्वीर ने छुआ था—लेकिन उसके चेहरे में एक ऐसी मोहक तीव्रता थी कि हरेश एक पल के लिए रुक गए। युवती रेलवे प्लेटफार्म पर बिछड़ने के सामान्य दुख से कहीं अधिक गहरे दुख को दृढ़ता से दबा रही थी। हरेश ने सोचा कि थोड़ी देर रुककर उस युवती से अपना परिचय दें, लेकिन लड़की के भाव में व्याप्त उदासी, लगभग निराशा, ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। इसके अलावा, उनकी ट्रेन जल्द ही छूटने वाली थी, उनका कुली उनसे काफी आगे निकल चुका था, और हरेश, कद में छोटे होने के कारण, चिंतित थे कि कहीं वह भीड़ में उसे खो न दें।

भाग पाँच

5.1

कुछ दंगे जानबूझकर भड़काए जाते हैं, कुछ अपने आप ही उत्पन्न हो जाते हैं। मिसरी मंडी में उत्पन्न समस्याओं से हिंसा की स्थिति तक पहुँचने की उम्मीद नहीं थी। हालाँकि, हरेश के जाने के कुछ दिनों बाद ही, मिसरी मंडी का मध्य भाग—जिसमें केदारनाथ की दुकान के आसपास का इलाका भी शामिल था—सशस्त्र पुलिस से भर गया था।

पिछली शाम पुराने ब्रह्मपुर से चमड़ा कारखाने की ओर जाने वाली कच्ची सड़क पर एक सस्ते शराबखाने में झगड़ा हो गया था। हड़ताल का मतलब था कम पैसे, लेकिन सबके पास ज़्यादा समय, इसलिए कलारी का अड्डा हमेशा की तरह ही भीड़भाड़ वाला था। यह जगह मुख्य रूप से जाटवों की थी, लेकिन सिर्फ़ उन्हीं की नहीं। शराब ने सबको बराबर कर दिया था, और उन्हें इस बात की परवाह नहीं थी कि उनके बगल वाली सादी लकड़ी

की मेज पर कौन बैठा है। वे पीते, हँसते, रोते, फिर लड़खड़ाते हुए बाहर निकल जाते, कभी गाते, कभी गालियाँ देते। वे अटूट दोस्ती की कसमें खाते, एक-दूसरे के राज़ खोलते, अपमान की कल्पना करते। मिसरी मंडी में एक व्यापारी का सहायक अपने ससुर के साथ चल रहे झगड़े के कारण बहुत परेशान था। वह अकेला शराब पी रहा था और खुद को आक्रामक अवस्था में ले जा रहा था। उसने अपने पीछे से अपने मालिक की चालाकी के बारे में की गई टिप्पणी सुनी, और उसकी मुट्ठियाँ कस गईं। यह देखने के लिए कि कौन बोल रहा है, वह मुड़ा और अपनी बेंच को गिराते हुए फर्श पर गिर गया।

उसके पीछे मेज पर बैठे तीनों आदमी हँस पड़े। वे जाटव थे जिनका उससे पहले भी लेन-देन हो चुका था। वही शाम को मिसरी मंडी की ओर भागते हुए व्यापारियों की टोकरियों से जूते निकालता था—उसका मालिक व्यापारी जूतों को छूना पसंद नहीं करता था क्योंकि उसे लगता था कि इससे वह अपवित्र हो जाएगा। जाटवों को पता था कि मिसरी मंडी में व्यापार ठप होने से उन व्यापारियों को विशेष रूप से नुकसान हुआ था जिन्होंने चिट प्रणाली में हद से ज्यादा निवेश कर दिया था। उन्हें यह भी पता था कि इससे उन्हें और भी ज्यादा नुकसान हुआ था—लेकिन उनके लिए यह किसी शक्तिशाली के घुटने टेकने जैसा मामला नहीं था। लेकिन यहाँ, सचमुच उनके सामने, यही हो रहा था।

स्थानीय स्तर पर बनी सस्ती शराब उनके सिर पर चढ़ गई थी, और उनके पास पकौड़े और अन्य नाश्ते खरीदने के लिए पैसे नहीं थे जिससे उनका नशा उतर सकता था। वे बेकाबू होकर हंसने लगे।

एक ने उपहास उड़ाते हुए कहा, 'वह हवा से कुश्ती लड़ रहा है।'

दूसरे ने ताना मारते हुए कहा, 'मुझे यकीन है कि वह किसी और तरह की कुश्ती करना पसंद करेगा।'

लेकिन क्या वह इसमें अच्छा होगा? लोग कहते हैं कि इसी वजह से उसे घर पर परेशानी होती है—'

'कितना बेकार है,' पहले आदमी ने ताना मारते हुए उसे उस अंदाज़ में दूर कर दिया जैसे कोई व्यापारी एक खराब जोड़ी के आधार पर टोकरी को अस्वीकार कर रहा हो।

उनकी वाणी लड़खड़ा रही थी, उनकी आँखों में तिरस्कार का भाव था। गिरा हुआ आदमी उन पर झपटा, और वे उस पर टूट पड़े। कलारी समेत कुछ लोगों ने सुलह कराने की कोशिश की, लेकिन ज़्यादातर लोग मज़ा लेने और नशे में धुत होकर हौसला बढ़ाने के लिए इकट्ठा हो गए। चारों ज़मीन पर लोट-पोट होकर लड़ते रहे।

लड़ाई शुरू करने वाले व्यक्ति को पीट-पीटकर बेहोश कर दिया गया और बाकी सभी घायल हो गए। एक व्यक्ति की आंख से खून बह रहा था और वह दर्द से चीख रहा था।

उस रात, जब उनकी एक आंख की रोशनी चली गई, तो गोविंद शू मार्ट पर जाटवों की एक खतरनाक भीड़ जमा हो गई, जहां व्यापारी का स्टॉल था। उन्होंने स्टॉल को बंद पाया। भीड़ नारे लगाने लगी और फिर स्टॉल को जलाने की धमकी देने लगी। एक अन्य व्यापारी ने भीड़ को समझाने की कोशिश की, तो भीड़ ने उस पर हमला कर दिया। भीड़ का मिजाज भांपते हुए कुछ पुलिसकर्मी मदद के लिए स्थानीय पुलिस स्टेशन भागे। अब दस पुलिसकर्मी छोटी, मजबूत बांस की लाठियों से लैस होकर आए और उन्होंने लोगों को अंधाधुंध पीटना शुरू कर दिया। भीड़ तितर-बितर हो गई।

आश्चर्यजनक रूप से जल्द ही, इस मामले की जानकारी जिले के पुलिस अधीक्षक से लेकर पूर्व प्रदेश के महानिरीक्षक तक, गृह सचिव से लेकर गृह मंत्री तक, सभी संबंधित अधिकारियों को हो गई। सभी को अलग-

अलग तथ्य और व्याख्याएं प्राप्त हुईं, और कार्रवाई या निष्क्रियता के लिए अलग-अलग सुझाव दिए गए।

मुख्यमंत्री शहर से बाहर थे। उनकी अनुपस्थिति में—और चूंकि कानून-व्यवस्था उनके अधिकार क्षेत्र में थी—गृह मंत्री ने स्थिति संभाली। महेश कपूर, हालांकि राजस्व मंत्री थे और इसलिए सीधे तौर पर इस मामले से संबंधित नहीं थे, लेकिन मिसरी मंडी का कुछ हिस्सा उनके निर्वाचन क्षेत्र में होने के कारण उन्हें अशांति की सूचना मिली। वे तुरंत घटनास्थल पर पहुंचे और पुलिस अधीक्षक और जिला मजिस्ट्रेट से बात की। एसपी और डीएम का मानना था कि अगर किसी भी पक्ष को उकसाया न जाए तो मामला शांत हो जाएगा। हालांकि, गृह मंत्री एल.एन. अग्रवाल, जिनका निर्वाचन क्षेत्र भी मिसरी मंडी में था, ने घटनास्थल पर जाना आवश्यक नहीं समझा। उन्हें घर पर कई फोन आए और उन्होंने निर्णय लिया कि एक सबक सिखाने के लिए कुछ करना आवश्यक है।

इन जाटवों ने अपनी तुच्छ शिकायतों और उपद्रवी हड़ताल से शहर के व्यापार को काफी समय तक ठप्प कर रखा था। निस्संदेह, उन्हें श्रमिक संघ के नेताओं ने उकसाया था। अब वे मिसरी मंडी की मुख्य सड़क से जुड़ने वाले गोविंद शू मार्ट के प्रवेश द्वार को अवरुद्ध करने की धमकी दे रहे थे। वहां के कई व्यापारी पहले से ही आर्थिक तंगी में थे। धमकी भरी धरना-प्रदर्शन उन्हें पूरी तरह से बर्बाद कर देगा। एल.एन. अग्रवाल स्वयं एक दुकानदार परिवार से थे और कुछ व्यापारी उनके अच्छे मित्र थे। अन्य व्यापारियों ने उन्हें चुनाव निधि प्रदान की थी। उन्हें इन व्यापारियों से तीन हताशा भरे फोन आए थे। यह समय केवल बातों का नहीं, बल्कि कार्रवाई का था। यह केवल कानून का प्रश्न नहीं था, बल्कि व्यवस्था का, स्वयं समाज की व्यवस्था का प्रश्न था। निश्चित रूप से भारत के लौह पुरुष, स्वर्गीय सरदार पटेल, यदि उनकी जगह होते तो यही महसूस करते।

लेकिन अगर वह यहाँ होते तो क्या करते? मानो सपने में, गृह मंत्री के मन में अपने राजनीतिक गुरु का गुंबदनुमा और गंभीर चेहरा उभर आया, जिनकी मृत्यु चार महीने पहले हो चुकी थी। वे कुछ देर सोच में डूबे रहे। फिर उन्होंने अपने निजी सहायक को ज़िला मजिस्ट्रेट से फ़ोन पर बात कराने का आदेश दिया।

लगभग पैंतीस वर्ष की आयु के जिला मजिस्ट्रेट, ब्रह्मपुर जिले के नागरिक प्रशासन के सीधे प्रभारी थे और एसपी (जैसा कि सभी द्वारा पुलिस अधीक्षक को कहा जाता था) के साथ मिलकर कानून और व्यवस्था बनाए रखते थे।

पीए ने संपर्क करने की कोशिश की, फिर कहा: 'माफ़ कीजिए सर, डीएम साइट पर हैं। वे सुलह कराने की कोशिश कर रहे हैं—'

गृह मंत्री ने शांत स्वर में कहा, 'मुझे फोन दो।' सहायक ने घबराते हुए उन्हें रिसीवर थमा दिया।

‘कौन? . . . कहाँ? . . . मैं अग्रवाल बोल रहा हूँ, वो बोल रहा हूँ . . . हाँ, सीधे निर्देश . . . मुझे परवाह नहीं। दयाल को तुरंत बुलाओ . . . हाँ, दस मिनट . . . मुझे वापस कॉल करो . . . एसपी वहाँ है, इतना काफी है, क्या यह कोई सिनेमा शो है?’

उसने फोन नीचे रख दिया और अपने सिर के चारों ओर घोड़े की नाल की तरह मुड़े हुए भूरे बालों को पकड़ लिया, जो लगभग पूरी तरह से गंजा था।

कुछ देर बाद उसने रिसीवर उठाने का नाटक किया, फिर अपना इरादा बदल दिया और अपना ध्यान एक फाइल की ओर मोड़ दिया।

दस मिनट बाद युवा जिला मजिस्ट्रेट कृष्ण दयाल का फोन आया। गृह मंत्री ने उन्हें गोविंद शू मार्ट के प्रवेश द्वार की सुरक्षा करने का निर्देश दिया। उन्हें किसी भी धरने को तत्काल तितर-बितर करने के लिए कहा गया,

और यदि आवश्यक हो तो दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 144 पढ़कर सुनाने और फिर भीड़ के न हटने पर गोली चलाने के लिए भी कहा गया। बातचीत स्पष्ट नहीं थी, लेकिन संदेश चिंताजनक रूप से साफ था। कृष्ण दयाल ने दृढ़ स्वर में कहा, लेकिन उनके स्वर में चिंता झलक रही थी: 'महोदय, आदरपूर्वक, क्या मैं कार्रवाई का एक वैकल्पिक तरीका सुझा सकता हूँ? हम भीड़ के नेताओं से बात कर रहे हैं—'

‘तो क्या नेता मौजूद हैं, क्या यह सहज नहीं है?’

'सर, यह स्वाभाविक है, लेकिन इसके नेता हैं।'

एल.एन. अग्रवाल ने कहा कि कृष्ण दयाल जैसे ही नादान लोग उन्हें ब्रिटिश जेलों में बंद करवाते थे। उन्होंने शांत भाव से कहा:

'क्या आप मजाक कर रहे हैं, श्री दयाल?'

‘नहीं, महोदय, मैं—’

‘आपको निर्देश मिल गए हैं। यह एक आपातकालीन स्थिति है। मैंने मुख्य सचिव से फोन पर बात की है। मुझे पता चला है कि भीड़ में लगभग तीन सौ लोग हैं। मैं एसपी से कहना चाहता हूं कि वे मिसरी मंडी की मुख्य सड़क पर हर जगह पुलिस तैनात करें और सभी प्रवेश द्वारों—गोविंद शू मार्ट, ब्रह्मपुर शू मार्ट इत्यादि—की सुरक्षा सुनिश्चित करें। आप बस आवश्यक कार्रवाई करें।’

कुछ देर का सन्नाटा छा गया। गृह मंत्री फोन रखने ही वाले थे कि डीएम ने कहा:

‘सर, हम इतनी बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों को अचानक उपलब्ध नहीं करा सकते। किसी भी प्रकार की परेशानी की स्थिति में शिव मंदिर परिसर में बड़ी संख्या में पुलिसकर्मी तैनात हैं। स्थिति बेहद तनावपूर्ण है, सर। राजस्व मंत्री का मानना है कि शुक्रवार को—’

'क्या वे इस समय वहां मौजूद हैं? मैंने उन्हें आज सुबह नहीं देखा,'

एल.एन. अग्रवाल ने शांत लेकिन दृढ़ स्वर में कहा।
'जी नहीं, महोदय, लेकिन वे चौक क्षेत्र के मुख्य पुलिस स्टेशन में हैं, इसलिए यह मंदिर स्थल के काफी करीब है। किसी वास्तविक आपात स्थिति के लिए उन्हें वहीं रखना सबसे अच्छा है।' कृष्ण दयाल युद्ध के दौरान सेना में थे, लेकिन गृह मंत्री के शांत, लगभग उपेक्षापूर्ण पूछताछ और आदेश भरे लहजे से वे घबरा गए थे।
'भगवान शिव मंदिर की देखभाल करेंगे। मैं समिति के कई सदस्यों के संपर्क में हूं, क्या आपको लगता है कि मुझे हालात की जानकारी नहीं है?' दयाल द्वारा 'वास्तविक आपातकाल' के जिक्र से वह उतना ही नाराज थे जितना कि उनके प्रतिद्वंद्वी महेश कपूर का जिक्र करने से, जो संयोगवश उन्हीं के निर्वाचन क्षेत्र से विधायक हैं।
'जी सर,' कृष्ण दयाल ने कहा, उनका चेहरा शर्म से लाल हो गया था—जो सौभाग्य से गृह मंत्री नहीं देख पाए। 'और क्या मैं जान सकता हूँ कि पुलिस वहाँ कितने समय तक रहेगी?'
गृह मंत्री ने कहा, 'अगले आदेश तक', और आगे की बहस को रोकने के लिए फोन रख दिया। उन्हें इन तथाकथित सरकारी कर्मचारियों का अपने से वरिष्ठ अधिकारियों को जवाब देने का तरीका पसंद नहीं था—जो उनसे बीस साल बड़े भी थे। प्रशासनिक व्यवस्था का होना आवश्यक था, इसमें कोई संदेह नहीं, लेकिन यह भी उतना ही आवश्यक था कि वह यह समझ ले कि अब वह इस देश पर शासन नहीं करती।

5.2

शुक्रवार को दोपहर की नमाज़ के समय आलमगिरी मस्जिद के खानदानी इमाम ने अपना प्रवचन दिया। वे कद में छोटे और मोटे थे, उनकी साँस फूलती थी, लेकिन इससे उनके भाषण की लय नहीं टूटी। बल्कि, उनकी साँस फूलने से ऐसा लग रहा था मानो वे भावनाओं से घुट रहे हों। शिव

मंदिर का निर्माण कार्य जारी था। इमाम की राज्यपाल से लेकर सभी अधिकारियों से की गई अपीलें अनसुनी कर दी गई थीं। मस्जिद से सटी ज़मीन पर राजा मारह के मालिकाना हक को चुनौती देने वाला एक कानूनी मामला दायर किया गया था, जो इस समय निचली अदालत में चल रहा था। मंदिर के निर्माण पर रोक लगाने का आदेश तुरंत नहीं मिल सका—बल्कि शायद मिल ही नहीं पाया। इस बीच, इमाम की पीड़ा भरी आँखों के सामने गोबर का ढेर बढ़ता जा रहा था।

उनकी सभा पहले से ही तनावग्रस्त थी। ब्रह्मपुर के कई मुसलमानों ने महीनों से अपनी मस्जिद के पश्चिम में स्थित भूखंड पर मंदिर की नींव बनते देख हताशा का भाव दिखाया था। अब, नमाज़ के पहले भाग के बाद, इमाम ने अपने श्रोताओं को वर्षों में दिया गया सबसे जोशीला और उत्तेजक भाषण दिया, जो व्यक्तिगत नैतिकता, स्वच्छता, दान या धर्मपरायणता पर उनके सामान्य उपदेशों से बिलकुल अलग था। उनका दुख और हताशा, साथ ही उनकी अपनी गहरी चिंता, कुछ और अधिक सशक्त करने की मांग कर रही थी। उनका धर्म खतरे में था। बर्बर लोग द्वार पर आ चुके थे। ये काफ़िर अपनी तस्वीरों और पत्थरों की पूजा करते हुए अज्ञानता और पाप में लिप्त थे। उन्हें अपनी गंदगी की मांद में जो चाहे करने दो। लेकिन ईश्वर देख सकता था कि अब क्या हो रहा है। वे अपनी बर्बरता को मस्जिद परिसर के बिल्कुल करीब ले आए थे। जिस ज़मीन पर काफ़िर निर्माण करना चाहते थे—क्यों चाहते थे? इस समय वे उस विवादित भूमि पर निर्माण कार्य कर रहे थे—जो ईश्वर और मनुष्य दोनों की दृष्टि में विवादित थी—परन्तु उन पशुओं की दृष्टि में नहीं, जो शंख बजाने और शरीर के उन अंगों की पूजा करने में अपना समय व्यतीत करते थे, जिनका नाम लेना भी उनके लिए कलंक था। क्या ईश्वर की उपस्थिति में एकत्रित धर्मनिष्ठ लोगों को पता था कि इस शिवलिंग की

स्थापना किस प्रकार की जानी थी? राख से सने नग्न जंगली लोग इसके सामने नाचेंगे—नग्न! ये निर्लज्ज लोग थे, सदोम के लोगों की तरह, जिन्होंने सर्वशक्तिमान ईश्वर की शक्ति का उपहास किया था।
ईश्वर लोगों का मार्गदर्शन नहीं करता।
अविश्वासियों का।
जिन पर ईश्वर ने अपनी मुहर लगा दी है
उनके हृदय, उनकी सुनने की शक्ति और उनकी आंखें
और वे लोग लापरवाह हैं;
निःसंदेह, आने वाली दुनिया में वे
हारने वाले वही होंगे।
वे सैकड़ों मूर्तियों की पूजा करते थे जिन्हें वे दिव्य मानते थे—चार सिर वाली, पाँच सिर वाली और हाथियों के सिर वाली मूर्तियाँ—और अब इस भूमि पर सत्ता रखने वाले काफिर चाहते थे कि मुसलमान जब काबा की ओर पश्चिम की ओर मुख करके प्रार्थना करें, तो इन्हीं मूर्तियों और इन्हीं घृणित वस्तुओं की ओर सिर झुकाकर खड़े हों। 'लेकिन,' इमाम ने आगे कहा, 'हम जिन्होंने कठिन और कड़वे समय को जिया है और अपने धर्म के लिए कष्ट सहे हैं और अपने धर्म के लिए खून बहाया है, हमें केवल मूर्तिपूजकों के अंजाम को याद रखना चाहिए।'
और उन्होंने परमेश्वर के समतुल्य व्यक्तियों को स्थापित किया,
वे हमें उसके मार्ग से भटका सकते हैं।
कहें: "अपनी खुशी मनाओ! तुम्हारा घर वापसी का जश्न मनाओ!
वह आग होगी!
इसके बाद छाई खामोशी में एक धीमी, ध्यानपूर्वक, स्तब्ध कर देने वाली उम्मीद भर गई।
'लेकिन अभी भी,' इमाम ने फिर से उग्र होकर, लगभग हांफते हुए कहा,

‘जब मैं बोल रहा हूँ—वे शंख बजाकर अज़ान की आवाज़ को दबाने की साज़िश रच रहे होंगे—वे हमारी शाम की नमाज़ में बाधा डालने की योजना बना रहे होंगे। वे अज्ञानी हो सकते हैं, लेकिन धूर्तता से भरे हुए हैं। वे पहले से ही पुलिस बल से मुसलमानों को निकाल रहे हैं ताकि अल्लाह का समुदाय असुरक्षित रह जाए। फिर वे हम पर हमला करके हमें गुलाम बना सकते हैं। अब यह हमारे लिए बिल्कुल स्पष्ट है कि हम सुरक्षा की भूमि में नहीं, बल्कि शत्रुता की भूमि में रह रहे हैं। हमने न्याय की गुहार लगाई है, और जहाँ हम गिड़गिड़ाने गए, वहीं हमें लात मारकर भगा दिया गया। गृह मंत्री स्वयं इस मंदिर समिति का समर्थन करते हैं—और इसका मार्गदर्शक मारह का व्यभिचारी भैंसा है!’ ऐसा न हो कि हमारे पवित्र स्थान गंदगी के संपर्क में आने से अपवित्र हो जाएँ—ऐसा न हो—पर अब जब हम हिंदुओं की धरती पर अपने शत्रुओं की तलवार के सामने असहाय खड़े हैं, तो हमें कौन बचा सकता है? हमें केवल हमारे अपने प्रयास, हमारी अपनी कार्रवाई—यहाँ वे साँस लेने और ज़ोर देने के लिए संघर्ष कर रहे थे—हमारी अपनी सीधी कार्रवाई—स्वयं की रक्षा के लिए। और केवल स्वयं ही नहीं, केवल हमारे परिवार ही नहीं, बल्कि ये कुछ फुट की पक्की ज़मीन जो सदियों से हमें दी गई है, जहाँ हमने अपनी चटाई बिछाई है और सर्वशक्तिमान ईश्वर के सामने आँसू बहाते हुए हाथ उठाए हैं, जो हमारे पूर्वजों और हमारी स्वयं की भक्ति से चिकनी हो गई है और—यदि ईश्वर की इच्छा हुई—तो हमारी आने वाली पीढ़ियों से भी ऐसी ही हो जाएगी। लेकिन डरो मत, ईश्वर की यही इच्छा है, डरो मत, ईश्वर तुम्हारे साथ है।

क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे प्रभु ने आद के साथ कैसा व्यवहार किया?

स्तंभों का इराम,

ऐसी चीज इस धरती पर पहले कभी नहीं बनी थी।
और थामूद, जिसने घाटी में चट्टानों को खोखला किया,
और फिरौन, वह जिसने तंबू की कीलें लगाईं,
जो सभी उस देश में उद्दंड थे
और उसमें बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार किया?
तेरे प्रभु ने उन पर दंड का कोड़ा बरसाया;
निःसंदेह तुम्हारा प्रभु सदा चौकस रहता है।
हे ईश्वर, पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) के धर्म की सहायता करने वालों की सहायता कर। हमें भी ऐसा ही करने की कृपा कर। मुहम्मद के धर्म को कमजोर करने वालों को कमजोर कर। तमाम प्राणियों के स्वामी, ईश्वर की स्तुति हो।
मोटे-ताज़े इमाम मंच से नीचे उतरे और लोगों को और अधिक प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया।
उस शाम दंगा भड़क गया।

5.3

गृह मंत्री के निर्देशों के कारण, पुलिस बल का अधिकांश हिस्सा मिसरी मंडी के संवेदनशील स्थानों पर तैनात था। शाम तक चौक स्थित मुख्य पुलिस स्टेशन में केवल पंद्रह पुलिसकर्मी ही बचे थे। आलमगिरी मस्जिद से अज़ान की आवाज़ शाम के आकाश में गूंज रही थी, तभी किसी दुर्भाग्यपूर्ण संयोग या शायद जानबूझकर की गई किसी घटना के कारण, शंख की ध्वनि कई बार सुनाई दी। सामान्यतः ऐसी बात को नज़रअंदाज़ कर दिया जाता, लेकिन आज ऐसा नहीं था।
चौक के एक तरफ स्थित मुस्लिम बस्ती की संकरी गलियों में जमा हुए लोग अचानक एक भीड़ में कैसे बदल गए, यह किसी को पता नहीं था। एक पल पहले वे शाम की नमाज के लिए मस्जिद की ओर गलियों से

अकेले या छोटे समूहों में जा रहे थे, फिर अचानक वे बड़े समूहों में इकट्ठा हो गए और उत्तेजित होकर उन अशुभ संकेतों पर चर्चा करने लगे जो उन्होंने सुने थे। दोपहर के उपदेश के बाद अधिकांश लोग संयम की कोई बात सुनने के मूड में नहीं थे। आलमगिरी मस्जिद हिफाज़त समिति के कुछ उत्साही सदस्यों ने भीड़ को भड़काने वाले कुछ भाषण दिए, कुछ स्थानीय उग्र और गुंडों ने खुद को और अपने आसपास के लोगों को क्रोधित कर दिया, जैसे-जैसे गलियां बड़ी होती गईं, भीड़ बढ़ती गई, उसकी सघनता, गति और अनिश्चित दृढ़ संकल्प का भाव बढ़ता गया, और वह अब केवल एक समूह नहीं बल्कि एक वस्तु बन गई थी—घायल और क्रोधित, और दूसरों को घायल और क्रोधित करने के अलावा और कुछ नहीं चाहती थी। 'अल्लाह-उ-अकबर' के नारे पुलिस स्टेशन तक सुनाई दे रहे थे। भीड़ में शामिल कुछ लोगों के हाथों में लाठियाँ थीं। एक-दो लोगों के पास चाकू भी थे। अब वे मस्जिद की ओर नहीं, बल्कि उसके ठीक बगल में बने अधूरे मंदिर की ओर जा रहे थे। यहीं से ईशनिंदा की शुरुआत हुई थी, और इसी को नष्ट किया जाना था।

चूंकि जिले के पुलिस अधीक्षक मिसरी मंडी में व्यस्त थे, इसलिए युवा जिला मजिस्ट्रेट कृष्ण दयाल स्वयं करीब एक घंटा पहले मुख्य पुलिस स्टेशन की गुलाबी रंग की ऊंची इमारत में गए ताकि चौक क्षेत्र में स्थिति स्थिर बनी रहे। उन्हें शुक्रवार को अक्सर होने वाले तनाव के बढ़ने का डर था। इमाम के प्रवचन के बारे में सुनकर उन्होंने कोतवाल (शहर के पुलिस उप अधीक्षक) से पूछा कि वे क्षेत्र की सुरक्षा के लिए क्या योजना बना रहे हैं।

लेकिन ब्रह्मपुर का कोतवाल एक आलसी आदमी था, जिसे अकेले रहकर शांति से रिश्वत लेने के अलावा और कुछ नहीं चाहिए था।

‘कोई परेशानी नहीं होगी, महोदय, मेरा विश्वास कीजिए,’ उन्होंने जिला

मजिस्ट्रेट को आश्वस्त किया। 'खुद अग्रवाल साहब ने मुझे फोन किया है। उन्होंने मुझे बताया है कि मुझे एसपी के साथ मिसरी मंडी जाना है—इसलिए मुझे जाना होगा, महोदय, आपकी अनुमति से।' और वे कुछ चिंतित भाव से दो अन्य निचले अधिकारियों को साथ लेकर चले गए, और कोतवाली का जिम्मा लगभग एक हेड कांस्टेबल को सौंप दिया। 'मैं इंस्पेक्टर को वापस भेज रहा हूँ,' उन्होंने आश्वस्त करने वाले लहजे में कहा। 'आपको रुकना नहीं चाहिए, महोदय,' उन्होंने विनम्रता से कहा। 'काफी देर हो चुकी है। यह शांतिपूर्ण समय है। मस्जिद में पिछली गड़बड़ियों के बाद हमने स्थिति को संभाल लिया है, मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है।'

लगभग बारह कांस्टेबलों के साथ रह रहे कृष्ण दयाल ने सोचा कि इंस्पेक्टर के लौटने तक वे घर जाने का फैसला नहीं करेंगे। उनकी पत्नी को उनके देर रात घर लौटने की आदत थी और वे उनका इंतज़ार करती थीं; उन्हें फोन करने की ज़रूरत नहीं थी। उन्हें वास्तव में किसी दंगे की आशंका नहीं थी; उन्हें बस इतना लग रहा था कि तनाव चरम पर है और जोखिम लेना उचित नहीं होगा। उनका मानना था कि चौक और मिसरी मंडी के मामले में गृह मंत्री की प्राथमिकताएँ गलत थीं; लेकिन गृह मंत्री संभवतः मुख्यमंत्री के बाद राज्य के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति थे, और वे स्वयं तो केवल एक डीएम थे।

वह बेफिक्र लेकिन बेचैन मन से बैठा इंतजार कर रहा था, तभी उसने वह बात सुनी जिसे बाद में कई पुलिसकर्मियों को पूछताछ के दौरान याद करना पड़ा—वह पूछताछ जो हर मजिस्ट्रेट के गोली चलाने के आदेश के बाद एक वरिष्ठ अधिकारी द्वारा अनिवार्य रूप से की जाती है। सबसे पहले उसने शंख और अज़ान की एक साथ आवाज सुनी। इससे वह थोड़ा चिंतित हुआ, लेकिन इमाम के भाषण की जो रिपोर्ट उसे मिली थी, उसमें

शंख के बारे में उनके पूर्वाभास का जिक्र नहीं था। फिर, कुछ देर बाद, दूर से आती हुई चीखों की हल्की-हल्की गूंज सुनाई दी, जिसके बीच-बीच में ऊँची आवाजें भी आ रही थीं। इससे पहले कि वह अलग-अलग अक्षरों को समझ पाता, वह आवाज की दिशा और उसकी तीव्रता से समझ गया कि क्या चिल्लाया जा रहा है। उसने एक पुलिसकर्मी को पुलिस स्टेशन की तीन मंजिला इमारत की छत पर भेजा ताकि पता चल सके कि भीड़ अब कहाँ है। भीड़ खुद अदृश्य थी—भ्रमित गलियों में बने घरों के पीछे छिपी हुई थी—लेकिन छतों से झांकते दर्शकों के इशारों से उसकी स्थिति का पता चल जाता। जैसे ही 'अल्लाह-उ-अकबर! अल्लाह-उ-अकबर!' की आवाजें करीब आने लगीं, डीएम ने बारह कांस्टेबलों की छोटी टुकड़ी को तुरंत आदेश दिया कि वे शिव मंदिर की नींव और कच्ची दीवारों के सामने राइफलें तैयार रखते हुए एक पंक्ति में खड़े हो जाएं। उनके मन में यह विचार कौंधा कि सेना में प्रशिक्षण के बावजूद वे शहरी अराजकता के माहौल में रणनीतिक रूप से सोचना नहीं सीख पाए थे। क्या दीवार के सामने खड़े होकर विपरीत परिस्थितियों का सामना करने के इस पागलपन भरे बलिदान के कर्तव्य को निभाने से बेहतर उनके पास कोई और विकल्प था?

उनके अधीन तैनात कांस्टेबल मुस्लिम और राजपूत थे, जिनमें से अधिकांश मुस्लिम थे। विभाजन से पहले पुलिस बल में अधिकांश मुस्लिम ही थे, जो फूट डालो और राज करो की कारगर साम्राज्यवादी नीति का परिणाम था: अंग्रेजों को यह लाभ मिला कि मुख्य रूप से हिंदू कांग्रेसी कार्यकर्ताओं की पिटाई मुख्य रूप से मुस्लिम पुलिसकर्मियों द्वारा की जाए। 1947 में पाकिस्तान पलायन के बाद भी पुलिस बल में बड़ी संख्या में मुस्लिम मौजूद थे। वे अन्य मुसलमानों पर गोली चलाना पसंद नहीं करते।

कृष्ण दयाल का मानना था कि हालांकि अधिकतम बल का प्रयोग करना हमेशा आवश्यक नहीं होता, लेकिन यह आभास देना आवश्यक है कि आप ऐसा करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने बुलंद स्वर में पुलिसकर्मियों से कहा कि उनके आदेश पर ही गोली चलाएँ। वे स्वयं पिस्तौल हाथ में लिए वहीं खड़े रहे। परन्तु अपने जीवन में पहले कभी इतना असुरक्षित महसूस नहीं किया था। उन्होंने स्वयं को समझाया कि एक कुशल अधिकारी, और एक ऐसा बल जिस पर वह पूरी तरह भरोसा कर सके, लगभग हमेशा ही जीत दिला सकता है, परन्तु 'पूरी तरह' शब्द पर उन्हें संदेह था; और 'लगभग' शब्द उन्हें चिंतित कर रहा था। एक बार जब भीड़, जो अभी भी कुछ गलियों की दूरी पर थी, अंतिम मोड़ से मुड़कर हमला कर मंदिर की ओर बढ़ जाती, तो स्पष्ट रूप से अक्षम पुलिस बल पर वह काबू नहीं पा पाता। कुछ लोग दौड़कर उनके पास आए और उन्हें बताया कि भीड़ में शायद एक हजार लोग हैं, वे अच्छी तरह से हथियारों से लैस हैं, और उनकी गति को देखते हुए, वे दो-तीन मिनट में उन पर टूट पड़ेंगे।

अब जब उसे पता चल गया था कि कुछ ही मिनटों में उसकी मौत हो सकती है—चाहे गोली चलाए या न चलाए—तो युवा डीएम ने अपनी पत्नी के बारे में एक संक्षिप्त विचार किया, फिर अपने माता-पिता के बारे में, और अंत में अपने एक पुराने स्कूल शिक्षक के बारे में, जिसने एक बार कक्षा में लाई गई उसकी नीली खिलौना पिस्तौल ज़ब्त कर ली थी। उसके भटकते विचारों को वापस ज़मीन पर लाने के लिए हेड कांस्टेबल ने उससे तुरंत बात की।

‘साहिब!’

'हां हां?'

‘साहिब—जरूरत पड़ने पर गोली चलाने का आपका निश्चय है?’ हेड कांस्टेबल एक मुसलमान था; उसे यह बात अजीब जरूर लगी होगी कि

वह एक अधूरे बने हिंदू मंदिर की रक्षा करते हुए मुसलमानों पर गोली चलाते हुए मरने वाला था, जो उसी मस्जिद का अपमान था जिसमें वह खुद अक्सर नमाज पढ़ता था।

'आप क्या सोचते हैं?' कृष्ण दयाल ने ऐसी आवाज़ में कहा जिससे सब कुछ स्पष्ट हो गया। 'क्या मुझे अपने आदेश दोहराने की ज़रूरत है?'

'साहिब, अगर आप मेरी सलाह मानें तो—' हेड कांस्टेबल ने तुरंत कहा, 'हमें यहाँ नहीं रुकना चाहिए जहाँ हम पर हमला हो सकता है। हमें मंदिर से ठीक पहले आखिरी मोड़ पर उनका इंतज़ार करना चाहिए—और जैसे ही वे मोड़ पर मुड़ें, हमें एक साथ हमला करके गोलियाँ चलानी चाहिए। उन्हें पता नहीं चलेगा कि हम कितने हैं, और उन्हें यह भी पता नहीं चलेगा कि उन पर क्या आफत आई है। निन्यानवे प्रतिशत संभावना है कि वे तितर-बितर हो जाएँगे।'

आश्चर्यचकित डीएम ने हेड कांस्टेबल से कहा: 'तुम्हें मेरी नौकरी मिल जानी चाहिए।'

वह बाकी लोगों की ओर मुड़ा, जो भयभीत प्रतीत हो रहे थे। उसने तुरंत उन्हें अपने साथ मोड़ की ओर दौड़ने का आदेश दिया। वे मोड़ से लगभग बीस फीट की दूरी पर गली के दोनों ओर तैनात हो गए। भीड़ बस एक मिनट की दूरी पर थी। वह उनकी चीख-पुकार सुन सकता था; सैकड़ों पैरों के आगे बढ़ने से ज़मीन का कंपन महसूस कर सकता था।

अंतिम क्षण में उसने इशारा दिया। तेरहों सैनिक दहाड़ते हुए आगे बढ़े और गोलियां चलाईं।

सैकड़ों की संख्या में मौजूद वह हिंसक और खतरनाक भीड़, अचानक मचे इस आतंक को देखकर थम गई, लड़खड़ा गई, मुड़ी और भाग गई। यह भयावह था। तीस सेकंड के भीतर ही वह भीड़ तितर-बितर हो गई। गली में दो शव पड़े थे: एक युवक को गर्दन में गोली लगी थी और वह

मरणासन्न अवस्था में था; दूसरा, सफेद दाढ़ी वाला एक बूढ़ा व्यक्ति, गिर गया था और भागती हुई भीड़ के नीचे दब गया था। वह बुरी तरह घायल था, शायद उसकी जान भी जा सकती थी। चप्पलें और लाठियाँ इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं। गली में कई जगहों पर खून था, जिससे स्पष्ट था कि अन्य लोग भी घायल हुए थे, संभवतः उनकी मृत्यु भी हुई थी। उनके मित्रों या परिवार के सदस्यों ने संभवतः शवों को घसीटकर पड़ोसी घरों के दरवाजों तक पहुँचाया था। कोई भी पुलिस की नजर में नहीं आना चाहता था।

डीएम ने अपने जवानों पर नज़र डाली। उनमें से कुछ कांप रहे थे, अधिकतर लोग खुशी से झूम रहे थे। किसी को चोट नहीं आई थी। उनकी नज़र हेड कांस्टेबल पर पड़ी। दोनों राहत की हंसी हंसने लगे, फिर रुक गए। पास के घरों में कुछ औरतें विलाप कर रही थीं। इसके अलावा, सब कुछ शांत था, या यूं कहें कि सन्नाटा पसरा हुआ था।

5.4

अगले दिन एल.एन. अग्रवाल अपनी इकलौती संतान, विवाहित बेटी प्रिया से मिलने गए। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उन्हें प्रिया और उसके पति से मिलना अच्छा लगता था, और साथ ही चौक में हुई गोलीबारी के बाद के हालातों को लेकर बेहद चिंतित अपने गुट के उन विधायकों से बचने के लिए भी, जो अपनी इस चिंता से उनका जीवन दयनीय बना रहे थे।

एल.एन. अग्रवाल की बेटी पुराने ब्रह्मपुर के शाही दरवाजा इलाके में रहती थी, जो मिसरी मंडी से कुछ ही दूरी पर था, जहाँ उसकी बचपन की दोस्त वीना टंडन रहती थी। प्रिया एक संयुक्त परिवार में रहती थी, जिसमें उसके पति के भाई और उनकी पत्नियाँ और बच्चे शामिल थे। उसके पति राम विलास गोयल एक वकील थे, जिनका मुख्य कार्यक्षेत्र जिला

न्यायालय था—हालाँकि वे समय-समय पर उच्च न्यायालय में भी पेश होते थे। वे मुख्य रूप से दीवानी मामलों पर काम करते थे, आपराधिक मामलों पर नहीं। वे शांत, सौम्य स्वभाव के, सौम्य चेहरे वाले, कम बोलने वाले और राजनीति में नाममात्र की रुचि रखने वाले व्यक्ति थे। वकालत और थोड़ा-बहुत व्यवसाय उनके लिए पर्याप्त था; इसके अलावा एक शांत पारिवारिक परिवेश और दिनचर्या की सुकून भरी लय, जिसकी अपेक्षा वे प्रिया से करते थे। उनके सहकर्मी उनकी ईमानदारी और उनकी धीमी लेकिन स्पष्ट कानूनी क्षमताओं के लिए उनका सम्मान करते थे। और उनके ससुर, गृह मंत्री, उनसे बात करना पसंद करते थे: वे गोपनीय बातें रखते थे, सलाह देने से बचते थे और राजनीति में उनकी कोई रुचि नहीं थी।

प्रिया गोयल अपने आप में एक जोशीली शख्सियत थीं। हर सुबह, चाहे सर्दी हो या गर्मी, वह छत पर चहलकदमी करती थीं। छत काफी लंबी थी, क्योंकि उस पर तीन संकरे घर बने हुए थे, जो तीनों मंजिलों पर लंबाई में जुड़े हुए थे। असल में, पूरा घर एक बड़े घर की तरह काम करता था, और परिवार व पड़ोसी भी इसे इसी तरह मानते थे। स्थानीय तौर पर इसे राय बहादुर का घर कहा जाता था क्योंकि राम विलास गोयल के दादा (जो अभी भी अस्सी-आठ वर्ष के हैं), जिन्हें अंग्रेजों ने यह उपाधि दी थी, ने पचास साल पहले इस संपत्ति को खरीदा और उसका पुनर्निर्माण करवाया था।

भूतल पर कई भंडारगृह और नौकरों के क्वार्टर थे। उससे ऊपर की मंजिल पर राम विलास के प्राचीन दादा, राय बहादुर; उनके पिता और सौतेली माँ; और उनकी बहन रहते थे। रसोई और पूजा कक्ष भी इसी मंजिल पर थे (जहाँ अधार्मिक, बल्कि अधर्मी प्रिया शायद ही कभी जाती थी)। सबसे ऊपर की मंजिल पर तीनों भाइयों के परिवारों के कमरे थे; राम विलास

मंझला भाई था और वह बीच वाले 'घर' की सबसे ऊपर की मंजिल के दो कमरों में रहता था। इसके ऊपर छत थी जिस पर कपड़े सुखाने की रस्सियाँ और पानी की टंकियाँ थीं।

जब प्रिया गोयल छत पर चहलकदमी करती, तो वह खुद को पिंजरे में बंद एक तेंदुए की तरह देखती। वह कुछ ही मिनटों की पैदल दूरी पर स्थित उस छोटे से घर की ओर बड़ी उम्मीद से देखती, जो बीच में बनी छतों के घने जंगल के बीच से मुश्किल से दिखाई देता था, जिसमें उसकी बचपन की दोस्त वीना टंडन रहती थी। प्रिया जानती थी कि वीना अब आर्थिक रूप से संपन्न नहीं थी, लेकिन वह अपनी मर्जी से कुछ भी करने को स्वतंत्र थी: बाजार जाना, अकेले घूमना, संगीत की कक्षाएं लेना। प्रिया के अपने घर में तो इसकी कोई गुंजाइश ही नहीं थी। राय बहादुर परिवार की बहू का बाजार में दिखना शर्मनाक माना जाता। 32 साल की उम्र में दस साल की बेटी और आठ साल के बेटे की मां होना उसके लिए कोई मायने नहीं रखता था। हमेशा शांत रहने वाले राम विलास को यह बिल्कुल मंजूर नहीं था। यह उनका तरीका नहीं था; और इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह थी कि इससे उनके पिता, सौतेली मां, दादा और बड़े भाई को दुख होता—और राम विलास संयुक्त परिवार के रीति-रिवाजों को बनाए रखने में पूरी तरह विश्वास रखते थे।

प्रिया को संयुक्त परिवार में रहना बिल्कुल पसंद नहीं था। शाही दरवाज़ा के गोयल परिवार के साथ रहने से पहले उसने कभी संयुक्त परिवार में नहीं रहा था। इसकी वजह यह थी कि उसके पिता, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, इकलौते बेटे थे जो वयस्क होने तक जीवित रहे, और उनकी भी इकलौती बेटी थी। पत्नी के निधन के बाद वे गहरे सदमे में थे और उन्होंने गांधीवादी व्रत के अनुसार यौन संयम का पालन किया था। वे सादगी पसंद थे। गृह मंत्री होते हुए भी वे विधानसभा सदस्यों के छात्रावास में दो

कमरों में रहते थे।

'विवाहित जीवन के शुरुआती साल सबसे कठिन होते हैं—इनमें सबसे ज़्यादा तालमेल बिठाना पड़ता है,' प्रिया को बताया गया था; लेकिन उसे महसूस हो रहा था कि समय बीतने के साथ-साथ यह और भी असहनीय होता जा रहा था। वीना के विपरीत, उसके पास कोई उचित पैतृक—और उससे भी महत्वपूर्ण, मातृ—घर नहीं था जहाँ वह अपने बच्चों के साथ साल में कम से कम एक महीने के लिए जा सके—जो सभी विवाहित महिलाओं का अधिकार होता है। यहाँ तक कि उसके दादा-दादी (जिनके साथ उसने अपने पिता के जेल में रहने के दौरान समय बिताया था) भी अब इस दुनिया में नहीं थे। उसके पिता उसे अपनी इकलौती संतान होने के कारण बहुत प्यार करते थे; एक तरह से उनके प्यार ने ही उसे गोयल संयुक्त परिवार के बंधनों में ढलने में सक्षम बनाया था, क्योंकि इसी प्यार ने उसमें स्वतंत्रता की भावना पैदा की थी; और अब, सादगी भरा जीवन जीते हुए, वे स्वयं उसे कोई सहारा नहीं दे सकते थे।

अगर उसके पति इतने दयालु न होते, तो उसे लगता कि वह पागल हो जाती। वह उसे पूरी तरह समझ नहीं पाते थे, लेकिन फिर भी संवेदनशील थे। उन्होंने छोटी-छोटी बातों से उसके लिए चीज़ें आसान बनाने की कोशिश की और कभी भी अपनी आवाज़ ऊंची नहीं की। साथ ही, उसे अपने ससुर, बूढ़े राय बहादुर भी पसंद थे। उनमें एक अलग ही आकर्षण था। परिवार के बाकी सदस्य, खासकर महिलाएं—उसकी सास, उसके पति की बहन और उसके पति के बड़े भाई की पत्नी—ने एक नई दुल्हन के रूप में उसे दुखी करने की पूरी कोशिश की थी और वह उन्हें बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। लेकिन उसे हर दिन, हर समय ऐसा दिखावा करना पड़ता था—सिवाय उस समय के जब वह छत पर इधर-उधर टहलती थी —जहां उसे बगीचा लगाने की भी अनुमति नहीं थी, इस आधार पर कि

इससे बंदर आकर्षित होंगे। राम विलास की सौतेली माँ ने तो उसे रोज़ाना इधर-उधर आने-जाने से रोकने की भी कोशिश की थी ('सोचो, प्रिया, पड़ोसियों को कैसा लगेगा?'), लेकिन इस बार प्रिया ने उनकी बात मानने से इनकार कर दिया था। जिन देवरानियों के सिर के ऊपर वह सुबह-सुबह चहलकदमी करती थी, उन्होंने उसकी शिकायत अपनी सास से कर दी। लेकिन शायद उस बुढ़िया को आभास हो गया था कि उसने प्रिया को हद से ज्यादा परेशान कर दिया है, इसलिए उसने दोबारा सीधे शब्दों में शिकायत नहीं की। प्रिया इस मामले में अप्रत्यक्ष रूप से कही गई किसी भी बात को समझना नहीं चाहती थी।

एल.एन. अग्रवाल हमेशा की तरह एकदम कड़क इस्त्री किए हुए (लेकिन सादे) कुर्ते, धोती और कांग्रेस की टोपी में सजे-धजे आए। सफेद टोपी के नीचे उनके घुंघराले भूरे बाल तो दिख रहे थे, लेकिन गंजापन नज़र नहीं आ रहा था। जब भी वे शाही दरवाज़ा जाते, तो अपने साथ छड़ी रखते ताकि आस-पास के बंदरों को भगा सकें, जो अक्सर आते-जाते रहते थे, बल्कि कुछ लोग तो कहते थे कि उस इलाके पर उनका दबदबा था। वे स्थानीय बाज़ार के पास अपना रिक्शा छोड़ते और मुख्य सड़क से हटकर एक छोटी सी गली में मुड़ जाते, जो एक छोटे से चौक में खुलती थी। चौक के बीचोंबीच एक बड़ा पीपल का पेड़ था। चौक की एक पूरी दीवार पर राय बहादुर का घर था।

बंदरों की वजह से सीढ़ियों के नीचे का दरवाजा बंद रखा गया था, इसलिए उन्होंने अपनी छड़ी से उस पर खटखटाया। ऊपर की मंजिलों की लोहे की जाली से बनी बालकनियों पर कुछ चेहरे दिखाई दिए। उन्हें देखकर उनकी बेटी का चेहरा खुशी से चमक उठा; उसने जल्दी से अपने खुले काले बालों का जूड़ा बनाया और दरवाजा खोलने के लिए नीचे आई। उसके पिता ने उसे गले लगाया और वे फिर से ऊपर चले गए।

उन्होंने हिंदी में पूछा, 'वकील साहब कहां गायब हो गए हैं?'
वह अपने दामाद को वकील कहकर संबोधित करना पसंद करते थे, हालांकि यह उपाधि राम विलास के पिता और दादा के लिए भी उतनी ही उपयुक्त थी।
'वह एक मिनट पहले यहीं था,' प्रिया ने जवाब दिया और उसे ढूंढने के लिए उठ गई।
उसके पिता ने गर्मजोशी भरे और शांत स्वर में कहा, 'अभी परेशान मत होइए। पहले मुझे थोड़ी चाय दीजिए।'
कुछ मिनटों के लिए गृह मंत्री ने घर के सुख-सुविधाओं का आनंद लिया: बढ़िया चाय (विधायक छात्रावास में मिलने वाली घटिया चाय नहीं); बेटी के घर की महिलाओं द्वारा बनाई गई मिठाइयाँ और कचौरी—शायद खुद बेटी द्वारा बनाई गई हों; अपने पोते और पोती के साथ कुछ पल बिताए, जो हालांकि छत की गर्मी में या नीचे चौक में अपने दोस्तों के साथ खेलना पसंद करते थे (उनकी पोती गली क्रिकेट में माहिर थी); और अपनी बेटी से कुछ बातें कीं, जिनसे वे बहुत कम मिलते थे और जिन्हें वे बहुत याद करते थे।
कुछ ससुरों की तरह उन्हें अपने दामाद के घर भोजन, पेय और आतिथ्य सत्कार स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं था। उन्होंने प्रिया से अपने स्वास्थ्य, अपने पोते-पोतियों, उनकी शिक्षा और उनके चरित्र के बारे में बात की; इस बारे में कि वकील साहब बहुत अधिक काम कर रहे थे; प्रिया की माँ के बारे में भी थोड़ी सी बातचीत की, जिनका नाम सुनते ही दोनों की आँखों में उदासी छा गई; और गोयल परिवार के पुराने नौकरों की हरकतों के बारे में भी चर्चा की।
जब वे बातें कर रहे थे, तभी कमरे के खुले दरवाजे से कुछ और लोग गुजरे, उन्हें देखा और अंदर आ गए। उनमें राम विलास के पिता भी

शामिल थे, जो अपनी दूसरी पत्नी के आतंक से ग्रस्त एक असहाय व्यक्ति थे। जल्द ही गोयल परिवार के सभी सदस्य आ गए—सिवाय राय बहादुर के, जिन्हें सीढ़ियाँ चढ़ना पसंद नहीं था।

'लेकिन वकील साहब कहाँ हैं?' एल.एन. अग्रवाल ने बार-बार यही सवाल दोहराया।

किसी ने कहा, 'ओह, वो नीचे राय बहादुर से बात कर रहे हैं। उन्हें पता है कि आप घर में हैं और रिहा होते ही वो ऊपर आ जाएंगे।'

'मैं अभी नीचे जाकर राय बहादुर को श्रद्धांजलि क्यों न दूं?' एल.एन. अग्रवाल ने कहा और उठ खड़े हुए।

नीचे, दादा और पोता उस बड़े कमरे में बातें कर रहे थे जिसे राय बहादुर ने अपने लिए आरक्षित रखा था—मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि उन्हें चिमनी को सजाने वाली खूबसूरत मोर वाली टाइलें बहुत पसंद थीं। मध्य पीढ़ी के होने के नाते, एल.एन. अग्रवाल ने भी उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की और उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।

'ज़रूर आप चाय पिएंगे?' राय बहादुर ने कहा।

मैंने ऊपर कुछ खाया है।

राय बहादुर ने कर्कश और स्पष्ट स्वर में पूछा, "जनता के नेताओं ने चाय पीने पर कब से कोई सीमा लगा दी है?" उन्होंने जिस शब्द का प्रयोग किया वह था 'नेता-लोग', जिसमें 'वकील साहब' के समान ही व्यंग्यात्मक आदर का भाव था।

'अब मुझे बताओ,' उसने आगे कहा, 'तुम चौक में ये सब हत्याएं क्यों कर रहे हो?'

इसका मतलब वो नहीं था जो सुनाई दिया, ये तो बस पुराने राय बहादुर का बोलने का अंदाज़ था, लेकिन एल.एन. अग्रवाल को सीधे सवाल-जवाब की ज़रूरत नहीं थी। सोमवार को सदन में शायद उन्हें इसकी काफ़ी

परीक्षा देनी पड़ती। वो तो बस अपने शांत स्वभाव वाले दामाद से थोड़ी देर बातचीत करना चाहते थे, अपने मन की बातें उनसे साझा करना चाहते थे।

उन्होंने कहा, 'कुछ नहीं, कुछ नहीं, सब कुछ ठीक हो जाएगा।'

'मैंने सुना है कि बीस मुसलमान मारे गए,' बूढ़े राय बहादुर ने दार्शनिक लहजे में कहा।

'नहीं, इतने ज़्यादा नहीं,' एल.एन. अग्रवाल ने कहा। 'कुछ ही लोग हैं। मामला पूरी तरह से सुलझ गया है।' वे थोड़ी देर रुके और सोचने लगे कि शायद उन्होंने स्थिति को गलत समझा था। 'इस कस्बे को संभालना मुश्किल है,' उन्होंने आगे कहा। 'एक समस्या हल नहीं होती तो दूसरी शुरू हो जाती है। हम अनुशासनहीन लोग हैं। लाठी और बंदूक ही ऐसी चीज़ें हैं जो हमें अनुशासन सिखा सकती हैं।'

'ब्रिटिश शासन के दिनों में कानून-व्यवस्था इतनी बड़ी समस्या नहीं थी,' कर्कश आवाज ने कहा।

गृह मंत्री राय बहादुर के बहकावे में नहीं आए। दरअसल, उन्हें इस बात का यकीन नहीं था कि यह टिप्पणी अनजाने में ही तो नहीं की गई थी।

'फिर भी, यह वहीं है,' उन्होंने जवाब दिया।

राय बहादुर ने कहा, 'महेश कपूर की बेटी कुछ दिन पहले यहां आई थी।'

यह टिप्पणी निश्चित रूप से निर्दोष नहीं हो सकती। या शायद थी? संभवतः राय बहादुर महज अपने मन में चल रहे विचारों का अनुसरण कर रहे थे।

'हाँ, वो अच्छी लड़की है,' एल.एन. अग्रवाल ने कहा। उन्होंने सोच-विचार करते हुए अपने बालों को सहलाया। फिर थोड़ी देर रुककर शांत स्वर में बोले, 'मैं शहर संभाल सकता हूँ; मुझे तनाव से कोई परेशानी नहीं है। दस मिसरी मंडियाँ और बीस चौक कुछ भी नहीं हैं। मुझे तो राजनीति, नेता

लोग परेशान करते हैं—’

राय बहादुर ने मुस्कुराने की अनुमति दी। यह मुस्कान भी कुछ फीकी थी, मानो उनके वृद्ध चेहरे की अलग-अलग परतें धीरे-धीरे बड़ी मुश्किल से खुद को फिर से व्यवस्थित कर रही हों।

एल.एन. अग्रवाल ने सिर हिलाया, फिर आगे बोले, ‘आज सुबह दो बजे तक विधायक मेरे चारों ओर ऐसे जमा थे जैसे चूजे अपनी माँ के चारों ओर। वे घबराए हुए थे। मुख्यमंत्री कुछ दिनों के लिए शहर से बाहर जा रहे हैं, देखिए उनकी अनुपस्थिति में क्या होता है! शर्माजी वापस आकर क्या कहेंगे? महेश कपूर का गुट इसका क्या फायदा उठाएगा? मिसरी मंडी में वे जाटवों की स्थिति पर जोर देंगे, चौक में मुसलमानों की। जाटवों और मुसलमानों के वोटों पर इसका क्या असर होगा? आम चुनाव बस कुछ ही महीने दूर हैं। क्या ये वोट बैंक कांग्रेस से दूर हो जाएंगे? अगर हां, तो कितनी संख्या में? एक-दो सज्जनों ने तो यह भी पूछा है कि क्या और भी ज्यादा टकराव का खतरा है—हालांकि आमतौर पर यह उनकी सबसे कम चिंता की बात होती है।’

‘और जब वे तुम्हारे पास दौड़ते हुए आते हैं, तो तुम उन्हें क्या कहती हो?’ राय बहादुर ने पूछा। उनकी बहू—प्रिया के भूत विद्या में सबसे बड़ी चुड़ैल —अभी-अभी चाय लेकर आई थी। उसका सिर साड़ी से ढका हुआ था। उसने चाय डाली, उन्हें तीखी नज़र से देखा, कुछ शब्द कहे और बाहर चली गई।

बातचीत का सिलसिला कहीं खो गया था, लेकिन राय बहादुर, शायद अपने युवावस्था में जिन जिरहों के लिए प्रसिद्ध थे, उन्हें याद करते हुए, उन्होंने धीरे से उसे फिर से शुरू कर दिया।

‘अरे, कुछ नहीं,’ एल.एन. अग्रवाल ने बड़ी शांति से कहा। ‘मैं उन्हें बस वही बता देता हूँ जो मुझे जगाए रखने से रोकने के लिए ज़रूरी होता है।’

'कुछ नहीं?'

‘नहीं, कुछ खास नहीं। बस इतना ही कि मामला शांत हो जाएगा; जो हो गया सो हो गया; थोड़ा अनुशासन किसी मोहल्ले के लिए कभी नुकसानदेह नहीं होता; आम चुनाव अभी काफी दूर हैं। बस कुछ ऐसी ही बातें।’ एल.एन. अग्रवाल ने चाय की चुस्की लेते हुए आगे कहा: ‘असल बात तो यह है कि देश के पास सोचने के लिए इससे कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। भोजन सबसे अहम मुद्दा है। बिहार में लगभग भुखमरी फैली हुई है। और अगर मानसून खराब रहा तो हम भी भुखमरी की चपेट में आ जाएंगे। देश के अंदर से या सीमा पार से हमें धमकाने वाले मुसलमानों से हम निपट सकते हैं। अगर नेहरू इतने नरम दिल न होते तो हमने कुछ साल पहले ही उनसे सख्ती से निपटा होता। और अब ये जाटव, ये’—उनके चेहरे पर इन शब्दों के प्रति अरुचि झलक रही थी—‘ये अनुसूचित जाति के लोग एक बार फिर समस्या बन रहे हैं। लेकिन देखते हैं, देखते हैं...’

राम विलास गोयल पूरी बातचीत के दौरान चुपचाप बैठे रहे। एक बार उन्होंने हल्का सा माथा सिकोड़ा, एक बार सिर हिलाया।

एल.एन. अग्रवाल ने कहा, "मुझे अपने दामाद की यही बात पसंद है। वह बेवकूफ नहीं है, पर बोलता नहीं है। उसने एक बार फिर तय कर लिया है कि उसने अपनी बेटी के लिए सही रिश्ता चुना है। प्रिया उकसा सकती है, और वह खुद को उकसाने नहीं देगा।"

5.5

इसी बीच, ऊपर प्रिया वीना से बात कर रही थी, जो उससे मिलने आई थी। लेकिन यह महज़ एक सामाजिक मुलाक़ात नहीं, बल्कि एक आपातकालीन स्थिति थी। वीना बहुत परेशान थी। घर आकर उसने केदारनाथ को न सिर्फ़ आँखें बंद किए हुए, बल्कि सिर हाथों में लिए हुए

पाया। यह उसकी सामान्य आशावादी चिंता की स्थिति से कहीं ज़्यादा गंभीर था। वह इस बारे में बात नहीं करना चाहता था, लेकिन आखिरकार उसे पता चला कि वह बहुत गंभीर आर्थिक संकट में है। चौक में पुलिस की तैनाती और धरना-प्रदर्शन के कारण थोक जूता बाज़ार में मंदी के बाद अब पूरी तरह से ठप हो गया था। अब हर दिन उसकी रसीदें देय हो रही थीं, और उसके पास भुगतान करने के लिए पैसे नहीं थे। जिन लोगों पर उसका कर्ज़ था, विशेषकर मुंबई के दो बड़े स्टोर, उन्होंने पिछले माल का भुगतान टाल दिया था क्योंकि उन्हें लगता था कि वह भविष्य में माल की आपूर्ति सुनिश्चित नहीं कर सकता। जगत राम जैसे लोगों से, जो ऑर्डर पर जूते बनाते थे, जो माल उसे मिलता था, वह भी पर्याप्त नहीं था। देशभर के खरीदारों द्वारा दिए गए ऑर्डर पूरे करने के लिए, उन्हें टोकरी बेचने वालों के जूतों की जरूरत थी, और वे इन दिनों मिसरी मंडी आने की हिम्मत नहीं करते थे।

लेकिन तात्कालिक समस्या यह थी कि देय तिथि के कर्ज़ का भुगतान कैसे किया जाए। उसके पास मदद के लिए कोई नहीं था; उसके सभी सहयोगी खुद ही नकदी की कमी से जूझ रहे थे। ससुर के पास जाना भी उसके लिए असंभव था। वह पूरी तरह हताश था। वह एक बार फिर अपने लेनदारों से बात करने की कोशिश करेगा—वे साहूकार जिनके पास उसके कर्ज़ थे और उनके कमीशन एजेंट जो देय तिथि पर भुगतान के लिए उसके पास आते थे। वह उन्हें समझाने की कोशिश करेगा कि उसे और उसके जैसे अन्य लोगों को कर्ज के संकट में धकेलने से किसी का भला नहीं होगा। यह स्थिति निश्चित रूप से लंबे समय तक नहीं चलेगी। वह दिवालिया नहीं था, बस नकदी की कमी से जूझ रहा था। लेकिन बोलते-बोलते ही उसे पता चल गया कि उनका जवाब क्या होगा। वह जानता था कि पैसा, श्रम के विपरीत, किसी विशेष व्यापार के प्रति वफादार नहीं

होता, और बिना किसी रोक-टोक, संकोच या संदेह के जूतों से निकलकर, मान लीजिए, कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं में जा सकता है। यह केवल दो प्रश्न पूछता है: 'क्या ब्याज?' और 'क्या जोखिम?'

वीना, प्रिया से आर्थिक मदद मांगने नहीं आई थी, बल्कि उससे यह पूछने आई थी कि शादी के बाद मां से मिले गहनों को बेचने का सबसे अच्छा तरीका क्या है—और उसके कंधे पर सिर रखकर रोने आई थी। वह गहने अपने साथ लाई थी। लाहौर से परिवार के पलायन के बाद के उन दर्दनाक दिनों में से बस कुछ ही बचे थे। हर गहना उसके लिए इतना कीमती था कि उसे खोने के ख्याल से ही वह रोने लगती थी। उसकी बस दो ही गुजारिशें थीं—कि गहने बिकने से पहले उसके पति को पता न चले; और कम से कम कुछ हफ्तों तक उसके माता-पिता को इस बारे में पता न चले।

वे जल्दी-जल्दी बातें कर रहे थे, क्योंकि घर में कोई निजता नहीं थी, और किसी भी क्षण कोई भी प्रिया के कमरे में आ सकता था।

प्रिया ने कहा, 'मेरे पिताजी यहीं हैं। नीचे राजनीति की बातें कर रहे हैं।'

'हम हमेशा दोस्त रहेंगे, चाहे कुछ भी हो जाए,' वीना ने अचानक कहा और फिर से रोने लगी।

प्रिया ने अपनी दोस्त को गले लगाया, उसे हिम्मत रखने को कहा और छत पर तेज चलने का सुझाव दिया।

‘इस भीषण गर्मी में क्या तुम पागल हो गए हो?’ वीना ने पूछा।

'क्यों नहीं? या तो लू लग जाएगी या मेरी सास दखल देंगी— और मुझे पता है कि मैं क्या पसंद करूंगी।'

वीना ने बचाव के दूसरे तरीके के तौर पर कहा, 'मुझे तुम्हारे बंदरों से डर लगता है। पहले वे दाल फैक्ट्री की छत पर लड़ते हैं, फिर तुम्हारी छत पर कूद पड़ते हैं। शाही दरवाजे का नाम बदलकर हनुमान द्वार रख देना

चाहिए।'

‘तुम्हें किसी चीज से डर नहीं लगता। मुझे यकीन नहीं हो रहा,’ प्रिया ने कहा। ‘सच तो यह है कि मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है। तुम जब चाहो अकेले चलकर आ सकती हो। मुझे देखो। और बालकनी की इन सलाखों को देखो। बंदर अंदर नहीं आ सकते, और मैं बाहर नहीं जा सकती।’

‘अरे,’ वीना ने कहा, ‘तुम्हें मुझसे ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए।’

वे कुछ देर तक चुप रहे।

‘भास्कर कैसा है?’ प्रिया ने पूछा।

वीना के गोल-मटोल चेहरे पर एक उदास सी मुस्कान खिल उठी। 'वह बिल्कुल ठीक है—कम से कम तुम्हारे दोनों भाई-बहन तो ठीक ही हैं। वह भी साथ आने की ज़िद कर रहा था। इस समय वे सब नीचे चौक में क्रिकेट खेल रहे हैं। पीपल के पेड़ से उन्हें कोई परेशानी नहीं हो रही है... काश, प्रिया, तुम्हारा भी एक भाई या बहन होता,' वीना ने अचानक अपने बचपन को याद करते हुए कहा।

दोनों दोस्त बालकनी में गए और लोहे की जाली से नीचे देखने लगे। उनके तीन बच्चे, दो अन्य बच्चों के साथ, छोटे से मैदान में क्रिकेट खेल रहे थे। प्रिया की दस वर्षीय बेटी उनमें सबसे अच्छी थी। वह अच्छी गेंदबाज और बेहतरीन बल्लेबाज थी। वह अक्सर पीपल के पेड़ से बच जाती थी, जो बाकी खिलाड़ियों के लिए हमेशा परेशानी का सबब बना रहता था।

‘आप दोपहर के भोजन के लिए क्यों नहीं रुकते?’ प्रिया ने पूछा।

वीना ने केदारनाथ और अपनी सास के बारे में सोचते हुए कहा, 'मैं नहीं कर सकती।' 'शायद कल।'

तो कल।

वीना ने गहनों से भरा बैग प्रिया के पास छोड़ दिया, जिसने उसे एक स्टील की अलमारी में बंद कर दिया। अलमारी के पास खड़ी वीना ने

कहा: 'तुम्हारा वजन बढ़ रहा है।'
'मैं हमेशा से मोटी रही हूं,' प्रिया ने कहा, 'और क्योंकि मैं दिन भर पिंजरे में बंद पक्षी की तरह यहां बैठी रहती हूं, इसलिए मैं और मोटी हो गई हूं।'
उसकी सहेली ने कहा, 'तुम मोटी नहीं हो और कभी मोटी नहीं रही हो। और तुमने छत पर टहलना कब से बंद कर दिया है?'
'मैंने ऐसा नहीं किया है,' प्रिया ने कहा, 'लेकिन एक दिन मैं इससे कूदकर आत्महत्या कर लूंगी।'
'अगर तुम इस तरह बात करोगे तो मैं अभी चली जाऊंगी,' वीना ने कहा और जाने लगी।
'नहीं, मत जाओ। तुम्हें देखकर मेरा मन प्रसन्न हो गया है,' प्रिया ने कहा। 'मैं आशा करती हूँ कि तुम्हारा बहुत बुरा समय आए। तब तुम हर समय मेरे पास दौड़कर आओगे। अगर विभाजन न हुआ होता तो तुम कभी ब्रह्मपुर वापस न आते।'
वीना हंस पड़ी।
'चलो, छत पर चलते हैं,' प्रिया ने आगे कहा। 'मैं यहाँ तुमसे खुलकर बात नहीं कर सकती। लोग हमेशा अंदर आकर बालकनी से सुनते रहते हैं। मुझे यहाँ बिल्कुल अच्छा नहीं लगता, मैं बहुत दुखी हूँ, अगर मैंने तुम्हें नहीं बताया तो मैं फूट-फूट कर रोऊँगी।' वह हँसी और वीना को खींचकर खड़ी कर दी। 'मैं बबलू से कहती हूँ कि हमारे लिए कुछ ठंडा ले आए ताकि लू न लगे।'
बबलू एक अजीबोगरीब पचास वर्षीय नौकर था, जो बचपन से ही परिवार में था और हर गुजरते साल के साथ और भी सनकी होता जा रहा था। हाल ही में उसने सबकी दवाइयाँ खाना शुरू कर दिया था।
जब वे छत पर पहुंचे, तो वे पानी की टंकी की छाया में बैठ गए और स्कूली छात्राओं की तरह हंसने लगे।

प्रिया ने अपने काले घने बालों को झटकते हुए कहा, "हमें एक-दूसरे के बगल में रहना चाहिए। फिर, अगर मैं अपनी छत से कूद भी जाऊं, तो तुम्हारी छत पर ही गिरूंगी।"

वीना हंसते हुए बोली, “अगर हम एक-दूसरे के बगल में रहते तो कितना बुरा होता। चुड़ैल और पुतला हर दोपहर इकट्ठा होकर अपनी बहुओं की शिकायत करते। “ओह, उसने मेरे बेटे पर जादू कर दिया है, वो हर समय छत पर चौपर खेलते रहते हैं, वो उसे कालिख जैसा काला कर देगी। और वो पूरे मोहल्ले के सामने बेशर्मी से छत पर गाती है। और वो जानबूझकर ऐसा स्वादिष्ट खाना बनाती है जिससे मेरे पेट में गैस भर जाए। एक दिन मैं फट जाऊंगा और वो मेरी हड्डियों पर नाचेगी।””

प्रिया खिलखिलाकर हंस पड़ी। ‘नहीं,’ उसने कहा, ‘सब ठीक हो जाएगा। दोनों रसोईघर आमने-सामने होंगे, और सब्जियां भी हमारे अत्याचारों के बारे में शिकायत करने में हमारा साथ देंगी। “ओ दोस्त आलू, खत्री का पुतला मुझे उबाल रहा है। सबको बता देना कि मेरी बुरी तरह मौत हो गई। अलविदा, अलविदा, मुझे कभी मत भूलना।” “ओ दोस्त कद्दू, बनिया की चुड़ैल ने मुझे सिर्फ दो दिन और बख्शा है। मैं तुम्हारे लिए रोऊंगी, लेकिन तुम्हारे चौथे दिन नहीं आ पाऊंगी। मुझे माफ कर दो, मुझे माफ कर दो।”’

वीना की हंसी फिर फूट पड़ी। उसने कहा, “सच कहूं तो मुझे अपनी उस पुतले पर तरस आता है। बंटवारे के दौरान उसने बहुत मुश्किल समय देखा। लेकिन लाहौर में भी, भास्कर के जन्म के बाद भी, वह मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव करती थी। जब वह देखती है कि मैं दुखी नहीं हूं, तो वह और भी दुखी हो जाती है। प्रिया, जब हम सास बनेंगी, तो हम अपनी बहुओं को रोज़ घी और चीनी खिलाएंगी।”

प्रिया ने घृणा से कहा, “मुझे अपनी डायन पर ज़रा भी दया नहीं आती। मैं अपनी बहू को सुबह से शाम तक तब तक परेशान करूंगी जब तक उसका

मनोबल पूरी तरह से टूट न जाए। औरतें दुखी होने पर ज़्यादा खूबसूरत लगती हैं, है ना?" उसने अपने घने काले बालों को इधर-उधर झटकते हुए सीढ़ियों की ओर घूरा। उसने आगे कहा, "यह घर बहुत ही घटिया है। मैं राय बहादुर के घर में बहू बनने से बेहतर दाल कारखाने की छत पर बंदर बनकर लड़ना पसंद करूंगी। मैं बाज़ार जाकर केले चुराऊंगी। मैं कुत्तों से लड़ूंगी, मैं चमगादड़ों पर झपटूंगी। मैं तरबूज का बाज़ार जाकर सभी खूबसूरत वेश्याओं के नितंबों को नोचूंगी। मैं... तुम्हें पता है उस दिन बंदरों ने यहाँ क्या किया था?"

'नहीं,' वीना ने कहा। 'मुझे बताओ।'

मैं बस यही करने जा रहा था। बबलू, जो दिन-ब-दिन और ज़्यादा पागल होता जा रहा था, ने राय बहादुर की अलार्म घड़ियाँ चौखट पर रख दीं। फिर हमने देखा कि पीपल के पेड़ पर तीन बंदर उन्हें निहार रहे थे और ऊँची आवाज़ में "मम्मम्म", "मम्मम्मम्म" कह रहे थे, मानो कह रहे हों, "तो? हमारे पास तुम्हारी घड़ियाँ हैं। अब क्या?" डायन बाहर चली गई। हमारे पास गेहूँ के छोटे पैकेट नहीं थे जिनसे हम उन्हें रिश्वत देते थे, इसलिए उसने कुछ मूसम्मी, केले और गाजर लिए और उन्हें नीचे बुलाने की कोशिश करते हुए कहा, "लो, लो, आओ, प्यारे बच्चों, आओ, आओ, हनुमान की कसम, मैं तुम्हें स्वादिष्ट चीज़ें खाने को दूँगी..." और वे नीचे आ गए, एक-एक करके, बहुत सावधानी से, हर एक ने अपनी बगल में एक घड़ी दबा रखी थी। फिर उन्होंने खाना शुरू किया, पहले एक हाथ से, ऐसे—फिर, घड़ियों को नीचे रखकर, दोनों हाथों से। खैर—जैसे ही तीनों घड़ियाँ ज़मीन पर गिरीं, चुड़ैल ने अपनी पीठ के पीछे छिपाई हुई छड़ी निकाली और उससे उनकी जान लेने की धमकी दी—इतनी गंदी भाषा का इस्तेमाल किया कि मुझे उसकी तारीफ़ करने पर मजबूर होना पड़ा। अंग्रेज़ी में कहते हैं ना, गाजर और छड़ी? तो कहानी का अंत सुखद रहा।

लेकिन शाही दरवाज़ा के बंदर बहुत चालाक हैं। वे जानते हैं कि वे किसका फिरौती ले सकते हैं और किसका नहीं।

बबलू सीढ़ियों से ऊपर आया, एक हाथ की चार गंदी उंगलियों में लगभग लबालब भरे ठंडे नींबू पानी के चार गिलास पकड़े हुए। 'लो!' उसने गिलास नीचे रखते हुए कहा। 'पी लो! अगर ऐसे धूप में बैठे रहोगे तो निमोनिया हो जाएगा।' फिर वह गायब हो गया।

‘क्या सब कुछ पहले जैसा ही है?’ वीना ने पूछा।

‘सब कुछ वैसा ही है, बल्कि और भी ज़्यादा,’ प्रिया ने कहा। ‘कुछ नहीं बदलता। यहाँ बस एक ही चीज़ सुकून देती है कि वकिल साहब पहले की तरह ही ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे लेते हैं। कभी-कभी रात में जब बिस्तर हिलता है, तो मुझे लगता है कि वो गायब हो जाएँगे, और मेरे रोने के लिए बस उनके खर्राटों की आवाज़ ही रह जाएगी। लेकिन इस घर में जो कुछ होता है, वो मैं तुम्हें बता नहीं सकती,’ उसने उदास स्वर में कहा। ‘तुम्हारा सौभाग्य है कि तुम्हारे पास ज़्यादा पैसा नहीं है। लोग पैसे के लिए क्या-क्या करते हैं, वीना, मैं तुम्हें बता नहीं सकती। और वो पैसा किसमें खर्च होता है? शिक्षा, कला, संगीत या साहित्य में नहीं—नहीं, सारा गहनों में। और घर की महिलाओं को हर शादी में दस टन गहने अपने गले में पहनने पड़ते हैं। और तुम्हें उन्हें एक-दूसरे को परखते हुए देखना चाहिए। ओह, वीना—’ उसने अचानक अपनी असंवेदनशीलता का एहसास करते हुए कहा, ‘मुझे बकबक करने की आदत है। मुझे चुप रहने को कहो।’

‘नहीं, नहीं, मुझे तो मज़ा आ रहा है,’ वीना ने कहा। ‘लेकिन बताइए, अगली बार जब ज्वेलर आपके घर आए तो क्या आप कीमत का अनुमान लगा पाएँगी? छोटे गहनों के लिए—और हाँ, खासकर मेरे नवरतन के लिए? क्या आप उनसे कुछ मिनट अकेले में बात कर पाएँगी ताकि आपकी सास को पता न चले? अगर मुझे खुद ज्वेलर के पास जाना पड़े

तो मैं ज़रूर ठगी का शिकार हो जाऊँगी। लेकिन आपको इन सब बातों की अच्छी जानकारी है।'

प्रिया ने सिर हिलाया। 'मैं कोशिश करूंगी,' उसने कहा। नवरतन एक खूबसूरत हार था; उसने इसे आखिरी बार प्राण और सविता की शादी में वीना के गले में देखा था। इसमें सोने के नौ वर्गाकार खानों का एक चाप था, जिनमें से प्रत्येक में एक अलग कीमती पत्थर जड़ा हुआ था, और किनारों पर और पीछे की तरफ भी, जहाँ यह दिखाई नहीं देता था, बारीक एनामेल का काम किया गया था। पुखराज, सफेद नीलम, पन्ना, नीला नीलम, माणिक, हीरा, मोती, कैट्स आई और मूंगा: अव्यवस्थित और अस्त-व्यस्त दिखने के बजाय, इस भारी हार में पारंपरिक मजबूती और आकर्षण का अद्भुत मेल था। वीना के लिए इसमें इससे कहीं अधिक महत्व था: अपनी माँ के सभी उपहारों में से यह वह उपहार था जिसे वह सबसे अधिक प्रिय मानती थी।

'मुझे लगता है कि हमारे पिता एक-दूसरे को इतना नापसंद करके पागल हो गए हैं,' प्रिया ने अचानक कहा। 'पूर्व प्रदेश का अगला मुख्यमंत्री कौन होगा, इससे किसे फर्क पड़ता है?'

वीना ने नींबू पानी की चुस्की लेते हुए सिर हिलाया।

'मान के बारे में क्या खबर है?' प्रिया ने पूछा।

वे इन विषयों पर गपशप करते थे: मान और सईदा बाई; नवाब साहब की बेटी और क्या परदे में उसकी स्थिति प्रिया से बदतर थी; सविता की गर्भावस्था; यहाँ तक कि परोक्ष रूप से श्रीमती रूपा मेहरा और कैसे वह अपने शिष्यों को रम्मी सिखाकर उन्हें भ्रष्ट करने की कोशिश कर रही थीं। वे दुनिया को भूल चुके थे। लेकिन अचानक सीढ़ियों के ऊपर बबलू का बड़ा सिर और गोल कंधे दिखाई दिए। 'हे भगवान!' प्रिया चौंककर बोली। 'रसोई में मेरी जिम्मेदारियाँ—जब से मैं तुमसे बात कर रही हूँ, तब से मेरे

दिमाग से निकल गई हैं। मेरी सास ने नहाने के बाद गीली धोती में अपना खाना बनाने का अपना बेवकूफी भरा काम खत्म किया होगा और अब वह मुझे पुकार रही हैं। मुझे भागना पड़ेगा। वह कहती हैं कि वह पवित्रता के लिए ऐसा करती हैं—हालांकि उन्हें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमारे घर में भैंस के आकार के तिलचट्टे इधर-उधर घूम रहे हैं और चूहे रात में तेल न धोने पर बाल नोच लेते हैं। अरे, दोपहर के भोजन के लिए रुकना, वीना, मुझे तुमसे मिलने का मौका ही नहीं मिलता!'

वीना ने कहा, 'मैं सचमुच नहीं कर सकती। स्लीपर को अपना खाना बिल्कुल पसंद है। और मुझे यकीन है कि स्नोरर को भी।'

'ओह, वो इतने नखरेबाज़ नहीं हैं,' प्रिया ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। 'वो मेरी सारी बकवास बर्दाश्त कर लेते हैं। लेकिन मैं बाहर नहीं जा सकती, मैं बाहर नहीं जा सकती, मैं कहीं नहीं जा सकती, सिवाय शादियों और कभी-कभार मंदिर या धार्मिक मेले में जाने के, और आप जानती ही हैं कि मैं उनके बारे में क्या सोचती हूँ। अगर वो इतने अच्छे न होते, तो मैं बिल्कुल पागल हो जाती। हमारे मोहल्ले में पत्नी को पीटना एक आम खेल है, अगर आप अपनी पत्नी को दो-चार थप्पड़ न मारें तो आपको मर्द नहीं समझा जाता, लेकिन राम विलास तो दशहरा पर ढोल भी नहीं बजाते। और वो उस डायन के प्रति इतना आदर दिखाते हैं कि मुझे घिन आती है, जबकि वो उनकी सौतेली माँ ही हैं। कहते हैं कि वो गवाहों के साथ इतने अच्छे से पेश आते हैं कि वे उन्हें सच बता देते हैं—भले ही वे अदालत में हों! खैर, अगर आप नहीं रुक सकते, तो आपको कल आना होगा। मुझसे फिर वादा कीजिए।'

वीना ने वादा किया और दोनों दोस्त ऊपर की मंजिल पर बने कमरे में चले गए। प्रिया की बेटी और बेटा बिस्तर पर बैठे थे और उन्होंने वीना को बताया कि भास्कर घर वापस चला गया है।

‘क्या? अकेले?’ वीना ने घबराकर कहा।
लड़के ने कहा, 'वह नौ साल का है, और यह जगह पांच मिनट की दूरी पर है।'
‘चुप रहो!’ प्रिया ने कहा। ‘बड़ों से ठीक से बात करो।’
'मुझे अभी जाना चाहिए,' वीना ने कहा।
नीचे उतरते समय वीना की मुलाकात एल.एन. अग्रवाल से हुई जो ऊपर आ रहे थे। सीढ़ियाँ संकरी और खड़ी थीं। उसने दीवार से सटकर नमस्ते किया। उन्होंने 'जीती रहो बेटी' कहकर अभिवादन स्वीकार किया और ऊपर चले गए।
लेकिन हालांकि उन्होंने उसे 'बेटी' कहकर संबोधित किया था, वीना को लगा कि जैसे ही उन्होंने उसे देखा, उन्हें तुरंत उस मंत्री पद के प्रतिद्वंद्वी की याद आ गई जिसकी वह वास्तव में बेटी थी।
5.6
क्या सरकार को इस बात की जानकारी है कि पिछले सप्ताह ब्रह्मपुर पुलिस ने गोविंद शू मार्ट के सामने प्रदर्शन कर रहे जाटव समुदाय के सदस्यों पर लाठीचार्ज किया था?
गृह मंत्री श्री एल.एन. अग्रवाल खड़े हो गए।
उन्होंने जवाब दिया, 'लाठी हमला नहीं हुआ था।'
'अगर आप चाहें तो इसे हल्का लाठीचार्ज कह सकते हैं। क्या सरकार उस घटना से अवगत है जिसका मैं जिक्र कर रहा हूं?'
गृह मंत्री ने विशाल गोलाकार कक्ष के उस पार देखा और शांत स्वर में कहा:
‘आम तौर पर होने वाले लाठीचार्ज जैसा कुछ नहीं हुआ था। पुलिस को एक इंच मोटी हल्की लाठियों का इस्तेमाल करने के लिए मजबूर होना पड़ा, जब बेकाबू भीड़ ने कई आम लोगों और एक पुलिसकर्मी पर पत्थर

फेंके और उनके साथ मारपीट की, और जब यह स्पष्ट हो गया कि गोविंद शू मार्ट, आम जनता और स्वयं पुलिसकर्मियों की सुरक्षा को गंभीर खतरा था।'

वह अपने पूछताछकर्ता, राम धन को घूर रहा था, जो चालीस वर्ष का एक छोटा, सांवला, चेचक के निशान वाला व्यक्ति था, जिसने अपनी बाहों को अपनी छाती पर बांधकर मानक हिंदी में, लेकिन एक मजबूत ब्रह्मपुरी लहजे के साथ, उससे प्रश्न पूछे।

प्रश्नकर्ता ने आगे पूछा, 'क्या यह सच है कि उसी शाम पुलिस ने पास ही स्थित ब्रह्मपुर शू मार्ट के सामने शांतिपूर्ण धरना दे रहे बड़ी संख्या में जाटवों की पिटाई की?' श्री राम धन अनुसूचित जाति के निर्दलीय विधायक थे और उन्होंने 'जाटव' शब्द पर विशेष जोर दिया। सदन में चारों ओर से आक्रोश भरी फुसफुसाहट सुनाई दी। अध्यक्ष ने शांति बनाए रखने का आदेश दिया और गृह मंत्री फिर से खड़े हो गए।

उन्होंने अपनी आवाज को शांत रखते हुए कहा, 'यह तथ्य नहीं है। पुलिस, एक उग्र भीड़ से घिरी हुई थी, इसलिए उन्होंने आत्मरक्षा की और इस कार्रवाई के दौरान तीन लोग घायल हो गए। माननीय सदस्य के इस आरोप के संबंध में कि पुलिस ने भीड़ में से किसी विशेष जाति के लोगों को निशाना बनाया या भीड़ में उस जाति के लोगों की अधिक संख्या होने के कारण विशेष रूप से कठोर व्यवहार किया, मैं उन्हें पुलिस के प्रति अधिक निष्पक्ष रहने की सलाह दूंगा। मैं उन्हें आश्वस्त करना चाहता हूं कि यदि भीड़ की संरचना अलग होती तो भी कार्रवाई में कोई अंतर नहीं होता।'

हालांकि, श्री राम धन ने एक ही बात को बार-बार दोहराते हुए कहा, 'क्या यह सच है कि माननीय गृह मंत्री ब्रह्मपुर के स्थानीय अधिकारियों, विशेष रूप से जिला मजिस्ट्रेट और पुलिस अधीक्षक के साथ लगातार संपर्क में

थे?'

'जी हां।' एल.एन. अग्रवाल ने इस एक शब्द को बोलकर ऊपर की ओर देखा, मानो धैर्य की तलाश में, सफेद पाले से ढके कांच के विशाल गुंबद की ओर, जिससे होकर सुबह की हल्की रोशनी विधानसभा पर पड़ रही थी।

क्या निहत्थे भीड़ पर लाठीचार्ज करने से पहले जिला अधिकारियों ने गृह मंत्री की विशेष अनुमति ली थी? यदि हां, तो कब? यदि नहीं, तो क्यों नहीं?

गृह मंत्री ने थकान के बजाय झुंझलाहट भरी आह भरी और फिर खड़े होते हुए कहा, "मैं फिर से दोहराना चाहता हूँ कि इस संदर्भ में 'लाठी हमला' शब्द का प्रयोग मुझे स्वीकार्य नहीं है। भीड़ निहत्थी भी नहीं थी, क्योंकि उन्होंने पत्थरों का इस्तेमाल किया था। हालाँकि, मुझे खुशी है कि माननीय सदस्य यह स्वीकार करते हैं कि पुलिस का सामना एक भीड़ से हुआ था। दरअसल, जिस तरह से उन्होंने मुद्रित, तारांकित प्रश्न में इस शब्द का प्रयोग किया है, उससे स्पष्ट है कि उन्हें आज से पहले ही इसकी जानकारी थी।"

'क्या माननीय मंत्री महोदय कृपया पूछे गए प्रश्न का उत्तर देंगे?' राम धन ने उत्तेजित होकर अपनी बाहें फैलाते हुए और मुट्ठियाँ भींचते हुए कहा।

'मुझे लगा था कि जवाब स्पष्ट होगा,' एल.एन. अग्रवाल ने कहा। वे थोड़ी देर रुके, फिर मानो रटते हुए बोले: 'ज़मीनी स्तर पर विकसित हो रही स्थिति कभी-कभी ऐसी होती है कि रणनीतिक रूप से यह अनुमान लगाना अक्सर असंभव होता है कि आगे क्या होगा, और स्थानीय अधिकारियों को कुछ लचीलापन देना आवश्यक है।'

लेकिन राम धन अपनी बात पर अड़े रहे। 'यदि जैसा कि माननीय मंत्री जी स्वीकार करते हैं, ऐसी कोई विशिष्ट मंजूरी नहीं ली गई थी, तो क्या

माननीय गृह मंत्री को पुलिस की प्रस्तावित कार्रवाई की जानकारी दी गई थी? क्या उन्होंने या मुख्यमंत्री ने अपनी मौन स्वीकृति दी थी?'
गृह मंत्री एक बार फिर उठे। उन्होंने कुएं को ढकने वाले गहरे हरे रंग के कालीन के ठीक बीचोंबीच स्थित एक बिंदु पर नज़र डाली। 'यह कार्रवाई पूर्व नियोजित नहीं थी। अचानक उत्पन्न हुई एक गंभीर स्थिति से निपटने के लिए इसे तत्काल करना आवश्यक था। इसमें सरकार से किसी भी प्रकार की पूर्व परामर्श की गुंजाइश नहीं थी।'
एक सदस्य ने चिल्लाकर पूछा: 'और मुख्यमंत्री के बारे में क्या?'
सदन के अध्यक्ष, जो एक विद्वान व्यक्ति थे लेकिन सामान्यतः बहुत मुखर नहीं थे और कुर्ता-धोती पहने हुए थे, पूर्व प्रदेश के प्रतीक चिन्ह - एक विशाल पीपल के पेड़ - के नीचे स्थित अपने ऊंचे मंच से नीचे देखते हुए बोले: 'ये संक्षिप्त तारांकित प्रश्न विशेष रूप से माननीय गृह मंत्री को संबोधित हैं, और उनके उत्तरों को ही पर्याप्त माना जाना चाहिए।'
अब कई आवाजें उठीं। उनमें से एक, बाकी सभी पर हावी होते हुए, गरज उठी: 'चूंकि माननीय मुख्यमंत्री अन्य स्थानों की यात्राओं के बाद सदन में उपस्थित हैं, तो क्या वे हमें उत्तर देने की कृपा करेंगे, भले ही वे स्थायी आदेशों द्वारा ऐसा करने के लिए बाध्य न हों? मुझे विश्वास है कि सदन इसकी सराहना करेगा।'
मुख्यमंत्री श्री एस.एस. शर्मा बिना छड़ी के खड़े हुए, अपना बायां हाथ अपनी गहरे रंग की लकड़ी की मेज पर टिकाकर दाएं-बाएं देखने लगे। वे केंद्रीय सदन के घुमावदार हिस्से में, लगभग एल.एन. अग्रवाल और महेश कपूर के ठीक बीच में बैठे थे। उन्होंने अपनी नाक से निकलने वाली, कुछ हद तक पितृवत आवाज़ में अध्यक्ष को संबोधित किया और ऐसा करते हुए धीरे से सिर हिलाया: ‘अध्यक्ष महोदय, मुझे बोलने में कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन मुझे कुछ कहना नहीं है। जो कार्रवाई की गई है—माननीय

सदस्यगण इसे जो भी नाम दें—वह जिम्मेदार कैबिनेट मंत्री के मार्गदर्शन में की गई है।' कुछ देर का विराम हुआ, इस दौरान यह स्पष्ट नहीं था कि मुख्यमंत्री आगे क्या कहेंगे, यदि कुछ कहेंगे भी तो। 'जिनका मैं स्वाभाविक रूप से समर्थन करता हूं,' उन्होंने कहा।

अभी वे बैठे भी नहीं थे कि राम धन फिर से मैदान में उतर आए। उन्होंने कहा, "मैं माननीय मुख्यमंत्री जी का बहुत आभारी हूं, लेकिन मैं एक स्पष्टीकरण चाहता हूं। क्या गृह मंत्री का समर्थन करने का मतलब यह है कि मुख्यमंत्री जिला अधिकारियों की नीति को स्वीकार करते हैं?"

मुख्यमंत्री के उत्तर देने से पहले ही गृह मंत्री तुरंत उठ खड़े हुए और बोले: 'मुझे आशा है कि हमने इस मुद्दे पर अपनी बात स्पष्ट कर दी है। यह पूर्व-अनुमति का मामला नहीं था। घटना के तुरंत बाद जांच की गई। जिला मजिस्ट्रेट ने मामले की पूरी तरह से जांच की और पाया कि केवल न्यूनतम बल का प्रयोग किया गया था, जो बिल्कुल अपरिहार्य था। सरकार को खेद है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई, लेकिन हम संतुष्ट हैं कि जिला मजिस्ट्रेट का निष्कर्ष सही है। लगभग सभी संबंधित पक्षों ने यह स्वीकार किया कि अधिकारियों ने गंभीर स्थिति का सामना सूझबूझ और संयम से किया।'

सोशलिस्ट पार्टी का एक सदस्य खड़ा हुआ। उसने पूछा, 'क्या यह सच है कि माननीय गृह मंत्री ने—सरकारी बेंचों से गुस्से भरी फुसफुसाहटें उठीं —'अपने बनिया व्यापारी समुदाय के सदस्यों के उकसावे पर—मिसरी मंडी के कोने-कोने में सेना—मेरा मतलब पुलिस—तब तैनात की थी?'

अध्यक्ष ने कहा, 'मैं इस प्रश्न की अनुमति नहीं देता।'

'अच्छा,' सदस्य ने आगे कहा, 'माननीय मंत्री जी कृपया हमें यह बताएँगे कि उन्होंने किसके परामर्श पर पुलिस के इस धमकी भरे दल को तैनात करने का निर्णय लिया?'

गृह मंत्री ने अपनी टोपी के नीचे बालों की लटों को पकड़ते हुए कहा: 'सरकार ने स्थिति की समग्रता को ध्यान में रखते हुए अपना निर्णय लिया। और अंततः यह प्रभावी साबित हुआ है। मिसरी मंडी में आखिरकार शांति स्थापित हो गई है।'

चारों ओर आक्रोश भरी चीखें, गंभीर बातचीत और दिखावटी हंसी गूंज उठी। 'कैसी शांति?', 'शर्मनाक!', 'इस मामले पर फैसला करने वाला डीएम कौन होता है?', 'मस्जिद का क्या?' आदि के नारे सुनाई दिए।

'व्यवस्था बनाए रखें! व्यवस्था बनाए रखें!' अध्यक्ष ने घबराते हुए कहा, तभी एक अन्य सदस्य अपने पैरों पर खड़ा हुआ और बोला:

क्या सरकार ऐसे मामलों में जांच करने के लिए संबंधित जिला अधिकारियों के अलावा अन्य तंत्र बनाने की सलाह पर विचार करेगी?

अध्यक्ष ने चिड़िया की तरह सिर हिलाते हुए कहा, 'मैं इस प्रश्न की अनुमति नहीं देता। स्थायी आदेशों के तहत कार्रवाई के सुझाव देने वाले प्रश्न अनुमेय नहीं हैं और मैं प्रश्नकाल के दौरान इनकी अनुमति देने के लिए तैयार नहीं हूं।'

मिसरी मंडी घटना को लेकर गृह मंत्री की पूछताछ समाप्त हो चुकी थी। छपे हुए प्रश्नपत्र पर केवल पाँच प्रश्न ही थे, लेकिन पूरक प्रश्नों ने इस बहस को लगभग जिरह का रूप दे दिया था। मुख्यमंत्री का हस्तक्षेप एल.एन. अग्रवाल के लिए आश्वस्त करने के बजाय अधिक चिंताजनक था। क्या एस.एस. शर्मा अपने धूर्त और अप्रत्यक्ष तरीके से इस घटना की पूरी जिम्मेदारी अपने वरिष्ठ अधिकारी पर डालने की कोशिश कर रहे थे? एल.एन. अग्रवाल पसीने से तरबतर होकर बैठ गए, लेकिन उन्हें पता था कि उन्हें तुरंत फिर से उठना होगा। और, हालांकि उन्हें कठिन परिस्थितियों में शांत रहने पर गर्व था, लेकिन अब उन्हें जिस बात का सामना करना था, वह उन्हें भाने वाली नहीं थी।

5.7

बेगम आबिदा खान धीरे से खड़ी हुईं। उन्होंने गहरे नीले, लगभग काले रंग की साड़ी पहनी हुई थी, और उनके पीले और क्रोधित चेहरे ने बोलने से पहले ही पूरे घर को अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। वह बैतर के नवाब के छोटे भाई की पत्नी और डेमोक्रेटिक पार्टी की प्रमुख नेताओं में से एक थीं, जो जमींदारी उन्मूलन विधेयक के आसन्न पारित होने के मद्देनजर जमींदारों के हितों की रक्षा करना चाहती थी। शिया होने के बावजूद, उन्हें नवगठित, अविभाजित स्वतंत्र भारत में सभी मुसलमानों के अधिकारों की एक जुझारू रक्षक के रूप में जाना जाता था। उनके पति, अपने पिता की तरह, स्वतंत्रता से पहले मुस्लिम लीग के सदस्य थे और स्वतंत्रता के तुरंत बाद पाकिस्तान चले गए थे। कई रिश्तेदारों के ज़बरदस्त आग्रह और निंदा के बावजूद, उन्होंने न जाने का फैसला किया था। उन्होंने कहा था, 'मैं वहाँ बैठकर गपशप करने में बेकार हो जाऊंगी। कम से कम यहाँ ब्रह्मपुर में मुझे पता है कि मैं कहाँ हूँ और क्या कर सकती हूँ।' और आज सुबह उन्हें ठीक-ठीक पता था कि वह क्या करना चाहती हैं। उस व्यक्ति की ओर सीधे देखते हुए, जिसे वह मानवता के कम सुखद रूपों में से एक मानती थी, उसने तारांकित प्रश्नों की अपनी सूची से प्रश्न पूछना शुरू किया।

क्या माननीय गृह मंत्री को इस बात की जानकारी है कि पिछले शुक्रवार को चौक के पास पुलिस की गोलीबारी में कम से कम पांच लोग मारे गए थे?

गृह मंत्री, जो आम तौर पर भी बेगम को बिल्कुल पसंद नहीं करते थे, ने जवाब दिया: 'बिल्कुल नहीं, मैं ऐसा नहीं था।'

उनका विस्तार से न बताना कुछ हद तक बाधक जैसा था, लेकिन उन्हें इस पीली-सी दिखने वाली महिला के सामने खुलकर बोलने का मन नहीं

था।
बेगम आबिदा खान ने अपनी तयशुदा बात से हटकर तीखे लहजे में पूछा, 'क्या माननीय मंत्री जी हमें ठीक-ठीक बताएंगे कि उन्हें क्या पता है?'
'मैं इस प्रश्न की अनुमति नहीं देता,' अध्यक्ष ने धीमी आवाज़ में कहा।
बेगम आबिदा खान ने पूछा, 'माननीय मंत्री जी चौक में हुई गोलीबारी में मरने वालों की संख्या कितनी थी?'
'एक,' एल.एन. अग्रवाल ने कहा।
बेगम आबिदा खान की आवाज अविश्वास से भरी थी: 'एक?' वह चिल्लाईं। 'एक?'
गृह मंत्री ने अपने दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली उठाते हुए जवाब दिया, 'एक,' मानो वे किसी ऐसे मंदबुद्धि बच्चे से बात कर रहे हों जिसे संख्याओं या सुनने या दोनों में कठिनाई होती हो।
बेगम आबिदा खान ने क्रोध से चिल्लाते हुए कहा: 'माननीय मंत्री जी, मैं आपको सूचित करना चाहूँगी कि कम से कम पाँच लोग मारे गए थे, और मेरे पास इस बात का पुख्ता सबूत है। मृतकों में से चार के मृत्यु प्रमाण पत्रों की प्रतियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं। वास्तव में, यह संभव है कि जल्द ही दो और लोग मारे जाएँगे—'
'महोदय, मैं व्यवस्था के प्रश्न पर खड़ा हुआ हूँ,' एल.एन. अग्रवाल ने उनकी बात अनसुनी करते हुए सीधे अध्यक्ष को संबोधित किया। 'मैं समझता हूँ कि प्रश्नकाल मंत्रियों से जानकारी प्राप्त करने के लिए होता है, न कि मंत्रियों को जानकारी देने के लिए।'
बेगम आबिदा खान की आवाज लगातार जारी रही: "माननीय मंत्री जी के गुर्गों की बदौलत जल्द ही दो और लोगों को ऐसे ही सम्मान प्रमाण पत्र प्राप्त होंगे। मैं इन मृत्यु प्रमाण पत्रों को—इन मृत्यु प्रमाण पत्रों की प्रतियों को—प्रस्तुत करना चाहूंगी।"

‘मुझे खेद है कि स्थायी आदेशों के तहत यह संभव नहीं है. . .’ अध्यक्ष ने विरोध जताया।

बेगम आबिदा खान ने दस्तावेजों को लहराते हुए ऊंची आवाज में कहा, 'अखबारों के पास इनकी प्रतियां हैं, सदन को इन्हें देखने का अधिकार क्यों नहीं है? जब निर्दोष पुरुषों का, मात्र लड़कों का खून बेरहमी से बहाया जा रहा है—'

अध्यक्ष ने कहा, 'माननीय सदस्य प्रश्नकाल का उपयोग भाषण देने के लिए नहीं करेंगे,' और उन्होंने अपना हथौड़ा पटका।

बेगम आबिदा खान ने अचानक खुद को संभाला और एक बार फिर एल.एन. अग्रवाल को संबोधित किया।

'माननीय मंत्री महोदय कृपया सदन को यह बताएं कि उन्होंने किस आधार पर एक का कुल आंकड़ा निकाला?'

'यह रिपोर्ट जिला मजिस्ट्रेट द्वारा प्रस्तुत की गई थी, जो घटना के समय उपस्थित थे।'

“वर्तमान” से आपका तात्पर्य यह है कि उसने इन दुर्भाग्यपूर्ण लोगों को कुचलने का आदेश दिया था, क्या ऐसा नहीं है?

एल.एन. अग्रवाल ने जवाब देने से पहले कुछ देर रुककर कहा:

‘जिला मजिस्ट्रेट एक अनुभवी अधिकारी हैं, जिन्होंने स्थिति के अनुसार जो भी कदम आवश्यक समझा, वे उठाए। जैसा कि माननीय सदस्य को ज्ञात है, एक वरिष्ठ अधिकारी के नेतृत्व में जल्द ही जांच की जाएगी, जैसा कि फायरिंग के आदेश से संबंधित सभी मामलों में होता है; और मैं उनसे निवेदन करता हूं कि रिपोर्ट प्रकाशित होने तक अटकलों को हवा न दें।’

‘अटकलें?’ बेगम आबिदा खान भड़क उठीं। ‘अटकलें? क्या आप इसे अटकलें कहती हैं? आपको—माननीय मंत्री जी—’—उन्होंने ‘माननीय’

शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा—‘माननीय मंत्री जी को शर्म आनी चाहिए। मैंने अपनी आँखों से दो आदमियों के शव देखे हैं। मैं अटकलें नहीं लगा रही हूँ। अगर सड़कों पर उनके अपने धर्म के लोगों का खून बह रहा होता, तो माननीय मंत्री जी ‘इतने समय तक इंतज़ार’ नहीं करते। हम जानते हैं कि वे उस घृणित संगठन, लिंग रक्षक समिति को खुला और मौन समर्थन देते हैं, जिसे हमारी मस्जिद की पवित्रता को नष्ट करने के लिए ही बनाया गया है—’

सदन में उनकी भाषण शैली से उत्तेजना बढ़ती जा रही थी, भले ही वह अनुचित रही हो। एल.एन. अग्रवाल अपने दाहिने हाथ से अपने भूरे बालों को कसकर पकड़े हुए थे, उनका हाथ पंजे की तरह तनावग्रस्त था, और उन्होंने अपना शांत स्वभाव त्यागकर हर तिरस्कारपूर्ण 'माननीय' शब्द पर उन्हें घूर रहे थे। दुबले-पतले दिख रहे अध्यक्ष ने उत्तेजना को रोकने का एक और प्रयास किया:

'माननीय सदस्य को शायद यह याद दिलाने की आवश्यकता हो सकती है कि मेरी प्रश्न सूची के अनुसार, उनके पास अभी भी तीन तारांकित प्रश्न शेष हैं।'

‘धन्यवाद, महोदय,’ बेगम आबिदा खान ने कहा। ‘मैं उनसे संपर्क करूंगी। दरअसल, मैं अगले व्यक्ति से तुरंत पूछूंगी। यह विषय से अत्यंत प्रासंगिक है। क्या माननीय गृह मंत्री हमें यह बता सकते हैं कि चौक में गोलीबारी से पहले दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 144 के तहत लोगों को तितर-बितर होने की चेतावनी दी गई थी? यदि हां, तो कब? यदि नहीं, तो क्यों नहीं?’

एल.एन. अग्रवाल ने क्रूरता और क्रोध से उत्तर दिया:

“ऐसा नहीं था। ऐसा हो ही नहीं सकता था। ऐसा करने का समय ही नहीं था। अगर लोग धार्मिक कारणों से दंगे भड़काते हैं और मंदिरों को नष्ट

करने की कोशिश करते हैं, तो उन्हें इसके परिणाम भुगतने ही होंगे। या मस्जिदों के मामले में भी यही बात लागू होती है।"

लेकिन अब बेगम आबिदा खान लगभग चिल्ला रही थीं। 'दंगा? दंगा? माननीय मंत्री जी इस निष्कर्ष पर कैसे पहुंचे कि भीड़ का यही इरादा था? यह शाम की नमाज़ का समय था। वे मस्जिद जा रहे थे—'

गृह मंत्री ने कहा, 'सभी रिपोर्टों से यह स्पष्ट था। वे हिंसक रूप से आगे बढ़ रहे थे, अपनी आदत के अनुसार जोश से चिल्ला रहे थे और हथियार लहरा रहे थे।'

वहां हंगामा मच गया।

सोशलिस्ट पार्टी के एक सदस्य ने रोते हुए पूछा, 'क्या माननीय मंत्री जी उपस्थित थे?'

कांग्रेस पार्टी के एक सदस्य ने कहा, 'वह हर जगह नहीं हो सकते।'

'लेकिन यह तो बहुत ही क्रूर था,' किसी और ने चिल्लाकर कहा। 'उन्होंने बिलकुल करीब से गोली चलाई।'

अध्यक्ष ने चिल्लाते हुए कहा, 'माननीय सदस्यों को याद दिलाया जाता है कि मंत्री जी को अपने ही सवालों के जवाब देने होते हैं।'

गृह मंत्री ने कहना शुरू किया, 'धन्यवाद महोदय।' लेकिन उन्हें घोर आश्चर्य और वास्तव में आक्रोश का सामना करना पड़ा जब कांग्रेस पार्टी के एक मुस्लिम सदस्य, अब्दस सलाम, जो राजस्व मंत्री के संसदीय सचिव भी थे, ने उठकर पूछा, 'भीड़ को तितर-बितर होने की उचित चेतावनी दिए बिना या भीड़ के इरादे का पता लगाने का प्रयास किए बिना, गोली चलाने का इतना गंभीर आदेश कैसे लिया जा सकता है?'

अब्दुस सलाम का उठ खड़ा होना सदन के लिए स्तब्ध कर देने वाला था। एक तरह से यह स्पष्ट नहीं था कि वे किस ओर इशारा कर रहे थे—वे अध्यक्ष की कुर्सी के ऊपर पूर्व प्रदेश की मुहर के दाईं ओर कहीं किसी

अनिश्चित बिंदु की ओर देख रहे थे। दरअसल, ऐसा लग रहा था मानो वे मन ही मन कुछ सोच रहे हों। वे एक विद्वान युवक थे, जो विशेष रूप से भूमि स्वामित्व कानून की उत्कृष्ट समझ के लिए जाने जाते थे, और पूर्व प्रदेश जमींदारी उन्मूलन विधेयक के प्रमुख रचनाकारों में से एक थे। इस मुद्दे पर उनका डेमोक्रेटिक पार्टी—जो जमींदारों की पार्टी है—के नेता के साथ हाथ मिलाना, सभी दलों के सदस्यों को स्तब्ध कर गया। स्वयं महेश कपूर अपने संसदीय सचिव के इस हस्तक्षेप से आश्चर्यचकित थे और पूरी तरह से प्रसन्न न होकर भौंहें चढ़ाकर पीछे मुड़ गए। मुख्यमंत्री ने भी तेवर दिखाए। एल.एन. अग्रवाल आक्रोश और अपमान से व्याकुल थे। सदन के कई सदस्य खड़े होकर अपने आदेश पत्र लहरा रहे थे, और अध्यक्ष समेत किसी की भी आवाज स्पष्ट नहीं सुनाई दे रही थी। यह एक अराजक स्थिति बनती जा रही थी।

जब स्पीकर के हथौड़े की बार-बार की चोटियों के बाद कुछ हद तक व्यवस्था बहाल हुई, तो गृह मंत्री, हालांकि अभी भी सदमे में थे, खड़े होकर पूछने लगे:

‘क्या मैं जान सकता हूँ, महोदय, कि क्या किसी मंत्री के संसदीय सचिव को सरकार से प्रश्न पूछने का अधिकार है?’

अब्दुस सलाम ने अचंभित होकर चारों ओर देखा, अनजाने में पैदा हुए हंगामे से चकित होकर कहा: 'मैं पीछे हटता हूँ।'

लेकिन अब चीखें सुनाई देने लगीं: 'नहीं, नहीं!', 'आप ऐसा कैसे कर सकते हैं?' और 'अगर आप नहीं पूछेंगे, तो मैं पूछ लूंगा।'

स्पीकर ने आह भरी।

उन्होंने फैसला सुनाया, 'प्रक्रिया के संबंध में, प्रत्येक सदस्य को प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता है।'

‘तो फिर क्यों?’ एक सदस्य ने क्रोधित होकर पूछा। ‘ऐसा क्यों किया

गया? क्या माननीय मंत्री जी इसका जवाब देंगे या नहीं?'
एल.एन. अग्रवाल ने कहा, 'मुझे सवाल समझ नहीं आया। मेरा मानना है कि इसे वापस ले लिया गया है।'
'मैं भी दूसरे सदस्य की तरह यही पूछ रहा हूँ कि किसी ने यह पता क्यों नहीं लगाया कि भीड़ क्या चाहती थी? डीएम को कैसे पता चला कि यह हिंसक था?' सदस्य ने दोहराया।
'इस पर स्थगन प्रस्ताव होना चाहिए,' दूसरे ने चिल्लाकर कहा।
तीसरे व्यक्ति ने कहा, 'अध्यक्ष के पास पहले से ही इस तरह का नोटिस मौजूद है।'
इन सबके बीच बेगम आबिदा खान की तीखी आवाज गूंजी: 'यह विभाजन के समय की हिंसा जितनी ही क्रूर थी। एक युवक की हत्या कर दी गई जो प्रदर्शन का हिस्सा भी नहीं था। क्या माननीय गृह मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि यह सब कैसे हुआ?' वह बैठ गईं और घूरने लगीं।
'प्रदर्शन?' एल.एन. अग्रवाल ने कानूनी विजय के भाव से कहा।
'भीड़, बल्कि—' संघर्षरत बेगम ने उछलकर और उसकी कुंडली से निकलते हुए कहा। 'आप इस बात से इनकार तो नहीं करेंगे कि वह प्रार्थना का समय था? यह प्रदर्शन—घोर अमानवीयता का प्रदर्शन, क्योंकि वास्तव में यह वही था—पुलिस की ओर से था। अब माननीय मंत्री जी शब्दों के जाल में न उलझें, बल्कि तथ्यों पर ध्यान दें।'
जब गृह मंत्री ने उस अभागी औरत को दोबारा उठते देखा, तो उनके दिल में घृणा की लहर दौड़ गई। वह उनके लिए काँटे की तरह चुभ रही थी और सदन के सामने उनका अपमान और बेइज्जती कर चुकी थी। अब उन्होंने ठान लिया था कि चाहे कुछ भी हो जाए, वे उससे और उसके घर—बैतर के नवाब साहब के परिवार—से बदला लेंगे। ये मुसलमान सब कट्टरपंथी थे, जिन्हें शायद यह एहसास ही नहीं था कि वे इस देश में मजबूरी में रह

रहे हैं। कानून का सख्ती से इस्तेमाल करके उन्हें सबक सिखाना ही होगा।
'मैं एक बार में केवल एक ही प्रश्न का उत्तर दे सकता हूँ,' एल.एन. अग्रवाल ने खतरनाक स्वर में कहा।
अध्यक्ष ने कहा, 'जिन माननीय सदस्य ने तारांकित प्रश्न पूछे हैं, उनके पूरक प्रश्नों को प्राथमिकता दी जाएगी।'
बेगम आबिदा खान गंभीर रूप से मुस्कुराईं।
गृह मंत्री ने कहा: 'हमें रिपोर्ट प्रकाशित होने तक इंतजार करना होगा।'
सरकार को इस बात की जानकारी ही नहीं है कि एक निर्दोष युवक पर गोली चलाई गई, घायल होने या मारे जाने की बात तो दूर की है।
अब अब्दुस सलाम फिर से खड़े हो गए। सदन के चारों ओर से आक्रोश भरी आवाजें उठने लगीं: 'बैठ जाओ, बैठ जाओ।' 'शर्मनाक!' 'तुम अपने ही पक्ष पर हमला क्यों कर रहे हो?'
‘उसे क्यों बैठना चाहिए?’ ‘तुम क्या छिपाना चाहते हो?’ ‘तुम कांग्रेस सदस्य हो—तुम्हें बेहतर पता होना चाहिए।’
लेकिन स्थिति इतनी अभूतपूर्व थी कि उनके हस्तक्षेप का विरोध करने वाले भी उत्सुक थे।
जब चीख-पुकार धीमी होकर अस्पष्ट फुसफुसाहट में बदल गई, तो अब्दस सलाम, जो अभी भी कुछ उलझन में दिख रहे थे, ने पूछा: 'इस चर्चा के दौरान मैं यही सोच रहा था कि आखिर मंदिर स्थल पर पर्याप्त पुलिस बल (या कम से कम पर्याप्त पुलिस बल) क्यों नहीं तैनात किया गया था? तब इस तरह से घबराकर गोली चलाने की कोई जरूरत ही नहीं पड़ती।'
गृह मंत्री ने गहरी सांस ली। सब लोग मुझे देख रहे हैं, उन्होंने सोचा। मुझे अपने चेहरे के भावों पर काबू रखना होगा।
अध्यक्ष ने पूछा, 'क्या यह पूरक प्रश्न माननीय मंत्री जी से पूछा गया है?'
‘जी हाँ, महोदय,’ अब्दुस सलाम ने अचानक दृढ़ निश्चय के साथ कहा। ‘मैं

यह प्रश्न वापस नहीं लूंगा। माननीय मंत्री जी हमें यह बताएँगे कि कोतवाली या मंदिर परिसर में पर्याप्त और प्रभावी पुलिस बल क्यों तैनात नहीं किया गया था? इस अत्यंत अशांत क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए केवल एक दर्जन पुलिसकर्मी ही क्यों तैनात थे, खासकर आलमगिरी मस्जिद में शुक्रवार के उपदेश की सामग्री अधिकारियों को पता चलने के बाद?'

यही वह सवाल था जिसका एल.एन. अग्रवाल को डर था, और उन्हें इस बात पर गहरा सदमा और गुस्सा आया कि यह सवाल उनकी ही पार्टी के एक विधायक और वह भी संसदीय सचिव ने पूछा था। वे खुद को असहाय महसूस कर रहे थे। क्या यह महेश कपूर की उन्हें बदनाम करने की साजिश थी? उन्होंने मुख्यमंत्री की ओर देखा, जो भावहीन चेहरे के साथ उनके जवाब का इंतजार कर रहे थे। एल.एन. अग्रवाल को अचानक एहसास हुआ कि वे काफी देर से खड़े हैं और उन्हें पेशाब करने की तीव्र इच्छा हो रही है। और वे जितनी जल्दी हो सके यहां से निकलना चाहते थे। उन्होंने मुख्यमंत्री की तरह टालमटोल का सहारा लेना शुरू किया, लेकिन संसदीय टालमटोल के उस उस्ताद के मुकाबले कहीं ज्यादा घटिया तरीके से। हालांकि, अब उन्हें इसकी परवाह नहीं थी। उन्हें पूरा यकीन था कि यह मुसलमानों और तथाकथित धर्मनिरपेक्ष हिंदुओं की उन पर हमला करने की साजिश है—और उनकी अपनी पार्टी देशद्रोह से ग्रसित हो चुकी है।

अब्दुस सलाम और फिर बेगम आबिदा खान की ओर शांत घृणा भरी निगाहों से देखते हुए उन्होंने कहा: 'मैं केवल इतना ही दोहरा सकता हूं - रिपोर्ट का इंतजार करें।'

एक सदस्य ने पूछा: 'जब पुलिसकर्मियों की वास्तव में चौक में जरूरत थी, तो इतनी बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों को पूरी तरह से अनावश्यक बल

प्रदर्शन के लिए मिसरी मंडी क्यों भेजा गया?'
गृह मंत्री ने सदन में चारों ओर घूरते हुए कहा, 'रिपोर्ट का इंतजार कीजिए,' मानो वे सदस्यों को उन्हें और उकसाने की चुनौती दे रहे हों।
बेगम आबिदा खान खड़ी हो गईं। उन्होंने पूछा, 'क्या सरकार ने इस बेवजह की गोलीबारी के लिए जिम्मेदार जिला मजिस्ट्रेट के खिलाफ कोई कार्रवाई की है?'
यह सवाल उठता ही नहीं है।
'यदि बहुप्रतीक्षित रिपोर्ट से पता चलता है कि बर्खास्तगी अनुचित और अनियमित थी, तो क्या सरकार इस संबंध में कोई कदम उठाने की योजना बना रही है?'
‘समय आने पर पता चल जाएगा। मुझे लगता है ऐसा हो सकता है।’
सरकार क्या कदम उठाने का इरादा रखती है?
‘उचित और पर्याप्त कदम।’
क्या सरकार ने अतीत में इसी तरह की स्थितियों में कोई ऐसे कदम उठाए हैं?
'यह है।'
‘वे कौन-कौन से कदम उठाए गए हैं?’
‘ऐसे कदम जो उचित और उपयुक्त समझे गए।’
बेगम आबिदा खान ने उसे ऐसे देखा जैसे किसी घायल सांप को देख रही हो, जो अपना सिर इधर-उधर घुमाकर अंतिम वार से बच रहा हो। खैर, अभी उसका हिसाब बाकी था।
क्या माननीय मंत्री जी उन वार्डों या मोहल्लों के नाम बताएँगे जहाँ अब लोहे की चोरी पर प्रतिबंध लगा दिया गया है? क्या ये प्रतिबंध हाल ही में हुई गोलीबारी के परिणामस्वरूप लगाए गए हैं? यदि हाँ, तो इन्हें पहले क्यों नहीं लगाया गया?

गृह मंत्री ने राजचिह्न में बने पीपल के पेड़ को देखा और कहा:
सरकार का मानना है कि माननीय सदस्य द्वारा "ठंडा स्टील" वाक्यांश से तात्पर्य तलवारें, कटारें, कुल्हाड़ियाँ और इसी तरह के हथियारों जैसी वस्तुओं से है।
बेगम आबिदा खान ने व्यंग्य भरे लहजे में कहा, "पुलिस ने गृहिणियों से घरेलू चाकू भी जब्त किए हैं। अच्छा, ये मोहल्ले कौन से हैं?"
‘चौक, हजरत महल और कैप्टनगंज,’ एल.एन. अग्रवाल ने कहा।
‘मिसरी मंडी नहीं?’
'नहीं।'
'हालांकि सबसे ज्यादा पुलिस बल वहीं तैनात था?' बेगम आबिदा खान ने सवाल पर जोर देते हुए कहा।
'पुलिस को बड़ी संख्या में वास्तविक समस्या वाले क्षेत्रों में तैनात करना पड़ा—' एल.एन. अग्रवाल ने कहना शुरू किया।
वह अचानक रुक गया, उसे बहुत देर बाद एहसास हुआ कि उसने जो कहना शुरू किया था उससे वह खुद को कैसे उजागर कर चुका था।
‘तो माननीय मंत्री जी ने स्वीकार किया—’ बेगम आबिदा खान ने विजयी भाव से चमकती आंखों के साथ कहना शुरू किया।
गृह मंत्री ने उससे प्राप्त किए गए कबूलनामे से स्तब्ध होकर कहा, 'सरकार कुछ भी स्वीकार नहीं करती। रिपोर्ट में सब कुछ विस्तार से बताया जाएगा।'
बेगम आबिदा खान ने तिरस्कार भरी मुस्कान के साथ यह निर्णय लिया कि प्रतिक्रियावादी, उग्र और मुस्लिम-विरोधी गुंडे ने अपने ही मुख से खुद को दोषी ठहराने के लिए पर्याप्त बयान दे दिए हैं, इसलिए अब उसे और अधिक आलोचना की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने अपने प्रश्न धीरे-धीरे समाप्त कर दिए।

‘कोल्ड स्टील पर ये प्रतिबंध क्यों लगाए गए?’
‘अपराधों और हिंसा की घटनाओं को रोकने के लिए।’
‘घटनाएँ?’
‘जैसे कि उग्र भीड़ द्वारा किए गए दंगे,’ उसने थकी हुई क्रोध भरी आवाज में चिल्लाकर कहा।
बेगम आबिदा खान ने लगभग हंसते हुए पूछा, 'ये प्रतिबंध कब तक जारी रहेंगे?'
जब तक उन्हें वापस नहीं ले लिया जाता।
और सरकार इन प्रतिबंधों को कब वापस लेने का प्रस्ताव रखती है?
जैसे ही परिस्थिति अनुकूल होगी।
बेगम आबिदा खान धीरे से बैठ गईं।
इसके बाद सदन को स्थगित करने का प्रस्ताव आया ताकि गोलीबारी के मुद्दे पर चर्चा की जा सके, लेकिन अध्यक्ष ने इसे तुरंत खारिज कर दिया। स्थगन प्रस्ताव केवल संकट या आपातकाल की अत्यंत असाधारण परिस्थितियों में ही स्वीकार किए जाते थे, जहाँ चर्चा में देरी संभव न हो; इन्हें स्वीकार करना या न करना पूर्णतः अध्यक्ष के विवेक पर निर्भर था। पुलिस गोलीबारी का मुद्दा, भले ही वह कोई मुद्दा होता—जो उनके विचार में था ही नहीं—पर पहले ही पर्याप्त चर्चा हो चुकी थी। उस असाधारण, लगभग अदम्य महिला के प्रश्न वस्तुतः एक बहस का विषय बन चुके थे।
अध्यक्ष ने दिन के कार्यसूची के अगले बिंदुओं पर चर्चा शुरू की: पहला, राज्य विधानमंडल द्वारा पारित उन विधेयकों की घोषणा जिन्हें राज्य के राज्यपाल या भारत के राष्ट्रपति की सहमति प्राप्त थी; दूसरा, पूरे सत्र के एजेंडे का सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा: जमींदारी उन्मूलन विधेयक पर जारी बहस।
लेकिन एल.एन. अग्रवाल विधेयक पर चर्चा सुनने के लिए नहीं रुके।

अध्यक्ष द्वारा स्थगन प्रस्ताव को अस्वीकार किए जाने के तुरंत बाद, वे भाग निकले—सीधे हॉल के उस पार निकास द्वार की ओर नहीं, बल्कि एक गलियारे से होते हुए परिधि दीर्घा की ओर और फिर अंधेरी, लकड़ी की दीवारों के सहारे आगे बढ़े। उनके चलने के तरीके से उनका तनाव और आक्रोश स्पष्ट झलक रहा था। वे अनजाने में अपने आदेश पत्र को हाथ में मसल रहे थे। कई सदस्यों ने उनसे बात करने और सहानुभूति जताने की कोशिश की। उन्होंने उन्हें अनसुना कर दिया। वे बिना देखे निकास द्वार की ओर चले गए और सीधे बाथरूम की ओर बढ़ गए।

5.8

एल.एन. अग्रवाल ने अपने पायजामे की डोरी खोली और मूत्रालय के पास खड़े हो गए। लेकिन वे इतने गुस्से में थे कि कुछ देर तक पेशाब नहीं कर पाए।

उसने सफेद टाइलों वाली लंबी दीवार को घूरकर देखा और उसमें खचाखच भरे कक्ष की छवि देखी, बेगम आबिदा खान का ताना मारने वाला चेहरा, अब्दस सलाम की गंभीर अकादमिक अभिव्यक्ति, महेश कपूर की समझ से परे भौंहें, और मुख्यमंत्री के चेहरे पर धैर्यपूर्ण लेकिन तिरस्कारपूर्ण भाव, जब वह प्रश्नकाल के जहरीले दलदल में दयनीय रूप से लड़खड़ा रहे थे।

शौचालय में दो सफाईकर्मियों के अलावा कोई नहीं था, और वे आपस में बातें कर रहे थे। उनकी बातचीत के कुछ शब्द एल.एन. अग्रवाल के गुस्से को भड़का रहे थे। वे सरकारी राशन दुकानों पर भी अनाज मिलने में आ रही दिक्कतों की शिकायत कर रहे थे। वे बेफिक्री से बातें कर रहे थे, शक्तिशाली गृह मंत्री पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहे थे और अपने काम पर भी बहुत कम। जैसे-जैसे उनकी बातें जारी रहीं, एल.एन. अग्रवाल को एक अजीब सा एहसास होने लगा। वे अपनी ही दुनिया, अपने ही जुनून,

महत्वाकांक्षाओं, नफरतों और आदर्शों से बाहर निकलकर, अपने अलावा दूसरे लोगों के निरंतर और जरूरी जीवन का एहसास करने लगे। उन्हें खुद पर थोड़ी शर्म भी आई।

सफाईकर्मी अब एक फिल्म के बारे में चर्चा कर रहे थे जिसे उनमें से एक ने देखा था। संयोग से वह फिल्म दीदार थी।

लेकिन दलीप कुमार की भूमिका—ओह—उसने मेरी आँखों में आंसू ला दिए— वो सबसे उदास गाने गाते समय भी अपने होठों पर हमेशा एक शांत मुस्कान रखते हैं— कितने अच्छे स्वभाव के इंसान— स्वयं अंधे होकर भी पूरी दुनिया को आनंद देते हैं—'

वह फिल्म के हिट गानों में से एक को गुनगुनाने लगा—'बचपन के दिनों को मत भूलो. . . .'

दूसरा व्यक्ति, जिसने अभी तक फिल्म नहीं देखी थी, गाने में शामिल हो गया - जो फिल्म रिलीज होने के बाद से लगभग हर किसी की जुबान पर था।

अब उन्होंने कहा: 'पोस्टर पर नरगिस इतनी खूबसूरत लग रही थीं कि मैंने सोचा कि मैं कल रात फिल्म देख लूँगा, लेकिन मेरी पत्नी मेरी तनख्वाह मिलते ही मुझसे पैसे ले लेती है।'

पहले आदमी ने हंसते हुए कहा, 'अगर वह तुम्हें पैसे रखने देती, तो उसे सिर्फ खाली लिफाफे और खाली बोतलें ही दिखाई देतीं।'

दूसरा आदमी उदास होकर अपनी नायिका की दिव्य छवि को याद करने की कोशिश करता रहा। 'तो बताओ, वह कैसी थी? उसका अभिनय कैसा था? कितना बड़ा अंतर था—वह सस्ती नाचने वाली लड़की निम्मी या पिम्मी या जो भी उसका नाम था—और नरगिस—इतनी उच्च कोटि की, इतनी कोमल।'

पहले आदमी ने गुस्से में कहा, 'मुझे तो निम्मी ही चाहिए, मैं नरगिस के

साथ रहने से बेहतर उसके साथ रहना पसंद करूंगा—नरगिस बहुत पतली है, बहुत घमंडी है। वैसे भी, उनके बीच वर्ग का क्या फर्क है? वो भी तो उन्हीं में से एक थी।'

दूसरा आदमी चौंक गया। 'नर्गिस?'

'जी हां, आपकी नरगिस। आपको क्या लगता है, उन्हें फिल्मों में पहला मौका कैसे मिला?' यह कहकर वह हँस पड़ा और फिर से गुनगुनाने लगा। दूसरा आदमी चुप रहा और एक बार फिर फर्श साफ करने लगा।

सफाईकर्मियों की बातें सुनते हुए एल.एन. अग्रवाल के विचार नरगिस से हटकर एक और 'ऐसी ही' महिला सईदा बाई और महेश कपूर के बेटे के साथ उनके संबंधों की आम चर्चा की ओर मुड़ गए। अच्छा! उन्होंने सोचा। महेश कपूर भले ही अपने बारीक कढ़ाई वाले कुर्ते कड़क कर लें, लेकिन उनका बेटा वेश्याओं के चरणों में पड़ा रहता है।

हालांकि क्रोध पहले से कुछ कम था, फिर भी वह एक बार फिर राजनीति और प्रतिद्वंद्विता की अपनी जानी-पहचानी दुनिया में प्रवेश कर चुका था। वह घुमावदार गलियारे से होते हुए अपने कमरे की ओर बढ़ा। हालांकि, वह जानता था कि जैसे ही वह अपने कार्यालय में प्रवेश करेगा, उसके चिंतित समर्थक उस पर टूट पड़ेंगे। पिछले कुछ मिनटों में उसने जो थोड़ी-बहुत शांति प्राप्त की थी, वह भी नष्ट हो जाएगी।

'नहीं—मैं इसके बजाय पुस्तकालय जाऊंगा,' उसने मन ही मन बुदबुदाया।

ऊपर, विधानसभा पुस्तकालय के ठंडे और शांत परिसर में, वे बैठ गए, अपनी टोपी उतारी और ठुड्डी को हाथों पर टिका लिया। कुछ अन्य विधायक लंबी लकड़ी की मेजों पर बैठे पढ़ रहे थे। उन्होंने ऊपर देखा, उनका अभिवादन किया और अपने काम में लग गए। एल.एन. अग्रवाल ने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपने मन को खाली करने की कोशिश

की। नीचे बैठे विधायकों का सामना करने से पहले उन्हें अपनी शांति फिर से स्थापित करनी थी। लेकिन उनके सामने जो छवि उभरी, वह उनकी चाहत के अनुसार खालीपन नहीं थी, बल्कि शौचालय की दीवार का बनावटी खालीपन था। उनके विचार एक बार फिर उग्र बेगम आबिदा खान की ओर मुड़ गए, और एक बार फिर उन्हें अपने क्रोध और अपमान को दबाना पड़ा। इस निर्लज्ज, दिखावटी महिला, जो एकांत में सिगरेट पीती थी और सार्वजनिक रूप से चीखती थी, जिसने अपने पति के पाकिस्तान जाने पर उसका साथ तक नहीं दिया, बल्कि बेशर्मी से और बिना पति के पूर्व प्रदेश में रहकर परेशानी खड़ी करती रही, और उसकी दिवंगत पत्नी, प्रिया की मां, जिसने वर्षों तक निस्वार्थ देखभाल और प्यार से उसके जीवन को मधुर बनाया था, के बीच कितना कम अंतर था।

एल.एन. अग्रवाल ने सोचा, "अब जब उस महिला का पति पाकिस्तान में रह रहा है, तो क्या बैतर हाउस के कुछ हिस्से को विस्थापितों की संपत्ति माना जा सकता है? संरक्षक को सूचना दो, पुलिस को आदेश भेजो, और फिर देखते हैं मैं क्या कर पाता हूँ।"

दस मिनट सोचने के बाद, वह उठा, दोनों विधायकों को सिर हिलाकर अभिवादन किया और अपने कमरे में नीचे चला गया।

जब वे पहुंचे तो कुछ विधायक पहले से ही उनके कमरे में बैठे थे, और अगले कुछ मिनटों में कई और विधायक इकट्ठा हो गए क्योंकि उन्हें पता चला कि वे सभा कर रहे हैं। शांत और हल्के से मुस्कुराते हुए, एल.एन. अग्रवाल ने हमेशा की तरह अपना भाषण दिया। उन्होंने अपने उत्तेजित समर्थकों को शांत किया, मामले को सही परिप्रेक्ष्य में रखा और रणनीति बनाई। एक विधायक ने अपने नेता के प्रति सहानुभूति जताई क्योंकि मिसरी मंडी और चौक की दोहरी विपत्ति उन पर एक साथ आ पड़ी थी, इस पर एल.एन. अग्रवाल ने जवाब दिया:

‘आप इस बात का जीता-जागता उदाहरण हैं कि एक अच्छा इंसान अच्छा राजनेता नहीं बन सकता। जरा सोचिए—अगर आपको कई घिनौने काम करने पड़ें, तो क्या आप चाहेंगे कि जनता उन्हें भूल जाए या याद रखे?’
स्पष्टतः इसका उत्तर 'उन्हें भूल जाओ' कहने का इरादा था, और यही विधायक की प्रतिक्रिया थी।
‘जितनी जल्दी हो सके?’ एल.एन. अग्रवाल ने पूछा।
‘जितनी जल्दी हो सके, मंत्री महोदय।’
एल.एन. अग्रवाल ने कहा, “अगर आपको कई घिनौने काम करने हों, तो इसका जवाब यही है कि उन्हें एक साथ करें। लोग अपनी शिकायतें बिखेरेंगे, एक जगह केंद्रित नहीं करेंगे। जब मामला शांत होगा, तो पांच में से कम से कम दो या तीन लड़ाइयाँ आपकी ही होंगी। और जनता की याददाश्त जल्दी कमजोर हो जाती है। चौक में हुई गोलीबारी और उन मारे गए दंगाइयों की बात करें, तो एक हफ्ते में ये सब पुरानी खबर हो जाएगी।”
विधायक संशय में दिखे, लेकिन सहमति में सिर हिलाया।
एल.एन. अग्रवाल ने आगे कहा, ‘इधर-उधर से सबक सिखाने से किसी को कोई नुकसान नहीं होता। या तो शासन करो, या मत करो। अंग्रेजों को पता था कि कभी-कभी उन्हें उदाहरण पेश करना पड़ता है—इसीलिए उन्होंने 1857 में विद्रोहियों को तोपों से उड़ा दिया था। वैसे भी, लोग तो हमेशा मरते ही रहते हैं—और मैं भूख से मरने की बजाय गोली से मरना पसंद करूंगा।’
कहने की जरूरत नहीं, यह उनके सामने कोई विकल्प नहीं था। लेकिन वे दार्शनिक मनोदशा में थे।
‘हमारी समस्याएं बहुत सीधी-सादी हैं, आप जानते हैं। असल में, ये सब दो ही बातों पर आकर टिकती हैं: भोजन की कमी और नैतिकता की

कमी। और दिल्ली में हमारे शासकों की नीतियां—मैं क्या कहूँ?—भी कुछ खास मदद नहीं करतीं।'

'अब जब सरदार पटेल की मृत्यु हो गई है, तो पंडितजी को कोई नियंत्रित नहीं कर सकता,' एक युवा लेकिन बेहद रूढ़िवादी विधायक ने टिप्पणी की।

'पटेल की मृत्यु से पहले नेहरू किसकी बात सुनते थे?' एल.एन. अग्रवाल ने तिरस्कारपूर्ण लहजे में कहा। 'सिवाय, बेशक, उनके महान मुस्लिम मित्र मौलाना आजाद के।'

उन्होंने अपने भूरे बालों को कसकर पकड़ा, फिर अपने निजी सहायक की ओर मुड़े। 'मुझे चौकीदार से फोन पर बात कराओ।'

'क्या आप शत्रु संपत्ति के संरक्षक हैं, महोदय?' सहायक कर्मचारी ने पूछा।

गृह मंत्री ने बड़ी शांति से, धीरे-धीरे और सीधे उसकी आँखों में देखते हुए, अपने कुछ हद तक लापरवाह सहायक से कहा: 'कोई युद्ध नहीं चल रहा है। ईश्वर ने तुम्हें जो बुद्धि दी है, उसका उपयोग करो। मैं विस्थापितों की संपत्ति के संरक्षक से बात करना चाहता हूँ। मैं उनसे पंद्रह मिनट में बात करूँगा।'

कुछ देर बाद उन्होंने आगे कहा, "आज हमारी स्थिति देखिए। हम अमेरिका से खाने की भीख मांगते हैं, हमें चीन और रूस से जो कुछ भी मिलता है, वही खरीदना पड़ता है, हमारे पड़ोसी राज्य में तो मानो अकाल पड़ा हुआ है। पिछले साल भूमिहीन मजदूर पांच-पांच रुपये में अपना काम बेच रहे थे। और किसानों और व्यापारियों को खुली छूट देने के बजाय ताकि वे अधिक उत्पादन कर सकें, चीजों का बेहतर भंडारण कर सकें और उन्हें कुशलतापूर्वक वितरित कर सकें, दिल्ली हम पर मूल्य नियंत्रण, सरकारी गोदाम, राशनिंग और हर संभव लोकलुभावन और बिना सोचे-

समझे उपाय थोपने के लिए मजबूर कर रही है। सिर्फ उनके दिल ही नरम नहीं हैं, बल्कि उनके दिमाग भी नरम हैं।”

किसी ने कहा, 'पंडितजी की मंशा अच्छी है।'

‘अच्छी नीयत से—अच्छी नीयत से—’ एल.एन. अग्रवाल ने आह भरी। ‘जब उन्होंने पाकिस्तान सौंप दिया, तब भी उनकी नीयत अच्छी थी। जब उन्होंने कश्मीर का आधा हिस्सा सौंप दिया, तब भी उनकी नीयत अच्छी थी। अगर पटेल न होते, तो आज हमारे पास यह देश भी न होता। जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पूरी जिंदगी अच्छी नीयत से ही जी है। गांधीजी उन्हें इसलिए प्यार करते थे क्योंकि उनकी नीयत अच्छी थी। और ये बेचारे, मूर्ख लोग भी उन्हें इसलिए प्यार करते हैं क्योंकि उनकी नीयत अच्छी है। भगवान हमें अच्छी नीयत वाले लोगों से बचाए। और ये हर महीने मुख्यमंत्रियों को लिखे जाने वाले नेक नीयत वाले पत्र। इन्हें लिखने की जहमत ही क्यों उठाते हैं? मुख्यमंत्री इन्हें पढ़कर खुश नहीं होते।’ उन्होंने सिर हिलाया और आगे कहा: ‘क्या आप जानते हैं उनमें क्या होता है? कोरिया और जनरल मैकआर्थर की बर्खास्तगी पर लंबे-लंबे उपदेश। जनरल मैकआर्थर हमारे लिए क्या हैं?—फिर भी हमारे प्रधानमंत्री इतने नेक और संवेदनशील हैं कि वे दुनिया की सारी बुराइयों को अपनी मानते हैं। नेपाल और मिस्र और न जाने किन-किन देशों के बारे में उनकी नीयत अच्छी है, और हमसे भी यही उम्मीद करते हैं।’ उन्हें प्रशासन की ज़रा भी समझ नहीं है, फिर भी वे खाद्य समितियों के गठन के बारे में बातें करते हैं। न ही उन्हें हमारे समाज और हमारे शास्त्रों की समझ है, फिर भी वे अपने अद्भुत हिंदू संहिता विधेयक के माध्यम से हमारे पारिवारिक जीवन और पारिवारिक नैतिकता को पलटना चाहते हैं।

अगर उनके सहायक कर्मचारी ने यह न कहा होता कि, 'महोदय, चौकीदार फोन पर हैं,' तो एल.एन. अग्रवाल काफी देर तक अपना प्रवचन देते रहते।

‘ठीक है,’ एल.एन. अग्रवाल ने हाथ के हल्के इशारे से कहा, जिसे बाकी लोग जाने का संकेत समझ गए। ‘आप सभी से कैंटीन में मिलेंगे।’

अकेले रह जाने पर, गृह मंत्री ने विस्थापित संपत्ति के संरक्षक से दस मिनट तक बात की। चर्चा सटीक और नीरस थी। कुछ और मिनटों तक गृह मंत्री अपनी मेज पर बैठे रहे, यह सोचते हुए कि क्या उन्होंने मामले के किसी पहलू को अस्पष्ट या असुरक्षित छोड़ दिया है। अंत में वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि उन्होंने ऐसा नहीं किया था।

फिर वह उठा और थके-हारे कदमों से असेंबली कैंटीन की ओर चल पड़ा। पुराने दिनों में उसकी पत्नी उसके लिए टिफिन में उसकी पसंद का सादा खाना भेजा करती थी। अब वह लापरवाह रसोइयों और उनके संस्थागत खान-पान के भरोसे था। तपस्या की भी एक सीमा होती है।

घुमावदार गलियारे से गुज़रते हुए उसे उस केंद्रीय कक्ष की याद आ गई जिसके चारों ओर गलियारे बने हुए थे—वह विशाल, गुंबददार कक्ष जिसकी ऊँचाई और भव्यता ने नीचे चल रही उन्मत्त और पक्षपातपूर्ण गतिविधियों को लगभग नगण्य बना दिया था। लेकिन उसकी यह अंतर्दृष्टि क्षण भर के लिए ही सही, उसके मन को आज सुबह की घटनाओं और उनसे उत्पन्न कड़वाहट से अलग कर पाई, और न ही उसे कुछ मिनट पहले की अपनी योजनाओं और तैयारियों पर ज़रा भी पछतावा हुआ।

5.9

अपने संसदीय सचिव को लाने के लिए चपरासी को भेजे हुए अभी पाँच मिनट भी नहीं बीते थे, फिर भी महेश कपूर विधि सलाहकार कार्यालय में बड़ी बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे थे। वे अकेले थे, क्योंकि उन्होंने कार्यालय के नियमित कर्मचारियों को विभिन्न कागजात और कानून की किताबें लाने के लिए भेज दिया था।

‘आह, हुजूर आखिरकार सचिवालय में आ ही गए!’ उन्होंने अब्दस सलाम

को देखकर कहा।
अब्दुस सलाम ने आदरपूर्वक—या व्यंग्यात्मक रूप से?—आदाब किया और पूछा कि वह क्या कर सकता है।
मैं उस पर अभी आता हूँ। सवाल यह है कि आपने अब तक क्या किया है।
'पहले से ही?' अब्दुस सलाम अप्रसन्न था।
'आज सुबह। सदन के पटल पर। हमारे माननीय गृह मंत्री की जमकर आलोचना की गई।'
मैंने तो बस यही पूछा था—
'मुझे पता है आपने क्या पूछा था, सलाम,' उनके मंत्री ने मुस्कुराते हुए कहा।
मैं आपसे पूछ रहा हूं कि आपने यह सवाल क्यों पूछा।
मैं सोच रहा था कि पुलिस ऐसा क्यों कर रही है—
महेश कपूर ने स्नेहपूर्वक कहा, 'मेरे प्यारे मूर्ख, क्या तुम्हें यह एहसास नहीं है कि लक्ष्मी नारायण अग्रवाल को लगता है कि मैंने ही तुम्हें इसके लिए उकसाया था?'
'आप?'
'जी हां, मैं ही!' महेश कपूर सुबह की घटनाओं और अपने प्रतिद्वंदी की अत्यधिक परेशानी के बारे में सोचकर खुश थे। 'बिल्कुल यही वो करता है —इसलिए वो मेरे बारे में भी यही सोचता है। बताओ'—उन्होंने आगे कहा —'क्या वो लंच के लिए कैंटीन गया था?'
'ओह हां।'
'और क्या मुख्यमंत्री वहां मौजूद थे? उन्होंने क्या कहा?'
नहीं, शर्मा साहब वहां नहीं थे।
महेश कपूर की आंखों के सामने एस.एस. शर्मा की वह छवि कौंध गई

जिसमें वह घर पर पारंपरिक रूप से फर्श पर बैठकर दोपहर का भोजन कर रहे थे, उनके शरीर का ऊपरी हिस्सा उनके पवित्र धागे के अलावा नंगा था।

'नहीं, मुझे नहीं लगता,' उसने कुछ अफसोस के साथ कहा। 'तो, वह कैसे प्रकट हुआ?'

'आप अग्रवाल साहब की बात कर रहे हैं? मुझे लगता है, वे काफी अच्छे हैं। काफी शांत हैं।'

'उफ़! तुम तो बिलकुल निकम्मे मुखबिर हो,' महेश कपूर ने चिढ़कर कहा। 'खैर, मैं इस बारे में थोड़ा सोच रहा था। बेहतर होगा कि तुम सोच समझकर बोलो, वरना अग्रवाल और मेरे दोनों के लिए मुश्किल खड़ी हो जाएगी। कम से कम ज़मींदारी विधेयक पारित होने तक तो संयम बरतो। इस मामले में सभी को एक-दूसरे के सहयोग की ज़रूरत है।'

'ठीक है, मंत्री महोदय।'

'वैसे, ये लोग अभी तक वापस क्यों नहीं आए?' महेश कपूर ने लीगल रिमेंबरेंसर के कार्यालय में चारों ओर देखते हुए पूछा। 'मैंने इन्हें एक घंटा पहले भेजा था।' यह पूरी तरह सच नहीं था। 'हर कोई हमेशा देर से आता है और इस देश में समय की कोई कद्र नहीं करता। यही हमारी मुख्य समस्या है... जी हाँ, क्या बात है? अंदर आइए, अंदर आइए,' उन्होंने दरवाजे पर हल्की दस्तक सुनकर अपनी बात जारी रखी।

यह एक चपरासी था जो अपना दोपहर का भोजन लेकर आया था, जिसे वह आमतौर पर काफी देर से खाता था।

अपना टिफिन बैग खोलते हुए महेश कपूर ने अपनी पत्नी के बारे में एक पल के लिए सोचा, जो अपनी बीमारियों के बावजूद उनके लिए इतना सब कुछ करती थीं। नीम के फूलों से एलर्जी होने के कारण ब्रह्मपुर में अप्रैल का महीना उनके लिए लगभग असहनीय होता था, और यह समस्या वर्षों

से बढ़ती जा रही थी। कभी-कभी, जब नीम के पेड़ फूलते थे, तो उन्हें इतनी सांस फूलने लगती थी जो प्राण के अस्थमा जैसी लगती थी।

इन दिनों वह अपने छोटे बेटे के सईदा बाई के साथ प्रेम संबंध से भी बहुत परेशान थीं। महेश कपूर ने अब तक इस मामले को उतना गंभीरता से नहीं लिया था जितना कि अगर उन्हें मान के प्रेम की गंभीरता का पता चल जाता तो वे लेते। वे लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित करने वाले मामलों में इतने व्यस्त थे कि उनके पास अपने पारिवारिक जीवन के अधिक पेचीदा पहलुओं पर ध्यान देने का समय ही नहीं था। उन्होंने सोचा कि मान को कभी न कभी तो सबक सिखाना ही पड़ेगा, लेकिन फिलहाल उन्हें दूसरे काम निपटाने थे।

महेश कपूर ने अपने संसदीय सचिव से कहा, 'इसे थोड़ा सा खा लीजिए: मुझे लगता है कि मैं आपको दोपहर के भोजन से दूर ले आया हूं।'

'नहीं, धन्यवाद, मंत्री जी, जब आपने मुझे बुलाया तब तक मेरा काम समाप्त हो चुका था। तो क्या आपको लगता है कि विधेयक के संबंध में सब कुछ ठीक चल रहा है?'

'हां, मूल रूप से—कम से कम सदन में तो ऐसा ही है, है ना? अब जबकि यह विधान परिषद से कुछ मामूली बदलावों के साथ वापस आ गया है, तो विधानसभा द्वारा इसे संशोधित रूप में दोबारा पारित करवाना मुश्किल नहीं होना चाहिए। बेशक, कुछ भी निश्चित नहीं है।' महेश कपूर ने अपने टिफिन बैग में देखा। थोड़ी देर बाद उन्होंने आगे कहा: 'आह, अच्छा, फूलगोभी का अचार। . . . मुझे असल में इस बात की चिंता है कि अगर यह विधेयक पारित हो जाता है तो बाद में इसका क्या होगा।'

अब्दुस सलाम ने कहा, 'कानूनी चुनौतियाँ कोई बड़ी समस्या नहीं होनी चाहिए। इसे अच्छी तरह से तैयार किया गया है, और मुझे लगता है कि यह स्वीकार्य होगा।'

'क्या आपको ऐसा लगता है, सलाम? पटना उच्च न्यायालय द्वारा बिहार जमींदारी अधिनियम को रद्द किए जाने के बारे में आपका क्या विचार है?' महेश कपूर ने पूछा।

'मुझे लगता है कि लोग जरूरत से ज्यादा चिंतित हैं, मंत्री महोदय। जैसा कि आप जानते हैं, ब्रह्मपुर उच्च न्यायालय पटना उच्च न्यायालय के फैसलों का पालन करने के लिए बाध्य नहीं है। यह केवल दिल्ली स्थित सर्वोच्च न्यायालय के फैसलों से ही बंधा हुआ है।'

महेश कपूर ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'सैद्धांतिक रूप से यह सच हो सकता है। व्यवहार में, पिछले फैसले मनोवैज्ञानिक मिसालें कायम करते हैं। विधेयक पारित होने के इस अंतिम चरण में भी हमें इसमें संशोधन करने का कोई न कोई तरीका ढूंढना होगा ताकि कानूनी चुनौतियों का सामना करना इसके लिए आसान हो सके—खासकर समान संरक्षण के मुद्दे पर।'

कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। मंत्री जी अपने विद्वान युवा सहकर्मी का बहुत सम्मान करते थे, लेकिन उन्हें यह उम्मीद नहीं थी कि वे कम समय में कोई उत्कृष्ट समाधान निकाल पाएंगे। फिर भी, वे इस विशेष क्षेत्र में उनके अनुभव का आदर करते थे और जानते थे कि उनकी बुद्धि ही सर्वोत्तम विकल्प है।

एक मिनट बाद अब्दुस सलाम ने कहा, 'कुछ दिन पहले मेरे मन में एक विचार आया। मंत्री महोदय, मुझे इस बारे में थोड़ा और सोचने दीजिए। शायद मेरे पास एक-दो उपयोगी सुझाव हों।'

राजस्व मंत्री ने अपने संसदीय सचिव की ओर लगभग मनोरंजक भाव से देखा और कहा:

मुझे आज रात तक अपने विचारों का मसौदा दे दो।

'आज रात तक?' अब्दस सलाम आश्चर्यचकित रह गया।

'जी हां,' महेश कपूर ने कहा। 'विधेयक का दूसरा वाचन हो रहा है। अगर

कुछ करना है तो अभी करना होगा।'

अब्दुस सलाम ने स्तब्ध चेहरे के साथ कहा, 'अच्छा, मुझे तुरंत पुस्तकालय जाना चाहिए।' दरवाजे पर पहुँचकर वह मुड़ा और बोला, 'शायद आप आज दोपहर बाद कानूनी सलाहकार से उनके मसौदा तैयार करने वाले विभाग से कुछ लोगों को मेरे पास भेजने के लिए कह सकते हैं। लेकिन क्या आज दोपहर विधेयक पर चर्चा के दौरान आपको मेरी आवश्यकता नहीं होगी?'

'नहीं, यह कहीं अधिक महत्वपूर्ण है,' मंत्री जी ने हाथ धोने के लिए उठते हुए उत्तर दिया। 'इसके अलावा, मुझे लगता है कि आपने सदन में आज के लिए काफी हंगामा कर दिया है।'

हाथ धोते हुए महेश कपूर अपने पुराने मित्र, बैतर के नवाब के बारे में सोच रहे थे। ज़मींदारी उन्मूलन विधेयक पारित होने से सबसे अधिक प्रभावित होने वालों में वे भी शामिल होंगे। रुधिया जिले के बैतर के आसपास की उनकी ज़मीनें, जिनसे संभवतः उनकी आय का दो-तिहाई हिस्सा आता था, यदि यह विधेयक लागू हो जाता, तो पूर्व प्रदेश राज्य के अधीन आ जातीं। उन्हें मुआवज़ा बहुत कम मिलता। किरायेदारों को अपनी खेती की ज़मीन खरीदने का अधिकार होता, और जब तक वे ऐसा नहीं करते, उनका किराया नवाब साहब के खजाने में नहीं, बल्कि सीधे राज्य सरकार के राजस्व विभाग के पास जाता। हालांकि, महेश कपूर को विश्वास था कि वे सही काम कर रहे हैं। यद्यपि उनका निर्वाचन क्षेत्र शहरी था, फिर भी वे रुधिया जिले में अपने खेत में इतने लंबे समय तक रहे थे कि उन्होंने अपने आसपास के ग्रामीण इलाकों पर ज़मींदारी व्यवस्था के विनाशकारी प्रभावों को देखा था। उन्होंने अपनी आँखों से उत्पादकता की कमी और उसके परिणामस्वरूप भुखमरी, भूमि सुधार में निवेश का अभाव, सामंती अहंकार और गुलामी के सबसे बुरे रूप, और जमींदारों के गुंडों और

बाहुबलियों द्वारा कमजोर और दुखी लोगों पर किए जाने वाले मनमाने अत्याचार को देखा था। यदि नवाब साहब जैसे कुछ भले लोगों की जीवनशैली को लाखों किरायेदार किसानों के व्यापक हित के लिए कुर्बान करना पड़े, तो यह वह कीमत थी जिसे चुकाना ही था।

अपने हाथ धोने के बाद, महेश कपूर ने उन्हें सावधानीपूर्वक सुखाया, कानूनी सलाहकार के लिए एक नोट छोड़ा और विधान भवन की ओर चल दिए।

5.10

बैतर हाउस, जो नवाब साहब और उनके बेटों का पैतृक निवास था, ब्रह्मपुर की सबसे खूबसूरत इमारतों में से एक था। एक लंबा, हल्के पीले रंग का अग्रभाग, गहरे हरे रंग के शटर, स्तंभों की कतारें, ऊंची छतें, बड़े-बड़े दर्पण, बेहद भारी गहरे रंग का फर्नीचर, झूमर, पूर्व के कुलीन निवासियों के तेलचित्र और गलियारों में विभिन्न उच्च ब्रिटिश अधिकारियों की यात्राओं की याद दिलाने वाली फ़्रेमयुक्त तस्वीरें: इस विशाल घर में आने वाले अधिकांश आगंतुक, अपने परिवेश का अवलोकन करते हुए, एक प्रकार के उदास विस्मय में डूब जाते थे - हाल के दिनों में हवेली के उन बड़े हिस्सों की धूल भरी और उपेक्षित स्थिति ने इस विस्मय को और भी बढ़ा दिया है, जिनके पूर्व निवासी पाकिस्तान चले गए थे।

बेगम आबिदा खान भी कभी अपने पति, नवाब साहब के छोटे भाई के साथ यहीं रहती थीं। उन्होंने कई साल महिलाओं के कमरे में तंगी में बिताए, फिर आखिरकार उन्हें राजी कर लिया कि वे उन्हें बाहरी दुनिया से अधिक व्यावहारिक और सीधा संपर्क बनाने की अनुमति दें। वहाँ उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक कार्यों में अपने पति से कहीं अधिक प्रभावी साबित किया था। विभाजन के बाद, उनके पति—जो विभाजन के प्रबल समर्थक थे—ने ब्रह्मपुर में अपनी स्थिति को असुरक्षित महसूस किया और

वहाँ से जाने का फैसला किया। वे पहले कराची गए। फिर—कुछ हद तक इसलिए कि उन्हें पाकिस्तान में बसने के अपने भारतीय संपत्ति और पत्नी के भाग्य पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में अनिश्चितता थी, कुछ हद तक इसलिए कि वे बेचैन थे, और कुछ हद तक इसलिए कि वे धार्मिक थे—वे शियाओं के विभिन्न पवित्र तीर्थस्थलों की यात्रा पर इराक चले गए और वहाँ कुछ वर्षों तक रहने का फैसला किया। उन्हें भारत लौटे तीन साल हो चुके थे, और कोई नहीं जानता था कि उनकी आगे की योजना क्या है। उनके और आबिदा के कोई संतान नहीं थी, इसलिए शायद यह बात ज्यादा मायने नहीं रखती थी।

संपत्ति अधिकारों का पूरा प्रश्न अनसुलझा था। बैतर, मारह की तरह, उत्तराधिकार के नियम के अधीन कोई रियासत नहीं थी, बल्कि एक विशाल जमींदारी जागीर थी जिसका पूरा क्षेत्र ब्रिटिश भारत के भीतर स्थित था और मुस्लिम उत्तराधिकार कानून के अधीन था। मृत्यु या परिवार के विघटन पर संपत्ति का विभाजन संभव था, लेकिन कई पीढ़ियों से कोई प्रभावी विभाजन नहीं हुआ था, और लगभग सभी लोग ब्रह्मपुर या ग्रामीण क्षेत्र में बैतर किले में स्थित उसी बड़े से घर में रहते आ रहे थे, भले ही सौहार्दपूर्ण ढंग से नहीं, लेकिन कम से कम कानूनी विवाद के बिना। निरंतर चहल-पहल, लोगों के आने-जाने, त्योहारों और उत्सवों के कारण, पुरुषों और महिलाओं दोनों के आवासों में एक भव्य ऊर्जा और जीवंतता का माहौल बना रहता था।

विभाजन के साथ ही हालात बदल गए थे। घर अब वह महान सामुदायिक केंद्र नहीं रहा था जो पहले हुआ करता था। कई मायनों में वह अकेलापन महसूस करने लगा था। चाचा-चाची और चचेरे भाई कराची या लाहौर चले गए थे। तीन भाइयों में से एक की मृत्यु हो गई थी, एक कहीं चला गया था, और केवल वह सौम्य विधुर, नवाब साहब ही रह गए थे। वे अपना

ज़्यादातर समय पुस्तकालय में फ़ारसी कविताएँ, रोमन इतिहास या उस दिन जो भी पढ़ने का मन करता, उसे पढ़ने में बिताते थे। उन्होंने बैतर स्थित अपनी जागीर का अधिकांश प्रबंधन—जो उनकी आय का मुख्य स्रोत थी—अपने मुंशी को सौंप दिया था। वह चतुर, आधा प्रबंधक, आधा क्लर्क, उन्हें अपने ज़मींदारी मामलों में ज़्यादा समय बिताने के लिए प्रोत्साहित नहीं करता था। जागीर से संबंधित मामलों के अलावा अन्य मामलों के लिए नवाब साहब ने एक निजी सचिव रखा हुआ था।

पत्नी के देहांत और बढ़ती उम्र के साथ नवाब साहब का सामाजिक व्यवहार कम होता जा रहा था और उन्हें मृत्यु का आभास होने लगा था। वे अपने बेटों के साथ अधिक समय बिताना चाहते थे, लेकिन अब वे बीस वर्ष के हो चुके थे और अपने पिता से स्नेहपूर्ण दूरी बनाए रखते थे। फ़िरोज़ की विधि, इम्तियाज़ की चिकित्सा, उनके युवा मित्रों का समूह, उनके प्रेम प्रसंग (जिनके बारे में उन्हें बहुत कम जानकारी थी) - इन सबने उन्हें बैतर हाउस के दायरे से बाहर कर दिया था। और उनकी प्रिय पुत्री ज़ैनब भी बहुत कम ही आती थीं—लगभग हर कुछ महीनों में एक बार—जब भी उनके पति उन्हें और नवाब साहब के दो पोतों को ब्रह्मपुर आने की अनुमति देते थे।

कभी-कभी तो उन्हें आबिदा की बिजली जैसी तेज उपस्थिति की भी कमी खलती थी, जिसकी बेशर्मी और खुलेपन से नवाब साहब को स्वाभाविक रूप से चिढ़ होती थी। विधायक बेगम आबिदा खान ने ज़नाना के नियमों और हवेली की बंदिशों को मानने से इनकार कर दिया था और अब वे विधानसभा के पास एक छोटे से घर में रह रही थीं। वे अपने न्यायसंगत या उपयोगी समझे जाने वाले मुद्दों के लिए आक्रामक और जरूरत पड़ने पर बेशर्म होने में विश्वास रखती थीं और नवाब साहब को पूरी तरह से निष्प्रभावी मानती थीं। दरअसल, वे अपने पति के बारे में भी अच्छी राय

नहीं रखती थीं, जो उनके अनुसार विभाजन के समय घबराहट में ब्रह्मपुर से 'भाग' गए थे और अब धार्मिक बुढ़ापे की अवस्था में मध्य पूर्व में भटक रहे थे। उनकी भतीजी ज़ैनब, जिनसे उन्हें बहुत लगाव था, उनसे मिलने आई थीं, इसलिए उन्होंने बैतर हाउस का दौरा किया, लेकिन उनसे अपेक्षित पर्दा प्रथा उन्हें खलती रही, और ज़नाना की बुजुर्ग महिलाओं द्वारा उनकी जीवनशैली की आलोचना भी उन्हें परेशान करती रही।

लेकिन आखिर ये बूढ़ी औरतें थीं कौन?—परंपराओं, पुराने स्नेह और पारिवारिक इतिहास की भंडार। नवाब साहब की सिर्फ दो बूढ़ी चाचियाँ और उनके दूसरे भाई की विधवा—उस पूरे व्यस्त ज़नाना में और कोई नहीं बचा था। बैतर हाउस में सिर्फ दो बच्चे थे, जो मिलने आए थे—नवाब साहब के छह और तीन साल के पोते-पोती। उन्हें बैतर हाउस और ब्रह्मपुर आना बहुत पसंद था क्योंकि उन्हें वह विशाल पुराना घर रोमांचक लगता था, क्योंकि वे बंद और सुनसान कमरों के दरवाजों के नीचे से नेवलों को सरकते हुए देख सकते थे, क्योंकि फिरोज मामा और इम्तियाज मामा से लेकर 'पुराने नौकरों' और रसोइयों तक, सभी उनका बहुत ख्याल रखते थे। और क्योंकि उनकी माँ घर से ज़्यादा यहाँ खुश रहती थीं।

*

नवाब साहब को पढ़ते समय कोई भी दखलंदाजी बिल्कुल पसंद नहीं थी, लेकिन उन्होंने अपने पोतों के लिए अपवाद बना दिया था। हसन और अब्बास को पूरे घर में घूमने की पूरी छूट थी। उनका मूड चाहे जैसा भी हो, वे उसे खुशनुमा बना देते थे; और यहाँ तक कि जब वे इतिहास के नीरस सुख में डूबे होते थे, तब भी उन्हें वर्तमान दुनिया में वापस आना अच्छा लगता था, बशर्ते यह उनके माध्यम से व्यक्तिगत रूप से हो। घर के बाकी हिस्सों की तरह, पुस्तकालय भी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था। उनके पिता द्वारा संजोया गया और तीनों भाइयों द्वारा अपनी-अपनी

रुचियों के अनुसार जोड़े गए विशाल संग्रह को एक भव्य, अलकोवनुमा और ऊँची खिड़कियों वाले कमरे में रखा गया था। नवाब साहब, एक नए सिरे से कड़क किए हुए कुर्ते-पायजामे में बैठे हुए थे—कुर्ते में कुछ छोटे-छोटे चौकोर छेद थे जो देखने में कीड़े के छेद जैसे लग रहे थे (लेकिन कौन सा कीड़ा इतनी चौकोर तरह से काटेगा?)—आज सुबह एक आले में गोल मेज पर बैठे हुए थे और अपने भतीजे जी.ओ. ट्रेवेलियन द्वारा चयनित लॉर्ड मैकाले के हाशिये पर लिखे नोट्स पढ़ रहे थे।

शेक्सपियर, प्लेटो और सिसरो पर मैकाले की टिप्पणियाँ जितनी तीखी थीं, उतनी ही विवेकपूर्ण भी थीं, और संपादक को स्पष्ट रूप से विश्वास था कि उनके प्रतिष्ठित चाचा की टिप्पणियाँ प्रकाशन के योग्य थीं। उनकी अपनी टिप्पणियाँ स्पष्ट रूप से प्रशंसात्मक थीं: 'सिसरो की कविता के लिए भी मैकाले ने इतना सम्मान दिखाया कि उन्होंने अच्छी और थोड़ी कम अच्छी कविता के बीच सावधानीपूर्वक अंतर किया,' यह एक वाक्य था जिसे पढ़कर नवाब साहब के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई।

लेकिन नवाब साहब ने आखिर सोचा, क्या करना सार्थक है और क्या नहीं? कम से कम मेरे जैसे लोगों के लिए तो हालात बिगड़ रहे हैं, और मुझे नहीं लगता कि बाकी की जिंदगी नेताओं, किरायेदारों, सिल्वरफिश, दामाद या आबिदा से लड़ते-झगड़ते उन दुनियाओं को बचाने और संवारने में बर्बाद करना उचित है जिन्हें संवारना या बनाए रखना मेरे लिए थका देने वाला काम है। हममें से हर कोई एक छोटे से दायरे में जीता है और कुछ भी हासिल नहीं कर पाता। शायद अगर मेरा कोई प्रतिष्ठित चाचा होता तो मैं एक-दो साल उनके हाशिये पर लिखे नोट्स को संकलित और छापने में बिताता।

और वह इस बात पर विचार करने लगा कि ज़मींदारी प्रथा के उन्मूलन और जागीर के धन के समाप्त होने से बैतर हाउस अंततः खंडहर में

तब्दील हो जाएगा। उसके मुंशी के अनुसार, किरायेदारों से तय किराया वसूलना पहले से ही मुश्किल होता जा रहा था। किरायेदारों ने आर्थिक तंगी का बहाना बनाया, लेकिन इन बहानेबाज़ियों के पीछे यह भावना छिपी थी कि स्वामित्व और निर्भरता के राजनीतिक समीकरण लगातार बदल रहे हैं। नवाब साहब के सबसे मुखर विरोधियों में वे लोग भी शामिल थे जिनके साथ उन्होंने अतीत में असाधारण नरमी, यहाँ तक कि उदारता भी बरती थी, और जिन्हें यह बात माफ़ करना कठिन लग रहा था।

उनके बाद क्या बचेगा? उनके मन में यह विचार आया कि यद्यपि उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय उर्दू कविता में बिताया था, फिर भी उन्होंने एक भी ऐसी कविता, एक भी ऐसा शेर नहीं लिखा था जिसे याद रखा जा सके। उन्होंने सोचा कि जो लोग ब्रह्मपुर में नहीं रहते, वे मस्त की कविता की निंदा करते हैं, लेकिन वे उनकी लिखी कई ग़ज़लों को नींद में भी सुना सकते हैं। उन्हें अचानक यह बात सूझी कि मस्त की कविताओं का कोई भी विद्वतापूर्ण संकलन कभी प्रकाशित नहीं हुआ था, और वे अपनी मेज पर पड़ रही सूर्य की किरण में मौजूद धूल के कणों को घूरने लगे।

शायद, उसने मन ही मन सोचा, इस समय यही वह काम है जिसके लिए मैं सबसे उपयुक्त हूँ। खैर, शायद यही वह काम है जिसमें मुझे सबसे ज़्यादा आनंद आएगा।

वह पढ़ते रहे, मैकाले द्वारा सिसरो के चरित्र के गहन विश्लेषण का आनंद लेते हुए, जिसमें उन्होंने सिसरो को उस कुलीन वर्ग के वश में कर लिया था जिसमें उसे गोद लिया गया था, वह दोहरे चरित्र वाला, घमंड और घृणा से भरा हुआ था, फिर भी निस्संदेह 'महान' था। नवाब साहब, जो इन दिनों मृत्यु के बारे में बहुत सोचते थे, मैकाले की इस टिप्पणी से चौंक गए: 'मुझे सचमुच लगता है कि त्रिमूर्ति ने उसे उसके कर्मों का फल

दिया।'

किताब पर सफेद पाउडर छिड़का होने के बावजूद, एक सिल्वरफिश उसकी जिल्द से निकलकर गोल मेज पर पड़ रही धूप की पट्टी पर रेंगती हुई चली गई। नवाब साहब ने एक पल के लिए उसे देखा और सोचने लगे कि उस नौजवान का क्या हुआ जिसने उनकी लाइब्रेरी का कार्यभार संभालने के लिए इतना उत्साह दिखाया था। उसने बैतर हाउस आने की बात कही थी, लेकिन उसके बाद नवाब साहब ने उससे कम से कम एक महीने पहले ही बात की थी। उन्होंने किताब बंद की और उसे झटक कर फिर से एक पन्ने पर खोला और पढ़ना जारी रखा, मानो नया पैराग्राफ पिछले पैराग्राफ से ही जुड़ा हो।

पूरे पत्राचार संग्रह में जिस दस्तावेज़ की वह सबसे अधिक प्रशंसा करते थे, वह सीज़र का सिसरो के उस संदेश का उत्तर था जिसमें उन्होंने कोर्फीनियम के आत्मसमर्पण के समय सीज़र के अधीन आए राजनीतिक विरोधियों के प्रति दिखाई गई मानवता के लिए आभार व्यक्त किया था। इसमें (जैसा कि मैकाले कहा करते थे) अब तक लिखा गया सबसे बेहतरीन वाक्य था:

मुझे इस बात पर विजय और प्रसन्नता है कि मेरे कार्य को आपकी स्वीकृति मिली; और मुझे इस बात से कोई चिंता नहीं है कि जिन्हें मैंने जीवित और स्वतंत्र रूप से विदा किया है, वे फिर से मेरे विरुद्ध हथियार उठाएंगे; क्योंकि मेरी इससे अधिक कोई इच्छा नहीं है कि मैं स्वयं जैसा हो जाऊं और वे स्वयं जैसे हो जाएं।

नवाब साहब ने वाक्य को कई बार पढ़ा। उन्होंने एक बार लैटिन शिक्षक की मदद ली थी, लेकिन उन्हें कोई खास सफलता नहीं मिली थी। अब वे अंग्रेज़ी के प्रभावशाली वाक्यांशों को मूल वाक्य के और भी अधिक प्रभावशाली वाक्यांशों से जोड़ने का प्रयास कर रहे थे। वे लगभग दस

मिनट तक वाक्य के भाव और शैली पर चिंतन करते रहे, और अगर उनके पायजामे के पैर में किसी ने खिंचाव महसूस न किया होता तो वे ऐसा ही करते रहते।

5.11

उनका छोटा पोता अब्बास उन्हें दोनों हाथों से खींच रहा था। नवाब साहब ने उसे आते हुए नहीं देखा था और उसे देखकर उन्हें सुखद आश्चर्य हुआ। अब्बास के थोड़ा पीछे उसका छह वर्षीय भाई हसन खड़ा था। और हसन के पीछे बूढ़ा नौकर गुलाम रसूल खड़ा था।

नौकर ने घोषणा की कि नवाब साहब और उनकी बेटी के लिए ज़नाना से सटे छोटे कमरे में दोपहर का भोजन तैयार है। उसने हसन और अब्बास को पुस्तकालय में जाने देने के लिए क्षमा भी मांगी, जब नवाब साहब पढ़ रहे थे। 'लेकिन साहब, वे अड़े रहे और बात सुनने को तैयार नहीं थे।'

नवाब साहब ने सहमति में सिर हिलाया और मैकाले और सिसरो से हसन और अब्बास की ओर प्रसन्नतापूर्वक मुड़ गए।

‘नाना-जान, आज हम ज़मीन पर बैठकर खाना खाएंगे या मेज़ पर बैठकर?’ हसन ने पूछा।

‘हम दोनों ही हैं—इसलिए हम अंदर कालीन पर बैठकर खाना खाएंगे,’ उनके दादा ने जवाब दिया।

'ओह, अच्छा,' हसन ने कहा, जो अपने पैर जमीन पर न होने पर घबरा गया था।

तीन साल के अब्बास ने पूछा, 'उस कमरे में क्या है, नाना-जान?' जब वे एक गलियारे से गुजर रहे थे और उनके सामने एक कमरा था जिसमें पीतल का एक विशाल ताला लगा हुआ था।

'नेवले, बिल्कुल,' उनके बड़े भाई ने ज्ञानपूर्वक कहा।

‘नहीं, मेरा मतलब कमरे के अंदर है,’ अब्बास ने जोर देकर कहा।

नवाब साहब ने कहा, 'मुझे लगता है कि हम उसमें कुछ कालीन रखते हैं।' फिर उन्होंने गुलाम रसूल की ओर मुड़कर पूछा, 'हम उसमें क्या रखते हैं?'
'साहिब, लोग कहते हैं कि उस कमरे को बंद किए हुए दो साल हो गए हैं। मुर्तजा अली के पास सारी जानकारी एक सूची में है। मैं उनसे पूछकर आपको बता दूंगा।'
"अरे नहीं, इसकी कोई ज़रूरत नहीं है," नवाब साहब ने अपनी दाढ़ी सहलाते हुए कहा और याद करने की कोशिश की—क्योंकि उन्हें आश्चर्य हुआ कि वे भूल ही गए थे—कि उस कमरे का इस्तेमाल कौन करता था।
"बस इतना ही काफी है कि उसका नाम सूची में है," उन्होंने कहा।
'हमें कोई भूत-प्रेत की कहानी सुनाइए, नाना-जान,' हसन ने अपने दादाजी का दाहिना हाथ खींचते हुए कहा।
'जी हां,' अब्बास ने कहा, जो अपने बड़े भाई के अधिकांश सुझावों से तुरंत सहमत हो जाता था, भले ही उसे समझ न आता हो कि क्या कहा जा रहा है। 'हमें एक भूत की कहानी सुनाओ।'
'नहीं, नहीं,' नवाब साहब ने कहा। 'मुझे भूतों की जितनी भी कहानियां पता हैं, वे सब बहुत डरावनी हैं और अगर मैं आपको एक भी कहानी सुनाऊं तो आप इतने डर जाएंगे कि अपना दोपहर का खाना भी नहीं खा पाएंगे।'
हसन ने कहा, 'हम डरेंगे नहीं।'
अब्बास ने कहा, 'मैं डरा हुआ नहीं हूं।'
वे उस छोटे से कमरे में पहुँचे जहाँ उनका दोपहर का भोजन तैयार था।
नवाब साहब अपनी बेटी को देखकर मुस्कुराए और पास के एक जग से ठंडे पानी से एक छोटे से वॉशबेसिन में अपने और अपने पोतों के हाथ धोए और उन्हें एक छोटी थाली के सामने बैठा दिया जिसमें पहले से ही भोजन परोसा जा चुका था।

नवाब साहब ने पूछा, ‘क्या आपको पता है कि आपके दोनों बेटे मुझसे क्या मांग रहे हैं?’

ज़ैनब ने अपने बच्चों की ओर मुड़कर उन्हें डांटा।

मैंने तुमसे कहा था कि पुस्तकालय में अपनी नानी को परेशान मत करो, लेकिन मेरी पीठ मुड़ते ही तुम अपनी मनमानी करते हो। अब तुम आखिर चाहते क्या हो?

हसन ने कुछ उदास स्वर में कहा, 'कुछ नहीं।'

अब्बास ने मधुर स्वर में दोहराया, 'कुछ नहीं।'

ज़ैनब ने अपने पिता को स्नेह से देखा और उन दिनों को याद किया जब वह उनके हाथों से लिपटकर अपनी ज़िद करती थी और अक्सर उनकी नरमी का सहारा लेकर अपनी माँ की सख्ती को नज़रअंदाज़ कर देती थी। वह अपनी चांदी की थाली के सामने कालीन पर उसी सीधे बैठे थे, जैसे ज़ैनब को अपने बचपन से याद था, लेकिन उनके गालों की पतली त्वचा और उनके कड़क कड़क कुर्ते पर पड़े छोटे-छोटे छेद देखकर ज़ैनब के मन में अचानक कोमलता उमड़ आई। उसकी माँ को गुज़रे दस साल हो गए थे —उसके अपने बच्चे तो उसे सिर्फ़ तस्वीरों और कहानियों से ही जानते थे —और विधवापन के उन दस सालों ने उसके पिता को उतना ही बूढ़ा कर दिया था जितना आम तौर पर बीस साल में हो जाता है।

‘अब्बा-जान, वे क्या मांग रहे हैं?’ ज़ैनब ने मुस्कुराते हुए कहा।

नवाब साहब ने कहा, 'वे भूत-प्रेत की कहानी सुनना चाहते हैं। बिलकुल वैसे ही जैसे आप सुना करते थे।'

‘लेकिन मैंने लंच के समय कभी भूत-प्रेत की कहानी सुनाने के लिए नहीं कहा,’ ज़ैनब ने कहा।

अपने बच्चों से उसने कहा, 'भूत-प्रेत की कहानियाँ मत सुनाओ। अब्बास, अपने खाने से खेलना बंद करो। अगर तुम बहुत अच्छे बच्चे बनोगे तो

शायद तुम्हें रात को सोने से पहले एक कहानी सुनने को मिलेगी।'
'नहीं, अभी! अभी—' हसन ने कहा।
'हसन,' उसकी माँ ने चेतावनी भरे लहजे में कहा।
'अभी! अभी!' हसन रोने और चिल्लाने लगा।
नवाब साहब अपने पोते-पोतियों द्वारा अपनी माँ के प्रति अवज्ञाकारी व्यवहार से बहुत दुखी थे और उन्होंने उन्हें इस तरह बात न करने की हिदायत दी। उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि अच्छे बच्चे ऐसा नहीं करते।
उन्होंने हल्के से फटकार लगाते हुए कहा, 'मुझे उम्मीद है कि वे कम से कम अपने पिता की बात तो सुनेंगे।'
अपनी बेटी के गाल पर आंसू बहते देख वह भयभीत हो गया। उसने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा और पूछा, 'क्या सब ठीक है? क्या वहां सब ठीक है?'
यह कहना स्वाभाविक था, लेकिन कहते ही उन्हें एहसास हुआ कि शायद उन्हें अपने पोते-पोतियों के दोपहर का भोजन समाप्त होने और अपनी बेटी के साथ अकेले रहने तक इंतजार करना चाहिए था। उन्हें अप्रत्यक्ष रूप से पता चला था कि उनकी बेटी की शादी में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है।
'जी हां, अब्बा-जान। बस मुझे लगता है कि मैं थोड़ा थका हुआ हूं।'
जब तक ज़ैनब के आँसू नहीं रुके, उन्होंने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा। बच्चे हैरान-परेशान दिख रहे थे। हालाँकि, उनका कुछ पसंदीदा खाना तैयार हो चुका था और वे जल्द ही अपनी माँ के आँसुओं को भूल गए। दरअसल, वह भी उन्हें खाना खिलाने में जुट गईं, खासकर छोटे बच्चे को, जिसे नान तोड़ने में दिक्कत हो रही थी। यहाँ तक कि नवाब साहब भी उन तीनों को एक साथ देखकर थोड़ी सी दर्द भरी खुशी महसूस कर रहे थे। ज़ैनब अपनी माँ की तरह छोटी थी, और उसके स्नेह या डांट के

कई हाव-भाव उन्हें अपनी पत्नी के उन हाव-भावों की याद दिला रहे थे जो वह फ़िरोज़ और इम्तियाज़ को खाना खिलाने के लिए किया करती थीं।
मानो उसके विचारों का जवाब देते हुए, फ़िरोज़ कमरे में दाखिल हुआ। ज़ैनब और बच्चे उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए।
'फिरोज मामा, फिरोज मामा!' बच्चों ने कहा। 'आपने हमारे साथ दोपहर का भोजन क्यों नहीं किया?'
फ़िरोज़ अधीर और परेशान लग रहा था। उसने हसन के सिर पर हाथ रखा।
उन्होंने कहा, 'अब्बा-जान, आपके मुंशी बैतर से आ गए हैं। वे आपसे बात करना चाहते हैं।'
'ओह,' नवाब साहब ने कहा, उन्हें इस बात से खुशी नहीं थी कि उनके समय की इस मांग के चलते उनका समय बर्बाद हो रहा था, जबकि वे अपनी बेटी से बात करना पसंद करते।
'वह चाहता है कि आप आज ही एस्टेट में आएं। कोई न कोई संकट मंडरा रहा है।'
'किस तरह का संकट?' नवाब साहब ने पूछा। अप्रैल की चिलचिलाती धूप में जीप में तीन घंटे की यात्रा का ख्याल ही उन्हें अच्छा नहीं लग रहा था।
फ़िरोज़ ने कहा, 'बेहतर होगा कि आप उनसे बात करें। आप जानते हैं कि मैं आपके मुंशी के बारे में क्या सोचता हूँ। अगर आपको लगता है कि मुझे आपके साथ बैतर चलना चाहिए, या आपकी जगह जाना चाहिए, तो कोई बात नहीं। आज दोपहर मेरे पास कोई काम नहीं है। हाँ, मेरी एक मुवक्किल से मुलाक़ात है, लेकिन उनका मामला अभी कुछ समय बाद आएगा, इसलिए मैं उसे टाल सकता हूँ।'
नवाब साहब ने आह भरकर उठकर अपने हाथ धोए।
जब वह उस कमरे में पहुँचा जहाँ मुंशी इंतज़ार कर रहा था, तो उसने

उससे रूखेपन से पूछा कि क्या बात है। ज़ाहिर है, दो समस्याएँ थीं, दोनों एक साथ पनप रही थीं। मुख्य समस्या किसानों से ज़मीन का किराया वसूलने में हमेशा से चली आ रही कठिनाई थी। नवाब साहब को मुंशी के ज़बरदस्ती वाले तरीके पसंद नहीं थे: किराया न देने वालों से निपटने के लिए स्थानीय गुंडों का इस्तेमाल। नतीजतन, वसूली कम हो गई थी, और मुंशी को अब लगा कि नवाब साहब का एक-दो दिन के लिए बैतर किले में व्यक्तिगत रूप से आना और कुछ स्थानीय नेताओं से निजी बातचीत करना स्थिति को काफी हद तक सुधार सकता है। आम तौर पर, चतुर मुंशी अपने मालिक को अपनी जागीर के प्रबंधन में शामिल करने को तैयार नहीं होता, लेकिन यह एक अपवाद था। वह अपने साथ एक छोटे स्थानीय ज़मींदार को भी लाया था ताकि यह पुष्टि हो सके कि मामला पेचीदा है और नवाब साहब की तत्काल उपस्थिति की आवश्यकता है, न केवल अपने लिए बल्कि इसलिए भी कि इससे अन्य ज़मींदारों को भी मदद मिलेगी।

संक्षिप्त चर्चा के बाद (दूसरी समस्या स्थानीय मदरसे या स्कूल में हुई गड़बड़ी से संबंधित थी), नवाब साहब ने कहा: 'मुझे आज दोपहर कुछ काम हैं। लेकिन मैं अपने बेटे से इस बारे में बात कर लूंगा। कृपया यहीं प्रतीक्षा करें।'

फ़िरोज़ ने कहा कि कुल मिलाकर उन्हें लगता है कि उनके पिता को जाना चाहिए, कम से कम यह सुनिश्चित करने के लिए कि मुंशी उन्हें लूट न ले। वह भी साथ चलेंगे और हिसाब-किताब देखेंगे। उन्हें बैतर में एक-दो रातें बितानी पड़ सकती हैं, और वह नहीं चाहते थे कि उनके पिता अकेले रहें। जहाँ तक ज़ैनब की बात है, जिन्हें नवाब साहब 'घर में अकेला' छोड़ने के लिए अनिच्छुक थे, जैसा कि उन्होंने कहा था, उनके जाने पर वह उदासीन थीं, हालाँकि उन्हें उनके जाने का दुख था।

“लेकिन अब्बा-जान, आप कल या परसों लौट आएंगे और मैं यहाँ एक और हफ़्ते के लिए हूँ। वैसे भी, क्या इम्तियाज़ कल नहीं लौटने वाला है? और कृपया मेरे बारे में चिंता न करें, मैं अपने जीवन का अधिकांश समय इसी घर में रही हूँ।” वह मुस्कुराई। “सिर्फ इसलिए कि अब मैं शादीशुदा हूँ, इसका मतलब यह नहीं है कि मैं अपना ख्याल रखने में कम सक्षम हूँ। मैं ज़नाना में गपशप करते हुए अपना समय बिताऊँगी, और बच्चों को भूत-प्रेत की कहानी सुनाने का आपका काम भी मैं संभाल लूँगी।”

हालांकि नवाब साहब को इस बात की थोड़ी चिंता थी कि वे वास्तव में क्या नहीं कह पाएंगे, फिर भी उन्होंने स्पष्ट रूप से अच्छी सलाह मान ली और अपनी बेटी से स्नेहपूर्वक विदा लेकर और अपने पोते-पोतियों को चूमने से केवल इसलिए परहेज किया क्योंकि वे दोपहर की नींद ले रहे थे, और एक घंटे के भीतर ब्रह्मपुर से बैतर के लिए रवाना हो गए।

5.12

शाम ढल गई। बैतर हाउस वीरान सा लग रहा था। वैसे भी घर का आधा हिस्सा खाली रहता था, और शाम ढलते ही नौकर कमरों में मोमबत्ती या दीपक जलाने या बिजली की बत्तियाँ जलाने के लिए इधर-उधर नहीं घूमते थे। उस खास शाम को नवाब साहब और उनके बेटों के कमरे और कभी-कभार इस्तेमाल होने वाले मेहमान के कमरे में भी रोशनी नहीं थी, और सड़क से देखने पर ऐसा लगता था मानो वहाँ अब कोई रहता ही नहीं। सारी चहल-पहल, बातचीत, चहल-पहल सिर्फ ज़नाना में थी, जो सड़क की ओर नहीं था।

अभी अंधेरा नहीं हुआ था। बच्चे सो रहे थे। ज़ैनब ने जितना सोचा था, उतना मुश्किल नहीं था उन्हें इस बात से ध्यान भटकाना कि उनके दादाजी उन्हें वादा की गई भूत-प्रेत की कहानी सुनाने के लिए वहाँ नहीं थे। दोनों ही पिछले दिन ब्रह्मपुर की यात्रा से थके हुए थे, हालाँकि उन्होंने पिछली

रात दस बजे तक जागने की ज़िद की थी।

ज़ैनब किताब लेकर आराम करना चाहती थी, लेकिन उसने शाम अपनी चाची और बड़ी चाचियों से बात करने में बिताने का फैसला किया। ये महिलाएं, जिन्हें वह बचपन से जानती थी, पंद्रह साल की उम्र से ही अपने पिता या पति के घर में परदे में रहती थीं। ज़ैनब भी परदे में ही रहती थी, हालांकि अपनी शिक्षा के कारण वह खुद को दुनिया की व्यापक समझ रखने वाली मानती थी। परदे की पाबंदियां, महिलाओं की वह दुनिया जिसने आबिदा खान को लगभग पागल कर दिया था—संवाद का सीमित दायरा, धार्मिकता, किसी भी तरह की निडरता या गैर-परंपरागतता पर लगाम—इन महिलाओं की नजरों में बिल्कुल अलग थीं। उनकी दुनिया राज्य के बड़े मामलों में उलझी नहीं थी, बल्कि मूल रूप से मानवीय थी। भोजन, त्योहार, पारिवारिक संबंध, उपयोगी और सुंदर वस्तुएं—मुख्य रूप से अच्छे के लिए, लेकिन कभी-कभी बुरे के लिए भी—उनकी रुचियों का आधार थीं, हालांकि पूरी तरह से नहीं। ऐसा नहीं था कि वे बाहरी दुनिया से अनजान थीं। दरअसल, दुनिया को परिवार और दोस्तों के हितों के नज़रिए से ज़्यादा छानकर देखा जाता था, जबकि प्रत्यक्ष अनुभव वाले किसी यात्री के लिए ऐसा नहीं होता। उन्हें मिलने वाले संकेत अप्रत्यक्ष होते थे, जिन्हें ज़्यादा संवेदनशीलता से समझने की ज़रूरत होती थी; और यही बात उनके द्वारा दिए जाने वाले संकेतों पर भी लागू होती थी। ज़ैनब —जो शालीनता, सूक्ष्मता, शिष्टाचार और पारिवारिक संस्कृति को अपने आप में मूल्यवान गुण मानती थी—के लिए ज़नाना की दुनिया एक संपूर्ण दुनिया थी, भले ही सीमित ही क्यों न हो। वह यह नहीं मानती थी कि उसकी चाचियों ने बचपन से ही परिवार के सदस्यों के अलावा किसी और पुरुष से मुलाकात नहीं की थी और अपने कमरे के अलावा बहुत कम ही बाहर गई थीं, इसलिए उनमें दुनिया की समझ या मानवीय स्वभाव की

जानकारी की कमी थी। वह उन्हें पसंद करती थी, उनसे बात करना उसे अच्छा लगता था, और वह जानती थी कि उसके कभी-कभार आने से उन्हें कितना आनंद मिलता था। लेकिन अपने पिता के घर की इस विशेष यात्रा पर वह उनके साथ बैठकर गपशप करने से हिचकिचा रही थी, क्योंकि लगभग निश्चित रूप से वे ऐसी बातें उठातीं जिनसे उसे दुख पहुँचता। अपने पति का ज़िक्र होते ही उसे फिर से उन बेवफ़ाइयों की याद आ जाती, जिनके बारे में उसे हाल ही में पता चला था और जिनसे उसे बहुत गहरा दुख हुआ था। उसे अपनी चाचियों के सामने यह दिखावा करना पड़ता कि सब ठीक है और यहाँ तक कि अपने पारिवारिक जीवन की अंतरंग बातों पर हल्की-फुल्की बातचीत भी करनी पड़ती।

वे कुछ ही मिनटों से बैठे-बैठे बातें कर रहे थे कि तभी दो घबराई हुई युवा नौकरानियाँ कमरे में दौड़कर आईं और सामान्य अभिवादन किए बिना ही हाँफते हुए बोलीं:

‘पुलिस—पुलिस यहाँ है।’

फिर वे फूट-फूटकर रोने लगे और उनकी बातें इतनी अस्पष्ट हो गईं कि उनसे कुछ भी समझना असंभव हो गया।

ज़ैनब ने उनमें से एक को थोड़ा शांत करने में कामयाबी हासिल की और उससे पूछा कि पुलिस क्या कर रही है।

लड़की ने फिर से रोते हुए कहा, 'वे घर पर कब्जा करने आए हैं।'

सभी लोग उस बेचारी लड़की को देखकर स्तब्ध रह गए, जो अपनी आस्तीन से अपनी आंखें पोंछ रही थी।

‘हाय, हाय!’ एक चाची ने दयनीय व्यथा से रोते हुए कहा। ‘हम क्या करेंगे? घर में कोई नहीं है।’

हालांकि ज़ैनब घटनाओं के अचानक मोड़ से स्तब्ध थी, उसने सोचा कि अगर घर में कोई नहीं होता—यानी कोई पुरुष नहीं होता—तो उसकी माँ

क्या करती।
सदमे से कुछ हद तक उबरने के बाद, उसने नौकरानी से कुछ त्वरित प्रश्न पूछे:
'पुलिस कहाँ है? क्या वे सचमुच घर में हैं? नौकर क्या कर रहे हैं? और मुर्तजा अली कहाँ है? वे घर पर कब्ज़ा क्यों करना चाहते हैं? मुन्नी, उठो और रोना बंद करो। मुझे तुम्हारी बातें समझ नहीं आ रही हैं।' वह लड़की को हिलाते हुए और दिलासा देते हुए बारी-बारी से उसे शांत करने लगी।
ज़ैनब को बस इतना ही पता चला कि उसके पिता का निजी सचिव, युवा मुर्तज़ा अली, बैतर हाउस के सामने लॉन के दूसरे छोर पर खड़ा होकर पुलिस को उनके आदेशों का पालन करने से रोकने की पुरज़ोर कोशिश कर रहा था। नौकरानी विशेष रूप से डरी हुई थी क्योंकि पुलिसकर्मियों के उस दल का नेतृत्व एक सिख अधिकारी कर रहा था।
'मुन्नी, सुनो,' ज़ैनब ने कहा। 'मैं मुर्तज़ा से बात करना चाहती हूँ।'
'लेकिन-'
अब जाओ और गुलाम रसूल या किसी अन्य नौकर से कहो कि वह सबको बता दे।
मैं मुर्तजा अली से तुरंत बात करना चाहता हूं।
उसकी चाचियों ने उसे हैरानी से देखा।
और हां, यह नोट रसूल को दे देना, ताकि वह इसे इंस्पेक्टर या पुलिस के प्रभारी अधिकारी को दे दे। ध्यान रखना कि यह उन तक पहुंच जाए।
ज़ैनब ने अंग्रेज़ी में एक छोटा सा नोट लिखा, जो इस प्रकार है:
प्रिय इंस्पेक्टर साहब,
मेरे पिता, बैतर के नवाब, घर पर नहीं हैं, और चूंकि उन्हें सूचित किए बिना कोई भी वैध कार्रवाई नहीं की जानी चाहिए, इसलिए मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि इस मामले में आगे न बढ़ें। मैं अपने पिता के निजी

सचिव श्री मुर्तजा अली से तुरंत बात करना चाहता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि उन्हें उपलब्ध कराएं। मैं आपसे यह भी अनुरोध करता हूं कि कृपया ध्यान दें कि यह शाम की नमाज का समय है, और जब घरवाले नमाज पढ़ रहे हों, उस समय हमारे पैतृक घर में किसी भी प्रकार की घुसपैठ सभी नेक लोगों के लिए अत्यंत हानिकारक होगी।
ईमानदारी से,
Zainab Khan

मुन्नी ने नोट लिया और कमरे से बाहर निकल गई, वह अभी भी सिसक रही थी लेकिन अब घबराई हुई नहीं थी। ज़ैनब ने अपनी चाचियों की निगाहों से बचते हुए दूसरी लड़की से, जो थोड़ी शांत हो गई थी, कहा कि वह ध्यान रखे कि हसन और अब्बास शोरगुल से जाग न गए हों।

5.13

बैतर हाउस पर कब्ज़ा करने आए दल के प्रभारी पुलिस उपाधीक्षक ने जब वह नोट पढ़ा, तो उनका चेहरा लाल हो गया, उन्होंने अपने कंधे उचकाए, नवाब साहब के निजी सचिव से कुछ देर बात की और जल्दी से अपनी घड़ी पर नज़र डालते हुए कहा:
'ठीक है, तो फिर आधा घंटा।'
उनका कर्तव्य स्पष्ट था और इससे बचने का कोई रास्ता नहीं था, लेकिन वे क्रूरता के बजाय दृढ़ता में विश्वास करते थे, और आधे घंटे की देरी स्वीकार्य थी।
ज़ैनब ने दो युवा नौकरानियों से ज़नाना से मरदाना की ओर जाने वाला दरवाज़ा खुलवाया और उस पर एक चादर डलवा दी। फिर, अपनी चाचियों के अविश्वास भरे नारों और अन्य धार्मिक उद्गारों के बावजूद, उसने मुन्नी से कहा कि वह एक नौकर से कहे कि वह मुर्तज़ा अली को दरवाज़े

के दूसरी तरफ खड़ा होने के लिए कहे। शर्मिंदगी और लज्जा से चेहरा लाल कर चुका वह युवक उस दरवाज़े के पास खड़ा था, जिसके पास जाने की उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

ज़ैनब ने कोमल और सरल उर्दू में कहा, "मुर्तज़ा साहब, आपकी और अपनी शर्मिंदगी के लिए मुझे माफ़ी मांगनी चाहिए। मैं जानती हूँ कि आप एक विनम्र व्यक्ति हैं और मैं आपकी झिझक समझती हूँ। कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए। मुझे भी लगता है कि मुझे यह कदम उठाना पड़ा है। लेकिन यह एक आपातकालीन स्थिति है, और मुझे पता है कि इसे बुरा नहीं माना जाएगा।"

उसने अनजाने में एकवचन के बजाय बहुवचन का प्रयोग किया, जबकि वह आमतौर पर एकवचन का प्रयोग करती थी। बोलचाल की भाषा में दोनों ही मान्य थे, लेकिन चूंकि बहुवचन लिंग के अनुसार अपरिवर्तनीय था, इसलिए इसने मर्दाना और ज़नाना क्षेत्रों के बीच स्थित भौगोलिक रेखा पर तनाव को कुछ हद तक कम कर दिया, जिसके उल्लंघन से उसकी चाचियाँ बहुत आहत हुई थीं। इसके अलावा, बहुवचन में एक हल्का सा आदेशात्मक भाव निहित था, और इसने एक ऐसा माहौल बनाने में मदद की जिससे न केवल शर्मिंदगी (जो अपरिहार्य थी) का आदान-प्रदान हो सका, बल्कि जानकारी का भी आदान-प्रदान संभव हो सका।

उतनी ही सुसंस्कृत लेकिन थोड़ी अलंकृत उर्दू में युवा मुर्तजा अली ने उत्तर दिया: 'क्षमा करने जैसा कुछ नहीं है, मेरा विश्वास कीजिए, बेगम साहिबा। मुझे केवल इस बात का अफसोस है कि मुझे ऐसी खबर का संदेशवाहक बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।'

तो कृपया मुझे संक्षेप में बताएं कि क्या हुआ है। पुलिस मेरे पिता के घर में क्या कर रही है? और क्या यह सच है कि वे इस घर पर कब्ज़ा करना

चाहते हैं? किस आधार पर?
बेगम साहिबा, मुझे समझ नहीं आ रहा कि कहाँ से शुरू करूँ। वे यहाँ हैं और जितनी जल्दी हो सके इस घर पर कब्ज़ा करना चाहते हैं। वे तुरंत अंदर आने वाले थे, लेकिन डीएसपी ने आपका नोट पढ़ा और हमें आधे घंटे का समय दे दिया। उन्हें विस्थापित संपत्ति के संरक्षक और गृह मंत्री का आदेश मिला है कि घर के उन सभी हिस्सों पर कब्ज़ा कर लिया जाए जिनमें कोई नहीं रहता, क्योंकि पूर्व निवासियों में से अधिकांश अब पाकिस्तान में बस गए हैं।
'क्या इसमें ज़नाना में प्रवेश करना भी शामिल है?' ज़ैनब ने यथासंभव शांत भाव से पूछा।
'मुझे नहीं पता कि इसमें क्या-क्या शामिल है, बेगम साहिबा। उन्होंने कहा, "सभी खाली हिस्से।"'
ज़ैनब ने पूछा, 'उसे कैसे पता चला कि घर का इतना बड़ा हिस्सा खाली पड़ा है?'
'मुझे खेद है, बेगम साहिबा, कि यह स्पष्ट है। कुछ हद तक, बेशक, यह आम जानकारी है। मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की कि यहाँ लोग रहते हैं, लेकिन उन्होंने अंधेरी खिड़कियों की ओर इशारा किया। नवाब साहब भी इस समय यहाँ नहीं हैं। न ही नवाबजादे।'
ज़ैनब एक पल के लिए चुप रही। फिर बोली, 'मुर्तज़ा साहब, मैं आधे घंटे में वो चीज़ नहीं छोड़ने वाली जो पीढ़ियों से हमारे परिवार की है। हमें तुरंत आबिदा चाची से संपर्क करना होगा। उनकी संपत्ति भी दांव पर है। और कपूर साहब, राजस्व मंत्री, जो परिवार के पुराने मित्र हैं। आपको यह करना होगा, क्योंकि ज़नाना में टेलीफ़ोन नहीं है।'
मैं ऐसा तुरंत करूंगा। मैं प्रार्थना करता हूं कि मैं सफल हो जाऊं।
ज़ैनब ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मुझे खेद है कि आज शाम आपको अपनी

नियमित नमाज़ छोड़नी पड़ेगी।' उसकी आवाज़ में मुस्कान साफ सुनाई दे रही थी।

'मुझे लगता है कि मुझे ऐसा करना ही पड़ेगा,' मुर्तजा अली ने जवाब दिया, उन्हें आश्चर्य हुआ कि इतने दुखद क्षण में भी वह मुस्कुरा सकते हैं। 'शायद मुझे अभी जाकर राजस्व मंत्री से संपर्क करने की कोशिश करनी चाहिए।'

ज़ैनब ने कहा, 'उसके लिए गाड़ी भेजो—नहीं, रुको—। उसकी ज़रूरत पड़ सकती है। सुनिश्चित करो कि वह तैयार खड़ी हो।'

उसने एक मिनट सोचा। मुर्तजा अली को लगा कि सेकंड तेजी से बीत रहे हैं।

ज़ैनब ने पूछा, 'घर की चाबियां किसके पास हैं? मेरा मतलब है खाली कमरों की?'

'ज़नाना की चाबियाँ पास में हैं—'

'नहीं, वे कमरे सड़क से दिखाई नहीं देते—वे महत्वपूर्ण नहीं हैं—मेरा मतलब है मर्दाना के कमरे।'

'मेरे पास उनमें से कुछ हैं, कुछ गुलाम रसूल के पास हैं, और कुछ, मेरा मानना है, नवाब साहब उन्हें अपने साथ बैतर ले गए हैं।'

ज़ैनब ने शांत स्वर में कहा, "अब आपको यही करना होगा। हमारे पास बहुत कम समय है। इस घर के सभी नौकरों और नौकरानियों को बुलाकर मोमबत्तियाँ, मशालें, दीपक, या घर में जो भी लौ हो, सब ले आइए और घर के सड़क की ओर खुलने वाले हर कमरे को थोड़ा-थोड़ा रोशन कीजिए —आप समझ रही हैं ना—चाहे इसके लिए आपको उन कमरों में भी जाना पड़े जिनमें आमतौर पर जाने की अनुमति लेनी पड़ती है, और चाहे इसके लिए आपको कहीं-कहीं ताला या दरवाजा तोड़ना पड़े।"

यह मुर्तजा अली के विवेक का ही प्रमाण था कि उन्होंने विरोध नहीं किया,

बल्कि इस उपाय की अच्छाई - भले ही यह हताशापूर्ण हो - को स्वीकार कर लिया।

'सड़क से देखने पर ऐसा लगना चाहिए कि घर में लोग रहते हैं, भले ही डीएसपी को यह मानने का कारण हो कि ऐसा नहीं है। अगर वह वापस जाना चाहे तो उसे बहाना दिया जाना चाहिए, भले ही हम उसे वास्तव में ऐसा विश्वास न दिला पाएं।'

'जी हां, बेगम साहिबा।' मुर्तजा उस मधुर आवाज वाली महिला के प्रति प्रशंसा से भर गया था जिसे उसने कभी नहीं देखा था—और न ही कभी देख पाएगा।

ज़ैनब ने आगे कहा, "मैं इस घर को अच्छी तरह जानती हूँ। मेरी चाचियों के विपरीत, मेरा जन्म यहीं हुआ था। हालाँकि अब मैं इस हिस्से में ही सीमित हूँ, लेकिन मैं बचपन से दूसरे हिस्से से परिचित हूँ और जानती हूँ कि उसकी बनावट में ज़्यादा बदलाव नहीं आया है। हमारे पास समय बहुत कम है और मैं कमरों में रोशनी करने में खुद मदद करने की योजना बना रही हूँ। मुझे पता है कि मेरे पिता समझ जाएँगे और अगर कोई और न भी समझे तो मुझे कोई खास फ़र्क नहीं पड़ता।"

"बेगम साहिबा, आपसे विनती है," उनके पिता के निजी सचिव ने दर्द और निराशा भरे स्वर में कहा। "आप ऐसा न करें। ज़नाना में व्यवस्था कर लें और जितने हो सके उतने दीपक व अन्य सामान तैयार कर लें ताकि उन्हें यहाँ हम तक पहुँचाया जा सके। लेकिन कृपया आप यहीं रहें। मैं देखूँगा कि सब कुछ आपके आदेशानुसार हो। अब मुझे जाना होगा, और मैं पंद्रह मिनट के भीतर आपको बता दूँगा कि क्या चल रहा है। ईश्वर आपके परिवार और इस घर को अपनी सुरक्षा में रखे।" इतना कहकर वे विदा हो गए।

ज़ैनब ने मुन्नी को अपने पास रखा और दूसरी लड़की से कहा कि वह दीये

लाकर जलाए और उन्हें घर के दूसरे हिस्से में ले जाए। फिर वह अपने कमरे में लौट आई और हसन और अब्बास को देखा, जो अभी भी सो रहे थे। उसने मन ही मन सोचा, "यह तुम्हारा इतिहास है, तुम्हारी विरासत है, तुम्हारी दुनिया है जिसकी मैं रक्षा कर रही हूँ," और छोटे भाई के बालों में हाथ फेरा। हसन, जो आमतौर पर उदास रहता था, मुस्कुरा रहा था और उसने अपने छोटे भाई को बाहों में भर रखा था। बगल के कमरे में उसकी चाचियाँ ज़ोर-ज़ोर से प्रार्थना कर रही थीं।

ज़ैनब ने अपनी आँखें बंद कीं, फ़ातिहा पढ़ी और थकी-हारी बैठ गई। फिर उसे अपने पिता की कही एक बात याद आई, उसने कुछ पल उसके महत्व पर विचार किया और एक और पत्र लिखना शुरू कर दिया।

उसने मुन्नी से कहा कि लड़कों को जगाओ और जल्दी से उन्हें उनके सबसे अच्छे पारंपरिक कपड़े पहनाओ—अब्बास के लिए एक छोटा सफेद कुर्ता और उसके बड़े भाई के लिए एक सफेद अंगरखा। उनके सिर पर सफेद कढ़ाई वाली टोपियाँ होनी थीं।

पंद्रह मिनट बाद भी जब मुर्तजा अली से कोई खबर नहीं मिली, तो उसने उन्हें बुलवाया। उनके आने पर उसने उनसे पूछा:

‘क्या यह हो गया?’

'जी हां, बेगम साहिबा, ऐसा ही है। घर रोशन सा लग रहा है। बाहर की हर खिड़की से कुछ न कुछ रोशनी दिखाई दे रही है।'

और कपूर साहब?

मुझे खेद है कि श्रीमती महेश कपूर द्वारा उन्हें बुलवाने के बावजूद मैं उनसे फोन पर संपर्क नहीं कर पा रहा हूँ। हो सकता है कि वे सचिवालय में कहीं देर तक काम कर रहे हों। लेकिन उनके कार्यालय में कोई भी फोन नहीं उठा रहा है।

‘Abida Chachi?’

'उनका टेलीफोन खराब लग रहा है, और मैंने अभी-अभी उन्हें एक पत्र लिखा है। मुझे क्षमा करें। मुझसे चूक हो गई है।'

'मुर्तजा साहब, आपने मेरी अपेक्षा से कहीं अधिक कार्य किया है। अब इस पत्र को ध्यान से सुनिए और बताइए कि इसमें कैसे सुधार किया जा सकता है।'

उन्होंने बड़ी तेज़ी से पत्र का संक्षिप्त मसौदा पढ़ा। यह अंग्रेज़ी में था और केवल सात-आठ पंक्तियों का था। मुर्तज़ा अली ने कुछ स्पष्टीकरण मांगे और कुछ सुझाव दिए; ज़ैनब ने उन्हें शामिल किया और उसकी एक साफ प्रति तैयार कर ली।

'अब हसन और अब्बास,' उसने अपने बेटों से कहा, जिनकी आँखें अभी भी नींद और इस अप्रत्याशित खेल के आश्चर्य से भरी हुई थीं, 'तुम मुर्तजा साहब के साथ जाओ और वो जो भी कहें, करो। तुम्हारे नाना-जान जब लौटेंगे तो तुमसे बहुत प्रसन्न होंगे, और मैं भी। इम्तियाज मामा और फिरोज मामा भी।' उसने उनमें से प्रत्येक को चूमा और उन्हें पर्दे के दूसरी ओर भेज दिया, जहाँ मुर्तजा अली ने उनकी जिम्मेदारी संभाली।

ज़ैनब ने कहा, 'उन्हें ही उसे चिट्ठी देनी चाहिए। गाड़ी लो, इंस्पेक्टर—मेरा मतलब डीएसपी—को बताओ कि तुम कहाँ जा रहे हो, और तुरंत निकल जाओ। मैं तुम्हारी मदद के लिए तुम्हें कैसे धन्यवाद दूं, यह मुझे नहीं पता। अगर तुम यहाँ नहीं होते तो हम अब तक ज़रूर खो चुके होते।'

'बेगम साहिबा, मैं आपके पिता की कृपा का बदला नहीं चुका सकता,' मुर्तजा अली ने कहा। 'मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि आपके बेटे एक घंटे के भीतर वापस आ जाएं।'

वह दोनों लड़कों का हाथ थामे गलियारे में चल पड़ा। पहले तो वह इतना डरा हुआ था कि किसी से कुछ बोल नहीं पाया, लेकिन जब वह पुलिस की मौजूदगी वाले लॉन के आखिरी छोर की ओर एक मिनट चला, तो

उसने लड़कों से कहा:
‘Hassan, Abbas, do adaab to the DSP Sahib.’
‘Adaab arz, DSP Sahib,’ said Hassan in salutation.
अब्बास ने अपने भाई की ओर देखा और उसके शब्दों को दोहराया, सिवाय इसके कि उसके मुंह से 'डिपसी साहब' निकला।
निजी सचिव ने स्पष्ट किया, 'नवाब साहब के पोते।'
पुलिस उप अधीक्षक ने सतर्कता से मुस्कुराते हुए जवाब दिया।
उन्होंने मुर्तजा अली से कहा, 'मुझे खेद है। मेरा समय समाप्त हो गया है और आपका भी। घर देखने में भले ही आबाद लगे, लेकिन हमारी जानकारी कुछ और ही कहती है, और हमें इसकी जांच करनी होगी। हमें अपना कर्तव्य निभाना ही होगा। स्वयं गृह मंत्री ने हमें निर्देश दिए हैं।'
‘मैं आपकी बात पूरी तरह समझता हूँ, डीएसपी साहब,’ मुर्तजा अली ने कहा। ‘लेकिन क्या मैं आपसे थोड़ा और समय मांग सकता हूँ? इन दोनों लड़कों के पास एक पत्र है जिसे किसी भी कार्रवाई से पहले पहुँचाना आवश्यक है।’
डीएसपी ने सिर हिलाया। उन्होंने हाथ उठाकर इशारा किया कि बहुत हो गया, और कहा: 'अग्रवालजी ने मुझे व्यक्तिगत रूप से कहा है कि वे इस संबंध में कोई याचिका स्वीकार नहीं करेंगे और हमें किसी भी प्रकार की देरी बर्दाश्त नहीं करनी है। मुझे खेद है। इस फैसले को बाद में चुनौती दी जा सकती है या अपील की जा सकती है।'
यह पत्र मुख्यमंत्री के लिए है।
पुलिसकर्मी थोड़ा सख्त हो गया।
‘इसका क्या मतलब है?’ उसने चिड़चिड़े और हैरान स्वर में कहा। ‘इस पत्र में क्या लिखा है? आप इससे क्या हासिल करना चाहते हैं?’
मुर्तजा अली ने गंभीरता से कहा:

“बैतर के नवाब साहब की बेटी और पूर्व प्रदेश के मुख्यमंत्री के बीच लिखे गए एक निजी और अत्यावश्यक पत्र की विषयवस्तु जानने की अपेक्षा मुझसे नहीं की जा सकती। स्पष्ट है कि यह पत्र गृह से संबंधित मामले से जुड़ा है, लेकिन इसमें क्या लिखा है, इस बारे में अटकलें लगाना मेरे लिए अनुचित होगा। गाड़ी तैयार है, और मुझे इन छोटे दूतों को शर्माजी के घर तक पहुँचाना होगा, इससे पहले कि वे अपना घर खो दें। डीएसपी साहब, आशा है कि आप कोई भी जल्दबाजी वाला कदम उठाने से पहले मेरे लौटने का इंतजार करेंगे।”

डीएसपी, जो फिलहाल नाकाम हो चुका था, कुछ नहीं बोला। वह जानता था कि उसे इंतजार करना होगा।

मुर्तजा अली ने विदा ली, अपना सामान इकट्ठा किया और नवाब साहब की कार में बैठकर चले गए।

बैतर हाउस के द्वार से पचास गज की दूरी पर, कार अचानक रुक गई और दोबारा स्टार्ट नहीं हो सकी। मुर्तजा अली ने ड्राइवर को रुकने के लिए कहा, अब्बास के साथ वापस घर गए, उसे एक नौकर के पास छोड़ा, अपनी साइकिल निकाली और वापस आ गए। फिर उन्होंने हसन को, जो आश्चर्यजनक रूप से शांत था, अपने सामने बिठाया और उसके साथ रात के अंधेरे में साइकिल चलाकर निकल गए।

5.14

पंद्रह मिनट बाद जब वे मुख्यमंत्री के घर पहुंचे, तो उन्हें तुरंत उनके कार्यालय में प्रवेश दिया गया, जहां वे देर रात तक काम कर रहे थे।

औपचारिक अभिवादन के बाद, उन्हें बैठने के लिए कहा गया। मुर्तजा अली पसीने से तरबतर थे—वह अपने सामान की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए जितनी तेज़ी से साइकिल चला सकते थे, चला रहे थे। लेकिन हसन अपने बढ़िया सफेद अंगरखा में एकदम शांत और चुस्त-दुरुस्त दिख

रहे थे, हालांकि उन्हें थोड़ी नींद आ रही थी।
अब मुझे यह आनंद किस कारण से मिला है?
मुख्यमंत्री ने छह साल के लड़के से लेकर नवाब साहब के तीस वर्षीय सचिव तक की ओर देखा और अपना सिर थोड़ा-थोड़ा अगल-बगल हिलाया, जैसा कि वह कभी-कभी थके होने पर करते थे।
मुर्तजा अली की मुख्यमंत्री से कभी व्यक्तिगत मुलाकात नहीं हुई थी। चूंकि उन्हें इस मामले को सुलझाने का सबसे अच्छा तरीका नहीं सूझ रहा था, इसलिए उन्होंने बस इतना कहा: 'मुख्यमंत्री साहब, इस पत्र में आपको सब कुछ पता चल जाएगा।'
मुख्यमंत्री ने पत्र को केवल एक बार, लेकिन धीरे-धीरे पढ़ा। फिर गुस्से भरी और दृढ़ आवाज में, नाक से निकलती हुई लेकिन अधिकार की स्पष्ट झलक के साथ, उन्होंने कहा:
'मुझे अग्रवाल से फोन पर बात करवाओ!'
फोन कनेक्ट होने के दौरान, मुख्यमंत्री ने मुर्तजा अली को इस बात पर फटकार लगाई कि वह 'बेचारे लड़के' को सोने के समय के बाद इतनी देर तक अपने साथ क्यों लाए थे। लेकिन इसका मुर्तजा अली पर स्पष्ट रूप से असर हुआ था। मुर्तजा अली ने सोचा कि अगर मैं अब्बास को भी साथ ले आता, तो शायद मुख्यमंत्री और भी कठोर बातें कहते।
जब फोन आया तो मुख्यमंत्री ने गृह मंत्री से कुछ देर बात की। उनकी आवाज में झुंझलाहट साफ झलक रही थी।
मुख्यमंत्री ने पूछा, 'अग्रवाल, बैतर हाउस के इस मामले का क्या मतलब है?'
एक मिनट बाद उन्होंने कहा: 'नहीं, मुझे इन सब बातों में कोई दिलचस्पी नहीं है। मुझे चौकीदार का काम अच्छी तरह से पता है। मैं अपनी नाक के नीचे इस तरह की हरकतें बर्दाश्त नहीं कर सकता। इसे तुरंत रद्द करो।'

कुछ सेकंड बाद उसने और भी अधिक झुंझलाहट भरे स्वर में कहा:
नहीं। सुबह तक इसका समाधान नहीं होगा। पुलिस को तुरंत जाने के लिए कहो। अगर ज़रूरी हो तो मेरे हस्ताक्षर कर देना।' वह रिसीवर नीचे रखने ही वाला था कि उसने कहा, 'और आधे घंटे में मुझे फ़ोन करना।'
मुख्यमंत्री ने फोन रखने के बाद ज़ैनब के पत्र पर एक नज़र डाली। फिर उन्होंने हसन की ओर मुड़कर थोड़ा सिर हिलाते हुए कहा:
'अब घर जाओ, सब ठीक हो जाएगा।'
5.15
बेगम आबिदा खान (डेमोक्रेटिक पार्टी): मुझे माननीय सदस्य की बात समझ नहीं आ रही है। क्या उनका दावा है कि हमें इस मामले में भी सरकार की बात मान लेनी चाहिए, जैसे अन्य मामलों में? क्या माननीय सदस्य को यह नहीं पता कि अभी कुछ ही दिन पहले इसी शहर में—ठीक कहें तो बैतर हाउस में—क्या हुआ था, जहाँ इस सरकार के आदेश पर, हथियारों से लैस पुलिसकर्मियों का एक गिरोह एक असुरक्षित ज़नाना के असहाय सदस्यों पर टूट पड़ता—और अगर ईश्वर की कृपा न होती तो—
माननीय अध्यक्ष महोदय: माननीय सदस्य को याद दिलाया जाता है कि यह चर्चा चल रहे जमींदारी विधेयक से संबंधित नहीं है। मुझे उन्हें बहस के नियमों की याद दिलाना होगा और उनसे अनुरोध है कि वे अपने भाषणों में अनावश्यक विषय न उठाएं।
बेगम आबिदा खान: मैं माननीय अध्यक्ष महोदय की अत्यंत आभारी हूँ। इस सदन के अपने नियम हैं, लेकिन ईश्वर भी ऊपर से हमारा न्याय करता है और यदि मैं इस सदन का अनादर किए बिना कहूँ तो, ईश्वर के भी अपने नियम हैं और हम देखेंगे कि कौन सा नियम मान्य होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ न्याय मिलना इतना कठिन है, वहाँ जमींदार इस सरकार से न्याय की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं, जबकि इस शहर में भी, इस माननीय

सदन के समक्ष, अन्य माननीय सदनों का मानहानि हो रही है?

माननीय अध्यक्ष महोदय: मैं माननीय सदस्य को दोबारा याद नहीं दिलाऊंगा। यदि इस संबंध में और कोई विषयांतर होता है तो मैं उनसे अपनी सीट पर वापस बैठने का अनुरोध करूंगा।

बेगम आबिदा खान: माननीय अध्यक्ष महोदय मेरे प्रति बहुत उदार रहे हैं, और मैं अपनी कमजोर आवाज से इस सदन को और परेशान नहीं करना चाहती। लेकिन मैं यह जरूर कहूंगी कि इस विधेयक को जिस तरह से बनाया गया, संशोधित किया गया, उच्च सदन द्वारा पारित किया गया, फिर इस निचले सदन में लाया गया और सरकार द्वारा ही इसमें बार-बार बड़े बदलाव किए गए, वह इसके घोषित मूल उद्देश्य के प्रति विश्वास और जिम्मेदारी, यहां तक कि ईमानदारी की कमी को दर्शाता है, और इस राज्य की जनता इसके लिए सरकार को माफ नहीं करेगी। उन्होंने अपने भारी बहुमत का दुरुपयोग करके ऐसे संशोधन जबरदस्ती पारित करवाए हैं जो स्पष्ट रूप से दुर्भावनापूर्ण हैं। जब विधान परिषद द्वारा संशोधित विधेयक का इस विधानसभा में दूसरा वाचन हो रहा था, तब जो कुछ हमने देखा वह इतना चौंकाने वाला था कि जीवन में कई चौंकाने वाली घटनाओं का सामना कर चुकी मैं भी स्तब्ध रह गई। यह तय किया गया था कि जमींदारों को मुआवजा दिया जाएगा। चूंकि उन्हें उनकी पुश्तैनी आजीविका से वंचित किया जा रहा है, इसलिए न्याय के नाम पर हम कम से कम इतना तो उम्मीद कर ही सकते हैं। लेकिन जो राशि दी जा रही है वह बहुत कम है—जिसमें से आधी राशि हमें अनिश्चित तिथि के सरकारी बांडों के रूप में स्वीकार करने की उम्मीद की जाती है, बल्कि हमें ऐसा करने के लिए बाध्य किया जाता है!

सदस्य: आपको इसे स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं है। कोष इसे आपके लिए सुरक्षित रखेगा।

बेगम आबिदा खान: और यहाँ तक कि वह बंधन से कमजोर हुई मामूली रकम भी एक क्रमिक पैमाने पर है, जिससे बड़े जमींदारों—जिनमें से कई के ऐसे प्रतिष्ठान हैं जिन पर सैकड़ों लोग निर्भर हैं—प्रबंधक, रिश्तेदार, नौकर, संगीतकार—

एक सदस्य: पहलवान, गुंडे, वेश्याएं, फिजूलखर्ची करने वाले लोग—

बेगम आबिदा खान: —उन्हें उनकी ज़मीन के अनुपात में मुआवज़ा नहीं मिलेगा, जबकि ज़मीन पर उनका हक़ है। ये बेचारे लोग क्या करेंगे? कहाँ जाएँगे? सरकार को कोई फ़िक्र नहीं है। उसे लगता है कि यह बिल जनता में लोकप्रिय होगा और उसकी नज़र कुछ ही महीनों में होने वाले आम चुनावों पर है। यही सच्चाई है। यही असलियत है और मैं राजस्व मंत्री, उनके संसदीय सचिव, मुख्यमंत्री या किसी और के इनकार को स्वीकार नहीं करती। उन्हें डर था कि ब्रह्मपुर उच्च न्यायालय उनके क्रमिक भुगतान के नियम को रद्द कर देगा। तो कल कार्यवाही के अंतिम चरण में—दूसरी वाचन के ठीक अंत में—उन्होंने क्या किया? कुछ ऐसा जो इतना छलपूर्ण, इतना शर्मनाक, फिर भी इतना पारदर्शी था कि एक बच्चा भी उसे समझ सकता था। उन्होंने मुआवज़े को दो भागों में बाँट दिया—एक गैर-क्रमबद्ध तथाकथित मुआवज़ा—और ज़मींदारों के लिए एक क्रमिक तथाकथित पुनर्वास अनुदान—और इस नई भुगतान योजना को वैध बनाने के लिए अंतिम समय में एक संशोधन पारित कर दिया। क्या उन्हें सचमुच लगता है कि अदालत यह मान लेगी कि मुआवज़ा सभी के लिए 'समान व्यवहार' है—जबकि राजस्व मंत्री और उनके संसदीय सचिव ने मात्र छल से मुआवज़े की तीन-चौथाई राशि एक लंबी और दिखावटी नाम वाली श्रेणी में स्थानांतरित कर दी है—एक ऐसी श्रेणी जहाँ बड़े ज़मींदारों के साथ खुलेआम असमान व्यवहार किया जा रहा है? आप निश्चिंत रहें कि जब तक हमारे शरीर में साँस है, हम इस अन्याय के खिलाफ लड़ते रहेंगे।

एक सदस्य: या हमारे फेफड़ों में गूंजती आवाज।
माननीय अध्यक्ष महोदय: मैं सदस्यों से अनुरोध करूंगा कि वे अन्य सदस्यों के भाषणों में अनावश्यक रूप से बाधा न डालें।
बेगम आबिदा खान: लेकिन उस सदन में न्याय के लिए आवाज उठाने का क्या फायदा, जहाँ हमें सिर्फ उपहास और बदतमीजी ही मिलती है? हमें पतित और अपाहिज कहा जाता है, लेकिन यकीन मानिए, मंत्रियों के बेटे ही असल में फिजूलखर्ची में माहिर हैं। इस प्रांत की संस्कृति, संगीत और शिष्टाचार को संजोए रखने वाले लोगों को बेदखल किया जा रहा है, उन्हें गलियों में भीख मांगने के लिए मजबूर किया जा रहा है। लेकिन हम इन उतार-चढ़ावों को उस गरिमा के साथ सहेंगे जो अभिजात वर्ग की विरासत है। यह सदन इस विधेयक पर मुहर लगा सकता है। उच्च सदन इसे सरसरी तौर पर पढ़कर फिर से मुहर लगा सकता है। राष्ट्रपति बिना सोचे-समझे इस पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। लेकिन अदालतें हमारा साथ देंगी। हमारे पड़ोसी राज्य बिहार की तरह, यह हानिकारक कानून रद्द कर दिया जाएगा। और हम न्याय के लिए लड़ेंगे, हाँ, न्यायपालिका के समक्ष, प्रेस में और चुनावी सभाओं में—जब तक हमारे शरीर में साँस है—और हाँ, जब तक हमारे फेफड़ों में आवाज़ है।
श्री देवकीनंदन राय (समाजवादी पार्टी): माननीय सदस्य का प्रवचन बहुत ज्ञानवर्धक रहा। मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे नहीं लगता कि वह ब्रह्मपुर की गलियों में भीख माँगकर अपना पेट भरेगी। शायद केक के लिए थोड़ी बहुत भीख माँग ले, पर मुझे इस पर भी संदेह है। अगर मेरा बस चलता तो वह भीख नहीं माँगती, बल्कि उसे और उसके जैसे लोगों को इसके लिए मेहनत करनी पड़ती। यही न्याय की मांग है, और यही इस प्रांत की आर्थिक सेहत के लिए भी आवश्यक है। मैं और समाजवादी पार्टी के सदस्य माननीय सदस्य से सहमत हैं कि यह विधेयक कांग्रेस पार्टी और

सरकार का चुनावी हथकंडा है। लेकिन हमारा यह मानना इस आधार पर है कि यह विधेयक शक्तिहीन, अप्रभावी और समझौतावादी है। यह इस प्रांत में कृषि संबंधों में व्यापक सुधार लाने के लिए आवश्यक उपायों के आस-पास भी नहीं है।

जमींदारों के लिए मुआवजा! क्या? उस खून का मुआवजा जो उन्होंने पहले ही बेबस और शोषित किसानों के अंगों से चूस लिया है? या उनके ईश्वर प्रदत्त अधिकार का मुआवजा—मैंने देखा है कि माननीय सदस्य को अपने कमजोर तर्कों को मजबूत करने के लिए जब भी ईश्वर की सहायता की आवश्यकता होती है, तो वे ईश्वर का आह्वान करने की आदत रखती हैं —उनका ईश्वर प्रदत्त अधिकार कि वे इस राज्य के घी पर खुद को और अपने बेकार बेरोजगार रिश्तेदारों के समूह को भरते रहें, जबकि गरीब किसान, गरीब किरायेदार, गरीब भूमिहीन मजदूर, गरीब श्रमिक अपने भूखे बच्चों के लिए आधा घूंट दूध भी मुश्किल से जुटा पाते हैं? राजकोष क्यों खाली हो रहा है? हम इन वादे किए गए बॉन्डों के ज़रिए खुद को और अपने बच्चों को कर्ज़ में क्यों डुबो रहे हैं, जबकि ज़मींदारों, तालुकदारों और हर तरह के जमींदारों के इस निकम्मे और भ्रष्ट वर्ग को उनकी ज़मीनों से तुरंत बेदखल कर देना चाहिए—बिना किसी मुआवज़े के —जिन पर वे पीढ़ियों से कब्ज़ा जमाए हुए हैं, सिर्फ़ इसलिए कि उन्होंने विद्रोह के समय अपने देश के साथ विश्वासघात किया और अंग्रेजों ने उन्हें उनके राजद्रोह के लिए भरपूर इनाम दिया? क्या यह न्यायसंगत है, महोदय—क्या यह उचित है कि उन्हें यह मुआवज़ा दिया जाए? यह सरकार अपनी निंदनीय तथाकथित उदारता के नाम पर इन खानदानी उत्पीड़कों की झोली में जो पैसा डाल रही है, उसे सड़कों और स्कूलों, भूमिहीनों के लिए आवास और भूमि सुधार, क्लीनिकों और कृषि अनुसंधान केंद्रों में लगाया जाना चाहिए, न कि उस विलासितापूर्ण खर्च में

जो अभिजात वर्ग की आदत या क्षमता है।

मिर्ज़ा अमानत हुसैन खान (डेमोक्रेटिक पार्टी): महोदय, मैं व्यवस्था का प्रश्न उठाना चाहता हूँ। क्या माननीय सदस्य को विषय से भटकने और सदन का समय अप्रासंगिक बातों में बर्बाद करने की अनुमति दी जानी चाहिए?

माननीय अध्यक्ष महोदय: मुझे लगता है कि उनका कथन अप्रासंगिक नहीं है। वे किरायेदारों, जमींदारों और सरकार के बीच संबंधों के सामान्य प्रश्न पर बोल रहे हैं। यह प्रश्न कमोबेश हमारे समक्ष है और माननीय सदस्य द्वारा इस विषय पर की गई कोई भी टिप्पणी अप्रासंगिक नहीं है। आप इसे पसंद करें या न करें, मैं इसे पसंद करूं या न करूं, लेकिन यह नियम के विरुद्ध नहीं है।

श्री देवकीनंदन राय: धन्यवाद महोदय। वहाँ नंगा किसान चिलचिलाती धूप में खड़ा है, और हम यहाँ अपने ठंडे बहस-मंचों में बैठकर व्यवस्था के बिंदुओं और प्रासंगिकता की परिभाषाओं पर चर्चा करते हैं और ऐसे कानून बनाते हैं जो उसकी स्थिति में कोई सुधार नहीं करते, जो उसकी आशा छीन लेते हैं, जो पूंजीपति, शोषक, शोषक वर्ग का पक्ष लेते हैं। किसान को उस भूमि के लिए क्यों भुगतान करना चाहिए जो उसका अधिकार है, परिश्रम के अधिकार से, पीड़ा के अधिकार से, प्रकृति के अधिकार से, और यदि आप चाहें तो ईश्वर के अधिकार से? किसान से सरकारी खजाने में यह भारी और अनुचित खरीद मूल्य चुकाने की अपेक्षा केवल जमींदार के अत्यधिक मुआवजे को वित्तपोषित करने के लिए की जाती है। मुआवजा समाप्त कर दें, तो खरीद मूल्य की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। खरीद मूल्य की अवधारणा को अस्वीकार कर दें, तो कोई भी मुआवजा आर्थिक रूप से असंभव हो जाएगा। मैं दो साल पहले विधेयक की शुरुआत से ही और पिछले सप्ताह दूसरे वाचन के दौरान इस मुद्दे पर

बहस करता रहा हूँ। लेकिन इस समय मैं क्या कर सकता हूँ? बहुत देर हो चुकी है। सत्ता पक्ष के सदस्यों से मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि आपने जमींदारों के साथ एक अपवित्र गठबंधन बना लिया है और आप हमारी जनता का मनोबल तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन देखते हैं क्या होता है जब जनता को पता चलेगा कि उनके साथ धोखा हुआ है। आम चुनाव इस कायर और समझौतावादी सरकार को उखाड़ फेंकेंगे और उसकी जगह एक ऐसी सरकार लाएंगे जो नाम के लायक हो: एक ऐसी सरकार जो जनता से बनी हो, जनता के लिए काम करे और अपने वर्ग शत्रुओं को कोई समर्थन न दे।

5.16

नवाब साहब अपने इस आखिरी भाषण के शुरुआती हिस्से में सदन में दाखिल हुए थे। वे आगंतुक दीर्घा में बैठे थे, हालाँकि अगर वे चाहते तो राज्यपाल दीर्घा में भी उनका स्वागत होता। वे पिछले दिन ब्रह्मपुर से आए एक ज़रूरी संदेश के जवाब में बैतर से लौटे थे। जो कुछ हुआ था उससे वे स्तब्ध और दुखी थे और इस बात से भयभीत थे कि उनकी बेटी को लगभग अकेले ही ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ा। ज़ैनब के प्रति उनकी चिंता उनकी बेटी के किए पर गर्व से कहीं अधिक स्पष्ट थी, जिसके कारण ज़ैनब मुस्कुराए बिना नहीं रह सकीं। काफी देर तक वे उन्हें और अपने दोनों पोते-पोतियों को गले लगाते रहे, उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। हसन असमंजस में था, लेकिन छोटे अब्बास ने इसे स्वाभाविक स्थिति मान लिया और इसका आनंद लिया—वह समझ गया था कि उनके दादाजी उन्हें देखकर बिल्कुल भी दुखी नहीं थे। फ़िरोज़ गुस्से से लाल हो गया था, और दोपहर में देर से आने पर इम्तियाज़ के सारे सौहार्दपूर्ण व्यवहार से ही परिवार शांत हुआ था।

नवाब साहब अपनी झगड़ालू भाभी से लगभग उतने ही नाराज़ थे जितने

एल.एन. अग्रवाल से। उन्हें पता था कि उन्हीं की वजह से उन पर यह मुसीबत आई थी। फिर, जब सब कुछ शांत हो गया, तो उन्होंने पुलिस कार्रवाई को हल्के में लिया और लगभग लापरवाही से मान लिया कि ज़ैनब ने भी ऐसे ही चतुराई भरे कौशल से मामले को संभाला होगा। एल.एन. अग्रवाल की बात करें तो, नवाब साहब ने सदन की ओर देखा और उन्हें राजस्व मंत्री से बड़ी विनम्रता से बात करते हुए पाया। राजस्व मंत्री उनकी मेज के पास आ गए थे और उनसे किसी मुद्दे पर चर्चा कर रहे थे, शायद आज दोपहर बाद होने वाले महत्वपूर्ण मतदान के संबंध में सदन के प्रबंधन पर।

नवाब साहब को वापसी के बाद से अपने मित्र महेश कपूर से बात करने का मौका नहीं मिला था, न ही मुख्यमंत्री को हार्दिक धन्यवाद देने का। उन्होंने सोचा था कि विधानसभा का आज का सत्र समाप्त होने के बाद वे ऐसा करेंगे। लेकिन आज सदन में उनकी उपस्थिति का एक और कारण यह था कि वे—और कई अन्य लोग भी, क्योंकि प्रेस और आम जनता की गैलरी खचाखच भरी हुई थी—यह समझ गए थे कि यह एक ऐतिहासिक अवसर है। उनके लिए, और उनके जैसे अन्य लोगों के लिए, आगामी मतदान एक ऐसा मतदान था जो—यदि न्यायालयों द्वारा रोका न जाए—तेजी से और अचानक पतन का कारण बनेगा।

खैर, उसने भाग्यवादी भाव से सोचा, यह तो देर-सवेर होना ही था। उसे इस बात का कोई भ्रम नहीं था कि उसका वर्ग विशेष रूप से गुणी था। उसमें न केवल कुछ भले लोग थे, बल्कि बहुत सारे जाहिल और उससे भी कहीं अधिक मूर्ख भी थे। उसे बारह वर्ष पूर्व जमींदार संघ द्वारा राज्यपाल को सौंपी गई याचिका याद आई: हस्ताक्षरकर्ताओं में से लगभग एक तिहाई ने अपने अंगूठे के निशान लगाए थे।

शायद अगर पाकिस्तान अस्तित्व में न आया होता, तो जमींदार अपनी

सत्ता को बचाए रखने के लिए सौदेबाजी कर सकते थे: एक एकजुट लेकिन अस्थिर भारत में, प्रत्येक शक्ति गुट यथास्थिति बनाए रखने के लिए अपनी महत्वपूर्ण ताकत का इस्तेमाल कर सकता था। रियासतें भी अपना दबदबा कायम रख सकती थीं, और मारह के राजा जैसे लोग नाम के साथ-साथ असल में भी राजा बने रह सकते थे। नवाब साहब का मानना था कि इतिहास के ये 'अगर-मगर' भले ही सारहीन हों, लेकिन एक मोहक खुराक की तरह हैं।

सन् 1850 के दशक के आरंभ में अंग्रेजों द्वारा ब्रह्मपुर पर कब्ज़ा किए जाने के बाद से बैतर के नवाबों और ब्रह्मपुर के पूर्व शाही परिवार के अन्य दरबारी राज्य की सेवा करने की मनोवैज्ञानिक संतुष्टि तक प्राप्त नहीं कर सके थे, जबकि यह संतुष्टि कई दूर-दूर स्थित कुलीन वर्गों को प्राप्त थी। अंग्रेज जमींदारों को भूमि-किराया से राजस्व एकत्र करने की अनुमति देने में प्रसन्न थे (और व्यवहार में उन्हें ब्रिटिश हिस्से से अधिक जो भी प्राप्त होता था, उसे देने में संतुष्ट थे), लेकिन राज्य के प्रशासन के लिए उन्होंने अपने ही समुदाय के सिविल सेवकों के अलावा किसी पर भरोसा नहीं किया, जिन्हें इंग्लैंड में चुना गया था, आंशिक रूप से प्रशिक्षित किया गया था और वहाँ से लाया गया था—या बाद में, ऐसे भूरे समकक्षों पर जिनकी शिक्षा और नैतिकता इतनी मिलती-जुलती थी कि कोई खास अंतर नहीं रह गया था।

और वास्तव में, नस्लीय अविश्वास के अलावा, नवाब साहब को यह स्वीकार करना पड़ा कि योग्यता का प्रश्न भी था। अधिकांश जमींदार—शायद स्वयं भी उनमें से एक—अपनी जागीरों का प्रबंधन ठीक से नहीं कर पाते थे और अपने मुंशी और साहूकारों के हाथों लूटे जाते थे। अधिकांश जमींदारों के लिए प्रबंधन का प्राथमिक प्रश्न यह नहीं था कि अपनी आय कैसे बढ़ाई जाए, बल्कि यह था कि उसे कैसे खर्च किया

जाए। बहुत कम लोगों ने इसे उद्योग या शहरी संपत्ति में निवेश किया था। कुछ ने निश्चित रूप से इसे संगीत, पुस्तकों और ललित कलाओं पर खर्च किया था। अन्य, जैसे पाकिस्तान के वर्तमान प्रधानमंत्री लियाकत अली खान, जो नवाब साहब के पिता के अच्छे मित्र थे, ने इसे राजनीति में प्रभाव बढ़ाने के लिए खर्च किया था। लेकिन अधिकतर राजकुमारों और जमींदारों ने अपना धन किसी न किसी प्रकार के विलासितापूर्ण जीवन पर बर्बाद कर दिया था: शिकार पर, शराब पर, महिलाओं पर या अफीम पर। दो छवियां उनके मन में अनचाहे ढंग से कौंध गईं। एक शासक को कुत्तों से इतना लगाव था कि उसका पूरा जीवन उन्हीं के इर्द-गिर्द घूमता था: वह कुत्तों के सपने देखता, सोता, जागता, कल्पना करता, उनके बारे में सोचता; वह जो कुछ भी कर सकता था, कुत्तों की महिमा के लिए ही करता था। दूसरा शासक अफीम का आदी था और उसे तभी सुकून मिलता था जब कुछ औरतें उसकी गोद में आ जाती थीं; तब भी वह हमेशा सक्रिय नहीं होता था; कभी-कभी तो वह बस खर्राटे लेता रहता था।

बैतर के नवाब के विचार सभा में चल रही बहस और अपने निजी चिंतन के बीच झूलते रहे। एक समय एल.एन. अग्रवाल ने बीच में आकर कुछ मज़ाकिया टिप्पणियाँ कीं, जिन पर महेश कपूर भी हँस पड़े। नवाब साहब अपने गंजे सिर को, जिसके चारों ओर घोड़े की नाल के आकार के भूरे बाल थे, घूरते रहे और सोचने लगे कि उस मांस और हड्डी की परत के नीचे उनके मन में क्या-क्या विचार उमड़ रहे होंगे। भला ऐसा व्यक्ति जानबूझकर, बल्कि खुशी-खुशी, उन्हें और उनके प्रियजनों को इतना दुख कैसे दे सकता है? उन्हें क्या संतोष मिला होगा कि जिस व्यक्ति ने उन्हें बहस में हराया, उसके रिश्तेदार उस घर से बेदखल हो जाएँ जिसमें उन्होंने अपना अधिकांश जीवन व्यतीत किया था?

अब लगभग साढ़े चार बज रहे थे और मतगणना में आधे घंटे से भी कम समय बचा था। अंतिम भाषण जारी थे और नवाब साहब अपनी भाभी द्वारा जमींदारी संस्था को एक चमकदार बैंगनी आभा से घेरने वाले भाषण को कुछ व्यंग्यात्मक भाव से सुन रहे थे।

बेगम आबिदा खान: एक घंटे से अधिक समय से हम सरकारी बेंचों से लगातार भाषण सुनते आ रहे हैं, जो घोर आत्म-प्रशंसा से भरे हुए हैं। मुझे नहीं लगा था कि मुझे दोबारा बोलने की इच्छा होगी, लेकिन अब बोलना ही पड़ेगा। मेरा मानना है कि उन लोगों को बोलने देना अधिक उचित होगा जिनकी मृत्यु और अंत्येष्टि की अध्यक्षता आप करना चाहते हैं—मेरा तात्पर्य जमींदारों से है, जिन्हें आप न्याय, न्याय और आजीविका से वंचित करना चाहते हैं। एक घंटे से वही सिलसिला चल रहा है—यदि यह राजस्व मंत्री नहीं हैं, तो उनका कोई चमचा है जिसे वही गीत गाने के लिए प्रशिक्षित किया गया है: उनके आका की आवाज। मैं आपको बता दूं कि यह संगीत बहुत सुखद नहीं है: यह नीरस है, सुखदायक नहीं। यह तर्क या विवेक की आवाज नहीं है, बल्कि बहुमत की शक्ति और आत्म-धार्मिकता की आवाज है। लेकिन इस पर आगे बोलना व्यर्थ है।

मुझे इस सरकार पर तरस आता है जो अपना रास्ता भटक चुकी है और अपनी ही नीतियों के दलदल से निकलने का रास्ता ढूंढ रही है। इनमें दूरदर्शिता नहीं है, और ये भविष्य पर नज़र नहीं रख सकते, न ही रखने की हिम्मत कर सकते हैं। कहा जाता है कि हमें 'आने वाले दिन से सावधान रहना चाहिए', और उसी तरह मैं इस कांग्रेस सरकार से कहता हूँ: 'उस समय से सावधान रहो जो तुम अपने ऊपर और इस देश पर लाने वाले हो।' आज़ादी मिले तीन साल हो गए हैं, लेकिन देश के गरीबों को देखो: उनके पास न तो खाने के लिए भोजन है, न पहनने के लिए कपड़े, न ही आसमान से बचने के लिए छत। तुमने जन्नत और हरे-भरे बागों का

वादा किया था, जिनके नीचे नदियाँ बहती हों, और लोगों को यह विश्वास दिलाया कि उनकी दयनीय स्थिति का कारण ज़मींदारी है। खैर, ज़मींदारी तो चली जाएगी, लेकिन जब इन हरे-भरे बागों के तुम्हारे वादे झूठे साबित होंगे, तब देखना कि लोग तुम्हारे बारे में क्या कहते हैं और तुम्हारे साथ क्या करते हैं। तुम आठ लाख लोगों को बेदखल कर रहे हो, और खुलेआम साम्यवाद को न्योता दे रहे हो। जनता जल्द ही जान जाएगी कि तुम कौन हो।

तुम ऐसा क्या कर रहे हो जो हमने नहीं किया? तुम उन्हें ज़मीन नहीं दे रहे, बल्कि उसे किराए पर दे रहे हो, ठीक वैसे ही जैसे हमने दिया था। पर तुम्हें उनकी क्या परवाह है? हम पीढ़ियों से साथ रहे हैं, हम उनके पिता-दादा जैसे थे, वे हमसे प्यार करते थे और हम उनसे, हम उनके स्वभाव को जानते थे और वे हमारे स्वभाव को। हम उन्हें जो कुछ भी देते थे, वे उससे खुश रहते थे और वे हमें जो कुछ भी देते थे, हम उससे खुश रहते थे। तुम हमारे बीच आ गए हो और प्राचीन प्रेम के बंधनों से पवित्र हुए रिश्ते को तोड़ दिया है। और जिन अपराधों और अत्याचारों का आरोप तुम हम पर लगाते हो, इन गरीब लोगों के पास क्या सबूत है कि तुम हमसे बेहतर होगे? उन्हें भ्रष्ट क्लर्क और लालची सब-डिविजनल ऑफिसर के पास जाना पड़ेगा और वे सब कुछ लूट लेंगे। हम कभी ऐसे नहीं थे। तुमने कील को मांस से अलग कर दिया है और तुम परिणाम से खुश हो।

मुआवजे की बात करें तो, मैं पहले ही बहुत कुछ कह चुका हूँ। लेकिन क्या यह शालीनता है, क्या यह न्यायसंगत प्रावधान है—कि आप किसी की दुकान पर जाकर उससे कहें: 'मुझे यह और यह इतने दाम में दे दीजिए' और अगर वह बेचने को तैयार न हो, तो आप उसे ले लें? और फिर जब वह आपसे कम से कम वादा किया हुआ सामान देने की गुहार लगाए, तो आप पलटकर कहें, 'यह लीजिए एक रुपया, बाकी आपको

पच्चीस साल में किश्तों में मिलेगा'?

आप हमें चाहे जितने नाम दें और हम पर तरह-तरह के दुख-दर्द थोपें—पर सच्चाई यह है कि हम ज़मींदारों ने ही इस प्रांत को यह मुकाम दिया है—इसे मज़बूत बनाया है, इसे इसकी खास पहचान दी है। जीवन के हर क्षेत्र में हमने अपना योगदान दिया है, एक ऐसा योगदान जो हमारे बाद भी कायम रहेगा और जिसे आप मिटा नहीं सकते। विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, शास्त्रीय संगीत की परंपराएं, विद्यालय, इस जगह की संस्कृति, सब कुछ हमने ही स्थापित किया है। जब विदेशी और हमारे देश के अन्य राज्यों के लोग इस प्रांत में आते हैं तो वे क्या देखते हैं—किसकी प्रशंसा करते हैं? बरसात महल, शाही दरवाज़ा, इमामबाड़े, बाग और वे हवेलियाँ जो हमसे आपको विरासत में मिली हैं। आप कहते हैं कि ये चीज़ें दुनिया को महकती हैं, लेकिन ये शोषण और सड़ते शवों की गंध से भरी हैं। क्या आपको इस तरह की बातें करते हुए शर्म नहीं आती? जब आप उन लोगों को कोसते और लूटते हैं जिन्होंने इस वैभव और सुंदरता को बनाया है? जब आप उन्हें इस शहर और इस राज्य की धरोहर इमारतों की सफेदी करने के लिए भी पर्याप्त मुआवज़ा नहीं देते? यह नीचता की सबसे बुरी हद है, यह गांव के दुकानदार का लोभी रवैया है, उस बनिया का जो मुस्कुराता रहता है और बिना किसी दया के लोगों को लूटता रहता है।

माननीय गृह मंत्री (श्री एल.एन. अग्रवाल): मुझे आशा है कि माननीय सदस्य मेरी जाति पर कोई आरोप नहीं लगा रहे हैं। यह इस सदन में आम बात होती जा रही है।

बेगम आबिदा खान: आप मेरी बात अच्छी तरह समझ रही हैं, आप तो शब्दों को तोड़-मरोड़कर और कानून को अपने हिसाब से इस्तेमाल करने में माहिर हैं। लेकिन मैं आपसे बहस करके अपना समय बर्बाद नहीं

करूंगी। आज आपने राजस्व मंत्री के साथ मिलकर एक वर्ग का शर्मनाक शोषण किया है, लेकिन कल आपको पता चल जाएगा कि ऐसे स्वार्थपूर्ण संबंधों का क्या अंजाम होता है— और जब आप अपने दोस्तों की तलाश करेंगी, तो हर कोई आपसे मुंह मोड़ लेगा। तब आपको यह दिन और मेरी कही बातें याद आएंगी, और आप और आपकी सरकार को पछतावा होगा कि काश आपने अधिक न्याय और मानवता का भाव दिखाया होता।

इसके बाद एक समाजवादी सदस्य ने बेहद लंबा भाषण दिया; फिर मुख्यमंत्री एस.एस. शर्मा ने लगभग पाँच मिनट तक बात की और इस विधेयक को तैयार करने में भूमिका निभाने वाले विभिन्न लोगों, विशेष रूप से राजस्व मंत्री महेश कपूर और उनके संसदीय सचिव अब्दस सलाम को धन्यवाद दिया। उन्होंने भूस्वामियों को सलाह दी कि संपत्ति के विनिवेश के बाद वे अपने पूर्व किरायेदारों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखें। उन्होंने सौम्य स्वर में और नाक से निकलने वाली आवाज़ में कहा कि उन्हें भाइयों की तरह साथ रहना चाहिए। यह भूस्वामियों के लिए अपनी उदारता दिखाने का अवसर था। उन्हें गांधीजी की शिक्षाओं पर विचार करना चाहिए और अपना जीवन साथी मनुष्यों की सेवा में समर्पित करना चाहिए। अंत में विधेयक के मुख्य सूत्रधार महेश कपूर को सदन में बहस समाप्त करने का मौका मिला। लेकिन उनके पास कुछ ही शब्द बोलने का समय था।

माननीय राजस्व मंत्री (श्री महेश कपूर): अध्यक्ष महोदय, मुझे आशा थी कि समाजवादी दल के मेरे मित्र, जिन्होंने समानता और वर्गहीन समाज की इतनी मार्मिक बातें कीं और सरकार को एक निष्प्रभावी और अन्यायपूर्ण विधेयक पेश करने के लिए लताड़ा, स्वयं भी न्यायप्रिय होंगे और मुझे भी कुछ समानता प्रदान करेंगे। आज का अंतिम दिन समाप्त हो रहा है। यदि उन्होंने अपने भाषण के लिए थोड़ा कम समय लिया होता,

तो मुझे थोड़ा और समय मिल जाता। अब मेरे पास बोलने के लिए मुश्किल से दो मिनट बचे हैं। उन्होंने दावा किया कि मेरा विधेयक केवल क्रांति को रोकने के उद्देश्य से बनाया गया एक उपाय था - एक ऐसी क्रांति जिसे वे वांछनीय मानते हैं। यदि ऐसा है, तो मैं यह देखने में रुचि रखूंगा कि वे और उनकी पार्टी कुछ ही मिनटों में किस ओर मतदान करते हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी के धन्यवाद और सलाह के बाद—जिस सलाह को जमींदारों द्वारा गंभीरता से लिया जाएगा, ऐसी मेरी हार्दिक आशा है—मुझे केवल कुछ और धन्यवाद के शब्द कहने हैं—सदन के इस भाग में और हाँ, उस भाग में भी, जिन्होंने इस विधेयक को पारित कराना संभव बनाया, और राजस्व विभाग, मुद्रण विभाग और विधि विभाग के अधिकारियों, विशेष रूप से मसौदा प्रकोष्ठ और विधि सलाहकार कार्यालय को। मैं उन सभी को उनके महीनों और वर्षों के सहयोग और सलाह के लिए धन्यवाद देता हूँ, और मुझे आशा है कि मैं पूर्व प्रदेश की जनता की ओर से यह कह रहा हूँ कि मेरा धन्यवाद केवल व्यक्तिगत नहीं है।

माननीय अध्यक्ष महोदय: सदन के समक्ष प्रश्न यह है कि पूर्व प्रदेश जमींदारी उन्मूलन विधेयक, जो मूल रूप से 1948 का है और जिसे विधान सभा द्वारा पारित किया गया था, विधान परिषद द्वारा संशोधित किया गया था और फिर विधान सभा द्वारा आगे संशोधित किया गया था, उसे पारित किया जाए।

प्रस्ताव पेश किया गया और सदन ने भारी बहुमत से विधेयक पारित कर दिया, जिसमें मुख्य रूप से कांग्रेस पार्टी के सदस्य शामिल थे, जिनकी सदन में संख्या बल अधिक थी। समाजवादी पार्टी को अनिच्छा से ही सही, विधेयक के पक्ष में मतदान करना पड़ा, क्योंकि उनका मानना था कि कुछ न मिलने से कुछ मिलना बेहतर है, और इस तथ्य के बावजूद कि इससे उनकी भूख कुछ हद तक शांत हुई, जिससे वे समृद्ध हो सकते थे।

यदि वे इसके विरुद्ध मतदान करते, तो उन्हें कभी पछतावा नहीं होता। डेमोक्रेटिक पार्टी ने सर्वसम्मति से इसके विरुद्ध मतदान किया, जैसा कि अपेक्षित था। छोटी पार्टियों और निर्दलीय सदस्यों ने अधिकांशत: विधेयक के पक्ष में मतदान किया।

बेगम आबिदा खान: अध्यक्ष की अनुमति से मैं कुछ कहना चाहूंगी।

माननीय अध्यक्ष महोदय: मैं आपको एक मिनट का समय दूंगा।

बेगम आबिदा खान: मैं अपनी और डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर से कहना चाहूंगी कि माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा जमींदारों को दी गई सलाह—कि वे अपने किरायेदारों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखें—बहुत ही मूल्यवान सलाह है, और मैं इसके लिए उन्हें धन्यवाद देती हूं। लेकिन हम उनकी इस उत्कृष्ट सलाह के बावजूद और इस विधेयक के पारित होने के बावजूद भी ऐसे ही उत्कृष्ट संबंध बनाए रखते—यह विधेयक जो इतने सारे लोगों को गरीबी और बेरोजगारी में धकेल देगा, जो इस प्रांत की अर्थव्यवस्था और संस्कृति को पूरी तरह से नष्ट कर देगा, और जो साथ ही साथ उन लोगों को जरा भी लाभ नहीं पहुंचाएगा जो—

माननीय राजस्व मंत्री (श्री महेश कपूर): अध्यक्ष महोदय, यह किस प्रकार का अवसर है भाषण देने का?

माननीय अध्यक्ष महोदय: मैंने उन्हें केवल संक्षिप्त बयान देने की अनुमति दी थी। मैं माननीय सदस्य से अनुरोध करूंगा—

बेगम आबिदा खान: इस विधेयक को अन्यायपूर्ण तरीके से भारी बहुमत से पारित किए जाने के परिणामस्वरूप, हमारे पास इस समय अपनी नाराजगी और अन्याय की भावना को व्यक्त करने का संवैधानिक रूप से एकमात्र उपाय सदन से बाहर निकलना है, जो कि एक संवैधानिक प्रक्रिया है। इसलिए, मैं अपनी पार्टी के सदस्यों से इस विधेयक के पारित होने के विरोध में सदन से बाहर निकलने का आह्वान करती हूं।

डेमोक्रेटिक पार्टी के सदस्य विधानसभा से बाहर चले गए। कुछ लोगों ने हूटिंग की और 'शर्म करो!' के नारे लगाए, लेकिन विधानसभा में ज्यादातर सन्नाटा छाया रहा। दिन का अंत हो चुका था, इसलिए यह कदम प्रतीकात्मक था, प्रभावी नहीं। कुछ देर बाद अध्यक्ष ने सदन को अगली सुबह ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित कर दिया। महेश कपूर ने अपने कागजात समेटे, विशाल, बर्फीले गुंबद की ओर देखा, आह भरी, और फिर धीरे-धीरे खाली होते सदन में चारों ओर नज़र घुमाई। उन्होंने दीर्घा की ओर देखा और उनकी नज़र नवाब साहब पर पड़ी। दोनों ने एक-दूसरे को अभिवादन के तौर पर सिर हिलाया, जो लगभग पूरी तरह से दोस्ताना था, हालांकि स्थिति की असहजता—जो पूरी तरह से विडंबना नहीं थी—उनमें से किसी से भी छिपी नहीं थी। दोनों में से कोई भी अभी एक-दूसरे से बात नहीं करना चाहता था, और दोनों यह बात समझते थे। इसलिए महेश कपूर अपने कागजात व्यवस्थित करते रहे, और नवाब साहब, सोचते हुए अपनी दाढ़ी सहलाते हुए, मुख्यमंत्री को ढूंढने के लिए दीर्घा से बाहर चले गए।

भाग छह

6.1

हरिदास संगीत महाविद्यालय पहुँचकर उस्ताद मजीद खान ने कुछ अन्य संगीत शिक्षकों को अनमने ढंग से सिर हिलाकर अभिवादन किया, भूतल पर स्थित पास के अभ्यास कक्ष में अपनी पायलें झनझनाती हुई ले जा रही दो महिला कथक नर्तकियों को देखकर अरुचि से मुँह बनाया और अपने कमरे के बंद दरवाजे पर पहुँच गए। कमरे के बाहर, अव्यवस्थित ढंग से, चप्पलों के तीन सेट और जूतों का एक जोड़ा पड़ा था। उस्ताद मजीद

खान को एहसास हुआ कि उन्हें पैंतालीस मिनट की देरी हो गई है, उन्होंने आधे चिढ़ और आधे थके हुए स्वर में 'या अल्लाह' कहा, अपनी पेशावरी चप्पलें उतारीं और कमरे में प्रवेश किया।

जिस कमरे में उन्होंने प्रवेश किया, वह एक सादा, आयताकार, ऊँची छत वाला कमरा था जिसमें प्राकृतिक रोशनी बहुत कम थी। बाहर से जो थोड़ी-बहुत रोशनी आ रही थी, वह दूर की दीवार पर बने एक छोटे से रोशनदान से आ रही थी। प्रवेश करते ही बाईं ओर की दीवार पर एक लंबी अलमारी थी, जिस पर एक रैक में कई तानपुरा रखे थे। फर्श पर हल्के नीले रंग का बिना डिज़ाइन वाला सूती कालीन बिछा था; इसे पाना काफी मुश्किल था, क्योंकि बाज़ार में मिलने वाले अधिकांश कालीनों पर फूलों या अन्य प्रकार के डिज़ाइन बने होते थे। लेकिन उन्होंने सादे कालीन पर ज़ोर दिया था ताकि संगीत में उनका ध्यान न भटके, और अधिकारियों ने आश्चर्यजनक रूप से उनके लिए एक कालीन ढूंढने की सहमति दे दी थी। कालीन पर उनके सामने एक छोटा, मोटा युवक बैठा था जिसे उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था; वह व्यक्ति उनके प्रवेश करते ही खड़ा हो गया। उनसे दूर एक युवक और दो युवतियाँ बैठी थीं। दरवाज़ा खुलते ही वे मुड़ीं और जैसे ही उन्होंने उन्हें देखा, सम्मानपूर्वक उनका अभिवादन करने के लिए उठ खड़ी हुईं। उनमें से एक महिला—मालती त्रिवेदी—ने उनके पैर छूने के लिए झुक भी गईं। उस्ताद मजीद खान नाराज नहीं हुए। जब वह उठीं तो उन्होंने उन्हें फटकारते हुए कहा:

तो आपने वापसी करने का फैसला कर लिया है, है ना? अब जब विश्वविद्यालय बंद है, तो मुझे लगता है कि मेरी कक्षाएं फिर से भर जाएंगी। हर कोई संगीत के प्रति अपने समर्पण की बात करता है, लेकिन परीक्षा के समय वे खरगोशों की तरह अपने बिलों में गायब हो जाते हैं।

फिर उस्ताद ने अजनबी की ओर रुख किया। यह मोटू चंद था, मोटा-ताज़ा

तबला वादक जो आमतौर पर सईदा बाई के साथ रहता था। उस्ताद मजीद खान, अपने नियमित तबला वादक की जगह किसी अपरिचित व्यक्ति को देखकर आश्चर्यचकित रह गए और उन्होंने उसे सख्ती से देखते हुए पूछा, 'जी?'

मोटू चंद ने सौम्य मुस्कान के साथ कहा, 'क्षमा करें उस्ताद साहब, मेरी गुस्ताखी के लिए। आपके नियमित तबला वादक, जो मेरी पत्नी की बहन के पति के मित्र हैं, की तबीयत ठीक नहीं है और उन्होंने मुझसे पूछा है कि क्या मैं आज उनकी जगह बजा सकता हूँ।'

क्या आपका कोई नाम है?

'वैसे तो लोग मुझे मोटू चंद कहते हैं, लेकिन असल में—'

'हम्म्ह!' उस्ताद मजीद खान ने कहा, रैक से अपना तानपुरा उठाया, बैठ गए और उसे ठीक करने लगे। उनके छात्र भी बैठ गए, लेकिन मोटू चंद खड़े ही रहे।

'ओह-होह, बैठ जाओ,' उस्ताद मजीद खान ने चिड़चिड़ाते हुए कहा, और मोटू चंद की ओर देखने की जहमत भी नहीं उठाई।

अपने तानपुरा को ठीक करते हुए उस्ताद मजीद खान ने ऊपर देखा और सोचने लगे कि तीनों छात्रों में से किसे पहले पंद्रह मिनट का समय दिया जाए। देखा जाए तो यह समय लड़के का था, लेकिन रोशनदान से आती एक तेज रोशनी मालती के हंसमुख चेहरे पर पड़ी, तो उस्ताद मजीद खान ने अचानक ही उसे शुरुआत करने के लिए कह दिया। वह उठी, एक छोटा तानपुरा लाई और उसे ठीक करने लगी। मोटू चंद ने अपने तबले की पिच को उसी के अनुसार समायोजित किया।

उस्ताद मजीद खान ने पूछा, 'मैं तुम्हें कौन सा राग सिखा रहा था—भैरव?'

'नहीं, उस्ताद साहब, रामकली,' मालती ने धीरे से तानपुरा बजाते हुए कहा, जिसे उसने अपने सामने कालीन पर फैला रखा था।

‘हम्म!’ उस्ताद मजीद खान ने कहा। उन्होंने राग की कुछ धीमी पंक्तियाँ गाना शुरू किया और मालती ने उनके बाद उन पंक्तियों को दोहराया। बाकी विद्यार्थी ध्यान से सुन रहे थे। राग के निचले स्वरों से उस्ताद ऊपरी स्वरों की ओर बढ़े और फिर, मोटू चंद को सोलह तालों के लयबद्ध चक्र में तबला बजाना शुरू करने का इशारा करके, उन्होंने वह रचना गाना शुरू किया जिसे मालती सीख रही थी। हालाँकि मालती ने ध्यान केंद्रित करने की पूरी कोशिश की, लेकिन दो और छात्राओं के आने से उसका ध्यान भंग हो गया। दोनों छात्राओं ने बैठने से पहले उस्ताद मजीद खान को प्रणाम किया।

स्पष्ट था कि उस्ताद एक बार फिर अच्छे मूड में थे; एक समय तो उन्होंने गाना रोककर पूछा, ‘तो, तुम सच में डॉक्टर बनना चाहती हो?’ मलाती से मुंह फेरते हुए उन्होंने व्यंग्यपूर्वक कहा, ‘उसकी जैसी आवाज़ के साथ वह जितना दुख देगी, उतना दुख वह खुद भी नहीं दे पाएगी, लेकिन अगर वह एक अच्छी संगीतकार बनना चाहती है तो उसे संगीत को अपने जीवन में दूसरे स्थान पर नहीं रखना चाहिए।’ फिर मलाती की ओर मुड़कर उन्होंने कहा, ‘संगीत में उतनी ही एकाग्रता की आवश्यकता होती है जितनी सर्जरी में। आप ऑपरेशन के बीच में एक महीने के लिए गायब नहीं हो सकते और अपनी मर्जी से संगीत नहीं कर सकते।’

‘जी हां, उस्ताद साहब,’ मालती त्रिवेदी ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा।

‘एक महिला डॉक्टर के रूप में!’ उस्ताद मजीद खान ने सोचते हुए कहा। ‘ठीक है, ठीक है, चलिए आगे बढ़ते हैं—हम रचना के किस भाग पर थे?’ ऊपर वाले कमरे से लगातार आती धमकियों की आवाज़ से उनका सवाल बीच में ही रुक गया। भरतनाट्यम नर्तकियों ने अभ्यास शुरू कर दिया था। हॉल में उस्ताद ने जिन कथक नर्तकियों को घूरकर देखा था, उनके

विपरीत ये नर्तकियां अभ्यास के दौरान पायल नहीं पहनती थीं। लेकिन पायल की झंकार से होने वाली परेशानी की भरपाई उन्होंने ऊपर वाले कमरे में फर्श पर एड़ियों और तलवों को ज़ोर-ज़ोर से पटककर कर ली। उस्ताद मजीद खान का माथा गुस्से से लाल हो गया और उन्होंने मालती को दे रहे अपने पाठ को अचानक रोक दिया।

अगला विद्यार्थी वह लड़का था। उसकी आवाज़ अच्छी थी और उसने कक्षाओं के बीच में खूब मेहनत की थी, लेकिन किसी कारणवश उस्ताद मजीद खान ने उसके साथ कुछ रूखा व्यवहार किया। शायद वे ऊपर से रुक-रुक कर सुनाई देने वाले भरतनाट्यम से अभी भी नाराज़ थे। कक्षा समाप्त होते ही लड़का चला गया।

इसी बीच वीणा टंडन अंदर आईं, बैठ गईं और सुनने लगीं। वह परेशान लग रही थीं। वह मालती के बगल में बैठीं, जिन्हें वह संगीत की सहपाठी और लता की दोस्त दोनों के रूप में जानती थीं। मोटू चंद, जो उनके सामने बैठकर संगीत बजा रहे थे, ने सोचा कि दोनों में एक दिलचस्प विरोधाभास है: मालती अपने गोरे, सुंदर चेहरे, भूरे बालों और थोड़ी शरारती हरी आँखों के साथ, और वीणा अपने सांवले, भरे-भरे चेहरे, काले बालों और गहरी आँखों के साथ, जीवंत लेकिन चिंतित।

लड़के के बाद एक हंसमुख लेकिन शर्मीली अधेड़ उम्र की बंगाली महिला की बारी आई, जिसकी बोली की नकल करना उस्ताद मजीद खान को बहुत पसंद था। वह आम तौर पर शाम को आती थी, और इस समय वह उसे राग मलकौंस सिखा रहे थे। वह कभी-कभी इसे 'मलकोश' कह देती थी, जिससे उस्ताद को हंसी आ जाती थी।

‘तो आप आज सुबह आए हैं,’ उस्ताद मजीद खान ने कहा। ‘मैं आपको सुबह-सुबह मलकोश कैसे सिखा सकता हूँ?’

बंगाली महिला ने कहा, 'मेरे पति का कहना है कि मुझे सुबह आना

चाहिए।'

'तो क्या आप अपनी शादी के लिए अपनी कला का बलिदान देने को तैयार हैं?' उस्ताद ने पूछा।

बंगाली महिला ने नज़रें झुकाए हुए कहा, 'पूरी तरह नहीं।' उसके तीन बच्चे थे और वह उनकी अच्छी परवरिश कर रही थी, लेकिन फिर भी वह बेहद शर्मीली थी, खासकर जब उसके उस्ताद उसकी आलोचना करते थे।

'आपका मतलब क्या है, पूरी तरह से नहीं?'

'खैर,' महिला ने कहा, 'मेरे पति चाहते हैं कि मैं शास्त्रीय संगीत नहीं बल्कि रवींद्रसंगीत गाऊं।'

'हम्म्ह!' उस्ताद मजीद खान ने कहा। रवींद्रनाथ टैगोर के गीतों की मीठी-मीठी धुनें किसी भी पुरुष के कानों को शास्त्रीय ख्याल की सुंदरता से ज़्यादा लुभा सकती हैं, यह बात ऐसे व्यक्ति को मूर्ख साबित करती है। शर्मीली बंगाली महिला से उस्ताद ने नरम लहजे में तिरस्कार से कहा: 'तो मुझे लगता है कि अब वो तुमसे गोजोल गाने को कहेंगे।'

उसके क्रूर गलत उच्चारण पर बंगाली महिला पूरी तरह से घबराकर चुप हो गई, लेकिन मालती और वीना ने एक-दूसरे को मजे से देखा।

उस्ताद मजीद खान ने अपने पिछले पाठ का जिक्र करते हुए कहा: 'लड़के की आवाज अच्छी है और वह मेहनत भी करता है, लेकिन वह ऐसे गाता है जैसे चर्च में गा रहा हो। यह पश्चिमी संगीत में उसके शुरुआती प्रशिक्षण का असर होगा। यह अपने आप में एक अच्छी परंपरा है,' उन्होंने धैर्यपूर्वक आगे कहा। फिर, कुछ देर रुककर, उन्होंने कहा, 'लेकिन आप इसे भूल नहीं सकते। आवाज में गलत तरीके से बहुत कंपन होता है। हम्म।' उन्होंने बंगाली महिला की ओर मुड़कर कहा: 'तानपुरा को "मा" पर ट्यून करो; मैं तुम्हें तुम्हारा "मलकोश" भी सिखा देता हूँ। किसी राग को आधा-अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए, भले ही उसे गाने का समय सही न हो। लेकिन फिर

मुझे लगता है कि सुबह दही जमाकर रात को खाया जा सकता है।’
घबराहट के बावजूद, बंगाली महिला ने अच्छा प्रदर्शन किया। उस्ताद ने उसे थोड़ा बहुत अपने आप ही बजाने दिया और यहाँ तक कि दो-तीन बार हौसला बढ़ाते हुए कहा, 'आपकी उम्र लंबी हो!' सच कहें तो, संगीत उस बंगाली महिला के लिए उसके पति और तीन सुसंस्कृत बेटों से भी ज़्यादा मायने रखता था, लेकिन जीवन की मजबूरियों के कारण उसके लिए इसे प्राथमिकता देना असंभव था। उस्ताद उससे प्रसन्न हुए और उसे सामान्य से ज़्यादा समय तक पाठ पढ़ाया। पाठ समाप्त होने पर, वह चुपचाप एक तरफ बैठ गई और आगे का पाठ सुनने लगी।
इसके बाद वीणा टंडन की कक्षा का समय आया। उन्हें राग भैरव गाना था, जिसके लिए तानपुरा को 'पा' में ट्यून करना ज़रूरी था। लेकिन अपने पति और बेटे की चिंताओं में इतनी डूबी होने के कारण उन्होंने तुरंत तानपुरा बजाना शुरू कर दिया।
‘आप कौन सा राग सीख रहे हैं?’ उस्ताद मजीद खान ने थोड़ा हैरान होकर पूछा। ‘क्या यह भैरव राग नहीं है?’
'जी हां, गुरुजी,' वीना ने कुछ असमंजस में पड़ते हुए कहा।
‘गुरुजी?’ उस्ताद मजीद खान ने हैरानी भरी आवाज में कहा, जो अगर अचंभित न होती तो आक्रोश से भरी होती। वीना उनकी प्रिय शिष्याओं में से एक थी, और वे समझ नहीं पा रहे थे कि उसे क्या हो गया है।
'उस्ताद साहब,' वीना ने खुद को सुधारा। उसे भी आश्चर्य हुआ कि उसने अपने मुस्लिम शिक्षक को संबोधित करते समय एक हिंदू शिक्षक के लिए उचित सम्मानसूचक उपाधि का प्रयोग किया था।
उस्ताद मजीद खान ने आगे कहा: 'और अगर आप भैरव का गायन कर रहे हैं, तो क्या आपको नहीं लगता कि तानपुरा को फिर से ट्यून करना एक अच्छा विचार होगा?'

'ओह,' वीना ने आश्चर्य से तानपुरा की ओर देखते हुए कहा, मानो उसकी इस भूल के लिए तानपुरा ही जिम्मेदार हो।

वीणा के फिर से सुर मिलाने के बाद, उस्ताद ने उसे अनुकरण करने के लिए एक धीमे आलाप की कुछ पंक्तियाँ गाकर सुनाईं, लेकिन उसका प्रदर्शन इतना असंतोषजनक था कि एक समय उन्होंने उससे तीखे स्वर में कहा: 'सुनो। पहले सुनो। पहले सुनो, फिर गाओ। सुनने में पंद्रह आना लगते हैं। उसे दोहराने में एक आना—यह तो तोते का काम है। क्या तुम्हें किसी बात की चिंता है?' वीणा को अपने गुरु के सामने अपनी चिंताओं के बारे में बात करना उचित नहीं लगा, और उस्ताद मजीद खान ने आगे कहा: 'क्यों न तुम तानपुरा बजाओ ताकि मैं सुन सकूँ? तुम्हें नाश्ते में बादाम खाने चाहिए—इससे तुम्हारी शक्ति बढ़ेगी। ठीक है, चलिए अब रचना पर चलते हैं—"जागो मोहन प्यारे",' उन्होंने अधीरता से कहा।

मोटू चंद ने तबले पर लयबद्ध धुन शुरू की और वे गाने लगे। उस प्रसिद्ध रचना के बोलों ने वीणा के अस्थिर विचारों को स्थिरता प्रदान की और उसके गायन में बढ़ता आत्मविश्वास और जीवंतता उस्ताद मजीद खान को प्रसन्न कर गई। थोड़ी देर बाद पहले मालती और फिर बंगाली महिला उठकर जाने लगीं। उस्ताद के मन में 'गोजोल' शब्द कौंधा और उन्हें याद आया कि उन्होंने मोटू चंद के बारे में पहले कहाँ सुना था। क्या वह वही तबला वादक नहीं थे जिन्होंने संगीत के पवित्र मंदिर को अपवित्र करने वाली सईदा बाई की ग़ज़लों में संगत की थी, वह वेश्या जिसने मारह के कुख्यात राजा की सेवा की थी? एक विचार से दूसरा विचार आया; वे अचानक वीणा की ओर मुड़े और बोले, 'अगर तुम्हारे पिता, मंत्री जी, हमारी आजीविका को नष्ट करने पर तुले हैं, तो कम से कम वे हमारे धर्म की रक्षा तो कर सकते हैं।'

वीना ने गाना बंद कर दिया और अचंभित होकर चुपचाप उनकी ओर देखने

लगी। उसे समझ आ गया था कि 'आजीविका' से तात्पर्य उन बड़े ग्रामीण जमींदारों के संरक्षण से है जिनकी जमीनों को जमींदारी उन्मूलन विधेयक छीनने की कोशिश कर रहा था। लेकिन उस्ताद साहब का अपने धर्म पर खतरे से क्या तात्पर्य था, यह वह बिल्कुल भी नहीं समझ पाई।

'उसे यह बात बता दो,' उस्ताद मजीद खान ने आगे कहा।

'जी हां, उस्ताद साहब,' वीना ने धीमी आवाज में कहा।

'कांग्रेस वाले नेहरू, मौलाना आजाद और रफी साहब का खात्मा कर देंगे। और हमारे आदरणीय मुख्यमंत्री और गृह मंत्री भी देर-सवेर आपके पिता को ही दबा देंगे। लेकिन जब तक उनका राजनीतिक जीवन बचा है, वे हम जैसे लोगों की मदद के लिए कुछ कर सकते हैं, जो सुरक्षा के लिए उन जैसे लोगों पर निर्भर हैं। एक बार जब वे हमारे प्रार्थना करते समय मंदिर से अपने भजन गाने लगेंगे, तो इसका अंजाम बुरा ही होगा।'

वीना को एहसास हुआ कि उस्ताद मजीद खान चौक में बन रहे शिव मंदिर का जिक्र कर रहे थे, जो उस्ताद मजीद खान के घर से कुछ ही गलियों की दूरी पर था।

कुछ सेकंड तक गुनगुनाते रहने के बाद उस्ताद रुके, गला साफ किया और लगभग खुद से ही बोले: "हमारे इलाके में जीना नामुमकिन होता जा रहा है। मारह के पागलपन के अलावा, मिसरी मंडी का पूरा पागलपन भरा मामला है। यह चौंकाने वाला है," उन्होंने आगे कहा, "पूरा इलाका हड़ताल पर है, कोई काम नहीं करता, और वे बस एक-दूसरे पर नारे लगाते और धमकियाँ देते रहते हैं। छोटे मोची भूखे मर रहे हैं और चिल्ला रहे हैं, व्यापारी कमर कस रहे हैं और धौंस जमा रहे हैं, और दुकानों में जूते नहीं हैं, पूरी मंडी में कोई रोजगार नहीं है। हर किसी के हित प्रभावित हो रहे हैं, फिर भी कोई समझौता करने को तैयार नहीं है। और यह वही इंसान है जिसे ईश्वर ने खून के थक्के से बनाया है, और जिसे उसने बुद्धि

और विवेक दिया है।”

उस्ताद ने अपने हाथ को तिरस्कारपूर्ण ढंग से हिलाते हुए अपनी बात समाप्त की, एक ऐसा इशारा जिससे यह संकेत मिलता था कि मानव स्वभाव के बारे में उन्होंने अब तक जो कुछ भी सोचा था, वह सब पुष्ट हो गया था।

वीना को और भी ज़्यादा परेशान देखकर मजीद खान के चेहरे पर चिंता के भाव आ गए। उन्होंने लगभग आत्म-निंदा करते हुए कहा, 'मैं तुम्हें ये सब क्यों बता रहा हूँ? तुम्हारे पति को ये सब मुझसे ज़्यादा पता है। इसीलिए तुम परेशान हो - बिलकुल, बिलकुल।'

वीणा, हालांकि सामान्यतः संवेदनहीन रहने वाले उस्ताद की इस सहानुभूतिपूर्ण अभिव्यक्ति से भावुक हो गई थीं, फिर भी चुप रहीं और तानपुरा बजाती रहीं। उन्होंने वहीं से शुरू किया जहाँ से छोड़ा था, लेकिन यह स्पष्ट था कि उनका ध्यान संगीत या उसके बाद आने वाली लयबद्धताओं—यानी ‘तानों’—पर नहीं था। एक समय उस्ताद ने उनसे कहा: ‘तुम “ग”, “ग”, “ग” गा रही हो, लेकिन क्या तुम सचमुच “ग” स्वर गा रही हो? मुझे लगता है तुम्हारे मन में बहुत कुछ चल रहा है। जब तुम अंदर आओ तो ऐसी बातें अपने जूतों के साथ इस कमरे के बाहर ही छोड़ दो।’

उन्होंने जटिल तानों की एक श्रृंखला गाना शुरू किया, और मोटू चंद संगीत के आनंद में डूबकर तबले पर मधुर तालबद्ध संगत की एक मनमोहक धुन बजाने लगे। तभी उस्ताद अचानक रुक गए।

उन्होंने व्यंग्यपूर्ण आदर के साथ मोटू चंद की ओर रुख किया। उन्होंने कहा, 'गुरुजी, कृपया जारी रखिए।'

तबला वादक शर्मिंदा होकर मुस्कुराया।

‘नहीं, आप जारी रखिए, हमें आपका एकल प्रदर्शन पसंद आ रहा था,’

उस्ताद मजीद खान ने आगे कहा।
मोटू चंद की मुस्कान और भी अधिक उदास हो गई।
‘क्या आप साधारण ठेका बजाना जानते हैं—वह सरल, बिना अलंकरण वाला लयबद्ध चक्र? या आप स्वर्ग के इतने ऊंचे दायरे में हैं कि आप ऐसा नहीं कर सकते?’
मोटू चंद ने उस्ताद मजीद खान की ओर गिड़गिड़ाते हुए देखा और कहा, 'उस्ताद साहब, आपके गायन की सुंदरता ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया था। लेकिन मैं ऐसा दोबारा नहीं होने दूंगा।'
उस्ताद मजीद खान ने उसे तीखी नजरों से देखा, लेकिन उनका इरादा कोई अभद्रता करने का नहीं था।
पाठ समाप्त होने के बाद वीणा उठकर जाने लगी। आम तौर पर वह यथासंभव देर तक रुकती थी, लेकिन आज यह संभव नहीं था। भास्कर को बुखार था और उसे वीणा की देखरेख की ज़रूरत थी; केदारनाथ को खुश करना ज़रूरी था; और उसकी सास ने उसी सुबह हरिदास संगीत महाविद्यालय में बिताए जाने वाले उसके समय को लेकर एक आहत टिप्पणी की थी।
उस्ताद ने अपनी घड़ी पर नज़र डाली। दोपहर की नमाज़ में अभी एक घंटा बाकी था। उन्हें अज़ान की याद आई, जो वे हर सुबह सबसे पहले अपनी स्थानीय मस्जिद से और फिर शहर भर की अन्य मस्जिदों से कुछ अंतराल पर सुनते थे। सुबह की अज़ान में उन्हें जो बात सबसे ज़्यादा पसंद थी, वह थी दो बार दोहराई जाने वाली पंक्ति, जो दिन में बाद में दी जाने वाली अज़ान में नहीं आती थी: 'नमाज़ नींद से बेहतर है।'
उनके लिए संगीत भी प्रार्थना के समान था, और कई सुबह वे भोर से बहुत पहले उठकर ललित राग या कोई और सुबह का राग गाते थे। फिर अज़ान के पहले शब्द, 'अल्लाह-उ-अकबर' - अल्लाह महान है - ठंडी हवा

में छतों पर गूंजते और उनके कान उस वाक्य का इंतज़ार करते जो सोते रहने वालों को चेतावनी देता था। जब वे उसे सुनते, तो मुस्कुराते। यह उनके दिन के सुखों में से एक था।

अगर नया शिव मंदिर बन जाता, तो सुबह के अज़ान की आवाज़ शंख की आवाज़ से दब जाती। यह सोच असहनीय थी। इसे रोकने के लिए कुछ तो करना ही होगा। ज़रूर शक्तिशाली मंत्री महेश कपूर—जिनका उनकी पार्टी के कुछ लोग प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की तरह लगभग नाममात्र का मुसलमान होने के लिए मज़ाक उड़ाते थे—कुछ कर सकते थे। उस्ताद ध्यानमग्न होकर उस गीत के बोल गुनगुनाने लगे जो वे अभी-अभी मंत्री की बेटी को सिखा रहे थे—'जागो मोहन प्यारे'। गुनगुनाते हुए वे खुद को भूल गए। वे उस कमरे को भूल गए जिसमें वे थे और उन विद्यार्थियों को भी जो अभी अपनी पढ़ाई का इंतज़ार कर रहे थे। उनके मन में यह ख्याल भी नहीं आया कि ये शब्द कृष्ण को संबोधित हैं, उनसे सुबह होने पर जागने का अनुरोध करते हैं, या भैरव—जिस राग को वे गा रहे थे—स्वयं महान भगवान शिव का ही एक नाम है।

6.2

सईदा बाई के सारंगी वादक इशाक खान कई दिनों से अपनी बहन के पति (जो स्वयं भी एक सारंगी वादक थे) को ऑल इंडिया रेडियो लखनऊ से, जहां वे एक 'स्टाफ आर्टिस्ट' थे, ऑल इंडिया रेडियो ब्रह्मपुर में तबादला कराने में मदद करने की कोशिश कर रहे थे।

आज सुबह भी, इशाक खान एआईआर कार्यालय गए और संगीत के सहायक निर्माता से बात करके अपनी किस्मत आजमाने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। नौजवान के लिए यह बेहद निराशाजनक था कि वह स्टेशन निदेशक के सामने भी अपनी बात ठीक से नहीं रख पाए। हालांकि, उन्होंने वहां मिले अपने कुछ संगीतकार मित्रों के सामने

अपनी बात ज़ोर-शोर से रखी। धूप खिली हुई थी और वे इमारत के बाहर लॉन में एक बड़े और घने नीम के पेड़ के नीचे बैठे थे। वे कैनसस के फूलों को देखते हुए इधर-उधर की बातें कर रहे थे। उनमें से एक के पास रेडियो था—जिसे उसने चतुराई से मुख्य इमारत के अंदर एक सॉकेट से जोड़ रखा था—और उन्होंने उसे उस एकमात्र स्टेशन पर चालू किया जिसे वे स्पष्ट रूप से सुन पा रहे थे, जो उनका अपना स्टेशन था।

उस्ताद मजीद खान की राग मियां-की-टोड़ी की सुरीली आवाज उनके कानों में गूंज रही थी। उन्होंने अभी गाना शुरू ही किया था और उनके साथ सिर्फ तबला और उनका अपना तानपुरा था।

यह एक शानदार संगीत था: भव्य, गरिमामय, उदास, गहरी शांति से भरा हुआ। सबने गपशप करना बंद कर दिया और सुनने लगे। यहाँ तक कि एक नारंगी चोंच वाला हूपो पक्षी भी एक मिनट के लिए फूलों की क्यारी में चोंच मारना बंद कर दिया।

उस्ताद मजीद खान की हमेशा की तरह, राग का सहज और सुव्यवस्थित प्रस्तुतीकरण लयहीन आलाप के बजाय एक बहुत ही धीमी लयबद्ध भाग के माध्यम से हुआ। लगभग पंद्रह मिनट बाद उन्होंने राग की एक तेज़ रचना की ओर रुख किया, और फिर देखते ही देखते राग तोड़ी समाप्त हो गया, और बच्चों का कार्यक्रम प्रसारित होने लगा।

इशाक खान ने रेडियो बंद कर दिया और चुपचाप बैठ गए, विचारों में डूबने के बजाय गहरी समाधि की अवस्था में थे।

कुछ देर बाद वे उठे और एआईआर स्टाफ कैंटीन चले गए। इशाक खान के दोस्त, उनके बहनोई की तरह, स्टाफ आर्टिस्ट थे, जिनके काम के घंटे तय थे और वेतन निश्चित था। इशाक खान, जिन्होंने रेडियो पर कुछ ही बार अन्य संगीतकारों के साथ संगत की थी, 'कैजुअल आर्टिस्ट' की श्रेणी में आते थे।

छोटी सी कैंटीन संगीतकारों, कार्यक्रम लेखकों, प्रशासकों और वेटरों से खचाखच भरी हुई थी। कुछ चपरासी दीवार के सहारे आराम कर रहे थे। पूरा माहौल अस्त-व्यस्त, शोरगुल भरा और आरामदायक था। कैंटीन अपनी कड़क चाय और स्वादिष्ट समोसों के लिए मशहूर थी। प्रवेश द्वार के सामने एक बोर्ड लगा था जिस पर लिखा था कि उधार नहीं दिया जाएगा; लेकिन संगीतकारों के पास हमेशा पैसों की कमी रहती थी, इसलिए उधार देना हमेशा ही पड़ता था।

एक मेज को छोड़कर बाकी सभी मेजें भरी हुई थीं। उस्ताद मजीद खान दूर वाली दीवार के पास मेज के सबसे आगे अकेले बैठे थे, सोच-विचार करते हुए अपनी चाय को हिला रहे थे। शायद उनके प्रति सम्मान के कारण, क्योंकि उन्हें ए-ग्रेड कलाकार से भी श्रेष्ठ माना जाता था, कोई भी उनके पास बैठने की हिम्मत नहीं करता था। कैंटीन में दिखने वाली सौहार्दपूर्ण और लोकतांत्रिक व्यवस्था के बावजूद, वहाँ भेद थे। उदाहरण के लिए, बी-ग्रेड कलाकार आमतौर पर बी-प्लस या ए-ग्रेड जैसे उच्च श्रेणी के कलाकारों के साथ नहीं बैठते थे—जब तक कि वे उनके शिष्य न हों—और वे आमतौर पर बोलने में भी उनका सम्मान करते थे।

इशाक खान ने कमरे में चारों ओर देखा और उस्ताद मजीद खान की मेज की आयताकार लंबाई में सजी पांच खाली कुर्सियाँ देखकर उस ओर बढ़ गया। उसके दोनों दोस्त थोड़ी झिझक के साथ उसके पीछे-पीछे चले।

जैसे ही वे पास पहुँचे, दूसरी मेज से कुछ लोग उठ गए, शायद इसलिए कि उनका अगला कार्यक्रम प्रसारित होना था। लेकिन इशाक खान ने इस पर ध्यान नहीं दिया और उस्ताद मजीद खान की मेज की ओर चल दिए। उन्होंने विनम्रता से पूछा, 'क्या हम बैठ सकते हैं?' महान संगीतकार किसी और ही दुनिया में खोए हुए थे, इसलिए इशाक और उनके दोस्त सामने वाले छोर पर रखी तीन कुर्सियों पर बैठ गए। मजीद खान के दोनों ओर दो

कुर्सियाँ खाली थीं। ऐसा लग रहा था मानो उन्हें नए आने वालों का एहसास ही न हो और वे गर्म मौसम के बावजूद दोनों हाथों से कप पकड़े चाय पी रहे थे।

इशाक दूसरे छोर पर मजीद खान के सामने बैठा था और उस नेक और अभिमानी चेहरे को देख रहा था, जो अधेड़ उम्र के स्थायी प्रभाव के बजाय किसी क्षणिक स्मृति या विचार से नरम प्रतीत हो रहा था।

राग तोड़ी की उनकी संक्षिप्त प्रस्तुति का इशाक पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा था कि वह अपनी प्रशंसा व्यक्त करने के लिए बेताब थे। उस्ताद मजीद खान कद में छोटे थे, लेकिन चाहे वे मंच पर अपनी लंबी काली अचकन पहने बैठे हों—जो गले पर इतनी कसकर बंधी होती थी कि ऐसा लगता था मानो उनकी आवाज दब जाएगी—या फिर मेज पर चाय पीते हुए, वे अपने सीधे और दृढ़ हावभाव से एक प्रभावशाली व्यक्तित्व का परिचय देते थे; वास्तव में, ऐसा लगता था मानो उनकी लंबाई और भी अधिक हो। उस समय वे लगभग पहुंच से बाहर लग रहे थे।

इशाक ने सोचा, काश वो मुझसे कुछ कहता, तो मैं उसे बता देता कि मुझे उसके प्रदर्शन के बारे में क्या लगा। उसे पता होना चाहिए कि हम यहाँ बैठे हैं। और वो मेरे पिता को जानता था। छोटे भाई को बड़े भाई की कई बातें नापसंद थीं, लेकिन जो संगीत उसने और उसके दोस्तों ने अभी सुना था, उसने उन सभी बातों को उनके तुच्छ परिप्रेक्ष्य में ला दिया।

उन्होंने चाय का ऑर्डर दिया। सरकारी संस्था होने के बावजूद कैंटीन में सेवा बहुत तेज़ थी। तीनों दोस्त आपस में बातें करने लगे। उस्ताद मजीद खान चुपचाप और तल्लीन होकर अपनी चाय पीते रहे।

इशाक अपने थोड़े व्यंग्यात्मक स्वभाव के बावजूद काफी लोकप्रिय थे और उनके कई अच्छे दोस्त थे। वे हमेशा दूसरों के काम और बोझ उठाने के लिए तत्पर रहते थे। अपने पिता की मृत्यु के बाद उन्हें और उनकी बहन

को अपने तीन छोटे भाइयों का पालन-पोषण करना पड़ा। यही एक कारण था कि उनकी बहन के परिवार का लखनऊ से ब्रह्मपुर जाना उनके लिए महत्वपूर्ण था। इशाक के दो दोस्तों में से एक, जो तबला वादक थे, ने सुझाव दिया कि इशाक के बहनोई, लखनऊ जाने के इच्छुक एक अन्य सारंगी वादक रफीक के साथ जगह बदल लें।

'लेकिन रफीक तो बी-प्लस ग्रेड का कलाकार है। तुम्हारे जीजाजी का ग्रेड क्या है?' इशाक के दूसरे दोस्त ने पूछा।

'बी।'

'स्टेशन डायरेक्टर बी-प्लस ग्रेड को बी ग्रेड में बदलना नहीं चाहेंगे। फिर भी, आप कोशिश कर सकते हैं।'

इशाक ने अपना कप उठाया, ऐसा करते समय उसे हल्का सा दर्द हुआ, और उसने अपनी चाय की चुस्की ली।

'जब तक वह खुद को बेहतर नहीं बना लेता,' उसके दोस्त ने आगे कहा। 'मैं मानता हूँ, किसी के प्रदर्शन की सिर्फ एक टेप रिकॉर्डिंग के आधार पर दिल्ली में किसी को आंकना एक बेवकूफी भरा सिस्टम है, लेकिन यही सिस्टम हमारे पास है।'

'खैर,' इशाक ने अपने पिता को याद करते हुए कहा, जो अपने जीवन के अंतिम वर्षों में ए श्रेणी तक पहुँच गए थे, 'यह कोई बुरी व्यवस्था नहीं है। यह निष्पक्ष है और एक निश्चित स्तर की योग्यता सुनिश्चित करती है।'

'योग्यता!' ये उस्ताद मजीद खान बोल रहे थे। तीनों मित्र उन्हें हैरानी से देखने लगे। ये शब्द उन्होंने ऐसे तिरस्कार भरे स्वर में कहा मानो उनके भीतर की गहराई से निकला हो। 'केवल दिखावटी योग्यता रखना पर्याप्त नहीं है।'

इशाक ने गहरी बेचैनी के साथ उस्ताद मजीद खान की ओर देखा। अपने पिता की याद ने उसे बोलने का साहस दिया।

‘खान साहब, आप जैसे व्यक्ति के लिए योग्यता तो कोई सवाल ही नहीं है। लेकिन हम बाकी लोगों के लिए...’ उनकी आवाज धीमी पड़ गई।

उस्ताद मजीद खान, अपने विचार का हल्का सा भी खंडन किए जाने पर नाराज़ होकर, चुपचाप बैठे रहे। ऐसा लग रहा था मानो वे अपने विचारों को एकत्रित कर रहे हों। कुछ देर बाद वे बोले।

उन्होंने कहा, ‘आपको कोई समस्या नहीं होनी चाहिए। सारंगी बजाने वाले के लिए किसी खास संगीत कौशल की आवश्यकता नहीं होती। आपको किसी शैली का उस्ताद होने की ज़रूरत नहीं है। एकल कलाकार जिस भी शैली में गाता है, आप बस उसका अनुसरण करते हैं। संगीत की दृष्टि से यह वास्तव में एक तरह का ध्यान भटकाने वाला काम है।’ उन्होंने उदासीन स्वर में आगे कहा, ‘अगर आपको मेरी मदद चाहिए तो मैं स्टेशन निदेशक से बात करूँगा। उन्हें पता है कि मैं निष्पक्ष हूँ—मुझे सारंगी बजाने वालों की ज़रूरत नहीं है और न ही मैं उनका इस्तेमाल करता हूँ। रफ़ीक़ हो या आपकी बहन का पति—इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन कहाँ है।’

इशाक का चेहरा पीला पड़ गया था। वह क्या कर रहा है या कहाँ है, यह सोचे बिना उसने सीधे मजीद खान की ओर देखा और कड़वी और तीखी आवाज़ में कहा:

मुझे किसी महान व्यक्ति द्वारा सारंगी बजानेवाला कहे जाने पर कोई आपत्ति नहीं है, न कि सारंगी बजाने वाला। मैं खुद को भाग्यशाली मानता हूँ कि उन्होंने मुझ पर ध्यान दिया। लेकिन ये वे बातें हैं जिनकी खान साहब को व्यक्तिगत जानकारी है। शायद वे इस वाद्ययंत्र की निरर्थकता के बारे में विस्तार से बता सकें।

यह कोई रहस्य नहीं था कि उस्ताद मजीद खान स्वयं एक ऐसे परिवार से आते थे जो खानदानी सारंगी वादकों का परिवार था। एक गायक के रूप

में उनकी कलात्मक आकांक्षाएँ एक अन्य प्रयास से गहराई से जुड़ी हुई थीं: सारंगी की अपमानजनक परंपरा और वेश्याओं से इसके ऐतिहासिक संबंध से स्वयं को अलग करने का प्रयास—और स्वयं को और अपने बेटे और बेटी को उच्च जाति के संगीतकारों के तथाकथित 'कलावंत' परिवारों से जोड़ना।

लेकिन सारंगी का प्रभाव इतना गहरा था कि कोई भी कलावंत परिवार मजीद खान के परिवार में शादी नहीं करना चाहता था। यह उनके जीवन की सबसे बड़ी निराशाओं में से एक थी। दूसरी निराशा यह थी कि उनका संगीत उन्हीं के साथ समाप्त हो जाएगा, क्योंकि उन्हें कभी कोई ऐसा शिष्य नहीं मिला जिसे वे अपनी कला के योग्य समझते हों। उनके अपने बेटे की आवाज और संगीत प्रतिभा मेंढक जैसी थी। जहाँ तक उनकी बेटी की बात है, वह संगीत में अच्छी तो थी, लेकिन उस्ताद मजीद खान की सबसे बड़ी इच्छा यही थी कि वह अपनी गायन प्रतिभा को निखारकर गायिका न बने।

उस्ताद मजीद खान ने गला साफ किया लेकिन कुछ नहीं कहा।

महान कलाकार के विश्वासघात का विचार, और जिस तिरस्कार के साथ मजीद खान ने, अपनी निर्विवाद प्रतिभा के बावजूद, उस परंपरा का सम्मान किया जिसने उन्हें जन्म दिया था, ये सब बातें इशाक को लगातार क्रोधित करती रहीं।

‘खान साहब हमें जवाब क्यों नहीं देते?’ वह अपने दोस्तों के रोकने के प्रयासों की परवाह किए बिना बोलते रहे। ‘आज चाहे वह कितने भी दूर क्यों न हों, ऐसे कई विषय हैं जिन पर खान साहब हमारी समझ को रोशन कर सकते हैं। और किसके पास इतनी जानकारी है? हमने खान साहब के प्रख्यात पिता और दादा के बारे में सुना है।’

'इशाक, मैं तुम्हारे पिता और तुम्हारे दादा को जानता था। वे ऐसे व्यक्ति थे

जो सम्मान और विवेक का अर्थ समझते थे।'
इशाक ने पलटवार करते हुए कहा, 'उन्होंने अपने नाखूनों पर बनी घिसी हुई लकीरों को बिना अपमानित महसूस किए देखा।'
आस-पास की मेजों पर बैठे लोग चुप हो गए थे और छोटे और बड़े आदमी के बीच हो रही बहस को सुन रहे थे। यह बात दर्दनाक और स्पष्ट थी कि खुद अपमानित हो चुका इशाक अब दूसरों को उकसा रहा था, उस्ताद मजीद खान को चोट पहुँचाने और अपमानित करने की कोशिश कर रहा था। दृश्य भयावह था, लेकिन मानो सब लोग स्तब्ध रह गए थे।
उस्ताद मजीद खान ने धीमी और भावहीनता से कहा: 'लेकिन यकीन मानिए, अगर वे जीवित होते और अपने बेटे को उस मालिक की बहन के साथ इश्कबाजी करते देखते, जिसके शरीर को बेचने में उसका धनुष मदद करता है, तो वे खुद को अपमानित महसूस करते।'
उसने अपनी घड़ी देखी और उठ खड़ा हुआ। दस मिनट में उसका एक और प्रदर्शन था। लगभग स्वयं से ही, अत्यंत सरलता और ईमानदारी से उसने कहा, 'संगीत कोई सस्ता तमाशा नहीं है—यह वेश्यालय का मनोरंजन नहीं है। यह प्रार्थना के समान है।'
इससे पहले कि इशाक कुछ कह पाता, वह दरवाजे की ओर बढ़ने लगा। इशाक उठा और लगभग उस पर झपटा। उसे दर्द और गुस्से का एक बेकाबू झटका लगा, और उसके दोनों दोस्तों को उसे ज़बरदस्ती कुर्सी पर बिठाना पड़ा। अन्य लोग भी इसमें शामिल हो गए, क्योंकि इशाक सबका चहेता था, और उसे और नुकसान करने से रोकना ज़रूरी था।
‘इशाक भाई, बहुत कुछ कहा जा चुका है।’
'सुनो, इशाक, बड़ों की कही हर बात को सहना ही पड़ता है, चाहे वो कितनी भी कड़वी क्यों न हो।'
‘खुद को बर्बाद मत करो। अपने भाइयों के बारे में सोचो। अगर वह

डायरेक्टर साहब से बात करता है तो...'

'इशाक भाई, मैंने आपको कितनी बार कहा है कि अपनी जुबान पर लगाम रखो!'

'सुनो, तुम्हें उससे तुरंत माफी मांगनी होगी।'

लेकिन इशाक की बातें लगभग अस्पष्ट थीं:

'कभी नहीं—कभी नहीं—मैं कभी माफ़ी नहीं माँगूँगा—अपने पिता की कब्र पर—उस बात के लिए—यह सोचकर कि ऐसा आदमी जो अपने और मेरे बड़ों की याद का अपमान करता है—सब उसके सामने घुटने टेकते हैं—हाँ, खान साहब, आपको पच्चीस मिनट का समय मिल सकता है—हाँ, हाँ, खान साहब, आप तय कीजिए कि आप कौन सा राग गाएँगे—हे भगवान! अगर मियां तानसेन जीवित होते तो आज उन्हें अपना राग गाते सुनकर रो पड़ते—कि भगवान ने उन्हें यह वरदान क्यों दिया—'

'बस करो, बस करो, इशाक...' एक बूढ़े सितार वादक ने कहा। इशाक ने आहत और क्रोधित आँखों से उसकी ओर रुख किया:

'क्या तुम अपने बेटे की शादी उसकी बेटी से करोगे? या अपनी बेटी की शादी उसके बेटे से? वो कौन है जिसके हाथ में भगवान है?—वो नमाज़ और इबादत के बारे में मुल्ला की तरह बातें करता है—ये आदमी जिसने अपनी आधी जवानी तरबूज के बाज़ार में बिताई—'

लोग दया और असहजता के भाव से इशाक से मुंह फेरने लगे। इशाक के कई शुभचिंतक अपमानित संगीतकार को शांत करने के लिए कैंटीन छोड़कर चले गए, जो अपनी अत्यधिक बेचैनी में रेडियो पर हंगामा मचाने ही वाले थे।

'खान साहब, लड़के को पता नहीं था कि वह क्या कह रहा है।'

स्टूडियो के दरवाजे के लगभग पास ही खड़े उस्ताद मजीद खान ने कुछ नहीं कहा।

‘खान साहब, बड़ों ने हमेशा छोटों के साथ बच्चों जैसा व्यवहार किया है, सहनशीलता से। आपको उनकी बातों को गंभीरता से नहीं लेना चाहिए। उनमें से कुछ भी सच नहीं है।’

उस्ताद मजीद खान ने मध्यस्थ की ओर देखकर कहा: 'अगर कोई कुत्ता मेरे अचकन पर पेशाब कर दे, तो क्या मैं पेड़ बन जाता हूँ?'

सितार वादक ने सिर हिलाते हुए कहा, 'मुझे पता है कि उसने ऐसा करने के लिए सबसे बुरा समय चुना था - जब आप प्रस्तुति देने वाले थे, उस्ताद साहब...।'

लेकिन उस्ताद मजीद खान ने शांति और असाधारण सुंदरता से भरपूर एक हिंदोल गाया।

6.3

सईदा बाई ने मान को आत्महत्या से बचाया था, जैसा कि उसने खुद कहा था, इस बात को हुए कुछ दिन बीत चुके थे। बेशक, यह बहुत ही असंभव था—और उसके दोस्त फ़िरोज़ ने भी उसे यही बताया था जब उसने अपने प्रेम-पीड़ित होने की पीड़ा के बारे में उससे शिकायत की थी—कि वह खुशमिजाज नौजवान अपनी प्रेम भावना को साबित करने के लिए दाढ़ी बनाते समय खुद को चोट पहुँचाने की भी कोशिश करेगा। लेकिन मान जानता था कि सईदा बाई, भले ही कठोर स्वभाव की थीं, कम से कम उसके लिए, कोमल हृदय की थीं; और यद्यपि वह जानता था कि अगर वह उससे प्रेम करने से इनकार कर देतीं तो सईदा बाई को यह विश्वास नहीं होता कि उसे खुद से कोई खतरा है, फिर भी वह यह भी जानता था कि वह इसे महज़ एक मीठी बात से कहीं अधिक समझेगी। कहने में ही सब कुछ छिपा होता है, और मान ने यह कहते हुए कि वह इस कठोर संसार में सईदा के बिना नहीं रह सकता, अपनी भावनाओं को पूरी तरह व्यक्त किया था। कुछ समय के लिए उसके दिल से उसके सारे पुराने प्रेम मिट

गए। ब्रह्मपुर की वे दर्जन भर से अधिक 'अच्छे परिवार की लड़कियाँ' जिनसे वह प्रेम करता था और जो आम तौर पर उससे प्रेम करती थीं, अचानक गायब हो गईं। सईदा बाई—कम से कम उस क्षण के लिए—उसके लिए सब कुछ बन गई।

और प्रेम करने के बाद, वह उसके लिए सब कुछ बन गई। घरेलू कलह के उस दूसरे कारण की तरह, सईदा बाई भी जहाँ सबसे ज़्यादा संतुष्टि देती थी, वहीं सबसे ज़्यादा भूख जगाती थी। इसका एक कारण तो प्रेम करने की उसकी निपुणता थी। लेकिन उससे भी बढ़कर, यह उसका नखरा था, यानी दिखावटी दुख या नाराज़गी का हुनर, जो उसने अपनी माँ और तरबूज़ का बाज़ार की अन्य वेश्याओं से सीखा था। सईदा बाई इसे इतने सहजता से करती थी कि यह और भी ज़्यादा विश्वसनीय लगने लगता था। एक आँसू, एक ऐसी बात जिससे शायद, बस शायद, यह संकेत मिलता था कि उसके कहे या किए किसी काम से उसे ठेस पहुँची है—और मान का दिल उसके लिए पिघल उठता था। चाहे उसे कितना भी नुकसान उठाना पड़े, वह उसे इस क्रूर, निंदनीय दुनिया से बचाएगा। कई मिनट तक वह उसके कंधे पर झुककर उसकी गर्दन चूमता रहता, और हर कुछ पल में उसके चेहरे की ओर देखता, इस उम्मीद में कि उसका मूड ठीक हो जाएगा। और जब ऐसा होता, और वह वही उज्ज्वल, उदास मुस्कान देखता जिसने प्रेम निवास में होली के अवसर पर गाते समय उसे मंत्रमुग्ध कर दिया था, तो वह कामुक इच्छा के उन्माद में डूब जाता। सईदा बाई को शायद यह बात पता थी, और वह उसे तभी मुस्कुराकर अभिवादन करती जब वह स्वयं उसे संतुष्ट करने के मूड में होती।

उसने ग़ालिब की कविताओं के उस एल्बम की एक पेंटिंग को फ्रेम में लगवाया था जो मान ने उसे दिया था। हालाँकि उसने यथासंभव उस पृष्ठ की मरम्मत कर दी थी जिसे मरह के राजा ने फाड़ दिया था, फिर भी

उसने उस विशेष चित्र को प्रदर्शित करने का साहस नहीं किया था, क्योंकि उसे राजा के और अधिक क्रोध का डर था। उसने जिस पेंटिंग को फ्रेम में लगवाया था, वह थी 'एक फ़ारसी इडिल', जिसमें हल्के नारंगी रंग के वस्त्र पहने एक युवती एक मेहराबदार द्वार के पास हल्के नारंगी रंग के कालीन पर बैठी है, अपनी पतली उंगलियों में सितार जैसा एक वाद्य यंत्र पकड़े हुए है, और मेहराब से बाहर एक रहस्यमय बगीचे को देख रही है। उस युवती के चेहरे की बनावट तीक्ष्ण और कोमल थी, सईदा बाई के बेहद आकर्षक लेकिन गैर-शास्त्रीय, शायद सुंदर भी नहीं, चेहरे के विपरीत। और वह वाद्य यंत्र जो युवती पकड़े हुए थी—सईदा बाई के मजबूत और मधुर हारमोनियम के विपरीत—चित्र में इतना बारीक नुकीला बनाया गया था कि उसे बजाना बिल्कुल असंभव था।

मान को इस बात की परवाह नहीं थी कि चित्र को किताब से निकाल लेने से वह क्षतिग्रस्त मानी जाएगी। सईदा बाई के अपने उपहार के प्रति इस लगाव को देखकर वह अत्यंत प्रसन्न था। वह उनके शयनकक्ष में लेटा हुआ चित्र को निहार रहा था और एक ऐसी रहस्यमयी खुशी से भर गया था जो मेहराब के पार फैले बगीचे जैसी थी। चाहे वह सईदा बाई के आलिंगन की यादों से जगमगा रहा हो या फिर एक छोटी सी अलंकृत चांदी की पिन में लगे उस स्वादिष्ट नारियल के स्वाद वाले पान को संतुष्टि से चबा रहा हो, उसे ऐसा लग रहा था मानो सईदा, उनका संगीत और उनका स्नेह उसे एक स्वर्गिक बगीचे में ले आए हों, जो अत्यंत सूक्ष्म होते हुए भी अत्यंत वास्तविक था।

मान ने कुछ स्वप्निल स्वर में कहा, 'यह कितना अकल्पनीय है कि हमारे माता-पिता को भी—बिल्कुल हमारी तरह—'

सईदा बाई की यह टिप्पणी कुछ अभद्र लगी। वह बिल्कुल नहीं चाहती थीं कि उनकी कल्पना महेश कपूर या किसी और के घरेलू प्रेम प्रसंगों की

ओर जाए। उन्हें अपने पिता के बारे में भी नहीं पता था: उनकी मां मोहसिना बाई ने भी यही कहा था। इसके अलावा, गृहस्थी और उससे जुड़ी आम चिंताएं उनके लिए रुचिकर विषय नहीं थीं। ब्रह्मपुर की गपशपों में उन पर आरोप लगाया गया था कि उन्होंने अपने घिनौने जाल बिछाकर कई स्थापित विवाहों को बर्बाद कर दिया। उन्होंने मान से कुछ तीखे लहजे में कहा:

'मेरे जैसे घर में रहना अच्छा है जहाँ ऐसी चीजों की कल्पना नहीं करनी पड़ती।'

मान थोड़ा शर्मिंदा लग रहा था। सईदा बाई, जो अब तक उससे काफी स्नेह करने लगी थीं और जानती थीं कि वह अक्सर मन में आने वाली पहली बात ही बोल देता है, उसे खुश करने की कोशिश करते हुए बोलीं: लेकिन दाग साहब व्यथित लग रहे हैं। क्या वे निष्कलंक गर्भ धारण करके अधिक प्रसन्न होते?

'मुझे ऐसा ही लगता है,' मान ने कहा। 'कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं पिता के बिना ज्यादा खुश रहूंगा।'

‘ओह?’ सईदा बाई ने कहा, जिन्हें स्पष्ट रूप से इसकी उम्मीद नहीं थी।

‘ओह, हाँ,’ मान ने कहा। ‘मुझे अक्सर लगता है कि मैं जो भी करता हूँ, मेरे पिता उसे तिरस्कार भरी नज़रों से देखते हैं। जब मैंने बनारस में कपड़े का कारोबार शुरू किया था, तो बाओजी ने मुझसे कहा था कि यह पूरी तरह से असफल होगा। अब जब मैंने इसे चला लिया है, तो वे कहते हैं कि मुझे हर साल, हर महीने, हर दिन वहीं बैठे रहना चाहिए। मैं ऐसा क्यों करूँ?’

सईदा बाई ने कुछ नहीं कहा।

‘और मुझे शादी क्यों करनी चाहिए?’ मान ने बिस्तर पर अपनी बाहें फैलाते हुए और अपने बाएं हाथ से सईदा बाई के गाल को छूते हुए कहा।

‘क्यों? क्यों? क्यों? क्यों? क्यों?’

सईदा बाई ने मुस्कुराते हुए कहा, “क्योंकि तुम्हारे पिता मुझे तुम्हारी शादी में गाने के लिए मना लेंगे। और तुम्हारे बच्चों के जन्म पर भी। और उनके मुंडन समारोह में भी। और उनकी शादियों में भी, बेशक।” वह कुछ पल चुप रहीं। फिर बोलीं, “लेकिन तब तक मैं जीवित नहीं रहूंगी। सच तो यह है कि कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि तुम मुझ जैसी बूढ़ी औरत में क्या देखते हो।”

मान बहुत क्रोधित हो गया। उसने ऊँची आवाज़ में कहा, 'तुम ऐसी बातें क्यों कहती हो? क्या तुम मुझे चिढ़ाने के लिए ही ऐसा करती हो? तुमसे मिलने से पहले मेरे लिए किसी का कोई महत्व नहीं था। बनारस की वह लड़की, जिससे मैं भारी सुरक्षा में दो बार मिला था, मेरे लिए कुछ भी नहीं है—और सब सोचते हैं कि मुझे उससे शादी करनी ही होगी, सिर्फ इसलिए कि मेरे माता-पिता ऐसा कहते हैं।'

सईदा बाई उसकी ओर मुड़ी और अपना चेहरा उसकी बाहों में छिपा लिया। “लेकिन तुम्हें शादी करनी ही होगी,” उसने कहा। “तुम अपने माता-पिता को इतना दुख नहीं दे सकते।”

'मुझे वह बिल्कुल भी आकर्षक नहीं लगती,' मान ने गुस्से से कहा।

‘इसमें बस समय लगेगा,’ सईदा बाई ने सलाह दी।

'और शादी के बाद मैं तुमसे मिलने नहीं आ पाऊंगा,' मान ने कहा।

‘ओह?’ सईदा बाई ने इस तरह कहा कि प्रश्न उत्तर की ओर ले जाने के बजाय, बातचीत के समापन का संकेत दे रहा था।

6.4

कुछ देर बाद वे उठे और दूसरे कमरे में चले गए। सईदा बाई ने तोते को बुलाया, जिससे उन्हें बहुत लगाव हो गया था। इशाक खान पिंजरा लेकर आए और इस बात पर चर्चा शुरू हुई कि वह कब बोलना सीखेगा। सईदा

बाई को लगता था कि दो महीने काफी होंगे, लेकिन इशाक को संदेह था। उन्होंने कहा, 'मेरे दादाजी के पास एक तोता था जो पूरे एक साल तक नहीं बोला—और फिर जीवन भर बोलता ही रहा।'

सईदा बाई ने बेपरवाही से कहा, 'मैंने ऐसा कुछ कभी नहीं सुना। वैसे, तुम उस पिंजरे को इतने अजीब तरीके से क्यों पकड़े हुए हो?'

'अरे, कुछ खास नहीं है,' इशाक ने पिंजरे को मेज पर रखते हुए और अपनी दाहिनी कलाई को रगड़ते हुए कहा। 'बस कलाई में थोड़ा दर्द है।'

दरअसल, यह बहुत दर्दनाक था और पिछले कुछ हफ्तों में यह और भी बदतर हो गया था।

'तुम तो काफी अच्छा खेलती हो,' सईदा बाई ने कुछ सहानुभूति न दिखाते हुए कहा। 'सईदा बेगम, अगर मैं नहीं खेलती तो क्या करती?'

'ओह, मुझे नहीं पता,' सईदा बाई ने नन्हे तोते की चोंच को गुदगुदी करते हुए कहा।

'शायद आपके हाथ में कुछ भी गड़बड़ नहीं है। क्या आप परिवार में किसी शादी में जाने की योजना बना रहे हैं? या रेडियो स्टेशन पर हुए आपके मशहूर विस्फोट की घटना के भुला दिए जाने तक शहर से बाहर जाने की योजना बना रहे हैं?'

अगर इस दर्दनाक संदर्भ या इन अनुचित शंकाओं से इशाक को ठेस पहुंची भी तो उसने इसे ज़ाहिर नहीं किया। सईदा बाई ने उसे मोटू चंद को लाने को कहा और तीनों जल्द ही मान की खुशी के लिए संगीत बजाने लगे। इशाक बीच-बीच में अपने निचले होंठ को काटता रहा जैसे-जैसे उसका धनुष तारों पर चलता रहा, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा।

सईदा बाई फारसी कालीन पर बैठी थीं और उनके सामने हारमोनियम रखा था। उनका सिर साड़ी से ढका हुआ था और वे अपने बाएं हाथ की उंगली से गले में लटकी मोतियों की दोहरी माला को सहला रही थीं। फिर

गुनगुनाते हुए, उन्होंने अपना बायां हाथ हारमोनियम की धौंकनी पर रखा और राग पीलू के कुछ सुर बजाने शुरू किए। थोड़ी देर बाद, मानो अपने भाव और गाने के प्रकार को लेकर असमंजस में हों, उन्होंने कुछ अन्य रागों की धुनें बजानी शुरू कर दीं।

‘आप क्या सुनना चाहेंगे?’ उसने मान से नरमी से पूछा।

उसने अब तक इस्तेमाल किए गए ‘तुम’ शब्दों की तुलना में कहीं अधिक आत्मीय ‘तुम’ शब्द का प्रयोग किया था—‘आप’ की जगह ‘तुम’। मान मुस्कुराते हुए उसकी ओर देखने लगा।

एक मिनट बीत जाने के बाद सईदा बाई ने कहा, 'तो?'

‘तो, सईदा बेगम?’ मान ने कहा।

‘तुम क्या सुनना चाहते हो?’ उसने फिर से ‘आप’ की जगह ‘तुम’ का इस्तेमाल किया और मान की दुनिया खुशी से झूम उठी। उसे कहीं सुना हुआ एक शेर याद आ गया:

इस प्रकार साकी ने प्रेमियों के बीच भेद की रेखा खींच दी।

एक-एक करके शराब के प्याले देते हुए: 'आपके लिए, महोदय'; 'आपका'; और 'तुम्हारा'।

‘अरे, कुछ भी,’ मान ने कहा। ‘बिल्कुल कुछ भी। जो भी तुम्हारे दिल में हो।’

मान ने सईदा बाई के साथ ‘तुम’ या सिर्फ ‘सईदा’ कहने की हिम्मत अभी तक नहीं जुटाई थी, सिवाय प्रेम करते समय, जब उसे शायद ही पता होता था कि वह क्या कह रहा है। शायद, उसने सोचा, वह मेरे साथ अनजाने में ही ये शब्द बोल देती है और अगर मैं भी ऐसा ही करूं तो उसे बुरा लग जाएगा।

लेकिन सईदा बाई किसी और बात पर नाराज होने को इच्छुक थीं।

‘मैं तुम्हें संगीत चुनने का विकल्प दे रही हूँ और तुम समस्या मुझ पर ही

डाल रहे हो,' उसने कहा। 'मेरे दिल में बीस अलग-अलग बातें हैं। क्या तुम मुझे राग बदलते हुए नहीं सुन सकते?' फिर, मान से मुँह मोड़कर उसने कहा:

'तो, मोटू, क्या गाया जाना है?'

'आपकी जो इच्छा हो, सईदा बेगम,' मोटू चंद ने प्रसन्नता से कहा।

'अरे मूर्ख! मैं तुम्हें वो मौका दे रही हूँ जिसके लिए मेरे ज़्यादातर श्रोता जान देने को तैयार होंगे, और तुम बस एक कमज़ोर दिमाग वाले बच्चे की तरह मुस्कुरा रहे हो और कह रहे हो, "जो तुम चाहो, सईदा बेगम।" कौन सी ग़ज़ल? जल्दी बताओ। या ग़ज़ल की जगह ठुमरी सुनना चाहते हो?'

'सबसे अच्छा होगा एक ग़ज़ल, सईदा बाई,' मोटू चंद ने कहा और ग़ालिब की 'यह सिर्फ एक दिल है, ईंट और पत्थर नहीं' कविता का सुझाव दिया। ग़ज़ल के अंत में सईदा बाई ने मान की ओर मुड़कर कहा: 'तुम्हें अपनी किताब में समर्पण अवश्य लिखना चाहिए।'

'क्या, अंग्रेजी में?' मान ने पूछा।

सईदा बाई ने कहा, 'महान कवि दाग को अपनी ही भाषा में अनपढ़ देखकर मुझे आश्चर्य होता है। हमें इसके बारे में कुछ करना होगा।'

'मैं उर्दू सीखूंगा!' मान ने उत्साहपूर्वक कहा।

मोटू चंद और इशाक खान ने एक-दूसरे की ओर देखा। स्पष्ट रूप से उन्हें लगा कि मान सईदा बाई के प्रति अपने आकर्षण में काफी हद तक डूब चुका है।

सईदा बाई हंस पड़ीं। उन्होंने मान से चिढ़ाते हुए पूछा, 'क्या तुम सचमुच ऐसा करोगे?' फिर उन्होंने इशाक को नौकरानी को बुलाने के लिए कहा।

आज सईदा बाई किसी वजह से बिब्बो से नाराज़ थीं। बिब्बो को शायद इसका एहसास था, लेकिन उन पर इसका कोई असर नहीं हुआ। वह मुस्कुराते हुए अंदर आईं, जिससे सईदा बाई की नाराज़गी फिर से भड़क

उठी।

'तुम मुझे चिढ़ाने के लिए ही मुस्कुरा रही हो,' उसने चिढ़कर कहा। 'और तुमने रसोइए को यह बताना भूल गई कि कल तोते की दाल ठीक से नहीं बनी थी—क्या तुम्हें लगता है कि उसके जबड़े बाघ जैसे हैं? मुस्कुराना बंद करो, बेवकूफ लड़की, और मुझे बताओ— अब्दुर रशीद तसनीम को अरबी पढ़ाने कब आ रहे हैं?'

सईदा बाई मान के साथ इतना सुरक्षित महसूस करती थीं कि उनकी उपस्थिति में तसनीम का नाम भी ले लेती थीं।

बिब्बो ने संतोषजनक ढंग से क्षमाप्रार्थी भाव धारण किया और कहा:

'लेकिन जैसा कि आप जानती हैं, सईदा बाई, वह पहले से ही यहाँ हैं।'

'मैं क्या जानती हूँ? मैं क्या जानती हूँ?' सईदा बाई ने फिर से अधीरता से कहा। 'मुझे कुछ नहीं पता। और न ही आपको,' उन्होंने आगे कहा। 'उसे तुरंत ऊपर आने के लिए कहो।'

कुछ मिनट बाद बिब्बो वापस आ गया, लेकिन अकेला।

'तो?' सईदा बाई ने कहा।

'वह नहीं आएगा,' बिब्बो ने कहा।

'वह नहीं आएगा? क्या उसे पता है कि तसनीम को ट्यूशन पढ़ाने के लिए उसे कौन पैसे देता है? क्या उसे लगता है कि अगर वह ऊपर इस कमरे में आया तो उसकी इज्जत खतरे में पड़ जाएगी? या फिर वह सिर्फ इसलिए दिखावा कर रहा है क्योंकि वह विश्वविद्यालय का छात्र है?'

बिब्बो ने कहा, 'मुझे नहीं पता, बेगम साहिबा।'

तो जाओ, लड़की, और उससे पूछो क्यों। मुझे उसकी आमदनी बढ़ानी है, अपनी नहीं।

पांच मिनट बाद बिब्बो चेहरे पर चौड़ी मुस्कान लिए लौटी और बोली, 'जब मैंने उन्हें दोबारा टोका तो वे बहुत गुस्सा हो गए। वे तसनीम को कुरान

शरीफ का एक जटिल अंश पढ़ा रहे थे और उन्होंने मुझसे कहा कि ईश्वरीय वचन को उनकी सांसारिक आय से अधिक महत्व देना होगा। लेकिन पाठ समाप्त होने पर वे जरूर आएंगे।'

'सच कहूँ तो, मुझे पक्का नहीं पता कि मैं उर्दू सीखना चाहता हूँ या नहीं,' मान ने कहा, जिसे अपने अचानक उत्साह पर पछतावा होने लगा था। वह सचमुच इतना ज़्यादा मेहनत का बोझ नहीं उठाना चाहता था। और उसने यह उम्मीद भी नहीं की थी कि बातचीत इतनी अचानक व्यावहारिक मोड़ ले लेगी। वह हमेशा ऐसे संकल्प लेता रहता था, जैसे, 'मुझे पोलो सीखना ही है' (फिरोज़ से, जिसे अपने दोस्तों को अपने नवाबों वाले अंदाज़ से रूबरू कराना अच्छा लगता था), या 'मुझे शादी करनी ही है' (वीना से, जो परिवार में इकलौती थी और उसे थोड़ा-बहुत डांट सकती थी), या फिर 'मैं व्हेल को तैरना नहीं सिखाऊँगा' (जिसे प्राण एक नासमझी भरी बात समझता था)। लेकिन वह ये संकल्प इस भरोसे के साथ लेता था कि इन्हें पूरा करना अभी बहुत दूर की बात है।

लेकिन तब तक, युवा अरबी शिक्षक दरवाजे के बाहर, काफी झिझकते हुए और कुछ हद तक असंतुष्ट भाव से खड़ा था। उसने सभी के समक्ष आदाब किया और यह सुनने के लिए प्रतीक्षा करने लगा कि उससे क्या अपेक्षा की जाती है।

'रशीद, क्या तुम मेरी इस युवा दोस्त को उर्दू सिखा सकते हो?' सईदा बाई ने सीधे मुद्दे पर आते हुए पूछा।

युवक ने थोड़ी अनिच्छा से सिर हिलाया।

'तसनीम के साथ जो समझौता हुआ था, वही समझौता इस मामले में भी होगा,' सईदा बाई ने कहा, जो व्यावहारिक मामलों को शीघ्रता से सुलझाने में विश्वास रखती थीं।

'कोई बात नहीं,' रशीद ने कहा। उसका लहजा कुछ संक्षिप्त था, मानो

अरबी की कक्षा में पहले हुई रुकावटों से वह अभी भी थोड़ा नाराज़ हो।
‘और उस सज्जन का नाम?’
‘जी हां, मुझे माफ कीजिए,’ सईदा बाई ने कहा। ‘ये दाग साहब हैं, जिन्हें दुनिया अब तक सिर्फ मान कपूर के नाम से जानती है। ये मंत्री महेश कपूर के बेटे हैं। और उनके बड़े भाई प्राण उसी विश्वविद्यालय में पढ़ाते हैं, जहां आप पढ़ते हैं।’
वह युवक गहरी एकाग्रता में डूबा हुआ था और माथे पर शिकन लिए खड़ा था। फिर, मान पर अपनी पैनी निगाहें टिकाते हुए उसने कहा, 'महेश कपूर के बेटे को पढ़ाना मेरे लिए सम्मान की बात होगी। मुझे खेद है कि मैं अपनी अगली ट्यूशन के लिए थोड़ा देर हो चुका हूँ। मुझे उम्मीद है कि जब मैं कल आऊँगा तो हम अपने पाठ के लिए एक उपयुक्त समय तय कर लेंगे। आप आमतौर पर कब खाली रहते हैं?'
‘ओह, वो तो लगभग हर समय खाली रहते हैं,’ सईदा बाई ने कोमल मुस्कान के साथ कहा। ‘दाग साहब के लिए समय कोई समस्या नहीं है।’
6.5
एक रात, परीक्षा के प्रश्नपत्रों की जाँच करते-करते थककर प्राण गहरी नींद में सो रहा था कि अचानक एक झटके से उसकी नींद खुल गई। उसे किसी ने लात मारी थी। उसकी पत्नी ने उसे बाहों में भर रखा था, लेकिन वह अब भी गहरी नींद में सो रही थी।
‘सविता, सविता—बच्चे ने मुझे लात मारी!’ प्राण ने उत्साह से अपनी पत्नी का कंधा हिलाते हुए कहा।
सविता ने अनिच्छा से एक आंख खोली, प्राण के दुबले-पतले और आरामदायक शरीर को अपने पास महसूस किया और अंधेरे में मुस्कुराई, फिर वापस नींद में डूब गई।
प्राण ने पूछा, 'क्या तुम जाग रहे हो?'

‘उह,’ सविता ने कहा। ‘हम्म।’
‘लेकिन सच में ऐसा हुआ था!’ प्राण ने उसकी प्रतिक्रिया न मिलने से नाखुश होकर कहा।
‘क्या हुआ?’ सविता ने नींद में कहा।
‘बच्चा।’
'क्या बच्चे?'
'हमारा शिशु।'
‘हमारे बच्चे ने क्या किया?’
‘इसने मुझे लात मारी।’
सविता सावधानी से उठी, प्राण के माथे पर चूमा, मानो वह खुद एक बच्चा हो, और उसे गले लगा लिया। 'ऐसा हो ही नहीं सकता। तुम सपना देख रहे हो। वापस सो जाओ। और मैं भी सो जाऊंगी। और बच्चा भी सो जाएगा।'
‘हाँ, ऐसा ही हुआ,’ प्राण ने थोड़ी झुंझलाहट के साथ कहा।
‘ऐसा हो ही नहीं सकता था,’ सविता ने दोबारा लेटते हुए कहा। ‘मुझे तो महसूस हो जाता।’
“हाँ, ऐसा हुआ था, बस इतना ही। शायद अब आपको उसके धक्के महसूस नहीं हो रहे होंगे। और आप बहुत गहरी नींद सो रहे होंगे। लेकिन उसने आपके पेट में लात मारी, बिल्कुल मारी, और मुझे जगा दिया।” वह बहुत ज़ोर देकर कह रहा था।
‘अच्छा, ठीक है,’ सविता ने कहा। ‘जैसा तुम चाहो। मुझे लगता है उसे पता होगा कि तुम्हें बुरे सपने आ रहे थे, जिनमें हर जगह काइआस्मस और अन्ना (जो भी उसका नाम हो) की झलक थी।’
‘एनाकोलुथिया।’
'हां, और मुझे अच्छे सपने आ रहे थे और वह मुझे परेशान नहीं करना

चाहता था।'
‘बहुत ही प्यारा बच्चा,’ प्राण ने कहा।
'हमारा बच्चा,' सविता ने कहा। प्राण को एक और गले लगाया गया।
वे कुछ देर चुप रहे। फिर, जैसे ही प्राण को नींद आने लगी,
सविता ने कहा:
'वह काफी ऊर्जावान प्रतीत होता है।'
‘ओह?’ प्राण ने अधनी नींद में कहा।
सविता, जो अब अपने विचारों में खोई हुई पूरी तरह से जागृत थी, इस बातचीत को बीच में ही रोकने के मूड में नहीं थी।
‘क्या आपको लगता है कि वह मान जैसा निकलेगा?’ उसने पूछा।
'वह?'
'मुझे लगता है कि वह लड़का है,' सविता ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा।
‘किस मायने में मान की तरह?’ प्राण ने पूछा, अचानक उसे याद आया कि उसकी माँ ने उसे अपने भाई से उसके जीवन की दिशा के बारे में बात करने के लिए कहा था—और विशेष रूप से सईदा बाई के बारे में, जिसे उसकी माँ केवल ‘वो’ कहकर संबोधित करती थी—वह महिला।
‘सुंदर—और साथ ही नखरेबाज भी?’
‘शायद,’ प्राण ने कहा, उसका ध्यान अन्य बातों पर था।
‘या फिर अपने पिता की तरह एक बुद्धिजीवी?’
‘अरे, क्यों नहीं?’ प्राण ने वापस ध्यान खींचते हुए कहा। ‘उसकी हालत इससे भी बदतर हो सकती थी। लेकिन उम्मीद है कि उसे अस्थमा न हो।’
या आपको लगता है कि उसका स्वभाव मेरे दादाजी जैसा होगा?
नहीं, मुझे नहीं लगता कि यह गुस्से में मारी गई लात थी। बस जानकारी देने के लिए थी। "मैं यहाँ हूँ; सुबह के दो बज रहे हैं, और सब ठीक है।"
या शायद, जैसा कि आप कहते हैं, वह किसी बुरे सपने को तोड़ रहा था।

'हो सकता है कि वह अरुण जैसा हो - बहुत ही आकर्षक और सभ्य।'
‘माफ़ करना, सविता,’ प्राण ने कहा। ‘अगर वो तुम्हारे भाई जैसा निकला, तो मैं उसे बेदखल कर दूँगा। लेकिन वो तो उससे बहुत पहले ही हमें बेदखल कर चुका होगा। असल में, अगर वो अरुण जैसा है, तो शायद इस समय यही सोच रहा होगा: “इस कमरे में कितनी घटिया सेवा है; मुझे मैनेजर से बात करनी होगी ताकि मुझे समय पर पोषण मिल सके। और इस इनडोर स्विमिंग पूल में एमनियोटिक द्रव का तापमान भी ठीक करना चाहिए, जैसे पाँच सितारा अस्पतालों में करते हैं। लेकिन भारत में क्या उम्मीद कर सकते हैं? इस बदकिस्मत देश में कुछ भी ठीक से काम नहीं करता। यहाँ के लोगों को अनुशासन की सख्त ज़रूरत है।” शायद इसीलिए उसने मुझे लात मारी।’
सविता हंस पड़ी। उसने जवाब दिया, 'तुम अरुण को अच्छी तरह से नहीं जानती हो।'
प्राण ने केवल हल्की सी आवाज निकाली।
‘खैर, हो सकता है वो इस परिवार की महिलाओं जैसा हो,’ सविता ने आगे कहा। ‘हो सकता है वो तुम्हारी या मेरी माँ जैसा निकले।’ यह सोचकर उसे खुशी हुई।
प्राण ने भौंहें चढ़ाईं, लेकिन सविता की यह नवीनतम सनक सुबह के दो बजे बहुत थकाऊ थी।
‘क्या मैं आपके लिए कुछ पीने को लाऊं?’ उसने उससे पूछा।
'नहीं, हम्म, हाँ, एक गिलास पानी।'
प्राण उठकर बैठ गया, थोड़ा खांसा, बिस्तर के पास रखी मेज की ओर मुड़ा, बिस्तर के पास वाला लैंप जलाया और थर्मस फ्लास्क से एक गिलास ठंडा पानी निकाला।
‘लो, प्रियतमा,’ उसने थोड़ी उदास स्नेह भरी निगाहों से उसकी ओर देखते

हुए कहा। वह अब कितनी सुंदर लग रही थी, और उसके साथ प्रेम करना कितना अद्भुत होगा।

‘प्राण, तुम्हारी आवाज ठीक नहीं लग रही,’ सविता ने कहा।

प्राण मुस्कुराया और उसने अपना हाथ उसके माथे पर फेरा। 'मैं ठीक हूँ।'

'मैं तुम्हारी चिंता है।'

‘मैं नहीं जानता,’ प्राण ने झूठ बोला।

‘तुम्हें पर्याप्त ताजी हवा नहीं मिलती, और तुम अपने फेफड़ों का बहुत ज्यादा इस्तेमाल करती हो। काश तुम लेखिका होतीं, व्याख्याता नहीं।’

सविता ने गर्म रात में पानी की ठंडक का आनंद लेते हुए धीरे-धीरे पानी पिया।

‘धन्यवाद,’ प्राण ने कहा। ‘लेकिन आप भी पर्याप्त व्यायाम नहीं करतीं। आपको गर्भावस्था के दौरान भी थोड़ा-बहुत टहलना चाहिए।’

‘मुझे पता है,’ सविता ने जम्हाई लेते हुए कहा। ‘मैं वो किताब पढ़ रही हूँ जो मेरी माँ ने मुझे दी थी।’

‘ठीक है, शुभ रात्रि, प्रिये। मुझे गिलास दो।’

उसने बत्ती बंद कर दी और अंधेरे में लेट गया, उसकी आँखें अभी भी खुली थीं। उसने खुद से कहा, "मैंने कभी इतनी खुशी की उम्मीद नहीं की थी। मैं खुद से पूछ रहा हूँ कि क्या मैं खुश हूँ, और इससे मेरी खुशी कम नहीं हुई है। लेकिन यह कब तक चलेगा? सिर्फ मैं ही नहीं, मेरी पत्नी और बच्चा भी मेरे बेकार फेफड़ों का बोझ उठा रहे हैं। मुझे अपना ख्याल रखना होगा। मुझे अपना ख्याल रखना होगा। मुझे ज़्यादा काम नहीं करना चाहिए। और मुझे जल्दी सो जाना चाहिए।"

और पांच मिनट में ही वह फिर से सो गया।

6.6

अगली सुबह डाक से कलकत्ता से एक पत्र आया। यह श्रीमती रूपा मेहरा

की अनोखी छोटी लिखावट में लिखा था, और उसमें निम्नलिखित बातें लिखी थीं:

प्रिय सविता और प्राण,

अभी-अभी मुझे आपका प्यारा सा पत्र मिला है और यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि इसे पाकर मैं कितनी प्रसन्न हुई हूँ। प्राण, मुझे आपसे पत्र की उम्मीद नहीं थी क्योंकि मुझे पता है कि आप बहुत व्यस्त रहते हैं और पत्र लिखने के लिए मुश्किल से ही समय निकाल पाते हैं, इसलिए इसे पाकर मुझे और भी अधिक खुशी हुई है।

मुझे पूरा यकीन है, प्रिय प्राण, मुश्किलों के बावजूद विभाग में तुम्हारे सपने ज़रूर पूरे होंगे। तुम्हें धैर्य रखना होगा, यह मैंने जीवन में सीखा है। मेहनत करना ज़रूरी है, बाकी सब कुछ अपने हाथ में नहीं होता। मैं खुशकिस्मत हूं कि मेरी प्रिय सविता को इतना अच्छा पति मिला है, बस उन्हें अपनी सेहत का ख्याल रखना चाहिए।

अब तक तो बच्ची की किक और भी तेज़ हो गई होगी और ये सोचकर मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं कि मैं तुम्हारे साथ इस खुशी को बाँटने के लिए वहाँ नहीं हूँ, मेरी सविता। मुझे याद है जब तुम किक मार रही थी, कितनी हल्की किक थी और पापा, भगवान उन्हें आशीर्वाद दें, वहीं थे और उन्होंने अपना हाथ मेरे पेट पर रखा था, लेकिन उन्हें महसूस भी नहीं हुआ था। अब मेरी प्यारी सविता, तुम खुद माँ बनने के काबिल हो। तुम मेरे ख्यालों में छाई रहती हो। कभी-कभी अरुण मुझसे कहता है कि तुम सिर्फ लता और सविता की परवाह करती हो, लेकिन ये सच नहीं है, मैं अपने चारों बच्चों, चाहे लड़का हो या लड़की, सबकी परवाह करती हूँ और उनके हर काम में दिलचस्पी लेती हूँ। वरुण को इस साल गणित की पढ़ाई में बहुत परेशानी हो रही है, मुझे उसकी बहुत चिंता है।

अपर्णा बहुत प्यारी है और अपनी नानी से बहुत प्यार करती है। शाम को

अक्सर मैं उसके साथ रहती हूँ। अरुण और मीनाक्षी बाहर जाते हैं और लोगों से मिलते-जुलते हैं, मुझे पता है कि यह उनके काम के लिए ज़रूरी है—और मुझे उसके साथ खेलना अच्छा लगता है। कभी-कभी मैं पढ़ती हूँ। वरुण कॉलेज से बहुत देर से लौटता है, पहले वह अपर्णा का मनोरंजन करता था और यह अच्छा था क्योंकि बच्चों को अपना सारा समय अपनी आयाओं के साथ नहीं बिताना चाहिए, यह उनके पालन-पोषण के लिए बुरा हो सकता है। इसलिए अब यह ज़िम्मेदारी मुझ पर आ गई है और अपर्णा मुझसे बहुत जुड़ गई है। कल उसने अपनी माँ से कहा, जो रात के खाने पर जाने के लिए तैयार हुई थीं: 'आप जा सकती हैं, मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता; अगर दादी यहाँ रहती हैं तो मुझे ज़रा भी परवाह नहीं।' ये उसके बिलकुल वही शब्द थे और मुझे उस पर बहुत गर्व हुआ कि तीन साल की उम्र में वह इतना कुछ कह सकती है। मैं उसे सिखा रही हूँ कि मुझे 'दादी' नहीं बल्कि 'दादी' कहकर बुलाए, लेकिन मीनाक्षी सोचती है कि अगर वह अभी सही अंग्रेज़ी नहीं सीखेगी तो कब सीखेगी?

मीनाक्षी कभी-कभी मुझे चिढ़ जाती है, फिर वो मुझे घूरती है और फिर सविता, मेरी प्यारी, मुझे लगता है कि घर में मेरी कोई ज़रूरत नहीं है। मेरा मन करता है कि मैं भी उसे घूरूँ, लेकिन कभी-कभी रोने लगती हूँ। मैं खुद को रोक नहीं पाती। तब अरुण मुझसे कहता है, 'माँ, रोना बंद करो, तुम हमेशा छोटी-छोटी बातों पर हंगामा करती हो।' तो मैं रोने की कोशिश नहीं करती, लेकिन जब तुम्हारे पापा के गोल्ड मेडल के बारे में सोचती हूँ तो आँसू आ ही जाते हैं।

आजकल लता मीनाक्षी के परिवार के साथ काफी समय बिता रही हैं। मुझे लगता है मीनाक्षी के पिता न्यायमूर्ति चटर्जी लता को बहुत पसंद करते हैं, और मीनाक्षी की बहन काकोली भी उन्हें बहुत स्नेह करती हैं। फिर तीन लड़के हैं अमित, दीपांकर और तपन चटर्जी, जो मुझे दिन-ब-

दिन और भी अजीब लगने लगे हैं। अमित कहता है कि लता को बंगाली सीखनी चाहिए, क्योंकि भारत में यही एकमात्र सभ्य भाषा है। जैसा कि आप जानते हैं, वह खुद अपनी किताबें अंग्रेजी में लिखते हैं, तो फिर वह ऐसा क्यों कहते हैं कि केवल बंगाली ही सभ्य है और हिंदी नहीं? मुझे नहीं पता, लेकिन चटर्जी परिवार वाकई अनोखा है। उनके पास पियानो है, लेकिन पिताजी शाम को अक्सर धोती पहनते हैं। काकोली रवींद्र संगीत और पश्चिमी संगीत भी गाती हैं, लेकिन उनकी आवाज़ मुझे पसंद नहीं है और कलकत्ता में उनकी छवि आधुनिक संगीत की है। कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि मेरे अरुण की शादी ऐसे परिवार में कैसे हो गई, लेकिन सब अच्छा ही है क्योंकि मेरे पास मेरी अपर्णा है।

मुझे डर है कि जब हम पहली बार कलकत्ता आए थे, तब लता मुझसे बहुत नाराज़ और दुखी थी, साथ ही अपने परीक्षा परिणामों को लेकर भी चिंतित थी और बिल्कुल भी पहले जैसी नहीं थी। आपको परिणाम आते ही तुरंत टेलीग्राम करना चाहिए, चाहे अच्छे हों या बुरे। यह सब उस लड़के 'के' की वजह से हुआ था, जिससे वह ब्रह्मपुर में मिली थी, और वह उस पर स्पष्ट रूप से बुरा प्रभाव डाल रहा था। कभी-कभी वह मुझसे कड़वी बातें करती थी और कभी-कभी मेरे सवालों के बहुत कम जवाब देती थी, लेकिन सोचिए अगर मैंने इसे ऐसे ही चलने दिया होता तो क्या होता? इस मामले में अरुण से मुझे कोई मदद या सहानुभूति नहीं मिली, लेकिन अब मैंने उससे कहा है कि वह लता को अपने मंगेतर और अन्य दोस्तों से मिलवाए और फिर देखते हैं क्या होता है। काश, मुझे अपनी लता के लिए प्राण जैसा पति मिल जाए, तो मैं संतुष्ट होकर मर जाऊंगी। अगर पिताजी ने आपको देखा होता प्राण, तो उन्हें पता चल जाता कि उनकी सविता अच्छे हाथों में है।

एक दिन मुझे इतना दुख हुआ कि मैंने लता से कहा, गांधीजी के समय में

अंग्रेजों के खिलाफ असहयोग आंदोलन करना तो ठीक था, लेकिन मैं तुम्हारी माँ हूँ, और तुम्हारा ऐसा करना बहुत हठधर्मिता है। क्या कर रही हो? उसने कहा— और उसका इतना उदासीन स्वर था कि मेरा दिल टूट गया। मेरी प्यारी सविता, मैं प्रार्थना करती हूँ, अगर तुम्हारी बेटी हो— हालाँकि वास्तव में अब परिवार में पोते के आने का समय हो गया है— तो वह कभी भी तुम्हारे प्रति इतनी कठोर न हो। लेकिन कभी-कभी वह मुझसे नाराज़गी भूल जाती है— और फिर जब तक उसे याद नहीं आता, तब तक वह बहुत स्नेहपूर्ण व्यवहार करती है।

ईश्वर आपको स्वस्थ और खुशहाल रखे ताकि आप अपनी सभी योजनाओं को पूरा कर सकें। और जल्द ही मानसून में आपसे मुलाकात होगी, डी.वी.

मेरी, अरुण, वरुण, लता, अपर्णा और मीनाक्षी की तरफ से आप दोनों को ढेर सारा प्यार और एक बड़ा सा गले लगाना और चुंबन। मेरी चिंता मत करो, मेरा ब्लड शुगर ठीक है।

आपकी सदा स्नेह करने वाली माँ की ओर से

पुनश्च: मान, वीणा, केदारनाथ, भास्कर, केदारनाथ की माताजी, आपके माता-पिता प्राण (आशा है नीम के फूल अब कम कष्टदायक होंगे) और मेरे पिता और पार्वती को मेरा प्यार देना, और निश्चित रूप से होने वाले बच्चे को भी। मंसूर, मतीन और अन्य नौकरों को भी मेरा सलाम कहना। कलकत्ता में बहुत गर्मी है, लेकिन ब्रह्मपुर में तो और भी ज्यादा होगी। सविता, आपकी हालत में आपको बहुत ठंडा रहना चाहिए और धूप में नहीं निकलना चाहिए या अनावश्यक व्यायाम नहीं करना चाहिए। आपको भरपूर आराम करना चाहिए। जब भी समझ न आए कि क्या करें, तो याद रखना कि कुछ भी न करें। यकीन मानिए, मेरी प्यारी सविता, जन्म के बाद आप काफी व्यस्त रहेंगी, इसलिए आपको अपनी शक्ति बचाकर

रखनी चाहिए।

6.7

नीम के फूलों का ज़िक्र सुनकर प्राण को याद आया कि वह कई दिनों से अपनी माँ से मिलने नहीं गया था। श्रीमती महेश कपूर इस साल नीम के पराग से पहले से भी ज़्यादा परेशान थीं। कुछ दिन तो उन्हें साँस लेने में भी मुश्किल होती थी। यहाँ तक कि उनके पति, जो सभी एलर्जी को ऐसे मानते थे मानो पीड़ित ने खुद को जानबूझकर परेशान किया हो, उन्हें भी अपनी पत्नी की देखभाल करनी पड़ी। प्राण, जिसे साँस लेने में तकलीफ का अनुभव था, अपनी माँ को याद करके उदास और बेबसी महसूस कर रहा था—और अपने पिता पर थोड़ा गुस्सा भी आ रहा था, जो घर-गृहस्थी संभालने के लिए उन्हें शहर में ही रहने के लिए कह रहे थे।

महेश कपूर ने कहा था, 'वह कहाँ जाए जहाँ नीम के पेड़ न हों? विदेश?'

‘अच्छा, बाओजी, शायद दक्षिण की ओर कहीं—या पहाड़ियों की ओर।’

‘अवास्तविक मत बनो। वहाँ उसकी देखभाल कौन करेगा? या क्या तुम्हें लगता है कि मुझे अपना काम छोड़ देना चाहिए?’

इसका कोई स्पष्ट जवाब नहीं था। महेश कपूर हमेशा दूसरों की बीमारियों और शारीरिक पीड़ा को नज़रअंदाज़ करते थे, और जब भी उनकी पत्नी प्रसव के करीब होती थीं, वे शहर से गायब हो जाते थे। उन्हें 'गंदगी, शोर-शराबा और इस तरह की बातें' बिल्कुल पसंद नहीं थीं।

हाल ही में, श्रीमती महेश कपूर एक बात को लेकर बहुत परेशान थीं, जिससे उनकी हालत और बिगड़ती जा रही थी। यह बात थी मान का सईदा बाई के साथ संबंध और बनारस में काम और अन्य जिम्मेदारियों के बावजूद ब्रह्मपुर में उसका इधर-उधर भटकना। जब उसकी मंगेतर के परिवार ने एक रिश्तेदार के माध्यम से शादी की तारीख तय करने के लिए अप्रत्यक्ष रूप से पूछताछ की, तो श्रीमती महेश कपूर ने प्राण से उससे

बात करने की गुहार लगाई। प्राण ने उन्हें बताया कि उसका अपने छोटे भाई पर बहुत कम नियंत्रण है। उसने कहा, 'वह केवल वीणा की सुनता है, और फिर भी वह अपनी मनमर्जी करता है।' लेकिन उसकी माँ इतनी दुखी लग रही थीं कि प्राण मान से बात करने के लिए राजी हो गया। हालांकि, उसने अब कई दिनों से इस बात को टाल रखा था।

ठीक है, प्राण ने मन ही मन कहा। मैं आज उससे बात करूँगा। और प्रेम निवास जाने का भी अच्छा मौका मिलेगा।

पहले से ही इतनी गर्मी थी कि पैदल चलना मुश्किल था, इसलिए वे तांगे से गए। सविता चुपचाप मुस्कुराती रही और प्राण को लगा कि उसका मुस्कुराना काफी रहस्यमय था। दरअसल, वह अपनी सास से मिलने की खुशी में थी, जिनसे वह प्यार करती थी और जिनके साथ वह नीम के पेड़, गिद्ध, घास के मैदान और लिली के फूलों के बारे में बातें करना पसंद करती थी।

प्रेम निवास पहुँचने पर उन्होंने पाया कि मान अभी भी सो रहा था। सविता को श्रीमती महेश कपूर के पास छोड़कर, जो पहले से थोड़ी बेहतर लग रही थीं, प्राण अपने भाई को जगाने चला गया। मान अपने कमरे में तकिए में चेहरा छिपाए लेटा हुआ था। छत का पंखा घूम रहा था, लेकिन कमरा अभी भी काफी गर्म था।

‘उठो! उठो!’ प्राण ने कहा।

‘ओह!’ मान ने दिन के उजाले को रोकने की कोशिश करते हुए कहा।

'उठो! मुझे तुमसे बात करनी है।'

‘क्या? ओह! क्यों? ठीक है, मुझे अपना चेहरा धोने दो।’

मान उठा, कई बार अपना सिर हिलाया, दर्पण में अपना चेहरा ध्यान से देखा, जब उसका भाई नहीं देख रहा था तो उसने स्वयं को आदरपूर्वक आदाब किया और अपने ऊपर थोड़ा पानी छिड़कने के बाद वापस आया

और एक बार फिर बिस्तर पर पीठ के बल लेट गया।
‘तुम्हें मुझसे बात करने के लिए किसने कहा?’ मान ने कहा। फिर, अपने सपने को याद करते हुए, उसने खेदपूर्वक कहा: ‘मैं एक बहुत ही सुंदर सपना देख रहा था। मैं बरसात महल के पास एक युवती के साथ चल रहा था—वैसे तो वह इतनी भी युवती नहीं थी, लेकिन उसके चेहरे पर अभी भी झुर्रियाँ नहीं थीं—’
प्राण मुस्कुराने लगा। मान थोड़ा दुखी लग रहा था।
‘क्या आपको इसमें दिलचस्पी नहीं है?’ उसने पूछा।
'नहीं।'
“अच्छा, भाई साहब, आप क्यों आए हैं? क्यों न आप पलंग पर बैठ जाइए—यह ज़्यादा आरामदायक है। ओह हाँ,” उन्होंने याद करते हुए कहा: “आप मुझसे बात करने आए हैं। आपको किसने उकसाया है?”
क्या किसी ने मुझे इसके लिए उकसाया होगा?
'जी हां। तुम आमतौर पर कभी भाईचारे वाली सलाह नहीं देते, और तुम्हारे चेहरे से मुझे पता चल गया है कि मुझे कुछ सलाह मिलने वाली है। ठीक है, ठीक है, बोलो। मुझे लगता है कि यह सईदा बाई के बारे में है।'
'आप बिल्कुल सही कह रहे है।'
‘खैर, कहने को क्या है?’ मान ने थोड़ी उदास और खुशमिजाज मुस्कान के साथ कहा। ‘मैं उससे बेइंतहा प्यार करता हूँ। लेकिन मुझे नहीं पता कि वह मुझसे जरा भी प्यार करती है या नहीं।’
‘अरे, तुम बेवकूफ हो,’ प्राण ने स्नेहपूर्वक कहा।
‘मेरा मजाक मत उड़ाओ। मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं बहुत उदास महसूस कर रहा हूँ,’ मान ने धीरे-धीरे खुद को अपने रोमांटिक अवसाद के बारे में समझाते हुए कहा। ‘लेकिन कोई मेरी बात पर यकीन नहीं करता। यहाँ तक कि फ़िरोज़ भी कहता है—’

और वह बिल्कुल सही कह रहा है। आप ऐसा कुछ भी महसूस नहीं कर रहे हैं। अब मुझे बताइए, क्या आपको सच में लगता है कि उस तरह का व्यक्ति प्यार करने में सक्षम है?

'ओह?' मान ने पूछा। 'क्यों नहीं?'

उसने सईदा बाई की बाहों में बिताई आखिरी शाम के बारे में सोचा और एक बार फिर से उसके मन में धुंधली सी प्रेम भावना जाग उठी।

प्राण ने जवाब दिया, 'क्योंकि ऐसा न करना उसका काम है। अगर उसे तुमसे प्यार हो गया तो यह उसके काम और उसकी प्रतिष्ठा दोनों के लिए अच्छा नहीं होगा! इसलिए वह ऐसा नहीं करेगी। वह बहुत जिद्दी है। जिसकी एक आंख भी ठीक है, वह यह देख सकता है, और मैंने उसे लगातार तीन होली में देखा है।'

'प्राण, तुम उसे जानते ही नहीं,' उसके भाई ने जोश से कहा।

कुछ ही घंटों में यह दूसरी बार था जब किसी ने प्राण से कहा था कि वह किसी दूसरे व्यक्ति को समझ ही नहीं पाता, और उसने अधीरता से प्रतिक्रिया दी।

'अब सुनो, मान, तुम पूरी तरह से मूर्ख बन रहे हो। ऐसी महिलाओं को भोले-भाले पुरुषों से प्यार का नाटक करना सिखाया जाता है—ताकि उनका दिल हल्का हो जाए और उनकी जेबें भी हल्की हो जाएं। तुम्हें पता है कि सईदा बाई इस तरह की हरकतों के लिए बदनाम हैं।'

मान पेट के बल पलट गया और अपना चेहरा तकिए में दबा लिया।

प्राण को अपने मूर्ख भाई के साथ न्याय करना बहुत मुश्किल लग रहा था। खैर, मैंने अपना कर्तव्य निभा दिया, उसने सोचा। अगर मैंने आगे कुछ कहा तो अम्माजी की इच्छा के बिल्कुल विपरीत परिणाम होगा।

उसने अपने भाई के बालों को सहलाते हुए कहा: 'मान—क्या तुम्हें पैसों की तंगी है?'

तकिये से थोड़ी दबी हुई मान की आवाज में उसने कहा: 'खैर, यह आसान नहीं है, आप जानते हैं। मैं कोई ग्राहक तो नहीं हूँ, लेकिन मैं खाली हाथ नहीं जा सकता। इसलिए, मैंने उसे कुछ उपहार दिए हैं। आप जानते हैं।'

प्राण चुप रहा। उसे कुछ पता नहीं था। फिर उसने कहा, 'तुम ब्रह्मपुर में व्यापार करने के लिए जो पैसा लेकर आए थे, उसमें से तुमने कुछ खर्च तो नहीं कर दिया, मान? तुम्हें पता है अगर बाओजी को पता चल गया तो उनकी क्या प्रतिक्रिया होगी।'

'नहीं,' मान ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। वह फिर से मुड़ गया था और पंखे की ओर देख रहा था। 'बाओजी ने कुछ दिन पहले मुझसे कुछ तीखी बात कही थी— लेकिन मुझे यकीन है कि उन्हें सईदा बाई से कोई आपत्ति नहीं है। आखिर, उनकी जवानी भी काफी रंगीन रही है— और इसके अलावा, उन्होंने सईदा को प्रेम निवास में गाने के लिए कई बार आमंत्रित किया है।'

प्राण ने कुछ नहीं कहा। उसे पूरा यकीन था कि उसके पिता बहुत नाराज थे।

मान ने आगे कहा: 'और कुछ ही दिन पहले मैंने उनसे पैसे मांगे थे —"इसके लिए और उसके लिए"—और उन्होंने मुझे काफी उदारतापूर्वक राशि दी।'

प्राण ने सोचा कि जब भी उनके पिता किसी कानून या किसी अन्य परियोजना में व्यस्त होते थे, तो उन्हें परेशान किया जाना बिल्कुल पसंद नहीं था, और वे लगभग लोगों को रिश्वत देकर चुप करा देते थे ताकि वे अपना काम कर सकें।

'तो देखा आपने,' मान ने कहा, 'कोई समस्या है ही नहीं।' समस्या को दूर करते हुए उसने आगे कहा, 'लेकिन मेरी प्यारी भाभी कहाँ हैं? मुझे तो उनसे डांट सुनना ज़्यादा अच्छा लगेगा।'

वह नीचे है।

क्या वह मुझसे भी नाराज है?
प्राण ने कहा, 'मान, मुझे तुमसे कोई खास गुस्सा नहीं है। ठीक है, तैयार हो जाओ और नीचे आ जाओ। वह तुमसे मिलने के लिए बेताब है।'
‘तुम्हारी नौकरी का क्या हाल है?’ मान ने पूछा।
प्राण ने अपने दाहिने हाथ से एक इशारा किया जो कंधे उचकाने के बराबर था।
'ओह, हाँ, और क्या प्रोफेसर मिश्रा अब भी आपसे नाराज़ हैं?'
प्राण ने भौंहें चढ़ा लीं। 'वह ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जो तुम्हारे जैसे छोटे-मोटे दयालु कार्यों को भूल जाएं। क्या तुम्हें पता है, अगर तुम छात्र होते और होली पर वही करते जो तुमने किया, तो छात्र कल्याण समिति के सदस्य के रूप में मुझे तुम्हें निष्कासित करने की सिफारिश करनी पड़ सकती थी।'
'आपके छात्र बहुत ही उत्साही लग रहे हैं,' मान ने प्रशंसा करते हुए कहा।
कुछ देर बाद उन्होंने चेहरे पर खुशी भरी मुस्कान के साथ कहा:
क्या आपको पता है कि वह मुझे दाग साहब कहकर बुलाती है?
‘ओह, सच में?’ प्राण ने कहा। ‘बहुत ही आकर्षक। मैं कुछ ही मिनटों में नीचे आपसे मिलूंगा।’

6.8

एक शाम, उच्च न्यायालय में लंबे दिन के बाद, फ़िरोज़ पोलो खेलने और घुड़सवारी के लिए छावनी जा रहा था, तभी उसने अपने पिता के सचिव, मुर्तज़ा अली को हाथ में एक सफेद लिफाफा लिए साइकिल चलाते हुए देखा। फ़िरोज़ ने गाड़ी रोकी और आवाज़ लगाई, और मुर्तज़ा अली रुक गया।
‘तुम कहाँ जा रहे हो?’ फ़िरोज़ ने पूछा।
‘अरे, कहीं नहीं, बस पसंद बाग के अंदर ही।’

‘ये लिफाफा किसके लिए है?’
'सईदा बाई फिरोजाबादी,' मुर्तजा अली ने अनिच्छा से कहा।
‘ठीक है, मैं इसे रास्ते में ही छोड़ दूंगा।’ फ़िरोज़ ने अपनी घड़ी देखी। ‘मुझे देर नहीं होनी चाहिए।’
उसने पैकेट लेने के लिए खिड़की से हाथ बढ़ाया, लेकिन मुर्तजा अली ने उसे रोक लिया।
‘कोई बात नहीं, छोटे साहब,’ उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा। ‘मुझे अपने कर्तव्यों का बोझ दूसरों पर नहीं डालना चाहिए। आप इन नए जोधपुरी पैंट में बहुत अच्छे लग रहे हैं।’
‘यह मेरा कर्तव्य नहीं है। लीजिए—’ और फ़िरोज़ ने एक बार फिर पैकेट की ओर हाथ बढ़ाया। उसने सोचा कि इससे उसे उस प्यारी लड़की तसनीम को एक बार फिर देखने का एक निर्दोष सा ज़रिया मिल जाएगा।
'माफ़ कीजिए, छोटे साहब, नवाब साहब ने स्पष्ट रूप से कहा था कि मैं इसे पहुंचा दूं।'
फ़िरोज़ ने कुछ संभ्रांत लहजे में कहा, 'यह बात मेरी समझ से परे है। मैंने पहले भी पैकेट पहुँचाया था—जब वह रास्ते में था तो आपने मुझे उसे ले जाने दिया ताकि आपको परेशानी न हो—और मैं उसे दोबारा ले जाने में सक्षम हूँ।'
‘छोटे साहब, यह तो बहुत छोटी सी बात है, कृपया इसे रहने दीजिए।’
'अब, भले आदमी, मुझे पैकेट दे दो।'
'मुझसे नहीं हो सकता।'
‘नहीं कर सकते?’ फ़िरोज़ की आवाज़ में एक दबंग और उदासीन भाव आ गया।
‘देखिए, छोटे साहब, पिछली बार जब मैंने ऐसा किया था, तो नवाब साहब बहुत नाराज़ हो गए थे। उन्होंने मुझे बहुत सख्ती से कहा था कि

ऐसा दोबारा कभी नहीं होना चाहिए। मुझे अपनी बदतमीज़ी के लिए आपसे माफ़ी मांगनी चाहिए, लेकिन आपके पिता इतने उग्र थे कि मैं उनकी नाराज़गी दोबारा मोल लेने की हिम्मत नहीं कर सकता।'

'मैं समझ गया।' फ़िरोज़ उलझन में था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसके पिता इस मामूली सी बात पर इतना गुस्सा क्यों कर रहे हैं। वह अपने खेल के लिए उत्सुक था, लेकिन अब उसका मूड खराब हो गया था। उसके पिता इतना रूढ़िवादी व्यवहार क्यों कर रहे थे? वह जानता था कि गाने वाली लड़कियों के साथ मेलजोल रखना ठीक नहीं होता, लेकिन सिर्फ़ एक चिट्ठी पहुँचाने में क्या हर्ज था? पर शायद समस्या यह थी ही नहीं।

कुछ देर सोचने के बाद उसने आगे कहा, 'मुझे यह बात स्पष्ट करने दीजिए। क्या मेरे पिता इस बात से नाराज़ थे कि आपने पैकेट नहीं पहुँचाया था या इस बात से कि मैंने पहुँचाया था?'

'मैं ये कह नहीं सकता, छोटे साहब। काश मैं खुद समझ पाता।' मुर्तजा अली अपनी साइकिल के बगल में शालीनता से खड़े रहे, एक हाथ में लिफाफा मजबूती से पकड़े हुए, मानो उन्हें डर हो कि फिरोज अचानक आवेग में आकर उसे उनसे छीन न ले।

'ठीक है,' फ़िरोज़ ने कहा और मुर्तज़ा अली को संक्षिप्त रूप से सिर हिलाकर इशारा किया और छावनी की ओर गाड़ी चला दी।

आसमान में हल्के बादल छाए हुए थे। शाम का समय होने के बावजूद मौसम अपेक्षाकृत ठंडा था। किचनर रोड के दोनों ओर नारंगी रंग के खिले हुए लंबे गुलमोहर के पेड़ खड़े थे। फूलों की अनोखी खुशबू, जो मीठी तो नहीं थी, लेकिन गेरेनियम की तरह मनमोहक थी, हवा में फैली हुई थी, और हल्के, पंखे के आकार की पंखुड़ियाँ सड़क पर बिखरी हुई थीं। फ़िरोज़ ने बैतर हाउस लौटकर अपने पिता से बात करने का फैसला

किया, और इस संकल्प ने उसे उस घटना को भुलाने में मदद की।
उसे तसनीम की पहली झलक याद आई और उसके प्रति अपने अचानक और बेचैन कर देने वाले आकर्षण का एहसास हुआ—ऐसा लगा जैसे उसने उसे पहले कहीं देखा हो, 'अगर इस जीवन में नहीं तो किसी पिछले जन्म में'। लेकिन कुछ देर बाद, जैसे ही वह पोलो मैदान के करीब पहुँचा और घोड़े के गोबर की जानी-पहचानी गंध महसूस की, जानी-पहचानी इमारतों के पास से गुजरा और जाने-पहचाने लोगों को हाथ हिलाया, खेल फिर से हावी हो गया और तसनीम भी पृष्ठभूमि में धुंधली पड़ गई।
फ़िरोज़ ने आज शाम मान को पोलो सिखाने का वादा किया था, और अब वह क्लब में उसे ढूंढ रहा था। असल में, यह कहना ज़्यादा सही होगा कि उसने अनिच्छुक मान को खेल के बारे में थोड़ा सीखने के लिए मजबूर कर दिया था। 'यह दुनिया का सबसे अच्छा खेल है,' उसने मान से कहा था। 'तुम्हें जल्द ही इसकी लत लग जाएगी। और तुम्हारे पास बहुत ज़्यादा खाली समय है।' फ़िरोज़ ने मान के हाथों को अपने हाथों में थामते हुए कहा था: 'ज़्यादा लाड़-प्यार से ये हाथ नरम पड़ रहे हैं।'
लेकिन इस समय मान कहीं नजर नहीं आ रहा था, और फिरोज ने थोड़ी अधीरता से अपनी घड़ी और घटते प्रकाश की ओर देखा।

6.9

कुछ मिनट बाद, मान घोड़े पर सवार होकर उसकी ओर आया, अभिवादन के एक प्रसन्न भाव से अपनी घुड़सवारी की टोपी उतारी और घोड़े से उतर गया।
फिरोज ने पूछा, 'तुम कहाँ थे?' 'यहाँ समय का बहुत सख्ती से पालन होता है, और अगर हम तय समय के दस मिनट के अंदर लकड़ी के घोड़े तक नहीं पहुँचे, तो कोई और उसे ले जाएगा। वैसे, तुमने उन्हें कैसे मना लिया कि वे तुम्हें किसी सदस्य के बिना उनके घोड़ों में से एक पर सवारी

करने दें?’

‘ओह, मुझे नहीं पता,’ मान ने कहा। ‘मैं बस थोड़ी देर के लिए वहाँ गया और एक घोड़े की देखभाल करने वाले से कुछ मिनट बात की, और उसने मेरे लिए इस भूरे घोड़े पर काठी कस दी।’

फ़िरोज़ ने सोचा कि उसे इतना आश्चर्य नहीं होना चाहिए था: उसका दोस्त अपनी बेफिक्री से हर तरह की अप्रत्याशित परिस्थितियों को आसानी से संभाल लेता था। दूल्हे ने शायद यही मान लिया होगा कि मान भी इस क्लब का एक पक्का सदस्य है।

मान लकड़ी के घोड़े पर असहज रूप से बैठा था, तभी फ़िरोज़ ने उसे प्रशिक्षण देना शुरू किया। मान के दाहिने हाथ में हल्की बाँस की पोलो स्टिक थमा दी गई और उसे अभ्यास के लिए कुछ बार उसे घुमाने और निशाना लगाने के लिए कहा गया।

लगभग पांच मिनट बाद मान ने कहा, 'लेकिन इसमें बिल्कुल भी मजा नहीं आ रहा है।'

फ़िरोज़ ने शांत भाव से उत्तर दिया, “शुरुआती पाँच मिनट में कुछ भी मज़ेदार नहीं होता। नहीं, छड़ी को उस तरह मत पकड़ो—अपनी बांह सीधी रखो—नहीं, बिल्कुल सीधी—ठीक है—हाँ, अब इसे घुमाओ—बस आधा घुमाओ—शाबाश!—तुम्हारी बांह छड़ी के विस्तार की तरह काम करनी चाहिए।”

'मैं कम से कम एक ऐसी चीज के बारे में सोच सकता हूँ जो पहले पांच मिनट में मजेदार हो सकती है,' मान ने थोड़ी मूर्खतापूर्ण मुस्कान के साथ कहा, छड़ी को इधर-उधर घुमाते हुए और थोड़ा सा अपना संतुलन खोते हुए।

फ़िरोज़ ने शांत भाव से मान के हावभाव का जायज़ा लिया। उन्होंने कहा, 'मैं कौशल और अभ्यास की आवश्यकता वाली किसी भी चीज़ के बारे में

बात कर रहा हूँ।'
'इसके लिए बहुत कौशल और अभ्यास की आवश्यकता होती है,' मान ने कहा।
फिरोज, जो पोलो को गंभीरता से लेता था, ने कहा, 'मजाक मत करो। अब बस वहीं खड़े रहो और मेरी तरफ देखो। ध्यान दो कि मेरे कंधों के बीच की रेखा घोड़े की रीढ़ की हड्डी के समानांतर चलती है। उसी स्थिति को लक्ष्य बनाओ।'
मान ने कोशिश की, लेकिन उसे और भी असहज महसूस हुआ। उसने पूछा, 'क्या आपको सच में लगता है कि कौशल की आवश्यकता वाली हर चीज़ शुरुआत में कष्टदायी होती है?' 'मेरे उर्दू शिक्षक की भी यही राय लगती है।' उसने पोलो स्टिक को अपने पैरों के बीच रखा और अपने दाहिने हाथ के पिछले हिस्से से अपना माथा पोंछा।
‘चलो मान,’ फ़िरोज़ ने कहा, ‘सिर्फ़ पाँच मिनट खेलने के बाद तुम थके हुए नहीं कह सकते। अब मैं तुम्हें गेंदबाज़ी में आज़माऊंगा।’
‘सच कहूँ तो मैं काफी थका हुआ हूँ,’ मान ने कहा। ‘मेरी कलाई में थोड़ा दर्द हो रहा है। और मेरी कोहनी में भी, और मेरे कंधे में भी।’
फ़िरोज़ ने उसे हौसला बढ़ाने वाली मुस्कान दी और गेंद को ज़मीन पर रख दिया। मान ने अपनी स्टिक घुमाई, लेकिन गेंद पूरी तरह से चूक गई। उसने फिर कोशिश की और फिर से चूक गया।
‘तुम्हें पता है,’ मान ने कहा, ‘मेरा इस सब में बिल्कुल भी मन नहीं है। मैं कहीं और रहना पसंद करूंगा।’
फिरोज ने उसकी बात अनसुनी करते हुए कहा: 'किसी और चीज को मत देखो, सिर्फ गेंद को देखो—सिर्फ गेंद को देखो—और कुछ नहीं—न मुझे देखो—न ही इस बात को देखो कि गेंद कहाँ जाएगी—यहाँ तक कि सईदा बाई की दूर की छवि को भी मत देखो।'

इस आखिरी टिप्पणी से मान का पूरा नियंत्रण बिगड़ने के बजाय, गेंद पर हल्का सा असर हुआ और मैलेट गेंद के ऊपरी हिस्से को छूते हुए निकल गया। मान ने कहा, 'सईदा बाई के साथ सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है, फिरोज। कल वो मुझसे बहुत नाराज़ हो गई थीं, और मुझे नहीं पता मैंने क्या किया।'

फिरोज ने बहुत सहानुभूति न दिखाते हुए पूछा, 'ऐसा क्यों हुआ?'

“खैर, जब हम बातें कर रहे थे, तभी उसकी बहन अंदर आई और तोते के बारे में कुछ कहा, जैसे वो थका हुआ लग रहा हो। वैसे तो वो एक पैराकीट है, लेकिन ये तोता भी तो ही होता है, है ना? तो मैंने उसे देखकर मुस्कुरा दिया और अपने उर्दू शिक्षक का ज़िक्र करते हुए कहा कि हम दोनों में कुछ समानता है। मतलब, ज़ाहिर है, तसनीम और मुझमें। और सईदा बाई एकदम भड़क उठीं। एकदम भड़क उठीं। आधे घंटे बाद ही उन्होंने मुझसे दोबारा प्यार से बात की।” मान एकदम खोया-खोया सा लग रहा था।

'हम्म,' फ़िरोज़ ने कहा, यह सोचते हुए कि जब तसनीम लिफाफा देने घर आया था तो सईदा बाई ने उसके साथ कितनी सख्ती बरती थी।

कुछ देर रुकने और कुछ और तस्वीरें लेने के बाद मान ने आगे कहा, 'ऐसा लग रहा था मानो वह ईर्ष्या कर रही हो। लेकिन इतनी खूबसूरत लड़की को किसी और से ईर्ष्या करने की क्या ज़रूरत है? खासकर अपनी बहन से?'

फ़िरोज़ ने सोचा कि वह सईदा बाई के लिए कभी भी 'अत्यंत सुंदर' जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं करता। उनकी बहन ही थीं जिन्होंने अपनी सुंदरता से उन्हें चकित कर दिया था। वह अच्छी तरह समझ सकता था कि सईदा बाई को उनकी ताजगी और यौवन से ईर्ष्या होती होगी।

‘खैर,’ उसने मान से कहा, उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान थी, ‘इसे

बिल्कुल भी बुरा संकेत मत समझो। मुझे समझ नहीं आता कि तुम इस बात से उदास क्यों हो। तुम्हें अब तक तो पता चल ही जाना चाहिए था कि औरतें ऐसी ही होती हैं।'

'तो तुम्हें लगता है कि ईर्ष्या एक अच्छी बात है?' मान ने पूछा, जो खुद भी ईर्ष्यालु स्वभाव का था। 'लेकिन ईर्ष्या करने का कोई कारण तो होना चाहिए, है ना? क्या तुमने कभी छोटी बहन को देखा है? वह सईदा बाई के सामने भला कैसे टिक सकती है?'

फिरोज कुछ देर तक चुप रहा, फिर संक्षेप में बोला: 'हां, मैंने उसे देखा है। वह एक खूबसूरत लड़की है।' उसने इसके अलावा और कुछ नहीं कहा।

लेकिन मान, गेंद को बेअसर ढंग से ऊपर की ओर मारते हुए, एक बार फिर सईदा बाई के बारे में सोच रहा था। उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'कभी-कभी मुझे लगता है कि वह मुझसे ज़्यादा उस तोते की परवाह करती है। वह उससे कभी नाराज़ नहीं होती। मैं ऐसे नहीं खेल सकता—मैं थक गया हूँ।'

आखिरी वाक्य में उनके दिल की नहीं, बल्कि उनकी बांह की बात हो रही थी। मान अपने शॉट्स खेलने में काफी ऊर्जा खर्च कर रहे थे, और फ़िरोज़ को उन्हें थोड़ा हांफते हुए देखकर आनंद आ रहा था।

उन्होंने पूछा, 'आखिरी शॉट मारते समय आपके हाथ में कैसा महसूस हुआ?'

'इसे काफी झटका लगा,' मान ने कहा। 'मैं कब तक बोलता रहूँ?'

"ओह, जब तक मुझे लगे कि तुम्हें काफी अभ्यास हो गया है," फ़िरोज़ ने कहा। "यह तो काफी उत्साहजनक है— तुम शुरुआती खिलाड़ियों वाली सारी आम गलतियाँ कर रहे हो। तुमने अभी गेंद के ऊपरी हिस्से पर निशाना लगाया। ऐसा मत करो— गेंद के निचले हिस्से पर निशाना लगाओ, और गेंद बहुत अच्छी तरह ऊपर उठेगी। अगर तुम ऊपरी हिस्से

पर निशाना लगाओगे, तो सारी ताकत ज़मीन में समा जाएगी। गेंद दूर नहीं जाएगी और, जैसा कि तुमने अभी महसूस किया, तुम्हें अपने हाथ पर एक तेज़ झटका लगेगा।"

'फिरोज,' मान ने कहा, 'तुम और इम्तियाज ने उर्दू कैसे सीखी? क्या यह बहुत मुश्किल नहीं था? मुझे तो यह नामुमकिन लग रहा है—ये सारे बिंदु और टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएं।'

फ़िरोज़ ने कहा, 'हमारे घर में एक पुराने मौलवी आते थे जो खास तौर पर हमें पढ़ाते थे। मेरी माँ चाहती थीं कि हम फ़ारसी और अरबी भी सीखें, लेकिन ज़ैनब ही अकेली ऐसी थी जिसने इन भाषाओं में काफ़ी प्रगति की।'

'ज़ैनब कैसी है?' मान ने पूछा। वह सोच रहा था कि बचपन में वह ज़ैनब का लाडला था, लेकिन कई सालों से उससे नहीं मिला था—जबसे वह परदे में लीन हो गई थी। वह उससे छह साल बड़ी थी और वह उसे बहुत प्यार करता था। दरअसल, छह साल की उम्र में एक बार तैरते समय हुए हादसे में ज़ैनब ने उसकी जान बचाई थी। मुझे शक है कि मैं उसे फिर कभी देख पाऊँगा, उसने मन ही मन सोचा। कितना भयानक—और कितना अजीब।

फिरोज ने कहा, 'बल का प्रयोग मत करो, शक्ति का प्रयोग करो।' 'या तुम्हारी प्रशिक्षक ने तुम्हें यह नहीं सिखाया?'

मान ने अपनी स्टिक से फिरोज पर हल्के से प्रहार किया।

अब दिन की रोशनी के केवल दस मिनट ही बचे थे, और फ़िरोज़ समझ गया था कि मान लकड़ी के घोड़े पर बैठे-बैठे खुश नहीं था। 'ठीक है, एक आखिरी शॉट,' उसने कहा।

मान ने गेंद की ओर इशारा किया, हल्का सा आधा स्विंग किया और अपनी बांह और कलाई की एक सहज, पूर्ण, गोलाकार गति से गेंद को

ठीक बीचोंबीच मारा। पोक्क! गेंद से लकड़ी की एक अद्भुत आवाज़ आई और वह एक सुंदर, नीची परवलयिक आकृति में ऊपर उड़ती हुई गड्ढे के शीर्ष पर लगे जाल के ऊपर से निकल गई।

फिरोज और मान दोनों ही आश्चर्यचकित रह गए।

'वाह!' मान ने खुद पर बहुत गर्व करते हुए कहा।

'हाँ,' फ़िरोज़ ने कहा। 'अच्छा निशाना लगाया। शुरुआत में किस्मत साथ देती है। कल देखेंगे कि क्या तुम लगातार ऐसा कर पाते हो। लेकिन अभी मैं तुम्हें कुछ मिनटों के लिए एक असली पोलो टट्टू पर बिठाकर देखूंगा कि क्या तुम सिर्फ़ बाएँ हाथ से लगाम संभाल सकते हो।'

'शायद कल,' मान ने कहा। उसके कंधे अकड़े हुए थे और पीठ में मोच सी आ रही थी, और वह पोलो खेलते-खेलते थक चुका था। 'क्यों न इसके बजाय घुड़सवारी करें?'

फ़िरोज़ ने कहा, 'मैं देख सकता हूँ कि तुम्हारे उर्दू शिक्षक की तरह, मुझे तुम्हें तुम्हारा विषय पढ़ाने से पहले अनुशासन सिखाना होगा। एक हाथ से घुड़सवारी करना बिलकुल भी मुश्किल नहीं है। यह घुड़सवारी सीखने या अलिफ़-बे-पे-ते सीखने से ज़्यादा कठिन नहीं है। अगर तुम अभी कोशिश करोगे, तो कल तुम बेहतर स्थिति में होगे।'

'लेकिन आज तो मेरा मन नहीं कर रहा,' मान ने विरोध करते हुए कहा। 'वैसे भी अंधेरा है, और मुझे मजा नहीं आएगा। खैर, ठीक है, जैसा तुम कहो, फिरोज। तुम ही तो मालिक हो।'

वह घोड़े से उतरा और अपने दोस्त के कंधे पर हाथ रखकर वे अस्तबल की ओर चल पड़े।

मान ने बिना किसी तात्कालिक विषय के बात जारी रखते हुए कहा, 'मेरे उर्दू शिक्षक के साथ समस्या यह है कि वह मुझे केवल सुलेख और उच्चारण की बारीकियां सिखाना चाहते हैं, और मैं केवल प्रेम कविताएँ

पढ़ना सीखना चाहता हूँ।'

'शिक्षक के साथ यही दिक्कत है, है ना?' फ़िरोज़ ने अपने दोस्त की पोलो स्टिक को पलटवार से रोकने के लिए पकड़ते हुए पूछा। वह फिर से खुश महसूस कर रहा था। मान की संगति लगभग हमेशा उसे ऐसा ही कर देती थी।

'अच्छा, क्या आपको नहीं लगता कि इस मामले में मेरी भी राय होनी चाहिए?' मान ने पूछा।

'शायद,' फ़िरोज़ ने कहा। 'अगर मुझे लगता कि तुम जानते हो कि तुम्हारे लिए क्या अच्छा है।'

6.10

घर लौटने के बाद फ़िरोज़ ने अपने पिता से बात करने का फैसला किया। मुर्तज़ा अली से हुई बहस के तुरंत बाद वह जितना नाराज़ था, अब उतना नाराज़ नहीं था, लेकिन पहले की तरह ही उलझन में था। उसे शक था कि उसके पिता का निजी सचिव उनके शब्दों का गलत अर्थ निकाल रहा है, या कम से कम बढ़ा-चढ़ाकर बता रहा है। ऐसे अजीब निर्देश देने का उसके पिता का क्या मतलब हो सकता है? क्या यह इम्तियाज़ पर भी लागू होता है? अगर हाँ, तो उसके पिता उनकी इतनी सुरक्षा क्यों कर रहे थे? उन्हें क्या लगता है कि उनके बेटे जाकर क्या करेंगे? शायद, फ़िरोज़ को लगा, उसे अपने पिता को दिलासा देना चाहिए।

जब उसने अपने पिता को कमरे में नहीं पाया, तो उसने मान लिया कि वे ज़ैनब से बात करने के लिए ज़नाना में गए होंगे, और उसने उनके पीछे न जाने का फैसला किया। यह अच्छा ही हुआ कि उसने ऐसा नहीं किया, क्योंकि नवाब साहब ज़ैनब से एक ऐसे निजी मामले पर बात कर रहे थे कि किसी और की उपस्थिति, यहाँ तक कि एक प्रिय भाई की उपस्थिति भी, बातचीत को अचानक रोक देती।

ज़ैनब, जिसने बैतर हाउस पर पुलिस की घेराबंदी के दौरान इतना साहस दिखाया था, अब अपने पिता के पास बैठी चुपचाप दुख से सिसक रही थी। नवाब साहब ने उसे अपनी बाहों में भर रखा था और उनके चेहरे पर गहरी कड़वाहट के भाव थे।

'हां,' वह धीरे से कह रहा था, 'मैंने अफवाहें सुनी हैं कि वह बाहर जाता है। लेकिन हर किसी की कही बात को सच नहीं मान लेना चाहिए।'

ज़ैनब कुछ देर तक चुप रही, फिर अपने हाथों से अपना चेहरा ढकते हुए बोली: 'अब्बा-जान, मुझे पता है यह सच है।'

नवाब साहब ने ज़ैनब के बालों को प्यार से सहलाया और उन दिनों को याद करने लगे जब ज़ैनब चार साल की थी और जब भी उसे कोई परेशानी होती, वह आकर उनकी गोद में बैठ जाती थी। उन्हें इस बात का असहनीय दुख था कि उनके दामाद ने अपने विश्वासघात से उसे इतना गहरा आघात पहुँचाया था। उन्होंने अपने विवाह को याद किया, उस व्यावहारिक और सौम्य महिला को जिसे वे कई वर्षों तक ठीक से जान भी नहीं पाए थे, और जिसने शादी के अंतिम समय में और अपने तीन बच्चों के जन्म के काफी समय बाद उनका दिल पूरी तरह जीत लिया था। उन्होंने ज़ैनब से बस इतना ही कहा:

‘अपनी माँ की तरह धैर्य रखो। एक दिन वह मान जाएगा।’

ज़ैनब ने ऊपर नहीं देखा, लेकिन उसे आश्चर्य हुआ कि उसके पिता ने उसकी माँ की याद क्यों दिलाई। थोड़ी देर बाद, उसके पिता ने लगभग खुद से बात करते हुए कहा:

मुझे उनके महत्व का एहसास जीवन के बहुत बाद के चरण में हुआ। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे।

कई वर्षों से नवाब साहब अपनी पत्नी की कब्र पर यथासंभव बार-बार जाकर फातिहा पढ़ते थे। वास्तव में, बेगम साहिबा एक असाधारण महिला

थीं। उन्होंने नवाब के अस्थिर युवावस्था के बारे में जो कुछ भी जानती थीं, उसे सहन किया, एकांतवास में रहकर ही जागीर का अधिकांश भाग कुशलतापूर्वक संभाला, उनकी धार्मिकता के अंतिम दौर को सहन किया (सौभाग्य से, उनके छोटे भाई की तरह अतिवादी नहीं), और अपने बच्चों का पालन-पोषण किया तथा अपने भतीजों और भांजियों को अनुशासन और संस्कृति से परिपूर्ण बनाने में मदद की। ज़नाना पर उनका प्रभाव व्यापक और शक्तिशाली था। वे पढ़ती थीं; और इसके बावजूद, वे चिंतनशील भी थीं।

दरअसल, शायद वे किताबें ही थीं जो ज़ैनब ने अपनी भाभी आबिदा को उधार दी थीं, जिन्होंने सबसे पहले उस बेचैन, व्याकुल हृदय में विद्रोह के कुछ बीज बोए थे। हालाँकि ज़ैनब की माँ ने स्वयं ज़नाना छोड़ने के बारे में नहीं सोचा था, लेकिन केवल उनकी उपस्थिति ही आबिदा के लिए इसे सहनीय बना रही थी। जब उनकी मृत्यु हुई, तो आबिदा ने अपने पति—और उनके बड़े भाई नवाब साहब—को तर्क, फुसलाने और आत्महत्या की धमकियों (जिसे वह पूरी तरह से अंजाम देना चाहती थी, और जिसे वे देख सकते थे कि उसने कर दिया है) के द्वारा उसे उस बंधन से मुक्त होने देने के लिए विवश कर लिया जो उसके लिए असहनीय हो गया था। विधानमंडल की प्रखर आबिदा को नवाब साहब के लिए कोई सम्मान नहीं था, जिन्हें वह कमजोर और निकम्मे समझती थी, और जिन्होंने (फिर से, जैसा कि वह देखती थी) अपनी पत्नी की परदे से बाहर आने की हर इच्छा को समाप्त कर दिया था। लेकिन उन्हें उनके बच्चों से बहुत स्नेह था: ज़ैनब से, क्योंकि उसका स्वभाव उसकी माँ जैसा था; इम्तियाज़ से, क्योंकि उसकी हँसी और उसके कई भाव उसकी माँ से मिलते-जुलते थे; और फिरोज के लिए, जिसका लंबा सिर और साफ-सुथरा और आकर्षक चेहरा उसकी मां के चेहरे की छाप लिए हुए था।

अब नौकरानी हसन और अब्बास को अंदर लेकर आई और ज़ैनब ने नम आंखों से उन्हें चूमकर शुभ रात्रि कही।

हसन, थोड़ा उदास दिखते हुए, अपनी माँ से बोला: 'अम्मी-जान, आपको कौन रुला रहा है?'

उसकी मां ने मुस्कुराते हुए उसे गले लगाया और कहा, 'कोई नहीं, मेरे प्यारे। कोई नहीं।'

हसन ने अपने दादाजी से भूत-प्रेत की कहानी सुनाने की ज़िद की, जो उन्होंने कुछ रात पहले उन्हें सुनाने का वादा किया था। नवाब साहब मान गए। जब वे दोनों बच्चों, यहाँ तक कि तीन साल के बच्चे को भी, अपनी रोमांचक और कुछ हद तक खूनी कहानी सुना रहे थे, तो उन्होंने इस घर से जुड़ी उन कई भूत-प्रेत की कहानियों पर विचार किया जो उन्हें बचपन में उनके नौकरों और परिवार ने सुनाई थीं। कुछ ही रात पहले इस घर और इसकी सभी यादों पर मंडरा रहा था। कोई भी उस हमले को रोक नहीं पाया था और यह महज़ ईश्वर की कृपा, संयोग या भाग्य की बात थी कि वह बच गया। नवाब साहब ने सोचा, हम सब अकेले हैं; सौभाग्य से, हम इस बात को शायद ही कभी महसूस करते हैं।

उनके पुराने मित्र महेश कपूर का ख्याल उनके मन में आया और उन्हें यह बात समझ में आई कि संकट के समय में कई बार ऐसा होता है कि जो लोग मदद करना चाहते हैं, वे भी असमर्थ हो जाते हैं। हो सकता है कि वे स्वयं किसी न किसी कारण से बंधे हों; या फिर किसी मजबूरी या बड़ी आवश्यकता के कारण वे इतनी अनिच्छा से दूर न रह पाते हों।

6.11

महेश कपूर भी अपने पुराने दोस्त के बारे में सोच रहे थे, और उन्हें अपराधबोध हो रहा था। जिस रात एल.एन. अग्रवाल ने पुलिस को बैतर हाउस पर कब्ज़ा करने के लिए भेजा था, उस रात उन्हें बैतर हाउस से

आपातकालीन संदेश नहीं मिला था। श्रीमती महेश कपूर ने उन्हें ढूंढने के लिए जिस चपरासी को भेजा था, वह भी उन्हें नहीं ढूंढ पाया था।

ग्रामीण भूमि (जो अब जमींदारी प्रथा के उन्मूलन की संभावना से खतरे में थी) के विपरीत, शहरी भूमि और इमारतों पर किसी भी प्रकार के अधिग्रहण का खतरा नहीं था—सिवाय इसके कि वे विस्थापित संपत्ति के संरक्षक के हाथों में पड़ जाएं। महेश कपूर ने यह सोचा भी नहीं था कि ब्रह्मपुर के भव्य भवनों में से एक—वास्तव में, शहर के प्रमुख स्थलों में से एक—बैतर हाउस खतरे में पड़ सकता है। नवाब साहब वहीं रहते थे, उनकी भाभी बेगम आबिदा खान विधानसभा में एक प्रभावशाली व्यक्ति थीं, और घर के सामने के मैदान और बगीचों की अच्छी तरह से देखभाल की जाती थी, भले ही अंदर के कई—या अधिकांश—कमरे अब खाली और अनुपयोगी थे। उन्हें इस बात का अफसोस था कि वे अपने मित्र को प्रत्येक कमरे में कम से कम किसी के रहने का आभास कराने की सलाह देने में असमर्थ रहे। और उन्हें इस बात का भी बहुत दुख था कि संकट की रात वे मुख्यमंत्री से हस्तक्षेप करके मदद नहीं कर पाए।

अंततः, ज़ैनब की मध्यस्थता से महेश कपूर की सारी उम्मीदें पूरी हो गईं। एस.एस. शर्मा का दिल पिघल गया था, और गृह मंत्री के प्रति उनका आक्रोश सच्चा साबित हुआ।

ज़ैनब ने नवाब साहब को जो पत्र लिखा था, उसमें एक ऐसी घटना का ज़िक्र था जो नवाब साहब ने कुछ साल पहले उसे बताई थी; यह बात उसके मन में बसी हुई थी। एस.एस. शर्मा—संरक्षित प्रांतों के पूर्व प्रधानमंत्री (स्वतंत्रता से पहले पूर्व प्रदेश के मुख्यमंत्री को यही कहा जाता था)—को 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान एक ब्रिटिश जेल में लगभग पूरी तरह से अलग-थलग रखा गया था, और वे अपने परिवार के लिए उतना ही कम कर सकते थे जितना उनका परिवार उनके लिए कर

सकता था। इसी समय नवाब साहब के पिता को पता चला कि शर्मा की पत्नी बीमार हैं और वे उनकी मदद के लिए आए थे। यह एक डॉक्टर, दवाइयों और एक-दो मुलाकातों का मामला था, लेकिन उन दिनों बहुत से लोग, चाहे वे ब्रिटिश शासन में विश्वास करते हों या नहीं, विध्वंसक परिवारों के साथ संबंध रखना नहीं चाहते थे। वास्तव में, शर्मा उस समय प्रधानमंत्री थे जब 1938 का पूर्व प्रदेश भूमि किरायेदारी अधिनियम पारित हुआ था—एक ऐसा अधिनियम जिसे नवाब साहब के पिता ने सही ही, व्यापक भूमि सुधार की शुरुआत माना था। फिर भी, साधारण मानवता और अपने शत्रु के प्रति श्रद्धा भाव ने ही इस महत्वपूर्ण सहायता को प्रेरित किया था। शर्मा अपने परिवार को संकट की घड़ी में मिली दयालुता के लिए अत्यंत आभारी थे, और जब हसन, जो उस व्यक्ति का छह वर्षीय परपोता था जिसने तब उनकी सहायता की थी, उनके पास मदद और सुरक्षा का अनुरोध करते हुए एक पत्र लेकर आया, तो वे बहुत भावुक हो गए थे।

महेश कपूर को इन परिस्थितियों की कोई जानकारी नहीं थी, क्योंकि दोनों में से कोई भी पक्ष इन्हें सार्वजनिक नहीं करना चाहता था, और मुख्यमंत्री की त्वरित और स्पष्ट प्रतिक्रिया सुनकर वे स्तब्ध रह गए थे। इससे उन्हें अपनी अक्षमता का और भी गहरा एहसास हुआ। और जब विधानसभा में ज़मींदारी विधेयक पारित होने के बाद नवाब साहब की नज़र उन पर पड़ी, तो कुछ ऐसा था जिसने उन्हें अपने मित्र के पास जाकर सहानुभूति जताने, स्पष्टीकरण देने और माफी मांगने से रोक दिया। क्या यह उनकी निष्क्रियता पर शर्म थी—या फिर इस तथ्य से उत्पन्न तात्कालिक बेचैनी कि जिस विधेयक को उन्होंने सदन से सफलतापूर्वक पारित करवाया था, वह भले ही उसमें कोई दुर्भावना न हो, नवाब साहब के हितों को उतना ही नुकसान पहुंचाएगा जितना गृह मंत्री की पुलिस कार्रवाई?

अब और भी समय बीत चुका था, और यह मामला उनके मन में खटकता रहा। महेश कपूर ने मन ही मन कहा, "मुझे आज शाम बैतर हाउस जाना ही होगा। मैं इसे और टाल नहीं सकता।"

6.12

लेकिन इस बीच, आज सुबह कुछ काम करना ज़रूरी था। पुराने ब्रह्मपुर स्थित उनके निर्वाचन क्षेत्र और अन्य जगहों से बड़ी संख्या में लोग प्रेम निवास के बरामदों में जमा हो गए थे। उनमें से कुछ लोग आंगन में भी घूम रहे थे और बगीचे में भी चले गए थे। महेश कपूर के निजी सचिव और निजी सहायक भीड़ को नियंत्रित करने और राजस्व मंत्री के घर पर बने छोटे से कार्यालय में आने-जाने वालों की आवाजाही को सुचारू बनाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे थे।

महेश कपूर दफ्तर के कोने में एक मेज पर बैठे थे। दीवारों के साथ लगी दो संकरी बेंचों पर तरह-तरह के लोग बैठे थे: किसान, व्यापारी, छोटे-मोटे राजनेता, और तरह-तरह के याचिकाकर्ता। मेज के उस पार महेश कपूर के सामने वाली कुर्सी पर एक बुजुर्ग शिक्षक बैठे थे। वे उम्र में छोटे थे, लेकिन मंत्री से बड़े दिखते थे। जीवन भर की चिंताओं ने उन्हें थका दिया था। वे एक पुराने स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने अंग्रेजों के शासन में कई साल जेल में बिताए थे और अपने परिवार को गरीबी में डूबते देखा था। उन्होंने 1921 में बी.ए. की डिग्री हासिल की थी, और उस समय ऐसी योग्यता के साथ वे सरकार के उच्चतम पदों तक पहुँच सकते थे। लेकिन उन्नीस सौ बीस के दशक के उत्तरार्ध में उन्होंने गांधीजी का अनुसरण करने के लिए सब कुछ छोड़ दिया था, और इस आदर्शवादी भावना की उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ी। जब वे जेल में थे, उनकी पत्नी, जिनका सहारा कोई नहीं था, तपेदिक से मर गईं, और उनके बच्चे, दूसरों का बचा-खुचा खाना खाने को मजबूर होकर, लगभग जानलेवा भुखमरी का

शिकार हो गए थे। आजादी मिलने पर उन्हें उम्मीद थी कि उनके बलिदान से व्यवस्था उन आदर्शों के करीब आएगी जिनके लिए उन्होंने संघर्ष किया था, लेकिन उन्हें घोर निराशा हाथ लगी। उन्होंने देखा कि राशनिंग व्यवस्था और सरकारी ठेकों की व्यवस्था में भ्रष्टाचार इस कदर फैल चुका था कि ब्रिटिश शासन में उन्होंने जो कुछ भी देखा था, उससे कहीं अधिक क्रूर था। पुलिस भी जबरन वसूली में और अधिक मुखर हो गई थी। इससे भी बुरी बात यह थी कि स्थानीय राजनेता, स्थानीय कांग्रेस समितियों के सदस्य, अक्सर भ्रष्ट छोटे अधिकारियों के साथ मिले हुए थे। लेकिन जब उस बुजुर्ग व्यक्ति ने अपने मोहल्ले के लोगों की ओर से मुख्यमंत्री एस.एस. शर्मा से कुछ खास राजनेताओं के खिलाफ कार्रवाई करने का अनुरोध किया, तो उस महान व्यक्तित्व ने केवल थकी हुई मुस्कान के साथ उनसे कहा:

'मास्टरजी, आपका काम, शिक्षक का काम, एक पवित्र पेशा है। राजनीति कोयले के व्यापार की तरह है। अगर लोगों के हाथ और चेहरे थोड़े काले हो जाएं तो आप उन्हें कैसे दोष दे सकते हैं?'

अब वह बुजुर्ग व्यक्ति महेश कपूर से बात कर रहा था और उसे समझाने की कोशिश कर रहा था कि कांग्रेस पार्टी अपने हितों में उतनी ही शर्मनाक रूप से लिप्त हो गई है और अपने शासन में उतनी ही शर्मनाक रूप से दमनकारी हो गई है जितनी कि ब्रिटिश कभी हुआ करते थे।

'कपूर साहब, आप जैसे व्यक्ति इस पार्टी में क्या कर रहे हैं, यह मेरी समझ से परे है,' उन्होंने हिंदी में कहा, जिसमें ब्रह्मपुर की बजाय इलाहाबाद का लहजा अधिक था। 'आपको इसे बहुत पहले ही छोड़ देना चाहिए था।'

बूढ़े आदमी को पता था कि कमरे में मौजूद हर कोई उसकी बातें सुन सकता है, लेकिन उसे कोई परवाह नहीं थी। महेश कपूर ने सीधे उसकी

ओर देखा और कहा:
'मास्टरजी, गांधीजी का युग बीत चुका है। मैंने उन्हें अपने चरम पर देखा है, और मैंने उन्हें इस कदर अपनी शक्ति खोते हुए भी देखा है कि वे इस देश के विभाजन को रोक नहीं पाए। हालांकि, वे इतने बुद्धिमान थे कि यह समझ गए थे कि उनकी शक्ति और प्रेरणा असीमित नहीं थी। उन्होंने एक बार कहा था कि जादू उनमें नहीं, बल्कि परिस्थितियों में था।'
कुछ सेकंड तक बूढ़े व्यक्ति ने कुछ नहीं कहा। फिर, होंठों के किनारों को हल्का सा हिलाते हुए, उन्होंने कहा: 'मंत्री साहब, आप मुझसे क्या कह रहे हैं?'
उनके संबोधन के बदले हुए लहजे को महेश कपूर ने भांप लिया और उन्हें अपने टालमटोल पर थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई। उन्होंने आगे कहा, 'मास्टरजी, मैंने भले ही पुराने दिनों में कष्ट झेले हों, लेकिन उतना नहीं जितना आपने झेला है। ऐसा नहीं है कि मैं अपने आसपास जो देख रहा हूं उससे निराश नहीं हूं। मुझे बस इस बात का डर है कि पार्टी के बाहर मेरी उपयोगिता पार्टी के अंदर की तुलना में कम होगी।'
बुजुर्ग व्यक्ति ने लगभग मन ही मन कहा, "गांधीजी सही थे जब उन्होंने यह अनुमान लगाया था कि यदि कांग्रेस पार्टी स्वतंत्रता के बाद भी सरकार की पार्टी बनी रही तो क्या होगा। इसीलिए उन्होंने कहा था कि इसे भंग कर दिया जाना चाहिए और इसके सदस्यों को सामाजिक कार्यों में अपना जीवन समर्पित कर देना चाहिए।"
महेश कपूर ने जवाब देते समय सीधे-सीधे अपनी बात कही। उन्होंने साफ-साफ कहा: 'अगर हम सब ऐसा करते, तो देश में अराजकता फैल जाती। 1930 के दशक के उत्तरार्ध में प्रांतीय सरकारों में कुछ अनुभव रखने वाले हम लोगों का यह फर्ज था कि कम से कम प्रशासन को चलाते रहें। आप जो कुछ हमारे चारों ओर हो रहा है, उसका सही वर्णन कर रहे

हैं। लेकिन अगर आप, मास्टरजी और मेरे जैसे लोग इस कोयला व्यापार से हाथ खींच लें, तो आप कल्पना कर सकते हैं कि किस तरह के लोग सत्ता संभालेंगे। पहले राजनीति लाभदायक नहीं थी। आप जेल में सड़ते रहे, आपके बच्चे भूखे मरते रहे। अब राजनीति लाभदायक है, और स्वाभाविक रूप से पैसा कमाने में रुचि रखने वाले लोग इस खेल में शामिल होने के लिए उत्सुक हैं। अगर हम बाहर निकलते हैं, तो वे अंदर आ जाते हैं। बात इतनी ही सरल है।' 'देखो ये सब लोग इधर-उधर घूम रहे हैं,' वह बूढ़े आदमी के कानों तक ही सुनाई देने वाली धीमी आवाज़ में बोलता रहा, अपने हाथों के एक बड़े इशारे से कमरे, बरामदे और लॉन को समेटते हुए, 'मैं आपको बता नहीं सकता कि उनमें से कितने लोग मुझसे आने वाले चुनावों के लिए कांग्रेस पार्टी के टिकट दिलवाने की भीख मांग रहे हैं। और मैं भी आपकी तरह जानता हूँ कि अंग्रेजों के ज़माने में, वे इस तरह का एहसान स्वीकार करने से पहले सौ मील दूर भाग जाते!'

'कपूर साहब, मेरा सुझाव यह नहीं था कि आप राजनीति छोड़ दें,' बूढ़े व्यक्ति ने कहा; 'बस इतना कि आप एक नई पार्टी बनाने में मदद करें। सब जानते हैं कि पंडित नेहरू अक्सर महसूस करते हैं कि कांग्रेस उनके लिए सही जगह नहीं है। सब जानते हैं कि वे टंडनजी के संदिग्ध तरीकों से कांग्रेस अध्यक्ष बनने से कितने दुखी हैं। सब जानते हैं कि पंडितजी अपनी ही पार्टी पर अपनी पकड़ लगभग खो चुके हैं। सब जानते हैं कि वे आपका सम्मान करते हैं, और मेरा मानना है कि दिल्ली जाकर उन्हें पार्टी छोड़ने के लिए मनाना आपका कर्तव्य है। पंडित नेहरू और कांग्रेस के कम आत्मसंतुष्ट गुटों के अलग होने से, उनके द्वारा बनाई गई नई पार्टी के अगले चुनाव जीतने की अच्छी संभावना होगी। मुझे इस पर पूरा विश्वास है; वास्तव में, अगर मुझे इस पर विश्वास नहीं होता तो मैं निराशा में डूब जाता।'

महेश कपूर ने सिर हिलाया और फिर कहा: 'मास्टरजी, मैं आपकी कही बातों पर गहराई से विचार करूंगा। मैं आपको यह कहकर धोखा नहीं देना चाहता कि मैंने पहले कभी ऐसे मामलों पर विचार नहीं किया है। लेकिन हर घटना का एक तर्क होता है और समय का एक तरीका होता है, इसलिए मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप इसे यहीं छोड़ दें।'

बूढ़े आदमी ने सिर हिलाया, उठा और अपने चेहरे पर स्पष्ट निराशा का भाव लिए हुए चला गया।

6.13

सुबह और दोपहर के शुरुआती समय में कई अन्य लोग, कुछ अकेले, कुछ जोड़ों में, कुछ समूहों में और कुछ भीड़ के रूप में, महेश कपूर से बात करते रहे। रसोई से चाय के प्याले आते-जाते खाली ही रह जाते। दोपहर का भोजन आया और चला गया, और मंत्री साहब भूखे होने के बावजूद ऊर्जावान बने रहे। श्रीमती महेश कपूर ने एक नौकर के माध्यम से उन्हें संदेश भेजा; उन्होंने उसे अधीरता से मना कर दिया। वह अपने पति से पहले खाने के बारे में कभी सोच भी नहीं सकती थीं, लेकिन उनकी मुख्य चिंता यह नहीं थी कि उन्हें भूख लगी है, बल्कि यह थी कि उन्हें भोजन की आवश्यकता है और उन्हें इसका एहसास नहीं है।

महेश कपूर ने अपने संपर्क में आने वाले लोगों को यथासंभव धैर्यपूर्वक सुना। वहाँ हर तरह के टिकट चाहने वाले और पक्षपात करने वाले लोग थे, अलग-अलग विचारधारा और ईमानदारी वाले राजनेता, सलाहकार, गपशप करने वाले, एजेंट, सहायक, पैरवी करने वाले, विधायक और अन्य सहयोगी, लाखों रुपये की संपत्ति वाले स्थानीय व्यापारी जो केवल धोती पहने हुए थे और किसी अनुबंध या सूचना की तलाश में थे या बस लोगों को यह बताने के लिए आए थे कि राजस्व मंत्री ने उनसे मुलाकात की थी, अच्छे लोग, बुरे लोग, खुश लोग, दुखी लोग (दुखी लोगों की संख्या

अधिक थी), जो लोग शहर में होने के कारण केवल सम्मान व्यक्त करने आए थे, जो लोग अचरज से उन्हें देखते रह गए थे और उनकी बातों पर ध्यान नहीं दे रहे थे, जो लोग उन्हें दक्षिणपंथी बनाना चाहते थे, जो लोग उन्हें और वामपंथी बनाना चाहते थे, कांग्रेसी, समाजवादी, कम्युनिस्ट, हिंदू पुनरुत्थानवादी, मुस्लिम लीग के पुराने सदस्य जो कांग्रेस में प्रवेश चाहते थे, रुधिया से आए प्रतिनिधिमंडल के नाराज सदस्य जो स्थानीय उप-विभागीय अधिकारी द्वारा लिए गए किसी निर्णय के खिलाफ शिकायत कर रहे थे। जैसा कि एक गवर्नर ने 1930 के दशक के उत्तरार्ध में लोकप्रिय रूप से निर्वाचित प्रांतीय सरकारों के अपने अनुभव के बारे में लिखा था: 'कुछ भी इतना छोटा, इतना स्थानीय, इतना स्पष्ट रूप से निराधार नहीं था' कि छोटे स्थानीय नेताओं द्वारा जिला प्रशासन के ऊपर राजनेताओं से अपील करने को उचित न ठहराया जा सके।

महेश कपूर ने सुना, समझाया, सुलह कराई, मामलों को आपस में जोड़ा, कुछ को सुलझाया, नोट्स लिखे, निर्देश दिए, जोर से बोले, धीरे से बोले, आगामी आम चुनावों के लिए संशोधित की जा रही नई मतदाता सूचियों के कुछ हिस्सों की प्रतियों की जांच की, किसी पर गुस्सा हुए और किसी के साथ बेहद तीखी प्रतिक्रिया दी, किसी दूसरे पर व्यंग्यात्मक मुस्कान बिखेरी, किसी तीसरे पर जम्हाई ली, एक जाने-माने वकील के आने पर खड़े हो गए और अधिक सुरुचिपूर्ण चीनी मिट्टी के बर्तनों में चाय परोसने का अनुरोध किया।

नौ बजे वह हिंदू संहिता विधेयक के प्रावधानों के बारे में अपनी समझ के अनुसार उन किसानों को समझा रहे थे जो इस बात से चिंतित और नाराज थे कि दिल्ली में संसद द्वारा विचाराधीन उत्तराधिकार कानूनों के तहत उनके बेटों के जमीन पर अधिकार उनकी बेटियों (और इसलिए उनके दामादों) के साथ साझा किया जाएगा।

दस बजे वह अपने एक पुराने सहकर्मी और वकील से कह रहे थे: “उस कमीने की बात करें तो, क्या आपको लगता है कि वह मुझसे अपनी मनमानी करवा सकता है? वह पैसों का गट्ठा लेकर मेरे दफ्तर आया था, ज़मींदारी विधेयक के एक प्रावधान को नरम करने के लिए मुझे मनाने की कोशिश कर रहा था, और मेरा मन कर रहा था कि उसे गिरफ्तार करवा दूं —चाहे उसके पास कोई पदवी हो या न हो। उसने कभी मारह पर राज किया होगा, लेकिन उसे यह सीख लेना चाहिए कि पूर्व प्रदेश पर दूसरे लोग राज करते हैं। बेशक मुझे पता है कि वह और उसके जैसे लोग इस विधेयक को अदालत में चुनौती देंगे। क्या आपको लगता है कि हम खुद तैयार नहीं होंगे? इसीलिए तो मैंने आपसे सलाह ली थी।”

ग्यारह बजे वे कह रहे थे: ‘मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से मूल समस्या मंदिर या मस्जिद नहीं है। मूल समस्या यह है कि ब्रह्मपुर में दोनों धर्म एक-दूसरे के साथ कैसे तालमेल बिठाएंगे। मौलवी साहब, आप इस बारे में मेरे विचार जानते हैं। मैंने अपना अधिकांश जीवन यहीं बिताया है। स्वाभाविक रूप से अविश्वास है: सवाल यह है कि इसे कैसे दूर किया जाए। आप जानते हैं कि स्थिति कैसी है। कांग्रेस के कार्यकर्ता उन पुराने मुस्लिम लीग सदस्यों का विरोध करते हैं जो कांग्रेस में शामिल होना चाहते हैं। खैर, यह तो अपेक्षित ही है। लेकिन कांग्रेस में हिंदू-मुस्लिम सहयोग की एक लंबी परंपरा रही है, और मेरा विश्वास कीजिए, यह शामिल होने के लिए सबसे उपयुक्त पार्टी है। और जहां तक टिकटों का सवाल है, मैं आपको वचन देता हूं कि मुसलमानों को उचित प्रतिनिधित्व मिलेगा। आपको इस बात का अफसोस नहीं होगा कि हमारे पास कोई आरक्षित सीटें या अलग निर्वाचक मंडल नहीं हैं। हां, राष्ट्रवादी मुस्लिम, जो अपने पूरे करियर में हमारी पार्टी के साथ रहे हैं, उन्हें इस मामले में प्राथमिकता मिलेगी, लेकिन अगर मेरा इसमें कोई हाथ रहा तो दूसरों के लिए भी कुछ जगह होगी।’

दोपहर होते-होते वह कहने लगे: 'दामोदरजी, आपकी उंगली में यह अंगूठी बहुत खूबसूरत है। इसकी कीमत कितनी है? बारह सौ रुपये? नहीं, नहीं, आपसे मिलकर खुशी हुई, लेकिन जैसा कि आप देख सकते हैं'—उन्होंने एक हाथ से अपनी मेज पर रखे कागजों के ढेर की ओर इशारा किया और दूसरे हाथ से भीड़ की ओर इशारा करते हुए कहा—'मेरे पास अपने पुराने दोस्तों से बात करने के लिए उतना समय नहीं है जितना मैं चाहता हूँ...'

एक बजे वह कह रहा था: 'क्या आप मुझसे कह रहे हैं कि लाठीचार्ज ज़रूरी था? क्या आपने देखा है कि ये लोग कैसे रहते हैं? और आपमें इतनी हिम्मत है कि आप मुझसे कहें कि आगे और दंडात्मक कार्रवाई की धमकी दी जानी चाहिए? जाइए और गृह मंत्री से बात कीजिए, आपको वहाँ ज़्यादा सहानुभूति मिलेगी। मुझे खेद है—आप देख सकते हैं कि कितने लोग इंतज़ार कर रहे हैं—'

दो बजे वह कह रहा था: 'मुझे लगता है मेरा थोड़ा बहुत प्रभाव है। मैं देखता हूँ मैं क्या कर सकता हूँ। लड़के से कहो कि अगले हफ्ते मुझसे मिलने आए। ज़ाहिर है, बहुत कुछ उसके परीक्षा परिणामों पर निर्भर करेगा। नहीं, नहीं, मुझे धन्यवाद मत दो—और निश्चित रूप से मुझे पहले से धन्यवाद मत दो।'

तीन बजे वह धीमी आवाज़ में कह रहे थे: 'देखिए, अग्रवाल के पास करीब सौ विधायक हैं। मेरे पास लगभग अस्सी हैं। बाकी किसी पार्टी के प्रति प्रतिबद्ध नहीं हैं और जहाँ भी उन्हें जीत की उम्मीद होगी, वे वहाँ चले जाएँगे। लेकिन मैं शर्मा जी को चुनौती देने के बारे में नहीं सोच रहा हूँ। नेतृत्व का सवाल तभी उठेगा जब पंडित जी उन्हें दिल्ली में केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल होने के लिए बुलाएँगे। फिर भी, मैं मानता हूँ कि इस मुद्दे को ज़िंदा रखने में कोई बुराई नहीं है—जनता की नज़र में बने रहना ज़रूरी है।'

सवा तीन बजे, श्रीमती महेश कपूर आईं, उन्होंने सहायकों को हल्के से डांटा और अपने पति से दोपहर का भोजन करने और थोड़ी देर आराम करने का अनुरोध किया। वे स्वयं नीम के फूलों की महक से परेशान थीं और एलर्जी के कारण उन्हें थोड़ी-थोड़ी सांस लेने में तकलीफ हो रही थी। महेश कपूर ने उन पर वैसे गुस्सा नहीं किया जैसे वे अक्सर करते थे। उन्होंने उनकी बात मान ली और आराम करने चले गए। लोग अनिच्छा से और धीरे-धीरे जाने लगे और कुछ देर बाद प्रेम निवास एक बार फिर राजनीतिक मंच, क्लिनिक और मेले के मैदान से एक निजी घर में बदल गया।

महेश कपूर के खाना खाने के बाद, वह थोड़ी देर झपकी लेने के लिए लेट गए, और अंत में श्रीमती महेश कपूर ने खुद दोपहर का भोजन किया।

6.14

दोपहर के भोजन के बाद, महेश कपूर ने अपनी पत्नी से पी.पी. विधान परिषद की कार्यवाही के कुछ अंश पढ़ने को कहा, जिनमें ज़मींदारी विधेयक पर हुई बहस का ज़िक्र था, जब यह विधानसभा से पहली बार उच्च सदन में भेजा गया था। चूंकि यह विधेयक नए संशोधनों के साथ फिर से उच्च सदन में जाने वाला था, इसलिए वे यह समझना चाहते थे कि उस सदन में इसे किन संभावित बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है।

महेश कपूर को स्वयं पिछले कुछ वर्षों के पूर्व प्रदेश विधानसभा की बहसों को पढ़ना बहुत मुश्किल लगता था। कुछ सदस्य इन दिनों अपने भाषणों को अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ हिंदी में देने में विशेष गर्व महसूस करते थे, जिसे कोई भी समझदार व्यक्ति समझ नहीं सकता था। हालाँकि, यह मुख्य समस्या नहीं थी। असली कठिनाई यह थी कि महेश कपूर हिंदी—या देवनागरी—लिपि से बहुत परिचित नहीं थे। उनका पालन-पोषण ऐसे

समय में हुआ था जब लड़कों को उर्दू—या अरबी—लिपि पढ़ना और लिखना सिखाया जाता था। 1930 के दशक में संरक्षित प्रांतों की विधानसभा की कार्यवाही भाषण-दर-भाषण अंग्रेजी, उर्दू और हिंदी में छपती थी—यह इस बात पर निर्भर करता था कि वक्ता किस भाषा में लिखता या बोलता था। उदाहरण के लिए, उनके अपने भाषण उर्दू में छपते थे, और कई अन्य लोगों के भाषण भी। अंग्रेजी भाषण तो वे बिना किसी कठिनाई के पढ़ सकते थे। लेकिन वे हिंदी भाषणों को छोड़ देते थे, क्योंकि उन्हें पढ़ने में कठिनाई होती थी। अब, स्वतंत्रता के बाद, कार्यवाही पूरी तरह से राज्य की आधिकारिक भाषा, यानी हिंदी में छपती थी; उर्दू भाषण भी हिंदी लिपि में छपते थे, और अंग्रेज़ी केवल सदन अध्यक्ष की स्पष्ट अनुमति से ही बोली जा सकती थी—और वह भी अत्यंत दुर्लभ रूप से। यही कारण था कि महेश कपूर अक्सर अपनी पत्नी से बहसें पढ़कर सुनाने के लिए कहते थे। उस समय की कई महिलाओं की तरह, उन्हें भी हिंदू पुनरुत्थानवादी संगठन आर्य समाज के प्रभाव में पढ़ना-लिखना सिखाया गया था, और उन्हें जो लिपि सिखाई गई थी, वह स्वाभाविक रूप से प्राचीन संस्कृत ग्रंथों और आधुनिक हिंदी भाषा की लिपि थी।

शायद निजी सहायकों के बजाय अपनी पत्नी से इन बहसों को पढ़वाने में मंत्री जी की कुछ शान या समझदारी भी झलकती थी। मंत्री जी नहीं चाहते थे कि दुनिया को पता चले कि उन्हें हिंदी पढ़ना नहीं आता। संयोगवश, उनके निजी सहायकों को यह बात पता थी, लेकिन वे काफी सतर्क थे और यह बात किसी को पता नहीं चली।

श्रीमती महेश कपूर एक नीरस स्वर में पढ़ रही थीं, मानो शास्त्रों का पाठ कर रही हों। उनकी साड़ी का पल्लू उनके सिर और चेहरे के कुछ हिस्से को ढके हुए था, और वह सीधे अपने पति की ओर नहीं देख रही थीं। इन दिनों उनकी सांस थोड़ी फूलने लगी थी, इसलिए उन्हें बीच-बीच में रुकना

पड़ता था, और महेश कपूर काफी अधीर हो जाते थे। जब भी लंबा विराम होता, वे कहते, 'जी हां, पढ़ते रहिए, पढ़ते रहिए!' और वह, अपनी धैर्यवान स्वभाव के कारण, बिना किसी शिकायत के पढ़ती रहती थीं।

समय-समय पर—आमतौर पर एक बहस से दूसरी बहस के बीच, या जब वह कोई दूसरी किताब उठातीं—वह राजनीति से परे किसी ऐसी बात का ज़िक्र करतीं जो उनके मन में चल रही होती। चूंकि उनके पति हमेशा व्यस्त रहते थे, इसलिए उनसे बात करने का यह उनका कुछ ही मौकों में से एक था। ऐसी ही एक बात यह थी कि महेश कपूर अपने पुराने दोस्त और ब्रिज पार्टनर डॉ. किशन चंद सेठ से कुछ समय से नहीं मिले थे।

'जी हां, मुझे पता है,' उनके पति ने अधीरता से कहा। 'जारी रखिए, जारी रखिए, हां, पृष्ठ 303 से।' श्रीमती महेश कपूर ने पानी का तापमान परखने के बाद पाया कि वह बहुत गर्म है, इसलिए वह कुछ देर चुप रहीं।

दूसरे अवसर पर उसने कहा कि वह जल्द ही घर में रामचरितमानस का पाठ करवाना चाहती है। यह घर और परिवार के लिए अच्छा होगा: प्राण की नौकरी और स्वास्थ्य के लिए, मान के लिए, वीणा, केदारनाथ और भास्कर के लिए, और सविता के होने वाले बच्चे के लिए। आदर्श समय, राम के जन्मदिन से पहले और उस दिन की नौ रातें, बीत चुकी थीं, और उसकी दोनों सहेलियाँ इस बात से निराश थीं कि वह अपने पति को पाठ की अनुमति देने के लिए राजी नहीं कर पाई थी। उस समय वह समझ सकती थी कि वह कई चीजों में व्यस्त था, लेकिन अब तो निश्चित रूप से —

उनकी बात अचानक ही रुक गई। महेश कपूर ने बहसों की आवाज़ की ओर इशारा करते हुए कहा, 'ओह, भाग्यशाली महिला— (यानी, उनसे शादी करके भाग्यशाली हुई)—पहले उन शास्त्रों का पाठ करो जिनका पाठ करने के लिए मैंने तुमसे कहा है।'

लेकिन आपने वादा किया था कि—
बस करो ये सब। तुम तीनों सासें जितनी चाहो साजिशें रच सकती हो, लेकिन मैं प्रेम निवास में इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती। मेरी छवि धर्मनिरपेक्ष है—और इस शहर में जहाँ हर कोई धर्म का ढोल पीट रहा है, मैं शहनाई में शामिल नहीं होने वाली। वैसे भी, मुझे इस मंत्रोच्चार और पाखंड में विश्वास नहीं है—और न ही भगवा वस्त्र पहने उन नायकों के उपवास में, जो गौहत्या पर प्रतिबंध लगाना चाहते हैं और सोमनाथ मंदिर, शिव मंदिर और न जाने क्या-क्या पुनर्जीवित करना चाहते हैं।
भारत के राष्ट्रपति स्वयं सोमनाथ जाकर वहां के नए मंदिर के उद्घाटन में सहायता करेंगे—'
महेश कपूर ने तीखे लहजे में कहा, 'भारत के राष्ट्रपति जो चाहें करें। राजेंद्र बाबू को चुनाव जीतने या विधानसभा का सामना करने की जरूरत नहीं है। मुझे करनी है।'
श्रीमती महेश कपूर ने बहसों में अगले विराम का इंतजार किया और फिर बोलने की हिम्मत की: 'मुझे पता है कि रामनवमी की नौ रातें बीत चुकी हैं, लेकिन दशहरा की नौ रातें अभी बाकी हैं। अगर आपको लगता है कि अक्टूबर में—'
अपने पति को समझाने की हड़बड़ी में वह थोड़ी हांफने लगी थी।
महेश कपूर ने थोड़ा नरम पड़ते हुए कहा, 'शांत हो जाइए, शांत हो जाइए। समय आने पर हम इस बारे में सब कुछ देखेंगे।'
श्रीमती महेश कपूर ने सोचा कि भले ही दरवाजा पूरी तरह खुला न हो, लेकिन उसे पूरी तरह बंद भी नहीं किया गया था। उन्होंने इस विषय को यह सोचकर समाप्त किया कि कुछ न कुछ, चाहे थोड़ा ही सही, हासिल हो गया है। उनका मानना था—हालाँकि वे इस बात को ज़ाहिर नहीं करतीं —कि उनके पति का जीवन को अर्थ देने वाले धार्मिक रीति-रिवाजों और

समारोहों को त्यागकर धर्मनिरपेक्षता के अपने नए धर्म को अपनाना सरासर गलत था।

अगले विराम पर श्रीमती महेश कपूर ने हिचकिचाते हुए कहा: 'मुझे एक पत्र मिला है।'

महेश कपूर ने अधीरता से अपनी जीभ चटकाई, एक बार फिर अपने विचारों से निकलकर घरेलू झंझटों में उलझ गए। 'ठीक है, ठीक है, तुम किस बारे में बात करना चाहती हो? ये चिट्ठी किसकी है? मुझ पर क्या मुसीबत आने वाली है?' उन्हें इस बात की आदत हो चुकी थी कि उनकी पत्नी ही इन अधूरी बातचीत को धीरे-धीरे और एक-एक विषय करके आगे बढ़ाती थीं, चाहे बात मामूली हो या फिर सबसे गंभीर।

'यह बनारस के लोगों की देन है,' श्रीमती महेश कपूर ने कहा।

‘हम्मह!’ महेश कपूर ने कहा।

श्रीमती महेश कपूर ने कहा, 'वे सभी को अपनी शुभकामनाएं भेजते हैं।'

'जी हां, जी हां, जी हां! मुद्दे पर आओ। उन्हें इस बात का पूरा एहसास है कि हमारा बेटा उनकी बेटी से कहीं बेहतर है और वे इस पूरे मामले को खत्म करना चाहते हैं।'

कभी-कभी समझदारी इसी में होती है कि व्यंग्यात्मक टिप्पणी को व्यंग्यात्मक न समझा जाए। श्रीमती महेश कपूर ने कहा: 'नहीं, बिलकुल इसके विपरीत। वे जितनी जल्दी हो सके तारीख तय करना चाहते हैं—और मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या जवाब दूं। अगर आप बातों का मतलब समझें तो लगता है कि उन्हें—हाँ, उस बारे में—कुछ तो अंदाजा है। वरना वे इतने चिंतित क्यों होते?'

‘उफ्फ!’ महेश कपूर ने अधीरता से कहा। ‘क्या मुझे हर किसी से यही सुनना पड़ेगा? विधानसभा की कैंटीन में, मेरे अपने दफ्तर में, हर जगह मुझे मान और उसकी बेवकूफी के बारे में ही सुनने को मिलता है! आज

सुबह दो-तीन लोगों ने इस बारे में बात की। क्या दुनिया में इससे ज्यादा जरूरी कुछ और नहीं है जिसके बारे में बात की जाए?'

लेकिन श्रीमती महेश कपूर ने हार नहीं मानी।

उन्होंने कहा, 'यह हमारे परिवार के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अगर ऐसा चलता रहा तो हम लोगों के सामने कैसे सिर ऊंचा करके खड़े रह पाएंगे? और मान के लिए भी यह ठीक नहीं है कि वह अपना सारा समय और पैसा इस तरह बर्बाद करे। उसे यहां व्यापार के सिलसिले में आना था, लेकिन उसने इस संबंध में कुछ नहीं किया। कृपया उससे बात करें।'

महेश कपूर ने बेरहमी से कहा, 'तुम उससे बात करो। तुमने उसे पूरी जिंदगी बिगाड़ दिया है।'

श्रीमती महेश कपूर चुप रहीं, लेकिन उनकी आंखों से एक आंसू बह निकला। फिर उन्होंने खुद को संभालते हुए कहा, "क्या इससे आपकी सार्वजनिक छवि को कोई फायदा होगा? एक बेटा जो अपना सारा समय उस तरह के व्यक्ति के साथ बिताने के अलावा कुछ नहीं करता? बाकी समय वह बिस्तर पर लेटा रहता है और पंखे को घूरता रहता है। उसे कुछ और करना चाहिए, कुछ गंभीर काम। मेरा उसे कुछ कहने का मन नहीं करता। आखिर एक मां क्या कह सकती है?"

'ठीक है, ठीक है, ठीक है,' महेश कपूर ने कहा और अपनी आंखें बंद कर लीं।

उन्होंने सोचा कि बनारस में कपड़ा व्यवसाय, एक कुशल सहायक की देखरेख में, मान की अनुपस्थिति में उससे कहीं बेहतर चल रहा था जितना मान के रहते चल रहा था। तो फिर मान का क्या किया जाए?

उस शाम करीब आठ बजे, बैतर हाउस जाने के लिए कार में बैठने ही वाले थे कि उन्होंने ड्राइवर को रुकने को कहा। फिर उन्होंने एक नौकर को यह देखने भेजा कि मान घर में है या नहीं। जब नौकर ने बताया कि वह सो

रहा है, तो महेश कपूर ने कहा:
‘इस निकम्मे को जगाओ और उससे कहो कि कपड़े पहनकर तुरंत नीचे आए। हम बैतर के नवाब साहब से मिलने जा रहे हैं।’
मान उदास सा लग रहा था जब नीचे आया। दिन में पहले उसने लकड़ी के घोड़े पर जमकर कसरत की थी, और अब वह सईदा बाई से मिलने और अपनी बुद्धि का प्रदर्शन करने के लिए उत्सुक था।
‘बाओजी?’ उसने जिज्ञासावश पूछा।
‘गाड़ी में बैठो। हम बैतार हाउस जा रहे हैं।’
‘क्या आप चाहते हैं कि मैं भी साथ चलूँ?’ मान ने पूछा।
'हाँ।'
‘ठीक है, फिर।’ मान कार में बैठ गया। उसे एहसास हो गया था कि अपहरण से बचने का कोई रास्ता नहीं था।
‘मुझे लगता है कि तुम्हारे पास करने के लिए और कुछ बेहतर नहीं है,’ उसके पिता ने कहा।
'नहीं वाकई में नहीं।'
'तो तुम्हें फिर से बड़ों की संगति में रहने की आदत डाल लेनी चाहिए,' उसके पिता ने सख्ती से कहा।
संयोगवश, उन्हें मान की प्रसन्नता भी अच्छी लगी और उन्होंने सोचा कि अपने पुराने मित्र नवाब साहब से माफी मांगने जाते समय मान को साथ ले जाना नैतिक समर्थन के लिए अच्छा रहेगा। लेकिन मान उस समय खुश नहीं थे। वे सईदा बाई के बारे में सोच रहे थे। सईदा बाई उनका इंतज़ार कर रही होंगी और मान उन्हें यह संदेश भी नहीं भेज पाएंगे कि वे नहीं आ सकते।

6.15

जैसे ही वे बैतर हाउस के परिसर में दाखिल हुए, फिरोज से मिलने की

उम्मीद से वह थोड़ा खुश हो गया। पोलो अभ्यास के दौरान फिरोज ने यह नहीं बताया था कि वह रात के खाने के लिए बाहर जा रहा है।

उन्हें कुछ मिनटों के लिए लॉबी में बैठने को कहा गया। बूढ़े नौकर ने बताया कि नवाब साहब पुस्तकालय में हैं और उन्हें मंत्री जी के आने की सूचना दे दी जाएगी। लगभग दस मिनट बाद, महेश कपूर पुराने चमड़े के सोफे से उठे और इधर-उधर टहलने लगे। वे खाली बैठे अंगूठे घुमाते और पैरों के पास मरे हुए बाघों के साथ गोरे आदमियों की तस्वीरें देखते-देखते थक गए थे।

कुछ ही मिनटों में उनका धैर्य टूट गया। उन्होंने मान को अपने साथ आने को कहा और ऊँची छतों वाले कमरों और कुछ हद तक कम रोशनी वाले गलियारों से होते हुए पुस्तकालय की ओर चल पड़े। गुलाम रसूल ने उन्हें रोकने की कुछ नाकाम कोशिशें कीं, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। पुस्तकालय के पास खड़े मुर्तजा अली को भी उन्होंने नज़रअंदाज़ कर दिया। राजस्व मंत्री अपने बेटे के साथ पुस्तकालय के दरवाजे तक पहुँचे और उसे खोल दिया।

तेज रोशनी ने उन्हें एक पल के लिए चकाचौंध कर दिया। न केवल पढ़ने के लिए लगी हल्की रोशनी, बल्कि पुस्तकालय के बीचोंबीच लगा विशाल झूमर भी जगमगा उठा था। और नीचे बड़ी गोल मेज पर—जिसके चारों ओर कागज फैले हुए थे और यहाँ तक कि उनके सामने चमड़े की जिल्द वाली कानून की दो किताबें खुली पड़ी थीं—तीन अन्य पिता-पुत्रों के जोड़े बैठे थे: बैतर और फिरोज के नवाब साहब; मरह के राजा और राजकुमार; और चश्मा पहने दो दुबले-पतले बैनर्जी बैरिस्टर (वकीलों का वह प्रसिद्ध परिवार ब्रह्मपुर में इसी नाम से जाना जाता था)।

यह कहना मुश्किल होगा कि इस अचानक दखलंदाजी से सबसे ज्यादा शर्मिंदा कौन हुआ।

उस अशिष्ट मार्ह ने गुस्से से कहा: 'शैतान का नाम लिया और शैतान हाज़िर।'

हालाँकि फ़िरोज़ को यह स्थिति असहज लगी, फिर भी मान को देखकर वह प्रसन्न हुआ और तुरंत उससे हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ा। मान ने अपना बायाँ हाथ अपने मित्र के कंधे पर रखा और कहा: 'मेरा दायाँ हाथ मत मिलाओ— तुमने इसे पहले ही अपाहिज कर दिया है।'

मारह के राजकुमार, जिनकी रुचि जमींदारी विधेयक की जटिल शब्दावली से कहीं अधिक युवा पुरुषों में थी, ने उस सुंदर जोड़ी को अनुमोदन से कुछ अधिक भाव से देखा।

बड़े बैनर्जी ('पी.एन.') ने अपने बेटे ('एस.एन.') की ओर सरसरी नजर डाली, मानो कह रहे हों, मैंने तुमसे कहा था कि हमें सम्मेलन अपने कमरों में करना चाहिए था।

नवाब साहब को लगा कि वह महेश कपूर के विधेयक के खिलाफ साजिश रचते हुए रंगे हाथों पकड़े गए हैं, उस व्यक्ति के साथ जिसे वह सामान्यतः त्याग देते।

और महेश कपूर को तुरंत एहसास हो गया कि वह इस कार्यकारी सम्मेलन में कल्पना से परे सबसे अवांछित घुसपैठिया थे - क्योंकि वही दुश्मन थे, शोषक थे, सरकार थे, अन्याय का स्रोत थे, दूसरा पक्ष थे।

लेकिन महेश कपूर ने नवाब साहब के पास जाकर उनका हाथ थामकर वरिष्ठों के बीच चुप्पी तोड़ी। उन्होंने कुछ नहीं कहा, बस धीरे से सिर हिलाया। सहानुभूति या माफी के किसी शब्द की जरूरत नहीं थी। नवाब साहब तुरंत समझ गए कि बैतर हाउस पर घेराबंदी के समय उनके मित्र ने उनकी मदद के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी होती, लेकिन उन्हें उस संकट की जानकारी नहीं थी।

मरह के राजा ने हँसते हुए चुप्पी तोड़ी:

‘तो आप हमारी जासूसी करने आए हैं! हम तो बहुत खुश हैं। कोई मामूली नौकर नहीं, बल्कि स्वयं मंत्री जी।’

महेश कपूर ने कहा:

'क्योंकि बाहर लगी आपकी सोने की नंबर प्लेट की चमक से मेरी आंखें चौंधिया नहीं गई थीं, इसलिए मुझे शायद ही पता चल पाता कि आप यहां हैं। संभवतः आप रिक्शा से आए होंगे।'

'जाने से पहले मुझे अपनी नंबर प्लेट गिननी होंगी,' मारह के राजा ने आगे कहा।

महेश कपूर ने कहा, 'अगर आपको किसी मदद की जरूरत हो तो मैं अपने बेटे को आपके साथ भेज दूंगा। वह दो तक गिनती कर सकता है।'

मरह के राजा का चेहरा लाल हो गया था। उन्होंने नवाब साहब से पूछा, 'क्या यह सब पहले से तय था?' उन्हें लग रहा था कि यह मुसलमानों और उनके समर्थकों की उन्हें अपमानित करने की साजिश हो सकती है।

नवाब साहब ने अपनी आवाज संभाली और बोले, 'नहीं, महाराज, ऐसा नहीं था। और मैं आप सभी से, विशेष रूप से आपसे, श्री बैनर्जी, माफी मांगता हूं—मुझे यहां मिलने पर जोर नहीं देना चाहिए था।'

आगामी मुकदमे में आपसी सहमति के चलते नवाब साहब का राजा से आमना-सामना हो ही गया था, इसलिए उन्होंने सोचा कि राजा को अपने घर बुलाकर शायद उन्हें चौक स्थित शिव मंदिर के बारे में उनसे थोड़ी बातचीत करने का मौका मिल जाए—या कम से कम भविष्य में बातचीत की संभावना तो बन ही जाए। ब्रह्मपुर में हिंदू और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक स्थिति इतनी चिंताजनक थी कि नवाब ने स्थिति को संभालने के लिए अपनी झिझक और थोड़ा सा अहंकार त्याग दिया था। अब उनका यह कदम उल्टा पड़ गया था।

बोनी बेस्पेक्टेकल्ड्स में से बड़े, पिछली घटनाओं से भयभीत होकर, अब

कुछ नखरे भरे स्वर में बोले: 'ठीक है, मुझे लगता है कि हमने मामले के मुख्य बिंदुओं पर चर्चा कर ली है, और फिलहाल हम बैठक स्थगित कर सकते हैं। मैं अपने पिता को पत्र द्वारा सभी पक्षों की कही गई बातों की जानकारी दूंगा, और मुझे उम्मीद है कि यदि और जब आवश्यक हुआ तो मैं उन्हें इस मामले में हमारी ओर से पेश होने के लिए मना सकूंगा।'

वे महान जी.एन. बैनर्जी का जिक्र कर रहे थे, जो एक विख्यात, कुशल और धूर्त वकील थे। यदि, जैसा कि अब लगभग तय था, संशोधित विधेयक उच्च सदन में पारित हो जाता, भारत के राष्ट्रपति के हस्ताक्षर प्राप्त कर कानून बन जाता, तो निश्चित रूप से इसे ब्रह्मपुर उच्च न्यायालय में चुनौती दी जाती। यदि जी.एन. बैनर्जी को जमींदारों की ओर से पेश होने के लिए राजी किया जा सकता, तो इससे अधिनियम को असंवैधानिक घोषित कराने और उसे अमान्य घोषित करवाने की उनकी संभावना काफी बढ़ जाती।

बैनर्जी परिवार विदा हो गया। छोटा बैनर्जी, जो फिरोज से उम्र में बड़ा नहीं था, पहले से ही एक सफल वकालत कर रहा था। वह बुद्धिमान था, मेहनती था, उसके परिवार के पुराने मुवक्किल उसे लगातार केस देते रहते थे, और वह फिरोज को वकालत के लिए कुछ ज्यादा ही सुस्त समझता था। फिरोज उसकी बुद्धिमत्ता की प्रशंसा करता था, लेकिन उसे अपने नखरेबाज़ पिता की तरह ही रूढ़िवादी समझता था। हालांकि, उसके दादा, महान जी.एन. बैनर्जी, रूढ़िवादी नहीं थे। सत्तर वर्ष की आयु में भी, वे अदालत में उतने ही ऊर्जावान और तल्लीन रहते थे, जितने बिस्तर पर। केस स्वीकार करने से पहले वे जो भारी-भरकम, कुछ लोग कहेंगे कि बेईमानी भरी, फीस लेते थे, उससे वे अपने कई स्त्रियों के समूह का भरण-पोषण करते थे; फिर भी वे अपनी आय से अधिक खर्च करने में सफल रहे।

मरह का राजकुमार मूल रूप से एक सभ्य और दिखने में बुरा न होने वाला, लेकिन कुछ हद तक कमज़ोर नौजवान था, जिस पर उसके पिता का अत्याचार रहता था। फ़िरोज़ उस अशिष्ट, मुस्लिम-विरोधी राजा से घृणा करता था: 'हीरे के बटन और कान की बालियों के साथ कोयले जैसा काला'। अपने पारिवारिक सम्मान के कारण वह राजकुमार से दूरी बनाए रखता था। लेकिन मान ऐसा नहीं था; वह लोगों को तब तक पसंद करता था जब तक वे खुद को नापसंद करने लायक न बना लें। मान से आकर्षित होकर, और यह जानकर कि इन दिनों वह खाली बैठा है, राजकुमार ने साथ में करने के लिए कुछ सुझाव दिए, और मान सप्ताह के अंत में उससे मिलने के लिए सहमत हो गया।

इसी बीच, मारह के राजा, नवाब साहब और महेश कपूर झूमर की तेज रोशनी में मेज के पास खड़े थे। महेश कपूर की नजर मेज पर फैले कागजों पर पड़ी, लेकिन राजा के पहले के उपहास को याद करके उन्होंने तुरंत अपनी नजरें हटा लीं।

‘नहीं, नहीं, आप पढ़िए, मंत्री जी,’ मारह के राजा ने व्यंग्यपूर्वक कहा। ‘पढ़िए। और बदले में, मुझे बताइए कि आप हमारी जमीनों का मालिकाना हक कब अपनी जेब में डालने की योजना बना रहे हैं।’

‘मेरी अपनी जेब से?’

एक सिल्वरफिश मेज पर सरपट दौड़ी। राजा ने उसे अपने अंगूठे से कुचल दिया। 'मेरा मतलब, ज़ाहिर है, पूर्वा प्रदेश राज्य के राजस्व विभाग से था।'

'उचित समय पर।'

'अब आप विधानसभा में अपने प्रिय मित्र अग्रवाल की तरह बात कर रहे हैं।'

महेश कपूर ने कोई जवाब नहीं दिया। नवाब साहब ने कहा, 'क्या हम ड्राइंग रूम में चले जाएं?'

मरह के राजा ने हिलने की कोई कोशिश नहीं की। उन्होंने नवाब साहब और राजस्व मंत्री दोनों से लगभग एक ही भाव से कहा: 'मैंने आपसे वह प्रश्न केवल परोपकारी भावना से पूछा था। मैं अन्य जमींदारों का समर्थन इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मुझे सरकार के रवैये की परवाह नहीं है—या आप जैसे राजनीतिक कीड़ों की। मेरा खुद का कुछ भी नुकसान नहीं है। मेरी ज़मीनें आपके कानूनों से सुरक्षित हैं।'

'ओह?' महेश कपूर ने कहा। 'मनुष्यों के लिए एक कानून और बंदरों के लिए दूसरा?'

'यदि तुम अब भी स्वयं को हिंदू कहते हो,' मारह के राजा ने कहा, 'तो तुम्हें याद रखना चाहिए कि बंदरों की सेना ने ही राक्षसों की सेना को पराजित किया था।'

'और इस बार आप किस चमत्कार की उम्मीद कर रहे हैं?' महेश कपूर खुद को यह पूछने से रोक नहीं पाए।

'संविधान का अनुच्छेद 362,' मारह के राजा ने दो से बड़ी संख्या को प्रसन्नतापूर्वक बोलते हुए कहा। 'ये हमारी निजी भूमि हैं, मंत्री महोदय, हमारी अपनी निजी भूमि, और आपके भारत में शामिल होने के लिए हमने जो विलय की संधि की थी, उसके अनुसार कानून इन्हें लूट नहीं सकता और न्यायालय इन्हें छू नहीं सकते।'

यह सर्वविदित था कि मारह के राजा नशे में धुत होकर और बड़बड़ाते हुए भारत के गंभीर गृह मंत्री सरदार पटेल के पास विलय पत्र पर हस्ताक्षर करवाने गए थे, जिसके द्वारा उन्होंने अपना राज्य भारतीय संघ को सौंप दिया था, और उन्होंने अपने आंसुओं से अपने हस्ताक्षर को भी धुंधला कर दिया था - इस प्रकार एक अद्वितीय ऐतिहासिक दस्तावेज का निर्माण हुआ।

महेश कपूर ने कहा, 'देखते हैं। देखते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि जी.एन.

बनर्जी भविष्य में भी आपकी रक्षा उतनी ही कुशलता से करेंगे जितनी कुशलता से उन्होंने अतीत में आपकी रक्षा की है।'

इस ताने के पीछे जो भी कहानी हो, इसका गहरा असर हुआ।

मारह के राजा ने महेश कपूर पर अचानक, गुर्राते हुए, हिंसक हमला किया। सौभाग्य से वह एक कुर्सी से टकराकर लड़खड़ा गया और बाईं ओर मेज पर जा गिरा। हाँफते हुए उसने कानून की किताबों और बिखरे कागजों के बीच से अपना चेहरा उठाया। लेकिन कानून की किताब का एक पन्ना फट गया था।

एक पल के लिए फटे हुए पन्ने को घूरते हुए, मारह के राजा स्तब्ध रह गए, मानो उन्हें समझ ही नहीं आ रहा था कि वे कहाँ हैं। फ़िरोज़ ने उनकी इस घबराहट का फ़ायदा उठाते हुए तेज़ी से उनके पास जाकर उन्हें कंधे पर हाथ रखकर ड्राइंग रूम की ओर ले गया। यह सब कुछ पल भर में हो गया। राजकुमार अपने पिता के पीछे-पीछे चल पड़ा।

नवाब साहब ने महेश कपूर की ओर देखा और एक हाथ थोड़ा सा ऊपर उठाया, मानो कह रहे हों, 'जो होगा देखा जाएगा।' महेश कपूर ने कहा, 'मुझे खेद है, बहुत खेद है'; लेकिन वे और उनके मित्र दोनों जानते थे कि उनका इशारा तात्कालिक घटना की ओर नहीं, बल्कि बैतर हाउस आने में हुई देरी की ओर था।

कुछ देर बाद उन्होंने अपने बेटे से कहा: ‘चलो मान, चलते हैं।’ बाहर निकलते समय उन्होंने देखा कि राजा की लंबी काली लांसिया कार, जिस पर सोने की ईंट जैसी दिखने वाली नंबर प्लेट पर ‘MARH 1’ अंकित था, ड्राइववे में खड़ी थी।

प्रेम निवास लौटते समय कार में बैठे हुए दोनों अपने-अपने विचारों में खोए हुए थे। महेश कपूर सोच रहे थे कि भले ही उन्होंने जल्दबाजी में यह कदम उठाया, लेकिन उन्हें खुशी थी कि उन्होंने अपने दोस्त को दिलासा देने में

और देर नहीं की। उन्हें महसूस हो रहा था कि नवाब साहब का हाथ थामते समय वे कितने भावुक हो गए थे।

महेश कपूर को उम्मीद थी कि नवाब साहब अगले दिन उन्हें फोन करके हुई घटना के लिए माफी तो मांगेंगे, लेकिन कोई ठोस स्पष्टीकरण नहीं देंगे। पूरा मामला बेहद असहज था: घटनाक्रम में एक अजीब, अनसुलझापन छाया हुआ था। और यह बात परेशान करने वाली थी कि उनके लंबे समय से पोषित कानून के खिलाफ स्वार्थ या आत्मरक्षा के लिए पूर्व शत्रुओं का एक गठबंधन - चाहे वह कितना भी अस्थिर क्यों न हो - बन रहा था। वह यह जानना चाहते थे कि वकीलों को उनके विधेयक में कोई कानूनी खामियां मिली हैं या नहीं।

मान सोच रहा था कि अपने दोस्त से दोबारा मिलकर उसे कितनी खुशी हुई। उसने फ़िरोज़ से कहा था कि शायद उसे पूरी शाम अपने पिता के साथ ही रहना पड़ेगा, और फ़िरोज़ ने सईदा बाई को संदेश भेजने का वादा किया था—और ज़रूरत पड़ने पर खुद जाकर उन्हें यह बताने का भी कि दाग़ साहब को हिरासत में ले लिया गया है।

6.16

नहीं; सावधान रहो; सोचो।

आवाज में थोड़ी सी व्यंग्यात्मकता थी, लेकिन चिंता भी झलक रही थी। ऐसा लग रहा था मानो उसे इस बात की परवाह हो कि काम ठीक से हो जाए—कि साफ-सुथरा लिखा हुआ पन्ना शर्म और बेढंगेपन का सबूत न बन जाए। एक तरह से, ऐसा लग रहा था मानो उसे मान के साथ क्या होगा, इसकी भी चिंता हो। मान ने भौंहें चढ़ाईं, फिर 'मीम' अक्षर दोबारा लिखा। उसे वह अक्षर एक मुड़े हुए शुक्राणु जैसा लग रहा था।

रशीद ने कहा, 'आपका ध्यान कलम की नोक पर नहीं है। अगर आप मेरे समय का सदुपयोग करना चाहते हैं - और मैं आपकी सेवा में तत्पर हूं -

तो फिर अपने काम पर ध्यान क्यों नहीं देते?'

‘हां, हां, ठीक है, ठीक है,’ मान ने संक्षिप्त स्वर में कहा, उसकी आवाज़ एक पल के लिए बिल्कुल अपने पिता जैसी लग रही थी। उसने फिर कोशिश की। उसे लगा कि उर्दू वर्णमाला कठिन, बहुआयामी, पेचीदा और मायावी है, जो ठोस हिंदी या ठोस अंग्रेजी लिपि से बिलकुल अलग है।

‘मैं यह नहीं कर सकता। छपे हुए पन्ने पर तो यह खूबसूरत दिखता है, लेकिन इसे लिखना—’

‘फिर से कोशिश करो। अधीर मत हो।’ रशीद ने उसके हाथ से बांस की कलम ली, उसे स्याही में डुबोया और एकदम साफ, गहरे नीले रंग का ‘मीम’ लिखा। फिर उसने उसके नीचे एक और लिखा: दोनों अक्षर बिल्कुल एक जैसे थे, जैसा कि शायद ही कभी दो अक्षर एक जैसे होते हैं।

‘इससे क्या फर्क पड़ता है?’ मान ने झुकी हुई मेज से नज़रें उठाकर पूछा, जिस पर वह ज़मीन पर पालथी मारकर बैठा था। ‘मैं उर्दू पढ़ना और लिखना चाहता हूँ, सुलेख का अभ्यास नहीं। क्या मुझे यह करना ही पड़ेगा?’ उसने सोचा कि वह वैसे ही अनुमति माँग रहा है जैसे बचपन में माँगता था। रशीद उससे उम्र में बड़ा नहीं था, लेकिन शिक्षक के रूप में उसने उस पर पूरा नियंत्रण कर लिया था।

‘अच्छा, तुमने खुद को मेरे भरोसे छोड़ दिया है, और मैं नहीं चाहता कि तुम्हारी शुरुआत कमजोर नींव पर हो। तो अब तुम क्या पढ़ना चाहोगे?’ रशीद ने हल्की मुस्कान के साथ पूछा, इस उम्मीद में कि मान का जवाब एक बार फिर वही अनुमानित जवाब न हो।

'ग़ज़ल,' मान ने बेझिझक कहा। 'मीर, ग़ालिब, दाग. . . .'

‘जी हाँ, ठीक है—’ रशीद कुछ देर चुप रहा। तसनीम के साथ पवित्र ग्रंथ के अंशों का अध्ययन करने से ठीक पहले मान को ग़ज़लें सिखानी होंगी,

इस बात के ख्याल से उसकी आँखों में तनाव झलक रहा था।
‘तो क्या कहते हो?’ मान ने कहा। ‘क्यों न हम आज से ही शुरू करें?’
कुछ सेकंड बाद रशीद ने जवाब दिया, "यह तो किसी बच्चे को मैराथन दौड़ना सिखाने जैसा होगा। उसे अपनी निराशा के अनुरूप एक हास्यास्पद उपमा मिल गई थी। आखिरकार, तुम दौड़ पाओगे। लेकिन अभी के लिए, उस मीम को फिर से आज़माओ।"
मान ने कलम नीचे रख दी और खड़ा हो गया। वह जानता था कि सईदा बाई रशीद को पैसे दे रही हैं, और उसे आभास था कि रशीद को पैसों की ज़रूरत है। उसे अपने शिक्षक से कोई शिकायत नहीं थी; एक तरह से वह उनकी कर्तव्यनिष्ठा की सराहना करता था। लेकिन वह उन पर एक नया बचपन थोपने के उनके प्रयास का विरोध कर रहा था। रशीद उसे जो समझा रहे थे, वह एक अंतहीन और असहनीय रूप से उबाऊ रास्ते का पहला कदम था; इस गति से तो उसे उन ग़ज़लों को पढ़ने में भी वर्षों लग जाएँगे जो उसे कंठस्थ थीं। और दशकों लग जाएँगे उन प्रेम पत्रों को लिखने में जिन्हें लिखने के लिए वह तरसता था। फिर भी सईदा बाई ने रशीद के साथ प्रतिदिन आधे घंटे का अनिवार्य पाठ 'एक छोटा सा कड़वा पूर्वाभास' बना दिया था जो उनकी संगति के लिए उसकी लालसा को बढ़ाएगा।
मान सोच रहा था कि यह सब कितना निर्मम और अनियमित था। कभी वह उसे देखती, कभी नहीं, बस अपनी मर्जी से। उसे कुछ भी पता नहीं होता था कि आगे क्या होगा, और इससे उसकी एकाग्रता भंग हो जाती थी। और इसलिए उसे अपनी प्रेमिका के घर के भूतल पर एक ठंडे कमरे में, साठ अलिफ़, चालीस ज़ाल और बीस टेढ़े-मेढ़े मीमों से भरी एक चटाई पर पीठ झुकाकर बैठना पड़ता था, जबकि कभी-कभी हारमोनियम से कुछ जादुई सुर, सारंगी से कोई धुन, ठुमरी की कोई धुन भीतरी

बालकनी से आती और दरवाजे से छनकर उसके पाठ और उसे दोनों को परेशान कर देती।

मान को वैसे भी अकेले रहना कभी अच्छा नहीं लगता था, लेकिन इन शामों में, जब उसका पाठ समाप्त हो जाता था और बिब्बो या इशाक के ज़रिए खबर आती थी कि सईदा बाई अकेले रहना पसंद करती हैं, तो वह दुख और निराशा से पागल हो जाता था। फिर, अगर फ़िरोज़ और इम्तियाज़ घर पर नहीं होते थे, और अगर पारिवारिक जीवन, जैसा कि अक्सर होता था, असहनीय रूप से नीरस, तनावपूर्ण और अर्थहीन लगता था, तो मान अपने नए परिचितों, मरह के राजकुमार और उसके साथियों के साथ मिल जाता और जुए और शराब में अपने सारे दुख और पैसे लुटा देता।

'देखो, अगर आज तुम्हारा मन पढ़ाई करने का नहीं है तो...' रशीद की आवाज मान की उम्मीद से कहीं ज्यादा नरम थी, हालांकि उसके भेड़िये जैसे चेहरे पर तीखापन साफ झलक रहा था।

'नहीं, नहीं, कोई बात नहीं। चलिए आगे बढ़ते हैं। यह तो बस आत्म-संयम की बात है।' मान फिर से बैठ गया।

'बिल्कुल सही,' रशीद ने अपने पुराने लहजे में लौटते हुए कहा। उसे एहसास हुआ कि मान को उत्तम मीमों से भी ज़्यादा आत्म-संयम की ज़रूरत थी। 'तुमने खुद को ऐसी जगह क्यों फंसा लिया है?' वह मान से पूछना चाहता था। 'क्या यह दुखद नहीं है कि तुम सईदा बेगम जैसे पेशे वाली महिला के लिए अपनी गरिमा का बलिदान दे रहे हो?'

शायद ये सब उसके तीन संक्षिप्त शब्दों में समाहित था। खैर, मान को अचानक उससे अपने मन की बात कहने का मन हुआ।

'देखो, बात कुछ इस तरह है—' मान ने कहना शुरू किया। 'मेरी इच्छाशक्ति कमजोर है, और जब मैं बुरी संगत में पड़ जाता हूँ—' वह

रुक गया। आखिर वह क्या कह रहा था? और रशीद को कैसे पता चलेगा कि वह क्या कह रहा है? और अगर उसे पता भी चल जाए, तो उसे परवाह क्यों करनी चाहिए?

लेकिन रशीद को बात समझ में आ गई थी। उसने कहा, 'जब मैं छोटा था, तब मैं—जो अब खुद को पूरी तरह से संयमी मानता हूँ—लोगों को पीटने में अपना समय बिताता था। मेरे दादाजी हमारे गाँव में ऐसा ही करते थे, और वे एक सम्मानित व्यक्ति थे, इसलिए मुझे लगता था कि लोगों को पीटने से ही लोग उनका सम्मान करते थे। हम लगभग पाँच या छह लोग थे, और हम एक-दूसरे को उकसाते रहते थे।'

हम बस यूं ही किसी सहपाठी के पास जाते, जो शायद यूं ही इधर-उधर घूम रहा होता, और उसके चेहरे पर ज़ोरदार थप्पड़ मार देते। जो काम मैं अकेले करने की हिम्मत कभी नहीं करता, वो मैं दूसरों के साथ बिना किसी झिझक के कर देता था। लेकिन, खैर, अब मैं ऐसा नहीं करता। मैंने एक अलग आवाज़ का अनुसरण करना सीख लिया है, अकेले रहकर चीजों को समझना सीख लिया है—शायद अकेले रहकर गलत समझा जाना भी सीख लिया है।

मान को यह सलाह किसी अच्छे फ़रिश्ते की लगी; या शायद किसी पुनर्जीवित फ़रिश्ते की। उसकी कल्पना में राजकुमार और रशीद उसकी आत्मा के लिए संघर्ष कर रहे थे। एक उसे पाँच पोकर कार्डों से नरक की ओर धकेल रहा था, दूसरा कलम से उसे स्वर्ग की ओर ले जा रहा था। उसने एक और मीम बिगाड़ दिया और फिर पूछा:

और क्या आपके दादाजी अभी भी जीवित हैं?

‘हाँ,’ रशीद ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। ‘वह दिन भर छाँव में चारपाई पर बैठकर कुरान शरीफ पढ़ता है और गाँव के बच्चों को परेशान करने पर भगा देता है। और जल्द ही वह पुलिस वालों को भी भगाने की कोशिश

करेगा, क्योंकि उसे तुम्हारे पिता की योजनाएँ पसंद नहीं हैं।'
'तो आप लोग जमींदार हैं?' मान आश्चर्यचकित रह गया।
रशीद ने इस पर विचार करने के बाद कहा: 'मेरे दादाजी थे, इससे पहले कि उन्होंने अपनी संपत्ति अपने बेटों में बाँट दी। मेरे पिता भी हैं और मेरे, खैर, मेरे चाचा भी। जहाँ तक मेरी बात है—' वह रुका, मानो मान के पन्ने पर नज़र डाली, फिर अपना पिछला वाक्य पूरा किए बिना ही बोला, 'खैर, इन मामलों में फैसला सुनाने वाला मैं कौन होता हूँ? वे स्वाभाविक रूप से चीजों को यथास्थिति में रखने से बहुत खुश हैं। लेकिन मैं लगभग पूरी जिंदगी इसी गाँव में रहा हूँ, और मैंने पूरी व्यवस्था देखी है। मैं जानता हूँ कि यह कैसे काम करती है। जमींदार—और मेरा परिवार इतना असाधारण नहीं है कि इसका अपवाद हो—जमींदार दूसरों के दुख से ही अपना जीवन यापन करते हैं; और वे अपने बेटों को भी उन्हीं के घिनौने सांचे में ढालने की कोशिश करते हैं।' यहाँ रशीद रुका, और उसके होंठों के कोने कस गए। 'अगर उनके बेटे कुछ और करना चाहते हैं, तो वे उनका जीवन भी दुखमय बना देते हैं,' उसने आगे कहा। वे पारिवारिक सम्मान के बारे में बहुत बातें करते हैं, लेकिन उनमें सम्मान की कोई भावना नहीं है सिवाय अपने आप से किए गए सुख के वादों को पूरा करने के।
वह एक क्षण के लिए चुप रहा, मानो हिचकिचा रहा हो; फिर आगे बोला: 'कुछ सबसे सम्मानित जमींदार भी अपना वादा नहीं निभाते, वे इतने तुच्छ हैं। आपको शायद यकीन न हो, लेकिन मुझे ब्रह्मपुर में ऐसे ही एक महान जमींदार के पुस्तकालय के क्यूरेटर के पद की पेशकश की गई थी, लेकिन जब मैं उस भव्य घर में पहुँचा तो मुझे बताया गया—खैर, ये सब बातें अप्रासंगिक हैं। मुख्य बात यह है कि जमींदारी व्यवस्था ग्रामीणों के लिए अच्छी नहीं है, पूरे ग्रामीण क्षेत्र के लिए अच्छी नहीं है, देश के लिए अच्छी

नहीं है, और जब तक यह खत्म नहीं हो जाती...' वाक्य अधूरा रह गया। रशीद दर्द से कराहते हुए अपनी उंगलियों को माथे पर दबा रहा था।

यह मीम से बिलकुल अलग था, लेकिन मान ने युवा शिक्षक की बातों को सहानुभूति से सुना, जो किसी भयानक दबाव में बोल रहा था, न कि केवल परिस्थितियों के कारण। कुछ ही मिनट पहले वह मान को सावधानी, एकाग्रता और संयम बरतने की सलाह दे रहा था।

दरवाजे पर दस्तक हुई और रशीद झट से सीधा खड़ा हो गया। इशाक खान और मोटू चंद अंदर आए।

'हमें खेद है, कपूर साहब।'

'नहीं, नहीं, आपका अंदर आना बिलकुल सही है,' मान ने कहा। 'मेरी क्लास का समय खत्म हो गया है, और मैं बेगम साहिबा की बहन को अरबी सीखने से वंचित कर रहा हूँ।' वह उठ खड़ा हुआ। 'ठीक है, कल मिलते हैं, और मेरी मीम बेमिसाल होगी,' उसने रशीद से जल्दबाज़ी में वादा किया। 'तो?' उसने संगीतकारों की ओर दोस्ताना अंदाज़ में सिर हिलाया, 'क्या यह ज़िंदगी और मौत का सवाल है?'

लेकिन मोटू चंद के उदास चेहरे से उन्हें इशाक खान के शब्दों का पूर्वाभास हो गया था।

'कपूर साहब, मुझे डर है कि आज शाम—मेरा मतलब है कि बेगम साहिबा ने मुझे आपको सूचित करने के लिए कहा है. . . .'

'जी हां,' मान ने गुस्से और आहत होकर कहा। 'अच्छा। बेगम साहिबा को मेरा गहरा प्रणाम। फिर मिलते हैं कल के लिए।'

'बस उसकी तबीयत ठीक नहीं है।' इशाक को झूठ बोलना पसंद नहीं था और वह इसमें माहिर भी नहीं था।

"जी हां," मान ने कहा, जो अगर उसकी अस्वस्थता पर यकीन करता तो कहीं ज़्यादा चिंतित होता। "मुझे उम्मीद है कि वह जल्दी ठीक हो

जाएगी।" दरवाज़े पर पहुँचकर उसने मुड़कर कहा, "अगर मुझे लगता कि इससे कोई फ़ायदा होगा, तो मैं उसे लगातार मीम की गोलियां लेने की सलाह देता, एक गोली हर घंटे और सोने से पहले कई गोलियां।'

मोटू चंद ने सुराग पाने के लिए इशाक की ओर देखा, लेकिन इशाक के चेहरे पर उसकी अपनी उलझन झलक रही थी।

'यह उससे ज़्यादा कुछ नहीं है जो उसने मुझे बताया है,' मान ने कहा। 'और जैसा कि आप देख सकते हैं, इसके परिणामस्वरूप मैं फल-फूल रहा हूँ। कम से कम मेरी आत्मा तो अस्वस्थता से उतनी ही सफलतापूर्वक बची रही है जितनी सफलतापूर्वक वह मुझसे बच रही है।'

6.17

रशीद अभी अपनी किताबें उठा ही रहा था कि दरवाजे के पास खड़े इशाक खान ने अचानक बोल दिया:

और तसनीम की तबीयत भी ठीक नहीं है।

मोटू चंद ने अपने दोस्त की तरफ देखा। रशीद की पीठ उनकी तरफ थी, लेकिन वह अकड़ गया था। उसने इशाक खान को मान से जो बहाना बनाते सुना था, वह सुना था; सईदा बाई के दूत के रूप में इस तरह के अपमानजनक व्यवहार से सारंगी वादक के प्रति उसका सम्मान ज़रा भी नहीं बढ़ा था। क्या अब वह तसनीम के दूत के रूप में भी काम कर रहा था?

'तुम्हें यह समझ कैसे आई?' उसने धीरे से मुड़ते हुए पूछा।

शिक्षक की आवाज में स्पष्ट अविश्वास देखकर इशाक खान का चेहरा लाल हो गया।

'खैर, अभी उसकी जो भी हालत हो, तुम्हारे साथ पाठ के बाद उसकी तबीयत खराब हो जाएगी,' उसने चुनौती भरे लहजे में जवाब दिया। और सचमुच, यह सच था। रशीद के साथ पाठ के बाद तसनीम अक्सर रोने

लगती थी।

रशीद ने इरादे से ज़्यादा कठोर लहजे में कहा, “उसे रोने की आदत है। लेकिन वह बुद्धिहीन नहीं है और अच्छी प्रगति कर रही है। अगर मेरे पढ़ाने में कोई समस्या हो, तो उसके अभिभावक मुझे व्यक्तिगत रूप से या लिखित रूप में सूचित कर सकते हैं।”

‘क्या आप उसके साथ थोड़ा कम सख्ती नहीं बरत सकते, साहब?’ इशाक ने गुस्से से कहा। ‘वह एक नाज़ुक लड़की है। वह मुल्ला बनने की ट्रेनिंग नहीं ले रही है, आप जानते हैं। या हाफ़िज़ बनने की।’

फिर भी, आँसू बहें या न बहें, इशाक ने दर्द से सोचा, तसनीम इन दिनों अपना ज़्यादातर खाली समय अरबी सीखने में बिता रही थी, जिससे उसके पास किसी और के लिए बहुत कम समय बचता था। ऐसा लगता था कि अरबी की पढ़ाई ने उसे रोमांटिक उपन्यासों से भी दूर कर दिया था। क्या वह सचमुच चाहता था कि उसका युवा शिक्षक उसके प्रति नरमी से पेश आए?

रशीद ने अपने कागज़ात और किताबें समेट ली थीं। अब वह लगभग खुद से ही बात कर रहा था। ‘मैं उसके साथ उतना ही सख़्त व्यवहार करता हूँ जितना कि’—वह कहने ही वाला था ‘खुद के साथ’—‘किसी और के साथ। भावनाएँ काफी हद तक आत्म-नियंत्रण पर निर्भर करती हैं। कुछ भी दर्द रहित नहीं होता,’ उसने थोड़ी कड़वाहट के साथ कहा।

इशाक की आँखों में चमक आ गई। मोटू चंद ने उसे रोकने के लिए अपना हाथ उसके कंधे पर रख दिया।

‘और वैसे भी,’ रशीद ने आगे कहा, ‘तसनीम में आलस्य की प्रवृत्ति है।’

‘मास्टर साहब, ऐसा लगता है कि उसमें कई प्रवृत्तियाँ हैं।’

रशीद ने माथे पर शिकन डाली। 'और यह समस्या उस मंदबुद्धि तोते की वजह से और भी बढ़ जाती है, जिसे खिलाने या लाड़-प्यार करने के लिए

वह बार-बार उसका काम बिगाड़ देती है। ईश्वर की पवित्र पुस्तक के अंशों को एक निंदक पक्षी की चोंच में कुचलते हुए सुनना कोई सुखद अनुभव नहीं है।'

इशाक इतना अवाक रह गया कि कुछ बोल ही नहीं पाया। रशीद उसके पास से गुज़रकर कमरे से बाहर चला गया।

कुछ सेकंड बाद मोटू चंद ने कहा, 'ईशाक भाई, आपने उसे इस तरह क्यों उकसाया?'

'उसे उकसाना? अरे, उसने तो मुझे उकसाया था। उसकी आखिरी टिप्पणी—'

'उसे पता नहीं चल सकता था कि तुमने उसे तोता दिया था।'

'अरे, ये तो सबको पता है।'

'शायद उसे परवाह नहीं है। हमारे सीधे-सादे रशीद को इस तरह की बातों में कोई दिलचस्पी नहीं है। तुम्हें क्या हो गया है? आजकल तुम सबको क्यों उकसा रहे हो?'

उस्ताद मजीद खान का जिक्र इशाक को समझ में आ गया था, लेकिन यह एक ऐसा विषय था जिसके बारे में सोचना भी उनके लिए असहनीय था। उन्होंने कहा:

तो उस उल्लू वाली किताब ने तुम्हें उकसाया, है ना? क्या तुमने उसकी कोई रेसिपी आजमाई है? मोटू, उस किताब ने कितनी महिलाओं को अपने वश में किया है? और तुम्हारी पत्नी तुम्हारी इस नई-नई काबिलियत के बारे में क्या कहती है?

'तुम जानते हो मेरा मतलब क्या है,' मोटू चंद ने बिना विचलित हुए कहा। 'सुनो, इशाक, लोगों को नाराज़ करने से कुछ हासिल नहीं होगा। अभी —'

"ये मेरे बदनसीब हाथ हैं," इशाक ने अपने हाथ ऊपर उठाते हुए और उन्हें

ऐसे देखते हुए कहा जैसे उसे उनसे नफरत हो। “ये बदनसीब हाथ। पिछले एक घंटे से ऊपर ये मेरे लिए यातना रहे हैं।”

लेकिन तुम तो बहुत अच्छा खेल रहे थे—

‘मेरा क्या होगा? मेरे छोटे भाइयों का क्या होगा? मेरी असाधारण बुद्धि के बल पर मुझे नौकरी नहीं मिल सकती। और मेरे जीजाजी भी अब ब्रह्मपुर आकर हमारी मदद नहीं कर पाएंगे। मैं रेडियो स्टेशन पर कैसे जाऊं, उनके तबादले की गुहार लगाना तो दूर की बात है?’

‘सब ठीक हो जाएगा, इशाक भाई। इस तरह परेशान मत होइए। मैं आपकी मदद करूंगा—’

यह तो बिलकुल असंभव था। मोटू चंद के चार छोटे बच्चे थे।

इशाक खान ने सिर हिलाते हुए मन ही मन कहा, "अब तो संगीत भी मेरे लिए पीड़ादायक है। संगीत भी। ड्यूटी पर न होने पर भी मैं इसे सुनना बर्दाश्त नहीं कर सकता। मेरा हाथ अपने आप धुन पर थिरकने लगता है और दर्द से अकड़ जाता है। अगर मेरे पिता जीवित होते, तो मुझे इस तरह बोलते हुए सुनकर वे क्या कहते?"

6.18

चौकीदार ने कहा, ‘बेगम साहिबा ने साफ-साफ कह दिया है। वह आज शाम किसी से नहीं मिल रही हैं।’

‘क्यों?’ मान ने पूछा। ‘क्यों?’

‘मुझे नहीं पता,’ चौकीदार ने कहा।

'कृपया पता लगाइए,' मान ने कहा और उस आदमी के हाथ में दो रुपये का नोट थमा दिया।

चौकीदार ने नोट लिया और कहा: 'वह ठीक नहीं है।'

‘लेकिन आपको यह पहले से पता था,’ मान ने थोड़ी नाराज़गी से कहा। ‘इसका मतलब है कि मुझे उससे मिलने जाना चाहिए। वह मुझसे मिलना

चाहेगी।'

द्वार के सामने खड़े चौकीदार ने कहा, 'नहीं। वह आपसे मिलना नहीं चाहेगी।'

यह बात मान को सरासर असहानुभूतिपूर्ण लगी। उसने कहा, 'अब देखो, मुझे अंदर आने दो।' उसने चौकीदार को धक्का देकर अंदर घुसने की कोशिश की, लेकिन चौकीदार ने विरोध किया और हाथापाई हो गई।

अंदर से आवाजें सुनाई दीं और बिब्बो बाहर निकली। जब उसने देखा कि क्या हो रहा है, तो उसने अपना हाथ अपने मुंह पर रख लिया। फिर हांफते हुए बोली, 'फूल सिंह—बस करो! दाग साहब, कृपया—कृपया—बेगम साहिबा क्या कहेंगी?'

इस विचार से मान को होश आया और वह शर्मिंदा होकर अपना कुर्ता झाड़ने लगा। न तो उसे और न ही चौकीदार को कोई चोट आई थी। चौकीदार पूरी घटना के प्रति बिल्कुल उदासीन बना रहा।

'बिब्बो, क्या वह बहुत बीमार है?' मान ने परोक्ष रूप से पीड़ा सहते हुए पूछा।

'बीमार?' बिब्बो ने कहा। 'कौन बीमार है?'

'बेशक, सईदा बाई।'

'वह बिल्कुल भी बीमार नहीं है,' बिब्बो ने हंसते हुए कहा। फिर, चौकीदार की ओर देखते हुए उसने आगे कहा, 'कम से कम आधे घंटे पहले तक तो नहीं, जब उसके दिल के आसपास तेज दर्द हुआ। वह आपको—या किसी को भी—देख नहीं सकती।'

'उसके साथ कौन है?' मान ने पूछा।

'कोई नहीं, मतलब, जैसा कि मैंने अभी कहा—कोई नहीं।'

'उसके साथ कोई है,' मान ने ईर्ष्या की तीखी लहर के साथ गुस्से से कहा।

बिब्बो ने सहानुभूति जताते हुए कहा, 'दाग साहब, आपका ऐसा व्यवहार

करना स्वाभाविक नहीं है।'
‘जैसे क्या?’ मान ने कहा।
'ईर्ष्यालु। बेगम साहिबा के पुराने चाहने वाले हैं—वह उन्हें छोड़ नहीं सकतीं।'
यह घर उनकी उदारता पर निर्भर है।'
‘क्या वह मुझसे नाराज है?’ मान ने पूछा।
‘गुस्सा? क्यों?’ बिब्बो ने खालीपन से पूछा।
‘क्योंकि मैंने वादा किया था कि मैं उस दिन आऊंगा, लेकिन मैं आ नहीं सका,’ मान ने कहा। ‘मैंने कोशिश की—लेकिन मैं आ नहीं पाया।’
बिब्बो ने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि वह तुमसे नाराज़ थी। लेकिन वह तुम्हारे दूत से ज़रूर नाराज़ थी।'
‘फिरोज के साथ?’ मान ने आश्चर्यचकित होकर कहा।
'हां, नवाबजादा के साथ।'
‘क्या उसने कोई संदेश पहुंचाया?’ मान ने पूछा। उसे थोड़ी ईर्ष्या हुई कि फ़िरोज़, जो उर्दू पढ़ और लिख सकता था, इस प्रकार सईदा बाई के साथ लिखित रूप में संवाद कर सकता था।
'मुझे ऐसा लगता है,' बिब्बो ने कुछ अस्पष्टता से कहा।
‘और वह क्यों गुस्सा थी?’ मान ने पूछा।
‘मुझे नहीं पता,’ बिब्बो ने हल्की हंसी के साथ कहा। ‘मुझे अब अंदर जाना होगा।’ और वह मान को फुटपाथ पर बहुत परेशान खड़ा छोड़कर चली गई।
सईदा बाई फिरोज को देखकर बेहद नाराज़ थीं और मान द्वारा उसे भेजे जाने पर गुस्सा भी थीं। फिर भी, जब उन्हें मान का संदेश मिला कि वह तय शाम को नहीं आ सकता, तो उन्हें निराशा और उदासी महसूस हुई। और इस बात से उन्हें और भी गुस्सा आया। वह इस हंसमुख, चंचल और

शायद फुर्तीले नौजवान से भावनात्मक रूप से जुड़ना नहीं चाहती थीं। उन्हें अपना पेशा संभालना था, और वह चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, ध्यान भटकाने वाला था। इसलिए उन्हें एहसास होने लगा कि अगर वह कुछ समय के लिए दूर रहे तो शायद अच्छा ही होगा। चूंकि आज शाम उनके घर एक मेहमान आ रहा था, इसलिए उन्होंने चौकीदार को निर्देश दिया था कि वह बाकी सभी को—और विशेष रूप से मान को—दूर रखे। जब बिब्बो ने बाद में सईदा बाई को सारी बात बताई, तो सईदा बाई को मान पर गुस्सा आया क्योंकि उन्हें लगा कि मान उनके पेशेवर जीवन में दखल दे रहा है: मान को उनके समय या उनके द्वारा किए जाने वाले कामों पर कोई अधिकार नहीं था। लेकिन बाद में, तोते से बात करते हुए, उन्होंने कई बार 'दाग साहब, दाग साहब' कहा, उनके भावों में कामुकता से लेकर चंचलता, कोमलता, उदासीनता, झुंझलाहट और क्रोध तक के भाव झलक रहे थे। तोता अपने साथियों की तुलना में दुनियादारी की कहीं अधिक गहन शिक्षा प्राप्त कर रहा था।

*

मान इधर-उधर भटक रहा था, सोच रहा था कि समय कैसे बिताए, सईदा बाई का ख्याल उसके मन से निकल ही नहीं रहा था, पर किसी भी तरह की गतिविधि की उसे तीव्र इच्छा थी जिससे कम से कम एक पल के लिए उसका ध्यान बँट जाए। उसे याद आया कि उसने राजकुमार से मिलने जाने का वादा किया था, इसलिए वह विश्वविद्यालय से कुछ ही दूरी पर स्थित उस आवास की ओर चल पड़ा जहाँ राजकुमार अपने छह-सात अन्य छात्रों के साथ ठहरे हुए थे। इनमें से चार छात्र ग्रीष्म ऋतु की छुट्टियों की शुरुआत में भी ब्रह्मपुर में ही थे। ये छात्र—जिनमें से दो छोटे-छोटे रियासतों के वंशज थे और एक बड़े जमींदार का पुत्र—धनवान नहीं थे। उनमें से अधिकांश को अपनी मर्जी से खर्च करने के लिए कुछ सौ रुपये

प्रति माह मिलते थे। यह प्राण के पूरे वेतन के लगभग बराबर था, और ये छात्र अपने साधारण शिक्षकों को तुच्छ समझते थे।

राजकुमार और उसके दोस्त साथ में खाना खाते, ताश खेलते और खूब एक-दूसरे का साथ पाते थे। उनमें से हर कोई महीने में पंद्रह रुपये खाने-पीने के खर्च (उनका अपना रसोइया था) और बीस रुपये 'लड़की के खर्चे' के तौर पर देता था। ये पैसे विश्वविद्यालय से कुछ ही दूरी पर एक गली में अपनी माँ के साथ रहने वाली उन्नीस साल की एक बेहद खूबसूरत नर्तकी के खर्चे में जाते थे। रूपवती अक्सर दोस्तों का मनोरंजन करती थी और उनमें से कोई एक बाद में रुक जाता था। इस तरह हर दो हफ्ते में बारी-बारी से उन्हें एक मौका मिल जाता था। बाकी रातों में रूपवती किसी का भी मनोरंजन करने या छुट्टी लेने के लिए स्वतंत्र थी, लेकिन शर्त यह थी कि वह किसी और ग्राहक के पास नहीं जाएगी। माँ लड़कों का बड़े प्यार से स्वागत करती थी; उन्हें देखकर वह बहुत खुश होती थी और अक्सर उनसे कहती थी कि अगर उनकी दयालुता न होती तो वह और उसकी बेटी क्या करतीं, यह उसे नहीं पता।

मारह के राजकुमार से मिलने और काफी मात्रा में व्हिस्की पीने के आधे घंटे के भीतर ही मान ने अपने सारे दुख उनके कंधों पर उंडेल दिए। राजकुमार ने रूपवती का जिक्र किया और उनसे मिलने का सुझाव दिया। यह सुनकर मान थोड़ा खुश हुआ और व्हिस्की की बोतल लेकर वे उसके घर की ओर चल पड़े। लेकिन राजकुमार को अचानक याद आया कि आज उसकी छुट्टी की रात है और उनका वहां पूरी तरह स्वागत नहीं होगा। ‘मुझे पता है हम क्या करेंगे। हम तरबूज का बाजार जाएंगे,’ राजकुमार ने एक तांगा बुलाते हुए कहा और मान को उस पर खींच लिया। मान इस सुझाव का विरोध करने के मूड में नहीं था।

लेकिन जब राजकुमार ने, जिसने अपना दोस्ताना हाथ उसकी जांघ पर

रखा था, उसे काफी ऊपर की ओर बढ़ाया, तो उसने हंसते हुए अपना हाथ झटक दिया।

राजकुमार ने इस अस्वीकृति को जरा भी बुरा नहीं माना, और कुछ ही मिनटों में, बोतल एक-दूसरे के बीच घूमती रही, और वे पहले की तरह ही सहजता से बातें करने लगे।

राजकुमार ने कहा, 'यह मेरे लिए बहुत बड़ा जोखिम है, लेकिन हमारी गहरी दोस्ती के कारण मैं यह कर रहा हूं।'

मान हंसने लगा। उसने कहा, 'फिर से ऐसा मत करना। मुझे गुदगुदी हो रही है।'

अब राजकुमार की हंसने की बारी थी। उन्होंने कहा, 'मेरा मतलब वो नहीं था। मेरा मतलब ये था कि तुम्हें तरबूज का बाजार ले जाना मेरे लिए जोखिम भरा है।'

‘अरे, कैसे?’ मान ने कहा।

क्योंकि “किसी भी छात्र को अनुचित स्थान पर पाए जाने पर तत्काल निष्कासन का सामना करना पड़ेगा”।

राजकुमार ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए बनाए गए विचित्र और विस्तृत आचरण नियमों का हवाला दे रहा था। यह नियम इतना अस्पष्ट और साथ ही इतना कठोर प्रतीत होता था कि राजकुमार और उसके दोस्तों ने इसे कंठस्थ कर लिया था और जब भी वे जुआ खेलने, शराब पीने या अय्याशी करने बाहर जाते थे, तो गायत्री मंत्र की मधुर धुन पर इसे एक साथ गाते थे।

6.19

वे जल्द ही पुराने ब्रह्मपुर पहुँच गए और संकरी गलियों से होते हुए तरबूज का बाजार की ओर चल पड़े। मान के मन में अब संदेह आने लगा था।

‘किसी और रात क्यों नहीं—?’ उसने बात शुरू की।

‘ओह, वहाँ बहुत अच्छी बिरयानी मिलती है,’ राजकुमार ने कहा।
'कहाँ?'
‘ताहमीना बाई के घर पर। मैं वहां एक-दो बार तब गया हूं जब रूपवती का कार्यक्रम नहीं था।’
मान ने अपना सिर अपनी छाती पर टिकाया और सो गया। जब वे तरबूज का बाजार पहुंचे, तो राजकुमार ने उसे जगाया।
‘यहां से हमें पैदल चलना होगा।’
‘ज्यादा दूर नहीं?’
‘नहीं—ज्यादा दूर नहीं। ताहमीना बाई का घर तो बस कोने पर ही है।’
वे घोड़े से उतरे, तांगे वाले को पैसे दिए और हाथ में हाथ डालकर एक गली में चले गए। फिर राजकुमार नशे में धुत मान को पीछे खींचते हुए संकरी और खड़ी सीढ़ियों पर चढ़ गया।
लेकिन जब वे सीढ़ियों के ऊपर पहुंचे तो उन्हें एक अजीब सी आवाज सुनाई दी, और जब वे गलियारे में कुछ कदम चले तो उनके सामने एक विचित्र दृश्य था।
गोल-मटोल, सुंदर और सपनों में खोई रहने वाली ताहमिना बाई खुशी से खिलखिला रही थी, जब अफीम के नशे में डूबा हुआ, भावहीन चेहरे वाला, लाल जुबान वाला, गठीला शरीर का एक अधेड़ उम्र का आदमी—एक आयकर क्लर्क—तबला बजाते हुए पतली आवाज में एक अश्लील गाना गा रहा था। दो मैले-कुचले निचले विभाग के क्लर्क इधर-उधर बैठे थे, जिनमें से एक ने अपना सिर उसकी गोद में रखा हुआ था। वे भी साथ में गाने की कोशिश कर रहे थे।
राजकुमार और मान पीछे हटने ही वाले थे कि तभी उस जगह की मालकिन ने उन्हें देख लिया और गलियारे से तेज़ी से उनकी ओर दौड़ पड़ी। वह राजकुमार को जानती थी और उसे आश्वस्त करने के लिए

जल्दी से बोली कि बाकी लोगों को कुछ ही मिनटों में बाहर निकाल दिया जाएगा।

दोनों कुछ मिनटों तक एक पान की दुकान के आसपास घूमते रहे, फिर ऊपर चले गए। ताहमीना बाई अकेली थीं और उनके चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान थी, और वे उनका स्वागत करने के लिए तैयार थीं।

पहले उसने ठुमरी गाई, फिर—यह महसूस करते हुए कि समय बीत रहा है—वह रूठ गई।

'ओह, गाना जरूर गाओ,' राजकुमार ने कहा और मान को ताहमिना बाई को भी मनाने के लिए प्रेरित किया।

'जी-एस—' मान ने कहा।

'नहीं, मैं नहीं करूंगी, आपको मेरी आवाज़ पसंद नहीं है।' उसने नीचे की ओर देखा और मुंह फुला लिया।

राजकुमार ने कहा, 'अच्छा, कम से कम हमें कुछ कविता सुनाकर तो हमें सम्मानित कीजिए।'

यह सुनकर ताहमीना बाई खिलखिलाकर हंस पड़ीं। उनके सुंदर छोटे गाल हिलने लगे और वे खुशी से खिलखिला उठीं। राजकुमार अचंभित रह गए। अपनी बोतल से एक और घूंट पीने के बाद उन्होंने आश्चर्य से उनकी ओर देखा।

'ओह, ये तो बहुत ही—आह, आह—कृपया हमें कुछ—हा हा—कविता सुनाइए!'

ताहमीना बाई अब रूठी हुई नहीं थी, बल्कि बेकाबू होकर हंस रही थी। वह चीखती-चिल्लाती, अपनी कमर पकड़े हांफती और उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

जब वह आखिरकार बोलने में सक्षम हुई, तो उसने उन्हें एक चुटकुला सुनाया।

‘कवि अकबर इलाहाबादी बनारस में थे, जब कुछ दोस्तों ने उन्हें हमारी ही तरह एक गली में बहला-फुसलाकर बुलाया। उन्होंने भी आपकी तरह खूब शराब पी रखी थी, इसलिए पेशाब करने के लिए दीवार से टिक गए। और फिर—क्या हुआ?—ऊपर की खिड़की से झाँकती एक वेश्या ने उन्हें उनकी एक कविता पाठ से पहचान लिया और—और उसने कहा—’ ताहमीना बाई खिलखिलाकर हँसीं, फिर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगीं, और इधर-उधर हिलने लगीं। ‘उसने कहा—अकबर साहब हमें अपनी कविता से नवाज़ रहे हैं!’ ताहमीना बाई एक बार फिर बेकाबू होकर हँसने लगीं, और मान को हैरानी हुई कि वह भी उनके साथ हँसने लगा।

लेकिन ताहमीना बाई ने अपना मजाक खत्म नहीं किया था और आगे कहा:

तो जब उसने उसकी बात सुनी, तो कवि ने तात्कालिक भाव से यह टिप्पणी की:

अफसोस—अकबर कितनी घटिया कविताएँ लिख सकते हैं!

जब कलम उसके हाथ में हो और स्याही की दवात ऊपर हो?

इसके बाद हंसी की चीखें और ठहाके गूंज उठे। फिर ताहमीना बाई ने मान से कहा कि उन्हें दूसरे कमरे में उसे कुछ दिखाना है, और वह उसे अंदर ले गईं, जबकि राजकुमार ने कुछ और घूंट पी लिए।

कुछ मिनट बाद वह बाहर आई, मान अस्त-व्यस्त और निराश दिख रहा था। लेकिन ताहमीना बाई मुंह फुलाए हुए थी। उसने राजकुमार से कहा: 'अब मुझे आपको कुछ दिखाना है।'

‘नहीं, नहीं,’ राजकुमार ने कहा। ‘मैं पहले ही—नहीं, मेरा मूड नहीं है—चलो, मान, चलते हैं।’

ताहमीना बाई को अपमानित महसूस हुआ और उन्होंने कहा: 'आप दोनों—आप दोनों—बहुत मिलती-जुलती हैं! आपको मेरी क्या ज़रूरत है?'

राजकुमार उठ खड़ा हुआ। उसने मान के कंधे पर हाथ रखा और वे दोनों दरवाजे की ओर बढ़ने लगे। गलियारे में पहुँचते ही उन्होंने उसे यह कहते सुना:

'जाने से पहले कम से कम थोड़ी बिरयानी खा लीजिए। कुछ ही मिनटों में तैयार हो जाएगी—'

उनकी ओर से कोई जवाब न मिलने पर ताहमिना बाई भड़क उठीं:

'इससे शायद आपको ताकत मिले। आप दोनों में से कोई भी मुझे अपनी कविता से सम्मानित नहीं कर सकता!'

वह हंसने लगी और कांपने लगी, और उसकी हंसी सीढ़ियों से नीचे सड़क तक उनके साथ-साथ गूंजती रही।

6.20

हालांकि मान ने ताहमीना बाई के साथ ऐसा कुछ नहीं किया था, फिर भी उसे इतनी शर्मिंदगी महसूस हो रही थी कि उसने ताहमीना बाई जैसी नीच गायिका से मुलाकात की थी। वह तुरंत सईदा बाई के पास जाकर उनसे माफी मांगना चाहता था। राजकुमार ने उसे घर जाने के लिए मना लिया। वह उसे प्रेम निवास के द्वार तक ले गया और वहीं छोड़ दिया।

श्रीमती महेश कपूर जाग रही थीं। मान को इतना नशे में और लड़खड़ाते हुए देखकर वे बहुत दुखी हुईं। हालांकि उन्होंने उससे कुछ नहीं कहा, लेकिन उन्हें उसकी चिंता सता रही थी। अगर उसके पिता उसे इस हालत में देख लेते तो उन्हें दौरा पड़ जाता।

मान को उसके कमरे में ले जाया गया, वह अपने बिस्तर पर गिर पड़ा और सो गया।

अगले दिन, पश्चाताप से भरा हुआ, वह सईदा बाई से मिलने गया, और सईदा उसे देखकर प्रसन्न हुई। उन्होंने शाम साथ बिताई। लेकिन सईदा ने उससे कहा कि वह अगले दो दिन व्यस्त रहेगी, और उसे बुरा नहीं मानना

चाहिए।

मान को यह बात बहुत बुरी लगी। वह तीव्र ईर्ष्या और दबी हुई इच्छा से ग्रस्त था और सोचता रहा कि उसने क्या गलती की है। भले ही वह हर शाम सईदा बाई को देख पाता, उसके दिन बूंद-बूंद करके ही बीतते। अब न केवल दिन बल्कि रातें भी उसके सामने अंतहीन रूप से फैली हुई थीं, काली और खाली।

उन्होंने फ़िरोज़ के साथ थोड़ा-बहुत पोलो का अभ्यास किया, लेकिन फ़िरोज़ दिन भर और कभी-कभी शाम को भी कानून या अन्य कामों में व्यस्त रहते थे। चश्मा पहने युवा बैनरजी के विपरीत, फ़िरोज़ पोलो खेलने या चलने के लिए उपयुक्त छड़ी चुनने में बिताए गए समय को व्यर्थ नहीं समझते थे; वे इन गतिविधियों को नवाब के पुत्र के लिए उचित मानते थे। हालाँकि, मान की तुलना में फ़िरोज़ अपने पेशे के प्रति बेहद समर्पित थे।

मान ने भी ऐसा ही करने की कोशिश की—बनारस में कपड़े के कारोबार के लिए कुछ खरीदारी और ऑर्डर लेने की—लेकिन उसे यह काम इतना उबाऊ लगा कि वह इसे जारी नहीं रख सका। उसने अपने भाई प्राण और बहन वीणा से एक-दो बार मुलाकात की, लेकिन उनके जीवन की सादगी और उद्देश्यपूर्णता उसके अपने जीवन के लिए एक फटकार थी। वीणा ने उसे खरी-खोटी सुनाते हुए पूछा कि वह युवा भास्कर के लिए किस तरह का उदाहरण पेश कर रहा है, और बूढ़ी श्रीमती टंडन ने उसे पहले से भी अधिक संदेह और नापसंदगी भरी नजरों से देखा। हालांकि, केदारनाथ ने मान के कंधे पर थपथपाया, मानो अपनी माँ की इस बेरुखी की भरपाई कर रहा हो।

अपने सारे विकल्प समाप्त हो जाने के बाद, मान मारह के राजकुमार के समूह में मंडराने लगा और (हालाँकि वह फिर कभी तरबूज का बाज़ार नहीं गया) व्यापार के लिए रखे गए पैसे का अधिकांश हिस्सा शराब पीने

और जुए में उड़ा दिया। जुआ—आमतौर पर खूब पैसा होता था, लेकिन कभी-कभी पोकर भी, जिसका ब्रह्मपुर के कुछ ज़्यादा ही अय्याश छात्रों में हाल ही में क्रेज़ था—मुख्य रूप से छात्रों के कमरों में होता था, लेकिन कभी-कभी शहर में इधर-उधर के निजी घरों में बने अनौपचारिक जुआ अड्डों में भी होता था। उनका पेय हमेशा स्कॉच होता था। मान हर समय सईदा बाई के बारे में सोचता रहता था और सुंदर रूपवती से मिलने से भी इनकार कर दिया। इस बात पर उसके सभी नए साथियों ने उसे ताना मारा और कहा कि अभ्यास की कमी के कारण वह अपनी क्षमताएँ हमेशा के लिए खो सकता है।

एक दिन मान अपने साथियों से बिछड़कर प्रेम में डूबा हुआ नबीगंज में इधर-उधर घूम रहा था, तभी उसकी मुलाकात अपनी पुरानी प्रेमिका से हो गई। वह अब शादीशुदा थी, लेकिन मान के लिए उसके मन में अभी भी बहुत स्नेह था। मान भी उसे बहुत पसंद करता था। उसके पति, जिसका उपनाम कबूतर था, ने मान से पूछा कि क्या वह उनके साथ रेड फॉक्स में कॉफी पीने चलेगा। लेकिन मान, जो आम तौर पर खुशी-खुशी निमंत्रण स्वीकार कर लेता, उसने नाखुशी से मुंह फेर लिया और कहा कि उसे जाना होगा।

उसके पति ने मुस्कुराते हुए उससे कहा, 'तुम्हारा पुराना प्रेमी इतना अजीब व्यवहार क्यों कर रहा है?'

‘मुझे नहीं पता,’ उसने हैरानी से कहा।

'यकीनन उसने तुमसे प्यार करना नहीं छोड़ा होगा।'

'ऐसा संभव है—लेकिन इसकी संभावना कम है। मान कपूर आमतौर पर किसी से भी प्यार करना नहीं छोड़ते।'

उन्होंने बात वहीं खत्म कर दी और रेड फॉक्स में चले गए।

6.21

मान ही श्रीमती टंडन के संदेह का एकमात्र निशाना नहीं था। हाल ही में, हर बात पर नज़र रखने वाली उस बुज़ुर्ग महिला ने गौर करना शुरू किया कि वीना अपने कुछ गहने नहीं पहन रही थी: हालांकि वह अपने ससुराल वालों के गहने तो पहनती थी, लेकिन अपने माता-पिता से मिले गहने पहनना बंद कर दिया था। एक दिन उन्होंने यह बात अपने बेटे को बताई। केदारनाथ ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

उसकी मां उसे लगातार मनाती रही, आखिरकार वह वीना से नवरतन पहनने के लिए कहने को राजी हो गया।

वीना का चेहरा लाल हो गया। उसने कहा, 'मैंने इसे प्रिया को उधार दिया है, जो इस डिज़ाइन की नकल करना चाहती है। उसने प्राण की शादी में मुझे इसे पहने देखा था और उसे यह पसंद आया।'

लेकिन वीना अपने झूठ से इतनी नाखुश लग रही थी कि सच्चाई जल्द ही सामने आ गई। केदारनाथ को पता चला कि घर चलाने में उससे कहीं ज़्यादा खर्च हो रहा था जितना उसने बताया था; घरेलू कामों में अकुशल और अक्सर घर से बाहर रहने वाले केदारनाथ ने इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया था। वीना को उम्मीद थी कि कम घरेलू खर्च मांगकर वह उसके व्यापार पर वित्तीय दबाव कम कर देगी। लेकिन अब उसे पता चला कि वीना ने अपने गहने गिरवी रखने या बेचने की तैयारी कर ली थी।

केदारनाथ को यह भी पता चला कि भास्कर की स्कूल फीस और किताबें पहले से ही श्रीमती महेश कपूर के मासिक घरेलू खर्च से दी जा रही थीं, जिसमें से कुछ राशि वह अपनी बेटी को देती थीं।

केदारनाथ ने कहा, 'हम ऐसा नहीं होने दे सकते। तुम्हारे पिता ने तीन साल पहले हमारी काफी मदद की थी।'

‘क्यों नहीं?’ वीना ने पूछा। ‘भास्कर की नानी को उसे ये सब देने की इजाजत तो जरूर है, क्यों नहीं? ऐसा तो है नहीं कि वो हमें राशन मुहैया

कराती हैं।'

'आज मेरी वीणा में कुछ गड़बड़ है,' केदारनाथ ने थोड़ी उदास मुस्कान के साथ कहा।

वीना संतुष्ट नहीं हुई।

'तुम मुझे कभी कुछ नहीं बताते,' वह फूट पड़ी, 'और फिर मैं तुम्हें सिर हाथों में लिए, आँखें बंद किए हुए कई मिनट तक देखती हूँ। मैं क्या सोचूँ? और तुम हमेशा दूर रहते हो। कभी-कभी जब तुम दूर होते हो तो मैं पूरी रात रोती रहती हूँ; एक शराबी पति होता तो बेहतर होता, बस वह हर रात यहीं सोता।'

'अब शांत हो जाओ। ये गहने कहाँ हैं?'

'प्रिया के पास वे हैं। उसने कहा कि वह मुझे अनुमानित लागत बता देगी।'

'तो क्या वे अभी तक बिके नहीं हैं?'

'नहीं।'

जाओ और उन्हें वापस ले आओ।

'नहीं।'

'जाओ और उन्हें वापस ले आओ, वीना। तुम अपनी माँ के नवरतन के साथ जुआ कैसे खेल सकती हो?'

'आप भास्कर के भविष्य के साथ चौपर का खेल कैसे खेल सकते हैं?'

केदारनाथ ने कुछ सेकंड के लिए अपनी आंखें बंद कर लीं।

उन्होंने कहा, 'तुम्हें कारोबार के बारे में कुछ भी समझ नहीं है।'

मैं इतना तो समझता हूँ कि आप लगातार खुद पर अत्यधिक बोझ नहीं डाल सकते।

'अत्यधिक विस्तार मात्र है। सभी महान दौलत कर्ज पर आधारित होती हैं।'

'खैर, मुझे पता है, हम फिर कभी इतने भाग्यशाली नहीं होंगे,' वीना ने

जोश से कहा। 'यह लाहौर नहीं है। हमारे पास जो थोड़ा-बहुत है, उसकी रक्षा हम क्यों नहीं कर सकते?'

केदारनाथ कुछ देर चुप रहे। फिर उन्होंने कहा:

'गहने वापस ले आओ। सब ठीक है, बिल्कुल ठीक है। हरेश का जूतों के साथ समझौता किसी भी दिन पूरा होने वाला है, और हमारी दीर्घकालिक समस्याएं हल हो जाएंगी।'

वीना ने अपने पति को बेहद संदेह भरी नजरों से देखा।

'हर अच्छी चीज होने वाली होती है, और हर बुरी चीज हमेशा घटित होती है।'

"यह सच नहीं है। कम से कम थोड़े समय के लिए तो मेरे साथ कुछ अच्छा हुआ है। बॉम्बे की दुकानों ने आखिरकार मेरा पैसा चुका दिया है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यह सच है। मुझे पता है कि मैं झूठ बोलने में बुरा हूँ, इसलिए मैं झूठ बोलने की कोशिश भी नहीं करता। अब नवरतन वापस लाओ।"

'पहले मुझे पैसे दिखाओ!'

केदारनाथ जोर से हंस पड़ा। वीणा की आंखों से आंसू बहने लगे।

कुछ देर रोने के बाद जब वह चुप हो गई, तो उसने पूछा, 'भास्कर कहाँ है?'

डॉ. दुर्रानी के यहाँ।

'अच्छा। मुझे उम्मीद है कि वह वहां कुछ और घंटे रुकेगा। चलो, हम दोनों चौपर का खेल खेलते हैं।'

वीना ने अपने रुमाल से अपनी आंखों को पोंछा।

'छत पर बहुत गर्मी है। तुम्हारी माँ नहीं चाहेगी कि उसका प्यारा बेटा स्याही की तरह काला पड़ जाए।'

'ठीक है, तो हम इसी कमरे में खेलेंगे,' केदारनाथ ने दृढ़ निश्चय के साथ

कहा।

*

वीना को उसी दोपहर बाद गहने वापस मिल गए। प्रिया उसे अनुमानित कीमत नहीं बता पाई; पिछली बार जब वह चुगली करने वाला जौहरी आया था, तब से वह चुड़ैल हर मिनट उसके आसपास मंडरा रही थी, इसलिए उसने जल्दबाजी के बजाय सावधानी बरतने का फैसला किया था।

वीना ने नवरतन की ओर देखा और बारी-बारी से प्रत्येक पत्थर को यादों भरी निगाहों से निहारा।

उसी शाम तड़के, केदारनाथ इसे लेकर अपने ससुर के पास गए और उनसे इसे प्रेम निवास में अपनी देखरेख में रखने का अनुरोध किया।

महेश कपूर ने पूछा, 'आखिर किसलिए? तुम मुझे इन छोटी-मोटी चीजों से क्यों परेशान कर रहे हो?'

'बाओजी, यह वीना की है, और मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि वह इसे अपने पास रखे। अगर यह मेरे घर में रही, तो हो सकता है कि उसे अचानक कोई नेक विचार आ जाए और वह इसे गिरवी रख दे।'

'इसे गिरवी रख दें?'

इसे गिरवी रख दो या बेच दो।

'यह क्या पागलपन है। आखिर चल क्या रहा है? क्या मेरे सभी बच्चे अपना मानसिक संतुलन खो बैठे हैं?'

नवरतन घटना का संक्षिप्त विवरण देने के बाद महेश कपूर ने कहा:

'और हड़ताल खत्म होने के बाद अब आपका कारोबार कैसा चल रहा है?'

मैं यह नहीं कह सकता कि सब कुछ ठीक चल रहा है—लेकिन अभी तक सब कुछ ठप भी नहीं हुआ है।'

'केदारनाथ, मेरी खेती का काम संभालो।'

नहीं, लेकिन धन्यवाद, बाओजी। मुझे अब वापस जाना चाहिए। बाज़ार खुल गया होगा। तभी उनके मन में एक और विचार आया। और वैसे भी, बाओजी, अगर मैं मिसरी मंडी छोड़ दूं तो आपके निर्वाचन क्षेत्र की परवाह कौन करेगा?

'सच है। ठीक है। कोई बात नहीं। अच्छा हुआ कि आपको वापस जाना पड़ रहा है क्योंकि मुझे कल सुबह से पहले इन फाइलों को निपटाना है,' महेश कपूर ने रूखेपन से कहा। 'मैं पूरी रात काम करूंगा। इसे कहीं यहीं रख दीजिए।'

'क्या—फाइलों पर, बाओजी?' मेज पर नवरतन को रखने के लिए और कोई जगह नहीं थी।

'और कहाँ—मेरे गले में? हाँ, हाँ, उस गुलाबी वाले पर: "मूल्यांकन प्रस्तावों पर राज्य सरकार के आदेश"। इतना परेशान मत दिखो, केदारनाथ, यह फिर से गायब नहीं होगा। मैं देख लूँगा कि वीना की माँ इस बेवकूफी भरी चीज़ को कहीं रख दे।'

6.22

उसी रात राजकुमार और उसके दोस्तों के घर में, मान ने फ्लश पर जुआ खेलते हुए दो सौ रुपये से अधिक हार दिए। वह आमतौर पर अपने कार्ड बहुत देर तक अपने पास रखता था, फिर उन्हें छोड़ देता था या दिखाने के लिए कहता था। उसका आशावादी स्वभाव उसकी जीत की संभावनाओं के लिए घातक साबित हुआ। इसके अलावा, वह बिल्कुल भी भावहीन नहीं था, और उसके साथी खिलाड़ियों को उसके कार्ड उठाते ही अंदाजा हो जाता था कि उसके कार्ड कितने अच्छे हैं। वह हर बार दस रुपये या उससे अधिक हार जाता था—और जब उसके पास तीन बादशाह होते थे, तब भी उसे केवल चार रुपये ही मिलते थे।

जितना ज्यादा वह पीता था, उतना ही ज्यादा वह हारता था, और इसका

उल्टा भी सच था।
जब भी कोई रानी या बेगम उसके हाथ लगती, तो उसे बेगम साहिबा की याद सताती, जिनसे वह इन दिनों बहुत कम मिल पाता था। वह महसूस कर सकता था कि उनके बीच आपसी उत्साह और स्नेह के बावजूद, जैसे-जैसे वह अधिक गंभीर होता जा रहा था, बेगम साहिबा को वह कम मनोरंजक लगने लगा था।
पूरी तरह से साफ हो जाने के बाद, उसने लड़खड़ाती आवाज में बुदबुदाते हुए कहा कि उसे जाना होगा।
राजकुमार ने सुझाव दिया, 'अगर आप चाहें तो आज रात यहीं रुक सकते हैं—सुबह घर चले जाना।'
'नहीं, नहीं—' मान ने कहा और चला गया।
वह सईदा बाई के घर की ओर चला गया, रास्ते में कुछ कविताएँ सुनाता रहा और बीच-बीच में गीत भी गाता रहा।
आधी रात हो चुकी थी। चौकीदार ने उसकी हालत देखकर उसे घर जाने को कहा। मान ने गाना शुरू किया और सईदा बाई से प्रार्थना की:
'यह तो सिर्फ एक दिल है, ईंट और पत्थर नहीं, तो फिर इसमें दर्द क्यों नहीं होना चाहिए?'
हां, मैं हजार बार रोऊंगी, तुम मुझे व्यर्थ में क्यों यातना दे रहे हो?
'कपूर साहब, आप गली के सबको जगा देंगे,' चौकीदार ने बेफिक्री से कहा। पिछली रात उनके बीच हुई कहासुनी को लेकर मान के मन में कोई द्वेष नहीं था।
बिब्बो बाहर आया और मान को धीरे से डांटा। "कृपया घर जाइए, दाग साहब। यह एक इज्जतदार घर है। बेगम साहिबा ने पूछा कि कौन गा रहा है, और जब मैंने उन्हें बताया, तो वह बहुत नाराज़ हो गईं। मुझे लगता है कि वह आपको बहुत पसंद करती हैं, दाग साहब, लेकिन वह आज रात

आपसे नहीं मिलेंगी, और उन्होंने मुझसे कहा है कि वह आपको इस हालत में कभी नहीं देखेंगी। कृपया मेरी गुस्ताखी के लिए मुझे माफ कर दीजिए, मैं बस उनके शब्दों को दोहरा रहा हूँ।"

'यह सिर्फ एक दिल है, ईंट और पत्थर नहीं,' मान ने गाया।

'आइए, साहब,' चौकीदार ने शांत भाव से कहा और मान को धीरे से लेकिन दृढ़ता से प्रेम निवास की दिशा में गली से नीचे ले गया।

'ये लो, ये तुम्हारे लिए है—तुम अच्छे आदमी हो—' मान ने अपने कुर्ते की जेबों में हाथ डालते हुए कहा। उसने जेबें उलट-पलट कर देखीं, लेकिन उनमें पैसे नहीं थे।

उन्होंने सुझाव दिया, 'मेरी सलाह को ध्यान में रखें।'

'जी साहब,' चौकीदार ने कहा और गुलाबी रंग के घर की ओर मुड़ गया।

6.23

नशे में धुत, कंगाल और बेहद उदास, मान लड़खड़ाते हुए प्रेम निवास लौटा। उसे आश्चर्य और कुछ हद तक असमंजस की स्थिति में यह देखकर निराशा हुई कि उसकी माँ फिर से उसका इंतज़ार कर रही थी। उसे देखते ही उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। वह नवरतन के मामले को लेकर पहले से ही बहुत परेशान थी।

'मान, मेरे प्यारे बेटे, तुम्हें क्या हो गया है? उसने मेरे बेटे के साथ क्या किया है? क्या तुम जानते हो कि लोग तुम्हारे बारे में क्या कह रहे हैं? बनारस के लोग भी अब जान चुके हैं।'

'कौन से बनारस के लोग?' मान ने उत्सुकतावश पूछा।

'बनारस के लोग?' श्रीमती महेश कपूर ने पूछा और और भी ज़ोर से रोने लगीं। उनके बेटे की सांसों से व्हिस्की की तेज़ गंध आ रही थी।

मान ने अपना हाथ उसके कंधे पर रखते हुए उसे सोने के लिए कहा। उसने मान से कहा कि वह बगीचे की सीढ़ियों से होते हुए अपने कमरे में

चला जाए ताकि उसके पिता को परेशानी न हो, जो अपने दफ्तर में देर तक काम कर रहे थे।

लेकिन मान, जिसने इस आखिरी निर्देश को नहीं समझा था, गुनगुनाते हुए मुख्य सीढ़ियों के पास स्थित अपने बिस्तर पर चला गया।

'कौन है? कौन है? क्या यह मान है?' उसके पिता की गुस्से भरी आवाज आई।

'जी हां, बाओजी,' मान ने कहा और सीढ़ियों पर चढ़ना जारी रखा।

'क्या तुमने मुझे सुना?' उसके पिता ने इतनी तेज आवाज में पुकारा कि प्रेम निवास के आधे हिस्से में उसकी आवाज गूंज उठी।

'हाँ, बाओजी,' मान रुका।

'तो फिर तुरंत नीचे आ जाओ।'

'जी हां, बाओजी।' मान लड़खड़ाते हुए सीढ़ियों से नीचे उतरा और अपने पिता के दफ्तर में घुस गया।

वह उस छोटी मेज के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया, जहाँ उसके पिता बैठे थे। दफ्तर में उन दोनों के अलावा कोई नहीं था, और कुछ छिपकलियाँ उनकी बातचीत के दौरान छत पर इधर-उधर भागती रहीं।

'खड़े हो जाओ। क्या मैंने तुम्हें बैठने के लिए कहा था?'

मान उठने की कोशिश कर रहा था, लेकिन नाकाम रहा। फिर उसने दोबारा कोशिश की और मेज के उस पार अपने पिता की ओर झुक गया। उसकी आँखें बेजान सी थीं। मेज पर रखे कागज़ और पिता के हाथ के पास रखा पानी का गिलास उसे डरा रहे थे।

महेश कपूर खड़े हो गए, उनके होंठ कसे हुए थे, आँखें सख्त थीं। उनके दाहिने हाथ में एक फाइल थी, जिसे उन्होंने धीरे से अपने बाएं हाथ में ले लिया। वे मान को ज़ोर से थप्पड़ मारने ही वाले थे कि तभी श्रीमती महेश कपूर अंदर आईं और बोलीं:

ऐसा मत करो—ऐसा मत करो—ऐसा मत करो—
उसकी आवाज़ और आँखों में अपने पति के लिए विनती थी, और वह मान गया। इसी बीच, मान ने अपनी आँखें बंद कर लीं और कुर्सी पर वापस लेट गया। उसे नींद आने लगी।
उसके पिता क्रोधित होकर मेज के चारों ओर आए और उसे इस तरह हिलाने लगे मानो वे उसके शरीर की हर हड्डी को हिला देना चाहते हों।
'बाओजी!' मान ने उस अनुभूति से जागते हुए कहा और हंसने लगा।
उसके पिता ने अपना दाहिना हाथ फिर उठाया और हथेली के पिछले हिस्से से अपने पच्चीस वर्षीय बेटे के चेहरे पर एक जोरदार थप्पड़ मारा। मान चौंक गया, अपने पिता को घूरता रहा और अपना हाथ उठाकर अपने गाल को छुआ।
श्रीमती महेश कपूर दीवार के किनारे बनी बेंचों में से एक पर बैठ गईं। वह रो रही थीं।
'अब सुनो, मान, वरना फिर वही सब झेलना पड़ेगा—मेरी बात सुनो,' उसके पिता ने गुस्से से कहा, अब उनकी पत्नी उनके किए पर रो रही थी। 'मुझे परवाह नहीं कि कल सुबह तुम्हें कितना याद रहेगा, लेकिन मैं तुम्हारे होश में आने का इंतज़ार नहीं करने वाला। समझे?' उन्होंने अपनी आवाज़ ऊँची करके दोहराया, 'समझे?'
मान ने सिर हिलाया, अपनी पहली सहज प्रतिक्रिया को दबाते हुए, जो कि आँखें बंद करने की थी। उसे इतनी नींद आ रही थी कि वह अपने होश में आते-जाते कुछ शब्दों को ही सुन पा रहा था। उसे कहीं न कहीं एक अजीब सा दर्द महसूस हो रहा था। पर किसका?
'क्या तुमने खुद को देखा है? क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि तुम कैसे दिखते हो? तुम्हारे बाल बिखरे हुए, तुम्हारी आँखें बेजान, तुम्हारी जेबें बाहर लटकी हुई, तुम्हारे कुर्ते पर व्हिस्की का दाग लगा हुआ—'

मान ने अपना सिर हिलाया, फिर उसे धीरे से अपनी छाती पर टिका दिया। वह बस अपने दिमाग के बाहर चल रही हर चीज़ को रोकना चाहता था: यह गुस्से वाला चेहरा, यह चीख-पुकार, यह झुनझुनी।
उसने जम्हाई ली।
महेश कपूर ने गिलास उठाया और मान के चेहरे पर पानी फेंक दिया। कुछ पानी उनके अपने कागजों पर भी गिरा, लेकिन उन्होंने उनकी तरफ देखा तक नहीं। मान खांसने लगा, उसका गला रुंध गया और वह अचानक उठ बैठा। उसकी माँ ने अपने हाथों से अपनी आँखें ढक लीं और रोने लगी।
'आपने पैसों का क्या किया? आपने उन पैसों का क्या किया?' महेश कपूर ने पूछा।
'कौन सा पैसा?' मान ने पूछा, अपने कुर्ते के सामने से पानी की बूंदों को टपकते हुए देखते हुए, एक नाला उसके व्हिस्की के दाग की राह पर बह रहा था।
‘व्यापार से प्राप्त धन।’
मान ने कंधे उचकाए और एकाग्रता से भौंहें सिकोड़ीं।
‘और वो खर्च के पैसे जो मैंने तुम्हें दिए थे?’ उसके पिता ने धमकी भरे लहजे में पूछा।
मान ने और भी गहरी एकाग्रता में भौंहें चढ़ाईं और फिर से कंधे उचका दिए।
‘तुमने उसका क्या किया? मैं तुम्हें बताता हूँ तुमने उसका क्या किया—तुमने उसे उस वेश्या पर खर्च कर दिया।’ महेश कपूर ने सईदा बाई के बारे में कभी ऐसे शब्दों का इस्तेमाल नहीं किया होता अगर उन पर इतना दबाव न डाला गया होता।
श्रीमती महेश कपूर ने अपने कान हाथों से ढक लिए। उनके पति ने चिढ़कर कहा। उन्हें लगा कि वह गांधीजी के तीनों बंदरों की तरह व्यवहार

कर रही हैं। अब तो वह अपना मुंह भी हाथों से ढक लेंगी।
मान ने अपने पिता की ओर देखा, एक पल सोचा, फिर बोला, 'नहीं। मैं तो बस उसके लिए छोटे-मोटे तोहफे लाया था। उसने कभी कुछ और नहीं माँगा।...' वह मन ही मन सोच रहा था कि पैसे कहाँ गए होंगे।
'तो फिर तुमने शराब पीकर और जुआ खेलकर सब कुछ गंवा दिया होगा,' उसके पिता ने गुस्से से कहा।
हां, यही तो था, मान ने राहत भरी सांस लेते हुए याद किया। उसने प्रसन्न स्वर में कहा, मानो लंबे प्रयास के बाद अचानक कोई अनसुलझी समस्या हल हो गई हो।
'हाँ, यही बात है, बाओजी। नशे में धुत—जुआ खेला—गया।' तभी उसे अपने आखिरी शब्द का अर्थ समझ आया और वह शर्मिंदा हो गया।
'बेशर्म—बेशर्म—तुम एक भ्रष्ट जमींदार से भी बदतर व्यवहार कर रहे हो, और मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूँगा,' महेश कपूर चिल्लाए। उन्होंने अपने सामने रखी गुलाबी फाइल को पटका। 'मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूँगा, और मैं तुम्हें यहाँ और नहीं रहने दूँगा। शहर से निकल जाओ, ब्रह्मपुर से निकल जाओ। तुरंत निकल जाओ। मैं तुम्हें यहाँ नहीं रहने दूँगा। तुम अपनी माँ की शांति, अपना जीवन, मेरा राजनीतिक करियर और हमारे परिवार की प्रतिष्ठा को बर्बाद कर रहे हो। मैं तुम्हें पैसा देता हूँ, और तुम उसका क्या करते हो?—तुम उससे जुआ खेलते हो या वेश्याओं पर या शराब पर खर्च करते हो। क्या अय्याशी ही तुम्हारा एकमात्र हुनर है? मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे अपने बेटे पर शर्म आएगी। अगर तुम किसी को सचमुच मुश्किलों में देखना चाहते हो तो अपने साले को देखो—वह अपने कारोबार के लिए कभी पैसे नहीं माँगता, "इसके लिए और उसके लिए" तो दूर की बात है। और तुम्हारी मंगेतर का क्या?' हम एक अच्छे परिवार से एक उपयुक्त लड़की ढूंढते हैं, हम आपके लिए एक अच्छा रिश्ता तय

करते हैं—और फिर आप सईदा बाई के पीछे भागते हैं, जिनका जीवन और इतिहास एक खुली किताब की तरह है।'

'लेकिन मैं उससे प्यार करता हूँ,' मान ने कहा।

'प्यार?' उसके पिता ने अविश्वास और क्रोध से भरी आवाज़ में कहा। 'तुरंत सो जाओ। इस घर में यह तुम्हारी आखिरी रात है। मैं चाहता हूँ कि तुम कल तक यहाँ से निकल जाओ। निकल जाओ! बनारस जाओ या जहाँ भी जाना चाहो, लेकिन ब्रह्मपुर से निकल जाओ। निकल जाओ!'

श्रीमती महेश कपूर ने अपने पति से इस कठोर आदेश को वापस लेने की विनती की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। मान ने छत पर इधर-उधर भागती हुई दो छिपकलियों को देखा। फिर अचानक, वह बड़े दृढ़ संकल्प के साथ और बिना किसी सहायता के उठ खड़ा हुआ और बोला:

ठीक है। शुभ रात्रि! शुभ रात्रि! शुभ रात्रि! मैं चलता हूँ! मैं कल इस घर से निकल जाऊंगा।

और वह बिना किसी की मदद के बिस्तर पर चला गया, यहां तक कि सोने से पहले अपने जूते उतारना भी उसे याद रहा।

6.24

अगली सुबह वह भयानक सिरदर्द के साथ उठा, जो चमत्कारिक रूप से कुछ ही घंटों में ठीक हो गया। उसे याद आया कि उसके पिता और उसके बीच कहा-सुनी हुई थी, और राजस्व मंत्री के विधानसभा जाने तक उसने इंतजार किया, फिर अपनी माँ से पूछा कि उन दोनों के बीच क्या कहा गया था। श्रीमती महेश कपूर बहुत परेशान थीं: उनके पति पिछली रात इतने गुस्से में थे कि घंटों सोए नहीं थे। न ही वे काम कर पाए थे, जिससे उनका गुस्सा और बढ़ गया था। सुलह की उनकी किसी भी कोशिश का उन्होंने लगभग बेकाबू गुस्से में जवाब दिया था। उन्हें एहसास हुआ कि वे गंभीर हैं, कि मान को जाना ही होगा। अपने बेटे को गले लगाते हुए

उन्होंने कहा:

'बनारस वापस जाओ, कड़ी मेहनत करो, जिम्मेदारी से व्यवहार करो, अपने पिता का दिल फिर से जीत लो।'

इन चारों शर्तों में से कोई भी मान को खास पसंद नहीं आई, लेकिन उसने अपनी माँ को भरोसा दिलाया कि वह प्रेम निवास में अब और कोई परेशानी नहीं खड़ी करेगा। उसने एक नौकर को अपना सामान पैक करने का आदेश दिया। उसने तय किया कि वह फिरोज के साथ रहेगा; या अगर वहाँ नहीं तो प्राण के साथ; या अगर वहाँ भी नहीं तो राजकुमार और उसके दोस्तों के साथ; या फिर ब्रह्मपुर में कहीं और। वह इस खूबसूरत शहर को नहीं छोड़ेगा और न ही अपनी प्रेमिका से मिलने का मौका गंवाएगा, सिर्फ इसलिए कि उसके असंतुष्ट और रूखे पिता ने उसे ऐसा करने को कहा था।

'क्या मैं आपके पिता के पीए से बनारस के लिए आपका टिकट बुक करवा दूं?' श्रीमती महेश कपूर ने पूछा।

नहीं। अगर जरूरत पड़ी तो मैं स्टेशन पर ही ऐसा कर लूंगा।

दाढ़ी बनाने और नहाने के बाद उसने साफ-सुथरा सफेद कुर्ता-पायजामा पहना और थोड़ा शर्मिंदा होकर सईदा बाई के घर की ओर चल पड़ा। अगर वह उतना ही नशे में था जितना उसकी माँ को लगता था, तो उसे लगा कि सईदा बाई के घर के बाहर भी वह उतना ही नशे में रहा होगा, जहाँ उसे हल्का-सा एहसास था कि वह गया था।

वह सईदा बाई के घर पहुंचा। उसे अंदर आने दिया गया। जाहिर तौर पर, उसका इंतजार हो रहा था।

सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उसने आईने में खुद को देखा। पहले के विपरीत, अब वह खुद को काफी आलोचनात्मक नज़र से देख रहा था। उसके सिर पर एक सफेद, कढ़ाईदार टोपी थी; उसने उसे उतारकर अपने समय से पहले

झड़ते बालों को गौर से देखा और फिर से पहन लिया। मन ही मन सोचते हुए उसे लगा कि शायद सईदा बाई को उसका गंजापन ही पसंद नहीं है। लेकिन मैं क्या कर सकता हूँ? उसने सोचा।

जब सईदा बाई ने गलियारे में उनके कदमों की आहट सुनी, तो उन्होंने स्वागत भरे स्वर में कहा, 'अंदर आइए, अंदर आइए, दाग साहब। आज आपके कदमों की आहट नियमित लग रही है। आशा है कि आपका हृदय भी नियमित रूप से धड़क रहा होगा।'

सईदा बाई मान के बारे में काफी सोच-विचार करने के बाद इस नतीजे पर पहुंचीं कि कुछ तो करना ही होगा। हालांकि उन्हें यह मानना पड़ा कि वह उनके लिए अच्छा था, लेकिन वह उनके समय और ऊर्जा की बहुत ज्यादा मांग करने लगा था, हद से ज्यादा आसक्ति दिखाने लगा था, जिसे संभालना उनके लिए मुश्किल हो रहा था।

जब मान ने उसे अपने पिता के साथ हुए झगड़े और घर से निकाले जाने की बात बताई, तो वह बहुत दुखी हुई। प्रेम निवास, जहाँ वह होली पर नियमित रूप से गाती थी और एक बार दशहरा पर भी गा चुकी थी, उसके वार्षिक कार्यक्रम का एक नियमित हिस्सा बन चुका था। उसे अपनी आमदनी के बारे में सोचना पड़ा। साथ ही, वह यह भी नहीं चाहती थी कि उसका युवा मित्र अपने पिता के साथ परेशानी में रहे। उसने उससे पूछा, 'तुम कहाँ जाने का इरादा रखते हो?'

‘कहीं नहीं!’ मान ने हैरानी से कहा। ‘मेरे पिता को घमंड सवार है। उन्हें लगता है कि जब वे लाखों जमींदारों की विरासत छीन सकते हैं, तो वे उतनी ही आसानी से अपने बेटे को भी हुकुम चला सकते हैं। मैं ब्रह्मपुर में दोस्तों के साथ रहूँगा।’ तभी अचानक उनके मन में एक विचार आया।

‘यहाँ क्यों नहीं?’ उन्होंने पूछा।

‘टोबा, टोबा!’ सईदा बाई ने हैरानी से अपने कानों पर हाथ रखते हुए

कहा।
‘मैं तुमसे क्यों अलग होऊं? उस कस्बे से जहां तुम रहती हो?’ वह उसकी ओर झुका और उसे गले लगाने लगा। ‘और तुम्हारा रसोइया कितने स्वादिष्ट शमी कबाब बनाता है,’ उसने आगे कहा।
सईदा बाई मान के उत्साह से प्रसन्न तो हुई होंगी, लेकिन वह गहरी सोच में डूबी हुई थीं। उन्होंने खुद को अलग करते हुए कहा, 'मैं जानती हूं, मुझे पता है कि तुम्हें क्या करना चाहिए।'
'हम्म,' मान ने खुद को फिर से काम में लगाने की कोशिश करते हुए कहा।
‘दाग साहब, कृपया शांत बैठिए और सुनिए,’ सईदा बाई ने नज़ाकत भरी आवाज़ में कहा। ‘आप मेरे करीब आना चाहते हैं, मुझे समझना चाहते हैं, है ना?’
'जी हां, बिल्कुल।'
'क्यों, दाग साहब?'
‘क्यों?’ मान ने अविश्वास से पूछा।
‘क्यों?’ सईदा बाई ने लगातार पूछा।
'क्योंकि मुझे तुमसे प्यार है।'
‘प्रेम क्या है—यह एक ऐसी दुर्भावना चीज है जो दोस्तों को भी दुश्मन बना देती है?’
यह सब मान के लिए असहनीय था, जो अमूर्त अटकलों में उलझने के मूड में नहीं था। अचानक उसके मन में एक भयानक विचार आया: 'क्या तुम चाहते हो कि मैं भी चलूँ?'
सईदा बाई चुप रहीं, फिर उन्होंने अपनी साड़ी, जो थोड़ी नीचे खिसक गई थी, को खींचकर वापस अपने सिर पर डाल लिया। काजल से काली की गई उनकी आंखें मानो मान की आत्मा में झांक रही थीं।

'दाग़ साहब, दाग़ साहब!' उसने उसे डाँटा।
मान को तुरंत पछतावा हुआ और उसने अपना सिर झुका लिया। उसने कहा, 'मुझे बस यही डर था कि कहीं तुम दूरी के जरिए हमारे प्यार की परीक्षा न लेना चाहो।'
उसने उदास होकर उससे कहा, 'इससे मुझे भी उतना ही दर्द होगा जितना तुम्हें। लेकिन मैं जो सोच रही थी वह बिल्कुल अलग था।'
वह चुप रही, फिर उसने हारमोनियम पर कुछ सुर बजाए और बोली:
'तुम्हारे उर्दू शिक्षक रशीद कुछ दिनों में अपने गाँव जा रहे हैं। वे एक महीने के लिए चले जाएँगे। मुझे नहीं पता कि उनकी अनुपस्थिति में तसनीम के लिए अरबी शिक्षक और तुम्हारे लिए उर्दू शिक्षक का इंतज़ाम कैसे करूँ। और मुझे लगता है कि मुझे सही मायने में समझने के लिए, मेरी कला की सराहना करने के लिए, मेरे जुनून से जुड़ने के लिए, तुम्हें मेरी भाषा सीखनी होगी, उस कविता की भाषा जो मैं सुनाती हूँ, उस ग़ज़ल की भाषा जो मैं गाती हूँ, उस विचार की भाषा जो मैं सोचती हूँ।'
'हां, हां,' मान ने मंत्रमुग्ध होकर फुसफुसाया।
इसलिए आपको अपने उर्दू शिक्षक के साथ कुछ समय के लिए—एक महीने के लिए—गांव जाना होगा।
'क्या?' मान चिल्लाया, उसे लगा जैसे उसके चेहरे पर पानी का एक और गिलास फेंक दिया गया हो।
सईदा बाई अपनी समस्या के समाधान से इतनी परेशान थीं कि कुछ ही मिनटों में मान उन्हें सांत्वना देने लगा, न कि सईदा बाई ने उदास होकर अपने होंठ दबाते हुए बुदबुदाया, "यह तो स्पष्ट समाधान था, लेकिन उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वह उससे अलग रहना कैसे सहन कर पाएंगी।"
उन्होंने सईदा को भरोसा दिलाया कि समस्या का यही एकमात्र समाधान है: भले ही गाँव में उनके पास रहने की जगह न हो, वह खुले में सोएंगे,

उनकी आत्मा की भाषा में बोलेंगे, सोचेंगे और लिखेंगे, उन्हें किसी फरिश्ते की उर्दू में लिखे पत्र भेजेंगे। उनके पिता भी उन पर गर्व करेंगे।

'आपने मुझे यह दिखा दिया है कि इसके अलावा कोई और रास्ता नहीं है,' सईदा बाई ने धीरे-धीरे खुद को आश्वस्त होने देते हुए अंततः कहा।

मान ने देखा कि उनके साथ कमरे में मौजूद तोता उसे तिरस्कार भरी नजरों से देख रहा था। उसने भौंहें चढ़ा लीं।

'रशीद कब जा रहा है?'

'कल।'

मान का चेहरा पीला पड़ गया। 'लेकिन अब तो सिर्फ आज रात ही बची है!' वह रोते हुए बोला, उसका दिल बैठ गया था। उसका साहस जवाब दे गया। 'नहीं—मैं नहीं जा सकता—मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जा सकता।'

'दाग साहब, यदि आप अपने ही तर्क के प्रति अविश्वासी हैं, तो मैं कैसे विश्वास कर सकता हूँ कि आप मेरे प्रति वफादार रहेंगे?'

'तो मुझे आज शाम यहीं बितानी होगी। एक महीने में यह हमारी आखिरी रात होगी।'

एक महीना? जैसे ही उसने यह शब्द कहा, उसके मन में यह विचार कौंध गया। उसने इसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया।

'आज शाम यह संभव नहीं होगा,' सईदा बाई ने अपनी प्रतिबद्धताओं के बारे में सोचते हुए व्यावहारिक लहजे में कहा।

'तो मैं नहीं जाऊंगा,' मान रोते हुए बोला। 'मैं नहीं जा सकता। मैं कैसे जा सकता हूं? वैसे भी, हमने रशीद से सलाह नहीं ली है।'

'रशीद को आपका आतिथ्य सत्कार करने में गर्व होगा। वह आपके पिता का बहुत सम्मान करता है—निस्संदेह उनकी कुशल लकड़हारा होने की वजह से—और, निश्चित रूप से, वह आपका भी बहुत सम्मान करता है—निस्संदेह आपकी सुलेखक होने की कुशलता की वजह से।'

‘मुझे आज रात तुमसे मिलना ही है,’ मान ने ज़िद की। ‘ज़रूर।’ ‘कौन सा लकड़हारा?’ उसने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।

सईदा बाई ने आह भरी। ‘दाग साहब, बरगद के पेड़ को काटना बहुत मुश्किल है, खासकर ऐसे पेड़ को जो इस प्रांत की मिट्टी में इतने लंबे समय से जड़ जमाए हुए हो। लेकिन मैं आपके पिता की अधीर कुल्हाड़ी को इसके आखिरी तने पर चलते हुए सुन सकती हूँ। जल्द ही यह ज़मीन से उखड़ जाएगा। इसकी जड़ों से साँप भगा दिए जाएँगे और इसकी सड़ी हुई लकड़ी से दीमक जलकर राख हो जाएँगे। लेकिन उन पक्षियों और बंदरों का क्या होगा जो इसकी शाखाओं में गाते-चहचहाते थे? मुझे यह बताइए, दाग साहब। आज हमारे यहाँ यही स्थिति है।’ फिर, मान को उदास देखकर, उन्होंने एक और आह भरते हुए कहा: ‘सुबह एक बजे आइएगा। मैं आपके दोस्त चौकीदार से कहूँगी कि वह शहंशाह का भव्य प्रवेश करवाए।’

मान को लगा कि शायद वह उस पर हंस रही है। लेकिन आज रात उससे मिलने की उम्मीद ने उसे तुरंत खुश कर दिया, भले ही वह जानता था कि वह बस उसके कड़वे घूंट को मीठा बना रही है।

‘बेशक, मैं कुछ भी वादा नहीं कर सकती,’ सईदा बाई ने आगे कहा। ‘अगर वह आपसे कहे कि मैं सो रही हूँ, तो आपको हंगामा नहीं करना चाहिए या पड़ोसियों को जगाना नहीं चाहिए।’

अब आह भरने की बारी मान की थी:

अगर मीर इतनी जोर-जोर से रोता रहे,

उसका पड़ोसी कैसे सोता रह सकता है?

लेकिन, जैसा कि हुआ, सब कुछ ठीक हो गया। अब्दुर रशीद मान को अपने गाँव में रखने और उसे उर्दू पढ़ाना जारी रखने के लिए राज़ी हो गए। महेश कपूर, जिन्हें डर था कि मान ब्रह्मपुर में रहकर उनकी बात न मानने

की कोशिश कर सकता है, बनारस न जाने से ज़्यादा नाराज़ नहीं थे, क्योंकि वे जानते थे कि मान के बिना भी कपड़ा व्यवसाय अच्छा चल रहा था। श्रीमती महेश कपूर (हालाँकि उन्हें मान की कमी खलेगी) इस बात से खुश थीं कि मान एक सख्त और गंभीर शिक्षक की देखरेख में रहेगा और 'उस' से दूर रहेगा। मान को कम से कम सईदा बाई के साथ एक आखिरी प्रेममय रात का आनंद तो मिला ही। और सुबह होने पर सईदा बाई ने राहत की साँस ली, जिसमें थोड़ी सी उदासी भी थी।

कुछ घंटों बाद, उदास मान, अपने पिता और प्रेमिका द्वारा इतनी सफाई से जकड़े जाने से परेशान और चिढ़कर, रशीद के साथ, जो उस क्षण केवल भीड़भाड़ वाले ब्रह्मपुर से निकलकर ग्रामीण इलाकों के खुलेपन में आने के सुख का अनुभव कर रहा था, एक नैरो-गेज ट्रेन में सवार हुए, जो एक कष्टदायक धीमी और रुक-रुक कर चलने वाले चाप में रुधिया जिले और रशीद के पैतृक गांव की ओर मुड़ी।

6.25

रशीद के जाने के बाद ही तसनीम को एहसास हुआ कि उसे अरबी की पढ़ाई में कितना आनंद आता था। उसके सारे काम घर-परिवार से जुड़े थे और उससे उसे बाहरी दुनिया से कोई परिचय नहीं मिलता था। लेकिन उसके गंभीर युवा शिक्षक ने व्याकरण के महत्व पर जोर देते हुए और मुश्किलों का सामना करने पर तसनीम के भागने की प्रवृत्ति को न मानते हुए, उसे यह एहसास दिलाया था कि उसके अंदर एक ऐसी लगन और मेहनत करने की क्षमता छिपी है जिसके बारे में उसे पहले पता नहीं था। वह उनकी प्रशंसा भी करती थी, क्योंकि वे अपने परिवार के सहारे के बिना ही दुनिया में अपना रास्ता बना रहे थे। और जब उन्होंने कुरान की एक आयत समझाते हुए तसनीम की बहन के बुलावे का जवाब देने से इनकार कर दिया, तो तसनीम ने उनके इस सिद्धांत की बहुत सराहना

की।
यह सारी प्रशंसा मौन थी। रशीद ने कभी भी यह संकेत नहीं दिया था कि वह एक शिक्षक के अलावा किसी और रूप में उसमें रुचि रखता है। किताब पर उनके हाथ कभी गलती से भी नहीं छूए थे। हफ्तों के अंतराल में ऐसा न होना उसकी ओर से जानबूझकर की गई योजना को दर्शाता है, क्योंकि सामान्य और निर्दोष परिस्थितियों में यह संयोग से ही हो सकता था, भले ही वे बाद में तुरंत पीछे हट गए होते।
अब वह एक महीने के लिए ब्रह्मपुर से बाहर रहेगा, और तसनीम को बहुत दुख हुआ, अरबी की पढ़ाई छूटने से कहीं ज़्यादा। इशाक खान ने उसकी मनोदशा और उसके कारण को भांपते हुए उसे खुश करने की कोशिश की।
'सुनो, तसनीम।'
'जी हां, इशाक भाई?' तसनीम ने थोड़ी बेरुखी से जवाब दिया।
'तुम बार-बार "भाई" क्यों कह रहे हो?' इशाक ने कहा।
तसनीम चुप रही।
'ठीक है, अगर आप चाहें तो मुझे भाई कह सकते हैं—बस उस आंसू भरे मूड से बाहर निकल जाइए।'
'मैं नहीं कर सकती,' तसनीम ने कहा। 'मैं दुखी महसूस कर रही हूँ।'
'बेचारा तसनीम। वह वापस जरूर आएगा,' इशाक ने सहानुभूति जताते हुए कहा।
'मैं उसके बारे में नहीं सोच रही थी,' तसनीम ने झट से कहा। 'मैं सोच रही थी कि अब मेरे पास उपन्यास पढ़ने और सब्जियां काटने के अलावा कुछ भी काम का नहीं होगा। सीखने के लिए कुछ भी उपयोगी नहीं होगा —'
'खैर, आप सीख न भी पाएं तो भी पढ़ा सकते हैं,' इशाक खान ने

होशियार दिखने की कोशिश करते हुए कहा।
'पढ़ाना?'
'मिया मिट्ठू को बोलना सिखाओ। तोते की शिक्षा में जीवन के पहले कुछ महीने बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।'
तसनीम एक पल के लिए खिल उठी। फिर बोली, “आपा ने मेरे तोते पर अपना कब्ज़ा जमा लिया है। पिंजरा हमेशा उनके कमरे में रहता है, मेरे कमरे में कभी नहीं।” उसने आह भरी। फिर धीमी आवाज़ में बोली, “लगता है मेरी हर चीज़ उनकी हो जाती है।”
इशाक खान ने बहादुरी से कहा, 'मैं इसे ले आऊंगा।'
‘अरे, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए,’ तसनीम ने कहा। ‘तुम्हारे हाथ—’
'ओह, मैं उतना भी अपंग नहीं हूँ जितना सब सोचते हैं।'
'लेकिन यह बहुत बुरा होगा। जब भी मैं तुम्हें अभ्यास करते हुए देखता हूँ, तुम्हारे चेहरे से पता चल जाता है कि तुम्हें कितना दर्द हो रहा है।'
‘अगर ऐसा हुआ तो क्या हुआ?’ इशाक खान ने कहा। ‘मुझे खेलना है और मुझे अभ्यास करना है।’
‘आप इसे डॉक्टर को क्यों नहीं दिखाते?’
यह ठीक हो जाएगा।
फिर भी, इसे दिखाने में कोई हर्ज नहीं है।
‘ठीक है,’ इशाक ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘मैं करूँगा, क्योंकि आपने मुझसे ऐसा करने को कहा है।’
इन दिनों जब इशाक सईदा बाई के साथ होता था, तो कभी-कभी दर्द से चीखने से खुद को रोकना उसके लिए बड़ी मुश्किल हो जाता था। उसकी कलाई का दर्द और भी बढ़ गया था। अजीब बात यह थी कि अब यह दर्द उसकी दोनों कलाईयों में फैल गया था, जबकि उसके दोनों हाथ—दायाँ हाथ धनुष पर और बायाँ हाथ डोर पर—बिल्कुल अलग-अलग काम करते

थे।

चूंकि उनकी और उनके छोटे भाइयों, जिनका वे भरण-पोषण करते थे, की आजीविका उन्हीं के हाथों पर निर्भर थी, इसलिए वे बेहद चिंतित थे। अपने बहनोई के तबादले के बारे में, इशाक ने स्टेशन निदेशक से मिलने की हिम्मत नहीं की थी—क्योंकि उन्हें कैंटीन में हुई घटना के बारे में ज़रूर पता चल गया होता और वे उनके प्रति बहुत ही प्रतिकूल रवैया रखते, खासकर तब जब स्वयं महान उस्ताद ने अपनी नाराज़गी ज़ाहिर की होती। इशाक खान को याद है कि उनके पिता उनसे कहते थे, 'रोजाना कम से कम चार घंटे अभ्यास करो। दफ्तरों में क्लर्क इससे भी ज्यादा देर तक कलम चलाते हैं, और तुम कम समय देकर अपनी कला का अपमान नहीं कर सकते।' इशाक के पिता कभी-कभी बातचीत के बीच में ही इशाक का बायां हाथ पकड़कर ध्यान से देखते थे; अगर नाखूनों पर धागे से घिसे निशानों में हाल ही में हुए अभ्यास के संकेत दिखते, तो वे कहते, 'अच्छा।' अन्यथा वे बस बातचीत जारी रखते, दिखने में भले ही नहीं, लेकिन उनकी निराशा साफ झलकती थी। हाल ही में, कलाई की नसों में असहनीय दर्द के कारण, इशाक खान दिन में एक या दो घंटे से ज्यादा अभ्यास नहीं कर पा रहे थे। लेकिन दर्द कम होते ही उन्होंने अभ्यास का समय बढ़ा दिया।

कभी-कभी अन्य मामलों पर ध्यान केंद्रित करना मुश्किल हो जाता था। पिंजरा उठाना, चाय हिलाना, दरवाजा खोलना, हर क्रिया उसे अपने हाथों की याद दिलाती थी। वह किसी से मदद नहीं मांग सकता था। अगर वह सईदा बाई को बताता कि उसके साथ चलना, खासकर तेज रास्तों में, कितना कष्टदायक हो गया है, तो क्या वह उसे दोष दे पाता अगर वह किसी और की तलाश करती?

'इतना अभ्यास करना समझदारी नहीं है। तुम्हें आराम करना चाहिए और

कोई मरहम लगाना चाहिए,' तसनीम ने धीरे से कहा।
'क्या आपको लगता है कि मैं आराम नहीं करना चाहता—क्या आपको लगता है कि मेरे लिए अभ्यास करना आसान है—'
'लेकिन आपको उचित दवा का प्रयोग करना चाहिए: ऐसा न करना बहुत ही नासमझी होगी,' तसनीम ने कहा।
'जाओ और मेरे लिए भी कुछ ले आओ,' इशाक खान ने अचानक और अप्रत्याशित तीखेपन से कहा। 'हर कोई सहानुभूति जताता है, हर कोई सलाह देता है, कोई मदद नहीं करता। जाओ—जाओ—'
वह एकदम रुक गया और अपने दाहिने हाथ से अपनी आँखें ढक लीं। वह उन्हें खोलना नहीं चाहता था।
उसने तसनीम के चौंके हुए चेहरे और हिरण जैसी आँखों में उमड़ते आँसुओं की कल्पना की। उसने सोचा, अगर दर्द ने मुझे इतना स्वार्थी बना दिया है, तो मुझे आराम करना होगा और खुद को तरोताज़ा करना होगा, भले ही इसका मतलब मेरे काम को जोखिम में डालना हो।
खुद को संभालते हुए उसने ऊँची आवाज़ में कहा, "तसनीम, तुम्हें मेरी मदद करनी होगी। अपनी बहन से बात करो और उसे वह सब बताओ जो मैं नहीं बता सकता।" उसने आह भरी। "मैं उससे बाद में बात करूँगा। इस हालत में मुझे कोई और काम नहीं मिल सकता। अगर मैं कुछ समय तक खेल भी न सकूँ, तो भी उसे मुझे काम पर रखना ही होगा।"
तसनीम ने कहा, 'हां।' उसकी आवाज से पता चल रहा था कि वह, जैसा कि उसने सोचा था, चुपचाप रो रही थी।
इशाक ने आगे कहा, 'कृपया मेरी बातों को बुरा न मानें। मैं ठीक नहीं हूँ। मैं आराम करूँगा।' उसने अपना सिर अगल-बगल हिलाया।
तसनीम ने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा। वह एकदम शांत हो गया, और जब उसने हाथ हटाया तब भी वह शांत ही रहा।

‘मैं आपा से बात करूंगी,’ उसने कहा। ‘क्या मुझे अभी जाना चाहिए?’
'हां। नहीं, थोड़ी देर यहीं रुकिए।'
‘आप किस बारे में बात करना चाहती हैं?’ तसनीम ने कहा।
‘मैं बात नहीं करना चाहता,’ इशाक ने कहा। थोड़ी देर रुककर उसने ऊपर देखा और उसका चेहरा देखा। वह आँसुओं से भीगा हुआ था।
उसने फिर नीचे देखा और फिर कहा: 'क्या मैं वह पेन इस्तेमाल कर सकता हूँ?'
तसनीम ने उसे लकड़ी का वह पेन दिया जिसकी चौड़ी, फटी हुई बांस की नोक थी और जिसे रशीद ने उसे सुलेख के लिए इस्तेमाल करने को कहा था। उससे लिखे अक्षर बड़े थे, लगभग बचकाने से भी बड़े; अक्षरों के ऊपर बने बिंदु छोटे समचतुर्भुज जैसे दिखते थे।
जब वह उसे देख रही थी, तब इशाक खान ने एक मिनट सोचा। फिर, उसने अपने अभ्यास के लिए इस्तेमाल होने वाले एक बड़े लाइनदार कागज को अपने मन में लाते हुए, कुछ प्रयास से कुछ पंक्तियाँ लिखीं और स्याही सूखने से पहले ही बिना कुछ कहे उसे सौंप दीं।
मेरे प्यारे हाथों, जो मुझे इतना दर्द देते हैं।
मैं आपकी सेवाएं दोबारा कब प्राप्त कर सकता हूँ?
हम दोबारा दोस्त कब बन सकते हैं?
मुझे क्षमा कर दीजिए, और मैं अपनी गलती सुधार लूंगा।
मैं फिर कभी लागू नहीं करूंगा
मेरी फिएट, अनुशासित और खुरदरी
आप दोनों से परामर्श किए बिना
हमें जो भी काम करना हो,
न ही इससे आपको दौरे पड़ेंगे या तकलीफ होगी।
लेकिन विनम्रता के माध्यम से आपका विश्वास जीतें।

उसने उसकी ओर देखा जबकि उसकी सुंदर, तरल आँखें दाएं से बाएं घूम रही थीं, और उसने एक प्रकार के दर्द भरे आनंद के साथ देखा कि अंतिम दोहे पर उनकी निगाह पड़ते ही उसके चेहरे पर लाली आ गई।

6.26

जब तसनीम अपनी बहन के बेडरूम में दाखिल हुई, तो उसने उसे दर्पण के सामने बैठकर अपनी पलकों पर काजल लगाते हुए पाया।

अधिकांश लोगों के चेहरे पर एक ऐसा भाव होता है जिसे वे केवल दर्पण में खुद को देखते समय ही व्यक्त करते हैं। कुछ लोग मुंह बनाते हैं, कुछ भौंहें चढ़ाते हैं, और कुछ खुद को घमंडी नज़रों से देखते हैं। सईदा बाई के चेहरे पर दर्पण में देखने के कई भाव थे। जिस प्रकार तोते से उनकी बातें प्रेम से लेकर झुंझलाहट तक, हर तरह की भावनाओं को दर्शाती थीं, ठीक वैसे ही उनके भाव भी बदलते रहते थे। जब तसनीम अंदर आई, तो सईदा बाई एक सपने में खोई हुई सी लग रही थीं और धीरे-धीरे अपना सिर इधर-उधर हिला रही थीं। यह अनुमान लगाना मुश्किल था कि उनके घने काले बालों में से एक सफेद बाल अभी-अभी निकला था, और वह सफेद बालों की तलाश कर रही थीं।

सईदा बाई की ड्रेसिंग टेबल पर रखी शीशियों और डिब्बों के बीच एक चांदी का पानदान रखा था और वह सुगंधित, अर्ध-ठोस तंबाकू जिसे किमाम कहते हैं, से सने दो पान खा रही थीं। जब तसनीम दर्पण में दिखाई दीं और उनकी नज़रें मिलीं, तो सईदा बाई के मन में सबसे पहला ख्याल यही आया कि वह, सईदा, बूढ़ी हो रही हैं और पांच साल में चालीस साल की हो जाएंगी। उनके चेहरे पर उदासी छा गई और वह दर्पण में अपने चेहरे की ओर मुड़ गईं, पहले एक आंख की पुतली में, फिर दूसरी आंख की पुतली में खुद को देखने लगीं। फिर, शाम को घर में आमंत्रित मेहमान को याद करके, उन्होंने स्नेहपूर्ण स्वागत करते हुए खुद

को देखकर मुस्कुरा दिया।
‘क्या बात है, तसनीम, बताओ,’ उसने पान के कारण कुछ अस्पष्ट स्वर में कहा।
‘आपा,’ तसनीम ने घबराते हुए कहा, ‘यह इशाक के बारे में है।’
‘क्या वह तुम्हें चिढ़ा रहा है?’ सईदा बाई ने तसनीम की घबराहट को गलत समझते हुए थोड़ी तीखी आवाज में कहा। ‘मैं उससे बात करूंगी। उसे यहाँ भेज दो।’
‘नहीं, नहीं, आपा, यह है,’ तसनीम ने कहा और अपनी बहन इशाक की कविता उसे सौंप दी।
इसे पूरा पढ़ने के बाद सईदा बाई ने इसे नीचे रख दिया और ड्रेसिंग टेबल पर रखी इकलौती लिपस्टिक से खेलने लगीं। वह कभी लिपस्टिक नहीं लगाती थीं, क्योंकि उनके होंठों में प्राकृतिक लालिमा थी जो पान लगाने से और भी बढ़ जाती थी, लेकिन यह लिपस्टिक उन्हें बहुत पहले उस मेहमान ने दी थी जो आज शाम आने वाली थीं और जिनसे उनका एक तरह से भावनात्मक लगाव था।
‘आप क्या सोचते हैं, आपा?’ तसनीम ने कहा। ‘कुछ तो बोलिए।’
सईदा बाई ने कहा, 'इसे अच्छे से व्यक्त किया गया है, लेकिन खराब तरीके से लिखा गया है, पर इसका मतलब क्या है? वह अपने हाथों के बारे में तो बात नहीं कर रहा है, है ना?'
तसनीम ने कहा, 'वे उसे बहुत तकलीफ दे रहे हैं, और उसे डर है कि अगर वह आपसे बात करेगा, तो आप उसे जाने के लिए कह देंगे।'
सईदा बाई, मान को जाने के लिए मनाने की बात याद करके मुस्कुरा उठीं और चुप रहीं। वह अपनी कलाई पर इत्र की एक बूंद लगाने ही वाली थीं कि बिब्बो हड़बड़ी में अंदर आ गईं।
‘ओह-होह, अब क्या बात है?’ सईदा बाई ने कहा। ‘जाओ, तुम अभागी

लड़की, क्या मुझे थोड़ी देर भी चैन नहीं मिल सकता? क्या तुमने तोते को दाना खिला दिया?'

'जी हां, बेगम साहिबा,' बिब्बो ने धृष्टतापूर्वक कहा। 'लेकिन मैं रसोइए को क्या बताऊं कि वह आज शाम आपको और आपके मेहमान को क्या खिलाए?'

सईदा बाई ने दर्पण में बिब्बो के प्रतिबिंब को सख्ती से संबोधित किया:

'अभागी लड़की, तुम कभी कुछ नहीं बन पाओगी—यहाँ इतने लंबे समय तक रहने के बाद भी तुमने शिष्टाचार या विवेक की जरा सी भी समझ हासिल नहीं की है।'

बिब्बो पश्चाताप करते हुए अविश्वसनीय लग रहा था। सईदा बाई ने आगे कहा, 'पता लगाओ कि रसोई के बगीचे में क्या उग रहा है और पांच मिनट बाद वापस आओ।'

जब बिब्बो गायब हो गई तो सईदा बाई ने तस्नीम से कहा:

'तो उसने तुम्हें मुझसे बात करने के लिए भेजा है, है ना?'

'नहीं,' तसनीम ने कहा। 'मैं खुद आई थी। मुझे लगा कि उसे मदद की जरूरत है।'

'क्या आपको यकीन है कि उसने कोई दुर्व्यवहार नहीं किया है?'

तसनीम ने अपना सिर हिलाया।

"शायद वो मेरे लिए एक-दो ग़ज़ल लिख दें, जिन्हें मैं गा सकूँ," सईदा बाई ने कुछ देर रुककर कहा। "मुझे उन्हें किसी काम में लगाना होगा। कम से कम अस्थायी तौर पर तो।" उन्होंने इत्र की एक बूँद लगाई। "मुझे लगता है उनका हाथ इतना ठीक है कि वो लिख सकते हैं?"

'हां,' तसनीम ने खुशी से कहा।

'तो चलिए इसे यहीं छोड़ देते हैं,' सईदा बाई ने कहा।

लेकिन उसके मन में एक स्थायी विकल्प का ख्याल चल रहा था। वह

जानती थी कि वह इशाक का सहारा अनिश्चित काल तक नहीं दे सकती —या तब तक नहीं जब तक उसके हाथ ठीक से काम करना शुरू न कर दें।

'धन्यवाद, आपा,' तस्नीम ने मुस्कुराते हुए कहा।

सईदा बाई ने चिढ़कर कहा, 'मुझे धन्यवाद मत दो। मुझे दुनिया की सारी परेशानियाँ अपने ऊपर लेने की आदत है। अब मुझे तुम्हारे इशाक भाई के दोबारा सारंगी बजाने लायक होने तक एक सारंगी वादक ढूंढना पड़ेगा, और मुझे तुम्हें अरबी सिखाने के लिए भी किसी को ढूंढना पड़ेगा।'

‘अरे नहीं, नहीं,’ तसनीम ने झट से कहा, ‘आपको ऐसा करने की जरूरत नहीं है।’

‘मुझे ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है?’ सईदा बाई ने मुड़कर तसनीम की छवि की बजाय खुद तसनीम की ओर देखते हुए कहा। ‘मुझे लगा कि आपको अरबी की कक्षाएं अच्छी लग रही थीं।’

बिब्बो उछलती हुई कमरे में वापस आ गई। सईदा बाई ने बेसब्री से उसकी ओर देखा और चिल्लाई, 'जी हाँ, बिब्बो? क्या बात है? मैंने तुमसे पाँच मिनट बाद आने को कहा था।'

'लेकिन मुझे पता चल गया है कि पिछवाड़े के बगीचे में क्या पक गया है,' बिब्बो ने उत्साह से कहा।

‘ठीक है, ठीक है,’ सईदा बाई ने हार मानकर कहा। ‘महिलाओं की उंगलियों के अलावा और क्या है? क्या करेला शुरू हो गया है?’

जी हां, बेगम साहिबा, और यहां एक कद्दू भी है।

'अच्छा, तो फिर रसोइए से कहो कि वह हमेशा की तरह शमी कबाब बनाए और अपनी पसंद की कोई सब्जी भी बनाए और साथ में करेला के साथ मटन भी बनाए।'

तसनीम ने थोड़ा सा मुंह बनाया, जिसे सईदा बाई ने भांप लिया।

‘अगर करेला तुम्हें कड़वा लगे तो कोई बात नहीं,’ उसने चिड़चिड़े स्वर में कहा। ‘कोई तुम्हें मजबूर नहीं कर रहा। मैं तुम्हें आराम देने के लिए दिन-रात मेहनत करती हूँ, पर तुम इसकी कदर नहीं करते। और हाँ,’ उसने बिब्बो की ओर मुड़ते हुए कहा, ‘चलिए बाद में फिरनी भी खा लेते हैं।’

‘लेकिन हमारे राशन में से तो चीनी बहुत कम बची है,’ बिब्बो चिल्लाया।

सईदा बाई ने कहा, 'इसे ब्लैक मार्केट से ले आओ। बिलग्रामी साहब को फिरनी बहुत पसंद है।'

फिर उसने तसनीम और बिब्बो दोनों को विदा किया और शांति से अपना श्रृंगार जारी रखा।

उस शाम जिस मेहमान का वह इंतज़ार कर रही थी, वह उसका एक पुराना दोस्त था। वह एक डॉक्टर था, एक जनरल प्रैक्टिशनर, जो उससे लगभग दस साल बड़ा था, दिखने में सुंदर और सुसंस्कृत। वह अविवाहित था और उसने कई बार उसे शादी का प्रस्ताव दिया था। हालाँकि एक समय वह उसका मरीज़ हुआ करता था, अब वह उसका दोस्त था। उसे उससे कोई लगाव नहीं था, लेकिन वह इस बात की आभारी थी कि ज़रूरत पड़ने पर वह हमेशा उसके साथ होता था। उसने उसे लगभग तीन महीने से नहीं देखा था, और इसीलिए उसने उसे आज शाम को बुलाया था। उसे यकीन था कि वह फिर से उसे शादी का प्रस्ताव देगा, और इससे उसका मन प्रसन्न हो जाएगा। उसका इनकार भी उतना ही स्वाभाविक था, इसलिए इससे उसे कोई खास परेशानी नहीं होगी।

उसने कमरे में चारों ओर देखा और उसकी नज़र एक फ्रेम में लगी उस तस्वीर पर पड़ी जिसमें एक महिला मेहराब से होते हुए एक रहस्यमयी बगीचे की ओर देख रही थी। उसने सोचा, अब तक दाग साहब अपनी मंज़िल पर पहुँच चुके होंगे। मैं उन्हें विदा करना नहीं चाहती थी, पर मैंने किया। वे जाना नहीं चाहते थे, पर चले गए। खैर, जो होना था सो हुआ।

लेकिन दाग साहब इस आकलन से सहमत नहीं होते।

6.27

इशाक खान अपने घर से कुछ दूर उस्ताद मजीद खान का इंतज़ार कर रहे थे। जब वे हाथ में एक छोटा सा थैला लिए गंभीर मुद्रा में चलते हुए बाहर आए, तो इशाक कुछ दूरी पर उनके पीछे-पीछे चले। वे तरबूज के बाज़ार की ओर मुड़े, मस्जिद की ओर जाने वाली सड़क को पार करते हुए, फिर स्थानीय सब्जी मंडी के अपेक्षाकृत खुले इलाके में पहुँच गए। वे एक दुकान से दूसरी दुकान पर जाकर देखने लगे कि क्या उन्हें कुछ पसंद आता है। यह देखकर अच्छा लगा कि मौसम के इतने बाद भी टमाटर भरपूर मात्रा में और उचित दाम पर मिल रहे थे। इसके अलावा, टमाटरों से मंडी में रौनक भी बढ़ गई थी। यह अफ़सोस की बात थी कि पालक का मौसम लगभग खत्म हो चुका था; यह उनकी पसंदीदा सब्जियों में से एक थी। और गाजर, फूलगोभी, पत्तागोभी, ये सब तो अगली सर्दी तक लगभग खत्म ही हो चुकी थीं। जो कुछ बची भी थीं, वे सूखी, मुरझाई हुई और महंगी थीं, और उनमें अपने चरम के समय का स्वाद बिल्कुल नहीं था।

उस सुबह जब उस्ताद इन्हीं विचारों में डूबे हुए थे, तभी उन्होंने एक आवाज को आदरपूर्वक कहते सुना:

‘Adaab arz, Ustad Sahib.’

उस्ताद मजीद खान ने इशाक की ओर मुड़कर देखा। उस नौजवान पर एक नज़र पड़ते ही उनकी तल्लीनता भंग हो गई और उन्हें कैंटीन में झेले गए अपमान याद आ गए। याद आते ही उनका चेहरा उदास हो गया; उन्होंने स्टॉल से दो-तीन टमाटर उठाए और उनकी कीमत पूछी।

‘मुझे आपसे एक अनुरोध करना है।’ यह फिर से इशाक खान थे।

‘जी?’ महान संगीतकार की आवाज में तिरस्कार स्पष्ट था। जैसा कि उन्हें

याद था, यह सारा वाकया तब हुआ था जब उन्होंने किसी मामूली मामले में उस युवक की मदद करने की पेशकश की थी।
मुझे भी माफी मांगनी है।
'कृपया मेरा समय बर्बाद न करें।'
‘मैं आपके घर से आपका पीछा करते हुए यहां तक आया हूं। मुझे आपकी मदद चाहिए। मैं मुश्किल में हूं। मुझे अपना और अपने छोटे भाइयों का पेट पालने के लिए काम चाहिए, और मुझे वह नहीं मिल रहा है। उस दिन के बाद से ऑल इंडिया रेडियो ने मुझे एक बार भी प्रस्तुति देने के लिए नहीं बुलाया है।’
उस्ताद ने अपने कंधे उचका दिए।
‘हे उस्ताद साहब, मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मेरे बारे में जो भी सोचते हों, मेरे परिवार को बर्बाद न करें। आप मेरे पिता और दादा को जानते थे। उनके खातिर मुझसे जो भी गलती हुई हो, उसे क्षमा कर दें।’
‘जो आपने बनाया हो?’
‘यह मैंने बनाया है। मुझे नहीं पता कि मुझ पर क्या बीत रहा था।’
मैं तुम्हें बर्बाद नहीं कर रहा हूँ। शांति से जाओ।
‘उस्ताद साहब, उस दिन से मुझे कोई काम नहीं मिला है, और मेरी बहन के पति को लखनऊ से उनके तबादले के बारे में कोई खबर नहीं मिली है। मैं निदेशक से संपर्क करने की हिम्मत नहीं कर पा रही हूँ।’
लेकिन तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे पास आने की। तुम मेरे घर से मेरा पीछा कर रहे हो—’
‘सिर्फ़ आपसे बात करने का मौका पाने के लिए। आप शायद समझ पाएंगे—एक साथी संगीतकार होने के नाते।’ उस्ताद थोड़ा झिझके। ‘और हाल ही में मेरे हाथों में तकलीफ हो रही है। मैंने उन्हें डॉक्टर को दिखाया, लेकिन—’

उस्ताद ने रूखेपन से कहा, 'मैंने सुना था,' लेकिन उन्होंने यह नहीं बताया कि कहाँ सुना था।

मेरे नियोक्ता ने मुझे स्पष्ट कर दिया है कि अब मुझे मेरे अपने हित के लिए लंबे समय तक सहायता प्रदान नहीं की जा सकती।

'तुम्हारा मालिक!' महान गायक गुस्से में आगे बढ़ने ही वाले थे कि उन्होंने कहा: 'जाओ और इसके लिए भगवान का शुक्रिया अदा करो। खुद को उनकी दया पर छोड़ दो।'

इशाक खान ने बेताबी से कहा, 'मैं खुद को तुम्हारे ऊपर न्योछावर कर रहा हूं।'

मैंने स्टेशन निदेशक से आपके पक्ष या विपक्ष में कुछ नहीं कहा है। उस सुबह जो कुछ हुआ, उसे मैं आपके दिमाग की एक गड़बड़ी मानूंगा। अगर आपके काम में कोई कमी आई है, तो इसमें मेरी कोई गलती नहीं है। वैसे भी, अपने हाथों से आप क्या करने का इरादा रखते हैं? आपको अपने लंबे अभ्यास के घंटों पर बहुत गर्व है। मेरी सलाह है कि आप कम अभ्यास करें।

तसनीम ने भी यही सलाह दी थी। इशाक खान ने हताशा से सिर हिलाया। कोई उम्मीद नहीं थी, और चूंकि उसकी हताशा के कारण उसके स्वाभिमान को पहले ही ठेस पहुँच चुकी थी, इसलिए उसे लगा कि माफी मांगने की अपनी अधूरी इच्छा को पूरा करने में उसका कुछ भी नुकसान नहीं होगा, और उसे लगा कि उसे माफी मांगनी ही चाहिए।

उन्होंने कहा, "एक और बात पर, अगर मैं आपकी और कृपा की उम्मीद करूं तो—मैं बहुत समय से उस बात के लिए माफी मांगना चाहता हूं जो मुझे पता है कि क्षमा करने योग्य नहीं है। उस सुबह, उस्ताद साहब, मैंने कैंटीन में आपकी मेज पर बैठने की हिम्मत इसलिए की क्योंकि मैंने कुछ देर पहले ही आपकी तोड़ी सुनी थी।"

सब्जियों का निरीक्षण कर रहे उस्ताद ने थोड़ा सा उसकी ओर रुख किया।

मैं अपने उन दोस्तों के साथ बाहर नीम के पेड़ के नीचे बैठा था। उनमें से एक के पास रेडियो था। हम सब मंत्रमुग्ध थे, कम से कम मैं तो था ही। मैंने सोचा कि मैं किसी तरह आपको यह बात बताऊँगा। लेकिन फिर कुछ गड़बड़ हो गई, और दूसरे विचार हावी हो गए।

उन्हें लगा कि माफी मांगते हुए वे और कुछ नहीं कह सकते, वरना वे अन्य मामलों को भी शामिल कर लेंगे—जैसे कि अपने पिता की स्मृति, जिसे उन्हें लगा कि उस्ताद ने अपमानित किया है।

उस्ताद मजीद खान ने लगभग न के बराबर सिर हिलाकर सहमति जताई। उन्होंने युवक के हाथों की ओर देखा, नाखून में बनी घिसी हुई लकीर पर उनकी नजर पड़ी और एक पल के लिए उन्हें भी आश्चर्य हुआ कि उसके पास सब्जियां घर ले जाने के लिए कोई थैला क्यों नहीं है।

'तो—तुम्हें मेरा टोडी पसंद आया,' उसने कहा।

'आपका—या भगवान का,' इशाक खान ने कहा। 'मुझे लगा कि महान तानसेन स्वयं अपने राग की उस प्रस्तुति को मंत्रमुग्ध होकर सुनते। लेकिन तब से मैं आपको कभी सुन नहीं पाया।'

उस्ताद ने भौंहें चढ़ाईं, लेकिन उन्होंने इशाक से यह पूछने की जहमत नहीं उठाई कि उनकी आखिरी टिप्पणी का क्या मतलब था।

उस्ताद मजीद खान ने कहा, 'मैं आज सुबह तोड़ी का अभ्यास करूंगा। इसके बाद आप मेरे पीछे आ जाइए।'

इशाक के चेहरे पर पूर्ण अविश्वास के भाव थे; मानो स्वर्ग उसके हाथों में आ गिरा हो। वह अपने हाथों को, अपने स्वाभिमान को, उस आर्थिक तंगी को भूल गया जिसने उसे उस्ताद मजीद खान से बात करने के लिए मजबूर किया था। वह सपने में खोए हुए की तरह सब्जी विक्रेता के साथ

उस्ताद की आगे की बातचीत सुन रहा था।
'यह कितने हैं?'
सब्जी विक्रेता ने उत्तर दिया, 'ढाई आने प्रति पाव।'
'सब्जीपुर से आगे आप इन्हें डेढ़ आना में खरीद सकते हैं।'
‘भाई साहब, ये सब्ज़ीपुर के दाम नहीं, चौक के दाम हैं।’
'ये कीमतें तो बहुत ज्यादा हैं।'
‘ओह, पिछले साल हमारे यहाँ एक बच्चा हुआ था—तब से मेरी कीमतें बढ़ गई हैं।’ जूट की चटाई पर शांति से बैठा सब्जी विक्रेता उस्ताद की ओर देखने लगा।
उस्ताद मजीद खान ने विक्रेता के ताने पर मुस्कुराया नहीं। 'दो आने प्रति पाव—बस इतना ही।'
'मुझे अपना भोजन आपसे ही कमाना पड़ता है, महोदय, किसी गुरुद्वारे की दान-पुण्य से नहीं।'
‘ठीक है—ठीक है—’ और उस्ताद मजीद खान ने उसे कुछ सिक्के फेंक दिए।
थोड़ा सा अदरक और कुछ मिर्च खरीदने के बाद, उस्ताद ने कुछ टिंडे खरीदने का फैसला किया।
'ध्यान रखना कि मुझे छोटे वाले ही देना।'
'हां, हां, मैं यही कर रहा हूं।'
और ये टमाटर तो नरम हैं।
‘धीरे बोलें, महोदय?’
‘जी हां, देखो—’ उस्ताद ने उन्हें तराजू से उतार लिया। ‘इनका वजन करो।’ उन्होंने उनमें से कुछ ढूंढना शुरू किया।
‘वे एक हफ्ते में नरम नहीं पड़ते—लेकिन आप जो चाहें कहें, महोदय।’
उस्ताद गुर्राते हुए बोले, 'इन्हें ठीक से तौलिए। अगर आप एक पलड़े पर

वजन डालते रहेंगे, तो मैं दूसरे पलड़े पर टमाटर डालता रहूंगा। मेरा पलड़ा तराजू में डूब जाएगा।'

अचानक, उस्ताद की नज़र कुछ ताज़ी फूलगोभी पर पड़ी, जो मौसम की कमज़ोर और अधपकी फूलगोभी जैसी नहीं लग रही थीं। लेकिन जब सब्जीवाले ने कीमत बताई, तो वे दंग रह गए।

क्या तुम ईश्वर से नहीं डरते?

'आपके लिए, महोदय, मैंने एक विशेष कीमत निर्धारित की है।'

'मेरे लिए कहने का क्या मतलब है? तुम तो हर किसी से यही कीमत वसूलते हो, बदमाश! मुझे पूरा यकीन है। विशेष कीमत—'

अरे, लेकिन ये फूलगोभी तो खास हैं—इन्हें तलने के लिए तेल की जरूरत नहीं पड़ती।'

इशाक ने हल्की सी मुस्कान दी, लेकिन उस्ताद मजीद खान ने स्थानीय मजाकिया व्यक्ति से बस इतना कहा:

'हूँ! मुझे यह वाला दो।'

इशाक ने कहा: 'उस्ताद साहब, मुझे इन्हें ले जाने दीजिए।'

उस्ताद मजीद खान ने इशाक को सब्जियों का थैला उठाने के लिए दे दिया, मानो उसके हाथों का ध्यान ही न रख रहे हों। घर लौटते समय उन्होंने कुछ नहीं कहा। इशाक चुपचाप उनके साथ चलता रहा।

अपने दरवाजे पर उस्ताद मजीद खान ने ऊँची आवाज़ में कहा: 'मेरे साथ कोई है।' घबराई हुई महिलाओं की आवाज़ें सुनाई दीं और फिर लोग सामने वाले कमरे से बाहर निकलने लगे। वे अंदर आए। तानपुरा एक कोने में रखा था। उस्ताद मजीद खान ने इशाक से सब्ज़ियाँ नीचे रखने और उनका इंतज़ार करने को कहा। इशाक खड़ा रहा, लेकिन उसने चारों ओर देखा। कमरा सस्ते सजावटी सामानों और बेस्वाद फर्नीचर से भरा हुआ था। सईदा बाई के बेदाग बाहरी कमरे से यह बिल्कुल विपरीत था।

उस्ताद मजीद खान चेहरा और हाथ धोकर वापस आए। उन्होंने इशाक को बैठने को कहा और कुछ देर तक तानपुरा को ठीक किया। अंत में संतुष्ट होकर उन्होंने राग तोड़ी में अभ्यास शुरू किया।

वहाँ कोई तबला वादक नहीं था, और उस्ताद मजीद खान ने राग को पहले से कहीं अधिक स्वतंत्र, कम लयबद्ध लेकिन अधिक गहन अंदाज में बजाना शुरू किया, जैसा कि इशाक खान ने पहले कभी नहीं सुना था। वे हमेशा अपने सार्वजनिक प्रदर्शनों की शुरुआत इस तरह के मुक्त आलाप से नहीं, बल्कि एक धीमी, लयबद्ध रचना से करते थे, जो उन्हें लगभग वैसी ही स्वतंत्रता प्रदान करती थी, लेकिन पूरी तरह से नहीं। इन कुछ मिनटों का अनुभव उन अन्य महान प्रदर्शनों से इतना अलग था कि इशाक मंत्रमुग्ध हो गए। उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं, और कमरा उनके लिए बेमानी हो गया; फिर, कुछ देर बाद, वे स्वयं भी; और अंत में गायक भी।

उन्हें पता नहीं था कि वे कितनी देर से वहां बैठे थे जब उन्होंने उस्ताद मजीद खान को यह कहते हुए सुना:

अब तुम इसे बजाओ।

उसने अपनी आँखें खोलीं। उस्ताद एकदम सीधे बैठे हुए थे और उन्होंने अपने सामने पड़े तानपुरा की ओर इशारा किया।

इशाक के हाथों में कोई दर्द नहीं हुआ, उसने उन्हें अपनी ओर मोड़ा और टॉनिक और डोमिनेंट के खुले और सम्मोहक संयोजन में पूरी तरह से ट्यून किए गए चारों तारों को बजाना शुरू कर दिया। उसे लगा कि उस्ताद अपना अभ्यास जारी रखेंगे।

'अब मेरे बाद इसे गाओ।' और उस्ताद ने एक पंक्ति गाई।

इशाक खान पूरी तरह से अवाक रह गए।

'तुम्हें इतनी देर क्यों लग रही है?' उस्ताद ने अपने उसी लहजे में सख्ती से पूछा, जिसे हरिदास संगीत महाविद्यालय के उनके छात्र बखूबी जानते थे।

इशाक खान ने यह वाक्यांश गाया।
उस्ताद उन्हें लगातार धुनें सुनाते रहे, पहले संक्षिप्त, फिर धीरे-धीरे लंबी और जटिल होती गईं। इशाक ने उन्हें अपनी पूरी क्षमता से दोहराया, पहले तो बेसुरी झिझक के साथ, लेकिन कुछ देर बाद संगीत के उतार-चढ़ाव में पूरी तरह खो गए।
उस्ताद ने सोच-समझकर कहा, 'सारंगी बेचने वाले नकल करने में माहिर होते हैं। लेकिन आपमें कुछ ऐसा है जो इससे कहीं आगे है।'
इशाक इतना आश्चर्यचकित हुआ कि उसके हाथ तानपुरा बजाना बंद कर गए।
उस्ताद कुछ देर चुप रहे। कमरे में सिर्फ एक सस्ती घड़ी की टिक-टिक की आवाज़ सुनाई दे रही थी। उस्ताद मजीद खान ने घड़ी को देखा, मानो पहली बार उसे महसूस कर रहे हों, फिर अपनी नज़रें इशाक की ओर घुमाईं।
उन्हें लगा कि शायद, लेकिन बस थोड़ी सी संभावना है, उन्हें इशाक में वह शिष्य मिल गया है जिसकी उन्हें वर्षों से तलाश थी—कोई ऐसा जिसे वे अपनी कला सिखा सकें, कोई ऐसा जो उनके कर्कश आवाज वाले बेटे के विपरीत, संगीत से बेहद प्यार करता हो, जिसे प्रस्तुति का अच्छा ज्ञान हो, जिसकी आवाज मधुर हो, जिसकी स्वर-बोध और अलंकरण की समझ असाधारण हो, और जिसमें उनकी अपनी ही धुनें दोहराते समय भी वह अनूठी अभिव्यक्ति हो, जो संगीत की आत्मा है। लेकिन क्या रचना में मौलिकता—क्या उनमें वह थी—या कम से कम ऐसी मौलिकता का बीज? यह तो समय ही बताएगा—महीनों, शायद वर्षों का समय।
‘कल फिर आना, लेकिन सुबह सात बजे,’ उस्ताद ने उसे विदा करते हुए कहा। इशाक खान ने धीरे से सिर हिलाया, फिर जाने के लिए खड़ा हो गया।

भाग सात

7.1

लता ने थाली पर लिफाफा देखा। अरुण का नौकर नाश्ते से ठीक पहले चिट्ठी लेकर आया था और उसे खाने की मेज पर रख दिया था। चिट्ठी देखते ही उसकी सांस अटक गई। उसने खाने के कमरे में चारों ओर नज़र घुमाई। अभी तक कोई और अंदर नहीं आया था। इस घर में नाश्ता अनियमित ही रहता था।

ब्रह्मपुर साहित्यिक समिति की बैठक के दौरान कबीर ने लता को जो पत्र लिखा था, उससे वह लता की लिखावट पहचान गई थी। उसे कबीर से पत्र की उम्मीद नहीं थी और वह समझ नहीं पा रही थी कि उसे कलकत्ता का पता कैसे मिला। वह नहीं चाहती थी कि कबीर उसे पत्र लिखे। वह उससे या उसके बारे में कुछ भी सुनना नहीं चाहती थी। अब जब वह पीछे मुड़कर देखती है, तो उसे एहसास होता है कि उससे मिलने से पहले वह खुश थी: शायद अपनी परीक्षाओं को लेकर चिंतित, अपनी माँ या किसी सहेली से कुछ छोटी-मोटी अनबन को लेकर परेशान, अपने लिए एक उपयुक्त लड़का ढूंढने की लगातार चर्चा से दुखी, लेकिन उस तथाकथित छुट्टी के दौरान उतनी दुखी नहीं थी, जो उसकी माँ ने अचानक उस पर थोप दी थी।

ट्रे पर एक कागज़ काटने वाला चाकू रखा था। लता ने उसे उठाया, फिर असमंजस में खड़ी रही। उसकी माँ किसी भी क्षण अंदर आ सकती थी और—जैसा कि वह अक्सर करती थी—लता से पूछ सकती थी कि पत्र किसने भेजा है और उसमें क्या लिखा है। उसने चाकू नीचे रख दिया और

पत्र उठा लिया।
अरुण अंदर आया। उसने कड़क सफेद कमीज के ऊपर लाल और काली धारीदार टाई पहनी हुई थी, एक हाथ में जैकेट और दूसरे हाथ में स्टेट्समैन अखबार था। उसने जैकेट को कुर्सी की पीठ पर टांग दिया, अखबार को मोड़कर क्रॉसवर्ड को आसानी से पढ़ने की जगह बनाई, लता को स्नेहपूर्वक नमस्कार किया और डाक के पन्ने पलटने लगा।
लता भोजन कक्ष से सटे छोटे से ड्राइंग रूम में गईं, मिस्र की पौराणिक कथाओं पर एक मोटी किताब निकाली जिसे कोई नहीं पढ़ता था, और उसमें अपना लिफाफा रख दिया। फिर वह भोजन कक्ष में लौट आईं और राग तोड़ी में गुनगुनाते हुए बैठ गईं। अरुण ने भौंहें चढ़ाईं। लता रुक गईं। नौकर उनके लिए एक तला हुआ अंडा लाया।
अरुण मन ही मन 'थ्री कॉइन्स इन अ फाउंटेन' गुनगुनाने लगा। उसने बाथरूम में ही क्रॉसवर्ड पहेली के कई सुराग हल कर लिए थे, और नाश्ते की मेज पर उसने कुछ और सुराग भर दिए। अब उसने अपनी कुछ चिट्ठियाँ खोलीं, उन पर सरसरी नज़र डाली और कहा:
‘वो मूर्ख मुझे मेरा अंडा कब लाएगा? मुझे देर हो जाएगी।’
उसने टोस्ट का एक टुकड़ा उठाया और उस पर मक्खन लगाया।
वरुण अंदर आया। उसने वही फटा हुआ कुर्ता-पायजामा पहना हुआ था जिसमें वह सो रहा था। 'सुप्रभात। सुप्रभात,' उसने कहा। उसकी आवाज़ में अनिश्चितता और थोड़ी शर्मिंदगी झलक रही थी। फिर वह बैठ गया। जब नौकर-सह-रसोइया हनीफ अरुण का अंडा लेकर आया, तो उसने अपना अंडा मंगवाया। पहले उसने आमलेट मांगा, फिर तले हुए अंडे का ऑर्डर दिया। इसी बीच उसने रैक से टोस्ट का एक टुकड़ा उठाया और उस पर मक्खन लगाया।
‘आप मक्खन काटने वाले चाकू का इस्तेमाल करने के बारे में सोच सकते

हैं,' अरुण ने मेज के सिर पर बैठे हुए गुर्राते हुए कहा।
वरुण ने अपने टोस्ट पर मक्खन लगाने के लिए अपनी ही छुरी से मक्खन के डिब्बे से मक्खन निकाला था। उसने डांट को चुपचाप सह लिया।
'तुमनें मुझे सुना?'
जी हां, अरुण भाई।
'तो बेहतर होगा कि आप मेरी टिप्पणी का एक शब्द या कम से कम एक इशारे से जवाब दें।'
'हाँ।'
'खाने के शिष्टाचार का भी एक उद्देश्य होता है, आप जानते हैं।'
वरुण ने मुंह बनाया। लता ने सहानुभूति भरी नजरों से उसकी ओर देखा।
'हर किसी को आपके टोस्ट पर मक्खन के टुकड़े चिपके हुए देखना अच्छा नहीं लगता।'
'ठीक है, ठीक है,' वरुण ने अधीर होकर कहा। यह एक कमजोर विरोध था, और इसका तुरंत निपटारा कर दिया गया।
अरुण ने अपना चाकू और कांटा नीचे रख दिया, उसकी तरफ देखा और इंतजार करने लगा।
'ठीक है, अरुण भाई,' वरुण ने विनम्रता से कहा।
वह तय नहीं कर पा रहा था कि मुरब्बा खाए या शहद, लेकिन अब उसने मुरब्बा ही चुना, क्योंकि शहद के चम्मच से बहस करने पर उसे डांट पड़ सकती थी। मुरब्बा फैलाते हुए उसने लता की ओर देखा और दोनों मुस्कुराए। लता की मुस्कान आधी थी, जो आजकल उसकी आदत बन चुकी थी। वरुण की मुस्कान कुछ अजीब सी थी, मानो उसे समझ नहीं आ रहा था कि खुश हो या निराश। यह वैसी ही मुस्कान थी जो उसके बड़े भाई को पागल कर देती थी और उसे यकीन दिला देती थी कि वरुण का कोई भविष्य नहीं है। वरुण ने गणित में बी.ए. में सेकंड क्लास हासिल

की थी और जब उसने अपने परिवार को रिजल्ट बताया, तो ठीक इसी तरह की मुस्कान के साथ।

सत्र समाप्त होने के कुछ ही समय बाद, वरुण नौकरी करके खर्चों में योगदान देने के बजाय, अरुण की नाराज़गी के बावजूद बीमार पड़ गया। वह अभी भी कुछ कमज़ोर था और तेज़ आवाज़ों से चौंक जाता था। अरुण ने मन ही मन सोचा कि उसे अगले एक-दो हफ़्ते में अपने छोटे भाई से खुलकर बात करनी होगी कि दुनिया किसी को जीने का दायित्व नहीं देती और अगर पिताजी जीवित होते तो क्या कहते।

मीनाक्षी अपर्णा के साथ अंदर आई।

'दादी कहाँ हैं?' अपर्णा ने श्रीमती रूपा मेहरा को ढूंढते हुए मेज के चारों ओर देखते हुए पूछा।

'दादी अभी आ रही हैं, प्यारी अपर्णा,' मीनाक्षी ने कहा। 'शायद वो वेदों का पाठ कर रही होंगी,' उसने अस्पष्ट रूप से कहा।

श्रीमती रूपा मेहरा, जो हर सुबह बहुत जल्दी गीता के एक-दो अध्याय पढ़ती थीं, वास्तव में कपड़े पहन रही थीं।

जैसे ही वह अंदर आई, मेज के चारों ओर उसकी मुस्कान फैल गई। लेकिन जब उसने अपर्णा की सोने की चेन देखी, जिसे मीनाक्षी ने बिना सोचे-समझे उसके गले में पहना दिया था, तो उसकी मुस्कान गायब हो गई। मीनाक्षी को इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था, लेकिन कुछ मिनट बाद अपर्णा ने पूछा:

'दादी, आप इतनी उदास क्यों दिख रही हैं?'

श्रीमती रूपा मेहरा ने टोस्ट पर तले हुए टमाटर का एक टुकड़ा चबाते हुए कहा: 'मैं दुखी नहीं हूँ, प्रिय।'

'दादी, क्या आप मुझसे नाराज हैं?' अपर्णा ने कहा।

नहीं, प्रियतमा, तुम्हारे साथ नहीं।

‘तो फिर किसके साथ?’

‘शायद मैं खुद के साथ हूं,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। उन्होंने पदक पिघलाने वाले की ओर नहीं देखा, बल्कि लता की ओर एक नज़र डाली, जो खिड़की से छोटे से बगीचे को निहार रही थी। लता आज सुबह सामान्य से अधिक शांत थी, और श्रीमती रूपा मेहरा ने मन ही मन सोचा कि उन्हें इस भोली बच्ची को इस मनोदशा से बाहर निकालना ही होगा। खैर, कल चटर्जी के घर पार्टी थी, और चाहे पसंद हो या ना हो, लता को जाना ही पड़ेगा।

बाहर एक कार का हॉर्न जोर से बजा और वरुण चौंक गया।

‘मुझे उस कमीने ड्राइवर को नौकरी से निकाल देना चाहिए,’ अरुण ने कहा। फिर वह हँसा और बोला, ‘लेकिन वह मुझे ऑफिस जाने का समय ज़रूर बता देता है। बाय, डार्लिंग।’ उसने कॉफी का एक घूंट पिया और मीनाक्षी को चूमा। ‘मैं आधे घंटे में गाड़ी वापस भेज दूंगा। बाय, अगली।’ उसने अपर्णा को चूमा और अपना गाल उसके गाल से रगड़ा। ‘बाय, माँ। बाय, सब लोग। मत भूलना, बेसिल कॉक्स डिनर पर आ रहे हैं।’

एक हाथ में जैकेट और दूसरे में ब्रीफकेस लिए वह बाहर खड़ी छोटी सी आसमानी नीली ऑस्टिन कार की ओर चल पड़ा, बल्कि यूं कहें कि शान से कदम बढ़ाते हुए चला गया। आखिरी क्षण तक यह कभी स्पष्ट नहीं होता था कि अरुण अखबार को अपने साथ दफ्तर ले जाएगा या नहीं; उसके साथ रहने की अनिश्चितताओं में से यह एक आम बात थी, ठीक वैसे ही जैसे उसका अचानक क्रोध से स्नेह और फिर शालीनता में बदलना। आज, सभी को राहत मिली, क्योंकि उसने अखबार को वहीं छोड़ दिया।

आम तौर पर वरुण और लता दोनों ही इसे पाने के लिए होड़ लगाते, लेकिन आज लता के न मिलने पर वरुण निराश हो गया। अरुण के जाने

के बाद माहौल थोड़ा हल्का हो गया था। अब अपर्णा सबकी निगाहों का केंद्र बन गई थी। उसकी माँ उसे बेढंगे तरीके से खाना खिलाती, फिर उसे संभालने के लिए बूढ़ी औरत को बुला लेती। वरुण उसे समाचार के कुछ अंश पढ़कर सुनाता, और वह समझने और रुचि दिखाने का नाटक करते हुए ध्यान से सुनती।

लता के मन में बस यही सवाल था कि इस ढाई कमरों वाले घर में, जहाँ निजता नाम की कोई चीज नहीं थी, उसे अपना पत्र पढ़ने के लिए समय और जगह कहाँ और कब मिलेगी। वह इस बात के लिए शुक्रगुजार थी कि उसे वह चीज मिल गई थी जो (हालाँकि श्रीमती रूपा मेहरा इस बात से असहमत होतीं) सिर्फ उसकी थी। लेकिन जब उसने खिड़की से बाहर छोटे, चमकीले हरे लॉन को देखा, जिस पर मकड़ी के जाले जैसी सफेद झालरें खिली थीं, तो उसके मन में पत्र में लिखी संभावित बातों को लेकर एक अजीब सी बेचैनी और आशंका का भाव जागा।

7.2

इस बीच शाम के खाने की तैयारियों में कुछ काम बाकी था। बेसिल कॉक्स, जो अपनी पत्नी पेट्रीशिया के साथ आने वाले थे, बेंटसेन एंड प्राइस में अरुण के विभाग के प्रमुख थे। हनीफ को दो मुर्गियां, एक मछली और सब्जियां लाने के लिए जगगुबाजार भेजा गया, जबकि मीनाक्षी - लता और श्रीमती रूपा मेहरा के साथ - अरुण के कार्यालय से अभी-अभी लौटी कार में न्यू मार्केट के लिए रवाना हो गईं।

मीनाक्षी अपनी पखवाड़े भर की ज़रूरत का सामान—सफेद आटा, जैम, चिवर्स मार्मलेड, लाइल्स गोल्डन सिरप, एंकर बटर, चाय, कॉफ़ी, पनीर और शुद्ध चीनी ('यह घटिया राशन वाली चीनी नहीं')—बाबोरैली से खरीदती थी। मिडलटन रो की एक दुकान से दो-चार रोटियाँ ('बाजार से मिलने वाली रोटी तो बहुत ही घटिया होती है, लुट्स'), फ्री स्कूल स्ट्रीट के

एक कोल्ड स्टोर से कुछ सलामी ('केवेंटर्स की सलामी तो बिलकुल फीकी होती है, मैंने तय कर लिया है कि मैं वहाँ कभी नहीं जाऊँगी'), और शॉ ब्रदर्स से बेक्स बीयर की आधा दर्जन बोतलें खरीदती थी। लता हर जगह उसके साथ जाती थी, हालाँकि श्रीमती रूपा मेहरा कोल्ड स्टोर या शराब की दुकान में जाने से मना कर देती थीं। वे मीनाक्षी की फिजूलखर्ची और उसकी कुछ खरीदारी की सनकी प्रकृति से हैरान थीं ('ओह, अरुण को यह ज़रूर पसंद आएगा, हाँ, मैं दो ले लूँगी,' मीनाक्षी तब कहती थी जब दुकानदार कुछ ऐसा सुझाता था जो उसे लगता था कि मैडम को पसंद आएगा)। सारा सामान एक बड़ी टोकरी में रखा गया जिसे एक फटेहाल छोटा लड़का अपने सिर पर उठाकर गाड़ी तक ले गया। जब भी कोई भिखारी उससे संपर्क करता, मीनाक्षी उन्हें अनदेखा कर देती थी।

लता पार्क स्ट्रीट पर एक किताबों की दुकान पर जाना चाहती थी और करीब पंद्रह मिनट तक वहीं रही, जबकि मीनाक्षी बेसब्री से चिढ़ती रही। जब मीनाक्षी ने देखा कि लता ने कुछ भी नहीं खरीदा है, तो उसे यह बहुत अजीब लगा। श्रीमती रूपा मेहरा समय की कमी के बिना आराम से किताबें देखती रहीं।

घर लौटने पर मीनाक्षी ने हनीफ को परेशान पाया। उसे सूफ़्ले की सही मात्रा का पता नहीं था, और हिलसा मछली के लिए मीनाक्षी को उसे यह बताना पड़ेगा कि उसे किस तरह की आग पर पकाना है। अपर्णा भी अपनी माँ की अनुपस्थिति के कारण रूठी हुई थी। अब उसने हंगामा करने की धमकी दी। यह सब मीनाक्षी के लिए असहनीय था, क्योंकि उसे अपने सहेलियों के समूह - 'शैडी लेडीज़' - के साथ सप्ताह में एक बार खेले जाने वाले कनास्ता के लिए देर हो रही थी, जिसे वह (बेसिल कॉक्स हो या न हो) किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ सकती थी। वह खुद भी परेशान हो गई और अपर्णा, बूढ़ी औरत और रसोइए पर चिल्लाई। वरुण ने खुद

को अपने छोटे से कमरे में बंद कर लिया और तकिए से अपना सिर ढक लिया।

'तुम्हें बेवजह गुस्सा नहीं करना चाहिए,' श्रीमती रूपा मेहरा ने बेरुखी से कहा।

मीनाक्षी झुंझलाहट से उसकी ओर मुड़ी। 'माँ, यह तो बड़ी मदद है!' उसने कहा। 'आप मुझसे क्या उम्मीद करती हैं? क्या मैं अपना कनास्ता छोड़ दूँ?'

'नहीं, नहीं, तुम्हारी कनास्ता (पारंपरिक स्पेनिश पाठ) नहीं छूटेगी,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। 'मैं तुमसे ऐसा करने के लिए नहीं कह रही हूँ, मीनाक्षी, लेकिन तुम्हें अपर्णा पर इस तरह चिल्लाना नहीं चाहिए। यह उसके लिए अच्छा नहीं है।' यह सुनकर अपर्णा अपनी दादी की कुर्सी की ओर सरक गई।

मीनाक्षी ने अधीरता भरी आवाज निकाली।

अचानक मीनाक्षी को अपनी स्थिति की असंभवता का एहसास हुआ। यह रसोइया सचमुच निकम्मा था। अगर आज शाम कुछ भी गड़बड़ हुई तो अरुण उस पर बुरी तरह गुस्सा होगा। यह उसके काम के लिए भी बहुत ज़रूरी था—और वह क्या कर सकती थी? क्या वह धुली हुई हिलसा मछली हटा देती? कम से कम यह बेवकूफ हनीफ तो भुना हुआ चिकन बना सकता था। लेकिन वह बहुत गुस्सैल था, और यहाँ तक कि अंडा भी ठीक से नहीं तल पाता था। मीनाक्षी ने घबराहट में कमरे में चारों ओर देखा।

लता को अचानक एक विचार आया और उसने कहा, 'अपनी मां से पूछो कि क्या तुम उनकी मुगल रसोइया उधार ले सकती हो।'

मीनाक्षी ने लता को आश्चर्य से देखा। 'तुम तो बिल्कुल आइंस्टीन हो, लता!' उसने कहा और तुरंत अपनी माँ को फोन किया। श्रीमती चटर्जी

अपनी बेटी की मदद के लिए तुरंत जुट गईं। उनके पास दो रसोइये थे, एक बंगाली खाना बनाने वाला और एक पश्चिमी खाना बनाने वाला। बंगाली रसोइये को बताया गया कि उसे उस शाम चटर्जी परिवार में खाना बनाना होगा, और मुगल रसोइया, जो चटगांव से आया था और यूरोपीय खाना बनाने में माहिर था, उसे आधे घंटे के भीतर सनी पार्क भेज दिया गया। इस बीच, मीनाक्षी अपनी सहेलियों के साथ कनास्ता खाने चली गई थी और जीवन की परेशानियों को लगभग भूल चुकी थी।

दोपहर के बीच में जब वह लौटी तो उसे विद्रोह का सामना करना पड़ा। ग्रामोफोन ज़ोर-ज़ोर से बज रहा था और मुर्गियाँ डर से कांव-कांव कर रही थीं। मुग़ रसोइए ने बड़े अकड़ से उससे कहा कि उसे इस तरह काम करने की आदत नहीं है, उसे इतनी छोटी रसोई में काम करने का अनुभव नहीं है, उसके रसोइए-सह-वाहक ने उसके साथ बदतमीज़ी की है, जो मछली और मुर्गियाँ खरीदी गई हैं वे ताज़ी नहीं हैं, और उसे सूफ़्ले के लिए एक खास तरह के नींबू के रस की ज़रूरत है जो उसने पहले से नहीं दिया था। हनीफ़ गुस्से से घूर रहा था और नौकरी छोड़ने ही वाला था। उसने एक कांव-कांव करती मुर्गी को अपने सामने पकड़ रखा था और कह रहा था: 'देखो, इसकी छाती को देखो—मेमसाहिब—यह एक जवान और ताज़ी मुर्गी है। मैं इस आदमी के नीचे क्यों काम करूँ? यह कौन होता है मेरी अपनी रसोई में मुझ पर हुकुम चलाने वाला?' वह बार-बार कहता है, "मैं न्यायमूर्ति चटर्जी का रसोइया हूँ। मैं न्यायमूर्ति चटर्जी का रसोइया हूँ।"

'नहीं, नहीं, मुझे तुम पर भरोसा है, मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है—' मीनाक्षी कांपते हुए और अपने लाल रंग से पॉलिश किए हुए नाखूनों को पीछे खींचते हुए चिल्लाई, जब उसकी रसोइया ने मुर्गे के पंखों को एक तरफ हटाकर उसका सीना उसे जांचने के लिए पेश किया।

रूपा मेहरा मीनाक्षी की परेशानी से नाराज़ तो नहीं थीं, लेकिन अपने प्यारे

बेटे की मालकिन के लिए इस रात्रिभोज को खतरे में नहीं डालना चाहती थीं। वे जिद्दी नौकरों के बीच सुलह कराने में माहिर थीं, और उन्होंने अब ऐसा ही किया। माहौल शांत हो गया, और वे ड्राइंग रूम में धैर्य का खेल खेलने चली गईं।

वरुण ने लगभग आधे घंटे पहले ग्रामोफोन चालू किया था और वही घिसी-पिटी 78-rpm वाली रिकॉर्डिंग बार-बार बजा रहा था: हिंदी फिल्मी गीत 'दो मदहोश कर देने वाली आंखें', एक ऐसा गीत जिसे पांच बार सुनने के बाद कोई भी, यहां तक कि भावुक श्रीमती रूपा मेहरा भी, बर्दाश्त नहीं कर पाती थीं। मीनाक्षी के लौटने से पहले वरुण उदास और स्वप्निल अंदाज़ में गीत के बोल गुनगुना रहा था। मीनाक्षी के आते ही वरुण ने गाना बंद कर दिया, लेकिन वह हर कुछ मिनट में ग्रामोफोन को रिवाइंड करता रहा और गीत को गुनगुनाता रहा। मशीन के किनारे बने छोटे से डिब्बे में एक-एक करके घिसी हुई सुइयां रखते हुए वह अपने क्षणभंगुर जीवन और स्वयं की निरर्थकता पर उदास मन से विचार कर रहा था।

लता ने मिस्र की पौराणिक कथाओं की किताब शेल्फ से उतारी और उसे लेकर बगीचे में जाने ही वाली थी कि उसकी माँ ने कहा:

'आप कहां जा रहे हैं?'

‘बगीचे में बैठो, माँ।’

लेकिन लता, यहाँ बहुत गर्मी है।

'मुझे पता है माँ, लेकिन इस संगीत के साथ मैं पढ़ नहीं सकती।'

‘मैं उससे कहूँगी कि इसे बंद कर दे। इतनी धूप तुम्हारी त्वचा के लिए हानिकारक है। वरुण, इसे बंद कर दो।’ वरुण को उसकी बात समझने में उसे कई बार अपनी बात दोहरानी पड़ी।

लता किताब लेकर बेडरूम में चली गई।

'लता, मेरे साथ बैठो, प्यारी,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।
‘माँ, कृपया मुझे अकेला छोड़ दो,’ लता ने कहा।
'तुम कई दिनों से मुझे नजरअंदाज कर रहे हो,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। 'जब मैंने तुम्हें तुम्हारे नतीजे बताए, तब भी तुम्हारा चुंबन बेमन से था।'
‘मां, मैंने आपकी अनदेखी नहीं की है,’ लता ने कहा।
‘हाँ, आपने किया है, आप इससे इनकार नहीं कर सकते। मुझे यह महसूस हो रहा है—यहाँ।’ श्रीमती रूपा मेहरा ने अपने हृदय के क्षेत्र की ओर इशारा किया।
‘ठीक है माँ, मैं आपकी बात नहीं मान रहा था। अब कृपया मुझे पढ़ने दीजिए।’
‘तुम क्या पढ़ रहे हो? मुझे किताब दिखाओ।’
लता ने उसे वापस शेल्फ पर रख दिया और बोली: 'ठीक है माँ, मैं इसे नहीं पढ़ूँगी, मैं आपसे बात करूँगी। खुश हो?'
'प्यारी, तुम किस बारे में बात करना चाहती हो?' श्रीमती रूपा मेहरा ने सहानुभूतिपूर्वक पूछा।
‘मैं बात नहीं करना चाहती। तुम बात करना चाहते हो,’ लता ने कहा।
‘अपनी बेवकूफी भरी किताब पढ़ो!’ श्रीमती रूपा मेहरा अचानक गुस्से में चिल्लाईं। ‘मुझे इस घर में सब कुछ करना पड़ता है, और कोई मेरी परवाह नहीं करता। सब कुछ गलत होता है और मुझे समझौता करना पड़ता है। मैंने पूरी जिंदगी तुम्हारे लिए गुलामी की है, और तुम्हें मेरी जिंदगी और मौत की कोई परवाह नहीं। जब मैं चिता पर जलूँगी, तभी तुम्हें मेरी कीमत समझ आएगी।’ उनकी आँखों से आंसू बहने लगे और उन्होंने एक लाल दस पर एक काला नौ रख दिया।
आम तौर पर लता अपनी माँ को सांत्वना देने की पूरी कोशिश करती, लेकिन उनकी अचानक भावनात्मक चालबाज़ी से वह इतनी परेशान और

नाराज़ थी कि उसने कुछ नहीं किया। थोड़ी देर बाद, उसने किताब को शेल्फ से फिर से उठाया और बगीचे में चली गई।

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'बारिश होगी और किताब खराब हो जाएगी। आपको पैसे की कीमत का कोई अंदाजा नहीं है।'

अच्छा हुआ, लता ने गुस्से से सोचा। काश किताब और उसमें लिखी हर चीज़—और मैं भी—बहकर बह जाए।

7.3

छोटा हरा बगीचा खाली था। अंशकालिक माली जा चुका था। एक समझदार दिखने वाला कौआ केले के पेड़ से कांव-कांव कर रहा था। नाज़ुक मकड़ी लिली खिले हुए थे। लता एक ऊंचे वन वृक्ष की छाया में लकड़ी की जालीदार हरी बेंच पर बैठ गई। सब कुछ बारिश से धुला हुआ और साफ था, ब्रह्मपुर के विपरीत जहाँ हर पत्ता धूल भरा और घास का हर तिनका सूखा हुआ लग रहा था।

लता ने लिफाफे को देखा जिस पर साफ-सुथरी लिखावट थी और ब्रह्मपुर का डाक टिकट लगा था। उस पर उसका नाम लिखा था और तुरंत बाद पता भी; उस पर किसी का नाम नहीं लिखा था।

उसने एक हेयरपिन निकाली और लिफाफा खोला। पत्र सिर्फ एक पन्ने का था। उसे कबीर के पत्र से स्नेहपूर्ण और क्षमाप्रार्थी होने की उम्मीद थी। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं था।

पता और तारीख के बाद यह इस प्रकार गया:

मेरी प्यारी लता,

मुझे बार-बार यह क्यों कहना चाहिए कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ? मुझे समझ नहीं आता कि तुम्हें मुझ पर अविश्वास क्यों करना चाहिए। मुझे तुम पर अविश्वास नहीं है। कृपया मुझे बताओ कि क्या बात है। मैं नहीं चाहता कि हमारे बीच सब कुछ इस तरह खत्म हो।

मैं तुम्हारे सिवा किसी और चीज़ के बारे में सोच ही नहीं सकती, लेकिन मुझे यह कहते हुए बुरा लग रहा है। मैं तुम्हारे साथ किसी सांसारिक स्वर्ग में भाग नहीं सकती थी और न ही भाग सकती हूँ, लेकिन तुम मुझसे ऐसी उम्मीद कैसे कर सकते थे? मान लो, मैं तुम्हारी इस पागलपन भरी योजना पर मान जाती। मुझे पता है कि तब तुम्हें इसे पूरा न कर पाने के बीस कारण मिल जाते। लेकिन शायद मुझे फिर भी मान जाना चाहिए था। शायद तुम्हें तसल्ली मिलती क्योंकि मैं साबित कर देती कि मैं तुम्हारी कितनी परवाह करती हूँ। खैर, मैं तुम्हारी इतनी परवाह नहीं करती कि अपनी बुद्धि को त्याग दूँ। मैं खुद की भी इतनी परवाह नहीं करती। मैं ऐसी बनी ही नहीं हूँ, और मैं थोड़ा आगे की सोचती हूँ।

मेरी प्यारी लता, तुम कितनी बुद्धिमान हो, चीजों को सही परिप्रेक्ष्य में क्यों नहीं देखती? मैं तुमसे प्यार करता हूँ। तुम्हें मुझसे माफी मांगनी चाहिए।

खैर, परीक्षा के नतीजों के लिए बधाई हो। आप बहुत खुश होंगे—लेकिन मुझे हैरानी नहीं हुई। आगे से बेंचों पर बैठकर रोने में अपना समय बर्बाद मत करना। कौन जाने, कौन तुम्हें बचाने आ जाए। शायद जब भी तुम्हें ऐसा करने का मन करे, तो मेरे बारे में सोच लेना और हर बार शतक न बना पाने पर पवेलियन लौटकर रोना याद करना।

दो दिन पहले मैंने एक नाव किराए पर ली और गंगा नदी में बरसात महल तक गई। लेकिन नवाब खुशवाक्त की तरह मैं भी इतनी दुखी थी कि मेरा मन व्याकुल था, और वह जगह मुझे उदास और मायूस लग रही थी। तमाम कोशिशों के बावजूद मैं तुम्हें लंबे समय तक नहीं भूल पाई। भले ही मेरे आंसू सुगंधित जल में तेज़ी से नहीं गिरे, फिर भी मुझे उससे एक गहरा जुड़ाव महसूस हुआ।

मेरे पिताजी, हालांकि वे काफी भुलक्कड़ हैं, फिर भी समझ जाते हैं कि मुझमें कुछ गड़बड़ है। कल उन्होंने कहा, 'ये तुम्हारे नतीजों की बात नहीं

है, तो फिर क्या बात है कबीर? मुझे लगता है कि लड़की होने वाली है या कुछ और।' मुझे भी लगता है कि लड़की होने वाली है या कुछ और।
अच्छा, अब जब आपके पास मेरा पता है तो आप मुझे क्यों नहीं लिखते? आपके जाने के बाद से मैं उदास हूँ और किसी भी चीज़ पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रही हूँ। मुझे पता था कि आप चाहकर भी मुझे नहीं लिख सकते क्योंकि आपके पास मेरा पता नहीं था। खैर, अब आपके पास है। तो कृपया लिखिए। नहीं तो मुझे पता चल जाएगा कि क्या सोचना है। और अगली बार जब मैं श्री नवरोजी के घर जाऊँगी तो मुझे अपनी लिखी कुछ दुखभरी कविताएँ पढ़नी पड़ेंगी।
मेरे पूरे प्यार के साथ, मेरी प्यारी लता,
आपका,
कबीर

7.4

काफी देर तक लता एक तरह के ख्यालों में डूबी बैठी रही। उसने पहले तो पत्र को दोबारा नहीं पढ़ा। उसके मन में अनेक भावनाएँ उमड़ रही थीं, पर वे उसे विरोधाभासी दिशाओं में खींच रही थीं। सामान्य परिस्थितियों में, भावनाओं के दबाव में वह शायद अनजाने में कुछ आँसू बहा देती, लेकिन पत्र में कुछ ऐसी बातें थीं जिन्होंने ऐसा करना असंभव बना दिया। उसे सबसे पहले यही आभास हुआ कि उसके साथ धोखा हुआ है, उस चीज़ से वंचित किया गया है जिसकी उसे उम्मीद थी। पत्र में उस पीड़ा के लिए कोई माफी नहीं थी जो उसने उसे पहुँचाई थी, यह बात वह जानता ही होगा। प्रेम की घोषणाएँ थीं, लेकिन वे उतनी भावुक और व्यंग्य से रहित नहीं थीं जितनी उसने सोची थीं। शायद उसने कबीर को अपनी पिछली मुलाकात में खुद को समझाने का मौका नहीं दिया था, लेकिन अब जब वह उसे पत्र लिख रहा था, तो वह बेहतर ढंग से समझा सकता था। उसने

किसी भी बात को गंभीरता से नहीं लिया था, और लता सबसे बढ़कर चाहती थी कि वह गंभीर हो। उसके लिए यह जीवन-मरण का मामला था। उसने लता को अपने बारे में ज़्यादा कुछ नहीं बताया था, और लता को यह जानने की बहुत इच्छा थी। वह उसके बारे में सब कुछ जानना चाहती थी—यहाँ तक कि परीक्षाओं में उसके प्रदर्शन के बारे में भी। उसके पिता की बात से तो यही लगता था कि उसने परीक्षा में बुरा प्रदर्शन नहीं किया होगा, लेकिन उनकी बात का यही एकमात्र अर्थ नहीं था। इसका सीधा सा मतलब यह भी हो सकता था कि परिणाम आने के बाद, भले ही वह केवल पास हुआ हो, उसके उदास—या शायद केवल बेचैन—मन की एक वजह अब स्पष्ट हो गई थी। और उसे लता का पता कैसे मिला? प्राण और सविता से तो नहीं? शायद मालती से? लेकिन जहाँ तक लता को पता था, कबीर मालती को जानता भी नहीं था।

यह स्पष्ट था कि वह उसके भावनाओं की कोई ज़िम्मेदारी नहीं लेना चाहता था। उसके अनुसार, माफी मांगने की ज़िम्मेदारी तो उसे ही उठानी चाहिए थी। एक वाक्य में उसने उसकी बुद्धिमत्ता की प्रशंसा की, दूसरे में उसे मूर्ख समझा। लता को लगा कि वह 'प्रेम' के अलावा कोई प्रतिबद्धता जताए बिना उसे बहलाने की कोशिश कर रहा है। और प्रेम आखिर होता क्या था?

उनके चुंबनों से भी ज़्यादा, उसे वो सुबह याद थी जब वो उसके पीछे-पीछे क्रिकेट मैदान तक गई थी और उसे नेट में अभ्यास करते हुए देखा था। वो जैसे सम्मोहित हो गई थी, मानो मंत्रमुग्ध हो गई हो। उसने अपना सिर पीछे झुकाया और किसी बात पर ज़ोर से हँस पड़ा। उसकी कमीज़ का कॉलर खुला था; बाँसों में हल्की-हल्की हवा चल रही थी; दो मैना आपस में लड़ रही थीं; मौसम सुहावना था।

उसने चिट्ठी को एक बार फिर पढ़ा। हालांकि उसने उसे बेंचों पर बैठकर

रोने से मना किया था, फिर भी उसकी आँखों में आँसू भर आए। चिट्ठी खत्म करने के बाद, वह लगभग अनजाने में ही मिस्र की पौराणिक कथाओं की किताब का एक पैराग्राफ पढ़ने लगी। लेकिन शब्द उसके दिमाग में कोई क्रम नहीं बना पा रहे थे।

कुछ ही गज की दूरी पर वरुण की आवाज सुनकर वह चौंक गई।

'लता, तुम अंदर जाओ, मां चिंतित हो रही हैं।'

लता ने खुद को संभाला और सिर हिलाया।

‘क्या बात है?’ उसने पूछा, यह देखकर कि वह रो रही थी—या रो चुकी थी। ‘क्या तुम्हारी उससे लड़ाई हुई थी?’

लता ने अपना सिर हिलाया।

वरुण ने किताब पर नजर डालते हुए पत्र देखा और तुरंत समझ गया कि यह किससे आया है।

वरुण ने भयभीत होकर भयंकर स्वर में कहा, 'मैं उसे मार डालूंगा।'

लता ने उदास से ज़्यादा गुस्से में कहा, 'मारने जैसा कुछ नहीं है। बस माँ को मत बताना, वरुण भाई। इससे हम दोनों पागल हो जाएँगे।'

7.5

उस दिन जब अरुण काम से लौटा तो वह बेहद खुश था। उसका दिन अच्छा बीता था और उसे लग रहा था कि शाम भी अच्छी गुज़रेगी। मीनाक्षी, जिसका घरेलू संकट सुलझ गया था, अब घबराकर इधर-उधर नहीं भाग रही थी; वास्तव में, वह इतनी शालीन और शांत थी कि अरुण को ज़रा भी अंदाज़ा नहीं हो सकता था कि वह कभी परेशान भी थी। उसके गाल पर चुंबन करने और अपनी प्यारी सी हंसी सुनाने के बाद, वह कपड़े बदलने चली गई। अपर्णा अपने पिता को देखकर बहुत खुश हुई और उसने भी उन्हें कुछ चुंबन दिए, लेकिन वह उन्हें अपने साथ पहेली सुलझाने के लिए मना नहीं पाई।

अरुण को लगा कि लता थोड़ी रूठी हुई लग रही है, पर आजकल लता का यही हाल रहता था। माँ, खैर, माँ, उनके मिजाज का तो कोई हिसाब ही नहीं था। वो बेचैन लग रही थीं, शायद इसलिए कि उनकी चाय समय पर नहीं आई थी। वरुण हमेशा की तरह मैला-कुचैला और धूर्त था। अरुण ने मन ही मन सोचा, आखिर उसके भाई में इतनी हिम्मत और पहल करने की क्षमता क्यों नहीं है और वो हमेशा फटे-पुराने कुर्ते-पायजामे क्यों पहनता है जो ऐसे लगते हैं मानो उनमें सोया गया हो? ड्राइंग रूम में घुसते ही वो चिल्लाया, 'ये बकवास बंद करो!' और तभी उसे 'दो मदहोश कर देने वाली आँखें' का पूरा असर झेलना पड़ा।

अरुण और उसकी धौंस जमाने की चालाकी से डरा हुआ वरुण कभी-कभार अपना सिर उठाता था, और आमतौर पर अरुण उसे बेरहमी से काट देता था। दूसरा सिर उगने में समय लगता था, लेकिन आज वह उग ही गया था। वरुण ने ग्रामोफोन बंद कर दिया, लेकिन उसका गुस्सा सुलगता रहा। बचपन से ही अपने भाई के अधिकार में रहने के कारण, वह इससे नफरत करता था—और वास्तव में, हर तरह के अधिकार से। एक बार, साम्राज्यवाद-विरोध और विदेशियों से नफरत के आवेश में आकर, उसने सेंट जॉर्ज स्कूल में दो बाइबलों पर 'सूअर' लिख दिया था, और इसके लिए श्वेत प्रधानाध्यापक ने उसकी जमकर पिटाई की थी। उस घटना के बाद अरुण ने भी उसे खूब खरी-खोटी सुनाई थी, उसके दयनीय बचपन और पिछले अपराधों का जिक्र करते हुए हर संभव अपमानजनक टिप्पणी की थी, और वरुण डर के मारे सहम गया था। लेकिन अपने हट्टे-कट्टे बड़े भाई के हमले से सहमते हुए भी, और किसी भी क्षण उससे थप्पड़ खाने की आशंका के बावजूद, वरुण मन ही मन सोच रहा था: इसे तो बस अंग्रेजों की चापलूसी करना और उनके नक्शेकदम पर चलना आता है। सूअर! सूअर! उसने अपने विचारों पर गौर किया होगा, क्योंकि

उसे वही थप्पड़ मिला जिसकी उसे उम्मीद थी।
अरुण युद्ध के दौरान रेडियो पर चर्चिल के भाषण सुना करता था और अंग्रेजों की तरह मन ही मन बुदबुदाता था, 'अच्छा पुराना विनी!' चर्चिल भारतीयों से घृणा करता था और इस बात को कभी छिपाता नहीं था, और गांधी के प्रति तिरस्कारपूर्ण लहजे में बोलता था, जो उससे कहीं अधिक महान व्यक्ति थे; और वरुण चर्चिल से गहरी नफरत करता था।
और उन सिकुड़े हुए पायजामों को बदल लो। बेसिल कॉक्स एक घंटे के भीतर आ रहे हैं और मैं नहीं चाहता कि उन्हें लगे कि मैं एक घटिया धर्मशाला चलाता हूँ।
वरुण ने उदास होकर कहा, 'मैं साफ-सुथरे कपड़े पहन लूंगा।'
‘तुम ऐसा नहीं करोगे,’ अरुण ने कहा। ‘तुम्हें ठीक से कपड़े पहनने होंगे।’
‘ठीक से कपड़े पहनो!’ वरुण ने व्यंग्यपूर्ण लहजे में धीरे से बुदबुदाया।
‘तुमने क्या कहा?’ अरुण ने धीरे से और धमकी भरे लहजे में पूछा।
वरुण ने तेवर दिखाते हुए कहा, 'कुछ नहीं।'
'कृपया इस तरह मत लड़िए। इससे मेरी नसों पर बुरा असर पड़ता है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।
‘माँ, आप इसमें दखल न दें,’ अरुण ने सीधे-सीधे कहा। उसने वरुण के छोटे से कमरे की ओर इशारा किया—जो बेडरूम से ज़्यादा एक स्टोररूम जैसा लग रहा था। ‘अब बाहर जाओ और कपड़े बदल लो।’
वरुण दरवाजे से बाहर निकलते हुए बोला, 'मैंने वैसे भी यही योजना बनाई थी।'
‘बेवकूफ,’ अरुण ने मन ही मन कहा। फिर स्नेहपूर्वक लता की ओर मुड़ा और बोला, ‘तो क्या बात है, तुम इतनी उदास क्यों दिख रही हो?’
लता मुस्कुराईं। उन्होंने कहा, 'मैं ठीक हूँ, अरुण भाई। मुझे लगता है मैं भी जाकर तैयार हो जाती हूँ।'

अरुण भी कपड़े बदलने अंदर चला गया। बेसिल कॉक्स और उनकी पत्नी के आने से लगभग पंद्रह मिनट पहले, वह बाहर आया तो देखा कि वरुण को छोड़कर बाकी सभी तैयार थे। मीनाक्षी रसोई से निकलीं जहाँ वह अंतिम समय की कुछ देखरेख कर रही थीं। सात लोगों के लिए मेज बेहतरीन कांच के बर्तनों, कटलरी और चम्मच-कांटे से सजी हुई थी, फूलों की सजावट एकदम सही थी, ऐपेटाइज़र चखकर बढ़िया पाया गया था, व्हिस्की, शेरी, कैम्पारी आदि अलमारी से निकाल लिए गए थे, और अपर्णा को बिस्तर पर सुला दिया गया था।

‘वह अब कहाँ है?’ अरुण ने तीनों महिलाओं से पूछा।

'वह बाहर नहीं आया है। वह अपने कमरे में ही होगा,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। 'काश आप उस पर चिल्लाती नहीं।'

उसे सभ्य परिवार में व्यवहार करना सीखना चाहिए। यह किसी धोतीवाले का घर नहीं है। उसे शालीन कपड़े पहनने चाहिए!

कुछ मिनट बाद वरुण बाहर आया। उसने साफ कुर्ता-पायजामा पहना हुआ था, जो फटा हुआ तो नहीं था, लेकिन उसका एक बटन गायब था। नहाने के बाद उसने सरसरी तौर पर दाढ़ी बनाई थी। उसे लगा कि वह ठीक-ठाक दिख रहा है।

अरुण को ऐसा नहीं लगा। उसका चेहरा लाल हो गया। वरुण ने उसके चेहरे का लाल होना देखा और - हालांकि वह डरा हुआ था - उसे काफी खुशी भी हुई।

एक पल के लिए अरुण इतना क्रोधित हुआ कि वह मुश्किल से बोल पाया। फिर वह भड़क उठा।

‘अरे बेवकूफ!’ वह दहाड़ा। ‘क्या तुम हम सबको शर्मिंदा करना चाहते हो?’

वरुण ने तिरछी नज़रों से उसकी ओर देखा। उसने पूछा, ‘भारतीय कपड़ों

में शर्मिंदगी वाली क्या बात है? क्या मैं अपनी मर्ज़ी के कपड़े नहीं पहन सकता? माँ, लता और भाभीजी साड़ी पहनती हैं, ड्रेस नहीं। या मुझे अपने ही घर में भी गोरों की नकल करनी पड़ेगी? मुझे नहीं लगता कि यह अच्छा विचार है।'

'मुझे इस बात की परवाह नहीं कि तुम क्या सोचते हो। मेरे घर में तुम वही करोगे जो मैं कहूँ। अब तुम कमीज़ और टाई पहन लो—या—या—'

'नहीं तो क्या, अरुण भाई?' वरुण ने अपने भाई को चिढ़ाते हुए और उसके गुस्से का आनंद लेते हुए कहा। 'आप मुझे अपने कॉलिन बॉक्स के साथ खाना नहीं खिलाएंगे? वैसे भी, मैं इस बॉक्सवाले और उसके बॉक्सवाले के सामने झुकने और गिड़गिड़ाने के बजाय अपने दोस्तों के साथ खाना खाना ज़्यादा पसंद करूंगा।'

'मीनाक्षी, हनीफ से कहो कि वह एक जगह हटा दे,' अरुण ने कहा।

मीनाक्षी असमंजस में दिख रही थी।

'क्या तुमने मुझे सुना?' अरुण ने खतरनाक स्वर में पूछा।

मीनाक्षी उसकी बात मानने के लिए उठ खड़ी हुई।

'अब निकल जाओ,' अरुण चिल्लाया। 'जाओ और अपने शमशु पीने वाले दोस्तों के साथ खाना खाओ। और आज शाम तक मुझे इस घर के आसपास कहीं भी मत दिखना। और मैं तुम्हें अभी और यहीं बता देता हूँ कि मैं तुम्हारी इस तरह की हरकतें बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करूँगा। अगर तुम इस घर में रहते हो, तो इसके नियमों का सख्ती से पालन करो।'

वरुण ने अनिश्चितता से अपनी माँ की ओर सहारा पाने के लिए देखा।

'डार्लिंग, कृपया वही करो जो वह कहता है। तुम कमीज और पैंट में ज़्यादा अच्छी लगती हो। वैसे भी, वह बटन गायब है। ये विदेशी समझते नहीं हैं। वह अरुण का बॉस है, हमें उस पर अच्छा प्रभाव डालना होगा।'

'वह तो किसी पर भी अच्छा प्रभाव डालने में असमर्थ है, चाहे वह कुछ भी

पहने या करे।' अरुण ने तीखा प्रहार करते हुए कहा। 'मैं नहीं चाहता कि वह बेसिल कॉक्स को नाराज़ करे, और वह ऐसा करने में पूरी तरह सक्षम है। अब, माँ, क्या तुम ये रोना बंद करोगी? देखो—तुमने सबको नाराज़ कर दिया है, बिलकुल मूर्ख!' अरुण ने वरुण की ओर मुड़ते हुए कहा।
लेकिन वरुण पहले ही चुपके से निकल चुका था।

7.6

हालांकि अरुण शांत होने के बजाय अधिक उग्र महसूस कर रहा था, फिर भी उसने हिम्मत भरी, हौसला बढ़ाने वाली मुस्कान बिखेरी और अपनी माँ के कंधे पर हाथ भी रख दिया। मीनाक्षी ने सोचा कि अंडाकार मेज के चारों ओर बैठने की व्यवस्था अब थोड़ी अधिक समरूप लग रही थी, हालांकि पुरुषों और महिलाओं के बीच असंतुलन और भी अधिक था। फिर भी, ऐसा नहीं था कि किसी और मेहमान को आमंत्रित किया गया हो। वहाँ केवल कॉक्स परिवार और उनके रिश्तेदार ही थे।
बेसिल कॉक्स और उनकी पत्नी समय पर पहुँच गए, और मीनाक्षी ने हल्की-फुल्की बातचीत की, जिसमें मौसम पर टिप्पणियाँ भी शामिल थीं ('पिछले कुछ दिनों से कितनी उमस और असहनीय गर्मी है, लेकिन फिर भी, यह कलकत्ता है—')। उन्होंने शेरी मंगवाई और आँखों में उदासी लिए उसे धीरे-धीरे पिया। सिगरेटें बाँटी गईं; उन्होंने सिगरेट जलाई, और अरुण और बेसिल कॉक्स ने भी।
बेसिल कॉक्स लगभग तीस वर्ष के थे, गुलाबी रंग के, चतुर, स्वस्थ और चश्मा पहने हुए। पेट्रीशिया कॉक्स छोटी कद-काठी की, नीरस स्वभाव की महिला थीं, जो ग्लैमरस मीनाक्षी से बिलकुल अलग थीं। वह धूम्रपान नहीं करती थीं। हालांकि, वह बहुत तेज़ी से और एक तरह की बेताबी से शराब पीती थीं। उन्हें कलकत्ता की संगति दिलचस्प नहीं लगती थी, और अगर उन्हें बड़ी पार्टियों से भी ज़्यादा कुछ नापसंद था, तो वह छोटी पार्टियां थीं,

जहाँ उन्हें लगता था कि वे मजबूरी में सामाजिकता में फँस गई हैं।
लता ने थोड़ी सी शेरी ली। श्रीमती रूपा मेहरा ने नींबू पानी लिया।
अपनी कड़क सफेद वर्दी में बेहद सजग दिख रहे हनीफ ने स्टार्टर्स की ट्रे पेश की: सलामी, पनीर और शतावरी के टुकड़े ब्रेड के छोटे-छोटे टुकड़ों पर रखे हुए थे। अगर मेहमान साफ़ तौर पर साहब (ऑफिस के मेहमान) न होते, तो शायद वह अपनी रसोई की स्थिति को लेकर अपनी नाराज़गी को और खुलकर ज़ाहिर कर पाते। लेकिन इस स्थिति में, वह अपने सबसे विनम्र स्वभाव में थे।
अरुण ने हमेशा की तरह अपनी कुशलता और आकर्षण के साथ विभिन्न विषयों पर बोलना शुरू कर दिया था: लंदन में हाल ही में हुए नाटक, अभी-अभी प्रकाशित और महत्वपूर्ण मानी जाने वाली पुस्तकें, फारस का तेल संकट, कोरियाई संघर्ष। अरुण के अनुसार, कम्युनिस्ट पीछे हट रहे थे, और यह बिल्कुल सही समय पर हो रहा था, हालांकि जाहिर है कि अमेरिकी, अपनी मूर्खता के कारण, शायद अपने सामरिक लाभ का फायदा नहीं उठाएंगे। लेकिन फिर भी, इस मामले में और अन्य मामलों में, कोई क्या कर सकता था?
यह अरुण—सौम्य, सौम्य, आकर्षक और ज्ञानवान, यहाँ तक कि (कभी-कभी) संकोची भी—आधे घंटे पहले के घरेलू तानाशाह और दबंग से बिल्कुल अलग था। बेसिल कॉक्स उससे मुग्ध हो गया। अरुण अपने काम में कुशल था, लेकिन कॉक्स ने कल्पना भी नहीं की थी कि वह इतना पढ़ा-लिखा होगा, बल्कि अपने परिचित अधिकांश अंग्रेजों से कहीं अधिक पढ़ा-लिखा होगा।
पैट्रीशिया कॉक्स ने मीनाक्षी से उसके छोटे नाशपाती के आकार के झुमकों के बारे में बात की। 'बहुत सुंदर,' उन्होंने टिप्पणी की। 'आपने इन्हें कहाँ बनवाया?'

मीनाक्षी ने उसे बताया और दुकान ले जाने का वादा किया। उसने श्रीमती रूपा मेहरा की ओर एक नज़र डाली, लेकिन राहत की सांस लेते हुए देखा कि वह अरुण और बेसिल कॉक्स को बड़े ध्यान से सुन रही थीं। आज शाम अपने कमरे में मीनाक्षी ने उन्हें चलाने से पहले एक पल के लिए सोचा था—लेकिन फिर उसने मन ही मन कहा: खैर, देर-सवेर माँ को जीवन की सच्चाई को स्वीकार करना ही होगा। मैं हमेशा उनकी भावनाओं का ख्याल नहीं रख सकती।

रात का भोजन सुचारू रूप से संपन्न हुआ। यह चार प्रकार का पूरा भोजन था: सूप, स्मोक्ड हिलसा, रोस्ट चिकन और लेमन सूफ़ले। बेसिल कॉक्स ने लता और श्रीमती रूपा मेहरा को बातचीत में शामिल करने की कोशिश की, लेकिन वे तभी बोलती थीं जब उनसे बात की जाती थी। लता का ध्यान कहीं और था। मीनाक्षी द्वारा हिलसा को स्मोक करने की प्रक्रिया का वर्णन सुनकर वह चौंककर वापस लौटीं।

मीनाक्षी ने कहा, 'यह एक शानदार पुरानी रेसिपी है जो हमारे परिवार में पीढ़ियों से चली आ रही है। इसे सावधानीपूर्वक हड्डियों से अलग करने के बाद कोयले की आग पर टोकरी में रखकर धुएँ में पकाया जाता है, और हिलसा मछली की हड्डियों को निकालना सचमुच बहुत मुश्किल काम है।'

'यह बहुत स्वादिष्ट है, मेरी प्यारी,' बेसिल कॉक्स ने कहा।

'बेशक, असली राज तो आग में छिपा है,' मीनाक्षी ने ज्ञान से कहा—हालांकि उसे आज दोपहर ही पता चला था कि यह कैसे बनता है, और वह भी इसलिए क्योंकि मुगल रसोइए ने सही सामग्री उपलब्ध कराने पर जोर दिया था—'हम उस पर मुरमुरे और कच्ची भूरी चीनी या गुड़ डालते हैं—जिसे हम यहाँ 'गुड़' कहते हैं—' (उसने इसका उच्चारण 'फुर' से मिलता-जुलता किया।)

जब वह लगातार बोलती रही तो लता उसे आश्चर्य से देखती रही।

‘बेशक, परिवार की हर लड़की ये बातें छोटी उम्र में ही सीख लेती है।’
पहली बार पेट्रीसिया कॉक्स पूरी तरह से ऊबी हुई नहीं लग रही थीं।
लेकिन जब तक सूफ़्ले का समय आया, तब तक वह निष्क्रिय अवस्था में जा चुकी थी।
रात के खाने, कॉफ़ी और शराब के बाद, अरुण सिगार लेकर आया। उसने और बेसिल कॉक्स ने काम के बारे में थोड़ी बातचीत की। अरुण कार्यालय के विषय पर बात शुरू नहीं करता, लेकिन बेसिल, जो यह मान चुका था कि अरुण एक सच्चा सज्जन व्यक्ति है, अपने एक सहकर्मी के बारे में उसकी राय जानना चाहता था। उसने कहा, 'आप जानते हैं, हमारे बीच की बात है, और बिल्कुल हमारे बीच की, मुझे उसकी समझदारी पर थोड़ा संदेह होने लगा है।' अरुण ने अपने शराब के गिलास के किनारे पर उंगली फेरते हुए एक हल्की सी आह भरी और अपने बॉस की राय की पुष्टि करते हुए अपनी ओर से एक-दो कारण भी बताए।
‘हम्म, हाँ, यह दिलचस्प है कि आप भी ऐसा सोचते हैं,’ बेसिल कॉक्स ने कहा।
अरुण ने अपने चारों ओर फैली धुंधली और सुकून देने वाली छाया में संतुष्टि और चिंतन के भाव से देखा।
अचानक, 'दो मदहोश कर देने वाली आंखें' के बेसुरी और अस्पष्ट सुरों के बाद, सामने के दरवाजे में चाबी के अटकने की आवाज सुनाई दी। वरुण, जो शमशु नामक सस्ती लेकिन असरदार चीनी शराब से तरोताजा था, जिसे वह और उसके दोस्त बड़ी मुश्किल से खरीद पाते थे, वापस अपने समूह में लौट आया था।
अरुण मानो बैंक्वों के भूत को देखकर चौंक गया। वह उठ खड़ा हुआ और वरुण को ड्राइंग रूम में घुसने से पहले ही घर से बाहर निकालने का पूरा इरादा रखता था। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी।

वरुण थोड़ा झुकते हुए और असाधारण आत्मविश्वास के साथ सबका अभिवादन किया। शमशु की गंध पूरे कमरे में फैली हुई थी। उसने श्रीमती रूपा मेहरा को चूमा। वह पीछे हट गईं। मीनाक्षी को देखकर वह थोड़ा कांप गया, जो अब इतनी भयभीत होने के बावजूद और भी अधिक सुंदर लग रही थी। उसने मेहमानों का अभिवादन किया।

'हेलो, मिस्टर बॉक्स, मिसेज़ बॉक्स—अरे, मिसेज़ बॉक्स, मिस्टर बॉक्स,' उन्होंने खुद को सुधारते हुए कहा। उन्होंने झुककर अभिवादन किया और गायब बटन के छेद को टटोलने लगे। उनके पजामे का डोरी उनके कुर्ते के नीचे लटक रहा था।

'मुझे नहीं लगता कि हम पहले कभी मिले हैं,' बेसिल कॉक्स ने परेशान दिखते हुए कहा।

'ओह,' अरुण ने गुस्से और शर्म से लाल होते हुए कहा। 'दरअसल, ये तो —मेरा भाई वरुण है। ये थोड़ा...अरे—क्या आप मुझे एक मिनट का समय देंगे?' उसने दबी हुई सख्ती से वरुण को दरवाजे की तरफ, फिर उसके कमरे की तरफ ले गया। 'एक शब्द भी नहीं!' उसने गुस्से से वरुण की हैरान आँखों में देखते हुए फुफकारा। 'एक शब्द भी नहीं, वरना मैं तुम्हें अपने हाथों से गला घोंट दूँगा।'

उसने वरुण के कमरे का दरवाजा बाहर से बंद कर दिया।

जब वह ड्राइंग रूम में लौटा, तब तक वह अपने पहले वाले आकर्षक रूप में वापस आ चुका था।

खैर, जैसा कि मैं कह रहा था, वह थोड़ा—उह, कभी-कभी बेकाबू हो जाता है। मुझे यकीन है कि आप समझते हैं। बिगड़ैल और ऐसा ही कुछ। बिल्कुल ठीक है, हिंसक या ऐसा कुछ नहीं, लेकिन—'

पेट्रीसिया कॉक्स अचानक उत्साहित होते हुए बोलीं, 'ऐसा लग रहा था जैसे उसने बहुत ज्यादा शराब पी रखी हो।'

‘मुझे लगता है कि इसे हमें आज़माने के लिए भेजा गया है,’ अरुण ने आगे कहा। ‘मेरे पिता की असमय मृत्यु वगैरह। हर परिवार में ऐसा एक होता है। उसकी कुछ अजीब आदतें हैं: वह उन बेतुके कपड़ों को पहनने पर ज़ोर देता है।’

‘बहुत तेज़ था, पता नहीं क्या था। मुझे अभी भी उसकी गंध आ रही है,’ पेट्रीशिया ने कहा। ‘अजीब भी है। क्या यह किसी तरह की व्हिस्की है? मैं इसे चखना चाहूंगी। क्या आपको पता है यह क्या है?’

मुझे लगता है कि इसे शमशु के नाम से जाना जाता है।

'शमशु?' श्रीमती कॉक्स ने बड़े उत्साह से कहा, और शब्द को तीन-चार बार बोलकर देखा। 'शमशु। क्या तुम जानते हो, बेसिल?' वह फिर से जीवंत हो उठीं। उनकी सारी झिझक गायब हो गई थी।

'मुझे नहीं लगता कि मैं ऐसा करता हूँ, मेरी प्रिय,' उसके पति ने कहा।

अरुण ने कहा, 'मुझे लगता है यह चावल से बना है। यह किसी तरह का चीनी व्यंजन है।'

पेट्रीसिया कॉक्स ने पूछा, 'क्या शॉ ब्रदर्स इसे बेचेंगे?'

‘मुझे इस पर संदेह है। यह चाइनाटाउन में उपलब्ध होना चाहिए,’ अरुण ने कहा।

दरअसल वरुण और उसके दोस्तों ने इसे चाइनाटाउन से ही खरीदा था, एक छोटी सी दुकान से, जहां एक गिलास आठ आने में मिलता था।

‘जो भी हो, ये बहुत ही ज़बरदस्त चीज़ होगी। स्मोक्ड हिलसा और शमशु — रात के खाने पर दो बिल्कुल अलग-अलग चीज़ें जानना कितना अद्भुत है। ऐसा कभी-कभार ही होता है,’ पेट्रीशिया ने बताया। ‘आम तौर पर तो मैं बहुत ऊब जाती हूँ।’

अरुण ने सोचा, "क्या तुम बिल्कुल ऊब गए हो?" लेकिन तब तक वरुण अपने कमरे में गुनगुनाना शुरू कर चुका था।

‘कितना दिलचस्प नौजवान है!’ पेट्रीशिया कॉक्स ने आगे कहा। ‘और आप कहती हैं कि वो आपका भाई है। वो क्या गा रहा है? वो हमारे साथ रात के खाने पर क्यों नहीं आया? हमें आप सबको कभी न कभी तो बुलाना ही चाहिए, है ना, डार्लिंग?’ बेसिल कॉक्स बहुत ही संशय में दिखे। पेट्रीशिया कॉक्स ने इसे सहमति मान लिया। ‘मुझे RADA में पढ़ने के बाद से इतना मज़ा कभी नहीं आया। और शमशु की एक बोतल ज़रूर लाना।’

बेसिल कॉक्स ने सोचा, "भगवान न करे ऐसा हो।"

अरुण ने सोचा, "भगवान न करे ऐसा हो।"

7.7

मेहमान बालीगंज स्थित न्यायमूर्ति चटर्जी के घर पहुँचने ही वाले थे। यह उन तीन-चार भव्य पार्टियों में से एक थी जो वे साल भर में अचानक आयोजित करते थे। मेहमानों का समूह कुछ अनोखा था, जिसके दो कारण थे। पहला, न्यायमूर्ति चटर्जी स्वयं, जिनके मित्रता और जान-पहचान का दायरा बहुत व्यापक था। (वे थोड़े भुलक्कड़ स्वभाव के थे, और इधर-उधर से दोस्त बना लेते थे।) दूसरा, क्योंकि चटर्जी परिवार इस तरह की किसी भी पार्टी को अपने सभी मित्रों को आमंत्रित करने का अवसर मानता था। श्रीमती चटर्जी ने अपने कुछ मित्रों को आमंत्रित किया, और उनके बच्चों ने भी; केवल तपन, जो स्कूल की छुट्टियों के लिए लौटा था, को इतना छोटा समझा गया कि उसे ऐसी पार्टी में आमंत्रितों की सूची में अपना नाम जोड़ने की अनुमति नहीं दी गई जहाँ शराब परोसी जाएगी।

न्यायमूर्ति चटर्जी कोई औपचारिक व्यक्ति नहीं थे, लेकिन उनके पाँच बच्चे थे, जिनमें लिंग का क्रम एक-एक करके निर्धारित था: अमित, मीनाक्षी (जिनका विवाह अरुण मेहरा से हुआ था), दीपांकर, काकोली और तपन।

इनमें से कोई भी काम नहीं करता था, लेकिन सभी का अपना-अपना काम था। अमित कविताएँ लिखते थे, मीनाक्षी कनास्ता खेलती थीं, दीपांकर जीवन के अर्थ की खोज में लगे रहते थे, काकोली फोन पर व्यस्त रहती थीं और तपन, जो केवल बारह या तेरह वर्ष का था और सबसे छोटा था, प्रतिष्ठित बोर्डिंग स्कूल झील में पढ़ता था।

कवि अमित ने ऑक्सफोर्ड में न्यायशास्त्र का अध्ययन किया था, लेकिन डिग्री प्राप्त करने के बाद, अपने पिता की नाराज़गी के बावजूद, उन्होंने वह काम पूरा नहीं किया जो उनके लिए आसानी से पूरा किया जा सकता था: अपने पिता के पुराने सराय, लिंकन इन में वकालत की पढ़ाई। उन्होंने लगभग हर दिन भोजन किया था और एक-दो परीक्षाएं पास भी कर ली थीं, लेकिन फिर कानून में उनकी रुचि खत्म हो गई। इसके बजाय, कविता के लिए मिले कुछ विश्वविद्यालय पुरस्कारों, साहित्यिक पत्रिकाओं में इधर-उधर प्रकाशित कुछ लघु कथाओं और एक कविता संग्रह, जिसके लिए उन्हें इंग्लैंड में पुरस्कार मिला था (और इसलिए कलकत्ता में प्रशंसा मिली थी), के बल पर वे अपने पिता के घर में आराम से बैठे थे और कोई भी ऐसा काम नहीं कर रहे थे जिसे वास्तविक काम कहा जा सके।

उस समय वह अपनी दोनों बहनों और लता से बात कर रहा था।

अमित ने पूछा, 'हम कितने लोगों के आने की उम्मीद कर सकते हैं?'

‘मुझे नहीं पता,’ काकोली ने कहा। ‘पचास?’

अमित मुस्कुराया। 'पचास तो तुम्हारे आधे दोस्तों के लिए ही काफी होंगे, कुकू। मुझे लगता है कि एक सौ पचास काफी होंगे।'

मीनाक्षी ने बड़े उत्साह से कहा, 'मुझे ये बड़ी पार्टियां बिल्कुल पसंद नहीं हैं।' हॉल में लगे लंबे दर्पण में खुद को देखते हुए काकोली ने कहा, 'नहीं, मुझे भी नहीं।'

'मुझे लगता है कि मेहमानों की सूची में केवल वही लोग शामिल हैं जिन्हें

मां, तपन और मैंने आमंत्रित किया है,' अमित ने परिवार के तीन सबसे कम मिलनसार सदस्यों का नाम लेते हुए कहा।
'वेरेईईईई फनीईईईई,' काकोली ने कहा (या, बल्कि गाया), जिसका नाम उस चिड़िया के होने का संकेत देता था जो वह थी।
मीनाक्षी ने कहा, 'अमित, तुम अपने कमरे में जाओ और जेन ऑस्टेन की किताब लेकर सोफे पर आराम से बैठ जाओ। खाना परोसे जाने पर हम तुम्हें बता देंगे। या फिर इससे भी अच्छा, हम खाना तुम्हारे पास ही भेज देंगे। इस तरह तुम अपने सभी चाहने वालों से बच जाओगे।'
काकोली ने लता से कहा, 'वह बहुत ही विचित्र व्यक्ति है। जेन ऑस्टेन ही उसके जीवन की एकमात्र महिला है।'
मीनाक्षी ने आगे कहा, 'लेकिन कलकत्ता के आधे भद्रलोक उसे अपनी बेटियों के लिए वर के रूप में चाहते हैं। उनका मानना है कि वह बुद्धिमान है।'
Kakoli recited:
'अमित चटर्जी, क्या शानदार कैच है!'
यह एक बेहद उपयुक्त जोड़ी है।
मीनाक्षी ने आगे कहा:
उन्होंने अभी तक शादी क्यों नहीं की?
हमेशा नखरे दिखाती रहती है।
काकोली ने आगे कहा:
लोग कहते हैं, 'वह एक प्रसिद्ध कवि हैं।'
"बेश" हर तरह से सभ्य है।
वह खिलखिलाकर हंस पड़ी।
लता ने अमित से कहा: 'तुम उन्हें ऐसा करने की छूट क्यों दे रहे हो?'
'तुम्हारा मतलब उनकी तुकबंदी वाली कविताओं से है?' अमित ने कहा।

'मेरा मतलब है तुम्हें चिढ़ाने से,' लता ने कहा।
‘ओह, मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता,’ अमित ने कहा।
लता हैरान दिखीं, लेकिन काकोली ने कहा, 'वह तुम्हारे साथ बिस्वास जैसा व्यवहार कर रहा है।'
‘एक बिस्वास?’
‘बिस्वास बाबू, मेरे पिता के पुराने क्लर्क। वो अब भी हफ्ते में दो-तीन बार आकर इधर-उधर के कामों में मदद करते हैं और हमें जीवन के बारे में सलाह देते हैं। उन्होंने मीनाक्षी को तुम्हारे भाई से शादी न करने की सलाह दी थी,’ काकोली ने कहा।
दरअसल, मीनाक्षी के अचानक हुए प्रेम प्रसंग और विवाह का विरोध कहीं अधिक व्यापक और गहरा था। मीनाक्षी के माता-पिता को इस बात से कोई खास आपत्ति नहीं थी कि उसने अपने समुदाय से बाहर विवाह किया था। अरुण मेहरा न तो ब्रह्म समाज से थे, न ब्राह्मण वंश के और न ही बंगाली। उनका परिवार आर्थिक तंगी से जूझ रहा था। चटर्जी परिवार की सराहना करनी होगी कि इस तथ्य से उन्हें कोई खास फर्क नहीं पड़ा, हालांकि वे स्वयं पीढ़ियों से समृद्ध थे। उनकी चिंता केवल इस बात को लेकर थी कि उनकी बेटी को शायद जीवन की वो सुख-सुविधाएं न मिल पाएं जिनमें वो पली-बढ़ी थी। लेकिन फिर भी, उन्होंने अपनी विवाहित बेटी को उपहारों से नहीं नहलाया था। भले ही न्यायमूर्ति चटर्जी का अपने दामाद के साथ सहज संबंध न था, लेकिन उन्हें यह उचित नहीं लगा।
'बत्तख के पानी से बिस्वास बाबू का क्या लेना-देना है?' लता ने पूछा, जिसे मीनाक्षी का परिवार मनोरंजक लेकिन उलझन भरा लगा।
‘अरे—यह तो बस उसकी एक अभिव्यक्ति है। मुझे नहीं लगता कि अमित का बाहरी लोगों को पारिवारिक संदर्भों के बारे में न समझाना कोई

अच्छी बात है।'
अमित ने कहा, 'वह बाहरी नहीं है। या उसे बाहरी नहीं होना चाहिए। दरअसल, हम सभी बिस्वास बाबू को बहुत पसंद करते हैं, और वह भी हमें बहुत पसंद करते हैं। वह मूल रूप से मेरे दादाजी के क्लर्क थे।'
'लेकिन वो अमित का नहीं होगा—जिसका अमित को बहुत अफसोस है,' मीनाक्षी ने कहा। 'दरअसल, अमित के वकालत छोड़ने से बिस्वास बाबू हमारे पिता से भी ज्यादा दुखी हैं।'
अमित ने कहा, 'अगर मैं चाहूं तो अभी भी अभ्यास कर सकता हूं। कलकत्ता में विश्वविद्यालय की डिग्री ही काफी है।'
'लेकिन आपको बार लाइब्रेरी में प्रवेश नहीं मिलेगा।'
अमित ने कहा, 'किसे परवाह है?' 'दरअसल, मुझे तो एक छोटी पत्रिका का संपादन करने, कुछ अच्छी कविताएँ और एक-दो उपन्यास लिखने और धीरे-धीरे बुढ़ापे में विलीन हो जाने में ही खुशी होगी। क्या मैं आपको एक पेय दूं? शेरी?'
काकोली ने कहा, 'मैं एक शेरी लूंगा।'
'तुम नहीं, कुकू, तुम खुद ले लो। मैं लता को पेय पदार्थ दे रहा था।'
'आह!' काकोली ने कहा। उसने लता की हल्के नीले रंग की सूती साड़ी को देखा जिस पर बारीक चिकन कढ़ाई थी, और बोली: 'जानती हो लता —गुलाबी रंग तुम पर बहुत जंचेगा।'
लता ने कहा: 'मुझे शेरी जैसी खतरनाक चीज़ नहीं पीनी चाहिए। क्या मुझे थोड़ी सी मिल सकती है—ओह, क्यों नहीं? एक छोटी सी शेरी, कृपया।'
अमित मुस्कुराते हुए बार में गया और बोला: 'क्या आपको लगता है कि मैं शेरी के दो गिलास ले सकता हूँ?'
'सूखा, मध्यम या मीठा, महोदय?' तपन ने पूछा।
तपन परिवार का सबसे छोटा सदस्य था, जिसे सब प्यार करते थे और

लाड़-प्यार करते थे, और जिसे कभी-कभार शेरी की एक घूंट पीने की भी इजाजत थी। आज शाम वह बार में मदद कर रहा था।

अमित ने कहा, 'एक मीठा और एक सूखा, कृपया।' उसने तपन से पूछा, 'दीपांकर कहाँ है?'

तपन ने कहा, 'मुझे लगता है वो अपने कमरे में है, दादा। क्या मैं उसे नीचे बुला लूँ?'

'नहीं, नहीं, तुम बार में मदद करो,' अमित ने अपने भाई के कंधे पर थपथपाते हुए कहा। 'तुम अच्छा काम कर रहे हो। मैं बस देखता हूँ कि वह क्या कर रहा है।'

उनके मंझले भाई दीपांकर एक स्वप्नद्रष्टा थे। उन्होंने अर्थशास्त्र का अध्ययन किया था, लेकिन अपना अधिकांश समय कवि और देशभक्त श्री अरबिंदो के बारे में पढ़ने में व्यतीत करते थे, जिनकी नीरस रहस्यवादी कविताओं में वे (अमित की घृणा के बावजूद) आजकल पूरी तरह डूबे हुए थे। दीपांकर स्वभाव से अनिर्णायक थे। अमित जानता था कि उन्हें स्वयं नीचे लाना ही सबसे अच्छा होगा। अपने हाल पर छोड़ दिए जाने पर, दीपांकर हर निर्णय को एक आध्यात्मिक संकट की तरह लेते थे। चाय में एक चम्मच चीनी डालें या दो, अभी नीचे आएं या पंद्रह मिनट बाद, बल्लीगंज के सुखमय जीवन का आनंद लें या श्री अरबिंदो के वैराग्य मार्ग को अपनाएं, इन सभी निर्णयों से उन्हें अंतहीन पीड़ा होती थी। उनके जीवन में कई सशक्त महिलाएं आईं और उनके अधिकांश निर्णय उनके लिए लेती रहीं, फिर उनके इस अनिश्चित रवैये ('क्या वह वास्तव में मेरे लिए सही हैं?') से अधीर होकर वे आगे बढ़ गईं। जब तक वे उनके साथ रहीं, उनके विचार उनके अनुरूप ढलते रहे, फिर से स्वतंत्र रूप से बहने लगे।

दीपांकर को नाश्ते के समय 'यह सब शून्य है' जैसी टिप्पणियां करने का

शौक था, जिससे तले हुए अंडों पर एक रहस्यमय आभा छा जाती थी।
अमित, दीपांकर के कमरे में गया और उसे प्रार्थना की चटाई पर हारमोनियम के पास बैठे हुए, रवींद्रनाथ टैगोर का एक गीत बेसुरा गाते हुए पाया।
अमित ने बंगाली में कहा, 'तुम्हें जल्दी नीचे आ जाना चाहिए। मेहमान आने लगे हैं।'
'बस आ रहा हूँ, बस आ रहा हूँ,' दीपांकर ने कहा। 'मैं बस यह गाना खत्म करूँगा, और फिर... मैं नीचे आ जाऊँगा। मैं आऊँगा।'
अमित ने कहा, 'मैं इंतजार करूंगा।'
'आप नीचे जा सकते हैं, दादा। आप परेशान न हों। कृपया।'
अमित ने कहा, 'कोई दिक्कत नहीं।' दीपांकर के गीत समाप्त करने के बाद, जो बेसुरा था (क्योंकि सभी स्वर, निस्संदेह, शून्य के समक्ष समान थे), अमित उसे सागौन की लकड़ी से बनी संगमरमर की सीढ़ियों से नीचे ले गया।

7.8

जब वे आधे रास्ते तक पहुँच गए, तो अमित ने पूछा, 'कडल्स कहाँ है?'
'ओह,' दीपांकर ने अस्पष्ट रूप से कहा, 'मुझे नहीं पता।'
वह किसी को काट सकता है।
'हां,' दीपांकर ने सहमति जताते हुए कहा, वह इस विचार से ज्यादा परेशान नहीं थे।
कडल्स एक मिलनसार कुत्ता नहीं था। वह दस साल से अधिक समय से चटर्जी परिवार के साथ था, इस दौरान उसने बिस्वास बाबू, कई स्कूली बच्चों (जो खेलने आए दोस्त थे), कई वकीलों (जो न्यायमूर्ति चटर्जी के बैरिस्टर के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान सम्मेलनों के लिए उनके चैंबर में आते थे), एक मध्यम स्तर के अधिकारी, घर-घर जाकर इलाज

करने आए एक डॉक्टर और डाकिया और इलेक्ट्रीशियन जैसे कई लोगों को काट लिया था।

कडल्स का सबसे हालिया शिकार वह व्यक्ति था जो दस-वर्षीय जनगणना में भाग लेने के लिए दरवाजे पर आया था।

कडल्स एकमात्र प्राणी जिसके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करता था, वह न्यायमूर्ति चटर्जी के पिता की बिल्ली पिलो थी, जो बगल के घर में रहती थी, और जो इतनी उग्र थी कि उसे पट्टे पर बांधकर सैर के लिए ले जाया जाता था।

अमित ने कहा, 'तुम्हें उसे बांध देना चाहिए था।'

दीपांकर ने माथे पर शिकन डाली। उनके विचार श्री अरबिंदो के साथ थे। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है मैंने किया है।'

अमित ने कहा, 'हमें पहले से ही सुनिश्चित कर लेना चाहिए। एहतियात के तौर पर।'

अच्छा हुआ कि उन्होंने ऐसा किया। कडल्स शायद ही कभी अपनी स्थिति बताने के लिए गुर्राता था, और दीपांकर को याद नहीं था कि उसने उसे कहाँ रखा था। हो सकता है कि वह अभी भी बगीचे में घूम रहा हो ताकि बरामदे में भटकने वाले किसी भी मेहमान पर हमला कर सके।

उन्हें कडल्स बेडरूम में मिला, जिसे लोगों के बैग और अन्य सामान रखने के लिए अलग रखा गया था। वह चुपचाप एक बेडसाइड टेबल के पास दुबका हुआ था और अपनी चमकदार छोटी काली आँखों से उन्हें देख रहा था। वह एक छोटा काला कुत्ता था, जिसकी छाती और पंजों पर कुछ सफेद निशान थे। जब उन्होंने उसे खरीदा था, तब चटर्जी परिवार को बताया गया था कि वह एक अप्सो है, लेकिन वह तिब्बती टेरियर के मिश्रण से बना एक मिश्रित नस्ल का कुत्ता निकला।

पार्टी में किसी तरह की परेशानी से बचने के लिए, उसे एक पट्टे से पलंग

के खंभे से बांध दिया गया था। दीपांकर को याद नहीं था कि उसने ऐसा किया था, इसलिए हो सकता है कि यह किसी और ने किया हो। वह और अमित कडल्स के पास गए। कडल्स आम तौर पर परिवार को बहुत प्यार करता था, लेकिन आज वह घबराया हुआ था।

कडल्स ने बिना गुर्राए उन्हें गौर से देखा, और जब उसे लगा कि सही समय आ गया है, तो वह पूरी ताकत से हवा में उनकी ओर झपटा, लेकिन तभी पट्टे के अचानक खिंचाव ने उसे पीछे खींच लिया। उसने पूरी ताकत लगाई, लेकिन काटने की सीमा तक नहीं पहुँच सका। सभी चटर्जी जानते थे कि जब उनकी सहज प्रवृत्ति कडल्स के हमले का संकेत देती है, तो उन्हें तुरंत पीछे हट जाना चाहिए। लेकिन शायद मेहमान इतनी जल्दी प्रतिक्रिया न दें।

अमित ने कहा, 'मुझे लगता है हमें उसे इस कमरे से बाहर ले जाना चाहिए।' देखा जाए तो कडल्स दीपांकर का कुत्ता था, और इसलिए उसकी ज़िम्मेदारी भी, लेकिन अब वह असल में उन सभी का हो गया था —या यूँ कहें कि, उन्हें उनमें से एक मान लिया गया था, जैसे एक नियमित षट्भुज का छठा बिंदु।

दीपांकर ने कहा, 'वह यहां काफी खुश लग रहा है। वह भी एक जीवित प्राणी है। घर में इतनी चहल-पहल से स्वाभाविक रूप से वह घबरा जाता है।'

अमित ने कहा, 'मेरी बात मानिए, वह किसी को काट लेगा।'

‘हम्म... क्या मुझे दरवाजे पर एक नोटिस लगाना चाहिए: कुत्ते से सावधान?’ दीपांकर ने पूछा।

नहीं। मुझे लगता है कि आपको उसे यहाँ से बाहर निकाल देना चाहिए। उसे अपने कमरे में बंद कर दो।

दीपांकर ने कहा, 'मैं ऐसा नहीं कर सकता। जब सब लोग नीचे होते हैं तो

उसे ऊपर रहना बिल्कुल पसंद नहीं होता। आखिर वह एक तरह का लाडला कुत्ता है।'

अमित को लगा कि कडल्स अब तक का सबसे सनकी पालतू कुत्ता था जिसे उसने देखा था। उसने भी उसके इस स्वभाव का कारण घर में लगातार आने वाले मेहमानों को ही बताया। हाल ही में काकोली के दोस्तों ने चटर्जी हवेली में आना-जाना बढ़ा दिया था। अब संयोग से, काकोली खुद एक दोस्त के साथ कमरे में दाखिल हुई।

अरे, आप यहाँ हैं, दादा, हम तो यही सोच रहे थे कि आपको क्या हो गया है।

क्या तुम नीरा से मिले हो? नीरा, ये मेरे भाई अमित और दीपांकर हैं। ओह हाँ, इसे बिस्तर पर रख दो,' काकोली ने कहा। 'यहाँ यह बिल्कुल सुरक्षित रहेगा। और बाथरूम उधर है।' कडल झपटने के लिए तैयार हो गया। 'कुत्ते से सावधान रहना—वह वैसे तो harmless है, लेकिन कभी-कभी उसका मिजाज बदल जाता है। हमारा भी मिजाज बदलता रहता है, है ना, कडल? बेचारा कडल, बेडरूम में बिल्कुल अकेला रह गया।'

डार्लिंग कडल्स, अब क्या करें?

जब घर इतना अस्त-व्यस्त हो!

sang Kakoli, then disappeared.

अमित ने कहा, 'हमें उसे ऊपर ले जाना चाहिए। चलो।'

दीपांकर मान गया। कडल गुर्राया। उन्होंने उसे शांत किया और ऊपर ले गए। फिर दीपांकर ने उसे दिलासा देने के लिए हारमोनियम पर कुछ मधुर धुनें बजाईं और वे नीचे लौट आए।

अब तक कई मेहमान आ चुके थे और पार्टी पूरे जोश में चल रही थी। भव्य पियानो और उससे भी बड़े झूमर वाले विशाल ड्राइंग रूम में गर्मियों की शाम के शानदार परिधानों में सजे-धजे कई मेहमान जमा थे, महिलाएं

एक-दूसरे की तारीफ करती, एक-दूसरे को निहारती और परखती हुई, वहीं पुरुष आत्म-प्रशंसा में मशगूल थे। ब्रिटिश और भारतीय, बंगाली और गैर-बंगाली, बूढ़े और अधेड़ और युवा, चमकती साड़ियाँ और झिलमिलाते हार, बारीक सोने की किनारी वाली और हाथों से परिपूर्ण रूप से सिली हुई शांतिपुरी धोती, सोने के बटनों वाले कच्चे ऑफ-व्हाइट रेशम के कुर्ते, विभिन्न पेस्टल रंगों की शिफॉन साड़ियाँ, लाल बॉर्डर वाली सफेद सूती साड़ियाँ, सफेद पृष्ठभूमि और बुनाई में पैटर्न वाली ढाकाई साड़ियाँ—या (और भी अधिक सुरुचिपूर्ण) सफेद डिज़ाइन वाली ग्रे पृष्ठभूमि वाली साड़ियाँ, काले पतलून और काले बो टाई के साथ सफेद डिनर जैकेट और काले पेटेंट लेदर डर्बी या ऑक्सफोर्ड जूते (प्रत्येक पर एक छोटा सा परावर्तित झूमर लगा हुआ), फूलों की छपाई वाले महीन पॉपलिन चिंट्ज़ और बारीक पोल्का-डॉट्स वाले सफेद सूती ऑर्गेंडी के लंबे परिधान, यहाँ तक कि सबसे हल्के और गर्मियों के अनुकूल रेशम में एक या दो ऑफ-द-शोल्डर सिल्क ड्रेस भी: कपड़े शानदार थे, और उन्हें पहनने वाले लोग दमक रहे थे।

अरुण, जिसे जैकेट की ज़रूरत नहीं लग रही थी, ने इसके बजाय एक स्टाइलिश कमरबंद पहना हुआ था—एक गहरे लाल रंग का कमरबंद जिस पर झिलमिलाता हुआ पैटर्न बना हुआ था—और साथ में मैचिंग बो टाई भी। वह जॉक मैके से गंभीर स्वर में बात कर रहा था, जो लगभग चालीस वर्ष का एक हंसमुख कुंवारा व्यक्ति था और मैककिबिन एंड रॉस की प्रबंध एजेंसी के निदेशकों में से एक था।

मीनाक्षी ने नारंगी रंग की आकर्षक फ्रेंच शिफॉन साड़ी और गले व कमर पर पतली पट्टियों से बंधी हुई गहरे नीले रंग की बैकलेस चोली पहनी हुई थी। उनका पेट खूबसूरती से खुला हुआ था, उनकी लंबी और सुशोभित गर्दन पर नीले और नारंगी रंग का जयपुरी एनामेल चोकर था, साथ ही

हाथों में मैचिंग ब्रेसलेट भी थे। स्टिलेटो हील्स और ऊंचे जूड़े ने उनकी पहले से ही अच्छी-खासी ऊंचाई को और भी बढ़ा दिया था, बड़े-बड़े झुमके उनकी ठुड्डी के नीचे खूबसूरती से लटक रहे थे, माथे पर लगा नारंगी टीका उनकी आंखों जितना बड़ा था, और सबसे आकर्षक और सुशोभित करने वाली थी उनकी दिलकश मुस्कान।

वह अमित की ओर बढ़ी, और उससे शॉकिंग शियापरेली की खुशबू आ रही थी।

लेकिन अमित के उसे नमस्कार करने से पहले ही, एक अधेड़ उम्र की, आरोप लगाने वाले भाव वाली, बड़ी-बड़ी उभरी हुई आँखों वाली महिला ने उसे घेर लिया, जिसे वह पहचानता नहीं था। उसने उससे कहा:

'मुझे आपकी पिछली किताब बहुत पसंद आई, लेकिन मैं यह नहीं कह सकती कि मुझे वह समझ में आई।' वह जवाब का इंतजार करने लगी।

'ओह—अच्छा, धन्यवाद,' अमित ने कहा।

'क्या आप बस इतना ही कहेंगी?' महिला ने निराश होकर कहा। 'मुझे लगा था कि कवि ज़्यादा वाक्पटु होते हैं। मैं आपकी माँ की पुरानी दोस्त हूँ, हालाँकि हमारी मुलाक़ात कई सालों से नहीं हुई है,' उसने बेतुकी बात कहते हुए कहा। 'हमारा रिश्ता शांतिनिकेतन से है।'

'अहा, मैं समझ गया,' अमित ने कहा। हालाँकि उसे इस महिला में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी, फिर भी वह वहाँ से नहीं हटा। उसे लगा कि उसे कुछ कहना चाहिए।

उन्होंने कहा, 'खैर, अब मैं उतना कवि नहीं रहा। मैं एक उपन्यास लिख रहा हूं।'

'लेकिन ये तो कोई बहाना नहीं है,' महिला ने कहा। फिर उसने आगे कहा: 'बताइए, मामला क्या है? या ये मशहूर अमित चटर्जी का कोई व्यापारिक रहस्य है?'

‘नहीं, नहीं, ऐसा नहीं है,’ अमित ने कहा, जिसे अपने मौजूदा काम के बारे में बात करना पसंद नहीं था। ‘यह बंगाल के अकाल के समय के एक साहूकार के बारे में है। जैसा कि आप जानते हैं, मेरी माँ का परिवार पूर्वी बंगाल से आता है—’

उस महिला ने कहा, 'यह कितनी अच्छी बात है कि आप अपने देश के बारे में लिखना चाहती हैं। खासकर विदेशों में इतने सारे पुरस्कार जीतने के बाद। बताइए, क्या आप अक्सर भारत आती-जाती रहती हैं?'

अमित ने देखा कि उसकी दोनों बहनें अब उसके पास खड़ी होकर बातें सुन रही थीं।

'ओह हाँ, अब जब मैं लौट आया हूँ तो मैं ज्यादातर समय यहीं रहता हूँ। मैं, खैर, आता-जाता रहता हूँ—'

'अंदर-बाहर,' महिला ने आश्चर्य से दोहराया।

मीनाक्षी ने मददगार लहजे में कहा, 'आगे-पीछे।'

‘कभी-कभी,’ काकोली ने कहा, जो संयम रखने में असमर्थ थे।

महिला ने भौंहें चढ़ा लीं।

‘इधर-उधर,’ मीनाक्षी ने कहा।

‘इधर-उधर,’ काकोली ने कहा।

वह और मीनाक्षी खिलखिलाकर हंसने लगीं। फिर उन्होंने विशाल कमरे के दूसरे छोर पर किसी को हाथ हिलाकर इशारा किया और पल भर में गायब हो गईं।

अमित ने माफी मांगते हुए मुस्कुराया। लेकिन वह महिला उसे गुस्से से देख रही थी। क्या ये युवा चटर्जी उसका मजाक उड़ाने की कोशिश कर रहे थे?

उसने अमित से कहा: 'मैं तुम्हारे बारे में पढ़ते-पढ़ते बिल्कुल ऊब गई हूँ।'

अमित ने हल्के स्वर में कहा: 'हम्म। हाँ।'

और आपके बारे में सुनकर।
अमित ने कहा, 'अगर मैं मैं न होता, तो अपने बारे में सुनकर बहुत ऊब जाता।' महिला ने भौंहें चढ़ाईं। फिर संभलते हुए बोली, 'मुझे लगता है मेरा पेय खत्म हो गया है।'
उसने देखा कि उसका पति पास ही खड़ा है, और उसने उसे अपना खाली गिलास थमा दिया, जिसके किनारे पर गहरे लाल रंग की लिपस्टिक के धब्बे लगे थे। 'लेकिन मुझे बताओ, तुम लिखते कैसे हो?'
'क्या आपका मतलब है—' अमित ने बात शुरू की।
मेरा मतलब है, क्या यह प्रेरणा है? या यह कड़ी मेहनत है?
अमित ने कहा, 'अच्छा, प्रेरणा के बिना कोई कुछ नहीं कर सकता—'
'मुझे पता था, मुझे बस इतना पता था कि यह प्रेरणा है। लेकिन शादी किए बिना, आपने उस युवा दुल्हन के बारे में वह कविता कैसे लिखी?'
उसकी आवाज़ में असहमति झलक रही थी।
अमित सोच में पड़ गया और बोला: 'मैं बस—'
'और मुझे बताइए,' महिला ने आगे कहा, 'क्या आपको किताब लिखने के बारे में सोचने में लंबा समय लगता है? मैं आपकी नई किताब पढ़ने के लिए बेताब हूं।'
अमित ने कहा, 'मैं भी ऐसा ही सोचता हूं।'
महिला ने कहा, 'मेरे पास किताबों के लिए कुछ अच्छे विचार हैं। जब मैं शांतिनिकेतन में थी, तब गुरुदेव का मुझ पर बहुत गहरा प्रभाव था... आप जानते हैं - हमारे अपने रवींद्रनाथ...'
अमित ने कहा, 'आह।'
'मुझे पता है, इसमें आपको ज्यादा समय नहीं लगेगा... लेकिन लिखना तो बहुत मुश्किल काम होगा। मैं कभी लेखक नहीं बन सकती। मुझमें वो प्रतिभा नहीं है। वो तो ईश्वर की देन है।'

‘हां, ऐसा लगता है कि यह आ रहा है—’
महिला ने कहा, ‘मैंने भी कभी कविताएँ लिखी थीं। अंग्रेज़ी में, बिल्कुल आपकी तरह। हालाँकि मेरी एक चाची हैं जो बंगाली कविताएँ लिखती हैं। वो रोबी बाबू की सच्ची शिष्या थीं। क्या आपकी कविताएँ तुकबंदी वाली होती हैं?’
'हाँ।'
‘मेरी कविताएँ वैसी नहीं थीं। वे आधुनिक थीं। मैं युवा थी, दार्जिलिंग में रहती थी। मैं प्रकृति के बारे में लिखती थी, प्रेम के बारे में नहीं। तब तक मेरी मुलाकात मिहिर से नहीं हुई थी। मेरे पति, आप जानते ही हैं। बाद में मैंने उन्हें टाइप किया। मैंने उन्हें मिहिर को दिखाया। एक बार मच्छरों के काटने से मुझे अस्पताल में रात बितानी पड़ी। और अचानक एक कविता मेरे मन में आई। लेकिन उन्होंने कहा, “इसमें तुकबंदी नहीं है।”’
उसने अपने पति की ओर नापसंदगी भरी नजरों से देखा, जो उसके गिलास को फिर से भरकर उसके आसपास एक कप-धारक की तरह मंडरा रहा था।
‘क्या आपके पति ने ऐसा कहा था?’ अमित ने कहा।
'हां। फिर मुझे दोबारा कभी ऐसी इच्छा नहीं हुई। मुझे नहीं पता क्यों।'
अमित ने उसके पति से कहा, 'तुमने एक कवि की हत्या कर दी है,' जो देखने में काफी अच्छा आदमी लग रहा था।
‘आइए,’ उसने लता से कहा, जो बातचीत का आखिरी हिस्सा सुन रही थी, ‘जैसा मैंने वादा किया था, मैं आपको कुछ लोगों से मिलवाता हूँ। मुझे एक मिनट के लिए माफ़ कीजिएगा।’
अमित ने ऐसा कोई वादा नहीं किया था, लेकिन इसकी वजह से वह बच निकलने में कामयाब हो गया।
7.9

अमित ने लता से कहा, 'अच्छा, तुम किससे मिलना चाहती हो?'
‘कोई नहीं,’ लता ने कहा।
‘कोई नहीं?’ अमित ने पूछा। वह मुस्कुरा रहा था।
‘कोई भी। लाल और सफेद सूती साड़ी वाली उस महिला के बारे में क्या ख्याल है?’
'छोटे भूरे बालों वाली वह महिला—जो दीपांकर और मेरे दादाजी को नियम बताती हुई प्रतीत होती है?'
'हाँ।'
‘ये इला चट्टोपाध्याय हैं। डॉ. इला चट्टोपाध्याय। ये हमारी रिश्तेदार हैं। इनके विचार दृढ़ और स्पष्ट होते हैं। आपको ये पसंद आएंगी।’
हालांकि लता को तुरंत और दृढ़ता से राय देने के महत्व के बारे में संदेह था, फिर भी उसे उस महिला का रूप-रंग अच्छा लगा। डॉ. इला चट्टोपाध्याय दीपांकर की ओर उंगली हिलाते हुए बड़े ही स्नेहपूर्ण ढंग से कुछ कह रही थीं। उनकी साड़ी थोड़ी सिकुड़ी हुई थी।
अमित ने पूछा, 'क्या हम बीच में दखल दे सकते हैं?'
‘बिल्कुल कर सकते हो, अमित, बेवकूफी मत करो,’ डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने कहा।
‘यह अरुण की बहन लता है।’
डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने एक पल में उसका आकलन करते हुए कहा, 'अच्छा। मुझे यकीन है कि वह अपने घमंडी भाई से कहीं ज़्यादा अच्छी है। मैं दीपांकर से कह रही थी कि अर्थशास्त्र एक बेकार विषय है। उसे गणित पढ़ना कहीं बेहतर होता। क्या आप सहमत नहीं हैं?'
‘बिल्कुल,’ अमित ने कहा।
‘अब जब तुम भारत लौट आए हो, अमित, तो तुम्हें यहीं स्थायी रूप से रहना होगा। तुम्हारे देश को तुम्हारी जरूरत है—और मैं यह बात हल्के में

नहीं कह रहा हूँ।'
'बिल्कुल,' अमित ने कहा।
डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने लता से कहा: 'मैं अमित पर कभी ध्यान नहीं देती, वह हमेशा मुझसे सहमत रहता है।'
अमित ने कहा, 'इला काकी कभी किसी पर ध्यान नहीं देती।'
नहीं। और क्या आप जानते हैं क्यों? यह आपके दादाजी की वजह से है।
'मेरी वजह से?' बूढ़े आदमी ने पूछा।
'जी हां,' डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने कहा। 'कई साल पहले आपने मुझसे कहा था कि चालीस साल की उम्र तक आप इस बात को लेकर बहुत चिंतित रहती थीं कि लोग आपके बारे में क्या सोचते हैं। फिर आपने यह तय किया कि आप इस बात को लेकर चिंतित रहेंगी कि आप दूसरों के बारे में क्या सोचती हैं।'
'क्या मैंने ऐसा कहा था?' बूढ़े श्री चटर्जी ने आश्चर्य से कहा।
जी हाँ, बिल्कुल, चाहे आपको याद हो या न हो। मैं भी दूसरों की राय की परवाह करके खुद को दुखी कर लेती थी, इसलिए मैंने तुरंत आपकी विचारधारा को अपना लिया, भले ही तब मेरी उम्र चालीस या तीस भी नहीं थी। क्या आपको अपनी वह बात सचमुच याद नहीं है? मैं अपने करियर को छोड़ने के बारे में सोच रही थी, और मेरे पति के परिवार की तरफ से मुझ पर बहुत दबाव था। आपसे हुई बातचीत ने मेरी ज़िंदगी बदल दी।
"खैर," बूढ़े श्री चटर्जी ने कहा, "मुझे आजकल कुछ बातें याद रहती हैं, लेकिन कुछ नहीं। लेकिन मुझे बहुत खुशी है कि मेरी बात ने आप पर इतना गहरा प्रभाव डाला। आपको पता है, उस दिन मैं अपनी पिछली बिल्ली से एक पहले वाली बिल्ली का नाम भूल गया था। मैंने याद करने की कोशिश की, लेकिन मुझे याद नहीं आया।"

‘Biplob,’ said Amit.

'हां, बिल्कुल, और मुझे आखिरकार याद आ ही गया। मैंने उनका नाम ऐसा इसलिए रखा था क्योंकि मैं सुभाष बोस का दोस्त था—ठीक है, मैं कहूँ कि मैं उनके परिवार को जानता था... ज़ाहिर है, एक न्यायाधीश के रूप में मेरी स्थिति में, ऐसा नाम, उह—'

अमित ने तब तक इंतजार किया जब तक बूढ़ा व्यक्ति सही शब्द की तलाश नहीं करने लगा, फिर उसने उसकी मदद की।

‘विडंबनापूर्ण?’

नहीं, अमित, मैं उस शब्द की तलाश नहीं कर रहा था, मैं—खैर, “व्यंग्यात्मक” ठीक रहेगा। बेशक, वो अलग ज़माने थे, हम्म, हम्म। जानते हो, अब तो मैं भारत का नक्शा भी नहीं बना सकता। ये सब अकल्पनीय लगता है। और कानून भी हर दिन बदल रहा है। हाई कोर्ट में रिट याचिकाओं के बारे में पढ़ते रहते हैं। खैर, मेरे ज़माने में तो हम सामान्य मुकदमों से ही संतुष्ट थे। लेकिन मैं बूढ़ा हो गया हूँ, चीज़ें आगे बढ़नी चाहिए, और मुझे पीछे हटना होगा। अब इला जैसी लड़कियाँ, और तुम जैसे युवा—उन्होंने अमित और लता की ओर इशारा करते हुए कहा—को चीज़ों को आगे ले जाना होगा।

डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने कहा, 'मैं अब मुश्किल से ही लड़की हूं। मेरी अपनी बेटी अब पच्चीस साल की है।'

‘मेरे लिए, प्यारी इला, तुम हमेशा एक लड़की ही रहोगी,’ बूढ़े श्री चटर्जी ने कहा।

डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने थोड़ी अधीरता भरी आवाज़ निकाली। “खैर, मेरे छात्र मुझे लड़की की तरह नहीं समझते। पिछले दिनों मैं अपने एक पुराने किताब के एक अध्याय पर अपने एक कनिष्ठ सहकर्मी, एक बहुत ही गंभीर युवक के साथ चर्चा कर रही थी, और उसने कहा, “महोदया, मैं न

केवल आपका कनिष्ठ हूँ, बल्कि उस समय के संदर्भ में इस किताब की स्थिति और इस तथ्य को भी समझता हूँ कि आपके पास अब ज्यादा दिन नहीं बचे हैं, इसलिए यह सुझाव देना मेरे लिए कतई उचित नहीं होगा कि —" मैं बहुत प्रभावित हुई। ऐसी बातें मुझे नई ऊर्जा देती हैं।

'वह कौन सी किताब थी?' लता ने पूछा।

डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने कहा, 'यह डॉन के बारे में एक किताब थी। तत्वमीमांसीय कार्य-कारणता। यह बहुत ही मूर्खतापूर्ण किताब है।'

'ओह, तो आप अंग्रेजी पढ़ाते हैं!' लता ने आश्चर्यचकित होकर कहा। 'मुझे लगा था कि आप डॉक्टर हैं—मेरा मतलब है, मेडिकल डॉक्टर।'

'आखिर तुम उसे क्या-क्या बता रहे थे?' डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने अमित से कहा।

'कुछ नहीं। मुझे आपको ठीक से परिचय कराने का मौका ही नहीं मिला। आप दीपांकर को इतनी ज़ोर से कह रहे थे कि उसे अर्थशास्त्र छोड़ देना चाहिए था कि मैंने बीच में टोकने की हिम्मत ही नहीं की।'

'मैं तो ऐसा ही था। और उसे भी ऐसा ही होना चाहिए था। लेकिन वह कहाँ चला गया?'

अमित ने सरसरी तौर पर कमरे का जायजा लिया और देखा कि दीपांकर, काकोली और उसके साथियों के साथ खड़ा है। दीपांकर, अपनी रहस्यवादी और धार्मिक प्रवृत्ति के बावजूद, भोली-भाली युवतियों को भी पसंद करता था।

अमित ने पूछा, 'क्या मैं उसे आपको वापस सौंप दूं?'

'अरे नहीं,' डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने कहा, 'उनसे बहस करने से मुझे और गुस्सा आता है, ये तो किसी बेस्वाद चीज़ से लड़ने जैसा है... भारत की आध्यात्मिक जड़ों और बंगाल की प्रतिभा के बारे में उनके सारे घिसे-पिटे विचार। खैर, अगर वो सच्चे बंगाली होते, तो अपना नाम बदलकर

चट्टोपाध्याय रख लेते—और आप सब भी, अंग्रेजों की कमज़ोर ज़ुबान और अक्ल को खुश करने के बजाय... आप कहाँ पढ़ रहे हैं?'

डॉ. इला चट्टोपाध्याय की जोशीली और ऊर्जावान बातों से अभी भी थोड़ी विचलित लता ने कहा: 'ब्रह्मपुर।'

'ओह, ब्रह्मपुर,' डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने कहा। 'एक असंभव जगह। मैं एक समय—नहीं, नहीं, मैं नहीं कहूँगी, यह बहुत क्रूर है, और तुम एक अच्छी लड़की हो।'

'ओह, बोलिए, इला काकी,' अमित ने कहा। 'मुझे क्रूरता बहुत पसंद है, और मुझे यकीन है कि लता आपकी हर बात सुन लेंगी।'

'वाह, ब्रह्मपुर!' डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने बिना किसी हिचकिचाहट के कहा। 'ब्रह्मपुर! लगभग दस साल पहले मुझे अंग्रेजी विभाग में किसी सम्मेलन में भाग लेने के लिए एक दिन के लिए वहाँ जाना पड़ा था, और मैंने ब्रह्मपुर और बरसात महल आदि के बारे में इतना कुछ सुना था कि मैं वहाँ दो-तीन दिन और रुक गई। मुझे तो लगभग उल्टी आने लगी थी। वह सारी दरबारी संस्कृति, जिसमें 'हाँ हुज़ूर' और 'नहीं हुज़ूर' जैसे शब्द थे और उसमें ज़रा भी जोश नहीं था। "आप कैसी हैं?" "अरे, मैं ठीक हूँ।" मैं उसे बर्दाश्त नहीं कर सकी। "हाँ, मुझे चावल की दो कलियाँ और दाल की एक बूँद चाहिए..." वह सारा सूक्ष्मता, शिष्टाचार, झुकना, चापलूसी करना, ग़ज़लें और कथक। कथक! जब मैंने उन मोटी महिलाओं को लट्टू की तरह घूमते देखा, तो मेरा मन किया कि उनसे कहूँ, "भागो! भागो! नाचो मत, भागो!"'

'अच्छा हुआ कि तुमने ऐसा नहीं किया, इला काकी, वरना तुम्हारा गला घोंट दिया जाता।'

"खैर, कम से कम इससे मेरे कष्टों का अंत तो हो जाता। अगली शाम मुझे आपकी ब्रह्मपुरी संस्कृति का एक और अनुभव करना पड़ा। हमें ग़ज़ल

गाने वाली एक गायिका का संगीत सुनने जाना पड़ा। भयानक, भयानक! मैं इसे कभी नहीं भूल पाऊँगी! उन भावुक महिलाओं में से एक, सईदा नाम की कोई महिला, जिसके गहनों के कारण कुछ दिखाई ही नहीं देता था—ऐसा लग रहा था जैसे सूरज को घूर रही हो। जंगली घोड़े भी मुझे वहाँ दोबारा नहीं ले जाएँगे... और वे सभी बेवकूफ आदमी उस बेवकूफी भरे उत्तरी पहनावे, पजामा में, ऐसे लग रहे थे जैसे अभी-अभी बिस्तर से उठे हों, आनंद या पीड़ा में लोट-पोट हो रहे थे—सबसे दयनीय आत्म-दया से भरे नीरस छंदों पर "वाह! वाह!" कराह रहे थे—या कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगा जब मेरे दोस्तों ने उसका अनुवाद किया... क्या आपको इस तरह का संगीत पसंद है?"

'खैर, मुझे शास्त्रीय संगीत पसंद है,' लता ने संकोच से कहना शुरू किया, और डॉ. इला चट्टोपाध्याय के यह कहने का इंतज़ार करने लगी कि वह पूरी तरह से गलत हैं। 'उदाहरण के लिए, उस्ताद मजीद खान द्वारा दरबारी जैसे रागों की प्रस्तुति...'

लता के वाक्य पूरा होने का इंतजार किए बिना, अमित ने तुरंत हस्तक्षेप किया और डॉ. इला चट्टोपाध्याय के गुस्से का पात्र बन गया।

'मैं भी यही सोचता हूँ, मैं भी यही सोचता हूँ,' उन्होंने कहा। 'मुझे हमेशा से ऐसा लगता रहा है कि राग का प्रदर्शन किसी उपन्यास की तरह होता है —या कम से कम उस तरह के उपन्यास की तरह जिसे मैं लिखने की कोशिश कर रहा हूँ। आप जानते हैं,' उन्होंने बोलते-बोलते अपनी बात जारी रखी, 'पहले आप एक स्वर लेते हैं और कुछ देर तक उसका अन्वेषण करते हैं, फिर दूसरे स्वर की संभावनाओं को जानने के लिए, फिर शायद आप प्रमुख स्वर तक पहुँचते हैं, और थोड़ी देर रुकते हैं, और धीरे-धीरे ही वाक्यांश बनने लगते हैं और तबला ताल में शामिल हो जाता है... और फिर अधिक शानदार सुधार और मोड़ शुरू होते हैं, मुख्य धुन

समय-समय पर लौटती रहती है, और अंत में सब कुछ तेज हो जाता है, और उत्साह चरम पर पहुँच जाता है।'

डॉ. इला चट्टोपाध्याय उन्हें हैरानी से देख रही थीं। 'ये तो बिलकुल बकवास है,' उन्होंने अमित से कहा। 'तुम तो दीपांकर की तरह ही बेवकूफ बनते जा रहे हो। लता, उसकी बातों पर ध्यान मत दो,' मेटाफिजिकल कॉज़ैलिटी की लेखिका ने आगे कहा। 'वो तो बस एक लेखक है, साहित्य के बारे में उसे कुछ भी नहीं पता। बकवास सुनकर मुझे भूख लग जाती है, मुझे तुरंत कुछ खाना चाहिए। कम से कम परिवार में तो खाना सही समय पर परोसा जाता है। "चावल के दो टुकड़े" ही काफी हैं!' और अपने सफेद बालों को ज़ोर से झटकते हुए वो बुफे टेबल की ओर चल पड़ीं।

अमित ने अपने दादाजी के लिए थाली में कुछ खाना लाने की पेशकश की, और बूढ़े ने सहमति दे दी। वे एक आरामदायक कुर्सी पर बैठ गए, और अमित और लता बुफे की ओर चल दिए। रास्ते में, एक सुंदर युवती काकोली के हंसते-खेलते गपशप करते समूह से अलग होकर अमित के पास आई।

'क्या तुम्हें मैं याद नहीं?' उसने पूछा। 'हम सरकार के यहाँ मिले थे।'

अमित यह पता लगाने की कोशिश कर रहा था कि वे कब और किस सरकार की दुकान पर मिले होंगे, और वह एक साथ भौंहें चढ़ा रहा था और मुस्कुरा भी रहा था।

लड़की ने उसे तिरस्कार भरी निगाहों से देखा। उसने कहा, 'हमारी काफी देर तक बातचीत हुई।'

'आह।'

'ब्रिटिशों के प्रति बंकिम बाबू के दृष्टिकोण के बारे में, और यह किस प्रकार उनकी लेखन शैली को प्रभावित करता है, विषयवस्तु को नहीं।'

अमित ने मन ही मन सोचा: हे भगवान! उसने ज़ोर से कहा: 'हाँ...हाँ...।'

लता को अमित और उस लड़की दोनों के लिए दुख तो हुआ, लेकिन वह मुस्कुराए बिना नहीं रह सकी। उसे खुशी थी कि वह आखिरकार पार्टी में आई थी।

लड़की ने ज़िद की: 'क्या तुम्हें याद नहीं है?'

अमित अचानक बहुत बोलने लगा। उसने कहा, 'मैं इतना भुलक्कड़ हूँ—' और जल्दी से जोड़ा, 'और इतना भुला देने वाला हूँ कि कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि क्या मेरा कभी अस्तित्व भी था। मैंने जो कुछ भी किया है, वह मानो कभी हुआ ही नहीं...'

लड़की ने सिर हिलाया। उसने कहा, 'मैं समझ गई कि तुम क्या कहना चाहते हो।' लेकिन थोड़ी देर बाद वह उदास होकर चली गई।

अमित ने भौंहें चढ़ाईं।

लता, जो समझ गई थी कि उसे लड़की को बुरा महसूस कराने का पछतावा हो रहा है, ने कहा:

ऐसा लगता है कि किताबें लिखने के बाद भी आपकी जिम्मेदारियां खत्म नहीं होतीं।

'क्या?' अमित ने कहा, मानो उसने उसे पहली बार देखा हो। 'ओह जी हाँ, ओह जी हाँ, यह बिल्कुल सच है। लीजिए, लता। एक थाली ले लीजिए।'

7.10

अमित मेज़बान के तौर पर अपने सामान्य कर्तव्यों के प्रति कुछ खास सजग नहीं था, फिर भी उसने यह सुनिश्चित करने की कोशिश की कि लता शाम के समय अकेली न रह जाए। वरुण (जो शायद लता का साथ देता) पार्टी में नहीं आया था; उसे अपने शमशु दोस्तों के साथ रहना ज़्यादा पसंद था। मीनाक्षी (जो लता को बहुत पसंद करती थी और आम तौर पर उसे घुमाने ले जाती) मेज़बानी के कामों से मिले थोड़े से आराम के दौरान अपने माता-पिता से कल दोपहर रसोई में मुग़ रसोइए के साथ

और कल शाम ड्राइंग रूम में कॉक्स परिवार के साथ हुई घटनाओं के बारे में बात कर रही थी। उसने कॉक्स परिवार को आज शाम भी आमंत्रित किया था क्योंकि उसे लगा कि यह अरुण के लिए अच्छा रहेगा।

‘लेकिन वो तो बड़ी सादी-सी दिखती है,’ मीनाक्षी ने कहा। ‘उसके कपड़े देखकर लगता है जैसे उसे किसी दुकान से खरीद लिया गया हो।’

उसके पिता ने कहा, 'जब उसने अपना परिचय दिया तो वह उतनी भी नीरस नहीं लग रही थी।'

मीनाक्षी ने कमरे में यूं ही नज़र घुमाई और थोड़ा चौंक गई। पेट्रीशिया कॉक्स ने मोतियों का हार और एक खूबसूरत हरे रंग की रेशमी पोशाक पहनी हुई थी। उनके सुनहरे-भूरे बाल छोटे थे और झूमर की रोशनी में बेहद आकर्षक लग रहे थे। यह कल वाली शांत पेट्रीशिया कॉक्स नहीं थी। मीनाक्षी के चेहरे पर खुशी का कोई भाव नहीं था।

'मुझे उम्मीद है कि तुम ठीक हो, मीनाक्षी,' श्रीमती चटर्जी ने एक क्षण के लिए बंगाली में लौटते हुए कहा।

‘बहुत बढ़िया, मागो,’ मीनाक्षी ने अंग्रेजी में जवाब दिया। ‘मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ।’

इससे श्रीमती चटर्जी के चेहरे पर चिंता की लकीरें उभर आईं।

उन्होंने कहा, 'हम काकोली को लेकर बहुत चिंतित हैं।'

‘हम?’ न्यायमूर्ति चटर्जी ने कहा। ‘ठीक है, मुझे लगता है कि यह सही है।’

‘तुम्हारे पिता बातों को गंभीरता से नहीं लेते। पहले तो कलकत्ता विश्वविद्यालय का वो लड़का था, जो, तुम्हें पता है ना—’

न्यायमूर्ति चटर्जी ने दयालुतापूर्वक कहा, 'वह कम्युनिस्ट है।'

'तो फिर वो लड़का था जिसका हाथ विकृत था और जिसका हास्यबोध विचित्र था, उसका नाम क्या था?'

‘खोजकर्ता।’

‘जी हाँ, कितना दुर्भाग्यपूर्ण संयोग है।’ श्रीमती चटर्जी ने बार की ओर देखा जहाँ उनका अपना तपन अभी भी ड्यूटी पर था। बेचारा। उन्हें उसे जल्दी सोने के लिए कहना होगा। क्या उसे कुछ खाने का समय मिल गया था?

‘और अब?’ मीनाक्षी ने कोने की ओर देखते हुए पूछा, जहाँ काकोली और उसकी सहेलियाँ लगातार बातें कर रही थीं।

‘अब,’ उसकी माँ ने कहा, ‘यह एक विदेशी है। चलो, मैं तुम्हें बता ही देती हूँ, यह वही जर्मन आदमी है।’

मीनाक्षी, जिसने सबसे पहले महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान दिया, ने कहा, 'वह बहुत ही सुंदर है। काकोली ने मुझे यह क्यों नहीं बताया?'

‘आजकल वह काफी रहस्यमयी हो गई है,’ उसकी मां ने कहा।

न्यायमूर्ति चटर्जी ने कहा, 'इसके विपरीत, वह बहुत ही खुले विचारों वाली हैं।'

श्रीमती चटर्जी ने कहा, 'यह बिल्कुल वैसा ही है। हम इतने सारे दोस्तों और खास दोस्तों के बारे में सुनते हैं कि हमें कभी पता ही नहीं चलता कि असली दोस्त कौन है। या फिर सच में कोई दोस्त है भी या नहीं।'

“खैर, प्रिय,” न्यायमूर्ति चटर्जी ने अपनी पत्नी से कहा, “तुम कम्युनिस्ट के बारे में चिंतित थीं और उसका कोई नतीजा नहीं निकला, और हाथ वाले लड़के के बारे में भी, उसका भी कोई नतीजा नहीं निकला। तो फिर चिंता क्यों करें? अरुण की माँ को देखो, वह हमेशा मुस्कुराती रहती है, उसे कभी किसी बात की चिंता नहीं होती।”

मीनाक्षी ने कहा, 'बाबा, यह बिल्कुल सच नहीं है, वह सबसे ज्यादा चिंता करने वाली है। वह हर बात की चिंता करती है—चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न हो।'

‘क्या सच में?’ उसके पिता ने रुचि से पूछा।

‘खैर,’ मीनाक्षी ने आगे कहा, ‘आपको कैसे पता कि उनके बीच कोई रोमांटिक दिलचस्पी है?’

उसकी मां ने कहा, 'वह उसे लगातार इन सभी राजनयिक कार्यक्रमों में आमंत्रित करता रहता है। वह जर्मन वाणिज्य दूतावास में द्वितीय सचिव है। वह रवींद्रसंगीत पसंद करने का दिखावा भी करता है। हद हो गई है।'

‘डार्लिंग, तुम कुछ ज़्यादा ही निष्पक्ष नहीं हो,’ न्यायमूर्ति चटर्जी ने कहा। ‘काकोली ने भी अचानक शुबर्ट के गीतों के पियानो वादन में रुचि दिखाई है। अगर हमारी किस्मत अच्छी रही, तो शायद आज रात हमें उसका एक अनौपचारिक गायन भी सुनने को मिल जाए।’

श्रीमती चटर्जी ने कहा, 'वह कहती हैं कि उनकी आवाज बहुत सुरीली है और वह उस पर मोहित हो जाती हैं। वह अपनी प्रतिष्ठा पूरी तरह से बर्बाद कर देंगी।'

मीनाक्षी ने पूछा, 'उसका नाम क्या है?'

‘Hans,’ said Mrs Chatterji.

‘सिर्फ हैंस?’

‘हंस, कुछ तो गड़बड़ है। सच में, मीनाक्षी, यह बहुत दुखद है। अगर वह गंभीर नहीं है, तो उसका दिल टूट जाएगा। और अगर वह उससे शादी कर लेती है, तो वह भारत छोड़कर चली जाएगी और हम उसे फिर कभी नहीं देख पाएंगे।’

‘हंस सीबर,’ उसके पिता ने कहा। ‘वैसे, अगर आप अपना परिचय मिस चटर्जी के बजाय श्रीमती मेहरा के रूप में देंगी, तो वह आपका हाथ पकड़कर चूम सकते हैं। मुझे लगता है कि उनका परिवार मूल रूप से ऑस्ट्रियाई था। वहाँ शिष्टाचार एक तरह की बीमारी है।’

‘सचमुच?’ मीनाक्षी ने उत्सुकता से पूछा।

'सचमुच। इला भी उससे मोहित हो गई थी। लेकिन तुम्हारी माँ को यह

बात पसंद नहीं आई; वह उसे एक फीके रावण की तरह मानती है जो उसकी बेटी को दूर-दराज के जंगलों में ले जाने आया है।'

यह तुलना उपयुक्त नहीं थी, लेकिन न्यायमूर्ति चटर्जी ने पीठ से बाहर आकर, अपनी उस तार्किक कठोरता को काफी हद तक शिथिल कर दिया जिसके लिए वे प्रसिद्ध थे।

तो आपको लगता है कि वह मेरे हाथ को चूम सकता है?

'शायद नहीं, करेगा। लेकिन उसने मेरे साथ जो किया, उसके मुकाबले यह कुछ भी नहीं है।'

'उन्होंने क्या किया, बाबा?' मीनाक्षी ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से अपने पिता को देखा।

'उसने इसे लगभग चूर-चूर कर दिया था।' उसके पिता ने अपना दाहिना हाथ खोला और कुछ सेकंड तक उसे देखा।

'उसने ऐसा क्यों किया?' मीनाक्षी ने अपनी मधुर हंसी के साथ पूछा।

उसके पिता ने कहा, 'मुझे लगता है कि वह तसल्ली देना चाहता था।'

'और कुछ मिनट बाद तुम्हारे पति को भी वैसी ही तसल्ली मिली। खैर, मैंने देखा कि हाथ मिलाते समय उसने अपना मुंह थोड़ा सा खोला था।'

'ओह, बेचारा अरुण,' मीनाक्षी ने बेफिक्री से कहा।

उसने हंस की ओर देखा, जो अपने बातूनी साथियों से घिरी काकोली को प्रेम भरी निगाहों से निहार रहा था। फिर, अपनी माँ की अत्यधिक पीड़ा के बीच, उसने दोहराया:

'वह बहुत सुंदर है। लंबा भी है। उसमें क्या खराबी है? क्या हम ब्रह्म समाज के लोग खुले विचारों वाले नहीं होते? कुकू की शादी किसी विदेशी से क्यों न करा दें? यह काफी फैशनेबल होगा।'

'हां, क्यों नहीं?' उसके पिता ने कहा। 'उसके अंग सही-सलामत प्रतीत होते हैं।'

श्रीमती चटर्जी ने कहा: 'काश आप अपनी बहन को जल्दबाजी में कदम उठाने से रोक पातीं। मैं उसे उस भयानक मिस हेबेल से वह क्रूर भाषा कभी नहीं सीखने देती।'

मीनाक्षी ने कहा: 'मुझे नहीं लगता कि हम एक-दूसरे से जो कुछ भी कहते हैं उसका कोई खास असर होता है। क्या कुछ साल पहले आप नहीं चाहते थे कि कुकू मुझे अरुण से शादी करने से रोके?'

'ओह, यह तो बिलकुल अलग था,' श्रीमती चटर्जी ने कहा। 'और वैसे भी, अब हमें अरुण की आदत हो गई है,' उन्होंने अविश्वास भरे लहजे में आगे कहा। 'अब हम सब एक बड़ा खुशहाल परिवार हैं।'

बातचीत के बीच में श्री कोहली आ गए, जो भौतिक विज्ञान के एक गोल-मटोल शिक्षक थे और शराब के शौकीन थे। वे बार जाते समय अपनी ताना मारने वाली पत्नी से टकराने से बचने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने कहा, 'नमस्कार, न्यायाधीश महोदय। बांडेल रोड मामले के फैसले के बारे में आपकी क्या राय है?'

"खैर, जैसा कि आप जानते हैं, मैं इस पर कोई टिप्पणी नहीं कर सकता," न्यायमूर्ति चटर्जी ने कहा। "हो सकता है कि अपील के दौरान यह मामला मेरी अदालत में आए। और सच कहूं तो, मैंने भी इस पर बारीकी से नज़र नहीं रखी है, हालांकि मेरे जानने वाले बाकी सभी लोग इस पर नज़र रख रहे हैं।"

लेकिन श्रीमती चटर्जी को ऐसी कोई हिचक नहीं थी। सभी अखबारों में मामले की प्रगति के बारे में लंबी रिपोर्ट छपी थीं और हर किसी की इस पर अपनी राय थी। उन्होंने कहा, 'यह वाकई चौंकाने वाला है। मुझे समझ नहीं आता कि एक साधारण मजिस्ट्रेट को यह अधिकार कैसे हो सकता है —'

'एक सत्र न्यायाधीश, मेरे प्रिय,' न्यायमूर्ति चटर्जी ने बीच में ही कहा।

'हाँ, ठीक है, मुझे समझ नहीं आता कि उसे जूरी के फैसले को पलटने का अधिकार कैसे हो सकता है। क्या यह न्याय है? बारह सच्चे और नेक लोग, है ना? उसकी हिम्मत कैसे हुई खुद को उनसे ऊपर समझने की?'

'नौ, प्रिय। कलकत्ता में नौ बजते हैं। जहाँ तक उनकी अच्छाई और सच्चाई की बात है—' 'हाँ, ठीक है। और फैसले को विकृत कहना—क्या उसने यही नहीं कहा था—?'

'विकृत, अतार्किक, स्पष्ट रूप से गलत और सबूतों के विरुद्ध,' गंजे सिर वाले श्री कोहली ने उसी आनंद के साथ कहा, जो आमतौर पर व्हिस्की पीते समय दिखाते थे। उनका छोटा सा मुंह आधा खुला हुआ था, कुछ-कुछ ध्यानमग्न मछली के मुंह जैसा।

श्रीमती चटर्जी ने आगे कहा, "यह विकृत, अनुचित और न जाने क्या-क्या है? क्या उन्हें ऐसा करने का अधिकार है? यह तो किसी न किसी तरह से अलोकतांत्रिक है। और चाहे हम मानें या न मानें, हम लोकतांत्रिक युग में जी रहे हैं। और लोकतंत्र ही हमारी आधी समस्या है। और इसीलिए हमारे यहाँ ये सारी अशांतियाँ और खून-खराबा होता है, और फिर यहाँ जूरी ट्रायल होते हैं—मुझे सच में नहीं पता कि कलकत्ता में ये अभी भी क्यों होते हैं जबकि भारत के बाकी हिस्सों में इनसे छुटकारा मिल चुका है—और कोई जूरी को रिश्वत देता है या डराता है, और वे ये असंभव फैसले सुना देते हैं। अगर इन फैसलों को पलटने वाले साहसी न्यायाधीश न होते, तो हम कहाँ होते? क्या आप सहमत नहीं हैं, प्रिय?" श्रीमती चटर्जी का स्वर आक्रोशपूर्ण था।

न्यायमूर्ति चटर्जी ने कहा, 'जी हां, बिल्कुल। तो लीजिए, श्री कोहली; अब आपको पता चल गया कि मैं क्या सोचता हूं। लेकिन आपका गिलास खाली है।'

श्री कोहली ने अचंभित होकर कहा, 'हां, मुझे लगता है मैं एक और ले

लूंगा।' उन्होंने चारों ओर जल्दी से देखा ताकि सुनिश्चित हो सके कि कोई आसपास न हो।

श्रीमती चटर्जी ने कहा, 'और तपन से कहिए कि वह तुरंत सो जाए। अगर उसने खाना नहीं खाया है, तो उसे तुरंत नहीं सोना चाहिए। उसे पहले खाना खाना चाहिए।'

न्यायमूर्ति चटर्जी ने कहा, 'क्या तुम्हें पता है, मीनाक्षी, कि पिछले सप्ताह एक दिन तुम्हारी माँ और मैं एक-दूसरे से इतनी जोरदार बहस कर रहे थे कि अगले दिन नाश्ते तक हम दोनों एक-दूसरे के दृष्टिकोण से सहमत हो गए थे और पहले की तरह ही उग्रता से बहस कर रहे थे?'

'तुम किस बात पर बहस कर रही थी?' मीनाक्षी ने कहा। 'मुझे हमारी नाश्ते के समय होने वाली बहसें याद आ रही हैं।'

न्यायमूर्ति चटर्जी ने कहा, 'मुझे याद नहीं आ रहा।' 'क्या आपको याद है? क्या इसका संबंध बिस्वास बाबू से था?'

'इसका कुछ संबंध कडल्स से था,' श्रीमती चटर्जी ने कहा।

'क्या सच में? मुझे पक्का नहीं पता। मुझे तो लगा था—खैर, मीनाक्षी, तुम्हें किसी दिन नाश्ते पर जरूर आना चाहिए। सनी पार्क घर से लगभग पैदल दूरी पर ही है।'

'मुझे पता है,' मीनाक्षी ने कहा। 'लेकिन सुबह-सुबह निकलना बहुत मुश्किल होता है। अरुण हर चीज़ को बिल्कुल व्यवस्थित रखने के लिए बहुत सख्त है, और अपर्णा तो ग्यारह बजे से पहले ही बहुत परेशान करने वाली और उबाऊ होती है। मागो, तुम्हारी रसोइया ने कल मेरी जान बचाई। अब मुझे लगता है मैं जाकर हंस से मिल लूँगी। और वो नौजवान कौन है जो हंस और काकोली को घूर रहा है? उसने तो टाई भी नहीं पहनी है।'

दरअसल, वह युवक लगभग नग्न था: उसने केवल एक साधारण सफेद

कमीज और सफेद पतलून पहनी हुई थी, साथ में एक सामान्य धारीदार टाई भी थी। वह एक कॉलेज का छात्र था।
'मुझे नहीं पता, प्रिय,' श्रीमती चटर्जी ने कहा।
‘एक और मशरूम?’ मीनाक्षी ने पूछा।
न्यायमूर्ति चटर्जी, जिन्होंने काकोली के दोस्तों के अचानक बड़ी संख्या में सामने आने पर सबसे पहले इस वाक्यांश का प्रयोग किया था, ने सिर हिलाया। उन्होंने कहा, 'मुझे यकीन है कि वह है।'
कमरे के बीचोंबीच पहुँचकर मीनाक्षी की मुलाकात अमित से हुई और उसने वही सवाल दोहराया।
अमित ने कहा, 'उसने अपना परिचय कृष्णन के रूप में दिया। लगता है काकोली उसे बहुत अच्छी तरह से जानता है।'
‘ओह,’ मीनाक्षी ने कहा। ‘वह क्या करता है?’
'मुझे नहीं पता। वह उसके करीबी दोस्तों में से एक है,' उसने कहा।
'उसकी सबसे करीबी दोस्तों में से एक?'
‘अरे नहीं,’ अमित ने कहा। ‘वह उसके सबसे करीबी दोस्तों में से एक नहीं हो सकता। वह उन सबके नाम जानती है।’
‘ठीक है, मैं कुकू के क्रॉट से मिलने जा रही हूँ,’ मीनाक्षी ने दृढ़ निश्चय से कहा। ‘लुट्स कहाँ है? वह कुछ मिनट पहले तुम्हारे साथ थी।’
‘मुझे नहीं पता। शायद वहीं कहीं।’ अमित ने उस दिशा की ओर इशारा किया।
पियानो वादक ने भीड़ के एक घनी आबादी वाले और बातूनी हिस्से से कहा, 'वैसे, हैंस को देखते समय अपने हाथों का ध्यान रखना।'
‘हां, मुझे पता है,’ मीनाक्षी ने कहा। ‘पापा ने भी मुझे चेतावनी दी थी। लेकिन अभी तो सुरक्षित समय है। वो खाना खा रहे हैं। यकीनन वो मेरी हाथ पकड़ने के लिए अपनी प्लेट नीचे नहीं रखेंगे?’

अमित ने गंभीर स्वर में कहा, 'कुछ कहा नहीं जा सकता।'
‘बहुत स्वादिष्ट,’ मीनाक्षी ने कहा।
7.11
इस बीच, लता, जो पार्टी के सबसे चहल-पहल वाले हिस्से में थी, ऐसा महसूस कर रही थी मानो वह भाषाओं के सागर में तैर रही हो। वह इसकी चमक-दमक और भव्यता से बेहद प्रभावित थी। कभी-कभी समझ में आने वाली अंग्रेज़ी की लहर उठती, तो कभी समझ से परे बंगाली की लहर। जैसे चिड़ियाएं छोटी-छोटी चीज़ों पर चहचहाती हैं—या कभी-कभार कोई अनमोल रत्न पाकर उसे छोटी-छोटी चीज़ें समझ लेती हैं—वैसे ही उत्साहित मेहमान लगातार बातें कर रहे थे। इतना सारा खाना खाने के बावजूद, हर कोई बहुत सारे शब्द बोल रहा था।
“अरे नहीं, नहीं, दीपांकर... तुम समझते नहीं हो—भारतीय सभ्यता का मूल आधार वर्ग है—जीवन के चार चरण, जीवन के चार उद्देश्य—प्रेम, धन, कर्तव्य और अंतिम मुक्ति—यहाँ तक कि हमारे प्राचीन प्रतीक, स्वास्तिका की चार भुजाएँ भी, जिसका हाल ही में बहुत दुरुपयोग हुआ है... हाँ, वर्ग ही है और केवल वर्ग ही हमारी आध्यात्मिकता का मूल आधार है... तुम इसे तभी समझोगे जब तुम मेरी तरह एक बूढ़ी औरत हो जाओगे...”
‘वह दो रसोइये रखती है, यही कारण है, और कोई कारण नहीं। सचमुच —लेकिन आपको लूची ज़रूर चखनी चाहिए। नहीं, नहीं, आपको सब कुछ सही क्रम में खाना होगा... यही बंगाली खाने का रहस्य है...’
'पिछले दिनों रामकृष्ण मिशन में एक बहुत ही शानदार वक्ता थे; काफी युवा लेकिन बेहद आध्यात्मिक... संकट के युग में रचनात्मकता... आपको अगले सप्ताह अवश्य जाना चाहिए: वे शांति और सद्भाव की खोज के बारे में बात करेंगे...'

सब कहते थे कि अगर मैं सुंदरबन जाऊँगा तो मुझे ढेरों बाघ देखने को मिलेंगे। मुझे एक मच्छर भी नहीं दिखा। चारों तरफ पानी ही पानी था—और कुछ भी नहीं। लोग कितने बड़े झूठे होते हैं!

'इन्हें निष्कासित कर देना चाहिए—चाहे परीक्षा कठिन हो या न हो, क्या परीक्षा कक्ष में पेपर छीनने का यही कारण है? ध्यान रहे, ये कलकत्ता विश्वविद्यालय के वाणिज्य के छात्र हैं। अनुशासन के बिना आर्थिक व्यवस्था का क्या होगा? अगर सर आशुतोष आज जीवित होते तो क्या कहते? क्या स्वतंत्रता का यही अर्थ है?'

'मोंटू बहुत प्यारी लग रही है। लेकिन पोलटू और लोलटू थोड़ी अस्वस्थ लग रही हैं। ज़ाहिर है, अपने पिता की बीमारी के बाद से। वे कहती हैं कि यह... मतलब... लिवर की समस्या है... ज़्यादा शराब पीने से।'

"ओह, नहीं, नहीं, नहीं, दीपांकर—हमारी प्राचीन सभ्यता का मूल प्रतिमान—मैं इसे रचना नहीं कहूंगा—निश्चित रूप से त्रिमूर्ति है... मेरा मतलब ईसाई त्रिमूर्ति से नहीं है; वह सब कुछ बहुत ही अपरिष्कृत लगता है—लेकिन त्रिमूर्ति एक प्रक्रिया और पहलू के रूप में—सृष्टि, संरक्षण और विनाश—हाँ, त्रिमूर्ति, यही हमारी सभ्यता का मूल प्रतिमान है, और कोई दूसरा नहीं..."

'बिल्कुल बेतुकी बात है। इसलिए मैंने यूनियन नेताओं को बुलाया और उन्हें जमकर खरी-खोटी सुनाई। स्वाभाविक रूप से, उन्हें फिर से पटरी पर लाने के लिए थोड़ी सख्ती बरतनी पड़ी। खैर, मैं यह नहीं कहूंगा कि उनमें से एक-दो सबसे जिद्दी लोगों को भुगतान नहीं किया गया, लेकिन यह सब कार्मिक विभाग द्वारा संभाला जाता है।'

'ये Je Reviens नहीं है—ये Quelques Fleurs है—दोनों में ज़मीन-आसमान का फर्क है। वैसे मेरे पति को तो ये फर्क पता भी नहीं चलेगा। उन्हें तो शनेल भी पहचान में नहीं आता!'

तब मैंने रोबी बाबू से कहा: “आप हमारे लिए भगवान के समान हैं, कृपया मेरी बच्ची का नाम बता दीजिए,” और वे मान गए। इसीलिए उसका नाम हेमांगिनी रखा गया है। . . . असल में, मुझे यह नाम पसंद नहीं था, लेकिन मैं क्या कर सकती थी?

‘अगर मुल्ला युद्ध चाहते हैं, तो वे युद्ध कर सकते हैं। पूर्वी पाकिस्तान के साथ हमारा व्यापार लगभग ठप हो गया है। खैर, इसका एक सुखद परिणाम यह है कि आमों की कीमतें कम हो गई हैं! मालदा के किसानों की इस साल बहुत अच्छी फसल हुई है, और उन्हें समझ नहीं आ रहा कि इनका क्या करें। . . . बेशक, परिवहन की समस्या भी है, ठीक वैसे ही जैसे बंगाल के अकाल के दौरान थी।’

“अरे नहीं, नहीं, नहीं, दीपांकर, तुम बिल्कुल नहीं समझे हो—भारतीय दर्शन का मूल स्वरूप द्वैतवाद का है... हाँ, द्वैतवाद का... हमारे प्राचीन वस्त्र, साड़ी का ताना-बाना—कपड़े का एक ही टुकड़ा जो हमारी भारतीय नारीत्व को लपेटे रखता है—ब्रह्मांड का ताना-बाना, अस्तित्व और गैर-अस्तित्व के बीच का तनाव—हाँ, निःसंदेह, हमारी इस प्राचीन भूमि पर केवल द्वैतवाद ही हम पर शासन करता है।”

‘कविता पढ़ते समय मुझे रोने जैसा महसूस हुआ। उन्हें उस पर बहुत गर्व होगा। बहुत गर्व।’

‘हेलो अरुण, मीनाक्षी कहाँ है?’

लता ने पीछे मुड़कर देखा तो अरुण का चेहरा कुछ नाराज़ सा लग रहा था। यह उसका दोस्त बिली ईरानी था। तीसरी बार किसी ने उससे उसकी पत्नी के बारे में जानने के इरादे से बात की थी। उसने कमरे में उसकी नारंगी साड़ी ढूंढी और उसे काकोली की भीड़ के पास देखा।

‘वो रही, बिली, कुकू के घोंसले के पास। अगर तुम उससे मिलना चाहते हो, तो मैं तुम्हारे साथ चलकर उसे घोंसले से अलग कर दूंगा,’ उसने

कहा।

लता एक पल के लिए सोचती रही कि उसकी सहेली मालती इस सब पर क्या प्रतिक्रिया देती। वह अरुण से ऐसे चिपक गई जैसे किसी जीवनरक्षक नाव से चिपकी हो, और तैरते हुए उस जगह पहुँच गई जहाँ काकोली खड़ी थी। किसी न किसी तरह श्रीमती रूपा मेहरा और धोती पहने एक बुजुर्ग मारवाड़ी सज्जन, उन चकाचौंध भरे नौजवानों की भीड़ में घुसपैठ कर चुके थे।

अपने चारों ओर मौजूद सजे-धजे युवकों से बेखबर, वह बूढ़ा सज्जन हंस से कुछ नखरे दिखाते हुए कह रहा था:

“मैं सन् 1933 से करेले का रस पी रहा हूँ। आप करेला जानते हैं ना? यह हमारी मशहूर भारतीय सब्जी है, जिसे करेला कहते हैं। यह कुछ इस तरह दिखता है’—उन्होंने लंबे इशारे से इशारा करते हुए कहा—‘और यह हरा होता है, और इसमें धारियाँ होती हैं।’

हंस हैरान दिख रहा था। उसके मुखबिर ने आगे बताया:

“हर हफ्ते मेरा नौकर एक करेला तोड़ता है, और सिर्फ उसके छिलके से रस निकालता है। हर करेले से एक जार भर करेला रस निकलता है।”

ध्यान से देखते हुए उसकी आँखें सिकुड़ गईं। “बाकी का वे क्या करते हैं, मुझे परवाह नहीं।”

उसने तिरस्कारपूर्ण इशारा किया।

‘जी?’ हंस ने विनम्रता से कहा। ‘यह सुनकर मेरी दिलचस्पी और बढ़ गई।’

काकोली खिलखिलाकर हंसने लगी थी। श्रीमती रूपा मेहरा गहरी दिलचस्पी से देख रही थीं। अरुण की नज़र मीनाक्षी पर पड़ी और उसने भौंहें चढ़ा लीं। ये मारवाड़ी तो मन ही मन सोच रहे थे। विदेशियों के सामने खुद को बेवकूफ बनाने में ये माहिर हैं।

अरुण की असहमति से बेखबर, लौकी के समर्थक ने आगे कहा:

फिर हर सुबह नाश्ते में वह मुझे एक गिलास शेरी या लिकर का एक गिलास—इतना ही—इस रस का देते हैं। 1933 से हर दिन। और मुझे शुगर की कोई समस्या नहीं है। मैं बिना किसी चिंता के मिठाई खा सकता हूँ। मेरी त्वचा भी बहुत अच्छी है, और मेरा मल त्याग भी बहुत संतोषजनक है।

मानो अपनी बात को साबित करने के लिए उसने चाशनी में डूबे हुए गुलाबजामुन को काट कर खा लिया।

श्रीमती रूपा मेहरा ने उत्सुकता से कहा: 'सिर्फ त्वचा?' अगर यह सच है, तो मधुमेह को अब उनके स्वाद और उनकी इच्छाओं के बीच बाधा बनने की जरूरत नहीं होगी।

'जी हां,' उस आदमी ने बड़े सलीके से कहा। 'सिर्फ ऊपरी परत, जैसा कि मैंने कहा है। बाकी सब फालतू है। करेले की सुंदरता सिर्फ ऊपरी दिखावे की होती है।'

7.12

'मज़े कर रहे हो?' जॉक मैके ने बेसिल कॉक्स से पूछा जब वे बरामदे में घूमने निकले।

"हाँ, बिल्कुल," बेसिल कॉक्स ने अपनी व्हिस्की का गिलास सफेद लोहे की रेलिंग पर बड़ी मुश्किल से टिकाते हुए कहा। उन्हें चक्कर आ रहा था, मानो वे खुद ही रेलिंग पर संतुलन बनाना चाहते हों। लॉन में गार्डेनिया की खुशबू फैली हुई थी।

'मैंने तुम्हें पहली बार चटर्जी के घर पर देखा है। पेट्रीशिया बेहद खूबसूरत लग रही है।'

'शुक्रिया... वो है ना? मैं कभी अंदाज़ा नहीं लगा सकता कि उसका मूड कब अच्छा होगा। तुम्हें पता है, जब मुझे भारत आना पड़ा, तो वो बिल्कुल भी तैयार नहीं थी। यहाँ तक कि...'

बेसिल ने अपने अंगूठे को धीरे से अपने निचले होंठ पर फेरते हुए बगीचे की ओर देखा, जहाँ अंगूर जैसे पीले फूलों के गुच्छों से ढके एक विशाल लेबर्नम के पेड़ के नीचे कुछ सुनहरे रंग के फूल खिले हुए थे। पेड़ के नीचे एक झोपड़ी जैसी कोई आकृति दिखाई दे रही थी।

लेकिन आपको यहां मजा आ रहा है, है ना?

मुझे लगता है ऐसा ही है... वैसे तो यह जगह थोड़ी पेचीदा है... वैसे, मुझे यहां आए हुए एक साल से भी कम समय हुआ है।'

'आपका क्या मतलब है?'

“अच्छा, ज़रा अभी जो चिड़िया गा रही थी, वो कौन सी थी—पु-पुउउउउ-पु! पु-पुउउउउ-पु! ऊँची और ऊँची होती जा रही थी। ये कोयल तो बिल्कुल नहीं है, काश होती। अजीब है। और ये सारे लाख, करोड़, आना और पैसे अब भी मुझे बहुत उलझन में डाल रहे हैं। मुझे सब कुछ दिमाग में दोबारा हिसाब लगाना पड़ रहा है। शायद समय के साथ मुझे इसकी आदत हो जाएगी।”

बेसिल कॉक्स के चेहरे के भावों से तो ऐसा लग ही नहीं रहा था। एक शिलिंग में बारह पेंस और एक पाउंड में बीस शिलिंग होना, एक आना में चार पैसे और एक रुपये में सोलह आना होने की तुलना में कहीं अधिक तार्किक था।

“खैर, असल में ये एक कोयल है,” जॉक मैके ने कहा, “ये बाज़ कोयल है—या यूँ कहें कि दिमागी बुखार वाली चिड़िया... क्या तुम्हें ये नहीं पता था? यकीन करना मुश्किल है, पर मुझे इसकी इतनी आदत हो गई है कि छुट्टी पर घर लौटने पर मुझे इसकी याद आती है। चिड़ियों का गाना मुझे बिल्कुल बुरा नहीं लगता, लेकिन भारतीय गायकों का वो भयानक संगीत मुझे बिल्कुल बर्दाश्त नहीं होता... वो चीख-पुकार वाला संगीत... लेकिन क्या तुम्हें वो सवाल पता है जिसने मुझे सबसे ज़्यादा परेशान किया था

जब मैं बीस साल पहले पहली बार यहाँ आया था और इन सभी खूबसूरत, सलीके से कपड़े पहनी महिलाओं को देखा था?" जॉक मैके ने खुशी-खुशी और भरोसे से अपना सिर ड्राइंग रूम की तरफ़ घुमाया। "साड़ी पहनकर सेक्स कैसे करते हैं?"

बेसिल कॉक्स ने अचानक हरकत की और उनका पेय फूलों की क्यारी में गिर गया। जॉक मैके को हल्की सी हंसी आई।

'अच्छा,' बेसिल कॉक्स ने कुछ चिढ़ते हुए कहा, 'क्या आपको पता चला?'

"हर कोई देर-सवेर अपनी-अपनी खोजें कर ही लेता है," जॉक मैके ने रहस्यमय अंदाज़ में कहा। "लेकिन कुल मिलाकर यह एक आकर्षक देश है," उन्होंने विस्तार से कहा। "राज के अंत तक वे एक-दूसरे का गला काटने में इतने व्यस्त हो गए थे कि उन्होंने हमारा गला नहीं काटा। किस्मत अच्छी थी।" उन्होंने अपने पेय की एक घूंट ली।

कुछ देर बाद बेसिल कॉक्स ने फूलों की क्यारी की ओर देखते हुए कहा, 'खैर, ऐसा लगता तो नहीं कि कोई नाराजगी है—बल्कि इसके बिल्कुल विपरीत है।' 'लेकिन मुझे आश्चर्य होता है कि चटर्जी जैसे लोग हमारे बारे में वास्तव में क्या सोचते हैं...आखिरकार, कलकत्ता में हमारी मौजूदगी अब भी काफी मजबूत है। व्यावसायिक तौर पर, हम ही यहाँ सब कुछ संभालते हैं।'

'अरे, अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो चिंता नहीं करता। लोग क्या सोचते हैं या क्या नहीं सोचते, यह कभी दिलचस्प नहीं होता,' जॉक मैके ने कहा। 'घोड़ों की बात करें तो, मैं अक्सर सोचता हूँ कि वे क्या सोच रहे होंगे...'

"दरअसल, मैंने कुछ दिन पहले उनके दामाद के साथ खाना खाया था—दरअसल कल—अरुण मेहरा, वो हमारे साथ काम करता है—अरे हाँ,

आप अरुण को तो जानते ही होंगे—और अचानक उसका भाई लड़खड़ाता हुआ अंदर आया, एकदम नशे में धुत और गाता हुआ—और किसी भयानक शराब की बदबू से लथपथ—सौ साल में भी मैंने नहीं सोचा था कि अरुण का ऐसा भाई भी हो सकता है। और वो भी फटे-पुराने पायजामे में!"

'नहीं, यह तो हैरान करने वाली बात है,' जॉक मैके ने सहमति जताते हुए कहा। 'मैं एक पुराने आईसीएस अधिकारी को जानता था, भारतीय, लेकिन काफी पक्का, जिसने सेवानिवृत्ति के बाद सब कुछ त्याग दिया, साधु बन गया और फिर कभी उसका कोई अता-पता नहीं चला। और वह शादीशुदा था और उसके दो बड़े बच्चे थे।'

'वास्तव में?'

सचमुच। लेकिन मैं कहूंगा कि वे बड़े ही आकर्षक लोग हैं: दिखावटी, चुगली करने वाले, नाम का बखान करने वाले, सर्वज्ञानी, आत्मप्रशंसा करने वाले, कानून का पालन करने वाले, सत्ता की पूजा करने वाले, सड़कों पर कब्जा जमाने वाले, थूकने वाले... मेरी सूची में कुछ और बातें भी थीं, लेकिन अब मैं उन्हें भूल गया हूं।

'तुम्हारी बातों से ऐसा लगता है जैसे तुम्हें यह जगह बिल्कुल पसंद नहीं है,' बेसिल कॉक्स ने कहा।

'बिल्कुल इसके विपरीत,' जॉक मैके ने कहा। 'अगर मैं यहीं रिटायर होने का फैसला कर लूं तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा। लेकिन क्या हमें वापस अंदर जाना चाहिए? मुझे लगता है कि आपने अपना पेय खो दिया है।'

7.13

तीस साल की उम्र से पहले किसी भी गंभीर चीज़ के बारे में मत सोचो,' युवा तपन को गोल-मटोल श्री कोहली सलाह दे रहे थे, जो कुछ मिनटों के लिए अपनी पत्नी से अलग हो पाए थे। उनके हाथ में गिलास था और वे

एक बड़े, चिंतित, लगभग उदास टेडी बियर की तरह लग रहे थे, जो धीरे-धीरे जल्दी में था; उनका विशाल सिर—मस्तिष्क विज्ञान का एक अजूबा—बार पर झुकते हुए चमक रहा था; अपने चुटीले कथनों में से एक कहने के बाद उन्होंने अपनी भारी पलकों वाली आँखें आधी बंद कर लीं और अपना छोटा मुँह आधा खोल दिया।

‘अब, बेबी साहब,’ बूढ़े नौकर बहादुर ने तपन से दृढ़ता से कहा, ‘मेमसाहिब कहती हैं कि आपको तुरंत बिस्तर पर जाना चाहिए।’

तपन हंसने लगा।

‘माँ से कह देना कि मैं तीस साल का होकर सोऊँगा,’ उसने बहादुर को टालते हुए कहा। ‘लोग सत्रह साल की उम्र में ही अटके रहते हैं,’ श्री कोहली ने आगे कहा। ‘वे हमेशा खुद को सत्रह साल का ही समझते हैं, हमेशा खुश। ऐसा नहीं है कि वे वास्तव में सत्रह साल की उम्र में खुश होते हैं। लेकिन अभी तुम्हारे पास कुछ साल बाकी हैं। तुम्हारी उम्र कितनी है?’

तेरह—लगभग।

'अच्छा—वहीं रहो, यही मेरी सलाह है,' श्री कोहली ने सुझाव दिया।

‘क्या आप सच कह रहे हैं?’ तपन ने अचानक थोड़ा नाराज़ होते हुए कहा। ‘क्या आपका मतलब है कि हालात कभी सुधरेंगे ही नहीं?’

श्री कोहली ने कहा, 'अरे, मेरी किसी भी बात को गंभीरता से मत लेना।' उन्होंने एक घूंट के लिए रुककर कहा, 'दूसरी ओर, मेरी हर बात को अन्य वयस्कों की बातों से कहीं अधिक गंभीरता से लेना।'

श्रीमती चटर्जी उनके पास आकर बोलीं, ‘तपन, तुरंत सो जाओ। बहादुर से ये क्या कह रहे हो? अगर ऐसे ही बर्ताव करोगे तो देर तक जागने की इजाजत नहीं मिलेगी। अब श्री कोहली के लिए एक पेय बनाओ और फिर तुरंत सो जाओ।’

‘अरे नहीं, नहीं, नहीं, दीपांकर,’ संस्कृति की महापरी ने धीरे-धीरे अपना प्राचीन और दयालु सिर अगल-बगल हिलाते हुए, दया भरी तिरस्कारपूर्ण निगाहों से उसे देखते हुए कहा, ‘ऐसा बिल्कुल नहीं है, द्वैतवाद नहीं, मैं कभी द्वैतवाद कह ही नहीं सकती, दीपांकर, अरे नहीं— भारत में हमारे अस्तित्व का मूल तत्व एकता है, जी हाँ, अस्तित्व की एकता, हमारे इस महान उपमहाद्वीप में समाहित हर चीज का एक सार्वभौमिक एकीकरण।’ उन्होंने ड्राइंग रूम में चारों ओर सहिष्णु और मातृत्व भाव से इशारा किया। ‘हमारी प्राचीन भूमि में एकता ही हमारी आत्माओं का मार्गदर्शन करती है।’

दीपांकर ने तेज़ी से सिर हिलाया, पलकें झपकाईं और अपनी स्कॉच गटक ली, जबकि काकोली ने उसे आँख मारी। काकोली ने सोचा, दीपांकर की यही बात उसे पसंद थी: वह चटर्जी परिवार का एकमात्र गंभीर सदस्य था, और क्योंकि वह इतना सौम्य और मिलनसार स्वभाव का था, इसलिए वह उन सभी लोगों की बातों को ध्यान से सुनने वाला था जो कभी-कभार इस बेपरवाह घर में आ जाते थे। और परिवार में हर कोई गंभीर सलाह लेने के लिए उसके पास जा सकता था।

काकोली ने कहा, 'दीपांकर, हेमांगिनी तुमसे बात करना चाहती है, वह तुम्हारे बिना बहुत उदास है, और उसे दस मिनट में जाना है।'

“जी कुकू, धन्यवाद,” दीपांकर ने नाराज़गी से कहा और परिणामस्वरूप सामान्य से ज़्यादा पलकें झपकाईं। “कोशिश करो कि उसे यहाँ जितना हो सके उतनी देर तक रोके रखो... हम अभी एक दिलचस्प चर्चा कर रहे थे... कुकू, तुम भी हमारे साथ क्यों नहीं बैठ जाती?” उसने बेताबी से कहा। “यह सब इस बारे में है कि एकता ही हमारे अस्तित्व का मूल तत्व है...”

‘ओह, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, दीपांकर,’ महान महिला ने थोड़ा उदास

होकर, लेकिन फिर भी धैर्यपूर्वक उन्हें सुधारते हुए कहा: 'एकता नहीं, एकता नहीं, बल्कि शून्य, स्वयं शून्यता ही हमारे अस्तित्व का मार्गदर्शक सिद्धांत है। मैं कभी भी आंतरिक सार शब्द का प्रयोग नहीं कर सकती थी —क्योंकि सार क्या है यदि वह आंतरिक न हो? भारत शून्य की भूमि है, क्योंकि हमारी धरती के क्षितिज से ही यह एक विशाल सूर्य की तरह उदय हुआ और ज्ञान के जगत पर अपना प्रकाश फैलाया।' उन्होंने कुछ क्षणों के लिए एक गुलाब-जामुन को देखा। 'दीपांकर, मंडल, वृत्त, समय के चक्रीय स्वरूप द्वारा दर्शाया गया शून्य ही हमारी सभ्यता का मार्गदर्शक सिद्धांत है।' यह सब—उसने एक बार फिर ड्राइंग रूम में अपना हाथ घुमाते हुए, एक धीमी, भारी नज़र से पियानो, किताबों की अलमारियाँ, बड़े-बड़े कांच के फूलदानों में सजे फूल, ऐशट्रे के किनारों पर सुलगती सिगरेटें, गुलाब जामुन की दो प्लेटें, चमकते हुए मेहमान और खुद दीपांकर को देखा —'यह सब कुछ अस्तित्वहीनता है। दीपांकर, तुम्हें वस्तुओं की इसी अस्तित्वहीनता को स्वीकार करना होगा, क्योंकि शून्यता में ही सर्वस्व का रहस्य छिपा है।'

7.15

चटर्जी संसद (जिसमें काकोली भी शामिल थे, जिन्हें आम तौर पर दस बजे से पहले उठना मुश्किल लगता था) अगले दिन नाश्ते के लिए एकत्रित हुई।

पार्टी के सारे निशान मिटा दिए गए थे। कडल्स को दुनिया में खुला छोड़ दिया गया था। वह खुशी से बगीचे में उछल-कूद कर रहा था और बगीचे के एक कोने में बनी अपनी छोटी सी झोपड़ी में दीपांकर के ध्यान में खलल डाल रहा था। उसने सब्जी के बगीचे में कुछ पौधे भी उखाड़ दिए थे, जिनमें दीपांकर को बहुत रुचि थी। दीपांकर ने यह सब शांत भाव से सहा। कडल्स ने शायद वहाँ कुछ दफनाया होगा और पिछली रात के

सदमे के बाद वह बस खुद को यह तसल्ली देना चाहता था कि दुनिया और उसमें मौजूद चीजें वैसी ही हैं जैसी पहले थीं।

काकोली ने हिदायत दी थी कि उसे सात बजे जगाया जाए। उसे हंस के सुबह की घुड़सवारी से लौटने के बाद उसे फोन करना था। वह कैसे दीपांकर की तरह सुबह पांच बजे उठ जाता था और घोड़े पर ये सारी फुर्तीली हरकतें कर लेता था, यह बात उसकी समझ से परे थी। लेकिन उसे महसूस हुआ कि उसमें इच्छाशक्ति की बहुत ताकत होगी।

काकोली को टेलीफोन से गहरा लगाव था और वह बेशर्मी से उस पर अपना एकाधिकार जमाए रखती थी—जैसे कार पर। अक्सर वह लगातार पैंतालीस मिनट तक बकबक करती रहती थी और कभी-कभी उसके पिता के लिए हाई कोर्ट या कलकत्ता क्लब से अपने घर पर फोन करना नामुमकिन हो जाता था। पूरे कलकत्ता में दस हज़ार से भी कम टेलीफोन थे, इसलिए दूसरा फोन होना उनके लिए एक अकल्पनीय विलासिता होती। लेकिन जब से काकोली ने अपने कमरे में एक एक्सटेंशन लगवाया था, तब से उनके पिता को वह अकल्पनीय चीज़ लगभग वाजिब लगने लगी थी।

चूंकि रात काफी देर तक जागने के कारण, बूढ़े नौकर बहादुर को, जो आमतौर पर अनिच्छुक कुकू को जगाने और दूध पिलाकर शांत करने का कठिन काम करता था, देर तक सोने के लिए कहा गया था। इसलिए अमित ने अपनी बहन को जगाने का जिम्मा उठाया।

उसने धीरे से उसके दरवाजे पर दस्तक दी। कोई जवाब नहीं मिला। उसने दरवाजा खोला। खिड़की से रोशनी काकोली के बिस्तर पर पड़ रही थी। वह बिस्तर पर तिरछी लेटी हुई थी और उसने अपनी बांह अपनी आंखों पर रखी हुई थी। उसका सुंदर, गोल चेहरा सूखे लैक्टो कैलामाइन से ढका हुआ था, जिसे वह पपीते के गूदे की तरह अपनी रंगत निखारने के लिए

इस्तेमाल करती थी।
अमित ने कहा, 'कुकू, उठो। सात बज गए हैं।'
काकोली गहरी नींद में सोती रही।
'जाग जाओ, कुकू।'
काकोली थोड़ी हिली, फिर उसने 'चू-मू' जैसी आवाज़ निकाली। यह शिकायत की आवाज़ थी।
लगभग पांच मिनट तक उसे जगाने की कोशिश करने के बाद, पहले कोमल शब्दों से और फिर कंधों को हल्के से एक-दो बार हिलाकर, और 'छू-छू' की आवाज के अलावा कुछ भी न मिलने पर, अमित ने उसके सिर पर तकिया काफी बेरहमी से फेंक दिया।
काकोली ने खुद को इतना सजग किया कि उसने कहा: 'बहादुर से सबक लो। लोगों को अच्छे से जगाओ।'
अमित ने कहा, 'मुझे इसकी आदत नहीं है। उसे शायद आपके बिस्तर के चारों ओर दस हजार बार खड़े होकर बीस मिनट तक यह बुदबुदाना पड़ा होगा, "कुकू बेबी, उठो; उठो, बेबी मेमसाहिब," जब आप अपनी "छू-छू" कर रही होती हैं।'
‘Ungh,’ said Kakoli.
अमित ने कहा, 'कम से कम अपनी आंखें तो खोल लो। वरना तुम करवट बदलकर फिर सो जाओगे।' थोड़ी देर रुककर उसने कहा, 'कुकू बेबी।'
‘उंह,’ काकोली ने चिड़चिड़ाते हुए कहा। हालांकि, उसने अपनी दोनों आंखें थोड़ी सी खोलीं।
अमित ने कहा, 'क्या तुम्हें अपना टेडी बियर चाहिए? तुम्हारा टेलीफोन? एक गिलास दूध?'
'दूध।'
‘कितने गिलास?’

'दूध का एक गिलास।'
'ठीक है।'
अमित उसके लिए एक गिलास दूध लेने चला गया।
जब वह लौटा तो उसने देखा कि वह बिस्तर पर बैठी थी, एक हाथ में टेलीफोन का रिसीवर और दूसरे हाथ में कडल्स को दबाए हुए। वह कडल्स को लगातार चहचहाते हुए सुना रही थी।
'अरे तुम तो बिल्कुल ही क्रूर हो,' वह कह रही थी: 'अरे तुम तो बिल्कुल ही क्रूर हो—अरे तुम तो बिल्कुल ही भयानक हो।' उसने टेलीफोन के रिसीवर से उसके सिर पर हाथ फेरा। 'अरे तुम तो बिल्कुल ही भयानक और क्रूर हो।' उसने अमित की तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं दिया।
अमित ने चिड़चिड़ाते हुए कहा, 'चुप रहो, कुकू, और अपना दूध पी लो। मुझे तुम्हारी सेवा करने के अलावा और भी काम हैं।'
इस टिप्पणी ने काकोली को अभूतपूर्व रूप से झकझोर दिया। वह मददगार लोगों के आसपास होने पर असहाय होने की कला में माहिर थी।
'या आप चाहते हैं कि मैं इसे आपके लिए भी पी लूँ?' अमित ने बिना किसी स्वार्थ के पूछा।
'जाओ अमित को काटो,' काकोली ने कडल्स को निर्देश दिया। कडल्स ने बात नहीं मानी।
'क्या मैं इसे यहाँ रख दूँ, महोदया?'
'जी हां, करो।' काकोली ने व्यंग्य को नजरअंदाज कर दिया।
'क्या बस इतना ही है, महोदया?'
'हाँ।'
'हाँ, क्या?'
जी हाँ, धन्यवाद।
'मैं गुड मॉर्निंग किस मांगने वाली थी, लेकिन वह लैक्टो कैलामाइन इतना

घिनौना लग रहा है कि मुझे लगता है कि मैं इसे टाल दूंगी।'
काकोली ने अमित को घूरकर देखा। उसने कहा, 'तुम एक बेहद बुरे और असंवेदनशील इंसान हो। मुझे समझ नहीं आता कि औरतें तुम्हारी कविताओं पर इतनी मोहित क्यों हो जाती हैं।'
अमित ने कहा, 'ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरी कविता बहुत संवेदनशील है।'
मुझे उस लड़की पर तरस आता है जो तुमसे शादी करेगी। मुझे उस पर सचमुच बहुत तरस आता है।
और मुझे उस आदमी पर तरस आता है जो तुमसे शादी करेगा। मुझे उस पर सचमुच बहुत तरस आता है। वैसे, क्या तुम मेरे होने वाले साले को फोन करने वाली थीं? नटक्रैकर?
'नटक्रैकर?'
अमित ने अपना दाहिना हाथ ऐसे बढ़ाया मानो किसी अदृश्य व्यक्ति से हाथ मिला रहा हो। धीरे-धीरे सदमे और पीड़ा से उसका मुंह खुल गया।
'अमित, चले जाओ, तुमने मेरा मूड पूरी तरह खराब कर दिया है,' काकोली ने कहा।
अमित ने कहा, 'खराब करने लायक क्या था?'
'जब मैं उन महिलाओं के बारे में कुछ कहता हूं जिनमें आपकी दिलचस्पी है, तो आप बहुत चिढ़ जाते हैं।'
'किसकी तरह? जेन ऑस्टेन?'
क्या मैं शांति और गोपनीयता में अपना फोन कॉल कर सकता हूँ?
'जी हां, जी कुकू बेबी,' अमित ने व्यंग्य और शांत भाव से कहा, 'मैं बस जा रहा हूँ, मैं बस जा रहा हूँ। नाश्ते पर मिलते हैं।'
7.16
नाश्ते के समय चटर्जी परिवार में सौहार्दपूर्ण नोकझोंक का माहौल था।

यह एक बुद्धिमान परिवार था जहाँ हर कोई दूसरे को मूर्ख समझता था। कुछ लोग चटर्जी परिवार को अप्रिय मानते थे क्योंकि वे आपस में दूसरों की संगति से भी अधिक आनंद लेते प्रतीत होते थे। लेकिन अगर वे चटर्जी परिवार के यहाँ नाश्ते के लिए आते और उन्हें झगड़ते देखते, तो शायद उन्हें चटर्जी परिवार इतना नापसंद नहीं होता।

न्यायमूर्ति चटर्जी मेज के शीर्ष पर बैठे थे। कद में छोटे, कमज़ोर दृष्टि वाले और कुछ हद तक भुलक्कड़ स्वभाव के होने के बावजूद, वे एक गरिमापूर्ण व्यक्ति थे। अदालत में उनका आदर होता था और उनके विलक्षण परिवार में भी एक प्रकार की आज्ञाकारिता थी। वे आवश्यकता से अधिक बोलना पसंद नहीं करते थे।

अमित ने कहा, 'जो भी मिक्स्ड फ्रूट जैम पसंद करता है, वह पागल है।'

‘क्या तुम मुझे पागल कह रहे हो?’ काकोली ने पूछा।

'नहीं, बिलकुल नहीं, कुकू, मैं सामान्य सिद्धांतों के आधार पर काम कर रहा हूँ। कृपया मुझे मक्खन दे दो।'

‘तुम खुद इसे ले सकते हो,’ कुकू ने कहा।

'अब बस करो, कुकू,' श्रीमती चटर्जी ने धीरे से कहा।

अमित ने विरोध करते हुए कहा, 'मैं नहीं कर सकता। मेरा हाथ कुचल गया है।'

तपन हँस पड़ा। काकोली ने उसे गुस्से से देखा, फिर किसी अनुरोध के लिए तैयार होते हुए उदास दिखने लगी।

कुछ सेकंड बाद कुकू ने कहा, 'बाबा, मुझे आज गाड़ी चाहिए। मुझे बाहर जाना है। मुझे पूरे दिन के लिए गाड़ी चाहिए।'

‘लेकिन बाबा,’ तपन ने कहा, ‘मैं आज का दिन पंकज के साथ बिता रहा हूँ।’

श्रीमती चटर्जी ने कहा, 'मुझे आज सुबह हैमिल्टन के यहाँ जाकर चांदी का

स्याहीदान वापस लाना ही होगा।'
न्यायमूर्ति चटर्जी ने अपनी भौहें उठाईं। उन्होंने पूछा, 'अमित?'
अमित ने कहा, 'कोई बोली नहीं।'
दीपांकर, जिसने परिवहन से भी इनकार कर दिया था, ने ज़ोर से पूछा कि कुकू इतनी उदास क्यों दिख रही है। कुकू ने भौंहें चढ़ाईं।
अमित और तपन ने तुरंत ही एक प्रतिध्वनि मंत्रोच्चार शुरू कर दिया।
हम आगे और पीछे देखते हैं, और जो है उसके लिए तरसते हैं—
'नहीं!'
‘दर्द के साथ हमारी सबसे सच्ची हंसी है—’
'पूछना!'
‘हमारे सबसे मधुर गीत वे हैं जो सबसे दुखद कहानियाँ सुनाते हैं—’
तपन ने हर्षोल्लास से चिल्लाते हुए कहा, 'थोट!', क्योंकि वह अमित को अपना नायक मानता था।
श्रीमती चटर्जी ने दिलासा देते हुए कहा, 'चिंता मत करो, प्यारी; अंत में सब ठीक हो जाएगा।'
काकोली ने पलटवार करते हुए कहा, 'तुम्हें जरा भी अंदाजा नहीं है कि मैं क्या सोच रहा था।'
‘तुम्हारा मतलब किससे है?’ तपन ने कहा।
काकोली ने कहा, 'चुप रहो, तुम अमीबा हो।'
'वह काफी अच्छा आदमी लग रहा था,' दीपांकर ने अनुमान लगाते हुए कहा।
‘अरे नहीं, वह तो बस एक ग्लैमरस लड़का है,’ अमित ने पलटवार किया।
‘ग्लैमडिप? ग्लैमडिप? क्या मुझसे कुछ छूट गया है?’ उनके पिता ने पूछा।
श्रीमती चटर्जी भी उतनी ही हैरान दिख रही थीं। उन्होंने अमित से पूछा, 'जी हां, ये ग्लैमडिप क्या होता है, प्यारे?'

अमित ने जवाब दिया, ‘एक आकर्षक राजनयिक। बेहद भावहीन, बेहद मनमोहक। बिल्कुल वैसा ही व्यक्ति जिसके लिए मीनाक्षी आहें भरती थी। और इसी सिलसिले में, उनमें से एक आज सुबह मुझसे मिलने आ रहा है। वह मुझसे संस्कृति और साहित्य के बारे में पूछना चाहता है।’
श्रीमती चटर्जी ने उत्सुकता से पूछा, 'सच में, अमित? कौन?'
अमित ने कहा, “दक्षिण अमेरिका का कोई राजदूत—पेरू या चिली या कहीं और से—कला में रुचि रखता है। मुझे एक-दो हफ्ते पहले दिल्ली से फोन आया था और हमने मुलाकात तय कर ली। या बोलीविया से? वह कलकत्ता यात्रा के दौरान एक लेखक से मिलना चाहता था। मुझे शक है कि उसने मेरी कोई रचना पढ़ी होगी।”
श्रीमती चटर्जी घबराई हुई लग रही थीं। उन्होंने कहा, 'लेकिन मुझे यह सुनिश्चित करना होगा कि सब कुछ ठीक-ठाक हो।' 'और आपने बिस्वास बाबू से कहा था कि आप उनसे आज सुबह मिलेंगी।'
‘मैंने ऐसा किया, मैंने ऐसा किया,’ अमित ने सहमति जताते हुए कहा। ‘और मैं ऐसा ही करता रहूंगा।’
काकोली ने अचानक कहा, 'वह सिर्फ एक ग्लैमरस व्यक्ति नहीं है। तुम उससे मुश्किल से ही मिले हो।'
‘नहीं, वह हमारे कुकू के लिए एक अच्छा लड़का है,’ तपन ने कहा। ‘वह बहुत ही शिनशीर है।’
यह बिस्वास बाबू द्वारा प्रशंसा के लिए इस्तेमाल किए गए विशेषणों में से एक था। कुकू को लगा कि तपन को घूंसे मारने चाहिए।
दीपांकर ने कहा, 'मुझे हंस पसंद है। उसने उस आदमी के प्रति बहुत विनम्रता दिखाई जिसने उसे करेले का रस पीने को कहा था। उसका दिल वाकई अच्छा है।'
'ओ मेरी जान, निर्दयी मत बनो।'

मेरा हाथ थाम लो। चलो हम एक हो जाएं।
अमित ने धीरे से कहा।
‘लेकिन इसे ज्यादा कसकर मत पकड़ो,’ तपन हंसते हुए बोला।
‘बस करो!’ कुकू चिल्लाई। ‘तुम सब बेहद बुरे बन रहे हो।’
तपन ने प्रतिशोध की धमकी देते हुए आगे कहा, 'वह हमारी कुकू के लिए शादी की घंटी बजाने के लिए एक अच्छा लड़का है।'
अमित ने पूछा, 'शादी की शहनाई? या फिर बिस्तर पर जाने की तैयारी?'
तपन खुशी से मुस्कुरा उठा।
‘बस करो अमित,’ न्यायमूर्ति चटर्जी ने अपनी पत्नी के हस्तक्षेप करने से पहले ही कहा। ‘नाश्ते के समय खून-खराबा नहीं। चलो किसी और विषय पर बात करते हैं।’
‘हां,’ कुकू ने सहमति जताते हुए कहा। ‘जैसे कल रात अमित लता के पीछे दीवाना था।’
‘लता के लिए?’ अमित ने सचमुच आश्चर्यचकित होकर कहा।
‘लता के बारे में?’ कुकू ने उसकी नकल करते हुए दोहराया।
अमित ने कहा, 'सच में, कुकू, प्यार ने तुम्हारा दिमाग खराब कर दिया है। मुझे पता ही नहीं चला कि मैं उसके साथ समय बिता रहा था।'
नहीं, मुझे यकीन है कि आपने ऐसा नहीं किया।
अमित ने कहा, 'वह बस एक अच्छी लड़की है, बस इतना ही। अगर मीनाक्षी गपशप करने में इतनी व्यस्त न होती और अरुण संपर्क बनाने में इतना मशगूल न होता, तो मैं उसकी कोई जिम्मेदारी नहीं लेता।'
‘इसलिए हमें कलकत्ता में रहते हुए उसे बेवजह आमंत्रित करने की जरूरत नहीं है,’ कुकू ने धीरे से कहा।
श्रीमती चटर्जी ने कुछ नहीं कहा, लेकिन वह चिंतित दिखने लगी थीं।
अमित ने कहा, 'मैं जिसे चाहूँगा उसे बुलाऊँगा। कुकू, तुमने तो कल रात

पार्टी में पचास से ज़्यादा लोगों को बुलाया था।'
तपन ने बिना रुके कहा, 'लगभग पचास लोग।'
कुकु ने उस पर जमकर हमला किया।
उन्होंने कहा, 'छोटे लड़कों को बड़ों की बातचीत में दखल नहीं देना चाहिए।'
तपन, मेज के दूसरी तरफ सुरक्षित जगह से, उसे देखकर मुंह बना लिया।
एक बार कुकू इतनी क्रोधित हो गई थी कि उसने तपन का मेज के चारों ओर पीछा किया था, लेकिन आमतौर पर वह दोपहर तक सुस्त रहती थी।
‘हां,’ अमित ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। ‘उनमें से कुछ तो बहुत अजीब थे, कुकू। वो कृष्णन कौन है? सांवला सा आदमी, दक्षिण भारतीय, मुझे लगता है। वो तुम्हें और तुम्हारे दूसरे सचिव को बहुत गुस्से से घूर रहा था।’
‘ओह, वो तो बस एक दोस्त है,’ कुकू ने सामान्य से अधिक एकाग्रता से मक्खन फैलाते हुए कहा। ‘मुझे लगता है कि वो मुझसे नाराज़ है।’
अमित खुद को काकोली की एक शेर बोलने से रोक नहीं सका:
अंत में कृष्णन कौन है?
बस एक मशरूम, बस एक दोस्त।
तपन ने आगे कहा:
'हमेशा डोसा खाते हुए,
बीयर पीते हुए पेशाब कर देना!
‘तपन!’ उसकी माँ ने हांफते हुए कहा।
ऐसा प्रतीत होता था कि अमित, मीनाक्षी और कुकू ने अपनी मूर्खतापूर्ण तुकबंदी से उसके बच्चे को पूरी तरह से बिगाड़ दिया था।
न्यायमूर्ति चटर्जी ने अपना टोस्ट नीचे रख दिया। उन्होंने कहा, 'तपन, बस करो।'
‘लेकिन बाबा, मैं तो बस मज़ाक कर रहा था,’ तपन ने विरोध करते हुए

कहा, उसे यह अनुचित लग रहा था कि उसे ही निशाना बनाया जा रहा है। सिर्फ इसलिए कि मैं सबसे छोटा हूँ, उसने सोचा। और वह शेर भी काफी अच्छा था।

'मज़ाक तो मज़ाक होता है, लेकिन अब बस बहुत हो गया,' उसके पिता ने कहा। 'और तुम भी, अमित। अगर तुम खुद कुछ उपयोगी काम करते, तो तुम्हें दूसरों की आलोचना करने का ज़्यादा हक होता।'

'जी हां, बिल्कुल सही,' कुकू ने स्थिति बदलते देख खुशी से कहा। 'दादा, कुछ गंभीरता से काम कीजिए। दूसरों की आलोचना करने से पहले समाज के एक उपयोगी सदस्य की तरह व्यवहार कीजिए।'

अमित ने पूछा, 'कविताएँ और उपन्यास लिखने में क्या बुराई है? या जुनून ने तुम्हें भी अनपढ़ बना दिया है?'

न्यायमूर्ति चटर्जी ने कहा, 'अमित, मनोरंजन के तौर पर तो यह ठीक है। लेकिन यह जीविका नहीं है। और इस कानून में क्या गलत है?'

अमित ने कहा, 'यह तो स्कूल वापस जाने जैसा है।'

'मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम इस निष्कर्ष पर कैसे पहुंचे,' उसके पिता ने रूखेपन से कहा।

अमित ने कहा, 'अच्छा, आपको ठीक से कपड़े पहनने होंगे—जैसे स्कूल की यूनिफॉर्म। और "सर" कहने की जगह "माई लॉर्ड" कहना होगा—जो उतना ही बुरा है—जब तक कि आप न्यायाधीश नहीं बन जाते और लोग आपको "माई लॉर्ड" कहकर संबोधित नहीं करने लगते। और आपको छुट्टियां मिलेंगी, और आपको तपन की तरह अच्छे और बुरे फैसले मिलेंगे: मतलब आपके पक्ष में और आपके खिलाफ फैसले।'

न्यायमूर्ति चटर्जी ने उपमा से पूरी तरह संतुष्ट न होते हुए कहा, 'खैर, यह आपके दादाजी और मेरे लिए काफी अच्छी थी।'

'लेकिन अमित में एक खास प्रतिभा है,' श्रीमती चटर्जी ने बीच में टोकते

हुए कहा। ‘क्या आपको उस पर गर्व नहीं है?’
उनके पति ने कहा, 'वह अपने खाली समय में अपनी विशेष प्रतिभाओं का अभ्यास कर सकता है।'
अमित ने पूछा, 'क्या उन्होंने रवींद्रनाथ टैगोर से भी यही कहा था?'
'मुझे यकीन है कि तुम मानोगे कि तुम और टैगोर में फर्क है,' उसके पिता ने अपने बड़े बेटे की ओर आश्चर्य से देखते हुए कहा।
अमित ने कहा, 'मैं मानता हूँ कि फर्क है, बाबा। लेकिन मेरे कहने का मतलब उस फर्क से क्या है?'
लेकिन टैगोर का नाम सुनते ही श्रीमती चटर्जी श्रद्धा की भावना से भर उठीं।
‘अमित, अमित,’ वह रोते हुए बोली, ‘तुम गुरुदेव के बारे में ऐसा कैसे सोच सकते हो?’
‘मैगो, मैंने ऐसा नहीं कहा—’ अमित ने कहना शुरू किया।
श्रीमती चटर्जी ने बीच में ही कहा, 'अमित, रोबी बाबू एक संत के समान हैं। बंगाल में हम सब उनके ऋणी हैं। जब मैं शांतिनिकेतन में थी, मुझे याद है उन्होंने एक बार मुझसे कहा था—'
लेकिन अब काकोली ने अमित के साथ हाथ मिला लिया।
‘प्लीज, मागो, सच में—हमने शांतिनिकेतन और उसके रमणीय होने के बारे में बहुत कुछ सुन लिया है। मुझे पता है कि अगर मुझे वहां रहना पड़े तो मैं हर दिन आत्महत्या करने की कोशिश करूंगी।’
'उसकी आवाज जंगल में रोने जैसी है,' उसकी मां ने अपनी बात जारी रखी, मानो उसकी आवाज सुन ही न पा रही हो।
‘मैं तो ऐसा बिल्कुल नहीं कहूंगा, मां,’ अमित ने कहा। ‘हम उन्हें अंग्रेजों द्वारा शेक्सपियर को पूजे जाने से भी कहीं अधिक पूजते हैं।’
श्रीमती चटर्जी ने कहा, ‘और इसका एक अच्छा कारण है। उनके गीत

हमारे होठों पर आ जाते हैं— उनकी कविताएँ हमारे दिलों में उतर जाती हैं —’

काकोली ने कहा, 'दरअसल, अबोल तबोल पूरे बंगाली साहित्य में एकमात्र अच्छी किताब है।'

जन्म से ही ग्रिफ़ॉनलिंग
वह प्रसन्न होने के लिए अनिच्छुक है।
हंसना या मुस्कुराना भी वह पाप मानता है।
और कांपते हुए कहता है, "धरती पर तो बिल्कुल नहीं।"

हाँ, और मुझे 'हूटम उल्लू के रेखाचित्र' पसंद हैं। और जब मैं साहित्य पढ़ना शुरू करूँगा, तो मैं अपनी खुद की एक किताब लिखूँगा: 'कुत्ते कडल के रेखाचित्र'।

‘कुकु, तुम सचमुच बेशर्म लड़की हो!’ श्रीमती चटर्जी क्रोधित होकर चिल्लाईं। ‘कृपया उसे ये सब बातें कहने से रोको।’

न्यायमूर्ति चटर्जी ने कहा, 'यह महज एक राय है, प्रिय। मैं उन्हें अपनी राय रखने से नहीं रोक सकता।'

लेकिन गुरुदेव के बारे में, जिनके गीत वह गाती हैं—रोबी बाबू के बारे में —’

काकोली, जिसे लगभग जन्म से ही रवीन्द्रसंगीत के साथ जबरदस्ती खिलाया गया था, अब एक संक्षिप्त 'शोंकोचेरो बिहवलता निजेरे अपोमन' की धुन पर चिल्लाने लगी:

‘रोबी बाबू, आर. टैगोर, ओह, वो तो बहुत उबाऊ हैं!’
रोबी बाबू, आर. टैगोर, ओह, वह तो बहुत उबाऊ हैं!
ओह, वो तो बहुत ही उबाऊ है।
कितना उबाऊ है!

कितना उबाऊ है!
ओह, वो तो बिल्कुल ही, ओह, वो तो बिल्कुल ही, ओह, वो तो बिल्कुल ही उबाऊ है।
रोबी बाबू, आर. टैगोर, ओह, वो तो बिल्कुल उबाऊ हैं!
'रुको! तुरंत बंद करो! काकोली, क्या तुम मुझे सुन रही हो?' श्रीमती चटर्जी ने भयभीत होकर कहा। 'बंद करो! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई! तुम मूर्ख, बेशर्म, छिछोरी लड़की हो।'
'सच में, माँ,' काकोली ने आगे कहा, 'उन्हें पढ़ना गुड़ में तैरने की कोशिश करने जैसा है। आपको अपने रोबी बाबू पर इला चट्टोपाध्याय को सुनना चाहिए। फूल, चांदनी और वैवाहिक पल...'
दीपांकर ने कहा, 'माँ, आप उन्हें अपने ऊपर हावी क्यों होने देती हैं? आपको शब्दों में निहित सर्वोत्तम बातों को अपनाना चाहिए और उन्हें अपनी आत्मा के अनुरूप ढालना चाहिए। इस तरह आप शांति प्राप्त कर सकती हैं।'
श्रीमती चटर्जी को शांति नहीं मिली। शांति उनसे बहुत दूर थी।
'क्या मैं उठ सकता हूँ? मैंने नाश्ता कर लिया है,' तपन ने कहा।
'बिल्कुल, तपन,' उसके पिता ने कहा, 'मैं कार का इंतजाम कर लूंगा।'
श्रीमती चटर्जी भड़क उठीं, 'इला चट्टोपाध्याय बहुत ही अज्ञानी लड़की हैं, मैं हमेशा से ऐसा ही सोचती आई हूं।' 'उनकी किताबों की बात करें तो, मुझे लगता है कि लोग जितना ज्यादा लिखते हैं, उतना ही कम सोचते हैं। और कल रात तो उन्होंने बिल्कुल पिचकी हुई साड़ी पहनी हुई थी।'
'वह अब मुश्किल से ही लड़की रह गई है, प्रिय,' उसके पति ने कहा। 'वह काफी बुजुर्ग महिला हो गई है—कम से कम पचपन वर्ष की तो होगी ही।'
श्रीमती चटर्जी ने अपने पति की ओर झुंझलाहट भरी नजर से देखा। पचपन साल की उम्र को बुढ़ापा कहना तो दूर की बात थी।

अमित ने आगे कहा, ‘और हमें उनकी राय पर ध्यान देना चाहिए। वह काफी अड़ियल हैं। कल वह दीपांकर को सलाह दे रही थीं कि अर्थशास्त्र में कोई भविष्य नहीं है। ऐसा लगता है जैसे उन्हें इस बात का पूरा ज्ञान है।’

श्रीमती चटर्जी ने कहा, 'ऐसा लगता है जैसे उन्हें सब पता है।' उन्होंने बेतुकी बात कहते हुए आगे कहा, 'वैसे भी, वह आपके पिता के परिवार से हैं। और अगर वह गुरुदेव की कद्र नहीं करतीं तो उनका दिल पत्थर का होगा।'

अमित ने कहा, 'आप उसे दोष नहीं दे सकते। इतनी त्रासदियों से भरी जिंदगी के बाद कोई भी कठोर हो जाएगा।'

श्रीमती चटर्जी ने पूछा, 'कौन सी त्रासदी?'

अमित ने कहा, ‘जब वह चार साल की थी, तब उसकी माँ ने उसे थप्पड़ मारा था—यह उसके लिए बहुत दर्दनाक अनुभव था—और फिर इसी तरह की घटनाएं होती रहीं। जब वह बारह साल की हुई तो एक परीक्षा में दूसरे स्थान पर आई... इससे इंसान मजबूत बन जाता है।’

‘तुम्हें ये पागल बच्चे कहाँ से मिले?’ श्रीमती चटर्जी ने अपने पति से पूछा।

‘मुझे नहीं पता,’ उन्होंने उत्तर दिया।

'अगर तुमने हर रोज क्लब जाने के बजाय उनके साथ ज्यादा समय बिताया होता, तो वे ऐसे नहीं बनते,' श्रीमती चटर्जी ने एक दुर्लभ फटकार लगाते हुए कहा; लेकिन वह बहुत ज्यादा परेशान थीं।

फोन की घंटी बजी।

अमित ने कहा, 'कुकू के जीतने की पूरी संभावना है।'

'यह।'

'मुझे लगता है कि तुम अंगूठी के प्रकार से बता सकते हो, है ना, कुकू?'

'यह कुकू के लिए है,' तपन ने दरवाजे से चिल्लाकर कहा।

‘ओह। यह किससे है?’ कुकू ने पूछा और अमित पर जीभ निकालकर चिढ़ा दी।
‘कृष्णन।’
‘उसे बता दो कि मैं फोन पर बात नहीं कर सकती। मैं बाद में कॉल करूंगी,’ कुकू ने कहा।
‘क्या मैं उसे बता दूं कि तुम नहा रहे हो? या सो रहे हो? या कार में हो? या तीनों?’ तपन मुस्कुराया।
‘प्लीज, तपन,’ कुकू ने कहा, ‘प्यार से पेश आओ और कोई बहाना बना लो। हाँ, कह दो कि मैं बाहर गया हूँ।’
श्रीमती चटर्जी चौंककर बोलीं, "लेकिन, कुकू, यह तो सरासर झूठ है।"
‘मुझे पता है, माँ,’ कुकू ने कहा, ‘लेकिन वह बहुत उबाऊ है, मैं क्या करूँ?’
“हाँ, जब किसी के सौ सबसे अच्छे दोस्त हों तो वह क्या कर सकता है?” अमित ने उदास होकर बुदबुदाया।
‘सिर्फ इसलिए कि कोई तुमसे प्यार नहीं करता—’ कुकू गुस्से से चीख पड़ी।
अमित ने कहा, 'बहुत से लोग मुझे प्यार करते हैं, है ना, दीपांकर?'
'जी हां, दादा,' दीपांकर ने कहा, जिसने तथ्यात्मक रहना ही बेहतर समझा।
अमित ने आगे कहा, 'और मेरे सभी प्रशंसक मुझे प्यार करते हैं।'
काकोली ने कहा, 'ऐसा इसलिए है क्योंकि वे आपको नहीं जानते।'
अमित ने कहा, 'मैं इस बात का खंडन नहीं करूंगा; और अदृश्य प्रशंसकों की बात करें तो, मुझे महामहिम के लिए तैयार हो जाना चाहिए। क्षमा करें।'
अमित जाने के लिए उठा और दीपांकर भी उठ गया; और न्यायमूर्ति

चटर्जी ने तपन के हितों को ध्यान में रखते हुए, दोनों मुख्य दावेदारों के बीच कार के उपयोग का निपटारा कर दिया।

7.17

राजदूत के एक घंटे की बातचीत के लिए घर पहुंचने के निर्धारित समय के लगभग पंद्रह मिनट बाद, अमित को फोन पर सूचित किया गया कि उन्हें थोड़ी देर हो जाएगी। अमित ने कहा, कोई बात नहीं।

लगभग आधे घंटे बाद अमित को बताया गया कि उन्हें आने में थोड़ी और देर हो सकती है। इससे उन्हें थोड़ी झुंझलाहट हुई, क्योंकि इस बीच वे कुछ लिख सकते थे। उन्होंने फोन पर मौजूद व्यक्ति से पूछा, 'क्या राजदूत कलकत्ता पहुँच गए हैं?' दूसरी ओर से आवाज़ आई, 'जी हाँ। वे कल दोपहर पहुँच गए थे। उन्हें थोड़ी देर हो रही है। लेकिन वे दस मिनट पहले आपके घर के लिए रवाना हो गए हैं। वे अगले पाँच मिनट में वहाँ पहुँच जाएँगे।'

बिस्वास बाबू के जल्द ही आने की संभावना थी और अमित परिवार के पुराने क्लर्क को इंतज़ार नहीं करवाना चाहता था, इसलिए वह चिढ़ गया। लेकिन उसने अपनी झुंझलाहट को दबा लिया और विनम्रता से कुछ बुदबुदाया।

पंद्रह मिनट बाद, श्री बर्नार्डो लोपेज़ एक बड़ी काली कार में दरवाजे पर पहुँचे। उनके साथ अन्ना-मारिया नाम की एक जीवंत युवती भी थीं। वे बेहद क्षमाशील और सांस्कृतिक सद्भावना से परिपूर्ण थे; वहीं दूसरी ओर, अन्ना-मारिया फुर्तीली और ऊर्जावान थीं और बैठते ही उन्होंने अपने पर्स से एक पुस्तिका निकाल ली।

अपने गंभीर और सौम्य शब्दों के प्रवाह के दौरान, जिन्हें वे धीरे-धीरे तौलते, विचार करते और व्यक्त करने से पहले स्पष्ट करते थे, राजदूत अमित को छोड़कर हर जगह देखते रहे: वे अपनी चाय के कप को, अपनी

मुड़ी हुई या थिरकती उंगलियों को, अन्ना-मारिया को (जिन्हें उन्होंने आश्वस्त करने के लिए सिर हिलाया), और कमरे के एक कोने में रखे ग्लोब को देखते रहे। बीच-बीच में वे मुस्कुराते भी थे। वे 'वेरी' शब्द का उच्चारण 'ब' के साथ करते थे।

अपने नुकीले गंजे सिर को घबराते हुए और गंभीरता से सहलाते हुए, और इस तथ्य से अवगत होते हुए कि वह अक्षम्य रूप से पैंतालीस मिनट देर से आया था, उसने सीधे मुद्दे पर आने का प्रयास किया:

“खैर, श्री चटर्जी, श्री अमित चटर्जी, अगर मैं इतनी हिम्मत कर सकूँ तो, जैसा कि आप जानते हैं, राजदूत होने के नाते, मुझे अक्सर अपने आधिकारिक कर्तव्यों के लिए बुलाया जाता है—दुर्भाग्य से, हमारे यहाँ यह स्थायी या निश्चित नहीं है; इसमें एक तत्व है, मैं कह सकता हूँ, या शायद यह कहना अनुचित नहीं होगा (हाँ, अगर मुझे किसी अन्य भाषा में एक मुहावरे के लिए अपनी प्रशंसा करने की अनुमति दी जाए तो यह बेहतर शब्द है) कि इसमें मनमानी का तत्व है, मेरा मतलब है, किसी विशेष स्थान पर हमारे रहने में; आप लेखकों के विपरीत जो...” खैर, मेरा मतलब यह था कि मैं आपसे सीधे एक सवाल पूछना चाहता हूँ, यानी, मुझे माफ़ करना, लेकिन जैसा कि आप जानते हैं, मैं यहाँ पैंतालीस मिनट देरी से पहुँचा हूँ और आपके कीमती समय के पैंतालीस मिनट बर्बाद कर दिए हैं (आपके अच्छे स्वभाव के, जैसा कि मैंने यहाँ कुछ लोगों को कहते सुना है), आंशिक रूप से इसलिए कि मैं बहुत देर से निकला (मैं सीधे इस अद्भुत शहर में एक दोस्त के घर से आया हूँ, जहाँ मुझे उम्मीद है कि आप कभी फुर्सत में आएँगे—या दिल्ली बेवजह—जिससे मेरा मतलब है, कहने की ज़रूरत नहीं है, हमारे अपने घर—हालाँकि अगर मैं आप पर बोझ डाल रहा हूँ तो आपको मुझे ज़रूर बताना चाहिए) लेकिन मैंने अपने सचिव से आपको इसकी सूचना देने के लिए कहा था (मुझे उम्मीद है कि उसने दे

दी होगी, है ना?), और आंशिक रूप से इसलिए कि हमारा ड्राइवर हमें हाज़रा रोड ले गया, जो कि, मुझे लगता है, एक बहुत ही स्वाभाविक गलती थी, क्योंकि सड़कें लगभग समानांतर और एक-दूसरे के करीब हैं, जहाँ हमारी मुलाकात एक सज्जन से हुई जिन्होंने हमें इस खूबसूरत घर की ओर निर्देशित करने की कृपा की—मैं न केवल वास्तुकला का बल्कि जिस तरह से आपने इसके वातावरण को संरक्षित किया है, उसका भी प्रशंसक हूँ। सरलता, नहीं, सरलता, यहाँ तक कि कौमार्य भी—लेकिन जैसा कि मैंने कहा, मैं (मुद्दे पर आते हुए) देर से आया हूँ, और वास्तव में पैंतालीस वर्ष का हूँ, खैर, अब मुझे आपसे वही पूछना है जो मैंने अपने आधिकारिक कर्तव्यों के दौरान दूसरों से पूछा है, हालाँकि यह किसी भी तरह से आधिकारिक कर्तव्य नहीं है बल्कि पूरी तरह से आनंददायक है (हालाँकि वास्तव में मुझे आपसे कुछ पूछना है, या यूँ कहें कि आपसे कुछ पूछना है), मुझे आपसे वैसे ही पूछना है जैसे मैं अन्य अधिकारियों से पूछता हूँ जिनके पास निर्धारित कार्यक्रम होते हैं, ऐसा नहीं है कि आप आधिकारिक हैं, बल्कि, खैर, एक व्यस्त व्यक्ति हैं: क्या इस समय के बाद आपकी कोई और नियुक्ति है जो आपने मुझे दी है, या क्या हम शायद इससे आगे बढ़ सकते हैं... हाँ? क्या मेरी बात स्पष्ट है?

अमित, इस डर से कि उसे फिर से ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ सकता है, ने जल्दबाजी में कहा: 'अफ़सोस, महामहिम मुझे क्षमा करेंगे, लेकिन मुझे पंद्रह मिनट में, नहीं, मुझे क्षमा करें, अभी पाँच मिनट में, मेरे पिता के एक पुराने सहकर्मी के साथ एक ज़रूरी काम है।'

‘तो कल?’ अन्ना-मारिया ने पूछा।

‘नहीं, अफसोस, मैं कल पलाशनगर जा रहा हूँ,’ अमित ने अपने उपन्यास के काल्पनिक शहर का नाम लेते हुए कहा। उसने सोचा कि यह बात लगभग सच ही है।

‘अफ़सोस, अफ़सोस,’ बर्नार्डो लोपेज़ ने कहा। ‘लेकिन हमारे पास अभी भी पाँच मिनट हैं, तो चलिए मैं बस इतना ही पूछता हूँ, जो मेरे लिए एक लंबे समय से अनसुलझा सवाल है: भारतीय कविता में, महान टैगोर को छोड़कर, “अस्तित्व”, पक्षियों, नावों और जीवन की नदी के बारे में यह सब क्या है? लेकिन मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि “हम” से मेरा तात्पर्य केवल पश्चिम के लोगों से है, यदि दक्षिण को पश्चिम में समाहित किया जा सकता है, और “खोज” से मेरा तात्पर्य उस बात से है जैसे यह कहना कि कोलंबस ने अमेरिका की खोज की, जबकि हम जानते हैं कि इसकी खोज की कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वहाँ ऐसे लोग थे जिनके लिए “खोज” करना अनावश्यक से कहीं अधिक अपमानजनक होता, और निश्चित रूप से भारतीय कविता से मेरा तात्पर्य उस कविता से है जो हम तक सुलभ हुई है, अर्थात् वह कविता जिसका अनुवाद द्वारा विकृतीकरण किया गया है। इस संदर्भ में, क्या आप मुझे, हम सबको, इस बारे में समझा सकते हैं?’

अमित ने कहा, 'मैं कोशिश करूंगा।'

‘देखा?’ बर्नार्डो लोपेज़ ने अपनी नोटबुक नीचे रख चुकी अन्ना-मारिया से थोड़ी विजयी भाव से कहा। ‘पूरब की धरती पर अनुत्तरित प्रश्न अनुत्तरित नहीं होते। Felix qui potuit rerum cognoscere causas, और जब यह बात पूरे राष्ट्र पर लागू होती है, तो आश्चर्य और भी बढ़ जाता है। सचमुच, जब मैं एक साल पहले यहाँ आया था, तो मुझे एक अहसास हुआ था—’

लेकिन तभी बहादुर अंदर आया और अमित को बताया कि बिस्वास बाबू अपने पिता के अध्ययन कक्ष में उसका इंतजार कर रहा है।

“क्षमा कीजिए, महामहिम,” अमित उठते हुए बोला, “ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे पिता के सहयोगी आ गए हैं। लेकिन मैं आपकी कही बातों पर

गंभीरता से विचार करूंगा। मैं आपका बहुत आभारी और सम्मानित महसूस कर रहा हूं।”

और हे नौजवान, यद्यपि यहाँ नौजवान शब्द का अर्थ केवल इतना है कि तुम्हारे जन्म के बाद से पृथ्वी ने सूर्य के चारों ओर मुझसे कम चक्कर लगाए हैं (और क्या इसका कोई अर्थ है?), मैं भी इस संवाद के परिणाम को ध्यान में रखूंगा और उस पर "निराश या चिंतनशील मन से" विचार करूंगा, जैसा कि झील के कवि ने व्यक्त किया है। इसकी तीव्रता, इस संक्षिप्त साक्षात्कार के दौरान मैंने जो प्रेरणाएँ महसूस की हैं, जिन्होंने मुझे अज्ञान से विज्ञान की ओर अग्रसर किया है—क्या वास्तव में यह एक उत्थान है? क्या समय हमें यह भी बताएगा? क्या समय हमें कुछ भी बताता है?—मैं इसे संजो कर रखूंगा।

'हां, हम ऋणी हैं,' अन्ना-मारिया ने अपनी नोटबुक उठाते हुए कहा।

जैसे ही वह विशाल काली कार उन्हें लेकर चली गई, और वे अब समय से पीछे नहीं थे, अमित बरामदे की सीढ़ी पर खड़ा होकर धीरे-धीरे हाथ हिला रहा था।

हालांकि, दादाजी के नौकर द्वारा पट्टे पर बांधकर ले जाई जा रही मुलायम सफेद बिल्ली पिलो उसकी दृष्टि के दायरे से गुजरी, लेकिन अमित ने सामान्य रूप से अपनी आंखों से उसका पीछा नहीं किया।

उन्हें सिरदर्द था और किसी से बात करने का मन नहीं था। लेकिन बिस्वास बाबू उनसे मिलने खास तौर पर आए थे, शायद उन्हें समझाने और वकालत दोबारा शुरू करवाने के लिए। अमित को लगा कि उनके पिता के पुराने क्लर्क, जिनसे सभी लोग बहुत स्नेह और सम्मान से पेश आते थे, उन्हें ज़रूरत से ज़्यादा देर तक बैठे रहने की ज़रूरत नहीं है—या यूँ कहें कि घुटने टेकने की, जो उनकी आदत थी।

7.18

मामला थोड़ा असहज इसलिए हो गया क्योंकि अमित की बंगाली अच्छी थी और बिस्वास बाबू की अंग्रेज़ी उतनी अच्छी नहीं थी, फिर भी अमित के इंग्लैंड से 'उपलब्धियों से लदे' लौटने के बाद से ही बिस्वास बाबू उनसे लगभग पूरी तरह अंग्रेज़ी में ही बात करने पर अड़े हुए थे। बाकी लोगों को यह सुविधा कभी-कभार ही मिलती थी; अमित हमेशा से बिस्वास बाबू का चहेता था, और वह विशेष ध्यान देने का हकदार था।

गर्मी का मौसम होने के बावजूद, बिस्वास बाबू ने कोट और धोती पहन रखी थी। उनके पास छाता और एक काला थैला था। बहादुर ने उन्हें चाय का एक प्याला दिया था, जिसे वे बड़े ध्यान से हिलाते हुए उस कमरे को देख रहे थे जहाँ उन्होंने अमित के पिता और दादा दोनों के लिए इतने वर्षों तक काम किया था। अमित के कमरे में प्रवेश करते ही वे खड़े हो गए।

बिस्वास बाबू को आदरपूर्वक प्रणाम करने के बाद अमित अपने पिता की बड़ी महोगनी की मेज पर बैठ गया। बिस्वास बाबू मेज के दूसरी ओर बैठे थे। सभी के हालचाल पूछने और एक-दूसरे की किसी भी प्रकार की सहायता करने की सामान्य बातचीत के बाद, वार्तालाप समाप्त हो गया।

इसके बाद बिस्वास बाबू ने थोड़ी सी नसवार ली। उन्होंने थोड़ी-थोड़ी नसवार दोनों नथुनों में डाली और सूंघी। उनके मन में कुछ चल रहा था, लेकिन वे उसे ज़ाहिर करने से हिचकिचा रहे थे।

'अब, बिस्वास बाबू, मुझे अंदाजा हो गया है कि आप यहां किस वजह से आए हैं,' अमित ने कहा।

'क्या सच में?' बिस्वास बाबू ने चौंकते हुए और कुछ दोषी महसूस करते हुए कहा।

लेकिन मुझे आपको यह बताना होगा कि मुझे नहीं लगता कि आपकी पैरवी भी कारगर साबित होगी।

'नहीं?' बिस्वास बाबू ने आगे झुकते हुए कहा। उनके घुटने तेजी से अंदर-

बाहर कांपने लगे।

‘देखिए, बिस्वास बाबू, मुझे पता है कि आपको लगता है कि मैंने परिवार को निराश किया है।’

‘जी?’ बिस्वास बाबू ने कहा।

‘देखिए, मेरे दादाजी और पिताजी ने तो इसमें रुचि ली थी, लेकिन मैंने नहीं। और शायद आपको यह बहुत अजीब लगता होगा। मुझे पता है कि आप मुझसे निराश हैं।’

‘यह कोई अजीब बात नहीं है, बस देर हो गई है। लेकिन आप शायद मौके का फायदा उठाकर ओले बना रहे हैं और जई बो रहे हैं। इसीलिए मैं आया हूँ।’

‘जई बोना?’ अमित हैरान था।

लेकिन मीनाक्षी ने गेंद लुढ़का दी है, अब आपको उसका पीछा करना होगा।

अमित को अचानक समझ आया कि बिस्वास बाबू कानून की नहीं, बल्कि शादी की बात कर रहे थे। वह हंसने लगा।

‘तो क्या इसी बात को लेकर आप मुझसे बात करने आए हैं, बिस्वास बाबू?’ उन्होंने कहा। ‘और आप मुझसे इस बारे में बात कर रहे हैं, मेरे पिता से नहीं।’

मैंने आपके पिता से भी बात की थी। लेकिन वह एक साल पहले की बात है, और तब से अब तक क्या प्रगति हुई है?

सिरदर्द होने के बावजूद अमित मुस्कुरा रहा था।

बिस्वास बाबू को बुरा नहीं लगा। उन्होंने अमित से कहा:

“जीवन साथी के बिना मनुष्य या तो देवता होता है या पशु। अब आप तय कर सकते हैं कि आप स्वयं को कहाँ रखते हैं। जब तक आप ऐसे विचारों से ऊपर नहीं उठते…”

अमित ने स्वीकार किया कि वह नहीं था।

बिस्वास बाबू ने कहा, ऐसे लोग बहुत कम थे। शायद केवल दीपांकर जैसे आध्यात्मिक प्रवृत्ति वाले लोग ही ऐसी इच्छाओं का त्याग कर पाए। इसीलिए अमित के लिए वंश को आगे बढ़ाना और भी ज़रूरी हो गया।

'विश्वास मत करो, बिस्वास बाबू,' अमित ने कहा। 'दीपांकर के साथ तो सब कुछ शराब और संन्यास का ही खेल है।'

लेकिन बिस्वास बाबू अपने उद्देश्य से विचलित नहीं हुए। उन्होंने कहा, 'तीन दिन पहले मैं तुम्हारे बारे में सोच रहा था। तुम इतने बूढ़े हो गए हो—उनतीस या उससे अधिक—और अभी तक तुम्हारी कोई संतान नहीं है। तुम अपने माता-पिता को कैसे खुशी दे सकते हो? तुम उनके ऋणी हो। श्रीमती बिस्वास भी यही मानती हैं। उन्हें तुम्हारी इस उपलब्धि पर बहुत गर्व है।'

लेकिन मीनाक्षी ने उन्हें अपर्णा दे दी है।

स्पष्टतः, अपर्णा जैसी गैर-चटर्जी, और वह भी एक लड़की, बिस्वास बाबू की नज़रों में कोई खास महत्व नहीं रखती थी। उन्होंने असहमति जताते हुए सिर हिलाया और होंठ सिकोड़ लिए।

'मेरे दिल से यह राय है—' उन्होंने कहना शुरू किया और रुक गए, ताकि अमित उन्हें आगे बोलने के लिए प्रोत्साहित कर सके।

'बिस्वास बाबू, आप मुझे क्या सलाह देते हैं?' अमित ने विनम्रतापूर्वक पूछा। 'जब मेरे माता-पिता चाहते थे कि मैं उस लड़की शोर्मिष्ठा से मिलूँ, तो आपने अपने विरोध मेरे पिता को बता दिए, और उन्होंने यह बात मुझे बता दी।'

'मुझे खेद है, लेकिन उसकी प्रतिष्ठा थोड़ी धूमिल थी,' बिस्वास बाबू ने मेज के कोने की ओर देखते हुए कहा। यह बातचीत उनके अनुमान से कहीं अधिक कठिन साबित हो रही थी। 'मैं आपके लिए कोई परेशानी नहीं

चाहता था। पूछताछ आवश्यक थी।'
'और इसलिए आपने उन्हें बनाया।'
'जी हां, अमित बाबू। अब शायद कानून के बारे में आपको सबसे अच्छी जानकारी हो। लेकिन मैं बचपन और युवावस्था के बारे में जानता हूं। इसे नियंत्रित करना मुश्किल है, और फिर खतरा भी रहता है।'
मुझे यकीन नहीं है कि मैं समझ पा रहा हूँ।
कुछ देर रुकने के बाद बिस्वास बाबू ने बोलना शुरू किया। वे थोड़े शर्मिंदा लग रहे थे, लेकिन परिवार के सलाहकार के रूप में अपने कर्तव्य की भावना ने उन्हें बोलने के लिए प्रेरित किया।
उन्होंने आगे कहा, 'यह निश्चित रूप से खतरनाक काम है, लेकिन एक से अधिक पुरुषों के साथ रहने वाली कोई भी महिला जोखिम बढ़ाती है। यह स्वाभाविक ही है।'
अमित को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे, क्योंकि वह बिस्वास बाबू की बात का मतलब नहीं समझ पाया था।
'सचमुच, जिस भी महिला को दूसरे पुरुष के पास जाने का मौका मिलता है, उसकी कोई सीमा नहीं रहती,' बिस्वास बाबू ने गंभीर, यहाँ तक कि उदास स्वर में टिप्पणी की, मानो अमित को दबे स्वर में चेतावनी दे रहे हों।
'दरअसल,' उन्होंने मन ही मन सोचा, 'हालांकि हमारे हिंदू समाज में इसे स्वीकार नहीं किया जाता, लेकिन आम तौर पर स्त्री पुरुष से अधिक उत्तेजित होती है, मुझे यह कहना ही पड़ेगा। इसीलिए दोनों में ज्यादा अंतर नहीं होना चाहिए। ताकि स्त्री पुरुष के साथ रहकर शांत हो सके।'
अमित चौंक गया।
'मेरा मतलब है,' बिस्वास बाबू ने आगे कहा, 'उम्र का अंतर तो निश्चित रूप से मायने रखता है। इस तरह से दोनों एक-दूसरे के अनुकूल होते हैं।

अन्यथा, जाहिर है, बुढ़ापे में एक बूढ़ा आदमी तब ज्यादा अच्छा लगता है जब उसकी पत्नी जवानी के चरम पर होती है और मौज-मस्ती करने की गुंजाइश होती है।'

अमित ने दोहराया, 'शरारत।' बिस्वास बाबू ने इससे पहले कभी उससे इस तरह बात नहीं की थी।

'बिल्कुल,' बिस्वास बाबू ने मन ही मन सोचा, अपने चारों ओर रखी कानून की किताबों की कतारों पर उदास निगाह डालते हुए, 'यह हर मामले में सच नहीं है। लेकिन आपको इसे तीस साल से अधिक उम्र तक नहीं टालना चाहिए। क्या आपको सिरदर्द है?' उन्होंने चिंतित होकर पूछा, क्योंकि अमित दर्द में लग रहा था।

अमित ने कहा, 'हल्का सा सिरदर्द है। कुछ गंभीर नहीं है।'

'एक शांत स्वभाव वाली लड़की से अरेंज मैरिज, यही समाधान है। और मैं दीपांकर के लिए भी एक जीवनसाथी के बारे में सोचूंगा।'

दोनों एक मिनट तक चुप रहे। अमित ने चुप्पी तोड़ी।

'आजकल लोग कहते हैं कि आपको अपना जीवनसाथी खुद चुनना चाहिए, बिस्वास बाबू। बेशक, मेरे जैसे कवि यही कहते हैं।'

'लोग क्या सोचते हैं, लोग क्या कहते हैं और लोग क्या करते हैं, ये दो अलग-अलग बातें हैं,' बिस्वास बाबू ने कहा। 'मैं और श्रीमती बिस्वास चौंतीस वर्षों से सुखी वैवाहिक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इसमें बुराई क्या है? किसी ने मुझसे पूछा ही नहीं। एक दिन मेरे पिता ने कहा कि यह तय है।'

लेकिन अगर मुझे खुद कोई मिल जाए तो—

बिस्वास बाबू समझौता करने को तैयार थे। 'अच्छा। लेकिन फिर जांच भी होनी चाहिए। वह एक सभ्य लड़की होनी चाहिए...'

'क्या वह अच्छे परिवार से है?' अमित ने पूछा।

‘एक अच्छे परिवार से।’
‘अच्छी शिक्षा प्राप्त?’
‘अच्छी शिक्षा प्राप्त। सरस्वती लक्ष्मी की तुलना में दीर्घकाल में बेहतर आशीर्वाद देती हैं।’
‘ठीक है, अब मैंने पूरा मामला सुन लिया है, मैं अपना फैसला सुरक्षित रखूंगा।’
‘अमित बाबू, इसे ज्यादा देर तक टालो मत,’ बिस्वास बाबू ने चिंता भरी, लगभग पिता तुल्य मुस्कान के साथ कहा। ‘देर-सवेर तुम्हें गॉर्डन की गांठ काटनी ही पड़ेगी।’
और इसे बांध दें?
‘इसे बांध दें?’
'मेरा मतलब है, शादी करना,' अमित ने कहा।
'तो फिर आपको शादी भी कर लेनी चाहिए,' बिस्वास बाबू ने कहा।
7.19
उसी शाम, उसी कमरे में, न्यायमूर्ति चटर्जी, जिन्होंने पिछली शाम की काली टाई के बजाय धोती-कुर्ता पहना हुआ था, ने अपने दो बड़े बेटों से कहा:
‘खैर, अमित—दीपांकर—मैंने आप दोनों को यहाँ इसलिए बुलाया है क्योंकि मुझे आप दोनों से कुछ कहना है। मैंने आपसे अकेले बात करने का फैसला किया है, क्योंकि आपकी माँ बातों पर भावुक हो जाती हैं, और इससे कोई फायदा नहीं होता। यह वित्तीय मामलों, हमारे पारिवारिक निवेशों और संपत्ति आदि के बारे में है। मैं इन मामलों को तीस साल से भी अधिक समय से संभाल रहा हूँ, लेकिन इससे मेरे अन्य कामों के अलावा मुझ पर बहुत बोझ पड़ता है, और अब समय आ गया है कि आप दोनों में से कोई एक इस तरफ की जिम्मेदारी संभाले। . . . अब रुकिए,

रुकिए'—न्यायमूर्ति चटर्जी ने हाथ उठाया—'मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए, फिर आप दोनों को बोलने का मौका मिलेगा। एक बात जो मैं नहीं बदलूंगा, वह है मेरा जिम्मेदारी सौंपने का फैसला। मेरे काम का बोझ —और यह बात मेरे सभी साथी न्यायाधीशों पर लागू होती है—पिछले एक साल में बहुत बढ़ गया है, और, खैर, मैं भी अब जवान नहीं हो रहा हूँ। पहले तो मैं बस इतना ही कहने वाला था, अमित, कि तुम सब कुछ संभाल लो।' तुम सबसे बड़े हो और सच कहूँ तो यह तुम्हारा कर्तव्य है। लेकिन तुम्हारी माँ और मैंने इस पूरे मुद्दे पर विस्तार से चर्चा की है, और हमने तुम्हारी साहित्यिक रुचियों को भी ध्यान में रखा है, और अब हम इस बात पर सहमत हैं कि यह ज़िम्मेदारी तुम पर नहीं होनी चाहिए। तुमने कानून की पढ़ाई की है—चाहे तुम वकालत करते हो या नहीं—और दीपांकर, तुम्हारे पास अर्थशास्त्र की डिग्री है। पारिवारिक संपत्ति का प्रबंधन करने के लिए इससे बेहतर योग्यता और कोई नहीं हो सकती—अब, एक मिनट रुको, दीपांकर, मेरी बात अभी खत्म नहीं हुई है—और तुम दोनों बुद्धिमान हो। तो हमने यह तय किया है। अगर तुम, दीपांकर, अपनी अर्थशास्त्र की डिग्री का कुछ उपयोग करो, बजाय इसके कि तुम —खैर, आध्यात्मिक पक्ष पर ध्यान केंद्रित करो, तो बहुत अच्छा। अगर नहीं, तो मुझे डर है, अमित, कि यह ज़िम्मेदारी तुम्हें ही उठानी पड़ेगी।

'लेकिन बाबा—' दीपांकर ने व्यथित होकर पलकें झपकाते हुए विरोध किया, 'अर्थशास्त्र किसी भी चीज़ को चलाने के लिए सबसे खराब योग्यता है। यह दुनिया का सबसे बेकार, अव्यावहारिक विषय है।'

'दीपांकर,' उसके पिता ने कुछ नाराज़गी जताते हुए कहा, 'तुमने कई सालों तक अर्थशास्त्र का अध्ययन किया है, और तुमने आर्थिक मामलों को संभालने के बारे में कुछ न कुछ तो ज़रूर सीखा होगा—मुझसे तो निश्चित रूप से ज़्यादा ही सीखा होगा। तुम्हारी शिक्षा के बिना भी मैंने—

पहले बिस्वास बाबू की मदद से, और अब लगभग उनके बिना—किसी तरह अपने मामलों को संभाल लिया है। भले ही, जैसा कि तुम कहते हो, अर्थशास्त्र की डिग्री मददगार न हो, मुझे नहीं लगता कि यह वास्तव में कोई बाधा बन सकती है। और यह सुनकर मुझे अजीब लग रहा है कि तुम अव्यावहारिक चीज़ों को बेकार बता रहे हो।'

दीपांकर ने कुछ नहीं कहा। अमित ने भी कुछ नहीं कहा।

'तो, अमित?' न्यायमूर्ति चटर्जी ने पूछा।

'मैं क्या कहूँ, बाबा?' अमित ने कहा। 'मैं नहीं चाहता कि आपको यह काम करते रहना पड़े। मुझे शायद इस बात का एहसास नहीं था कि इसमें कितना समय लगता होगा। लेकिन, खैर, मेरी साहित्यिक रुचियाँ सिर्फ़ रुचियाँ नहीं हैं, बल्कि मेरा पेशा हैं—लगभग मेरा जुनून। अगर यह संपत्ति में मेरे हिस्से का सवाल होता, तो मैं सब कुछ बेच देता, पैसा बैंक में जमा कर देता और ब्याज से गुज़ारा करता—या, अगर वह काफ़ी नहीं होता, तो मैं अपने उपन्यासों और कविताओं पर काम करते हुए उसे खत्म होने देता। लेकिन, खैर, ऐसा नहीं है। हम सभी के भविष्य को खतरे में नहीं डाल सकते—तपन का, कुकू का, माँ का, और कुछ हद तक मीनाक्षी का भी। मुझे लगता है कि मैं खुश हूँ कि कम से कम यह संभावना तो है कि मुझे यह काम न करना पड़े—यानी, अगर दीपांकर—'

'दादा, क्यों न हम दोनों थोड़ा-थोड़ा करके दिखाएं?' दीपांकर ने अमित की ओर मुड़ते हुए पूछा।

उनके पिता ने सिर हिलाया। 'इससे परिवार में केवल भ्रम और कठिनाइयाँ ही पैदा होंगी। या तो यह होगा या वह।'

दोनों ही उदास दिख रहे थे। न्यायमूर्ति चटर्जी ने दीपांकर की ओर मुड़कर कहा, "मुझे पता है कि आप पुल मेले में जाने के लिए बहुत उत्सुक हैं, और शायद गंगा में कुछ बार डुबकी लगाने के बाद आपको कुछ फैसला

लेने में मदद मिल जाए। खैर, मैं कुछ और महीनों तक, मान लीजिए इस साल के अंत तक, आपके विचार करने और निर्णय लेने के लिए तैयार हूँ। मेरा मानना है कि आपको किसी फर्म में नौकरी कर लेनी चाहिए—हो सके तो किसी बैंक में; इससे शायद यह सब आपके मौजूदा काम के अनुरूप हो जाएगा। लेकिन, जैसा कि अमित आपको बताएगा, मेरे विचार हमेशा सही नहीं होते—और सही हों या न हों, हमेशा स्वीकार्य भी नहीं होते। खैर, अगर आप सहमत नहीं हैं, तो अमित, आपको ही फैसला लेना होगा। आपके उपन्यास को पूरा होने में कम से कम एक या दो साल और लगेंगे, और मैं इतना लंबा इंतजार नहीं कर सकता। आपको अपने साहित्यिक कार्यों पर साथ-साथ काम करना होगा।"

दोनों भाइयों में से किसी ने भी दूसरे की ओर नहीं देखा।

'क्या आपको लगता है कि मैं अन्याय कर रहा हूँ?' न्यायमूर्ति चटर्जी ने मुस्कुराते हुए बंगाली में पूछा।

'नहीं, बिलकुल नहीं, बाबा,' अमित ने मुस्कुराने की कोशिश करते हुए कहा, लेकिन वह केवल बेहद परेशान दिखने में ही सफल रहा।

7.20

अरुण मेहरा सुबह 9:30 बजे के कुछ ही देर बाद डलहौज़ी स्क्वायर स्थित अपने कार्यालय पहुंचे। आसमान बादलों से घिरा हुआ था और मूसलाधार बारिश हो रही थी। बारिश की बूंदें राइटर्स बिल्डिंग के विशाल अग्रभाग पर बह रही थीं और स्क्वायर के बीचोंबीच स्थित विशाल तालाब में सीधे पानी भर रही थीं।

'सावन बैरी।'

वह अपना ब्रीफकेस अंदर छोड़कर कार से बाहर निकले और स्टेट्समैन अखबार से खुद को बचाने लगे। इमारत के बरामदे में खड़ा उनका चपरासी अपने मालिक की छोटी नीली कार को देखकर चौंक गया।

बारिश इतनी तेज हो रही थी कि लगभग रुकने तक उसने कार को देखा ही नहीं था। घबराकर उसने छाता खोला और साहब को बचाने के लिए दौड़ पड़ा। उसे एक-दो सेकंड की देरी हो गई।

'खूनी बेवकूफ।'

हालांकि चपरासी अरुण मेहरा से कई इंच छोटा था, फिर भी उसने अरुण के भवन में प्रवेश करते ही उनके सिर पर छाता थाम लिया। अरुण लिफ्ट में चढ़े और लिफ्टकर्मी को व्यस्त भाव से सिर हिलाकर अभिवादन किया। चपरासी अपने मालिक का ब्रीफकेस लेने के लिए कार की ओर भागा और फिर उस विशाल इमारत की दूसरी मंजिल पर जाने के लिए सीढ़ियाँ चढ़ गया।

प्रबंधकीय एजेंसी बेंटसेन एंड प्राइस, जिसे बेंटसेन प्राइस के नाम से अधिक जाना जाता है, का मुख्यालय पूरी दूसरी मंजिल पर स्थित था।

इन परिवेशों से, कंपनी के अधिकारी भारत के व्यापार और वाणिज्य में अपने हिस्से का नियंत्रण रखते थे। यद्यपि कलकत्ता 1912 से पहले की तरह भारत सरकार की राजधानी नहीं रह गया था, फिर भी लगभग चार दशक बाद और स्वतंत्रता के लगभग चार वर्ष बाद भी, यह निर्विवाद रूप से वाणिज्यिक राजधानी बना रहा। देश के आधे से अधिक निर्यात हुगली नदी के गाद भरे रास्ते से होकर बंगाल की खाड़ी में जाते थे। बेंटसेन प्राइस जैसी कलकत्ता स्थित प्रबंधकीय एजेंसियां भारत के अधिकांश विदेशी व्यापार का प्रबंधन करती थीं; इसके अलावा, वे कलकत्ता के भीतरी इलाकों में संसाधित या निर्मित वस्तुओं के उत्पादन के एक बड़े हिस्से और बीमा जैसी सेवाओं को भी नियंत्रित करती थीं, जो वाणिज्यिक मार्गों के माध्यम से उनके सुचारू प्रवाह को सुनिश्चित करती थीं।

प्रबंधकीय एजेंसियों के पास आम तौर पर कारखानों का संचालन करने वाली वास्तविक विनिर्माण कंपनियों में नियंत्रक हिस्सेदारी होती थी और

वे कलकत्ता स्थित अपने मुख्यालय से इन सभी का पर्यवेक्षण करती थीं। लगभग सभी मामलों में ये एजेंसियां ब्रिटिश स्वामित्व में थीं, और कलकत्ता के वाणिज्यिक केंद्र डलहौज़ी स्क्वायर के पास स्थित प्रबंधकीय एजेंसियों के कार्यकारी अधिकारी लगभग सभी मामलों में श्वेत थे। अंतिम नियंत्रण लंदन कार्यालय के निदेशकों और इंग्लैंड के शेयरधारकों के पास होता था—लेकिन जब तक लाभ निरंतर आता रहता था, वे आमतौर पर कलकत्ता स्थित मुख्यालय पर नियंत्रण छोड़ने के लिए तैयार रहते थे।

इसका दायरा व्यापक था और काम दिलचस्प और महत्वपूर्ण दोनों था। बेंटसेन प्राइस स्वयं निम्नलिखित क्षेत्रों में शामिल थी, जैसा कि उसके एक विज्ञापन में बताया गया था:

अपघर्षक, एयर कंडीशनिंग, बेल्टिंग, ब्रश, भवन निर्माण, सीमेंट, रसायन और रंगद्रव्य, कोयला, कोयला खनन मशीनरी, तांबा और पीतल, कच्छ और कथा, कीटाणुनाशक, दवाएं और औषधियां, ड्रम और कंटेनर, इंजीनियरिंग, हैंडलिंग सामग्री, औद्योगिक तापन, बीमा, जूट मिलें, सीसा पाइप, लिनन धागा, लूज लीफ उपकरण, तेल (अलसी के तेल उत्पाद सहित), पेंट, कागज, रस्सी, रोपवे निर्माण, रोपवे, शिपिंग, छिड़काव उपकरण, चाय, लकड़ी, वर्टिकल टर्बाइन पंप, वायर रोप।

बीस वर्ष की आयु में इंग्लैंड से आए युवा, जिनमें से अधिकांश ऑक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज से थे, आसानी से उस औपचारिक अनुशासन में ढल गए जो बेंटसन प्राइस, एंड्रयू यूल, बर्ड एंड कंपनी या इसी तरह की कई अन्य कंपनियों में प्रचलित था। ये कंपनियाँ स्वयं को (और अन्य लोगों द्वारा भी) कलकत्ता और इसलिए भारतीय व्यापार जगत का शिखर मानती थीं। वे अनुबंधित सहायक थे, जो कंपनी के साथ अनुबंध या निरंतर चलने वाले अनुबंध से बंधे हुए थे। बेंटसन प्राइस में, कुछ वर्ष पहले तक, कंपनी की यूरोपीय अनुबंधित सेवा में भारतीयों के लिए कोई स्थान

नहीं था। भारतीयों को भारतीय अनुबंधित सेवा में रखा जाता था, जहाँ जिम्मेदारी और वेतन दोनों का स्तर काफी कम था।

स्वतंत्रता के समय के आसपास, सरकार के दबाव में और बदलते समय के अनुरूप, कुछ भारतीयों को अनिच्छा से बेंटसेन प्राइस के शांत और एकांत कार्यालयों में प्रवेश करने की अनुमति दी गई थी। परिणामस्वरूप, 1951 तक फर्म के अस्सी अधिकारियों में से पाँच (हालाँकि अभी तक कोई भी विभाग प्रमुख या निदेशक नहीं था) ऐसे थे जिन्हें श्वेत-भूरा कहा जा सकता था।

उन सभी को अपनी असाधारण स्थिति का असाधारण रूप से एहसास था, और अरुण मेहरा को तो यह एहसास और भी अधिक था। अगर कोई व्यक्ति इंग्लैंड और अंग्रेजों से इतना मोहित था, तो वह अरुण मेहरा ही थे। और यहाँ वे उनके साथ काफी सौहार्दपूर्ण माहौल में घुलमिल रहे थे।

अरुण मेहरा ने कहा, "अंग्रेजों को शासन करना बखूबी आता था। वे खूब मेहनत करते थे और खूब मौज-मस्ती भी करते थे। वे नेतृत्व में विश्वास रखते थे, और मैं भी। उनका मानना था कि अगर आप पच्चीस साल की उम्र में नेतृत्व नहीं कर सकते, तो आपमें वह काबिलियत नहीं है। उनके युवा और जोशीले लड़के तो और भी जल्दी भारत आ जाते थे; उन्हें इक्कीस साल की उम्र में नेतृत्व करने से रोकना मुश्किल था। इस देश की समस्या पहल की कमी थी। भारतीयों की बस यही ख्वाहिश थी कि उन्हें एक सुरक्षित नौकरी मिल जाए।"

"सारे के सारे लोग कलम चलाने वाले हैं," अरुण ने मन ही मन कहा, जब वह वातानुकूलित कार्यकारी कार्यालयों की ओर जाते हुए उमस भरे क्लर्कियल सेक्शन का जायजा ले रहा था।

उनका मूड खराब मौसम की वजह से ही नहीं था, बल्कि इसलिए भी था क्योंकि उन्होंने स्टेट्समैन क्रॉसवर्ड पज़ल का सिर्फ़ एक तिहाई हिस्सा ही

हल किया था। उनके दोस्त जेम्स पेटिग्रेव, जो दूसरी कंपनी में काम करते थे और जिनसे वे लगभग हर सुबह फ़ोन पर पज़ल के सुराग और हल बाँटते थे, शायद अब तक ज़्यादातर पज़ल हल कर चुके होते। अरुण मेहरा को चीज़ें समझाना अच्छा लगता था, और उन्हें किसी और से समझाना पसंद नहीं था। उन्हें दूसरों को यह जताना अच्छा लगता था कि उन्हें हर ज़रूरी बात पता है, और वे खुद को भी यही जताने में कामयाब हो चुके थे।

7.21

आज सुबह की डाक को अरुण के विभाग प्रमुख बेसिल कॉक्स ने अपने कुछ वरिष्ठ सहायकों की मदद से छाँटा। आज सुबह करीब दस पत्र अरुण के नाम से आए थे। उनमें से एक पत्र पर्शियन फाइन टीज़ कंपनी का था, जिसे उन्होंने विशेष रुचि से पढ़ा।

'क्या आप एक पत्र लिख देंगी, मिस क्रिस्टी?' उन्होंने अपनी सचिव से कहा, जो एक बेहद समझदार और हंसमुख युवा एंग्लो-इंडियन महिला थीं और उनके मिजाज से परिचित हो चुकी थीं। मिस क्रिस्टी को पहले इस बात पर आपत्ति थी कि उन्हें एक ब्रिटिश अधिकारी के बजाय एक भारतीय अधिकारी के अधीन नियुक्त किया गया था, लेकिन अरुण ने अपने स्नेह और स्नेह से उन्हें अपना अधिकार स्वीकार करने के लिए मना लिया था।

जी हां, श्री मेहरा, मैं तैयार हूं।

'सामान्य शीर्षक। प्रिय श्री पूर्जहेदी, हमें चाय की खेप के विवरण प्राप्त हुए हैं—श्रीमती क्रिस्टी, पत्र से विवरण लिख लीजिए—तेहरान—क्षमा कीजिए, खुर्रमशहर और तेहरान—जिसका आप चाहते हैं कि हम कलकत्ता में नीलामी से लेकर तेहरान में माल प्राप्तकर्ता को सीमा शुल्क बांड द्वारा पहुंचने तक बीमा करें। हमारी दरें पहले की तरह ही मानक

पॉलिसी के लिए प्रति सौ रुपये पर पांच आना हैं, जिसमें एसआर एंड सीसी और टीपीएनडी दोनों शामिल हैं। खेप का मूल्य छह लाख उनतालीस हजार नौ सौ सत्तर रुपये है, और देय प्रीमियम होगा—श्रीमती क्रिस्टी, क्या आप इसकी गणना कर सकती हैं?—धन्यवाद—भवदीय, और इसी तरह आगे... क्या लगभग एक महीने पहले उनकी ओर से कोई दावा नहीं आया था?'

'मुझे ऐसा ही लगता है, श्री मेहरा।'

'हम्म।' अरुण ने अपनी ठुड्डी के नीचे दोनों हाथों को जोड़कर इशारा किया और फिर कहा: 'मुझे लगता है कि मैं बुर्रा बाबू से बात करूंगा।'

विभाग के प्रमुख क्लर्क को अपने कार्यालय में बुलाने के बजाय, उन्होंने उनसे मिलने का फैसला किया। बुर्रा बाबू बेंटसेन प्राइस के बीमा विभाग में पच्चीस वर्षों से कार्यरत थे और विभाग के कामकाज की हर छोटी-बड़ी बात उन्हें पता थी। वे किसी रेजिमेंटल सार्जेंट मेजर की तरह थे और निचले स्तर के सभी काम उन्हीं के हाथों से होकर गुजरते थे। यूरोपीय अधिकारी सिर्फ उन्हीं से बात करते थे।

जब अरुण अपने डेस्क की ओर बढ़ा, तो बड़े-बड़े अधिकारी चेकों और पत्रों की प्रतियों के ढेर को देख रहे थे और अपने अधीनस्थों को निर्देश दे रहे थे कि क्या करना है। वे कह रहे थे, 'त्रिदिब, तुम इसे संभालो; सरत, तुम यह बिल बनाओ।' उमस भरा दिन था और छत के पंखे क्लर्कों के डेस्क पर रखे कागजों के ऊंचे ढेरों को सरसरा रहे थे।

अरुण को देखकर बुर्रा बाबू खड़ा हो गया। उसने कहा, 'सर।'

'बैठ जाइए,' अरुण ने सहज भाव से कहा। 'बताइए, पर्शियन फाइन टीज़ के साथ आजकल क्या चल रहा है? मेरा मतलब दावों के मामले में है।'

'बिनॉय, क्लेम क्लर्क से कहो कि वह क्लेम लेजर लेकर यहां आए।'

अरुण, जो अपने पद के अनुरूप (और अपरिहार्य रूप से) सूट पहने हुए

थे, ने क्लर्कों और बहीखातों के साथ पसीने से तर लेकिन ज्ञानवर्धक बीस मिनट बिताने के बाद, अपने कार्यालय के ठंडे और शांत वातावरण में लौट आए और मिस क्रिस्टी से कहा कि वह उनके द्वारा लिखवाए गए पत्र को टाइप करने से रोक दें।

'खैर, आज शुक्रवार है,' उन्होंने कहा। 'ज़रूरत हो तो सोमवार तक इंतज़ार कर सकते हैं। अगले पंद्रह मिनट तक मैं फ़ोन नहीं उठाऊँगा। और हाँ, आज दोपहर भी मैं नहीं आऊँगा। कलकत्ता क्लब में मेरा लंच का अपॉइंटमेंट है और उसके बाद मुझे मिस्टर कॉक्स और मिस्टर स्विंडन के साथ पुट्टीगढ़ की उस जूट फैक्ट्री का दौरा करना है।'

श्री स्विंडन जूट विभाग से थे, और वे एक कारखाने का दौरा करने जा रहे थे जिसका एक अन्य कंपनी अग्नि बीमा करवाना चाहती थी। अरुण को एक विशेष जूट कारखाने का दौरा करने का कोई औचित्य नहीं दिख रहा था, क्योंकि ऐसे सभी कारखानों का बीमा स्पष्ट रूप से एक मानक शुल्क पर आधारित था जो उत्पादन प्रक्रिया के अलावा किसी अन्य चीज़ पर निर्भर नहीं करता था। लेकिन स्विंडन ने बेसिल कॉक्स को बताया था कि कारखाने का निरीक्षण करना महत्वपूर्ण है, और बेसिल ने अरुण से अपने साथ चलने का अनुरोध किया था।

'अगर मुझसे पूछो तो ये सब समय की बर्बादी है,' अरुण ने कहा। बेंटसेन प्राइस में शुक्रवार दोपहर को क्लब में आराम से भोजन करने, फिर गोल्फ खेलने और शायद ऑफिस बंद होने के समय के आसपास नाममात्र की उपस्थिति दर्ज कराने की परंपरा थी। हफ्ते का काम गुरुवार दोपहर तक लगभग खत्म हो जाता था। लेकिन, सोचने पर अरुण को लगा कि शायद बेसिल कॉक्स ने उसे समुद्री बीमा के अंतर्गत आने वाली जिम्मेदारियों के बजाय अग्नि बीमा के मामले में मदद करने के लिए कहकर उसे व्यापक जिम्मेदारियों के लिए तैयार करने की कोशिश की थी। दरअसल, अब जब

उसने इस पर विचार किया, तो उसे हाल ही में सामान्य बीमा के कई मामले भी सौंपे गए थे। इन सबका मतलब यही हो सकता है कि उच्च अधिकारी उससे और उसके काम से संतुष्ट थे।

इस विचार से उत्साहित होकर उसने बेसिल कॉक्स के दरवाजे पर दस्तक दी।

'अंदर आइए। जी अरुण?' बेसिल कॉक्स ने एक कुर्सी की ओर इशारा किया और फोन के माइक्रोफोन से हाथ हटाकर आगे कहा: 'वाह, बहुत बढ़िया। तो चलिए दोपहर का भोजन करते हैं, और हां, हम दोनों आपको घुड़सवारी करते देखने के लिए उत्सुक रहेंगे। अलविदा।'

उन्होंने अरुण की ओर मुड़कर कहा: 'मुझे खेद है, प्यारे बेटे, मैंने तुम्हारी शुक्रवार की दोपहर को थोड़ा सा बर्बाद कर दिया। लेकिन मुझे आश्चर्य है कि क्या मैं इसकी भरपाई कल टॉली में होने वाली रेस में तुम्हें और मीनाक्षी को अपने मेहमान के रूप में आमंत्रित करके कर सकता हूँ।'

अरुण ने कहा, 'हमें बहुत खुशी होगी।'

'मैं जॉक मैके से बात कर रहा था। लगता है वो किसी रेस में हिस्सा ले रहे हैं। उन्हें देखना काफी मजेदार हो सकता है। बेशक, अगर मौसम ऐसा ही रहा तो उन्हें अपने घोड़ों को ट्रैक पर तैराना पड़ेगा।'

अरुण ने हल्की सी हंसी को स्वीकार किया।

'मुझे नहीं पता था कि वह कल घुड़सवारी करेगा। क्या आपको पता था?' बेसिल कॉक्स ने कहा।

'नहीं, मैं यह नहीं कह सकता कि मैंने ऐसा किया। लेकिन वह अक्सर घुड़सवारी करता है,' अरुण ने कहा। उसने सोचा कि घुड़दौड़ का दीवाना वरुण न केवल यह जानता होगा कि जॉक मैके घुड़सवारी कर रहा है, बल्कि यह भी कि वह किस दौड़ में, किस घोड़े पर, किस बाधा के साथ और संभावित संभावनाओं के साथ भाग लेगा। वरुण और उसके शमशु

दोस्त आमतौर पर बुधवार को जैसे ही कोई अस्थायी या कच्चा रेसिंग फॉर्म बाजार में आता था, उसे खरीद लेते थे और तब से लेकर शनिवार दोपहर तक वे इसके अलावा किसी और चीज के बारे में सोचते या चर्चा नहीं करते थे।

‘और अब?’ बेसिल कॉक्स ने अरुण से पूछा।

'यह फारसी उत्तम चाय पर लगने वाले शुल्क के बारे में है। वे चाहते हैं कि हम एक और खेप का बीमा कराएं।'

'हां। मैंने वह पत्र आपके लिए चिह्नित कर दिया था। बिलकुल एक नियमित प्रक्रिया है, है ना?'

मुझे इतना यकीन नहीं है।

बेसिल कॉक्स ने अपने अंगूठे से अपने निचले होंठ को सहलाया और अरुण के बोलने का इंतजार किया।

अरुण ने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि उनके साथ हमारा दावा संबंधी अनुभव इतना अच्छा रहा है।'

‘खैर, इसकी आसानी से जाँच की जा सकती है।’

मैंने ऐसा पहले ही कर दिया है।

'अच्छा ऐसा है।'

'पिछले तीन वर्षों के आंकड़ों को देखें तो दावों की राशि प्रीमियम का एक सौ बावन प्रतिशत है। यह कोई अच्छी स्थिति नहीं है।'

‘नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं,’ बेसिल कॉक्स ने सोचते हुए कहा। ‘यह कोई सुखद स्थिति नहीं है।’

वे आम तौर पर किस बात का दावा करते हैं? मुझे याद है, चोरी का। या फिर बारिश के पानी से हुए नुकसान का? और क्या उन्होंने एक बार दाग लगने का दावा नहीं किया था? चमड़ा चाय या ऐसी ही किसी चीज़ के साथ एक ही जगह पर रखा गया था?

‘बारिश के पानी से हुए नुकसान के लिए एक और कंपनी ज़िम्मेदार थी। और लॉयड्स, जो मौके पर हमारे दावा निपटान एजेंट थे, से रिपोर्ट मिलने के बाद हमने मिलावट के दावे को अस्वीकार कर दिया। उनके सर्वेक्षकों ने कहा कि मिलावट नगण्य थी, हालांकि फारसी लोग चाय का स्वाद से ज़्यादा उसकी सुगंध से आंकते हैं। असल में उन्हें चोरी से नुकसान हुआ है। या यूं कहें कि हमें। खुर्रमशहर के सीमा शुल्क गोदाम में हुई कुशल चोरी। यह एक बदनाम बंदरगाह है, और जहां तक हमें पता है, सीमा शुल्क अधिकारी भी इसमें शामिल हो सकते हैं।’

‘अच्छा, इस समय प्रीमियम कितना है? पाँच आना?’

'हाँ।'

इसे बढ़ाकर आठ आना कर दो।

‘मुझे नहीं लगता कि यह तरीका कारगर होगा,’ अरुण ने कहा। ‘मैं कलकत्ता में उनके एजेंट से संपर्क करके ऐसा कर सकता हूँ। लेकिन मुझे नहीं लगता कि वह इसे आसानी से स्वीकार करेंगे। उन्होंने एक बार कहा था कि हमारी पाँच आना की दर भी कमर्शियल यूनियन द्वारा उन्हें बीमा देने की तय दर के मुकाबले बहुत कम है। हम उन्हें खो सकते हैं।’

‘अच्छा, क्या आपके पास कुछ और सुझाव है?’ बेसिल कॉक्स ने थकी हुई मुस्कान के साथ कहा। अनुभव से वह जानता था कि अरुण के पास कुछ और सुझाव होने की पूरी संभावना थी।

‘हाँ, मैं करता हूँ,’ अरुण ने कहा।

‘आह,’ बेसिल कॉक्स ने आश्चर्य जताते हुए कहा।

हम लॉयड्स को पत्र लिखकर उनसे पूछ सकते हैं कि सीमा शुल्क गोदाम से चोरी को रोकने या कम करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं।

बेसिल कॉक्स काफी निराश थे लेकिन उन्होंने इस बात का जिक्र नहीं किया।

‘मैं समझ गया। अच्छा, धन्यवाद, अरुण।’
लेकिन अरुण ने अभी अपनी बात पूरी नहीं की थी।
और हम प्रीमियम कम करने का प्रस्ताव भी दे सकते हैं।
‘इसे कम करो, क्या तुमने यही कहा?’ बेसिल कॉक्स ने अपनी दोनों भौहें ऊपर उठा लीं।
'हाँ। बस चोरी, लूटपाट और माल की गैर-वितरण वाली शर्त हटा दीजिए। बाकी सब कुछ उनके पास रहेगा: आग, तूफान, रिसाव, समुद्री डकैती, जबरन माल फेंकना आदि की मानक पॉलिसी, साथ ही हड़ताल, दंगा और नागरिक अशांति, बारिश से होने वाला नुकसान, यहाँ तक कि दाग-धब्बे, जो भी वे चाहें। सब कुछ बहुत ही अनुकूल शर्तों पर। लेकिन टीपीएनडी (माल की गैर-वितरण) नहीं। उसका बीमा वे किसी और से करवा सकते हैं। जाहिर है, अगर हम हर बार उनके दावों का भुगतान करते रहेंगे जब कोई उनकी चाय पी लेगा, तो उनके पास अपने माल की सुरक्षा करने का कोई प्रोत्साहन नहीं रहेगा।'
बेसिल कॉक्स मुस्कुराए। 'यह एक अच्छा विचार है। मुझे इस बारे में सोचने दीजिए। हम आज दोपहर पुट्टीगुरह जाते समय कार में इस पर चर्चा करेंगे।'
‘एक और बात है, बेसिल।’
क्या यह दोपहर तक भी इंतजार कर सकता है?
दरअसल, राजस्थान से हमारा एक दोस्त एक घंटे में मुझसे मिलने आ रहा है और बात उसी से जुड़ी है। मुझे यह बात पहले ही बता देनी चाहिए थी, लेकिन मैंने सोचा कि बाद में भी बात हो सकती है। मुझे नहीं पता था कि उसे इतनी जल्दी जवाब चाहिए।
यह मारवाड़ी व्यापारियों के लिए इस्तेमाल होने वाला एक आम शब्द था। उस समुदाय के लालची, उद्यमशील, चालाक, ऊर्जावान और सबसे बढ़कर

असभ्य स्वभाव वाले लोग प्रबंध एजेंसियों के आरामपसंद और सभ्य साहबों को बिल्कुल पसंद नहीं आते थे। प्रबंध एजेंसी किसी खास तरह के मारवाड़ी व्यापारी से बड़ी रकम उधार ले सकती थी, लेकिन अध्यक्ष उसे अपने क्लब में आमंत्रित करने के बारे में सोच भी नहीं सकता था, भले ही वह क्लब भारतीयों के लिए ही क्यों न हो।

लेकिन इस मामले में मारवाड़ी व्यापारी बेंटसेन प्राइस से वित्तीय सहायता चाहता था। संक्षेप में, उसका प्रस्ताव यह था: उसकी कंपनी एक नए व्यवसाय में विस्तार करना चाहती थी, लेकिन वह चाहता था कि बेंटसेन प्राइस इस विस्तार में निवेश करे। बदले में, वह नए व्यवसाय से उत्पन्न होने वाला सारा बीमा कारोबार उन्हें दे देगा।

अरुण ने समुदाय के प्रति अपनी सहज अरुचि को दबाते हुए और यह याद दिलाते हुए कि व्यापार तो व्यापार होता है, बेसिल कॉक्स के सामने यथासंभव निष्पक्षता से यह मामला रखा। उन्होंने इस बात का ज़िक्र करने से परहेज़ किया कि यह एक ब्रिटिश कंपनी द्वारा दूसरी ब्रिटिश कंपनी के लिए व्यापार के सामान्य तरीके से की जाने वाली सेवाओं से अधिक कुछ नहीं था। वह जानते थे कि उनके बॉस इस तथ्य से अनभिज्ञ नहीं थे।

बेसिल कॉक्स ने उनसे सलाह नहीं मांगी। उन्होंने अरुण के दाहिने कंधे के पीछे एक बिंदु को काफी देर तक देखा, फिर कहा:

मुझे यह पसंद नहीं है—मुझे इसमें थोड़ी मारवाड़ी सी गंध आती है।'

अपने लहजे से उसने यह संकेत दिया कि यह एक प्रकार की चालाकी थी। अरुण बोलने ही वाला था कि उसने आगे कहा:

नहीं। यह हमारे लिए बिल्कुल भी नहीं है। और मुझे पता है कि वित्त विभाग को यह बिल्कुल भी पसंद नहीं आएगा। चलिए बात यहीं खत्म करते हैं। तो क्या हम ढाई बजे मिलेंगे?

'ठीक है,' अरुण ने कहा।

जब वह अपने कमरे में वापस लौटे, तो सोचने लगे कि वे अपने मेहमान को क्या समझाएँगे और इस फैसले का बचाव करने के लिए क्या तर्क देंगे। लेकिन उन्हें इसकी ज़रूरत नहीं पड़ी। श्री झुनझुनवाला ने इस फैसले को आश्चर्यजनक रूप से सहजता से स्वीकार कर लिया। जब अरुण ने उन्हें बताया कि उनकी कंपनी इस प्रस्ताव पर आगे नहीं बढ़ सकती, तो श्री झुनझुनवाला ने उनसे स्पष्टीकरण नहीं माँगा। उन्होंने बस सिर हिलाया, फिर हिंदी में कहा—जो अरुण को एक भयानक मिलीभगत का आभास देता हुआ लगा—'आप जानते हैं, बेंटसेन प्राइस के साथ यही समस्या है: वे तब तक कोई काम हाथ में नहीं लेते जब तक उसमें अंग्रेज़ों की थोड़ी सी भी झलक न हो।'

7.22

श्री झुनझुनवाला के जाने के बाद, अरुण ने मीनाक्षी को फोन करके बताया कि वह उस शाम काम से काफी देर से लौटेगा, लेकिन उन्हें लगभग साढ़े सात बजे फिनले के घर कॉकटेल के लिए जाने का प्लान बनाना चाहिए। इसके बाद उसने कुछ और पत्रों का जवाब दिया और अंत में अपने क्रॉसवर्ड को हल करने में जुट गया।

लेकिन इससे पहले कि वह दो-तीन और सुराग सुलझा पाता, फोन की घंटी बज उठी। यह जेम्स पेटिग्रेव का फोन था।

‘अच्छा, अरुण, कितने?’

'मुझे डर है कि ज्यादा लोग नहीं हैं। मैंने अभी-अभी इस पर गौर करना शुरू किया है।'

यह सरासर झूठ था। शौचालय में बैठकर दिमाग की हर कोशिका पर ज़ोर डालने के अलावा, अरुण नाश्ते के समय क्रॉसवर्ड को लेकर परेशान रहता था और यहाँ तक कि काम पर जाते समय गाड़ी में सुरागों के नीचे संभावित एनाग्राम के अक्षर भी लिखता था। उसकी लिखावट इतनी

खराब थी कि उसे खुद भी समझ नहीं आती थी, इसलिए इससे आमतौर पर उसे कोई खास मदद नहीं मिलती थी।

मैं आपसे यह नहीं पूछूंगा कि क्या आपको "गर्दन में वह घटिया सा टुकड़ा" लगा था।

‘धन्यवाद,’ अरुण ने कहा। ‘मुझे खुशी है कि आपने मुझे कम से कम अस्सी के आईक्यू का श्रेय दिया।’

और “जॉनसन का गुलाब”?

'हाँ।'

“पेरिस में एक सज्जन द्वारा खरीदा गया चाकू” कैसा रहेगा?

'नहीं—लेकिन चूंकि आप मुझे बताने के लिए स्पष्ट रूप से उत्सुक हैं, तो क्यों न आप हम दोनों को इस पीड़ा से मुक्ति दिला दें?'

‘मचेते।’

‘मचेटी?’

‘मचेते।’

मुझे डर है कि मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा है कि कैसे—

‘अरे, अरुण, तुम्हें एक दिन फ्रेंच सीखनी ही पड़ेगी,’ जेम्स पेटिग्रेव ने चिढ़कर कहा।

‘अच्छा, तुम्हें क्या समझ नहीं आया?’ अरुण ने अपनी झुंझलाहट को छिपाते हुए पूछा।

‘दरअसल, बहुत कम,’ उस बदतमीज़ जेम्स ने कहा।

‘तो तुमने सब कुछ सुलझा लिया है, है ना?’ अरुण ने कहा।

'खैर, बिलकुल नहीं, बिलकुल नहीं। कुछ बातें हैं जो मुझे अभी भी थोड़ी परेशान कर रही हैं।'

‘ओह, बस दो?’

'ठीक है, शायद दो जोड़े।'

'उदाहरण के लिए?'
‘“एक संगीतकार जिसकी आवाज़ में लालच झलकता है”, पाँच अक्षर, तीसरा अक्षर T, पाँचवाँ अक्षर R□’
‘लूटर,’ अरुण ने तुरंत कहा।
‘आह, यह तो सही होना ही चाहिए। लेकिन मुझे हमेशा लगता था कि सही शब्द ल्यूटनिस्ट या शायद ल्यूटिस्ट था।’
क्या एल आपको दूसरी दिशा में कोई मदद देता है?
‘अह... चलिए देखते हैं... हाँ, ऐसा ही है। यह "बेलफ़्री" ही होना चाहिए। धन्यवाद।’
‘कोई बात नहीं,’ अरुण ने कहा। ‘असल में, उस मामले में मुझे भाषाई लाभ मिला था।’
‘ऐसा कैसे?’ जेम्स ने कहा।
‘लूट’ शब्द हिंदी से आया है।
‘हाँ, ऐसा ही है,’ जेम्स पेटिग्रेव ने कहा। ‘खैर,’ उन्होंने आगे कहा, ‘ऐसा लगता है कि मैंने एशेज तीन-दो से जीत ली है, और अगले हफ्ते आपको मुझे दोपहर का खाना खिलाना होगा।’
वह सोमवार से शुक्रवार तक चलने वाली उनकी साप्ताहिक क्रॉसवर्ड प्रतियोगिता की बात कर रहा था। अरुण ने हार स्वीकार करते हुए आह भरी।
*
जब यह बातचीत चल रही थी, जो काफी हद तक शब्दों की बारीकियों पर केंद्रित थी और अरुण मेहरा को पूरी तरह से पसंद नहीं आ रही थी, उसी दौरान एक और टेलीफोन पर बातचीत भी चल रही थी, जो शब्दों की बारीकियों से ही संबंधित थी, जिसके बारे में अगर अरुण मेहरा को पता होता तो वह और भी कम प्रसन्न होते।

मीनाक्षी: नमस्कार।
बिली ईरानी: नमस्कार!
मीनाक्षी: आपकी आवाज़ अलग लग रही है। क्या ऑफिस में आपके साथ कोई और है?
बिली: नहीं। लेकिन काश आप मुझे ऑफिस में फोन न करते।
मीनाक्षी: मेरे लिए बाकी समय में फोन करना बहुत मुश्किल होता है। लेकिन आज सुबह तो सब लोग बाहर गए हुए हैं। आप कैसी हैं?
बिली: मैं ठीक हूँ, मतलब, मेरी हालत ठीक है।
मीनाक्षी: इससे तो आप किसी घोड़े की तरह लगते हैं।
बिली: क्या आपको यकीन है कि आप टखने के बारे में नहीं सोच रहे हैं?
मीनाक्षी: अरे बेवकूफ! बिलकुल नहीं। टखने के पास के बाल होते हैं। मुझे लगता है, घोड़े को पकड़ने के लिए आप इन्हीं बालों का इस्तेमाल करते हैं। शायद गर्दन के निचले हिस्से में अयाल का हिस्सा होता है। बाल मतलब लॉक।
बिली: तो फिर बताओ, टखने में मोच कैसे आ सकती है या वह टूट कैसे सकता है? अक्सर सुनने में आता है कि किसी घोड़े को टखने टूटने की वजह से गोली मारनी पड़ती है। वैसे, क्या तुम कल टॉली में होने वाली रेस देखने जा रहे हो?
मीनाक्षी: जी हाँ, संयोग से। अरुण ने अभी-अभी मुझे ऑफिस से फोन किया था। बेसिल कॉक्स ने हमें आमंत्रित किया है। तो क्या हम वहाँ मिलेंगे?
बिली: मुझे पक्का नहीं पता कि मैं कल जा रहा हूँ या नहीं। लेकिन हम सब आज शाम को फिनले के घर कॉकटेल के लिए मिल रहे हैं, है ना? और फिर कहीं डिनर और डांस करेंगे?
मीनाक्षी: लेकिन मुझे आपसे एक शब्द भी कहने का मौका नहीं मिलेगा

—क्योंकि शिरीन आपकी एक कीमती अंडे की तरह रक्षा कर रही है, और अरुण—और मेरी भाभी।

बिली: आपकी भाभी?

मीनाक्षी: वो काफी अच्छी है; हालांकि उसे थोड़ा और निखारने की जरूरत है। मैंने सोचा कि हम उसे बिश के साथ रखेंगे और देखेंगे कि वे दोनों आपस में कैसे घुल-मिल जाते हैं।

बिली: और क्या तुमने मुझे पन्ना का अंडा कहा था?

मीनाक्षी: जी हाँ। तुम बिल्कुल पन्ना के अंडे की तरह हो। और इसी बात से मैं मुद्दे पर आती हूँ। अरुण आज दोपहर करीब सात बजे तक पुट्टीगढ़ या कहीं और रहेगा। आज दोपहर तुम क्या कर रही हो? मुझे पता है आज शुक्रवार है, इसलिए यह मत कहना कि तुम काम कर रही हो।

बिली: दरअसल, मैं पहले लंच करूंगा, फिर गोल्फ खेलूंगा।

मीनाक्षी: क्या? इस मौसम में? तुम तो समुद्र में बह जाओगे। तो चलो मिलते हैं—चाय पर वगैरह।

बिली: खैर—मुझे नहीं लगता कि यह सब करना इतना अच्छा विचार है।

मीनाक्षी: चलो चिड़ियाघर चलते हैं। बाहर बहुत तेज बारिश हो रही होगी, इसलिए हमें आम तौर पर मिलने वाले अच्छे नागरिक नहीं मिलेंगे। हमें कोई घोड़ा या ज़ेबरा मिल जाएगा और हम उससे पूछेंगे कि क्या उसके बाल या गर्दन में मोच आ गई है। मैं कितनी मज़ेदार हूँ, है ना?

बिली: हाँ, बहुत मज़ेदार। अच्छा, मैं तुमसे साढ़े चार बजे मिलूंगा। फेयरलॉन होटल में। चाय पर।

मीनाक्षी: चाय वगैरह के लिए।

बिली [कुछ अनिच्छा से]: और इसी तरह। हाँ।

मीनाक्षी: तीन बजे।

बिली: चार बजे।

मीनाक्षी: चार बजे। चार बजे। शायद जब आपने टखने कहा तो आप माथे के बालों के बारे में सोच रही थीं।
बिली: शायद मैं था।
मीनाक्षी: या चमड़ी।
बिली: मैं घोड़े को उस तरह से नहीं पकड़ूंगा।
मीनाक्षी: अरे बेवकूफ! लेकिन फिर टखने की हड्डी क्या होती है?
बिली: शब्दकोश में देखो—और मुझे आज दोपहर को बताओ। या मुझे दिखाओ।
मीनाक्षी: शरारती।
बिली [आह भरते हुए]: मीनाक्षी, तुम मुझसे कहीं ज्यादा शरारती हो। मुझे नहीं लगता कि यह बिल्कुल भी अच्छा विचार है।
मीनाक्षी: तो फिर चार बजे। मैं टैक्सी ले लूंगी। अलविदा।
बिली: अलविदा।
मीनाक्षी: मैं तुमसे ज़रा भी प्यार नहीं करती।
बिली: भगवान का शुक्र है।
7.23
जब मीनाक्षी बिली से मुलाकात करके लौटी, तो साढ़े छह बज रहे थे और वह संतुष्टि भरी मुस्कान लिए हुए थी। उसका श्रीमती रूपा मेहरा से इतना अच्छा व्यवहार देखकर रूपा मेहरा थोड़ी असहज हो गईं और उन्होंने मीनाक्षी से पूछा कि क्या कोई बात है। मीनाक्षी ने उन्हें आश्वस्त किया कि कोई बात नहीं है।
लता यह तय नहीं कर पा रही थी कि शाम को क्या पहने। वह हल्के गुलाबी रंग की सूती साड़ी लिए ड्राइंग रूम में दाखिल हुई, जिसका एक हिस्सा उसने अपने कंधे पर डाल रखा था। उसने कहा, 'माँ, आपको यह कैसी लगी?'

'बहुत बढ़िया, प्यारी,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा और अपर्णा के सोते हुए सिर से एक मक्खी को पंखे से उड़ा दिया।

'ये क्या बकवास है, माँ, ये तो बिलकुल ही भयानक है,' मीनाक्षी ने कहा।

श्रीमती रूपा मेहरा ने बचाव करते हुए कहा, 'यह बिल्कुल भी बुरा नहीं है। गुलाबी आपके ससुर का पसंदीदा रंग था।'

'गुलाबी?' मीनाक्षी हंसने लगी। 'उसे गुलाबी रंग पहनना पसंद था?'

'मेरे ऊपर। जब मैंने इसे पहना था!' श्रीमती रूपा मेहरा गुस्से में थीं। मीनाक्षी पल भर में अच्छी से बुरी बन गई थी। 'अगर तुम्हें मेरा ज़रा भी सम्मान नहीं है, तो कम से कम मेरे पति का तो सम्मान करो। तुम्हें अक्ल नहीं आती। न्यू मार्केट घूमने चली गईं और अपर्णा को नौकरों के भरोसे छोड़ दिया।'

'माँ, मुझे यकीन है कि गुलाबी रंग आप पर बहुत अच्छा लग रहा था,' मीनाक्षी ने नरमी से कहा। 'लेकिन लुट्स के रंग-रूप पर यह बिलकुल भी जंच नहीं रहा है। न कलकत्ता के लिए, न शाम के लिए, न इस तरह के समाज के लिए। और सूती तो बिल्कुल भी ठीक नहीं है। मैं देखती हूँ कि लुट्स के पास क्या है और उसकी मदद करती हूँ ताकि वह कुछ ऐसा चुन सके जिसमें वह सबसे अच्छी लगे। हमें जल्दी करनी चाहिए, अरुण किसी भी पल घर आ जाएगा, और फिर हमारे पास किसी चीज़ के लिए समय नहीं बचेगा। चलो, लुट्स।'

और लता को अनुशासित किया गया। आखिरकार उसे मीनाक्षी की गहरे नीले रंग की शिफॉन साड़ी पहनाई गई, जो संयोगवश मीनाक्षी के अपने नीले ब्लाउज से मेल खा रही थी। (उसे साड़ी को मीनाक्षी की तुलना में काफी ज्यादा अंदर तक डालना पड़ा, क्योंकि वह कुछ इंच छोटी थी।) मीनाक्षी का ही एक हल्के नीले, गहरे नीले और हरे रंग के एनामेल से बना मोर का ब्रोच उसकी साड़ी को उसके ब्लाउज से जोड़ रहा था। लता ने

अपने जीवन में कभी ब्रोच नहीं पहना था, और मीनाक्षी को उसे डांटकर यह आदत डालनी पड़ी।

इसके बाद मीनाक्षी ने लता के बालों को कसकर बांधने के जूड़े को खारिज कर दिया। लता की गुरु ने कहा, 'लुट्स, यह स्टाइल बहुत ही बनावटी लगता है। यह तुम पर बिल्कुल भी जंचता नहीं है। तुम्हें इसे खुला ही रखना चाहिए।'

'नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकती,' लता ने विरोध किया। 'यह ठीक नहीं है। माँ को बहुत गुस्सा आएगा।'

'बिल्कुल सही!' मीनाक्षी ने कहा। 'चलो कम से कम इसके सामने के हिस्से को थोड़ा नरम कर देते हैं ताकि तुम इतनी सख्त मिजाज की न लगो।'

अंत में, मीनाक्षी लता को अपने बेडरूम में ड्रेसिंग टेबल तक ले गई और उसके चेहरे पर थोड़ा सा मस्कारा लगाकर उसे अंतिम रूप दिया। उसने कहा, 'इससे तुम्हारी पलकें लंबी दिखेंगी।'

लता ने प्रयोग के तौर पर अपनी पलकें झपकाईं। 'क्या तुम्हें लगता है कि ये मक्खियों की तरह गिरेंगी?' उसने हंसते हुए मीनाक्षी से पूछा।

'जी हां, लुट्स,' मीनाक्षी ने कहा। 'और तुम्हें मुस्कुराते रहना चाहिए। तुम्हारी आंखें अब वाकई बहुत आकर्षक लग रही हैं।'

और जब लता ने खुद को आईने में देखा, तो उसे यह स्वीकार करना पड़ा कि वे वास्तव में मौजूद थे।

'अब तुम पर कौन सा परफ्यूम जंचेगा?' मीनाक्षी ने मन ही मन कहा। 'वोर्त तुम्हारे लिए ठीक रहेगा।'

लेकिन इससे पहले कि वह कोई अंतिम निर्णय ले पाती, दरवाजे की घंटी बज उठी। अरुण पुट्टीगढ़ से लौट आया था। अगले कुछ मिनटों तक सब लोग खुशी से उछल-कूद करते रहे और नाचते-नाचते उसका स्वागत करते

रहे।
जब वह तैयार हो गया, तो मीनाक्षी के इतना समय लेने पर उसे निराशा हुई। जब वह अंततः बाहर आई, तो श्रीमती रूपा मेहरा ने उसे गुस्से से घूर कर देखा। उसने बिना आस्तीन का, लो-कट वाला, मैजेंटा रंग का ब्लाउज पहना हुआ था, जो पीछे से खुली चोली शैली का था, और उसके ऊपर बेहद महीन शिफॉन की गहरे हरे रंग की साड़ी थी।
'तुम इसे नहीं पहन सकती!' श्रीमती रूपा मेहरा हांफते हुए बोलीं, उनकी आंखें इतनी बड़ी हो गई थीं जितनी मेहरा परिवार में अक्सर कहा जाता था। उनकी नजर मीनाक्षी के क्लीवेज से लेकर उसके पेट और पूरी तरह से खुले हुए हाथों तक घूमी। 'तुम नहीं पहन सकती, तुम—तुम नहीं पहन सकती। यह तो तुम्हारे माता-पिता के घर पर कल रात से भी बदतर है।'
'बिल्कुल कर सकता हूँ, प्रिय मालूस, इतने पुराने ख्यालों वाले मत बनो।'
'तो? क्या तुम आखिरकार तैयार हो?' अरुण ने अपनी घड़ी की ओर इशारा करते हुए पूछा।
'नहीं, डार्लिंग। क्या तुम मेरे गले के हार का हुक बंद कर दोगी?' और मीनाक्षी ने बड़े ही धीमे और कामुक अंदाज़ में अपना हाथ अपने गले के उस पार, अपने मोटे सोने के हार के ठीक नीचे फेरा।
उसकी सास ने अपनी निगाहें फेर लीं।
उसने अपने बेटे से पूछा, 'तुम उसे ये पहनने की इजाज़त क्यों देते हो? क्या वो दूसरी भारतीय लड़कियों की तरह शालीन ब्लाउज़ नहीं पहन सकती?'
'मां, मुझे माफ करना, हमें देर हो रही है,' अरुण ने कहा।
मीनाक्षी ने कहा, 'साधारण चोली पहनकर टैंगो नहीं किया जा सकता। आओ, लुट्स।'
लता ने अपनी मां को चूमा। 'चिंता मत करो मां, मैं ठीक हो जाऊंगी।'

‘टैंगो?’ श्रीमती रूपा मेहरा ने घबराकर कहा। ‘टैंगो क्या होता है?’
‘बाय, मां,’ मीनाक्षी ने कहा। ‘टैंगो। एक डांस। हम गोल्डन स्लिपर जा रहे हैं। चिंता की कोई बात नहीं। बस बहुत भीड़ है, एक बैंड है और नाच-गाना है।’
‘नाचना छोड़ दिया!’ श्रीमती रूपा मेहरा को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था।
लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाती, नन्हा सा आसमानी नीले रंग का ऑस्टिन रात के जश्न के पहले चरण के लिए निकल पड़ा था।
7.24
फिनले के घर पर कॉकटेल पार्टी में खूब चहल-पहल थी। सब लोग खड़े होकर ‘मानसून जैसे’ मौसम के बारे में बातें कर रहे थे, जो इस साल सामान्य से पहले आ गया था। आज की भारी बारिश मानसूनी थी या पूर्व-मानसून, इस पर राय बंटी हुई थी। आज दोपहर गोल्फ खेलना लगभग नामुमकिन था, और हालांकि टॉलीगंज में होने वाली रेस मौसम की वजह से बहुत कम ही रद्द होती थीं (आखिरकार, इसे सर्दियों के सीजन से अलग करने के लिए मानसून रेसिंग सीजन कहा जाता था), अगर कल भी बारिश आज जितनी ही तेज हुई, तो मैदान पूरी तरह कीचड़ से भर जाएगा और घोड़ों के लिए दौड़ना बहुत मुश्किल हो जाएगा। इंग्लिश काउंटी क्रिकेट भी बातचीत का अहम हिस्सा था, और लता ने डेनिस कॉम्पटन की शानदार बल्लेबाजी और उनके बाएं हाथ के स्पिनरों के बारे में, और मिडलसेक्स के कप्तान के रूप में उनके बेहतरीन प्रदर्शन के बारे में जितना सुनना चाहा उससे कहीं ज्यादा सुना। जहाँ भी ज़रूरी था, उसने सहमति में सिर हिलाया, उसका ध्यान किसी और क्रिकेटर पर था।
भीड़ का लगभग एक तिहाई हिस्सा भारतीय था: अरुण जैसे प्रबंधन

एजेंसियों के अधिकारी, कुछ सरकारी कर्मचारी, वकील, डॉक्टर और सेना अधिकारी। ब्रह्मपुर के विपरीत, जहाँ वह अभी-अभी अपने विचारों में गई थी, कलकत्ता समाज के इस वर्ग में—चटर्जी के घर से भी कहीं अधिक स्पष्ट रूप से—पुरुष और महिलाएं खुलकर और बिना किसी झिझक के घुलमिल रहे थे। तेज नाक वाली मेज़बान, श्रीमती फिनले, उसके प्रति बहुत दयालु थीं और जब उन्होंने उसे अकेले खड़े देखा तो उन्होंने उसका परिचय कुछ लोगों से कराया। लेकिन लता असहज महसूस कर रही थी। दूसरी ओर, मीनाक्षी अपने पूरे रंग में थी, और उसकी हंसी बीच-बीच में सामाजिक शोरगुल के बीच गूंज रही थी।

जब अरुण और मीनाक्षी लता के साथ अलीपुर से फ़िरपो के घर पहुँचे, तब तक वे दोनों ज़मीन से कुछ इंच ऊपर हवा में तैर रहे थे। बारिश दो घंटे पहले ही रुक गई थी। वे विक्टोरिया मेमोरियल के पास से गुज़रे, जहाँ आइसक्रीम और झाल-मुरी बेचने वाले शाम की अपेक्षाकृत ठंडी हवा में टहलने निकले जोड़ों और परिवारों को सामान और मिठाई बेच रहे थे। चौरंगी में ज़्यादा भीड़ नहीं थी। रात में भी सड़क का चौड़ा और खुला हिस्सा देखने में बहुत आकर्षक लग रहा था। बाईं ओर मैदान के किनारे कुछ ट्रामें देर रात तक चल रही थीं।

फ़िरपो के प्रवेश द्वार पर उनकी मुलाकात बिश्वनाथ भादुरी से हुई: अरुण की उम्र का एक सांवला, लंबा युवक, जिसका जबड़ा चौकोर था और बाल करीने से पीछे की ओर कंघी किए हुए थे। लता से परिचय कराते समय वह कमर झुकाकर बोला कि उसका नाम बिश है और वह लता से मोहित हो गया है।

वे बिली ईरानी और शिरीन फ्रामजी का कुछ मिनट तक इंतजार करते रहे। अरुण ने कहा, 'मैंने उनसे कहा था कि हम पार्टी छोड़कर जा रहे हैं। आखिर वे अभी तक क्यों नहीं आए?'

शायद उनकी ज़िद का जवाब देते हुए, वे कुछ ही सेकंड में आ गए, और लता से परिचय होने के बाद—फिनले के घर पर अरुण और मीनाक्षी के पास ज़रूरी परिचय कराने का समय नहीं था क्योंकि वे छोटी-मोटी बातों में उलझ गए थे—वे सभी एक साथ रेस्तरां में गए, और उन्हें उस मेज पर बैठाया गया जो उन्होंने आरक्षित की थी।

लता को फ़िरपो का खाना स्वादिष्ट लगा और बिश्वनाथ भादुरी की बातें बेहद नीरस। उन्होंने बताया कि संयोगवश वे उनकी बहन सविता की शादी के समय ब्रह्मपुर में थे, जहाँ वे अरुण के साथ गए थे। “एक प्यारी दुल्हन —ऐसा लग रहा था मानो उसे मंडप से ही छीन लें। लेकिन बेशक अपनी छोटी बहन जितनी प्यारी नहीं,” उन्होंने बड़ी विनम्रता से कहा।

लता ने एक-दो सेकंड तक अविश्वास भरी निगाहों से उसे देखा, फिर रोल को देखकर उन्हें गोलियों में बदलने की कल्पना करने लगी।

'मुझे लगता है शहनाई पर "हेयर कम्स द ब्राइड" बजना चाहिए था,' उसने ऊपर देखते हुए खुद को यह कहने से नहीं रोका।

‘क्या? उह, हम्म, हाँ?’ बिश ने अचंभित होकर कहा। फिर उसने पास की एक मेज की ओर देखते हुए कहा कि फ़िरपो की सबसे अच्छी बात यह है कि यहाँ आपको हर तरह के लोग देखने को मिलते हैं।

लता ने सोचा कि उसकी बात का उस पर कोई असर नहीं हुआ, जैसे बत्तख पानी पर होता है। और उस मुहावरे को याद करके वह मुस्कुराने लगी।

बिश्वनाथ भादुरी को लता रहस्यमयी तो लगी, लेकिन आकर्षक भी। कम से कम बात करते समय वह उनकी तरफ देखती तो थी। उनके समूह की कलकत्ता की ज्यादातर लड़कियां अपना आधा समय यह देखने में बिताती थीं कि फ़िरपो के यहाँ और कौन-कौन है।

अरुण ने फैसला कर लिया था कि बिश लता के लिए एक अच्छा विकल्प

हो सकता है, और उसने लता से कहा था कि वह एक 'उभरता हुआ नौजवान' है।

अब बिश लता को इंग्लैंड की अपनी यात्रा के बारे में बता रहा था:

'मन में असंतोष का भाव आता है और वह अपनी आत्मा की खोज में भटकता रहता है... अदन में घर की याद सताने लगती है और पोर्ट सईद से पोस्टकार्ड खरीदता है... एक ही तरह की नौकरी करता है और उसकी आदत पड़ जाती है... कलकत्ता लौटकर कभी-कभी चौरंगी को पिकाडिली समझने लगता है... बेशक, कभी-कभी यात्रा के दौरान संपर्क टूट जाता है... रेलवे स्टेशन पर रुकता है और वहाँ कुछ नहीं मिलता—और पूरी रात प्लेटफार्म पर खर्राटे लेते कुलियों के साथ गुजारनी पड़ती है...' उसने फिर से मेनू उठाया। 'मुझे समझ नहीं आ रहा कि कुछ मीठा खा लूँ... बंगाली स्वाद तो पसंद आता ही है...'

लता को यह इच्छा होने लगी कि काश वह उठकर चलने-फिरने लगता।

बिश ने अपने विभाग के किसी मामले पर चर्चा शुरू की थी जिसमें उन्होंने विशेष रूप से अच्छा प्रदर्शन किया था।

'...और बेशक, मैं इसका श्रेय व्यक्तिगत रूप से लेना नहीं चाहता, लेकिन अंततः मुझे अनुबंध मिल गया, और तब से मैं ही इस व्यवसाय को संभाल रहा हूँ। स्वाभाविक रूप से'—और यहाँ उन्होंने लता की ओर मुस्कुराते हुए कहा—'मेरे प्रतिस्पर्धियों में काफी बेचैनी थी। वे कल्पना भी नहीं कर पा रहे थे कि मैंने यह कैसे कर दिखाया।'

'ओह?' लता ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, और साथ ही वह अपने पीच मेल्बा को खाने लगी। 'क्या सच में कोई अशांति थी? क्या अशांति काफी ज्यादा थी?'

बिश्वनाथ भादुरी ने उसे एक क्षणिक निगाह से देखा—ठीक से नापसंदगी तो नहीं, लेकिन हां, बेचैनी जरूर झलक रही थी।

शिरीन 300 क्लब में नाचना चाहती थी, लेकिन उसकी बात नहीं मानी गई, और वे सब इसके बजाय फ्री स्कूल स्ट्रीट में गोल्डन स्लिपर चले गए, जहाँ का माहौल ज़्यादा जीवंत था, हालाँकि वह कम विशिष्ट था। ये होनहार युवा कभी-कभी मौज-मस्ती करने में विश्वास रखते थे।

बिष को शायद यह आभास हो गया था कि लता उसे पसंद नहीं करती, इसलिए उसने बहाना बनाया और रात के खाने के बाद गायब हो गया।

'जल्द ही मिलते हैं,' ये उनके विदाई के शब्द थे।

बिली ईरानी पूरी शाम बेहद शांत रहे और ऐसा लग रहा था कि उन्हें नाचने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं है—यहां तक कि फॉक्सट्रॉट और वाल्ट्ज़ भी नहीं। लता के मना करने के बावजूद कि उन्हें नाचना नहीं आता, अरुण ने उन्हें जबरदस्ती वाल्ट्ज़ पर नचाया। अरुण ने प्यार से कहा, 'बकवास! तुम्हें आता है, बस तुम्हें पता नहीं है।' वह सही थे; लता को जल्दी ही नाच समझ आ गया और उन्हें मज़ा भी आया।

शिरीन ने बिली को जबरदस्ती खड़ा किया। बाद में, जब ऑर्केस्ट्रा ने एक भावुक धुन बजानी शुरू की, तो मीनाक्षी ने उसे अपने पास बुला लिया। जब वे वापस मेज़ पर लौटे तो बिली का चेहरा शर्म से लाल हो रहा था।

मीनाक्षी ने प्रसन्नता से कहा, 'देखो, वह कैसे शरमा रहा है। मुझे लगता है कि उसे मुझे गले लगाना अच्छा लगता है। वह मुझे अपने मजबूत, गोल्फ खेलने वाले हाथों से अपने चौड़े सीने से इतनी कसकर दबा रहा था कि मैं उसके दिल की धड़कन महसूस कर सकती थी।'

'मैं नहीं था,' बिली ने गुस्से से कहा।

'काश तुम मान जाते,' मीनाक्षी ने आह भरते हुए कहा। 'मुझे तुम्हारे लिए एक गुप्त वासना है, तुम्हें पता है ना, बिली।'

शिरीन हंस पड़ी। बिली ने मीनाक्षी को गुस्से से घूरा और उसका चेहरा और भी लाल हो गया।

‘बस करो ये सब बकवास,’ अरुण ने कहा। ‘मेरे दोस्त को—या मेरी छोटी बहन को—शर्मिंदा मत करो।’

‘ओह, मुझे शर्म नहीं आ रही है, अरुण भाई,’ लता ने कहा, हालांकि वह बातचीत के लहजे से काफी हैरान थी।

लेकिन लता को सबसे ज़्यादा आश्चर्य टैंगो नृत्य देखकर हुआ। सुबह लगभग डेढ़ बजे, जब तक दोनों जोड़े नशे में चूर हो चुके थे, मीनाक्षी ने बैंड लीडर को एक संदेश भेजा और पाँच मिनट बाद ही उसने टैंगो बजाना शुरू कर दिया। चूंकि बहुत कम लोग टैंगो नृत्य जानते थे, इसलिए नृत्य-मंडली में मौजूद जोड़े थोड़ा असमंजस में खड़े रहे। लेकिन मीनाक्षी सीधे कमरे के दूसरी ओर एक मेज पर अपने दोस्तों के साथ बैठे एक व्यक्ति के पास गई, जिसने डिनर जैकेट पहनी हुई थी, और उसे नृत्य-मंडली में खींच लिया। वह उसे जानती नहीं थी, लेकिन उसने उसे एक अद्भुत नर्तक के रूप में पहचान लिया, जिसे उसने पहले भी नृत्य करते देखा था। उसके दोस्तों ने भी उसे प्रोत्साहित किया। सभी ने उनके लिए मंच खाली कर दिया, और बिना किसी झिझक के, वे दोनों एक साथ तेज़ी से, झटकेदार, शैलीबद्ध गतियों में ऐसे कामुक नियंत्रण और उत्साह के साथ नाचने लगे कि देखते ही देखते पूरा नाइटक्लब उनका उत्साहवर्धन करने लगा। लता को लगा कि उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा है। मीनाक्षी की निर्भीकता ने उसे मंत्रमुग्ध कर दिया और उसके गले में लटके सोने के हार पर पड़ती रोशनी की चमक ने उसे अचंभित कर दिया। जाहिर है मीनाक्षी सही थी; भद्दी चोली में कोई नाच नहीं सकता था।

वे ढाई बजे नाइटक्लब से लड़खड़ाते हुए बाहर निकले और अरुण चिल्लाया: 'चलो चलें—फल्ता चलें! वाटरवर्क्स—पिकनिक—मुझे भूख लगी है—निज़ाम के यहाँ कबाब।'

‘अरुण, काफी देर हो गई है,’ बिली ने कहा। ‘शायद हमें अब सोना

चाहिए। मैं शिरीन को छोड़ देता हूँ और—'

'कोई बकवास नहीं—मैं समारोह का संचालक हूँ,' अरुण ने ज़ोर देकर कहा। 'मेरी कार में बैठो। हम सब चलेंगे—नहीं, पीछे बैठो—मैं इस खूबसूरत लड़की के साथ आगे बैठूँगा—नहीं, नहीं, नहीं, कल शनिवार है —और हम सब अभी चलेंगे—तुरंत—हम सब एयरपोर्ट पर नाश्ता करने चलेंगे—एयरपोर्ट पिकनिक—सब नाश्ते के लिए एयरपोर्ट चलेंगे—कमबख्त कार स्टार्ट नहीं हो रही—ओह, चाबी गलत है।'

अरुण लड़खड़ाते हुए स्टीयरिंग व्हील पर बैठा था, शिरीन उसके साथ आगे की सीट पर थी, और बिली पीछे की दो महिलाओं के बीच में ठसाठस बैठा था। लता बहुत घबराई हुई लग रही थी, क्योंकि बिली ने प्यार से एक बार उसका हाथ थपथपाया। थोड़ी देर बाद, उसने देखा कि बिली का दूसरा हाथ मीनाक्षी के हाथ में फंसा हुआ था। वह हैरान तो हुई, लेकिन उस जोशीले टैंगो के बाद उसे शक नहीं हुआ; उसने सोचा कि इस तरह के समाज में गाड़ी चलाते समय ऐसा ही होता है। लेकिन उसने अपनी सुरक्षा के लिए उम्मीद की कि आगे की सीट पर ऐसा कुछ न हो रहा हो।

हालांकि हवाई अड्डे तक कोई चौड़ी और सीधी सड़क नहीं थी, फिर भी उत्तरी कोलकाता की संकरी गलियाँ भी इस समय सुनसान थीं, और गाड़ी चलाना कोई मुश्किल काम नहीं था। अरुण तेज़ी से गाड़ी चला रहा था और बीच-बीच में ज़ोर से हॉर्न बजा रहा था। लेकिन अचानक एक बच्चा एक ठेले के पीछे से निकलकर सीधे उनके रास्ते में आ गया। अरुण ने तेज़ी से गाड़ी मोड़ी, बाल-बाल टक्कर से बचा और एक लैंप पोस्ट के सामने रुक गया।

सौभाग्यवश न तो बच्चे को और न ही कार को कोई नुकसान हुआ। बच्चा जितनी अचानक प्रकट हुआ था, उतनी ही अचानक गायब भी हो गया।

अरुण गुस्से से आग बबूला होकर कार से बाहर निकला और रात के अंधेरे में चिल्लाने लगा। लैंप पोस्ट से एक सुलगती हुई रस्सी लटक रही थी, जिससे लोग अपनी बीड़ी जलाते थे। अरुण उसे घंटी की रस्सी की तरह खींचने लगा। 'उठो—उठो—तुम सब—तुम सब कमीने—' वह पूरे मोहल्ले पर चिल्लाया।

'अरुण—अरुण—कृपया ऐसा मत करो,' मीनाक्षी ने कहा।

'बेवकूफों की तो ऐसी-तैसी—सुबह के तीन बजे अपने बच्चों को संभाल नहीं सकते—'

कूड़े के ढेर के बगल में संकरे फुटपाथ पर फटे-पुराने कपड़ों में सो रहे कुछ बेसहारा लोग अचानक हिलने-डुलने लगे।

'चुप रहो, अरुण,' बिली ईरानी ने कहा। 'तुम मुसीबत खड़ी कर दोगे।'

'क्या तुम कमान अपने हाथ में लेना चाहते हो, बिली?—बिल्कुल नहीं—अच्छा लड़का है, पर कुछ खास नहीं—' उसने अपना ध्यान अनदेखे दुश्मन, यानी बढ़ती हुई, मूर्ख जनता की ओर मोड़ा। 'उठो—कमीने—क्या तुम मुझे सुन नहीं सकते?' इसके बाद उसने कुछ और हिंदी गालियाँ दीं, क्योंकि वह बंगाली नहीं बोल सकता था।

मीनाक्षी जानती थी कि अगर उसने कुछ कहा तो अरुण उस पर भड़क उठेगा।

लता ने यथासंभव शांत भाव से कहा, 'अरुण भाई, मुझे बहुत नींद आ रही है, और माँ हमारे बारे में चिंतित होंगी। चलिए अब घर चलते हैं।'

'घर? हाँ, चलो घर चलते हैं।' इस बेहतरीन सुझाव से चकित होकर अरुण ने अपनी प्रतिभाशाली बहन की ओर मुस्कुराया।

बिली उसे गाड़ी चलाने का सुझाव देने ही वाला था, फिर उसने अपना इरादा बदल दिया।

जब उन्हें और शिरीन को उनकी कार के पास छोड़ा गया, तो वे विचारमग्न

थे, हालांकि उन्होंने सभी को शुभ रात्रि कहने के अलावा कुछ नहीं कहा। श्रीमती रूपा मेहरा देर रात तक उनका इंतजार कर रही थीं। गाड़ी के आने की आवाज सुनकर उन्हें इतनी राहत मिली कि जब वे अंदर आए तो वे पहले तो बोल ही नहीं पाईं।

'माँ, आप इस समय क्यों उठी हुई हैं?' मीनाक्षी ने जम्हाई लेते हुए कहा।

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'तुम्हारे स्वार्थ के कारण मुझे आज रात बिल्कुल नींद नहीं आएगी। जल्दी ही उठने का समय हो जाएगा।'

'माँ, आपको पता है जब हम नाचने जाते हैं तो हमेशा देर से लौटते हैं,' मीनाक्षी ने कहा। इस बीच अरुण अपने कमरे में चला गया था, और वरुण भी, जिसे उसकी घबराई हुई माँ ने दो बजे जगा दिया था और उसके साथ बैठने के लिए मजबूर किया था, इस मौके का फायदा उठाकर चुपके से बिस्तर पर चला गया।

'हाँ, जब तुम अकेले घूम रही हो तो जितना चाहो उतना गैरजिम्मेदाराना व्यवहार कर सकती हो,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। 'लेकिन मेरी बेटी तुम्हारे साथ हो तो नहीं। क्या तुम ठीक हो, प्यारी?' उन्होंने लता से पूछा।

'जी माँ, मुझे बहुत मज़ा आया,' लता ने जम्हाई लेते हुए कहा। उसे टैंगो डांस याद आया और वह मुस्कुराने लगी।

श्रीमती रूपा मेहरा संशय में दिखीं। 'तुम्हें मुझे अपने हर काम के बारे में बताना होगा। तुमने क्या खाया, क्या देखा, किससे मिले, क्या किया।'

'जी मां। कल,' लता ने एक और जम्हाई लेते हुए कहा।

'ठीक है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने स्वीकार किया।

7.25

अगले दिन दोपहर के करीब लता सिरदर्द के साथ उठीं, जो पिछली रात की घटनाओं का वर्णन करने के दौरान भी कम नहीं हुआ। अपर्णा और श्रीमती रूपा मेहरा दोनों टैंगो के बारे में जानना चाहती थीं। नृत्य की

बारीकियों को समझने के बाद, बेहद होशियार अपर्णा को किसी कारणवश एक खास बात पर आश्वासन चाहिए था:
‘तो मम्मी ने टैंगो डांस किया और सबने ताली बजाई?’
'हां जानेमन।'
‘क्या पापा भी?’
'ओह हां। पापा ने भी ताली बजाई।'
क्या आप मुझे टैंगो सिखाएंगे?
लता ने कहा, 'मुझे टैंगो करना नहीं आता। लेकिन अगर आता तो मैं जरूर करती।'
क्या अंकल वरुण को टैंगो डांस आता है?
लता ने यह कल्पना करने की कोशिश की कि अगर मीनाक्षी वरुण को मेज से खींचकर डांस फ्लोर पर ले जाने की कोशिश करती तो वरुण कितना भयभीत होता। उसने कहा, 'मुझे तो शक है।' उसने अपनी माँ से पूछा, 'वरुण है कहाँ?'
श्रीमती रूपा मेहरा ने संक्षेप में कहा, 'वह बाहर गया था। साजिद और जेसन आए और फिर गायब हो गए।'
लता की इन दोनों शमशु मित्रों से सिर्फ एक बार मुलाकात हुई थी। साजिद के निचले होंठ के बाईं ओर एक सिगरेट लटकी हुई थी, सचमुच लटकी हुई, बिना किसी सहारे के। वह क्या काम करता था, यह लता को नहीं पता था। जेसन उससे बात करते समय गुस्से से भौंहें चढ़ाए खड़ा था। वह एंग्लो-इंडियन था और कलकत्ता पुलिस में था, लेकिन कुछ महीने पहले एक अन्य सब-इंस्पेक्टर की पत्नी के साथ संबंध रखने के कारण उसे निकाल दिया गया था। वरुण इन दोनों को सेंट जॉर्ज स्कूल से जानता था। अरुण यह सोचकर कांप उठा कि उसके अपने ही कॉलेज से ऐसे घटिया लोग निकले होंगे।

लता ने पूछा, ‘क्या वरुण आईएएस परीक्षा की तैयारी बिल्कुल नहीं कर रहा है?’ कुछ दिन पहले वरुण ने साल के अंत में सिविल सेवा परीक्षा देने की बात कही थी।

‘नहीं,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने आह भरते हुए कहा। ‘और मैं कुछ कर भी नहीं सकती। वह अब अपनी माँ की बात नहीं सुनता। जब मैं उससे कुछ कहती हूँ, तो वह बस मेरी बात से सहमत हो जाता है और एक घंटे बाद अपने दोस्तों के साथ चला जाता है।’

'शायद वह प्रशासनिक सेवा के लिए उपयुक्त नहीं हैं,' लता ने सुझाव दिया।

लेकिन उसकी मां को यह बिल्कुल मंजूर नहीं था।

उन्होंने कहा, 'पढ़ाई एक अच्छी आदत है। इसमें लगन की जरूरत होती है। तुम्हारे पिताजी कहा करते थे कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम क्या पढ़ते हो। जब तक तुम मन लगाकर पढ़ाई करते हो, इससे दिमाग तेज होता है।'

उस लिहाज़ से, स्वर्गीय रघुबीर मेहरा को अपने छोटे बेटे पर गर्व होना चाहिए था। वरुण, साजिद और जेसन उस समय टॉलीगंज रेसट्रैक के दो रुपये वाले बाड़े में खड़े थे, अरुण की नज़र में सौर मंडल के सबसे निचले तबके के लोगों के बीच, दोपहर की छह रेसों के लिए रेसिंग फॉर्म के अंतिम संस्करण का गहन अध्ययन कर रहे थे। उन्हें उम्मीद थी कि इससे उनका दिमाग तो नहीं सुधरेगा, लेकिन कम से कम आर्थिक स्थिति तो सुधरेगी।

सामान्यतः वे एक पुख्ता रेसिंग फॉर्म खरीदने के लिए लगने वाले छह आने का निवेश नहीं करते, और बाधा सूची और रद्द होने की जानकारी की मदद से बुधवार को खरीदे गए अस्थायी फॉर्म पर मामूली बदलाव कर देते। लेकिन साजिद ने वह फॉर्म खो दिया था।

कलकत्ता में हल्की, गर्म बारिश हो रही थी और टॉलीगंज रेसकोर्स कीचड़ से लथपथ था। पैडॉक में टहलाए जा रहे असंतुष्ट घोड़ों को बूंदाबांदी में चारों ओर से उत्सुकता से देखा जा रहा था। टॉलीगंज में जिमखाना रेसिंग होती थी, टर्फ रेसिंग नहीं, रॉयल कलकत्ता टर्फ क्लब के विपरीत, जिसका मानसून का मौसम एक महीने से भी अधिक बाद शुरू होता था। इसका मतलब यह था कि पेशेवर जॉकी अनिवार्य नहीं थे, और कई सज्जन जॉकी और यहां तक कि एक-दो महिला जॉकी भी रेस में भाग लेती थीं। चूंकि सवार कभी-कभी काफी भारी होते थे, इसलिए घोड़ों पर लगने वाला हैंडीकैप भी अधिक होता था।

जेसन ने उदास स्वर में कहा, 'हार्ट्स स्टोरी का वजन उससे 11 स्टोन 6 पाउंड ज्यादा है। मैं उस पर दांव लगाता, लेकिन—'

‘तो क्या हुआ?’ साजिद ने कहा। ‘वह जॉक मैके के साथ घुड़सवारी करने की आदी है, और वह इस ट्रैक पर किसी को भी हरा सकता है। वह अपने उस 11 स्टोन से थोड़ा ज़्यादा वज़न का अच्छा-खासा हिस्सा इस्तेमाल कर लेगा, और यह उसका असली वज़न है, सीसे की गोलियां नहीं। इससे फर्क पड़ता है।’

‘इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वज़न तो वज़न ही होता है,’ जेसन ने कहा। तभी उसकी नज़र एक बेहद आकर्षक अधेड़ उम्र की यूरोपीय महिला पर पड़ी, जो जॉक मैके से धीमी आवाज़ में बात कर रही थी।

‘हे भगवान! ये तो श्रीमती डिपीरो हैं!’ वरुण ने आधी हैरानी और आधी घबराहट भरी आवाज़ में कहा। ‘ये तो खतरनाक हैं!’ उसने प्रशंसा भरे लहजे में आगे कहा।

श्रीमती डिपीरो एक हंसमुख विधवा थीं, जो जानकार लोगों से, विशेष रूप से जॉक मैके से, जो उनके प्रेमी माने जाते थे, टिप्स लेकर घुड़दौड़ में अक्सर अच्छा प्रदर्शन करती थीं। वह अक्सर एक ही घुड़दौड़ पर कुछ

हजार रुपये का दांव लगाती थीं।
‘जल्दी करो! उसके पीछे जाओ!’ जेसन ने कहा, हालाँकि उसके इरादे का मतलब तब साफ़ हुआ जब वह सट्टेबाज़ों के पास गई और उसने अपना ध्यान उसके शरीर से हटाकर ब्लैकबोर्ड पर बने चाक के निशानों पर लगाया, जिन्हें सट्टेबाज़ तेज़ी से मिटाकर दोबारा लिख रहे थे। वह इतनी धीमी आवाज़ में दांव लगा रही थी कि सट्टेबाज़ उसे सुन नहीं पा रहे थे। लेकिन सट्टेबाज़ों के लिखे निशान सब कुछ बयां कर रहे थे। उसके भारी दांव लगाने के कारण वे अपने दांवों में बदलाव कर रहे थे। हार्ट्स स्टोरी का भाव 7-1 से घटकर 6-1 हो गया था।
‘बस यही!’ साजिद ने सुस्ती से कहा। ‘मैं इसी पर दांव लगा रहा हूँ।’
जेसन ने कहा, 'जल्दबाजी मत करो। जाहिर है वह अपने घोड़े की तारीफ करेगा।'
लेकिन उसकी नाराज़गी की कीमत पर नहीं। उसे पता होना चाहिए कि मौजूदा हालात में इसका मूल्य कम आंका गया है।
‘हम्म,’ वरुण ने बीच में टोकते हुए कहा। ‘एक बात मुझे परेशान कर रही है।’
‘क्या?’ साजिद और जेसन ने एक साथ कहा। रेसिंग के मामलों में वरुण की राय आमतौर पर सटीक होती थी। वह रेसिंग का सच्चा लेकिन सतर्क शौकीन था।
‘बारिश की वजह से ऐसा हो रहा है। जब ज़मीन इतनी गीली होती है, तो सबसे ज़्यादा परेशानी गंभीर रूप से कमज़ोर घोड़ों को होती है। और 11 स्टोन 6 पाउंड सबसे भारी हैंडीकैप है जो मिल सकता है। मुझे लगता है कि उन्होंने उस घोड़ी को इसलिए दंडित किया क्योंकि तीन हफ्ते पहले फिनिशिंग स्ट्रेट पर उसके सवार ने उसे रोक दिया था।’
साजिद असहमत थे। बोलते समय उनकी सिगरेट ऊपर-नीचे हिल रही

थी। उन्होंने कहा, 'यह छोटी दौड़ है। छोटी दौड़ में हैंडीकैप का उतना महत्व नहीं होता। मैं तो वैसे भी उसी पर दांव लगाऊंगा। आप दोनों जो चाहें कर सकते हैं।'

‘वरुन, तुम्हारा क्या कहना है?’ जेसन ने अनिर्णय की स्थिति में कहा।

'हा ठीक है।'

उन्होंने सट्टेबाजों के बजाय ठेले से टिकट खरीदे, क्योंकि वे दो-दो रुपये के दो टिकट ही खरीद सकते थे। इसके अलावा, हार्ट्स स्टोरी पर सट्टेबाजों का ऑड्स अब घटकर 5-to-1 हो गया था।

वे अपने बाड़े में लौट आए और अनियंत्रित उत्साह की स्थिति में बारिश से भीगे मैदान को निहारने लगे।

यह एक छोटी दौड़ थी, केवल पाँच फर्लांग (एक मील का हिस्सा)। दौड़ के दूसरे छोर पर स्थित आरंभिक बिंदु बारिश और दूरी के कारण दिखाई नहीं दे रहा था, खासकर सदस्यों के बाड़े से इतनी नीचे स्थित होने के कारण। लेकिन घोड़ों के खुरों की गड़गड़ाहट और बारिश की धुंधली दीवार के बीच उनकी अस्पष्ट, तेज़ गति ने उन्हें चिल्लाने और चीखने पर मजबूर कर दिया। वरुण उत्साह से लगभग बेकाबू हो रहा था और अपनी पूरी ताकत से चिल्ला रहा था: 'हार्ट्स स्टोरी! चलो, हार्ट्स स्टोरी!' अंत में वह बस इतना ही कह पाया:

‘दिल! दिल! दिल! दिल!’

वह अनिश्चितता के उन्माद में साजिद के कंधे को पकड़े हुए था।

अंतिम सीधी दौड़ के लिए मोड़ से घोड़े निकले। उनके रंग और उनके सवारों के रंग और भी स्पष्ट हो गए—और यह साफ हो गया कि हरे और लाल रंग के घोड़े जॉक मैके, जो भूरे रंग के घोड़े पर सवार थे, सबसे आगे थे, उनके ठीक पीछे ऐनी हॉज, जो आउटरेजियस फॉर्च्यून पर सवार थीं, थीं। उन्होंने जॉक को आखिरी प्रयास के लिए प्रेरित करने की पूरी कोशिश

की। टखनों—शायद पैरों—के आसपास की उफनती मिट्टी से थककर, उन्होंने तब संघर्ष छोड़ दिया जब ऐसा लग रहा था कि वे जीत जाएंगे: फिनिशिंग लाइन से सिर्फ बीस गज दूर।

हार्ट्स स्टोरी ने डेढ़ लेंथ से जीत हासिल की थी।

उनके चारों ओर निराशा की आहें और खुशी की चीखें गूंज रही थीं। तीनों दोस्त उत्साह से पागल हो गए। उनकी जीती हुई रकम उनके मन में बहुत बड़ी लग रही थी। उन्हें लग रहा था कि उन्होंने पंद्रह-पंद्रह रुपये जीत लिए हैं! स्कॉच की एक बोतल—शमशु के बारे में भला क्यों सोचना?—सिर्फ चौदह रुपये की थी।

आनंद!

अब उन्हें बस सफेद शंकु के ऊपर उठने का इंतजार करना था और अपनी जीत की राशि प्राप्त करनी थी।

सफेद शंकु के साथ एक लाल शंकु भी ऊपर चला गया।

निराशा।

इस पर आपत्ति जताई गई थी। पास ही मौजूद किसी व्यक्ति ने कहा, 'नंबर सात ने नंबर दो के सड़क पार करने पर आपत्ति जताई है।'

‘इतनी बारिश में वे कैसे बता सकते हैं?’

‘बेशक वे बता सकते हैं।’

‘वह उसके साथ ऐसा कभी नहीं करेगा। ये सज्जन पुरुष हैं।’

'ऐनी हॉज इस तरह की बात पर झूठ नहीं बोलेगी।'

‘यह जॉक नाम का लड़का बहुत बेईमान है। जीतने के लिए वह कुछ भी कर सकता है।’

‘ये चीजें गलती से भी हो सकती हैं।’

'गलती से!'

तनाव असहनीय था। तीन मिनट बीत गए। वरुण भावनाओं और तनाव से

हांफ रहा था, और साजिद की सिगरेट कांप रही थी। जेसन सख्त और बेपरवाह दिखने की कोशिश कर रहा था, लेकिन बुरी तरह नाकाम रहा। जब लाल कोन धीरे-धीरे नीचे गिरा, जिससे दौड़ का नतीजा घोषित हो गया, तो वे एक-दूसरे को ऐसे गले लगा लिया जैसे बिछड़े हुए भाई हों, और तुरंत अपनी जीत की रकम लेने और अगली दौड़ पर दांव लगाने के लिए चले गए।

'हेलो! वरुण है ना?' उसने इसे वे-रून उच्चारित किया।

वरुण घूमकर पेट्रीशिया कॉक्स को घूरने लगा, जो हवादार सफेद सूती पोशाक में बेहद सजी-धजी थीं और उनके हाथ में एक सफेद छाता था जो धूप से बचाव का काम भी कर रहा था। वह बिल्कुल भी दबी-कुचली नहीं लग रही थीं, बल्कि बिल्ली जैसी फुर्तीली थीं। उन्होंने भी अभी-अभी हार्ट्स स्टोरी प्रतियोगिता जीती थी।

वरुण के बाल बिखरे हुए थे, चेहरा लाल था; उसके हाथों में रेसिंग फॉर्म कुचला हुआ था; उसकी कमीज़ बारिश और पसीने से भीगी हुई थी। जेसन और साजिद उसके अगल-बगल खड़े थे। उन्हें अभी-अभी अपनी जीत की रकम मिली थी और वे खुशी से उछल-कूद रहे थे।

हालांकि, चमत्कारिक रूप से, साजिद की सिगरेट अपनी जगह से नहीं हटी थी, और हमेशा की तरह उसके होंठ से बेतरतीब ढंग से लटक रही थी।

'हेह, हेह,' वरुण ने घबराते हुए हँसते हुए इधर-उधर देखा।

पेट्रीसिया कॉक्स ने स्पष्ट प्रसन्नता के साथ कहा, 'आपसे दोबारा मिलकर कितना आनंद आया।'

'एरह, एह, हेह, हेह,' वरुण ने कहा। 'हम। एर।' उसे उसका नाम याद नहीं आ रहा था। बॉक्स? वह असमंजस में दिख रहा था।

'पैट्रीशिया कॉक्स,' पैट्रीशिया कॉक्स ने मदद करते हुए कहा। 'हम उस

शाम खाने के बाद आपके घर पर मिले थे। लेकिन मुझे लगता है कि आप भूल गई हैं।'

'नहीं, उह, नहीं, हेह, हेह!' वरुण ने कमजोर आवाज में हंसते हुए कहा, मानो बचने का रास्ता ढूंढ रहा हो।

'और मुझे लगता है कि ये आपके शमशु मित्र हैं,' उसने सहमति जताते हुए आगे कहा।

जेसन और साजिद, जो अब तक अचंभित होकर देख रहे थे, अब पेट्रीसिया कॉक्स को घूरने लगे, फिर उन्होंने वरुण की ओर प्रश्नवाचक और कुछ धमकी भरे लहजे में देखा।

वरुण ने दयनीय स्वर में मिमियाते हुए कहा, 'हेह, हेह।'

'अगली रेस के लिए आपके पास कोई सुझाव हैं?' पेट्रीसिया कॉक्स ने पूछा। 'आपका भाई हमारे मेहमान के रूप में यहाँ है। क्या आप कुछ सुझाव देना चाहेंगे—'

'नहीं—नहीं—मुझे जाना होगा—' वरुण ने आखिरकार अपनी आवाज पाई और अगली रेस पर शर्त लगाए बिना ही लगभग हॉल से भाग निकला।

जब पेट्रीशिया कॉक्स सदस्यों के लिए बने कक्ष में लौटीं तो उन्होंने अरुण से उत्साहपूर्वक कहा: 'आपने मुझे बताया ही नहीं कि आपका भाई यहाँ होगा। हमें पता ही नहीं था कि उसे घुड़दौड़ में इतनी दिलचस्पी है। हम उसे भी आमंत्रित करते।'

अरुण एकदम सख्त हो गया। 'यहाँ? ओह हाँ, यहीं। हाँ, कभी-कभी। बिल्कुल। बारिश रुक गई है।'

'मुझे डर है कि वह मुझे ज्यादा पसंद नहीं करता,' पेट्रीसिया कॉक्स ने उदास होकर कहा।

मीनाक्षी ने समझदारी से कहा, 'शायद वह तुमसे डरता है।'

‘मुझसे?’ पेट्रीसिया कॉक्स को इस बात पर विश्वास करना मुश्किल लगा। अगली रेस के दौरान, अरुण के लिए ट्रैक पर ध्यान केंद्रित करना नामुमकिन हो गया। जहाँ उसके आस-पास के सभी लोग (कुछ संयम के साथ) घोड़ों का हौसला बढ़ा रहे थे, वहीं उसकी नज़रें मानो अपने आप ही नीचे की ओर भटक गईं। पैडॉक से ट्रैक तक जाने वाले रास्ते के उस पार विशिष्ट (और पूरी तरह से यूरोपीय) टॉलीगंज क्लब था, जहाँ बारिश रुकने के बाद कुछ सदस्य लॉन पर चाय पीते हुए आराम से रेस देख रहे थे। और यहीं, जहाँ अरुण कॉक्स परिवार के मेहमान के रूप में बैठा था, सदस्यों के समूह का सामाजिक संतुलन चरम पर था।

लेकिन उन दोनों के बीच, दो रुपये वाले बाड़े में, अरुण का भाई खड़ा था, अपने दो बदनाम साथियों के बीच फंसा हुआ। वह अगली दौड़ के उत्साह में इतना डूबा हुआ था कि कुछ मिनट पहले हुई अपनी दर्दनाक मुलाकात को भूल चुका था और उछल-कूद कर रहा था। उसका चेहरा लाल था और वह ऐसे शब्द चिल्ला रहा था जो इस दूरी से समझ में नहीं आ रहे थे, लेकिन लगभग निश्चित रूप से उस घोड़े का नाम था जिस पर उसने दांव नहीं लगाया था, लेकिन अपना दिल जरूर लगा रखा था। वह लगभग पहचानने योग्य नहीं लग रहा था।

अरुण की नाक थोड़ी सी फड़क उठी और कुछ सेकंड बाद उसने नज़रें फेर लीं। उसने मन ही मन सोचा कि उसे अपने भाई की रक्षा करना शुरू कर देना चाहिए—क्योंकि वह दरिंदा, एक बार पिंजरे से बाहर निकल गया तो ब्रह्मांड के संतुलन को बहुत नुकसान पहुंचा सकता है।

7.26

श्रीमती रूपा मेहरा और लता अपनी बातचीत जारी रखे हुए थीं। वरुण और आईएएस अधिकारी से हटकर वे सविता और बच्चे की बात पर आ गई थीं। हालांकि अभी यह हकीकत नहीं थी, श्रीमती रूपा मेहरा के मन में

बच्चा पहले से ही प्रोफेसर या जज बन चुका था। कहने की जरूरत नहीं, बच्चा लड़का था।

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, ‘मुझे एक हफ्ते से अपनी बेटी की कोई खबर नहीं मिली है। मैं उससे बहुत नाराज़ हूँ।’ लता के साथ रहते हुए रूपा मेहरा सविता को ‘मेरी बेटी’ कहकर संबोधित करती थीं और सविता भी श्रीमती रूपा मेहरा को ‘मेरी बेटी’ कहती थीं।

लता ने तसल्ली देते हुए कहा, 'वह ठीक है, माँ। वरना आपको ज़रूर पता चल जाता।'

‘और इस भीषण गर्मी में गर्भवती होना!’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, जिसका मतलब था कि सविता को समय का बेहतर ध्यान रखना चाहिए था। ‘तुम्हारा जन्म भी मानसून में हुआ था,’ उन्होंने लता से कहा। ‘तुम्हारा जन्म बहुत मुश्किल था,’ उन्होंने आगे कहा और उनकी आँखों में भावुकता झलक रही थी।

लता ने अपने कठिन जन्म के बारे में सौ बार सुना था। कभी-कभी जब उसकी माँ उससे नाराज़ होती, तो वह इस बात को ताना मारती और उस पर आरोप लगाती। कभी-कभी, जब वह उससे विशेष रूप से स्नेह करती, तो वह इस बात का ज़िक्र करती ताकि उसे याद दिला सके कि लता उसके लिए हमेशा कितनी अनमोल रही है। लता ने यह भी कई बार सुना था कि बचपन में उसकी पकड़ कितनी मज़बूत थी।

‘और बेचारा प्राण। मैंने सुना है कि ब्रह्मपुर में अभी तक बारिश नहीं हुई है,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने आगे कहा।

'हाँ, माँ, थोड़ा-बहुत।'

'ठीक से बारिश नहीं हुई - बस कहीं-कहीं एक-दो बूँदें गिरीं। अभी भी बहुत धूल है, और यह उसके अस्थमा के लिए बहुत खराब है।'

लता ने कहा: ‘माँ, आपको उसकी चिंता नहीं करनी चाहिए। सविता और

उसकी माँ दोनों उस पर कड़ी नज़र रखती हैं।' हालाँकि, वह जानती थी कि इसका कोई फायदा नहीं था। श्रीमती रूपा मेहरा को चिंता करने में ही आनंद आता था। सविता की शादी का एक अद्भुत परिणाम यह था कि उन्हें एक नया परिवार मिल गया जिसकी उन्हें चिंता करनी पड़ती थी।

'लेकिन उनकी मां की तबीयत भी ठीक नहीं है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने विजयी भाव से कहा। 'और इसी सिलसिले में, मुझे अपने होम्योपैथ से मिलने का मन कर रहा है।'

अगर अरुण वहां मौजूद होता, तो वह अपनी मां को बता देता कि सभी होम्योपैथ धोखेबाज होते हैं। लता ने बस इतना कहा:

'लेकिन क्या उन छोटी सफेद गोलियों से आपको कोई फायदा होता है, माँ? मुझे लगता है कि यह सब अंधविश्वास है।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने पूछा, 'आस्था में क्या बुराई है? आपकी पीढ़ी में तो कोई किसी चीज में विश्वास नहीं करता।'

लता ने अपनी पीढ़ी का बचाव नहीं किया।

'मौज-मस्ती करने और सुबह चार बजे तक बाहर रहने के अलावा,' श्रीमती रूपा मेहरा ने आगे कहा।

लता खुद भी आश्चर्यचकित होकर हंस पड़ी।

'क्या बात है?' उसकी माँ ने पूछा। 'तुम क्यों हंस रही हो? दो दिन पहले तो तुम हंस ही नहीं रही थी।'

'कुछ नहीं माँ, मैं बस हँस रही थी, बस इतना ही। क्या मैं कभी-कभार हँस नहीं सकती?' हालाँकि, कबीर की याद आने पर वह हँसना बंद कर चुकी थी।

श्रीमती रूपा मेहरा ने मुख्य मुद्दे को नजरअंदाज करते हुए विशिष्ट मुद्दे पर ध्यान केंद्रित किया।

लेकिन तुम किसी वजह से हंस रहे थे। कोई न कोई वजह जरूर होगी।

तुम अपनी मां को बता सकते हो।
‘माँ, मैं बच्चा नहीं हूँ, मुझे अपने विचार रखने का अधिकार है।’
'मेरे लिए, तुम हमेशा मेरी जान रहोगी।'
‘क्या तब भी जब मैं साठ साल का हो जाऊंगा?’
श्रीमती रूपा मेहरा ने अपनी बेटी को हैरानी से देखा। हालाँकि उन्होंने अभी-अभी सविता के अजन्मे बच्चे को न्यायाधीश के रूप में देखा था, लेकिन उन्होंने लता को साठ वर्ष की महिला के रूप में कभी नहीं देखा था। उन्होंने अब कोशिश की, लेकिन यह विचार बहुत डरावना था। सौभाग्य से, एक और व्यक्ति ने हस्तक्षेप किया।
‘भगवान मुझे उससे बहुत पहले ही अपने पास बुला लेंगे,’ उसने आह भरते हुए कहा। ‘और जब मैं मर जाऊंगी और तुम मेरी खाली कुर्सी देखोगे, तभी तुम्हें मेरी अहमियत समझ आएगी। अभी तो तुम मुझसे सब कुछ छिपा रहे हो, मानो तुम्हें मुझ पर भरोसा ही न हो।’
लता ने बड़े दुख के साथ सोचा कि उसे अपनी माँ पर भरोसा नहीं था कि वह उसकी भावनाओं को पूरी तरह समझ पाएगी। उसे कबीर का पत्र याद आया, जिसे उसने मिस्र की पौराणिक कथाओं की किताब से निकालकर अपने सूटकेस के नीचे रखे एक नोटबुक पर लिख लिया था। उसे उसका पता कहाँ से मिला होगा? वह उसके बारे में कितनी बार सोचता होगा? उसे फिर से उसके पत्र का बेपरवाह लहजा याद आया और उसे बहुत गुस्सा आया।
शायद यह सचमुच में हल्की-फुल्की बात नहीं थी, उसने मन ही मन सोचा। और शायद उसका यह कहना सही था कि उसने उसे अपनी बात समझाने का ज़्यादा मौका नहीं दिया था। उसने अपनी आखिरी मुलाकात के बारे में सोचा—ऐसा लग रहा था जैसे बहुत समय बीत गया हो—और अपने व्यवहार के बारे में भी: वह लगभग उन्मादपूर्ण थी। लेकिन उसके

लिए तो वह उसकी पूरी ज़िंदगी थी और उसके लिए शायद सुबह-सुबह की एक सुखद सैर मात्र। उसने स्पष्ट रूप से उसके इस तीव्र गुस्से की उम्मीद नहीं की थी। शायद, लता ने माना, शायद उससे इसकी उम्मीद करना उचित ही नहीं था।

असल में, उसका दिल उसके लिए तड़प रहा था। पिछली रात उसने कल्पना में अपने भाई के साथ नहीं, बल्कि उसी के साथ नृत्य किया था। और आज सुबह सपने में भी उसने उसी का ज़िक्र देखा, जिसमें वह एक भाषण प्रतियोगिता में, जिसमें वह जजों में से एक थी, उसके द्वारा उसे लिखे गए पत्र को सुना रहा था।

'तो आप क्यों हंस रहे थे?' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।

लता ने कहा: 'मैं कल रात फ़िरपो में बिश्वनाथ भादुरी और उनकी बेतुकी टिप्पणियों के बारे में सोच रही थी।'

'लेकिन वह एक अनुबंध से बंधा हुआ है,' उसकी माँ ने बताया।

उन्होंने मुझसे कहा कि मैं सविता से भी ज्यादा खूबसूरत हूं और मेरे बाल नदी की तरह हैं।

'तुम जब ठान लेती हो तो बहुत खूबसूरत लगती हो, प्यारी,' उसकी माँ ने दिलासा देते हुए कहा। 'लेकिन तुम्हारे बाल जूड़े में बंधे थे, है ना?'

लता ने सिर हिलाया और जम्हाई ली। दोपहर हो चुकी थी। परीक्षा की तैयारी के अलावा, उसे दिन के इतने समय में शायद ही कभी इतनी नींद आती थी। मीनाक्षी ही थी जो आमतौर पर जम्हाई लेती थी—और जब भी मौका मिलता था, वह बड़े सलीके से जम्हाई लेती थी।

'वरुण कहाँ है?' लता ने पूछा। 'मुझे उसके साथ गजट देखना था—उसमें आईएएस परीक्षा की जानकारी है। क्या तुम्हें लगता है कि वह भी रेस देखने चला गया है?'

'लता, तुम हमेशा मुझे परेशान करने वाली बातें कहती हो,' श्रीमती रूपा

मेहरा ने अचानक गुस्से से कहा। 'मेरी इतनी परेशानियां हैं, और तुम ऐसी बातें करती हो। जातिवाद। किसी को मेरी परेशानियों की परवाह नहीं, सब अपनी ही चिंता करते हैं।'

'क्या परेशानी है, माँ?' लता ने बेरुखी से कहा। 'आपकी अच्छी देखभाल हो रही है, और जो भी आपको जानता है, वह आपसे प्यार करता है।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने लता को कड़े शब्दों में देखा। सविता कभी ऐसा कठोर प्रश्न नहीं पूछती। वास्तव में, यह प्रश्न से अधिक एक टिप्पणी या निर्णय जैसा था। कभी-कभी, वह मन ही मन सोचती, मुझे लता बिल्कुल समझ नहीं आती।

श्रीमती रूपा मेहरा ने दृढ़ता से कहा, 'मेरी बहुत सारी परेशानियाँ हैं। आप भी उन्हें मुझसे बेहतर जानती हैं। मीनाक्षी को देखिए, वो बच्चे को कैसे संभालती है। और वरुण, उसकी पढ़ाई-लिखाई—उसका क्या होगा—सिगरेट पीना, शराब पीना, जुआ खेलना और ये सब? और आपकी शादी नहीं हुई—क्या ये भी परेशानी नहीं है? और सविता गर्भवती है। और प्राण अपनी बीमारी से परेशान है। और प्राण का भाई: ये सब कर रहा है और ब्रह्मपुर में हर कोई इसके बारे में बातें कर रहा है। और मीनाक्षी की बहन —उसके बारे में भी लोग बातें कर रहे हैं। क्या आपको लगता है कि मुझे लोगों से ये सब बातें नहीं सुननी पड़तीं? कल ही पुरोबी रे कुकू के बारे में गपशप कर रहे थे। तो ये मेरी परेशानियाँ हैं, और अब आपने मुझे और भी परेशान कर दिया है। और मैं एक विधवा हूँ और मुझे मधुमेह भी है,' उन्होंने लगभग बाद में सोचते हुए कहा। 'क्या ये भी परेशानी नहीं है?'

लता ने स्वीकार किया कि आखिरी वाला वाकई एक बड़ी मुसीबत साबित होगा।

'और अरुण चिल्लाता है, जो मेरे रक्तचाप के लिए बहुत बुरा है। और आज हनीफ ने छुट्टी ले रखी है, इसलिए मुझसे उम्मीद की जा रही है कि

मैं सब कुछ खुद ही करूँ, यहाँ तक कि चाय भी बनाऊँ।'
लता ने कहा, 'मैं आपके लिए बना दूंगी, माँ। क्या आप अभी थोड़ा खाना चाहेंगी?'
'नहीं, प्यारी, तुम्हें जम्हाई आ रही है, तुम जाकर आराम करो,' श्रीमती रूपा मेहरा ने अचानक नरमी दिखाते हुए कहा। चाय बनाने की पेशकश करके लता ने मानो उनके लिए चाय बना ही दी थी।
'मैं आराम नहीं करना चाहती, माँ,' लता ने कहा।
'तो फिर तुम जम्हाई क्यों ले रही हो, डार्लिंग?'
'शायद इसलिए क्योंकि मैं बहुत ज्यादा सो गया हूँ। क्या आप चाय पीना चाहेंगे?'
'अगर इससे बहुत ज्यादा परेशानी हो तो नहीं।'
लता रसोई में गई। उसकी माँ ने उसे सिखाया था कि 'मुसीबत पैदा न करो, बल्कि मुसीबत सहो'। पिता की मृत्यु के बाद, वे कई वर्षों तक उसी घर में रहे थे—और इसलिए एक तरह से दोस्तों की मदद पर ही गुज़ारा करते रहे थे, चाहे वह मदद कितनी भी उदारता से दी गई हो—इसलिए यह स्वाभाविक था कि श्रीमती रूपा मेहरा को इस बात की चिंता रहती कि कहीं वे सीधे तौर पर या अपने बच्चों के ज़रिए किसी को मुसीबत न दें। चारों बच्चों के व्यक्तित्व में इन वर्षों का गहरा प्रभाव देखा जा सकता था। अनिश्चितता की भावना और परिवार के बाहर के लोगों के प्रति कर्तव्यबोध ने उन पर अपना असर डाला था। ऐसा लगता था कि सविता पर इसका सबसे कम प्रभाव पड़ा था; लेकिन सविता को देखकर कभी-कभी ऐसा लगता था कि उसकी दयालुता और कोमलता उसे बचपन से ही मिली थी, और केवल परिवेश की परिस्थितियों से उनमें कोई बड़ा बदलाव नहीं आया था।
कुछ मिनट बाद जब लता चाय लेकर लौटी तो उसने पूछा, 'क्या सविता

बचपन से ही हंसमुख थी?' लता को अपने सवाल का जवाब पता था, न केवल इसलिए कि यह मेहरा परिवार की लोककथाओं का हिस्सा था, बल्कि इसलिए भी कि सविता की हंसमुखता को दर्शाने वाली कई तस्वीरें मौजूद थीं: बचपन की तस्वीरें जिनमें वह बड़े प्यार से उबले अंडे चट कर रही थी, या सोते समय मुस्कुरा रही थी। लेकिन फिर भी उसने यह सवाल पूछा, शायद अपनी मां का मूड ठीक करने के लिए।

'जी हां, बहुत धूप है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। 'लेकिन, प्रिय, तुम मेरी मीठी मिठाई लाना भूल गए।'

7.27

कुछ देर बाद अमित और दीपांकर चटर्जी की बड़ी सफेद हंबर कार में वहाँ पहुँचे। उन्हें समझ आ गया था कि लता और उनकी माँ उन्हें देखकर थोड़ी हैरान थीं।

'मीनाक्षी कहाँ है?' दीपांकर ने धीरे-धीरे चारों ओर देखते हुए पूछा। 'बाहर सुंदर स्पाइडर लिली के फूल खिले हैं।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'वह अरुण के साथ रेस देखने गई हैं। वे निमोनिया का शिकार होने पर तुली हुई हैं। हम अभी चाय पी रहे थे। लता एक और केतली चाय बनाएंगी।'

'नहीं, सच में, इसकी कोई जरूरत नहीं है,' अमित ने कहा।

लता ने मुस्कुराते हुए कहा, 'कोई बात नहीं। पानी गर्म है।'

अमित ने थोड़ी झुंझलाहट और थोड़ी हंसी के साथ कहा, 'बिल्कुल मीनाक्षी जैसी!' 'और उसने कहा कि आज दोपहर को आना ठीक रहेगा। मुझे लगता है हमें अब जाना चाहिए। दीपांकर को एशियाटिक सोसाइटी की लाइब्रेरी में कुछ काम है।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने आतिथ्य सत्कार करते हुए कहा, 'आप ऐसा नहीं कर सकते। चाय पिए बिना नहीं।'

लेकिन क्या उसने आपको यह भी नहीं बताया कि हम आ रहे हैं?
श्रीमती रूपा मेहरा ने अनायास ही कहा, 'मुझे कोई कुछ नहीं बताता।'
बिना छाते के रवाना होना,
मीनी-हाहा टॉली के पास जाता है,'
अमित ने टिप्पणी की।
श्रीमती रूपा मेहरा ने माथे पर शिकन डाली। उन्हें हमेशा ही चटर्जी परिवार के किसी भी युवा सदस्य के साथ सार्थक बातचीत करने में कठिनाई होती थी।
दीपांकर ने एक बार फिर चारों ओर देखकर पूछा: 'वरुण कहाँ है?'
वरुण से बात करना उसे अच्छा लगता था। यहाँ तक कि जब वरुण ऊब जाता था, तब भी वह इतना घबराया हुआ होता था कि कुछ कह नहीं पाता था, और दीपांकर उसकी चुप्पी को रुचि समझ लेता था। यकीनन वह दीपांकर के परिवार के किसी भी सदस्य से बेहतर श्रोता था, जो शून्यता के ताने या इच्छा के अंत के बारे में बात करते ही अधीर हो जाते थे। जब उसने नाश्ते की मेज पर इस विषय पर बात की थी, तो काकोली ने उसकी प्रेमिकाओं के नाम एक-एक करके गिनाए थे और कहा था कि उसे अब तक उसके जीवन में कोई स्पष्ट मंदी तो दूर, अंत भी नहीं दिखी। दीपांकर ने सोचा कि कुकू चीजों को अमूर्त रूप में नहीं देखती थी। वह अभी भी आकस्मिक वास्तविकता के धरातल पर फंसी हुई थी।
लता चाय लेकर लौटते हुए बोली, ‘वरुण भी बाहर गया है। क्या मैं उससे कहूँ कि लौटने पर तुम्हें फोन करे?’
‘अगर हमारी मुलाकात होनी है तो हम मिलेंगे,’ दीपांकर ने सोच-विचार करते हुए कहा। फिर वह बगीचे में चले गए, हालांकि हल्की-हल्की बारिश हो रही थी और उनके जूते कीचड़ से सन जाएंगे।
मीनाक्षी के भाई! श्रीमती रूपा मेहरा ने सोचा।

चूंकि अमित चुपचाप बैठा था, और श्रीमती रूपा मेहरा को चुप्पी बिल्कुल पसंद नहीं थी, इसलिए उन्होंने तपन के बारे में पूछा।

अमित ने कहा, 'ओह, वह बिल्कुल ठीक है। हमने उसे और कडल को एक दोस्त के घर पर छोड़ दिया है। उनके पास बहुत सारे कुत्ते हैं, और हैरानी की बात है कि कडल उन सभी के साथ घुलमिल गया है।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने सोचा, 'अजीब बात है'। पहली मुलाकात में ही कडल्स हवा में उछल पड़ा और उन्हें काटने की कोशिश की। सौभाग्य से, वह पियानो के पैर से बंधा हुआ था और उनकी पहुँच से थोड़ा दूर ही रहा। इस बीच, काकोली बिना रुके चोपिन बजाती रही। उसने कहा, 'उसकी परवाह मत करो, उसका इरादा अच्छा है।' श्रीमती रूपा मेहरा ने मन ही मन सोचा, वाकई एक अजीब परिवार है!

'और प्यारी काकोली?' उसने पूछा।

'वह हैंस के साथ शुबर्ट गा रही है। या यूं कहें कि वह बजा रही है, वह गा रहा है।'

श्रीमती रूपा मेहरा का चेहरा गंभीर हो गया। यह वही लड़का होना चाहिए जिसका जिक्र पुरोबी राय ने काकोली के संदर्भ में किया था। बिलकुल अनुपयुक्त।

'घर पर, बिल्कुल,' उसने कहा।

नहीं, हंस के घर पर। वह उसे लेने आया था। अच्छा हुआ, नहीं तो कुकू हमसे पहले कार तक पहुँच जाती।

श्रीमती रूपा मेहरा ने पूछा, 'उनके साथ कौन है?'

अमित ने सहज भाव से उत्तर दिया, 'शुबर्ट की आत्मा।'

'कुकू की खातिर आपको सावधान रहना चाहिए,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, जो उनकी कही बातों के साथ-साथ उनके लहजे से भी चौंक गई थीं। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि चटर्जी परिवार अपनी बहन के सामने

आने वाले खतरों को लेकर इतना गंभीर रवैया क्यों अपना रहा है। 'वे बल्लीगंज में गाना क्यों नहीं गा सकते?'

'खैर, सबसे पहले तो, हारमोनियम और पियानो के बीच अक्सर टकराव होता है। और मैं उस शोरगुल में लिख नहीं सकता।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'मेरे पति ने अपने रेलवे निरीक्षण रिपोर्ट तब लिखे जब उनके चारों ओर चार बच्चे चिल्ला रहे थे।'

'मां, ये बिल्कुल अलग बात है,' लता ने कहा। 'अमित एक कवि है। कविता अलग चीज है।'

अमित ने कृतज्ञता भरी नजरों से उसे देखा, हालांकि वह सोच रहा था कि जिस उपन्यास पर वह काम कर रहा था - या यहां तक कि कविता - वह निरीक्षण रिपोर्टों से उस हद तक अलग थी जितना वह कल्पना करती थी।

दीपांकर बगीचे से अंदर आए, काफी भीगे हुए थे। हालांकि, अंदर आने से पहले उन्होंने चटाई पर अपने पैर पोंछे। वे श्री अरबिंदो की रहस्यवादी कविता 'सावित्री' का एक अंश पढ़ रहे थे, वास्तव में जप कर रहे थे।

'अविनाशी प्रकाश के शांत आकाश,
बैंगनी शांति के प्रकाशित महाद्वीप,
ईश्वर के आनंद के महासागर और नदियाँ
और बैंगनी सूर्यों के नीचे शोक रहित देश...

वह उनकी ओर मुड़ा। 'ओह, चाय!' उसने कहा और सोचने लगा कि उसे कितनी चीनी डालनी चाहिए।

अमित ने लता की ओर मुड़कर पूछा, 'क्या तुम्हें समझ आया?'

दीपांकर ने अपने बड़े भाई पर सौम्य तिरस्कारपूर्ण दृष्टि डाली। उसने कहा, 'अमित दा एक संशयवादी हैं, और जीवन और पदार्थ में विश्वास करते हैं। लेकिन प्राणिक और भौतिक मानसिकता के पीछे छिपी मानसिक सत्ता का क्या?'

‘इसमें क्या है?’ अमित ने कहा।

‘क्या मतलब, तुम अतिमानसिक शक्ति में विश्वास नहीं करते?’ दीपांकर ने पलकें झपकाते हुए पूछा। ऐसा लग रहा था मानो अमित ने शनिवार के अस्तित्व पर ही सवाल उठा दिया हो—जो वास्तव में वह कर भी सकता था।

अमित ने कहा, 'मुझे नहीं पता कि मैं इस पर विश्वास करता हूँ या नहीं। मुझे नहीं पता कि यह क्या है। लेकिन कोई बात नहीं—नहीं, मुझे मत बताओ।'

"यह वह धरातल है जिस पर दैवीय सत्ता व्यक्तिगत आत्मा से मिलती है और व्यक्ति को एक 'ज्ञानी प्राणी' में बदल देती है," दीपांकर ने हल्के तिरस्कार के साथ समझाया।

‘कितना दिलचस्प है,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, जो समय-समय पर ईश्वर के बारे में सोचती रहती थीं। उन्हें दीपांकर के बारे में काफी सकारात्मक भावनाएँ आने लगी थीं। चटर्जी के सभी बच्चों में वह सबसे गंभीर स्वभाव का प्रतीत होता था। वह बहुत पलकें झपकाता था, जो थोड़ा अटपटा लगता था, लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा इस बात को नज़रअंदाज़ करने को तैयार थीं।

‘जी हां,’ दीपांकर ने अपनी चाय में एक तिहाई चम्मच चीनी मिलाते हुए कहा। ‘यह ब्रह्म और सत्-चित-आनंद से नीचे है, लेकिन एक माध्यम या संवाहक की तरह काम करता है।’

'क्या यह काफी मीठा है?' श्रीमती रूपा मेहरा ने चिंता से पूछा।

'मुझे ऐसा लगता है,' दीपांकर ने मूल्यांकन के भाव से कहा।

एक श्रोता मिल जाने पर, दीपांकर ने अब उन कई विषयों पर चर्चा शुरू कर दी जिनमें उनकी रुचि थी। रहस्यवाद में उनकी रुचि व्यापक थी, जिसमें तंत्र और मातृदेवी की पूजा के साथ-साथ वह वैचारिक

'संश्लेषणात्मक' दर्शन भी शामिल था जिसका उन्होंने अभी-अभी प्रतिपादन किया था। जल्द ही वह और श्रीमती रूपा मेहरा महान संत रामकृष्ण और विवेकानंद के बारे में आनंदपूर्वक बातें करने लगे। आधे घंटे बाद वे एकता, द्वैत और त्रित्व के विषय पर चर्चा करने लगे, जिस पर दीपांकर ने हाल ही में गहन अध्ययन किया था। श्रीमती रूपा मेहरा दीपांकर के विचारों के प्रवाह को समझने की पूरी कोशिश कर रही थीं।

दीपांकर ने कहा, "ब्रह्मपुर के पुल मेले में यह सब अपने चरम पर पहुंचता है। उस समय ग्रहों का संयोजन सबसे शक्तिशाली होता है। जेठ महीने की पूर्णिमा की रात को चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण बल हमारे सभी चक्रों पर पूरी ताकत से काम करता है। मैं सभी किंवदंतियों में विश्वास नहीं करता, लेकिन विज्ञान को नकारा नहीं जा सकता। मैं इस साल जा रहा हूं और हम सब मिलकर गंगा में स्नान करेंगे। मैंने अपना टिकट बुक करा लिया है।"

श्रीमती रूपा मेहरा संशय में दिखीं। फिर उन्होंने कहा:

'यह एक अच्छा विचार है। देखते हैं परिणाम क्या निकलता है।'

उसे अभी-अभी राहत की सांस लेते हुए याद आया था कि वह उस समय ब्रह्मपुर में नहीं होगी।

7.28

इसी बीच अमित लता से काकोली के बारे में बात कर रहा था। वह लता को उसके नए प्रेमी, जर्मन नटक्रैकर के बारे में बता रहा था। कुकू ने तो उससे अपने बाथटब के ऊपर एक कूटनीतिक रूप से अनुपयुक्त रीचसैडलर की पेंटिंग भी बनवा ली थी। बाथटब को कुकू के कलात्मक मित्रों ने अंदर और बाहर से कछुओं, मछलियों, केकड़ों और अन्य जलीय जीवों से सजाया था। कुकू को समुद्र बहुत पसंद था, खासकर गंगा के डेल्टा, सुंदरबन का। और मछलियाँ और केकड़े उसे स्वादिष्ट बंगाली

व्यंजनों की याद दिलाते थे, और उसके नहाने के आनंद को और भी बढ़ा देते थे।

'और आपके माता-पिता ने आपत्ति नहीं जताई?' लता ने चटर्जी हवेली की भव्यता को याद करते हुए पूछा।

अमित ने कहा, "मेरे माता-पिता को शायद बुरा लगे, लेकिन कुकू मेरे पिता को अपनी उंगलियों पर नचा सकती है। वह उनकी लाडली है। मुझे लगता है कि मेरी माँ भी इस बात से ईर्ष्या करती है कि वह उसे कितना लाड़-प्यार करते हैं। कुछ दिन पहले तो यह बात भी चल रही थी कि उसे एक्सटेंशन के बजाय अपना खुद का टेलीफोन दे दिया जाए।"

एक ही घर में दो टेलीफोन देखकर लता को फिजूलखर्ची लगी। उसने पूछा कि इनकी क्या ज़रूरत है, तो अमित ने उसे काकोली के टेलीफोन से गहरे लगाव के बारे में बताया। उसने काकोली के ए-लेवल, बी-लेवल और सी-लेवल के दोस्तों से बात करने के खास अंदाज़ की नकल भी की। 'लेकिन फोन में उसके लिए ऐसा जादू है कि अगर उसका कोई सी-लेवल का दोस्त लाइन पर हो, तो वह उससे मिलने के लिए इतनी दूर आने वाले ए-लेवल के दोस्त को भी बीस मिनट बात करने के लिए खुशी-खुशी छोड़ देती है।'

लता ने कहा, 'मुझे लगता है कि वह बहुत मिलनसार है। मैंने उसे कभी अकेले नहीं देखा।'

अमित ने कहा, 'वह है।'

क्या उसका ऐसा करने का इरादा है?

'आपका क्या मतलब है?'

क्या यह उसकी अपनी इच्छा से है?

अमित ने कहा, 'यह एक कठिन प्रश्न है।'

लता ने पार्टी में बड़ी भीड़ से घिरी हंसमुख काकोली की कल्पना करते हुए

कहा, 'खैर, वह बहुत अच्छी, आकर्षक और जीवंत है। मुझे आश्चर्य नहीं है कि लोग उसे पसंद करते हैं।'

अमित ने कहा, 'हम्म। वह खुद लोगों को फोन नहीं करती और घर से बाहर होने पर आने वाले संदेशों को भी अनदेखा कर देती है, इसलिए वह ज्यादा सक्रिय नहीं दिखती। फिर भी वह हमेशा फोन पर लगी रहती है। लोग हमेशा वापस फोन करते हैं।'

'तो वह निष्क्रिय रूप से स्वैच्छिक है।' लता अपने ही वाक्यांश पर कुछ आश्चर्यचकित दिखीं।

'खैर, निष्क्रिय रूप से स्वैच्छिक - एक जीवंत तरीके से,' अमित ने कहा, यह सोचते हुए कि कुकू का वर्णन करने का यह एक अजीब तरीका था।

लता ने उनकी ओर देखते हुए कहा, 'मेरी मां तुम्हारे भाई के साथ अच्छे से घुल-मिल रही हैं।'

'ऐसा ही लगता है,' अमित ने मुस्कुराते हुए कहा।

लता ने पूछा, 'और उसे किस तरह का संगीत पसंद है?' 'मेरा मतलब कुकू से है।'

अमित ने एक पल सोचा। 'निराशाजनक संगीत,' उसने कहा।

लता ने उसके विस्तार से बताने का इंतजार किया, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। इसके बजाय उसने पूछा, 'और आपको किस तरह का संगीत पसंद है?'

'मैं?' लता ने कहा।

अमित ने कहा, 'तुम।'

'अरे, बहुत तरह की। मैंने तुम्हें बताया था ना कि मुझे भारतीय शास्त्रीय संगीत पसंद है। और अपनी इला काकी को मत बताना, लेकिन एक बार जब मैं ग़ज़ल संगीत कार्यक्रम में गई थी, तो मुझे बहुत मज़ा आया था। और तुम्हें?'

‘हर तरह के लोग भी।’
लता ने पूछा, 'क्या कुकू को निराशावादी संगीत पसंद करने का कोई कारण है?'
अमित ने बड़ी बेरुखी से कहा, 'खैर, मुझे यकीन है कि उसने भी दिल टूटने का दर्द सहा होगा। लेकिन अगर किसी और ने उसका दिल न तोड़ा होता तो उसे हंस न मिलता।'
लता ने अमित को उत्सुकता से देखा, शायद कुछ सख्ती से। उसने कहा, 'मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा कि तुम कवि हो।'
‘नहीं। मैं भी नहीं कर सकता,’ अमित ने कहा। ‘क्या आपने मेरी कोई रचना पढ़ी है?’
‘नहीं,’ लता ने कहा। ‘मुझे पूरा यकीन था कि इस घर में आपकी किताब की एक प्रति होगी, लेकिन—’
और क्या आपको कविताएं पसंद हैं?
'बहुत शौकीन।'
कुछ देर का विराम। फिर अमित ने कहा:
‘आपने अब तक कलकत्ता में क्या-क्या देखा है?’
विक्टोरिया मेमोरियल और होवराह ब्रिज।
'बस इतना ही?'
'बस इतना ही।'
अब अमित की बारी थी गंभीर दिखने की।
‘और आज दोपहर आप क्या कर रहे हैं?’ उसने पूछा।
लता ने आश्चर्य से कहा, 'कुछ नहीं।'
'अच्छा। मैं आपको कुछ काव्य दृष्टि से रुचिकर स्थान दिखाऊंगा। हमारे पास कार है, जो अच्छी बात है। और कार में दो छाते भी हैं—इसलिए कब्रिस्तान में घूमते समय हम भीगेंगे नहीं।'

लेकिन लता के कहने के बावजूद कि वो 'सिर्फ अमित' के साथ ही बाहर जा रही थी, श्रीमती रूपा मेहरा ने बेवजह किसी के साथ जाने पर ज़ोर दिया। श्रीमती रूपा मेहरा के लिए अमित तो बस मीनाक्षी का भाई था—और किसी भी मायने में कोई खतरा नहीं था। लेकिन खैर, वो एक नौजवान था, और औपचारिकता के तौर पर यह ज़रूरी था कि कोई उनके साथ रहे, ताकि उन्हें अकेले न देखा जाए। दूसरी तरफ, श्रीमती रूपा मेहरा साथ जाने वाले व्यक्ति के बारे में काफी लचीली थीं। वो खुद तो बारिश में उनके साथ घूमने नहीं जाना चाहती थीं। लेकिन दीपांकर ठीक रहेगा।

‘मैं आपके साथ नहीं जा सकता, दादा,’ दीपांकर ने कहा। ‘मुझे पुस्तकालय जाना है।’

अमित ने कहा, 'ठीक है, मैं तपन को उसके दोस्त के घर फोन करूंगा और देखूंगा कि वह क्या कहता है।'

तपन इस शर्त पर सहमत हो गया कि कडल उनके साथ जा सकता है - बेशक, पट्टे पर बंधा हुआ।

चूंकि कडल नाममात्र के लिए दीपांकर का कुत्ता था, इसलिए उसकी अनुमति भी आवश्यक थी। और उसने यह अनुमति सहर्ष दे दी।

और इसलिए, एक गर्म, बरसात वाली शनिवार की दोपहर को, अमित, लता, दीपांकर (जो उनके साथ एशियाटिक सोसाइटी तक गया), तपन और कडल्स श्रीमती रूपा मेहरा की सहमति से ड्राइव और वॉक पर निकल पड़े, जिन्हें इस बात की राहत थी कि लता आखिरकार फिर से अपने सामान्य स्वभाव की तरह व्यवहार कर रही थी।

7.29

जब अंग्रेजों ने स्वतंत्रता के समय भारत छोड़ा, तो वे अपने पीछे बड़ी संख्या में पियानो छोड़ गए, और उनमें से एक, एक बड़ा, काला, उष्णकटिबंधीय शैली का स्टाइनवे पियानो, क्वींस मेंशन्स में हंस सीबर के

अपार्टमेंट के ड्राइंग रूम में रखा था। काकोली उस पर बैठी थीं और हंस उनके पीछे खड़े होकर उसी धुन पर गा रहे थे जिस पर काकोली बजा रही थीं, और वे बेहद खुश थे, हालांकि उनके गाए गाने बेहद उदास थे।

हंस शुबर्ट के भक्त थे। वे विंटरराइज़ गा रहे थे, जो बर्फ से ढके संगीत का एक ऐसा चक्र था जिसमें अस्वीकृति और निराशा का भाव था और जो पागलपन में समाप्त होता था। बाहर, कलकत्ता की गर्म बारिश मूसलाधार बरस रही थी। इसने सड़कों को जलमग्न कर दिया, अपर्याप्त जल निकासी व्यवस्था से बहकर हुगली नदी में जा गिरी और अंत में हिंद महासागर में समा गई। अपने अतीत में यह शायद वही कोमल जर्मन बर्फ रही होगी जो स्मृतियों से घिरे यात्री के चारों ओर घूम रही थी, और भविष्य में यह उस बर्फीली धारा का हिस्सा बन सकती है जिसकी सतह पर उसने अपने और अपनी बेवफा प्रेमिका के नाम के पहले अक्षर उकेरे थे। या शायद उसके गर्म आँसू भी हो सकते हैं जो सर्दियों की सारी बर्फ पिघलाने की धमकी दे रहे थे।

काकोली शुरू में शुबर्ट की संगीत शैली से उतनी प्रभावित नहीं थीं, क्योंकि उनकी पसंद चोपिन की ओर अधिक थी, जिन्हें वे भारी रुबाटो और उदासी के साथ बजाती थीं। लेकिन अब जब वे हैंस के गायन में संगत कर रही थीं, तो उन्हें शुबर्ट की संगीत शैली धीरे-धीरे पसंद आने लगी थी।

हंस के प्रति भी उसकी यही भावना थी, जिसकी अत्यधिक विनम्रता ने पहले तो उसे हंसाया, फिर चिढ़ाया और अब उसे आश्वस्त किया। हंस भी कुकू पर उतना ही मोहित था जितना कि उसके मशरूम कभी हुए थे। लेकिन उसे लगता था कि कुकू उसे हल्के में लेती है, उसके तीन में से केवल एक कॉल का जवाब देती है। अगर उसे अन्य मित्रों के साथ उसके इससे भी कम व्यवहार के बारे में पता होता, तो उसे एहसास होता कि वह

उसे कितना महत्व देती है।
गीत-चक्र के चौबीस गीतों में से वे अब अंतिम से एक पहले वाले गीत, 'द मॉक सन्स' पर पहुँच चुके थे। हैंस इसे उत्साहपूर्वक और तेज़ी से गा रहा था। कुकू पियानो पर धीमी गति से बजा रहा था। यह व्याख्या की एक खींचतान थी।
‘नहीं, नहीं, हैंस,’ काकोली ने झुककर आखिरी गाने का पन्ना पलटते हुए कहा। ‘तुमने इसे बहुत तेज़ गाया।’
‘बहुत तेज़?’ हैंस ने कहा। ‘मुझे लगा कि संगत बहुत तेज़ नहीं थी। आप धीमा करना चाहते थे, है ना? “आह, माइन सोनन सेइड इहर निष्ट!”’ उसने इसे खींचकर कहा। ‘तो?’
'हाँ।'
‘खैर, वो पागल है, काकोली, तुम्हें पता है।’ हंस द्वारा इतने जोश से गाना गाने का असली कारण कुकू की शानदार उपस्थिति थी।
‘लगभग पागल,’ कुकू ने कहा। ‘अगले गाने में वह बिल्कुल पागल हो जाता है। आप उसे जितनी तेज़ी से चाहें गा सकते हैं।’
‘लेकिन वह आखिरी गाना बहुत धीमा होना चाहिए,’ हैंस ने कहा। ‘इस तरह—’ और उसने पियानो के ऊंचे सुरों पर अपने दाहिने हाथ से इशारा करते हुए अपनी बात समझाई। पहली पंक्ति के अंत में उसका हाथ एक पल के लिए कुकू के हाथ से छू गया। ‘देखो, काकोली, उसने अपने भाग्य को स्वीकार कर लिया है।’
‘तो क्या वो अचानक पागल होना बंद कर दिया?’ काकोली ने कहा। ये कैसी बकवास है, उसने सोचा।
'शायद वह पागल है और उसने अपनी किस्मत मान ली है। मिश्रित।'
कुकू ने इसे आजमाया और अपना सिर हिलाया। उसने कहा, 'मैं सो जाऊंगी।'

‘तो अब, काकोली, आपको लगता है कि “द मॉक सन्स” धीमी होनी चाहिए और “द ऑर्गन-ग्राइंडर” तेज होनी चाहिए।’

‘बिल्कुल।’ काकोली को अच्छा लगता था जब हंस उसका नाम लेता था; वह तीनों अक्षरों का उच्चारण समान महत्व के साथ करता था। वह उसे बहुत कम ही कुकू कहकर पुकारता था।

‘और मुझे लगता है कि “द मॉक सन्स” तेज गति वाला होना चाहिए और “द ऑर्गन-ग्राइंडर” धीमा होना चाहिए,’ हैंस ने आगे कहा।

'हां,' कुकू ने कहा। उसने सोचा, हम दोनों कितने बेमेल हैं! और सब कुछ एकदम सही होना चाहिए—बिल्कुल सही। अगर सही नहीं होता तो बहुत बुरा होता।

"तो हममें से हर कोई यही सोचता है कि एक गाना तेज़ होना चाहिए और एक धीमा," हैंस ने विजयी भाव से कहा। इससे उसे यह साबित होता दिख रहा था कि कुछ मामूली बदलावों के साथ, वह और काकोली असाधारण रूप से एक-दूसरे के अनुकूल थे।

कुकु ने हंस के चौकोर और सुंदर चेहरे को देखा, जो खुशी से दमक रहा था। हंस ने कहा, 'देखो, अक्सर जब मैं सुनता हूं, लोग धीमी गति से गाते हैं।'

‘दोनों धीमे?’ कुकू ने कहा। ‘ऐसा तो बिलकुल नहीं चलेगा।’

‘नहीं, ऐसा कभी मत करना,’ हैंस ने कहा। ‘क्या हम इसे वहीं से धीमी गति से फिर से शुरू करें, जैसा कि आपने सुझाव दिया है?’

‘हां,’ काकोली ने कहा। ‘लेकिन इसका आखिर मतलब क्या है? या आकाश में? मेरा मतलब है, उस गाने का।’

'तीन सूर्य हैं,' हैंस ने समझाया, 'दो चले जाते हैं और फिर एक बच जाता है।'

‘हंस,’ काकोली ने कहा। ‘मुझे लगता है कि तुम बहुत प्यारे हो। और

तुम्हारा घटाव सटीक है। लेकिन तुमने मेरी समझ में कुछ जोड़ा नहीं है।'
हंस शरमा गया। 'मुझे लगता है कि वे दो सूर्य लड़की और उसकी माँ हैं, और वह स्वयं तीसरा सूर्य है।'
काकोली ने उसे घूरकर देखा। 'उसकी माँ?' उसने अविश्वास से कहा। शायद हंस का स्वभाव कुछ ज़्यादा ही रूढ़िवादी था।
हंस संशय में दिख रहा था। 'शायद नहीं,' उसने स्वीकार किया। 'लेकिन और कौन?' उसने सोचा कि माँ का ज़िक्र गीत चक्र में कहीं न कहीं ज़रूर आया था, हालाँकि बहुत पहले।
'मुझे तो कुछ समझ ही नहीं आ रहा। ये एक रहस्य है,' काकोली ने कहा। 'लेकिन ये माँ तो बिल्कुल नहीं है।' उसे आभास हो गया था कि कोई बड़ा संकट मंडरा रहा है। ये लगभग उतना ही गंभीर था जितना हंस को बंगाली खाना नापसंद था।
'जी?' हैंस ने कहा। 'एक रहस्य?'
'खैर, हंस, तुम बहुत अच्छा गाते हो,' कुकू ने कहा। 'मुझे तुम्हारे दिल टूटने के बारे में गाना बहुत पसंद है। यह बहुत ही पेशेवर लगता है। हमें अगले हफ्ते फिर से ऐसा करना चाहिए।'
हंस एक बार फिर शरमा गया और काकोली को पीने के लिए कुछ दिया। हालाँकि वह विवाहित महिलाओं के हाथों को चूमने में माहिर था, उसने अभी तक काकोली को नहीं चूमा था। उसे लगा था कि काकोली को यह पसंद नहीं आएगा; लेकिन वह गलत था।
7.30
जब वे पार्क स्ट्रीट कब्रिस्तान पहुंचे, तो अमित और लता कार से उतर गए। दीपांकर ने तपन के साथ कार में ही इंतजार करने का फैसला किया, क्योंकि उन्हें बस कुछ ही मिनट लगने थे और वैसे भी, वहां सिर्फ दो ही छाते थे।

वे लोहे के गेट से अंदर गए। कब्रिस्तान संकरी गलियों से घिरी हुई एक ग्रिड जैसी संरचना में बना हुआ था, जहाँ कब्रों के समूह बने हुए थे। जगह-जगह कुछ भीगे हुए ताड़ के पेड़ झुंडों में खड़े थे, और कौवों की कांव-कांव गरज और बारिश की आवाज़ के बीच गूंज रही थी। यह एक उदास जगह थी। 1767 में स्थापित यह कब्रिस्तान यूरोपीय मृतकों से जल्दी ही भर गया था। जवान और बूढ़े, सभी - अधिकतर भीषण गर्मी के शिकार - यहाँ दफ़न थे, बड़ी-बड़ी शिलाखंडों, पिरामिडनुमा कब्रों, समाधियों, कलशों और स्तंभों के नीचे दबे हुए, जो कलकत्ता की दस पीढ़ियों की गर्मी और बारिश से अब सड़ चुके थे और भूरे पड़ गए थे। कब्रें इतनी घनी थीं कि कुछ जगहों पर उनके बीच चलना मुश्किल था। कब्रों के बीच बारिश के पानी से सींची गई हरी-भरी घास उग रही थी, और उस पर लगातार बारिश बरस रही थी। ब्रह्मपुर या बनारस, इलाहाबाद या आगरा, लखनऊ या दिल्ली की तुलना में, कलकत्ता को शायद ही कोई ऐतिहासिक शहर माना जा सकता है, लेकिन यहाँ की जलवायु ने इसकी अपेक्षाकृत नवीनता को धीमी गति से होने वाले विनाश की एक उजाड़ और गैर-रोमांटिक भावना प्रदान की है।

‘आप मुझे यहाँ क्यों लाए हैं?’ लता ने पूछा।

क्या आप लैंडोर को जानते हैं?

‘मकान मालिक? नहीं।’

अमित ने निराशा से पूछा, 'क्या आपने कभी वाल्टर सैवेज लैंडोर के बारे में नहीं सुना?'

‘ओह हाँ। वाल्टर सैवेज लैंडर। बिल्कुल। “रोज़ आयल्मर, जिसे ये चौकस निगाहें देख रही हैं।”’

‘जागृत। खैर, वह यहीं दफन है। जैसे थैकरे के पिता और डिकेंस के बेटों में से एक, और बायरन के डॉन जुआन की मूल रचना,’ अमित ने उचित

कलकत्तावासी गर्व के साथ कहा।
‘सचमुच?’ लता ने कहा। ‘यहाँ? कलकत्ता में?’ मानो उसने अचानक सुना हो कि हेमलेट दिल्ली का राजकुमार है। ‘अरे, राजसी वंश का क्या ही फायदा!’
‘अहा, क्या दिव्य रूप है!’ अमित ने आगे कहा।
‘क्या ही सद्गुण, क्या ही गुण!’ लता ने अचानक उत्साह से कहा।
'रोज़ आयल्मर, सब कुछ तुम्हारा ही था।'
दोनों छंदों के बीच बिजली की गड़गड़ाहट सुनाई दी।
‘रोज़ आयल्मर, जिसे ये चौकस निगाहें—’ लता ने आगे कहा।
‘जागृत।’
‘माफ़ करना, जाग जाओ। रोज़ आयल्मर, जिसे ये जागती आँखें—’
अमित ने अपना छाता लहराते हुए कहा, 'रो सकते हैं, लेकिन कभी देख नहीं सकते।'
‘यादों और आहों से भरी एक रात।’
मैं तुम्हें समर्पित करता हूँ।
अमित रुका। ‘आह, प्यारी कविता, प्यारी कविता,’ उसने लता की ओर प्रसन्नता से देखते हुए कहा। वह फिर रुका, फिर बोला: ‘दरअसल, यह “यादों और आहों की रात” है।’
'क्या मैंने यही नहीं कहा था?' लता ने पूछा, उन रातों - या रातों के कुछ हिस्सों - के बारे में सोचते हुए जो उसने खुद हाल ही में इसी तरह बिताई थीं।
नहीं। आपने दूसरा “of” छोड़ दिया है।
‘यादों और आहों की एक रात। यादों और आहों की। मैं समझ गया तुम्हारा मतलब। लेकिन क्या इससे इतना फर्क पड़ता है?’
हां, इससे फर्क पड़ता है। दुनिया भर का फर्क तो नहीं, लेकिन, ठीक है,

फर्क तो पड़ता है। सिर्फ एक "का" शब्द का; जिसे आम तौर पर "प्यार" के साथ तुकबंदी करने की अनुमति है। लेकिन वह अपनी कब्र में है, और ओह, उसके लिए कितना फर्क है।

वे आगे बढ़ते रहे। दो-दो करके साथ चलना संभव नहीं था, और भीड़भाड़ वाले स्मारकों के बीच उनकी छतरियों ने स्थिति को और जटिल बना दिया था। ऐसा नहीं था कि उनकी समाधि बहुत दूर थी—वह पहले चौराहे पर ही थी—लेकिन अमित ने एक घुमावदार रास्ता चुना था। यह एक छोटी सी समाधि थी जिसके ऊपर घुमावदार रेखाओं वाला एक शंकु के आकार का स्तंभ था; लैंडोर की कविता एक तरफ एक पट्टिका पर उनके नाम और उम्र के नीचे और कुछ साधारण पंचक पंक्तियों में खुदी हुई थी:

उसका भाग्य क्या था? उसके समय से बहुत पहले ही,
मृत्यु ने उसके कोमल मन को सुख भंग करके छीन लिया।
पहली कलियों से, आनंद की कलियों से;
वे कुछ बचे हुए पत्ते जो हमारे लिए हानिकारक भाग्य का कारण बने।
मानव जीवन के इस प्रतिकूल वातावरण में।

लता ने मकबरे की ओर देखा और फिर अमित की ओर, जो गहरी सोच में डूबा हुआ प्रतीत हो रहा था। उसने मन ही मन सोचा: उसका चेहरा कितना सहज और शांत है।

‘तो जब उसकी मृत्यु हुई तब वह बीस साल की थी?’ लता ने कहा।

'हाँ। लगभग तुम्हारी ही उम्र की। उनकी मुलाकात स्वानसी सर्कुलेटिंग लाइब्रेरी में हुई थी। और फिर उसके माता-पिता उसे भारत ले गए। बेचारा लैंडर। नेक जंगली। जाओ, प्यारी रोज़।'

‘उसकी मृत्यु किस कारण हुई? बिछड़ने के दुख से?’

‘अनानास की अधिकता।’

लता हैरान दिखीं।

अमित ने कहा, 'मुझे पता है कि आपको मेरी बात पर यकीन नहीं हो रहा है, लेकिन अरे, यह सच है, यह सच है।'

उन्होंने आगे कहा, 'हमें वापस चले जाना चाहिए। वे हमारा इंतजार नहीं करेंगे—और इसमें हैरानी की क्या बात है? तुम तो पूरी तरह भीगे हुए हो।'

'और इसलिए आप कर रहे हैं।'

अमित ने आगे कहा, 'उसकी कब्र उल्टे आइसक्रीम कोन जैसी दिखती है।'

लता ने कुछ नहीं कहा। वह अमित से काफी नाराज़ थी।

दीपांकर को एशियाटिक सोसाइटी में छोड़ने के बाद, अमित ने ड्राइवर से उन्हें चौरंगी होते हुए प्रेसिडेंसी अस्पताल ले जाने को कहा। विक्टोरिया मेमोरियल के पास से गुजरते हुए उसने कहा:

तो क्या विक्टोरिया मेमोरियल और हावड़ा ब्रिज ही वह सब कुछ है जो आप कलकत्ता के बारे में जानते हैं और बस इतना ही जानना आपके लिए काफी है?

लता ने कहा, 'मुझे इतना सब कुछ जानने की ज़रूरत नहीं है। मुझे बस इतना ही पता है। और फ़िरपो की कहानी, और 'द गोल्डन स्लिपर', और 'द न्यू मार्केट'।'

तपन ने इस खबर का स्वागत काकोली के एक दोहे से किया:

'प्यार से गले लगाओ, प्यार से गले लगाओ, प्यारे कुत्ते,'

जाओ और सर स्टुअर्ट हॉग को काट लो।

लता असमंजस में दिखीं। चूंकि तपन और अमित दोनों ने ही इस संदर्भ को नहीं समझाया, इसलिए उन्होंने आगे कहा: 'लेकिन अरुण ने कहा है कि हम बॉटनिकल गार्डन में पिकनिक के लिए जाएंगे।'

अमित ने कहा, 'फैले हुए बरगद के पेड़ के नीचे।'

'यह दुनिया का सबसे बड़ा है,' तपन ने अपने भाई के समान

कलकत्तावादी राष्ट्रवाद के साथ कहा।
अमित ने कहा, 'और क्या तुम बारिश में वहाँ जाओगे?'
'अच्छा, अगर अभी नहीं तो क्रिसमस पर।'
‘तो आप क्रिसमस पर वापस आएंगे?’ अमित ने प्रसन्न होकर पूछा।
'मुझे ऐसा लगता है,' लता ने कहा।
‘बहुत बढ़िया,’ अमित ने कहा। ‘सर्दियों में भारतीय शास्त्रीय संगीत के बहुत सारे कार्यक्रम होते हैं। और कलकत्ता बहुत ही सुहावना है। मैं तुम्हें घुमाऊंगा। मैं तुम्हारी अज्ञानता दूर करूंगा। मैं तुम्हारा ज्ञान बढ़ाऊंगा। मैं तुम्हें बांग्ला सिखाऊंगा!’
लता हंस पड़ी। उसने कहा, 'मुझे इसका बेसब्री से इंतजार रहेगा।'
कडल्स ने दिल दहला देने वाली गुर्राहट की।
तपन ने पूछा, 'अब तुम्हें क्या हुआ है?' उसने लता को पट्टा देते हुए पूछा, 'क्या तुम इसे थोड़ी देर के लिए पकड़ोगी?'
गले लगने की आवाज धीरे-धीरे खामोशी में बदल गई।
तपन नीचे झुका और कडल्स के कान को ध्यान से देखने लगा।
तपन ने कहा, 'उसने अभी तक सैर नहीं की है। और मैंने अभी तक अपना मिल्कशेक नहीं पिया है।'
अमित ने कहा, ‘तुम सही कह रही हो। बारिश रुक गई है। चलो, दूसरी महान काव्य कृति देख लेते हैं और फिर मैदान में चलते हैं, जहाँ तुम दोनों जितना चाहो कीचड़ में खेल सकती हो। और वापस आते समय हम केवेंटर्स पर रुकेंगे।’ लता की ओर मुड़ते हुए उसने आगे कहा, ‘मैं तुम्हें उत्तरी कोलकाता में रवींद्रनाथ टैगोर के घर ले जाने की सोच रहा था, लेकिन वह काफी दूर है और वहाँ थोड़ा कीचड़ है, इसलिए इसे किसी और दिन के लिए टाल सकते हैं। लेकिन तुमने मुझे यह नहीं बताया कि क्या तुम्हें वहाँ कुछ खास देखना है।’

लता ने कहा, 'मैं एक दिन विश्वविद्यालय क्षेत्र देखना चाहूंगी। कॉलेज स्ट्रीट और बाकी सब कुछ। लेकिन इसके अलावा और कुछ नहीं। क्या आप वाकई समय निकाल पाएंगे?'

'जी हां,' अमित ने कहा। 'और हम यहां आ गए हैं। उसी छोटी सी इमारत में सर रोनाल्ड रॉस ने मलेरिया के कारण का पता लगाया था।' उन्होंने द्वार पर लगी एक पट्टिका की ओर इशारा करते हुए कहा, 'और उन्होंने इस खोज को मनाने के लिए एक कविता भी लिखी थी।'

इस बार सभी नीचे बैठ गए, हालांकि तपन और कडल्स ने पट्टिका में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। लता ने बड़ी उत्सुकता से उसे पूरा पढ़ा। वह वैज्ञानिकों की सुबोध लेखन शैली से परिचित नहीं थी और उसे यह भी नहीं पता था कि आगे क्या होगा।

आज के दिन ईश्वर दया कर रहा है
मेरे हाथ में रखा है
एक अद्भुत बात; और ईश्वर
आपकी प्रशंसा हो। उनके आदेश पर,
उसके गुप्त कार्यों की खोज में
आँसुओं और साँस फूलते हुए,
मुझे तुम्हारे धूर्त बीज मिले
हे लाखों लोगों की हत्या करने वाली मौत।
मुझे यह छोटी सी बात पता है
असंख्य लोग बचाएंगे।
ओ डैथ, वेयर इज़ दायी स्टिंग?
हे कब्र, तेरी विजय?

लता ने इसे दूसरी बार पढ़ा। अमित ने पूछा, 'तुम्हें यह कैसा लगा?'

'ज्यादा नहीं,' लता ने कहा।

'में क्यों?'

लता ने कहा, 'मुझे पक्का नहीं पता। मुझे यह पसंद नहीं है। "आंसू और मेहनत", "लाखों हत्याएं"—ये शब्द बहुत ही अनुप्रासपूर्ण हैं। और "भगवान" को "भगवान" के साथ तुकबंदी करने की अनुमति क्यों दी जानी चाहिए? क्या आपको यह पसंद है?'

'हाँ, एक तरह से,' अमित ने कहा। 'मुझे यह पसंद है। लेकिन साथ ही मैं इस भावना का बचाव भी नहीं कर सकता। शायद मुझे यह बात भावुक कर देती है कि एक सर्जन-मेजर अपने द्वारा किए गए किसी काम के बारे में इतनी जोशीली और धार्मिक भावना से लिखे। मुझे अंत में आने वाला अनोखा चियास्मस पसंद है। आह, मैंने अभी-अभी एक पेंटामीटर बना दिया है,' उसने प्रसन्नता से कहा।

लता थोड़ी भौंहें चढ़ाए हुए थी, अभी भी पट्टिका को देख रही थी, और अमित समझ गया कि वह संतुष्ट नहीं थी।

'आप अपने फैसले में काफी सख्त हैं,' उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा। 'मुझे आश्चर्य है कि आप मेरी कविताओं के बारे में क्या कहेंगे।'

लता ने कहा, 'शायद किसी दिन मैं उन्हें पढ़ूँगी। मैं कल्पना भी नहीं कर सकती कि आप किस तरह की कविताएँ लिखते हैं। आप तो बहुत हंसमुख और व्यंग्यात्मक लगते हैं।'

अमित ने कहा, 'मैं तो निश्चित रूप से निराशावादी हूँ। क्या तुम कभी अपनी कविताएँ सुनाते हो?'

अमित ने कहा, 'लगभग कभी नहीं।'

क्या लोग आपसे ऐसा करने के लिए नहीं कहते?

'हां, हर समय,' अमित ने कहा। 'क्या आपने कवियों को उनकी रचनाएँ पढ़ते हुए सुना है? यह आमतौर पर बहुत बुरा होता है।'

लता को ब्रह्मपुर साहित्यिक समाज की याद आई और वह मुस्कुरा उठी।

फिर उसे कबीर की याद आई। वह असमंजस और उदास महसूस करने लगी।

अमित ने उसके चेहरे के भावों में आए अचानक बदलाव को देखा। वह कुछ पल के लिए झिझका, यह पूछना चाहता था कि ऐसा क्यों हुआ, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, उसने पट्टिका की ओर इशारा करते हुए पूछा:

उन्होंने इसकी खोज कैसे की?

'ओह,' अमित ने कहा, 'उसने अपने नौकर को मच्छर लाने भेजा, फिर मच्छरों ने उसे ही काट लिया—मतलब उसके नौकर को—और जब उसे कुछ समय बाद मलेरिया हो गया, तो रॉस को एहसास हुआ कि मच्छरों के काटने से ही ऐसा हुआ था। हे लाखों लोगों की जान लेने वाली मौत!'

लता ने कहा, 'लगभग दस लाख एक।'

'हां, मैं समझ गया कि आप क्या कहना चाहते हैं। लेकिन लोग हमेशा से अपने नौकरों के साथ अजीब व्यवहार करते आए हैं। यादों और आहों के मालिक ने एक बार अपने रसोइए को खिड़की से बाहर फेंक दिया था।'

लता ने कहा, 'मुझे यकीन नहीं है कि मुझे कलकत्ता के कवि पसंद हैं।'

7.31

मैदान और मिल्कशेक के बाद, अमित ने लता से पूछा कि क्या घर लौटने से पहले उसके घर पर चाय पीने का समय है। लता ने कहा, हाँ। उसे उस घर की चहल-पहल, पियानो, किताबें, बरामदा और बड़ा बगीचा बहुत पसंद था। जब अमित ने अपने कमरे में दो लोगों के लिए चाय मंगवाई, तो नौकर बहादुर, जिसे अमित में मालिकाना हक जैसा भाव था, ने उससे पूछा कि क्या उसके साथ चाय पीने के लिए कोई और है।

'अरे नहीं,' अमित ने कहा, 'मैं दोनों कप खुद ही पीऊंगा।'

बाद में, जब बहादुर ने चाय की थाली नीचे रखते हुए लता को गौर से

देखा, तो अमित ने कहा, 'तुम्हें उसकी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। उसे लगता है कि मैं हर उस व्यक्ति से शादी करने की योजना बना रहा हूँ जिसके साथ मैं चाय पीता हूँ। एक या दो?'

लता ने कहा, 'दो दीजिए।' सवाल में कोई जोखिम नहीं था, इसलिए उसने शरारती अंदाज़ में पूछा, 'और क्या आपके पास भी हैं?'

'अरे, अभी तक तो नहीं,' अमित ने कहा। 'पर उसे यकीन नहीं होता। हमारे नौकरों ने हमारी ज़िंदगी पर राज करने की कोशिश करना नहीं छोड़ा है। बहादुर ने मुझे अजीब-अजीब समय पर चाँद को घूरते हुए देखा है और वह मुझे एक साल के अंदर शादी करवाकर ठीक करना चाहता है। दीपांकर अपनी झोपड़ी के चारों ओर पपीते और केले के पौधे लगाने का सपना देख रहा है और माली उसे फूलों की क्यारियों के बारे में ज्ञान दे रहा है। मुग़ रसोइया तो लगभग नौकरी छोड़ने ही वाला था क्योंकि तपन, जब बोर्डिंग स्कूल से लौटा, तो पूरे एक हफ्ते तक नाश्ते में मेमने के चॉप्स और आम की आइसक्रीम खाने पर अड़ा रहा।'

'और कुकू?'

'कुकु ड्राइवर को पागल कर देता है।'

लता ने कहा, 'तुम लोग कितने अजीब परिवार हो!'

अमित ने कहा, 'इसके विपरीत, हम तो विवेक का गढ़ हैं।'

7.32

जब लता शाम को घर लौटी तो श्रीमती रूपा मेहरा ने उससे यह नहीं पूछा कि वह कहाँ गई थी और उसने क्या देखा था। वह इतनी परेशान थी कि ऐसा करने की उसकी कोई इच्छा नहीं थी। अरुण और वरुण के बीच ज़बरदस्त झगड़ा हुआ था और आग की तेज़ गंध अभी भी हवा में फैली हुई थी।

वरुण अपनी जीती हुई रकम जेब में लेकर घर लौट आया था। वह अभी

नशे में नहीं था, लेकिन यह साफ था कि वह अपनी इस अमाउंट को कहाँ खर्च करने वाला था। अरुण ने उसे समझाया था कि वह गैरजिम्मेदार है; उसे जीती हुई रकम परिवार के खर्चे में लगा देनी चाहिए और फिर कभी रेस ट्रैक पर नहीं जाना चाहिए। वह अपना जीवन बर्बाद कर रहा था और उसे त्याग और मेहनत का मतलब नहीं पता था। वरुण, जो जानता था कि अरुण खुद रेस में गया था, ने उसे बताया कि वह उसकी सलाह का क्या कर सकता है। गुस्से से लाल हुए अरुण ने उसे घर से बाहर जाने का आदेश दिया। श्रीमती रूपा मेहरा रोईं, गिड़गिड़ाईं और मामले को और बिगाड़ने की कोशिश की। मीनाक्षी ने कहा कि वह ऐसे शोरगुल वाले परिवार में नहीं रह सकती और बालीगंज वापस जाने की धमकी दी। उसने कहा कि उसे खुशी है कि आज हनीफ की छुट्टी है। अपर्णा जोर-जोर से रोने लगी। उसकी आया भी उसे चुप नहीं करा पाई।

अपर्णा के रोने से सब शांत हो गए थे, शायद उन्हें थोड़ी शर्म भी महसूस हुई थी। मीनाक्षी और अरुण अभी-अभी पार्टी के लिए निकले थे, और वरुण अपने छोटे से आधे कमरे में बैठा खुद से कुछ बुदबुदा रहा था।

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'काश सविता यहाँ होती। अरुण के नखरे को केवल वही संभाल सकती है।'

‘अच्छा हुआ कि वो यहाँ नहीं है, माँ,’ लता ने कहा। ‘वैसे भी, मुझे वरुण की ज़्यादा चिंता है। मैं जाकर देखती हूँ कि वो कैसा है।’ उसे लग रहा था कि ब्रह्मपुर में उसे दी गई उसकी सलाह बेकार गई थी।

जब उसने उसके दरवाजे पर दस्तक दी और अंदर प्रवेश किया, तो उसने उसे बिस्तर पर लेटा हुआ पाया और उसके सामने भारत का राजपत्र खुला पड़ा हुआ था।

वरुण घबराते हुए इधर-उधर देखते हुए बोला, ‘मैंने खुद को सुधारने का फैसला किया है।’ ‘मैं आईएएस परीक्षा के नियम पढ़ रहा हूँ। परीक्षाएँ

इसी सितंबर में होनी हैं, और मैंने अभी तक पढ़ाई शुरू भी नहीं की है। अरुण भाई मुझे गैरजिम्मेदार समझते हैं, और वो सही हैं। मैं सचमुच बहुत गैरजिम्मेदार हूँ। मैं अपना जीवन बर्बाद कर रहा हूँ। पापा को मुझ पर शर्म आती। मुझे देखो, लुट्स, बस मुझे देखो। मैं क्या हूँ?' वह और भी ज़्यादा उत्तेजित होता जा रहा था। 'मैं बिलकुल बेवकूफ हूँ,' उसने अरुण के अंदाज़ में निंदा करते हुए कहा। ' बिलकुल बेवकूफ!' उसने फिर दोहराया। 'क्या तुम्हें भी ऐसा नहीं लगता?' उसने लता से उम्मीद से पूछा।

'क्या मैं आपके लिए चाय बना दूं?' लता ने हैरानी से पूछा, यह सोचते हुए कि वरुण ने मीनाक्षी की तरह उसे 'लुट्स' क्यों कहा। वरुण बहुत आसानी से बहकावे में आ जाता था।

वरुण ने वेतनमानों, वैकल्पिक और अनिवार्य विषयों की सूचियों, परीक्षाओं के मानक और पाठ्यक्रम, यहां तक कि अनुसूचित जातियों की सूची को भी उदास भाव से देखा।

'हां। अगर आपको लगता है कि यही सबसे अच्छा है,' उसने अंत में कहा। जब लता चाय लेकर लौटी, तो उसने पाया कि वह फिर से निराशा में डूब गया था। उसने अभी-अभी मौखिक परीक्षा पर लिखा अनुच्छेद पढ़ा था:

उम्मीदवार का साक्षात्कार एक बोर्ड द्वारा लिया जाएगा जिसके समक्ष उसके पूरे करियर का रिकॉर्ड होगा। उससे सामान्य रुचि के विषयों पर प्रश्न पूछे जाएंगे। साक्षात्कार का उद्देश्य उस सेवा के लिए उसकी उपयुक्तता का आकलन करना है जिसके लिए उसका चयन किया जा रहा है, और अपने आकलन को तैयार करते समय बोर्ड उसकी बुद्धिमत्ता और सतर्कता, उसके उत्साह और चरित्र की दृढ़ता तथा उसके नेतृत्व की संभावित क्षमताओं को विशेष महत्व देगा।

वरुण ने कहा, 'इसे पढ़ो! बस इसे पढ़ो।' लता ने गजट उठाया और उसे रुचिपूर्वक पढ़ने लगी।

वरुण ने आगे कहा, ‘मेरे पास कोई मौका नहीं है। मेरा व्यक्तित्व इतना घटिया है कि मैं किसी पर अच्छा प्रभाव नहीं डाल पाता। बिल्कुल भी नहीं। और इंटरव्यू 400 अंकों का है। नहीं। मुझे इसे स्वीकार कर लेना चाहिए। मैं सिविल सेवा के लायक नहीं हूं। उन्हें नेतृत्व गुणों वाले लोग चाहिए—मुझ जैसे पांचवीं श्रेणी के निकम्मे लोग नहीं।’

लता ने कहा, 'लो, चाय पीजिए वरुण भाई।'

वरुण ने आँखों में आँसू लिए हाँ कह दी। ‘पर मैं और क्या कर सकता हूँ?’ उसने उससे पूछा। ‘मैं पढ़ा नहीं सकता, मैं किसी मैनेजमेंट एजेंसी में शामिल नहीं हो सकता, भारत की सारी व्यावसायिक कंपनियाँ परिवार द्वारा चलाई जाती हैं, मुझमें खुद का व्यवसाय शुरू करने की हिम्मत नहीं है— न ही इसके लिए पैसा जुटाने की। और अरुण तो हर समय मुझ पर चिल्लाता रहता है। मैं ‘हाउ टू विन फ्रेंड्स एंड इन्फ्लुएंस पीपल’ पढ़ रहा हूँ,’ उसने बताया। ‘अपनी पर्सनैलिटी सुधारने के लिए।’

‘क्या यह काम कर रहा है?’ लता ने पूछा।

वरुण ने कहा, 'मुझे नहीं पता। मैं इस बारे में कुछ कह भी नहीं सकता।'

लता ने पूछा, 'वरुण भाई, चिड़ियाघर में उस दिन मैंने जो कहा था, आपने मेरी बात क्यों नहीं सुनी?'

‘मैंने किया। मैं अब अपने दोस्तों के साथ बाहर जा रहा हूँ। और देखिए इसका नतीजा क्या निकला!’ वरुण ने कहा।

कुछ देर सन्नाटा छा गया। वे दोनों चुपचाप उस छोटे से कमरे में चाय की चुस्कियाँ लेते रहे। तभी गजट पढ़ रही लता अचानक गुस्से से उठ बैठी। उसने कहा, “यह सुनो। भारत सरकार भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय पुलिस सेवा के लिए किसी विवाहित महिला उम्मीदवार का चयन नहीं कर सकती और बाद में विवाह करने पर उसे सेवा से इस्तीफा देने के लिए कह सकती है।”

‘ओह,’ वरुण ने कहा, जिसे समझ नहीं आ रहा था कि इसमें गलत क्या है। जेसन एक पुलिसकर्मी था, या रह चुका था, और वरुण सोच रहा था कि क्या किसी भी महिला को, चाहे वह विवाहित हो या नहीं, उसके जैसा क्रूर काम करने की अनुमति दी जानी चाहिए।

लता ने आगे कहा, “और स्थिति और भी बदतर हो जाती है। भारतीय विदेश सेवा के लिए महिला उम्मीदवार तभी पात्र होती हैं जब वे अविवाहित हों या बिना किसी बंधन के विधवा हों। यदि ऐसी उम्मीदवार का चयन होता है, तो उनकी नियुक्ति इस स्पष्ट शर्त पर की जाएगी कि विवाह या पुनर्विवाह होने पर उन्हें सेवा से इस्तीफा देने के लिए कहा जा सकता है।”

‘बिना किसी बंधन के?’ वरुण ने कहा।

‘इसका मतलब है बच्चे, शायद। माना जाता है कि आप जिम्मेदारियों से घिरे एक विधुर होकर अपने पारिवारिक जीवन और काम दोनों को संभाल सकते हैं। लेकिन अगर आप विधवा हैं तो ऐसा नहीं हो सकता। . . . मुझे माफ करना, मैंने गजट का कार्यभार संभाल लिया है।’

'अरे नहीं, नहीं, आपने पढ़ लिया। मुझे अचानक याद आया कि मुझे बाहर जाना है। मैंने वादा किया था।'

‘किससे वादा किया था?’ लता ने पूछा। ‘साजिद और जेसन से?’

‘नहीं, बिलकुल नहीं,’ वरुण ने शरमाते हुए कहा। ‘खैर, वादा तो वादा होता है और उसे कभी तोड़ना नहीं चाहिए।’ वह हल्की हंसी हंसा; वह अपनी मां की एक कहावत दोहरा रहा था। ‘लेकिन मैं उनसे कह दूंगा कि मैं अब उनसे नहीं मिल सकता। मैं पढ़ाई में बहुत व्यस्त हूं। क्या आप थोड़ी देर के लिए मां से बात कर लेंगे?’

‘क्या तुम चुपके से निकल जाओगी?’ लता ने कहा। ‘कोई डर नहीं।’

‘लुट्स, मैं उससे क्या कहूँ? वो मुझसे ज़रूर पूछेगी कि मैं कहाँ जा रही

हूँ।'
'उसे बताओ कि तुम शमशु पीकर बुरी तरह नशे में धुत होने वाले हो।'
वरुण ने खुश होते हुए कहा, 'आज शमशु नहीं होगा।'
उसके जाने के बाद लता गजट लेकर अपने कमरे में चली गई। कबीर ने कहा था कि डिग्री मिलने के बाद वह आईएफएस की परीक्षा देना चाहता है। उसे पूरा यकीन था कि अगर वह उस मुकाम तक पहुंच गया तो इंटरव्यू में अच्छा प्रदर्शन करेगा। उसमें नेतृत्व के गुण और जोश तो भरपूर थे ही। वह कल्पना कर सकती थी कि बोर्ड पर उसका कितना अच्छा प्रभाव पड़ेगा। वह उसकी सतर्कता, उसकी खुली मुस्कान और किसी बात को न जानने पर तुरंत स्वीकार करने के उसके सहज अंदाज की कल्पना कर सकती थी।
उसने नियमों को ध्यान से पढ़ा और सोचने लगी कि वह कौन से वैकल्पिक विषय चुन सकता है। एक विषय का वर्णन केवल इस प्रकार किया गया था: 'विश्व इतिहास। 1789 से 1939।'
एक बार फिर उसने सोचा कि क्या उसे उसके पत्र का जवाब देना चाहिए, और एक बार फिर उसने सोचा कि वह क्या कह सकती है। वह यूँ ही वैकल्पिक विकल्पों की सूची पर नज़र डालती रही, तभी उसकी नज़र कुछ पंक्तियों के बाद एक विकल्प पर पड़ी। पहले तो वह उलझन में पड़ गई, फिर उसे हंसी आ गई, और अंत में इससे उसे कुछ हद तक सुकून मिला। वह इस प्रकार था:
दर्शनशास्त्र। इस विषय में पूर्वी और पश्चिमी नैतिकता का इतिहास और सिद्धांत शामिल हैं, साथ ही नैतिक मानदंड और उनका अनुप्रयोग, नैतिक व्यवस्था की समस्याएं, समाज और राज्य की प्रगति, और दंड के सिद्धांत भी शामिल हैं। इसमें पश्चिमी दर्शन का इतिहास भी शामिल है और इसका अध्ययन विशेष रूप से स्थान, समय और कारणता, विकास और मूल्य,

और ईश्वर के स्वरूप से संबंधित समस्याओं के संदर्भ में किया जाना चाहिए।

लता ने मन ही मन कहा, 'ये तो बच्चों का खेल है,' और उसने बगल वाले कमरे में अकेली बैठी अपनी माँ से बात करने का फैसला किया। अचानक उसे चक्कर आने लगे।

7.33

मेरी प्यारी चूहा, मेरी सबसे प्यारी चूहा,

कल रात भर मैंने तुम्हारे सपने देखे। मैं दो बार जागा और हर बार तुम्हारे सपने से ही जागा। मुझे नहीं पता क्यों तुम बार-बार मेरे दिमाग में आते हो और मुझे तुम्हारी यादों और आहों से भर देते हो। हमारी आखिरी मुलाकात के बाद मैंने ठान लिया था कि तुम्हारे बारे में नहीं सोचूंगा, फिर भी तुम्हारा पत्र मुझे परेशान करता है। तुम इतनी बेरुखी से कैसे लिख सकते हो, जबकि तुम जानते हो कि तुम मेरे लिए क्या मायने रखते हो और मैं तुम्हारे लिए क्या मायने रखता था?

मैं एक कमरे में था—शुरू में वह एक अंधेरा कमरा था, जिसमें से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था। थोड़ी देर बाद एक खिड़की दिखाई दी, और मैंने उसके ज़रिए एक धूपघड़ी देखी। फिर, अचानक, कमरे में रोशनी हो गई, और उसमें फर्नीचर दिखाई देने लगा—और इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता, मैं 20 हेस्टिंग्स रोड वाला कमरा था, जिसमें श्री नवरोजी, श्रीमती सुप्रिया जोशी और डॉ. मखीजानी मौजूद थे, लेकिन अजीब बात यह थी कि कहीं भी कोई दरवाजा नहीं था, इसलिए मैंने मान लिया कि वे खिड़की से अंदर चढ़े होंगे। और मैं खुद अंदर कैसे आ गया? खैर, इससे पहले कि मैं इन सब बातों को सुलझा पाता, एक दरवाजा ठीक उसी जगह दिखाई दिया जहाँ उसे होना चाहिए था, और किसी ने उस पर दस्तक दी—आराम से, लेकिन बेसब्री से। मैं जानता था कि यह

आप ही हैं—हालाँकि मैंने आपको कभी दरवाजे पर दस्तक देते नहीं सुना, असल में हम उस एक बार को छोड़कर हमेशा बाहर ही मिले हैं—और हाँ, उस्ताद मजीद खान के संगीत कार्यक्रम में भी। मुझे पूरा यकीन था कि यह आप ही हैं, और मेरा दिल इतनी तेज़ी से धड़कने लगा कि मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था, मैं आपसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक था। फिर पता चला कि वह कोई और था, और मैंने राहत की सांस ली।

प्रिय कबीर, मैं यह पत्र डाक से नहीं भेज रही हूँ, इसलिए आपको चिंता करने की ज़रूरत नहीं है कि मैं आपके प्रति अत्यधिक प्रेम में पड़ जाऊँगी और भारतीय विदेश सेवा, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय और बाकी सभी योजनाओं में बाधा डाल दूँगी। अगर आपको लगता है कि मैं अनुचित थी, तो शायद थी, लेकिन मैंने पहले कभी प्यार नहीं किया है और यह निश्चित रूप से एक अनुचित भावना है—और एक ऐसी भावना जिसे मैं आपके लिए या किसी और के लिए फिर कभी महसूस नहीं करना चाहती।

मैंने मकड़ी-कमल के बीच बैठकर तुम्हारा पत्र पढ़ा, लेकिन मेरे मन में बस यही ख्याल आ रहा था कि मेरे पैरों के पास गुलमोहर के फूल खिले हैं और तुमने मुझसे कहा था कि मैं पाँच साल में अपनी सारी परेशानियाँ भूल जाऊँगी। हाँ, और हाँ, अपने बालों से कामिनी के फूल झाड़कर रोने का भी ख्याल आ रहा था।

दूसरा सपना—खैर, मैं आपको बताऊँ क्यों न, वैसे भी वो आप तक नहीं पहुँचेगा। हम दोनों किनारों से बहुत दूर एक नाव पर अकेले लेटे थे, और आप मुझे चूम रहे थे, और—ओह, वो परम आनंद था। फिर थोड़ी देर बाद आप उठे और बोले, 'मुझे अब चार चक्कर तैरने जाना है; अगर मैं तैरा तो हमारी टीम मैच जीत जाएगी, और अगर नहीं तैरा तो नहीं,' और आप मुझे नाव में अकेला छोड़कर चले गए। मेरा दिल बैठ गया, लेकिन आप जाने के लिए पूरी तरह दृढ़ थे। सौभाग्य से नाव डूबी नहीं, और मैंने अकेले ही

चप्पू चलाकर उसे किनारे तक पहुँचाया। मुझे लगता है कि आखिरकार मैं आपसे छुटकारा पा चुकी हूँ। कम से कम मुझे उम्मीद तो यही है। मैंने बंधनों से मुक्त कुंवारी रहने और अपना समय अंतरिक्ष, समय और कारण-कार्य संबंध, विकास और मूल्य और ईश्वर के स्वरूप के बारे में सोचने में लगाने का फैसला किया है।

तो हे प्रिय राजकुमार, हे प्रिय चूहे-राजकुमार, ईश्वर आपका भला करे, और आप धोबी-घाट के पास सुरक्षित, भले ही अस्त-व्यस्त हालत में, पहुंचें और जीवन में खूब तरक्की करें।

मेरे प्यारे कबीर, लता, तुम्हें भी मेरा पूरा प्यार।

लता ने पत्र को मोड़कर एक लिफाफा बनाया और उस पर कबीर का नाम लिखा। फिर, उसका पता लिखने के बजाय, उसने लिफाफे पर जगह-जगह कबीर का नाम कुछ और बार लिख दिया। इसके बाद उसने लिफाफे के कोने पर एक मुहर लगाई ('कुछ भी बर्बाद न करो, किसी चीज की कमी न हो') और उस पर 'डाक शुल्क देय' लिख दिया। अंत में, उसने पूरे लिफाफे को छोटे-छोटे टुकड़ों में फाड़ दिया और रोने लगी।

लता ने सोचा, अगर मैं जीवन में और कुछ हासिल न भी कर पाऊं, तो कम से कम मैं दुनिया के महान न्यूरोटिक लोगों में से एक तो बन ही जाऊंगी।

7.34

अमित ने लता को अगले दिन चटर्जी परिवार के यहाँ दोपहर के भोजन और चाय के लिए आमंत्रित किया।

उन्होंने कहा, 'मैंने सोचा कि मैं आपको यहाँ बुला लूँ ताकि आप हमें ब्रह्मस के सबसे उत्तम रूप में देख सकें। इला चट्टोपाध्याय, जिनसे आप परसों मिली थीं, वहाँ होंगी, साथ ही मेरी माँ की तरफ से एक चाची और चाचा और उनके सभी बच्चे भी होंगे। और अब तो विवाह के कारण आप भी

इस कुल का हिस्सा बन गई हैं।'

अगले दिन अमित के घर पर वे पारंपरिक बंगाली भोजन करने बैठे, जो पिछले सप्ताह की पार्टी के खाने से बिल्कुल अलग था। अमित को लगा कि लता ने पहले भी इस तरह का खाना खाया होगा। लेकिन जब उसने अपने सामने करेला और चावल की एक छोटी सी प्लेट देखी, तो वह इतनी हैरान हुई कि अमित को उसे बताना पड़ा कि अभी और भी व्यंजन आने वाले हैं।

अमित ने सोचा, यह अजीब बात है कि उसे इस बारे में पता नहीं था। हालांकि अरुण और मीनाक्षी की शादी से पहले वह खुद इंग्लैंड में रह चुका था, लेकिन उसे पता था कि मेहरा परिवार को चटर्जी के घर एक-दो बार दावत दी गई थी। लेकिन शायद इस तरह की दावत के लिए नहीं।

दोपहर का भोजन थोड़ा देर से शुरू हुआ। वे डॉ. इला चट्टोपाध्याय का इंतज़ार कर रहे थे, लेकिन अंत में बच्चों की भूख के कारण उन्होंने खाने का फैसला किया। अमित के चाचा श्री गांगुली एक अत्यंत कम बोलने वाले व्यक्ति थे, जिनकी सारी ऊर्जा खाने में ही लग जाती थी। उनके गाल तेज़ी से, लगभग एक सेकंड में दो बार हिलते थे, और कभी-कभार ही रुकते थे, जबकि उनकी सौम्य, भावहीन, बैल जैसी आँखें अपने मेज़बानों और साथी मेहमानों को देखती रहती थीं जो बातें कर रहे थे। उनकी पत्नी एक मोटी, अत्यधिक भावुक महिला थीं, जिनके बालों में बहुत सारा सिंदूर लगा रहता था और माथे के बीचोंबीच उतनी ही चमकदार लाल रंग की एक बड़ी बिंदी थी। वह एक सनसनीखेज गपशप करने वाली महिला थीं और अपने पान से सने बड़े मुँह से मछली की हड्डियाँ निकालते हुए, अपने सभी पड़ोसियों और अपने उन रिश्तेदारों की प्रतिष्ठा को तार-तार कर देती थीं जो वहाँ मौजूद नहीं थे। गबन, शराबखोरी, गुंडागर्दी, व्यभिचार: जो कुछ कहा जा सकता था, वह कहा जाता था और जो नहीं

कहा जा सकता था, उसका संकेत दिया जाता था। श्रीमती चटर्जी हैरान थीं, उन्होंने जितना है उससे कहीं अधिक हैरान होने का नाटक किया, और उनकी संगति का खूब आनंद लिया। उसे बस इस बात की चिंता थी कि उसके घर से चले जाने के बाद श्रीमती गांगुली उनके परिवार के बारे में, खासकर कुकू के बारे में क्या कहेंगी।

कुकु हमेशा की तरह बेफिक्र होकर खेल रही थी, तपन और अमित उसे और भी प्रोत्साहित कर रहे थे। थोड़ी देर में डॉ. इला चट्टोपाध्याय आ गईं ('मैं कितनी बेवकूफ औरत हूँ, मैं हमेशा लंच का समय भूल जाती हूँ। क्या मैं देर से आई हूँ? बेवकूफी भरा सवाल। हेलो। हेलो। हेलो। अरे, आप फिर? ललिता? लता? मुझे नाम कभी याद नहीं रहते') और माहौल और भी शोरगुल भरा हो गया।

बहादुर ने घोषणा की कि काकोली के लिए एक फोन कॉल आया है।

उसके पिता ने कहा, 'जिस किसी को भी यह देना हो, उसे बता देना कि कुकू दोपहर के भोजन के बाद इसे ले लेगी।'

'ओह, बाबा!' कुकू ने नम निगाहों से अपने पिता की ओर देखा।

'यह कौन है?' न्यायमूर्ति चटर्जी ने बहादुर से पूछा।

'वह जर्मन साहब।'

श्रीमती गांगुली की बुद्धिमान, सूअर जैसी आंखें एक चेहरे से दूसरे चेहरे पर तेजी से घूम रही थीं।

'ओह बाबा, ये तो हंस है। मुझे जाना होगा।' 'हंस' शब्द को उसने विनती भरे लहजे में लंबा खींचकर बोला।

न्यायमूर्ति चटर्जी ने हल्के से सिर हिलाया, और कुकू उछलकर फोन की ओर दौड़ पड़ी।

जब काकोली मेज पर लौटी, तो बच्चों को छोड़कर बाकी सब उसकी ओर मुड़ गए। बच्चे टमाटर की चटनी बड़े चाव से खा रहे थे, और उनकी माँ

उन्हें डांट भी नहीं रही थी, क्योंकि वह कुकू की बात सुनने के लिए इतनी उत्सुक थी।

लेकिन कुकू का ध्यान प्रेम से हटकर भोजन की ओर मुड़ गया था। 'ओह, गुलाब जामुन,' उसने बिस्वास बाबू की नकल करते हुए कहा, 'और चमचम! और मिष्टी दही। ओह—भेरी स्मृति मेरे शालीभेरी जूस को बहने पर मजबूर कर देती है।'

'कुकु।' न्यायमूर्ति चटर्जी बेहद नाराज हुए।

'माफ़ करना बाबा। माफ़ करना। माफ़ करना। मुझे भी गपशप में शामिल होने दीजिए। मेरी गैरमौजूदगी में आप लोग किस बारे में बात कर रहे थे?'

'कुकू, एक संदेश खा लो,' उसकी माँ ने कहा।

'तो, दीपांकर,' डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने कहा। 'क्या तुमने अपना विषय बदल लिया है?'

'मैं नहीं कर सकता, इला काकी,' दीपांकर ने कहा।

'क्यों नहीं? जितनी जल्दी आप यह कदम उठाएंगे, उतना ही अच्छा होगा। मैं एक भी ऐसे सभ्य इंसान को नहीं जानता जो अर्थशास्त्री हो। आप क्यों नहीं बदल सकते?'

क्योंकि मैंने पहले ही स्नातक की उपाधि प्राप्त कर ली है।

'ओह!' डॉ. इला चट्टोपाध्याय क्षण भर के लिए स्तब्ध रह गईं। 'और आप अपने साथ क्या करने जा रहे हैं?'

मैं एक-दो सप्ताह में फैसला कर लूंगा। पुल मेले में जाकर मैं इस बारे में सोचूंगा। यह मेरे लिए आध्यात्मिक और बौद्धिक संदर्भ में आत्म-मूल्यांकन का समय होगा।

डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने एक संदेश तोड़ते हुए कहा: 'सच में, लता, क्या तुमने कभी ऐसी बेतुकी बातें सुनी हैं? मुझे कभी समझ नहीं आया कि "आध्यात्मिक संदर्भ" का क्या मतलब होता है। आध्यात्मिक बातें तो

समय की सरासर बर्बादी हैं। मैं पुल मेले जैसी किसी जगह जाने के बजाय तुम्हारी चाची की गपशप और तुम्हारी माँ के दिखावटी कष्ट सहने की आदत को सुनना ज़्यादा पसंद करूँगी। क्या यह बहुत गंदा नहीं है?' उन्होंने दीपांकर की ओर मुड़कर कहा, 'ब्रह्मपुर किले के ठीक नीचे रेत की एक पट्टी पर लाखों तीर्थयात्री जमा होते हैं? और वहाँ सब कुछ करते हैं।'

दीपांकर ने कहा, 'मुझे नहीं पता। मैं कभी गया नहीं। लेकिन यह बहुत ही सुनियोजित होता है। हर छह साल में होने वाले इस भव्य पुल मेले के लिए एक जिला मजिस्ट्रेट विशेष रूप से नियुक्त किया जाता है। इस साल यह छठा साल है, इसलिए स्नान करना विशेष रूप से शुभ माना जाता है।'

डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने कहा, 'गंगा एक बेहद गंदी नदी है। मुझे उम्मीद है कि आप इसमें स्नान करने का इरादा नहीं रखते... अरे, दीपांकर, पलकें झपकाना बंद करो, इससे मेरी एकाग्रता भंग होती है।'

दीपांकर ने कहा, 'अगर मैं स्नान करूँ, तो न केवल मेरे अपने पाप धुल जाएँगे, बल्कि मुझसे छह पीढ़ियों पहले के पाप भी धुल जाएँगे। शायद उनमें आप भी शामिल हों, इला काकी।'

'भगवान न करे,' डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने कहा।

लता की ओर मुड़ते हुए दीपांकर ने कहा, 'लता, तुम्हें भी आना चाहिए। आखिर तुम ब्रह्मपुर से हो।'

'मैं वास्तव में ब्रह्मपुर से नहीं हूं,' लता ने डॉ. इला चट्टोपाध्याय की ओर एक नजर डालते हुए कहा।

'तो आप कहाँ से हैं?' दीपांकर ने पूछा।

'अब कहीं नहीं,' लता ने कहा।

'खैर,' दीपांकर ने गंभीरता से आगे कहा, 'मुझे लगता है कि मैंने तुम्हारी माँ को आने के लिए मना लिया है।'

लता ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मुझे शक है।' वह श्रीमती रूपा मेहरा और

दीपांकर को पुल मेले की भीड़ और समय एवं कारण के पेचीदगियों में एक-दूसरे का मार्गदर्शन करते हुए देखना चाहती थी। 'वह उस समय ब्रह्मपुर में नहीं होंगी। लेकिन आप ब्रह्मपुर में कहाँ रहेंगे?'

'रेत पर—मुझे किसी के तंबू में जगह मिल जाएगी,' दीपांकर ने आशावादी होकर कहा।

'क्या आप ब्रह्मपुर में किसी को नहीं जानते?'

'नहीं। खैर, सविता तो है ही। और एक बूढ़े श्री मैत्रा हैं जो किसी न किसी तरह से हमारे रिश्तेदार हैं, जिनसे मैं बचपन में एक बार मिला था।'

लता ने कहा, 'वहाँ पहुँचकर सविता और उसके पति से ज़रूर मिलना। मैं प्राण को लिख दूँगी कि तुम आ रही हो। अगर रेत खत्म हो जाए तो तुम उनके साथ रह सकती हो। वैसे भी, किसी अनजान शहर में पता और फ़ोन नंबर होना काम आता है।'

'धन्यवाद,' दीपांकर ने कहा। 'ओह, आज रात रामकृष्ण मिशन में लोकप्रिय धर्म और उसके दार्शनिक आयामों पर एक व्याख्यान है। आप क्यों नहीं आते? इसमें पुल मेला का भी जिक्र जरूर होगा।'

'सच में, दीपांकर, तुम मेरी सोच से भी ज़्यादा बेवकूफ हो,' डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने अपने भतीजे से कहा। 'मैं तुम पर अपना समय क्यों बर्बाद कर रही हूँ? तुम भी उस पर अपना समय बर्बाद मत करो,' उन्होंने लता को सलाह दी। 'मैं अमित से बात करने जा रही हूँ। वो कहाँ है?'

अमित बगीचे में था। बच्चों ने उसे लिली के तालाब में मेंढक के अंडे दिखाने के लिए मजबूर किया था।

7.35

हॉल लगभग भरा हुआ था। लगभग दो सौ लोग रहे होंगे, हालांकि लता ने गौर किया कि उनमें से केवल पाँच महिलाएँ थीं। अंग्रेजी में दिया जाने वाला व्याख्यान ठीक समय पर, सात बजे शुरू हुआ। प्रोफेसर दत्ता-रे

(जिन्हें खांसी थी) ने वक्ता का परिचय देते हुए श्रोताओं को उस युवा विद्वान की जीवनी और योग्यताओं के बारे में बताया और कुछ मिनटों तक इस बात पर अटकलें लगाते रहे कि वे क्या कहेंगे।

युवा वक्ता खड़ा हुआ। वह देखने में बिलकुल भी ऐसा नहीं लग रहा था जैसे वह, जैसा कि प्रोफेसर ने कहा था, पाँच वर्षों से साधु रहा हो। उसका चेहरा गोल और चिंतित था। उसने कड़क इस्त्री किया हुआ कुर्ता और धोती पहनी हुई थी, और कुर्ते की जेब में दो कलम थीं। उसने लोकप्रिय धर्म और उसके दार्शनिक पहलुओं पर बात नहीं की, हालाँकि उसने एक बार पुल मेले का ज़िक्र अप्रत्यक्ष रूप से किया, 'यह विशाल जनसमूह जो पूर्णिमा की रोशनी में स्नान करने के लिए गंगा के किनारे इकट्ठा होगा'। अधिकतर समय उसने धैर्यवान श्रोताओं को बेहद साधारण भाषण दिया। वह एक विशाल भूभाग पर उड़ता और घूमता रहा, और यह मान रहा था कि उसकी बातें एक समझने योग्य ढाँचा बना लेंगी।

कुछ वाक्यों के बाद, वह अपने हाथों को एक कोमल, सर्वव्यापी भाव से फैलाता था, मानो कोई पक्षी अपने पंख फैला रहा हो।

दीपांकर तल्लीन दिख रहा था, अमित ऊबा हुआ था, लता असमंजस में थी।

वक्ता अब पूरे जोश में थे: 'मानवता को वर्तमान में साकार करना होगा... मन के क्षितिजों को तोड़ना होगा... चुनौती आंतरिक है... जन्म एक अद्भुत घटना है... पक्षी पत्ते के विशाल कंपन को महसूस करता है... लोकप्रिय और दार्शनिक के बीच एक पवित्र संबंध बनाए रखा जा सकता है... एक खुला मन जिसके माध्यम से जीवन प्रवाहित हो सके, जिसके माध्यम से कोई पक्षियों का गीत सुन सके, अंतरिक्ष-समय की प्रेरणा को महसूस कर सके।'

अंततः, एक घंटे बाद, वह उस महत्वपूर्ण प्रश्न पर पहुंचा:

‘क्या मानवता यह भी बता सकती है कि नई प्रेरणा कहाँ से उत्पन्न होगी? क्या हम अपने भीतर के उन घोर अंधकारों को भेद सकते हैं जहाँ प्रतीकों का जन्म होता है? मैं कहता हूँ कि हमारे अनुष्ठान, चाहे आप उन्हें लोकप्रिय कहें, इस अंधकार को भेदते हैं। इसका विकल्प मन की मृत्यु है, और यह “पुनर्मृत्यु” या पुनर्मृत्यु नहीं है, जिसका हमारे शास्त्रों में “पुनर्जन्म” के लिए पहला उल्लेख है, बल्कि परम मृत्यु है, अज्ञान की मृत्यु। तो मैं आप सभी से कहना चाहता हूँ’— उन्होंने श्रोताओं की ओर बाहें फैलाईं—‘कि आपत्ति करने वाले चाहे जो कहें, प्राचीन पवित्रता के रूपों को संरक्षित करके ही, चाहे वे दार्शनिक दृष्टि से कितने ही विकृत या अंधविश्वासी क्यों न लगें, हम अपनी मौलिकता, अपने लोकाचार, अपने विकास, अपने मूल तत्व को बनाए रख सकते हैं।’ वे बैठ गए।

अमित ने लता से कहा, 'हमारे अंडे के छिलके।'

दर्शकों ने संशयपूर्ण ढंग से तालियाँ बजाईं।

लेकिन अब आदरणीय प्रोफेसर दत्ता-रे, जिन्होंने पहले तो वक्ता का इतने स्नेहपूर्वक परिचय कराया था, उठ खड़े हुए और वक्ता पर स्पष्ट शत्रुतापूर्ण निगाहें डालते हुए, उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को ध्वस्त करने लगे। (यह स्पष्ट था कि प्रोफेसर स्वयं को भाषण में उल्लिखित 'आपत्तिकर्ताओं' में से एक मानते थे।) लेकिन क्या भाषण में कोई सिद्धांत थे भी? एक लहजा तो अवश्य था, लेकिन लहजे को ध्वस्त करना कठिन था। खैर, प्रोफेसर ने कोशिश की, उनकी आवाज, जो पहले तो सौम्य थी, धीरे-धीरे कर्कश होकर युद्धघोष में बदल गई:

हमें स्वयं को धोखा नहीं देना चाहिए! क्योंकि यद्यपि यह अक्सर सच हो सकता है कि सिद्धांत आंतरिक रूप से तर्कसंगत हों, फिर भी उन्हें केवल उदाहरण स्वरूप साक्ष्यों से ही सिद्ध या खंडित करना असंभव है; वास्तव में, व्यवहार में यह जानना कठिन है कि क्या वे मुख्य प्रश्न के संदर्भ में

आते हैं, जो कि प्रवृत्ति पर प्रकाश तो डाल सकता है, लेकिन यह शायद ही बता सकता है कि क्या इसका उत्तर व्यापक रूप से विकसित होते स्वरूपों के संदर्भ में ठोस रूप से दिया जा सकता है; इस परिप्रेक्ष्य में, यद्यपि यह सिद्धांत अज्ञानी व्यक्ति को सुस्थापित प्रतीत हो सकता है, यह मूल कठिनाई के विश्लेषण के रूप में बाध्यकारी नहीं है, जिसकी जड़ें उन विचारों में निहित हैं जिन्हें हमें कहीं और देखना होगा; स्पष्ट रूप से कहें तो, इसकी व्याख्या करने में विफलता इसे अप्रासंगिक बना देती है, भले ही यह वास्तव में इसे खंडित न करे; लेकिन ऐसा कहना संपूर्ण विश्लेषणात्मक ढांचे के आधार को ही नष्ट करना है, और सबसे प्रासंगिक और ठोस तर्क को छोड़ना पड़ेगा।

वक्ता की ओर विजय और द्वेषपूर्ण भाव से देखते हुए उसने आगे कहा: 'व्यापक रूप से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि, अन्य सभी चीजें समान होने पर, विशिष्ट सामान्यीकरण नहीं करना चाहिए जब सामान्य विशिष्टीकरण समान रूप से उपलब्ध हों - और कहीं अधिक कम व्यर्थ प्रभाव के साथ उपलब्ध हों।'

दीपांकर हैरान दिख रहा था, अमित ऊब गया था, लता हैरान थी.

श्रोताओं में से कई लोग प्रश्न पूछना चाहते थे, लेकिन अमित का मन भर चुका था। लता स्वेच्छा से और दीपांकर अनिच्छा से हॉल से बाहर चले गए। उन्हें हल्का चक्कर आ रहा था, और यह केवल उन अमूर्त विचारों के कारण नहीं था जिन पर उन्होंने अभी-अभी चर्चा की थी। अंदर बहुत गर्मी और घुटन थी।

एक-दो मिनट तक उनमें से कोई नहीं बोला। लता, जिसने अमित की ऊब को भांप लिया था, उम्मीद कर रही थी कि वह अपनी झुंझलाहट दिखाएगा और दीपांकर विरोध करेगा। लेकिन अमित ने बस इतना कहा:

जब मुझे ऐसी किसी स्थिति का सामना करना पड़ता है, और अगर मेरे

पास कागज और पेंसिल न हो, तो मैं वक्ता द्वारा इस्तेमाल किए गए किसी भी शब्द—जैसे "पक्षी", "कपड़ा", "केंद्रीय" या "नीला"—को लेकर और उनके विभिन्न रूपों की कल्पना करने की कोशिश करके अपना मनोरंजन करता हूं।

‘क्या “केंद्रीय” जैसे शब्द भी?’ लता ने इस विचार पर हंसते हुए पूछा।

अमित ने कहा, 'वे भी। अधिकांश शब्द अर्थपूर्ण होते हैं।'

उसने अपनी जेब में एक आना टटोला और एक विक्रेता से ताजे सफेद बेला फूलों की एक छोटी, सुगंधित माला खरीदी। 'लो,' उसने लता को देते हुए कहा।

लता बेहद प्रसन्न होकर बोली, 'धन्यवाद,' और एक प्रसन्न मुस्कान के साथ उसकी सुगंध को सूंघने के बाद, उसने उसे सहजता से अपने बालों में लगा लिया।

उसके हावभाव में कुछ ऐसा सुखद, स्वाभाविक और सरल था कि अमित सोचने लगा: वह मेरी बहनों से ज़्यादा बुद्धिमान तो हो सकती है, लेकिन मुझे खुशी है कि वह इतनी संभली हुई नहीं है। वह बहुत समय बाद मिली सबसे अच्छी लड़की है।

लता मन ही मन सोच रही थी कि मीनाक्षी का परिवार उसे कितना पसंद है। उन्होंने उसे उसकी खुद की बनाई हुई बेवजह की परेशानियों से बाहर निकाला था। उनकी संगति में, अभी-अभी सुने गए इस प्रवचन का भी किसी न किसी रूप में आनंद लिया जा सकता था।

7.36

न्यायमूर्ति चटर्जी अपने अध्ययन कक्ष में बैठे थे। उनके सामने एक अधर में लिखा हुआ फैसला पड़ा था। उनकी मेज पर उनके माता-पिता की एक श्वेत-श्याम तस्वीर और उनकी, उनकी पत्नी और उनके पांच बच्चों की एक और तस्वीर रखी थी, जो कई साल पहले कलकत्ता के एक प्रसिद्ध

स्टूडियो में खींची गई थी। जिद्दी बच्ची काकोली ने अपने टेडी बियर को भी तस्वीर में शामिल करने की जिद की थी; तपन उस समय इतना छोटा था कि वह अपनी इच्छा को स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं कर सकता था।

इस मामले में डकैतों के एक गिरोह के छह सदस्यों की मौत की सजा की पुष्टि का फैसला सुनाया गया था। ऐसे मामले न्यायमूर्ति चटर्जी को बहुत कष्ट देते थे। उन्हें आपराधिक मामलों से जुड़े काम बिल्कुल पसंद नहीं थे और वे सिविल मामलों में स्थानांतरित होने की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो बौद्धिक रूप से अधिक उत्तेजक और कम तनावपूर्ण थे। इसमें कोई संदेह नहीं था कि इन छह लोगों को कानून के अनुसार दोषी पाया गया था और सत्र न्यायाधीश का फैसला अनुचित या अनुचित नहीं था। इसलिए न्यायमूर्ति चटर्जी जानते थे कि वे इसे रद्द नहीं करेंगे। हो सकता है कि उनमें से सभी ने जानबूझकर उन लोगों की हत्या करने का इरादा न किया हो जिन्हें वे लूट रहे थे, लेकिन भारतीय दंड संहिता के तहत, डकैती-सह-हत्या के मामले में प्रत्येक अपराधी अपने कृत्य के लिए व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी होता है।

यह मामला सर्वोच्च न्यायालय के लिए उपयुक्त नहीं था। कलकत्ता उच्च न्यायालय ही अंतिम प्रभावी अपील न्यायालय था। वह न्यायाधीश और उनके साथी न्यायाधीश दोनों ही फैसले पर हस्ताक्षर करेंगे, और इन दोनों का अंत यहीं होगा। कुछ सप्ताह बाद एक सुबह, उन्हें अलीपुर जेल में फांसी दे दी जाएगी।

न्यायमूर्ति चटर्जी ने एक-दो मिनट तक अपने परिवार की तस्वीर देखी और फिर अपने कमरे का जायजा लिया। तीन दीवारों पर हल्के पीले रंग की आधी-काफ या गहरे नीले रंग की जिल्द वाली कानून की किताबें लगी थीं: इंडियन लॉ रिपोर्ट्स, ऑल इंडिया रिपोर्टर, इनकम टैक्स रिपोर्ट्स, ऑल इंग्लैंड लॉ रिपोर्ट्स, हैल्सबरी लॉज़, कुछ पाठ्यपुस्तकें और सामान्य

न्यायशास्त्र की किताबें, भारत का संविधान (लगभग एक साल पुराना) और विभिन्न संहिताएँ और कानून, साथ ही उनकी व्याख्याएँ। यद्यपि उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के पुस्तकालय से अब उन्हें ज़रूरत की सभी किताबें मिल जाती थीं, फिर भी वे उन पत्रिकाओं की सदस्यता लेते रहे जिनकी वे हमेशा से लेते आए थे। वे इस श्रृंखला को बंद नहीं करना चाहते थे, आंशिक रूप से इसलिए कि उन्हें कभी-कभी घर पर अपने फैसले लिखना अच्छा लगता था, और आंशिक रूप से इसलिए कि उन्हें उम्मीद थी कि अमित उनके नक्शेकदम पर चलेगा—ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने अपने पिता के नक्शेकदम पर चलकर, स्वयं और बाद में अपने बेटे के लिए भी, योग्यता प्राप्त करने के लिए एक ही संस्थान चुना था।

आज दोपहर न्यायमूर्ति चटर्जी के मेज़बान के रूप में अपने कर्तव्यों से बचने का कारण उनका मानसिक अभाव नहीं था, न ही वह मोटी गपशप करने वाली महिला, और न ही उसके बच्चों का शोर, जिनसे उन्हें वास्तव में बहुत स्नेह था। दरअसल, गपशप करने वाली महिला के पति, श्री गांगुली, दोपहर के भोजन के दौरान लंबे समय तक चुप रहने के बाद अचानक बरामदे में आकर अपने पसंदीदा महान व्यक्ति - हिटलर - के बारे में बात करने लगे: हिटलर, जिसकी मृत्यु को छह साल हो चुके थे, लेकिन फिर भी वे उसे देवता की तरह पूजते थे। अपनी नीरस आवाज़ में, जैसे जुगाली कर रहे हों, उन्होंने उसी तरह का एकालाप शुरू कर दिया था जैसा न्यायमूर्ति चटर्जी ने उनसे पहले दो बार सुना था: कैसे नेपोलियन (एक और महान बंगाली नायक) भी हिटलर के स्तर तक नहीं पहुँच पाया, कैसे हिटलर ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस की मदद की थी जब वे भयानक अंग्रेजों से लड़ना चाहते थे, भारत-जर्मनी का बंधन कितना प्राचीन और प्रशंसनीय था, और यह कितना दुखद था कि जर्मन और ब्रिटिश एक महीने के भीतर आधिकारिक तौर पर 1939 से चले आ रहे युद्ध को

समाप्त कर देंगे। (न्यायमूर्ति चटर्जी को लगा कि यह सही समय है, लेकिन उन्होंने ऐसा कहा नहीं; उन्होंने इस एकालाप में उलझने से इनकार कर दिया।)

दोपहर के भोजन के दौरान काकोली के 'जर्मन साहब' का ज़िक्र होने पर, इस व्यक्ति ने इस संभावना पर संतोष व्यक्त किया कि 'भारत-जर्मन संबंध' उसके अपने परिवार में भी प्रकट हो सकता है। न्यायमूर्ति चटर्जी ने कुछ देर तक सौहार्दपूर्ण अरुचि के साथ सुना; फिर उन्होंने विनम्रतापूर्वक बहाना बनाया, उठे और वापस नहीं लौटे।

न्यायमूर्ति चटर्जी को हंस से कोई शिकायत नहीं थी। उन्होंने हंस को जितना देखा था, उतना पसंद किया था। हंस सुंदर, सलीके से कपड़े पहने हुए और हर तरह से सभ्य था, और उसका व्यवहार मनोरंजक लेकिन आक्रामक विनम्रता से भरा था। काकोली उसे बहुत पसंद करती थी। समय के साथ शायद वह लोगों के हाथों को चोट पहुँचाना भी छोड़ देगा। लेकिन न्यायमूर्ति चटर्जी को जो बात बर्दाश्त नहीं हुई, वह थी उनकी पत्नी के रिश्तेदार द्वारा प्रदर्शित एक विशेष प्रकार का व्यवहार—जो बंगाल में आम था: जर्मनी और जापान भागकर बाद में अंग्रेजों से लड़ने के लिए भारतीय राष्ट्रीय सेना की स्थापना करने वाले देशभक्त सुभाष बोस का अंधभक्तिपूर्ण महिमामंडन; हिटलर, फासीवाद और हिंसा की प्रशंसा; ब्रिटिश या 'छद्म-ब्रिटिश उदारवाद' से कलंकित हर चीज की निंदा; और धूर्त और डरपोक गांधी के प्रति घृणा, जिसने कई साल पहले चुनाव जीतकर बोस को कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष पद से बेदखल कर दिया था। नेताजी सुभाष चंद्र बोस बंगाली थे, और न्यायमूर्ति चटर्जी को बंगाली होने पर उतना ही गर्व था जितना भारतीय होने पर, लेकिन वे—अपने पिता, 'पुराने श्री चटर्जी' की तरह—इस बात से बेहद आभारी थे कि सुभाष बोस जैसे नेता कभी देश पर शासन करने में सफल नहीं हुए। उनके पिता

सुभाष बोस के शांत स्वभाव वाले और उतने ही देशभक्त भाई शरत को अधिक पसंद करते थे, जो स्वयं भी एक वकील थे और जिन्हें वे जानते थे और एक तरह से उनकी प्रशंसा भी करते थे।

न्यायमूर्ति चटर्जी ने सोचा, अगर यह व्यक्ति मेरी पत्नी का रिश्तेदार न होता, तो मैं रविवार की दोपहर इसके साथ बर्बाद करना बिल्कुल नहीं चाहता। परिवार में स्वभाव की विविधता बहुत अधिक होती है—और जान-पहचान वालों के विपरीत, इन्हें भुलाया नहीं जा सकता। और हम तब तक रिश्तेदार बने रहेंगे जब तक हममें से कोई एक मर न जाए।

न्यायमूर्ति चटर्जी का मानना था कि मृत्यु पर ऐसे विचार, जीवन का ऐसा अवलोकन, उनके लगभग अस्सी वर्षीय पिता के लिए अधिक उपयुक्त थे, न कि उनके लिए। लेकिन वृद्ध व्यक्ति अपनी बिल्ली और संस्कृत ग्रंथों (साहित्यिक, धार्मिक नहीं) के अपने अवकाशपूर्ण पठन में इतने मग्न प्रतीत होते थे कि वे मृत्यु या समय के बीतने के बारे में शायद ही कभी सोचते थे। उनकी पत्नी का निधन उनके विवाह के दस वर्ष बाद हो गया था, और उसके बाद उन्होंने उनका ज़िक्र बहुत कम किया था। क्या वे इन दिनों उनके बारे में ज़्यादा सोचते थे? कुछ दिन पहले उन्होंने अपने बेटे से कहा था, 'मुझे वे पुराने नाटक पढ़ना अच्छा लगता है। राजा, राजकुमारी, दासी—उस समय जो भी विचार थे, वे आज भी सच हैं। जन्म, चेतना, प्रेम, महत्वाकांक्षा, घृणा, मृत्यु, सब एक समान। सब एक समान।'

अचानक न्यायमूर्ति चटर्जी को एहसास हुआ कि वे स्वयं अपनी पत्नी के बारे में बहुत कम सोचते थे। उनकी मुलाकात ब्रह्म समाज द्वारा आयोजित युवाओं के लिए विशेष उत्सवों में से एक में हुई थी—उन्हें क्या कहते थे? जहाँ किशोर-युवा एक-दूसरे से मिलते थे—जुबोक जुबोटी दिबोष। उनके पिता को उनकी पत्नी पसंद आ गई थीं और उन्होंने शादी कर ली थी। उनका रिश्ता अच्छा था; घर का कामकाज सुचारू रूप से चल रहा था;

बच्चे, भले ही थोड़े सनकी थे, लेकिन बच्चों के हिसाब से बुरे नहीं थे। वे शाम का शुरुआती समय क्लब में बिताते थे। उनकी पत्नी इस बारे में बहुत कम शिकायत करती थीं; वास्तव में, उन्हें संदेह था कि उन्हें शाम का शुरुआती समय बच्चों के साथ अकेले बिताने में कोई आपत्ति नहीं थी।

वह उनके जीवन में तीस वर्षों से मौजूद थी। अगर वह न होती तो उन्हें उसकी कमी ज़रूर खलती। लेकिन वह अपना ज़्यादातर समय अपने बच्चों के बारे में सोचने में बिताते थे—खासकर अमित और काकोली के बारे में, जिनकी वजह से उन्हें चिंता रहती थी—उनकी तुलना में। और शायद यही बात उनकी पत्नी पर भी लागू होती थी। उनकी बातचीत, जिसमें अमित और दीपांकर को अल्टीमेटम देने वाली हालिया बातचीत भी शामिल है, ज़्यादातर बच्चों के बारे में ही होती थी: 'कुकू हर समय फ़ोन पर रहती है, और मुझे कभी पता नहीं चलता कि वह किससे बात कर रही है। और अब तो वह अजीब समय पर बाहर जाने लगी है, और मेरे सवालों से बचती है।' 'अरे, उसे रहने दो। उसे पता है वह क्या कर रही है।' 'अच्छा, तुम्हें तो पता ही है लाहिरी लड़की का क्या हुआ था।' और इस तरह बातचीत शुरू होती थी। उनकी पत्नी गरीबों के लिए एक स्कूल की समिति में थीं और महिलाओं के लिए प्रिय अन्य सामाजिक कार्यों में भी शामिल थीं, लेकिन उनकी सबसे बड़ी इच्छा अपने बच्चों के कल्याण पर केंद्रित थी। उनकी सबसे बड़ी इच्छा यही थी कि उनकी शादी हो जाए और वे अच्छी तरह से बस जाएं।

मीनाक्षी और अरुण मेहरा की शादी से वह पहले तो बहुत परेशान थीं। स्वाभाविक रूप से, अपर्णा के जन्म के बाद उनका मन बदल गया। लेकिन न्यायमूर्ति चटर्जी ने इस मामले में शालीनता और मर्यादा का व्यवहार किया, फिर भी शादी को लेकर उनकी बेचैनी कम होने के बजाय बढ़ती ही जा रही थी। एक तो अरुण की मां थीं, जो उनकी नज़र में एक अजीब

महिला थीं—अत्यधिक भावुक और छोटी-छोटी बातों का बतंगड़ बनाने वाली। (उन्होंने सोचा था कि वह चिंता नहीं करतीं, लेकिन मीनाक्षी ने उन्हें पदकों के मामले में अपना पक्ष बता दिया था।) और फिर मीनाक्षी थीं, जो कभी-कभी ठंडे स्वार्थ की झलक दिखाती थीं, जिसे एक पिता होने के नाते भी वह पूरी तरह से अनदेखा नहीं कर सकते थे; उन्हें मीनाक्षी की याद आती थी, लेकिन जब वह घर पर रहती थीं, तब उनके नाश्ते के समय की बातचीत अब की तुलना में कहीं अधिक तीखी होती थी।

अंत में, अरुण स्वयं थे। न्यायमूर्ति चटर्जी उनकी लगन और बुद्धिमत्ता का सम्मान करते थे, लेकिन बाकी किसी बात का नहीं। उन्हें अरुण अनावश्यक रूप से आक्रामक और घमंडी लगते थे। वे कलकत्ता क्लब में कभी-कभार मिलते थे, लेकिन उनके बीच बातचीत के लिए कुछ खास नहीं होता था। क्लब में दोनों अपने-अपने समूह में बैठते थे, जो उनकी उम्र और पेशे के अंतर के अनुरूप थे। अरुण के समूह के लोग उन्हें अनावश्यक रूप से शोरगुल वाले लगते थे, जो क्लब के ताड़ के पेड़ों और दीवारों के अनुरूप नहीं थे। लेकिन शायद यह उम्र की वजह से होने वाली असहिष्णुता थी, न्यायमूर्ति चटर्जी ने सोचा। समय उनके सामने बदल रहा था, और वे ठीक उसी तरह प्रतिक्रिया दे रहे थे जैसे हर कोई—राजा, राजकुमारी, नौकरानी—उसी स्थिति में प्रतिक्रिया देता है।

लेकिन किसने सोचा होगा कि हालात इतने बदल जाएंगे और इतनी तेज़ी से बदलेंगे। दस साल से भी कम समय पहले हिटलर ने इंग्लैंड को अपने शिकंजे में ले रखा था, जापान ने पर्ल हार्बर पर बमबारी की थी, गांधी जी जेल में भूख हड़ताल पर थे जबकि चर्चिल बेसब्री से यह जानने की कोशिश कर रहे थे कि गांधी जी अभी तक मरे क्यों नहीं, और टैगोर का अभी-अभी निधन हुआ था। अमित छात्र राजनीति में सक्रिय थे और अंग्रेजों द्वारा जेल भेजे जाने के खतरे में थे। तपन तीन साल का था और

गुर्दे की सूजन से लगभग मर ही गया था। लेकिन उच्च न्यायालय में सब कुछ ठीक चल रहा था। युद्ध लाभ अधिनियम और अतिरिक्त आय अधिनियम पर आधारित मामलों से जूझते हुए एक बैरिस्टर के रूप में उनका काम और भी दिलचस्प होता जा रहा था। उनकी बुद्धिमत्ता में कोई कमी नहीं आई थी और बिस्वास बाबू की बेहतरीन फाइलिंग प्रणाली ने उनकी भूलने की आदत को काबू में रखा हुआ था।

आजादी के पहले ही साल उन्हें न्यायाधीश पद की पेशकश की गई थी, जिससे उनके पिता और उनके क्लर्क उनसे भी ज्यादा खुश थे। हालांकि बिस्वास बाबू जानते थे कि उन्हें खुद कोई नई नौकरी ढूंढनी पड़ेगी, लेकिन परिवार पर गर्व और वंशानुगत परंपरा के प्रति उनके लगाव ने उन्हें इस बात से प्रसन्न कर दिया था कि अब उनके मालिक के साथ, उनके पिता की तरह, लाल, सफेद और सुनहरे रंग की वर्दी पहने एक पगड़ीधारी सेवक चलेगा। उन्हें इस बात का अफसोस था कि अमित बाबू तुरंत अपने पिता के पेशे को संभालने के लिए तैयार नहीं थे; लेकिन उन्होंने सोचा था कि इसमें दो साल से ज्यादा समय नहीं लगेगा।

7.37

जिस पीठ में न्यायमूर्ति चटर्जी शामिल हुए थे, वह उस पीठ से बिल्कुल अलग थी जिसकी उन्होंने कुछ साल पहले तक कल्पना भी नहीं की थी। वे अपनी बड़ी महोगनी की मेज से उठे और उस शेल्फ की ओर गए जिस पर ऑल इंडिया रिपोर्टर के हाल के अंक पीले, लाल, काले और सुनहरे रंग की जिल्दों में रखे थे। उन्होंने दो अंक - कलकत्ता 1947 और कलकत्ता 1948 - उतारे और दोनों के पहले पन्नों की तुलना करने लगे। जैसे-जैसे वे उनकी तुलना करते गए, उन्हें उस देश की स्थिति पर गहरा दुख हुआ जिसे वे बचपन से जानते थे, और वास्तव में अपने मित्रों के समूह, विशेषकर अंग्रेज और मुस्लिम मित्रों पर भी।

बिना किसी स्पष्ट कारण के, अचानक उसे अपने एक बेहद असामाजिक अंग्रेज़ डॉक्टर की याद आ गई, जो उसका दोस्त था और (उसकी ही तरह) अपने घर पर होने वाली पार्टियों से भाग जाता था। वह किसी आपात स्थिति का बहाना बनाता—शायद किसी मरणासन्न मरीज़ का—और गायब हो जाता। फिर वह बंगाल क्लब जाता, जहाँ वह एक ऊँची कुर्सी पर बैठकर जितनी हो सके उतनी व्हिस्की पीता। डॉक्टर की पत्नी, जो ये बड़ी-बड़ी पार्टियाँ देती थी, खुद भी काफी सनकी थी। वह एक बड़ी टोपी पहनकर साइकिल पर घूमती थी, जिसके नीचे से वह दुनिया की हर चीज़ को बिना पहचाने—या कम से कम उसे ऐसा लगता था—देख सकती थी। उसके बारे में कहा जाता था कि एक बार वह फ़िरपो के यहाँ डिनर पर अपने कंधों पर काले लेस का अंडरवियर डाले हुए पहुँची थी। ज़ाहिर है, अपनी नासमझी के कारण, उसने सोचा था कि वह एक शॉल है।

न्यायमूर्ति चटर्जी मुस्कुराए बिना नहीं रह सके, लेकिन तुलना के लिए खोले गए दो पन्नों को देखते ही उनकी मुस्कान गायब हो गई। उन दो पन्नों में एक साम्राज्य के पतन और दो देशों के जन्म की कहानी सूक्ष्म रूप से झलक रही थी, जो इस दुखद और अज्ञानतापूर्ण धारणा पर आधारित थी कि विभिन्न धर्मों के लोग एक साथ शांतिपूर्वक नहीं रह सकते।

न्यायमूर्ति चटर्जी ने अपनी विधि-पुस्तकों में टिप्पणियाँ लिखने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली लाल पेंसिल से, 1947 के अंक में उन नामों के आगे एक छोटा सा 'x' चिह्न लगाया, जो ठीक एक वर्ष बाद, 1948 में प्रकाशित नहीं हुए थे। यह सूची उनके द्वारा किए गए कार्य के बाद इस प्रकार दिखाई दी:

कलकत्ता उच्च न्यायालय 1947

मुख्य न्यायाधीशों
माननीय सर आर्थर ट्रेवर हैरिस, नाइट, बार-एट-लॉ।
माननीय सर रूपेंद्र कुमार मित्तर, नाइट, एम.एससी., एम.एल. (कार्यवाहक)।

पुइस्ने न्यायाधीश
x माननीय सर नूरुल अज़ीम खुंदकर, के.टी., बी.ए. (कैंटब.), एल.एल.बी., बार-एट-लॉ।
x माननीय सर नॉर्मन जॉर्ज आर्मस्ट्रांग एडगली, नाइट, एम.ए., आई.सी.एस., बार-एट-लॉ।
माननीय डॉ. बिजन कुमार मुखर्जी, एम.ए., डी.एल.
माननीय श्री चारु चंद्र बिस्वास, सी.आई.ई., एम.ए., बी.एल.
x माननीय श्री रोनाल्ड फ्रांसिस लॉज, बी.ए. (कैंटब.), आई.सी.एस.
माननीय श्री फ्रेडरिक विलियम जेंटल, बार-एट-लॉ।
The Hon'ble Mr. Amarendra Nath Sen, Bar-at-law.
माननीय श्री थॉमस जेम्स यंग रॉक्सबर्ग, सी.आई.ई., बी.ए., आई.सी.एस., बार-एट-लॉ।
x माननीय श्री अबू सालेह मोहम्मद अकरम, बी.एल.
माननीय श्री अब्राहम लुईस ब्लैंक, एम.ए., आई.सी.एस., बार-एट-लॉ।
माननीय श्री सुधी रंजन दास, बी.ए., एलएल.बी. (लंदन), बार-एट-लॉ।
माननीय श्री अर्नेस्ट चार्ल्स ऑरमंड, बार-एट-लॉ।
माननीय श्री विलियम मैककॉर्निक शार्प, डी.एस.ओ., बी.ए., आई.सी.एस.

The Hon'ble Mr. Phani Bhusan Chakravartti, M.A., B.L.
माननीय श्री जॉन अल्फ्रेड क्लॉघ, बार-एट-लॉ।
x माननीय श्री थॉमस होबार्ट एलिस, एम.ए. (ऑक्सफ़ोर्ड), आई.सी.एस.
माननीय श्री जोगेंद्र नारायण मजूमदार, सी.आई.ई., एम.ए., बी.एल., बार-एट-लॉ।
x माननीय श्री अमीर-उद-दीन अहमद, एम.बी.ई., एम.ए., बी.एल.
माननीय श्री अमीन अहमद, बार-एट-लॉ।
माननीय श्री कमल चंदर चंदर, बी.ए. (कैंटब.), आई.सी.एस., बार-एट-लॉ।
माननीय श्री गोपेंद्र नाथ दास, एम.ए., बी.एल.

1948 की सूची में सबसे नीचे कुछ और नाम थे, जिनमें उनका अपना नाम भी शामिल था। लेकिन आधे अंग्रेज न्यायाधीश और सभी मुस्लिम न्यायाधीश जा चुके थे। 1948 में कलकत्ता उच्च न्यायालय में एक भी मुस्लिम न्यायाधीश नहीं था।
एक ऐसे व्यक्ति के लिए, जो अपने मित्रों और परिचितों में धर्म और राष्ट्रीयता को महत्वपूर्ण और अप्रासंगिक दोनों मानता था, उच्च न्यायालय की बदलती संरचना दुखद थी। जल्द ही, ब्रिटिश न्यायाधीशों की संख्या और भी कम हो गई। अब केवल ट्रेवर हैरिस (जो अभी भी मुख्य न्यायाधीश थे) और रॉक्सबर्ग ही बचे थे।
न्यायाधीशों की नियुक्ति अंग्रेजों के लिए हमेशा से ही अत्यंत महत्वपूर्ण विषय रही थी, और वास्तव में (चालीस के दशक में लाहौर उच्च न्यायालय में हुए कुछ घोटालों को छोड़कर) ब्रिटिश शासन के दौरान न्याय व्यवस्था निष्पक्ष और काफी त्वरित रही थी। (यह कहने की आवश्यकता

नहीं है कि दमनकारी कानून भी बहुत थे, लेकिन यह एक अलग, हालांकि संबंधित, मामला है।) मुख्य न्यायाधीश किसी व्यक्ति से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से परामर्श लेते थे यदि उन्हें लगता था कि वह न्यायाधीश पद के लिए उपयुक्त उम्मीदवार है, और यदि वह व्यक्ति रुचि दिखाता था, तो वे उसका नाम सरकार को प्रस्तावित करते थे।

कभी-कभी सरकार की ओर से राजनीतिक आपत्तियां उठाई जाती थीं, लेकिन आम तौर पर किसी राजनीतिक व्यक्ति से पहले तो इस बारे में पूछा ही नहीं जाता था, और अगर मुख्य न्यायाधीश उससे इस बारे में पूछते भी तो वह इसे स्वीकार करने के लिए उत्सुक नहीं होता था। वह अपने विचारों को व्यक्त करने में किसी तरह की रोक नहीं चाहता था। इसके अलावा, अगर फिर से कोई भारत छोड़ो आंदोलन होता, तो उसे कई ऐसे फैसले सुनाने पड़ सकते थे जो उसकी अपनी राय में अनुचित होते। उदाहरण के लिए, शरत बोस को अंग्रेजों द्वारा न्यायाधीश का पद नहीं दिया जाता, और अगर दिया भी जाता तो वह इसे स्वीकार नहीं करते।

अंग्रेजों के जाने के बाद हालात में कोई खास बदलाव नहीं आया, खासकर कलकत्ता में, जहाँ मुख्य न्यायाधीश के पद पर एक अंग्रेज ही बने रहे। न्यायमूर्ति चटर्जी सर आर्थर ट्रेवर हैरिस को एक अच्छा इंसान और एक अच्छा मुख्य न्यायाधीश मानते थे। अब उन्हें कलकत्ता के प्रमुख वकीलों में से एक के रूप में उनसे हुई मुलाकात याद आ रही थी, जब उन्हें उनके कक्ष में उनसे मिलने का निमंत्रण मिला था।

जैसे ही वे दोनों बैठे, ट्रेवर हैरिस ने कहा: 'अगर मेरी अनुमति हो, श्री चटर्जी, तो मैं सीधे मुद्दे पर आता हूँ। मैं सरकार को न्यायाधीश पद के लिए आपके नाम की सिफारिश करना चाहता हूँ। क्या यह आपको स्वीकार्य होगा?'

श्री चटर्जी ने कहा था: 'मुख्य न्यायाधीश महोदय, यह मेरे लिए सम्मान की बात है, लेकिन मुझे खेद है कि मुझे इसे अस्वीकार करना होगा।'
ट्रेवर हैरिस काफी हैरान रह गया था। 'क्या मैं पूछ सकता हूँ कि क्यों?'
श्री चटर्जी ने जवाब दिया था, 'मुझे उम्मीद है कि अगर मैं भी उतनी ही स्पष्ट बात कहूँ तो आपको कोई आपत्ति नहीं होगी। कुछ साल पहले मुझसे पहले एक कनिष्ठ व्यक्ति को नियुक्त किया गया था, और उनकी तुलनात्मक योग्यता इसका कारण नहीं हो सकती।'
'एक अंग्रेज?'
'जैसा हुआ वैसा ही है। मैं कारण के बारे में अटकलें नहीं लगा रहा हूं।'
ट्रेवर हैरिस ने सिर हिलाया। 'मुझे लगता है कि मैं जानता हूँ कि आप किसका जिक्र कर रहे हैं। लेकिन वह काम किसी और मुख्य न्यायाधीश ने किया था - और मुझे लगा कि वह व्यक्ति आपका दोस्त था।'
'वह मेरा दोस्त है, और मैं दोस्ती की बात नहीं कर रहा हूँ। बल्कि सवाल सिद्धांतों का है।'
कुछ देर रुकने के बाद ट्रेवर हैरिस ने आगे कहा, 'खैर, मैं भी आपकी तरह उस फैसले की सही-गलत के बारे में अटकलें नहीं लगाऊंगा। लेकिन वह एक बीमार आदमी था, और उसका समय खत्म हो रहा था।'
'फिर भी।'
ट्रेवर हैरिस मुस्कुराए। 'आपके पिता एक उत्कृष्ट न्यायाधीश थे, श्री चटर्जी। अभी कुछ ही दिन पहले मुझे एस्टोपेल के प्रश्न पर उनके 1933 के एक फैसले का हवाला देने का अवसर मिला था।'
मैं उसे बता दूंगा। वह बहुत प्रसन्न होगा।
कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। श्री चटर्जी उठने ही वाले थे कि मुख्य न्यायाधीश ने हल्की सी आह भरते हुए कहा:
श्री चटर्जी, मैं आपका बहुत सम्मान करता हूँ और इस मामले में आपके

निर्णय को प्रभावित नहीं करना चाहता। लेकिन मुझे यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं है कि मुझे आपकी इस इच्छा से निराशा हुई है कि आप मना कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि आप समझते हैं कि इतने कम समय में इतने अच्छे न्यायाधीशों की कमी को पूरा करना मेरे लिए मुश्किल है। पाकिस्तान और इंग्लैंड दोनों ने इस न्यायालय के कई न्यायाधीशों को अपने यहाँ नियुक्त किया है। हमारा कार्यभार लगातार बढ़ रहा है, और जल्द ही हमारे ऊपर जो संवैधानिक कार्य का बोझ आने वाला है, उसके लिए हमें सर्वोत्तम नए न्यायाधीशों की आवश्यकता होगी। इसी संदर्भ में मैंने आपसे शामिल होने का अनुरोध किया है, और इसी संदर्भ में मैं आपसे अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने का अनुरोध करता हूँ।' उन्होंने आगे बोलने से पहले कुछ देर रुककर कहा, 'क्या मैं इस आने वाले सप्ताह के अंत में आपसे यह पूछने की अनुमति ले सकता हूँ कि क्या आपका निर्णय अभी भी वही है? यदि ऐसा है, तो मेरा सम्मान वही रहेगा, लेकिन मैं इस विषय पर आपको और परेशान नहीं करूँगा।'

श्री चटर्जी घर लौट आए थे और उनका इरादा न तो अपना मत बदलने का था और न ही इस मामले पर किसी और से सलाह लेने का। लेकिन अपने पिता से बात करते समय उन्होंने गलती से मुख्य न्यायाधीश द्वारा 1933 के फैसले के बारे में कही गई बात का जिक्र कर दिया। उनके पिता ने पूछा, 'मुख्य न्यायाधीश आपसे किस बारे में मिलना चाहते हैं?' और फिर यह बात सामने आ गई।

उनके पिता ने उन्हें संस्कृत की एक पंक्ति सुनाई थी, जिसका अर्थ था कि ज्ञान का सबसे अच्छा आभूषण विनम्रता है। उन्होंने कर्तव्य के बारे में कुछ भी नहीं कहा था।

श्रीमती चटर्जी को इस बात का पता तब चला जब उनके पति ने सोने से पहले लापरवाही से अपने बिस्तर के पास एक छोटी सी पर्ची छोड़ दी,

जिस पर लिखा था: ‘सीजे शुक्रवार 4:45 (?) न्यायाधीश पद के संबंध में।’ अगली सुबह जब वे उठे तो उन्होंने पाया कि उनकी पत्नी काफी नाराज़ थीं। एक बार फिर सच्चाई सामने आ गई। उनकी पत्नी ने कहा: ‘यह आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा होगा। कनिष्ठों के साथ देर रात की बैठकें नहीं। एक अधिक संतुलित जीवन।’

'मेरी सेहत ठीक है, प्रिय। मुझे काम में मजा आता है। और ओर, डिग्नम को इस बात का अच्छा अंदाजा है कि उन्हें मुझे कितने मामलों की जानकारी देनी चाहिए।'

'खैर, मुझे आपका विग और लाल वस्त्र पहने हुए देखने का विचार अच्छा लगता है।'

मुझे अफसोस है कि हम लाल रंग के वस्त्र केवल तभी पहनते हैं जब हम मूल पक्ष की ओर से आपराधिक मामलों की सुनवाई कर रहे होते हैं। और विग नहीं। नहीं, आजकल इसमें दिखावटी शान-शौकत बहुत कम रह गई है।'

'श्रीमान न्यायमूर्ति चटर्जी। यह बिल्कुल उपयुक्त लगता है।'

मुझे डर है कि मैं अपने पिता जैसा बन जाऊंगा।

‘इससे बुरा भी हो सकता था।’

बिस्वास बाबू को इसके बारे में कैसे पता चला, यह एक रहस्य ही था। लेकिन उन्हें पता चल गया था। एक शाम अपने कक्ष में श्री चटर्जी उन्हें कोई राय लिखवा रहे थे, तभी बिस्वास बाबू ने अनजाने में उन्हें 'महोदया' कहकर संबोधित किया। श्री चटर्जी उठ बैठे। उन्होंने सोचा, 'शायद वह कुछ पल के लिए अतीत में खो गए होंगे और मुझे अपने पिता समझ बैठे होंगे।' लेकिन बिस्वास बाबू अपनी इस गलती पर इतने चौंके और शर्मिंदा दिखे कि उनकी पोल खुल गई। और अपनी पोल खुल जाने पर उन्होंने जल्दी से अपने घुटने हिलाते हुए कहा, 'महोदय, मैं समय से पहले ही

सही, अपनी बधाई अर्पित करते हुए बहुत प्रसन्न हूं—'
श्री चटर्जी ने बहुत तीखे लहजे में और बंगाली में कहा, 'मैं इसे नहीं ले रहा, बिस्वास बाबू।'
उसका क्लर्क इतना हैरान हुआ कि वह होश ही खो बैठा। उसने बंगाली में ही जवाब दिया, 'क्यों नहीं, महोदय? क्या आप न्याय नहीं करना चाहते?'
श्री चटर्जी नाराज़ होकर खुद को संभाला और अपनी राय लिखवाना जारी रखा। लेकिन बिस्वास बाबू के शब्दों का उन पर धीरे-धीरे लेकिन गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने यह नहीं कहा था, 'क्या आप न्यायाधीश नहीं बनना चाहते?'
एक वकील का काम अपने मुवक्किल के लिए लड़ना होता है—चाहे वह सही हो या गलत—अपनी पूरी बुद्धि और अनुभव का इस्तेमाल करते हुए। एक न्यायाधीश का काम निष्पक्षता से मामलों का मूल्यांकन करना और न्यायसंगत निर्णय लेना होता है। उनके पास न्याय करने की शक्ति होती है, और यह एक महान शक्ति है। सप्ताह के अंत में जब श्री चटर्जी मुख्य न्यायाधीश से मिले, तो उन्होंने उनसे कहा कि यदि उनका नाम सरकार को भेजा जाए तो उन्हें बहुत सम्मान महसूस होगा। कुछ महीनों बाद उन्होंने शपथ ली।
*
उन्हें अपना काम पसंद था, हालांकि वे अपने साथियों से ज्यादा मेलजोल नहीं रखते थे। उनके मित्रों और परिचितों का दायरा काफी विस्तृत था, और कुछ न्यायाधीशों की तरह वे उनसे दूरी नहीं बनाते थे। उन्हें मुख्य न्यायाधीश बनने या दिल्ली स्थित सर्वोच्च न्यायालय जाने की कोई महत्वाकांक्षा नहीं थी। (संघीय न्यायालय और प्रिवी काउंसिल में अपील की व्यवस्था समाप्त हो चुकी थी।)
इन सब बातों के अलावा, उन्हें कलकत्ता इतना प्रिय था कि वे उसे

छोड़कर जाना नहीं चाहते थे। उन्हें वर्दीधारी और पगड़ीधारी सेवक थोड़ा चिड़चिड़ा और हास्यास्पद लगता था, जबकि उनके साथी न्यायाधीशों में से एक, जो बाजार में मछली खरीदने जाते समय भी उनके पीछे-पीछे चलने पर जोर देते थे, उनसे बिल्कुल अलग थे। लेकिन उन्हें 'माई लॉर्ड' या कुछ वकीलों द्वारा 'मॉलड' कहकर संबोधित किए जाने से कोई आपत्ति नहीं थी।

सबसे बढ़कर, उन्हें वह बात पसंद थी जिसे बिस्वास बाबू, दिखावे और आडंबर के प्रति अपने प्रेम के बावजूद, अपनी संतुष्टि का मूल स्रोत मानते थे: कानून के दायरे में न्याय का वितरण। हाल ही में उनके द्वारा निपटाए गए दो मामलों ने इसे स्पष्ट किया। एक मामला 1950 के निवारक नजरबंदी अधिनियम के तहत था, जिसमें एक मुस्लिम मजदूर संगठनकर्ता को बिना किसी स्पष्ट कारण बताए ही हिरासत में ले लिया गया था। कई आरोपों में से एक यह था कि वह पाकिस्तान का एजेंट था, हालांकि इसका कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया। एक और निराधार और व्यापक आरोप, जिसका खंडन करना असंभव था, यह था कि वह जन अशांति भड़का रहा था। आरोपों की अस्पष्टता और अनिश्चितता ने न्यायमूर्ति चटर्जी और उनके सहयोगी न्यायाधीश को संविधान के अनुच्छेद 22 खंड 5 के आधार पर आदेश को रद्द करने के लिए प्रेरित किया।

एक अन्य हालिया मामले में, जब एक आरोपी की साजिश के आरोप में दोषसिद्धि के खिलाफ अपील सफल रही, लेकिन उसके इकलौते सह-आरोपी ने—संभवतः गरीबी के कारण—अपनी दोषसिद्धि के खिलाफ अपील दायर नहीं की, तो न्यायमूर्ति चटर्जी और एक अन्य न्यायाधीश ने स्वयं राज्य को एक आदेश जारी कर सह-आरोपी की दोषसिद्धि और सजा को रद्द करने का कारण बताने को कहा। इस स्वतः संज्ञान वाले फैसले के कारण क्षेत्राधिकार संबंधी जटिल विवाद उत्पन्न हुए, लेकिन अंततः

न्यायालय ने निर्णय लिया कि जब स्पष्ट अन्याय हो रहा हो तो उचित आदेश पारित करना उसके अंतर्निहित क्षेत्राधिकार के अंतर्गत आता है।
वर्तमान मामले में भी, हालांकि न्यायमूर्ति चटर्जी को मृत्युदंड की पुष्टि करने में कोई प्रसन्नता नहीं थी, फिर भी उन्हें लगा कि वे न्यायसंगत कार्य कर रहे हैं। उनका निर्णय स्पष्ट रूप से विचारित और सशक्त था। लेकिन वे इस बात से काफी चिंतित थे कि अपने निर्णय के पहले मसौदे में उन्होंने पांच डकैतों के नाम लिखे थे और छठे का उल्लेख छोड़ दिया था। यह ठीक उसी तरह की संभावित आपदा थी जिससे बिस्वास बाबू अपने वकालत के दिनों में हमेशा बचते रहे थे।
एक पल के लिए उनका मन बिस्वास बाबू की ओर गया। उन्होंने सोचा कि वो कैसे होंगे और क्या कर रहे होंगे। उनके अध्ययन कक्ष के खुले दरवाजे से कुकू के पियानो वादन की आवाज़ आ रही थी। उन्हें दोपहर के भोजन के समय कुकू की कही हुई बात याद आ गई, जिसमें उसने 'शैलीभेरी ज्यूइश' के बारे में कहा था। तब तो उन्हें गुस्सा आया था, अब उन्हें हंसी आ रही थी। बिस्वास बाबू की लिखित कानूनी अंग्रेज़ी भले ही सटीक और संक्षिप्त थी (कभी-कभार आर्टिकल के गलत स्थान को छोड़कर), लेकिन उनकी बोली जाने वाली अंग्रेज़ी एक जटिल सुंदरता थी। और भला कोई यह उम्मीद कैसे कर सकता था कि हंसमुख कुकू उसकी अभिव्यंजक संभावनाओं से अनजान न हो।

7.38

संयोगवश, बिस्वास बाबू उस समय अपने मित्र और सहकर्मी, बेंटसेन प्राइस के बीमा विभाग के बुर्रा बाबू के साथ थे। उनकी दोस्ती बीस साल से भी ज़्यादा पुरानी थी, और बिस्वास बाबू के अड्डे ने धीरे-धीरे उनके इस रिश्ते को और मज़बूत कर दिया था। (जब अरुण ने मीनाक्षी से शादी की, तो ऐसा लगा मानो उनके परिवार अचानक एक-दूसरे के सहयोगी बन गए

हों।) बुर्रा बाबू लगभग हर शाम बिस्वास बाबू के घर आते थे; यहाँ उनके कई पुराने दोस्त दुनिया भर की बातें करने या बस बैठकर चाय पीने और अख़बार पढ़ने के लिए इकट्ठा होते थे, और बीच-बीच में कुछ टिप्पणियाँ भी करते थे। आज उनमें से कुछ लोग नाटक देखने जाने की सोच रहे थे।
एक व्यक्ति ने अनुमान लगाते हुए कहा, 'ऐसा लगता है कि आपके उच्च न्यायालय भवन पर बिजली गिर गई है।'
'कोई नुकसान नहीं, कोई नुकसान नहीं,' बिस्वास बाबू ने कहा। 'मुख्य समस्या पूर्वी बंगाल से आए शरणार्थी हैं जिन्होंने गलियारों में डेरा डालना शुरू कर दिया है।' यहाँ किसी ने भी इसे पूर्वी पाकिस्तान नहीं कहा।
'वहां के हिंदुओं को डराया-धमकाया जा रहा है और उन्हें भगाया जा रहा है। हर रोज हिंदुस्तान स्टैंडर्ड में हिंदू लड़कियों के अपहरण की खबरें पढ़ने को मिलती हैं—'
'अय, माँ'—यह बिस्वास बाबू की सबसे छोटी पोती, छह साल की बच्ची को संबोधित था—'अपनी माँ से कहो कि वह थोड़ी और चाय भेज दे।'
'एक त्वरित युद्ध, और बंगाल एक बार फिर एकजुट हो जाएगा।'
इसे इतना मूर्खतापूर्ण माना गया कि किसी ने भी प्रतिक्रिया नहीं दी।
कुछ मिनटों तक संतोषपूर्ण सन्नाटा छाया रहा।
'क्या आपने वह लेख पढ़ा जिसमें नेताजी की विमान दुर्घटना में हुई मौत का खंडन किया गया था? यह दो दिन पहले प्रकाशित हुआ था—'
खैर, अगर वह जीवित है, तो वह इसे साबित करने के लिए कुछ खास नहीं कर रहा है।
'स्वाभाविक रूप से उसे छिपकर रहना होगा।'
'क्यों? अंग्रेज तो चले गए हैं।'
'अरे—लेकिन पीछे छूटे लोगों में उसके और भी बुरे दुश्मन हैं।'
'कौन?'

‘नेहरू—और बाकी सभी,’ समर्थक ने निराशाजनक लेकिन कमजोर ढंग से अपनी बात समाप्त की।

‘मुझे लगता है कि आप यह भी सोचते हैं कि हिटलर अभी भी जीवित है?’ इस पर चारों ओर हंसी की लहर दौड़ गई।

कुछ देर रुककर किसी ने बिस्वास बाबू से पूछा, ‘आपके अमित बाबू की शादी कब हो रही है?’ ‘पूरा कोलकाता इंतजार कर रहा है।’

'कलकत्ता को इंतजार करने दो,' बिस्वास बाबू ने कहा और अपने अखबार पर लौट गए।

‘यह आपकी जिम्मेदारी है कि आप कुछ करें—जैसा कि अंग्रेजी में कहते हैं, “किसी भी तरह से”।’

‘मैंने काफी कुछ कर लिया है,’ बिस्वास बाबू ने बनावटी थकावट भरे लहजे में कहा। ‘वह अच्छा लड़का है, लेकिन एक स्वप्नदर्शी है।’

‘अच्छा लड़का है—परन्तुओं में खोया रहता है! चलो दामाद वाला चुटकुला फिर सुनाते हैं,’ किसी ने बिस्वास बाबू और बुर्रा बाबू से कहा।

‘नहीं, नहीं—’ दोनों ने आनाकानी की। लेकिन बाकी लोगों ने उन्हें आसानी से मना लिया और वे नाटक करने के लिए तैयार हो गए। दोनों को अभिनय करना पसंद था, और यह नाटक कुछ ही पंक्तियों का था। वे इसे पहले भी आधा दर्जन बार उसी दर्शकों के सामने कर चुके थे; आम तौर पर सुस्त रहने वाला अड्डा कभी-कभी नाटकीयता से भर जाता था।

बुर्रा बाबू मछली बाजार में सामान का जायजा लेते हुए कमरे में घूम रहे थे। अचानक उनकी नजर अपने पुराने दोस्त पर पड़ी। 'अरे, अरे, बिस्वास बाबू!' उन्होंने खुशी से कहा।

‘जी हां, जी साहब—काफी समय हो गया है,’ बिस्वास बाबू ने अपना छाता झाड़ते हुए कहा।

‘आपकी बेटी की सगाई पर बधाई हो, बिस्वास बाबू। अच्छा लड़का है?’

बिस्वास बाबू ने ज़ोर से सिर हिलाया। 'वह अच्छा लड़का है। बहुत ही सभ्य। हाँ, कभी-कभार एक-दो प्याज खा लेता है, बस इतना ही।'
बुर्रा बाबू, जो स्पष्ट रूप से हैरान थे, ने कहा: 'क्या? क्या वह हर दिन प्याज खाता है?'
'अरे नहीं! हर दिन नहीं। बिलकुल भी नहीं। केवल तभी जब उसने कुछ ड्रिंक्स पी रखी हों।'
लेकिन शराब पीना! यकीनन वह अक्सर शराब नहीं पीता होगा।
'अरे नहीं!' बिस्वास बाबू ने कहा। 'बिल्कुल नहीं। ऐसा सिर्फ तब होता है जब वह शाम को महिलाओं के साथ होता है...'
लेकिन महिलाएं—क्या!—और क्या ऐसा नियमित रूप से होता है?
'अरे नहीं!' बिस्वास बाबू ने हैरानी से कहा। 'वह इतनी बार वेश्याओं के पास जाने का खर्च नहीं उठा सकता। उसके पिता एक सेवानिवृत्त दलाल हैं, और कंगाल हैं, और लड़का उनसे कभी-कभार ही पैसे ले सकता है।'
इस प्रस्तुति पर सबने तालियों और हंसी के साथ स्वागत किया। इससे शाम को उत्तरी कोलकाता के एक स्थानीय थिएटर, स्टार थिएटर में होने वाले नाटक के प्रति उनकी उत्सुकता और बढ़ गई। थोड़ी ही देर में चाय आ गई, साथ ही बिस्वास बाबू की बहू द्वारा बनाई गई कुछ स्वादिष्ट लोबोंगो-लोटिका और अन्य मिठाइयाँ भी परोसी गईं; और कुछ मिनटों के लिए सब लोग प्रशंसा में चुप हो गए, सिवाय कुछ लोगों के जीभ चटकाने और आनंद की टिप्पणियों के।

7.39

दीपांकर अपने कमरे में छोटी सी चटाई पर कडल को गोद में लेकर बैठा था और अपने परेशान भाई-बहनों को सलाह दे रहा था।
जबकि अमित जब अपनी अमर गद्य या पद्य रचना पर काम कर रहे होते थे, या इस डर से कि वह काम कर रहे होंगे, तो किसी ने भी उन्हें परेशान

करने की हिम्मत नहीं की, वहीं दीपांकर के समय और ऊर्जा का बेखौफ इस्तेमाल किया जा सकता था।

वे विशिष्ट सलाह लेने आते थे, या कभी-कभी सिर्फ बातचीत करने। दीपांकर में एक तरह की सुखद और चंचल गंभीरता थी जो बहुत आश्वस्त करने वाली थी।

हालांकि दीपांकर अपने जीवन में पूरी तरह से अनिर्णायक थे—या शायद इसी कारण से—वे दूसरों के जीवन में उपयोगी सुझाव देने में काफी अच्छे थे।

मीनाक्षी ने सबसे पहले यह सवाल पूछा कि क्या एक से अधिक लोगों से पूरी तरह, बेइंतहा और सच्चे दिल से प्यार करना संभव है? दीपांकर ने उससे इस विषय पर बहुत अस्पष्ट शब्दों में बात की और निष्कर्ष निकाला कि यह निश्चित रूप से संभव है। उन्होंने कहा कि आदर्श स्थिति तो यही है कि ब्रह्मांड में हर किसी से समान रूप से प्रेम किया जाए। मीनाक्षी इस बात से पूरी तरह सहमत नहीं थी, लेकिन इस बारे में बात करने से उसे काफी राहत मिली।

इसके बाद कुकू एक खास समस्या लेकर आई। वह हंस का क्या करे? उसे बंगाली खाना बिल्कुल पसंद नहीं था, वह अरुण से भी बदतर असभ्य था, जो मछली का सिर, यहाँ तक कि सबसे स्वादिष्ट हिस्सा, आँखें भी खाने से मना कर देता था। हंस को तले हुए नीम के पत्ते भी पसंद नहीं थे (उसे वे बहुत कड़वे लगते थे, सोचो ज़रा, कुकू ने कहा), और उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या वह सच में ऐसे आदमी से प्यार कर सकती है जिसे नीम के पत्ते पसंद नहीं हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात, क्या वह सच में उससे प्यार करता था? हंस को शायद अब भी छोड़ना ही पड़ेगा, चाहे वह कितना भी शुबर्ट और श्मेर्ज़ संगीत बजाता हो।

दीपांकर ने उसे आश्वस्त किया कि वह ऐसा कर सकती है, और वह खुद

भी ऐसा करता है। उसने कहा कि स्वाद तो स्वाद होते हैं, और अगर उसे याद हो, तो श्रीमती रूपा मेहरा ने एक बार कुकू को बर्बर समझा था क्योंकि उसने दशहरी आम के बारे में अपमानजनक टिप्पणी की थी। जहाँ तक हंस की बात है, दीपांकर को संदेह था कि उसे सबक सीखने को मिलेगा। साउरक्रॉट की जगह जल्द ही केले का फूल ले लेगा, और स्टोलन और सैकरटोर्ट की जगह लोबोंगो-लोटिका और लेडिकेनिस ले लेंगे; और उसे ढलना होगा, स्वीकार करना होगा और सराहना करनी होगी, अगर उसे काकोली का सबसे पसंदीदा मशरूम बने रहना है; क्योंकि अगर बाकी सब उसके मजबूत हाथों की कठपुतली हैं, तो वह भी निश्चित रूप से उसके हाथों की कठपुतली है।

'और मैं कहाँ जाकर रहूँगी?' कुकु ने सिसकते हुए पूछा। 'उस बर्फीले, तबाह देश में?' उसने दीपांकर के कमरे में चारों ओर देखा और कहा, 'तुम्हें पता है उस दीवार पर सुंदरबन की तस्वीर की कमी है। मैं तुम्हारे लिए एक बना दूँगी। . . . मैंने सुना है जर्मनी में हर समय बारिश होती रहती है, और लोग पूरी जिंदगी ठंड में ठिठकते रहते हैं, और अगर हंस और मेरा झगड़ा हो जाए, तो मैं मीनाक्षी की तरह पैदल घर नहीं जा सकती।'

काकोली को छींक आई। कडल्स भौंका। दीपांकर ने पलकें झपकाईं और आगे बढ़ता रहा।

'अच्छा, कुकू, अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो—'

काकोली ने विरोध करते हुए कहा, 'आपने मुझे आशीर्वाद नहीं दिया।'

'ओह, माफ करना, कुकू, भगवान तुम्हारा भला करे।'

'ओह, कडल्स, कडल्स, कडल्स,' कुकू ने कहा, 'हमें कोई प्यार नहीं करता, बिल्कुल कोई नहीं, यहां तक कि दीपांकर भी नहीं। अगर हमें निमोनिया हो जाए और हम मर जाएं तो किसी को परवाह नहीं।'

बहादुर अंदर आया। उसने कहा, 'बेबी मेमसाहिब के लिए एक फोन कॉल

है।'

'ओह,' कुकू ने कहा, 'मुझे भागना होगा।'

'लेकिन आप तो अपने जीवन की दिशा के बारे में बात कर रहे थे,' दीपांकर ने हल्के स्वर में आपत्ति जताते हुए कहा। 'आपको तो यह भी नहीं पता कि किसने फोन किया है—यह इतना महत्वपूर्ण तो हो ही नहीं सकता।'

'लेकिन यह फोन है,' कुकू ने कहा और इस पूर्ण और अपरिहार्य स्पष्टीकरण को देने के बाद, वह सचमुच भाग गई।

इसके बाद दीपांकर की मां सलाह लेने नहीं, बल्कि सलाह देने आई थीं।

'तुम क्या कर रहे हो, दीपांकर?...' उसने कहना शुरू किया और उसे धीरे-धीरे डांटती रही, जबकि दीपांकर शांति से मुस्कुराता रहा। 'तुम्हारे पिता बहुत चिंतित हैं... और मैं भी चाहती हूँ कि तुम घर बसा लो... पारिवारिक व्यवसाय... आखिर हम हमेशा तो जीने वाले नहीं हैं... ज़िम्मेदारी... पिताजी बूढ़े हो रहे हैं... अपने भाई को देखो, सिर्फ कविताएँ लिखना चाहता है, और अब ये उपन्यास, खुद को दूसरा शरतचंद्र समझता है... तुम ही हमारी एकमात्र आशा हो... तब तुम्हारे पिता और मैं चैन से रह सकेंगे।'

'लेकिन, मागो, हमारे पास अभी भी इस मामले को सुलझाने के लिए कुछ समय बचा है,' दीपांकर ने कहा, जो हमेशा हर संभव बात को टाल देते थे और बाकी को अनिश्चित छोड़ देते थे।

श्रीमती चटर्जी असमंजस में थीं। जब दीपांकर छोटा था, तो जब भी बहादुर उससे पूछता कि वह नाश्ते में क्या खाना चाहता है, तो वह बस ऊपर देखता और सिर हिलाकर कुछ भी तय कर लेता, और बहादुर सहज ही समझ जाता कि क्या चाहिए, और उसके लिए तला हुआ अंडा या आमलेट या कुछ भी ले आता, जिसे दीपांकर बड़े चाव से खा लेता था।

पूरा परिवार आश्चर्य से भर जाता था। शायद, श्रीमती चटर्जी अब सोचने लगीं, उनके बीच कभी कोई मानसिक संवाद हुआ ही नहीं था, और बहादुर तो बस भाग्य का प्रतीक था जो दीपांकर को अपनी भेंट दे रहा था, जो कुछ भी तय नहीं करता था, बस सब कुछ स्वीकार कर लेता था।

श्रीमती चटर्जी ने आगे कहा, 'और लड़कियों में भी आप फैसला नहीं कर सकते। हेमांगिनी है, चित्रा है, और... यह कुकू जितना ही बुरा है।' उन्होंने उदास होकर अपनी बात समाप्त की।

दीपांकर के चेहरे की बनावट काफी तराशी हुई थी, अमित की तरह नहीं, जिसकी आंखें बड़ी-बड़ी थीं और जो श्रीमती चटर्जी की बंगाली सौंदर्य की परिभाषा में खरा उतरता था। श्रीमती चटर्जी हमेशा दीपांकर को एक बदसूरत बत्तख के बच्चे की तरह समझती थीं, उसे दुबला-पतला और हड्डियों का ढांचा होने के आरोपों से बचाने के लिए हमेशा तत्पर रहती थीं, और जब युवा पीढ़ी की महिलाएं, ये सभी चित्रा और हेमांगिनी, उसकी सुंदरता की तारीफ करती थीं, तो वह आश्चर्यचकित रह जाती थीं।

‘इनमें से कोई भी आदर्श नहीं है, मागो,’ दीपांकर ने कहा। ‘मुझे आदर्श की खोज जारी रखनी होगी। और एकता की भी।’

और अब आप ब्रह्मपुर में इस पुल मेले में जा रहे हैं। गंगा की पूजा करना और उसमें डुबकी लगाना एक ब्रह्म पुरुष के लिए बिल्कुल अनुचित है।

‘नहीं माँ, बिलकुल नहीं—’ दीपांकर ने गंभीरता से कहा। ‘केशब चंद्र सेन ने भी डलहौजी स्क्वायर स्थित टंकी में तेल लगाकर तीन बार डुबकी लगाई थी।’

'उसने ऐसा नहीं किया!' श्रीमती चटर्जी ने दीपांकर के धर्मत्याग से स्तब्ध होकर कहा।

ब्रह्म समाज के लोग, जो एक अमूर्त और उच्चतर एकेश्वरवाद में विश्वास करते थे, या ऐसा करने की उम्मीद रखते थे, वे इस तरह की चीजें करने

में कभी भी संलग्न नहीं होते थे।

‘हाँ, मैगो। खैर, मुझे पक्का नहीं पता कि वो डलहौज़ी स्क्वायर ही था,’ दीपांकर ने स्वीकार किया। ‘लेकिन दूसरी तरफ, मुझे लगता है कि चार डुबकीं थीं, तीन नहीं। और गंगा एक ठहरे हुए तालाब से कहीं ज़्यादा पवित्र है। अरे, रवींद्रनाथ टैगोर ने भी गंगा के बारे में यही कहा था...’

'ओह, रोबी बाबू!' श्रीमती चटर्जी ने कहा, उनका चेहरा मौन आनंद से भर गया था।

दीपांकर के क्लिनिक में आने वाला चौथा व्यक्ति तपन था।

कडल्स झट से दीपांकर की गोद से कूदकर तपन की गोद में जा बैठा। जब भी तपन का सामान स्कूल जाने के लिए पैक किया जाता, कडल्स लगभग बेचैन हो जाता, सामान को हटाने से रोकने के लिए उस पर बैठ जाता और उसके बाद एक हफ्ते तक बेकाबू होकर हिंसक हो जाता।

तपन ने कडल्स के सिर पर हाथ फेरा और उसकी आंखों और नाक से बने चमकदार काले त्रिकोण को देखा।

‘हम तुम्हें कभी गोली नहीं मारेंगे, कडल्स,’ उसने वादा किया। ‘तुम्हारी आँखों में बिल्कुल भी सफेदी नहीं है।’

कडल्स ने पूरे मन से अपनी खुरदरी पूंछ हिलाकर अपनी सहमति व्यक्त की।

तपन थोड़ा परेशान लग रहा था और कुछ कहना चाहता था, लेकिन अपनी बात स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं कर पा रहा था। दीपांकर ने उसे थोड़ी देर बोलने दिया। थोड़ी देर बाद तपन की नज़र दीपांकर की सबसे ऊपरी अलमारी पर रखी प्रसिद्ध लड़ाइयों की एक किताब पर पड़ी और उसने उसे उधार माँग लिया। दीपांकर ने धूल से सनी उस किताब को आश्चर्य से देखा—यह तो उनके अज्ञानता भरे दिनों की निशानी थी—और उसे नीचे उतार दिया।

‘इसे अपने पास रखो,’ उसने तपन से कहा।
‘क्या आप सच में आश्वस्त हैं, दादा?’ तपन ने कृतज्ञतापूर्वक पूछा।
‘पक्का?’ दीपांकर ने पूछा, उसे अब शक होने लगा था कि क्या तपन के लिए ऐसी किताब रखना वाकई अच्छा होगा। ‘खैर, मुझे पक्का नहीं पता। जब तुम इसे पढ़ लो, तो वापस ले आना, और हम तब तय करेंगे कि इसका क्या करना है... या बाद में।’
अंततः, जैसे ही वह ध्यान लगाने ही वाला था, अमित वहाँ से गुज़रा। वह दिन भर लिखता रहा था और थका हुआ लग रहा था।
‘क्या आपको यकीन है कि मैं आपको परेशान नहीं कर रहा हूँ?’ उसने पूछा।
नहीं दादा, बिलकुल नहीं।
‘क्या आपको पूरा यकीन है?’
'हाँ।'
'क्योंकि मैं आपसे कुछ बात करना चाहता था—कुछ ऐसा जिस पर मीनाक्षी या कुकू से बात करना बिलकुल नामुमकिन है।'
‘मुझे पता है, दादा। हाँ, वह काफी अच्छी है।’
‘दीपांकर!’
‘हाँ; अप्रभावित,’ दीपांकर ने कहा, उनका चेहरा किसी बल्लेबाज को आउट करने वाले अंपायर की तरह लग रहा था; ‘बुद्धिमान,’ उन्होंने चर्चिल की तरह जीत का संकेत देते हुए कहा; ‘आकर्षक—’, अब वे शिव के त्रिशूल का प्रतिनिधित्व कर रहे थे; ‘चटर्जी के अनुकूल,’ उन्होंने जीवन के चार उद्देश्यों पर जोर देने वाली किसी महान महिला की तरह धीरे से कहा; ‘और बीस्टली टू बिश,’ उन्होंने अंत में एक दयालु बुद्ध की मुद्रा में जोड़ा।
‘क्या बिश के साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार किया?’ अमित ने पूछा।
‘दादा, मीनाक्षी ने मुझे कुछ देर पहले बताया। लगता है अरुण बहुत

नाराज़ है और उसे किसी से भी मिलवाने से मना कर रहा है। अरुण की माँ बहुत परेशान है, लता मन ही मन खुश है, और—हाँ—मीनाक्षी—जो सोचती है कि बिश् में कोई कमी नहीं है सिवाय इसके कि वह असहनीय है—लता का पक्ष ले रही है। और संयोग से, दादा, बिस्वास बाबू, जिन्होंने उसके बारे में सुना है, सोचते हैं कि वह बिल्कुल मेरे टाइप की है! क्या आपने उन्हें उसके बारे में बताया?' दीपांकर ने बिना पलक झपकाए पूछा।
'नहीं,' अमित ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। 'मैंने नहीं किया। शायद कुकू ने किया होगा—वो बकबक करने वाली। तुम तो बड़े ही गपशप करने वाले हो, दीपांकर, क्या तुम कोई काम नहीं करते? काश तुम बाबा की बात मान लेते और कोई अच्छी नौकरी कर लेते और इस दयनीय पारिवारिक खर्च को संभाल लेते। अगर मुझे ऐसा करना पड़ा तो मैं और मेरा उपन्यास दोनों बर्बाद हो जाएंगे। वैसे भी, वो तुम्हारे टाइप की बिल्कुल नहीं है, और तुम ये जानते हो। जाओ और अपनी आदर्श ढूंढो।'
'आपके लिए कुछ भी, दादा,' दीपांकर ने मधुरता से कहा और कोमल आशीर्वाद के भाव से अपना दाहिना हाथ नीचे कर लिया।

7.40

एक दोपहर ब्रह्मपुर से श्रीमती रूपा मेहरा के लिए आम आए और उनकी आँखें चमक उठीं। कलकत्ता में मिलने वाले लंगड़ा आमों से उनका मन भर गया था, जो (ठीक-ठाक होने के बावजूद) उन्हें उनके बचपन की याद नहीं दिलाते थे। उन्हें तो दशहरी के नाज़ुक और स्वादिष्ट आमों की बहुत याद आ रही थी, और उन्हें लगा था कि दशहरी का मौसम तो बीत चुका है। सविता ने कुछ दिन पहले पार्सल से उनके लिए एक दर्जन आम भेजे थे, लेकिन जब पार्सल पहुँचा तो ऊपर के तीन पिचके हुए आमों के अलावा नीचे सिर्फ गुठलियाँ ही थीं। साफ था कि डाकघर में किसी ने उन्हें रोक लिया था। श्रीमती रूपा मेहरा मनुष्य की इस क्रूरता से उतनी ही दुखी

थीं जितनी अपनी इस कमी से। उन्होंने इस मौसम में दशहरी की उम्मीद ही छोड़ दी थी। और कौन जाने अगले साल मैं ज़िंदा रहूँगी या नहीं? उन्होंने नाटकीय अंदाज़ में मन ही मन सोचा—जो कुछ हद तक अतार्किक भी था, क्योंकि उनकी उम्र पचास साल से अभी कई साल कम थी। लेकिन अब यहाँ एक और पार्सल था जिसमें दो दर्जन दशहरी थे, पके हुए लेकिन ज्यादा पके नहीं, और छूने पर भी ठंडे थे।

'इन्हें कौन लाया?' श्रीमती रूपा मेहरा ने हनीफ से पूछा। 'डाकिया?'

नहीं, मेमसाहिब। एक आदमी।

वह कैसा दिखता था? वह कहाँ से था?

'मेमसाहिब, वह तो बस एक आम इंसान थे। लेकिन उन्होंने ये पत्र आपके लिए मुझे दिया।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने हनीफ को गुस्से से देखा। 'तुम्हें ये मुझे तुरंत दे देना चाहिए था। ठीक है। मेरे लिए एक थाली और एक तेज चाकू लाओ, और दो आम धो दो।' श्रीमती रूपा मेहरा ने कुछ आमों को दबाकर सूंघा और दो चुन लिए। 'ये दोनों।'

जी हां, मेमसाहिब।

और लता से कहो कि वह बगीचे से अंदर आए और मेरे साथ तुरंत एक आम खाए।

लता बगीचे में बैठी थी। बारिश नहीं हो रही थी, हालांकि हल्की हवा चल रही थी। जब वह अंदर आई, तो श्रीमती रूपा मेहरा ने सविता के साथ लिखे पत्र को पूरा पढ़कर सुनाया।

...लेकिन मैंने कहा कि मैं समझ सकती हूँ कि आपको कितनी निराशा हो रही होगी, माँ, और हम भी बहुत दुखी थे क्योंकि हमने उन्हें बहुत ध्यान से और प्यार से चुना था, हर एक को परख कर यह सुनिश्चित किया था कि वह छह दिनों में पक जाए। लेकिन फिर रजिस्ट्रार कार्यालय में काम करने

वाले एक बंगाली सज्जन ने हमें इस समस्या का हल बताया। वह ब्रह्मपुर-कलकत्ता मेल के वातानुकूलित डिब्बे में काम करने वाले एक कर्मचारी को जानते हैं। हमने उन्हें दस रुपये दिए ताकि वे आम आप तक पहुँचा दें, और हमें उम्मीद है कि वे आप तक सुरक्षित, ठंडे और सही सलामत पहुँच गए होंगे। कृपया मुझे बताएँ कि वे समय पर पहुँच गए हैं या नहीं। अगर ऐसा है तो हम सीज़न खत्म होने से पहले एक और खेप का इंतज़ाम कर सकते हैं क्योंकि हमें पार्सल पोस्ट के लिए आधे पके आम नहीं चुनने पड़ेंगे। लेकिन माँ, आपको अपने ब्लड शुगर के कारण बहुत ज़्यादा आम खाने से भी सावधान रहना होगा। अरुण को भी यह पत्र पढ़ना चाहिए और आपके खाने-पीने पर नज़र रखनी चाहिए।

श्रीमती रूपा मेहरा की आंखें आंसू से भर आईं जब उन्होंने अपनी छोटी बेटी को पत्र पढ़कर सुनाया। फिर उन्होंने बड़े चाव से एक आम खाया और लता को भी एक आम खाने के लिए कहा।

'अब हम एक और साझा करेंगे,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।

‘माँ, आपका ब्लड शुगर—’

एक आम से कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

‘बेशक चलेगा, माँ, और अगला भी चलेगा, और उसके बाद वाला भी। और क्या आप नहीं चाहतीं कि ये अगले पार्सल के आने तक चलें?’

अमित और कुकू के आने से चर्चा बीच में ही रुक गई।

अमित ने पूछा, 'मीनाक्षी कहाँ है?'

'वह बाहर गई है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।

‘फिर से नहीं!’ अमित ने कहा। ‘मुझे उससे मिलने की उम्मीद थी। जब तक मुझे पता चला कि वह दीपांकर से मिलने आई है, तब तक वह जा चुकी थी। कृपया उसे बता देना कि मैंने फोन किया था। वह कहाँ चली गई?’

'उन संदिग्ध महिलाओं के लिए,' श्रीमती रूपा मेहरा ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

अमित ने कहा, 'कितने दुख की बात है। लेकिन आप दोनों को देखकर अच्छा लगा।' उसने लता की ओर मुड़कर कहा, 'कुक्कू अभी प्रेसिडेंसी कॉलेज में अपने एक पुराने दोस्त से मिलने जा रही थी, और मैंने सोचा कि शायद हम भी साथ चल लें। मुझे याद है कि आप भी उस इलाके में जाना चाहती थीं।'

'जी हां!' लता ने खुशी से कहा कि अमित को याद था। 'क्या मैं जा सकती हूं, मां? या आज दोपहर आपको मेरी कोई जरूरत है?'

'कोई बात नहीं,' श्रीमती रूपा मेहरा ने उदारतापूर्वक कहा। 'लेकिन जाने से पहले आप लोग कुछ आम जरूर खा लीजिए,' उन्होंने अमित और कुकू से बड़े सत्कारपूर्वक कहा। 'ये ब्रह्मपुर से अभी-अभी आए हैं। सविता ने भेजे हैं। और प्राण—यह कितना अच्छा लगता है जब किसी के बच्चे की शादी इतने समझदार व्यक्ति से होती है। और आप भी कुछ आम अपने साथ घर ले जाइए,' उन्होंने आगे कहा।

अमित, कुकू और लता के चले जाने के बाद, श्रीमती रूपा मेहरा ने एक और आम काटने का फैसला किया। अपर्णा जब अपनी नींद से उठी, तो उसे आम का एक टुकड़ा खिलाया गया। मीनाक्षी जब शैडी लेडीज़ से महजोंग के कुछ सफल खेल खेलकर लौटी, तो उसे सविता का पत्र पढ़कर सुनाया गया और उसे आम खाने के लिए कहा गया।

नहीं, माँ, मैं सच में नहीं कर सकती—यह मेरे शरीर के लिए अच्छा नहीं है —और इससे मेरी लिपस्टिक खराब हो जाएगी। हेलो, अपर्णा प्यारी— नहीं, अभी मम्मी को मत चूमो। तुम्हारे होंठ चिपचिपे हैं।'

श्रीमती रूपा मेहरा की यह राय पक्की थी कि मीनाक्षी बेहद विचित्र थी। आमों के प्रति इतना कठोर रवैया अपनाना लगभग अमानवीय निर्ममता

को दर्शाता था।
'अमित और कुकू ने इनका खूब आनंद लिया।'
‘ओह, कितना अफसोस है कि मैं उनसे मिल नहीं पाई।’ मीनाक्षी के लहजे में राहत झलक रही थी।
‘अमित खास तौर पर आपसे मिलने आया था। वह कई बार आ चुका है, और आप हर बार बाहर ही रहे हैं।’
'मुझे शक है।'
'तुम्हारा क्या मतलब है?' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, जिन्हें अपनी बहू द्वारा विरोध किए जाने पर बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता था।
मुझे शक है कि वह मुझसे मिलने आया होगा। आपके ब्रह्मपुर से आने से पहले वह बहुत कम ही हमसे मिलने आता था। वह अपने काल्पनिक पात्रों की दुनिया में ही रहना पसंद करता है।
श्रीमती रूपा मेहरा ने मीनाक्षी की ओर भौंहें चढ़ाईं लेकिन चुप रहीं।
‘ओह, माँ, आप तो बहुत देर से समझती हैं,’ मीनाक्षी ने आगे कहा। ‘साफ़ तौर पर उसकी दिलचस्पी लुट्स में है। मैंने उसे पहले कभी किसी लड़की के प्रति इतना विचारशील व्यवहार करते नहीं देखा। और यह कोई बुरी बात भी नहीं है।’
‘यह भी कोई बुरी बात नहीं है,’ अपर्णा ने इस वाक्यांश को आजमाते हुए दोहराया।
‘चुप रहो, अपर्णा,’ उसकी दादी ने तीखे स्वर में कहा। अपर्णा इतनी हैरान थी कि उसे अपनी दादी की डांट से कोई आहत नहीं हुई, इसलिए वह चुप रही लेकिन ध्यान से सुनती रही।
'यह सच नहीं है, यह बिल्कुल सच नहीं है। और उन दोनों को कोई भी ऐसी बात मत बताओ,' श्रीमती रूपा मेहरा ने मीनाक्षी की ओर उंगली हिलाते हुए कहा।

'मैं उन्हें कोई ऐसा विचार नहीं दूंगा जो उनके पास पहले से न हो,' यह उनका शांत जवाब था।

'मीनाक्षी, तुम शरारत करने वाली हो, मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूंगी,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।

'मेरी प्यारी माँ,' मीनाक्षी ने मुस्कुराते हुए कहा। 'गुस्सा मत होइए। न तो यह कोई शरारत है, न ही मैंने की है। मैं तो बस चीजों को उनके वास्तविक रूप में स्वीकार कर लेती हूँ।'

'मैं हालात को जैसे हैं वैसे ही स्वीकार करने का इरादा नहीं रखती,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। चटर्जी परिवार के हाथों अपने एक और बच्चे की बलि देने की घिनौनी कल्पना से उनका चेहरा गुस्से से लाल हो गया था। 'मैं उसे तुरंत ब्रह्मपुर वापस ले जाऊंगी।' वह रुक गईं। 'नहीं, ब्रह्मपुर नहीं। कहीं और।'

'और लुट्स आज्ञाकारी होकर तुम्हारे पीछे-पीछे चलेगा?' मीनाक्षी ने अपनी लंबी गर्दन फैलाते हुए कहा।

'लता एक समझदार और अच्छी लड़की है, और वह मेरी बात मानती है। वह उन लड़कियों की तरह जिद्दी और अवज्ञाकारी नहीं है जो खुद को बहुत आधुनिक समझती हैं। उसकी परवरिश अच्छे से हुई है।'

मीनाक्षी ने आलस से अपना सिर पीछे झुकाया और पहले अपने नाखूनों को देखा, फिर अपनी घड़ी को। 'ओह, मुझे दस मिनट में कहीं जाना है,' उसने कहा। 'माँ, क्या आप अपर्णा का ध्यान रखेंगी?'

श्रीमती रूपा मेहरा ने मौन भाव से अपनी नाराज़गी भरी सहमति व्यक्त की। मीनाक्षी भली-भांति जानती थी कि उसकी सास अपनी इकलौती पोती की देखभाल करके प्रसन्न होगी।

मीनाक्षी ने कहा, 'मैं साढ़े छह बजे तक वापस आ जाऊंगी। अरुण ने कहा था कि उसे आज ऑफिस में थोड़ी देर हो जाएगी।'

लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा नाराज थीं और उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। उनकी नाराजगी के पीछे धीरे-धीरे घबराहट पनपने लगी और उन पर हावी होने लगी।

7.41

अमित और लता कॉलेज स्ट्रीट की अनगिनत किताबों की दुकानों में घूम रहे थे। (कुकू कॉफी हाउस में कृष्णन से मिलने गई थी। उसके अनुसार, कृष्णन को 'शांत' करना ज़रूरी था, हालाँकि अमित ने उससे यह नहीं पूछा कि उसका मतलब क्या था, जिससे कुकू चिढ़ गई।)

लता ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा, 'इन लाखों किताबों के बीच कोई भी इतना भ्रमित महसूस करता है,' वह इस बात से हैरान थी कि शहर का कई सौ गज का क्षेत्र वास्तव में केवल किताबों के लिए ही समर्पित हो सकता है - फुटपाथ पर किताबें, सड़क पर बनी अस्थायी किताबों की अलमारियों पर किताबें, पुस्तकालय और प्रेसिडेंसी कॉलेज में किताबें, पहली, दूसरी, तीसरी और दसवीं बार पढ़ी गई किताबें, इलेक्ट्रोप्लेटिंग पर तकनीकी मोनोग्राफ से लेकर अगाथा क्रिस्टी की नवीनतम रचनाओं तक सब कुछ।

'आपका मतलब है कि मैं इन लाखों किताबों के बीच बहुत असमंजस में पड़ जाता हूँ।'

'नहीं, मैं करती हूँ,' लता ने कहा।

अमित ने कहा, 'मेरा मतलब "मैं" था, न कि "एक"। अगर आपका मतलब सामान्य "एक" होता, तो ठीक था। लेकिन आपका मतलब "मैं" था। बहुत से लोग "मैं" की जगह "एक" बोल देते हैं। मैंने उन्हें इंग्लैंड में ऐसा करते हुए अक्सर देखा है, और यह मूर्खता यहाँ उनके छोड़ देने के बाद भी लंबे समय तक बनी रहेगी।'

लता का चेहरा लाल हो गया लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। उसे याद आया

कि बिश् खुद को हमेशा और लगातार 'एक' कहकर संबोधित करता था।
अमित ने कहा, 'यह लगभग "तीन गुना" है।'
‘मैं समझ गई,’ लता ने कहा।
अमित ने आगे कहा, "जरा सोचिए अगर मैं आपसे कहूं: 'कोई आपसे प्यार करता है।'"
या इससे भी बुरा, "एक व्यक्ति दूसरे से प्यार करता है।" क्या यह मूर्खतापूर्ण नहीं लगता?
'हां,' लता ने भौंहें चढ़ाते हुए स्वीकार किया। उसे लगा कि वह कुछ ज़्यादा ही पेशेवर लहजे में बात कर रहा है। और 'प्यार' शब्द ने उसे बेवजह कबीर की याद दिला दी।
अमित ने कहा, 'मेरा मतलब बस यही था।'
लता ने कहा, 'मैं समझ गई। या यूं कहें कि, कोई समझ जाता है।'
अमित ने कहा, 'मुझे लगता है कि एक ऐसा करता है।'
कुछ देर रुककर लता ने पूछा, ‘उपन्यास लिखना कैसा होता है? क्या आपको ‘मैं’ या ‘एक’ को भूलना नहीं पड़ता?’
अमित ने कहा, 'मुझे ठीक से नहीं पता। यह मेरा पहला उपन्यास है और मैं अभी इसे समझने की प्रक्रिया में हूँ। फिलहाल यह एक बरगद के पेड़ जैसा लग रहा है।'
'मैं समझ गई,' लता ने कहा, हालांकि वह वास्तव में नहीं समझ पाई थी।
अमित ने आगे कहा, ‘मेरा मतलब यह है कि यह अंकुरित होता है, बढ़ता है, फैलता है और शाखाएँ नीचे गिराता है जो तने बन जाती हैं या दूसरी शाखाओं से उलझ जाती हैं। कभी-कभी शाखाएँ सूख जाती हैं। कभी-कभी मुख्य तना सूख जाता है और संरचना सहायक तनों के सहारे टिकी रहती है। जब आप वनस्पति उद्यान जाएँगे तो आपको मेरी बात समझ आ जाएगी। इसका अपना जीवन है—लेकिन इसमें, इसके ऊपर और इसके

आसपास रहने वाले साँप, पक्षी, मधुमक्खियाँ, छिपकलियाँ और दीमक भी अपने आप में जीवन हैं। लेकिन फिर यह गंगा नदी की तरह भी है—अपने ऊपरी, मध्य और निचले हिस्सों में—जिसमें इसका डेल्टा भी शामिल है—बेशक।'

'बिल्कुल,' लता ने कहा।

अमित ने कहा, 'मुझे ऐसा लग रहा है कि तुम मुझ पर हंस रहे हो।'

उसने कहा, 'इसे लिखने में अब तक तुम कितनी दूर तक आगे बढ़ चुकी हो?'

मैं लगभग एक तिहाई रास्ता तय कर चुका हूँ।

'और क्या मैं आपका समय बर्बाद नहीं कर रहा हूँ?'

'नहीं।'

'यह बंगाल के अकाल के बारे में है, है ना?'

'हाँ।'

क्या आपको स्वयं उस अकाल की कोई याद है?

'हाँ, मुझे याद है। मुझे अच्छी तरह याद है। यह सिर्फ आठ साल पहले की बात है।' वह रुका। 'मैं उस समय छात्र राजनीति में थोड़ा सक्रिय था। लेकिन क्या आप जानते हैं, हमारे पास तब भी एक कुत्ता था, और हम उसे अच्छे से खिलाते-पिलाते थे।' वह परेशान लग रहा था।

लता ने पूछा, 'क्या एक लेखक को अपनी रचना के बारे में दृढ़ता से महसूस करना आवश्यक है?'

अमित ने कहा, 'मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं है। कभी-कभी मैं उन चीजों के बारे में सबसे अच्छा लिखता हूं जिनकी मुझे सबसे कम परवाह होती है। लेकिन यह भी कोई पक्का नियम नहीं है।'

तो क्या आप बस हाथ-पैर मारते रहेंगे और उम्मीद करते रहेंगे?

नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं।

लता को लगा कि अमित, जो एक मिनट पहले इतना खुला और उदार था, अब उसके सवालों का विरोध कर रहा था, और उसने आगे इस बारे में और पूछताछ नहीं की।

अमित ने कहा, 'मैं तुम्हें कभी अपनी कविताओं की एक किताब भेजूंगा। और तुम खुद तय कर लेना कि मैं कितना महसूस करता हूं या कितना कम महसूस करता हूं।'

'अभी क्यों नहीं?' लता ने पूछा।

अमित ने कहा, 'मुझे उपयुक्त शिलालेख सोचने के लिए समय चाहिए।'

'अरे, कुकू का नाम तो है ही।'

7.42

कुकु ने अपना काम पूरा कर लिया था। अब वह जल्द से जल्द घर जाना चाहती थी। दुर्भाग्य से, एक बार फिर बारिश शुरू हो गई थी, और जल्द ही गर्म बारिश हंबर की छत पर ज़ोर से बरसने लगी। सड़क के किनारों से भूरे पानी की छोटी-छोटी धाराएँ बहने लगीं। थोड़ा आगे जाने पर सड़क का नामोनिशान नहीं था, बस एक उथली नहर जैसी जगह थी, जहाँ विपरीत दिशा से आ रहे वाहनों से ऐसी लहरें उठ रही थीं जिनसे कार का ढांचा हिल रहा था। दस मिनट बाद कार अचानक आई बाढ़ में फंस गई। ड्राइवर धीरे-धीरे आगे बढ़ा, सड़क के बीचोंबीच रहने की कोशिश कर रहा था, जहाँ ढलान के कारण पानी का स्तर थोड़ा ऊंचा था। तभी इंजन बंद हो गया।

कार में कुकू और अमित से बात करने का मौका मिलने पर लता को कोई चिंता नहीं हुई। हालांकि, गर्मी बहुत थी और उसके माथे पर पसीने की बूँदें आ गईं। अमित ने उसे अपने कॉलेज के दिनों के बारे में थोड़ा बताया और बताया कि उसने कविताएँ लिखना कैसे शुरू किया। उसने कहा, 'मेरी ज़्यादातर कविताएँ बहुत खराब थीं और मैंने उन्हें जला दिया था।'

‘तुम ऐसा कैसे कर सकते हो?’ लता ने हैरानी से पूछा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि कोई इतनी भावनाओं से लिखी गई चीज़ को कैसे जला सकता है। पर कम से कम उसने उसे जलाया तो था, फाड़ा नहीं था। फाड़ना तो बहुत ही बेमन का काम होता। कलकत्ता की गर्मी में आग जलाने का ख्याल भी अजीब था। बल्लीगंज वाले घर में कोई चिमनी नहीं थी।

‘तुमने कविताएँ कहाँ जलाईं?’ उसने पूछा।

‘वॉशबेसिन में,’ कुकू ने बीच में टोकते हुए कहा। ‘उसने लगभग घर में आग भी लगा दी थी।’

अमित ने बचाव करते हुए कहा, 'यह बेहद घटिया कविता थी। शर्मनाक हद तक खराब। आत्ममुग्ध और बेईमान।'

मुझे कविता की इच्छा नहीं है

मैं अग्नि में आत्मदाह कर लूंगा।

मुझे एक कुकू मिला।

‘मेरा सारा दुख, मेरा सारा दर्द:

राख नाली में बह रही है।

अमित ने आगे कहा।

लता ने अजीब सी झुंझलाहट के साथ पूछा, ‘क्या कोई चटर्जी ऐसे नहीं हैं जो हल्के-फुल्के दोहे न लिखते हों?’ क्या वे कभी गंभीर नहीं होते? भला वे इतने मार्मिक मामलों पर मज़ाक कैसे कर सकते हैं?

‘माँ और बाबा नहीं गाते,’ कुकु ने कहा। ‘क्योंकि अमित को कभी बड़े भाई के रूप में नहीं देखा। और दीपांकर हम बाकी लोगों जितना कुशल नहीं है। यह हमारे लिए स्वाभाविक है, जैसे किसी राग में गाना, अगर आपने उसे बार-बार सुना हो। लोग हैरान होते हैं कि हम गा सकते हैं, लेकिन हम हैरान हैं कि दीपांकर नहीं गा सकता। या फिर महीने में एक

बार ही, जब उसका काव्यमय दौर आता है...'
तुकबंदी, इतनी सटीक तुकबंदी—
दोहे अच्छे बन रहे हैं।
काकोली ने गुनगुनाते हुए कहा, और वह इतनी भयावह आवृत्ति से दोहे सुनाती थी कि अब उन्हें काकोली-दोहे कहा जाने लगा था, हालांकि इस चलन की शुरुआत अमित ने की थी।
अब तक अधिकांश मोटर वाहन थम चुके थे। कुछ रिक्शा अभी भी चल रहे थे, रिक्शावाले कमर तक पानी में डूबे हुए थे, उनके यात्री, सामान से लदे हुए, अपने चारों ओर के जलमग्न भूरे रंग के संसार को एक प्रकार की भयभीत संतुष्टि के साथ देख रहे थे।
कुछ देर बाद पानी कम हो गया। ड्राइवर ने इंजन देखा, इग्निशन वायर को देखा, जो गीला था, और उसे कपड़े से पोंछा। फिर भी गाड़ी स्टार्ट नहीं हुई। फिर उसने कार्बोरेटर देखा, थोड़ा इधर-उधर हिलाया, और अपनी पसंदीदा देवियों के नाम सही क्रम में बुदबुदाए। गाड़ी चलने लगी।
जब तक वे सनी पार्क वापस पहुंचे तब तक अंधेरा हो चुका था।
रूपा मेहरा ने लता से तीखे स्वर में कहा, 'तुमने बहुत देर लगा दी।' लता ने अमित को घूरकर देखा।
अमित और लता दोनों ही अपने स्वागत में दिखाई गई शत्रुता से आश्चर्यचकित थे।
'मीनाक्षी भी तुमसे पहले लौट आई है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने आगे कहा। उन्होंने अमित की ओर देखा और मन ही मन सोचा: कवि, निकम्मा! इसने जीवन भर एक भी ईमानदारी का रुपया नहीं कमाया। मैं नहीं चाहती कि मेरे सारे पोते-पोती बंगाली बोलें! अचानक उन्हें याद आया कि पिछली बार जब अमित लता को घर छोड़ने गया था, तब उसके बालों में फूल लगे हुए थे।

लता की ओर देखते हुए, लेकिन संभवतः उन दोनों को—या शायद उन तीनों को, जिनमें कुकू भी शामिल थी—संबोधित करते हुए, उसने आगे कहा: 'तुमने मेरा रक्तचाप और मेरा रक्त शर्करा बढ़ा दिया है।'

'नहीं, माँ,' लता ने थाली में रखे ताज़े आम के छिलकों को देखते हुए कहा। 'अगर आपका ब्लड शुगर बढ़ गया है तो यह उन दसहरे पकवानों की वजह से है जो आप खा रही हैं। अब कृपया दिन में एक से ज़्यादा मत खाना—या ज़्यादा से ज़्यादा दो।'

'क्या तुम अपनी दादी को अंडे चूसना सिखा रहे हो?' श्रीमती रूपा मेहरा ने गुस्से से घूरते हुए पूछा।

अमित मुस्कुराया। उसने कहा, 'यह मेरी गलती थी, माँ। विश्वविद्यालय से थोड़ी दूर पर सड़कें पानी से भर गई थीं, और हम उसमें फंस गए।'

श्रीमती रूपा मेहरा का दोस्ताना व्यवहार करने का कोई मूड नहीं था। आखिर वह मुस्कुरा क्यों रहा था?

'क्या आपका ब्लड शुगर बहुत ज्यादा है?' काकोली ने झट से पूछा।

'बहुत ज़्यादा,' श्रीमती रूपा मेहरा ने दुख और गर्व के साथ कहा। 'मैंने करेले का रस भी पिया है, लेकिन उसका कोई असर नहीं हुआ।'

'तो फिर आपको मेरे होम्योपैथिक डॉक्टर के पास जाना होगा,' काकोली ने कहा।

रूपा मेहरा ने अपने हमले से ध्यान हटाते हुए कहा, 'मेरे पास पहले से ही एक होम्योपैथ है।'

लेकिन काकोली ने जोर देकर कहा कि उसका डॉक्टर बाकी सभी डॉक्टरों से बेहतर है। 'डॉक्टर नूरुद्दीन।'

'एक मुसलमान?' श्रीमती रूपा मेहरा ने संदेह से पूछा।

'हां। यह घटना कश्मीर में हुई थी, जब हम छुट्टियां मना रहे थे।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने दृढ़ता से कहा, 'मैं कश्मीर नहीं जा रही हूं।'

नहीं, उन्होंने मेरा इलाज यहीं किया। उनका क्लिनिक यहीं कलकत्ता में है। वे लोगों का हर तरह का इलाज करते हैं—मधुमेह, गठिया, त्वचा संबंधी समस्याएं। मेरे एक दोस्त की पलक पर एक गांठ थी। उन्होंने उसे थूजा नाम की दवा दी और गांठ तुरंत गायब हो गई।

'जी हां,' अमित ने जोश से सहमति जताते हुए कहा। 'मैंने अपनी एक दोस्त को होम्योपैथ के पास भेजा था, और उसका ब्रेन ट्यूमर गायब हो गया, उसकी टूटी हुई टांग ठीक हो गई, और हालांकि वह बांझ थी, उसने तीन महीने के भीतर जुड़वां बच्चों को जन्म दिया।'

कुकू और श्रीमती रूपा मेहरा दोनों ने उसे घूरकर देखा। लता ने उसे मिली-जुली नाराज़गी और स्वीकृति भरी मुस्कान के साथ देखा।

'अमित हमेशा उन चीजों का मजाक उड़ाता है जो उसे समझ नहीं आतीं,' कुकू ने कहा। 'वह होम्योपैथी को ज्योतिष से जोड़कर देखता है। लेकिन हमारे पारिवारिक डॉक्टर को भी धीरे-धीरे होम्योपैथी की प्रभावशीलता का यकीन हो गया है। और कश्मीर में हुई मेरी भयानक समस्या के बाद से मैं पूरी तरह से होम्योपैथी का समर्थक बन गया हूँ। मुझे परिणाम पर विश्वास है,' कुकू ने आगे कहा। 'जब कोई चीज काम करती है तो मैं उस पर भरोसा करता हूँ।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने उत्सुकता से पूछा, 'आपको क्या समस्या थी?'

'यह गुलमर्ग के एक होटल में मिलने वाली आइसक्रीम थी।'

'ओह।' श्रीमती रूपा मेहरा की कमजोरियों में से एक आइसक्रीम भी थी।

'होटल में खुद की आइसक्रीम बनाई जाती थी। मैंने अचानक ही दो स्कूप आइसक्रीम खा ली।'

'और तब?'

'फिर—फिर तो भयानक स्थिति हो गई।' कुकू की आवाज़ में उसके सदमे की झलक थी। 'मेरा गला बुरी तरह दुख रहा था। स्थानीय डॉक्टर ने मुझे

कुछ एलोपैथिक दवा दी। उससे एक दिन के लिए आराम मिला, फिर वही लक्षण वापस आ गए। मैं खा नहीं सकती थी, गा नहीं सकती थी, मुश्किल से बोल पाती थी, निगल नहीं सकती थी। ऐसा लगता था जैसे मेरे गले में कांटे चुभ रहे हों। मुझे कुछ भी बोलने से पहले सोचना पड़ता था।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने सहानुभूति जताते हुए अपनी जीभ चटकाई।

'और मेरी नाक पूरी तरह से बंद हो गई थी।' कुकू थोड़ी देर रुकी, फिर आगे बोली:

फिर मुझे दवा की एक और खुराक दी गई। इससे मेरी हालत कुछ देर के लिए दब गई, लेकिन फिर से बिगड़ गई। मुझे दिल्ली भेजा गया और फिर हवाई जहाज से कलकत्ता वापस लाया गया। तीसरी खुराक के बाद मेरा गला सूज गया था, साइनस और नाक दोनों में संक्रमण हो गया था, मेरी हालत बहुत खराब थी। मेरी चाची, श्रीमती गांगुली ने डॉक्टर नूरुद्दीन का नाम सुझाया। उन्होंने मेरी माँ से कहा, "उनसे इलाज करवाकर देखिए। इसमें क्या हर्ज है?"

श्रीमती रूपा मेहरा के लिए सस्पेंस असहनीय था। बीमारियों से जुड़ी कहानियाँ उनके लिए उतनी ही दिलचस्प थीं जितनी कि हत्या के रहस्य या प्रेम कहानियाँ।

उन्होंने मेरी मेडिकल हिस्ट्री ली और मुझसे कुछ अजीब सवाल पूछे। फिर उन्होंने कहा: "पल्सटिला की दो खुराकें लो और मेरे पास वापस आओ।" मैंने कहा: "दो खुराकें? सिर्फ दो खुराकें? क्या इतना काफी होगा? पूरा कोर्स नहीं?" उन्होंने कहा: "इंशाल्लाह, दो खुराकें काफी होंगी।" और ऐसा ही हुआ। मैं ठीक हो गया। सूजन गायब हो गई। मेरे साइनस पूरी तरह से साफ हो गए और यह समस्या फिर कभी नहीं हुई। एलोपैथिक इलाज में साइनस को पंचर करके पस निकालना पड़ता, जबकि यह एक

स्थायी समस्या थी—और अगर मैं डॉ. नूरुद्दीन के पास नहीं जाता, तो यही होता; और अमित, तुम हंसना बंद करो।'

श्रीमती रूपा मेहरा मान गईं। उन्होंने कहा, 'मैं आपके साथ उनसे मिलने चलूंगी।'

'लेकिन तुम्हें उसके अजीबोगरीब सवालों पर ध्यान नहीं देना चाहिए,' काकोली ने कहा।

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'मैं हर परिस्थिति में खुद को संभाल सकती हूं।'

उनके चले जाने के बाद, श्रीमती रूपा मेहरा ने लता से तीखे स्वर में कहा:

'मैं कलकत्ता से बहुत ऊब गया हूँ, प्रिय, और यह मेरे स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा नहीं है। चलो दिल्ली चलते हैं।'

'किसलिए, माँ?' लता ने कहा। 'मुझे यहाँ अच्छा लगने लगा है। और अचानक ऐसा क्यों?'

श्रीमती रूपा मेहरा ने अपनी बेटी को गौर से देखा।

लता हंसते हुए बोलीं, 'और हमारे पास अभी भी खाने के लिए ढेर सारे आम बचे हैं। और हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि वरुण थोड़ी पढ़ाई भी कर ले।'

श्रीमती रूपा मेहरा गंभीर दिख रही थीं। 'मुझे बताओ—' उन्होंने कहना शुरू किया, फिर रुक गईं। लता निश्चित रूप से उस मासूमियत का दिखावा नहीं कर रही होगी जो उसके चेहरे पर साफ झलक रही थी। और अगर वह दिखावा नहीं कर रही थी, तो उसके दिमाग में ये बातें क्यों डाली जा रही थीं?

'हां मां?'

'मुझे बताओ तुमने आज क्या किया।'

यह श्रीमती रूपा मेहरा के रोज़ाना के सवालों से मिलता-जुलता था, और

लता को अपनी माँ को सामान्य व्यवहार करते देखकर राहत मिली। लता का कलकत्ता और चटर्जी परिवार से अलग होने का कोई इरादा नहीं था। जब उसने सोचा कि यहाँ आने पर वह कितनी दुखी थी, तो उसे उस परिवार के प्रति, और विशेष रूप से सहज, व्यंग्यपूर्ण और विचारशील अमित के प्रति कृतज्ञता महसूस हुई, जिस तरह उन्होंने उसे अपने परिवार में समाहित कर लिया था—लगभग तीसरी बहन की तरह, उसने सोचा।

इसी बीच श्रीमती रूपा मेहरा भी चटर्जी परिवार के बारे में सोच रही थीं, लेकिन उनके विचार उतने सकारात्मक नहीं थे। मीनाक्षी की बातों ने उन्हें घबरा दिया था।

वह सोच रही थी, मैं अकेले ही दिल्ली जाऊंगी, ज़रूरत पड़ने पर। कल्पना गौर को तुरंत मेरे लिए एक अच्छा लड़का ढूंढने में मदद करनी होगी। फिर मैं लता को बुलाऊंगी। अरुण बिल्कुल निकम्मा है। शादी के बाद से उसने अपने परिवार के लिए सारी भावना खो दी है। उसने लता को इस विश्वनाथ नाम के लड़के से मिलवाया था, और तब से उसने कुछ नहीं किया। उसे अपनी बहन के प्रति कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। अब मैं दुनिया में बिल्कुल अकेली हूँ। सिर्फ़ मेरी अपर्णा ही मुझसे प्यार करती है। मीनाक्षी सो रही थी, और अपर्णा उस बूढ़ी औरत के साथ थी जिसके दांत नहीं थे। श्रीमती रूपा मेहरा ने अपनी पोती को तुरंत अपनी गोद में ले लिया।

7.43

बारिश की वजह से अरुण को भी देर हो गई थी। जब वह घर लौटा तो बहुत गुस्से में था।

अपनी मां, बहन और बेटी के लिए बस एक हल्की सी आवाज़ निकालकर, वह सीधे बेडरूम में चला गया। 'सारे के सारे लोग कमीने हैं,' उसने ऐलान किया। 'और ड्राइवर भी।'

मीनाक्षी ने बिस्तर से ही उसे देखा। उसने जम्हाई ली:

‘अरुण, प्रिय, इतना गुस्सा क्यों?’
फ्लूरी द्वारा बनाई गई चॉकलेट का आनंद लें।
‘अरे, ये बेवकूफी भरी बकवास बंद करो,’ अरुण चिल्लाया, अपना ब्रीफकेस नीचे रखते हुए और अपना भीगा हुआ कोट कुर्सी के बाजू पर रखते हुए। ‘तुम मेरी पत्नी हो। कम से कम सहानुभूति जताने का नाटक तो कर सकती हो।’
‘क्या हुआ, डार्लिंग?’ मीनाक्षी ने अपने चेहरे पर अपेक्षित भाव लाते हुए कहा। ‘ऑफिस में दिन खराब रहा?’
अरुण ने अपनी आंखें बंद कर लीं। वह बिस्तर के किनारे बैठ गया।
'मुझे बताओ,' मीनाक्षी ने कहा, उसकी लंबी, सुंदर, लाल नाखूनों वाली उंगलियां धीरे-धीरे उसकी टाई ढीली कर रही थीं।
अरुण ने आह भरी। “इस कमीने रिक्शावाले ने मुझे सड़क पार मेरी कार तक ले जाने के लिए तीन रुपये मांगे। सड़क पार?” उसने घृणा और अविश्वास से सिर हिलाते हुए दोहराया।
मीनाक्षी की उंगलियां रुक गईं। 'नहीं!' वह सचमुच हैरान होकर बोली। 'मुझे उम्मीद है कि आपने भुगतान करने के लिए सहमति नहीं दी होगी।'
‘मैं क्या कर सकता था?’ अरुण ने पूछा। ‘मैं घुटनों तक पानी में चलकर अपनी कार तक नहीं जा सकता था—या फिर सड़क के बाढ़ वाले हिस्से को पार करते समय कार के रुकने का जोखिम नहीं उठा सकता था।’ वह यह देख सकता था—और साहब को अपनी मुट्ठी में पाकर वह मुस्कुरा रहा था। “यह तुम्हारा फैसला है,” उसने कहा। “तीन रुपये।” तीन रुपये! जबकि आम तौर पर यह ज़्यादा से ज़्यादा दो आना होता है। एक आना ज़्यादा उचित कीमत होती—बीस कदम से ज़्यादा नहीं। लेकिन वह देख सकता था कि आस-पास कोई दूसरा रिक्शा नहीं था और मैं भीग रहा था। धिक्कार है मुनाफाखोरों पर!’

मीनाक्षी ने बिस्तर से ही दर्पण में देखा और कुछ पल सोचती रही। उसने कहा, 'मुझे बताओ, जब विश्व बाजार में जूट की अस्थायी कमी हो जाती है और कीमतें बढ़ जाती हैं, तो बेंटसेन प्राइस क्या करते हैं? क्या वे अपनी कीमतें बाजार की मांग के अनुसार नहीं बढ़ा देते? या यह सिर्फ मारवाड़ी प्रथा है? मुझे पता है कि सुनार और चांदी के कारीगर ऐसा करते हैं। और सब्जी बेचने वाले भी। मुझे लगता है कि रिक्शावाला भी यही कर रहा था। शायद मुझे इतना हैरान नहीं होना चाहिए था। और न ही तुम्हें।'

वह सहानुभूति दिखाने का अपना इरादा भूल चुकी थी। अरुण ने उसे आहत भाव से देखा, लेकिन अनजाने में ही सही, उसके शब्दों में छिपी अप्रिय रूप से प्रभावशाली तर्कशक्ति को समझ गया।

'क्या तुम मेरा काम करना चाहोगे?' उसने पूछा।

'अरे नहीं, प्यारे,' मीनाक्षी ने नाराज़गी जताए बिना कहा। 'मैं कोट और टाई पहनना बर्दाश्त नहीं कर सकती। और मुझे तुम्हारी प्यारी मिस क्रिस्टी को चिट्ठियाँ लिखवाना भी नहीं आता। . . . वैसे, आज ब्रह्मपुर से कुछ आम आए हैं। और सविता की एक चिट्ठी भी।'

'ओह।'

और मां, अपनी आदत के अनुसार, अपनी मधुमेह की परवाह किए बिना उन्हें जमकर खा रही हैं।

अरुण ने सिर हिलाया। मानो उसकी मुसीबतें पहले से ही कम न हों। उसकी माँ सुधरने वाली नहीं थी। कल वो फिर तबीयत खराब होने की शिकायत करेगी और उसे डॉक्टर के पास ले जाना पड़ेगा। माँ, बहन, बेटी, पत्नी: उसे अचानक लगा जैसे वो फँस गया हो—पूरा घर औरतों से भरा पड़ा है। और ऊपर से निकम्मा वरुण भी।

वरुण कहाँ है?

मीनाक्षी ने कहा, 'मुझे नहीं पता। वह लौटा नहीं है, और उसने फोन भी

नहीं किया है। मुझे नहीं लगता कि उसने किया है। मैं झपकी ले रही थी।'
अरुण ने आह भरी।
'मैं तुम्हारे बारे में सपने देख रही थी,' मीनाक्षी ने झूठ बोला।
'क्या आपके पास है?' अरुण ने शांत होकर पूछा। 'चलिए—'
'ओह, बाद में, तुम्हें नहीं लगता, डार्लिंग?' मीनाक्षी ने शांत भाव से कहा। 'हमें आज शाम बाहर जाना है।'
'क्या कोई ऐसी शाम नहीं होती जब हम बाहर न जाते हों?' अरुण ने पूछा।
मीनाक्षी ने कंधे उचकाए, मानो यह कहना चाह रही हो कि इनमें से अधिकांश कार्यक्रम उसकी मर्जी से नहीं हुए थे।
'काश मैं फिर से कुंवारा हो जाता।' अरुण ने अनजाने में ही ये बात कह दी थी।
मीनाक्षी की आँखों में आग सी दौड़ गई। 'अगर तुम वैसा ही बनना चाहती हो तो—' उसने कहना शुरू किया।
नहीं, नहीं, मेरा मतलब वो नहीं है। बस ये बहुत ज्यादा तनाव है। और मेरी पीठ में फिर से दर्द होने लगा है।
मीनाक्षी ने कहा, 'मुझे वरुण का कुंवारा जीवन उतना प्रशंसनीय नहीं लगता।'
अरुण ने भी ऐसा ही किया। उसने फिर से अपना सिर हिलाया और आह भरी। वह थका हुआ लग रहा था।
बेचारा अरुण, मीनाक्षी ने सोचा।
'चाय—या कोई पेय, प्रिये?' उसने कहा।
'चाय,' अरुण ने कहा। 'चाय। एक बढ़िया कप चाय। बाकी पेय बाद में भी पी जा सकता है।'

वरुण अभी तक नहीं लौटा था क्योंकि वह पार्क लेन स्थित साजिद के घर में जुआ खेलने और सिगरेट पीने में व्यस्त था। पार्क लेन एक ऐसी गली थी जो सुनने में जितनी लगती थी उससे कहीं ज़्यादा गंदी थी। साजिद, जेसन, वरुण और कुछ अन्य दोस्त ऊपर साजिद के बड़े से पलंग पर बैठे थे और फ्लश खेल रहे थे: एक आना ब्लाइंड से शुरू करके दो आना सीन। आज, कुछ अन्य मौकों की तरह, उनके साथ नीचे वाले फ्लैट में रहने वाले साजिद के किराएदार पॉल और उसकी बहन हॉर्टेंस भी शामिल हो गए थे। हॉर्टेंस (जिसे साजिद और उसके दोस्त आपस में 'हॉट-एंड्स' कहते थे) अपने प्रेमी (एक जहाज़ के कर्मचारी) की गोद में बैठी थी और उसकी तरफ से खेल रही थी। दांव बढ़कर चार आना ब्लाइंड और आठ आना सीन हो गया था—यह उनकी अधिकतम सीमा थी। सभी घबराए हुए थे और लोग इधर-उधर अपने दांव समेट रहे थे। अंत में केवल वरुण, जो बेहद घबराया हुआ था, और हॉट-एंड्स, जो बेहद शांत थी, बचे रहे।

साजिद ने कहा, 'अब सिर्फ वरुण और हॉर्टेंस अकेले होंगे। अब तो माहौल और भी गर्म हो जाएगा।'

वरुण का चेहरा शर्म से लाल हो गया और उसके हाथ से कार्ड लगभग गिर ही गए। दोस्तों के बीच यह बात सबको पता थी (लेकिन हॉर्टेंस के बॉयफ्रेंड, जो कि पर्सर था, को नहीं) कि पॉल—जो वैसे तो बेरोजगार था—अपनी बहन के लिए दलाली करता था जब भी उसका बॉयफ्रेंड शहर से बाहर होता था। पता नहीं वह ग्राहकों को कहाँ से लाता था, लेकिन कभी-कभी वह देर शाम को किसी व्यापारी के साथ टैक्सी में लौटता था और हॉर्टेंस और उसके ग्राहक के काम करते रहने के दौरान सीढ़ियों के नीचे या बाहर सीढ़ियों पर खड़ा होकर रोड्स नेवी कट सिगरेट पीता रहता था।

वरुण के चेहरे के भाव को देखकर जेसन ने कहा, 'एकदम शानदार'।

वरुण, घबराहट से कांपते हुए और तसल्ली के लिए अपने कार्डों पर नज़र डालते हुए, फुसफुसाया, 'मैं यहीं रुकूंगा।' उसने आठ आना का सिक्का किटी में डाल दिया, जिसमें अब लगभग पांच रुपये बचे थे।

हॉट-एंड्स ने अपने कार्डों या किसी और की ओर देखे बिना, और जितना संभव हो सके उतने भावहीन चेहरे के साथ, चुपचाप आठ आना और पूल में डाल दिए। उसके प्रेमी ने अपनी उंगली उसके गले के गड्ढे में ऊपर-नीचे फिराई, और वह पीछे की ओर झुक गई।

वरुण, घबराहट में अपनी जीभ होठों पर फेरते हुए और उत्साह से चमकती आँखों के साथ, आठ आने और दांव पर लगा दिए। हॉट-एंड्स ने इस बार सीधे उसकी ओर देखते हुए, उसकी भयभीत और मोहित निगाहों को अपनी निगाहों से थामते हुए, जितना संभव हो सके भारी स्वर में कहा: 'अरे, लालची लड़के! तुम बस मेरा फायदा उठाना चाहते हो। ठीक है, मैं तुम्हें वही दूंगी जो तुम चाहते हो।' और उसने आठ आने और जमा कर दिए।

वरुण अब और बर्दाश्त नहीं कर सका। सस्पेंस से कमजोर और इस डर से भयभीत कि उसके हाथ में क्या होगा, उसने कार्ड दिखाने को कहा। हॉट-एंड्स के पास हुकुम का बादशाह, रानी और गुलाम था। वरुण राहत से लगभग गिर पड़ा। उसके पास हीरे का इक्का, बादशाह और रानी थी।

लेकिन वह इतना टूटा हुआ लग रहा था मानो हार गया हो। उसने अपने दोस्तों से विनती की कि उसे जाने दें और घर जाने दें।

‘बिल्कुल नहीं!’ साजिद ने कहा। ‘आप यूं ही पैसे कमाकर गायब नहीं हो सकते। आपको इसे बनाए रखने के लिए संघर्ष करना होगा।’

और वरुण ने अगले कुछ खेलों में अपनी सारी जीती हुई रकम (और उससे भी ज़्यादा) गंवा दी। ट्राम से घर लौटते समय उसने मन ही मन सोचा, "मैं जो भी करता हूँ, सब गड़बड़ हो जाता है। मैं एक निकम्मा

इंसान हूँ—बिल्कुल निकम्मा—और परिवार के लिए कलंक हूँ।" हॉट-एंड्स ने उसे जिस तरह से देखा था, उसे याद करके वह फिर से घबरा गया और सोचने लगा कि अगर वह अपने शमशु दोस्तों के साथ मेलजोल जारी रखता है तो कहीं उसके लिए और भी मुसीबतें न खड़ी हो जाएँ।

7.45

जिस सुबह श्रीमती रूपा मेहरा दिल्ली जाने वाली थीं, उस सुबह मेहरा परिवार नाश्ते की मेज पर बैठा था। अरुण हमेशा की तरह क्रॉसवर्ड हल कर रहा था। थोड़ी देर बाद उसने कुछ और पन्ने देखे।

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'कम से कम आप मुझसे बात तो कर सकते हैं। मैं आज जा रही हूं, और आप अपने अखबार के पीछे छिपे हुए हैं।'

अरुण ने ऊपर देखा। 'सुनो माँ,' उसने कहा। 'बिल्कुल तुम्हारे लिए ही है।' और उसने व्यंग्यात्मक स्वर में अखबार का एक विज्ञापन पढ़कर सुनाया:

सात दिनों में मधुमेह का इलाज। चाहे मधुमेह कितना भी गंभीर या लंबे समय से चला आ रहा हो, नवीनतम वैज्ञानिक खोज वीनस चार्म से इसे पूरी तरह ठीक किया जा सकता है। इस बीमारी के कुछ मुख्य लक्षण हैं असामान्य प्यास और भूख, मूत्र में अतिरिक्त शर्करा और खुजली आदि। गंभीर रूप में यह फोड़े, मवाद, मोतियाबिंद और अन्य जटिलताओं का कारण बनता है। वीनस चार्म का उपयोग करके हजारों लोग मृत्यु के मुंह से बच चुके हैं। यह अगले ही दिन शर्करा को खत्म कर देता है और विशिष्ट गुरुत्वाकर्षण को सामान्य कर देता है। 2 या 3 दिनों के भीतर आप आधे से अधिक ठीक महसूस करेंगे। कोई आहार संबंधी प्रतिबंध नहीं। 50 गोलियों की एक शीशी की कीमत 6 रुपये 12 आना है। डाक निःशुल्क। वीनस रिसर्च लेबोरेटरी (एन.एच.), पोस्ट बॉक्स 5 से उपलब्ध।

श्रीमती रूपा मेहरा चुपचाप रोने लगीं। उन्होंने अपने बड़े बेटे से कहा, 'मैं आशा करती हूँ कि तुम्हें कभी मधुमेह न हो। अभी तुम मेरा जितना चाहो

उतना मज़ाक उड़ा सकते हो, लेकिन—'

'लेकिन जब तुम मर जाओगे और चले जाओगे—चिता—खाली कुर्सी—हाँ, हाँ, बाकी तो हम जानते ही हैं,' अरुण ने काफी निर्ममता से कहना जारी रखा।

पिछली रात से उसकी पीठ में दर्द हो रहा था, और मीनाक्षी उसके प्रदर्शन से संतुष्ट नहीं थी।

'चुप रहो, अरुण भाई!' वरुण गुस्से से लाल-पीला चेहरा करके बोला। वह अपनी माँ के पास गया और उनके कंधे पर हाथ रख दिया।

'मुझसे इस तरह बात मत करो,' अरुण उठकर वरुण की ओर धमकी भरे लहजे में बढ़ते हुए बोला। '"चुप रहो"? क्या तुमने मुझसे "चुप रहो" कहा? तुरंत निकल जाओ। निकल जाओ!' वह गुस्से से आग बबूला हो रहा था। 'निकल जाओ!' उसने एक बार फिर दहाड़ लगाई।

यह स्पष्ट नहीं था कि वह वरुण को कमरे से, घर से या अपने जीवन से बाहर निकालना चाहता था।

'अरुण भाई, सच में—' लता ने आक्रोश से विरोध किया।

वरुण सहम गया और मेज के दूसरी तरफ पीछे हट गया।

'आप दोनों बैठ जाइए,' मीनाक्षी ने कहा। 'चलिए शांति से नाश्ता करते हैं।'

दोनों बैठ गए। अरुण ने वरुण को घूरा, वरुण ने अपने अंडे को घूरा।

'और वो मुझे स्टेशन तक जाने के लिए गाड़ी तक नहीं देता,' श्रीमती रूपा मेहरा ने अपने काले बैग से रुमाल निकालते हुए कहा। 'मुझे अजनबियों की मदद पर निर्भर रहना पड़ता है।'

'सच में, माँ,' लता ने अपनी माँ के गले में हाथ डालकर उन्हें चूमते हुए कहा। 'अमित कोई अजनबी नहीं है।'

श्रीमती रूपा मेहरा के कंधे तन गए।

‘तुम भी,’ उसने लता से कहा। ‘तुम्हें मेरी भावनाओं की कोई परवाह नहीं है।’

‘माँ!’ लता ने कहा।

‘तुम खूब मौज-मस्ती करोगे। सिर्फ मेरी प्यारी अपर्णा को ही मेरे जाने का दुख होगा।’

‘माँ, ज़रा समझदारी से काम लीजिए। वरुण और मैं आपके साथ होम्योपैथ के पास और फिर थाने चलेंगे। और अमित पंद्रह मिनट में गाड़ी लेकर यहाँ आ जाएगा। क्या आप चाहती हैं कि वह आपको रोते हुए देखे?’

'मुझे इस बात की परवाह नहीं है कि वह क्या देखता है या क्या नहीं देखता,' श्रीमती रूपा मेहरा ने अपनी आवाज में तीखेपन के साथ कहा।

अमित समय पर पहुँच गया। श्रीमती रूपा मेहरा ने अपना चेहरा धो लिया था, लेकिन उनकी नाक अभी भी भावुकता से लाल थी। अपर्णा को विदाई देते समय दोनों रोने लगीं। सौभाग्य से अरुण पहले ही काम पर जा चुका था, इसलिए वह किनारे खड़े होकर कोई अनावश्यक टिप्पणी नहीं कर सका।

*

होम्योपैथ डॉक्टर नूरुद्दीन अधेड़ उम्र के व्यक्ति थे, जिनका चेहरा लंबा, व्यवहार हंसमुख और आवाज कुछ धीमी थी। उन्होंने श्रीमती रूपा मेहरा का गर्मजोशी से अभिवादन किया, उनकी सामान्य जानकारी और चिकित्सा इतिहास प्राप्त किया, उनके रक्त शर्करा चार्ट देखे, काकोली चटर्जी के बारे में एक-दो मिनट बात की, खड़े हुए, फिर बैठ गए और फिर कुछ अटपटे सवाल पूछने शुरू कर दिए।

‘क्या आप रजोनिवृत्ति की अवस्था में पहुंच चुकी हैं?’

‘हाँ। लेकिन क्यों—’

डॉ. नूरुद्दीन ने एक चिड़चिड़े बच्चे की तरह पूछा, 'हां?'
'कुछ नहीं,' श्रीमती रूपा मेहरा ने विनम्रता से कहा।
क्या आप आसानी से चिड़चिड़े या परेशान हो जाते हैं?
'क्या हर कोई ऐसा नहीं करता?'
डॉ. नूरुद्दीन मुस्कुराए। 'बहुत से लोग ऐसा करते हैं। क्या आप भी करती हैं, श्रीमती मेहरा?'
'हां। आज सुबह नाश्ते में—'
'आँसू?'
'हाँ।'
क्या आपको कभी-कभी अत्यधिक उदासी महसूस होती है? घोर निराशा, असहनीय उदासी?
उन्होंने इन लक्षणों को ऐसे बताया जैसे कोई खुजली या पेट दर्द जैसे चिकित्सीय लक्षणों का वर्णन करता है। श्रीमती रूपा मेहरा ने उन्हें हैरानी से देखा।
'अत्यधिक? कितना अत्यधिक?' वह हिचकिचाई।
'आप जो भी जवाब देंगे, वह मेरे लिए मददगार होगा।'
श्रीमती रूपा मेहरा ने जवाब देने से पहले सोचा: 'कभी-कभी मुझे बहुत निराशा महसूस होती है। जब भी मैं अपने दिवंगत पति के बारे में सोचती हूं।'
क्या तुम अभी उसके बारे में सोच रहे हो?
'हाँ।'
'क्या आप निराशा में हैं?'
'अभी नहीं,' श्रीमती रूपा मेहरा ने स्वीकार किया।
डॉ. नूरुद्दीन ने पूछा, 'अभी आपको कैसा महसूस हो रहा है?'
'यह सब कितना विचित्र है।'

इसका अनुवाद यह था: 'तुम पागल हो। और मैं भी पागल हूँ, क्योंकि मैं इन सवालों को बर्दाश्त कर रहा हूँ।'

डॉ. नूरुद्दीन ने अपनी पेंसिल के इरेज़र को अपनी नाक की नोक से छुआने के बाद पूछा: 'श्रीमती मेहरा, क्या आपको लगता है कि मेरे प्रश्न प्रासंगिक नहीं हैं? क्या वे अप्रासंगिक हैं?'

'कुंआ-'

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि ये आपकी स्थिति को समझने के लिए बहुत प्रासंगिक हैं। होम्योपैथी में हम संपूर्ण प्रणाली का उपचार करने का प्रयास करते हैं, हम केवल शारीरिक पक्ष तक ही सीमित नहीं रहते। अब बताइए, क्या आपको स्मृति हानि की समस्या है?

नहीं। मुझे हमेशा दोस्तों के नाम और जन्मदिन, और अन्य महत्वपूर्ण बातें याद रहती हैं।

डॉ. नूरुद्दीन ने एक छोटी सी पैड पर कुछ लिखा। 'अच्छा, अच्छा,' उन्होंने कहा। 'और सपने?'

'सपने?'

'सपने।'

'जी?' श्रीमती रूपा मेहरा ने हैरानी से पूछा।

'श्रीमती मेहरा, आपके क्या सपने हैं?'

मुझे याद नहीं है।

'तुम्हें याद नहीं है?' उसने सौम्य संदेह के साथ जवाब दिया।

'नहीं,' श्रीमती रूपा मेहरा ने दांत पीसते हुए कहा।

क्या तुम नींद में दांत पीसते हो?

'मुझे कैसे पता चलेगा? मैं सो रहा हूँ। इन सब बातों का मेरी मधुमेह से क्या लेना-देना है?'

डॉ. नूरुद्दीन ने हंसते हुए आगे पूछा, 'क्या आपको कभी रात में प्यास

लगती है?'
श्रीमती रूपा मेहरा ने भौंहें चढ़ाते हुए उत्तर दिया: 'हां, अक्सर। मैं अपने बिस्तर के पास पानी का एक जग रखती हूं।'
‘आपको सुबह या शाम को ज्यादा थकान महसूस होती है?’
'सुबह के समय, मैं सोचती हूँ। जब तक मैं गीता का पाठ नहीं कर लेती। उसके बाद मुझे अधिक शक्ति महसूस होती है।'
क्या आपको आम पसंद हैं?
श्रीमती रूपा मेहरा ने मेज के उस पार डॉ. नूरुद्दीन को घूरते हुए पूछा, 'आपको कैसे पता?'
'यह तो बस एक सवाल था, श्रीमती मेहरा। क्या आपके पेशाब से वायलेट की गंध आती है?'
‘तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?’ श्रीमती रूपा मेहरा ने आक्रोश से चिल्लाते हुए कहा।
डॉ. नूरुद्दीन ने अपनी पेंसिल नीचे रखते हुए कहा, 'श्रीमती मेहरा, मैं आपकी मदद करने की कोशिश कर रहा हूँ। क्या आप मेरे सवालों का जवाब देंगी?'
मैं ऐसे सवालों का जवाब नहीं दूंगा। मेरी ट्रेन एक घंटे से भी कम समय में हावड़ा से निकलने वाली है। मुझे जाना ही होगा।
डॉ. नूरुद्दीन ने अपनी 'मटेरिया मेडिका' की प्रति निकाली और उसे संबंधित पृष्ठ पर खोला। उन्होंने कहा, 'देखिए, श्रीमती मेहरा, मैं इन लक्षणों को मनगढ़ंत नहीं बता रहा हूँ। लेकिन मेरे सवालों का आपने जिस तरह से विरोध किया, वह भी मेरे निदान में सहायक रहा है। अब मेरा बस एक ही सवाल है।'
श्रीमती रूपा मेहरा घबरा गईं। उन्होंने पूछा, 'जी हां?'
डॉ. नूरुद्दीन ने पूछा, 'क्या आपकी उंगलियों के सिरों में कभी खुजली होती

है?'
'नहीं,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा और एक गहरी सांस ली।
डॉ. नूरुद्दीन ने एक मिनट तक अपनी दोनों तर्जनी उंगलियों से अपनी नाक के ऊपरी हिस्से को सहलाया, फिर एक पर्ची लिखी और उसे अपने सहायक को सौंप दिया, जिसने विभिन्न सामग्रियों को पीसकर एक सफेद पाउडर बनाना शुरू किया, जिसे उसने इक्कीस छोटे कागज के पैकेटों में बांट दिया।
डॉ. नूरुद्दीन ने कहा, 'आप प्याज, अदरक या लहसुन नहीं खाएंगे, और प्रत्येक भोजन से पहले पाउडर का एक छोटा पैकेट लेंगे। प्रत्येक भोजन से कम से कम आधा घंटा पहले।'
‘और इससे मेरी मधुमेह की समस्या में सुधार होगा?’
इंशाल्लाह।
'लेकिन मुझे लगा था कि आप मुझे वो छोटी गोलियां देंगे,' श्रीमती रूपा मेहरा ने विरोध जताते हुए कहा।
डॉ. नूरुद्दीन ने कहा, 'मुझे पाउडर पसंद हैं। सात दिन बाद फिर आइएगा, हम देखेंगे।'
मैं कलकत्ता छोड़ रहा हूँ। मैं महीनों तक वापस नहीं आऊँगा।
डॉ. नूरुद्दीन ने उतने हंसमुख अंदाज में नहीं कहा, “आपने मुझे क्यों नहीं बताया?”
‘आपने मुझसे पूछा नहीं। मुझे खेद है, डॉक्टर।’
'हां। और आप कहां जा रहे हैं?'
'पहले दिल्ली, फिर ब्रह्मपुर। मेरी बेटी सविता गर्भवती है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने बताया।
आप ब्रह्मपुर कब आएंगे?
एक या दो सप्ताह में।

डॉ. नूरुद्दीन ने कहा, 'मैं लंबे समय तक दवाइयां लिखना पसंद नहीं करता, लेकिन लगता है कि मेरे पास ज्यादा विकल्प नहीं हैं।' उन्होंने आगे बोलने से पहले अपने सहायक से बात की।

‘मैं आपको दो सप्ताह की दवाइयाँ दे रही हूँ। पाँच दिन बाद मुझे इस पते पर लिखकर बताइएगा कि आप कैसा महसूस कर रही हैं। और ब्रह्मपुर में आपको डॉक्टर बलदेव सिंह से अवश्य मिलना है। उनका पता यह है। मैं आज बाद में आपके बारे में उन्हें एक पत्र लिख दूँगी। कृपया भुगतान करके दवाइयाँ ले लें। अलविदा, श्रीमती मेहरा।’

'धन्यवाद, डॉक्टर,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।

‘अगला,’ डॉ. नूरुद्दीन ने प्रसन्नतापूर्वक कहा।

7.46

श्रीमती रूपा मेहरा स्टेशन जाते समय असामान्य रूप से शांत थीं। जब उनके बच्चों ने उनसे पूछा कि डॉक्टर के साथ उनकी मुलाकात कैसी रही, तो उन्होंने कहा: 'यह अजीब था। तुम यह बात कुकू को बता देना।'

क्या आप उनके बताए नुस्खे का पालन करेंगे?

‘जी हां,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। ‘मुझे पैसे बर्बाद करना सिखाया नहीं गया था।’ उनकी आवाज़ से ऐसा लग रहा था मानो उन्हें उनकी मौजूदगी से चिढ़ हो।

हावड़ा ब्रिज पर लंबे ट्रैफिक जाम के दौरान, जब कीमती मिनट बीतते जा रहे थे और हंबर ट्रेन शोरगुल, हॉर्न बजाते, चिल्लाते और कान फाड़ देने वाले बसों, ट्रामों, टैक्सियों, कारों, मोटरसाइकिलों, बैलगाड़ियों, रिक्शाओं, साइकिलों और सबसे बढ़कर पैदल यात्रियों की भीड़ के बीच से धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी, तब श्रीमती रूपा मेहरा, जो आम तौर पर हताश होकर चूड़ियों को कसकर पकड़े हुए होतीं, उन्हें शायद ही इस बात का एहसास था कि उनकी ट्रेन पंद्रह मिनट से भी कम समय में छूटने

वाली है।

जब चमत्कारिक रूप से यातायात सामान्य हुआ और रूपा मेहरा अपने डिब्बे में अपने सारे सूटकेस के साथ आराम से बैठ गईं और अन्य यात्रियों को देखने का उन्हें अच्छा मौका मिला, तब जाकर श्रीमती रूपा मेहरा की स्वाभाविक भावनाएँ फिर से जागृत हुईं। आँखों में आँसू लिए लता को चूमते हुए उन्होंने उससे कहा कि उसे वरुण का ख्याल रखना है। आँखों में आँसू लिए वरुण को चूमते हुए उन्होंने उससे कहा कि उसे लता का ख्याल रखना है। अमित थोड़ा अलग खड़ा था। हावड़ा स्टेशन, जहाँ भीड़, धुआँ, शोर-शराबा और सड़ती हुई मछलियों की दुर्गंध फैली रहती थी, दुनिया में उसकी पसंदीदा जगह नहीं थी।

'सच में, अमित, हमें कार देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद,' श्रीमती रूपा मेहरा ने विनम्रता दिखाने की कोशिश करते हुए कहा।

'बिल्कुल नहीं, माँ, यह तो संयोगवश खाली था। कुकू ने किसी चमत्कार से इसे आरक्षित नहीं किया था।'

'जी हां, कुकू,' श्रीमती रूपा मेहरा अचानक घबराकर बोलीं। हालांकि उन्हें लोगों को यह बताने की आदत थी कि उन्हें हमेशा मां कहकर बुलाया जाता है और उन्हें यह अच्छा लगता है, लेकिन अमित द्वारा इस तरह संबोधित किए जाने पर उन्हें अभी खुशी नहीं हुई। उन्होंने अपनी बेटी को चिंता से देखा। उन्हें लता की याद आई जब वह अपर्णा की उम्र की थीं। किसने सोचा होगा कि वह इतनी जल्दी बड़ी हो जाएगी?

'अपने परिवार को मेरा ढेर सारा प्यार देना,' उसने अमित से ऐसी आवाज में कहा जिसमें विश्वास का कोई भाव नहीं था।

अमित को कुछ अजीब सा महसूस हो रहा था—शायद यह उसका भ्रम ही था?—कि कहीं न कहीं दुश्मनी की भावना छिपी हुई थी। वह सोच रहा था कि होम्योपैथ के यहाँ ऐसा क्या हुआ था जिससे लता की माँ परेशान

थी? या क्या वह उससे नाराज़ थी?
घर लौटते समय, उन सभी ने इस बात पर सहमति जताई कि श्रीमती रूपा मेहरा का मूड बहुत ही अजीब था।
अमित ने कहा: 'मुझे लगता है मैंने कुछ ऐसा किया है जिससे तुम्हारी माँ नाराज़ हो गई हैं। मुझे उस शाम तुम्हें समय पर वापस ले आना चाहिए था।'
लता ने कहा: 'यह तुम्हारी गलती नहीं है। यह मेरी गलती है। वह चाहती थी कि मैं उसके साथ दिल्ली जाऊं, और मैं जाना नहीं चाहती थी।'
वरुण ने कहा: 'ये सब मेरी वजह से है। मुझे पता है। वो मुझसे बहुत नाराज़ दिख रही थी। वो मुझे अपनी ज़िंदगी बर्बाद करते हुए नहीं देख सकती। मुझे अपनी ज़िंदगी बदलनी होगी। मैं उसे दोबारा निराश नहीं कर सकता। और जब तुम मुझे अपने पुराने तौर-तरीकों पर लौटते देखो, लुट्स, तो तुम्हें मुझ पर गुस्सा करना होगा। बहुत गुस्सा। मुझ पर चिल्लाओ। मुझे कहो कि मैं एक नंबर का बेवकूफ हूँ और मुझमें नेतृत्व के गुण नहीं हैं। बिलकुल नहीं!'
लता ने ऐसा करने का वादा किया।

भाग आठ

8.1
ब्रह्मपुर रेलवे स्टेशन पर मान और उसके उर्दू शिक्षक अब्दुर रशीद को विदा करने कोई नहीं आया। दोपहर का समय था। मान इतना उदास था कि प्राण, फ़िरोज़ या उसके कुछ बदनाम छात्रों की मौजूदगी भी उसे कुछ खास राहत नहीं दे पाती। उसे लग रहा था जैसे उसे देश निकाला दिया जा रहा हो, और वह बिल्कुल सही था: उसके पिता और सईदा बाई दोनों की

यही सोच थी। शहर छोड़ने का पिता का आदेश सीधा था, जबकि सईदा बाई का समाधान थोड़ा चालाकी भरा था। एक ने उसे मजबूर किया तो दूसरे ने फुसलाया। दोनों मान को पसंद करते थे और दोनों उसे रास्ते से हटाना चाहते थे।

मान सईदा बाई को दोष नहीं दे रहा था, या यूँ कहें कि बहुत कम। उसे लगा कि उसकी अनुपस्थिति सईदा बाई के लिए बहुत कष्टदायी होगी, और बनारस वापस जाने के बजाय रुधिया जाने का सुझाव देकर सईदा बाई उसे परिस्थितियों के अनुसार जितना संभव हो सके अपने करीब रख रही थी। हालाँकि, वह अपने पिता से बहुत नाराज़ था, जिन्होंने उसे लगभग बिना किसी कारण के ब्रह्मपुर से निकाल दिया था, उसकी बात सुनने से इनकार कर दिया था, और जब उन्हें बताया गया कि उन्हें अपने उर्दू शिक्षक के गाँव जाना है, तो उन्होंने संतुष्टि भरी आवाज़ में कुछ कहा नहीं।

उसके पिता ने कहा था, 'जब तुम वहाँ जाओ तो हमारे खेत पर ज़रूर आना—मैं जानना चाहता हूँ कि सब कैसा चल रहा है।' फिर थोड़ी देर रुककर उन्होंने बेवजह कहा, 'मतलब, अगर तुम कुछ मील का सफर तय करने का समय निकाल सको। मुझे पता है कि तुम कितने मेहनती विद्यार्थी बनोगे।'

श्रीमती महेश कपूर ने अपने बेटे को बस गले लगाया और उसे जल्दी लौटने को कहा। मान ने गुस्से और निराशा से भरते हुए सोचा कि कभी-कभी तो उसकी माँ का स्नेह भी असहनीय हो जाता है। वही तो सईदा बाई के खिलाफ अडिग खड़ी थीं।

महेश कपूर ने जवाब दिया, 'एक महीना बीतने से पहले नहीं।' उन्हें इस बात की राहत थी कि मान, अपनी नाराज़गी के बावजूद, ब्रह्मपुर में रहकर उनकी बात नहीं मानेंगे, लेकिन इस बात से नाराज़ भी थे कि उन्हें खुद

'बनारस से निपटना' पड़ेगा, दोनों मायनों में: मान की मंगेतर के माता-पिता से और कपड़े के कारोबार में मान के सहायक से, जो - और उन्होंने ईश्वर का शुक्रिया अदा किया - ठीक-ठाक काबिल था। उनके पास पहले से ही बहुत काम था, और मान उनका समय और धैर्य दोनों बर्बाद कर रहे थे।

प्लेटफ़ॉर्म हमेशा की तरह यात्रियों, उनके दोस्तों, परिवार वालों, नौकरों, फेरीवालों, रेलवे कर्मचारियों, कुलियों, आवारा लोगों और भिखारियों से खचाखच भरा हुआ था। बच्चे रो रहे थे और सीटियाँ बज रही थीं। आवारा कुत्ते दबी नज़रों से इधर-उधर घूम रहे थे, बंदर आक्रामक दाँत दिखा रहे थे। पूरे प्लेटफ़ॉर्म पर रेलवे की दुर्गंध फैली हुई थी। दिन बहुत गर्म था और डिब्बों में पंखे नहीं चल रहे थे। ट्रेन अपने तय समय से आधे घंटे बाद तक नैरो-गेज प्लेटफ़ॉर्म पर खड़ी रही। मान द्वितीय श्रेणी के डिब्बे में गर्मी से परेशान था, लेकिन उसने कोई शिकायत नहीं की। वह उदास होकर बार-बार अपने सामान की ओर देख रहा था: एक गहरे नीले रंग का चमड़े का सूटकेस और कई छोटे बैग।

मान को लगा कि रशीद की शक्ल-सूरत कुछ-कुछ भेड़िये जैसी है। वह दूसरे डिब्बे में बैठे कुछ लड़कों से बात करने के लिए दौड़ पड़ा। वे ब्रह्मपुर मदरसे के छात्र थे जो कुछ दिनों के लिए अपने-अपने जिलों में वापस जा रहे थे।

मान को बहुत नींद आने लगी। पंखे अभी भी नहीं चल रहे थे और ट्रेन के चलने का कोई आसार नहीं था। उसने अपने कान के ऊपरी हिस्से को छुआ, जहाँ उसने सईदा बाई के गुलाब के इत्र की एक बूँद से भीगी हुई रुई रखी थी, और धीरे से अपना हाथ अपने चेहरे पर फेरा। उसका चेहरा पसीने से भीगा हुआ था।

चेहरे से टपकते पसीने की असहज अनुभूति को कम करने के लिए, मान

यथासंभव स्थिर रहने की कोशिश कर रहा था। उसके सामने बैठा व्यक्ति हिंदी अखबार से खुद को हवा कर रहा था।

अंततः ट्रेन चलने लगी। कुछ देर शहर से गुज़रने के बाद वह खुले ग्रामीण इलाके में पहुँच गई। गाँव और खेत पीछे छूटते चले गए, कुछ सूखे, धूल भरे और बंजर थे, तो कुछ गेहूँ से पीले या अन्य फसलों से हरे-भरे। पंखे चलने लगे और सभी ने राहत की सांस ली।

रेलवे ट्रैक के किनारे कुछ खेतों में गेहूं की कटाई चल रही थी। अन्य खेतों में अभी-अभी कटाई पूरी हुई थी और सूखी पराली धूप में चमक रही थी। लगभग हर पंद्रह मिनट में ट्रेन एक छोटे रेलवे स्टेशन पर रुकती थी, कभी सुनसान जगह पर, कभी किसी गाँव में। कभी-कभार ही वह किसी छोटे कस्बे में रुकती थी, जो उस जिले के उपमंडल का मुख्यालय होता था जहाँ से वे गुज़र रहे थे। एक मस्जिद या मंदिर, कुछ नीम, पीपल या बरगद के पेड़, धूल भरी कच्ची सड़क पर बकरियाँ चराता एक लड़का, अचानक नीले रंग के किंगफिशर की चमक—मान को ये सब धुंधले ढंग से याद आ रहे थे। थोड़ी देर बाद उसने फिर से अपनी आँखें बंद कर लीं, और उस एक व्यक्ति से बिछड़ने की भावना से अभिभूत हो गया जिसकी संगति वह चाहता था। वह कुछ भी देखना या सुनना नहीं चाहता था, बस पसंद बाग़ के घर के नज़ारों और आवाज़ों को याद करना चाहता था: सईदा बाई के कमरे की मनमोहक खुशबू, शाम की ठंडक, उसकी आवाज़, उसके हाथ पर उसके हाथ का स्पर्श। वह उसके तोते और चौकीदार को भी स्नेह से याद करने लगा।

लेकिन दोपहर की तेज़ धूप और धूल भरे आसमान के विशाल दृश्य से दूर, नीरस खेतों को नज़रअंदाज़ करने के लिए जब उसने अपनी आँखें बंद कीं, तब भी ट्रेन की आवाज़ तेज़ होती चली गई। ट्रेन के अगल-बगल और थोड़ा ऊपर की ओर हिलने से होने वाली खड़खड़ाहट, किसी छोटे पुल से

गुज़रने की आवाज़ या विपरीत दिशा से तेज़ी से आती ट्रेन की सरसराहट, किसी महिला के खांसने या बच्चे के रोने की आवाज़, यहाँ तक कि सिक्के के गिरने या अख़बार की सरसराहट भी असहनीय लगने लगी। उसने अपना सिर हाथों पर टिका लिया और स्थिर हो गया।

‘क्या तुम ठीक हो? क्या तुम ठीक महसूस कर रहे हो?’ रशीद उससे बात कर रहा था।

मान ने सिर हिलाया और अपनी आंखें खोलीं।

उसने अपने सहयात्रियों की ओर देखा, फिर रशीद की ओर। उसने पाया कि रशीद उसकी उम्र के हिसाब से बहुत दुबला-पतला लग रहा था। उसके कुछ बाल भी सफेद हो गए थे।

मान ने सोचा, अगर मैं पच्चीस साल की उम्र में गंजा होना शुरू हो सकता हूँ, तो वह सफेद क्यों नहीं होना शुरू हो सकता?

कुछ देर बाद उसने पूछा: 'तुम्हारे यहाँ पानी कैसा है?'

'आपका क्या मतलब है?'

‘सब ठीक है, है ना?’ मान ने चिंता से कहा। वह सोचने लगा था कि गांव में जीवन कैसा होगा।

'हां, हम इसे हाथ से ही फुलाते हैं।'

क्या आपके पास बिजली नहीं है?

रशीद ने थोड़ा व्यंग्यपूर्ण ढंग से मुस्कुराते हुए अपना सिर हिलाया।

मान चुप रहा। उसके निर्वासन के गंभीर व्यावहारिक परिणाम धीरे-धीरे उसके मन में घर करने लगे थे।

वे एक छोटे से स्टेशन से थोड़ा आगे रुक गए थे। ट्रेन के टैंक ऊपर से पानी से भरे जा रहे थे, और जैसे ही इंजन चलने लगा, डिब्बे की छत पर पानी की बूंदों की आवाज़ ने मान को बारिश की याद दिला दी। मानसून आने तक कई हफ़्तों तक असहनीय गर्मी झेलनी पड़ेगी।

‘मक्खियाँ!’

रशीद के बगल में बैठा आदमी बोल रहा था। वह एक सूखे-सूखे किसान जैसा लग रहा था, लगभग चालीस साल का। वह अपने दूसरे हाथ के अंगूठे से हथेली में तंबाकू लपेट रहा था। उसने उसे रगड़ा, फिर दबाया, अतिरिक्त तंबाकू फेंक दिया, बचे हुए हिस्से को ध्यान से देखा, अशुद्धियों को अलग किया, एक चुटकी तंबाकू लिया, अपने निचले होंठ के अंदरूनी हिस्से को चाटा और थोड़ा सा तंबाकू बगल में फर्श पर थूक दिया।

कुछ देर बाद उन्होंने हिंदी की स्थानीय बोली में पूछा, 'क्या आप अंग्रेजी बोलते हैं?'

उसने मान के लगेज टैग पर ध्यान दिया था।

'हां,' मान ने कहा।

किसान ने समझदारी से कहा, 'अंग्रेजी के बिना तुम कुछ नहीं कर सकते।'

मान सोच रहा था कि किसान के लिए अंग्रेजी का क्या उपयोग हो सकता है।

‘अंग्रेजी का क्या उपयोग है?’ मान ने कहा।

किसान ने एक अजीब सी गहरी हंसी के साथ कहा, “लोगों को अंग्रेज़ी बहुत पसंद है! अगर आप अंग्रेज़ी में बात करते हैं, तो आप राजा हैं। आप जितने ज़्यादा लोगों को भ्रमित कर सकते हैं, उतने ही ज़्यादा लोग आपका सम्मान करेंगे।” वह वापस अपने तंबाकू की ओर मुड़ गया।

मान को अचानक खुद को समझाने की तीव्र इच्छा हुई। जब वह सोचने लगा कि उसे क्या कहना चाहिए, तभी उसे अपने आसपास मक्खियों की भिनभिनाहट तेज होती सुनाई दी। गर्मी इतनी ज़्यादा थी कि वह सोच भी नहीं पा रहा था, और उसे नींद आने लगी। उसने अपना सिर अपनी छाती पर टिका दिया। एक मिनट में ही वह सो गया।

8.2

‘रुधिया जंक्शन। यह रुधिया जंक्शन है।’ मान की नींद खुली तो उसने देखा कि कई यात्री ट्रेन से अपना सामान उतार रहे थे और कुछ अन्य ट्रेन में चढ़ रहे थे। रुधिया, ज़िले का सबसे बड़ा शहर था, लेकिन ब्रह्मपुर की तरह यह कोई रेलवे जंक्शन नहीं था, और निश्चित रूप से मुगलसराय जैसे किसी बड़े जंक्शन की तरह तो बिल्कुल नहीं। रुधिया में दो नैरो-गेज लाइनें मिलती थीं, बस इतना ही। लेकिन वहाँ रहने वाले लोग इसे ब्रह्मपुर के बाद पूर्व प्रदेश का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र मानते थे, और स्टेशन पर लगे साइन बोर्ड और छह सफेद टाइलों वाले थूकदानों पर लिखे रुधिया जंक्शन शब्द शहर की शान बढ़ाते थे, ठीक वैसे ही जैसे ज़िला न्यायालय, कलेक्ट्रेट और अन्य प्रशासनिक कार्यालय, और कोयले से चलने वाला स्टीम पावर हाउस।

रुधिया स्टेशन पर ट्रेन पूरे तीन मिनट रुकने के बाद हांफते हुए दोपहर भर के लिए आगे बढ़ी। स्टेशन मास्टर के कार्यालय के सामने एक बोर्ड लगा था जिस पर लिखा था: हमारा लक्ष्य: सुरक्षा, संरक्षा और समय की पाबंदी। दरअसल, ट्रेन पहले ही डेढ़ घंटा लेट थी। यह कोई असामान्य बात नहीं थी, और अधिकांश यात्रियों को अगर असुविधा हुई भी तो उन्होंने परेशान होकर स्थिति को और खराब नहीं किया। डेढ़ घंटा कोई बड़ी बात नहीं थी।

ट्रेन एक मोड़ पर मुड़ी और डिब्बे में धुआं तेजी से भरने लगा। किसान खिड़कियों से जूझने लगा और मान और रशीद ने उसकी मदद की।

खेत में एक विशाल, लाल पत्तों वाले पेड़ ने मान का ध्यान आकर्षित किया। उसने खिड़की से बाहर इशारा करते हुए पूछा, 'यह कौन सा पेड़ है?' 'यह अपने लाल पत्तों के कारण आम जैसा दिखता है, लेकिन यह आम नहीं है।'

रशीद के जवाब देने से पहले ही किसान ने कहा, 'यह महुआ है।' वह

मुस्कुरा रहा था, मानो उसे बिल्ली के बारे में समझाना पड़ा हो।
‘बहुत ही सुंदर पेड़ है,’ मान ने कहा।
‘हाँ, बिल्कुल। उपयोगी भी है,’ किसान ने कहा।
'किस तरह से?'
'इससे नशा हो जाता है,' भूरे दांतों वाली मुस्कान के साथ किसान ने कहा।
‘सचमुच?’ मान ने उत्सुकता से पूछा। ‘क्या यह पेड़ का रस है?’
लेकिन किसान, अपनी अज्ञानता से प्रसन्न होकर, अपने अजीबोगरीब और गहरी हंसी हंसने लगा, और उसने 'रस!' शब्द के अलावा कुछ और नहीं कहा।
रशीद ने मान की ओर झुककर ध्यान से देखा और उनके बीच रखे स्टील के ट्रंक को थपथपाते हुए कहा:
‘ये फूल हैं। ये बहुत हल्के और खुशबूदार हैं। ये लगभग एक महीने पहले गिरे होंगे। अगर इन्हें सुखा लें तो ये एक साल तक चल सकते हैं। इन्हें किण्वित करें, तो इनसे एक शराब बन जाएगी।’ उनकी आवाज़ में थोड़ी असहमति झलक रही थी।
‘ओह, हाँ?’ मान ने उत्साह से कहा।
लेकिन रशीद ने आगे कहा: 'इन्हें पकाओ, ये सब्जी की तरह काम करेंगी। इन्हें दूध में उबालो, ये दूध को लाल कर देंगी और पीने वाले को ताकत देंगी। इन्हें सर्दियों में रोटी बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाले आटे में मिला लो, और तुम्हें ठंड नहीं लगेगी।'
मान प्रभावित हुआ।
किसान ने आगे कहा, 'इन्हें अपने मवेशियों को खिला दो। इससे उनकी ऊर्जा दोगुनी हो जाएगी।'
मान ने रशीद की ओर पुष्टि के लिए देखा, उसे उस मजाक उड़ाने वाले

किसान की किसी भी बात पर भरोसा नहीं था।
'हां, यह सच है,' रशीद ने कहा।
'कितना अद्भुत पेड़ है!' मान ने प्रसन्नता से कहा। वह अचानक सुस्ती से बाहर आया और ढेर सारे सवाल पूछने लगा। अब तक उसे जो ग्रामीण इलाका बिल्कुल नीरस लग रहा था, वह अब रोचक हो गया।
वे अभी-अभी एक चौड़ी, भूरी नदी पार करके जंगल में दाखिल हुए थे। मान तुरंत यह जानना चाहता था कि क्या वहाँ कोई शिकार मिलेगा, और यह जानकर उसे खुशी हुई कि वहाँ लोमड़ी, सियार, नीलगाय, जंगली सूअर और कभी-कभार भालू भी दिख जाते हैं। और यहाँ से कुछ ही दूरी पर स्थित खाइयों और चट्टानी इलाकों में भेड़िये भी थे, जो कभी-कभी स्थानीय लोगों के लिए खतरा बन जाते थे।
'दरअसल,' रशीद ने कहा, 'यह जंगल बैतर एस्टेट का हिस्सा है।'
'आह!' मान ने प्रसन्नता से कहा। हालाँकि वह और प्राण फ़िरोज़ और इम्तियाज़ के बचपन से दोस्त थे, लेकिन वे उन्हें केवल ब्रह्मपुर में ही जानते थे और उन्होंने कभी बैतर किले या उस जागीर का दौरा नहीं किया था।
'लेकिन यह तो बहुत बढ़िया है!' मान ने कहा। 'मैं इस परिवार को अच्छी तरह जानता हूँ। हमें साथ में शिकार पर जाना चाहिए।'
रशीद ने थोड़ी उदासी भरी मुस्कान दी और कुछ नहीं कहा। मान ने सोचा, शायद वह सोच रहा होगा कि इस रफ्तार से तो वह गांव में रहने के दौरान बहुत कम उर्दू सीख पाएगा। लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता है? उसका मन किया कि वह कहे। लेकिन इसके बजाय उसने कहा:
किले में घोड़े जरूर होंगे।
किसान ने अचानक उत्साह और नए सम्मान के साथ कहा, "हाँ, उनके पास बहुत सारे घोड़े हैं। पूरा अस्तबल है। और दो जीप भी हैं। और मुहर्रम

के लिए वे एक भव्य जुलूस और कई रस्में निकालते हैं। क्या आप नवाब साहब को सच में जानते हैं?”

‘खैर, मैं उसके बेटों को जानता हूं,’ मान ने कहा।

किसान से काफी थक चुके रशीद ने धीरे से कहा: 'यह महेश कपूर का बेटा है।'

किसान का मुंह खुला का खुला रह गया। यह कथन इतना अविश्वसनीय था कि लगभग निश्चित रूप से सत्य ही था। लेकिन आखिर वह—महान मंत्री का पुत्र—क्या कर रहा था, एक साधारण नागरिक की तरह दूसरी श्रेणी की गाड़ी में सफर कर रहा था और एक सिकुड़ा हुआ कुर्ता-पायजामा पहने हुए था?

'और मैं तुमसे मजाक कर रहा था,' उसने अपनी ही धृष्टता पर आश्चर्यचकित होते हुए कहा।

मान, जिसे पहले अपनी तकलीफ में मजा आता था, अब अपनी तकलीफ में मजा लेने लगा। उसने कहा, 'मैं अपने पिता को नहीं बताऊंगा।'

किसान ने कहा, 'अगर उसे इसके बारे में पता चला तो वह मेरी जमीन छीन लेगा'—वह या तो राजस्व मंत्री की अतिरंजित शक्तियों में विश्वास करता था, या फिर अपने डर को बढ़ा-चढ़ाकर बताना राजनीतिक रूप से उचित समझता था।

‘वह ऐसा कुछ नहीं करेगा,’ मान ने कहा। अपने पिता के बारे में सोचते ही उसे अचानक बहुत गुस्सा आया।

किसान ने कहा, ‘जब जमींदारी प्रथा समाप्त हो जाएगी, तो ये सारी जमीनें वही ले लेगा। नवाब साहब की जागीरें भी। मुझ जैसे छोटे जमींदार क्या कर सकता है?’

‘मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ,’ मान ने कहा। ‘अपना नाम मत बताना। तब तुम सुरक्षित रहोगे।’

किसान को यह विचार मजेदार लगा और उसने इसे दो-तीन बार अपने मन में दोहराया।

अचानक ट्रेन में तेज झटके लगने लगे, मानो ब्रेक लगा दिया गया हो, और थोड़ी देर में वह खुले ग्रामीण इलाके में आकर रुक गई।

'ऐसा हमेशा होता है,' रशीद ने थोड़ी झुंझलाहट के साथ कहा।

'इसका क्या मतलब है?' मान ने कहा।

'ये स्कूली लड़के जंजीर खींचकर ट्रेन को तब रोक देते हैं जब वह उनके गांव के पास पहुंचती है। ये सिर्फ इसी इलाके के लड़के हैं। जब तक गार्ड उनके डिब्बे तक पहुंचते हैं, तब तक वे गन्ने के खेतों में गायब हो चुके होते हैं।'

'क्या वे इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते?' मान ने कहा।

'उन पर काबू पाने का कोई तरीका नहीं है। या तो उन्हें ट्रेन को यहीं रोक देना चाहिए और हार मान लेनी चाहिए। या फिर उन्हें किसी तरह उनमें से किसी एक को पकड़ लेना चाहिए और उसे सबक सिखाना चाहिए।'

'कैसे?'

'अरे, उसकी खूब पिटाई करो,' रशीद ने शांत भाव से कहा। 'और उसे कुछ दिनों के लिए जेल में डाल दो।'

'लेकिन यह तो बहुत कठोर है,' मान ने यह कल्पना करने की कोशिश करते हुए कहा कि कुछ दिनों के लिए एक कोठरी में बंद रहना कैसा होगा।

'यह काफी कारगर है। हम भी उस उम्र में उतने ही उद्दंड थे,' रशीद ने हल्की मुस्कान के साथ आगे कहा। 'मेरे पिता मुझे अक्सर पीटते थे। एक बार मेरे दादाजी—जिनसे आप आगे मिलेंगे—ने मेरे भाई को बुरी तरह पीटा था—और वह उसके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। वह पहलवान बन गया!'

‘तुम्हारे दादा ने उसे पीटा था, तुम्हारे पिता ने नहीं?’ मान ने कहा।
‘मेरे दादाजी। हम सबसे ज्यादा उन्हीं से डरते थे,’ रशीद ने कहा।
'फिर भी?'
अब उतना नहीं। वो सत्तर साल से ऊपर के हैं। लेकिन साठ के दशक में वो दस गांवों के लिए आतंक थे। क्या मैंने पहले भी उनका जिक्र आपसे नहीं किया है?
'तुम्हारा मतलब है कि उसने उन्हें आतंकित किया?' मान ने उस विचित्र मुखिया की कल्पना करने की कोशिश करते हुए कहा।
मतलब, सब लोग उनका सम्मान करते थे और अपने झगड़े सुलझाने के लिए उनके पास आते थे। वे एक जमींदार हैं, मध्यम आकार के जमींदार, इसलिए हमारे समुदाय में उनकी अच्छी प्रतिष्ठा है। वे धार्मिक और न्यायप्रिय व्यक्ति हैं, इसलिए लोग उनका आदर करते हैं। और वे खुद जवानी में पहलवान थे, इसलिए लोग उनकी ताकत से डरते हैं। वे अपनी ताकत से किसी भी बदमाश को पीट देते थे।
'मुझे लगता है कि मुझे आपके गांव में रहते हुए जुआ नहीं खेलना चाहिए या शराब नहीं पीनी चाहिए,' मान ने हंसमुख होकर कहा।
रशीद बेहद गंभीर दिख रहे थे। मान को लगा कि उन्होंने काफी औपचारिक ढंग से कहा, 'जी नहीं, कपूर साहब। आप मेरे मेहमान हैं और मेरे परिवार को आपके आने की जानकारी नहीं है। जिस महीने आप मेरे साथ रहेंगे, आपका व्यवहार मुझ पर असर डालेगा।'
‘अरे, चिंता मत करो,’ मान ने आवेग में आकर कहा, ‘मैं ऐसा कुछ नहीं करूंगा जिससे तुम्हें कोई परेशानी हो। मैं वादा करता हूं।’
रशीद को राहत मिली और मान को अपने वादे की जल्दबाजी का एहसास हुआ। उसने अपने जीवन में अब तक कभी भी पूरे एक महीने तक संयमित व्यवहार नहीं किया था।

8.3

सलीमपुर के छोटे से उपमंडलीय कस्बे में, वे साइकिल से उतरे, अपने बैग एक कमजोर साइकिल रिक्शा के पिछले हिस्से पर लादे और असंतुलित होकर उस पर बैठ गए।

सलीमपुर से रशीद के पैतृक गांव देबरिया जाने वाली गड्ढों भरी सड़क पर रिक्शा हिचकोले खाते और इधर-उधर डगमगाता हुआ चल रहा था। शाम का समय था और हर जगह पेड़ों पर पक्षी चहचहा रहे थे। शाम की गर्म हवा में नीम के पेड़ सरसरा रहे थे। सीधे, चौड़ी पत्तियों वाले सागौन के पेड़ों के एक छोटे से झुंड के नीचे, दो टांगें बंधी हुई एक गधा दर्द से लंगड़ाता हुआ आगे बढ़ रहा था। हर पुलिया पर बच्चों की भीड़ बैठी थी, जो रिक्शा के चलते ही उस पर चिल्ला रहे थे। फसल कटाई के बाद गांव की ओर जा रही कई बैलगाड़ियों और कुछ मवेशियों को ले जा रहे लड़कों के अलावा बहुत कम यातायात था।

मान ने ट्रेन से उतरने से पहले नारंगी रंग का कुर्ता पहन लिया था—उसका पहना हुआ कुर्ता पसीने से भीग चुका था—इसलिए ढलते सूरज की रोशनी में भी वह एक आकर्षक दृश्य प्रस्तुत कर रहा था। रशीद को रास्ते में कई पैदल या बैलगाड़ी सवारों ने अभिवादन किया।

'आप कैसे हैं?'

‘बहुत बढ़िया। और आप? सब ठीक है?’

'सबकुछ ठीक है।'

फसल कैसी चल रही है?

‘अच्छा—कुछ खास अच्छा नहीं। ब्रह्मपुर से वापस आ गए?’

'हाँ।'

'आप कितने समय तक रहेंगे?'

एक महीना।

पूरी बातचीत के दौरान, वे रशीद की ओर नहीं बल्कि मान की ओर घूरते रहे, उसे ऊपर से नीचे तक देखते रहे।

सूर्यास्त गुलाबी, धुंध भरा और शांत था। खेत दोनों ओर दूर क्षितिज तक फैले हुए थे। आसमान में एक भी बादल नहीं था। मान को एक बार फिर सईदा बाई की याद आने लगी और उसे अंदर ही अंदर यह महसूस हुआ कि उसके लिए सईदा के बिना एक महीना भी गुजारना नामुमकिन होगा। आखिर वह सभ्यता से इतनी दूर, इस मूर्खतापूर्ण जगह पर क्या कर रहा था—संदिग्ध, अनपढ़ और बिजली से वंचित किसानों के बीच, जो अजनबियों को घूरने के अलावा कुछ नहीं जानते थे?

अचानक एक जोरदार झटका लगा और मान, रशीद और उनका सामान लगभग रिक्शा से बाहर गिर ही गए।

'तुमने ऐसा क्यों किया?' रशीद ने रिक्शावाले से तीखी आवाज में कहा।

'अरे भाई, सड़क में गड्ढा था। मैं कोई पैंथर नहीं हूँ जो अंधेरे में देख सकूँ,' रिक्शावाले ने अचानक कहा।

कुछ देर बाद वे सड़क से हटकर एक और भी संकरे कच्चे रास्ते पर मुड़ गए जो एक मील दूर स्थित गाँव की ओर जाता था। यह रास्ता बरसात के मौसम में निश्चित रूप से दुर्गम हो जाएगा और गाँव लगभग दुनिया से कट जाएगा। उस समय रिक्शा चालक के लिए संतुलन बनाए रखना ही बड़ी मुश्किल थी। थोड़ी देर बाद उसने हार मान ली और अपने यात्रियों को उतरने के लिए कहा।

उन्होंने कहा, 'इसके लिए मुझे आपसे दो रुपये नहीं, तीन रुपये लेने चाहिए।'

'एक रुपया आठ आना,' रशीद ने शांत भाव से जवाब दिया। 'अब शुरू करो।'

जब वे रशीद के घर पहुँचे—या यूँ कहें कि जैसा वह अक्सर कहता था,

अपने पिता के घर—तब तक घना अंधेरा हो चुका था। वह सफेदी की हुई ईंटों से बनी एक मध्यम आकार की एक मंजिला इमारत लग रही थी। छत पर एक मिट्टी के तेल का दीपक जल रहा था। रशीद के पिता छत पर थे और जब उन्होंने रिक्शा की आवाज़ सुनी—जो मान की टॉर्च की रोशनी में गाँव की गली में हिचकोले खाते हुए आगे बढ़ रहा था—तो उन्होंने आवाज़ लगाई।

‘वो कौन है?’

‘यह रशीद है, अब्बा-जान।’

'अच्छा। हम आपका ही इंतजार कर रहे थे।'

‘क्या यहाँ सब ठीक है?’

‘जितना हो सकता है उतना ठीक है। फसल अच्छी नहीं हुई है। मैं नीचे आ रहा हूँ। क्या आपके साथ कोई है?’

मान को यह बात अचानक सूझी कि छत से आ रही आवाज किसी बिना दांत वाले आदमी की लग रही थी, यह आवाज रशीद के दादा की आवाज जैसी थी, न कि उसके पिता की।

जब वह नीचे आया तो उस आदमी के हाथों में दो मिट्टी के तेल के दीपक और मुँह में दो पान थे। उसने अपने बेटे का बड़े ही सौम्य स्नेह से अभिवादन किया। फिर तीनों घर के सामने एक बड़े नीम के पेड़ के नीचे चारपाई पर बैठ गए।

‘ये मान कपूर हैं, अब्बा-जान,’ रशीद ने कहा।

उसके पिता ने सिर हिलाया और फिर मान से कहा: 'क्या तुम यहाँ घूमने आए हो या किसी तरह के अधिकारी हो?'

मान मुस्कुराया। 'मैं यहां घूमने आया हूं। आपका बेटा मुझे ब्रह्मपुर में उर्दू पढ़ाता रहा है। अब मुझे उम्मीद है कि वह देबरिया में भी मुझे पढ़ाना जारी रखेगा।'

मान ने दीपक की रोशनी में देखा कि रशीद के पिता के दांतों के बीच काफी गैप था। इससे उनकी अजीब आवाज और कुछ व्यंजनों का न बोलना समझ में आया। लेकिन इससे उनका चेहरा डरावना लगता था, यहाँ तक कि जब वे मेहमाननवाज़ी करने की कोशिश करते थे तब भी।

इसी बीच, अंधेरे से एक और शख्स सामने आया और रशीद का अभिवादन किया। उसका परिचय मान से कराया गया और वह घर के सामने बिछे एक और पलंग पर बैठ गया। वह लगभग बीस वर्ष का था, यानी रशीद से छोटा, हालांकि वह उसका चाचा था—वास्तव में उसके पिता का छोटा भाई। वह बहुत बातूनी था—वास्तव में, वह अपने आप पर बहुत घमंड करता था।

एक नौकर उन सभी के लिए गिलास में थोड़ा-थोड़ा शरबत लेकर आया।

रशीद के पिता ने कहा, 'तुम्हारा सफर लंबा रहा है। अपने हाथ धो लो, कुल्ला कर लो और शरबत पी लो।'

मान ने कहा: 'क्या कहीं है. . . .'

'ओह, हाँ,' रशीद के पिता ने कहा, 'अगर पेशाब करना हो तो गौशाला के पीछे जाओ। बस इतना ही?'

"हां," मान ने कहा और अपनी मशाल को कसकर पकड़े हुए, गोबर पर पैर रखते हुए शेड के दूसरी तरफ चला गया। उसके पास आते ही एक बैल रंभाने लगा।

जब रशीद वापस आया तो उसने पीतल के बर्तन से थोड़ा पानी अपने हाथों पर डाला। उस गर्म शाम में पानी बहुत ही ठंडा था।

शरबत भी वैसा ही था। इसके तुरंत बाद रात का खाना परोसा गया, जो फिर से मिट्टी के तेल के लैंप की रोशनी में खाया गया। खाने में मांस के व्यंजन और मोटी गेहूं की रोटियाँ थीं। चारों आदमी तारों भरी रात में और चारों ओर भिनभिनाते कीड़ों के बीच एक साथ खाना खा रहे थे। वे खाने

पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे; बातचीत बेमतलब ही हो रही थी।
‘यह क्या है? कबूतर?’ मान ने पूछा।
‘हाँ। ऊपर हमारा एक कबूतरखाना है—या यूँ कहें कि मेरे दादाजी का है।’ रशीद ने अँधेरे में इशारा किया। ‘वैसे बाबा कहाँ हैं?’ उसने अपने पिता से पूछा।
जवाब मिला, ‘वह गांव के निरीक्षण दौरे पर गए हैं। शायद विलायत साहब से बात करने के लिए गए हों—उन्हें इस्लाम में वापस लाने की कोशिश करने के लिए।’
मान को छोड़कर बाकी सब हंस पड़े, क्योंकि वह उन दोनों लोगों को नहीं जानता था। उसने शमी कबाब का एक टुकड़ा खाया और थोड़ा उदास महसूस करने लगा।
'उसे रात की नमाज के समय तक वापस आ जाना चाहिए,' रशीद ने कहा, जो चाहता था कि मान अपने दादा से मिले।
जब किसी ने रशीद की पत्नी का ज़िक्र किया, तो मान चौंक उठा। उसे पता ही नहीं था और न ही उसने कभी सोचा था कि रशीद की पत्नी भी है। थोड़ी देर बाद किसी ने रशीद की दो छोटी बेटियों का ज़िक्र किया और मान और भी ज़्यादा हैरान हो गया।
‘अब हम तुम्हारे लिए बिस्तर बिछा देते हैं,’ रशीद के पिता ने अपने चुस्त-दुरुस्त लेकिन बिना दांत वाले लहजे में कहा। ‘मैं वहाँ छत पर सोता हूँ। इस मौसम में, जितनी भी हवा मिल जाए, उतना अच्छा है।’
‘बहुत अच्छा विचार है,’ मान ने कहा। ‘मैं भी ऐसा ही करूंगा।’
कुछ देर तक अजीब सी खामोशी छाई रही, फिर रशीद ने कहा:
“दरअसल, हमें यहीं खुले आसमान के नीचे सोने की कोशिश करनी चाहिए—घर के बाहर। हम अपना बिस्तर यहीं बिछा सकते हैं।”
मान ने भौंहें चढ़ाईं और सवाल पूछने ही वाला था कि रशीद के पिता ने

कहा: 'अच्छा, तो बात पक्की हो गई। मैं नौकर को सामान लेकर भेज देता हूँ। गद्दे के लिए बहुत गर्मी है। चारपाई पर एक चटाई बिछा दो और उसके ऊपर एक-दो चादरें डाल दो। ठीक है, कल मिलते हैं।'

बाद में, अपने बिस्तर पर लेटे हुए, साफ आसमान की ओर देखते हुए, मान के विचार घर की ओर मुड़ गए। सौभाग्य से उसे काफी नींद आ रही थी, इसलिए सईदा बाई के विचारों से उसकी नींद पूरी तरह नहीं टूटी। गाँव के किनारे कहीं एक तालाब में मेंढक टर्रा रहे थे। एक बिल्ली म्याऊं कर रही थी। गौशाला में एक भैंस फुफकार रही थी। कुछ झींगुर बोल रहे थे, और एक नीम के पेड़ की शाखा पर एक उल्लू की धूसर-सफेद झलक दिखाई दी। मान ने इसे एक शुभ संकेत माना।

'एक उल्लू,' उसने रशीद को बताया, जो उसके बगल में चारपाई पर लेटा हुआ था।

‘ओह, हाँ,’ रशीद ने कहा। ‘और एक और है।’

एक और भूरे रंग की आकृति उड़कर शाखा पर आ गिरी।

'मुझे उल्लू बहुत पसंद हैं,' मान ने नींद में कहा।

‘अशुभ पक्षी,’ रशीद ने कहा।

‘खैर, उन्हें पता है कि मैं उनका दोस्त हूँ,’ मान ने कहा। ‘इसीलिए वे मेरी नींद पर नज़र रख रहे हैं। वे यह सुनिश्चित करेंगे कि मैं सुखद सपने देखूँ। खूबसूरत महिलाओं के सपने, और इसी तरह के सपने। रशीद, कल मुझे कुछ ग़ज़लें सिखाना। वैसे, तुम यहाँ बाहर क्यों सो रहे हो? तुम्हें अपनी पत्नी के साथ होना चाहिए था?’

‘मेरी पत्नी अपने पिता के गांव में है,’ रशीद ने कहा।

‘आह,’ मान ने कहा।

कुछ देर तक रशीद चुप रहा। फिर उसने कहा, 'क्या आप महमूद गजनी और उसके शांतिप्रिय प्रधानमंत्री की कहानी जानते हैं?'

‘नहीं।’ उस महान विजेता और नगरों को तबाह करने वाले का पिछली घटनाओं से क्या संबंध था, यह मान को समझ नहीं आ रहा था। लेकिन नींद से पहले की उस धुंधली अवस्था में, यह देखना आवश्यक नहीं था।
रशीद ने अपनी कहानी शुरू करते हुए कहा: 'गज़नी के महमूद ने अपने वज़ीर से कहा: "वे दो उल्लू क्या हैं?"'
‘अरे हाँ?’ मान ने कहा। ‘गज़नी का महमूद चारपाई पर लेटा हुआ इन उल्लुओं को घूर रहा था?’
‘शायद नहीं,’ रशीद ने कहा। ‘अलग-अलग उल्लू हैं, और शायद चारपाई पर नहीं।’ तो वज़ीर ने कहा: “एक उल्लू के पास एक छोटा लड़का उल्लू है, और दूसरे के पास एक छोटी लड़की उल्लू है। वे हर तरह से एक-दूसरे के लिए उपयुक्त हैं, और शादी की योजनाएँ आगे बढ़ रही हैं। दोनों उल्लू —जो ससुर बनने वाले हैं—एक डाल पर बैठे अपने बच्चों की शादी के बारे में चर्चा कर रहे हैं, खासकर दहेज के महत्वपूर्ण प्रश्न पर।” वज़ीर यहाँ रुक जाता है। तो महमूद ग़ज़नी पूछता है, “वे क्या कह रहे हैं?” वज़ीर जवाब देता है: “लड़के की तरफ वाला उल्लू दहेज के रूप में एक हज़ार वीरान गाँव माँग रहा है।” “जी हाँ? जी हाँ?” महमूद ग़ज़नी पूछता है, “और दूसरा उल्लू क्या कह रहा है?” वज़ीर जवाब देता है: “लड़की की तरफ वाला उल्लू कह रहा है: महमूद ग़ज़नी के हालिया अभियान के बाद वह पाँच हज़ार दे सकता है...” शुभ रात्रि। अच्छी नींद लें।’
कहानी सुनकर मान प्रसन्न हुआ और बोला, ‘शुभ रात्रि।’ हालांकि, वह एक-दो मिनट तक कहानी के बारे में सोचता रहा। जब उसे नींद आई तब भी उल्लू डाल पर ही बैठे थे।
अगली सुबह वह किसी की आवाज़ सुनकर जागा, जो बड़े स्नेह और सख्ती से कह रही थी: 'जागो! जागो! क्या तुम अपनी सुबह की नमाज़ नहीं पढ़ोगे? अरे रशीद, जाओ और थोड़ा पानी ले आओ, तुम्हारे दोस्त को

नमाज़ से पहले हाथ धोने हैं।'

एक बूढ़ा आदमी, हृष्ट-पुष्ट शरीर और दाढ़ी के साथ किसी पैगंबर जैसा दिखता था, नंगे बदन और ढीली-ढाली हरी सूती लुंगी पहने हुए, उसके ऊपर खड़ा था। मान ने अनुमान लगाया कि यह रशीद के दादाजी होंगे, या 'बाबा' जैसा कि रशीद उन्हें बुलाता था। बूढ़ा आदमी इतना स्नेही और धार्मिकता का पालन करवाने में इतना दृढ़ था कि मान में मना करने की हिम्मत ही नहीं हुई।

'तो?' बाबा ने कहा। 'उठो, उठो। जैसा कि अज़ान में कहा गया है, प्रार्थना नींद से बेहतर है।'

'दरअसल,'—मान ने आखिरकार अपनी आवाज पाई—'मैं नमाज पढ़ने नहीं जाता।'

'तुम नमाज़ नहीं पढ़ते?' बाबा को आहत होने से कहीं ज़्यादा हैरानी हुई। रशीद किस तरह के लोगों को अपने गाँव ला रहा था? उनका मन कर रहा था कि उस बदतमीज़ नौजवान को बिस्तर से खींचकर बाहर निकाल दें।

'बाबा—ये हिंदू हैं,' रशीद ने बीच में दखल देते हुए और आगे की शर्मिंदगी से बचने की कोशिश करते हुए समझाया। 'इनका नाम मान कपूर है।' उन्होंने मान के उपनाम पर ज़ोर दिया।

बूढ़े व्यक्ति ने मान को आश्चर्य से देखा। यह विचार उनके मन में बिल्कुल नहीं आया था। फिर उन्होंने अपने पोते की ओर देखा और कुछ पूछने के लिए मुंह खोला। लेकिन जाहिर तौर पर उन्होंने अपना इरादा बदल दिया, क्योंकि सवाल पूछा ही नहीं गया।

कुछ सेकंड का विराम रहा। फिर बूढ़े व्यक्ति ने बोलना शुरू किया।

'अरे, वह तो हिंदू है!' उसने अंत में कहा और मान से मुंह फेर लिया।

8.4

थोड़ी देर बाद रशीद ने मान को समझाया कि सुबह शौच के लिए उन्हें

कहाँ जाना होगा—खेतों में, जहाँ पानी ले जाने के लिए पीतल का लोटा होगा। दिन का यही एक समय होता था जब मौसम थोड़ा ठंडा होता था और थोड़ी एकांतता भी मिल जाती थी। मान को थोड़ी असहजता महसूस हो रही थी, उसने अपनी आँखें मलीं, लोटे में पानी भरा और रशीद के पीछे-पीछे खेतों में चला गया।

वह एक सुहावनी, साफ सुबह थी। वे गाँव के पास एक तालाब के पास से गुज़रे। कुछ बत्तखें सरकंडों के बीच तैर रही थीं और एक चमकदार काली भैंस उसमें अपनी नाक तक गहरे पानी में नहा रही थी। गाँव के बाहरी इलाके में एक घर से गुलाबी और हरे रंग की सलवार-कमीज़ पहने एक युवती निकली, मान को देखा, शरमाते हुए हल्की सी आह भरी और तुरंत गायब हो गई।

रशीद अपने विचारों में खोया हुआ था। उसने कहा, 'यह तो सरासर बर्बादी है।'

'क्या है?'

'यह सब।' उसने अपने चारों ओर फैले ग्रामीण इलाके की ओर इशारा करते हुए खेतों, तालाब, गाँव और दूर दिखाई देने वाले एक और गाँव को देखा। फिर, चूंकि मान ने उससे कारण नहीं पूछा, तो उसने आगे कहा: 'मेरा सपना है कि मैं इसे पूरी तरह से बदल दूं...'

मान मुस्कुराने लगा और रशीद की बातों को समझने में असमर्थ हो गया। महुआ के पेड़ों और भूदृश्य की बारीकियों के बारे में रशीद के ज्ञान के बावजूद, मान को लगता था कि वह एक अव्यावहारिक दूरदर्शी है। अगर वह मान की मेमनों के मामले में इतना सख्त होता, तो गाँव के जीवन को उस तरह की पूर्णता प्राप्त करने में एक सहस्राब्दी लग जाती जो उसे संतुष्ट कर सके। रशीद अब बहुत तेज़ चलने लगा था और मान के लिए उसके साथ चलना मुश्किल हो रहा था। खेतों को विभाजित करने वाली

मिट्टी की मेड़ों पर चलना आसान नहीं था, खासकर रबर की चप्पलों में। वह फिसल गया और बाल-बाल टखने में मोच आने से बच गया। हालाँकि, उसका लोटा गिर गया और उसमें रखा पानी छलक कर बह गया।

रशीद ने देखा कि उसका साथी पीछे छूट गया है, तो वह मुड़ा और उसे जमीन पर अपने टखने को रगड़ते हुए देखकर घबरा गया।

'तुमने चिल्लाया क्यों नहीं?' उसने पूछा। 'क्या तुम ठीक हो?'

'हां,' मान ने कहा। फिर, ज्यादा हंगामा न करते हुए, उसने आगे कहा: 'लेकिन आप इन सबको बदलने के बारे में क्या कह रहे थे?'

एक पल के लिए, रशीद के दुबले-पतले, भेड़िये जैसे चेहरे पर चिंता के भाव उभर आए। फिर उसने कहा: "उदाहरण के लिए, वह तालाब। उसमें मछलियाँ पाली जा सकती हैं और उसका इस्तेमाल किया जा सकता है। और एक बड़ा तालाब है, जो गाँव की साझा संपत्ति का हिस्सा है, जैसे कि आम चरागाह। लेकिन उसका कोई उपयोग नहीं होता। वह आर्थिक रूप से बेकार है। यहाँ तक कि उसका पानी भी—" वह रुका और मान के गिरे हुए लोटे की ओर देखा।

'लो,' उसने कहा और अपने लोटे का आधा पानी मान के लोटे में डालने ही वाला था कि रुक गया। फिर उसने कहा, 'फिर सोचता हूँ,' 'मैं इसे बाद में डालूँगा, जब हम अपनी मंज़िल पर पहुँच जाएँगे।'

'ठीक है,' मान ने कहा।

रशीद को याद था कि मान को शिक्षित करना उसका कर्तव्य है और कल मान ने जानकारी ग्रहण करने में कितनी उत्सुकता दिखाई थी। इसलिए उसने रास्ते में आने वाले विभिन्न पौधों के नाम उसे बताने शुरू कर दिए। लेकिन मान आज सुबह सीखने के मूड में नहीं था और उसने अपनी प्रतिक्रिया में कभी-कभार एक शब्द को दोहराया, जिससे यह पता चलता

था कि उसका ध्यान कहीं और नहीं भटका है।
‘यह क्या है?’ उसने अचानक कहा।
वे एक हल्की ढलान की चोटी पर पहुँच गए थे। लगभग आधा मील दूर एक सुंदर नीले रंग का तालाब था, जिसके दोनों ओर स्पष्ट रूप से परिभाषित मिट्टी के किनारे थे, और उनसे कुछ दूरी पर किनारे पर कुछ सफेद इमारतें थीं।
रशीद ने सहज भाव से कहा, 'यह स्थानीय स्कूल है, मदरसा है। यह वास्तव में पड़ोसी गांव में है, लेकिन हमारे गांव के सभी मुस्लिम बच्चे भी वहीं जाते हैं।'
'क्या वे वहां मुख्य रूप से इस्लामी अध्ययन पढ़ाते हैं?' मान ने पूछा, जो पूल के बारे में पूछना चाहता था लेकिन रशीद के जवाब से उसका ध्यान भटक गया था।
‘नहीं—हाँ, कुछ तो ज़रूर। लेकिन वे शुरुआत में लगभग पाँच साल के छोटे बच्चों को लेते हैं और उन्हें हर चीज़ थोड़ी-थोड़ी सिखाते हैं।’ रशीद कुछ पल रुककर आसपास के नज़ारे का जायज़ा लेने लगा, उसे वापस आकर पल भर के लिए खुशी महसूस हुई। उसे ब्रह्मपुर पसंद था क्योंकि वहाँ जीवन गाँव के कठोर और—उसके विचार में—प्रतिक्रियावादी माहौल की तुलना में कम संकीर्ण और निराशाजनक था, लेकिन शहर में वह हमेशा पढ़ाई या अध्यापन में व्यस्त रहता था और हर जगह बहुत शोरगुल रहता था।
उसने कुछ पल उस मदरसे को देखा जहाँ वह इतना शरारती छात्र था कि उसके शिक्षक, उसे संभाल न पाने के कारण, नियमित रूप से उसके पिता और दादा को उसकी शिकायत करते थे। फिर उसने कहा: ‘यहाँ पढ़ाई का स्तर अच्छा है। विलायत साहब ने भी यहीं से अपनी पढ़ाई शुरू की थी, इससे पहले कि यह छोटा सा तालाब उनके लिए तंग हो जाए। अब जब वे

पुरातत्व में इतने बड़े नाम हैं, तो वे स्कूल की लाइब्रेरी में ऐसी किताबें दान करते हैं जिन्हें कोई भी बच्चा समझ नहीं पाता। उनमें से कई किताबें उन्होंने खुद लिखी हैं। वे एक हफ्ते के लिए यहाँ आए हैं, लेकिन वे बहुत एकांतप्रिय हैं। शायद हम उनसे मिल लें। चलिए, हम यहाँ हैं। मुझे अपना लोटा दीजिए।'

वे पेड़ों के एक छोटे से झुरमुट के पास एक ऊंचे खेत-विभाजक तक पहुँच गए थे। रशीद ने अपना पानी मान के साथ साझा किया। फिर वह नीचे बैठ गया और बोला: 'यहाँ आसपास कोई भी जगह अच्छी है। आराम से समय बिताओ। कोई हमें परेशान नहीं करेगा।'

मान शर्मिंदा था, लेकिन उसने यथासंभव सहजता से व्यवहार किया। 'मैं वहाँ जाता हूँ,' उसने कहा और चला गया।

लगता है अगले महीने का यही हाल रहने वाला है, उसने उदास मन से सोचा। मुझे इसकी आदत डाल लेनी चाहिए। उम्मीद है आसपास कोई सांप या दूसरी अप्रिय चीजें न हों। पानी भी बहुत कम है। अगर दिन में बाद में जाना चाहूँ तो? क्या मुझे इतनी गर्मी में चलकर आना-जाना पड़ेगा? इसके बारे में न सोचना ही बेहतर है। और चूंकि वह अप्रिय विचारों से बचने में माहिर था, इसलिए उसने दूसरी बातों पर ध्यान देना शुरू कर दिया।

वह सोचने लगा कि स्थानीय स्कूल के पास नीले रंग के तालाब में तैरना कितना अच्छा होगा। मान को तैरना बहुत पसंद था, व्यायाम के लिए नहीं बल्कि इसके सुखदायक अनुभव के लिए। ब्रह्मपुर में रहते हुए, वह उच्च न्यायालय से कुछ ही दूरी पर स्थित विंडरमेयर नामक झील पर जाया करता था और तैराकों के लिए आरक्षित क्षेत्र में तैरता था। उसे आश्चर्य हुआ कि पिछले एक महीने में वह वहाँ क्यों नहीं तैरा—या इसके बारे में सोचा भी क्यों नहीं।

गांव लौटते समय उसने मन ही मन कहा: मुझे सईदा बाई को पत्र लिखना ही होगा। रशीद को मेरा पत्र लिखने में मदद करनी होगी।

उसने ऊँची आवाज़ में कहा: 'ठीक है, जब हम वापस लौटेंगे तो मैं नीम के पेड़ के नीचे अपनी पहली उर्दू की क्लास के लिए तैयार हूँ। बशर्ते आप लोग और कुछ न कर रहे हों।'

'नहीं, मैं नहीं हूँ,' रशीद ने प्रसन्न होकर कहा। 'मुझे डर था कि मुझे ही इस विषय को उठाना पड़ेगा।'

8.5

जब मान उर्दू का पाठ पढ़ रहा था, तभी छोटे बच्चों की भीड़ उसके चारों ओर जमा हो गई।

'वे आपको बहुत दिलचस्प पाते हैं,' रशीद ने कहा।

'मैं समझ सकता हूँ,' मान ने कहा। 'वे स्कूल क्यों नहीं जा रहे हैं?'

'दो सप्ताह में सत्र शुरू हो जाएगा,' रशीद ने कहा। 'अब जाओ,' उसने उनसे कहा। 'क्या तुम्हें नहीं दिख रहा कि मैं तुम्हें पाठ पढ़ा रहा हूँ?'

बच्चे सचमुच देख सकते थे कि वह उन्हें कुछ सिखा रहे थे, और वे इससे बहुत प्रभावित हुए। वे विशेष रूप से एक ऐसे वयस्क को देखकर आश्चर्यचकित थे जिसे वर्णमाला सीखने में कठिनाई हो रही थी।

वे मन ही मन मान की नकल करने लगे। 'अलिफ़-बे-पे-ते... लाम-मीम-नून,' वे गुनगुनाते रहे, मान उन्हें अनदेखा करने की कोशिश कर रहा था, फिर भी वे हिम्मत जुटाते रहे।

मान को उनकी ज़रा भी परवाह नहीं थी। वह अचानक उन पर झपटा और एक क्रोधित शेर की तरह दहाड़ा, जिससे वे सब भयभीत होकर इधर-उधर भाग गए। उनमें से कुछ सुरक्षित दूरी से धीरे-धीरे हंसने लगे और फिर हिचकिचाते कदमों से दोबारा पास आने लगे।

'क्या आपको लगता है कि हमें अंदर जाना चाहिए?' मान ने कहा।

रशीद शर्मिंदा सा लग रहा था। 'दरअसल, सच्चाई यह है कि हम घर में पर्दा प्रथा का पालन करते हैं। आपके सारे बैग सुरक्षित रखने के लिए अंदर ही रखे हैं।'

'ओह!' मान ने कहा, 'बिल्कुल।' थोड़ी देर बाद उसने कहा, 'कल रात तुम्हारे पिताजी को मेरा छत पर सोने की बात कहना बहुत अजीब लगा होगा।'

'इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है,' रशीद ने कहा। 'मुझे तुम्हें पहले ही चेतावनी दे देनी चाहिए थी। लेकिन मैं अपने घर की हर चीज को हल्के में लेता हूँ।'

'नवाब साहब ब्रह्मपुर स्थित अपने घर में पर्दा प्रथा का पालन करते हैं, इसलिए मुझे यह नहीं मान लेना चाहिए था कि यहां स्थिति अलग होगी,' मान ने कहा।

'हाँ, ऐसा ही है,' रशीद ने कहा। 'निचली जाति की मुस्लिम महिलाओं को खेतों में काम करना पड़ता है, इसलिए वे पर्दा प्रथा का पालन नहीं कर पातीं। लेकिन हम शेख और सैयद कोशिश करते हैं। यह बस सम्मान की बात है, गाँव में बड़े होने की बात है।'

जैसे ही मान रशीद से पूछने ही वाला था कि उसका गाँव मुख्य रूप से या पूरी तरह से मुस्लिम है, रशीद के दादाजी यह देखने आ गए कि वे क्या कर रहे हैं। बूढ़े ने अभी भी अपनी हरी लुंगी पहनी हुई थी, लेकिन साथ में एक सफेद बनियान भी पहन रखी थी। अपनी सफेद दाढ़ी और कुछ कमजोर होती आँखों के साथ, वे सुबह मान पर नज़र रखने के समय की तुलना में अधिक दुर्बल लग रहे थे।

'रशीद, तुम उसे क्या सिखा रहे हो?'

'उर्दू, बाबा।'

'जी? अच्छा, अच्छा।'

उन्होंने मान से कहा:
‘आपकी उम्र कितनी है, कपूर साहब?’
‘पच्चीस।’
'क्या आप शादीशुदा हैं?'
'नहीं।'
'क्यों नहीं?'
‘खैर,’ मान ने कहा, ‘अभी तक ऐसा हुआ नहीं है।’
‘तुम्हारे साथ कुछ गलत तो नहीं है, है ना?’
‘अरे नहीं!’ मान ने कहा। ‘कुछ नहीं।’
तो फिर आपको शादी कर लेनी चाहिए। यही सही समय है, जब आप जवान हैं। फिर जब आपके बच्चे बड़े हो रहे होंगे तब आप बूढ़े नहीं होंगे। मुझे ही देख लीजिए। मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ, लेकिन एक समय ऐसा था जब मैं बूढ़ा नहीं था।
मान का मन हुआ कि वह रशीद से एक नजर का आदान-प्रदान करे, लेकिन उसे लगा कि ऐसा करना सही नहीं होगा।
बूढ़े आदमी ने मान की अभ्यास पुस्तिका उठाई जिस पर वह लिख रहा था और उसे अपनी आँखों से दूर कर लिया। पूरा पन्ना एक ही दो अक्षरों से भरा हुआ था। बूढ़े आदमी ने कहा, 'देखा, चमका, देखा, चमका, देखा, चमका। बस करो! रशीद, इसे कुछ और सिखाओ—यह सब बच्चों के लिए तो ठीक है। यह ऊब जाएगा।'
रशीद ने सिर हिलाया लेकिन कुछ नहीं कहा।
बूढ़े आदमी ने मान की ओर मुड़कर कहा: 'क्या तुम अभी तक ऊब नहीं गए हो?'
‘अरे नहीं,’ मान ने झट से कहा। ‘मैं पढ़ना सीख रहा हूँ। यह तो बस सुलेख वाला हिस्सा है।’

‘बहुत बढ़िया,’ रशीद के दादाजी ने कहा। ‘बहुत अच्छा। पढ़ते रहो, पढ़ते रहो। मैं उधर जाता हूँ’—उन्होंने सामने एक घर के सामने पड़ी चारपाई की ओर इशारा करते हुए कहा—‘और पढ़ता हूँ।’

उसने गला साफ किया और ज़मीन पर थूका, फिर धीरे-धीरे चला गया। कुछ ही मिनटों में मान ने उसे चश्मा लगाए चारपाई पर पालथी मारकर बैठे देखा, वह आगे-पीछे झूल रहा था और अपने सामने रखी एक बड़ी किताब से कुछ पढ़ रहा था, जिसे मान ने कुरान समझा। चूंकि वह लगभग बीस कदम ही दूर था, इसलिए उसके पढ़ने की धीमी आवाज़ बच्चों की आवाज़ों में घुलमिल गई, जो अब मान—‘शेर’—को छूने की हिम्मत दिखा रहे थे।

मान ने रशीद से कहा, 'मैं एक पत्र लिखने के बारे में सोच रहा हूँ। क्या तुम मेरे लिए पत्र लिख सकते हो और उसे लिखने में मेरी मदद कर सकते हो? मैं अभी भी इस लिपि में मुश्किल से दो शब्द ही जोड़ पाता हूँ।'

‘बिल्कुल,’ रशीद ने कहा।

‘क्या तुम्हें सच में कोई आपत्ति नहीं है?’ मान ने कहा।

‘नहीं, बिलकुल नहीं। मैं ऐसा क्यों करूँ?’ रशीद ने कहा।

दरअसल, यह सईदा बाई के लिए है।

‘मैं समझ गया,’ रशीद ने कहा।

‘शायद खाने के बाद?’ मान ने कहा। ‘अभी मेरा मन नहीं है, इतने सारे बच्चे इधर-उधर भाग रहे हैं।’ उसे डर था कि कहीं वे ज़ोर-ज़ोर से ‘सईदा बाई! सईदा बाई!’ चिल्लाना शुरू न कर दें।

रशीद कुछ पल चुप रहा, फिर एक मक्खी को भगाते हुए बोला: ‘मैं तुमसे ये दो अक्षर बार-बार इसलिए लिखवा रहा हूँ क्योंकि तुम वक्र रेखा बहुत कम गहरी बना रहे हो। इसे थोड़ा और गोल होना चाहिए। इस तरह—’ और उसने बहुत धीरे-धीरे ‘शीन’ अक्षर बनाया।

मान को यह एहसास हो गया था कि रशीद खुश नहीं है, बल्कि वास्तव में वह इस बात से सहमत नहीं है, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। वह यह सोचकर परेशान था कि सईदा बाई से उसे कोई खबर नहीं मिलेगी, और उसे डर था कि अगर वह उसे पत्र नहीं लिखेगा तो शायद सईदा बाई भी उसे पत्र न लिखे। दरअसल, उसे यह भी पक्का नहीं था कि सईदा बाई के पास उसका डाक पता है या नहीं। बेशक, 'अब्दुर रशीद के पते पर, गांव देबरिया, तहसील सलीमपुर, जिला रुधिया, पी.पी.' वाला पता उस तक पहुंच जाएगा, लेकिन मान को यकीन नहीं था कि सईदा बाई को इस बात का पूरा भरोसा होगा कि पता उस तक पहुंचेगा।

चूंकि सईदा बाई केवल उर्दू ही पढ़ सकती थीं, इसलिए उन्हें अपना पत्र लिखने के लिए किसी उर्दू लेखक की मदद लेनी पड़ती, जब तक कि वे स्वयं उर्दू लिपि को अच्छी तरह से सीख न लें। और रशीद के अलावा और कौन उनकी मदद कर सकता था, पत्र लिखकर, और—जब तक सईदा बाई की लिखावट असाधारण रूप से साफ और सावधानीपूर्वक न हो—उनका जवाब आने पर पढ़कर सुना सकता था?

मान असमंजस में ज़मीन की ओर देख रहा था, तभी उसने देखा कि बाबा के थूकने की जगह के चारों ओर मक्खियों का एक बड़ा झुंड जमा हो गया था। वे मान और रशीद द्वारा पिए जा रहे शरबत को नज़रअंदाज़ कर रही थीं।

उसने सोचा, "कितना अजीब है," और भौंहें चढ़ा लीं।

‘क्या सोच रहे हो?’ रशीद ने बड़े रूखेपन से कहा। ‘एक बार जब तुम भाषा पढ़ना-लिखना सीख जाओगे तो आज़ाद हो जाओगे। इसलिए ध्यान से सुनो, कपूर साहब।’

‘इसे देखो,’ मान ने कहा।

‘यह अजीब बात है। आपको मधुमेह तो नहीं है?’ रशीद ने अपनी आवाज में तीखेपन के बजाय चिंता व्यक्त करते हुए कहा।
‘नहीं,’ मान ने हैरानी से कहा। ‘क्यों? बाबा ने अभी-अभी वहीं थूका था।’
‘ओह, हाँ, मैं समझ गया,’ रशीद ने कहा। ‘वह है। और मक्खियाँ उसकी लार के चारों ओर जमा हो जाती हैं क्योंकि वह मीठी होती है।’
मान ने उस बूढ़े आदमी की ओर देखा, जो शरारती बच्चों में से एक पर उंगली हिला रहा था।
रशीद ने कहा, "लेकिन वो ज़ोर देकर कहते हैं कि उनकी सेहत बहुत अच्छी है, और हमारी तमाम सलाहों के बावजूद वो रमज़ान के दौरान हर दिन रोज़ा रखते हैं। पिछले साल रमज़ान जून में था, और उन्होंने सूर्योदय से सूर्यास्त तक एक निवाला भी नहीं खाया और एक बूंद पानी भी नहीं पिया। और इस साल भी लगभग उसी समय रोज़ा रहेगा। लंबे, गर्म दिन। उनकी उम्र के किसी व्यक्ति से ऐसी उम्मीद नहीं की जाती। लेकिन वो सुनते ही नहीं।"
अचानक गर्मी मान को परेशान करने लगी थी, पर उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। वह नीम के पेड़ के नीचे बैठा था, जो बाहर सबसे ठंडी जगह थी। अगर वह घर पर होता, तो पंखा चलाकर बिस्तर पर लेट जाता और पंखे के घूमते हुए ब्लेड को छत को घूरता रहता। लेकिन यहाँ उसके पास सहने के सिवा कोई चारा नहीं था। पसीना उसके चेहरे से टपक रहा था, और वह शुक्रगुजार था कि मक्खियाँ तुरंत उस पर नहीं बैठीं।
‘बहुत गर्मी है!’ मान ने कहा। ‘मैं जीना नहीं चाहता।’
‘तुम्हें नहा लेना चाहिए,’ रशीद ने कहा।
‘आह!’ मान ने कहा।
रशीद ने आगे कहा, ‘मैं अंदर जाकर साबुन ले आता हूँ और उस आदमी से कहूँगा कि जब तुम नल के नीचे हो, तब पानी पंप कर दे। कल रात

अंधेरा होने के बाद पानी बहुत ठंडा हो जाता, लेकिन अब अच्छा समय है... उस नल का इस्तेमाल करो।' उसने घर के ठीक सामने लगे पंप की ओर इशारा किया। 'लेकिन नहाते समय लुंगी पहनना।'

घर से बाहर निकला हुआ एक छोटा, बिना खिड़की वाला कमरा था, जिसका इस्तेमाल मान कपड़े बदलने के लिए करता था। यह घर का हिस्सा नहीं था, बल्कि एक तरह के शेड का काम करता था। इसमें कृषि मशीनों के कुछ पुर्जे और कुछ हल रखे थे। एक कोने में कुछ भाले और लाठियाँ पड़ी थीं। जब मान उसमें दाखिल होता, तो बच्चों में उतनी ही उत्सुकता होती, मानो कोई अभिनेता मंच के पीछे जाकर नए-नए परिधान में बाहर आया हो। जब वह बाहर आता, तो बच्चे उसकी आलोचनात्मक चर्चा करने लगते।

'उसे देखो, वह कितना पीला दिख रहा है।'

अब तो वह और भी ज्यादा गंजा दिख रहा है।

'शेर, शेर, बिना पूंछ वाला!'

सभी बच्चे बहुत उत्तेजित हो गए। करीब सात साल के एक शरारती बच्चे, जिसका नाम 'मिस्टर बिस्किट' था, ने शोर-शराबे का फायदा उठाकर एक लड़की पर पत्थर फेंका। पत्थर हवा में उड़ता हुआ आया और लड़की के सिर के पिछले हिस्से पर जा लगा। वह दर्द और सदमे से चीखने लगी। बाबा, जो अपनी प्रार्थना में लीन थे, अचानक अपनी चारपाई से उठे और तुरंत स्थिति का जायजा लिया। सभी लोग मिस्टर बिस्किट को घूर रहे थे, जो बेपरवाह दिखने की कोशिश कर रहा था। बाबा ने मिस्टर बिस्किट का कान पकड़कर मरोड़ दिया।

'हरामजादा—हरामजादे—तेरी हिम्मत कैसे हुई उस जानवर की तरह बर्ताव करने की?' बूढ़े आदमी ने चिल्लाकर कहा।

श्री बिस्किट रोने लगे और उनकी नाक से बलगम बहने लगा। बाबा उन्हें

कान पकड़कर घसीटते हुए वहीं ले गए जहाँ वे बैठे थे और उन्हें इतनी ज़ोर से थप्पड़ मारा कि लड़का लगभग उड़ ही गया। फिर, उनकी अनदेखी करते हुए, वे दोबारा अपनी कविता पाठ करने बैठ गए। लेकिन उनकी एकाग्रता भंग हो चुकी थी।

मिस्टर बिस्किट कुछ मिनटों तक अचेत अवस्था में जमीन पर बैठे रहे, फिर उठकर और शरारत करने के लिए निकल पड़े। इसी बीच रशीद उनकी शिकार को घर ले आया था; उसके सिर के पिछले हिस्से से बहुत खून बह रहा था और वह फूट-फूट कर रो रही थी।

सात साल की उम्र में ही अज्ञानी और क्रूर! रशीद ने सोचा, गाँव का यही हाल होता है। उसके भीतर अपने परिवेश के प्रति क्रोध उमड़ पड़ा।

मान ने गांव के बच्चों की निगरानी में स्नान किया। नल से ठंडा पानी भरपूर मात्रा में बह रहा था, जिसे एक बहुत ही चुस्त-दुरुस्त अधेड़ उम्र का व्यक्ति पंप कर रहा था, जिसका चेहरा दोस्ताना, चौकोर और झुर्रियों से भरा हुआ था। उसमें थकान का कोई संकेत नहीं दिख रहा था और ऐसा लग रहा था कि उसे सेवा करने में आनंद आ रहा है, मान के स्नान करने के बाद भी वह पानी पंप करता रहा।

अंततः मान शांत हो गया और इसलिए उसने दुनिया के साथ समझौता कर लिया।

8.6

मान ने दोपहर के भोजन में ज्यादा कुछ नहीं खाया, लेकिन उसने खाने की बहुत प्रशंसा की, इस उम्मीद में कि उसकी कुछ प्रशंसा घर की उस अदृश्य महिला या महिलाओं तक पहुँच जाएगी जिन्होंने इसे तैयार किया था।

दोपहर के भोजन के कुछ देर बाद, जब उन्होंने हाथ धो लिए और बाहर चारपाई पर आराम कर रहे थे, तभी घर पर कुछ मेहमान आए। उनमें से

एक रशीद के मामा थे।

यह आदमी रशीद की दिवंगत मां का बड़ा भाई था। वह एक विशालकाय, दयालु भालू जैसा आदमी था, जिसकी दाढ़ी में हल्के भूरे बाल थे। वह लगभग दस मील दूर रहता था, और एक बार रशीद अपने एक सहपाठी का गला घोंटकर जान से मारने की कोशिश में घर पर पिटाई खाने के बाद उसके घर से भागकर एक महीने तक उसके साथ रहा था।

रशीद उसे देखते ही चारपाई से उठ खड़ा हुआ। फिर उसने मान से कहा —बाकी लोग अभी भी सुनाई नहीं दे रहे थे—'ये मोटा आदमी मेरा मामा है। गोल-मटोल वाले को मेरी माँ के गाँव में "गुप्पी" कहते हैं—ये बकबक करता ही रहता है और बेतुकी कहानियाँ सुनाता है। हम फंस गए हैं।'

तब तक आगंतुक मवेशी-बाड़े तक पहुंच चुके थे।

'अरे मामा, मुझे पता ही नहीं था कि आप आ रहे हैं। आप कैसे हैं?' रशीद ने गर्मजोशी से स्वागत करते हुए कहा। और उसने गप्पी को विनम्रतापूर्वक सिर हिलाकर अभिवादन किया।

"आह," भालू ने कहा और चारपाई पर भारी मन से बैठ गया। वह कम बोलने वाला व्यक्ति था।

बहुत बोलने वाला वह व्यक्ति, उसका मित्र और यात्रा साथी, भी बैठ गया और एक गिलास पानी माँगा। रशीद तुरंत अंदर गया और शरबत ले आया।

गुप्पी ने मान से कई सवाल पूछे और जल्दी ही पता लगा लिया कि वह कौन है, क्यों है, क्या है और कैसा है। फिर उसने मान को अपनी दस मील की यात्रा में घटी कई घटनाओं का वर्णन किया। उन्होंने एक सांप देखा था, जो 'मेरी बांह जितना मोटा' था (रशीद के मामा ने ध्यान से भौंहें चढ़ाईं, लेकिन उसकी बात का खंडन नहीं किया); वे अचानक आए बवंडर से बाल-बाल बचे थे; और सलीमपुर के ठीक बाहर चेक-पोस्ट पर पुलिस

ने उन पर तीन बार गोली चलाई थी।
रशीद के मामा ने बस अपना माथा पोंछा और गर्मी में हांफते हुए ज़ोर से सांस ली। मान इन अप्रत्याशित कारनामों को देखकर अचंभित होकर आगे झुक गया।
रशीद शरबत के गिलास लेकर लौटा। उसने बताया कि उसके पिता सो रहे हैं। भालू ने दयालुता से सिर हिलाया।
बातूनी लड़का मान से उसकी प्रेम कहानी के बारे में पूछ रहा था, और मान बड़ी कमजोरी से उन सवालों को टालने की कोशिश कर रहा था।
'लोगों की प्रेम कहानियां ज्यादा दिलचस्प नहीं होतीं,' मान ने कहा, और उसकी यह बात उसे खुद भी अविश्वसनीय लग रही थी।
‘तुम ऐसा कैसे कह सकते हो?’ गुप्पी ने कहा। ‘हर आदमी की प्रेम कहानी दिलचस्प होती है। अगर उसकी कोई प्रेम कहानी नहीं है, तो भी दिलचस्प है। अगर है, तो भी दिलचस्प है। और अगर दो हैं, तो उससे भी दुगनी दिलचस्प है।’ वह अपनी बात पर खिलखिलाकर हँस पड़ा। रशीद शर्मिंदा सा हो गया। बाबा पहले ही अपने घर के अंदर जा चुके थे।
अपने गाँव में अक्सर होने वाली परेशानी के बावजूद, उसे तुरंत दबाया नहीं गया, इस बात से उत्साहित होकर गुप्पी आगे बढ़ा:
लेकिन सच्चे प्यार के बारे में तुम क्या जानते हो? तुम नौजवानों ने तो कुछ देखा ही नहीं है। तुम्हें लगता होगा कि ब्रह्मपुर में रहने के कारण तुमने दुनिया देख ली है—या हम जैसे गरीब देहातियों से ज़्यादा दुनिया देख ली है। लेकिन हम जैसे कुछ देहातियों ने भी दुनिया देखी है—और सिर्फ़ ब्रह्मपुर की दुनिया ही नहीं, बल्कि बंबई की दुनिया भी।
वह अपने ही शब्दों से प्रभावित होकर, विशेषकर 'बॉम्बे' जैसे मोहक शब्द से, थोड़ी देर रुका और प्रसन्नता से अपने श्रोताओं की ओर देखा। पिछले कुछ मिनटों में कई बच्चे गुप्पी के जादू से आकर्षित होकर वहाँ आ गए थे।

जब भी गुप्पी प्रकट होता, उन्हें एक अच्छी कहानी सुनने को मिलती, और शायद ऐसी कहानी जो उनके माता-पिता उन्हें सुनाना नहीं चाहते—भूत-प्रेत, जानलेवा हिंसा या भावुक प्रेम की कहानियाँ।

एक बकरी भी प्रकट हुई और एक गाड़ी के ऊपरी सिरे पर खड़ी होकर ठीक ऊपर एक शाखा की पत्तियों को चरने की कोशिश कर रही थी। अपनी चालाक पीली आँखों से वह पत्तियों को घूर रही थी और अपनी गर्दन ऊपर की ओर उठा रही थी।

'जब मैं बंबई में था,' गोल-मटोल और गूंजती हुई आवाज़ वाले उस गुप्पी ने आगे कहा, 'बहुत समय पहले जब मेरा भाग्य नहीं बदला था और मुझे इस सुखी ग्रामीण इलाके में लौटना पड़ा था, मैं एक बड़ी दुकान में काम करता था, एक बहुत प्रसिद्ध दुकान जिसे एक मुल्ला चलाता था, और हम बंबई के सभी बड़े लोगों को कालीन बेचा करते थे। उनके पास इतना पैसा होता था कि वे अपने थैलों से गठ्ठों में भरकर निकालते और काउंटर पर फेंक देते थे।'

जैसे उसे कुछ याद आ गया हो, उसकी आँखें चमक उठीं। बच्चे मंत्रमुग्ध होकर बैठे थे—या उनमें से ज़्यादातर तो बैठे ही थे। सात साल का शरारती बच्चा, मिस्टर बिस्किट, बकरी के साथ मग्न था। जब भी बकरी अपने लक्ष्य, पत्तों वाली डाल के पास पहुँचती, मिस्टर बिस्किट गाड़ी को नीचे की ओर झुका देते, और बेचारी बकरी दूसरी तरफ चढ़ने की कोशिश करती। अब तक वह एक भी पत्ता नहीं खा पाई थी।

'यह एक प्रेम कहानी है, मैं आपको पहले ही चेतावनी दे रहा हूँ, इसलिए यदि आप इसे सुनना नहीं चाहते हैं, तो आप मुझे अभी रुकने के लिए कह सकते हैं,' गुप्पी ने एक औपचारिक लहजे में कहा। 'क्योंकि एक बार शुरू हो जाने के बाद, मैं इसे रोक नहीं सकता, ठीक वैसे ही जैसे कोई प्रेम की क्रिया को रोक नहीं सकता।'

अगर रशीद को मेज़बान होने का इतना एहसास न होता, तो वह उठकर चला जाता। लेकिन मान रुककर कहानी सुनना चाहता था।
'आगे बढ़ो, आगे बढ़ो,' उसने कहा।
रशीद ने मान की ओर ऐसे देखा मानो कह रहा हो: इस आदमी को किसी प्रोत्साहन की जरूरत नहीं है। अगर तुम थोड़ी सी भी दिलचस्पी दिखाओगे तो यह दुगनी देर तक बोलता रहेगा।
उसने गप्पी से जोर से कहा: 'बेशक, हमेशा की तरह यह एक प्रत्यक्षदर्शी विवरण है।'
गुप्पी ने उसे एक नज़र देखा, पहले संदेह भरी नज़र से, फिर शांत भाव से। वह बस यही कहने ही वाला था कि उसने जिन घटनाओं का वर्णन करने वाला था, उन्हें उसने अपनी आँखों से देखा था।
उन्होंने कहा, 'मैंने इन घटनाओं को अपनी आंखों से देखा।'
बकरी दयनीय ढंग से मिमियाने लगी। गुप्पी ने ध्यान भटका रहे मिस्टर बिस्किट पर चिल्लाते हुए कहा: 'बैठ जाओ, वरना मैं तुम्हें उस बकरी को खिला दूँगा, पहले तुम्हारी आँखें।'
अपने भाग्य के ऐसे भयावह वर्णन से भयभीत होकर, श्री बिस्किट ने सोचा कि गुप्पी का इरादा गंभीर होगा, और वह किसी भी साधारण बच्चे की तरह जमीन पर बैठ गया।
गुप्पी ने आगे बताया: "हम बड़े-बड़े लोगों को कालीन बेचते थे, और हमारी दुकान पर इतनी खूबसूरत औरतें आती थीं कि हमारी आँखों में आँसू आ जाते थे। मुल्ला को तो खूबसूरती से बेहद लगाव था, और जब भी वह किसी खूबसूरत औरत को हमारी दुकान के पास से गुजरते या अंदर आते देखता, तो कहता: "हे भगवान! आपने ऐसी फरिश्ते क्यों बनाई हैं? फरिश्ते धरती पर आकर हम इंसानों को परेशान कर रहे हैं।" हम सब हंसने लगते। वह बहुत गुस्सा हो जाता और हमें डांटता: "जब

घुटनों पर बैठकर बिस्मिल्लाह कहते-कहते थक जाओ, तो अल्लाह के फरिश्तों की तारीफ करो।""

गुप्पी ने प्रभाव दिखाने के लिए कुछ देर विराम लिया।

एक दिन—यह मेरी आँखों के सामने हुआ—विमला नाम की एक खूबसूरत महिला ने अपनी कार स्टार्ट करने की कोशिश की, जो हमारी दुकान के पास खड़ी थी। कार स्टार्ट नहीं हुई, इसलिए वह बाहर निकली। वह हमारी दुकान की ओर चलने लगी। वह इतनी खूबसूरत थी कि हम सब मंत्रमुग्ध हो गए। हममें से एक ने कहा: "ज़मीन हिल रही है।" मुल्ला ने कहा: "वह इतनी खूबसूरत है कि अगर वह तुम्हें देख ले, तो तुम्हारे पूरे शरीर पर फोड़े निकल आएंगे।" लेकिन फिर—अचानक—'

उस घटना को याद करके गुप्पी की आवाज कांपने लगी।

अचानक—दूसरी दिशा से—और गली के दूसरी ओर से—एक युवक पठान आया, जो इतना लंबा और सुंदर था कि मुल्ला पहले की तरह ही उत्साह से ईश्वर की स्तुति करने लगा: "जैसे चंद्रमा आकाश से विदा होता है, वैसे ही सूर्य आ जाता है," इत्यादि।

वे एक-दूसरे के करीब आए। तभी वह पठान युवक सड़क पार करके उसकी ओर बढ़ा—विनम्र स्वर में "कृपा कीजिए, कृपया!" कहते हुए और अपनी जेब से एक कार्ड निकालकर उसे दिखाते हुए। उसने उसे तीन बार दिखाया। वह उसे पढ़ने में हिचकिचा रही थी, लेकिन अंततः उसने कार्ड ले लिया और उसे पढ़ने के लिए अपना सिर झुकाया। जैसे ही उसने ऐसा किया, उस पठान युवक ने उसे भालू की तरह गले लगा लिया और उसके गाल पर इतनी जोर से काटा कि खून बहने लगा। वह चीख पड़ी!

उस गुप्पी ने उस भयानक दृश्य को मन से मिटाने के लिए अपने चेहरे को हाथों से ढक लिया। फिर उसने हिम्मत जुटाई और आगे बोला:

मुल्ला चिल्लाया, "जल्दी करो, जल्दी करो, लेट जाओ, किसी ने कुछ

नहीं देखा— किसी को इसमें शामिल नहीं होना चाहिए।" लेकिन पास के एक होटल की छत पर अंडरवियर पहने एक आदमी ने यह सब देखा और चिल्लाया, "टोबा, टोबा!" वह मदद के लिए नीचे नहीं आया, लेकिन उसने पुलिस को फोन कर दिया। कुछ ही मिनटों में सड़कें बंद कर दी गईं, और बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं बचा, बचने का कोई रास्ता नहीं था। पांच जीपें चारों दिशाओं से पठान की ओर दौड़ीं। पुलिस अधीक्षक निर्दयी था और पुलिसकर्मियों ने अपनी पूरी ताकत लगा दी, लेकिन पठान लड़की से इतनी कसकर चिपका हुआ था कि वे उसकी बाहों को अलग नहीं कर सके, जो उसकी कमर के चारों ओर जकड़ी हुई थीं। उसने तीन आदमियों को धक्का देकर हटा दिया, इससे पहले कि वे आखिरकार पिस्तौल के बट से उसे बेहोश करने और लोहे की छड़ से उसके हाथों को अलग करने में सफल हुए।

गुप्पी ने आगे बोलने से पहले कुछ देर रुककर अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश की। श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए थे।

पूरे बंबई में इस गुंडागर्दी, इस बदमाशी को लेकर आक्रोश फैल गया और उसके खिलाफ तुरंत मामला दर्ज कर लिया गया। सबने कहा: "सख्ती बरतो—वरना बंबई की सारी लड़कियों के गाल नोच लिए जाएँगे, फिर क्या होगा?" एक बड़ा अदालती मुकदमा चला। उसे अदालत में एक पिंजरे में बंद कर दिया गया। उसने इतनी उग्रता से पिंजरे की सलाखों को हिलाया कि अदालत कक्ष हिल गया। लेकिन उसे दोषी पाया गया और मौत की सजा सुनाई गई। फिर न्यायाधीश ने कहा: "फांसी के फंदे पर बेदम लटकने से पहले क्या तुम किसी को देखना चाहते हो? क्या तुम अपनी माँ की एक आखिरी झलक देखना चाहते हो?" लड़के ने कहा: "नहीं—मैंने उसे काफी देख लिया है। मैंने उसकी छाती से दूध पिया है और बचपन में उसकी गोद में पेशाब किया है—मैं उसे दोबारा क्यों देखना

चाहूँगा?" सब चौंक गए। "कोई और?" न्यायाधीश ने पूछा।
"हाँ," उस बदनसीब आदमी ने कहा। "हाँ। एक ही इंसान, और सिर्फ़ एक ही इंसान: वो इंसान, जिसकी एक झलक ने मुझे धरती पर जीने की सारी उम्मीदें छोड़ने पर मजबूर कर दिया और मरने को तैयार कर दिया—वो इंसान जिसने मुझे परलोक का स्वाद चखाया है, क्योंकि उसने मुझे स्वर्ग भेजा है। मुझे उससे दो बातें कहनी हैं। वो सलाखों के बाहर खड़ी रहे, मैं अंदर—मैं उसे छूऊंगा भी नहीं—"
'बंबई के सभी बड़े लोग, सभी व्यापारी और बड़े-बड़े रईस अदालत में खड़े हो गए, उसकी विनती सुनकर सदमे से पत्थर की तरह जम गए। लड़की का परिवार चीखने लगा। "कभी नहीं!" वे चिल्लाए—"हमारी बेटी उससे कभी बात नहीं करेगी।" जज ने कहा: "मैंने कहा है कि वह कर सकती है —और उसे करना ही चाहिए।" तो वह अदालत में गई, और हर कोई फुसफुसा रहा था: "बेहया—बेशर्म—अपनी मौत के सामने तुम कितनी बेशर्म हो सकती हो।" लेकिन वह केवल सलाखों को पकड़े हुए हँस रहा था। अखबारों में भी यही लिखा था: वह हँसा।'
गुप्पी ने अपना शरबत का गिलास खाली किया और उसे फिर से भरने के लिए आगे बढ़ाया। अतीत को सटीक रूप से पुनर्जीवित करना एक प्यास लगने वाला काम था। बच्चे बेसब्री से उसकी गर्दन को हर घूंट के साथ ऊपर-नीचे होते देख रहे थे। एक आह भरकर उसने आगे कहा:
युवक ने अपने पिंजरे की सलाखों को पकड़ रखा था और विमला की आँखों में गहराई से देख रहा था। मानो वह उसकी आत्मा को उसके शरीर से पी जाना चाहता हो। लेकिन विमला ने उसे तिरस्कार भरी निगाहों से देखा, अपना सिर गर्व से ऊँचा उठाए हुए, उसका कभी सुंदर रहा गाल अब दागदार और कलंकित था। आखिरकार उसने हिम्मत जुटाई और बोला: "मैं तुमसे सिर्फ दो बातें कहना चाहता हूँ। पहली, अब तुमसे कोई

विवाह नहीं करेगा सिवाय किसी बूढ़े और गरीब आदमी के... तुम पठान द्वारा काटी गई स्त्री के रूप में चिह्नित हो गई हो। दूसरी"—और यहाँ युवक का स्वर भर आया और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे—"दूसरी, कसम से, मुझे नहीं पता था कि मुझे क्या हो गया था जब मैंने तुम्हारे साथ ऐसा किया। तुम्हें देखते ही मैं होश खो बैठा, मुझे पता ही नहीं चला कि मैं क्या कर रहा था—मुझे क्षमा कर दो, मुझे क्षमा कर दो! मुझे सैकड़ों विवाह प्रस्ताव मिले हैं। मैंने उन सभी को ठुकरा दिया—सबसे सुंदर स्त्रियों को भी। जब तक मैंने तुम्हें नहीं देखा, मुझे पता ही नहीं था कि मेरी आत्मा का साथी भी है।"

मैं तुम्हारे इस निशान को सुंदरता का प्रतीक मानूंगा, इसे अपने आंसुओं से धोऊंगा और इस पर चुंबनों की वर्षा करूंगा। मैं लंदन से लौटा हूं और मेरे कारखानों में पैंतीस हजार लोग काम करते हैं और मेरे पास करोड़ों रुपये की संपत्ति है, और मैं यह सब तुम्हें देना चाहता हूं। ईश्वर हमारे बीच साक्षी है—मुझे पता नहीं था कि मैं क्या कर रहा हूं—लेकिन अब मैं मरने को तैयार हूं।

यह सुनकर, वह लड़की, जो एक मिनट पहले उसे अपने हाथों से मार सकती थी, प्रेम से बीमार होकर हांफने लगी और न्यायाधीश की ओर गिर पड़ी, उनसे उस आदमी को बख्शने की भीख मांगते हुए बोली: "उसे बख्श दो, उसे बख्श दो—मैं उसे लंबे समय से जानती थी, मैंने उससे मुझे काटने की विनती की थी—" लेकिन न्यायाधीश ने अपना फैसला सुना दिया और कहा: "असंभव। झूठ मत बोलो, वरना मैं तुम्हें जेल में डाल दूंगा।" तब हताशा में उसने अपने थैले से चाकू निकाला और उसे अपने गले पर रखकर पूरी अदालत—उच्च न्यायालय के न्यायाधीश और सभी उच्च अधिकारियों और वकीलों—से कहा, "अगर उसे मार दिया गया, तो मैं मर जाऊंगी। मैं यहां लिखूंगी कि मैंने आपके द्वारा सुनाए गए फैसले के

कारण आत्महत्या कर ली।”
इसलिए उन्हें सजा रद्द करनी पड़ी—वे कर ही क्या सकते थे? फिर उसने विनती की कि शादी लड़के के घर पर ही हो। लड़की पंजाबी थी, और पठान और उसके परिवार के प्रति इतनी दुश्मनी थी कि उसके माता-पिता बदला लेने के लिए लड़की और लड़के दोनों को मार डालते।
गुप्पी रुक गई।
'यही सच्चा प्यार है,' उसने अपनी कहानी से बेहद भावुक होकर कहा और थकावट से चूल्हे पर पीछे की ओर झुक गया।
मान, अपनी इच्छा के विरुद्ध भी, मंत्रमुग्ध हो गया। रशीद ने उसे देखा, फिर उन मंत्रमुग्ध बच्चों को देखा, और जो कुछ भी हुआ था, उसके प्रति हल्के तिरस्कार के भाव से अपनी आँखें बंद कर लीं। उसका लंबा-चौड़ा, कम बोलने वाला मामा, जो मानो सुन ही नहीं रहा था, अपने दोस्त की पीठ थपथपाकर बोला:
‘अब रेडियो झूटिस्तान अपने श्रोताओं से विदा लेता है।’ फिर उसने गुप्पी के कान के पास एक काल्पनिक घुंडी बंद कर दी और अपना हाथ उसके मुंह पर रख दिया।
8.7
मान और रशीद गाँव से गुज़र रहे थे। रुधिया ज़िले के हज़ारों अन्य गाँवों से देखने में यह गाँव कुछ ज़्यादा अलग नहीं था: मिट्टी की दीवारें जिनमें लोग रहते थे (अक्सर अपने मवेशियों के साथ), फूस की छतें, संकरी गलियाँ जिनमें बाहर की ओर खिड़कियाँ नहीं थीं (सदियों के आक्रमण और डाकुओं के दौर की रूढ़िवादी विरासत), और गाँव के किसी बड़े आदमी का इक्का-दुक्का सफ़ेद रंग का एक मंज़िला ईंट का मकान। गायें और कुत्ते गलियों में घूमते रहते थे, नीम के पेड़ अंदरूनी आंगनों या गाँव के कुएँ के पास से झाँकते रहते थे, गाँव के बीचोंबीच पाँच ब्राह्मण घरों

और बनिया की दुकान के पास एक छोटी सफ़ेद मस्जिद की नीची मीनारें खड़ी थीं। केवल दो परिवारों के पास अपना हैंडपंप था: रशीद का और एक और परिवार का। शेष आबादी—कुल मिलाकर लगभग चार सौ परिवार—तीन कुओं में से किसी एक से अपना पानी प्राप्त करते थे: मुस्लिम कुआँ, जो एक नीम के पेड़ के पास खुले स्थान पर स्थित था, सवर्ण हिंदू कुआँ, जो एक पीपल के पेड़ के पास खुले स्थान पर स्थित था, और अछूत या बहिष्कृत लोगों का कुआँ, जो गाँव के बिल्कुल किनारे पर मिट्टी की झोपड़ियों के घने समूह के बीच, एक चमड़ा बनाने के गड्ढे से कुछ ही दूरी पर स्थित था।

वे लगभग अपने गंतव्य, अनाज भूनने वाले के घर पहुँच ही गए थे कि उनकी मुलाकात रशीद के छोटे चाचा से हुई, जो सलीमपुर जाने के लिए निकलने ही वाले थे। मान ने उन्हें पिछली रात की तुलना में दिन के उजाले में बेहतर ढंग से देखा। वे मध्यम कद के और दिखने में अच्छे युवक थे: सांवली त्वचा, सलीकेदार चेहरे की बनावट, हल्के घुंघराले काले बाल और मूंछें। जाहिर है, वे अपना ख्याल रखते थे। उनकी चाल में थोड़ा सा अकड़पन था। रशीद से छोटे होने के बावजूद, उन्हें इस बात का पूरा एहसास था कि वे चाचा हैं और रशीद भतीजा।

‘दोपहर की तेज गर्मी में तुम इधर-उधर क्यों घूम रहे हो?’ उसने रशीद से कहा। ‘और अपने दोस्त को अपने साथ क्यों घसीट रहे हो? बहुत गर्मी है। उसे आराम करना चाहिए।’

रशीद ने कहा, 'वह आना चाहता था। लेकिन तुम खुद यहां क्या कर रहे हो?'

मैं सलीमपुर जा रहा हूँ। वहाँ एक डिनर पार्टी है। मैंने सोचा कि मैं जल्दी जाकर वहाँ कांग्रेस पार्टी के कार्यालय में कुछ काम निपटा लूँ।

यह युवक बेहद ऊर्जावान और महत्वाकांक्षी था और स्थानीय राजनीति

समेत कई क्षेत्रों में सक्रिय था। स्वार्थपरक नेतृत्व के इन्हीं गुणों के कारण अधिकांश लोग उसे नेताजी कहकर पुकारते थे। अंततः उसके परिवार ने भी उसे नेताजी कहना शुरू कर दिया। उसे यह पसंद नहीं था।

रशीद ने ऐसा न करने का पूरा ध्यान रखा। उसने कहा, 'मुझे तुम्हारी मोटरसाइकिल कहीं नहीं दिख रही है।'

नेताजी ने उदास स्वर में कहा, 'यह स्टार्ट नहीं हो रही है।' उनकी पुरानी हार्ले डेविडसन (युद्ध के दौरान सेना द्वारा बेची गई, यह पहले ही कई लोगों के हाथों से गुजर चुकी थी) उनके दिल का गौरव थी।

'यह तो बहुत दुख की बात है। तो आप अपने रिक्शा से ही वहां क्यों नहीं चले जाते?'

मैंने इसे एक दिन के लिए किराए पर दिया है। सच में, यह मोटरसाइकिल फायदे से ज्यादा परेशानी वाली है। जब से मैंने इसे लिया है, तब से मैं इसे इस्तेमाल करने से ज्यादा इसकी चिंता में ही समय बिता रहा हूँ। गाँव के लड़के, और खासकर वो कमीना मोअज़्ज़म, हमेशा इसमें कुछ न कुछ गड़बड़ करते रहते हैं। मुझे हैरानी नहीं होगी अगर उन्होंने ईंधन टैंक में पानी डाल दिया हो।

जैसे अपने नाम से कोई जिन्न प्रकट हुआ हो, मोअज़्ज़म अचानक कहीं से प्रकट हो गया। वह लगभग बारह साल का लड़का था, काफी हट्टा-कट्टा और गाँव के सबसे शरारती लड़कों में से एक। उसका चेहरा बेहद दोस्ताना था और उसके बाल साही की तरह खड़े रहते थे। कभी-कभी किसी अनकहे विचार से उसका चेहरा उदास हो जाता था। वह किसी के भी बस में नहीं था, खासकर अपने माता-पिता के। लोग उसे सनकी समझते थे और उम्मीद करते थे कि कुछ सालों में वह सुधर जाएगा। जहाँ मिस्टर बिस्किट को कोई पसंद नहीं करता था, वहीं मोअज़्ज़म के चाहने वाले भी थे।

‘अरे कमीने!’ नेताजी ने मोअज्जम को देखते ही कहा। ‘मेरी मोटरसाइकिल का क्या हाल कर दिया तुमने?’

इस अचानक हमले से मुअज़्ज़म अचंभित हो गया और उसका चेहरा गंभीर हो गया। मान ने उसे उत्सुकता से देखा, और मुअज़्ज़म ने मानो एक पल के लिए साज़िश भरी नज़र से उसे आँख मारी।

‘क्या तुम मुझे सुन नहीं सकते?’ नेताजी ने उसकी ओर बढ़ते हुए कहा।

मोअज्जम ने चिड़चिड़े स्वर में कहा, 'मैं तुम्हें सुन सकता हूँ। मैंने तुम्हारी मोटरसाइकिल को कुछ नहीं किया है। मुझे तुम्हारी उस घटिया मोटरसाइकिल की क्या परवाह होनी चाहिए?'

मैंने आज सुबह तुम्हें अपने दो दोस्तों के साथ वहाँ घूमते हुए देखा।

'इसलिए?'

'फिर कभी इसके पास मत जाना। समझे? अगर मैंने तुम्हें फिर कभी इसके पास देखा, तो मैं तुम्हें गाड़ी से कुचल दूंगा।'

मोअज्जम ने हल्की सी हंसी हंसी।

नेताजी मोअज्जम को थप्पड़ मारना चाहते थे, लेकिन फिर उन्होंने अपना इरादा बदल दिया। उन्होंने बाकी लोगों से बेपरवाही से कहा, “चलो इस सूअर को यहीं छोड़ देते हैं। सही मायने में तो इसे डॉक्टर को दिखाना चाहिए, लेकिन इसका बाप इतना कंजूस है कि ऐसा नहीं करेगा। मुझे अब जाना होगा।”

मोअज़्ज़म ने गुस्से में नाचते हुए नेताजी से कहा, “सूअर! तुम खुद सूअर हो! तुम ही सूअर हो। और कंजूस भी। तुम ब्याज पर पैसा उधार देते हो, रिक्शा खरीदते हो और किसी को मुफ्त में इस्तेमाल नहीं करने देते। हमारे महान नेता, गांव के नेताजी को देखो! मेरे पास तुम्हारे लिए समय नहीं है। अपनी मोटरसाइकिल लेकर सलीमपुर चले जाओ, मुझे कोई परवाह नहीं।”

जब नेताजी मन ही मन धमकी भरे लहजे में बड़बड़ाते हुए चले गए, तो मोअज्जम ने रशीद और मान के साथ रहने का फैसला किया। . . . अब उसने मान की घड़ी देखने को कहा।

मान ने तुरंत उसे उतारकर मोअज़्ज़म को दिखाया, जिसने उसकी जांच करने के बाद उसे अपनी जेब में रख लिया। रशीद ने मोअज़्ज़म से तीखे स्वर में कहा:

'मुझे घड़ी दे दो। क्या मेहमानों के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है?'

मोअज़्ज़म पहले तो हैरान हुआ, फिर उसने घड़ी निकाल दी। उसने घड़ी रशीद को दी, जिसने उसे मान को वापस कर दिया।

'धन्यवाद, मैं आपका बहुत आभारी हूं,' मान ने मोअज्जम से कहा।

रशीद ने मान से कहा, मानो मोअज्जम वहाँ मौजूद ही न हो, "उसके साथ नरमी से पेश मत आना, वरना वह तुम्हारा फायदा उठा लेगा। अगर वह आस-पास हो तो अपना सामान अपने पास रखना। वह हाथ की सफाई से चीजें गायब करने के लिए मशहूर है।"

'ठीक है,' मान ने मुस्कुराते हुए कहा।

'वह दिल का बुरा इंसान नहीं है,' रशीद ने आगे कहा।

'दिल से बुरा नहीं है,' मोअज़्ज़म ने अनमने ढंग से दोहराया। हालाँकि, उसका ध्यान कहीं और था। एक बूढ़ा आदमी छड़ी लिए संकरी गली से उसकी ओर आ रहा था। उसकी झुर्रीदार गर्दन पर एक ताबीज़ था जिसने मोअज़्ज़म का ध्यान आकर्षित किया। जब वे एक-दूसरे के पास से गुज़रे, तो उसने उसे छूने के लिए हाथ बढ़ाया।

'मुझे दे दो,' उसने कहा।

बूढ़ा आदमी अपनी छड़ी पर झुक गया और धीमी और थकी हुई आवाज में बोला: 'युवक, मुझमें अब कोई ताकत नहीं बची है।'

इससे मोअज्जम प्रसन्न हुए और उन्होंने तुरंत ताबीज को रिहा कर दिया।

लगभग दस साल की एक लड़की बकरी लेकर उनकी ओर आ रही थी। लालच में डूबे मोअज़्ज़म ने रस्सी छीनने का नाटक किया और एक खूंखार डाकू के स्वर में बोला: 'मुझे दे दो!'
लड़की रोने लगी।
रशीद ने मोअज्जम से कहा: 'क्या तुम इस हाथ की पीठ को छूना चाहते हो? क्या तुम बाहरी लोगों पर यही प्रभाव डालना चाहते हो?'
मोअज्जम अचानक मान की ओर मुड़ा और बोला: 'मैं तुम्हारी शादी करवा दूंगा। तुम्हें हिंदू दुल्हन चाहिए या मुस्लिम?'
'दोनों,' मान ने बिना कोई भाव दिखाए कहा।
मोअज़्ज़म ने पहले तो इसे गंभीरता से लिया। उसने कहा, 'तुम्हारे पास दोनों चीजें कैसे हो सकती हैं?' फिर उसे एहसास हुआ कि मान शायद उसका मज़ाक उड़ा रहा है, और उसके चेहरे पर दुख के भाव आ गए।
लेकिन जब गांव के कुछ कुत्तों ने मान को देखकर जोर-जोर से भौंकना शुरू कर दिया, तो उसका उत्साह फिर से जागृत हो गया।
मोअज्जम भी खुशी से भौंकने लगा—कुत्तों पर। जैसे-जैसे वह गुजरता गया, कुत्ते और भी ज्यादा उत्तेजित होते गए और जोर-जोर से भौंकने लगे।
अब तक वे तीनों गाँव के बीचोंबीच एक छोटे से खुले मैदान में पहुँच चुके थे, और उन्होंने देखा कि लगभग दस लोगों का एक समूह अनाज भूनने वाले के घर के चारों ओर इकट्ठा था। उनमें से अधिकांश लोग गेहूँ भून रहे थे, लेकिन एक-दो लोग अपने साथ चावल या चना भी लाए थे।
मान ने मोअज्जम से कहा: 'क्या आपको कुछ भुना हुआ मक्का चाहिए?'
मोअज्जम ने हैरानी से उसकी ओर देखा, फिर जोर से सिर हिलाया।
मान ने अपने सिर पर हाथ फेरा। उसके घने काले बाल कालीन के रेशों की तरह लचीले थे।

‘अच्छा!’ उसने कहा।

रशीद ने मान का परिचय अनाज भूनने वाली महिला से कराया। उन्होंने मान को संदेह भरी नजरों से देखा, लेकिन खुलकर कोई शत्रुता नहीं दिखाई। उनमें से अधिकतर इसी गाँव के थे, एक-दो पास के गाँव सगल से थे, जो विद्यालय के ठीक आगे स्थित था। मान के उनके साथ शामिल होने के बाद, उनकी बातचीत मुख्य रूप से अनाज भूनने वाली महिला को निर्देश देने तक ही सीमित रही। जल्द ही रशीद की बारी आ गई।

बूढ़ी भुट्टा भूनने वाली महिला ने रशीद द्वारा दिए गए भुट्टे को पाँच बराबर भागों में बाँटा, एक भाग अपने लिए भुगतान के रूप में रख लिया और शेष भुट्टा भूनने लगी। उसने भुट्टे और थोड़ी सी रेत को अलग-अलग गर्म किया— भुट्टे को धीमी आँच पर, रेत को तेज़ आँच पर। फिर उसने गर्म भुट्टे वाले उथले बर्तन में रेत डाली और उसे दो मिनट तक चलाया। मोअज़्ज़म इस प्रक्रिया को ध्यान से देखता रहा, हालाँकि उसने इसे पहले भी सौ बार देखा होगा।

उसने पूछा, 'क्या आप इसे भूनना चाहते हैं या पॉप करना चाहते हैं?'

‘बस भुना हुआ,’ रशीद ने कहा।

अंत में महिला ने रेत छानकर अलग कर दी और भुने हुए अनाज को वापस रख दिया।

मोअज्जम ने दूसरों से ज्यादा लिया, लेकिन जितना वह चाहता था उससे कम लिया।

उसने कुछ वहीं खा लिया और मुट्ठी भर अपने कुर्ते की गहरी जेबों में भर लिया। फिर वह उतनी ही अचानक गायब हो गया जितनी अचानक वह आया था।

8.8

काफी रात हो चुकी थी और वे गाँव के आखिरी छोर पर पहुँच चुके थे।

बादल घिर रहे थे और लाल आसमान आग की तरह लग रहा था। शाम की नमाज़ की अज़ान की हल्की सी आवाज़ उनके कानों तक पहुँची, लेकिन रशीद ने मस्जिद जाने के बजाय गाँव का चक्कर पूरा करने का फैसला किया।

गांव के उत्तर में स्थित बंजर भूमि में छप्पर की झोपड़ियों, खेतों, फैले हरे आम के पेड़ों और सूखे, भूरे पत्तों वाले शीशम के पेड़ों पर लालिमा छाई हुई थी। गांव के दो खलिहानों में से एक यहीं स्थित था, और थके हुए बैल अभी भी वसंत की फसल पर काम कर रहे थे। वे खलिहान में गोल-गोल घूम रहे थे, गोल-गोल। वे देर रात तक ऐसा ही करते रहेंगे।

शाम की हल्की हवा उत्तर दिशा से धीरे-धीरे बह रही थी, जो गाँव के सुदूर बाहरी इलाके में बसे विभिन्न अछूतों—धोबी, चमार और सफाईकर्मियों—की तंग झोपड़ियों की ओर बढ़ रही थी। यह हवा गाँव की मिट्टी की दीवारों और संकरी गलियों में दबकर गाँव के केंद्र तक पहुँचने से पहले ही थम जाती। कुछ फटेहाल बच्चे, जिनके बाल भूरे, धूप से फीके पड़ गए थे, गंदे और उलझे हुए थे, अपने घरों के बाहर धूल में खेल रहे थे। एक बच्चा लकड़ी का काला टुकड़ा घसीट रहा था, दूसरा टूटे हुए कंचे से खेल रहा था। वे भूखे थे और दुबले-पतले और बीमार लग रहे थे।

रशीद ने कुछ चमार परिवारों का दौरा किया। एक परिवार अपने पुश्तैनी पेशे, मरे हुए जानवरों की खाल उतारने और उसे बेचने के लिए तैयार करने में लगा हुआ था। हालांकि, अधिकांश लोग कृषि मजदूर थे, जिनमें से एक-दो के पास अपनी थोड़ी-बहुत ज़मीन भी थी। एक घर में मान ने उस व्यक्ति को पहचान लिया जिसके चेहरे पर गहरी झुर्रियाँ थीं और जिसने नहाते समय बड़ी खुशी से उसके लिए पानी भरा था। रशीद ने कहा, 'वह दस साल की उम्र से हमारे परिवार के लिए काम कर रहा है। उसका नाम कछेरू है।'

बूढ़ा आदमी और उसकी पत्नी एक ही छप्पर वाले कमरे में अकेले रहते थे, जिसे वे रात में अपनी गाय और बड़ी संख्या में कीड़ों के साथ साझा करते थे।

रशीद की विनम्रता के बावजूद, उन्होंने उसके प्रति अत्यधिक, यहाँ तक कि भयभीत भाव से व्यवहार किया। जब उसने मान की ओर से भी उनकी झोपड़ी में चाय पीने की सहमति दी, तभी वे कुछ हद तक सहज हुए।

'धर्मपाल के बेटे—आपके भतीजे—का क्या हुआ?' रशीद ने पूछा।

कछेरु ने संक्षेप में कहा, 'उनकी मृत्यु एक महीने पहले हुई थी।'

'क्या वे सभी डॉक्टर?'

'पैसे खाने के अलावा कोई फायदा नहीं। अब मेरा भाई बनिया का कर्जदार है—और मेरी भाभी, खैर, आप उसे पहचान भी नहीं पाएंगे। वह अपने पिता के गांव चली गई है। वह वहां एक महीने तक रहेगी—जब तक बारिश शुरू नहीं हो जाती।'

'अगर उसे पैसों की जरूरत थी तो वह हमारे पास क्यों नहीं आया?' रशीद ने व्याकुल होकर कहा।

'तुम्हें यह अपने पिता से पूछना चाहिए,' कछेरु ने कहा। 'मुझे लगता है कि वह उनके पास दो-तीन बार गए थे। लेकिन उसके बाद तुम्हारे पिता नाराज हो गए और उन्हें कहा कि बेकार में पैसा बर्बाद मत करो। लेकिन उन्होंने अंतिम संस्कार में मदद की।'

'मैं समझ गया। मैं समझ गया। कोई क्या कर सकता है? भगवान की मर्जी—' रशीद ने कुछ सांत्वना भरे शब्द बुदबुदाए।

उनके जाने के बाद, मान ने देखा कि रशीद बहुत परेशान था। कुछ देर तक दोनों में से किसी ने कुछ नहीं कहा। फिर रशीद बोला:

'हम धरती से इतने पतले धागों से बंधे हैं। और यहाँ इतना अन्याय है—

इतना ज़्यादा—कि मेरा दिमाग खराब हो जाता है। और अगर आपको लगता है कि यह गाँव बुरा है, तो ऐसा इसलिए है क्योंकि आप सगल को नहीं जानते। वहाँ एक बेचारा आदमी है जिसे—भगवान उन्हें माफ करें—उसके अपने ही परिवार ने तबाह कर दिया और मरने के लिए छोड़ दिया। और उस बूढ़े आदमी और औरत को देखो,' रशीद ने फटे-पुराने कपड़ों में अपनी झोपड़ी के बाहर बैठे भीख माँग रहे एक दंपत्ति की ओर इशारा करते हुए कहा। 'उन्हें उनके बच्चों ने घर से निकाल दिया है, जबकि उनके बच्चे ठीक-ठाक जीवन जी रहे हैं।'

मान ने उनकी ओर देखा। वे भूखे-प्यासे और गंदे थे, उनकी हालत दयनीय थी। मान ने उन्हें कुछ आने दिए। वे पैसों को घूरते रहे।

'वे बेसहारा हैं। उनके पास खाने के लिए पर्याप्त नहीं है, लेकिन उनके बच्चे उनकी मदद नहीं करेंगे,' रशीद ने आगे कहा। 'हर कोई कहता है कि यह दूसरे की जिम्मेदारी है, या किसी की भी जिम्मेदारी नहीं है।'

'ये बच्चे किसके लिए काम करते हैं?' मान ने पूछा।

'हमारे लिए,' रशीद ने कहा। 'हमारे लिए। गांव के प्रतिष्ठित और प्रतिष्ठित लोगों के लिए।'

'तुम उन्हें यह क्यों नहीं बताते कि यह सब ऐसे ही नहीं चल सकता?' मान ने कहा। 'कि वे अपने माता-पिता के साथ ऐसा व्यवहार नहीं कर सकते? तुम उन्हें यह जरूर बता सकते हो कि अगर वे तुम्हारे लिए काम करना चाहते हैं तो उन्हें अपने घर की व्यवस्था ठीक करनी होगी?'

'अरे, ये तो अच्छा सवाल है,' रशीद ने कहा। 'लेकिन ये सवाल मेरे आदरणीय पिता और दादाजी के लिए है, मेरे लिए नहीं,' उसने कड़वाहट से कहा।

8.9

मान अपनी रस्सियों वाली चारपाई पर लेट गया और ऊपर आसमान की

ओर देखने लगा, जो पिछली रात के विपरीत, बादलों से घिरा हुआ था। उसे न तो बादलों से और न ही नक्षत्रों से कोई हल सूझ रहा था कि वह अपना पत्र कैसे लिखे। एक बार फिर उसे अपने पिता की याद सता रही थी और वह चिढ़ गया था।

पास ही कदमों की आहट सुनकर वह एक कोहनी के बल झुक गया और आवाज की दिशा में देखने लगा। रशीद के विशालकाय भालू जैसे चाचा और उनकी साथी गुप्पी मछली पास आ रहे थे।

'असलम अलैकुम।'

'अगर तुम नहीं करोगे,' मान ने जवाब दिया।

'सब ठीक चल रहा है?'

'आपकी प्रार्थनाओं के लिए धन्यवाद,' मान ने उत्तर दिया। 'और आप? आप कहाँ से आ रहे हैं?'

रशीद के चाचा ने कहा, "मैं दूसरे गाँव में अपने दोस्तों से मिलने गया था। मेरा दोस्त भी मेरे साथ आ गया। अब मैं घर के अंदर जा रहा हूँ, लेकिन मुझे अपने दोस्त को आपके साथ यहीं छोड़ना पड़ेगा। आपको कोई आपत्ति नहीं है?"

'बिल्कुल नहीं,' मान ने झूठ बोला, जिसे किसी की संगति नहीं चाहिए थी, खासकर गुप्पी की तो बिल्कुल भी नहीं। लेकिन चूंकि उसके पास कमरा नहीं था, इसलिए दरवाजा भी नहीं था।

रशीद के चाचा ने आंगन में बिखरी हुई कई चारपाइयों को देखकर, अपनी दोनों विशाल भुजाओं से एक-एक चारपाई उठाई और उन्हें बरामदे की दीवार के सहारे एक तरफ रख दिया। उन्होंने कहा, "लगता है बारिश होने वाली है। और वैसे भी, अगर ये एक तरफ रखी रहेंगी तो मुर्गियां आकर इन्हें गंदा नहीं करेंगी। वैसे, रशीद कहां है?"

'अंदर,' मान ने कहा।

रशीद के चाचा ने डकार ली, अपनी घनी दाढ़ी पर हाथ फेरा और फिर दोस्ताना अंदाज़ में बोले: “तुम्हें पता है, वो घर से भाग गया था और कुछ दिन मेरे साथ रहा। स्कूल में वो हमेशा बहुत तेज़ और झगड़ालू था। बनारस में आगे की पढ़ाई के लिए जाने पर भी उसका यही हाल था। धार्मिक पढ़ाई! लेकिन जब से वो ब्रह्मपुर में है, उसमें बदलाव आया है और वो काफी शांत हो गया है। या शायद ये बदलाव बनारस में ही शुरू हुआ हो।” उन्होंने एक पल सोचा। “अक्सर ऐसा ही होता है,” उन्होंने कहा। “लेकिन वो अपने लोगों से सहमत नहीं है। और फिर मुसीबत होगी। उसे हर जगह अन्याय दिखता है; वो अपने आस-पास की चीज़ों को समझने की कोशिश नहीं करता। तुम उसके दोस्त हो—तुम्हें उससे बात करनी चाहिए। अच्छा, मैं अंदर जा रहा हूँ।”

गुप्पी के साथ रह जाने पर मान को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे, लेकिन उसकी समस्या ज्यादा देर तक नहीं रही। गुप्पी ने दूसरी चारपाई पर आराम से बैठते हुए कहा:

आप किस तरह की सुंदरता का सपना देख रहे हैं?

मान चौंक गया और थोड़ा चिढ़ भी गया।

‘देखो, मैं तुम्हें बॉम्बे घुमाऊंगा,’ गुप्पी ने कहा। ‘मेरे साथ चलो।’ ‘बॉम्बे’ शब्द सुनते ही उसकी आवाज़ में फिर से उत्साह झलक उठा।

‘वहाँ इतनी सुंदरियाँ हैं कि ब्रह्मांड के सभी प्रेम में डूबे नौजवानों की इच्छाएँ पूरी हो जाएँगी। तंबाकू?’

मान ने अपना सिर हिलाया।

‘वहाँ मेरा एक शानदार घर है,’ गुप्पी ने आगे कहा। ‘उसमें पंखा है। नज़ारा बहुत अच्छा है। ऐसी गर्मी कहीं नहीं होती। मैं तुम्हें ईरानी चाय की दुकानें दिखाऊँगा। मैं तुम्हें चौपाटी बीच दिखाऊँगा। चार आने भुनी हुई मूंगफली के बदले तुम दुनिया देख सकते हो। चलते-चलते मूंगफली चबाते हुए

नज़ारे का आनंद लो: लहरें, अप्सराएँ, फरिश्ते, समुद्र में बेशर्मी से तैरती हुई सभी खूबसूरत औरतें। तुम भी उनके साथ शामिल हो सकते हो...'
मान ने अपनी आंखें तो बंद कर लीं, लेकिन अपने कान बंद नहीं कर सका।
"दरअसल, मुंबई के पास ही मैंने एक ऐसी अद्भुत घटना देखी जिसे मैं कभी नहीं भूलूंगा। अगर आप चाहें तो मैं आपको बता सकता हूँ," गुप्पी ने आगे कहा। वह एक पल के लिए रुका और बिना किसी विरोध के, एक ऐसी कहानी सुनाना जारी रखा जो पहले की बातों से पूरी तरह असंबद्ध थी।
गुप्पी ने शांत भाव से कहना शुरू किया, लेकिन कहानी आगे बढ़ने के साथ-साथ उसका उत्साह बढ़ता गया। "कुछ मराठी डाकू इस ट्रेन में चढ़ गए। उन्होंने कुछ नहीं कहा, बस एक स्टेशन पर चढ़ गए। ट्रेन चलने लगी और फिर वे खड़े हो गए—वे सभी छह खूंखार बदमाश—और चाकू से लोगों को धमकाने लगे। सभी यात्री डर गए और उन्होंने अपने पैसे और गहने उन्हें सौंप दिए। वे छहों पूरे डिब्बे में घुस गए और सबको लूट लिया। आखिर में वे एक पठान के पास पहुँचे।"
'पठान', 'बॉम्बे' की तरह, गुप्पी की कल्पना को और भी उत्तेजित करने का काम करता प्रतीत हुआ। उसने श्रद्धापूर्वक सांस ली और आगे बढ़ा:
पठान—एक हट्टा-कट्टा, तगड़ा आदमी—अपनी पत्नी और बच्चों के साथ यात्रा कर रहा था, और उसके पास अपने सामान से भरा एक संदूक था। तीन बदमाश उसके चारों ओर खड़े थे। उनमें से एक ने कहा, "अच्छा—"
"किस बात का इंतज़ार कर रहे हो?"
"इंतजार कर रहे हो?" पठान ने ऐसे कहा जैसे उसे समझ ही नहीं आ रहा हो कि वे क्या कह रहे हैं।
"मुझे अपना पैसा दो," मराठा डाकुओं में से एक चिल्लाया।

“मैं ऐसा नहीं करूंगा,” पठान गुर्राया।
“क्या?” डाकू चिल्लाया, उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वह क्या सुन रहा है।
“तुमने सबको लूट लिया है,” पठान ने बैठे-बैठे कहा, जबकि गुंडे उस पर मंडरा रहे थे। “मुझे भी क्यों लूट रहे हो?”
“नहीं!” डाकुओं ने कहा। “हमें अपना पैसा दो। जल्दी दो।”
पठान ने देखा कि वह तुरंत कुछ नहीं कर सकता। उसने समय बिताने की कोशिश की। वह अपनी चाबी और संदूक के ताले से छेड़छाड़ करने लगा। वह उसे खोलने के लिए झुका, दूरी का अंदाज़ा लगाया—और अचानक —एक लात से—धराम!—उसने उनमें से एक को गिरा दिया—फिर—धूश!—उसने बाकी दो डाकुओं के सिर आपस में टकरा दिए और उन्हें ट्रेन से बाहर फेंक दिया; एक को तो उसने गर्दन और कमर से उठाकर गेहूँ की बोरी की तरह बाहर फेंक दिया। वह बदमाश अगले डिब्बे पर उछला और फिर ज़मीन पर गिर गया।
गुप्पी ने अपना गोल-मटोल चेहरा पोंछा, जो उत्तेजना और याद करने की कोशिश के कारण पसीने से तरबतर था।
फिर सरगना—जो अभी भी डिब्बे में था—ने अपनी पिस्तौल निकाली और गोली चला दी। धम्म! ... गोली पठान की बांह को भेदते हुए डिब्बे की दीवार में जा लगी। चारों ओर खून ही खून था। उसने दोबारा गोली चलाने के लिए पिस्तौल उठाई। डिब्बे में मौजूद हर कोई डर से जम गया। फिर पठान ने शेर जैसी आवाज में यात्रियों से कहा: “कमीने! मैंने अकेले ही उनमें से तीन को पीट डाला, और किसी ने मेरी मदद के लिए हाथ नहीं बढ़ाया। मैं तुम्हारा पैसा और दौलत तुम्हारे लिए बचा रहा हूँ। क्या तुममें से कोई ऐसा नहीं है जो उसका हाथ पकड़कर उसे दोबारा गोली चलाने से रोक सके?”

फिर उन सबको होश आया। उन्होंने डाकू का हाथ पकड़कर उसे पठान को मारने से रोका और उसे तब तक पीटा जब तक वह दया की भीख मांगने और दर्द से कराहने नहीं लगा। पठान ने कहा, “ठीक से मारो,” और उन्होंने वैसा ही किया जब तक वह खून से लथपथ नहीं हो गया। और उन्होंने उसे अगले स्टेशन के प्लेटफार्म पर फेंक दिया, बिल्कुल चूर-चूर। जैसे कोई फेंका हुआ, सड़ा हुआ आम!

फिर सभी महिलाएं पठान के चारों ओर जमा हो गईं: उसके हाथ पर पट्टी बांधने लगीं, इत्यादि। वे उसके साथ ऐसा व्यवहार कर रही थीं मानो पूरे समूह में केवल एक ही पुरुष हो। सुंदर महिलाएं, सभी प्रशंसा से भरी हुई थीं।

स्वीकृति की तलाश में गुप्पी ने मान की ओर देखा, जिसे थोड़ी सी तबीयत खराब लग रही थी।

‘क्या तुम ठीक हो?’ लंबे मौन के बाद गुप्पी ने पूछा।

‘हम्मह,’ मान ने कहा। थोड़ी देर रुकने के बाद उसने आगे कहा: ‘बताओ, तुम इतनी अजीबोगरीब कहानियां क्यों सुनाते हो?’

‘लेकिन ये सब सच हैं,’ गुप्पी ने कहा। ‘मूलतः सच हैं।’

मान चुप रहा।

‘इसे इस तरह समझो,’ गुप्पी ने आगे कहा। ‘अगर मैं सिर्फ “नमस्ते” कहूँ और तुम कहो, “नमस्ते। तुम कहाँ से आए हो?” और मैं कहूँ, “बैतर की तरफ से ट्रेन से”—तो दिन कैसे बीतेगा? हम इन उमस भरी दोपहरों और गर्म रातों को कैसे गुजारेंगे? इसलिए मैं कहानियां सुनाता हूँ—कुछ तुम्हें ठंडक पहुँचाने के लिए, कुछ तुम्हें और उत्तेजित करने के लिए!’ गुप्पी हँस पड़ा।

लेकिन मान अब और सुन नहीं रहा था। 'बैतर' शब्द सुनते ही वह एकदम से चौकन्ना हो गया था, ठीक वैसे ही जैसे गप्पी मछली 'बॉम्बे' सुनकर

होश में आ गई थी। उसके मन में एक अद्भुत विचार आया था।
वह फिरोज को पत्र लिखते, बस इतना ही। वह फिरोज को पत्र लिखते और साथ में सईदा बाई के लिए भी एक पत्र भेजते। फिरोज की उर्दू बहुत अच्छी थी और उनमें रशीद जैसी रूढ़िवादिता बिल्कुल नहीं थी। फिरोज मान के पत्र का अनुवाद करते और उसे सईदा बाई को भेज देते। सईदा बाई को उनका पत्र पाकर आश्चर्य होता: आश्चर्य और प्रसन्नता दोनों! और वह अगली डाक से उन्हें जवाब लिख देतीं।
मान चारपाई से उठा और इधर-उधर टहलने लगा, मन ही मन पत्र का प्रारूप तैयार कर रहा था, बीच-बीच में ग़ालिब, मीर या दाग़ की एक-दो शेर जोड़कर उसे अलंकृत या ज़ोरदार बना रहा था। रशीद को बैतर के नवाब के बेटे को पत्र भेजने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती थी; मान उसे बस बंद लिफाफा सौंप देगा।
मान के अनियमित व्यवहार से हैरान और अपने श्रोताओं को खो देने से निराश होकर गुप्पी अंधेरे में भटक गया।
मान एक बार फिर बैठ गया, बरामदे के किनारे से टेक लगाकर, और लालटेन की सरसराहट और रात की दूसरी आवाज़ें सुनने लगा। कहीं कोई बच्चा रो रहा था। कहीं कोई कुत्ता भौंक रहा था, और दूसरे कुत्ते भी उसमें शामिल हो रहे थे। फिर कुछ देर के लिए सब शांत हो गया, सिवाय छत से आती एक-दो आवाज़ों के, जहाँ रशीद के पिता गर्मियों की रातें बिताते थे। कभी आवाज़ें बहस में तेज़ लगती थीं, कभी धीमी; लेकिन मान को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहा जा रहा है।
बादल छाई रात थी, और दूर एक पेड़ से पापीहा या ब्रेनफीवर पक्षी रुक-रुक कर बोल रहा था। उसकी तीन सुरों की श्रृंखला धीरे-धीरे तेज, ऊँची और तीव्र होती जा रही थी, जब तक कि वह चरम पर पहुँचकर अचानक शांत नहीं हो गई। मान ने उस आवाज़ से जुड़े रोमांटिक भावों के बारे में

नहीं सोचा ('पी-कहां? पी-कहां?' मेरा प्यार कहाँ है? मेरा प्यार कहाँ है?)। वह चाहता था कि पक्षी चुप हो जाए ताकि वह अपने दिल की आवाज़ पर ध्यान केंद्रित कर सके।

8.10

उस रात भयंकर तूफान आया। यह गर्मी के मौसम का अचानक आया तूफान था, जैसा कि असहनीय गर्मी में होता है। यह पेड़ों और खेतों से होकर गुजरा, घरों की छप्परें और यहाँ तक कि कुछ टाइलें भी उड़ा ले गया, और धूल भरी ज़मीन को भिगो दिया। जिन लोगों ने बादलों की ओर देखा था—जो अक्सर हवा के झोंके के अलावा कुछ नहीं लाते—और गर्मी से बचने के लिए बाहर सोने का फैसला किया था, उन्होंने अपनी चारपाइयाँ उठाईं और अंदर भागे, तभी अचानक एक-दो बूँदों के अलावा कोई चेतावनी नहीं मिली और बादल उनके सिर पर फट पड़े। फिर वे बाहर जाकर बाहर बंधे मवेशियों को अंदर ले आए। अब वे सभी गाँव वालों के रहने वाले झोपड़ियों के अँधेरे में एक साथ बैठे थे, मवेशी आगे के कमरों में दर्द भरी आवाज़ में रंभा रहे थे, और लोग पीछे के कमरों में आपस में बातें कर रहे थे।

कछेरु, जो बचपन से रशीद के परिवार के लिए काम करने वाला चमार था और जिसकी झोपड़ी में सिर्फ एक कमरा था, उसने तूफान के आने का समय बिल्कुल सटीक अनुमान लगाया था। उसकी भैंस अंदर थी और मूसलाधार बारिश से सुरक्षित थी। वह बीच-बीच में फुफकारती और पेशाब करती थी, लेकिन ये आवाजें सुकून देने वाली थीं।

छत से हल्की बारिश की बूँदें अंदर आईं और कछेरू और उसकी पत्नी पर गिरीं, जो ज़मीन पर लेटे हुए थे। कई छतें उसकी छत से भी ज़्यादा कमज़ोर थीं, और कुछ तो इस तरह के तूफ़ान में उड़ जातीं, लेकिन कछेरू ने तीखे स्वर में कहा:

'बुढ़िया—अगर तुम हमें बारिश से भी नहीं बचा सकती तो तुम्हारा क्या फायदा?'

उसकी पत्नी कुछ देर तक चुप रही। फिर उसने कहा: 'हमें देखना चाहिए कि भिखारी और उसकी पत्नी कैसे हैं। उनकी झोपड़ी नीची ज़मीन पर है।'

'यह हमारा काम नहीं है,' कछेरु ने पलटवार किया।

'ऐसी रातों में मुझे वो रात याद आती है जब तिरु का जन्म हुआ था। मैं सोचता हूँ कि कलकत्ता में वो कैसा होगा। वो कभी चिट्ठी नहीं लिखता।'

'सो जाओ, सो जाओ,' कछेरु ने थके हुए स्वर में कहा। वह जानता था कि अगली सुबह उसे कितना काम करना है, और वह अपनी नींद के घंटे बेकार की बातों में बर्बाद नहीं करना चाहता था।

लेकिन कुछ देर तक वह अपने विचारों में खोया हुआ जागता रहा। हवा ज़ोर से चल रही थी, रुक रही थी और फिर से चलने लगी, और पानी लगातार रिसता रहा। अंत में वह उठा और अपनी पत्नी की खराब छप्पर की अस्थायी मरम्मत करने लगा।

बाहर, झोपड़ियों और पेड़ों, दीवारों और कुओं की ठोस दुनिया, अब हवा, पानी, चांदनी, बिजली, बादलों और गरज की एक आकारहीन, भयावह गर्जना में तब्दील हो गई थी। जिस ज़मीन पर अछूत जातियाँ रहती थीं, वह गाँव के उत्तरी बाहरी इलाके में थी। कछेरू भाग्यशाली था; उसकी अपनी झोपड़ी, हालाँकि छोटी थी, सबसे निचले इलाके में नहीं थी; वास्तव में वह मिट्टी के एक निचले ढलान के किनारे पर थी। लेकिन उससे नीचे वह बारिश से धुंधली हुई झोपड़ियों की रूपरेखा देख सकता था जो सुबह तक पानी और गंदगी से लथपथ हो जाएँगी।

जब वह जागा, तब उजाला नहीं हुआ था। उसने अपनी गंदी धोती पहनी और गांव की कीचड़ भरी गलियों से होते हुए रशीद के पिता के घर की ओर चल पड़ा। बारिश रुक चुकी थी, लेकिन नीम के पेड़ों से पानी की बूँदें

उस पर और सफाई करने वाली महिलाओं पर पड़ रही थीं, जो चुपचाप घर-घर जाकर रात में घर की महिलाओं द्वारा बाहर छोड़े गए कचरे को साफ कर रही थीं। कुछ सूअर गलियों में गुर्राते हुए जा रहे थे और जो भी जूठा या मल उन्हें मिलता, उसे चट कर जाते थे। सभी कुत्ते चुप थे, हालांकि ढलते अंधेरे में कभी-कभार एक मुर्गा बांग दे रहा था।

धीरे-धीरे उजाला होने लगा। अब तक कछेरू, जो कीचड़ भरी गलियों के थोड़े सूखे किनारों पर धीरे-धीरे लेकिन सधे हुए ढंग से चल रहा था, सबसे भीषण क्षति के स्थान से काफी दूर निकल चुका था। यह क्षति कभी-कभी उसे और उसकी पत्नी को समान रूप से परेशान करती थी, लेकिन उसने इसे नजरअंदाज करना सीख लिया था।

रशीद के पिता के घर पहुँचकर कछेरु ने चारों ओर देखा। उसे कोई दिखाई नहीं दिया, लेकिन उसने सोचा कि बाबा कम से कम जाग रहे होंगे; वे सुबह की नमाज़ के पक्के अनुयायी थे। ढके हुए बरामदे में चारपाइयों पर कुछ लोग सो रहे थे; वे शायद आँगन में सो रहे थे और अचानक हुई बारिश में भीग गए होंगे। कछेरु ने अपने झुर्रीदार चेहरे पर हाथ फेरा और मुस्कुरा दिया।

अचानक बत्तखों की कर्कश और कुड़कुड़ाहट की मिली-जुली आवाज़ें गूंज उठीं। आंगन का राजा, एक बत्तख, आक्रामक ढंग से अपना सिर आगे की ओर उठाए, लेकिन चेहरे पर अजीब तरह से शांत भाव लिए, बारी-बारी से एक मुर्गे, कुछ मुर्गियों और कुछ बड़े चूजों का ईंट और मिट्टी के मैदान पर पीछा कर रहा था—कभी मवेशी-बाड़े की ओर तो कभी उससे दूर, कभी नीम के पेड़ के चारों ओर, और फिर गली पार करके उस घर की ओर जहाँ बाबा और उनका छोटा बेटा रहते थे।

कछेरु थोड़ी देर तक अपने घुटनों के बल बैठा रहा। फिर वह पानी के पंप के पास गया और अपने नंगे और कीचड़ से सने पैरों पर थोड़ा पानी

छिड़का। एक छोटी काली बकरी पंप के शाफ्ट से अपना सिर टकरा रही थी। कछेरु ने उसका सिर खुजलाया। उसकी पीली, व्यंग्यात्मक आँखें उसे देखती रहीं और जब वह रुका तो उसने शिकायत भरी आवाज़ में मिमियाया।

कछेरू हलों वाले कमरे के दरवाजे तक चार सीढ़ियाँ चढ़ गया। रशीद के पिता के पास तीन हल थे, दो देसी हल जिनमें नुकीले लकड़ी के फाल लगे थे और एक मिष्ठान हल जिसमें घुमावदार धातु का फाल लगा था, जिसे कछेरू ने अनदेखा कर दिया। उसने कमरे का दरवाजा खुला छोड़ दिया और देसी हलों को दरवाजे की रोशनी में खींच लाया। फिर वह एक बार फिर घुटनों के बल बैठ गया और दोनों हलों का निरीक्षण करने लगा। अंत में उसने एक हल अपने कंधे पर रखा और आंगन पार करके गौशाला की ओर चल दिया। उसके आने पर मवेशियों ने अपना सिर घुमाया और उन्हें देखकर प्रसन्न होकर कछेरू ने धीमी और स्नेह भरी आवाज़ में कहा, 'आह! आह!'

सबसे पहले, उसने सभी मवेशियों को चारा खिलाया, और गर्मी के मौसम में उनके भोजन के रूप में दिए जाने वाले भूसे, भूसे और पानी के मिश्रण में सामान्य से थोड़ा अधिक अनाज मिलाया। यहाँ तक कि काली भैंसों को भी चारा खिलाया गया—जिन्हें आमतौर पर चरवाहे की देखरेख में चरने के लिए छोड़ दिया जाता था—क्योंकि इस मौसम में उनके लिए पर्याप्त चारा मिलना मुश्किल था। फिर उसने उन दो बुद्धिमान सफेद बैलों की गर्दन और नाक पर थूथन और रस्सियाँ बाँधीं जिनके साथ काम करना उसे सबसे ज़्यादा पसंद था। उसने मवेशी-बाड़े की दीवार से टिकी एक लंबी छड़ी उठाई और उन्हें धीरे से बाहर निकाल दिया। ज़ोर से, लेकिन इस तरह कि कोई उसे सुन न सके, उसने कहा:

अगर मैं न होता तो तुम्हारा काम तमाम हो जाता।

जैसे ही वह बैलों को जोतने वाला था, उसे अचानक कुछ याद आया। उसने उन्हें सख्ती से वहीं रुकने को कहा और वापस आंगन पार करके सामने वाले कमरे में चला गया। उसने एक फावड़ा निकाला और उसे लेकर आया। बैल इधर-उधर नहीं भटके थे। उसने उनकी प्रशंसा की, फिर उन्हें जोता और हल को जुए पर उल्टा रख दिया, और उन्हें उसे घसीटने दिया जबकि उसने फावड़ा अपने कंधे पर रख लिया।

कछेरु से यह अपेक्षा की जाती थी कि जब भी गर्मी के सूखे महीनों में बारिश हो, वह अगले एक-दो दिन अपने स्वामी के खेतों में जाकर तब तक जुताई करे जब तक मिट्टी में पानी मौजूद हो। उसे एक खेत से दूसरे खेत में जाकर सुबह से शाम तक जुताई करनी होती थी ताकि इस अस्थायी नमी का पूरा लाभ उठा सके। यह बहुत ही थका देने वाला काम था और इसके लिए उसे कोई भुगतान नहीं मिलता था।

कछेरु रशीद के पिता के चमारों में से एक था, और जब भी रशीद चाहता, वह हाज़िर रहता था। वह न सिर्फ़ खेती-बाड़ी के कामों में, बल्कि हर तरह के छोटे-मोटे कामों में मदद करता था—चाहे नहाने के लिए पानी भरना हो, गाँव के दूसरे छोर तक संदेश पहुँचाना हो, या खाना पकाने के लिए अरहर की बालियाँ छत पर सुखाने के लिए ले जाना हो। दूसरे अजनबियों के विपरीत, उसे घर के सबसे निजी और कभी-कभार ही प्रवेश की विशेष अनुमति प्राप्त थी, खासकर तब जब छत पर कुछ सामान ले जाना होता था। रशीद के बड़े भाई की मृत्यु के बाद, घर के भारी कामों के लिए मदद की ज़रूरत पड़ने लगी थी। लेकिन जब भी कछेरु को बुलाया जाता, घर की औरतें खुद को किसी कमरे में बंद कर लेतीं या पीछे वाले सब्ज़ी के बगीचे में चली जातीं, और घर की दीवार के जितना हो सके करीब रहतीं।

अपनी सेवाओं के बदले में, परिवार उसकी देखभाल करता था। इसका मतलब यह था कि फसल कटाई के समय उसे एक निश्चित मात्रा में

अनाज दिया जाता था: हालांकि, यह उसके और उसकी पत्नी के बुनियादी भोजन के लिए भी पर्याप्त नहीं था। उसे अपने स्वामी के खाली समय में खेती करने के लिए एक छोटा सा खेत भी दिया गया था। उसके स्वामी ने उसे अपना हल और बैल भी इस्तेमाल करने के लिए दिए थे, अगर उसे लगता था कि वह उन्हें खाली छोड़ सकता है, साथ ही फावड़े, कुदाल और अन्य औजार भी, जिनमें से कोई भी काछेरू के पास नहीं था और न ही उसने अपने छोटे से खेत की जुताई के लिए इन्हें खरीदने के लिए कर्ज लेना उचित समझा।

वह अत्यधिक काम के बोझ तले दबा हुआ था, लेकिन यह बात उसके दिमाग की नहीं, बल्कि उसके शरीर की थकावट की वजह से थी। जैसे-जैसे साल बीतते गए और उसने कभी विद्रोह या बदतमीज़ी नहीं की, वैसे-वैसे जिस परिवार की उसने चालीस साल तक, बचपन से ही सेवा की थी, अब उसके साथ ज़्यादा विनम्रता से पेश आने लगा। वे उसे बताते थे कि उसे क्या करना है, लेकिन उस पर चिल्लाते नहीं थे, जिस तरह से उसकी नीची जाति के लिए अपमानजनक आदेश देना उचित होता है। रशीद के पिता कभी-कभी उसे 'मेरा बूढ़ा' कहकर पुकारते थे, जिससे कछेरू प्रसन्न होता था। उसे अपने चमारों में एक तरह का विशेष स्थान दिया गया था, और खेती के सबसे व्यस्त मौसमों के दौरान समय-समय पर उन्हें देखरेख करने के लिए कहा जाता था।

फिर भी, जब उनके इकलौते बेटे तिरु ने कहा कि वह देबिया और उसके जाति-ग्रस्त, गरीबी से ग्रस्त, अथक परिश्रम और निराशा से भरे जीवन से बाहर निकलना चाहता है, तो कछेरु ने कोई आपत्ति नहीं जताई। कछेरु की पत्नी ने अपने बेटे से न जाने की विनती की, लेकिन पति के मौन समर्थन का उस पर गहरा प्रभाव पड़ा।

गांव में उनके बेटे का भविष्य क्या था? उसके पास न जमीन थी, न पैसा,

और परिवार को बहुत त्याग करना पड़ा था—क्योंकि मवेशी चराकर होने वाली आमदनी भी छोड़नी पड़ी थी—कि कुछ मील दूर स्थित सरकारी प्राथमिक विद्यालय में छठी कक्षा तक उसकी पढ़ाई कराई गई थी। क्या यह इसलिए था कि वह खेतों की चिलचिलाती धूप में काम करते-करते अपनी जान दे दे? कछेरू अपने जीवन के बारे में चाहे जो भी सोचता हो, वह अपने बेटे के साथ ऐसा नहीं चाहता था। लड़का ब्रह्मपुर जाए, कलकत्ता जाए, बंबई जाए या जहाँ चाहे जाए और वहाँ काम ढूंढे: कोई भी काम, चाहे घरेलू नौकर के रूप में हो या कारखाने या चक्की में मजदूर के रूप में।

पहले तो तिरु पैसे भेजता था और हिंदी में स्नेह भरे पत्र घर लिखता था, जिन्हें कछेरु डाकिया या दुकान के बनिया से—जब भी उन्हें समय मिलता —पढ़ने के लिए कहता था। कभी-कभी वह उनसे कई बार पढ़वाता था, जब तक कि वे चिढ़ और उलझन में न पड़ जाएं। फिर वह उन्हें बोलकर जवाब लिखवाता था और उनसे पोस्टकार्ड पर लिखने का अनुरोध करता था। लड़का अपनी दो छोटी बहनों की शादी के लिए लौटा था और उनके दहेज में भी मदद की थी। लेकिन पिछले एक साल से कलकत्ता से कोई पत्र नहीं आया था और कछेरु के कई पत्र भेजने वाले को वापस आ गए थे। हालांकि, सभी नहीं; इसलिए वह अपने बेटे के पुराने पते पर हर महीने पत्र लिखता रहा। लेकिन वह कहाँ था, उसके साथ क्या हुआ था और उसने पत्र लिखना क्यों बंद कर दिया था, यह वह समझ नहीं पा रहा था —और डर भी रहा था। ऐसा लग रहा था मानो उनका बेटा लगभग मर ही गया हो। उसकी पत्नी व्याकुल थी। कभी-कभी वह अंधेरे में अकेले में रोती थी, कभी-कभी वह पीपल के पेड़ में बने एक छोटे से नारंगी रंग के ताक में प्रार्थना करती थी, जहाँ गाँव के देवता का निवास माना जाता था और जहाँ वह अपने बेटे को उसके जाने से पहले आशीर्वाद दिलाने ले गई

थी। हर दिन वह कछेरू को याद दिलाती थी कि उसने यह सब पहले ही देख लिया था।

अंततः एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह अपने स्वामी से अनुमति और आर्थिक सहायता लेकर कलकत्ता जाकर अपने बेटे की खोज करेगा (हालाँकि वह जानता था कि इसका अर्थ अथाह कर्ज के दलदल में फँसना होगा)। यह सुनकर उसकी पत्नी अज्ञात भय से भर कर ज़मीन पर गिर पड़ी और रोने लगी। कछेरू सलीमपुर तो कभी गया ही नहीं था, और रुधिया ज़िले के कस्बे में तो कभी गया ही नहीं था। ब्रह्मपुर तो दूर, कलकत्ता भी उसके लिए कल्पना से परे था। वहीं, उसकी पत्नी ने केवल दो ही गाँव देखे थे - एक वह गाँव जहाँ उसका जन्म हुआ था और दूसरा वह गाँव जहाँ उसकी शादी हुई थी।

8.11

मौसम सुहाना था और सुबह की हल्की हवा चल रही थी। कबूतरखाने से धीमी, भारी गुटरगू की आवाज़ आ रही थी। फिर कुछ कबूतर उड़ने लगे: कुछ भूरे रंग के जिन पर काली धारियाँ थीं, कुछ हल्के भूरे रंग के, एक-दो सफेद रंग के। कछेरु बैलों को गाँव से बाहर ले जाते हुए मन ही मन भजन गुनगुना रहा था।

कुछ गरीब औरतें और बच्चे, जिनमें से अधिकतर उसी जाति के थे, कल की फसल के बाद बचे हुए अनाज को इकट्ठा करने के लिए टोकरियाँ लेकर निकले थे। आम तौर पर इतनी जल्दी निकलकर वे उन पक्षियों और छोटे जानवरों से आगे निकल जाते थे जो खेतों को पूरी तरह से चट कर जाते थे। लेकिन अब ये अनाज इकट्ठा करने वाले कीचड़ के दलदल में खाने के दाने ढूँढ रहे थे।

दिन के इस समय हल चलाना अप्रिय नहीं था। मौसम सुहावना था, और अच्छी तरह से प्रशिक्षित और आज्ञाकारी बैलों की जोड़ी के पीछे टखनों

तक ठंडे पानी और कीचड़ में चलना अच्छा लग रहा था (कछेरु ने इन दोनों को खुद प्रशिक्षित किया था)। उसे अपनी छड़ी का इस्तेमाल शायद ही कभी करना पड़ता था; कई किसानों के विपरीत, उसे इसका इस्तेमाल करना बिल्कुल भी पसंद नहीं था। बैल उसकी आवाज़ों पर प्रतिक्रिया देते हुए खेत के चारों ओर वामावर्त दिशा में चक्कर लगाते हुए, किनारे के जितना हो सके करीब, हल को धीरे-धीरे अपने पीछे खींचते हुए आगे बढ़ते थे। कछेरु गुनगुनाता रहा, अपने भजन को 'वो! वो!' या 'टका टका' या अन्य आदेशों से रोककर, फिर वहीं से शुरू करता जहाँ उसने छोड़ा था, बल्कि वहीं से जहाँ वह गाता रहता अगर उसने गाना बंद न किया होता। जब पहले खेत की पूरी सतह पर हल की क्यारियाँ बन गईं—जो उसके अपने खेत से दुगना बड़ा था—तो वह मेहनत से पसीने से तरबतर हो गया। सूरज अब आसमान में लगभग पंद्रह डिग्री ऊपर चढ़ चुका था, और गर्मी बढ़ने लगी थी। उसने बैलों को आराम करने दिया और खेत के अनछुए कोनों में जाकर अपने फावड़े से मिट्टी खोदने लगा।

जैसे-जैसे सुबह आगे बढ़ी, उसने गाना बंद कर दिया। कुछ मौकों पर उसका धैर्य टूट गया और उसने उन्हें छड़ी से एक-दो बार मारा—खासकर बाहरी बैल को, जिसने अपने साथी के रुकने पर रुकने का फैसला किया था, जबकि उसे गोल-गोल घूमने का आदेश दिया गया था।

कछेरु अब स्थिर गति से काम कर रहा था, अपनी सीमित ऊर्जा और अपने पशुओं की ऊर्जा का सावधानीपूर्वक उपयोग कर रहा था। गर्मी असहनीय हो गई थी, और पसीना उसके माथे से बहकर उसकी भौहों तक पहुँच रहा था और वहाँ से आँखों में टपक रहा था। वह समय-समय पर अपने दाहिने हाथ के पिछले हिस्से से पसीना पोंछता रहता था, और बाएं हाथ से हल को मजबूती से पकड़े रहता था। दोपहर तक वह पूरी तरह थक चुका था। उसने पशुओं को एक नाले के पास ले गया, लेकिन वहाँ

का पानी, हालांकि पशुओं ने पिया, गर्म था। उसने स्वयं उस चमड़े के थैले से पानी पिया जिसे उसने निकलने से पहले पानी के पंप पर भरा था।

जब सूरज अपने चरम पर था, तब उसकी पत्नी खेतों में आई और उसके लिए रोटियाँ, नमक, कुछ मिर्च और पीने के लिए लस्सी लेकर आई। उसने चुपचाप उसे खाते हुए देखा, उससे पूछा कि क्या उसे कुछ और चाहिए, और वापस चली गई।

कुछ देर बाद रशीद के पिता छाता लेकर आए, जिसे वे धूप से बचने के लिए ओढ़ रहे थे। वे एक खेत को दूसरे से अलग करने वाली मिट्टी की एक छोटी सी मेड़ पर बैठ गए और कछेरू को हौसला देने के लिए कुछ शब्द कहे। उन्होंने कहा, “ये सच है कि खेती से ज्यादा कठिन कोई काम नहीं होता।” कछेरू ने कोई जवाब नहीं दिया, बस सम्मानपूर्वक सिर हिलाया। उसे तबीयत खराब लगने लगी थी। जब रशीद के पिता चले गए, तो उनकी मौजूदगी का सबूत उस लाल रंग की मिट्टी से मिला जहाँ उन्होंने पान का रस थूका था।

अब तक खेतों में पानी इतना गर्म हो चुका था कि पैरों से छूना असहज हो रहा था, और गर्म हवा चलने लगी थी। उसने मन ही मन कहा, 'मुझे थोड़ी देर आराम करना होगा।' लेकिन उसे एहसास था कि जब तक ज़मीन पर पानी बह रहा है, तब तक जुताई करना कितना ज़रूरी है, और वह नहीं चाहता था कि कोई कहे कि उसने वह काम नहीं किया जो करना आवश्यक था।

दोपहर ढलते-ढलते उसका सांवला चेहरा लाल हो गया था। उसके पैर, जो खुरदुरे और फटे हुए थे, ऐसे लग रहे थे मानो उबल गए हों। दिनभर की मेहनत के बाद वह आमतौर पर खेतों से मवेशियों को वापस लाते समय हल खुद ही कंधे पर उठाता था। लेकिन आज उसमें इतनी ताकत नहीं थी कि वह ऐसा कर सके, इसलिए उसने थके-हारे मवेशियों को ही हल

खींचने का काम सौंप दिया। उसके दिमाग में शायद ही कोई बात साफ हो पा रही थी। जब गलती से उसके फावड़े की धातु उसके कंधे से छू गई, तो वह दर्द से कराह उठा।

वह अपने बिना जोते हुए खेत के पास से गुजरा, जिसमें शहतूत के दो पेड़ थे, और उसने शायद ही उस पर ध्यान दिया हो। वह छोटा सा खेत भी वास्तव में उसका अपना नहीं था, लेकिन उसने ऐसा कहना या सोचना भी नहीं चाहा। उसका एकमात्र इरादा देबरिया की ओर जाने वाले रास्ते पर एक-एक कदम बढ़ाना था। गाँव उससे तीन-चौथाई मील आगे था, और उसे ऐसा लग रहा था मानो वह आग के बीच से चलकर वहाँ पहुँच रहा हो।

8.12

देबरिया के मानकों के अनुसार रशीद के पिता का सफेदी किया हुआ घर बाहर से देखने में काफी भव्य था, लेकिन उसमें कमरे बहुत कम थे। मूल रूप से यह एक चौकोर, स्तंभों से घिरा हुआ, बीच में खुला हुआ आंगन था। इस आंगन के एक तरफ स्तंभों के बीच की जगह को ईंटों से भरकर तीन बिल्कुल हवादार न होने वाले कमरे बनाए गए थे। इन कमरों में परिवार के सदस्य रहते थे। घर में इसके अलावा कोई और कमरा नहीं था। खाना पकाने का काम खुले आंगन के एक कोने में किया जाता था। इससे घर की महिलाएं बंद रसोई में बिना चिमनी वाले चूल्हे के धुएं से बच जाती थीं—जिसके संपर्क में आने से समय के साथ उनकी आंखें और फेफड़े खराब हो सकते थे।

स्तंभों वाली गलियारे के अन्य हिस्सों में भंडारण डिब्बे और अलमारियां थीं। केंद्रीय चौक में एक खुला स्थान था जिसमें एक नींबू का पेड़ और एक अनार का पेड़ था। चौक की पिछली दीवार के पीछे महिलाओं के लिए एक शौचालय और एक छोटा सब्जी का बगीचा था। सीढ़ियाँ छत

तक जाती थीं जहाँ रशीद के पिता दरबार लगाते थे और पान खाते थे—जैसा कि वे इस समय कर रहे थे।

घर में परिवार के करीबी सदस्य के अलावा किसी और को प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी। रशीद के मामा या चाचा को घर में पूरी छूट थी। यह नियम उनके भालू जैसे मजबूत मामा के लिए तब भी लागू था, जब उनकी बहन, रशीद की माँ, का निधन हो गया था और रशीद के पिता ने दूसरी, और काफी कम उम्र की, शादी कर ली थी। परिवार के मुखिया, बाबा, अपनी उम्र और मधुमेह के बावजूद सीढ़ियाँ चढ़ने में कोई परेशानी महसूस नहीं करते थे, इसलिए छत पर बैठकें नियमित रूप से होती थीं। उदाहरण के लिए, जब भी कोई लंबे समय बाद घर लौटता था, तो पारिवारिक मामलों को सुलझाने के लिए हमेशा छत पर बैठक बुलाई जाती थी।

आज शाम का कार्यक्रम रशीद के सम्मान में आयोजित किया गया था, लेकिन अन्य लोगों के इकट्ठा होने से पहले ही यह रशीद और उसके पिता के बीच बहस या कई बहसों में बदल गया। उसके पिता ने कई बार ऊंची आवाज में बात की। रशीद ने अपना बचाव किया, लेकिन अनियंत्रित गुस्से में ऊंची आवाज में बात करना उसके लिए लगभग अकल्पनीय था। कभी-कभी वह चुप रहता था।

जब रशीद मान को बाहर छोड़कर आंगन में दाखिल हुआ, तो उसका मन बेचैन था। मान ने आज चिट्ठी का ज़िक्र नहीं किया, जो अच्छी बात थी। रशीद को अपने दोस्त को निराश करने का ख्याल अच्छा नहीं लग रहा था, लेकिन उसके लिए वो सब लिखना नामुमकिन था जो मान लगभग निश्चित रूप से लिखवाना चाहता। रशीद को इंसानी बुरी प्रवृत्तियों से कोई मतलब नहीं था। ये उसे असहज कर देती थीं, कभी-कभी तो गुस्सा भी दिलाती थीं। ऐसे मामलों में वो चुप रहना ही बेहतर समझता था। अगर

उसे शक भी होता कि मान और सईदा बाई के बीच कुछ है—और उनकी मुलाकातों के हालात को देखते हुए ये सोचना मुश्किल था कि उसे कैसे पता नहीं चला होगा—तो वो इस बारे में सोचना नहीं चाहता था।

अपने पिता से मिलने के लिए सीढ़ियों से ऊपर जाते हुए, वह अपनी माँ के बारे में सोच रहा था, जो दो साल पहले अपनी मृत्यु तक उसी घर में रही थीं। तब भी उसके लिए यह अकल्पनीय था, और अब भी अकल्पनीय है, कि उनकी मृत्यु के बाद उसके पिता किसी और से शादी कर सकते थे। पचपन वर्ष की आयु में, स्वाभाविक रूप से इच्छाएँ शांत हो जाती हैं; और निश्चित रूप से उस महिला की स्मृति, जिसने अपना पूरा जीवन उनकी और उनके दोनों बेटों की सेवा में समर्पित कर दिया था, उनके पिता और दूसरी शादी के विचार के बीच एक दीवार की तरह खड़ी रही होगी। लेकिन यहाँ वह थी, उसकी सौतेली माँ: एक सुंदर महिला, जो उससे दस साल भी बड़ी नहीं थी। और वही थी जो उसके पिता के साथ छत पर सोती थी जब भी वह चाहता था, और जो घर में चहल-पहल करती रहती थी, मानो उस महिला की आत्मा से बेपरवाह हो जिसने वे पेड़ लगाए थे जिनके फल वह बिना सोचे समझे तोड़ लेती थी।

रशीद सोचता था कि उसके पिता अपनी इच्छाओं के अलावा और क्या करते थे? वे घर पर बैठे लोगों को आदेश देते रहते थे और सुबह से शाम तक लगातार पान खाते रहते थे, जैसे कोई चेन स्मोकर हो। उन्होंने अपने दांत, जीभ और गला खराब कर लिया था। उनका मुंह बस एक लाल धब्बा जैसा था, जिसमें कभी-कभार कोई काला दांत दिख जाता था। फिर भी, काले, घुंघराले, झड़ते बालों और मजबूत, झगड़ालू चेहरे वाला यह आदमी हमेशा उसे उकसाता और उपदेश देता रहता था—और रशीद के बचपन से लेकर वयस्कता तक ऐसा ही करता रहा था।

रशीद को शायद ही कोई ऐसा समय याद हो जब उसके पिता ने उसे डांट

न लगाई हो। स्कूल में, जब वह छोटा या किशोर शरारती था, तो वह निश्चित रूप से डांट का पात्र था। लेकिन बाद में, जब वह संभल गया और कॉलेज में अच्छा प्रदर्शन करने लगा, तब भी वह अपने पिता की नाराज़गी का निशाना बना रहा। और हालात तब और बिगड़ गए जब उनकी पत्नी के निधन से ठीक एक साल पहले, एक ट्रेन दुर्घटना में उनके बड़े और लाडले बेटे, रशीद के प्रिय भाई की मृत्यु हो गई।

बाद में उसके पिता ने उससे कहा, 'तुम्हारा स्थान यहीं, इस ज़मीन पर है। मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत है। मैं अब उतना जवान नहीं रहा। अगर तुम ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय में रहना चाहते हो, तो तुम्हें खुद ही इसके लिए साधन जुटाने होंगे।' रशीद ने मन ही मन कड़वाहट से सोचा कि उसके पिता गरीब तो थे नहीं। वे जाहिर तौर पर इतने जवान थे कि एक जवान पत्नी से शादी कर सकते थे। और—यह सोचकर रशीद का मन झकझोर रहा था—वे इतने जवान भी थे कि अपनी पत्नी से एक और संतान चाहते थे। देर से पिता बनना उनके परिवार में एक तरह की परंपरा थी। आखिर, नेताजी के जन्म के समय बाबा पचास वर्ष के आसपास थे।

जब भी रशीद को अपनी माँ की याद आती, उसकी आँखों में आँसू आ जाते। उसकी माँ उसे और उसके भाई को हद से ज़्यादा प्यार करती थी, और बदले में माँ भी उसे उतना ही प्यार करती थी। उसके भाई को अनार का पेड़ बहुत प्यारा था और उसे नींबू का। अब जब वह बारिश से भीगे और धुले हुए आँगन में चारों ओर देखता, तो उसे हर जगह उसकी माँ के प्यार के प्रत्यक्ष निशान दिखाई देते।

अपने बड़े बेटे की मृत्यु ने निश्चित रूप से उसकी अपनी मृत्यु को भी शीघ्र कर दिया था। और मरने से पहले उसने रशीद से, जो अपने भाई की मृत्यु और अपनी आसन्न मृत्यु से दुखी था, एक वादा करवाया था जिसे वह दिल से मना करना चाहता था लेकिन कर नहीं पा रहा था: एक वादा जो

अपने आप में बेशक अच्छा था; लेकिन जिसने उसके जीवन को आज़ादी का स्वाद चखने से पहले ही बांध दिया था।

8.13

सीढ़ियाँ चढ़ते हुए रशीद ने आह भरी। उसके पिता छत पर चारपाई पर बैठे थे और उसकी सौतेली माँ उनके पैर दबा रही थी।

‘Adaab arz, Abba-jaan. Adaab arz, Khala,’ said Rasheed. He called his stepmother Aunt.

'आने में तुम्हें बहुत देर हो गई,' उसके पिता ने रूखेपन से कहा।

रशीद ने कुछ नहीं कहा। उसकी युवा सौतेली माँ ने एक पल के लिए उसकी ओर देखा, फिर मुँह फेर लिया। रशीद ने कभी उसके साथ असभ्य व्यवहार नहीं किया था, लेकिन उसकी उपस्थिति में वह हमेशा उस महिला के प्रति सचेत रहती थी जिसकी जगह उसने ले ली थी, और उसे इस बात का दुख था कि उसने उसे दिलासा देने या स्नेह दिखाने का कोई प्रयास नहीं किया।

'अपने मित्र कैसे हैं?'

‘ठीक है, अब्बा। मैंने उसे नीचे छोड़ दिया है—मुझे लगता है वह पत्र लिख रहा है।’

मुझे उसके आने से कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन मुझे पहले से चेतावनी दी जानी चाहिए थी।

जी अब्बा। मैं अगली बार ऐसा करने की कोशिश करूंगा। यह बात अचानक ही सामने आई।

रशीद की सौतेली माँ उठी और बोली: 'मैं जाकर चाय बनाती हूँ।'

जब वह चली गई, तो रशीद ने धीरे से कहा: 'अब्बा, अगर हो सके तो कृपया मुझे इससे बख्श दीजिए।'

‘तुम्हें किस बात से बख्शूँ?’ उसके पिता ने अचानक गुस्से में कहा। वे

रशीद का असली मतलब समझ गए थे, लेकिन इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं थे।

रशीद ने पहले तो चुप रहने का फैसला किया, फिर अपना इरादा बदल लिया। उसने सोचा, अगर मैं अपने मन की बात नहीं कहूंगा, तो क्या मुझे असहनीय पीड़ा सहनी पड़ेगी? उसने धीमी आवाज़ में कहा, 'मेरा मतलब है, अब्बा, उसके सामने मेरी आलोचना होना।'

'मैं तुमसे जो चाहूँ, जब चाहूँ और जहाँ चाहूँ कहूँगा,' उसके पिता ने पान चबाते हुए और छत के किनारे से बाहर देखते हुए कहा। 'बाकी लोग कहाँ हैं? ओह, हाँ—और तुम यकीन मानो कि सिर्फ़ मैं ही नहीं हूँ जो तुम्हारी और तुम्हारे जीवनशैली की आलोचना करता हूँ।'

'मेरी जीवनशैली?' रशीद ने थोड़ी सी कड़वाहट भरी आवाज़ में कहा। उसे लगा कि उसके पिता का उसकी जीवनशैली की आलोचना करना उचित नहीं था।

'गांव में अपनी पहली शाम को, तुमने शाम और रात दोनों की नमाज़ छोड़ दी। आज जब मैं खेतों में गया तो मैं चाहता था कि तुम मेरे साथ आओ—लेकिन तुम कहीं नज़र नहीं आए। मुझे तुम्हें कुछ ज़रूरी बात बतानी थी और तुमसे कुछ चर्चा करनी थी। कुछ ज़मीन। लोग सोचेंगे कि तुम किस तरह के प्रभाव में हो? और तुम अपना पूरा दिन धोबी के घर से सफाईकर्मी के घर घूमते हुए, इसके बेटे और उसके भतीजे के बारे में पूछते हुए बिताते हो, लेकिन अपने परिवार के साथ ज़रा भी समय नहीं बिताते। यह कोई रहस्य नहीं है कि यहां बहुत से लोग सोचते हैं कि तुम कम्युनिस्ट हो।'

रशीद ने सोचा कि शायद इसका मतलब सिर्फ इतना था कि वह गाँव में व्याप्त गरीबी और अन्याय से घृणा करता था, और वह इसे छुपाता भी नहीं था। गरीब परिवारों से मिलना कोई निंदनीय बात तो थी ही नहीं।

रशीद ने दबे हुए व्यंग्यपूर्ण लहजे में कहा, 'मुझे उम्मीद है कि आप यह नहीं सोचते कि मैं जो कर रहा हूं वह गलत है।'

उसके पिता एक पल के लिए चुप रहे, फिर बड़े गुस्से से बोले: 'ब्रह्मपुर आदि में तुम्हारी शिक्षा ने तुम्हारे आत्मविश्वास को बहुत बढ़ाया है। तुम्हें जहां से भी सलाह मिल सके, उसे लेना चाहिए।'

'और वो सलाह क्या होगी?' रशीद ने कहा। 'इस गाँव के बड़े-बुजुर्गों की सलाह कि मैं जितनी जल्दी हो सके उतना पैसा कमा लूँ? जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, यहाँ हर कोई अपनी वासनाओं के लिए ही जीता है: औरतों के लिए, शराब के लिए या खाने के लिए—'

'बस करो! बहुत हो गया!' उसके पिता ने उस पर चिल्लाते हुए कहा, लेकिन इस प्रक्रिया में उनके मुंह से कई व्यंजन शब्द छूट गए।

रशीद ने '—या पान' नहीं कहा, जैसा कि वह कहने ही वाला था। इसके बजाय वह चुप रहा, उसने ठान लिया कि चाहे कितना भी गुस्सा क्यों न हो, वह अपने पिता से ऐसा कुछ नहीं कहेगा जिसका उन्हें बाद में पछतावा हो। अंत में रशीद ने सामान्य शब्दों में कहा: 'अब्बा, मुझे लगता है कि इंसान दूसरों के प्रति भी जिम्मेदार होता है, न कि सिर्फ अपने और अपने परिवार के प्रति।'

लेकिन सबसे पहले अपने परिवार के लिए।

'आप जो भी कहें, अब्बा,' रशीद ने हैरानी जताते हुए कहा कि वह देबारिया क्यों लौटा। 'क्या आपको लगता है कि मेरी शादी, उदाहरण के तौर पर, यह दिखाती है कि मुझे अपने परिवार की परवाह नहीं है? कि मुझे अपनी माँ या अपने बड़े भाई की परवाह नहीं थी? मुझे लगता है कि अगर मैं मर गया होता तो मैं और आप दोनों ज़्यादा खुश होते।'

उनके पिता एक मिनट के लिए चुप रहे। वे अपने हंसमुख बड़े बेटे के बारे में सोच रहे थे, जो देबरिया में रहकर पारिवारिक ज़मीन की देखभाल में

संतुष्ट था, जो शेर की तरह बलवान था, जिसे स्थानीय ज़मींदार का बेटा होने पर गर्व था, और जो हर चीज़ को समस्या समझने के बजाय, जहाँ भी जाता था, एक तरह की निश्चिंत सद्भावना फैलाता था। फिर उन्हें अपनी पत्नी—रशीद की माँ—की याद आई और उन्होंने एक गहरी साँस ली।

रशीद से उन्होंने पहले से भी नरम स्वर में कहा: "तुम अपनी ये सारी योजनाएँ—ये सारी शिक्षा योजनाएँ, ऐतिहासिक योजनाएँ, समाजवादी योजनाएँ, ये सारी सुधार और पुनर्वितरण योजनाएँ, ये सब—उन्होंने अपना हाथ घुमाते हुए कहा—'छोड़कर यहाँ क्यों नहीं रहते और हमारी मदद क्यों नहीं करते? क्या तुम्हें पता है कि एक-दो साल में ज़मींदारी खत्म होने पर इस ज़मीन का क्या होगा? वे इसे हमसे छीनना चाहते हैं। और फिर तुम्हारे सारे काल्पनिक मुर्गी फार्म, अधिक उपज देने वाले मछली तालाब और उन्नत डेयरी फार्म, जिनसे तुम जनसमूह को लाभ पहुँचाना चाहते हो, हवा में ही बनाने पड़ेंगे, क्योंकि अगर ऐसा हुआ तो निश्चित रूप से इन्हें चलाने के लिए पर्याप्त ज़मीन नहीं बचेगी। कम से कम हमारे परिवार में तो नहीं।"

उनके पिता का इरादा शायद नरमी से बोलने का था, लेकिन उनके शब्दों से जो बात निकली वह स्पष्ट रूप से तिरस्कारपूर्ण थी।

'अब्बा, मैं इसे रोकने के लिए क्या कर सकता हूँ?' रशीद ने कहा। 'यदि भूमि पर न्यायपूर्वक कब्जा होना है तो वह हो ही जाएगा।'

'तुम बहुत कुछ कर सकते हो,' उसके पिता ने गुस्से में कहना शुरू किया। 'एक तो तुम "न्यायपूर्वक" शब्द का प्रयोग करना बंद कर सकते हो, क्योंकि यह चोरी के सिवा कुछ नहीं है। और दूसरा, तुम अपने दोस्त से बात कर सकते हो—'

रशीद का चेहरा तनावग्रस्त हो गया। वह इस तरह खुद को अपमानित

करने के विचार को सहन नहीं कर पा रहा था। लेकिन उसने एक ऐसा तर्क चुना जो उसे लगा कि उसके पिता के विश्वदृष्टिकोण के अधिक अनुकूल होगा।

उन्होंने कहा, 'यह काम नहीं करेगा। राजस्व मंत्री बिल्कुल अडिग हैं। वे किसी को भी छूट नहीं देंगे। वास्तव में, उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि जो लोग उन पर या राजस्व विभाग में किसी और पर अपना प्रभाव डालने की कोशिश करेंगे, उन्हें इस अधिनियम के तहत सबसे पहले सूचित किया जाएगा।'

'क्या सच में?' रशीद के पिता ने सोच-विचार करते हुए कहा। 'खैर, हम भी तो आलसी नहीं रहे हैं... तहसीलदार हमें जानता है; और उपमंडल अधिकारी ईमानदार तो है, लेकिन आलसी है... देखते हैं क्या होता है।'

'अच्छा, अब्बा, क्या चल रहा है?' रशीद ने पूछा।

'मैं इसी बारे में आपसे बात करना चाहता था... मैं कुछ खास क्षेत्रों की ओर ध्यान दिलाना चाहता था... हमें सभी के लिए चीजें स्पष्ट करनी होंगी... जैसा कि मंत्री जी ने कहा है, कोई अपवाद नहीं हो सकता...'

रशीद ने भौंहें चढ़ा लीं। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसके पिता क्या कहना चाह रहे हैं।

'मकसद है कि किरायेदारों को इधर-उधर स्थानांतरित किया जाए,' उसके पिता ने पीतल के छोटे से सुपारी के चम्मच से सुपारी तोड़ते हुए कहा। 'उन्हें काम पर लगाए रखना है—इस साल इस खेत में, अगले साल उस खेत में...'

'लेकिन कछेरू?' रशीद ने शहतूत के दो पेड़ों वाले छोटे से खेत के बारे में सोचते हुए कहा—कछेरू ने आम का पेड़ इसलिए नहीं लगाया था क्योंकि उसे डर था कि ऐसा दुस्साहस करना भाग्य को चुनौती दे सकता है।

'कच्छेरु का क्या होगा?' उसके पिता ने गुस्से का प्रदर्शन करते हुए कहा,

मानो वे इस असहज विषय पर चुप्पी साधना चाहते हों। 'उसे वही खेत मिलेगा जो मैं उसे देना चाहूँगा। अगर एक भी चमार को छोड़कर कोई और खेत दिया तो बीस विद्रोह हो जाएँगे। परिवार इस पर सहमत है।'
लेकिन उसके पेड़—?
'उसके पेड़?' रशीद के पिता ने खतरनाक लहजे में कहा। 'मुसीबत तो इन कम्युनिस्ट विचारों की है जिन्हें तुम विश्वविद्यालय में माँ के दूध की तरह पीते हो। उसे एक-एक पेड़ दोनों हाथों में लेकर चले जाने दो अगर वो जाना चाहता है।'
अपने पिता को देखते ही रशीद के दिल में एक अजीब सी बेचैनी छा गई। उसने धीरे से कहा कि उसकी तबीयत ठीक नहीं है और जाने की इजाज़त मांगी। पहले तो उसके पिता ने उसे गौर से देखा, फिर अचानक बोले, 'जाओ। पता करो कि चाय का क्या हुआ है। अरे, देखो तुम्हारे मामा आ रहे हैं।' तभी सीढ़ियों के ऊपर उसके साले का बड़ा, घनी दाढ़ी वाला चेहरा दिखाई दिया।
रशीद के पिता ने हंसते हुए कहा, 'मैं रशीद को उसकी बड़ी-बड़ी बेवकूफियों के बारे में अपने विचार बता रहा था,' ठीक उसी समय जब रशीद सीढ़ियों से नीचे उतरकर नजरों से ओझल हो गया।
'ओह, हाँ?' भालू ने नरमी से कहा। वह अपने भतीजे को बहुत सम्मान देता था और अपने बहनोई के उसके प्रति रवैये की परवाह नहीं करता था। भालू जानता था कि रशीद भी उसे पसंद करता है, और कभी-कभी उसे इस बात पर आश्चर्य होता था। आख़िरकार, वह कोई पढ़ा-लिखा आदमी नहीं था। लेकिन रशीद को उसकी जो बात सबसे अच्छी लगती थी, वह यह थी कि वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने अपने उत्साह को खोए बिना सहनशीलता और शांति प्राप्त कर ली थी। और वह यह भी कभी नहीं भूल सकता था कि जब वह अपने घर से भागा था, तब उसे अपने चाचा

के घर में शरण मिली थी।
भालू को रशीद के बारे में सबसे ज़्यादा चिंता इस बात की थी कि वह ठीक नहीं दिख रहा था। वह बहुत दुबला-पतला, बहुत काला और बहुत कमजोर था; और उसके बालों में सामान्य से कहीं ज़्यादा सफ़ेदी आ गई थी।
उन्होंने कहा, 'रशीद अच्छा है।'
इस निरपेक्ष कथन के जवाब में उसे एक हल्की सी आह मिली।
भालू ने आगे कहा, 'रशीद के साथ एकमात्र समस्या यह है कि वह तुम्हारे सहित सभी के बारे में बहुत ज्यादा चिंता करता है।'
'ओह?' रशीद के पिता ने अपने होंठ खोलते हुए और अपना लाल मुंह फैलाते हुए कहा।
'सिर्फ़ आप ही नहीं,' उसके बहनोई ने शांत भाव से और बड़े ही स्पष्ट ढंग से कहा। 'उसकी पत्नी के बारे में। उसके बच्चों के बारे में। गाँव के बारे में। देश के बारे में। सच्चे धर्म और झूठे धर्म के बारे में। और भी कई बातें हैं: कुछ महत्वपूर्ण, कुछ कम महत्वपूर्ण। जैसे कि हमें अपने साथी मनुष्यों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। जैसे कि दुनिया को भोजन कैसे मिल सकता है। जैसे कि जब आप ज़मीन में खूंटी गाड़ते हैं तो मिट्टी कहाँ जाती है। और बेशक सबसे बड़ा सवाल...' भालू रुका और डकार ली।
'यह क्या है?' उसके बहनोई ने पूछे बिना नहीं रह सका।
भालू ने कहा, 'बकरी हरी सब्जियां खाकर काला मल क्यों त्यागती है?'
8.14
पिता के शब्द कानों में गूंजते हुए रशीद सीढ़ियों से नीचे उतरा। वह चाय के बारे में पूछना भूल गया। उसे पहले तो समझ ही नहीं आ रहा था कि क्या सोचे, क्या करे तो दूर की बात है। सबसे बढ़कर, उसे शर्म महसूस हो रही थी। कछेरू, जिसे वह बचपन से जानता था, जिसने उसे अपनी

पीठ पर बिठाकर घुमाया था, जिसने उसके स्नान करते समय धैर्यपूर्वक हैंडपंप के पास खड़ा रहा था, जिसने इतने वर्षों तक विश्वासपूर्वक और बिना थके परिवार की सेवा की थी, खेत जोता, निराई, सामान लाना-ले जाना: यह अकल्पनीय था कि उसके पिता ने बुढ़ापे में इतनी उदासीनता से उसे एक खेत से दूसरे खेत में भेजने का सुझाव दिया हो। वह अब जवान नहीं था; उनकी सेवा में बूढ़ा हो गया था। स्थिर आदतों वाला वह व्यक्ति, उस छोटे से खेत से गहरा लगाव रखता था जिसे उसने पंद्रह वर्षों तक जोता था। उसने खेत में सुधार किए थे, उसे छोटी-छोटी नहरों की एक श्रृंखला से जोड़कर एक बड़ी खाई बनाई थी; उसने खेत के किनारे बने ऊंचे रास्तों का रखरखाव किया था; उसने छाया और कभी-कभार फल के लिए शहतूत के पेड़ लगाए थे। सच कहें तो, पुरानी व्यवस्था के तहत ये ज़मीनें भी ज़मींदार की ही रही होंगी, लेकिन यहाँ सख्ती से बात करना अमानवीय होगा। और नई व्यवस्था के तहत, जो निस्संदेह जल्द ही आने वाली थी, कछेरू के ऐसे अधिकार थे जिन्हें नकारा नहीं जा सकता था। हर कोई जानता था कि वह उस खेत का किसान था। आगामी ज़मींदारी कानून के तहत, लगातार पाँच साल की किरायेदारी ही ज़मीन पर उसके अधिकार को स्थापित करने के लिए पर्याप्त थी।

उस रात रशीद को मुश्किल से नींद आई। वह किसी से बात नहीं करना चाहता था, मान से भी नहीं। रात की नमाज़ के दौरान—जिससे वह बचता नहीं था—उसने आदतवश शब्द बुदबुदाए, लेकिन उसका मन शांत रहा। लेटते ही उसे सिर में दर्द महसूस हुआ। कुछ घंटों की बेचैनी के बाद आखिरकार वह उठा और गलियों से होते हुए गाँव के सुदूर उत्तरी छोर पर स्थित बंजर भूमि की ओर चल पड़ा। सब कुछ शांत था। बैल खलिहान में अपना काम बंद कर चुके थे। कुत्ते उसकी उपस्थिति से अप्रभावित थे। रात तारों से जगमगा रही थी और गर्म थी। अपनी तंग फूस की झोपड़ियों में

गाँव के सबसे गरीब लोग सो रहे थे। रशीद ने मन ही मन कहा, "वे ऐसा नहीं कर सकते। वे ऐसा नहीं कर सकते।"

इस बात की पुष्टि करने के लिए, वह अगले दिन सुबह नाश्ते के बाद गाँव के पटवारी से मिलने गया। पटवारी गाँव का लेखा-जोखा रखने वाला एक छोटा सरकारी अधिकारी होता था, जो हर साल ज़मीन के रिकॉर्ड को बड़ी मेहनत से अपडेट करता था और हर भूखंड के मालिकाना हक और उपयोग का विस्तृत विवरण दर्ज करता था। रशीद का अनुमान था कि गाँव की लगभग एक तिहाई ज़मीन जमींदारों द्वारा किराए पर दी गई थी; उसके अपने परिवार के मामले में तो लगभग दो तिहाई ज़मीन किराए पर थी। उसे पूरा भरोसा था कि पटवारी की मोटी, कपड़े की जिल्द वाली बही-खातों में कछेरू के लगातार किराए पर रहने का अकाट्य प्रमाण मौजूद होगा।

दुबले-पतले बूढ़े पटवारी ने थकी हुई मुस्कान के साथ रशीद का विनम्रतापूर्वक अभिवादन किया। उन्होंने रशीद के गाँव में सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेने के बारे में सुना था और विशेष रूप से मिलने आने पर प्रसन्न हुए। धूप से अपनी आँखों को बचाते हुए उन्होंने रशीद से पूछा कि उसकी पढ़ाई कैसी चल रही है और वह गाँव में कितने दिन रुकने की योजना बना रहा है। उन्होंने रशीद को शरबत भी पिलाई। कुछ समय बाद पटवारी को एहसास हुआ कि यह मुलाकात पूरी तरह से सामाजिक नहीं थी, लेकिन इससे उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी। उनका सरकारी वेतन कम था और यह सर्वविदित था कि उन्हें अनौपचारिक रूप से अपनी आय बढ़ाने की आवश्यकता होती थी। उन्हें उम्मीद थी कि रशीद अपने परिवार की ज़मीनों की स्थिति जानने के लिए आया होगा। निस्संदेह, उसके दादा ने उसे ज़मीनों की स्थिति का जायजा लेने के लिए भेजा होगा। और वह जो देखेगा उससे प्रसन्न होगा।

पटवारी अंदर जाकर तीन बहीखाते, कुछ खेत-खलिहान और दो बड़े कपड़े के नक्शे ले आया, जो लगभग तीन फुट चौड़े और पांच फुट लंबे थे और पूरे गाँव को कवर करते थे। उसने अपने छोटे से आँगन में लकड़ी के चबूतरे पर उनमें से एक नक्शा बड़े प्यार से फैलाया। उसने अपने हाथ के किनारे से उसके एक कोने को धीरे से सहलाया। वह अपना चश्मा भी ले आया, जिसे उसने अब सावधानी से अपनी नाक पर लगाया।

'खैर, खान साहब,' उन्होंने रशीद से कहा, 'एक-दो साल में ये किताबें, जिनकी मैंने बाग की तरह देखभाल की है, दूसरे हाथों में चली जाएंगी। अगर सरकार की मनमानी चली तो वह हमें हर तीन साल में एक गाँव से दूसरे गाँव भेज देगी। हमारा जीवन जीने लायक नहीं रहेगा। और कोई बाहरी व्यक्ति गाँव के जीवन, उसके इतिहास, यहाँ की वास्तविकता को कैसे समझ सकता है? उसे यहाँ बसने में ही कम से कम तीन साल लग जाएंगे।'

रशीद ने सहानुभूति भरे स्वर निकाले। उसने शरबत का गिलास नीचे रख दिया था और हल्के पीले पड़ चुके रेशमी कपड़े से बने नक्शे पर कछेरू के खेत को ढूंढने की कोशिश कर रहा था।

'और इस गाँव के लोग हमेशा से इस पापी आदमी के प्रति बहुत दयालु रहे हैं,' पटवारी ने थोड़ी और जोशीली हंसी के साथ आगे कहा। 'घी, अनाज, दूध, लकड़ी... यहाँ तक कि कभी-कभार कुछ रुपये भी दे देते हैं—खान साहब का परिवार तो विशेष रूप से उदार रहा है... आपको क्या चाहिए?'

'हमारा चमार कचेरू का खेत।'

पटवारी की उंगली अचूक रूप से उस स्थान पर गई और उससे आधा इंच ऊपर हवा में आकर रुक गई।

'लेकिन चिंता मत कीजिए, खान साहब, सब कुछ ठीक कर दिया गया है,' उन्होंने कहा।

रशीद ने प्रश्नवाचक दृष्टि से उसकी ओर देखा।
पटवारी को थोड़ा आश्चर्य हुआ कि उसकी योग्यता या परिश्रम पर संदेह किया जा रहा है। उसने चुपचाप रेशमी नक्शे को लपेटकर मोटे कपड़े का नक्शा खोला। यह उसका कार्य नक्शा था, जिसे वह अपने रिकॉर्ड रखने के दौरों पर साथ ले जाता था। यह नक्शा थोड़ा मिट्टी से सना हुआ था और इसमें खेतों का घना जाल बना हुआ था, जिस पर काले और लाल रंग में उर्दू में नाम, संख्याएँ और तरह-तरह के चिह्न लिखे हुए थे। कुछ देर तक वह उसे देखता रहा, फिर बहीखातों और फटी-पुरानी खेत-पुस्तकों की ओर गया, उनमें से कुछ को उपयुक्त पृष्ठों पर खोला, बारी-बारी से कुछ बार उन्हें देखा और गंभीर तथा थोड़ा दुखी भाव से रशीद को इशारा किया। 'खुद देख लो,' उसने कहा।
रशीद ने कॉलम, प्रविष्टियाँ, माप, भूमि स्वामित्व संख्या, प्लॉट संख्या, क्रम संख्या, भूमि के प्रकार, भूमि की स्थिति और भूमि के उपयोग से संबंधित अभिलेखों को देखा; लेकिन, जैसा कि पटवारी को भलीभांति संदेह था, वह इस गूढ़ उलझन से कुछ भी नहीं समझ सका।
'लेकिन-'
‘खान साहब,’ शांत हुए पटवारी ने खुलेपन का भाव दिखाते हुए अपनी हथेलियाँ ऊपर की ओर करते हुए कहा। ‘मेरे अभिलेखों से ऐसा प्रतीत होता है कि पिछले कई वर्षों से उस खेत और उसके आसपास की जमीनों की खेती आप ही कर रहे हैं।’
‘क्या?’ रशीद चिल्लाया, पहले पटवारी के मुस्कुराते चेहरे को घूरते हुए, और फिर उस प्रविष्टि को देखते हुए जिस पर उसकी उंगली अब इशारा कर रही थी; वह फिर से पृष्ठ की सतह से थोड़ा ऊपर टिकी हुई थी, जैसे किसी जलीय कीट का शरीर।
‘Name of cultivator as given in khatauni register:

Abdur Rasheed Khan,' read out the patwari.

'यह कब से चल रहा है?' रशीद ने बड़ी मुश्किल से पूछा, उसका दिमाग इतनी तेज़ी से चल रहा था कि उसकी ज़बान पर काबू पाना मुश्किल था। वह बेहद परेशान और व्याकुल लग रहा था।

अब भी पटवारी, जो किसी भी तरह से मूर्ख नहीं था, को कुछ भी संदेह नहीं हुआ। उसने सीधे-सादे शब्दों में कहा: 'जब से भूमि सुधार कानून का खतरा मंडराया है, और आपके आदरणीय दादा-दादी ने संभावित परिणामों के बारे में चिंता व्यक्त की है, तब से आपका सेवक आपके परिवार के हितों की रक्षा में पूरी लगन से लगा हुआ है। परिवार की जमीनों को नाममात्र के लिए विभिन्न सदस्यों के बीच विभाजित कर दिया गया है, और आप सभी मेरे रिकॉर्ड में मालिक-कृषक के रूप में दर्ज हैं। यही सबसे सुरक्षित तरीका है। बड़ी व्यक्तिगत भूमि जोत संदिग्ध लगती है। बेशक, आप ब्रह्मपुर में पढ़ाई कर रहे थे, और ये छोटी-मोटी बातें इतिहास के विद्वान के लिए मायने नहीं रखतीं—'

'हाँ,' रशीद ने गंभीर स्वर में कहा। 'हमारी कितनी ज़मीन किरायेदारों को दी गई है?' उसने पूछा।

'कोई नहीं,' पटवारी ने लापरवाही भरे इशारे से अपनी बही-खातों की ओर इशारा करते हुए कहा।

'कोई नहीं?' रशीद ने कहा। 'लेकिन सबको पता है कि हमारे पास बटाईदार और किराया देने वाले किरायेदार दोनों हैं—'

'वे किराए पर रखे गए कर्मचारी हैं,' पटवारी ने सुधार करते हुए कहा। 'और भविष्य में उन्हें बहुत ही समझदारी से अलग-अलग क्षेत्रों में स्थानांतरित किया जाएगा।'

'लेकिन उदाहरण के लिए, कछेरू'—रशीद अचानक बोल पड़ा—'सब जानते हैं कि वह खेत वर्षों से उसी का है। तुम खुद ही तुरंत समझ गए कि

कछेरू के खेत से मेरा क्या मतलब था।'

'यह कहने का एक तरीका है,' रशीद के तर्क को पलटते हुए देखकर पटवारी को हंसी आ गई। 'अगर मैं खान साहब के विश्वविद्यालय का जिक्र करूं, तो इसका मतलब यह नहीं होगा कि ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय आपका था—या आप वहां पांच साल तक रहे थे।' उन्होंने हल्की हंसी हंसते हुए रशीद को बातचीत में शामिल होने का न्योता दिया; लेकिन जब रशीद ने कोई जवाब नहीं दिया, तो उन्होंने आगे कहा: 'मेरे रिकॉर्ड से पता चलता है कि हां, मंगलू चमार के बेटे कछेरू ने कभी-कभी खेत में मजदूरी की थी, लेकिन कभी भी लगातार पांच साल तक बिना रुके नहीं। हमेशा बीच में रुकावट आती रही है—'

'आप कहते हैं कि अब यह खेत नाममात्र का मेरा है?' रशीद ने कहा।

'हाँ।'

'मैं चाहता हूं कि आप काछेरु के नाम पर स्वामित्व परिवर्तन पंजीकृत करें।'

अब पटवारी के चौंकने की बारी थी। उसने रशीद को ऐसे देखा मानो उसका दिमाग खराब हो गया हो। वह कहने ही वाला था कि खान साहब मज़ाक कर रहे हैं, तभी अचानक उसे एहसास हुआ कि वह मज़ाक नहीं कर रहे थे।

'चिंता मत करो,' रशीद ने कहा। 'मैं तुम्हें तुम्हारी तय फीस दे दूंगा—मैं क्या कहूँ?—तुम्हारी तय फीस।'

पटवारी ने चिंता से अपने होंठ चाटे।

लेकिन आपका परिवार? क्या वे सभी—

क्या आप इस मामले में मेरी योग्यता पर सवाल उठा रहे हैं?

'अरे नहीं, खान साहब, भगवान न करे—'

रशीद ने सावधानी से कहा, "हमारे परिवार ने इस मामले पर विस्तार से

चर्चा की है। इसीलिए मैं यहाँ आया हूँ।" वह रुका और बोला, "यदि स्वामित्व का हस्तांतरण शीघ्रता से नहीं हो सकता या इसमें अन्य कानूनी दस्तावेज़ शामिल हैं, तो बेहतर होगा कि इस भूखंड के किरायेदारी रिकॉर्ड में वास्तविकता को दर्शाया जाए। हाँ, यह एक बेहतर तरीका है और इससे कम परेशानी होगी। कृपया यह स्पष्ट कर दें कि चमार यहाँ लगातार किरायेदार रहा है।"

पटवारी ने आज्ञाकारी भाव से सिर हिलाया। उसने धीमी आवाज़ में कहा, 'हुज़ूर के आदेशानुसार।'

रशीद ने पैसे निकालते समय अपनी घृणा को छिपाने की कोशिश की।

'मेरी प्रशंसा व्यक्त करने के लिए यह एक छोटा सा उपहार है। इतिहास के विद्यार्थी के रूप में, मैं इन अभिलेखों की सटीकता से अत्यंत प्रभावित हुआ हूँ। और एक जमींदार के रूप में, मैं आपसे सहमत हूँ कि सरकार की पटवारियों को बारी-बारी से नियुक्त करने की नीति अत्यंत खेदजनक है।'

'खान साहब, थोड़ा और शरबत चाहिए? या मैं आपको कुछ और पौष्टिक दूं? शहर की जिंदगी ने आपको थका दिया है... आप बहुत दुबले-पतले दिख रहे हैं...'

'नहीं, धन्यवाद,' रशीद ने कहा। 'मुझे जाना होगा। लेकिन मैं दो सप्ताह में फिर से फोन करूंगा। इतना समय काफी होगा, है ना?'

'ऐसा होना चाहिए,' पटवारी ने सहमति जताई।

'Good, then. Khuda haafiz.'

'खुदा हाफ़िज़, खान साहब,' पटवारी ने धीरे से कहा। और सचमुच, ईश्वर को ही रशीद को उस मुसीबत से बचाना होगा जिसमें उसने खुद को—और सिर्फ खुद को ही नहीं—फंसा दिया था।

भाग नौ

9.1

‘डार्लिंग, तुम बहुत दुबली-पतली लग रही हो,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कल्पना गौर से कहा— जो हष्ट-पुष्ट और जीवंत थीं, लेकिन पहले से कम हष्ट-पुष्ट लग रही थीं। श्रीमती रूपा मेहरा लता के लिए एक भावी वर की तलाश में दिल्ली आई थीं। चूंकि उनके बेटे किसी काम के नहीं थे, इसलिए उन्होंने कल्पना गौर से, जो उनके लिए ‘बेटी जैसी’ थीं, लता के लिए वर ढूंढने का फैसला किया।

“हाँ, मेरी भतीजी बीमार पड़ गई है,” उसके पिता ने कहा, जो बीमारी से तंग आ चुके थे। “पता नहीं इतनी कम उम्र में उसे ये सारी बीमारियाँ कैसे लग जाती हैं। इस बार तो उसे फ्लू हो गया है: गर्मी के मौसम में फ्लू— कितनी अजीब बात है। आजकल कोई सैर पर नहीं जाता। मेरी भतीजी कभी सैर पर नहीं जाती थी; बहुत आलसी थी। उसे अपेंडिक्स हो गया था, ऑपरेशन करवाना पड़ा और ज़ाहिर है, ठीक होने में बहुत समय लग गया। जब मैं लाहौर में था, हम हर सुबह पाँच बजे उठते थे और हम सब —मेरे पिता से लेकर मेरे छह साल के भाई तक—एक घंटे सैर पर जाते थे। इसी तरह हम अपनी सेहत का ख्याल रखते थे।”

कल्पना गौर ने श्रीमती रूपा मेहरा की ओर मुड़कर कहा, “अब आपको चाय और आराम की ज़रूरत है।” थोड़ी सी नाक पोंछते हुए, वह नौकरों और सामान के काम में लग गईं और तांगे वाले को पैसे दे दिए। श्रीमती रूपा मेहरा ने पहले विरोध किया, फिर मान गईं। कल्पना ने आगे कहा, “आपको एक महीने हमारे साथ रहना होगा। इस गर्मी में आप यात्रा कैसे कर सकती हैं? सविता कैसी हैं? बच्चे का जन्म कब होने वाला है? और लता? अरुण? वरुण? महीनों से आपकी कोई खबर नहीं मिली। हम

कलकत्ता में बाढ़ के बारे में पढ़ते रहते हैं, लेकिन दिल्ली में आसमान में एक भी बादल नहीं है। हर कोई प्रार्थना कर रहा है कि मानसून समय पर आ जाए। मैं नौकरों को सामान तैयार करने के लिए कह देती हूँ, फिर आपको हमें अपनी सारी खबरें बतानी होंगी। कल नाश्ते में हमेशा की तरह तले हुए टमाटर? पापा की तबीयत ठीक नहीं है, आपको पता ही है। दिल का दौरा।" उन्होंने अपने पिता की ओर स्नेह भरी नज़रों से देखा, जिन्होंने बदले में तेवर चढ़ा लिए।

बूढ़े आदमी ने बेपरवाही से कहा, 'मैं बिल्कुल ठीक हूँ। रघुबीर मुझसे पाँच साल छोटा था और मैं अब भी तंदुरुस्त हूँ। अब आप बैठ जाइए। आप थके हुए होंगे। और हमें सबकी खबरें बताइए। इसमें कुछ भी दिलचस्प नहीं है।' उन्होंने अखबार की ओर इशारा करते हुए कहा, 'बस वही रोज़ाना की पाकिस्तान के साथ युद्ध की बातें, असम में बाढ़ का कहर, नेताओं का कांग्रेस पार्टी छोड़ना, कलकत्ता में गैस कर्मचारियों की हड़ताल... और इसके चलते विश्वविद्यालय में रसायन विज्ञान की प्रैक्टिकल परीक्षाएँ भी नहीं हो पा रही हैं! अरे, आप तो अभी-अभी कलकत्ता से आए हैं, तो आपको ये सब पता ही होगा। और इसी तरह की और खबरें। क्या आप जानते हैं, अगर मैं सिर्फ अच्छी खबरें छापने वाला अखबार चलाऊँ—जैसे फलां-फलां के घर स्वस्थ बच्चे का जन्म हुआ, फलां देश ने अपने पड़ोसी देश के साथ शांति बनाए रखी, यह नदी साफ बह रही है और उस फसल को टिड्डियों ने नहीं खाया—तो मुझे यकीन है लोग उसे सिर्फ अपना मन बहलाने के लिए खरीद लेंगे।'

'नहीं पापा, वे ऐसा नहीं करेंगे।' कल्पना ने अपना भरा-पूरा लेकिन सुंदर चेहरा श्रीमती रूपा मेहरा की ओर घुमाया। 'आपने हमें बताया क्यों नहीं कि आप आ रहे हैं? हम आपको स्टेशन से लेने आ जाते।'

लेकिन मैंने भेजा था। मैंने एक टेलीग्राम भेजा था।

'ओह—शायद यह आज ही आ जाएगा। डाक सेवा की हालत इतनी खराब हो गई है, जबकि उन्होंने अभी-अभी दरें बढ़ाई हैं।'

‘इसमें समय लगेगा। उनके पास एक समझदार मंत्री हैं,’ उनके पिता ने कहा। ‘युवा लोग हमेशा इतने अधीर होते हैं।’

‘खैर, आपने हमें पत्र क्यों नहीं भेजा?’ कल्पना ने पूछा।

श्रीमती रूपा मेहरा ने हड़बड़ी में कहा, 'मैंने अचानक आने का फैसला किया। मैं चाहती हूं कि आप उसके लिए तुरंत एक लड़का ढूंढ दें। एक उपयुक्त लड़का। वह अनुपयुक्त लड़कों के साथ मेलजोल बढ़ा रही है, और मैं ऐसा होने नहीं दे सकती।'

कल्पना ने अपने उन रिश्तों पर विचार किया जो उसके लिए उपयुक्त नहीं थे: एक सगाई जो उसके दोस्त के अचानक मन बदलने के कारण टूट गई थी; और एक अन्य सगाई को लेकर उसके पिता का विरोध। वह अभी भी अविवाहित थी, और जब भी वह इसके बारे में सोचती तो उसे काफी दुख होता था। उसने कहा: 'खत्री, बिल्कुल? एक या दो?'

श्रीमती रूपा मेहरा ने कल्पना को चिंता भरी मुस्कान दी। 'दो दीजिए, कृपया। मैं इसे खुद चला लूंगी। वैसे तो मुझे यह मीठा खाना चाहिए, लेकिन यात्रा के बाद कोई भी अपवाद चल सकता है। बेशक खत्री सबसे अच्छा रहेगा। मुझे लगता है कि अपने समुदाय में रहने से सुकून मिलता है। लेकिन असली खत्री: सेठ, खन्ना, कपूर, मेहरा—नहीं, मेहरा नहीं—'

कल्पना लगभग विवाह योग्य आयु से बाहर नहीं थी; शायद श्रीमती रूपा मेहरा की हताशा ही थी कि उन्होंने यह ज़िम्मेदारी उसे सौंपी थी। हालाँकि, उनका निर्णय तर्कहीन नहीं था। कल्पना युवा लोगों को जानती थी, जबकि श्रीमती रूपा मेहरा दिल्ली में किसी और को नहीं जानती थीं। कल्पना लता को बहुत पसंद करती थी, जो उससे कई साल छोटी थी। और चूंकि संभावित उम्मीदवारों के लिए केवल खत्री समुदाय से ही संपर्क

किया जा रहा था, इसलिए कल्पना को हितों के टकराव की आशंका नहीं थी—खासकर इसलिए कि वह खत्री नहीं बल्कि ब्राह्मण थी।

'चिंता मत करो माँ, तुम्हारे सिवा मैं किसी मेहरा को नहीं जानती,' कल्पना गौर ने कहा। वह मुस्कुराई और आगे बोली:

'वैसे, दिल्ली में मैं कुछ खन्ना और कपूर परिवार के लोगों को जानता हूँ। मैं उनसे आपका परिचय करा दूँगा। जब वे आपको देखेंगे, तो उन्हें पता चल जाएगा कि आपकी बेटी निश्चित रूप से खूबसूरत होगी।'

'कार दुर्घटना से पहले मैं कहीं ज्यादा खूबसूरत थी,' श्रीमती रूपा मेहरा ने अपनी चाय को हिलाते हुए और खिड़की से बाहर देखते हुए कहा - उनकी नज़र गर्मी की धूल से सूखे हुए गार्डेनिया के पौधे पर पड़ी थी।

'क्या आपके पास लता की कोई तस्वीर है? हाल की कोई तस्वीर?'

'ज़रूर।' श्रीमती रूपा मेहरा के काले बैग में लगभग हर चीज़ मौजूद थी। उसमें लता की एक सादी, ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीर थी, जिसमें उन्होंने कोई गहने या मेकअप नहीं किया था; उनके बालों में कुछ फूल थे—कुछ फ्लॉक्स के फूल। लता की बचपन की एक तस्वीर भी थी, हालाँकि इससे संभावित दूल्हे के परिवार पर कोई खास असर नहीं पड़ता। 'लेकिन पहले तुम्हें ठीक होना होगा, प्यारी,' उन्होंने कल्पना से कहा। 'मैं बिना बताए आ गई। तुमने मुझे दिवाली या क्रिसमस पर आने के लिए कहा था, लेकिन समय किसी का इंतज़ार नहीं करता।'

'मैं बिल्कुल ठीक हूँ,' कल्पना गौर ने नाक पोंछते हुए कहा। 'और इस समस्या से मैं और भी बेहतर हो जाऊँगी।'

उसके पिता ने कहा, 'वह बिल्कुल सही कह रही है। उसकी आधी बीमारी आलस्य के कारण है। अगर वह सावधान नहीं रही, तो अपनी माँ की तरह कम उम्र में ही मर जाएगी।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने फीकी सी मुस्कान दी।

‘या फिर आपके पति,’ श्री गौर ने आगे कहा। ‘वह तो मूर्ख ही थे। कमजोर दिल के साथ भूटान के पहाड़ों पर चढ़ना—और इतनी मेहनत करना—किसके लिए? अंग्रेजों और उनकी रेलवे के लिए।’ उनकी आवाज़ में नाराज़गी झलक रही थी, क्योंकि उन्हें अपने पुराने दोस्त की याद आ रही थी।

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा कि रेलवे तो सभी की थी, और स्वर्गीय रघुबीर मेहरा की रुचि काम में थी, न कि वेतन देने वाले व्यक्ति में। हर सरकारी कर्मचारी को ब्रिटिश शासन का सेवक माना जा सकता था।

श्रीमती रूपा मेहरा ने उदास स्वर में कहा, “उन्होंने कड़ी मेहनत की, लेकिन कर्म के लिए, कर्म के फल के लिए नहीं। वे सच्चे कर्मयोगी थे।” हालांकि रघुबीर मेहरा ने भी अत्यधिक मेहनत की, फिर भी अपने बारे में इस तरह की प्रशंसा सुनकर उन्हें हंसी आती।

श्री गौर ने कहा, 'अंदर जाओ और अतिथि कक्ष देख लो। और यह सुनिश्चित कर लो कि उसमें फूल हों।'

दिन सुखद ढंग से बीत रहे थे। जब श्री गौर अपनी दुकान से लौटते, तो वे पुराने दिनों की बातें करते। रात में, घर के पीछे सियार की आवाज़ और कमरे में फैली गार्डेनिया की खुशबू के बीच, श्रीमती रूपा मेहरा दिन भर की घटनाओं को लेकर चिंतित रहतीं। बिना किसी ठोस सबूत के, वह लता को दिल्ली बुलाकर खतरे से बाहर नहीं निकाल सकती थीं। कल्पना के तमाम प्रयासों के बावजूद, उन्हें अब तक कोई उपयुक्त व्यक्ति नहीं मिला था। वह अक्सर अपने पति के बारे में सोचतीं, जो उनके डर को दूर कर देते—या तो उन पर गुस्सा करके या उन्हें चिढ़ाकर फिर सुलह कर लेते। सोने से पहले वह अपने बैग में रखी उनकी तस्वीर देखतीं, और उस रात उन्होंने सपना देखा कि वह अपनी कार में बच्चों के साथ रमी खेल रहे हैं।

सुबह श्रीमती रूपा मेहरा गौरों से भी पहले उठ गईं और मधुर स्वर में भगवद गीता के श्लोकों का पाठ करने लगीं।

‘आप उन लोगों के लिए शोक मनाते हैं जो शोक से परे हैं,’
और आप अंतर्दृष्टिपूर्ण बातें कहते हैं;
लेकिन विद्वान लोग शोक नहीं करते।
मृतकों के लिए या जीवितों के लिए।
मैं कभी अस्तित्वहीन नहीं रहा
न तो तुम, न ही ये राजा;
और भविष्य में कभी नहीं
क्या हमारा अस्तित्व समाप्त हो जाएगा?
ठीक उसी प्रकार जैसे देहधारी आत्मा
बचपन, युवावस्था और वृद्धावस्था में प्रवेश करता है।
तो क्या यह दूसरे शरीर में प्रवेश करता है?
इससे दृढ़ निश्चयी व्यक्ति विचलित नहीं होता।
पदार्थ के संपर्क में आने से हमें अनुभूति होती है
गर्मी और सर्दी, सुख और दुख।
अर्जुन, तुम्हें सहन करना सीखना होगा।
क्षणभंगुर चीजें—वे आती हैं और चली जाती हैं!
जब ये चीजें किसी व्यक्ति को प्रताड़ित नहीं कर सकतीं,
जब दुख और सुख बराबर हों
उसके लिए और उसमें साहस है।
वह अमरता के योग्य है।
अस्तित्वहीनता का कुछ भी अस्तित्व में नहीं आता।
और न ही अस्तित्व का अंत होता है;
इन दोनों के बीच की सीमा

इसे वे लोग देखते हैं जो वास्तविकता को पहचानते हैं।
यह उपस्थिति अविनाशी है।
जो इन सबमें व्याप्त है;
कोई भी नष्ट नहीं कर सकता
यह अपरिवर्तनीय वास्तविकता...
लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा के मन में वास्तविकता का सर्वव्यापी सार नहीं, बल्कि वे प्रिय विशिष्टताएँ घर कर गई थीं जिन्हें उन्होंने खो दिया था या जो खोने वाली थीं। उनके पति अब किस शरीर में हैं? यदि उनका पुनर्जन्म मनुष्य रूप में हो, तो क्या वे उन्हें सड़क पर देखकर पहचान भी पाएँगी? विवाह के पवित्र बंधन में सात जन्मों तक बंधे रहने का क्या अर्थ है? यदि उन्हें अपने अतीत की कोई स्मृति ही न हो, तो इस ज्ञान का क्या लाभ? जहाँ तक उन्हें पता था, यह उनका अंतिम विवाह ही उनका सातवाँ विवाह हो सकता था। भावनाओं ने उन्हें शाब्दिक अर्थों में बँधा दिया; उन्हें ठोस आश्वासन की लालसा थी। हरे रंग की छोटी, कपड़े की जिल्द वाली पुस्तक के सुखदायक संस्कृत शब्द उनके होठों से निकले, पर यद्यपि इससे उन्हें शांति मिली—गीता पढ़ते समय उनकी आँखों में शायद ही कभी आँसू आए—फिर भी इसने उनके किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। और जहाँ प्राचीन ज्ञान अक्सर सांत्वनाहीन साबित होता है, वहीं फोटोग्राफी, वह क्रूर आधुनिक कला, यह सुनिश्चित करने में सहायक रही कि उनके पति के चेहरे की छवि भी समय के साथ धुंधली न पड़े।

9.2

इस बीच, कल्पना ने लता के लिए संभावित उम्मीदवारों की तलाश में अपनी पूरी कोशिश की। कुल मिलाकर उसे सात उम्मीदवार मिले, जो इतने कम समय में काफी अच्छा था। इनमें से तीन दोस्त या परिचित थे, तीन दोस्तों या परिचितों के दोस्त या परिचित थे, और एक दोस्त के दोस्त

का दोस्त था।
पहला युवक, एक हंसमुख और मिलनसार लड़का, विश्वविद्यालय में उसके साथ पढ़ चुका था और नाटकों में भी उसके साथ अभिनय कर चुका था। रूपा मेहरा ने उसे बहुत अमीर होने के कारण अस्वीकार कर दिया। रूपा मेहरा ने कहा, 'कल्पना, तुम हमारी परिस्थितियों को जानती हो।'
'लेकिन वो दहेज तो बिल्कुल नहीं चाहेगा। वो बहुत अमीर है,' कल्पना ने कहा।
रूपा मेहरा ने दृढ़ता से कहा, "वे बहुत ही धनी हैं। इस बारे में बात करने का कोई फायदा नहीं है। शादी को लेकर उनकी सामान्य अपेक्षाएं भी बहुत अधिक होंगी। हमें एक हजार लोगों को भोजन कराना होगा। उनमें से शायद सात सौ लोग उनकी तरफ से मेहमान होंगे। हमें उनके ठहरने का इंतजाम भी करना होगा और सभी महिलाओं को साड़ियां देनी होंगी।"
'लेकिन वो अच्छा लड़का है,' कल्पना ने ज़िद करते हुए कहा, 'कम से कम उसे देख तो लो।'
उसका फ्लू ठीक हो गया था और वह पहले की तरह ही ऊर्जावान थी।
श्रीमती रूपा मेहरा ने सिर हिलाया। 'अगर मैं उसे पसंद करती तो मुझे केवल दुख होता। वह अच्छा हो सकता है, लेकिन वह अपने पूरे परिवार के साथ रहता है। लता की तुलना हमेशा दूसरी बहुओं से की जाएगी—वह गरीब रिश्तेदार जैसी लगेगी। मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकती। वह खुश नहीं रहेगी।'
और इस तरह पहले संभावित उम्मीदवार को खारिज कर दिया गया।
दूसरे व्यक्ति से मिलने वे गए, जो अच्छी अंग्रेज़ी बोलता था और गंभीर स्वभाव का लग रहा था। लेकिन वह बहुत लंबा था। वह लता से भी लंबा दिखता। वह ठीक नहीं था। रूपा मेहरा ने कल्पना से कहा, 'अगर पहली बार में सफलता न मिले, तो बार-बार कोशिश करो,' हालाँकि वह खुद भी

निराश होने लगी थीं।
तीसरा लड़का भी समस्या पैदा करने वाला था।
'बहुत अंधेरा है, बहुत अंधेरा है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।
‘But Meenakshi—’ began Kalpana Gaur.
'मीनाक्षी के बारे में मुझसे बात मत करो,' श्रीमती रूपा मेहरा ने ऐसे स्वर में कहा जिसमें किसी भी प्रकार की बहस की गुंजाइश नहीं थी।
'मां, लता को खुद तय करने दो कि वह उसके बारे में क्या सोचती है।'
श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'मैं अश्वेत पोते-पोतियों को जन्म नहीं दूंगी।'
‘अरुण की शादी के समय भी आपने बिल्कुल यही कहा था—और देखिए आप अपर्णा को कितना पसंद करते हैं। और वो तो सांवली भी नहीं है—’
श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा: 'अपर्णा अलग है।' कुछ देर रुककर उन्होंने कुछ और सोचा। 'अपवाद नियम को सिद्ध करता है,' उन्होंने आगे कहा।
कल्पना गौर ने कहा: 'लता खुद भी उतनी खूबसूरत नहीं हैं।'
‘तो अब और भी ज़्यादा वजह है,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। इसका क्या मतलब था, यह स्पष्ट नहीं था; लेकिन यह स्पष्ट था कि उन्होंने अपना मन बना लिया था।
चौथा संभावित वर कनॉट सर्कस में एक सफल जौहरी की दुकान के मालिक का बेटा था। मुलाकात के पांच मिनट के भीतर ही उसके माता-पिता ने दो लाख रुपये के दहेज की बात कही। श्रीमती रूपा मेहरा आश्चर्य से कल्पना को देखती रह गईं।
घर से बाहर निकलते ही कल्पना ने कहा: ‘सच कहूँ तो माँ, मुझे पता ही नहीं था कि वे ऐसे हैं। मैं उस लड़के को जानती भी नहीं। एक दोस्त ने बस इतना बताया कि उनका एक बेटा है जिसके लिए वे दुल्हन ढूंढ रहे हैं। अगर मुझे पता होता तो मैं आपको इन सब परेशानियों से नहीं गुज़ारती।’
रूपा मेहरा ने अभी भी आहत होकर कहा, 'अगर मेरे पति जीवित होते, तो

वे रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष होते, और हमें कभी किसी के सामने सिर नहीं झुकाना पड़ता, निश्चित रूप से इन जैसे लोगों के सामने तो बिल्कुल नहीं।'
पांचवां उम्मीदवार, हालांकि काफी सभ्य था, लेकिन ठीक से अंग्रेजी नहीं बोल पाता था। कोशिश करते रहो।
छठा वाला ठीक नहीं था—हानिरहित, काफी सुखद, लेकिन थोड़ा अपूर्ण।
श्रीमती रूपा मेहरा द्वारा उनके माता-पिता के साथ किए गए साक्षात्कार के दौरान वह लगातार मासूमियत से मुस्कुराते रहे।
रॉबर्ट ब्रूस और मकड़ी के बारे में सोचते हुए, श्रीमती रूपा मेहरा को पूरा विश्वास हो गया था कि सातवां आदमी ही उनकी बेटी के लिए सही जीवनसाथी होगा।
हालांकि, सातवें व्यक्ति के मुंह से व्हिस्की की गंध आ रही थी और उसकी अनिश्चित हंसी ने उसे असहज रूप से वरुण की याद दिला दी।
श्रीमती रूपा मेहरा बेहद निराश थीं और दिल्ली में अपने सभी संपर्कों के समाप्त हो जाने के बाद उन्होंने फैसला किया कि कानपुर, लखनऊ और बनारस (जिनमें से प्रत्येक में उनके या उनके दिवंगत पति के रिश्तेदार थे) में पहले छानबीन करनी होगी, उसके बाद ही वे ब्रह्मपुर लौटकर अपनी किस्मत आजमाएंगी (जहाँ अवांछित कबीर घात लगाए बैठा था)। लेकिन क्या होगा अगर कानपुर, लखनऊ और बनारस भी उतने ही निष्फल साबित हुए?
अब तक कल्पना की तबीयत फिर बिगड़ चुकी थी और वह काफी गंभीर रूप से बीमार हो गई थी (हालाँकि डॉक्टर निदान को लेकर असमंजस में थे; उसे छींक आना बंद हो गया था, लेकिन वह हर समय कमजोर और सुस्त लग रही थी)। श्रीमती रूपा मेहरा ने दिल्ली से अपनी थोड़ी अधूरी वार्षिक ट्रांस-इंडिया रेल यात्रा के शेष भाग के लिए रवाना होने से पहले कुछ दिन कल्पना की देखभाल करने का फैसला किया।

9.3

एक शाम, एक कद में छोटा लेकिन ऊर्जावान युवक दरवाजे पर आया और श्री गौर ने उसका स्वागत किया।

'शुभ संध्या, श्री गौर—मुझे आश्चर्य है कि क्या आपको मैं याद हूँ। मैं हरीश खन्ना हूँ।'

'ओह, जी हाँ?' श्री गौर ने कहा।

'मैं सेंट स्टीफंस में कल्पना को जानती थी। हम साथ में अंग्रेजी पढ़ते थे।'

'क्या तुम वही नहीं थे जो इंग्लैंड में भौतिकी या कुछ और पढ़ने गए थे? मुझे नहीं लगता कि मैंने तुम्हें सालों से देखा है।'

'जूते।'

'ओह। जूते। मैं समझ गया।'

'क्या कल्पना अंदर है?'

'जी हाँ—लेकिन उसकी तबीयत कुछ ठीक नहीं है।' श्री गौर ने अपनी छड़ी तांगे की ओर इशारा करते हुए कहा, जिस पर एक सूटकेस, एक ब्रीफकेस और एक बिस्तर का रोल रखा हुआ था। 'क्या आप यहाँ रुकने की सोच रहे थे?' उन्होंने कुछ घबराते हुए पूछा।

'नहीं—नहीं—बिल्कुल नहीं। मेरे पिताजी नील दरवाजा के पास रहते हैं। मैं स्टेशन से सीधे आया हूँ। मैं कानपुर में काम करता हूँ। मैंने सोचा था कि बाओजी के घर जाने से पहले कल्पना से मिल लूँ। लेकिन अगर वो ठीक नहीं हैं... तो क्या बात है? उम्मीद है कुछ गंभीर नहीं होगा?' हरेश मुस्कुराया और उसकी आँखें गायब हो गईं।

श्री गौर ने कुछ सेकंड तक उसे घूरकर देखा, फिर बोले।

'डॉक्टरों की राय एक जैसी नहीं है। लेकिन वह लगातार जम्हाई ले रही है। सेहत सबसे अनमोल चीज़ है, नौजवान।' (वह हरेश का नाम भूल गया था।) 'यह मत भूलना।' वह रुका। 'अच्छा, अंदर आ जाओ।'

हालांकि उसके पिता उसके अचानक और बिना बताए आने से चौंक गए थे, कल्पना जब ड्राइंग रूम में दाखिल हुई तो हरेश को देखकर उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। कॉलेज छोड़ने के बाद लगभग एक साल तक उनका कभी-कभार पत्र व्यवहार चलता रहा, लेकिन समय और दूरी का असर दिखने लगा था और हरेश के प्रति उसका आकर्षण धीरे-धीरे कम होता चला गया था। फिर कल्पना का प्रेम प्रसंग और टूटी हुई सगाई हुई। हरेश को यह बात दोस्तों से पता चली थी और उसने मन ही मन सोचा था कि अगली बार जब वह दिल्ली आएगा तो उससे मिलने जरूर जाएगा।

'You!' said Kalpana Gaur, reviving.

'मैं!' हरेश ने अपनी उपचार क्षमता पर प्रसन्न होकर कहा।

'आप आज भी उतने ही आकर्षक हैं जितने कि मैं डॉ. मथाई के बायरन पर दिए गए व्याख्यानों के दौरान आपकी प्रशंसा करता था।'

और आप आज भी उतने ही आकर्षक हैं जितने तब थे जब हम सब अपने वस्त्र और वस्त्र आपके चरणों में बिछा रहे थे।

कल्पना गौर के चेहरे पर मुस्कान में थोड़ी उदासी झलक रही थी। सेंट स्टीफंस में कुछ ही लड़कियों में से एक होने के कारण, उनकी काफी मांग थी। उन दिनों वह काफी खूबसूरत भी थीं; बल्कि शायद आज भी थीं। लेकिन किसी कारणवश उनके प्रेमी लंबे समय तक उनके साथ नहीं टिक पाते थे। उनका व्यक्तित्व बहुत दृढ़ था और जल्द ही वह उन्हें अपने जीवन, पढ़ाई और काम के बारे में सलाह देने लगती थीं। वह उन्हें मां की तरह या शायद भाई की तरह समझने लगती थीं (क्योंकि वह खुद थोड़ी टॉमबॉय थीं) - और इससे धीरे-धीरे उनके रोमांटिक उत्साह में कमी आने लगी। उन्हें उनकी चंचलता भी असहनीय लगने लगी और वे धीरे-धीरे उनसे दूर हो गए - उनके मन में अपराधबोध था और कल्पना को दुख। यह बहुत दुख की बात थी, क्योंकि कल्पना गौर एक जीवंत, स्नेही और

बुद्धिमान महिला थीं और दूसरों को दी गई मदद और खुशी के लिए उन्हें कुछ न कुछ इनाम मिलना ही चाहिए था।

हरेश के मामले में, सिमरन के पास वास्तव में कभी कोई मौका ही नहीं था। कॉलेज के दिनों में वह उसे बहुत पसंद करता था, लेकिन उसका दिल तब भी और अब भी सिमरन के लिए धड़कता था, जो एक सिख लड़की थी, उसकी किशोरावस्था की प्रेमिका, जिसका परिवार यह तय कर चुका था कि सिमरन की शादी उससे न हो क्योंकि वह सिख नहीं था।

एक-दूसरे की तारीफ करने के बाद, हरीश और कल्पना ने पुराने दिनों की बातें शुरू कर दीं, दो साल पहले एक-दूसरे को पत्र लिखने के बाद से उनके जीवन में क्या-क्या हुआ, इस बारे में चर्चा करने से पहले ही। श्री गौर अंदर चले गए थे; उन्होंने पाया कि युवा लोगों के पास कहने के लिए दिलचस्प बातें बहुत कम होती हैं।

अचानक कल्पना गौर उठ खड़ी हुई। 'क्या तुम्हें मेरी खूबसूरत चाची याद हैं?' वह कभी-कभी श्रीमती रूपा मेहरा को अपनी चाची कहकर पुकारती थी, हालाँकि वास्तव में वह ऐसी कोई चाची नहीं थीं।

'नहीं,' हरेश ने कहा। 'मुझे नहीं लगता कि मैं उससे कभी मिला हूँ। लेकिन मुझे याद है कि तुम उसके बारे में बात करते थे।'

‘खैर, वह फिलहाल हमारे साथ रह रही है।’

'मैं उससे मिलना चाहूंगा,' हरेश ने कहा।

कल्पना, श्रीमती रूपा मेहरा को लेने गई, जो अपने कमरे में पत्र लिख रही थीं।

उसने भूरे और सफेद रंग की सूती साड़ी पहनी हुई थी, जो थोड़ी सिकुड़ी हुई थी—ऐसा लग रहा था जैसे वह आधे घंटे पहले आराम कर रही हो—और हरेश को वह बहुत सुंदर लगी। खड़े होते ही उसकी आँखों में मुस्कान आ गई; कल्पना ने उन दोनों का परिचय कराया।

'खन्ना?' श्रीमती रूपा मेहरा ने पहिए घुमाते हुए कहा।
उसने गौर किया कि वह युवक अच्छे कपड़े पहने हुए था, उसने क्रीम रंग की रेशमी कमीज और हल्के भूरे रंग की पतलून पहनी हुई थी। उसका चेहरा चौकोर और आकर्षक था। और वह गोरा भी था।
इस बार श्रीमती रूपा मेहरा ने बातचीत के दौरान ज्यादा कुछ नहीं कहा। हालांकि हरेश कुछ ही महीने पहले ब्रह्मपुर गया था, लेकिन इस बात का जिक्र नहीं हुआ, न ही कोई जाना-पहचाना नाम सामने आया, इसलिए उनके लिए बातचीत शुरू करने का कोई स्पष्ट जरिया नहीं था। खैर, कल्पना गौर ने बातचीत को हरेश के हाल के इतिहास की ओर मोड़ दिया, और श्रीमती रूपा मेहरा बढ़ती दिलचस्पी के साथ सुनती रहीं। हरेश भी कल्पना को अपनी हाल की उपलब्धियों और कारनामों के बारे में बताने में प्रसन्न थे। वे एक ऊर्जावान व्यक्ति थे, जिनमें अपार आशावाद और आत्मविश्वास था, और वे अपनी अत्यधिक विनम्रता से बिल्कुल भी विचलित नहीं होते थे।
हरेश को कानपुर लेदर एंड फुटवियर कंपनी में अपना काम बेहद दिलचस्प लगता था, और उसे लगता था कि बाकी लोगों को भी ऐसा ही लगेगा। 'मैं सीएलएफसी में सिर्फ एक साल से हूं, लेकिन मैं एक बिल्कुल नया विभाग स्थापित कर रहा हूं—और मैंने उन्हें ऐसे ऑर्डर दिलवाए हैं जिन्हें वे खुद हासिल करने का ज्ञान या पहल नहीं कर पाते थे। लेकिन इसमें कोई भविष्य नहीं है, यही समस्या है। घोष शीर्ष अधिकारी हैं, और यह पूरी तरह से पारिवारिक व्यवसाय है, और मैं वास्तव में कुछ भी बनने की आकांक्षा नहीं रख सकता। वे सभी बंगाली हैं।'
‘Bengali entrepreneurs?’ said Kalpana Gaur.
‘अजीब लगता है, है ना?’ हरेश ने सहमति जताते हुए कहा। ‘वैसे, घोष एक प्रभावशाली व्यक्ति हैं। लंबे कद के, अपने दम पर सफल हुए। उनका

एक निर्माण व्यवसाय है जिसे वे मुंबई से चलाते हैं। यह तो उनकी कई रुचियों में से एक है।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने सहमति में सिर हिलाया। उन्हें स्वयं के दम पर सफलता हासिल करने वाले लोगों का विचार पसंद आया।

"खैर, मैं राजनीति में ज्यादा दिलचस्पी नहीं रखता," हरेश ने आगे कहा, "सीएलएफसी में अधिकारियों के बीच हद से ज्यादा राजनीति है। दफ्तर की राजनीति बहुत ज्यादा है और काम बहुत कम। और मेरे काम के हिसाब से साढ़े तीन सौ रुपये महीना बहुत कम है। बात बस इतनी है कि इंग्लैंड से लौटने के बाद मुझे जो पहली नौकरी मिली, वही करनी पड़ी। मैं कंगाल था, इसलिए मेरे पास कोई चारा नहीं था।" इस घटना से उन्हें कोई परेशानी नहीं हुई।

श्रीमती रूपा मेहरा ने हरेश की ओर चिंता भरी नजरों से देखा।

वह मुस्कुराया। उसकी आँखें अब लगभग पूरी तरह सिकुड़ गईं। एक बार उसके कॉलेज के दोस्तों ने उसे मुस्कुराते समय आँखें खुली रखने के लिए दस रुपये देने का वादा किया था, लेकिन वह उसे कमा नहीं पाया था।

श्रीमती रूपा मेहरा भी मुस्कुराए बिना नहीं रह सकीं।

"तो मैं दिल्ली सिर्फ काम के लिए ही नहीं, बल्कि घूमने-फिरने के लिए भी आया हूँ।" हरीश ने माथे पर हाथ फेरा। "मैं अपने सारे सर्टिफिकेट और प्रमाण पत्र वगैरह ले आया हूँ, और यहाँ एक कंपनी में मेरा इंटरव्यू है। ज़ाहिर है, बाओजी का मानना है कि मुझे किसी पक्के काम पर ही टिके रहना चाहिए, और उमेश अंकल को मेरी कोई खास पसंद नहीं है, लेकिन मैं कोशिश करने के लिए दृढ़ संकल्पित हूँ। तो, कल्पना, क्या तुम्हें मेरे क्षेत्र में कोई नौकरी पता है? दिल्ली में मुझे किससे मिलना चाहिए? मैं हमेशा की तरह नील दरवाजा में परिवार के साथ रहूँगा।"

'मुझे तो नहीं पता, लेकिन अगर मुझे आपके लिए कुछ उपयुक्त पता चले

तो—' कल्पना ने कहना शुरू किया। फिर अचानक एक विचार आया और उसने कहा: 'सुनो, क्या तुम्हारे पास वाकई में अपने प्रशंसापत्र वगैरह यहाँ मौजूद हैं?'

'वे बाहर तांगे में हैं। मैं सीधे स्टेशन से आया हूँ।'

'क्या तुमने किया?' कल्पना ने हरीश की ओर मुस्कुराते हुए कहा।

हरेश ने अपने हाथ ऊपर उठा लिए, जिसका मतलब यह हो सकता था कि कल्पना का आकर्षण थके हुए यात्री के लिए एक अनूठा आकर्षण था, या फिर केवल यह कि उसने परिवार और दुनिया में उलझने से पहले लंबे समय से लंबित सामाजिक कार्यों को निपटाने का फैसला किया था।

'अच्छा, तो चलिए उन्हें देखते हैं; उन्हें ले आते हैं।'

'उन्हें ले आओ?'

'जी हां, बिल्कुल, हरेश। हम उन्हें देखना चाहते हैं, भले ही आप उन्हें दिखाना न चाहें।' कल्पना ने श्रीमती रूपा मेहरा की ओर इशारा किया, जिन्होंने ज़ोर से सिर हिलाया।

लेकिन हरेश अपने प्रमाणपत्रों को दिखाने के लिए बहुत उत्सुक था। उसने तांगे से अपना ब्रीफकेस निकाला और मिडलैंड्स कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी से प्राप्त अपने सभी डिप्लोमा, साथ ही कुछ प्रशंसा पत्र भी निकाले, जिनमें से एक स्वयं प्रधानाचार्य का था। कल्पना गौर ने इनमें से कुछ पढ़कर सुनाए और श्रीमती रूपा मेहरा ने ध्यान से सुना। हरेश समय-समय पर प्रासंगिक तथ्य बताता रहा, जैसे कि उसने पैटर्न-कटिंग परीक्षा में टॉप किया था या कोई पदक जीता था। वह अपनी उपलब्धियों को लेकर बिल्कुल भी संकोच नहीं करता था।

अंत में, श्रीमती रूपा मेहरा ने हरेश से कहा: 'तुम्हें बहुत गर्व होना चाहिए।' वह उनसे और बात करना चाहती थी, लेकिन उसे उस शाम खाने के लिए बाहर जाना था और उसने अभी तक अपनी सिकुड़ी हुई साड़ी नहीं बदली

थी। उसने बहाना बनाकर उठ गई। जैसे ही वह कमरे से निकलने वाली थी, हरेश ने कहा: 'श्रीमती मेहरा, आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। लेकिन क्या आप वाकई जानती हैं कि हम पहले नहीं मिले हैं?'

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा: 'मैं किसी का चेहरा नहीं भूलती। मुझे पूरा यकीन है कि अगर हम मिले होते तो मुझे याद रहता।' वह कमरे से बाहर निकलीं, खुश लग रही थीं लेकिन थोड़ी चिंतित भी थीं।

हरेश ने अपना माथा रगड़ा। उसे पूरा यकीन था कि उसने उसे पहले देखा है, लेकिन उसे याद नहीं आ रहा था कि कहाँ।

9.4

जब श्रीमती रूपा मेहरा भोजन करके लौटीं, तो उन्होंने कल्पना गौर से कहा:

'कल्पना, जितने भी लड़कों से हम मिले हैं, उनमें से मुझे वो युवक सबसे ज्यादा पसंद है। तुमने मुझे उससे पहले क्यों नहीं मिलवाया? क्या कोई खास वजह थी?'

'नहीं, मां, मैंने तो उसके बारे में सोचा भी नहीं था। वह तो बस संयोग से कानपुर से आ गया।'

'ओह, जी हाँ, कानपुर। बिल्कुल।'

वैसे, वो आप पर बहुत मोहित हो गए थे। उन्हें लगता है कि आप बहुत आकर्षक हैं। उन्होंने कहा कि आप "बेहद खूबसूरत" हैं।

'तुम बहुत शरारती लड़की हो जो मुझे अपनी सुंदर चाची कहती हो।'

लेकिन बहुत सच।

'तुम्हारे पिता उसके बारे में क्या सोचते हैं?'

'मेरे पिता उनसे सिर्फ एक मिनट के लिए मिले थे। लेकिन आपको वो सच में पसंद आए?' कल्पना ने संदेह भरे भाव से पूछा।

श्रीमती रूपा मेहरा को हरेश वाकई पसंद था। उन्हें उसकी ऊर्जा, परिवार

से स्वतंत्र सोच (हालांकि उनके प्रति स्नेहपूर्ण भाव रखते हुए) और अपने पहनावे का विशेष ध्यान रखने की आदत अच्छी लगती थी। आजकल तो कई लड़के इतने बिखरे-बिखरे दिखते हैं। और हरेश के पक्ष में एक अहम बात उसका नाम था। खन्ना परिवार से होने के कारण उसका खत्री होना तो तय था।

‘हमें एक मीटिंग तय करनी होगी,’ उसने कहा। ‘क्या वह—आप जानते हैं —’

'उपलब्ध?'

'हाँ।'

‘खैर, एक समय वह एक सिख लड़की से प्यार करता था,’ कल्पना गौर ने धीमी आवाज़ में कहा। ‘मुझे नहीं पता कि उसका क्या अंजाम हुआ।’

‘अरे। मेरे जाने के बाद तुमने उससे इसके बारे में क्यों नहीं पूछा? तुम दोनों तो पुराने दोस्तों की तरह बातें कर रहे थे।’

'मुझे उस समय यकीन नहीं था कि आपको उसमें इतनी दिलचस्पी है,' कल्पना गौर ने कहा, उनका चेहरा थोड़ा लाल हो गया।

‘जी हां। शायद वो लता के लिए बिल्कुल सही लड़का हो, आपको नहीं लगता? मैं लता को तुरंत दिल्ली आने के लिए टेलीग्राम कर दूंगी। तुरंत।’

श्रीमती रूपा मेहरा ने माथे पर शिकन डालते हुए पूछा, ‘क्या आप मीनाक्षी के भाई को जानती हैं?’

नहीं। मेरी मीनाक्षी से मुलाकात सिर्फ शादी में हुई थी—

‘वह मुझे बहुत परेशान कर रहा है।’ श्रीमती रूपा मेहरा ने अपनी जीभ चटकाई।

‘क्या ये वही कवि अमित चटर्जी नहीं हैं?’ कल्पना ने पूछा। ‘माँ, ये तो काफी मशहूर हैं।’

‘मशहूर! वो तो बस अपने पिता के घर में बैठा रहता है और ऊपर की

खिड़की से बाहर देखता रहता है। नौजवान को नौकरी करनी चाहिए और अपनी रोजी-रोटी कमानी चाहिए।' श्रीमती रूपा मेहरा को पेशेंस स्ट्रॉन्ग, विल्हेल्मिना स्टिच और कई अन्य लेखकों की कविताएँ पसंद थीं, लेकिन कविता की रचना में किसी भी तरह की गतिविधि—या आवश्यक निष्क्रियता—का होना उन्हें समझ से परे लगता था। 'लता उससे बहुत ज्यादा मिल रही है।'

'आप ये तो नहीं कह रही हैं कि कोई संभावना है—' श्रीमती रूपा मेहरा के हावभाव को देखकर कल्पना हंस पड़ी। 'अच्छा, मां, कम से कम उसे लता के लिए दो-चार कविताएं तो लिखने दीजिए।'

कलकत्ता में हो रही घटनाओं के बारे में सोचकर परेशान श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, "मैं कुछ नहीं कह रही हूँ और न ही कोई अटकलें लगा रही हूँ। मैं थक चुकी हूँ। मुझे शहर-शहर क्यों भटकना पड़ रहा है? मुझे लगता है मैंने कुछ ज्यादा खा लिया है और होम्योपैथिक दवा लेना भूल गई हूँ।" वह उठीं, फिर बोलने के लिए मुड़ीं, लेकिन फिर अपना इरादा बदल दिया और अपना बड़ा काला बैग उठा लिया।

'शुभ रात्रि माँ,' कल्पना ने कहा। 'मैंने आपके बिस्तर के पास पानी का जग रख दिया है। अगर आपको कुछ चाहिए हो तो मुझे बता देना—ओवलटाइन या हॉर्लिक्स या कुछ भी। और मैं कल हरेश से बात कर लूंगी।'

नहीं, प्रिय, अब तुम्हें आराम करना चाहिए। बहुत देर हो चुकी है, और तुम्हारी तबीयत भी ठीक नहीं है।

'दरअसल, माँ, मैं आज सुबह की तुलना में काफी बेहतर महसूस कर रहा हूँ। हरेश और लता—लता और हरेश। खैर, कोशिश करने में कोई हर्ज नहीं है।'

लेकिन अगली सुबह कल्पना गौर की तबीयत बिल्कुल भी ठीक नहीं थी

और उन्होंने पूरा दिन सुस्ती और जम्हाई लेते हुए बिताया। और उसके अगले दिन जब उन्होंने नील दरवाज़ा को संदेश भेजा, तो उन्हें पता चला कि हरीश खन्ना कानपुर लौट चुके थे।

9.5

कलकत्ता से कानपुर जाने वाली ट्रेन में लता के पास अपने अचानक आए बुलावे के बारे में सोचने के लिए काफी समय था। श्रीमती रूपा मेहरा का टेलीग्राम रहस्यमय था, जैसा कि अक्सर अच्छे टेलीग्राम होते हैं, और उसमें उन्हें दो दिनों के भीतर कानपुर आने के लिए कहा गया था।

यह एक दिन का सफर था, हालांकि लंबा था। अरुण उसे हावड़ा स्टेशन छोड़ने के लिए सुबह जल्दी उठ गया था। हावड़ा पुल पर ज्यादा भीड़ नहीं थी। जब वे स्टेशन पहुंचे, जहां धुएं, पेशाब और मछली की जानी-पहचानी गंध आ रही थी, तो अरुण ने सुनिश्चित किया कि वह अपने महिला डिब्बे में आराम से बैठ गई है।

‘रास्ते में आप क्या पढ़ेंगे?’

‘एम्मा।’

'हमारे सैलून जैसा तो नहीं है, है ना?'

'नहीं,' लता ने मुस्कुराते हुए कहा।

मैंने ब्रह्मपुर को टेलीग्राम भेज दिया है, इसलिए प्राण स्टेशन पर होना चाहिए। शायद सविता भी। उन पर नज़र रखना।

‘ठीक है, अरुण भाई।’

अब अच्छे बच्चे बनो। तुम्हारे बिना घर में सब कुछ पहले जैसा नहीं रहेगा। अपर्णा को संभालना और भी मुश्किल होगा।

मैं लिखूंगा... और, अरुण भाई, जब आप जवाब दें, तो कृपया टाइप करें।

अरुण हँसा, फिर उसे जम्हाई आई।

ट्रेन समय पर रवाना हुई।

लता बंगाल के हरे-भरे और नम ग्रामीण इलाकों को देखकर एक बार फिर खुश हो उठी, जिनसे उसे बेहद लगाव था—खजूर और केले के पेड़, हरे-भरे धान के खेत और गांवों के तालाब। हालांकि, कुछ देर बाद ही परिदृश्य बदलकर शुष्क और पहाड़ी इलाके में बदल गया, जहां छोटी-छोटी खाइयां थीं और ट्रेन एक अलग ही आवाज में खड़खड़ाती हुई गुजरी।

जैसे-जैसे वे पश्चिम की ओर मैदानी इलाकों में बढ़ते गए, भूमि और भी अधिक शुष्क होती गई।

टेलीग्राफ के खंभों और रेल मार्ग के चिह्नों के बीच से धूल भरे खेत और छोटे-छोटे गाँव गुज़रते जा रहे थे। गर्मी बहुत तेज़ थी और लता का मन कहीं और भटकने लगा। वह अपनी बाकी छुट्टियाँ कलकत्ता में ही बिताना चाहती थी, लेकिन उसकी माँ कभी-कभी रेल यात्रा के दौरान किसी साथी की ज़िद कर बैठती थी—अक्सर तब जब वह रास्ते में कहीं बीमार या अकेलापन महसूस करती थी। वह सोच रही थी कि इस बार क्या बात थी।

उसके डिब्बे में बैठी दूसरी महिलाएं पहले तो आपस में झिझकती रहीं और केवल उन्हीं से बात करती रहीं जिनके साथ वे यात्रा कर रही थीं, लेकिन समय बीतने के साथ-साथ, एक प्यारे से बच्चे के आने से, उनके बीच बातचीत का एक जाल बन गया। जब ट्रेन किसी स्टेशन पर रुकती, तो उनके परिवारों के युवक आकर पूछते कि सब ठीक है या नहीं, मिट्टी के प्यालों में चाय लाते और मिट्टी के घड़ों में पानी भरते रहते, क्योंकि दिन और भी गर्म होता जा रहा था और पंखे लगभग आधे समय ही चल रहे थे।

बुर्का पहने एक महिला ने पश्चिम दिशा का पता लगाने के बाद एक छोटी सी प्रार्थना की चटाई बिछाई और प्रार्थना करने लगी।

लता कबीर के बारे में सोच रही थी, और उसे एक अजीब सी बेचैनी और

खुशी दोनों महसूस हो रही थी—एक तरह से जिसे वह समझ नहीं पा रही थी। वह अब भी उससे प्यार करती थी—यह दिखावा करना बेकार था। क्या कलकत्ता जाने से उसके लिए उसके प्यार में कोई कमी आई थी? निश्चित रूप से, उसके पत्र से उसे कबीर के प्यार की गहराई के बारे में कोई खास उम्मीद नहीं मिली थी। क्या प्यार करने और बदले में उतना ही प्यार न मिलने में कोई बुराई थी? उसे ऐसा नहीं लगता था। तो फिर, उसके बारे में सोचते ही उसके चेहरे पर मुस्कान क्यों आ जाती थी?

लता ने अपनी एम्मा पढ़ी और ऐसा कर पाने के लिए आभारी थी। अगर वह अपनी माँ के साथ यात्रा कर रही होती, तो वे बातचीत के केंद्र में होतीं और डिब्बे में बैठे हर व्यक्ति ने अब तक बेंटसेन प्राइस, लता की पढ़ाई में प्रतिभा, श्रीमती रूपा मेहरा के गठिया रोग का विवरण, उनके नकली दांत और पूर्व सौंदर्य, उनके दिवंगत पति के निरीक्षण दौरों की शान-शौकत, भाग्य की कठोरता और स्वीकृति एवं त्याग की समझ के बारे में सुना होता।

कालिख से लथपथ, रुक-रुक कर चलती हुई ट्रेन गंगा के विशाल, धधकते मैदान पर अपना सफर तय कर रही थी।

पटना में एक मील लंबी टिड्डियों के झुंड ने आसमान को काला कर दिया। कांच के शीशे नीचे करने के बावजूद भी धूल, मक्खियां और कालिख किसी न किसी तरह डिब्बे के अंदर घुसने में कामयाब हो ही जाती थीं।

ब्रह्मपुर का टेलीग्राम नहीं आ सका, क्योंकि सविता और प्राण दोनों ही उसे लेने के लिए प्लेटफार्म पर मौजूद नहीं थे। लता उनसे मिलने के लिए बेताब थी, भले ही ट्रेन के ब्रह्मपुर जंक्शन पर रुकने के पंद्रह मिनट के लिए ही सही। जैसे ही ट्रेन ब्रह्मपुर जंक्शन से निकली, उसे अत्यधिक उदासी महसूस हुई।

जैसे ही ट्रेन की सीटी अचानक तेज आवाज में बज उठी, उसने दूर से

विश्वविद्यालय की छतों की एक झलक देखी।
मैं हमेशा रोती रहती हूँ, रोती रहती हूँ।
अपने हृदय में मेरी छवि को संजोए रखना
उदाहरण के लिए, अगर वह स्टेशन पर प्रकट होता—मान लीजिए, उन्हीं साधारण कपड़ों में जो उसने नाव में उसके साथ रहते हुए पहने थे, अपनी पुरानी मित्रता भरी मुस्कान के साथ, कुली से उसके किराए को लेकर बहस करते हुए—मान लीजिए कि वह भी कानपुर जा रहा होता—या कम से कम बनारस या इलाहाबाद तक—तो लता को लगता कि उसकी आवाज और चेहरे को देखकर उसका दिल खुशी से उछल पड़ता—और उनके बीच की सारी गलतफहमी भाप के एक झटके में, पहियों के एक ही चक्कर में गायब हो जाती।
लता ने अपनी किताब की ओर देखा।
'मेरी प्यारी इसाबेला,' उसने स्नेहपूर्वक उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, और कुछ क्षणों के लिए उसके पाँच बच्चों में से किसी एक के काम में व्यस्त इसाबेला को रोकते हुए बोला, 'कितना लंबा समय हो गया, कितना भयानक समय हो गया जब तुम यहाँ आई थी! और अपनी यात्रा के बाद तुम कितनी थकी हुई होगी! तुम्हें जल्दी सो जाना चाहिए, मेरी प्यारी—और सोने से पहले मैं तुम्हें थोड़ा दलिया खाने की सलाह देता हूँ।—हम दोनों एक साथ दलिया खाएँगे। मेरी प्यारी एम्मा, चलो हम सब थोड़ा-थोड़ा दलिया खाएँ।'
एक बगुला खेत के ऊपर से उड़कर एक खाई की ओर चला गया।
गन्ने के कारखाने से गुड़ की दुर्गंध आ रही थी।
ट्रेन बिना किसी खास वजह के एक छोटे से स्टेशन पर एक घंटे के लिए रुक गई।
डिब्बे की सलाखों वाली खिड़कियों पर भिखारी भीख मांग रहे थे।

जब ट्रेन बनारस में गंगा नदी पार कर रही थी, तो उसने सौभाग्य के लिए जालीदार खिड़की से दो आना का सिक्का बाहर फेंक दिया। वह एक गर्डर से टकराया और फिर घूमते हुए नदी में गिर गया।

इलाहाबाद में ट्रेन फिर से दाहिने किनारे पर आ गई, और लता ने एक और सिक्का बाहर फेंक दिया।

गंगा दर्शन बहुत सुखद है।

मैंने इसे अब तक दो बार पूरा कर लिया है।

उसने खुद से कहा कि वह मानद चटर्जी बनने के खतरे में है।

उन्होंने राग सारंग गुनगुनाना शुरू किया, फिर बाद में मुल्तानी में बह गईं।

उसने अपने सैंडविच ठुकरा दिए और अगले स्टेशन पर कुछ समोसे और चाय खरीद ली।

उसने आशा की कि उसकी माँ स्वस्थ होगी। उसे जम्हाई आई। उसने एम्मा को एक तरफ रख दिया। उसने एक बार फिर कबीर के बारे में सोचा।

वह एक घंटे के लिए सो गई। जब उसकी नींद खुली तो उसने पाया कि वह सफेद साड़ी पहने एक बूढ़ी औरत के कंधे से टेक लगाकर लेटी हुई थी, जिसने उसे देखकर मुस्कुराया। वह लता के चेहरे से मक्खियों को हटा रही थी।

शाम ढलते समय बंदरों का एक झुंड एक बगीचे में धूल से सने आम के पेड़ पर हमला कर रहा था, जबकि तीन आदमी नीचे खड़े होकर पत्थरों और लाठियों से उन्हें भगाने की कोशिश कर रहे थे।

जल्द ही रात हो गई। मौसम अभी भी गर्म था।

कुछ देर बाद ट्रेन एक बार फिर धीमी हो गई, और प्लेटफार्म पर लगे एक बड़े पीले साइनबोर्ड पर काले अक्षरों में 'कानपुर' लिखा हुआ दिखाई दिया। उसकी माँ और उसके चाचा श्री कक्कड़ दोनों वहाँ मौजूद थे;

लेकिन उसकी माँ के चेहरे पर तनाव झलक रहा था।

9.6

वे कार से घर गए। कक्कड़ फूफा (जैसा कि लता अपने पिता की बहन के पति को बुलाती थी) एक सफल लेखाकार थे और उनका स्वभाव हंसमुख था।

जब वे दोनों अकेले थे, तब श्रीमती रूपा मेहरा ने लता को हरेश के बारे में बताया: 'एक बहुत ही उपयुक्त लड़का'।

लता एक पल के लिए अवाक रह गई। फिर अविश्वास भरे स्वर में उसने कहा, 'आप मेरे साथ बच्चे जैसा व्यवहार करते हैं।'

श्रीमती रूपा मेहरा कुछ पल तक संयम और शांत करने के बीच दुविधा में रहीं, फिर धीरे से बोलीं: 'इसमें क्या हर्ज है, प्यारे? मैं तुम पर कुछ भी थोप नहीं रही हूँ। और वैसे भी परसों हम लखनऊ के लिए रवाना होंगे और उसके अगले दिन ब्रह्मपुर वापस आ जाएँगे।'

लता ने अपनी माँ की ओर देखा, उसे आश्चर्य हुआ कि उसे अपना बचाव क्यों करना पड़ रहा है।

‘और इसी कारण से—न कि इसलिए कि आप अस्वस्थ थीं या आपको मेरी मदद की ज़रूरत थी—मुझे कलकत्ता से बुलाया गया था।’ लता की आवाज़ में इतना स्नेहहीनता थी कि श्रीमती रूपा मेहरा की नाक लाल हो गई। लेकिन उन्होंने खुद को संभाला और कहा:

‘डार्लिंग, मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत है। तुम्हारी शादी करवाना आसान नहीं है। और लड़का हमारे समुदाय का है।’

‘मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह किस समुदाय से संबंध रखता है। मैं उससे मिलने नहीं जा रही। मुझे कलकत्ता कभी नहीं छोड़ना चाहिए था।’

‘लेकिन वह खत्री है—मूल रूप से उत्तर प्रदेश का रहने वाला है,’ उसकी

मां ने विरोध जताया।
इस कठोर तर्क का लता पर कोई असर नहीं हुआ। उसने कहा:
‘माँ, कृपया। मैं आपके सभी पूर्वाग्रहों को जानती हूँ और मैं उनमें से किसी से भी सहमत नहीं हूँ। आप मेरी परवरिश एक तरह से करती हैं और अपना व्यवहार बिल्कुल अलग तरीके से करती हैं।’
इस न्यायसंगत हमले पर उसकी माँ ने बस इतना ही कहा: ‘लता, तुम्हें पता है, मुझे मुसलमानों से कोई दुश्मनी नहीं है। मुझे तो बस तुम्हारे भविष्य की चिंता है।’ श्रीमती रूपा मेहरा को किसी तरह के आक्रोश की उम्मीद थी, और उन्होंने बड़ी मुश्किल से खुद को शांत रखा।
लता चुप रही। ओह, कबीर, कबीर, उसने मन ही मन सोचा।
‘प्यारे, तुम कुछ खा क्यों नहीं रहे हो? यह बहुत लंबा सफर रहा है।’
'मुझे भूख नहीं है।'
'जी हां, आप हैं,' श्रीमती रूपा मेहरा ने जोर देकर कहा।
‘माँ, आपने मुझे झूठे बहाने से यहाँ बुलाया है,’ लता ने अपना सूटकेस खोलते हुए और अपनी माँ की ओर देखे बिना कहा। ‘आपको पता होना चाहिए था कि अगर आपने टेलीग्राम में कारण बता दिए होते तो मैं कभी नहीं आती।’
‘डार्लिंग, टेलीग्राम में शब्द जोड़ना समझदारी नहीं है। आजकल टेलीग्राम बहुत महंगे हो गए हैं। हां, अगर आप “सुरक्षित और सुखद यात्रा के लिए शुभकामनाएं” या “बिजॉय की हार्दिक शुभकामनाएं” जैसे कोई सामान्य वाक्य भेजें तो बात अलग है। और वो बहुत ही प्यारा लड़का है। तुम खुद देख लोगी।’
लता इतनी परेशान थी कि उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसने अपना सिर हिलाया, अब वह खुद पर, अपनी माँ पर और उस अनजान हरेश पर और भी ज़्यादा गुस्सा थी।

‘मां, मुझे उम्मीद है कि जब मैं आपकी उम्र की हो जाऊंगी तो मैं आपके जैसी नहीं बनूंगी,’ उसने भावुक होकर कहा।
श्रीमती रूपा मेहरा की नाक तुरंत फिर से लाल हो गई।
अगर आपको मेरी बात पर यकीन नहीं है, तो कम से कम कल्पना की बात तो मान लीजिए। मैं उससे उसके घर पर मिली थी। वह लड़का कल्पना का दोस्त है। उसने इंग्लैंड में पढ़ाई की है और उसके नतीजे बहुत अच्छे हैं। वह दिखने में सुंदर है और आपसे मिलना चाहता है। अगर आपको उससे मिलने में कोई दिलचस्पी नहीं है, तो मैं कल्पना को कैसे दिखाऊं जिसने इतनी मेहनत करके यह सब करवाया? यहां तक कि श्री गौर भी उसे पसंद करते हैं। अगर आपको मेरी बात पर यकीन नहीं है, तो उसका यह पत्र पढ़ लीजिए। यह आपके लिए है।
लता ने कहा, 'मुझे इसे पढ़ने की जरूरत नहीं है। आप मुझे बता सकते हैं कि इसमें क्या है।'
श्रीमती रूपा मेहरा ने तीखे स्वर में कहा, 'आपको कैसे पता कि मैंने इसे पढ़ा है? क्या आपको अपनी माँ पर भी भरोसा नहीं है?'
लता ने खाली सूटकेस को एक कोने में रख दिया। उसने कहा, 'माँ, आपके चेहरे पर अपराधबोध साफ झलक रहा है। लेकिन मैं फिर भी इसे पढ़ लूंगी।'
कल्पना का पत्र संक्षिप्त और स्नेहपूर्ण था। जैसे उसने हरेश को बताया था कि लता उसके लिए बहन समान है, वैसे ही अब उसने लता को बताया कि हरेश उसके लिए भाई समान है। ऐसा प्रतीत हुआ कि कल्पना ने हरेश को पत्र लिखा था। हरेश ने जवाब में लिखा कि वह दिल्ली नहीं लौट सकता क्योंकि कारखाने में उसकी आवश्यकता है और उसने हाल ही में छुट्टी ली है, लेकिन वह कानपुर में लता और श्रीमती रूपा मेहरा से मिलकर बहुत प्रसन्न होगा। उसने यह भी लिखा कि सिमरन के प्रति स्नेह

होने के बावजूद, अब उसे एहसास हो गया है कि उसके लिए वहाँ कोई उम्मीद नहीं है। इसलिए, उसे अन्य लड़कियों से मिलने में कोई आपत्ति नहीं है। इस समय उसका जीवन काम के सिवा कुछ नहीं है; भारत इंग्लैंड नहीं है, जहाँ लड़कियों से आसानी से जान-पहचान हो जाती है।

कल्पना ने घुमावदार लिखावट में लिखना जारी रखते हुए कहा, "जहाँ तक दहेज की बात है, वो माँगने वाला आदमी नहीं है, और न ही उसकी तरफ से माँगने वाला कोई है। वो अपने पिता से बहुत जुड़ा हुआ है—असल में, अपने पालक पिता से, हालाँकि वो उन्हें बाओजी कहकर पुकारता है—लेकिन (अपने पालक भाइयों के विपरीत) उसने कम उम्र में ही अपनी आज़ादी हासिल कर ली है। पंद्रह साल की उम्र में वो एक बार घर से भाग गया था, लेकिन आपको इस बात को लेकर उसे दोषी नहीं ठहराना चाहिए। अगर आप दोनों एक-दूसरे को पसंद करते हैं, तो आपको अपने ससुराल वालों के साथ नहीं रहना पड़ेगा। संयुक्त परिवार दिल्ली के नील दरवाज़ा में रहता है, और हालाँकि मैं वहाँ एक बार जा चुकी हूँ और वहाँ के अधिकांश लोगों की तरह, मैं जानती हूँ कि जिस तरह से आपका पालन-पोषण हुआ है, वह माहौल आपको रास नहीं आएगा।"

लता, मैं तुम्हें सच बता सकती हूँ कि मुझे हमेशा से हरेश पसंद था। एक समय तो मुझे उस पर थोड़ा क्रश भी था—हम सेंट स्टीफंस में एक ही क्लास में पढ़ते थे। जब मेरे पिताजी ने उसका हाल ही का पत्र पढ़ा, तो उन्होंने कहा: 'वाह, यह तो सीधा जवाब है। कम से कम उसने अपने पुराने प्यार को छुपाया तो नहीं।' और हाँ, माँ तो उस पर पूरी तरह फिदा लग रही हैं। वो आजकल दिन-रात चिंतित होती जा रही हैं। शायद यही उनके और तुम्हारे सपनों का जवाब है। खैर, लता, चाहे तुम आखिर में कुछ भी करो या न करो, उससे ज़रूर मिलना, और अपनी माँ से नाराज़ मत होना, जो तुम्हारी खुशी (जैसा कि वो समझती हैं) सुनिश्चित करने के लिए जी-

तोड़ मेहनत कर रही हैं।

माँ ने तुम्हें मेरी सेहत के बारे में बताया होगा। अगर मैं खुद ठीक न होती तो अपने लक्षणों पर हँसती, जो जम्हाई लेने से लेकर चक्कर आने और पैरों के तलवों में जलन तक हैं। ये जलन तो और भी अजीब हैं। तुम्हारी माँ कलकत्ता के डॉक्टर नूरुद्दीन की बहुत तारीफ करती हैं, पर वो झोलाछाप डॉक्टर लगते हैं। और वैसे भी, मैं कहीं जा नहीं सकती। कानपुर के बाद क्यों न तुम मुझसे मिलने आओ और हम मोनोपॉली खेलें, जैसे बचपन में खेलते थे? तुम्हें देखे हुए बहुत समय हो गया है। तुम्हें और माँ को मेरा प्यार। उनकी सलाह पर ध्यान देना; मुझे लगता है कि तुम उनकी बेटी होकर बहुत भाग्यशाली हो। जैसे ही तुम्हें कुछ बताना हो, मुझे तुरंत बताना। बिस्तर पर लेटे-लेटे मैं रेडियो पर बस ये दर्द भरा क्लासिकल संगीत सुन रही हूँ, जो मुझे पता है तुम्हें दर्द भरा नहीं लगता, और बेवकूफ दोस्तों की गपशप। तुम्हारा आना मुझे अच्छा लगेगा।

पत्र के लहजे में कुछ ऐसा था जिसने लता को सोफिया कॉन्वेंट के उस समय की याद दिला दी, जब एक स्कूली छात्रा के रूप में, अचानक एक आवेग से अभिभूत होकर, एक अजीब, सम्मोहन जैसी अवस्था में, वह ईसाई और नन बनना चाहती थी। वह तुरंत धर्म परिवर्तन करना चाहती थी और अरुण को उसे समझाने के लिए मसूरी बुलाया गया था। उसने तुरंत घोषणा कर दी कि यह सब 'गर्मियों का कोरा सपना' है। लता ने यह मुहावरा पहली बार सुना था। हालाँकि वह इससे प्रभावित हुई थी, उसने यह मानने से इनकार कर दिया था कि ये धार्मिक आवेग किसी भी तरह का कोरा सपना थे। वह अपने संकल्प पर अडिग थी। दरअसल, सोफिया कॉन्वेंट की एक नन ने ही अंततः उसे एक बेंच पर बैठाया और उससे बात की - स्कूल की इमारतों से कुछ दूरी पर एक हरी बेंच। वहाँ से एक ढलान दिखाई देती थी जो सुव्यवस्थित लॉन और सुंदर फूलों से ढकी थी; ढलान

के नीचे एक कब्रिस्तान था जिसमें संप्रदाय की ननें, जिनमें से कई ने स्कूल में पढ़ाया था, दफन थीं। उन्होंने कहा था: 'लता, खुद को कुछ महीने का समय दो।' कम से कम स्कूल खत्म होने तक इंतजार करो। बाद में तुम हमेशा फैसला कर सकते हो। तुरंत कोई फैसला मत लो। याद रखो, यह तुम्हारी मां के लिए बहुत मुश्किल होगा, जो एक युवा विधवा हैं। लता कुछ देर तक कल्पना का पत्र हाथ में लिए बिस्तर पर बैठी रही, अपनी माँ के चेहरे की ओर देखने से बचती रही। श्रीमती रूपा मेहरा ने जानबूझकर चुपचाप अपनी साड़ियाँ दराज में समेट लीं। एक मिनट बाद लता बोली:

‘ठीक है माँ। मैं उससे मिल लूँगी।’ उसने आगे कुछ नहीं कहा। वह अब भी गुस्से में थी, लेकिन उसे इसे ज़ाहिर करने में कोई फायदा नहीं दिख रहा था। जब उसकी माँ के माथे पर चिंता की लकीरें कुछ कम हुईं, तो उसे खुशी हुई कि उसने बात वहीं खत्म कर दी थी।

9.7

कुछ समय से हरेश एक डायरी रखता था। आजकल वह आमतौर पर रात में एल्म विला में किराए पर लिए गए कमरों में एक भारी-भरकम डेस्क पर बैठकर डायरी लिखता था। वह डायरी पलट रहा था और बीच-बीच में अपनी डेस्क पर चांदी के फ्रेम में लगी तस्वीर पर नज़र डाल रहा था।

Brahmpur

यहां जूतों की टिकाऊपन अच्छी है, और कारीगरी का स्तर भी सामान्य रूप से बढ़िया है। मैं सुनील के लिए जो जूते लाया था, उसी डिज़ाइन के ब्रोक्स सैंडल रविदासपुर में बनवा रहा हूँ। अगर मेरा यह विचार सफल रहा, तो ब्रह्मपुर तैयार जूतों का एक अच्छा स्रोत बन सकता है। लेकिन गुणवत्ता ही सबसे महत्वपूर्ण है। जब तक कुशल कारीगरों का ढांचा तैयार नहीं हो जाता, तब तक व्यापार आगे नहीं बढ़ेगा।

माइक्रो-शीट की खरीद में कोई समस्या नहीं है: हड़ताल के कारण आपूर्ति अधिक है। केदारनाथ टंडन मुझे बाजार घुमाने ले गए (फिलहाल स्थानीय मांग को लेकर मजदूरों और आपूर्तिकर्ताओं के साथ कुछ दिक्कतें चल रही हैं) और मैंने उनके परिवार के साथ दोपहर का भोजन किया। उनका बेटा भास्कर बहुत होशियार है और उनकी पत्नी बेहद खूबसूरत हैं। मुझे लगता है उनका नाम वीना है।

प्राहा के लोगों से बात करना बहुत मुश्किल है, और वे मेरी योग्यताओं से प्रभावित नहीं हैं। हमेशा की तरह, समस्या प्रवेश की है। अगर मैं शीर्ष अधिकारियों से बात कर पाऊं, तो कुछ संभावना है, वरना कोई नहीं। उन्होंने मेरे पत्रों का भी गंभीरता से जवाब नहीं दिया है।

सुनील हमेशा की तरह शानदार फॉर्म में हैं।

बाओजी, सिमरन, एम. और श्रीमती पौडेविग्ने को पत्र

कानपुर

गर्मी के दिन हैं और कारखाने में काम करना कठिन है। कम से कम शाम को एल्म विला में पंखे के नीचे आराम कर सकता हूँ।

मैं हर पल सिमरन के बारे में सोचती रहती हूँ, लेकिन मुझे पता है कि उम्मीद बहुत कम है। अब उसकी माँ ने धमकी दी है कि अगर उसकी शादी दूसरे धर्म के किसी लड़के से हुई तो वह आत्महत्या कर लेगी। शायद यह इंसानी फितरत है, लेकिन मैं इस तरह के हालातों का शिकार नहीं बनना चाहती। सिमरन के लिए तो और भी मुश्किल है। इसमें कोई शक नहीं कि वे उसकी शादी किसी अच्छे लड़के से करवाने की कोशिश कर रहे होंगे, बेचारी।

कामकाज में हमेशा की तरह आपूर्ति में देरी हो रही है। मैं बहुत जल्दी गुस्सा हो जाता हूँ और अधीर हो जाता हूँ। दूसरे विभाग के राव से मेरी कहा-सुनी हो गई। वो निकम्मा आदमी है, जिसे सिर्फ़ मजदूरों को आपस

में लड़ाना आता है। उसके कुछ चहेते हैं और वो निष्पक्ष नहीं है, जिससे पूरे संगठन को नुकसान हो रहा है। कभी-कभी वो जानबूझकर एक-दो ऐसे लोगों को निकाल लेता है जिनकी मुझे ज़रूरत होती है, और फिर मेरे पास कर्मचारियों की कमी हो जाती है। वो उरियाह की तरह दुबला-पतला है, और उसकी नाक तेज़ है। दूसरी जगहों पर लोग 'खुद को बढ़ाओ और कारोबार बढ़ाओ' में विश्वास करते हैं। भारत में हम मानते हैं कि तरक्की करने का तरीका है किसी दूसरे को नीचा दिखाना।

आज मुझे कीलें, तलवे या सिलाई का धागा जैसी कोई समस्या नहीं हुई, बल्कि फिर से भेड़ की खाल की समस्या थी। कई जूतों के ऊपरी हिस्से कटे हुए थे जिनमें अस्तर लगाना था, साथ ही हाल ही में आए ऑर्डर में भी भेड़ की खाल की आवश्यकता थी। मजदूरों को काम पर लगाने के बाद मैंने अपने सस्पेंस खाते से 600 रुपये निकाले और खुद बाजार चला गया। सामान खरीदना अपने आप में एक प्रशिक्षण होता है। शायद मुझे सीएलएफसी में अपने अनुभव को एक सशुल्क प्रशिक्षण की तरह लेना चाहिए। दिन भर के काम के बाद मैं थक गया था। घर आकर मैंने 'द मेयर ऑफ कैस्टरब्रिज' के कुछ पन्ने पढ़े और जल्दी सो गया। कोई पत्र नहीं आया।

घड़ी का पट्टा 12 रुपये (मगरमच्छ की चमड़ी)

कानपुर

बहुत ही रोचक दिन रहा।

समय पर कारखाने पहुँच गया। बारिश हो रही थी। हमेशा की तरह काम में लग गया, लगता है काम में कोई व्यवस्था नहीं है, एक ही व्यक्ति को इतने सारे काम संभालने पड़ते हैं।

बाज़ार में ली नाम के एक चीनी व्यक्ति की दुकान देखी। उसकी छोटी सी दुकान थी, मुझे कुछ आकर्षक डिज़ाइन वाले जूते दिखे, तो मैं बिना सोचे

समझे अंदर चला गया और उससे बात की। वह अंग्रेज़ी और थोड़ी अजीब तरह से हिंदी बोलता है। वह खुद जूते बनाता है। मैंने उससे पूछा कि इन्हें किसने डिज़ाइन किया है, तो उसने कहा कि उसने खुद ही डिज़ाइन किया है। मैं प्रभावित हुआ। उसकी डिज़ाइनिंग तकनीक वैज्ञानिक नहीं है, लेकिन उसे अनुपात और रंग संयोजन की अच्छी समझ है, भले ही मैं रंग-अंधा हूँ, फिर भी मुझे यह दिखाई दिया। जूते का अगला और अगला हिस्सा टेढ़ा नहीं था, तलवा और एड़ी संतुलित थे, कुल मिलाकर देखने में आकर्षक लग रहा था। उसकी बिक्री और बातचीत से मैंने बिना उसे परेशान किए यह पता लगा लिया कि किराया, सामग्री और अन्य खर्चों के बाद उसकी कितनी कमाई होगी। ली ज़्यादा कमाई नहीं कर पाता क्योंकि प्राहा, कूपर एलन आदि सस्ते जूतों से बाज़ार को भर देते हैं, और कानपुर में खास डिज़ाइन वाले जूतों की कोई खास मांग नहीं है। मुझे लगता है कि अगर मैं मुखर्जी को उसे 1000 रुपये में काम पर रखने के लिए मना लूँ, तो मैं उसकी संभावनाओं को बेहतर बना सकता हूँ और अपने नए विभाग की भी मदद कर सकता हूँ। 250 रुपये प्रति माह। ज़ाहिर है, उसे बॉम्बे में घोष से बात करनी होगी, और यही असली समस्या है। अगर मैं अपना खुद का व्यवसाय करता, तो उसे तुरंत काम पर रख लेता। वह निश्चित रूप से बिना किसी झंझट के डिज़ाइनर की नौकरी पाकर खुश होगा।

दिल्ली का टिकट मिल गया है और मैं कल रवाना हो रहा हूँ। एक निजी कंपनी मुझे काम पर रखने की सोच रही है, इसलिए मुझे अच्छी तैयारी करनी चाहिए। और सीएलएफसी भी दिल्ली के बाज़ार में उतरना चाहती है। उन्हें पहले अपनी व्यवस्था ठीक करनी चाहिए।

मुझे इतनी नींद आ रही है कि मैं और कुछ लिख नहीं पा रहा हूँ।

दिल्ली

मुखर्जी ली के बारे में सहमत हैं, अब यह घोष पर निर्भर है।

थकान थी, इसलिए ट्रेन में ही आराम किया, हालांकि दिन भर का सफर था। वेटिंग रूम में फ्रेश होकर कल्पना के पास गई। पुरानी यादें ताजा करते हुए खूब बातें हुईं। उसकी तबीयत ठीक नहीं है और उसने दुख भरी जिंदगी जी है, लेकिन फिर भी वह अपने आसपास सबको खुश कर देती है। एस के बारे में बात नहीं की, हालांकि हम दोनों के मन में यही बात थी। उसके पिता और उसकी खूबसूरत चाची श्रीमती मेहरा से भी मुलाकात हुई।

बाओजी अपने खेती-बाड़ी के इरादों पर अड़े रहे। मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की क्योंकि उन्हें खेती का कोई अनुभव नहीं था। लेकिन एक बार कोई फैसला कर लेने पर उसे बदलना मुश्किल होता है। उमेश अंकल से न मिलना मेरे लिए राहत की बात थी।

कानपुर

देर से उठा, कारखाने में आधा घंटा देरी से पहुँचा। वहाँ काफी अव्यवस्था थी और बहुत काम करना बाकी था। प्राहा का टेलीग्राम आया, जो उत्साहवर्धक नहीं था, बल्कि अपमानजनक था: वे मुझे 28 रुपये प्रति सप्ताह दे रहे हैं—क्या वे मुझे मूर्ख समझते हैं? सिमरन, जीन और कल्पना का पत्र आया। कल्पना का पत्र कुछ अजीब था, जिसमें श्रीमती मेहरा की बेटी लता से सगाई का संकेत था। जीन का पत्र हमेशा की तरह था। सही स्थिति का पता लगाने के लिए सोमवार तक मजदूरों से बात करना टाल दिया। कम से कम मजदूरों को पता है कि मैं किसी को किसी के खिलाफ भड़काने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। कोई और उनसे ठीक से बात नहीं करता: बाबू लोगों का यही रवैया है। शाम को घर आया और चैन से सो गया।

यहां मुझे अपने पंख फैलाने की भी जगह नहीं है। अब क्या करूं?

साइकिल तेल पुनः 1/4

श्रीमती मेसन को किराया और भोजन आदि के लिए 185 रुपये का भुगतान किया गया।
डाक टिकट 1 रुपये का।
9.8
सोने से पहले, उसने कल्पना का पत्र दोबारा पढ़ा, जिसे वह ढूंढ रहा था, फिर उसे याद आया कि उसने उसे डायरी के पीछे रख दिया था।
मेरे प्यारे हरीश,
मुझे नहीं पता कि इस पत्र पर आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी। बहुत समय बाद लिख रही हूँ, जबकि हमारी मुलाकात अभी-अभी हुई है। आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा, और यह जानकर खुशी हुई कि आप मुझे भूले नहीं हैं और आप पर मेरा बंधन पूरी तरह से खत्म नहीं हुआ है। मैं आज ठीक नहीं थी और आपके आने के लिए तैयार भी नहीं थी। लेकिन आपके जाने के बाद मुझे फिर से नई ऊर्जा मिली, और मैंने इस बारे में अपनी खूबसूरत चाची से भी बात की।
दरअसल, मैं उन्हीं के कहने पर यह पत्र लिख रहा हूँ—लेकिन केवल उन्हीं के कहने पर नहीं। मैं जो कुछ भी कहूँगा, उसमें स्पष्ट और सटीक रहूँगा, और मैं आपसे भी यही अपेक्षा करता हूँ कि आप अपने उत्तर में उतने ही स्पष्टवादी हों।
बात यह है कि श्रीमती मेहरा की एक छोटी बेटी लता है—और वह आपसे इतनी प्रभावित हुईं कि वह जानना चाहती थीं कि क्या लता और आपके बीच विवाह का कोई संबंध बन सकता है। मेरी ये सब बातें सुनकर आश्चर्यचकित न हों, लेकिन मुझे लगता है कि लता का विवाह हमारी भी ज़िम्मेदारी है। उनके स्वर्गीय पिता और मेरे पिता बहुत घनिष्ठ मित्र थे और एक-दूसरे को लगभग भाई समान मानते थे, इसलिए जब मेरी चाची अपनी बेटियों के लिए उपयुक्त वर ढूंढना चाहती थीं, तो उनका हमसे

मदद मांगना स्वाभाविक था। (बड़ी बेटी का अब सुखी वैवाहिक जीवन चल रहा है।) मैंने अपनी चाची को अपने सभी योग्य खत्री मित्रों से मिलवाया, लेकिन आपसे संपर्क टूटने और आपके दिल्ली में न होने के कारण मैंने आपके बारे में नहीं सोचा। शायद कुछ और भी कारण रहे होंगे। लेकिन उस शाम उन्होंने आपको देखा और बहुत प्रभावित हुईं। उन्हें लगता है कि आप जैसे लड़के ही लता के स्वर्गीय पिता को प्रसन्न करते।
लता की बात करें तो, वह उन्नीस साल की हैं, पढ़ाई में बहुत होशियार हैं, सोफिया कॉन्वेंट से सीनियर कैम्ब्रिज परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया, ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय से इंटरमीडिएट आर्ट्स किया और अभी-अभी ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय से ही अंग्रेजी में प्रथम वर्ष की बी.ए. परीक्षा (उत्कृष्ट अंकों के साथ) उत्तीर्ण की है। अगले साल बी.ए. पूरा करने के बाद वह नौकरी ढूंढने के लिए उत्सुक हैं। उनके बड़े भाई कलकत्ता में बेंटसेन प्राइस में काम करते हैं, उनके दूसरे भाई ने अभी-अभी कलकत्ता विश्वविद्यालय से पढ़ाई पूरी की है और आईएएस की तैयारी कर रहे हैं। उनकी बड़ी बहन, जैसा कि मैंने बताया, विवाहित हैं। उनके पिता का 1942 में निधन हो गया था और वे रेलवे में कार्यरत थे। अगर वे जीवित होते तो अब तक रेलवे बोर्ड में जरूर होते।
वह 5 फुट 5 इंच लंबी है, बहुत गोरी नहीं है, लेकिन भारतीय अंदाज़ में आकर्षक और समझदार है। मुझे लगता है कि वह भविष्य में एक शांत, संयमित जीवन की कामना करती है। मैं बचपन में उसके साथ खेलती थी —वह मेरी छोटी बहन जैसी है, और उसने यहाँ तक कहा है: 'अगर कल्पना किसी के बारे में अच्छा सोचती है, तो मुझे पूरा यकीन है कि मैं भी उसके बारे में अच्छा सोचूँगी।'
मैंने आपको सारी जानकारी दे दी है। जैसा कि बायरन कहते हैं, 'यद्यपि स्त्रियाँ देवदूत होती हैं, फिर भी विवाह शैतान है।' आप इस विचार से

सहमत हो सकते हैं। मैं बस इतना कह सकता हूँ कि, भले ही आप सहमत न हों, इसका मतलब यह नहीं है कि मेरे कहने मात्र से आप 'हाँ' कह दें। इस पर विचार करें; यदि आपकी रुचि हो, तो मुझे बता दें। बेशक, आपको उससे मिलना होगा और उसे आपको देखना होगा— और फिर आपकी और उसकी प्रतिक्रियाएँ मायने रखेंगी। यदि आप (1) विवाह करने की सोच रहे हैं (2) आपकी कोई पूर्व प्रतिबद्धता नहीं है, और (3) इस विशेष व्यक्ति में रुचि रखते हैं, तो आप दिल्ली आ सकते हैं। (मैंने आपके दिल्ली छोड़ने से पहले आपसे संपर्क करने की कोशिश की थी, लेकिन असफल रहा।) यदि आप नील दरवाजा में अपने परिवार के साथ रहने में सहज महसूस नहीं करते हैं, तो आप चाहें तो हमारे साथ रह सकते हैं; आपके परिवार को आपके आने का उद्देश्य या यहाँ तक कि आपके यहाँ होने की जानकारी देने की आवश्यकता नहीं है। लता की माँ कुछ और दिनों के लिए दिल्ली में रहेंगी, और उन्होंने मुझे बताया कि लता जल्द ही उनके पास आने की योजना बना रही है। वह एक अच्छी लड़की है (यदि आप रुचि रखते हैं) और अपने दिवंगत पिता की तरह एक स्थिर, ईमानदार और सच्चे जीवनसाथी की हकदार है।

तो, अब काम खत्म हो गया है, तो मैं आपको बता दूं कि मेरी तबीयत बिल्कुल ठीक नहीं है। कल से बिस्तर पर ही पड़ी हूँ और डॉक्टर को भी समझ नहीं आ रहा कि क्या हुआ है। मुझे लगातार जम्हाई आ रही है और पैरों के तलवों में जलन हो रही है! मुझे हिलने-डुलने या ज्यादा बात करने की इजाज़त नहीं है। मैं ये सब बिस्तर से ही लिख रही हूँ, इसलिए लिखावट इतनी खराब है। उम्मीद करती हूँ कि मैं जल्दी ठीक हो जाऊँ, खासकर इसलिए क्योंकि पिताजी के पैर में भी तकलीफ है। उन्हें गर्मी से भी बहुत परेशानी हो रही है। उन्हें न तो बीमार रहना पसंद है और न ही जून का महीना। हम सब यही दुआ कर रहे हैं कि मानसून में देरी न हो।

अंत में—अगर आपको लगता है कि मैंने आपको इतनी स्पष्ट रूप से लिखकर कोई गलती की है, तो कृपया मुझे क्षमा कर दें। मैंने इस तरह से लिखकर हमारी मित्रता का दुरुपयोग किया है। अगर मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था, तो चलिए इस मामले को यहीं खत्म करते हैं और सब कुछ भूल जाते हैं।

मुझे आशा है कि जल्द ही आपसे संपर्क होगा या आपसे मुलाकात होगी। टेलीग्राम या पत्र— दोनों ही ठीक रहेंगे।

ढेर सारी शुभकामनाएँ।

कल्पना

पत्र पढ़ते-पढ़ते हरेश की आँखें एक-दो बार बंद हो गईं। उसने सोचा, इस लड़की से मिलना दिलचस्प होगा। अगर उसकी माँ को देखें तो वो भी आकर्षक होनी चाहिए। लेकिन इससे पहले कि वो इस बात पर पूरी तरह विचार कर पाता, उसे जम्हाई आने लगी, और थकान के मारे उसके सारे विचार धराशायी हो गए। पाँच मिनट में ही उसे नींद आ गई; यह एक सुखद और स्वप्नहीन नींद थी।

9.9

'आपके लिए एक कॉल है, श्री खन्ना।'

‘बस आ ही रहा हूँ, श्रीमती मेसन।’

'यह एक महिला की आवाज है,' श्रीमती मेसन ने मदद करते हुए कहा।

‘धन्यवाद, श्रीमती मेसन।’ हरेश उस ड्राइंग रूम में गया जिसका इस्तेमाल उसके तीनों किराएदार मिलकर करते थे। वहाँ कोई और नहीं था, लेकिन श्रीमती मेसन नारंगी रंग के फूलों से भरे फूलदान को अलग-अलग कोणों से निहार रही थीं। वह पचहत्तर साल की एंग्लो-इंडियन महिला थीं, विधवा थीं और अपनी अधेड़ उम्र की अविवाहित बेटी के साथ रहती थीं। उन्हें अपने किराएदारों पर नज़र रखना अच्छा लगता था।

‘Hello. Haresh Khanna.’
‘हेलो, हरीश, मैं श्रीमती मेहरा हूँ, तुम्हें याद है ना, हम दिल्ली में कल्पना गौर के यहाँ मिले थे—और—’
'हां,' हरेश ने श्रीमती मेसन की ओर एक नज़र डालते हुए कहा, जो फूलदान के पास ध्यानमग्न मुद्रा में खड़ी थीं और उनकी एक उंगली उनके निचले होंठ पर थी।
‘क्या आप—अह, क्या कल्पना—’
जी हाँ, कानपुर में आपका स्वागत है। कल्पना ने टेलीग्राम भेजा। मुझे आप दोनों का ही इंतज़ार था।
श्रीमती मेसन ने अपना सिर एक तरफ झुकाया।
हरेश ने अपना हाथ अपने माथे पर फेरा।
'मैं अभी बात नहीं कर सकता,' हरेश ने कहा। 'मुझे काम पर जाने में थोड़ी देर हो रही है। मैं कब आ सकता हूँ? मेरे पास पता है। मुझे बहुत खेद है कि मैं आपको स्टेशन पर लेने नहीं आ सका, लेकिन मुझे पता नहीं था कि आप किस ट्रेन में होंगे।'
श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'हम अलग-अलग ट्रेनों में थे। क्या आप ग्यारह बजे आ सकती हैं? मुझे आपसे दोबारा मिलने का बेसब्री से इंतजार है। और लता को भी।'
‘मैं भी,’ हरेश ने कहा। ‘यह समय मेरे लिए बिल्कुल उपयुक्त है। मुझे कुछ भेड़ें खरीदनी हैं—और फिर मैं आ जाऊँगा।’ श्रीमती मेसन ने फूलदान को दूसरी मेज पर रख दिया, फिर फैसला किया कि पहली वाली मेज ही बेहतर थी।
अलविदा, हरेश। तो हम जल्द ही मिलेंगे?
‘हाँ। अलविदा।’
फोन के दूसरी तरफ, श्रीमती रूपा मेहरा ने लता की ओर मुड़कर कहा:

“उसकी आवाज़ बहुत रूखी थी। उसने मुझे नाम से तक नहीं पुकारा। और कल्पना कहती है कि उसने अपने पत्र में मुझे श्रीमती मेहरोत्रा कहकर संबोधित किया।” वह थोड़ी देर रुकी। “और वह कुछ भेड़ें खरीदना चाहता है। मुझे यकीन नहीं है कि मैंने उसे सही सुना।” वह फिर रुकी। “लेकिन, यकीन मानिए, वह बहुत अच्छा लड़का है।”

हरेश ने अपनी साइकिल को, अपने जूतों, कंघी और कपड़ों की तरह, बहुत अच्छी हालत में रखा था, लेकिन वह साइकिल से श्री कक्कड़ के घर श्रीमती और मिस मेहरा से मिलने नहीं जा सकता था। इसलिए वह कारखाने में रुका और कारखाने के प्रबंधक श्री मुखर्जी को मना लिया कि वे उसे कारखाने की दो कारों में से एक दे दें। वहाँ एक बड़ी लिमोसिन थी जिसका ड्राइवर बहुत ही शानदार और प्रभावशाली था, और एक छोटी, खस्ताहाल कार थी जिसका ड्राइवर अपने सभी यात्रियों से बातें करता था। श्री मुखर्जी को हरेश इसलिए पसंद आया क्योंकि उसमें कोई अकड़ नहीं थी और वह हमेशा उससे दोस्ताना अंदाज में बात करता था।

हरेश ने खूबसूरती की तलाश की, लेकिन उसे एक खूंखार गाड़ी मिल गई। खैर, आखिर गाड़ी ही तो है, उसने मन ही मन कहा।

उन्होंने अस्तर के लिए भेड़ की खाल खरीदी और आपूर्तिकर्ता से यह सुनिश्चित करने को कहा कि वह कारखाने तक पहुँच जाए। फिर वे पान खाने के लिए रुके, जो उन्हें हमेशा पसंद था। उन्होंने कार के शीशे में देखकर एक बार फिर अपने बाल संवारे। और उन्होंने ड्राइवर को सख्त हिदायत दी कि उस दिन कार में यात्रा कर रहे किसी भी व्यक्ति (हरेश सहित) से वे तब तक बात न करें जब तक उनसे बात न की जाए।

श्रीमती रूपा मेहरा बढ़ती घबराहट के साथ उनका इंतज़ार कर रही थीं। उन्होंने श्री कक्कड़ को उनके साथ आने के लिए मना लिया था ताकि पहली मुलाकात की असहजता दूर हो सके। श्री कक्कड़, एक व्यक्ति

और एक लेखाकार दोनों के रूप में, स्वर्गीय रघुबीर मेहरा के बहुत सम्मान के पात्र थे, और श्रीमती रूपा मेहरा को यह जानकर तसल्ली हुई कि नाममात्र की मेज़बानी वही करेंगी, न कि वे खुद।

उसने हरेश का गर्मजोशी से स्वागत किया। हरेश ने लगभग वही कपड़े पहने हुए थे जो उसने दिल्ली में कल्पना के घर पर उससे पहली बार मुलाकात के दौरान पहने थे: एक रेशमी कमीज और हल्के भूरे रंग की सूती गैबरडीन पतलून। उसने भूरे और सफेद रंग के कॉ-रेस्पोंडेंट जूते भी पहने हुए थे, जिन्हें वह बेहद स्टाइलिश मानता था।

सोफे पर बैठी लता को देखकर उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। उसने सोचा, कितनी प्यारी और शांत लड़की है!

लता ने लखनऊ की चिकन कढ़ाई वाली हल्के गुलाबी रंग की सूती साड़ी पहनी हुई थी। उनके बाल जूड़े में बंधे थे। उन्होंने मोतियों की साधारण बालियों के अलावा कोई गहना नहीं पहना था। हरेश ने उनसे सबसे पहले यही कहा:

'हम पहले भी मिल चुके हैं, मिस मेहरा, है ना?'

लता ने भौंहें चढ़ाईं। उसे देखते ही उसकी पहली छाप यही थी कि वह उसकी उम्मीद से छोटा था। अगली छाप—जब उसने बोलने के लिए मुंह खोला—तो यह थी कि वह पान चबा रहा था। यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। शायद, अगर उसने कुर्ता-पायजामा पहना होता, तो लाल रंग से सना हुआ मुंह ठीक लगता—भले ही स्वीकार्य न हो। पान हल्के भूरे रंग के गैबर्डाइन और रेशमी कमीज के साथ बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था। असल में, पान तो उसके पति की छवि से बिल्कुल मेल नहीं खाता था। उसका पूरा पहनावा ही उसे भड़कीला लगा। और सबसे ज्यादा भड़कीले थे उसके जूते। वह किसे प्रभावित करने की कोशिश कर रहा था?

‘मुझे नहीं लगता कि हमारी मुलाकात हुई है, श्रीमान खन्ना,’ उन्होंने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया। ‘लेकिन मुझे खुशी है कि हमें मिलने का मौका मिला।’

लता ने अपनी सादगी और सुरुचिपूर्ण पोशाक से हरेश पर तुरंत ही सकारात्मक प्रभाव डाला। उसने मेकअप नहीं किया था, फिर भी वह आकर्षक और आत्मविश्वासी लग रही थी, और हरेश ने यह देखकर प्रसन्नता व्यक्त की कि उसका लहजा भारी भारतीय नहीं, बल्कि हल्का, लगभग ब्रिटिश जैसा था, क्योंकि वह कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ी थी।

दूसरी ओर, हरेश के लहजे ने लता को आश्चर्यचकित कर दिया था, जिसमें हिंदी और इंग्लैंड में सीखी हुई मिडलैंड्स की स्थानीय बोली दोनों के अंश थे। दरअसल, उसके दोनों भाई उससे बेहतर अंग्रेजी बोलते थे। लता कल्पना कर सकती थी कि काकोली और मीनाक्षी चटर्जी हरेश के बोलने के तरीके का मज़ाक उड़ाकर कितना आनंद उठाती होंगी।

हरेश ने अपना हाथ माथे पर फेरा। यकीनन वह गलत नहीं हो सकता था। वही बड़ी, खूबसूरत आंखें, वही अंडाकार चेहरा—भौंहें, नाक, होंठ, वही गहन भाव। खैर, शायद उसने यह सब सपना ही देखा था।

मेज़बान के रूप में अपनी अनिश्चित स्थिति के कारण थोड़ा घबराए हुए श्री कक्कड़ ने उन्हें बैठने के लिए कहा और चाय पेश की। कुछ देर तक किसी को समझ नहीं आया कि किस बारे में बात करें, खासकर तब जब उनकी मुलाकात का उद्देश्य स्पष्ट था। राजनीति? नहीं। मौसम? नहीं। सुबह की खबरें? हरेश को अखबार देखने का समय ही नहीं मिला था।

उन्होंने पूछा, 'क्या आपकी यात्रा सुखद रही?'

श्रीमती रूपा मेहरा ने लता की ओर देखा, और लता ने श्रीमती रूपा मेहरा की ओर। दोनों ने एक-दूसरे का सम्मान किया। फिर श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा:

‘अच्छा, लता, बोलो, सवाल का जवाब दो।’
'मुझे लगा कि श्री खन्ना आपसे बात कर रहे थे, माँ। जी हाँ, धन्यवाद, मेरी यात्रा सुखद रही। शायद थोड़ी थका देने वाली थी।'
आप कहाँ से आ रहे थे?
‘कलकत्ता से।’
लेकिन तब तो आप बहुत थके हुए होंगे। ट्रेन सुबह बहुत जल्दी पहुंचती है।
‘नहीं, मैं दिन की ट्रेन से आई थी, इसलिए मुझे एक आरामदायक बिस्तर मिला और मैं सही समय पर उठी,’ लता ने कहा। ‘क्या आपकी चाय ठीक है?’
'जी हां, धन्यवाद, मिस मेहरा,' हरेश ने मुस्कुराते हुए कहा।
वह मुस्कान इतनी गर्मजोशी भरी और दोस्ताना थी कि लता भी खुद को मुस्कुराने से रोक नहीं पाई।
श्रीमती रूपा मेहरा ने सुझाव दिया, 'आप दोनों एक-दूसरे को लता और हरेश कहकर बुलाएं।'
'शायद हमें युवाओं को खुद ही बात करने देना चाहिए,' श्री कक्कड़ ने सुझाव दिया, जिनकी पहले से ही एक अपॉइंटमेंट थी।
‘नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने दृढ़ता से कहा। ‘वे हमारी संगति पाकर बहुत प्रसन्न होंगे। हरेश जैसे उत्तम बालक से मिलने का अवसर बार-बार नहीं मिलता।’
इस टिप्पणी पर लता मन ही मन असहज हो गई, लेकिन हरेश को इस तरह वर्णित किए जाने से जरा भी असहजता नहीं हुई।
‘क्या आप कभी कानपुर गई हैं, मिस मेहरा?’ उन्होंने पूछा।
श्रीमती रूपा मेहरा ने सुधार करते हुए कहा, 'लता।'
‘लता।’
‘सिर्फ एक बार। आमतौर पर मैं कक्कड़ फूफा से तब मिलता हूं जब वे

काम के सिलसिले में ब्रह्मपुर या कलकत्ता आते हैं।'
काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। चाय को खूब हिलाया गया, खूब पी गई।
अंत में हरेश ने पूछा, 'कल्पना कैसी है?' 'जब मैंने उसे देखा तो वह ठीक नहीं लग रही थी, और उसके पत्रों में अजीब लक्षणों का जिक्र है। मुझे उम्मीद है कि बेचारी ठीक होगी। पिछले कुछ सालों में उसने बहुत कुछ झेला है।'
यह सही विषय था। श्रीमती रूपा मेहरा अब पूरी तरह से सक्रिय हो गईं। उन्होंने कल्पना के लक्षणों का विस्तार से वर्णन किया, जो उन्होंने खुद देखा था और जो उन्होंने लता को लिखे पत्र में पढ़ा था। उन्होंने उस अनुपयुक्त लड़के के बारे में भी बताया जिससे कल्पना का कभी रिश्ता बन गया था। वह सच्चा नहीं निकला। वह चाहती थीं कि कल्पना को एक सच्चा आदमी मिले, एक ऐसा सच्चा आदमी जिसका भविष्य उज्ज्वल हो। वह पुरुषों में ईमानदारी को एक गुण मानती थीं। और महिलाओं में भी, बेशक। क्या हरेश उनसे सहमत नहीं था?
हरेश मान गया। स्पष्टवादी और खुले दिल का होने के कारण, वह सिमरन के बारे में बात करने ही वाला था, लेकिन खुद को रोक लिया।
'क्या आपके पास वे शानदार प्रमाण पत्र हैं?' श्रीमती रूपा मेहरा ने अचानक पूछा।
'नहीं,' हरेश ने आश्चर्य से कहा।
'कितना अच्छा होता अगर लता इन्हें पढ़ पाती। क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता, लता?'
'जी मां,' लता ने कहा, हालांकि वह इसके विपरीत सोच रही थी।
'मुझे बताओ, तुम पंद्रह साल की उम्र में घर से क्यों भाग गए थे?' श्रीमती रूपा मेहरा ने अपनी चाय में सैकरिन की एक अतिरिक्त गोली डालते हुए

कहा।
हरेश यह जानकर चौंक गया कि कल्पना ने इस तथ्य का उल्लेख किया था। दिल्ली में लता की मां से हुई मुलाकात में, कल्पना ने उसे यथासंभव अनुकूल छवि में प्रस्तुत करने का भरसक प्रयास किया था।
'श्रीमती मेहरा,' हरेश ने कहा, 'मेरा मानना है कि एक समय ऐसा आ सकता है जब एक युवक को उन लोगों से भी अलग होना पड़ सकता है जो उससे प्यार करते हैं और जिनसे वह प्यार करता है।'
श्रीमती रूपा मेहरा कुछ संशय में दिखीं, लेकिन लता को थोड़ी दिलचस्पी थी। उन्होंने प्रोत्साहन के तौर पर सिर हिलाया, और हरेश ने बोलना जारी रखा।
‘इस मामले में मेरे पिता—दरअसल, मेरे पालक पिता—मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझ पर सगाई थोप रहे थे, और मैं इसे स्वीकार नहीं कर सका। मैं भाग गया। मेरे पास पैसे नहीं थे। मसूरी में मुझे प्राहा की एक जूते की दुकान में सफाई का काम मिल गया—जूते के कारोबार में यह मेरा पहला अनुभव था, और यह सुखद नहीं था। आखिरकार मैं दुकान में नौकर बन गया। मैं भूखा और ठंड से कांपता रहा, लेकिन मैंने ठान लिया था कि मैं वापस नहीं जाऊंगा।’
‘क्या तुमने घर पर एक भी पत्र नहीं लिखा?’ लता ने पूछा।
'नहीं, मिस मेहरा, मैंने ऐसा नहीं किया। मैं बहुत जिद्दी था।'
श्रीमती रूपा मेहरा ने उपनाम में सिमट जाने पर उनकी नाराजगी व्यक्त की।
‘अंत में क्या हुआ?’ लता ने पूछा।
नील दरवाज़ा से मेरे पालक भाइयों में से एक, जिसे मैं सबसे ज़्यादा प्यार करती थी, छुट्टियों में मसूरी आया था। उसने मुझे दुकान में देखा। मैंने ग्राहक होने का नाटक किया, लेकिन मैनेजर ने मुझसे बड़े तीखे लहजे में

पूछा कि काम करते हुए मैं गपशप क्यों कर रही हूँ। जब मेरे पालक भाई को सच्चाई पता चली, तो उसने मेरे साथ आए बिना घर वापस जाने से इनकार कर दिया। दरअसल, मेरी माँ के निधन के बाद उसकी माँ ने मेरी देखभाल की थी।

यह आखिरी वाक्य किसी चीज की सटीक व्याख्या नहीं थी, लेकिन सभी को समझ में आ गया।

“लेकिन अब मुझे न तो भूख लग रही है और न ही ठंड,” हरेश ने गर्व से कहा। “दरअसल, क्या मैं आप सबको अपने घर दोपहर के भोजन पर आमंत्रित कर सकता हूँ?” उसने श्रीमती रूपा मेहरा की ओर मुड़कर कहा, “कल्पना ने अपने टेलीग्राम में बताया था कि आप शाकाहारी हैं।”

श्री कक्कड़ ने अनुपस्थिति की अनुमति मांगी, लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा ने लता और स्वयं की ओर से तुरंत अनुमति स्वीकार कर ली।

9.10

एल्म विला जाते समय ड्राइवर असामान्य रूप से शांत था। खस्ताहाल कार भी ठीक-ठाक चल रही थी।

'आपको अपना काम कितना अच्छा लगता है?' श्रीमती रूपा मेहरा ने पूछा।

‘मुझे इसमें मज़ा आ रहा है,’ हरेश ने कहा। ‘आपको याद है मैंने आपको दिल्ली वाले विभाग के बारे में बताया था? वहाँ सारी मशीनरी ला दी गई है, और मैं अगले हफ्ते से उस नए ऑर्डर पर काम शुरू कर दूंगा जो मैंने हासिल कर लिया है। मैं आज दोपहर आपको वहाँ घुमाऊंगा। अब जब मैंने सब कुछ संभाल लिया है, तो सब कुछ बहुत व्यवस्थित हो गया है।’

‘तो आप कानपुर में रहने की योजना बना रही हैं?’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।

‘मुझे नहीं पता,’ हरेश ने कहा। ‘मैं सीएलएफसी में शीर्ष पद तक नहीं

पहुंच सकता, और मैं अपना जीवन ऐसी कंपनी में नहीं बिताना चाहता जहाँ मैं शीर्ष पर न पहुँच सकूँ। मैंने बाटा, जेम्स हॉली, प्राहा, फ्लेक्स, कूपर एलन और यहाँ तक कि सरकारी उद्यमों में भी एक-दो नौकरियों के लिए कोशिश की है। देखते हैं क्या होता है। मुझे किसी ऐसे मार्गदर्शक की ज़रूरत है जो मुझे शुरुआत करने में मदद करे। उसके बाद मैं अपनी क्षमताओं के दम पर खड़ा हो जाऊँगा।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'मेरा बेटा भी यही सोचता है। मेरा बड़ा बेटा, अरुण। वह बेंटसेन प्राइस में काम करता है—और खैर, बेंटसेन प्राइस तो बेंटसेन प्राइस ही है! देर-सवेर वह निदेशक जरूर बनेगा। शायद पहला भारतीय निदेशक भी।' उन्होंने कुछ पल इस कल्पना में खोकर सोचा। उन्होंने आगे कहा, 'उसके स्वर्गीय पिता को उस पर बहुत गर्व होता। वह अब तक रेलवे बोर्ड में होता। शायद अध्यक्ष भी। जब वह जीवित थे, हम हमेशा महंगी कारों में सफर करते थे।'

लता थोड़ी नाराज़ दिख रही थी।

“हम यहाँ पहुँच गए। एल्म विला!” हरेश ने कहा, मानो वह वायसराय लॉज की घोषणा कर रहा हो। वे नीचे उतरे और ड्राइंग रूम में चले गए। श्रीमती मेसन खरीदारी करने गई हुई थीं, और उनके साथ वर्दीधारी सहायक के अलावा और कोई नहीं था।

ड्राइंग रूम बड़ा और रोशनी से जगमगा रहा था, वर्दीधारी सेवक अत्यंत विनम्र था। उसने झुककर धीरे से बात की। हरेश ने उन्हें नींबू पानी दिया, और सेवक थाली में गिलास लेकर आया, जिसके ऊपर सफेद रंग की बारीक जालीदार डोरियां थीं, जिनके किनारों से छोटे-छोटे कांच के मोती लटक रहे थे। दीवार पर यॉर्कशायर (जहां से श्रीमती मेसन का वंश जुड़ा था) की दो रंगीन तस्वीरें टंगी थीं। फूलदान में सजे नारंगी रंग के कॉसमॉस फूल, फूलों के पैटर्न वाले सोफे में एक अलग ही चमक ला रहे

थे; ये इस मौसम के उन गिने-चुने फूलों में से एक थे जो सफेद नहीं थे। हरेश ने पिछली शाम रसोइए को बताया था कि दोपहर के भोजन के लिए मेहमान आ सकते हैं, इसलिए आखिरी समय में कोई व्यवस्था करने की जरूरत नहीं थी।

श्रीमती रूपा मेहरा एल्म विला स्थित व्यवस्था से बहुत प्रभावित हुईं। उन्होंने होम्योपैथिक पाउडर लेने के कुछ मिनट बाद तक नींबू पानी नहीं पिया। लेकिन जब उन्होंने पिया, तो उन्हें संतुष्टि मिली।

हालाँकि उनकी मुलाकात का मकसद तीनों के मन में लगातार बना हुआ था, फिर भी बातचीत पहले से कहीं ज़्यादा सहज थी। हरेश ने इंग्लैंड और अपने शिक्षकों के बारे में, अपनी स्थिति सुधारने की योजनाओं के बारे में, और सबसे बढ़कर अपने काम के बारे में बात की। उसे जो ऑर्डर मिला था, वह उसके दिमाग में छाया हुआ था, और उसे लगता था कि श्रीमती रूपा मेहरा और लता भी उस प्रोजेक्ट के नतीजे का बेसब्री से इंतज़ार कर रही होंगी। उसने विदेश में अपने जीवन के बारे में बताया—हालाँकि उसने उन अंग्रेज़ लड़कियों का ज़िक्र नहीं किया जिनके साथ उसके संबंध थे। दूसरी ओर, वह सिमरन का ज़िक्र करने से खुद को रोक नहीं पाया, और ऐसा करते समय वह अपनी भावनाओं को पूरी तरह छिपा भी नहीं सका। लता को कोई आपत्ति नहीं थी; वह लगभग बातचीत से बेपरवाह थी। बीच-बीच में उसकी नज़र उसके सह-शिकायतकर्ता के जूतों पर पड़ती, और वह अपना मनोरंजन करने के लिए काकोली का कोई दोहा गढ़ लेती।

दोपहर के भोजन की अध्यक्षता मिस मेसन ने की, जो पैंतालीस वर्ष की एक बेहद बदसूरत और बेजान महिला थीं। उनकी माँ अभी भी बाहर थीं; और दो अन्य किराएदार भी बाहर ही दोपहर का भोजन कर रहे थे। ड्राइंग रूम के विपरीत, भोजन कक्ष गंदा और फूलों से रहित था (सिवाय एक गहरे रंग की स्थिर चित्रकला के, जिसमें गुलाब तो थे, लेकिन श्रीमती रूपा

मेहरा को वह पसंद नहीं आई)। यह भारी फर्नीचर से भरा हुआ था—दो साइडबोर्ड, एक अलमारी और एक विशाल, भारी मेज—और कमरे के दूसरे छोर पर, स्थिर चित्रकला के सामने, गायों के साथ एक अंग्रेजी ग्रामीण दृश्य का तेल चित्र लटका हुआ था। श्रीमती रूपा मेहरा को तुरंत उनके खाने योग्य होने का ख्याल आया और वे परेशान हो गईं। लेकिन भोजन स्वयं हानिरहित था, और फूलों के पैटर्न वाली लहरदार किनारों वाली प्लेटों में परोसा गया था।

पहले टमाटर का सूप परोसा गया। फिर श्रीमती रूपा मेहरा को छोड़कर बाकी सभी के लिए तली हुई मछली थी, श्रीमती रूपा मेहरा को सब्जी के कटलेट मिले। इसके बाद चिकन करी और चावल के साथ तला हुआ बैंगन और आम की चटनी परोसी गई। (श्रीमती रूपा मेहरा को सब्जी की करी मिली।) और अंत में कारमेल कस्टर्ड था। वर्दीधारी नौकर के शाही सम्मान और मिस मेसन की भावहीनता ने अधिकांश बातचीत को रोक दिया।

दोपहर के भोजन के बाद, हरेश ने श्रीमती रूपा मेहरा और लता को अपने कमरे दिखाने का प्रस्ताव रखा। श्रीमती रूपा मेहरा ने खुशी-खुशी सहमति दे दी। एक कमरे से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। वे ऊपर गईं। वहाँ एक शयनकक्ष, एक प्रतीक्षा कक्ष, एक बरामदा और एक स्नानघर था। सब कुछ साफ-सुथरा, सुव्यवस्थित और आकर्षक था—लता को यह अत्यधिक, लगभग विचलित करने वाला, व्यवस्थित लगा। छोटी सी किताबों की अलमारी पर हार्डी की पुस्तकें भी वर्णमाला क्रम में रखी हुई थीं। कमरे के एक कोने में जूते रखने वाले रैक पर रखे जूते बर्फ की तरह चमक रहे थे। लता ने बरामदे से एल्म विला के बगीचे की ओर देखा, जिसमें नारंगी रंग के फूलों की क्यारी थी।

दूसरी ओर, जब हरेश बाथरूम में था, श्रीमती रूपा मेहरा ने कमरे में चारों

ओर देखा और गहरी साँस ली। हरेश की लेखन मेज पर एक चाँदी के फ्रेम में मुस्कुराती हुई, लंबे बालों वाली युवती की तस्वीर रखी थी। कमरे में कोई और तस्वीर नहीं थी, यहाँ तक कि हरेश के परिवार की भी नहीं। लड़की गोरी थी—श्रीमती रूपा मेहरा यह बात उस ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीर से भी समझ गईं—और उसके चेहरे की बनावट बेहद खूबसूरत थी।

उसे लगा कि हरेश ने उन्हें एल्म विला में आमंत्रित करने से पहले कम से कम तस्वीर को हटा तो सकता था।

लेकिन ऐसा ख्याल तो हरेश के मन में आया ही नहीं होगा। और अगर रूपा मेहरा ने गलती से भी इस चूक के बारे में कुछ कह दिया होता, तो हरेश के लिए बात वहीं खत्म हो जाती। वह एक हफ्ते में मेहरा परिवार के आने की बात भूल जाता।

जब हरेश हाथ धोकर लौटा, तो श्रीमती रूपा मेहरा ने थोड़ा भौंहें चढ़ाते हुए उससे कहा:

'मुझे आपसे एक सवाल पूछने दीजिए, हरेश। क्या आपके जीवन में अभी भी कोई और है?'

“श्रीमती मेहरा,” हरेश ने कहा, “मैंने कल्पना को बताया था और मुझे यकीन है कि उसने आपको भी बताया होगा कि सिमरन मुझे बहुत प्रिय थी और आज भी है। लेकिन मैं जानता हूँ कि अब वह रास्ता बंद हो चुका है। मैं उसे उसके परिवार से अलग नहीं कर सकता, और उसके परिवार के लिए बस यही मायने रखता है कि मैं सिख नहीं हूँ। अब मैं किसी ऐसे साथी की तलाश में हूँ जिसके साथ मैं सुखमय वैवाहिक जीवन बिता सकूँ। आपको इस बारे में चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है। मुझे बहुत खुशी है कि लता और मुझे एक-दूसरे को थोड़ा-बहुत जानने का मौका मिला।”

इस बातचीत के दौरान लता बरामदे से वापस आ गई थीं। उन्होंने हरीश की सीधी-सादी बातें सुन ली थीं और बिना सोचे समझे उनसे कहा, “हरीश, इस सब में आपके परिवार की क्या भूमिका होगी? आपने उनके बारे में बहुत कम बात की है। अगर—अगर—आप किसी से शादी करने का इरादा रखते हैं, तो क्या इस मामले में उनकी कोई राय होगी?” उनके होंठ हल्के से कांप रहे थे। इतनी सीधी बात करने का ख्याल ही उन्हें बेहद शर्मिंदा कर रहा था। लेकिन हरीश के इस तरह कहने के अंदाज़ ने, ‘मैं जानता हूँ कि मेरे लिए वह दरवाज़ा बंद है,’ उन्हें प्रभावित किया और इसलिए उन्होंने बोल दिया।

हरेश ने उसकी झिझक को भांपते हुए उसे अच्छा लगा और मुस्कुराया; हमेशा की तरह उसकी नज़रें कहीं और चली गईं। 'नहीं। मैं बाओजी से आशीर्वाद तो ज़रूर मांगूंगा, लेकिन उनकी सहमति नहीं। उन्हें पता है कि मैं अपने वादों को लेकर कितना गंभीर हूं।'

कुछ क्षणों की चुप्पी के बाद, लता ने कहा:

मुझे लगता है कि आपको हार्डी पसंद है।

‘जी हां,’ हरेश ने कहा। ‘लेकिन प्रियतम नहीं।’ फिर उसने अपनी घड़ी देखी और बोला: ‘मुझे इसमें इतना मज़ा आया कि समय का पता ही नहीं चला। मुझे कारखाने में थोड़ा काम करना है, लेकिन क्या आप मेरे काम करने की जगह देखना चाहेंगी? मैं आपसे कुछ भी छिपाना नहीं चाहता; वहां का माहौल एल्म विला से थोड़ा अलग है। आज मुझे गाड़ी मिल गई है, तो मैं या तो आपको वहां ले जा सकता हूं या श्री कक्कड़ के घर छोड़ सकता हूं। लेकिन शायद आप थोड़ा आराम करना चाहेंगी। आज बहुत गर्मी है और आप थकी हुई होंगी।’

इस बार लता ने कहा, 'मैं फैक्ट्री देखना चाहूंगी। लेकिन क्या मैं पहले—?'

हरेश ने बाथरूम की ओर इशारा किया।

बाहर आने से पहले उसने ड्रेसिंग टेबल पर नज़र डाली। यहाँ भी सब कुछ करीने से और व्यवस्थित ढंग से रखा हुआ था: केंट कंघे, बेजर के बालों वाला शेविंग ब्रश, और पिनाउड डिओडोरेंट की जमी हुई स्टिक जो गर्म दिन में भी ताज़ी खुशबू बिखेर रही थी। लता ने अपनी बाईं कलाई के अंदरूनी हिस्से पर थोड़ा सा डिओडोरेंट लगाया और मुस्कुराते हुए बाहर आ गई। ऐसा नहीं था कि वह हरेश को नापसंद करती थी। लेकिन उनकी शादी का ख्याल उसे बेतुका लगता था।

9.11

कुछ देर बाद चमड़ा कारखाने की दुर्गंध में उसके चेहरे से मुस्कान गायब हो गई। हरेश को नए कर्मचारी ली को सीएलएफसी के अपने चमड़ा कारखाने में ले जाना था ताकि उसे जूते बनाने के लिए उपलब्ध विभिन्न प्रकार के चमड़े (भेड़ के चमड़े के अलावा, जिसे वे खुले बाजार से खरीदते थे) दिखा सके। ली के डिज़ाइन आंशिक रूप से उपलब्ध चमड़े पर निर्भर करेंगे; और बदले में वह भविष्य में चमड़ा कारखाने द्वारा आपूर्ति किए जाने वाले रंगों के चयन को प्रभावित कर सकता था। सीएलएफसी में एक साल बिताने के बाद हरेश की नाक उस विशिष्ट गंध की कुछ हद तक आदी हो गई थी, लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा लगभग बेहोश सी हो गईं, और लता समय-समय पर अपनी बाईं कलाई को सूंघती रहीं, यह देखकर आश्चर्यचकित थीं कि ली और हरेश उस भयानक दुर्गंध को लगभग अनदेखा कर रहे थे।

हरेश ने लता की माँ को तुरंत समझाया कि खालें 'मृत जानवरों' की थीं, यानी उन गायों की जो स्वाभाविक रूप से मर गई थीं और अन्य देशों की तरह उनका वध नहीं किया गया था। उन्होंने कहा कि वे मुस्लिम वधशालाओं से खालें स्वीकार नहीं करते। श्री ली ने उन्हें आश्वस्त करने वाली मुस्कान दी, और उनकी उदासी थोड़ी कम हुई, हालांकि उत्साह में

कोई खास बदलाव नहीं आया।

अस्थायी भंडारण गोदामों का संक्षिप्त दौरा करने के बाद, जहाँ खालें नमक में ढेर करके रखी थीं, वे भिगोने वाले गड्ढों की ओर गए। नारंगी रबर के दस्ताने पहने हुए आदमी हुक की मदद से फूली हुई खालों को बाहर निकाल रहे थे और उन्हें चूने के ड्रमों में डाल रहे थे जहाँ बाल और चर्बी हटाई जानी थी। जब हरेश उत्साह से विभिन्न प्रक्रियाओं—बाल हटाना, चूना हटाना, अचार बनाना, क्रोम टैनिंग आदि—के बारे में बता रहा था, तो लता को उसके काम से अचानक घृणा हुई और उसे इस बात पर बेचैनी हुई कि कोई इस तरह के काम का आनंद कैसे ले सकता है। इस बीच, हरेश आत्मविश्वास से बोलता रहा: 'लेकिन एक बार जब यह गीले-नीले रंग की अवस्था में पहुँच जाता है, तो आगे की प्रक्रिया को समझना आसान हो जाता है: चर्बी को घोलना, सैमिंग करना, चीरना, शेव करना, रंगना, सेट करना, सुखाना, और फिर बस! वह चमड़ा जिसे हम वास्तव में चमड़ा कहते हैं! बाकी सभी प्रक्रियाएँ—ग्लेजिंग, बोर्डिंग, इस्त्री करना आदि—बेशक वैकल्पिक हैं।'

लता ने दुबले-पतले, थके हुए, दाढ़ी वाले उस आदमी को देखा जो रोलर प्रेस की मदद से गीले नीले चमड़े से पानी निचोड़ रहा था, फिर उसने मिस्टर ली को देखा, जो उससे बात करने के लिए उसके पास गए थे।

श्री ली की हिंदी अनोखी थी, और लता, अपनी नाक और आँखों की अरुचि के बावजूद, उनकी बातें ध्यान से सुनने से खुद को रोक नहीं पाई। वे न केवल जूते के डिज़ाइन और निर्माण के बारे में, बल्कि चमड़ा उद्योग के बारे में भी जानकार प्रतीत होते थे। जल्द ही हरेश भी उनके साथ आ गया, और वे मानसून के हफ्तों के दौरान चमड़ा कारखाने से निकलने वाले चमड़े की कम मात्रा के बारे में बात करने लगे, जब हवा में सुखाना मुश्किल होता था और सुरंग में सुखाने का सहारा लेना पड़ता था।

अचानक कुछ याद आने पर हरेश ने कहा, 'श्री ली, मुझे याद है कलकत्ता के कुछ चीनी चमड़ा व्यापारियों ने मुझे बताया था कि चीनी भाषा में दस हजार के लिए एक विशेष शब्द होता है। क्या यह सच है?'

‘जी हां, सही पेकिंग चीनी भाषा में इसे “वान” कहते हैं।’

और एक बहुत सी?

मिस्टर ली ने हैरानी से हरेश की ओर देखा और अपने दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली से अपने बाएं हाथ की हथेली पर कुछ लिखते हुए एक काल्पनिक अक्षर बनाया और अपने नाम से मिलता-जुलता 'ई' जैसा कुछ कहा।

‘Ee?’ said Haresh.

श्री ली ने उस शब्द को दोहराया।

'तुम्हारे पास ऐसे शब्द क्यों हैं?' हरेश ने पूछा।

श्री ली ने मधुर मुस्कान के साथ कहा, 'मुझे नहीं पता।' 'आपको क्यों नहीं पता?'

अब तक श्रीमती रूपा मेहरा इतनी कमजोर महसूस कर रही थीं कि उन्हें हरेश से उन्हें चमड़ा कारखाने से बाहर ले जाने के लिए कहना पड़ा।

तो क्या आप उस कारखाने में जाना चाहते हैं, जहाँ मैं काम करता हूँ?

नहीं, हरीश, धन्यवाद, यह आपकी बहुत अच्छी बात है, लेकिन अब हमें घर जाना चाहिए। श्री कक्कड़ हमारा इंतजार कर रहे होंगे।

‘इसमें सिर्फ बीस मिनट लगेंगे, और आप मेरे बॉस श्री मुखर्जी से मिल सकते हैं। सच में, हम वहां बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। और मैं आपको नए विभाग का सेटअप दिखाऊंगा।’

‘किसी और समय। दरअसल, मुझे थोड़ी गर्मी महसूस हो रही है—’

हरेश ने लता की ओर देखा। हालाँकि वह साहस दिखाने की कोशिश कर रही थी, लेकिन उसकी नाक ऊपर की ओर सिकुड़ रही थी।

हरेश को अचानक मामला समझ में आया और उसने कहा: 'वह गंध—वह गंध। ओह—लेकिन आपको मुझे बताना चाहिए था। मुझे माफ़ करना—देखिए, मैं इस बारे में ज़्यादा सोचता ही नहीं।'

'नहीं, नहीं,' लता ने थोड़ी शर्मिंदगी के साथ कहा। उसके भीतर कहीं न कहीं चमड़े और सड़े-गले मांस के पूरे प्रदूषणकारी कारोबार के प्रति एक आदिम घृणा जागृत हो गई थी।

लेकिन हरेश बहुत माफी मांग रहा था। उन्हें कार तक वापस ले जाते हुए उसने समझाया कि यह तुलनात्मक रूप से गंधहीन चमड़ा कारखाना था! पास ही में एक पूरा इलाका था जहाँ सड़क के दोनों ओर चमड़ा कारखाने थे, जिनका कचरा और अपशिष्ट खुले में सूखने या जमा होने के लिए छोड़ दिया जाता था। एक समय था जब एक नाली थी जो इस कचरे को पवित्र गंगा नदी तक ले जाती थी, लेकिन आपत्तियों के कारण अब कोई निकास नहीं था। और लोग बड़े अजीब थे, हरेश ने कहा—उन्होंने बचपन से जो देखा था उसे स्वीकार कर लिया था—चमड़े के टुकड़े और अन्य अपशिष्ट पदार्थ इधर-उधर बिखरे पड़े रहते थे—वे इसे स्वाभाविक मानते थे। (हरेश ने अपनी बात को साबित करने के लिए हाथ हिलाए।) कभी-कभी उसने देखा कि गांवों या बाजारों से खालों से भरी गाड़ियाँ भैंसों द्वारा खींची जा रही थीं जो खुद लगभग मर चुकी थीं। 'और निश्चित रूप से एक या दो हफ्ते में, जब मानसून आएगा, तो इन टुकड़ों को सुखाने का कोई फायदा नहीं होगा, इसलिए वे उन्हें ऐसे ही पड़े रहने देंगे और वे सड़ जाएंगे।' और गर्मी और बारिश के साथ— खैर, आप कल्पना ही कर सकते हैं कि बदबू कैसी होगी। यह आपके अपने शहर ब्रह्मपुर में रविदासपुर जाने वाले रास्ते पर स्थित टैनिंग गड्ढों जितनी ही खराब है। वहां तो मुझे भी अपनी नाक बंद करनी पड़ी थी।

लता और श्रीमती रूपा मेहरा को इस संकेत का कोई अर्थ समझ नहीं

आया, क्योंकि वे रविदासपुर जाने का सपना भी नहीं देख सकती थीं, ठीक वैसे ही जैसे वे ओरियन जाने का सपना भी नहीं देख सकती थीं।
श्रीमती रूपा मेहरा हरेश से यह पूछने ही वाली थीं कि वह ब्रह्मपुर कब गया था, तभी दुर्गंध ने एक बार फिर उन्हें जकड़ लिया।
'मैं तुम्हें तुरंत वापस ले जाऊंगा,' हरेश ने दृढ़ता से कहा।
उन्होंने संदेश भेजा कि वे कारखाने में थोड़ा देर से लौटेंगे और कार बुला ली। श्री कक्कड़ के घर लौटते समय उन्होंने थोड़ी विनम्रता से कहा: 'खैर, जूते तो किसी को बनाने ही हैं।'
श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा: 'लेकिन आप चमड़ा कारखाने में काम नहीं करते, है ना, हरीश?'
‘अरे नहीं!’ हरेश ने कहा। ‘आम तौर पर मैं हफ्ते में सिर्फ एक बार ही वहां जाता हूं। मैं मुख्य कारखाने में काम करता हूं।’
‘हफ्ते में एक बार?’ लता ने कहा।
हरेश उसकी बातों में छिपी चिंता को भांप गया। वह ड्राइवर के साथ आगे बैठा था। अब वह मुड़ा और थोड़ी परेशान आवाज़ में बोला: 'मुझे अपने बनाए जूतों पर गर्व है। मुझे दफ्तर में बैठकर आदेश देना और चमत्कार की उम्मीद करना पसंद नहीं है। अगर इसका मतलब यह है कि मुझे खुद गड्ढे में खड़े होकर भैंस की खाल भिगोनी पड़े, तो मैं वह भी कर लूंगा। उदाहरण के लिए, प्रबंधन एजेंसियों में काम करने वाले लोग वस्तुओं का व्यापार करने में तो खुश रहते हैं, लेकिन स्याही के अलावा किसी और चीज़ से अपनी उंगलियां गंदी करना पसंद नहीं करते। और उन्हें गुणवत्ता से ज़्यादा मुनाफ़े की परवाह होती है।'
कुछ सेकंड तक कोई नहीं बोला, फिर उसने आगे कहा:
अगर आपको कुछ करना ही है, तो बिना शोर मचाए कर दीजिए। दिल्ली में मेरे एक चाचा सोचते हैं कि चमड़े का काम करने से मैं अपवित्र हो गया

हूँ, मेरी जाति बिगड़ गई है। जाति! मुझे लगता है कि वह मूर्ख हैं, और वह मुझे भी मूर्ख समझते हैं। मैं उन्हें अपने विचार बताने ही वाला था। लेकिन मुझे यकीन है कि उन्हें पता है। लोग हमेशा जान जाते हैं कि आप उन्हें पसंद करते हैं या नापसंद।

कुछ देर का विराम। फिर हरेश, अपने अप्रत्याशित धार्मिक कथन से थोड़ा विचलित होकर बोला, 'मैं आपको रात के खाने पर आमंत्रित करना चाहता हूँ। हमारे पास एक-दूसरे को जानने के लिए बहुत कम समय है। मुझे उम्मीद है कि श्री कक्कड़ को कोई आपत्ति नहीं होगी।'

उसने बस यही मान लिया था कि मेहरा परिवार ऐसा नहीं करेगा। कार की पिछली सीट पर बैठी माँ और बेटी एक-दूसरे को देख रही थीं, दोनों में से कोई भी एक-दूसरे की प्रतिक्रिया का अनुमान नहीं लगा पा रही थीं। लगभग पाँच सेकंड बाद, हरेश ने उनकी चुप्पी को सहमति मान लिया।

'अच्छा,' उसने कहा। 'मैं तुम्हें साढ़े सात बजे लेने आऊंगा। और तब मैं वायलेट की तरह मीठी खुशबू बिखेर रहा होऊंगा।'

'एक वायलेट?' श्रीमती रूपा मेहरा ने अचानक घबराकर कहा। 'वायलेट क्यों?'

'मुझे नहीं पता,' हरेश ने कहा। 'अगर आप चाहें तो एक गुलाब, श्रीमती मेहरा। वैसे भी, यह नीले रंग से तो बेहतर है।'

9.12

रात का खाना रेलवे रेस्तरां में था, जहाँ पाँच प्रकार के स्वादिष्ट पकवान परोसे गए। लता ने हल्के हरे रंग की चंदेरी साड़ी पहनी थी, जिस पर छोटे-छोटे सफेद फूल और सफेद बॉर्डर था। उन्होंने वही मोती के झुमके पहने थे जो पहले पहने थे; लगभग वही उनके एकमात्र गहने थे, और चूंकि उन्हें पता नहीं था कि उन्हें सबके सामने पेश किया जाएगा, इसलिए उन्होंने मीनाक्षी से कुछ भी उधार लेने की जहमत नहीं उठाई। श्री कक्कड़

ने गुलदस्ते से एक चंपा निकालकर उनके बालों में लगा दिया था। रात सुहावनी थी, और हरे-सफेद रंग की पोशाक में वह बेहद जीवंत और तरोताज़ा लग रही थीं।

हरेश ने हल्के सफेद रंग का आयरिश लिनेन सूट और भूरे रंग के पोल्का डॉट्स वाली क्रीम रंग की टाई पहनी हुई थी। लता को ये महंगे और दिखावटी कपड़े पसंद नहीं आए और वो सोच रही थी कि अरुण इनके बारे में क्या सोचता। कलकत्ता में लोगों का पहनावा थोड़ा सादा होता है। रेशमी कमीज़ भी वहाँ थी। हरेश ने अपनी कमीज़ों का ज़िक्र भी किया: वो बेहतरीन रेशम की बनी थीं, वही रेशम जिसे वो कमीज़ों में बनवाना पसंद करता था—आजकल के लोकप्रिय पॉपलिन रेशम की नहीं, बल्कि उस रेशम की जिसके गठ्ठे के नीचे दो घोड़ों का ब्रांडमार्क होता था। लता के लिए इन सब बातों का कोई मतलब नहीं था, जैसे गीले नीले कपड़े, सिलाई और फटने जैसी चीज़ों का। सौभाग्य से हरेश के सह-प्रतिभागी के जूते मेज़ के नीचे छिपे हुए थे।

खाना बहुत बढ़िया था; उनमें से किसी ने भी शराब नहीं पी। बातचीत राजनीति (हरेश का मानना था कि नेहरू अपने समाजवादी विचारों से देश को बर्बाद कर रहे हैं) से लेकर अंग्रेजी साहित्य (जहां, कुछ गलत उद्धरणों के साथ, हरेश ने दावा किया कि शेक्सपियर को शेक्सपियर ने ही लिखा था) और सिनेमा तक फैली हुई थी (ऐसा लगता था कि हरेश ने इंग्लैंड में रहते हुए लगभग चार फिल्में प्रति सप्ताह देखी थीं)।

लता को आश्चर्य होता था कि वह अपने पाठ्यक्रम में इतना अच्छा प्रदर्शन करने और साथ ही साथ जीविका कमाने के लिए समय और ऊर्जा कैसे निकाल पाता था। उसका लहजा उसे अब भी खटकता था। उसे याद आया कि उसने दोपहर के भोजन में दाल को 'गुड़िया' और कानपुर को 'कांवपोर' कहकर टाल दिया था। लेकिन जब उसने कुछ समय पहले

फिरपो के यहाँ उस शाम सुसंस्कृत और प्रतिष्ठित बिश्वनाथ भादुरी की संगति से उसकी संगति की तुलना की, तो उसे एहसास हुआ कि उसकी संगति उसे कितनी बेहतर लगती है। वह जीवंत था (भले ही वह अपनी बात दोहराता था) और आशावादी था (भले ही वह अपनी क्षमताओं को लेकर अति आत्मविश्वासी था), और ऐसा लगता था कि वह उसे पसंद करता है।

उसने सोचा कि हरेश सही मायने में पश्चिमी सभ्यता से ग्रसित नहीं था: उसे लगा कि उसके तौर-तरीकों और शैली में कुछ कमी थी (कम से कम कलकत्ता के मानकों के अनुसार), और इसी वजह से वह कभी-कभी दिखावा करता था। लेकिन हालांकि वह उसे पसंद आना चाहता था, उसने अपनी राय रखने से पहले उसकी राय जानने की कोशिश करके उसे खुश करने का प्रयास नहीं किया। बल्कि, वह अपने विचारों की सत्यता को लेकर कुछ ज़्यादा ही आश्वस्त था। न ही उसने वह घिनौना, बनावटी आकर्षण दिखाया जिसकी उसे अरुण के युवा कलकत्ता के दोस्तों में आदत हो गई थी। अमित, बेशक, अलग था; लेकिन वह अरुण का दोस्त नहीं, मीनाक्षी का भाई था।

हरेश को श्रीमती रूपा मेहरा स्नेही और सुंदर लगीं। उन्होंने शुरू से अंत तक उन्हें श्रीमती मेहरा कहकर सम्मानजनक दूरी बनाए रखने की कोशिश की, लेकिन अंततः उन्होंने जोर देकर कहा कि वह उन्हें मां कहकर बुलाएं। 'पांच मिनट बाद तो सब लोग ऐसा ही करते हैं, तो तुम भी कर लो,' उन्होंने हरेश से कहा। वह अपने दिवंगत पति और आने वाले पोते के बारे में बहुत बातें करने लगीं। वह दोपहर के सदमे को पहले ही भुला चुकी थीं और अपने होने वाले दामाद को परिवार में शामिल कर चुकी थीं।

आइसक्रीम खाते हुए लता ने तय किया कि उसे उसकी आँखें पसंद आ गईं। उसने सोचा, वे कितनी प्यारी थीं, और आश्चर्यजनक रूप से; वे छोटी

और जीवंत थीं, उसके अच्छे रूप को बिगाड़ती नहीं थीं, और जब वह मुस्कुराता था तो वे पूरी तरह गायब हो जाती थीं! यह बहुत ही आकर्षक था। फिर, बिना किसी स्पष्ट कारण के, उसे इस बात का डर सताने लगा कि रात के खाने के बाद, उसे वापस छोड़ते समय, वह पान के लिए रुकने का प्रस्ताव देगा— इस बात से बेखबर कि यह शाम के माहौल, लिनेन, चांदी के बर्तनों, चीनी मिट्टी के बर्तनों के साथ कितना बुरा बर्ताव करेगा, कैसे यह उसकी सद्भावना को घृणा के अंधे झटके से तोड़ देगा, कैसे यह पूरे दिन को पान के रस से सने लाल मुँह की छवि से घेर लेगा।

हरेश के विचार जटिल नहीं थे। उसने मन ही मन कहा: यह लड़की बुद्धिमान तो है, लेकिन उसमें घमंड नहीं है, और आकर्षक तो है, लेकिन उसमें दिखावा नहीं है। वह अपने विचार आसानी से प्रकट नहीं करती, और मुझे यही अच्छा लगता है। फिर उसे सिमरन की याद आई, और उसके दिल में पुराना, कभी न मिटने वाला दर्द फिर से उभर आया।

लेकिन कभी-कभी, कुछ मिनटों के लिए, हरेश सिमरन को भूल जाता था। और कभी-कभी, लता कबीर को भूल जाती थी। और कभी-कभी वे दोनों यह भूल जाते थे कि बर्तनों की खनक के बीच जो कुछ वे कर रहे थे, वह एक ऐसा आपसी साक्षात्कार था जो शायद यह तय कर सकता था कि भविष्य में कभी वे इन बर्तनों का एक साझा सेट खरीदेंगे या नहीं।

9.13

अगली सुबह कार (जिसमें हरेश और ड्राइवर थे) श्रीमती रूपा मेहरा और लता को लेकर रेलवे स्टेशन गई। उन्हें लगा कि वे समय पर पहुँच गए हैं। लेकिन कानपुर-लखनऊ ट्रेन का समय बदल गया था, और उनकी ट्रेन छूट गई। जिस बस में वे चढ़ने की कोशिश कर रहे थे, वह भरी हुई थी। अब उनके पास 9:42 बजे वाली ट्रेन का इंतजार करने के अलावा कोई चारा नहीं था। इसी बीच वे एल्म विला लौट आए।

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा कि उनके पति के ज़माने में ऐसा कुछ नहीं हुआ था। तब ट्रेनें समय की पाबंद थीं और ट्रेनों के समय में बदलाव किसी राजवंश के परिवर्तन की तरह होते थे: महत्वपूर्ण और दुर्लभ। अब सब कुछ बेतरतीब ढंग से बदल रहा है: सड़कों के नाम, ट्रेनों के कार्यक्रम, कीमतें, रीति-रिवाज। कानपुर और कश्मीर की जगह अपरिचित वर्तनी वाले नाम रखे जा रहे हैं। अगला नंबर दिल्ली, कोलकाता और मुंबई का होगा। और अब, चौंकाने वाली बात यह है कि वे मुद्रा और यहाँ तक कि वज़न-माप में भी मीट्रिक प्रणाली अपनाने की धमकी दे रहे हैं।

'चिंता मत करो, माँ,' हरेश ने मुस्कुराते हुए कहा। 'हमने 1870 से ही किलोग्राम को प्रचलन में लाने की कोशिश की है, और शायद इसे अगले सौ वर्षों तक लागू नहीं किया जाएगा।'

'क्या आपको ऐसा लगता है?' श्रीमती रूपा मेहरा ने प्रसन्न होकर कहा। उनके लिए 'सीयर्स' का अर्थ कुछ निश्चित होता था, 'पाउंड्स' का अर्थ कुछ अस्पष्ट और 'किलोग्राम्स' का कोई महत्व नहीं था।

“हां,” हरेश ने कहा। “हममें न तो व्यवस्था का भाव है, न तर्क का, न अनुशासन का। इसीलिए तो हमने अंग्रेजों को हम पर राज करने दिया। लता, तुम्हारा क्या विचार है?” उसने लता को अपनी ओर आकर्षित करने के सरल प्रयास में यह बात कही।

लेकिन लता के पास तुरंत कोई राय नहीं थी। वह दूसरी बातों में उलझी हुई थी। उसके दिमाग में सबसे पहले हरीश की पनामा टोपी थी, जिसे (भले ही उसने उतार दिया था) वह बेहद बेवकूफी भरी मानती थी। आज सुबह भी उसने अपना आयरिश लिनेन का सूट पहना हुआ था।

वे स्टेशन पर थोड़ा जल्दी पहुँच गए और रेलवे कैफे में बैठ गए। लता और श्रीमती रूपा मेहरा ने लखनऊ के लिए प्रथम श्रेणी के टिकट खरीदे—यात्रा छोटी थी और टिकट पहले से आरक्षित करने की आवश्यकता नहीं

थी। हरेश ने उन्हें फीजेंट की ठंडी चॉकलेट का एक कप दिया—जो एक डच उत्पाद है। यह स्वादिष्ट थी, और लता के चेहरे पर खुशी झलक रही थी। लता की मासूम खुशी देखकर हरेश इतना प्रसन्न हुआ कि उसने अचानक कहा, 'क्या मैं आपके साथ लखनऊ चल सकता हूँ? मैं वहाँ सिमरन की बहन के साथ रुक सकता हूँ, और कल आपको ब्रह्मपुर जाने वाली ट्रेन में छोड़ने के बाद वापस आ जाऊँगा।' असल में वह कहना चाहता था: मैं आज आपके साथ कुछ और घंटे बिताना चाहता हूँ, भले ही इसके लिए किसी और को टिकट खरीदना पड़े।

श्रीमती रूपा मेहरा हरेश को समझाने में सफल नहीं हुईं; उसने अपने लिए लखनऊ का टिकट खरीद लिया। उसने सुनिश्चित किया कि उनका सामान बर्थ पर और उसके नीचे सुरक्षित रूप से रखा गया है, कुली ने उन्हें धोखा नहीं दिया है, वे आराम से बैठे हैं, प्रत्येक को एक पत्रिका दी गई है, और हर तरह से उनकी व्यवस्था ठीक है। दो घंटे की पूरी यात्रा के दौरान उसने एक शब्द भी नहीं कहा। वह सोच रहा था कि संतोष ऐसे ही क्षणों में निहित है।

दूसरी ओर, लता सोच रही थी कि यह बहुत अजीब बात है कि उसने लखनऊ जाने के अपने कारण के रूप में सिमरन की बहन के साथ रहने की योजना का उल्लेख किया था। अपनी किताबों और कला में भले ही कितना भी अनुशासन हो, वह एक गैर-जिम्मेदार व्यक्ति था।

जब ट्रेन लखनऊ स्टेशन पर पहुंची, तो हरीश ने कहा: 'मैं कल आपकी कुछ मदद करना चाहूंगा।'

‘नहीं, नहीं,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने लगभग घबराते हुए कहा। ‘टिकट पहले ही आरक्षित हो चुके हैं। हमें किसी मदद की ज़रूरत नहीं है। ये मेरे बेटे ने बुक करवाए हैं—बेंटसेन प्राइस में काम करने वाले मेरे बेटे ने। हम बहुत आराम से यात्रा करेंगे। आपको स्टेशन आने की ज़रूरत नहीं है।’

हरेश ने कुछ देर लता को देखा और उससे कुछ पूछने ही वाला था कि तभी उसने लता की माँ की ओर मुड़कर कहा: 'क्या मैं लता को पत्र लिख सकता हूँ, श्रीमती मेहरा?'

श्रीमती मेहरा उत्साह से सहमत होने ही वाली थीं, फिर खुद को रोकते हुए लता की ओर मुड़ीं, और लता ने कुछ गंभीरता से सिर हिलाया। मना करना बहुत क्रूरता होती।

'जी हां, आप बिल्कुल लिख सकते हैं,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। 'और आपको मुझे मां कहकर ही बुलाना होगा।'

"अब मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि आप श्री सहगल के घर सुरक्षित पहुँच जाएँ," हरेश ने कहा। "मैं एक तांगा लाता हूँ।"

देखभाल किए जाने से अच्छा लगा, और दोनों महिलाओं ने हरेश को कुशलतापूर्वक उनकी देखभाल करने की अनुमति दी।

पंद्रह मिनट में वे सहगल के घर पहुँच गए। श्रीमती सहगल, श्रीमती रूपा मेहरा की चचेरी बहन थीं। वह लगभग पैंतालीस वर्ष की एक सरल स्वभाव वाली, मधुर मिजाज महिला थीं, जिनका विवाह लखनऊ के एक जाने-माने वकील से हुआ था। उन्होंने हरीश से पूछा, 'यह सज्जन कौन हैं?'

'यह एक युवक है जो सेंट स्टीफंस में कल्पना गौर को जानता था,' श्रीमती रूपा मेहरा ने अस्पष्ट स्पष्टीकरण देते हुए कहा।

श्रीमती सहगल ने कहा, 'लेकिन उन्हें अंदर आकर हमारे साथ चाय पीनी ही होगी। अगर वे नहीं आए तो सहगल साहब बहुत नाराज हो जाएंगे।'

श्रीमती सहगल का मीठा-मीठा, मूर्खतापूर्ण जीवन उनके पति के इर्द-गिर्द घूमता था। उनके लिए कोई भी वाक्य श्री सहगल के उल्लेख के बिना पूरा नहीं होता था। कुछ लोग उन्हें संत समझते थे, कुछ मूर्ख। श्रीमती रूपा मेहरा को याद है कि उनके दिवंगत पति, जो आमतौर पर सौम्य और

सहनशील व्यक्ति थे, श्रीमती सहगल को एक भावुक मूर्ख समझते थे। उन्होंने यह बात हंसी में नहीं, बल्कि गुस्से में कही थी। सहगल का लगभग सत्रह वर्षीय बेटा मानसिक रूप से मंदबुद्धि था। उनकी बेटी, जो लता की उम्र की थी, अत्यंत बुद्धिमान और अत्यधिक मनोरोगी थी।

श्री सहगल लता और उसकी माँ को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। वे गंभीर और बुद्धिमान दिखने वाले व्यक्ति थे, जिनकी दाढ़ी छोटी और सलीके से कटी हुई थी। अगर उनका भावहीन चित्र बनाया जाता, तो वे किसी न्यायाधीश की तरह दिखते। लेकिन हरेश का स्वागत करने के बजाय, उन्होंने उसे एक अजीब, षड्यंत्रकारी मुस्कान दी। हरेश को उनसे तुरंत घृणा हो गई।

उन्होंने पूछा, 'क्या आपको पूरा यकीन है कि मैं कल आपकी किसी भी तरह से मदद नहीं कर सकता?'

'बिल्कुल, हरेश, भगवान आपका भला करे,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।

‘लता?’ हरेश ने मुस्कुराते हुए कहा, लेकिन उसके चेहरे पर थोड़ी अनिश्चितता थी; शायद, पहली बार, उसे पूरी तरह से यकीन नहीं था कि उसे पसंद किया जा रहा है या नापसंद। निश्चित रूप से उसे मिल रहे संकेत उलझन भरे और मिले-जुले थे। ‘क्या आपको यकीन है कि मैं लिख सकता हूँ?’

'हां, यह अच्छा होगा,' लता ने ऐसे कहा जैसे किसी ने उसे टोस्ट का एक टुकड़ा पेश किया हो।

यह बात उन्हें भी इतनी उदासीन लगी कि उन्होंने आगे कहा:

'यह वाकई बहुत अच्छा होगा। एक-दूसरे को जानने का यह एक अच्छा तरीका है।'

हरेश कुछ और कहने ही वाला था, लेकिन फिर उसने अपना इरादा बदल दिया।

‘तो फिर अलविदा,’ उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा। उन्होंने इंग्लैंड में कुछ फ्रेंच भाषा के पाठ पढ़े थे।

‘अलविदा,’ लता ने हंसते हुए जवाब दिया।

‘तुम क्यों हंस रहे हो?’ हरेश ने पूछा। ‘क्या तुम मुझ पर हंस रहे थे?’

‘हां,’ लता ने ईमानदारी से कहा। ‘मैं थी। धन्यवाद।’

'किसलिए?' हरेश ने पूछा।

‘बहुत ही आनंददायक दिन था।’ उसने एक बार फिर उसके सह-प्रतिभागी के जूतों पर नज़र डाली। ‘मैं इसे कभी नहीं भूलूंगी।’

'मैं भी नहीं,' हरेश ने कहा। फिर उसने कहने के लिए कई बातें सोचीं, लेकिन हर एक को नकार दिया।

लता ने कहा, 'तुम्हें कम शब्दों में अलविदा कहना सीखना होगा।'

'क्या आपके पास मेरे लिए कोई और सलाह है?' हरेश ने पूछा।

हां, लता ने सोचा; कम से कम सात टुकड़े। उसने ज़ोर से कहा: 'हां, मैं करती हूं। बाईं ओर रहो।'

स्नेहपूर्ण सादगी के लिए आभारी होकर, हरेश ने सिर हिलाया; और उसका तांगा सिमरन की बहन के घर की ओर धीरे-धीरे चल पड़ा।

9.14

कानपुर की यात्रा के बाद लता और श्रीमती रूपा मेहरा दोनों इतनी थक गई थीं कि दोपहर के भोजन के तुरंत बाद ही सो गईं। दोनों के अपने-अपने कमरे थे, और लता को एकांत के ये दुर्लभ पल बहुत अच्छे लगे। वह जानती थी कि जैसे ही वे दोनों अकेली होंगी, उनकी माँ उनसे हरेश के बारे में पूछना शुरू कर देंगी।

सोने से पहले उसकी मां उसके कमरे में आई। कमरे एक लंबे गलियारे के दोनों ओर कतारों में बने हुए थे—जैसे किसी होटल में होते हैं। दोपहर का समय काफी गर्म था। श्रीमती रूपा मेहरा के पास 4711 ईओ डे कोलोन

की बोतल थी, जो उनके बैग में हमेशा रहती थी। उन्होंने अपने गुलाब की कढ़ाई वाले रूमाल के एक कोने को इससे भिगोया और स्नेह से लता के सिर पर थपथपाया।

मैंने सोचा कि सोने से पहले मैं अपनी प्यारी बेटी से कुछ शब्द कह लूँ।

लता प्रश्न का इंतजार कर रही थी।

'तो, लता?'

'तो माँ?' लता मुस्कुराई। अब जब यह एक आशंका नहीं बल्कि हकीकत थी, तो सवाल इतना मुश्किल नहीं था।

'क्या आपको नहीं लगता कि वह उपयुक्त है?' श्रीमती रूपा मेहरा की आवाज से यह स्पष्ट था कि हरेश को अस्वीकार करने से उन्हें बहुत दुख होगा।

'माँ, मैं उससे सिर्फ चौबीस घंटे पहले ही मिली हूँ!'

छब्बीस।

'मैं उसके बारे में वास्तव में क्या जानती हूँ, माँ?' लता ने कहा। 'मान लो —यह नकारात्मक नहीं है: वह ठीक-ठाक है। मुझे उसे और बेहतर तरीके से जानना होगा।'

यह आखिरी वाक्य अस्पष्ट होने के कारण, श्रीमती रूपा मेहरा को तत्काल स्पष्टीकरण चाहिए था। लता ने मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा:

मैं इसे इस तरह समझाता हूँ। उसने अस्वीकार नहीं किया है। वह कहता है कि वह मुझे पत्र लिखना चाहता है। देखते हैं कि वह अपने बारे में क्या कहता है।

उसकी मां ने कहा, 'तुम बहुत नखरे वाली और कृतघ्न लड़की हो। तुम हमेशा गलत लोगों के बारे में सोचती हो।'

लता ने कहा:

'हां मां, आप बिल्कुल सही कह रही हैं। मैं बहुत नखरे वाली और बहुत

कृतघ्न हूं, लेकिन इस समय मुझे बहुत नींद भी आ रही है।'
'लो। तुम इसे अपने पास रखो।' और उसकी माँ उसे अकेला छोड़कर चली गई।
लता को लगभग तुरंत ही नींद आ गई। कलकत्ता के सनी पार्क स्थित घर, भीषण गर्मी में कानपुर की लंबी यात्रा, शादी के लायक लड़के के सामने प्रदर्शित होने का तनाव, चमड़ा कारखाना, हरेश के प्रति उसकी पसंद-नापसंद का तनाव, कानपुर से लखनऊ तक की यात्रा और कबीर के बार-बार आने वाले अनचाहे विचार - इन सबने उसे थका दिया था। उसे अच्छी नींद आई। जब वह उठी तो चार बज चुके थे और चाय का समय हो गया था। उसने चेहरा धोया, कपड़े बदले और ड्राइंग रूम में चली गई।
उनकी मां, श्री सहगल, श्रीमती सहगल और उनके दो बच्चे वहां चाय और समोसे खा रहे थे। श्रीमती रूपा मेहरा हमेशा की तरह अपने परिचितों के विशाल नेटवर्क से जानकारी ले रही थीं। हालांकि श्रीमती सहगल उनकी चचेरी बहन थीं, लेकिन वे एक-दूसरे को बहनों की तरह मानती थीं: रूपा की मां की फ्लू महामारी में मृत्यु के बाद उन्होंने अपना बचपन काफी हद तक साथ बिताया था।
श्रीमती सहगल की अपने पति को प्रसन्न करने की चाहत हास्यास्पद, या शायद दयनीय थी। उनकी निगाहें लगातार उनके पति का पीछा करती रहती थीं। 'क्या मैं वह अखबार ले आऊं?' 'क्या आप एक और कप लेंगे?' 'क्या आप चाहते हैं कि मैं फोटो एल्बम ले आऊं?' कमरे में किसी भी वस्तु पर उनकी नजर पड़ते ही, श्रीमती सहगल उनकी इच्छा को भांप लेतीं और उसे पूरा करने के लिए तुरंत जुट जातीं। हालांकि, वे उनका अपमान नहीं करते थे; वे संयमित लहजे में उनकी प्रशंसा करते थे। कभी-कभी वे अपनी छोटी, भूरी-सफेद दाढ़ी सहलाते हुए कहते, 'देखो मेरी किस्मत? माया जैसी पत्नी पाकर मुझे कुछ नहीं करना पड़ता! मैं उनकी

पूजा देवी की तरह करता हूं।' उनकी पत्नी प्रसन्नता से इतरातीं।
और सचमुच, दीवार पर या इधर-उधर छोटे-छोटे फ्रेमों में उनकी पत्नी की कई तस्वीरें लगी हुई थीं। वह शारीरिक रूप से आकर्षक महिला थीं (उनकी बेटी भी) और श्री सहगल शौकिया फोटोग्राफर थे। उन्होंने लता को एक-दो तस्वीरें दिखाईं; लता को लगा कि पोज़ थोड़े से—वह शब्द सोचने की कोशिश कर रही थी—फिल्मी सितारों जैसे थे। किरण की भी कुछ तस्वीरें थीं, जो लता की उम्र की थी और लखनऊ विश्वविद्यालय में पढ़ रही थी। किरण लंबी, गोरी और काफी आकर्षक थी; लेकिन उसकी चाल-ढाल में अचानक बदलाव आ जाता था और उसकी आँखें बेचैन रहती थीं।
श्री सहगल ने लता से कहा, 'अब तुम जीवन की यात्रा पर निकल पड़ोगी।' वह थोड़ा आगे झुके और थोड़ी सी चाय गिर गई। उनकी पत्नी तुरंत उसे साफ करने के लिए दौड़ी।
'मौसाजी, मैं टिकट चेक किए बिना कोई यात्रा शुरू नहीं करना चाहती,' लता ने उनकी बात को हल्के में लेने की कोशिश करते हुए कहा, लेकिन इस बात से नाराज़ थी कि उसकी माँ ने उनसे इस तरह के मामलों पर बात करने की हिम्मत की।
श्रीमती रूपा मेहरा ने हरेश का ज़िक्र करना अहंकारपूर्ण नहीं, बल्कि विचारशीलतापूर्ण समझा। श्री और श्रीमती सहगल को बस इतना बताया जा रहा था कि लता के लिए उन्हें लखनऊ के खत्री समुदाय में छानबीन नहीं करनी पड़ेगी—जो अन्यथा निश्चित रूप से आवश्यक होता।
इस समय लता से कुछ साल छोटा, मंदबुद्धि पुत्र पुष्कर अपने आप में गुनगुनाने लगा और थोड़ा-थोड़ा आगे-पीछे झूलने लगा।
‘क्या बात है बेटा?’ उसके पिता ने नरमी से पूछा।
पुष्कर ने कहा, 'मैं लता दीदी से शादी करना चाहता हूं।'

श्री सहगल ने श्रीमती रूपा मेहरा की ओर क्षमा मांगते हुए कंधे उचकाए। उन्होंने कहा, 'वह कभी-कभी ऐसे ही हो जाते हैं। चलो पुष्कर, हम तुम्हारे मेकानो सेट से कुछ बनाते हैं।' वे कमरे से बाहर चले गए।

लता को अचानक एक अजीब सी बेचैनी महसूस हुई, जो लखनऊ की पिछली यात्रा की याद से जुड़ी हुई प्रतीत हुई। लेकिन यह इतनी अस्पष्ट थी कि वह यह याद नहीं कर पा रही थी कि इसका कारण क्या था। उसे लगा कि उसे अकेले रहने की ज़रूरत है, घर से बाहर निकलने की, टहलने जाने की।

उन्होंने कहा, 'मैं पुरानी ब्रिटिश रेजीडेंसी तक टहलने जाऊंगी। अब वहां मौसम ठंडा है और यह कुछ ही मिनटों की दूरी पर है।'

'लेकिन तुमने अभी तक एक भी समोसा नहीं खाया है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।

‘माँ, मुझे भूख नहीं है। लेकिन मैं टहलने जाना चाहता हूँ।’

‘तुम अकेले नहीं जा सकती,’ उसकी माँ ने दृढ़ता से कहा। ‘यह ब्रह्मपुर नहीं है। मौसाजी के लौटने तक प्रतीक्षा करो, शायद वह तुम्हारे साथ चले जाएँ।’

किरण ने झट से कहा, 'मैं लता के साथ जाऊंगी।'

‘किरण, यह तो बहुत अच्छी बात है,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। ‘लेकिन ज्यादा देर मत लगाओ। जब लड़कियां एक साथ मिलती हैं तो घंटों बातें करती रहती हैं और समय का पता ही नहीं चलता।’

किरण ने कहा, 'हम अंधेरा होने से पहले वापस आ जाएंगे। चिंता मत करो, रूपा मौसी।'

9.15

पूर्वी आकाश में कुछ बादल थे, हल्के भूरे रंग के, लेकिन बारिश लाने वाले नहीं थे। लखनऊ मुख्य न्यायालय (अब इलाहाबाद उच्च न्यायालय की

लखनऊ बेंच) की सुंदर लाल ईंटों वाली इमारत के पास से गुजरने वाली रेजिडेंसी की सड़क पर भीड़ नहीं थी। यहीं श्री सहगल वकालत करते थे। किरण और लता लगभग आपस में बात ही नहीं करती थीं, और यह बात लता को अच्छी लगती थी।

हालांकि लता इससे पहले दो बार लखनऊ जा चुकी थीं—एक बार जब वह नौ साल की थीं, अपने पिता के जीवित रहते हुए, और दूसरी बार जब वह लगभग चौदह साल की थीं, उनके निधन के बाद—और दोनों बार सहगल परिवार के साथ ही रुकी थीं, लेकिन उन्होंने कभी भी खंडहर हो चुके रेजिडेंसी का दौरा नहीं किया था। दरअसल, यह कैसरबाग के पास सहगल के घर से मात्र पंद्रह मिनट की पैदल दूरी पर था। अपनी पिछली दो यात्राओं के बारे में उन्हें लखनऊ के ऐतिहासिक स्मारक नहीं, बल्कि श्रीमती सहगल द्वारा परोसा गया ताजा, घर का बना सफेद मक्खन याद था; और किसी कारणवश उन्हें नाश्ते में अंगूरों का पूरा गुच्छा दिया जाना भी याद था। उन्हें यह भी याद था कि पहली यात्रा में किरण कितनी मिलनसार थीं, और दूसरी यात्रा में कितनी अमित्र—यहाँ तक कि नाराज़—थीं। तब तक यह स्पष्ट हो चुका था कि उनके भाई के साथ सब कुछ ठीक नहीं था, और शायद वह लता के दो भाइयों, शोरगुल करने वाले, स्नेही और सामान्य स्वभाव से ईर्ष्या करती थीं। लेकिन लता ने सोचा, तुम्हारे पास तुम्हारे पिता हैं, और मैंने अपने पिता को खो दिया है। तुम मुझे क्यों नापसंद करती हो? लता खुश थीं कि किरण आखिरकार दोस्ती को फिर से कायम करने की कोशिश कर रही थीं; उसकी बस यही इच्छा थी कि काश वह आज बेहतर स्थिति में होती ताकि बदले में वैसा ही व्यवहार कर पाती।

आज उसका किरण या किसी और से बात करने का बिल्कुल मन नहीं था—खासकर श्रीमती रूपा मेहरा से। वह अकेले रहना चाहती थी—अपने

जीवन के बारे में, और उसमें जो कुछ घट रहा था, उसके बारे में सोचना चाहती थी। या शायद सोचना भी नहीं चाहती थी—बल्कि किसी ऐसी चीज़ में खो जाना चाहती थी जो इतनी दूर, इतनी पुरानी और इतनी भव्य हो कि उसके सुख-दुख का दायरा सीमित हो जाए। उस दिन पार्क स्ट्रीट कब्रिस्तान में मूसलाधार बारिश में उसने कुछ ऐसा ही अनुभव किया था। वह उसी दूरी के भाव को फिर से महसूस करने की कोशिश कर रही थी।
पहाड़ी पर स्थित रेजिडेंसी के विशाल, खंडित, गोलियों के निशान से ग्रस्त अवशेष उनके ऊपर खड़े थे। पहाड़ी की तलहटी में बारिश न होने के कारण घास भूरी पड़ गई थी, जबकि ऊपर, जहाँ पानी दिया गया था, वहाँ घास हरी थी। चारों ओर, टूटी-फूटी इमारतों के बीच, पेड़ और झाड़ियाँ थीं —पीपल, जामुन, नीम, आम, और कहीं-कहीं कम से कम चार विशाल बरगद के पेड़। खुरदरी और चिकनी छाल वाले ताड़ के पेड़ों से मैनाएँ दहाड़ रही थीं, मैजेंटा रंग के बोगनविलिया के फूल एक लॉन पर ज़ोरदार बौछार की तरह गिर रहे थे। गिरगिट और गिलहरियाँ खंडहरों, स्तंभों और तोपों के बीच घूम रही थीं। जहाँ-जहाँ मोटी दीवारों का प्लास्टर उखड़ गया था, वहाँ इमारत की पतली, कठोर ईंटें दिखाई दे रही थीं। उदास एकड़ में पट्टियाँ और कब्र के पत्थर बिखरे पड़े थे। इन सबके केंद्र में, मुख्य बची हुई इमारत में, एक संग्रहालय था।
लता ने पूछा, 'क्या हम पहले संग्रहालय चलें? वह शायद जल्दी बंद हो जाए।'
इस सवाल ने किरण को अचानक घबराहट में डाल दिया। 'मुझे नहीं पता —मुझे—मुझे नहीं पता। अब हम कुछ भी कर सकते हैं,' उसने कहा। 'कोई कहने वाला नहीं है।'
‘तो चलिए ऐसा ही करते हैं,’ लता ने कहा। वे अंदर चले गए।
किरण इतनी घबराई हुई थी कि उसने अपने नाखून नहीं, बल्कि अंगूठे के

निचले हिस्से की त्वचा को काट लिया। लता ने हैरानी से उसकी ओर देखा।

‘किरण, क्या तुम ठीक हो?’ उसने पूछा। ‘क्या हम वापस चलें?’

‘नहीं—नहीं,’ किरण चिल्लाई। ‘उसे मत पढ़ो—’ उसने कहा।

किरण जिस पट्टिका की ओर इशारा कर रही थी, लता ने तुरंत उसे पढ़ लिया।

सुज़ाना पामर
इस कमरे में हत्या कर दी गई
तोप के गोले से
1 जुलाई 1857
अपने उन्नीसवें वर्ष में

लता हंस पड़ी। 'सच में, किरण!' उसने कहा।

किरण ने कहा, ‘उसके पिता कहाँ थे? वो कहाँ थे? वो उसकी रक्षा क्यों नहीं कर सके?’

लता ने आह भरी। अब उसे पछतावा हो रहा था कि काश वह यहाँ अकेली ही आई होती, लेकिन उसकी माँ की इस ज़िद को नज़रअंदाज़ करना नामुमकिन था कि वह किसी अनजान शहर में अकेले कहीं न जाए।

किरण को लता की सहानुभूति से परेशानी हो रही थी, इसलिए उसने उसे नज़रअंदाज़ करने की कोशिश की और लखनऊ की घेराबंदी के दौरान रेजीडेंसी और आसपास के इलाके के बारीक ढंग से बनाए गए मॉडल में दिलचस्पी दिखाई। एक दीवार पर युद्ध की, तोपखानों पर हमले की, बिलियर्ड रूम की और अंग्रेज़ जासूस के भेष बदलकर देशी सेना की घेराबंदी पार करने की धुंधली तस्वीरें टंगी थीं।

वहाँ लता के पसंदीदा कवियों में से एक, टेनीसन की एक कविता भी थी। हालाँकि, उन्होंने यह विशेष कविता, 'लखनऊ की रक्षा', कभी नहीं पढ़ी

थी। इसमें सात छंद थे, और उन्होंने पहले तो रुचि से, फिर बढ़ती हुई घृणा के साथ उन्हें पढ़ा। उन्होंने सोचा कि अमित ने इनके बारे में क्या सोचा होगा। प्रत्येक छंद इस पंक्ति के साथ समाप्त होता था:

और सबसे ऊँची छत पर हमारा इंग्लैंड का झंडा हमेशा लहराता रहा!

कभी-कभी 'और' की जगह 'लेकिन' या 'कि' का प्रयोग किया जाता था। लता को मुश्किल से ही विश्वास हो रहा था कि यह 'मॉड' और 'लोटस-ईटर्स' के कवि हैं। उसने सोचा कि इससे अधिक नस्लीय रूप से अभिमानी होना शायद ही संभव था।

हम मुट्ठी भर लोग ही थे, लेकिन दिल और शरीर से हम अंग्रेज थे।

आदेश देने, आज्ञा मानने और सहन करने की नस्ल की ताकत से परिपूर्ण...

अब इसे बोलने दो, और तुम गोली चलाओ, और वह अंधकारमय अग्रदूत अब और नहीं रहेगा।

हैवलॉक के नेक पैदल सैनिकों के निर्मल श्वेत चेहरों को आशीर्वाद देते हुए...

और इतने पर और आगे।

उसने इस तथ्य पर ध्यान नहीं दिया कि यदि विजय का क्रम उल्टा होता, तो इंग्लैंड की हरी-भरी और रमणीय भूमि पर शायद फारसी में, संभवतः संस्कृत में, उतनी ही अवर्णनीय कविताएँ बिखरी होतीं। उसे सविता के ससुर पर बहुत गर्व हुआ, जिन्होंने अंग्रेजों को इस देश से बाहर निकालने में अपनी भूमिका निभाई थी, और वह क्षण भर के लिए सोफिया कॉन्वेंट और एम्मा के बारे में सब कुछ भूल गई।

गुस्से में लता किरण को भूल ही गई थी, जिसे उसने अब बेचारी सुज़ाना पामर की याद में बनी पट्टिका को घूरते हुए पाया। किरण का शरीर सिसकियों से कांप रहा था और लोग उसे देख रहे थे। लता ने उसका

कंधा थाम लिया, पर उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसने उसे इमारत से बाहर निकाला और एक बेंच पर बैठा दिया। अंधेरा हो रहा था और उन्हें जल्द ही घर जाना था।

किरण दिखने में अपनी माँ जैसी थी, हालाँकि उसमें मूर्खता का कोई अंश नहीं था। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे, पर वह कुछ बोल नहीं पा रही थी। लता ने बड़ी मुश्किल से यह जानने की कोशिश की कि किरण किस बात से परेशान है। क्या लगभग एक सदी पहले उसकी उम्र की किसी लड़की की मृत्यु हुई थी? क्या रेजिडेंसी का पूरा माहौल निराशा से भरा हुआ था? क्या घर में कोई गड़बड़ थी? उनके पास ही घास पर एक लड़का खड़ा था, जो नारंगी और बैंगनी रंग की पतंग उड़ा रहा था। कभी-कभी वह उन्हें घूरता था।

दो बार लता को लगा कि किरण कुछ राज़ खोलने वाली है या कम से कम माफी मांगने वाली है। लेकिन जब कुछ भी नहीं हुआ, तो लता ने सुझाव दिया:

'हमें अब घर चलना चाहिए, बहुत देर हो रही है।'

किरण ने आह भरी, उठी और लता के साथ पहाड़ी से नीचे उतर गई। लता राग मारवा की एक पंक्ति गुनगुनाने लगी, जो राग उसे बेहद प्रिय था। जब तक वे घर पहुँचे, किरण कुछ ठीक हो चुकी थी। घर पहुँचते ही उसने लता से पूछा:

‘आप कल शाम की ट्रेन से जा रहे हैं, है ना?’

'हाँ।'

‘काश मैं ब्रह्मपुर में आपसे मिलने आ पाती। लेकिन मैंने सुना है कि सविता का घर बहुत छोटा है, मेरे पिता के आलीशान होटल जैसा नहीं।’ उसने ये आखिरी शब्द कड़वाहट से कहे। ‘किरण, तुम्हें ज़रूर आना चाहिए। तुम आराम से हमारे साथ एक हफ़्ते या उससे ज़्यादा रह सकती

हो। तुम्हारा कार्यकाल हमारे कार्यकाल के पंद्रह दिन बाद शुरू होता है। और हम एक-दूसरे को बेहतर तरीके से जान लेंगे।'

किरण की चुप्पी फिर से लगभग अपराधबोध से भर गई। उसने लता की बातों का ज़ोर से जवाब तक नहीं दिया।

लता अपनी माँ को दोबारा देखकर राहत महसूस कर रही थी। श्रीमती रूपा मेहरा ने उन्हें इतनी देर से लौटने पर खूब खरी-खोटी सुनाई। लता को उनकी जानी-पहचानी डांट संगीत जैसी लगी।

'आपको मुझे बताना होगा—' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहना शुरू किया।

'माँ, पहले हम मुख्य न्यायालय के पास से सड़क पर चले, और फिर हम रेजीडेंसी पहुँचे। रेजीडेंसी के नीचे एक स्मारक था जो उन अधिकारियों और सिपाहियों की याद में बनाया गया था जो अंग्रेजों के प्रति वफादार रहे थे। तीन गिलहरियाँ उसके आधार पर बैठी थीं—'

'लता!'

'हां मां?'

'तुम बहुत बुरा बर्ताव कर रहे हो। मैं बस इतना जानना चाहता था कि—'

'सब कुछ।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने भौंहें चढ़ाईं, फिर अपनी चचेरी बहन की ओर मुड़ीं।

'क्या आपको किरण के साथ भी यही परेशानी होती है?' उसने पूछा।

'अरे नहीं,' श्रीमती सहगल ने कहा। 'किरण बहुत अच्छी लड़की है। ये सब सहगल साहब की वजह से है। सहगल साहब हमेशा उससे बात करते हैं और उसे सलाह देते हैं। उनके जैसा पिता हो ही नहीं सकता। यहाँ तक कि जब ग्राहक इंतज़ार कर रहे होते हैं तब भी... लेकिन लता भी अच्छी लड़की है।'

'नहीं,' लता ने हंसते हुए कहा। 'दुर्भाग्य से मैं एक बुरी लड़की हूँ। माँ, अगर मेरी शादी हो गई और मैं कहीं और चली गई तो आप क्या करेंगी?

आप किसे-किसे नाराज़ कर पाएंगी?'
'मैं तुम्हें फिर भी डांट दूंगी,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।
इसी बीच श्री सहगल अंदर आए और बातचीत का आखिरी हिस्सा सुनकर शांत, स्नेहपूर्ण स्वर में बोले: 'लता, तुम बुरी लड़की नहीं हो, मैं जानता हूँ। मैंने तुम्हारे नतीजों के बारे में सब कुछ सुना है और हमें तुम पर बहुत गर्व है। जल्द ही हमें भविष्य के बारे में विस्तार से बात करनी चाहिए।'
किरण खड़ी हो गई। उसने कहा, 'मैं पुष्कर से बात करने जा रही हूं।'
श्री सहगल ने उसी शांत स्वर में कहा, 'बैठ जाओ।'
किरण, जिसका चेहरा पीला पड़ गया था, बैठ गई।
श्री सहगल की निगाहें कमरे में इधर-उधर घूम रही थीं।
'क्या मैं ग्रामोफोन चला दूं?' उसकी पत्नी ने पूछा।
श्री सहगल ने लता से पूछा, 'क्या आपकी कोई हॉबी है?'
'ओह, जी हाँ,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। 'उसने शास्त्रीय संगीत बहुत ही सुंदर ढंग से गाना शुरू कर दिया है। और वह सचमुच किताबों की शौकीन है।'
श्री सहगल ने कहा, 'मुझे फोटोग्राफी पसंद है। जब मैं इंग्लैंड में कानून की पढ़ाई कर रहा था, तब मुझे इसमें रुचि होने लगी।'
'एल्बम?' श्रीमती सहगल ने उनकी सेवा करने की संभावना से उत्साहित होकर पूछा।
'हाँ।'
उसने उन्हें उसके सामने मेज पर रख दिया। श्री सहगल ने उन्हें अपनी अंग्रेज़ मकान मालकिनों और उनकी बेटियों की तस्वीरें दिखानी शुरू कीं, फिर वहाँ की कुछ अन्य लड़कियों की तस्वीरें, उसके बाद अपनी पत्नी और बेटी की कई तस्वीरें दिखाईं, जिनमें से कुछ ऐसी थीं जिन्हें लता को पसंद नहीं आया। एक तस्वीर में, श्रीमती सहगल आगे की ओर झुकी हुई

थीं, और उनका एक स्तन लगभग उनके ब्लाउज से बाहर निकल रहा था। श्री सहगल ने बड़े ही सधे हुए और संयमित ढंग से फोटोग्राफी की कला, रचना और एक्सपोज़र, ग्रेन और ग्लॉस, कॉन्ट्रास्ट और डेप्थ ऑफ़ फील्ड के बारे में समझाना शुरू किया।

लता ने अपनी माँ की ओर देखा। श्रीमती रूपा मेहरा तस्वीरों को हैरानी और उत्सुकता से देख रही थीं। श्रीमती सहगल का चेहरा गर्व से लाल था। किरण एकदम अकड़ी हुई बैठी थी, मानो बीमार पड़ गई हो। वह फिर से अपने अंगूठे के तलवे को उसी अजीब और परेशान करने वाली मुद्रा में काट रही थी। जब उसने लता की निगाहें खुद पर देखीं, तो उसने शर्म और घृणा के मिले-जुले भाव से लता की ओर देखा।

रात के खाने के बाद लता सीधे अपने कमरे में चली गई। उसे बहुत बेचैनी हो रही थी और वह खुश थी कि वे अगले दिन लखनऊ छोड़ रहे थे। दूसरी ओर, उसकी माँ प्रस्थान को स्थगित करने के बारे में सोच रही थी, क्योंकि श्रीमान और श्रीमती सहगल दोनों ही चाहते थे कि वे कुछ दिनों के लिए वहीं रुकें।

'यह क्या है?' श्रीमती सहगल ने रात के खाने पर कहा था। 'आप एक दिन के लिए आती हैं, और फिर एक साल के लिए गायब हो जाती हैं। क्या एक नन को ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए?'

'मैं यहाँ रुकना चाहती हूँ, माया,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। 'लेकिन लता का कार्यकाल बहुत जल्द शुरू हो रहा है। अन्यथा हमें आपके और सहगल साहब के साथ रुककर बहुत खुशी होती। अगली बार हम ज़्यादा दिन रुकेंगे।'

पुष्कर रात के खाने के दौरान चुप रहा। वह अपने पिता की मदद से ही खाना खा पाया। खाना खत्म होते-होते श्री सहगल काफी थके हुए लग रहे थे। फिर उन्होंने पुष्कर को सुला दिया।

ड्राइंग रूम में लौटकर उन्होंने सबको शुभ रात्रि कहा और तुरंत लंबे गलियारे के आखिरी छोर पर स्थित अपने कमरे में चले गए। उनकी पत्नी का कमरा उनके कमरे के ठीक सामने था। फिर अतिथि कक्ष थे, और अंत में गलियारे के आखिरी छोर पर पुष्कर और किरण के कमरे थे। चूंकि पुष्कर को एक विशाल ग्रैंडफादर क्लॉक (जो उनके परिवार की पुश्तैनी धरोहर थी) बहुत पसंद थी, इसलिए श्री सहगल ने उसे उनके कमरे के ठीक बाहर लगा दिया था। कभी-कभी पुष्कर उसकी घंटियों की आवाज़ गुनगुनाते थे। उन्होंने उसे खुद चाबी भरना भी सीख लिया था।

9.16

लता कुछ देर तक जागती रही। गर्मी का मौसम चरम पर था, इसलिए ओढ़ने के लिए सिर्फ एक चादर ही थी। पंखा चल रहा था, लेकिन मच्छरदानी की अभी कोई ज़रूरत नहीं थी। पंद्रह मिनट पर बजने वाली घंटियाँ धीमी थीं, लेकिन जब घड़ी में ग्यारह बजे, यानी आधी रात हुई, तो उनकी आवाज़ गलियारे में गूंज उठी। लता ने अपने बिस्तर के पास की हल्की रोशनी में थोड़ा पढ़ा, लेकिन पिछले दो दिनों की घटनाएँ उसके और पन्नों के बीच तैर रही थीं। अंत में उसने बत्ती बुझा दी और आँखें बंद कर लीं, और आधी नींद में कबीर का सपना देखा।

कालीन बिछे गलियारे में धीमी कदमों की आहट सुनाई दी। जब वे उसके दरवाजे के बाहर रुके, तो वह चौंककर उठ बैठी। ये उसकी माँ के कदमों की आहट नहीं थी। दरवाजा खुला और उसने गलियारे की धुंधली रोशनी में एक आदमी की परछाई देखी। वह श्री सहगल थे।

लता ने बत्ती जला दी। श्री सहगल हल्के से पलकें झपकाते, सिर हिलाते और बगल में रखे लैंप की हल्की रोशनी से भी अपनी आँखों को हाथ से बचाते हुए खड़े थे। उन्होंने भूरे रंग का गाउन पहना हुआ था, जो भूरे रंग की रस्सी से बंधा हुआ था और उस पर झालरें लगी थीं। वे बहुत थके हुए

लग रहे थे।

लता ने हैरानी और अचरज से उनकी ओर देखा। 'क्या आप ठीक हैं, मौसाजी?' उसने पूछा। 'क्या आप बीमार हैं?'

नहीं, बीमार नहीं हूँ। लेकिन मैं देर तक काम कर रही थी। इसीलिए—और मैंने देखा कि तुम्हारी लाइट जल रही थी। लेकिन फिर तुमने उसे बंद कर दिया। तुम एक बुद्धिमान लड़की हो—बहुत पढ़ती हो।

उन्होंने कमरे में चारों ओर देखा और अपनी छोटी दाढ़ी सहलाई। वे काफी हट्टे-कट्टे आदमी थे। सोच-विचार भरे स्वर में उन्होंने कहा, "यहाँ कोई कुर्सी नहीं है। मुझे माया से इस बारे में बात करनी होगी।" वे पलंग के किनारे बैठ गए। "सब ठीक है ना?" उन्होंने लता से पूछा। "सब ठीक है ना? तकिए और बाकी सब? मुझे याद है जब तुम छोटी बच्ची थीं, तुम्हें अंगूर बहुत पसंद थे। तुम बहुत छोटी थीं। और अभी तो अंगूरों का मौसम है। पुष्कर को भी अंगूर पसंद हैं। बेचारा लड़का।"

लता ने खुद को बेहतर ढंग से ढकने के लिए चादर को और करीब खींचने की कोशिश की, लेकिन श्री सहगल उसके एक कोने पर बैठे थे।

'पुष्कर के लिए आप बहुत अच्छे हैं, मौसाजी,' उसने कहा, यह सोचते हुए कि वह क्या कर सकती है या क्या बातचीत कर सकती है। वह अपने दिल की धड़कन सुन और महसूस कर सकती थी।

श्री सहगल ने शांत स्वर में कहा, अपने ड्रेसिंग गाउन के कमरबंद के लटकन को हाथों से पकड़े हुए, "देखिए, यहाँ रहकर उसके लिए कोई उम्मीद नहीं है। इंग्लैंड में विशेष स्कूल हैं, विशेष..." वे लता के चेहरे और गर्दन को देखते हुए रुके। "वह लड़का, हरेश—क्या वह इंग्लैंड में था? शायद उसके पास भी अपनी मकान मालकिनों की तस्वीरें हों?"

श्री सहगल की उत्तेजक तस्वीरों के बारे में सोचते हुए और अपने बढ़ते डर को काबू करने की कोशिश करते हुए लता ने कहा, 'मुझे नहीं पता।

मौसाजी, मुझे बहुत नींद आ रही है, मुझे कल जाना है—'
लेकिन आप तो शाम को जा रहे हैं। हमें अभी बात करनी ही होगी। देखिए, लखनऊ में बात करने वाला कोई नहीं है। कलकत्ता में—या फिर दिल्ली में भी—लेकिन मैं लखनऊ नहीं छोड़ सकता। मेरा पेशा, आप समझ रहे हैं ना?
'हां,' लता ने कहा।
'किरण के लिए भी ये अच्छा नहीं होगा। वो पहले से ही बुरे लड़कों से मिलती है, बुरी किताबें पढ़ती है। मुझे ये आदतें छोड़नी होंगी। मेरी पत्नी तो संत है, वो ये सब नहीं देखती।' वो लता को नरमी से समझा रहे थे और लता बस बेमन से सिर हिला रही थी।
'मेरी पत्नी संत हैं,' उन्होंने दोहराया। 'हर सुबह एक घंटे पूजा करती हैं। मेरे लिए कुछ भी कर सकती हैं। मैं जो भी खाना चाहता हूँ, वो अपने हाथों से बनाती हैं। वो सीता जैसी हैं—एक आदर्श पत्नी। अगर मैं उनसे कहूँ कि वो मेरे लिए नग्न होकर नाचें, तो वो नाचेंगी। उन्हें अपने लिए कुछ नहीं चाहिए। वो बस यही चाहती हैं कि किरण की शादी हो जाए। लेकिन मुझे लगता है कि किरण को अपनी पढ़ाई पूरी करनी चाहिए—तब तक घर पर रहने में क्या बुराई है? एक बार एक लड़का घर आया—सचमुच घर आया। मैंने उसे बाहर जाने को कहा—बाहर जाओ!' श्री सहगल अब थके हुए नहीं बल्कि गुस्से से भरे हुए लग रहे थे, हालाँकि उनकी आवाज़ अभी भी धीमी थी। फिर वो शांत हुए और समझाने के लहजे में बोले: 'लेकिन किरण से कौन शादी करेगा, जब कभी-कभी, आप जानते हैं, पुष्कर इतनी डरावनी आवाज़ें निकालता है। कभी-कभी मुझे उसका गुस्सा महसूस होता है। आपको बुरा तो नहीं लगेगा अगर मैं इस तरह आपसे अपने मन की बात कहूँ? किरण आपकी अच्छी दोस्त है, मुझे पता है। आपको भी मुझे अपने बारे में, अपनी योजनाओं के बारे में बताना

चाहिए...' उन्होंने परखने के अंदाज़ में सूंघा। 'यह वही इत्र है जो तुम्हारी माँ इस्तेमाल करती है। किरण कभी इत्र नहीं लगाती। प्राकृतिक चीजें ही सबसे अच्छी होती हैं।'

लता उसे घूरती रही। उसका मुंह बिल्कुल सूख गया था।

श्री सहगल ने आगे कहा, 'लेकिन जब भी मैं दिल्ली जाता हूँ, उनके लिए साड़ियाँ खरीदता हूँ। युद्ध के दौरान, समाज की महिलाएँ चौड़े बॉर्डर वाली साड़ियाँ पहनती थीं; यहाँ तक कि ब्रोकेड और टिशू भी। विधवा होने से पहले मैंने एक बार आपकी माँ को उनकी शादी की टिशू साड़ी पहने देखा था। लेकिन अब वो सब खत्म हो गया है। कढ़ाई को बहुत भद्दा माना जाता है।'

बाद में उन्होंने यह भी जोड़ा:

'क्या मैं आपके लिए एक साड़ी खरीद लूँ?'

'नहीं—नहीं—' लता ने कहा।

'क्या आपको नहीं लगता कि जॉर्जेट शिफॉन से बेहतर ड्रेप होता है?' लता ने कोई जवाब नहीं दिया।

'आजकल अजंता पल्लू का चलन बहुत बढ़ गया है। इनके डिज़ाइन इतने कल्पनाशील हैं—मैंने एक पर पैस्ले डिज़ाइन देखा, दूसरे पर कमल का डिज़ाइन—' श्री सहगल मुस्कुराए। 'और अब इन छोटी चोलियों में महिलाएं पीछे से भी अपनी कमर दिखा रही हैं। क्या आपको लगता है कि आप कोई बुरी लड़की हैं?'

'एक बुरी लड़की?' लता ने दोहराया।

'रात के खाने पर तुमने कहा था कि तुम एक बुरी लड़की हो,' उसके चाचा ने बड़े ही विनम्र और संयमित लहजे में समझाया। 'मुझे नहीं लगता कि तुम हो। मुझे लगता है कि तुम लिपस्टिक लगाने वाली लड़की हो। क्या तुम सच में लिपस्टिक लगाने वाली लड़की हो?'

लता को भयानक डर के साथ याद आया कि पाँच साल पहले जब वे उसकी कार में साथ बैठे थे, तब उसने उससे यही सवाल पूछा था। उसने उस याद को पूरी तरह से भुला दिया था। उस समय वह लगभग चौदह साल की थी, और उसने उससे शांत भाव से, लगभग विनम्रता से पूछा था: 'क्या तुम लिपस्टिक लगाने वाली लड़की हो?'

'एक लिपस्टिक लगाने वाली लड़की?' लता ने हैरानी से पूछा था। उस समय उसका मानना था कि लिपस्टिक लगाने वाली महिलाएं, सिगरेट पीने वाली महिलाओं की तरह, साहसी और आधुनिक होती हैं और शायद समाज से परे होती हैं। 'मुझे ऐसा नहीं लगता,' उसने कहा था।

'क्या आप जानते हैं कि लिपस्टिक गर्ल क्या होती है?' श्री सहगल ने अपने चेहरे पर हल्की सी मुस्कान के साथ पूछा था।

'कोई जो लिपस्टिक लगाती हो?' लता ने कहा था।

'उसके होठों पर?' उसके चाचा ने धीरे से पूछा।

'हां, उसके होठों पर।'

'नहीं, उसके होंठों पर नहीं, उसके होंठों पर नहीं—इसे तो लिपस्टिक लगाने वाली लड़की कहते हैं।' श्री सहगल ने अपना सिर धीरे से अगल-बगल हिलाया और मुस्कुराए, मानो किसी मजाक का आनंद ले रहे हों।

किरण कार में लौट आई थी—वह कुछ खरीदने गई थी—और वे आगे बढ़ गए। लेकिन लता को लगभग अस्वस्थ महसूस हो रहा था। बाद में, उसने अपने चाचा की बात को गलत समझने के लिए खुद को दोषी ठहराया। उसने इस घटना का ज़िक्र न तो अपनी माँ से किया और न ही किसी और से, और वह इसे भूल चुकी थी। अब उसे यह बात फिर से याद आ गई और वह उन्हें घूरने लगी।

'मुझे पता है कि तुम्हें लिपस्टिक बहुत पसंद है। क्या तुम्हें लिपस्टिक चाहिए?' श्री सहगल ने बिस्तर पर आगे बढ़ते हुए कहा।

‘नहीं—’ लता चिल्लाई। ‘मैं नहीं—मौसाजी—कृपया इसे रोकें—’
'बहुत गर्मी है—मुझे यह ड्रेसिंग गाउन उतारना होगा।'
‘नहीं!’ लता चिल्लाना चाहती थी, पर खुद को रोक नहीं पाई। ‘प्लीज, मौसाजी, ऐसा मत कीजिए। मैं—मैं चिल्लाऊँगी—मेरी माँ को हल्की नींद आती है—चले जाइए—चले जाइए—माँ—माँ—’
घड़ी में एक बज गया।
श्री सहगल का मुंह खुला रह गया। वे एक पल के लिए चुप रहे। फिर उन्होंने आह भरी।
वह फिर से बहुत थका हुआ लग रहा था। उसने निराश स्वर में कहा, 'मैंने सोचा था कि तुम एक समझदार लड़की हो। क्या सोच रही हो? अगर तुम्हारा पालन-पोषण अच्छे से हुआ होता, तो तुम ऐसा व्यवहार नहीं करती।' वह उठ खड़ा हुआ। 'मुझे इस कमरे के लिए एक कुर्सी लानी होगी, हर आलीशान होटल के हर कमरे में एक कुर्सी होनी चाहिए।' वह लता के बालों को छूने ही वाला था, लेकिन शायद उसे महसूस हो गया कि वह डर से सहमी हुई है। इसके बजाय, उसने क्षमा भरे स्वर में कहा: 'मैं जानता हूँ कि दिल से तुम एक अच्छी लड़की हो। चैन से सोओ, भगवान तुम्हारा भला करे।'
‘नहीं!’ लता लगभग चिल्लाई।
जब वह अपने कमरे की ओर धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए चले गए, तो लता कांपने लगी। उसे याद आया कि उसके पिता उसे, अपनी 'छोटी बंदरिया' को, अक्सर यही कहते थे, 'अच्छी नींद लेना, भगवान तुम्हारा भला करे।' उसने बत्ती बंद की, फिर तुरंत दोबारा चालू कर दी। वह दरवाजे के पास गई, लेकिन उसे बंद करने का कोई तरीका नहीं था। आखिरकार उसने अपना सूटकेस घसीटा और दरवाजे के सहारे रख दिया। बिस्तर के पास रखे लैंप के बगल में एक जग में पानी रखा था, और उसने एक गिलास

पानी पिया। उसका गला सूख रहा था और हाथ कांप रहे थे। उसने अपना चेहरा अपनी माँ के रुमाल में छिपा लिया।

वह अपने पिता के बारे में सोच रही थी। स्कूल की छुट्टियों के दौरान, जब भी वे काम से लौटते, तो उससे चाय बनाने के लिए कहते। वह उनसे बहुत प्यार करती थी, और उनकी यादों को संजोकर रखती थी। वे एक हंसमुख इंसान थे और शाम को अपने परिवार के साथ समय बिताना पसंद करते थे। जब कलकत्ता में दिल की लंबी बीमारी के बाद उनका निधन हुआ, तब वह मसूरी के सोफिया कॉन्वेंट में थी। ननें बहुत दयालु थीं। इतना ही नहीं, उन्हें उस दिन की परीक्षा से छूट मिल गई थी। उन्होंने उन्हें कविताओं का एक संग्रह दिया था जो आज भी उनकी सबसे कीमती चीजों में से एक है। और एक नन ने कहा था, 'हमें बहुत दुख है - उनका निधन इतनी कम उम्र में हो गया।' 'नहीं,' लता ने जवाब दिया। 'वे बहुत बूढ़े थे - वे सैंतालीस साल के थे।' तब भी, यह बात उसे अविश्वसनीय लग रही थी। कुछ ही महीनों में सत्र समाप्त हो जाएगा, और वह हमेशा की तरह घर चली जाएगी। उसे रोना मुश्किल लग रहा था।

एक महीने बाद उसकी मां मसूरी आई। श्रीमती रूपा मेहरा शोक से लगभग व्याकुल थीं और अपनी बेटी को देखने के लिए भी पहले नहीं आ पाई थीं। उन्होंने सफेद वस्त्र पहने थे और उनके माथे पर टीका नहीं था। यही बात लता को सच्चाई का एहसास करा गई और वह रो पड़ी।

'वह बहुत बूढ़े थे।' फिर से उसने अपने चाचा की आवाज सुनी: 'तुम बहुत छोटी थीं।' लता ने एक बार फिर अपनी बत्ती बुझा दी और अंधेरे में लेट गई।

जो कुछ हुआ था, उसके बारे में वह किसी से बात नहीं कर सकती थी। श्रीमती सहगल अपने पति से बहुत प्यार करती थीं; क्या उन्हें पता भी था कि वह कैसे थे? उनके कमरे अलग-अलग थे: श्री सहगल अक्सर देर तक

काम करते थे। श्रीमती रूपा मेहरा को लता पर शायद ही विश्वास होता। अगर होता भी, तो वह सोचतीं—या सोचना चाहतीं—कि लता ने निर्दोष घटनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया है। और अगर वह लता पर पूरी तरह विश्वास भी कर लेतीं, तो वह क्या कर सकती थीं? माया के पति की निंदा करके उसकी मूर्खतापूर्ण खुशी को बर्बाद कर देतीं?

लता को याद आया कि उसकी माँ और सविता दोनों ने ही उसे मासिक धर्म के बारे में कुछ नहीं बताया था, जब तक कि अचानक बिना किसी चेतावनी के ट्रेन में उसके साथ ऐसा नहीं हुआ। लता बारह साल की थी। उसके पिता का निधन हो चुका था। वे अब सैलून में नहीं, बल्कि दूसरे और तीसरे के बीच की मध्यवर्ती श्रेणी में यात्रा कर रहे थे। यह गर्मियों के आखिरी दिनों की भीषण गर्मी थी—जैसा कि अभी था, मानसून अभी शुरू नहीं हुआ था। किसी कारणवश वह और उसकी माँ अकेले यात्रा कर रही थीं। जब उसे कुछ असहज महसूस हुआ तो वह शौचालय गई—और वहाँ, जब उसने देखा कि क्या हो रहा है, तो उसे लगा कि वह खून बहने से मर रही है। डर के मारे वह वापस अपने डिब्बे में भागी। उसकी माँ ने उसे खून पोंछने के लिए एक रुमाल दिया, लेकिन वह बहुत शर्मिंदा थी। उसने लता से कहा कि उसे इस बारे में किसी से भी बात नहीं करनी चाहिए, खासकर पुरुषों से। सीता और सावित्री ऐसी बातें नहीं करती थीं। लता सोचती थी कि उसने ऐसा क्या किया था कि उसे यह सब सहना पड़ा। अंत में, श्रीमती रूपा मेहरा ने उनसे कहा कि घबराएं नहीं—ऐसा सभी महिलाओं के साथ होता है—यही बात महिलाओं को बहुत खास और अनमोल बनाती है—और यह हर महीने होगा।

‘क्या तुम्हारे पास यह है?’ लता ने पूछा था।

'जी हां,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। 'पहले मैं मुलायम कपड़े का इस्तेमाल करती थी, लेकिन अब मैं गद्देदार नैपकिन इस्तेमाल करती हूं, और आपको

भी कुछ अपने साथ रखने चाहिए। मेरे पास सूटकेस के नीचे कुछ रखे हुए हैं।'

तेज गर्मी में यह चिपचिपा और असहज था, लेकिन सहना ही पड़ता था। सालों बीतने के साथ इसमें कोई सुधार नहीं हुआ। गंदगी, कमर दर्द, परीक्षा से ठीक पहले इसका अनियमित आना—लता को इसमें कुछ भी खास या अनमोल नहीं लगता था। जब उसने सविता से पूछा कि उसने उसे इसके बारे में क्यों नहीं बताया, तो सविता ने कहा: 'लेकिन मुझे लगा कि तुम्हें पता है। मुझे तो पता था, इससे पहले कि यह मेरे साथ हो।'

गलियारे में लगी घड़ी में तीन बज चुके थे और लता अभी भी जाग रही थी। तभी, डर के मारे उसकी सांसें थम गईं। कालीन बिछे गलियारे में भारी कदमों की आहट सुनाई दे रही थी। वह जानती थी कि वे उसके दरवाजे पर रुकेंगे। ओह, माँ, माँ—लता ने सोचा।

लेकिन कदमों की आहट गलियारे के दूसरे छोर की ओर, पुष्कर और किरण के कमरों की तरफ धीरे-धीरे बढ़ती रही। शायद श्री सहगल यह देखने जा रहे थे कि उनका बेटा ठीक है या नहीं। लता को उनके कदमों की आहट का बेसब्री से इंतज़ार था। उसे नींद नहीं आ रही थी। लेकिन दो घंटे बाद, सुबह पांच बजे से कुछ पहले, उनके कमरे के दरवाजे पर एक पल रुकने के बाद, वे धीरे से उसके कमरे के पास से गुज़रे।

9.17

अगली सुबह नाश्ते के समय श्री सहगल अनुपस्थित थे।

श्रीमती सहगल ने कहा, 'सहगल साहब की तबीयत ठीक नहीं है। वे इतनी मेहनत करने से थक गए हैं।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने सिर हिलाते हुए कहा: 'माया, तुम्हें उनसे कहना चाहिए कि वे थोड़ा आराम करें। मेरे पति की मौत अत्यधिक काम के कारण हुई थी। और आखिर किसलिए? मेहनत तो करनी ही चाहिए,

लेकिन बस बहुत हो गया। लता, तुम अपना टोस्ट क्यों नहीं खा रही हो? वह ठंडा हो जाएगा। और देखो, माया मौसी ने वह स्वादिष्ट सफेद मक्खन बनाया है जो तुम्हें बहुत पसंद है।'

श्रीमती सहगल ने लता को देखकर मीठी मुस्कान दी। 'बेचारी कितनी थकी हुई और परेशान लग रही है। मुझे लगता है कि उसे एच से प्यार हो गया है। अब तो उसे रातों की नींद भी उड़ गई है।' उन्होंने खुशी से आह भरी।

लता चुपचाप अपने टोस्ट पर मक्खन लगा रही थी।

पिता की मदद के बिना, पुष्कर को टोस्ट खाने में काफी दिक्कत हो रही थी। किरण, जो लता की तरह ही नींद में लग रही थी, उसकी मदद करने के लिए आगे बढ़ी।

'जब उसे दाढ़ी बनानी होती है तो वह क्या करता है?' श्रीमती रूपा मेहरा ने धीमी आवाज में पूछा।

'ओह, सहगल साहब उनकी मदद करते हैं,' श्रीमती सहगल ने कहा। 'या फिर कोई नौकर करता है—लेकिन पुष्कर चाहता है कि हम उसकी मदद करें। ओह रूपा, काश तुम कुछ और दिन रुक पातीं। हमें कितनी सारी बातें करनी हैं। और लड़कियाँ भी एक-दूसरे को जान पाएंगी।'

'नहीं!' लता के मुंह से ये शब्द इतनी जल्दी निकल गए कि वो सोच भी नहीं पाई कि क्या कह रही है। वो डरी हुई और घृणा से भरी हुई लग रही थी।

किरण ने पुष्कर की थाली पर चाकू गिरा दिया। फिर वह कमरे से बाहर भाग गई।

'लता, तुम्हें तुरंत माफी मांगनी चाहिए,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। 'इसका मतलब क्या है? क्या तुममें जरा भी शर्म नहीं है?'

लता अपनी माँ को बताने ही वाली थी कि उसका मतलब सिर्फ इतना था

कि वह अब और घर में नहीं रहना चाहती और किरण को चोट पहुँचाने का उसका कोई इरादा नहीं था। लेकिन ऐसा कहने से एक गलती की जगह दूसरी गलती हो जाती। इसलिए उसने अपना मुँह बंद रखा और सिर झुका लिया।

'क्या तुमने मुझे सुना?' श्रीमती रूपा मेहरा की ऊंची आवाज में गुस्से की झलक थी।

'हाँ।'

'हाँ, क्या?'

'जी मां, मैंने सुना। मैंने सुना। मैंने सुना।'

लता उठी और अपने कमरे में चली गई। श्रीमती रूपा मेहरा को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

पुष्कर गुनगुनाने लगा और अपनी बहन द्वारा मक्खन लगे टोस्ट के छोटे-छोटे टुकड़ों को मुंह में ठूंसने लगा। श्रीमती सहगल परेशान दिख रही थीं।

'काश सहगल साहब यहाँ होते। उन्हें बच्चों से निपटना आता है।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा: 'लता कभी-कभी बेपरवाह हो जाती है। मैं उससे बात करने जा रही हूँ।' फिर उन्होंने सोचा कि शायद वह कुछ ज़्यादा ही कठोर हो रही हैं। 'ज़ाहिर है, कानपुर का समय उसके लिए तनावपूर्ण रहा। मेरे लिए भी, ज़ाहिर है। वह मेरे द्वारा उसके लिए किए गए प्रयासों की सराहना नहीं करती। केवल भगवान ने ही मेरी सराहना की।'

'पहले तुम अपनी चाय खत्म करो, रूपा, मेरी चाय है,' श्रीमती सहगल ने कहा।

कुछ मिनट बाद, जब श्रीमती रूपा मेहरा लता के कमरे में दाखिल हुईं, तो उन्होंने उसे सोते हुए पाया। वह इतनी गहरी नींद में सो रही थी कि कुछ घंटों बाद दोपहर के भोजन के लिए उसे जगाना पड़ा।

दोपहर के भोजन के समय, श्री सहगल ने लता की ओर मुस्कुराते हुए

कहा, 'देखो, मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ।' यह लाल कागज में लिपटा हुआ एक छोटा, चपटा, चौकोर पैकेट था। लपेटने वाले कागज पर होली की पत्तियां, घंटियां और क्रिसमस की अन्य सजावटें बनी हुई थीं।
'कितना प्यारा!' श्रीमती रूपा मेहरा ने बिना यह जाने कहा कि यह क्या है।
शर्म और गुस्से से लता के कान जलने लगे।
मुझे यह नहीं चाहिए।
श्रीमती रूपा मेहरा सदमे में थीं और कुछ बोल नहीं पा रही थीं।
‘और फिर हम सिनेमा जा सकते हैं। आपकी ट्रेन छूटने से पहले समय होगा।’
लता उसे घूरती रही।
श्रीमती रूपा मेहरा, जिन्हें बचपन से यह सिखाया गया था कि उपहार मिलने पर उन्हें कभी न खोलें बल्कि अकेले होने तक इंतजार करें, बिल्कुल खुद को भूल गईं।
‘इसे खोलो,’ उसने लता को आदेश दिया।
लता ने कहा, 'मुझे यह नहीं चाहिए।' 'आप इसे खोलिए।' उसने पैकेट आगे बढ़ा दिया। अंदर कुछ खनखनाया।
‘सविता कभी ऐसा व्यवहार नहीं करती,’ उसकी माँ ने कहना शुरू किया। ‘और मौसाजी ने तुम्हारे लिए दोपहर की छुट्टी ली है—ताकि माया और मुझे बात करने का समय मिल सके। तुम्हें पता नहीं कि उन्हें तुममें कितनी दिलचस्पी है। वो हमेशा कहते हैं कि तुम बहुत बुद्धिमान हो, लेकिन मुझे अब इस पर शक होने लगा है। उन्हें धन्यवाद कहो।’
लता ने अपमानित और बेइज्जत महसूस करते हुए कहा, 'धन्यवाद।'
और जब तुम वापस आओगे तो मुझे फिल्म के बारे में सब कुछ बताना।
मैं फिल्म देखने नहीं जाऊंगा।
'क्या?'

मैं फिल्म देखने नहीं जाऊंगा।
‘मौसाजी तुम्हारे साथ होंगे, लता—तुम्हें किस बात की चिंता है?’ उसकी मां ने अबोध से कहा।
किरण ने ईर्ष्या भरी कड़वी निगाहों से लता को देखा। श्री सहगल ने कहा, 'वह मेरी अपनी बेटी जैसी है। मैं ध्यान रखूंगा कि वह ज्यादा आइसक्रीम और दूसरी अस्वास्थ्यकर चीजें न खाए।'
‘मैं नहीं जाऊंगी!’ लता की आवाज चुनौती और घबराहट से भर उठी।
श्रीमती रूपा मेहरा पैकेट खोलने के लिए संघर्ष कर रही थीं। अचानक हुए इस विद्रोह की चीख से उनकी उंगलियां बेकाबू हो गईं। आम तौर पर वह हर उपहार को अत्यंत सावधानी से खोलती थीं ताकि बाद में कागज का दोबारा इस्तेमाल कर सकें। लेकिन अब कागज फट गया।
‘देखो तुमने मुझसे क्या करवा दिया,’ उसने लता से कहा। लेकिन फिर, सामग्री को देखकर, वह असमंजस में पड़कर श्री सहगल की ओर मुड़ी।
उपहार में एक पहेली थी, गुलाबी प्लास्टिक का एक भूलभुलैया जिसका ऊपरी भाग पारदर्शी था। सात छोटी चांदी की गेंदों को वर्गाकार भूलभुलैया में इस तरह हिलाना था कि अगर किस्मत अच्छी रही तो वे अंततः बीच वाले खाने में आकर रुक जाएं।
श्री सहगल ने कोमल स्वर में समझाया, “वह बहुत ही होशियार लड़की है, इसलिए मैंने सोचा कि उसे एक पहेली दे दूं। आम तौर पर वह इसे पांच मिनट में हल कर लेती है। लेकिन ट्रेन में सब कुछ इतना हिलता है कि उसे एक घंटा लग जाएगा। कभी-कभी समय बहुत धीरे-धीरे बीतता है।”
'कितनी अच्छी सोच है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने थोड़ा भौंहें चढ़ाते हुए धीरे से कहा।
लता ने सिरदर्द का बहाना बनाया और अपने कमरे में लौट गई। लेकिन वास्तव में, वह बीमार महसूस कर रही थी—उसके पेट में बहुत तेज दर्द हो

रहा था।

9.18

श्री सहगल की कार उन्हें दोपहर बाद स्टेशन ले गई। वह काम पर थे, इसलिए नहीं आए। किरण पुष्कर के साथ वहीं रुक गई। श्रीमती सहगल उनके साथ आईं और पूरे रास्ते मीठी-मीठी और निरर्थक बातें करती रहीं। लता ने एक शब्द भी नहीं कहा।

वे प्लेटफार्म पर मौजूद भीड़ में खो गए थे। अचानक हरेश प्रकट हुआ।

'हैलो, श्रीमती मेहरा। हैलो, लता।'

'हरेश? मैंने कहा था कि तुम्हें नहीं आना है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।

'और मैंने तुमसे कहा था कि मुझे माँ कहो,' उन्होंने बेजान भाव से कहा।

हरेश मुस्कुराया, उन्हें आश्चर्यचकित करने की खुशी से वह प्रसन्न था।

'कानपुर वापस जाने वाली मेरी ट्रेन पंद्रह मिनट में है, इसलिए मैंने सोचा कि मैं आपकी मदद कर दूं। अब आपका कुली कहाँ है?'

उन्होंने उन्हें प्रसन्नतापूर्वक और कुशलतापूर्वक उनके डिब्बे में स्थापित किया, और यह सुनिश्चित किया कि श्रीमती रूपा मेहरा का काला हैंडबैग ऐसी जगह पर रखा जाए जहां वह आसानी से पहुंच योग्य हो और चोरी से सुरक्षित हो।

श्रीमती रूपा मेहरा बेहद शर्मिंदा लग रही थीं; कानपुर से लखनऊ के लिए दो प्रथम श्रेणी के टिकट खरीदना उनके लिए एक कठिन निर्णय था, लेकिन उन्हें लगा कि भावी दामाद पर एक खास प्रभाव डालना जरूरी है। अब वह साफ देख सकता था कि वे आमतौर पर द्वितीय श्रेणी में नहीं, बल्कि अंतरश्रेणी में यात्रा करते थे। और वास्तव में, हरेश उलझन में था, हालांकि उसने इसे दिखाया नहीं। श्रीमती रूपा मेहरा की शान-ओ-शैलियों में यात्रा करने और बेंटसन प्राइस में बेटे के होने की बातों के बाद, उसने उनसे एक अलग तरह की जीवनशैली की उम्मीद की थी।

लेकिन इन सब बातों से क्या फर्क पड़ता है? उसने खुद से पूछा। मुझे वो लड़की पसंद है।

लता, जो पहले तो उसे देखकर खुश लग रही थी—शायद राहत महसूस कर रही थी—अब गुमसुम सी लग रही थी, मानो उसे अपनी मौजूदगी का, अपनी माँ की, अपनी चाची की, और उसकी मौजूदगी का भी एहसास न हो।

सीटी बजते ही हरेश के मन में एक दृश्य उभर आया। यह लगभग इसी समय का दृश्य था। मौसम गर्म था, इसलिए यह कई महीने पहले की बात नहीं हो सकती। वह एक व्यस्त स्टेशन के प्लेटफार्म पर खड़ा था, खुद ट्रेन पकड़ने ही वाला था, और उसका कुली आगे भीड़ में गायब होने ही वाला था। एक अधेड़ उम्र की महिला, जिसकी पीठ उसकी ओर थोड़ी मुड़ी हुई थी, एक युवा महिला के साथ दूसरी ट्रेन में चढ़ रही थी। यह युवा महिला —अब उसे पता चला कि वह लता थी—के चेहरे पर ऐसी तीव्रता और अंतर्मुखता का भाव था, शायद दुख या क्रोध का भी, कि हरेश की सांसें थम गईं। उनके साथ एक आदमी भी था, वही युवक जिससे वह सुनील पटवर्धन की पार्टी में मिला था—वह अंग्रेजी शिक्षक जिसका नाम उसे याद नहीं आ रहा था। ब्रह्मपुर, हाँ—वहीं उसने उन्हें पहले देखा था। वह जानता था; वह जानता था, और अब सब कुछ उसे याद आ गया। आखिरकार, वह गलत नहीं था। वह मुस्कुराया, उसकी आँखें गायब हो गईं।

'ब्रह्मपुर—एक हल्के नीले रंग की साड़ी,' उसने लगभग खुद से कहा।

लता ने खिड़की से प्रश्नवाचक दृष्टि से उसकी ओर देखा। ट्रेन चलने लगी। हरेश ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया। अगर ट्रेन रुकी भी होती, तो शायद वह अपनी बात नहीं समझाता।

ट्रेन के रवाना होते ही उसने हाथ हिलाया, लेकिन न तो माँ और न ही बेटी

ने जवाब में हाथ हिलाया। हालाँकि, आशावादी होने के नाते, हरेश ने इसे उनकी अंग्रेज़ी शिष्टता का नतीजा माना।

एक नीली साड़ी। यही तो बात थी, वह मन ही मन सोचता रहा।

9.19

हरेश ने अपना पूरा दिन लखनऊ में सिमरन की बहन के घर बिताया। उसने सिमरन को बताया कि कल ही उसकी मुलाकात एक महिला से हुई थी, और सिमरन के साथ सफल होने की कोई उम्मीद न होने के कारण वह उसे पत्नी के रूप में गंभीरता से विचार कर रहा था।

उन्होंने ठीक यही नहीं कहा था; लेकिन अगर कहा भी होता तो भी इसमें कोई आपत्तिजनक बात नहीं होती। उनकी जानकारी में ज़्यादातर शादियाँ इसी आधार पर तय होती थीं, और फ़ैसला लेने वाले आमतौर पर दूल्हा-दुल्हन खुद नहीं बल्कि उनके बड़े-बुज़ुर्ग होते थे: पिता या संबंधित परिवारों के पुरुष मुखिया—और इसमें दर्जनों अन्य लोगों की सलाह भी शामिल होती थी, चाहे वो सलाह चाहें या न चाहें। हरेश के एक दूर के ग्रामीण चचेरे भाई के मामले में, गाँव का नाई ही मध्यस्थ था; गाँव के ज़्यादातर घरों तक पहुँच होने के कारण, उस साल यह चौथी शादी थी जिसे उसने तय करने में अहम भूमिका निभाई थी।

सिमरन की बहन को हरेश के प्रति सहानुभूति थी। वह जानती थी कि हरेश ने उसकी बहन से कितने लंबे समय तक और कितनी निष्ठा से प्यार किया था, और उसे लगता था कि उसका दिल अभी भी उसी के लिए धड़कता है।

हरेश ने स्वयं भी इसे आकस्मिक लाक्षणिक अर्थ में नहीं समझा होगा।

वह और उसका दिल पूरी तरह से उसी का था। वह उसके साथ जो चाहे कर सकती थी, और वह फिर भी उससे प्यार करता। जब भी वे मिलते, सिमरन की आँखों में जो खुशी झलकती थी—उस खुशी के पीछे छिपी

उदासी—यह बढ़ता हुआ डर कि उसके माता-पिता नहीं मानेंगे, उसे खुद से अलग कर देंगे—और उसकी माँ, जो एक भावुक महिला थी, कहीं वह खुद को दी गई उस धमकी को अंजाम तक न पहुँचा दे, जिसका ज़िक्र वह अब उसे लिखे हर पत्र में और हर दिन घर आने पर करती थी—इन सब बातों ने सिमरन को तोड़ दिया था। इंग्लैंड में भी उसका पत्र-व्यवहार अनियमित था (कुछ हद तक इसलिए क्योंकि उसे खुद हरेश के पत्र अनियमित रूप से मिलते थे, जब भी वह दोस्त उससे मिलने आता था जिसके पते पर वे भेजे जाते थे)। अब यह अनियमित हो गया था। कभी-कभी कई हफ्ते बीत जाते थे और हरेश को उसकी कोई खबर नहीं मिलती थी; फिर उसे उतने ही दिनों में तीन पत्र मिल जाते थे।

सिमरन की बहन जानती थी कि हरेश के किसी और के साथ जीवन बिताने के फैसले या इस बारे में सोचने की खबर सुनना उसके लिए कितना मुश्किल होगा। सिमरन हरेश से प्यार करती थी। उसकी बहन भी उससे प्यार करती थी—भले ही वह लाला का बेटा था, जो सिखों में हिंदुओं के लिए एक अपमानजनक शब्द माना जाता था। उसका भाई भी इस साजिश में शामिल था। जब वह और हरेश दोनों सत्रह साल के थे, तब उसके भाई को अपनी बहन की खिड़की के नीचे अपने दोस्त की तरफ से ग़ज़लें गाने के लिए पैसे दिए गए थे: सिमरन किसी कारण से हरेश से नाराज़ थी, और हरेश उसे मनाने की कोशिश कर रहा था। उसे उसके भाई को इसलिए काम पर रखना पड़ा क्योंकि संगीत के प्रति प्रेम और कठोर हृदयों को पिघलाने की शक्ति में विश्वास के साथ-साथ, उसकी गायन प्रतिभा इतनी बेसुरी थी कि उसकी प्रिय सिमरन (जिसे उसकी बोलने की आवाज़ भी पसंद थी) ने भी उसे बेसुरी बताया था।

‘हरेश, क्या तुमने फैसला कर लिया है?’ सिमरन की बहन ने पंजाबी में पूछा। वह सिमरन से तीन साल बड़ी थी और उसकी अपनी शादी भी एक

सिख सैन्य अधिकारी से तय हुई थी।
'मेरे पास क्या विकल्प है?' हरेश ने जवाब दिया। 'मुझे देर-सवेर किसी और के बारे में सोचना ही होगा। समय बीत रहा है। मैं अट्ठाईस साल का हूँ। मैं उसके बारे में भी अच्छा सोच रहा हूँ—जब तक उसे यह पता नहीं चल जाता कि मेरी शादी हो चुकी है, तब तक वह तुम्हारे माता-पिता द्वारा सुझाए गए हर किसी को मना कर देगी।'
हरेश की आंखें नम हो गईं। सिमरन की बहन ने उसके कंधे पर थपथपाया।
'आपने कब यह तय किया कि यह लड़की आपके लिए उपयुक्त हो सकती है?'
'कानपुर स्टेशन पर। वो चॉकलेट वाला ड्रिंक पी रही थी—पता है, फीजेंट्स का।' सिमरन की बहन के चेहरे के भाव देखकर हरेश समझ गया कि वो पूरी बात जानना नहीं चाहती।
'क्या आपने कोई प्रस्ताव रखा है?'
नहीं। हमने एक-दूसरे को पत्र लिखने पर सहमति जताई है। उनकी मां ने मुलाकात का इंतजाम किया था। वे इस समय लखनऊ में हैं, लेकिन वे मुझे यहां देखने के लिए उत्सुक नहीं लग रहे थे।
क्या तुमने अपने पिता को पत्र लिखा है?
'मैं कानपुर वापस पहुँचकर आज रात उसे पत्र लिखूंगा।' हरेश ने ऐसी ट्रेन चुनी थी जिससे वह लखनऊ स्टेशन पर श्रीमती रूपा मेहरा और उनकी बेटी से संयोगवश मिल सके।
'अभी सिमरन को पत्र मत लिखो।'
हरेश ने दुखी स्वर में कहा: 'लेकिन क्यों? मुझे देर-सवेर कुछ कहना ही पड़ेगा।'
'अगर इससे कुछ नहीं निकला तो तुमने उसे बेवजह ही दुख पहुंचाया

होगा।'
अगर उसे मेरी तरफ से कोई खबर नहीं मिली तो वह परेशान हो जाएगी।
'वैसे ही लिखो जैसे तुम हमेशा लिखते हो।'
'मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ?' हरेश ने इस धोखे पर आपत्ति जताई।
'झूठ मत बोलो। इस विषय पर बिल्कुल भी बात मत करो।'
हरेश ने कुछ देर सोचा। अंत में उसने कहा, 'ठीक है।' लेकिन उसे लगा कि सिमरन उसे इतनी अच्छी तरह जानती है कि उसके पत्रों से उसे यह एहसास हो गया होगा कि न केवल उसके जीवन में, बल्कि उसके जीवन में भी, कुछ ऐसा घटित होने लगा है जो उन दोनों को अलग कर सकता है।
9.20
कुछ देर बाद बातचीत सिमरन की बहन की ओर मुड़ गई। उसका छोटा बेटा मोंटी (केवल तीन साल का) नौसेना में भर्ती होना चाहता था और उसका पति
(जो उस लड़के के लिए दीवानी थी) इस फैसले को बहुत बुरी तरह ले रही थी। उसने इसे अपने ऊपर अविश्वास का वोट समझा और ऐसा लग रहा था कि वह इसी वजह से रूठ गई थी। उसने खुद मोंटी की इस पसंद का कारण यह बताया कि उसे अपने टब में नावों से खेलना अच्छा लगता था और वह अभी तक मॉडल सैनिक बनने की अवस्था में नहीं पहुंचा था।
संयोगवश, मोंटी को कुछ शब्दों का उच्चारण करने में कठिनाई होती थी, और अभी कुछ ही दिन पहले मानसून से पहले की एक हल्की बारिश के बाद अपने पसंदीदा पानी में खेलते हुए (पंजाबी के बजाय अंग्रेजी में बोलते हुए) उसने कहा था कि वह 'पगल के मिगल' जाना चाहता है। सिमरन की बहन ने इसे उसकी स्वाभाविक मधुरता का लक्षण समझा। उसने आशा जताई कि आने वाले वर्षों में वह अपने आदमियों को 'बैकल

के दिल में' जाने का आदेश देगा। मोंटी यह सब कुछ अपमानित गरिमा के भाव से सुनता रहा। बीच-बीच में वह अपनी माँ की उंगलियाँ खींचकर उन्हें बकबक बंद करने के लिए कहता रहा।

चूंकि हरीश को भूख नहीं लग रही थी, इसलिए उसने दोपहर का भोजन न करने का फैसला किया और इसके बजाय बारह बजे का फिल्म शो देखने चला गया। स्थानीय सिनेमा हॉल में हैमलेट चल रहा था। उसे फिल्म अच्छी लगी, लेकिन हैमलेट की अनिर्णयता ने उसे चिढ़ा दिया।

फिर उन्होंने एक रुपये में अच्छे बाल कटवाए। आखिर में उन्होंने पान खाया और कानपुर वापस जाने वाली ट्रेन पकड़ने के लिए स्टेशन की ओर चल दिए—और उन्हें उम्मीद थी कि वहाँ उनकी मुलाकात लता और उनकी माँ से होगी, जिनसे उन्हें काफी लगाव हो गया था। अपनी इस उम्मीद में कामयाब होने पर उन्हें बहुत खुशी हुई; ट्रेन के चलने पर उनके न हाथ हिलाने से उन्हें ज्यादा दुख नहीं हुआ। ब्रह्मपुर स्टेशन और लखनऊ स्टेशन के इस संयोग को उन्होंने शुभ संकेत माना।

कानपुर वापस आने वाली दो घंटे की ट्रेन यात्रा के दौरान, हरेश ने अपने पोर्टफोलियो से एक नीली राइटिंग पैड (जिसके हर पन्ने के ऊपर 'एच.सी. खन्ना' उभरा हुआ था) और एक सस्ती सफेद रफिंग पैड निकाली। उसने एक के बाद एक दोनों को देखा, फिर अपने सामने बैठी एक महिला को, और फिर खिड़की से बाहर। अंधेरा होने लगा था। थोड़ी देर में ट्रेन की बत्तियाँ जल उठीं। आखिरकार उसने फैसला किया कि हिलती-डुलती ट्रेन में गंभीर पत्र लिखना ठीक नहीं होगा। उसने राइटिंग पैड एक तरफ रख दी।

अपनी नोटबुक के सबसे ऊपर उसने लिखा: 'करने योग्य कार्य'। फिर उसने उसे काटकर लिखा: 'याद रखने योग्य बातें'। फिर उसने उसे भी काटकर लिखा: 'कार्य बिंदु'। उसे अचानक एहसास हुआ कि वह हैमलेट

की तरह ही मूर्खतापूर्ण व्यवहार कर रहा है।
अपने पत्राचार और काम से संबंधित विभिन्न वस्तुओं की सूची बनाने के बाद, उनके विचार अधिक सामान्य मामलों की ओर मुड़ गए, और उन्होंने 'मेरा जीवन' शीर्षक के तहत एक तीसरी सूची बनाई:
1. समाचारों और विश्व मामलों से अवगत रहना आवश्यक है।
हरेश को लगा कि मेहरा परिवार के साथ हुई मुलाकातों में उनकी छवि कुछ खास अच्छी नहीं बनी। लेकिन काम में वे इतने व्यस्त रहते थे कि कभी-कभी तो उन्हें कागजात देखने का भी समय नहीं मिलता था।
2. व्यायाम: प्रतिदिन कम से कम 15 मिनट। समय कैसे निकालें?
3. 1951 को अपने जीवन का निर्णायक वर्ष बनाओ।
4. उमेश अंकल के सभी ऋण चुका दें।
5. अपने गुस्से पर काबू रखना सीखें। मूर्खों को सहना सीखें, चाहे खुशी से हो या ना हो।
6. ब्रह्मपुर में केदारनाथ टंडन के साथ ब्रोग स्कीम को ठीक से चालू करवाएं।
बाद में उन्होंने इसे काट दिया और कार्य संबंधी सूची में स्थानांतरित कर दिया।
7. मूंछ?
उसने इसे काट दिया और फिर प्रश्न चिह्न सहित दोबारा लिखा।
8. बाबरम जैसे अच्छे लोगों से सीखें।
9. टी.एच. के प्रमुख उपन्यासों को पढ़ना समाप्त करें।
10. पहले की तरह नियमित रूप से डायरी लिखने का प्रयास करें।
11. मेरी पाँच सबसे अच्छी और पाँच सबसे बुरी खूबियों को नोट करें। बुरी खूबियों को बनाए रखें और अच्छी खूबियों को मिटा दें।
हरेश ने इस आखिरी वाक्य को पढ़ा, आश्चर्यचकित होकर देखा और इसे

ठीक कर दिया।

9.21

जब वह एल्म विला लौटा तो काफी देर हो चुकी थी। हालांकि, श्रीमती मेसन, जो कभी-कभी हरेश के भोजन के लिए देर से आने पर शिकायत करती थीं (इस आधार पर कि इससे कर्मचारियों को परेशानी होगी), ने उनका बहुत गर्मजोशी से स्वागत किया।

‘ओह, आप बहुत थके हुए लग रहे हैं। मेरी बेटी बता रही थी कि आप कितने व्यस्त रहे हैं। और आपने यह भी नहीं बताया कि आप एक दिन से ज़्यादा के लिए जा रहे हैं। हमने आपके लिए दोपहर का खाना तैयार किया। और रात का खाना भी। और आज फिर दोपहर का खाना। लेकिन कोई बात नहीं। आप आखिरकार वापस आ गए हैं, और यही सबसे ज़रूरी बात है। यह मटन है। बढ़िया, स्वादिष्ट रोस्ट।’

यह सुनकर हरेश को खुशी हुई। श्रीमती मेसन उत्सुकता से भरी हुई थीं, लेकिन खाना खाते समय उन्होंने कोई सवाल नहीं पूछा। उन्होंने सुबह से कुछ नहीं खाया था।

रात के खाने के बाद श्रीमती मेसन ने बोलने के लिए हरेश की ओर रुख किया।

'सोफी कैसी है?' हरेश ने चतुराई से बीच में ही सवाल उठाया। सोफी मेसन परिवार की प्यारी फ़ारसी बिल्ली थी, जो हमेशा जीवंत चर्चा का विषय बनी रहती थी।

सोफी की कहानी के पांच मिनट बाद, हरेश ने जम्हाई ली और कहा, 'शुभ रात्रि, श्रीमती मेसन। मेरे लिए खाना गर्म रखने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे लगता है कि अब मुझे सोने जाना चाहिए।'

और इससे पहले कि मिसेज मेसन बातचीत को सिमरन या दोनों आगंतुकों की ओर मोड़ पातीं, हरेश अपने कमरे में चला गया था।

वह बहुत थका हुआ था, लेकिन फिर भी जागते हुए उसने तीन पत्र लिख डाले। बाकी पत्र उसे अगले दिन तक लिखने के लिए मजबूर होना पड़ा।
वह लता को पत्र लिखने ही वाला था कि सिमरन की निगाहें खुद पर महसूस करते ही उसने एक छोटे और आसान पत्र—दरअसल एक पोस्टकार्ड—की ओर रुख किया।
यह केदारनाथ टंडन के पुत्र भास्कर को दिया गया था।
प्रिय भास्कर,
आशा है आप कुशल मंगल होंगे। मेरे एक चीनी सहकर्मी के अनुसार, आपको जिन शब्दों की आवश्यकता है, वे हैं 'वान' ('कान' से मिलता-जुलता) और 'ई' ('नी' से मिलता-जुलता)। इससे आपको दस की घातों के क्रम में ये संख्याएँ मिलेंगी: एक, दस, सौ, हज़ार, वान, लाख, करोड़, ई, अरब। दस की घात के लिए एक विशेष शब्द आपको स्वयं गढ़ना होगा। मेरा सुझाव है 'भास्क'।
कृपया डॉक्टर दुर्रानी, आपके माता-पिता और आपकी दादी को मेरा प्रणाम कहिएगा। साथ ही, अपने पिता से कहिए कि वे मुझे जूतों का दूसरा नमूना भेज दें, जिसका वादा रविदासपुर के उस व्यक्ति ने मुझसे किया था। उन्हें एक सप्ताह से अधिक समय पहले ही आ जाना चाहिए था। शायद वे अब रास्ते में हैं।
स्नेहपूर्वक,
Haresh Chacha.
इसके बाद उन्होंने अपने पिता को डेढ़ पृष्ठ का एक छोटा सा पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने मेहरा परिवार से मिली लता की एक छोटी सी तस्वीर संलग्न की। वे स्वयं उनकी तस्वीर लेना चाहते थे, लेकिन उन्हें थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई, इसलिए उन्होंने इस पर ज़ोर नहीं दिया।
लता को उसने अपने नीले रंग के राइटिंग पैड पर तीन पन्नों का पत्र

लिखा। हालांकि ठंडी चॉकलेट पीते हुए वह लगभग उसे (या यूं कहें कि उन दोनों को) यह बताने ही वाला था कि वह जानता है कि लता ही उसके लिए सही पत्नी है, लेकिन किसी बात ने उसे रोक लिया था। अब उसे इस बात की खुशी थी। हरेश जानता था कि व्यावहारिक होने के बावजूद वह बहुत जल्दबाज़ था। जब उसने पंद्रह साल की उम्र में घर छोड़ने का फैसला किया था, तो उसे फैसला करने में एक मिनट लगा था और घर छोड़ने में दस मिनट; महीनों बाद वह लौटा था। कुछ दिन पहले बाज़ार में उसने लगभग डिज़ाइनर श्री ली को तुरंत काम पर रख लिया था, हालांकि उसके पास ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं था; वह जानता था कि नए ऑर्डर को डिज़ाइन करने में मदद करने के लिए वही सही व्यक्ति है, और उसे पूरा भरोसा था कि वह ये ऑर्डर ला सकता है।

ये उन फैसलों की बात है जो सराहनीय न सही, तो कम से कम प्रशंसनीय तो थे ही। लेकिन पटियाला में उन्होंने अपने एक दोस्त को जो पैसा उधार दिया था, वह भी उन्होंने उतनी ही जल्दबाजी में दिया था। वह उनकी कुल संपत्ति का एक तिहाई हिस्सा था, और अब उन्हें पता था कि वह उसे कभी वापस नहीं पा सकेंगे। लेकिन इस समय उनके सामने जो फैसला था, वह उनकी संपत्ति से नहीं, बल्कि खुद से जुड़ा था। अगर उन्होंने खुद को पूरी तरह से बेच दिया, तो वे खुद को वापस नहीं पा सकेंगे।

उसने सिमरन की तस्वीर पर नज़र डाली—लता को अपना पहला पत्र लिखते समय भी कोई बात उसे तस्वीर से नज़र हटाने के लिए मजबूर नहीं कर सकती थी। वह सोचता था कि वह क्या कहती, क्या सलाह देती। वह जानता था कि उसकी दयालुता और पवित्र हृदय उसे सही राह पर ले जाते। वह उसका भला उतना ही चाहती थी जितना वह उसका।

'सिमरन, इसे इस तरह देखो,' उसने कहा। 'मैं अट्ठाईस साल का हूँ। हमारे

बीच कुछ भी होने की कोई संभावना नहीं है। मुझे एक दिन शादी करनी ही होगी। अगर मुझे शादी करनी ही है तो मैं अभी कर लेता हूँ। वे मुझे पसंद करते हैं। कम से कम मुझे पूरा भरोसा है कि माँ मुझे पसंद करती है; और यह एक अच्छी बात है।'

लता को लिखे अपने तीन पन्नों के पत्र में से डेढ़ पन्ने प्राहा शू कंपनी के बारे में थे। यह चेक मूल की कंपनी थी जिसका मुख्यालय कलकत्ता में था और प्राहापुर में पंद्रह मील दूर एक विशाल कारखाना था। हरेश चाहता था कि उसका नाम और उसके प्रमाणपत्रों की प्रतियां उस व्यक्ति के ध्यान में लाई जाएं जिसे श्रीमती रूपा मेहरा कई वर्षों से सामाजिक रूप से जानती थीं और जो स्वयं कंपनी में किसी उच्च पदस्थ व्यक्ति को जानती थीं। हरेश को प्राहा में नौकरी के तीन फायदे नज़र आते थे। एक पेशेवर रूप से प्रबंधित कंपनी में शीर्ष पद तक पहुंचने का उसका बेहतर मौका होता। वह कलकत्ता के पास होता, जिसे मेहरा परिवार का घर माना जा सकता था, और जहां लता, जैसा कि उसने पता लगाया था, अपनी क्रिसमस की छुट्टियां बिताने वाली थीं। और अंत में, उसे लगा कि उसकी आमदनी निश्चित रूप से उसकी वर्तमान आमदनी से अधिक होगी। प्राहा से पहले मिले साप्ताहिक वेतन के अपमानजनक प्रस्ताव को वह नज़रअंदाज़ करने को तैयार था, क्योंकि यह बिना किसी पूर्व परिचय के लगातार पत्र लिखने वाले व्यक्ति की तरफ से उनकी तरफ से दी गई एक चिड़चिड़ी प्रतिक्रिया थी। हरेश का मानना था कि उसे बस शीर्ष पर बैठे किसी व्यक्ति का ध्यान आकर्षित करना था।

यह काम समाप्त हो गया है [हरेश ने आगे कहा], हमेशा की तरह मैं आशा करता हूँ कि आपकी घर वापसी की यात्रा सुखद रही होगी और ब्रह्मपुर से इतने लंबे समय तक अनुपस्थित रहने के बाद आपसे मिलने वाले सभी लोगों ने आपको याद किया होगा। [...]

कानपुर आने और हमारे साथ बिताए सुखद समय के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आपमें ज़रा भी संकोच या बनावटीपन नहीं था और मुझे पूरा विश्वास है कि हम बहुत अच्छे दोस्त बन सकते हैं। आपकी स्पष्टवादिता और बात कहने का तरीका मुझे बहुत पसंद आया। मैं मानता हूँ कि मैंने बहुत कम ऐसी अंग्रेज़ लड़कियाँ देखी हैं जो आपकी तरह इतनी अच्छी अंग्रेज़ी बोलती हों। ये गुण, आपके पहनावे और व्यक्तित्व के साथ मिलकर आपको औसत से कहीं ऊपर ले जाते हैं। मुझे लगता है कि कल्पना ने आपकी जो तारीफ़ की थी, वह बिल्कुल सही थी। ये सब शायद तारीफ़ लगें, लेकिन मैं अपने मन की बात लिख रहा हूँ।

मैंने आज ही आपकी तस्वीर अपने पालक पिता को भेजी है, साथ ही उन कुछ पलों के दौरान आपके बारे में मेरे विचार भी भेजे हैं जो हमने साथ बिताए थे। मैं आपको बता दूँगा कि उनका क्या कहना है।

सामान्य बातों पर लिखे कुछ आखिरी पैराग्राफ के बाद पत्र समाप्त हो गया। हरेश ने लिफाफे पर पता लिख दिया। कुछ मिनट बाद जब वह अपने बिस्तर पर लेटा था, तो उसे ख्याल आया कि मेहरा परिवार ने उसकी लेखन मेज पर रखी सिमरन की चांदी के फ्रेम वाली तस्वीर ज़रूर देखी होगी। जब उसने उन्हें एल्म विला में आमंत्रित किया था, तब उसने तस्वीर के बारे में बिल्कुल नहीं सोचा था। वह तस्वीर उसके बिस्तर की तरह ही कमरे का अभिन्न अंग थी। माँ और बेटी ने आपस में इस बारे में चर्चा की होगी—और विशेष रूप से इस बात पर कि उसने तस्वीर को वहाँ क्यों रहने दिया। उसने सोचा कि उन्होंने क्या सोचा होगा, क्या कहा होगा। लेकिन वह इतनी जल्दी सो गया कि ज्यादा देर तक सोच-विचार करने का समय ही नहीं मिला।

9.22

कुछ दिनों बाद, एक सुबह, हरेश कारखाने में पहुंचा तो उसने पाया कि

राव ने ली को कुछ मामूली काम करने के लिए सौंप दिया था।
'मुझे ली की जरूरत है,' हरेश ने सीधे-सीधे कहा। 'यह एचएसएच आदेश के लिए है।'
राव ने अपनी तीखी नाक से घृणा भरी निगाहों से उसे देखा। उन्होंने कहा, 'जब मेरा काम उससे निपट जाएगा, तब तुम उसे ले सकते हो। वह इस सप्ताह मेरे साथ काम करेगा।'
ली, जिसने यह सब देखा था, बहुत शर्मिंदा हुआ। उसे यह पद हरीश की वजह से मिला था और वह उसका सम्मान करता था। वह राव का सम्मान नहीं करता था, लेकिन कंपनी संरचना में राव नाममात्र के लिए हरीश से वरिष्ठ था।
उसी सुबह मुखर्जी के कार्यालय में हुई साप्ताहिक बैठक में शानदार आतिशबाजी का प्रदर्शन हुआ।
मुखर्जी ने हाल ही में स्वीकृत हुए एचएसएच ऑर्डर को हासिल करने में हरेश के प्रयासों के लिए उन्हें हार्दिक बधाई दी। इस ऑर्डर के बिना कारखाने को गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता।
उन्होंने आगे कहा, 'लेकिन श्रम संबंधी मुद्दे पर सेन गुप्ता के साथ समन्वय स्थापित किया जाना चाहिए।'
‘बिल्कुल,’ सेन गुप्ता ने कहा। वे प्रसन्न लग रहे थे। उन्हें श्रम एवं कार्मिक विभाग का प्रभारी होना चाहिए था, लेकिन इस आलसी व्यक्ति को पान चबाने और किसी भी ज़रूरी काम को टालने से ज़्यादा कुछ भी पसंद नहीं था। सेन गुप्ता को लाल रंग से सनी फाइल को घूरते हुए देखने के अलावा कुछ और करते देखना किसी स्तूप के टूटने का इंतज़ार करने जैसा था। जब मुखर्जी ने हरीश की प्रशंसा की थी, तब सेन गुप्ता का चेहरा उतरा हुआ था।
‘हमें हर तरफ थोड़ी और मेहनत करनी होगी, है ना? सेन गुप्ता?’ फैक्ट्री

मैनेजर ने आगे कहा। ‘अब, खन्ना,’ उन्होंने हरीश की ओर मुड़ते हुए कहा, ‘सेन गुप्ता हाल ही में आपके श्रम मामलों में दखलंदाजी से थोड़ा नाराज़ हैं। खासकर निर्माण कार्य में। उन्हें लगता है कि वे बेहतर और सस्ते में और जल्दी काम पर रख सकते थे।’

दरअसल, सेन गुप्ता बेहद गुस्से में थे और ईर्ष्या से भरे हुए थे।

जल्दी करो! सेन गुप्ता! यही बात हरीश सोच रहा था।

‘कर्मचारियों की बात करें तो,’ उन्होंने जोर से कहा, यह तय करते हुए कि अब मामले पर खुलकर चर्चा करने का समय है, ‘मैं ली को एचएसएच आदेश पर वापस काम पर लगाना चाहूंगा।’ उन्होंने राव की ओर देखा।

‘Back?’ said Mukherji, looking from Haresh to Rao.

जी हाँ। श्री राव ने फैसला किया कि—

राव ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'वह एक हफ्ते में वापस आ जाएगा। इस बैठक में इस मुद्दे को उठाने की कोई जरूरत नहीं है। श्री मुखर्जी के पास इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण मामले हैं।'

मुझे उसकी अभी ज़रूरत है। अगर हम इस ऑर्डर में नाकाम रहे तो क्या आपको लगता है कि वे हमारे पास हाथ जोड़कर और जूते बनवाने के लिए वापस आएंगे? क्या हम अपनी प्राथमिकताओं को ठीक से तय नहीं कर सकते? ली को गुणवत्ता की परवाह है। मुझे डिज़ाइन और चमड़े के चयन दोनों के लिए उसकी ज़रूरत है।

राव ने अरुचि से कहा, 'मुझे गुणवत्ता की भी परवाह है।'

‘एक और बात बताओ,’ हरेश ने गुस्से से कहा। ‘जब मुझे सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है, तब तुम मेरे कर्मचारियों को चुरा लेते हो—अभी दो दिन पहले ही मेरे दो क्लिकर तुम्हारे विभाग में गायब हो गए, क्योंकि तुम्हारे आदमी काम पर नहीं आए। तुम अपने क्षेत्र में अनुशासन नहीं रख सकते, और मेरे क्षेत्र में तो उसे बिगाड़ते ही हो। गुणवत्ता तो तुम्हारे दिमाग में

सबसे आखिरी चीज़ है।' हरेश मुखर्जी की ओर मुड़ा। 'आप उसे ऐसा करने की छूट क्यों देते हैं? आप तो कारखाने के प्रबंधक हैं।'

यह कुछ ज्यादा ही सीधा-सादा जवाब था, लेकिन हरेश गुस्से से उबल रहा था। उसने आगे कहा, 'अगर मेरे आदमी और मेरा डिजाइनर गायब हो गए तो मैं काम नहीं कर सकता।'

'तुम्हारा डिज़ाइनर?' सेन गुप्ता ने लाल आँखों से हरीश को घूरते हुए कहा। 'तुम्हारा डिज़ाइनर? ली को नौकरी देने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं था। तुम कौन होते हो उसे काम पर रखने वाले?'

'मैंने नहीं किया। श्री मुखर्जी ने श्री घोष की अनुमति से किया। मैंने तो बस उन्हें ढूंढा था। कम से कम वो पेशेवर तो हैं।'

'और मैं नहीं? तुम्हारे जन्म से पहले ही मैंने दाढ़ी बनाना सीख लिया था,' श्री सेन गुप्ता ने बड़े ही बेतुके अंदाज में कहा।

'पेशेवर? इस जगह को देखो,' हरेश ने लगभग दबी हुई तिरस्कार भरी आवाज़ में कहा। 'इसकी तुलना प्राहा, जेम्स हॉली या कूपर एलन से करो। अगर हम समय पर ऑर्डर पूरे नहीं करते या हमारी गुणवत्ता घटिया है, तो हम अपने ग्राहकों को कैसे बनाए रख सकते हैं? ब्रह्मपुर की झुग्गियों में इससे बेहतर जूते बनते हैं। यहाँ जिस तरह से काम होता है, वह बिल्कुल भी पेशेवर नहीं है। हमें ऐसे लोगों की ज़रूरत है जो जूतों के बारे में जानते हों, राजनीति के बारे में नहीं। जो काम करते हों, न कि जहाँ कहीं भी हों, अड्डा लगा लें।'

'गैर-पेशेवर?' सेन गुप्ता ने हरीश की टिप्पणी को पकड़ लिया और उसमें थोड़ा सा बदलाव कर दिया। 'श्री घोष को इसका पता चलेगा! आप हमें गैर-पेशेवर कहते हैं? आप देखेंगे, आप देखेंगे।'

सेन गुप्ता के उद्दंड रवैये और स्पष्ट ईर्ष्या को देखकर हरेश ने कहा:

'हां, यह गैर-पेशेवर है।'

‘सुना तुमने? सुना तुमने?’ सेन गुप्ता ने राव और मुखर्जी की तरफ देखा, फिर हरीश की ओर मुड़े, उनकी लाल जीभ थोड़ी मुड़ी हुई थी, मुंह खुला हुआ था। ‘आप हमें गैर-पेशेवर कह रहे हैं?’ उन्होंने गुस्से में अपनी कुर्सी आगे नहीं बल्कि पीछे धकेली और गाल फुला लिए। ‘तुम अपनी औकात से ज्यादा घमंड कर रहे हो, जी हां, अपनी औकात से ज्यादा।’ उनकी लाल आंखें लगभग बाहर निकल आईं।

अब तक की सारी गलतियाँ करने के बाद, हरेश ने एक और गलती कर दी। 'जी हाँ, श्री सेन गुप्ता, मैं बिल्कुल यही कह रहा हूँ। आप मुझे स्पष्ट बोलने पर मजबूर कर रहे हैं, लेकिन यह सच है, खासकर आपके बारे में। आप हर मायने में गैर-पेशेवर हैं—और राव को छोड़कर, आप मेरे जानने वाले सबसे बुरे जोड़-तोड़ करने वालों में से एक हैं।'

“ज़रूर,” मुखर्जी ने कहा, जो सुलह कराने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन सेन गुप्ता द्वारा हरेश से चालाकी से निकलवाए गए उस शब्द से आहत थे, जिसे उन्होंने उस अर्थ में लिया जो हरेश का कम से कम पहली बार में इरादा नहीं था। “निश्चित रूप से हमें उन सभी क्षेत्रों में सुधार करना चाहिए जहाँ हम कमज़ोर हैं। लेकिन चलिए अब हम आपस में शांति से बात करते हैं।” वे राव की ओर मुड़े। “आप कई वर्षों से इस फर्म में हैं, श्री घोष द्वारा इसे खरीदने और संभालने से पहले से ही। आपका सभी सम्मान करते हैं। सेन गुप्ता और मैं तुलनात्मक रूप से नए हैं।” फिर उन्होंने हरेश से कहा: “और सभी लोग आपके द्वारा HSH ऑर्डर प्राप्त करने के तरीके की प्रशंसा करते हैं।” अंत में उन्होंने सेन गुप्ता से कहा: “चलिए इसे यहीं छोड़ देते हैं।” और उन्होंने बंगाली में कुछ सांत्वना भरे शब्द कहे।

लेकिन सेन गुप्ता उग्र होकर हरेश की ओर मुड़े और चिल्लाए, 'तुम्हें एक सफलता मिली है, और तुम पूरी जगह पर कब्जा करना चाहते हो।' वे चिल्ला रहे थे और अपने हाथ हिला रहे थे, और इस हास्यास्पद प्रदर्शन से

क्रोधित हरेश ने घृणा से बीच में दखल दिया:
‘मैं इसे तुमसे कहीं बेहतर तरीके से चला सकता हूँ, यह तो पक्का है। यह तो बंगाली मछली बाजार की तरह चल रहा है।’
ये शब्द आवेश में बोले गए थे, लेकिन इन्हें वापस नहीं लिया जा सकता था। अप्रिय स्वभाव वाले राव क्रोधित हो गए; और वे बंगाली भी नहीं थे। सेन गुप्ता बेहद नाराज थे। और बंगाल और मछली का एक साथ अपमान मुखर्जी को भी रास नहीं आया।
उन्होंने हरीश से कहा, 'तुम बहुत ज्यादा मेहनत कर रहे हो।'
उस दोपहर हरेश को बताया गया कि श्री मुखर्जी उनसे अपने कार्यालय में मिलना चाहते हैं। हरेश ने सोचा कि शायद यह एचएसएच आदेश से संबंधित कोई मामला हो सकता है, इसलिए वह अपने साथ एक सप्ताह के काम और योजनाओं वाली एक फाइल कार्यालय ले गए। वहां श्री मुखर्जी ने उन्हें बताया कि एचएसएच आदेश का काम राव संभालेंगे, वे नहीं।
हरेश ने अन्याय की बेबसी भरी भावना से उसकी ओर देखा। उसने अपना सिर ऐसे हिलाया मानो वह आखिरी वाक्य को भुला देना चाहता हो जो उसने सुना था।
'मैंने वह ऑर्डर पाने के लिए जी तोड़ मेहनत की, श्री मुखर्जी, और आप यह जानते हैं। इसने इस कारखाने की किस्मत बदल दी है। आपने लगभग वादा किया था कि यह काम मेरे विभाग में और मेरी देखरेख में होगा। मैंने अपने कामगारों को बता दिया है। अब मैं उन्हें क्या बताऊँ?'
‘मुझे खेद है।’ श्री मुखर्जी ने सिर हिलाया। ‘ऐसा लगा कि आप पर पहले से ही बहुत काम का बोझ है। अपने नए विभाग को धीरे-धीरे काम शुरू करने दें और उसकी समस्याओं को सुलझाने दें; उसके बाद वह इस तरह के बड़े काम को करने के लिए तैयार हो जाएगा। एचएसएच हमें और भी

ऑर्डर देगा। और मैं आपकी इस दूसरी योजना की संभावनाओं से भी प्रभावित हूं। सब कुछ सही समय पर होगा।'

“नए विभाग में कोई समस्या नहीं है,” हरेश ने कहा। “बिल्कुल नहीं। यह पहले से ही बाकी विभागों से बेहतर चल रहा है। और मैं पिछले सप्ताह से ही इसके क्रियान्वयन के विवरण पर काम कर रहा हूँ। देखिए!” उन्होंने फाइल खोली। श्री मुखर्जी ने सिर हिलाया।

हरीश गुस्से से भरी आवाज में बोला, 'अगर हमने यह ऑर्डर भी बिगाड़ दिया तो वे हमें दूसरा ऑर्डर नहीं देंगे। राव को दे दो तो वो काम बिगाड़ देगा। मैंने तो यह भी सोच लिया है कि हम ऑर्डर तय तारीख से लगभग दो हफ्ते पहले ही कैसे पूरा कर सकते हैं।'

मुखर्जी ने आह भरी। 'खन्ना, तुम्हें शांत रहना सीखना होगा।'

मैं घोष के पास जाऊंगा।

‘यह निर्देश श्री घोष की ओर से आया है।’

'ऐसा हो ही नहीं सकता था,' हरेश ने कहा। 'उसके लिए समय ही नहीं होता।'

मुखर्जी दुखी लग रहे थे। हरीश उलझन में दिखते हुए बोले, "जब तक राव ने खुद बॉम्बे में घोष को फोन न किया हो। उन्होंने जरूर किया होगा। क्या यह घोष का विचार था? मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि यह विचार आपसे आया है।"

'मैं इस बारे में चर्चा नहीं कर सकता, खन्ना।'

‘यह मामला यहीं खत्म नहीं होगा। मैं इसे यहीं नहीं छोड़ूंगा।’

मुझे खेद है। मुखर्जी खन्ना को पसंद करते थे।

हरेश अपने कमरे में लौट गया। यह उसके लिए एक गहरा सदमा था। उसने इस आदेश पर पूरा भरोसा किया था। वह किसी भी कीमत पर अपने द्वारा लाए गए किसी ठोस काम को अंजाम देना चाहता था, यह

दिखाना चाहता था कि वह और उसका नया विभाग क्या कर सकते हैं—और हाँ, उस कंपनी के लिए कुछ उत्कृष्ट करना चाहता था जिसका वह अधिकारी था। कुछ पल के लिए उसे लगा जैसे उसका मनोबल टूट गया हो। उसे राव की अवहेलना और सेन गुप्ता की खुशी याद आ गई। उसे अपने कर्मचारियों को यह खबर देनी ही होगी। यह असहनीय था। और वह इसे बर्दाश्त नहीं करेगा।

हालांकि वह निराश था, फिर भी उसने चुपचाप बैठकर यह स्वीकार करने से इनकार कर दिया कि ये अन्यायपूर्ण व्यवहार उसके भविष्य के कामकाजी जीवन का स्वरूप बन जाएगा। उसके साथ दुर्व्यवहार किया गया था और उसका शोषण किया गया था। यह सच था कि घोष ने उसे पहली नौकरी दी थी—और वह भी बहुत कम समय में—और वह इसके लिए आभारी था। लेकिन इस तरह के त्वरित तर्कहीनता और अन्याय ने उसकी वफादारी की भावना को चकनाचूर कर दिया था। ऐसा लग रहा था मानो उसने किसी बच्चे को आग से बचाया हो और इनाम के तौर पर उसे खुद आग में झोंक दिया गया हो। वह यह नौकरी केवल तब तक ही करेगा जब तक उसे इसकी आवश्यकता होगी। अगर साढ़े तीन सौ रुपये के वेतन पर उसे पत्नी का भरण-पोषण करने की चिंता थी, तो शून्य वेतन पर तो वह इसके बारे में भूल ही जाए। उसने जिन लोगों को भी नौकरी के लिए आवेदन किया था, उनसे उसे कोई उपयोगी जवाब नहीं मिला था। लेकिन जल्द ही, उसे उम्मीद थी, बहुत जल्द, कुछ न कुछ तो होगा। कुछ?—कुछ भी। जो भी मिलेगा, वह उसे स्वीकार कर लेगा।

उन्होंने अपने दफ्तर का दरवाजा बंद कर लिया, जिसे वे लगभग हमेशा खुला ही छोड़ देते थे, और एक बार फिर सोचने के लिए बैठ गए।

9.23

हरेश को तत्काल कार्रवाई का निर्णय लेने में दस मिनट लगे।

वह काफी समय से जेम्स हॉली में नौकरी की संभावना तलाशना चाह रहा था। अब उसने ठान लिया कि वह जितनी जल्दी हो सके वहां नौकरी पाने की कोशिश करेगा। वह उस संस्था का प्रशंसक था; और उसका मुख्यालय कानपुर में था। जेम्स हॉली का कारखाना मशीनीकृत और काफी आधुनिक था। वहां बनने वाले जूते सीएलएफसी द्वारा पर्याप्त माने जाने वाले जूतों से कहीं बेहतर गुणवत्ता के थे। हरेश के लिए गुणवत्ता ही सबसे बड़ी प्राथमिकता थी। उसे यह भी पूरा भरोसा था कि जेम्स हॉली उसकी क्षमताओं का अधिक सम्मान करेगा और मनमानी नहीं करेगा।

लेकिन हमेशा की तरह, प्रवेश ही असली समस्या थी। वह कैसे अंदर पैर जमा पाता—या दूसरे शब्दों में कहें तो, शीर्ष पर बैठे किसी व्यक्ति से बात कर पाता? क्रोमार्ती समूह के अध्यक्ष सर नेविल मैक्लीन थे; प्रबंध निदेशक सर डेविड गोवर थे; और इसकी सहायक कंपनी जेम्स हॉली के कानपुर स्थित विशाल कारखाने (जो प्रतिदिन 30,000 जोड़ी जूते बनाता था) के प्रबंधक भी एक अंग्रेज थे। वह सीधे मुख्यालय जाकर किसी से बात करने का अनुरोध नहीं कर सकता था।

काफी सोच-विचार करने के बाद, उन्होंने प्रसिद्ध प्यारे लाल भल्ला से मिलने का फैसला किया, जो उनके ही समुदाय के एक खत्री थे और जूते के व्यवसाय में प्रवेश करने वाले पहले खत्रियों में से एक थे। उन्होंने इस व्यवसाय में कैसे प्रवेश किया और वर्तमान मुकाम तक कैसे पहुंचे, यह अपने आप में एक अनोखी कहानी है।

प्यारे लाल भल्ला लाहौर से आए थे। वे मूल रूप से इंग्लैंड से टोपी और बच्चों के कपड़ों के विक्रेता थे, और बाद में उन्होंने खेल के कपड़े, पेंट और कपड़े के कारोबार में भी विस्तार किया। वे अपने काम में बेहद कुशल थे, और उनका व्यवसाय उनके अपने प्रयासों और संतुष्ट ग्राहकों की सिफ़ारिशों के कारण बढ़ा था। कल्पना कीजिए, उदाहरण के लिए, जेम्स

हॉली क्लब के किसी सदस्य को भारत जाते समय उनके किसी साथी ने कहा होगा: 'अगर आप लाहौर में हैं, और पंजाब में अपने विक्रेता से संतुष्ट नहीं हैं, तो आप पियरी लोल बुलर से संपर्क कर सकते हैं। मुझे नहीं लगता कि वे जूते-चप्पल का कारोबार करते हैं, लेकिन वे एक बेहतरीन विक्रेता हैं, और उनसे मिलना उनके लिए फ़ायदेमंद साबित हो सकता है। और आपके लिए भी। मैं उन्हें पत्र लिख देता हूँ कि आप उनसे मिलने आ सकते हैं।'

यह देखते हुए कि वह शाकाहारी थे (मशरूम ही एकमात्र ऐसी चीज़ थी जिसे वह मांस के सबसे करीब मानते थे), यह दिलचस्प था कि प्यारे लाल भल्ला ने जेम्स हॉली एंड कंपनी के लिए अविभाजित पंजाब के पूरे क्षेत्र के प्रतिनिधि के रूप में काम करने के लिए तुरंत सहमति दे दी थी। चमड़ा प्रदूषणकारी था, और निश्चित रूप से, जिन जानवरों की खालें मरने के बाद भी इंसानों के पैरों पर एक अतिरिक्त परत के रूप में मौजूद रहती थीं, वे 'मृत' नहीं थे; उन्हें मारा गया था। भल्ला ने कहा कि हत्याओं से उनका कोई लेना-देना नहीं था। वह केवल एक प्रतिनिधि थे। सीमा रेखा स्पष्ट थी। अंग्रेजों ने जो किया, उन्होंने जो किया।

फिर भी, उन्हें ल्यूकोडर्मा हो गया था, और कई लोगों का मानना था कि यह क्रोधित देवताओं का विकृत चिह्न था, क्योंकि उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से ही सही, पशु वध करके अपनी आत्मा को दूषित कर लिया था। हालांकि, अन्य लोग उनके आसपास मंडराते रहे, क्योंकि वे बेहद सफल और बेहद धनी थे। पंजाब में एकमात्र एजेंट होने से वे पूरे भारत के एकमात्र एजेंट बन गए थे। वे कानपुर चले गए, जो उस समूह का मुख्यालय था जिसका जेम्स हॉली हिस्सा थे। उन्होंने इस विशेष लाभदायक व्यवसाय पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अपने कई अन्य व्यवसाय छोड़ दिए। समय के साथ, उन्होंने न केवल उनके जूते बेचे, बल्कि उन्हें यह भी बताया कि सबसे

अच्छा क्या बिकेगा। उन्होंने सुझाव दिया कि वे गोरिल्ला जूतों का उत्पादन कम करें और चैंपियंस का उत्पादन बढ़ाएं। उन्होंने वस्तुतः उनके उत्पाद मिश्रण को निर्धारित किया। जेम्स हॉली उनकी सूझबूझ के कारण फले-फूले, और वे उन पर निर्भर हो गए थे।

युद्ध के दौरान, कंपनी ने अपना पूरा उत्पादन सैन्य बूटों में बदल दिया था। ये बूट सीधे भल्ला के हाथों में नहीं जाते थे, लेकिन जेम्स हॉली ने निष्पक्षता और दूरदर्शिता के चलते भल्ला को कमीशन देना जारी रखा। हालांकि कमीशन का प्रतिशत कम था, लेकिन बिक्री की अधिक मात्रा के कारण भल्ला की स्थिति पहले से बेहतर ही रही। युद्ध के बाद, प्यारे लाल भल्ला की बिक्री और विपणन की कुशलता से प्रेरित होकर, जेम्स हॉली ने नागरिक बूटों का उत्पादन फिर से शुरू कर दिया। यह बात भी हरीश को पसंद आई, क्योंकि उन्होंने मिडलैंड्स कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी में इसी तरह के उत्पादन का प्रशिक्षण प्राप्त किया था।

एचएसएच का आदेश रद्द होने की कड़वी खबर मिलने के एक घंटे के भीतर ही, हरीश साइकिल से प्यारे लाल भल्ला के दफ्तर पहुँच गए। मेस्टन रोड के एक तंग कोने की पहली मंजिल पर स्थित छोटे-छोटे कमरों के उस जाल को ' दफ्तर' कहना शायद थोड़ा अधिक ही होगा, क्योंकि वही कमरा उनका निवास, उनका व्यवसाय, उनका शोरूम और उनका गेस्ट हाउस था।

हरेश सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गया। उसने पहरेदार को कागज का एक टुकड़ा लहराया और बुदबुदाते हुए कहा, 'जेम्स हॉली' और कुछ अंग्रेज़ी शब्द। वह एक प्रतीक्षालय में दाखिल हुआ, फिर एक और कमरा जिसमें अलमारियाँ थीं जिनका उद्देश्य वह समझ नहीं पाया, एक भंडारगृह, एक कमरा जिसमें कई क्लर्क ज़मीन पर अपनी मेजों और लाल बहीखातों के साथ बैठे थे, और अंत में स्वयं प्यारे लाल भल्ला का दरबार कक्ष—क्योंकि यही

उसका उद्देश्य था। यह एक छोटा सा कमरा था, जिस पर रंग करने के बजाय सफेदी की गई थी। पैंसठ वर्ष की आयु में भी ऊर्जावान, रोग से पीला पड़ा चेहरा लिए हुए, वह बूढ़ा व्यक्ति एक बड़े लकड़ी के चबूतरे पर बैठा था जो एक बेदाग सफेद चादर से ढका था। वह एक सख्त, बेलनाकार सूती तकिये के सहारे टिका हुआ था। उसके ऊपर उसके पिता की माला से सटी तस्वीर टंगी हुई थी। उसके चबूतरे से सटी दीवारों के साथ दो बेंचें थीं। यहाँ विभिन्न लोग बैठे थे: चापलूस, एहसान चाहने वाले, सहयोगी, कर्मचारी। इस कमरे में न कोई क्लर्क था, न कोई बहीखाता। प्यारे लाल भल्ला स्वयं उन सभी सूचनाओं, अनुभवों और विवेक का भंडार थे जिनकी उन्हें निर्णय लेने के लिए आवश्यकता होती थी।

हरेश अंदर आया और सिर झुकाकर तुरंत अपने हाथ आगे बढ़ा दिए, मानो प्यारे लाल भल्ला के घुटनों को छूना चाहता हो। बूढ़े आदमी ने अपने हाथ हरेश के सिर के ऊपर उठा दिए।

'Sit down, son,' said Pyare Lal Bhalla in Punjabi. Haresh sat down on one of the benches.

खड़े हो जाओ।

Haresh stood up.

बैठ जाओ।

हरेश एक बार फिर बैठ गया।

प्यारे लाल भल्ला ने उसे इतनी एकाग्रता से देखा कि वह लगभग सम्मोहित होकर उनके आदेशों का पालन करने के लिए विवश हो गया। बेशक, आवश्यकता जितनी अधिक होती है, सम्मोहित होने की प्रवृत्ति उतनी ही अधिक होती है, और हरेश की आवश्यकता, जैसा कि उसने स्वयं महसूस किया, बहुत अधिक थी।

इसके अलावा, प्यारे लाल भल्ला एक बुजुर्ग और संभ्रांत व्यक्ति होने के नाते सम्मान की उम्मीद करते थे। क्या उनकी बेटी का विवाह लाहौर में वर्षों से हुए सबसे भव्य विवाह में नहीं हुआ था? उनका विवाह एक प्रथम श्रेणी के राजपत्रित अधिकारी, पंजाब नहरों के कार्यकारी अभियंता के पुत्र —सबसे बड़े पुत्र—से हुआ था? यह सवाल केवल सैन्य सेवाओं द्वारा व्यापार के अस्तित्व को स्वीकार करने का नहीं था। यह उनके बीच एक गठबंधन था। इसने उनके आगमन की घोषणा इस तरह की कि बीस मंदिरों का दान भी नहीं कर पाता। अपने सामान्य सहज अंदाज में उन्होंने दूल्हे के पिता से कहा: 'जैसा कि आप जानते हैं, मैं एक गरीब आदमी हूँ, लेकिन मैंने वर्मा और रैंकिन के यहाँ संदेश छोड़ दिया है, और वे आपके लिए उपयुक्त व्यक्ति का नाप लेंगे।' शार्क की खाल के अचकन, उत्तम कश्मीरी ऊन के सूट: दूल्हे के पिता ने अपने परिवार के लिए पचास सेट कपड़े बनवाने में कोई संकोच नहीं किया—और इस खुली छूट की पूर्ति, प्यारे लाल भल्ला द्वारा गर्व और चतुराई से वहन किए गए शादी के खर्चों के सागर में एक बूंद मात्र थी।

'उठो। मुझे अपना हाथ दिखाओ।'

यह हरेश का दिन का चौथा तनावपूर्ण सामना था। उसने गहरी सांस ली, फिर अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ाया। प्यारे लाल भल्ला ने उसे कुछ जगहों पर दबाया, खासकर छोटी उंगली के ठीक नीचे वाले हिस्से पर। फिर, यह संकेत दिए बिना कि वह संतुष्ट है या नहीं, उसने कहा:

बैठ जाओ।

हरेश आज्ञाकारी होकर बैठ गया।

अगले दस मिनट तक प्यारे लाल भल्ला ने अपना ध्यान किसी और पर केंद्रित कर लिया।

हरेश की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, 'उठो।'

Haresh rose.
‘जी हां, बेटे? तुम कौन हो?’
‘I am Haresh Khanna, the son of Amarnath Khanna.’
‘कौन सा अमरनाथ खन्ना? बनारस वाला? या नील दरवाजा वाला?’
‘नील दरवाजा।’
इससे एक तरह का संबंध स्थापित हो गया, क्योंकि हरीश के पालक पिता का कार्यकारी अभियंता प्यारे लाल भल्ला के दामाद से बहुत अप्रत्यक्ष संबंध था।
‘हम्म। बोलो। मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ?’
हरेश ने कहा: 'मैं जूते बनाने वाली कंपनी में काम कर रहा हूं। मैं पिछले साल मिडिलहैम्प्टन से लौटा हूं। मैंने मिडलैंड्स कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी से पढ़ाई की है।'
‘मिडिलहैम्प्टन। मैं समझ गया। मैं समझ गया।’ प्यारे लाल भल्ला जाहिर तौर पर कुछ उत्सुक थे।
कुछ देर बाद उसने कहा, 'आगे बढ़ो।'
‘मैं सीएलएफसी में काम कर रहा हूँ। लेकिन वे मुख्य रूप से गोला-बारूद के जूते बनाते हैं, और मेरा अनुभव मुख्य रूप से नागरिक क्षेत्र में है। हालाँकि, मैंने नागरिकों के लिए एक नया विभाग शुरू किया है—’
‘ओह। घोष,’ प्यारे लाल भल्ला ने कुछ तिरस्कारपूर्ण लहजे में बीच में ही टोकते हुए कहा। ‘वो परसों यहाँ आए थे। वो चाहते थे कि मैं उनके कुछ संवादों को उनके लिए प्रचारित करूँ। हाँ, हाँ, उन्होंने नागरिक विचार के बारे में कुछ कहा था।’
यह देखते हुए कि घोष देश की सबसे बड़ी निर्माण कंपनियों में से एक चलाते थे, प्यारे लाल भल्ला का तिरस्कारपूर्ण लहजा थोड़ा अटपटा लग सकता था। हालांकि, सच्चाई यह थी कि जूते के कारोबार में वे जेम्स

हॉली जैसे दिग्गज के मुकाबले बहुत छोटे थे।
“आप जानते हैं कि वहाँ काम कैसे चलता है,” हरेश ने कहा। सीएलएफसी की अक्षमता और मनमानी को उन्होंने अक्सर महसूस किया था—लेकिन आज तो उन्हें सबसे ज़्यादा तकलीफ़ हुई—इसलिए उन्हें ऐसा नहीं लगा कि इस तरह बोलने से वे अपनी कंपनी को किसी भी तरह से निराश कर रहे हैं। उन्होंने उनके लिए जी-जान से मेहनत की थी। असल में, कंपनी ने ही उन्हें निराश किया था।
'जी हां, मैं करता हूं। तो आप नौकरी के लिए मेरे पास आए हैं।'
‘आपने मुझे सम्मानित किया, भल्ला साहब। लेकिन वास्तव में मैं जेम्स हॉली के यहाँ नौकरी के लिए आया हूँ—जो लगभग वही बात है।’
लगभग एक मिनट तक, जब तक हरेश खड़ा रहा, प्यारे लाल भल्ला के व्यापारिक दिमाग में विचार कौंधे। फिर उन्होंने बगल के कमरे से एक क्लर्क को बुलाया और कहा:
'गॉवर के लिए उसे एक पत्र लिखो और उस पर मेरे हस्ताक्षर कर दो।'
इसके बाद प्यारे लाल भल्ला ने आश्वासन, आशीर्वाद, सहानुभूति और विदाई के संयुक्त भाव से हरेश की ओर अपना दाहिना हाथ उठाया।
हरेश ने उत्साह से सोचा, "मेरा पैर दरवाजे के अंदर है।"
उन्होंने यह नोट लिया और साइकिल चलाते हुए क्रोमार्ती हाउस की भव्य चार मंजिला इमारत की ओर चल दिए, जो उस समूह का मुख्यालय था जिसका जेम्स हॉली हिस्सा थे। उन्होंने सर डेविड गोवर से मिलने का समय तय किया था, यदि संभव हो तो इसी सप्ताह या अगले सप्ताह। साढ़े पाँच बज रहे थे, कार्यदिवस समाप्त हो रहा था। वे भव्य द्वार से अंदर दाखिल हुए। जब उन्होंने मुखपृष्ठ पर अपना नोट दिया, तो उन्हें प्रतीक्षा करने के लिए कहा गया। आधा घंटा बीत गया। फिर उन्हें बताया गया:
'कृपया यहीं प्रतीक्षा करते रहें, श्री खन्ना। सर डेविड आपसे बीस मिनट में

मिलेंगे।'

साइकिल चलाने से पसीने से तरबतर, रेशमी कमीज़ और भूरे रंग की पतलून के अलावा कुछ भी पहने नहीं, न जैकेट, न टाई!—हरेश अचानक मिली इस सूचना से चौंक गया। लेकिन उसके पास इंतज़ार करने के अलावा कोई चारा नहीं था। उसके पास अपने कीमती प्रमाण पत्र भी नहीं थे। सौभाग्य से, और अपनी आदत के अनुसार, उसकी जेब में एक कंघी थी, और उसने बाथरूम में जाकर खुद को तरोताज़ा करते समय उसका इस्तेमाल किया। उसने मन ही मन सोचा कि उसे सर डेविड से क्या कहना है और किस क्रम में कहना सबसे प्रभावी होगा। लेकिन जब उसे भव्य, अलंकृत लिफ्ट से होते हुए क्रोमार्ती ग्रुप के प्रबंध निदेशक के विशाल कार्यालय में ले जाया गया, तो वह अपनी सारी बातें भूल गया। यह दरबार उस छोटे से सफ़ेद कमरे से बिल्कुल अलग था जिसमें वह एक घंटे पहले बैठा (और खड़ा) था।

क्रीम रंग से रंगी दीवारें लगभग बीस फीट ऊंची रही होंगी, और दरवाजे से लेकर अंत में रखी विशाल महोगनी की मेज तक की दूरी कम से कम चालीस फीट थी। जैसे ही हरेश गहरे लाल रंग के कालीन पर चलकर भव्य मेज की ओर बढ़ा, उसे एहसास हुआ कि उस मेज के पीछे एक हट्टा-कट्टा आदमी बैठा है—घोष जितना लंबा और उससे भी ज्यादा भारी-भरकम—जो चश्मे से उसे घूर रहा है। उसने महसूस किया कि कद में छोटा होने के कारण वह इस विशाल परिवेश में और भी छोटा दिख रहा होगा। संभवतः इस कार्यालय में आने वाले किसी भी साक्षात्कारकर्ता से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह इतनी गहन निगरानी में कमरे में चलते समय डर से कांप उठेगा। हालांकि हरेश प्यारे लाल भल्ला के सामने एक बच्चे की तरह सहजता से खड़ा और बैठ गया था, लेकिन उसने गौवर के सामने कोई घबराहट नहीं दिखाई। सर डेविड ने इतनी कम सूचना पर

उससे मिलने की कृपा की थी; उन्हें उसके पहनावे का ध्यान रखना ही होगा।

'जी हां, नौजवान, मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं?' सर डेविड गोवर ने न तो उठते हुए और न ही हरेश को कुर्सी पर बैठने का इशारा करते हुए कहा।

'सच कहूं तो, सर डेविड,' हरेश ने कहा, 'मैं नौकरी की तलाश में हूं। मेरा मानना है कि मैं इसके लिए योग्य हूं, और मुझे उम्मीद है कि आप मुझे नौकरी देंगे।'

भाग दस

10.1

तूफान के कुछ दिनों बाद, देबरिया गांव से लोगों का पलायन शुरू हो गया। विभिन्न कारणों से कई लोग कुछ ही घंटों के भीतर उपमंडल के कस्बे सलीमपुर के लिए रवाना हो गए, जो शाखा लाइन का सबसे नज़दीकी रेलवे स्टेशन था।

रशीद अपनी पत्नी के गांव जाने के लिए ट्रेन पकड़ने के लिए निकल पड़ा; उसने अपनी पत्नी और दो बच्चों को देबरिया वापस लाने की योजना बनाई थी, जहां वे तब तक रहेंगे जब तक कि उसकी पढ़ाई उसे वापस ब्रह्मपुर नहीं बुला लेती।

मान को रशीद के साथ जाना था। वह ऐसा करने के लिए बिल्कुल भी उत्सुक नहीं था। रशीद की पत्नी जहाँ अपने पिता के साथ रहती थी, उस गाँव जाना, उससे एक शब्द भी बोले बिना वापस लौटना, उसे सिर से पैर तक काले बुर्के में ढका देखना, उसकी छवि की कल्पना में समय बिताना, रशीद की बेचैनी को महसूस करना जब वह दो अलग-अलग बातचीत

करने की कोशिश कर रहा था, इस भीषण गर्मी में किसी भी तरह की मेहनत करना, इनमें से कुछ भी मान को ज़रा भी सुखद नहीं लग रहा था। हालाँकि, रशीद ने उसे आमंत्रित किया था; शायद उसने सोचा होगा कि ऐसा न करना अनुचित होगा: आख़िरकार, मान उसके परिवार का मेहमान होने से पहले उसका निजी मेहमान था। मान के लिए बिना किसी उचित कारण के मना करना मुश्किल था, और उसके पास कोई उचित कारण नहीं था। इसके अलावा, गाँव में रहना उसे पागल कर रहा था। वह देबरिया में अपने जीवन और उसकी सभी असुविधाओं और ऊब से हताश हो चुका था।

भालू और उसका साथी गुप्पी देबरिया में अपना सारा काम निपटा चुके थे और कहीं और जा रहे थे।

नेताजी वहां इसलिए जा रहे थे क्योंकि उन्हें 'उपमंडल न्यायालयों में कुछ काम था', लेकिन असल में वे सलीमपुर में स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों और छोटे-मोटे राजनेताओं से मेलजोल बढ़ाना चाहते थे।

अंत में, प्रख्यात पुरातत्वविद विलायत साहब थे, जिनकी झलक मान को अभी तक नहीं मिली थी। उन्हें दिल्ली लौटते समय ब्रह्मपुर लौटना था। अपनी आदत के अनुसार, वे देबरिया से अकेले ही बैलगाड़ी पर सवार होकर निकल गए, इससे पहले कि कोई उनके साथ रिक्शा साझा करने का दोस्ताना प्रस्ताव दे पाता।

मान ने सोचा, मानो उसका कोई अस्तित्व ही न हो—जैसे वो पर्दे में हो। मैंने उसके बारे में सुना तो है, पर उसे कभी देखा नहीं—परिवार की महिलाओं की तरह। शायद उनका भी अस्तित्व हो। या शायद न हो। शायद सारी महिलाएं महज़ अफवाहें हों। वह बहुत बेचैन होने लगा था।

बड़े ही आकर्षक और मूंछों वाले नेताजी ने ज़िद की कि मान उनकी हार्ले डेविडसन मोटरसाइकिल पर बैठकर सलीमपुर चले। उन्होंने पूछा, “इस

गर्मी में एक घंटे तक खस्ताहाल साइकिल रिक्शा में क्यों सफर करना चाहते हो? ब्रह्मपुर के रहने वाले हो तो ऐशो-आराम की आदत है, दिमाग को झुलसाने की आदत तो नहीं होगी। खैर, मुझे तुमसे बात करनी है।" मान मान गया और अब गड्ढों वाली ग्रामीण सड़क पर मोटरसाइकिल पर उछलता-कूदता जा रहा था, मानो उसका दिमाग झुलसने के बजाय कंपन कर रहा हो।

रशीद ने मान को नेताजी और हर संभव परिस्थिति से व्यक्तिगत लाभ उठाने के उनके प्रयास के बारे में चेतावनी दी थी, इसलिए मान को उनकी बातचीत के इस मोड़ पर आश्चर्य नहीं हुआ।

'आप कैसे आनंद ले रहे हैं? क्या आप मुझे सुन पा रहे हैं?' नेताजी ने पूछा।

'ओह, हाँ,' मान ने जवाब दिया।

मैंने पूछा, आप कैसा महसूस कर रहे हैं?

'बिल्कुल। ये मोटरसाइकिल आपको कहाँ से मिली?'

मेरा मतलब था, क्या आपको हमारे गांव में मजा आ रहा है?

'क्यों नहीं?'

'क्यों नहीं? इसका मतलब है कि आप नहीं हैं।'

नहीं, नहीं—मुझे बहुत मजा आ रहा है।

अच्छा, आपको इसमें क्या अच्छा लगता है?

'अरे, देश में बहुत ताजी हवा है,' मान ने कहा।

'मुझे तो यह बिलकुल पसंद नहीं,' नेताजी चिल्लाए।

'वह क्या था?'

मुझे इससे नफरत है। यहाँ करने को कुछ नहीं है। यहाँ तक कि कोई उचित राजनीति भी नहीं है। इसीलिए अगर मैं गाँव छोड़कर हफ्ते में कम से कम दो बार सालिमपुर नहीं जाता, तो मैं बीमार पड़ जाता हूँ।

‘बीमार?’ मान ने पूछा।
'हाँ, बीमार। गाँव में हर कोई मुझे बीमार कर देता है। और गाँव के बदमाश तो सबसे बुरे हैं। जैसे कि वो मोअज़्ज़म, उसे दूसरों की संपत्ति का ज़रा भी सम्मान नहीं है... तुम ठीक से पकड़ नहीं रहे हो। गिर जाओगे। संतुलन बनाए रखने के लिए मुझे कसकर पकड़ लो।'
'ठीक है।'
‘मैं अपनी मोटरसाइकिल को भी उनसे सुरक्षित नहीं रख सकता। मुझे उसे खुले आंगन में रखना पड़ता है, और वे जानबूझकर उसे नुकसान पहुंचाते हैं। अब ब्रह्मपुर, वह तो एक शहर है!’
‘तो आप ब्रह्मपुर गए थे?’
‘जी हां, बिल्कुल,’ नेताजी ने अधीरता से कहा। ‘आपको पता है मुझे ब्रह्मपुर में क्या पसंद है?’
‘क्या?’ मान ने पूछा।
आप होटलों में खाना खा सकते हैं।
‘होटलों में?’ मान ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।
‘छोटे होटलों में।’
'ओह।'
‘अब ये मुश्किल दौर है। कसकर पकड़ लो। मैं धीरे चलूंगा। इस तरह, अगर हम फिसल भी गए तो भी हम ठीक रहेंगे।’
'अच्छा।'
'क्या आप मुझे सुन सकते हैं?'
'बिल्कुल सही।'
‘मक्खियों के बारे में क्या ख्याल है?’
नहीं, तुम मेरी ढाल हो।
कुछ देर रुकने के बाद नेताजी ने कहा, 'आपके पास बहुत सारे संपर्क

होंगे।'
‘संपर्क?’
'हां, संपर्क, संपर्क, आप समझ रहे हैं ना मेरा मतलब?'
'लेकिन-'
नेताजी ने साफ शब्दों में कहा, 'आपको अपने संपर्कों का इस्तेमाल करके हमारी मदद करनी चाहिए। मुझे पूरा यकीन है कि आप मुझे केरोसिन डीलर का लाइसेंस दिलवा सकते हैं। राजस्व मंत्री के बेटे के लिए तो यह काफी आसान होना चाहिए।'
‘दरअसल, ये सब एक अलग मंत्रालय के अधीन है,’ मान ने बिना नाराज़ हुए कहा। ‘मुझे लगता है, नागरिक आपूर्ति मंत्रालय के अधीन।’
‘अरे, अरे, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे पता है यह कैसे काम करता है।’
‘मैं बिल्कुल नहीं कर सकता,’ मान ने कहा। ‘अगर मैंने ऐसा सुझाव दिया तो मेरे पिता मुझे मार डालेंगे।’
‘पूछने में कोई हर्ज नहीं है। वैसे भी, आपके पिताजी की यहाँ बहुत इज़्ज़त है... वो आपके लिए कोई आरामदायक नौकरी क्यों नहीं ढूंढते?’
‘एक नौकरी... उह, यहाँ लोग मेरे पिता का सम्मान क्यों करते हैं? आखिर, वो तुम्हारी जमीन छीन लेंगे, है ना?’
‘अच्छा...’ नेताजी ने कहना शुरू किया, फिर रुक गए। वे सोचने लगे कि क्या उन्हें मान को यह बताना चाहिए कि गाँव के अभिलेखपाल ने पारिवारिक हितों के लिए अभिलेखों में हेराफेरी की थी। नेताजी या परिवार में किसी को भी अब तक रशीद के पटवारी जाने की जानकारी नहीं थी। यह सोचना भी असंभव था कि रशीद ने कछेरू की ओर से अभिलेखों को ठीक करने के लिए कहा होगा।
‘क्या हमें विदा करने वाला आपका बेटा था?’ मान ने पूछा।

'हां। वह अभी दो साल से थोड़ा ज्यादा का है, और इन दिनों उसका मूड खराब है।'

'क्यों?'

'ओह, वह अपनी दादी के घर से लौटा है, जहाँ उसे बहुत लाड़-प्यार मिला था। अब हम जो कुछ भी करते हैं, वह उसे पसंद नहीं आता, और वह जानबूझकर मनमानी कर रहा है।'

शायद गर्मी की वजह से ऐसा है।

'शायद,' नेताजी सहमत हुए। 'क्या आपने कभी प्यार किया है?'

'वह क्या था?'

मैंने पूछा, क्या तुमने कभी प्यार किया है?

'ओह हाँ,' मान ने कहा। 'बताओ, वह इमारत कौन सी है जिसके पास से हम अभी गुज़रे?'

कुछ देर में वे सलीमपुर पहुँच गए। उन्होंने कपड़े और सामान्य सामान की दुकान पर बाकी लोगों से मिलने का तय किया था। लेकिन सलीमपुर की संकरी, भीड़भाड़ वाली गलियाँ पूरी तरह से भरी हुई थीं। यह साप्ताहिक बाजार का दिन था। फेरीवाले, ठेलेवाले, हर तरह के विक्रेता, सुस्त कोबरा लिए सपेरे, नीम-हकीम, लोहार, सिर पर आम और लीची की टोकरियाँ लिए फल विक्रेता, मक्खियों से भरी बर्फी, लड्डू और जलेबी लिए मिठाई विक्रेता, और सलीमपुर ही नहीं बल्कि आसपास के कई गाँवों की आबादी का एक बड़ा हिस्सा कस्बे के केंद्र में किसी तरह ठसाठस भर गया था।

वहाँ बहुत शोरगुल था। ग्राहकों के शोरगुल और फेरीवालों की चीख-पुकार के बीच दो कर्कश लाउडस्पीकरों की विरोधाभासी आवाज़ें गूंज रही थीं, एक से ऑल इंडिया रेडियो ब्रह्मपुर का मौजूदा प्रसारण हो रहा था, जबकि दूसरे से फिल्मी गानों के साथ-साथ राहत-ए-रूह या ईज़-फॉर-द-सोल हेयर ऑयल के विज्ञापन भी बज रहे थे।

बिजली! मान ने खुशी से उछलते हुए सोचा। शायद कहीं कोई पंखा भी मिल जाए।

नेताजी अधीरता से गालियां देते हुए और लगातार हॉर्न बजाते हुए पंद्रह मिनट में मुश्किल से सौ गज की दूरी तय कर पाए।

उन्होंने रिक्शा से आ रहे बाकी लोगों के बारे में कहा, जो उनसे आधे घंटे पीछे थे, 'उनकी ट्रेन छूट जाएगी।' लेकिन चूंकि ट्रेन पहले ही तीन घंटे लेट थी, इसलिए ऐसा होने की संभावना वास्तव में कम थी।

जब नेताजी अपने मित्र की दुकान पर पहुँचे (जो दुर्भाग्यवश, पंखे से सुसज्जित नहीं थी), तब तक उनका सिरदर्द इतना तेज़ हो चुका था कि मान का परिचय कराते ही वे तुरंत एक बेंच पर लेट गए और आँखें बंद कर लीं। दुकानदार ने कुछ कप चाय मंगवाई। दुकान में कई अन्य मित्र भी जमा थे, जो राजनीतिक और अन्य गपशप का अड्डा बन चुकी थी। उनमें से एक उर्दू अखबार पढ़ रहा था, दूसरा—बगल का सुनार—बड़े ध्यान से अपनी नाक खुजला रहा था। थोड़ी देर में भालू और गुप्पी आ गए।

चूंकि यह आंशिक रूप से एक कपड़े की दुकान थी, इसलिए मान को यह देखने में थोड़ी दिलचस्पी थी कि इसे कैसे चलाया जाता है। उसने देखा कि वहां कोई ग्राहक नहीं था।

'आज यहां इतना कम कारोबार क्यों है?' मान ने पूछा।

'बाजार का दिन है—किसी भी दुकान में बहुत कम चहल-पहल है,' सुनार ने कहा। 'बस इक्का-दुक्का बाहर से आए हुए लोग दिख जाते हैं। इसीलिए मैंने अपनी दुकान छोड़ दी है। खैर, मैं यहीं से इस पर नज़र रख सकता हूँ।'

दुकानदार से उसने पूछा, 'रुधिया उपमंडल के एसडीओ आज सलीमपुर में क्या कर रहे हैं?'

नेताजी, जो एक शव की तरह स्थिर लेटे हुए थे, 'एसडीओ' सुनते ही

अचानक चौकन्ने हो गए। सालिमपुर का अपना एसडीओ था, जो असल में इस क्षेत्र का प्रशासनिक स्वामी था। किसी दूसरे उपमंडल के उपमंडल अधिकारी का आना वाकई एक बड़ी खबर थी।

दुकानदार ने कहा, 'ये तो अभिलेखागार ही होगा। मैंने किसी को कहते सुना था कि इन्हें देखने के लिए कहीं से किसी को भेजा जा रहा है।'

नेताजी ने थककर बेंच पर वापस गिरने से पहले कहा, 'अरे गधे, इसका अभिलेखागार से कोई लेना-देना नहीं है। इसका संबंध जमींदारी अधिनियम लागू होने के बाद विभिन्न उपमंडलों में अधिसूचना की प्रक्रिया के समन्वय से है।'

दरअसल, नेताजी को इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि एसडीओ शहर में क्यों आए हैं। लेकिन उन्होंने तुरंत उनसे मिलने का फैसला कर लिया।

एक दुबला-पतला स्कूली शिक्षक भी कुछ मिनटों के लिए आया, उसने व्यंग्यपूर्ण टिप्पणी की कि उसके पास अपने कुछ परिचित लोगों की तरह बेकार की बातों में पूरा दिन बिताने का समय नहीं है, उसने नेताजी की लेटी हुई आकृति को तिरस्कार भरी नजरों से देखा, मान की ओर थोड़ा भौंहें चढ़ाकर सवालिया निगाहों से देखा और चला गया।

'गुप्पी कहाँ है?' भालू ने अचानक पूछा। किसी को पता नहीं था। वह गायब हो गया था। कुछ मिनट बाद वह मिला, सड़क के बीचोंबीच एक बूढ़े झोलाछाप डॉक्टर द्वारा अर्धवृत्त में सजाई गई बोतलों और गोलियों के ढेर को देखकर वह अचंभित होकर देख रहा था। वहाँ भीड़ जमा हो गई थी और झोलाछाप डॉक्टर की बातों को सुन रही थी, जिसने एक बोतल पकड़ी हुई थी जिसमें गाढ़ा, अपारदर्शी चूने के हरे रंग का तरल पदार्थ था। और यह अद्भुत औषधि, जो वास्तव में एक सर्वगुणकारी औषधि है, मुझे ताजुद्दीन ने दी थी, जो एक महान बाबा थे और अल्लाह के बहुत करीब

थे। उन्होंने नागपुर के जंगलों में बारह साल बिताए, कुछ भी नहीं खाया—वे केवल नमी के लिए पत्तियाँ चबाते थे और भोजन के लिए अपने पेट पर एक पत्थर रखते थे। उनकी मांसपेशियाँ सड़ गईं, उनका खून सूख गया, उनका मांस गल गया। वे मात्र हड्डी और काली चमड़ी रह गए थे। तब अल्लाह ने दो फरिश्तों से कहा, "नीचे जाओ और उन्हें मेरा सलाम कहो"—

वह गुप्पी, जो मुंह खोलकर इस बकवास को पूरी निष्ठा से सुन रही थी, उसे भालू को लगभग घसीटकर उस जगह से वापस दुकान में ले जाना पड़ा।

10.2

चाय, पान और अखबार का दौर शुरू होते ही बातचीत राज्य स्तर की राजनीति, विशेषकर ब्रह्मपुर में हाल ही में हुए सांप्रदायिक दंगों की ओर मुड़ गई। घृणा का मुख्य निशाना गृह मंत्री एल.एन. अग्रवाल थे, जिन्होंने आलमगिरी मस्जिद के पास मुस्लिम भीड़ पर पुलिस फायरिंग का बचाव किया था, जिसकी खबरें अखबारों में खूब छपी थीं। वे शिव मंदिर के निर्माण—या यूं कहें कि पुनर्निर्माण—के प्रबल समर्थक माने जाते थे। ब्रह्मपुर में मुसलमानों के बीच लोकप्रिय कुछ तुकबंदी वाले नारे सलीमपुर तक पहुंच गए थे और उन्हें बड़े चाव से दोहराया जा रहा था:

Saanp ka zahar, insaan ki khaal:

Yeh hai L.N. Agarwal!

सांप का जहर, मनुष्य की खाल:

ये हैं एल.एन. अग्रवाल!

Ghar ko loot kar kha gaya maal:

गृह मंत्री अग्रवाल!

उसने हमारे घर को लूटा और हमारी सारी संपत्ति हड़प ली:

गृह मंत्री अग्रवाल!
यह उनके 'कठोर लोहे' के आदेश का संदर्भ हो सकता है, जिसके तहत अति उत्साही पुलिसकर्मियों ने न केवल कुल्हाड़ी और भाले बल्कि घरेलू चाकू भी जब्त कर लिए थे, या यह इस तथ्य का संकेत हो सकता है कि एल.एन. अग्रवाल, हिंदू दुकानदार समुदाय के सदस्य होने के नाते, पूर्व प्रदेश की कांग्रेस पार्टी के लिए सबसे महत्वपूर्ण धन संग्राहक थे। उनके मूल का उल्लेख निम्नलिखित नारे में भी हल्के ढंग से किया गया था:
L.N. Agarwal, wapas jao,
Baniye ki dukaan chalao!
एल.एन. अग्रवाल, वापस जाओ।
जाओ और अपने बनिया की दुकान चलाओ!
लेकिन दीवारों में शायद उस ज़ोरदार हंसी की गूंज सुनाई दी होगी जो इस आखिरी दोहे पर हंसी देने वालों की ही हंसी का मज़ाक उड़ाते हुए आई थी। क्योंकि यह सब एक दुकान में हो रहा था, और मान, एक खत्री होने के नाते, व्यापार से अच्छी तरह वाकिफ था।
एल.एन. अग्रवाल के बिल्कुल विपरीत, महेश कपूर, हालांकि हिंदू थे, अन्य धर्मों के प्रति अपनी सहिष्णुता के लिए जाने जाते थे—उनकी पत्नी कहती थीं कि वे केवल अपने धर्म के प्रति ही असहिष्णु थे—और जानकार मुसलमानों के बीच उन्हें पसंद और सम्मान दिया जाता था। यही कारण था कि, उदाहरण के लिए, जब मान और रशीद पहली बार मिले, तो रशीद का उनके प्रति अच्छा रवैया था। अब उन्होंने मान से कहा:
'अगर राष्ट्रीय स्तर पर नेहरू जैसे लोग या राज्य स्तर पर आपके पिता जैसे लोग न होते, तो मुसलमानों की स्थिति आज की तुलना में और भी बदतर होती।'
मान, जिसका अपने पिता के प्रति विशेष रूप से अच्छा भाव नहीं था, ने

कंधे उचका दिए।

रशीद सोच रहा था कि मान इतना भावहीन क्यों है। शायद, उसने सोचा, बात उसके कहने के तरीके की वजह से थी। उसने 'हमारी स्थिति' की जगह 'मुसलमानों की स्थिति' शब्द का इस्तेमाल किया था, इसलिए नहीं कि वह अपने समुदाय का हिस्सा नहीं था, बल्कि इसलिए कि वह अपने दिल के इतने करीब के मुद्दे को भी लगभग अकादमिक रूप से संतुलित श्रेणियों में बाँटता था। दुनिया को वस्तुनिष्ठ रूप से समझने की कोशिश करना उसकी आदत थी, लेकिन हाल ही में—खासकर अपने पिता के साथ छत पर हुई बातचीत के बाद से—उसे इससे और भी ज़्यादा घृणा होने लगी थी। उसे पटवारी के सामने अपने धोखे—या शायद टालमटोल —से नफ़रत थी, लेकिन वह जानता था कि उसके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था। अगर पटवारी को यह विश्वास हो जाता कि रशीद का परिवार उसके साथ नहीं है, तो कछेरू के ज़मीन पर अधिकार की रक्षा कोई नहीं कर सकता था।

नेताजी सीधे बैठते हुए और अपने उपनाम के अनुरूप एक नेता जैसी आवाज में बोले, 'मैं आपको बताता हूँ कि मैं क्या सोचता हूँ। हमें एकजुट होना होगा। हमें भलाई के लिए मिलकर काम करना होगा। हमें हालात को पटरी पर लाना होगा। और अगर पुराने नेता बदनाम हो गए हैं, तो ऐसे नौजवानों की ज़रूरत है—हमारे आस-पास मौजूद नौजवानों जैसे—जो काम करना जानते हों। काम करने वाले, न कि अव्यावहारिक सपने देखने वाले। वे जो लोगों को जानते हों, हर उपमंडल के शीर्ष अधिकारियों को। अब हर कोई मेरे पिता का सम्मान करता है, हो सकता है कि वे अपने समय के महत्वपूर्ण लोगों को जानते हों, मैं इससे इनकार नहीं करता। लेकिन उनका समय, सब सहमत होंगे, अब लगभग समाप्त हो चुका है। केवल इतना ही काफी नहीं है—'

लेकिन जो करना काफी नहीं था, वह अनसुना रह गया। कुछ मिनटों से शांत पड़ा लाउडस्पीकर वाला ठेला, जिस पर 'ईज़-फॉर-द-सोल हेयर ऑयल' का विज्ञापन था, अचानक दुकान के ठीक बाहर से कान फाड़ देने वाली तेज़ आवाज़ में बजने लगा। शोर इतना ज़्यादा था—पहले की तुलना में कहीं ज़्यादा—कि लोगों को अपने कान ढकने पड़े। बेचारे नेताजी का चेहरा पीला पड़ गया और उन्होंने दर्द से अपना सिर पकड़ लिया। सभी लोग शोर को शांत करने के लिए सड़क पर उतर आए। लेकिन ठीक उसी समय नेताजी ने भीड़ में एक लंबे कद के व्यक्ति को देखा, जिसका चेहरा हेलमेट के नीचे कुछ अपरिचित और कमज़ोर ठुड्डी वाला था। रुधिया के एसडीओ—क्योंकि नेताजी अपनी अचूक सूझबूझ से तुरंत समझ गए थे कि यह कौन है—ने आवाज़ के स्रोत की ओर तिरस्कार भरी नज़र से देखा, इससे पहले कि दो पुलिसकर्मी उन्हें भीड़ के बीच से तेज़ी से रेलवे स्टेशन की ओर ले गए।

जैसे ही तीनों सिर (सोल टोपी के दोनों ओर एक-एक पगड़ी) भीड़ में से गुज़रते हुए गायब हो गए, नेताजी ने घबराकर अपनी मूंछें पकड़ लीं क्योंकि उन्हें लगा कि उनका लक्ष्य हाथ से निकल गया है। “स्टेशन की ओर, स्टेशन की ओर!” वे अपना सिरदर्द भूलकर इतनी बेचैनी से चिल्लाए कि लाउडस्पीकर भी उनकी चीख को दबा नहीं पाया। “ट्रेन, ट्रेन, आप सबकी ट्रेन छूट जाएगी। अपने बैग उठाओ और भागो! जल्दी करो! जल्दी करो!”

यह सब इतने विश्वास के साथ कहा गया कि किसी ने भी नेताजी के अधिकार या जानकारी पर सवाल नहीं उठाया। भीड़ को धकेलते हुए, पसीना बहाते हुए, चिल्लाते हुए, एक-दूसरे को कोसते हुए और गालियां खाते हुए, काफिला दस मिनट में सलीमपुर स्टेशन पहुँच गया। वहाँ उन्हें पता चला कि ट्रेन एक घंटे बाद आने वाली है।

भालू ने कुछ झुंझलाहट के साथ नेताजी की ओर मुड़कर पूछा, 'आपने हमें इतनी जल्दी क्यों करवाई?'

नेताजी मंच पर बेचैनी से इधर-उधर देख रहे थे। अब अचानक उनके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी।

भालू ने भौंहें चढ़ाईं। अपना सिर धीरे से एक तरफ झुकाकर उसने नेताजी की ओर देखा और कहा:

'अच्छा, क्यों?'

'क्या? तुमने क्या कहा?' नेताजी ने पूछा। उन्होंने अभी-अभी प्लेटफार्म के दूसरे छोर पर, स्टेशन मास्टर के कार्यालय के पास लगी सोला टोपी पर अपनी नज़र डाली थी।

लेकिन भालू, नाराज होकर, और इस बात से भी नाराज होकर कि वह नाराज था, मुंह फेरकर चला गया।

नेताजी, नए संपर्क की लालसा से प्रेरित होकर, मान को पकड़कर लगभग घसीटते हुए प्लेटफार्म के दूसरे छोर की ओर ले गए। मान इतना आश्चर्यचकित था कि उसने विरोध तक नहीं किया।

नेताजी ने निडरता और आत्मविश्वास के साथ सीधे युवा एसडीओ के पास जाकर कहा:

'एसडीओ साहब, आपसे मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई। और मैं खुद को बहुत सम्मानित महसूस कर रहा हूं। मैं यह बात दिल से कह रहा हूं।'

सोला टोपी के नीचे दुबली ठुड्डी वाला चेहरा उसे असंतुष्ट और हैरान निगाहों से देख रहा था।

'जी?' उसने कहा। 'मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?' एसडीओ की हिंदी, हालांकि सहनीय थी, लेकिन उसमें बंगाली लहजा था।

नेताजी ने आगे कहा, 'लेकिन एसडीओ साहब, आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? सवाल यह है कि मैं आपकी किस प्रकार सेवा कर सकता हूँ। आप

सलीमपुर तहसील में हमारे मेहमान हैं। मैं देबरिया गाँव के एक जमींदार का पुत्र हूँ। मेरा नाम ताहिर अहमद खान है। यहाँ यह नाम सबको पता है: ताहिर अहमद खान। मैं कांग्रेस पार्टी का युवा कार्यकर्ता हूँ।'

'अच्छा। आपसे मिलकर खुशी हुई,' एसडीओ ने बेहद असंतुष्ट स्वर में कहा।

इस उत्साहहीनता से नेताजी निराश नहीं हुए। अब उन्होंने अपना तुरुप का पत्ता निकाला।

'और ये हैं मेरे अच्छे दोस्त, मान कपूर,' उन्होंने बड़े ही सलीके से कहा और मान को आगे की ओर धकेल दिया। मान कुछ उदास से लग रहे थे।

एसडीओ ने पहले की तरह ही बेरुखी से कहा, 'अच्छा।' फिर उनके चेहरे पर धीरे-धीरे शिकन आई और उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है मैं आपसे पहले कहीं मिल चुका हूँ।'

'अरे, लेकिन ये तो हमारे राजस्व मंत्री महेश कपूर के बेटे हैं!' नेताजी ने आक्रामक चापलूसी भरे लहजे में कहा।

एसडीओ हैरान दिखे। फिर उन्होंने ध्यान से भौंहें सिकोड़ीं। 'अरे हाँ! मुझे लगता है, हम लगभग एक साल पहले आपके पिताजी के घर पर बहुत संक्षिप्त मुलाकात हुई थी,' उन्होंने काफी सौहार्दपूर्ण स्वर में कहा, अब वे अंग्रेजी में बोल रहे थे और इस वजह से अनजाने में नेताजी को बातचीत से अलग कर दिया। 'आपका भी रुधिया के पास एक घर है, है ना? मतलब कस्बे के पास।'

'हां, मेरे पिता का वहां एक खेत है। दरअसल, अगर मुझे याद आ रहा है तो मुझे एक दिन वहां जाना चाहिए,' मान ने अचानक अपने पिता के निर्देशों को याद करते हुए कहा।

एसडीओ ने पूछा, 'आप यहां क्या कर रहे हैं?'

'अरे, कुछ खास नहीं, बस एक दोस्त से मिलने जा रहा हूँ,' मान ने कहा।

फिर थोड़ी देर रुककर उसने आगे कहा: ‘एक दोस्त जो प्लेटफार्म के दूसरे छोर पर खड़ा है।’

एसडीओ ने हल्की सी मुस्कान दी। उन्होंने कहा, 'ठीक है, मैं आज बाद में रुधिया जा रहा हूँ, और अगर आप अपने पिता के फार्म पर जाना चाहते हैं और मेरी जीप में ऊबड़-खाबड़ सफर से आपको कोई आपत्ति नहीं है, तो आपका मेरे साथ स्वागत है। मुझे खुद भी थोड़ा भेड़ियों का शिकार करना है: एक ऐसा काम, जिसके लिए मैं बिल्कुल भी प्रशिक्षित और योग्य नहीं हूँ। लेकिन चूंकि मैं एसडीओ हूँ, इसलिए मुझे खुद इस खतरे से निपटते हुए दिखना होगा।'

मान की आंखें चमक उठीं। ‘भेड़ियों का शिकार?’ उसने कहा। ‘क्या तुम्हारा सचमुच यही मतलब है?’

“जी हां, बिलकुल,” एसडीओ ने कहा। “हम कल सुबह निकलेंगे। क्या आपको शिकार का शौक है? क्या आप साथ आना चाहेंगे?”

‘यह तो बहुत अच्छा होगा,’ मान ने बड़े उत्साह से कहा। ‘लेकिन मेरे पास पहनने के लिए कुर्ता-पायजामा के अलावा कुछ नहीं है।’

“ओह, मुझे लगता है कि ज़रूरत पड़ने पर हम आपको पूरी तैयारी करवा सकते हैं,” एसडीओ ने कहा। “वैसे, यह कोई औपचारिक काम नहीं है—बस कुछ आदमखोर भेड़ियों को खदेड़ने की कोशिश है जो मेरे उपखंड के कुछ गांवों को परेशान कर रहे हैं।”

‘ठीक है, मैं अपने दोस्त से बात करता हूँ,’ मान ने कहा। उसे एहसास हुआ कि भाग्य ने उसे एक साथ तीन उपहार दिए हैं: कुछ ऐसा करने का मौका जो उसे पसंद था, एक ऐसी यात्रा से मुक्ति जो वह नहीं करना चाहता था, और उस मुक्ति को हासिल करने का एक उचित बहाना।

उसने अपने अप्रत्याशित उपकारक की ओर अत्यंत सौहार्दपूर्ण ढंग से देखा और कहा: 'मैं अभी वापस आता हूँ। लेकिन मुझे नहीं लगता कि

आपने अपना नाम बताया था।'

'मुझे बहुत खेद है, आप बिल्कुल सही हैं। मैं संदीप लाहिड़ी हूं,' एसडीओ ने मान से गर्मजोशी से हाथ मिलाते हुए कहा और घायल और क्रोधित नेताजी को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया।

10.3

रशीद को इस बात का दुख नहीं था कि मान उसके साथ उसकी पत्नी के गांव नहीं आ सका, और उसे यह देखकर खुशी हुई कि मान अपने पिता के खेत में जाने के लिए कितना उत्साहित था।

एसडीओ को साथ पाकर खुशी हुई। उन्होंने और मान ने कुछ घंटों में मिलने का तय किया। सलीमपुर स्टेशन पर कुछ काम निपटाने के बाद—जिसमें इलाके में टीकाकरण कार्यक्रम के लिए टीकों की खेप पहुंचाना शामिल था—संदीप लाहिड़ी स्टेशन मास्टर के दफ्तर में बैठ गए और अपने बैग से 'हावर्ड्स एंड' किताब निकाली। मान ने उन्हें वहां पाया, तब भी वह किताब पढ़ ही रहे थे। वे लगभग तुरंत ही निकल पड़े।

दक्षिण की ओर जीप की यात्रा संदीप लाहिड़ी के वादे के मुताबिक ही ऊबड़-खाबड़ और धूल भरी थी। ड्राइवर और एक पुलिसकर्मी आगे बैठे थे, और मान और एसडीओ पीछे। उन्होंने ज़्यादा बात नहीं की।

संदीप ने एक मौके पर अपनी सोला टोपी उतारकर उसे प्रशंसा भरी नजरों से देखते हुए कहा, 'यह वाकई काम करता है। मुझे यहां काम शुरू करने से पहले इस पर कभी यकीन नहीं हुआ था। मैं हमेशा यही सोचता था कि यह पक्के साहब की बेतुकी वर्दी का हिस्सा है।'

एक अन्य अवसर पर उन्होंने मान को अपने उपखंड के बारे में कुछ जनसांख्यिकीय विवरण बताए: वहाँ मुसलमानों, हिंदुओं आदि का प्रतिशत कितना है। ये विवरण तुरंत मान के दिमाग से निकल गए।

संदीप लाहिड़ी के कभी-कभार बोले जाने वाले, सुव्यवस्थित वाक्यों को

बोलने का एक सुखद, बल्कि कुछ हद तक संकोची तरीका था, और मान को वह पसंद आ गया।

उस शाम अपने बंगले पर संदीप का व्यवहार और भी स्पष्ट हो गया, जिससे उनकी यह नापसंदगी और बढ़ गई। हालांकि मान एक मंत्री के पुत्र थे, संदीप अपने उपमंडल के राजनेताओं और उनके काम में दखलंदाजी के प्रति अपनी नापसंदगी को खुलकर जाहिर करते थे। चूंकि वे अपने उपमंडल के न्यायिक और कार्यकारी दोनों प्रमुख थे—पूर्व प्रदेश में शक्तियों का पृथक्करण अभी पूरी तरह से लागू नहीं हुआ था—इसलिए उन पर किसी भी व्यक्ति की अपेक्षा से कहीं अधिक काम का बोझ था। इसके अलावा, तरह-तरह की आपात स्थितियां भी उत्पन्न होती रहती थीं: जैसे भेड़ियों का हमला, महामारी या किसी बड़े राजनेता का दौरा जो एसडीओ द्वारा ही अपने साथ ले जाए जाने पर अड़ा रहता था। हैरानी की बात यह थी कि संदीप लाहिड़ी को सबसे ज्यादा परेशानी उनके स्थानीय विधायक से नहीं, बल्कि विधान परिषद के एक सदस्य से होती थी, जिसका घर इसी इलाके में था और जो इसे अपना निजी क्षेत्र समझता था।

मान को जिन मिले नींबू पानी पीते हुए पता चला कि यह आदमी एसडीओ को अपने प्रभाव का प्रतिद्वंद्वी मानता था। अगर एसडीओ उसकी बात मानता और हर बात पर उससे सलाह लेता, तो वह संतुष्ट रहता। अगर एसडीओ ज़रा भी मनमानी करता, तो वह उसे तुरंत अपने वश में करने की कोशिश करता।

संदीप लाहिड़ी ने अपने मेहमान की ओर खेद भरी नज़र से देखते हुए कहा, 'समस्या यह है कि झा एक महत्वपूर्ण कांग्रेसी नेता हैं—विधान परिषद के अध्यक्ष और मुख्यमंत्री के मित्र। और वे मुझे यह याद दिलाने का कोई मौका नहीं छोड़ते। वे मुझे समय-समय पर यह भी याद दिलाते

रहते हैं कि वे मुझसे उम्र में दोगुने से भी अधिक हैं और जिसे वे “जनता की बुद्धिमत्ता” कहते हैं, उसका साक्षात उदाहरण हैं। खैर। कुछ मायनों में वे बिल्कुल सही हैं। नियुक्ति के अठारह महीनों के भीतर ही हमें पाँच लाख लोगों के क्षेत्र का प्रभार सौंप दिया जाता है—राजस्व और आपराधिक मामलों को संभालना, कानून व्यवस्था बनाए रखना, उपखंड के सामान्य कल्याण का प्रबंधन करना और जनता के अभिभावक-माता की भूमिका निभाना। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि जब भी वे मुझे देखते हैं, तो वे चिढ़ जाते हैं, क्योंकि मैं अभी-अभी मेटकाफ हाउस में अपने प्रशिक्षण और किसी अन्य जिले में छह महीने के क्षेत्र अनुभव से लौटा हूँ। एक और?’

'कृपया।'

कुछ देर बाद संदीप लाहिड़ी ने कहा, “तुम्हारे पिताजी का यह बिल हमारे लिए बहुत सारा अतिरिक्त काम बढ़ा देगा। लेकिन मुझे लगता है कि यह अच्छी बात है।” उनकी आवाज़ में थोड़ी शंका थी। “ओह, समाचार का समय लगभग हो गया है।” वे अपने साइडबोर्ड की ओर गए, जिस पर एक सुंदर पॉलिश किए हुए लकड़ी के कैबिनेट में एक बड़ा रेडियो रखा था। उसमें बहुत सारे सफेद डायल थे।

उसने उसे चालू किया। एक बड़ी हरी बत्ती धीरे-धीरे जलने लगी और शाम के राग में गाए गए एक पुरुष की आवाज़ धीरे-धीरे कमरे में गूंजने लगी। यह उस्ताद मजीद खान थे। संदीप लाहिड़ी ने सहज अरुचि दिखाते हुए आवाज़ कम कर दी।

‘खैर,’ उसने मान से कहा, ‘मुझे डर है कि इससे बचने का कोई रास्ता नहीं है। यह समाचार देखने की कीमत है, और मैं हर दिन एक या दो मिनट के लिए यह कीमत चुकाता हूँ। वे मोजार्ट या बीथोवेन जैसा कुछ सुनने लायक क्यों नहीं बजा सकते?’

मान, जिसने अपने जीवन में शायद तीन बार ही पश्चिमी शास्त्रीय संगीत सुना था और उसे यह अनुभव सुखद नहीं लगा था, ने कहा:
'ओह, मुझे नहीं पता। यहां ज्यादातर लोगों को यह पसंद नहीं आएगा।'
संदीप ने कहा, 'क्या आपको सचमुच ऐसा लगता है?' 'मुझे लगता है कि वे ऐसा करेंगे। अच्छा संगीत तो अच्छा संगीत ही होता है। मुझे लगता है कि यह सिर्फ प्रचार-प्रसार का सवाल है। प्रचार-प्रसार और थोड़ा सा मार्गदर्शन।'
मान संशय में दिख रहा था।
संदीप लाहिड़ी ने कहा, 'खैर, मुझे यकीन है कि उन्हें यह घटिया चीज़ पसंद नहीं आती। वे असल में फिल्मी गाने सुनना चाहते हैं, जो ऑल इंडिया रेडियो उन्हें कभी नहीं देगा। जहाँ तक मेरी बात है, अगर बीबीसी न होता तो मुझे नहीं पता कि मैं यहाँ क्या करता।'
लेकिन मानो इन टिप्पणियों के जवाब में, कई झंकारें सुनाई दीं और एक स्पष्ट भारतीय आवाज, जिस पर ब्रिटिश लहजे की झलक थी, ने घोषणा की:
'यह ऑल इंडिया रेडियो है. . . . समाचार, मोहित बोस द्वारा पढ़े जा रहे हैं।'

10.4

अगली सुबह वे शिकार के लिए निकल पड़े।
कुछ मवेशियों को सड़क के किनारे चराया जा रहा था। जब उन्होंने तेज़ गति से आती हुई सफेद जीप को देखा तो वे घबराकर इधर-उधर भागने लगे। जैसे-जैसे जीप नज़दीक आती गई, चालक ने लगभग बीस सेकंड तक लगातार हॉर्न बजाया, जिससे उनका डर और बढ़ गया। जब जीप उनके पास से गुज़री तो धूल का एक बड़ा बादल उठ खड़ा हुआ। चरवाहों ने प्रशंसा में खांसा: उन्होंने जीप को एसडीओ की जीप के रूप में पहचान

लिया था। सड़क पर वह एकमात्र वाहन था, और चालक ऐसे तेज़ी से गाड़ी चला रहा था मानो वह राजमार्ग का राजा हो। वैसे तो वह सड़क कोई राजमार्ग नहीं थी: वह एक कच्ची सड़क थी, जिस पर मानसून शुरू होने के बाद चलना शायद मुश्किल हो जाए, लेकिन फिलहाल ठीक थी।

संदीप ने मान को खाकी रंग का शॉर्ट्स, खाकी रंग की कमीज़ और टोपी उधार दी थी। मान की तरफ दरवाजे के सहारे एसडीओ के बंगले में रखी राइफल रखी थी। संदीप ने (ना चाहते हुए भी) एक बार राइफल चलाना सीखा था, लेकिन दोबारा चलाने की उसकी ज़रा भी इच्छा नहीं थी। मान उसकी जगह राइफल चला सकता था।

मान बनारस के अपने दोस्तों के साथ कई बार नीलगाय और हिरण के शिकार पर जा चुका था, जंगली सूअर का भी शिकार कर चुका था, और एक बार तेंदुए का शिकार करने की कोशिश में असफल रहा था। उसे इसमें बहुत आनंद आया था। उसने पहले कभी भेड़िये का शिकार नहीं किया था, और उसे ठीक से पता नहीं था कि इसे कैसे संभाला जाएगा। शायद वहाँ कुछ लोग उसे भगाने के लिए मौजूद होंगे। चूंकि संदीप को तकनीक के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी, इसलिए मान ने उससे इस समस्या के बारे में पूछा।

उन्होंने पूछा, 'क्या भेड़िये आम तौर पर ग्रामीणों से डरते नहीं हैं?'

संदीप ने कहा, 'मैंने भी यही सोचा था। वैसे भी हमारे पास अब ज़्यादा भेड़िये नहीं बचे हैं, और जब तक वे कोई खतरा न बन जाएं, लोगों को उनका शिकार करने की इजाज़त नहीं है। लेकिन मैंने भेड़ियों द्वारा बुरी तरह घायल हुए बच्चों को देखा है, और यहाँ तक कि भेड़ियों द्वारा मारे और खाए गए बच्चों के अवशेष भी देखे हैं। यह वाकई भयानक है। इन गांवों के लोग बुरी तरह डरे हुए हैं। मुझे लगता है कि वे बढ़ा-चढ़ाकर बता रहे हैं, लेकिन वन अधिकारियों ने पदचिह्नों आदि से पुष्टि की है कि हम

भेड़ियों की बात कर रहे हैं, न कि तेंदुओं या लकड़बग्घों या किसी और जानवर की।'

अब वे झाड़ियों और पथरीले टीलों से ढके ऊबड़-खाबड़ इलाके से गुज़र रहे थे। मौसम गर्म होता जा रहा था। इक्का-दुक्का गाँव कस्बे के पास वाले गाँवों की तुलना में और भी बंजर और वीरान लग रहे थे। एक जगह वे रुके और गाँव वालों से पूछा कि क्या उन्होंने उनके दल के बाकी लोगों को वहाँ से गुज़रते देखा है।

जी साहब,' सफेद बालों वाले एक अधेड़ उम्र के ग्रामीण ने कहा, जो एसडीओ को अपने बीच देखकर अचंभित था। उसने बताया कि थोड़ी देर पहले एक जीप और एक कार यहाँ से गुजरी थी।

संदीप ने पूछा, 'क्या इस गांव में भेड़ियों से कोई समस्या हुई है?'

ग्रामीण ने अपना सिर बाएँ से दाएँ हिलाया। 'जी हाँ, साहब,' उसने कहा, उसका चेहरा उस घटना की याद से तन गया था। 'बच्चन सिंह का बेटा अपनी माँ के साथ बाहर सो रहा था और एक भेड़िये ने उसे पकड़ लिया और उठा ले गया। हमने लालटेन और लाठियों से उसका पीछा किया, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। अगले दिन हमें लड़के का शव एक खेत में मिला। वह आधा खाया हुआ था। साहब, कृपया हमें इस खतरे से बचाएँ, आप हमारे माता-पिता हैं। इन दिनों हम न तो गर्मी के कारण घर के अंदर सो सकते हैं और न ही डर के कारण बाहर।'

एसडीओ ने सहानुभूतिपूर्वक पूछा, 'यह कब हुआ?'

'पिछले महीने, साहब, अमावस्या के दिन।'

'अमावस्या के एक दिन बाद,' एक अन्य ग्रामीण ने सुधार किया।

जब वे वापस कार में बैठे, तो संदीप ने बस इतना ही कहा: 'बहुत दुखद, बहुत दुखद। ग्रामीणों के लिए दुखद, भेड़ियों के लिए दुखद।'

'भेड़ियों के लिए दुखी हो?' मान ने चौंककर कहा।

संदीप ने अपनी सोला टोपी उतारकर माथे से पसीना पोंछते हुए कहा, “खैर, आप जानते ही हैं, यह इलाका अब बहुत उजाड़ दिखता है, लेकिन कभी यहाँ बहुत घना जंगल हुआ करता था—साल, महुआ आदि—और यह कई छोटे जंगली जानवरों का घर था, जिनका शिकार भेड़िये करते थे। लेकिन यहाँ बहुत ज्यादा पेड़ काटे गए हैं, पहले युद्ध के दौरान क्योंकि इसकी ज़रूरत थी, और फिर युद्ध के बाद अवैध रूप से—अक्सर, मुझे डर है, खुद वन अधिकारियों की मिलीभगत से—और साथ ही उन ग्रामीणों की मिलीभगत से भी, जिन्हें अपने खेतों के लिए और ज़मीन चाहिए। खैर, भेड़िये छोटे से छोटे इलाकों में सिमटते जा रहे हैं और ज़्यादा से ज़्यादा हताश होते जा रहे हैं। गर्मी का मौसम सबसे बुरा होता है क्योंकि सब कुछ सूखा होता है और खाने को कुछ नहीं मिलता—ज़मीनी केकड़े, मेंढक या अन्य छोटे जानवर तो न के बराबर ही मिलते हैं। उस समय भूख से बेहाल होकर वे ग्रामीणों की बकरियों पर हमला करते हैं—और जब उन्हें बकरियाँ नहीं मिलतीं, तो वे ग्रामीणों के बच्चों पर हमला करते हैं।”

क्या आप किसी क्षेत्र में पुनः वृक्षारोपण कर सकते हैं?

“खैर, वे ऐसे इलाके होने चाहिए जिनका इस्तेमाल खेती के लिए न होता हो। राजनीतिक रूप से और मानवीय रूप से भी, इसके अलावा कुछ और संभव नहीं है। अगर मैंने ऐसा सुझाव भी दिया तो मैं सोच सकता हूँ कि झा जैसे लोग मुझे जिंदा जला देंगे। लेकिन खैर, यह एक दीर्घकालिक नीति है, और ग्रामीणों को बस यही चाहिए कि आतंक अब बंद हो जाए।”

अचानक उसने अपने ड्राइवर के कंधे पर थपथपाया। चौंककर ड्राइवर ने अपनी गर्दन घुमाई और एसडीओ की ओर सवालिया निगाहों से देखते हुए पूरी रफ्तार से गाड़ी चलाना जारी रखा।

एसडीओ ने हिंदी में कहा, 'क्या तुम हॉर्न बजाना बंद करोगे?' फिर थोड़ी देर रुककर उन्होंने मान से बातचीत जारी रखी:

‘आंकड़े तो वाकई चौंकाने वाले हैं। पिछले सात सालों से, हर गर्मी में—लगभग फरवरी से जून तक, जब मानसून शुरू होता है—लगभग तीस गांवों के इलाके में एक दर्जन से ज़्यादा जानवरों की मौत और लगभग उतनी ही संख्या में जानवरों के हमले होते रहे हैं। सालों से अधिकारी रिपोर्ट लिखते रहे हैं, टालते रहे हैं, अनुमान लगाते रहे हैं और क्या किया जाए, इस बारे में गोलमोल बातें करते रहे हैं: ज़्यादातर तो सिर्फ़ कागज़ी समाधान ही। कभी-कभी वे हाल ही में शिकार हुए जानवर के गांव के बाहर कुछ बकरियां बांध देते हैं, इस उम्मीद में कि इससे शायद मामला सुलझ जाएगा। लेकिन—’ उसने कंधे उचकाए, माथे पर शिकन डाली और आह भरी। मान को लगा कि उसकी कमज़ोर ठुड्डी की वजह से वह थोड़ा चिड़चिड़ा लग रहा है।

संदीप ने आगे कहा, “खैर, मुझे लगा कि इस साल इस बारे में कुछ ठोस कदम उठाना ही होगा। सौभाग्य से मेरे डीएम मान गए और उन्होंने जिला स्तर पर पुलिस को शामिल करने में मदद की। उनके पास कुछ अच्छे निशानेबाज हैं, न सिर्फ पिस्तौल से बल्कि राइफलों से भी। एक हफ्ते पहले हमें पता चला कि आदमखोरों का एक गिरोह इस इलाके में सक्रिय है और—अरे, वे रहे!” उन्होंने सड़क के किनारे एक पुराने और अब सुनसान सराय (यात्रियों के विश्राम स्थल) के पास खड़े एक पेड़ की ओर इशारा करते हुए कहा, जो सड़क से लगभग एक फर्लांग आगे था। पेड़ के नीचे एक जीप और एक कार खड़ी थी, और आसपास काफी लोग घूम रहे थे, जिनमें से कई स्थानीय ग्रामीण थे। एसडीओ की जीप तेजी से आई और अचानक रुक गई, जिससे चारों ओर धूल का गुबार छा गया।

यद्यपि उपस्थित अधिकारियों में एसडीओ सबसे कम विशेषज्ञ और सौंपे गए कार्य को व्यवस्थित करने में सबसे कम सक्षम थे, फिर भी मान ने देखा कि हर कोई उन्हीं की बात मानता था और उनकी राय जानने की

कोशिश करता था, भले ही उनके पास देने के लिए कोई राय न हो। अंततः, विनम्रतापूर्वक झुंझलाते हुए संदीप ने कहा:

'मैं अब और समय बातचीत में बर्बाद नहीं करना चाहता। आप कहते हैं कि गश्ती दल और किराए के निशानेबाज मौके पर ही हैं—खाई के पास। यह अच्छी बात है। लेकिन आप'—उन्होंने वन विभाग के दो अधिकारियों, उनके पांच सहायकों, इंस्पेक्टर, दो कुशल पुलिस निशानेबाजों और पुलिसकर्मियों की ओर इशारा करते हुए कहा— 'एक घंटे से यहां इंतजार कर रहे हैं और हम आधे घंटे से यहां बातचीत कर रहे हैं। हमें अपने आने का समय बेहतर ढंग से समन्वित करना चाहिए था, लेकिन कोई बात नहीं। चलिए अब और समय बर्बाद न करें। गर्मी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। श्री प्रशांत, आप कहते हैं कि आपने तीन दिन पहले गश्त के लिए जगह का मुआयना करने के बाद बड़ी सावधानी से योजना बनाई है। ठीक है, कृपया उन्हें दोहराएं नहीं और हर बात के लिए मेरी मंजूरी न मांगें। मैं आपकी योजना स्वीकार करता हूं। अब आप हमें बताएं कि कहां जाना है, और हम आपका पालन करेंगे। कल्पना कीजिए कि आप स्वयं डीएम हैं।'

वन अधिकारी प्रशांत यह सोचकर दंग रह गए, मानो संदीप ने भगवान के बारे में कोई भद्दा मजाक कर दिया हो। संदीप ने लगभग उग्र भाव से कहा, "चलो अब आगे बढ़ते हैं और हत्यारों को मार डालते हैं।"

10.5

जीप और कार मुख्य सड़क से हटकर एक कच्ची सड़क पर मुड़ गईं, और गाँव वालों को पीछे छोड़ दिया। एक और गाँव गुज़रा, और फिर खुला मैदान दिखाई दिया: पहले की तरह ही झाड़ियाँ और चट्टानें, जिनके बीच-बीच में खेती योग्य ज़मीन के टुकड़े और इक्का-दुक्का बड़े पेड़—जैसे जंगली घास, महुआ या बरगद—मौजूद थे। चट्टानों ने महीनों से गर्मी जमा कर रखी थी, और सुबह की धूप में ज़मीन चमकने लगी। लगभग साढ़े

आठ बज रहे थे और पहले से ही गर्मी थी। जीप के उछलते-कूदते मान ने जम्हाई ली और अंगड़ाई ली। वह खुश था।

गाड़ियाँ एक सूखे नाले के किनारे एक विशाल बरगद के पेड़ के पास रुक गईं। वहाँ लाठी और भाले लिए हुए शिकारी बैठे थे, जिनमें से दो ने अपने शरीर पर साधारण ढोल बाँध रखे थे। वे तंबाकू चबा रहे थे, बेसुरा गा रहे थे, हँस रहे थे, सुबह के काम के बदले मिलने वाले दो रुपयों के बारे में बातें कर रहे थे और श्री प्रशांत के निर्देशों को बार-बार समझाने के लिए कह रहे थे। वे शारीरिक और शारीरिक रूप से अलग-अलग थे, लेकिन सभी काम करने के लिए उत्सुक थे और आशा कर रहे थे कि वे एक-दो आदमखोर भेड़ियों को बाहर निकाल देंगे। पिछले एक हफ्ते में संदिग्ध भेड़ियों को कई बार देखा गया था—एक बार तो चार भेड़िये एक साथ—और वे उस लंबी खाई में भाग गए थे जिसमें सूखा नाला बहता था। यहीं उनके छिपे होने की सबसे अधिक संभावना थी। शिकारी अंततः खेतों और पहाड़ियों को पार करते हुए खाई के निचले सिरे की ओर चल पड़े और धीरे-धीरे चलते-चलते दूर जाकर गायब हो गए। बाद में वे खाई से आगे बढ़ेंगे और दूसरे छोर पर मौजूद खदान को बाहर निकालने की कोशिश करेंगे।

जीपें अब धूल उड़ाती हुई खाई के ऊपरी छोर की ओर बढ़ रही थीं। लेकिन इस ऊपरी छोर पर भी, निचले छोर की तरह, मुख्य निकास के अलावा कई अन्य निकास थे, और प्रत्येक निकास की सुरक्षा आवश्यक थी। निशानेबाजों को इन विभिन्न निकासों पर तैनात किया गया था। निकासों के आगे कुछ सौ गज तक ऊबड़-खाबड़ खुला मैदान था, और उसके आगे सूखे खेतों और वन क्षेत्रों का एक मिला-जुला इलाका था।

श्री प्रशांत ने संदीप लाहिड़ी के आदेश का पालन करने की कोशिश की कि उन्हें यह भूल जाना चाहिए कि वे एक उच्च पदस्थ, ईश्वर-प्रदत्त, द्विज

अधिकारी की उपस्थिति में हैं। उन्होंने अपनी टोपी पहनी, घबराहट में उसे घुमाया और अंत में लोगों को बैठने और करने के लिए कहने का साहस जुटाया। संदीप और मान को एक छोटे और ढलान वाले निकास द्वार पर बैठने के लिए कहा गया, जिसे श्री प्रशांत के विचार से एक भेड़िया शायद ही चुनेगा क्योंकि इससे उसकी गति बहुत कम हो जाएगी। पुलिस के निशानेबाजों और पेशेवर शिकारियों को अलग-अलग क्षेत्रों में तैनात किया गया, जहाँ वे कई छोटे पेड़ों की घनी और उमस भरी छाया में बैठे रहे। गश्त का लंबा इंतजार शुरू हुआ। हवा में जरा भी हलचल नहीं थी जिससे राहत मिल सके।

संदीप, जिसे गर्मी असहनीय लग रही थी, ज्यादा कुछ नहीं बोला। मान गुनगुना रहा था; यह एक ग़ज़ल का अंश था जिसे उसने सईदा बाई को गाते सुना था, लेकिन अजीब बात यह थी कि इससे सईदा बाई की याद उसके मन में नहीं आई। उसे इस बात का एहसास भी नहीं था कि वह गुनगुना रहा है। वह शांत उत्तेजना की अवस्था में था, और समय-समय पर अपना माथा पोंछता, पानी की बोतल से घूंट लेता या अपने गोला-बारूद की जाँच करता। उसने मन ही मन कहा, "ज्यादा से ज्यादा आधा दर्जन गोलियां तो चलेंगी ही।" फिर उसने राइफल की चिकनी लकड़ी पर हाथ फेरा, और उसे कुछ बार कंधे पर उठाया, उस घाटी में झाड़ियों और घनी वनस्पतियों पर निशाना साधते हुए जहाँ से भेड़िया निकलने की सबसे अधिक संभावना थी।

आधे घंटे से ज़्यादा समय बीत चुका था। पसीना उनके चेहरों से टपक रहा था और शरीर से रिस रहा था। लेकिन हवा सूखी थी और पसीना भाप बनकर उड़ रहा था; मानसून की तरह उन्हें परेशान नहीं कर रहा था। कुछ मक्खियाँ भिनभिना रही थीं, कभी-कभी उनके चेहरों या नंगे हाथों और पैरों पर बैठ जाती थीं, और खेत में एक छोटी बेर की झाड़ी पर बैठा एक

टिड्डा तेज़ आवाज़ में चहचहा रहा था। ढोल बजाने वालों की हल्की आवाज़ अब दूर से उनके कानों तक आ रही थी, लेकिन उनकी चीखें नहीं। संदीप उत्सुकता से मान को देख रहा था, उत्सुकता उसके कामों से ज़्यादा उसके हाव-भाव को लेकर थी। मान उसे एक सहज, खुशमिजाज किस्म का आदमी लगा था। लेकिन अब उसकी नज़र में एक दृढ़ निश्चय और लगन थी, मानो वह सुखद उम्मीद के साथ कह रहा हो: उस झाड़ी से एक भेड़िया निकलेगा, और मैं अपनी राइफल से उसका पीछा तब तक करूँगा जब तक वह रास्ते के उस खास बिंदु पर न पहुँच जाए जहाँ से मुझे उस पर सीधा निशाना लगाने का मौका मिले, और मैं ट्रिगर दबाऊँगा, और गोली सही निशाने पर लगेगी, और वह वहीं गिर जाएगा—मर जाएगा—और बस। सुबह का बढ़िया काम।

यह मान के वास्तविक विचारों का सटीक अनुमान था। संदीप के अपने स्वतंत्र विचारों की बात करें तो, गर्मी के कारण वे धुंधले और अस्पष्ट हो गए थे। भेड़ियों को मारने में उसे कोई खुशी तो नहीं थी, लेकिन उसे लगा कि यही एकमात्र तात्कालिक उपाय है। वह बस यही आशा करता था कि ग्रामीणों पर मंडरा रहे इस खतरे को किसी तरह कम या समाप्त किया जा सके। पिछले ही हफ्ते वह जिला अस्पताल में एक सात वर्षीय लड़के को देखने गया था, जिसे भेड़िये ने बुरी तरह घायल कर दिया था। लड़का जनरल वार्ड में चारपाई पर सो रहा था, और संदीप उसे जगाना नहीं चाहता था। लेकिन वह लड़के के माता-पिता की आँखों में उस भाव को नहीं भूल सका, जब वे उससे बात कर रहे थे—जैसे कि वह किसी तरह उनके जीवन पर आई इस त्रासदी को दूर या कम कर सकता हो। लड़के के हाथों और शरीर के ऊपरी हिस्से में गंभीर चोटों के अलावा, उसकी गर्दन में भी चोट आई थी, और डॉक्टर ने कहा था कि वह फिर कभी चल नहीं पाएगा।

संदीप बेचैन महसूस कर रहा था। वह उठकर अंगड़ाई लेने लगा और नीचे खाई में फैली कम घनी गर्मी की वनस्पति और बाहर उससे भी कम घनी झाड़ियों की ओर देखने लगा। अब उन्हें दूर से जानवरों को चराने वालों की हल्की-हल्की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। मान भी अपने ही विचारों में खोया हुआ लग रहा था।

अचानक, और उम्मीद से कहीं पहले, एक भेड़िया, एक वयस्क भूरा भेड़िया, जो अल्सेशियन से भी बड़ा और तेज़ था, उस घाटी के मुख्य द्वार से निकल आया जहाँ कई पेशेवर निशानेबाज तैनात थे, और बंजर भूमि और सूखे खेतों को पार करते हुए आगे बढ़ गया। वह सीधे बाईं ओर जंगल की ओर दौड़ा, और कुछ देर बाद चली गोलियों की आवाज़ उसका पीछा करती रही।

मान और संदीप ऐसी स्थिति में नहीं थे जहाँ से वे भेड़िये को स्पष्ट रूप से देख सकें, लेकिन उसके पीछे सुनाई देने वाली चीखों और गोलियों की आवाज़ों से उन्हें पता चल गया कि कुछ गड़बड़ है। मान ने उसे एक अधजले, सूखे खेत में दौड़ते हुए देखा, तभी वह कुछ दूरी पर उसकी ओर मुड़ा और पेड़ों के बीच गायब हो गया, मानो मौत के सामने तेज़ी से और बेताब होकर भाग रहा हो।

यह तो बच निकला! उसने गुस्से से सोचा। लेकिन अगला वाला नहीं बचेगा।

एक-दो मिनट तक निराशा और आरोप-प्रत्यारोप की चीखें सुनाई दीं, और फिर आस-पास का सारा इलाका फिर से शांत हो गया। लेकिन जंगल में कहीं से एक चिड़िया ने अपनी वही चिरपरिचित तीन-तीन चीखें मारनी शुरू कर दीं, और वह आवाज़ दूसरी दिशा से आ रही चीखों और ढोल की थापों के साथ मिल गई: शिकारी अब तेज़ी से खाई की ओर आ रहे थे, और उसमें जो कुछ भी था उसे शिकारियों की दिशा में भगा रहे थे। अब

मान को भी उनकी लाठियों और भालों से झाड़ियों पर प्रहार करने की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं।

अचानक एक और छोटा, धूसर रंग का जीव घबराकर खाई से बाहर निकला, इस बार उस खड़ी ढलान की ओर जिसकी मान रखवाली कर रहा था। सहज प्रतिक्रिया से उसने अपनी राइफल उसकी ओर घुमाई और गोली चलाने ही वाला था—अपनी योजना से पहले ही, ताकि एक अच्छा तिरछा निशाना लग सके—तभी वह चौंककर अपने आप से बुदबुदाया:

लेकिन यह तो लोमड़ी है!

लोमड़ी को पता ही नहीं था कि उसकी जान बच गई है, और डर से वह बेहाल होकर खेतों को पार करते हुए बिजली की तरह जंगल की ओर भागी, उसकी काली नोक वाली भूरी पूंछ एकदम सीधी और ज़मीन के समानांतर थी। मान एक पल के लिए हँस पड़ा।

लेकिन उसके चेहरे पर हंसी थम सी गई। शिकारी शायद सौ गज से भी कम दूरी पर थे कि एक विशाल, भूरे और खुरदुरे रंग का भेड़िया, जिसके कान पीछे की ओर मुड़े हुए थे और जिसकी तेज़ छलांगों में कुछ अनियमितता सी झलक रही थी, झाड़ियों से बाहर निकला और ढलान पर उस जगह की ओर दौड़ पड़ा जहाँ मान और संदीप बैठे थे। मान ने राइफल घुमाई, लेकिन भेड़िया कोई बड़ा निशाना नहीं था। बल्कि, जैसे ही वह उनकी ओर बढ़ा, उसका बड़ा भूरा चेहरा, जिसकी गहरी धनुषाकार भौहें थीं, मानो प्रतिशोध की क्रूरता से उन्हें घूर रहा हो, वह घोर भय का पात्र बन गया।

अचानक ही उसे उनकी मौजूदगी का एहसास हुआ। वह उनसे दूर हटकर खाई में बने उस रास्ते पर कूद गया, जहाँ मान ने पहले सोचा था कि भेड़िया निकलेगा। अपनी राहत के बारे में सोचने का ज़रा भी मौका न देते हुए और स्तब्ध संदीप पर ज़रा भी ध्यान न देते हुए, उसने अपनी राइफल

घुमाकर भेड़िये का पीछा किया, उस जगह तक जहाँ उसने पहले अनुमान लगाया था कि वह सबसे अच्छा निशाना होगा। अब वह उसकी नज़र में था।

लेकिन जैसे ही वह गोली चलाने वाला था, उसने अचानक दो निशानेबाजों को देखा जो पहले वहां नहीं थे और जिनका वहां होने का कोई मतलब नहीं था, वे रास्ते के दूसरी ओर एक नीची पहाड़ी पर, ठीक उसके सामने बैठे थे, उनकी राइफलें भेड़िये पर तनी हुई थीं, और स्पष्ट रूप से वे भी गोली चलाने वाले थे।

ये तो पागलपन है! मान ने सोचा।

'गोली मत चलाओ! गोली मत चलाओ!' वह चिल्लाया।

निशानेबाजों में से एक ने गोली चलाई, लेकिन निशाना चूक गया। गोली मान से दो फीट दूर ढलान पर एक चट्टान से टकराई और दूर जा गिरी।

'गोली मत चलाओ! गोली मत चलाओ! तुम पागल हो!' मान चिल्लाया।

विशाल भेड़िये ने एक बार अपना रास्ता बदला, लेकिन फिर ऐसा नहीं किया। उसी अनियमित, भारी फुर्ती से वह खाई से निकला और जंगल की ओर भागा, उसके पंजे धूल उड़ाते हुए एक पल के लिए एक ऊबड़-खाबड़ खेत की नीची सीमा के पीछे गायब हो गए। जैसे ही उन्होंने उसे खुले मैदान में देखा, अन्य निकासों पर तैनात कुछ निशानेबाजों ने उसकी घटती हुई आकृति पर गोलियां चलाईं। लेकिन उनके पास बचने का कोई मौका नहीं था। भेड़िया, लोमड़ी और अपने पहले साथी की तरह, कुछ ही सेकंड में जंगल में पहुँच गया, इस संगठित मानव आतंक से सुरक्षित।

शिकारी खाई के निकास द्वार तक पहुँच चुके थे और शिकार का काम समाप्त हो गया था। मान को निराशा नहीं, बल्कि भयंकर क्रोध का अनुभव हुआ। उसने कांपते हाथों से अपनी राइफल खाली की, फिर उन निशानेबाजों के पास गया जो अपना काम छोड़कर भाग गए थे और उनमें

से एक को उसकी कमीज से पकड़ लिया।
वह आदमी मान से लंबा और शायद ज़्यादा ताकतवर था, लेकिन वह क्षमा याचना करता हुआ और डरा हुआ लग रहा था। मान ने उसे छोड़ दिया, फिर उसके सामने खड़ा हो गया, कुछ नहीं बोला, बस तनाव और आक्रामकता से तेज़ और भारी साँसें ले रहा था। फिर उसने बोलना शुरू किया। उनसे यह पूछने के बजाय कि वे इंसानों का शिकार कर रहे हैं या भेड़ियों का, जैसा कि वह करने ही वाला था, उसने किसी तरह खुद को संभाला और अर्ध-जंगली गुर्राहट में बस इतना कहा:
'तुम्हें उस रास्ते की सुरक्षा के लिए तैनात किया गया था। तुम्हारा इरादा पहाड़ी की चोटी से नीचे आकर किसी और जगह शिकार करने का नहीं था, जिसे तुमने बेहतर समझा हो। हममें से कोई मारा जा सकता था। वह तुम भी हो सकते थे।'
उस आदमी ने कुछ नहीं कहा। वह जानता था कि उसने और उसके साथी ने जो किया था वह अक्षम्य था। उसने अपने साथी की ओर देखा, जिसने कंधे उचका दिए।
अचानक, मान को निराशा की लहर महसूस हुई। उसने सिर हिलाकर मुंह फेर लिया और वापस वहीं चला गया जहाँ उसकी राइफल और पानी की बोतल रखी थी। संदीप और बाकी लोग एक पेड़ के नीचे इकट्ठा होकर गश्त के बारे में चर्चा कर रहे थे। संदीप अपनी सोले की टोपी से अपना चेहरा हवा कर रहा था। वह अभी भी घबराया हुआ लग रहा था।
किसी ने कहा, 'असली समस्या तो वहाँ की लकड़ी है। यह निकास द्वार के बहुत करीब है। नहीं तो हम लगभग दस और निशानेबाजों को ला सकते थे और उन्हें एक बहुत बड़े चाप में फैला सकते थे—यहाँ—और वहाँ, मान लीजिए—'
'खैर, जो भी हो,' किसी और ने कहा, 'उन्हें बहुत बड़ा झटका लगा है। हम

अगले हफ्ते इस घाटी की फिर से सफाई करेंगे। सिर्फ दो भेड़िये दिखे—मुझे उम्मीद थी कि आज यहाँ और भी भेड़िये होंगे।' उसने अपनी जेब से एक बिस्कुट निकाला और उसे चबाने लगा।

'ओह, तो आपको लगता है कि वे अगले हफ्ते यहाँ आपकी इच्छा पूरी करने के लिए इंतजार करेंगे?'

एक अन्य व्यक्ति ने कहा, 'हम बहुत देर से निकले। सुबह जल्दी निकलना सबसे अच्छा समय होता है।'

मान उनसे अलग खड़ा था, भावनाओं के उफान से जूझ रहा था—एक ही समय में असहनीय रूप से तनावपूर्ण और असहनीय रूप से सुस्त।

उसने अपनी पानी की बोतल से एक घूंट पिया और उस राइफल को देखा जिससे उसने एक भी गोली नहीं चलाई थी। वह थका हुआ, निराश और घटनाओं से धोखा खाया हुआ महसूस कर रहा था। वह उनके व्यर्थ के विश्लेषण में शामिल नहीं होना चाहता था। और वास्तव में, विश्लेषण करना—शाब्दिक अर्थ में—अनुचित था।

10.6

लेकिन उसी दोपहर बाद मान को कुछ अच्छी खबर मिली। संदीप के एक आगंतुक ने बताया कि उसके एक विश्वसनीय सहकर्मी ने उसे बताया था कि नवाब साहब और उनके दो बेटे रुधिया से होते हुए बैतर गए हैं और उनका इरादा किले में कुछ दिन रुकने का है।

मान का दिल खुशी से उछल पड़ा। उसके पिता के खेत की फीकी छवियाँ उसके मन से गायब हो गईं। उनकी जगह बैतर एस्टेट में घोड़ों के साथ एक शानदार शिकार के विचार और उससे भी अधिक खुशी की बात यह थी कि फिरोज से सईदा बाई के बारे में खबर मिलने की उम्मीद जाग उठी। आह, मान ने सोचा, शिकार का आनंद! उसने अपना थोड़ा-बहुत सामान इकट्ठा किया, संदीप से कुछ उपन्यास उधार लिए - ताकि देबरिया

में उसका एकांतवास थोड़ा सहनीय हो सके - स्टेशन गया और बैतर जाने वाली धीमी और रुक-रुक कर चलने वाली शाखा लाइन पर पहली ट्रेन पकड़ ली।

मुझे आश्चर्य है कि क्या फ़िरोज़ ने इसे स्वयं पहुँचाया होगा, उसने मन ही मन कहा। उसने अवश्य ही पहुँचाया होगा! और मैं पता लगाऊँगा कि जब उसने उसका पत्र—बल्कि मेरा पत्र—पढ़ा और यह जाना कि दाग साहब, उससे दूर रहने और संवाद करने में अपनी असमर्थता से हताश होकर, नवाबज़ादा को ही अनुवादक, लेखक और दूत के रूप में इस्तेमाल किया था, तो उसने उससे क्या कहा। और दाग की पंक्तियों के मेरे उल्लेख पर उसने क्या प्रतिक्रिया दी?

तुमने ही मुझे गलत ठहराया, और फिर तुमने ही पूछा:

महोदय, कृपया मुझे बताएं कि आज आप कैसे हैं?

वह बैतर स्टेशन पर उतरा और किले तक जाने के लिए एक रिक्शा किराए पर लिया। चूंकि उसने कुचले हुए कपड़े पहने हुए थे (गर्म और भीड़भाड़ वाली ट्रेन यात्रा के कारण और भी सिकुड़ गए थे) और दाढ़ी भी नहीं बनाई थी, इसलिए रिक्शावाले ने उसे और उसके बैग को देखकर पूछा:

‘क्या वहां किसी से मुलाकात हो रही है?’

‘जी हां,’ मान ने कहा, जिसने अपने प्रश्न को गुस्ताखी नहीं समझा। ‘नवाब साहब।’

रिक्शावाले ने मान के हास्यबोध पर हंसते हुए कहा, 'बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया।'

कुछ देर बाद उसने पूछा:

आपको बैतार शहर कैसा लगता है?

मान ने बिना ज्यादा सोचे-समझे कहा, 'यह एक अच्छा शहर है। देखने में

अच्छा शहर लगता है।'

रिक्शावाले ने कहा: 'सिनेमा हॉल बनने से पहले यह एक अच्छा शहर हुआ करता था। अब स्क्रीन पर नाचने-गाने वाली लड़कियों और उन सब प्रेम-प्रदर्शनों और थिरकने-नाचने-नाचने के दृश्यों के कारण'—सड़क पर एक गड्ढे से बचने के लिए उसने अचानक रिक्शा मोड़ा—'यह और भी खूबसूरत शहर बन गया है।'

रिक्शावाले ने बोलना जारी रखा: 'सभ्यता के लिहाज़ से अच्छा, दुष्टता के लिहाज़ से भी अच्छा। बैतर, बैतर, बैतर, बैतर।' वह पैडल की थाप के साथ ताल मिलाते हुए ये शब्द बोलता रहा। 'वह—वह इमारत जिस पर हरा साइनबोर्ड लगा है—अस्पताल है, रुधिया के ज़िला अस्पताल जितना ही अच्छा। इसे वर्तमान नवाब के पिता या दादा ने बनवाया था। और वह लाल कोठी है, जिसे नवाब साहब के परदादा शिकारगाह के रूप में इस्तेमाल करते थे—लेकिन अब वह कस्बे से घिरी हुई है। और वह'—क्योंकि जैसे ही वे सड़क के एक बने-बनाए मोड़ पर मुड़े, अचानक उन्हें सफ़ेद रंग के घरों के बीच एक छोटी पहाड़ी पर खड़ी एक विशाल, हल्के पीले रंग की इमारत दिखाई दी—'वह बैतर किला है।'

यह एक विशाल और प्रभावशाली इमारत थी, और मान ने इसे प्रशंसा भरी नजरों से देखा।

'लेकिन पंडितजी इसे वापस लेकर गरीबों को देना चाहते हैं,' रिक्शावाले ने कहा, 'जब जमींदारी प्रथा समाप्त हो जाएगी।'

कहने की जरूरत नहीं है कि पंडित नेहरू—जो दिल्ली में थे और कई अन्य मामलों में व्यस्त थे—की ऐसी कोई योजना नहीं थी। न ही पूर्व प्रदेश जमींदारी उन्मूलन विधेयक—जो अब राष्ट्रपति के हस्ताक्षर से कानून बनने वाला था—में जमींदारों के किलों, आवासों या यहां तक कि स्व-प्रबंधित भूमि पर कब्जा करने की कोई योजना थी। लेकिन मान ने इसे

नजरअंदाज कर दिया।

'इस सब से तुम्हें क्या फायदा होगा?' उसने रिक्शावाले से पूछा।

'मैं? कुछ नहीं! बिलकुल कुछ नहीं, बिलकुल कुछ नहीं। कम से कम यहाँ तो नहीं। अगर मुझे एक कमरा मिल जाए तो अच्छा होगा। अगर दो मिल जाएं तो और भी बढ़िया; मैं एक कमरा किसी और बेचारे को किराए पर दे दूंगा और उसकी मेहनत के पैसों से अपना गुजारा करूंगा। वरना मैं दिन भर अपना रिक्शा चलाता रहूंगा और रात को उसी पर सोऊंगा।'

'लेकिन मानसून के दौरान आप क्या करते हैं?' मान ने पूछा।

'ओह, मुझे कहीं न कहीं आश्रय मिल ही जाएगा—अल्लाह ही सब कुछ मुहैया कराता है, अल्लाह ही सब कुछ मुहैया कराता है, और वह हमेशा की तरह मुहैया कराता रहेगा।'

'क्या नवाब साहब इन इलाकों में लोकप्रिय हैं?' मान ने पूछा।

'लोकप्रिय? वो तो सूरज और चाँद का मिलाजुला रूप हैं!' रिक्शावाले ने कहा। 'और युवा नवाबजादे भी, खासकर छोटे साहब। सब उनके स्वभाव को पसंद करते हैं। और क्या गजब के पुरुष हैं! जब वे साथ होते हैं तो उन्हें देखना चाहिए: सचमुच एक अद्भुत नजारा होता है। बूढ़े नवाब साहब अपने दोनों हाथों में एक-एक बेटे को लिए हुए। जैसे वायसराय और उनके अधिकारी।'

लेकिन अगर वे इतने लोकप्रिय हैं, तो लोग उनकी संपत्तियों पर कब्जा क्यों करना चाहते हैं?

'क्यों नहीं?' रिक्शावाले ने कहा। 'लोग जहाँ भी ज़मीन मिल जाए, हथियाना चाहते हैं। मेरे गाँव में, जहाँ मेरी पत्नी और परिवार रहते हैं, हम कई सालों से अपनी ज़मीन पर खेती कर रहे हैं—मेरे पिता के चाचा के ज़माने से। लेकिन फिर भी हमें नवाब साहब को—उनके खून चूसने वाले मुंशी को—किराया देना पड़ता है। किराया क्यों दें? बताइए। हमने पचास

साल तक अपनी मेहनत से इसे सींचा है, यह हमारी ज़मीन होनी चाहिए, इस पर हमारा मालिकाना हक होना चाहिए।'

जब वे बैतर किले की दीवार में बने विशाल, लकड़ी के, पीतल जड़े द्वार पर पहुँचे, तो रिक्शावाले ने उनसे सामान्य किराए से दुगुना किराया माँगा। मान ने एक मिनट तक बहस की, क्योंकि माँगी गई रकम स्पष्ट रूप से अनुचित थी; फिर, रिक्शावाले पर दया करते हुए, उसने अपनी कुर्ते की जेब से माँगी गई रकम—साथ ही चार आने अतिरिक्त—निकाल कर उसे दे दिए।

रिक्शावाला अपने इस फैसले से पूरी तरह संतुष्ट होकर चला गया कि मान थोड़ा पागल था। शायद उसने सचमुच कल्पना की थी कि वह नवाब साहब से मिलने जा रहा है। बेचारा!

10.7

द्वार पर तैनात कुली की भी यही राय थी और उसने मान को वहाँ से चले जाने को कहा। उसने मान का हुलिया मुंशी को बताया था और मुंशी ने ही ये निर्देश जारी किए थे।

मान आश्चर्यचकित होकर कागज के एक टुकड़े पर कुछ शब्द लिखकर बोला: 'मैं किसी मुंशी से बात नहीं करना चाहता। अब ध्यान रखना कि यह संदेश नवाब साहब, बुर्रे साहब या छोटे साहब तक पहुँच जाए। जाकर इसे अंदर ले जाओ।'

कुली ने मान को अंग्रेज़ी में कुछ लिखते देख, इस बार उसे अपने पीछे आने को कहा, हालाँकि उसने उसका बैग उठाने की पेशकश नहीं की। वे भीतरी द्वार से अंदर गए और किले की मुख्य इमारत की ओर चल पड़े: एक विशाल संरचना, चार मंजिला, दो स्तरों पर आंगनों और सबसे ऊपर बुर्जों के साथ।

मान को धूसर पत्थरों से बने एक आंगन में छोड़ दिया गया; कुली सीढ़ियों

से ऊपर चढ़ा और फिर गायब हो गया। शाम ढल रही थी और इस पत्थर और दीवारों से घिरे आंगन में अभी भी भीषण गर्मी थी। मान ने चारों ओर देखा। कुली, फ़िरोज़, इम्तियाज़ या कोई भी नज़र नहीं आ रहा था। तभी उसे ऊपर की एक खिड़की में हल्की सी हलचल महसूस हुई। एक देहाती, अधेड़ उम्र का, गठीला चेहरा, जिसकी मूंछें भूरे-सफेद रंग की थीं, ऊपर की खिड़की से उसे घूर रहा था।

एक-दो मिनट बाद कुली वापस आ गया।

'मुंशी पूछता है, तुम क्या चाहते हो?'

मान ने क्रोधित होकर कहा: 'मैंने तुमसे कहा था कि वह नोट छोटे साहब को दो, मुंशी को नहीं।'

लेकिन नवाब साहब और नवाबजादे यहां नहीं हैं।

'तुम्हारा क्या मतलब है, यहाँ नहीं? वे कब चले गए?' मान ने हताश होकर पूछा।

कुली ने कहा, 'वे एक हफ्ते से यहां नहीं आए हैं।'

'अच्छा, उस मूर्ख मुंशी को बता देना कि मैं नवाबजादा का दोस्त हूँ और आज रात यहीं रुकूँगा।' मान ने अपनी आवाज़ ऊँची कर दी थी, और उसकी गूँज पूरे आँगन में गूँज उठी।

मुंशी जल्दी से नीचे उतरा। गर्मी होने के बावजूद उसने कुर्ते के ऊपर बुंदी पहनी हुई थी। वह चिड़चिड़ा रहा था। दिन भर की थकान के बाद वह साइकिल से बैतर कस्बे लौटने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था, जहाँ वह रहता था। अब यह बिना दाढ़ी वाला और अनजान अजनबी किले में आने की ज़िद कर रहा था। आखिर ये सब क्या था?

'जी?' मुंशी ने अपने चश्मे जेब में रखते हुए कहा। उन्होंने मान को ऊपर से नीचे तक देखा और अपनी मूंछों के एक कोने को चाटा। 'मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?' उन्होंने विनम्र हिंदी में पूछा। लेकिन उनकी विनम्र

आवाज़ और सौम्य व्यवहार के पीछे मान को हिसाब-किताब की तेज़ गति सुनाई दी।

मान ने कहा, "सबसे पहले तो आप मुझे इस तपते आंगन से बाहर निकाल दीजिए, और दाढ़ी बनाने के लिए एक कमरा और गर्म पानी का इंतजाम कर दीजिए, साथ ही कुछ खाने का भी इंतजाम कर दीजिए। मेरी सुबह शिकार में बहुत गर्मी और थकान भरी रही, ट्रेन का सफर भी बहुत गर्मी और थकान भरा रहा, और पिछले आधे घंटे से आप लोग मुझे टालमटोल कर रहे हैं—और अब यह आदमी मुझे बता रहा है कि फिरोज चला गया है—या यूं कहें कि वह कभी यहां था ही नहीं। तो फिर?" क्योंकि मुंशी ने उसकी मदद करने की कोई कोशिश नहीं की थी।

'क्या साहब मुझे नवाब साहब या नवाबजादों में से किसी एक से परिचय पत्र दिलवा सकते हैं?' मुंशी ने कहा। 'मुझे साहब से मिलने का सौभाग्य नहीं मिला है, और किसी तरह के परिचय के अभाव में मुझे खेद है कि—'

'तुम्हें जो चाहे पछतावा हो सकता है,' मान ने कहा। 'मैं मान कपूर हूँ, फ़िरोज़ और इम्तियाज़ का दोस्त। मुझे तुरंत बाथरूम जाना है, और मैं तुम्हारे होश में आने का इंतज़ार नहीं करने वाला।'

मान के आदेश भरे लहजे ने मुंशी को थोड़ा डरा दिया, लेकिन उसने कोई हरकत नहीं की। उसने मान को शांत करने के लिए मुस्कुराया, लेकिन उसे अपनी ज़िम्मेदारी का भला पता था। कोई भी सड़क से आ सकता था, यह जानते हुए कि नवाब साहब और उनके बेटे वहाँ नहीं हैं, उनमें से किसी एक का दोस्त होने का दावा कर सकता था, और थोड़ी-बहुत अंग्रेज़ी लिखकर और अपना दबदबा दिखाकर किले में घुसपैठ कर सकता था।

'मुझे खेद है—' उसने चापलूसी भरे लहजे में कहा। 'मुझे खेद है, लेकिन —'

‘अब सुनो,’ मान ने कहा। ‘फिरोज ने तुम्हारे सामने मेरे बारे में बात न की हो, पर उसने मेरे सामने तुम्हारे बारे में जरूर बात की है।’ मुंशी थोड़ा घबरा गया: छोटे साहब उसे ज्यादा पसंद नहीं करते थे। ‘और मुझे लगता है कि नवाब साहब ने तुम्हारे सामने मेरे पिता का नाम लिया होगा। वे पुराने दोस्त हैं।’

‘और साहब के पिता कौन हो सकते हैं?’ मुंशी ने बड़ी बेफिक्री से पूछा, यह उम्मीद करते हुए कि ज़्यादा से ज़्यादा किसी छोटे-मोटे ज़मींदार का नाम ही सुनने को मिलेगा।

‘Mahesh Kapoor.’

‘महेश कपूर!’ मुंशी की जीभ तेजी से उसकी मूंछों के दूसरी तरफ चली गई। उसने मान को घूरकर देखा। यह असंभव सा लग रहा था।

‘राजस्व मंत्री?’ उसने कांपती हुई आवाज में पूछा।

‘जी हां। राजस्व मंत्री,’ मान ने पुष्टि की। ‘अब, बाथरूम कहां है?’

मुंशी ने जल्दी से मान की ओर, उसके थैले की ओर, कुली की ओर और फिर मान की ओर देखा। उसे कहीं से भी किसी बात की पुष्टि नहीं मिली। उसने सोचा कि मान से उसकी पहचान का कोई सबूत, कोई भी सबूत, दिखाने को कहे, ज़रूरी नहीं कि परिचय पत्र ही हो—लेकिन वह जानता था कि इससे मान और भी ज़्यादा क्रोधित हो जाएगा। यह एक असंभव दुविधा थी। इस आदमी की आवाज़ और बोलने के तरीके से तो यही लगता था कि वह ज़रूर पढ़ा-लिखा होगा, चाहे वह कितना भी पसीने से तर और मैला-कुचैला क्यों न दिखता हो। और अगर यह सच था कि वह राजस्व मंत्री का बेटा था, उस कठोर विधेयक का मुख्य सूत्रधार, जो बैतार परिवार—और अप्रत्यक्ष रूप से खुद उसे भी—की विशाल ज़मीनों, जंगलों और बंजर भूमि से बेदखल करने वाला था, तो वह वाकई बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति था, और उसका अपमान करना, उसके प्रति इतना

असभ्य व्यवहार करना—सोचना भी मुश्किल था। उसका सिर चकराने लगा।

जब गाड़ी रुकी, तो वह विनम्रता और स्वागत भाव से हाथ जोड़कर नीचे झुका और गार्ड या कुली से बैग उठाने के लिए कहने के बजाय, उसने खुद मान का बैग उठा लिया। वह अपनी मूर्खता पर आश्चर्य और शर्मिंदगी महसूस करते हुए धीरे से हंसने लगा। 'लेकिन, हुजूर, आपको शुरू से ही बता देना चाहिए था। मैं किले से बाहर आकर आपसे मिलता। मैं स्टेशन पर जीप लेकर आपका इंतजार करता। ओह, हुजूर, आपका स्वागत है, स्वागत है—आपके मित्र के घर में आपका स्वागत है। आपको जो भी चाहिए, बस मुझसे मांगिए। महेश कपूर के पुत्र—महेश कपूर के पुत्र—और साहब की गरिमामय उपस्थिति से मैं इतना प्रभावित हो गया कि मैं होश खो बैठा और आपको पानी का गिलास तक नहीं दिया।' वह हांफते हुए सीढ़ियों की पहली सीढ़ी चढ़ा, फिर बैग गार्ड को सौंप दिया।

'हुजूर को छोटे साहब के खास कमरे में ठहरना होगा,' मुंशी ने बड़ी उत्सुकता और विनम्रता से कहा। 'यह एक शानदार कमरा है, जहाँ से ग्रामीण इलाकों और उस जंगल का सुंदर नज़ारा दिखता है जहाँ छोटे साहब शिकार करना पसंद करते हैं। हुजूर ने अभी एक मिनट पहले ही बताया था कि वे आज सुबह शिकार पर गए थे? मुझे कल सुबह उनके लिए शिकार का इंतज़ाम करना होगा। नीलगाय, हिरण, जंगली सूअर, शायद तेंदुआ भी। क्या हुजूर इसके लिए तैयार हैं? बंदूकों की कोई कमी नहीं है—और घोड़े भी, अगर साहब सवारी करना चाहें। और पुस्तकालय ब्रह्मपुर के पुस्तकालय जितना ही बढ़िया है। नवाब साहब के पिता हमेशा हर किताब की दो प्रतियाँ मंगवाते थे; पैसे की कोई परवाह नहीं होती थी। और हुजूर को बैतर शहर ज़रूर देखना चाहिए: हुजूर की अनुमति से, मैं खुद लाल कोठी, अस्पताल और स्मारकों का भ्रमण करवा दूँगा। अब

हुजूर का बेचारा मुंशी उनके लिए क्या लाएगा? यात्रा के बाद पीने के लिए कुछ? मैं अभी केसर मिला बादाम का शरबत मंगवाता हूँ।' इससे तुम्हारा सिर ठंडा होगा और तुम्हें ऊर्जा मिलेगी। और साहब को मुझे अपने सारे कपड़े धुलवाने होंगे। अतिथि कक्षों में अतिरिक्त कपड़े हैं, जिनमें से दो सेट मैं तुरंत मंगवा लूँगा। और मैं हुज़ूर के निजी नौकर को दस मिनट में गर्म पानी लेकर भेज दूँगा ताकि हुज़ूर की दाढ़ी बनाई जा सके और उनसे आगे के किसी भी आदेश की कृपा प्राप्त की जा सके।

'जी हाँ। बहुत बढ़िया,' मान ने कहा। 'बाथरूम कहाँ है?'

10.8

कुछ समय बाद, जब मान ने नहा-धोकर, दाढ़ी बनाकर और आराम कर लिया, तो उसके लिए नियुक्त युवा नौकर वारिस ने उसे किले का भ्रमण कराया। यह युवक ब्रह्मपुर के बैतर हाउस में मान की देखभाल करने वाले बूढ़े नौकर से बिल्कुल अलग था—और निश्चित रूप से मुंशी से भी।

वह लगभग तीस वर्ष का था, मजबूत, हट्टा-कट्टा, सुंदर, अत्यंत आतिथ्यवान (मालिक के भरोसेमंद सेवक के रूप में), और नवाब साहब और उनके बच्चों, विशेषकर फ़िरोज़ के प्रति पूर्णतः वफादार था। उसने फ़िरोज़ के कमरे में एक छोटी सी चांदी की फ्रेम में लगी धुंधली सी ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीर की ओर इशारा किया। इस तस्वीर में नवाब साहब अपनी पत्नी (जो तस्वीर के लिए परदे में नहीं थीं), ज़ैनब, इम्तियाज़ और फ़िरोज़ के साथ पोज़ दे रहे थे। फ़िरोज़ और इम्तियाज़ लगभग पाँच वर्ष के लग रहे थे; फ़िरोज़ अपना सिर पैंतालीस डिग्री के कोण पर झुकाकर कैमरे की ओर बड़ी ध्यान से देख रहा था।

मान ने सोचा कि यह अजीब बात है कि जब वह पहली बार किले का दौरा कर रहा था, तो उसे फिरोज नहीं बल्कि कोई और घुमा रहा था।

किला अंतहीन प्रतीत होता था। सर्वप्रथम भव्यता का आभास होता था,

और उपेक्षित होने का आभास भी। वे खड़ी सीढ़ियों से एक के बाद एक मंजिल चढ़ते गए, अंततः छत पर पहुँचे जहाँ प्राचीरें, कंगूरे और चार वर्गाकार मीनारें थीं, जिनमें से प्रत्येक के शीर्ष पर एक खाली ध्वज स्तंभ था। लगभग अंधेरा हो चुका था। किले के चारों ओर ग्रामीण इलाका शांतिपूर्वक फैला हुआ था, और घरों में जल रही आग से उठने वाले धुएं के कोहरे ने बैतर कस्बे पर एक धुंधली सी छाया डाल रखी थी। मान एक मीनार पर चढ़ना चाहता था, लेकिन वारिस के पास चाबियाँ नहीं थीं। उसने बताया कि सबसे पास वाली मीनार में एक उल्लू रहता है और पिछली दो रातों से जोर-जोर से हूटिंग करते हुए उड़ रहा है—और यहाँ तक कि दिन के उजाले में भी बाहर निकलकर पुराने ज़नाना वाले हिस्सों की ओर चक्कर लगा चुका है।

वारिस ने उदारतापूर्वक कहा, 'अगर आप चाहें तो मैं आज रात हरामजादों को गोली मार दूंगा। मैं नहीं चाहता कि इससे आपकी नींद खराब हो।'

'अरे नहीं, नहीं, इसकी कोई ज़रूरत नहीं है,' मान ने कहा। 'मैं तो किसी भी मौसम में सो जाता हूँ।'

वारिस ने मोटे, हरे रंग के शीशे से नीचे की ओर इशारा करते हुए कहा, 'ये नीचे पुस्तकालय है। कहते हैं, ये भारत के सबसे बेहतरीन निजी पुस्तकालयों में से एक है। ये दो मंजिला इमारत है और दिन की रोशनी इस शीशे से छनकर अंदर आती है। किले में अभी कोई नहीं है, इसलिए हमने इसे रोशन नहीं किया है। लेकिन जब भी नवाब साहब यहाँ आते हैं, तो अपना ज़्यादातर समय पुस्तकालय में ही बिताते हैं। उन्होंने अपने सारे जागीर के काम उस कमीने मुंशी को सौंप रखे हैं। अब ज़रा संभलकर चलना—ये फिसलन भरा है; ये एक गड्ढा है जहाँ बारिश का पानी बहकर आता है।'

मान को जल्द ही पता चल गया कि वारिस हरामजादा शब्द का इस्तेमाल

काफी खुलेआम करता था। दरअसल, वह नवाब के बेटों से बात करते समय भी बड़े ही दोस्ताना अंदाज में अपशब्दों का प्रयोग करता था। यह उसकी सहज देहाती शैली का हिस्सा था, जिसे वह केवल नवाब साहब से बात करते समय ही नियंत्रित करता था। उनकी उपस्थिति में, आदरपूर्वक, वह यथासंभव कम बोलता था और बोलते समय भी अपने शब्दों पर कड़ा नियंत्रण रखता था।

वारिस आमतौर पर नए लोगों से मिलने पर सहज रूप से सतर्क या सहजता महसूस करता था, और वह उनके साथ उसी के अनुसार बोलता और व्यवहार करता था। मान के साथ उसे आत्म-नियंत्रण की कोई आवश्यकता महसूस नहीं हुई।

'मुंशी में क्या खराबी है?' मान ने पूछा, उसे इस बात में दिलचस्पी थी कि वारिस भी उसे पसंद नहीं करता था।

वारिस ने सीधे-सीधे कहा, 'वह चोर है।' वह यह सोच भी बर्दाश्त नहीं कर सकता था कि मुंशी नवाब साहब की जायदाद का एक भी हिस्सा हड़प रहा था, और यह बात जगजाहिर थी कि वह ऐसा हमेशा करता था, बेची गई उपज का कम मूल्य दिखाता था, खरीदी गई वस्तुओं का अधिक मूल्य दिखाता था, बिना काम किए खर्च का दावा करता था, और किसान किरायेदारों से किराए में छूट दर्ज करता था जबकि कोई छूट दी ही नहीं गई थी।

‘इसके अलावा,’ वारिस ने आगे कहा, ‘वह जनता पर अत्याचार करता है। और इसके अलावा, वह एक कायस्थ है!’

‘कायस्थ होने में क्या बुराई है?’ मान ने पूछा। कायस्थ, हालांकि हिंदू थे, सदियों से मुस्लिम दरबारों में लेखक और सचिव के रूप में काम करते रहे थे, और अक्सर मुसलमानों से भी बेहतर फारसी और उर्दू लिखते थे।

‘ओह,’ वारिस ने अचानक याद करते हुए कहा कि मान स्वयं एक हिंदू

था। 'मैं तुम्हारे जैसे हिंदुओं के खिलाफ नहीं हूँ। मुझे केवल कायस्थों से आपत्ति है। मुंशी के पिता नवाब साहब के पिता के समय में यहाँ मुंशी थे; और उन्होंने बूढ़े आदमी को पूरी तरह लूटने की कोशिश की थी; लेकिन फर्क सिर्फ इतना था कि बूढ़ा आदमी अंधा नहीं था।'

'लेकिन मौजूदा नवाब साहब?' मान ने कहा।

'वह बहुत ही नेक दिल, बहुत ही दानशील और बहुत ही धार्मिक हैं। वह हम पर कभी सच में गुस्सा नहीं करते—और हमारे लिए उनका थोड़ा सा गुस्सा ही काफी होता है। लेकिन जब वह मुंशी को डांटते हैं, तो मुंशी कुछ मिनटों के लिए गिड़गिड़ाते हैं और फिर पहले की तरह ही अपना काम करने लगते हैं।'

'आपका क्या हाल है? क्या आप बहुत धार्मिक हैं?' मान ने पूछा।

'नहीं,' वारिस ने हैरानी से कहा। 'राजनीति मेरा क्षेत्र है। मैं यहाँ सब कुछ व्यवस्थित रखता हूँ। मेरे पास बंदूक है—और बंदूक का लाइसेंस भी। इस कस्बे में एक आदमी है—एक नीच, घटिया आदमी जिसे नवाब साहब ने पढ़ाया-लिखाया है और जिसने उन्हीं की तरह नमक खाया है—जो नवाब साहब और नवाबजादों के लिए हर तरह की मुसीबत खड़ी करता है—झूठे केस करता है, यह साबित करने की कोशिश करता है कि किला खाली कराई गई संपत्ति है, कि नवाब साहब पाकिस्तानी हैं—अगर यह कमीना यहाँ विधायक बन गया तो हम मुसीबत में पड़ जाएँगे। और वह कांग्रेस का समर्थक है और उसने यह जता दिया है कि वह इस निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस का टिकट पाने के लिए दौड़ में है। काश नवाब साहब खुद निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में खड़े हो जाएँ—या मुझे उनके लिए चुनाव लड़ने दें! मैं उस कमीने का सफाया कर दूँगा।'

मान वारिस की वफादारी की भावना से प्रसन्न था; उसे स्पष्ट रूप से महसूस हो रहा था कि बैतार परिवार की प्रतिष्ठा और समृद्धि पूरी तरह से

उसके कंधों पर टिकी हुई है।

मान अब भोजन कक्ष में नीचे उतरा। वहाँ उसे सबसे अधिक प्रभावित करने वाली चीज़ न तो कीमती कालीन थी, न ही लंबी सागौन की मेज, न ही नक्काशीदार साइडबोर्ड, बल्कि दीवारों पर टंगी हुई तेल चित्रों ने किया: क्योंकि वहाँ चार चित्र थे, लंबी दीवारों में से प्रत्येक पर दो-दो चित्र लगे थे।

एक चित्र नवाब साहब के परदादा का था, जो घोड़े, तलवार और हरे पंख के साथ सजे हुए थे और सलीमपुर में अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ते हुए शहीद हो गए थे। उसी दीवार पर दूसरा चित्र उनके पुत्र का था, जिन्हें अंग्रेजों ने उनकी विरासत सौंप दी थी और जिन्होंने विद्वतापूर्ण एवं परोपकारी कार्यों में अधिक रुचि दिखाई थी। वे घोड़े पर सवार नहीं थे, बल्कि खड़े थे, हालांकि नवाबों के पूरे वस्त्र पहने हुए थे। उनकी आँखों में एक प्रकार की शांति, यहाँ तक कि एकांत का भाव भी था—जो उनके पिता के आकर्षक अहंकार के बिल्कुल विपरीत था। सामने वाली दीवार पर, बड़े का बड़े के सामने और छोटे का छोटे के सामने, महारानी विक्टोरिया और राजा एडवर्ड सप्तम के चित्र टंगे थे। बैठी हुई विक्टोरिया उदास और थोड़ी मोटी लग रही थीं, उनके सिर पर रखा छोटा गोल मुकुट इस भाव को और भी बढ़ा रहा था। उन्होंने एक लंबा, गहरे नीले रंग का गाउन और फर से सजा हुआ लबादा पहना हुआ था और एक छोटा राजदंड धारण किए हुए थीं। उनके मोटे-ताज़े, चंचल पुत्र एक गहरे रंग की पृष्ठभूमि के सामने बिना मुकुट के, लेकिन राजदंड के साथ खड़े थे; उसने गहरे भूरे रंग की कमरबंद वाली लाल कमीज, फर का लबादा और मखमली गाउन पहना हुआ था, और उसके सिर पर गुंथी हुई चोटियाँ और लटकनें थीं। उसके चेहरे पर पहले से कहीं अधिक प्रसन्नता थी, लेकिन उसकी माँ जैसा आत्मविश्वास नहीं था। मान ने अपने अत्यधिक मसालेदार और अकेले भोजन के दौरान

बारी-बारी से सभी चित्रों को देखा।

बाद में वह अपने कमरे में लौट आया। किसी कारणवश उसके बाथरूम के नल और फ्लश काम नहीं कर रहे थे, लेकिन उसकी ज़रूरतों के लिए बाल्टियाँ और पीतल के बर्तन पर्याप्त मात्रा में पानी से भरे हुए थे। कुछ दिनों तक खेतों में काम करने या एसडीओ के बंगले की साधारण सुविधाओं में रहने के बाद, फ़िरोज़ के कमरे का संगमरमर की टाइलों वाला बाथरूम, भले ही उसे खुद पानी भरना पड़ता था, मान के लिए एक अत्यंत विलासिता थी। एक बाथटब, शॉवर और दो सिंक के अलावा, वहाँ एक धूल से सना हुआ यूरोपीय शैली का शौचालय और एक भारतीय शौचालय भी था। पहले वाले पर एक चौपाई जैसी कुछ पंक्तियाँ लिखी हुई थीं:

जे बी नॉर्टन एंड संस लिमिटेड

स्वच्छता इंजीनियर

ओल्ड कोर्ट हाउस कॉर्नर

कलकत्ता

बाद वाले ने सरल शब्दों में कहा:

नॉर्टन का पेटेंट

'द हिंदू'

संयुक्त अलमारी

कलकत्ता

मान, जैसा कि उन्होंने बाद वाले शब्द का प्रयोग किया, ने आश्चर्य व्यक्त किया कि क्या मुस्लिम लीग के इस पूर्व गढ़ में उनसे पहले किसी ने इस विध्वंसक शिलालेख पर विचार किया था, शायद इस विचार पर विद्रोह करते हुए कि उनकी साझा सांस्कृतिक विरासत की इस वस्तु को अंग्रेजों द्वारा मनमाने ढंग से दूसरे और प्रतिद्वंद्वी धर्म के लोगों को सौंप दिया गया

था।

10.9

अगली सुबह मान साइकिल चलाते हुए मुंशी से मिला; दोनों के बीच कुछ देर बातचीत हुई। मुंशी यह जानने के लिए उत्सुक था कि मान को सब कुछ ठीक लगा या नहीं: खाना, कमरा, वारिस का व्यवहार। उसने वारिस के असभ्य व्यवहार के लिए माफी मांगते हुए कहा, "लेकिन साहब, हम क्या कर सकते हैं, यहाँ के लोग तो बिल्कुल गंवार हैं।" मान ने उसे बताया कि वह उस गंवार के साथ शहर घूमने की योजना बना रहा है, यह सुनकर मुंशी ने घबराहट में अपनी मूंछें चाट लीं।

फिर उसका चेहरा खिल उठा और उसने मान को बताया कि वह अगले दिन उसके लिए शिकार का इंतजाम करने जा रहा है।

वारिस ने दोपहर का भोजन पैक किया, मान को टोपी के कई विकल्प दिए और उसे शहर के दर्शनीय स्थलों की सैर कराई, साथ ही नवाब साहब के वीर परदादा के समय से लेकर अब तक हुए सभी सुधारों के बारे में बताया। सफेद कमीज और सफेद पतलून पहने साहब को घूरने वाले लोगों पर वह जोर से चिल्लाया। दोपहर ढलते-ढलते वे किले में लौट आए। द्वार पर कुली ने वारिस से सख्ती से कहा:

‘मुंशीजी ने कहा था कि तुम्हें तीन बजे तक वापस आ जाना है। रसोई में लकड़ी की कमी है। वे बहुत नाराज़ हैं। वे बड़े दफ्तर में जागीर के तहसीलदार के साथ बैठे हैं और उन्होंने कहा है कि तुम्हें तुरंत उन्हें रिपोर्ट करना है।’

वारिस ने मुंह बनाया। उसे एहसास हुआ कि वह किसी छोटी-मोटी मुसीबत में है। मुंशी दिन के इस समय हमेशा चिड़चिड़ा रहता था; यह मलेरिया के चक्र जैसा था। हालांकि, मान ने कहा:

‘देखो, मैं तुम्हारे साथ चलूंगा और सब कुछ समझा दूंगा।’

‘नहीं, नहीं, मान साहब, क्यों परेशान हो रहे हैं? रोजाना साढ़े चार बजे एक ततैया हरामजादे के लिंग को काटता है।’

इसमें कोई परेशानी नहीं है।

‘आप बहुत अच्छे हैं, मान साहब। जब आप चले जाएं तो मुझे मत भूलना।’

‘बिल्कुल नहीं। अब देखते हैं तुम्हारे मुंशी का क्या कहना है।’

वे गर्म, पक्के आंगन में दाखिल हुए और सीढ़ियाँ चढ़कर बड़े दफ्तर के कमरे में पहुँचे। मुंशी कोने में रखी बड़ी मेज (संभवतः नवाब साहब के लिए आरक्षित) पर नहीं, बल्कि एक छोटी, लकड़ी की, पीतल से जड़ी, ढलान वाली लेखन मेज के सामने पालथी मारकर बैठे थे। उनके बाएं हाथ की उंगलियाँ उनकी भूरी-सफेद मूंछों में गड़ी हुई थीं। वे अपने सामने खड़ी एक बूढ़ी औरत को घृणा से देख रहे थे, जो अपनी फटी हुई साड़ी से बेहद गरीब लग रही थी और जिसका चेहरा आंसुओं से भीगा हुआ था।

जागीर का तहसीलदार मुंशी के पीछे खड़ा था और गुस्से और उग्रता से भरा दिख रहा था।

“क्या तुम्हें लगता है कि तुम इस तरह झूठे बहाने बनाकर किले में घुस सकते हो और फिर हमसे अपनी बात सुनने की उम्मीद करोगे?” मुंशी ने चिढ़कर कहा। उसने मान और वारिस पर ध्यान नहीं दिया, जो दरवाजे के ठीक बाहर खड़े थे; उसकी ऊंची आवाज सुनकर वे रुक गए थे।

‘मेरे पास कोई और रास्ता नहीं था,’ बूढ़ी औरत लड़खड़ाती आवाज़ में बोली। ‘अल्लाह जानता है कि मैंने आपसे बात करने की कोशिश की है—कृपा करके, मुंशी जी, मेरी प्रार्थना सुनिए। हमारा परिवार पीढ़ियों से इस घर की सेवा करता आया है—’

मुंशी ने बीच में ही टोकते हुए कहा, “जब आपके बेटे ने गांव के अभिलेखों में अपना किरायेदारी का दस्तावेज दर्ज कराने की कोशिश की, तब क्या

आप इस घर में सेवा कर रही थीं? वह क्या करना चाहता है? क्या वह उस जमीन पर कब्जा करना चाहता है जो उसकी नहीं है? अगर हमने उसे सबक सिखा दिया है, तो इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है।"

लेकिन यह तो बिल्कुल सच है—उस जमीन पर उसने खेती की है—'

'क्या? क्या तुम यहाँ मुझसे बहस करने और मुझे सत्य का ज्ञान देने आए हो? मुझे पता है कि तुम लोगों की बातों में कितना सत्य है।' उसकी आवाज़ की कोमलता के नीचे अब एक तीखापन झलक रहा था। और उसे अपने पैरों तले कुचलने की शक्ति का प्रयोग करने में जो आनंद आ रहा था, उसे छुपाने की उसने कोई कोशिश भी नहीं की।

बुढ़िया कांपने लगी। 'यह एक गलती थी। उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। लेकिन हमारी ज़मीन के अलावा हमारे पास क्या है, मुंशीजी? अगर आप हमारी ज़मीन छीन लेंगे तो हम भूखे मर जाएंगे। आपके आदमियों ने उसे पीट दिया है, उसे सबक मिल गया है। उसे माफ़ कर दीजिए—और मुझे भी माफ़ कर दीजिए, जो इस अभागे बच्चे को जन्म देने के लिए आपके सामने हाथ जोड़कर आई हूँ।'

'जाओ,' मुंशी ने कहा। 'मैंने बहुत सुन लिया। तुम्हारी झोपड़ी है। जाओ और अनाज भूनो। या फिर अपना मुरझाया हुआ शरीर बेच दो। और अपने बेटे से कहो कि वह किसी और के खेतों में हल चलाए।'

वह महिला बेबस होकर रोने लगी।

'जाओ,' मुंशी ने दोहराया। 'क्या तुम बहरे होने के साथ-साथ गूंगे भी हो?'

'तुममें ज़रा भी इंसानियत नहीं है,' बूढ़ी औरत सिसकते हुए बोली। 'एक दिन आएगा जब तुम्हारे कर्मों का हिसाब होगा। उस दिन, जब ईश्वर कहेगा —'

'क्या?' मुंशी उठ खड़ा हुआ। उसने उस औरत के झुर्रियों वाले चेहरे को घूरकर देखा, जिसकी आँखें आँसुओं से भरी और झुकी हुई थीं और मुँह

से कड़वाहट झलक रही थी। 'क्या? तुमने क्या कहा? मैं तो नरमी बरतने की सोच रहा था, पर अब मुझे पता है कि मेरा कर्तव्य क्या है। नवाब साहब की कृपा और मेहमाननवाज़ी का सालों तक आनंद उठाने के बाद, हम तुम्हारे जैसे लोगों को उनकी ज़मीन पर उपद्रव मचाने नहीं दे सकते।' वह जागीर के तहसीलदार की ओर मुड़ा। 'इस बुढ़िया को यहाँ से बाहर निकालो—किले से बाहर फेंक दो और आदमियों को बता दो कि मैं चाहता हूँ कि वह आज रात तक गाँव में अपने घर से निकल जाए। इससे उसे और उसके एहसानफरामोश बेटे को सबक मिलेगा—'

वह बोलते-बोलते रुक गया और घूरने लगा, न तो वास्तविक क्रोध से और न ही दिखावटी क्रोध से, बल्कि स्पष्ट भय से। उसका मुंह खुलता-बंद होता रहा, वह लगभग बिना आवाज किए हांफता रहा, और उसकी जीभ उसकी मूंछों की ओर बढ़ गई।

क्रोध से सफेद पड़े मान, जिसका दिमाग गुस्से से खाली था, एक मशीन की तरह उसकी ओर बढ़ रहा था, न बाएँ देख रहा था न दाएँ, और उसकी आँखों में हत्या की भावना थी।

तहसीलदार, बुढ़िया, नौकर, मुंशी खुद— कोई नहीं हिला। मान ने मुंशी की मोटी, खुरदरी दाढ़ी वाली गर्दन पकड़ ली और बिना कुछ बोले उसे ज़ोर से हिलाने लगा, उसकी आँखों में दिख रहे खौफ की उसे ज़रा भी परवाह नहीं थी। उसके अपने दाँत बाहर निकले हुए थे और वह भयानक लग रहा था। मुंशी हांफने लगा और उसका दम घुटने लगा— उसके हाथ उसकी गर्दन पर चले गए। तहसीलदार आगे बढ़ा— बस एक कदम। अचानक मान ने मुंशी को छोड़ दिया और वह अपनी मेज पर गिर पड़ा।

एक मिनट तक किसी ने कुछ नहीं कहा। मुंशी हांफने और खांसने लगा। मान अपने किए पर स्तब्ध रह गया।

उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि उन्होंने इस तरह की प्रतिक्रिया क्यों दी।

उन्हें बस मुंशी पर चिल्लाना चाहिए था और उसे सबक सिखाना चाहिए था। उन्होंने अपना सिर हिलाया। वारिस और तहसीलदार दोनों आगे बढ़े, एक मान की ओर, दूसरा मुंशी की ओर। बूढ़ी औरत का मुंह डर से खुला हुआ था और वह धीरे-धीरे अपने आप से 'या अल्लाह! या अल्लाह!' दोहरा रही थी।

'साहिब! साहब!' मुंशी ने आखिरकार अपनी आवाज पाते हुए लड़खड़ाती आवाज में कहा। 'हुजूर जानते हैं कि यह सिर्फ एक मजाक था—इन लोगों का एक तरीका—मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था—एक अच्छी औरत —कुछ नहीं होगा—उसका बेटा, उसका खेत वापस—हुजूर को ऐसा नहीं सोचना चाहिए—' उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे।

'मैं जा रहा हूँ,' मान ने आधे मन से और आधे वारिस से कहा। 'मेरे लिए एक रिक्शा मंगवा दो।' उसे पूरा यकीन था कि वह उस आदमी को जान से मारने से बाल-बाल बचा था।

वह दृढ़ निश्चयी मुंशी अचानक आगे उछला और लगभग मान के पैरों पर झपटा, अपने हाथों और सिर से उनके पैरों को छूते हुए हांफता हुआ उनके सामने गिर पड़ा। 'नहीं, नहीं, हुजूर—कृपा करके—कृपा करके—मुझे बर्बाद मत कीजिए,' वह अपने मातहतों की मौजूदगी की परवाह किए बिना रोते हुए बोला। 'यह एक मज़ाक था—एक मज़ाक—एक बात समझाने का तरीका—कोई भी ऐसी बातें जानबूझकर नहीं करता, मैं अपने माता-पिता की कसम खाता हूँ।'

'तुम्हें बर्बाद कर रहा हूँ?' मान ने अचंभित होकर कहा।

'लेकिन कल तुम्हारा शिकार—' मुंशी हांफते हुए बोला। वह भली-भांति समझ गया था कि वह दोहरी मुसीबत में फंसा है। मान के पिता महेश कपूर थे, और ऐसी घटना से बैतर एस्टेट के प्रति उनका स्नेह कम हो जाता। मान फिरोज का मित्र था; फिरोज उग्र स्वभाव का था और उसके

पिता उसे पसंद करते थे और कभी-कभी उसकी बात सुनते भी थे; और मुंशी को यह सोचकर डर लग रहा था कि अगर नवाब साहब, जो यह सोचते थे कि एस्टेट को बिना किसी परेशानी के और उदारतापूर्वक चलाया जा सकता है, को मुंशी द्वारा एक बूढ़ी औरत को दी गई धमकियों के बारे में पता चल गया तो क्या होगा।

'हंट?' मान ने उसे घूरते हुए कहा।

और आपके कपड़े अभी भी धुलाई में हैं—

मान घृणा से मुंह फेर लिया। उसने वारिस को अपने पीछे आने को कहा। वह अपने कमरे में गया, अपना सामान बैग में डाला और किले से बाहर निकल गया। उसे स्टेशन ले जाने के लिए एक रिक्शा बुलाया गया। वारिस उसके साथ जाना चाहता था, लेकिन मान ने उसे आने नहीं दिया।

वारिस के आखिरी शब्द नवाब साहब के लिए ये थे: 'मैंने नवाब साहब को एक जंगली मुर्गा भेजा है। क्या आप देख सकते हैं कि उन्हें मिल गया या नहीं? और उस बूढ़े आदमी, गुलाम रसूल को मेरा प्रणाम कहना, जो यहाँ काम करता था।'

10.10

'तो बताओ,' रशीद ने अपने ससुर के घर के बाहर चारपाई पर बैठे हुए अपनी चार वर्षीय बेटी मेहर से कहा, 'तुमने क्या सीखा है?'

अपने पिता की गोद में बैठी मेहर ने उर्दू वर्णमाला को अपने तरीके से इस प्रकार सुनाया:

'Alif-be-te-se-he-che-dal-bari-ye!'

रशीद खुश नहीं थे। उन्होंने कहा, 'यह वर्णमाला का बहुत संक्षिप्त रूप है।' उन्होंने सोचा कि ब्रह्मपुर में उनकी अनुपस्थिति के दौरान मेहर की शिक्षा में काफी गिरावट आई थी। 'अब, मेहर, तुम्हें इससे अधिक मेहनत करनी होगी। तुम एक होशियार लड़की हो।'

हालांकि मेहर वास्तव में एक होशियार लड़की थी, लेकिन उसने अपनी सूची में दो या तीन अक्षर जोड़ने के अलावा वर्णमाला में कोई और रुचि नहीं दिखाई।

अपने पिता को देखकर वह बहुत खुश हुई, लेकिन पिछली शाम जब वे कई महीनों के बाद घर लौटे तो वह उनसे बहुत शर्मा रही थी। रशीद का अभिवादन करने के लिए उसकी माँ को उसे बहुत मनाना पड़ा और यहाँ तक कि एक बिस्किट का लालच भी देना पड़ा। आखिरकार, बहुत हिचकिचाते हुए उसने कहा, 'आदाब अर्ज़, चाचा-जान।'

बहुत ही कोमल स्वर में उसकी माँ ने कहा था, 'चाचा-जान नहीं, अब्बा-जान।' इस सुधार ने उसे फिर से शर्मिंदगी से भर दिया था। लेकिन अब रशीद ने उसका दिल फिर से जीत लिया था और वह उससे ऐसे बातें कर रही थी मानो बीच के महीने बीते ही न हों।

'गांव की दुकान में क्या बिकता है?' रशीद ने पूछा, इस उम्मीद में कि मेहर व्यावहारिक मामलों में वर्णमाला की तुलना में बेहतर प्रदर्शन कर पाएगी।

मेहर ने कहा, 'मिठाई, नमकीन, साबुन, तेल।'

रशीद खुश हो गया। उसने उसे अपनी गोद में उछालना शुरू किया और चुंबन मांगा, जो उसे तुरंत मिल गया।

कुछ देर बाद रशीद के ससुर घर से बाहर आए, जहाँ वे अपनी बेटी से बात कर रहे थे। वे लंबे, सज्जन पुरुष थे जिनकी सफेद दाढ़ी करीने से कटी हुई थी, और गाँव में उन्हें हाजी साहब के नाम से जाना जाता था, क्योंकि उन्होंने लगभग तीस साल पहले मक्का की तीर्थयात्रा की थी।

अपने दामाद और पोती को घर के बाहर लगातार बातें करते और कोई गतिविधि न करते देख उन्होंने कहा:

'अब्दुर रशीद, सूरज ऊपर चढ़ रहा है, और अगर तुम्हें आज ही जाना है,

तो जल्दी चलो।' वह रुके। 'और ध्यान रखना कि हर भोजन में उस डिब्बे से एक बड़ा चम्मच घी ज़रूर खाना। मैं मेहर को ऐसा करने के लिए कहता हूँ, और इसीलिए उसकी त्वचा इतनी स्वस्थ दिखती है और उसकी आँखें हीरे की तरह चमकती हैं।' हाजी साहब अपनी पोती को गोद में उठाने के लिए झुके और उसे गले लगा लिया। मेहर, जिसे समझ आ गया था कि वह, उसकी छोटी बहन और उसकी माँ अपने पिता के साथ देबरिया जा रही हैं, अपने नाना से बड़े प्यार से लिपट गई और उनकी जेब से चार आना का सिक्का निकाल लिया।

'आप भी आइए, नाना-जान,' उसने जोर देकर कहा।

'तुम्हें क्या मिला?' रशीद ने पूछा। 'इसे वापस रख दो। बुरी आदत, बुरी आदत,' उसने सिर हिलाते हुए कहा।

लेकिन मेहर ने अपने नाना से विनती की, जिन्होंने उसे अपनी संदिग्ध रूप से अर्जित संपत्ति रखने की अनुमति दे दी। उन्हें जाते देखकर नाना बहुत दुखी हुए, लेकिन वे अपनी बेटी और बच्चे को लाने के लिए अंदर चले गए।

रशीद की पत्नी घर से बाहर निकली। उसने काले रंग का बुर्का पहना हुआ था और चेहरे पर पतला सा नकाब था। उसकी गोद में बच्चा था। मेहर अपनी मां के पास गई, उसका बुर्का खींचा और बच्चे को गोद में लेने की गुहार लगाई।

'अभी नहीं, मुनिया सो रही है। थोड़ी देर में,' उसकी माँ ने कोमल स्वर में कहा।

'कुछ खा लो। या कम से कम जाने से पहले एक गिलास शरबत पी लो,' हाजी साहब ने कहा, जो कुछ मिनट पहले ही उन्हें जल्दी करने के लिए दबाव डाल रहे थे।

'हाजी साहब, हमें चलना चाहिए,' रशीद ने कहा। 'हमें कस्बे के पास थोड़ा

समय बिताना चाहिए।'

'तो मैं आपके साथ रेलवे स्टेशन चलूंगा,' हाजी साहब ने धीरे से सिर हिलाते हुए कहा।

'कृपया आप परेशान न हों,' रशीद ने कहा।

अचानक ही उस बुजुर्ग व्यक्ति के गंभीर चेहरे पर सामान्य से कहीं अधिक चिंता, यहाँ तक कि घबराहट के भाव उभर आए।

'रशीद, मुझे चिंता है कि—' उसने कहना शुरू किया, फिर रुक गया।

रशीद, जो अपने ससुर का सम्मान करता था, ने पटवारी के पास जाने के बारे में उनसे खुलकर बात की थी, लेकिन वह जानता था कि बूढ़े आदमी की चिंता का कारण यह नहीं था।

'हजी साहब, चिंता न कीजिए,' रशीद ने कहा, उसके चेहरे पर भी क्षणिक पीड़ा झलक रही थी। फिर वह उनके थैलों, डिब्बों और बक्सों को समेटने में व्यस्त हो गया और वे सब गाँव के बाहरी इलाके से होकर जाने वाली सड़क की ओर चल पड़े। यहाँ एक छोटी सी चाय की दुकान थी जहाँ कस्बे और रेलवे स्टेशन जाने वाली बस रुकती थी। यात्रियों की एक छोटी सी भीड़ जमा थी, साथ ही उन्हें विदा करने आए लोगों की एक बड़ी भीड़ भी थी।

बस धड़ाम से रुक गई।

हाजी साहब पहले अपनी बेटी को, फिर अपने दामाद को गले लगाते हुए भावुक हो गए और उनकी आँखों में आँसू आ गए। जब उन्होंने मेहर को अपनी गोद में उठाया, तो मेहर ने अपनी उंगली से उनके एक आंसू का पीछा किया और भौंहें चढ़ा लीं। बच्ची इस सब के दौरान सोती रही, हालाँकि उसे बार-बार एक हाथ से दूसरे हाथ में दिया जा रहा था।

बहुत अफरा-तफरी के बीच दो यात्रियों को छोड़कर बाकी सभी लोग बस में चढ़ गए; एक नारंगी रंग की साड़ी पहने युवती और लगभग आठ साल

की एक छोटी लड़की, जो स्पष्ट रूप से उसकी बेटी थी।
वह महिला एक अधेड़ उम्र की महिला को गले लगा रही थी—संभवतः उसकी माँ, जिससे वह मिलने आई थी, या शायद उसकी बहन—और ज़ोर-ज़ोर से रो रही थी। वे नाटकीय अंदाज़ में एक-दूसरे को गले लगाकर विलाप कर रही थीं। अधेड़ उम्र की महिला दुख से हांफ रही थी और रो रही थी:
'क्या तुम्हें वो समय याद है जब मैं गिर गया था और मेरे घुटने में चोट लग गई थी. . .'
दूसरी महिला विलाप करते हुए बोली: 'तुम ही मेरे इकलौते हो, मेरे इकलौते...'
बैंगनी रंग की पोशाक पहने और अपनी एक चोटी में गुलाबी रिबन बांधे हुए वह छोटी बच्ची बेहद ऊबी हुई लग रही थी।
'तुमने मुझे खाना खिलाया—तुमने मुझे सब कुछ दिया...' उसकी माँ ने आगे कहा।
'तुम्हारे बिना मैं क्या करूँगा... हे भगवान! हे भगवान!'
ड्राइवर के लगातार हॉर्न बजाने के बावजूद यह सिलसिला कुछ मिनट तक चलता रहा। लेकिन उनके बिना गाड़ी चलाना नामुमकिन था। हालांकि बाकी यात्री इस तमाशे से ऊब चुके थे और अब अधीर हो रहे थे, फिर भी वे ऐसा होने नहीं देते।
'क्या हो रहा है?' रशीद की पत्नी ने धीमी, परेशान आवाज में रशीद से पूछा।
'कुछ नहीं, कुछ नहीं। वे तो बस हिंदू हैं।'
आखिरकार, युवती और उसकी बेटी बस में चढ़ गईं। वह खिड़की से बाहर झुककर लगातार रोने लगी। छींक और गुर्राहट के साथ बस अचानक आगे बढ़ी। कुछ ही पलों में, महिला का रोना बंद हो गया और उसने अपना

ध्यान लड्डू खाने पर लगाया, जिसे उसने पैकेट से निकाला, दो बराबर हिस्सों में तोड़ा और अपनी बेटी के साथ बाँट लिया।

10.11

बस इतनी खस्ताहाल थी कि कुछ-कुछ मिनटों में ही पलट जाती थी। यह एक कुम्हार की थी जिसने अपना पेशा पूरी तरह बदल लिया था—इतना बड़ा बदलाव कि उसके स्थानीय जाति-भाई-बंधुओं ने उसे बहिष्कृत कर दिया था, जब तक कि उन्हें स्टेशन जाने के लिए उसकी बस बेहद ज़रूरी नहीं लगने लगी। कुम्हार ही बस चलाता था, उसकी देखभाल करता था, उसे खाना-पानी देता था, उसकी छींकों और मौत के झूठे आहटों का इलाज करता था और उसकी जर्जर हालत को सड़क पर घसीटता था। इंजन से धूसर-नीले धुएं के बादल उठते थे, उसके ईंधन से कच्चा तेल रिसता था, ब्रेक लगाने पर जलते हुए रबर की बदबू हवा में फैल जाती थी और हर एक-दो घंटे में उसका टायर पंचर हो जाता था या फट जाता था। ईंटों से बनी सड़क गड्ढों से भरी थी और पहियों के शॉक एब्जॉर्बर पूरी तरह से खराब हो चुके थे। रशीद को हर कुछ मिनटों में ऐसा लगता था जैसे उसका बधियाकरण होने वाला है। उसकी घुटने सामने बैठे आदमी से टकराते रहते थे क्योंकि सीट के पीछे के तख्ते गायब थे।

हालांकि, नियमित यात्रियों में से किसी को भी शिकायत का कोई कारण नहीं लगा। यह बैलगाड़ी में दो घंटे की यात्रा से कहीं बेहतर और सुविधाजनक था। जब भी बस कहीं अनजाने में रुकती, कंडक्टर खिड़की से बाहर झुककर पहियों को देखता। फिर एक और आदमी प्लास लेकर बाहर कूदता और बस के नीचे चढ़ जाता। कभी-कभी बस इसलिए रुकती थी क्योंकि ड्राइवर रास्ते में किसी दोस्त से बात करना चाहता था—या बस यूं ही रुकने का मन करता था। ड्राइवर को अपने यात्रियों से काम करवाने में भी कोई संकोच नहीं था। जब भी उसे बस को धक्का देकर

चालू करवाना होता, वह मुड़कर ज़ोरदार स्थानीय बोली में चिल्लाता:
'अरे, दू-चार जेन उतारी आउ. चलो ढाका चलें!'
और जब बस चलने ही वाली होती, तो वह उन्हें युद्धघोष के साथ बुलाता:
'अरे भाई, अरे, अरे। चलो!'
बस चालक को बस में लगे (मानक हिंदी में) संकेतों पर विशेष गर्व था। उदाहरण के लिए, उसकी सीट के ऊपर लिखा था: अधिकारी की सीट और बस चलते समय चालक से बात न करें। दरवाजे के ऊपर लिखा था: बस के रुकने पर ही उतरें। बस की एक दीवार पर गहरे लाल रंग में यह संदेश लिखा था: नशे में या भरी हुई बंदूक के साथ यात्रा न करें। लेकिन इसमें बकरियों के बारे में कुछ नहीं लिखा था, जबकि बस में कई बकरियां थीं।
स्टेशन के आधे रास्ते में, बस एक और छोटी चाय की दुकान पर रुकी, और यहाँ एक नेत्रहीन व्यक्ति चढ़ा। उसका चेहरा फूलगोभी जैसी सूजन से ढका हुआ था, और उसकी नाक छोटी और चपटी थी। वह छड़ी के सहारे चलता था, और टटोलते हुए बस में चढ़ा। वह दूर से ही बस की विशिष्ट आवाज़ों से पहचान लेता था। वह लोगों को उनकी आवाज़ों से तुरंत पहचान लेता था, और उसे उनसे बात करना अच्छा लगता था। उसकी एक पतलून का पाँवा लंबा और दूसरा छोटा मोड़ा हुआ था। ऊपर देखते हुए वह अब बेफिक्र और बेसुरी आवाज़ में गा रहा था:
हे दाता, किसी को भी गरीबी मत दो।
मुझे मृत्यु दे दो, लेकिन दुर्भाग्य मत दो।
वह बस में घूमते हुए छोटे-छोटे सिक्के इकट्ठा करते हुए यही गीत और इसी तरह के अन्य गीत गाता रहा और कंजूसों को प्रासंगिक दोहों की बौछार से फटकारता रहा। रशीद, जब भी इस बस में सफर करता, तो वह उसके सबसे उदार दानदाताओं में से एक था, और भिखारी ने उसकी

आवाज़ तुरंत पहचान ली। 'क्या?' वह चिल्लाया। 'तुमने अपने ससुर के यहाँ सिर्फ़ दो रातें बिताई हैं? शर्म की बात है! तुम्हें अपनी पत्नी के साथ ज़्यादा समय बिताना चाहिए, तुम जैसे जवान आदमी के साथ। या क्या यह रोता हुआ बच्चा तुम्हारा ही है—और क्या यह तुम्हारी पत्नी तुम्हारे साथ यहाँ है? हे अब्दुर रशीद की पत्नी, अगर तुम इस बस में हो, तो इस बदकिस्मत को उसकी गुस्ताखी के लिए माफ़ कर दो और उसका आशीर्वाद स्वीकार करो। तुम्हें और भी कई पुत्र हों, और सभी इतने ही बुलंद आवाज़ वाले हों। दान दो—दान दो—ईश्वर उदार लोगों को पुरस्कृत करता है...' और वह बस में आगे बढ़ गया।

मेहर की मां बुर्के के नीचे शर्म से लाल हो गईं और फिर खिलखिलाकर हंसने लगीं। थोड़ी देर बाद वह चुप हो गईं। फिर वह सिसकने लगीं और रशीद ने धीरे से उनके कंधे पर हाथ रखा।

भिखारी आखिरी स्टेशन, रेलवे स्टेशन पर उतर गया। उसने कहा, 'आप सभी को शांति मिले। और भारतीय रेलवे में यात्रा करने वाले सभी लोगों को स्वास्थ्य और सुरक्षा की शुभकामनाएं।'

रशीद को पता चला कि ट्रेन बस थोड़ी सी लेट है, और वह निराश हो गया। उसने सोचा था कि वह रिक्शा लेकर अपने बड़े भाई की कब्र पर जाएगा, जो इस छोटे से कस्बे के बाहर एक कब्रिस्तान में आधे घंटे की दूरी पर थी। क्योंकि तीन साल पहले इसी स्टेशन पर उसके भाई की ट्रेन की चपेट में आकर मौत हो गई थी। उसके परिवार तक खबर पहुंचने से पहले ही कस्बे के लोगों ने उसके कुचले हुए शव के अंतिम संस्कार की व्यवस्था कर दी थी।

अब दोपहर के करीब का समय था और भीषण गर्मी थी। प्लेटफार्म पर बैठे हुए उन्हें कुछ ही मिनट हुए थे कि रशीद की पत्नी कांपने लगी। रशीद ने उसका हाथ थाम लिया और कुछ नहीं बोला। फिर उसने धीमी आवाज़

में कहा: 'मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ कि तुम कैसा महसूस कर रही हो। मैं भी उससे मिलना चाहता था। अगली बार जब हम यहाँ आएंगे तो मिलेंगे। आज समय नहीं था। यकीन मानो, समय नहीं था। और इतने सारे सामान के साथ—हम कैसे जा सकते थे?'

कुछ बोरियों से बने अस्थायी पालने में लेटा बच्चा सोता रहा। मेहर भी थक चुकी थी और सो गई थी। रशीद ने उन्हें देखा और अपनी आँखें बंद कर लीं।

उसकी पत्नी ने कुछ नहीं कहा, बस धीरे से कराह उठी। उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था और वह स्तब्ध सी लग रही थी। 'तुम भैया के बारे में सोच रही हो, है ना?' उसने कहा। वह फिर से रोने लगी और बेकाबू होकर कांपने लगी। रशीद को अपने सिर के पिछले हिस्से में दबाव महसूस होने लगा। उसने उसके चेहरे की ओर देखा, जो घूंघट के बावजूद भी सुंदर था —शायद इसलिए सुंदर क्योंकि वह जानता था कि वह सुंदर है। उसने फिर से बात की, उसका हाथ अपने हाथ में लेकर उसके माथे को सहलाते हुए:

रोना मत—रोना मत—मेहर और बच्चा जाग जाएँगे—हम जल्द ही इस अशुभ जगह से निकल जाएँगे। क्यों शोक मनाएँ, क्यों शोक मनाएँ, जब आप कुछ कर ही नहीं सकतीं... देखो, गर्मी भी हो सकती है। अपना घूंघट हटाओ—थोड़ी हवा अपने चेहरे पर लगने दो... हमें जल्दी करनी पड़ती, और शायद हमारी ट्रेन छूट जाती और हमें इस मनहूस कस्बे में रात बितानी पड़ती। अगली बार हम समय निकाल लेंगे। यह मेरी गलती है, मुझे घर से जल्दी निकलना चाहिए था। लेकिन शायद मैं अकेले इस दुख को सहन नहीं कर पाती। बस बार-बार रुकती रही और हमें देर हो गई। और अब, मान लो भाभी, बिल्कुल भी समय नहीं है।

उन्होंने उसे पुराने दिनों की तरह ही भाभी कहकर संबोधित किया। क्योंकि

वह उनके भाई की पत्नी थीं और मेहर उनके भाई की संतान थीं। उन्होंने अपनी माताजी की अंतिम इच्छा पर ही उनसे विवाह किया था; उनकी माताजी यह सहन नहीं कर सकती थीं कि उनकी नन्ही पोती अनाथ रह जाए या उनकी बहू (जिसे वे बहुत प्यार करती थीं) विधवा हो जाए।

'उसका ख्याल रखना,' उसने रशीद से कहा था। 'वह एक अच्छी औरत है और तुम्हारे लिए भी एक अच्छी पत्नी साबित होगी।' रशीद ने उसकी बात मानने का वादा किया और अपना कठिन और बाध्यकारी वादा निभाया।

10.12

आदरणीय मौलाना अब्दुर रशीद साहब,

मैं बड़ी हिचकिचाहट के साथ और अपनी बहन और अभिभावक को बिना बताए कलम उठा रही हूँ। मुझे लगा कि आप जानना चाहेंगी कि आपकी अनुपस्थिति में मेरी अरबी कैसी चल रही है। अच्छी चल रही है। मैं हर दिन अभ्यास कर रही हूँ। पहले मेरी बहन ने मेरे लिए एक और शिक्षक नियुक्त करने की कोशिश की, एक बूढ़े व्यक्ति जो बड़बड़ाते और खांसते थे और मेरी गलतियों को सुधारने का कोई प्रयास नहीं करते थे। लेकिन मैं इतनी दुखी हुई कि सईदा आपा ने उन्हें हटा दिया। आप मुझे कभी भी गलतियों की छूट नहीं देती थीं, और मुझे डर है कि कई बार जब ऐसा लगता था कि मैं कुछ भी सही नहीं कर सकती, तो मैं रोने लगती थी। लेकिन आपने मुझे कभी भी रोने नहीं दिया, और जब मैं खुद को संभाल लेती थी, तब भी मुझे कुछ आसान करने नहीं दिया। अब मुझे आपकी शिक्षण पद्धति का महत्व समझ में आ गया है, और मुझे वह मेहनत याद आती है जो मुझे आपके रहते करनी पड़ती थी।

आजकल मेरा ज़्यादातर समय घर के कामों में ही बीतता है। आपा आजकल बहुत उदास हैं, शायद इसलिए क्योंकि उनका नया सारंगी बजाने वाला ठीक से नहीं बजा रहा है। इसलिए मुझे उनसे कुछ काम

करने के लिए कहने में डर लगता है। आपने मुझे उपन्यास न पढ़ने की सलाह दी थी, लेकिन मेरे पास इतना समय है कि मैं उन्हें पढ़ने लगती हूँ। पर मैं रोज़ कुरान शरीफ़ पढ़ती हूँ और कुछ अंश लिख लेती हूँ। अब मैं जिस सूरह को पढ़ रही हूँ, उसमें से एक-दो उद्धरण लिखूँगी, सारे विशेष स्वर चिह्नों के साथ, ताकि आपको दिखा सकूँ कि मेरी अरबी लिखावट कैसी चल रही है। पर मुझे डर है कि इसमें कोई तरक्की नहीं हो रही है। आपकी गैरमौजूदगी में तो यह रुकी ही हुई है।

क्या उन्होंने अपने से ऊपर मौजूद पक्षियों पर ध्यान नहीं दिया?

अपने पंख फैलाना और फिर उन्हें बंद करना?

उन्हें केवल सर्वशक्तिमान ईश्वर ही थामे हुए हैं। निश्चय ही।

वह सब कुछ देखता है।

कहें: 'आप क्या सोचते हैं? अगर सुबह

आपका पानी गायब हो जाना चाहिए था

अगर पृथ्वी होती, तो फिर तुम्हें कौन लाता?

बहता पानी?

आपके जाने से एक दिन पहले जो तोता कमजोर दिख रहा था, उसने हाल ही में कुछ शब्द बोलना शुरू कर दिया है। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि सईदा आपा को वह बहुत पसंद आ गया है।

आशा है आप जल्द ही लौट आएंगे, क्योंकि मुझे आपसे मिलना और आपकी आलोचनाएँ और सुधार सुनना बहुत याद आ रहा है। आशा है आप स्वस्थ और खुश होंगे। मैं यह पत्र बिब्बो के माध्यम से भेज रहा हूँ। वह इसे डाक से भेज देगी; उसका कहना है कि यह पता पर्याप्त होगा। प्रार्थना है कि यह पत्र आप तक पहुँच जाए।

ढेर सारी शुभकामनाओं और नए सिरे से सम्मान के साथ,

आपका विद्यार्थी,

तसनीम

स्कूल के पास झील के किनारे बैठकर रशीद ने यह पत्र धीरे-धीरे दो बार पढ़ा। वह देबिया लौटा तो देखा कि मान उम्मीद से थोड़ा पहले ही लौट आया था, और पूछताछ करने के बाद वह यह सुनिश्चित करने के लिए उसके पीछे झील तक गया कि वह ठीक है या नहीं। दूर किनारे से जिस तेज़ी से वह तैरकर वापस आ रहा था, उससे लग रहा था कि वह बिल्कुल ठीक है।

रशीद को पत्र पाकर आश्चर्य हुआ। यह पत्र उसके पिता के घर पर उसका इंतज़ार कर रहा था। वह उसमें लिखे अंशों को देखकर उत्सुक हुआ, जिन्हें उसने कुरान के 'राज्य' नामक अध्याय से तुरंत पहचान लिया। उसने सोचा, तसनीम की यह कितनी स्वाभाविक शैली है कि उसने नरक की आग और विनाश के भयानक वर्णनों से भरे सूरह से सबसे सौम्य अंश चुने हैं।

उसकी लिखावट खराब नहीं हुई थी। बल्कि थोड़ी सुधर ही गई थी। खुद उसकी लिखावट के बारे में उसकी राय भी विनम्र और उचित थी। पत्र में कुछ ऐसा था—यह बात तो अलग थी कि वह सईदा बाई की पीठ पीछे उसे भेजा गया था—जिसने उसे परेशान कर दिया, और अनजाने में ही उसके विचार मेहर की माँ की ओर मुड़ गए, जो उसके पिता के घर में बैठी शायद बच्चे को पंखा कर रही थी। बेचारी, भले ही वह नेक दिल और खूबसूरत थी, लेकिन वह अपना नाम भी ठीक से नहीं लिख पाती थी। और उसने एक बार फिर सोचा: अगर मुझे कोई विकल्प मिलता, तो क्या मैं कभी उसके जैसी स्त्री को इस जीवन भर के लिए अपना जीवनसाथी चुनता?

10.13

मान थोड़ा हँसा, फिर खाँसा। रशीद ने उसकी तरफ देखा। उसे छींक आ

गई।

'तुम्हें अपने बाल सुखा लेने चाहिए,' रशीद ने कहा। 'अगर तुम्हें सर्दी लग जाए तो मुझे दोष मत देना। तैरने के बाद बाल न सुखाना सर्दी लगने का पक्का तरीका है। गर्मियों में होने वाली सर्दी सबसे खराब होती है। तुम्हारी आवाज़ भी खराब लग रही है। और तुम कुछ दिन पहले की तुलना में ज़्यादा काले लग रहे हो, धूप से झुलसे हुए से।'

मान ने सोचा कि सफर की धूल से उसकी आवाज़ पर असर पड़ा होगा। उसने असल में किसी पर चिल्लाया नहीं था, न ही निशानेबाज पर और न ही मुंशी पर। बैतर से लौटते समय, शायद अपने मन को शांत करने के लिए, वह सीधे स्कूल के पास वाली झील की ओर गया और कई बार तैरकर वापस आया। जब वह बाहर निकला, तो उसने रशीद को किनारे पर बैठकर एक पत्र पढ़ते देखा। उसके पास मिठाई का एक छोटा डिब्बा रखा था।

'ये सब उर्दू की वजह से ही होगा जो तुम मुझे सिखा रहे हो,' मान ने कहा। 'वो सारे गले से निकलने वाले अक्षर, ग़ाफ़ और खाय वगैरह—मेरा गला इन्हें सहन नहीं कर पाता।'

'तुम बहाने बना रहे हो,' रशीद ने कहा। 'यह पढ़ाई न करने का बहाना है।' दरअसल, जब से तुम यहां आए हो, तुमने चार घंटे से ज्यादा पढ़ाई नहीं की है।'

'तुम क्या कह रहे हो?' मान ने कहा। 'मैं सुबह से शाम तक बस वर्णमाला को आगे-पीछे दोहराता रहता हूँ और हवा में उर्दू अक्षर लिखने का अभ्यास करता रहता हूँ। अरे, अभी तैरते समय भी मैं अक्षरों की कल्पना करता रहा: जब मैं ब्रेस्टस्ट्रोक तैर रहा था, तो मैं काफ लिख रहा था, जब मैं बैकस्ट्रोक तैर रहा था, तो मैं नून लिख रहा था—'

'क्या तुम ऊपर जाना चाहते हो?' रशीद ने कुछ अधीरता से पूछा।

‘तुम्हारा क्या मतलब है?’ मान ने कहा।
'मेरा मतलब है, क्या आपकी कही बातों में जरा सी भी सच्चाई है?'
‘बिल्कुल भी नहीं!’ मान हंसते हुए बोला।
तो जब आप वहां जाएंगे, तो आप भगवान से क्या कहेंगे?
‘अच्छा,’ मान ने कहा। ‘इन सब बातों को लेकर मेरे विचार बिल्कुल उलटे हैं। मेरे लिए ऊपर नीचे है और नीचे ऊपर। दरअसल, मेरा मानना है कि अगर कहीं स्वर्ग है, तो वह यहीं है, धरती पर। आपका क्या ख्याल है?’
रशीद गंभीर विषयों पर सतही बातों को बिल्कुल पसंद नहीं करता था। उसका मानना था कि स्वर्ग धरती पर नहीं है: न तो ब्रह्मपुर में, न ही देबरिया में, और न ही उसकी पत्नी के लगभग निरक्षर गाँव में।
‘तुम चिंतित लग रहे हो,’ मान ने कहा। ‘मुझे उम्मीद है कि यह मेरी किसी बात की वजह से नहीं है।’
रशीद ने जवाब देने से पहले कुछ सेकंड सोचा। उसने कहा, 'दरअसल, यह आपका जवाब नहीं था। मैं मेहर की शिक्षा के बारे में जानना चाह रहा था।'
‘आपकी बेटी?’ मान ने पूछा।
जी हां। मेरी बड़ी बेटी। वो बहुत होशियार है—आप उससे शाम को मिलेंगी। लेकिन उसके मायके में इस तरह के स्कूल नहीं हैं—उसने पास के मदरसे की ओर इशारा करते हुए कहा—और अगर मैंने कुछ नहीं किया तो वो अनपढ़ ही रह जाएगी। जब भी मैं यहां होता हूं, उसे पढ़ाने की कोशिश करता हूं, लेकिन फिर कुछ महीनों के लिए ब्रह्मपुर चला जाता हूं, और वहां का निरक्षर वातावरण हावी हो जाता है।
रशीद को यह बात कभी अजीब नहीं लगी कि वह मेहर को अपनी बेटी जितना ही प्यार करता था। शायद इस रिश्ते का एक पहलू यही था कि मेहर शुरू में उसके लिए केवल प्यार की वस्तु थी, ज़िम्मेदारी की नहीं।

यहाँ तक कि जब लगभग एक साल पहले उसने उसे चाचा कहना बंद करके अब्बा कहना शुरू कर दिया, तब भी उसके मन में उस मामा वाली भावना का कुछ अंश बाकी था—जो घर आकर उसे तोहफों और प्यार से लाड़-प्यार करता था। रशीद को अचानक याद आया कि बच्ची की उम्र लगभग उतनी ही थी जितनी मेहर की तब थी जब उसके पिता की मृत्यु हुई थी। शायद यही बात उसकी माँ के मन में भी रही होगी जब वह अपने आप पर काबू नहीं रख पाई और थाने में फूट-फूट कर रो पड़ी थी।

रशीद अपनी पत्नी के बारे में कोमल भाव से सोचता था, लेकिन जुनून से नहीं, और उसे लगता था कि उसकी पत्नी भी उसके लिए कोई जुनून नहीं रखती थी, बस उसके साथ रहने पर उसे सुकून मिलता था। वह अपने बच्चों और अपने पहले पति की यादों के लिए जीती थी।

रशीद ने सोचा, "यही मेरा जीवन है, यही एक जीवन है जो मैं जीऊंगा। काश हालात अलग होते, तो हम दोनों खुश होते।"

पहले तो उसके साथ एक घंटे के लिए भी एक कमरे में रहने का ख्याल ही उसे परेशान कर देता था। फिर धीरे-धीरे उसे आधी रात को, जब बाकी आदमी आंगन में सो रहे होते थे, उससे मिलने जाने की आदत पड़ गई। लेकिन पति होने के नाते अपने कर्तव्यों को निभाते हुए भी वह सोचता रहता था कि वह क्या सोच रही होगी। कभी-कभी उसे लगता था कि वह रोने ही वाली है। क्या बच्चे के जन्म के बाद उसका प्यार उसके लिए और बढ़ गया था? शायद। लेकिन उसके पिता के गांव के ज़नाना की औरतें—उसके बड़े भाइयों की पत्नियां—अक्सर एक-दूसरे को चिढ़ाते समय भी काफी निर्दयी होती थीं, और वह अपने प्यार को खुलकर ज़ाहिर नहीं कर पाती, भले ही उसे बहुत कुछ कहना होता।

एक बार फिर रशीद ने अपने प्राप्त पत्र को खोलना शुरू किया, फिर रुक गया और मान से कहा:

तो—आपके पिताजी का खेत कैसा चल रहा है?
‘मेरे पिता का खेत?’
'हाँ।'
‘ठीक है,’ मान ने कहा। ‘सब ठीक ही होगा। साल के इस समय में ज्यादा कुछ होता नहीं है।’
लेकिन क्या आप अभी-अभी फार्म से नहीं आए हैं?
नहीं। बिलकुल नहीं।
'बिल्कुल नहीं?'
'मेरा मतलब है, नहीं। नहीं, मेरा इरादा तो था, लेकिन—मैं कुछ चीजों में उलझ गया।'
'और सुना क्या कर रहा है?'
'मुख्य रूप से मेरा गुस्सा फूट रहा था,' मान ने कहा। 'और भेड़ियों को मारने की कोशिश कर रहा था।'
रशीद ने भौंहें चढ़ाईं, लेकिन इन दिलचस्प संभावनाओं पर आगे कोई चर्चा नहीं की। उन्होंने कहा, 'तुम हमेशा की तरह बेपरवाह हो रहे हो।'
‘ये कौन से फूल हैं?’ मान ने विषय बदलने के लिए पूछा। रशीद ने तालाब के उस पार दूर किनारे की ओर देखा।
‘बैंगनी वाले?’
'हां। उन्हें क्या कहते हैं?'
‘सदाबहार’—यानी सदाबहार,’ रशीद ने कहा, ‘क्योंकि इनमें हमेशा बसंत का मौसम रहता है। ये कभी मरते नहीं और इन्हें कोई हटा नहीं सकता। मुझे ये बहुत सुंदर लगते हैं—हालाँकि ये अक्सर गंदी जगहों पर उगते हैं...’ वह रुका। ‘कुछ लोग इन्हें “बेहया”—यानी “बेशर्म” कहते हैं।’ वह काफी देर तक विचारों में डूबा रहा, एक विचार दूसरे विचार को जन्म देता रहा।

‘अच्छा,’ मान ने कहा, ‘तुम क्या सोच रहे थे?’

‘मेरी माँ,’ रशीद ने कहा। कुछ देर रुककर उसने धीमी आवाज़ में कहा, ‘मैं उनसे बहुत प्यार करता था, ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे। वह एक नेक औरत थीं और पढ़ी-लिखी भी थीं। वह मुझसे और मेरे भाई से बहुत प्यार करती थीं और उन्हें बस इस बात का अफ़सोस था कि उनकी कोई बेटी नहीं थी। शायद इसीलिए—खैर, जो भी हो, वही अकेली थीं जिन्होंने मेरी शिक्षा पाने, कुछ बनने और इस जगह के लिए कुछ करने की इच्छा को समझा।’ रशीद ने ‘इस जगह’ शब्द को इतनी कड़वाहट से कहा कि मानो उसे इससे नफ़रत हो। ‘लेकिन उनके लिए मेरे प्यार ने मेरी ज़िंदगी को उलझा दिया है। और मेरे पिता की बात करें तो—उन्हें संपत्ति और पैसे के अलावा और कुछ समझ ही नहीं आता? मुझे घर में भी सोच-समझकर बोलना पड़ता है। मैं हमेशा छत की तरफ देखता रहता हूँ और अपनी आवाज़ धीमी रखता हूँ। बाबा, अपनी सारी धार्मिकता के बावजूद, ऐसी बातें समझते हैं—ऐसी बातें जिनकी उनसे उम्मीद नहीं की जा सकती। लेकिन मेरे पिता हर उस चीज़ का तिरस्कार करते हैं जिसका मैं आदर करता हूँ।’ और घर में हुए बदलावों के कारण हाल ही में स्थिति और भी खराब हो गई है।’ मान ने अनुमान लगाया कि रशीद का मतलब उसके पिता की दूसरी पत्नी से था।

लेकिन रशीद बड़ी कड़वाहट के साथ बोलता रहा। उसने कहा, ‘अपने चारों ओर देखो। या इतिहास को देखो। यह हमेशा से ऐसा ही रहा है। बूढ़े लोग अपनी सत्ता और अपने विश्वासों से चिपके रहते हैं, जो उनकी सारी बुराइयों को स्वीकार करते हैं, लेकिन युवाओं की छोटी से छोटी गलती को भी छुपाते हैं और उनके छोटे से छोटे नवाचार का गला घोंट देते हैं। फिर, ईश्वर का शुक्र है, वे मर जाते हैं और कोई नुकसान नहीं कर सकते। लेकिन तब तक हम, युवा, बूढ़े हो चुके होते हैं और उनके छोड़े हुए थोड़े

से बुरे कामों को पूरा करने की कोशिश करते हैं। यह गाँव सबसे बुरा है,' रशीद ने स्कूल के पीछे देबरिया के जुड़वां गाँव सगल की नीची इमारतों की ओर इशारा करते हुए कहा। 'हमारे गाँव से भी बदतर, और निश्चित रूप से, अधिक धार्मिक भी। मैं तुम्हें इस गाँव का एक अच्छा आदमी दिखाऊंगा—मैं उससे मिलने जा रहा था जब मैंने तुम्हें अकेले तैरकर अपनी जान जोखिम में डालते देखा। तुम देखोगे कि दूसरों ने उसे किस हालत में पहुँचा दिया है—और, मुझे लगता है, ईश्वर के न्यायपूर्ण या अन्यायपूर्ण क्रोध ने भी।'

रशीद की इस तरह की बातें सुनकर मान चकित रह गया। ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय से पहले रशीद की शिक्षा पारंपरिक रूप से धार्मिक थी, और मान जानता था कि वह ईश्वर, उसके पैगंबर और ईश्वर के संदेशवाहक, कुरान में कितना दृढ़ विश्वास रखता था—यहाँ तक कि सईदा बाई के कहने पर भी उसने कुरान से तसनीम के पाठ को संक्षिप्त करने से इनकार कर दिया था। लेकिन रशीद ईश्वर द्वारा बनाई गई दुनिया से संतुष्ट नहीं था, और न ही वह समझ पा रहा था कि इसे इस दयनीय स्थिति में क्यों बनाया गया है। जहाँ तक उस बूढ़े व्यक्ति की बात है, मान को याद आया कि गाँव में लंबी सैर के दौरान रशीद ने उसका ज़िक्र संक्षेप में किया था, लेकिन वह गाँव की बदहाली के विभिन्न नमूने देखने के लिए विशेष रूप से उत्सुक नहीं था।

'क्या आप हमेशा से ही हालात को लेकर इतने गंभीर थे?' मान ने पूछा।

'बिल्कुल नहीं,' रशीद ने अपने होंठों के कोने पर एक अजीब सी मुस्कान लिए कहा। 'बिल्कुल नहीं। जब मैं छोटा था, तो मैं सिर्फ अपनी और अपनी मुट्ठियों की परवाह करता था। मैंने आपको इसके बारे में पहले भी बताया है, है ना? मैं आसपास देखता और कुछ चीजों पर ध्यान देता था। मेरे दादाजी का उनके आसपास के सभी लोग बहुत सम्मान करते थे।

लोग दूर-दूर से उनके पास विवाद सुलझाने के लिए आते थे। कभी-कभी वे बड़ी सख्ती से ऐसा करते थे, अपराधियों को पीटते थे। मैं इसे इस बात का सबूत मानता था कि लोगों को पीटना उनके सम्मान का कारण था। मैं भी लोगों को पीटता था।'

रशीद मदरसे की ओर ढलान पर देखने के लिए रुका, फिर आगे बोला:

'स्कूल में मैं हमेशा बच्चों को पीटता रहता था। मैं किसी अकेले बच्चे को ढूंढ लेता और उसकी पिटाई कर देता। कभी-कभी मुझे खेतों में या सड़क किनारे कोई लड़का मिल जाता और मैं उसके चेहरे पर ज़ोर से थप्पड़ मार देता।'

मान हँस पड़ा। उसने कहा, 'हाँ, मुझे याद है तुमने मुझे यह बताया था।'

'यह सचमुच कोई हंसी की बात नहीं है,' रशीद ने कहा। 'और निश्चित रूप से मेरे माता-पिता भी ऐसा नहीं सोचते थे। मेरी माँ मुझे बहुत कम ही पीटती थी, अगर कभी पीटती भी थी तो एक-दो बार। लेकिन मेरे पिता—वह मुझे नियमित रूप से पीटते थे।'

"बाबा, जो गाँव के असली मुखिया थे, मुझसे बहुत प्यार करते थे और उनकी मौजूदगी अक्सर मेरी जान बचा लेती थी। मैं उनका लाडला था। वे नियमित रूप से नमाज़ पढ़ते थे। इसलिए मैं भी हमेशा नमाज़ पढ़ता था, भले ही स्कूल में मेरा प्रदर्शन बहुत खराब रहता था। लेकिन कभी-कभी मैं किसी लड़के को पीट देता था और उसके पिता बाबा को इसकी शिकायत कर देते थे। एक बार बाबा ने मुझे सज़ा के तौर पर कान पकड़कर सौ बार बैठने और उठने को कहा। मेरे कुछ दोस्त आस-पास खड़े थे और मैंने ऐसा करने से इनकार कर दिया। शायद मैं बच जाता। लेकिन मेरे पिता वहाँ से गुज़र रहे थे और मेरे इस दुर्व्यवहार से वे इतने आहत हुए कि उन्होंने मेरे चेहरे पर ज़ोर से घूंसा मार दिया। मैं शर्म और दर्द से रोने लगा और भाग जाने का फैसला किया। मैं काफी दूर तक भागा—उत्तर दिशा में खलिहान

के पार आम के पेड़ों तक—जब तक कि किसी ने मुझे पकड़ने के लिए भेजा और मुझे वापस लाया गया।”

मान इतना मग्न था मानो वह किसी गुप्पी से कहानी सुन रहा हो।

‘क्या यह उस समय से पहले की बात है जब तुम भालू के साथ रहने के लिए भाग गए थे?’ उसने पूछा।

'हां,' रशीद ने थोड़ा चिढ़ते हुए कहा कि मान को उसकी कहानी इतनी अच्छी तरह से पता थी।

‘खैर, बाद में,’ उन्होंने आगे कहा, ‘मुझे बातें समझ आने लगीं। मुझे लगता है कि यह उस धार्मिक प्रशिक्षण महाविद्यालय में हुआ जहाँ मैं गया था। यह बनारस में है, मुझे यकीन है कि आपने इसके बारे में सुना होगा, यह काफी प्रसिद्ध है, और इसकी अकादमिक प्रतिष्ठा बहुत ऊँची है—हालाँकि यह एक भयानक जगह है। खैर, पहले तो उन्होंने मुझे मेरे स्कूल के कम अंकों के कारण दाखिला नहीं दिया; लेकिन एक साल के भीतर ही मैं साठ लड़कों की अपनी कक्षा में तीसरे स्थान पर आ गया। मैंने लोगों को पीटना भी छोड़ दिया! और, जिस तरह के हालात में हमें रहना पड़ता था, उसके कारण मुझे व्यावहारिक राजनीति में रुचि हो गई, और मैंने महाविद्यालय में होने वाले सबसे बुरे अत्याचारों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करने के लिए लड़कों को संगठित करना शुरू कर दिया! शायद यहीं से मुझे सुधार का स्वाद मिला, हालाँकि मैं तब तक समाजवादी नहीं था। मेरे स्कूल के पुराने साथी मुझ पर चकित थे—और शायद मेरे इस नेक रास्ते पर चलने से स्तब्ध भी थे। उनमें से एक डाकू बन गया है। और अब जब मैं गाँव सुधार आदि की बात करता हूँ, तो वे सब सोचते हैं कि मैं पागल हूँ। भगवान जानता है कि इन गाँवों को सुधार की ज़रूरत है—और इन्हें सुधारा जा सकता है।’ लेकिन मुझे शक है कि लोग चाहे कितनी भी बार नमाज़ पढ़ें, अल्लाह को इसके लिए समय मिलेगा। जहाँ तक विधान की

बात है—' रशीद उठ खड़ा हुआ। 'चलो। देर हो रही है, और मुझे इस मुलाक़ात के लिए जाना है। अगर मैं सूर्यास्त तक देबरिया नहीं पहुँचा तो मुझे इस गाँव के बड़े-बुजुर्गों के साथ नमाज़ पढ़नी पड़ेगी—जो सब पाखंडी हैं।' रशीद स्पष्ट रूप से सगल को बुराई का अड्डा मानता था।

'ठीक है,' मान ने उत्सुकता जताते हुए कहा। 'मुझे लगता है कि मेरे लिए साथ चलना ठीक रहेगा।'

10.14

जब वे बूढ़े आदमी के घर से कुछ ही दूर थे, तब रशीद ने मान को अपने बारे में कुछ बातें बताईं:

'वह लगभग साठ वर्ष के हैं और कई भाइयों वाले एक बहुत धनी परिवार से आते हैं। उनके स्वयं के कई बच्चे थे, लेकिन अब उनकी दो बेटियों को छोड़कर सभी मर चुके हैं, जो बारी-बारी से उनकी देखभाल करती हैं। वह एक नेक इंसान हैं जिन्होंने अपने जीवन में कभी कोई गलत काम नहीं किया—और जबकि उनके कुटिल भाई धन और बच्चों के साथ फल-फूल रहे हैं, उनकी हालत दयनीय है।' रशीद रुका, फिर सोचने लगा: 'कुछ लोग कहते हैं कि किसी जिन्न ने उनके साथ ऐसा किया है। हालांकि वे स्वयं दुष्ट होते हैं, वे अक्सर अच्छे लोगों की संगति चाहते हैं। खैर—' रशीद अचानक रुक गया। संकरी गली में एक लंबा, आदरणीय दिखने वाला व्यक्ति उसके पास से गुजरा, और उन्होंने अभिवादन किया, रशीद उदास था।

कुछ क्षण बाद उसने मान से कहा, "वह उसका एक भाई है, उसी भाई का जिसने परिवार की संपत्ति में उसका हिस्सा हड़प लिया है। वह समुदाय के प्रमुख लोगों में से एक है, और जब मस्जिद का इमाम अनुपस्थित होता है तो वह अक्सर नमाज़ में नमाज़ पढ़ाता है। उसे नमस्कार करने से भी मुझे असहजता होती है।"

फिर वे एक आंगन में दाखिल हुए और उन्हें एक विचित्र दृश्य दिखाई दिया।

चारागाह के पास एक खूंटी से दो दुबले-पतले बैल बंधे थे। एक छोटी बकरी एक चारपाई पर लेटी थी, जिसके बगल में एक बच्चा सो रहा था। उस बच्चे के सुंदर चेहरे के आसपास कुछ मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। छोटे से आंगन की दीवार पर घास उग रही थी; एक कोने में टहनियों से बनी झाड़ू दीवार से टिकी हुई थी। लाल रंग के कपड़े पहने एक सुंदर आठ साल की लड़की उन्हें देख रही थी। उसने एक मरे हुए कौवे का ढीला पंख पकड़ रखा था, जो अपनी एक धुंधली धूसर आँख से उन्हें घूर रहा था। एक बाल्टी, एक टूटा हुआ मिट्टी का पीने का बर्तन, मसाले पीसने के लिए एक पत्थर का तख्ता और बेलन, और कुछ अन्य छोटी-मोटी चीजें - ये सब आंगन में इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं, मानो किसी को पता ही न हो कि ये किस काम की हैं और किसी को परवाह भी न हो।

जर्जर दो कमरों वाले फूस के मकान के बरामदे में एक झुकी हुई चारपाई थी, और उस पर एक बूढ़ा आदमी लेटा हुआ था। दुबले-पतले चेहरे, काली-सफेद दाढ़ी और धँसी हुई आँखों वाला वह आदमी एक गंदी, चेकदार हरे रंग की चादर पर करवट लेकर लेटा हुआ था। उसका शरीर पूरी तरह से कमजोर और पसलियों से भरा हुआ था; उसके हाथ मुड़े हुए पंजों जैसे थे, और उसकी पतली टांगें भी अंदर की ओर मुड़ी हुई थीं। वह देखने में नब्बे साल का और मृत्यु के निकट लग रहा था। लेकिन उसकी आवाज़ साफ़ थी और जब उसने उन्हें पास आते देखा, तो उसने कहा, क्योंकि वह उनके रूप को केवल धुंधला ही देख पा रहा था:

'कौन? वो कौन है?'

'रशीद,' रशीद ने जोर से कहा, यह जानते हुए कि वह आदमी कम सुनता है।

'कौन?'

‘रशीद।’

‘अरे, तुम कब आए?’

‘मैं अभी अपनी पत्नी के गाँव से लौटा हूँ।’ रशीद यह बताना नहीं चाहता था कि वह देबारिया में काफी समय से था, लेकिन अब तक वहाँ गया नहीं था। बूढ़े ने उसकी बात सुनी और फिर बोला: ‘तुम्हारे साथ कौन है?’

‘यह ब्रह्मपुर का बाबू है,’ रशीद ने कहा। ‘यह एक अच्छे परिवार से आता है।’

मान को इस संक्षिप्त जीवनी के बारे में कुछ समझ नहीं आ रहा था, लेकिन उसने सोचा कि 'बाबू' शायद इन इलाकों में सम्मान का एक शब्द है।

बूढ़ा आदमी थोड़ा आगे झुका, फिर आह भरकर वापस बैठ गया। उसने पूछा, 'ब्रह्मपुर में सब कैसा चल रहा है?'

रशीद ने मान की ओर सिर हिलाया।

‘अभी भी बहुत गर्मी है,’ मान ने कहा, उसे पता नहीं था कि उससे क्या उम्मीद की जा रही है। ‘एक पल के लिए उस दीवार की तरफ मुड़ जाओ,’ रशीद ने मान से धीरे से कहा। मान ने बिना पूछे ही वैसा ही किया। हालाँकि, उसे मना करने से पहले ही वह वापस मुड़ गया और उसने पीले रंग की साड़ी पहने एक सुंदर और गोरे चेहरे वाली महिला की एक झलक देखी, जो जल्दी से बरामदे के एक चौकोर खंभे के पीछे गायब हो गई। उसकी गोद में वह बच्चा था जो चारपाई पर सो रहा था। बाद में वह इस अस्थायी पर्दे से बातचीत में शामिल हो गई। लाल कपड़े पहनी छोटी बच्ची ने अपना मरा हुआ कौआ कहीं गिरा दिया था और खंभे के पीछे अपनी माँ और भाई के साथ खेलने चली गई थी।

‘वह उसकी छोटी बेटी थी,’ रशीद ने मान से कहा।

‘बहुत सुंदर,’ मान ने कहा। रशीद ने तीखी नज़र से उसे चुप करा दिया।
‘आप चारपाई पर क्यों नहीं बैठते? बकरी को भगा दीजिए,’ महिला ने आतिथ्य सत्कार करते हुए कहा।
‘ठीक है,’ रशीद ने कहा।
अब जहां वे बैठे थे, वहां से मान के लिए बार-बार चोरी-छिपे उसकी ओर देखना रोकना मुश्किल हो रहा था। वह ऐसा तभी करता था जब उसे यकीन होता था कि रशीद उसे नहीं देख रहा है। बेचारा मान, वह इतने लंबे समय से स्त्री के साथ से वंचित था कि जब भी उसकी नज़र उसके चेहरे पर पड़ती, उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगता था।
‘वह कैसा है?’ रशीद ने महिला से पूछा।
‘आप देख सकते हैं। अभी तो और भी बुरा होना बाकी है। डॉक्टर उसका इलाज करने से इनकार कर रहे हैं। मेरे पति का कहना है कि हमें उसे आराम देना चाहिए, उसकी हर इच्छा पूरी करने की कोशिश करनी चाहिए, बस इतना ही।’ उसकी आवाज़ में खुशी थी और बोलने का अंदाज़ जीवंत था।
उन्होंने कुछ देर तक उसके बारे में इस तरह चर्चा की मानो वह वहां मौजूद ही न हो।
फिर अचानक बूढ़ा आदमी बोलने के लिए तैयार हुआ। उसने ऊँची आवाज़ में कहा, 'बाबू!'
रशीद ने एक बार फिर मान को सिर हिलाकर अभिवादन किया।
'जी?' मान ने कहा, शायद इतनी धीमी आवाज में कि वह आदमी सुन ही न पाया।
‘मैं आपको क्या बताऊँ, बाबू—मैं बाईस साल से बीमार हूँ—और बारह साल से बिस्तर पर पड़ा हूँ। मैं इतना अपाहिज हो गया हूँ कि बैठ भी नहीं सकता। काश भगवान मुझे अपने पास बुला लें। मेरे छह बच्चे थे और छह

बेटियाँ भी थीं'—मान उनके बारह बच्चों का वर्णन करने के तरीके से प्रभावित हुआ—'और अब सिर्फ़ दो ही बची हैं। मेरी पत्नी तीन साल पहले गुज़र गई। कभी बीमार मत पड़ना, बाबू। यह सबसे बुरी किस्मत है। मैं यहीं खाता हूँ, यहीं सोता हूँ, यहीं नहाता हूँ, यहीं बात करता हूँ, यहीं प्रार्थना करता हूँ, यहीं रोता हूँ, यहीं शौच और पेशाब करता हूँ। भगवान ने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?'

मान ने रशीद की ओर देखा। वह सदमे में लग रहा था।

'रशीद!' बूढ़े आदमी ने पुकारा।

'हां, स्वप्न-आत्मा।'

'तुम्हारी माँ'—बूढ़े आदमी ने सिर हिलाकर अपनी बेटी की ओर इशारा करते हुए कहा—'तुम्हारे पिता के बीमार होने पर उनकी देखभाल करती थी। अब तो वो मिलने भी नहीं आते। ये सब तुम्हारी सौतेली माँ के आने के बाद से ही चल रहा है। पहले, जब भी मैं उनके घर के पास से गुज़रता था—लगभग बारह साल पहले—वे मुझसे चाय पीने की ज़िद करते थे। जब मैं बीमार पड़ा तो वे मुझसे मिलने आए थे। अब सिर्फ़ तुम ही आती हो। मैंने सुना है विलायत साहब भी यहाँ आए थे। वो भी मिलने नहीं आए।'

'विलायत साहब कभी किसी से मिलने नहीं जाते, फूफा-जान।'

आप क्या कह रहे हैं?

'Vilayat Sahib never visits anyone.'

'हां। लेकिन आपके पिता? इसे बुरा मत मानिए। मैं आलोचना नहीं कर रहा हूं।'

'नहीं, नहीं,' रशीद ने कहा। 'मुझे पता है। यह सही नहीं है। मैं यह नहीं कहता कि यह सही है।' उसने धीरे से अपना सिर हिलाया और नीचे देखने लगा। फिर उसने आगे कहा: 'मुझे बुरा नहीं लगा। अपने मन की बात कह

देना ही सबसे अच्छा है। मुझे खेद है कि ऐसा है। लेकिन मुझे इसे सुनना ही होगा। यही उचित है।'

'वापस जाने से पहले आपको एक बार फिर आना चाहिए. . . . आप ब्रह्मपुर में कैसे गुजारा करते हैं?'

'मैं बहुत अच्छे से गुजारा कर लेता हूँ,' रशीद ने आश्वस्त करते हुए कहा, हालाँकि उसकी बात पूरी तरह सही नहीं थी। 'मैं ट्यूशन पढ़ाता हूँ और उससे मेरा खर्च आराम से निकल जाता है। मैं तंदुरुस्त हूँ। मैं तुम्हारे लिए एक छोटा सा तोहफा लाया हूँ—कुछ मिठाई।'

'मिठाई?'

'हां। मैं उन्हें उसे दे दूंगा।'

महिला से रशीद ने कहा, "ये आसानी से पच जाते हैं, लेकिन एक बार में एक या दो से ज़्यादा मत देना।" बूढ़े आदमी से उसने कहा, "मुझे अब जाना होगा, फूफा-जान।"

'आप एक भले आदमी हैं।'

रशीद ने कहा, 'सगल में वह उपाधि हासिल करना आसान है।'

बूढ़े आदमी ने हल्की सी हंसी हंसते हुए कहा, 'हां।'

रशीद जाने के लिए उठा और मान उसके पीछे-पीछे चला गया।

उस बूढ़े व्यक्ति की बेटी ने कोमल औपचारिक स्वर में कहा, "आपने जो किया है उससे लोगों में हमारा विश्वास बहाल हो गया है।"

लेकिन जैसे ही वे आंगन से निकले, मान ने रशीद को मन ही मन कहते सुना:

और भले लोगों ने तुम्हारे साथ जो किया है, उससे मुझे ईश्वर में अपनी आस्था पर संदेह होने लगा है।

10.15

सगल गांव से निकलते समय, वे मस्जिद के सामने एक छोटे से खुले

मैदान से गुज़रे। वहाँ लगभग दस गाँव के बड़े-बुजुर्ग खड़े होकर बातें कर रहे थे, जिनमें से अधिकतर दाढ़ी वाले थे, और उनमें वह आदमी भी शामिल था जो बूढ़े आदमी के घर के बाहर उनसे मिला था। रशीद ने समूह में बीमार आदमी के दो और भाइयों को पहचान लिया, लेकिन शाम के धुंधलके में वह उनके चेहरे के भाव नहीं देख पाया। हालाँकि, ऐसा लग रहा था कि वे उसे घूर रहे हैं, और उनका हावभाव शत्रुतापूर्ण था। जैसे ही वह पास पहुँचा, उसने देखा कि उनका भाव भी वैसा ही था। कुछ सेकंड तक उन्होंने उसे ऊपर से नीचे तक घूरा। मान, जो अभी भी अपनी सफेद कमीज़ और पतलून में था, भी उनकी नज़रों के घेरे में आ गया।

'तो तुम आ गए,' एक ने थोड़े व्यंग्यात्मक लहजे में कहा।

'हां,' रशीद ने बिना किसी स्नेह के कहा, और यहां तक कि बोलने वाले व्यक्ति के लिए निर्धारित प्रथागत उपाधि का भी प्रयोग नहीं किया।

आपने काफी समय ले लिया है।

'खैर,' रशीद ने कहा, 'कुछ चीजों में समय लगता है।'

"तो तुम लोग बैठकर बातें करते रहे और एक-दूसरे से हालचाल पूछते रहे, जब तक कि नमाज़ पढ़ने में बहुत देर नहीं हो गई," दूसरे व्यक्ति ने कहा, जो थोड़ी देर पहले उसके पास से गुजरा था।

यह बात बिल्कुल सच थी; रशीद इतना मग्न था कि उसने शाम की नमाज़ की अज़ान भी नहीं सुनी थी।

'हां,' उसने गुस्से से जवाब दिया। 'बिल्कुल सही।'

उन्हें इस खुलेआम सभा में उकसाए जाने पर बहुत गुस्सा आया, और यह उकसावा नमाज़ में उनकी उपस्थिति सुधारने के लिए नहीं, बल्कि सरासर उपहास और दुर्भावना से किया जा रहा था। उन्होंने सोचा, वे मुझसे जलते हैं, क्योंकि मैं जवान हूँ और मैंने तरक्की की है। और वे मेरे विचारों से भयभीत हैं—उन्होंने मुझे कम्युनिस्ट मान लिया है। और सबसे ज़्यादा उन्हें

इस बात से नफ़रत है कि मेरा उस आदमी से संबंध है, जिसका जीवन उनके अपने जीवन के लिए शर्म का कारण है।

एक लंबे, हट्टे-कट्टे आदमी ने रशीद को घूरते हुए पूछा, 'और ये कौन हैं?' उसने मान की ओर इशारा करते हुए कहा, 'क्या आप हमें इनका परिचय नहीं करवाएंगे? तब हम जान पाएंगे कि मौलाना साहब किन लोगों के साथ रहते हैं और उससे लाभ भी उठा पाएंगे।' मान ने जब पहली बार यहाँ आया था, तब उसने जो नारंगी कुर्ता पहना हुआ था, उसी से यह अफवाह फैल गई थी कि वह एक हिंदू साधु है।

'मुझे नहीं लगता कि यह ज़रूरी है,' रशीद ने कहा। 'वह मेरा दोस्त है, बस इतना ही। एक जैसे लोगों का परिचय होना चाहिए।'

मान रशीद के साथ खड़े होने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन रशीद ने इशारे से उसे गोलीबारी की मुख्य धारा से दूर रखा।

'क्या आप कल देबरिया की मस्जिद में सुबह की नमाज में शामिल होने का इरादा रखते हैं, मौलाना साहब? हमें पता चला है कि आप देर से उठते हैं और इसमें कुछ त्याग करना पड़ सकता है,' उस हट्टे-कट्टे आदमी ने रशीद से कहा।

रशीद ने गुस्से में कहा, 'मैं अपनी मर्जी से जिन नमाजों में शामिल होना चाहूंगा, उनमें शामिल होऊंगा।'

'तो मौलाना साहब, यही है आपका अंदाज,' किसी और ने कहा।

'देखो—' रशीद गुस्से से लगभग बौखलाते हुए बोला, 'अगर तुममें से कोई मेरी शैली के बारे में बात करना चाहता है, तो कभी भी मेरे घर आ जाओ, हम इस पर चर्चा करेंगे और देखेंगे कि किसकी शैली दूसरे से बेहतर है। जहाँ तक किसके जीवन की शालीनता और किसके धार्मिक विश्वासों की गहराई का सवाल है—समाज जानता है और बता सकता है। समाज क्यों? यहाँ तक कि बच्चे भी धर्मनिष्ठ लोगों के बदनामी भरे जीवन

के बारे में जानते हैं।' उसने दाढ़ी वाले लोगों के अर्धवृत्त की ओर इशारा करते हुए कहा, 'अगर न्याय होता, तो अदालतें भी यह सुनिश्चित करतीं —'

'यह समाज, बच्चों या अदालतों का काम नहीं है, बल्कि केवल ईश्वर को ही कहना है,' एक बूढ़े व्यक्ति ने रशीद के चेहरे के सामने उंगली हिलाते हुए चिल्लाकर कहा।

'खैर, यह तो राय और बहस का विषय है,' रशीद ने पलटवार किया।

'अपने पतन से पहले इब्लिस को बहस करना आता था!'

'नेक फरिश्तों ने भी ऐसा ही किया,' रशीद ने गुस्से से कहा। 'दूसरे भी ऐसा ही करते हैं।'

'क्या आप खुद को फरिश्ता कहते हैं, मौलाना साहब?' उस आदमी ने ताना मारते हुए कहा।

'क्या तुम मुझे इब्लिस कह रहे हो?' रशीद चिल्लाया।

अचानक उसे एहसास हुआ कि मामला हद से ज़्यादा बिगड़ चुका है, बल्कि हद से ज़्यादा बिगड़ गया है। ये उसके बड़े-बुजुर्ग थे, चाहे वे कितने भी अपमानजनक, रूढ़िवादी, पाखंडी और ईर्ष्यालु क्यों न हों। उसने मान के बारे में भी सोचा और यह भी कि ऐसा दृश्य उसे कितना बुरा लगेगा—उसके धर्म की कितनी बुरी छवि बनेगी।

एक बार फिर उसके सिर के अंदर एक तीव्र दबाव बनने लगा था। वह आगे बढ़ा—उसका रास्ता एक तरह से अवरुद्ध हो गया था—और कुछ लोग एक तरफ हट गए।

'काफी देर हो गई है,' रशीद ने कहा। 'माफ़ कीजिए। हमें जाना होगा। तो फिर मिलेंगे—और तब देखेंगे।' वह टूटे हुए मेहराब से आगे बढ़ा, और मान उसके पीछे-पीछे चला।

अंत में एक व्यंग्यात्मक आवाज ने कहा, 'शायद आपको "खुदा हाफिज"

कहना चाहिए।'

'हां, खुदा हाफिज, अल्लाह आपकी भी रक्षा करे,' रशीद ने गुस्से से कहा और पीछे मुड़े बिना आगे बढ़ गया।

10.16

देबरिया और सगल भौगोलिक रूप से लगभग एक मील की दूरी पर स्थित अलग-अलग गाँव थे, लेकिन अफवाहों के लिहाज से वे एक ही गाँव माने जाते थे। क्योंकि एक गाँव में जो कुछ भी कहा जाता, वही दूसरे गाँव में दोहराया जाता था। चाहे सगल से कोई देबरिया में अनाज भूनने के लिए आता हो, या देबरिया से कोई सगल के डाकघर में जाता हो, या स्कूली बच्चे एक ही मदरसे में पढ़ने जाते हों, या कोई दूसरे गाँव में किसी से मिलने जाता हो या पास के खेत में उससे मुलाक़ात हो जाती हो, दोस्ती और दुश्मनी, प्राचीन वंश और हाल ही में हुए विवाह, सूचना और गलत सूचना के जाल से ये दोनों गाँव इतने अविभाज्य रूप से जुड़े हुए थे कि गपशप का एक ही जाल बन गया था।

सगल में लगभग कोई उच्च जाति का हिंदू नहीं था। देबरिया में कुछ ब्राह्मण परिवार थे, और वे भी इस ताने-बाने का हिस्सा थे, क्योंकि रशीद जैसे संपन्न मुस्लिम परिवारों के साथ उनके अच्छे संबंध थे, और वे कभी-कभी एक-दूसरे के घर आते-जाते रहते थे। उन्हें इस बात पर गर्व था कि दोनों समुदायों के बीच आपसी झगड़े ही उनके बीच किसी भी तरह के टकराव पर हावी थे। आसपास के कुछ गांवों में ऐसा नहीं था, खासकर उन जगहों पर जहां विभाजन के समय मुसलमानों के खिलाफ हिंसा की यादें ताजा थीं।

ब्राह्मण जमींदारों में से एक, जिसे लोकप्रिय रूप से फुटबॉल कहा जाता था, वास्तव में रशीद के पिता से सुबह मिलने जा रहा था।

मान घर के बाहर चारपाई पर बैठा मेहर के साथ खेल रहा था। मोअज़्ज़म

आसपास मंडरा रहा था; वह मेहर को देखकर बहुत खुश था और बीच-बीच में आश्चर्य से उसके सिर पर हाथ फेरता रहता था। मिस्टर बिस्किट भूख से इधर-उधर घूम रहा था।

रशीद और उसके पिता एक दूसरी चारपाई पर बैठे बातें कर रहे थे। रशीद और सगल के बुजुर्गों के बीच हुई कहासुनी की खबर उसके पिता तक पहुँच चुकी थी।

'तो आपको नमाज़ महत्वपूर्ण नहीं लगती?' उन्होंने कहा।

'हाँ, हाँ,' रशीद ने जवाब दिया। 'मैं क्या कहूँ? पिछले कुछ दिनों से मैंने इसका सख्ती से पालन नहीं किया है—मेरी कुछ अपरिहार्य जिम्मेदारियाँ और कर्तव्य थे। और आप बस में नमाज़ की चटाई नहीं बिछा सकते। इसमें कुछ हद तक मेरी अपनी आलस भी है। लेकिन अगर कोई मुझे सुधारना चाहता और सहानुभूति से मुझे बातें समझाना चाहता, तो वह मुझे अलग ले जाकर बात करता—या आपसे, अब्बा, बात करता—न कि सबके सामने मेरी इज्जत को ठेस पहुँचाता।' वह रुका, फिर जोश से बोला: 'और मेरा मानना है कि किसी भी नमाज़ से ज़्यादा महत्वपूर्ण जीवन है।'

'इसका क्या मतलब है?' उसके पिता ने तीखे स्वर में कहा। उन्होंने कछेरु को पास से गुजरते देखा। 'ए कछेरु, बनिया की दुकान से मेरे लिए सुपारी ले आओ— मेरे पान के लिए सुपारी खत्म हो गई है। जी हां— मुझे हमेशा की तरह उतनी ही चाहिए... अरे, फुटबॉल हमारे यहाँ आने वाला है; वह शायद तुम्हारे हिंदू दोस्त की वजह से आया है। हां, लोगों की जान कीमती है, लेकिन यह कोई बहाना नहीं है— वैसे भी, गाँव के बड़े लोगों से इस तरह बात करने का कोई बहाना नहीं है। क्या तुमने ऐसा व्यवहार करते समय मेरी इज्जत का ख्याल रखा है? या गाँव में अपनी हैसियत का?'

रशीद की निगाहें कुछ देर तक कछेरू पर टिकी रहीं। 'ठीक है,' उसने कहा, 'कृपया मुझे माफ कर दीजिए - गलती मेरी ही है।'
लेकिन उनकी दिखावटी माफी को नजरअंदाज करते हुए, उनके पिता अब अपने मेहमान का स्वागत चौड़ी मुस्कान के साथ कर रहे थे, उनका लाल मुंह चौड़ा खुला हुआ था: 'स्वागत है, स्वागत है, तिवारीजी।'
‘हेलो, हेलो,’ फुटबॉल ने कहा। ‘पिता और पुत्र इतनी गरमागरम बहस किस बारे में कर रहे थे?’
पिता और पुत्र दोनों ने एक साथ कहा, 'कुछ नहीं।'
“अच्छा, ठीक है। हममें से दो-तीन लोग काफी समय से आपसे मिलने की सोच रहे थे, लेकिन फसल कटाई वगैरह की वजह से समय नहीं मिल पा रहा था। फिर हमें पता चला कि आपका मेहमान कुछ दिनों के लिए बाहर गया है, इसलिए हमने उसके लौटने तक इंतजार करने का फैसला किया।”
‘तो आप वास्तव में कपूर साहब को देखने आए हैं, हमें नहीं,’ उनके मेजबान ने कहा।
फुटबॉल ने अपना सिर ज़ोर से हिलाया: 'आप क्या कह रहे हैं, आप क्या कह रहे हैं, खान साहब? हमारी दोस्ती दशकों पुरानी है। और रशीद से बात करने का मौका भी बहुत कम मिलता है, क्योंकि वह साल का ज़्यादातर समय ब्रह्मपुर में अपनी बुद्धि निखारने में बिताता है।'
‘खैर,’ रशीद के पिता ने शरारती अंदाज़ में आगे कहा, ‘इतनी मेहनत करके आए हो तो क्यों न एक कप चाय पी लो। मैं रशीद के दोस्त को बुलाता हूँ और हम बातें करेंगे। वैसे, और कौन आ रहा है? रशीद, हम सबके लिए चाय मंगवा देना।’
फुटबॉल उत्तेजित हो गया। 'नहीं, नहीं—' उसने ततैयों के झुंड को भगाने की तरह हाथ-पैर हिलाते हुए कहा, 'चाय नहीं, चाय नहीं।'

लेकिन हम सब इसे साथ में ही लेंगे, तिवारीजी, इसमें जहर नहीं है। कपूर साहब भी हमारे साथ शामिल होंगे।
तिवारी ने कहा, 'क्या वह आप सबके साथ चाय पीता है?'
'जी हां। वह हमारे साथ खाना भी खाता है।'
फुटबॉल कुछ देर चुप रहा, मानो वह इस बात को पचा रहा हो। थोड़ी देर बाद उसने कहा:
लेकिन मैंने अभी-अभी चाय पी है, आप जानते हैं, नाश्ते के साथ—मैंने अभी-अभी चाय पी है और घर से निकलने से पहले ज़रूरत से ज़्यादा खा भी लिया है। मुझे देखिए। मुझे सावधान रहना होगा। आपकी मेहमाननवाज़ी की कोई सीमा नहीं है। लेकिन—'
"क्या आप यह तो नहीं कह रहे हैं, तिवारी जी, कि हम जो परोस रहे हैं वह आपकी अपेक्षाओं से कम है? आप हमारे साथ खाना क्यों नहीं खाना चाहते? क्या आपको लगता है कि हम आपको अपवित्र कर देंगे?"
"अरे नहीं, नहीं, नहीं, बात बस इतनी सी है कि मुझ जैसे गली के कीड़े को महल की सुख-सुविधाएँ मिलने पर खुशी नहीं होती। हा हा हा!"
उसकी इस मज़ाकिया बात पर फुटबॉल थोड़ा लड़खड़ा गया और रशीद के पिता भी मुस्कुरा दिए। उन्होंने इस बात को आगे न बढ़ाने का फैसला किया। बाकी सभी ब्राह्मण अपने जाति नियमों को लेकर स्पष्ट थे, जिनमें गैर-ब्राह्मणों के साथ भोजन करना मना था, लेकिन फुटबॉल हमेशा टालमटोल करता था।
चाय और बिस्कुट की खुशबू से आकर्षित होकर श्री बिस्किट उनकी चारपाई के पास पहुंचे।
'यहाँ से चले जाओ, वरना मैं तुम्हें घी में तल दूँगा,' मोअज़्ज़म ने अपने काँटेदार बालों को खड़ा करते हुए कहा। 'यह पेटू है,' उसने मान को समझाया।

मिस्टर बिस्किट ने उन्हें खाली निगाहों से देखा।
मेहर ने उसे अपने दो बिस्कुटों में से एक दिया, और वह उसे खाने के लिए एक ज़ोंबी की तरह आगे बढ़ा।
रशीद मेहर की उदारता से प्रसन्न था, लेकिन मिस्टर बिस्किट से बिल्कुल भी प्रसन्न नहीं था।
‘वह दिन भर बस खाता-पीता और शौच करता रहता है, खाता-पीता और शौच करता रहता है,’ उसने मान से कहा। ‘उसकी जिंदगी का बस यही काम है। वह सात साल का है और मुश्किल से एक शब्द भी पढ़ पाता है। भला कोई क्या कर सकता है?—गांव का माहौल ही ऐसा है। लोग उसे मजाकिया समझते हैं और उसे प्रोत्साहित करते हैं।’
मानो अपनी अन्य प्रतिभाओं को साबित करने के लिए, श्री बिस्किट ने प्रसाद ग्रहण करने के बाद, अपने कानों पर हाथ रख लिए और मुअज़्ज़िन की प्रार्थना की पुकार की नकल करते हुए चिल्लाया:
'आआआआए, सो जाओ, सो जाओ, सो जाओ! एक किरदार, एक किरदार!'
मोअज्जम चिल्लाया: 'अरे नीच प्राणी!' और उसे थप्पड़ मारने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन मान ने उसे रोक लिया।
मान की घड़ी को देखकर मोअज्जम एक बार फिर मंत्रमुग्ध हो गया और बोला: 'देखो: अब दोनों सुइयां एक साथ आ रही हैं।'
‘मोअज़्ज़म को अपनी घड़ी मत देना,’ रशीद ने सलाह दी। ‘मैंने तुम्हें पहले ही चेतावनी दे दी है। या अपनी टॉर्च भी मत देना। उसे ये जानने में मज़ा आता है कि घड़ियाँ कैसे काम करती हैं, लेकिन उसका काम वैज्ञानिक तरीके से नहीं होता। एक बार मैंने उसे मेरी घड़ी पर ईंट से वार करते हुए पकड़ा था। उसने मेरी नज़र हटाए बिना उसे मेरे बैग से निकाल लिया था। सौभाग्य से, बुनियादी मशीनरी तो काम कर रही थी। लेकिन शीशा, सुई,

स्प्रिंग—सब टूट गए थे। उसे ठीक करवाने में मुझे बीस रुपये लगे।'
लेकिन अब मोअज़्ज़म मेहर के पैर की उंगलियों को गिन रहा था और गुदगुदी कर रहा था—जिससे मेहर बहुत खुश हो रही थी। रशीद ने कहा, "कभी-कभी वह बहुत ही दिलचस्प और संवेदनशील बातें कह देता है। वह बहुत ही पेचीदा है। दिक्कत यह है कि उसके माता-पिता ने उसे बहुत लाड़-प्यार दिया है और उसे अनुशासन बिल्कुल नहीं सिखाया। अब वह बस अपनी मर्जी से चलता है। कभी-कभी वह उनसे या दूसरों से पैसे चुराकर सलीमपुर चला जाता है। वहां वह क्या करता है, यह कोई नहीं जानता। फिर कुछ दिनों बाद लौट आता है। वह बहुत बुद्धिमान है, और स्नेहशील भी। लेकिन उसका अंत बुरा ही होगा।"
यह सब सुनकर मोअज़्ज़म हँस पड़ा और थोड़ा नाराज़गी से बोला, 'मैं नहीं करूँगा। तुम्हारा ही बुरा हाल होगा। आठ, नौ, दस; दस, नौ, आठ—शांत रहो—सात, छह। मुझे वह ताबीज़ दो—तुम उससे काफ़ी देर खेल चुके हो।'
दूर से कुछ अन्य आगंतुकों को आते देख, उसने मेहर को उसके परदादा को सौंप दिया, जो घर से बाहर आ गए थे, और जांच करने और - यदि आवश्यक हो - तो उन्हें चुनौती देने के लिए चला गया।
'काफी शरारती बच्चा था,' मान ने कहा।
'शरारती?' बाबा ने कहा। 'वह बारह साल की उम्र में ही बदमाश—चोर है!'
मान मुस्कुराया।
उसने वहां साइकिल से चलने वाली सूप फटकने वाली मशीन का पंखा तोड़ दिया।
'वह शरारती नहीं है, वह एक बदमाश है,' बाबा ने मेहर को आगे-पीछे झुलाते हुए कहा, जो एक बूढ़े व्यक्ति के लिए काफी ज़ोरदार था।

बाबा ने मोअज्जम की ओर गुस्से भरी नज़र से देखते हुए आगे कहा, "अब तो वो इतना बड़ा हो गया है कि उसे बढ़िया खाना चाहिए। इसलिए वो लोगों की जेबों से चोरी करता है। रोज़ाना अपने ही घर से चावल, दाल, जो कुछ भी मिलता है, चुराकर बनिया की दुकान पर बेच देता है। फिर सालिमपुर जाकर अंगूर और अनार खाता है!"

मान हंस पड़ा।

अचानक बाबा को कुछ सूझा। 'रशीद!' उन्होंने कहा।

'जी बाबा?'

'तुम्हारी दूसरी बेटी कहाँ है?'

'अंदर, बाबा अपनी माँ के साथ है। मुझे लगता है कि वह उसे दूध पिला रही है।'

'वह तो कमजोर है। मेरे खानदान की बच्ची जैसी बिल्कुल नहीं लगती। उसे भैंस का दूध पिलाना चाहिए। जब वह मुस्कुराती है तो किसी बूढ़ी औरत जैसी लगती है।'

'बहुत से बच्चे ऐसा करते हैं, बाबा,' रशीद ने कहा।

'यह तो एक स्वस्थ बच्ची है। देखो इसके गाल कितने दमक रहे हैं।'

गांव के दो ब्राह्मण अब खुले आंगन की ओर बढ़े, उनके आगे मोअज्जम और पीछे कछेरू थे। बाबा उनका अभिवादन करने के लिए आगे बढ़े, और रशीद और मान अपनी चारपाई को आंगन के उस छोर के पास ले गए जहाँ रशीद के पिता फुटबॉल के साथ बैठे थे। यह एक सम्मेलन जैसा माहौल बन रहा था।

संख्या को और बढ़ाने के लिए, नेताजी भी सागल के निर्देश पर थोड़ी देर के लिए प्रकट हुए। उनके साथ कमर भी थे, जो व्यंग्यपूर्ण स्वभाव के शिक्षक थे और जिन्होंने सलीमपुर की दुकान पर बहुत संक्षिप्त उपस्थिति दर्ज कराई थी। वे शिक्षकों से बात करने के लिए मदरसे गए थे।

10.17

सभी ने एक-दूसरे का अभिवादन किया, हालांकि उत्साह का स्तर अलग-अलग था। कमर इतने सारे ब्राह्मणों को देखकर प्रसन्न नहीं था और उसने उनका अभिवादन बड़े ही औपचारिक ढंग से किया—हालांकि हाल ही में आए बाजपेयी (चंदन के पेस्ट से बने अपने जाति चिह्न के साथ) और उनके बेटे किशोर बाबू बहुत अच्छे लोग थे। वे अपने साथी ब्राह्मण, फुटबॉल को देखकर खुश नहीं थे, जो शरारती था और लोगों को आपस में लड़ाने में उसे बहुत आनंद आता था।

किशोर बाबू एक शर्मीले और सौम्य स्वभाव के व्यक्ति थे। उन्होंने मान से कहा कि उनसे मिलकर उन्हें बहुत खुशी हुई और उनके दोनों हाथ अपने हाथों में ले लिए। इसके बाद उन्होंने मेहर को गोद में उठाने की कोशिश की, लेकिन मेहर ने उन्हें ऐसा करने नहीं दिया और दौड़कर अपने दादाजी की गोद में बैठ गई, जबकि दादाजी कछेरू द्वारा लाए गए पान के दानों की जाँच कर रहे थे। नेताजी दूसरी तरफ जाकर एक और चारपाई ले आए।

बाजपेयी ने मान का दाहिना हाथ पकड़ लिया था और उसे ध्यान से देख रहे थे। उन्होंने कहा, 'एक पत्नी। कुछ धन-दौलत। ज्ञान की परंपरा की बात करें तो...'

'...ऐसा लगता है कि इसका कोई अस्तित्व ही नहीं है।' मान ने उसकी बात पूरी की और मुस्कुराया।

'जीवन की राह बहुत अनुकूल नहीं है,' बाजपेयी ने हौसला बढ़ाते हुए कहा। मान हंस पड़ा।

इस बीच कमर इस पूरी कवायद से बेहद नाराज़ दिख रहा था। यह हिंदुओं के दयनीय अंधविश्वास का एक और उदाहरण था।

बाजपेयी ने आगे कहा, 'तुम चार बच्चे थे, अब सिर्फ तीन ही बचे हैं।'

मान की हंसी रुक गई और उसका हाथ तन गया।

‘क्या मैं सही कह रहा हूँ?’ बाजपेयी ने कहा।
'हां,' मान ने कहा।
‘कौन गुजर गया?’ बाजपेयी ने मान के चेहरे को ध्यान से और स्नेहपूर्वक देखते हुए पूछा।
‘नहीं,’ मान ने कहा, ‘यह तो तुम्हें ही मुझे बताना होगा।’
मुझे लगता है कि वह सबसे छोटा था।
मान को राहत मिली। उसने कहा, 'मैं सबसे छोटा हूं। तीसरा बच्चा एक साल से भी कम उम्र में मर गया था।'
'सब बकवास है, सब बकवास है,' कमर ने तिरस्कार भरी नज़र से कहा। वह सिद्धांतों का आदमी था और धोखेबाज़ी बर्दाश्त नहीं कर सकता था।
‘आपको ऐसा नहीं कहना चाहिए, स्वामी जी,’ किशोर बाबू ने विनम्रता से कहा। ‘यह तो पूरी तरह वैज्ञानिक है। हस्तरेखा शास्त्र—और ज्योतिष शास्त्र भी। वरना तारे अपनी जगह पर क्यों होते?’
कमर ने कहा, 'तुम्हारे लिए सब कुछ वैज्ञानिक है। यहां तक कि जाति व्यवस्था भी। लिंग और अन्य घृणित चीजों की पूजा करना भी। और उस व्यभिचारी, उस स्त्री-लुभाने वाले, उस चोर कृष्ण के भजन गाना भी।'
अगर कमर झगड़ा करने के मूड में था, तो उसे वो नहीं मिला जो वो चाहता था। मान ने हैरानी से उसकी तरफ देखा लेकिन दखल नहीं दिया। उसे भी इस बात में दिलचस्पी थी कि बाजपेयी और किशोर बाबू क्या कहेंगे। फुटबॉल की बात करें तो, उसकी छोटी-छोटी आँखें तेज़ी से इधर-उधर घूम रही थीं।
किशोर बाबू अब धीमी और सधी हुई आवाज़ में बोले: ‘देखिए, कमर भाई, बात ऐसी है। हम इन मूर्तियों की पूजा नहीं करते। ये तो केवल एकाग्रता के केंद्र हैं। अब बताइए, प्रार्थना करते समय आप मक्का की ओर क्यों मुँह करते हैं? कोई यह तो नहीं कहेगा कि आप पत्थर की पूजा

कर रहे हैं। और भगवान कृष्ण के बारे में हम ऐसा नहीं सोचते। हमारे लिए वे स्वयं विष्णु के अवतार हैं। वैसे, मेरा नाम भी एक तरह से भगवान कृष्ण के नाम पर ही रखा गया है।'

कमर ने नाक सिकोड़ी। उसने कहा, 'मुझे यह मत बताओ कि सलीमपुर के आम हिंदू, जो हर सुबह अपनी चार भुजाओं वाली देवियों और हाथी के सिर वाले देवताओं के सामने पूजा करते हैं, उन्हें एकाग्रता के केंद्र के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं। वे बस उन मूर्तियों की पूजा कर रहे हैं, सीधी सी बात है।'

किशोर बाबू ने आह भरी। "आह, आम लोग!" उन्होंने इस अंदाज़ में कहा जैसे कि इससे सब कुछ स्पष्ट हो जाता हो। वे जाति व्यवस्था में दृढ़ विश्वास रखते थे।

रशीद ने हिंदू अल्पसंख्यक समुदाय के पक्ष में हस्तक्षेप करना आवश्यक समझा। 'वैसे भी, लोग अपने कर्मों के अनुसार अच्छे या बुरे होते हैं, न कि अपनी पूजा-अर्चना के अनुसार।'

'सच में, मौलाना साहब?' कमर ने चिढ़कर कहा। 'तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किसकी या किस चीज की पूजा करते हैं? कपूर साहब, आप इस सब के बारे में क्या सोचते हैं?' उसने उकसाने वाले लहजे में आगे कहा।

मान ने कुछ पल सोचा लेकिन कुछ नहीं बोला। उसने मेहर और उसकी दो सहेलियों की ओर देखा जो नीम के पेड़ की लहरदार छाल को पकड़ने की कोशिश कर रही थीं।

'क्या इस विषय पर आपकी कोई राय नहीं है, कपूर साहब?' कमर ने ज़िद करते हुए पूछा। गाँव से बाहर का होने के कारण वह जितना चाहे उतना कठोर हो सकता था।

किशोर बाबू अब काफी परेशान दिख रहे थे। बाबा और उनके बेटों में से

किसी ने भी अब तक इस धार्मिक विवाद में हिस्सा नहीं लिया था। किशोर बाबू को लगा कि मेज़बान होने के नाते उन्हें हस्तक्षेप करना चाहिए था ताकि मामला हाथ से न निकल जाए। उन्हें आभास हुआ कि मान को कमर के सवाल पूछने का तरीका बिल्कुल पसंद नहीं आया और उन्हें डर था कि मान कड़ी प्रतिक्रिया दे सकता है।

लेकिन मान ने ऐसा नहीं किया। वह अब भी ज्यादातर नीम के पेड़ की ओर देख रहा था और कभी-कभार ही कमर की ओर देखता था। मान ने कहा:

'मैं इन बातों के बारे में नहीं सोचता। इनके बिना भी जीवन काफी जटिल है। लेकिन यह स्पष्ट है, गुरु साहब, कि यदि आप सोचते हैं कि मैं आपके प्रश्न से बच रहा हूँ, तो आप मुझे या किसी और को भी चैन नहीं लेने देंगे। इसलिए मुझे लगता है कि आप मुझे गंभीर होने के लिए मजबूर करने वाले हैं।'

'इसमें कोई बुरी बात नहीं है,' कमर ने संक्षिप्त लहजे में कहा। उसने मान के चरित्र का जल्दी से आकलन कर लिया था और इस निष्कर्ष पर पहुंचा था कि वह कोई खास महत्व का व्यक्ति नहीं है।

'मेरा मानना है कि किशोर बाबू का हिंदू परिवार में जन्म होना और आपका, मास्टर साहब, मुस्लिम परिवार में जन्म होना महज़ एक संयोग है। मुझे पूरा यकीन है कि अगर जन्म के बाद, जन्म से पहले या गर्भधारण से पहले ही आपकी अदला-बदली हो जाती, तो आप कृष्णजी और पैगंबर मुहम्मद कृष्णजी की प्रशंसा कर रहे होते। जहाँ तक मेरी बात है, मास्टर साहब, मैं प्रशंसा के योग्य तो बिल्कुल नहीं हूँ, इसलिए मुझे किसी की प्रशंसा करने का मन नहीं करता—पूजा करना तो दूर की बात है।'

'क्या?' फुटबॉल ने आक्रामक ढंग से बातचीत में दखल देते हुए और बोलते-बोलते अपनी गति बढ़ाते हुए कहा: 'क्या रामजप बाबा जैसे संत

भी नहीं? क्या पुल मेले की पूर्णिमा की रात पवित्र गंगा भी नहीं? क्या वेद भी नहीं? क्या स्वयं भगवान भी नहीं?'

'अरे, भगवान!' मान ने कहा। 'भगवान एक बहुत बड़ा विषय है—मुझ जैसे व्यक्ति के लिए बहुत बड़ा। मुझे यकीन है कि वे इतने महान हैं कि उन्हें इस बात की परवाह नहीं है कि मैं उनके बारे में क्या सोचता हूँ।'

किशोर बाबू ने चिंता भरे लहजे में आगे झुकते हुए पूछा, 'लेकिन क्या आपको कभी उनकी उपस्थिति का अहसास नहीं होता? क्या आपको कभी ऐसा महसूस नहीं होता कि आप उनसे संवाद कर रहे हैं?'

'अब जब तुमने इसका जिक्र किया है,' मान ने कहा, 'मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं अभी उनसे सीधे संवाद कर रहा हूँ। और वे मुझसे कह रहे हैं कि इस व्यर्थ की बहस को रोकूँ और चाय ठंडी होने से पहले पी लूँ।'

फ़ुटबॉल, क़मर और रशीद को छोड़कर बाकी सब मुस्कुरा रहे थे। रशीद को मान की वह आदत पसंद नहीं आई जिसे वह हमेशा की तरह बेपरवाही मानता था। क़मर को लगा कि उसे एक घटिया और बेतुकी चाल में मात दे दी गई है, जबकि फ़ुटबॉल का उपद्रव मचाने का प्रयास विफल हो गया। लेकिन सामाजिक सद्भाव फिर से स्थापित हो गया था, और सभा छोटे-छोटे समूहों में बंट गई।

रशीद के पिता, फुटबॉल और बाजपेयी इस बात पर चर्चा करने लगे कि अगर जमींदारी कानून लागू हो गया तो क्या होगा। इसे राष्ट्रपति की मंजूरी मिल चुकी थी, लेकिन इसकी संवैधानिकता को ब्रह्मपुर उच्च न्यायालय में चुनौती दी जा रही थी। रशीद, जो फिलहाल इस विषय पर बात करने में असहज महसूस कर रहा था, कमर से मदरसे के पाठ्यक्रम में बदलावों के बारे में बात करने लगा। किशोर बाबू, मान और नेताजी एक तीसरा समूह बना रहे थे—लेकिन चूंकि किशोर बाबू अहिंसा पर मान के विचारों के बारे में धीरे से सवाल करने पर अड़े रहे, जबकि नेताजी

भेड़ियों के शिकार के बारे में उनसे पूछने के लिए उत्सुक थे, इसलिए बातचीत थोड़ी अटपटी सी हो गई। बाबा अपनी प्यारी परपोती के साथ समय बिताने चले गए, जिसे मोअज्जम मवेशी-बाड़े से कबूतर-घर तक पीठ पर बिठाकर ले जा रहा था।

कछेरु गौशाला की छाया में दीवार के सहारे बैठा अपने विचारों में खोया हुआ था और आंगन में खेल रहे बच्चों को स्नेह से देख रहा था। उसने किसी भी चर्चा पर ध्यान नहीं दिया था। उसे कोई दिलचस्पी नहीं थी। सेवा करने में प्रसन्नता तो थी, लेकिन इस बात से भी खुश था कि दो बीड़ी पीने में जितना समय लगा, उतने समय में किसी ने उससे कुछ भी करने को नहीं कहा था।

10.18

दिन एक-एक करके बीतते गए। गर्मी बढ़ती गई। बारिश बंद हो गई। विशाल आकाश कई दिनों तक पीड़ादायक रूप से नीला बना रहा। कभी-कभार मैदानों के अंतहीन विस्तार पर कुछ बादल दिखाई दिए, लेकिन वे छोटे और सफेद थे, और जल्द ही गायब हो गए।

मान धीरे-धीरे अपने निर्वासन का आदी हो गया। पहले तो वह परेशान रहा। गर्मी उसे सताती रही, खेतों की विशाल, सपाट, नीची दुनिया उसे भ्रमित करती रही और वह बुरी तरह ऊब गया। इस वीरान जगह पर अकेला पड़ा हुआ, वह बिल्कुल भी वहाँ नहीं था जहाँ वह रहना चाहता था। वह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि वह कभी यहाँ ढल पाएगा। उसे लगता था कि आराम और प्रेरणा की ज़रूरत एक बढ़ती हुई चरखी की तरह है। फिर भी, जैसे-जैसे दिन बीतते गए, और चीजें आकाश की मर्ज़ी, कैलेंडर के अनुसार या अन्य लोगों की इच्छाओं के अनुसार चलती रहीं या नहीं चलती रहीं, वह अपने आसपास के जीवन में ढल गया। उसके मन में यह विचार आया कि शायद उसके पिता का कारावास

स्वीकार करना भी कुछ ऐसा ही था—बस फर्क इतना था कि मान के दिन सुबह हाजिरी और बत्ती बंद होने से नहीं, बल्कि अज़ान की आवाज़ और गायों के रंभाते हुए गलियों में लौटने के समय से तय होते थे।

अपने पिता के प्रति उनका शुरुआती आक्रोश भी कम हो गया था; लंबे समय तक क्रोधित रहना बहुत मुश्किल था, और इसके अलावा, ग्रामीण इलाकों में रहने के दौरान, उन्होंने अपने पिता के प्रयासों की व्यापकता की सराहना करना और यहां तक कि प्रशंसा करना शुरू कर दिया था - हालांकि इससे उनके भीतर अनुकरण की कोई भावना उत्पन्न नहीं हुई।

थोड़ा आलसी होने के कारण, वह अक्सर लेटा रहता था। गाँव के बच्चों ने जब वह पहली बार आया था, तब उसे शेर का नाम दिया था। वह बहुत कम समय काम में बिताता था, खूब जम्हाई लेता था और अपनी इस सुस्ती में मग्न प्रतीत होता था, जिसे वह बीच-बीच में एक-दो दहाड़ और थोड़ी-बहुत गतिविधि से तोड़ता था—शायद स्कूल के पास वाली झील में तैरना या आम के बाग में टहलना—क्योंकि आम का मौसम था और मान को आम बहुत पसंद थे। कभी-कभी वह अपनी चारपाई पर लेटकर संदीप लाहिड़ी द्वारा दी गई रोमांचक कहानियों में से कोई एक पढ़ता था। कभी-कभी वह अपनी उर्दू की किताबें देखता था। बहुत अधिक मेहनत न करने के बावजूद, वह अब स्पष्ट छपी हुई उर्दू पढ़ सकता था; और एक दिन नेताजी ने उसे मीर की सबसे प्रसिद्ध ग़ज़लों का एक छोटा सा संग्रह दिया, जिसे मान को अधिकांश भाग याद होने के कारण पढ़ना ज्यादा मुश्किल नहीं लगा।

आखिर गांव में लोग करते क्या थे? उसने खुद से पूछा। वे इंतज़ार करते; बैठते, बातें करते, खाना बनाते, खाते, पीते और सोते। वे उठते और पानी के पीतल के घड़े लेकर खेतों में चले जाते। शायद, मान ने सोचा, हर कोई असल में एक मिस्टर बिस्किट जैसा ही है। कभी-कभी वे ऊपर आसमान

की ओर देखते, जहां बारिश नहीं होती थी। सूरज ऊपर चढ़ता, अपनी चरम सीमा पर पहुंचता, डूबता और अस्त हो जाता। अंधेरा होने के बाद, जब ब्रह्मपुर में उसकी जिंदगी शुरू होती थी, तब कुछ करने को नहीं होता था। कोई मिलने आता; कोई चला जाता। चीजें बढ़ती जातीं। लोग इधर-उधर बैठकर इस-उस बात पर बहस करते और मानसून का इंतज़ार करते। मान भी बैठकर बातें करता था, क्योंकि लोगों को उससे बात करना अच्छा लगता था। वह अपनी चारपाई पर बैठकर लोगों, समस्याओं, महुआ के पेड़ों, दुनिया की हालत, हर चीज़ पर चर्चा करता था। उसे कभी शक नहीं था कि लोग उसे पसंद करेंगे या उस पर भरोसा करेंगे; क्योंकि वह स्वभाव से संदेहहीन था, इसलिए उसने कभी सोचा भी नहीं था कि दूसरे उस पर शक करेंगे। लेकिन एक बाहरी होने के नाते, शहर में रहने वाले होने के नाते, एक हिंदू होने के नाते, एक राजनेता के बेटे होने के नाते—और वो भी राजस्व मंत्री—उस पर हर तरह के संदेह और अफवाहें उड़ती थीं—और उनमें से कुछ उतनी बेतुकी नहीं थीं जितनी उसकी नारंगी कुर्ते की वजह से फैली अफवाह। कुछ लोगों का मानना था कि वह उस निर्वाचन क्षेत्र पर नज़र रख रहा है जहाँ से उसके पिता ने आने वाले चुनावों में चुनाव लड़ने का फैसला किया है, कुछ का मानना था कि उसने शहर की ज़िंदगी को अपने लिए न पाकर यहीं स्थायी रूप से बसने का फैसला कर लिया है, और कुछ का मानना था कि वह कर्जदारों से बचने के लिए छिप रहा है। लेकिन कुछ समय बाद लोग मान के आदी हो गए, उसके स्पष्ट उद्देश्य की कमी में उन्हें कोई बुराई नहीं दिखी, उसकी राय सुखद और हास्यपूर्ण रूप से आक्रामक नहीं लगी, और उन्हें यह बात अच्छी लगी कि वह उनकी राय को पसंद करता था। हैंडपंप के नीचे नहाते हुए 'शेर, शेर, बिना पूंछ वाला' के रूप में, रोते हुए बच्चे को गोद में लिए मान चाचा के रूप में, घड़ी और टॉर्च जैसी दिलचस्प वस्तुओं के स्रोत के

रूप में, और साधारण शब्दों की वर्तनी में गलत उर्दू 'ज़' का प्रयोग करने वाले तल्लीन और अकुशल सुलेखक के रूप में, उन्हें बच्चों ने जल्दी ही स्वीकार कर लिया और उन पर भरोसा करने लगे; और जल्द ही उनके माता-पिता का भरोसा और स्वीकृति भी मिल गई। अगर मान को इस बात का अफसोस था कि वह केवल पुरुषों से ही मिलते थे, तो उन्होंने इस बारे में कुछ नहीं कहा। इस बीच, वह गांव के झगड़ों और जमींदारी या धर्म की चर्चाओं से दूर रहे। ईश्वर के विषय पर कमर और फुटबॉल के साथ उनका व्यवहार जल्द ही पूरे गांव में मशहूर हो गया। लगभग सभी ने इसे पसंद किया। रशीद के परिवार को उनकी संगति अच्छी लगने लगी। वह उनके लिए एक तरह से खुली हवा में मन की बात कहने का स्थान बन गए।

दिन एक-दूसरे से लगभग अलग नहीं लग रहे थे। जब डाकिया घर आता, तो वह मान के उत्सुक चेहरे को अक्सर उदास भाव से देखता। हफ्तों में उसे दो पत्र मिले: एक प्राण का, एक उसकी माँ का। प्राण के पत्र से उसे पता चला कि सविता ठीक है, उसकी माँ की तबीयत कुछ ठीक नहीं है, भास्कर ने अपना प्यार भेजा है और वीना ने स्नेहपूर्ण सलाह दी है, ब्रह्मपुर जूता मंडी खुल गई है, अंग्रेजी विभाग अभी भी गहरी नींद में है, लता कलकत्ता गई है और श्रीमती रूपा मेहरा दिल्ली गई हैं। ये दुनियाएँ कितनी दूर लग रही थीं, उसने सोचा, जैसे कभी-कभार दिखने वाले सफेद बादल जो मीलों ऊपर प्रकट होते और गायब हो जाते। उसके पिता, ऐसा लग रहा था, हमेशा की तरह देर से घर आ रहे थे: वे ज़मींदारी अधिनियम को चुनौती देने के मामले में एडवोकेट-जनरल से गहन परामर्श में व्यस्त थे; उनकी माँ ने बताया कि उनके पास लिखने का समय नहीं था, लेकिन उन्होंने मान के स्वास्थ्य और खेत के बारे में पूछा था। उसने ज़ोर देकर कहा कि वह खुद स्वस्थ है; प्राण ने शायद बेवजह जिन छोटी-मोटी

शिकायतों का ज़िक्र किया होगा, उन्हें उसने बुढ़ापे का असर बताया—मान को उसकी चिंता करने की ज़रूरत नहीं थी। बारिश देर से शुरू होने से बगीचे पर असर पड़ा था, लेकिन जल्द ही बारिश होने की उम्मीद थी, और जब सब कुछ फिर से हरा-भरा हो जाएगा, तो मान दो छोटी-छोटी नई चीज़ों पर ध्यान देगा: बगल के लॉन में थोड़ी सी असमानता, और उसकी खिड़की के नीचे लगाए गए ज़िनिया के फूलों की क्यारी।

मान ने अपने मित्र की चुप्पी को नज़रअंदाज़ करते हुए सोचा कि फ़िरोज़ भी ज़मींदारी मामले में गहराई से शामिल होगा। जहाँ तक उस चुप्पी की बात है जो उसके कानों में सबसे गहरी गूँज रही थी, उसने उसे अपने पत्र के तुरंत बाद के दिनों में सबसे ज़्यादा पीड़ा दी थी, जब वह इसके बारे में सोचे बिना साँस भी नहीं ले पाता था। अब वह भी एक हल्का दर्द था, जो गर्मी और लंबे दिनों के कारण कुछ कम हो गया था। फिर भी जब वह शाम की हल्की रोशनी में चारपाई पर लेटकर मीर की कविताएँ पढ़ता था, विशेष रूप से वह कविता जो उसे प्रेम निवास में सईदा बाई को देखने की उस पहली शाम की याद दिलाती थी, तो सईदा बाई की स्मृति मान के मन में लौट आती थी और उसे लालसा और व्याकुलता से व्याकुल कर देती थी।

वह इस बारे में किसी से बात नहीं कर सकता था। रशीद की हल्की सी कैसियस जैसी मुस्कान, जब उसने उसे मीर के प्रति कोमल भाव से लीन देखा, अगर उसे पता होता कि वह किसे निहारना चाहता है, तो स्पष्ट तिरस्कार में बदल जाती। एक बार जब रशीद ने मान से प्रेम के बारे में सामान्य शब्दों में बात की थी, तो वह इस विषय पर भी उतना ही गंभीर, निश्चित और सैद्धांतिक था जितना कि वह अन्य सभी विषयों पर होता था। मान को स्पष्ट था कि उसने कभी प्रेम का अनुभव नहीं किया था। मान अक्सर रशीद की गंभीरता से परेशान हो जाता था; इस विशेष मामले में,

वह चाहता था कि उसने इस विषय को कभी न उठाया होता।
रशीद को इस बात की खुशी थी कि उसके पास मान था जिससे वह अपने विचारों और भावनाओं के बारे में बात कर सकता था, लेकिन वह मान की असीम दिशाहीनता को समझ नहीं पा रहा था। खुद मान एक ऐसे परिवेश से आया था जहाँ उच्च शिक्षा सितारों की तरह पहुँच से बाहर लगती थी, और उसने इतनी ऊँचाई तक पहुँचने के बाद यह विश्वास किया कि इच्छाशक्ति और प्रयास से उसे कहीं भी पहुँचाया जा सकता है। उसने बहादुरी से, उत्साह से, और शायद जुनून की हद तक, हर चीज को - पारिवारिक जीवन, विद्या, सुलेख, व्यक्तिगत सम्मान, व्यवस्था, रीति-रिवाज, ईश्वर, कृषि, इतिहास, राजनीति; संक्षेप में, इस दुनिया और अन्य सभी दुनियाओं को - एक बोधगम्य समग्रता में समेटने का प्रयास किया। वह स्वयं के प्रति जितना कठोर था, उतना ही दूसरों के प्रति भी कठोर था। और मान, जो उसकी ऊर्जा और सिद्धांतों की भावना से कुछ हद तक प्रभावित था, को ऐसा लग रहा था कि वह मानवता के सभी बोझों और जिम्मेदारियों को इतनी गहराई से महसूस करने और इतनी दृढ़ता से उठाने के कारण खुद को थका रहा है।
एक दिन नीम के पेड़ के नीचे बैठकर बातें करते हुए मान ने रशीद से कहा, “कुछ न करके—या कुछ न करने से भी बदतर काम करके—मैंने अपने पिता को नाराज़ कर दिया है। और कुछ करके—या कुछ बेहतर काम करके—तुमने अपने पिता को नाराज़ कर दिया है।”
रशीद ने परेशान स्वर में कहा कि अगर उसके पिता को पता चल जाए कि उसने क्या कर दिखाया है, तो वे बहुत नाराज़ होंगे। मान ने उससे पूछा कि उसका क्या मतलब है, लेकिन उसने सिर हिला दिया। मान, हालांकि उसकी बात से असहज था, उसने आगे कुछ नहीं पूछा। अब तक वह रशीद के कभी गुप्त रहने और कभी अचानक, यहाँ तक कि अंतरंग बातें

कहने के इस व्यवहार का आदी हो चुका था। दरअसल, जब मान ने उसे बैतर किले में मुंशी और बुढ़िया के बारे में बताया था, तो रशीद पटवारी से मिलने के अपने अनुभव के बारे में बताने ही वाला था। लेकिन किसी बात ने उसकी ज़बान रोक दी। आख़िरकार, इस गाँव में कोई भी, यहाँ तक कि कछेरू भी, उस अन्यायपूर्ण कृत्य के बारे में नहीं जानता था; और यही बेहतर था कि इसे ऐसे ही रहने दिया जाए। इसके अलावा, पटवारी पिछले एक-दो हफ़्तों से गाँव में नहीं था, और रशीद को अभी तक अपने निर्देशों की अपेक्षित पुष्टि नहीं मिली थी।

इसके बजाय रशीद ने कहा था: 'क्या तुम्हें उस औरत का नाम पता चला? तुम्हें कैसे पता कि मुंशी अपना बदला उस पर नहीं लेगा?' अपनी अव्यावहारिकता के संभावित परिणामों से स्तब्ध मान ने अपना सिर हिला दिया था।

कुछ मौकों पर रशीद अनिच्छुक मान को ज़मींदारी व्यवस्था पर चर्चा करने के लिए मनाने में सफल रहा, लेकिन मान के विचार हमेशा की तरह अस्पष्ट और चिड़चिड़े थे। उसने पीड़ा और क्रूरता पर सहज, बल्कि हिंसक प्रतिक्रिया तो दी थी, लेकिन व्यवस्था के सामान्य सही-गलत के बारे में उसकी कोई खास राय नहीं थी। वह नहीं चाहता था कि उसके पिता द्वारा वर्षों से किए गए प्रयासों से तैयार किए गए कानून को अदालतें रद्द कर दें, लेकिन वह यह भी नहीं चाहता था कि फ़िरोज़ और इम्तियाज़ अपनी पारिवारिक संपत्ति का बड़ा हिस्सा खो दें। रशीद के इस विशेष तर्क पर कि बड़े ज़मींदार अपनी आजीविका के लिए काम नहीं करते (या उन्हें काम करने की ज़रूरत नहीं होती), मान से सर्वहारा वर्ग के आक्रोश की उम्मीद नहीं की जा सकती थी।

रशीद को अपने परिवार और उनके नौकरों के साथ किए जाने वाले बर्ताव के बारे में कठोर शब्दों में बोलने में कोई झिझक नहीं थी। लेकिन नवाब

साहब के बारे में, जिनसे रशीद की मुलाकात सिर्फ एक बार हुई थी, उन्होंने मान से कोई बुराई नहीं की। ब्रह्मपुर से ट्रेन यात्रा के दौरान ही उन्हें पता चल गया था कि मान युवा नवाबजादों का मित्र है; और वह न तो मान को असहज करना चाहते थे और न ही कुछ महीने पहले बैतर हाउस में नौकरी की तलाश में जाते समय अपने साथ हुए अपमान को याद दिलाना चाहते थे।

10.19

एक शाम, जब मान मस्जिद जाने से पहले रशीद द्वारा दिए गए कुछ अभ्यास कर रहा था, तभी रशीद के पिता ने उसे बीच में ही रोक दिया। वे अपनी बाहों में सोई हुई मेहर को लिए हुए थे।

बिना किसी भूमिका के उसने मान से कहा: 'अब जब तुम अकेले हो, तो क्या मैं तुमसे एक सवाल पूछ सकता हूँ? मैं कुछ समय से इसके बारे में सोच रहा हूँ।'

'बिल्कुल,' मान ने कलम नीचे रखते हुए जवाब दिया।

रशीद के पिता बैठ गए।

'अब देखिए,' उसने कहना शुरू किया, 'मैं इसे कैसे कहूँ? अविवाहित रहना मेरे और आपके धर्म में...' वह रुका, सही शब्द ढूँढ़ने के लिए। उसकी आवाज़ में असहमति झलक रही थी।

'अधर्म? सही सिद्धांतों के विरुद्ध?' मान ने सुझाव दिया।

'हाँ, इसे अधर्म कह लो,' रशीद के पिता ने राहत भरी सांस लेते हुए कहा। 'ठीक है, तुम बाईस-तेईस साल के हो...'

'बूढ़ा।'

'अधिक उम्र? यह तो बुरी बात है। अब तक तो तुम्हारी शादी हो जानी चाहिए थी। मेरा मानना है कि सत्रह से पैंतीस वर्ष की आयु के बीच का पुरुष अपने जीवन के सबसे उत्तम दौर में होता है।'

‘आह,’ मान ने सावधानी से सहमति जताते हुए सिर हिलाया। रशीद के दादाजी ने उसके ठहरने की शुरुआत में ही इस विषय को उठाया था। अब रशीद ही उन्हें परेशान करेगा।

रशीद के पिता ने आगे कहा, 'पैंतालीस साल की उम्र में भी मुझे अपनी ताकत में कोई कमी महसूस नहीं हुई।'

‘यह तो अच्छी बात है,’ मान ने कहा। ‘मैं कुछ ऐसे लोगों को जानता हूँ जो इस उम्र में भी काफी बूढ़े लगते हैं।’

‘लेकिन फिर, जैसा कि आप देख रहे हैं,’ रशीद के पिता ने आगे कहा, ‘फिर मेरे बेटे की मृत्यु हुई, और मेरी पत्नी की मृत्यु हुई—और मैं पूरी तरह टूट गया।’

मान चुप रहा। कछेरु एक लालटेन लेकर आया और उसे थोड़ी दूरी पर रख दिया।

रशीद के पिता, जो मान को सलाह देने का इरादा रखते थे, धीरे से अपनी यादों में खो गए: 'मेरा बड़ा बेटा एक अद्भुत लड़का था। सौ गांवों में उसके जैसा कोई नहीं था। वह शेर की तरह बलवान और छह फुट से भी अधिक लंबा था—एक पहलवान और भारोत्तोलक—वह अंग्रेजी व्यायाम करता था। वह दो मन लोहा आसानी से उठा लेता था। और उसका चेहरा बेहद मासूम और ताजा था; और वह हमेशा इतना मिलनसार और मुस्कुराता रहता था—वह लोगों का इतनी मित्रता से अभिवादन करता था कि उनके दिल खुश हो जाते थे। और जब वह वह सूट पहनता था जो मैंने उसके लिए सिलवाया था, तो वह इतना अच्छा दिखता था कि लोग कहते थे कि उसे पुलिस अधीक्षक बनना चाहिए।'

मान ने उदास होकर सिर हिलाया। रशीद के पिता बिना आँसू बहाए अपनी कहानी सुना रहे थे, लेकिन उनका लहजा ठंडा नहीं था—ऐसा लग रहा था मानो वे किसी और की कहानी सहानुभूति से सुना रहे हों।

“खैर, वैसे भी,” उन्होंने आगे कहा, “रेलवे स्टेशन पर हुए उस हादसे के बाद, मुझे नहीं पता कि मेरे साथ क्या हुआ। मैं महीनों तक घर से बाहर नहीं निकला। मेरी सारी ताकत खत्म हो गई। मैं कई दिनों तक बेहोश रहा। वह बहुत छोटा था। और फिर कुछ समय बाद उसकी माँ का भी निधन हो गया।”

उसने मान से आधा मुंह फेरते हुए घर की ओर देखा और आगे कहा:

‘यह घर भूतिया था। मुझे नहीं पता मेरा क्या होता। मैं इतना दुखी और कमजोर था कि मर जाना चाहता था। घर में मुझे पानी देने वाला भी कोई नहीं था।’ उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। ‘रशीद कहाँ है?’ उसने कुछ ठंडे स्वर में मान की ओर मुड़कर पूछा।

'मुझे लगता है, मस्जिद में।'

“हाँ, आखिरकार बाबा ने मुझे समझाया और कहा कि मुझे खुद को संभालना चाहिए। हमारा धर्म कहता है कि अविवाहित पुरुष की इज्जत, यानी सम्मान, विवाहित पुरुष के सम्मान का आधा होता है। बाबा ने जोर देकर कहा कि मुझे दूसरी शादी कर लेनी चाहिए।”

'खैर, वह अपने अनुभव से बोल रहा था,' मान ने मुस्कुराते हुए कहा।

जी हाँ। रशीद ने आपको बताया ही होगा कि बाबा की तीन पत्नियाँ थीं। हम दोनों भाई और हमारी बहन, हम सब अलग-अलग पत्नियों से हैं। ध्यान रहे, उनकी तीन पत्नियाँ एक साथ नहीं थीं, बल्कि एक समय में एक ही पत्नी थी। “मरते गए, करते गए।” एक पत्नी की मृत्यु हो जाने पर वे दूसरी से विवाह कर लेते थे। हमारे परिवार में पुनर्विवाह की परंपरा है: मेरे दादाजी की चार पत्नियाँ थीं, मेरे पिताजी की तीन और मेरी दो।

'क्यों नहीं?'

‘क्यों नहीं, बिलकुल नहीं,’ रशीद के पिता ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘दुख से उबरने के बाद मैंने भी यही सोचा था।’

'और क्या पत्नी ढूंढना मुश्किल था?' मान ने उत्सुकता से पूछा।
‘नहीं, ऐसा नहीं है,’ रशीद के पिता ने कहा। ‘इस जगह के हिसाब से हम काफी संपन्न हैं। मुझे सलाह दी गई थी कि मैं किसी जवान लड़की से नहीं, बल्कि किसी ऐसी महिला से शादी करूं जिसकी पहले शादी हो चुकी हो—कोई विधवा या तलाकशुदा महिला। इसलिए मैंने दोबारा शादी कर ली—लगभग एक साल हो गया है—एक ऐसी महिला से जो मुझसे पंद्रह साल छोटी है—ज्यादा फर्क नहीं पड़ता। वह दूर के रिश्ते से मेरी पत्नी (जिनकी आत्मा को शांति मिले) से भी संबंधित है। और वह घर का काम अच्छे से संभालती है। मेरी सेहत में फिर से सुधार हो गया है। मैं बिना किसी सहारे के दो मील दूर अपनी ज़मीन तक चल सकता हूं। मेरी नज़र ठीक है, बस पास की चीज़ें देखने में थोड़ी दिक्कत होती है। मेरा दिल ठीक है। मेरे दांतों की बात करें तो, वैसे भी उनका इलाज संभव नहीं था। शादी कर लेनी चाहिए। इसमें कोई शक नहीं।’
एक कुत्ता भौंकने लगा। थोड़ी देर बाद दूसरे कुत्ते भी भौंकने लगे। मान ने बात को दूसरी तरफ मोड़ने की कोशिश करते हुए कहा:
‘क्या वह सो रही है? क्या वह इन सब के दौरान सो सकती है?’
रशीद के पिता ने अपनी पोती को प्यार से देखते हुए कहा: 'हां, वह सो रही है। वह मुझसे बहुत प्यार करती है।'
मैंने देखा कि आज जब आप खेतों से छाता लेकर आए तो वह गर्मी में आपके पीछे दौड़ी।
रशीद के पिता ने गर्व से सिर हिलाया।
जब मैं उससे पूछती हूँ कि वह देबरिया या ब्रह्मपुर में रहना चाहती है, तो वह हमेशा देबरिया कहती है—"क्योंकि आप, दादा-जान, यहाँ हैं।" और एक बार जब मैं उसकी माँ के गाँव गई, तो वह अपने नाना को छोड़कर मेरे पीछे दौड़ पड़ी।

दोनों दादाओं के बीच की इस जोशीली प्रतिस्पर्धा के बारे में सोचकर मान मुस्कुरा उठा। उसने कहा: 'शायद रशीद तुम्हारे साथ था।'

'खैर, हो सकता है वह रहा हो। लेकिन अगर वह नहीं भी रहा होता, तो भी वह मेरे पीछे दौड़ती।'

'तो फिर वो तुम्हें बहुत प्यार करती होगी,' मान ने हंसते हुए कहा।

"जी हां, बिल्कुल। उसका जन्म इसी घर में हुआ था—जिसे बाद में लोग मनहूस और अशुभ कहने लगे थे। लेकिन उन बुरे दिनों में वह मेरे लिए भगवान के उपहार जैसी थी। मैंने ही उसे पाला-पोसा था। सुबह चाय—चाय और बिस्कुट! "दादा-जान", वह कहती, "मुझे चाय और बिस्कुट चाहिए। क्रीम बिस्कुट"—ये सूखे बिस्कुट नहीं। वह यहां की नौकरानी बिट्टन को मेरे खास डिब्बे से क्रीम बिस्कुट लाने को कहती। उसकी मां एक कोने में चाय बना रही होती। और वह अपनी मां के हाथों से नहीं खाती थी। मुझे ही उसे खिलाना पड़ता था।"

'खैर, सौभाग्य से अब घर में एक और बच्चा आ गया है,' मान ने कहा। 'उसका साथ देने के लिए।'

'निस्संदेह,' रशीद के पिता ने कहा। 'लेकिन मेहर ने तय कर लिया है कि मैं सिर्फ उसका हूं। जब उसे बताया जाता है कि मैं उसकी बहन का दादा भी हूं, तो वह इस बात पर विश्वास करने से इनकार कर देती है।'

मेहर नींद में करवट बदली।

रशीद के पिता ने दृढ़ता से कहा, 'पूरे परिवार में इस तरह का कोई बच्चा नहीं हुआ है।'

'ऐसा लगता है कि वह इसी धारणा के आधार पर काम करती है,' मान ने सहमति जताई।

रशीद के पिता हँसे और फिर बोले: "उसे ऐसा करने का पूरा अधिकार है। ओह, मुझे याद है, इस गाँव में एक बूढ़ा आदमी रहता था। उसका अपने

बेटों से झगड़ा हो गया था और वह अपनी बेटी और दामाद के साथ रहने आ गया था। उसके पास एक अनार का पेड़ था, जो किसी कारणवश हमारे पेड़ों से कहीं बेहतर फल देता था।"

क्या आपके पास अनार का पेड़ है?

'ओह जी हाँ, बिल्कुल, अंदर। मैं आपको किसी दिन दिखाऊँगा।'

'कैसे?'

'तुम्हारा मतलब क्या है, कैसे?' रशीद के पिता ने कहा। 'यह मेरा घर है...'

ओह, मैं समझ गया। मैं तुम्हारे जाने तक महिलाओं को इधर-उधर कर दूंगा। तुम अच्छे लड़के हो,' उसने अचानक कहा। 'बताओ, तुम क्या करते हो?'

'मुझे क्या करना?'

'हाँ।'

'कुछ खास नहीं।'

'यह बहुत बुरा है।'

'मेरे पिता भी यही सोचते हैं,' मान ने सहमति जताते हुए कहा।

वह सही कह रहा है। वह बिलकुल सही कह रहा है। आजकल कोई भी युवा काम नहीं करना चाहता।

या तो पढ़ाई करो या आसमान को घूरते रहो।'

दरअसल, बनारस में मेरा कपड़ों का व्यवसाय है।

'तो फिर तुम यहाँ क्या कर रहे हो?' रशीद के पिता ने कहा। 'तुम्हें पैसे कमाने चाहिए।'

'क्या आपको लगता है कि मुझे यहां नहीं होना चाहिए?' मान ने पूछा।

'नहीं, नहीं—बिल्कुल, आपका स्वागत है,' रशीद के पिता ने कहा। 'हमें खुशी है कि आप हमारे मेहमान बनकर आए हैं। हालांकि आपने आने के

लिए गर्मी और उमस भरा समय चुना है। आपको बकरीद के समय आना चाहिए। तब आपको पूरा गाँव उत्सवपूर्ण दिखेगा। जी हाँ, ऐसा ही कीजिए —याद रखिएगा... ओह, हाँ, अनार। यह बूढ़ा आदमी बहुत ही हंसमुख था, और वह और मेहर एक बेहतरीन जोड़ी थे। मेहर जानती थी कि जब भी वह उसके घर जाती, उसे कुछ न कुछ जरूर मिलता। इसलिए वह हमेशा मुझे उसे वहाँ ले जाने के लिए मजबूर करती थी। मुझे याद है पहली बार जब उसने उसे अनार दिया था। वह पका हुआ नहीं था। फिर भी, हमने उसे बड़े उत्साह से छीला, और उसने छह-सात चम्मच अनार खा लिए और बाकी हमने नाश्ते के लिए रख लिए!'

एक बुजुर्ग व्यक्ति वहां से गुजरा। वह देबरिया मस्जिद के इमाम थे।

'आप कल शाम को आएंगे ना, इमाम साहब?' रशीद के पिता ने चिंतित स्वर में पूछा।

'कल इसी समय—जी हां। नमाज के बाद,' इमाम ने हल्के से फटकार लगाते हुए कहा।

'पता नहीं रशीद कहां है,' मान ने अपने अधूरे अभ्यासों को देखते हुए कहा। 'वह शायद किसी भी मिनट लौट आएगा।'

उसके पिता ने भयंकर क्रोध में कहा, "वह शायद गाँव में टहल रहा होगा और सभी निचले तबके के लोगों से बात कर रहा होगा। यही उसका तरीका है। उसे थोड़ा और विवेक दिखाना चाहिए। मुझे बताओ, क्या वह तुम्हें पटवारी के पास ले गया है?"

मान उस लहजे से इतना अचंभित हो गया कि उसने शायद ही सवाल को समझा हो।

'पटवारी। क्या आप गांव के पटवारी से मिले हैं?' प्रश्न दोहराते समय आवाज में थोड़ी सख्ती थी।

'नहीं,' मान ने हैरानी से कहा। 'क्या कोई बात है?'

‘नहीं,’ रशीद के पिता ने कहा। थोड़ी देर रुककर उन्होंने कहा: ‘कृपया इस बात का ज़िक्र मत करना कि मैंने तुमसे यह पूछा था।’

'अगर आपको पसंद है,' मान ने सहजता से कहा, लेकिन वह अभी भी असमंजस में था।

‘खैर, मैंने तुम्हारी पढ़ाई को काफी नुकसान पहुंचा दिया है,’ रशीद के पिता ने कहा। ‘अब बेहतर होगा कि मैं तुम्हें और परेशान न करूं।’ और वह मेहर को गोद में लिए, लालटेन की रोशनी में frowning करते हुए घर की ओर वापस चले गए।

10.20

मान, जो अब काफी चिंतित था, लालटेन लेकर आया और रशीद द्वारा लिखे गए शब्दों को पढ़ने और नकल करने की कोशिश करने लगा। लेकिन रशीद के पिता जल्द ही वापस आ गए, इस बार मेहर उनके साथ नहीं थी।

‘गिग्गी क्या होता है?’ उसने पूछा।

‘एक गिग्गी?’

‘तुम्हें नहीं पता कि गिग्गी क्या होता है?’ निराशा स्पष्ट रूप से झलक रही थी।

‘नहीं। क्या बात है?’ मान ने पूछा।

रशीद के पिता ने व्याकुल होकर कहा, 'मुझे भी नहीं पता।'

मान ने हैरानी से उसकी ओर देखा।

‘तुम यह क्यों जानना चाहते हो?’ उसने उससे पूछा।

‘ओह,’ रशीद के पिता ने कहा। ‘मुझे एक की तुरंत जरूरत है।’

'अगर आपको पता ही नहीं है कि यह क्या है, तो आपको कैसे पता चलेगा कि आपको इसकी जरूरत है?' मान ने कहा।

‘ये मेरे लिए नहीं, बल्कि मेहर के लिए है,’ रशीद के पिता ने कहा। ‘वो

सुबह उठी और बोली, “दादा, मुझे एक गिग्गी चाहिए। मुझे एक गिग्गी दे दो।” और अब वो इसके लिए रो रही है, और मैं उससे ये पता नहीं लगा पा रहा हूँ कि ये क्या है या कैसी दिखती है। मुझे तब तक इंतज़ार करना पड़ेगा—मतलब, जब तक रशीद वापस नहीं आ जाता। शायद उसे पता हो। आपको फिर से परेशान करने के लिए माफ़ करना।’

‘नहीं, बिलकुल नहीं,’ मान ने कहा, जिसे इस रुकावट से कोई आपत्ति नहीं थी। कुछ देर तक वह अपने काम पर वापस नहीं लौट सका। वह यह तय करने की कोशिश कर रहा था कि गिग्गी को खाया जाए, उसके साथ खेला जाए या उस पर सवारी की जाए। आखिरकार उसने फिर से अपनी कलम उठा ली।

मस्जिद से लौटे बाबा ने उन्हें खुले आंगन में अकेले बैठे देखकर एक मिनट बाद उनके पास जाकर अभिवादन किया, फिर खांसकर जमीन पर थूका।

‘तुम्हारे जैसे नौजवान को किताब पर अपनी आंखें बर्बाद करने का क्या फायदा?’

मैं उर्दू पढ़ना और लिखना सीख रहा हूँ।

‘हां, हां। मुझे याद है: देखा, चमक... देखा, चमक... क्यों परेशान होना?’ बाबा ने कहा और फिर से अपना गला साफ किया।

'परेशान क्यों होना?'

'जी हां—बताइए उर्दू में कुछ पापपूर्ण कविताओं के अलावा और क्या है?'

'अब जब मैंने इसे शुरू कर दिया है, तो मुझे इसे पूरा करना चाहिए,' मान ने कहा।

यह कहना सही था। बाबा ने इस भावना का समर्थन किया और फिर कहा: 'अब अरबी, तुम्हें अरबी सीखनी चाहिए। यही वह भाषा है जिसे सीखना चाहिए। फिर तुम पवित्र ग्रंथ पढ़ सकते हो। शायद तुम काफ़िर होना छोड़ दोगे।'

‘क्या आपको ऐसा लगता है?’ मान ने खुशी से कहा।
‘ओह, बिलकुल,’ बाबा ने कहा। उन्होंने आगे कहा: ‘क्या तुम्हें मेरी कही बात बुरी नहीं लगी?’
मान मुस्कुराया।
बाबा ने याद करते हुए आगे कहा, “मेरा एक सबसे अच्छा दोस्त ठाकुर है जो कुछ गाँव दूर रहता है। 1947 की गर्मियों में, विभाजन के समय के आसपास, सलीमपुर जाने वाली सड़क पर एक भीड़ जमा हो गई थी ताकि हम मुसलमानों की वजह से इस गाँव पर हमला कर सके। और सगल पर भी। मैंने अपने दोस्त को तुरंत संदेश भेजा, और वह और उसके आदमी लाठियों और बंदूकों के साथ निकले और भीड़ से कहा कि उन्हें पहले इनसे निपटना होगा। और यह अच्छा ही हुआ। नहीं तो, मैं लड़ते हुए मर जाता, लेकिन मरना ठीक ही होता।”
मान को अचानक यह एहसास हुआ कि वह सबका सर्वमान्य विश्वासपात्र बन गया है।
‘रशीद ने कहा था कि तुम तहसील के आतंक थे,’ उसने बाबा से कहा।
बाबा ने ज़ोरदार सहमति में सिर हिलाया। उन्होंने दृढ़ता से कहा: 'मैं लोगों के प्रति सख्त था। मैंने उसे'—उन्होंने छत की ओर इशारा करते हुए —'सात साल की उम्र में घर से बाहर निकाल दिया था, नग्न अवस्था में खेतों में, क्योंकि वह पढ़ाई नहीं करता था।'
मान ने कल्पना करने की कोशिश की कि रशीद के पिता बचपन में कैसे रहे होंगे, जिनके हाथ में पान की थैली की जगह किताब रही होगी। लेकिन बाबा बोलते रहे:
‘अंग्रेजों के समय में ईमानदारी थी। सरकार दृढ़ थी। दृढ़ हुए बिना शासन कैसे किया जा सकता है? अब, जब पुलिस किसी अपराधी को पकड़ती है, तो मंत्री, सांसद और विधायक कहते हैं, “वह मेरा दोस्त है: उसे रिहा

कर दो!" और वे ऐसा कर देते हैं।'

'यह तो बहुत बुरा हुआ,' मान ने कहा।

बाबा ने कहा, 'पुलिस पहले छोटी-मोटी रिश्वत लेती थी, अब बड़ी-बड़ी रिश्वतें लेती है। और वो दिन भी आएगा जब वो बहुत बड़ी रिश्वतें लेने लगेगी। कानून का कोई सम्मान नहीं है। पूरी दुनिया बर्बाद हो रही है। ये लोग देश बेच रहे हैं। और अब वो उस ज़मीन को छीनने की कोशिश कर रहे हैं जिसे हमारे पूर्वजों ने अपने पसीने-खून से कमाया था। खैर, कोई मेरी एक बीघा ज़मीन भी नहीं छीन सकता, मैं आपको यकीन दिलाता हूँ।'

'लेकिन अगर यह कानून है तो—' मान ने अपने पिता के बारे में सोचते हुए कहा।

बाबा ने कहा, "अब तुम एक सलीकेदार नौजवान हो। तुम शराब नहीं पीते, सिगरेट नहीं पीते, कानून का पालन करते हो और हमारे रीति-रिवाजों का सम्मान करते हो। लेकिन मुझे बताओ, अगर कोई कानून बना दे कि तुम्हें मक्का की बजाय कलकत्ता की पूजा करनी चाहिए, तो क्या तुम उसका पालन करोगे?"

मान ने दोनों ही स्थितियों के बारे में सोचकर मुस्कुराने से बचने की कोशिश करते हुए अपना सिर हिलाया।

बाबा ने कहा, 'बात तो वही है। रशीद ने मुझे बताया है कि तुम्हारे पिता नवाब साहब के बहुत अच्छे दोस्त हैं, जिनका इस जिले में बहुत सम्मान है। नवाब साहब इस ज़मीन पर कब्ज़ा करने की कोशिश के बारे में क्या सोचते हैं?'

'उसे यह पसंद नहीं है,' मान ने कहा। अब तक वह स्पष्ट बात को यथासंभव सरल शब्दों में कहना सीख चुका था।

और न ही आप ऐसा करेंगे। मैं आपको बता सकता हूँ कि हालात और भी

बदतर होते जाएँगे। अभी तो सब कुछ बिखरने लगा है। इस गाँव में एक गरीब परिवार है जिसने अपने माता-पिता को भूखा मरने के लिए घर से निकाल दिया है। वे ठीक-ठाक खाते हैं, फिर भी उन्होंने उन्हें घर से निकाल दिया है। आज़ादी मिल गई है—और अब नेता ज़मींदारों को खत्म करना चाहते हैं—और देश बर्बाद हो गया है। पुराने ज़माने में अगर किसी ने ऐसा किया होता—अपनी माँ को भिखारी बनाने की हिम्मत की होती —उस माँ को जिसने उसे खाना खिलाया, साफ-सफाई की, कपड़े पहनाए—तो हम उसे तब तक पीटते जब तक उसकी हड्डियाँ और दिमाग ठीक न हो जाते। यह हमारी ज़िम्मेदारी थी। अब अगर हम किसी को पीटते हैं तो वे तुरंत मुकदमा कर देते हैं, वे हमें पुलिस स्टेशन में बंद करने की कोशिश करते हैं।

‘क्या तुम उनसे बात नहीं कर सकते, उन्हें मना नहीं सकते?’ मान ने पूछा।

बाबा ने अधीरता से कंधे उचकाए। 'बेशक—लेकिन बुरे चरित्रों में सुधार स्पष्टीकरण से कम और लाठी से ज़्यादा होता है।'

'आप बहुत ही सख्त अनुशासक रहे होंगे,' मान ने कहा, उन गुणों को देखकर वह काफी खुश था जिन्हें वह अपने पिता में बर्दाश्त नहीं कर पाता।

‘हाँ,’ रशीद के दादाजी ने सहमति जताते हुए कहा। ‘अनुशासन ही सफलता की कुंजी है। आपको हर काम में मेहनत करनी होगी। उदाहरण के लिए, आपको पढ़ाई करनी चाहिए, न कि मुझ जैसे बूढ़े आदमी से बात करके अपना समय बर्बाद करना चाहिए। . . . मुझे बताइए, क्या आपके पिता चाहते थे कि आप यहाँ आएँ?’

'हाँ।'

'क्यों?'

‘खैर, उर्दू सीखने के लिए—और मुझे लगता है कि गांवों का कुछ अनुभव प्राप्त करने के लिए,’ मान ने तात्कालिक रूप से कहा।
अच्छा... अच्छा। ठीक है, उन्हें बता दीजिए कि यह एक अच्छा निर्वाचन क्षेत्र है। हमारे समुदाय में उनकी अच्छी प्रतिष्ठा है... उर्दू का अध्ययन करना? हाँ, हमें इसकी रक्षा करनी चाहिए... यह हमारी विरासत है... आप जानते हैं, आप खुद एक अच्छे राजनेता बन सकते हैं। आपने फुटबॉल को गोलपोस्ट के पार बहुत आसानी से किक किया। बेशक, अगर आप इस जगह से राजनीति में आते हैं, तो नेताजी शायद आपकी हत्या कर देंगे... ओह, ठीक है... ठीक है, लगे रहिए, लगे रहिए...
और वह उठा और अपने घर की ओर चलने लगा।
मान के मन में एक विचार आया।
‘क्या आपको पता है कि गिग्गी क्या होता है, बाबा?’ उसने पूछा।
बाबा रुक गए। 'एक गिग्गी?'
'हाँ।'
‘नहीं। मैंने ऐसी कोई बात कभी नहीं सुनी। क्या आपको यकीन है कि आप इसे सही पढ़ रहे हैं?’ वह वापस गया और मान की अभ्यास पुस्तिका उठाई। ‘मेरे पास चश्मा नहीं है।’
‘ओह, ये तो मेहर है जो गिग्गी मांग रही है,’ मान ने कहा।
‘लेकिन यह क्या है?’ बाबा ने पूछा।
‘यही तो समस्या है,’ मान ने कहा। ‘वह उठी और अपने दादाजी से गिग्गी माँगने लगी। यह ज़रूर सपने का हिस्सा रहा होगा। घर में किसी को नहीं पता कि इसका क्या मतलब है।’
‘हम्म,’ बाबा ने संकट पर विचार करते हुए कहा। ‘शायद मुझे जाकर मदद करनी चाहिए।’ उन्होंने अपना रुख बदला और अपने बेटे के घर की ओर चल दिए। ‘मैं ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति हूँ जो उसे सही मायने में समझता

है।'

10.21

मान से मिलने अगला व्यक्ति नेताजी थे। अब काफी अंधेरा हो चुका था। नेताजी, जो कुछ दिनों से किसी रहस्यमय काम से बाहर गए हुए थे, मान से कई बातें पूछना चाहते थे: एसडीओ, बैतर स्थित नवाब साहब की जागीर, भेड़ियों का शिकार और प्रेम। लेकिन उन्होंने देखा कि मान उर्दू में काफी मग्न था, इसलिए उन्होंने प्रेम विषय पर ही बात करने का फैसला किया। आखिर उन्होंने ही मान को मीर की ग़ज़लें उधार दी थीं।

'क्या यहां बैठना ठीक है?' उसने पूछा।

'ठीक है,' मान ने कहा। उसने ऊपर देखा। 'कैसा चल रहा है?'

'अच्छा, ठीक है,' नेताजी ने कहा। रेलवे स्टेशन पर हुए अपमान के लिए उन्होंने मान को लगभग पूरी तरह से माफ कर दिया था, क्योंकि उसके बाद कई बड़े अपमान और सफलताएँ घटित हो चुकी थीं, और कुल मिलाकर विश्व विजय की अपनी योजनाओं में वह प्रगति कर रहे थे।

नेताजी ने कहा, 'क्या आपको मेरे एक प्रश्न पूछने में कोई आपत्ति नहीं होगी?'

'नहीं,' मान ने कहा, 'उस एक सवाल को छोड़कर कोई भी सवाल चलेगा।'

नेताजी मुस्कुराए और आगे बोले, 'बताइए, क्या आपने कभी प्यार किया है?'

मान ने सवाल से बचने के लिए नाराज़गी का नाटक किया। उसने पूछा, 'यह किस तरह का सवाल है?'

नेताजी ने माफी मांगते हुए कहा, 'देखिए—मैंने सोचा था कि ब्रह्मपुर में—एक आधुनिक परिवार में—जीवन कैसा होगा।'

'तो यही है हमारे बारे में आपकी राय—' मान ने कहा।

नेताजी तुरंत पीछे हट गए: 'नहीं, नहीं, मुझे नहीं पता—और वैसे भी, मुझे इस बात से क्या फर्क पड़ता है कि आपका जवाब क्या है? मैंने तो सिर्फ जिज्ञासावश पूछा था।'

'अच्छा, अगर आपने ऐसा सवाल पूछा है,' मान ने कहा, 'तो आपको खुद ही इसका जवाब देने के लिए तैयार रहना चाहिए। क्या आपने कभी प्यार किया है?'

नेताजी जवाब देने में बिल्कुल भी हिचकिचा नहीं रहे थे। उन्होंने हाल ही में इस विषय पर काफी विचार किया था। उन्होंने मान से कहा, "देखो, हमारी सभी शादियाँ तयशुदा होती हैं। हमेशा से ऐसा ही होता आया है। अगर मेरी मर्ज़ी चलती, तो मैं अलग तरह से करता। लेकिन जो हो गया सो हो गया। मुझे यकीन है कि अगर ऐसा न होता तो भी मुझे प्यार हो जाता। लेकिन अब तो यह मुझे और भी उलझन में डाल देगा। तुम्हारा क्या ख्याल है?"

'देखो, रशीद आ रहा है,' मान ने कहा। 'क्या हमें उसे अपनी चर्चा में शामिल होने के लिए कहना चाहिए?'

नेताजी ने हड़बड़ी में विदा ली। उन्हें रशीद के चाचा होने के नाते अपनी नाममात्र की श्रेष्ठता बनाए रखनी थी। जैसे ही रशीद उनके पास पहुँचा, उन्होंने उसे एक विचित्र नज़र से देखा और गायब हो गए।

'वह कौन था?' रशीद ने कहा।

'नेताजी। वह मुझसे प्रेम के बारे में बात करना चाहते थे।'

रशीद ने अधीरता भरी आवाज निकाली।

'तुम कहाँ थे?' मान ने रशीद से पूछा।

'बनिया की दुकान पर, कुछ लोगों से बात कर रहा था—सगल काल में हुए उस प्राचीन नुकसान को कुछ हद तक ठीक करने की कोशिश कर रहा था।'

‘इसमें क्या सुधार की गुंजाइश है?’ मान ने कहा। ‘तुम बहुत जोशीले थे। मैं तुम्हारी बहुत प्रशंसा करता था। लेकिन लगता है कि किसी कारणवश तुम्हारे पिता तुमसे बहुत नाराज़ हैं।’

‘बहुत कुछ सुधारना बाकी है,’ रशीद ने कहा। ‘उस घटना का नया संस्करण यह है कि मेरी अच्छे बुजुर्गों से हाथापाई हुई और मैंने दावा किया कि सगल मस्जिद का इमाम शैतान का अवतार है। मेरा मदरसे की ज़मीन पर एक कम्यून स्थापित करने का भी प्लान है—एक बार जब मैं तुम्हें मना लूँ कि तुम अपने पिता को किसी तरह ज़मीन का ज़िम्मा लेने के लिए मना लो। लेकिन लोग—कम से कम देबरिया में—कहानी के इस हिस्से पर शक करते हैं।’ रशीद थोड़ी देर हँसा। ‘तुमने गाँव में काफी अच्छी छाप छोड़ी है। हर कोई तुम्हें पसंद करता है; यह मुझे आश्चर्यचकित करता है।’

'लगता है तुम मुसीबत में पड़ गए हो,' मान ने कहा।

'शायद। शायद नहीं। अज्ञानता से भला कैसे बहस की जा सकती है? लोग कुछ नहीं जानते और कुछ जानना भी नहीं चाहते।'

मान ने कहा, 'मुझे बताओ, क्या तुम जानते हो कि गिग्गी क्या होती है?'

‘नहीं,’ रशीद ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

'तो फिर तुम जितनी कल्पना कर रहे हो उससे कहीं ज्यादा बड़ी मुसीबत में फंस जाओगे,' मान ने कहा।

‘मैं?’ रशीद ने पूछा, और एक पल के लिए वह सचमुच चिंतित लग रहा था।

‘वैसे, आपकी एक्सरसाइज कैसी चल रही हैं?’

'बहुत बढ़िया,' मान ने कहा। 'जब से तुम गए हो, मैं उन पर काम कर रहा हूँ।'

रशीद के घर के अंदर जाते ही डाकिया घर लौटते समय वहाँ आया और

मान को एक पत्र थमा दिया।

उसने मान से कुछ शब्द कहे; मान ने बिना समझे ही जवाब दिया कि उसने क्या कहा। वह स्तब्ध था।

हल्का पीला लिफाफा चांदनी की तरह शीतल और कोमल प्रतीत हो रहा था। उर्दू लिपि सहज और कुछ हद तक बेपरवाह थी। डाक टिकट पर 'पसंद बाग डाकघर, ब्रह्मपुर' लिखा था। आखिरकार उसने उसे पत्र लिखा ही था।

लालटेन की रोशनी में लिफाफा पकड़े हुए उसकी इच्छा ने उसे कमजोर कर दिया था। उसे उसके पास तुरंत वापस जाना था—चाहे उसके पिता —या कोई और—कुछ भी कहे। उसका निर्वासन आधिकारिक रूप से समाप्त हो गया था या नहीं, इससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था।

जब मान फिर से अकेला हुआ, तो उसने लिफाफा खोला। उसकी जानी-पहचानी इत्र की हल्की खुशबू रात की हवा में घुल गई। उसने तुरंत समझ लिया कि इस पत्र को पढ़ना—जिसकी लिखावट लगभग अस्पष्ट थी, जिसमें जगह-जगह विराम चिह्न लगे थे, और जिसमें शब्दों को संक्षिप्त किया गया था—उर्दू में उसकी शुरुआती जानकारी से कहीं परे होगा। उसने दाग साहब को लिखे अभिवादन को समझने की कोशिश की, पत्र के बाहरी रूप से यह भी समझ लिया कि उसमें काव्यात्मक दोहे लगे हैं, लेकिन फिलहाल वह इससे आगे नहीं बढ़ सका।

मान ने झुंझलाहट से सोचते हुए कहा, अगर इस गाँव में अकेलापन नहीं था, तो निजता भी नहीं थी। अगर रशीद के पिता या दादाजी यहाँ से गुज़रते और उसका पत्र खुला पड़ा होता, तो वे उसे बड़ी सहजता से उठा लेते और पढ़ लेते। और फिर भी उसका कुछ अंश भी समझने के लिए, उसे खुद घंटों तक उसे देखना पड़ता और एक-एक अक्षर को जोड़कर समझने की कोशिश करनी पड़ती।

मान घंटों तक उसे पढ़ने में समय बर्बाद नहीं करना चाहता था। वह तुरंत जानना चाहता था कि सईदा बाई ने उसे क्या लिखा है। लेकिन वह किससे मदद मांगे? रशीद से? नहीं। नेताजी से? नहीं। उसका दुभाषिया कौन बनेगा?

उसने क्या लिखा था? उसकी कल्पना में, उसकी चमकीली अंगूठियों वाला दाहिना हाथ पीले पन्ने पर दाएं से बाएं चल रहा था। ऐसा करते हुए, उसे हारमोनियम पर एक अवरोही सुर सुनाई दिया। वह चौंक गया और उसे एहसास हुआ कि उसने उसे कभी कुछ लिखते हुए नहीं देखा था। उसके हाथों का उसके चेहरे पर स्पर्श—कीबोर्ड पर उसके हाथों का स्पर्श—इनमें बहुत कम सचेत व्याख्या की आवश्यकता होती थी। लेकिन यहाँ उसके हाथ पन्ने पर गति और सुंदरता के एक पैटर्न में चल रहे थे, और उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि इसमें प्रेम या उदासीनता, गंभीरता या चंचलता, आनंद या क्रोध, इच्छा या शांति का क्या भाव है।

10.22

रशीद वास्तव में अपनी कल्पना से कहीं अधिक बड़ी मुसीबत में था, लेकिन उसे इस बात का पता अगली शाम को चला।

लगभग पूरी रात नींद न आने के बाद, जब मान ने उस सुबह सईदा बाई के पत्र के लिए रशीद से मदद मांगी, तो रशीद ने कुछ पल के लिए लिफाफे को ध्यान से देखा, असहज महसूस किया (शायद अनुरोध पर शर्मिंदगी के कारण, मान ने सोचा), और, उसे बहुत आश्चर्य हुआ, जब वह सहमत हो गया।

उन्होंने सुझाव दिया था, 'रात के खाने के बाद।'

हालांकि रात के खाने में अभी कई महीने बाकी लग रहे थे, फिर भी मान ने कृतज्ञतापूर्वक सिर हिलाया।

लेकिन शाम की नमाज़ के तुरंत बाद संकट शुरू हो गया। रशीद को छत

पर इकट्ठा हुए पाँच लोगों से मिलने के लिए बुलाया गया: उसके दादा; उसके पिता; नेताजी; उसकी माँ का भाई जो उस दोपहर अपने दोस्त गुप्पी के बिना आया था; और मस्जिद का इमाम।

वे सभी छत के बीचोंबीच बिछे एक बड़े कालीन पर बैठे थे। रशीद ने अपने आदाब पढ़े।

'बैठ जाओ, रशीद,' उसके पिता ने कहा। अभिवादन का जवाब देने के अलावा किसी और ने कुछ नहीं कहा।

केवल भालू ही सचमुच मेहमाननवाज लग रहा था, हालाँकि वह बेहद असहज दिख रहा था। थोड़ी देर बाद उसने रशीद को लाल रंग के तरल से भरा गिलास देते हुए कहा, 'एक गिलास यह शरबत पी लो, रशीद।' उसने आगे बताया, 'यह रोडोडेंड्रोन से बना है। बहुत बढ़िया है। जब मैं पिछले महीने पहाड़ियों पर गया था...' और फिर वह चुप हो गया।

'यह सब क्या है?' रशीद ने पहले असहज भालू को देखा, फिर इमाम की ओर। देबरिया मस्जिद के इमाम एक भले आदमी थे, गाँव के दूसरे बड़े ज़मींदार परिवार के वरिष्ठ सदस्य। वे आम तौर पर रशीद का गर्मजोशी से स्वागत करते थे, लेकिन पिछले कुछ दिनों से रशीद ने उनमें एक दूरी महसूस की थी। शायद सगल की घटना ने उन्हें भी परेशान कर दिया था — या शायद फैल रही अफवाहों ने एक इमाम को दूसरे से भ्रमित कर दिया था। खैर, चाहे उनकी अपनी धार्मिक या सामाजिक गलतियाँ कुछ भी हों, एक अभियोग समिति जैसी दिखने वाली सभा के सामने अभद्रता के आरोपों का जवाब देना अपमानजनक था। और भालू को इतनी दूर से यहाँ क्यों बुलाया गया था? रशीद ने अपना शरबत पिया और दूसरों की ओर देखा। उसके पिता नाराज़ लग रहे थे, दादाजी गंभीर। नेताजी समझदार दिखने की कोशिश कर रहे थे; लेकिन वे संतुष्ट दिखने में सफल रहे।

यह रशीद के पिता थे जिन्होंने अपनी कर्कश आवाज में बात की।
'अब्दुर रशीद, मेरे बेटे और इस परिवार के सदस्य होने के नाते तुमने अपनी इस स्थिति का दुरुपयोग करने की हिम्मत कैसे की? पटवारी दो दिन पहले तुम्हें ढूंढते हुए यहां आया था। जब वह तुम्हें नहीं ढूंढ पाया, तो उसने मुझसे बात की, भगवान का शुक्र है।'
रशीद का चेहरा पीला पड़ गया।
वह एक शब्द भी नहीं बोल सका। जो कुछ हुआ था, वह बिल्कुल स्पष्ट था। उस दुष्ट पटवारी को, जो भली-भांति जानता था कि रशीद उससे मिलने आने वाला था, उसके परिवार से सीधे बात करने का बहाना ढूंढने का मन बना लिया था। अपने निर्देशों को लेकर संशय और चिंता में डूबा हुआ, और यह जानते हुए कि उसकी रोटी पर घी कहां से आया है, उसने रशीद से सीधे बात करने के बजाय उससे मिलने का फैसला किया था। निस्संदेह वह दोपहर की नमाज़ के समय आया था, जब उसे लगभग यकीन था कि रशीद मस्जिद में होगा, और यह पूरी तरह से निश्चित था कि उसके पिता वहां नहीं होंगे।
रशीद ने अपना गिलास कसकर पकड़ लिया। उसके होंठ सूखे लग रहे थे। उसने शरबत का एक घूंट पिया। इस हरकत से उसके पिता और भी क्रोधित हो गए। उन्होंने अपनी उंगली रशीद के सिर की ओर उठाई।
'बेशर्मी मत बरतो। मुझे जवाब दो। तुम्हारे बाल उस खाद से भी ज्यादा समझदार दिखते हैं जिस पर वे उग रहे हैं, लेकिन—और यह बात अच्छी तरह याद रखना, रशीद—तुम अब बच्चे नहीं हो और बच्चों जैसा लाड़-प्यार पाने की उम्मीद नहीं कर सकते।'
बाबा ने आगे कहा, "रशीद, यह ज़मीन तुम्हारी देने या लेने की नहीं है। पटवारी को तुम्हारे शर्मनाक निर्देशों को रद्द करने के लिए कहा गया है। तुम ऐसा कैसे कर सकते हो? मैंने बचपन से ही तुम पर भरोसा किया है।

तुम कभी आज्ञाकारी नहीं थे, लेकिन तुमने कभी छल-कपट भी नहीं किया।"

रशीद के पिता ने कहा: "अगर तुम आगे कोई गड़बड़ी करने की सोच रहे हो, तो जान लो कि तुम्हारा नाम अब उन जमीनों से नहीं जुड़ा है। और पटवारी जो लिखता है, उसे सुप्रीम कोर्ट के लिए पलटना मुश्किल होता है। तुम्हारी कम्युनिस्ट योजनाएँ यहाँ कामयाब नहीं होंगी। हम ब्रह्मपुर के प्रतिभाशाली छात्रों की तरह सिद्धांतों और विचारों से इतनी आसानी से प्रभावित नहीं होते।"

रशीद की आँखों में क्रोध और प्रतिरोध की झलक दिखाई दी। उसने कहा, 'आप मुझे इस तरह बेदखल नहीं कर सकते। हमारे समुदाय का कानून स्पष्ट है—' उसने इमाम की ओर मुड़कर पुष्टि की।

'मुझे लगता है तुमने धार्मिक अध्ययन के अपने वर्षों का भी अच्छा उपयोग किया है,' उसके पिता ने तीखे स्वर में कहा। 'अच्छा, अब्दुर रशीद, चूंकि तुम उत्तराधिकार के कानून का जिक्र कर रहे हो, तो मैं तुम्हें सलाह दूंगा कि तुम उस शुभ क्षण का इंतजार करो जब मेरे पिता और मैं दोनों झील के किनारे शांति से विश्राम कर रहे हों, उसके बाद ही इसका लाभ उठाओ।'

इमाम बेहद स्तब्ध दिखे और उन्होंने हस्तक्षेप करने का फैसला किया। उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा, 'रशीद, तुम्हें अपने परिवार की पीठ पीछे ऐसा करने की प्रेरणा कहाँ से मिली? तुम जानते हो कि गाँव में सुव्यवस्था तभी बनी रहती है जब गाँव के सभ्य परिवार सही ढंग से व्यवहार करें।'

बिल्कुल सही! रशीद ने सोचा—यह कैसा मज़ाक है, कैसा पाखंडी मज़ाक है। बेशक, अपने स्वार्थ की रक्षा के लिए वर्षों से खेती कर रहे मज़दूरों को उनकी ज़मीनों से बेदखल करना उचित था। यह बात अब और भी स्पष्ट हो रही थी कि इमाम केवल आध्यात्मिक सलाहकार के रूप में ही उपस्थित

नहीं थे।

और भालू? उसका इन सबमें क्या हाथ था? रशीद ने अपनी निगाहें उसकी ओर घुमाईं, मानो बिना कुछ कहे उससे मदद की गुहार लगा रहा हो। यकीनन भालू उसकी मंशा को समझेगा और उससे सहानुभूति रखेगा। लेकिन भालू उसकी निगाहों में नहीं टिक सका।

रशीद के पिता ने उसके मन की बात समझ ली। अपने दांत दिखाते हुए उन्होंने कहा: 'अपने मामा से प्रोत्साहन की उम्मीद मत करो। अब तुम उनके पास पनाह लेने नहीं जा सकते। हमने इस मामले पर परिवार के साथ मिलकर अच्छी तरह चर्चा की है, अब्दुर रशीद। इसीलिए वह यहाँ है। और उसे इसमें शामिल होने का पूरा अधिकार है, और तुम्हारे व्यवहार से आहत होने का भी। हमारी कुछ ज़मीन उसकी बहन के दहेज से खरीदी गई थी। क्या तुम्हें लगता है कि हम इतनी आसानी से वह सब कुछ छोड़ देंगे जिसे हमने पीढ़ियों से विकसित करने, खेती करने और विस्तार करने के लिए मेहनत की है? क्या तुम्हें लगता है कि इस मौसम में देर से हुई बारिश से हमें पहले ही काफ़ी परेशानी नहीं है, तो हम अपने सिर पर टिड्डियों का प्रकोप भी क्यों न चाहें? अगर तुम एक चमार को ज़मीन का एक टुकड़ा भी दे दोगे—'

नीचे बच्चा रोने लगा। रशीद के पिता उठे, आंगन में झुककर दीवार के ऊपर से आवाज़ लगाई:

'मेहर की माँ! क्या तुम रशीद के उस बच्चे को इतना शोर मचाने से नहीं रोक सकतीं? क्या पुरुष बिना किसी बाधा के आपस में बात भी नहीं कर सकते?'

उन्होंने पीछे मुड़कर कहा: 'यह याद रखना, रशीद: हमारा धैर्य अनंत नहीं है।'

रशीद अचानक क्रोधित हो उठा और बिना सोचे-समझे अपने शब्दों पर

अड़े रहते हुए बोला, 'और क्या आपको लगता है कि मेरा कुछ भी है? जब से मैं इस गाँव में आया हूँ, मुझे ताने और ईर्ष्या के सिवा कुछ नहीं मिला। वह निर्धन बूढ़ा आदमी, जो पुराने दिनों में आपके प्रति दयालु था, अब्बा, और जिसे अब आप अनदेखा करते हैं—'

उसके पिता ने कड़े स्वर में कहा, 'विषय से भटकने की कोशिश मत करो। अपनी आवाज़ धीमी रखो।'

'मैं भटक नहीं रहा हूँ—यह उसके दुष्ट और लालची भाई हैं जिन्होंने मुझे अपनी मस्जिद में घेर लिया और अब ये घिनौनी अफवाहें फैला रहे हैं—'

'आप खुद को एक बहुत ही वीर व्यक्ति के रूप में देखते हैं—'

'अगर न्याय होता, तो उन्हें जंजीरों में बांधकर अदालत में घसीटा जाता और उनके अपराधों का प्रायश्चित कराया जाता।'

'अब, आप अदालतों को इसमें घसीटना चाहते हैं, अब्दुर रशीद—'

'हां, मैं करता हूं, अगर कोई और रास्ता न हो। और अंततः अदालतें ही आपको वह सब कुछ वापस दिलवाएंगी जो पीढ़ियों से आपके पास है—'

'बस करो!' बाबा की आवाज कोड़े की तरह भड़क उठी।

लेकिन रशीद ने उसकी बात मुश्किल से ही सुनी।

'अदाब-अदाबियाँ—' वह चिल्लाया, 'आप अदालतों की शिकायत कर रहे हैं? आप इसे क्या समझते हैं? यह पंचायत, यह पाँच सदस्यों की जांच समिति जहाँ आपको लगता है कि आप मुझे खुलकर अपमानित कर सकते हैं—'

'बस करो!' बाबा ने कहा। उन्हें रशीद पर दूसरी बार कभी भी अपनी आवाज ऊंची करने की जरूरत नहीं पड़ी थी।

रशीद चुप रहा और उसने अपना सिर झुका लिया।

नेताजी ने कहा: 'रशीद, तुम्हें हमें अदालत नहीं समझना चाहिए। हम तुम्हारे वरिष्ठ हैं, तुम्हारे शुभचिंतक हैं, जो अजनबियों की अनुपस्थिति में

तुम्हें सलाह देने के लिए एकत्रित हुए हैं।'
रशीद ने खुद पर कड़ा नियंत्रण रखा और कुछ नहीं बोला। नीचे से बच्चा फिर रोने लगा।
रशीद अपने पिता के उठने से पहले ही उठ गया और आंगन की ओर पुकारा: 'पत्नी! पत्नी! ध्यान रखना कि बच्चा आराम से रहे।'
'क्या तुमने इस मामले में उनके बारे में सोचा है?' उसके पिता ने आंगन की ओर सिर हिलाते हुए पूछा।
रशीद ने हैरानी से घूरना शुरू कर दिया।
'क्या तुमने कछेरू के बारे में सोचा है?' बाबा ने गंभीर स्वर में पूछा।
'कछेरू—?' रशीद ने कहा। 'उन्हें इसके बारे में कुछ नहीं पता, बाबा। उन्हें इसके बारे में बिल्कुल भी कुछ नहीं पता। उन्होंने मुझसे कुछ करने को नहीं कहा।' उसने अपने हाथों से अपना सिर ढक लिया। एक बार फिर उसके कनपटी पर असहनीय दबाव महसूस होने लगा था।
बाबा ने आह भरी, फिर रशीद के सिर के ऊपर गाँव की ओर देखते हुए कहा: "खैर, यह मामला तो सामने आना ही है। यही समस्या है। हम यहाँ पाँच हैं। छह। हम सब भले ही वादा कर लें कि एक शब्द भी नहीं बोलेंगे, लेकिन बात किसी न किसी तरह फैल ही जाएगी। बेशक, हमें अपने मेहमान, आपके दोस्त से पता चला है कि आपने उसे इस सब में शामिल नहीं किया है, जो अच्छी बात है—"
'मान?' रशीद ने अविश्वास से कहा। 'तुम मान से बात कर रहे थे?'
"लेकिन पटवारी भी तो है, जो अपनी सुविधा के अनुसार कुछ भी छुपा या प्रकट कर सकता है। वह बड़ा धूर्त है।" बाबा ने अपने अगले शब्दों पर विचार करने के लिए कुछ देर रुककर कहा, "यह बात फैल जाएगी, और बहुत से लोग मान लेंगे कि कछेरू ने तुम्हें यह सब करने के लिए उकसाया है। हमें एक उदाहरण पेश करना होगा। मुझे डर है कि तुमने उसके लिए

चीजें आसान नहीं बनाई हैं।”
‘बाबा—’ रशीद ने विरोध जताया।
लेकिन उसके पिता ने बीच में ही टोकते हुए गुस्से से भरी आवाज में कहा, 'तुम्हें यह सब पहले सोचना चाहिए था। ज़्यादा से ज़्यादा उसका क्या होता? हम उसे बारी-बारी से अलग-अलग खेतों में काम पर लगा देते। उसे हमारे परिवार का सहारा मिलता, वह हमारे मवेशियों और औजारों का इस्तेमाल कर पाता—तुम ही हो, तुमने ही मेरे बूढ़े चमार को नुकसान पहुंचाया है।'
रशीद ने अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया। भालू ने कहा:
‘खैर, अभी तक तो कुछ भी अंतिम रूप से तय नहीं हुआ है।’
कुछ देर रुकने के बाद बाबा ने सहमति जताते हुए कहा, 'नहीं।' रशीद गहरी साँसें ले रहा था, उसकी छाती ऊपर-नीचे हो रही थी।
रशीद के पिता ने कहा: ‘दूसरों के व्यवहार की आलोचना करने के बजाय, मुझे आशा है कि इस अनुभव से तुम अपने व्यवहार पर विचार करोगे। तुमने अभी तक न तो माफी मांगी है, न ही अपनी गलती मानी है। यकीन मानो, अगर तुम्हारे मामा और इमाम साहब न होते, तो हम तुम्हारे प्रति इतने नरम न होते। तुम जब चाहो यहाँ रह सकते हो। समय आने पर कुछ ज़मीन तुम्हारे नाम कर दी जाएगी, बशर्ते तुम उसके योग्य साबित हो जाओ। लेकिन यकीन मानो, अगर तुम इस घर पर भरोसा करना छोड़ दोगे, तो इस घर के दरवाजे तुम्हारे लिए बंद हो जाएंगे। मुझे बेटे को खोने का डर नहीं है। मैं पहले ही एक बेटा खो चुका हूँ। अब नीचे जाओ। अपनी पत्नी और बच्चे का ध्यान रखना—बच्चों का। हमें कछेरू के बारे में बात करनी है।’
रशीद ने चारों ओर मौजूद चेहरों पर नजर डाली। उसने कुछ लोगों में सहानुभूति देखी, लेकिन किसी में भी समर्थन नहीं।

वह उठा, धीमी आवाज़ में 'खुदा हाफ़िज़' कहा और सीढ़ियों से उतरकर आँगन में चला गया। कुछ देर तक उसने अनार के पेड़ को देखा, फिर अंदर चला गया। बच्चा और मेहर सो रहे थे। उसकी पत्नी बहुत चिंतित लग रही थी। उसने उसे बताया कि वह रात का खाना नहीं खाएगा। स्तब्धता में वह घर से बाहर निकल गया।

मान ने जब रशीद को बाहर आते देखा तो राहत भरी मुस्कान के साथ कहा, 'मैंने लोगों के बात करने की आवाज़ें सुनीं और सोचा कि तुम कभी नीचे नहीं आओगे।' उसने अपने कुर्ते की जेब से सईदा बाई का पत्र निकाला।

एक पल के लिए रशीद ने मान के सामने अपने सारे दुख-दर्द बाँटने, यहाँ तक कि उसकी मदद माँगने के बारे में सोचा। आखिर मान उस व्यक्ति का बेटा था जिसने न्याय दिलाने के उद्देश्य से यह कानून बनाया था। लेकिन फिर वह अचानक मुँह फेरकर चला गया।

'लेकिन यह—' मान ने लिफाफा लहराते हुए कहा।

'बाद में, बाद में,' रशीद ने नीरस स्वर में कहा और उत्तर दिशा में घर से दूर जाने लगा।

भाग ग्यारह

11.1

ठीक दस बजते ही, ब्रह्मपुर उच्च न्यायालय के न्यायालय कक्ष संख्या एक के दाहिनी ओर लगे गहरे लाल मखमली पर्दों के पीछे से, सफेद पगड़ी, लाल वर्दी और सुनहरी कढ़ाई वाले वस्त्र पहने न्यायाधीशों के पाँच सेवक प्रकट हुए। सभी लोग खड़े हो गए। सेवक अपने-अपने न्यायाधीशों की ऊँची पीठ वाली कुर्सियों के पीछे खड़े हो गए और मुख्य न्यायाधीश के

सेवक के इशारे पर—जो अपनी छाती पर क्रॉस किए हुए राजदंडों के चिन्ह के कारण अन्य सभी से कहीं अधिक भव्य दिख रहे थे—उन्होंने न्यायाधीशों के लिए जगह बनाने के लिए कुर्सियों को पीछे खींच लिया।

खचाखच भरे न्यायालय में सभी की निगाहें उन अनुरक्षकों पर टिकी थीं जो लगभग एक जुलूस की तरह बेंच की ओर बढ़ रहे थे। सामान्य मामलों में एक न्यायाधीश या दो न्यायाधीशों की बेंच की आवश्यकता होती है, और अत्यंत महत्वपूर्ण और जटिल मामलों को तीन न्यायाधीशों को सौंपा जा सकता है। लेकिन पांच न्यायाधीशों का होना किसी असाधारण मामले का संकेत था, और यहाँ वे पांचों न्यायाधीश अपने भव्य वस्त्रों में उपस्थित थे।

और अब न्यायाधीश अपने काले गाउन में प्रवेश करने लगे, जो उनके सहायकों के लिए एक निराशाजनक अंत था। उन्होंने विग नहीं पहनी थी, और उनमें से कुछ थोड़े लड़खड़ाते हुए दिखाई दिए। वे वरिष्ठता क्रम में प्रवेश कर रहे थे: सबसे पहले मुख्य न्यायाधीश, उसके बाद वे कनिष्ठ न्यायाधीश जिन्हें उन्होंने इस मामले के लिए नियुक्त किया था। मुख्य न्यायाधीश, एक छोटे कद के, दुबले-पतले व्यक्ति जिनके सिर पर लगभग बाल नहीं थे, केंद्रीय कुर्सी के सामने खड़े थे; उनके दाहिनी ओर अगले वरिष्ठतम न्यायाधीश खड़े थे, एक लंबे, झुके हुए व्यक्ति जो लगातार अपने दाहिने हाथ से कुछ न कुछ कर रहे थे; मुख्य न्यायाधीश के बाईं ओर इस पीठ के अगले वरिष्ठतम न्यायाधीश खड़े थे, एक अंग्रेज जिन्होंने आईसीएस की न्यायिक सेवा में काम किया था और स्वतंत्रता के बाद भी वहीं रहे थे; वे ब्रह्मपुर उच्च न्यायालय के नौ न्यायाधीशों में एकमात्र अंग्रेज थे। अंत में, एक तरफ दो कनिष्ठ न्यायाधीश खड़े थे।

मुख्य न्यायाधीश ने खचाखच भरे न्यायालय की ओर नहीं देखा—न ही प्रसिद्ध मुवक्किलों, प्रतिष्ठित वकीलों, शोर मचाती जनता और संशयपूर्ण

लेकिन उत्साहित पत्रकारों की ओर। उन्होंने अपने और अपने सहयोगियों के सामने रखी मेज पर नज़र डाली—कागज़ के पैड, हरे रंग के कपड़े पर सजे लेस से ढके पानी के गिलास। फिर उन्होंने सावधानी से दाएं-बाएं देखा, मानो किसी व्यस्त राजमार्ग पर यातायात की जाँच कर रहे हों, और समझदारी से मेज की ओर बढ़ने लगे। उनके ऐसा करते ही, अन्य न्यायाधीशों ने भी उनका अनुसरण किया, और सहायकों ने भारी कुर्सियों को न्यायधीश की कुर्सी के नीचे धकेल दिया।

बैतर के नवाब साहब इस भव्यता को देखकर बेहद प्रभावित हुए। उन्हें वे दो अन्य अवसर याद आए जब वे उच्च न्यायालय में उपस्थित हुए थे। एक बार वे एक मुवक्किल के रूप में गए थे, जब उनकी उपस्थिति अनिवार्य थी। मामला संपत्ति से संबंधित था और एक न्यायाधीश के समक्ष चल रहा था। दूसरा अवसर तब था जब उन्होंने अपने बेटे को वकालत करते देखने का फैसला किया था। उन्हें पता था कि एक दोपहर फिरोज को द्विभाजित पीठ के समक्ष वकालत करनी होगी। मामले की बहस शुरू होने से ठीक पहले, नवाब साहब अपने किसी भी सेवक के बिना खाली अदालत कक्ष में प्रवेश कर गए और फिरोज के ठीक पीछे बैठ गए, ताकि जब तक फिरोज पूरी तरह से न मुड़ जाए, तब तक उन्हें किसी का ध्यान न जाए। वे अपनी उपस्थिति का संकेत देकर फिरोज को घबराना नहीं चाहते थे, और वास्तव में, उस दिन फिरोज को जरा भी अंदाजा नहीं था कि उनके पिता उनके पीछे बैठे हैं। उन्होंने अच्छी तरह से बहस की और नवाब साहब संतुष्ट हो गए।

आज, ज़ाहिर है, फ़िरोज़ जानता था कि उसके पिता ठीक उसके पीछे बैठे हैं, क्योंकि ज़मींदारी उन्मूलन अधिनियम की संवैधानिक वैधता को ही अदालत में चुनौती दी जा रही थी। यदि अदालतें इसके पक्ष में फैसला सुनातीं, तो यह अधिनियम बरकरार रहता। यदि नहीं, तो यह ऐसा हो

जाता मानो यह कभी अस्तित्व में ही न रहा हो।

मुख्य याचिका के साथ लगभग दो दर्जन रिट याचिकाओं पर संयुक्त रूप से विचार किया जाना था; ये याचिकाएँ लगभग एक ही विषय पर आधारित थीं, लेकिन इनमें कुछ अंतर थे। कुछ याचिकाएँ धार्मिक संस्थाओं द्वारा, कुछ उन जमींदारों द्वारा प्रस्तुत की गई थीं जिन्हें राजकोष द्वारा सीधे भूमि प्रदान की गई थी, और कुछ पूर्व शासकों द्वारा - जैसे कि मारह के राजा - जिन्होंने यह माना था कि संविधान के संधि प्रावधानों द्वारा उन्हें संरक्षण प्राप्त होगा, भले ही छोटे-मोटे हितों को ठेस पहुँचे। फ़िरोज़ ऐसी ही दो सहायक याचिकाओं के वकीलों में से एक थे।

'माननीय न्यायाधीशगण—'

नवाब साहब का ध्यान—जो कि कोर्ट रीडर द्वारा मामले की संख्या, मुख्य और संबंधित रिट याचिकाओं की संख्या, पक्षकारों के नाम और मामले में उपस्थित वकीलों के नाम सुनाए जाने के दौरान कुछ भटक गया था—अचानक अदालत की ओर वापस लौट आया। महान जी.एन. बैनर्जी गलियारे के सबसे करीब वाली पहली पंक्ति में मेज पर खड़े थे। मेज पर रखे एक लेक्चर स्टैंड पर अपना लंबा, वृद्ध शरीर टिकाकर—जिस पर उनका संक्षिप्त विवरण और एक छोटी, लाल कपड़े की जिल्द वाली नोटबुक रखी थी—उन्होंने प्रारंभिक वाक्य दोहराया, फिर विचारपूर्वक बोलते रहे, बीच-बीच में बेंच की ओर, विशेष रूप से मुख्य न्यायाधीश की ओर देखते रहे।

माननीय न्यायाधीश महोदय, मैं इस मामले में सभी याचिकाकर्ताओं की ओर से संयुक्त रूप से उपस्थित हो रहा हूँ। यह कहना आवश्यक नहीं है कि माननीय न्यायाधीश महोदय इस मामले की गंभीरता को भलीभांति समझते होंगे। संभवतः इस राज्य के जनमानस के लिए इतना महत्वपूर्ण कोई मामला इससे पहले इस न्यायालय में न तो अशोक सिंह के प्रतीक

चिन्ह के अंतर्गत और न ही सिंह एवं एक सींग वाले प्रतीक चिन्ह के अंतर्गत लड़ा गया है। यहाँ जी.एन. बनर्जी ने अपनी बात जारी रखने से पहले पीठ के बाईं ओर थोड़ा सा देखा। माननीय न्यायाधीश महोदय, इस राज्य की कार्यपालिका द्वारा ऐसे कानून के माध्यम से इस राज्य के संपूर्ण जीवन शैली को बदलने का प्रयास किया जा रहा है जो देश के संविधान के स्पष्ट और अप्रत्यक्ष रूप से विपरीत है। वह अधिनियम जो पूर्व प्रदेश के नागरिकों के जीवन को इतने व्यापक और व्यापक तरीके से बदलने का प्रयास करता है, वह पूर्व प्रदेश जमींदारी उन्मूलन एवं भूमि सुधार अधिनियम, 1951 है, और मेरा और याचिकाकर्ताओं के अन्य अधिवक्ताओं का यह तर्क है कि यह कानून, स्पष्ट रूप से जनहितैषी होने के अलावा, असंवैधानिक है, और इसलिए शून्य एवं अमान्य है। अशक्त और शून्य।'

पूर्व प्रदेश के एडवोकेट-जनरल, छोटे कद के और थोड़े मोटे श्री शास्त्री, ने सहजता से मुस्कुराते हुए कहा। वे पहले भी जी.एन. बैनर्जी के खिलाफ पेश हो चुके थे। बैनर्जी को अपने भाषण के प्रत्येक पैराग्राफ की शुरुआत और अंत में महत्वपूर्ण वाक्यांशों को दोहराना पसंद था। अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व के बावजूद, उनकी आवाज़ थोड़ी ऊंची थी—हालांकि सुनने में अप्रिय नहीं थी; बल्कि कर्कश नहीं, बल्कि मधुर थी—और ये दोहराव ऐसे थे मानो छोटी-छोटी चमकदार कीलें दो बार ठोंकी गई हों ताकि वे ठीक से जम जाएं। यह शायद उनकी बोलने की एक आदत थी, न कि कोई ऐसी चीज़ जो वे जानबूझकर करते थे। लेकिन जी.एन. बैनर्जी आम तौर पर दोहराव के महत्व में दृढ़ विश्वास रखते थे। वे अपने प्रस्तावों को तीन-चार अलग-अलग तरीकों से कहने में विशेष मेहनत करते थे और फिर उन्हें अपनी दलीलों के अलग-अलग बिंदुओं पर दोहराते थे ताकि न्यायाधीशों की बुद्धि का अपमान किए बिना, वे यह सुनिश्चित कर सकें कि उनके

मामले के बीज जड़ पकड़ लें, भले ही उनमें से कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरें। उन्होंने अपने कनिष्ठों से कहा—जिनमें उनके चश्माधारी बेटे और पोते भी शामिल थे—'यह सब ठीक है कि हम अपने फायदे के लिए या दूसरे पक्ष के फायदे के लिए एक बार कुछ कह दें। हम हफ्तों से इस मामले में गहराई से जुड़े हुए हैं। और शास्त्री और मुझे दूसरों द्वारा अच्छी तरह से जानकारी दी गई है। लेकिन पीठ के लिए हमें वकालत के मूल नियम का पालन करना चाहिए: बार-बार दोहराना, बार-बार दोहराना और फिर से दोहराना। न्यायाधीशों के मामले के ज्ञान को बढ़ा-चढ़ाकर आंकना एक बड़ी गलती है, भले ही उन्होंने दोनों पक्षों के हलफनामे पढ़ लिए हों। और यह मान लेना भी एक गलती हो सकती है कि उन्हें कानून का कोई विस्तृत ज्ञान है। आखिरकार, संविधान को बने अभी मुश्किल से एक साल ही हुआ है—और इस मामले में कम से कम एक न्यायाधीश को शायद यह भी नहीं पता होगा कि संविधान क्या होता है।'

जी.एन. बैनर्जी (उनके लिए काफी विनम्रता से) इस मामले की सुनवाई कर रही पूर्ण पीठ के सबसे कनिष्ठ न्यायाधीश, न्यायमूर्ति माहेश्वरी का जिक्र कर रहे थे, जो जिला न्यायपालिका से ऊपर आए थे और संयोगवश, संवैधानिक अनुभव की कमी को पूरा करने के लिए उनमें बुद्धिमत्ता की कमी थी। जी.एन. बैनर्जी मूर्खों को आसानी से बर्दाश्त नहीं करते थे और उन्होंने न्यायमूर्ति माहेश्वरी को, जो पचपन वर्ष के थे और उनसे पंद्रह वर्ष छोटे थे, मूर्ख समझा।

फिरोज (जो जी.एन. बैनर्जी के होटल के कमरे में जमींदारों के वकीलों की बैठक में मौजूद थे, जब महान वकील ने यह टिप्पणी की थी) ने इसे नवाब साहब तक पहुँचाया था। इससे नवाब साहब को मामले के नतीजे के बारे में कोई ज़्यादा उम्मीद नहीं जगी। उनकी भावनाएँ दूसरी तरफ़ के उनके मित्र, राजस्व मंत्री की ही तरह थीं: जीत की उम्मीद से ज़्यादा हार का

डर। इस मामले पर इतना कुछ निर्भर था कि दोनों पक्षों में आशंका ही हावी थी। मारह के राजा को छोड़कर, जो अपनी पवित्र भूमि के उल्लंघन पर विश्वास नहीं कर पा रहे थे, केवल दोनों पक्षों के वकील ही कुछ हद तक बेपरवाह नज़र आ रहे थे।

'छठे, माननीय न्यायाधीश महोदय,' जी.एन. बैनर्जी ने आगे कहा, 'ज़मींदारी उन्मूलन अधिनियम को शब्द के उचित अर्थों में सार्वजनिक उद्देश्य वाला नहीं कहा जा सकता। माननीय न्यायाधीश महोदय, संविधान के अनुच्छेद 31 खंड 2 के अनुसार निजी संपत्ति पर सार्वजनिक अधिग्रहण से संबंधित सभी अधिनियमों के लिए यह एक स्पष्ट आवश्यकता है। मैं इस प्रस्ताव पर उचित समय पर तब विचार करूंगा जब मैं उन अन्य आधारों का उल्लेख कर दूंगा जिनके तहत विवादित अधिनियम कानून की दृष्टि से गलत है।'

जी.एन. बैनर्जी ने पानी का एक घूंट पीने के बाद रुककर कानून पर अपनी आपत्तियां रखीं, लेकिन इस स्तर पर उन्होंने विस्तृत कारण नहीं बताए। उन्होंने जमींदारी अधिनियम को अस्वीकार्य पाया क्योंकि इसमें नाममात्र का मुआवजा दिया गया था और इसलिए यह 'संविधान के साथ धोखा' था; क्योंकि प्रस्तावित मुआवजा बड़े और छोटे जमींदारों के बीच भेदभावपूर्ण था और इस प्रकार अनुच्छेद 14 के प्रावधानों का उल्लंघन करता था, जो 'कानूनों के समान संरक्षण' का प्रावधान करता है; क्योंकि यह अनुच्छेद 19(1)(एफ) के प्रावधानों का उल्लंघन करता था, जिसमें कहा गया था कि सभी नागरिकों को 'संपत्ति प्राप्त करने, रखने और उसका निपटान करने' का अधिकार है; क्योंकि प्रशासन में कनिष्ठ अधिकारियों को संपत्तियों के वास्तविक अधिग्रहण के क्रम का निर्णय लेने में विवेकाधिकार का प्रयोग करने के लिए व्यापक क्षेत्र सौंपकर, विधायिका ने अवैध रूप से अपनी शक्तियां किसी अन्य प्राधिकरण को

सौंप दी थीं; और इसी प्रकार आगे भी। एक घंटे से अधिक समय तक अपने मामले के क्षेत्र में तीक्ष्ण निगरानी रखते हुए, श्री जी.एन. बैनर्जी ने अब इस अधिनियम की विभिन्न कमजोरियों पर तीक्ष्ण प्रहार किया, और उन पर बार-बार, निश्चित रूप से, एक-एक करके हमला किया।

11.2

उसने ऐसा करना शुरू ही किया था कि अंग्रेज न्यायाधीश ने बोलना शुरू कर दिया:

'श्री बैनर्जी, क्या कोई कारण है कि आपने प्रतिनिधिमंडल के मुद्दे को पहले निपटाने का विकल्प चुना है?'

'मेरे नाथ?'

'ठीक है, आपका तर्क है कि विवादित अधिनियम संविधान के कुछ विशिष्ट प्रावधानों का उल्लंघन करता है। तो पहले उन सीधे आधारों पर विचार क्यों नहीं करते? संविधान में प्रत्यायोजन के विरुद्ध कुछ भी नहीं है। मेरा मानना है कि विधायिकाओं की शक्तियाँ अपने-अपने क्षेत्रों में पूर्ण हैं। वे जिसे चाहें उसे शक्तियाँ प्रत्यायोजित कर सकती हैं, बशर्ते वे संविधान की सीमाओं का उल्लंघन न करें।'

'मेरे प्रभु, यदि मैं अपने तरीके से इस मामले पर बहस करूँ तो—'

न्यायाधीश साठ वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त होते थे, और इसलिए पीठ में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं था जो जी.एन. बैनर्जी से कम से कम दस वर्ष छोटा न हो।

जी जी, श्रीमान बनर्जी। बिलकुल।' न्यायाधीश ने अपना माथा पसीना पोंछा। अदालत कक्ष में असहनीय गर्मी थी।

'मेरा यही तर्क है, महोदय, कि पूर्व प्रदेश विधानमंडल ने कार्यपालिका को जो अधिकार सौंपे हैं, वे उसकी अपनी शक्तियों का त्याग हैं और संविधान के स्पष्ट उद्देश्य तथा हमारे अपने विधान और संवैधानिक कानून

के विपरीत हैं, जैसा कि कई मामलों में, जिनमें हाल ही में जतिंद्र नाथ गुप्ता का मामला भी शामिल है। उस मामले में यह निर्णय लिया गया था कि राज्य विधानमंडल अपने विधायी कार्यों को किसी अन्य निकाय या प्राधिकरण को नहीं सौंप सकता, और वह मामला हम पर बाध्यकारी है, क्योंकि उसका निर्णय संघीय न्यायालय, जो सर्वोच्च न्यायालय का पूर्ववर्ती था, द्वारा किया गया था।'

मुख्य न्यायाधीश ने अब बोलना शुरू किया, उनका सिर अभी भी एक तरफ झुका हुआ था: 'श्री बनर्जी, क्या वह मामला तीन न्यायाधीशों के मुकाबले दो न्यायाधीशों के मत से तय नहीं हुआ था?'

फिर भी, माननीय न्यायाधीश महोदय, निर्णय हो चुका है। यह निश्चित रूप से संभव है कि इसी पीठ से भी इसी अनुपात में फैसला सुनाया जाए—हालांकि मुझे पूरा विश्वास है कि न तो मैं और न ही मेरे सामने बैठे विद्वान मित्र ऐसी किसी संभावना की कामना करते हैं।

'जी हां। आगे बढ़िए, श्रीमान बनर्जी,' मुख्य न्यायाधीश ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। यह आखिरी चीज थी जो वह खुद भी चाहते थे।

कुछ देर बाद मुख्य न्यायाधीश ने फिर हस्तक्षेप किया।

लेकिन क्या रानी बनाम बुराह, श्रीमान बैनर्जी? या हॉज बनाम रानी?

'मैं उन मामलों की सुनवाई अपने ही धीमे और नियमित तरीके से कर रहा था, माननीय न्यायाधीश।'

मुख्य न्यायाधीश के चेहरे पर शायद एक मुस्कान झलकती; लेकिन वे चुप रहे।

आधे घंटे बाद जी.एन. बैनर्जी एक बार फिर पूरे जोश में थे:

लेकिन हमारा संविधान, ब्रिटिश संविधान से अलग लेकिन अमेरिकी संविधान की तरह, एक लिखित संविधान है जो स्पष्ट रूप से जनता की इच्छा को व्यक्त करता है। और ठीक यही कारण है कि दोनों संविधानों में

राज्य की विभिन्न शक्तियों का विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच समान विभाजन है, इसलिए हमें मार्गदर्शन और व्याख्या के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित नियमों की ओर रुख करना चाहिए।

'क्या यह ज़रूरी है, श्रीमान बैनर्जी?' यह अंग्रेज न्यायाधीश का प्रश्न था।

'होना चाहिए, मेरे प्रभु।'

'क्या आपका यह तात्पर्य है कि ये निर्णय हम पर बाध्यकारी हैं? इस प्रश्न के दो उत्तर नहीं हो सकते।'

जैसा कि आपके प्रश्न से मुझे पूरा विश्वास है, माननीय न्यायाधीश महोदय, यह एक मूर्खतापूर्ण तर्क होगा। लेकिन हर प्रश्न के दो पहलू होते हैं। मेरा तात्पर्य यह था कि अमेरिकी मिसालें और व्याख्याएँ, यद्यपि कड़ाई से हम पर बाध्यकारी नहीं हैं, फिर भी हमारे लिए अपेक्षाकृत अपरिचित परिस्थितियों में एकमात्र सुरक्षित मार्गदर्शक हैं। और अमेरिका में स्थापित वह नियम जो राज्य के किसी भी पृथक अंग द्वारा शक्ति के प्रत्यायोजन को प्रतिबंधित करता है, हमारे लिए भी मानदंड होना चाहिए।

'ठीक है।' माननीय न्यायाधीश का लहजा आश्वस्त नहीं था, लेकिन वे समझाने-बुझाने के लिए तैयार थे।

'माननीय न्यायाधीशों, जिन कारणों से शक्तियों का प्रत्यायोजन नहीं किया जाना चाहिए, उन्हें कूली ने 'संवैधानिक सीमाएं' खंड 1, पृष्ठ 224 में संक्षेप में बताया है।'

मुख्य न्यायाधीश ने बीच में ही बात काट दी।

'एक मिनट रुकिए, श्रीमान बनर्जी। हमारे पास यह किताब अभी मौजूद नहीं है, और हम आपके कथनों को पृष्ठ दर पृष्ठ समझना चाहेंगे। आपके तर्कों के लिए अटलांटिक महासागर पार करने का यही एक जोखिम है।'

'संभवतः आपका तात्पर्य प्रशांत महासागर से है।'

न्यायाधीशों और न्यायालय दोनों में हंसी गूंज उठी। 'शायद मेरा मतलब दोनों से है। जैसा कि आपने देखा है, श्री बैनर्जी, हर प्रश्न के दो पहलू होते हैं।'

'माई लॉर्ड, मैंने संबंधित पृष्ठों की कार्बन कॉपी बनवा ली है।'

लेकिन कोर्ट रीडर ने तुरंत मंच के नीचे अपनी मेज से वह किताब निकाल ली। यह स्पष्ट था कि उस पुस्तक की केवल एक ही प्रति थी, पाँच नहीं, जैसा कि भारतीय और अंग्रेजी विधि रिपोर्टों और संदर्भों के साथ होना चाहिए था।

मुख्य न्यायाधीश ने कहा: 'श्री बनर्जी, मैं अपनी ओर से कहूँ तो, मुझे अपने हाथों में किताब पकड़ने का एहसास ज़्यादा पसंद है। मुझे उम्मीद है कि हमारे पास एक ही संस्करण है। पृष्ठ 224। जी हाँ, ऐसा लगता है कि हमारे पास वही संस्करण है। हालाँकि, मेरे सहयोगी आपके द्वारा उपलब्ध कराई गई कार्बन प्रतियों का उपयोग कर सकते हैं।'

'जैसा आप चाहें। अब, मेरे लॉर्ड्स, कूली इस प्रश्न का उत्तर निम्नलिखित शब्दों में देते हैं:

जहां राज्य की संप्रभु शक्ति ने अधिकार स्थापित किया है, वहीं वह अधिकार बना रहना चाहिए; और जब तक संविधान में परिवर्तन नहीं हो जाता, तब तक केवल संवैधानिक प्रक्रिया के तहत ही कानून बनाए जाने चाहिए।

जिस सत्ता को यह उच्च विशेषाधिकार सौंपा गया है, वह अन्य एजेंसियों को चुनकर इस जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकती, न ही वह किसी अन्य निकाय के निर्णय, ज्ञान और देशभक्ति को उन निकायों के स्थान पर प्रतिस्थापित कर सकती है, जिन्हें जनता ने इस संप्रभु विश्वास को सौंपना उचित समझा है।

'यह वही संप्रभु विश्वास है, हे मेरे प्रभुगण, जो पूर्व प्रदेश के विधानमंडल ने

जमींदारी उन्मूलन अधिनियम के माध्यम से कार्यपालिका को सौंपा है। इसके लागू होने की तिथि; जमींदारों की संपत्तियों पर कब्ज़ा करने का क्रम; प्रशासन के कई कनिष्ठ अधिकारियों द्वारा लिए जाने वाले ये निर्णय (संभवतः मनमाने, सनकी, यहाँ तक कि दुर्भावनापूर्ण); मुआवजे के रूप में दिए जाने वाले बांडों की शर्तें, और नकद तथा बांडों का मिश्रण; और कई अन्य बिंदु जो केवल विवरण नहीं बल्कि सारगर्भित हैं। हे प्रभुगण, यह केवल विवरण भरना मात्र नहीं है, यह अधिकार का अनुचित प्रत्यायोजन है, और यह अधिनियम, भले ही कोई अन्य आधार न हो, केवल इन्हीं आधारों पर अमान्य होगा।'

छोटे कद के हंसमुख श्री शास्त्री, एडवोकेट-जनरल, मुस्कुराते हुए खड़े हो गए। पसीने से उनका कड़ा सफेद कॉलर ढीला पड़ गया था। 'माननीय महोदय, मेरे विद्वान मित्र के लिए एक छोटा सा सुधार। राष्ट्रपति की सहमति से ही अधिकार ग्रहण करने की तिथि स्वतः प्रभावी हो जाती है। अतः अधिनियम तत्काल प्रभाव से लागू होता है।' हालांकि यह उनका पहला हस्तक्षेप था, लेकिन उन्होंने इसे सहज और सौहार्दपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया। श्री शास्त्री की अंग्रेजी सुरुचिपूर्ण नहीं थी (उदाहरण के लिए, उन्होंने 'कार्टे ब्लैंच' का उच्चारण 'का-थी बिल-लान-ची' किया), न ही उनकी वकालत का तरीका धाराप्रवाह था। लेकिन उन्होंने सरल सिद्धांतों (या, जैसा कि उनके कनिष्ठ सहकर्मी कह सकते हैं, सिद्धांतों) के आधार पर शानदार ढंग से तर्क दिया, और राज्य में, शायद पूरे देश में, उनके समकक्ष कुछ ही वकील थे।

जी.एन. ने कहा, 'स्पष्टीकरण के लिए मैं अपने विद्वान मित्र का आभारी हूं।'

बैनर्जी एक बार फिर मंच पर आगे झुकते हुए बोले, 'माननीय न्यायाधीशों, मैं संपत्ति के अधिकार प्राप्त होने की तिथि का जिक्र नहीं कर रहा था, जो

कि मेरे विद्वान मित्र के अनुसार तत्काल है, बल्कि संपत्ति के अधिग्रहण की तिथियों का जिक्र कर रहा था।'

मुख्य न्यायाधीश के दाहिनी ओर बैठे विशालकाय न्यायाधीश ने अपने अंगूठे और तर्जनी को आपस में रगड़ते हुए कहा, 'श्री बैनर्जी, आप सरकार से यह उम्मीद तो नहीं कर सकते कि वह एक साथ सभी संपत्तियों का अधिग्रहण कर ले? यह प्रशासनिक दृष्टि से अव्यवहारिक होगा।'

जी.एन. बैनर्जी ने कहा, "महोदया, यह समकालिकता का प्रश्न नहीं है, बल्कि समानता का प्रश्न है। यही बात मुझे चिंतित करती है। दिशानिर्देश कई तरीकों से निर्धारित किए जा सकते थे—उदाहरण के लिए, आय के आधार पर या भौगोलिक स्थिति के आधार पर। लेकिन वर्तमान अधिनियम प्रशासन को मनमानी करने की छूट देता है। उदाहरण के लिए, यदि वे कल यह तय कर लें कि उन्हें कोई विशेष जमींदार, जैसे कि मारह का राजा, पसंद नहीं है, क्योंकि वह किसी ऐसे मुद्दे पर बहुत मुखर है जो सरकार की नीति या हितों के विरुद्ध है, तो वे विवादित अधिनियम के तहत तत्काल अधिसूचना जारी कर सकते हैं कि पूर्व प्रदेश में उसकी जागीरों पर कब्जा कर लिया जाएगा। यह अत्याचार का द्वार है, प्रभुगण, अत्याचार से कम कुछ नहीं।"

गर्मी और आलस्य के कारण कुर्सी पर आगे की ओर झुकते-झुकते ऊंघने लगे मारह के राजा अपना नाम सुनकर अचानक जाग उठे। कुछ देर तक वे असमंजस में इधर-उधर भटकते रहे, अपने स्वप्नदोष के बाद उन्हें अपने आसपास का वातावरण समझ नहीं आ रहा था।

उसने अपने सामने बैठी एक कनिष्ठ वकील के गाउन को खींचा।

'उसने क्या कहा? वह मेरे बारे में क्या कह रहा है?' उसने पूछा।

वकील मुड़ा, हाथ थोड़ा ऊपर उठाकर उसने सुलह का संकेत दिया। उसने

धीरे से स्पष्टीकरण दिया। मारह का राजा उसे खाली और अबोध भरी निगाहों से देखता रहा, फिर यह महसूस करते हुए कि कुछ भी ऐसा नहीं कहा गया जिससे उसके हितों को नुकसान पहुंचे, वह फिर से ऊंघने लगा। इस प्रकार बहस आगे बढ़ी। जो बाहरी लोग किसी बड़े या छोटे हंगामे की उम्मीद लेकर आए थे, वे बेहद निराश हुए। कई याचिकाकर्ता स्वयं भी इस मामले को लेकर असमंजस में थे। उन्हें यह नहीं पता था कि बैनर्जी याचिकाकर्ताओं की ओर से पाँच दिनों तक खड़े रहेंगे, इसके बाद राज्य की ओर से शास्त्री पाँच दिनों तक अपनी बात रखेंगे और अंत में बैनर्जी दो दिनों तक अपना जवाब देंगे। उन्होंने झड़पों, जोरदार बहस और तलवारों की गड़गड़ाहट की उम्मीद की थी। लेकिन इसके बजाय उन्हें हॉज बनाम महारानी, जतिंद्र नाथ गुप्ता बनाम बिहार प्रांत और शेचटर पोल्ट्री कॉर्पोरेशन बनाम संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे मामलों का एक मिला-जुला, लेकिन उबाऊ मिश्रण देखने को मिला।

लेकिन वकीलों को—खासकर अदालत के पीछे बैठे उन वकीलों को, जिनका इस मामले से कोई सीधा संबंध नहीं था—इस कार्यवाही का हर पल बेहद पसंद आया। उनके लिए यह सचमुच तलवार और ढाल की टक्कर जैसा था। वे जानते थे कि जी.एन. बनर्जी की संवैधानिक बहस की शैली, जो इस मामले में ब्रिटिश और इसलिए भारतीय वकालत की विधि-आधारित परंपराओं से बिल्कुल अलग थी, 1935 के भारत सरकार अधिनियम के बाद से ही लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही थी, जिसने भारत के संविधान की रूपरेखा तैयार की, जिसका अनुसरण पंद्रह साल बाद स्वयं भारत के संविधान ने किया। लेकिन उन्होंने इससे पहले कभी किसी मामले की इतनी व्यापक बहस नहीं सुनी थी, और वह भी इतने प्रतिष्ठित वकील द्वारा इतनी लंबी बहस के साथ।

दोपहर एक बजे जब अदालत दोपहर के भोजन के लिए स्थगित हुई, तो

ये वकील चमगादड़ के पंखों की तरह फड़फड़ाते गाउन पहने हुए बाहर निकले और अन्य अदालतों से आ रहे वकीलों के छोटे-छोटे समूहों में शामिल हो गए। वे उच्च न्यायालय भवन के उस हिस्से की ओर बढ़े जहाँ अधिवक्ता संघ का कार्यालय था, और सीधे शौचालयों की ओर चल पड़े, जो गर्मी में भयानक रूप से बदबूदार थे। फिर वे समूहों में अपने-अपने कक्षों, अधिवक्ता संघ के पुस्तकालय, कॉफी शॉप या कैंटीन की ओर चले गए। वहाँ वे बैठकर मामले की खूबियों और प्रतिष्ठित वरिष्ठ वकीलों के तौर-तरीकों पर उत्सुकतापूर्वक चर्चा करते रहे।

11.3

कार्यवाही स्थगित होने पर नवाब साहब महेश कपूर से बात करने के लिए उनके पास गए। जब उन्हें पता चला कि महेश कपूर दोपहर की बैठक में नहीं आ रहे हैं, तो उन्होंने उन्हें बैतर हाउस में दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया और महेश कपूर मान गए। फ़िरोज़ भी अपने पिता के मित्र—या उनके पिता—से कुछ मिनटों की बातचीत करने के बाद अपनी विधि-पुस्तकों में लौट आए। यह उनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण मामला था, और वे दिन-रात उस छोटे से हिस्से पर काम कर रहे थे जिसकी उन्हें पैरवी करनी पड़ सकती थी—या कम से कम अपने वरिष्ठ अधिकारी को संक्षेप में बताना पड़ सकता था।

नवाब साहब ने गर्व और स्नेह से उसकी ओर देखा और उससे कहा कि वह दोपहर की छुट्टी ले रहे हैं।

लेकिन अब्बा, जी.एन. बनर्जी आज अनुच्छेद 14 पर अपनी दलील शुरू करेंगे।

‘अब मुझे याद दिलाओ—’

फिरोज ने अपने पिता को देखकर मुस्कुराया, लेकिन अनुच्छेद 14 के बारे में बताने से परहेज किया।

‘लेकिन क्या आप कल यहाँ होंगे?’ उसने पूछा।

'जी हां, शायद। खैर, जब तुम्हारी बारी आएगी, मैं यहीं रहूंगा,' नवाब साहब ने अपनी दाढ़ी सहलाते हुए और आंखों में स्नेहपूर्ण मनोरंजन का भाव लिए कहा।

'यह आपका भी हिस्सा है, अब्बा—राजकीय अनुदान द्वारा प्रदत्त भूमि।'

‘जी हां।’ नवाब साहब ने आह भरी। ‘खैर, मैं और वो आदमी जो इन्हें मुझसे छीनना चाहता है, दोनों ही इस चकाचौंध से थक चुके हैं, और हम दोपहर के भोजन के लिए जा रहे हैं। लेकिन फिरोज, मुझे बताओ, इस समय अदालतें बंद क्यों नहीं कर दी जातीं? गर्मी बहुत भयानक होती है। क्या पटना उच्च न्यायालय मई और जून में अवकाश नहीं लेता?’

‘खैर, मुझे लगता है कि हम कलकत्ता मॉडल का अनुसरण करेंगे,’ फ़िरोज़ ने कहा। ‘लेकिन मुझसे यह मत पूछो कि क्यों। अच्छा, अब्बा, मैं चलता हूँ।’

दोनों पुराने दोस्त गलियारे में चले गए, जहाँ गर्मी उन्हें ज़ोरदार झटके की तरह लगी, और वहाँ से नवाब साहब की कार तक पहुँचे। महेश कपूर ने अपने ड्राइवर को बैतर हाउस तक उनका पीछा करने का निर्देश दिया। कार में दोनों ने मामले या उसके निहितार्थों पर चर्चा करने से पूरी तरह परहेज किया, जो एक तरह से अफ़सोस की बात थी क्योंकि यह जानना दिलचस्प होता कि वे क्या कहते। हालाँकि, महेश कपूर कहने से खुद को रोक नहीं पाए:

मुझे बताइए कि फ़िरोज़ कब बहस करने वाला है। मैं आकर सुनूंगा।

‘मैं ऐसा ही करूँगा। यह आपकी बहुत बड़ी मेहरबानी है।’ नवाब साहब मुस्कुराए। हालाँकि उनका ऐसा इरादा नहीं था, लेकिन शायद उनकी टिप्पणी को व्यंग्य के रूप में समझा जा सकता था। जब उनके मित्र ने आगे कहा तो उन्हें तसल्ली मिली:

‘अरे—वो तो मेरे भतीजे जैसा है।’ कुछ देर रुककर महेश कपूर ने आगे कहा, ‘लेकिन क्या कार्लेकर इस मामले में उसका नेतृत्व नहीं कर रहा है?’

'हां, लेकिन उसका भाई बहुत बीमार है, और उसे बंबई वापस जाना पड़ सकता है। अगर ऐसा होता है, तो फिरोज को उसकी जगह पैरवी करनी होगी।'

‘आह।’ थोड़ी देर का विराम रहा।

बैतर हाउस में उतरते ही नवाब साहब ने आखिरकार पूछा, ‘मान की क्या खबर है?’ ‘हम पुस्तकालय में खाना खाएंगे; वहां हमें कोई परेशान नहीं करेगा।’

महेश कपूर का चेहरा उतर आया।

'अगर मैं उसे जानता हूं, तो वह अब भी उस अभागी औरत के प्यार में पागल है। काश मैंने उसे होली पर प्रेम निवास में गाने के लिए न कहा होता। यह सब उसी शाम की वजह से हुआ।'

नवाब साहब चुप रहे, लेकिन ऐसा लग रहा था कि उन शब्दों को सुनकर वे सख्त हो गए थे।

महेश कपूर ने संक्षिप्त हंसी के साथ कहा, 'अपने बेटे पर भी नजर रखना। मेरा मतलब फिरोज से है।'

नवाब साहब ने अपने दोस्त की ओर देखा, लेकिन कुछ नहीं बोले। उनका चेहरा पीला पड़ गया था।

'तुम ठीक हो?'

जी जी जी कपूर साहब, मैं ठीक हूँ। आप फ़िरोज़ के बारे में क्या कह रहे थे?

मैंने सुना है कि वह उस घर में भी जाता है। अगर यह थोड़े समय के लिए ही हो तो इसमें कोई बुराई नहीं है, अभी तक तो यह कोई जुनून नहीं बना

है—'

'नहीं!' नवाब साहब की आवाज़ में इतना तीखा और अकथनीय दर्द, लगभग भय था कि महेश कपूर स्तब्ध रह गए। उन्हें पता था कि उनके मित्र धार्मिक हो गए हैं, लेकिन उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी कि वे इतने कट्टरपंथी बन जाएंगे।

उन्होंने झट से विषय बदल दिया। उन्होंने कुछ नए विधेयकों के बारे में बात की, बताया कि देश भर में निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन किसी भी दिन होने की उम्मीद है, और कांग्रेस पार्टी में चल रही अंतहीन समस्याओं के बारे में भी बात की—राज्य स्तर पर उनके और अग्रवाल के बीच, और केंद्र में नेहरू और दक्षिणपंथी दलों के बीच।

राजस्व मंत्री ने कहा, "मैं खुद सोच रहा हूँ कि यह पार्टी अब मेरे लिए घर जैसी नहीं रही। एक पुराने शिक्षक—एक स्वतंत्रता सेनानी—कुछ दिन पहले मेरे पास आए और उन्होंने कई बातें कहीं जिन पर मैं विचार कर रहा हूँ। शायद मुझे कांग्रेस छोड़ देनी चाहिए। मेरा मानना है कि अगर नेहरू को पार्टी छोड़ने और अपने दम पर एक नई पार्टी के साथ अगला चुनाव लड़ने के लिए राजी किया जा सके, तो वे जीत जाएंगे। मैं उनका अनुसरण करूंगा, और कई अन्य लोग भी करेंगे।"

लेकिन इस चौंकाने वाले और महत्वपूर्ण दावे पर भी नवाब साहब ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। दोपहर के भोजन के समय भी वे उतने ही मग्न थे। दरअसल, उन्हें न केवल बोलने में बल्कि खाना निगलने में भी कठिनाई हो रही थी।

11.4

दो शाम बाद, ज़मींदारों के सभी वकील और कुछ मुवक्किल जी.एन. बैनर्जी के होटल के कमरे में मिले। वे अगले दिन की बहस की तैयारी के लिए हर शाम लगभग छह से आठ बजे तक ये बैठकें करते थे। हालाँकि,

आज इस बैठक का दोहरा उद्देश्य था। पहला, अन्य वकील सुबह के सत्र की तैयारी में उनकी मदद करने के लिए उपस्थित थे, जब वे अपने मामले की प्रारंभिक पैरवी समाप्त करेंगे। दूसरा, उनसे दोपहर के सत्र में होने वाली उनकी बहस के लिए भी सलाह देने का अनुरोध किया गया था, जब वे पीठ के समक्ष मामले के अपने-अपने विशेष अनुभागों की पैरवी करेंगे। जी.एन. बैनर्जी उनकी मदद करने के लिए खुश थे, लेकिन वे उन्हें ठीक आठ बजे जाते देखना चाहते थे ताकि वे अपनी शाम अपने खास अंदाज में उस महिला के साथ बिता सकें, जिसके बारे में कनिष्ठ वकील गपशप करते थे कि वह उनकी 'प्रेमिका' हैं: श्रीमती चक्रवर्ती, जिन्हें उन्होंने ब्रह्मपुर जंक्शन पर एक साइडिंग पर स्थित रेलवे सैलून में बड़े ही शान-शौकत से (और अपने मुवक्किलों के खर्चे पर) ठहराया था।

सभी लोग ठीक छह बजे पहुँच गए। स्थानीय वरिष्ठ और कनिष्ठ लोग विधि-पुस्तकें लेकर आए और एक वेटर चाय के प्याले लेकर आया। जी.एन. बैनर्जी ने होटल में लगे पंखों और चाय के बारे में शिकायत की। उन्हें बाद में एक-दो स्कॉच पीने की इच्छा थी।

‘सर, मैं आज दोपहर सार्वजनिक उद्देश्य पर आपकी दलील की तारीफ करने के लिए काफी समय से इंतजार कर रहा था।’ यह एक स्थानीय वरिष्ठ वकील थे।

महान जी.एन. बनर्जी मुस्कुराए। 'हां, आपने देखा कि मुख्य न्यायाधीश ने सार्वजनिक उद्देश्य और सार्वजनिक लाभ के बीच संबंध के बारे में दिए गए बिंदु की कितनी सराहना की।'

'न्यायमूर्ति माहेश्वरी को ऐसा प्रतीत नहीं हुआ।' इस कथन से प्रतिक्रिया होना तय था।

‘महेश्वरी!’ पीठ के कनिष्ठ सदस्य को एक ही शब्द में बर्खास्त कर दिया गया।

‘लेकिन, महोदय, भूमि राजस्व आयोग के बारे में उनकी टिप्पणी का जवाब देना होगा,’ एक उत्साही कनिष्ठ छात्र ने कहा।

'वह क्या कहता है, यह महत्वपूर्ण नहीं है। वह दो दिन तक चुपचाप बैठा रहता है, फिर एक के बाद एक दो मूर्खतापूर्ण सवाल पूछता है।'

'बिल्कुल सही, महोदय,' फ़िरोज़ ने शांत स्वर में कहा। 'आपने कल की बहस में दूसरे मुद्दे पर विस्तार से चर्चा की थी।'

‘उसने पूरी रामायण पढ़ ली है, फिर भी उसे नहीं पता कि सीता के पिता कौन हैं!’ इस प्रचलित व्यंग्य में किए गए इस नए प्रयोग से हंसी फूट पड़ी, जिसमें से कुछ हंसी थोड़ी चाटुकारिता भरी थी।

जी.एन. बैनर्जी ने आगे कहा, ‘खैर, हमें मुख्य न्यायाधीश और न्यायमूर्ति बेली के तर्कों पर ध्यान देना चाहिए। वे पीठ के सबसे बुद्धिमान न्यायाधीश हैं और उनका फैसला हमारे पक्ष में होगा। क्या उन्होंने ऐसा कुछ कहा है जिस पर हम विचार कर सकें?’

फिरोज ने थोड़ी झिझक के साथ कहा, “महोदय, अगर मैं कुछ कह सकूँ तो। न्यायमूर्ति बेली की टिप्पणियों से मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वे दोनों भुगतानों को अलग करने के संबंध में राज्य पर लगाए गए आपके आरोपों से सहमत नहीं हैं। आपने यह बात कही, महोदय, कि राज्य ने चालाकी से भुगतान को दो भागों में बाँट दिया—एक मूल मुआवजा और दूसरा पुनर्वास अनुदान। और ऐसा करने के पीछे उनका मकसद बिहार जमींदारी मामले में पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के निर्णयों को दरकिनार करना था। लेकिन क्या वास्तव में हमारे लिए यह बेहतर नहीं होगा कि हम सरकार के इस तर्क को स्वीकार कर लें कि पुनर्वास अनुदान और मुआवजा अलग-अलग हैं?”

जी.एन. बैनर्जी ने कहा: 'नहीं, क्यों? हमें उनकी बात क्यों माननी चाहिए?' खैर, देखते हैं एडवोकेट-जनरल क्या कहते हैं। मैं इन सब का जवाब बाद

में दे दूंगा।' वह मुँह फेरकर चले गए।
फिरोज ने बड़ी गंभीरता से आगे कहा: 'मेरा मतलब है, महोदय, अगर यह साबित हो जाए कि पुनर्वास अनुदान जैसी अनुग्रह राशि को भी अनुच्छेद 14 के तहत खारिज किया जा सकता है।'
जी.एन. बनर्जी के कुछ हद तक आडंबरपूर्ण पोते ने फ़िरोज़ की बात काटते हुए कहा, 'अनुच्छेद 14 पर दूसरे दिन पूरी बहस हो चुकी थी।' वह अपने दादाजी को एक बेतुके तर्क से बचाने की कोशिश कर रहा था। इतने महत्वपूर्ण मुद्दे पर सरकार के तर्क को स्वीकार करना निश्चित रूप से अपने ही पक्ष को कमजोर करने जैसा होगा।
लेकिन जी.एन. बैनर्जी ने अपने पोते को बंगाली में यह कहकर चुप करा दिया, 'आचा, चूप कोरे थाको!' और फिरोज की ओर उंगली उठाकर बोले, 'फिर से कहो। फिर से कहो।'
फिरोज ने अपनी टिप्पणी दोहराई, फिर उसे विस्तार से समझाया।
जी.एन. बैनर्जी ने इस मुद्दे पर विचार किया, फिर अपनी लाल नोटबुक में कुछ लिखा। फ़िरोज़ की ओर मुड़कर उन्होंने कहा, 'इस मुद्दे पर आपको जो भी अमेरिकी कानूनी मामले मिलें, उन्हें ढूंढकर कल सुबह आठ बजे यहाँ ले आओ।'
फिरोज ने कहा, 'जी सर।' उसकी आँखें खुशी से चमक रही थीं।
जी.एन. बैनर्जी ने कहा: 'यह एक खतरनाक हथियार है जिसका इस्तेमाल करना ठीक नहीं है। इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। मुझे आश्चर्य है कि इस स्तर पर—' वे अपने विचारों में खो गए। 'मामले तो मेरे सामने लाइए, मैं देख लूंगा। मुझे अदालत का मिजाज देखने दीजिए। ठीक है, अनुच्छेद 14 पर और कुछ कहना है?'
किसी ने कुछ नहीं कहा।
'कारलेकर कहाँ है?'

‘सर, उनके भाई का निधन हो गया है और उन्हें बंबई के लिए रवाना होना पड़ा है। उन्हें टेलीग्राम कुछ ही घंटे पहले मिला—जब आप काम पर थे।’
‘मैं समझ गया। और क्राउन ग्रांट रिट्स के लिए उनका कनिष्ठ अधिकारी कौन है?’
‘जी हां, श्रीमान,’ फिरोज ने कहा।
‘युवक, आज का दिन तुम्हारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम इसे संभाल लोगे।’ इस अप्रत्याशित प्रशंसा से फ़िरोज़ का चेहरा चमक उठा और उसके लिए मुस्कुराए बिना रहना मुश्किल था।
‘सर, अगर आपके पास कोई सुझाव हो तो—’ उसने कहा।
‘ऐसा नहीं है। बस यह तर्क दीजिए कि राजशाही अनुदानों ने शाश्वत रूप से पूर्ण अधिकार प्रदान किए हैं, और इसलिए अनुदान प्राप्तकर्ता अन्य मध्यस्थों की तरह नहीं हैं। लेकिन यह सब तो स्पष्ट है। अगर मुझे कुछ और याद आया तो मैं आपको कल सुबह यहाँ आने पर बता दूँगा। वैसे, दस मिनट पहले आ जाइए।’
'धन्यवाद महोदय।'
सम्मेलन डेढ़ घंटे तक चला। लेकिन जी.एन. बनर्जी बेचैन होते जा रहे थे, और सभी को लग रहा था कि महान वकील पर अगले दिन बहस होने से पहले ही अधिक बोझ नहीं डालना चाहिए। हालांकि, सवाल अभी खत्म नहीं हुए थे कि उन्होंने अपना चश्मा उतारा, दो उंगलियां ऊपर की ओर उठाईं और सिर्फ एक शब्द कहा:
‘Aachha.’
यह लोगों के लिए अपने कागजात समेटने का संकेत था।
बाहर अंधेरा छा रहा था। बाहर निकलते समय, कुछ कनिष्ठ सहकर्मी, इस बात से अनभिज्ञ थे कि वे अभी भी जी.एन. बनर्जी के बेटे और पोते की बातों को सुन सकते हैं, और वे कलकत्ता के वकील के बारे में कानाफूसी

कर रहे थे।
एक ने पूछा, 'क्या आपने उसकी प्रेमिका को देखा है?'
‘अरे नहीं, नहीं,’ दूसरे ने कहा।
मैंने सुना है कि वह बहुत ही जोशीली और ऊर्जावान महिला है।
दूसरे ने हंसते हुए कहा, 'सत्तर साल से ज़्यादा उम्र का है, और उसकी एक प्रेमिका भी है!'
लेकिन श्रीमती बैनर्जी के बारे में सोचो! वह क्या सोचती होंगी? पूरी दुनिया जानती है।
दूसरे ने कंधे उचका दिए, मानो यह जताने के लिए कि श्रीमती बैनर्जी क्या सोचेंगी, यह या तो उसकी चिंता का विषय है या उसकी कल्पना से परे है।
महान वकील के बेटे और पोते ने यह बातचीत सुनी, हालांकि उन्होंने कंधे उचकाने का इशारा नहीं देखा। वे मन ही मन भौंहें चढ़ाते रहे, लेकिन एक-दूसरे से कुछ नहीं कहा और चुपचाप उस विषय को शाम की हवा में गुम होने दिया।

11.5

अगले दिन जी.एन. बनर्जी ने याचिकाकर्ताओं की ओर से प्रारंभिक बहस समाप्त की, और कई अन्य वकीलों ने अपने-अपने विशिष्ट बिंदुओं पर संक्षिप्त समय के लिए बहस की। फ़िरोज़ को भी अपना मौका मिला।
फिरोज के उठने से पहले कुछ क्षणों के लिए, उसका दिमाग अचानक एक अवर्णनीय अंधकार में डूब गया—लगभग एक खालीपन सा। उसे अपने सारे तर्क स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे, लेकिन उसे किसी भी बात का कोई अर्थ नहीं दिख रहा था—यह मामला, उसका करियर, उसके पिता की ज़मीनें, वह व्यवस्था जिसका यह न्यायालय और यह संविधान हिस्सा थे, उसका अपना अस्तित्व, यहाँ तक कि मानव जीवन भी। उसके भीतर

उमड़ रही भावनाओं की अत्यधिक तीव्रता—और इन भावनाओं का वर्तमान मामले से कोई संबंध न होना—उसे स्तब्ध कर रहा था।

कुछ देर तक उसने अपने कागज़ों को इधर-उधर किया, और उसका दिमाग़ साफ़ हो गया। लेकिन अब वह इतना घबराया हुआ था, इन विचारों के अचानक आने से इतना परेशान था कि पहले तो उसे अपने हाथ लेक्चर स्टैंड के पीछे छिपाने पड़े।

उन्होंने औपचारिक टिप्पणी से शुरुआत की: 'माननीय न्यायाधीशगण, मैं श्री जी.एन. बैनर्जी के सभी मुख्य बिंदुओं पर दिए गए तर्कों से सहमत हूँ, लेकिन क्राउन ग्रांट के अंतर्गत आने वाली भूमि के प्रश्न के संबंध में मैं अपने तर्क जोड़ना चाहूँगा।' इसके बाद उन्होंने तर्क की प्रबल शक्ति से यह तर्क दिया कि ये भूमि अन्य भूमियों से भिन्न श्रेणी में आती हैं और अनुबंध एवं घोषणा द्वारा इन्हें किसी भी प्रकार के अधिग्रहण से संरक्षित किया गया है। पीठ ने उनकी बात ध्यानपूर्वक सुनी; और उन्होंने यथासंभव अपने तर्क का उनके प्रश्नों के उत्तर दिया। उनकी विचित्र अनिश्चितता जितनी अचानक उत्पन्न हुई थी, उतनी ही अचानक गायब भी हो गई।

महेश कपूर अपने व्यस्त कार्यभार से समय निकालकर फ़िरोज़ की बात सुनने आए थे। उन्होंने फ़िरोज़ के तर्कों को स्नेह और उत्साह से सुना, लेकिन उन्हें लगा कि यदि न्यायालय ने उन्हें स्वीकार कर लिया तो यह एक बड़ी आपदा होगी। पूर्व प्रदेश में किराए पर दी गई ज़मीन का एक बड़ा हिस्सा उन अनुदानों की श्रेणी में आता था जो ब्रिटिश विद्रोह के बाद शक्तिशाली स्थानीय व्यक्तियों की मध्यस्थता से व्यवस्था बहाल करने के उद्देश्य से सरकार द्वारा दिए गए थे। इनमें से कुछ, जैसे नवाब साहब के पूर्वज, अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े थे; लेकिन यह माना गया कि उन्हें और उनके परिवारों को और नाराज़ करना सुरक्षित नहीं होगा। इसलिए अनुदान अच्छे व्यवहार की शर्त पर दिए गए थे—अन्य किसी शर्त पर नहीं।

महेश कपूर एक अन्य याचिका में भी विशेष रुचि रखते थे, जिसे उन लोगों ने दायर किया था जिन्होंने वास्तव में ब्रिटिश शासन के अधीन अपने-अपने राज्यों पर शासन किया था, जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद भारतीय संघ में विलय के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए थे और संविधान में कुछ गारंटी प्राप्त की थीं। ऐसा ही एक मामला मारह के क्रूर राजा का था, जिसे महेश कपूर पूरी तरह से बेदखल करने के लिए बेहद उत्सुक थे। यद्यपि मारह राज्य मध्य भारत में आता था, राजा के पूर्वजों को पूर्व प्रदेश (जिसे उस समय संरक्षित प्रांत कहा जाता था) में भी भूमि दी गई थी। पूर्व प्रदेश में उनकी भूमि राजकोषीय अनुदान की श्रेणी में आती थी, लेकिन राजा के वकीलों का एक तर्क यह था कि पूर्व प्रदेश में उनकी जागीरों से होने वाली अनंत आय को देखते हुए सरकार से मिलने वाला उनका निजी भत्ता सामान्य से कम निर्धारित किया गया था। ये भूमि राजा को राजकीय संपत्ति के बजाय व्यक्तिगत संपत्ति के रूप में दी गई थी, और (उनके तर्क के अनुसार) संविधान के दो अनुच्छेदों द्वारा इसकी गारंटी दी गई थी। एक ने स्पष्ट रूप से घोषणा की कि सरकार पूर्व शासकों के व्यक्तिगत अधिकारों, विशेषाधिकारों और गरिमा के संबंध में विलय के समझौतों के तहत दी गई किसी भी आश्वासन का उचित ध्यान रखेगी; और दूसरे ने कहा कि ऐसे समझौतों और इसी तरह के दस्तावेजों से उत्पन्न विवाद अदालतों में न्यायोचित नहीं होंगे।

दूसरी ओर, सरकारी वकीलों ने अपने हलफनामों में इस बात पर जोर दिया था कि 'व्यक्तिगत अधिकार, विशेषाधिकार और गरिमा' में निजी संपत्ति शामिल नहीं है; निजी संपत्ति के मामले में पूर्व शासकों को अन्य नागरिकों के समान ही दर्जा और अधिकार प्राप्त थे। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि उनके विचार में यह मामला न्यायोचित नहीं था।

अगर महेश कपूर की मर्ज़ी चलती, तो वे न केवल पूर्व प्रदेश में राजा की

निजी ज़मीनों पर, बल्कि मध्य भारत में भी उन्हें निजी ज़मीन के तौर पर दी गई हर संपत्ति पर, और ब्रह्मपुर में उनकी सभी शहरी संपत्तियों पर भी कब्ज़ा कर लेते—जिसमें शिव मंदिर का स्थल भी शामिल था, जिसका निर्माण कार्य आगामी पुल मेले के कारण तेज़ी से चल रहा था। अफसोस, ऐसा संभव नहीं था; अगर ऐसा होता, तो राजा की इन घिनौनी हरकतों पर रोक लग जाती। महेश कपूर के लिए यह सोचना बेहद अप्रिय होता कि उनकी यह इच्छा गृह मंत्री एल.एन. अग्रवाल की उस इच्छा से बहुत अलग नहीं थी, जब उन्होंने बैतर हाउस पर कब्ज़ा करने की कोशिश की थी।

दोपहर के सत्र के कुछ समय बाद जब महेश कपूर दरबार में आए तो बैतर के नवाब ने उन्हें देख लिया; हालांकि वे गलियारे के अलग-अलग किनारों पर बैठे थे, फिर भी उन्होंने बिना कुछ बोले एक-दूसरे को अभिवादन किया।

नवाब साहब का दिल खुशी से भर गया था। उन्होंने अपने बेटे का भाषण अत्यंत गर्व और प्रसन्नता के साथ सुना था। वे एक बार फिर इस बात को याद किए बिना नहीं रह सके कि फ़िरोज़ को अपनी माँ के कितने ही गुण विरासत में मिले थे। और वह भी कभी-कभी सबसे अधिक दृढ़ निश्चय के समय सबसे अधिक घबरा जाती थीं। न्यायाधीशों द्वारा युवक के तर्कों पर ध्यान देने का आनंद उनके पिता को स्वयं से भी अधिक मिला, क्योंकि वे उनके प्रश्नों का उत्तर देने में इतने व्यस्त थे कि उन्हें इसका आनंद लेने का अवसर ही नहीं मिला।

नवाब साहब ने सोचा कि उनके वरिष्ठ भी इससे बेहतर नहीं कर सकते थे। उन्होंने सोचा कि अगले दिन ब्रह्मपुर क्रॉनिकल में फ़िरोज़ की दलीलों के बारे में क्या खबर छपेगी। उन्होंने कल्पना भी की कि महान सिसरो ब्रह्मपुर उच्च न्यायालय में उपस्थित होकर अपने बेटे की वकालत की प्रशंसा कर रहे हैं।

लेकिन क्या अंत में इससे कोई खास फायदा होगा?—खुशी के बीच यह विचार बार-बार उसके मन में आ रहा था। जब कोई सरकार अपना काम करवाने पर तुली होती है, तो वह आमतौर पर किसी न किसी तरीके से ऐसा करती है। और इतिहास हमारे वर्ग के खिलाफ है। उसने मारह के राजा और राजकुमार की ओर देखा, जहाँ वे बैठे थे। मुझे लगता है कि अगर सिर्फ हमारा वर्ग होता तो कोई फर्क नहीं पड़ता, उसने मन ही मन कहा। लेकिन इसमें बाकी सभी लोग भी शामिल हैं। उसके विचार न केवल अपने सेवकों और आश्रितों की ओर मुड़े, बल्कि उन संगीतकारों की ओर भी गए जिन्हें वह अपनी जवानी में सुना करता था, उन कवियों की ओर भी जिन्हें वह संरक्षण देता था, और सईदा बाई की ओर भी।
और उसने फिरोज की ओर नई चिंता के साथ देखा।

11.6

अदालत में भीड़ प्रतिदिन कम होती गई, यहाँ तक कि अंततः प्रेस, वकीलों और कुछ मुवक्किलों के अलावा शायद ही कोई दिखाई देता था। नवाब साहब और उनके वर्ग के पक्ष में इतिहास था या नहीं, कानून ने समाज को गति दी या समाज ने कानून को, कविता के संरक्षण ने किरायेदारों के कष्टों को संतुलित किया या नहीं, ऐसे अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न उन पांच व्यक्तियों के तात्कालिक कार्यक्षेत्र से बाहर थे जिनके हाथों में इस मामले का फैसला टिका था। उनकी चिंताएं भारत के संविधान के अनुच्छेद 14, 31(2) और 31(4) पर केंद्रित थीं, और वे सौहार्दपूर्ण श्री शास्त्री से इन अनुच्छेदों और विवादित कानून के संबंध में उनके विचार जानने के लिए गहन पूछताछ कर रहे थे।
मुख्य न्यायाधीश संविधान की अपनी प्रति देख रहे थे और अनुच्छेद 14 और 31 के शब्दों को चौथी बार पढ़ रहे थे।
अन्य न्यायाधीश (न्यायमूर्ति माहेश्वरी को छोड़कर) एडवोकेट-जनरल से

कुछ प्रश्न पूछ रहे थे, जिन्हें मुख्य न्यायाधीश बड़ी बेमन से सुन रहे थे। मारह के राजा, जो अदालत के माहौल का आनंद लेते प्रतीत हो रहे थे, मानो बिल्कुल अनमने ढंग से सुन रहे थे। वे अदालत में उपस्थित तो थे, लेकिन एक बार फिर इस तथ्य से अनभिज्ञ थे। जब वे आगे की ओर झुक गए, तो उनके पुत्र, राजकुमार, ने उन्हें जगाने की हिम्मत नहीं की।

न्यायाधीशों द्वारा पूछे गए प्रश्न तात्कालिक बहस के पूरे क्षेत्र में फैले हुए थे।

'माननीय अधिवक्ता महाधिवक्ता, श्री बनर्जी के इस तर्क पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है कि जमींदारी अधिनियम का उद्देश्य सार्वजनिक उद्देश्य नहीं बल्कि उस राजनीतिक दल की नीति है जो वर्तमान में राज्य में सत्ता में है?'

'क्या आप, महाधिवक्ता महोदय, इन विभिन्न अमेरिकी निर्णयों में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास कर सकते हैं? मेरा अर्थ है, कानूनों के समान संरक्षण के बजाय सार्वजनिक उद्देश्य के प्रश्न पर।'

“माननीय अधिवक्ता-महाप्रबंधक, क्या आप सचमुच हमसे यह मानने को कह रहे हैं कि “इस संविधान में किसी बात के होते हुए भी” अनुच्छेद 31 के खंड 4 के निर्णायक शब्द हैं और इसलिए उस अनुच्छेद के अंतर्गत किया गया कोई भी कार्य अनुच्छेद 14 या उस संविधान के किसी अन्य अनुच्छेद के तहत चुनौती योग्य नहीं है? निश्चित रूप से यह केवल अनुच्छेद 31 के खंड 2 में निहित आधारों पर ही अधिनियम को चुनौती से बचाता है।”

“माननीय अधिवक्ता-महावयस्क, अनुच्छेद 14 के संबंध में यिक वो बनाम हॉपकिंस मामले के बारे में क्या कहना है? या विलिस मामले में न्यायमूर्ति फजल अली द्वारा हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय के एक फैसले में अनुच्छेद 14 के अंतर्निहित सिद्धांतों की सही व्याख्या के रूप में

अनुमोदित अंश के बारे में क्या कहना है?—"कानूनों के समान संरक्षण की गारंटी का अर्थ है समान कानूनों का संरक्षण।" इत्यादि। आवेदकों के विद्वान वकील ने इस पर बहुत जोर दिया है, और मुझे नहीं लगता कि आप उनके तर्क का खंडन कर सकते हैं।"

अदालत कक्ष में मौजूद कई पत्रकारों और यहां तक कि वकीलों को भी इस बात का प्रबल आभास था कि मामला सरकार के खिलाफ जाने लगा है।

एडवोकेट-जनरल इस बात से अनभिज्ञ प्रतीत हुए। वे शांत भाव से अपने शब्दों, यहाँ तक कि अक्षरों को भी इतनी सावधानी से तोलते रहे कि उनका उच्चारण जी.एन. बैनर्जी की गति का लगभग एक तिहाई ही रहा।

पहले प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा: 'निर्देशात्मक सिद्धांत, मेरे लॉर्ड्स।' कुछ देर रुकने के बाद उन्होंने एक-एक करके संबंधित अनुच्छेदों की सूची दी। फिर कुछ देर रुकने के बाद उन्होंने कहा: 'इस प्रकार आपके लॉर्डशिप्स इसे संविधान में ही निहित मानते हैं, न कि केवल पार्टी नीति में।'

विभिन्न अमेरिकी न्यायिक निर्णयों में सामंजस्य स्थापित करने के प्रश्न पर उन्होंने केवल मुस्कुराते हुए कहा: 'नहीं, माननीय न्यायाधीशों।' उनके लिए असंगत को सुलझाने का प्रयास करना उचित नहीं था, विशेषकर तब जब वे स्वयं अमेरिकी न्यायिक निर्णयों का सहारा नहीं ले रहे थे। वास्तव में, क्या डॉ. कूली ने भी परस्पर विरोधी न्यायिक निर्णयों के आलोक में 'सार्वजनिक उद्देश्य' का अर्थ निर्धारित करने का प्रयास करते समय स्वयं को 'कुछ हद तक असमंजस में' नहीं कहा था? लेकिन इसका उल्लेख क्यों करें? 'नहीं, माननीय न्यायाधीशों' कहना ही पर्याप्त था।

भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो, मुख्य न्यायाधीश पिछले कुछ मिनटों से कुछ हद तक हाशिये पर थे। अब वे भी मैदान में उतर आए। महत्वपूर्ण

अनुच्छेदों पर एक बार फिर नज़र डालने और अपने सामने रखे पैड पर एक मछली का चित्र बनाने के बाद, उन्होंने अपना सिर एक तरफ झुकाया और कहा:

‘अब, माननीय अधिवक्ता महालेखाकार, मैं समझता हूँ कि राज्य का तर्क है कि दो भुगतान, एकमुश्त मुआवजा और संपत्ति-आधारित, परिवर्तनशील पुनर्वास अनुदान, पूरी तरह से अलग प्रकृति के हैं। एक मुआवजा है, दूसरा नहीं। इसलिए इन्हें एक साथ नहीं रखा जा सकता, और यह नहीं कहा जा सकता कि मुआवजा क्रमिक या परिवर्तनशील पैमाने पर है, और इसलिए इसे बड़े जमींदारों के खिलाफ भेदभावपूर्ण या असमान नहीं कहा जा सकता।’

'जी महाराज।'

मुख्य न्यायाधीश ने स्पष्टीकरण की व्यर्थ प्रतीक्षा की। कुछ देर रुकने के बाद उन्होंने आगे कहा:

और राज्य की ओर से यह तर्क भी दिया जाता है कि ये दोनों भुगतान अलग-अलग हैं क्योंकि, उदाहरण के लिए, जमींदारी अधिनियम की अलग-अलग धाराएँ इन दोनों भुगतानों से संबंधित हैं; क्योंकि इनके वितरण के लिए अलग-अलग अधिकारी जिम्मेदार हैं—पुनर्वास अनुदान अधिकारी और मुआवजा अधिकारी इत्यादि।

'जी महाराज।'

दूसरी ओर, आवेदकों की ओर से श्री बैनर्जी का तर्क था कि यह अंतर केवल छल है, खासकर इसलिए कि मुआवजा निधि पुनर्वास निधि का लगभग एक तिहाई ही है।

नहीं, मेरे प्रभु।

'नहीं?'

‘यह कोई जादूगरी नहीं है, मेरे प्रभु।’

मुख्य न्यायाधीश ने आगे कहा, 'और उनका कहना है कि चूंकि विधायी बहसों में इस अंतर का उल्लेख अंतिम चरण तक नहीं किया गया था, इसलिए पटना उच्च न्यायालय के प्रतिकूल फैसले के बाद सरकार ने संवैधानिक सुरक्षाओं से धोखाधड़ी से बचने के तरीके के रूप में इसे पेश किया।'

'कार्य तो कार्य है, माननीय न्यायाधीश। वाद-विवाद तो वाद-विवाद ही होते हैं।'

"और अधिनियम की प्रस्तावना के बारे में क्या, महाधिवक्ता महोदय, जिसमें पुनर्वास को कानून के उद्देश्य के रूप में उल्लेख नहीं किया गया है?"

'हे प्रभु, यह चूक है। किया गया कार्य तो किया गया कार्य है।'

मुख्य न्यायाधीश ने अपना सिर दूसरे हाथ पर टिका लिया। "अब मान लीजिए कि हम आपकी—अर्थात् राज्य की—इस दलील को स्वीकार कर लें कि अनुच्छेद 31 खंड 2 के तहत तथाकथित मुआवजा ही वास्तविक मुआवजे के रूप में मौजूद है, तो आप तथाकथित पुनर्वास अनुदान का वर्णन कैसे करेंगे?"

'अनुग्रह भुगतान, मेरे प्रभु, जो राज्य अपनी इच्छानुसार किसी को भी किसी भी तरीके से कर सकता है।'

मुख्य न्यायाधीश ने अब अपना सिर दोनों हाथों पर टिका लिया और अपने शिकार का मुआयना करने लगे।

क्या अनुच्छेद 32 खंड 4 द्वारा मुआवजे को प्रदान की गई न्यायिक चुनौती से सुरक्षा अनुग्रह भुगतान पर भी लागू होगी? क्या इस अनुग्रह भुगतान की असमान शर्तों—यानी उतार-चढ़ाव वाले पैमाने—को अनुच्छेद 14 के तहत चुनौती नहीं दी जा सकती, जो समान कानूनों की सुरक्षा प्रदान करता है?

फिरोज, जो अत्यंत ध्यान से बहस सुन रहे थे, ने जी.एन. बैनर्जी की ओर देखा। ठीक यही वह मुद्दा था जिसकी ओर वे उस शाम सम्मेलन में इशारा कर रहे थे। प्रतिष्ठित वकील ने अपना चश्मा उतार दिया था और उसे धीरे-धीरे पॉलिश कर रहे थे। अंत में, उन्होंने पॉलिश करना बंद कर दिया और बिल्कुल स्थिर खड़े हो गए, अदालत में मौजूद बाकी सभी लोगों की तरह एडवोकेट-जनरल की ओर देखने लगे।

लगभग पंद्रह सेकंड तक सन्नाटा छाया रहा।

'अनुग्रह राशि के भुगतान को चुनौती, माननीय न्यायाधीश?' श्री शास्त्री ने सौम्य भाव से आश्चर्यचकित होते हुए कहा।

मुख्य न्यायाधीश ने भौंहें चढ़ाते हुए आगे कहा, 'यह प्रणाली बड़े जमींदारों के लिए नुकसानदायक है। सबसे छोटे जमींदारों को किराए के आधार पर दस गुना अधिक राशि मिलती है और सबसे बड़े जमींदारों को केवल डेढ़ गुना। अलग-अलग अनुपात, इसलिए असमान व्यवहार, इसलिए अनुचित भेदभाव।'

श्री शास्त्री ने विरोध जताते हुए कहा, 'माननीय न्यायाधीशों, अनुग्रह राशि से कोई कानूनी अधिकार प्राप्त नहीं होता। यह राज्य द्वारा प्रदत्त विशेषाधिकार है। इसलिए, इस पर अनुचित भेदभाव का आरोप नहीं लगाया जा सकता।' लेकिन महाधिवक्ता इतनी सहजता से मुस्कुरा नहीं रहे थे। यह लगभग आमने-सामने की पूछताछ बन चुकी थी। अन्य न्यायाधीशों ने कोई प्रश्न नहीं पूछा।

"अब, महाधिवक्ता महोदय, अमेरिका में उनके सर्वोच्च न्यायालय ने यह माना है कि उनका चौदहवाँ संशोधन—जिससे हमारा अनुच्छेद 14 भाषा और भावना में मेल खाता है—न केवल लगाए गए दायित्वों पर बल्कि प्रदत्त विशेषाधिकारों पर भी लागू होता है। तो क्या यह अनुग्रह भुगतानों पर लागू नहीं होगा?"

'माई लॉर्ड्स, अमेरिकी संविधान छोटा है, इसलिए उसमें मौजूद कमियों को व्याख्या के माध्यम से भरा जाता है। हमारा संविधान लंबा है, इसलिए यहां इसकी आवश्यकता कम है।'

मुख्य न्यायाधीश मुस्कुराए। अब वे काफी चालाक लग रहे थे: एक बूढ़ा, बुद्धिमान, गंजा कछुआ। एडवोकेट-जनरल कुछ देर रुके। लेकिन इस बार वे जानते थे कि उन्हें कम अविश्वासनीय और सामान्य तर्क प्रस्तुत करना होगा। दोनों चौदह बहुत मिलते-जुलते थे। उन्होंने कहा:

'माननीय न्यायाधीशों, भारत में अनुच्छेद 31 खंड 4 संविधान के अंतर्गत किसी भी प्रकार की चुनौती से अधिनियम की रक्षा करता है।'

'माननीय अधिवक्ता महाधिवक्ता, मैंने उस बिंदु पर न्यायमूर्ति बेली के प्रश्न के आपके उत्तर को सुना। लेकिन यदि यह पीठ उस तर्क को ठोस नहीं मानती है और साथ ही इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि अनुग्रह राशि का भुगतान अनुच्छेद 14 की गारंटी को पूरा करना चाहिए, तो राज्य की स्थिति क्या होगी?'

एडवोकेट-जनरल कुछ देर तक चुप रहे। यदि वकीलों पर आत्म-विरोधी स्पष्टवादिता अनिवार्य होती, तो उनका उत्तर होता: 'राज्य स्थिर नहीं रहता, महोदय, वह गिर जाता है।' इसके बजाय उन्होंने कहा: 'राज्य को अपनी स्थिति पर विचार करना होगा, महोदय।'

'मेरा मानना है कि राज्य को इस संभावित तर्क के आलोक में अपनी स्थिति पर विचार करना चाहिए।'

अदालत में तनाव इतना बढ़ गया था कि उसका कुछ असर मारह के राजा के सपनों में भी ज़रूर दिखाई दिया होगा। वे अचानक चौंककर जाग उठे। वे अत्यधिक चिंता से व्याकुल थे। वे खड़े हुए और गलियारे में आगे बढ़े। अपनी याचिका की सुनवाई के दौरान उन्होंने अच्छा व्यवहार किया था। अब, जब एक ऐसे मुद्दे पर, जो सीधे तौर पर उनसे संबंधित नहीं था,

लेकिन उन्हें भी सुरक्षित रखता, राज्य के लिए हालात खतरनाक होते दिख रहे थे, तो वे बुरी तरह से घबरा गए।
उन्होंने कहा, 'यह सही नहीं है।'
मुख्य न्यायाधीश आगे की ओर झुके।
‘यह सही नहीं है। हम भी अपने देश से प्यार करते हैं। वे कौन हैं? वे कौन हैं? यह धरती—’ उन्होंने विरोध जताया।
अदालत में सन्नाटा छा गया। राजकुमार खड़ा हुआ और अपने पिता की ओर धीरे से एक कदम बढ़ाया। उसके पिता ने उसे धक्का देकर एक तरफ कर दिया।
मुख्य न्यायाधीश ने धीमी गति से कहा, 'महामहिम, मैं आपको सुन नहीं पा रहा हूँ।'
मारह के राजा को इस बात पर जरा भी यकीन नहीं हुआ। उन्होंने ऐलान किया, 'महाराज, मैं और जोर से बोलूंगा।'
मुख्य न्यायाधीश ने दोहराया: ‘महामहिम, मैं आपकी बात नहीं सुन पा रहा हूँ। यदि आपको कुछ कहना है, तो कृपया अपने वकील के माध्यम से कहें। और कृपया तीसरी पंक्ति में बैठें। पहली दो पंक्तियाँ वकीलों के लिए आरक्षित हैं।’
‘नहीं, महोदय! मेरी ज़मीन दांव पर है! मेरी जान दांव पर है!’ उसने आक्रामक ढंग से ऊपर की ओर घूरा, मानो वह अदालत पर हमला करने ही वाला हो।
मुख्य न्यायाधीश ने अपने दोनों ओर बैठे सहयोगियों की ओर देखा और न्यायालय के पाठक और व्यवस्थापकों से हिंदी में कहा:
‘उस आदमी को हटाओ।’
वहां मौजूद सेवक स्तब्ध रह गए। उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि उन्हें कभी महाराज को छूना पड़ेगा।

अंग्रेजी में, मुख्य न्यायाधीश ने पाठक से कहा: 'चौकसी कर्मचारियों को बुलाओ।' मारह के राजा के वकील से उन्होंने कहा: 'अपने मुवक्किल को नियंत्रित करो। उसे कहो कि वह इस अदालत के धैर्य की परीक्षा न ले। यदि आपका मुवक्किल तुरंत अदालत नहीं छोड़ता है, तो मैं उसे अवमानना के लिए गिरफ्तार कर दूंगा।'

पांच भव्य दरबारी, दरबारी और याचिकाकर्ताओं के कई वकीलों ने क्षमा मांगते हुए, लेकिन शारीरिक रूप से लड़खड़ाते हुए राजा मारह को, न्यायालय संख्या एक से बाहर निकाला, इससे पहले कि वह खुद को, अपने मामले को या न्यायालय की गरिमा को और अधिक नुकसान पहुंचा सकें। शर्म से लाल हुए राजकुमार मारह धीरे-धीरे उनके पीछे-पीछे गए। दरवाजे पर पहुँचकर वह मुड़े। न्यायालय में सबकी निगाहें उनके पिता की लड़खड़ाती चाल पर टिकी थीं। फ़िरोज़ भी उन्हें तिरस्कारपूर्ण अविश्वास से देख रहे थे। राजकुमार ने अपनी नज़रें नीचे कर लीं और अपने पिता के पीछे गलियारे में चले गए।

11.7

इस अपमान को सहने के कुछ दिनों बाद, पंखों वाली पगड़ी और हीरे के बटनों से सजे मारह के राजा, अपने शानदार दरबारी दल के साथ, पुल मेले के लिए रवाना हुए।

महाराज ने सुबह चौक स्थित शिव मंदिर से प्रस्थान किया (जहाँ उन्होंने मत्था टेकी), ब्रह्मपुर के पुराने कस्बे से होते हुए आगे बढ़े और गंगा के दक्षिणी तट पर स्थित मिट्टी की चट्टानों से रेत तक धीरे-धीरे नीचे उतरने वाले विशाल मिट्टी के टीले के शीर्ष पर पहुँचे। हर कुछ कदम पर एक उद्घोषक राजा की उपस्थिति की घोषणा कर रहा था और उनकी महिमा के सम्मान में गुलाब की पंखुड़ियाँ हवा में उछाली जा रही थीं। यह मूर्खतापूर्ण था।

हालांकि, यह राजा की स्वयं के बारे में और संसार में अपने स्थान के बारे में धारणा के अनुरूप ही था। वह संसार से, और विशेष रूप से ब्रह्मपुर क्रॉनिकल से नाराज़ थे, जिसने मुख्य न्यायाधीश की अदालत में उनके उद्गारों और वहाँ से उनके निष्कासन का बड़े चाव से वर्णन किया था। मामला बंद होने से पहले चार-पाँच दिन और चला (निर्णय बाद में सुनाया जाना था), और हर दिन ब्रह्मपुर क्रॉनिकल को राजा मारह के अनुचित निष्कासन का उल्लेख करने का कोई न कोई अवसर मिल जाता था।

जुलूस विशाल पीपल के पेड़ की छाँव में रैंप के शीर्ष पर रुका और राजा ने नीचे देखा। उनके नीचे, जहाँ तक नज़र जाती थी, खाकी रंग के तम्बुओं का एक विशाल सागर रेत पर फैला हुआ था—धुएँ से ढका हुआ। गंगा पर बने एकमात्र पुल के स्थान पर अब पाँच नावों के पुल थे, जिन्होंने नदी के निचले हिस्से में जाने वाले सभी यातायात को पूरी तरह से रोक दिया था। फिर भी, छोटी नावों के बड़े-बड़े बेड़े नदी पार कर रहे थे ताकि तीर्थयात्रियों को दोनों किनारों पर स्थित रेतीले टीलों पर बने विशेष रूप से पवित्र स्नान स्थलों तक पहुँचाया जा सके—या फिर अस्थायी और अत्यधिक भीड़भाड़ वाले पुलों पर लोगों की भीड़ का सामना करने की तुलना में नदी पार करने का एक तेज़ और अधिक सुखद साधन उपलब्ध कराया जा सके।

भव्य रैंप भी पूरे भारत से आए तीर्थयात्रियों से खचाखच भरा हुआ था, जिनमें से कई लोग पुल मेला यातायात के लिए चलाई गई विशेष ट्रेनों से पहुंचे थे। हालांकि, कुछ मिनटों के लिए राजा के सेवकों ने भीड़ को इतना पीछे धकेल दिया कि उनके स्वामी को दृश्य का शाही और विश्रामपूर्ण नजारा मिल सके।

राजा ने सुंदर और शांत गंगा नदी को श्रद्धापूर्वक निहारा। नदी का जलस्तर अभी कम था और रेत के टीले चौड़े थे। जून का मध्य था। ब्रह्मपुर में

मानसून अभी शुरू नहीं हुआ था और बर्फ पिघलने से नदी में पानी का स्तर भी अधिक नहीं बढ़ा था। दो दिन बाद गंगा दशहरा का भव्य स्नान दिवस होगा (जब परंपरा के अनुसार गंगा बनारस के स्नान घाटों पर एक कदम ऊपर चढ़ जाती है), और उसके चार दिन बाद पूर्णिमा का दूसरा भव्य स्नान दिवस होगा। भगवान शिव की कृपा से ही गंगा ने पृथ्वी को जलमग्न नहीं किया था, क्योंकि उन्होंने गंगा को अपने बालों से बहने देकर स्वर्ग से गिरने से रोका था। राजा चंद्रचूड़ मंदिर का निर्माण भगवान शिव के लिए ही करवा रहे थे। पवित्र नदी को निहारते और अपने कार्यों के पुण्य पर विचार करते हुए राजा की आँखों में आँसू आ गए।

राजा को नीचे एक विशेष शिविर की ओर जाना था: सनकी बाबा के तम्बू। यह हंसमुख, अधेड़ उम्र का व्यक्ति कृष्ण का भक्त था और अपना समय उनकी स्तुति और ध्यान में व्यतीत करता था। वह आकर्षक शिष्यों से घिरा रहता था और शांतिदायक ऊर्जा के स्रोत के रूप में उसकी बहुत ख्याति थी। राजा शैव संतों के शिविरों में जाने से पहले ही उनसे मिलने के लिए दृढ़ संकल्पित था। राजा की मुस्लिम-विरोधी भावनाएँ सर्व-हिंदू आकांक्षाओं और अनुष्ठानों में परिवर्तित हो गई थीं: उसने अपनी यात्रा एक शिव मंदिर से शुरू की थी, जो ब्रह्मा के नाम पर रखे गए शहर से होकर गुजरी थी, और विष्णु के महान अवतार कृष्ण के एक भक्त के दर्शन के साथ समाप्त होनी थी। इस प्रकार संपूर्ण हिंदू त्रिमूर्ति प्रसन्न हो जाएगी। फिर वह गंगा में स्नान करेगा (एक रत्नजड़ित पैर की उंगली डुबोना ही पर्याप्त होगा), और इस प्रकार वह अपनी पीढ़ी सहित सात पीढ़ियों के पापों को धो लेगा। यह सुबह का एक उपयोगी कार्य था। राजा ने चौक की ओर पीछे मुड़कर देखा और कुछ क्षणों के लिए मस्जिद के मीनारों को निहार लिया। उसने सोचा, "मेरे मंदिर के ऊपर स्थित त्रिशूल जल्द ही तुमसे कहीं अधिक ऊंचा हो जाएगा," और उसके पूर्वजों का वीर रक्त

उसके भीतर उबलने लगा।

लेकिन अपने पूर्वजों के बारे में सोचते ही उन्हें अपने वंशजों की याद आ गई, और उन्होंने अपने बेटे राजकुमार को हैरानी और बेचैनी से देखा, जो अनिच्छा से अपने पिता के पीछे-पीछे चल रहा था। कितना निकम्मा है ये! राजा ने सोचा। मुझे इसकी शादी तुरंत करवा देनी चाहिए। मुझे परवाह नहीं कि ये कितने लड़कों के साथ सोता है, बस मुझे एक पोता दे दे। कुछ दिन पहले राजा उसे सईदा बाई के पास ले गए थे ताकि उसे मर्द बना सकें। राजकुमार डर के मारे लगभग भाग ही गया था! राजा को नहीं पता था कि उनका बेटा पुराने शहर के वेश्यालयों से अच्छी तरह वाकिफ था, जहाँ उसके विश्वविद्यालय के दोस्त कभी-कभी जाते थे। लेकिन अपने अशिष्ट पिता से अंतरंग शिक्षा पाना उसके लिए असहनीय था।

राजा को उनकी शक्तिशाली माता, मारह की विधवा रानी से निर्देश मिले थे कि वे अपने पोते पर अधिक ध्यान दें। हाल ही में वे इसका पालन करने का भरसक प्रयास कर रहे थे। उन्होंने अपने बेटे को ज़िम्मेदारी, कानून और संपत्ति से परिचित कराने के लिए उसे और खुद को उच्च न्यायालय तक घसीटा था। परिणाम पूरी तरह विफल रहा। संतानोत्पत्ति और संसार के पुरुष के जीवन में भी कोई खास सुधार नहीं हुआ था। आज का पाठ धर्म और शौर्य की भावना पर था। यहाँ भी राजकुमार पूरी तरह असफल रहा। जहाँ राजा मस्जिद के पास से गुजरते समय और भी अधिक उत्साह से 'हर हर महादेव!' का जाप करते थे, वहीं राजकुमार अपना सिर झुकाकर और भी अनिच्छा से ये शब्द बुदबुदाते थे। अंत में, रीति-रिवाज और शिक्षा का विषय था। राजा अपने बेटे को गंगा में विसर्जित करने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। चूंकि राजकुमार के विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी होने में केवल एक वर्ष शेष था, इसलिए उन्हें स्नातक होने के लिए हिंदू धर्म के उचित संस्कार - स्नान - में भाग लेना चाहिए - भले ही थोड़ा

समय से पहले ही सही, ताकि वे एक सच्चे स्नातक बन सकें। और शरारती बनने के लिए इससे बेहतर जगह क्या हो सकती है कि हर छह साल में होने वाले पुल मेले के दौरान पवित्र गंगा में उतरा जाए, जो हमेशा की तरह भव्य होता था? वह उसे अपने सेवकों की जयजयकार के बीच पानी में फेंक देता था। और अगर वह डरपोक तैरना नहीं जानता था, और उसे हांफते-कांपते हुए वापस किनारे पर खींचना पड़ता था, तो यह बहुत ही मजेदार होता था।

'जल्दी करो, जल्दी करो!' राजा लड़खड़ाते हुए रेत पर बने लंबे ढलान से नीचे उतरते हुए चिल्लाया। 'यह सनकी बाबा का शिविर कहाँ है? ये सब बहन-भ्रष्ट तीर्थयात्री कहाँ से आते हैं? क्या कोई संगठन नहीं है? मेरी गाड़ी लाओ!'

'महामहिम, अधिकारियों ने पुलिस और वीआईपी को छोड़कर सभी कारों के लिए प्रतिबंध लगा दिया है। हमें अनुमति नहीं मिल सकी,' किसी ने धीमी आवाज़ में कहा।

'क्या मैं वीआईपी नहीं हूँ?' राजा का सीना आक्रोश से फूल गया।

जी जी महाराज। लेकिन—'

अंततः, मीलों तक फैले तंबुओं और शिविरों के बीच, सेना के इंजीनियरों द्वारा रेत पर बिछाई गई धातु की प्लेटों की अस्थायी सड़कों पर लगभग आधे घंटे तक चलने के बाद, वे सनाकी बाबा के शिविर के पास पहुँचे, और राजा का दल कृतज्ञतापूर्वक उसकी ओर बढ़ा। वे उससे मात्र सौ गज की दूरी पर थे।

'आखिरकार!' मारह के राजा ने खुशी से चिल्लाते हुए कहा। गर्मी से उनका बुरा हाल हो रहा था। वे बुरी तरह पसीने से तरबतर थे। 'बाबा को बाहर बुलाओ। मैं उनसे मिलना चाहता हूँ। और मुझे शरबत चाहिए।'

'महारानी-'

लेकिन जैसे ही वह व्यक्ति संदेश लेकर आगे बढ़ा, दूसरी तरफ से एक पुलिस जीप शिविर के सामने अचानक रुक गई, और कई लोग नीचे उतरे और अंदर चले गए।

राजा की आंखें फटी रह गईं।

'हम यहाँ पहले आए थे। इन्हें रोको! मुझे बाबा से तुरंत मिलना है,' उसने आक्रोश में चिल्लाते हुए कहा।

लेकिन जीप वाले तो पहले ही अंदर जा चुके थे।

11.8

जब जीप पहली बार किले के नीचे रेत पर उतरी, तो उसमें सवार यात्रियों में से एक दीपांकर चटर्जी वास्तव में आश्चर्यचकित रह गए थे।

पुल मेले की रेतीली सड़कों पर तंबू और शिविरों के बीच लोगों की भारी भीड़ थी। कई लोग अपने साथ बिस्तर के रोल और अन्य सामान लिए हुए थे, जिनमें खाना पकाने के बर्तन, खाने-पीने का सामान और शायद एक-दो बच्चे बगल में दबाए या पीठ पर चिपकाए हुए थे। वे कपड़े के थैले, बाल्टियाँ, डंडे, झंडे, पताकाएँ और गेंदे के फूलों की मालाएँ लिए हुए थे। कुछ लोग गर्मी और थकान से हाँफ रहे थे, तो कुछ ऐसे बातें कर रहे थे जैसे पिकनिक पर गए हों, या भजन और अन्य धार्मिक गीत गा रहे थे क्योंकि माँ गंगा के दर्शन की अपार खुशी ने पल भर में यात्रा की थकान मिटा दी थी। पुरुष, महिलाएं और बच्चे, बूढ़े और जवान, काले और गोरे, अमीर और गरीब, ब्राह्मण और अछूत, तमिल और कश्मीरी, भगवा वस्त्रधारी साधु और नग्न नाग, सभी रेतीली सड़कों पर एक साथ धक्का-मुक्की कर रहे थे। अगरबत्ती, गांजे, पसीने और दोपहर के खाने की महक, बच्चों के रोने की आवाज़, लाउडस्पीकरों की तेज़ आवाज़, महिलाओं के कीर्तन और पुलिसकर्मियों के चिल्लाने की आवाज़, गंगा पर चमकते सूरज का नज़ारा और सड़कों पर जहाँ भीड़ नहीं थी वहाँ रेत के

छोटे-छोटे भंवरों का उठना - ये सब मिलकर दीपांकर को असीम आनंद से भर देते थे। उसे लगता था कि यहाँ उसे वो सब कुछ मिल जाएगा जिसकी उसे तलाश थी, या वो खास चीज़ जिसकी उसे खोज थी। यही ब्रह्मांड का सूक्ष्म रूप था; इसकी उथल-पुथल में कहीं न कहीं शांति छिपी थी।

जीप रेतीले, धातु की प्लेटों से बने रास्तों पर हॉर्न बजाते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। एक जगह पर चालक रास्ता भटकता हुआ प्रतीत हुआ। वे एक चौराहे पर पहुँचे जहाँ एक युवा पुलिसकर्मी बड़ी मुश्किल से यातायात को नियंत्रित करने का प्रयास कर रहा था। जीप वहाँ एकमात्र वाहन थी, लेकिन पुलिसकर्मी के चारों ओर भारी भीड़ उमड़ पड़ी थी, जो चिल्ला रहा था और अपनी लाठी हवा में लहरा रहा था, लेकिन कोई खास असर नहीं हो रहा था। ब्रह्मपुर में दीपांकर के बुजुर्ग मेज़बान श्री मैत्रा, जो भारतीय पुलिस के पूर्व अधिकारी थे और जिन्होंने एक तरह से जीप को अपने कब्जे में ले लिया था, ने अब स्थिति को अपने हाथ में ले लिया।

‘रुको!’ उसने ड्राइवर से हिंदी में कहा।

ड्राइवर ने जीप रोक दी।

जीप को देखकर अकेला पुलिसकर्मी उसकी ओर बढ़ा।

श्री मैत्रा ने आदेशात्मक स्वर में पूछा, 'सनकी बाबा का तम्बू कहाँ है?'

'जी महोदय, उस दिशा में दो फर्लांग आगे, बाईं ओर।'

‘अच्छा,’ श्री मैत्रा ने कहा। अचानक उनके मन में एक विचार आया। ‘क्या आप जानते हैं कि मैत्रा कौन थे?’

‘मैत्रा?’ युवा पुलिसकर्मी ने पूछा।

आर.के. मैत्रा।

'हां,' पुलिसकर्मी ने कहा, लेकिन ऐसा लग रहा था मानो वह अपने अजीबोगरीब सवाल पूछने वाले की इच्छा पूरी करने के लिए ही ऐसा कह रहा हो।

श्री मैत्रा ने पूछा, 'वह कौन था?'
‘वह हमारे पहले भारतीय एसपी थे,’ पुलिसकर्मी ने जवाब दिया।
‘मैं ही हूँ!’ श्री मैत्रा ने कहा।
पुलिसकर्मी ने बड़े ही सलीके से सलाम किया। श्री मैत्रा के चेहरे पर खुशी झलक रही थी।
‘चलो चलें!’ उसने कहा और वे फिर से चल पड़े।
कुछ ही देर में वे सनाकी बाबा के शिविर में पहुँच गए। अंदर जाने से पहले ही दीपांकर ने देखा कि दूसरी तरफ से फूलों का जुलूस आ रहा है। उसने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया और शिविर के पहले तंबू में प्रवेश कर गया —जो एक बड़ा तंबू था और एक तरह से सार्वजनिक सभा कक्ष का काम करता था।
तंबू के फर्श पर खुरदुरे लाल और नीले रंग के कालीन बिछे थे, और सभी लोग जमीन पर बैठे थे: पुरुष बाईं ओर, महिलाएं दाईं ओर। एक छोर पर सफेद कपड़े से ढका एक लंबा चबूतरा था। इस पर सफेद वस्त्र पहने एक दुबला-पतला, दाढ़ी वाला युवक बैठा था; वह धीमी और कर्कश आवाज में उपदेश दे रहा था। उसके पीछे सनकी बाबा की तस्वीर थी, जिसमें वे मोटे-ताज़े, लगभग गंजे, बेहद हंसमुख, कमर तक नंगे और छाती पर घने घुंघराले बालों वाले दिख रहे थे। उन्होंने सिर्फ एक ढीली-ढाली शॉर्ट्स पहनी हुई थी। उनके पीछे एक नदी बह रही थी—संभवतः गंगा, लेकिन संभवतः, चूंकि वे कृष्ण के भक्त थे, यमुना भी हो सकती थी।
जब दीपांकर और श्री मैत्रा अंदर आए, तब वह युवक प्रवचन दे रहा था। उनके साथ आए पुलिसकर्मी बाहर ही खड़े रहे। श्री मैत्रा अपने प्रिय धर्मगुरु से मिलने की उम्मीद में मन ही मन मुस्कुरा रहे थे। उन्होंने युवक के प्रवचन पर कोई ध्यान नहीं दिया।
‘सुनो,’ युवा उपदेशक ने कर्कश स्वर में कहा:

आपने शायद गौर किया होगा कि जब बारिश होती है तो बेकार के पौधे, घास, खरपतवार और झाड़ियाँ ही पनपने लगती हैं।
वे बिना किसी प्रयास के फलते-फूलते हैं।
लेकिन अगर आप कोई उपयोगी पौधा उगाना चाहते हैं: जैसे गुलाब, फलदार पेड़, पान की बेल, तो आपको मेहनत करनी पड़ेगी।
आपको पानी देना होगा, खाद डालनी होगी, खरपतवार निकालनी होगी और छंटाई करनी होगी।
यह इतना आसान नहीं है।
'दुनिया के साथ भी ऐसा ही है। हम इसके रंग से रंग जाते हैं। हम बिना किसी प्रयास के इसके रंग से रंग जाते हैं। दुनिया जैसी है, हम वैसे ही बन जाते हैं।'
हम अपनी प्रकृति के अनुसार दुनिया में अंधाधुंध आगे बढ़ते हैं। यह आसान है।
लेकिन ईश्वर के ज्ञान के लिए, सत्य के ज्ञान के लिए, हमें प्रयास करना होगा...।
इसी समय मारह के राजा और उनके दल ने प्रवेश किया। राजा ने एक आदमी को कुछ मिनट पहले भेजा था, लेकिन वह प्रवचन में बाधा डालने की हिम्मत नहीं कर पाया था। हालांकि, राजा मुख्य न्यायाधीश या सहायक बाबा से डरने वाले व्यक्ति नहीं थे। उन्होंने युवा उपदेशक पर नजर डाली। युवक ने नमस्ते किया, अपनी घड़ी देखी और भूरे रंग के खादी कुर्ते वाले एक व्यक्ति को राजा से मिलने का निर्देश दिया। श्री मैत्रा ने इसे सनकी बाबा को अपने आगमन की सूचना देने का एक अच्छा अवसर समझा, जो समय और स्थान—और कभी-कभी लोगों—के बारे में काफी लापरवाह थे और शायद घंटों तक प्रकट न हों। भूरे रंग के कुर्ते वाला व्यक्ति तंबू से निकलकर शिविर के भीतर स्थित एक छोटे से तंबू में

चला गया। श्री मैत्रा अधीर दिख रहे थे, राजा अधीर और अत्यधिक उत्तेजित थे। दीपांकर न तो अधीर थे और न ही उत्तेजित। उनके पास दुनिया का सारा समय था, और उन्होंने फिर से प्रवचन पर ध्यान केंद्रित किया। वह पुल मेले में किसी उत्तर या उत्तरों की खोज में आया था, और इस खोज में जल्दबाजी नहीं की जा सकती थी।

युवा बाबा ने अपनी कर्कश, गंभीर आवाज में बोलना जारी रखा:

ईर्ष्या क्या है? यह तो बहुत आम है। हम बाहरी दिखावे को देखते हैं और चीजों की लालसा करते हैं...

मरह का राजा पैर पटक रहा था। उसे तो लोगों से मिलने की आदत थी, न कि उनका इंतज़ार करने की। और उसने जो शरबत का गिलास मंगवाया था, उसका क्या हुआ?

'एक लौ ऊपर उठती है। क्यों? क्योंकि वह अपने महान स्वरूप, यानी सूर्य के लिए तरसती है।'

मिट्टी का एक ढेला नीचे गिरता है। क्यों? क्योंकि वह अपने बड़े स्वरूप, पृथ्वी के लिए तरसता है।

गुब्बारे में मौजूद हवा अगर संभव हो तो बाहर निकल जाती है। क्यों? ताकि वह अपने विशाल स्वरूप, बाहरी हवा से मिल सके।

“इसी प्रकार हमारे शरीरों में स्थित आत्मा भी विशाल विश्व-आत्मा से जुड़ने की लालसा रखती है। अब हमें ईश्वर का नाम लेना चाहिए।”

मैं राम बनूंगा, मैं राम बनूंगा, राम राम, मैं बनूंगा, मैं बनूंगा।

मैं कृष्ण की पूजा करूँगा, मैं कृष्ण की पूजा करूँगा, कृष्ण कृष्ण, मैं पूजा करूँगा, मैं पूजा करूँगा।

उन्होंने धीरे-धीरे और मधुर स्वर में मंत्रोच्चार शुरू किया। कुछ लोग...

'मैं राम बनूंगा, मैं राम बनूंगा, राम राम, मैं बनूंगा, मैं बनूंगा।'

मैं कृष्ण की पूजा करूँगा, मैं कृष्ण की पूजा करूँगा, कृष्ण कृष्ण, मैं पूजा करूँगा, मैं पूजा करूँगा।

जल्द ही गायन इतना तीव्र हो गया कि बैठे-बैठे ही श्रोता अगल-बगल झूमने लगे। छोटी-छोटी झांझें बजने लगीं, कुछ शब्दों पर उमंग भरे स्वर सुनाई देने लगे। गायकों पर इसका सम्मोहक प्रभाव पड़ा। दीपांकर ने शिष्टाचारवश साथ देना उचित समझा, पर वे सम्मोहित नहीं हुए। मारह के राजा ने क्रोधित होकर देखा। अचानक कीर्तन रुक गया और एक भजन शुरू हो गया।

गोपाल, गोपाल, मुझे अपना बना लो—

मैं पापी हूँ, आप दयालु हैं—'

लेकिन अभी बात शुरू ही हुई थी कि सनकी बाबा, जो सिर्फ़ शॉर्ट्स पहने हुए थे, तंबू में दाखिल हुए और भूरे कुर्ते वाले आदमी से बातचीत में मशगूल थे। 'जी हाँ, जी हाँ,' सनकी बाबा अपनी छोटी-छोटी आँखों में चमक लिए बोले, 'तुम्हें जाकर इंतज़ाम कर लेना चाहिए: कुछ कद्दू, कुछ प्याज़, कुछ आलू। इस मौसम में गाजर कहाँ से मिलेंगी?... नहीं, नहीं, इसे वहाँ फैला दो... हाँ, मैत्र साहब को बता दो... और प्रोफ़ेसर को भी।' वह जितनी अचानक आया था, उतनी ही अचानक गायब भी हो गया। उसने मारह के राजा को देखा तक नहीं।

धूसर कुर्ते पहने उस व्यक्ति ने श्री मैत्रा के पास जाकर उन्हें बताया कि सनकी बाबा उनसे अपने तम्बू में मिलेंगे। लगभग साठ वर्ष के एक अन्य व्यक्ति, संभवतः प्रोफेसर, को भी उनके साथ आने के लिए कहा गया। मारह के राजा क्रोध से लगभग फट पड़े।

'और मेरा क्या?'

'बाबाजी आपसे जल्द ही मिलेंगे, राजा साहब। वे आपके लिए विशेष समय निकालेंगे।'

मुझे उससे अभी मिलना ही होगा! मुझे उसके विशेष समय की परवाह नहीं है।

वह व्यक्ति, जाहिरा तौर पर यह समझते हुए कि राजा को अगर काबू में नहीं रखा गया तो वह गड़बड़ी करेगा, सनकी बाबा की सबसे करीबी शिष्याओं में से एक, पुष्पा नाम की एक युवती को इशारा करके बुलाया। दीपांकर ने प्रशंसा करते हुए कहा कि पुष्पा बहुत सुंदर और गंभीर थी। उन्हें तुरंत अपने आदर्श की खोज का ख्याल आया। निश्चित रूप से यह उनके उत्तर की खोज के साथ-साथ चल सकती थी। उन्होंने देखा कि पुष्पा राजा से बात कर रही थी और उसे अपने वश में कर रही थी।

इसी बीच, प्रिय लोग सनाकी बाबा के छोटे से तम्बू में प्रवेश कर गए। श्री मैत्रा ने दीपांकर का परिचय सनाकी बाबा से कराया।

श्री मैत्रा ने कहा, ‘उनके पिता कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश हैं। और वे सत्य की खोज कर रहे हैं।’

दीपांकर ने कुछ नहीं कहा, बस सनकी बाबा के तेजस्वी चेहरे को देखता रहा। उसे एक तरह की शांति का अनुभव हुआ।

सनाकी बाबा काफी प्रभावित दिखे। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया।' फिर उन्होंने प्रोफेसर की ओर मुड़कर पूछा, 'आपकी दुल्हन कैसी हैं?'

बाबा ने यह बात अपनी पत्नी के लिए एक प्रशंसा के तौर पर कही थी, जो कई वर्षों से उनके साथ थीं और अक्सर अपने पति के आने पर उनसे मिलने आती थीं। प्रोफेसर ने कहा, 'ओह, वह बरेली में अपने दामाद से मिलने गई हैं। उन्हें खेद है कि वह नहीं आ सकीं।'

‘मेरे शिविर के लिए ये व्यवस्थाएँ ठीक हैं,’ सनाकी बाबा ने कहा। ‘बस पानी की समस्या बनी हुई है। यहाँ गंगा है, और यहाँ पानी नहीं है!’

मेले के प्रशासनिक सलाहकार मंडल के सदस्य प्रतीत होने वाले प्रोफेसर

ने कुछ चापलूसी भरे लहजे में, कुछ आत्मविश्वास से कहा: “बाबाजी, आपकी कृपा और अनुग्रह से ही सब कुछ इतना सुचारू रूप से चल रहा है। मैं तुरंत जाकर देखता हूँ कि इस मामले में क्या किया जा सकता है।” हालाँकि, उन्होंने तुरंत कोई कदम नहीं उठाया और सनाकी बाबा को श्रद्धापूर्वक निहारते रहे।

11.9

अब सनाकी बाबा ने दीपांकर की ओर मुड़कर पूछा:

'पुल मेले के सप्ताह के दौरान आप कहाँ ठहरेंगे?'

श्री मैत्रा ने कहा, 'वह ब्रह्मपुर में मेरे साथ रह रहा है।'

‘और इतनी लंबी दूरी रोज़ाना तय करके आना?’ सनाकी बाबा ने पूछा। ‘नहीं, नहीं, आपको यहीं इस शिविर में रहना होगा और रोज़ाना तीन बार गंगा में स्नान करना होगा। बस मेरे पीछे आइए!’ वे हँसे। ‘देखिए, मैंने तैराकी के कपड़े पहने हैं। क्योंकि मैं मेले का तैराकी चैंपियन हूँ। यह कैसा मेला है! हर साल यह और बड़ा होता जा रहा है। और हर छह साल में तो यह और भी भव्य हो जाता है। यहाँ हज़ारों बाबा हैं। एक रामजप बाबा हैं, एक तोता बाबा हैं, यहाँ तक कि एक इंजन-चालक बाबा भी हैं। सच कौन जानता है? क्या कोई जानता है? मैं देख सकता हूँ कि आप खोज रहे हैं।’ उन्होंने दीपांकर की ओर देखा और विनम्रता से कहा: ‘आपको मिल जाएगा, लेकिन कौन जाने कब।’ श्री मैत्रा से उन्होंने कहा: ‘आप इसे यहीं छोड़ सकते हैं। यह ठीक रहेगा। आपने अपना नाम क्या बताया था—दिव्याकर?’

‘Dipankar, Babaji.’

‘दीपांकर।’ उन्होंने बड़े प्यार से ये शब्द कहा और दीपांकर अचानक खुश हो गया। ‘दीपांकर, आपको मुझसे अंग्रेज़ी में बात करनी चाहिए, क्योंकि मुझे इसे सीखना है। मैं बहुत कम अंग्रेज़ी बोलता हूँ। कुछ विदेशी लोग मेरे

प्रवचन सुनने आए हैं, इसलिए मैं अंग्रेज़ी में प्रवचन देना और ध्यान करना भी सीख रहा हूँ।'

श्री मैत्रा ने बहुत देर तक अपने भीतर संयम रखा। अब वे फूट पड़े: 'बाबा, मुझे चैन नहीं मिल रहा। मैं क्या करूँ? कोई उपाय बताइए।'

सनाकी बाबा ने मुस्कुराते हुए उसकी ओर देखा और कहा: 'मैं तुम्हें एक अचूक मार्ग बताऊंगा।'

श्री मैत्रा ने कहा: 'मुझे अभी बताओ।'

सनाकी बाबा ने कहा, 'यह बहुत सरल है। आपको शांति मिलेगी।' उन्होंने अपना हाथ पीछे की ओर श्री मैत्रा के माथे पर फेरा—उनकी उंगलियां त्वचा को छूती हुई—और पूछा, 'कैसा लग रहा है?'

श्री मैत्रा मुस्कुराए और बोले, 'अच्छा।' फिर चिड़चिड़ेपन से बोले, 'मैं राम का नाम लेता हूँ और आपकी सलाह के अनुसार माला जपता हूँ। तब मुझे शांति मिलती है, लेकिन उसके बाद विचारों का सैलाब उमड़ आता है।' उनके दिल की बात साफ झलक रही थी और उन्हें इस बात की जरा भी परवाह नहीं थी कि प्रोफेसर सुन रहे हैं। 'मेरा बेटा—वह ब्रह्मपुर में नहीं रहना चाहता। उसने अपनी नौकरी में तीन साल का विस्तार लिया है, और मैंने उसे स्वीकार कर लिया, लेकिन मुझे नहीं पता था कि वह कलकत्ता में घर बनवा रहा है। वह सेवानिवृत्त होने के बाद वहीं रहेगा, यहाँ नहीं। क्या मैं कलकत्ता में पिंजरे में बंद कबूतर की तरह रह सकता हूँ? वह पहले जैसा लड़का नहीं रहा। मुझे बहुत दुख हुआ है।'

सनाकी बाबा प्रसन्न दिखे। 'क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम्हारा कोई भी पुत्र वापस नहीं आएगा? तुमने मेरी बात नहीं मानी।'

'हां। मुझे क्या करना चाहिए?'

'आपको इनकी आवश्यकता क्यों है? यह संन्यास की अवस्था है, त्याग की अवस्था है।'

लेकिन मुझे शांति नहीं मिलती।
'संन्यास ही शांति है।'
लेकिन इससे श्री मैत्रा संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने विनती करते हुए कहा, 'मुझे कोई तरीका बताइए।'
सनाकी बाबा ने उन्हें शांत किया। उन्होंने कहा, 'मैं करूँगा, मैं करूँगा। अगली बार जब तुम आओगे।'
'आज क्यों नहीं?'
सनाकी बाबा ने चारों ओर देखा। 'किसी और दिन। जब भी आना चाहो आ जाना।'
क्या तुम यहाँ रहोगे?
मैं 20 तारीख तक यहीं रहूंगा।
'17 तारीख कैसी रहेगी? 18 तारीख?'
'पूर्णिमा के स्नान दिवस के कारण बहुत भीड़ होगी,' सनाकी बाबा ने मुस्कुराते हुए कहा। '19 तारीख की सुबह आना।'
'सुप्रभात। कितने बजे?'
'19 तारीख की सुबह... ग्यारह बजे।'
श्री मैत्रा शांति के लिए सटीक समय सुनिश्चित करने में सफल होकर प्रसन्नता से झूम उठे। उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक कहा, 'मैं आऊंगा।'
'अब तुम कहाँ जाओगे?' सनाकी बाबा ने पूछा। 'तुम दिव्याकर को यहीं छोड़ सकते हो।'
मैं उत्तरी तट पर रामजप बाबा से मिलने जा रहा हूँ। मेरे पास जीप है, इसलिए हम पोंटून ब्रिज नंबर चार पार करेंगे। दो साल पहले मैं उनसे मिलने गया था और उन्हें मैं याद था—उन्हें बीस साल पहले की बात याद थी। तब गंगा में उनका एक चबूतरा था, और उनसे मिलने के लिए पानी में चलकर जाना पड़ता था।

‘हिस मैमरी बेरी शुर्प,’ सनाकी बाबा ने दीपांकर से अंग्रेजी में कहा। ‘बूढ़ा, बूढ़ा, बूढ़ा आदमी। बिल्कुल लकड़ी के डंडे जैसा।’

‘तो अब मैं सनाकी बाबा से मिलने जाऊंगा,’ श्री मैत्रा उठते हुए बोले। सनाकी बाबा अचंभित नजर आए।

श्री मैत्रा ने भौंहें चढ़ाकर फिर से समझाया: 'गंगा के उस पार।'

"लेकिन मैं सनकी बाबा हूं," सनकी बाबा ने कहा।

‘ओह जी हाँ,’ श्री मैत्रा ने कहा, ‘मेरा मतलब था—उनका नाम क्या है?’

‘रामजप बाबा।’

जी हां, रामजप बाबा।

तो श्री मैत्रा चले गए, और थोड़ी देर बाद सुंदर पुष्पा ने दीपांकर को एक तंबू में रेतीली ज़मीन पर बिछी पुआल की ओर इशारा किया: यही अगले सप्ताह के लिए उसका बिस्तर होने वाला था। रातें गर्म थीं, इसलिए एक चादर से काम चल जाएगा।

पुष्पा, मारह के राजा को सनकी बाबा के तम्बू तक ले जाने के लिए रवाना हो गई।

दीपांकर बैठ गया और श्री अरबिंदो की रचनाएँ पढ़ने लगा। लेकिन एक घंटे बाद वह बेचैन हो गया और उसने सनकी बाबा के पीछे-पीछे चलने का फैसला किया।

सनाकी बाबा अत्यंत व्यावहारिक और दयालु प्रतीत होते थे—खुशमिजाज, सक्रिय और तानाशाही रहित। दीपांकर समय-समय पर उन्हें ध्यान से देखता था। उनकी छोटी भौहें कभी-कभी सोच में तल्लीन हो जाती थीं। उनकी गर्दन बैल जैसी थी, छाती पर काले घुंघराले बाल थे और तोंद निकली हुई थी। उनके सिर पर केवल माथे पर और किनारों पर ही बाल उगे हुए थे। जून की धूप में उनका भूरा अंडाकार सिर चमक रहा था। और कभी-कभी, जब वे सुनते थे, तो एकाग्रता में उनका मुंह खुल जाता

था। जब भी वे दीपांकर को अपनी ओर देखते देखते, तो मुस्कुरा देते थे। दीपांकर भी पुष्पा से बहुत प्रभावित था और जब भी वह उससे बात करता, तो उसकी पलकें बार-बार झपकती रहती थीं। लेकिन जब भी पुष्पा उससे बात करती, तो उसकी आवाज़ बहुत गंभीर होती और चेहरे पर गंभीर भाव होते थे।

समय-समय पर मारह का राजा सनाकी बाबा के शिविर में प्रकट होता और यदि सनाकी बाबा वहां नहीं होते तो क्रोध से दहाड़ता। किसी ने उसे दीपांकर की विशेष स्थिति के बारे में बता दिया था, और कभी-कभी प्रवचनों के दौरान वह उसे गुस्से से घूरता था।

दीपांकर को ऐसा लगा कि मारह का राजा प्रेम पाना चाहता था, लेकिन प्रेम के योग्य बनना उसके लिए मुश्किल था।

11.10

दीपांकर गंगा नदी में एक नाव पर बैठे थे।

माथे पर जाति चिह्न लिए एक बूढ़ा ब्राह्मण व्यक्ति चप्पूओं की आवाज के बीच जोर-जोर से टिप्पणी करता रहा। उसने ब्रह्मपुर की तुलना बनारस से, इलाहाबाद के महान संगम से, हरिद्वार से और सागर द्वीप से की, जहाँ गंगा समुद्र से मिलती है।

‘इलाहाबाद में यमुना के नीले जल और गंगा के भूरे जल का मिलन राम और भरत के मिलन के समान है,’ उस बुजुर्ग व्यक्ति ने श्रद्धापूर्वक कहा।

‘लेकिन त्रिवेनी की तीसरी नदी के बारे में क्या कहेंगे जो वहां उनसे मिलती है?’ दीपांकर ने पूछा। ‘सरस्वती नदी की तुलना आप किससे करेंगे?’

बूढ़े आदमी ने दीपांकर की ओर गुस्से से देखा। उसने पूछा, 'तुम कहाँ से हो?'

'कलकत्ता से,' दीपांकर ने कहा। उसने यह सवाल मासूमियत से पूछा था

और उसे इस बात का अफसोस था कि उसने उस आदमी को नाराज कर दिया था।

‘हम्म्ह!’ बूढ़े आदमी ने नाक सिकोड़ते हुए कहा।

‘और आप कहाँ से हैं?’ दीपांकर ने पूछा।

‘सलीमपुर से।’

‘वह कहाँ है?’ दीपांकर ने पूछा।

‘यह रुधिया जिले में है,’ बूढ़े व्यक्ति ने कहा। अब वह झुककर अपने विकृत पैर के नाखूनों की जांच कर रहा था।

‘और वह कहाँ है?’ दीपांकर ने लगातार पूछा।

बूढ़े व्यक्ति ने अविश्वास भरी निगाहों से दीपांकर की ओर देखा।

'यहाँ से यह कितनी दूर है?' दीपांकर ने पूछा, यह देखकर कि बूढ़ा व्यक्ति और पूछे बिना जवाब नहीं देने वाला था।

‘यह सात रुपये दूर है,’ बूढ़े आदमी ने कहा।

‘ठीक है,’ नाविक चिल्लाया, ‘हम यहाँ पहुँच गए हैं। अब, भले लोगों, जी भर कर स्नान कर लीजिए और सभी मनुष्यों की भलाई के लिए प्रार्थना कीजिए, जिसमें मैं भी शामिल हूँ।’

लेकिन बूढ़े आदमी ने उसकी बात नहीं मानी। ‘यह सही जगह नहीं है,’ वह चिल्लाया। ‘मैं बीस साल से हर साल यहाँ आता रहा हूँ और तुम मुझे बेवकूफ नहीं बना सकते। यह जगह वहीं है।’ उसने नावों की कतार के बीचोंबीच एक जगह की ओर इशारा किया।

नाविक ने घृणा से कहा, 'बिना वर्दी वाला पुलिसवाला!' अनिच्छा से उसने चप्पू को कुछ और बार खींचा और नाव को बताए गए स्थान पर ले गया। वहाँ पहले से ही काफी संख्या में लोग नहा रहे थे। पानी उथला था और उसमें खड़ा होना संभव था। नहाने वालों के छपछपाने और मंत्रोच्चार की आवाज़ मंदिर की घंटी की ध्वनि में घुलमिल गई। गेंदे और गुलाब की

पंखुड़ियाँ कीचड़ भरे पानी में तैर रही थीं, साथ ही भीगे हुए पर्चों के टुकड़े, भूसे के टुकड़े, माचिस की डिब्बियों के नीले रंग के आवरण और सिले हुए पत्तों से बने खाली पैकेट भी थे।

बूढ़े व्यक्ति ने अपने सारे कपड़े उतारकर लुंगी में रह लिया, जिससे उनके बाएं कंधे से लेकर दाहिने कूल्हे तक फैला पवित्र धागा दिखाई देने लगा। पहले से भी ऊँची आवाज़ में उन्होंने तीर्थयात्रियों को स्नान करने के लिए प्रेरित किया। 'हाना लो, हाना लो,' वे उत्साह में शब्दों को तोड़-मरोड़ कर चिल्ला रहे थे। दीपांकर ने अपने सारे कपड़े उतार दिए और पानी में कूद पड़े।

पानी साफ नहीं दिख रहा था, फिर भी वह एक-दो मिनट तक पानी उछालता रहा। किसी कारणवश, यह सबसे पवित्र स्थान उसे उतना आकर्षित नहीं कर रहा था जितना वह स्थान जहाँ नाविक रुका था। वहाँ तो उसे पानी में कूदने की तीव्र इच्छा हुई थी। लेकिन बूढ़ा व्यक्ति आनंद से भर उठा। वह उकड़ू बैठ गया, खुद को पूरी तरह पानी में डुबो लिया, हाथों में पानी भरकर पी लिया और जितना हो सके उतनी गहरी आवाज़ में 'हरि ओम' का जाप किया। अन्य तीर्थयात्री भी उतने ही आनंदित थे। पुरुष और महिलाएं, सभी गंगा के स्पर्श से उतना ही प्रसन्न थे जितना बच्चे अपनी माँ के स्पर्श से प्रसन्न होते हैं, और वे सब 'गंगा माता की जय!' के नारे लगा रहे थे।

‘हे गंगा! हे यमुना!’ बूढ़े व्यक्ति ने सूर्य की ओर हाथ जोड़कर संस्कृत में मंत्रोच्चार करते हुए कहा—

'हे गंगा! हे यमुना!

Godavari, Saraswati!

नर्मदा, सिंधु, कावेरी,

इन जल में प्रकट हो जाओ।

वापस लौटते समय उसने दीपांकर से कहा:
‘तो आपने ब्रह्मपुर आने के बाद पहली बार गंगा में डुबकी लगाई!’
'हां,' दीपांकर ने आश्चर्य जताते हुए कहा कि उसे यह कैसे पता चल सकता था।
“मैं यहाँ हर दिन स्नान करता हूँ—दिन में पाँच-छह बार,” बूढ़े व्यक्ति ने कुछ गर्व भरे लहजे में कहा। “यह तो बस एक छोटी सी डुबकी थी। मैं दिन-रात स्नान करता हूँ—कभी-कभी तो दो घंटे तक लगातार। माँ गंगा सारे पाप धो देती हैं।”
'तुम जरूर बहुत पाप करते होगे,' दीपांकर ने कहा, उनके चटर्जी वाले तीखेपन का कुछ अंश सतह पर आ गया।
इस अपमानजनक हास्य को देखकर बूढ़ा व्यक्ति स्तब्ध रह गया।
उन्होंने तीखी फटकार लगाते हुए दीपांकर से पूछा, 'क्या आप सब घर पर स्नान नहीं करते?'
‘जी हां,’ दीपांकर हंसते हुए बोला। ‘लेकिन लगातार दो घंटे तक नहीं।’ उसे कुकू के टब की याद आई और वह मुस्कुराने लगा। ‘और नदी में भी नहीं।’
बूढ़े व्यक्ति ने तीखे स्वर में कहा, ‘नदी मत कहो। गंगा या गंगा माता कहो। यह सिर्फ एक नदी नहीं है।’
दीपांकर ने सिर हिलाया। बूढ़े आदमी की आँखों में आँसू देखकर वह आश्चर्यचकित रह गया।
“ग्लेशियर में स्थित गौमुख की बर्फीली गुफा से लेकर सागर द्वीप के चारों ओर फैले समुद्र तक, मैंने गंगा माता के साथ यात्रा की है,” बूढ़े व्यक्ति ने कहा। “मैं अपनी आंखें बंद कर सकता था और जान सकता था कि मैं कहां हूं।”
'क्या रास्ते में बोली जाने वाली अलग-अलग भाषाओं के कारण?'

दीपांकर ने विनम्रता से पूछा।

नहीं! क्योंकि मेरी नाक में हवा भर गई है। ग्लेशियर की पतली, चुभने वाली हवा, घाटियों की चीड़-पूँजी वाली हवा, हरिद्वार की खुशबू, कानपुर की दुर्गंध, प्रयाग और बनारस की विशिष्ट सुगंध... और इसी तरह सुंदरबन और सागर की नम, नमकीन हवा तक।

उसने अपनी आँखें बंद कर ली थीं और अपनी यादों को याद करने की कोशिश कर रहा था। उसकी नाक के नथुने और चौड़े हो गए और उसके चिड़चिड़े चेहरे पर शांति का भाव आ गया।

उन्होंने कहा, 'अगले साल मैं वापसी यात्रा करूँगा, सागर से लेकर हिमालय की बर्फ़ और विशाल गौमुख हिमनद तक और एक बार फिर बर्फ़ की गुफा के खुले मुँह तक, शिवलिंग के विशाल शिखर के नीचे... तब मैं गंगा की पूरी परिक्रमा कर लूँगा... बर्फ़ से नमक तक, नमक से बर्फ़ तक। अगले साल, अगले साल, बर्फ़ और नमक के बीच से मेरी आत्मा अवश्य सुरक्षित रहेगी।'

11.11

अगले दिन दीपांकर ने देखा कि श्रोताओं में कुछ भ्रमित से दिखने वाले युवा विदेशी थे—और वह सोचने लगा कि वे इस सब का क्या मतलब निकाल रहे हैं। शायद उन्हें प्रवचन या भजनों का एक भी शब्द समझ नहीं आ रहा था। लेकिन सुंदर, थोड़ी चपटी नाक वाली पुष्पा जल्द ही उनकी मदद के लिए आगे आई।

'अब,' उसने अंग्रेजी में कहा, 'विचार बस इतना है: हमें जो कुछ भी मिल रहा है वह भगवान के कमल चरणों में समर्पित होना है।'

विदेशियों ने जोरदार ढंग से सिर हिलाया और मुस्कुराए।

पुष्पा ने घोषणा की, 'अब मुझे यह बताना होगा कि बाबा स्वयं अंग्रेजी में ध्यान कराएंगे।'

लेकिन उस दिन सनाकी बाबा ध्यान लगाने के मूड में नहीं थे। वे प्रोफेसर और युवा उपदेशक, जिन्हें वे सफेद चादर वाले मंच पर लाए थे, से अपनी रुचि के विषय पर बातें कर रहे थे। पुष्पा नाखुश लग रही थी।

शायद इसे भांपते हुए, सनाकी बाबा मान गए और एक बहुत ही संक्षिप्त ध्यान सत्र शुरू हुआ। उन्होंने कुछ मिनटों के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं और अपने श्रोताओं को भी ऐसा ही करने को कहा। फिर उन्होंने लंबे स्वर में 'ओम' का उच्चारण किया। अंत में, एक आत्मविश्वासपूर्ण, मधुर और शांत स्वर में, बेहद अटपटे अंग्रेजी उच्चारण में, प्रत्येक वाक्य के बीच लंबा विराम लेते हुए, उन्होंने धीरे से कहा:

प्रेम की नदी, आनंद की नदी, न्याय का जिगर...

'नाक के छिद्रों के माध्यम से वातावरण और परम सत्ता को ग्रहण करो। . . .

अब आपको आनंद और आलोक का अनुभव होगा—परमानंद और हल्कापन का। अनुभव कीजिए, सोचिए मत।

अचानक वह उठ खड़ा हुआ और गाने लगा। किसी ने तबले पर ताल बजाना शुरू किया, किसी और ने छोटी-छोटी झांझें आपस में टकराना शुरू कर दिया। फिर वह नाचने लगा। दीपांकर को देखकर उसने कहा: 'उठो, दिव्याकर, उठो और नाचो। और तुम, देवियों, उठो। माताजी, उठो, उठो,' उसने साठ साल की एक अनिच्छुक बूढ़ी औरत को ज़बरदस्ती उठाकर खड़ा कर दिया। देखते ही देखते वह अकेले ही नाचने लगी। दूसरी औरतें भी नाचने लगीं। विदेशी भी नाचने लगे और बड़े उत्साह से नाचने लगे। हर कोई नाच रहा था, कभी अकेला तो कभी सब साथ मिलकर—और खुशी और संतोष से मुस्कुरा रहे थे। यहाँ तक कि दीपांकर, जिसे नाचना बिल्कुल पसंद नहीं था, वह भी झांझों और तबले की आवाज़ और कृष्ण, कृष्ण, राधा के प्रिय, कृष्ण के नाम के बार-बार जप पर नाचने लगा।

झांझ, तबला और मंत्रोच्चार बंद हो गए, और नृत्य उतनी ही अचानक समाप्त हो गया जितनी अचानक वह शुरू हुआ था।

सनाकी बाबा चारों ओर दयालुता से मुस्कुरा रहे थे और उन्हें पसीना आ रहा था।

पुष्पा को कुछ घोषणाएँ करनी थीं, लेकिन इससे पहले उन्होंने उपस्थित लोगों पर एक नज़र डाली और एकाग्रता से भौंहें सिकोड़ीं। कुछ क्षणों के लिए उन्होंने अपने विचारों को समेटा। फिर उन्होंने कुछ फटकार भरे लहजे में अंग्रेज़ी में कहा: 'आपके पास नृत्य, प्रवचन, संकीर्तन और ध्यान है। और प्रेम भी। लेकिन जब आप दफ्तरों और कारखानों में होते हैं, तो क्या? तब बाबा जी आपके साथ भौतिक रूप में नहीं होते। तब बाबा जी आपके साथ होते हैं, लेकिन भौतिक रूप में नहीं। इसलिए आपको नृत्य और अभ्यास से आसक्त नहीं होना चाहिए। यदि आप आसक्त हो जाते हैं, तो इसका कोई लाभ नहीं है। आपके भीतर साक्षी भाव होना चाहिए, साक्षी भाव होना चाहिए, अन्यथा इसका क्या लाभ?'

पुष्पा स्पष्ट रूप से पूरी तरह खुश नहीं थीं। उन्होंने भोजन का समय बताया और कहा कि सनकी बाबा अगले दिन दोपहर को एक विशाल जनसमूह को संबोधित करेंगे। उन्होंने वहां पहुंचने के लिए स्पष्ट निर्देश भी दिए।

रात का खाना सादा लेकिन स्वादिष्ट था: दही, सब्जियां, चावल—और मिठाई में रस मलाई। दीपांकर पुष्पा के बगल में बैठने में कामयाब रहा। पुष्पा की हर बात उसे बेहद मनमोहक और बिल्कुल सच्ची लगती थी।

उन्होंने हिंदी में उनसे कहा, 'मैं पहले अध्यापन का काम करती थी। मैं कई कामों में फंसी हुई थी। लेकिन फिर यह काम आया, और बाबा ने मुझसे कहा, मैं सब कुछ संभाल लूं, और मुझे एक चिड़िया की तरह आज़ादी महसूस हुई। युवा लोग मूर्ख नहीं होते,' उन्होंने गंभीरता से कहा। 'अधिकांश धार्मिक साधुओं ने धर्म को नष्ट कर दिया है। उन्हें बड़े धन, बड़ी

संख्या में अनुयायी और पूर्ण नियंत्रण पसंद है। बाबा जी ने मुझे आज़ादी दी है। मेरा कोई मालिक नहीं है। आईएएस अधिकारियों का भी मालिक होता है, मंत्रियों का भी मालिक होता है। प्रधानमंत्री का भी मालिक होता है। उन्हें जनता के प्रति जवाबदेह होना पड़ता है।'

दीपांकर ने जोरदार सहमति में अपना सिर हिलाया।

अचानक ही उसे सब कुछ त्यागने का मन हुआ—श्री अरबिंदो, चटर्जी हवेली, बैंक में नौकरी की संभावना, लेबर्नम के पेड़ के नीचे बनी उसकी झोपड़ी, कडल सहित सभी चटर्जी परिवार के सदस्यों को—और स्वतंत्र होने का—एक पक्षी की तरह स्वतंत्र और बिना किसी मालिक के।

'कितनी सही बात है,' उसने आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुए कहा।

11.12

पोस्टकार्ड 1

प्रिय दादा,

मैं गंगा के पास एक तंबू से आपको पत्र लिख रहा हूँ, पुआल के बिस्तर पर लेटा हुआ। यहाँ बहुत गर्मी है और शोर भी, क्योंकि हर समय लाउडस्पीकरों पर भजन, कीर्तन और अन्य घोषणाएँ सुनाई देती रहती हैं और बार-बार आने वाली ट्रेनों की सीटियाँ भी, लेकिन मुझे शांति है। दादा, मुझे मेरा आदर्श मिल गया है। यहाँ आते समय ट्रेन में ही मुझे यह आभास हो गया था कि ब्रह्मपुर में ही मुझे अपनी सच्ची पहचान और अपने जीवन की दिशा का पता चलेगा, और मुझे यह आशा भी थी कि शायद मुझे मेरा आदर्श मिल जाए। लेकिन ब्रह्मपुर में मैं केवल लता को ही जानता था, इसलिए मुझे डर था कि कहीं वही मेरी आदर्श न बन जाए। इसी वजह से मैंने अब तक उसके परिवार से मिलने से परहेज किया है, और सविता और उसके पति से मिलने का फैसला भी पुल मेला खत्म होने तक टाल दिया है। लेकिन अब मुझे चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है।

उसका नाम पुष्पा है, और वह सचमुच एक फूल है। लेकिन वह एक गंभीर स्वभाव की इंसान है, इसलिए हमारी पुष्पा-लीला में हम एक-दूसरे पर विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान करेंगे, हालांकि मैं उसे गुलाब और चमेली के फूलों से सजाना चाहूँगा। जैसा कि रोबी बाबू कहते हैं:

...तुम्हारा प्यार सिर्फ मेरे लिए ही इंतजार कर रहा था
युगों और संसारों में जागृत और विचरण करते हुए,
क्या यह सच है?
मुझे उम्मीद है कि मेरी आवाज, मेरी आंखों और मेरे होंठों से आपको राहत मिली होगी।
पल भर में, जन्म-जन्म के चक्र से,
क्या यह सच है?
मेरे कोमल माथे पर तुमने अनंत सत्य को पढ़ा,
मेरे प्यारे दोस्त,
क्या यह सच है?

उसे देखना, उसकी बातें सुनना ही मेरे लिए काफी है। मुझे लगता है कि मैं सिर्फ शारीरिक आकर्षण से आगे बढ़ चुका हूँ। मुझे उसमें नारीत्व का सार बहुत पसंद है।

पोस्टकार्ड 2

एक चूहा मेरे पैरों के पास खेल रहा है, और कल रात उसकी वजह से और हाँ, अपने विचारों की वजह से मेरी नींद उड़ गई। लेकिन यह सब लीला है, ब्रह्मांड का खेल है, और मैं इसमें बड़े हर्ष से डूब गई हूँ। मुझे डर है कि पहला पोस्टकार्ड जल्दी ही गायब हो गया, इसलिए मैं उन दो दर्जन स्व-संबोधित पोस्टकार्डों में से एक और पर काम कर रही हूँ जिन्हें माँ ने मुझे अपने साथ ले जाने पर ज़ोर दिया था।

और हां, मेरी लिखावट थोड़ी खराब है, इसलिए मुझे माफ कर दीजिएगा।

पुष्पा की लिखावट बहुत अच्छी है। मैंने उसे प्रवेश पुस्तिका में मेरा नाम अंग्रेजी में लिखते देखा था, और उसने मेरे 'i' के ऊपर एक रहस्यमय पूर्णिमा के आकार का बिंदु बनाया था।

माँ, बाबा, मीनाक्षी, कुकू, तपन, कडल्स और आप सब कैसे हैं? मुझे अभी तक आपमें से किसी की भी याद नहीं आ रही है, और जब भी मैं आप लोगों के बारे में सोचती हूँ, तो निःस्वार्थ प्रेम से सोचने की कोशिश करती हूँ। मुझे अपनी उस झोपड़ी की भी याद नहीं आ रही जहाँ मैं ध्यान करती हूँ—या 'ध्यान', जैसा कि पुष्पा अपने मनमोहक लहजे और प्यारी मुस्कान के साथ कहती हैं। वह कहती हैं कि हमें आज़ाद होना चाहिए—पक्षियों की तरह आज़ाद—और मैंने मेले के बाद यात्रा करने का फैसला किया है, जहाँ भी मेरा मन मुझे ले जाए, ताकि मैं वास्तव में संपूर्णता को जान सकूँ।

पोस्टकार्ड 3

मेरी आत्मा और भारत का अस्तित्व। पुल मेले में घूमते-फिरते ही मुझे यह अहसास हुआ कि भारत का आध्यात्मिक स्रोत शून्य, एकता, द्वैत या त्रित्व भी नहीं, बल्कि स्वयं अनंत है। अगर मुझे लगता कि वह मान जाएगी, तो मैं उसे अपने साथ चलने के लिए कहता, लेकिन वह सनकी बाबा की भक्त है और उसने अपना पूरा जीवन उन्हें समर्पित करने का निश्चय कर लिया है।

लेकिन मुझे एहसास हुआ कि मैंने आपको यह नहीं बताया कि वे कौन हैं। वे एक पवित्र व्यक्ति हैं, बाबा जी, जिनके परिसर में मैं गंगा के किनारे रेत पर ठहर रहा हूँ। श्री मैत्रा मुझे उनसे मिलने लाए थे, और सनकी बाबा ने तय किया कि मुझे यहीं ठहरना चाहिए। वे बहुत बुद्धिमान, सौम्य और विनोदी स्वभाव के व्यक्ति हैं। श्री मैत्रा ने उन्हें बताया कि वे कितने दुखी और बेचैन महसूस कर रहे हैं, और सनकी बाबा ने उन्हें कुछ राहत दी और

कहा कि वे बाद में उन्हें ध्यान करने का तरीका समझाएँगे। जब वे चले गए, तो बाबा जी मेरी ओर मुड़े और बोले: 'दिव्याकर'—वे कभी-कभी मुझे किसी कारण से दिव्यकार कहकर बुलाते हैं—'मैं अंधेरे में एक मेज से टकरा जाता हूँ, लेकिन मुझे मेज से चोट नहीं लगती, बल्कि प्रकाश की कमी से लगती है। इसलिए, बुढ़ापे में, ये सभी छोटी-छोटी बातें दुख देती हैं, क्योंकि ध्यान का प्रकाश अनुपस्थित है।' 'लेकिन ध्यान, बाबा जी,' मैंने कहा, 'आसान नहीं है। आप इसे ऐसे बता रहे हैं जैसे यह आसान हो।'
‘क्या सोना आसान है?’ उसने पूछा। ‘हाँ,’ मैंने उत्तर दिया। ‘लेकिन अनिद्रा के रोगी के लिए नहीं,’ उसने कहा। ‘और ध्यान करना आसान है, लेकिन आपको वह सहजता फिर से प्राप्त करनी होगी।’
इसलिए मैंने उस शांति को पाने का निश्चय किया है, और मैंने यह भी तय किया है कि गंगा का किनारा ही वह स्थान है जहाँ मुझे वह शांति मिलेगी। कल नाव में मेरी मुलाकात एक बूढ़े व्यक्ति से हुई जिसने कहा कि वह सब कुछ भूल चुका है।
पोस्टकार्ड 4
गौमुख से सागर तक गंगा के किनारे का सफर, और इसने मेरे दिल में भी वैसा ही करने की इच्छा जगा दी। शायद मैं अपने बाल भी बढ़ा लूँ, सब कुछ त्याग दूँ और संन्यास ले लूँ। सनकी बाबा को इस बात में काफी दिलचस्पी थी कि बाबा (ये सारे 'बाबा' कितने उलझन भरे हैं!) एक हाई कोर्ट जज हैं, लेकिन उन्होंने एक और मौके पर प्रवचन के दौरान कहा कि बड़े-बड़े महलों में रहने वाले भी अंत में धूल में मिल जाते हैं, जिनमें गधे भी लोटते हैं। इस बात ने मुझे हर मायने में गहराई से झकझोर दिया। मेरी गैरमौजूदगी में तपन कडल्स का ख्याल रखेगा, और अगर वो नहीं तो कोई और रखेगा। मुझे झील स्कूल का हमारा एक स्कूल गीत याद है: रोबी बाबू का 'अकला चलो रे', जो मुझे तब भी बेतुका लगता था जब उसे

400 लोग मिलकर गाते थे। लेकिन अब जब मैंने खुद 'अकेले सफर' करने का फैसला कर लिया है, तो यह मेरे लिए एक प्रेरणा बन गया है, और मैं इसे हर समय गुनगुनाती रहती हूँ (हालाँकि कभी-कभी पुष्पा मुझे रुकने के लिए कहती है)।

यहां सब कुछ इतना शांत है, धर्म से उत्पन्न होने वाली कटुता का कोई नामोनिशान नहीं है, जैसा कि हमने रामकृष्ण मिशन में उस शाम के व्याख्यान में देखा था। मैं आजकल पुष्पा को आध्यात्मिक विषयों पर लिखे अपने लेख दिखाने के बारे में सोच रहा हूँ। अगर आप हेमांगिनी से मिलें, तो कृपया उनसे कहिएगा कि वे शून्य पर लिखे मेरे लेखों की तीन प्रतियाँ टाइप कर दें; कार्बन कॉपी पढ़ते समय उंगलियों पर दाग लग जाते हैं, और मेरी लिखावट पुष्पा के लिए पढ़ना बहुत मुश्किल है।

पोस्टकार्ड 5

यहां हर दिन इतना कुछ सीखने को मिलता है, यहां के क्षितिज अनंत हैं और हर दिन विस्तृत होते जा रहे हैं। मेले की रेत पर मैं पीपल के पत्तों का पुल देख सकता हूँ, मानो गंगा पर रैंप से लेकर उत्तरी रेत तक फैला एक हरा इंद्रधनुष आत्माओं को परलोक ले जा रहा हो और अपनी हरियाली से हमारी प्रदूषित धरती को पुनर्जीवित कर रहा हो। और जब मैं गंगा में स्नान करता हूँ, जो मैं दिन में कई बार करता हूँ (इला काकी को मत बताना, उन्हें बहुत गुस्सा आएगा), तब मुझे ऐसा लगता है जैसे मेरे शरीर में आशीर्वाद का प्रवाह हो रहा हो। हर कोई 'गंगे च, यमुना च ऐव' का जाप करता है, वह मंत्र जो श्रीमती गांगुली ने हमें माँ की नाराज़गी के बावजूद सिखाया था, और मैं भी बाकी सब की तरह इसका जाप करता हूँ!

मुझे याद है, दादाजी, आपने एक बार मुझसे कहा था कि गंगा नदी, उसकी सहायक नदियाँ, वितरिकाएँ आदि, आपके उपन्यास का आदर्श

थीं, लेकिन अब मुझे लगता है कि यह तुलना उस समय आपके विचार से भी कहीं अधिक सटीक है। क्योंकि भले ही अब आपको परिवार के आर्थिक मामलों को संभालने का अतिरिक्त भार उठाना पड़े—क्योंकि मैं आपकी बिल्कुल भी मदद नहीं कर पाऊँगा—और भले ही आपको अपना उपन्यास पूरा करने में कुछ और साल लग जाएँ, फिर भी आप अपने जीवन के इस नए प्रवाह को ब्रह्मपुत्र की तरह मान सकते हैं, जो देखने में तो अलग दिशा में बहता हुआ प्रतीत होता है, लेकिन जो हमारे लिए अभी तक अनदेखे विचित्र मार्गों से होकर निश्चित रूप से आपकी कल्पना की विशाल गंगा में विलीन हो जाएगा। कम से कम मुझे तो यही आशा है, दादाजी। बेशक मैं जानता हूँ कि लेखन आपके लिए कितना मायने रखता है, लेकिन आख़िरकार स्रोत की खोज के सामने उपन्यास क्या है?

पोस्टकार्ड 6

अब मेरे पास पोस्टकार्डों का पूरा ढेर लग गया है, और मैं तय नहीं कर पा रही कि इन्हें कैसे भेजूं। क्योंकि अगर मैं इन्हें यहाँ के डाकघर में अलग-अलग भेजूं—यहाँ तो पुल मेला डाकघर भी है! प्रशासनिक व्यवस्था तो वाकई कमाल की है—ये बेतरतीब क्रम में पहुँचेंगे, और मुझे डर है कि इससे गड़बड़ी हो जाएगी। वैसे भी, बंगाली और अंग्रेज़ी के मिश्रण से ये देखने में उलझे हुए लग रहे हैं, और मेरी लिखावट भी हमेशा से खराब है क्योंकि मेरे पास पोस्टकार्डों को रखने के लिए मेरे श्री अरबिंदो के अलावा कुछ नहीं है। और मुझे डर है कि मैंने जो रास्ता चुना है, या यूँ कहूँ कि जो रास्ता मैं नहीं चुन सकती, उससे आपको असुविधा न हो। कृपया समझने की कोशिश कीजिए, दादा। शायद आप एक-दो साल के लिए घर पर मेरी ज़िम्मेदारी संभाल लें, और फिर शायद मैं वापस आकर आपकी जगह ले लूँगी। लेकिन ज़ाहिर है, यह मेरा अंतिम निर्णय नहीं है क्योंकि मैं हर दिन कुछ नया सीख रही हूँ। जैसा कि सनाकी बाबा कहते हैं, 'दिव्याकर, यह

तुम्हारे जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ है।' और पुष्पा जब कहती हैं, 'सच्ची भावनाओं की तरंगें हमेशा केंद्र बिंदु तक पहुँचती हैं,' तो उनकी बात में कितना आकर्षण है, इसका आपको अंदाजा भी नहीं है। शायद, यह सब लिखने के बाद, मुझे इसे भेजने की ज़रूरत ही नहीं है। खैर, मैं इस बारे में बाद में फैसला करूँगा—या शायद कोई और मुझसे फैसला कर ले।

सभी को शांति और प्रेम, और बाबा का आशीर्वाद। कृपया माँ को आश्वस्त करें कि मैं ठीक हूँ।

मुस्कुराते रहो!

दीपक

11.13

रेगिस्तान में अंधेरा छा गया था। तंबुओं का शहर हजारों रोशनी और खाना पकाने की आग से जगमगा रहा था। दीपांकर ने पुष्पा को मेले का थोड़ा सा हिस्सा दिखाने के लिए मनाने की कोशिश की।

'मैं उस सारी दुनिया के बारे में क्या जानती हूँ?' उसने ज़ोर देकर कहा। 'बाबा का यह शिविर ही मेरी दुनिया है। तुम जाओ, दीपांकर,' उसने लगभग कोमल स्वर में कहा। 'दुनिया में जाओ—उन प्रकाशों की ओर जो आकर्षित और मोहित करते हैं।'

दीपांकर ने सोचा, यह कहने का एक नाटकीय तरीका था। खैर, पुल मेले में यह उसकी दूसरी रात थी, और वह देखना चाहता था कि यह कैसा होता है। वह भीड़ के धक्के खाते हुए, या अपनी जिज्ञासा या सहज प्रवृत्ति के कारण इधर-उधर खिंचते हुए चलता रहा। वह दुकानों की एक कतार के पास से गुजरा—जो रात के लिए बंद होने ही वाली थीं—जहाँ हथकरघा कपड़ा, चूड़ियाँ, गहने, सिंदूर पाउडर, रेशमी कैंडी, मिठाइयाँ, राशन और धार्मिक पुस्तकें बेची जा रही थीं। वह तीर्थयात्रियों के समूहों के पास से गुजरा जो अपने कंबलों और कपड़ों पर लेटे हुए थे या रेत में गड़ी

हुई धुएँ वाली, अस्थायी आग के सामने अपना शाम का भोजन पका रहे थे। उसने पाँच नग्न, राख से सने साधुओं का एक जुलूस देखा—अपने त्रिशूल लिए हुए—गंगा में स्नान करने के लिए जा रहे थे। वह हथकरघा की दुकानों के पास एक तंबू में कृष्ण के जीवन पर आधारित एक धार्मिक नाटक देख रही एक बड़ी भीड़ में शामिल हो गया। अचानक कहीं से एक चंचल सफेद पिल्ला उसकी ओर दौड़ा और उसके पायजामे पर शरारती ढंग से झपटा; उसने अपनी पूंछ हिलाई और दीपांकर की एड़ी काटने की कोशिश की। कडल्स की तरह हिंसक तो नहीं था, लेकिन उतना ही जिद्दी लग रहा था। दीपांकर जितनी बार उससे बचने के लिए घूमता, पिल्ला उतना ही इस खेल का आनंद लेता हुआ प्रतीत होता। अंत में, दो साधुओं ने यह सब देखकर पिल्ले पर रेत के ढेले फेंके और वह भाग गया।

रात सुहावनी थी। चाँद आधा से थोड़ा अधिक निकला हुआ था। दीपांकर चलता रहा, उसे ठीक से पता नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है। उसने गंगा नदी पार नहीं की, बल्कि दक्षिणी किनारे पर काफी देर तक घूमता रहा।

पुल मेले की रेत के बड़े-बड़े हिस्से साधुओं के विभिन्न संप्रदायों या समूहों के लिए निर्धारित किए गए थे। इनमें से कुछ बड़े समूह, जिन्हें अखाड़े के नाम से जाना जाता था, अपनी सुदृढ़ और जुझारू संगठन शैली के लिए प्रसिद्ध थे। इन्हीं अखाड़ों के साधु पूर्णिमा के बाद होने वाले भव्य स्नान दिवस पर पुल मेले में निकलने वाली पारंपरिक शोभायात्रा का सबसे आकर्षक हिस्सा होते थे। विभिन्न अखाड़े गंगा के निकट आने, शोभायात्रा में प्राथमिकता पाने और अपने प्रदर्शन की भव्यता दिखाने के लिए एक-दूसरे से होड़ करते थे। कभी-कभी वे हिंसक भी हो जाते थे।

दीपांकर संयोगवश एक खुले द्वार से होते हुए एक विशाल आच्छादित क्षेत्र में पहुँच गया, जो ऐसे ही एक अखाड़े का प्रतीक था। उसे वहाँ तनाव का स्पष्ट अनुभव हुआ। लेकिन अन्य लोग, जो स्पष्ट रूप से स्वयं साधु नहीं

थे, अंदर-बाहर आ-जा रहे थे, इसलिए उसने वहीं रुकने का निर्णय लिया। यह शैव संप्रदाय का अखाड़ा था। साधु समूह में मंद अग्नि के पास बैठे थे, जो अखाड़े के धुएँ से भरे भीतरी हिस्सों में एक पंक्ति में फैली हुई थी। उनके बगल में त्रिशूल गड़े हुए थे, कभी गेंदे के फूलों की मालाओं से लिपटे हुए, कभी भगवान शिव से जुड़े छोटे ढोल से सुशोभित। साधु मिट्टी के पाइप से धूम्रपान कर रहे थे, जिन्हें वे एक-दूसरे को दे रहे थे, और हवा में गांजे की तेज़ गंध फैली हुई थी। जैसे-जैसे दीपांकर अखाड़े में और अंदर की ओर बढ़ता गया, वह अचानक रुक गया। अखाड़े के दूसरे छोर पर, घने धुएँ के बीच, सैकड़ों युवक, केवल छोटी सफेद धोती पहने, सिर मुंडे हुए, बड़े लोहे के बर्तनों के चारों ओर मधुमक्खियों की तरह बैठे थे। दीपांकर को समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है, लेकिन भय और विस्मय की भावना ने उसे जकड़ लिया—जैसे कि वह किसी दीक्षा समारोह में आ गया हो, जिसे देखना एक जिज्ञासु बाहरी व्यक्ति के लिए खतरे का संकेत था।

और सचमुच, इससे पहले कि वह पीछे हट पाता, एक नग्न साधु ने, जिसका त्रिशूल सीधे दीपांकर के हृदय की ओर था, धीमी आवाज में उससे कहा:

'जाना।'

लेकिन मैं बस—

‘जाओ।’ नग्न व्यक्ति ने त्रिशूल को अखाड़े के उस हिस्से की ओर इशारा किया जहाँ से दीपांकर आया था।

दीपांकर मुड़ा और लगभग दौड़ने लगा। उसके पैरों में मानो सारी ताकत खत्म हो गई थी। आखिरकार, वह अखाड़े के प्रवेश द्वार के पास पहुँचा। उसे खांसी आ रही थी—धुआँ उसके गले में अटक गया था। वह झुका और अपने हाथों को पेट पर दबाया।

अचानक चांदी के एक राजदंड के प्रहार से वह ज़मीन पर गिर पड़ा। एक जुलूस गुज़र रहा था और वह उसमें बाधा बन गया था। उसने ऊपर देखा तो रेशम, ब्रोकेड और कढ़ाई वाले जूतों की एक चकाचौंध भरी झलक दिखाई दी। और फिर वह गायब हो गई।

उन्हें चोट तो नहीं लगी थी, लेकिन सांस फूलने और घबराहट होने लगी थी। वे अभी भी अखाड़े की रेतीली ज़मीन पर बिछी खुरदरी चटाई पर बैठे हुए थे और चारों ओर देखने लगे। कुछ देर बाद उन्हें कुछ ही दूरी पर पाँच-छह साधुओं का एक समूह दिखाई दिया। वे एक छोटी सी राख की आग के चारों ओर बैठे गांजा पी रहे थे। वे बीच-बीच में उनकी ओर देखकर ऊँची आवाज़ में हँसते थे।

'मुझे जाना होगा, मुझे जाना होगा,' दीपांकर ने उठते हुए बंगाली में खुद से कहा।

साधुओं ने हिंदी में कहा, 'नहीं, नहीं।'

‘जी’, दीपांकर ने कहा। ‘मुझे जाना होगा। ओम नमः शिवाय,’ उसने जल्दी से कहा।

उनमें से एक ने उसे आदेश दिया, 'अपना दाहिना हाथ आगे करो।'

कांपते हुए दीपांकर ने ऐसा ही किया।

साधु ने अपने माथे पर थोड़ी सी राख मली और थोड़ी सी अपनी हथेली में रखी। 'अब इसे खाओ,' उसने आदेश दिया।

Dipankar drew back.

‘इसे खाओ। तुम पलकें क्यों झपका रहे हो? अगर मैं तांत्रिक होता, तो मैं तुम्हें मरे हुए आदमी का मांस खाने को देता। या इससे भी बुरा।’

अन्य साधु खिलखिलाकर हंस पड़े।

साधु ने उसकी आँखों में गहराई से देखते हुए आदेश दिया, “इसे खाओ। यह भगवान शिव का प्रसाद है—उनकी कृपा भेंट है। यह उनकी विभूति

है।”
दीपांकर ने वह भयानक पाउडर निगल लिया और मुंह बना लिया। साधुओं को यह देखकर हंसी आ गई और वे फिर से खिलखिलाकर हंसने लगे।
किसी ने दीपांकर से पूछा: 'अगर साल में बारह महीने बारिश होती है, तो नदियाँ क्यों सूख जाती हैं?'
एक अन्य व्यक्ति ने पूछा: 'यदि स्वर्ग से पृथ्वी तक सीढ़ी होती, तो पृथ्वी पर आबादी क्यों होती?'
एक तीसरे व्यक्ति ने पूछा: 'अगर गोकुल से द्वारका तक टेलीफोन होता, तो राधा कृष्ण के बारे में लगातार चिंतित क्यों रहती?'
यह सुनकर वे सब जोर से हंस पड़े। दीपांकर को समझ नहीं आया कि क्या कहे।
चौथे व्यक्ति ने पूछा: 'यदि गंगा अभी भी भगवान शिव की चोटी से बह रही है, तो हम ब्रह्मपुर में क्या कर रहे हैं?'
इस प्रश्न ने उन्हें दीपांकर के बारे में भुला दिया, और वह व्याकुल और असमंजस में अखाड़े से बाहर निकल गया।
शायद, उसने सोचा, मैं एक प्रश्न की तलाश कर रहा हूँ, उत्तर की नहीं।
लेकिन बाहर, मेला पहले की तरह ही चल रहा था। भीड़ गंगा की ओर उमड़ रही थी या वहां से लौट रही थी, लाउडस्पीकरों पर खोए और पाए गए लोगों की घोषणा हो रही थी, भजनों और जयकारों की आवाज़ें पुल मेला रेलवे स्टेशन पर आने वाली ट्रेनों की सीटियों के साथ मिल रही थीं, और आकाश में आधा चाँद कुछ ही डिग्री ऊपर था।
11.14
प्राण ने रेत पर बने पुल की ओर चलते हुए पूछा, 'गंगा दशहरा में ऐसी क्या खास बात है?'
बुजुर्ग श्रीमती टंडन ने श्रीमती महेश कपूर की ओर मुड़कर पूछा, 'क्या उन्हें

सचमुच नहीं पता?'
श्रीमती महेश कपूर ने कहा: 'मुझे यकीन है कि मैंने उन्हें एक बार बताया था, लेकिन इस अंग्रेजीपन ने उनके दिमाग से बाकी सब कुछ निकाल दिया है।'
'भास्कर को भी पता है,' बूढ़ी श्रीमती टंडन ने कहा।
'ऐसा इसलिए है क्योंकि आप उसे कहानियां सुनाते हैं,' श्रीमती महेश कपूर ने कहा।
‘और क्योंकि वह सुनता है,’ बूढ़ी श्रीमती टंडन ने कहा। ‘अधिकांश बच्चे रुचि नहीं लेते।’
‘अच्छा,’ प्राण ने मुस्कुराते हुए कहा, ‘क्या कोई मुझे इस बारे में बताएगा? या यह विज्ञान के वेश में धोखाधड़ी का एक और मामला है?’
‘ऐसे शब्द,’ उसकी माँ ने दुखी होकर कहा। ‘वीना, इतना आगे मत जाओ।’
वीणा और केदारनाथ रुक गए और बाकी लोगों के आने का इंतजार करने लगे।
‘बच्चे, ये ऋषि जह्नु थे,’ बूढ़ी श्रीमती टंडन ने विनम्रता से उसकी ओर मुड़ते हुए कहा। ‘जब गंगा जह्नु के कान से निकली और धरती पर गिरी, उसी दिन गंगा दशहरा मनाया जाने लगा, और इसीलिए तब से यह मनाया जाता आ रहा है।’
‘लेकिन सब कहते हैं कि यह शिव के बालों से निकला था,’ प्राण ने विरोध किया।
‘यह बहुत पहले की बात है,’ बूढ़ी श्रीमती टंडन ने समझाया। ‘तब यह नदी जाह्नु के यज्ञ स्थल पर बाढ़ की तरह फैल गई, और उन्होंने क्रोध में आकर इसे पी लिया। अंत में उन्होंने इसे अपने कान से बाहर निकाल दिया और यह धरती पर आ गई। इसीलिए गंगा को जाह्नु की संतान, जाह्नु की संतान

भी कहा जाता है।' बूढ़ी श्रीमती टंडन ने ऋषि के क्रोध और अंततः सुखद परिणाम की कल्पना करते हुए मुस्कुरा दिया।

और,' उसने अपने चेहरे पर प्रसन्नता की चमक के साथ आगे कहा, 'तीन-चार दिन बाद, जेठ महीने की पूर्णिमा की रात को, एक और ऋषि जो अपने आश्रम से विमुख हो गए थे, पीपल के पत्तों से बने पुल पर से पार गए। इसीलिए वह पुल मेले का सबसे पवित्र स्नान दिवस है।'

श्रीमती महेश कपूर की राय इससे बिल्कुल अलग थी। उनका मानना था कि पुल मेला की यह कहानी सरासर मनगढ़ंत है। पुराणों, महाकाव्यों या वेदों में ऐसी कोई बात कहाँ लिखी है?

'सब जानते हैं कि यह सच है,' बूढ़ी श्रीमती टंडन ने कहा।

वे भीड़भाड़ वाले पोंटून पुल पर पहुंच गए थे, और वहां से आगे बढ़ना भी मुश्किल हो रहा था, क्योंकि भीड़ इतनी घनी थी।

'लेकिन यह कहाँ लिखा है?' श्रीमती महेश कपूर ने थोड़ी हाँफते हुए, लेकिन दृढ़ता से अपनी बात पर कायम रहते हुए पूछा। 'हम कैसे कह सकते हैं कि यह सच है? मुझे इस पर विश्वास नहीं है। इसीलिए मैं जेठ पूर्णिमा पर स्नान करने वाले अंधविश्वासी लोगों के समूह में कभी शामिल नहीं होती। इससे केवल दुर्भाग्य ही आता है।'

श्रीमती महेश कपूर के त्योहारों को लेकर बहुत ही स्पष्ट विचार थे। वे राखी में भी विश्वास नहीं करती थीं और उनका मानना था कि भाई-बहन के बंधन को पवित्र करने वाला सच्चा त्योहार भाई दूज है।

बुजुर्ग श्रीमती टंडन अपने समधीन से झगड़ा नहीं करना चाहती थीं, खासकर परिवार के सामने, और खासकर तब जब वे गंगा पार कर रहे थे, और उन्होंने बात यहीं खत्म कर दी।

11.15

गंगा के उत्तर में, भीड़भाड़ वाले पुलों के पार, भीड़ कम थी। तंबू भी कम

थे, और वे पाँचों कहीं-कहीं उबड़-खाबड़ रेत के टीलों पर चल रहे थे। हवा तेज हो गई और रेत उनकी ओर उड़ने लगी, जब वे रामजप बाबा के चबूतरे की दिशा में पश्चिम की ओर संघर्ष करते हुए आगे बढ़े।

वे अन्य तीर्थयात्रियों की लंबी कतार का हिस्सा थे जो उसी स्थान की ओर जा रहे थे। वीणा और बुजुर्ग महिलाओं ने अपने चेहरे साड़ियों के पल्लू से ढके हुए थे। प्राण और केदारनाथ ने अपने मुंह और नाक को रुमालों से ढका हुआ था। सौभाग्य से प्राण के अस्थमा ने उन्हें तुरंत कोई परेशानी नहीं दी, हालांकि इससे बदतर स्थिति की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। अंततः लंबी यात्रा उन्हें उस स्थान पर ले गई जहाँ रामजप बाबा का छप्पर, लकड़ी और बांस के ऊंचे खंभों पर बना हुआ, पत्तों और गेंदे के फूलों की मालाओं से सजा हुआ, तीर्थयात्रियों की एक विशाल भीड़ से घिरा हुआ, नदी के वर्तमान किनारे से लगभग पचास गज की दूरी पर, धीरे-धीरे ढलान वाली उत्तरी रेत पर स्थित था। वे यहाँ तब भी रहेंगे जब कुछ हफ्तों में यह चबूतरा गंगा में एक द्वीप बन जाएगा। वे अपना दिन केवल भगवान के नाम का जाप करते हुए बिताएंगे: 'राम, राम, राम, राम' लगभग निरंतर, जागते समय और अक्सर सोते समय भी। यही उनके लोकप्रिय नाम का स्रोत था।

अपनी तपस्या और लोगों की नज़र में उनकी स्वाभाविक अच्छाई के कारण, उन्होंने महान पुण्य और शक्ति प्राप्त कर ली थी। लोग उनकी एक झलक पाने के लिए मीलों तक रेत पर चलते थे, उनकी आँखों में श्रद्धा झलकती थी। जुलाई से सितंबर तक, जब गंगा नदी उनके चबूतरे से टकराती थी, तब वे नावों से उनके पास जाते थे। वे तीस वर्षों से ऐसा करते आ रहे थे। रामजप बाबा हमेशा पुल मेले के समय ब्रह्मपुर आते थे, पानी के उनके चारों ओर छा जाने का इंतज़ार करते थे और लगभग चार महीने बाद जब पानी उनके चबूतरे से पीछे हट जाता था, तब लौट जाते

थे। यह उनका अपना चतुर्मास था, भले ही यह देवताओं के पारंपरिक चार महीने के विश्राम से पूरी तरह मेल नहीं खाता था।

लोगों को उससे क्या मिलता था, यह कहना मुश्किल था। कभी वह उनसे बात करता, कभी नहीं, कभी उन्हें आशीर्वाद देता, कभी नहीं। यह दुबला-पतला आदमी, जो किसी पुतले की तरह मुरझाया हुआ था, धूप और हवा से झुलसकर गहरे रंग के चमड़े जैसा हो गया था, कमजोर और थका हुआ, अपने चबूतरे पर बैठा था, उसके घुटने उसके कानों के पास थे, उसका लंबा सिर चबूतरे के किनारे से हल्का सा दिखाई दे रहा था। उसकी सफेद दाढ़ी थी, उलझे हुए काले बाल थे, और धंसी हुई आंखें लोगों के सागर में लगभग दृष्टिहीनता से घूर रही थीं, मानो वे रेत के कण या पानी की बूँदें हों।

तीर्थयात्रियों की भीड़—जिनमें से कई लोगों के हाथों में श्री भगवद् चरित की प्रतियां थीं, जिसका एक पीले जिल्द वाला संस्करण यहां बिक्री के लिए उपलब्ध था—को युवा स्वयंसेवकों द्वारा नियंत्रित किया जा रहा था, जिन्हें बदले में एक बुजुर्ग व्यक्ति के इशारों से नियंत्रित किया जा रहा था। यह व्यक्ति, जो एक तरह से पूरी प्रक्रिया का संचालन करता प्रतीत हो रहा था, मोटे चश्मे पहने हुए था और एक विद्वान जैसा दिखता था। वास्तव में वह कई वर्षों तक सरकारी सेवा में रहा था, लेकिन रामजप बाबा की सेवा करने के लिए उसने वह नौकरी छोड़ दी थी।

रामजप बाबा के दुर्बल शरीर की एक पतली सी भुजा दीवार पर टिकी हुई थी, और उसी से वे आगे आने वाले लोगों को आशीर्वाद दे रहे थे। वे धीमी, कमजोर आवाज में उनसे कुछ फुसफुसा रहे थे। कभी-कभी वे बस सामने घूरते रहते थे। स्वयंसेवक बड़ी मुश्किल से भीड़ को रोक पा रहे थे। चिल्लाते-चिल्लाते उनकी आवाज लगभग बैठ चुकी थी।

'वापस जाओ—वापस जाओ—कृपया बाबा जी द्वारा स्पर्श किए जाने के

लिए पुस्तक की केवल एक प्रति ही लाओ—’
उस बूढ़े साधु ने थके हुए स्वर में अपने दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली से उसे छुआ।
‘क्रम से, कृपया—क्रम से—हाँ, मुझे पता है कि आप ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय के छात्र हैं और आपके साथ पच्चीस सहपाठी हैं—कृपया अपनी बारी का इंतजार करें—बैठ जाइए, बैठ जाइए—पीछे हट जाइए, माताजी, कृपया पीछे हट जाइए, हमारे लिए मुश्किलें पैदा मत कीजिए—’ हाथ फैलाए, आँखों में आँसू लिए, भीड़ आगे बढ़ गई। कुछ लोग आशीर्वाद लेना चाहते थे, कुछ रामजप बाबा के दर्शन करना चाहते थे, कुछ उन्हें भेंट चढ़ाना चाहते थे: कटोरे, थैले, किताबें, कागज, अनाज, मिठाई, फल, पैसे।
स्वयंसेवकों ने कहा, ‘प्रसाद को इस टोकरी में डालो—प्रसाद को इस टोकरी में डालो।’ लोगों द्वारा दिया गया प्रसाद पवित्र हो जाएगा और पवित्र होने के बाद फिर से उन्हीं में बाँट दिया जाएगा।
प्राण ने अपने बगल में खड़े एक व्यक्ति से पूछा, 'वह इतना प्रसिद्ध क्यों है?' उसे उम्मीद थी कि उसके साथियों ने उसकी बात नहीं सुनी होगी।
‘मुझे नहीं पता,’ उस आदमी ने कहा। ‘लेकिन अपने समय और स्थान पर उसने बहुत कुछ किया है। वह बस है।’ फिर उसने एक बार फिर आगे बढ़ने की कोशिश की।
लोग कहते हैं कि वह दिन भर राम का नाम लेता रहता है। वह ऐसा क्यों करता है?
'लकड़ी को तब तक रगड़ते रहो जब तक उससे मनचाही रोशनी न मिल जाए।'
जब प्राण इस जवाब पर विचार कर रहा था, तभी मोटे चश्मे पहने हुए वह व्यक्ति जो सभी मामलों का प्रभारी था, श्रीमती महेश कपूर के पास

आया और उसने बहुत ही गहरा नमस्ते किया।
‘आप यहाँ आई हैं?’ उन्होंने आश्चर्य और गहरे सम्मान के साथ पूछा। ‘और आपके पति?’ सरकारी सेवा में रहने के कारण वे श्रीमती महेश कपूर को जानते थे।
‘वह—खैर, उन्हें काम के सिलसिले में रोक लिया गया था। क्या हम—?’ श्रीमती महेश कपूर ने शरमाते हुए पूछा।
वह आदमी प्लेटफार्म पर गया, कुछ शब्द बोले और वापस आ गया।
बाबा जी ने कहा, आपका आना हमारी कृपा है।
लेकिन क्या हम आगे बढ़ सकते हैं?
मैं पूछूंगा।
कुछ देर बाद वह तीन अमरूद और चार केले लेकर लौटा, जो उसने श्रीमती महेश कपूर को दे दिए।
उन्होंने कहा, 'हम आशीर्वाद पाना चाहते हैं।'
'ओह, जी हाँ, जी हाँ, मैं देखूंगा।'
अंततः वे आगे पहुंच गए। उन्हें बारी-बारी से उस पवित्र व्यक्ति से मिलवाया गया।
'धन्यवाद, धन्यवाद—' मुरझाए चेहरे ने पतले होठों से फुसफुसाते हुए कहा।
‘श्रीमती टंडन—’
'धन्यवाद धन्यवाद-'
‘केदारनाथ टंडन और उनकी पत्नी वीणा—’
‘आह?’
केदारनाथ टंडन और उनकी पत्नी।
‘आह, धन्यवाद, धन्यवाद, राम, राम, राम, राम...’
‘बाबाजी, ये प्राण कपूर हैं, राजस्व मंत्री महेश कपूर के पुत्र। और ये मंत्री

जी की पत्नी हैं।'
बाबा ने प्राण की ओर देखा और थके हुए स्वर में दोहराया:
'धन्यवाद धन्यवाद।'
उसने अपनी उंगली आगे बढ़ाकर प्राण के माथे को छुआ।
लेकिन इससे पहले कि उन्हें जल्दी से आगे बढ़ाया जाता, श्रीमती महेश कपूर ने विनती भरे स्वर में कहा:
'बाबा, लड़का बहुत बीमार है—उसे बचपन से ही अस्थमा है। अब जब आपने उसे छू लिया है—'
'धन्यवाद, धन्यवाद,' बूढ़े प्रेत ने कहा। 'धन्यवाद, धन्यवाद।'
'बाबा, क्या वह ठीक हो जाएगा?'
बाबा ने उस उंगली से आकाश की ओर इशारा किया जिससे उन्होंने प्राण को आशीर्वाद दिया था।
'और बाबा, उनके काम का क्या हुआ? मैं बहुत चिंतित हूँ—'
बाबा आगे की ओर झुके। अंगरक्षक ने श्रीमती महेश कपूर से रास्ता देने की विनती करने की कोशिश की।
'काम?' आवाज बहुत धीमी थी। 'भगवान का काम?'
नहीं बाबा, वह नौकरी की तलाश में है। क्या उसे नौकरी मिलेगी?
'यह निर्भर करेगा। मृत्यु ही सब कुछ तय करेगी।' ऐसा लग रहा था मानो होंठ खुल रहे हों और कंकालनुमा सीने से कोई दूसरी आत्मा बोल रही हो।
'एक मौत? किसकी, बाबा, किसकी?' श्रीमती महेश कपूर ने अचानक डरते हुए पूछा।
'प्रभु—तुम्हारा प्रभु—हम सबका प्रभु—वह था—वह सोचता था कि वह था—'
उन अजीबोगरीब, अस्पष्ट शब्दों ने उसके रोंगटे खड़े कर दिए। कहीं यह उसके पति के साथ न हो! घबराई हुई आवाज़ में श्रीमती महेश कपूर ने

विनती की: 'बताइए बाबा, क्या यह मृत्यु मेरे किसी करीबी की होगी?'
बाबा ने महिला की आवाज़ में छिपे भय को महसूस किया; उनके चेहरे पर उभरे तनाव भरे भावों में शायद करुणा झलक रही थी। “अगर ऐसा है भी, तो इससे तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ेगा...”, उन्होंने कहा। ये शब्द कहने में उन्हें बहुत कठिनाई हुई।
वह उसकी अपनी मृत्यु की बात कर रहा था। उसका यही मतलब होना चाहिए था। उसे यह बात अंदर तक महसूस हो रही थी। उसके कांपते होंठ मुश्किल से अगला सवाल पूछ पाए:
क्या आप मेरी मृत्यु की बात कर रहे हैं?
'नहीं। । । ।'
रामजप बाबा ने अपनी आँखें बंद कर लीं। श्रीमती महेश कपूर के दिल में राहत और बेचैनी दोनों उमड़ रही थीं, और वह आगे बढ़ीं। उनके पीछे से उन्हें फुसफुसाती हुई आवाज सुनाई दी, 'धन्यवाद, धन्यवाद।'
'धन्यवाद, धन्यवाद,' यह फुसफुसाहट धीरे-धीरे और भी धीमी होती गई, जैसे-जैसे वह, उसका बेटा, उसकी बहन, उसका पति और उसकी माँ - प्रेम और परिणामस्वरूप भय की एक श्रृंखला - धीरे-धीरे भीड़ से निकलकर खुली रेत पर आगे बढ़े।
11.16
सनाकी बाबा आंखें बंद करके बोल रहे थे।
‘के बारे में। के बारे में। के बारे में।
'भगवान आनंद का सागर हैं, और मैं उनकी एक बूँद हूँ।'
'प्रभु प्रेम का सागर है, और मैं उसका एक अंश हूं।'
मैं प्रभु का अंश हूं।
‘नाक के छिद्रों से द्विभाजन को अंदर लें।’
'श्वास लेना और सांस छोड़ना।

‘Om alokam, Om anandam.
‘प्रभु आप में विद्यमान हैं और आप प्रभु का अंश हैं।’
‘वातावरण और दिव्य गुरु की ऊर्जा को ग्रहण करें।’
'बुरी भावनाओं को बाहर निकाल दें।'
‘महसूस करो, सोचो मत।’
‘न महसूस करो और न सोचो।’
‘यह शरीर तुम्हारा नहीं है... यह मन तुम्हारा नहीं है... यह बुद्धि तुम्हारी नहीं है।’
‘ईसा मसीह, मुहम्मद, बुद्ध, राम, कृष्ण, शिव: मंत्र का अर्थ है अंजप जाप, भगवान का कोई नाम नहीं है।’
संगीत अनसुनी द्विभाजन है। संगीत को सुंदर कमल के फूल की तरह केंद्र खोलने दो।
आपको तैरना नहीं है, आपको बहना है।
या कमल के फूल की तरह तैरें।
'ठीक है।'
सब समाप्त हो गया। सनाकी बाबा ने अपना मुंह बंद किया और आंखें खोलीं। धीरे-धीरे और अनिच्छा से ध्यान करने वाले उस संसार में लौट आए जिसे वे छोड़कर आए थे। बाहर मूसलाधार बारिश हो रही थी। बीस मिनट तक उन्होंने संघर्ष और भागदौड़ से दूर एक ऐसे संसार में शांति और एकता का अनुभव किया था। दीपांकर को लगा कि ध्यान में शामिल सभी लोगों को एक दूसरे के लिए स्नेह और आत्मीयता का भाव अवश्य महसूस हुआ होगा। इसके बाद जो हुआ, उससे वे और भी अधिक स्तब्ध रह गए।
सत्र समाप्त होते-होते प्रोफेसर ने कहा: 'क्या मैं एक प्रश्न पूछ सकता हूँ?'
‘क्यों नहीं?’ सनाकी बाबा ने स्वप्निल भाव से कहा।

प्रोफेसर ने अपना गला साफ किया। उन्होंने 'मैडम' शब्द पर जोर देते हुए कहा, 'यह प्रश्न महोदया से है,' मानो वह उन्हें खुली चुनौती दे रहे हों। 'आपने जिस श्वास-प्रश्वास की बात की, क्या उसका प्रभाव ऑक्सीकरण के कारण है या ध्यान के कारण?'

पीछे से किसी ने कहा: 'हिंदी में बोलिए।' प्रोफेसर ने अपना प्रश्न हिंदी में दोहराया।

लेकिन यह एक विचित्र प्रश्न था, जिसका या तो कोई उत्तर संभव नहीं था —या जिसका उत्तर केवल असमंजस भरे अंदाज़ में 'दोनों' में ही दिया जा सकता था। क्योंकि ऑक्सीकरण और ध्यान की दो संभावनाओं में कोई विरोधाभास नहीं था, चाहे उनका अर्थ कुछ भी हो। स्पष्ट रूप से प्रोफेसर का मानना था कि जिस महिला ने बाबा जी से अत्यधिक शक्ति और निकटता हथिया ली थी, उसे उसकी औकात दिखानी ज़रूरी थी, और इस तरह का प्रश्न उसकी अज्ञानता और उसके दिखावे दोनों को उजागर कर देगा।

पुष्पा जाकर सनकी बाबा के दाहिनी ओर खड़ी हो गईं। उन्होंने अपनी आँखें फिर से बंद कर ली थीं और वे अत्यंत प्रसन्नता से मुस्कुरा रहे थे। वास्तव में, इसके बाद हुई पूरी बातचीत के दौरान वे उसी प्रसन्नता से मुस्कुराते रहे।

बाबा के अलावा सबकी निगाहें पुष्पा पर टिकी थीं। वह अंग्रेजी में वापस आ गई और जोश तथा ठंडे गुस्से के साथ बोली:

मैं यह बात बिल्कुल स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि यहाँ पूछे जाने वाले प्रश्न “महोदया” या किसी और से नहीं, बल्कि गुरु से पूछे जाने चाहिए। यदि हम यहाँ उपदेश देते हैं, तो वह उनकी वाणी में होता है, और हम उनके द्वारा वाणी बनकर दिए गए संकेतों के कारण ही अनुवाद करते हैं या बोलते हैं। “महोदया” को कुछ नहीं पता। इसलिए प्रश्न गुरु से ही पूछे

जाने चाहिए। बस इतना ही।
दीपांकर उसकी प्रतिक्रिया की गंभीरता से स्तब्ध रह गया। उसने बाबा की ओर देखा कि वे क्या कहेंगे। बाबा की आँखें अभी भी मुस्कुराती हुई बंद थीं, और उन्होंने अपनी ध्यान मुद्रा नहीं बदली। अब उन्होंने अपनी आँखें खोलीं और कहा:
'यह पुष्पा के कहने जैसा है, और मैं उससे अपने द्विभाजनों के साथ बोलने के लिए कहती हूं।'
'बिवरेशन' शब्द सुनते ही बाहर बिजली चमकी और उसके बाद गरज की आवाज सुनाई दी।
गुरु ने पुष्पा को प्रश्न का उत्तर देने के लिए बाध्य किया। वह व्यथित और शर्मिंदा होकर अपना चेहरा कपड़े से ढक लिया।
फिर उसने क्रोध, ईमानदारी और संघर्षपूर्ण बचाव के भाव से बात की।
प्रोफेसर की ओर सीधे देखते हुए उसने कहा:
एक बात कहना अत्यंत आवश्यक है, और वह यह है कि हम सभी साधिकाएँ हैं, हम सभी सीख रहे हैं, चाहे हमारी उम्र कितनी भी हो, और हमें केवल प्रासंगिक प्रश्न ही पूछने चाहिए, न कि केवल प्रश्न पूछने के लिए, या किसी “महोदया” या “गुरु” या किसी और की परीक्षा लेने के लिए। यदि आप वास्तव में किसी प्रश्न से परेशान हैं तो आप उसे पूछ सकते हैं—अन्यथा, आपको गुरु की कृपा प्राप्त नहीं होगी। इसलिए मुझे यह स्पष्ट कर देना चाहिए, और अब मैं प्रश्न का उत्तर दूंगा। क्योंकि मुझे पता है कि हमारे पास और भी प्रश्न और उत्तर सत्र होंगे, और मुझे यह सब शुरू से ही स्पष्ट कर देना चाहिए—
यहां प्रोफेसर ने हस्तक्षेप करने की कोशिश की, लेकिन उसने उन्हें चुप करा दिया।
‘मुझे बोलने दीजिए और अपनी बात पूरी करने दीजिए। मैं प्रोफेसर साहब

के प्रश्न का उत्तर दे रही हूँ, चाहे वह किसी भी भावना से पूछा गया हो, तो प्रोफेसर साहब को बीच में टोकने की क्या ज़रूरत है? मैं ऑक्सीकरण की वैज्ञानिक तो नहीं हूँ... ऑक्सीकरण तो प्राकृतिक है, पर यह हमेशा होता रहता है। लेकिन हो क्या रहा है? आप देख या सुन रहे होंगे, लेकिन शब्द या चित्र अपने आप में क्या है? प्रभाव क्या है? यह अलग-अलग हो सकता है। अगर आप कोई अश्लील चित्र देखते हैं, तो उसका आप पर एक अलग प्रभाव पड़ेगा, एक तीव्र प्रभाव'— उसने नाक सिकोड़ी और अरुचि से आँखें बंद कर लीं—'और एक सुंदर चित्र, उसका प्रभाव अलग होगा। संगीत भी ऐसा ही है। भजन संगीत, फिल्मी संगीत, संगीत है, लेकिन एक का एक निश्चित प्रभाव होता है; दूसरे का दूसरा। गंध में भी यही बात लागू होती है। यह जल रहा हो सकता है, लेकिन अगरबत्ती की जलने की गंध अद्भुत होती है, और जूतों के जलने की गंध भयानक होती है। या कल अखाड़ों के जुलूसों को ही ले लीजिए: कुछ अच्छे मूड में होंगे, कुछ लड़ रहे होंगे। यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्या हो रहा है।' और संकीर्तन भी, जैसे आज शाम को: आप अच्छे लोगों के साथ भी संकीर्तन कर सकते हैं, या बुरे लोगों के साथ भी।' यह बात बहुत स्पष्ट रूप से कही गई थी। 'इसीलिए संत चैतन्य केवल अच्छे लोगों के साथ ही संकीर्तन करते थे।'

तो मैं प्रोफेसर साहब से कहना चाहता हूँ कि यह सवाल नहीं है कि "क्या यह ध्यान है? क्या यह ऑक्सीकरण है?" असली सवाल यह है: "आपका गंतव्य क्या है? आप कहाँ जाना चाहते हैं?"

अब सनाकी बाबा ने अपनी आँखें खोलीं और बोलने लगे। बारिश तेज़ थी और उनकी आवाज़ धीमी थी, लेकिन उन्हें सुनना मुश्किल नहीं था। गुरु के शब्द शांत और सुखदायक थे, भले ही वे भेद स्पष्ट करने और गलतियों को इंगित करने का प्रयास कर रहे थे। लेकिन पुष्पा अपने गुरु के बोलते

ही अपना सिर बाएँ से दाएँ हिला रही थी, और उनके द्वारा कही गई बातों पर प्रसन्नतापूर्वक मुस्कुरा रही थी, जिन्हें वह 'पराजित' प्रोफेसर के विरुद्ध निर्देशित मान रही थी। यह सब इतना प्रेमहीन, अधिकार जताने वाला और रक्षात्मक था कि दीपांकर इसे मुश्किल से सहन कर पा रहा था। उसके भीतर उत्पन्न तीव्र घृणा ने उसे इस सुंदर स्त्री को एक बिल्कुल अलग नज़रिए से देखने पर मजबूर कर दिया। वह अपने प्रतिद्वंद्वी की हार पर इस तरह प्रसन्न हो रही थी कि दीपांकर को लगभग घिन आ रही थी।

11.17

पुराने ब्रह्मपुर की गलियों में हवा ज़ोरों से सीटी बजा रही थी और रैंप पर लगे पीपल के पेड़ को पूरी ताकत से हिला रही थी। नीचे उतर रहे तीर्थयात्री किले की तलहटी तक पहुँचते-पहुँचते पूरी तरह भीग चुके थे। घाटों की सीढ़ियों से बारिश का पानी बह रहा था, गंगा की सतह में मिल रहा था और पुल मेला की रेत में नालियाँ बना रहा था। चाँद लगभग छिपा हुआ था। ऊपर, बादल आसमान में बेतरतीब ढंग से इधर-उधर भाग रहे थे। नीचे, पुरुष और महिलाएं ज़मीन पर बेतरतीब ढंग से इधर-उधर भाग रहे थे—अपने सामान की रक्षा करने की कोशिश कर रहे थे; अपने तंबू के खूंटों को रेत में और मज़बूती से गाड़ रहे थे; और तेज़ बारिश और रेत से भरी तूफ़ानी हवा में लड़खड़ाते हुए गंगा में स्नान करने के लिए जा रहे थे, क्योंकि सबसे शुभ स्नान का समय—जो पंद्रह घंटे तक, अगले दिन दोपहर लगभग तीन बजे तक चलेगा—अभी शुरू ही हुआ था।

पुल मेला की रेत पर लगे कुछ तंबू तूफान से उड़ गए, और ऊपर पुराने कस्बे में कुछ गलियों में पानी भर गया, कुछ छतों से टाइलें उड़ गईं, और यहाँ तक कि रेत की ओर जाने वाले रैंप से सौ गज से अधिक दूर खड़ा एक छोटा पीपल का पेड़ भी जड़ से उखड़ गया। लेकिन ये घटनाएँ जल्द ही अंधेरे और भय के कारण और भी भयावह हो गईं।

‘बड़ा पीपल का पेड़ गिर गया है!’ किसी ने घबराकर कहा। और हालांकि यह सच नहीं था, फिर भी यह अफवाह विस्मय से भरे तीर्थयात्रियों की भीड़ में बेकाबू हवा की तरह फैल गई। वे एक-दूसरे को देखने लगे और सोचने लगे कि इसका क्या मतलब हो सकता है। अगर रैंप के किनारे खड़ा बड़ा पीपल का पेड़ सचमुच गिर गया था, तो पत्तों के पुल का क्या होगा, पुल मेले का क्या होगा, या फिर पूरी व्यवस्था का क्या होगा?

11.18

आधी रात होते-होते तूफान थम गया। बादल छंट गए, पूरा चांद फिर से दिखाई दिया। लाखों तीर्थयात्रियों ने रात भर और अगले दिन तक स्नान किया।

सुबह-सुबह बड़े अखाड़ों की शोभायात्राएं शुरू हुईं। प्रत्येक संप्रदाय के साधु बारी-बारी से मेले की मुख्य सड़क पर निकले, जो नदी के समानांतर थी, लेकिन कुछ सौ गज रेत पर बनी हुई थी। यह नजारा भव्य था: झांकियां, बैंड, घुड़सवार, पालकियों पर सवार महंत, बैनर, झंडे, ढोल, चाबुक, अग्नि-चिमटे या त्रिशूल लिए नग्न नाग, एक विशालकाय, बर्बर व्यक्ति जो पवित्र मंत्रों का जाप करते हुए एक बड़ी तलवार लहरा रहा था। बड़ी भीड़ इस दृश्य को देखने और साधुओं का उत्साहवर्धन करने के लिए जमा हुई थी। फेरीवाले बांसुरी, नकली बाल, पवित्र धागा, चूड़ियां, बालियां, गुब्बारे और नाश्ता बेच रहे थे—मूंगफली, चना-जोर-गरम और जल्दी पिघलने वाली आइसक्रीम। पैदल पुलिसकर्मी—या घोड़ों पर सवार और एक मामले में ऊंट पर—व्यवस्था बनाए रखे हुए थे। भ्रम से बचने के लिए—या साधुओं के एक संप्रदाय और दूसरे संप्रदाय के बीच संघर्ष से बचने के लिए शोभायात्राओं को अलग-अलग समय पर निकाला गया था। साधु जितने उग्र थे उतने ही अभिमानी और प्रतिस्पर्धी भी थे, इसलिए पुल मेले के आयोजकों ने यह सुनिश्चित करने का पूरा प्रयास किया कि एक

जुलूस और दूसरे जुलूस के बीच कम से कम पंद्रह मिनट का अंतराल हो। अपने जुलूस के अंत में, प्रत्येक जुलूस के साधु बाईं ओर मुड़कर सीधे गंगा की ओर बढ़ते थे, जहाँ वे 'जय गंगा!' और 'गंगा मैया की जय!' के नारों के बीच उत्साहपूर्वक सामूहिक स्नान करते थे। फिर वे एक संकरे समानांतर मार्ग से अपने शिविरों में लौट आते थे, इस बात से संतुष्ट होकर कि उनके अखाड़े से अधिक भव्य या पवित्र कोई अखाड़ा नहीं हो सकता।

चौड़े मिट्टी के चबूतरे के ऊपर स्थित विशाल पीपल का वृक्ष, जैसा कि अब हर कोई देख सकता था, पूरी तरह से सुरक्षित था और संभवतः अगले कुछ सौ वर्षों तक फलता-फूलता रहेगा। कुछ छोटे वृक्षों के विपरीत, यह तूफान से उखड़ नहीं गया था। तीर्थयात्री बड़ी संख्या में पुल मेला रेलवे स्टेशन पर आते रहे; वे वृक्ष के पास से गुजरते, सम्मान और प्रार्थना में हाथ जोड़ते और चबूतरे से नीचे रेत और गंगा की ओर अपनी यात्रा शुरू करते। लेकिन आज, समय-समय पर, जब भी कोई जुलूस मुख्य मेला मार्ग से चबूतरे के नीचे से गुजरता, तो यातायात में थोड़ी बाधा और चबूतरे पर कुछ भीड़भाड़ हो जाती थी। हालांकि, इसे सभी ने सकारात्मक भाव से लिया, खासकर इसलिए कि चबूतरे पर खड़े होने वाले कई लोगों को नीचे से गुजरने वाले जुलूसों का एक सामान्य दृश्य दिखाई देता था—और उन तीर्थयात्रियों को जो इस शुभ दिन पर अभी-अभी पहुंचे थे, तंबू से ढके पूरे क्षेत्र और उसके पार पवित्र नदी का पहला दृश्य दिखाई देता था।

वीना टंडन और उनकी सहेली प्रिया गोयल, अपने परिवार के कुछ सदस्यों के साथ, रैंप से नीचे देख रही भीड़ में शामिल थीं। बुजुर्ग श्रीमती टंडन भी वहाँ थीं, और उनका पोता भास्कर भी, जो सब कुछ देखने, गिनने, अनुमान लगाने, हिसाब लगाने और आनंद लेने के लिए बहुत उत्सुक था। प्रिया पुराने ब्रह्मपुर स्थित संयुक्त परिवार के घर में लगभग कैद जैसी स्थिति से निकलकर खास तौर पर इस पवित्र उद्देश्य के लिए आई थीं।

उनकी ननदों और सास ने काफी हंगामा किया, लेकिन उनके पति ने अपने सौम्य स्वभाव से धार्मिक आधार पर उन्हें मना लिया; दरअसल, जब उनकी सहेली वीना उन्हें लेने आई थीं, तो उन्होंने उन्हें भी साथ आने के लिए राजी कर लिया था। वीना के अपने परिवार के पुरुषों की बात करें तो, उनमें से कोई भी उपस्थित नहीं था: केदारनाथ काम के सिलसिले में शहर से बाहर थे, मान अभी भी रुधिया में थे, प्राण ने एक बार फिर अज्ञानता और अंधविश्वास के शिकार होने से इनकार कर दिया था, और महेश कपूर ने अपनी बेटी द्वारा उनके साथ आने के सुझाव को बड़े ही तिरस्कारपूर्ण ढंग से ठुकरा दिया था। आज तो, वास्तव में, श्रीमती महेश कपूर भी उनके साथ नहीं थीं। वह शास्त्रों में वर्णित न होने वाली पीपल के पुल की पौराणिक कथा पर विश्वास नहीं कर पा रही थी, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह विशेष दिन गंगा नदी पर बना था। जाह्नु का कान एक बात थी, पीपल का पुल दूसरी।

वीना और प्रिया स्कूल की लड़कियों की तरह बातें कर रही थीं। वे अपने स्कूली दिनों, अपने पुराने दोस्तों, अपने परिवार के बारे में (जब भी प्रिया के पति ध्यान नहीं देते थे, तो दबी आवाज़ में) मेले के नज़ारों और शाही दरवाज़े के बंदरों की हरकतों पर चर्चा कर रही थीं। दोनों ने अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ चटख कपड़े पहने थे, वीना ने लाल और प्रिया ने हरे। हालाँकि प्रिया ने भी बाकी सब की तरह गंगा में स्नान करने की योजना बनाई थी, फिर भी उसने कलियों के डिज़ाइन वाला एक मोटा सोने का हार पहना था—क्योंकि राय बहादुर परिवार की बहू को घर से बाहर निकलना था, तो वह बिना गहनों के नग्न अवस्था में नहीं दिख सकती थी। उसके पति, राम विलास गोयल, भास्कर को अपनी पीठ पर उठाए हुए थे ताकि उसे सब कुछ साफ़ दिखाई दे। जब भी भास्कर के मन में कोई सवाल होता, वह अपनी दादी से पूछता और बूढ़ी श्रीमती टंडन, हालाँकि उनकी नज़र

कमज़ोर थी—अपनी लंबाई और कमज़ोर दृष्टि के कारण—उन्हें समझाने में कोई कसर नहीं छोड़ती थीं। वे सभी और उनके आस-पास के सभी लोग बहुत खुश थे। वे मुख्य रूप से शहरवासियों और किसानों से घिरे हुए थे, हालांकि कहीं-कहीं एक-आध पुलिसकर्मी या यहां तक कि एक साधु भी दिखाई दे रहा था जो जुलूस में शामिल नहीं था।

सुबह के लगभग दस बज रहे थे, और पिछली रात के तूफान के बावजूद, बहुत गर्मी थी। कुछ तीर्थयात्री धूप से बचने के लिए छाते लिए हुए थे—और शायद बारिश से बचने के लिए भी। इसी कारण से—और क्योंकि यह अधिकार का प्रतीक था—विभिन्न जुलूसों में शामिल साधुओं में से जो अधिक महत्वपूर्ण थे, उनके भक्त उन्हें छतरियों से ढककर धूप से बचा रहे थे।

लाउडस्पीकर पर तेज़ आवाज़ में घोषणाएँ लगातार जारी रहीं, ढोल और तुरही की आवाज़ें भी गूंजती रहीं, और भीड़ की धीमी-धीमी आवाज़ें कभी धीमी तो कभी तेज़ गर्जना करती रहीं। जुलूस एक के बाद एक निकलते रहे: पीले वस्त्र पहने, नारंगी पगड़ी वाले पुजारी, तुबा और शंख की थाप के साथ; एक पालकी में बैठा एक बूढ़ा व्यक्ति, जो किसी भरे हुए तीतर जैसा दिखता था, नींद में डूबा हुआ था, जिसके आगे लाल मखमली बैनर लगा था जिस पर लिखा था कि वह श्री स्वामी प्रभानंद जी महाराज, वेदांताचार्य, एम.ए. हैं; अर्धनग्न नाग, जिनकी कमर पर डोरी बंधी थी और जननांगों के लिए एक छोटी सफेद थैली थी; लंबे बालों वाले पुरुष चांदी के गदा लिए हुए; तरह-तरह के बैंड, एक काले कुर्ते और सोने की कढ़ाई वाले एपॉलेट्स पहने हुए, क्लैरिनेट पर बेसुरा बजा रहे थे, दूसरा (दीवाना 786 बैंड—स्पष्ट रूप से मुस्लिम, क्योंकि उन्होंने शुभ संख्या अपनाई थी—लेकिन उन्हें इस जुलूस के लिए क्यों किराए पर लिया गया था?) लाल कुर्ते और तीखे ओबो बजाते हुए। एक घोड़े से खींचे जाने वाले रथ पर

एक क्रूर, बिना दांत वाला आदमी बैठा था, जो भीड़ पर 'हर, हर...' चिल्ला रहा था, ताकि भीड़ 'महादेव!' की गर्जना भरी प्रतिक्रिया दे। एक अन्य महंत, मोटा और सांवला, जिसके स्तन स्त्री के समान भरे हुए थे, एक आदमी द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी पर सौम्य भाव से बैठा था और तीर्थयात्रियों पर गेंदे के फूल फेंक रहा था, जिन्हें पाने के लिए तीर्थयात्री गीली रेत पर टूट पड़ते थे।

अब तक वीना और उनके साथी चौड़े रैंप पर आधे रास्ते तक पहुँच चुके थे, जो तीर्थयात्रियों से खचाखच भरा हुआ था, लगभग पचास लोग एक कतार में खड़े थे। उनके पीछे से आ रहे तीर्थयात्रियों के दबाव से वे लगातार आगे धकेले जा रहे थे। ये तीर्थयात्री आसपास के कस्बों या ग्रामीण इलाकों से आ रहे थे, या पुल मेला की विशेष शटल ट्रेनों से लगातार पहुँच रहे थे। रैंप के दोनों ओर गहरी खाइयाँ होने के कारण, आगे बढ़ने के अलावा कोई रास्ता नहीं था। दुर्भाग्य से, साधुओं का वर्तमान जुलूस, जिसने उनका रास्ता रोक रखा था, पहले से भी धीमी गति से आगे बढ़ रहा था, शायद आगे किसी रुकावट के कारण—या संभवतः दर्शकों के बीच अपनी लोकप्रियता का आनंद लेने के लिए। लोग घबराने लगे। बूढ़ी श्रीमती टंडन ने सुझाव दिया कि वे वापस जाने की कोशिश करें, लेकिन यह स्पष्ट रूप से असंभव था। अंततः जुलूस आगे बढ़ा, अगले जुलूस से पहले एक स्वागत योग्य जगह दिखाई दी, और रैंप पर मौजूद भीड़ मुख्य मार्ग को पार करते हुए आगे बढ़ी और लड़खड़ाते हुए रास्ते के दूसरी ओर खड़े दर्शकों की भीड़ में जा घुसी। पुलिस ने व्यवस्था बहाल करने में कामयाबी हासिल की, और कुछ ही मिनटों में भास्कर, राम विलास के कंधों से उतरकर, अगले जुलूस को देख सका: सैकड़ों नाग तपस्वी, पूरी तरह नग्न, जिनका नेतृत्व छह हाथी कर रहे थे और उनके पीछे छह विशाल सोने से सजे हाथी चल रहे थे।

भास्कर और उसका परिवार अब भी रैंप पर ही थे, हालांकि अब वे उसके आधार से लगभग बीस फीट की दूरी पर थे। उन्हें सब कुछ नज़दीक से दिखाई दे रहा था, और उनके आगे से लोगों के हटने से भीड़ थोड़ी कम हो गई थी। भास्कर ने राख से सने नग्न पुरुषों को देखकर घोर आश्चर्य व्यक्त किया, जो कमज़ोर या तंदुरुस्त थे, उनके बाल उलझे हुए थे, उनके कानों या गले में गेंदे के फूल लटके हुए थे। उनके भूरे लिंग, शिथिल या अर्ध-शिथिल, नीचे लटक रहे थे और उनके आगे बढ़ने पर इधर-उधर झूल रहे थे, वे चार-चार की पंक्ति में चल रहे थे, उनके दाहिने हाथों में त्रिशूल या भाले ऊँचे थे। वह इतना आश्चर्यचकित था कि अपनी दादी से यह नहीं पूछ सका कि यह सब क्या हो रहा है। तभी भीड़ से एक ज़ोरदार जयकार, लगभग गर्जना, उठी, और कई महिलाएं, युवा और अधेड़ उम्र की, नागों के पैर छूने और उनके द्वारा रौंदे गए धूल को इकट्ठा करने के लिए आगे बढ़ीं।

लेकिन नागों ने अपनी व्यवस्था भंग नहीं होने दी। वे त्रिशूल लहराते हुए उन पर उग्र रूप से टूट पड़े। पुलिस ने महिलाओं को समझाने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। यह सिलसिला कुछ देर तक चलता रहा, कुछ महिलाएं रैंप के नीचे तैनात कुछ पुलिसकर्मियों से बच निकलने में कामयाब रहीं और पवित्र पुरुषों के सामने एक पल के लिए प्रणाम किया। फिर अचानक जुलूस रुक गया।

किसी को पता नहीं था कि ऐसा क्यों हो रहा है। सबको उम्मीद थी कि एक-दो मिनट में फिर से शुरू हो जाएगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। नाग अधीर होने लगे। रैंप पर फिर से दबाव बढ़ने लगा, क्योंकि आने वाली भीड़ आगे बढ़ती जा रही थी और बदले में दूसरों को भी आगे धकेल रही थी। रैंप के निचले हिस्से में खड़े लोग अब अपने पीछे मौजूद लोगों की भीड़ के भार से दबने लगे थे। एक आदमी वीणा से सट गया और गुस्से में

आकर उसने पीछे मुड़ने की कोशिश की। लेकिन जगह नहीं थी। सांस लेना मुश्किल होता जा रहा था। उसके चारों ओर लोग चिल्लाने लगे थे। कुछ लोग पुलिस से उन्हें जाने देने की गुहार लगा रहे थे, तो कुछ लोग रैंप पर ऊपर चिल्लाकर पूछ रहे थे कि क्या हो रहा है। हालांकि ऊपर रैंप पर खड़े लोगों को स्थिति साफ नहीं दिख रही थी, फिर भी नज़ारा चौड़ा था। वे देख सकते थे कि नागों का नेतृत्व करने वाले हाथी रुक गए थे क्योंकि उनके आगे का जुलूस रुक गया था। लेकिन वह पिछला जुलूस क्यों रुका था, यह बताना नामुमकिन था। इतनी दूरी से जुलूस और दर्शक एक हो गए थे, और कुछ भी स्पष्ट नहीं था। रैंप से नीचे की ओर से जवाब चिल्लाकर दिए गए, लेकिन भीड़ के शोर, ढोल की आवाज़ और लाउडस्पीकरों पर लगातार हो रही घोषणाओं के बीच वे भी सुनाई नहीं दिए।

रैंप के निचले हिस्से में मौजूद भीड़ पूरी तरह से अचंभित होकर दहशत में आ गई। कुछ ही मिनटों में जब ऊपर मौजूद लोगों ने देखा कि साधुओं का अगला जुलूस आ चुका है और अब रैंप के नीचे एक निरंतर अवरोध बना चुका है, जिसके पार जाने का कोई रास्ता नहीं बचा है, तो वे भी दहशत में आ गए। पहले से ही भीषण गर्मी अब दम घोंटने वाली हो गई थी। पुलिस खुद उस भीड़ में समा गई जिसे वे नियंत्रित करने की कोशिश कर रहे थे। फिर भी थके-हारे, गर्मी से बेहाल, लेकिन उत्साही तीर्थयात्री स्टेशन पर आते रहे और नीचे क्या हो रहा है, इससे बेखबर, पवित्र गंगा तक पहुँचने के लिए उत्सुकता से पीपल के पेड़ और रैंप की ओर बढ़ते चले गए।

वीना ने देखा कि प्रिया ने अपने गले में लटकी माला को कसकर पकड़ रखा है। उसका मुंह खुला हुआ था और वह हांफ रही थी। भास्कर ने अपनी मां और दादी की तरफ देखा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या

हो रहा है, लेकिन वह बुरी तरह डरा हुआ था। राम विलास ने देखा कि प्रिया कुचली जा रही है, तो वह उसकी तरफ बढ़ने की कोशिश करने लगा और भास्कर उसकी पीठ से गिर गया। वीना किसी तरह लड़के को पकड़ने में कामयाब रही। लेकिन बूढ़ी श्रीमती टंडन कहीं नजर नहीं आ रही थीं—भीड़ ने उन्हें अपनी बेबस और अनियंत्रित गति में निगल लिया था। लोग अब चीख रहे थे, एक-दूसरे को पकड़ रहे थे और एक-दूसरे पर पैर रख रहे थे, अपने पति-पत्नी, माता-पिता और बच्चों को ढूंढने की कोशिश कर रहे थे, या अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर हाथ-पैर मार रहे थे, सांस लेने और कुचले जाने से बचने के लिए बेताब थे। कुछ लोग नागों की तरफ आगे बढ़े, जो अपने और दूसरी तरफ मौजूद दर्शकों के बीच कुचले जाने के डर से, क्रोध से दहाड़ते हुए अपने त्रिशूलों से उन पर टूट पड़े। लोग गिर पड़े, उनके घावों से खून बह रहा था, जमीन पर। खून देखकर भीड़ दहशत में आ गई और पीछे हटने की कोशिश करने लगी। लेकिन जाने के लिए कोई जगह नहीं थी।

रैंप के किनारों पर खड़े कुछ लोगों ने बांस की बाड़ तोड़कर दोनों ओर बनी खाइयों में उतरने की कोशिश की। लेकिन पिछली रात के तूफान ने इन खड़ी ढलानों को फिसलन भरा बना दिया था और खाइयाँ पानी से भरी हुई थीं। लगभग सौ भिखारी एक खाई के किनारे शरण लिए हुए थे। उनमें से कई अपंग थे, कुछ अंधे थे। घायल तीर्थयात्री, जो हांफ रहे थे और ढलान पर पैर जमाने की कोशिश कर रहे थे, अब उन पर गिर पड़े। कुछ भिखारी कुचलकर मर गए, और कुछ ने पानी में भागने की कोशिश की, जो जल्द ही खून से लथपथ कीचड़ में बदल गया क्योंकि रैंप पर फंसे और भी लोग बचने के लिए इसी एकमात्र रास्ते की तलाश में नीचे चीखते-चिल्लाते लोगों पर गिर पड़े या फिसल गए।

रैंप के निचले हिस्से में, जहाँ वीना और उसका परिवार फँसा हुआ था,

लोग घायल या मरणासन्न थे। कई बूढ़े और कमज़ोर लोग ज़मीन पर गिर पड़े। उनमें से कुछ, लंबी यात्रा से थक चुके थे, और भीड़ के दबाव या सदमे को सहन करने की शक्ति उनमें नहीं थी। एक छात्र, जो हिल-डुल नहीं सकता था, असहाय होकर पास ही देखता रहा जब उसकी माँ को कुचलकर मार डाला गया और उसके पिता की पसलियाँ चूर-चूर हो गईं। कई लोग सचमुच एक-दूसरे से दबकर मर गए। कुछ का दम घुट गया, कुछ चोटों से दम तोड़ गए। वीना ने एक बूढ़ी औरत को देखा, जिसके मुँह से खून बह रहा था, वह अचानक उसके पास ही गिर पड़ी।

वहां पूरी तरह से भयावह अराजकता फैली हुई थी।

'भास्कर—भास्कर—मेरा हाथ मत छोड़ो,' वीना ने उसे कसकर पकड़ते हुए कहा। उसे हर शब्द मुश्किल से बोलना पड़ रहा था। लेकिन चारों ओर मौजूद भयभीत और घायल लोगों की भारी भीड़ के कारण वे दोनों इधर-उधर धक्के खा रहे थे, और वीना को अपने और उसके हाथ के बीच किसी के शरीर का भारी भार महसूस हो रहा था।

'नहीं—नहीं—' वह भय से सिसकते हुए चीखी। लेकिन उसने महसूस किया कि छोटा हाथ पहले हथेली और फिर एक-एक उंगली करके उसके हाथ से निकल गया।

11.19

पंद्रह मिनट के भीतर एक हजार से अधिक लोग मारे गए।

अंततः पुलिस रेलवे अधिकारियों से संपर्क करने और ट्रेनों को रोकने में कामयाब रही। उन्होंने रैंप तक जाने वाले रास्तों पर बैरिकेड लगा दिए और रैंप के नीचे और आसपास के क्षेत्र को खाली करा दिया। लाउडस्पीकरों से लोगों को वापस जाने, मेले के मैदान में प्रवेश न करने और जुलूस न देखने के लिए कहा जाने लगा। उन्होंने घोषणा की कि शेष जुलूस भी रद्द कर दिए गए हैं।

अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया था कि क्या हुआ था।

दीपांकर मुख्य मार्ग के दूसरी ओर दर्शकों में शामिल था। पचास फीट से भी कम दूरी पर हो रहे नरसंहार को वह भय से देख रहा था, लेकिन रैंप और नागों के बीच होने के कारण वह कुछ नहीं कर सकता था। वैसे भी, मरने या घायल होने के अलावा उसके पास कोई चारा नहीं था। रैंप पर इतनी भीड़ थी कि वह किसी को पहचान नहीं पा रहा था। यह एक भयावह दृश्य था, मानो मानवता पागल हो गई हो, हर कोई एक-दूसरे से अलग नहीं दिख रहा था, सब एक तरह की सामूहिक आत्महत्या पर आमादा थे।

उसने देखा कि एक युवा नाग एक बूढ़े आदमी पर बेरहमी से वार कर रहा था, जो डर के मारे जुलूस के दूसरी तरफ जाकर अपनी जान बचाने की कोशिश कर रहा था। वह आदमी गिर पड़ा, फिर उठा। उसके कंधे और पीठ पर लगे घावों से खून बह रहा था। दीपांकर ने दहशत के साथ उसे पहचान लिया, वह वही आदमी था जिससे वह नाव में मिला था, सालिमपुर का वह साहसी बूढ़ा तीर्थयात्री जो स्नान के लिए सही जगह पर जाने के लिए इतना ज़ोर दे रहा था। उस आदमी ने पीछे हटने की कोशिश की, लेकिन भीड़ के फिर से आगे बढ़ने पर वह नीचे गिर पड़ा। उसकी पीठ और सिर कुचले गए पैरों के नीचे दब गए। जब भीड़ त्रिशूल की नोक पर फिर से आगे बढ़ी, तो बूढ़े आदमी का क्षत-विक्षत शरीर वहीं पड़ा रहा, मानो ज्वार द्वारा बहाकर लाया गया कोई मलबा हो।

11.20

इसी बीच, ब्रह्मपुर किले की प्राचीरों से जुलूसों का भव्य नजारा देख रहे कई वीआईपी और सेना अधिकारी नीचे के दृश्य को अविश्वास से देखने लगे। अफरा-तफरी इतनी अचानक मची और सब कुछ इतनी जल्दी खत्म हो गया कि जब डरी हुई भीड़ आखिरकार छंटने में कामयाब हुई, तो

जमीन पर पड़े बेजान शरीरों की संख्या अविश्वसनीय थी। आखिर हुआ क्या था? कौन सी व्यवस्थाएं गड़बड़ हो गईं? इसके लिए कौन जिम्मेदार था?

किले के कमांडर ने औपचारिक अनुरोध की प्रतीक्षा किए बिना ही पुलिस और मेला अधिकारियों की सहायता के लिए तुरंत सैनिक भेजे। उन्होंने शवों को हटाना शुरू किया, घायलों को प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों में और शवों को पुल मेला पुलिस स्टेशन ले जाया गया। उन्होंने आपदा के बाद की स्थिति से निपटने के लिए तुरंत एक केंद्रीय नियंत्रण कक्ष स्थापित करने का सुझाव भी दिया। मेले के लिए स्थापित अस्थायी टेलीफोन एक्सचेंज को इसी उद्देश्य के लिए उपयोग में लाया गया।

इस शुभ दिन पर स्नान करने की इच्छा रखने वाले विशिष्ट अतिथि गंगा के बीचोंबीच एक नौका पर थे, तभी कप्तान बड़ी घबराहट में उनके पास आया। मुख्यमंत्री और गृह मंत्री अगल-बगल खड़े थे। कप्तान ने दूरबीन आगे बढ़ाते हुए मुख्यमंत्री से कहा, “महोदय—मुझे आशंका है कि प्रवेश मार्ग पर कुछ गड़बड़ है। आप स्वयं जाकर देख लें।” एस.एस. शर्मा ने बिना कुछ कहे दूरबीन ले ली और उसे फिर से केंद्रित किया। दूर से जो मामूली हलचल लग रही थी, वह अचानक उनके सामने अपने भयावह रूप में प्रकट हो उठी। उनका मुंह खुला रह गया, उन्होंने व्याकुलता से अपनी आंखें बंद कर लीं और फिर खोलकर मार्ग के ऊपरी हिस्से, फिर दोनों ओर की खाइयों, नागों और संघर्षरत पुलिसकर्मियों को देखा। उन्होंने दूरबीन एल.एन. अग्रवाल को सौंपते हुए केवल एक शब्द कहा: “अग्रवाल!”

गृह मंत्री के मन में सबसे पहला विचार यही आया कि अंततः इस आपदा के लिए उन्हें ही जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। शायद इस विचार को असामान्य और अनुचित मानना अनुचित होगा। दूसरों की सबसे भीषण आपदाओं में भी, हमारे मन का एक हिस्सा, अक्सर वह हिस्सा जो सबसे

तेज़ी से प्रतिक्रिया करता है, उस कंपन को सहने की कोशिश करता है जो आपदा के केंद्र से हम तक पहुंचेगी। गृह मंत्री कहने ही वाले थे कि, 'लेकिन सारी व्यवस्थाएं एकदम सही थीं—मैंने स्वयं मेला अधिकारी के साथ उनकी समीक्षा की थी—', तभी एक दूसरे विचार ने उन्हें रोक दिया। प्रिया। प्रिया कहाँ थी? उसने आज महेश कपूर की बेटी के साथ मेले में जाने का प्लान बनाया था—जुलूस देखने और नहाने के लिए। यकीनन वो ठीक होगी। यकीनन उसे कुछ नहीं हुआ होगा। उसके लिए प्यार और जो कुछ हो सकता था उसके डर के बीच फंसा हुआ वो एक शब्द भी नहीं बोल सका। उसने दूरबीन मुख्यमंत्री को वापस दे दी। मुख्यमंत्री उससे कुछ कह रहे थे, पर वो समझ नहीं पा रहा था। वो शब्दों को समझ नहीं पा रहा था। उसने अपना सिर हाथों में छिपा लिया।

कुछ देर बाद उसके मन का धुंध छंट गया और उसने खुद को समझाया कि आज मेले में लाखों लोग आए हैं और उसके भगदड़ में फंसने की संभावना, असल संभावना, बहुत कम है। लेकिन फिर भी वह अपनी इकलौती संतान के लिए चिंता से व्याकुल था। हे भगवान, उसे कुछ न हुआ हो।

मुख्यमंत्री का चेहरा गंभीर बना रहा और वे उनसे भी गंभीर लहजे में ही बात कर रहे थे। लेकिन तीखे लहजे के अलावा गृह मंत्री को कुछ भी समझ नहीं आया। थोड़ी देर बाद उन्होंने गंगा की ओर देखा। नाव के पास पानी पर कुछ गुलाब की पंखुड़ियाँ और एक नारियल तैर रहे थे। उन्होंने हाथ जोड़कर पवित्र नदी से प्रार्थना करना शुरू कर दिया।

11.21

क्योंकि इस नाव को सामान्य नावों की तुलना में अधिक गहरे पानी की आवश्यकता थी, इसलिए गंगा के उथले किनारे पर इसे उतारना मुश्किल था। कप्तान ने अंततः इसे नावों की एक श्रृंखला से बांधने का उपाय

अपनाया, जिस पर उसने एक तरह से अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया था। जब तक नाव को बांधा गया, तब तक पौने घंटे से अधिक समय बीत चुका था। ब्रह्मपुर की ओर के मुख्य स्नान स्थलों पर भीड़ लगभग न के बराबर रह गई थी। आपदा की खबर तेजी से फैल चुकी थी। रंग-बिरंगे चिह्नों वाले स्नान केंद्र—तोता, मोर, भालू, कैंची, पर्वत, त्रिशूल आदि—लगभग सुनसान थे। कुछ लोग संयमित, लगभग भयभीत भाव से, नदी में डुबकी लगा रहे थे और जल्दी से वहां से जा रहे थे।

मुख्यमंत्री थोड़ा लंगड़ाते हुए और गृह मंत्री चिंता से लगभग कांपते हुए, नाव में उनके साथ आए कुछ अधिकारियों के साथ रैंप के नीचे वाले इलाके में पहुँचे। दृश्य भयावह था। रेत का एक बड़ा हिस्सा पूरी तरह से खाली था। वहाँ कुछ भी नहीं था: न लोग, न ही शव—सिर्फ जूते, चप्पलें, छाते, भोजन, कागज के टुकड़े, फटे-पुराने कपड़े, थैले, बर्तन, तरह-तरह का सामान। कौवे भोजन को चोंच मार रहे थे। जगह-जगह गीली रेत के कुछ धब्बे गहरे रंग के दिख रहे थे, लेकिन आपदा की भयावहता का कोई संकेत नहीं था।

किले के कमांडर ने अपनी शुभकामनाएँ दीं। मेला अधिकारी, जो एक आईसीएस अधिकारी थे, ने भी ऐसा ही किया। प्रेस को किसी तरह से दूर रखा गया था।

मुख्यमंत्री ने कहा, 'मृतक कहाँ हैं? आपने उन्हें बहुत जल्दी स्थानांतरित कर दिया है।'

'पुलिस स्टेशन पर।'

'कौन सा?'

‘पुल मेला पुलिस स्टेशन, महोदय।’

मुख्यमंत्री का सिर थोड़ा हिल रहा था—जैसा कि कभी-कभी थकान होने पर होता था, लेकिन अब उस कारण से नहीं।

‘हम तुरंत वहाँ जाएँगे। अग्रवाल, यह—’ मुख्यमंत्री ने उस दृश्य की ओर इशारा किया, फिर अपना सिर हिलाया और आगे कुछ नहीं कहा।

एल.एन. अग्रवाल, जिनके मन में प्रिया के सिवा कोई विचार नहीं था, ने बड़ी मुश्किल से खुद को संभाला। उन्होंने अपने महान नायक सरदार वल्लभभाई पटेल को याद किया, जिनका निधन एक साल से भी कम समय पहले हुआ था। कहा जाता है कि पटेल अदालत में थे, अपने मुवक्किल के हत्या के आरोप में बचाव के एक अहम चरण में, तभी उन्हें अपनी पत्नी के निधन की खबर मिली। उन्होंने अपने दुःख को काबू में रखा और अपनी दलीलें जारी रखीं। अदालत की कार्यवाही समाप्त होने पर ही उन्होंने जीवित लोगों को ठेस पहुंचाए बिना दिवंगत के लिए शोक व्यक्त किया। ये वो व्यक्ति थे जो कर्तव्य का अर्थ जानते थे और निजी दुःख से ऊपर कर्तव्य की अहमियत समझते थे।

जहाँ कहीं भी उसका लड़खड़ाता हुआ मन
अस्थिर रूप से भटकता है,
उसे इसे नियंत्रित करना चाहिए
और इसे आत्म-नियंत्रण में लाएं।

भगवद् गीता में कृष्ण के वचन एल.एन. अग्रवाल के मन में आए। लेकिन इसके तुरंत बाद अर्जुन की अधिक मानवीय पुकार सुनाई दी:

कृष्ण, मन विचलित हो रहा है।
हिंसक, बलवान और जिद्दी;
मुझे यह उतना ही कठिन लगता है
हवा की तरह थामे रखना।

पुलिस स्टेशन जाते समय गृह मंत्री ने यथासंभव स्थिति की जानकारी प्राप्त की।

उन्होंने पूछा, 'घायलों का क्या होगा?'

‘उन्हें प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों में ले जाया गया है, महोदय।’
‘कितने लोग घायल हुए हैं?’
‘मुझे नहीं पता, महोदय, लेकिन मृतकों की संख्या को देखते हुए—’
'सुविधाएं अपर्याप्त हैं। गंभीर रूप से घायल लोगों को अस्पताल ले जाना होगा।'
‘सर।’ लेकिन अधिकारी जानता था कि यह असंभव है। उसने मंत्री जी के क्रोध का जोखिम उठाने का फैसला किया। ‘लेकिन सर, हम ऐसा कैसे कर सकते हैं जब निकास मार्ग जाने वाले तीर्थयात्रियों से भरा हुआ है? हम सभी को जल्द से जल्द निकलने के लिए प्रोत्साहित करने की कोशिश कर रहे हैं।’
एल.एन. अग्रवाल ने तीखे शब्दों में उस पर प्रहार किया। अब तक उन्होंने व्यवस्थाओं के प्रभारी अधिकारी के प्रति निंदा का एक शब्द भी नहीं कहा था। वे अपना क्रोध प्रकट करने से पहले यह पता लगाना चाहते थे कि जिम्मेदारी किसकी है। लेकिन अब उन्होंने कहा:
‘क्या आप लोग कभी दिमाग का इस्तेमाल करते हैं? मैं निकास रैंप के बारे में नहीं सोच रहा हूँ। प्रवेश रैंप सुनसान है, उसे घेर लिया गया है। वाहनों को अंदर-बाहर लाने-ले जाने के लिए उसका इस्तेमाल करें। वह काफी चौड़ा है। रैंप के नीचे सड़क के उस हिस्से को कार पार्किंग के रूप में इस्तेमाल करें। और पीपल के पेड़ से एक मील के दायरे में आने वाले हर वाहन को अपने कब्जे में ले लें।’
‘सर, अनुरोध—?’
जी हां। आपने सही सुना। मैं इसे उचित समय पर लिखित में दे दूंगा। अब आदेश दीजिए ताकि यह कार्य तुरंत किया जाए। और अस्पतालों को इसके बारे में चेतावनी दे दीजिए।
'जी श्रीमान।'

'विश्वविद्यालय, विधि महाविद्यालय और चिकित्सा महाविद्यालय से भी संपर्क करें। अगले कुछ दिनों के लिए हमें जितने भी स्वयंसेवक मिल सकें, उन सभी की आवश्यकता होगी।'

'लेकिन वे छुट्टी पर हैं, महोदय।' फिर, एल.एन. अग्रवाल की ओर देखते हुए: 'जी महोदय, मैं देखता हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ।' मेला अधिकारी जाने ही वाला था।

मुख्यमंत्री ने अपने सहयोगी की तुलना में नरम लहजे में कहा, 'और ऐसा करते समय, पुलिस महानिरीक्षक और मुख्य सचिव को भी बुला लें।'

पुलिस स्टेशन का दृश्य भयावह था।

मृतकों को पहचान के लिए पंक्तियों में लिटाया गया था। उन्हें धूप में रखने के अलावा और कोई जगह नहीं थी। कई शव बुरी तरह विकृत हो चुके थे, कई चेहरों पर भयानक घाव थे। कुछ मृत व्यक्ति मानो सो रहे थे, लेकिन उन्होंने अपने चेहरों और घावों पर घनी और गंदी तरह से बैठी मक्खियों के झुंड को नहीं हटाया। गर्मी असहनीय थी। सिसकते हुए पुरुष और महिलाएं शवों के बीच अपने प्रियजनों को ढूंढते हुए एक शव से दूसरे शव तक जा रहे थे। पास ही दो पुरुष आँसू बहाते हुए एक-दूसरे को गले लगा रहे थे। वे भाई थे जो भगदड़ में बिछड़ गए थे, और दोनों यहाँ इस डर से आए थे कि कहीं दूसरा मर न गया हो। एक अन्य व्यक्ति अपनी मृत पत्नी के शव को गले लगाए हुए था और लगभग क्रोध में उसके दोनों हाथों को हिला रहा था, मानो उसे उम्मीद हो कि इससे वह किसी तरह फिर से जीवित हो उठेगी।

11.22

'फोन कहां है?' एल.एन. अग्रवाल ने पूछा।

'सर, मैं इसे आपके पास ले आता हूँ,' एक पुलिस अधिकारी ने कहा।

'मैं अंदर जाकर फोन करूंगा,' एल.एन. अग्रवाल ने कहा।

‘लेकिन, महोदय, यह तो यहाँ पहले से ही मौजूद है,’ विनम्र अधिकारी ने कहा; एक लंबे तार से जुड़ा टेलीफोन बाहर लाया गया था।

गृह मंत्री ने अपने दामाद के घर फोन किया। यह खबर सुनकर कि उनकी बेटी और दामाद दोनों मेले में गए थे और तब से उनसे कोई संपर्क नहीं हो पाया है, उन्होंने कहा:

और बच्चे?

वे दोनों घर पर हैं।

भगवान का शुक्र है। अगर उनसे कोई खबर मिले तो मुझे तुरंत पुलिस स्टेशन में फोन करना। मैं जहां भी रहूं, मुझे संदेश मिल जाएगा। राय बहादुर को कहना कि चिंता न करें। नहीं, अगर राय बहादुर को पता ही नहीं है कि क्या हुआ है, तो उन्हें कुछ भी मत बताना। लेकिन एल.एन. अग्रवाल, जो खबर फैलने के तरीके को अच्छी तरह जानते थे, आश्वस्त थे कि पूरे ब्रह्मपुर—बल्कि, आधे भारत—को शायद इस आपदा की खबर पहले ही मिल चुकी होगी।

मुख्यमंत्री ने गृह मंत्री की ओर सिर हिलाया, उनकी आवाज में सहानुभूति का भाव आ गया: 'अरे अग्रवाल, मुझे इसका एहसास नहीं था—'

एल.एन. अग्रवाल की आंखों में आंसू भर आए, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा।

कुछ देर बाद उसने कहा: 'क्या प्रेस वाले यहाँ आए थे?'

'यहाँ नहीं, महोदय। वे घटनास्थल पर ही मृतकों की तस्वीरें ले रहे थे।'

‘इन्हें यहाँ बुलाओ। इनसे सहयोग करने को कहो। और सरकारी वेतन पर काम करने वाले सभी फोटोग्राफरों को भी यहाँ बुलाओ। पुलिस फोटोग्राफर कहाँ हैं? मैं चाहता हूँ कि इन सभी शवों की सावधानीपूर्वक तस्वीरें ली जाएँ। हर एक की।’

लेकिन, महोदय!

“इन शवों से दुर्गंध आने लगी है। जल्द ही ये बीमारियों का स्रोत बन जाएंगे। परिजनों को अपने शव ले जाने दें। बाकी शवों का अंतिम संस्कार कल ही करना होगा। मेला अधिकारियों की मदद से गंगा तट पर अंतिम संस्कार के लिए जगह का इंतजाम करें। हमें उन सभी मृतकों की तस्वीरें चाहिए जिनकी पहचान अभी तक उनके परिजनों या पहचान के अन्य साधनों से नहीं हो पाई है।”

गृह मंत्री सबसे बुरे की आशंका से मृतकों की कतारों के बीच इधर-उधर घूमते रहे। अंत में उन्होंने कहा: 'क्या अभी और भी लोग मरे हैं?'

‘सर, वे अभी भी आ रहे हैं। मुख्यतः प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों से।’

‘और प्राथमिक चिकित्सा केंद्र कहाँ हैं?’ एल.एन. अग्रवाल अपने दिल में उठ रही बेचैनी को अब भी काबू नहीं कर पा रहे थे।

'सर, कई शिविर हैं, कुछ काफी दूर हैं। लेकिन लापता और घायल बच्चों का शिविर बस वहीं पर है।'

गृह मंत्री को पता था कि उनके अपने पोते-पोतियां सुरक्षित हैं। सबसे पहले वे प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों का मुआयना करना चाहते थे, जहाँ घायल लोग भर्ती थे, इससे पहले कि उन्हें उनके ही निर्देशों के अनुसार शहर के अस्पतालों में भेजा जाए। लेकिन उनके मन में कुछ कशमकश थी, और उन्होंने आह भरकर कहा: 'हाँ, मैं पहले वहीं जाता हूँ।'

मुख्यमंत्री एस.एस. शर्मा गर्मी से परेशान हो गए थे और उन्हें वापस लौटना पड़ा। गृह मंत्री उस परिसर में गए जहाँ बच्चों को अस्थायी रूप से रखा गया था। लाउडस्पीकरों से लगातार रेत पर गूंज रहे कर्कश और उदास संदेशों में मुख्य रूप से उनके नाम ही बताए जा रहे थे। ‘उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के मकरगंज गाँव का लगभग छह वर्षीय राम रतन यादव पुलिस स्टेशन के पास स्थित गुमशुदा बच्चों के परिसर में अपने माता-पिता का इंतजार कर रहा है। कृपया आकर उसे ले जाएं।’ लेकिन कई

बच्चे—जिनकी उम्र तीन महीने से दस साल तक थी—अपने नाम या अपने गाँव के नाम नहीं जानते थे; और कुछ बच्चों के माता-पिता, जो सदमे और थकावट से सिसक रहे थे, रो रहे थे या सो रहे थे, पास के पुलिस परिसर में मृत अवस्था में पड़े थे।

महिला स्वयंसेवक बच्चों को खाना खिला रही थीं और उन्हें यथासंभव सांत्वना दे रही थीं। उन्होंने मिले हुए बच्चों की सूचियाँ तैयार कर ली थीं —हालांकि ऐसी सूचियाँ स्वाभाविक रूप से अपूर्ण होती हैं—और उन्हें केंद्रीय नियंत्रण कक्ष में भेज दिया था, ताकि उनका मिलान वहाँ तैयार की जा रही लापता लोगों की राज्यवार सूची से किया जा सके। लेकिन गृह मंत्री को यह स्पष्ट था कि यदि इन लावारिस बच्चों को जल्द ही कोई लेने नहीं आया, तो मृतकों की तरह ही इनकी भी तस्वीरें लेनी होंगी।

'पुलिस स्टेशन में संदेश पहुंचा दो—' उसने कहना शुरू किया। और फिर जैसे ही उसने अपनी बेटी की आवाज सुनी, 'पापा', खुशी और राहत से उसका दिल मानो रुक ही गया।

'प्रिया।' यह नाम, जिसका अर्थ 'प्रिय' होता था, आज पहले से कहीं अधिक सत्य प्रतीत हुआ। उसने उसकी ओर देखा और रोने लगा। फिर उसने उसे गले लगाया और उसका उदास चेहरा देखकर पूछा:

'वकील साहब कहाँ हैं? क्या वो ठीक हैं?'

'जी पापा, वो वहीं है।' उसने परिसर के दूसरे छोर की ओर इशारा किया। 'लेकिन हमें वीना का बच्चा नहीं मिल रहा है। इसीलिए हम यहाँ आए हैं।'

'क्या आपने पुलिस स्टेशन में जाँच की? मैंने वहाँ बच्चों को नहीं देखा।'

'जी पापा।'

'और?'

'नहीं।'

कुछ देर रुकने के बाद उसने कहा:

‘क्या आप वीना से बात करना चाहते हैं? वह और उसकी सास बहुत चिंतित हैं। वीना का पति तो शहर में भी नहीं है।’

‘नहीं। नहीं।’ एल.एन. अग्रवाल, अपने बच्चे को खोने के डर के बाद, उसी पीड़ा में किसी और का सामना करने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे।

‘पापा—’

‘ठीक है। मुझे एक-दो मिनट दीजिए।’

अंत में वह महेश कपूर की बेटी के पास गया और उसे दिलासा देने और व्यावहारिक बातें समझाने की कोशिश की। अगर भास्कर अभी तक पुलिस स्टेशन में नहीं मिला है, तो उसके मिलने की अच्छी संभावना है, इत्यादि... लेकिन बोलते-बोलते उसे यह भी महसूस हुआ कि उसकी बातें माँ और दादी को कितनी खोखली लग रही होंगी। उसने उनसे कहा कि वह प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों में जाकर भास्कर के दादा को प्रेम निवास में फोन करेगा और अगर कोई अच्छी या बुरी खबर मिले तो उन्हें भी समय-समय पर फोन करके जानकारी देते रहना चाहिए।

लेकिन किसी भी प्राथमिक चिकित्सा केंद्र पर उस छोटे मेंढक का कोई अता-पता नहीं था, और जैसे-जैसे घंटे बीतते गए, वीना और बूढ़ी श्रीमती टंडन, और जल्द ही श्रीमान और श्रीमती महेश कपूर, और प्राण और सविता, और निश्चित रूप से प्रिया और राम विलास गोयल (जिन्हें अब इस घटना के लिए खुद को जिम्मेदार महसूस होने लगा था), निराशा और हताशा की गहरी भावना में डूबते चले गए।

11.23

महेश कपूर ने प्रिया के प्रति सहानुभूति जताते हुए और उसे आश्वस्त करते हुए कि उसे इतनी मूर्खता नहीं करनी चाहिए कि वह उस चीज़ के लिए खुद को ज़िम्मेदार ठहराए जो किसी के बस में नहीं थी, उसे यह नहीं बताया कि ज़िम्मेदारी किसके कंधों पर थी: पूरी तरह से उसके पिता के

कंधों पर। वे गृह मंत्री थे। यह उनका कर्तव्य था कि वे सुनिश्चित करें कि व्यवस्थाएँ इस भयावह घटना के लिए असुरक्षित न हों। कम से कम एक बार पहले, चौक पर हुई गोलीबारी में, एल.एन. अग्रवाल ने या तो व्यक्तिगत दूरदर्शिता की कमी दिखाई थी या फिर उन लोगों को अधिकार सौंपने में नासमझी भरा आत्मविश्वास दिखाया था जिनमें इसकी कमी थी। महेश कपूर, हालांकि आमतौर पर अपने परिवार के लिए उनके पास बहुत कम समय होता था, अपनी इकलौती पोती से बहुत प्यार करते थे और अपनी पत्नी और बेटी के लिए बेहद दुखी थे।

उस रात सब लोग प्रेम निवास में ही रुके। केदारनाथ से संपर्क नहीं हो पा रहा था; वे शहर से बाहर थे। टेलीफोन पर बात करना मुश्किल था, और वे कानपुर में भी नहीं थे, जहाँ उन्हें लगा था कि वे किसी काम से गए होंगे। मान, जो भास्कर को बहुत पसंद करता था, अभी भी देबरिया में ही था। वीना और बूढ़ी श्रीमती टंडन पहले इस उम्मीद में घर गईं कि शायद भास्कर वापस आ गया हो। लेकिन उनके पड़ोस में किसी ने भी भास्कर को नहीं देखा था। उनके पास खुद भी टेलीफोन नहीं था, और रात अकेले घर में बिताना असहनीय था। लाल साड़ी वाली उनकी पड़ोसी ने उन्हें भरोसा दिलाया कि अगर उन्हें कोई खबर मिले तो वह मंत्री साहब के घर से संपर्क कर लेंगी। और इस तरह वे प्रेम निवास वापस लौट आईं, वीना मन ही मन केदारनाथ को कोस रही थी कि वे अक्सर की तरह ब्रह्मपुर से बाहर क्यों हैं।

उसने सोचा, जैसे मेरे पिता मेरे जन्म के समय थे।

तब तक प्राण और सविता भी प्रेम निवास पहुँच चुके थे। प्राण जानता था कि उसे अपने माता-पिता और बहन के साथ रहना होगा, लेकिन वह अपनी पत्नी को उसकी वर्तमान स्थिति में अनावश्यक रूप से परेशान करने से डर रहा था। यदि उसकी माँ या बहन यात्रा से लौट आई होतीं,

तो उसे उन्हें उनकी देखभाल में छोड़कर स्वयं प्रेम निवास में रहने में कोई संकोच नहीं होता। लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा का आखिरी पत्र दिल्ली से आया था, और वह इस समय या तो कानपुर में थीं या लखनऊ में, इतनी दूर जहाँ से उनकी कोई मदद नहीं हो सकती थी।

उस रात परिवार ने इस बात पर चर्चा की कि क्या किया जा सकता है। किसी को नींद नहीं आई। श्रीमती महेश कपूर ने प्रार्थना की। ऐसा लगभग सब कुछ था जो पहले ही किया जा चुका था। ब्रह्मपुर के सभी अस्पतालों में भास्कर की तलाश की गई, इस अनुमान के आधार पर कि वह घायल हो गया था और किसी मददगार व्यक्ति द्वारा सीधे अस्पताल ले जाया गया था। सभी पुलिस स्टेशनों में भी तलाशी ली गई—लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

उन सभी को पूरा यकीन था कि भास्कर, जो बुद्धिमान और (आमतौर पर) शांत स्वभाव का था, अगर हो पाता तो या तो घर लौट जाता या अपने दादा-दादी से संपर्क कर लेता। क्या उसके शव की पहचान गलत हुई और उसे दूसरों ने दाह संस्कार के लिए ले लिया? क्या अफरा-तफरी में उसका अपहरण हो गया? जैसे-जैसे सारे संभावित तथ्य सामने आते गए और खारिज होते गए, असंभव कल्पनाओं को भी अपनी विश्वसनीयता मिलने लगी।

उस रात किसी को नींद नहीं आई। उनके अपने दुख और चिंता के साथ-साथ अंधेरे में गूंजती मौज-मस्ती की आवाज़ भी परेशान कर रही थी। क्योंकि यह रमज़ान का महीना था, मुसलमानों का उपवास का महीना। विशुद्ध चंद्र कैलेंडर के कारण, रमज़ान का महीना पिछले कुछ वर्षों से गर्मियों के मौसम में आ रहा था। दिन लंबे और गर्म होते थे, और उपवास की कमी बहुत ज़्यादा होती थी—क्योंकि कट्टर मुसलमानों को दिन के समय पानी पीने की भी मनाही थी। सूर्यास्त के बाद राहत और भी बढ़

जाती थी—और रातें दावत और जश्न में बीतती थीं।

नवाब साहब स्वयं तो धर्मपरायण थे, फिर भी पुल मेले में हुई इस विपत्ति की खबर सुनकर उन्होंने अपने घर में किसी भी प्रकार का उत्सव मनाने से मना कर दिया था। जब उन्हें पता चला कि उनके मित्र का पोता लापता है, तो वे और भी दुखी हुए। लेकिन ऐसी सहानुभूति हर जगह नहीं थी, या कम से कम सर्वत्र नहीं थी, और जिस कस्बे में इस आपदा की खबर आग की तरह फैल चुकी थी और हर किसी को पता चल चुकी थी, वहाँ मुसलमानों के उत्सव की आवाज सुनकर महेश कपूर जैसे व्यक्ति को भी बहुत दुख हुआ।

फोन बीच-बीच में बजता रहता था, जिससे उनमें उम्मीद और डर दोनों पैदा होते थे। लेकिन वे या तो सहानुभूति भरे संदेश होते थे—या किसी आधिकारिक सूत्र से यह सूचना मिलती थी कि कुछ भी सामने नहीं आया है—या फिर ऐसी कॉल होती थीं जिनका भास्कर से कोई लेना-देना नहीं होता था।

11.24

उससे एक दिन पहले दोपहर में, गृह मंत्री के निर्देश पर, घायलों को अस्पताल ले जाने के लिए कई कारों को अधिग्रहित किया गया था। इनमें से एक कार डॉ. किशन चंद सेठ की ब्यूक थी।

डॉ. सेठ ने उस दोपहर फिल्म देखने का फैसला किया था और उनकी कार रियाल्टो सिनेमा हॉल के बाहर खड़ी थी। जब वे भावुक होकर रोते हुए, अपनी दृढ़ निश्चयी युवा पत्नी पार्वती के सहारे बाहर निकले, तो उन्होंने देखा कि दो पुलिसकर्मी उनकी कार पर झुके हुए हैं।

डॉ. किशन चंद सेठ तुरंत क्रोधित हो गए। उन्होंने धमकी भरे अंदाज़ में अपनी छड़ी उठाई, और अगर पार्वती ने उन्हें रोका न होता, तो वे निश्चित रूप से उसका इस्तेमाल कर देते। डॉ. सेठ की प्रतिष्ठा से परिचित

पुलिसकर्मियों ने बहुत क्षमा मांगी।
उन्होंने कहा, 'हमें इस कार को अपने कब्जे में लेने के आदेश मिले हैं, महोदय।'
'तुम—क्या?' डॉ. सेठ हकलाते हुए बोले। 'निकल जाओ, निकल जाओ, मेरी नज़रों से दूर हो जाओ, इससे पहले कि मैं—' उन्हें शब्द नहीं सूझ रहे थे। उनकी गुस्ताखी के लिए कोई भी सज़ा काफ़ी नहीं लग रही थी।
'पुल मेले की वजह से—'
'सब अंधविश्वास है, सब अंधविश्वास!' डॉ. किशन चंद सेठ ने कहा। 'मुझे तुरंत जाने दो।' उन्होंने अपनी चाबी निकाली।
सब-इंस्पेक्टर ने अप्रत्याशित और कुशल तरीके से माफी मांगते हुए उसे उनके हाथ से ले लिया। डॉ. किशन चंद सेठ लगभग दिल का दौरा पड़ने से बाल-बाल बचे।
'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई—' वह हांफते हुए बोला। 'यह तो जर्मनों जैसी भयानक हरकत है—' उसने अंग्रेज़ी में कहा। यह तो बच्चों को संगीन से मारने से भी बदतर था।
'सर, पुल मेले में एक भयानक दुर्घटना हो गई है, और हम—'
'ये क्या बकवास है! अगर ऐसा कुछ होता तो मुझे जरूर पता चलता। मैं एक डॉक्टर हूँ—एक रेडियोलॉजिस्ट। आप किसी डॉक्टर की गाड़ी को अपने कब्जे में नहीं ले सकते। मुझे अपने लिखित आदेश दिखाइए।'
'हमें पीपल के पेड़ से एक मील के दायरे में मौजूद किसी भी वाहन को अपने कब्जे में लेने का आदेश मिला है।'
डॉ. किशन चंद सेठ ने अपनी ब्यूक कार की ओर इशारा करते हुए कहा, 'मैं तो बस फिल्म देखने आया हूँ, यह कार यहाँ नहीं है।' उन्होंने चाबी वापस देने के लिए हाथ बढ़ाया।
'किशी, चिल्लाओ मत, जान,' पार्वती ने कहा। 'शायद सच में कोई

आपदा आ गई है। हम पिछले तीन घंटे से फिल्म देख रहे हैं।'

'मैं आपको आश्वस्त करता हूँ, महोदय, ऐसा हुआ है,' पुलिसकर्मी ने कहा। 'बहुत से लोगों की मौत हुई है और कई घायल हुए हैं। मैं पूर्व प्रदेश के गृह मंत्री के विशेष निर्देशों पर इस कार को अपने कब्जे में ले रहा हूँ। केवल सक्रिय (सेवानिवृत्त नहीं) डॉक्टरों की कारों को ही छूट है। हम इसका पूरा ध्यान रखेंगे।'

यह आखिरी टिप्पणी महज दिलासा देने का एक तरीका था। डॉ. किशन चंद सेठ तुरंत समझ गए कि उनकी कार दुरुपयोग और अत्यधिक उपयोग के कारण लगभग बेकार हो चुकी होगी। अगर उस मूर्ख की बात सच थी, तो जब तक उन्हें कार वापस मिलेगी, इंजन में रेत भरी होगी और सीट पर खून लगा होगा। लेकिन क्या सच में ऐसी कोई दुर्घटना हुई थी? या यह आजादी के बाद की भ्रष्टता का एक और उदाहरण मात्र था? आजकल लोग हद से ज्यादा मनमानी करने लगे थे।

'तुम!' उसने राहगीर पर चिल्लाते हुए कहा।

इस तरह से संबोधित किए जाने के आदी न होने के कारण अचंभित होकर, सरकारी विभाग में कार्यरत एक सम्मानित क्लर्क, वह व्यक्ति अचानक रुक गया और उसने विनम्रतापूर्वक, उलझन भरी पूछताछ के भाव से डॉ. किशन चंद सेठ की ओर देखा।

'मुझे?'

'जी हां, तुम ही। क्या पुल मेले में कोई हादसा हुआ है? सैकड़ों लोग मारे गए?' आखिरी सवाल तिरस्कारपूर्ण अविश्वास के साथ पूछा गया।

'जी साहब, ऐसा हुआ है,' उस आदमी ने कहा। 'मैंने पहले अफवाह सुनी, फिर रेडियो पर भी सुनी। यह बिलकुल सच है। सरकारी अनुमान भी सैकड़ों में है।'

'ठीक है—ले लो,' डॉ. किशन चंद सेठ ने कहा। 'लेकिन ध्यान रखना—

सीटों पर खून नहीं लगना चाहिए—सीटों पर खून नहीं लगना चाहिए। मैं बर्दाश्त नहीं करूँगा। क्या तुम मुझे सुन रहे हो?'

जी जी। निश्चिंत रहिए, हम इसे एक सप्ताह के भीतर आपको लौटा देंगे। आपका पता क्या है, जी जी?

डॉ. किशन चंद सेठ ने बेपरवाही से कहा, 'मेरा पता सबको पता है।' और वे अपनी छड़ी लहराते हुए सड़क पर निकल आए। वे घर जाने के लिए टैक्सी या कोई और गाड़ी लेने जा रहे थे।

11.25

ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय के छात्रों में एल.एन. अग्रवाल लोकप्रिय नहीं थे। उन्हें उनके निरंकुश रवैये और ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद में उनकी चालाकी के कारण नापसंद किया जाता था। विश्वविद्यालय परिसर में अधिकांश राजनीतिक दलों के बयान अग्रवाल विरोधी लहजे में ही होते थे।

गृह मंत्री को इस बात की जानकारी थी, इसलिए उन्होंने आपदा के बाद राहत कार्यों में मदद के लिए छात्र स्वयंसेवकों से किए गए अपने अनुरोध को मुख्यमंत्री के अनुरोध के रूप में प्रस्तुत किया। छुट्टियों के कारण अधिकांश छात्र ब्रह्मपुर में नहीं थे। लेकिन जो छात्र वहाँ थे, उनमें से कई ने मदद के लिए आगे आए। अगर अनुरोध पर गृह मंत्री के हस्ताक्षर भी होते, तो भी वे लगभग निश्चित रूप से मदद के लिए आगे आते।

कबीर, जो विश्वविद्यालय के एक शिक्षक के पुत्र थे और इसलिए विश्वविद्यालय के पास ही रहते थे, अपील की खबर पाने वाले पहले लोगों में से एक थे। वे और उनके छोटे भाई हाशिम किले में स्थापित केंद्रीय नियंत्रण कक्ष में गए। तंबुओं के शहर पर सूरज डूबने ही वाला था। रोशनी और खाना पकाने की आग के अलावा, जगह-जगह कई बड़ी आग जल रही थीं, जहाँ शवों का अंतिम संस्कार किया जा रहा था। लाउडस्पीकरों

पर नामों की अंतहीन सूची लगातार सुनाई दे रही थी, और यह पूरी रात जारी रहेगी।

उन्हें अलग-अलग प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों में तैनात किया गया। बाकी स्वयंसेवक थक चुके थे और राहत पाकर खुश थे। उन्हें कुछ खाना और कुछ घंटों की नींद मिल गई, जिसके बाद उन्हें फिर से ड्यूटी पर बुलाया गया।

सभी के प्रयासों के बावजूद—सूचियों, केंद्रों, स्टेशनों, नियंत्रण कक्ष—व्यवस्था से ज़्यादा अव्यवस्था फैली हुई थी। खोई हुई महिलाओं—जिनमें से ज़्यादातर बूढ़ी, कमज़ोर, बेसहारा और भूखी थीं—के साथ क्या किया जाए, यह किसी को नहीं पता था। आखिरकार, अधिकारियों की अनिर्णयता से तंग आकर कांग्रेस महिला समिति ने उन्हें अपने हाथ में ले लिया। आम तौर पर, खोए हुए, मृत या घायल लोगों को कहाँ ले जाया जाए, यह तो कुछ ही लोगों को पता था, उन्हें ढूँढ़ा कहाँ जाए, यह भी किसी को नहीं पता था। दुखी लोग तपती रेत के एक छोर से दूसरे छोर तक भागते रहे, लेकिन उन्हें बताया गया कि उनके राज्य के तीर्थयात्रियों के मिलने का स्थान कहीं और है। घायल या मृत बच्चों को कभी खोए हुए बच्चों के परिसर में ले जाया जाता, कभी प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों में, कभी पुलिस घेरे में। लाउडस्पीकर पर दिए जाने वाले निर्देश उसे अस्थायी रूप से संभालने वाले व्यक्ति के अनुसार बदलते रहते थे।

प्राथमिक चिकित्सा केंद्र में रात भर सहायता करने के बाद, कबीर खाली निगाहों से अपने सामने घूर रहा था जब उसने भास्कर को अंदर आते देखा।

एक मोटे, उदास, अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने उसे बड़े प्यार से अंदर लाया। भास्कर सो रहा था। कबीर ने उसे देखकर भौंहें चढ़ाईं और तुरंत उठ खड़ा हुआ। उसने लड़के को अपने पिता के गणित के सहपाठी के रूप में

पहचान लिया।

“भगदड़ के तुरंत बाद मुझे वह रेत पर मिला,” उस आदमी ने लड़के को थोड़ी सी जगह में बिठाते हुए बताया। “वह रैंप से ज़्यादा दूर नहीं पड़ा था, इसलिए किस्मत अच्छी थी कि कुचलने से बच गया। मैं उसे अपने कैंप में ले आया, यह सोचकर कि वह जल्द ही जाग जाएगा और मैं उसे घर ले जा सकूँगा। मुझे बच्चे बहुत प्यारे हैं, आप जानते हैं। मेरी पत्नी और मेरे कोई बच्चे नहीं हैं...” वह कुछ देर के लिए सो गया, फिर अपने विषय पर लौट आया। “खैर, वह एक बार जागा, लेकिन मेरे किसी भी सवाल का जवाब नहीं दिया। उसे अपना नाम तक नहीं पता। और फिर वह दोबारा सो गया, और तब से नहीं जागा है। मैं उसे कुछ खिला नहीं पाया हूँ। मैंने उसे हिलाया भी, लेकिन उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसने कुछ पिया भी नहीं है, आप जानते हैं। लेकिन, मेरे गुरु की कृपा से, उसकी नब्ज़ अभी भी चल रही है।”

कबीर ने कहा, 'अच्छा हुआ कि तुम उसे यहाँ ले आए। मुझे लगता है कि मैं उसके माता-पिता का पता लगा सकता हूँ।'

दरअसल, मैं उसे अस्पताल ले जाने वाला था, लेकिन तभी मेरी नज़र उस भयानक लाउडस्पीकर पर एक-दो मिनट के लिए पड़ी—और उसमें कहा गया कि जिन लापता बच्चों को व्यक्तियों ने संरक्षण में लिया है, उन्हें मेला क्षेत्र में रखा जाना चाहिए, अन्यथा उनका पता लगाना असंभव होगा। इसलिए मैं उसे यहाँ ले आया।

‘अच्छा। अच्छा,’ कबीर ने आह भरी।

‘अब अगर मैं कुछ कर सकता हूँ तो—मुझे खेद है कि मैं कल सुबह जा रहा हूँ।’ उस व्यक्ति ने भास्कर के माथे पर हाथ फेरा। ‘उसके पास कोई पहचान पत्र नहीं है, इसलिए मुझे नहीं लगता कि आप उसे ढूँढ पाएंगे। लेकिन मेरे जीवन में इससे भी अजीब चीजें हुई हैं। आप किसी व्यक्ति को

खोज रहे होते हैं, यह भी नहीं जानते कि वह कौन है, और फिर अचानक आप उसे पा लेते हैं। खैर, अलविदा।'

कबीर ने जम्हाई लेते हुए कहा, 'धन्यवाद। आपने बहुत कुछ किया है। अच्छा, हाँ, आप एक काम और कर सकते हैं। क्या आप यह नोट विश्वविद्यालय क्षेत्र के किसी पते पर पहुँचा देंगे?'

'निश्चित रूप से।'

कबीर को लगा कि शायद वह फोन पर अपने पिता से बात न कर पाए, इसलिए उनके लिए एक छोटा सा पत्र उपयोगी रहेगा। उसने कुछ पंक्तियाँ लिखीं—थकान के कारण उसकी लिखावट थोड़ी टेढ़ी-मेढ़ी थी —पत्र को चार हिस्सों में मोड़ा, ऊपर पता लिखा और उस मोटे आदमी को दे दिया।

उन्होंने कहा, 'जितनी जल्दी हो उतना अच्छा।'

वह आदमी सिर हिलाकर उदास स्वर में गुनगुनाते हुए चला गया।

अपना काम निपटाने के बाद कबीर ने फोन उठाया और ऑपरेटर से डॉक्टर दुर्रानी का नंबर मांगा। लाइनें व्यस्त थीं, इसलिए उसे थोड़ी देर बाद फिर कोशिश करने को कहा गया। दस मिनट बाद उसका फोन लग गया और संयोग से उसके पिता घर पर ही थे। कबीर ने उन्हें स्थिति के बारे में बताया और उनसे अनुरोध किया कि उन्हें जो नोट मिलेगा उसे नज़रअंदाज़ कर दें।

'मुझे पता है कि वह तुम्हारा दोस्त है, छोटा गॉस, और उसका नाम भास्कर है। लेकिन वह कहाँ रहता है?'

उनके पिता अपनी सबसे खराब भुलक्कड़ अवस्था में थे।

'ओह, हम्म, एर—' डॉ. दुर्रानी ने कहना शुरू किया। 'यह कहना बहुत, एर, मुश्किल है। अब उनका अंतिम, एर, नाम क्या है?'

कबीर ने कहा, 'मुझे लगा कि शायद आपको पता होगा।' वह कल्पना कर

सकता था कि उसके पिता ध्यान से आंखें सिकोड़ रहे होंगे।
‘अब, उह, मुझे ठीक से पता नहीं है, देखिए, उह, वह आता-जाता रहता है, कई लोग, ठीक है, उसे यहाँ छोड़ देते हैं, फिर हम बात करते हैं, और फिर, उह, वे आते हैं और उसे ले जाते हैं। वह पिछले हफ्ते यहाँ था—’
'मुझे पता है-'
‘और हम फर्माट के उस अनुमान पर चर्चा कर रहे थे—’
'पिता-'
'ओह, हाँ, और एक, अह, पेर्गोलेसी लेम्मा का एक दिलचस्प रूप। कुछ-कुछ वैसा ही, अह, जैसा मेरे युवा सहकर्मी के बारे में है, अह, मेरे पास एक विचार है—क्यों न हम, अह, अह, उनसे पूछें?'
‘किससे पूछें?’
'जी हां, सुनील पटवर्धन, क्या उन्हें उस लड़के के बारे में पता नहीं होगा? मुझे लगता है कि यह उनकी पार्टी थी। बेचारा भास्कर। उसके माता-पिता ज़रूर परेशान होंगे।'
इसका जो भी मतलब हो, कबीर को एहसास हुआ कि शायद उसे अपने पिता से ज़्यादा इस नई जानकारी से समझ आ जाएगी। उसने सुनील पटवर्धन से संपर्क किया, जिन्होंने बताया कि भास्कर केदारनाथ टंडन के बेटे और महेश कपूर के पोते थे। कबीर ने प्रेम निवास को फोन किया।
महेश कपूर ने दूसरी घंटी बजते ही फोन उठाया। 'जी?'
कबीर ने हिंदी में कहा, 'क्या मैं मंत्री महोदय से बात कर सकता हूँ?'
आप उससे बात कर रहे हैं।
‘मंत्री महोदय, मैं किले के पूर्वी छोर के ठीक नीचे स्थित प्राथमिक चिकित्सा केंद्र से बोल रहा हूँ।’
'हां।' आवाज एक तनी हुई स्प्रिंग की तरह थी।
‘आपका पोता भास्कर यहाँ है—’

'जीवित?'
‘हाँ। हमने अभी-अभी—’
‘तो फिर उसे तुरंत प्रेम निवास ले आओ। किस बात का इंतजार कर रहे हो?’ महेश कपूर की आवाज बीच में ही सुनाई दी।
‘मंत्री जी, मुझे खेद है, लेकिन मैं यहाँ ड्यूटी पर हूँ। आपको स्वयं नीचे आना होगा।’
‘जी हाँ, जी हाँ, बिल्कुल, बिल्कुल—’
और मुझे यह भी उल्लेख करना चाहिए—
‘हां, हां, आगे बढ़ो, आगे बढ़ो—’
'अभी उसे स्थानांतरित करना शायद उचित न हो। खैर, मैं जल्द ही आपकी प्रतीक्षा करूंगा।'
'अच्छा तुम्हारा नाम क्या है?'
‘Kabir Durrani.’
‘दुर्रानी?’ महेश कपूर की आवाज में हैरानी झलक रही थी, फिर उन्होंने खुद से कहा कि विपत्ति का कोई धर्म नहीं होता। ‘गणितज्ञ की तरह?’
'जी हां। मैं उनका बड़ा बेटा हूं।'
‘मेरी तीखी टिप्पणी के लिए मैं क्षमा चाहता हूँ। हम सब बहुत तनाव में थे। मैं तुरंत नीचे आ रहा हूँ। वह कैसा है? उसे ले जाया क्यों नहीं जा सकता?’
कबीर ने कहा, 'मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि आप खुद देख लें।' फिर, यह महसूस करते हुए कि ये शब्द कितने भयावह लग सकते हैं, उन्होंने आगे कहा: 'उस पर कोई बाहरी चोट के निशान नहीं दिखते।'
‘पूर्वी छोर?’
‘पूर्वी छोर।’
महेश कपूर ने फोन नीचे रखा और परिवार की ओर मुड़े, जो उनकी तरफ

से आ रही हर बात को ध्यान से सुन रहा था।
पंद्रह मिनट में वीना ने भास्कर को फिर से अपनी बाहों में ले लिया। उसने उसे इतनी कसकर पकड़ रखा था कि मानो वे एक ही प्राणी हों। लड़का अभी भी बेहोश था, हालांकि उसका चेहरा शांत था। उसने अपना माथा उसके माथे से छुआया और बार-बार उसका नाम फुसफुसाया।
जब उसके पिता ने प्राथमिक चिकित्सा केंद्र में थके हुए युवक का परिचय डॉ. दुर्रानी के बेटे के रूप में कराया, तो उसने अपने हाथ उसके सिर की ओर बढ़ाए और उसे आशीर्वाद दिया।
11.26
भगदड़ की उस निरर्थक त्रासदी के बाद से दीपांकर, जो मृत्यु के अलावा लगभग किसी और चीज के बारे में नहीं सोच रहा था, ने कहा: 'क्या इससे कोई फर्क पड़ता है, बाबा?'
'हां।' दयालु चेहरे ने नीचे रखी दो मालाओं को देखा और छोटी-छोटी आंखें झपकीं, मानो मनोरंजन कर रही हों।
दीपांकर ने ये मालाएँ खरीदी थीं, एक अपने लिए और एक—पता नहीं क्यों—अमित के लिए। मेले से जाने से पहले उसने सनकी बाबा से इन मालाओं को आशीर्वाद देने की प्रार्थना की थी।
सनकी बाबा ने उन्हें अपने हाथों में लेकर कहा था: 'आप किस रूप, किस शक्ति की ओर सबसे अधिक आकर्षित होते हैं? राम? या कृष्ण? या शिव? या शक्ति? या स्वयं ओम?'
पहले तो दीपांकर उस सवाल को ठीक से समझ ही नहीं पाया। उसका दिमाग उस भयानक दृश्य की यादों में खो गया था—जो उसने देखा नहीं था, बल्कि अनुभव किया था। एक बार फिर उसे कुछ ही दूरी पर उस बूढ़े का टूटा-फूटा शरीर दिखाई दिया—नाग उस पर वार कर रहे थे, भीड़ उसे पैरों तले कुचल रही थी—वह अफरा-तफरी और पागलपन। क्या यही

इंसानी जिंदगी है? क्या इसीलिए वह यहाँ आया था? अब उसे कुछ भी समझने की उम्मीद कितनी दयनीय लग रही थी। वह पहले से कहीं ज्यादा निराश, भयभीत और हैरान था।

सनकी बाबा ने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा। हालाँकि उन्होंने अपना प्रश्न दोहराया नहीं, लेकिन उनके स्पर्श ने दीपांकर को वर्तमान में वापस ला दिया, शायद महान अवधारणाओं और महान देवताओं की तुच्छता की ओर।

अब सनाकी बाबा उनके जवाब का इंतजार कर रहे थे।

दीपांकर ने मन ही मन सोचा: ओम मेरे लिए बहुत अमूर्त है; शक्ति बहुत रहस्यमय है, और कलकत्ता में तो मुझे इसका काफी अनुभव हो चुका है; शिव बहुत उग्र हैं; और राम बहुत धर्मात्मा हैं। मेरे लिए तो कृष्ण ही सही हैं।

उन्होंने कहा, 'कृष्ण।'

यह उत्तर सनाकी बाबा को प्रसन्न करता प्रतीत हुआ, लेकिन उन्होंने केवल नाम दोहराया।

फिर उन्होंने दीपांकर के दोनों हाथ अपने हाथों में लेते हुए कहा: 'अब मेरे साथ कहो: हे भगवान, आज—'

'हे भगवान, आज—'

'— ब्रह्मपुर में गंगा के तट पर—'

'— ब्रह्मपुर में गंगा के तट पर—'

'— पुल मेले के शुभ अवसर पर—'

'— पुल मेले के अवसर पर,' दीपांकर ने संशोधन किया।

'— पुल मेले के शुभ अवसर पर,' सनाकी बाबा ने जोर देकर कहा।

'— पुल मेले के शुभ अवसर पर—'

'— मेरे गुरु के हाथों—'

'लेकिन क्या आप मेरे गुरु हैं?' दीपांकर ने अचानक संदेह भरे स्वर में पूछा।

सनाकी बाबा हँसे। उन्होंने कहा, 'तो सनाकी बाबा के हाथों से।'

'— सनकी बाबा के हाथों—'

'— मैं इसे लेता हूँ, तुम्हारे सभी नामों का प्रतीक—'

'— मैं इसे लेता हूँ, तुम्हारे सभी नामों का प्रतीक—'

'— जिससे मेरे सभी दुख दूर हो जाएं।'

'— जिससे मेरे सभी दुख दूर हो जाएं।'

'ॐ कृष्ण, ॐ कृष्ण, ॐ कृष्ण।' सनकी बाबा को खांसी आने लगी। उन्होंने कहा, 'यह अगरबत्ती की वजह से है। चलो बाहर चलते हैं।'

'अब, दिव्यकार,' सनकी बाबा ने कहा, 'मैं तुम्हें इसका उपयोग करने का तरीका समझाता हूँ। ॐ बीज है, ध्वनि है। यह निराकार है। लेकिन अगर तुम्हें पेड़ चाहिए, तो अंकुर होना ज़रूरी है, और इसीलिए लोग कृष्ण या राम को चुनते हैं। अब तुम माला को इस तरह पकड़ो—' और उन्होंने एक माला दीपांकर को दी, जिसने उनके इशारों की नकल की। 'दूसरी और पाँचवीं उंगली का इस्तेमाल मत करो। इसे अपने अंगूठे और अनामिका के बीच पकड़ो, और अपनी मध्यमा उंगली से एक-एक मनका हिलाते हुए "ॐ कृष्ण" का उच्चारण करो। हाँ, यही तरीका है। इसमें 108 मनके हैं। जब तुम गाँठ पर पहुँच जाओ, तो उसे पार मत करो, वापस आओ और दूसरी तरफ घूमो। जैसे समुद्र में लहरें आगे-पीछे चलती हैं।'

'जागते ही, कपड़े पहनते समय, जब भी मन करे "ओम कृष्ण" का जाप करें... अब मेरा आपसे एक प्रश्न है।'

'बाबाजी, मेरे पास आपके लिए भी एक है,' दीपांकर ने थोड़ा पलकें झपकाते हुए कहा।

गुरु ने कहा, 'मेरा प्रश्न सतही है, जबकि तुम्हारा प्रश्न गहरा है। इसलिए

मैं पहले अपना प्रश्न पूछता हूँ। तुमने कृष्ण को क्यों चुना?'
मैंने उन्हें इसलिए चुना क्योंकि मैं राम की प्रशंसा करता हूं लेकिन मुझे लगता है कि—
'हां, वह सांसारिक यश के पीछे बहुत ज्यादा भाग रहा था,' सनाकी बाबा ने अपनी बात पूरी करते हुए कहा।
और सीता के प्रति उनका व्यवहार—
'वह पूरी तरह टूट गई थी,' सनाकी बाबा ने कहा। 'उसे राजत्व या सीता में से किसी एक को चुनना था और उसने राजत्व को चुना। उसका जीवन दुखमय रहा।'
'साथ ही, उनका जीवन शुरू से अंत तक एक ही था—कम से कम उनके चरित्र में तो ऐसा ही था,' दीपांकर ने कहा। 'लेकिन कृष्ण के जीवन के कई अलग-अलग चरण थे। और अंत में, पराजित होकर, जब वे द्वारका में थे—'
सनकी बाबा को अगरबत्ती के धुएं से अभी भी खांसी आ रही थी।
उन्होंने कहा, 'हर किसी के जीवन में दुख आते हैं। लेकिन कृष्ण को आनंद मिला। जीवन का रहस्य स्वीकार करना है। सुख को स्वीकार करो, दुख को स्वीकार करो; सफलता को स्वीकार करो, असफलता को स्वीकार करो; प्रसिद्धि को स्वीकार करो, अपमान को स्वीकार करो; संदेह को स्वीकार करो, यहाँ तक कि निश्चितता के आभास को भी स्वीकार करो। अब, आप कब जा रहे हैं?'
'आज।'
'और आपका सवाल क्या था?' सनाकी बाबा ने सौम्य गंभीरता से कहा।
'बाबा, आप यह सब कैसे समझाएंगे?' दीपांकर ने दूर से उठ रहे एक विशाल चिता से निकलते धुएं की ओर इशारा किया, जहां सैकड़ों अज्ञात शव जलाए जा रहे थे। 'क्या यह सब ब्रह्मांड की लीला है, ईश्वर का खेल

है? क्या वे भाग्यशाली हैं क्योंकि उनकी मृत्यु इस शुभ स्थान पर इस शुभ त्योहार पर हुई?'
'श्री मैत्रा कल आ रहे हैं, है ना?'
'मुझे भी ऐसा ही लगता है।'
जब उसने मुझसे शांति प्रदान करने के लिए कहा, तो मैंने उससे कहा कि वह बाद में किसी और दिन वापस आए।
'मैं समझ गया।' दीपांकर अपनी आवाज में निराशा को छिपा नहीं सका।
एक बार फिर उसे उस बूढ़े आदमी की याद आई, जो बर्फ और नमक की बात करता था, और अगले साल गंगा के उद्गम स्थल तक अपनी यात्रा पूरी करने की बात करता था। उसने सोचा, अगले साल वह खुद कहाँ होगा? सब लोग कहाँ होंगे?
'मैंने फिर भी उन्हें जवाब देने से इनकार नहीं किया,' सनाकी बाबा ने कहा।
'नहीं, तुमने ऐसा नहीं किया,' दीपांकर ने आह भरते हुए कहा।
लेकिन क्या आपको अंतरिम उत्तर चाहिए?
'Yes,' said Dipankar.
गुरु ने बेपरवाही से जवाब दिया, 'मुझे लगता है कि प्रशासनिक व्यवस्था में कोई खामी थी।'
11.27
जिन अखबारों ने लगातार 'प्रशासनिक व्यवस्था के सराहनीय उच्च स्तर' की प्रशंसा की थी, उन्होंने प्रशासन और पुलिस दोनों की कड़ी आलोचना की। घटना के कई स्पष्टीकरण दिए गए। एक सिद्धांत यह था कि जुलूस में एक झांकी को ले जा रही कार अत्यधिक गर्म होकर रुक गई थी, और इसी से सिलसिलेवार प्रतिक्रिया शुरू हुई।
एक और बात यह थी कि यह कार किसी जुलूस की नहीं बल्कि एक

वीआईपी की थी, और इसे पुल मेला की रेत पर आने की अनुमति ही नहीं दी जानी चाहिए थी, खासकर जेठ पूर्णिमा के दिन तो बिल्कुल भी नहीं। आरोप था कि पुलिस को तीर्थयात्रियों में कोई दिलचस्पी नहीं थी, केवल उच्च अधिकारियों में रुचि थी। और उच्च अधिकारियों को जनता में कोई दिलचस्पी नहीं थी, केवल पद के सुख-सुविधाओं में रुचि थी। यह सच था कि मुख्यमंत्री ने इस त्रासदी पर प्रेस को एक भावुक बयान दिया था; लेकिन उसी शाम सरकारी आवास में होने वाला भोज रद्द नहीं किया गया था। राज्यपाल को कम से कम विवेक से तो अपनी करुणा की कमी को पूरा करना चाहिए था।

एक अन्य व्यक्ति ने कहा कि पुलिस को जुलूसों से काफी आगे रास्ता साफ कर देना चाहिए था, लेकिन वे ऐसा करने में विफल रहे। दूरदर्शिता की इस कमी के कारण स्नान स्थलों पर इतनी भीड़ जमा हो गई थी कि साधु आगे नहीं बढ़ पाए। समन्वय की कमी, संचार की खामी और कर्मचारियों की अपर्याप्त संख्या थी। पुलिस बल में तानाशाही और अक्षम कनिष्ठ अधिकारी तैनात थे, जो विभिन्न जिलों से आए पुलिसकर्मियों के समूहों के प्रभारी थे। ये पुलिसकर्मी ऐसे लोगों का बेमेल समूह थे जिन्हें वे अच्छी तरह से नहीं जानते थे और जो उनके आदेशों का पालन नहीं करते थे। तटबंध पर सौ से भी कम कांस्टेबल और केवल दो राजपत्रित अधिकारी तैनात थे, और रैंप के आधार पर महत्वपूर्ण मोड़ पर केवल सात ही अधिकारी थे। जिले के पुलिस अधीक्षक पुल मेले के आसपास कहीं भी मौजूद नहीं थे।

एक चौथे विवरण में पिछली रात के तूफान के बाद जमीन की फिसलन भरी स्थिति को बड़ी संख्या में हुई मौतों, विशेष रूप से रैंप के किनारे खाई में हुई मौतों के लिए जिम्मेदार ठहराया गया।

एक पांचवें व्यक्ति ने कहा कि प्रशासन को मेले का आयोजन करते

समय, विभिन्न शिविरों के लिए गंगा के उत्तरी तट पर अपेक्षाकृत खाली क्षेत्र का अधिक उपयोग करना चाहिए था, ताकि दक्षिणी तट पर अनुमानित रूप से खतरनाक दबाव को कम किया जा सके।

छठे व्यक्ति ने नागों को दोषी ठहराया और जोर देकर कहा कि आपराधिक रूप से हिंसक अखाड़ों को तत्काल भंग कर दिया जाना चाहिए या कम से कम भविष्य के सभी पुल मेलों से उन्हें प्रतिबंधित कर दिया जाना चाहिए।

एक सातवें व्यक्ति ने स्वयंसेवकों के 'दोषपूर्ण और अव्यवस्थित' प्रशिक्षण को दोषी ठहराया, जिनकी घबराहट और अनुभवहीनता ने भगदड़ को जन्म दिया।

आठवें व्यक्ति ने इसके लिए राष्ट्रीय चरित्र को दोषी ठहराया।

सच चाहे जो भी हो, अगर कहीं भी हो, हर कोई जांच की मांग कर रहा था। ब्रह्मपुर क्रॉनिकल ने मांग की कि 'इस भयावह त्रासदी के कारणों की जांच करने और इसकी पुनरावृत्ति को रोकने के लिए उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की अध्यक्षता में विशेषज्ञों की एक समिति नियुक्त की जाए'। अधिवक्ता संघ और जिला बार एसोसिएशन ने सरकार, विशेष रूप से गृह मंत्री की आलोचना की और एक कड़े शब्दों वाले संयुक्त प्रस्ताव में कहा: 'तेजी से कार्रवाई करना अत्यंत आवश्यक है। जो भी कार्रवाई हो, उसे होने दो।'

कुछ दिनों बाद एक विशेष राजपत्र में यह घोषणा की गई कि व्यापक कार्यक्षेत्र वाली एक जांच समिति का गठन किया गया है और उससे अनुरोध किया गया है कि वह अपनी जांच को पूरी तत्परता से आगे बढ़ाए।

11.28

ज़मींदारी मामले में पाँचों न्यायाधीशों ने अपनी बातचीत को लेकर कड़ी

गोपनीयता बरती। मामला समाप्त होने और फैसला सुरक्षित रखे जाने के बाद से ही उनकी चुप्पी न्यायिक विवेकाधिकार की सीमा से भी कहीं अधिक थी। वे उन्हीं लोगों के सामाजिक दायरे में उठते-बैठते थे, जिनके जीवन और संपत्ति इस मामले से जुड़े हुए थे, और वे इस बात से भली-भांति अवगत थे कि उनकी सामान्य टिप्पणी का भी कितना गहरा प्रभाव पड़ सकता है। वे किसी भी कीमत पर अटकलों के तूफान में नहीं फंसना चाहते थे।

इसके बावजूद, अटकलें व्यापक, सक्रिय और बेहद असंगत थीं। न्यायाधीशों में से एक, न्यायमूर्ति माहेश्वरी, जी.एन. बैनर्जी द्वारा अपने प्रति रखे गए कम सम्मान से अनभिज्ञ होकर, एक चाय पार्टी में एक महिला के समक्ष उस प्रख्यात वकील की वकालत की बहुत प्रशंसा की थी। न्यायाधीश ने बताया कि उन्होंने कुछ बेहद महत्वपूर्ण बातें कही थीं। यह खबर फैल गई और जमींदारों में फिर से आशा की किरण जगी। लेकिन दूसरी ओर, यह लगभग निश्चित था कि मुख्य न्यायाधीश ही फैसले का पहला मसौदा लिखेंगे, न कि न्यायमूर्ति माहेश्वरी।

फिर भी, मुख्य न्यायाधीश ने ही महाधिवक्ता से इतनी तीखी पूछताछ की थी। शास्त्री ने संभलकर अपने तर्कों पर पुनर्विचार किया और स्वीकार किया कि यदि वे बिहार मामले में सफल रही रणनीति पर कायम रहे, तो पूर्व प्रदेश मामले में उनकी जीत की संभावना खतरे में पड़ सकती है। यहाँ न्यायाधीशों ने अलग-अलग मत प्रस्तुत किए। लेकिन उनका पलटवार सफल हुआ या नहीं, यह कहना मुश्किल था। जी.एन. बनर्जी ने अपने अंतिम दो दिनों के खंडन में अपने विद्वान मित्र की उस नाव की कड़ी आलोचना की, जिसे उन्होंने 'अपने विद्वान मित्र की दिशाहीन नाव का अवसरवादी बहाव' कहा, जो बेंच के आसपास की हलचल को देखकर अपना रास्ता बदल लेती है। अंतिम दो दिनों में अदालत में उपस्थित लोगों

की आम राय यही थी कि उन्होंने सरकार के मामले को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया था।

लेकिन मारह के राजा, जिनकी कुछ ज़मीनें एक दिन अचानक टिड्डियों के झुंड ने तबाह कर दी थीं, ने इसे एक प्रतिकूल फैसले की चेतावनी के रूप में देखा। अन्य लोगों ने, अधिक ठोस कारणों से, संविधान के प्रथम संशोधन विधेयक पर ध्यान दिया। यह विधेयक, जिसे जून के मध्य में भारत के राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद (जिनके पिता, दिलचस्प बात यह है कि एक ज़मींदार के मुंशी थे) की सहमति मिली, संविधान के कुछ अनुच्छेदों के तहत भूमि सुधार कानूनों को चुनौती से बचाने का प्रयास करता था। कुछ ज़मींदारों का मानना था कि यह उनके लिए अंतिम झटका था। फिर भी, अन्य लोगों का मानना था कि इस संशोधन को स्वयं चुनौती दी जा सकती है—और जिन भूमि सुधार विधेयकों को यह संरक्षित करना चाहता था, उन्हें किसी भी मामले में असंवैधानिक घोषित किया जा सकता है क्योंकि वे अन्य, असुरक्षित, अनुच्छेदों का उल्लंघन करते थे—और वास्तव में संविधान की भावना का भी उल्लंघन करते थे।

एक ओर जमींदार और दूसरी ओर अधिनियम बनाने वाले, एक ओर किरायेदार और दूसरी ओर जमींदारों के नौकर, सभी खुशी और निराशा के इन उतार-चढ़ावों से गुजर रहे थे, वहीं न्यायाधीश गुप्त रूप से अपना फैसला तैयार करते रहे। बहस समाप्त होने के तुरंत बाद वे मुख्य न्यायाधीश के कक्ष में एकत्रित हुए और इस बात पर चर्चा की कि फैसले का स्वरूप और दिशा क्या होनी चाहिए। मुद्दों, फैसले तक पहुंचने के लिए अपनाई जाने वाली नीति और यहां तक कि स्वयं फैसले पर भी काफी मतभेद थे। हालांकि, मुख्य न्यायाधीश ने अन्य न्यायाधीशों को एकजुट होकर काम करने के लिए राजी किया। उन्होंने कहा, 'उस बिहार के फैसले को देखिए। तीन न्यायाधीश, जो मूल रूप से असहमत नहीं थे, प्रत्येक

अपनी बात पर अड़े रहे, और - मुझे उम्मीद है कि मेरा हवाला नहीं दिया जाएगा - इतनी लंबी और उबाऊ बहस की। वकीलों को कैसे पता चलेगा कि फैसले का क्या मतलब है?' यह हाउस ऑफ लॉर्ड्स नहीं है, और हमारे फैसले व्यक्तिगत भाषणों के रूप में नहीं होने चाहिए।' अंततः उन्होंने अपने सहयोगियों को इस विचार के लिए राजी कर लिया कि जब तक किसी विशेष मुद्दे पर कड़ा मतभेद न हो, तब तक एक ही फैसला सुनाया जाए। फैसले का पहला मसौदा किसी अन्य न्यायाधीश को सौंपने के बजाय, उन्होंने इसे स्वयं लिखने का निर्णय लिया।

उन्होंने यथासंभव तेज़ी से काम किया। निर्णय का मसौदा एक परिपत्र के माध्यम से सभी न्यायाधीशों के बीच भेजा गया और अलग-अलग पन्नों पर टिप्पणियाँ एकत्र की गईं। 'पृष्ठ 21 पर इस तर्क को देखते हुए कि जहाँ संविधान के शब्दों में किसी विशेष मामले से संबंधित विशिष्ट प्रावधान पहले से मौजूद हैं, वहाँ अंतर्निहित अवधारणाएँ लागू नहीं होतीं, क्या भूमि अधिग्रहण पर लंबी चर्चा निरर्थक नहीं है?' 'मेरा सुझाव है कि पृष्ठ 16 की पंक्ति 8 पर, हम "अपनी भूमि पर खेती कर रहे थे" वाक्यांश को हटाकर उसके स्थान पर "वास्तव में कृषकों और राज्य के बीच मध्यस्थ नहीं थे" वाक्यांश का प्रयोग करें।' 'मेरा मानना है कि यदि सर्वोच्च न्यायालय भूमि अधिग्रहण के पहलू पर हमारे फैसले को पलट देता है, तो हमें इसे बचाव की दूसरी पंक्ति के रूप में रखना चाहिए।' और इसी तरह की टिप्पणियाँ। इन पाँचों न्यायाधीशों में से कोई भी इस निर्णय में अपने ऊपर आने वाली भारी ज़िम्मेदारी से अनभिज्ञ नहीं था: उनका निर्णय विधायिका या कार्यपालिका के किसी भी कार्य जितना ही महत्वपूर्ण होगा और लाखों लोगों के जीवन को बदल देगा।

पचहत्तर पृष्ठों का यह फैसला तैयार किया गया, इसमें संशोधन किए गए, इस पर चर्चा हुई, फिर से संशोधन किए गए, इसकी जांच की गई, इसे

मंजूरी दी गई और अंत में इसे अंतिम रूप दिया गया। इसकी एक प्रति मुख्य न्यायाधीश के निजी सचिव द्वारा टाइप की गई थी। ब्रह्मपुर में भी देश के बाकी हिस्सों की तरह ही गपशप और जानकारी का रिसाव आम बात थी, लेकिन इन छह लोगों के अलावा किसी को भी यह पता नहीं चला कि फैसले में—और सबसे महत्वपूर्ण बात, इसके अंतिम निर्णायक अनुच्छेद में—क्या लिखा था।

11.29

पिछले एक सप्ताह से महेश कपूर, कई अन्य वरिष्ठ और कनिष्ठ राज्य राजनेताओं की तरह, ब्रह्मपुर और पटना के बीच लगातार यात्रा कर रहे थे, जो सड़क या रेल मार्ग से कुछ ही घंटों की दूरी पर था। पुल मेले के राजनीतिक नतीजों और उनके पोते के स्वास्थ्य की नाजुक स्थिति के कारण वे ब्रह्मपुर में ही रुके रहे। लेकिन पटना में घट रही महत्वपूर्ण घटनाओं के कारण वे लगभग हर दूसरे दिन पटना की ओर खिंचे चले जाते थे, ऐसी घटनाएँ जो उनके विचार में देश की राजनीतिक शक्तियों के स्वरूप और संरचना को पूरी तरह से बदल सकती थीं।

एक सुबह उनकी पत्नी के साथ हुई बातचीत में ये बातें सामने आईं।

पिछली शाम पटना से लौटने पर (जहां कांग्रेस पार्टी सहित कई राजनीतिक दल जून की भीषण गर्मी में अधिवेशन कर रहे थे) उन्हें एक ऐसी खबर मिली थी जिसके कारण उन्हें कम से कम उस दोपहर तक ब्रह्मपुर में ही रुकना पड़ेगा।

श्रीमती महेश कपूर ने धीमी आवाज़ में कहा, 'अच्छा। फिर हम साथ में भास्कर से मिलने अस्पताल जा सकते हैं।'

महेश कपूर ने अधीरता से जवाब दिया, 'महिला, मेरे पास इसके लिए समय नहीं है। मैं सारा दिन अस्पताल के वार्डों में नहीं घूम सकता।'

श्रीमती महेश कपूर ने कुछ नहीं कहा, लेकिन उनके पति को उनकी बेचैनी

साफ झलक रही थी। भास्कर बेहोश तो नहीं थे, लेकिन उनकी हालत सामान्य से बहुत अलग थी। उन्हें तेज बुखार था और भगदड़ वाले दिन की कोई भी घटना उन्हें याद नहीं थी। यहां तक कि पिछली घटनाओं की भी उनकी याददाश्त कमजोर थी।

जब केदारनाथ लौटे, तो उन्हें खबर पर मुश्किल से ही यकीन हुआ। वीणा, जिसने उनकी अनुपस्थिति में उन्हें फटकारा था, अब ऐसा करने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी। वे दिन-रात भास्कर के बिस्तर के पास ही रहे। पहले तो भास्कर अपने माता-पिता की पहचान को लेकर भी बेहद अनिश्चित था, लेकिन धीरे-धीरे वह खुद को और अपने आस-पास के माहौल को पहचानने लगा था। फिर भी, गणित उसके लिए मायने रखता था; और जब भी डॉ. दुर्रानी उससे मिलने आते, वह खुश हो जाता था। लेकिन डॉ. दुर्रानी को ये मुलाकातें खास दिलचस्प नहीं लगती थीं, क्योंकि उनके नौ वर्षीय सहकर्मी की गणितीय समझ कुछ कम हो गई थी। कबीर, जिसके लिए भास्कर पहले घर में कभी-कभार आने वाला चेहरा मात्र था, अब उससे स्नेह करने लगा था। दरअसल, कबीर ही अपने भुलक्कड़ पिता को हर दो-तीन दिन में भास्कर से मिलने के लिए प्रेरित करता था।

कुछ देर बाद श्रीमती महेश कपूर ने पूछा, 'ऐसा क्या ज़रूरी काम है कि आप उनसे मिलने नहीं जा सकते?' उनके पति अखबार पढ़ने में वापस लग गए थे।

‘कल की केस लिस्ट,’ उनके पति ने संक्षिप्त जवाब दिया। लेकिन श्रीमती महेश कपूर अड़ी रहीं, और राजस्व मंत्री ने बड़े ही सरल शब्दों में समझाया कि ब्रह्मपुर उच्च न्यायालय की केस लिस्ट में अगले दिन की कार्यवाही का बेंच-दर-बेंच विवरण है; और जमींदारी मामले का फैसला उसी सुबह दस बजे मुख्य न्यायाधीश की अदालत में सुनाया जाएगा।

और उसके बाद?

‘उसके बाद? उसके बाद—फैसला जो भी हो—मुझे तय करना होगा कि अगला कदम क्या होना चाहिए। मैं एडवोकेट-जनरल और अब्दस सलाम और न जाने किसके साथ बंद कमरे में बात करूंगा। और फिर, जब मैं पटना लौटूंगा, तो मुख्यमंत्री के साथ—मैं आपको यह सब क्यों समझा रहा हूँ?’ वह फिर से अपने अखबार की ओर मुड़ गया।

‘क्या आप सात बजे के बाद पटना के लिए नहीं निकल सकते? शाम को मिलने का समय पांच से सात बजे तक है।’

महेश कपूर ने अखबार नीचे रख दिया और लगभग चिल्लाते हुए बोले, ‘क्या एक आदमी को अपने घर में भी शांति नहीं मिल सकती? प्राण की माँ, क्या आपको पता है इस देश में क्या हो रहा है? कांग्रेस दो हिस्सों में बँटने की कगार पर है, लोग इस नई पार्टी में धड़ाधड़ शामिल हो रहे हैं।’ वे रुके, फिर बढ़ते हुए भावों के साथ बोले, ‘हर सभ्य व्यक्ति जा रहा है। पी.सी. घोष जा चुके हैं, प्रकाशम जा चुके हैं, कृपलानी और उनकी पत्नी दोनों जा चुके हैं। वे हम पर, बिल्कुल सही, “भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और पक्षपात” का आरोप लगा रहे हैं। रफी साहब, अपने हमेशा के तमाशे वाले अंदाज में, दोनों पार्टियों की बैठकों में जा रहे हैं— और उन्होंने खुद को इस नई चीज़, इस केएमपीपी, इस किसान और मजदूर जन पार्टी के बोर्ड में निर्वाचित करवा लिया है! और नेहरू खुद कांग्रेस से इस्तीफा देने की धमकी दे रहे हैं। “हम भी थक चुके हैं,” वे कहते हैं।’ महेश कपूर ने आखिरी वाक्य दोहराने से पहले एक चिढ़ भरी आवाज़ निकाली। ‘और आपके अपने पति भी कुछ ऐसा ही महसूस करते हैं,’ उन्होंने आगे कहा। ‘मैंने अपनी जिंदगी के इतने साल जेल में इसलिए नहीं बिताए। मैं कांग्रेस पार्टी से तंग आ चुका हूँ, और मैं भी इसे छोड़ने की सोच रहा हूँ। मुझे पटना जाना है, समझ रहे हो ना? और मुझे आज दोपहर ही पटना जाना है। हर घंटे हालात बदल रहे हैं, हर बैठक में कोई न कोई नया संकट खड़ा

हो जाता है। भगवान जाने मेरी गैरमौजूदगी में इस राज्य के लिए क्या फैसले लिए जा रहे हैं। अग्रवाल पटना में हैं, जी हाँ, अग्रवाल, अग्रवाल, जिन्हें पुल मेला की गड़बड़ी सुलझानी चाहिए थी, वो पटना में हैं, लगातार जोड़-तोड़ कर रहे हैं, टंडन को जितना हो सके उतना समर्थन दे रहे हैं और नेहरू को जितना हो सके उतना परेशान कर रहे हैं। और आप मुझसे पूछते हैं कि मैं पटना वापस जाने में देरी क्यों नहीं कर रहा। भास्कर को मेरी गैरमौजूदगी का पता भी नहीं चलेगा, बेचारा, और आप मेरे कारण वीना को समझा सकते हैं—अगर आपको उनमें से एक-दसवां हिस्सा भी याद रहे। आप गाड़ी ले जाइए। मैं अदालत खुद पहुँच जाऊँगा। अब बस करो —' और उन्होंने अपना हाथ ऊपर उठा दिया।

श्रीमती महेश कपूर ने आगे कुछ नहीं कहा। वह नहीं बदलेंगी; वह नहीं बदलेंगे; वह जानते थे कि वह नहीं बदलेंगी; वह जानती थीं कि वह नहीं बदलेंगे; और दोनों जानते थे कि दूसरा यह जानता है।

वह अपने साथ कुछ फल अस्पताल ले गई, और वह अपने साथ कुछ फाइलें अदालत ले गया। भास्कर से मिलने जाने से पहले, उसने एक नौकर को अपने पति के लिए कुछ पराठे बनाकर पैक करने को कहा ताकि वह दिन में बाद में पटना की यात्रा के दौरान कुछ खा सकें।

11.30

वह एक गर्म सुबह थी, और ब्रह्मपुर उच्च न्यायालय के खुले गलियारों में झुलसा देने वाली हवा चल रही थी। साढ़े नौ बजे तक, न्यायालय कक्ष संख्या एक पूरी तरह से भर चुका था। न्यायालय कक्ष के अंदर का वातावरण, हालांकि उमस भरा था, असहनीय नहीं था। कुछ खिड़कियों पर हाल ही में टांगी गई खास की लंबी चटाइयों पर पानी छिड़का गया था, जिससे जून की गर्म हवा अंदर ठंडी हवा में बदल गई थी।

भावनात्मक माहौल में तनाव, उत्साह और चिंता व्याप्त थी। मामले की

पैरवी करने वालों में से केवल स्थानीय वकील ही उपस्थित थे, लेकिन ऐसा लग रहा था कि ब्रह्मपुर बार के सभी सदस्य, चाहे वे इस मामले से जुड़े हों या नहीं, इस ऐतिहासिक अवसर पर सामूहिक रूप से उपस्थित होने का निर्णय ले चुके थे। प्रेस रिपोर्टर भी बड़ी संख्या में मौजूद थे और पहले से ही खबरें लिख रहे थे। बारी-बारी से गर्दन घुमाते और गर्दन झुकाते हुए, वे हर प्रसिद्ध वादी, हर राजा, नवाब या महान जमींदार को देखने की कोशिश कर रहे थे, जिनका भाग्य दांव पर लगा था। या शायद यह कहना अधिक सटीक होगा कि पलड़ा पहले ही झुक चुका था, लेकिन तराजू को छिपाने वाला पर्दा अभी भी अपनी जगह पर था। कुछ ही मिनटों में, वह पर्दा हट जाएगा।

महेश कपूर पूर्व प्रदेश के एडवोकेट-जनरल से बात करते हुए अंदर आए। ब्रह्मपुर क्रॉनिकल के रिपोर्टर को उनकी कुछ ही बातें सुनाई दीं क्योंकि वे बगल के गलियारे से उनके पास से होकर निकल गए। एडवोकेट-जनरल ने अपनी हमेशा वाली मुस्कान के साथ, जो सामान्य से थोड़ी अधिक चौड़ी थी, कहा, 'ब्रह्मांड चलाने के लिए एक त्रिमूर्ति ही काफी है, लेकिन ऐसा लगता है कि इस मामले में दो अतिरिक्त दिमागों की आवश्यकता है।'

महेश कपूर ने कहा: 'वो कमीना मार्ह और उसका बाल यौन शोषण करने वाला बेटा— मुझे हैरानी है कि उनमें दोबारा इस अदालत में आने की इतनी बेशर्मी कैसे आ गई। कम से कम वे चिंतित तो दिख रहे हैं।' फिर उन्होंने अपना सिर हिलाया, और प्रतिकूल फैसले की आशंका से उतने ही चिंतित दिखे।

अदालत की घड़ी में दस बज गए। व्यवस्थापकों का जुलूस शुरू हुआ। न्यायाधीश एक-एक करके अंदर आए। उन्होंने न तो सरकारी वकीलों की ओर देखा और न ही याचिकाकर्ताओं के अधिवक्ताओं की ओर। उनके

भावों से यह समझना असंभव था कि फैसला क्या होगा। मुख्य न्यायाधीश ने इधर-उधर देखा और कुर्सियाँ आगे खिसकाई गईं। कोर्ट रीडर ने 'फैसला सुनाए जाने' के लिए सूचीबद्ध कई संयुक्त रिट याचिकाओं के क्रमांक पुकारे। मुख्य न्यायाधीश ने अपने सामने रखे टाइप किए हुए पन्नों के मोटे बंडल पर नज़र डाली और अनमने ढंग से उन्हें पलटने लगे। अदालत में सबकी निगाहें उन पर टिकी थीं। उन्होंने अपने सामने रखे गिलास से लेस की डोरी हटाई और पानी का एक घूंट पिया।

उसने पचहत्तर पृष्ठों के फैसले के अंतिम पृष्ठ को पलटा, अपना सिर एक तरफ झुकाया और फैसले के मुख्य भाग को पढ़ना शुरू किया। उसने आधे मिनट से भी कम समय में, स्पष्ट और तेज़ी से पढ़ा:

पूर्व प्रदेश जमींदारी उन्मूलन एवं भूमि सुधार अधिनियम संविधान के किसी भी प्रावधान का उल्लंघन नहीं करता है और अमान्य नहीं है। मुख्य आवेदन, साथ ही उससे संबंधित अन्य आवेदन, खारिज किए जाते हैं। हमारा मानना है कि दोनों पक्ष अपना-अपना खर्च स्वयं वहन करेंगे, और हम तदनुसार आदेश देते हैं।

उन्होंने फैसले पर हस्ताक्षर किए और उसे अपने दाहिनी ओर बैठे वरिष्ठतम न्यायाधीश को सौंप दिया, जिन्होंने हस्ताक्षर करके उसे मुख्य न्यायाधीश के पार अगले वरिष्ठतम न्यायाधीश को दे दिया; इस प्रकार दस्तावेज़ इधर-उधर घूमता रहा जब तक कि वह कोर्ट रीडर के पास नहीं पहुंचा, जिन्होंने उस पर न्यायालय की मुहर लगा दी जिस पर लिखा था: 'उच्च न्यायालय, ब्रह्मपुर'। फिर न्यायाधीश उठ खड़े हुए, क्योंकि यही एकमात्र कार्य था जिसके लिए पांच न्यायाधीशों की पूर्ण पीठ गठित की गई थी। कुर्सियों का क्रम उलट गया, और न्यायाधीश दाहिनी ओर लगे फीके लाल पर्दे के पीछे चले गए, उनके पीछे चमकीले रंग के सेवक भी चले गए।

ब्रह्मपुर उच्च न्यायालय की परंपरा के अनुसार, चारों कनिष्ठ न्यायाधीश

मुख्य न्यायाधीश के कक्ष तक उनके साथ गए; फिर वे क्रमानुसार अगले वरिष्ठ न्यायाधीश के कक्ष तक गए। अंत में, न्यायमूर्ति माहेश्वरी अकेले अपने कक्ष में वापस लौटे। कई हफ्तों तक आमने-सामने और लिखित रूप से मुद्दों पर विचार-विमर्श करने के बाद, किसी का भी आगे बातचीत करने का मन नहीं था; काले वस्त्रों में सजे न्यायाधीशों का जुलूस लगभग शोकपूर्ण था। जहाँ तक न्यायमूर्ति माहेश्वरी की बात है, वे उस दस्तावेज़ को लेकर अभी भी असमंजस में थे जिस पर उन्होंने अभी-अभी अपने हस्ताक्षर किए थे, लेकिन वे रामायण में सीता की स्थिति को समझने के कुछ करीब पहुँच चुके थे।

अदालत में मची अफरा-तफरी को शब्दों में बयान करना भी कम होगा। जैसे ही आखिरी जज नज़र से ओझल हुए, मुवक्किलों और वकीलों से लेकर प्रेस और आम जनता तक, सभी खुशी से झूम उठे, चिल्लाने लगे, एक-दूसरे को गले लगाने लगे और रोने लगे। फ़िरोज़ और उनके पिता को एक-दूसरे की तरफ देखने का मौका भी नहीं मिला था कि वे वकीलों, मकान मालिकों और पत्रकारों के मिले-जुले समूह से घिर गए—और उनके लिए कुछ भी ठीक से बोलना नामुमकिन हो गया। फ़िरोज़ का चेहरा गंभीर दिख रहा था।

मारह के राजा, बाकी सभी की तरह, न्यायाधीशों के उठने पर खड़े हो गए थे। लेकिन क्या वे फैसला नहीं सुनाने वाले? उन्होंने सोचा। क्या उन्होंने इसे टाल दिया है? उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि इतने कम शब्दों में इतना गहरा अर्थ कैसे समा सकता है। लेकिन सरकार पक्ष की खुशी और अपने पक्ष की निराशा और घबराहट ने उन्हें उस अशुभ मंत्र का पूरा अर्थ समझा दिया। उनके पैर लड़खड़ा गए; वे आगे की ओर सामने रखी कुर्सियों की कतार पर गिर पड़े और ज़मीन पर धराशायी हो गए; और उनकी आँखों के सामने अंधेरा छा गया।

11.31

दो दिन बाद, पूर्व प्रदेश के एडवोकेट-जनरल श्री शास्त्री ने उच्च न्यायालय के प्रिंटिंग प्रेस द्वारा प्रकाशित निर्णय के पूरे पाठ का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया। वे इस बात से प्रसन्न थे कि निर्णय सर्वसम्मति से दिया गया था। यह संक्षिप्त और स्पष्ट रूप से लिखा गया था, और उनका मानना था कि यह सर्वोच्च न्यायालय में होने वाली अनिवार्य अपील का सामना कर सकेगा, विशेषकर अब जब प्रथम संशोधन की नई, नई दीवार इसके चारों ओर खड़ी हो गई थी।

कानून के प्रत्यायोजन, सार्वजनिक उद्देश्य की कमी इत्यादि पर आधारित आपत्तियों पर विचार किया गया और उन्हें खारिज कर दिया गया।

मूल प्रश्न पर—जो श्री शास्त्री के विचार में आसानी से किसी भी पक्ष में जा सकता था—न्यायाधीशों ने इस प्रकार निर्णय दिया था:

पुनर्वास अनुदान और मुआवज़ा, दोनों मिलकर अधिग्रहित भूमि के लिए वास्तविक प्रतिपूर्ति, यानी 'वास्तविक मुआवज़ा' बनाते हैं। न्यायाधीशों के अनुसार, इससे ये दोनों मद अपर्याप्तता या भेदभाव के आधार पर संवैधानिक चुनौती से परे हो जाते हैं। यदि सरकार का यह सुनियोजित तर्क कि ये दोनों मद अलग-अलग हैं, सही साबित हो जाता, तो पुनर्वास अनुदान को संविधान के अंतर्गत 'मुआवज़े' को प्राप्त संरक्षण प्राप्त नहीं होता और इसलिए 'कानूनों के समान संरक्षण' के प्रावधान के तहत इसे रद्द कर दिया जाता।

एडवोकेट-जनरल के अनुसार, न्यायाधीशों ने सरकार को करारा झटका दिया था—और इस तरह उसे एक अदृश्य लेकिन तेज़ी से आती हुई ट्रेन के रास्ते से हटा दिया था। इस सब की विचित्रता पर वह मन ही मन मुस्कुराया।

जहां तक विशेष मामलों का सवाल है—हिंदू धर्मार्थ ट्रस्ट, वक्फ,

राजकोषीय अनुदानग्राही, पूर्व शासक आदि—उनमें से किसी की भी दलीलें मान्य नहीं हुईं। शास्त्री जी को केवल एक मामूली अफसोस था, और उसका फैसले से कोई लेना-देना नहीं था। वह यह था कि उनके प्रतिद्वंद्वी जी.एन. बनर्जी फैसले को सुनने के लिए अदालत में उपस्थित नहीं थे।

लेकिन जी.एन. बैनर्जी कलकत्ता में एक अन्य बेहद लाभदायक, हालांकि कम महत्वपूर्ण, मामले की पैरवी कर रहे थे, और श्री शास्त्री ने सोचा कि जब उन्हें टेलीफोन या टेलीग्राम से इस मामले के परिणाम के बारे में पता चला होगा, तो उन्होंने शायद बस कंधे उचकाए होंगे और अपने लिए एक और स्कॉच का गिलास भर लिया होगा।

11.32

पिछले पुल मेलों में, जेठ पूर्णिमा के बाद भीड़ कम होने लगती थी, फिर भी बड़ी संख्या में तीर्थयात्री ग्यारह दिन बाद एकादशी की रात को स्नान करने के लिए या चौदह दिन बाद अगली अमावस्या (भगवान जगन्नाथ के लिए पवित्र मानी जाने वाली) को स्नान करने के लिए आते थे। लेकिन इस बार ऐसा नहीं हुआ। इस त्रासदी ने श्रद्धालुओं के बीच भय पैदा करने के साथ-साथ रेत पर नियमित प्रशासन को पूरी तरह से अस्त-व्यस्त कर दिया। आपातकालीन स्थिति के कारण स्वास्थ्य कर्मचारियों पर काम का बोझ इतना बढ़ गया कि वे अपने नियमित कार्यों की उपेक्षा करने को मजबूर हो गए। स्वच्छता की स्थिति खराब हो गई और विशेष रूप से उत्तरी तट पर गैस्ट्रोएंटेराइटिस और दस्त की महामारी फैल गई। तीर्थयात्रियों को रुकने से रोकने के लिए खाने-पीने की दुकानें हटा दी गईं, लेकिन जो लोग रुके उन्हें खाना ही था और जल्द ही मुनाफाखोरी शुरू हो गई: एक सेर पूरी पाँच रुपये में बिकती थी, एक सेर उबले आलू तीन रुपये में बिकते थे और पान की कीमत तिगुनी हो गई।

लेकिन जल्द ही तीर्थयात्री पूरी तरह से तितर-बितर हो गए। सेना के इंजीनियरों ने सड़कों से बिजली के खंभे और स्टील की प्लेटें हटा दीं और पोंटून पुलों को तोड़ दिया। नदी में यातायात सामान्य रूप से नीचे की ओर बढ़ने लगा।

समय बीतने के साथ मानसून की बारिश से गंगा का जलस्तर बढ़ गया और उसने रेत को ढक लिया।

रामजप बाबा अपने चबूतरे पर ही बैठे रहे, जो अब चारों ओर से गंगा से घिरा हुआ था, और निरंतर भगवान के शाश्वत नाम का जाप करते रहे।

भाग बारह

12.1

श्रीमती रूपा मेहरा और लता विश्वविद्यालय के मानसून सत्र शुरू होने से लगभग एक सप्ताह पहले लखनऊ से ब्रह्मपुर लौट आईं। प्राण उन्हें लेने स्टेशन पर मौजूद था। रात काफी हो चुकी थी और हालांकि ठंड नहीं थी, प्राण को खांसी आ रही थी।

श्रीमती रूपा मेहरा ने उसके आने पर उसे डांटा।

‘माँ, ऐसी बेवकूफी मत करो,’ प्राण ने कहा। ‘क्या तुम्हें लगता है कि मैं मंसूर को भेजता?’

'सविता कैसी है?' श्रीमती रूपा मेहरा ने पूछा, ठीक उसी समय जब लता भी यही सवाल पूछने वाली थी।

‘बहुत अच्छा,’ प्राण ने कहा। ‘लेकिन वह दिन-ब-दिन बड़ी होती जा रही है —’ ‘कोई जटिलता तो नहीं?’

‘वह ठीक है। वह घर पर आपका इंतजार कर रही है।’

उसे सो जाना चाहिए था।

“हाँ, मैंने उसे यही बताया था। लेकिन ज़ाहिर है कि वह अपने पति से ज़्यादा अपनी माँ और बहन की परवाह करती है। उसने सोचा कि घर पहुँचने पर आपको कुछ खाने की ज़रूरत पड़ सकती है। आपकी यात्रा कैसी रही? उम्मीद है लखनऊ स्टेशन पर आपकी मदद करने के लिए कोई मिला होगा।”

लता और उसकी मां ने एक दूसरे को जल्दी से देखा।

‘जी हां,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने दृढ़ता से कहा। ‘वही बहुत अच्छा युवक जिसके बारे में मैंने आपको दिल्ली से पत्र लिखा था।’

‘The shoemaker Haresh Khanna.’

‘प्राण, तुम्हें उसे मोची नहीं कहना चाहिए,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। ‘ईश्वर की कृपा से वह शायद मेरा दूसरा दामाद बनेगा।’

अब प्राण की बारी थी लता पर एक सरसरी नज़र डालने की। लता धीरे-धीरे अपना सिर अगल-बगल हिला रही थी। प्राण को समझ नहीं आ रहा था कि वह इस राय को नकार रही है या इसकी निश्चितता को।

‘लता ने उसे लता को पत्र लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। इसका केवल एक ही अर्थ हो सकता है,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने आगे कहा।

‘इसके विपरीत, माँ,’ लता ने कहा, जो अब और संकोच नहीं कर सकती थी। ‘इसका मतलब कई चीजें हो सकती हैं।’ उसने यह नहीं बताया कि उसने हरेश को लिखने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया था, बल्कि केवल उसे ऐसा करने की अनुमति दी थी।

‘हाँ, मैं सहमत हूँ, वह अच्छा आदमी है,’ प्राण ने कहा। ‘ये रहा तांगा।’ और वह कुलियों को सामान रखने का तरीका बताने में जुट गया।

लता प्राण की बात को ठीक से समझ नहीं पाई, वरना वह भी अपनी मां की तरह ही बहुत हैरानी जताती।

‘अच्छा आदमी? आपको कैसे पता कि वह अच्छा आदमी है?’ श्रीमती

रूपा मेहरा ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।
प्राण ने श्रीमती रूपा मेहरा की उलझन का आनंद लेते हुए कहा, 'कोई रहस्य नहीं। मेरी उनसे बस संयोगवश मुलाकात हो गई, बस इतना ही।'
'तुम्हारा मतलब है कि तुम हरेश को जानते हो?' उसकी सास ने कहा।
प्राण खांसते हुए साथ ही सिर भी हिला रहा था। अब श्रीमती रूपा मेहरा और लता दोनों उसे हैरानी से देख रही थीं।
जब उसकी आवाज वापस आई तो उसने कहा, 'हां, हां, मैं तुम्हारे मोची को जानता हूं।'
रूपा मेहरा ने झुंझलाहट में कहा, 'काश आप उसे उस नाम से न बुलातीं। उसके पास इंग्लैंड की डिग्री है। और काश आप अपनी सेहत का ख्याल रखतीं। अगर आप खुद अपना ख्याल नहीं रखेंगी तो सविता की देखभाल कैसे करेंगी?'
प्राण ने कहा, "मैं उसे ठीक-ठाक पसंद करता हूँ। लेकिन मुझे उसके बारे में एक मोची की याद आती है। जब वह सुनील पटवर्धन की पार्टी में आया, तो वह अपने साथ जूतों की एक जोड़ी लाया था जो उसने उसी सुबह बनाई थी। या शायद बनवाई थी। या कुछ ऐसा ही।"
'प्राण, तुम क्या बात कर रहे हो?' श्रीमती रूपा मेहरा चिल्लाईं। 'काश तुम पहेलियों में बात न करते। तुम अपने साथ कोई ऐसी चीज़ कैसे ला सकते हो जिसे बनवाना है? ये सुनील पटवर्धन कौन है, और ये कैसे जूते हैं? और'—उन्होंने खास तौर पर नाराज़गी भरे लहजे में कहा—'मुझे इन सब बातों की जानकारी क्यों नहीं थी?'
श्रीमती रूपा मेहरा, जिनका खास काम दूसरों के बारे में जानना था, उन्हें यह बात पता न होने से बहुत गुस्सा आया कि हरेश प्राण से मिल चुका था, और पूरी संभावना है कि उनसे पहले ही वह मिल चुकी थीं।
'अब मुझसे नाराज़ मत होइए, माँ, इसमें मेरी कोई गलती नहीं है कि मैंने

आपको नहीं बताया। मुझे लगता है उस समय घर पर हालात कुछ तनावपूर्ण थे—या शायद मैं भूल ही गई थी। वो कुछ महीने पहले व्यापार के सिलसिले में यहाँ आए थे और एक सहकर्मी के घर रुके थे, और संयोग से मेरी उनसे मुलाकात हो गई। छोटे कद के, सलीके से कपड़े पहने, सीधे-सादे और अपने विचारों में एकदम पक्के। हरीश खन्ना, जी हाँ। मुझे उनका नाम खास तौर पर याद रहा क्योंकि मुझे लगा कि वो लता के लिए एक उपयुक्त वर हो सकते हैं।'

'आपको याद होगा कि आपने सोचा था—' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहना शुरू किया। 'और आपने इस बारे में कुछ नहीं किया?' यह कर्तव्य की घोर उपेक्षा थी। उनके बेटे इस मामले में पूरी तरह से गैरजिम्मेदार थे, लेकिन उन्होंने अपने दामाद से ऐसी उम्मीद नहीं की थी।

'अच्छा—' प्राण कुछ देर रुका, अपने शब्दों पर विचार किया, फिर बोला: 'अब मुझे नहीं पता कि आप उनके बारे में कितना जानती हैं, माँ, और पार्टी हुए भी काफी समय हो गया है, और मैं यह नहीं कह सकता कि मुझे सब कुछ ठीक वैसे ही याद है जैसा मैंने सुना था, लेकिन सुनील पटवर्धन से मुझे यही समझ आया है कि उनके जीवन में कोई लड़की थी, कोई सिख लड़की, जो—'

'जी हां, हमें पता है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने उन्हें बीच में ही रोक दिया। 'हमें अच्छी तरह पता है। लेकिन यह हमारे रास्ते में बाधा नहीं बनेगा।' श्रीमती रूपा मेहरा ने अपने लहजे से स्पष्ट कर दिया कि सिख युवतियों का एक सशस्त्र दस्ता भी उनके और उनके लक्ष्य के बीच नहीं आ सकता।

प्राण ने आगे कहा: 'सुनील ने अपने और उस लड़की के बारे में एक बिलकुल बेवकूफी भरा शेर सुनाया था। मुझे अभी याद नहीं आ रहा है। खैर, उसने मुझे यह समझा दिया कि हमारे मोची की शादी तय हो चुकी

है।’

श्रीमती रूपा मेहरा ने इस नाम को नजरअंदाज कर दिया। उन्होंने पूछा, 'यह सुनील कौन है?'

‘माँ, क्या आप उसे नहीं जानतीं?’ प्राण ने कहा। ‘खैर, मुझे लगता है कि जब आप यहाँ थीं तब वह हमारे यहाँ नहीं आया था। सविता और मैं उसे बहुत पसंद करते हैं। वह बहुत हंसमुख है, नकल करने में माहिर है। उसे आपसे मिलकर खुशी होगी, और मुझे लगता है कि आपको भी उससे मिलकर खुशी होगी। कुछ मिनटों के बाद आपको लगेगा कि आप खुद से बात कर रही हैं।’

‘लेकिन वो करते क्या हैं?’ श्रीमती रूपा मेहरा ने पूछा। ‘उनका काम क्या है?’

'ओह, माफ कीजिए माँ, मैं समझ गया। वह गणित विभाग में व्याख्याता हैं। वह डॉ. दुर्रानी के समान ही कुछ क्षेत्रों में काम करते हैं।'

लता ने नाम सुनते ही अपना सिर घुमाया। उसके चेहरे पर कोमलता और उदासी के भाव एक साथ उभर आए। वह जानती थी कि कैंपस में कबीर से बचना कितना मुश्किल होगा, और अब वह इस बात को लेकर अनिश्चित थी कि क्या वह उससे बचना चाहती है—या खुद को उससे बचने के लिए मजबूर कर पाएगी। लेकिन उसकी लंबी चुप्पी के बाद, कबीर की भावनाएँ उसके प्रति क्या होंगी? उसे डर था कि उसने कबीर को भी उतना ही दुख पहुँचाया है जितना कबीर ने उसे, और ये दोनों ही विचार उसे पीड़ा के सिवा कुछ नहीं दे रहे थे।

श्रीमती रूपा मेहरा ने जल्दी से कहा, 'अब आपको ब्रह्मपुर की बाकी सारी खबरें बतानी होंगी। पुल मेले में हुई उस भयानक घटना के बारे में बताइए जिसके बारे में हम सब सुन रहे हैं। यह भगदड़। उम्मीद है कि हमारे किसी जानने वाले को चोट नहीं आई होगी।'

‘अच्छा, माँ,’ प्राण ने सोच-समझकर कहा, आज रात भास्कर के बारे में कुछ भी कहने की इच्छा न रखते हुए, ‘खबरों के बारे में कल सुबह बात करते हैं। बताने के लिए बहुत कुछ है—पुल मेला दुर्घटना, ज़मींदारी फैसला, मेरे पिता पर उसका असर—ओह हाँ, और आपके पिता की कार, ब्यूक पर भी’—यहाँ उसे खांसी आने लगी—‘और, ज़ाहिर है, रामजप बाबा ने मेरा अस्थमा ठीक कर दिया है, सिवाय इसके कि खबर अभी तक मेरे फेफड़ों तक नहीं पहुँची है। आप दोनों थकी हुई हैं, और मैं मानता हूँ कि मैं भी थोड़ा थका हुआ महसूस कर रहा हूँ। चलो, हम यहाँ हैं। आह, प्रिय’—क्योंकि सविता द्वार तक आ गई थी—‘तुम सचमुच नासमझ हो।’ उसने उसके माथे पर चुंबन किया।

सविता और लता ने एक-दूसरे को चूमा। श्रीमती रूपा मेहरा ने अपनी बड़ी बेटी को एक मिनट तक आँसू भरी आँखों से गले लगाया, फिर बोलीं: 'मेरे पिता की कार?—'

लेकिन बातचीत का समय नहीं था। तांगा खाली किया गया, गरमा गरम सूप पेश किया गया जिसे सबने मना कर दिया, शुभ रात्रि का अभिवादन हुआ। श्रीमती रूपा मेहरा ने जम्हाई ली, सोने की तैयारी की, अपने नकली दांत निकाले, लता को चुंबन दिया, प्रार्थना की और सो गईं।

लता देर तक जागती रही, लेकिन तांगे के विपरीत, वह न तो कबीर के बारे में सोच रही थी और न ही हरेश के बारे में। उसकी माँ की शांत और नियमित साँसें भी उसे तसल्ली नहीं दे पाईं। लेटते ही उसे याद आ गया कि उसने पिछली रात कहाँ बिताई थी। पहले तो उसे लगा कि वह अपनी आँखें बंद नहीं कर पाएगी। वह दरवाजे के बाहर कदमों की आहट की कल्पना करती रही, और उसकी कल्पना ने उसके लिए उस लंबे गलियारे के अंत में, पुष्कर और किरण के कमरों के पास रखी हुई बड़ी घड़ी की घंटियों को फिर से जीवंत कर दिया।

‘मुझे लगा था कि तुम एक बुद्धिमान लड़की हो,’ वह घृणित, निराश, क्षमाशील आवाज कह रही थी।

लेकिन कुछ देर बाद उसकी आंखें अपने आप बंद हो गईं, और उसका मन एक सुखद थकावट के वश में हो गया।

12.2

श्रीमती रूपा मेहरा और उनकी दो बेटियों ने अभी-अभी नाश्ता समाप्त किया था और अब तक उन्हें किसी महत्वपूर्ण विषय पर बात करने का समय नहीं मिला था, तभी प्रेम निवास से दो आगंतुक आए: श्रीमती महेश कपूर और वीना।

श्रीमती रूपा मेहरा का चेहरा उनकी दयालुता और विचारशीलता को याद करके खिल उठा। 'अंदर आइए, अंदर आइए, अंदर आइए,' उन्होंने हिंदी में कहा। 'मैं अभी आपके बारे में ही सोच रही थी, और आप यहाँ हैं। नाश्ता तो कर ही लीजिए,' उन्होंने अपनी बेटी के घर पर इस तरह कब्ज़ा जमा लिया, जो कलकत्ता में उस भयानक माहौल में उनके लिए नामुमकिन था। 'नहीं? चलो, कम से कम चाय तो पी लीजिए। प्रेम निवास में सब कैसे हैं? और मिसरी मंडी में? केदारनाथ क्यों नहीं आए—या उनकी माँ? और भास्कर कहाँ है? स्कूल अभी शुरू नहीं हुआ है—या हो गया है? मुझे लगता है वह अपने दोस्तों के साथ पतंग उड़ाने गया होगा और अपनी रूपा नानी को भूल गया होगा। मंत्री साहब ज़रूर व्यस्त होंगे, मैं समझ सकती हूँ, इसलिए मैं उन्हें हमारे पास न आने के लिए दोष नहीं देती, लेकिन केदारनाथ को तो ज़रूर आना चाहिए था। वह सुबह ज़्यादा कुछ नहीं करते। लेकिन मुझे सारी खबरें बताइए। प्राण ने वादा किया था, लेकिन उनसे बात करने की तो बात ही छोड़िए, मैंने उन्हें आज सुबह देखा भी नहीं है। वह किसी समिति की बैठक में गए हैं।' सविता, तुम्हें उससे कहना चाहिए कि वह ज्यादा मेहनत न करे। और’—प्राण की माँ की ओर मुड़ते

हुए—'तुम्हें उसे यह भी समझाना चाहिए कि वह इतना सक्रिय न रहे। तुम्हारे शब्दों का बहुत महत्व होगा। एक माँ के शब्दों का हमेशा ही महत्व होता है।'

श्रीमती महेश कपूर ने अपने शांत लहजे में कहा, 'मेरी बातें कौन सुनता है?' 'आप तो जानते ही हैं कि असलियत क्या है।'

'जी हां,' श्रीमती रूपा मेहरा ने सिर हिलाते हुए ज़ोर से सहमति जताई। 'मैं अच्छी तरह जानती हूं। आजकल कोई अपने माता-पिता की बात नहीं सुनता। ये समय की ही देन है।' लता और सविता ने एक-दूसरे की तरफ देखा। श्रीमती रूपा मेहरा ने आगे कहा: 'अब मेरे पिता के साथ, कोई भी उनकी बात न मानने की हिम्मत नहीं करता। वरना वो थप्पड़ मार देते हैं। अरुण के जन्म के बाद भी उन्होंने मुझे एक बार थप्पड़ मारा था क्योंकि उनका कहना था कि मैं उसे ठीक से संभाल नहीं रही थी; अरुण बहुत ज़िद्दी था, बिना किसी कारण के रोता था, और इससे मेरे पिता परेशान हो जाते थे। थप्पड़ पड़ने पर मैं भी रोने लगी। और अरुण, जो उस समय केवल एक साल का था, और भी ज़ोर से रोने लगा। उस समय मेरे पति दौरे पर थे।' उनकी आंखों में आंसू आ गए, फिर कुछ याद आने पर वे साफ हो गए।

'मेरे पिता की कार—बुइक—का क्या हुआ?' उसने पूछा।

वीना ने कहा, 'इसे पुल मेले में घायल हुए लोगों की मदद के लिए मंगवाया गया था। मुझे लगता है कि इसे वापस कर दिया गया है; अब तक तो इसे वापस कर दिया जाना चाहिए था। लेकिन इन दिनों हम भास्कर को लेकर बहुत चिंतित थे, इसलिए हमने इस बारे में ज्यादा जानकारी नहीं ली।'

'चिंतित हो? किसलिए?' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।

लता ने साथ ही कहा, 'भास्कर को क्या हुआ?'

वीना, उसकी माँ और सविता, तीनों को इस बात पर गहरा आश्चर्य हुआ कि प्राण ने पिछली रात भास्कर की दुर्घटना और उसके बाद की घटनाओं के बारे में पहुँचने के कुछ ही मिनटों के भीतर श्रीमती रूपा मेहरा को पूरी जानकारी क्यों नहीं दी। सभी ने उत्सुकता और चिंता के साथ पूरी बात बताई, और श्रीमती रूपा मेहरा की घबराहट और सहानुभूति भरी चीखों ने चिंता, उत्तेजना और शोर को और बढ़ा दिया।

अगर हम पांच लोग इतना शोर मचा सकते हैं, तो बीरबल ने सचमुच उस पेड़ के नीचे एक चमत्कार देखा होगा, लता ने मन ही मन कहा, और उसके विचार भास्कर से कबीर की ओर उसी क्षण मुड़ गए जब बातचीत भी उसी तरह बदल गई।

वीना टंडन कह रही थीं: "सचमुच, अगर उस लड़के ने भास्कर को न पहचाना होता, तो भगवान ही जानता है कि हम क्या करते—या उसे कौन ढूंढ पाता। जब हमने उसे देखा तो वह बेहोश था—और जब उसे होश आया, तो उसे अपना नाम तक याद नहीं था।" यह सोचकर वह कांप उठीं कि एक और भी भयानक हादसा कितना करीब था, लगभग टलने लायक नहीं था। जागते हुए भी, यहां तक कि जब वह अपने बेटे का हाथ उसके बिस्तर के पास पकड़े होती थीं, तब भी उन्हें अक्सर भयानक स्पष्टता के साथ याद आता था कि कैसे उसकी उंगलियां उनकी पकड़ से फिसल गईं। और उस हाथ का वापस आना इतनी नाजुक संभावना पर निर्भर था कि इसका एकमात्र कारण ईश्वर की कृपा और दया ही हो सकती थी।

'अरे, चाय!' श्रीमती रूपा मेहरा ने तीन युवा बेटियों की परवरिश करते हुए स्नेह से कहा। 'वीना, तुम्हें तुरंत एक कप चाय पीनी चाहिए, जी हाँ, चाहे तुम्हारे हाथ काँप रहे हों। इससे तुम्हें तुरंत आराम मिलेगा। नहीं, सविता, तुम बैठ जाओ, इस हालत में मेहमाननवाज़ी करने की ज़िद करना ठीक

नहीं है। माँ होती क्या है, तुम सहमत नहीं हो?' यह आखिरी वाक्य उन्होंने श्रीमती महेश कपूर से कहा। 'लता, प्यारी, यह कप वीना को दे दो। भास्कर को पहचानने वाला यह लड़का कौन था? उसका कोई दोस्त?'

'अरे नहीं,' वीना ने थोड़ी संभली आवाज़ में कहा। 'वह एक नौजवान था, एक स्वयंसेवक। हम उसे नहीं जानते थे, लेकिन वह भास्कर को जानता था। वह कबीर दुर्रानी है, डॉ. दुर्रानी का बेटा, जिसने भास्कर के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया है—'

लेकिन सदमे से अचानक कांपने लगे श्रीमती रूपा मेहरा के हाथों से वह चाय गिर गई जिसे वह अभी-अभी परोस रही थीं।

नाम सुनते ही लता एकदम शांत हो गई थी।

कबीर पुल मेले के पास एक हिंदू त्योहार में स्वयंसेवक के रूप में क्या कर रहे होंगे?

श्रीमती रूपा मेहरा ने चायदानी नीचे रखी और लता की ओर देखा, जो उनकी परेशानी का मूल कारण थी। वह कहने ही वाली थीं, 'अब देखो तुमने मुझसे क्या करवा दिया!' लेकिन उनकी अंतरात्मा ने उन्हें रोक दिया। आखिर वीना और श्रीमती महेश कपूर को कबीर की लता में दिलचस्पी के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। (वह इसे इसी तरह सोचना पसंद करती थीं।)

इसके बजाय उसने कहा: 'लेकिन वह—खैर, वह—मेरा मतलब है, उसके नाम से तो यही लगता है—वह पुल मेले में क्या कर रहा था? ज़रूर—'

वीना ने कहा, 'मुझे लगता है कि वह विश्वविद्यालय से आया एक स्वयंसेवक था। आपदा के बाद उन्होंने स्वयंसेवकों के लिए अपील भेजी थी, और वह मदद करने चला गया। कितना नेक नौजवान है। उसने एक मंत्री की बात मानने के लिए भी प्राथमिक चिकित्सा केंद्र में अपनी ड्यूटी छोड़ने से इनकार कर दिया—आप जानते ही हैं कि बाओजी फोन पर

कितने रूखे हो सकते हैं। हमें खुद भास्कर को देखने जाना पड़ा। यह अच्छा हुआ, क्योंकि भास्कर को वहाँ से नहीं ले जाना चाहिए था। और हालांकि दुर्रानी का बेटा थका हुआ था, उसने हमसे काफी देर तक बात की, हमें दिलासा दिया, बताया कि भास्कर को कैसे लाया गया था, और उसे कोई बाहरी चोट नहीं लगी थी। मैं चिंता से लगभग बेहाल थी। इससे लगता है कि हम सब में ईश्वर का अंश है। वह आजकल अक्सर प्रेम निवास आता है। उसके पिता, जो भास्कर को जानते हैं, भी अक्सर साथ आते हैं। हमें नहीं पता कि वे क्या बातें करते हैं। हालांकि इससे भास्कर खुश हो जाता है, इसलिए हम उन्हें कागज और पेंसिल के साथ अकेला छोड़ देते हैं।'

'प्रेम निवास?' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। 'इजिप्शियन मंडी क्यों नहीं?'

'अच्छा, रूपाजी,' श्रीमती महेश कपूर ने कहा। 'मैंने जोर देकर कहा है कि जब तक भास्कर पूरी तरह ठीक नहीं हो जाता, वीना हमारे साथ ही रहे। डॉक्टर का कहना है कि उसके लिए ज्यादा घूमना-फिरना ठीक नहीं है।' दरअसल, श्रीमती महेश कपूर ने डॉक्टर को अलग ले जाकर उनसे यही बात कहलवाई थी। 'और वीना के लिए भी, भास्कर की देखभाल करना ही काफी थकाने वाला काम है, ऊपर से घर का काम भी संभालना। केदारनाथ और उसकी मां भी स्वाभाविक रूप से हमारे साथ ही रह रहे हैं। वे दोनों अभी भास्कर के साथ हैं। किसी न किसी को तो रहना ही होगा।' श्रीमती महेश कपूर ने इस व्यवस्था से अपने ऊपर पड़ने वाले किसी भी अतिरिक्त दबाव का ज़िक्र नहीं किया। दरअसल, चार लोगों को अपने घर में ठहराने के अतिरिक्त प्रयास को उन्होंने कोई असामान्य बात नहीं समझा। प्रेम निवास में उनका घर हमेशा से ऐसा ही रहा था, जिसमें हर तरह के लोगों—अक्सर अजनबियों, उनके पति के राजनीतिक सहयोगियों —को हर समय आतिथ्य सत्कार देना शामिल था। अगर यह एक ऐसा

प्रयास था जिसे वे स्वेच्छा से, भले ही खुशी से न करें, करती थीं, तो यह एक ऐसा प्रयास था जिसे वे खुशी और स्वेच्छा दोनों से कर रही थीं। उन्हें खुशी थी कि इस तरह के संकट के समय में वे मदद के लिए काफी करीब थीं। विभाजन के काले बादल में अगर कोई उम्मीद की किरण थी, तो वह यह थी कि इसने उनकी विवाहित बेटी और पोते को लाहौर से वापस उनके ही शहर में रहने के लिए ला खड़ा किया था। और अब, एक और दुखद घटना के कारण, वे प्रेम निवास में वापस आ गए थे।

वीना ने कहा, "उसे अपने दोस्तों की बहुत याद आती है। वह हमारे मोहल्ले में वापस जाना चाहता है। और एक बार स्कूल शुरू हो जाए तो उसे दूर रखना मुश्किल हो जाएगा। फिर रामलीला की रिहर्सल भी होगी —और वह ज़िद कर रहा है कि इस बार वह बंदर बनना चाहता है। वह हनुमान, नल, नील या किसी भी महत्वपूर्ण किरदार के लिए बहुत छोटा है, लेकिन वह सेना का हिस्सा ज़रूर बन सकता है।"

श्रीमती महेश कपूर ने कहा, 'पढ़ाई में पिछड़ने से बचने के लिए काफी समय होगा। और रामलीला अभी बहुत दूर है। बंदर बनने के लिए ज्यादा अभ्यास की जरूरत नहीं होती। स्वास्थ्य सबसे जरूरी है। जब प्राण बचपन में बीमार था, तो उसे अक्सर पढ़ाई छोड़नी पड़ती थी। लेकिन इससे उसे कोई नुकसान नहीं हुआ।'

प्राण की बात करते-करते श्रीमती महेश कपूर का ध्यान अपने छोटे बेटे की ओर चला गया, पर उन्होंने यह सीख लिया था कि जिन बातों पर चिंता करना व्यर्थ है, उन पर बेवजह परेशान नहीं होना चाहिए। उनकी इच्छा थी कि वे अपनी चिंताओं को पूरी तरह से काबू कर लें। महेश कपूर ने जोर देकर कहा था कि मान को उस दुर्घटना के बारे में न बताया जाए, क्योंकि उन्हें डर था कि वह तुरंत उस छोटे मेंढक से मिलने ब्रह्मपुर लौट आएगा और वहीं ब्रह्मपुर में उलझकर 'उस' झंझट में पड़ जाएगा। पटना में

कांग्रेस अधिवेशन से लौटने के बाद से ही महेश कपूर का मन उथल-पुथल में था। पार्टी और देश की स्थिति में आए इस भयावह मोड़ के सामने उन्हें क्या करना चाहिए, यह तय करना काफी मुश्किल था। मान की मौजूदगी उनके लिए एक और उतनी ही बेकाबू मुसीबत थी—और उनकी प्रतिष्ठा के लिए भी।

पहले हुई बातों का जिक्र न करते हुए, श्रीमती महेश कपूर ने थोड़ी शर्मिंदगी भरी हंसी के साथ कहा: 'मुझे कभी-कभी ऐसा लगता है कि मंत्री साहब की बातचीत भी आजकल डॉ. दुर्रानी की तरह ही समझ से परे हो गई है।'

शांत स्वभाव वाली श्रीमती महेश कपूर के मुंह से ऐसी बात सुनकर सब हैरान रह गए। वीना को विशेष रूप से लगा कि अत्यधिक दबाव और चिंता के कारण ही उन्होंने ऐसा बयान दिया होगा। अब वह खुद को कोस रही थी; भास्कर को लेकर अपनी चिंताओं में वह इस बात से बेखबर थी कि उसकी मां पर क्या बीत रही होगी, प्राण के अस्थमा और भास्कर की चोट से वह कितनी चिंतित रही होगी, मान के व्यवहार और पति के बढ़ते रूखेपन के अलावा भी। उसकी मां की तबीयत भी ठीक नहीं लग रही थी, लेकिन शायद यह उसकी सबसे छोटी चिंता थी।

इस बीच, आखिरी टिप्पणी के परिणामस्वरूप श्रीमती रूपा मेहरा का ध्यान एक अलग ही दिशा में चला गया। उन्होंने पूछा, 'डॉ. दुर्रानी को भास्कर के बारे में कैसे पता चला?'

वीना, जिसका ध्यान कहीं और था, ने कुछ हैरान करने वाली आवाज में कहा, 'डॉक्टर दुर्रानी?'

'जी हां, भास्कर और डॉ. दुर्रानी का मेल कैसे हुआ? आप कहते हैं कि उनके इस कर्तव्यनिष्ठ पुत्र ने उस संबंध के कारण भास्कर को पहचान लिया।'

‘ओह,’ वीना ने कहा। ‘यह तब शुरू हुआ जब केदारनाथ ने हरीश खन्ना को दोपहर के भोजन पर आमंत्रित किया। वह कानपुर का एक नौजवान है—’

लता ज़ोर से हंस पड़ी। श्रीमती रूपा मेहरा का चेहरा पहले पीला पड़ा, फिर गुलाबी हो गया। यह बिल्कुल असहनीय था। ब्रह्मपुर में हर कोई इस हरेश को जानता था, और उन्हें इसके बारे में सबसे आखिर में पता चला था। हरेश ने अपनी बातचीत में केदारनाथ, भास्कर या डॉक्टर दुर्रानी का ज़िक्र क्यों नहीं किया? दामाद मिलने के विषय पर उन्हें, श्रीमती रूपा मेहरा को, सबसे आखिर में क्यों बताया गया, जबकि यह विषय इस कमरे में मौजूद किसी भी व्यक्ति से ज़्यादा उनके दिल के करीब था?

लता और उसकी मां दोनों की प्रतिक्रियाओं को देखकर वीना और श्रीमती महेश कपूर आश्चर्यचकित रह गईं।

‘यह सब कब से चल रहा है?’ श्रीमती रूपा मेहरा ने आरोप और नाराजगी भरे स्वर में पूछा। ‘सबको सब कुछ कैसे पता चल गया? हर कोई इस हरेश को जानता है; मैं जहां भी जाती हूं, हरेश ही हरेश होता है। और सिर्फ मैं ही देखती रह जाती हूं।’

‘लेकिन आप उनके यहाँ आने के तुरंत बाद ही कलकत्ता के लिए रवाना हो गईं, इसलिए आपसे बात करने का कोई मौका ही नहीं मिला, माँ,’ वीना ने कहा। ‘यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है?’

जब वीना और श्रीमती महेश कपूर को पूछताछ के दौरान यह एहसास हुआ कि हरेश को एक 'संभावित वर' माना जा रहा है, तो उन्होंने श्रीमती रूपा मेहरा पर सवालों की बौछार कर दी और उन्हें अंधेरे में रखने के लिए फटकार लगाई।

श्रीमती रूपा मेहरा संतुष्ट होकर जानकारी देने के साथ-साथ उसे प्राप्त करने के लिए भी उतनी ही उत्सुक थीं। उन्होंने हरेश के प्रमाणपत्रों,

योग्यताओं, कपड़ों और रूप-रंग का वर्णन किया और लता की हरेश के प्रति और हरेश की लता के प्रति प्रतिक्रियाओं के बारे में बताने लगीं, तभी लता की शांति के लिए सौभाग्यवश मालती त्रिवेदी के आगमन से उनकी बातचीत में बाधा आ गई।

'हेलो, हेलो,' मालती त्रिवेदी लगभग उछलते हुए मुस्कुराईं। 'लता, तुम्हें महीनों से नहीं देखा। नमस्ते, श्रीमती मेहरा—माँ, मेरा मतलब है। और आप दोनों को भी।' उन्होंने सविता और उनके उभरे हुए पेट की ओर इशारा करते हुए कहा। 'हेलो, वीना जी, संगीत कैसा चल रहा है? उस्ताद साहब कैसे हैं? मैंने पिछली रात रेडियो चालू किया और उन्हें राग बागेश्री गाते हुए सुना। कितना प्यारा था: झील, पहाड़ियाँ और राग—सब एक हो गए। मुझे खुशी से ऐसा लगा जैसे मैं मर जाऊँगी।' श्रीमती महेश कपूर को, जिन्हें वह पहचान नहीं पाईं, लेकिन जिन्हें उन्होंने वीना की माँ समझा, उन्हें अंतिम बार नमस्ते करते हुए मालती ने बात पूरी की और बैठ गईं। 'मैं अभी नैनीताल से लौटी हूँ,' उन्होंने खुशी से कहा। 'प्राण कहाँ है?'

12.3

लता ने मालती को ऐसे देखा मानो वह कोई वीर योद्धा हो। 'चलो चलें!' उसने उससे कहा। 'चलिए सैर पर चलते हैं। अभी! मुझे आपसे बहुत सी बातें करनी हैं। मैं सुबह से घर से बाहर निकलना चाहती थी, लेकिन आलस के मारे निकल नहीं पाई। मैंने सोचा था कि महिलाओं के छात्रावास जाऊं, लेकिन पता नहीं था कि आप वापस आई हैं या नहीं। हम खुद तो कल रात ही वापस आए हैं।'

मालती ने सहर्ष उठकर दोबारा जगह बना ली।

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'मालती अभी-अभी आई हैं। लता, यह मेहमाननवाज़ी का अच्छा तरीका नहीं है, न ही शिष्टाचार का। आपको उन्हें

चाय पिलानी चाहिए। उसके बाद आप टहलने जा सकती हैं।'
‘कोई बात नहीं माँ,’ मलाती मुस्कुराते हुए बोली। ‘मुझे चाय पीने का मन नहीं है, और लौटने पर प्यास लगेगी। तब मैं चाय पी लूँगी, और फिर हम बातें कर लेंगे। इस बीच लता और मैं नदी किनारे टहलने चलते हैं।’
'मालती, सावधान रहना, बरगद के पेड़ों के पास वाला रास्ता इस मौसम में बहुत फिसलन भरा है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने चेतावनी दी।
कुछ चीजें लाने के लिए अपने कमरे में जाने के बाद, लता वहां से भागने में सफल रही।
दरवाजे से बाहर निकलते ही मालती ने पूछा, 'यह सब क्या है? तुम यहाँ से जाना क्यों चाहते थे?'
लता ने बिना किसी खास वजह के अपनी आवाज धीमी कर ली।
‘वे मेरे और उस आदमी के बारे में बात कर रहे थे जिससे मेरी माँ ने मुझे कानपुर में मिलवाया था, मानो मैं वहाँ थी ही नहीं, और यहाँ तक कि सविता ने भी कोई आपत्ति नहीं जताई।’
‘मुझे नहीं लगता कि मैं भी आपत्ति करती,’ मलाती ने कहा। ‘वे क्या कह रहे थे?’
लता ने कहा, 'मैं तुम्हें बाद में बताऊंगी। मैं कुछ समय से खुद से ऊब चुकी हूं, और कुछ अलग सुनना चाहती हूं। तुम्हारी क्या खबर है?'
‘आपको किस तरह की खबरें चाहिए?’ मलाती ने पूछा। ‘बौद्धिक, शारीरिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक या रोमांटिक?’
लता ने आखिरी दो बातों पर विचार किया, फिर उसे मालती की झील, पहाड़ियों और रात्रि राग के बारे में की गई टिप्पणी याद आई। 'रोमांटिक,' उसने कहा।
‘यह एक गलत चुनाव है,’ मालती ने कहा। ‘आपको रोमांस के सारे विचार अपने दिमाग से निकाल देने चाहिए। लेकिन, खैर—नैनीताल में मेरा एक

रोमांटिक अनुभव हुआ था। सिवाय इसके कि—' वह रुक गई।
'लेकिन क्या?' लता ने पूछा।
लेकिन, असल में ऐसा नहीं था। खैर, मैं आपको बताता हूँ कि क्या हुआ और आप खुद फैसला कर लीजिए।
'ठीक है।'
'तुम्हें मेरी बहन के बारे में पता है, मेरी बड़ी बहन, वही जो हमें बार-बार अगवा करती रहती है?'
'हां—मैं उससे नहीं मिली हूं, लेकिन वह जिसने पंद्रह साल की उम्र में युवा जमींदार से शादी कर ली थी और बरेली के पास रहती है।'
'हाँ, सही कहा,' मालती ने कहा। 'दरअसल आगरा के पास। खैर, उनकी नैनीताल में छुट्टियाँ थीं, तो मैं भी उनके साथ चली गई। मेरी तीन छोटी बहनें, चचेरे भाई-बहन और बाकी सब भी चले गए। सबको जेब खर्च के तौर पर एक रुपया प्रतिदिन मिलता था, और इससे पूरा दिन किसी न किसी गतिविधि में बिताने के लिए काफी था। मेरा सेमेस्टर काफी मुश्किल रहा था, और मैं ब्रह्मपुर को अपने दिमाग से निकालना चाहती थी। शायद तुम्हारी ही तरह।' उसने लता के कंधे पर हाथ रख दिया।
खैर, मैं सुबह घुड़सवारी करती थी—घोड़ा किराए पर लेने का किराया सिर्फ चार आना प्रति घंटा होता है—और मैं नाव भी चलाती थी, और स्केटिंग रिंक पर स्केटिंग करती थी—कभी-कभी मैं दिन में दो बार स्केटिंग करती थी और दोपहर के भोजन के लिए घर जाना भूल जाती थी। परिवार के बाकी सदस्य अपनी-अपनी गतिविधियों में व्यस्त रहते थे। अब मुझे यकीन है कि आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि आगे क्या हुआ होगा।
लता ने कहा, 'तुम गिर गए थे, और आइस रिंक पर मौजूद एक बहादुर युवक ने तुम्हें बचा लिया।'

‘नहीं,’ मलाती ने कहा। ‘मैं इतनी आत्मविश्वासी दिखती हूँ कि कोई भी गैलाहैड मेरा पीछा करने नहीं आएगा।’

लता ने सोचा कि ऐसा होना काफी हद तक संभव है। यह सच था कि पुरुष उसकी सहेली पर तुरंत मोहित हो जाते थे, लेकिन अगर वह गिर जाती तो शायद उसे उठाने से डरते। मालती का ज्यादातर पुरुषों के प्रति यही रवैया था कि वे उसके ध्यान देने लायक नहीं थे।

मलाती ने आगे बताया: ‘असल में, स्केटिंग करते समय मैं एक-दो बार गिरी, लेकिन खुद ही उठ गई। नहीं, जो हुआ वो बिल्कुल अलग था। मैंने गौर करना शुरू किया कि एक अधेड़ उम्र का आदमी मेरा पीछा कर रहा था। हर सुबह जब मैं नाव चला रही होती थी, तो मैं उसे किनारे से मुझे घूरते हुए देखती थी। कभी-कभी वह खुद भी नाव लेकर आ जाता था। वह स्केटिंग रिंक पर भी आ जाता था।’

‘भयानक!’ लता ने कहा, और तुरंत उसके विचार लखनऊ में रहने वाले अपने चाचा श्री सहगल की ओर चले गए।

'खैर, नहीं, लता, ऐसा नहीं था। पहले तो मैं घबराई नहीं, बस थोड़ी उलझन में थी। वह मेरे पास नहीं आया, न ही उसने मुझसे बात करने की कोशिश की। लेकिन कुछ देर बाद मुझे यह बात परेशान करने लगी। इसलिए मैं उसके पास गई।'

‘तुम उसके पास गई थीं?’ लता ने पूछा। यह स्पष्ट रूप से मुसीबत मोल लेना था। ‘यह बहुत साहसिक कार्य था।’

हां, और मैंने कहा, “तुम मेरा पीछा कर रहे हो। क्या कोई बात है? क्या तुम मुझसे कुछ कहना चाहोगे?” उसने कहा, “मैं छुट्टी पर हूं, और फलां होटल में फलां कमरा नंबर में ठहरा हुआ हूं; क्या तुम आज दोपहर मेरे साथ चाय पीने आओगी?” मैं हैरान थी, लेकिन वह देखने में अच्छा लग रहा था और उसकी बातें सभ्य लग रही थीं, इसलिए मैं मान गई।

लता अचंभित और हैरान दिख रही थी। मालती ने यह देखकर आनंद लिया।

'खैर,' मालती ने आगे कहा, 'चाय के समय उसने मुझे बताया कि वह सचमुच मेरा पीछा कर रहा था, और जितना मैंने सोचा था उससे कहीं ज़्यादा समय से। लता, इतना हैरान मत दिखो, यह परेशान करने वाला है। खैर, उसने मुझे बताया कि एक दिन जब वह नाव चला रहा था, तब उसने मुझे देखा था, और छुट्टी पर होने के कारण उसके पास करने को कुछ नहीं था, इसलिए वह मेरे पीछे आ गया। नाव चलाने के बाद, मैंने एक घोड़ा किराए पर लिया और सवारी की। बाद में मैंने स्केटिंग की। मुझे खाने, आराम करने, या किसी और चीज़ की परवाह नहीं थी, सिवाय उस गतिविधि के जिसमें मैं लगी हुई थी। उसने तय कर लिया कि वह मुझे बहुत पसंद करता है। इतना नाराज़ मत दिखो, यह सब सच है। उसने कहा कि उसके पाँच बेटे हैं, और उसे लगता है कि मैं उनमें से एक के लिए बहुत अच्छी जोड़ी बनूँगी। वे इलाहाबाद में रहते हैं। अगर मैं कभी उस रास्ते से गुज़रूँ, तो क्या मैं उनसे मिलने के लिए राज़ी हो जाऊँगी? ओह, संयोग से, जब हम हल्की-फुल्की बातें कर रहे थे, तब पता चला कि वह मेरे पिता की मृत्यु से भी कई साल पहले मेरठ में मेरे परिवार को जानता था।'

'और आप सहमत हो गए?' लता ने कहा।

हां, मैं मान गई थी। कम से कम उनसे मिलने के लिए। लता, उनसे मिलने में कोई हर्ज नहीं है; पांच भाई—शायद मैं उन सभी से शादी कर लूं। या किसी से भी नहीं। तो बस यही बात थी—इसीलिए वह मेरा पीछा कर रहा था।' वह थोड़ी देर रुकी। 'यह मेरी प्रेम कहानी है। कम से कम मुझे तो यही लगता है। यह शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक या राजनीतिक तो बिलकुल नहीं है। अब आपके साथ क्या हो रहा है?'

लेकिन क्या आप उन परिस्थितियों में किसी से शादी करेंगे?
'क्यों नहीं? मुझे यकीन है कि उनके बेटे काफी अच्छे होंगे। लेकिन शादी से पहले मुझे एक और अफेयर करना होगा। पांच बेटे! कितना अजीब है।'
लेकिन तुम पांच बहनें हो, है ना?
'मुझे लगता है हम हैं,' मलाती ने कहा। 'खैर, अब यह उतना अजीब नहीं लगता। मैंने अपना अधिकांश बचपन महिलाओं के बीच बिताया है, और यह मुझे बिल्कुल भी अजीब नहीं लगता। बेशक, आपके लिए यह वैसा नहीं है। भले ही आपने अपने पिता को खो दिया हो, लेकिन आपके भाई थे। लेकिन अभी जब मैं आपकी बहन के ड्राइंग रूम में दाखिल हुई तो मुझे एक अजीब सा एहसास हुआ। जैसे मैं अपने पुराने जीवन में लौट आई हूँ: छह महिलाएं और कोई पुरुष नहीं। लेकिन यह वैसा एहसास नहीं था जैसा किसी महिला छात्रावास में होता है। यह बहुत सुकून देने वाला था।'
'लेकिन अब तुम पुरुषों से घिरी हुई हो, है ना मलाती?' लता ने कहा। 'तुम्हारा विषय—'
'ओह, हाँ,' मालती ने कहा, 'कक्षा में तो ऐसा ही होता था—लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता है? इंटरमीडिएट साइंस में तो इससे भी कहीं बुरा हाल था। कभी-कभी तो मुझे लगता है कि मर्दों को दीवार के सामने खड़ा करके गोली मार देनी चाहिए। ऐसा नहीं है कि मैं उनसे नफरत करती हूँ। अब तुम्हारा क्या हाल है? कबीर का क्या हुआ? तुमने उससे कैसे निपटा? और अब जब तुम वापस आ गई हो, तो क्या करने का इरादा है—उसे गोली मारकर पारी खत्म करने के अलावा?'

12.4

लता ने अपनी सहेली को उस दर्दनाक फोन कॉल के बाद की सारी बातें बताईं—ऐसा लग रहा था जैसे कई साल बीत गए हों—जिसमें मालती ने कबीर के बारे में बताया था और साफ-साफ कह दिया था (कहीं लता को

यह बात समझ न आ रही हो—पर भला वह कैसे न समझ पाती?) कि यह रिश्ता नामुमकिन है। वे उस जगह से कुछ ही दूर चल रही थीं जहाँ लता ने कबीर से कहा था कि वे अकेले कहीं चले जाएँ और अपने आस-पास की संकीर्ण सोच और दिल वाली दुनिया को नज़रअंदाज़ कर दें। लता ने उस दिन अपने किए पर टिप्पणी करते हुए कहा, 'बहुत ही नाटकीय!'

मलाती समझ सकती थी कि लता को कितना दुख हुआ होगा।

'काफी साहसिक,' उसने आश्वस्त करते हुए कहा, हालांकि मन ही मन सोच रही थी कि अगर कबीर लता की योजना पर सहमत हो जाता तो क्या होता। 'लता, तुम हमेशा मुझे मेरी बहादुरी के लिए बधाई देती हो, लेकिन तुमने तो मुझे भी पीछे छोड़ दिया।'

'क्या मैंने ऐसा किया है?' लता ने कहा। 'खैर, मैंने तब से उससे एक शब्द भी नहीं बोला या लिखा है। हालांकि, उसके बारे में सोचना भी मेरे लिए असहनीय है। मैंने सोचा था कि उसके पत्र का जवाब न देकर मैं उसे भूल जाऊंगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।'

'उसका पत्र?' मालती ने आश्चर्य से कहा। 'क्या उसने तुम्हें कलकत्ता में पत्र लिखा था?'

'हाँ। और अब जब मैं ब्रह्मपुर लौट आई हूँ, तो मुझे उनका नाम बार-बार सुनने को मिल रहा है। कल रात ही प्राण ने उनके पिता का ज़िक्र किया था, और आज सुबह मैंने सुना कि भगदड़ के बाद पुल मेले में उन्होंने खुद मदद की थी। वीना कहती हैं कि उन्होंने उनके खोए हुए बेटे को ढूंढने में उनकी मदद की थी। और यहाँ आपके साथ चलना, जहाँ हम साथ-साथ चले थे—'

लता चुप हो गई। कुछ देर बाद उसने कहा, 'आपकी क्या सलाह है?'

'ठीक है,' मलाती ने कहा, 'जब हम वापस जाएंगे, तो शायद आप मुझे

उसका पत्र पढ़ने देंगे। मुझे निदान करने से पहले लक्षणों को समझना होगा।'

'ये रहा,' लता ने पत्र निकालते हुए कहा। 'मैंने तुम्हारे अलावा किसी और को इसे पढ़ने नहीं दिया।'

'हम्म,' मालती ने कहा। 'कब—ओह, मैं समझ गई, जब तुम अपने कमरे में वापस गए थे।' पत्र काफी पढ़ा हुआ लग रहा था। मालती बरगद के पेड़ की जड़ पर बैठ गई। 'क्या तुम्हें सच में कोई आपत्ति नहीं है?' उसने आधा पत्र पढ़ लेने के बाद कहा।

एक बार पढ़ने के बाद उसने इसे दोबारा पढ़ा।

'सुगंधित जल क्या होते हैं?' उसने पूछा।

'ओह, यह तो एक गाइडबुक का उद्धरण है।' लता को यह याद आते ही खुशी हो गई।

'लता, तुम्हें पता है,' मलाती ने पत्र को मोड़कर उसे वापस देते हुए कहा, 'मुझे यह पसंद आया, और वह काफी खुले दिल का और नेक दिल लगता है। लेकिन यह किसी किशोर लड़के के पत्र जैसा लगता है जो अपनी प्रेमिका को लिखने के बजाय उससे बात करना ज्यादा पसंद करता है।'

लता ने कुछ देर तक अपनी सहेली की बात पर विचार किया। कुछ ऐसा ही उसके मन में भी आया था, लेकिन उस पत्र का उस पर धीरे-धीरे असर कम नहीं हुआ था। उसने सोचा कि शायद उसमें भी अपरिपक्वता की कमी है। और मालती में भी। भला कौन परिपक्व था? उसका बड़ा भाई अरुण? उसका छोटा भाई वरुण? उसकी माँ? उसका सनकी दादाजी, जो सिसकियाँ लेते थे और छड़ी चलाते थे? और वैसे भी परिपक्व होने का क्या मतलब था? और उसे अपना अधूरा और न भेजा हुआ पत्र याद आया।

'लेकिन बात सिर्फ चिट्ठी की नहीं है, मालती,' उसने कहा। 'प्राण के

परिवार वाले उसका ज़िक्र बार-बार करेंगे। और कुछ ही महीनों में क्रिकेट का सीज़न शुरू हो जाएगा और उसके बारे में पढ़ना या सुनना नामुमकिन हो जाएगा। मुझे पूरा यकीन है कि मैं पचास गज दूर से भी उसका नाम पहचान लूंगी।'

'ओह, लता, इस कमजोर तरीके से रोना बंद करो,' मालती ने उतनी ही अधीरता और स्नेह के साथ कहा।

'क्या?' लता ने अपने शोक के बीच गुस्से से कहा। उसने अपनी सहेली को घूरकर देखा।

'तुम्हें कुछ करना होगा,' मलाती ने दृढ़ता से कहा। 'पढ़ाई के अलावा कुछ और। वैसे भी, तुम्हारी अंतिम परीक्षाएं लगभग एक साल दूर हैं, और यह वह सत्र है जब लोग आराम करते हैं।'

'आपकी वजह से अब मैं गाती हूं।'

'अरे नहीं,' मालती ने कहा, 'मेरा मतलब बिल्कुल भी वो नहीं था। बल्कि, आपको राग गाना बंद करके फिल्मी गाने शुरू कर देने चाहिए।'

वरुण और उसके ग्रामोफोन के बारे में सोचकर लता हंस पड़ी।

'काश यह नैनीताल होता,' मालती ने आगे कहा।

'तुम्हारा मतलब है, ताकि मैं घुड़सवारी कर सकूं, नाव चला सकूं और स्केटिंग कर सकूं?' लता ने कहा।

'हां,' मालती ने कहा।

लता ने कहा, 'समस्या यह है कि अगर मैं नाव चलाऊंगी तो मुझे सिर्फ सुगंधित पानी का ही ख्याल आएगा, और अगर मैं साइकिल चलाऊंगी तो मुझे उसकी साइकिल की याद आएगी। और वैसे भी मैं न तो साइकिल चला सकती हूं और न ही नाव चला सकती हूं।'

'कुछ ऐसा जो सक्रिय हो और आपको अपने आप से बाहर ले जाए,' मलाती ने कुछ हद तक खुद से ही कहा। 'कोई संस्था—एक साहित्यिक

संस्था कैसी रहेगी?'

'नहीं,' लता ने सिर हिलाते हुए और मुस्कुराते हुए कहा। श्री नवरोजी की पार्टियाँ या उनसे मिलती-जुलती कोई भी चीज़ उनके लिए बहुत असहज थी।

'तो फिर एक नाटक देखते हैं। वे ट्वेल्थ नाइट का मंचन कर रहे हैं। नाटक में एक भूमिका पा लो। इससे तुम्हें प्यार और जीवन पर हंसी आएगी।'

लता ने कहा, 'मेरी मां मेरे नाटक में अभिनय करने को बर्दाश्त नहीं करतीं।'

'लता, इतनी डरपोक मत बनो,' मालती ने कहा। 'ज़रूर वो मान जाएगी। आख़िरकार, प्राण ने पिछले साल जूलियस सीज़र का मंचन किया था और उसमें कुछ महिलाएँ थीं। ज़्यादा नहीं, शायद अहम भूमिकाएँ भी नहीं थीं, लेकिन असली छात्राएँ थीं, लड़के लड़कियों के वेश में नहीं थे। उस समय प्राण की सगाई सविता से हुई थी। क्या तुम्हारी माँ ने आपत्ति जताई थी? नहीं, उन्होंने नहीं जताई थी। उन्होंने नाटक नहीं देखा था, लेकिन उसकी सफलता से बहुत खुश थीं। अगर उन्होंने तब आपत्ति नहीं जताई थी, तो अब भी नहीं जता सकतीं। प्राण तुम्हारा साथ देगा।'

पटना विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय में भी अब मिश्रित नस्ल के छात्र हैं। यह एक नया युग है!

लता केवल कल्पना ही कर सकती थी कि नए युग के बारे में उसकी माँ क्या कहेगी।

'हाँ!' मालती ने बड़े उत्साह से कहा। 'इसे वो दर्शनशास्त्र के शिक्षक आयोजित कर रहे हैं, उनका नाम क्या है—मुझे याद आ रहा है—और ऑडिशन एक हफ्ते में हैं। लड़कियों के ऑडिशन एक दिन, लड़कों के ऑडिशन दो दिन बाद। बहुत ही शालीन। शायद वे अलग-अलग रिहर्सल भी करेंगे। किसी भी सतर्क माता-पिता को इस पर कोई आपत्ति नहीं

होगी। और यह वार्षिक दिवस के लिए है, इसलिए इसे और भी सम्मानजनक माना जा सकता है। आपको कुछ ऐसा ही चाहिए, वरना आप मुरझा जाएँगे। सक्रियता—उत्साहपूर्ण, बिना ध्यान लगाए, बहुत सारे लोगों के बीच। मेरी बात मानिए, आपको यही चाहिए। इसी तरह मैंने अपने संगीतकार बनने के जुनून से छुटकारा पाया।'

लता को भले ही यह महसूस होता था कि मालती का एक विवाहित संगीतकार के साथ प्रेम प्रसंग कोई मामूली बात नहीं थी, फिर भी वह उसे खुश करने की कोशिश करने के लिए लता की आभारी थी। कबीर के प्रति मालती की तीव्र भावनाओं को समझने के बाद, लता उस बात को बेहतर ढंग से समझ पाई जो वह पहले नहीं समझ पाई थी: मालती ने खुद को इतने जटिल और खतरनाक रिश्ते में क्यों उलझने दिया था।

'खैर,' मालती कह रही थी, 'मैं कबीर से ऊब चुकी हूँ: मैं उन सभी पुरुषों के बारे में सुनना चाहती हूँ जिनसे तुम मिली हो। कानपुर का ये लड़का कौन है? और कलकत्ता का क्या? और क्या तुम्हारी माँ ने तुम्हें दिल्ली और लखनऊ भी ले जाने की योजना नहीं बनाई थी? कम से कम हर शहर में एक-एक आदमी तो होना ही चाहिए था।'

लता द्वारा अपनी यात्रा का पूरा विवरण देने के बाद, जो पुरुषों की सूची से कहीं अधिक घटनाओं का एक जीवंत वर्णन था, जिसमें लखनऊ की अवर्णनीय घटना को छोड़कर, मालती ने कहा:

मुझे ऐसा लगता है कि वैवाहिक मामलों में कवि और पान खाने वाला बराबरी पर हैं।

'कवि?' लता अवाक रह गई।

'हां, मैं उनके भाई दीपांकर या अनुबंधित बिश को इस दौड़ में बिल्कुल भी शामिल नहीं मानता।'

'मैं भी नहीं,' लता ने चिढ़कर कहा। 'लेकिन मैं आपको यकीन दिलाती हूँ

कि अमित भी नहीं है। वह मेरा दोस्त है। बिल्कुल आपकी तरह। कलकत्ता में वही एक ऐसा व्यक्ति था जिससे मैं खुलकर बात कर सकती थी।'

'आगे बताओ,' मलाती ने कहा। 'यह बहुत दिलचस्प है। और क्या उसने तुम्हें अपनी कविताओं की एक प्रति दी?'

'नहीं, उसने नहीं भेजा,' लता ने चिढ़कर कहा। कुछ देर बाद उसे याद आया कि अमित ने वास्तव में अस्पष्ट ढंग से उसे एक प्रति देने का वादा किया था। लेकिन अगर उसका इरादा सच में भेजने का होता, तो वह दीपांकर के ज़रिए ज़रूर भेज सकता था, जो ब्रह्मपुर में था और प्राण और सविता से मिला था। लता को लगा कि वह मालती से पूरी तरह सच नहीं बोल रही है, और अब उसने यह टिप्पणी जोड़ दी: 'कम से कम अभी तक तो नहीं भेजा है।'

'खैर, मुझे खेद है,' मलाती ने बिना किसी पश्चाताप के कहा। 'यह आपके लिए एक संवेदनशील मुद्दा है।'

लता ने कहा, 'ऐसा नहीं है। यह संवेदनशील नहीं है। यह बस चिढ़ाने वाला है। अमित को दोस्त के रूप में सोचना मुझे सुकून देता है, और उसे किसी और रूप में सोचना मुझे बिल्कुल भी सुकून नहीं देता। बस इसलिए कि आपने खुद को एक संगीतकार से जोड़ लिया है, आप मुझे एक कवि से जोड़ना चाहते हैं।'

'शायद।'

'मलाती, कृपया मेरी बात पर विश्वास करो, तुम एक ऐसी चीज की तलाश कर रही हो जिसका कोई अस्तित्व नहीं है।'

'ठीक है,' मालती ने कहा। 'एक प्रयोग करो। अपनी आँखें बंद करो और कबीर के बारे में सोचो।'

लता जाने से मना करना चाहती थी। लेकिन जिज्ञासा तो बड़ी अजीब चीज है, और कुछ देर हिचकिचाने के बाद उसने माथे पर शिकन डालकर

जाने का फैसला किया। उसने कहा, 'आँखें बंद करना ज़रूरी तो नहीं है।'
‘नहीं, नहीं, अपनी आँखें बंद करो,’ मलाती ने ज़ोर देकर कहा। ‘अब बताओ कि उसने क्या पहना है—और एक-दो शारीरिक विशेषताओं का भी। बोलते समय अपनी आँखें मत खोलो।’
लता ने कहा: 'उसने क्रिकेट के कपड़े पहने हैं; टोपी लगाई है; वह मुस्कुरा रहा है—और—यह हास्यास्पद है, मालती।'
'जारी रखें।'
‘वाह, उसकी टोपी उतर गई: उसके बाल लहराते हुए हैं, चौड़े कंधे हैं, और सुंदर, एक जैसे दांत हैं। बल्कि—उसे बेवकूफी भरी रोमांटिक उपन्यासों में क्या कहते हैं?—एक नुकीली नाक। इन सबका क्या मतलब है?’
‘ठीक है, अब हरेश के बारे में सोचो।’
लता ने कहा, 'मैं कोशिश कर रही हूँ। ठीक है, अब वह मेरी नज़र में है। उसने क्रीम रंग की रेशमी कमीज़ और हल्के भूरे रंग की पतलून पहनी है। और हाँ—वो भयानक सह-प्रतिवादी के जूते जिनके बारे में मैंने आपको बताया था।'
'विशेषताएँ?'
'उसकी आंखें छोटी हैं, लेकिन वे बड़ी खूबसूरती से सिकुड़कर मुस्कान में तब्दील हो गई हैं - मानो गायब ही हो गई हों।'
क्या वह पान चबा रहा है?
'नहीं, भगवान का शुक्र है। वह ठंडी चॉकलेट पी रहा है। उसने बताया कि इसका नाम फीजेंट्स है।'
और अब अमित।
‘ठीक है,’ लता ने आह भरी। उसने उसकी छवि अपने मन में संजोने की कोशिश की, लेकिन उसके चेहरे के भाव स्पष्ट नहीं हो पाए। कुछ देर बाद उसने कहा, ‘वह साफ दिखाई नहीं दे रहा।’

‘ओह,’ मलाती ने अपनी आवाज में कुछ निराशा के साथ कहा। ‘लेकिन उसने क्या पहना है?’

लता ने कहा, 'मुझे नहीं पता। कितना अजीब है। क्या मुझे कल्पना करने के बजाय सोचने की अनुमति है?'

‘मुझे लगता है ऐसा ही है,’ मलाती ने कहा।

लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद लता यह कल्पना नहीं कर पाई कि अमित किस तरह की कमीजें, पतलून और जूते पहनता था।

‘तुम कहाँ हो?’ मालती ने पूछा। ‘घर में? गली में? पार्क में?’

लता ने कहा, 'एक कब्रिस्तान।'

‘और तुम क्या कर रही हो?’ मलाती ने हंसते हुए कहा।

'बारिश में बातें करना। ओह हाँ, उसके पास छाता है। क्या उसे कपड़ों की श्रेणी में गिना जाएगा?'

‘ठीक है,’ मालती ने स्वीकार किया। ‘मैं गलत थी। लेकिन पेड़ उगते हैं, तुम्हें पता है।’ लता ने इस बेकार की अटकलबाजी को आगे बढ़ाने से इनकार कर दिया। थोड़ी देर बाद, जब वे वादा की गई चाय के लिए घर लौटे, तो उसने कहा: ‘उससे बचना नामुमकिन है, मालती। मुझे उससे मिलना ही होगा। जब उसने आपदा के बाद मदद की, तो वह किसी ‘महज किशोर लड़के’ की निशानी नहीं थी। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसे लगा कि उसे करना ही है, इसलिए नहीं कि वह चाहता था कि मुझे इसके बारे में पता चले।’

मलाती ने कहा: ‘तुम्हें बस इतना करना है कि उसके बिना अपना जीवन समेटना है, भले ही शुरुआत में यह कितना भी असहनीय लगे। इस बात को स्वीकार कर लो कि तुम्हारी माँ उसे कभी स्वीकार नहीं करेगी। यह बिल्कुल तय है। तुम सही कह रही हो, उससे तुम्हारी मुलाकात कभी न कभी जरूर होगी, और एक बात जिसका तुम्हें पूरा ध्यान रखना है, वह

यह है कि तुम्हारे पास बिल्कुल भी खाली समय न हो। हाँ, नाटक तुम्हारे लिए बिल्कुल सही रहेगा। तुम्हें ओलिविया का किरदार निभाना चाहिए।'
लता ने कहा, 'तुम मुझे मूर्ख समझते होगे।'
'खैर, मूर्खता है,' मलाती ने कहा।
'यह बहुत बुरा है, मलाती,' लता ने आगे कहा। 'मैं उससे मिलना चाहती हूँ, किसी भी चीज़ से ज़्यादा। और मैंने अपने सह-पत्रकार को पत्र लिखने के लिए कहा है। उसने थाने में पूछा था, और मैं उसके साथ बुरा बर्ताव नहीं कर सकती थी, क्योंकि उसने माँ और मेरी इतनी मदद की थी।'
'अरे, इसमें कोई बुराई नहीं है,' मलाती ने कहा। 'जब तक आप उसे नापसंद या पसंद नहीं करतीं, तब तक आप उससे पत्र व्यवहार कर सकती हैं। और क्या उसने यह स्पष्ट नहीं किया था कि वह अब भी किसी और से आधा प्यार करता है?'
'हां,' लता ने कुछ सोच-विचार करते हुए कहा। 'हां, उसने किया था।'

12.5

दो दिन बाद कबीर ने लता को एक छोटा सा पत्र लिखकर पूछा कि क्या वह अब भी उससे नाराज़ है। क्या वे शुक्रवार को ब्रह्मपुर लिटरेरी सोसाइटी में नहीं मिल सकते? कबीर तभी जाएगा जब लता से मिलने की कोई संभावना होगी।
पहले तो लता ने सोचा कि वह एक बार फिर मालती से पूछे कि उसे क्या करना चाहिए। फिर, आंशिक रूप से इसलिए कि मालती से उसके प्रेम जीवन की हर छोटी-बड़ी बात को संभालने की उम्मीद करना मुश्किल था, और आंशिक रूप से इसलिए कि मालती शायद उसे न जाने और पत्र को अनदेखा करने की सलाह देती, लता ने खुद से और बंदरों से सलाह लेने का फैसला किया।
वह टहलने निकली, चट्टान पर बैठे बंदरों को कुछ मूंगफली बिखेर दीं, और

कुछ देर के लिए उनकी स्नेहपूर्ण निगाहों का केंद्र बन गई। पुल मेले के दौरान बंदरों को खूब दावतें मिली थीं, लेकिन अब हालात फिर से सामान्य हो गए थे; और बहुत कम लोग उनके कल्याण के बारे में सोचने के लिए समय निकाल रहे थे।

एक नेक काम करने के बाद, लता को लगा कि वह अब ज़्यादा स्पष्ट रूप से सोच सकती है। कबीर पहले भी ब्रह्मपुर साहित्यिक समाज में व्यर्थ ही उसका इंतज़ार कर चुका था। उसे श्रीमती नवरोजी का केक भी खाना पड़ा था। लता को लगा कि वह उसे दोबारा ऐसा अनुभव नहीं करा सकती। उसने कबीर को एक छोटा सा पत्र लिखा:

प्रिय कबीर,

मुझे आपका पत्र मिल गया है, लेकिन मैं इस शुक्रवार को नवरोजी परिवार के घर नहीं जा पाऊँगी। कलकत्ता में रहते हुए मुझे आपका पत्र भी मिला था। उससे मुझे सब कुछ याद आ गया और मैं सोचने पर मजबूर हो गई। मैं आपसे बिल्कुल भी नाराज़ नहीं हूँ; कृपया ऐसा न सोचें। लेकिन मुझे लगता है कि हमारे पत्र लिखने या मिलने का कोई मतलब नहीं है। इससे बहुत कष्ट होगा और कोई लाभ नहीं होगा।

लता

अपने नोट को तीन बार पढ़ने के बाद, और यह सोचने के बाद कि क्या इसे अंतिम वाक्य के बिना फिर से लिखना चाहिए, लता खुद से अधीर हो गई और उसने इसे वैसे ही पोस्ट कर दिया।

उस दिन वह प्रेम निवास गई और यह जानकर राहत महसूस की कि कबीर उस समय भास्कर से मिलने नहीं आया था।

मानसून सत्र शुरू होने के कुछ दिनों बाद, मालती और लता 'ट्वेल्थ नाइट' के ऑडिशन के लिए गईं। रंगमंच में गहरी रुचि रखने वाले एक युवा, थोड़े घबराए हुए दर्शनशास्त्र के शिक्षक इस वर्ष वार्षिक दिवस के नाटक का

निर्देशन कर रहे थे। ऑडिशन—वह दिन लड़कियों के ऑडिशन का था—विश्वविद्यालय सभागार में नहीं, बल्कि दर्शनशास्त्र विभाग के स्टाफ रूम में हुए। शाम के पाँच बज रहे थे। लगभग पंद्रह लड़कियाँ वहाँ जमा थीं, कुछ घबराई हुई सी बातें कर रही थीं, तो कुछ श्री बरुआ को उत्सुकता और जिज्ञासा से देख रही थीं। लता ने अंग्रेजी विभाग की कई लड़कियों को पहचाना, कुछ तो अपने ही बैच की थीं, लेकिन उनमें से किसी को भी वह अच्छी तरह से नहीं जानती थी। मालती उसके साथ इसलिए आई थी ताकि वह आखिरी क्षण में पीछे न हट जाए। 'अगर आप चाहें तो मैं भी ऑडिशन दूंगी।'

‘लेकिन क्या दोपहर में आपकी कुछ प्रैक्टिकल क्लास नहीं होती?’ लता ने पूछा। ‘अगर आपको कोई रोल मिल जाए और रिहर्सल करनी पड़े तो —’

'मुझे कोई भूमिका नहीं मिलेगी,' मलाती ने दृढ़ता से कहा।

श्री बरुआ ने लड़कियों को एक-एक करके खड़ा किया और नाटक के विभिन्न अंश पढ़ने को कहा। नाटक में केवल तीन महिला भूमिकाएँ थीं और इसके अलावा, श्री बरुआ ने अभी तक यह तय नहीं किया था कि वियोला की भूमिका किसी लड़की को ही दी जाएगी, इसलिए प्रतियोगिता बहुत कड़ी थी। श्री बरुआ ने ऑडिशन देने वाली लड़की द्वारा पढ़ी जा रही भूमिका को छोड़कर, हर पुरुष और महिला भूमिका पढ़ी, और उन्होंने अपने सामान्य व्यवहार की घबराहट को पूरी तरह से त्यागते हुए, इतनी सहजता से पढ़ा कि दर्शकों में बैठी कई लड़कियाँ और ऑडिशन देने वाली एक-दो लड़कियाँ हँसने लगीं।

श्री बरुआ ने सबसे पहले उन्हें वियोला का हिस्सा पढ़ने को कहा, जिसकी शुरुआत इस वाक्य से होती थी: 'अच्छी महोदया, मुझे आपका चेहरा देखने दीजिए।' फिर, उनकी प्रतिक्रिया के आधार पर, उन्होंने उन्हें कुछ

और पढ़ने को कहा, या तो ओलिविया के हिस्से से या मारिया के हिस्से से, लेकिन लता के मामले में दोनों हिस्सों से। कुछ लड़कियाँ लयबद्ध स्वर में पढ़ रही थीं या उनके बोलने का कोई और अटपटा तरीका था; श्री बरुआ, अपने घबराए हुए अंदाज़ में लौटकर, उन्हें बीच में ही रोकते हुए कहते थे: 'अच्छा, धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद, यह अच्छा था, बहुत अच्छा, वास्तव में बहुत अच्छा, अब मुझे एक बढ़िया विचार आया है, अच्छा, अच्छा—' जब तक कि पढ़ने वाली लड़की को विचार समझ नहीं आ गया, और (कुछ मामलों में, आँसू भरी आँखों से) वह अपनी कुर्सी पर लौट गई।

ऑडिशन के बाद, श्री बरुआ ने कुछ अन्य लड़कियों के सामने लता से कहा: 'आपने बहुत अच्छी पढ़ाई की है, मिस मेहरा। मुझे आश्चर्य है कि मैंने आपको इससे पहले मंच पर नहीं देखा।' शर्मिंदगी से अभिभूत होकर वे अपने कागजात समेटने के लिए मुड़ गए।

लता को घबराहट भरी तारीफ सुनकर बहुत खुशी हुई। मालती ने उससे कहा कि उसे श्रीमती रूपा मेहरा को इस बात के लिए तैयार कर देना चाहिए कि उन्हें कोई न कोई भूमिका जरूर मिलेगी।

‘ओह, मुझे तो कोई रोल मिलने की कोई गारंटी ही नहीं है,’ लता ने कहा।

'जब आप इस विषय पर चर्चा करें तो सुनिश्चित करें कि प्राण कमरे में मौजूद हो,' मालती ने कहा।

उस रात भोजन के बाद प्राण, सविता, श्रीमती रूपा मेहरा और लता एक साथ बैठे थे, तभी लता ने कहा:

‘प्राण, श्री बरुआ के बारे में आपकी क्या राय है?’

प्राण ने पढ़ते-पढ़ते विराम लिया। 'दर्शनशास्त्र के व्याख्याता?'

'हां—वह इस साल वार्षिक दिवस का नाटक कर रहे हैं, और मैं जानना चाहता था कि क्या आपको लगता है कि वह इसका निर्देशन अच्छे से कर

पाएंगे।'

‘हम्म, हाँ,’ प्राण ने कहा। ‘मैंने सुना था कि वो ये कर रहे हैं। ट्वेल्थ नाइट या ऐज़ यू लाइक इट या कुछ ऐसा ही। जूलियस सीज़र से बिल्कुल अलग। वो बहुत अच्छे हैं—एक अभिनेता के तौर पर भी वो बहुत अच्छे हैं,’ प्राण ने आगे कहा। ‘लेकिन लोग कहते हैं कि वो लेक्चरर के तौर पर उतने अच्छे नहीं हैं।’

कुछ क्षण रुकने के बाद लता ने कहा: 'यह ट्वेल्थ नाइट है। मैं ऑडिशन देने गई थी, और संभव है कि मुझे इसमें एक भूमिका मिल जाए, इसलिए मैंने सोचा कि बेहतर होगा कि मुझे चीजों के बारे में पहले से ही जानकारी हो।'

प्राण, सविता और श्रीमती रूपा मेहरा तीनों ने ऊपर देखा। श्रीमती रूपा मेहरा ने सिलाई रोक दी और गहरी सांस ली।

प्राण ने उत्साहपूर्वक कहा, 'शानदार! बहुत बढ़िया!'

‘कौन सा हिस्सा?’ सविता ने पूछा।

'नहीं,' श्रीमती रूपा मेहरा ने जोर देकर कहा और अपनी बात पर जोर देने के लिए अपनी सुई को हिलाया।

‘मेरी बेटी किसी भी नाटक में अभिनय नहीं करेगी। बिलकुल नहीं।’ उसने अपने चश्मे के ऊपर से लता को घूरकर देखा।

चारों ओर सन्नाटा छा गया। कुछ देर बाद श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'बिल्कुल नहीं।'

कुछ देर बाद भी कोई प्रतिक्रिया न मिलने पर उसने आगे कहा: 'लड़के और लड़कियां एक साथ अभिनय कर रहे हैं!' यह स्पष्ट था कि ऐसी भद्दी, अनैतिक बात को बर्दाश्त नहीं किया जा सकता था।

'पिछले साल जूलियस सीज़र की तरह,' लता ने कहा।

‘चुप रहो,’ उसकी माँ ने झल्लाकर कहा। ‘किसी ने तुम्हें बोलने के लिए

नहीं कहा है। क्या तुमने कभी सविता को अभिनय करने की इच्छा रखते हुए सुना है? सैकड़ों लोगों के सामने मंच पर अभिनय करने की? और लड़कों के साथ उन रात की पार्टियों में जाने की—'

प्राण ने पूछा, 'रिहर्सल।'

'जी हां, रिहर्सल,' श्रीमती रूपा मेहरा ने अधीरता से कहा। 'यह बात मेरे मुंह से निकल ही गई थी। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती। सोचो कितनी शर्म आएगी। तुम्हारे पिता क्या कहते?'

'अरे नहीं, माँ,' सविता ने कहा। 'परेशान मत होइए। ये तो बस एक नाटक है।'

अपने दिवंगत पति का जिक्र करते हुए श्रीमती रूपा मेहरा भावुक हो गई थीं, और अब उन्हें शांत करना और उनसे तर्क करना संभव था। प्राण ने बताया कि आपात स्थिति को छोड़कर रिहर्सल दिन में ही होंगी। सविता ने कहा कि उसने स्कूल में 'ट्वेल्थ नाइट' पढ़ी थी, और यह एक हानिरहित नाटक था; इसमें कुछ भी आपत्तिजनक नहीं था।

सविता ने स्कूल की पाठ्यपुस्तक के रूप में स्वीकृत संशोधित संस्करण को पढ़ा था, लेकिन यह बहुत संभव था कि श्री बरुआ को वार्षिक दिवस में उपस्थित अभिभावकों को आहत और विचलित होने से बचाने के लिए कुछ अंश हटाने ही पड़ते। श्रीमती रूपा मेहरा ने नाटक नहीं पढ़ा था; यदि उन्होंने पढ़ा होता, तो वे निश्चित रूप से इसे अनुपयुक्त मानतीं।

उन्होंने कहा, 'यह मलाती का प्रभाव है, मैं जानती हूं।'

'खैर, मां, ऑडिशन में जाने का फैसला लता का था,' प्राण ने कहा। 'हर बात के लिए मालती को दोष मत दीजिए।'

'वह लड़की बहुत ही साहसी है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, जो मालती के प्रति अपने स्नेह और जीवन के प्रति उसके अत्यधिक आगे बढ़ने वाले रवैये के प्रति अपनी असहमति के बीच लगातार संघर्ष कर रही थीं।

लता ने कहा, 'मलाती ने कहा कि मुझे अन्य चीजों से ध्यान हटाने के लिए किसी चीज की जरूरत है।'

उसकी माँ को इस तर्क की सच्चाई और गंभीरता को समझने में देर नहीं लगी। लेकिन बात मानते हुए भी उसने कहा, 'अगर मालती ऐसा कहती है, तो ऐसा ही होगा। मैं कौन होती हूँ कुछ कहने वाली? मैं तो बस तुम्हारी माँ हूँ। मेरी सलाह की अहमियत तुम्हें तभी समझ आएगी जब मैं अपनी चिता पर जल रही होऊँगी। तब तुम्हें पता चलेगा कि मैंने तुम्हारी भलाई की कितनी परवाह की।' इस विचार से उसे थोड़ी राहत मिली।

'खैर, माँ, मुझे यह रोल मिलने की संभावना बहुत कम है,' लता ने कहा।

'चलो बच्चे से पूछते हैं,' उसने सविता के पेट पर हाथ रखते हुए कहा।

'ओलिविया, मारिया, वियोला, कुछ नहीं' की प्रार्थना को कई बार धीरे-धीरे दोहराया गया, और चौथी बार जब यह दोहराया गया तो बच्चे ने 'कुछ नहीं' शब्द पर एक तेज लात मारकर जवाब दिया।

12.6

दो-तीन दिन बाद, लता को एक पत्र मिला जिसमें उसे ओलिविया का किरदार सौंपा गया था और उसे गुरुवार दोपहर साढ़े तीन बजे पहले रिहर्सल में आने के लिए कहा गया था। वह बेहद उत्साहित होकर महिला छात्रावास की ओर दौड़ी, लेकिन रास्ते में उसकी मुलाकात मलाती से हुई। मलाती को मारिया का किरदार मिला था। दोनों ही समान रूप से प्रसन्न और आश्चर्यचकित थीं।

पहला पूर्वाभ्यास मात्र नाटक का पाठ करना था। सभागार बुक करने की कोई आवश्यकता नहीं थी; कक्षा ही पर्याप्त थी। लता और मलाती ने ब्लू डेन्यूब में आइसक्रीम खाकर जश्न मनाने का फैसला किया और पाठ शुरू होने से ठीक पाँच मिनट पहले उत्साह से कक्षा में पहुँचीं।

वहाँ लगभग एक दर्जन लड़के थे, और केवल एक लड़की थी, संभवतः

वियोला। वह उनसे अलग बैठी खाली ब्लैकबोर्ड को निहार रही थी।
मुख्य अभिनेताओं के समूह से अलग बैठे कबीर भी थे, जिन्होंने उन दोनों लड़कियों के प्रवेश करने पर उत्पन्न मर्दाना उत्साह के माहौल में बिल्कुल भी भाग नहीं लिया।
पहले तो लता का दिल उसे देखकर उछल पड़ा; फिर उसने मालती को वहीं रुकने को कहा। वह उससे बात करने जा रही थी।
उसका व्यवहार इतना सहज था कि यह जानबूझकर किया गया प्रतीत होता था। स्पष्ट रूप से, वह उसका इंतज़ार कर रहा था। यह असहनीय था।
'तुम कौन हो?' उसने गुस्से से भरी धीमी आवाज में कहा।
वह लहजे और सवाल दोनों से हैरान रह गया। वह कुछ दोषी सा लग रहा था।
'मालवोलियो,' उसने कहा, फिर जोड़ा: 'मैडम।' लेकिन वह बैठा ही रहा।
लता ने कहा, 'तुमने मुझे कभी नहीं बताया कि तुम्हें शौकिया नाट्यकला में जरा भी दिलचस्पी है।'
'और तुमने मुझे बताया भी नहीं,' उसने जवाब दिया।
लता ने संक्षेप में कहा, 'कुछ दिन पहले तक मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी, जब तक कि मालती मुझे ऑडिशन के लिए खींचकर नहीं ले गई।'
कबीर ने मुस्कुराने की कोशिश करते हुए कहा, 'मेरी दिलचस्पी भी लगभग उसी समय से है। मैंने सुना है कि आपने ऑडिशन में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया।'
लता को अब सब कुछ समझ आ गया था। किसी न किसी तरह उसे पता चल गया था कि उसे कोई भूमिका मिलने की अच्छी संभावना है, और उसने पुरुष भूमिकाओं के ऑडिशन में जाने का फैसला किया था। उससे

दूर रहने के लिए ही उसने अभिनय करना शुरू किया था।
'मुझे लगता है कि आपने सामान्य पूछताछ शुरू कर दी होगी,' लता ने कहा।
नहीं, मुझे इसके बारे में संयोग से पता चला। मैं तुम्हारा पीछा नहीं कर रहा था।
'इसलिए-'
कबीर ने मासूमियत से कहा, 'इसमें 'तो' लगाने की क्या ज़रूरत है? मुझे तो बस नाटक की पंक्तियाँ पसंद हैं।' और उसने सहज और बेफिक्र अंदाज़ में ये पंक्तियाँ दोहराईं:
‘महिलाओं के पक्ष नहीं हैं’
क्या इतनी तीव्र भावनाओं की मार सहन कर सकता है?
जिस प्रकार प्रेम मेरे हृदय को देता है: किसी स्त्री का हृदय नहीं।
इतनी बड़ी जगह में इतना सारा सामान रखना मुश्किल है; इनमें याददाश्त की कमी है।
अफसोस, उनके प्रेम को लालसा कहा जा सकता है,—
यकृत की कोई गति नहीं, केवल तालु की गति होती है।
जो अतिभोग, ऊब और विद्रोह से पीड़ित होते हैं;
लेकिन मेरा सब कुछ समुद्र की तरह भूखा है।
और उतना ही पचा सकता है: कोई तुलना ही नहीं।
उस प्रेम के बीच एक स्त्री मुझे सहन कर सकती है
और इसके लिए मैं ओलिविया का ऋणी हूं।'
लता को लगा जैसे उसका चेहरा जल रहा हो। थोड़ी देर बाद उसने कहा: 'मुझे लगता है कि तुम किसी और की पंक्तियाँ दोहरा रही हो। ये तुम्हारे लिए नहीं लिखी गई थीं।' वह थोड़ी देर रुकी, फिर बोली: 'लेकिन तुम्हें ये बहुत अच्छी तरह से याद हैं।'

कबीर ने कहा, ‘मैंने ऑडिशन से ठीक एक रात पहले ये सब और भी बहुत कुछ सीखा। मैं मुश्किल से सो पाया! मैं ड्यूक का किरदार पाने के लिए दृढ़ संकल्पित था। लेकिन मुझे मालवोलियो से ही संतोष करना पड़ा। मुझे उम्मीद है कि इससे मेरे भाग्य पर कोई असर नहीं पड़ेगा। मुझे तुम्हारा संदेश मिल गया। मुझे उम्मीद है कि हम प्रेम निवास या कहीं और मिलेंगे।’

लता को खुद आश्चर्य हुआ जब उसने हंसना शुरू कर दिया। 'तुम पागल हो, बिलकुल पागल हो,' उसने कहा।

वह मुंह फेरकर चली गई थी, लेकिन जब वह उसकी ओर मुड़ी तो उसने उसके चेहरे पर वास्तविक पीड़ा की आखिरी झलक देखी।

लता ने कहा, 'मैं तो बस मजाक कर रही थी।'

कबीर ने बात को हल्के में लेते हुए कहा, 'खैर, कुछ लोग जन्म से ही पागल होते हैं, कुछ लोग पागलपन हासिल कर लेते हैं, और कुछ लोगों पर पागलपन थोप दिया जाता है।'

लता का मन हुआ कि वह उससे पूछे कि वह खुद को इन तीन श्रेणियों में से किसमें मानता है। लेकिन इसके बजाय उसने कहा: 'तो आप मालवोलियो की भूमिका भी जानते हैं।'

‘अरे वाह, ये पंक्तियाँ!’ कबीर ने कहा। ‘ये पंक्तियाँ तो सबको पता हैं। बेचारा मालवोलियो बस मूर्खता का अभिनय कर रहा है।’

लता ने कहा, 'तुम क्रिकेट या कुछ और क्यों नहीं खेल रहे हो?'

‘क्या? मानसून के संदर्भ में?’

लेकिन कुछ मिनट पहले ही पहुंचे श्री बरुआ ने ड्यूक की भूमिका निभाने वाले छात्र की ओर एक काल्पनिक छड़ी लहराई और कहा: 'ठीक है, तो अब, "अगर संगीत ऐसा हो...", ठीक है? अच्छा।' और पाठ शुरू हो गया।

जैसे-जैसे लता सुनती गई, वह दूसरी दुनिया में खोती चली गई। कुछ

समय बाद ही उसका पहला प्रवेश हुआ। और जब उसने पढ़ना शुरू किया, तो वह भाषा में पूरी तरह डूब गई। जल्द ही वह ओलिविया बन गई। उसने मालवोलियो के साथ अपनी पहली बातचीत सफलतापूर्वक पूरी कर ली। बाद में उसने मलाती द्वारा मारिया के गायन पर बाकी लोगों के साथ हँसी। वियोला का किरदार निभाने वाली लड़की भी बहुत अच्छी थी, और लता को उससे प्यार हो गया। वियोला और उसके भाई का किरदार निभाने वाले लड़के में थोड़ी-बहुत समानता भी थी। श्री बरुआ ने कलाकारों का चयन बहुत अच्छे से किया था।

हालांकि, नाटक से बाहर निकलते समय लता को समय-समय पर याद आ जाता था कि वह कहाँ है। वह कबीर की ओर देखने से यथासंभव बचती रही, और केवल एक बार ही उसे लगा कि कबीर की नज़रें उस पर टिकी हैं। उसे पूरा विश्वास था कि कबीर बाद में उससे बात करना चाहेंगे, और उसे खुशी थी कि उसे और मालती दोनों को भूमिकाएँ मिली थीं। एक दृश्य में उसे विशेष कठिनाई हुई, और श्री बरुआ को उसे समझा-बुझाकर वह दृश्य पूरा करवाना पड़ा।

ओलिविया: अरे, कैसे हो तुम, पुरुष? तुम्हें क्या हुआ है?

मालवोलियो: मेरा मन काला नहीं है, हालांकि मेरे पैर पीले हैं। यह उसके हाथों में आ चुका है, और आदेशों का पालन किया जाएगा। मुझे लगता है कि हम रोमन के कुशल हाथों को अच्छी तरह जानते हैं।

श्री बरुआ [विराम पर आश्चर्यचकित होकर, और लता की ओर अपेक्षा भरी निगाहों से देखते हुए]: जी हाँ, जी हाँ, अच्छा है?

ओलिविया: विल्ट—

श्री बरुआ: विल? जी हाँ, विल... अच्छा, उत्कृष्ट, जारी रखिए, मिस मेहरा, आप बहुत अच्छा कर रही हैं।

ओलिविया: क्या तुम—

श्री बरुआ: क्या तुम ऐसा करोगे? हाँ, हाँ!
ओलिविया: क्या तुम सोने जाओगे, मालवोलियो?
श्री बरुआ [हंसी रोकने के लिए एक हाथ ऊपर उठाते हुए, और अपनी काल्पनिक छड़ी से अवाक कबीर की ओर इशारा करते हुए]: अब क्या, मालवोलियो?
मालवोलियो: बिस्तर पर चलें? जी हां, प्रियतम; और मैं तुम्हारे पास आऊंगा।
दो अभिनेताओं और श्री बरुआ को छोड़कर बाकी सभी लोग उसके बाद हुई हंसी में शामिल हो गए। यहां तक कि मालती भी। लता ने मन ही मन सोचा, "तुम भी!"
नाटक के अंत में विदूषक ने गीत गाया नहीं, बल्कि सुनाया, और लता ने मालती की नज़रें अपनी ओर खींच लीं और कबीर से नज़रें बचाते हुए जल्दी से वहाँ से चली गई। अभी अंधेरा नहीं हुआ था। लेकिन उसे इस बात का डर नहीं था कि कबीर उसे उस शाम बाहर जाने के लिए कहेगा। गुरुवार का दिन था, और कबीर का एक और काम था।

12.7

कबीर जब अपने चाचा के घर पहुँचा तो अँधेरा हो चुका था। उसने अपनी साइकिल खड़ी की और दरवाजा खटखटाया। उसकी चाची ने दरवाजा खोला। एक मंज़िला और फैला हुआ वह घर ठीक से रोशन नहीं था। कबीर को अक्सर अपने बचपन में अपने चचेरे भाइयों के साथ बड़े से पिछवाड़े वाले बगीचे में खेलने की याद आती थी, लेकिन पिछले कई सालों से वह घर उसे भूतिया सा लगने लगा था। अब वह आमतौर पर गुरुवार की शाम को ही वहाँ जाता था।
'आज वो कैसी है?' उसने अपनी चाची से पूछा।
उसकी चाची, जो दुबली-पतली, कुछ हद तक सख्त दिखने वाली लेकिन

निर्दयी न होने वाली महिला थी, ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'दो-तीन दिन तक सब ठीक था। फिर वही सब शुरू हो गया। क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे साथ रहूँ?'

'नहीं—नहीं, मुमानी, मैं उसके साथ अकेले रहना पसंद करूंगा।'

कबीर घर के पिछले हिस्से में बने कमरे में दाखिल हुआ, जो पिछले पाँच सालों से उसकी माँ का शयनकक्ष था। घर के बाकी हिस्सों की तरह, यह कमरा भी कम रोशनी वाला था, जिसमें भारी पर्दों में बस दो कमज़ोर बल्ब लगे थे। वह एक सख्त पीठ वाली कुर्सी पर बैठी खिड़की से बाहर देख रही थी। वह हमेशा से ही थोड़ी गोल-मटोल महिला थी, लेकिन अब वह और भी मोटी हो गई थी। उसका चेहरा थैलियों से भरा हुआ लग रहा था।

वह खिड़की से बाहर बगीचे के छोर पर स्थित अमरूद के पेड़ों की गहरी आकृतियों को निहारती रही। कबीर आकर उसके पास खड़ा हो गया। उसने कबीर की उपस्थिति को तब तक महसूस नहीं किया जब तक कि उसने ये नहीं कहा:

'दरवाजा बंद कर दो, ठंड है।'

‘मैंने इसे बंद कर दिया है, अम्मी-जान।’

कबीर ने यह नहीं कहा कि बिल्कुल भी ठंड नहीं थी, जुलाई का महीना था और साइकिल चलाने के बाद उसे पसीना आ रहा था।

कुछ पल का सन्नाटा छा गया। उसकी माँ उसे भूल चुकी थी। उसने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा। वह एक पल के लिए चौंक गई, फिर बोली:

तो यह गुरुवार की रात है।

उन्होंने गुरुवार के लिए उर्दू शब्द 'जुमेरात' का प्रयोग किया, जिसका शाब्दिक अर्थ है शुक्रवार की रात। कबीर को याद आया कि बचपन में उन्हें

यह बात कितनी मजेदार लगती थी कि शुक्रवार की रात को भी एक रात कहा जा सकता है। उनकी माँ उन्हें ये बातें बड़े प्यार और हल्के-फुल्के अंदाज में समझाया करती थीं, क्योंकि उनके पिता विचारों के अगाध सागर में अकेले ही खोए रहते थे और बच्चों पर ज्यादा ध्यान नहीं देते थे। जब उनके बच्चे उनसे ठीक से बात करने लायक हुए, तभी उन्होंने उनमें थोड़ी-बहुत दिलचस्पी लेना शुरू किया।

'हां, गुरुवार रात।'

‘हाशिम कैसा है?’ उसने पूछा। वह अक्सर इसी तरह से अपनी बात शुरू करती थी।

'बहुत अच्छा, वह स्कूल में अच्छा कर रहा है। उसे कुछ बहुत कठिन होमवर्क मिला था, इसलिए वह नहीं आ सका।'

दरअसल, हाशिम को ऐसी मुलाकातों में जाना मुश्किल लगता था, और जब कबीर उसे बताते कि गुरुवार शाम है, तो वह आमतौर पर न जाने का कोई न कोई बहाना ढूंढ लेता था। कबीर, उसकी भावनाओं को भली-भांति समझते हुए, कभी-कभी उसे याद नहीं दिलाते थे। आज शाम भी ऐसा ही हुआ।

और सामिया?

‘अभी भी इंग्लैंड में स्कूल में पढ़ रहा हूँ।’

वह कभी लिखती नहीं है।

‘कभी-कभी वो लिखती हैं, अम्मी—लेकिन बहुत कम। हमें भी उनके पत्रों की कमी खलती है।’

अपनी माँ को यह बताना नामुमकिन था कि उनकी बेटी मर चुकी है, मेनिन्जाइटिस से, जिसे एक साल पहले दफना दिया गया था। उसने सोचा, यकीनन, एक साल तक चली यह चुप्पी की साजिश कामयाब नहीं हो सकती। चाहे लोगों का मन कितना भी विचलित क्यों न हो, कुछ

संकेत, सुराग, सुझाव, सुनी-सुनाई बातें, सब कुछ मन में घर कर जाते हैं और एक ऐसा ढाँचा बना लेते हैं जो सच्चाई की ओर इशारा करता है। दरअसल, कुछ महीने पहले ही उनकी माँ ने कहा था: 'आह, सामिया। मैं उसे यहाँ नहीं, बल्कि दूसरी जगह देखूँगी।' लेकिन इसका जो भी मतलब रहा हो, इससे उन्हें बाद में अपनी बेटी के बारे में पूछने से नहीं रोका। कभी-कभी, किसी बातचीत या विचार के कुछ ही मिनटों के भीतर, वह उनके मन से पूरी तरह मिट जाता था।

‘तुम्हारे पिताजी कैसे हैं? क्या अब भी पूछते हैं कि दो और दो चार होते हैं?’ एक पल के लिए कबीर ने उसकी आँखों में वही पुरानी हँसी और शरारत भरी चमक देखी, फिर वो गायब हो गई।

'हाँ।'

जब मेरी उससे शादी हुई थी—

‘आप अभी भी वही हैं, अम्मी।’

‘तुम मेरी बात नहीं सुन रहे हो। जब मैं— तुमने मुझे भुला दिया—’

कबीर ने उसका हाथ थाम लिया। हाथ की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

‘सुनो,’ उसकी माँ ने कहा। ‘मेरी हर बात ध्यान से सुनो। हमारे पास ज़्यादा समय नहीं है। वे मेरी शादी किसी और से करवाना चाहते हैं। और रात में मेरे कमरे के चारों ओर पहरेदार तैनात रहते हैं। कई सारे हैं। मेरे भाई ने उन्हें वहाँ तैनात किया है।’ उसकी पकड़ में उसका हाथ कस गया। कबीर ने उसे मना नहीं किया। वह इस बात से खुश था कि वे अकेले थे।

‘कहाँ?’ उसने पूछा।

उसने पेड़ों की दिशा में अपना सिर थोड़ा सा झटका दिया।

कबीर ने पूछा, 'पेड़ों के पीछे?'

‘हाँ। यहाँ तक कि बच्चे भी जानते हैं,’ उसने कहा। ‘वे मेरी तरफ देखते हैं

और कहते हैं, तोबा! तोबा! एक दिन वह फिर से एक बच्चे को जन्म देगी। दुनिया—'

जी अम्मी।

'यह दुनिया एक भयानक जगह है और लोग क्रूरता पसंद करते हैं। अगर यही मानवता है, तो मैं इसमें शामिल नहीं होना चाहती। आप ध्यान क्यों नहीं दे रहे हैं? वे मुझे लुभाने के लिए संगीत बजाते हैं। लेकिन, माशाअल्लाह, मैं होश में हूँ। मैं एक सेना अधिकारी की बेटी हूँ, यह कोई संयोग नहीं है। आपके पास वहाँ क्या है?'

'मैं आपके लिए कुछ मिठाई लाया हूँ, अम्मी।'

'मैंने पीतल की अंगूठी माँगी थी, और तुम मेरे लिए मिठाई ले आए?' उसकी आवाज़ विरोध में ऊँची हो गई। कबीर ने सोचा, वह आज सामान्य से कहीं ज़्यादा परेशान थी। आमतौर पर मिठाई उसे शांत कर देती थी और वह लालच से उसे मुँह में ठूँस लेती थी। लेकिन इस बार, वह मिठाई नहीं खाएगी। उसकी साँस फूल गई, फिर उसने बोलना शुरू किया:

'इन मिठाइयों में दवा है। डॉक्टरों ने इन्हें इनमें मिलाया है। अगर भगवान चाहते कि मुझे दवा मिले, तो वो संदेश भेज देते। हाशिम, तुम्हें कोई परवाह नहीं है—'

'Kabir, Ammi.'

'कबीर पिछले हफ्ते गुरुवार को आया था।' आवाज में घबराहट और सतर्कता बढ़ गई, मानो उसे आभास हो गया हो कि यह भी किसी जाल का हिस्सा है।

'मैं—' लेकिन अब उसकी आँखों में आंसू आ गए और वह बोल नहीं सका।

इस नई घटना से उसकी माँ चिढ़ गई और उसका हाथ उसके हाथ से ऐसे छूट गया जैसे कोई मृत प्राणी हो।

मैं कबीर हूँ।

उसने इसे स्वीकार कर लिया। यह अप्रासंगिक था।

'वे मुझे बरसात महल के पास किसी डॉक्टर के पास भेजना चाहते हैं। मैं जानती हूँ कि वे क्या चाहते हैं।' उसने नीचे की ओर देखा। फिर उसका सिर उसकी छाती पर गिर गया और वह सो गई।

कबीर आधे घंटे तक उसके पास ही रहा, लेकिन वह नहीं जागी। आखिरकार, वह उठा और दरवाजे की ओर गया।

उसकी चाची ने उसके चेहरे पर व्याकुलता देखकर कहा:

'कबीर, बेटा, हमारे साथ खाना क्यों नहीं खाते? इससे तुम्हें फायदा होगा। और हमें भी तुमसे बात करने का मौका मिल जाएगा।'

लेकिन कबीर अपनी साइकिल पर सवार होकर जितनी तेज़ी से और जितनी दूर हो सके, भाग जाना चाहता था। यह वह माँ नहीं थी जिसे वह प्यार करता था और जानता था, बल्कि एक ऐसी अजनबी थी जो बिल्कुल अजनबी थी।

परिवार में ऐसी स्थिति का कोई इतिहास नहीं था, न ही कोई विशेष दुर्घटना—गिरना या चोट लगना—जिसके कारण यह हुआ हो। अपनी माँ की मृत्यु के बाद लगभग एक वर्ष तक वह भावनात्मक रूप से तनावग्रस्त रही, लेकिन यह एक ऐसा दुःख था जो दुनिया में असामान्य नहीं था। पहले तो वह केवल अवसादग्रस्त थी, फिर वह छोटी-छोटी बातों पर चिंतित होने लगी और दैनिक जीवन के कार्यों को संभालने में असमर्थ हो गई। उसे लोगों पर संदेह होने लगा: दूधवाले पर, माली पर, अपने रिश्तेदारों पर, अपने पति पर। जब डॉक्टर दुर्रानी इस समस्या को अनदेखा नहीं कर सकते थे, तो कभी-कभी वे उसकी मदद के लिए लोगों को काम पर रखते थे, लेकिन उसका संदेह जल्द ही उन पर भी फैल गया। अंततः, उसने यह ठान लिया कि उसका पति उसे नुकसान पहुँचाने

की एक सुनियोजित साजिश रच रहा है, और इसे विफल करने के लिए उसने उसके बहुमूल्य और अधूरे गणितीय शोध पत्रों के ढेर फाड़ दिए। इसी समय उसने उसके भाई से उसे वहाँ से ले जाने के लिए कहा। एकमात्र दूसरा विकल्प किसी पागलखाने में भर्ती होना था। ब्रह्मपुर में एक पागलखाना था, जो बरसात महल के ठीक आगे स्थित था; शायद वह पहले इसी बात का जिक्र कर रही थी।

बचपन में कबीर, हाशिम और सामिया हमेशा बड़े गर्व से अपने पिता को थोड़ा पागल कहते थे। उनकी सनक—या उससे मिलती-जुलती कोई बात —ही लोगों को उनका इतना सम्मान करने का कारण थी। लेकिन उनकी स्नेही, हंसमुख और व्यावहारिक मां को ही यह अजीबोगरीब बीमारी हो गई थी, वो भी बिना किसी कारण के और लाइलाज तरीके से। कबीर ने सोचा, कम से कम सामिया तो इस लगातार पीड़ा से बची हुई है।

12.8

मरह का राजकुमार मुसीबत में था और प्राण के सामने पेश हुआ। मकान मालिक से समस्याओं के कारण राजकुमार और उसके साथियों को छात्रों के छात्रावास में रहने के लिए मजबूर होना पड़ा था, लेकिन उन्होंने वहां के नियमों के अनुसार अपनी जीवनशैली को ढालने से इनकार कर दिया था। अब उसे और उसके दो दोस्तों को प्रॉक्टर के एक सहायक ने तरबुज़ का बाज़ार में एक वेश्यालय से निकलते हुए देखा था। जब उनसे पूछताछ की गई, तो उन्होंने उसे धक्का देकर एक तरफ कर दिया और लड़कों में से एक ने कहा:

'अरे बहन के साथ कुटिल, इस सब में तेरा क्या काम है? क्या तू कमीशन एजेंट है? यहाँ कर क्या रहा है? या तू अपनी बहन के लिए दलाली भी कर रहा है?' उनमें से एक ने उसके चेहरे पर एक घूंसा मारा था।

उन्होंने अपना नाम बताने से इनकार कर दिया और यह मानने से भी

इनकार कर दिया कि वे छात्र हैं। उन्होंने दावा किया, 'हम छात्र नहीं हैं, हम छात्रों के दादा-दादी हैं।'

बचाव में, या शायद बचाव में नहीं, यह कहा जा सकता है कि वे उस समय नशे में थे।

वापस लौटते समय उन्होंने एक लोकप्रिय फिल्मी गीत, 'मैंने आह नहीं भरी, मैंने शिकायत नहीं की—' को ज़ोर-ज़ोर से गाया और कई मोहल्लों की शांति भंग कर दी। प्रॉक्टर का सहायक सुरक्षित दूरी से उनके पीछे-पीछे चलता रहा। अति आत्मविश्वास के चलते वे छात्रावास लौट आए, जहाँ एक दयालु चौकीदार ने उन्हें अंदर जाने दिया, हालाँकि आधी रात हो चुकी थी। वे कुछ देर तक गाते रहे, जब तक कि उनके साथी छात्रों ने उनसे चुप रहने की विनती नहीं की।

राजकुमार अगली सुबह तेज सिरदर्द और किसी अनहोनी के पूर्वाभास के साथ उठा, और वही अनहोनी हो गई। चौकीदार, अपनी नौकरी को लेकर डरा हुआ, उन्हें पहचानने के लिए मजबूर हो गया, और उन्हें छात्रावास के वार्डन के सामने पेश किया गया। वार्डन ने उन्हें तुरंत छात्रावास छोड़ने का आदेश दिया और उनके निष्कासन की सिफारिश की। प्रॉक्टर, अपनी ओर से, सख्त कार्रवाई के पक्ष में था। छात्रों की गुंडागर्दी एक बड़ी समस्या बनती जा रही थी, और अगर एस्पिरिन से यह ठीक नहीं होती, तो सिर कलम करना ही एकमात्र उपाय होता। उसने प्राण को, जो अब अनुशासन का ध्यान रखने वाली छात्र कल्याण समिति में था, अस्थायी रूप से मामले को संभालने के लिए कहा, क्योंकि वह स्वयं छात्र संघ चुनावों की व्यवस्था में व्यस्त रहने वाला था। निष्पक्ष और शांतिपूर्ण चुनाव सुनिश्चित करना एक लगातार बनी रहने वाली समस्या थी: विभिन्न राजनीतिक दलों (कम्युनिस्ट, समाजवादी, और - एक अलग नाम से - हिंदू पुनरुत्थानवादी आरएसएस) के छात्रों ने वोटों के लिए लड़ाई से पहले ही एक-दूसरे को

जूतों और लाठियों से पीटना शुरू कर दिया था।
दूसरों के भाग्य का फैसला करने का बोझ प्राण के लिए बेहद चिंता का विषय था, और सविता देख सकती थी कि इससे वह कितना परेशान हो जाता था। वह सुबह के अखबार पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा था। पिछले कुछ दिनों से उसकी तबीयत बिल्कुल ठीक नहीं थी—और सविता समझ सकती थी कि इन मूर्ख युवकों को सज़ा देने का दबाव उसके लिए और भी बुरा साबित होने वाला था। वह शेक्सपियर की कॉमेडी पर अपने व्याख्यानों पर भी काम नहीं कर पा रहा था, जबकि उसने पिछली शाम इसके लिए कुछ समय निकाला था।
सविता ने कहा, 'मुझे समझ नहीं आता कि आपको उन्हें यहां देखने की क्या जरूरत है। उनसे कहिए कि वे प्रॉक्टर के कार्यालय में जाएं।'
नहीं, नहीं, प्रिय, इससे तो वे और भी घबरा जाएँगे। मैं बस उनकी बात सुनना चाहती हूँ, और अगर वे कम डरे हुए हों—अगर वे मेरे साथ ड्राइंग रूम में बैठे हों, बजाय इसके कि डेस्क के सामने खड़े होकर इधर-उधर घूम रहे हों—तो वे ज़्यादा खुलकर बताएँगे। मुझे उम्मीद है कि आपको और माँ को कोई आपत्ति नहीं होगी। ज़्यादा से ज़्यादा आधा घंटा लगेगा।
अपराधी ग्यारह बजे पहुंचे और प्राण ने उन्हें चाय की पेशकश की।
मारह का राजकुमार अपने आप पर बेहद शर्मिंदा था और अपनी हथेलियों को घूरता रहा, लेकिन उसके दोस्तों ने प्राण की दयालुता को कमजोरी समझ लिया और यह जानते हुए कि वह छात्रों में लोकप्रिय था, यह मान लिया कि उन्हें कोई खतरा नहीं है। जब प्राण ने उनसे आरोपों के बारे में पूछा तो वे मुस्कुरा दिए। वे जानते थे कि प्राण, मान का भाई है, और उन्होंने प्राण की सहानुभूति को स्वाभाविक मान लिया।
उनमें से एक ने कहा, 'हम तो अपने काम से काम रख रहे थे। उसे भी अपने काम से काम रखना चाहिए था।'

‘उसने आपसे आपके नाम पूछे, और आपने कहा—’ प्राण ने अपने हाथ में रखे कागजों पर नज़र डाली। ‘खैर, आप जानते हैं आपने क्या कहा। मुझे इसे दोहराने की ज़रूरत नहीं है। मुझे आपको विश्वविद्यालय के नियम बताने की भी ज़रूरत नहीं है। लगता है आप उन्हें अच्छी तरह जानते हैं। इसके अनुसार, जैसे ही आप छात्रावास के पास पहुँचे, आपने गाना शुरू कर दिया: “कोई भी छात्र जो अनुचित स्थान पर देखा जाएगा, उसे तत्काल निष्कासित कर दिया जाएगा।”’

दोनों मुख्य दोषियों ने एक-दूसरे को देखकर बेपरवाह मिलीभगत की मुस्कान बिखेरी।

राजकुमार को डर था कि अगर उसे निकाल दिया गया तो उसके क्रोधित पिता उसे नपुंसक बना देंगे या इससे भी बुरा कुछ करेंगे, इसलिए उसने बुदबुदाते हुए कहा: 'लेकिन मैंने तो कुछ किया ही नहीं।' यह तो बस उसकी किस्मत थी कि वह सामाजिक होने के चक्कर में साथ चला गया था।

बाकी दो में से एक ने कुछ तिरस्कारपूर्ण लहजे में कहा: 'हाँ, यह सच है, हम इसकी पुष्टि कर सकते हैं। उसे इस तरह की चीजों में कोई दिलचस्पी नहीं है - तुम्हारे भाई के विपरीत, जो -'

प्राण ने युवक की बात काटते हुए तीखे स्वर में कहा, ‘यह मुद्दा नहीं है। आइए, गैर-छात्रों को इसमें शामिल न करें। मुझे लगता है कि आप यह नहीं समझते कि आपको निष्कासित किए जाने की पूरी संभावना है। जुर्माना व्यर्थ है, इसका आप पर कोई असर नहीं पड़ेगा।’ उन्होंने एक चेहरे से दूसरे चेहरे की ओर देखा और फिर आगे कहा, ‘तथ्य स्पष्ट हैं, और आपका रवैया भी मददगार नहीं है। आपके पिता पहले से ही काफी मुश्किलों का सामना कर रहे हैं, उन्हें आपकी परेशानी में और इजाफा करने की जरूरत नहीं है।’

प्राण ने उनके चेहरों पर पहली बार कमजोरी का भाव देखा—पश्चाताप से ज़्यादा डर का। ज़मींदारी प्रथा के जल्द ही समाप्त होने के कारण उनके पिता अपने फिजूलखर्च बेटों से सचमुच चिढ़ने लगे थे। देर-सवेर उनकी जेब खर्च भी कम हो सकती थी। छात्र जीवन में मौज-मस्ती करने के अलावा उन्हें कुछ और सूझ नहीं रहा था, और अगर यह भी उनसे छीन लिया गया, तो आगे अंधकार के सिवा कुछ नहीं था। उन्होंने प्राण की ओर देखा, लेकिन प्राण कुछ देर तक चुप रहे। ऐसा लग रहा था मानो वे अपने सामने रखे कागजों के गट्ठे को पढ़ रहे हों।

प्राण ने सोचा, उनके लिए यह मुश्किल है। यह सब अय्याशी और ऐशो-आराम का जीवन दुखद है; यही सब कुछ वे जानते हैं, और यह ज्यादा दिन नहीं चलेगा। उन्हें शायद नौकरी भी ढूंढनी पड़े। आजकल छात्रों के लिए जीवन आसान नहीं है, चाहे वे किसी भी वर्ग के हों। रोजगार मिलना मुश्किल है, देश किसी दिशा में आगे बढ़ता हुआ नहीं दिख रहा है, और उनके बड़ों का उदाहरण दयनीय है। उसके मन में मारह के राजा, प्रोफेसर मिश्रा और झगड़ालू राजनेताओं की तस्वीरें उभर आईं। उसने ऊपर देखा और कहा:

मुझे यह तय करना है कि प्रॉक्टर को क्या सिफारिश करनी है। मैं वार्डन से सहमत हूं—'

'नहीं, कृपया, महोदय—' छात्रों में से एक ने कहा।

दूसरा चुप रहा, लेकिन उसने प्राण को विनती भरी नजरों से देखा।

राजकुमार अब सोच रहा था कि वह अपनी दादी, मारह की विधवा रानी का सामना कैसे करेगा। उनके पिता का क्रोध भी उनकी आँखों में दिख रही निराशा को सहने से कहीं अधिक सहन करने योग्य था।

वह सिसकने लगा।

उन्होंने कहा, 'हमने जानबूझकर ऐसा नहीं किया। हम...'

प्राण ने कहा, 'रुको। बोलने से पहले सोचो कि तुम क्या कह रहे हो।'
‘लेकिन हम नशे में थे,’ बदकिस्मत राजकुमार ने कहा। ‘इसीलिए हमने ऐसा व्यवहार किया।’
'कितनी शर्मनाक बात है,' बाकी लोगों में से एक ने धीमी आवाज में कहा।
प्राण ने अपनी आंखें बंद कर लीं।
उन सभी ने उसे आश्वस्त किया कि वे फिर कभी ऐसा कुछ नहीं करेंगे। उन्होंने अपने पूर्वजों की कसम खाई, उन्होंने कई देवताओं के नाम पर प्रतिज्ञा की। वे पश्चाताप करते हुए दिखाई देने लगे, और वास्तव में, ऐसा दिखने के कारण उन्हें पश्चाताप का अहसास भी होने लगा।
कुछ देर बाद प्राण का सब्र टूट गया और वह खड़ा हो गया।
‘अधिकारियों से आपको उचित समय पर सूचना मिल जाएगी,’ उसने दरवाजे पर उनसे कहा। नौकरशाही से भरे ये औपचारिक शब्द उसे खुद भी अजीब लग रहे थे। वे हिचकिचाए, यह सोचते हुए कि वे अपने बचाव में और क्या कह सकते हैं, फिर निराश होकर चले गए।

12.9

सविता को दोपहर के भोजन तक वापस आने का वादा करके प्राण प्रेम निवास चला गया। मौसम सुहाना था, हालांकि आसमान में बादल छाए हुए थे। जब वह वहाँ पहुँचा तो उसकी साँस थोड़ी फूल रही थी। उसकी माँ बगीचे में माली को निर्देश दे रही थी।
वह उसका स्वागत करने के लिए आगे बढ़ी, फिर रुक गई। 'प्राण, क्या तुम ठीक हो?' उसने पूछा। 'तुम मुझे बिल्कुल भी ठीक नहीं लग रहे हो।'
‘जी अम्माजी, मैं ठीक हूँ। रामजप बाबा की कृपा से,’ उसने यह कहने से खुद को नहीं रोका।
आपको उस भले आदमी का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए।
‘नहीं, नहीं,’ प्राण ने कहा। ‘भास्कर कैसा है?’

‘वो काफी अच्छी तरह से बात कर रहा है, और चल-फिर भी रहा है। वो मिसरी मंडी वापस जाने की जिद पर अड़ा है। लेकिन यहाँ की हवा बहुत ताज़ी है।’ उसने बगीचे की ओर इशारा किया। ‘और सविता?’

‘वह इस बात से नाराज़ है कि मैं उसके साथ बहुत कम समय बिताता हूँ। मुझे दोपहर के भोजन के लिए वापस आने का वादा करना पड़ा। मुझे समिति में यह सारा अतिरिक्त काम बिल्कुल पसंद नहीं है, लेकिन अगर मैं इसे नहीं करूँगा, तो किसी और को करना पड़ेगा।’ वह रुका। ‘इसके अलावा, वह बिल्कुल ठीक है। माँ उसकी इतनी देखभाल करती है कि वह हर साल एक बच्चा पैदा करना चाहेगी।’

श्रीमती महेश कपूर ने मन ही मन मुस्कुराया। फिर उनके चेहरे पर चिंता के भाव उभर आए और उन्होंने कहा: ‘मान कहाँ चला गया, तुम्हें पता है? वो न तो गाँव में है, न ही खेत में, और बनारस में किसी को नहीं पता कि वो कहाँ है। वो गायब ही हो गया है। उसने दो हफ़्तों से चिट्ठी नहीं लिखी। मैं उसके बारे में बहुत चिंतित हूँ। तुम्हारे पिताजी तो बस यही कहते हैं कि वो चाहे तो पाताल लोक में हो, बस वो ब्रह्मपुर में न हो।’

प्राण ने उस सुबह अपने भाई के बारे में दूसरी बार सुनकर भौंहें चढ़ाईं, फिर अपनी माँ को आश्वस्त किया कि मान का दो या दस सप्ताह के लिए गायब हो जाना चिंता का कारण नहीं है। हो सकता है वह शिकार पर गया हो, या पहाड़ों की तलहटी में ट्रेकिंग पर, या बैतर किले में छुट्टियाँ मनाने। फ़िरोज़ को उसके ठिकाने का पता हो सकता है; वह आज दोपहर फ़िरोज़ से मिलने वाला था, और वह उससे पूछेगा कि क्या उसने अपने दोस्त से कोई खबर सुनी है।

उसकी माँ ने नाखुशी से सिर हिलाया। थोड़ी देर बाद उसने कहा:

‘आप सभी प्रेम निवास क्यों नहीं आ जाते? इससे सविता को अपने अंतिम दिनों में बहुत फायदा होगा।’

नहीं, अम्माजी, उन्हें वहीं रहना पसंद है जहाँ वे रहने की आदी हैं। और अब जब बाओजी कांग्रेस पार्टी छोड़ने की सोच रहे हैं, तो घर में हर तरह के राजनेता उन्हें मनाने या रोकने की कोशिश में लगे रहेंगे। और आप भी थकी हुई लग रही हैं। आप सबकी देखभाल करती हैं, और किसी को अपनी देखभाल नहीं करने देतीं। आप सचमुच बहुत थकी हुई लग रही हैं।
'अरे, ये तो बुढ़ापा है,' उसकी माँ ने कहा।
'आप माली को घर के अंदर क्यों नहीं बुला लेते, जहाँ ठंडक है, और उसे वहीं निर्देश दे देते?'
'अरे नहीं,' श्रीमती महेश कपूर ने कहा। 'यह बिल्कुल भी काम नहीं करेगा। इससे फूलों के मनोबल पर बुरा असर पड़ेगा।'

12.10

प्राण घर गया और दोपहर के भोजन के बजाय आराम किया। थोड़ी देर बाद उसकी मुलाकात ब्रह्मपुर उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के प्रांगण कक्ष में फिरोज से हुई। फिरोज विश्वविद्यालय के विरुद्ध शिकायत करने वाले एक छात्र की ओर से पेश हुआ था। वह छात्र विश्वविद्यालय के सबसे प्रतिभाशाली रसायन विज्ञान के छात्रों में से एक था और अपने शिक्षकों का चहेता भी था। लेकिन शैक्षणिक वर्ष के अंत में अप्रैल की परीक्षा में उसने कुछ ऐसा चौंकाने वाला काम किया कि उसका स्पष्टीकरण लगभग असंभव था। वह परीक्षा के बीच में ही बाथरूम चला गया और फिर परीक्षा कक्ष के ठीक बाहर खड़े अपने कुछ दोस्तों को देखकर उनसे एक मिनट के लिए बात करने के लिए रुक गया। उसने दावा किया कि वे इस बारे में बात कर रहे थे कि इतनी गर्मी थी कि सोचना मुश्किल था; और यह मानने का कोई कारण नहीं था कि वह झूठ बोल रहा था। उसके दोनों दोस्त दर्शनशास्त्र के छात्र थे और परीक्षा में उसकी मदद करने का तो सवाल ही नहीं उठता था; वैसे भी, वह अपने

बैच का सबसे अच्छा रसायन विज्ञान का छात्र था।
लेकिन उसकी शिकायत दर्ज कर ली गई। यह स्पष्ट था कि उसने परीक्षा के कड़े नियमों का उल्लंघन किया था। इस आधार पर कि उसके लिए कोई अपवाद नहीं किया जा सकता था, उसकी परीक्षाएं रद्द कर दी गईं और उसे शेष परीक्षाओं में बैठने की अनुमति नहीं दी गई। असल में, उसका एक साल बर्बाद हो गया। उसने कुलपति से 'कम्पार्टमेंटल' परीक्षाओं में बैठने की अनुमति देने की अपील की; ये परीक्षाएं, जो सामान्यतः अगस्त में उन छात्रों के लिए आयोजित की जाती हैं जो किसी एक विषय में अनुत्तीर्ण हो जाते हैं, यदि वह इन्हें एक साथ देता तो उसे अगले वर्ष में प्रवेश मिल जाता। उसकी अपील खारिज कर दी गई। हताशा में उसने कानूनी उपाय की ओर रुख किया। फ़िरोज़ उसका वकील बनने के लिए सहमत हो गया।
प्राण, छात्र कल्याण समिति के कनिष्ठ सदस्य होने के नाते, जिनसे मूल निर्णय में परामर्श लिया गया था, को प्रॉक्टर ने सुनवाई में उपस्थित रहने के लिए कहा था। उन्होंने अदालत कक्ष में फ़िरोज़ का अभिवादन सिर हिलाकर किया और कहा: 'यह सब खत्म होने के बाद बाहर मिलते हैं।' उन्हें फ़िरोज़ को काले गाउन और गले में सफेद पट्टियों में देखने की आदत नहीं थी, और वह उन्हें देखकर सुखद रूप से प्रभावित हुए, हालांकि उन्हें यह थोड़ा अजीब भी लगा।
फिरोज ने छात्र की ओर से एक रिट याचिका दायर की थी, जिसमें दावा किया गया था कि संविधान के तहत उसके अधिकारों का उल्लंघन हुआ है। मुख्य न्यायाधीश ने उसकी दलील को तुरंत खारिज कर दिया। उन्होंने उससे कहा कि कठिन मामले कानून को कमजोर बनाते हैं; विश्वविद्यालय को अपने स्वयं के पर्यवेक्षण प्राधिकरण के रूप में कार्य करने के लिए विश्वसनीय माना जा सकता है, जब तक कि ऐसा पर्यवेक्षण स्पष्ट रूप से

अनुचित न हो, जैसा कि इस मामले में नहीं था; और यदि छात्र कानून का सहारा लेने पर अड़ा हुआ है—जो उनकी राय में नासमझी थी—तो उसे स्थानीय मजिस्ट्रेट के पास मुकदमा दायर करने की सलाह दी जानी चाहिए थी, न कि सीधे उच्च न्यायालय में रिट याचिका दायर करने की। उच्च न्यायालय में रिट याचिकाएँ हाल ही में पारित संविधान के तहत आई एक नई व्यवस्था थी, और मुख्य न्यायाधीश को ये याचिकाएँ कुछ खास पसंद नहीं थीं। उनका मानना था कि इनका इस्तेमाल अक्सर सिर्फ समय बचाने के लिए किया जाता है।

उन्होंने अपना सिर एक तरफ झुकाया और फ़िरोज़ की ओर देखते हुए कहा, "युवक, मुझे तो रिट की कोई ज़रूरत ही नहीं दिखती। आपके मुवक्किल को मुंसिफ़ मजिस्ट्रेट के पास जाना चाहिए था। अगर वह उनके फैसले से संतुष्ट नहीं होते, तो वे ज़िला न्यायाधीश के पास अपील कर सकते थे और फिर आगे की अपील के लिए यहाँ आ सकते थे। आपको इस अदालत का समय बर्बाद करने के बजाय उचित न्यायालय चुनने में थोड़ा समय लगाना चाहिए। रिट और मुकदमे दो बिल्कुल अलग चीज़ें हैं, युवक, दो बिल्कुल अलग चीज़ें।"

अदालत के बाहर, फ़िरोज़ गुस्से से आग बबूला था। उसने अपने मुवक्किल को सुनवाई में न आने की सलाह दी थी, और उसे इस बात का अफ़सोस था कि उसने ऐसा किया। वह खुद इस अन्याय से बहुत दुखी था। और मुख्य न्यायाधीश द्वारा उसे फटकार लगाना, यह संकेत देना कि उसने उचित मंच का ध्यान नहीं रखा—यह भी असहनीय था। उसने इसी न्यायाधीश के सामने, इसी अदालत में ज़मींदारी मामले की पैरवी की थी; मुख्य न्यायाधीश को पता होना चाहिए कि वह सतही तर्कों और बिना सोचे-समझे लिए गए फैसलों को पसंद नहीं करता। फ़िरोज़ को 'युवक' कहलाना भी पसंद नहीं था, जब तक कि वह किसी प्रशंसात्मक टिप्पणी

के संदर्भ में न कहा जाए।

प्राण, जिसका दिल विद्यार्थी के पक्ष में था, ने फिरोज के प्रति सहानुभूति जताई। उसने फिरोज के कंधे पर हाथ फेरा।

फिरोज ने अपने गले के चारों ओर बंधी पट्टियों को ढीला करते हुए कहा, "यही सही रास्ता है।" मानो ये पट्टियाँ उसके सिर में रक्त प्रवाह को रोक रही हों। "कुछ वर्षों में ऐसे मामलों में कानूनी नोटिस ही मान्य तरीका बन जाएँगे। मुकदमेबाजी बहुत धीमी प्रक्रिया है। सुनवाई होने तक अगस्त बीत चुका होगा।" वह रुका और जोश से बोला, "मुझे उम्मीद है कि जल्द ही उनके पास कानूनी नोटिसों की बाढ़ आ जाएगी।" फिर हल्की मुस्कान के साथ उसने कहा, "बेशक, तब तक यह बूढ़ा आदमी सेवानिवृत्त हो चुका होगा। वह और उसके सभी साथी।"

'ओह हाँ,' प्राण ने कहा। 'मुझे याद है मैं आपसे क्या पूछना चाहता था। मान कहाँ है?'

फिरोज ने खुशी से कहा, 'क्या वह वापस आ गया है? क्या वह यहाँ है?'

नहीं, मैं आपसे पूछ रहा हूँ। मैंने नहीं सुना और मुझे लगा कि शायद आपने सुना होगा।

'क्या मैं तुम्हारे भाई का रखवाला हूँ?' फ़िरोज़ ने पूछा। 'हाँ, एक तरह से, मैं हूँ ही,' उसने नरमी से कहा। 'या बनना चाहूँगा। लेकिन नहीं, मुझे कोई खबर नहीं मिली। मुझे लगा था कि वो अब तक यहाँ आ गया होगा, अपने भतीजे के साथ। लेकिन जैसा मैंने कहा, मुझे उससे कोई खबर नहीं मिली। उम्मीद है कोई चिंता की बात नहीं है?'

नहीं, नहीं, कुछ नहीं। मेरी माँ चिंतित हैं। आप जानते ही हैं कि माँएँ कैसी होती हैं।

फ़िरोज़ ने थोड़ी उदास मुस्कान दी, ठीक वैसे ही जैसे उसकी माँ मुस्कुराती हुआ करती थी। उस समय वह बेहद आकर्षक लग रहा था।

‘अच्छा,’ प्राण ने विषय बदलते हुए कहा। ‘क्या तुम अपने भाई के रखवाले हो? मैंने इम्तियाज को इतने दिनों से क्यों नहीं देखा? शायद तुम उसे पिंजरे से बाहर टहलने दे सकते हो।’

‘हम उन्हें खुद भी मुश्किल से देख पाते हैं, आप जानते हैं। वे हर समय किसी न किसी मरीज से मिलने में व्यस्त रहते हैं। उनका ध्यान आकर्षित करने का एकमात्र तरीका बीमार पड़ जाना है।’ और यहाँ फ़िरोज़ ने एक उर्दू शेर उद्धृत किया जिसमें बताया गया है कि प्रेमिका ही बीमारी और दवा दोनों है, और साथ ही वह डॉक्टर भी है जिसकी मुलाक़ात से सब कुछ सार्थक हो जाता है। यदि मुख्य न्यायाधीश सुन रहे होते तो वे यह कहने के लिए क्षमा किए जा सकते थे, ‘मुझे इस विशेष दलील की प्रासंगिकता समझ में नहीं आती।’

‘ठीक है, शायद मैं ऐसा ही करूँ,’ प्राण ने कहा। ‘मुझे आजकल अजीब तरह की थकान महसूस हो रही है, दिल के आसपास एक तरह का तनाव सा है—’

फ़िरोज़ हँस पड़ा। ‘वास्तविक बीमारी की सबसे अच्छी बात यह है कि यह आपको बीमारी का वहम करने की छूट देती है।’ फिर, अपना सिर एक तरफ झुकाते हुए उसने कहा: ‘दिल और फेफड़े दो बिल्कुल अलग चीजें हैं, नौजवान, दो बिल्कुल अलग चीजें।’

12.11

अगले दिन प्राण व्याख्यान दे रहे थे कि अचानक उन्हें कमजोरी और सांस फूलने लगी। उनका मन भी भटकने लगा, जो उनके लिए बहुत ही असामान्य बात थी। उनके छात्र हैरान रह गए और एक-दूसरे को देखने लगे। प्राण व्याख्यान मंच पर झुककर और कक्षा की दूर वाली दीवार को घूरते हुए बोलते रहे।

‘यद्यपि इन नाटकों में ग्रामीण परिवेश और शिकार के दृश्यों की भरमार है,

यहाँ तक कि “क्या आप शिकार पर जाएँगे, महाराज?” ये छह शब्द आपको तुरंत—’ प्राण रुके, फिर बोले: ‘आपको तुरंत शेक्सपियर की हास्य रचना की दुनिया में ले जाते हैं, फिर भी यह मानने का कोई ऐतिहासिक कारण नहीं है कि शेक्सपियर स्ट्रैटफ़ोर्ड छोड़कर लंदन इसलिए गए थे क्योंकि—क्योंकि—’ प्राण ने अपना सिर लेक्चर स्टैंड पर टिकाया, फिर ऊपर देखा। सब लोग एक-दूसरे को क्यों देख रहे थे? और अब उनकी नज़र पहली पंक्तियों पर पड़ी, जहाँ लड़कियाँ बैठी थीं। वहाँ मालती त्रिवेदी बैठी थीं। वह उनके व्याख्यान में क्या कर रही थीं? उन्होंने सामान्य तरीके से ‘उपस्थिति की अनुमति’ नहीं माँगी थी। उन्होंने अपना हाथ माथे पर फेरा। उपस्थिति दर्ज करते समय उन्होंने मालती पर ध्यान नहीं दिया था। लेकिन उपस्थिति दर्ज करते समय वह कभी भी अपनी बहीखाता से नज़र नहीं हटाते थे। कुछ लड़के खड़े हो गए थे। मालती भी खड़ी हो गई थीं। वे उन्हें वापस डेस्क पर ले जा रहे थे। अब उन्होंने उन्हें बिठा दिया था। ‘महोदय, क्या आप ठीक हैं?’ कोई कह रहा था। मालती उसकी नब्ज़ देख रही थी। तभी दरवाजे पर कोई आया— प्रोफेसर मिश्रा और एक आगंतुक जो पास से गुजर रहा था और अंदर झाँक रहा था। प्राण ने अपना सिर हिलाया। जैसे ही प्रोफेसर मिश्रा पीछे हटे, प्राण ने ये शब्द सुने: ‘... शौकिया नाट्यकला के शौकीन... हाँ, छात्रों में लोकप्रिय, लेकिन—’

‘कृपया यहाँ भीड़ न लगाएँ,’ मालती ने कहा। ‘श्री कपूर को ताज़ी हवा चाहिए।’

उस अजनबी लड़की की आवाज में व्याप्त अधिकार को सुनकर लड़के चौंक गए और थोड़ा पीछे हट गए।

‘मैं ठीक हूँ,’ प्राण ने कहा।

'आप हमारे साथ चलें तो बेहतर होगा,' मालती ने कहा।

‘मैं ठीक हूँ, मालती,’ प्राण ने अधीरता से कहा।
लेकिन वे उसे स्टाफ रूम तक ले गए और बिठा दिया। उसके कुछ सहकर्मियों ने छात्रों से कहा कि वे श्री कपूर का पूरा हाल सुनिश्चित करेंगे। कुछ देर बाद प्राण की हालत सामान्य हो गई, पर उसे समझ नहीं आ रहा था। उसे न तो खांसी आ रही थी और न ही सांस फूल रही थी। शायद गर्मी और उमस की वजह से ऐसा हो रहा था, उसने सोचा, लेकिन उसे यकीन नहीं हो रहा था। शायद यह सिर्फ ज्यादा काम करने की वजह से था, जैसा कि सविता ने कहा।
इस बीच, मालती ने प्राण के घर जाने का फैसला किया था। जब श्रीमती रूपा मेहरा ने उसे दरवाजे पर देखा, तो उनका चेहरा खुशी से चमक उठा। फिर उन्हें याद आया कि शायद मालती ने ही लता को नाटक में लिया था, और वे थोड़ा परेशान हो गईं। लेकिन मालती चिंतित लग रही थी, जो उसके लिए एक असामान्य भाव था, और श्रीमती रूपा मेहरा ने सहानुभूतिपूर्वक चिंता जताते हुए मुश्किल से ही पूछा था, 'क्या कुछ गड़बड़ है?' तभी मालती ने पूछा:
‘सविता कहाँ है?’
‘अंदर आ जाओ। अंदर आओ। सविता, मालती तुमसे मिलने आई है।’
‘हेलो, मालती,’ सविता ने मुस्कुराते हुए कहा। फिर, कुछ गड़बड़ महसूस करते हुए, उसने पूछा: ‘क्या तुम ठीक हो? क्या लता ठीक है?’
मालती बैठ गई, खुद को संभाला ताकि सविता को अनावश्यक रूप से परेशान न करे, और बोली:
मैं अभी प्राण द्वारा दिए जा रहे एक व्याख्यान में भाग ले रहा था—
'आप प्राण के व्याख्यान में क्यों शामिल हो रहे थे?' श्रीमती रूपा मेहरा ने यह सवाल पूछे बिना नहीं रह सकीं।
‘यह शेक्सपियर की कॉमेडी पर आधारित था, माँ,’ मालती ने कहा। ‘मुझे

लगा कि इससे मुझे नाटक में अपनी भूमिका को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी।' श्रीमती रूपा मेहरा का मुंह बंद हो गया, लेकिन उन्होंने आगे कुछ नहीं कहा, और मालती ने बोलना जारी रखा:

"अब सविता, घबराओ मत, लेकिन व्याख्यान देते समय उन्हें थोड़ी बेहोशी सी महसूस हुई और उन्हें बैठना पड़ा। मैंने बाद में कुछ लड़कों से बात की और उन्होंने बताया कि कुछ दिन पहले भी ऐसा ही कुछ हुआ था, लेकिन वह सिर्फ एक सेकंड के लिए ही था और उन्होंने व्याख्यान जारी रखने पर जोर दिया था।"

श्रीमती रूपा मेहरा, जो अब इतनी चिंतित थीं कि लड़कों से इतनी खुलकर बात करने के लिए मालती को मन ही मन भी डांट नहीं पा रही थीं, बोलीं: 'वह कहाँ है? क्या वह ठीक है?'

सविता ने कहा, 'क्या उसे खांसी आ रही थी? क्या उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही थी?'

नहीं, उन्हें खांसी नहीं आ रही थी, लेकिन वे थोड़े हांफ रहे थे। मुझे लगता है उन्हें डॉक्टर से मिलना चाहिए। और शायद, अगर वे भाषण देने पर अड़े हैं, तो उन्हें बैठकर भाषण देना चाहिए।

'लेकिन वो तो नौजवान है, मालती,' सविता ने अपने पेट पर हाथ रखते हुए कहा, मानो वो बच्चे को इस बातचीत से बचाना चाहती हो। 'वो सुनता ही नहीं। वो ज़रूरत से ज़्यादा काम करता है, और मैं उसे अपने काम को कम गंभीरता से लेने के लिए मना नहीं सकती।'

'अगर वो किसी की बात सुनेगा, तो सिर्फ तुम्हारी ही सुनेगा,' मालती ने उठकर सविता के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा। 'मुझे लगता है उसे थोड़ा सदमा लगा है; शायद अब उससे बात करने का सबसे अच्छा समय है। उसे सिर्फ अपने कर्तव्यों के बारे में ही नहीं, तुम्हारे और बच्चे के बारे में भी सोचना होगा। अब मैं वापस जाकर देखूंगी कि वो तुरंत रिक्शा से घर आ

जाए।’

अगर सविता को पीछे छोड़ना न पड़ता, तो श्रीमती रूपा मेहरा प्राण को बचाने के लिए खुद अंग्रेजी विभाग में चली जातीं। सविता सोच रही थी कि वह अपने पति को क्या बताए जिससे उसकी अब तक की विनतियों से कहीं अधिक प्रभाव पड़े। प्राण में जिद्दीपन और कर्तव्य की एक अजीब सी भावना थी, और हो सकता है कि वह इन्हीं के बल पर अपनी बात पर अड़ा रहे।

12.12

इस समय प्राण का दृढ़ निश्चय स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। प्राण स्टाफ रूम में प्रोफेसर मिश्रा के साथ अकेले थे। प्रोफेसर मिश्रा ने, हालांकि उन्हें ज्यादा हैरानी नहीं हुई, यह जान लिया था कि कक्षा के दरवाजे से गुजरते समय उन्होंने जो दृश्य देखा था, वह शेक्सपियर का कोई नाटक नहीं, बल्कि वास्तविक जीवन था। प्राण को हर बात की जानकारी रखना पसंद था, इसलिए उन्होंने छात्रों से कुछ प्रश्न पूछे। उन्होंने अपने साथ आए आगंतुक को विभागाध्यक्ष के कार्यालय में बैठाया और स्टाफ रूम की ओर चले गए।

घंटी बज ही रही थी कि प्राण के सहकर्मी असमंजस में थे कि प्राण को छोड़कर अपने व्याख्यानों में चले जाएं या नहीं, तभी प्रोफेसर मिश्रा अंदर आए, उन सभी को और प्राण को देखकर मुस्कुराए और बोले: 'मरीज को मेरे भरोसे छोड़ दो। मैं उसकी हर इच्छा पूरी करूंगा। कैसे हो, प्यारे बच्चे? मैंने चपरासी से तुम्हारे लिए चाय लाने को कहा है।'

प्राण ने कृतज्ञतापूर्वक सिर हिलाया। 'धन्यवाद, प्रोफेसर मिश्रा। मुझे नहीं पता कि मुझे क्या हो गया था। मुझे यकीन है कि मैं व्याख्यान देना जारी रख सकता था, लेकिन मेरे छात्र, आप जानते हैं—'

प्रोफेसर मिश्रा ने अपना विशाल, पीला हाथ प्राण के हाथ पर रखा। उन्होंने

कहा, ‘लेकिन आपके छात्र आपकी इतनी रक्षा करते हैं, इतनी रक्षा।’
‘यही तो अध्यापन का आनंद है—अपने छात्रों से जुड़ाव। उन्हें व्याख्यान में प्रेरित करना, उन्हें पैंतालीस मिनट बाद यह सोचने पर मजबूर करना कि उनके लिए दुनिया बदल गई है, कि हर पल कुछ नया है। उनके लिए कविता का सार खोल देना—आह! किसी ने मुझसे कुछ दिन पहले कहा था कि वे मुझे उन शिक्षकों में से एक मानते हैं जिनके व्याख्यान छात्र कभी नहीं भूलते—देब या दस्तूर या खलीलुद्दीन अहमद जैसे महान शिक्षक। उन्होंने कहा, मैं व्याख्यान मंच पर एक प्रभावशाली व्यक्तित्व था। अभी कुछ देर पहले ही मैं मद्रास विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जयकुमार को, जिन्हें मैं अपने विभाग का दौरा करा रहा था, बता रहा था कि यह एक ऐसी प्रशंसा है जिसे मैं कभी नहीं भूलूंगा। आह, लेकिन मेरे प्रिय मित्र, मुझे आपके छात्रों की बात करनी चाहिए, अपने छात्रों की नहीं। उनमें से कई उस आकर्षक और बेहद सक्षम लड़की से बहुत प्रभावित थे जिसने कुछ समय पहले कार्यभार संभाला था। वह कौन थी? क्या आपने उसे पहले कभी देखा था?’
'मालती त्रिवेदी,' प्राण ने कहा।
प्रोफेसर मिश्रा ने आगे कहा, 'मुझे पता है कि यह मेरा मामला नहीं है, लेकिन जब उन्होंने उपस्थित होने की अनुमति मांगी, तो उन्होंने क्या कारण बताया? यह हमेशा सुखद होता है जब किसी की प्रसिद्धि उसके विभाग से बाहर फैलती है। मुझे लगता है कि मैंने उन्हें पहले कहीं देखा है।'
प्राण ने कहा, 'मुझे समझ नहीं आ रहा कि कहाँ।' फिर अचानक उसे झटके से याद आया कि शायद होली के भयानक जलमग्न होने के समय ही हुआ होगा।
‘माफ़ कीजिए, प्रोफ़ेसर मिश्रा, मुझे आपका सवाल समझ नहीं आया,’

प्राण ने कहा, जिसे ध्यान केंद्रित करने में मुश्किल हो रही थी। गुलाबी पानी से भरे टब में प्रोफ़ेसर मिश्रा के छटपटाने की छवि उसके दिमाग में बार-बार उभर रही थी।

'अरे, चिंता मत करो, चिंता मत करो। बाद में इन सब बातों के लिए काफी समय है,' प्राण के चेहरे पर दिख रही घबराहट और लगभग हंसी जैसे भावों को देखकर प्रोफेसर मिश्रा हैरान रह गए और बोले, 'अरे, ये रही चाय।' विनम्र चपरासी ने उनकी काल्पनिक इच्छाओं का सम्मान करते हुए ट्रे को आगे-पीछे किया, और प्रोफेसर मिश्रा ने आगे कहा: 'लेकिन आप जानते हैं, मुझे कुछ समय से लग रहा है कि आपके ये कर्तव्य वाकई काफी बोझिल हैं। बेशक, इनमें से कुछ को टालना मुश्किल है। उदाहरण के लिए, विश्वविद्यालय के कर्तव्य। मैंने आज सुबह ही सुना कि मारह के राजा का बेटा कल आपसे उस दुर्भाग्यपूर्ण झगड़े के सिलसिले में मिलने आया था जिसमें वह फंस गया था। अब बेशक, अगर उसके खिलाफ कुछ किया गया तो राजा खुद बहुत नाराज हो जाएगा, वह तो काफी उत्तेजित स्वभाव का आदमी है, है ना? आप जिस समिति में हैं, उसमें तो दुश्मन बन ही जाते हैं। लेकिन सत्ता को स्वीकार करने की अपनी कीमत होती है, और इंसान को अपना कर्तव्य निभाना ही चाहिए। "ईश्वर की वाणी की कठोर पुत्री!" लेकिन, बेशक, इसका असर किसी के शिक्षण पर अवश्य ही पड़ेगा।

प्राण ने सिर हिलाया।

'विभागीय कर्तव्य तो बिल्कुल अलग बात है,' प्रोफेसर मिश्रा ने आगे कहा। 'मैंने फैसला किया है कि अगर आप पाठ्यक्रम समिति से मुक्त होना चाहते हैं...' प्राण ने सिर हिलाया। प्रोफेसर मिश्रा ने आगे कहा: 'अकादमिक परिषद में मेरे कुछ सहयोगियों ने मुझसे खुलकर कहा है कि उन्हें आपकी सिफारिशें—मेरा मतलब हमारी सिफारिशें—बिल्कुल

अस्वीकार्य लगती हैं। जॉयस, आप जानते ही हैं—एक अजीब आदतों वाला आदमी।' उन्होंने प्राण के चेहरे की ओर देखा और पाया कि उसकी बात में कोई प्रगति नहीं हो रही थी।

प्राण ने अपनी चाय को हिलाया और एक घूंट लिया।

उन्होंने कहा, 'प्रोफेसर मिश्रा, मैं आपसे पूछना चाहता था: क्या चयन समिति का गठन हो चुका है?'

'चयन समिति?' प्रोफेसर मिश्रा ने मासूमियत से पूछा।

'रिक्त पाठक वर्ग पर निर्णय लेना।' सविता पिछले कुछ समय से प्राण से इस विषय पर सवाल कर रही थी।

'खैर,' प्रोफेसर मिश्रा ने कहा, 'समय लगता है, समय लगता है। रजिस्ट्रार आजकल बहुत व्यस्त हैं। लेकिन जैसा कि आप जानते हैं, हमने विज्ञापन जारी कर दिया है और हमें उम्मीद है कि सभी आवेदन जल्द ही प्राप्त हो जाएंगे। मैंने कुछ आवेदनों पर नज़र डाली है और वे बहुत अच्छे हैं, वाकई बहुत अच्छे। उत्कृष्ट योग्यताएं, उत्कृष्ट शिक्षण योग्यताएं।'

उन्होंने प्राण को कुछ कहने का मौका देने के लिए विराम लिया, लेकिन प्राण दृढ़तापूर्वक चुप रहे।

'ठीक है,' प्रोफेसर मिश्रा ने कहा। 'मैं आप जैसे नौजवान को हतोत्साहित नहीं करना चाहता, लेकिन मेरा मानना है कि एक-दो साल में, जब आपका स्वास्थ्य ठीक हो जाएगा और बाकी सब कुछ स्थिर हो जाएगा—' उन्होंने प्राण की ओर मीठी मुस्कान के साथ देखा।

प्राण ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। चाय की एक और घूंट लेने के बाद उसने कहा, 'प्रोफेसर जी, आपको क्या लगता है कि समिति की बैठक कब होगी?'

'अरे, अब ये कहना मुश्किल है, बहुत मुश्किल। हम पटना विश्वविद्यालय जैसे नहीं हैं, जहाँ विभागाध्यक्ष बिहार लोक सेवा आयोग के कुछ लोगों

को समिति में बिठा सकते हैं, हालाँकि मुझे मानना पड़ेगा कि उस व्यवस्था के भी कुछ फायदे हैं। हमारे यहाँ समिति सदस्यों के चयन की यह अनावश्यक रूप से जटिल प्रक्रिया है: विशेषज्ञों के पैनल से दो सदस्य—और कुलाधिपति का नामित व्यक्ति—और इसी तरह आगे। मद्रास के प्रोफेसर जयकुमार, जिन्होंने अभी-अभी आपका'—वे 'प्रदर्शन' कहने ही वाले थे, लेकिन खुद को रोक लिया—'आपकी परेशानी देखी, हमारे विशेषज्ञों के पैनल में हैं। लेकिन उनके लिए ब्रह्मपुर आने का जो समय सुविधाजनक हो, हो सकता है कि पैनल के किसी और सदस्य के लिए वह सुविधाजनक न हो। और अब, जैसा कि आप जानते हैं, कुलपति स्वयं इतने अस्वस्थ हैं कि वे सेवानिवृत्ति की बात कर रहे हैं। बेचारे, उन्हें चयन समितियों की अध्यक्षता करने का भी समय मुश्किल से मिलता है। हर काम में समय लगता है। खैर, खैर, मुझे यकीन है कि आप मेरी स्थिति समझते होंगे।' और प्रोफेसर मिश्रा ने अपने बड़े पीले हाथों को उदास निगाहों से देखा।

'उसके साथ, तुम्हारे साथ, या मेरे साथ?' प्राण ने हल्के से पूछा।

'कितना तीखा!' प्रोफेसर मिश्रा ने कहा। 'मैंने इस बारे में सोचा ही नहीं था। एक उपजाऊ अस्पष्टता। खैर, मुझे उम्मीद है कि हम सभी में ऐसा ही होता है। सहानुभूति उदारतापूर्वक देने से खत्म नहीं होती। फिर भी, दुनिया में सच्ची सहानुभूति बहुत कम है। लोग हमेशा दूसरों को वही बताते हैं जो वे सुनना चाहते हैं, न कि वह जो उन्हें लगता है कि वास्तव में दूसरे व्यक्ति के हित में है। अब, उदाहरण के लिए, अगर मैं आपको पाठक के पद के लिए अपना आवेदन वापस लेने की सलाह दूं—'

'—मैं ऐसा नहीं करूंगा,' प्राण ने बात पूरी की।

'तुम्हारी सेहत, मेरे प्यारे बेटे। मैं सिर्फ तुम्हारी सेहत के बारे में सोच रहा हूँ। तुम खुद पर बहुत ज्यादा दबाव डाल रहे हो। ये सारे लेख जो तुम

प्रकाशित कर रहे हो—' उन्होंने हल्के से फटकार लगाते हुए सिर हिलाया।
प्राण ने कहा, 'प्रोफेसर मिश्रा, मैंने अपना मन बना लिया है। मैं चाहता हूं कि मेरा नाम आगे बढ़े। मैं समिति के सामने अपनी किस्मत आजमाऊंगा। मुझे पता है कि आप मेरा साथ देंगे।'
प्रोफेसर के चेहरे पर एक पल के लिए निर्मम क्रूरता का भाव आया। लेकिन जब उन्होंने प्राण की ओर रुख किया तो उनका चेहरा पूरी तरह से शांत और सौम्य हो गया।
'बिल्कुल, बिल्कुल,' उसने कहा। 'थोड़ी और चाय?'
सौभाग्यवश, जब मालती दरवाजे पर आई, तब तक प्रोफेसर मिश्रा प्राण को अकेला छोड़कर जा चुके थे। उसने प्राण को बताया कि सविता घर पर उसका इंतजार कर रही है और उसे बाहर खड़ी रिक्शा से घर जाना है।
'लेकिन यह तो कैंपस के ठीक सामने है,' प्राण ने विरोध किया। 'सच में, मालती, मैं अभी अपाहिज नहीं हुआ हूँ। मैं कल प्रेम निवास तक पैदल चलकर गया था।'
'श्रीमती कपूर का आदेश है, महोदय,' मालती ने कहा। प्राण ने कंधे उचकाए और आदेश का पालन किया।
जब वह घर पहुँचा तो उसकी सास रसोई में थी। उसने सविता को बैठे रहने को कहा और प्यार से उसे अपनी बाहों में भर लिया।
'तुम इतने जिद्दी क्यों हो?' उसने उससे कहा, उसकी कोमलता ने उसकी चिंता को फिर से बढ़ा दिया।
प्राण ने फुसफुसाते हुए कहा, 'हम सब ठीक हो जाएंगे। हम सब ठीक हो जाएंगे।'
'मैं डॉक्टर को बुलाने जा रही हूं,' सविता ने कहा।
प्राण ने कहा, 'अपने लिए, मेरे लिए नहीं।'
'प्राण, मैं इस पर जोर देने वाला हूँ। अगर तुम मेरी परवाह करते हो, तो

कभी-कभी मेरी सलाह मानोगे।’
‘लेकिन मेरा जादुई मालिश करने वाला कल आ रहा है। वह मेरे शरीर और मन दोनों को ठीक कर देता है।’ सविता को चिंतित देखकर उसने कहा: ‘मैं आपको बताता हूँ—अगर उसकी मालिश के बाद भी मुझे आराम नहीं मिला, तो मैं डॉक्टर से मिलूंगा। कैसा रहेगा?’
'कुछ न होने से तो बेहतर है,' सविता ने कहा।
12.13
'यह कौशल भगवान शिव का वरदान है—यह मुझे एक दर्शन में—एक सपने में—अचानक प्राप्त हुआ, धीरे-धीरे नहीं।'
मालिश करने वाला, मगगु गोपाल, एक मजबूत और गठीला आदमी था, जो प्राण के पूरे शरीर पर तेल से मालिश कर रहा था। उसकी उम्र लगभग साठ वर्ष थी, उसके बाल छोटे-छोटे कटे हुए और भूरे थे, और वह लगातार बड़बड़ा रहा था जिससे प्राण को बहुत सुकून मिल रहा था। प्राण बरामदे में तौलिए पर पेट के बल लेटा हुआ था और उसने केवल अंडरवियर पहना हुआ था। मालिश करने वाले ने अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ा रखी थीं और वह प्राण की गर्दन की कुछ हद तक ढीली मांसपेशियों को दृढ़ता से दबा रहा था।
‘ऐ!’ प्राण थोड़ा छटपटाते हुए बोला—‘दर्द हो रहा है।’ उसने अंग्रेज़ी में बात की, क्योंकि मगगु गोपाल की सारी बातें अंग्रेज़ी में ही होती थीं, बस हिंदी के कुछ उद्धरण होते थे। प्राण को उसके एक दोस्त ने उस जादुई मालिश करने वाले के बारे में बताया था, और वह हफ्ते में दो बार आने के लिए राज़ी हो गया था। मालिश करने वालों के हिसाब से वह थोड़ा महंगा था, लेकिन उसने प्राण की छह बार मालिश की थी, और प्राण को हर बार उसके आने के बाद अच्छा महसूस होता था।
‘अगर तुम हमेशा चलते रहोगे तो सुधार कैसे करोगे?’ यह सवाल मैगगु

गोपाल ने पूछा, जिसे अपने अनोखे अंदाज में दोहे सुनाने का शौक था।
प्राण ने आज्ञा का पालन किया और स्थिर रहा।
'मैं उच्च वर्ग के लोगों का मालिशकर्ता रहा हूँ—मुख्यमंत्री शर्मा, कुछ उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, दो गृह सचिव और कई अंग्रेज भी। और इन सभी गणमान्य व्यक्तियों के हाथ के निशान मेरे पास हैं। यह सब भगवान शिव की कृपा है—आप जानते हैं, नाग देव'—उन्होंने महसूस किया कि प्राण को, अंग्रेजी के शिक्षक के रूप में, ऐसी व्याख्याओं की आवश्यकता थी—'गंगा के देवता और महान चंद्रचूड़ मंदिर के देवता, जो अब चौक में प्रतिदिन उत्थान कर रहा है।'
कुछ देर पिटाई के बाद, उन्होंने कहा:
'यह तिल का तेल बहुत अच्छा है—इसमें गर्माहट देने वाले गुण हैं। मेरे अमीर ग्राहक भी हैं—कलकत्ता के कई मारवाड़ी मुझे जानते हैं। वे अपने शरीर का ध्यान नहीं रखते। लेकिन मैं कहता हूँ कि शरीर एक बेहतरीन पुरानी कार की तरह है, जिसके पुर्जे बाज़ार में नहीं मिलते। इसलिए इसे किसी कुशल इंजीनियर से सेवा और रखरखाव की ज़रूरत है, यानी'—और यहाँ उन्होंने अपनी ओर इशारा किया—'मग्गू गोपाल। और आपको खर्च की चिंता नहीं करनी चाहिए। क्या आप अपनी स्विस घड़ी किसी नाकाबिल चौकीदार को देंगे क्योंकि वह कम पैसे ले रहा है? कुछ लोग कभी-कभी रामू या शामू जैसे नौकरों को मालिश के लिए बुलाते हैं। उन्हें लगता है कि मालिश तेल में ही होती है।'
वह रुका, पेशेवर अंदाज में प्राण की पिंडलियों पर घूंसे मारे, फिर बोला:
तेल की बात करें तो, सरसों का तेल अच्छा नहीं होता—और मालिश में इसका इस्तेमाल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिबंधित है। इससे दाग भी लग जाते हैं। रोमछिद्रों को सांस लेने की जरूरत होती है। श्री प्राण, इस मौसम में भी आपके पैर ठंडे रहते हैं। यह कमजोर तंत्रिका तंत्र का संकेत है।

आप बहुत ज्यादा सोचते हैं।
'हां, मैं करता हूं,' प्राण ने स्वीकार किया।
'बहुत ज्यादा शिक्षा अच्छी नहीं होती,' मग्गू गोपाल ने कहा। 'नौवीं कक्षा, मैट्रिक पास नहीं; फिर भी किसी तरह मैं काम चला लेता हूँ।'
उसने प्राण का सिर हिंसक रूप से घुमाया और उसकी आंखों में सीधे देखा।
'आपकी ठुड्डी पर यह फोड़ा दिख रहा है—यह एक संकेत है—मैं इसे संकेत नहीं कहूंगा, बल्कि कब्ज का संकेत है—कब्ज की प्रवृत्ति का। सभी विचारक लोगों में—अर्थात, सभी चिंतनशील लोगों में—यह प्रवृत्ति होती है। इसलिए आपको दिन में दो बार पपीता खाना चाहिए और एक हल्की रेचक गोली लेनी चाहिए—और बिना दूध की चाय, शहद और नींबू के साथ पीनी चाहिए। और आप बहुत सांवले हैं—भगवान शिव की तरह —लेकिन इसके बारे में कुछ नहीं किया जा सकता।'
प्राण ने यथासंभव सिर हिलाकर सहमति दी। उस जादुई मालिश करने वाले ने उसका सिर छोड़ा और अपना काम जारी रखा।
'विचारशील लोग, चाहे वे उबला हुआ और हल्का भोजन ही क्यों न खाएं, उन्हें कब्ज हो जाएगी—उनका पेट नरम नहीं रहेगा। लेकिन आपके रिक्शावाले और नौकर, चाहे वे तला हुआ भोजन ही क्यों न खाएं, उन्हें कब्ज नहीं होगी—क्योंकि वे शारीरिक श्रम करते हैं। हमेशा याद रखें:
जोड़ी गरम, पेट नरम, सर ठंडा
Doctor aaye to maro danda!
मैंने इस कहावत का अनुवाद अंग्रेजों के लिए किया है:
ठंडा सिर, नरम पेट, गर्म पैर।
अगर डॉक्टर आए तो तुम उसे पीट सकते हो!
प्राण मुस्कुराया। उसे पहले से बेहतर महसूस हो रहा था। उसके मूड में

आए बदलाव को भांपते हुए उस जादुई मालिश करने वाले ने उससे पूछा कि वह उदास क्यों था।
‘लेकिन मैं दुखी नहीं था,’ प्राण ने कहा।
नहीं, नहीं, तुम उदास थे।
‘Really, Mr Maggu Gopal.’
‘तो फिर आप चिंतित हैं।’
'नहीं - नहीं-'
‘क्या यही आपका कामकाजी जीवन है?’
'नहीं।'
‘आपका वैवाहिक जीवन?’
'नहीं।'
उस जादुई मालिश करने वाले को संदेह हुआ।
प्राण ने स्वीकार किया, 'मुझे हाल ही में कुछ स्वास्थ्य समस्याएं हुई हैं।'
‘ओह, सिर्फ़ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ?’ जादुई मालिश करने वाले ने कहा। ‘यह सब आप मुझ पर छोड़ सकते हैं। याद रखें, शहद आपका देवता है। आपको हमेशा चीनी की जगह शहद का प्रयोग करना चाहिए।’
‘क्योंकि शहद में गर्माहट देने वाले गुण होते हैं?’ प्राण ने सुझाव दिया।
‘बिल्कुल!’ मग्गू गोपाल ने कहा। ‘और हां, सूखे मेवे खूब खाने चाहिए, खासकर पिस्ता, जो बहुत गर्म होता है। लेकिन आप तरह-तरह के सूखे मेवे भी खा सकते हैं। सहमत हैं?’
‘सहमत!’ प्राण ने कहा।
‘और गर्म पानी से टब में स्नान करें, और धूप सेंकें: धूप में बैठें और सूर्य की ओर मुख करें। गायत्री मंत्र का जाप करें।’
‘आह।’
‘लेकिन ये तो तुम्हारा ही काम है, मैं देख सकता हूँ।’ मग्गू गोपाल ने प्राण

का हाथ उसी दर्द भरी ताकत से पकड़ा, जिस ताकत से उसने उसका सिर घुमाया था। उसने ध्यान से उसका निरीक्षण किया। थोड़ी देर बाद उसने गंभीर स्वर में कहा: 'तुम्हारा हाथ वाकई अद्भुत है। तुम्हारी सफलता की कोई सीमा नहीं है।'

'सचमुच?' प्राण ने कहा।

सचमुच। निरंतरता! यही किसी भी कला में सफलता का रहस्य है। निपुणता प्राप्त करने के लिए, आपका एक ही लक्ष्य होना चाहिए—एक ही राह—निरंतरता।

'जी हां, बिलकुल,' प्राण ने कहा, और कई अन्य बातों के साथ-साथ अपने बच्चे, अपनी पत्नी, अपने भाई, अपने भतीजे, अपनी बहन, अपने पिता, अपनी मां, विभाग, अंग्रेजी भाषा, देश के भविष्य, भारतीय क्रिकेट टीम और अपने स्वास्थ्य के बारे में सोच रहा था।

स्वामी विवेकानंद का एक कथन है: "उठो! जागो! तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए!"' उस जादुई मालिश करने वाले ने प्राण को आश्वस्त करते हुए मुस्कुराया।

प्राण ने अपना सिर एक तरफ घुमाते हुए कहा, 'श्री मग्गू गोपाल, मुझे बताइए, क्या आप मेरे हाथ देखकर बता सकते हैं कि मुझे बेटी होगी या बेटा?'

'कृपया पलट जाइए,' मग्गू गोपाल ने कहा। उन्होंने प्राण के दाहिने हाथ की दोबारा जाँच की। 'हाँ,' उन्होंने मन ही मन कहा।

पीठ के बल लेटने से प्राण को खांसी आने लगी, लेकिन मगगु गोपाल ने इस पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वह अपने हाथ को घूरने में इतना मग्न था।

'अब देखो,' उसने कहा, 'तुम्हें, या यों कहें कि तुम्हारी पत्नी को एक बेटी होगी।'

लेकिन मेरी पत्नी को पूरा यकीन है कि उसे बेटा होगा।
'मेरी बात याद रखना,' उस जादुई मालिश करने वाले ने कहा।
‘ठीक है,’ प्राण ने कहा, ‘लेकिन मेरी पत्नी लगभग हमेशा सही होती है।’
‘क्या आपका वैवाहिक जीवन सुखमय है?’ मग्गू गोपाल ने पूछा।
‘You tell me, Mr Maggu Gopal,’ said Pran.
मग्गू गोपाल ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'तुम्हारे हाथ में लिखा है कि तुम्हारा वैवाहिक जीवन एक कॉमेडी होगा।'
'ओह अच्छा।'
'जी हां, आप देख सकते हैं—आपका बुध ग्रह बहुत मजबूत है।'
प्राण ने कहा, 'मुझे लगता है कि मैं नियति से बच नहीं सकता।'
इस शब्द का मग्गू गोपाल पर जादुई असर हुआ। वह थोड़ा पीछे हट गया और प्राण की छाती की ओर उंगली करके बोला, 'किस्मत!' और प्राण की ओर देखकर मुस्कुराया। 'बस यही है।' थोड़ी देर रुककर उसने आगे कहा: हर सफल पुरुष के पीछे एक महिला होती है। नेपोलियन के पीछे जोसेफिन थीं। ऐसा नहीं है कि शादी करना जरूरी है। मैं ऐसा नहीं मानता। वास्तव में, मेरा अनुमान है कि आपके जीवन में शादी से पहले भी शुभ महिलाएं रही हैं और शादी के बाद भी आती रहेंगी।
प्राण ने दिलचस्पी से, लेकिन कुछ डरते हुए कहा, 'सच में? क्या मेरी पत्नी को यह पसंद आएगा? मुझे डर है कि कहीं मेरी जिंदगी एक अजीब तरह की कॉमेडी न बन जाए।'
‘अरे नहीं, नहीं,’ जादुई मालिश करने वाले ने आश्वस्त करते हुए कहा। ‘वह बहुत सहनशील होगी। लेकिन महिलाओं का शुभ होना जरूरी है। गंदे पानी से बनी चाय पीने से आप बीमार पड़ जाएंगे। लेकिन उत्तम पानी से बनी चाय पीने से आपको ताजगी मिलेगी।’
मग्गू गोपाल प्राण को कुछ देर तक एकटक देखता रहा। यह देखकर कि

प्राण बात समझ गया है, उसने आगे कहा:
'प्रेम रंगभेद नहीं देखता। जाति मायने नहीं रखती। यह कर्म है—जिसका अर्थ है ईश्वर की इच्छा के अनुसार कर्म करना।'
'भगवान का क्रोध?' प्राण ने अचंभित होकर कहा, इससे पहले कि वह समझ पाता कि मगगु गोपाल क्या कहना चाह रहा है।
'जी हां, जी हां,' उस जादुई मालिश करने वाले ने प्राण की उंगलियों को एक-एक करके खींचते हुए कहा, जब तक कि उनमें से चटकने और टूटने की आवाजें नहीं आने लगीं। 'सुबह चाय लाने के लिए—या सेक्स के लिए—या किसी और चीज के लिए—शादी नहीं करनी चाहिए।'
'आह,' प्राण ने अचानक ज्ञानोदय का अनुभव करते हुए कहा, 'बस दिन-प्रतिदिन जीने के लिए ही तो काफी है।'
'आज! जी हाँ! कल या आने वाले कल के लिए मत जियो।'
'मेरा मतलब दिन-प्रतिदिन की बात थी,' प्राण ने समझाया।
'हां, हां, सब एक जैसा ही है। बच्चों के साथ पारिवारिक जीवन एक कॉमेडी है, आज भी, कल भी और आने वाले कल भी।'
'और मेरे कितने बच्चे होंगे?' प्राण ने पूछा। हाल ही में वह सोचने लगा था कि क्या उसे इस दुनिया में एक बच्चे को लाना भी चाहिए, नफरत, षड्यंत्र, गरीबी और शीत युद्ध की इस भयानक दुनिया में—एक ऐसी दुनिया जो उसके अपने अशांत बचपन से भी अलग थी, क्योंकि अब तो स्वयं पृथ्वी की सुरक्षा ही खतरे में थी।
"अरे, सही संख्या तो पत्नी के हाथ में है," मालिश करने वाले ने खेद से कहा। "लेकिन एक बार एक बच्चे के जन्म से जीवन में खुशी आ जाए, तो यह एक टॉनिक, एक च्यवनप्राश की तरह होता है—और फिर संतानोत्पत्ति की कोई सीमा नहीं रहती।"
प्राण ने कहा, 'दो या तीन काफी होंगे।'

लेकिन आपको मालिश जारी रखनी होगी। शरीर में आवश्यक तरल पदार्थों का संतुलन बनाए रखने के लिए।
‘ओह हाँ!’ प्राण ने सहमति जताई।
यह सभी लोगों के लिए अत्यंत आवश्यक है।
‘लेकिन मालिश करने वाले की मालिश कौन करता है?’ प्राण ने पूछा।
श्री मग्गू गोपाल ने कुछ नाराज़गी जताते हुए कहा, 'मैं तिरसठ वर्ष का हूँ। मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है। अब कृपया मुड़ जाइए।'
12.14
जब मान ब्रह्मपुर लौटा, तो वह सीधे बैतर हाउस की ओर चल पड़ा। शाम का समय था और फ़िरोज़ उससे मिला। वह मान को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ, लेकिन थोड़ा असहज भी लग रहा था, खासकर जब उसने देखा कि मान अपने साथ अपना सामान भी लाया है।
'मैंने सोचा था कि मैं यहीं रुक जाऊंगा,' मान ने अपने दोस्त को गले लगाते हुए कहा।
‘घर पर नहीं हो?’ फ़िरोज़ ने पूछा। ‘हे भगवान, तुम कितने झुलसे हुए और बेहाल दिख रहे हो।’
‘क्या स्वागत है!’ मान ने बिना किसी नाराज़गी के कहा। ‘नहीं, यही सबसे अच्छा है—मतलब, अगर आपको कोई आपत्ति न हो। क्या आपको अपने पिता से पूछना पड़ेगा? बात यह है कि मैं एक ही समय में अपने पिता और बाकी सब कुछ संभाल नहीं सकता।’
फिरोज ने मुस्कुराते हुए कहा, 'बेशक आपका स्वागत है।' 'बाकी सब चीजों' की ओर इशारा करते हुए उसने आगे कहा, 'अच्छा। मैं गुलाम रसूल से कहूँगा कि वह आपके सामान को आपके कमरे में रख दे— उसी कमरे में जिसमें आप आमतौर पर रहते हैं।'
‘धन्यवाद,’ मान ने कहा।

मुझे उम्मीद है कि आप कुछ देर रुकेंगे। मेरा इरादा आपको अपमानित करने का नहीं था। मुझे बस यह उम्मीद नहीं थी कि आप घर के बजाय यहाँ रुकना चाहेंगे। मुझे खुशी है कि आप यहाँ हैं। अब अंदर आइए, हाथ-मुँह धो लीजिए और मेरे साथ रात का खाना खाइए।

लेकिन मान ने रात के खाने से मना कर दिया।

‘ओह, माफ कीजिए,’ फिरोज ने कहा, ‘मैं सोच नहीं रहा था। आप अभी तक घर नहीं आए हैं।’

‘खैर,’ मान ने कहा। ‘मैं घर जाने के बारे में नहीं सोच रहा था।’

फिरोज ने पूछा, 'तो फिर कहाँ?' 'ओह, मैं समझ गया।'

‘इतना असंतोष मत जताओ। मैं बेसब्री से इंतजार कर रहा हूँ। मैं बहुत उत्साहित हूँ!’

फ़िरोज़ ने गंभीरता से कहा, 'मैं इससे सहमत नहीं हूँ। आपको पहले घर जाना चाहिए।'

खैर, मैंने यह सुनिश्चित कर लिया कि आपका पत्र उस तक पहुँच जाए,’ उसने आगे कहा, मानो वह इस विषय पर और बात नहीं करना चाहता हो।

'मुझे लगता है कि आप खुद सईदा बाई में दिलचस्पी रखते हैं, और मुझे उससे दूर रखने की कोशिश कर रहे हैं,' मान ने अपने ही मजाक पर हंसते हुए कहा।

‘नहीं—नहीं—’ फ़िरोज़ ने कुछ हद तक अविश्वास भरे लहजे में कहा। वह तसनीम के बारे में लंबी चर्चा नहीं करना चाहता था, जिसने उस पर एक हल्का और कोमल जादू कर दिया था।

अपने दोस्त के चेहरे पर कई तरह के भाव बदलते देख मान ने कहा, 'अब क्या बात है?' 'अरे, वो लड़की है।'

‘नहीं, नहीं—’ फ़िरोज़ ने और भी अविश्वासपूर्ण ढंग से कहा।

‘खैर, या तो बड़ी बहन होगी या छोटी बहन—नहीं तो नौकरानी—बिब्बो!’

और फ़िरोज़ और बिब्बो को एक साथ देखकर मान ज़ोर से हंस पड़ा। फ़िरोज़ ने मान के कंधे पर हाथ रखा और उसे घर के अंदर खींच लिया।
‘तुम मुझसे खुलकर बातें नहीं करते,’ मान ने शिकायत की। ‘मैं तुम्हें अपने दिल की हर बात बता देता हूँ।’
फिरोज ने मुस्कुराते हुए कहा, 'तुम सबको सब कुछ बता देते हो।'
'सब कुछ नहीं,' मान ने फिरोज की ओर देखते हुए कहा।
फ़िरोज़ का चेहरा थोड़ा लाल हो गया। 'नहीं, मुझे नहीं लगता। वैसे, ज़्यादातर बातें। मैं बहुत खुलकर बोलने वाला इंसान नहीं हूँ। मैं आपको उतना ही बताता हूँ जितना मैं बाकी सबको बताता हूँ। और अगर मैं आपको इससे ज़्यादा न बताऊँ, तो यह अच्छी बात है। वरना यह परेशान करने वाला हो सकता है।'
‘मुझे?’ मान ने कहा।
‘जी हां—तुम्हारे लिए, मेरे लिए, हमारे लिए, ब्रह्मपुर के लिए, ब्रह्मांड के लिए,’ फ़िरोज़ ने टालमटोल करते हुए कहा। ‘मुझे लगता है कि तुम यात्रा के बाद स्नान करने जा रहे हो?’
‘जी हां,’ मान ने कहा। ‘लेकिन आप इतनी ज़िद क्यों कर रहे हैं कि मैं सईदा बाई के घर न जाऊं?’
‘ओह,’ फ़िरोज़ ने कहा, ‘मैं नहीं चाहता कि तुम वहाँ न जाओ। मैं बस—तुमने क्या कहा था?— इस बात से नाराज़ था कि तुम पहले अपने परिवार से मिलने नहीं गए। खैर, कम से कम अपनी माँ से तो मिल लेते। मैं प्राण से कुछ दिन पहले मिला था और उसने बताया कि तुम अचानक गायब हो गए थे— दस दिनों से किसी ने तुम्हें देखा या सुना नहीं था, गाँव में भी नहीं। और तुम्हारी माँ बहुत चिंतित थीं। और फिर मैंने सोचा कि तुम्हारे भतीजे वगैरह के साथ—’
‘क्या?’ मान चौंककर बोला। ‘सविता का बच्चा पहले ही पैदा हो चुका

है?’
‘नहीं, नहीं, आपके गणितज्ञ भतीजे—क्या आपने नहीं सुना?’
फ़िरोज़ के चेहरे के भाव देखकर मान समझ गया कि खबर अच्छी नहीं है। उसका मुंह थोड़ा खुला रह गया। मान ने पूछा, 'तुम्हारा मतलब उस छोटे मेंढक से है?' 'कौन सा छोटा मेंढक?'
वीना का बच्चा—भास्कर।
‘जी हाँ। आपका इकलौता भतीजा। वह पुल मेले में भगदड़ में घायल हो गया था। क्या आपने सच में नहीं सुना?’ उसने अविश्वास से कहा।
‘लेकिन मुझे बताने के लिए किसी ने लिखा ही नहीं!’ मान ने नाराज़ और परेशान होकर कहा। ‘फिर मैं इस ट्रेक पर गया, और—वह कैसा है?’
‘अब वो ठीक है। इतनी चिंता मत करो। वो सच में ठीक है। लेकिन लगता है उसे सिर में चोट लगी थी, और उसकी याददाश्त चली गई थी, और उसे होश में आने में कुछ समय लगा। शायद अच्छा ही हुआ कि उन्होंने चिट्ठी नहीं लिखी। तुम उसे बहुत पसंद करते हो, है ना?’
“हां,” भास्कर के लिए चिंतित मान ने बेचैनी से कहा। “यह मेरे पिता का ही काम होगा। उन्होंने सोचा होगा कि अगर मुझे पता चलता तो मैं सीधे ब्रह्मपुर लौट आता। खैर, मैं लौट ही जाता—” उसने तीखे स्वर में बोलना शुरू किया, फिर रुक गया। “फिरोज, तुम्हें मुझे लिखकर बताना चाहिए था।”
फ़िरोज़ ने कहा, 'मुझे इसका ख्याल ही नहीं आया। मुझे बहुत अफ़सोस है। मैंने सोचा था कि आपके परिवार ने आपको बता दिया होगा। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि वे नहीं बताएंगे। ऐसा नहीं था कि यह कोई पारिवारिक रहस्य था। हम सभी को पता था।'
मान के मन में अचानक एक बेतुका सा ख्याल फिर आया। उसने अपने दोस्त से पूछा, 'तुम सईदा बाई के छुपके प्रशंसक तो नहीं हो?'

‘अरे नहीं,’ फ़िरोज़ ने हैरानी से कहा। ‘ऐसा नहीं है कि मैं उसकी प्रशंसा नहीं करता।’

‘अच्छा हुआ,’ मान ने राहत भरी सांस लेते हुए कहा। ‘मैं नवाबजादे से मुकाबला नहीं कर सकता था। ओह, ज़मींदारी मामले के बारे में सुनकर बुरा लगा—खबर सुनते ही मुझे तुम्हारी याद आ गई। हम्म, क्या तुम मुझे एक छड़ी उधार दोगे? आज शाम को कुछ घुमाने का मन कर रहा है। ओह, और थोड़ा इत्र भी। और एक साफ कुर्ता-पायजामा भी। सभ्यता उन लोगों के लिए कठोर होती है जो बर्बरता में लौट जाते हैं।’

‘मेरे कपड़े तुम्हें फिट नहीं आएंगे। तुम्हारे कंधे बहुत चौड़े हैं।’

इम्तियाज ऐसा ही करते। उन्होंने किले में ऐसा ही किया था।

फिरोज ने कहा, 'हाँ, वे लाएँगे। मैं उन्हें तुम्हारे कमरे में ले आऊँगा। और साथ में आधी बोतल व्हिस्की भी।'

‘धन्यवाद,’ मान ने अपने दोस्त के बालों को सहलाते हुए कहा। ‘शायद सभ्यता उतनी भी कठिन नहीं है जितनी सोची जाती है।’

12.15

जब मान गर्म पानी से भरे स्नान के सुखद एहसास में डूबा हुआ था, तब वह अपनी प्रेमिका की बाहों में मिलने वाले और भी सुखद एहसासों की कल्पना कर रहा था। उसने दिए गए तौलिए के बाथरोब में खुद को लपेटा और बेडरूम में चला गया।

लेकिन तभी, उसके मन में कुछ गंभीर विचार आए। उसने अपने भतीजे के बारे में सोचा और यह भी कि अगर उसे पता चले कि उसके मामा शहर में थे और उससे मिलने तुरंत नहीं आए, तो उसे कितना दुख होगा। कुछ उदास मन से मान ने फैसला किया कि उसे पहले भास्कर से मिलना होगा। उसने अपने लिए एक गिलास व्हिस्की डाली, जल्दी से पी ली, फिर दूसरी डाली, उसे भी उतनी ही जल्दी पी लिया और आधी बोतल बची हुई

व्हिस्की इम्तियाज के कुर्ते की जेब में रख ली।
तांगा किराए पर लेने के बजाय, उसने प्रेम निवास तक पैदल जाने का फैसला किया, जहां फिरोज ने उसे बताया था कि भास्कर होगा।
पसंद बाग में घूमना सुखद था। मान ने अपने जीवन में पहली बार देखा कि ज़्यादातर सड़कों पर स्ट्रीटलाइटें भी थीं। देहाती रास्तों की कीचड़ और गंदगी के बाद पक्की सड़कों पर चलना एक सौभाग्य था। वह फ़िरोज़ की छड़ी को थपथपाता और घुमाता रहा। लेकिन थोड़ी देर बाद उसका मन नहीं हुआ। अपने पिता का सामना करने के ख्याल से वह उदास हो गया। और एक तरह से अपनी माँ का भी: वह शाम की उम्मीदों पर पानी फेर देंगी। वह उसे रात के खाने के लिए रुकने को कहेंगी। वह उससे गाँवों के बारे में और उसकी सेहत के बारे में पूछेंगी। मान के कदम थोड़े धीमे और लड़खड़ाने लगे। शायद यह व्हिस्की का असर भी था। उसने हफ़्तों से बहुत कम पिया था।
जब मंज़िल से कुछ ही दूर एक चौराहे पर पहुँचकर उसने दिशा जानने के लिए आसमान में तारों की ओर देखा। फिर उसने अपनी छड़ी से ज़मीन पर थपथपाया और पहले इधर मुड़ा, फिर उधर। वह बहुत असमंजस में दिख रहा था। अंत में, उसने प्रेम निवास जाने वाली सड़क के बजाय सईदा बाई के घर जाने वाली दाहिनी ओर की सड़क पकड़ ली। इससे उसका मन तुरंत खुश हो गया।
उसने तय किया, "यही बेहतर है। अगर मैं घर गया, तो वे मुझे रात के खाने के लिए रुकने पर ज़ोर देंगे, और मैं रुक नहीं सकता। और भास्कर को भी कोई खास फ़र्क नहीं पड़ेगा। उसे तो बस इस बात की फ़िक्र है कि मैं उसे सवाल न दूं। और जब मेरा दिमाग़ ही कहीं और लगा है, तो मैं उसे सवाल कैसे दे सकता हूँ? वैसे भी, उसकी तबीयत ठीक नहीं है, उसे देर तक जागना नहीं चाहिए, वह शायद सो गया होगा। नहीं, यही बेहतर है।

मैं कल सुबह सबसे पहले उससे मिलने जाऊंगा। वह मुझसे नाराज़ नहीं होगा।"

कुछ देर बाद उसने मन ही मन कहा: और वैसे भी, अगर सईदा बाई को पता चला कि मैं ब्रह्मपुर में था और सबसे पहले उनसे मिलने नहीं आया, तो वो मुझे कभी माफ नहीं करेंगी। मैं समझ सकता हूँ कि मेरे दूर रहने के दौरान उनके लिए कितना मुश्किल रहा होगा। ये एक अद्भुत मिलन होगा —वो मुझे देखकर आश्चर्यचकित रह जाएँगी। और उनकी मुलाकात की उम्मीद में उसके शरीर में एक सुखद कमजोरी सी महसूस हुई।

कुछ ही देर में वह घर से कुछ ही दूरी पर एक विशाल नीम के पेड़ के नीचे खड़ा था, आने वाले सुखों का पूर्वाभास कर रहा था। तभी उसके मन में एक विचार आया: मैं अपने साथ कोई उपहार तो लाया ही नहीं हूँ।

लेकिन मान, जो प्रतीक्षा को लंबे समय तक संजोकर रखने में सक्षम नहीं था, ने आधे मिनट बाद ही फैसला कर लिया कि उसने खुद को संभालने के लिए काफी इंतजार कर लिया है। मैं खुद ही अपना उपहार हूँ, जैसे वह अपनी है! उसने प्रसन्नतापूर्वक मन ही मन कहा, और पहले अपनी छड़ी को थपथपाते हुए और फिर लहराते हुए, वह शेष दूरी तय करके द्वार तक पहुँच गया।

‘फूल सिंह!’ उसने ऊँची आवाज़ में चौकीदार को नमस्कार किया।

‘अरे कपूर साहब। कई महीने बीत चुके होंगे—’

‘नहीं, इसमें तो सालों लग गए होंगे—’ मान ने दो रुपये का नोट निकालते हुए कहा।

चौकीदार ने शांति से नोट को अपनी जेब में रख लिया और फिर कहा: 'आपकी किस्मत अच्छी है। बेगम साहिबा ने मुझे आज शाम किसी खास मेहमान के बारे में कोई निर्देश नहीं दिया है। इसलिए मुझे लगता है कि वह अकेले रहना चाहती हैं।'

‘हम्म।’ मान ने भौंहें चढ़ाईं। फिर उसका चेहरा खिल उठा। ‘अच्छा,’ उसने कहा।

चौकीदार ने दरवाजा खटखटाया। सुडौल बिब्बो ने बाहर झाँका। मान की एक झलक पाते ही वह मुस्कुरा उठी। उसे मान की बहुत याद आ रही थी। वह उसकी मालकिन के सभी प्रेमियों में सबसे प्यारा और सबसे सलीकेदार था।

“अरे, दाग साहब, आपका स्वागत है, आपका स्वागत है,” उसने दरवाजे से इतनी जोर से कहा कि वह द्वार पर ही उसकी आवाज सुन सके। “बस एक मिनट, मैं ऊपर जाकर पूछताछ करती हूँ।”

‘पूछने की क्या बात है?’ मान ने पूछा। ‘क्या मेरा यहाँ स्वागत नहीं है? क्या आपको लगता है कि मैं भारत माता की गाँव की मिट्टी बेगम साहिबा के दरबार में लाऊँगा?’ वह हँसा और बिब्बो खिलखिला उठी।

‘जी हां, आपका बहुत स्वागत है,’ बिब्बो ने कहा। ‘बेगम साहिबा बहुत प्रसन्न होंगी। लेकिन मैं सिर्फ अपने बारे में बात करूंगी,’ उसने शरारती अंदाज़ में कहा। ‘मुझे एक मिनट भी नहीं लगेगा।’

वह अपने वचन की पक्की थी। थोड़ी ही देर में मान हॉल से होते हुए सीढ़ियों पर चढ़ गया, जहाँ शीशा आधा ऊपर लैंडिंग पर लगा था (वह अपनी सफेद कढ़ाई वाली टोपी ठीक करने के लिए रुका), और फिर हॉल के किनारे बनी ऊपरी गैलरी से होते हुए आगे बढ़ा। जल्द ही वह सईदा बाई के कमरे के दरवाजे पर पहुँच गया। लेकिन वहाँ न तो किसी की आवाज़ थी, न गाने की, और न ही हारमोनियम की। जब वह अंदर गया और अपने जूते दरवाजे के बाहर उतार दिए, तो उसने देखा कि सईदा बाई उस कमरे में नहीं थीं जहाँ वह अक्सर मेहमानों का स्वागत करती थीं। वह ज़रूर बेडरूम में होंगी, उसने तीव्र इच्छा के साथ सोचा। वह चादर बिछी ज़मीन पर बैठ गया और एक सफेद तकिए से टेक लगा ली। थोड़ी देर

बाद सईदा बाई बेडरूम से बाहर आईं। वह थकी हुई लग रही थीं, लेकिन प्यारी थीं, और मान को देखकर मंत्रमुग्ध हो गई थीं।

उसे देखते ही मान का दिल खुशी से उछल पड़ा, और वह भी। अगर उसके हाथ में चिड़िया का पिंजरा न होता तो वह उसे गले लगा लेता।

लेकिन फिलहाल उसकी आंखों का वो भाव ही काफी होगा। मान ने सोचा, कितना बेवकूफ तोता है!

'बैठ जाइए, दाग साहब। मैं इस पल के लिए कितना तरस रहा था।' इसके बाद एक उपयुक्त शेर बोला गया।

मान के बैठने तक उसने इंतज़ार किया, फिर उसने तोते को नीचे रखा, जो अब एक असली तोते जैसा दिख रहा था, न कि हल्के हरे रंग के रोएँदार गोले जैसा। फिर उसने पक्षी से कहा:

'मिया मिट्ठू, तुम बहुत अनुत्तरदायी रहे हो, और मैं तुमसे बिल्कुल भी खुश नहीं हूँ।' मान से उसने कहा, 'दाग साहब, ऐसी अफवाह है कि आप कुछ दिनों से शहर में हैं। निस्संदेह, उस खूबसूरत हाथीदांत की नोक वाली छड़ी को घुमा रहे होंगे। लेकिन कल जो जलकुंभी सबकी पसंदीदा थी, वह आज कला पारखी को मुरझाई हुई सी लग रही है।'

'Begum Sahiba—' protested Maan.

'भले ही वह जीवन के जल की कमी से ही मुरझा गई हो,' सईदा बाई ने अपना सिर थोड़ा एक तरफ झुकाते हुए और अपनी साड़ी को अपने बालों पर उस परिचित ढंग से खींचते हुए कहा, जिसे देखकर मान का दिल प्रेम निवास में उस पहली शाम को देखने के बाद से ही ज़ोर से धड़कने लगता था।

'बेगम साहिबा, मैं कसम खाता हूँ—'

'आह,' सईदा बाई ने तोते से कहा, 'तुम इतने दिनों तक दूर क्यों रहे? एक हफ्ता भी कष्टदायक था। चिलचिलाती धूप में रेगिस्तान में मुरझाते हुए के

लिए प्रतिज्ञाओं का क्या अर्थ?' अचानक अपने इस उपमा से ऊबकर उन्होंने कहा: 'पिछले कुछ दिनों से बहुत गर्मी है। मैं तुम्हारे लिए शरबत लाती हूँ।' उठकर वह दरवाजे के बाहर गैलरी में गईं और रेलिंग पर झुककर ताली बजाई: 'बिब्बो!'

जी हां, बेगम साहिबा?

'हम दोनों के लिए बादाम का शरबत ले आओ। और दाग साहब के शरबत में थोड़ा केसर जरूर मिला देना। रुधिया की तीर्थयात्रा से वो काफी थके हुए लग रहे हैं। और तुम्हारा रंग भी काफी गहरा हो गया है।'

'सईदा, तुमसे दूर रहने की वजह से ही मैं कमजोर हुआ—' मान ने कहा।

'और वही हंसती-हंसती निर्दयी जिसने मुझे खुद से दूर कर दिया, अब इस दूर रहने का दोष मुझ पर डाल रही है। इससे ज्यादा अन्यायपूर्ण और क्या हो सकता है?'

'हां—' सईदा बाई ने धीरे से कहा। 'अगर आसमान ने हमें और अधिक समय तक अलग रखा होता।'

चूंकि सईदा बाई ने मान को लिखे अपने पत्र में स्नेह भरे शब्दों का प्रयोग करते हुए उनसे आग्रह किया था कि वे ब्रह्मपुर से और भी लंबे समय तक दूर रहें - हालांकि उन्होंने इसके कारण स्पष्ट नहीं किए थे - इसलिए उनका वर्तमान जवाब शायद ही उचित था।

लेकिन मान को यह संतोषजनक लगा; नहीं, संतोषजनक से भी कहीं अधिक, आनंददायक। सईदा बाई ने मानो स्वीकार ही कर लिया था कि वह उसे फिर से अपनी बाहों में लेना चाहती हैं। उसने शयनकक्ष के दरवाजे की ओर हल्का सा सिर हिलाया। लेकिन सईदा बाई तोते की ओर मुड़ गईं।

12.16

सईदा बाई ने शरारती लहजे में कहा, 'पहले शरबत, फिर बातचीत, फिर

संगीत, और फिर देखेंगे कि केसर का असर हुआ है या नहीं। या फिर उसे अपनी जेब से झांकती हुई व्हिस्की की ज़रूरत है?'

तोते ने मान की ओर देखा। वह प्रभावित नहीं हुआ। जब बिब्बो पेय लेकर अंदर आई, तो उसने उसका नाम पुकारा:

'बिब्बो!'

उसने यह बात कुछ दबंग और थोड़ी कठोर आवाज़ में कही। बिब्बो ने चिड़िया को झुंझलाहट भरी नज़रों से देखा। मान ने यह देखा; वह भी उस तोते से उतना ही चिढ़ रहा था, और जब उसने बिब्बो को मज़ाकिया और सहानुभूति भरी नज़रों से देखा, तो उनकी नज़रें एक पल के लिए मिलीं। बिब्बो, जो शरारती और चंचल स्वभाव का था, एक पल के लिए उसकी आँखों में देखता रहा और फिर नज़रें हटा लीं।

सईदा बाई को यह बात अच्छी नहीं लगी। उन्होंने कहा, 'बस करो, बिब्बो, तुम शरारती लड़की हो।'

‘क्या रोकूँ, सईदा बेगम?’ बिब्बो ने मासूमियत से पूछा।

‘बेशर्मी मत बरतो। मैंने तुम्हें दाग साहब को आँख मारते हुए देखा,’ सईदा बाई ने कहा। ‘तुरंत रसोई में जाओ और वहीं रहो।’

'सहयोगी को फांसी दे दी गई है, मुख्य अपराधी बरी हो गया है,' बिब्बो ने कहा और मान के पास फर्श पर ट्रे छोड़कर जाने के लिए मुड़ गया।

‘बेशर्म,’ सईदा बाई ने कहा; फिर बिब्बो की टिप्पणी पर सोचते हुए, वह झुंझलाहट से मान की ओर मुड़ी। ‘दाग साहब, अगर मधुमक्खी खिले हुए ट्यूलिप की कली से कम सुंदर फूल को भी अधिक आकर्षक मानती है —’

‘सईदा बेगम, आप जानबूझकर मुझे गलत समझ रही हैं,’ मान ने थोड़ा रूठते हुए कहा। ‘मेरा हर शब्द, मेरी हर नज़र—’

सईदा बाई नहीं चाहती थीं कि वह रूठ जाए। उन्होंने उसे सलाह दी,

'अपना शरबत पी लो। तुम्हारे दिमाग को गर्म होने की जरूरत नहीं है।'
मान ने अपना शरबत चखा। वह स्वादिष्ट था। फिर उसने भौंहें सिकोड़ीं, मानो उसने कुछ कड़वा चख लिया हो।
'क्या बात है?' सईदा बाई ने चिंता से पूछा।
'कुछ तो कमी है,' मान ने कहा, मानो वह अपने पेय का मूल्यांकन कर रहा हो।
'क्या?' सईदा बाई ने पूछा। 'वो बिब्बो—लगता है वो तुम्हारे गिलास में शहद डालना भूल गई।'
मान ने सिर हिलाया और भौंहें चढ़ा लीं। अंत में उसने कहा, 'मुझे ठीक-ठीक पता है कि क्या कमी है।'
क्या दाग साहब हमें इसका समाधान प्रदान करेंगे?
'संगीत।'
सईदा बाई ने मुस्कुराते हुए कहा, 'ठीक है। मेरे लिए हारमोनियम लाओ। मैं आज इतनी थकी हुई हूँ कि मुझे लग रहा है जैसे दुनिया में मेरा चार दिन का कार्यकाल समाप्त हो गया है।'
सईदा बाई ने हमेशा की तरह मान से यह पूछने के बजाय कि वह क्या सुनना चाहता है, मन ही मन ग़ज़ल गुनगुनाना शुरू कर दिया और धीरे-धीरे अपनी उंगलियों को पियानो की कुंजियों पर फिराने लगीं। थोड़ी देर बाद वह गाने लगीं। फिर अचानक रुक गईं, अपने विचारों में खो गईं।
'दाग साहब, अकेली महिला—इस निर्दयी दुनिया में उसे क्या स्थान मिल सकता है?'
'इसीलिए उसकी रक्षा के लिए किसी का होना जरूरी है,' मान ने दृढ़ता से कहा।
'सिर्फ़ प्रशंसकों के लिए इतनी सारी समस्याओं का सामना करना मुश्किल है। कभी-कभी तो प्रशंसक खुद ही समस्या बन जाते हैं।' उन्होंने

उदास होकर हँसते हुए कहा। 'घर, कर, भोजन, व्यवस्थाएँ, इस संगीतकार का हाथ कट जाता है, उस ज़मींदार की ज़मीन छिन जाती है, किसी को पारिवारिक शादी के लिए जाना पड़ता है, किसी को डर लगता है कि वह अब अपनी उदारता नहीं दिखा पाएगा, किसी की शिक्षा का ध्यान रखना पड़ता है, दहेज का इंतज़ाम करना पड़ता है। और एक उपयुक्त लड़का ढूँढना पड़ता है। अंतहीन। अंतहीन।'

'आपका मतलब तसनीम के लिए है?'

'हाँ। हाँ। कौन सोच सकता था कि लोग उससे मिलने आएंगे? यहाँ, इसी घर में। हाँ, यह सच है। इन सब चीज़ों का इंतज़ाम करना मेरी ज़िम्मेदारी है, उसकी बहन, उसकी अभिभावक। वह इशाक—अब वह उस्ताद मजीद खान का शिष्य बन गया है, इसलिए भले ही उसकी आवाज़ ज़मीनी लगती हो, वह ख्यालों में खोया रहता है—वह यहाँ आता है, मुझसे मिलने और सम्मान जताने का बहाना बनाकर, लेकिन असल में उससे मिलने। मैंने तोते को अपने कमरे में रख लिया है। फिर भी वह कोई न कोई बहाना ढूंढ ही लेता है। और वह बुरा आदमी नहीं है; लेकिन उसका कोई भविष्य नहीं है। उसके हाथ अपाहिज हैं, और उसकी आवाज़ को कोई प्रशिक्षण नहीं मिला है। मियां मिट्ठू उससे बेहतर गा सकता है। मेरी माँ की बेचारी मैना भी गा सकती थी।'

'क्या और भी लोग हैं?' मान ने पूछा।

'तुम्हें इतना मासूम बनने की जरूरत नहीं है,' सईदा बाई ने चिढ़कर कहा।

'सईदा बाई—सचमुच—' मान ने कहा।

'तुम नहीं, तुम नहीं। तुम्हारा समाजवादी मित्र, जिसने दुनिया में अपनी पहचान बनाने के लिए विश्वविद्यालय में आयोजन का काम शुरू कर दिया है।'

यह विवरण फ़िरोज़ पर बिल्कुल भी लागू नहीं होता था। मान असमंजस

में पड़ गया।

जी हाँ, हमारे युवा मौलवी, उनके अरबी शिक्षक। जिनकी मेहमाननवाज़ी का आपने आनंद लिया है, जिनसे आपने शिक्षा प्राप्त की है, जिनके साथ आपने कई हफ्तों तक समय बिताया है। दाग साहब, यहाँ अपना सामान मत बेचिए। घायल मासूमियत का एक बाज़ार है, और वह इन दीवारों के बीच नहीं मिलेगा।

लेकिन मान पूरी तरह से हैरान रह गया होगा। वह सोच भी नहीं सकता था कि रशीद तसनीम को रिझाने की कोशिश कर रहा होगा। सईदा बाई ने आगे कहा, "जी हां, यह सच है। यह नेक नौजवान, जो मेरे सामने बुलाए जाने पर भी नहीं आया क्योंकि वह तसनीम को पवित्र ग्रंथ का एक अंश पढ़ाने में व्यस्त था, अब यह मान चुका है कि तसनीम उससे प्यार करती है, उसके प्यार में पागल हो रही है, और उसे उससे शादी करके अपना फर्ज निभाना चाहिए। वह एक धूर्त और खतरनाक नौजवान है।"

'सच कहूँ तो, सईदा बेगम, यह खबर मेरे लिए बिल्कुल नई है। मैंने उन्हें दो हफ़्तों से नहीं देखा है,' मान ने कहा। उसने देखा कि सईदा की पीली गर्दन लाल हो गई थी।

'इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है। वह दो हफ्ते पहले यहाँ लौटा था। अगर, जैसा कि आपके विरोध से प्रतीत होता है, आप हाल ही में आए हैं —'

'हाल ही में?' मान ने हैरानी से कहा। 'मुझे तो चेहरा और हाथ धोने का भी मुश्किल से समय मिला है—'

'क्या आपका मतलब है कि उसने इस बारे में एक शब्द भी नहीं कहा? यह तो बहुत ही असंभव है।'

"बिल्कुल नहीं, सईदा बाई। वो बहुत ही नेक इंसान हैं; उन्होंने तो मुझे ग़ज़लें सिखाना भी नहीं चाहा। हाँ, उन्होंने एक-दो बार समाजवाद और

गाँव की आर्थिक स्थिति सुधारने के तरीकों के बारे में बात की थी—लेकिन प्यार! अरे, वो तो शादीशुदा हैं।"

सईदा बाई मुस्कुराईं। उन्होंने पूछा, 'क्या दाग साहब भूल गए हैं कि हमारे समुदाय में पुरुष चार तक गिनना नहीं भूले हैं?'

'ओह, जी हाँ, बिल्कुल,' मान ने कहा। 'बिल्कुल। लेकिन—अच्छा, आप खुश नहीं हैं—'

'नहीं,' सईदा बाई ने गुस्से से कहा। 'मैं खुश नहीं हूँ।'

'इस तसनीम—'

'नहीं, वो ऐसी नहीं है, बिल्कुल नहीं, और मैं उसे किसी गांव के बदमाश से प्यार नहीं करने दूंगी—' सईदा बेगम ने कहा। 'वो मेरी संपत्ति के लिए उससे शादी करना चाहता है। फिर वो उसे गांव में गड्ढा खोदने या पेड़ लगाने में खर्च कर देगा। पेड़!'

यह बात मान की रशीद के प्रति धारणा से बिल्कुल मेल नहीं खाती थी, लेकिन उसने सईदा बाई का विरोध करने के बजाय बेहतर समझा, जो आक्रोश की स्थिति में पहुँच चुकी थीं।

'अच्छा, तसनीम के लिए एक सच्चे प्रशंसक के बारे में क्या ख्याल है?' उसने बात को मोड़ने के लिए सुझाव दिया।

सईदा बाई फिरोजाबादी ने कहा, 'यह प्रशंसकों का काम नहीं है कि वे उसे चुनें, बल्कि यह मेरा काम है कि वह मुझे चुने।'

'क्या एक नवाबजादा भी दूर से ही सही, उसकी प्रशंसा नहीं कर सकता?'

'आप किसकी बात कर रहे हैं?' सईदा बाई ने खतरनाक ढंग से अपनी आँखों को चमकाते हुए पूछा।

'मैं कहूँ, एक दोस्त,' मान ने उसकी सच्ची दिलचस्पी का आनंद लेते हुए और उसके चेहरे की चमक की प्रशंसा करते हुए कहा—जैसे सूर्यास्त के समय तलवारबाजी हो रही हो। वह कितनी खूबसूरत लग रही थी—और

आगे कितनी शानदार रात आने वाली थी।
लेकिन सईदा बेगम उठीं और गैलरी में चली गईं। वह अपने गाल के अंदरूनी हिस्से को दांतों से दबा रही थीं। उन्होंने फिर से ताली बजाई। 'बिब्बो!' वह चिल्लाईं। 'बिब्बो! बिब्बो! वह बेवकूफ लड़की रसोई में चली गई होगी। आह'—क्योंकि मालकिन की आवाज में खतरे का भाव सुनकर बिब्बो दौड़कर सीढ़ियों से ऊपर आ गई थी—'बिब्बो, आखिरकार तुमने हमें अपनी उपस्थिति से सम्मानित करने का फैसला कर लिया? मैं पिछले आधे घंटे से चिल्ला-चिल्लाकर अपनी आवाज खराब कर चुकी हूँ।'
मान ने उस मनमोहक अतिशयोक्ति पर मन ही मन मुस्कुरा दिया।
'दाग साहब थक गए हैं, बिब्बो। कृपया उन्हें बाहर तक छोड़ दीजिए।' उनकी आवाज़ में कुछ लड़खड़ाहट थी।
मान चौंक गया। आखिर सईदा बेगम को क्या हो गया था?
उसने उसकी ओर देखा, लेकिन उसने अपना चेहरा दूसरी ओर कर लिया था। उसकी आवाज़ में न केवल गुस्सा था, बल्कि वह बेहद दुखी भी लग रही थी।
उसने सोचा, ये मेरी ही गलती होगी। मैंने कुछ बहुत गलत कहा या किया होगा। लेकिन मैंने आखिर किया क्या है? उसने खुद से पूछा। नवाबजादा का तसनीम से प्रेम निवेदन करना सईदा बेगम को इतना परेशान क्यों कर रहा है? आखिर फिरोज तो गांव के आवारा लड़के से बिलकुल अलग है।
सईदा बाई उसके पास से गुजरीं, चिड़िया का पिंजरा उठाया और दरवाजा बंद करके अपने शयनकक्ष में वापस चली गईं। मान दंग रह गया। उसने बिब्बो की ओर देखा। वह भी अचंभित थी। अब उसकी बारी थी कि वह मान को सहानुभूति से देखे।
'कभी-कभी ऐसा हो जाता है,' बिब्बो ने कहा। लेकिन असल में ऐसा बहुत कम होता था। 'आपने क्या किया?' उसने बड़ी उत्सुकता से पूछा।

उसकी मालकिन आमतौर पर किसी बात से नहीं घबराती थी। यहाँ तक कि मारह के राजा ने भी हाल ही में जो कुछ किया था—और वो ज़मींदारी उन्मूलन मामले के नतीजे से बहुत नाराज़ थे—उसका भी ऐसा असर नहीं हुआ था।

'कुछ नहीं,' मान ने बंद दरवाजे को घूरते हुए कहा। एक मिनट बाद उसने धीरे से कहा, मानो खुद से कह रहा हो: 'लेकिन वह सच में गंभीर नहीं हो सकती।' और उसने मन ही मन सोचा, मैं तो इस तरह से चुप नहीं बैठने वाला। वह बेडरूम के दरवाजे की ओर बढ़ा।

'ओह, दाग साहब, कृपया, कृपया—' बिब्बो भयभीत होकर चिल्लाया। सईदा बाई जब भी शयनकक्ष में प्रवेश करती थीं, वह पवित्र माना जाता था।

'सईदा बेगम,' मान ने कोमल और उलझन भरी आवाज़ में कहा, 'मैंने क्या किया है? कृपया मुझे बताइए। आप मुझसे इतनी नाराज़ क्यों हैं? क्या यह रशीद की वजह से है—या फ़िरोज़ की वजह से—या किसी और वजह से?'

अंदर से कोई जवाब नहीं आया।

'कृपया, कपूर साहब—' बिब्बो ने अपनी आवाज ऊंची करते हुए और दृढ़ लहजे में कहने की कोशिश की।

'बिब्बो!' शयनकक्ष से तोते की धातु जैसी, लेकिन प्रभावशाली आवाज आई। बिब्बो खिलखिलाकर हंसने लगा।

मान अब दरवाजा खोलने की कोशिश कर रहा था, लेकिन हैंडल काम नहीं कर रहा था। उसने गुस्से में सोचा, ज़रूर उसने अंदर से ताला लगा दिया होगा। उसने ज़ोर से कहा, 'यह मेरे साथ अन्याय है, सईदा बेगम—एक पल में जन्नत का वादा करती हो और अगले ही पल मुझे जहन्नम में धकेल देती हो। ब्रह्मपुर पहुँचने के बाद मुझे नहाने और दाढ़ी बनाने का भी

समय नहीं मिला, और मैं तुमसे मिलने आ गया। कम से कम मुझे यह तो बता दो कि तुम इतनी नाराज़ क्यों हो।'

कमरे के अंदर से सईदा बाई की आवाज आई: 'बस चले जाइए, दाग साहब, मुझ पर दया कीजिए। मैं आज आपसे नहीं मिल सकती। मैं आपको हर बात का कारण नहीं बता सकती।'

'आपने मुझे अपने पत्र में दूर रखने का कोई कारण नहीं बताया, और अब जब मैं यहाँ हूँ—'

'बिब्बो!' तोते ने आदेश दिया। 'बिब्ब! बाइबल!'

मान दरवाजे पर जोर-जोर से दस्तक देने लगा। 'मुझे अंदर आने दो! मुझसे बात करो, प्लीज़—और भगवान के लिए उस मंदबुद्धि तोते को चुप कराओ। मुझे पता है तुम परेशान हो। तुम्हें क्या लगता है मैं कैसा महसूस कर रहा हूँ? तुमने मुझे घड़ी की तरह घुमा दिया है, और अब—'

अंदर से सईदा बाई ने नम आवाज़ में कहा, "अगर आप मुझे फिर से देखना चाहते हैं, तो अभी चले जाइए। वरना मैं बिब्बो से चौकीदार को बुलाने को कह दूंगी। आपने अनजाने में मुझे तकलीफ दी है। मैं मानती हूँ कि यह अनजाने में हुआ था। अब आपको भी यह मानना चाहिए कि यह तकलीफ थी। कृपया चले जाइए। किसी और दिन आना। दाग साहब, भगवान के लिए, अगर आप मुझे फिर से देखना चाहते हैं, तो यह सब बंद कीजिए।"

इस खतरे को भांपते हुए मान ने दरवाजा पीटना बंद कर दिया और गैलरी में चला गया, वह अंदर ही अंदर घुट रहा था और पूरी तरह से हैरान था। वह इतना परेशान था कि उसने न तो जाने का ऐलान किया और न ही उसे शुभकामनाएं दीं। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। यह मानो आसमान से अचानक ओले गिरने जैसा था। फिर भी, यह महज़ नखरेबाज़ी नहीं थी।

‘लेकिन तुमने किया क्या?’ बिब्बो ने अपनी मालकिन के मिजाज से थोड़ी डरी हुई, लेकिन इस नाटक का आनंद लेते हुए लगातार पूछा। बेचारी दाग साहब! उसने पहले कभी सईदा बाई के दरवाजे पर किसी को दस्तक देते नहीं सुना था। कितना जोश था!

‘कुछ भी नहीं,’ मान ने हताशा और अपमानित महसूस करते हुए कहा, और किसी की सहानुभूति पाकर उसे खुशी भी हुई। ‘कुछ भी नहीं।’ यकीनन वह वजह नहीं थी जिसके लिए वह हफ्तों से ग्रामीण इलाके में एकांतवास में था। कुछ ही मिनट पहले उसने लगभग उसे प्यार और आनंद से भरी एक रात का वादा किया था, और अब—बिना किसी कारण के—उसने न केवल अपना वादा तोड़ा, बल्कि उसे भावनात्मक धमकियों से भी जकड़ लिया।

‘बेचारे दाग साहब,’ बिब्बो ने उनके हैरान लेकिन आकर्षक चेहरे को देखते हुए कहा। ‘आप अपनी छड़ी भूल गए हैं। ये रही।’

‘ओह—आप सही कह रहे हैं,’ मान ने कहा।

जैसे ही वे सीढ़ियों से नीचे उतरे, उसने किसी तरह उसे छू लिया, फिर उससे सट गई। वह पंजों के बल खड़ी हुई और अपने होंठ उसके चेहरे की ओर बढ़ा दिए। मान खुद को उसे चूमने से रोक नहीं पाया। वह इतना व्याकुल था कि वह किसी से भी, यहाँ तक कि ताहमीना बाई से भी, तुरंत और बेतहाशा प्रेम कर बैठता।

मान ने सोचा, बिब्बो कितनी समझदार लड़की है, जब वे दोनों एक मिनट तक एक-दूसरे को चूमते और गले लगाते रहे। बुद्धिमान भी है। हाँ, यह बिल्कुल भी उचित नहीं है, यह अनुचित है, और वह इसे देख सकती है।

लेकिन शायद बिब्बो इतना समझदार नहीं था। वे सीढ़ियों पर एक-दूसरे को चूम रहे थे, और ऊंचे दर्पण में उनकी परछाईं गैलरी तक दिखाई दे रही थी। सईदा बाई का क्रोध पहले उग्र था, फिर मान के साथ किए गए अपने

व्यवहार पर उन्हें गहरा पछतावा हुआ। उन्होंने मान को अपने स्नेह का आश्वासन देने का फैसला किया और जब वह हॉल पार कर रहा था, तो गैलरी से उसे अलविदा कहा। अब उन्होंने सीढ़ियों से नीचे देखा कि उसे क्या रोके हुए है। दर्पण में जो देखा, उससे उन्होंने अपने होंठ को इतनी जोर से काटा कि लगभग खून निकल आया।

वह वहीं स्तब्ध खड़ी रह गई। थोड़ी देर बाद, मान को होश आया और वह वहाँ से हट गया। प्यारी बिब्बो, हल्की सी हँसी के साथ, उसे हॉल पार करके दरवाजे तक ले गई।

जब वह लौटी, तो उसने हॉल पार किया और सीढ़ियों से ऊपर जाकर सईदा बाई के बाहरी कमरे से शरबत के गिलास हटाए। उसने सोचा, बेगम साहिबा शायद एक घंटे तक अपने बिस्तर पर लेटी रहेंगी और भूख लगने पर ही बाहर आएंगी। चुंबन की याद आते ही वह थोड़ा और खिलखिला उठी। जब वह गैलरी में पहुँची, तब भी वह मन ही मन खिलखिला रही थी। वहाँ उसने सईदा बाई को देखा। सईदा बाई का चेहरा देखते ही उसकी खिलखिलाहट रुक गई।

12.17

अगले दिन मान भास्कर से मिलने गया।

भास्कर कुछ दिनों से ऊब रहा था। फिर उसने मीट्रिक प्रणाली सीखने का फैसला किया, हालांकि उस समय तक भारत में इसका प्रचलन नहीं था। आयतन मापने के लिए मीट्रिक प्रणाली का उपयोग शुरू करते ही उसे ब्रिटिश प्रणाली की तुलना में इस प्रणाली के लाभ तुरंत स्पष्ट हो गए।

मीट्रिक प्रणाली का उपयोग करने पर हर तरह की तुलनाएँ स्पष्ट हो गईं। उदाहरण के लिए, यदि वह ब्रह्मपुर किले के आयतन की तुलना सविता के होने वाले बच्चे के आयतन से करना चाहते, तो वे घन गज को घन इंच में परिवर्तित किए बिना तुरंत ऐसा कर सकते थे। ऐसा नहीं था कि यह

रूपांतरण भास्कर के लिए बहुत कठिन था; बस यह असुविधाजनक और भद्दा लगता था।

मीट्रिक प्रणाली का एक और आनंद यह था कि भास्कर अपनी प्रिय दस की घातों में बेरोकटोक आनंद से विचरण कर सकता था। लेकिन कुछ दिनों बाद वह मीट्रिक प्रणाली और उसके सुखों से ऊब गया। उसके मित्र डॉ. दुर्रानी कुछ समय से उससे मिलने नहीं आए थे, हालांकि कबीर आए हुए थे। भास्कर कबीर को पसंद करता था, लेकिन डॉ. दुर्रानी ही थे जो हमेशा गणित की नई-नई जानकारियाँ लेकर आते थे, और उनके बिना भास्कर को खुद ही सब कुछ संभालना पड़ता था।

फिर से वह ऊब गया और उसने श्रीमती महेश कपूर से शिकायत की। थोड़ी देर बड़बड़ाने के बाद—वह मिसरी मंडी वापस जाना चाहता था, और उसकी दादी उसे जाने देने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थीं—उसने अपने दादाजी से गुहार लगाई।

महेश कपूर ने भास्कर से सख्त लहजे में कहा कि वह उनकी मदद नहीं कर सकते। ऐसे सभी फैसले उनकी पत्नी के अधिकार क्षेत्र में आते हैं।

भास्कर ने कहा, 'लेकिन मैं बहुत ऊब गया हूँ। और मुझे एक हफ्ते से सिरदर्द भी नहीं हुआ है। मुझे आधा दिन बिस्तर पर क्यों बिताना पड़ता है? मैं स्कूल जाना चाहता हूँ। मुझे प्रेम निवास में रहना अच्छा नहीं लगता।'

'क्या?' उसके दादाजी ने कहा। 'तुम्हारे नाना-नानी के यहाँ होते हुए भी नहीं?'

भास्कर ने कहा, 'नहीं। एक-दो दिन के लिए तो ठीक है। वैसे भी, आप असल में कभी यहां होते ही नहीं हैं।'

'यह सच है। मुझे बहुत काम करना है और बहुत सारे फैसले लेने हैं। खैर, आपको यह जानकर हैरानी होगी कि मैंने कांग्रेस पार्टी छोड़ने का फैसला

किया है।'

“ओह,” भास्कर ने दिलचस्पी दिखाने की पूरी कोशिश करते हुए कहा। “और इसका क्या मतलब है? क्या वे हार जाएंगे?”

महेश कपूर ने माथे पर शिकन डाली। इस फैसले में जो मेहनत और तनाव लगा था, उसे एक बच्चा समझ नहीं सकता था। भास्कर को तो यह भी संदेह था कि दो और दो हमेशा चार होते हैं, और उससे यह उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि वह अपने दादाजी के जीवन की निश्चितताओं के हिलने-डुलने पर सहानुभूति दिखाएगा। फिर भी, भास्कर कई बार तथ्यों और आंकड़ों को लेकर इतना आश्वस्त रहता था, हालांकि हो सकता है कि वह उन तक अमूर्त विचारों के बेतरतीब उछालों से ही पहुंचा हो। महेश कपूर, जो परिवार में किसी से भी भयभीत नहीं थे, शायद भास्कर से थोड़ा डरते भी थे। एक अजीब लड़का! महेश कपूर ने सोचा, उसे अपनी इस रहस्यमयी क्षमताओं को विकसित करने का हर अवसर अवश्य दिया जाना चाहिए।

महेश कपूर ने कहा, ‘सबसे पहले तो, इसका मतलब यह है कि मुझे यह तय करना होगा कि मुझे किस निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ना है। शहर में कांग्रेस पार्टी बहुत मजबूत है, लेकिन मेरी ताकत भी वहीं है। दूसरी ओर, शहर में मेरे पुराने निर्वाचन क्षेत्र की सीमाएं बदल दी गई हैं, और इससे मुझे कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।’

'जो समस्याएं हैं?'

‘तुम्हें कुछ समझ नहीं आएगा,’ महेश कपूर ने भास्कर से कहा। फिर, भास्कर के तीखे, यहाँ तक कि शत्रुतापूर्ण, चेहरे को देखकर उन्होंने आगे कहा: ‘जातिगत संरचना अब बिल्कुल अलग है। मैंने चुनाव आयुक्त द्वारा निर्धारित कई नए निर्वाचन क्षेत्रों का अध्ययन किया है, और जनसंख्या के आंकड़े—’

भास्कर ने धीमी आवाज़ में कहा, 'आंकड़े।'
'हां, 1931 की जनगणना में धर्म और जाति के आधार पर व्यवस्था की गई थी। जाति! जाति! आप इसे पागलपन समझ सकते हैं, लेकिन आप इसे कभी अनदेखा नहीं कर सकते।'
भास्कर ने कहा, 'नानाजी, क्या मैं इन आंकड़ों पर एक नज़र डाल सकता हूँ? मैं आपको बताता हूँ कि क्या करना है। बस मुझे बता दीजिए कि कौन से कारक आपके पक्ष में हैं—'
'साफ हिंदी में बोलो, बेवकूफ, तुम्हारी बात समझना नामुमकिन है,' महेश कपूर ने अपने पोते से स्नेहपूर्वक कहा, लेकिन भास्कर के इस दुस्साहस से वे काफी चिढ़ गए थे।
हालांकि, जल्द ही भास्कर के पास वे सभी तथ्य और आंकड़े आ गए जिनकी उन्हें कम से कम तीन दिनों तक खुश रहने के लिए जरूरत थी, और उन्होंने निर्वाचन क्षेत्रों का गहन अध्ययन करना शुरू कर दिया।
12.18
जब मान मिलने आया, तो उसने नौकर से उसे सीधे भास्कर के कमरे में ले जाने को कहा। उसने देखा कि भास्कर बिस्तर पर बैठा हुआ है। बिस्तर कागज से ढका हुआ था।
'हेलो, जीनियस,' मान ने सौहार्दपूर्वक कहा।
भास्कर ने कुछ खोए-खोए अंदाज़ में कहा, 'नमस्ते। बस एक मिनट।' वह एक मिनट तक चार्ट को घूरता रहा, पेंसिल से कुछ अंक लिखे और अपने चाचा की ओर मुड़ गया।
मान ने उसे चूमा और पूछा कि वह कैसा है।
'ठीक है, मान मामा, लेकिन यहाँ तो सब लोग इतना हंगामा करते हैं।'
'सिर कैसा है?'
भास्कर ने हैरानी से कहा, 'सिर?' 'मेरा सिर तो ठीक है।'

तो फिर, क्या आपको कुछ हिसाब-किताब चाहिए?
भास्कर ने कहा, 'सिर्फ अभी के लिए नहीं। मेरा दिमाग ऐसे विचारों से भरा हुआ है।'
मान को इस प्रतिक्रिया पर मुश्किल से ही विश्वास हुआ। ऐसा लग रहा था मानो कुंभकरण ने सुबह तड़के उठकर डाइट पर जाने का फैसला कर लिया हो।
‘तुम क्या कर रहे हो? यह बहुत गंभीर लग रहा है,’ उसने पूछा।
महेश कपूर की आवाज़ आई, 'सच में बहुत गंभीर मामला है।' मान मुड़ा। उसके पिता, माता और बहन कमरे में आ चुके थे। वीना ने नम आँखों से मान को गले लगाया और कुछ कागज़ हटाकर भास्कर के बिस्तर के किनारे बैठ गई। भास्कर ने कोई आपत्ति नहीं जताई।
वीना ने मान से कहा, 'भास्कर शिकायत कर रहा है कि वह यहां ऊब गया है। वह यहां से जाना चाहता है।'
भास्कर ने कहा, 'ओह, मैं दो-तीन दिन और रुक सकता हूँ।'
‘सच में?’ वीना ने हैरानी से कहा। ‘शायद मुझे सच में दिन में दो बार तुम्हारा दिमाग चेक करवाना चाहिए।’ बहन की बात सुनकर मान खुश हो गया। अगर वो इस तरह मज़ाक कर सकती है, तो भास्कर ज़रूर ठीक होगा।
उन्होंने पूछा, 'वह क्या कर रहा है?'
महेश कपूर ने संक्षिप्त जवाब दिया: 'वह मुझे बता रहे हैं कि मुझे किस निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ना चाहिए।'
‘अपने पुराने वाले से क्यों नहीं?’ मान ने पूछा।
उन्होंने इसे दोबारा बनाया है।
'ओह।'
इसके अलावा, मैं कांग्रेस पार्टी छोड़ने जा रहा हूं।

‘ओह!’ मान ने अपनी माँ की ओर देखा, पर उन्होंने कुछ नहीं कहा। हालाँकि, वे काफी दुखी लग रही थीं। वे अपने पति के फैसले से सहमत नहीं थीं, पर उन्हें लगा कि वे उन्हें रोक नहीं सकतीं। उन्हें राजस्व मंत्री पद से इस्तीफा देना होगा; उन्हें उस पार्टी से अलग होना होगा जो लोगों के मन में स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी हुई थी, जिस पार्टी के वे और उनकी माँ जीवन भर सदस्य रहे थे; उन्हें राज्य कांग्रेस पार्टी के विशाल कोष का मुकाबला करने के लिए कहीं से धन जुटाना होगा, जिसे गृह मंत्री ने बड़ी कुशलता से इकट्ठा और खर्च किया था। सबसे बढ़कर, उन्हें एक बार फिर कठिन परिस्थितियों से जूझना होगा, और वे अब युवा नहीं थे।

‘मान, तुम कितने दुबले हो गए हो,’ उसकी मां ने कहा।

‘पतला? मैं?’ मान ने कहा।

‘हाँ, और तुम पहले से कहीं ज़्यादा सांवले हो गए हो,’ उसने उदास होकर कहा। ‘लगभग प्राण जैसे। यह गाँव का जीवन तुम्हारे लिए अच्छा नहीं है। अब हमें तुम्हारा ठीक से ख्याल रखना होगा। हर भोजन के समय तुम्हें मुझे बताना होगा कि तुम्हें क्या चाहिए—’

'जी हां, आपको वापस देखकर अच्छा लगा, और मुझे उम्मीद है कि चीजें बदल गई होंगी,' महेश कपूर ने अपने बेटे को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की, लेकिन साथ ही कुछ चिंतित भी थे।

‘मुझे भास्कर के बारे में किसी ने क्यों नहीं बताया?’ मान ने कहा।

वीना और उसकी मां दोनों ने महेश कपूर की ओर देखा।

महेश कपूर ने कहा, 'ठीक है, कुछ मामलों में निर्णय लेने के लिए आपको हम पर भरोसा करना होगा।'

‘तो अगर सविता का बच्चा पैदा हो गया होता—’

‘मान, तुम यहाँ हो, और यही सबसे महत्वपूर्ण बात है,’ उसके पिता ने संक्षिप्त में कहा। ‘तुम्हारा सामान कहाँ है? नौकर उसे ढूंढ नहीं पा रहा है।

मैं उसे तुम्हारे कमरे में भिजवा देता हूँ। और बनारस जाने से पहले तुम्हें —'

मेरा सामान फिरोज के घर पर है। मैं वहीं रह रहा हूँ।

इस टिप्पणी पर सन्नाटा छा गया।

महेश कपूर नाराज़ लग रहे थे, और मान को इससे ज़्यादा बुरा नहीं लगा। लेकिन श्रीमती महेश कपूर दुखी लग रही थीं, और उन्हें बुरा लगा। वह सोचने लगे कि क्या उन्होंने सही किया था।

'तो अब यह आपका घर नहीं रहा?' उसने कहा।

'बिल्कुल है, बिल्कुल है, अम्माजी, लेकिन यहाँ इतने सारे लोग ठहरे हुए हैं —'

'लोग—सच में, मान,' वीना ने कहा।

'यह सिर्फ अस्थायी है। जब संभव होगा, मैं वापस आ जाऊंगी। मुझे फ़िरोज़ से भी बात करनी है। मेरे भविष्य और बाकी सब बातों पर—'

'तुम्हारा भविष्य बनारस में ही है, इसमें कोई शक नहीं,' उसके पिता ने अधीरता से कहा।

उसकी माँ को संभावित परेशानी का आभास हो गया और उसने कहा: 'ठीक है, हम दोपहर के भोजन के बाद इस बारे में बात करेंगे। तुम दोपहर के भोजन के लिए रुक सकते हो, है ना?' उसने उसे स्नेह से देखा।

'बिल्कुल कर सकता हूँ, अम्माजी,' मान ने दुखी होकर कहा।

'अच्छा। आज हमारे पास आलू पराठा है।' यह मान के पसंदीदा व्यंजनों में से एक था। 'तुम कब आए?'

मैं अभी-अभी आया हूँ। मैंने सोचा कि मैं भास्कर को सबसे पहले देख लूँ। नहीं, ब्रह्मपुर।

'कल शाम।'

'तो तुम हमारे साथ खाना खाने क्यों नहीं आए?' उसकी माँ ने पूछा।

'मैं थक गया था।'

‘तो तुमने बैतर हाउस में खाना खाया?’ उसके पिता ने पूछा। ‘नवाब साहब कैसे हैं?’

मान का चेहरा लाल हो गया, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। यह असहनीय था। उसे खुशी थी कि उसे अपने पिता की दबदबे वाली निगरानी में नहीं रहना पड़ेगा।

‘तो तुमने रात का खाना कहाँ खाया?’ उसके पिता ने दोहराया।

‘मैंने कल रात खाना नहीं खाया। मुझे भूख नहीं थी। मैंने पूरी यात्रा के दौरान थोड़ा-थोड़ा खाया, और जब मैं पहुंचा तो मुझे भूख नहीं थी। बिल्कुल भी भूख नहीं थी।’

‘क्या तुमने रुधिया में अच्छा खाना खाया?’ उसकी माँ ने पूछा।

'हां, अम्माजी, मैंने अच्छे से खाया, मैंने हमेशा बहुत अच्छे से खाया,' मान ने अपनी आवाज में थोड़ी झुंझलाहट के साथ कहा।

वीना अपने भाई के मिजाज को भली-भांति समझती थी। उसे याद था कि बचपन में वह घर में उसके पीछे-पीछे घूमता रहता था। वह हमेशा हंसमुख रहता था, सिवाय तब जब वह किसी बात से अड़ियल या परेशान होता था। उसे गुस्सा तो आता था, लेकिन वह शायद ही कभी चिड़चिड़ाता था। हाल ही में कुछ ऐसा हुआ होगा जिससे वह परेशान या निराश हो गया होगा; उसे पूरा यकीन था। वह उससे इसके बारे में पूछने ही वाली थी—जिससे शायद वह और भी परेशान हो जाता—तभी भास्कर, मानो किसी तन्मयता से जागते हुए बोला: ‘रुधिया?’

‘रुधिया का क्या हुआ?’ मान ने पूछा।

भास्कर ने पूछा, 'आप रुधिया के किस हिस्से में थे?'

‘उत्तरी भाग—देबारिया के निकट।’

भास्कर ने कहा, 'ग्रामीण क्षेत्रों में यह निःसंदेह सबसे अनुकूल निर्वाचन

क्षेत्र है। उत्तरी रुधिया। नानाजी ने कहा था कि मुसलमानों और जाटवों की बड़ी संख्या उनके पक्ष में एक महत्वपूर्ण कारक थी।'

महेश कपूर ने अपना सिर हिलाया। उन्होंने भास्कर से कहा, 'चुप रहो। तुम नौ साल के हो। तुम्हें इन सब बातों के बारे में कुछ नहीं पता।'

“लेकिन नानाजी, सच में, यह सबसे बेहतरीन सीटों में से एक है!” भास्कर ने ज़ोर देकर कहा। “आप वहीं से चुनाव क्यों नहीं लड़ते—आपने कहा था कि नई पार्टी आपको मनचाही कोई भी सीट देगी। अगर आपको ग्रामीण सीट चाहिए, तो यही सीट चुनें। उत्तरी रुधिया में सलीमपुर-सह-बैतार। मैंने अभी तक शहरी सीटों का फैसला नहीं किया है।”

महेश कपूर ने कहा, 'बेवकूफ, तुम्हें राजनीति के बारे में कुछ नहीं पता। मुझे वो कागजात वापस चाहिए।'

भास्कर का पक्ष लेते हुए मान ने कहा, ‘मैं बकरीद पर रुधिया लौट रहा हूँ।’ अपने पिता की परेशानी देखकर वह खुश हो गया था। ‘लोग चाहते हैं कि मैं उनके साथ ईद मनाऊँ। मैं बहुत लोकप्रिय हूँ! और तुम मेरे साथ आ सकते हो। मैं तुम्हें तुम्हारे भावी निर्वाचन क्षेत्र में सभी से मिलवाऊँगा। सभी मुसलमानों से, सभी जाटवों से।’

महेश कपूर ने तीखे लहजे में कहा: 'मैं सबको जानता हूँ, मुझे किसी से परिचय कराने की ज़रूरत नहीं है। और यह मेरा भावी निर्वाचन क्षेत्र नहीं है, मैं यह बात स्पष्ट कर देना चाहता हूँ। और मैं आपको बता दूं कि आप बनारस वापस बसने जा रहे हैं, रुधिया में ईद की मौज-मस्ती करने नहीं।'

12.19

महेश कपूर ने जिस पार्टी को अपना जीवन समर्पित किया था, उसे बिना दर्द और पछतावे के नहीं छोड़ा था, और वे अब भी अपने फैसले को लेकर दुविधा में थे। उनका डर और उम्मीद यही थी कि कांग्रेस नहीं हारेगी। पार्टी सत्ता में और जनता की चेतना में दोनों जगह इतनी मज़बूती से जमी हुई

थी कि नेहरू को खोए बिना वह कैसे हार सकती थी? हालाँकि वे मौजूदा हालात से असंतुष्ट थे, फिर भी महेश कपूर के बने रहने के कई और अच्छे कारण थे। उनके द्वारा निर्मित ज़मींदारी उन्मूलन अधिनियम को अभी सर्वोच्च न्यायालय द्वारा वैध घोषित किया जाना और लागू किया जाना बाकी था। और यह स्पष्ट खतरा भी था कि एक मजबूत मंत्री पद के प्रतिद्वंद्वी की अनुपस्थिति में एल.एन. अग्रवाल अपने हाथों में और अधिक शक्ति समेट लेंगे।

महेश कपूर ने नेहरू को कांग्रेस पार्टी से बाहर निकालने के लिए एक सोची-समझी चाल चली थी (या उन्हें ऐसा करने के लिए राजी किया गया था)। या शायद यह सोची-समझी चाल नहीं, बल्कि एक मनमौजी चाल थी। या शायद मनमौजी भी नहीं, बल्कि सहज प्रवृत्ति थी। दरअसल, पर्दे के पीछे असली जुआरी नेहरू के अपने मंत्रिमंडल में दिल्ली स्थित संचार मंत्री, चतुर रफी अहमद किदवई थे, जो अपने बिस्तर पर एक सौम्य, सफेद टोपी पहने, चश्मा लगाए बुद्ध की तरह झुके हुए थे और उन्होंने महेश कपूर (जो उनसे मिलने आए थे) से कहा था कि अगर वे अब कांग्रेस पार्टी की बहती नाव से नहीं कूदे, तो वे इसे कभी भी रस्सी से खींचकर किनारे तक नहीं ला पाएंगे।

यह एक अटपटी सी धारणा थी, और यह बात इसे और भी संदिग्ध बना देती थी कि रफी साहब, अपनी असाधारण विचार-शैली और तेज कारों के शौक के बावजूद, कभी भी तेज गति के आदी नहीं थे—या यूं कहें कि किसी भी तरह के शारीरिक व्यायाम के, कूदने, तैरने और खींचने की तो बात ही छोड़िए। लेकिन वे अपनी बातों से लोगों को प्रभावित करने में माहिर थे। चतुर व्यापारी भी उनकी उपस्थिति में अपनी चतुराई खो बैठते थे और हजारों रुपये लुटा देते थे, जिसे वे तुरंत जरूरतमंद विधवाओं, गरीब छात्रों, पार्टी नेताओं और यहां तक कि अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों

को भी दे देते थे। उनके मिलनसार स्वभाव, उदारता और बुद्धिमत्ता ने महेश कपूर से कहीं अधिक कठोर राजनेताओं को भी मोहित कर लिया था।

रफ़ी साहब को कई चीज़ों का शौक था—फाउंटेन पेन, आम और घड़ियाँ उनमें से कुछ थीं—और उन्हें चुटकुलों का भी शौक था; और महेश कपूर, जिन्होंने आखिरकार मनोवैज्ञानिक दांव खेलकर इस पर विचार किया, सोच रहे थे कि कहीं यह उनका कोई अजीबोगरीब और विनाशकारी दांव तो नहीं होगा। नेहरू ने अभी तक कांग्रेस छोड़ने का कोई ठोस संकेत नहीं दिया था, जबकि उनके वैचारिक समर्थक ही उनसे दूर होते जा रहे थे। समय ही बताएगा, और समय ही सबसे महत्वपूर्ण था। रफ़ी साहब, जो अपने चारों ओर चल रही छह बातों के बीच चुपचाप मुस्कुराते हुए बैठे रह सकते थे, अचानक किसी असाधारण रुचि और अंतर्दृष्टि वाले वाक्य पर गिरगिट की तरह मक्खी पकड़ने की तरह झपट्टा मार देते थे। राजनीति के बदलते परिदृश्यों को समझने की उनकी ऐसी ही सहज क्षमता थी: जैसे गंदे, कीचड़ भरे पानी में भी मगरमच्छों से डॉल्फ़िन को अलग करने की सोनार जैसी क्षमता, और सही समय पर कार्रवाई करने का अद्भुत ज्ञान। महेश कपूर के जाने पर उन्होंने उन्हें एक घड़ी भेंट की थी—महेश कपूर की अपनी घड़ी की स्प्रिंग टूट गई थी—और कहा था: 'मैं गारंटी देता हूँ कि नेहरू, आप और मैं एक ही मंच से लड़ेंगे, चाहे कुछ भी हो जाए। तेरहवें महीने के तेरहवें दिन तेरह बजे, कपूर साहब, इस घड़ी को देखिए और बताइए कि क्या मैं गलत था।'

12.20

ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय छात्र संघ के चुनावों के समय परिसर के अंदर और बाहर दोनों जगह राजनीतिक गतिविधियों में ज़बरदस्त उछाल आया। मुद्दों का एक बड़ा घालमेल था: एक ओर सिनेमा टिकटों की रियायतें, तो

दूसरी ओर प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के वेतन विवाद में उनके साथ एकजुटता का आह्वान; पंडित नेहरू की गुटनिरपेक्ष विदेश नीति के समर्थन के साथ-साथ अधिक रोज़गार के अवसरों की मांग; विश्वविद्यालय की कठोर आचार संहिता में संशोधन—और सिविल सेवा परीक्षाओं में हिंदी के प्रयोग पर ज़ोर। कुछ दल—या कुछ दलों के नेता, क्योंकि दल कहाँ समाप्त होते हैं और नेता कहाँ से शुरू होते हैं, यह समझना अपने आप में एक कठिन काम था—मानते थे कि प्राचीन हिंदू परंपराओं की ओर लौटने से भारत की सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। वहीं दूसरी ओर, अन्य लोग इस बात पर ज़ोर देते थे कि समाजवाद, चाहे उसे अलग-अलग तरह से परिभाषित किया जाए या समझा जाए, सभी समस्याओं का रामबाण इलाज है।

माहौल उथल-पुथल और झड़पों से भरा था। शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत थी और कोई भी अपनी पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे रहा था; परीक्षाएं नौ महीने दूर थीं। छात्र कॉफी हाउस, प्रतिनिधिमंडल के आवासों या छात्रावासों में गपशप करते, कक्षाओं के बाहर समूहों में इकट्ठा होते, छोटे-छोटे जुलूस निकालते, उपवास करते और एक-दूसरे को लाठी-पत्थर से पीटते। कभी-कभी उन्हें उन स्थानीय पार्टियों से मदद मिलती जिनसे वे जुड़े हुए थे, लेकिन इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी। छात्रों ने अंग्रेजों के शासनकाल में भी उपद्रव करना सीख लिया था, और दिल्ली और ब्रह्मपुर में सत्ता परिवर्तन के कारण पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही मेहनत से अर्जित सामूहिक कौशल को व्यर्थ करने का कोई कारण नहीं था। इसके अलावा, कांग्रेस सरकार अपनी सुस्ती और देश की समस्याओं को हल करने में असमर्थता के कारण छात्रों के बीच अलोकप्रिय थी, जो स्थिरता को किसी भी तरह से अंतिम लक्ष्य नहीं मानते थे।

कांग्रेस पार्टी को उम्मीद थी कि वह आसानी से जीत जाएगी, जैसा कि

अक्सर बड़े, बेढंगे, मध्यमार्गी दलों के साथ होता है। उसे उम्मीद थी कि वह जीत जाएगी, भले ही उसका राष्ट्रीय नेतृत्व मतभेदों से घिरा हुआ था, भले ही पटना में हुई बैठक के बाद से कांग्रेसी बड़ी संख्या में पार्टी छोड़ रहे थे, भले ही सबसे प्रमुख स्थानीय कांग्रेसी नेता का नाम छात्रों के बीच बदनाम हो चुका था—विश्वविद्यालय के कोषाध्यक्ष के रूप में कार्यपालिका परिषद में उनके हथकंडों के कारण और लाठी चलाने वाले गृह मंत्री के रूप में। छात्र कांग्रेस पार्टी का नारा था: 'हमें समय दीजिए। हम स्वतंत्रता की पार्टी हैं, जवाहरलाल नेहरू की पार्टी हैं, एल.एन. अग्रवाल की नहीं। भले ही हालात नहीं सुधरे हैं, लेकिन अगर आप हम पर भरोसा बनाए रखेंगे तो सुधरेंगे। अगर आप अभी नेता बदलेंगे, तो निश्चित रूप से हालात नहीं सुधरेंगे।'

लेकिन अधिकांश छात्र यथास्थिति के पक्ष में मतदान करने के इच्छुक नहीं थे; उनके पास न तो जीवनसाथी थे, न बच्चे, न नौकरी, न आय का कोई साधन, जिसके खोने का डर अस्थिरता के रोमांच को संतुलित कर सके। न ही उन्हें भविष्य के लिए उन लोगों पर भरोसा था जिन्होंने अतीत में कोई योग्यता नहीं दिखाई थी। देश को विदेशों से भोजन की भीख मांगनी पड़ रही थी। अर्थव्यवस्था, कभी कम योजनाबद्ध तो कभी अधिक योजनाबद्ध, एक संकट से दूसरे संकट में फंसी हुई थी। स्नातक होने के बाद छात्रों के लिए नौकरियों के अवसर भी बहुत कम थे।

स्वतंत्रता के बाद का उनका रोमांटिकवाद और स्वतंत्रता के बाद की निराशा एक अस्थिर मिश्रण बन गई। कांग्रेस का तर्क खारिज हो गया और सोशलिस्ट पार्टी ने चुनाव जीत लिया। रशीद पार्टी के उम्मीदवारों में शामिल थे और पदाधिकारी बन गए।

मालती त्रिवेदी, जो खुद को समाजवादी मानने की संभावना नहीं समझती थीं, लेकिन उन्होंने इस सब का आनंद लेने और चर्चाओं में रुचि होने के

कारण, और अपने कुछ मित्रों (जिनमें उनका संगीतकार भी शामिल था) के समाजवादी होने के कारण इसमें भाग लिया, उन्हें पद में कोई दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन उन्होंने चुनाव के एक सप्ताह बाद आयोजित होने वाले 'विजय-सह-विरोध' मार्च में शामिल होने की योजना बनाई थी।
शीर्षक में 'विरोध' शब्द का प्रयोग इस तथ्य से प्रेरित है कि समाजवादी पार्टी—साथ ही अन्य सभी पार्टियां जो इसमें शामिल होना चाहती थीं—प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों के कम वेतन के विरोध में प्रदर्शन करने जा रही थीं। दस हजार से अधिक प्राथमिक विद्यालय शिक्षक थे, और यह शर्मनाक था कि उनका वेतन इतना कम था, जो निश्चित रूप से सम्मानजनक जीवन यापन के लिए पर्याप्त नहीं था, बल्कि ग्राम पटवारियों के वेतन से भी कम था। शिक्षकों ने अपनी बात मनवाने के कई असफल प्रयासों के बाद हड़ताल का रुख किया था। चिकित्सा और विधि महाविद्यालयों सहित कई छात्र संघों ने इस आंदोलन को अपना समर्थन देने का वादा किया था। शिक्षा उनके लिए महत्वपूर्ण थी, और यह विश्वविद्यालय के भविष्य, वास्तव में, देश के नागरिकों की गुणवत्ता से भी जुड़ी थी। इसके अलावा, यह एक ऐसा उत्कृष्ट केंद्र था जिससे वे अपने मन में आने वाली किसी भी बात को जोड़ सकते थे। इनमें से कुछ संघ न केवल विश्वविद्यालय बल्कि पूरे ब्रह्मपुर में हलचल मचाने में रुचि रखते थे; दिलचस्प बात यह है कि उग्रवाद का एक छोटा सा केंद्र मुस्लिम लड़कियों का एक समूह था जो अभी भी पर्दा प्रथा का पालन कर रही थीं।
गृह मंत्री एल.एन. अग्रवाल ने स्पष्ट कर दिया था कि शांतिपूर्ण जुलूस एक बात है और उपद्रवी भीड़ का बेकाबू जमावड़ा दूसरी। वे उपलब्ध सभी साधनों से इसे नियंत्रित करेंगे। यदि लाठीचार्ज आवश्यक हुआ तो वे इसका आदेश भी देंगे।
चूंकि मुख्यमंत्री कुछ दिनों के लिए दिल्ली में थे, इसलिए दस छात्रों का

एक प्रतिनिधिमंडल (जिनमें रशीद भी शामिल था) गृह मंत्री से मिलने गया, जो एस.एस. शर्मा की अनुपस्थिति में कार्यभार संभाल रहे थे। वे सचिवालय स्थित उनके कार्यालय में जमा हो गए। उन्होंने एक-दूसरे को प्रभावित करने के साथ-साथ उन्हें मनाने की उम्मीद में भी तीखे शब्दों में अपनी मांगें रखीं। उन्होंने उन्हें वह सम्मान नहीं दिया जो मुख्यमंत्री अपने बड़ों को देना उचित समझते थे, विशेषकर उन बड़ों को जिन्होंने (उनके विपरीत) अपने देश को स्वतंत्र देखने के लिए कष्ट, बर्बादी और वर्षों तक जेल का सामना किया था। उन्होंने उनकी मांगें मानने से इनकार कर दिया और कहा कि वे या तो शिक्षा मंत्री से बात करें या मुख्यमंत्री के लौटने पर उनसे स्वयं बात करें। उन्होंने शहर में हर कीमत पर व्यवस्था बनाए रखने के अपने स्पष्ट रुख से भी पीछे नहीं हटे।

'क्या इसका मतलब यह है कि अगर हम हद पार कर गए तो आप हमें गोली मार देंगे?' रशीद ने एक द्वेषपूर्ण नज़र से पूछा।

गृह मंत्री ने कहा, 'मैं ऐसा करना पसंद नहीं करूंगा,' मानो यह विचार उन्हें बिल्कुल भी अप्रिय न लगे, 'लेकिन, कहने की जरूरत नहीं है, ऐसी नौबत नहीं आएगी।' उन्होंने मन ही मन सोचा, 'खैर, अभी विधानमंडल का सत्र नहीं चल रहा है कि इस बारे में मुझसे सवाल किया जा सके।'

'यह अंग्रेजों के ज़माने जैसा है,' रशीद ने चौक में पुलिस फायरिंग को जायज़ ठहराने वाले व्यक्ति को घूरते हुए गुस्से से कहा, और शायद उसमें मनमानी और तानाशाही की ही छवि देख रहा था। 'अंग्रेजों ने हम पर लाठियाँ चलाईं, उन्होंने हम छात्रों पर गोलियाँ भी चलाईं, भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान। ब्रह्मपुर में—चौक में, कैप्टनगंज में—अंग्रेजों ने हमारा खून बहाया था।'

उनके भाषण से प्रभावित होकर प्रतिनिधिमंडल के बाकी सदस्य काफी गुस्से में आपस में फुसफुसाने लगे।

‘जी हाँ,’ गृह मंत्री ने उन्हें बीच में ही रोकते हुए कहा। ‘मैं जानता हूँ। मैंने यह सब देखा है। तब आप बारह साल के लड़के रहे होंगे, जो उत्सुकता से आईने में अपने बाल उगने के पहले संकेतों का इंतज़ार कर रहे होंगे। जब आप “हम छात्र” कहते हैं, तो आपका मतलब खुद से नहीं है, बल्कि आपके पूर्ववर्तियों का खून बहा था। और, मैं यह भी कहना चाहूँगा, मेरे कुछ लोगों का भी। दूसरों के खून पर सत्ता तक पहुँचना बहुत आसान है। और जहाँ तक भारत छोड़ो आंदोलन की बात है, यह अब एक भारतीय सरकार है, और मुझे उम्मीद है कि आप नहीं चाहते कि हम भारत छोड़ दें।’ वे थोड़ी देर हँसे। ‘अब अगर आपके पास कुछ उपयोगी कहना है, तो कहिए। वरना जाइए। आपके पास पढ़ने के लिए किताबें भले ही न हों, लेकिन मेरे पास मेरी फाइलें हैं। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि यह मार्च किस बारे में है। यह प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के वेतन के बारे में नहीं है। यह राज्य और देश की कांग्रेस सरकार पर संगठित रूप से हमला करने और शहर में असंतोष और अशांति फैलाने का एक तरीका है।’ उन्होंने हाथ के पिछले हिस्से से तिरस्कारपूर्ण इशारा किया। ‘अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित रखें। यही मेरी आपको सलाह है, एक सच्चे मित्र के रूप में—और विश्वविद्यालय के कोषाध्यक्ष के रूप में—और गृह मंत्री के रूप में —और कार्यवाहक मुख्यमंत्री के रूप में; और यही सलाह आपके कुलपति की भी है। और आपके शिक्षकों की भी। और आपके माता-पिता की भी।’
‘और भगवान,’ छात्र संघ के अध्यक्ष ने कहा, जो नास्तिक थे।
गृह मंत्री ने शांत स्वर में कहा, 'बाहर निकलो।'

12.21

लेकिन मार्च के लिए निर्धारित दिन से एक शाम पहले शहर में एक ऐसी घटना घटी जिसने दोनों पक्षों को एक मुद्दे पर अस्थायी रूप से एक साथ ला खड़ा किया।

नबीगंज स्थित मनोरमा टॉकीज सिनेमा हॉल, जहां दीदार फिल्म दिखाई जा रही थी, और वास्तव में महीनों से लगातार हाउसफुल या लगभग हाउसफुल शो चल रहे थे, लगभग एक छात्र दंगे का स्थल बन गया।

ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार छात्रों को दूसरी या देर रात के शो में जाने की मनाही थी, लेकिन इस नियम का पालन शायद ही कोई करता था। विशेष रूप से, विश्वविद्यालय के छात्रावासों के बाहर रहने वाले छात्र जब चाहे इसका उल्लंघन करते थे। दीदार एक बेहद लोकप्रिय फिल्म थी। इसके गाने हर किसी की जुबान पर थे और यह बूढ़े-जवान सभी को पसंद आती थी; ऐसा भी हो सकता है कि किसी शाम डॉ. किशन चंद सेठ और मारह के राजकुमार ने एक साथ इसे देखकर खूब आंसू बहाए हों। लोगों ने इसे कई बार देखा। इसका अंत असामान्य रूप से दुखद था, लेकिन ऐसा नहीं था कि उसे देखकर पर्दा फाड़ने या थिएटर में आग लगाने का मन करे।

समस्या की जड़ यह थी कि उस शाम प्रबंधन ने टिकट काउंटर को सख्त हिदायत दी थी कि अगर पर्याप्त टिकट खरीदार मिल जाएं तो छात्रों को छूट न दी जाए। यह शाम का शुरुआती शो था। दो छात्रों को, जिनमें से एक ने पहले भी फिल्म देखी थी, बताया गया कि हॉल फुल है। पिछले अनुभव के कारण वे प्रबंधन पर भरोसा नहीं करते थे। जब उनके बाद आए कई अन्य लोगों को टिकट मिल गए, तो वे पहले टिकट की कतार में खड़े लोगों से बहस करने लगे—जब एक महिला ने उन्हें चुप रहने को कहा, तो उन्होंने उसे फिल्म का अंत बता दिया—और फिर टिकट काउंटर पर कर्मचारियों पर चिल्लाने लगे। कर्मचारी बेफिक्र होकर अपना काम करते रहे—जब तक कि छात्र, जिनमें से एक के पास छाता था, इतने बेकाबू नहीं हो गए कि उन्होंने सिनेमा हॉल के दरवाजों के शीशे तोड़ दिए। कुछ दर्शक चिल्लाने लगे और पुलिस को बुलाने की धमकी देने लगे,

लेकिन प्रबंधन पुलिस को बुलाना नहीं चाहता था। कर्मचारियों ने प्रोजेक्शनिस्ट और कुछ अन्य लोगों को इकट्ठा किया, छात्रों की पिटाई की और उन्हें बाहर निकाल दिया। कुछ ही मिनटों में मामूली झड़प समाप्त हो गई, और इससे दर्शकों के बाद के मूड पर ज्यादा असर नहीं पड़ा।

पहले शो के खत्म होते-होते, करीब चार सौ नाराज छात्रों की भीड़ जमा हो गई थी, जो प्रबंधन की गैरकानूनी कार्रवाइयों—खासकर उनके दो साथियों के साथ हुई बदसलूकी—के खिलाफ धमकी भरे लहजे में प्रदर्शन कर रही थी। उन्होंने टिकट काउंटर से उन सभी लोगों को भगा दिया था जो दूसरे शो के लिए टिकट खरीदने की सोच रहे थे या जिन्होंने पहले से टिकट खरीद लिए थे और लॉबी में प्रवेश करने की कोशिश कर रहे थे।

हल्की-हल्की बारिश शुरू हो गई थी, लेकिन छात्र जाने को तैयार नहीं थे। वे गुस्से में थे, फिर भी उत्साहित थे, क्योंकि वे यहाँ कुख्यात मनोरमा टॉकीज़ के दरवाज़े के सामने अपनी ताकत का प्रदर्शन कर रहे थे। यह सिनेमाघर, दीदार की लगातार सफलता के कारण, जो पूरे दाम पर भी ग्राहकों को आकर्षित कर रहा था, और साथ ही अपने उस अड़ियल प्रबंधक के कारण, जिसे मुनाफ़े से ज़्यादा कानून की परवाह नहीं थी, महीनों से उनके साथ भेदभाव कर रहा था। छुट्टियों से तरोताज़ा, हाल ही में हुए छात्र चुनावों से उत्साहित, और अपने स्वाभिमान और जेब पर हुए हमले से नाराज़, छात्रों ने चिल्लाकर कहा कि वे प्रबंधन को दिखा देंगे कि वे किस चीज़ के बने हैं, कि सिनेमाघर को 'या तो सबक सीखना होगा या जल जाना होगा', और लाठियों से कर्मचारियों को वह सबक मिलेगा जो पास से नहीं मिला। पहले शो के दुखी और दबे हुए दर्शक बाहर आने लगे। वे एक उग्र भीड़ को देखकर हैरान रह गए, जिसने पहले हुई हिंसा में उनकी सहमति की निंदा की। 'शर्म! शर्म!' छात्रों ने चिल्लाकर कहा। दर्शकों में मौजूद बुजुर्ग और यहां तक कि बच्चे भी शामिल थे, जिन्होंने

आंसुओं से भीगे चेहरों के साथ असमंजस भरी निगाहों से उनकी ओर देखा।

हालात बिगड़ने लगे। हिंसा तो नहीं हुई, लेकिन कुछ दर्शकों को उनकी कारों में बैठने नहीं दिया गया और वे डर के मारे जल्दी से वहां से चले गए, क्योंकि उन्हें लगा कि अगर वे रुके रहे तो उनकी सुरक्षा को खतरा हो सकता है। आखिरकार जिला मजिस्ट्रेट, पुलिस उपाधीक्षक और विश्वविद्यालय के प्रॉक्टर मौके पर पहुंचे। उन्होंने समस्या की प्रकृति का पता लगाने की कोशिश की। उन सभी का मानना था कि इसके लिए प्रबंधन जिम्मेदार है, लेकिन छात्रों को अपनी शिकायत उचित माध्यम से दर्ज करानी चाहिए थी। प्रॉक्टर ने यह बात भी समझाने की कोशिश की कि छात्रों को दूसरे शो से पहले प्रदर्शन करने का कोई अधिकार नहीं था, लेकिन यह स्पष्ट था कि बरसात की रात में चार सौ क्रोधित छात्रों का सामना करते हुए वे तुरंत अपने सामान्य अधिकार का प्रयोग नहीं कर सकते थे। शोरगुल में उनकी आवाज दब गई। जब उन्हें लगा कि छात्रों को उनके अपने संघ के पदाधिकारियों के अलावा किसी और से शांत नहीं किया जा सकता या उचित माध्यमों की उपयुक्तता के बारे में समझाया नहीं जा सकता, तो उन्होंने उनसे मिलने की कोशिश की। उनमें से दो, हालांकि रशीद नहीं, भीड़ में मौजूद थे। लेकिन उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि वे तब तक कोई कार्रवाई नहीं करेंगे जब तक कोषाध्यक्ष कार्यकारी परिषद के प्रतिनिधि के रूप में उनकी ओर से उपस्थित होकर यह प्रदर्शित न कर दें कि परिषद सामान्यतः छात्रों की रक्षा के लिए कार्य करती है, न कि केवल उन पर अपनी इच्छा थोपने के लिए। यह एल.एन. अग्रवाल की उपस्थिति की मांग करने का एक तरीका था।

मैनेजर, जो छात्रों की पिटाई के तुरंत बाद और भीड़ जमा होने से पहले घर चला गया था, यह सुनकर तुरंत घटनास्थल पर पहुंचा कि पुलिस

उसकी सुरक्षा करेगी लेकिन मनोरमा टॉकीज की सुरक्षा केवल वही कर सकता है। वह बेहद दुखी था। उसने छात्रों को 'मेरे प्यारे दोस्तों' कहकर पुकारा। एक छात्र के हाथों और पीठ पर चोट के निशान देखकर वह रो पड़ा। उसने अपने छात्र जीवन के दिनों की बातें कीं। उसने सभी को 'दीदार' फिल्म का विशेष प्रदर्शन दिखाने का प्रस्ताव दिया। लेकिन यह काफी नहीं था। छात्र संघ ने जोर देकर कहा, 'हमारे विश्वविद्यालय के कोषाध्यक्ष हमारा प्रतिनिधित्व करेंगे। केवल वही हमें नियंत्रित करना जानते हैं।' दरअसल, वे खुद चाहते थे कि यह घटना हिंसक न हो, क्योंकि इससे अगले दिन होने वाले विजय-सह-विरोध मार्च पर असर पड़ेगा, और वे नहीं चाहते थे कि आम जनता को लगे कि छात्र केवल अपने तुच्छ विशेषाधिकारों के लिए प्रदर्शन कर रहे हैं, न कि समाज की भलाई के लिए।

एल.एन. अग्रवाल ने डीएसपी से कहा था कि उन्हें यह मामला खुद संभालना चाहिए और हर छोटी-मोटी गड़बड़ी के लिए गृह मंत्री को फोन नहीं करना चाहिए। लेकिन अंततः अपने सहकर्मी, प्रॉक्टर के फोन कॉल पर वे घटनास्थल पर आने के लिए राजी हो गए। बड़ी अनिच्छा से ही सही, वे वहाँ गए। उन्हें उपद्रवी भीड़ से ज़रा भी सहानुभूति नहीं थी। छात्रों को इस बात का एहसास नहीं था कि वे अपने देशवासियों की तुलना में कितने विशेषाधिकार प्राप्त हैं। वे जानबूझकर इस बात से अनभिज्ञ थे कि वे अपनी शिक्षा के लिए कितना कम भुगतान करते हैं, और इसका दो-तिहाई हिस्सा सरकार द्वारा सब्सिडी प्राप्त है। वे बेहद लाड़-प्यार में पले-बढ़े थे, और अग्रवाल को उन रियायतों पर खेद था जो उन्हें मनोरंजन के लिए मिल रही थीं। लेकिन चूंकि रियायतें मौजूद थीं, इसलिए उन्हें प्रबंधक से कहना पड़ा कि उन्हें छात्रों की मांगें माननी ही होंगी।

परिणामस्वरूप, दोषी कर्मचारियों को बर्खास्त कर दिया गया; प्रबंधक ने

प्रॉक्टर को एक क्षमा पत्र प्रस्तुत कर घटना पर खेद व्यक्त किया और छात्रों को 'हर समय सर्वोत्तम सेवा' का आश्वासन दिया; प्रत्येक पीड़ित छात्र को दो सौ रुपये का मुआवजा दिया गया; और प्रबंधक ब्रह्मपुर के सभी सिनेमाघरों में अपने क्षमा पत्र की स्लाइड दिखाने के लिए सहमत हो गया।

छात्र संघ ने भीड़ को शांत किया। छात्र तितर-बितर हो गए। पुलिस चली गई। और एल.एन. अग्रवाल विधायकों के छात्रावास में अपने दो कमरों में लौट आए, उपद्रवी भीड़ की ओर से कार्रवाई करने के कारण वे बेहद क्रोधित थे। प्रबंधक के कार्यालय से बाहर निकलते ही कुछ छात्रों ने उनका मज़ाक उड़ाया। एक छात्र ने तो उनके उपनाम की तुकबंदी हिंदी शब्द 'दलाल' से कर दी। गृह मंत्री ने सोचा कि बचकानेपन, स्वार्थ और कृतघ्नता में तो इनकी बराबरी करना मुश्किल है। और कल फिर, निःसंदेह, हिंसा के प्रति उनकी प्रवृत्ति सामने आ जाएगी। खैर, अगर वे प्रवृत्ति और कार्रवाई के बीच की सीमा को पार करते हैं तो पुलिस तैयार रहेगी।

12.22

अगले दिन, एल.एन. अग्रवाल की आशंकाएँ या आशाएँ सच हो गईं। प्राथमिक विद्यालय से निकलते ही जुलूस शांतिपूर्ण ढंग से शुरू हुआ। लड़कियाँ (जिनमें मालती भी शामिल थीं) पुलिस कार्रवाई को रोकने के लिए आगे-आगे चल रही थीं और लड़के उनके पीछे। वे सरकार के खिलाफ और प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के समर्थन में नारे लगा रहे थे, जिनमें से कुछ उनके साथ जुलूस में शामिल थे। लोग अपने घरों की खिड़कियों से, दुकानों के खुले सामने से या छतों से जुलूस को देख रहे थे। कुछ ने छात्रों का हौसला बढ़ाया, तो कुछ ने अपने कारोबार में बाधा की शिकायत की। प्राथमिक विद्यालयों में एक और दिन की हड़ताल थी,

और कई बच्चों ने अपने पहचाने हुए शिक्षकों को हाथ हिलाकर अभिवादन किया। शिक्षकों ने भी कभी-कभी हाथ हिलाकर अभिवादन किया। सुबह मौसम साफ़ था, और पिछली रात की बारिश के कुछ ही गड्ढे बचे थे।

कुछ बैनरों में विश्वविद्यालय के उस कदम का विरोध किया गया था जिसमें छात्र संघ की सदस्यता को स्वैच्छिक बनाने की मांग की गई थी। कुछ अन्य बैनरों में बढ़ती बेरोजगारी का विरोध किया गया था। लेकिन उनमें से अधिकांश बैनरों में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की दुर्दशा का विरोध किया गया था और उनके प्रति एकजुटता व्यक्त की गई थी।

जब भीड़ सचिवालय से सौ गज की दूरी तक पहुँची, तो लाठियों से लैस पुलिसकर्मियों की एक बड़ी टुकड़ी ने उनका रास्ता रोक दिया। छात्र रुक गए। पुलिस आगे बढ़ी और तब तक उनके बीच खड़ी रही जब तक कि वे एक-दूसरे से पाँच गज की दूरी पर नहीं आ गए। डीएसपी के निर्देश पर एक इंस्पेक्टर ने छात्रों को या तो तितर-बितर होने या वापस लौटने को कहा। उन्होंने इनकार कर दिया। वे लगातार नारे लगा रहे थे, लेकिन अब ये नारे और भी अपमानजनक होते जा रहे थे और इनमें न केवल सरकार बल्कि पुलिस को भी निशाना बनाया जा रहा था। पुलिस, जो अंग्रेजों की चमची थी, अब कांग्रेसियों की चमची बन गई थी; उन्हें धोती पहननी चाहिए, शॉर्ट्स नहीं; इत्यादि।

पुलिसकर्मी बेचैन हो गए। वे भीड़ में सबसे ज़ोर-ज़ोर से नारे लगाने वालों को पकड़ना चाहते थे। लेकिन बुर्का पहने लड़कियों के घेरे ने लड़कों को घेर रखा था, इसलिए उनके लिए लाठियाँ लहराकर धमकी देने के अलावा कुछ और करना मुश्किल था। दूसरी ओर, छात्रों को यह समझ आ गया था कि एल.एन. अग्रवाल की तमाम धमकियों के बावजूद, पुलिस के पास लाठियाँ थीं, हथियार नहीं, और इससे उनका साहस और बढ़ गया।

उनमें से कुछ ने गृह मंत्री की पर्दे के पीछे की धूर्त शैली को याद करते

हुए, उन्हें व्यक्तिगत रूप से निशाना बनाना शुरू कर दिया; पिछली रात की तरह उनके नाम को 'दलाल' के साथ तुकबंदी करने के अलावा, उन्होंने कई नए दोहे भी गढ़े, जैसे:

‘Maananiya Mantri, kya hain aap?
Aadha maanav, aadha saanp.’

मंत्री जी, आप किस रूप में प्रकट होते हैं?
आधा इंसान, आधा सांप।

कुछ लोगों ने सीधे तौर पर उनकी मर्दानगी को चुनौती दी। रशीद और छात्र संघ के एक अन्य पदाधिकारी ने छात्रों को शांत रखने और उनके नारों को उद्देश्यपूर्ण बनाए रखने का प्रयास किया, लेकिन इसका कोई खास फायदा नहीं हुआ। एक तो यह कि कुछ प्रदर्शनकारी उन छात्र संघों से संबंधित थे जिन पर नव निर्वाचित समाजवादी पार्टी के छात्र संघ का कोई वास्तविक नियंत्रण नहीं था। दूसरा, सभा में एक प्रकार का नशा छाया हुआ था। उच्च विचारों वाले बैनर अब निम्न स्तर के उपहास के साथ दयनीय रूप से विरोधाभास पैदा कर रहे थे।

यह देखकर कि जिस विरोध प्रदर्शन को आयोजित करने में उसने मदद की थी, वह पूरी तरह से बेकाबू हो रहा था, रशीद ने अब कम से कम अपने आस-पड़ोस के लोगों को शांत करने की कोशिश की। वे मान तो गए, लेकिन बाकी लोग नहीं माने। दरअसल, तब तक कई अन्य समूहों में भी ज़ोरदार गालियाँ और अपशब्द शुरू हो चुके थे। उसने चिल्लाकर समझाने की कोशिश की कि यह उनके मार्च या उनके मंच का मकसद नहीं था, लेकिन वह खुद उनके गुस्से का शिकार बन गया। मेडिकल कॉलेज के एक युवा, जो बहुत ही हाज़िरजवाब और जोशीला था, ने उससे कहा: 'अभी तुम ऑल इंडिया रेडियो थे, अब तुम अग्रवाल की जेब में रेंगने वाली छोटी गिलहरी हो। पहले तुम हमें भड़काते हो, फिर शांत करने की

कोशिश करते हो। हम कोई खिलौने नहीं हैं।' और जैसे पदाधिकारियों से अपनी आज़ादी साबित करने के लिए, वह लड़का अब लड़कियों के सुरक्षा घेरे को पार करके आगे बढ़ा और पुलिस के आगे बढ़ने पर पीछे हटते हुए अपनी गालियाँ बरसाता रहा। उसके दोस्त हँसे, लेकिन रशीद, पुलिसकर्मियों के चेहरों को देखकर डर गया और इस सिद्धांतवादी मार्च के इस विकृत रूप से घृणा करते हुए, मुँह फेर लिया—और कुछ अन्य छात्रों की हूटिंग के बावजूद, वापस मुड़ गया। लड़के की कही बात में इतनी सच्चाई थी कि उसे दिल से बेचैनी होने लगी।

कुछ छोटे-छोटे समूह ही सबसे घटिया किस्म के बेतुके ताने मार रहे थे। लेकिन इन तानों से भीड़ में मौजूद ज़्यादातर लड़कियाँ और कुछ अन्य लोग, जिनमें कई शिक्षक भी शामिल थे, भड़क उठे। वे वहाँ से जाने लगे। सचिवालय स्थित अपने कार्यालय से सब कुछ देख रहे एल.एन. अग्रवाल ने संतोष के साथ देखा कि सुरक्षा घेरा पतला होता जा रहा है, और उन्होंने संदेश भेजा कि बचे हुए छात्रों को भी वहाँ से हटा दिया जाए। निर्देश लेने आए डीएसपी से उन्होंने कहा, 'इन्हें सिखाओ कि पाठ कक्षा के अंदर के साथ-साथ बाहर भी पढ़ाए जा सकते हैं।'

डीएसपी ने लगभग कृतज्ञतापूर्वक कहा, 'जी सर।'

पुलिस के अपमान के बाद, डीएसपी बिना किसी खास पछतावे के अपने निर्देशों का पालन करता था।

उन्होंने इंस्पेक्टरों, सब-इंस्पेक्टरों और कांस्टेबलों को आदेश दिया कि वे छात्रों को सबक सिखाएं, और उन्होंने ऐसा ही किया। लाठीचार्ज क्रूर और अचानक हुआ। कई छात्रों की बुरी तरह पिटाई हुई। पिछली रात की बारिश के पानी में कुछ खून मिलकर सड़क पर फैल गया। कई वार बेहद गंभीर थे। कुछ युवकों की हड्डियां टूट गईं: पसलियां, पैर या हाथ, जिन्हें उन्होंने अपने सिर को चोट से बचाने के लिए ऊपर उठाया था।

पुलिसकर्मियों ने उन्हें सड़क से घसीटकर पुलिस वैन की ओर ले गए, कभी पैरों से तो कभी उनके सिर सड़क पर उछलते या घिसटते रहे। वे इतने क्रोधित थे कि स्ट्रेचर का इस्तेमाल भी नहीं कर पाए।

एक लड़का खोपड़ी में चोट लगने के कारण मौत के कगार पर एक वैन में पड़ा था। वह मेडिकल कॉलेज का छात्र था।

12.23

जब एस.एस. शर्मा उस दोपहर लौटे तो उन्होंने एक खतरनाक स्थिति का सामना किया। जो विरोध मार्च के रूप में शुरू हुआ था, उसने अब पूरे शहर को परेशान और भयभीत कर दिया था। अपनी राजनीतिक संबद्धताओं की परवाह किए बिना, छात्रों ने पुलिस की क्रूरता, जिसे कुछ लोगों ने अपराध भी कहा, के खिलाफ एकजुट होकर विरोध प्रदर्शन किया। मेडिकल कॉलेज के पास धरना शुरू हो गया, जहाँ (पुलिस को उसकी चोटों की गंभीरता का एहसास होने पर) छात्र को उतारा गया था। कई हज़ार छात्र मेडिकल कॉलेज के बाहर लड़के के स्वास्थ्य के बारे में खबर का इंतजार कर रहे थे। कहने की जरूरत नहीं है कि उस दिन विश्वविद्यालय में कहीं भी कक्षाएं नहीं चलीं, और न ही कुछ समय तक चलने वाली थीं।

गृह मंत्री को लड़के की मौत होने की आशंका थी, इसलिए उन्होंने मुख्यमंत्री को सेना बुलाने और जरूरत पड़ने पर मार्शल लॉ लागू करने की सलाह दी। उन्होंने स्वयं पहले ही पुलिस कर्फ्यू लगा दिया था, जो उसी शाम से लागू होना था।

एस.एस. शर्मा चुपचाप सुनते रहे। फिर उन्होंने कहा, 'अग्रवाल, ऐसा क्यों है कि मैं दो दिन के लिए भी शहर से बाहर नहीं जा सकता, बिना आपके कोई न कोई समस्या दिए? अगर आप अपने काम से ऊब गए हैं, तो मैं आपको कोई और काम दे दूंगा।'

लेकिन एल.एन. अग्रवाल गृह मंत्री होने के नाते मिलने वाली शक्ति का भरपूर आनंद लेते थे और वे जानते थे कि यह पोर्टफोलियो किसी और को नहीं दिया जा सकता, खासकर अब जब यह एक खुला रहस्य था कि महेश कपूर कांग्रेस पार्टी और सरकार से अपने इस्तीफे की घोषणा करने वाले थे। उन्होंने कहा: 'मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया है। दयालुता से कोई राज्य नहीं चलाया जा सकता।'

तो क्या आप सेना को बुलाने का सुझाव दे रहे हैं?

'I do, Sharmaji.'

एस.एस. शर्मा थके हुए लग रहे थे। उन्होंने कहा, "यह न तो सेना के लिए अच्छा होगा और न ही ब्रह्मपुर की जनता के लिए। छात्रों के लिए तो यह उन्हें और भी भड़का देगा।" उनका सिर थोड़ा हिलने लगा। "मैं उन्हें अपने बच्चों के समान मानता हूँ। हमने यह गलत काम किया है।"

मुख्यमंत्री की भावुकता पर एल.एन. अग्रवाल ने कुछ तिरस्कारपूर्ण मुस्कान बिखेरी। लेकिन सामूहिक 'हम' की भावना को देखकर उन्हें राहत मिली।

'मुझे विश्वास है, शर्माजी, कि हम चाहे कुछ भी कर लें, उस छात्र की मृत्यु होने पर छात्र आक्रोशित हो जाएंगे।'

'आप पूछते हैं, 'कब', न कि 'अगर'? तो फिर उसके लिए कोई उम्मीद नहीं है?'

'मुझे ऐसा नहीं लगता। लेकिन इस स्थिति में तथ्यों का पता लगाना मुश्किल है। यह सच है कि लोग बातों को बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं। फिर भी, तैयार रहना ही बेहतर है।' एल.एन. अग्रवाल का लहजा ठंडा था, रक्षात्मक नहीं।

मुख्यमंत्री ने आह भरी, फिर अपनी थोड़ी नाक से निकलने वाली आवाज़ में कहा, 'इस कर्फ्यू की वजह से, छात्रों के साथ जो भी हो, आज शाम

हमें परेशानी होगी। अगर छात्र तितर-बितर नहीं हुए तो क्या होगा? क्या आप सुझाव दे रहे हैं कि हम उन पर गोली चलाना शुरू कर दें?'

गृह मंत्री ने चुप्पी साधे रखी।

और जब लड़का मर जाएगा, तो मैं तुम्हें बता दूं कि अंतिम संस्कार बेकाबू हो जाएगा। वे उसे गंगा के किनारे, शायद उस दूसरे दुर्भाग्यपूर्ण चिता के पास ही जलाना चाहेंगे।

गृह मंत्री ने इस अनावश्यक संदर्भ पर जरा भी विचलित नहीं हुए। जब कोई अपना कर्तव्य ठीक से निभाता है, तो वह आंतरिक रूप से विचलित हुए बिना निंदा का सामना कर सकता है। उन्हें पूरा विश्वास था कि पुल मेला जांच आयोग, जिसकी बैठकें एक सप्ताह पहले शुरू हुई थीं, उन्हें दोषमुक्त कर देगा।

उन्होंने कहा, 'यह असंभव होगा। उन्हें इसे किसी घाट पर या कहीं और करना होगा। नदी के इस तरफ की रेत पहले से ही पानी में डूबी हुई है।'

एस.एस. शर्मा कुछ कहने ही वाले थे कि उन्होंने अपना इरादा बदल दिया। पंडित जवाहरलाल नेहरू, जो अपनी ही पार्टी में संघर्षरत थे, ने एक बार फिर उन्हें केंद्र में आकर अपने मंत्रिमंडल में शामिल होने का निमंत्रण दिया था। मना करना मुश्किल होता जा रहा था। लेकिन अब, महेश कपूर के आसन्न इस्तीफे के साथ, शर्मा के जाने से लगभग निश्चित रूप से एल.एन. अग्रवाल मुख्यमंत्री बन जाते। और शर्मा को लगा कि वे अंतरात्मा की आवाज सुनकर अपना राज्य इस चतुर और कठोर व्यक्ति के हाथों में नहीं सौंप सकते, जिसमें अपनी बुद्धिमत्ता के बावजूद मानवीय भावना का अभाव था। अपने दार्शनिक विचारों में शर्मा अपने संरक्षण में रहने वालों के प्रति पिता तुल्य भाव रखते थे। कभी-कभी इससे अनावश्यक सुलह या टाले जा सकने वाले समझौते हो जाते थे, लेकिन उनका मानना था कि ये अग्रवाल के विकल्प से बेहतर थे। कहने की

जरूरत नहीं है कि किसी राज्य को केवल दयालुता के बल पर नहीं चलाया जा सकता। लेकिन वे केवल अनुशासन और भय के बल पर चलने वाले राज्य के बारे में सोचकर ही भयभीत हो जाते थे।

मुख्यमंत्री ने कहा, 'अग्रवाल, मैं यह समस्या आपसे ले रहा हूँ। कृपया इस मामले में कोई और निर्देश जारी न करें। लेकिन आपने जो निर्देश पहले ही जारी कर दिए हैं, उन्हें रद्द न करें। कर्फ्यू लागू रहने दें।'

मुख्यमंत्री ने अपनी घड़ी देखी और अपने निजी सहायक को मेडिकल कॉलेज के अधीक्षक से फोन पर बात कराने का आदेश दिया। उन्होंने उस दिन का अखबार उठाया और अग्रवाल की बात अनसुनी कर दी। जब निजी सहायक ने अधीक्षक से बात कराई, तो उन्होंने कहा, 'मुख्यमंत्री जी आपसे बात करना चाहते हैं,' और फोन मुख्यमंत्री को सौंप दिया।

मुख्यमंत्री ने कहा, 'मैं शर्मा बोल रहा हूँ। मैं तुरंत मेडिकल कॉलेज आना चाहता हूँ। . . . नहीं, कोई पुलिस नहीं, कोई पुलिस एस्कॉर्ट नहीं। सिर्फ़ एक सहायक। . . . जी हाँ। . . . मुझे उस लड़के के बारे में सुनकर दुख हुआ। . . . जी हाँ, मेरी सुरक्षा मेरी चिंता है। मैं निगरानी कर रहे छात्रों से बचूँगा। . . . आपका क्या मतलब है, असंभव? ज़रूर कोई साइड गेट या कुछ और होगा। आपके घर का निजी गेट? जी हाँ, मैं उसी का इस्तेमाल करूँगा। अगर आप कृपया मुझसे वहाँ मिलें। . . . अच्छा, तो पंद्रह मिनट में। इस बारे में किसी को मत बताना, वरना मुझे ऐसी स्वागत समिति का सामना करना पड़ेगा जिसकी मुझे ज़रूरत नहीं है। . . . नहीं, वह मेरे साथ नहीं होगा—नहीं, बिल्कुल नहीं।'

मुख्यमंत्री ने एल.एन. अग्रवाल की ओर न देखते हुए, बल्कि अपनी मेज पर रखे कांच के पेपरवेट की ओर देखते हुए कहा: 'मुझे मेडिकल कॉलेज जाना है और देखना है कि मैं क्या कर सकता हूँ। मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि आप मेरे साथ न चलें। यदि आप मेरे कार्यालय में ही रहें, तो

किसी भी घटनाक्रम की स्थिति में मैं आपसे तुरंत संपर्क कर सकूँगा और मेरा स्टाफ आपकी सेवा में तत्पर रहेगा।'

एल.एन. अग्रवाल ने बेचैनी से अपने सिर के चारों ओर बने घोड़े की नाल के आकार के बालों में हाथ फेरा।

उन्होंने कहा, 'मैं आपके साथ आना पसंद करूंगा। या कम से कम आपको पुलिस सुरक्षा प्रदान करूंगा।'

मुझे नहीं लगता कि यह सबसे अच्छा होगा।

'आपको सुरक्षा की जरूरत है। वे छात्र—'

एस.एस. शर्मा ने धीमी आवाज़ में, लेकिन थोड़ी नाराज़गी भरी मुस्कान के साथ कहा, 'अग्रवाल, आप अभी मुख्यमंत्री नहीं बने हैं।' एल.एन. अग्रवाल ने भौंहें चढ़ाईं, लेकिन एक शब्द भी नहीं कहा।

12.24

जब वह उस कमरे में पहुँचे जहाँ घायल लड़का लेटा हुआ था, तो ब्रिटिश लाठीचार्ज और गोलीबारी में हुई मौतों और चोटों से कठोर हो चुके मुख्यमंत्री ने एक मिनट तक दया और अविश्वास से अपना सिर हिलाया। उन्होंने खिड़की से लॉन और सड़क पर बैठे छात्रों पर एक नज़र डाली और उनके सदमे और गुस्से की भावनाओं को समझने की कोशिश की। यह अच्छा ही था कि उन्हें नहीं पता था कि वह कॉलेज में हैं। अधीक्षक उनसे कुछ कह रहे थे, कक्षाओं को फिर से शुरू करने की असंभवता के बारे में। हालाँकि, मुख्यमंत्री का ध्यान कांग्रेस के विशिष्ट वेश में एक बूढ़े व्यक्ति पर गया, जो चुपचाप एक कोने में बैठा था और उनका अभिवादन करने के लिए खड़ा नहीं हुआ था। वह अपनी ही दुनिया में खोया हुआ प्रतीत हो रहा था, जैसे कि वह स्वयं थे।

मुख्यमंत्री ने पूछा, 'आप कौन हैं?'

'मैं इस दुर्भाग्यशाली लड़के का पिता हूं,' उस व्यक्ति ने कहा।

मुख्यमंत्री ने अपना सिर झुकाया।
उन्होंने कहा, 'तुम्हें मेरे साथ चलना होगा। बाकी मुद्दे हम बाद में सुलझा लेंगे। लेकिन अभी हमें इस समस्या का तुरंत समाधान करना होगा। वो भी एक निजी कमरे में, न कि इतने सारे लोगों के सामने।'
'मैं इस कमरे से बाहर नहीं जा सकती। मुझे समझ आ गया है कि मेरे बेटे के पास जीने के लिए ज्यादा समय नहीं बचा है।'
मुख्यमंत्री ने कमरे में चारों ओर देखा और एक डॉक्टर को छोड़कर बाकी सभी को बाहर जाने के लिए कहा। फिर उन्होंने उस बूढ़े व्यक्ति से कहा:
‘मैंने यह सब होने दिया, इसके लिए मैं दोषी हूँ। मैं इसकी ज़िम्मेदारी स्वीकार करता हूँ। लेकिन मुझे आपकी मदद चाहिए। आप स्थिति को समझ रहे हैं। केवल आप ही इस स्थिति को सुधार सकते हैं। यदि आप ऐसा नहीं करते हैं, तो और भी कई दुर्भाग्यशाली लड़के और शोकग्रस्त पिता होंगे।’
‘मैं क्या कर सकता हूँ?’ बूढ़े व्यक्ति ने शांत भाव से कहा, मानो अब उसे किसी बात की परवाह ही न हो।
छात्र भड़क उठे हैं। जब आपके बेटे की मृत्यु होगी, तो वे जुलूस निकालना चाहेंगे। यह एक भावनात्मक घटना होगी और हालात बेकाबू हो जाएंगे। अगर ऐसा होता है, और यह लगभग तय है, तो आगे क्या होगा, इसकी जिम्मेदारी कौन उठा सकता है?
'आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?'
‘छात्रों से बात कीजिए। उनसे कहिए कि वे आपके प्रति संवेदना व्यक्त करें, उनसे कहिए कि वे अंतिम संस्कार में शामिल हों। यह वहीं होगा जहाँ आप चाहें; मैं किसी भी पुलिसकर्मी को उपस्थित रहने की अनुमति नहीं दूंगा। लेकिन कृपया उन्हें सलाह दें कि वे जुलूस न निकालें। इससे स्थिति बेकाबू हो जाएगी।’

बूढ़ा आदमी रोने लगा। कुछ देर बाद उसने खुद को संभाला और अपने बेटे को देखा, जिसका सिर लगभग पूरी तरह पट्टियों से ढका हुआ था, और पहले जैसी ही शांत आवाज में बोला: 'मैं वैसा ही करूंगा जैसा आप कहते हैं।'

फिर उसने मन ही मन सोचा: 'तो क्या उसकी मौत व्यर्थ ही हुई?'

मुख्यमंत्री ने धीमी आवाज़ में कही गई बात सुन ली। उन्होंने कहा, “हाँ, मैं सुनिश्चित करूँगा कि ऐसा न हो। मैं अपने तरीके से स्थिति को संभालने की कोशिश करूँगा। लेकिन मेरे किसी भी प्रयास का उतना प्रभाव नहीं होगा जितना आपके कुछ शब्दों का होगा। आपके इस कार्य से आपने उतने दुखों को रोका है जितना अधिकांश लोग अपने जीवन में नहीं रोक सकते।”

मुख्यमंत्री गुप्त रूप से, जैसे आए थे वैसे ही लौट गए। अपने कार्यालय में लौटकर उन्होंने एल.एन. अग्रवाल को कर्फ्यू रद्द करने और प्रदर्शन के दौरान गिरफ्तार किए गए सभी छात्रों को रिहा करने का आदेश दिया। उन्होंने आगे कहा, 'और छात्र संघ के अध्यक्ष को भी बुलवाएं।'

एल.एन. अग्रवाल के इस विरोध के बावजूद कि यह समस्या मूल रूप से संघ द्वारा उकसाए गए मार्च के कारण उत्पन्न हुई थी, मुख्यमंत्री ने उस युवक से मुलाकात की, जो पहले की तुलना में कम आत्मविश्वासी लेकिन अधिक दृढ़ निश्चयी प्रतीत हो रहा था। वे रशीद को अपने साथ लाना चाहते थे—एक हिंदू, एक मुसलमान, ताकि समाजवादियों के धर्मनिरपेक्षता पर बल दिया जा सके—लेकिन रशीद इतना दुखी और अपराधबोध से व्याकुल लग रहा था कि उन्होंने अपना इरादा बदल दिया। अब वह युवक यहाँ अकेला था, मुख्यमंत्री और गृह मंत्री के सामने, और वह स्पष्ट रूप से घबराया हुआ था।

मुख्यमंत्री ने कहा, ‘मैं आपकी शर्तों से सहमत हूं, लेकिन मैं चाहता हूं कि

आंदोलन रद्द कर दिया जाए। क्या आप ऐसा करने के लिए तैयार हैं? क्या आपमें और अधिक रक्तपात को रोकने का साहस है?'

'छात्र संघों की सदस्यता का सवाल?' युवक ने पूछा।

मुख्यमंत्री ने कहा, 'जी हां।' एल.एन. अग्रवाल पास ही चुपचाप खड़े रहे और एक शब्द भी बोलने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे। वे जानते थे कि उनकी चुप्पी सहमति का संकेत है, और ऐसी चुप्पी बनाए रखना उनके लिए मुश्किल था।

'प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का वेतन?'

हम इस मुद्दे पर गौर करेंगे और वेतन में सुधार करेंगे, लेकिन हमें नहीं पता कि सुधार की सीमा आपको पूरी तरह संतुष्ट करेगी या नहीं। राज्य के संसाधन सीमित हैं। फिर भी, हम कोशिश करेंगे।

इस प्रकार उन्होंने मांगों की सूची को एक-एक करके पूरा किया।

'मैं जो पेशकश कर सकता हूँ, वह है अस्थायी रूप से पीछे हटना। मुझे आपका वादा मिल गया है, और आपको मेरा—बशर्ते मैं दूसरों को मना लूँ। लेकिन अगर वास्तव में मांगें पूरी नहीं हुईं, तो यह समझौता कायम नहीं रहेगा।'

कार्यवाही से नाराज़ एल.एन. अग्रवाल ने कहा कि वह युवक इस बात को बिल्कुल भी महत्व नहीं देता कि वह राज्य के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के साथ बराबरी के स्तर पर बातचीत कर रहा है। और यहाँ तक कि एस.एस. शर्मा, जो सामान्यतः आदर और आज्ञापालन के दिखावे को पसंद करते थे, ऐसा प्रतीत होता है कि वे अपने कर्तव्य को इतना भूल चुके थे कि उन्हें इसकी अनुपस्थिति का भी कोई आदर नहीं था।

मुख्यमंत्री कह रहे थे, 'मैं समझता हूँ और सहमत हूँ।' एल.एन. अग्रवाल ने एस.एस. शर्मा की ओर देखा और मन ही मन सोचा: आप बूढ़े और कमज़ोर होते जा रहे हैं। आपने अस्थायी शांति खरीदने के लिए

अतार्किकता को स्वीकार कर लिया है। लेकिन इस शांति की मिसाल हम, आपके उत्तराधिकारियों को, हमेशा परेशान करती रहेगी। और वैसे भी, आपने शायद शांति खरीदी ही न हो। फिर भी, हमें जल्द ही इसका पता चल जाएगा।

उसी रात घायल छात्र की मृत्यु हो गई। शोक संतप्त पिता ने बाहर शोक मना रहे लोगों से बात की। अगले दिन गंगा किनारे स्थित श्मशान घाट पर शव का अंतिम संस्कार किया गया। छात्र घाट की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर बैठे रहे। कोई जुलूस नहीं निकला। शव के चारों ओर जलती लपटों के बीच शोक मनाने वालों की घनी भीड़ शांत थी। पुलिस को दूर रहने का निर्देश दिया गया था। कोई हिंसा नहीं हुई।

12.25

डॉ. किशन चंद सेठ ने सब्ज़ीपुर क्लब के छोटे से ब्रिज रूम में दो टेबल बुक करवा रखी थीं। दिन की हाजिरी में उनका नाम देखकर बाकी किसी भी सदस्य ने बची हुई दो टेबलों में से एक भी बुक नहीं करवाई थी। लाइब्रेरियन, जो आमतौर पर खुद हाजिरी देखना ज़रूरी समझते थे (ब्रिज रूम लाइब्रेरी के ठीक बगल में था), ने उस प्रख्यात रेडियोलॉजिस्ट का नाम देखकर आह भरी। उस दोपहर उन्हें चैन नहीं मिलने वाला था; और अगर वे फिल्म खेलते रहे तो उस शाम भी नहीं।

डॉ. किशन चंद सेठ दीवार पर लटकी बाघ की खाल के सामने बैठे थे, जिसका सिर नीचे की ओर था। बाघ वहाँ तब से था जब से किसी को याद था, हालाँकि ब्रिज खेल से उसका संबंध स्पष्ट नहीं था। बाकी दीवारों पर ऑक्सफोर्ड कॉलेजों की तस्वीरें टंगी थीं, जिनमें से एक में चौक में एक खंभे पर पेलिकन बैठा हुआ था। छोटे से चौकोर कमरे में हरे रंग के कपड़े से ढकी चार ब्रिज टेबल करीने से रखी थीं। सोलह सख्त पीठ वाली कुर्सियों के अलावा और कोई कुर्सी नहीं थी। बाघ को छोड़कर, कमरा

काफी सादा था। इसकी एक बड़ी खिड़की बजरी वाली सड़क की ओर खुलती थी, और उसके आगे लॉन था जहाँ सदस्य और उनके मेहमान बड़े पेड़ों की छाया में सफेद बेंत की कुर्सियों पर बैठकर पेय पीते थे; और उससे भी आगे गंगा नदी बहती थी।

डॉ. किशन चंद सेठ की ब्रिज पार्टी में सात अन्य सदस्य थे: उनकी पत्नी पार्वती, जिन्होंने गुलाबों की छपाई वाली एक बेहद भद्दी साड़ी पहनी हुई थी; उनके वैवाहिक रिश्तेदार, पूर्व राजस्व मंत्री महेश कपूर, जिनसे डॉ. सेठ को याद आया कि उनके वर्तमान में अच्छे संबंध थे; महाधिवक्ता श्री शास्त्री; बैतर के नवाब साहब; प्रोफेसर और श्रीमती ओ.पी. मिश्रा; और डॉ. दुर्रानी। छह पुरुष और दो महिलाएं थीं, और ताश के पत्तों के बंटवारे के अनुसार दोनों महिलाएं एक ही मेज पर बैठी थीं, हालांकि वे साझेदार नहीं थीं। श्रीमती ओ.पी. मिश्रा, एक डरी हुई लेकिन बड़बड़ाने वाली महिला, एक अच्छी ब्रिज खिलाड़ी थीं। पार्वती सेठ अच्छी खिलाड़ी नहीं थीं, और जब भी वह उनकी साझेदार होतीं, तो अपनी झिझक भरी और अटपटी बोली से अपने पति को बहुत परेशान करती थीं। हालांकि, वह बहुत कम ही उन्हें डांटने की हिम्मत करते थे, और अपना गुस्सा आस-पास मौजूद किसी भी व्यक्ति पर निकालते थे।

डॉ. किशन चंद सेठ के लिए ब्रिज खेलने की एक आदर्श दोपहर का विचार उग्र, निर्मम खेल के साथ निरंतर बातचीत का संयोजन था; और मनोरंजक बातचीत के बारे में उनका विचार छोटे-छोटे झटकों और विस्फोटों की एक श्रृंखला थी।

जब वह बेहद खुश होता था, तो सचमुच खिलखिलाकर हंसता था। और यह खिलखिलाहट निम्नलिखित टिप्पणी से पहले की थी:

'दो हुकुम। हम्म, हम्म, हम्म, अब, मंत्री जी—पूर्व मंत्री जी, मुझे कहना चाहिए—आप बोली लगाने में उतना ही समय ले रहे हैं जितना आपको

इस्तीफा देने का फैसला करने में लगा होगा।'
महेश कपूर ने ध्यान से भौंहें चढ़ाईं। 'क्या? पास।'
'या फिर ज़मींदारी अधिनियम बनाने में जितना समय लगा, उतना ही समय लग सकता है, है ना नवाब साहब? वो हमेशा से ही धीमी गति से बोली लगाने वाले रहे हैं; उम्मीद है कि आपकी जागीरों को हड़पने में भी उन्हें समय लगेगा। लेकिन आपको इतनी धीमी गति से बोली लगाने की कोई ज़रूरत नहीं है।'
नवाब साहब, कुछ विचलित होकर बोले, 'तीन दिल।'
डॉ. किशन चंद सेठ ने बाईं ओर मुड़ते हुए कहा, 'लेकिन मैं भूल गया। अब आप यह काम नहीं करेंगे। मुझे आश्चर्य है कि कौन करेगा? अग्रवाल? क्या वह राजस्व और गृह दोनों विभागों को संभाल सकते हैं?'
श्री महेश कपूर थोड़ा और अकड़कर बैठ गए, लेकिन कुछ नहीं बोले। उन्होंने अपने कार्डों को और कसकर पकड़ रखा था। उन्होंने एक पल के लिए सोचा कि अपने मेज़बान को याद दिला दें कि कारों को ज़ब्त करने का आदेश स्वयं एल.एन. अग्रवाल ने दिया था। लेकिन वे चुप रहे।
'नहीं, मतलब, कोई बोली नहीं,' डॉ. दुर्रानी ने कहा।
डॉ. किशन चंद सेठ ने अपने तीन असफल प्रयासों के बाद चौथा प्रयास किया। 'यह ऐसा पोर्टफोलियो है जिसके लिए किसी जिम्मेदार व्यक्ति की आवश्यकता है, और मंत्रिमंडल में अग्रवाल से अधिक सक्षम और कौन है? अब, मैं क्या बोली लगाऊं? मैं क्या बोली लगाऊं? तीन हुकुम। अच्छा। लेकिन मुझे कहना होगा कि उन्होंने उन छात्रों को सबक सिखाने में अच्छा काम किया। मेरे समय में, मेडिकल छात्र केवल शरीर रचना विज्ञान पर ध्यान देते थे और खुद को मुर्दा नहीं बनाते थे। तीन हुकुम। जी हां, अब आपकी क्या बोली है, कपूर साहब?'
महेश कपूर ने अपने साथी की ओर देखा और उस छात्र के बारे में सोचा

जिसने उनके पोते को उनसे वापस लौटाया था। डॉ. दुर्रानी मानो अपने आप से जूझ रहे थे। उन्होंने आँखें सिकोड़ते हुए पूछा, 'अच्छा, उह, क्या आप मानते हैं कि लाठीचार्ज उचित था?' उनकी आवाज़ में असहमति की उतनी ही झलक थी जितनी कि वह आमतौर पर व्यक्त कर सकती थी, यानी बहुत कम। जब उनकी पत्नी ने उनके गणित के कागजात फाड़कर उनके जीवन भर के काम के एक बड़े हिस्से को नष्ट करने की कोशिश की थी, तब उन्होंने केवल हल्की सी मौखिक असहमति व्यक्त की थी।

'अरे हाँ, मैं करता हूँ—' डॉ. किशन चंद सेठ ने बड़े चाव से कहा। 'दयालु होने के लिए ही क्रूर होना पड़ता है। सर्जन का चाकू; हम डॉक्टर इसे बचपन में ही सीख लेते हैं। लेकिन आप भी तो डॉक्टर हैं, बेशक। एक तरह के डॉक्टर। अभी प्रोफेसर नहीं बने हैं, लेकिन यकीन मानिए, बन जाएँगे। आपको वहाँ प्रोफेसर मिश्रा से पूछना चाहिए कि इतनी ऊँचाई तक पहुँचने के लिए क्या करना पड़ता है।'

डॉ. किशन चंद सेठ ने इसी तरह दोनों मेज़ों को आपस में जोड़कर ध्यान भटकाने वाली बातचीत का जाल बुन दिया। उनका अपना खेल इस शोरगुल से मिलने वाली प्रेरणा से और भी मज़ेदार हो गया। बाकी लोग उन्हें जान-पहचान के कारण जानते थे और उकसाने से बचने की कोशिश करते थे। लेकिन उस समय ब्रिज रूम में मौजूद कोई भी व्यक्ति, अगर डॉ. किशन चंद सेठ खुद समिति के सदस्य न होते, तो समिति से शिकायत करने के लिए ज़रूर ललचाता। चूंकि वे सब्ज़ीपुर क्लब के सबसे पुराने सदस्यों में से एक थे और उनका मानना था कि दूसरों को उनके बारे में हल्की-फुल्की शिकायत करने से पहले ही डरा देना चाहिए, इसलिए उनके इस अजीब व्यवहार पर आम तौर पर कोई कार्रवाई नहीं होती थी।

जब उन्होंने नकली मोहरे का हाथ देखा, तो डॉ. किशन चंद सेठ लगभग

बौखला गए। हाथ खेलने के बाद, वे और नवाब साहब एक चाल से पीछे थे, और डॉ. सेठ अपने साथी पर भड़क उठे। 'हे भगवान, नवाब साहब, इतने खराब हाथ के साथ आपने तीन हार्ट्स की बोली कैसे लगा दी? हमारे पास नौ चालें जीतने का कोई मौका नहीं था।'

'तुम्हारे पास दिल हो सकते थे।'

डॉ. किशन चंद सेठ गुस्से से आग बबूला हो गए। उन्होंने लगभग चिल्लाते हुए कहा, 'अगर मेरे पास हार्ट्स होते, तो मैं पहले ही सूट की बोली लगा देता। अगर तुम्हारे पास स्पेड्स नहीं थे, तो तुम्हें चुप रहना चाहिए था—बोली लगाना बंद कर देना चाहिए था। यही होता है जब तुम अपने धर्म से मुंह मोड़ लेते हो और काफिरों के साथ ताश खेलते हो।'

नवाब साहब ने अपने आप से कहा, जैसा कि वह पहले भी कई बार करते थे, कि वह भविष्य में डॉ. किशन चंद सेठ के किसी भी निमंत्रण का जवाब नहीं देंगे।

'अरे नहीं, किशी,' पार्वती ने नरमी से कहा और दूसरी मेज की ओर देखा।

'माफ़ कीजिए—माफ़ कीजिए—' डॉ. किशन चंद सेठ ने कहा। 'मैं—अच्छा—अच्छा, अब किसकी बारी है? अरे हाँ, पेय पदार्थ। सभी लोग क्या पिएंगे?' और उन्होंने मेज में अपने ठीक दाहिनी ओर स्थित लकड़ी और पीतल से बने छोटे से एक्सटेंशन को बाहर निकाला; उसमें एक ऐशट्रे और एक कोस्टर था। 'पहले महिलाओं की बारी। महिलाओं के लिए जिन?'

श्रीमती ओ.पी. मिश्रा ने अपने पति को भयभीत निगाहों से देखा। पार्वती सेठ ने उनकी निगाहों को भांपते हुए तीखे स्वर में कहा, 'किशी!'

अगले कुछ मिनटों के लिए किशी पूरी तरह से काबू में आ गया। उसका ध्यान बारी-बारी से ताश के पत्तों, बाघ और (वेटर के लाने के बाद) व्हिस्की पर लगा हुआ था। आम तौर पर उसे चाय और नींबू पानी ही पीने

को मिलता था, लेकिन ब्रिज खेलते समय अगर उसे व्हिस्की न दी जाए तो वह इतना हंगामा करता था कि पार्वती ने बेहतर समझा कि वह अपनी ताकत को जीतने लायक मुकाबलों के लिए बचाकर रखे। दिक्कत बस इतनी थी कि व्हिस्की का असर अनिश्चित होता था। कभी-कभी यह उसे थोड़ा शांत कर देती थी, तो कभी-कभी उसे और भी उग्र बना देती थी। लेकिन व्हिस्की उसे कभी कामुक नहीं बनाती थी। और न ही कभी उसे भावुक बनाती थी, जैसा कि कुछ पुरुषों को बना देती है; यह शक्ति तो सिर्फ फिल्मों में ही होती है।

डॉ. किशन चंद सेठ आज क्लब में दिखाई जाने वाली फिल्म का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे: उन्हें याद आया कि वह चार्ली चैपलिन की फिल्म थी। उनकी पोती सविता इसे देखने के लिए बहुत उत्सुक थी और अपने पति और माता की सलाह के बावजूद, उसने क्लब की सदस्यता का लाभ उठाकर इसे देखा था। प्राण और श्रीमती रूपा मेहरा ने भी स्वाभाविक रूप से साथ आने की ज़िद की थी। लेकिन एक घंटा बीत जाने और दूसरे और तेरहवें तर्क के बीच में भी, डॉ. सेठ उन्हें लॉन पर कहीं भी बैठे हुए नहीं देख पाए।

'अह, खैर,' डॉ. दुर्रानी ने आपत्ति जताते हुए कहा, 'मैं आपसे पूरी तरह सहमत नहीं हो सकता। संभावनाओं की सटीक गणना एक अनिवार्य हिस्सा है—'

'ज़रूरी नहीं, कुछ भी नहीं!' डॉ. किशन चंद सेठ ने उन्हें बीच में ही रोक दिया। 'ज़्यादातर अच्छा ब्रिज गेम सिर्फ़ अनुमान पर आधारित होता है, संभावनाओं का आकलन नहीं। अब मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ,' उन्होंने आगे कहा। डॉ. किशन चंद सेठ को उदाहरणों से तर्क देना पसंद था। 'यह मेरे साथ अभी एक हफ़्ते पहले हुआ था। एक हफ़्ते पहले, है ना प्रिय?'

'जी हां, प्रिय,' पार्वती ने कहा। उन्हें वह खेल अच्छी तरह याद था, क्योंकि उनके पति की जीत ने पूरे सप्ताह उनकी शाम की बातचीत में रोमांच भर दिया था।

'मैं डिक्लेरर था और मैंने खेल की शुरुआत में ही क्लब्स खेले। मेरे पास पांच थे, मेरे डमी के पास दो थे, और दाहिनी ओर वाले खिलाड़ी ने रफ किया।'

'औरत, किशी।'

'जी हां, महिला!' डॉ. किशन चंद सेठ ने अपनी पूरी हिम्मत से विरोध जताते हुए कहा।

'इसका मतलब यह था कि मेरे बाईं ओर बैठे व्यक्ति के पास छह क्लब होने चाहिए थे, या यूँ कहें कि इस दौर के बाद पाँच ही रह गए। खेल में आगे चलकर यह स्पष्ट हो गया कि उसके हाथ में केवल दो हार्ट्स के लिए ही जगह थी; चूंकि उसने स्पेड का दांव लगाया था, इसलिए मैंने मान लिया कि उसके पास कम से कम चार स्पेड तो होंगे ही, और बचे हुए स्पेड ने उसके हाथ में शेष स्थान भर दिया होगा।'

'क्या वह रूपा नहीं है, प्यारी?' पार्वती ने अचानक लॉन की ओर इशारा करते हुए पूछा। उसने यह कहानी इतनी बार सुनी थी कि वह इसे श्रद्धापूर्वक मानना पूरी तरह भूल गई थी।

इस अचानक हुई दखलअंदाजी ने उसके पति को पूरी तरह से विचलित कर दिया। 'हाँ, हाँ, यह रूपा है। रूपा ही हो—या कोई और,' वह चिल्लाया, अपनी बेटी को दिमाग से निकाल कर। 'देखो, मेरे पास इक्का, बादशाह और जैक ऑफ हार्ट्स थे। तो मैंने पहले इक्का खेला और फिर बादशाह। जैसा मैंने अनुमान लगाया था, रानी गिर गई।' वह उस याद को ताज़ा करने के लिए रुका। 'सब कहते थे कि मैं एक भाग्यशाली खिलाड़ी था या संभावनाएं मेरे पक्ष में थीं। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं था। भाग्य—

कुछ नहीं! संभावनाएं—कुछ नहीं! मेरी आँखें खुली थीं, और सबसे बढ़कर, मेरा दिमाग खुला था। अनुमान लगाने के लिए,' उसने विजयी भाव से अपनी बात समाप्त की। फिर, क्योंकि यह एक टोस्ट जैसा लग रहा था, उसने व्हिस्की का एक बड़ा घूंट लिया।

डॉ. दुर्रानी आश्वस्त नहीं दिखे।

हालांकि डॉ. सेठ अक्सर उन्हें अपने ही विचारों के भंवर में खींच लेते थे, फिर भी अगली मेज पर माहौल काफी शांत था। एडवोकेट-जनरल श्री शास्त्री अपने मिलनसार स्वभाव में थे और (अपनी संक्षिप्त शैली में) श्रीमती ओ.पी. मिश्रा को बातचीत में शामिल करने की पूरी कोशिश कर रहे थे। श्रीमती मिश्रा अच्छा खेल रही थीं, लेकिन ऐसा लग रहा था कि उन्हें इस बात की चिंता है कि वह ऐसा कर रही हैं; वह बार-बार अपने सामने बैठे पति की ओर देख रही थीं। ब्रिज, जिसमें बोली लगभग पूरी तरह से एक-एक शब्द के खेल पर आधारित होती है, श्री शास्त्री के लिए आदर्श खेल था। उन्हें खुशी थी कि वह दूसरी मेज पर नहीं बैठे थे, जहां उनके मेजबान उन्हें जागीरों के अधिग्रहण और जब जमींदारी का मामला सुप्रीम कोर्ट में जाता तो सरकार की संभावनाओं के बारे में शर्मनाक बातचीत करने के लिए मजबूर कर देते। वह नवाब साहब और महेश कपूर दोनों के प्रति समान रूप से सहानुभूति रखते थे। महेश कपूर डॉ. किशन चंद सेठ के विचारों के सामने दो बार भड़क उठे थे और ऐसा लग रहा था कि वह तीसरी बार भी ऐसा ही करने वाले हैं। नवाब साहब ने अपने व्यवहार में संयम बरता था; अब वह अपने मेज़बान की सबसे आपत्तिजनक टिप्पणियों का भी खंडन करने से इनकार कर रहा था, और व्हिस्की के बार-बार दिए जाने वाले प्रस्तावों पर भी कोई आपत्ति नहीं जता रहा था—दरअसल, वह उस बात को दोहराने से भी कतरा रहा था जो डॉ. किशन चंद सेठ अच्छी तरह जानते थे, कि वह शराब नहीं पीते थे।

केवल डॉ. दुर्रानी ही अनमने ढंग से असहमति जताने में सक्षम थे, और इससे डॉ. किशन चंद सेठ चिढ़ गए।

इसी बीच, प्रोफेसर ओ.पी. मिश्रा पार्वती और एडवोकेट-जनरल के लाभार्थ अपना भाषण दे रहे थे:

'राजनेता, आप जानते हैं, महत्वपूर्ण पदों पर औसत दर्जे के लोगों को नियुक्त करना इसलिए पसंद करते हैं, न केवल इसलिए कि वे स्वयं तुलना में बेहतर दिखेंगे या इसलिए कि वे प्रतिस्पर्धा से डरते हैं, बल्कि इसलिए भी कि, देखिए, योग्यता के आधार पर नियुक्त व्यक्ति को लगता है कि यह उसका हक है, जबकि एक औसत दर्जे का व्यक्ति इस बात से भली-भांति अवगत होता है कि ऐसा नहीं है।'

श्री शास्त्री मुस्कुराते हुए बोले, 'मैं समझ गया। और क्या आपके पेशे के साथ ऐसा नहीं है?'

'खैर,' प्रोफेसर मिश्रा ने कहा, 'कभी-कभार कोई न कोई अपवाद तो होता ही है, लेकिन सामान्य तौर पर, कम से कम हमारे विभाग में, उत्कृष्टता को सर्वोच्च स्थान देने का हर संभव प्रयास किया जाता है। . . . मात्र इसलिए कि कोई व्यक्ति, उदाहरण के लिए, किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पुत्र है, हमारी दृष्टि में उसे अयोग्य नहीं ठहराया जाना चाहिए—'

'मिश्रा, आप क्या कह रहे हैं?' बगल की मेज से डॉ. सेठ ने चिल्लाकर कहा। 'कृपया दोहराएँ—मैंने आपको ठीक से नहीं सुना; न ही मेरे मित्र कपूर साहब ने। . . .'

डॉ. सेठ को भावनात्मक रूप से चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों से गुजरने में सबसे ज्यादा खुशी मिलती थी—सिवाय तब जब उन्हें अपने साथ सात अन्य सैनिकों को भी घसीटना पड़ता था।

प्रोफेसर मिश्रा ने अपने होंठों को प्यार से सिकोड़ते हुए कहा: 'मेरे प्रिय डॉ. सेठ, मैं तो भूल ही गया कि मैं क्या बड़बड़ा रहा था—शायद इसलिए

कि मैं इस रमणीय वातावरण में इतना आराम महसूस कर रहा हूँ। या शायद आपकी बेहतरीन व्हिस्की ने मेरी याददाश्त को मेरे अंगों की तरह सुस्त कर दिया है। लेकिन मानव शरीर कितना अद्भुत तंत्र है: कौन कल्पना कर सकता है कि कोई व्यक्ति चार अरारोट बिस्कुट और एक उबला अंडा खाकर तीन स्पेड और एक ट्रिक डाउन जैसा परिणाम प्राप्त कर सकता है?'

पार्वती ने तुरंत बीच में कहा: 'प्रोफेसर मिश्रा, एक युवा व्याख्याता, कुछ ही दिन पहले हमें शिक्षण के सुखों के बारे में बता रहे थे। यह कितना महान पेशा होगा!'

'मेरी प्रिय महोदया,' प्रोफेसर मिश्रा ने कहा, 'शिक्षण एक धन्यवादरहित कार्य है, लेकिन इसे इसलिए किया जाता है क्योंकि व्यक्ति को लगता है कि यह उसका कर्तव्य है। कुछ साल पहले रेडियो पर मेरी एक वकील दिलीप पांडे के साथ शिक्षण को एक पेशे के रूप में देखने की अवधारणा पर काफी दिलचस्प चर्चा हुई थी, जिसमें मैंने कहा था—या शायद दीपक पांडे—खैर, मैंने कहा था—'

एडवोकेट-जनरल ने कहा, 'दिलीप, दरअसल, अब मर चुका है।'

'ओह, क्या सच में? कितना अफ़सोस की बात है। खैर, मैंने यही कहा था कि तीन तरह के शिक्षक होते हैं: वो जिन्हें भुला दिया जाता है, वो जिन्हें याद रखा जाता है और जिनसे नफ़रत की जाती है, और तीसरे, वो भाग्यशाली होते हैं, और मुझे उम्मीद है कि मैं भी उनमें से एक हूँ, जिन्हें याद रखा जाता है और'—वो रुके—'माफ़ कर दिया जाता है।'

वह अपने सूत्र से काफी संतुष्ट प्रतीत हो रहा था।

'ओह, आप हैं, आप हैं—' उसकी पत्नी ने उत्सुकता से कहा।

'यह क्या है?' डॉ. किशन चंद सेठ चिल्लाए। 'ज़ोर से बोलो, हमें सुनाई नहीं दे रहा।' उन्होंने अपनी छड़ी ज़मीन पर पटकी।

दूसरे सत्र के अंत में, लाइब्रेरियन (पुस्तकालय के उपयोगकर्ताओं द्वारा दो बार अनुरोध किए जाने के बाद) ने ब्रिज रूम में एक नोट भेजा। अगर पार्वती ने उन्हें रोका न होता, तो डॉ. किशन चंद सेठ इसे पाकर क्रोध से चिल्ला उठते। लेकिन, ब्रिज रूम में बातचीत का शोर कम करने के अनुरोध में लाइब्रेरियन की अवज्ञा पर उन्हें न तो विश्वास हुआ और न ही वे इसे बर्दाश्त कर पाए। वे उस आदमी को समिति के सामने पेश करेंगे। एक निकम्मा आदमी, जो अपना अधिकांश समय किताबों के ढेर में ऊंघते हुए बिताता है, जो नौकरी को एक आराम का काम समझता है, जो—

'जी हां, प्रिय,' पार्वती ने कहा। 'जी हां, प्रिय, मुझे पता है। अब हम सबने अपनी मेज पर दूसरा रबर खत्म कर लिया है, लेकिन हम सब बहुत धीरे-धीरे बात कर रहे हैं। तुम अपना रबर खत्म करने पर ध्यान क्यों नहीं देतीं, फिर हम सब बाहर लॉन में जा सकते हैं; फिल्म लगभग बीस मिनट में शुरू हो जाएगी। अफसोस की बात है कि मानसून में इसे अंदर दिखाया जाता है। अरे हां, प्राण और सविता वहां बैठे हैं; शायद चिप्स खा रहे हैं। वह बहुत मोटी लग रही है। मुझे लगता है कि शायद हम अभी जाकर उनके साथ बैठ जाएं, और तुम भी पीछे आ सकती हो।'

प्रोफेसर मिश्रा ने जल्दी से उठते हुए कहा, 'मुझे खेद है कि अब हमें जाना होगा।' उनकी पत्नी भी खड़ी हो गईं।

'क्या आपको जाना ही है? क्या आप हमारे साथ नहीं आ सकतीं?' पार्वती ने पूछा।

'नहीं—नहीं—इन दिनों मैं बहुत व्यस्त हूँ—घर में मेहमान आए हुए हैं—और मुझे अनावश्यक रूप से पाठ्यक्रम में संशोधन करने का काफी काम सौंपा गया है,' प्रोफेसर मिश्रा ने समझाया।

महेश कपूर ने एक पल के लिए उसकी तरफ देखा, फिर अपने कार्डों पर वापस ध्यान देने लगे।

'धन्यवाद, धन्यवाद,' व्हेल ने कहा और तेजी से आंखों से ओझल हो गई, उसके पीछे उसकी छोटी मछली भी चली गई।

पार्वती ने मेज की ओर मुड़ते हुए कहा, 'कितनी अजीब बात है!' उन्होंने श्री शास्त्री से पूछा, 'आप इसके बारे में क्या सोचते हैं?'

श्री शास्त्री का मत था, 'एक सशक्त व्यक्तित्व।' यद्यपि यह कोई रहस्य उजागर करने वाला कथन नहीं था, फिर भी उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि श्री शास्त्री को दुनियादारी की कुछ समझ है और वे अनावश्यक बातों पर अपनी राय नहीं देते।

पार्वती अपने पति को अपने साथ आने देने के बारे में दोबारा सोचने लगी थी। एक तो, उसे अभी भी संभालना पड़ सकता था। दूसरा, वह उसके बिना श्रीमती रूपा मेहरा से मिलना नहीं चाहती थी। उसकी गुलाब से सजी साड़ी पर किशी की बेटी की क्या प्रतिक्रिया होगी, यह कहना मुश्किल था। इसलिए पार्वती ने कुछ और मिनट इंतज़ार किया कि खेल कब खत्म होगा। खेल खत्म हो गया। उसका पति जीत गया था। वह बड़ी खुशी से अपने अंक गिन रहा था—जिसमें एक ओवरट्रिक और सौ ऑनर शामिल थे। उसने चैन की सांस ली।

12.26

लॉन में, सभी का एक-दूसरे से परिचय कराया गया। सविता श्री शास्त्री के साथ धीमी और गंभीर बातचीत में मग्न हो गईं। उन्हें श्री शास्त्री बहुत रोचक लगे। वे उन्हें ब्रह्मपुर उच्च न्यायालय की एक महिला वकील के बारे में बता रहे थे, जो मुवक्किलों, सहकर्मियों और न्यायाधीशों की आपत्तियों को दूर करने के बावजूद आपराधिक मामलों में बहुत सफल रहीं।

प्राण थोड़ा थका हुआ महसूस कर रहा था, लेकिन सविता ने ज़िद की थी कि माँ बनने से पहले चार्ली चैपलिन को एक बार फिर देख लेना चाहिए; उनके दादाजी की ब्यूक कार, जो ज़ब्त होने के कारण थोड़ी खस्ता हालत

में थी, उन्हें लेने के लिए भेजी गई थी। लता श्रीमती रूपा मेहरा की उन शाम की रिहर्सल में से एक में चली गई थी, जिनसे उन्हें बहुत डर लगता था; निर्देशक ने कहा था कि छात्रों के आंदोलन के कारण छूटी हुई रिहर्सल की भरपाई करना ज़रूरी था।

सविता खुश और ऊर्जावान दिख रही थी और बड़े चाव से क्लब की खास डिश, छोटे-छोटे गोली कबाब खा रही थी, जिनके बीच में किशमिश लगी थी। श्री शास्त्री से बात करते-करते उसे लगने लगा कि कानून की पढ़ाई करना कितना दिलचस्प होगा।

प्राण उस नीची दीवार की ओर बढ़ा जो सब्ज़ीपुर क्लब के लॉन को रेत और नदी से अलग करती थी। उसने दीवार के उस पार भूरे पानी और कुछ धीमी गति से चुपचाप चल रही नावों को देखा। वह सोच रहा था कि जल्द ही, अपने पिता की तरह, वह भी पिता बनेगा, और उसे संदेह था कि वह एक अच्छा पिता बन पाएगा या नहीं। उसने सोचा, मैं अपने बच्चे के भले के लिए ज़रूरत से ज़्यादा चिंतित रहूँगा। लेकिन कुछ देर बाद उसे याद आया कि केदारनाथ की निरंतर चिंता का भास्कर पर कोई बुरा असर नहीं पड़ा था। और, मान की याद में मुस्कुराते हुए उसने सोचा, इंसान ज़रूरत से ज़्यादा बेफिक्र भी हो सकता है। क्योंकि उसे थोड़ी साँस फूल रही थी, इसलिए वह दीवार से टिक गया और कुछ गज की दूरी से दूसरों को देखने लगा।

डॉ. दुर्रानी का नाम सुनते ही श्रीमती रूपा मेहरा चौंक उठीं। उन्हें यकीन ही नहीं हो रहा था कि उनके पिता उन्हें इतनी अच्छी तरह जानते थे कि उन्हें ब्रिज खेलने के लिए आमंत्रित किया था। आखिर, वही तो डॉ. किशन चंद सेठ थे जिनसे उन्होंने बेहद मुश्किल समय में सलाह ली थी और जिन्होंने दुर्रानी के खतरे को देखते हुए लता को जल्द से जल्द ब्रह्मपुर से निकालने की सलाह दी थी। क्या उन्होंने जानबूझकर उन्हें इस जान-पहचान के बारे

में नहीं बताया था? या यह जान-पहचान अभी हाल ही की थी?
डॉ. दुर्रानी अब उनके बगल में बैठे थे, अपनी बेंत की कुर्सी पर थोड़ा आगे की ओर झुके हुए थे, और शिष्टाचार और जिज्ञासा दोनों के कारण उन्हें अपना आश्चर्य दबाकर उनसे बात करनी पड़ी। उनके एक प्रश्न के उत्तर में, उन्होंने बताया कि उनके दो बेटे हैं।
‘अरे हाँ,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, ‘उनमें से एक ने पुल मेले में भास्कर को बचाया था। कितना भयानक मामला था। उसने कितनी बहादुरी दिखाई। एक और चिप जरूर लेना।’
‘जी हाँ, कबीर। मुझे डर है कि उनकी, उह, उनकी अंतर्दृष्टि की तीक्ष्णता —’
‘किसका? कबीर का?’
डॉ. दुर्रानी चौंक गए। 'नहीं, मतलब भास्कर का।'
'क्या उसे कष्ट हुआ है?' श्रीमती रूपा मेहरा ने चिंता से पूछा।
'हां, बिलकुल।'
कुछ देर सन्नाटा छा गया; फिर श्रीमती रूपा मेहरा ने पूछा, 'और वह अब कहाँ है?'
'बिस्तर पर?' डॉ. दुर्रानी ने पूछा, उत्तर के बजाय एक प्रश्न प्रस्तुत करते हुए।
'क्या उसके लिए अभी सोने का समय थोड़ा जल्दी नहीं है?' श्रीमती रूपा मेहरा ने हैरानी से कहा।
'जैसा कि मुझे, अह, पता चला है, उसकी माँ और अह, दादी काफी सख्त हैं। आजकल वे उसे लगभग सात बजे सुला देती हैं। डॉक्टर का आदेश है।'
‘ओह,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। ‘हमारी बातें आपस में भटक रही थीं। मेरा मतलब था, आपका बेटा कबीर क्या कर रहा है? क्या वह हाल ही में

हुई छात्र गतिविधियों में शामिल था?'
'उस लड़के को लगी उस, उह, दुखद, उह, चोट के बाद ही...' उसने अपना सिर हिलाया और उसकी पलकें कसकर बंद हो गईं। 'नहीं, खैर, उसकी और भी रुचियां हैं। इस समय वह, उह, एक नाटक का पूर्वाभ्यास कर रहा है... उह, क्या कोई बात है? प्रिय श्रीमती मेहरा?'
श्रीमती रूपा मेहरा ने गलती से नींबू पानी निगल लिया था।
अपनी शर्मिंदगी छुपाने के लिए डॉ. दुर्रानी ने ऐसा जताने की कोशिश की जैसे कुछ हुआ ही न हो। वे हिचकिचाते हुए इधर-उधर की बातें करते रहे। जब श्रीमती रूपा मेहरा सदमे से कुछ हद तक उबर गईं, तो उन्होंने पाया कि वे बड़े ही शालीन और सहानुभूतिपूर्ण ढंग से पेर्गोलेसी लेम्मा पर चर्चा कर रहे थे।
'यह मेरा वह शोध पत्र था, जो उस लेम्मा पर आधारित था, जिसे मेरी पत्नी ने लगभग नष्ट कर दिया था,' वह कह रहा था।
'अरे, ऐसा क्यों?' श्रीमती रूपा मेहरा ने पूछा, और यह दिखाने के लिए कि वह उसका पीछा कर रही थीं, उन्होंने सामने मौजूद पहले दो समझदार अक्षरों का सहारा लिया।
'आह,' प्रोफेसर दुर्रानी ने कहा। 'क्योंकि मेरी पत्नी, उह, पागल है।'
'पागल?' श्रीमती रूपा मेहरा ने फुसफुसाते हुए कहा।
'जी हां, बिल्कुल पागलपन है। ऐसा लगता है कि फिल्म शुरू होने वाली है। क्या हम अंदर चलें?' डॉ. दुर्रानी ने पूछा।
12.27
वे क्लब के डांस हॉल में दाखिल हुए, जहाँ सर्दी या बरसात के मौसम में साप्ताहिक फ़िल्में दिखाई जाती थीं। खुली हवा में रहना ज़्यादा सुखद था, क्योंकि हॉल हमेशा खचाखच भरा रहता था; लेकिन आजकल शाम को अचानक बारिश होने का खतरा बना रहता था।

सिटी लाइट्स शुरू हुआ और चारों ओर हंसी गूंज उठी। लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा के लिए यह हंसी उपहास भरी थी। अब उन्हें साफ-साफ समझ आ गया था कि लता ने मालती की मिलीभगत से कबीर के साथ एक ही नाटक में अभिनय करने की साजिश रची थी। ब्रह्मपुर लौटने के बाद से लता ने कबीर का ज़िक्र तक नहीं किया था। जब भास्कर प्रकरण में कबीर की संलिप्तता का ज़िक्र आया, तो उसने जानबूझकर उसे नज़रअंदाज़ कर दिया। श्रीमती रूपा मेहरा ने गुस्से से सोचा कि लता ऐसा कर सकती थी, क्योंकि आमने-सामने की बातचीत में उसे कबीर से ही सारी जानकारी मिल सकती थी।

लता ने अपनी माँ के साथ इतनी छुपकर जो व्यवहार किया, जबकि उसकी माँ उससे बहुत प्यार करती थी और अपने बच्चों की शिक्षा और खुशी के लिए उसने हर सुख-सुविधा का त्याग कर दिया था, इस बात से श्रीमती रूपा मेहरा को गहरा दुख हुआ। सहनशील और समझदार होने का यही फल था। विधवा होने पर, दुनिया में बिल्कुल अकेली होने पर, और बच्चों को उनकी भलाई के लिए संभालने में मदद करने वाला कोई न होने पर, यही होता है। अंधेरे हॉल में उनकी नाक लाल हो गई थी; और जब उन्हें अपने दिवंगत पति की याद आई, तो वे फूट-फूटकर रोने लगीं।

'मेरी पत्नी, उह, पागल है।' ये शब्द उसके दिमाग में गूंजने लगे। ये किसने कहे थे? डॉक्टर दुर्रानी ने? फिल्म में किसी की आवाज़ ने? उसके अपने पति रघुबीर ने? मुसलमान होने से संतुष्ट न होकर, यह बेचारा लड़का आधा पागल भी था। बेचारी लता, बेचारी लता। और श्रीमती रूपा मेहरा, अपनी बेटी पर दया और गुस्से से भर कर, ज़ोर-ज़ोर से और बेशर्मी से रोने लगीं।

उन्हें आश्चर्य हुआ जब उन्होंने देखा कि उनके बाईं और दाईं ओर बैठे लोग भी रो रहे थे। उदाहरण के लिए, उनके बगल में बैठे डॉ. किशन चंद सेठ

शोक से कांप रहे थे। जब उन्हें इसका कारण समझ आया, तो उन्होंने छोटी स्क्रीन की ओर तेज़ी से देखा। लेकिन ध्यान केंद्रित करना असंभव था। उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। उन्होंने अपना काला पर्स खोला और उसमें से इत्र निकाला।

प्राण भी अस्वस्थ महसूस कर रहा था। भीड़भाड़ वाले, घुटन भरे और थोड़ी सी सीलन भरी हॉल के वातावरण में, उसे महसूस हो रहा था कि उसका एक भयानक दौरा पड़ने वाला है। उसे पहले थोड़ी सांस फूल रही थी, लेकिन बैठने पर थोड़ी राहत मिली थी। अब फिर से सांस लेना मुश्किल हो रहा था। उसने मुंह खोला। न तो बासी हवा बाहर निकालना मुश्किल था और न ही ताजी हवा अंदर लेना। वह आगे झुका, कमर मोड़ी, सीधा बैठा। कोई फायदा नहीं हुआ। वह हांफने लगा। उसकी छाती और गर्दन हिलीं, लेकिन कोई असर नहीं हुआ। हताशा के धुंध में उसने दर्शकों की हंसी सुनी, लेकिन उसने अपनी आंखें बंद कर रखी थीं, इसलिए उसे स्क्रीन दिखाई नहीं दे रही थी।

प्राण को घरघराहट होने लगी, और सविता, जो यह सोचकर उसकी ओर आधी मुड़ी हुई थी कि शायद यह हंसी के कारण हुआ है और ठीक हो जाएगा, ने खतरे का स्पष्ट संकेत सुना। उसने प्राण का हाथ थाम लिया। लेकिन प्राण के मन में बस एक ही बात थी: अपने फेफड़ों में ऑक्सीजन कैसे पहुंचाए। जितना अधिक वह कोशिश करता, उतना ही मुश्किल होता जाता। उसकी कोशिशें और भी बेकाबू हो गईं। उसे उठकर झुकना पड़ा। अब बाकी लोग भी मुड़कर शोर के स्रोत की ओर देखने लगे थे। सविता ने परिवार के अन्य सदस्यों से धीमी आवाज़ में बात की, और वे सब उठकर जाने लगे। श्रीमती रूपा मेहरा का अपनी बेटी के लिए रोना अब अपने दामाद के लिए एक नई और अधिक गंभीर चिंता में बदल गया। लेकिन डॉ. किशन चंद सेठ, जो मानसिक रूप से 'सिटी लाइट्स' के सुख-दुखों से

जुड़े हुए थे, निराशा में दांत पीस रहे थे, और केवल अपनी पत्नी की चेतावनी भरी बात से ही वे भड़कने से बच पाए।

किसी तरह वे उसकी कार तक पहुँचे, और वहाँ प्राण बेहोश हो गया। उसकी साँसें फूल रही थीं, जिन्हें देखना बहुत दर्दनाक था, और श्रीमती रूपा मेहरा ने अपनी बेटी को यह सब देखने से रोकने की कोशिश की। बच्चे का जन्म दो सप्ताह में होने वाला था, और उन्होंने सविता को फिल्म के हल्के-फुल्के रोमांच से भी बचने की सलाह दी थी।

सविता ने प्राण का हाथ कसकर पकड़ लिया और डॉक्टर किशन चंद सेठ से कहा, “नानाजी, यह सामान्य से ज़्यादा गंभीर दौरा है। हमें अस्पताल चलना चाहिए।” लेकिन प्राण किसी तरह हांफते हुए सिर्फ एक शब्द बोल पाए: “घर।” उन्हें लगा कि घर पहुँचते ही ऐंठन अपने आप शांत हो जाएगी।

वे वापस घर लौट आए। प्राण को बिस्तर पर लिटा दिया गया। लेकिन ऐंठन जारी रही। उसकी गर्दन और माथे की नसें उभरी हुई थीं। आँखें खुली होने पर भी, बाहरी दुनिया को बहुत कम देख पा रही थीं। उसका सीना लगातार ऊपर-नीचे हो रहा था। उसकी खाँसी, साँस फूलना और घरघराहट की आवाज़ से कमरा भर गया था, और उसके मन में एक गहरा अंधकार छाया हुआ था।

अब इस घटना को शुरू हुए लगभग एक घंटा हो चुका था। डॉ. किशन चंद सेठ ने अपने एक सहकर्मी को फोन किया। फिर, अपनी माँ के मना करने के बावजूद कि उसे आराम करना चाहिए, इस तरह खुद को परेशान नहीं करना चाहिए, सविता सावधानी से बेडरूम से बाहर निकली, रिसीवर उठाया, बैतर हाउस में फोन किया और इम्तियाज़ से बात करने को कहा। किसी चमत्कार से वह घर पर ही था, हालाँकि उस विशाल घर में उसे फोन पर बुलाने में थोड़ा समय लग गया।

‘इम्तियाज़ भाई,’ सविता ने कहा, ‘प्राण को अस्थमा का दौरा पड़ रहा है, लेकिन आज यह सामान्य से कहीं ज़्यादा गंभीर है। क्या आप आ सकते हैं?... एक घंटा हो गया है... हाँ, मैं शांत रहूँगा—लेकिन कृपया आ जाइए... प्लीज़... फिल्म देखते समय क्लब में... नहीं, आपके पिताजी अभी भी वहीं हैं, लेकिन मेरे दादाजी हमारे साथ घर पर हैं... हाँ, हाँ, मैं शांत रहूँगा, लेकिन आपके आने पर मैं और भी शांत हो जाऊँगा... मैं इसे शब्दों में बयान नहीं कर सकता। यह सामान्य से कहीं ज़्यादा गंभीर है, और मैंने ऐसे कई दौरे देखे हैं।’

जब वह बात कर रही थी, तभी युवा नौकर मंसूर को चिंता हुई कि उसकी हालत में उसे खड़े रहना चाहिए, इसलिए वह उसके लिए एक कुर्सी ले आया। अब वह बैठ गई, फोन देखने लगी और रोने लगी।

कुछ देर बाद, खुद को संभालकर, वह वापस बेडरूम में गई, जहाँ सभी लोग परेशान और उत्तेजित होकर खड़े थे।

सामने के दरवाजे पर एक आवाज सुनाई दी। श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'मैं देखती हूं कौन है।'

ये लता और मलाती थीं, जो ट्वेल्थ नाइट के रिहर्सल से वापस लौटी थीं। मलाती ने कहा, 'जब भी मैं अभिनय या गायन करती हूं, तो मुझे ऐसा लगता है कि मैं एक घोड़ा भी खा सकती हूं।'

जैसे ही दरवाजा खुला, लता ने कहा, ‘आज हम घोड़े का मांस नहीं परोस रहे हैं। आज माँ का व्रत है। सब लोग कहाँ हैं?’ उसने आगे पूछा, यह देखकर कि बाहर कार खड़ी होने के बावजूद ड्राइंग रूम खाली था। ‘माँ? अब आप क्यों रो रही हैं? मेरा आपको चिढ़ाने का कोई इरादा नहीं था। वैसे भी, यह एक बेवकूफी भरा मजाक था... क्या कोई बात है? क्या कुछ गड़बड़ है?’

भाग तेरह

13.1

मान, फ़िरोज़ और इम्तियाज़ थोड़ी ही देर में वहाँ पहुँच गए। मान ने सविता को थोड़ा खुश करने की कोशिश की। फ़िरोज़ ने ज़्यादा कुछ नहीं कहा। बाकी सब की तरह, प्राण को इतनी दयनीय हालत में, साँस लेने में तकलीफ़ और हाँफते हुए देखकर वह भी दुखी था।

दूसरी ओर, इम्तियाज़ अपने मित्र की पीड़ा से ज़रा भी विचलित नहीं हुआ और उसने तुरंत निदान का काम शुरू कर दिया। पार्वती सेठ एक प्रशिक्षित नर्स थीं और ज़रूरत पड़ने पर प्राण को हिलाने-डुलाने में मदद करती थीं। इम्तियाज़ जानता था कि प्राण सवालों के जवाब देने की स्थिति में नहीं है, सिवाय कभी-कभार सिर हिलाने या मना करने के। इसलिए उसने इस हालिया दौरे की पृष्ठभूमि और अचानकता के बारे में जितने भी सवाल हो सके, सविता से पूछे। मालती ने कुछ दिन पहले व्याख्यान कक्ष में हुई घटना का काफी चिकित्सकीय वर्णन किया। फ़िरोज़ ने घर जाते समय इम्तियाज़ को बताया था कि प्राण ने कुछ दिन पहले उच्च न्यायालय में उससे मिलने पर थकावट और साथ ही दिल के आसपास तकलीफ की शिकायत की थी।

श्रीमती रूपा मेहरा चुपचाप कुर्सी पर बैठी थीं, और लता उनके पीछे कंधे पर हाथ रखे खड़ी थीं। श्रीमती रूपा मेहरा ने लता से कुछ नहीं कहा। प्राण की चिंता ने बाकी सभी मामलों को पीछे धकेल दिया था।

सविता कभी अपने पति को देखती, कभी इम्तियाज़ के लंबे, गोरे और पैनी नज़रों से निहारते चेहरे को। उसके गाल पर एक छोटा सा तिल था जो उसका ध्यान विशेष रूप से खींच रहा था, हालांकि वह यह नहीं बता

सकती थी कि क्यों। इस समय इम्तियाज़ प्राण के जिगर की जांच कर रहा था—जो अस्थमा के दौरे के बाद एक असामान्य प्रक्रिया लग रही थी। डॉ. किशन चंद सेठ से उन्होंने कहा: 'स्टेटस अस्थमैटिकस है, बिल्कुल। यह अपने आप ठीक हो जाना चाहिए, लेकिन अगर थोड़ी देर में ठीक नहीं हुआ तो मैं त्वचा के नीचे एड्रेनालाईन का इंजेक्शन लगाऊंगा। हालांकि, अगर संभव हो तो मैं इससे बचना चाहूंगा। क्या आप कल ईसीजी मशीन मंगवा सकते हैं?'

'ईसीजी' शब्द सुनते ही न केवल डॉ. सेठ बल्कि बाकी सभी लोग चौंक गए।

डॉ. सेठ ने तीखे स्वर में कहा, 'तुम्हें इसकी क्या ज़रूरत है?' ब्रह्मपुर में केवल एक ही ईसीजी मशीन थी, और वह मेडिकल कॉलेज अस्पताल में थी।

‘अच्छा, मैं रीडिंग लेना चाहूंगा। मैं नहीं चाहता कि प्राण को बिल्कुल भी स्थानांतरित किया जाए, इसलिए क्या आप इसे यहां लाने की व्यवस्था कर सकते हैं? अगर मैं इसके लिए अनुरोध करूंगा, तो वे बस यही सोचेंगे कि मैं नए विचारों वाला एक नौजवान हूं जिसे अस्थमा का इलाज करना नहीं आता।’

डॉ. किशन चंद सेठ भी यही सोच रहे थे। क्या इम्तियाज़ यह कहना चाह रहे थे कि उनके विचार पुराने ज़माने के हैं? लेकिन इम्तियाज़ के मरीज़ की जाँच करने के आत्मविश्वासपूर्ण अंदाज़ ने उन्हें प्रभावित कर दिया था। उन्होंने कहा कि वे ज़रूरी इंतज़ाम कर देंगे। उन्हें पता था कि ईसीजी मशीन वाले संस्थान उन्हें बहुत संभालकर रखते हैं।

लखनऊ में ऐसी एक ही मशीन थी, और उस समय बनारस में ऐसी कोई मशीन नहीं थी। ब्रह्मपुर स्थित मेडिकल कॉलेज अस्पताल को अपनी इस नई खरीद पर बेहद गर्व और हिफ़ाज़त थी। लेकिन डॉ. सेठ का प्रभाव वहाँ

भी उतना ही ज़बरदस्त था जितना अन्य जगहों पर। अगले ही दिन ईसीजी मशीन मंगवा ली गई।

प्राण, जो एक और दर्दनाक घंटे तक सांस लेने में तकलीफ के बाद स्थिर हो गया था और फिर थकावट भरी नींद में सो गया था, जब जागा तो उसने अपने बेडरूम में इम्तियाज और मशीन को पाया।

‘सविता कहाँ है?’ उसने पूछा।

‘वह दूसरे कमरे में सोफे पर आराम कर रही है। डॉक्टर ने ऐसा करने का आदेश दिया है। वह ठीक है।’

‘यह क्या है?’ प्राण ने पूछा।

‘ईसीजी मशीन।’

प्राण ने कुछ खास प्रभावित हुए बिना कहा, 'यह बहुत बड़ा नहीं है।'

इम्तियाज ने हंसते हुए कहा, 'वायरस भी नहीं।' 'आप कैसे सोए?'

‘ठीक है।’ प्राण की आवाज साफ थी; उसमें कोई घरघराहट नहीं थी।

'आपको कैसा लगता है?'

'थोड़ा कमजोर महसूस कर रहा हूँ। सच में, इम्तियाज, ईसीजी का क्या उद्देश्य है? यह तो दिल के लिए होता है, और मेरी समस्या मेरे फेफड़ों की है।'

“क्यों न आप यह फैसला मुझ पर छोड़ दें। आप शायद सही हों, लेकिन जांच कराने में कोई हर्ज नहीं है। मुझे लगता है कि इस बार कार्डियोग्राम मददगार साबित हो सकता है। मेरा मानना है कि यह सिर्फ अस्थमा का दौरा नहीं है।”

इम्तियाज जानता था कि वह प्राण को अज्ञानता के सुखदायक झूले में सुलाकर शांत नहीं कर सकता, और उसने महसूस किया कि उसे प्राण को अपने विश्वास में लेना चाहिए।

लेकिन प्राण ने बस 'ओह' कहा। उसे अभी भी नींद आ रही थी।

कुछ देर बाद, इम्तियाज ने उनसे उनके मेडिकल इतिहास के बारे में कुछ और जानकारी मांगी और कहा, 'मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप जितना हो सके कम हिलें-डुलें।'

लेकिन मेरे व्याख्यान—

इम्तियाज ने खुशी से कहा, 'बिल्कुल असंभव।'

और मेरी समितियाँ?

इम्तियाज हँस पड़ा। 'उन्हें भूल जाओ। फ़िरोज़ ने मुझे बताया है कि तुम वैसे भी उनसे नफ़रत करते हो।'

प्राण तकियों पर लेट गया। उसने कहा, 'तुम हमेशा से ही बदमाश रहे हो, इम्तियाज। खैर, अब तो साफ है कि तुम किस तरह के दोस्त हो। होली पर अचानक आ जाते हो, मुझे मुसीबत में डाल देते हो, और फिर सिर्फ बीमार होने पर ही मुझसे मिलने आते हो।'

इम्तियाज को जम्हाई आई।

'मुझे लगता है कि आपका बहाना यह है कि आप बहुत ज्यादा मेहनत करते हैं।'

इम्तियाज़ ने कहा, 'हाँ, बिल्कुल। डॉ. खान अपनी कम उम्र के बावजूद, या शायद इसी वजह से, ब्रह्मपुर के सबसे लोकप्रिय डॉक्टरों में से एक हैं। अपने पेशे के प्रति उनका समर्पण अनुकरणीय है। और वे अपने सबसे जिद्दी मरीजों से भी अपने आदेशों का पालन करवा लेते हैं।'

‘ठीक है, ठीक है,’ प्राण ने कहा और पढ़ने के लिए तैयार हो गया। ‘तो, अगली बार मैं आपसे कब मिलने की उम्मीद कर सकता हूँ?’

'एक दिन में। याद रखना, तुम्हें घर से बाहर नहीं निकलना है और हो सके तो बिस्तर से भी नहीं उठना है।'

‘महोदय, क्या मैं बाथरूम जा सकता हूँ?’

'हाँ।'

‘और क्या मैं आगंतुकों को स्वीकार कर सकता हूँ?’
'हाँ।'
इम्तियाज़ के अगली मुलाकात में, वह गंभीर दिख रहा था। उसने ईसीजी रीडिंग की जांच की थी और प्राण को बिना लाग-लपेट के बताया:
जी हां, मैं सही था, इस बार सिर्फ अस्थमा ही नहीं, बल्कि दिल की समस्या भी है। आपको "दाएं वेंट्रिकल पर गंभीर तनाव" है। मैं आपको तीन सप्ताह तक पूरी तरह आराम करने की सलाह दे रहा हूं, और कुछ समय के लिए आपको अस्पताल में भर्ती कर रहा हूं। घबराइए मत। लेकिन लेक्चर नहीं होंगे। कमेटी का काम वगैरह भी नहीं।
लेकिन बच्चा—
‘ओह, बच्चा? क्या वहाँ कोई समस्या है?’
क्या आपका मतलब यह है कि जब मैं खुद अस्पताल में रहूंगी तब बच्चे का जन्म होगा?
इम्तियाज़ ने निर्ममता से कहा, ‘मुझे लगता है कि यह सब बच्चे पर निर्भर करता है। जहाँ तक मेरा सवाल है, आपको अभी से शुरू करके तीन सप्ताह तक आराम करना है। बच्चे से मेरा कोई लेना-देना नहीं है।’ फिर उसने आगे कहा, ‘बच्चे के जन्म के लिए जो ज़रूरी था, वह हो चुका है। बाकी सब सविता पर निर्भर है। अगर आप खुद को और खतरे में डालना चाहती हैं, तो यह न तो उसके लिए अच्छा होगा और न ही बच्चे के लिए।’
प्राण ने इस तर्क की वैधता को स्वीकार किया। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, लेकिन जैसे ही उसने ऐसा किया, अज्ञात चिंताओं की एक लहर उस पर छा गई।
उसने झट से अपनी आँखें खोलीं और बोला: ‘इम्तियाज़, मुझे बताओ ये क्या है—ये वेंट्रिकुलर स्ट्रेन जिसका तुमने ज़िक्र किया था। ये मत कहना कि मुझे जानने की ज़रूरत नहीं है। क्या मुझे दिल का दौरा पड़ा है या

कुछ और?' उसे फ़िरोज़ की बात याद आई: 'दिल और फेफड़े दो बिल्कुल अलग चीज़ें हैं, नौजवान, दो बिल्कुल अलग चीज़ें,' और खुद पर काबू न रख पाने के कारण उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई।

इम्तियाज़ ने उसी गंभीर भाव से उसकी ओर देखा जो उसके स्वभाव के विपरीत लगता था, और कहा: 'अच्छा, मैं समझ सकता हूँ कि दिल का दौरा पड़ने का विचार आपको रोचक लग रहा है। अच्छी बात है कि आपको कभी दिल का दौरा नहीं पड़ा, और—वैसे—शायद पड़ेगा भी नहीं। लेकिन चूंकि आपने पूछा है, तो चलिए मैं आपको जितना हो सके स्पष्ट रूप से समझा देता हूँ।' वह रुका, थोड़ा सोचा कि कैसे समझाए, फिर बोला: 'दिल और फेफड़ों के बीच गहरा संबंध है; वे एक ही गुहा में होते हैं, और दिल का दाहिना हिस्सा फेफड़ों को बासी खून पहुँचाता है ताकि वह उसे ताज़ा कर सके, ऑक्सीजन युक्त कर सके। इसलिए जब फेफड़े अपना काम ठीक से नहीं करते—उदाहरण के लिए, जब अस्थमा के कारण फेफड़ों तक जाने वाली हवा की नलियाँ बंद हो जाती हैं और उन्हें पर्याप्त हवा नहीं मिलती—तो दिल प्रभावित होता है। यह खराब ऑक्सीजन आदान-प्रदान की भरपाई के लिए फेफड़ों को अधिक खून पहुँचाने की कोशिश करता है, और इससे इसका अपना रक्त संचार कक्ष खून से भर जाता है, जिससे वह अवरुद्ध और फूल जाता है। क्या आप समझ रहे हैं?'

'हां। आप बातों को बहुत अच्छे से समझाते हैं,' प्राण ने उदास होकर कहा।

'अब इस रक्त जमाव और फैलाव के कारण, हृदय एक पंप के रूप में अपनी कार्यक्षमता खो देता है, और इसी को हम "कंजेस्टिव कार्डियक फेलियर" कहते हैं। इसका "हार्ट फेलियर" शब्द से आम लोगों की समझ से कोई लेना-देना नहीं है। उनके लिए इसका मतलब दिल का दौरा होता

है। खैर, जैसा कि मैंने कहा, आपको इसका कोई खतरा नहीं है।'
तो फिर मुझे तीन सप्ताह तक बिस्तर पर क्यों रहना पड़ेगा? यह तो बहुत लंबा समय लगता है। मेरे काम का क्या होगा?
इम्तियाज ने कहा, 'ठीक है, आप बिस्तर पर थोड़ा हल्का-फुल्का काम कर सकते हैं। बाद में आप टहलने भी जा सकते हैं। लेकिन फिलहाल क्रिकेट नहीं खेल पाएंगे।'
'बाहर?'
मुझे अफसोस है कि ऐसा ही है। अब दवा की बात करते हैं। ये दो सेट सफेद गोलियां हैं। आपको ये दिन में तीन बार और ये दिन में एक बार पहले हफ्ते तक लेनी हैं। फिर मैं आपकी नाड़ी की गति के आधार पर डिजॉक्सिन की खुराक थोड़ी कम कर दूंगा। लेकिन आपको एमिनोफिलिन कुछ महीनों तक लेते रहना होगा। जरूरत पड़ने पर मुझे आपको पेनिसिलिन का इंजेक्शन भी देना पड़ सकता है।
'आप गंभीर लग रहे हैं, डॉक्टर,' प्राण ने बातचीत में थोड़ी नरमी लाने की कोशिश करते हुए कहा। यह इम्तियाज़ उस इम्तियाज़ से बिल्कुल अलग था जिसने प्रोफ़ेसर मिश्रा को टब में डुबोने में मदद की थी।
'मैं गंभीर हूँ।'
लेकिन अगर यह दिल का दौरा नहीं है, तो मुझे किस बात का खतरा है?
'अगर आपको कंजेस्टिव हार्ट फेलियर है, तो आपके शरीर में खून जमा होने के सारे लक्षण दिखाई देंगे। आपका लिवर बड़ा हो जाएगा, आपके पैर भी, आपकी गर्दन की नसें उभरी हुई दिखेंगी, आपको खांसी आएगी और आपको बहुत सांस फूलने लगेगी, खासकर चलने या मेहनत करने पर। और यह भी संभव है कि आपका दिमाग भी भ्रमित हो जाए। मैं आपको डराना नहीं चाहता—यह जानलेवा नहीं है—'
'लेकिन तुम मुझे डरा रहे हो,' प्राण ने इम्तियाज के तिल को देखते हुए

कहा, जिसे वह बहुत परेशान कर रहा था। 'तुम और क्या कर रहे हो? मैं इस बिस्तर पर आराम को गंभीरता से नहीं ले सकता। मुझे पता है मैं ठीक हूँ। मैं, खैर, मैं एक जवान आदमी हूँ। मैं ठीक महसूस करता हूँ। और हमेशा से ऐसा ही रहा है कि जब मेरी सांस लेने में होने वाली ऐंठन दूर हो जाती है, तो मैं पहले की तरह ही स्वस्थ हो जाता हूँ—किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह—पूरी तरह से चुस्त। मैं क्रिकेट खेलता हूँ। मुझे ट्रेकिंग करना पसंद है—'

इम्तियाज़ ने कहा, 'मुझे डर है कि अब स्थिति अलग है। पहले आप अस्थमा के मरीज़ थे। लेकिन अब मुख्य समस्या आपके दिल के दाहिने हिस्से में है। आपको आराम की ज़रूरत होगी। मेरी सलाह को गंभीरता से लेना आपके लिए अच्छा रहेगा।'

प्राण को अपने मित्र के औपचारिक संबोधन से आहत महसूस हुआ और उसने आगे कोई विरोध नहीं किया। इम्तियाज़ ने कहा था कि यह स्थिति तत्काल जानलेवा नहीं है। प्राण अपने मित्र के गंभीर व्यवहार और संभावित जटिलताओं की सूची से बिना पूछे ही समझ गया था कि दीर्घकाल में यह लगभग निश्चित रूप से जीवन को छोटा कर देगी।

इम्तियाज़ के जाने के बाद प्राण ने इस नई सच्चाई का सामना करने की कोशिश की। लेकिन आज का दिन कल जैसा ही लग रहा था, और इस अचानक आई सच्चाई को प्राण लगभग भुला देना चाहता था—जैसे कोई अप्रासंगिक स्मृति या बुरा सपना हो। लेकिन वह उदास था, और लता, सास या सबसे बढ़कर सविता के साथ सामान्य व्यवहार करना और इस उदासी को छुपाना उसके लिए मुश्किल हो रहा था।

13.2

उस दोपहर प्राण को मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया। सविता ने उससे मिलने की ज़िद की थी, इसलिए उसे भूतल पर मौजूद

कुछ कमरों में से एक कमरा दिया गया। उसके आने के लगभग आधे घंटे बाद ही तेज़ बारिश शुरू हो गई और कई घंटों तक जारी रही। प्राण को लगा कि इन परिस्थितियों में बारिश उसके लिए सबसे अच्छी चीज़ थी। इसने उसे इस तरह से तनावमुक्त कर दिया कि पढ़ने से भी ऐसा नहीं हो पाता। इसके अलावा, इम्तियाज़ ने उसे बताया था कि पहले दिन उसे न तो पढ़ना चाहिए और न ही किसी और तरह का कोई काम करना चाहिए। बारिश लगातार बरस रही थी। यह एक निरंतर घटना थी, फिर भी इससे कोई उत्तेजना नहीं हो रही थी: प्राण को बस इसी संयोजन की ज़रूरत थी। थोड़ी देर में ही उसे नींद आने लगी।

वह अपने हाथ पर मच्छर के काटने के निशान के साथ जागा।

लगभग सात बज चुके थे, मुलाक़ात का समय समाप्त हो चुका था। आँखें खोलते ही और नाइटस्टैंड पर रखे चश्मे को उठाते ही उन्होंने गौर किया कि सविता के अलावा कमरे में कोई और नहीं था।

‘कैसा महसूस कर रहे हो, प्यारे?’ सविता ने कहा।

प्राण ने कहा, 'मुझे अभी-अभी मच्छर ने काट लिया है।'

'बेचारी बच्ची। मच्छर बहुत परेशान कर रहे हैं।'

'भूतल पर कमरा लेने में यही समस्या होती है।'

'क्या है?'

मच्छर।

हम खिड़कियाँ बंद कर देंगे।

'बहुत देर हो चुकी है, वे पहले ही अंदर आ चुके हैं।'

मैं उनसे कमरे में फ्लिट का छिड़काव करवाऊंगा।

'वह स्प्रे मुझे भी बेहोश कर देगा; जब वे ऐसा कर रहे हों तो मैं कमरे से बाहर नहीं जा सकता।'

'यह सच है।'

‘सविता, हम कभी झगड़ा क्यों नहीं करते?’
क्या हम ऐसा नहीं करते?
'नहीं वाकई में नहीं।'
‘अच्छा, हमें ऐसा क्यों करना चाहिए?’ सविता ने पूछा।
‘मुझे नहीं पता। मुझे लगता है कि मैं कुछ खो रही हूँ। अब अरुण और मीनाक्षी को देखो। तुम ही बताओ, वे हमेशा झगड़ते रहते हैं। युवा जोड़ों के बीच अक्सर झगड़े होते ही हैं।’
'खैर, हम बच्चे की शिक्षा को लेकर छोटी-मोटी बहस कर सकते हैं।'
'इतना लंबा इंतजार करना ठीक नहीं है।'
‘अच्छा, इसके खाने के समय के बारे में। प्राण, वापस सो जाओ, तुम बहुत परेशान कर रहे हो।’
‘ये कार्ड किसने भेजा है?’
‘प्रोफेसर मिश्रा।’
प्राण ने अपनी आंखें बंद कर लीं।
और वो फूल?
'आपकी मां।'
‘वह यहीं थी—और किसी ने मुझे जगाया क्यों नहीं?’
'नहीं। इम्तियाज ने कहा था कि आपको आराम करना है—और हमने आपको आराम करने दिया।'
‘आज और कौन-कौन आया था? आपको पता है, मुझे काफी भूख लग रही है।’
'ज्यादा लोग नहीं हैं। आज तो हमें आपको अकेला छोड़ना था।'
'ओह।'
बस इन सब बातों से उबरने के लिए।
प्राण ने आह भरी। सन्नाटा छा गया। 'खाना?'

'हां, हम घर से कुछ लाए हैं। इम्तियाज ने हमें चेतावनी दी थी कि अस्पताल का खाना बहुत खराब होता है।'
'क्या यह वही अस्पताल नहीं है जहां उस लड़के की मौत हुई थी - उस मेडिकल छात्र की?'
'प्राण, तुम इतने निराशावादी क्यों हो रहे हो?'
'मरने में भयावह क्या है?'
'खैर, काश आप इसके बारे में बात न करते।'
प्राण ने कहा, 'करने से बेहतर है इसके बारे में बात करना।'
क्या आप चाहते हैं कि मेरा गर्भपात हो जाए?
'ठीक है, ठीक है। तुम क्या पढ़ रहे हो?'
'कानून की किताब। फिरोज ने मुझे उधार दी थी।'
'कानून की किताब?'
'हां। यह दिलचस्प है।'
विषय क्या है?
'अपराध।'
क्या आप कानून की पढ़ाई करने के बारे में सोच रहे हैं?
'हां, शायद। प्राण, तुम्हें इतना ज्यादा नहीं बोलना चाहिए, ये तुम्हारे लिए अच्छा नहीं है। क्या मैं तुम्हें ब्रह्मपुर क्रॉनिकल का कुछ अंश पढ़कर सुनाऊं? राजनीतिक समाचार?'
'नहीं, नहीं। बेवकूफ!' प्राण थोड़ा हंसने लगा, फिर खांसने लगा।
'देखा?' सविता ने कहा और उसे सहारा देने के लिए बिस्तर की ओर बढ़ी।
प्राण ने कहा, 'तुम्हें इतनी चिंता नहीं करनी चाहिए।'
'चिंतित हो?' सविता ने अपराधबोध से कहा।
'मैं मरने वाला नहीं हूँ, तुम्हें पता है। तुमने अचानक कोई पेशा अपनाने का

फैसला क्यों किया?'

'सच में, प्राण—लगता है तुम वो झगड़ा करने पर तुले हुए हो। अगर मैं वकालत की पढ़ाई करूंगा तो शास्त्री जी की वजह से ही करूंगा, जिन्होंने मुझे इसमें दिलचस्पी दिलाई। मैं उस महिला वकील, जया सूद से मिलना चाहता हूं, जो हाई कोर्ट में वकालत करती हैं। उन्होंने ही मुझे उनके बारे में बताया था।'

प्राण ने कहा, 'तुम्हारी मां बनने वाली है; तुम्हें अभी से पढ़ाई शुरू नहीं करनी चाहिए। और सोचो मेरे पिता क्या कहेंगे।'

महेश कपूर, जो महिलाओं की शिक्षा में विश्वास रखते थे, महिलाओं के काम करने में विश्वास नहीं करते थे और उन्होंने इस बात को खुलकर कहा था।

सविता ने कुछ नहीं कहा। उसने ब्रह्मपुर क्रॉनिकल को मोड़ा और एक मच्छर को भगाया। उसने प्राण से पूछा, 'क्या तुम खाने के लिए तैयार हो?'

प्राण ने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि तुम यहाँ अकेले नहीं हो। मुझे आश्चर्य है कि तुम्हारी माँ ने तुम्हें अकेले यहाँ आने दिया। अगर अचानक तुम्हारी तबीयत खराब हो जाए तो क्या होगा?'

'मुलाकात के समय के बाद सिर्फ एक ही व्यक्ति को रुकने की इजाजत है। और मैंने धमकी दी थी कि अगर मुझे नहीं रोका गया तो मैं हंगामा कर दूंगी। मेरी नाजुक हालत में भावनात्मक उत्तेजना मेरे लिए बहुत हानिकारक है,' सविता ने कहा।

प्राण ने स्नेहपूर्वक कहा, 'तुम बेहद मूर्ख और जिद्दी हो।'

'जी हां,' सविता ने कहा। 'बिल्कुल। लेकिन अगर ज़रूरत पड़े तो आपके पिताजी की गाड़ी नीचे खड़ी है। वैसे, आपके पिताजी नेहरू की बहन के बारे में क्या सोचते हैं, जो वाकई एक सफल कामकाजी महिला हैं?'

‘आह,’ प्राण ने अंतिम टिप्पणी न करते हुए कहा। ‘तला हुआ बैंगन। स्वादिष्ट। हाँ, चलिए ब्रह्मपुर क्रॉनिकल का कुछ अंश सुनते हैं। नहीं, मुझे विश्वविद्यालय के नियमों का कुछ अंश पढ़कर सुनाइए, जहाँ वह बुकमार्क लगा है, वहाँ से शुरू करके। छुट्टी के बारे में वह अंश।’

'इसका आपकी समिति से क्या लेना-देना है?' सविता ने किताब को अपने पेट पर टिकाते हुए पूछा।

कुछ नहीं। लेकिन मुझे कम से कम तीन सप्ताह की छुट्टी लेनी होगी, और बेहतर होगा कि मैं नियमों का पता लगा लूँ। मैं मिश्रा के किसी जाल में नहीं फंसना चाहता।

सविता ने सोचा कि उसे एक दिन के लिए विश्वविद्यालय के बारे में भूल जाने का सुझाव दे, लेकिन वह जानती थी कि यह असंभव था। इसलिए उसने किताब उठाई और पढ़ना शुरू कर दिया:

निम्नलिखित प्रकार की छुट्टियां स्वीकार्य हैं:

(क) आकस्मिक अवकाश

(ख) मुआवज़ा अवकाश

(सी) प्रतिनियुक्ति अवकाश

(घ) ड्यूटी अवकाश

(ई) असाधारण अवकाश

(f) मातृत्व अवकाश

(जी) चिकित्सा अवकाश

(h) विशेषाधिकार अवकाश

(i) संगरोध अवकाश

(j) अध्ययन अवकाश।

वह रुक गई। 'क्या मैं आगे लिखूँ?' उसने पृष्ठ पर सरसरी नजर डालते हुए पूछा।

'हाँ।'
सविता ने आगे कहा: 'अत्यावश्यक मामलों को छोड़कर, जिनमें कुलपति या प्रो-कुलपति निर्णय लेंगे, सामान्य तौर पर अवकाश देने का अधिकार कार्यकारी परिषद में निहित होगा।'
प्राण ने कहा, 'इसमें कोई समस्या नहीं है। यह एक अत्यावश्यक मामला है।'
लेकिन एल.एन. अग्रवाल के कार्यकारी परिषद में होने और आपके पिता के अब मंत्री न रहने के साथ—'
प्राण ने शांत भाव से कहा, 'वह क्या कर सकता है? कुछ खास नहीं। ठीक है—अब आगे क्या?'
सविता ने भौंहें चढ़ाईं और आगे पढ़ना जारी रखा:
जब छुट्टी शुरू होने से ठीक पहले वाला दिन या छुट्टी समाप्त होने के ठीक बाद वाला दिन कोई अवकाश, छुट्टियों का समूह या छुट्टी का अवकाश हो, तो जिस व्यक्ति को छुट्टी दी गई है या जो छुट्टी से लौट रहा है, वह उस अवकाश या छुट्टियों के समूह या छुट्टी के अवकाश से पहले वाले दिन के अंत में कार्यभार सौंप सकता है या उसके बाद वाले दिन कार्यभार पर लौट सकता है, बशर्ते कि इस तरह जल्दी प्रस्थान करने या लौटने में देरी करने से विश्वविद्यालय पर कोई अतिरिक्त व्यय न हो। जब छुट्टी ऐसे अवकाश या छुट्टी के अवकाश से पहले या बाद में दी जाती है, तो परिणामी व्यवस्था, जैसा भी मामला हो, छुट्टी शुरू होने या समाप्त होने की तारीख से शुरू या समाप्त होगी।
'क्या?' प्राण ने कहा।
'क्या मैं इसे दोबारा पढ़ूँ?' सविता ने मुस्कुराते हुए पूछा।
नहीं, नहीं, कोई बात नहीं। मुझे थोड़ा चक्कर आ रहा है। आपके कानून भी उतने ही बुरे होंगे—या उससे भी बदतर, आप जानते हैं। कुछ और

पढ़िए। ब्रह्मपुर क्रॉनिकल से कुछ पढ़िए। राजनीति नहीं—कोई मानवीय रुचि की कहानी—जैसे किसी बच्चे को लकड़बग्घे ने खा लिया हो। ओह, माफ कीजिए! माफ कीजिए, प्रिये। जैसे किसी ने लॉटरी जीत ली हो—या "ब्रह्मपुर डायरी"—ये तो हमेशा सुकून देती है। बच्चा कैसा है?

'मुझे लगता है कि वह सो रहा है,' सविता ने एकाग्रता भरी नज़र से कहा।

'वह?'

मेरी विधि-पुस्तकों के अनुसार, "वह" में "वह" भी शामिल है।

'किताबें, है ना?' प्राण ने कहा। 'अच्छा, ठीक है।'

13.3

प्राण के लिए चिंता, किसी भी दिन प्रसव होने वाली सविता के लिए फिक्र और लता के लिए अत्यधिक चिंता के बीच फंसी श्रीमती रूपा मेहरा का दिल टूट गया था। लेकिन फिलहाल हालात इतने तनावपूर्ण थे कि उन्होंने ऐसा होने नहीं दिया।

जब सविता अस्पताल में थी, श्रीमती रूपा मेहरा उसके साथ रहना चाहती थीं। जब लता विश्वविद्यालय में होती थी—खासकर जब वह अपनी किसी रिहर्सल में होती थी—श्रीमती रूपा मेहरा को उसकी शरारतों की आशंका सताती रहती थी। फिर भी लता इतनी व्यस्त रहती थी कि उसकी माँ को उसके साथ अकेले में बात करने का मौका ही नहीं मिलता था, दिल खोलकर बातें करने का तो सवाल ही नहीं उठता था। रात में तो यह नामुमकिन ही था, क्योंकि जब सविता सोने के लिए घर आती थी, तो घर में भावनात्मक उथल-पुथल ऐसी चीज़ थी जिसे उसकी माँ उसे बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं करना चाहती थी।

श्रीमती रूपा मेहरा को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें, और न ही गीता और न ही अपने दिवंगत पति से की गई प्रार्थनाएँ इस संकट में उनकी मदद कर पा रही थीं। इस समय लता को नाटक से हटाना कहीं

उसे किसी अनहोनी की ओर धकेल न दे—यहाँ तक कि वह सीधे-सीधे अवज्ञा भी कर सकती थी। वह न तो सविता की सलाह मान सकती थी और न ही प्राण की, क्योंकि सविता प्रसव के करीब थी, और प्राण—जैसा कि श्रीमती रूपा मेहरा ने खुद को समझा लिया था—मृत्यु के करीब थे। जागने पर वह गीता के अपने दो अध्यायों का पाठ तो करती थी, लेकिन दुनिया की बातें उसके दिमाग में इतनी बैठी हुई थीं कि कभी-कभी वह चुपचाप खालीपन को घूरती रहती थी।

प्राण को अस्पताल में रहना अच्छा लगने लगा था। मानसून का मौसम उमस भरा था, जो उसे पसंद नहीं था, लेकिन कम से कम हवा में मौजूद नमी उसकी सांस की नली के लिए ज़्यादा हानिकारक नहीं थी। उसने अपने कमरे से मच्छर भगा दिए थे। उसने ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय के कैलेंडर और नियमों की जगह अगाथा क्रिस्टी की किताबें पढ़ना शुरू कर दिया था। सविता अब शिकायत नहीं करती थी कि प्राण उसके साथ समय नहीं बिताता। वह खुद को एक शांत कैदी की तरह महसूस करता था, जो ब्रह्मांड की धाराओं में बह रहा हो। कभी-कभी ब्रह्मांड किसी को उसके पास ले आता था। अगर प्राण सो रहा होता, तो आगंतुक थोड़ी देर रुककर चला जाता। अगर प्राण जागा होता, तो वे बातें करते।

आज दोपहर उनके आसपास दबी आवाज़ में अफरा-तफरी मची हुई थी। लता और मालती रिहर्सल के बाद उनसे मिलने आई थीं। उन्हें सोते हुए देखकर वे सोफे पर बैठ गईं और इंतज़ार करने लगीं। कुछ ही मिनटों बाद, श्रीमती रूपा मेहरा सविता के साथ वहाँ पहुँचीं।

श्रीमती रूपा मेहरा ने उन दोनों को देखा और उनकी आंखें झुंझलाहट से सिकुड़ गईं।

'तो!' उसने कहा।

लता और मालती उसकी आवाज के लहजे को तो समझ गईं, लेकिन

उसका कारण नहीं जान पाईं।
‘तो!’ श्रीमती रूपा मेहरा ने सोते हुए प्राण की ओर देखते हुए धीमी आवाज़ में कहा। ‘मुझे लगता है कि तुम रिहर्सल से आए हो।’
अगर उसे लगा था कि साजिश का यह अप्रत्यक्ष जिक्र दोषियों को आत्मसमर्पण करने पर मजबूर कर देगा, तो वह गलत थी।
‘जी मां,’ लता ने कहा।
‘माँ, रिहर्सल बहुत बढ़िया रही—देखो लता ने कितना निखार दिखाया है,’ मलाती ने कहा। ‘वार्षिक दिवस पर आने पर आपको नाटक का भरपूर आनंद आएगा।’
लता के खुलकर बोलने की बात सोचकर श्रीमती रूपा मेहरा शर्म से लाल हो गईं। उन्होंने कहा, 'मैं नाटक जरूर देखूंगी, लेकिन लता उसमें नहीं होंगी।'
‘मां!’ लता और मालती ने एक साथ कहा।
‘लड़कियों को नाटकों में नहीं होना चाहिए—’
‘माँ, हमने इस बारे में पहले ही बात कर ली थी,’ लता ने सविता की ओर देखते हुए कहना शुरू किया। ‘प्राण को जगाना नहीं है।’
‘जी मां, यह सच है,’ सविता ने कहा। ‘अब आप लता को वापस नहीं ले सकतीं। आपने उसे अभिनय करने की अनुमति दी थी। उनके लिए किसी और को ढूंढना असंभव होगा। उसने अपने संवाद याद कर लिए हैं—’
श्रीमती रूपा मेहरा एक कुर्सी पर बैठ गईं। उन्होंने सविता से फटकार लगाते हुए कहा, 'तो तुम भी जानती हो?' उन्होंने आगे कहा, 'बच्चे तो बस दुख ही देते हैं।'
सौभाग्यवश, सविता ने इस टिप्पणी को अपनी वर्तमान स्थिति से नहीं जोड़ा। 'जानती हो?'
'जानते हो क्या?' उसने कहा।

‘वो—वो लड़का, के’—श्रीमती रूपा मेहरा उसका नाम लेने की हिम्मत नहीं कर पा रही थीं—‘लता के साथ नाटक में अभिनय कर रहा है। मुझे तुम पर शर्म आ रही है, मालती,’ उन्होंने आगे कहा, उनकी नाक लाल होने लगी थी, ‘मुझे तुम पर शर्म आ रही है। मैंने तुम पर भरोसा किया। और तुम इतनी धूर्त निकलीं।’ उनकी आवाज ऊंची हो गई, और सविता ने अपनी उंगली होठों पर रख ली।

‘माँ, कृपया—’

‘जी हां, यह सब ठीक है, जब आप मां बनेंगी तो आपको भी पता चल जाएगा—’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। ‘आपको त्याग करने पड़ेंगे, और फिर वे आपका दिल तोड़ देंगे।’

मालती मुस्कुराए बिना नहीं रह सकी। श्रीमती रूपा मेहरा, जो इस साजिश की मुख्य सूत्रधार थीं, उस पर भड़क उठीं।

‘तुम खुद को बहुत होशियार समझते हो, पर मुझे हमेशा पता होता है कि क्या चल रहा है,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। उन्होंने यह नहीं बताया कि एक आकस्मिक बातचीत से ही उन्हें पता चला था कि कबीर ‘ट्वेल्थ नाइट’ नाटक में अभिनय कर रहा है। ‘हाँ, तुम जितना चाहो मुस्कुरा सकते हो, पर रोने का काम तो मैं ही करूंगी।’

‘मां, हमें बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि कबीर अभिनय करेगा,’ मालती ने कहा। ‘मैं लता को उसके रास्ते से दूर रखने की कोशिश कर रही थी।’

‘हां, हां, मुझे पता है, मुझे पता है, मुझे सब पता है,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने अविश्वास भरे स्वर में कहा। उन्होंने अपने बैग से कढ़ाई किया हुआ रूमाल निकाला।

प्राण हिल उठा; सविता उसके पास जाकर खड़ी हो गई।

‘माँ, इस बारे में बाद में बात करेंगे,’ लता ने कहा। ‘इसमें मालती की कोई गलती नहीं है।’

और अब मैं पीछे नहीं हट सकता।'
श्रीमती रूपा मेहरा ने अपने पसंदीदा उपदेशात्मक कवियों में से एक की एक पंक्ति उद्धृत करते हुए यह दर्शाया कि कुछ भी असंभव नहीं है, फिर कहा: 'और आपको हरेश का पत्र भी मिला है। क्या आपको इस दूसरे लड़के को देखने में शर्म नहीं आती?'
लता ने गुस्से से फुसफुसाते हुए कहा, 'तुम्हें कैसे पता चला कि मुझे हरेश का पत्र मिला है?'
'मैं तुम्हारी मां हूं, इसलिए मुझे पता है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।
'खैर, माँ,' लता ने गुस्से में फुसफुसाते हुए कहा, 'आप मुझ पर भरोसा करें या न करें, लेकिन मैं आपको बता दूं कि मुझे नहीं पता था कि कबीर नाटक में होंगे, और मैं बाद में उनसे नहीं मिल रही हूँ, और नाटक में कोई कथानक ही नहीं है।'
इनमें से किसी भी बात से श्रीमती रूपा मेहरा संतुष्ट नहीं हुईं, जिन्होंने एक पल के लिए सविता की ओर देखते हुए, उन बेमेल बच्चों के बारे में सोचना शुरू कर दिया जो इस अकल्पनीय विवाह से पैदा हो सकते थे।
'वह आधा पागल है, क्या आपको यह भी पता है?' श्रीमती रूपा मेहरा ने पूछा।
लता को आश्चर्य और हैरानी हुई कि इससे उसके चेहरे पर केवल एक मुस्कान ही आई।
'तुम मुझ पर हंस रहे हो?' उसने स्तब्ध होकर कहा।
'नहीं, माँ, उस पर। वह तो पागलपन को बखूबी निभा रहा है,' लता ने कहा। कबीर ने मालवोलियो का किरदार आश्चर्यजनक रूप से बखूबी निभाया था; उसकी शुरुआती झिझक गायब हो गई थी।
'तुम इस पर कैसे हंस सकते हो? तुम इस पर कैसे हंस सकते हो?' श्रीमती रूपा मेहरा अपनी कुर्सी से उठते हुए बोलीं। 'तुम्हें दो जोरदार

थप्पड़ पड़ें तो सबक मिलेगा। अपनी ही मां पर हंस रहे हो।'
'माँ, धीरे से बोलिए,' सविता ने कहा।
'मुझे लगता है कि मुझे अब जाना चाहिए,' मलाती ने कहा।
'नहीं, तुम वहीं रहो,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। 'तुम्हें यह भी सुनना चाहिए, फिर तुम लता को बेहतर सलाह दे पाओगी। मैं इस लड़के के पिता से सब्ज़ीपुर क्लब में मिली थी। उन्होंने मुझे बताया कि उनकी पत्नी पूरी तरह पागल है। और जिस अजीब तरीके से उन्होंने यह बात कही, उससे मुझे लगा कि शायद वे खुद भी थोड़े पागल हैं।' श्रीमती रूपा मेहरा अपनी आवाज़ में जीत की खुशी को पूरी तरह छिपा नहीं पाईं।
लता ने स्तब्ध होकर कहा, 'बेचारा कबीर!'
कबीर की अपनी मां के बारे में कही गई वह बात, जिसे वह बहुत पहले भूल चुका था, अब एक भयावह तरीके से समझ में आने लगी।
लेकिन इससे पहले कि श्रीमती रूपा मेहरा लता को और डांट पातीं, प्राण जाग गया। चारों ओर देखते हुए उसने कहा: 'क्या हो रहा है? हेलो मां, हेलो लता। अरे, मालती, तुम भी आ गईं—मैंने सविता से पूछा कि तुम्हें क्या हुआ है। क्या बात है? उम्मीद है कुछ बड़ा हुआ होगा। बताओ तो सही। मैंने किसी को कहते सुना कि कोई पागल हो गया है।'
"ओह, हम नाटक के बारे में बात कर रहे थे," लता ने कहा। "मालवोलियो, तुम्हें पता है ना।" उसे बोलने में काफी मशक्कत करनी पड़ी।
'ओह, हाँ। तुम्हारा काम कैसा चल रहा है?'
'अच्छा।'
'और तुम्हारा, मलाती?'
'अच्छा।'
वाह, वाह, वाह। चाहे मुझे अनुमति मिले या न मिले, मैं इसे देखने जरूर

आऊंगा। इसमें अब लगभग एक महीना ही बचा है। शानदार नाटक है, ट्वेल्थ नाइट—वार्षिक दिवस के लिए एकदम सही। बरुआ रिहर्सल कैसे करवा रहे हैं?

'बहुत खूब,' मलाती ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा; वह समझ गई थी कि लता बोलने के मूड में नहीं थी। 'उसमें वाकई प्रतिभा है। कोई सोच भी नहीं सकता, वह इतना शांत स्वभाव का है। लेकिन पहली ही पंक्ति से —'

'प्राण बहुत थका हुआ है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने इस अप्रिय वर्णन को रोकते हुए कहा। वह नाटक के बारे में कुछ भी सकारात्मक सुनना नहीं चाहती थीं। वास्तव में, वह उस निर्भीक लड़की मालती से कुछ भी सुनना नहीं चाहती थीं। 'प्राण, अब तुम खाना खा लो।'

'जी हाँ, बहुत बढ़िया विचार है,' प्राण ने धैर्य के बावजूद कुछ ज़्यादा ही उत्सुकता से कहा। 'मेरे लिए क्या लाए हो? व्यायाम न करने की वजह से मुझे बहुत भूख लगती है। लगता है मैं बस किसी तरह गुज़ारा कर रहा हूँ। सूप में क्या है? ओह, सब्ज़ी का सूप,' उसने निराश होकर कहा। 'क्या मुझे कभी-कभार टमाटर का सूप भी नहीं मिल सकता?'

कभी-कभार? सविता ने सोचा। प्राण ने पिछले दिन और उससे पहले वाले दिन अपना पसंदीदा टमाटर का सूप पिया था, और उसने सोचा था कि आज कुछ अलग होगा।

'पागल! याद रखना!' श्रीमती रूपा मेहरा ने लता से धीमी आवाज़ में कहा। 'जब तुम मौज-मस्ती करते हुए इधर-उधर जाओगी, तब याद रखना। मुसलमान और पागल।'

13.4

जब मान अंदर आया तो उसने देखा कि प्राण बड़े चाव से अपना खाना खा रहा था।

‘अब तुम्हें क्या हुआ है?’ उसने पूछा।
‘कुछ खास नहीं। बस फेफड़े, दिल और जिगर,’ प्राण ने कहा।
'हां, इम्तियाज ने आपके दिल के बारे में कुछ कहा था। लेकिन आप दिल की बीमारी से पीड़ित व्यक्ति जैसे नहीं दिखते। वैसे भी, आपकी उम्र के लोगों को ऐसा नहीं होता।'
‘खैर,’ प्राण ने कहा। ‘मुझे अभी तक दिल की बीमारी नहीं है। कम से कम मुझे तो ऐसा नहीं लगता। मुझे बस गंभीर चोट लगी है।’
श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'वेंट्रिकुलर।'
‘ओह। आह, नमस्ते माँ।’ मान ने सबका अभिवादन किया और प्राण के खाने को ध्यान से देखा। ‘जामुन? स्वादिष्ट!’ उसने कहा और दो जामुन मुँह में डाल लिए। उसने बीज हथेली पर थूक दिए, उन्हें थाली के किनारे रख दिया और दो और जामुन उठा लिए। ‘तुम्हें भी इन्हें चखना चाहिए,’ उसने प्राण को सलाह दी।
‘मान, आजकल क्या चल रहा है?’ सविता ने पूछा। ‘तुम्हारी उर्दू कैसी चल रही है?’
‘ओह, बढ़िया, बहुत बढ़िया। खैर, कोई बात नहीं, मैंने वाकई तरक्की की है। अब मैं उर्दू में चिट्ठी लिख सकती हूँ—और तो और, दूसरी तरफ कोई उसे पढ़ भी सकता है। और हाँ, मुझे आज एक चिट्ठी लिखनी है।’ उनका सौम्य चेहरा पल भर के लिए उलझन में पड़ गया, फिर मुस्कुरा उठा।
‘और आप कैसी हैं? एक दर्जन आदमियों के बीच दो औरतें। वे सब आप पर लट्टू हो रहे होंगे। आप उनसे कैसे पीछा छुड़ाती हैं?’
श्रीमती रूपा मेहरा ने उन्हें गुस्से भरी निगाहों से देखा।
लता ने कहा, 'हम ऐसा नहीं करते। हम एक कठोर दूरी बनाए रखते हैं।'
'बहुत ही ठंडा माहौल है,' मलाती ने सहमति जताते हुए कहा। 'हमें अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा करनी है।'

लता ने सख्ती से कहा, 'अगर हम सावधान नहीं रहे, तो कोई हमसे शादी नहीं करेगा। या हमारे साथ भागकर भी नहीं जाएगा।'

श्रीमती रूपा मेहरा का सब्र टूट चुका था। उन्होंने झुंझलाहट में कहा, 'आप मजाक उड़ा सकते हैं, लेकिन यह हंसने की बात नहीं है।'

'आप बिलकुल सही कह रही हैं, माँ,' मान ने कहा। 'यह हँसी की बात बिल्कुल नहीं है। आपने उन्हें—मेरा मतलब लता को—अभिनय करने की अनुमति दी ही क्यों?'

श्रीमती रूपा मेहरा ने गहरी चुप्पी साधे रखी, और मान को अंततः एहसास हुआ कि यह एक संवेदनशील विषय है।

'खैर,' उसने प्राण से कहा, 'मैं तुम्हारे लिए नवाब साहब का स्नेह, फ़िरोज़ का प्यार और ज़ैनब की चिंता – फ़िरोज़ के ज़रिए – लाया हूँ। हाँ, और बस इतना ही नहीं। इम्तियाज़ जानना चाहता है कि क्या तुम अपनी छोटी सफ़ेद गोलियाँ ले रही हो। वह कल सुबह तुमसे मिलने और उन्हें गिनने की योजना बना रहा है। और किसी और ने कुछ और कहा था, लेकिन मुझे याद नहीं आ रहा कि क्या था। प्राण, क्या तुम सच में ठीक हो? तुम्हें अस्पताल में इस हालत में देखना बहुत दुखद है। बच्चे का जन्म कब होने वाला है? शायद, अगर सविता हर समय तुमसे चिपकी रहे, तो बच्चा इसी अस्पताल में पैदा हो जाए। शायद इसी कमरे में। कैसा रहेगा? स्वादिष्ट जामुन!' और मान ने दो और जामुन अपने मुँह में डाल लिए।

'आप बिल्कुल ठीक लग रहे हैं,' सविता ने कहा।

'लेकिन मैं ऐसा नहीं हूँ,' मान ने कहा। 'मैं जीवन की तलवारों का शिकार होता हूँ, मेरा खून बहता है।'

प्राण ने मुंह बनाते हुए कहा, 'कांटे।'

'कांटे?'

'कांटे।'

‘अच्छा, तो फिर मुझे यही करना पड़ेगा,’ मान ने कहा। ‘खैर, मैं बहुत दुखी हूँ।’

'वैसे आपके फेफड़े अच्छी स्थिति में हैं,' सविता ने कहा।

‘हाँ, लेकिन मेरा दिल नहीं। न ही मेरा जिगर,’ मान ने उर्दू कविता की परंपराओं के अनुसार दोनों भावों को शामिल करते हुए दुख भरे स्वर में कहा। ‘मेरे दिल की शिकारी—’

‘अब हमें सचमुच जाना चाहिए,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने अपनी बेटियों को चूजों की तरह अपने पास समेटते हुए कहा। मालती ने भी विदा ली।

जब मान और उसका भाई अकेले रह गए, तो मान ने पूछा, 'क्या मैंने कुछ गलत कह दिया?'

‘अरे, चिंता मत करो,’ प्राण ने कहा। आज दोपहर फिर से काफी तेज बारिश हुई थी, और वह काफी दार्शनिक हो गया था। ‘बस बैठ जाओ और शांत रहो। मुझसे मिलने आने के लिए धन्यवाद।’

‘मैंने पूछा, प्राण, क्या वह अब भी मुझसे प्यार करती है?’

प्राण ने अपने कंधे उचका दिए।

‘उसने मुझे कुछ दिन पहले घर से निकाल दिया। क्या आपको लगता है कि यह एक अच्छा संकेत है?’

‘प्रथम तौर पर तो ऐसा नहीं लगता।’

‘मुझे लगता है तुम सही कह रहे हो,’ मान ने कहा। ‘लेकिन मैं उससे बेहद प्यार करता हूँ। मैं उसके बिना नहीं रह सकता।’

प्राण ने कहा, 'ऑक्सीजन की तरह।'

‘ऑक्सीजन? हाँ, मुझे लगता है ऐसा ही होगा,’ मान ने उदास स्वर में कहा। ‘खैर, मैं आज उसे एक पत्र भेजूंगा। मैं उसे जान से मारने की धमकी दूंगा।’

‘क्या सब खत्म करना है?’ प्राण ने बिना ज्यादा घबराए पूछा। ‘तुम्हारा

जीवन?’
'हां, शायद,' मान ने संशय भरे स्वर में कहा। 'क्या तुम्हें लगता है कि इससे वह वापस आ जाएगी?'
'तो क्या आप अपनी धमकी को कार्रवाई में बदलने की योजना बना रहे हैं? क्या आप जीवन की तलवारों के सामने गिर पड़ेंगे या जीवन की बंदूकों से खुद को गोली मार लेंगे?'
मान ने बात शुरू की। व्यावहारिकता की यह प्रवृत्ति खराब थी। 'नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता,' उसने कहा।
प्राण ने कहा, 'मुझे भी ऐसा नहीं लगता। खैर, रहने दो। मुझे तुम्हारी बहुत याद आएगी। इस कमरे में मौजूद सभी लोगों को भी तुम्हारी याद आएगी। जिन लोगों के संदेश तुमने मुझे भेजे हैं, उन सभी को भी तुम्हारी याद आएगी। बाओजी, अम्माजी, वीणा और भास्कर को भी तुम्हारी याद आएगी। तुम्हारे लेनदारों को भी तुम्हारी याद आएगी।'
‘तुम सही कह रहे हो!’ मान ने दृढ़ता से कहा। उसने आखिरी दो जामुन चट कर लिए। ‘बिल्कुल सही। प्राण, तुम तो शक्ति के स्तंभ हो, जानते हो ना? लेटे हुए भी। अब मुझे लगता है कि मैं हर किसी और हर चीज का सामना कर सकता हूँ। मुझे शेर जैसा महसूस हो रहा है।’ उसने प्रयोग करते हुए दहाड़ा।
दरवाजा खुला और श्रीमान और श्रीमती महेश कपूर, वीना, केदारनाथ और भास्कर अंदर आए।
शेर शांत हो गया और थोड़ा शर्मिंदा सा लग रहा था। वह दो दिन से घर नहीं आया था, और हालांकि उसकी माँ की आँखों में कोई नाराज़गी नहीं थी, फिर भी उसे बुरा लग रहा था। प्राण से कुछ बातें करते हुए, उसने बगीचे से लाई हुई बेला की सुगंधित गुच्छी को अपने साथ लाए हुए फूलदान में सजाया। और उसने मान से नवाब साहब के परिवार के बारे में

पूछा।
मान ने सिर झुका लिया। “अम्माजी, सब ठीक हैं,” उसने कहा। “और मेंढक कैसा है? क्या वह ठीक होकर ऐसे उछल-कूद कर रहा है?” उसने भास्कर को गले लगाया, फिर केदारनाथ से कुछ बातें कीं। वीना प्राण के पास गई, उसके माथे पर हाथ रखा और उससे यह नहीं पूछा कि वह कैसा है, बल्कि यह पूछा कि सविता उसकी बीमारी को कैसे झेल रही है।
प्राण ने अपना सिर हिलाया। उसने कहा, 'इससे बुरा समय और कोई नहीं हो सकता था।'
वीना ने कहा, 'तुम्हें अपना ख्याल रखना चाहिए।'
‘जी हां,’ प्राण ने कहा। ‘जी हां, बिल्कुल।’ थोड़ी देर रुककर उसने आगे कहा, ‘वह कानून की पढ़ाई करना चाहती है—अगर वह विधवा हो जाए और बच्चा अनाथ हो जाए—मेरा मतलब है, पिताहीन हो जाए।’
‘प्राण, ऐसी बातें मत कहो,’ उसकी बहन ने तीखे स्वर में कहा।
'कानून?' श्री महेश कपूर ने भी उतनी ही तीक्ष्णता से पूछा।
‘ओह, मैं तो इन्हें सिर्फ इसलिए कहता हूँ क्योंकि मुझे इन पर विश्वास नहीं है,’ प्राण ने कहा। ‘मैं एक मंत्र से सुरक्षित हूँ।’
श्रीमती महेश कपूर ने उनकी ओर मुड़कर कहा, ‘प्राण—रामजप बाबा ने एक और बात भी कही थी; उन्होंने कहा था कि किसी की मृत्यु से तुम्हारी नौकरी मिलने की संभावना पर असर पड़ेगा। भाग्य का मजाक मत उड़ाओ। यह कभी अच्छा नहीं होता। अगर मेरे किसी वयस्क बच्चे की मुझसे पहले मृत्यु हो जाए, तो मैं खुद मरना चाहूंगी।’
‘यह सब मरने की बातें क्यों?’ उसके पति ने इस अनावश्यक भावुकता से चिढ़ते हुए कहा। ‘यह कमरा मच्छरों से भरा है। अभी-अभी एक मच्छर ने मुझे काट लिया। सविता से कहो कि वह एक माँ के रूप में अपने कर्तव्यों पर ध्यान दे। इस सब कानून से उसे कोई फायदा नहीं होगा।’

श्रीमती महेश कपूर ने आश्चर्यजनक रूप से आपत्ति जताई।
'उह! तुम्हें इन सब बातों की कितनी समझ है?' उसके पति ने कहा। महिलाओं को अधिकार मिलने चाहिए। मैं उन्हें संपत्ति का अधिकार देने के पक्ष में हूँ। लेकिन अगर वे काम करने पर अड़ी रहीं, तो वे अपने बच्चों के साथ समय नहीं बिता पाएंगी और उनकी परवरिश ठीक से नहीं हो पाएगी। अगर तुम काम कर रही होतीं, तो क्या तुम्हारे पास प्राण की देखभाल करने का समय होता? क्या वह आज ज़िंदा होता?'
श्रीमती महेश कपूर ने इस विषय पर और कुछ नहीं कहा। उन्होंने प्राण के बचपन को याद किया और सोचा कि उनके पति ने जो कहा था वह शायद सच ही था।
प्राण ने पूछा, 'अम्माजी, बगीचा कैसा है?' कमरे में बेला के फूलों की खुशबू फैली हुई थी।
मान की खिड़की के नीचे खिले ज़िनिया के फूल खिल गए हैं,' उसकी माँ ने कहा। 'और माली नई घास लगा रहे हैं। तुम्हारे पिता के इस्तीफ़ा देने के बाद मुझे थोड़ा समय मिल गया है, हालाँकि अब हमें मालियों को खुद ही पैसे देने पड़ते हैं। और मैंने कुछ नए गुलाब के पौधे भी लगाए हैं। ज़मीन नरम है। और तालाब के बगुले भी आने लगे हैं।'
मान, जो अब तक काफी संयमित और शेर जैसा व्यवहार नहीं कर रहा था, ग़ालिब की पंक्तियाँ उद्धृत करने से खुद को रोक नहीं सका:
'विश्वास के बाग की हवा मेरे हृदय से विलीन हो गई है।
और मेरे पास अधूरी इच्छाओं के सिवा कुछ नहीं बचा है।
वह असामान्य रूप से उदास हो गया।
वीना मुस्कुराई; प्राण हँसा; भास्कर के चेहरे पर कोई भाव नहीं बदला, क्योंकि उसका ध्यान कहीं और था।
लेकिन केदारनाथ सामान्य से अधिक परेशान दिख रहे थे; श्रीमती महेश

कपूर ने अपने छोटे बेटे के चेहरे को नई चिंता के साथ देखा; और पूर्व राजस्व मंत्री ने उन्हें चिड़चिड़ाते हुए चुप रहने को कहा।

13.5

श्रीमती महेश कपूर अपने बगीचे में धीरे-धीरे टहल रही थीं। सुबह का समय था, आसमान में बादल छाए हुए थे और मौसम अपेक्षाकृत ठंडा था। बाहर फुटपाथ पर जड़ा हुआ एक लंबा जामुन का पेड़, अपनी शाखाओं को बगीचे के एक कोने तक फैलाए हुए था। जामुन के बैंगनी फलों ने पत्थर के रास्ते को गहरे रंग से रंग दिया था; गुठलियाँ उनके लॉन के एक कोने में बिखरी पड़ी थीं।

मान की तरह श्रीमती महेश कपूर को भी जामुन बहुत पसंद थे और उन्हें लगता था कि आम के मौसम के जाने की भरपाई जामुनों से कहीं ज़्यादा अच्छी तरह हो गई है। लोक निर्माण विभाग के बागवानी विभाग द्वारा ठेके पर रखे गए जामुन तोड़ने वाले सुबह-सुबह गली में घूमते, हर पेड़ पर चढ़ते और अपनी लंबी लाठियों से गहरे रंग के, जैतून के आकार के, मीठे-खट्टे जामुन तोड़ते। नीचे खड़ी उनकी पत्नियाँ उन्हें बड़ी-बड़ी चादरों पर लादकर चौक के पास के व्यस्त बाज़ार में बेचने के लिए ले जातीं। हर साल श्रीमती महेश कपूर के हिस्से में आने वाले जामुनों पर अधिकार को लेकर विवाद होता था और हर साल यह शांतिपूर्वक सुलझ जाता था। जामुन तोड़ने वालों को उनके बगीचे में तभी प्रवेश करने दिया जाता था जब वे उन्हें फलों का हिस्सा देते और यह वचन देते कि वे उनके लॉन और फूलों की क्यारियों को रौंदेंगे नहीं।

जामुन तोड़ने वालों ने सावधानी बरतने की पूरी कोशिश की, लेकिन लॉन और फूलों की क्यारियों को नुकसान तो हुआ ही। खैर, श्रीमती महेश कपूर ने सोचा, कम से कम मानसून तो है, और इस मौसम में बगीचे की सुंदरता फूलों में नहीं, बल्कि हरियाली में होती है। अब तक उन्हें समझ

आ गया था कि जामुन के पेड़ों के पास वाली क्यारियों में कुछ चमकीले मानसूनी फूल—ज़िनिया, बलसम, नारंगी कॉसमॉस—नहीं लगाने चाहिए। और उन्हें जामुन तोड़ने वाले अच्छे लगते थे, जो हंसमुख थे, और जिनके बिना शायद उन्हें उन शाखाओं का भी लाभ नहीं मिलता जो उनके लॉन पर फैली हुई थीं।

अब वह प्रेम निवास के बगीचे में धीरे-धीरे टहल रही थी, कई बातों के बारे में सोच रही थी, लेकिन मुख्य रूप से प्राण के बारे में। उसने एक पुरानी साड़ी पहनी हुई थी: एक छोटी, साधारण सी दिखने वाली महिला, जो किसी अजनबी को नौकरानियों में से एक लग सकती थी। उसके पति बहुत सलीके से कपड़े पहनते थे—अगर कांग्रेस विधायक होने के नाते उन्हें सूती कपड़े पहनने पड़ते थे, तो भी वे बेहतरीन गुणवत्ता के ही होते थे—और वे अक्सर उसे उसके सादे पहनावे के लिए डांटते थे। लेकिन चूंकि यह कई डांटों में से एक थी, चाहे वह सही हो या गलत, उसे लगता था कि उस पर अमल करने की न तो उसमें हिम्मत है और न ही रुचि। यह उसकी अंग्रेज़ी भाषा के ज्ञान की कमी की तरह था। वह इसके बारे में क्या कर सकती थी? कुछ नहीं, उसने बहुत पहले ही तय कर लिया था। अगर वह मूर्ख थी, तो मूर्ख थी; यह ईश्वर की मर्जी थी।

दिसंबर में आयोजित होने वाली गुलाब और गुलदाउदी प्रदर्शनी और फरवरी में आयोजित होने वाली वार्षिक पुष्प प्रदर्शनी में हर साल उनका सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार जीतना ब्रह्मपुर के संभ्रांत निवासियों को हमेशा आश्चर्यचकित करता था। रेस क्लब की समिति इस बात से चकित थी कि उनके गुलाबों में एक ऐसी सघनता और ताजगी थी जो उनके गुलाबों में कभी नहीं पाई जा सकती थी; और बर्मा शेल या प्राहा शू कंपनी के अधिकारियों की पत्नियों ने तो अपनी अंग्रेज़ीकृत हिंदी में उनसे एक-दो बार यह भी पूछ लिया कि वह अपने लॉन में ऐसा क्या डालती हैं जिससे

वह इतना समतल, हरा-भरा और सुडौल रहता है। श्रीमती महेश कपूर के लिए, भले ही वह उनकी हिंदी को पूरी तरह समझ जातीं, उत्तर देना मुश्किल होता। वह बस कृतज्ञतापूर्वक हाथ जोड़कर खड़ी रहीं, उनकी प्रशंसा स्वीकार करती रहीं और कुछ मूर्ख सी दिखती रहीं, जब तक कि उन्होंने हार नहीं मान ली। सिर हिलाकर उन्होंने फैसला किया कि वह वास्तव में मूर्ख थीं, लेकिन उनमें—या शायद उनके मुख्य माली में—कोई न कोई प्रतिभा थी। एक-दो बार उन्होंने उसे उसकी वर्तमान तनख्वाह से दुगुनी तनख्वाह देकर उसे छोड़ने के लिए रिश्वत देने की कोशिश भी की थी; लेकिन मूल रूप से रुधिया के निवासी मुखिया प्रेम निवास में रहकर अपने लगाए पेड़ों को लंबा होते और छँटे हुए गुलाबों को खिलते देखकर संतुष्ट थे। बगल के लॉन को लेकर उनका माली से मतभेद सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझ गया था। लॉन थोड़ा ऊबड़-खाबड़ छोड़ दिया गया था, और वह उनके पसंदीदा पक्षी के लिए एक तरह का अभयारण्य बन गया था।

दोनों सहायक माली सरकारी कर्मचारी थे और राजस्व मंत्री महेश कपूर की देखरेख में काम करते थे। उन्हें प्रेम निवास का बगीचा बहुत प्रिय था और इससे अलग होने से वे दुखी थे। उन्होंने उदास होकर पूछा, 'मंत्री साहब ने इस्तीफा क्यों दिया?'

'आपको मंत्री साहब से पूछना होगा,' श्रीमती महेश कपूर ने कहा, जो स्वयं उनके इस फैसले से खुश नहीं थीं और इसे नासमझी भरा कदम मानती थीं। आख़िरकार, नेहरू अपनी पार्टी की आलोचना और शिकायत करने के बावजूद कांग्रेस में ही थे। उनके समर्थकों द्वारा कोई भी जल्दबाज़ी वाला कदम—जैसे कि इस्तीफ़ा देना—समय से पहले ही उठाया गया कदम था। सवाल यह था कि क्या इससे प्रधानमंत्री पर दबाव पड़ेगा और वे भी पार्टी छोड़ देंगे, जिससे एक नई और शायद ज़्यादा सशक्त पार्टी का जन्म होगा? या इससे उनकी अपनी पार्टी में उनकी

स्थिति कमज़ोर हो जाएगी और हालात पहले से भी बदतर हो जाएंगे?
‘वे हमें कोई दूसरा घर दे देंगे,’ बागवानों ने आँखों में आँसू लिए कहा। ‘कोई दूसरा मंत्री और कोई दूसरी मेमसाहिब। कोई भी हमारे साथ उतना अच्छा व्यवहार नहीं करेगा जितना आपने किया है।’
'मुझे पूरा यकीन है कि वे मान जाएंगे,' श्रीमती महेश कपूर ने कहा। वह एक सौम्य हृदय और मृदुभाषी महिला थीं और अपने कर्मचारियों पर कभी ऊंची आवाज में बात नहीं करती थीं। इसी वजह से, और क्योंकि वह अक्सर उनके परिवारों के बारे में पूछती थीं और छोटी-छोटी बातों में उनकी मदद करती थीं, कर्मचारी उन्हें बहुत पसंद करते थे।
एक ने पूछा, 'मेमसाहिब, हमारे बिना आप क्या करेंगी?'
‘क्या तुम प्रेम निवास में मेरे लिए अंशकालिक काम कर सकते हो?’ उसने पूछा। ‘इस तरह तुम अपना वो बगीचा नहीं खोओगे जिस पर तुमने इतनी मेहनत की है।’
‘हां—हर सुबह एक या दो घंटे के लिए। बस एक ही बात है—’
श्रीमती महेश कपूर ने उनकी असहजता का अनुमान लगाते हुए और अपने घरेलू खर्चों का हिसाब लगाते हुए कहा, 'बेशक, आपको आपके काम के लिए भुगतान मिलेगा। लेकिन मुझे किसी और को पूर्णकालिक रूप से काम पर रखना होगा। क्या आप किसी को जानते हैं?'
एक ने कहा, 'मेरा भाई एक अच्छा आदमी बनेगा।'
श्रीमती महेश कपूर ने आश्चर्य से कहा, 'मुझे नहीं पता था कि आपका एक भाई भी है।'
‘वह मेरा सगा भाई नहीं है—मेरे चाचा का बेटा है।’
‘ठीक है। मैं उसे एक महीने के लिए प्रोबेशन पर काम करने दूंगा, और गजराज मुझे बताएगा कि वह कितना अच्छा है।’
'धन्यवाद, मेमसाहिब। इस वर्ष हम सुनिश्चित करेंगे कि आपको सर्वश्रेष्ठ

उद्यान के लिए प्रथम पुरस्कार मिले।'

यह एक ऐसा पुरस्कार था जो श्रीमती महेश कपूर को अब तक नहीं मिला था, और उन्होंने सोचा कि इसे जीतना कितना सुखद होगा। लेकिन अपनी क्षमताओं पर संदेह करते हुए, उन्होंने उनकी महत्वाकांक्षा पर मुस्कुरा दिया।

उन्होंने कहा, 'यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।'

'और साहब के मंत्री न होने की चिंता मत कीजिए। हम आपको सरकारी नर्सरी से सस्ते दामों पर पौधे दिलवा देंगे। और दूसरी जगहों से भी।' अच्छे माली इधर-उधर से पौधे चुराने में माहिर होते थे, या अपने साथी मालीयों को मनाकर उनके फालतू पौधों में से कुछ ले लेते थे।

'अच्छा,' श्रीमती महेश कपूर ने कहा। 'गजराज को यहाँ बुलाओ। अब मेरे पास थोड़ा समय है, तो मैं व्यवस्था पर चर्चा करना चाहती हूँ। अगर साहब फिर से मंत्री बन गए, तो मैं चाय के प्याले मंगवाने के अलावा कुछ नहीं करूँगी।'

माली लोग इस छोटी सी बेअदबी से काफी खुश हुए। मुखिया माली को बुलाया गया और श्रीमती महेश कपूर ने उनसे कुछ देर बात की। सामने के नए लॉन में सावधानीपूर्वक कतारों में पौधे लगाए जा रहे थे, एक-एक करके, और लॉन का एक कोना पहले से ही हल्के हरे रंग का हो गया था। बाकी सब कीचड़ था, सिवाय उस पत्थर के रास्ते के जिस पर वे चल रहे थे।

श्रीमती महेश कपूर ने उन्हें बताया कि पुष्प प्रदर्शनी के बारे में दूसरों ने क्या कहा था। उनका मानना था कि सर्वश्रेष्ठ उद्यान के लिए प्रथम पुरस्कार के बजाय द्वितीय पुरस्कार जीतने के दो कारण थे। पहला, न्यायमूर्ति बेली (जिन्होंने लगातार तीन वर्षों तक पुरस्कार जीता था) को उनकी पत्नी ने अपनी आधी आय उद्यान पर खर्च करने के लिए मजबूर

कर दिया था। उन्होंने एक दर्जन माली रखे थे। दूसरा, उनके उद्यान में हर झाड़ी, पौधा या फूल फरवरी के मध्य में पुष्प प्रदर्शनी की तारीख को ध्यान में रखकर लगाया गया था। उस समय सब कुछ सबसे सुंदर होता है। अगर श्रीमती महेश कपूर चाहें तो गजराज भी कुछ ऐसा ही कर सकता है। लेकिन उनके चेहरे के भाव से स्पष्ट था कि उन्हें पूरा यकीन था कि श्रीमती महेश कपूर ऐसा नहीं चाहेंगी। और इस वर्ष बगल के लॉन की असमानता भी इसमें सहायक नहीं होगी।

'नहीं, नहीं—वो तो बिल्कुल भी बगीचा नहीं रहेगा,' श्रीमती महेश कपूर ने कहा। 'हम सर्दियों का बगीचा वैसे ही लगाते हैं जैसे हमेशा लगाते हैं—अलग-अलग समय पर अलग-अलग फूल खिलें, ताकि बाहर बैठना हमेशा सुखद रहे। और जहाँ वह नीम का पेड़ खड़ा था, वहाँ हमें सीता अशोक का पेड़ लगाना चाहिए। अभी सही समय है।' श्रीमती महेश कपूर ने दो साल पहले बड़े दुख के साथ एक पुराने नीम के पेड़ को कटवाने की सहमति दी थी क्योंकि उन्हें उसके फूलों से असहनीय एलर्जी थी; उस जगह का खालीपन उन्हें लगातार कचोटता रहता था। लेकिन मान की खिड़की के बाहर वाला पेड़, जिस पर वह बचपन में चढ़ा करता था, उसे काटने की उनकी हिम्मत नहीं हुई थी।

गजराज ने हाथ जोड़ लिए। वह दुबला-पतला, छोटा कद, दुबला-पतला, नंगे पैर और सादी सफेद धोती-कुर्ता पहने हुए था। वह गंभीर दिख रहा था, माली से ज़्यादा किसी बाग के पुजारी जैसा। 'जो आप कहें, मेमसाहिब,' उसने कहा। थोड़ी देर बाद उसने पूछा, 'इस साल कमल के फूलों के बारे में आपका क्या ख्याल है?' उसे लगा कि उन पर कुछ टिप्पणी करना ज़रूरी है, और अब तक श्रीमती महेश कपूर ने उनके बारे में कुछ नहीं कहा था। शायद हाल ही में उनका ध्यान किसी और बात पर था।

‘चलिए, हम वहां जाकर उन्हें फिर से देख लेते हैं,’ उसने कहा।
गजराज, मन ही मन प्रसन्न होकर, श्रीमती महेश कपूर के साथ कीचड़ भरे मैदान पर धीरे-धीरे चल रहा था। श्रीमती महेश कपूर एक पल के लिए पोमेलो के पेड़ के पास रुकीं। वे कमल के तालाब के पास ठहर गईं। पानी मटमैला था और उसमें मेंढक के बच्चे भरे हुए थे। श्रीमती महेश कपूर ने एक मिनट तक गोल कमल की पत्तियों और आधे खिले हुए कमलों को निहारा: गुलाबी, लाल, नीले और सफेद रंग के। तीन-चार मधुमक्खियाँ उनके आसपास भिनभिना रही थीं।
‘इस साल पीले वाले नहीं हैं?’ उसने पूछा।
‘नहीं, मेमसाहिब,’ गजराज ने कुछ निराश होकर कहा।
'ये बहुत खूबसूरत हैं,' श्रीमती महेश कपूर ने लिली के फूलों को देखते हुए कहा।
गजराज का दिल खुशी से उछल पड़ा। उसने कहा, 'इस साल वे पहले से भी बेहतर हैं।'
'पीले वाले तो निकले ही नहीं, पता नहीं क्यों।'
श्रीमती महेश कपूर ने कहा, 'कोई बात नहीं। मेरे बच्चों को चमकीले फूल पसंद हैं—लाल और नीले। मुझे लगता है कि सिर्फ़ हम दोनों को ही हल्के पीले रंग के लिली पसंद हैं। लेकिन अगर वे मुरझा गए हैं, तो क्या हम उन्हें अगले साल कहीं और से ला सकते हैं?'
‘मेमसाहिब, मुझे नहीं लगता कि ये आपको ब्रह्मपुर में मिलेंगे। इन्हें दो साल पहले आपके कलकत्ता वाले दोस्त ने मंगवाया था।’
दरअसल गजराज वीना की एक सहेली का जिक्र कर रहे थे, जो शांतिनिकेतन की रहने वाली एक युवती थी और प्रेम निवास में दो-तीन बार मेहमान बनकर रह चुकी थी। उसे बगीचा बहुत पसंद आया था और श्रीमती महेश कपूर को उसकी संगत अच्छी लगती थी, भले ही उसका

व्यवहार थोड़ा अटपटा था। अपनी दूसरी यात्रा में वह पीले लिली के फूल पानी से भरी बाल्टी में अपने साथ ट्रेन में लेकर आई थी।
'अफसोस की बात है,' श्रीमती महेश कपूर ने कहा। 'खैर, नीले वाले तो बहुत ही आकर्षक हैं।'
13.6
लॉन की कीचड़ भरी सतह पर कुछ पक्षी—बैबलर, रेड-वॉटल्ड लैपविंग और मैना—घूम रहे थे और जो भी उन्हें दिखाई देता, उसे चोंच मार रहे थे। यह केंचुओं का मौसम था और लॉन उनके घुमावदार खोलों से भरा हुआ था।
आकाश में अंधेरा छा गया था और दूर से गरजने की आवाज सुनाई दे रही थी।
श्रीमती महेश कपूर ने पूछा, 'क्या आपने इस साल कोई सांप देखा है?'
‘नहीं,’ गजराज ने कहा। ‘लेकिन भास्कर ने कहा कि उसने एक कोबरा देखा था। उसने मुझे पुकारा, लेकिन जब तक मैं आया, वह गायब हो चुका था।’
‘क्या?’ श्रीमती महेश कपूर का दिल एक मिनट के लिए और तेज़ी से धड़कने लगा। ‘कब?’
‘बस कल दोपहर ही।’
‘उसने यह कहाँ देखा?’
‘वह वहाँ ईंटों और मलबे के ढेर पर खेल रहा था—उस पर खड़ा होकर पतंग उड़ा रहा था—मैंने उसे सावधान रहने को कहा, क्योंकि वहाँ साँप होने की संभावना थी, लेकिन—’
‘उसे कहो कि वह तुरंत बाहर आ जाए। और वीना बेबी को भी बुलाओ।’
वीना, हालांकि अब एक माँ बन चुकी थी, फिर भी प्रेम निवास के बड़े नौकर उसे बेबी कहकर बुलाते थे।

'नहीं,' श्रीमती महेश कपूर ने आगे कहा। 'फिर से सोचने पर, मैं चाय पीने के लिए बरामदे में वापस चली जाती हूँ। ऐसा लग रहा है कि बारिश होने वाली है।'

बाहर आने पर उसने अपनी बेटी से कहा, 'वीना, यह लड़का बिलकुल तुम्हारी तरह जिद्दी है। कल वह मलबे के ढेर पर खेल रहा था, और वह ढेर साँपों से भरा हुआ है।'

'जी हां!' भास्कर ने उत्साह से कहा। 'मैंने कल एक कोबरा देखा था।'

'भास्कर!' वीना ने कहा, उसका खून जम गया था।

'इससे मुझे कोई खतरा नहीं था। यह बहुत दूर था। और जब तक मैंने गजराज को बुलाया, तब तक वह वहां से जा चुका था।'

'तुमने मुझे क्यों नहीं बताया?' उसकी माँ ने पूछा।

मैं भूल गया था।

वीना ने कहा, 'ये ऐसी बात नहीं है जिसे कोई भूल जाए। क्या आप आज फिर वहां बजाने का इरादा रखते थे?'

'खैर, जब कबीर आएगा तो हम पतंग उड़ाने की सोच रहे थे—'

'तुम्हें वहाँ नहीं खेलना है, समझे? न वहाँ और न ही पीछे वाले बगीचे के किसी भी हिस्से में। समझे? वरना मैं तुम्हें बगीचे में बिल्कुल भी नहीं जाने दूँगा।'

लेकिन, मम्मी—

'नहीं, "लेकिन मम्मी" या "प्लीज मम्मी"—तुम्हें वहाँ नहीं खेलना है। अब अंदर जाओ और अपना दूध पियो।'

भास्कर ने कहा, "मैं दूध से तंग आ गया हूँ। मैं नौ साल का हूँ—लगभग दस साल का। मुझे हमेशा दूध क्यों पीना चाहिए?" दादी के सामने डांट पड़ने से वह खुश नहीं था। उसे यह भी लग रहा था कि गजराज, जिसे वह दोस्त मानता था, ने उसे धोखा दिया है।

वीना ने कहा, 'दूध सेहत के लिए अच्छा होता है। कई लड़कों को तो बिल्कुल भी दूध नहीं मिलता।'

भास्कर ने कहा, 'वे भाग्यशाली हैं।' 'मुझे ठंडा होने पर इस पर जमने वाली परत से नफरत है। और यहाँ के गिलास घर के गिलासों से एक-छठे हिस्से बड़े हैं,' उन्होंने कृतज्ञताहीन भाव से कहा।

“अगर तुम जल्दी से दूध पी लोगे, तो उसमें कुछ भी नहीं जमेगा,” उसकी माँ ने बेरुखी से कहा। भास्कर का इतना उदास होना उसके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत था, और माँ ने ठान लिया था कि वह उसे और उदास नहीं होने देगी। “अब, अगर तुमने फिर से मेरी बात नहीं मानी और छह साल के बच्चे जैसा व्यवहार किया, तो मैं तुम्हें थप्पड़ मार दूँगी—और नानी भी मुझे नहीं रोक पाएंगी।”

बिजली कड़की और बारिश की कुछ बूँदें गिरने लगीं।

भास्कर कुछ गरिमा के साथ घर के अंदर चला गया। उसकी माँ और दादी ने एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराया।

उनमें से किसी को भी यह बताने की जरूरत नहीं थी कि वीना भी बचपन में अपना दूध पीने को लेकर बहुत नखरे करती थी और अक्सर उसे अपने छोटे भाइयों को फेंकने के लिए दे देती थी।

कुछ देर बाद श्रीमती महेश कपूर ने कहा:

डॉक्टरों की तमाम बातों के बावजूद, कल रात वह काफी खुशमिजाज लग रहा था। क्या आपको भी ऐसा नहीं लगा?

‘जी अम्माजी, मैंने कर दिया।’ सन्नाटा छा गया। ‘उनके लिए यह मुश्किल समय है,’ वीना ने आगे कहा। ‘क्यों न आप सविता, लता और मां से कहें कि वे बच्चे के जन्म तक प्रेम निवास में ही रुकें? वैसे भी हम एक-दो दिन में निकलने वाले हैं।’

उसकी मां ने सिर हिलाया। 'मैंने पहले भी एक बार पूछा था, लेकिन प्राण

को लगा कि उसे यह पसंद नहीं आएगा, उसे परिचित परिवेश में ज्यादा खुशी महसूस होगी।'

श्रीमती महेश कपूर ने यह भी बताया कि जब श्रीमती रूपा मेहरा प्रेम निवास आती थीं, तो अक्सर कहती थीं कि उन्हें कमरे बेहद खाली-खाली लगते हैं। और यह बात सच थी। महेश कपूर, हालांकि घर के कामकाज में कोई मदद नहीं करते थे, फिर भी प्रस्तावित साज-सज्जा पर अक्सर अपना प्रतिबंध लगा देते थे। केवल पूजा-गृह और रसोईघर ही ऐसे थे जहाँ उनकी पत्नी बगीचे की तरह स्नेह और देखभाल कर पाती थीं।

'और मान?' वीना ने कहा। 'उसके बिना यह घर अजीब सा लगता है। जब वह ब्रह्मपुर में होता है तो बहुत बुरा लगता है कि वह अपने परिवार के साथ नहीं रहता। वैसे भी हमें मुश्किल से मिलने का मौका मिलता है।'

'नहीं,' उसकी माँ ने कहा। 'मुझे पहले तो बुरा लगा, लेकिन मुझे लगता है कि वह सही है, उसके लिए अपने दोस्त के साथ रहना ही सबसे अच्छा है। मंत्री साहब कठिन दौर से गुजर रहे हैं, और मुझे लगता है कि उन दोनों को एक-दूसरे का साथ सहना मुश्किल लगेगा।'

यह एक हल्की भविष्यवाणी थी। महेश कपूर इन दिनों सबसे रूखे व्यवहार से पेश आ रहे थे। बात सिर्फ इतनी ही नहीं थी कि घर में अचानक चापलूसों और तरह-तरह के महत्वाकांक्षी लोगों की भीड़ कम हो गई थी, जिनकी संगति से वे पहले नफरत करने का दावा करते थे, लेकिन वास्तव में अब उन्हें चिंता होती थी; बल्कि भविष्य की अनिश्चितता भी उन्हें परेशान कर रही थी और इसी वजह से वे अपने आसपास मौजूद किसी भी व्यक्ति पर बिना सोचे-समझे भड़क उठते थे।

'लेकिन उनके मिजाज को छोड़ दें तो मुझे इस राहत का आनंद मिलता है,' श्रीमती महेश कपूर ने अपने विचारों को पूरा करते हुए कहा। 'शाम को भजनों के लिए समय मिल जाता है। और अब मैं सुबह बगीचे में टहल

सकती हूँ, बिना यह सोचे कि मैं किसी महत्वपूर्ण राजनीतिक अतिथि की अनदेखी कर रही हूँ।'

अब तक बादल सूरज को पूरी तरह ढक चुके थे। बगीचे में तेज़ हवा चल रही थी और पास के चिनार के पेड़ की पत्तियों के नीचे का चांदी जैसा रंग इतनी तेज़ी से बदल रहा था कि वह गहरा हरा नहीं बल्कि चांदी जैसा दिख रहा था। लेकिन जिस बरामदे में वे बैठे थे, वह पोर्टुलाका के छोटे-छोटे गमलों से सजी एक नीची दीवार से घिरा हुआ था और उस पर नालीदार छत थी, इसलिए उनमें से किसी का भी अंदर जाने का मन नहीं कर रहा था।

वीना गुनगुनाते हुए एक भजन की पहली कुछ पंक्तियाँ गुनगुना रही थी, जो उसकी माँ का पसंदीदा भजन था: 'उठो, मुसाफिर, आकाश उज्ज्वल है'। यह भजन गांधी जी के आश्रम में इस्तेमाल होने वाले भजन संग्रह से लिया गया था और श्रीमती महेश कपूर को याद दिलाता था कि कैसे वे स्वतंत्रता संग्राम के सबसे निराशा भरे दिनों में खुद को साहस देती थीं।

कुछ सेकंड बाद, वह भी गुनगुनाने लगी, और फिर शब्दों को गाने लगी:

‘Uth, jaag, musafir, bhor bhaee

Ab rayn kahan jo sowat hai. . . .’

उठो, यात्री, आकाश उज्ज्वल है।

तुम क्यों सो रहे हो? अभी रात नहीं हुई है।

फिर वह हंस पड़ी। 'उन दिनों की कांग्रेस पार्टी के बारे में सोचो। और अब उसे देखो।'

वीना मुस्कुराई। उसने कहा, 'लेकिन तुम फिर भी जल्दी उठते हो। तुम्हें इस भजन की ज़रूरत नहीं है।'

“हां,” उसकी मां ने कहा। “पुरानी आदतें आसानी से नहीं छूटतीं। और आजकल मुझे कम नींद की जरूरत पड़ती है। लेकिन फिर भी मुझे दिन में

कई बार उस भजन की मदद चाहिए होती है।”
उसने कुछ देर तक चाय की चुस्की ली। फिर उसने पूछा, 'तुम्हारा संगीत कैसा है?'
‘मेरा गंभीर संगीत?’ वीना ने पूछा।
‘जी हां,’ उसकी मां ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘तुम्हारा गंभीर संगीत। भजन नहीं, बल्कि वो जो तुम अपने उस्ताद से सीखती हो।’
वीना ने कहा, ‘मेरा मन इस पर नहीं लग रहा है।’ कुछ देर रुककर उसने आगे कहा, ‘केदारनाथ की माँ ने अब इस पर आपत्ति करना बंद कर दिया है। और यह प्रेम निवास से मिसरी मंडी की तुलना में ज़्यादा नज़दीक है। लेकिन इन दिनों मेरा ध्यान नहीं लग रहा है। मैं दुनिया से खुद को अलग नहीं कर पा रही हूँ। पहले केदारनाथ, फिर भास्कर, अब प्राण; और मुझे उम्मीद है कि अगला नंबर सविता का न हो। काश, इन सभी को एक साथ परेशानियाँ झेलनी पड़तीं, तो अच्छा होता: मेरे बाल एक बार सफ़ेद हो सकते हैं, लेकिन बाकी समय में मेरी तरक्की ज़रूर होती।’ वह फिर रुकी। ‘लेकिन उस्ताद साहब अपने दूसरे शिष्यों की तुलना में मेरे साथ ज़्यादा धैर्य रखते हैं। या शायद ऐसा इसलिए है क्योंकि इन दिनों वे ज़्यादा संतुष्ट हैं, जीवन के प्रति कम कड़वाहट रखते हैं।’
कुछ देर बाद वीना ने आगे कहा: 'काश मैं प्रिया के लिए कुछ कर पाती।'
‘Priya Goyal?’
'हाँ।'
‘आपको उसकी याद कैसे आई?’
‘मुझे नहीं पता। मुझे अचानक उसकी याद आ गई। जब वह छोटी थी तो उसकी माँ कैसी थी?’
'अरे, वह एक अच्छी महिला थीं,' श्रीमती महेश कपूर ने कहा।
वीना ने कहा, 'मुझे लगता है कि अगर बाओजी और एल.एन. अग्रवाल के

बजाय आप और वह राज्य का संचालन करें तो राज्य की स्थिति बेहतर होगी।'

वीना की इस आपत्तिजनक टिप्पणी के लिए उसे फटकार लगाने के बजाय, श्रीमती महेश कपूर ने बस इतना कहा: 'मुझे ऐसा नहीं लगता। दो अनपढ़ औरतें—हम तो एक फाइल भी नहीं पढ़ पाएंगी।'

'कम से कम तुम दोनों एक-दूसरे के प्रति उदार तो होते। पुरुषों की तरह नहीं।'

'अरे नहीं,' उसकी माँ ने उदास होकर कहा। 'तुम्हें औरतों की छोटी सोच का कुछ पता ही नहीं। जब भाई संयुक्त परिवार को बाँटने का फैसला करते हैं, तो कभी-कभी वे कुछ ही मिनटों में लाखों रुपये की संपत्ति बाँट लेते हैं। लेकिन साझा रसोई में बर्तनों को लेकर पत्नियों का झगड़ा—उससे तो खून-खराबा होने की नौबत आ जाती है।'

'खैर,' वीना ने कहा, 'प्रिया और मैं सब कुछ अच्छे से संभाल लेंगे। और इससे उसे शाही दरवाजे के उस मनहूस घर से और अपने पति की बहन और भाभी से छुटकारा पाने में मदद मिलेगी। हाँ, महिलाओं के बारे में शायद आप सही कह रही हैं। लेकिन क्या आपको लगता है कि कोई महिला छात्रों पर लाठीचार्ज का आदेश देती?'

'नहीं, शायद नहीं,' उसकी माँ ने कहा। 'वैसे भी, ऐसी बातों के बारे में सोचना व्यर्थ है। महिलाओं को कभी भी ऐसे निर्णय लेने की आवश्यकता नहीं होगी।'

वीना ने कहा, 'एक दिन इस देश में एक महिला प्रधानमंत्री या एक महिला राष्ट्रपति जरूर होगी।'

वीना की मां इस भविष्यवाणी पर हंस पड़ीं। उन्होंने धीरे से कहा, 'अगले सौ सालों में तो नहीं,' और फिर से लॉन की ओर देखने लगीं।

कुछ गोल-मटोल भूरे तीतर, कुछ बड़े, कुछ छोटे, लॉन के दूर छोर पर

बेढंगे तरीके से दौड़े और बड़ी मुश्किल से कुछ सेकंड के लिए हवा में उछले। वे इमली के पेड़ की एक शाखा से लटके चौड़े झूले पर उतरे। वहाँ तीतर बैठे रहे और अचानक तेज़ बारिश होने लगी।

माली तुरंत रसोई के पास घर के पीछे वाले हिस्से में शरण लेने चले गए। गरज की गड़गड़ाहट से गिलहरियाँ घबराकर पेड़ पर चढ़ गईं। आसमान में बिजली कड़कने लगी। मूसलाधार बारिश होने लगी और देखते ही देखते लॉन की मिट्टी गाढ़ी हो गई। तीतर बारिश की बौछार में गायब हो गए; यहाँ तक कि झूला भी धुंधला दिखाई देने लगा। नालीदार छत पर तूफान की आवाज़ से बोलना मुश्किल हो गया और कभी-कभार हवा का तेज़ झोंका बारिश को बरामदे तक ले आया।

कुछ देर बाद घर का दरवाजा खुला और भास्कर बाहर आया। वह अपनी मां के बगल में बैठ गया और तीनों पानी की दीवार को घूरने लगे।

लगभग पाँच मिनट तक वे चुपचाप बारिश को देखते रहे, उसकी शक्ति और ध्वनि से मंत्रमुग्ध थे, और हवा में विशाल वृक्षों को झूलते और कांपते हुए देखकर आनंदित थे। फिर बारिश थोड़ी धीमी हुई, और बातचीत फिर से संभव हो पाई।

श्रीमती महेश कपूर ने कहा, 'यह किसानों के लिए अच्छा होगा। इस साल अब तक पर्याप्त बारिश नहीं हुई है।'

'लेकिन मोचियों के लिए नहीं,' वीना ने कहा। केदारनाथ ने एक बार उसे बताया था कि छोटे-मोटे जूते बनाने वाले, जो गीले ऊपरी हिस्सों को लकड़ी के सांचों पर फैलाकर उन्हें आकार देते हैं, उन्हें कभी-कभी इस मौसम में सूखने और उतारने के लिए एक सप्ताह तक इंतजार करना पड़ता है। चूंकि उनका गुजारा मुश्किल से चलता है और उनकी सारी पूंजी सामग्री और औजारों में लगी होती है, इसलिए यह उनके लिए बहुत बड़ी कठिनाई होती है।

जब बारिश से एक और राहत मिली, तो श्रीमती महेश कपूर ने भास्कर से पूछा, 'क्या आपको बारिश पसंद है?'
भास्कर ने कहा, 'मुझे बारिश के बाद पतंग उड़ाना अच्छा लगता है। हवा की धाराएँ ज़्यादा दिलचस्प होती हैं।'
बारिश एक बार फिर तेज हो गई, और एक बार फिर हर कोई अपने निजी विचारों में खो गया।
भास्कर कुछ दिनों में अपने घर लौटने के बारे में सोच रहा था, जहाँ आकाश में यहाँ की तुलना में कहीं अधिक पतंगें थीं और जहाँ वह अपने दोस्तों के साथ फिर से खेल सकता था। यहाँ 'कॉलोनियों' में जीवन काफी सीमित था।
श्रीमती महेश कपूर ने अपनी मां के बारे में सोचा, जो तूफानों से बहुत डरती थीं, और जिनकी अंतिम बीमारी ऐसे ही एक भयंकर तूफान में और भी गंभीर हो गई थी।
और वीना को अपनी बंगाली सहेली (पीली जल लिली वाली) की याद आई, जो भीषण गर्मी के महीनों के बाद जब मानसून की बारिश शुरू होती थी, तो वैसे ही कपड़े पहने घर से बाहर निकलती थी, स्वागत में टैगोर का एक गीत गुनगुनाती थी, और बारिश की बूंदों को अपने चेहरे और बालों पर बहने देती थी, शरीर से नीचे नंगे पैरों तक जाने देती थी, और अपनी ब्लाउज और साड़ी को पूरी तरह भिगो देती थी।

13.7

मान के पास समय बहुत कम बचा था। लेकिन उसे एहसास था कि उसे सईदा बाई से जल्द से जल्द सुलह करनी होगी, वरना वह ऊब और इच्छा से पागल हो जाएगा। इसलिए उसने सईदा बाई को उर्दू में अपना पहला पत्र लिखा, जिसमें उसने उनसे अपने प्रति दयालु होने की विनती की, अपने वफादार सेवक, अपने मोहक पतंगे आदि के प्रति। पत्र में कई वर्तनी

की गलतियाँ थीं और लिखावट कुछ हद तक अटपटी थी, लेकिन उसके भावों की तीव्रता स्पष्ट थी। उसने वाक्य रचना के कुछ पहलुओं में रशीद की मदद लेने के बारे में सोचा, फिर फैसला किया कि चूंकि रशीद सईदा बाई की नज़र में अच्छा नहीं था, इसलिए इससे केवल जटिलताएँ ही पैदा हो सकती हैं। उसने पत्र चौकीदार को सईदा बाई को देने के लिए दे दिया, लेकिन तुरंत सईदा बाई की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा नहीं की।

वह बरसात महल की ओर टहलने गया और चांदनी रात में नदी के उस पार देखता रहा। फ़िरोज़ के अलावा दुनिया में कोई भी उसका साथ देता हुआ नज़र नहीं आ रहा था। हर कोई चाहता था कि वह अपनी राय या इच्छा के अनुसार किसी न किसी दिशा में ढल जाए। और फ़िरोज़ भी इन दिनों दरबार में काफ़ी व्यस्त था, और उसने केवल एक बार पोलो अभ्यास के लिए जाने का सुझाव दिया था। वह भी एक मामले में उसके वरिष्ठ द्वारा बुलाई गई बैठक के कारण अंतिम क्षण में रद्द करना पड़ा था।

मान सोच रहा था कि जल्द ही कुछ होना चाहिए। वह बेकाबू होकर बेचैन हो रहा था। अगर सविता जल्दी बच्चे को जन्म दे दे तो अच्छा होगा। कहीं न कहीं कुछ खुशनुमा माहौल तो होगा। आजकल तो हर कोई उदास और परेशान सा दिख रहा था।

या फिर अगर वो अपने पिता को किसी ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ने के लिए मना लेते, तो वे कुछ दिनों के लिए रुधिया जिले का तूफानी दौरा कर सकते थे और शायद वो सईदा बाई को कुछ देर के लिए भूल पाते। खुद भी खाली बैठे उनके पिता का मान के प्रति नैतिक अधिकार थोड़ा कम हो गया था, और मान की संगति शायद इतनी असहनीय न होती; वैसे भी, पिछले कुछ दिनों से उन्होंने मान को घर बसाने के लिए नहीं कहा था। लेकिन अपनी स्थिति को स्वीकार न कर पाने के कारण ही महेश कपूर इन दिनों कुछ ज्यादा ही चिड़चिड़े हो गए

थे। शायद रुधिया जाना उतना अच्छा विचार नहीं था।

मान की मुसीबतों में एक और बात जुड़ गई थी, उसे पैसों की सख्त जरूरत थी; उसके पास लगभग कुछ भी नहीं बचा था। फिरोज, जिससे उसने ब्रह्मपुर लौटने पर छोटा सा कर्ज मांगा था, ने मान को अपना बटुआ थमा दिया और कहा कि वह उसमें से जो चाहे ले ले। कुछ दिनों बाद, दोपहर के भोजन के बाद, बिना पूछे, शायद मान के उदास चेहरे को देखकर, फिरोज ने वही उदारता दिखाई। इससे मान का गुजारा हो गया था। लेकिन वह अपने दोस्त से लगातार उधार नहीं ले सकता था। बनारस में कई लोगों पर उसका कर्ज था, कुछ ने सामान की आपूर्ति की थी, कुछ ने अपनी त्रासदियों की कहानियों के कारण, जिन्हें मान सहन नहीं कर पा रहा था, और मान को लगा कि अब जब वह खुद बदकिस्मत है, तो वे उसकी मदद करने के लिए उत्सुक होंगे। उसने अपना कर्ज चुकाने के लिए कुछ दिनों के लिए बनारस जाने का फैसला किया। अपने एक-दो परेशान करने वाले कर्जदारों से बचना आसान होगा। समस्या यह थी कि उसकी मंगेतर के परिवार को पता चल सकता था कि वह बनारस में है। इसके अलावा, उसे यह भी पक्का नहीं था कि बनारस जाने का यह सही समय है या नहीं। वह बच्चे के जन्म के समय सविता की मदद के लिए मौजूद रहना चाहता था, क्योंकि प्राण अपनी वर्तमान स्थिति में ऐसा करने में असमर्थ था, और मान को डर था कि अगर बच्चा उसके शहर से बाहर होने पर पैदा हुआ तो यह उसकी बदकिस्मती ही होगी।

उन्होंने सईदा बाई के पत्र का जवाब पाने के लिए पूरे दो दिन इंतजार किया। उन्होंने अपना पता बैतर हाउस दिया था। कोई जवाब नहीं आया।

अपनी ही टालमटोल और झंझटों से तंग आकर और किसी न किसी तरह की कार्रवाई के लिए उत्सुक होकर, मान ने फिरोज से कुछ और पैसे उधार लिए, एक नौकर को अगली सुबह बनारस जाने वाली ट्रेन का

टिकट लेने भेजा, और एक निराशाजनक और घटनाहीन आखिरी शाम बिताने की तैयारी की।

सबसे पहले, उन्होंने अस्पताल जाकर सविता को कम से कम दो दिन तक बच्चे को जन्म न देने की सलाह दी। सविता हंस पड़ी और अपनी पूरी कोशिश करने का वादा किया।

फिर उन्होंने फ़िरोज़ के साथ भोजन किया। ज़ैनब के पति भी भोजन में मौजूद थे—वे किसी वक्फ़ समिति की बैठक के लिए अकेले ब्रह्मपुर आए थे—और मान को यह आभास हुआ कि फ़िरोज़ उनके प्रति केवल औपचारिक व्यवहार कर रहे थे। मान को यह बात समझ नहीं आई। ज़ैनब के पति देखने में तो काफी सुसंस्कृत, लेकिन थोड़े झिझकते हुए लग रहे थे। वे बार-बार यही कह रहे थे कि वे दिल से किसान हैं, और इस बात को फ़ारसी शेरों से पुष्ट कर रहे थे। नवाब साहब ने अकेले ही भोजन किया।

अंत में, मान ने उर्दू में एक और पत्र लिखा और उसे सईदा बाई के चौकीदार को सौंप दिया। सईदा बाई को उसे बताना चाहिए था कि उसका अपराध क्या था— और अगर वह उसे माफ नहीं कर सकतीं, तो कम से कम उसके पत्रों का जवाब तो दे सकती थीं।

'कृपया इसे उसे तुरंत दे दो—और कह दो कि मैं जा रहा हूँ।' मान ने इस आखिरी वाक्य के नाटकीय अर्थ को भांपते हुए गहरी आह भरी।

चौकीदार ने दरवाजे पर दस्तक दी और बिब्बो बाहर आ गया।

'बिब्बो—' मान ने हाथीदांत से जड़ी छड़ी से इशारा करते हुए कहा।

लेकिन बिब्बो काफी डरा हुआ लग रहा था और उसने उसकी ओर देखने से इनकार कर दिया।

उसे क्या हो गया है? मान ने सोचा। पिछली बार जब मैं यहाँ आया था तो उसने मुझे चूमने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

कुछ मिनट बाद बिब्बो बाहर आया और बोला: 'बेगम साहिबा ने मुझे

आपको अंदर आने देने का निर्देश दिया है।'

'बिब्बो!' मान ने कहा, उसकी स्वीकारोक्ति से प्रसन्न होते हुए भी, उसके औपचारिक, यहाँ तक कि बेजान लहजे से आहत हुआ। वह इतना खुश था कि उसे गले लगाना चाहता था, लेकिन सीढ़ियों पर चढ़ते समय उससे आधा मुँह फेरकर उसने स्पष्ट कर दिया कि ऐसा संभव नहीं है।

'तुम उस तोते की तरह बार-बार मेरा नाम दोहराते रहते हो,' बिब्बो ने कहा। 'लोगों के प्रति मेरी दयालुता का मुझे केवल कष्ट ही मिलता है।'

'लेकिन पिछली बार तो मैंने तुम्हें किस किया था!' मान हंसते हुए बोला।

बिब्बो को यह बात याद दिलाना बिल्कुल पसंद नहीं था। मान ने बड़े ही मन से सोचा कि वह मुंह फुला रही है।

सईदा बाई का मूड अच्छा था। वह, मोटू चंद और एक वरिष्ठ सारंगी वादक अपने बाहरी कमरे में बैठकर गपशप कर रहे थे। उस्ताद मजीद खान ने हाल ही में बनारस में प्रस्तुति दी थी और उनके साथ इशाक खान ने संगत की थी। इशाक खान ने अच्छा प्रदर्शन किया था; किसी भी हालत में उन्होंने अपने गुरु को शर्मिंदा नहीं किया था।

'मैं खुद बनारस जा रहा हूं,' मान ने घोषणा की, जिसने बातचीत का आखिरी हिस्सा सुना था।

'और शिकारी को उस पालतू हिरण से दूर क्यों जाना चाहिए जो प्रसन्नता से स्वयं को उसकी दृष्टि के सामने प्रस्तुत करता है?' सईदा बाई ने अपना हाथ घुमाते हुए पूछा और रत्न-प्रतिबिंबित प्रकाश की अचानक चमक से मान को चकाचौंध कर दिया।

सईदा बाई का यह वर्णन अप्रत्याशित था, क्योंकि पिछले कुछ दिनों से वह उससे बच रही थी। मान ने उसकी आँखों में देखा, लेकिन उसे उनमें स्पष्ट ईमानदारी के अलावा कुछ भी नहीं दिखा। तुरंत ही उसे एहसास हुआ कि उसने उसे गलत समझा था: वह हमेशा की तरह मनमोहक थी,

और वह एक नासमझ मूर्ख था।

सईदा बाई पूरी शाम उनके प्रति बेहद विनम्र रहीं; ऐसा लग रहा था मानो सईदा बाई उन्हें रिझा रही हों, न कि वे उन्हें। उन्होंने उनसे पिछली बार हुई अपनी असभ्यता के लिए क्षमा मांगी। उस दिन कई बातें उनके मन को व्याकुल करने का कारण बनी थीं। दाग साहब को उस अज्ञानी साकी को क्षमा कर देना चाहिए जिसने अत्यधिक घबराहट में उनके निर्दोष हाथों पर शराब गिरा दी थी।

उसने मानो किसी प्रेरणा से उसके लिए गीत गाया। और फिर उसने संगीतकारों को विदा कर दिया।

13.8

अगली सुबह, मान बनारस जाने वाली ट्रेन पकड़ने के लिए ठीक समय पर स्टेशन पहुँच गया। वह खुशी से फूला नहीं समा रहा था। भाप का हर झोंका और पहियों का हर चक्कर उसे ब्रह्मपुर से दूर ले जा रहा था, फिर भी उसकी खुशी कम नहीं हुई। पिछली शाम की यादों में खोया हुआ वह धीरे-धीरे मुस्कुरा रहा था, उन सभी प्यारी बातों और चुटकुलों में, उस रोमांच और संतुष्टि में।

जब मान बनारस पहुँचा, तो उसने पाया कि जिन लोगों ने उसे पहले से प्राप्त माल के लिए पैसे देने थे, वे उसे देखकर प्रसन्न नहीं थे। उन्होंने कसम खाकर कहा कि उनके पास इस समय पैसे नहीं हैं, वे अपना कर्ज़ चुकाने के लिए जी-जान से कोशिश कर रहे हैं, जिनमें से एक मान का कर्ज़ भी था, बाज़ार में मंदी है, और सर्दियों तक—या ज़्यादा से ज़्यादा अगली बसंत तक—उन्हें भुगतान में कोई समस्या नहीं होगी।

जिन लोगों की दुर्भाग्य भरी कहानियों ने मान को अपना पर्स खोलने के लिए प्रेरित किया था, उन्होंने भी अब उसके लिए अपना पर्स नहीं खोला। एक युवक अच्छे कपड़े पहने हुए था और समृद्ध प्रतीत हो रहा था। उसने

मान को एक अच्छे रेस्तरां में अपने साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित किया, ताकि वह आराम से उसे सारी बातें समझा सके। अंत में, मान ने ही भोजन का बिल चुकाया।

एक अन्य व्यक्ति मान की मंगेतर के परिवार से दूर का रिश्तेदार था। वह मान को उनसे मिलवाने के लिए बेताब था, लेकिन मान ने विनती की कि उसे दोपहर की ट्रेन से ब्रह्मपुर लौटना है। उसने बताया कि उसका भाई, जो बीमार था और अस्पताल में भर्ती था, किसी भी दिन पिता बनने वाला था। मान की पारिवारिक ज़िम्मेदारी की इस नई भावना को देखकर वह व्यक्ति हैरान प्रतीत हुआ, लेकिन उसने आगे कुछ नहीं कहा। लेकिन मान, जो खुद को बचाव की मुद्रा में महसूस कर रहा था, अपने बकाया ऋण का ज़िक्र करने की हिम्मत नहीं जुटा पाया।

एक देनदार ने घुमा-फिराकर और अप्रत्यक्ष तरीके से यह संकेत दिया कि चूंकि महेश कपूर ने पड़ोसी राज्य में राजस्व मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया है, इसलिए मान का बकाया ऋण अब उसके दिमाग पर उतना हावी नहीं होता है।

मान उधार दी गई रकम का लगभग आठवां हिस्सा वापस पाने में कामयाब रहा, और उसने अपने कई दोस्तों और जान-पहचान वालों से लगभग उतनी ही रकम उधार ली। कुल मिलाकर दो हजार रुपये से कुछ अधिक हो गए। पहले तो उसे निराशा और हताशा महसूस हुई। लेकिन जेब में दो हजार रुपये और खुशहाल जीवन की ओर लौटने का ट्रेन टिकट पाकर उसे लगा कि आखिरकार जिंदगी काफी अच्छी है।

13.9

इस बीच तहमीना बाई ने सईदा बाई से मुलाकात की।

ताहमीना बाई की मां तरबुज का बाजार में उस प्रतिष्ठान की मालकिन थीं, जहां पहले सईदा बाई और उनकी मां मोहसिना बाई रहती थीं।

‘हम क्या करें? हम क्या करें?’ ताहमीना बाई ने बड़े उत्साह से कहा। ‘चौपर खेलें और गपशप करें? या गपशप करें और चौपर खेलें? सईदा, अपने रसोइए से कहो कि वो स्वादिष्ट कबाब बनाएँ। मैं बिरयानी लाई हूँ —मैंने बिब्बो को रसोई में ले जाने को कहा है—अब मुझे बताओ, मुझे सब कुछ बताओ। मुझे तुम्हें बहुत कुछ बताना है—’

चौपर के कुछ खेल खेलने और अंतहीन गपशप करने के बाद, साथ ही दुनिया की कुछ और गंभीर खबरों पर चर्चा करने के बाद—जैसे कि जमींदारी अधिनियम का उन पर, विशेष रूप से सईदा बाई पर, जिनके ग्राहक उच्च वर्ग के थे, क्या प्रभाव पड़ेगा; तसनीम की शिक्षा; ताहमीना बाई की माँ का स्वास्थ्य; और तरबूज का बाजार में भी बढ़ते किराए और संपत्ति के मूल्यों के बारे में—वे अपने विभिन्न ग्राहकों की हरकतों की ओर मुड़ गए।

‘मैं मरह बनूंगी,’ सईदा बाई ने कहा। ‘तुम मेरी भूमिका निभाओ।’

‘नहीं, मैं मरह बनूँगी,’ ताहमीना बाई ने कहा। ‘तुम मेरी जगह लो।’ वह खुशी से खिलखिला रही थी। उसने एक फूलदान उठाया, फूल मेज पर फेंके और पीने का नाटक किया। थोड़ी देर में वह इधर-उधर लड़खड़ाने लगी और अजीब सी आवाजें निकालने लगी। फिर उसने सईदा बाई पर झपट्टा मारा, जिन्होंने अपनी साड़ी का पल्लू झटक कर उसकी पहुँच से दूर कर दिया, ‘तोबा! तोबा!’ चिल्लाते हुए हारमोनियम की ओर दौड़ीं और जल्दी से दो सप्तकों तक अवरोही सुर बजाने लगीं।

ताहमीना बाई की आँखें धुंधली होने लगीं। जैसे-जैसे वजन कम होता गया, वैसे-वैसे वह भी नीचे गिरती गई। जल्द ही वह कालीन पर खर्राटे लेने लगी। दस सेकंड बाद, उसने अपना शरीर ऊपर उठाया, 'वाह! वाह!' चिल्लाई और फिर से गिर पड़ी, इस बार हंसी से चीखती और फुफकारती हुई। फिर वह उछल पड़ी, फलों का कटोरा उलट गया, और सईदा बाई पर

गिर पड़ी, जो आनंद से कराहने लगी। एक हाथ से ताहमीना बाई ने सेब उठाया और उसे काट लिया। फिर, चरम सुख के क्षण में, उसने व्हिस्की के लिए पुकार लगाई। और अंत में वह करवट बदली, डकार ली और फिर से सो गई।

वे हंसते-हंसते दम घुटने लगे थे। तोता डर के मारे चीख रहा था।

‘ओह, लेकिन उनका बेटा तो और भी बेहतर है,’ ताहमीना बाई ने कहा।

‘नहीं, नहीं,’ सईदा बाई हँसी से बेहाल होकर बोलीं। ‘मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती। रुक जाओ, ताहमीना, रुक जाओ, रुक जाओ—’

लेकिन जब राजकुमार ने ताहमीना बाई को अपनी कविता से सम्मानित नहीं किया, तो उन्होंने उसी तरह का व्यवहार करना शुरू कर दिया था।

स्तब्ध और विरोध करती हुई, सदमे से ग्रस्त ताहमीना ने अपने एक काल्पनिक लेकिन बहुत नशे में धुत दोस्त को खींचकर खड़ा किया। 'नहीं, नहीं,' वह भयभीत स्वर में रोई, 'नहीं, कृपया, ताहमीना बेगम—मैं पहले ही, नहीं, नहीं, मेरा मूड नहीं है—चलो, मान, चलते हैं।'

सईदा बाई ने कहा: 'क्या? क्या आपने मान कहा?'

ताहमिना बाई को हंसी का दौरा पड़ रहा था।

‘लेकिन ये तो मेरे दाग साहब हैं,’ सईदा बाई ने आश्चर्यचकित होकर कहा।

‘आपका मतलब है कि वह मंत्री जी का बेटा था?’ ताहमीना बाई ने कहा।

‘वही जिसके बारे में हर कोई बातें कर रहा है? कनपटी के बाल झड़ रहे हैं।’

'हाँ।'

‘वह मुझे भी सम्मान नहीं दे सका।’

‘यह सुनकर मुझे खुशी हुई,’ सईदा बाई ने कहा।

‘सावधान रहना, सईदा,’ ताहमीना बाई ने स्नेहपूर्वक कहा। ‘सोचो तुम्हारी माँ क्या कहेंगी।’

‘अरे, ये तो कुछ भी नहीं है,’ सईदा बाई ने कहा। ‘मैं उनका मनोरंजन करती हूँ; वो मेरा मनोरंजन करते हैं।’

यह तो मियां मिठ्ठू जैसा है; मैं मूर्ख नहीं हूँ।'

और इसके बाद उसने मान के बेताब प्रेम प्रसंग की काफी अच्छी नकल की।

13.10

ब्रह्मपुर लौटते ही मान ने सबसे पहले प्रेम निवास को फोन करके सविता का हालचाल पूछा। सविता ने अपना वादा निभाया था। बच्चा अभी भी उसके गर्भ में था, ब्रह्मपुर के सुख-दुखों से अभी तक अनछुआ।

मान के लिए प्राण से अस्पताल में मिलने का समय निकल चुका था; गुनगुनाते हुए वह सईदा बाई के घर की ओर चल पड़ा। चौकीदार आज रात कुछ खोया-खोया सा लग रहा था; उसने दरवाजा खटखटाया और बिब्बो से कुछ देर बात की। बिब्बो ने द्वार पर उत्सुकता से खड़े मान की ओर देखा, फिर चौकीदार की ओर मुड़कर सिर हिलाया।

लेकिन मान, जिसने नकारात्मक संकेत को सही ढंग से समझ लिया था, पलक झपकते ही बाड़ के ऊपर से कूद गया और उसके दरवाजा बंद करने से पहले ही दरवाजे पर पहुँच गया।

‘क्या?’ उसने बड़ी मुश्किल से अपनी आवाज़ पर काबू रखते हुए कहा। ‘बेगम साहिबा ने कहा था कि वो आज शाम मुझसे मिलेंगी। क्या हुआ है?’

बिब्बो ने 'अस्वस्थ' शब्द पर विशेष जोर देते हुए कहा, 'वह अस्वस्थ हैं।' यह स्पष्ट था कि सईदा बाई बिल्कुल भी अस्वस्थ नहीं थीं।

‘बिब्बो, तुम मुझसे क्यों नाराज़ हो?’ मान ने बेबसी से कहा। ‘मैंने ऐसा क्या किया है कि तुम सब मुझसे इस तरह पेश आ रहे हो?’

‘कुछ नहीं। लेकिन बेगम साहिबा आज किसी से नहीं मिल रही हैं।’

क्या उसे पहले से ही कोई मिल चुका है?
‘दाग साहब—’ बिब्बो ने नरमी दिखाने का नाटक करते हुए कहा, लेकिन साथ ही साथ एक उत्तेजक इशारा भी किया, ‘दाग साहब, कोई ऐसा व्यक्ति जिसे मैं ग़ालिब साहब कह सकता हूँ, उनके साथ है। कवियों में भी वरीयता क्रम होता है। यह सज्जन अच्छे मित्र हैं, और वह अन्य सभी की तुलना में उनकी संगति को अधिक पसंद करती हैं।’
यह सब मान के लिए असहनीय था। 'यह कौन है? यह कौन है?' वह लगभग आपा खोकर चिल्लाया।
बिब्बो मान को सीधे-सीधे बता सकती थी कि वो श्री बिलग्रामी थे, सईदा बाई के पुराने चाहने वाले, जो उसे उबाऊ तो लगते थे लेकिन सुकून देने वाले भी, लेकिन वो मान की इस नाटकीय प्रतिक्रिया से उत्साहित थी। इसके अलावा, वो मान से नाराज़ थी और अपनी बदकिस्मती का बदला लेने के लिए उसे ईर्ष्या का एक-दो घूंट पिलाना चाहती थी। सीढ़ियों पर चुंबन के बाद सईदा बाई ने बिब्बो को कई बार ज़ोर से थप्पड़ मारे थे और उसकी बेशर्मी के लिए उसे घर से निकाल देने की धमकी दी थी। बिब्बो को याद था कि मान ने ही पहले चुंबन की शुरुआत की थी, जिसकी वजह से वो इस सारी मुसीबत में फंसी थी।
‘मैं आपको यह नहीं बता सकती कि वह कौन है,’ उसने अपनी भौहें थोड़ी ऊपर उठाते हुए कहा। ‘आपकी काव्यात्मक अंतर्ज्ञान आपको बता देगी।’
मान ने बिब्बो को कंधों से पकड़कर हिलाना शुरू कर दिया। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ बोल पाती और चौकीदार उसे बचाने आता, बिब्बो उसकी पकड़ से छूटकर उसके मुंह पर दरवाजा पटक दिया।
‘आइए अब, कपूर साहब—’ चौकीदार ने शांत भाव से कहा।
‘वह कौन है?’ मान ने कहा।
चौकीदार ने धीरे से अपना सिर हिलाया। उसने कहा, 'मुझे चेहरे याद नहीं

रहते। अगर कोई मुझसे पूछे कि क्या आप इस घर में आए थे, तो मुझे याद नहीं होगा।'

मुलाकात को जिस बेशर्मी से तोड़ा गया था, उससे स्तब्ध और ईर्ष्या से जलते हुए, मान किसी तरह बैतर हाउस वापस लौट आया।

प्रवेश द्वार पर बने विशाल पत्थर के फाटक के ऊपर एक बंदर बैठा था। इतनी देर रात तक उसका जागना एक रहस्य था। जैसे ही मान उसके पास पहुँचा, बंदर ने उस पर गुर्राया। मान ने उसे घूरकर देखा।

बंदर फाटक से कूदकर मान पर झपटा। अगर मान पिछले दो दिनों से बनारस में न होता, तो उसने ब्रह्मपुर क्रॉनिकल में पसंद बाग इलाके में घूम रहे एक खूंखार बंदर के बारे में पढ़ा होता। ऐसा लगता था कि कुछ स्कूली बच्चों द्वारा उसके बच्चे को पत्थर मारकर मार डालने के बाद वह पागल हो गई थी। तब से वह स्थानीय निवासियों पर हमला कर रही थी, उन्हें काट रही थी और डरा रही थी। उसने अब तक सात लोगों पर हमला किया था, आमतौर पर उनके पैरों से मांस के टुकड़े नोच लिए थे, और मान आठवां शिकार बनने वाला था।

वह निर्भीक और आक्रामक भाव से उस पर टूट पड़ी। यद्यपि वह मुड़कर भागा नहीं, फिर भी उसने अपनी गति धीमी नहीं की, और जब वह उसके काफी करीब पहुँच गई, तो उसने उसके पैर पर अंतिम प्रहार किया। लेकिन उसने मान के क्रोध का अनुमान नहीं लगाया था। मान ने अपनी छड़ी तैयार रखी थी और उसे ऐसा प्रहार किया कि वह वहीं रुक गई।

उस प्रहार में उसकी सारी शारीरिक शक्ति, ईर्ष्या और क्रोध की सारी ताकत समा गई। उसने अपनी छड़ी फिर उठाई, लेकिन बंदर सड़क पर पड़ा था, हिल नहीं रहा था, शायद स्तब्ध था या मर चुका था।

मान गुस्से और घबराहट से कांपते हुए एक मिनट तक फाटक पर टिका रहा। फिर अचानक खुद पर शर्मिंदगी महसूस करते हुए वह धीरे-धीरे घर

की ओर चल पड़ा। फ़िरोज़ घर पर नहीं था, न ही ज़ैनब का पति, और नवाब साहब पहले ही सो चुके थे। लेकिन इम्तियाज़ जागकर पढ़ रहा था।
‘मेरे प्रिय मित्र, आपको सदमा लगा है। क्या सब ठीक है—मेरा मतलब अस्पताल में?’
'मुझे लगता है मैंने अभी-अभी एक बंदर को मार डाला है। वह मुझ पर झपटा था। वह गेट पर बैठा था। मुझे व्हिस्की चाहिए।'
इम्तियाज़ ने राहत भरी आवाज़ में कहा, “अरे वाह, तुम तो हीरो हो! अच्छा हुआ तुम्हारे पास वो लाठी थी। मुझे डर था कि कहीं प्राण या सविता न हो। पुलिस उसे दिन भर से पकड़ने की कोशिश कर रही है। उसने पहले ही कई लोगों को काट लिया है। बर्फ और पानी? खैर, अगर तुमने उसे मार डाला है तो शायद तुम इतने बड़े हीरो नहीं हो। मुझे उसे घर के पास से कहीं और ले जाना चाहिए, वरना धार्मिक अशांति फैल जाएगी। लेकिन क्या तुमने ऐसा कुछ किया जिससे वो नाराज़ हुई?”
‘उसे नाराज कर दिया?’ मान ने कहा।
'हां, तुम्हें पता है, क्या तुमने उस पर अपनी छड़ी लहराई थी या कुछ और? शायद पत्थर फेंका था?'
‘कुछ नहीं,’ मान ने बड़े जोश से कहा। ‘उसने बस मुझे एक नज़र देखा और मुझ पर टूट पड़ी। और मैंने उसे नाराज़ करने के लिए कुछ भी नहीं किया था। कुछ भी नहीं। बिलकुल कुछ भी नहीं।’

13.11

सभी ने सविता को बताया था कि बच्चा लड़का होगा; उसके चलने का तरीका, पेट का उभार और अन्य अचूक संकेत सभी एक लड़के की ओर इशारा कर रहे थे।
‘अच्छे विचार रखो, कविताएँ पढ़ो,’ श्रीमती रूपा मेहरा लगातार सविता को प्रोत्साहित करती रहती थीं, और सविता ऐसा करने की कोशिश करती

थी। उसने 'कानून सीखना' नामक एक पुस्तक भी पढ़ी। श्रीमती रूपा मेहरा ने सविता को संगीत सुनने की सलाह दी, लेकिन संगीत में विशेष रुचि न होने के कारण उसने ऐसा नहीं किया।

बच्चा बीच-बीच में पैर पटकता था। लेकिन कभी-कभी ऐसा लगता था कि वह कई दिनों तक सोता ही रहता है। आजकल वह बहुत शांत रहता था।

श्रीमती रूपा मेहरा, सविता को शांत मन से सोचने के लिए कहते हुए, अक्सर अपने और अन्य माताओं के प्रसव अनुभवों को उसके साथ साझा करती थीं। कुछ कहानियाँ मनमोहक थीं, कुछ नहीं। 'तुम्हें पता है, तुम्हारी डिलीवरी का समय निकल चुका था,' उन्होंने प्यार से सविता से कहा। 'और मेरी सास ने ज़िद की कि मुझे प्रसव पीड़ा शुरू करने का उनका अपना तरीका आज़माना चाहिए। मुझे अरंडी का तेल का पूरा गिलास पीना पड़ा। यह एक रेचक है, तुम्हें पता है, और माना जाता था कि इससे प्रसव पीड़ा शुरू हो जाएगी। इसका स्वाद बहुत खराब था, लेकिन मुझे लगा कि यह मेरा कर्तव्य है, इसलिए मुझे इसे पीना पड़ा; यह साइडबोर्ड पर रखा था। मुझे याद है, सर्दी का मौसम था, कड़ाके की ठंड थी, दिसंबर का मध्य था—'

'यह दिसंबर नहीं हो सकता, माँ, मेरा जन्मदिन नवंबर में है।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने अपनी तल्लीनता में इस व्यवधान पर भौंहें चढ़ाईं, लेकिन उन्होंने तुरंत देखा कि इसका तर्क अकाट्य था, और शांत भाव से आगे बढ़ीं:

नवंबर का महीना था, हाँ, सर्दी का मौसम था, और मैंने उसे साइडबोर्ड पर रखा देखा, और दोपहर के भोजन के लिए जाते समय मैंने उसे एक ही घूंट में पी लिया। मुझे याद है कि हमने दोपहर के भोजन में पराठे खाए थे, वगैरह। मैं आम तौर पर ज्यादा नहीं खाती थी, लेकिन उस दिन मैंने पेट भरकर खाया। लेकिन इसका कोई असर नहीं हुआ। फिर रात का खाना

आया। फिर तुम्हारे पापा मेरी पसंदीदा मिठाई, रसगुल्लों से भरा एक बर्तन लेकर आए। मैंने एक खाया, फिर दूसरा, और दूसरा अभी गले से नीचे उतर ही रहा था कि अचानक ऐसा लगा जैसे मेरे पेट में मुट्ठी बन गई हो! प्रसव पीड़ा शुरू हो गई थी, और मुझे भागना पड़ा।

सविता ने कहा, 'माँ, मुझे लगता है—'

लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा ने आगे कहा: 'हमारे भारतीय नुस्खे सबसे अच्छे हैं। अब वे कहते हैं कि इस मौसम में मुझे खूब जामुन खाने चाहिए, क्योंकि वे मधुमेह के लिए अच्छे होते हैं।'

'मां, मुझे लगता है कि मुझे यह अध्याय खत्म कर लेना चाहिए,' सविता ने कहा।

श्रीमती रूपा मेहरा ने आगे कहा, 'अरुण सबसे दर्दनाक था। तुम्हें तैयार रहना चाहिए, प्यारी; पहले बच्चे के साथ दर्द इतना भयानक होता है कि मरने का मन करता है, और अगर मैंने तुम्हारे पापा के बारे में न सोचा होता तो मैं निश्चित रूप से मर जाती।'

'मा—'

'सविता, प्यारी, जब मैं तुमसे बात कर रही हूँ तो तुम्हें वह किताब नहीं पढ़नी चाहिए। कानून के बारे में पढ़ना बहुत सुकून देने वाला नहीं होता।'

'माँ, चलो किसी और विषय पर बात करते हैं।'

'मैं तुम्हें तैयार करने की कोशिश कर रही हूँ, मेरी प्यारी। वरना माँ का क्या काम? मेरी माँ जीवित नहीं थी जो मुझे तैयार कर सके, और मेरी सास भी सहानुभूति नहीं रखती थी। बाद में वह चाहती थी कि मैं एक महीने से अधिक समय तक प्रसव के बाद आराम करूँ, लेकिन मेरे पिता ने कहा कि यह सब अंधविश्वास है और खुद डॉक्टर होने के नाते उन्होंने इस बात का कड़ा विरोध किया।'

'क्या यह वाकई इतना दर्दनाक है?' सविता ने डरते हुए कहा।

‘हाँ। सचमुच असहनीय,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने सविता को डराने या परेशान न करने की अपनी तमाम चेतावनियों को अनसुना करते हुए कहा। ‘मेरे जीवन में अब तक हुए किसी भी दर्द से ज़्यादा दर्दनाक, खासकर अरुण के समय। लेकिन जब बच्चा पैदा होता है, तो उसे देखना कितना सुखद होता है—अगर सब ठीक हो, तो। लेकिन कुछ बच्चों के साथ, यह बहुत दुखद होता है, जैसे कामिनी बुआ का पहला बच्चा—फिर भी, ऐसी चीजें होती रहती हैं,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने दार्शनिक लहजे में अपनी बात समाप्त की।

‘माँ, आप मुझे एक कविता क्यों नहीं सुनातीं?’ सविता ने अपनी माँ का ध्यान इस नए विषय से हटाने की कोशिश करते हुए कहा। लेकिन जब श्रीमती रूपा मेहरा ने अपनी पसंदीदा कविताओं में से एक, कॉली सिबर की ‘अंधा लड़का’ कविता सुनानी शुरू की, तो सविता को अपने सुझाव पर पछतावा हुआ।

आँखों में आँसू भर आए थे, श्रीमती रूपा मेहरा ने कांपती हुई आवाज़ में पढ़ना शुरू किया:

अरे बताओ, प्रकाश नाम की वह चीज क्या है?
क्या मुझे कभी इसका आनंद नहीं लेना चाहिए?
दृष्टि के क्या-क्या लाभ हैं?
अरे, अपने बेचारे अंधे लड़के को बताओ!

‘माँ,’ सविता ने कहा, ‘पापा आपके प्रति बहुत अच्छे थे, है ना? बहुत कोमल—बहुत स्नेही—’

‘ओह, हाँ,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने आँसू बहाते हुए कहा, ‘वह लाखों में एक पति थे। प्राण के पिता प्राण की माँ के प्रसव के समय हमेशा गायब हो जाते थे। उन्हें प्रसव पीड़ा सहन नहीं होती थी—इसलिए जब बच्चा छोटा,

शोर मचाने वाला और गंदा होता था, तो वह जितना हो सके दूर रहने की कोशिश करते थे। अगर वह वहाँ होते, तो शायद प्राण बचपन में उस साबुन के टब में आधा न डूबता, और फिर यह सारा अस्थमा न होता—और उसका दिल भी सही सलामत होता।' 'दिल' शब्द पर श्रीमती रूपा मेहरा की आवाज़ धीमी हो गई।

'माँ, मुझे थकान महसूस हो रही है। मुझे लगता है मैं सो जाऊँगी,' सविता ने कहा। उसने अपने शयनकक्ष में अकेले सोने की ज़िद की, हालाँकि श्रीमती रूपा मेहरा ने उसके साथ सोने की पेशकश की थी, ताकि अगर उसे प्रसव पीड़ा शुरू हो जाए और वह हिलने-डुलने या मदद मांगने में असमर्थ हो जाए तो वे उसके साथ सो सकें।

*

एक रात करीब नौ बजे, जब सविता बिस्तर पर बैठकर पढ़ रही थी, अचानक उसे तेज दर्द हुआ और वह जोर से चिल्लाई। श्रीमती रूपा मेहरा, जिनके कान इन दिनों सविता की आवाज़ के प्रति असाधारण रूप से संवेदनशील थे, दौड़कर कमरे में आईं। उन्होंने अपने नकली दांत पहले ही निकाल दिए थे और केवल ब्रा और पेटीकोट पहने हुए थीं। उन्होंने सविता से पूछा कि क्या हुआ है और क्या दर्द शुरू हो गया है।

सविता ने पेट पकड़कर सिर हिलाया और कहा कि उसे भी ऐसा ही लगता है। श्रीमती रूपा मेहरा ने तुरंत लता को जगाया, उसे घर का कोट पहनाया, नौकरों को बुलाया, उसके नकली दांत लगाए और कार भेजने के लिए प्रेम निवास को फोन किया। प्रसूति विशेषज्ञ के घर के नंबर पर उनसे संपर्क नहीं हो पाया। उन्होंने बैतर हाउस को फोन किया।

इम्तियाज़ ने फ़ोन उठाया। उसने पूछा, 'प्रसव कितनी बार हो रहे हैं?' 'आपके प्रसूति विशेषज्ञ कौन हैं? बुतालिया? अच्छा। क्या आपने उन्हें फ़ोन किया है? ओह, मैं समझ गया। छोड़िए, शायद वो किसी और प्रसव

के लिए अस्पताल में हों। मैं सुनिश्चित कर लूँगा कि उनके पास एक निजी कमरा तैयार हो और वे हर चीज़ के लिए तैयार हों।'

अब दर्द ज़्यादा बार होने लगा था, लेकिन अनियमित था। लता सविता का हाथ पकड़े हुए थी और कभी उसे चूमती या उसके माथे पर हाथ फेरती थी। दर्द होने पर सविता अपनी आँखें बंद कर लेती थी। इम्तियाज़ एक घंटे में आ गया। उसे प्रसूति विशेषज्ञ को ढूंढने में काफ़ी परेशानी हुई थी, जो संयोगवश एक पार्टी में गई हुई थी।

अस्पताल में भर्ती होते ही—मेडिकल कॉलेज अस्पताल में—सविता ने चारों ओर देखा और पूछा प्राण कहाँ है? श्रीमती रूपा मेहरा ने पूछा, 'क्या मैं उसे बुला लाऊँ?'

'नहीं, नहीं, उसे सोने दो—उसे बिस्तर से नहीं उठना चाहिए,' सविता ने कहा।

इम्तियाज ने दृढ़ता से कहा, 'वह बिल्कुल सही कह रही है। इससे उसे कोई फायदा नहीं होगा। यहां समर्थन और साथ देने के लिए हम काफी लोग मौजूद हैं।'

एक नर्स ने उन्हें बताया कि प्रसूति विशेषज्ञ बहुत जल्द आने वाली हैं और घबराने की कोई बात नहीं है। 'पहली डिलीवरी में आमतौर पर काफी समय लगता है। बारह घंटे लगना बिल्कुल सामान्य है।' सविता की आँखें चौड़ी हो गईं।

हालांकि वह असहनीय दर्द में थी, लेकिन उसने ज़ोर से चीख नहीं मारी। डॉ. बुटालिया, एक कद में छोटी और कुछ हद तक भावुक आँखों वाली सिख डॉक्टर, वहाँ पहुँचीं, उन्होंने संक्षेप में उसकी जाँच की और फिर से उसे आश्वस्त किया कि सब ठीक है।

"बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया," उसने मुस्कुराते हुए कहा, उसकी नज़र घड़ी पर टिकी हुई थी जबकि सविता बिस्तर पर छटपटा रही थी। "दस मिनट

—वाह, अच्छा, अच्छा।" फिर वह गायब हो गया।
इसके बाद मान आया। नर्स ने देखा कि वह मिस्टर कपूर हैं और काफी बिखरे हुए और चिंतित दिख रहे हैं, इसलिए उसने अनुमान लगाया कि वह पिता ही होंगे और कुछ मिनटों तक उन्हें इसी नाम से संबोधित करती रही, जिसके बाद मान ने उसे सुधार दिया।
'मुझे अफसोस है कि पिता भी इसी अस्पताल में भर्ती एक मरीज हैं,' मान ने कहा। 'मैं उनका भाई हूं।'
'ओह, लेकिन यह कितना भयानक है,' नर्स ने कहा। 'क्या उसे पता है—'
'अभी तक नहीं।'
'ओह।'
'हां, वह सो रहे हैं, और उनके डॉक्टर और उनकी पत्नी ने उन्हें हिलने-डुलने या अनावश्यक उत्तेजना पैदा न करने का निर्देश दिया है। मैं उनकी जगह पर हूं।'
नर्स ने माथे पर शिकन डाली। 'अब चुपचाप लेट जाओ,' उसने सविता को सलाह दी। 'चुपचाप लेट जाओ और शांत विचार करो।'
'हां,' सविता ने कहा, उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।
रात बहुत गर्म थी, और कमरा दूसरी मंजिल पर होने के बावजूद वहाँ बहुत सारे मच्छर थे। श्रीमती रूपा मेहरा ने एक और पलंग लाने को कहा ताकि वह और लता बारी-बारी से आराम कर सकें। इम्तियाज़ ने सब कुछ ठीक-ठाक देखकर वहाँ से चला गया। मान गलियारे में एक कुर्सी पर बैठ गया और सो गया।
सविता शांत मन से सोच भी नहीं पा रही थी। उसे ऐसा लग रहा था मानो किसी भयानक, क्रूर शक्ति ने उसके शरीर पर से उसका नियंत्रण छीन लिया हो। दर्द होने पर वह हांफने लगी, लेकिन उसकी मां ने उसे बताया था कि दर्द असहनीय होगा और उसे लग रहा था कि दर्द और बढ़ेगा,

इसलिए उसने जोर से चिल्लाने की कोशिश नहीं की और सफल भी रही। घंटे बीतते गए और उसके माथे पर पसीना आ गया। लता मच्छरों को उसके चेहरे से दूर रखने की कोशिश करती रही।

चार बज चुके थे और अभी भी अंधेरा था। कुछ ही घंटों में प्राण जाग जाएगा। लेकिन इम्तियाज़ ने साफ कह दिया था कि उसे अपने कमरे से बाहर नहीं निकलने दिया जाएगा। अब सविता धीरे-धीरे रोने लगी, न केवल इसलिए कि उसे प्राण के सहारे का सहारा नहीं मिलेगा, बल्कि इसलिए भी कि वह कल्पना कर सकती थी कि प्राण उसके लिए कितना चिंतित होगा।

उसकी मां को लगा कि वह दर्द के कारण रो रही है, इसलिए उसने कहा: 'अब, प्यारी, हिम्मत रखो, यह सब जल्द ही खत्म हो जाएगा।'

सविता कराह उठी और उसने अपनी मां का हाथ कसकर पकड़ लिया।

दर्द अब लगभग असहनीय हो गया था। अचानक, उसे अपने पैरों के आसपास बिस्तर गीला महसूस हुआ और शर्मिंदगी और उलझन से चेहरा लाल करके वह श्रीमती रूपा मेहरा की ओर मुड़ी।

'मा—'

'क्या बात है, प्रिय?'

मुझे लगता है—मुझे लगता है कि बिस्तर गीला है।

श्रीमती रूपा मेहरा ने मान को जगाया और उसे ड्यूटी पर मौजूद नर्सों को बुलाने के लिए भेजा।

एमनियोटिक द्रव की थैली फट गई थी, और अब संकुचन बहुत तेज़ी से, लगभग हर दो मिनट में आने लगे थे। नर्सों ने स्थिति को देखते ही सविता को प्रसव कक्ष में ले गईं। उनमें से एक ने डॉक्टर बुटालिया को फोन किया।

'मेरी मां कहां है?' सविता ने पूछा।

एक नर्स ने कुछ रूखेपन से कहा, 'वह बाहर है।'
कृपया उसे अंदर आने के लिए कहिए।
‘श्रीमती कपूर, मुझे बहुत खेद है, हम ऐसा नहीं कर सकते,’ दूसरी नर्स ने कहा, जो एक लंबी, दयालु, एंग्लो-इंडियन महिला थी। ‘डॉक्टर बहुत जल्द यहाँ आ जाएँगे। अगर दर्द बहुत ज़्यादा हो तो अपने बिस्तर के पीछे लगी रेलिंग को पकड़ लें।’
‘मुझे लगता है कि मैं बच्चे को महसूस कर सकती हूँ—’ सविता ने कहना शुरू किया।
'श्रीमती कपूर, कृपया डॉक्टर के आने तक धैर्य बनाए रखें।'
'मैं नहीं कर सकता-'
सौभाग्य से डॉक्टर लगभग तुरंत ही आ गए, और नर्सों ने भी उसे जोर लगाने के लिए प्रोत्साहित किया।
‘अपने ऊपर मौजूद स्प्रिंग और हैंडल को पकड़ कर रखें।’
‘धक्का दो, धक्का दो, धक्का दो—’
‘मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती—मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती—’ सविता ने दर्द से अपने होंठ फैलाते हुए कहा।
बस धक्का दो—
‘नहीं,’ वह रोते हुए बोली। ‘यह बहुत भयानक है। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती। मुझे बेहोशी की दवा दीजिए। डॉक्टर, कृपया—’
डॉक्टर ने कहा, 'जोर लगाइए, श्रीमती कपूर, आप बहुत अच्छा कर रही हैं।'
दर्द के धुंधलेपन में, सविता ने एक नर्स को दूसरी नर्स से यह कहते हुए सुना: 'क्या बच्चे का सिर पहले बाहर आ रहा है?'
सविता को नीचे की ओर फटने जैसा दर्द महसूस हुआ, फिर अचानक गर्म तरल पदार्थ का प्रवाह हुआ। उसके बाद और खिंचाव हुआ और इतना दर्द

हुआ कि उसे लगा कि वह बेहोश हो जाएगी।
‘मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती, ओह माँ, मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकती,’ वह चीखी। ‘मैं फिर कभी बच्चा नहीं चाहती।’
‘वे सब यही कहते हैं,’ नर्स ने अचानक कहा, ‘और वे सब अगले साल वापस आते हैं। कोशिश करते रहो—’
‘मैं नहीं करूंगी। मैं कभी नहीं—कभी नहीं—कभी दूसरा बच्चा नहीं पैदा करूंगी,’ सविता ने कहा, जो खुद को असहनीय पीड़ा से जूझते हुए, लगभग टूटते हुए महसूस कर रही थी। ‘हे भगवान।’
अचानक सिर बाहर निकल आया, और उसे तुरंत राहत का एहसास हुआ। जब काफी देर बाद उसे बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी, तो उसने अपनी आंखें खोलीं, जो अभी भी आंसुओं से धुंधली थीं, और उसने खून से लथपथ, झुर्रियों वाले, काले बालों वाले, रोते हुए बच्चे को देखा, जिसे डॉक्टर अपनी बाहों में उठाए हुए था।
‘मिसेज कपूर, यह एक लड़की है,’ स्वप्निल आँखों वाले डॉक्टर ने कहा। ‘इसकी आवाज़ बहुत ही दमदार है।’
‘एक लड़की?’
'हां। काफी बड़ा बच्चा है। बहुत बढ़िया। प्रसव काफी मुश्किल था, जैसा कि ऐसे मामलों में होता है।'
सविता कुछ मिनटों तक थकी-हारी लेटी रही। प्रसव कक्ष की रोशनी उसके लिए बहुत तेज़ थी। एक बच्चा! उसने सोचा।
कुछ देर बाद उसने पूछा, 'क्या मैं उसे गोद में ले सकती हूँ?'
'बस एक मिनट और, और हम उसे साफ कर देंगे।'
लेकिन जब वह बच्ची सविता के ढीले पेट की गोद में आकर रुकी, तो वह अभी भी काफी फिसलन भरी थी। सविता ने उसके सिर के ऊपरी हिस्से को प्यार और थोड़ी सी शंका भरी निगाहों से देखा, फिर उसे धीरे से थाम

लिया और थकान से एक बार फिर अपनी आँखें बंद कर लीं।

13.12

प्राण जब जागा तो उसने खुद को पिता पाया।

‘क्या?’ उसने अविश्वास से इम्तियाज से कहा।

लेकिन अपने माता-पिता को अपने बिस्तर के पास बैठे देखकर, जो कि आमतौर पर मिलने के समय के बाहर नहीं होता, उसने अपना सिर हिलाया और इस बात पर विश्वास कर लिया।

इम्तियाज ने आगे कहा, 'एक लड़की है। वे ऊपर हैं। मान भी वहीं है, और उसे पिता समझे जाने में कोई परेशानी नहीं है।'

‘एक लड़की?’ प्राण हैरान था, शायद थोड़ा निराश भी। ‘सविता कैसी है?’

'ठीक है। मैंने प्रसूति विशेषज्ञ से बात कर ली है। उनका कहना है कि प्रसव थोड़ा मुश्किल था, लेकिन कुछ भी असामान्य नहीं था।'

'अच्छा, मैं उसे और बच्चे को देखने जाती हूँ। मुझे लगता है कि वह हिल-डुल नहीं सकती।'

‘नहीं, वो नहीं कर सकती। कुछ दिनों तक नहीं। उसे कुछ टांके लगे हैं। और मुझे माफ करना प्राण, तुम भी हिल-डुल नहीं सकते। न तो हिलना-डुलना और न ही उत्तेजित होना तुम्हारे ठीक होने में मददगार होगा।’ इम्तियाज ने थोड़ी सख्त औपचारिकता के साथ बात की, जो उन्हें मरीजों से उनकी बात मनवाने के लिए सबसे कारगर लगती थी।

'ये तो बेतुका है, इम्तियाज। समझदारी से काम लो। प्लीज़। मुझे लगता है कि तुम मुझे यही बताने वाले हो कि मैं अपने बच्चे की सिर्फ तस्वीरें ही देख सकती हूँ।'

इम्तियाज़ मुस्कुराए बिना और अपने गाल पर तिल को सहलाते हुए बोला, 'यह अच्छा विचार है। लेकिन बच्चा, माँ के विपरीत, एक ऐसी वस्तु है जिसे कहीं भी ले जाया जा सकता है, और उसे निश्चित रूप से आपके

पास यहाँ लाया जा सकता है। शुक्र है कि आपको संक्रमण नहीं है, वरना यह भी संभव नहीं होता। बुतालिया अपने बच्चों की रक्षा ऐसे करता है जैसे वे कोई कीमती वस्तु हों।'

'लेकिन मुझे सविता से बात करनी होगी,' प्राण ने कहा।

'प्राण, वो ठीक है,' उसके पिता ने उसे दिलासा देते हुए कहा। 'जब मैं ऊपर था, वो आराम कर रही थी। वो अच्छी बच्ची है,' उन्होंने बेमतलब की बात कहते हुए कहा।

इम्तियाज ने सुझाव दिया, 'तुम उसे एक पत्र क्यों नहीं लिख देते?'

'एक नोट?' प्राण ने हल्की हंसी के साथ कहा। 'वह किसी दूसरे शहर में तो नहीं है।' लेकिन उसने अपनी माँ से नाइटस्टैंड पर रखा पैड मांगा और उस पर कुछ पंक्तियाँ लिख डालीं:

प्रिय,

इम्तियाज़ ने मुझे तुमसे मिलने से मना कर दिया है; उसका कहना है कि कुछ सीढ़ियाँ चढ़ने और तुम्हें देखने की खुशी से मैं बेहाल हो जाऊँगा। मुझे पता है कि तुम हमेशा की तरह खूबसूरत लग रही होगी। उम्मीद है तुम ठीक हो, और काश मैं वहाँ होता, तुम्हारा हाथ थामकर तुम्हें बता पाता कि हमारी बच्ची कितनी प्यारी है। क्योंकि मुझे पूरा यकीन है कि वह बहुत प्यारी होगी।

मैंने भी उसे अभी तक नहीं देखा है, और आपसे अनुरोध है कि कृपया उसे कुछ मिनटों के लिए मुझे सौंप दें।

वैसे, मैं ठीक हूँ और अगर आप सोच रहे थे तो बता दूं कि मैंने रात को चैन से बिताई!

मेरा सारा प्यार,

लेना

इम्तियाज चला गया।

‘चिंता मत करो, प्राण, यह लड़की है,’ उसकी मां ने कहा।
प्राण ने कहा, 'मुझे बिल्कुल भी चिंता नहीं है। मैं बस हैरान हूं। हर कोई एक लड़के के बारे में बात कर रहा था, इसलिए कुछ समय बाद मैंने इस पर विश्वास कर लिया।'
श्रीमती महेश कपूर स्वयं इस बात से असंतुष्ट नहीं थीं कि उन्हें एक पोती हुई है, क्योंकि भास्कर (हालांकि पुरुष वंश से नहीं) ने पोते की उनकी इच्छा पूरी कर दी थी।
‘रूपा खुश नहीं हो सकती,’ उसने अपने पति से कहा।
‘क्यों?’ उसके पति ने कहा।
‘दो पोतियां हैं और कोई पोता नहीं है।’
अखबार पढ़ने से पहले उन्होंने जवाब दिया, 'महिलाओं को अपने दिमाग की जांच करानी चाहिए।'
लेकिन तुम हमेशा कहते हो—
महेश कपूर ने अपना हाथ उठाया और पढ़ना जारी रखा।
कुछ ही देर में श्रीमती रूपा मेहरा बच्चे के साथ वहां पहुंचीं।
प्राण की आँखों में अचानक आँसू भर आए। 'नमस्ते माँ,' उसने बच्चे की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा।
बच्ची की आंखें खुली थीं, लेकिन झुर्रियों के कारण ऐसा लग रहा था मानो वह आंखें सिकोड़ रही हो। प्राण को वह बेहद रूखी और झुर्रीदार लगी, लेकिन बदसूरत नहीं। मानो वह भी प्राण को देख पा रही हो।
उसे गोद में लिए वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे। एक शिशु से कैसे बात की जाए? उसने थोड़ी देर गुनगुनाया। फिर उसने अपनी सास से पूछा, 'सविता कैसी है? वह कब चलने-फिरने लगेगी?'
'ओह, उसने पार्सल के साथ एक कस्टम नोट भेजा है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने प्राण को कागज का एक टुकड़ा देते हुए कहा।

प्राण ने अपनी सास की ओर देखा, अचानक आए इस मजाकिया अंदाज से वह हैरान था। उसे लगा कि अगर उसने भी इसी तरह का मजाक किया होता तो वह उसे डांटती।

'सच में, माँ!' उसने कहा। लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा हँस रही थीं और बच्चे के सिर के पीछे बड़े प्यार से गुदगुदी कर रही थीं। प्राण ने चिट्ठी बच्चे के पास रखी और उसमें ये लिखा था:

प्रिय पी,

इसके साथ एक शिशु पात्र संलग्न है, साइज एम, लिंग एफ, रंग आर, जिसे निरीक्षण और अनुमोदन के बाद वापस करना होगा।

मैं बिल्कुल ठीक हूँ और आपसे मिलने के लिए बेताब हूँ। मुझे बताया गया है कि दो-तीन दिनों में मैं सावधानी से चल-फिर सकूँगी। ये टांके ही हैं जिनकी वजह से मुझे कुछ काम करने में दिक्कत हो रही है।

इस बच्ची का अपना एक अलग ही व्यक्तित्व है और मुझे लगता है कि वह मुझे पसंद करने लगी है। आशा है कि आप भी इतने ही भाग्यशाली हों। उसकी नाक मुझे माँ की याद दिलाती है, लेकिन बाकी कुछ भी मुझे हमारे परिवार के किसी सदस्य की याद नहीं दिलाता। जब वह पैदा हुई थी तो बहुत चिकनी थी, लेकिन अब उसे साफ करके और मेकअप लगाकर सुंदर बना दिया गया है।

प्राण, मेरे बारे में चिंता मत करो। मैं बिल्कुल ठीक हूँ, और माँ बच्चे के पालने के बगल वाले मेरे कमरे में सोएगी ताकि मुझे दूध पिलाने के समय को छोड़कर बाकी समय आराम मिल सके।

आशा है तुम ठीक हो, मेरी प्यारी, और तुम्हें बहुत-बहुत बधाई हो। अपनी बदली हुई स्थिति के बारे में सोचना मेरे लिए मुश्किल है। मुझे पता है कि मैंने एक बच्चे को जन्म दिया है, लेकिन मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैं माँ हूँ।

ढेर सारा प्यार,
सविता
प्राण ने कुछ देर तक अपनी बेटी को झुलाया। आखिरी वाक्य पर उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। इम्तियाज ने उसे बच्चा होने की नहीं बल्कि पिता बनने की बधाई दी थी, और उसे पितृत्व की सच्चाई को स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं हुई।
बच्ची उसकी गोद में सो रही थी। प्राण उसे देखकर चकित था कि वह कितनी परिपूर्ण थी, उसका हर अंग कितना सुंदर था। इतनी छोटी होने के बावजूद, उसकी हर नस, हर अंग, पलक, होंठ, हर छोटी उंगली मौजूद थी —और ठीक से काम कर रही थी।
बच्चे का मुंह एक भावहीन मुस्कान में खुला हुआ था।
प्राण को समझ आ गया कि सविता नाक के बारे में क्या कह रही थी। हालाँकि नाक बहुत छोटी थी, फिर भी उसे लगा कि उसमें श्रीमती रूपा मेहरा की बाज जैसी नुकीली नाक की झलक है। उसने सोचा कि क्या रोने पर उसकी नाक भी उसी तरह लाल हो जाएगी। खैर, अभी जितनी लाल है, उससे ज़्यादा लाल तो नहीं हो सकती।
‘क्या वह प्यारी नहीं है?’ श्रीमती रूपा मेहरा ने पूछा। ‘अपनी दूसरी पोती को देखकर उन्हें कितना गर्व होता।’
प्राण ने बच्चे को थोड़ी देर और झुलाया और उसकी नाक को अपनी नाक से छुआया।
श्रीमती रूपा मेहरा ने पूछा, 'आप अपनी बेटी के बारे में क्या सोचती हैं?'
प्राण ने कहा, 'बच्ची होने के बावजूद उसकी मुस्कान बहुत प्यारी है।'
जैसा उसने सोचा था, श्रीमती रूपा मेहरा को उसका यह लापरवाह रवैया पसंद नहीं आया। उन्होंने उससे कहा कि अगर उसने बच्चे को जन्म दिया होता तो वह उसकी और भी कद्र करता।

‘बिल्कुल सही, माँ, बिल्कुल सही,’ प्राण ने कहा।

उसने सविता को एक छोटा सा पत्र लिखकर बताया कि बच्चा उसे पसंद आया है और उसे आश्वस्त किया कि चालाक लोग भी जीवन में ज़रूरी होते हैं। जब श्रीमती रूपा मेहरा बच्चे को लेकर ऊपर लौटीं, तो श्री और श्रीमती महेश कपूर भी उनके पीछे-पीछे आए, और प्राण छत को घूरता रहा, अपने विचारों में खोया हुआ, भविष्य की चिंता से ज़्यादा वर्तमान से खुश।

पहले दिन बच्ची को दूध पिलाने में थोड़ी दिक्कत हुई। पहले तो उसने स्तन को स्वीकार ही नहीं किया, लेकिन जैसे ही सविता ने अपनी उंगली उसके गाल पर छुई, वह तुरंत घूम गई और अपना मुंह खोल दिया। यही वह मौका था जब बच्ची के मुंह में निप्पल लगाया गया। बच्ची के चेहरे पर हैरानी के भाव दिखे। उसे ठीक से दूध पीने में भी थोड़ी परेशानी हुई। उसके बाद कोई दिक्कत नहीं हुई, बस इतना था कि दूध पीते-पीते उसे नींद आ जाती थी और उसे जगाकर दूध पिलाना पड़ता था। कभी सविता उसके कानों के पीछे गुदगुदी करती थी, कभी पैरों के तलवों पर। बच्ची इतनी आराम से और संतुष्ट थी कि कभी-कभी उसे जगाने के लिए काफी मनाना पड़ता था।

दादी, माँ और बच्चे के लिए अलग-अलग बिस्तर थे। लता को सुबह कक्षाओं में जाना होता था, लेकिन दोपहर के भोजन के समय वह अक्सर एक-दो घंटे के लिए माँ की देखभाल से छुट्टी ले लेती थी। कभी-कभी श्रीमती रूपा मेहरा, सविता और बच्चा सब सो रहे होते थे, केवल लता ही उनकी देखभाल करती थी, और कभी-कभार कोई नर्स आकर देखती थी कि सब ठीक है या नहीं। यह शांत समय होता था, और लता इसका उपयोग अपनी पंक्तियाँ याद करने के लिए करती थी। बाकी समय वह बस सोच-विचार करती रहती थी। अगर बच्चा जाग जाता या उसे डायपर

बदलने की ज़रूरत होती, तो वह ज़रूरी काम कर देती थी। बच्चा उसकी गोद में झूलने से खुश रहता था।

कभी-कभी, यहाँ बैठे-बैठे, अपनी गोद में ट्वेल्थ नाइट की चिह्नित प्रति लिए, लता प्रसिद्ध उद्धरण में 'महानता' शब्द के स्थान पर 'खुशी' शब्द का प्रयोग करती थी। वह सोचती थी कि कोई व्यक्ति सुखी जन्म लेने, सुख प्राप्त करने या उसे प्राप्त करने के लिए क्या कर सकता है। उसे लगता था कि बच्ची ने सुखी जन्म लेने की व्यवस्था कर ली थी; वह शांत थी, और अपने पिता के खराब स्वास्थ्य के बावजूद, इस संसार में सुख पाने की उसकी उतनी ही अच्छी संभावना थी जितनी किसी और की। प्राण और सविता, भले ही उनकी पृष्ठभूमि अलग-अलग थी, एक सुखी दंपत्ति थे। वे सीमाओं और संभावनाओं को पहचानते थे; उनकी आकांक्षाएँ उनकी पहुँच से बाहर नहीं थीं। वे एक-दूसरे से प्रेम करते थे—या यूँ कहें कि एक-दूसरे से प्रेम करने लगे थे। वे दोनों बिना कहे—या शायद बिना इस बारे में खुलकर सोचे भी—मान लेते थे कि विवाह और संतान एक महान वरदान हैं। अगर सविता बेचैन थी—और दोपहर की हल्की धूप में उसके सोते हुए चेहरे पर बेचैनी नहीं, बल्कि एक शांति और आनंद झलक रहा था, जिसे देखकर लता आश्चर्यचकित रह गई—तो अगर वह बेचैन थी, तो इसलिए क्योंकि उसे डर था कि बाहरी ताकतें इस महान भलाई को नष्ट कर देंगी। वह सबसे बढ़कर यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि उसके पति के साथ कुछ भी हो जाए, असुरक्षा और दुख उनके बच्चे पर न आ पड़ें। उसके पलंग के एक तरफ मेज पर रखी विधि-पुस्तक, दूसरी तरफ पालने में सो रहे बच्चे को संतुलित कर रही थी।

आजकल, जब श्रीमती रूपा मेहरा सविता या अपनी अभी तक नामहीन पोती के बारे में चिंता जतातीं या प्राण के स्वास्थ्य या वरुण की लापरवाही के बारे में लता से अपनी चिंताएं व्यक्त करतीं, तो लता पहले की तरह

अधीर नहीं होती थीं। अब उनकी मां उन्हें परिवार की रक्षक लगती थीं; और अस्पताल में जीवन और मृत्यु इतने करीब थे कि लता को लगता था कि दुनिया में स्थिरता या उससे सुरक्षा प्रदान करने वाला एकमात्र सहारा परिवार ही है। कलकत्ता, दिल्ली, कानपुर, लखनऊ—अनगिनत रिश्तेदारों से मुलाक़ातें—हर साल होने वाली भारत-पार रेल यात्राएँ जिनका अरुण लगातार मज़ाक उड़ाता था और वो जलप्रपात जो उसे परेशान करते थे, दूर के रिश्तेदारों को जन्मदिन पर कार्ड भेजना, जन्म से मृत्यु तक हर रस्म में परिवार की गपशप, और अपने पति की निरंतर याद—वो अनुपस्थित लेकिन निस्संदेह अब भी कृपालु संरक्षक—ये सब एक घरेलू देवी के कार्यों का हिस्सा माने जा सकते हैं, जिनके प्रतीक (नकली दांत, काला थैला, कैंची और अंगुली, सोने और चांदी के सितारे) उनके जाने के बहुत बाद भी कोमलता से याद किए जाएंगे—जैसा कि वह खुद भी अक्सर कहती थीं। वह लता की खुशी चाहती थीं, ठीक वैसे ही जैसे सविता अपने बच्चे की खुशी चाहती थीं; और उन्होंने इसके लिए यथासंभव दृढ़ संकल्प से प्रयास किया था। लता को अब इस बात का कोई मलाल नहीं था।

इस साल अचानक ही शादी के बाज़ार में आ जाने और शहर-शहर भटकने के कारण लता ने शादियों (सहगल परिवार, चटर्जी परिवार, अरुण और मीनाक्षी, महेश कपूर और उनकी पत्नी, प्राण और सविता) को पहले से कहीं ज़्यादा गंभीरता से देखना शुरू कर दिया था। लेकिन चाहे यह उसकी माँ के दबाव के कारण हो, या उसके अत्यधिक प्रेम के कारण, या इन विभिन्न परिवारों की झलक के कारण, या प्राण की बीमारी के कारण, या सविता के बच्चे के जन्म के कारण, या इन सभी के मिले-जुले प्रभाव के कारण, लता को लगा कि वह बदल गई है। सोई हुई सविता शायद बातूनी मालती से कहीं ज़्यादा प्रभावशाली सलाहकार थी।

लता कबीर के साथ भाग जाने की अपनी इच्छा को एक तरह के आश्चर्य

के साथ याद कर रही थी, हालांकि उसके मन में कबीर के लिए जो भावनाएं थीं, वे अभी भी उसके लिए बनी हुई थीं। लेकिन ये भावनाएं उसे कहाँ ले जाएंगी? क्या प्राण के प्रति सविता के समान धीरे-धीरे विकसित होने वाला, स्थिर आकर्षण उसके लिए, परिवार के लिए और भविष्य में होने वाली उसकी संतानों के लिए सबसे अच्छा नहीं होगा?

अभ्यास सत्र के हर दिन वह डरती और उम्मीद करती थी कि कबीर उसके पास आकर कुछ ऐसा कहेगा या करेगा जिससे उसके चारों ओर बुने गए अपरिचित, अत्यधिक ठोस ताने-बाने में एक बार फिर दरार पड़ने लगेगी। लेकिन अभ्यास सत्र बीतते गए, मिलने का समय आ गया, और बातें पहले की तरह अनकही और अनसुलझी ही रहीं।

बहुत से लोग बच्ची को देखने आए: इम्तियाज़, फ़िरोज़, मान, भास्कर, बूढ़ी श्रीमती टंडन, केदारनाथ, वीना, स्वयं नवाब साहब, मालती, श्री और श्रीमती महेश कपूर, श्री शास्त्री (जो सविता को देने का वादा किया था, वह विधि-पुस्तक लेकर आए थे), डॉ. किशन चंद सेठ और पार्वती, और कई अन्य लोग, जिनमें रुधिया परिवार के कई रिश्तेदार भी शामिल थे जिन्हें सविता नहीं जानती थी। स्पष्ट था कि बच्ची किसी दंपत्ति की नहीं, बल्कि एक पूरे परिवार की संतान थी। दर्जनों लोग उसके ऊपर मंडरा रहे थे (कुछ उसकी सुंदरता की प्रशंसा कर रहे थे, तो कुछ उसके स्त्री होने पर आपत्ति जता रहे थे) और माँ द्वारा दिखाए गए किसी भी अधिकार जताने वाले भाव पर कड़ी आपत्ति जताई जा रही थी। सविता, यह सोचकर कि बच्ची पर उसका कुछ विशेष अधिकार है, दो दिनों तक उसके सिर के चारों ओर छाए प्रशंसा के नमों से उसे बचाने की कोशिश करती रही। लेकिन अंत में उसने हार मान ली और स्वीकार कर लिया कि रुधिया और ब्रह्मपुर के कपूरों को अपने तरीके से अपने कबीले के इस नए सदस्य का स्वागत करने का पूरा अधिकार है। वह सोच रही थी कि उसके

भाई अरुण को रुधिया परिवार के बारे में क्या लगता होगा। लता ने कलकत्ता को एक टेलीग्राम भेजा था, लेकिन मेहरा परिवार की उस शाखा से अभी तक कोई खबर नहीं मिली थी।

13.13

'नहीं, दीदी, सच में—मुझे इसमें मज़ा आ रहा है। इसमें कोई परेशानी नहीं है। मुझे कभी-कभी ऐसी चीजें पढ़ना अच्छा लगता है जो मुझे समझ में नहीं आतीं।'

'तुम अजीब हो,' सविता ने मुस्कुराते हुए कहा।

'हां। ठीक है, बशर्ते मुझे पता हो कि वे वास्तव में तर्कसंगत हैं।'

‘क्या आप उसे थोड़ी देर के लिए पकड़ कर रखेंगे?’

लता ने यातना पर लिखी किताब नीचे रख दी, सविता के पास गई और बच्चे को अपने हाथ में ले लिया। बच्चा थोड़ी देर तक उसे देखकर मुस्कुराता रहा और फिर सो गया।

उसने बच्चे को गोद में झुलाया, जो उसकी बाहों में काफी संतुष्ट लग रहा था। लता ने कहा, 'यह सब क्या है, बेटा? यह सब क्या है? थोड़ा जाग जाओ और हमसे बात करो, अपनी लता मौसी से बात करो। जब मैं जागती हूँ तो तुम सो जाते हो, जब मैं सोती हूँ तो तुम जाग जाते हो, चलो अब सीधे-सीधे बात करते हैं, ठीक है? यह सब ठीक नहीं है, है ना?'

वह आश्चर्यजनक कुशलता से बच्ची को एक हाथ से दूसरे हाथ में ले जाती रही, और इस दौरान उसके सिर को लगातार सहारा देती रही।

‘कानून की पढ़ाई करने के बारे में आपका क्या ख्याल है?’ सविता ने कहा। ‘क्या आपको लगता है कि मुझमें इसके लिए उपयुक्त स्वभाव है? सविता मेहरा, सरकारी वकील; सविता मेहरा, वरिष्ठ अधिवक्ता; हे भगवान, मैं एक पल के लिए भूल ही गई थी कि मैं कपूर परिवार से हूँ। सविता कपूर, एडवोकेट-जनरल; श्रीमती न्यायमूर्ति सविता कपूर। क्या

मुझे “माई लॉर्ड” या “माई लेडी” कहकर पुकारा जाएगा?’
'अंडे से चूजा निकलने से पहले ही उसकी गिनती मत करो,' लता ने हंसते हुए कहा।
‘लेकिन शायद ये कभी फूटें ही न,’ सविता ने कहा। ‘मैं अभी ही गिन लूं तो बेहतर है। मां को तो लगता है कि वकालत करना कोई बुरा विचार नहीं है। उन्हें लगता है कि अगर उन्होंने कोई पेशा अपनाया होता तो शायद उन्हें मदद मिलती।’
‘अरे, प्राण को कुछ नहीं होगा,’ लता ने बच्ची को देखकर मुस्कुराते हुए कहा। ‘क्या सच में? पापा को कुछ नहीं होगा, कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं। वो तो सालों तक अपने बेवकूफी भरे अप्रैल फूल के मज़ाक करते रहेंगे। जानते हो, उसकी नब्ज़ तो उसके सिर से भी महसूस की जा सकती है?’
‘कितना अद्भुत!’ सविता ने कहा। ‘मेरे लिए दोबारा पतला होने की आदत डालना बहुत मुश्किल होगा। जब आप गर्भवती होती हैं और आपका पेट निकला हुआ होता है, तो आप विश्वविद्यालय परिसर में सभी लड़कियों के बीच लोकप्रिय हो जाती हैं, और लोग आपको अपने बारे में अंतरंग बातें बताते हैं।’
लता ने नाक सिकोड़ी। 'लेकिन अगर हम अंतरंग बातें सुनना ही न चाहें तो?' उसने बच्चे से पूछा। 'अगर हम किसी शांत छोटे से नदी-नाव में अकेले ही मजे से घूमना चाहें और हमें नियाग्रा फॉल्स और बरसात महल में कोई दिलचस्पी न हो तो?'
सविता कुछ पल चुप रही, फिर बोली: 'ठीक है, मैं उसे वापस ले जाती हूँ। और तुम मुझे थोड़ा और पढ़कर सुनाओ। वह कौन सी किताब है?'
‘ट्वेल्थ नाइट’।
नहीं, दूसरा वाला—हरा और सफेद कवर वाला।

‘समकालीन कविता,’ लता ने धीरे से कहा, और किसी अज्ञात कारण से उसका चेहरा लाल हो गया।

‘ओह, मुझे थोड़ा पढ़कर सुनाओ,’ सविता ने कहा। ‘माँ को लगता है कि कविता मेरे लिए अच्छी है। सुकून देने वाली। शांत करने वाली।’

यह गर्मी की शाम थी।

बूढ़े कैस्पर का काम पूरा हो गया था।

लता ने पाठ करना शुरू किया:

और वह अपनी झोपड़ी के दरवाजे के पास था

धूप में बैठा था।

मुझे याद है, उस कविता में कहीं न कहीं एक खोपड़ी का ज़िक्र है। ओह हाँ, और माँ को वो भयानक कविता "कैसाबियांका" भी बहुत पसंद है, जिसमें लड़का डेक पर जल रहा होता है—और "लॉर्ड उलिन की बेटी" भी। उसमें कहीं न कहीं मृत्यु और दिल टूटने का ज़िक्र तो होना ही चाहिए, वरना वो असली कविता नहीं है। मुझे नहीं पता कि इस किताब की कविताओं के बारे में वो क्या सोचेंगी। ठीक है, आप क्या सुनना चाहते हैं?

‘इसे बेतरतीब ढंग से खोलो,’ सविता ने सुझाव दिया। और किताब ऑडेन की कविता ‘कानून, कहते हैं माली’ पर खुली।

‘उचित है,’ लता ने कहा और पढ़ना शुरू कर दिया। लेकिन जैसे ही उसने पन्ना पलटकर आखिरी कुछ पंक्तियाँ पढ़ीं और कवि द्वारा कानून और प्रेम के बीच की तुलना को पढ़ा, उसका चेहरा पीला पड़ गया:

‘प्यार की तरह, हम नहीं जानते कि यह कहाँ से आया और क्यों से आया।’

प्यार की तरह हम किसी को मजबूर नहीं कर सकते या उसे भगा नहीं सकते।

प्यार की तरह हम अक्सर रोते हैं
प्यार की तरह, हम इसे शायद ही कभी बरकरार रख पाते हैं।
उसने किताब बंद कर दी।
‘अजीब कविता है,’ उसने कहा।
‘जी हां,’ सविता ने सावधानी से कहा। ‘चलिए यातना के विषय पर वापस चलते हैं।’

13.14

मीनाक्षी मेहरा बच्चे के जन्म के तीन दिन बाद ब्रह्मपुर पहुंचीं। वह अपनी बहन काकोली के साथ आई थीं, लेकिन उनकी बेटी अपर्णा उनके साथ नहीं थीं। वह कलकत्ता से ऊब चुकी थीं और उन्हें आराम की जरूरत थी, और टेलीग्राम ने उन्हें एक बहाना दे दिया।

सबसे पहले तो वह अरुण से तंग आ चुकी थी, जो इन दिनों बहुत उबाऊ और रूढ़िवादी हो गया था, और खुर्रमशहर की चाय पर लगने वाले प्रीमियम के अलावा उसे किसी और चीज़ में कोई दिलचस्पी नहीं रही थी। वह अपर्णा से भी परेशान थी, जो अपनी 'मम्मी ये', 'मम्मी वो' और 'मम्मी आप सुन नहीं रही हैं' जैसी बातों से उसे चिढ़ाने लगी थी। वह उस बूढ़ी औरत, हनीफ और अंशकालिक माली से बहस करते-करते थक चुकी थी। उसे लग रहा था जैसे वह पागल हो रही हो। वरुण घर में चुपके से आता-जाता रहता था, और हर बार जब वह अपने चोरी-छिपे शमशु वाले अंदाज़ में 'हे-हे-हे' करता, तो उसे चीखने का मन करता था। बिली के साथ कभी-कभार दोपहर बिताना और उन चालाक महिलाओं के साथ कनास्ता खेलना भी बेस्वाद लगने लगा था। यह बहुत ही भयानक था। सचमुच, कलकत्ता मुँह में छींटे के सिवा कुछ नहीं था।

फिर उन्हें यह टेलीग्राम मिला जिसमें बताया गया था कि अरुण की बहन ने एक बच्चे को जन्म दिया है। यह किसी वरदान से कम नहीं था।

दीपांकर ने एक के बाद एक कई पोस्टकार्ड भरकर ब्रह्मपुर की सुंदरता और सविता के ससुराल वालों के अच्छे स्वभाव का वर्णन किया था। वे अवश्य ही मेहमाननवाज होंगे और सविता पंखे के नीचे लेटकर अपने तनाव को शांत कर पाएगी। मीनाक्षी को छुट्टी की जरूरत महसूस हो रही थी और ब्रह्मपुर जाकर मदद करने का यह एक शानदार अवसर था। वह अपनी भाभी को बेटी की देखभाल के बारे में बेहतरीन सलाह दे सकती थी। उसने अपर्णा की सफलतापूर्वक देखभाल की थी, और इससे उसे अपनी भतीजी की देखभाल करने का आत्मविश्वास मिला।

मीनाक्षी को बुआ बनकर बहुत खुशी हुई, भले ही यह उसके पति की बहन के माध्यम से ही क्यों न हो। उसके अपने भाइयों और बहन ने उसे एक भी भतीजा या भतीजी नहीं दी थी। इस मामले में अमित सबसे बड़ा दोषी था; उसे कम से कम तीन साल पहले ही शादी कर लेनी चाहिए थी। वास्तव में, मीनाक्षी सोचती थी, उसे अपनी गलती का प्रायश्चित अभी कर लेना चाहिए: लता से शादी करके।

ब्रह्मपुर जाने का एक और कारण यह था; वहाँ पहुँचकर वह सारी तैयारी कर लेगी। ज़ाहिर है, अमित को अपनी योजना बताने का तो सवाल ही नहीं था; वह तो आग बबूला हो जाता। कभी-कभी तो वह चाहती थी कि वह आग बबूला हो जाए। यकीनन कवियों को अमित से ज़्यादा भावुक होना चाहिए। लेकिन वह कल्पना कर सकती थी कि अमित तीखे लहजे में कहेगा: 'मीनाक्षी, तुम तो अपना प्रेम निवेदन खुद करो, मुझे करने दो।' नहीं, बेहतर यही होगा कि वह अमित को कुछ भी न बताए।

लेकिन जब काकोली एक दोपहर सनी पार्क घूमने आई, तो उसे सारी बातें पता चल गईं और वह बहुत खुश हुई। उसने लता को शांत स्वभाव की लेकिन अच्छी लड़की समझा, जिसमें बीच-बीच में अचानक कुछ ऐसी बातें आ जाती थीं जो माहौल को खुशनुमा बना देती थीं। अमित को भी

लता पसंद आती थी, लेकिन वह अपने लिए कुछ भी करने में असमर्थ था, वह बस चीजों पर विचार करने और समय बीतने देने में ही संतुष्ट रहता था। काकोली को लगा कि लता और अमित एक-दूसरे के लिए बिल्कुल सही हैं, लेकिन दोनों को थोड़ा प्रोत्साहन चाहिए। उसने उनके रिश्ते को और मजबूत करने के लिए काकोली की शैली में एक दोहा सुनाया।

'मनमोहक लता, जन्म से ही'

Lady Lata Chatterji.'

मीनाक्षी की खिलखिलाती हंसी और बदले में मिली उसकी सेवा से उसे पुरस्कृत किया गया:

लज़ीज़ लता, क्या यह मुश्किल है?

एक प्रसिद्ध कवि की पत्नी होने के नाते?

काकोली ने हंसते हुए गेंद को नेट के पार नीची दिशा में मारा:

'ओह, तुकबंदी में यह कितना कठिन है:

प्यार करने वाला, स्नेह दिखाने वाला, हर समय।

और मीनाक्षी ने रैली को आगे बढ़ाया:

'चुंबन, याद आना, हर दिन,'

गले मिलते हुए, हर पल उलझन में फंसे हुए।

काकोली को अचानक याद आया कि उसने कडल को पलंग से बांध रखा है, और उसने मीनाक्षी से कहा कि उसे तुरंत घर जाना होगा। 'लेकिन क्यों न हम दोनों साथ में ब्रह्मपुर चलें?' उसने सुझाव दिया। 'प्रांतों में,' उसने हल्के-फुल्के अंदाज़ में कहा।

'क्यों नहीं?' मीनाक्षी ने कहा। 'हम एक-दूसरे के साथ रह सकते हैं। लेकिन क्या तुम्हें हंस की याद नहीं आएगी?'

'हमें सिर्फ एक हफ्ते के लिए जाना है। उसे मेरी कमी महसूस होना अच्छा

लगेगा। और मुझे उसकी कमी जो भी तकलीफ हो, वह इसके लायक होगी।'

और कडल्स? दीपांकर का यह न बताना कि वह कब वापस आ रहा है, वाकई बहुत परेशान करने वाला है। वह सालों से दूर है, और अब जब उसके पास पोस्टकार्ड खत्म हो गए हैं, तो हमें उससे कभी कोई खबर नहीं मिलेगी।

'ये तो उसकी खासियत है। खैर, अमित कडल्स का रखवाला बन सकता है।'

जब श्रीमती चटर्जी को इस यात्रा के बारे में पता चला, तो उन्हें हंस के न मिलने से ज्यादा काकोली के क्लास छूटने की चिंता थी।

'ओह, माँ,' काकोली विलाप करते हुए बोली, 'इतनी उबाऊ बातें मत करो। क्या तुम कभी जवान नहीं थीं? क्या तुमने कभी जीवन के बंधनों से मुक्ति पाने की इच्छा नहीं की? कॉलेज में मेरी उपस्थिति बहुत अच्छी है, और एक सप्ताह से कोई फर्क नहीं पड़ेगा। हम हमेशा किसी डॉक्टर से यह प्रमाणित करवा सकते हैं कि मैं बीमार थी। किसी जानलेवा बीमारी से।' उसने विंटरराइज़ की दो बर्फीली पंक्तियाँ सुनाईं, जिनमें उस सराय का ज़िक्र था जो मृत्यु का प्रतीक थी। 'या मलेरिया,' उसने आगे कहा। 'देखो, वहाँ एक मच्छर है।'

न्यायमूर्ति चटर्जी ने अपनी किताब से नजरें उठाते हुए कहा, 'हम ऐसा कुछ नहीं करेंगे।'

लेकिन काकोली ने यह बात मानते हुए भी, ब्रह्मपुर की सैर के बारे में अपने माता-पिता को खूब समझाया। 'मीनाक्षी को मेरी ज़रूरत है। अरुण काम में बहुत व्यस्त है। परिवार को हमारी ज़रूरत है,' उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा। 'बच्चे बहुत पेचीदा होते हैं। हर किसी का साथ मददगार होता है। और लता बहुत अच्छी लड़की है, उसकी संगति से मेरा मन सुधरेगा।

अमित से पूछ लो, क्या वो अच्छी नहीं है? और सुधर भी रही है।'
'अरे चुप रहो, कुकू, मुझे कीट्स के साथ अकेला छोड़ दो,' अमित ने कहा।
'कुकु, कीट्स, कुकु, कीट्स,' काकोली ने पियानो पर बैठते हुए कहा। 'अमित, मैं तुम्हारे लिए क्या बजाऊं? ला-ला-लीबेस्ट्राउम?'
अमित ने उसे घूरकर देखा। लेकिन काकोली अपनी गति बनाए रखी:
'अमित अपने बिस्तर पर लेटा हुआ है,
उसके दिमाग में लता के सपने आते रहते हैं।
वह अपनी चादरों पर रो रहा था, सिसक रहा था।
कीट्स पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा हूँ।

अमित ने कहा, 'तुम मेरी जान-पहचान की सबसे बेवकूफ लड़की हो। लेकिन तुम अपनी बेवकूफी का प्रचार क्यों करती हो?'
'शायद इसलिए कि मैं बेवकूफ हूँ!' काकोली ने कहा और अपने बेवकूफी भरे जवाब पर खिलखिलाकर हंस पड़ी। 'लेकिन क्या तुम उसे ज़रा सा भी पसंद नहीं करते? थोड़ा सा? ज़रा सा?'
अमित अपने कमरे में जाने के लिए उठा, लेकिन इससे पहले कि वह जा पाता, उस पर एक और काकोली दोहे से गोली चलाई गई।
'कुकु-घड़ी उसका नाम पुकारती है।'
कवि शर्म से लाल होकर भाग रहा है।
'सच में, कुकू!' उसकी माँ ने कहा। 'हदें तो होती ही हैं।' वह अपने पति की ओर मुड़ी। 'तुम उससे कभी कुछ नहीं कहते। तुम कभी कोई सीमा नहीं तय करते। तुम उसे कभी कुछ करने से नहीं रोकते। तुम हमेशा उसकी बात मान लेते हो। पिता होने का क्या मतलब?'
न्यायमूर्ति चटर्जी ने कहा, 'पहले तो ना कहना।'

13.15

ब्रह्मपुर की अधिकांश खबरें श्रीमती रूपा मेहरा के सूचनात्मक पत्रों के माध्यम से कलकत्ता तक पहुँच चुकी थीं। लेकिन उनका आखिरी पत्र टेलीग्राम से पहले ही पहुँच गया था। इसलिए जब मीनाक्षी और काकोली प्राण के घर पर आराम से बैठने के इरादे से ब्रह्मपुर पहुँचीं, तो उन्हें यह देखकर गहरा सदमा लगा कि प्राण वहाँ नहीं थे, बल्कि अस्पताल में बीमार थे। सविता स्वयं अस्पताल में थीं, और लता और उनकी माँ प्राण और सविता की देखभाल में व्यस्त थीं, यह स्पष्ट था कि मीनाक्षी और कुकू को उस तरह से अस्पताल में नहीं रखा जा सकता था, जिस तरह से वे आदी थीं।

मीनाक्षी को यह विश्वास करना मुश्किल लग रहा था कि कपूर दंपति ने अपने प्रेम प्रसंगों का समय इतना खराब रखा था कि पति-पत्नी दोनों एक ही समय में बिस्तर पर पड़ गए थे।

काकोली अधिक सहानुभूतिपूर्ण थी, उसने इस तथ्य को स्वीकार किया कि शिशु और उसकी मां पहले से सलाह-मशविरा नहीं कर सकते। उसने पूछा, 'हम प्राण के पिता के घर क्यों नहीं रुक जाते, उसका नाम क्या है, प्रेम निवास?'

मीनाक्षी ने जवाब दिया, 'यह असंभव है। माँ को तो अंग्रेजी भी नहीं आती। और उनके पास पश्चिमी शैली के शौचालय नहीं होंगे—बस ज़मीन में बने वो भयानक गड्ढे ही होंगे।'

‘तो अब हम क्या करें?’

‘कुकू, उस बूढ़े आदमी के बारे में क्या ख्याल है जिसका पता बाबा ने हमें दिया था?’

लेकिन भला कौन ऐसे व्यक्ति के साथ रहना चाहेगा जो बुढ़ापे की यादों में डूबा रहता हो?

‘अच्छा, यह कहाँ है?’

‘उसने तुम्हें दिया था। यह तुम्हारे बैग में ही होगा,’ काकोली ने कहा।

‘नहीं, कुकू, उसने यह तुम्हें दिया है,’ मीनाक्षी ने कहा।

काकोली ने कहा, 'मुझे पूरा यकीन है कि उसने ऐसा नहीं किया। कृपया जांच करवा लें।'

‘अच्छा—ओह, हाँ, यह रहा। शायद यह उस पर है। हाँ, यह वही है: श्रीमान और श्रीमती मैत्रा। चलिए उन पर उतरते हैं।’

‘पहले बच्चे को देख लेते हैं।’

‘हमारे सामान का क्या होगा?’

मीनाक्षी और काकोली ने सज-धज कर कपड़े बदले, क्रमशः बैंगनी और लाल सूती साड़ी पहनी, मतीन को उनके लिए पौष्टिक नाश्ता लाने का आदेश दिया और सिविल लाइंस के लिए तांगे पर सवार होकर चल पड़ीं। मीनाक्षी यह देखकर हैरान थी कि ब्रह्मपुर में टैक्सी मिलना इतना मुश्किल था, और घोड़े के पादने पर वह कांप उठती थी।

मीनाक्षी और काकोली ने झट से श्रीमान और श्रीमती मैत्रा पर अपना प्रभाव जमा लिया और फिर तांगे के पीछे से हाथ हिलाते हुए अस्पताल की ओर दौड़ पड़ीं।

“खैर, उनका दावा है कि वे चटर्जी की बेटियाँ हैं,” बूढ़े पुलिसवाले ने कहा। “उनके बच्चे बहुत चंचल लगते हैं। उस दूसरे लड़के का नाम क्या था, उनका बेटा?”

श्रीमती मैत्रा, जो उनकी कमर का लगभग चार इंच हिस्सा देख पाने से बेहद आहत थीं, ने अपना सिर हिलाया और सोचा कि कलकत्ता किस हालत में पहुँच गया है। उनके अपने बेटे के पत्रों में कमर के बारे में कोई ज़िक्र नहीं था।

वे दोपहर के भोजन के लिए कब लौटेंगे?

उन्होंने कुछ नहीं कहा।

“खैर, चूंकि वे हमारे मेहमान हैं, हमें उनका इंतजार करना चाहिए। लेकिन मुझे दोपहर तक बहुत भूख लग जाती है,” बूढ़े श्री मैत्रा ने कहा। “और फिर मुझे दो घंटे तक माला जपना पड़ता है, और अगर मैं देर से शुरू करता हूँ, तो सब कुछ गड़बड़ हो जाता है। हमें कुछ और मछली भी ले लेनी चाहिए।”

उनकी पत्नी ने कहा, 'हम एक बजे तक इंतजार करेंगे, फिर खाना खाएंगे। अगर वे नहीं आ पाए तो हमें फोन कर देंगे।'

और इसलिए उन दो विचारशील बुजुर्गों ने उन दो युवतियों के साथ तालमेल बिठा लिया, जिनका उनके साथ भोजन करने का कोई इरादा नहीं था, और जिनके मन में फोन करने का विचार तो बिल्कुल भी नहीं आता था।

*

श्रीमती रूपा मेहरा प्राण के कमरे से सविता के कमरे में बच्चे को ले जा रही थीं, तभी उन्होंने बैंगनी रंग की मीनाक्षी और गहरे लाल रंग की काकोली को गलियारे में अपनी ओर आते देखा। वह लगभग बच्चे को गिरा ही देतीं।

मीनाक्षी ने वो छोटी-छोटी सोने की अजीबोगरीब चीज़ें पहन रखी थीं, जिन्हें देखकर श्रीमती रूपा मेहरा हमेशा परेशान हो जाती थीं। और काकोली स्कूल के दिनों में यहाँ क्या कर रही थी? श्रीमती रूपा मेहरा ने सोचा, सच में, चटर्जी परिवार अपने बच्चों पर कोई अनुशासन नहीं थोपता। इसीलिए तो वे सब इतने अजीब हैं।

उसने ऊँची आवाज़ में कहा: ‘ओह, मीनाक्षी, काकोली, कितना प्यारा सरप्राइज है। क्या तुमने बच्ची को देखा है? नहीं, बिलकुल नहीं देखा होगा। ज़रा उसे देखो, कितनी प्यारी है ना? और सब कहते हैं कि उसकी

नाक बिल्कुल मेरी जैसी है।'

'कितना प्यारा है,' मीनाक्षी ने सोचा, क्योंकि बच्चा देखने में लाल चूहे जैसा लग रहा था, जन्म के कुछ दिनों बाद उसकी अपर्णा जितनी खूबसूरत बिल्कुल नहीं थी।

'और मेरा प्रियतम कहाँ है?' श्रीमती रूपा मेहरा ने पूछा।

एक पल के लिए मीनाक्षी को लगा कि श्रीमती रूपा मेहरा अरुण के बारे में बात कर रही हैं। फिर उसे एहसास हुआ कि उसकी सास अपर्णा के बारे में बात कर रही थीं।

'बेशक, कलकत्ता में।'

'आप उसे अपने साथ नहीं लाए?' श्रीमती रूपा मेहरा इस मातृत्वहीनता पर अपना आश्चर्य मुश्किल से छिपा सकीं।

'ओह, माँ, यात्रा करते समय कोई पूरी दुनिया को अपने साथ नहीं ले जा सकता,' मीनाक्षी ने शांत भाव से कहा। 'अपर्णा कभी-कभी बहुत परेशान करती है, और अगर वह मेरे साथ होती तो मैं यहाँ बिल्कुल भी मदद नहीं कर पाती।'

'आप मदद करने आए हैं?' श्रीमती रूपा मेहरा अपनी आवाज में आश्चर्य और नाराजगी को मुश्किल से छिपा पाईं।

'जी मां,' काकोली ने सरलता से कहा।

लेकिन मीनाक्षी ने विस्तार से बताया: 'जी हाँ, बिल्कुल माँ, प्यारी। कितनी प्यारी बच्ची है। मुझे किसी की याद दिलाती है—खैर, वह अनोखी है, वह मुझे किसी और की नहीं, बल्कि सिर्फ अपनी ही याद दिलाती है।' मीनाक्षी खिलखिलाती हंसी हंसी। 'अब सविता का कमरा कहाँ है?'

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'सविता आराम कर रही है।'

मीनाक्षी ने कहा, 'लेकिन वह हमें देखकर बहुत खुश होगी। चलो, उससे मिलने चलते हैं। लगता है उसके दूध पिलाने का समय हो गया है। छह,

दस, दो, छह, दस, जैसा कि डॉ. इवांस ने अपर्णा के लिए सलाह दी थी। और अभी लगभग दस बज रहे हैं।'

और वे सविता के पास पहुँचे, जो अभी भी काफी थकी हुई थी और टांकों के खिंचाव के कारण उसे बहुत दर्द हो रहा था। फिर भी वह बिस्तर पर बैठी थी और कानून की किताब के बजाय महिलाओं की पत्रिका पढ़ रही थी।

सविता उन्हें देखकर आश्चर्यचकित तो हुई, लेकिन प्रसन्न भी हुई। उसके साथ बैठी लता भी बेहद खुश थी। उसे मीनाक्षी द्वारा उसे संवारने के प्रयास अच्छे लग रहे थे; और उसे उम्मीद थी कि कुकू की चंचलता से सबका मूड अच्छा हो जाएगा। अरुण की शादी के बाद से सविता कुकू से केवल दो बार ही मिली थी।

'आप यहां मिलने के निर्धारित समय के बाहर कैसे आ गए?' सविता ने पूछा, जो अब काफी योद्धा जैसी लग रही थी, उसके दोनों गालों पर चमकीली लिपस्टिक लगी हुई थी।

'ओह, काकोली और मैं रिसेप्शन डेस्क के लिए काफी थीं,' मीनाक्षी ने कहा। और सचमुच, हक्का-बक्का क्लर्क को समझ नहीं आ रहा था कि इन ग्लैमरस, कमर खुली महिलाओं को अपने पास से आसानी से गुजरने से कैसे रोके।

काकोली ने बड़े ही सहज अंदाज में उसे एक चुंबन दिया था। वह अभी भी उससे उबर रहा था।

13.16

कलकत्ता और ब्रह्मपुर की खबरें तेजी से एक-दूसरे को सुनाई दे रही थीं। अरुण काम में बेहद व्यस्त था, वरुण आईएएस परीक्षा की तैयारी में गंभीरता से कोई दिलचस्पी नहीं दिखा रहा था, और भाइयों के बीच खूब झगड़े होते थे, अरुण समय-समय पर वरुण को घर से निकालने की

धमकी देता रहता था। अपर्णा की शब्दावली तेजी से बढ़ रही थी; कुछ दिन पहले उसने कहा था: 'पापा, मैं उदास हूँ।' मीनाक्षी को अचानक अपर्णा की याद आने लगी। बच्ची को सविता की गोद में लिपटा देखकर, उसे अपर्णा के बचपन की याद आ गई, दूध पिलाते समय उसे जो अपनापन महसूस होता था, अपर्णा के एक अलग और अक्सर जिद्दी इंसान बनने से पहले उसके मन में जो अपनापन था।

'उसके गले में नाम का पट्टा क्यों नहीं है?' उसने पूछा। 'डॉक्टर इवांस हमेशा नाम के पट्टे लगाने पर ज़ोर देते थे, ताकि अगर बच्चे खो जाएं या गलती से बदल जाएं तो पता चल सके।' मीनाक्षी के छोटे झुमके चमक उठे जब उसने इस भयानक विचार पर अपना सिर हिलाया।

श्रीमती रूपा मेहरा चिढ़ गईं। 'मैं यहां यह सुनिश्चित करने के लिए हूं कि कुछ भी अप्रिय घटना न हो। माताओं को अपने बच्चों के साथ रहना चाहिए। जब बच्चे का पालना इस कमरे में है तो उसे कौन चुरा सकता है?'

मीनाक्षी ने आगे कहा, 'बेशक, कलकत्ता में व्यवस्था कहीं बेहतर है। इरविन नर्सिंग होम में, जहाँ अपर्णा का जन्म हुआ था, वहाँ शिशुओं के लिए एक अलग नर्सरी है, और आप उन्हें केवल शीशे के पीछे से ही देख सकते हैं—ज़ाहिर है, संक्रमण से बचाव के लिए। यहाँ हर कोई शिशु के ऊपर साँस लेता है और बात करता है, और हवा रोगाणुओं से भरी होती है। वह आसानी से बीमार पड़ सकती है।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने सख्ती से कहा, 'सविता आराम करने की कोशिश कर रही है। मीनाक्षी, ये विचार आपको सुकून नहीं देंगे।'

'मैं सहमत हूँ,' काकोली ने कहा। 'मुझे लगता है यहाँ सब कुछ बहुत बढ़िया ढंग से चल रहा है। असल में, मुझे लगता है कि अगर बच्चों की अदला-बदली हो जाए तो बहुत मज़ा आएगा। जैसे 'राजकुमार और

जिप्सी' में होता है।' यह एक रोमांटिक उपन्यास था जिसे कुकू ने हाल ही में पढ़ा था। 'दरअसल,' उसने आगे कहा, 'यह बच्चा मुझे कुछ ज़्यादा ही लाल और झुर्रियों वाला लग रहा है। मैं दूसरा बच्चा माँगूँगी।' वह हँस पड़ी।

लता ने कहा, 'कुकु, तुम्हारा गायन और पियानो बजाना कैसा चल रहा है? और हंस कैसा है?'

'मुझे लगता है मुझे बाथरूम जाना है, माँ—क्या आप मेरी मदद कर सकती हैं?' सविता ने पूछा।

मीनाक्षी और काकोली ने एक साथ कहा, 'मुझे मदद करने दीजिए।'

'धन्यवाद, लेकिन माँ और मुझे ऐसी चीजों की आदत है,' सविता ने शांत और आत्मविश्वास भरे लहजे में कहा। उसके लिए बाथरूम तक जाना मुश्किल था; टांकों की वजह से हर चीज़ में दर्द बढ़ गया था। दरवाजा बंद करने के बाद उसने श्रीमती रूपा मेहरा से कहा कि वह काफी थकी हुई है, और मीनाक्षी और काकोली को शाम को मिलने के समय आने के लिए कह देना चाहिए।

इसी बीच मीनाक्षी और काकोली लता से बात कर रही थीं और उन्होंने फैसला कर लिया था कि वे उस दोपहर 'ट्वेल्थ नाइट' के पूर्वाभ्यास को देखने आएंगी।

मीनाक्षी ने धीमी आवाज़ में कहा, 'मैं सोचती हूँ कि शेक्सपियर से शादी करना कैसा रहा होगा, और उनसे हर समय प्रेम और जीवन के बारे में इतनी अद्भुत काव्यात्मक बातें सुनना कैसा रहा होगा।'

लता ने कहा, 'उन्होंने ऐनी हैथवे से ज्यादा बात नहीं की। वे ज्यादातर समय वहां मौजूद नहीं रहते थे। और प्रोफेसर मिश्रा के अनुसार, उनकी कविताओं से यह संकेत मिलता है कि उन्हें अन्य लोगों में भी रुचि थी - एक से अधिक लोगों में।'

‘लेकिन कौन नहीं है?’ मीनाक्षी ने कहा, फिर अचानक रुक गई, उसे याद आया कि लता आखिर अरुण की बहन थी। ‘खैर, मैं शेक्सपियर को कुछ भी माफ कर दूंगी। एक कवि से शादी करना कितना अद्भुत होगा। उसकी प्रेरणा बनना, उसे खुश करना। मैं यही बात अमित से कुछ दिन पहले कह रही थी, लेकिन वह इतना विनम्र है कि उसने सिर्फ इतना कहा: “मुझे लगता है मेरी पत्नी को बहुत मजा आएगा।”’

‘यह तो बिलकुल बकवास है,’ काकोली ने कहा। ‘अमित का स्वभाव बहुत प्यारा है। अरे, कडल्स तो उसे बाकी सब लोगों से भी कम काटता है।’

लता ने कुछ नहीं कहा। मीनाक्षी और कुकू बेहद स्पष्टवादी बातें कर रही थीं, और अमित के बारे में उनकी बातें लता को चिढ़ा रही थीं। उसे पूरा यकीन था कि अमित इस मिशन के लिए राज़ी नहीं हुआ होगा। उसने अपनी घड़ी देखी और महसूस किया कि वह क्लास के लिए लगभग लेट हो चुकी है।

‘तीन बजे सभागार में मिलते हैं,’ उसने कहा। ‘क्या आप प्राण को भी नहीं देखना चाहेंगे?’

‘प्राण? ओह, हाँ।’

‘वह कमरा नंबर 56 में है। भूतल पर। आप कहाँ ठहरे हुए हैं?’

‘सिविल लाइंस में श्री मैत्रा के साथ। वो एक प्यारे बूढ़े आदमी हैं, लेकिन पूरी तरह से बुढ़ापे के कारण उनकी याददाश्त कमजोर हो गई है। दीपांकर भी उनके साथ ही रहता था। अब वह जगह ब्रह्मपुर में चटर्जी छात्रावास बन गई है।’

लता ने कहा, 'काश तुम हमारे साथ रुकते। लेकिन तुम देख ही रहे हो कि इस समय हालात कितने मुश्किल हैं।'

‘अब, लता, हमारी चिंता मत करो,’ कुकू ने प्यार से कहा। ‘बस हमें बता

दो कि अब से तीन बजे तक हम अपना समय कैसे बिताएँ। मुझे लगता है कि फिलहाल हम बच्चे को देखकर थक चुके हैं।'

लता ने कहा, 'अच्छा, तुम बरसात महल जा सकती हो। मुझे पता है कि दिन के इस समय गर्मी होती है, लेकिन यह उतना ही सुंदर है जितना लोग कहते हैं, और तस्वीरों से कहीं ज्यादा खूबसूरत है।'

'ओह, स्मारक!' मीनाक्षी ने जम्हाई लेते हुए कहा।

'क्या ब्रह्मपुर में इससे ज्यादा जीवंत जगह नहीं है?' काकोली ने पूछा।

'अच्छा, नबीगंज में ब्लू डेन्यूब कैफे है। और रेड फॉक्स भी। और फिल्में भी, हालांकि अंग्रेजी फिल्में कुछ साल पुरानी हैं। और किताबों की दुकानें भी—' बोलते-बोलते लता को एहसास हुआ कि कलकत्ता की महिलाओं को ब्रह्मपुर कितना नीरस लगता होगा। 'माफ़ कीजिए, मुझे अब जाना होगा। मेरा लेक्चर है।'

और लता की पढ़ाई के प्रति उत्साह देखकर कुकू आश्चर्यचकित रह गया।

13.17

प्राण की बीमारी और बच्चे के आगमन से जुड़ी हलचल, लता की चुप्पी और पूर्वाभ्यासों में मालती की सुरक्षात्मक उपस्थिति के कारण, पिछले कुछ दिनों से लता और कबीर ने केवल शेक्सपियर की पंक्तियाँ ही बोली थीं, अपनी कोई पंक्ति नहीं बोली थी। लता उसे बताना चाहती थी कि उसकी माँ के बारे में वह उससे कितनी सहानुभूति रखती है, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा कैसे करे, कहीं दोनों पक्षों की भावनाओं में इतनी तीव्रता न आ जाए कि वह खुद को—और शायद कबीर को भी —बहुत बुरी तरह से झकझोर दे। इसलिए उसने कुछ नहीं कहा। लेकिन श्री बरुआ ने देखा कि ओलिविया मालवोलियो के प्रति स्क्रिप्ट के अनुसार जितनी दयालु थी, उससे कहीं अधिक दयालु थी, और उन्होंने उसे सुधारने की कोशिश की।

‘अब, मिस मेहरा, इसे फिर से कोशिश कीजिए। “ओह, तुम आत्मप्रेम से बीमार हो, मालवोलियो—”’

लता ने दूसरी कोशिश के लिए अपना गला साफ किया। 'ओह, मालवोलियो, तुम आत्मप्रेम से बीमार हो, और तुम्हारी भूख विकृत है—'

नहीं, नहीं, मिस मेहरा, इस तरह: “ओह, आप बीमार हैं—” और इसी तरह। थोड़ी तीखी, थोड़ी थकी हुई। आप मालवोलियो से चिढ़ गई हैं। वही तो आपके पीछे दीवाना है।

लता ने यह याद करने की कोशिश की कि पहले रिहर्सल में कबीर को देखकर वह कितनी क्रोधित हुई थी। उसने एक बार फिर सोचना शुरू किया:

‘ओह, मालवोलियो, तुम आत्मप्रेम से ग्रस्त हो और तुम्हारी भूख विकृत है। उदार, निर्दोष और मुक्त स्वभाव का होना, उन चीजों को पक्षी-तीर समझना है जिन्हें तुम तोप की गोलियां समझते हो—’

“अहा, हाँ, बहुत बेहतर, बहुत बेहतर। लेकिन आप कुछ ज़्यादा ही नाराज़ लग रही हैं। कृपया थोड़ा शांत हो जाइए, मिस मेहरा। इससे, जब वह बाद में सचमुच गुस्से में या अपमानजनक बातें करने लगे, तो आपके पास भावनाओं का एक ऐसा भंडार होगा जिसका आप इस्तेमाल कर सकती हैं। क्या आप समझ रही हैं मेरा मतलब?’

'जी हां, जी मुझे लगता है कि मैं करता हूं, श्री बरुआ।'

काकोली और मीनाक्षी कुछ देर से मालती से बातें कर रही थीं, लेकिन वह अचानक गायब हो गई। 'मेरा नंबर आ गया है,' उसने समझाया और मारिया के रूप में मंच पर आने के लिए तुरंत स्टेज के पीछे चली गई।

‘कुकू, तुम्हारा क्या ख्याल है?’ मीनाक्षी ने कहा।

मुझे लगता है कि उसके मन में मालवोलियो नाम के उस लड़के के लिए एक खास जगह है।

मीनाक्षी ने कहा, 'मालती ने हमें यकीन दिलाया कि उसने ऐसा नहीं किया था। उसने तो उसे बदमाश तक कह दिया। बदमाश जैसा शब्द इस्तेमाल करना अजीब लगा।'

मुझे लगता है वो बेहद आकर्षक है। वो चौड़े कंधों वाला और भावुक दिखता है। काश वो मुझ पर तोप का गोला दाग दे। या फिर अपना बर्ड-बोल्ट।

'सच में, कुकू, तुममें जरा भी शिष्टाचार नहीं है,' मीनाक्षी ने कहा।

'कलकत्ता में रहने के बाद से लता का व्यक्तित्व निश्चित रूप से बदल गया है,' काकोली ने सोच-समझकर कहा। 'अगर अमित को सफल होना है, तो वह अब और चुप नहीं रह सकता—'

मीनाक्षी ने कहा, 'जो जल्दी उठता है, उसे ही सफलता मिलती है।' काकोली खिलखिलाकर हंस पड़ी।

श्री बरुआ झुंझलाहट से पीछे मुड़ गए।

'अह, क्या पीछे बैठी दोनों युवतियाँ—'

'लेकिन ये तो बहुत मज़ेदार है—मतलब, आपके निर्देशन में बोले गए संवाद,' काकोली ने बड़ी बेबाकी से कहा। कुछ लड़के हँस पड़े और श्री बरुआ शरमाते हुए पीछे मुड़ गए।

लेकिन सर टोबी द्वारा कुछ मिनटों तक की गई मूर्खता के बाद, काकोली और मीनाक्षी दोनों ऊब गईं और चली गईं।

उस शाम दोनों बहनें अस्पताल गईं। उन्होंने प्राण के साथ कुछ पल बिताए, जो उन्हें अनाकर्षक और महत्वहीन लगा—मीनाक्षी ने कहा, 'शादी में उसे देखते ही मुझे पता चल गया था'—और अपना ज़्यादातर समय ऊपर सविता के कमरे में बिताया। मीनाक्षी ने सविता को उसके खाने के समय के बारे में बताया। सविता ध्यान से सुन रही थी, और दूसरी बातों में उलझी हुई थी। कई और लोग अंदर आए और कमरा किसी संगीत

कार्यक्रम की तरह भीड़भाड़ वाला हो गया। मीनाक्षी और काकोली, ब्रह्मपुर कबूतरों के बीच तीतर की तरह, चारों ओर स्पष्ट तिरस्कार से देख रही थीं, खासकर रुधिया परिवार और श्रीमती महेश कपूर को। इनमें से कुछ लोग अंग्रेज़ी बोलने में असमर्थ थे। और उनके कपड़े!

श्रीमती महेश कपूर को तो यकीन ही नहीं हो रहा था कि ये दो बेहद बेशर्म, कमर खुली और मुंहफट लड़कियां उस भले लड़के दीपांकर की बहनें हैं, जो सादगी से कपड़े पहनता था, जिसका व्यवहार सौम्य था और जिसकी रुचियां आध्यात्मिक थीं। उन्हें इस बात की चिंता सता रही थी कि मान आस-पास ही मग्न होकर मंडरा रहा था। कुकू उसे नम आंखों से देख रही थी। मीनाक्षी की आंखों में एक ऐसी चुनौती भरी तिरस्कार की झलक थी, जो कुकू की मोहकता से कहीं अधिक आकर्षक थी। शायद अंग्रेजी कम समझने के कारण ही श्रीमती महेश कपूर इस कमरे में लगातार बातें कर रहे लगभग बीस लोगों के बीच छिपी शत्रुता और आकर्षण, तिरस्कार और प्रशंसा, कोमलता और उदासीनता की भावनाओं को अधिक गहराई से समझ पा रही थीं।

मीनाक्षी अपनी गर्भावस्था के बारे में एक कहानी सुना रही थी, जिसमें उसकी खिलखिलाती हंसी गूंज रही थी। “बेशक, डॉक्टर इवांस ही सही थे। डॉक्टर मैथ्यू इवांस। सच में, अगर किसी को कलकत्ता में बच्चा पैदा करना हो, तो उनके अलावा कोई और विकल्प नहीं है। कितने आकर्षक व्यक्ति हैं वो। कलकत्ता के सबसे बेहतरीन स्त्री रोग विशेषज्ञ। उनका अपने मरीजों के साथ व्यवहार बहुत ही सौम्य है।”

‘ओह, मीनाक्षी, तुम ऐसा सिर्फ इसलिए कह रही हो क्योंकि वह अपने मरीजों के साथ बेशर्मी से छेड़छाड़ करता है,’ काकोली ने बीच में टोकते हुए कहा। ‘वह उनके नितंबों पर थपथपाता है।’

मीनाक्षी ने कहा, 'हाँ, वह निश्चित रूप से उन्हें खुश कर देता है। यह उसके

व्यवहार का एक हिस्सा है।'
काकोली खिलखिलाकर हंस पड़ी। श्रीमती रूपा मेहरा ने श्री महेश कपूर की ओर देखा, जो मानो आत्म-नियंत्रण के दौरे से गुजर रहे थे।
'बेशक वो बहुत ही महंगे हैं—अपर्णा के लिए उनकी फीस 750 रुपये थी। लेकिन मां, जो इतनी कंजूस हैं, वो भी मानती हैं कि वो हर पैसे के लायक थे। है ना मां?'
श्रीमती रूपा मेहरा सहमत नहीं थीं, लेकिन उन्होंने ऐसा कहा नहीं। जब डॉ. इवांस को पता चला कि मीनाक्षी प्रसव पीड़ा में हैं, तो उन्होंने मानो किसी विशाल नौसेना को देखते हुए कहा: 'उनसे कहो कि थोड़ा और धैर्य रखें। मैं अपना गोल्फ का खेल खत्म कर रहा हूँ।'
मीनाक्षी बोलती रही, 'इरविन नर्सिंग होम एकदम साफ-सुथरा है। और वहाँ एक नर्सरी भी है। माँ को बच्चे को हर समय पालने में अपने साथ रखने, रोने और डायपर बदलने की ज़रूरत पड़ने से थकान नहीं होती। उसे सिर्फ़ दूध पिलाने के समय ही माँ के पास लाया जाता है। और वहाँ आने-जाने वालों की संख्या को लेकर भी वे बहुत सख्त हैं।' मीनाक्षी ने रुधिया के लोगों की ओर तीखी नज़र से देखा।
मीनाक्षी के व्यवहार से श्रीमती रूपा मेहरा इतनी शर्मिंदा थीं कि वे कुछ कह नहीं पाईं।
श्री महेश कपूर ने कहा: 'श्रीमती मेहरा, यह बहुत ही रोचक है, लेकिन—'
'क्या आपको ऐसा लगता है?' मीनाक्षी ने कहा। 'मुझे तो लगता है कि बच्चे को जन्म देना बहुत ही गरिमापूर्ण अनुभव है।'
कुकू ने आश्चर्यचकित होकर कहा, 'एन्नोब्लिंग?'
सविता का चेहरा पीला पड़ने लगा था।
'अच्छा, क्या आपको नहीं लगता कि किसी को भी इस पूरे अनुभव से वंचित नहीं रहना चाहिए?' मीनाक्षी ने गर्भवती होने के दौरान ऐसा नहीं

सोचा था।
काकोली ने कहा, 'मुझे नहीं पता। मैं अभी गर्भवती नहीं हूं।'
मान हँस पड़ा और महेश कपूर लगभग हंसते-हंसते लोटपोट हो गए।
'काकोली!' श्रीमती रूपा मेहरा ने चेतावनी भरे स्वर में कहा।
'लेकिन हर किसी को पता नहीं चलता कि वे गर्भवती हैं,' काकोली ने आगे कहा। 'कश्मीर में ब्रिगेडियर गुहा की पत्नी को याद कीजिए? उन्हें इस गौरवशाली अनुभव से नहीं गुजरना पड़ा।'
मीनाक्षी उस याद को याद करके हंस पड़ी। 'उसका क्या हुआ?' मान ने पूछा।
'अच्छा—' मीनाक्षी ने कहना शुरू किया।
'वह थी—' काकोली ने साथ ही बोलना शुरू किया। 'तुम बताओ,' मीनाक्षी ने कहा।
'नहीं, तुम बताओ,' काकोली ने कहा।
'ठीक है,' मीनाक्षी ने कहा। 'वह कश्मीर में हॉकी खेल रही थी, जहाँ वह अपना चालीसवाँ जन्मदिन मनाने के लिए छुट्टी मनाने गई थी। वह गिर गई और उसे चोट लग गई, इसलिए उसे कलकत्ता लौटना पड़ा। वापस आने पर उसे हर कुछ मिनट में तेज दर्द होने लगा। उन्होंने डॉक्टर को बुलाया —'
काकोली ने आगे कहा, 'डॉ. इवांस।'
नहीं, कुकू, डॉ. इवांस बाद में आए, यह एक और मामला था। तो उसने कहा, "डॉक्टर साहब, यह क्या है?" और उन्होंने कहा, "आप गर्भवती हैं। हमें आपको तुरंत नर्सिंग होम ले जाना होगा।"
'इससे कलकत्ता के समाज में सचमुच सदमे की लहर दौड़ गई,' काकोली ने वहां मौजूद लोगों से कहा। 'जब उन्होंने उसके पति को बताया तो उन्होंने कहा: "कैसा बच्चा? बिलकुल बकवास!" वह पचपन साल के थे।'

मीनाक्षी ने आगे कहा, 'देखिए, जब उनके मासिक धर्म बंद हो गए, तो उन्होंने सोचा कि यह उनका रजोनिवृत्ति है। वह कल्पना भी नहीं कर सकती थीं कि वह मां बनने वाली हैं।'

अपने पिता के भावहीन चेहरे को देखकर मान बेकाबू होकर हंसने लगा, और मीनाक्षी ने भी उसे मुस्कुराकर जवाब दिया। बच्चा भी मुस्कुराता हुआ प्रतीत हुआ, लेकिन शायद यह पेट की गैस थी।

13.18

अगले कुछ दिनों में बच्ची और माँ का रिश्ता बहुत अच्छा हो गया। सविता को बच्ची के बारे में सबसे आश्चर्यजनक बात उसकी कोमलता लगी। वह लगभग असहनीय रूप से कोमल थी, खासकर उसके पैरों के तलवे, कोहनियों के अंदरूनी हिस्से, गर्दन का पिछला हिस्सा—यहाँ तो वह और भी अद्भुत, दिल को छू लेने वाली कोमलता से भरी थी! कभी-कभी वह बच्ची को अपने बगल में पलंग पर लिटा देती और उसे निहारती रहती। बच्ची जीवन से संतुष्ट प्रतीत होती थी; वह काफी भूखी थी, लेकिन शोर नहीं मचाती थी। जब उसका पेट भर जाता, तो वह अपनी माँ को आधी खुली आँखों से देखती: एक संतुष्ट, आत्मसंतुष्ट भाव। सविता ने पाया कि दाहिने हाथ से काम करने के कारण, उसे बाएं स्तन से दूध पिलाना आसान था। यह बात उसे पहले कभी समझ नहीं आई थी।

अब तो वह खुद को मां भी मानने लगी थी।

अपनी माँ, बेटी और बहन के स्नेहपूर्ण और स्नेहपूर्ण परिवेश में पली-बढ़ी सविता को दिन सुकून और खुशी से बीतते नज़र आते थे। लेकिन कभी-कभी गहरे अवसाद की लहर उसे घेर लेती थी। एक बार ऐसा तब हुआ जब बाहर बारिश हो रही थी और खिड़की की चौखट पर कुछ कबूतर गुटरगू कर रहे थे। कभी-कभी वह उस विद्यार्थी के बारे में सोचती जिसकी कुछ दिन पहले इसी अस्पताल में मृत्यु हो गई थी, और उस दुनिया के बारे

में सोचती जिसमें उसने अपनी बेटी को जन्म दिया था। एक बार जब उसने सुना कि मान ने उस पागल बंदर को मार डाला, तो वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसके अचानक आने वाले दुखों की गहराई अवर्णनीय थी।

या शायद यह उतना रहस्यमय नहीं था जितना उसे लग रहा था। प्राण की हृदय संबंधी बीमारी के साये में, परिवार हमेशा अनिश्चितता के साये में जीएगा। सविता को धीरे-धीरे यह महसूस होने लगा कि प्राण के पिता चाहे कुछ भी कहें, उसे कोई न कोई पेशा सीखना ही होगा।

प्राण और सविता के बीच हमेशा की तरह विचारों का आदान-प्रदान होता था, लेकिन आजकल ज्यादातर बातचीत बच्ची के लिए उपयुक्त नामों के बारे में होती थी। दोनों इस बात पर सहमत थे कि बच्ची का नाम जल्द ही रख देना चाहिए; उपयुक्त नाम चुनने के लिए उसके स्वभाव के विकसित होने का इंतजार करना जरूरी नहीं था।

सभी ने तरह-तरह के सुझाव दिए। अंततः प्राण और सविता ने पत्र व्यवहार द्वारा माया नाम तय किया। इसके दो सरल अक्षरों का अर्थ, अन्य बातों के अलावा, देवी लक्ष्मी, भ्रम, मोह, कला, देवी दुर्गा, दयालुता और बुद्ध की माता का नाम था। इसका अर्थ अज्ञान, भ्रम, छल, कपट और पाखंड भी था; लेकिन जिन लोगों ने अपनी बेटी का नाम माया रखा, उन्होंने कभी भी इन नकारात्मक अर्थों पर ध्यान नहीं दिया।

जब सविता ने परिवार को बच्ची का नाम सुनाया, तो कमरे में मौजूद लगभग एक दर्जन लोगों ने सराहना भरी हल्की फुसफुसाहट की। फिर श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा:

'आप उसका नाम माया नहीं रख सकते, बस यही बात है।'

‘क्यों नहीं, माँ?’ मीनाक्षी ने कहा। ‘यह एक बहुत ही बंगाली नाम है, एक बहुत ही प्यारा नाम है।’

'क्योंकि यह बिलकुल असंभव है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। 'प्राण की

मां से पूछिए,' उन्होंने हिंदी में कहा।
मीनाक्षी की तरह वीना भी इस बच्चे के जन्म के कारण मौसी बन चुकी थी और खुद को इस मामले में कुछ हक समझती थी। उसे भी यह नाम अच्छा लगा। उसने हैरानी से अपनी माँ की ओर देखा।
लेकिन श्रीमती महेश कपूर ने श्रीमती रूपा मेहरा की बात से सहमति जताई।
'नहीं, रूपाजी, आप बिल्कुल सही कह रही हैं, यह ठीक नहीं रहेगा।'
'लेकिन क्यों, अम्माजी?' वीना ने पूछा। 'क्या आपको लगता है कि माया अशुभ है?'
'ऐसी बात नहीं है, वीना। बात बस इतनी है कि—जैसा कि सविता की मां सोच रही है—आपको किसी जीवित रिश्तेदार के नाम पर बच्चे का नाम नहीं रखना चाहिए।'
लखनऊ में सविता की मौसी का नाम माया था।
युवा पीढ़ी के कितने भी तर्क-वितर्क करने पर भी दोनों दादी-नानी टस से मस नहीं हुईं।
'लेकिन यह घोर अंधविश्वास है,' मान ने कहा।
'अंधविश्वास हो या न हो, यही हमारा तरीका है। तुम्हें पता है, वीना, जब तुम छोटी थीं, तो मंत्री साहब की माँ मुझे तुम्हारा नाम लेकर पुकारने तक नहीं देती थीं। उन्होंने कहा था कि सबसे बड़ी संतान को उसके असली नाम से नहीं पुकारना चाहिए, और मुझे उनकी बात माननी पड़ी।'
'तो तुमने मुझे क्या कहकर पुकारा?' वीना ने कहा।
'बिटिया, या मुन्नी, या—मुझे सारे नाम याद नहीं आ रहे जिनसे मैं तुम्हें पुकारती थी ताकि बात न बने। लेकिन इसे जारी रखना बहुत मुश्किल था। खैर, मुझे लगता है कि यह सब अंधविश्वास है। और जब मेरी सास का देहांत हुआ, तो मैंने इसे छोड़ दिया।'

'अच्छा, अगर आप इसे अंधविश्वास कहते हैं, तो आप इसे क्या समझते हैं?' वीना ने कहा।

‘इसमें एक कारण है। आप अपनी चाची का जिक्र किए बिना बच्चे को कैसे डांट सकते हैं? यह बहुत गलत है। भले ही आप उसे किसी और नाम से पुकारें, फिर भी मन ही मन आप माया को ही डांट रहे होंगे।’

बहस करने का कोई फायदा नहीं था। माता-पिता की बात अनसुनी कर दी गई, माया नाम को नाम से हटाना पड़ा और एक नए नाम की तलाश शुरू हो गई।

जब मान ने प्राण को वीटो के बारे में बताया, तो प्राण ने इसे दार्शनिक दृष्टिकोण से लिया।

उन्होंने कहा, ‘मैं कभी मायावादी नहीं था। मैंने कभी यह नहीं माना कि पूरा ब्रह्मांड भ्रम है। बेशक, मेरी खांसी असली है। डॉक्टर जॉनसन की तरह, मैं भी इसका खंडन कर सकता हूँ। तो दोनों दादियाँ उसका क्या नाम रखना चाहती हैं?’

‘मुझे पक्का नहीं पता,’ मान ने कहा। ‘वे केवल उन्हीं बातों पर सहमत हुए जो स्वीकार्य नहीं थीं।’

प्राण ने कहा, 'यह मुझे मेरे कमेटी के काम की याद दिलाता है।' 'अच्छा, मान, तुम्हें भी खूब दिमाग लगाना चाहिए। और क्यों न उस जादुई मालिश करने वाले से सलाह ले लो? उसके पास विचारों की कभी कमी नहीं होती।'

मान ने ऐसा करने का वादा किया।

कुछ दिनों बाद, जब सविता बच्चे के साथ घर जाने लायक स्वस्थ हो गईं, तो उन्हें श्री मग्गु गोपाल का एक कार्ड मिला। कार्ड पर भगवान शिव और उनके परिवार की तस्वीर थी। कार्ड में मग्गु गोपाल ने लिखा था कि सभी की राय अलग होने के बावजूद उन्हें पहले से ही पता था कि सविता को

बेटी होगी। उन्होंने सविता को भरोसा दिलाया कि उनके पति के हाथ को देखकर केवल ये तीन नाम ही शुभ माने जा सकते हैं: पार्वती, उमा और ललिता। उन्होंने यह भी पूछा कि क्या प्राण ने 'रोजमर्रा की सभी जरूरतों' के लिए चीनी की जगह शहद का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। उन्होंने प्राण के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की और उन्हें एक बार फिर आश्वस्त किया कि उनका वैवाहिक जीवन एक कॉमेडी जैसा होगा।

इसके अलावा अन्य कार्ड, बधाई पत्र और टेलीग्राम भी आए, जिनमें से कई में प्रचलित वाक्यांश संख्या 6 लिखा था: 'नए मेहमान के आगमन पर हार्दिक बधाई'।

बच्ची के जन्म के कुछ सप्ताह बाद, सर्वसम्मति से उसका नाम उमा रखने का निर्णय लिया गया। श्रीमती रूपा मेहरा ने बच्ची के आगमन का जश्न मनाने के लिए एक भव्य बधाई कार्ड बनाने के लिए कैंची और गोंद लेकर काम शुरू किया। उन्हें यह बात स्वीकार करने में थोड़ा समय लगा था कि उनका अभी तक कोई पोता नहीं है; और अब जब वे अपनी पोती से खुश थीं, तो उन्होंने अपनी खुशी को मूर्त रूप देने का फैसला किया।

गुलाब, एक छोटा, कुछ हद तक भयावह दिखने वाला देवदूत और पालने में एक शिशु को एक साथ चिपकाया गया था, और एक पिल्ला और तीन सुनहरे सितारों ने चित्र को पूरा किया। तीनों सितारों के नीचे शिशु के नाम के तीन अक्षर लाल स्याही और हरी पेंसिल से लिखे गए थे।

अंदर संदेश में श्रीमती रूपा मेहरा की छोटी और सलीके से लिखी एक कविता थी, जो काफी सरल प्रारूप में थी। उन्होंने इसे लगभग एक साल पहले विल्हेल्मिना स्टिच नामक लेखिका की एक ज्ञानवर्धक पुस्तक, 'द फ्रैग्रेंट मिनट फॉर एवरी डे' में पढ़ा था - सविता की वर्तमान स्थिति को देखते हुए यह नाम बिल्कुल उपयुक्त था - और उस समय उन्होंने इसे अपनी छोटी नोटबुक में लिख लिया था। यह 'बारहवें दिन' की कविता थी।

उन्हें पूरा विश्वास था कि यह कविता सविता और प्राण की आँखों से भी कृतज्ञता और आनंद के वही आँसू बहाएगी जो उनकी आँखों से बहे थे। कविता इस प्रकार थी:

लेडी बेबी

'आज एक नन्ही परी आई—' इससे सुंदर शब्द और क्या हो सकते हैं? ये मन को मुस्कुराने पर मजबूर कर देते हैं, नन्ही परी की खुशी के लिए प्रार्थना करने का मन करता है। 'आज एक नन्ही परी आई।' हमने उसका प्यारा नाम नहीं सुना है, फिर भी हम उसे नन्ही परी-आशीर्वाद देने आई कहकर पुकार सकते हैं।

जब लेडी बेबी धरती पर आईं, तो उनका घर आनंद और उल्लास से भर गया। लेडी बेबी की कोमलता के आधे मूल्य का कोई रत्न नहीं है। हमें खुशी है कि लेडी बेबी यहाँ हैं, क्योंकि साल के इस धूपहीन समय में, लेडी बेबी की कोमलता जैसी गर्माहट और खुशी और किसी चीज से नहीं मिलती।

चुप रहो! नन्ही नन्ही नन्ही गहरी नींद में सो रही है, आग की मर्मस्पर्शी लपटें नाच रही हैं और उछल रही हैं, देवदूतों के पंख उसके ऊपर मंडरा रहे हैं और उसकी आँखों को चूम रहे हैं। 'नन्ही न ...

13.19

क्रोमार्टी ग्रुप के प्रबंध निदेशक सर डेविड गोवर ने अपने सुनहरे किनारों वाले अर्धचंद्राकार चश्मे से अपने सामने खड़े छोटे कद के लेकिन आत्मविश्वासी युवक को देखा। उसने ज़रा भी भय नहीं दिखाया था, जो सर डेविड के अनुभव में असामान्य था, क्योंकि उनका कार्यालय विशाल और आलीशान था, उन्हें दरवाजे से डेस्क तक काफी दूरी तय करनी पड़ी थी और सबकी निगाहें उन पर टिकी थीं, साथ ही उनका अपना कद-काठी और आक्रामक चेहरा भी काफी प्रभावशाली था।

अंततः उन्होंने कहा, 'बैठ जाइए।'
हरेश सर डेविड की मेज के सामने रखी तीन कुर्सियों में से बीच वाली कुर्सी पर बैठ गया।
मैंने पियरी लॉल बुलर का पत्र पढ़ा है, और उन्होंने कृपा करके मुझे भी फोन किया है। मुझे इतनी जल्दी आपसे मिलने की उम्मीद नहीं थी, लेकिन खैर, आप यहाँ हैं। आपने कहा कि आपको नौकरी चाहिए। आपकी योग्यताएँ क्या हैं? और आप कहाँ काम कर रहे थे?
'बस सड़क के उस पार, सर डेविड।'
'आपका मतलब सीएलएफसी से है?'
'हां। और उससे पहले मैं मिडिलहैम्पटन में था—वहीं मैंने फुटवियर टेक्नोलॉजी की पढ़ाई की थी।'
और आप हमारे साथ काम क्यों करना चाहते हैं?
'मैं जेम्स हॉली को एक उत्कृष्ट रूप से संचालित संगठन के रूप में देखता हूं, जिसमें मेरे जैसे व्यक्ति का भविष्य है।'
'दूसरे शब्दों में कहें तो, आप अपने भविष्य को बेहतर बनाने के लिए हमसे जुड़ना चाहते हैं?'
'हाँ, इस तरह से कहा जाए तो।'
'खैर, इसमें कोई बुरी बात नहीं है,' सर डेविड ने कुछ गुर्राते हुए कहा।
उसने कुछ देर तक हरेश को देखा। हरेश सोच रहा था कि वह क्या सोच रहा है। उसकी नज़र न तो उसके कपड़ों पर पड़ी—जो साइकिल से आने के कारण थोड़े पसीने से भीगे हुए थे—और न ही उसके बालों पर, जो बस सँवारे हुए और पीछे की ओर कंघी किए हुए थे। न ही उसकी नज़र उसकी आत्मा में झाँक रही थी। ऐसा लग रहा था मानो उसकी नज़र उसके माथे पर टिकी हो।
कुछ देर बाद प्रबंध निदेशक ने पूछा, 'आप हमें क्या पेशकश कर सकते

हैं?'

'सर, इंग्लैंड में मेरे परिणाम स्वयं ही सब कुछ बयां करते हैं। और मैंने थोड़े ही समय में सीएलएफसी को व्यवस्था और दिशा दोनों ही दृष्टियों से बदलने में मदद की है।'

सर डेविड ने अपनी भौंहें उठाईं। उन्होंने कहा, 'यह तो बहुत बड़ा दावा है। मुझे लगा था कि मुखर्जी महाप्रबंधक हैं। खैर, मुझे लगता है कि आपको हमारे महाप्रबंधक जॉन क्लेटन से मिलना चाहिए।' उन्होंने टेलीफोन उठाया।

'जॉन, आह, तुम अभी भी यहीं हो। अच्छा। मैं एक नौजवान को भेज रहा हूँ, एक श्रीमान'—उन्होंने कागज़ के एक टुकड़े पर नज़र डाली—'श्रीमान खन्ना को, तुम्हारे पास... हाँ, वही जिनके बारे में बूढ़े पियरी लोल बुलर ने कुछ मिनट पहले मुझे फ़ोन किया था जब तुम यहाँ थे... मिडलहैम्प्टन... ठीक है, अगर तुम्हें ऐसा लगता है... नहीं, मैं इसे तुम पर छोड़ता हूँ।' उन्होंने फ़ोन रख दिया और हरेश को शुभकामनाएँ दीं।

'आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, सर डेविड।'

'खैर, हम आपको काम पर रखें या न रखें, यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्लेटन आपके बारे में क्या सोचता है,' सर डेविड गोवर ने कहा और हरेश को अपने विचारों से बाहर कर दिया।

सोमवार सुबह जेम्स हॉली का एक पत्र आया। इस पर महाप्रबंधक जॉन क्लेटन के हस्ताक्षर थे और इसमें हरीश को दिए जाने वाले प्रस्ताव की शर्तें लिखी थीं, जो काफी उदार थीं: वेतन के रूप में 325 रुपये और महंगाई भत्ता के रूप में 450 रुपये—पिछले कुछ वर्षों में मुद्रास्फीति के समायोजन के लिए। हरीश को यह बात थोड़ी अजीब लगी, लेकिन साथ ही सुखद भी।

सीएलएफसी में उसके साथ हुए अन्याय, राव की चालाकी, सेन गुप्ता की

घिनौनी हरकतें, मुखर्जी की दिखावटी बेअसरता, और दूर रहने वाले बॉस घोष की मनमानी—ये सब बातें उसके दिमाग से निकल गईं। उसने अपने नए भविष्य के बारे में सोचना शुरू किया, जो उसे उज्ज्वल लग रहा था। शायद किसी दिन वह उस विशाल महोगनी डेस्क के दूसरी तरफ बैठेगा। और इस जैसी अच्छी नौकरी के साथ, जो सीएलएफसी की नौकरी की तरह नीरस नहीं थी, वह बिना किसी झिझक के वैवाहिक जीवन शुरू कर सकता था।

दो पत्र हाथ में लेकर वह मुखर्जी से मिलने गया।

जब वे दोनों बैठ गए, तो उसने कहा, 'श्री मुखर्जी, मुझे लगता है कि मुझे आपसे कुछ बातें साझा करनी चाहिए। मैंने जेम्स हॉली में नौकरी के लिए आवेदन किया है और उन्होंने मुझे नौकरी का प्रस्ताव दिया है। पिछले सप्ताह की घटनाओं के बाद आप समझ सकते हैं कि मुझे यहाँ काम जारी रखने के बारे में कैसा महसूस हो रहा है। मैं आपसे सलाह लेना चाहता हूँ कि मुझे क्या करना चाहिए।'

श्री मुखर्जी ने बड़ी असंतुष्टि से कहा, 'श्री खन्ना, मुझे यह सुनकर खेद हुआ। मेरा मानना है कि आपने कुछ समय पहले आवेदन किया होगा।'

मैंने शुक्रवार दोपहर को आवेदन किया और एक घंटे के भीतर ही मुझे नौकरी मिल गई।

श्री मुखर्जी चौंक गए। लेकिन अगर हरेश ने ऐसा कहा है, तो यह सच ही होगा।

यह नियुक्ति पत्र है।

महाप्रबंधक ने इसे सरसरी तौर पर देखा और कहा, 'ठीक है। आपने मुझसे सलाह मांगी है। मैं केवल इतना ही कह सकता हूं कि पिछले सप्ताह जिस तरह से वह आदेश आपके हाथों से छीन लिया गया, उसके लिए मुझे खेद है। इसमें मेरी कोई गलती नहीं थी। लेकिन मैं आपका

इस्तीफा स्वयं स्वीकार नहीं कर सकता—कम से कम तुरंत तो बिल्कुल नहीं। इस मामले को बॉम्बे भेजना पड़ेगा।'

मुझे पूरा यकीन है कि श्री घोष सहमत होंगे।

उनके बहनोई श्री मुखर्जी ने सहमति जताते हुए कहा, 'मुझे पूरा यकीन है कि वह मान जाएंगे। लेकिन, ठीक है, इसे स्वीकार करने से पहले मुझे उनकी मंजूरी चाहिए।'

'खैर,' हरेश ने कहा। 'मैं अब आपको अपना त्यागपत्र सौंप रहा हूँ।'

लेकिन जब श्री मुखर्जी ने उन्हें फोन करके बताया कि हरेश जा रहा है, तो श्री घोष बेहद क्रोधित हो गए। हरेश उनकी कानपुर फैक्ट्री की सफलता के लिए महत्वपूर्ण था, और वे उसे जाने देने को तैयार नहीं थे। उन्हें सेना के जूतों के लिए सरकारी ऑर्डर प्राप्त करने के लिए दिल्ली जाना था, और उन्होंने श्री मुखर्जी से कहा कि वे हरेश खन्ना को तब तक रोक कर रखें जब तक वे स्वयं तुरंत कानपुर नहीं आ जाते।

वहाँ पहुँचते ही उसने हरेश को बुलाया और मुखर्जी की उपस्थिति में उसे जमकर लताड़ा। उसकी आँखें गुस्से से फटी हुई थीं और वह लगभग पागल सा लग रहा था, हालाँकि वह पूरी तरह से बेसुध नहीं था।

'श्री खन्ना, जब आप भारत आए थे, तब मैंने ही आपको आपकी पहली नौकरी दी थी। और, यदि आपको याद हो, तो आपने उस समय मुझे आश्वासन दिया था कि आप दो साल तक हमारे साथ रहेंगे, जब तक हम आपको रखना चाहें। खैर, हम आपको रखना चाहते हैं। दूसरी नौकरी ढूंढना आपकी ओर से एक कपटपूर्ण हरकत है, और मैं आपको जाने नहीं दूंगा।'

घोष के शब्दों और व्यवहार से हरेश को बहुत गुस्सा आया। 'धोखाधड़ी' जैसा शब्द उसके लिए लाल कपड़े के समान था। लेकिन घोष उम्र में बड़े थे और उनकी व्यावसायिक समझ की वह प्रशंसा करते थे। इसके

अलावा, यह सच था कि उन्होंने ही उन्हें पहली नौकरी दी थी। 'मुझे वह बातचीत याद है, महोदय,' उन्होंने कहा। 'लेकिन आपको याद होगा कि आपने मुझे कुछ आश्वासन भी दिए थे। आपने कहा था कि मैं उस समय साढ़े तीन सौ रुपये स्वीकार कर लूँ, क्योंकि संगठन में अपनी योग्यता साबित करने के बाद आप इसे बढ़ा देंगे। मैंने अपनी योग्यता साबित कर दी है, लेकिन आपने अपना वादा नहीं निभाया।'

घोष ने अचानक कहा, 'अगर बात पैसों की है तो कोई समस्या नहीं है। हम आपकी मदद कर सकते हैं—हम उनके प्रस्ताव के बराबर राशि दे सकते हैं।'

यह बात हरीश के लिए नई थी—और मुखर्जी के लिए भी, जो चौंक गए थे—लेकिन 'गुप्त' शब्द उन्हें इतना खटक रहा था कि उन्होंने आगे कहा, 'मुझे डर है कि यह सिर्फ पैसे की बात नहीं है, महोदय, यह तो पूरे तौर-तरीके की बात है।' वे रुके, फिर बोले, 'जेम्स हॉली एक पेशेवर संगठन है। मैं वहां उस तरह से तरक्की कर सकता हूं जिस तरह से मैं किसी पारिवारिक संगठन में नहीं कर सकता। मैं शादी करने की सोच रहा हूं, और मुझे यकीन है कि आप समझ रहे होंगे कि मुझे भविष्य के बारे में सोचना होगा।'

घोष ने कहा, 'तुम हमें छोड़कर नहीं जा रहे हो। मुझे बस इतना ही कहना है।'

“देखते हैं क्या होता है,” घोष के इस हठधर्मिता से बेहद नाराज़ हरेश ने कहा। “मेरे पास लिखित प्रस्ताव है और आपके पास मेरा लिखित त्यागपत्र। मुझे समझ नहीं आ रहा कि आप इसके बारे में क्या कर सकते हैं।” इतना कहकर वह खड़ा हुआ, अपने दोनों वरिष्ठों को बिना कुछ कहे सिर हिलाया और चला गया।

जैसे ही हरेश ने कार्यालय छोड़ा, घोष ने जॉन क्लेटन को फोन किया,

जिनसे वह दिल्ली में कुछ मंत्रालयों में कई बार मिल चुके थे; दोनों अपनी कंपनियों के लिए सरकारी ऑर्डर प्राप्त करने को लेकर चिंतित थे।

घोष ने क्लेटन को स्पष्ट शब्दों में कहा कि उनके द्वारा अपने आदमी को 'पकड़ने' की कार्रवाई अनैतिक है। उन्होंने इसे बर्दाश्त करने से इनकार कर दिया और हरेश को रिहा नहीं किया। जरूरत पड़ने पर वे मामले को अदालत में ले जाएंगे। यह एक अत्यंत अनुचित व्यापारिक प्रथा थी और किसी प्रतिष्ठित ब्रिटिश कंपनी के लिए इस तरह का व्यवहार करना उचित नहीं था।

श्री घोष के कई महत्वपूर्ण सरकारी अधिकारियों और एक-दो राजनेताओं से संबंध थे—इसी वजह से उन्हें सीएलएफसी के जूतों के लिए सरकारी ऑर्डर मिल पाए थे, जो कि सर्वोत्तम गुणवत्ता के नहीं थे। स्पष्ट रूप से वे काफी प्रभावशाली व्यक्ति थे। इस समय वे बहुत गुस्से में थे और जेम्स हॉली के लिए, बल्कि कानपुर और अन्य जगहों पर पूरे क्रोमार्टी समूह के लिए, समस्याएँ खड़ी कर सकते थे।

कुछ दिनों बाद हरेश को जेम्स हॉली का एक और पत्र मिला। उसमें सबसे अहम वाक्य था: 'हमारा प्रस्ताव पक्का करने से पहले आपको अपने वर्तमान नियोक्ताओं से मंज़ूरी लेनी होगी।' पिछले पत्र में किसी भी तरह की मंज़ूरी की ज़रूरत का ज़िक्र नहीं था, और यह साफ़ था कि जेम्स हॉली दबाव में झुक गए थे। घोष को अब यकीन हो गया होगा कि हरेश के पास उनके पास हाथ जोड़कर अपनी पुरानी नौकरी वापस मांगने के अलावा कोई चारा नहीं होगा। लेकिन हरेश के लिए एक बात तय थी: वह सीएलएफसी में एक दिन भी काम नहीं करेंगे। वह भीख मांगने के बजाय भूखे रहना पसंद करेंगे।

अगले दिन वह अपना सामान लेने और दरवाजे से पीतल की नेमप्लेट हटाने के लिए कारखाने गया। उसी समय मुखर्जी वहाँ से गुजर रहे थे और

उन्होंने भविष्य में मदद का प्रस्ताव दिया। हरेश ने सिर हिला दिया। उसने ली से बात की और उसे काम पर रखने के तुरंत बाद ही छोड़ने के लिए माफी मांगी। फिर उसने अपने विभाग के कामगारों से बात की। वे घोष द्वारा उस व्यक्ति के साथ किए गए व्यवहार से दुखी और क्रोधित थे, जिसे वे पसंद करने लगे थे, सम्मान करते थे और जिसे वे एक अजीब तरीके से अपना रक्षक मानने लगे थे; निश्चित रूप से घोष के कंपनी में शामिल होने के बाद से उन्हें अधिक काम और अधिक वेतन मिला था, भले ही वह उनसे, खुद की तरह, बहुत मेहनत करवाता था। उन्होंने तो यहाँ तक कह दिया कि वे उसके लिए हड़ताल पर चले जाएंगे। हरेश को इस पर विश्वास नहीं हुआ और वह लगभग रोने ही वाला था, लेकिन उसने उनसे कहा कि उन्हें ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए। उसने कहा, 'मैं तो वैसे भी जाने वाला था, और प्रबंधन मेरे साथ अच्छा व्यवहार करे या बुरा, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।' मुझे बस इस बात का अफसोस है कि मुझे आपको राव जैसे अक्षम व्यक्ति के भरोसे छोड़ना पड़ रहा है।' राव पास ही खड़ा था जब उसने यह कहा, लेकिन हरेश को अब परवाह नहीं थी।

अपना मन बहलाने के लिए वह एक दिन के लिए सिमरन की बहन से मिलने लखनऊ चला गया। तीन दिन बाद, कानपुर में उसे कुछ भी काम न मिलने और बहुत कम पैसे होने के कारण, वह अपने परिवार के साथ रहने और वहाँ कुछ मिलने की उम्मीद में दिल्ली के लिए निकल पड़ा। वह तय नहीं कर पा रहा था कि लता को पत्र लिखकर यह खबर दे या नहीं। वह बहुत निराश था; उसे लग रहा था कि अब बेरोजगार होने के कारण उसकी सारी खुशियाँ धूमिल हो गई हैं।

लेकिन कुछ दिनों बाद यह उत्साह कुछ हद तक कम हो गया। कल्पना गौर ने उनके प्रति सहानुभूति दिखाई, और दिल्ली पहुँचते ही उनके पुराने सेंट स्टीफन कॉलेज के दोस्तों ने उन्हें अपने हंसमुख समूह में शामिल कर

लिया। और, स्वभाव से आशावादी होने के कारण—या कम से कम उनमें आत्मविश्वास की प्रचुरता, शायद अत्यधिक प्रचुरता होने के कारण—उन्होंने इन कठिन समयों में भी यह मानने से इनकार कर दिया कि कुछ भी नहीं होगा।

13.20

उनके पालक पिता समझदार थे और उन्होंने उन्हें निराश न होने की सलाह दी। लेकिन परिवार के करीबी मित्र उमेश अंकल, जो ज्ञान बांटने के शौकीन थे, ने उनसे कहा कि उन्होंने अहंकार को विवेक के आड़े आने देकर बहुत बड़ी गलती की है।

उन्होंने टिप्पणी की, 'आपको लगता है कि आप सड़क पर चलेंगे और नौकरी के प्रस्ताव पके आमों की तरह आप पर गिर पड़ेंगे।'

हरेश ने कुछ नहीं कहा। उमेश अंकल हमेशा उसे चिढ़ाते थे।

इसके अलावा, उसे लगता था कि उसका चाचा, भले ही उसके नाम के आगे राय बहादुर और पीछे ओ.बी.ई. की उपाधि लगी हो, एक मूर्ख था।

पंजाबी परिवार के छह भाइयों में से एक, राय बहादुर उमेश चंद खत्री (ओबीई.) एक आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे: गोरे रंग और कोमल नैन-नक्श वाले। उनका विवाह एक अत्यंत धनी और सुसंस्कृत व्यक्ति की दत्तक पुत्री से हुआ था, जिनके कोई पुत्र नहीं थे, इसलिए उन्होंने दामाद को घर में रखने का निर्णय लिया था। उमेश चंद खत्री की एकमात्र खूबी उनका आकर्षक रूप था। वे अपने ससुर की संपत्ति का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करते थे, उनकी विशाल पुस्तकालय में से शायद एक वर्ष में एक ही पुस्तक पढ़ते थे, और उन्होंने उन्हें तीन पोते दिए, जिनमें दो पुत्र शामिल थे।

उन्होंने जीवन भर कभी काम नहीं किया था, लेकिन आस-पास मौजूद हर किसी को सलाह देने के लिए वे हमेशा तरसते रहते थे। हालांकि, जब

द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ, तो परिस्थितियाँ उनके लिए एक वरदान साबित हुईं। आदर्श मसाला कंपनी तक उनकी पहुँच थी, और उन्हें भारतीय सैनिकों के लिए करी पाउडर सहित मसाला पाउडर के निर्माण के सरकारी ठेके मिल गए। इसी के बल पर उन्होंने खूब पैसा कमाया। उन्हें 'युद्ध प्रयासों के सम्मान में' राय बहादुर की उपाधि से सम्मानित किया गया, वे आदर्श मसाला कंपनी के अध्यक्ष बने, और हरेश के पालक पिता को छोड़कर, जो उनके थोड़े चिड़चिड़े मित्र थे, उन्हें समय-समय पर चुप रहने के लिए कहते रहते थे, बाकी सभी को पहले से भी अधिक असहनीय तरीके से सलाह देते रहे।

उमेश चंद खत्री को हरेश से अक्सर शिकायत रहती थी, जिसे वे अक्सर चिढ़ाते रहते थे। शिकायत यह थी कि हरेश हमेशा सलीके से रहता था। उमेश चंद का मानना था कि उनके और उनके दोनों बेटों को अपने सभी परिचितों में सबसे सलीकेदार और सुरुचिपूर्ण दिखना चाहिए। एक बार इंग्लैंड जाने से ठीक पहले, हरेश ने कनॉट प्लेस स्थित आर्मी एंड नेवी स्टोर्स से तेरह रुपये का रेशमी रुमाल खरीदकर खुद को फिजूलखर्ची में लिप्त कर लिया था। उमेश चाचा ने सबके सामने उसे इस तरह की फिजूलखर्ची के लिए फटकार लगाई थी।

अब जब हरेश का भाग्य साथ नहीं दे रहा था, तो उमेश चाचा ने उससे कहा:

तो—तुम्हें लगता है तुमने कोई चालाकी का काम किया है—दिल्ली वापस आकर आलस करना?’

'मेरे पास कोई विकल्प नहीं था,' हरेश ने उत्तर दिया। 'कानपुर में रहने का कोई मतलब नहीं था।'

उमेश अंकल थोड़ी देर हँसे। ‘तुम नौजवान कुछ ज़्यादा ही आत्मविश्वास से भरे हो, अच्छे-खासे काम छोड़ने में भी बड़े खुश हो। दो-तीन महीने में

देखते हैं तुम्हारे इस दिखावे का क्या होता है।'
हरेश जानता था कि उसका पैसा इतने समय तक भी नहीं चलेगा। उसे गुस्सा आ गया। उसने लगभग झुंझलाते हुए कहा, 'एक महीने के अंदर मुझे नौकरी मिल जाएगी—जो मैंने छोड़ी है उससे अच्छी या उससे भी बेहतर।'
उमेश अंकल ने सौम्य तिरस्कार के साथ कहा, 'तुम मूर्ख हो। नौकरी पाना आसान नहीं है।'
उनकी आवाज़ और आत्मविश्वास ने हरेश को झकझोर दिया। उसी दोपहर उसने कई कंपनियों को पत्र लिखे और कई आवेदन भरे, जिनमें इंदौर में एक सरकारी नौकरी का आवेदन भी शामिल था। वह पहले भी कई बार मशहूर प्राहा शू कंपनी में आवेदन कर चुका था, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली थी। अब उसने एक बार फिर आवेदन किया। प्राहा, जो मूल रूप से एक चेक कंपनी थी और आज भी काफी हद तक चेक लोगों द्वारा ही चलाई जाती है, देश की सबसे बड़ी जूता निर्माताओं में से एक थी और अपने उत्पादों की गुणवत्ता पर गर्व करती थी। अगर हरेश को ब्रह्मपुर या कलकत्ता स्थित प्राहा शू फैक्ट्री में कोई अच्छी नौकरी मिल जाती, तो वह एक साथ दो काम कर लेता: अपना आत्मसम्मान वापस पा लेता और लता के करीब आ जाता। उमेश अंकल के ताने उसके कानों में गूंज रहे थे, साथ ही घोष के धोखे के आरोप भी।
श्री मुखर्जी से हुई मुलाकात ने हरेश को प्राहा कंपनी में संपर्क बनाने का मौका दिया। किसी ने हरेश को बताया कि उनके पुराने बॉस शहर में आए हुए हैं। हरेश उनसे मिलने गए। हरेश को मुखर्जी से कोई शिकायत नहीं थी, जिन्हें वे एक नेक इंसान मानते थे, भले ही वे बहुत साहसी न हों। अपने बहनोई के हरेश के प्रति कठोर रवैये के बावजूद, मुखर्जी को जो कुछ हुआ था उसका बहुत दुख था। उन्होंने पहले ही हरेश को बताया था

कि श्री खंडेलवाल—प्राहा शू कंपनी के चेयरमैन, और हैरानी की बात यह है कि वे चेक नहीं बल्कि भारतीय थे—व्यापार के सिलसिले में शहर में आए हुए हैं। हरेश, जो प्राहा संगठन में किसी को नहीं जानते थे, ने सोचा कि यह उनके साथ अपनी किस्मत आजमाने का सुनहरा अवसर है—या कम से कम अपने कई अनुरोधों और पत्रों का जवाब पाने का। उन्होंने मुखर्जी से कहा कि अगर वे उन्हें श्री खंडेलवाल से मिलवा दें तो वे उनके आभारी होंगे।

एक शाम मुखर्जी हरीश को अपने साथ इंपीरियल होटल ले गए, जहाँ श्री खंडेलवाल दिल्ली में रहने पर हमेशा ठहरते थे। दरअसल, श्री खंडेलवाल हमेशा मुगल सुइट में ठहरते थे, जो सभी सुइट्स में सबसे आलीशान था। वे शांत स्वभाव के व्यक्ति थे, मध्यम कद के, थोड़े मोटे और उनके बाल भी सफेद होने लगे थे। उन्होंने कुर्ता और धोती पहनी हुई थी। जाहिर तौर पर, वे हरीश से भी ज्यादा पान के शौकीन थे; वे एक साथ तीन पान चबाते थे।

हरेश को पहले तो यकीन ही नहीं हुआ कि सोफे पर धोती पहने बैठा यह आदमी वही मशहूर श्री खंडेलवाल हैं। लेकिन जब उसने देखा कि कैसे सब लोग उनके चारों ओर भाग-दौड़ कर रहे थे, कुछ तो सचमुच कांपते हुए उन्हें कागज़ दे रहे थे जिन्हें वे झटपट पढ़कर, आमतौर पर कुछ ही शब्दों में, टिप्पणी कर देते थे, तब हरेश को उनकी बुद्धिमत्ता और निर्विवाद अधिकार का एहसास हुआ। एक छोटा, उत्साही चेक व्यक्ति, अत्यंत विनम्रता से इधर-उधर घूमता हुआ, श्री खंडेलवाल के हर काम, जाँच या रिपोर्ट के लिए नोट्स लिखता जाता था।

जब श्री खंडेलवाल ने श्री मुखर्जी को देखा तो उन्होंने मुस्कुराकर बंगाली में उनका स्वागत किया। मारवाड़ी होने के बावजूद, श्री खंडेलवाल, जिन्होंने अपना पूरा जीवन कलकत्ता में बिताया था, बंगाली भाषा में धाराप्रवाह थे;

वास्तव में, वे कलकत्ता के पास प्राहापुर कारखाने के ट्रेड यूनियन नेताओं के साथ बैठकें पूरी तरह से बंगाली में ही करते थे।

'मुखर्जी साहब, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?' उसने कहा और व्हिस्की का एक घूंट लिया।

"यह युवक, जो हमारे लिए काम कर रहा था, अब नौकरी की तलाश में है। वह यह देखना चाहता था कि क्या प्राहा उसे नौकरी दे सकता है। उसके पास फुटवियर टेक्नोलॉजी में उत्कृष्ट शैक्षणिक योग्यताएं हैं, और मैं अन्य सभी मामलों में उसकी योग्यता की गारंटी दे सकता हूं।"

श्री खंडेलवाल ने दयालुता से मुस्कुराते हुए, अब श्री मुखर्जी की ओर नहीं बल्कि हरेश की ओर देखते हुए कहा: 'आप मुझ पर इतना उदार क्यों हो रहे हैं कि मुझे इतना अच्छा आदमी दे रहे हैं?'

श्री मुखर्जी थोड़े शर्मिंदा दिखे। उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा, "उसके साथ अन्याय हुआ है, और मेरे पास अपने बहनोई से इस बारे में बात करने की हिम्मत नहीं है। वैसे भी, मुझे डर है कि इससे कोई फायदा नहीं होगा; उसने अपना मन बना लिया है।"

श्री खंडेलवाल ने हरीश से पूछा, 'आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?'

'सर, मैंने प्राहा में नौकरी के लिए कई बार आवेदन किया है और कई पत्र भी भेजे हैं, लेकिन मुझे अभी तक कोई उचित जवाब नहीं मिला है। यदि आप मेरे आवेदन पर कम से कम विचार करने का निर्णय लें, तो मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी योग्यता और कार्य अनुभव मुझे कंपनी में नौकरी दिला देंगे।'

'उसका आवेदन ले लो,' श्री खंडेलवाल ने कहा, और उस सलीके से कपड़े पहने चेक व्यक्ति ने आवेदन ले लिया और अपने पैड पर कुछ लिख लिया।

'तो—' श्री खंडेलवाल ने कहा, 'आपको एक सप्ताह से भी कम समय में

प्राहा से सूचना मिल जाएगी।'
लेकिन हालांकि हरेश को कुछ ही दिनों में प्राहा से खबर मिली, लेकिन कार्मिक कार्यालय ने उसे एक बार फिर 28 रुपये प्रति सप्ताह की नौकरी की पेशकश की: यह एक मामूली रकम थी जिसने उसे केवल क्रोधित ही किया।
हालांकि, इससे उमेश अंकल को तसल्ली मिली। 'मैंने तुमसे कहा था कि अगर तुमने यह नौकरी छोड़ी तो तुम्हें नौकरी नहीं मिलेगी। लेकिन तुमने मेरी सलाह कभी नहीं मानी; तुम खुद को बहुत होशियार समझते थे। अब देखो, मेहनत करने के बजाय दूसरों पर निर्भर हो, जबकि एक आदमी को मेहनत करनी चाहिए।'
हरेश ने खुद को संभालते हुए जवाब दिया: 'उमेश अंकल, आपकी सलाह के लिए एक बार फिर धन्यवाद। यह हमेशा की तरह ही मूल्यवान है।'
हरेश के अचानक आए इस विनम्र स्वभाव को देखकर उमेश अंकल को लगा कि उसका मनोबल टूट गया है और अब से वह उनकी सलाह को आसानी से स्वीकार कर लेगा। उन्होंने हरेश से कहा, 'अच्छा हुआ कि तुम्हें आखिरकार अक्ल आ गई। किसी को भी अपने बारे में बहुत अधिक नहीं सोचना चाहिए।'
हरेश ने सिर हिलाया, उसके विचार बिल्कुल भी विनम्र नहीं थे।
13.21
कुछ सप्ताह पहले जब लता को हरेश का पहला पत्र मिला था—जो उसके नीले रंग के नोटबुक पर उसकी छोटी, आगे की ओर झुकी लिखावट में तीन पन्नों का था—तो उसने उसका जवाब दोस्ताना लहजे में दिया था। हरेश के पत्र का आधा हिस्सा प्राहा शू कंपनी में किसी से संपर्क करने की कोशिश से संबंधित था, ताकि वह अपना आवेदन प्रस्तुत कर सके। कानपुर में हुई मुलाकात में श्रीमती रूपा मेहरा ने बताया था कि वह

किसी ऐसे व्यक्ति को जानती हैं जो किसी ऐसे व्यक्ति को जानता है जो शायद मदद कर सके। वास्तव में, यह उनकी कल्पना से कहीं अधिक कठिन साबित हुआ और कुछ भी हासिल नहीं हुआ। उस समय हरेश को यह पता नहीं था कि घटनाओं की एक विचित्र श्रृंखला और श्री मुखर्जी की सहानुभूति के कारण उसे प्राहा के अध्यक्ष श्री खंडेलवाल से मिलने का अवसर मिलेगा।

पत्र का दूसरा भाग व्यक्तिगत था। लता ने उसे कई बार पढ़ा था। कबीर के पत्र के विपरीत, इसे पढ़कर उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई थी।

यह काम खत्म हो गया है [हरेश ने लिखा था], हमेशा की तरह मेरी यही कामना है कि आपकी घर वापसी की यात्रा सुखद रही होगी और ब्रह्मपुर से इतने लंबे समय बाद आपसे मिलने वाले सभी लोगों ने आपको याद किया होगा। मुझे उम्मीद है कि पुल मेले में हुई दुर्घटना से शहर उबर चुका होगा।

कानपुर आने और हमारे साथ बिताए सुखद समय के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आपमें ज़रा भी संकोच या बनावटीपन नहीं था और मुझे पूरा विश्वास है कि हम बहुत अच्छे दोस्त बन सकते हैं। आपकी स्पष्टवादिता और बात कहने का तरीका मुझे बहुत पसंद आया। मैं मानता हूँ कि मैंने बहुत कम ऐसी अंग्रेज़ लड़कियाँ देखी हैं जो आपकी तरह इतनी अच्छी अंग्रेज़ी बोलती हों। ये गुण, आपके पहनावे और व्यक्तित्व के साथ मिलकर आपको औसत से कहीं ऊपर ले जाते हैं। मुझे लगता है कि कल्पना ने आपकी जो तारीफ़ की थी, वह बिल्कुल सही थी। ये सब शायद तारीफ़ लगें, लेकिन मैं अपने मन की बात लिख रहा हूँ।

मैंने आज ही आपकी तस्वीर अपने पालक पिता को भेजी है, साथ ही उन कुछ पलों के दौरान आपके बारे में बनी अपनी राय भी भेजी है जो हमने साथ बिताए थे। मैं आपको बता दूँगा कि उनका क्या कहना है।

लता यह समझने की कोशिश कर रही थी कि आखिर इस पत्र में उसे क्या पसंद आया। हरेश की अंग्रेज़ी थोड़ी अटपटी थी। तीन छोटे पैराग्राफ में लिखे लगभग दस उदाहरणों में से दो उदाहरण लें तो, 'सामान्य तरीके से' और 'बातें कहने का तरीका', लता की भाषा की समझ से मेल नहीं खाते थे। फिर भी, पूरा पत्र उसे बुरा नहीं लगा। किसी ऐसे व्यक्ति से प्रशंसा पाना सुखद था जो प्रशंसा करने में अभ्यस्त नहीं लगता था—और जो अपने भरपूर आत्मविश्वास के बावजूद स्पष्ट रूप से लता की प्रशंसा करता था।

जैसे-जैसे वह पत्र पढ़ती गई, उसे वह और भी पसंद आने लगा। लेकिन उसने जवाब देने से पहले कुछ देर इंतजार किया:

Dear Haresh,

मुझे आपका पत्र पाकर बहुत खुशी हुई, क्योंकि आपने स्टेशन पर ही संकेत दिया था कि आप मुझे पत्र लिखना चाहते हैं। मेरा मानना है कि एक-दूसरे को जानने का यह एक अच्छा तरीका है।

प्राहा शू कंपनी से हमें ज्यादा सफलता नहीं मिली है, लेकिन इसका कारण यह है कि हम फिलहाल कलकत्ता में नहीं हैं और कंपनी का मुख्यालय वहीं है, साथ ही मां का एक परिचित भी वहीं रहता है। लेकिन मां ने उसे पत्र लिख दिया है, देखते हैं क्या होता है। उन्होंने कलकत्ता में रहने वाले मेरे भाई अरुण से भी इस बारे में बात की है, शायद वह हमारी मदद कर सके। उम्मीद करते हैं कि सब ठीक हो जाए।

अच्छा होता अगर आप प्राहापुर में होते, क्योंकि नए साल की छुट्टियों में जब मैं कलकत्ता में होता, तो हम नियमित रूप से एक-दूसरे से ज़्यादा मिल पाते। कानपुर में आपसे मिलकर अच्छा लगा। मुझे खुशी है कि मैंने वहाँ अपना सफ़र रोक दिया। लखनऊ स्टेशन पर आपने हमें डिब्बे में सुरक्षित पहुँचाने और हमारा सामान रखने में जो मदद की, उसके लिए मैं

आपको फिर से धन्यवाद देना चाहता हूँ। हमारी वापसी का सफ़र बहुत आरामदायक रहा, और प्राण—मेरे जीजाजी—ने दूसरे छोर पर हमारा स्वागत किया।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आपने अपने पालक पिता को पत्र लिखा है। मुझे यह जानने की उत्सुकता होगी कि वे क्या सोचते और कहते हैं।

मुझे यह स्वीकार करना होगा कि चमड़ा कारखाने का दौरा करना दिलचस्प था। मुझे आपका चीनी डिज़ाइनर पसंद आया। जिस तरह से वह हिंदी बोलता था, वह बहुत अच्छा लगा।

मुझे आप जैसे महत्वाकांक्षी पुरुषों को देखकर अच्छा लगता है—आपको ज़रूर सफलता मिलेगी। धूम्रपान न करने वाले व्यक्ति से मिलना भी सुखद है—मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि मैं इसकी सराहना करती हूँ —क्योंकि मेरे विचार से इसके लिए एक मजबूत व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है। मुझे आप इसलिए पसंद आए क्योंकि आप अपनी सभी बातों में इतने स्पष्ट और बेबाक थे—कलकत्ता में, और केवल कलकत्ता में ही नहीं, आमतौर पर मिलने वाले युवाओं से बिल्कुल अलग —आप इतने सभ्य, इतने आकर्षक, फिर भी इतने सच्चे। आपकी सच्चाई मन को सुकून देती है।

जब हम मिले थे, तब आपने बताया था कि आप इस साल की शुरुआत में कुछ समय के लिए ब्रह्मपुर आए थे, लेकिन हम दूसरी बातों में उलझ गए और इस पर ज़्यादा चर्चा नहीं हुई। इसलिए माँ (और सिर्फ़ माँ ही नहीं, मैं मानती हूँ) यह जानकर हैरान रह गईं कि आप हमारे परिवार के कम से कम दो सदस्यों को पहले से जानती हैं। प्राण ने बताया कि वह आपसे एक पार्टी में मिला था। अगर आपको याद न हो, तो वह अंग्रेज़ी विभाग में दुबले-पतले, लंबे लेक्चरर हैं। आपने अभी-अभी उन्हीं के पते पर पत्र लिखा है। और फिर हैं केदारनाथ टंडन—जो प्राण के जीजाजी हैं—यानी

मेरे जीजाजी के जीजाजी, लेकिन (ब्रह्मपुर के संदर्भ में, और शायद आपके दिल्ली के संदर्भ में भी) यह काफ़ी करीबी रिश्ता है। उनके बेटे भास्कर को भी अभी-अभी आपका पत्र मिला है, जो मुझे भेजे गए पत्र से भी छोटा है। आपको यह जानकर दुख होगा कि पुल मेले की भगदड़ में उन्हें मामूली चोट लगी थी, लेकिन अब वे लगभग पूरी तरह ठीक हो चुके हैं। वीना ने बताया कि पोस्टकार्ड और उसमें दी गई जानकारी पाकर वे कितने खुश हुए।

ब्रह्मपुर में इन दिनों असहनीय गर्मी है और मुझे अपनी बहन सविता की थोड़ी चिंता हो रही है, जो जल्द ही माँ बनने वाली है। लेकिन माँ सब कुछ संभालने के लिए यहाँ हैं, और प्राण से बेहतर और देखभाल करने वाला पति कोई हो ही नहीं सकता।

मैं अभी तक अपनी पढ़ाई में पूरी तरह से रम नहीं पाई हूँ, लेकिन अपनी इच्छा के विरुद्ध, एक दोस्त की सलाह पर, मैंने इस साल के हमारे वार्षिक दिवस नाटक 'ट्वेल्थ नाइट' में एक भूमिका निभाने का फैसला किया है। मुझे ओलिविया का किरदार मिला है और मैं अपने संवाद याद करने में व्यस्त हूँ, जिसमें मेरा काफी समय लग रहा है। मेरी दोस्त मुझे हौसला देने के लिए ऑडिशन में आई थी, लेकिन उसे मारिया का किरदार मिल गया, जो एक तरह से उसके लिए सही ही हुआ। माँ, पुराने ख्यालों की होने के कारण, मेरे अभिनय के बारे में मिली-जुली राय रखती हैं। आपको क्या लगता है?

मुझे आपके अगले पत्र का इंतज़ार रहेगा—कृपया अपने बारे में लिखें। मुझे आपकी हर बात जानने में रुचि होगी।

मुझे अब अलविदा कहना चाहिए, क्योंकि यह पत्र पहले ही काफी लंबा हो चुका है और मुझे लगता है कि अब तक आपको जम्हाई आ रही होगी।

मां की ओर से आपको ढेर सारी शुभकामनाएं, और मेरी ओर से भी

आपको ढेर सारी शुभकामनाएं।

लता के पत्र में हरेश के अड़ियल रवैये, कानपुर को 'कांवपोर' बोलने, चमड़ा कारखाने की बदबू, पान, सह-पत्रकार के जूतों या उसकी मेज पर रखी सिमरन की तस्वीर का कोई ज़िक्र नहीं था। ऐसा नहीं था कि लता उन्हें भूल गई थीं, बल्कि उनमें से कुछ की यादें धुंधली पड़ गई थीं, कुछ बातें अब उन्हें उतनी बुरी नहीं लगती थीं, और एक बात तो ऐसी थी जिसका ज़िक्र वह कभी करना नहीं चाहती थीं—जब तक कि ऐसा करना ज़रूरी न हो जाए।

लेकिन हरेश ने अपने अगले पत्र में खुद ही इस बात का ज़िक्र किया। उन्होंने बताया कि लता की जो बात उन्हें सबसे ज़्यादा पसंद आई, वह थी उनकी स्पष्टवादिता, और इसी ने उन्हें खुलकर बोलने का हौसला दिया, खासकर तब से जब लता ने उनसे अपने बारे में बताने को कहा था। उन्होंने विस्तार से बताया कि सिमरन उनके जीवन में कितनी महत्वपूर्ण थीं, कैसे उन्हें यह एहसास होने के बाद कि उनके लिए कोई उम्मीद नहीं बची है, कोई ऐसा व्यक्ति मिलना असंभव सा लगने लगा था जो उनके लिए मायने रख सके, और कैसे लता उनके जीवन के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर उनके जीवन में आईं। अब उन्होंने सुझाव दिया कि वह सिमरन को एक पत्र लिखें ताकि दोनों एक-दूसरे को बेहतर तरीके से जान सकें। उन्होंने सिमरन को अपनी मुलाकात के बारे में पहले ही लिख दिया था, लेकिन उस समय उनके पास सिमरन की एकमात्र तस्वीर थी जो उनके पालक पिता के पास थी, इसलिए वह उसे अपने पत्र में नहीं भेज सके। उन्होंने लिखा:

...मुझे उम्मीद है कि आप सिमरन के बारे में इतनी बातें करने के लिए मुझे माफ कर देंगे, लेकिन वह एक बहुत ही प्यारी लड़की है और आप दोनों अच्छे दोस्त बन सकते हैं। अगर आप उसे पत्र लिखना चाहें, तो यह

उसका पता है। आप उसे सीधे पत्र नहीं लिख सकते क्योंकि उसके लोग पत्र रोक सकते हैं, इसलिए पत्र को मिस प्रीतम कौरा के नाम से इस पत्र के नीचे दिए गए पते पर भेजें। मैं चाहता हूँ कि आप अपना फैसला लेने से पहले मुझे, खासकर मेरे अतीत को अच्छी तरह जान लें, और सिमरन उसका एक अभिन्न अंग है।

कभी-कभी मुझे लगता है कि आपसे मिलना इतना सुखद है कि यकीन ही नहीं होता। मैं पूरी तरह से निराश हो गई थी, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं और किससे साथ पाऊं। बेचारी सिमरन, उसकी परिस्थिति ऐसी है कि वह अपने दिल की बात भी नहीं कह पाती, उसके परिवार वाले रूढ़िवादी हैं—आपकी मां से बिलकुल अलग, भले ही नाटकों को लेकर उनकी मिली-जुली भावनाएं हों। आप मेरी जिंदगी में एक नई रोशनी बनकर आईं, एक ऐसे इंसान की तरह जिनसे प्रेरित होकर मैं बेहतर बनना चाहती हूं।

आपने मेरी ईमानदारी की बहुत प्रशंसा की है—जिन परिस्थितियों में मैं रहा हूँ, उन्हें देखते हुए ईमानदार होना स्वाभाविक ही था। ईमानदारी और स्पष्टवादिता का एक नकारात्मक पहलू भी है—किसी को चोट न पहुँचाने के चक्कर में किसी के भ्रम को दूर करने का निर्णय टाल देना—अंततः इसका खामियाजा भुगतना ही पड़ता है। जब हम एक-दूसरे को बेहतर जान लेंगे और क्षमा करके भूल जाएँगे, तब मैं इस कथन को विस्तार से समझाऊँगा। मैं आपको एक संकेत देना चाहता हूँ—शायद बेहतर होगा कि मैं ऐसा न करूँ। क्योंकि मेरे जीवन के कुछ पहलू बिल्कुल अपूर्ण हैं, और शायद इसके लिए आपको मुझे क्षमा करना मुश्किल लगे। शायद मैंने पहले ही बहुत कुछ कह दिया है।

खैर, हमारी अचानक हुई मुलाकात के लिए मुझे कल्पना का शुक्रिया अदा करना है। अगर वो न होती तो हम कभी एक-दूसरे को जान ही नहीं पाते।

कृपया मुझे अपने पैर का निशान भेजें, क्योंकि मैं आपके लिए कुछ डिज़ाइन करना चाहता हूँ—शायद चीनी व्यक्ति, श्री ली, इसमें आपकी मदद कर सकें! क्या आपको गर्मियों के लिए कम ऊँचाई वाली सैंडल चाहिए या आप हमेशा की तरह ऊँची एड़ी के जूते पहनती हैं?

और हाँ, आपने जो तस्वीर मुझे दी थी, वो मुझे शायद ही कभी देखने को मिलती है क्योंकि वो डाक से आती-जाती रहती है। कृपया मुझे अपनी कोई और हाल ही की तस्वीर भेज दीजिए। मैं वो तस्वीर नहीं भेजूँगा। आज मैंने आपकी तस्वीर के लिए फ्रेम लेने की कोशिश की, लेकिन मुझे नहीं मिला। इसलिए मैं आपकी अगली तस्वीर का इंतज़ार कर रहा हूँ, ताकि अच्छे फ्रेम पर पैसे खर्च कर सकूँ। क्या आपको बुरा लगेगा अगर मैं आपकी तस्वीर अपनी मेज़ पर रखूँ? इससे शायद मुझे और ज़्यादा महत्वाकांक्षी बनने की प्रेरणा मिले। जब मैं अपने पिता के यहाँ से लौटकर आई आपकी तस्वीर देखता हूँ, तो मुझे आपकी हल्की सी मुस्कान बहुत प्यारी लगती है। आपमें एक ऐसा आत्मविश्वास है जो मुझे बहुत आकर्षित करता है, लेकिन मुझे यकीन है कि आप खुद भी यह जानती होंगी—यह बात तो मुझसे पहले भी कई लोगों ने आपको बताई होगी।

मेरे पिता इस विवाह के पक्ष में प्रतीत होते हैं।

अपनी माँ, प्राण, केदारनाथ और उनकी पत्नी, और भास्कर को मेरा नमस्कार कहना। उस भगदड़ में उस लड़के के घायल होने के बारे में सोचकर मुझे बहुत दुख होता है। मुझे उम्मीद है कि अब वह ठीक होगा।

स्नेहपूर्वक,

Haresh

लता इस पत्र से बेचैन हो गई। तस्वीर से लेकर पैरों के निशान तक, हर बात उसे परेशान कर रही थी, और उसके अतीत के बारे में दिए गए संकेत भी उसे चिंतित कर रहे थे। वह समझ नहीं पा रही थी कि वह उससे

सिमरन को पत्र लिखने की उम्मीद कैसे कर सकता है। लेकिन क्योंकि वह उसे पसंद करती थी, उसने यथासंभव विनम्रता से जवाब दिया। प्राण के अस्पताल में भर्ती होने, सविता के जल्द ही जन्म लेने वाले बच्चे और कबीर के साथ रोज़ाना की रिहर्सल के बोझ तले दबी लता, दो-तीन पन्ने से ज़्यादा नहीं लिख पाई, और जब उसने पत्र को दोबारा पढ़ा, तो उसे वह इनकारों की एक श्रृंखला के अलावा कुछ नहीं लगा। उसने उसे अपने इशारों को ज़ाहिर करने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया; वास्तव में उसने इसका ज़िक्र तक नहीं किया। उसने बस इतना कहा कि जब तक वह अपनी भावनाओं को लेकर आश्वस्त नहीं हो जाती, तब तक वह सिमरन को पत्र नहीं लिख सकती (हालाँकि वह इस बात से खुश थी कि उसने उस पर इतना भरोसा किया कि इतनी सारी बातें उससे साझा कीं)। उसे अपने पैरों को लेकर शर्म आ रही थी, क्योंकि उसे लगता था कि वे ज़्यादा आकर्षक नहीं दिखते। और जहाँ तक तस्वीर की बात है:

सच कहूँ तो, स्टूडियो में या स्टूडियो के लोगों द्वारा फोटो खिंचवाना मेरे लिए बहुत कष्टदायक होता है। मुझे पता है कि यह मेरी बेवकूफी है, लेकिन मुझे बहुत बुरा लगता है। मुझे लगता है कि माँ ने मेरी जो आखिरी तस्वीर खिंचवाई थी—जो मैंने आपको दी थी उससे पहले—लगभग छह साल पहले, और वह बिल्कुल भी अच्छी नहीं थी। जो तस्वीर आपके पास है, वह इस साल मजबूरी में कलकत्ता में खिंचवाई गई थी। पिछले तीन सालों से मैं अपने पुराने स्कूल की पत्रिका के लिए एक तस्वीर भेजने का वादा करती रही हूँ; वास्तव में, कानपुर आने से ठीक पहले जब मैं अपनी एक पुरानी नन से मिली और उन्होंने इस बारे में मुझसे फिर से सवाल किया, तो मुझे खुद पर बहुत शर्म आई। कम से कम अब मैं उन्हें एक तस्वीर भेज पाई हूँ। लेकिन मैं उस कष्ट से दोबारा नहीं गुजर सकती। जहाँ तक 'मुस्कान की कगार' की बात है—कुल मिलाकर, मुझे लगता है कि

आप मेरी तारीफ कर रही हैं। यह विरोधाभासी है, क्योंकि मैं आपको एक बहुत ही ईमानदार और स्पष्टवादी व्यक्ति मानती हूँ, और निश्चित रूप से ईमानदारी और चापलूसी एक साथ नहीं चल सकते! खैर, जो कुछ भी कहा गया है, वह तो हमेशा सच ही होता है।

इस पत्र और हरेश के अगले पत्र के बीच काफी लंबा अंतराल था, और लता को लगा कि उसके तीन बार इनकार करने से हरेश को बहुत दुख हुआ होगा। उसने मालती से इस बारे में बात की कि तीनों बार इनकार करने में से किस बात ने हरेश को सबसे ज्यादा परेशान किया, और इस चर्चा से उसे इस मामले को हल्के में लेने में मदद मिली।

13.22

एक दिन, जब कबीर ने विशेष रूप से अच्छा अभिनय किया, तो लता ने मालती से कहा: 'मैं बाद में उसे बताऊंगी कि मुझे उसका अभिनय कितना अच्छा लगा। यही एक तरीका है जिससे बातचीत शुरू हो सकती है।'

मलाती ने कहा: 'लता, मूर्खता मत करो, इससे बर्फ नहीं पिघलेगी, बल्कि तनाव बढ़ेगा। बस जो जैसा है उसे वैसा ही रहने दो।'

लेकिन रिहर्सल खत्म होने के बाद, जब वे तीनों, और कुछ अन्य लोग, सभागार के बाहर इधर-उधर घूम रहे थे, कबीर लता के पास आया और बोला: 'क्या आप इसे भास्कर को दे सकती हैं? मेरे पिताजी को लगा कि उन्हें यह दिलचस्प लगेगा।' यह एक अनोखी आकृति की पतंग थी: एक तरह की हीरे के आकार की जिसके पीछे झालरें लगी थीं।

‘जी हां, बिल्कुल,’ लता ने थोड़ी झिझकते हुए कहा। ‘लेकिन आपको पता है कि वह अब प्रेम निवास में नहीं है। वह मिसरी मंडी में अपने माता-पिता के घर वापस चला गया है।’

मुझे उम्मीद है कि इससे आपको ज्यादा परेशानी नहीं होगी—

'नहीं, कबीर, ऐसा बिल्कुल नहीं है—आपने उसके लिए जो कुछ भी

किया है, उसके लिए हम आपके जितने भी आभारी हों, कम है।'
दोनों चुप रहे। मालती कुछ देर वहीं खड़ी रही, यह सोचकर कि अगर कबीर किसी गंभीर बातचीत में दखल दे तो लता शायद खुश हो जाएगी। लेकिन लता पर एक-दो नज़र डालने के बाद उसे लगा कि लता को कबीर से अकेले में बात करना ज़्यादा अच्छा लगेगा। इसलिए वह उन दोनों से विदा लेकर चली गई—हालाँकि कबीर ने उसे नमस्कार नहीं किया था।
मालती के जाते ही कबीर ने लता से धीमी आवाज में कहा, 'तुम मुझसे क्यों बच रही हो?'
लता ने अपना सिर हिलाया, वह उसका चेहरा देखने में असमर्थ थी। लेकिन उस बातचीत से बचना नामुमकिन था जो बिल्कुल भी अनौपचारिक नहीं होने वाली थी।
‘आप क्या उम्मीद करते हैं?’ उसने कहा।
क्या तुम अब भी मुझसे उस बात को लेकर नाराज़ हो?
‘नहीं—मुझे इसकी आदत हो रही है। आज तुमने बहुत अच्छा अभिनय किया।’
कबीर ने कहा, 'मेरा मतलब नाटक से नहीं है। मेरा मतलब हमारी आखिरी वास्तविक मुलाकात से है।'
'अरे ऐसा है-'
'हां, वही।' ऐसा लग रहा था कि वह इस बात को सुलझाने के लिए दृढ़ संकल्पित था।
मुझे नहीं पता—तब से बहुत कुछ हो चुका है।’
'छुट्टियों के अलावा कुछ नहीं हुआ।'
मेरा मतलब है, मैंने चीजों के बारे में बहुत सोचा है—’
‘क्या आपको लगता है कि मैंने ऐसा नहीं किया है?’ उसने कहा।
‘कबीर, कृपया—मेरा मतलब यह था कि मैंने हमारे बारे में भी सोचा है।’

‘और इसमें कोई शक नहीं कि आप अब भी सोचते होंगे कि मैं अनुचित था।’ कबीर थोड़ा मुस्कुराया हुआ लग रहा था।

लता ने उसके चेहरे की ओर देखा, फिर मुंह फेर लिया। उसने कुछ नहीं कहा।

कबीर ने कहा, 'चलो टहलने चलते हैं। कम से कम इससे हमें अपनी खामोशी में कुछ करने को तो मिल जाएगा।'

‘ठीक है,’ लता ने सिर हिलाते हुए कहा।

वे सभागार से परिसर के केंद्र की ओर जाने वाले रास्ते पर चले - जैकारांडा के पेड़ों के झुरमुट की ओर, और उससे आगे क्रिकेट के जालों की ओर।

कबीर ने पूछा, 'क्या मुझे जवाब पाने का हक है?'

कुछ देर बाद लता ने कहा, 'गलत तो मैं ही थी।'

इससे कबीर का उत्साह एकदम पस्त हो गया। उसने आश्चर्य से उसकी ओर देखा और वह आगे बोली:

‘आप बिलकुल सही थे। मैं अनुचित और तर्कहीन था, और आपने जो कुछ भी कहा, वह सब मुझ पर लागू होता है। यह संभव नहीं है—यह कभी संभव नहीं था—लेकिन समय, करियर, पढ़ाई या अन्य व्यावहारिक चीजों के कारण नहीं।’

‘तो फिर क्यों?’ कबीर ने कहा।

लता ने कहा, 'मेरे परिवार की वजह से। चाहे वे मुझे कितना भी परेशान करें और बांधें, मैं उन्हें छोड़ नहीं सकती। अब मुझे यह पता चल गया है। बहुत कुछ हो चुका है। मैं अपनी माँ को नहीं छोड़ सकती—'

लता रुक गई, यह सोचकर कि कबीर पर इस आखिरी टिप्पणी का क्या प्रभाव पड़ेगा, लेकिन उसने फैसला किया कि उसे अब या कभी भी अपनी बात समझानी ही होगी।

उन्होंने कहा, 'मैं समझ सकती हूं कि वह हर चीज की कितनी परवाह करती है और इस घटना से वह कितनी प्रभावित होगी।'
'इससे!' कबीर ने कहा। 'तुम्हारा मतलब है, तुम और मैं।'
लता ने कहा, 'कबीर, क्या तुम्हें किसी ऐसे मिश्रित विवाह के बारे में पता है जो सफल रहा हो?' लेकिन कहते ही उसे लगा कि शायद उसने कुछ ज़्यादा ही कह दिया है। कबीर ने कभी खुलकर शादी का ज़िक्र नहीं किया था—वह उसके साथ रहना चाहता था, उसके करीब रहना चाहता था—लेकिन शादी? शायद उसने एक-दो साल इंतज़ार करने के लिए कहकर—जब उसने आगे की पढ़ाई, विदेश सेवा और कैम्ब्रिज में दाखिला लेने की अपनी योजनाओं का ज़िक्र किया था—तो शादी का संकेत दे दिया था। लेकिन अब वह इस शब्द से पीछे नहीं हट रहा था।
उन्होंने कहा, 'क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसने ऐसा नहीं किया हो?'
लता ने कहा, 'हमारे परिवार में तो मुझे किसी के बारे में पता ही नहीं है।'
'अविभाजित विवाह भी हमेशा आदर्श नहीं होते।'
'मुझे पता है, कबीर; मैंने सुना है—' लता ने दुखी स्वर में और इतनी सहानुभूति के साथ कहा कि कबीर समझ गया कि वह उसकी माँ के बारे में बात कर रही है।
वह रुका और बोला:
क्या इसका भी इससे कुछ संबंध है?
लता ने कहा, 'मैं कुछ नहीं कह सकती—मुझे नहीं पता—मुझे यकीन है कि मेरी माँ भी इससे प्रभावित होंगी।'
तो आपका कहने का मतलब यह है कि मेरी वंशानुगतता और मेरा धर्म ऐसे कारक हैं जिन्हें पार नहीं किया जा सकता—और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप मेरी परवाह करते हैं या नहीं।'

‘कबीर, ऐसा मत कहो,’ लता चिल्लाई। ‘मैं ऐसा महसूस नहीं करती।’
लेकिन यही वह आधार है जिस पर आप कार्य कर रहे हैं।
लता जवाब देने में असमर्थ थी।
कबीर ने पूछा, ‘क्या तुम्हें मेरी परवाह नहीं?’
'मैं यह करता हूं, मैं यह करता हूं-'
‘तो फिर तुमने लिखा क्यों नहीं? मुझसे बात क्यों नहीं करते—’
‘सिर्फ़ इसी वजह से—’ उसने पूरी तरह भावुक होकर कहा।
‘क्या तुम हमेशा मुझसे प्यार करोगे? क्योंकि मुझे पता है कि मैं करूंगा —’
‘ओह, कबीर, बस करो—मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकती—’ वह रो पड़ी।
असल में वह यही कहना चाह रही थी कि वह खुद को और कबीर को यह समझाने की कोशिश कर रही थी कि उनके बीच की भावनाएँ व्यर्थ हैं।
लेकिन वह उसे ऐसा करने की अनुमति नहीं देगा।
‘लेकिन हमें मिलना क्यों बंद कर देना चाहिए?’ उन्होंने जोर देकर कहा।
‘मुलाकात? कबीर, तुम्हें इसका कोई मतलब नहीं दिखता। इससे क्या नतीजा निकलेगा?’
‘क्या इसका कोई नतीजा निकलना ही चाहिए?’ उसने कहा। ‘क्या हम बस साथ में समय नहीं बिता सकते?’ कुछ देर रुककर उसने पूछा: ‘क्या आपको मेरे इरादों पर शक है?’
लता उदासी के व्याकुल स्वर में उनके चुंबनों को याद कर रही थी। वह याद इतनी तीव्र थी कि उसे अपने इरादों पर ही संदेह होने लगा। उसने धीमी आवाज़ में कहा, 'नहीं, लेकिन क्या यह सब दुखद नहीं होगा?'
उसे एहसास हुआ कि उसके सवालों से उसके मन में और भी सवाल उठ रहे हैं, और हर सवाल उस बड़ी उलझन में एक और गांठ जोड़ रहा है। उसका दिल उसके लिए तड़प रहा था, लेकिन अंदर से उसे लग रहा था

कि इसका कोई नतीजा नहीं निकलेगा। वह उसे बताना चाहती थी कि वह किसी और को लिख रही है, लेकिन अब वह ऐसा नहीं कर पा रही थी क्योंकि वह जानती थी कि इससे उसे कितना दुख होगा।

वे परीक्षा हॉल के बाहर सीढ़ियों से गुजर रहे थे। कबीर ने ऊपर उनकी ओर देखा और भौंहें सिकोड़ीं। रोशनी कम थी और नीचे पेड़ और बेंच घास पर लंबी छाया डाल रहे थे।

'तो अब हम क्या करें?' उसने निर्णायकता दिखाने की कोशिश में अपने होंठ सिकोड़ते हुए कहा।

लता ने कहा, 'मुझे नहीं पता। हमें अब कुछ समय साथ बिताना ही होगा, कम से कम मंच पर तो। कम से कम एक और महीने के लिए। हम खुद ही इस जाल में फंस गए हैं।'

'क्या तुम एक और साल इंतजार नहीं कर सकते?' उसने अचानक हताशा भरे स्वर में कहा।

'क्या बदलेगा?' उसने हताशा से कहा और रास्ते से हटकर उससे दूर एक बेंच की ओर चल पड़ी। वह इतनी थक चुकी थी कि सोच भी नहीं पा रही थी—भावनात्मक रूप से थकी हुई, बच्चे की देखभाल करते-करते थकी हुई, अभिनय करने के प्रयास से थकी हुई—और बेंच पर बैठ गई, अपना सिर अपनी बाहों पर टिका लिया। वह इतनी थकी हुई थी कि आंसू भी नहीं बहा पा रही थी।

यह वही गुलमोहर के पेड़ के नीचे वाली बेंच थी जिस पर वह परीक्षा के बाद बैठी थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। क्या उसे फिर से उसे दिलासा देना चाहिए? क्या उसे इस बात का होश भी था कि वह कहाँ बैठी है? वह इतनी उदास लग रही थी कि उसका मन कर रहा था कि वह उसे गले लगा ले। वह महसूस कर सकता था कि वह रोने के कितनी करीब थी।

दोनों ने वही कहा जो होना ही था, फिर भी कबीर को ऐसा नहीं लगा कि वे एक-दूसरे के विरोधी हैं। उसे लगा कि उसे लता को समझने की कोशिश करनी चाहिए। परिवार का दबाव, उस बड़े परिवार का दबाव जो अपने सदस्यों पर धीरे-धीरे और दृढ़ता से स्वीकृति थोपता है, ऐसा दबाव था जिसका सामना उसने अपने माता-पिता के साथ कभी नहीं किया था। पिछले कुछ महीनों में लता उससे दूर हो गई थी, और शायद अब उसकी पहुँच से बाहर हो चुकी थी। अगर वह अब उसके पास जाकर उसकी उदासी दूर करने में मदद करे, तो क्या वह कुछ खोया हुआ वापस पा सकेगा? या वह उसे और भी अधिक पीड़ादायक कमजोरी का बोझ ही देगा?

वह क्या सोच रही थी? वह ढलती रोशनी में वहीं खड़ा रहा, अपनी लंबी परछाई के पार से उसे देखता रहा। उसका सिर उसके हाथों से हिला तक नहीं था। वह अजीब सी पतंग उसके बगल में बेंच पर रखी थी। वह थकी हुई और बेसुध लग रही थी। एक-दो मिनट बाद वह उदास होकर चला गया।

13.23

लता लगभग पंद्रह मिनट तक चुपचाप बैठी रही, फिर पतंग लेकर उठ खड़ी हुई। लगभग अंधेरा हो चुका था। उसे सोचने में मुश्किल हो रही थी। लेकिन अब, अपने दर्द के कारण, उसे दूसरों की कठिनाइयों के प्रति सहानुभूति महसूस होने लगी। उसने प्राण और उसकी चिंताओं के बारे में सोचा। उसने खुद को याद दिलाया कि वरुण को लिखे हुए उसे काफी समय हो गया था।

उसे अचानक हरेश को लिखे अपने आखिरी पत्र की याद आ गई, और सिमरन के मामले में उसकी संक्षिप्त टिप्पणी भी याद आ गई, जो जाहिर तौर पर हरेश के लिए बहुत मायने रखती थी। बेचारा हरेश—वह भी एक

असंभव रिश्ते को निभाने की कोशिश कर रहा था, और यहाँ भी समस्या वैसी ही थी।

जहां तक उसकी बात है, कल एक और रिहर्सल थी। क्या वह पहले से ज़्यादा या कम घबराहट के साथ उसका सामना करेगी? कबीर के लिए कैसा होगा? कम से कम उन्होंने बात तो की थी; वह उस भयानक पल का बेसब्री से इंतज़ार नहीं कर रही होगी। वैसे भी, शायद उसका सामना करना, उसका इंतज़ार करने से कम भयानक था। लेकिन यह कितना निराशाजनक था। या क्या वास्तव में यह इतना निराशाजनक था?

वह शाम काफी शांत थी: उसकी माँ, प्राण, सविता, बच्चा और वह खुद। चर्चा के विषयों में से एक हरेश और उसके द्वारा अभी तक पत्र न लिखने का कारण था।

सामान्य तौर पर, श्रीमती रूपा मेहरा हरेश से आने वाले हर पत्र को पढ़ना चाहती थीं, लेकिन लता केवल उसकी खबरें और शुभकामनाएँ ही आगे पहुँचा देती थीं, उसकी सुखद टिप्पणियों को अपने तक ही सीमित रखती थीं, और अपनी माँ के साथ अधिक परेशान करने वाली टिप्पणियों को साझा करने में खुद को असमर्थ पाती थीं।

हरेश वास्तव में लता के पत्र से थोड़ा निराश था, लेकिन लगभग तुरंत जवाब न देने का कारण यह निराशा नहीं बल्कि अचानक बेरोजगार हो जाना था। वह इस बात को लेकर बहुत चिंतित था कि इस खबर का लता पर क्या असर होगा—और उससे भी ज़्यादा उसकी माँ पर, जो उसके प्रति सद्भावना रखती थी, लेकिन हरेश के अनुसार, अपनी बेटी के लिए उपयुक्त लड़के के चयन में वह बहुत सख्त और व्यावहारिक थी।

लेकिन जब एक सप्ताह बीत गया, और जेम्स हॉली ने अपनी अपीलों के बावजूद उनके साथ हुए अन्याय को दूर नहीं किया, और दिल्ली में भी श्री मुखर्जी द्वारा श्री खंडेलवाल से मुलाकात के वादे के अलावा कोई तत्काल

परिणाम नहीं निकला, तो उन्हें लगा कि वे अब और चुप नहीं रह सकते, और उन्होंने लता को पत्र लिखा।

हुआ यूं कि हरीश का पत्र आने से एक दिन पहले ही श्रीमती रूपा मेहरा को कल्पना गौर का पत्र मिला था, जिससे उन्हें पता चला कि हरीश की नौकरी चली गई है। प्राण, सविता और बच्चा सब घर लौट आए थे, इसलिए बहुत कुछ करना बाकी था, लेकिन यह ताजा और कुछ हद तक चौंकाने वाली खबर श्रीमती रूपा मेहरा के मन में सबसे ज्यादा छाई हुई थी। उन्होंने इस बारे में मीनाक्षी और काकोली समेत सभी से बात की, जो बच्चे को देखने आई थीं। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि हरीश ने 'ऐसे ही' नौकरी कैसे छोड़ दी; उनके पति तो हमेशा से दो काम निपटाने में विश्वास रखते थे, बजाय एक को झाड़ी में छोड़ने के। श्रीमती रूपा मेहरा हरीश को लेकर कई तरह से चिंतित होने लगीं और उन्होंने लता से अपनी चिंताएं जाहिर करना शुरू कर दिया।

'ओह, वह जल्द ही जरूर लिखेगा,' लता ने श्रीमती रूपा मेहरा की पसंद के हिसाब से कुछ ज्यादा ही लापरवाही से कहा।

अगले दिन ही उसकी बात सही साबित हो गई, और यह उसकी खुद की उम्मीद से कहीं जल्दी हुआ।

जब श्रीमती रूपा मेहरा ने डाक में हरेश की जानी-पहचानी लिखावट में लिखा एक लिफाफा देखा, तो उन्होंने लता से तुरंत उसे खोलने और उसमें लिखी बातें पढ़कर सुनाने की ज़िद की। लता ने मना कर दिया। काकोली और मीनाक्षी, जो इस दृश्य में शामिल होकर बहुत खुश थीं, ने मेज से पत्र छीन लिया और लता को चिढ़ाने लगीं। लता ने काकोली से पत्र वापस छीन लिया, अपने कमरे में भागी और दरवाजा बंद कर लिया। वह एक घंटे से अधिक समय तक बाहर नहीं निकली। उसने पत्र पढ़ा और किसी से सलाह लिए बिना ही उसका जवाब दे दिया। श्रीमती रूपा मेहरा अपनी

बेटी की अवज्ञा से और मीनाक्षी और काकोली से भी बहुत नाराज़ थीं।
'प्राण के बारे में सोचो,' उसने कहा। 'यह उत्साह उसके दिल के लिए अच्छा नहीं है।'
काकोली ने इतनी जोर से गाया कि उसकी आवाज बंद दरवाजे के दूसरी तरफ सुनाई दे सके:
'प्यारी लता, थोड़ा तो दिल रखो!'
आओ और मुझे चूमो। रूखा व्यवहार मत करो।
जब उसे इस भद्दी रचना पर कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली, तो उसने आगे कहा:
'मुझे आपके हाथों को चूमने दीजिए, मेरी रानी:
मैंने अब तक जितनी भी सुअर की खाल देखी है, उनमें यह सबसे मुलायम है।
श्रीमती रूपा मेहरा काकोली पर चिल्लाने ही वाली थीं कि तभी बच्ची के रोने की आवाज़ से दरवाजे के उस तरफ खड़े सभी लोगों का ध्यान भटक गया। लता शांति से शोरगुल भरे माहौल में पढ़ती रहीं।
हरेश का पत्र हमेशा की तरह सीधा-सादा था। बुरी खबर का जिक्र करने के बाद उन्होंने आगे लिखा:
प्राण की बीमारी और अब शायद उनके बच्चे की भी, आपके लिए यह समय आसान नहीं होगा, इसलिए मुझे खेद है कि मैं आपको उपरोक्त समाचार देकर परेशान कर रहा हूँ। लेकिन आज मुझे बहुत तनावपूर्ण परिस्थितियों में आपको लिखना पड़ा। जेम्स हॉली के श्री क्लेटन की ओर से पुनर्विचार के संबंध में अभी तक कोई सूचना नहीं मिली है, और अब मुझे इस दिशा में कुछ होने की उम्मीद भी कम ही है। यह एक अच्छी नौकरी थी जिसमें कुल मिलाकर 750 रुपये प्रति माह मिलते थे, लेकिन मैंने अभी तक पूरी तरह से उम्मीद नहीं छोड़ी है। मुझे लगता है कि वे इस

पूरे मामले में हुए अन्याय को समझेंगे। लेकिन शायद सीएलएफसी से इस्तीफा देने के बाद मैं सचमुच दोराहे पर आ गया हूँ। महाप्रबंधक श्री मुखर्जी एक अच्छे इंसान हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि श्री घोष मेरे सख्त खिलाफ हैं।

कल मैं कल्पना के साथ दो घंटे से अधिक समय तक थी और उस दौरान बातचीत का एकमात्र विषय तुम ही थे। मैं अपनी भावनाओं को कितना छिपा पाई, यह मुझे नहीं पता, क्योंकि तुम्हारे बारे में सोचकर ही मैं रोमांचित हो रही थी।

इस लिखने वाली पैड के लिए क्षमा करें। फिलहाल मेरे पास कोई और पैड नहीं है। कल्पना ने कहा है कि उसने मेरी खबर आपकी माँ को लिख दी है, और मुझे आज आपको लिखना चाहिए—और मुझे भी ऐसा ही लग रहा है।

इस महीने के अंत में इंदौर में (राज्य लोक सेवा आयोग के साथ) लघु उद्योग में नौकरी के लिए मेरा साक्षात्कार है। और शायद प्राहा का मामला सुलझ जाए। कम से कम अगर मैं श्री मुखर्जी के माध्यम से श्री खंडेलवाल से मिल पाता हूँ, तो मुझे यकीन है कि मुझे कलकत्ता में नौकरी का साक्षात्कार मिल जाएगा। हालाँकि, कुछ बातें हैं जिन पर आपको निर्णय लेना होगा:

1. क्या आप चाहेंगे कि मैं आपके बहनोई की बीमारी सहित कई अलग-अलग कारकों को ध्यान में रखते हुए ब्रह्मपुर होते हुए कलकत्ता जाऊं?

2. क्या मेरी बेरोज़गारी की स्थिति में आपको लगता है कि मैं पहले जैसा ही हूँ—अर्थात् क्या आपको लगता है कि आप मुझे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में पाकर काफी खुश रह सकते हैं जिसकी आप देखभाल कर सकें।

मुझे उम्मीद है कि आपकी मां इसे ज्यादा गंभीरता से नहीं लेंगी - मुझे यकीन है कि उनके लिए और भी नौकरियां उपलब्ध होंगी, और इसे ठीक

करने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।
मुझे कहीं न कहीं अपनी वर्तमान स्थिति में कुछ अच्छाई भी नज़र आती है — बेरोज़गार होने से इंसान के स्वभाव की बेहतर समझ मिलती है और सही चीज़ों का सही महत्व समझ आता है। आशा है प्राण अब ठीक होगा। परिवार को मेरा नमस्कार कहना। मैं जल्द ही फिर लिखूंगा।
आपका,
Haresh
13.24
इस पत्र से लता की गर्मजोशी और कोमलता और भी प्रभावी ढंग से उभर कर सामने आ गई। उन्हें हरेश के लिए बहुत बुरा लगा, खासकर इस सोच से कि उनके साहसी मुखौटे के पीछे कहीं गहरी चिंता छिपी हो सकती है। अगर उन्हें परेशानियाँ थीं, तो उन्हें भी थीं, और कहीं अधिक गंभीर। फिर भी, अपनी बदकिस्मती से निराश होने के बजाय, उन्होंने उसमें सकारात्मक पहलू देखने का दावा किया। भावनात्मक कठिनाई के सामने अधिक दृढ़ व्यवहार न करने के लिए लता को स्वयं पर थोड़ी शर्म महसूस हुई।
उसने जवाब में लिखा:
मेरे प्यारे हरीश,
आज आपका पत्र आया और मैं तुरंत जवाब दे रही हूँ। कल माँ को कल्पना का पत्र मिला था। तब से मैं आपको पत्र लिखना चाह रही थी, लेकिन मुझे लगा कि आपसे सीधे खबर सुने बिना मैं नहीं लिख सकती। आपको यकीन करना चाहिए कि इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। स्नेह नौकरी जैसी चीजों पर निर्भर नहीं करता। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आपने जेम्स हॉली में इतना अच्छा मौका गंवा दिया—यह वास्तव में एक बहुत अच्छी कंपनी है—मेरे ख्याल से लगभग सर्वश्रेष्ठ। खैर, चिंता मत करो।

जो होता है अच्छे के लिए होता है—और जैसा कि आपने कहा, अभी भी उम्मीद है—कोशिश करते रहने में कोई बुराई नहीं है। मुझे पूरा यकीन है कि कुछ न कुछ जरूर निकलेगा।

यहां लता रुकी और आगे लिखने से पहले बेडरूम की खिड़की से बाहर देखा। लेकिन उसे अपनी नहीं, बल्कि उसकी समस्याओं का समाधान करना था, और उसने विचारों के हावी होने से पहले ही लिखना जारी रखा।

शायद, हरीश, आपने अपनी कंपनी को यह न बताकर बहुत बड़ी गलती की कि आप कहीं और नौकरी ढूंढ रहे थे। शायद आपको उनके माध्यम से ही जाना चाहिए था। खैर, अब इसे भूल जाते हैं—यह सब अतीत की बात है। लोगों की बेरहमी तभी दुख देती है जब हम उसे याद करते रहते हैं। अब जब आपकी नौकरी चली गई है, तो शायद आपको सबसे अच्छी नौकरी के लिए कोशिश करनी चाहिए, न कि पहली नौकरी के लिए। शायद थोड़ा इंतजार करना फायदेमंद हो।

आपने पूछा कि क्या मैं चाहूँ कि आप कलकत्ता जाते समय ब्रह्मपुर में रुकें। आपसे दोबारा बात करके अच्छा लगेगा। आशा है कि आपकी मुस्कान अभी भी बरकरार है। वैसे भी, आपके पत्र से तो ऐसा नहीं लगता। आपकी मुस्कान बहुत प्यारी है—जब आप खुश होते हैं तो आपकी आँखें मानो गायब हो जाती हैं—और अगर आप इसे खो दें तो यह बहुत दुख की बात होगी।

यहां लता फिर रुक गई। मैं आखिर क्या लिख रही हूँ? उसने खुद से पूछा। क्या यह कुछ ज्यादा ही है? फिर उसने कंधे उचकाए, खुद से कहा कि वह इसे ठीक नहीं करेगी, और लिखना जारी रखा:

बस दिक्कत ये है कि घर में इस समय अफरा-तफरी मची हुई है, और अगर आप होटल में भी रहें, तो भी आप हमें बहुत ही उलझन भरे समय

में देखेंगे। साथ ही, मेरे भाई अरुण की पत्नी और साली भी यहाँ हैं, और हालाँकि मैं उन्हें बहुत पसंद करता हूँ, वे हम दोनों को एक पल भी चैन नहीं लेने देतीं। और फिर मेरी दोपहरें रिहर्सल में ही बीत जाती हैं, जिससे मैं बहुत परेशान हो जाता हूँ। मुझे नहीं पता कि मैं खुद हूँ या शेक्सपियर के किसी किरदार जैसा व्यवहार कर रहा हूँ। माँ भी कुछ अजीब मूड में हैं। कुल मिलाकर, हमारे लिए इस समय मिलना ठीक नहीं है। मुझे उम्मीद है कि आप ये नहीं सोचेंगे कि मैं आपको टालने की कोशिश कर रहा हूँ।

मुझे खुशी है कि श्री मुखर्जी इतने दयालु और समझदार हैं। मुझे आशा है कि वे आपकी मदद करने में सफल होंगे।

प्राण अस्पताल में तीन सप्ताह बिताने के बाद काफी बेहतर दिख रहा है, और बच्ची की निरंतर उपस्थिति—जिसका नाम पूरे परिवार ने एक तरह की बैठक में उमा रखा है—उसके लिए बहुत फायदेमंद साबित हुई है। वह आपको नमस्कार भेजता है, जैसे यहां सभी लोग भेजते हैं। मां कल्पना से आपकी खबर सुनकर चिंतित थीं, लेकिन ठीक उस तरह से नहीं जैसा आप सोच रही हैं। वह इसलिए ज्यादा चिंतित थीं क्योंकि उन्हें लगा कि मैं चिंतित हूं, और वह मुझे बार-बार कह रही थीं कि चिंता मत करो, सब ठीक हो जाएगा। मैं तो बस इसलिए चिंतित थी क्योंकि मुझे लगा कि आप बहुत परेशान होंगी—खासकर इसलिए कि आपने कुछ समय से पत्र नहीं लिखा था। तो आप समझ ही सकती हैं कि यह एक तरह का दुष्चक्र था। मुझे खुशी है कि आपने अपना आशावाद नहीं खोया है और आप निराश नहीं हैं। मुझे ऐसे लोग बिल्कुल पसंद नहीं हैं जो खुद को शहीद की तरह पेश करते हैं—ठीक वैसे ही जैसे मुझे आत्म-दया नापसंद है। यह बहुत सारी परेशानियों का कारण है।

मुझे हर बात की जानकारी देते रहना और जल्द ही लिखना। उमेश चाचा के अलावा किसी ने भी तुम पर से विश्वास नहीं खोया है, वैसे भी उमेश

चाचा को तुम पर कभी विश्वास था ही नहीं, इसलिए तुम भी खुद पर से विश्वास मत खोना।

स्नेहपूर्वक,

लता

13.25

लता ने वह पत्र मंसूर के साथ बाजार जाते समय रास्ते में पड़ने वाले सामान्य डाकघर में डाक से जमा करने के लिए भेज दिया।

श्रीमती रूपा मेहरा इस बात से नाराज थीं कि उन्हें न तो पत्र और न ही उसका जवाब पढ़ने की अनुमति दी गई थी।

‘माँ, अगर आप ज़िद करती हैं तो मैं आपको उसका पत्र पढ़ने दूंगी,’ लता ने कहा। ‘लेकिन मेरा जवाब तो जा चुका है, इसलिए उसे पढ़ने का कोई सवाल ही नहीं उठता।’

हरेश के पत्र में सामान्य से कहीं कम व्यक्तिगत बातें थीं, इसलिए इसे उजागर किया जा सकता था। 'अत्यधिक तनावपूर्ण परिस्थितियों' के कारण—या शायद लता की इस विषय पर संक्षिप्त प्रतिक्रिया के कारण —हरेश ने सिमरन का मुद्दा दोबारा नहीं उठाया था।

इसी बीच, काकोली को प्राण और सविता के लिए श्रीमती रूपा मेहरा का कार्ड मिल गया था, और वह असहाय बच्ची को 'मनमोहक' और 'सुंदर' जैसे शब्द कहकर आनंद ले रही थी, और उमा के माथे पर चुंबन करते हुए उन पंक्तियों को नए सिरे से दोहरा रही थी।

'चुप रहो! लेडी बेबी गहरी नींद में सो रही है, आग की दोस्ताना लपटें नाचती-कूदती हैं और उसे जलाकर राख कर देती हैं, और लेडी बेबी के कपड़े पर फैल जाती हैं।'

‘कितना भयानक!’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।

'आज एक नन्ही सी बच्ची जलकर राख हो गई—उसकी कोमल आत्मा

उड़ गई—भगवान ने उसे वापस खेलने-कूदने के लिए बुला लिया—और इस तरह एक नन्ही सी बच्ची कम हो गई।'

काकोली खिलखिलाकर हंस पड़ी। 'चिंता मत करो, मां, हम अगस्त में ब्रह्मपुर में आग नहीं जलाएंगे। यह साल का ऐसा समय नहीं है जब सूरज न निकलता हो।'

'मीनाक्षी, तुम्हें अपनी बहन पर नियंत्रण रखना चाहिए।'

'ऐसा कोई नहीं कर सकता, माँ। वह बिल्कुल नामुमकिन है।'

'तुम अपर्णा के साथ भी हमेशा यही कहते हो।'

'क्या मैं गर्भवती हूँ?' मीनाक्षी ने अनमने ढंग से कहा। 'ओह, मुझे याद आया, मुझे लगता है मैं गर्भवती हूँ।'

'क्या?' लेडी बेबी को छोड़कर बाकी सब चिल्ला उठे।

'हां—मेरा मासिक धर्म नहीं आया है—महज देरी होने से अब बहुत देर हो चुकी है। इसलिए हो सकता है कि आपको आखिरकार आपका पोता मिल ही जाए, मां।'

'ओह!' श्रीमती रूपा मेहरा ने असमंजस में कहा। कुछ देर रुककर उन्होंने पूछा, 'क्या अरुण को पता है?'

मीनाक्षी के चेहरे पर एक खोई-खोई सी झलक दिखाई दी। 'नहीं, अभी नहीं,' उसने कहा। 'मुझे लगता है मुझे उसे बताना ही पड़ेगा। क्या मैं उसे टेलीग्राम भेजूँ? नहीं, ऐसी बातें आमने-सामने ही करना बेहतर होता है। वैसे भी, मैं ब्रह्मपुर से ऊब चुकी हूँ। यहाँ कोई रौनक नहीं है।' उसे एक बार फिर कनास्ता, महजोंग, उन संदिग्ध महिलाओं और चकाचौंध भरी रोशनी की याद सताने लगी थी। ब्रह्मपुर में शायद एकमात्र जीवंत व्यक्ति मान था, और वह भी बहुत कम ही दिखाई देता था। उसके मेज़बान श्री और श्रीमती मैत्रा इतने कठोर थे कि उनके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता था। रुधिया परिवार के आवारा लोगों के बारे में तो उसके पास

कहने के लिए शब्द ही नहीं थे। इसके अलावा, लता उस मोची और उसकी चिंताओं में इतनी डूबी हुई थी कि अमित के बारे में इशारों को समझने की उसकी कोई इच्छा ही नहीं थी।

'कुकु, तुम्हारा क्या कहना है?'

'कहना?' कुकू ने कहा। 'मैं तो दंग रह गया। तुम्हें कब पता चला?'

मेरा मतलब कलकत्ता वापस जाने से था।

'ओह, ठीक है,' काकोली ने विनम्रता से कहा। ऐसा नहीं था कि उसे यहाँ मज़ा नहीं आ रहा था। लेकिन उसे कडल्स, हैंस, टेलीफ़ोन, दोनों रसोइये, कार और यहाँ तक कि परिवार की भी याद आ रही थी। 'जब भी आप चाहें, मैं जाने के लिए तैयार हूँ। लेकिन आप इतने सोच में क्यों डूबे हुए हैं?'

यह एक ऐसा लुक था जिसे मीनाक्षी काफी समय तक बीच-बीच में अपनाती रहीं।

वह आखिर कब गर्भवती हुई थी?

और किसके साथ?

13.26

हरेश को इस बात का दुख था कि कलकत्ता जाते समय उसे ब्रह्मपुर में रुकने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया गया और न ही कलकत्ता में लता के भाइयों से मिलने के लिए कहा गया, जबकि वे निश्चित रूप से उसके भावी जीजा बनने वाले थे। लेकिन लता के पत्र में दिखाई गई समझदारी ने उसकी अनिश्चितताओं के बीच उसे बहुत सांत्वना दी। प्राहा शू कंपनी का पत्र, जिसमें उसे 28 रुपये प्रति सप्ताह की नौकरी का प्रस्ताव दोहराया गया था, उसके आवेदन पर इतना दयनीय जवाब था कि उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि श्री खंडेलवाल का इसमें कोई हाथ हो सकता है। संभवतः यह पत्र कार्मिक कार्यालय को भेजा गया था, उन्हें

जवाब देने के लिए मजबूर होना पड़ा था, और उन्होंने हमेशा की तरह उपेक्षापूर्ण ढंग से जवाब दिया था।

हरेश ने कलकत्ता जाने का निश्चय कर लिया था और वहाँ पहुँचते ही उसने प्राहा को अपना निर्णय बदलने के लिए मनाने में जरा भी देर नहीं की। वह ट्रेन से प्राहापुर गया, जो पंद्रह मील से भी कम की दूरी थी। बारिश हो रही थी, इसलिए बंगाल के सबसे बड़े और सबसे कुशल परिसरों में से एक इस भव्य परिसर का उसका पहला अनुभव उदास वातावरण में हुआ। श्रमिकों के घरों की अंतहीन कतारें; कार्यालय और सिनेमाघर; सड़क के किनारे लगे हरे ताड़ के पेड़ और हरे-भरे खेल के मैदान; विशाल, चारदीवारी वाला कारखाना—जिसकी दीवार पर प्राहा के नवीनतम जूतों के विज्ञापन करीने से चित्रित थे; उससे भी ऊँची दीवारों के पीछे छिपी अधिकारियों की कॉलोनी (लगभग पूरी तरह से चेक); ये सब हरेश ने एक गर्म, गीली सुबह की असुविधा और धुंधलेपन के बीच देखा। उसने हल्के सफेद रंग का सूट पहना था और छाता लिए हुए था। लेकिन मौसम और बंगाल की जलवायु—दोनों ने ही उसे निराश किया था—उसके मन पर थोड़ा सा असर डाला था। रेलवे स्टेशन से कार्मिक कार्यालय जाते समय रिक्शा लेते हुए श्री घोष और श्री सेन गुप्ता की यादें उसके मन में उमड़ आईं। अच्छा, कम से कम मुझे यहां चेक लोगों से निपटना होगा, बंगालियों से नहीं, हरेश ने सोचा।

चेक लोग (एक अपवाद को छोड़कर) सभी भारतीयों के साथ एक जैसा व्यवहार करते थे, चाहे वे बंगाली बोलते हों या नहीं: तिरस्कारपूर्ण। उन्होंने अपने अनुभव से यह निष्कर्ष निकाला था कि भारतीय काम करने के बजाय बातें करना पसंद करते हैं। चेक लोगों को काम करने से बढ़कर कुछ भी पसंद नहीं था: उत्पादन, गुणवत्ता, बिक्री, लाभ और प्राहा शू कंपनी की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए। बातें करना अक्सर उनके लिए

नुकसानदायक साबित होता था; वे आम तौर पर अच्छी अंग्रेजी नहीं बोल पाते थे और न ही लिख पाते थे, और न ही उनमें संस्कृति की कोई खास समझ थी। उनके बारे में यह कहा जा सकता है कि जब कोई संस्कृति की बात करता था तो वे अपना औजार उठा लेते थे। लोग प्राहा शू कंपनी में कम उम्र में ही काम शुरू कर देते थे, चाहे चेकोस्लोवाकिया में हों या भारत में; वे कारखाने में काम से शुरुआत करते थे; विश्वविद्यालय की शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं थी। चेक लोग एक ओर तो भारतीयों की वाक्पटुता (यूनियन वार्ताकार सबसे बुरे थे) पर अविश्वास करते थे, और दूसरी ओर इस बात से नाराज़ थे कि कलकत्ता में ब्रिटिश व्यावसायिक प्रतिष्ठान, भले ही वे साथी यूरोपीय थे, उन्हें अपने बराबर नहीं मानता था। उदाहरण के लिए, बेंटसेन एंड प्राइस की प्रबंध एजेंसी के निदेशक, विभागाध्यक्ष और यहां तक कि अनुबंधित सहायक भी, प्राहा शू कंपनी के चेक लोगों के साथ मेलजोल रखने के बारे में सपने में भी नहीं सोच सकते थे।

चेक लोगों ने कड़ी मेहनत करके भारतीय जूता उद्योग का चेहरा बदल दिया। उन्होंने लगभग दलदली भूमि पर एक विशाल कारखाना और बस्ती स्थापित की, इसके बाद ब्रह्मपुर सहित चार छोटे कारखाने खोले और पूरे देश में दुकानों का एक सुव्यवस्थित नेटवर्क चलाया, न कि कलकत्ता क्लब में बैठकर मौज-मस्ती की। चेक अधिकारी, जिनमें उनके प्रबंध निदेशक भी शामिल थे, नौकरीपेशा परिवारों से नहीं थे। उनके लिए प्राहा शू कंपनी ही उनका जीवन थी और प्राहा सिद्धांत लगभग उनका धर्म था। उनकी शाखाएँ, कारखाने और दुकानें दुनिया भर में फैली हुई थीं; और यद्यपि उनके अपने देश में कम्युनिस्टों ने उन पर कब्ज़ा कर लिया था, लेकिन जो 'प्राहावासी' उस समय विदेश में थे या भागने में सफल रहे थे, उन्हें उनकी नौकरी से नहीं निकाला गया था। प्राहा शू कंपनी के मालिक

और संचालक श्री जान टोमिन थे, जो इसके महान संस्थापक के सबसे बड़े और उन्हीं के नाम वाले पुत्र थे, जिन्हें अब 'ओल्ड मिस्टर टोमिन' के नाम से जाना जाता है। श्री टॉमिन ने यह सुनिश्चित किया था कि उनके अनुयायी, चाहे कनाडा में हों, इंग्लैंड में हों, नाइजीरिया में हों या भारत में, सभी की अच्छी तरह देखभाल की जाए, और उन्होंने उनके प्रति अपनी वफादारी का बदला ऐसी प्रबल कृतज्ञता से चुकाया जो सामंती निष्ठा के करीब थी। जब उन्होंने सेवानिवृत्त होने का निर्णय लिया, तो यह अधीनता उनके पुत्र को सौंप दी गई। जब भी युवा श्री टॉमिन लंदन स्थित अपने विश्व मुख्यालय (दुर्भाग्यवश, अब प्राग में नहीं) से भारत आते थे, तो पूरा प्राहापुर उत्साह से भर उठता था। प्राहापुर में हर जगह टेलीफोन बजते थे और कलकत्ता स्थित मुख्यालय से उनके आगमन की सूचना देने वाले तत्काल संदेश भेजे जाते थे: 'श्री टॉमिन हवाई अड्डे पर पहुँच गए हैं,' यह अफवाह फैल जाती थी। 'वे अब प्राहापुर स्टेशन के पास फ्लाईओवर पर हैं। श्रीमती टॉमिन उनके साथ हैं।' 'श्री टॉमिन 416 विभाग का दौरा कर रहे हैं।' उन्होंने श्री ब्रातिंका के प्रयासों की सराहना की और गुडइयर वेल्डेड शू लाइन में गहरी रुचि दिखाई। श्री और श्रीमती टोमिन आज दोपहर टेनिस खेलेंगे। श्री टोमिन ने ऑफिसर्स क्लब में तैराकी की, लेकिन उन्हें पानी बहुत गर्म लगा। बच्चे को भी रबर की ट्यूब में तैराया गया।

श्री टॉमिन की पत्नी अंग्रेज़ थीं, जिनका सुंदर अंडाकार चेहरा उनके सीधे-सादे, मिलनसार और चौकोर चेहरे से बिलकुल अलग था। दो साल पहले उन्होंने एक बेटे को जन्म दिया था, और इस बेटे का नाम भी उसके पिता और दादा की तरह जान रखा गया था। श्री टॉमिन अपने हालिया भारत दौरे पर इस बेटे को भी साथ ले गए थे ताकि वह बचपन की उन आँखों से देख सके जो एक दिन उसकी होंगी।

लेकिन प्राहा शू कंपनी की भारतीय शाखा के चेयरमैन, जो कलकत्ता के

कैमक स्ट्रीट स्थित आलीशान मुख्यालय में बैठते थे (प्राहापुर के शोरगुल और धुएं से दूर) और थिएटर रोड पर स्थित आलीशान 'प्राहा रेसिडेंसी' में रहते थे, जो उनकी ऑस्टिन शीरलाइन कार से मात्र पाँच मिनट की दूरी पर था, कोई गठीले हुसेक या हुसाक नहीं थे, बल्कि हंसमुख, उम्रदराज, पान चबाने वाले और स्कॉच पीने वाले मारवाड़ी श्री हीरालाल खंडेलवाल थे, जिन्हें जूतों के दैनिक निर्माण के बारे में लगभग कुछ भी नहीं पता था (और उन्हें इसकी परवाह भी नहीं थी)। यह सब कैसे हुआ, यह एक दिलचस्प कहानी थी।

इस विचित्र संरचना का इतिहास बीस वर्ष से अधिक पुराना था। श्री खंडेलवाल, खंडेलवाल एंड कंपनी नामक पारिवारिक फर्म में वकील थे और प्राहा के कानूनी मामलों को संभालते थे। जब 1920 के दशक के उत्तरार्ध में प्राहा के एक प्रमुख अधिकारी को भारतीय कंपनी स्थापित करने के लिए प्राग से भेजा गया, तो खंडेलवाल को एक सक्षम व्यक्ति के रूप में उनके सामने पेश किया गया। खंडेलवाल ने कंपनी का पंजीकरण कराया और सभी आवश्यक कानूनी औपचारिकताएं पूरी कीं, जिन्हें चेक लोगों ने समझ से परे और अरुचिपूर्ण माना। वे जूते बनाने का काम जल्द से जल्द, मजबूती से और उत्कृष्ट गुणवत्ता के साथ शुरू करना चाहते थे।

श्री खंडेलवाल ने हर संभव सहायता प्रदान की: भूमि की खरीद, ब्रिटिश भारत सरकार से आवश्यक अनुमतियाँ, श्रमिक नेताओं के साथ वार्ता। लेकिन 1939 में, जब द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ा, तब उनकी असली प्रतिभा सामने आई। जर्मनों द्वारा चेकोस्लोवाकिया पर कब्जा कर लेने के कारण, भारत में प्राहा की संपत्ति को शत्रु संपत्ति घोषित किए जाने और जब्त किए जाने का गंभीर खतरा मंडरा रहा था। सरकार में अपने अच्छे संपर्कों (विशेष रूप से भारतीय सिविल सेवा में उभरते हुए भारतीय अधिकारियों के एक प्रभावशाली समूह के साथ, जिनके साथ वे अक्सर दावतें करते थे

और जिन्हें वे सौदेबाजी में पैसे देते थे) के बल पर श्री खंडेलवाल प्राहा की स्थिति को पुनः स्थापित करने में सफल रहे। ब्रिटिश राज की सत्ता ने अंततः प्राहा को शत्रु संपत्ति घोषित नहीं किया; इसके बजाय, उन्होंने इसे सेना के बूट और अन्य जूते बनाने के बड़े-बड़े ऑर्डर दिए। चेक लोग न केवल अचंभित थे, बल्कि चकित भी थे। श्री खंडेलवाल को तुरंत प्राहा (भारत) के बोर्ड में शामिल कर लिया गया और कुछ ही समय बाद उन्हें अध्यक्ष बना दिया गया।

और वह प्राहा के सबसे चतुर और शक्तिशाली अध्यक्ष थे। उनकी एक बड़ी खूबी यह थी कि मजदूर उनके इशारों पर चलते थे। उनके लिए वह साक्षात देवता थे—खंडेलवाल देवता!—प्राहा के श्वेत शासकों पर राज करने वाले भूरे रंग के व्यक्ति। जवाहरलाल नेहरू उनसे मिले थे, और श्रम मंत्री समेत कई कैबिनेट मंत्री उन्हें जानते थे। पिछले साल प्राहापुर में लंबी हड़ताल हुई थी, और मजदूरों ने प्रबंधन के खिलाफ प्रधानमंत्री को एक याचिका भेजी थी। नेहरू ने उनसे कहा था: 'अगर आपके पास हीरालाल खंडेलवाल हैं, तो आपको मेरी क्या जरूरत है?' और जब मजदूरों ने उन्हें अपनी शिकायतों पर गौर करने के लिए राजी कर लिया, तो खंडेलवाल ने चेक प्रबंधन और यूनियनों के बीच एकमात्र मध्यस्थ के रूप में काम किया —और वह भी अध्यक्ष रहते हुए!

उनसे मिलने के अलावा, हरेश ने श्री मुखर्जी से प्राहा के अध्यक्ष के बारे में बहुत कुछ सुना था, जिसमें उनके निजी जीवन के बारे में कुछ रोचक बातें भी शामिल थीं। खंडेलवाल विलासिता के शौकीन थे, जिसमें निश्चित रूप से महिलाएं भी शामिल थीं; और उनका विवाह बिहार की एक आकर्षक गायिका और पूर्व दरबारी महिला से हुआ था—जो एक प्रभावशाली स्वभाव की महिला थीं।

यह जानकर कि उनका आवेदन खंडेलवाल ने भेजा था, हरेश को थोड़ी

हिम्मत मिली और वह प्राहापुर स्थित कार्मिक विभाग के प्रमुख श्री नोवाक के बाहरी कार्यालय में दाखिल हुए। हरेश ने मिडलहैम्पटन के बेहतरीन दर्ज़ियों द्वारा सिला हुआ आयरिश लिनेन का सूट पहना हुआ था। उनके जूते सैक्सोन ब्रांड के थे, जिनकी कीमत पाँच पाउंड प्रति जोड़ी थी। उन्होंने बालों में ट्रुगेल साबुन लगाया हुआ था और उनसे महकते हुए महंगे साबुन की हल्की खुशबू आ रही थी। फिर भी, उन्हें बाहर कतार में बैठने के लिए कहा गया।

अंततः, एक घंटे बाद, उन्हें अंदर आने के लिए कहा गया। नोवाक ने खुली कमीज़ और हल्के भूरे रंग की पतलून पहनी हुई थी। उनका कोट उनकी कुर्सी पर टंगा हुआ था। वे सुगठित शरीर वाले, लगभग 5 फीट 9 इंच लंबे और बेहद मृदुभाषी व्यक्ति थे। वे बिना मुस्कुराए, अडिग और बेहद सख्त मिजाज के थे; आमतौर पर वही यूनियनों से बातचीत करते थे। उनकी आँखें भेदक थीं।

जब वह हरेश का साक्षात्कार ले रहे थे, तब उनके सामने हरेश का आवेदन पत्र था। दस मिनट के अंत में उन्होंने कहा:

‘खैर, मुझे अपना प्रस्ताव बदलने का कोई कारण नहीं दिखता। यह एक अच्छा प्रस्ताव है।’

‘क्या अट्ठाईस रुपये प्रति सप्ताह?’

'हाँ।'

'आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि मैं ऐसा प्रस्ताव स्वीकार कर सकता हूँ।'

'यह आप पर निर्भर करता है।'

'मेरी योग्यताएं—मेरा कार्य अनुभव—' हरेश ने असहाय होकर अपने आवेदन पत्र की ओर हाथ हिलाते हुए कहा।

श्री नोवाक ने जवाब देना उचित नहीं समझा। वे एक बूढ़े, ठंडे दिमाग वाले

लोमड़ी की तरह दिख रहे थे।
'श्री नोवाक, कृपया अपने प्रस्ताव पर पुनर्विचार करें।'
'नहीं।' आवाज धीमी थी, और आंखें भावहीन थीं और यहां तक कि - हरेश को ऐसा लगा - पलकें भी नहीं झपका रही थीं।
मैं दिल्ली से इतनी दूर चलकर आया हूँ। कम से कम मुझे आधा मौका तो दीजिए। मैं एक उचित मासिक वेतन पर प्रबंधन में काम कर रहा हूँ, और आप मुझसे एक मजदूर की साप्ताहिक मजदूरी लेने को कह रहे हैं—वह भी पर्यवेक्षक या फोरमैन की नहीं। मुझे यकीन है कि आप समझ रहे होंगे कि यह प्रस्ताव कितना अनुचित है।
'नहीं।'
'अध्यक्ष—'
श्री नोवाक की आवाज एक शांत चाबुक की तरह चुभ गई:
अध्यक्ष ने मुझे आपके आवेदन पर विचार करने के लिए कहा था। मैंने ऐसा किया और आपको पत्र भेजा। बात यहीं खत्म हो जानी चाहिए थी। आप दिल्ली से बिना किसी कारण के यहां आए हैं, और मुझे अपना निर्णय बदलने का कोई कारण नहीं दिखता। सुप्रभात, श्री खन्ना।
हरेश गुस्से से उबलता हुआ उठा और चला गया। बाहर अभी भी तेज़ बारिश हो रही थी। कलकत्ता वापस जाने वाली ट्रेन में उसने सोचा कि क्या करे। उसे लगा कि नोवाक ने उसके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया है, और यह बात उसे अंदर ही अंदर खाए जा रही थी। उसे गिड़गिड़ाना बिल्कुल पसंद नहीं था, और उसकी गिड़गिड़ाहट का कोई असर नहीं हुआ।
वह स्वाभिमानी व्यक्ति था, लेकिन अब उस पर कुछ और ही दबाव था। लता से प्रेम करने के लिए उसे नौकरी करनी ही थी। रूपा मेहरा के बारे में उसे जो पता था, उससे यही लगता था कि वह उसे कभी भी बेरोजगार

आदमी से शादी करने नहीं देंगी—और हरेश इतना गैरजिम्मेदार नहीं हो सकता था कि लता से कहे कि वह उसके साथ तंगी में गुज़ारा करे। और जब उमेश अंकल दिल्ली लौटेंगे तो क्या कहेंगे? उनके ताने सहना असहनीय होगा।

इसलिए उन्होंने जोखिम उठाने का फैसला किया। उस दोपहर वे कैमक स्ट्रीट स्थित प्राहा मुख्यालय के बाहर बारिश में खड़े रहे। अगले दिन धूप खिली थी और उन्होंने वही किया। इस पड़ताल के परिणामस्वरूप उन्होंने श्री खंडेलवाल की गतिविधियों का पता लगा लिया। यह स्पष्ट हो गया कि दोपहर एक बजे वे दोपहर के भोजन के लिए कार्यालय से निकलते थे।

तीसरे दिन दोपहर के भोजन के समय, जैसे ही अध्यक्ष की ऑस्टिन शीरलाइन कार को निकलने देने के लिए द्वार खुले, हरेश कार के सामने खड़ा होकर उसे रोक दिया। चौकीदार घबराकर इधर-उधर भागने लगे और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि उससे बात करें या उसे घसीटकर ले जाएं। तभी श्री खंडेलवाल ने उसे देखा, पहचान लिया और खिड़की खोल दी।

'आह,' उसने नाम याद करने की कोशिश करते हुए कहा।

'Haresh Khanna, Sir—'

'जी हां, मुझे याद है, मुखर्जी आपको दिल्ली में मुझसे मिलने लाए थे। क्या हुआ था?'

'कुछ नहीं।' हरेश ने शांत भाव से कहा, हालांकि वह मुस्कुरा नहीं सका।

'कुछ नहीं?' श्री खंडेलवाल ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।

जेम्स हॉली के यहाँ मुझे सात सौ पचास रुपये प्रति माह का प्रस्ताव मिला था, जबकि श्री नोवाक ने मुझे अट्ठाईस रुपये प्रति सप्ताह का प्रस्ताव दिया। ऐसा लगता है कि प्राहा विश्वविद्यालय योग्य लोगों को नहीं चाहता।

हरेश ने इस बात का जिक्र नहीं किया कि जेम्स हॉली का प्रस्ताव प्रभावी रूप से रद्द कर दिया गया था, और उन्हें खुशी थी कि जब वह और मुखर्जी

दिल्ली में खंडेलवाल से मिले थे तो इस मामले का यह पहलू सामने नहीं आया था।

'हम्म,' श्री खंडेलवाल ने कहा, 'परसों आकर मुझसे मिलिएगा।'

जब हरेश दो दिन बाद उनसे मिलने गया, तो श्री खंडेलवाल के सामने उनकी फाइल रखी हुई थी। उन्होंने संक्षेप में बात की। उन्होंने हरेश को सिर हिलाकर अभिवादन किया और कहा: 'मैंने इसे देख लिया है। हावेल कल आपसे साक्षात्कार के लिए मिलेंगे।' हावेल प्राहापुर में महाप्रबंधक थे। श्री खंडेलवाल के पास हरीश से मुखर्जी के हालचाल के अलावा और कोई सवाल नहीं थे। उन्होंने जाते समय कहा, 'ठीक है, देखते हैं आगे क्या होता है।' ऐसा लग रहा था कि हरीश के सफल होने या असफल होने को लेकर उन्हें कोई खास चिंता नहीं थी।

13.27

लेकिन फिर भी हरेश को काफी हौसला मिला। हावेल के साथ साक्षात्कार का मतलब था कि अध्यक्ष ने चेक अधिकारियों को उनके आवेदन को गंभीरता से लेने के लिए मजबूर कर दिया था। अगले दिन, जब वह प्राहापुर की पैंतालीस मिनट की यात्रा के लिए ट्रेन में सवार हुए, तो उनका मनोबल काफी ऊंचा था।

महाप्रबंधक के भारतीय निजी सहायक ने उन्हें बताया कि नोवाक साक्षात्कार में शामिल नहीं होंगे। हरेश को राहत मिली।

कुछ ही मिनटों में हरेश को प्राहापुर के महाप्रबंधक के कार्यालय में ले जाया गया।

पावेल हेवेल—जिसका नाम उसके नासमझ माता-पिता ने शरारती ढंग से रखा था, जिन्हें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि स्कूल में उसे किस तरह चिढ़ाया जाएगा—हरेश की तरह कद में छोटा था, लेकिन लंबाई के साथ-साथ चौड़ाई में भी लगभग उतना ही चौड़ा था।

‘Sit, sit, sit—’ he said to Haresh.
Haresh sat down.
उन्होंने कहा, 'मुझे अपने हाथ दिखाओ।'
हरेश ने श्री हावेल की ओर अपने हाथ बढ़ाए, हथेलियाँ ऊपर की ओर थीं।
अपने अंगूठे को मोड़ो।
हरेश ने इसे जितना हो सके उतना मोड़ा।
श्री हेवेल ने एक ऐसे अंदाज में हँसा जो अभद्र नहीं बल्कि निर्णायक था।
उन्होंने कहा, 'तुम मोची नहीं हो।'
'मैं हूं,' हरेश ने कहा।
‘नहीं, नहीं, नहीं—’ श्री हावेल हँसे। ‘कोई और क्षेत्र, कोई और नौकरी आपके लिए बेहतर रहेगी। किसी और कंपनी में शामिल हो जाइए। आप प्राहा में क्या करना चाहते हैं?’
'मैं इस डेस्क के दूसरी तरफ बैठना चाहता हूं,' हरेश ने कहा।
श्री हेवेल ने मुस्कुराना बंद कर दिया।
‘ओह,’ उसने कहा। ‘इतना ऊंचा?’
'अंततः,' हरेश ने कहा।
श्री हेवेल ने समझाया, “हम सब शुरुआत कारखाने में काम करने से ही करते हैं।” उन्हें उस नाकाबिल लेकिन महत्वाकांक्षी नौजवान पर तरस आ रहा था जो कभी जूता बनाने वाला नहीं बन सकता था। यह बात उस पल ही साफ हो गई जब उसने अंगूठा मोड़ने की कोशिश की। चेकोस्लोवाकिया में जूते बनाने का तरीका ऐसा था कि अंगूठा मोड़ना ज़रूरी था। इस नौजवान का प्राहा में भविष्य उतना ही अंधकारमय था जितना कुश्ती के अखाड़े में एक हाथ वाले आदमी का। “मैं, श्री नोवाक, श्री जनाचेक, श्री कुरिल्ला, हम सबने शुरुआत कारखाने में काम करने से ही की थी। अगर तुम जूते नहीं बना सकते,” उन्होंने आगे कहा, “तो इस

कंपनी में तुम्हारे लिए क्या उम्मीद है?”
‘None,’ said Haresh.
‘तो आप देख रहे हैं—’ पावेल हेवेल ने कहा।
‘तुमने मुझे जूता बनाने की कोशिश करते हुए भी नहीं देखा है,’ हरेश ने कहा। ‘तुम्हें कैसे पता चलेगा कि मैं क्या कर सकता हूँ और क्या नहीं?’
पावेल हावेल थोड़ा चिढ़ गए। आज उन्हें बहुत काम करना था, और अंतहीन बेकार की बातें उन्हें परेशान कर रही थीं। भारतीय हमेशा बड़ी-बड़ी बातें करते हैं और काम में नाकाम रहते हैं। वे थोड़े थके हुए लग रहे थे। खिड़की से बाहर की हरी-भरी हरियाली को निहारते हुए, वे सोचने लगे कि क्या कम्युनिस्ट कभी चेकोस्लोवाकिया छोड़ेंगे, और क्या उन्हें और उनके परिवार को अपने जीवनकाल में कभी अपने गृहनगर ब्रातिस्लावा को फिर से देखने का मौका मिलेगा।
वह युवक जूते बनाने की अपनी क्षमता के बारे में कुछ कह रहा था।
पावेल हावेल ने अपने शानदार सूट के कॉलर को घूरते हुए काफी निर्ममता से कहा: 'तुम कभी जूता नहीं बना पाओगे।'
हरेश को हावेल के लहजे में आए अचानक बदलाव की समझ नहीं आई, लेकिन वह इससे डरा नहीं। उसने कहा, 'मुझे लगता है कि मैं डिजाइन पैटर्न से लेकर तैयार उत्पाद तक एक जूता बना सकता हूं।'
‘ठीक है,’ पावेल हावेल ने कहा। ‘तुम एक जूता बनाओ। तुम एक जूता बनाओ, और मैं तुम्हें अस्सी रुपये प्रति सप्ताह के वेतन पर फोरमैन की नौकरी दूंगा।’ प्राहा में फोरमैन के पद से किसी ने भी शुरुआत नहीं की थी, लेकिन पावेल हावेल को पूरा यकीन था कि यह एक जोखिम रहित दांव था। कागज़ी योग्यताएँ एक बात थीं, लेकिन कठोर अंगूठे और ढीली राष्ट्रीय भावना दूसरी बात।
लेकिन हरेश बेहतर की तलाश में था। उसने कहा, 'मेरे पास जेम्स हॉली

का नियुक्ति पत्र है जिसमें मुझे सात सौ पचास रुपये की नौकरी की पेशकश की गई है। अगर मैं आपकी संतुष्टि के अनुसार जूता बनाऊं, कोई साधारण जूता नहीं, बल्कि आपकी उत्पादन लाइन का सबसे कठिन जूता, तो क्या आप उनकी पेशकश के बराबर वेतन देंगे?'

पावेल हावेल ने उस नौजवान को देखा, उसके आत्मविश्वास से विचलित होकर, और अपनी उंगलियों को होठों पर रखते हुए, मानो अपने अनुमानों पर पुनर्विचार कर रहे हों। 'नहीं,' उन्होंने धीरे से कहा। 'इससे तुम प्रबंधकीय पद पर पहुँच जाओगे और प्राहा में क्रांति आ जाएगी। यह असंभव है। वैसे भी, अगर तुम एक जोड़ी जूते बना सको—जिस तरह के जूते मैं चुनूँगा—अगर तुम बना सको—तो तुम फोरमैन बन जाओगे, और यह अपने आप में आधी क्रांति है।' चेकोस्लोवाकिया में एक क्रांति का सामना कर चुके पावेल हावेल क्रांतियों के पक्षधर नहीं थे।

उन्होंने लेदर फुटवियर डिवीजन के प्रमुख कुरिल्ला को फोन किया और उनसे कुछ मिनटों के लिए अपने कार्यालय आने का अनुरोध किया।

‘कुरिला, तुम्हारा क्या ख्याल है?’ उसने कहा। ‘खन्ना जूता बनाना चाहता है। उसे बनाने के लिए हमें क्या देना चाहिए?’

'गुडइयर वेल्टेड,' कुरिल्ला ने निर्दयता से कहा।

पावेल हेवेल ने मुस्कुराते हुए कहा, 'जी हां, जी हां। जाओ और हमारे तैयार पैटर्न के अनुसार गुडइयर वेल्डेड जूते बनाओ।'

यह जूता बनाने का सबसे कठिन प्रकार था, और इसमें सौ से अधिक विभिन्न प्रक्रियाएं शामिल थीं। हेवेल ने भौंहें चढ़ाईं, अपने अंगूठों को देखा और हरेश को जाने का आदेश दिया।

13.28

किसी भी कवि ने इतनी मेहनत और प्रेरणा से कविता रचने का प्रयास नहीं किया होगा जितना कि हरेश ने अगले तीन दिनों तक अपने जूतों की

जोड़ी पर किया। उन्हें सामग्री उपलब्ध कराई गई, विभिन्न मशीनों के स्थान बताए गए, और उन्होंने कारखाने की गर्मी और शोर के बीच काम शुरू कर दिया।

उन्होंने ऊपरी और अंदरूनी चमड़े के उत्तम टुकड़ों की जांच और चयन किया, उनकी मोटाई मापी, घटकों को काटा, छीला, चिपकाया और मोड़ा, आकार और शैली के लिए अंदरूनी चमड़े पर मुहर लगाई, ऊपरी और अंदरूनी घटकों को एक साथ फिट किया और सावधानीपूर्वक उन्हें एक दूसरे से सिल दिया।

उसने ऊपरी हिस्से में काउंटर और टो-पफ को लगाया और आकार दिया, और इनसोल को सांचे से जोड़ दिया।

फिर उसने ऊपरी हिस्से को लकड़ी के सांचे पर लगाया और उसे पैर की उंगलियों, एड़ी और किनारों को आकार देकर इनसोल से जोड़ दिया, और संतुष्टि के साथ जांच की कि ऊपरी हिस्सा बिना किसी शिकन के सांचे पर ठीक से बैठ गया है, और यह त्वचा की तरह कसकर चिपका हुआ है।

उसने चारों ओर एक सिलवट लगाई। उसने अतिरिक्त कपड़े को काटकर अलग कर दिया और कॉर्क और गोंद के मिश्रण से खाली जगह को भर दिया।

वह मुश्किल से ही कुछ खाता था। कलकत्ता लौटते समय हर रात वह तैयार जूतों के जोड़े का सपना देखता था और सोचता था कि वे जूते उसके जीवन को कैसे बदल देंगे।

उसने जूते के तलवे का चमड़ा काटा और उसे सही मोटाई में फाड़ा। उसने उसे बिछाया, सिलाई की और एड़ी जोड़ दी। फिर उसने एड़ी और तलवे को ट्रिम किया। इस कठिन और नाजुक काम को शुरू करने से पहले वह कुछ मिनटों के लिए रुका; ट्रिमिंग करना बाल काटने जैसा था—एक गलती गंभीर और अपरिवर्तनीय हो सकती थी। जूतों का एक जोड़ा पूरी

तरह से सममित होना चाहिए, बायां और दायां हिस्सा एक दूसरे के बिल्कुल अनुपात में होना चाहिए। इसके बाद भी वह कुछ मिनटों के लिए रुका। उसे अनुभव से पता था कि एक कठिन काम को अच्छे से करने के बाद उसे उस तरह की राहत और अति आत्मविश्वास महसूस होता है जो उसे किसी सरल काम को बिगाड़ने की ओर ले जाता है।

ट्रिमिंग के बाद, उसने एड़ी को अच्छी तरह से साफ किया और उभार को उभारकर उसे आकर्षक बनाया। काम पूरा होने पर, उसने सोचा कि सब कुछ ठीक चल रहा है। उसने किनारों को रंग दिया और उन्हें गर्म मोम लगाकर इस्त्री किया ताकि वे पानी से अप्रभावित रहें।

श्री नोवाक, जो एक चतुर और शातिर व्यक्ति थे, एक बार यह देखने आए कि हरेश का काम कैसा चल रहा है। हरेश बाल कटवाने के बाद थोड़ा आराम कर रहा था। श्री नोवाक ने सिर हिलाकर अभिवादन नहीं किया, हरेश ने भी सिर हिलाकर अभिवादन नहीं किया, और श्री नोवाक बिना कुछ कहे चले गए।

जूते लगभग तैयार थे, बस सिलाई वाले तलवों में थोड़ी खुरदुराहट दिख रही थी। इसलिए हरेश ने तलवों को अच्छी तरह से पॉलिश किया, उन पर मोम लगाया और चमकाया। अंत में, उसने तलवों के किनारों को एक गर्म घूमते हुए पहिये पर रगड़कर चिकना कर दिया, जिससे भद्दी सिलाई एक सुंदर सजावटी पैटर्न के नीचे छिप गई।

हरेश ने सोचा, इससे मुझे एक सबक मिलता है। अगर जेम्स हॉली ने अपना प्रस्ताव वापस नहीं लिया होता तो मैं अब भी इसी शहर में फंसा होता। अब शायद मुझे कलकत्ता के पास कोई नौकरी मिल जाए। और गुणवत्ता की बात करें तो, प्राहा के जूते भारत में सबसे अच्छे हैं।

स्वाभाविक ही, उनका अगला काम जूते के तलवे पर प्राहा का नाम अंकित करना था। उन्होंने लकड़ी का सांचा हटाया। उन्होंने एड़ी (जो पहले

केवल अस्थायी रूप से लगी हुई थी) को कीलों से जोड़ा। सोने की पन्नी से उन्होंने जूते के अंदरूनी हिस्से पर प्राहा का नाम अंकित किया और उसे चिपकाकर अंदर सीमेंट से पक्का कर दिया। बस हो गया!

वह हेवेल के कार्यालय के आधे रास्ते में ही था कि वह पीछे मुड़ गया, अपना सिर हिलाया और खुद पर मुस्कुराया।

'अब क्या?' उस व्यक्ति ने कहा जिसे काम के दौरान उस पर नजर रखने के लिए नियुक्त किया गया था।

'जूतों के फीते,' हरेश ने कहा। 'मैं ज़रूर बहुत थक गया हूँगा।'

महाप्रबंधक, चमड़ा विभाग के प्रमुख और कार्मिक विभाग के प्रमुख हरेश के जूतों को देखने, उन्हें घुमाने-फिराने, टटोलने और बारीकी से जांचने के लिए एक साथ इकट्ठा हुए। वे चेक भाषा में बात कर रहे थे।

कुरिल्ला ने कहा, 'खैर, ये तो आप या मेरे बनाए किसी भी चीज़ से बेहतर हैं।'

हेवेल ने कहा, 'मैंने उसे फोरमैन की नौकरी देने का वादा किया है।'

नोवाक ने कहा, 'आप ऐसा नहीं कर सकते। हर कोई शुरुआत फर्श से ही करता है।'

मैंने उसे फोरमैन की नौकरी का वादा किया है, और उसे वह नौकरी मिल जाएगी। मैं इस तरह के आदमी को खोना नहीं चाहता। आपको क्या लगता है मिस्टर के क्या कहेंगे?

हालाँकि खंडेलवाल हरेश के भाग्य के प्रति उदासीन प्रतीत होते थे, वास्तव में (जैसा कि हरेश को बाद में पता चला) वे चेक लोगों के प्रति बहुत कठोर थे। हरेश के कागजात देखने के बाद उन्होंने हावेल से कहा: 'मुझे कोई अन्य आवेदक, चाहे चेक हो या भारतीय, दिखाएँ जिनके पास समान योग्यताएँ हों।' हावेल ऐसा नहीं कर पाए। यहाँ तक कि लेदर विभाग के प्रमुख कुरिल्ला, जिन्होंने स्वयं कई वर्ष पहले मिडिलहैम्पटन कॉलेज ऑफ़

टेक्नोलॉजी से स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी, उन्हें भी हरेश की तरह प्रथम स्थान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त नहीं था। श्री खंडेलवाल ने तब कहा: 'जब तक इस व्यक्ति को नौकरी का प्रस्ताव नहीं दिया जाता, तब तक मैं आपको इस व्यक्ति की योग्यताओं से कम योग्यता वाले किसी भी व्यक्ति को भर्ती करने से मना करता हूँ।' हावेल ने खंडेलवाल को इस कठोर निषेध से रोकने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हुए। उन्होंने हरेश को आवेदन वापस लेने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हुए। फिर उन्होंने उन्हें एक ऐसा कार्य सौंपा जिसमें हरेश ने दूर-दूर तक सफलता की कल्पना भी नहीं की थी। लेकिन हरेश के जूते उनकी क्षमता के अनुरूप थे। पावेल हावेल, भारतीयों के बारे में चाहे जो भी सोचते हों, वे फिर कभी लोगों के अंगूठों के बारे में अपमानजनक बातें नहीं करेंगे।

गुडइयर वेल्डेड जूते एक साल से अधिक समय तक हेवेल के कार्यालय में पड़े रहे, और जब भी वह उत्तम कारीगरी पर चर्चा करना चाहते थे, तो वह विभिन्न अवसरों पर आगंतुकों को उन्हें दिखाते थे।

हरेश को बुलाया गया।

'बैठो, बैठो, बैठो,' हेवेल ने कहा।

Haresh sat down.

‘उत्कृष्ट, उत्कृष्ट!’ हेवेल ने कहा।

हरेश को पता था कि उसके जूते कितने अच्छे हैं, लेकिन फिर भी वह खुशी से झूम उठा। उसकी मुस्कान में उसकी आँखें गुम हो गईं।

तो मैंने अपना वादा निभाया। आपको नौकरी मिल गई। अस्सी रुपये प्रति सप्ताह। सोमवार से शुरू। जी हां, कुरिल्ला?’ ‘जी हां।’

‘नोवाक?’

नोवाक ने बिना मुस्कुराए सिर हिलाया। उसका दाहिना हाथ जूतों में से

एक के किनारे पर चल रहा था। 'अच्छी जोड़ी है,' उसने धीरे से कहा।
‘तो ठीक है,’ हेवेल ने कहा। ‘आप स्वीकार करते हैं?’
'वेतन बहुत कम है,' हरेश ने कहा। 'पहले जो वेतन मिल रहा था और अब जो प्रस्ताव दिया गया है, दोनों की तुलना में यह बहुत कम है।'
‘हम आपको छह महीने के लिए परिवीक्षा पर रखेंगे, और फिर वेतन पर पुनर्विचार करेंगे। खन्ना, आपको अंदाजा नहीं है कि हम आपको समायोजित करने के लिए, आपको प्रहमान बनाने के लिए कितनी हद तक प्रयास करते हैं।’
हरेश ने कहा: 'मैं आभारी हूं। मैं इन शर्तों को स्वीकार करता हूं, लेकिन एक बात पर मैं समझौता नहीं करूंगा। मुझे कॉलोनी के अंदर रहना होगा और ऑफिसर्स क्लब का उपयोग करने में सक्षम होना होगा।'
उन्हें एहसास हुआ कि प्राहा की संस्कृति के लिहाज से पर्यवेक्षक स्तर पर उनका सीधा प्रवेश कितना भी महत्वपूर्ण क्यों न हो, सामाजिक दृष्टि से उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ेगा यदि उन्हें लता, उनकी मां और उनके बहुचर्चित कलकत्ता स्थित भाई जैसे लोगों के सामने अपनी कंपनी के प्रबंधकों के साथ सहज संबंध रखने वाले के रूप में नहीं देखा गया।
‘नहीं, नहीं, नहीं—’ पावेल हेवेल ने कहा। वह बेहद चिंतित दिख रहे थे।
'असंभव,' नोवाक ने कहा, उसकी निगाहें हरेश पर टिकी हुई थीं, मानो वह उसे हार मानने के लिए मजबूर कर रहा हो।
कुरिल्ला ने कुछ नहीं कहा। उसने जूतों के जोड़े को देखा। वह जानता था कि चारदीवारी वाले परिसर में लगभग चालीस घरों में से किसी में भी सुपरवाइजर को जगह नहीं दी गई थी—और उनमें से केवल एक भारतीय को ही जगह मिली थी। लेकिन हरेश द्वारा अपने पुराने कॉलेज की उत्कृष्ट प्रशिक्षण पद्धति को सही साबित होते देखकर वह खुश था। उसके प्राहा के सहकर्मियों में, जिनमें से अधिकांश ने काम करते हुए ही कौशल सीखा

था, कुरिल्ला के तकनीकी प्रशिक्षण को अक्सर मजाक के तौर पर लिया जाता था।

हरेश को भी हावेल के भारतीय सहायक से पता चला था कि अब तक केवल एक ही भारतीय को उस पवित्र कॉलोनी में प्रवेश मिला था - लेखा विभाग का एक प्रबंधक।

उन्होंने कुरिल्ला की सहानुभूति और हावेल की झिझक को भांप लिया। यहां तक कि कठोर स्वभाव वाले नोवाक ने भी कुछ देर पहले—और अपने स्वभाव के बिल्कुल विपरीत—तीन संक्षिप्त शब्दों में उनके काम की प्रशंसा की थी। इसलिए उम्मीद की किरण दिखाई दी।

“मैं सबसे बढ़कर प्राहा के लिए काम करना चाहता हूँ,” हरेश ने भावुक होकर कहा। “आप देख सकते हैं कि मैं गुणवत्ता को कितना महत्व देता हूँ। यही बात मुझे आपकी कंपनी की ओर खींच लाई है। मैं कानपुर लेदर एंड फुटवियर कंपनी में एक अधिकारी था, और मुझे जेम्स हॉली में प्रबंधक, एक अधिकारी का पद दिया गया था, इसलिए परिसर में रहना कोई असाधारण बात नहीं होगी। लेकिन मैं इसके अलावा यह नौकरी नहीं ले सकता। मुझे खेद है। मैं यहाँ काम करने के लिए इतना उत्सुक हूँ कि मैं वेतन और पद में समझौता करने को तैयार हूँ। अगर आप चाहें तो मुझे फोरमैन, सुपरवाइजर के रूप में रख सकते हैं और मुझे पहले से कम वेतन दे सकते हैं। लेकिन कृपया आवास के इस छोटे से मामले में समझौता कर लें।”

चेक भाषा में बातचीत हुई। प्रबंध निदेशक देश से बाहर थे और उनसे सलाह नहीं ली जा सकी। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि अध्यक्ष, जो कभी-कभी चेक लोगों के साथ उतना ही कठोर व्यवहार करते थे जितना वे भारतीयों के साथ करते थे, उनकी इस अलगाववादी सोच के प्रति सहानुभूति नहीं रखते। अगर इन सब के बाद भी हरीश ने नौकरी

ठुकरा दी, तो उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।

जैसे कोई मुवक्किल अदालत में कानूनी अस्पष्टताओं को सुनता है, ऐसी अस्पष्टताएँ जो उसका भविष्य तय करने वाली थीं, उसी तरह हरेश उन तीनों व्यक्तियों की बातें सुन रहा था। उनके लहजे, हाव-भाव और कभी-कभार बोले गए शब्दों—'कॉलोनी', 'क्लब', 'खंडेलवाल', 'मिडिलहैम्प्टन', 'जान टोमिन' आदि—से हरेश समझ रहा था कि कुरिल्ला ने हावेल को मना लिया था और अब दोनों नोवाक पर दबाव बना रहे थे। नोवाक के जवाब संक्षिप्त, तीखे और दृढ़ थे, जिनमें शायद ही कभी पाँच-छह शब्द होते थे। फिर अचानक ही नोवाक ने एक भावपूर्ण इशारा किया—उन्होंने आधा कंधा उचकाया, आधा हाथ ऊपर उठाया। उन्होंने एक शब्द भी नहीं बोला, न ही सहमति में सिर हिलाया, लेकिन उनकी ओर से कोई असहमति भी नहीं आई।

पावेल हावेल ने चौड़ी मुस्कान के साथ हरेश की ओर रुख किया।

'स्वागत है—प्राहा में आपका स्वागत है!' उसने कहा, मानो वह हरेश को स्वर्ग के राज्य की चाबियां सौंप रहा हो।

हरेश खुशी से झूम उठा, मानो सचमुच वही हो।

और सभी ने शालीनता से हाथ मिलाया।

13.29

अरुण मेहरा और उनके दोस्त बिली ईरानी कलकत्ता क्लब के बरामदे में लॉन की ओर देखते हुए बैठे थे। दोपहर का भोजन का समय था। वेटर अभी तक पेय का ऑर्डर लेने नहीं आया था। हालांकि, अरुण अपनी सफेद बेंत की मेज पर लगी छोटी पीतल की घंटी दबाना नहीं चाहते थे। कुछ गज की दूरी पर एक वेटर के गुजरते ही, अरुण ने अपने दाहिने हाथ से अपने बाएं हाथ के ऊपरी हिस्से को थपथपाकर उसका ध्यान आकर्षित किया।

‘अब्दार!’
'जी श्रीमान।'
‘बिली, तुम क्या लोगे?’
एक गिम्लेट।
एक गिम्लेट और एक टॉम कॉलिन्स।
'जी श्रीमान।'
कुछ देर बाद पेय पदार्थ आ गए। दोनों ने दोपहर के भोजन के लिए ग्रिल्ड मछली का ऑर्डर दिया।
वे अभी भी अपनी ड्रिंक पी ही रहे थे कि अरुण ने चारों ओर देखते हुए कहा: 'वहाँ अकेले बैठे हुए खंडेलवाल हैं—प्राहा वाले।'
बिली की टिप्पणी सहज थी: 'ये मारवाड़ी - एक समय था जब इस क्लब की सदस्यता का कुछ महत्व हुआ करता था।'
उन दोनों ने कई मौकों पर खंडेलवाल की शराब पीने की आदतों को नापसंद किया था। शक्तिशाली श्रीमती खंडेलवाल द्वारा घर पर शाम को केवल एक ही पेय पीने की अनुमति होने के कारण, खंडेलवाल दिन भर में जितना हो सके उतना पीने का प्रयास करता था।
लेकिन आज अरुण को खंडेलवाल की मौजूदगी में कोई खास आपत्ति नहीं थी, खासकर इस बात पर कि वह अकेले बैठे अपनी चौथी स्कॉच पी रहे थे। श्रीमती रूपा मेहरा ने अरुण को पत्र लिखकर हरीश खन्ना से जान-पहचान करने और उन्हें अपने विचार बताने के लिए कहा था। हरीश को जाहिर तौर पर प्राहा में कोई नौकरी मिल गई थी और वह प्राहापुर में रहते और काम करते थे।
अरुण के लिए सीधे उनसे बात करना बहुत अपमानजनक होता, और वह सोच रहा था कि यह कैसे किया जाए। लेकिन हाँ, वह प्राहा के अध्यक्ष से इस मामले का ज़िक्र ज़रूर कर सकता था और शायद किसी तटस्थ स्थान

पर चाय पर आम निमंत्रण पाने का जुगाड़ कर सकता था। यह एक बेहतरीन अवसर था।

बिली आगे बोल रहा था: 'यह कमाल की बात है। वह एक काम खत्म करते ही दूसरा काम उसके बगल में शुरू हो जाता है। उसे कभी पता ही नहीं चलता कि कब रुकना है।'

अरुण हँस पड़ा। तभी उसके मन में एक और बात आई। 'अरे हाँ, मीनाक्षी फिर से गर्भवती है।'

'क्या आप गर्भवती हैं?' बिली थोड़ा असमंजस में दिख रहा था।

'हां, तुम्हें पता है, बूढ़े आदमी, गर्भवती!'

'अरे हाँ, हाँ, गर्भवती!' बिली ईरानी ने सिर हिलाया। फिर अचानक उनके मन में एक विचार आया और वे व्याकुल दिखने लगे।

'क्या तुम ठीक हो, दोस्त? एक और? अब्दार—'

वेटर पास आया। 'जी सर।'

'एक और गोली। हालांकि हम हमेशा की तरह सावधानी बरत रहे थे। फिर भी, इससे पता चलता है कि कुछ भी निश्चित नहीं कहा जा सकता। दृढ़ निश्चयी लोग—'

'साथी?'

हां, तुम्हें पता है ना, बच्चे। वे आना चाहते हैं, इसलिए वे अपने माता-पिता से सलाह लिए बिना ही आ जाते हैं। मीनाक्षी थोड़ी परेशान लग रही है—लेकिन मुझे लगता है कि यह सब अच्छे के लिए ही है। अपर्णा को एक भाई की ज़रूरत है। या बहन, शायद। मैंने कहा, बिली, मुझे खंडेलवाल से कुछ बात करनी पड़ेगी। यह हमारी कंपनी की नई भर्ती नीतियों के बारे में है। लगता है प्राहा ने हाल ही में कुछ भारतीयों को काम पर रखा है, और मुझे उनसे कुछ सुझाव मिल सकते हैं—खैर, मुझे कुछ ही मिनटों में आ जाना चाहिए। तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं है?

‘अरे नहीं, नहीं—बिल्कुल नहीं।’
‘आप कुछ अस्वस्थ लग रहे हैं। क्या धूप का असर है? हम टेबल बदल सकते हैं।’
'नहीं, नहीं—बस थका हुआ हूँ—शायद बहुत ज्यादा काम कर रहा हूँ।'
‘अच्छा, शांत रहो। क्या शिरीन तुम्हें परेशान नहीं करती? तुम पर संयम बनाए रखने का काम करती हो?’ अरुण मुस्कुराते हुए वहां से चला गया।
‘शिरीन?’ बिली का सुंदर चेहरा पीला पड़ गया था। उसका मुंह मछली की तरह खुला हुआ था। ‘ओह, हाँ, शिरीन।’
अरुण को एक पल के लिए लगा कि कहीं बिली का बुद्धि स्तर शून्य तो नहीं हो गया, लेकिन जल्द ही उसका ध्यान दूसरे विचारों में लग गया। बरामदे के दूसरे छोर पर स्थित श्री खंडेलवाल की मेज की ओर बढ़ते हुए उसने चेहरे पर हल्की सी मुस्कान बिखेरी।
‘अरे, श्रीमान खंडेलवाल। आपको देखकर अच्छा लगा।’
श्री खंडेलवाल ने ऊपर देखा, वे पहले से ही थोड़े नशे में थे, लेकिन उनका चेहरा बेहद सौम्य था। ये अरुण मेहरा थे, कलकत्ता के उन गिने-चुने नौजवानों में से एक जिन्हें ब्रिटिश व्यापारिक प्रतिष्ठान में जगह मिली थी —और जो अपनी पत्नियों के साथ कलकत्ता के भारतीय समाज के नेता थे। प्राहा के चेयरमैन होने के बावजूद, अरुण द्वारा पहचाने जाने पर उन्हें बहुत खुशी हुई, जिनसे उनकी मुलाकात एक बार घुड़दौड़ के दौरान हुई थी। खंडेलवाल को याद था कि उस नौजवान की पत्नी बेहद आकर्षक थीं, लेकिन उन्हें नाम याद रखने में दिक्कत होती थी, इसलिए वे थोड़ा सोच-विचार करने के बाद अरुण से मिले, जिन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि कोई उन्हें भूल सकता है, और उन्होंने कहा, 'अरुण मेहरा।'
'जी हां, बिल्कुल—बेंटसेन प्राइस।'
अरुण शांत हो गया।

उन्होंने कहा, 'मुझे आश्चर्य है कि क्या मैं आपसे कुछ देर बात कर सकता हूँ, श्रीमान खंडेलवाल।'
श्री खंडेलवाल ने एक कुर्सी की ओर इशारा किया और अरुण बैठ गया।
'क्या आप कुछ पीना चाहेंगे?' श्री खंडेलवाल ने छोटी पीतल की घंटी के ऊपर हाथ रखते हुए पूछा।
'नहीं, धन्यवाद, मैं पहले ही एक ले चुका हूँ।'
श्री खंडेलवाल की राय में, यह छह और न रखने का कोई अच्छा कारण नहीं था। उन्होंने युवक से पूछा, 'तुम्हारे मन में क्या चल रहा है?'
"जैसा कि आप जानते हैं, श्रीमान खंडेलवाल, हमारी कंपनी और हमारे जैसी कई अन्य कंपनियां धीरे-धीरे योग्य भारतीयों को प्रबंधन पदों के लिए भर्ती कर रही हैं। और सुनने में आया है कि आप भी, एक बड़ी संस्था होने के नाते, ऐसा ही करने की सोच रहे हैं।"
खंडेलवाल ने सिर हिलाया।
'खैर,' अरुण ने कहा। 'कुछ मायनों में हम एक ही दुविधा में हैं। हमें जिस तरह के लोगों की जरूरत है, उन्हें पाना काफी मुश्किल है।'
खंडेलवाल मुस्कुराए।
'आपको शायद मुश्किल हो,' उन्होंने धीरे से कहा, 'लेकिन हमें योग्य लोग मिलने में कोई दिक्कत नहीं होती। अभी कुछ दिन पहले ही हमने एक अच्छे बैकग्राउंड वाले आदमी को भर्ती किया है।' वे हिंदी में बोलने लगे। 'एक बढ़िया आदमी—उन्होंने इंग्लैंड में पढ़ाई की है, उनका तकनीकी ज्ञान बहुत अच्छा है। वे उन्हें निचले पद पर रखना चाहते थे, लेकिन मैंने ज़ोर दिया—' उन्होंने एक और स्कॉच का इशारा किया। 'मुझे उनका नाम याद नहीं आ रहा, ओह हाँ, हरीश खन्ना।'
'कानपुर से?' अरुण ने हिंदी में दो शब्द बोलते हुए उत्तर दिया।
'मुझे नहीं पता,' श्री खंडेलवाल ने कहा। 'ओह हाँ, कानपुर से।

सीएलएफसी के मुखर्जी के माध्यम से मुझे उनके बारे में पता चला। हाँ, क्या आपने उनके बारे में सुना है?'

'यह तो बहुत अजीब बात है,' अरुण ने कहा, जबकि उसके लिए इनमें से कुछ भी अजीब नहीं था। 'लेकिन अब जब आपने नाम लिया है, श्री खंडेलवाल, तो मुझे लगता है कि यह वही युवक होगा जिसके बारे में मेरी माँ ने कुछ देर पहले बात की थी—मेरी बहन के लिए एक संभावित जीवनसाथी के रूप में। वह खत्री है, और जैसा कि आप जानते हैं, हम भी खत्री हैं—हालांकि मैं जाति-वंश में बिल्कुल भी विश्वास नहीं करता। लेकिन मेरी माँ से बहस करना तो नामुमकिन है—वह खत्री-पितृ के इस पूरे मामले में विश्वास करती हैं। कितना दिलचस्प है; तो वह आपके यहाँ काम करता है?'

'हां। अच्छा लड़का है। तकनीकी योग्यताएं भी अच्छी हैं।'

अरुण 'तकनीकी' शब्द सुनकर मन ही मन कांप उठा।

'खैर, हमें कोई आपत्ति नहीं होगी अगर वह कभी हमारे घर आएँ,' अरुण ने कहा। 'लेकिन शायद बेहतर होगा कि आमने-सामने की मुलाकात न हो, सिर्फ हम दोनों के बीच। मुझे लगता है कि आप और श्रीमती खंडेलवाल एक दिन चाय पर आना चाहेंगे। हम सनी पार्क में रहते हैं, जो कि जैसा कि आप जानते हैं, बल्लीगंज में है: आपसे ज्यादा दूर नहीं है। मैं आपको कुछ समय से आमंत्रित करने के बारे में सोच रहा था; मुझे पता चला है कि आप ब्रिज का बहुत अच्छा खेल खेलते हैं।'

चूंकि श्री खंडेलवाल एक कुख्यात लापरवाह खिलाड़ी थे—ब्रिज में उनकी कुशलता का अधिकांश हिस्सा ऊंचे दांव पर खेलते हुए हारने में निहित था (हालांकि कभी-कभी बड़े खेल के हित में भी)—अरुण की टिप्पणी सरासर चापलूसी थी। लेकिन इसका असर हुआ।

श्री खंडेलवाल, हालांकि अरुण की आकर्षक चतुराई से अनजान नहीं थे,

फिर भी प्रशंसा पाकर प्रसन्न हुए। वे एक आतिथ्यवान व्यक्ति थे और उनके पास दिखाने के लिए एक आलीशान घर था। इसलिए, जैसा कि अरुण ने अपने उल्टे निमंत्रण के समय आशा और इरादा किया था, प्राहा के अध्यक्ष ने उन्हें ही आमंत्रित कर लिया।

‘नहीं, नहीं, आप हमारे घर चाय पर आइए,’ श्री खंडेलवाल ने कहा। ‘मैं इस लड़के को बुला लाता हूँ—खन्ना को। और मेरी पत्नी श्रीमती मेहरा से मिलने में बहुत दिलचस्पी लेंगी। कृपया उन्हें भी साथ ले आइए।’

'आपकी बहुत बड़ी मेहरबानी है, श्रीमान खंडेलवाल।'

'बिल्कुल नहीं, बिल्कुल नहीं। क्या आप वाकई में शराब नहीं पिएंगे?'

'नहीं धन्यवाद।'

‘हम तब भर्ती प्रक्रियाओं पर चर्चा कर सकते हैं।’

‘ओह, हाँ, भर्ती,’ अरुण ने कहा। ‘अच्छा, आपको कौन सा दिन ठीक रहेगा?’

‘कभी भी आ जाइए।’ श्री खंडेलवाल ने इस मामले को अधर में छोड़ दिया। खंडेलवाल परिवार के नियम बहुत लचीले थे। लोग बिना बुलाए आ जाते थे और अक्सर एक ही समय में कई भव्य औपचारिक पार्टियां आयोजित की जाती थीं। छह बड़े अल्सेशियन कुत्ते भी इस शोर-शराबे में शामिल हो जाते थे और मेहमानों को डरा देते थे। श्रीमती खंडेलवाल श्री खंडेलवाल पर सख्ती से नियंत्रण रखती थीं, लेकिन वे अक्सर शराब या महिलाओं के चक्कर में बहक जाते थे।

अगले मंगलवार कैसा रहेगा?

‘हां, हां, अगले मंगलवार, किसी भी दिन,’ श्री खंडेलवाल ने अस्पष्ट रूप से कहा।

‘पांच बजे?’

'हां, हां, पांच बजे, किसी भी समय।'

‘अच्छा, तो अगले मंगलवार को शाम पांच बजे। मुझे इसका इंतज़ार रहेगा,’ अरुण ने कहा, और सोच रहा था कि क्या श्री खंडेलवाल को पांच मिनट बाद भी यह बातचीत याद रहेगी।

‘जी हां, जी हां, मंगलवार को पांच बजे,’ श्री खंडेलवाल ने नशे में चूर होकर कहा। ‘जी हां। अब्दार—’

13.30

सुबह आठ बजे दूसरी सायरन बजने से पहले ही सभी ने प्राहा फैक्ट्री के गेट पर हाजिरी लगा दी थी; लेकिन सुपरवाइजरों और मैनेजरों के लिए, फोरमैन से लेकर ऊपर तक, अलग-अलग गेट थे। हरेश को उसकी बैठने की जगह दिखाई गई। वह कन्वेयर बेल्ट के बगल में खुले हॉल में एक मेज पर बैठा था। यहीं पर वह निगरानी करने के साथ-साथ ज़रूरी ऑफिस का काम भी करेगा। केवल ग्रुप फोरमैनों को ही छोटे केबिन मिले थे। उसके पास अपने नाम की पीतल की प्लेट लगाने की कोई जगह नहीं थी, जिसे उसने कुछ समय पहले ही सीएलएफसी में अपने ऑफिस के दरवाजे से हटाया था।

लेकिन शायद वह उस पीतल की थाली का इस्तेमाल वैसे भी नहीं कर पाता। प्राहा में सब कुछ एकसमान था और निस्संदेह पीतल की थालियों पर भी बाकी सभी चीजों की तरह ही मानक अक्षर और आकार होते थे। उदाहरण के लिए, चेक लोग अपने साथ मीट्रिक प्रणाली लाए थे और राज के समय जो भी प्रणाली प्रचलित थी या स्वतंत्र भारत में जो भी प्रचलित थी, उसके अलावा किसी और प्रणाली को अपनाने से इनकार कर दिया था। जहाँ तक उस कहावत की बात है जो हर भारतीय स्कूली बच्चा सीखता था—‘एक पैसे में तीन पाई, एक आना में चार पैसे, एक रुपये में सोलह आना’—चेक लोग इसे मजाक समझते थे। सरकार द्वारा ऐसा करने का निर्णय लेने से दशकों पहले ही उन्होंने प्राहा के सभी आंतरिक

कार्यों के लिए रुपये को दशमलव प्रणाली में बदल दिया था।
हरेश, जिसे व्यवस्था पसंद थी, ने इस बात पर कोई आपत्ति नहीं जताई। वह एक सुव्यवस्थित, अच्छी रोशनी वाले और सौहार्दपूर्ण वातावरण में काम करके खुश था और कंपनी के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए दृढ़ संकल्पित था।
चूंकि उन्हें फोरमैन के पद से ही काम पर रखा गया था और कॉलोनी में रहने की अनुमति दी गई थी, इसलिए कामगारों के बीच कई अफवाहें फैलने लगी थीं। श्री खंडेलवाल के साथ चाय पर बुलाए जाने के बाद ये अफवाहें और भी बढ़ गईं। पहली अफवाह यह थी कि गोरा, चुस्त-दुरुस्त और अच्छे कपड़े पहने हुए हरेश खन्ना असल में एक चेक नागरिक है, जिसने अपने निजी मकसद से भारतीय होने का नाटक किया है। दूसरी अफवाह यह थी कि वह श्री खंडेलवाल का साला है। हरेश ने इन अफवाहों को दूर करने की कोई कोशिश नहीं की, क्योंकि काम करवाने के लिए ये दोनों ही अफवाहें उसके लिए मददगार साबित हुईं।
हरेश ने चेयरमैन के साथ चाय पीने के लिए कलकत्ता जाने वाले दिन एक घंटे की छुट्टी ली। जब वह थिएटर रोड स्थित विशाल घर—जिसे लोकप्रिय रूप से 'प्राहा रेजीडेंसी' के नाम से जाना जाता था—पहुंचे, तो गार्डों ने उनका सलीके से स्वागत किया। साफ-सुथरा लॉन, ड्राइववे में खड़ी पांच कारें (जिनमें ऑस्टिन शीरलाइन भी शामिल थी जिसे उन्होंने कुछ दिन पहले रोक दिया था), ड्राइववे के किनारे लगे ताड़ के पेड़, भव्य हवेली—सब कुछ ने उन्हें बेहद प्रभावित किया। बस एक चीज जो उन्हें थोड़ी खटक रही थी, वह यह थी कि एक ताड़ का पेड़ थोड़ा टेढ़ा लगा हुआ था।
श्री खंडेलवाल ने हिंदी में दोस्ताना लहजे में उनका अभिवादन किया। 'तो आप प्रहमान बन गए। बहुत बढ़िया।'
'यह आपकी दयालुता के कारण है—' हरेश ने कहना शुरू किया।

श्री खंडेलवाल ने आत्मनिंदा करते हुए कोई टिप्पणी करने के बजाय कहा, 'आप बिलकुल सही हैं। यह मेरी दयालुता ही थी।' वे हँसे। 'अगर उन पागल चेक लोगों को मौका मिलता, तो वे आपको निकाल ही देते। अंदर आइए, अंदर आइए... लेकिन आपकी योग्यता ने ही कमाल किया। मैंने आपके जूतों के बारे में सुना था।' वे फिर हँसे।

हरीश का परिचय श्रीमती खंडेलवाल से कराया गया, जो तीस वर्ष की आयु के आसपास की एक बेहद आकर्षक महिला थीं और सुनहरे-सफेद रंग की साड़ी पहने हुए थीं। हीरे की नथ, हीरे के झुमके और उनकी मनमोहक और जीवंत मुस्कान ने उनकी खूबसूरती को और भी बढ़ा दिया। कुछ ही मिनटों में उसने उसे बाथरूम में खराब नल ठीक करने के लिए भेज दिया। उसने अपने बेहद आकर्षक अंदाज़ में कहा, 'दूसरे मेहमानों के आने से पहले हमें इसे ठीक करना होगा। मैंने सुना है कि तुम काम में बहुत माहिर हो।'

हरेश थोड़ा असमंजस में था, और आदेश का पालन करने चला गया। यह किसी प्रकार की परीक्षा नहीं थी—न तो पावेल हावेल जैसी, न ही श्रीमती खंडेलवाल की मुस्कान के प्रति उसकी संवेदनशीलता की। बात बस इतनी थी कि जब कोई काम करवाना होता था, तो श्रीमती खंडेलवाल अपने आस-पास के सभी लोगों से उसे करने की अपेक्षा करती थीं। जब उन्हें किसी कुशल कारीगर की आवश्यकता होती थी, तो वह किसी भी कुशल व्यक्ति को काम पर लगा देती थीं। सभी भारतीय प्राहमैनों को यह सिखाया गया था कि उन्हें किसी भी समय महारानी के आदेश का पालन करने के लिए बुलाया जा सकता है। हरेश को इससे कोई आपत्ति नहीं थी; उसे चीजों को ठीक करना अच्छा लगता था। उसने अपनी जैकेट उतारी और एक नौकर के साथ उस विशाल घर में तब तक घूमता रहा जब तक कि वह खराब नल के पास नहीं पहुँच गया। वह सोचने लगा कि

ये महत्वपूर्ण मेहमान कौन हैं।

इसी बीच मेहमान भी आ रहे थे। मीनाक्षी को इन सबका बेसब्री से इंतज़ार था। ब्रह्मपुर की उबाऊ ज़िंदगी के बाद कलकत्ता लौटना अच्छा लग रहा था। अपर्णा अपनी दादी श्रीमती चटर्जी के साथ कुछ दिन बिताने के बाद थोड़ी शांत हो गई थी (और आज शाम भी वह वहीं थी); और यहाँ तक कि लापरवाह वरुण (जो आज शाम बाहर था) भी ब्रह्मपुर के बच्चों की गंध, रुधिया परिवार और लड़खड़ाते मैत्रा परिवार के बाद घर वापसी का सुखद नज़ारा था।

आज की शाम बड़ी ही शानदार होने वाली थी: खंडेलवाल परिवार के साथ चाय; उसके बाद दो कॉकटेल पार्टियाँ (जिनमें से कम से कम एक में उसकी मुलाकात बिली से ज़रूर होनी थी—वह सोच रही थी कि जब वह हँसते हुए उसे अपनी खबर सुनाएगी तो वह क्या कहेगा?); फिर रात का खाना और नाच-गाना। वह खंडेलवाल परिवार के बारे में जानने के लिए उत्सुक थी, उनके आलीशान घर, छह कुत्तों और पाँच कारों के बारे में, और वह उस नवोदित मोची से मिलने के लिए भी बहुत उत्सुक थी जो लुट्स पर अपना कब्ज़ा जमाना चाहता था।

प्राहा रेजीडेंसी के लॉन और फूल बेहद प्रभावशाली थे, यहाँ तक कि उस मौसम में भी जब लगभग कुछ भी नहीं खिलता था। श्रीमती खंडेलवाल, जो एक जुनूनी महिला थीं, अगर उनके लिए उपयुक्त होता तो क्यू वृक्ष को कलकत्ता में स्थानांतरित करने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं होती।

जब हरेश को उस लंबे-चौड़े नौजवान और उनकी सजी-धजी पत्नी से मिलवाया गया, तब तक वह अपनी जैकेट पहन चुका था। दोनों ही उसे एक ऐसी ऊँचाई से परख रहे थे जो सिर्फ़ वास्तविक नहीं थी। जैसे ही उसने अपने मेज़बान के शब्द सुने—'अरुण मेहरा—बेंटसेन प्राइस से'—उसे समझ आ गया कि ऐसा क्यों था। तो ये थे लता के कलकत्ता वाले

भाई।

'आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई,' हरेश ने अरुण का हाथ शायद कुछ ज़्यादा ही मज़बूती से मिलाते हुए कहा। यह किसी ब्राउन साहब से उनकी पहली मुलाक़ात थी। ब्राउन साहब उनके जीवन का हिस्सा कभी नहीं रहे थे। पटियाला में कुछ समय रहने के दौरान वे अक्सर सोचते थे कि लोग इंपीरियल टोबैको, शेल या किसी अन्य विदेशी कंपनी के उस नौजवान के बारे में इतना शोर क्यों मचाते हैं जो शहर में रहता है या वहाँ से गुज़रता है। उन्हें यह एहसास नहीं था कि एक मामूली व्यापारी के लिए दलाल वर्ग का ऐसा सदस्य अपनी उम्र से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण होता है; वह एजेंसियाँ दे और रद्द कर सकता है, वह किसी का भाग्य बना या बिगाड़ सकता है। वह हमेशा ड्राइवर वाली कार में सफ़र करता था, और एक छोटे शहर में ड्राइवर वाली कार होना बहुत बड़ी बात थी।

अरुण अपने मन में सोच रहा था: कद में छोटा; थोड़ा उद्दंड; उसके कपड़े पहनने का तरीका कुछ ज्यादा ही भड़कीला है; खुद को जरूरत से ज्यादा अच्छा समझता है।

लेकिन वे सब चाय पीने बैठ गए, और बातचीत की शुरुआत महिलाओं ने की। मीनाक्षी ने गौर किया कि सफेद और सुनहरे रंग की रोसेन्थल की प्लेटें उसकी मेज़बान की साड़ी से बिल्कुल मेल खा रही थीं। ये लोग तो ऐसे ही होते हैं! उसने सोचा। ये लोग ज़रूरत से ज़्यादा दिखावा करते हैं।

उसने कमरे में प्रशंसा करने लायक कुछ ढूंढने के लिए चारों ओर देखा। वह भारी-भरकम फर्नीचर की प्रशंसा तो नहीं कर सकती थी, जो कि ज्यादातर हद से ज्यादा दिखावटी था, लेकिन वहाँ एक जापानी पेंटिंग थी जो उसे काफी पसंद आई: दो पक्षी और कुछ सुलेख।

'श्रीमती खंडेलवाल, यह बहुत ही सुंदर चित्र है,' मीनाक्षी ने कहा। 'आपने इसे कहाँ से खरीदा?'

‘जापान से। श्री खंडेलवाल वहां यात्रा पर गए थे—’
श्री खंडेलवाल ने कहा, 'यह इंडोनेशिया से है।' यह उन्हें जकार्ता में एक सम्मेलन में एक जापानी व्यवसायी ने दिया था, जिसमें वे प्राहा इंडिया की ओर से शामिल हुए थे।
श्रीमती खंडेलवाल ने गुस्से भरी निगाहों से उसे देखा और वह सहम गया।
'मुझे पता है कि तुम्हें क्या मिला और कब मिला,' श्रीमती खंडेलवाल ने कहा।
‘हां, हां—’ उसके पति ने कुछ चिंतित स्वर में कहा।
'अच्छा फर्नीचर है!' हरेश ने इस विश्वास के साथ कहा कि इस तरह की छोटी-मोटी बातचीत करना जरूरी था।
मीनाक्षी ने उसकी ओर देखा और कोई टिप्पणी करने से परहेज किया।
लेकिन श्रीमती खंडेलवाल ने अपनी सबसे प्यारी और मनमोहक भाव-भंगिमाओं के साथ उन्हें निहारा। उन्होंने उन्हें वह कहने का अवसर दे दिया था जो वह कहना चाहती थीं। 'क्या आपको ऐसा लगता है?' उन्होंने हरेश से पूछा। 'यह कामदारों ने किया है—बंबई के कामदारों ने। हमारे आधे कमरे उन्हीं ने सजाए हैं।'
मीनाक्षी ने गहरे नीले रंग की गद्दी वाली, ठोस लकड़ी से बने भारी-भरकम कोने वाले सोफे को देखा। उन्होंने कहा, 'अगर आपको इस तरह की चीज़ें पसंद हैं, तो ये आपको कोलकाता में आसानी से मिल जाएंगी। उदाहरण के लिए, पुराने ज़माने के फर्नीचर के लिए चौरंगी सेल्स ब्यूरो है। और अगर आपको कुछ आधुनिक शैली का चाहिए, तो मोज़ूमदार तो है ही। ये थोड़ा कम'—वह एक शब्द के लिए रुकीं—'थोड़ा कम भारी-भरकम है। लेकिन ये आपकी पसंद पर निर्भर करता है। ये पकौड़े तो बहुत स्वादिष्ट हैं,' उन्होंने एक और पकौड़ा लेते हुए कहा।
उसकी खिलखिलाती हंसी चीनी के बर्तनों पर गूंज उठी, हालांकि उसकी

पिछली टिप्पणियों में कुछ भी स्पष्ट रूप से हास्यपूर्ण नहीं था।
‘ओह, लेकिन मुझे लगता है,’ श्रीमती खंडेलवाल ने मोहक अंदाज में कहा, ‘मुझे वास्तव में लगता है कि कामदार की कारीगरी और लकड़ी की गुणवत्ता बेजोड़ है।’
और दूरी का महत्व, मीनाक्षी ने सोचा। अगर आप बंबई में रहते, तो आपको अपना फर्नीचर कलकत्ता से मंगवाना पड़ता। उसने ज़ोर से कहा: 'खैर, कामदार की दुकान तो कामदार की ही है, ज़ाहिर है।'
'श्रीमती मेहरा, थोड़ी और चाय पीजिए,' श्रीमती खंडेलवाल ने खुद चाय परोसते हुए कहा।
वह बेहद आकर्षक थीं और लोगों को, यहाँ तक कि महिलाओं को भी, अपना बनाने में विश्वास रखती थीं। हालाँकि अपने अतीत की वजह से उनमें कुछ असुरक्षा की भावना थी, लेकिन वे कभी भी उनके साथ आक्रामक नहीं होती थीं। केवल जब मधुरता काम नहीं आती थी, तभी वे अपना क्रोध प्रकट करती थीं।
श्री खंडेलवाल अधीर होते दिख रहे थे। थोड़ी देर बाद वे ताजी हवा लेने के लिए उठकर चले गए। एक-दो मिनट बाद वे वापस आए, उनके शरीर से इलायची की खुशबू आ रही थी और वे पहले से ज्यादा खुश लग रहे थे।
जब वह लौटा तो श्रीमती खंडेलवाल ने उसे संदेह की नजर से देखा, लेकिन वह पूरी तरह से निर्दोष प्रतीत हो रहा था।
अचानक, बिना किसी चेतावनी के, तीन विशालकाय अल्सेशियन कुत्ते उन्माद में भौंकते हुए कमरे में घुस आए। हरेश अचंभित रह गया और उसकी चाय लगभग गिर ही गई। अरुण उछल पड़ा। खंडेलवाल असमंजस में था; वह सोच रहा था कि वे अंदर कैसे आ गए। केवल दो महिलाएं ही शांत रहीं। मीनाक्षी को कडल की शरारतों की आदत थी और उसे कुत्तों से बहुत प्यार था। श्रीमती खंडेलवाल ने धीमी, लेकिन प्रभावशाली फुफकार

के साथ उन पर पलटवार किया:
‘बैठ जाओ! बैठ जाओ, कैसियस, बैठ जाओ—बैठ जाओ—क्रिस्टल—बैठ जाओ, जलेबी!’
तीनों कुत्ते कांपते हुए चुपचाप एक कतार में बैठ गए। उनमें से हर एक जानता था कि अगर उन्होंने अवज्ञा की तो श्रीमती खंडेलवाल उन्हें वहीं बेरहमी से कोड़े मारेंगी।
‘देखो—’ श्रीमती खंडेलवाल ने कहा, ‘देखो, मेरा कैसियस कितना प्यारा है, उसे देखो, मेरा नन्हा लाडला—कितना दुखी लग रहा है। उसका इरादा किसी को परेशान करने का नहीं था।’
‘खैर,’ अरुण ने कहा, ‘मुझे डर है कि मेरी पत्नी की हालत कुछ हद तक नाजुक है, और ये अचानक लगने वाले झटके—’
श्रीमती खंडेलवाल भयभीत होकर अपने पति की ओर मुड़ीं। उन्होंने पूर्ण अधिकारपूर्ण स्वर में कहा, 'श्रीमान खंडेलवाल, क्या आपको पता है आपने क्या किया है? क्या आपको इसका जरा भी अंदाजा है?'
'नहीं,' श्री खंडेलवाल ने डरते और कांपते हुए कहा।
‘तुमने दरवाजा खुला छोड़ दिया है। इसी वजह से ये तीनों जानवर अंदर आ गए हैं। इन्हें तुरंत बाहर निकालो और दरवाजा बंद कर दो।’
कुत्तों और अपने पति को विदा करने के बाद, वह चिंता से भरी आंखों से मीनाक्षी की ओर मुड़ी।
'मेरी प्यारी श्रीमती मेहरा, मैं आपसे जितनी माफी मांगूं कम है। एक और पकौड़ा खा लीजिए। दो खा लीजिए। आपको अपनी ताकत बढ़ानी होगी।'
'शानदार चाय, श्रीमती खंडेलवाल,' हरेश ने साहसपूर्वक कहा।
'एक और कप पीजिए। हम अपना खास मिश्रण सीधे दार्जिलिंग से मंगवाते हैं,' श्रीमती खंडेलवाल ने कहा।
13.31

कुछ देर का विराम हुआ, और अब हरेश ने शेर को चुनौती देने का फैसला किया।

‘तुम लता के भाई होगे,’ उसने अरुण से कहा। ‘लता कैसी है?’

‘बहुत अच्छा,’ अरुण ने कहा।

'और आपकी माँ?'

‘बहुत अच्छा, धन्यवाद,’ अरुण ने कुछ घमंड भरे लहजे में कहा।

और बच्चा?

‘बच्चा?’

‘आपकी भतीजी।’

‘निस्संदेह फल-फूल रहा है।’

फिर कुछ देर का विराम रहा।

'क्या आपके कोई बच्चे हैं?' हरेश ने मीनाक्षी से पूछा।

‘हां,’ मीनाक्षी ने कहा। ‘एक लड़की।’

उसने फैसला किया कि यह मोची अमित का बहुत ही घटिया प्रतिद्वंद्वी साबित होगा।

अरुण ने हरीश की ओर मुड़कर कहा: 'आप असल में क्या काम करते हैं, श्री खन्ना? मुझे पता चला है कि प्राहा ने आपको किसी पद पर नियुक्त किया है। मेरा अनुमान है कि आप प्रबंधकीय पद पर हैं।'

“वैसे, प्रबंधकीय पद नहीं,” हरेश ने कहा। “मैं फिलहाल पर्यवेक्षक के पद पर हूं, हालांकि मेरी पिछली नौकरी प्रबंधकीय थी। मैंने यह नौकरी इसलिए चुनी क्योंकि इसमें बेहतर भविष्य की संभावनाएं हैं।”

‘पर्यवेक्षणीय?’

मैं एक फोरमैन हूँ।

‘अरे! एक फोरमैन।’

'प्राहा आमतौर पर लोगों को फैक्ट्री फ्लोर पर काम से शुरुआत करवाता

है, यहां तक कि सुपरवाइजरी पदों पर भी नहीं।'
'हम्म।' अरुण ने चाय की एक और घूंट ली।
'जेम्स हॉली ने मुझे मैनेजर की नौकरी की पेशकश की—' हरेश ने बात शुरू की।
'मुझे कभी समझ नहीं आया कि क्रोमार्टी ग्रुप ने अपना मुख्यालय कलकत्ता क्यों नहीं स्थानांतरित किया,' अरुण ने उदासीन भाव से कहा। 'यह समझ से परे है कि वे एक प्रांतीय कंपनी बने रहना चाहते हैं। खैर।'
मीनाक्षी को लगा कि अरुण कुछ ज्यादा ही असभ्य व्यवहार कर रहा है। उसने पूछा, 'आप मूल रूप से दिल्ली के रहने वाले हैं, है ना श्री खन्ना?'
'जी हां, बिलकुल,' हरेश ने कहा। 'और मैं सेंट स्टीफंस कॉलेज गया था।'
और फिर, जैसा कि मुझे पता चला है, आप अपनी शिक्षा के लिए इंग्लैंड गए थे। क्या वह ऑक्सफोर्ड था या कैम्ब्रिज?
मैंने मिडिलहैम्पटन कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी से पढ़ाई की।
कुछ सेकंड के लिए सन्नाटा छा गया, जो श्री खंडेलवाल की वापसी से टूटा। वे और भी खुश दिख रहे थे। उन्होंने चौकीदार से गेट पर उनके लिए व्हिस्की की एक बोतल और एक गिलास रखने का इंतजाम कर रखा था, और उन्होंने पांच सेकंड में एक पेग गटकने की कला में महारत हासिल कर ली थी।
अरुण ने हरेश से बातचीत जारी रखते हुए पूछा, 'श्री खन्ना, आपने हाल ही में कौन-कौन से नाटक देखे हैं?' अरुण ने लंदन में चल रहे कुछ नाटकों के नाम बताए।
'नाटक?'
'खैर, चूंकि आप इंग्लैंड से आए हैं, तो मुझे लगता है कि आपने थिएटर देखने का अवसर जरूर लिया होगा।'
'मिडलैंड्स में मुझे नाटक देखने का ज्यादा मौका नहीं मिला,' हरेश ने

कहा। 'लेकिन मैंने बहुत सारी फिल्में देखीं।'
अरुण ने बिना कोई टिप्पणी किए यह जानकारी प्राप्त की। 'खैर, मुझे उम्मीद है कि आप स्ट्रैटफ़ोर्ड गए होंगे; यह मिडिलहैम्प्टन से ज्यादा दूर नहीं है।'
“मैंने कर दिया,” हरेश ने राहत भरी सांस लेते हुए कहा। यह नोवाक, हावेल और कुरिल्ला की संयुक्त हिंसा से भी बदतर था।
अरुण ने ऐनी हैथवे की कुटिया के जीर्णोद्धार के बारे में बात करना शुरू किया और धीरे-धीरे प्रांतों से लंदन में युद्धोत्तर पुनर्निर्माण कार्य की ओर बढ़ गया।
मीनाक्षी ने अपनी उन सहेलियों के बारे में बात की जो बेकर स्ट्रीट के पास एक गली को ठीक करवा रही थीं।
वहाँ से बातचीत होटलों की ओर मुड़ गई। क्लेरिज होटल का जिक्र होते ही, श्री खंडेलवाल, जो लंदन आने पर हमेशा वहाँ एक सुइट बुक करते थे, ने कहा:
“ओह, जी हाँ, क्लेरिजेस। क्लेरिजेस के साथ मेरा अच्छा रिश्ता है। मैनेजर हमेशा मुझसे पूछता है, “क्या सब कुछ आपकी संतुष्टि के अनुरूप है, श्रीमान खंडेलवाल?” और मैं हमेशा कहता हूँ, “हाँ, सब कुछ मेरी संतुष्टि के अनुरूप है।”” वह मुस्कुराया, मानो किसी निजी मजाक पर।
श्रीमती खंडेलवाल ने दबी हुई नाराज़गी से उसकी ओर देखा। उन्हें शक था कि लंदन की उनकी यात्राओं में व्यापारिक पहलू के साथ-साथ कामुक पहलू भी शामिल थे, और उनका शक सही निकला। कभी-कभी वह आधी रात को उन्हें फोन करके यह सुनिश्चित करतीं कि वह वहीं हैं जहाँ उन्होंने होने का वादा किया था। अगर वह शिकायत करते, जो कि वह शायद ही कभी करते थे, तो वह उन्हें बतातीं कि उनसे समय क्षेत्र को लेकर गलती हो गई थी।

'जब भी आप लंदन जाते हैं, तो आपको वहां सबसे ज्यादा क्या पसंद आता है?' अरुण ने हरीश की ओर मुड़ते हुए पूछा।
'बेशक, पब ही हैं,' हरेश ने कहा। 'आप कहीं भी जाएं, आपको कोई न कोई पब मिल ही जाएगा। मेरा पसंदीदा पब ट्रैफ़लगर स्क्वायर के पास वाला वो नुकीला पब है - मार्क्विस ऑफ़ एंगलेसी - या शायद मार्क्विस ऑफ़ ग्रैनबी?'
श्री खंडेलवाल कुछ दिलचस्पी दिखाते हुए दिखे, लेकिन अरुण, मीनाक्षी और श्रीमती खंडेलवाल एक साथ सिहर उठे। रोसेन्थल परिवार में हरेश बिल्कुल अकड़ दिखा रहा था।
'आप अपनी बेटी के लिए खिलौने कहाँ से खरीदती हैं?' श्रीमती खंडेलवाल ने झटपट पूछा। 'मैं हमेशा श्रीमान खंडेलवाल से कहती हूँ कि इंग्लैंड से खिलौने खरीदें। वे बहुत अच्छे उपहार होते हैं। भारत में तो बच्चे पैदा होते ही रहते हैं और मुझे समझ नहीं आता कि उन्हें क्या उपहार दूँ।'
अरुण ने शीघ्रता से, सटीकता और आत्मविश्वास के साथ, लंदन में तीन खिलौनों की दुकानों के नाम बताए, लेकिन अंत में हैमलीज की प्रशंसा करते हुए अपनी बात समाप्त की:
"वैसे तो, श्रीमती खंडेलवाल, मेरा हमेशा से यही मानना रहा है कि हमें आजमाए हुए और भरोसेमंद स्टोरों में ही जाना चाहिए। और सच में, हैमलीज़ की बराबरी आज भी कोई नहीं कर सकता। ऊपर से नीचे तक खिलौने ही खिलौने—हर मंजिल पर सिर्फ खिलौने ही खिलौने। और क्रिसमस के समय तो इसे बहुत खूबसूरती से सजाया जाता है। यह रीजेंट स्ट्रीट पर है, जैगर से ज्यादा दूर नहीं है—"
'जैगर!' श्री खंडेलवाल ने कहा। 'मैंने पिछले महीने वहीं से एक दर्जन स्वेटर खरीदे थे।'
'आप आखिरी बार इंग्लैंड कब गए थे, श्री मेहरा?' हरेश ने पूछा, जो खुद

को बातचीत से अलग-थलग महसूस कर रहा था।
लेकिन ऐसा लग रहा था कि अरुण के गले में कुछ अटक गया है, क्योंकि उसने अपनी जेब से एक रुमाल निकाला और खांसने लगा, साथ ही अपने बाएं हाथ से अपने कंठ की ओर इशारा किया।
मेज़बान बहुत चिंतित थीं। उन्होंने उनके लिए एक गिलास पानी मंगवाया। नौकर स्टेनलेस स्टील की थाली में पानी से भरा एक मोटा गिलास लेकर आया। मीनाक्षी के भयभीत चेहरे को देखकर श्रीमती खंडेलवाल नौकर पर चिल्लाईं।
'क्या तुमने पानी लाना इसी तरह सीखा है? मुझे तुम्हें वापस गाँव भेज देना चाहिए।' स्टील की थाली सोने और सफेद रंग की चाय की थालियों से बिल्कुल मेल नहीं खा रही थी। मेज़बान के इस सार्वजनिक आक्रोश को देखकर मीनाक्षी और भी ज़्यादा भयभीत हो गई।
जब अरुण संभल गया और बातचीत की दिशा बदलने ही वाली थी, तो हरेश को लगा कि अरुण को उसमें दिलचस्पी लेना अच्छा लगेगा, इसलिए उसने अपना सवाल दोहराया:
आप आखिरी बार इंग्लैंड कब गए थे?
अरुण का चेहरा लाल हो गया, फिर उसने खुद को संभाला। उसके पास बचने का कोई रास्ता नहीं था। उसे सवाल का जवाब देना ही था।
"खैर," उन्होंने यथासंभव गरिमा बनाए रखते हुए कहा, "आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि मुझे वास्तव में कभी वहां जाने का अवसर नहीं मिला है—लेकिन निश्चित रूप से हम कुछ महीनों में जा रहे हैं।"
हरेश चौंक गया। उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि वह अरुण से पूछेगा कि क्या वह कभी इंग्लैंड गया है। उसे हंसी आ रही थी, लेकिन हिम्मत नहीं हुई। हालांकि, उसकी आंखों में हंसी के भाव आ गए। उसके

मेज़बान और मेज़बानी करने वाली महिला भी चौंक गईं।
मीनाक्षी ने ब्रिज के बारे में जल्दी-जल्दी बातें शुरू कीं और बताया कि उन्हें किसी दिन खंडेलवाल परिवार को अपने घर जरूर बुलाना है। कुछ मिनटों की शिष्टाचारपूर्ण बातचीत के बाद मेहरा परिवार ने अपनी घड़ियाँ देखीं, एक-दूसरे को देखा, मेज़बानों को धन्यवाद दिया, उठे और चले गए।
13.32
मीनाक्षी सही थी। बिली ईरानी उस शाम उन दो कॉकटेल पार्टियों में से दूसरी पार्टी में मौजूद थे। शिरीन उनके साथ थी, लेकिन मीनाक्षी ने कुछ हल्के-फुल्के मज़ाकिया अंदाज़ में उन्हें सबके सामने एक तरफ बुला लिया।
‘बिली, क्या तुम्हें पता है,’ उसने धीमी और हंसती हुई आवाज़ में कहा, उसकी आवाज़ दूर तक नहीं गई और उसके चेहरे के हाव-भाव से लग रहा था कि वे हल्की-फुल्की बातें कर रहे हैं, ‘क्या तुम्हें पता है कि मैं गर्भवती हूँ?’
बिली ईरानी घबराए हुए लग रहे थे। 'हां, अरुण ने मुझसे इसका जिक्र किया था।'
'कुंआ?'
‘अच्छा—क्या मुझे आपको बधाई देनी चाहिए?’
मीनाक्षी खनकती हुई हंसी हंसी, उसकी आंखें ठंडी थीं।
नहीं, मुझे नहीं लगता कि यह अच्छा विचार है। कुछ महीनों में आप खुद को बधाई दे रहे होंगे।
बेचारा बिली काफी डरा हुआ लग रहा था।
‘लेकिन हम सावधान थे।’ (सिवाय उस एक बार के, उसने सोचा।)
मीनाक्षी ने पलटवार करते हुए कहा, 'मैंने सबके साथ सावधानी बरती है।'
‘सब लोग?’ बिली चौंक गया।

‘मेरा मतलब है, तुम्हारे साथ और अरुण के साथ। ठीक है, चलो विषय बदलते हैं, वह आ रहा है।’

लेकिन अरुण, जिसने पेट्रीशिया कॉक्स को देख लिया था और उसके प्रति शिष्टता दिखाने का निश्चय कर लिया था, सिर हिलाकर उनके पास से गुजर गया। मीनाक्षी कह रही थी:

और हां, मुझे इन कमियों वगैरह के बारे में कुछ भी समझ नहीं आता, लेकिन मुझे ईगल और बर्डी जैसे नाम पसंद हैं। ये सुनने में बहुत अच्छे लगते हैं... खैर, वो चला गया। अब बिली, हम कब मिलें?

‘हम नहीं मिल सकते। इसके बाद तो बिलकुल नहीं!’ बिली घबराया हुआ लग रहा था। इसके अलावा, वह मीनाक्षी की छोटी नाशपाती जैसी बालियों को देखकर मंत्रमुग्ध हो गया था, जो उसे अजीब तरह से विचलित कर रही थीं।

मीनाक्षी ने कहा, 'मैं दोबारा गर्भवती नहीं हो सकती। अब यह पूरी तरह से सुरक्षित है।'

बिली बीमार लग रहा था। उसने कमरे में शिरीन की ओर एक नज़र डाली। ‘सच में, मीनाक्षी!’

मीनाक्षी ने तीखे स्वर में कहा, 'मुझे "सचमुच मीनाक्षी" मत कहो। बिली, हम पहले की तरह ही आगे बढ़ेंगे, वरना मैं अंजाम भुगतने के लिए तैयार नहीं हूँगी।'

‘तुम उसे नहीं बताओगे—’ बिली हांफते हुए बोला।

मीनाक्षी ने अपनी सुंदर गर्दन ऊपर उठाई और बिली को देखकर मुस्कुराई। वह थकी हुई लग रही थी, शायद थोड़ी चिंतित भी। उसने उसके सवाल का जवाब नहीं दिया।

‘और वो—वो—बच्चा?’ बिली ने कहा।

मीनाक्षी ने कहा, 'मुझे इसके बारे में सोचना पड़ेगा। नहीं तो मैं इसके बारे

में सोचते-सोचते पागल हो जाऊंगी। मुझे पता ही नहीं चलेगा। इसमें भी मुझे थोड़ी मदद की ज़रूरत पड़ सकती है। तो, शुक्रवार दोपहर को मिलते हैं?'

बिली ने बेबसी से सिर हिलाया।

'तो शुक्रवार दोपहर, ठीक है,' मीनाक्षी ने कहा। 'तुम्हें दोबारा देखकर बहुत अच्छा लगा। लेकिन तुम थोड़े अस्वस्थ लग रहे हो, बिली। आने से पहले एक कच्चा अंडा खा लेना।' और वह कमरे के आधे रास्ते तक पहुँचकर उसे एक चुंबन देते हुए चली गई।

13.33

रात के खाने और थोड़ी देर नाचने के बाद ('पता नहीं तुम कब तक नाच पाओगी, डार्लिंग,' अरुण ने उससे कहा), वे घर लौट आए। मीनाक्षी ने बत्ती जलाई और ठंडा पानी पीने के लिए फ्रिज खोला। अरुण ने खाने की मेज पर रखे ग्रामोफोन रिकॉर्ड के मोटे ढेर को देखा और गुर्राया:

'वरुन ने यह तीसरी बार किया है। अगर उसे इस घर में रहना है, तो उसे यह सीखना होगा कि घर कोई गंदी जगह नहीं होती। वैसे भी वह है कहां?'

'उसने कहा था कि वह देर से बाहर रहेगा, डार्लिंग।'

अरुण अपने बेडरूम की ओर बढ़ा और जाते हुए अपनी टाई खोल दी। उसने लाइट जलाई और एकदम रुक गया।

पूरे कमरे में तोड़फोड़ हुई थी। लोहे का लंबा काला संदूक, जो आमतौर पर गद्दे और जकूज़ी से ढका रहता था और खिड़की के पास बैठने के लिए इस्तेमाल होता था, खुला पड़ा था, उसका ताला टूटा हुआ था। संदूक के अंदर रखा मजबूत चमड़े का थैला खाली था। उसके नौ लीवर का ताला तोड़ना बहुत मुश्किल था, इसलिए मोटे चमड़े के ऊपरी हिस्से को चाकू से चीरकर एक बड़ा सा S-आकार का छेद बना दिया गया था। अंदर रखे

गहनों के बक्से खाली कर दिए गए थे और फर्श पर इधर-उधर बिखरे पड़े थे। उसने कमरे में चारों ओर जल्दी से नज़र डाली। बाकी किसी चीज़ को छुआ नहीं गया था, लेकिन थैले में रखा सारा सामान गायब था: परिवार के दोनों तरफ से मिले गहनों से लेकर उसके पिता का एकमात्र बचा हुआ सोने का पदक तक। केवल मीनाक्षी का वह हार गायब था जिसे उसने पिछली रात पहना था और जिसे उसने ताला लगाकर नहीं रखा था बल्कि ड्रेसिंग टेबल पर छोड़ दिया था; और, ज़ाहिर है, आज रात उसने जो कुछ भी पहना था। बहुत सी ऐसी चीज़ें ले ली गई थीं जिनका भावनात्मक महत्व बहुत अधिक था। सबसे बुरी बात यह थी कि - यह देखते हुए कि वह बेंटसेन प्राइस के बीमा विभाग से संबंधित थे और शायद प्रीमियम के खर्च के बावजूद उन्हें बीमा करवाना चाहिए था - उनमें से किसी का भी बीमा नहीं था।

जब अरुण ड्राइंग रूम में वापस गया, तो उसका चेहरा पीला पड़ गया था।

‘क्या बात है, प्यारे?’ मीनाक्षी ने बेडरूम की ओर बढ़ते हुए पूछा।

‘कुछ नहीं, डार्लिंग,’ अरुण ने उसका रास्ता रोकते हुए कहा। ‘कुछ नहीं। बैठ जाओ। नहीं, ड्राइंग रूम में।’ वह कल्पना कर सकता था कि यह दृश्य उस पर, खासकर उसकी वर्तमान स्थिति में, क्या असर डालेगा। फटे हुए अटैची केस की तस्वीर देखकर उसने अपना सिर हिलाया।

‘लेकिन अरुण, कुछ तो बहुत गलत हो रहा है,’ मीनाक्षी ने कहा।

धीरे-धीरे, और अपना हाथ उसके कंधे पर रखकर, उसने उसे बताया कि क्या हुआ था।

'भगवान का शुक्र है कि अपर्णा आज रात तुम्हारे माता-पिता के साथ है। लेकिन नौकर कहाँ हैं?'

मैंने उन्हें समय से पहले ही छुट्टी दे दी।

हमें देखना होगा कि हनीफ पीछे वाले क्वार्टर में सो रहा है या नहीं।

सामान ढोने वाला और रसोइया दोनों ही बुरी तरह डर गए थे। वे सो रहे थे। उन्होंने कुछ भी देखा या सुना नहीं था। उन्हें डर था कि कहीं उन पर शक न हो जाए। साफ तौर पर लग रहा था कि गहनों के ठिकाने की जानकारी किसी को थी। शायद सफाईकर्मी को पता हो, उन्होंने सुझाव दिया। उन्हें इस बात का भी डर था कि पूछताछ के दौरान पुलिस उनके साथ क्या करेगी।

अरुण ने पुलिस को फोन करने की कोशिश की, लेकिन फोन पर कोई जवाब नहीं मिला।

लगातार छह अपशब्दों के बाद, उसे होश आया। वह अपनी पत्नी को किसी भी कीमत पर नाराज नहीं करना चाहता था।

'डार्लिंग, तुम यहीं रुको,' उसने कहा। 'मैं पुलिस स्टेशन जाकर उन्हें सूचना दे देता हूँ।'

लेकिन मीनाक्षी घर में अकेली नहीं रहना चाहती थी और उसने कहा कि वह अरुण के साथ जाएगी। वह थोड़ी कांपने लगी थी। गाड़ी चलाते समय उसने अपना हाथ अरुण के कंधे पर रख दिया।

'कोई बात नहीं, जानम,' अरुण ने कहा। 'कम से कम हम सब तो ठीक हैं। चिंता मत करो। इसके बारे में मत सोचो। यह तुम्हारे और बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।'

13.34

मीनाक्षी चोरी और अपने गहनों के नुकसान से इतनी दुखी थी कि उसे एक हफ्ते के लिए अपने माता-पिता के घर आराम करने की ज़रूरत पड़ी। उसके गहनों में सोने की बालियां तो नहीं थीं, लेकिन उसके ससुर का दूसरा स्वर्ण पदक ज़रूर शामिल था। अरुण ने उसके प्रति पूरी सहानुभूति दिखाई और हालांकि वह जानता था कि उसे मीनाक्षी और अपर्णा की कमी खलेगी, फिर भी उसे लगा कि कुछ समय के लिए मीनाक्षी का घर

से दूर रहना उसके लिए अच्छा होगा। वरुण अगली सुबह अपने दोस्तों के साथ रात बिताने के बाद लौटा। खबर सुनकर उसका चेहरा पीला पड़ गया। जब अरुण ने उसे बताया कि अगर वह 'पूरी रात शहर में शराब पीकर न घूमता तो घर पर कोई होता जो चोरी को रोक देता', तो उसका चेहरा लाल हो गया। आखिर अरुण भी तो मौज-मस्ती कर रहा था। लेकिन अरुण को, जो बहुत गुस्से में लग रहा था, भड़काने के बजाय वरुण चुप रहा और अपने कमरे में चला गया।

अरुण ने श्रीमती रूपा मेहरा को पत्र लिखकर चोरी के बारे में बताया। उसने उन्हें आश्वस्त किया कि मीनाक्षी ठीक है, लेकिन उसे यह भी बताना पड़ा कि दूसरा पदक भी खो गया है। वह समझ सकता था कि यह सुनकर रूपा को कितना बुरा लगेगा। वह भी अपने पिता से बहुत प्यार करता था और इस पदक के खोने से सबसे ज़्यादा दुखी था। लेकिन अब सिवाय इस उम्मीद के और कुछ नहीं किया जा सकता था कि पुलिस अपराधी या अपराधियों को ढूंढ निकालेगी। पुलिस सफाईकर्मी लड़के से पूछताछ कर रही थी: उसे पीट रही थी, ठीक कहें तो। जब अरुण को इस बारे में पता चला, तो उसने उन्हें रोकने की कोशिश की।

'लेकिन हम यह कैसे पता लगा सकते हैं कि क्या हुआ था—चोरों को कैसे पता चला कि आपने गहने कहाँ रखे थे?' थाने के अधिकारी ने पूछा।

'मुझे परवाह नहीं। मैं यह बर्दाश्त नहीं करूँगा,' अरुण ने कहा और यह सुनिश्चित किया कि वे उसे और न पीटें। सबसे बुरी बात यह थी कि अरुण को खुद शक था कि सफाईकर्मी ही अपराधियों के साथ मिला हुआ था। यह मुमकिन नहीं था कि वह टूथलेस क्रोन या हनीफ हो। जहाँ तक अंशकालिक माली या ड्राइवर की बात है, वे कभी घर में दाखिल नहीं हुए। अरुण ने अपनी माँ को एक और बात लिखी थी, जो हरेश से उसकी मुलाकात के बारे में थी। खंडेलवाल के यहाँ हुई बेइज्जती के बारे में

सोचते ही वह शर्म से लाल हो जाता था। उसने श्रीमती रूपा मेहरा को अपने होने वाले साले के बारे में साफ-साफ बता दिया कि वह एक छोटा, अड़ियल और बदतमीज नौजवान है, जिसे खुद पर बहुत घमंड है। नील दरवाजा की बदबूदार गलियों में पले-बढ़े होने के बावजूद उस पर मिडलैंड्स की थोड़ी-बहुत छाप थी। न तो सेंट स्टीफंस स्कूल का और न ही लंदन की संस्कृति का उस पर कोई खास असर पड़ा था। वह सलीके से कपड़े पहनता था; उसमें सामाजिक शिष्टाचार की कमी थी; और कॉलेज में अंग्रेजी पढ़ने और दो साल गाँव में रहने के बावजूद उसकी अंग्रेजी अजीब तरह से बेढंगी थी। अरुण की संगति (कलकत्ता क्लब और टॉलीगंज रेसकोर्स: कलकत्ता के संभ्रांत वर्ग, भारतीय और यूरोपीय दोनों) में घुलने-मिलने की बात तो अरुण को समझ ही नहीं आ रही थी। खन्ना उस चेक जूता बनाने वाली फैक्ट्री में सिर्फ एक फोरमैन था—सिर्फ एक फोरमैन! श्रीमती रूपा मेहरा को यकीन ही नहीं हो रहा था कि वह उनके वर्ग और पृष्ठभूमि की मेहरा महिला से शादी करने या उनकी बेटी को अपने साथ घसीटने के लायक है। अरुण ने आगे बताया कि मीनाक्षी भी काफी हद तक उससे सहमत थी।

जो बात उसने नहीं बताई, क्योंकि उसे इसका पता नहीं था, वह यह थी कि मीनाक्षी के लता के लिए कुछ और ही प्लान थे। अब जब वह चटर्जी परिवार के साथ रह रही थी, तो उसने अमित को रिझाने की कोशिश शुरू कर दी। काकोली भी उसकी इस कोशिश में साथ दे रही थी। दोनों लता को पसंद करते थे और दोनों को लगता था कि वह उनके बड़े भाई के लिए बिल्कुल सही जोड़ी होगी। वह अमित की अजीब आदतों को सहन कर लेगी और उसके काम की सराहना करेगी। वह बुद्धिमान और साहित्यिक थी; और हालांकि अमित जीवन में बहुत कम बातचीत से ही संतुष्ट हो जाता था (अपनी बहनों या यहां तक कि दीपांकर के विपरीत),

लेकिन वह जो भी बातचीत करता था, वह निरर्थक या खोखली नहीं हो सकती थी—सिवाय अपने भाई-बहनों के, जिनके साथ वह अपेक्षाकृत खुलकर बात करता था।

बहरहाल, काकोली—जिसने एक बार उससे कहा था कि उसे उस महिला पर सचमुच बहुत दया आती है जिसे उससे शादी करनी पड़ेगी—ने फैसला किया कि उसे लता पर दया करने की जरूरत नहीं है, जो अपने सनकी भाई को समझने और संभालने में सक्षम होगी।

शायद मीनाक्षी की साजिश अच्छी ही साबित हुई। अमित, जो लता को बहुत पसंद करता था, अपनी ऊर्जावान और चालाक बहनों के कारण ही इस तरह की कार्रवाई करने के लिए प्रेरित हुआ होगा।

हमेशा की तरह बेअसर साबित हो रहे काकोली के दोहों का इस्तेमाल करने के बजाय, इस बार दोनों बहनें अमित के साथ ज़्यादा नरमी से पेश आईं। मीनाक्षी ने उसे बताया कि कोई अनजान व्यक्ति बीच में आ गया है। पहले तो उसने सोचा था कि वह अकबर नाम का कोई आदमी होगा जो लता के साथ 'ऐज़ यू लाइक इट' में काम कर रहा था, लेकिन असल दावेदार तो एक घमंडी मोची निकला, जो लता के बिल्कुल लायक नहीं था; इस तरह उसने इशारा किया कि अमित दखल देकर लता को एक नाखुशहाल शादी से बचाएगा। काकोली ने बस इतना कहा कि लता उसे पसंद करती है, और वह जानती है कि अमित भी लता को पसंद करता है, और उसे समझ नहीं आ रहा कि वह इतना हंगामा क्यों कर रहा है। वह उसे एक प्रेम पत्र और अपनी कोई किताब क्यों नहीं भेजता?

मीनाक्षी और काकोली दोनों को ही लगता था कि अगर उन्होंने लता के प्रति अमित की भावनाओं को सही ढंग से नहीं समझा है, तो उन्हें सफलता मिलने की कोई खास उम्मीद नहीं है; लेकिन अगर उन्होंने सही समझ लिया होता, तो वे कार्रवाई के लिए ज़रूरी प्रेरणा का काम करतीं।

उन्हें ऑक्सफोर्ड में अमित के समय और वहाँ उसके प्रेम-प्रसंगों के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं थी, लेकिन वे इतना ज़रूर जानती थीं कि कलकत्ता में उसने अपनी महिला प्रशंसकों या उनकी माताओं के उसे बेहतर तरीके से जानने के सभी प्रयासों को ठुकरा दिया था। वह जेन ऑस्टेन के प्रति वफ़ादार रहा था। वह चिंतनशील जीवन जीने में संतुष्ट प्रतीत होता था। उसकी इच्छाशक्ति मज़बूत थी, भले ही वह खुलकर ज़ाहिर न हो, और उसने कभी भी वह काम नहीं किया जो वह नहीं करना चाहता था। जहाँ तक कानून की बात है, जिसमें उसने डिग्री हासिल की थी, बिस्वास बाबू के आग्रह और पिता की नाराज़गी के बावजूद, अमित ने उसमें ज़रा भी रुचि नहीं दिखाई थी।

अपनी निष्क्रियता के लिए वह खुद को कुछ इस तरह समझाता था: मुझे पैसों की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है; मुझे कभी किसी चीज़ की कमी नहीं होगी। ज़रूरत से ज़्यादा क्यों कमाना? अगर मैं वकालत करने लगूँ, तो खुद को बोर करने और आस-पास के लोगों को चिढ़ाने के अलावा, मुझे कुछ भी स्थायी उपलब्धि नहीं मिलेगी। मैं हज़ारों वकीलों में से एक बनकर रह जाऊँगा। सौ शानदार केस जीतने से बेहतर है एक यादगार कविता लिखना। मुझे लगता है कि मैं अपने जीवन में कम से कम एक यादगार कविता तो लिख ही सकता हूँ—अगर मैं खुद को इसके लिए अवसर और समय दूँ। मैं अपने जीवन को जितनी कम अनावश्यक व्यस्तताओं से भरूँगा, उतना ही बेहतर लिख पाऊँगा। इसलिए मैं जितना हो सके उतना कम काम करूँगा। जब भी समय मिलेगा, मैं अपने उपन्यास पर काम करूँगा, और जब भी प्रेरणा मिलेगी, कविता लिखूँगा, और बस इतना ही।

उसके पिता के अल्टीमेटम और दीपांकर के भाग जाने से उसकी यही योजना खतरे में पड़ गई थी। अगर उसे आर्थिक तंगी का सामना करना

पड़ता तो उसके उपन्यास का क्या होता?

दुर्भाग्य से, अमित के मामले में, परिवार चलाने के लिए कम से कम प्रयास करने के साथ-साथ सामाजिक जीवन में भी कम से कम सक्रिय रहना स्वाभाविक था। उसके कुछ अच्छे दोस्त थे, लेकिन वे सभी विदेश में रहते थे—विश्वविद्यालय के दिनों के दोस्त, जिन्हें वह पत्र लिखता था और जिनसे उसे छोटे-छोटे पत्र मिलते थे, जो उसकी उनके साथ होने वाली छिटपुट बातचीत के समान थे। वे स्वभाव में उससे काफी अलग थे और आमतौर पर उन्हीं ने उससे दोस्ती की थी। वह संकोची था और पहल करने में उसे कठिनाई होती थी, लेकिन जवाब देने में वह देर नहीं करता था। हालांकि, कलकत्ता में उसने किसी से ज्यादा बातचीत नहीं की थी। जब भी उसे सामाजिकता की आवश्यकता होती, परिवार ही उसके लिए पर्याप्त होता था। लता विवाह के माध्यम से परिवार की सदस्य थीं, इसलिए उसने चटर्जी की पार्टी में उनकी देखभाल सुनिश्चित करना अपना कर्तव्य समझा था। चूंकि वह लगभग परिवार जैसी थीं, इसलिए उसने उनसे लगभग पहली मुलाकात से ही सहज और अनौपचारिक तरीके से बात की, जो आमतौर पर महीनों की जान-पहचान के बाद ही संभव हो पाता था। बाद में वह लता को उनके व्यक्तित्व के कारण पसंद करने लगा। अमित का उसे कलकत्ता घुमाने और शहर के दर्शनीय स्थल दिखाने का प्रयास करना उसकी बहनों और दीपांकर दोनों को ऊर्जा का एक असामान्य व्यय लगा। शायद अमित को भी अपना आदर्श मिल गया था।

बात यहीं आकर रुक गई। लता के कलकत्ता छोड़ने के बाद, उनका कोई पत्र-व्यवहार नहीं हुआ। लता को अमित दयालु और सांत्वना देने वाला लगा; उसने लता को उसके दुख से निकालकर कविता की दुनिया में, शहर के इतिहास में और—उतना ही महत्वपूर्ण—खुली हवा में ले गया, चाहे वह कब्रिस्तान हो या कॉलेज स्ट्रीट। अमित भी लता को बहुत पसंद

करता था, लेकिन उसने अपने प्यार का इज़हार नहीं किया। हालाँकि वह एक कवि था और उसे आम तौर पर मानवीय भावनाओं की कुछ समझ थी, फिर भी वह अपने निजी जीवन में इतना कम बोलने वाला था कि अपनी खुशी को नहीं छिपा पाया। जब वह ऑक्सफ़ोर्ड में था, तो वह अपने एक दोस्त की बहन की ओर बिना कुछ कहे आकर्षित हो गया था, जो पटाखे की तरह जीवंत और जोशीली थी; उसे बाद में पता चला कि वह भी उसे पसंद करती थी—और अंततः अधीर होकर उसने उससे रिश्ता तोड़ लिया और किसी और से जुड़ गई। 'बिना कुछ कहे' का मतलब था कि उसने अपने दिल की बात नहीं कही थी। हालांकि, उसने अपनी भावनाओं के बारे में बहुत सारे शब्द लिखे थे, जो तुकबंदी वाले और कुछ हद तक तर्कपूर्ण थे, हालांकि उसने उनमें से अधिकांश को काट दिया था, बचे हुए में से बहुत कम प्रकाशित किए थे, और उसे एक भी नहीं भेजा या दिखाया था।

मीनाक्षी और काकोली को इस प्रेम प्रसंग (या प्रेम प्रसंग न होने) के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, हालांकि परिवार में सभी का मानना था कि उनकी पहली, बेहद सफल, कविता संग्रह में लिखी गई सभी दुखी प्रेम कविताओं का कोई न कोई कारण जरूर होगा। हालांकि, अमित अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से उन सभी बहनों के सवालों का जवाब देने में सक्षम थे जो उनके संवेदनशील, उर्वर और आलसी स्वभाव के बहुत करीब आते थे।

उनकी दूसरी किताब में एक तरह का दार्शनिक समर्पण झलक रहा था, जो तीस साल से कम उम्र के और काफी मशहूर शख्स के लिए असामान्य था। उनके एक अंग्रेज दोस्त ने चिट्ठी में पूछा, आखिर वो किस बात से इतने निराश थे? उन्हें इस बात का एहसास नहीं था कि अमित शायद अकेले थे, और शायद उन्होंने खुद भी इस बात को पहचाना नहीं था। कलकत्ता में उनके कोई दोस्त नहीं थे—न पुरुष, न महिला; और यह बात

कि यह उनकी अपनी कोशिशों और सामाजिकता की कमी का नतीजा थी, उनके इस उदास मिजाज को कम नहीं कर पाई: एक तरह की मज़ाकिया उदासी, और कभी-कभी तो साफ़ तौर पर निजी निराशा भी।
बंगाल के अकाल के दौर पर आधारित उनके उपन्यास ने उन्हें स्वयं से बाहर निकलकर दूसरों के जीवन में झाँकने का अवसर दिया। लेकिन यहाँ भी अमित को समय-समय पर यह चिंता सताती थी कि कहीं उन्होंने विषय का चुनाव कुछ ज़्यादा ही अंधकारमय तो नहीं कर दिया। विषय जटिल और गहरा था—मनुष्य बनाम मनुष्य, मनुष्य बनाम प्रकृति, शहर बनाम गाँव, युद्ध की विकट मजबूरियाँ, एक विदेशी सरकार बनाम असंगठित किसान वर्ग—शायद सामाजिक हास्य लेखन उनके लिए बेहतर होता। उनके परिवार में इसके लिए पर्याप्त सामग्री मौजूद थी। और उन्हें हास्य लेखन का शौक भी था; गंभीर गद्य लेखन के अपने कार्य से ध्यान हटाने के लिए वे अक्सर हल्की-फुल्की किताबें—जासूसी कहानियाँ, सर्वव्यापी वोडहाउस की रचनाएँ, यहाँ तक कि कॉमिक्स—पढ़ लेते थे।
जब बिस्वास बाबू ने अमित से विवाह का प्रस्ताव रखा, तो उन्होंने अपने हमेशा के जोशीले अंदाज़ में कहा: 'एक शांत स्वभाव वाली लड़की से विवाह तय करना ही सही उपाय है।' अमित ने कहा कि वह इस मामले पर अभी कोई राय नहीं देंगे, हालाँकि उन्हें तुरंत ही यह बात बुरी लगी; वे स्त्री की शालीनता के साये में रहने की बजाय जीवन भर कुंवारे रहना पसंद करेंगे। लेकिन लता के साथ श्मशान में टहलने के बाद, जब लता उनके मनमौजी व्यवहार और शब्दों के उग्र और घुमावदार स्वरूप से विचलित नहीं हुईं, बल्कि आश्चर्यजनक जीवंतता के साथ उनका जवाब दिया, तो उन्हें यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि क्या उनका 'शांत स्वभाव वाली लड़की' होना इतना भारी पड़ना चाहिए। लता ने उनके प्रति कोई भय नहीं दिखाया, हालाँकि वे काफी प्रसिद्ध थे, न ही उन्होंने अपने

विचारों पर ज़ोर देने की कोई ज़रूरत महसूस की। उन्हें रामकृष्ण मिशन में दिए गए भयानक भाषण के बाद जब उन्होंने लता के बालों में फूलों की माला बाँधी थी, तब लता की सहज कृतज्ञता और प्रसन्नता याद आई। शायद, उन्होंने सोचा, मेरी बहनें एक बार सही थीं। लेकिन खैर, लता क्रिसमस पर कलकत्ता आ रही हैं, और मैं उन्हें बॉटनिकल गार्डन में विशाल बरगद का पेड़ दिखा सकता हूँ, और फिर देखेंगे कि आगे क्या होता है। उन्हें घटनाओं को लेकर कोई जल्दबाजी नहीं थी, बस मोची के बारे में एक हल्की सी आशंका थी, और अकबर नाम के इस व्यक्ति के बारे में उन्हें ज़रा भी चिंता नहीं थी।

13.35

शोक और उदासी से भरी, कुकू पियानो पर अपने ही संगीत की धुन पर गुनगुना रही थी:

इस घर में मुझे बहुत अकेलापन महसूस होता है।

मुझे सिर्फ कडल्स ही प्यार करता है।

'अरे, चुप रहो, कुकू,' अमित ने अपनी किताब नीचे रखते हुए कहा। 'क्या हमें यह लगातार बकवास सुननी ही है? मैं यह न पढ़ने लायक प्रॉस्ट पढ़ रहा हूँ, और तुम इसे और भी बदतर बना रहे हो।'

लेकिन कुकू को लगा कि रुकना प्रेरणा का ह्रास होगा। और कडल्स के साथ विश्वासघात होगा, जो पियानो के दूर वाले पैर से बंधा हुआ था।

चटर्जी भाड़ में जाएं।

मैं ग्रैंड होटल में रहूंगा।

कमरा नंबर क्या है या वह कहाँ स्थित है?

मुझे अपने कडल की परवाह नहीं है!

उनके बाएं हाथ की संगत में जान आ गई, और शुबर्ट जैसी धुन जैज़ में बदल गई:

मुझे कमरा नंबर 21 चाहिए:
मेरे कडल्स के साथ: यह तो बहुत मजेदार है!
मुझे कमरा नंबर 22 चाहिए:
मेरे कडल्स के साथ: इतना काफी है।
मुझे कमरा नंबर 23 चाहिए:
मेरे प्यारे कडल्स के साथ: सिर्फ मेरे लिए।
मुझे कमरा नंबर 24 चाहिए:
मेरे लाड़-प्यार के साथ: . . .
उसने कुछ देर तक बिना किसी पूर्व तैयारी के, सहजता से धुन बजाई—ट्रिल, टूटे हुए कॉर्ड और अनिश्चित धुन के टुकड़े—जब तक अमित और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सका, और उसने कहा: 'ज़रूर।'
उन्होंने गाने के बाकी हिस्से को एक साथ मिलकर तैयार किया:
मुझे कमरा नंबर 25 चाहिए:
मेरे कडल्स के साथ: हम खुशहाल रहेंगे।
मुझे कमरा नंबर 26 चाहिए:
मेरे कडल्स के साथ: कृपया इसे ठीक करें।
मुझे कमरा नंबर 27 चाहिए:
मेरे प्यारे के साथ, वो तो स्वर्ग है।
मुझे कमरा नंबर 28 चाहिए:
मेरे कडल्स के साथ: यह बहुत अच्छा है।
मुझे कमरा नंबर 29 चाहिए:
मेरे कडल्स के साथ: यह ठीक है।
मुझे कमरा नंबर 30 चाहिए।
“माफ़ कीजिए, नहीं, वह कमरा गंदा है।”
दोनों खुशी से हंस पड़े और एक-दूसरे को अपनी मूर्खता का एहसास

दिलाने लगे। कडल्स कर्कश आवाज में भौंका, लेकिन फिर अचानक बहुत उत्साहित हो गया। उसके कान खड़े हो गए और वह पट्टे को खींचने लगा।
'तकिया?' अमित ने कहा।
नहीं, वह खुश दिख रहा है।
दरवाजे की घंटी बजी और दीपांकर अंदर आ गया।
'दीपांकर!'
'दादा! आपका वापस स्वागत है।'
'हैलो, कुकू, हैलो, दादा-ओह, कडल्स!'
घंटी बजाने से पहले ही उसे पता चल गया था कि तुम वापस आ गए हो। वह बैग नीचे रख दो।
'चतुर कुत्ता। बहुत ही चतुर कुत्ता।'
'इसलिए!'
'इसलिए!'
'देखो तो ज़रा—काले और दुबले-पतले—और तुमने अपना सिर क्यों मुंडवा लिया है?' कुकू ने उसके सिर के ऊपरी हिस्से को सहलाते हुए कहा। 'ऐसा लगता है जैसे कोई तिल हो।'
'क्या तुमने कभी तिल को सहलाया है, कुकू?' अमित ने पूछा।
'अरे, दादाजी, इतनी ज्ञान बघारने वाली बातें मत कीजिए, थोड़ी देर पहले तो आप बहुत अच्छे थे। खोया हुआ बेटा लौट आया है, और वैसे भी "खोया हुआ बेटा" का मतलब क्या होता है?'
अमित ने कहा, 'इससे क्या फर्क पड़ता है? ये तो "लैम्बेंट" जैसा है, सब लोग इसका इस्तेमाल करते हैं, पर किसी को इसका मतलब नहीं पता। वैसे, तुमने अपना सिर क्यों मुंडवा लिया? माँ को तो झटका लगने वाला है।'
'क्योंकि बहुत गर्मी थी—क्या आपको मेरे पोस्टकार्ड नहीं मिले?'

‘ओह, हाँ,’ कुकू ने कहा, ‘लेकिन आपने उनमें से एक में लिखा था कि आप अपने बाल लंबे करने वाले हैं और हम आपको फिर कभी नहीं देख पाएंगे। हमें आपके पोस्टकार्ड बहुत पसंद थे, है ना दादा? स्रोत की खोज और गर्भवती ट्रेनों की सीटियों के बारे में।’

‘गर्भवती महिलाएं किस तरह की ट्रेन में सफर करती हैं?’

‘तुम्हारी लिखावट में तो ऐसा ही दिख रहा था। वापस स्वागत है। तुम्हें बहुत भूख लगी होगी।’

'मैं हूँ-'

‘मोटा किया हुआ मज्जा बाहर निकालो!’ अमित ने कहा।

‘हमें बताओ, क्या तुम्हें कोई दूसरा आदर्श मिला है?’ कुकू ने पूछा।

Dipankar blinked.

अमित ने पूछा, 'क्या आप उसमें निहित नारी तत्व की पूजा करते हैं? या इसके अलावा भी कुछ और है?'

‘ओह, दादा,’ कुकु ने तिरस्कारपूर्ण स्वर में कहा। ‘आप ऐसा कैसे कर सकते हैं!’ वह संस्कृति की महारथी बनकर, उपदेशात्मक लहजे में बोलीं: ‘हमारे भारत में, स्तूप की तरह, स्तन पोषण देता है, फुलाता है... स्तन हमारे नौजवानों के लिए वासना की वस्तु नहीं है, बल्कि उर्वरता का प्रतीक है।’

‘अच्छा—’ दीपांकर ने कहा।

‘हम गीतों के पंखों पर उड़ रहे थे, तभी आप आए, दादा,’ कुकू ने कहा:

‘गीतों के पंखों पर...’

गलियारे की ओर

और अब आप हमें धरती पर मजबूती से टिकाए रख सकते हैं—'

‘हां, हमें तुम्हारी जरूरत है, दीपांकर,’ अमित ने कहा। ‘तुम्हारे अलावा हम सब हीलियम के गुब्बारे हैं—’

कुकू बीच में घुस आया।
'सुबह गंगा में स्नान करना,
आपको जवां बनाने की गारंटी।
उसने गाया, 'क्या यह सचमुच बहुत गंदा था? इला काकी बहुत क्रोधित होंगी—'
'कुकू, अगर मैंने तुम्हें बीच में टोका है तो मुझे टोकना मत, क्या तुम ऐसा करोगे?' अमित ने कहा। 'मैं कह रहा था कि दीपांकर, तुम ही हो जो इस परिवार को संभाले रखते हो। शांत हो जाओ, कडल! अब खाना खा लो, नहा लो और आराम कर लो—माँ खरीदारी करने गई हैं, लेकिन एक घंटे में वापस आ जाएँगी। . . . तुमने हमें बताया क्यों नहीं कि तुम कब आ रहे हो? तुम कहाँ थे? तुम्हारा एक पोस्टकार्ड ऋषिकेश से था! तुमने पारिवारिक व्यवसाय के बारे में क्या फैसला किया है? क्या तुम ये सब नहीं संभालोगे और मुझे अपने उस घटिया उपन्यास पर काम करने दोगे? मैं इसे कैसे छोड़ सकती हूँ या टाल सकती हूँ जब मेरे दिमाग में वो सारे किरदार चीख रहे हैं? जब मैं गर्भवती हूँ, भूखी हूँ, प्यार और गुस्से से भरी हुई हूँ?'
दीपांकर मुस्कुराया। 'दादा, मुझे अपने अनुभवों को अपने अस्तित्व में विलीन होने देना होगा, तभी मैं किसी उत्तर तक पहुँच पाऊँगा।'
अमित ने झुंझलाहट में अपना सिर हिलाया।
'उसे तंग मत करो, दादा,' कुकू ने कहा। 'वह अभी-अभी लौटा है।'
अमित ने निराशा और बनावटी निराशा के बीच कहा, 'मुझे पता है कि मैं अनिर्णायक हूं, लेकिन दीपांकर तो हद ही पार कर देता है। या यूं कहें कि उसे यह भी नहीं पता कि उसे क्या करना चाहिए।'
13.36
चटर्जी परिवार की बैठक हमेशा की तरह नाश्ते के समय हुई; तपन को

छोड़कर, जो वापस बोर्डिंग स्कूल चला गया था, बाकी सभी लोग मौजूद थे; अपर्णा अपनी आया के साथ आई थी; और यहां तक कि बूढ़े श्री चटर्जी भी उनके साथ शामिल हो गए थे, जैसा कि वे कभी-कभी अपनी बिल्ली को टहलाने के बाद करते थे।

‘कडल्स कहाँ है?’ काकोली ने चारों ओर देखते हुए पूछा।

दीपांकर ने कहा, 'ऊपर मेरे कमरे में। तकिए की वजह से।'

काकोली ने अपनी पसंदीदा बंगाली किताब 'अबोल तबोल' का जिक्र करते हुए कहा, 'पिडल्स और कुलो - व्हेलफैंट की तरह।'

‘पिलो के बारे में क्या बात है?’ बूढ़े श्री चटर्जी ने पूछा।

श्रीमती चटर्जी ने कहा, 'कुछ नहीं। दीपांकर तो बस इतना कह रहा था कि कडल्स उससे डरता है।'

‘ओह, सच में?’ बूढ़े आदमी ने सिर हिलाते हुए कहा। ‘पिलो किसी भी कुत्ते का मुकाबला कर सकता है।’

काकोली ने पूछा, 'क्या कडल को आज पशु चिकित्सक के पास नहीं ले जाना है?'

‘हां,’ दीपांकर ने कहा। ‘तो मुझे कार की जरूरत पड़ेगी।’

काकोली ने मुंह फुला लिया। उसने कहा, 'लेकिन मुझे भी इसकी जरूरत है। हैंस की कार खराब हो गई है।'

दीपांकर ने कहा, 'कुकु, तुम्हें हमेशा कार की ज़रूरत पड़ती है। अगर तुम कडल को खुद पशु चिकित्सक के पास ले जाने को तैयार हो, तो तुम इसे रख सकते हो।'

'मैं ऐसा नहीं कर सकता, यह बेहद उबाऊ है, और जो भी उसे पकड़ता है, वह उस पर चिल्लाता है।'

‘अच्छा, तो फिर हंस से मिलने के लिए टैक्सी ले लो,’ अमित ने कहा, जिसे नाश्ते के लिए कार को लेकर होने वाली यह नोकझोंक हमेशा बेहद

परेशान करती थी और दिन की शुरुआत का सबसे बुरा तरीका लगता था।
‘इस बारे में झगड़ा करना बंद करो। कुकू, मुझे मुरब्बा देना।’
श्रीमती चटर्जी ने कहा, 'मुझे खेद है कि आप दोनों में से कोई भी इसे नहीं ले सकता। मैं मीनाक्षी को डॉक्टर इवांस के पास ले जा रही हूँ। उसे चेक-अप की ज़रूरत है।'
‘मैं सच में ऐसा नहीं सोचती, मागो,’ मीनाक्षी ने कहा। ‘इतना परेशान मत हो।’
'तुम्हें बहुत बड़ा सदमा लगा है, मेरी प्यारी, और मैं कोई जोखिम नहीं लेना चाहती,' उसकी मां ने कहा।
‘हां मीनाक्षी, चेक-अप करवाने में कोई हर्ज नहीं है,’ उसके पिता ने स्टेट्समैन अखबार को नीचे रखते हुए कहा।
‘हां,’ अपर्णा ने सहमति जताते हुए बड़े चाव से अपना आधा उबला अंडा चम्मच से मुंह में डाला। ‘कोई नुकसान नहीं।’
मीनाक्षी ने थोड़ी चिढ़कर अपर्णा से कहा, 'अपना खाना खाओ, प्यारी।'
अमित ने कांपती हुई आवाज में कहा, 'कुकू, मुरब्बा चाहिए, आंवले का जैम नहीं। गज़पाचो नहीं, एंकोवी नहीं, संदेश नहीं, सूफ़ले नहीं; मुरब्बा चाहिए।'
‘तुम्हें क्या हो गया है?’ काकोली ने कहा। ‘तुम आजकल बहुत चिड़चिड़े हो गए हो। कडल से भी बदतर। ज़रूर यौन कुंठा होगी।’
अमित ने कहा, 'कुछ ऐसा जिसके बारे में आपको पता नहीं होगा।'
‘Kuku! Amit!’ said Mrs Chatterji.
‘लेकिन यह सच है,’ काकोली ने कहा। ‘और उसने बर्फ के टुकड़े चबाना शुरू कर दिया है, जिसके बारे में मैंने कहीं पढ़ा है कि यह इसका एक अचूक लक्षण है।’
‘कुकु, मैं तुम्हें नाश्ते के समय इस तरह बात नहीं करने दूँगा—जब ए यहाँ

बैठा है।'
अपर्णा उत्सुकता से उठ बैठी और अंडे से सनी चम्मच को कढ़ाईदार मेज़पोश पर रख दिया।
काकोली ने कहा, 'मैगो, ए को हमारी कही हुई पहली बात भी समझ नहीं आ रही है।'
'खैर, मैं नहीं हूं,' अमित ने कहा।
मुझे लगता है कि तुम उसके बारे में सपना देख रहे होगे।
'कौन?' श्रीमती चटर्जी ने कहा।
'तुम्हारी पहली किताब की नायिका। तुम्हारी कविताओं की श्वेत महिला,' काकोली ने अमित की ओर देखते हुए कहा।
'तुम्हें बोलना चाहिए!' अमित ने कहा।
'विदेशी महिला कितनी बेशर्म है।'
भारतीय भी निर्दोष नहीं हैं।
काकोली ने धीरे से कहा।
उसने दोहे से बचने की कोशिश की थी, लेकिन यह दोहा अनायास ही उसके सामने आया और उसकी जुबान से निकल गया।
अमित ने कहा: 'कुकू, कृपया मुरब्बा दे दो, मेरा टोस्ट ठंडा हो रहा है।'
'विदेशी महिला एक गिद्ध के समान है।'
यह हमारी प्राचीन संस्कृति के विरुद्ध है—
कुकू ने बिना सोचे-समझे कहा, "अच्छा हुआ कि आपने उस घटना को छोटी चटर्जी जैसी बच्चियों की बजाय कविता का रूप दे दिया। दादा, किसी अच्छी और भारतीय लड़की से शादी करो; मेरी राह मत अपनाओ। क्या आपने लुट्स को वह किताब भेज दी है? उसने मुझे बताया था कि आपने उसे एक किताब देने का वादा किया था।"
अमित ने अनुरोध किया, 'कम हास्य, ज्यादा मुरब्बा।'

आखिरकार कुकू ने उसे वह चीज़ उसे दे दी और उसने बड़ी सावधानी से उसे अपने टोस्ट पर फैलाया, हर कोने को ढकते हुए। 'उसने तुम्हें यह बताया था, है ना?' अमित ने पूछा।

'ओह, जी हाँ,' काकोली ने कहा। 'मीनाक्षी मेरी बात की गवाही देगी।'

'ओह, हाँ,' मीनाक्षी ने अपनी चाय को ध्यान से देखते हुए कहा। 'काकोली जो कुछ भी कहती है, वह सब सच है। और हमें आपकी चिंता है। आप अब लगभग तीस साल की हो चुकी हैं—'

अमित ने नाटकीय उदासी भरे लहजे में कहा, 'मुझे याद मत दिलाओ। बस मुझे इकत्तीस साल का होने से पहले चीनी दे दो। उसने और क्या कहा था?'

पूरी तरह से अविश्वसनीय बात गढ़ने और इस तरह अपने पिछले बयान के प्रभाव को खत्म करने का जोखिम उठाने के बजाय, मीनाक्षी ने बुद्धिमानी से ऐसा करने से परहेज किया।

'कुछ खास नहीं,' उसने कहा। 'लेकिन लता के मामले में एक छोटी सी टिप्पणी भी बहुत मायने रखती है। और उसने तुम्हारा कई बार जिक्र किया।'

'मैंने बड़े उदास मन से सोचा,' काकोली ने कहा।

अमित ने कहा, 'यह कैसे हो सकता है कि दीपांकर, मैं और तपन इतने ईमानदार और सभ्य निकले, और तुम लड़कियाँ इतनी बेशर्मी से झूठ बोलना सीख गईं? यह आश्चर्यजनक है कि हम एक ही परिवार से हैं।'

काकोली ने पलटवार करते हुए कहा, 'ऐसा कैसे हो सकता है कि मीनाक्षी और मैं, अपनी चाहे जो भी कमियां हों, महत्वपूर्ण निर्णय ले सकते हैं और उन्हें शीघ्रता से ले सकते हैं, जबकि आप निर्णय लेने से इनकार करते हैं और दीपांकर कभी यह तय नहीं कर पाता कि कौन सा निर्णय लेना है?'

'गुस्सा मत होइए, दादा,' दीपांकर ने कहा, 'वे बस आपको उकसाने की

कोशिश कर रहे हैं।'
अमित ने कहा, 'चिंता मत करो। वे सफल नहीं होंगे। मेरा मूड कुछ ज्यादा ही अच्छा है।'
13.37
मैं मानता हूँ कि देर हो गई, लेकिन देर से आना, न आने से बेहतर है।
जो व्यक्ति इसकी कीमत समझ सकता है, उसे उपहार देने की आवश्यकता नहीं है।
इस किताब को बहुत कुछ मिला /मिल गया /सड़ गया /गर्म /शॉट / ओवर-शॉट /शॉर्ट आता है
शब्दों के नशे में चूर एक शराबी की ओर से, आपके लिए कमियाँ
एक अर्थ हैकनी बार्ड और कानून में स्नातक।
अमित ने अपने लेखन और रेखाचित्र बनाने का काम रोक दिया। वह लता के लिए कुछ लिखने की कोशिश कर रहा था। अब जब उसकी प्रेरणा खत्म हो चुकी थी, तो वह सोचने लगा कि अपनी दो कविता संग्रहों में से कौन सी लता को भेजे। या क्या दोनों भेज दे? शायद पहली किताब भेजना अच्छा विचार नहीं था। उसकी कविताओं में वर्णित श्वेत महिला लता को गलत धारणा दे सकती थी। इसके अलावा, दूसरी किताब में, हालांकि कुछ प्रेम कविताएँ भी थीं, कलकत्ता का अधिक वर्णन था, उन स्थानों का अधिक वर्णन था जो उसे लता की याद दिलाते थे, और शायद लता को भी उसकी याद दिलाते हों।
इस समस्या के हल होने से अमित को अपनी कविता लिखने में मदद मिली और दोपहर के भोजन तक वह 'द फीवर बर्ड' के पहले पृष्ठ पर अपना समर्पण लिखने के लिए तैयार था। उसका लिखा हुआ मसौदा केवल उसे ही समझ आ रहा था, लेकिन लता के लिए उसने जो लिखा वह आसानी से पढ़ा जा सकता था। उसने धीरे-धीरे लिखा, उस चांदी के

फाउंटेन पेन का इस्तेमाल करते हुए जो उसके दादाजी ने उसे उसके इक्कीसवें जन्मदिन पर दिया था, और उसने अपनी कविताओं के अपेक्षाकृत सुंदर ब्रिटिश संस्करण में लिखा, जिसकी उसके पास केवल तीन प्रतियां बची थीं।
मैं मानता हूँ कि देर हो गई, लेकिन देर से आना भी अच्छा है।
एक ऐसा उपहार जो इसकी खामियों को नजरअंदाज करने की जरूरत नहीं समझता।
यह पुस्तक एक वाक्पटु व्यक्ति द्वारा लिखी गई है।
एक बाबू कवि और कानून में स्नातक।
कहीं ऐसा न हो कि आप यह सोचें कि यहाँ जिस व्यक्ति से आप मिलते हैं वह ऐसा प्रतीत होता है
आप जिसे जानते थे, उससे कम निराशावादी।
सच्चाई तो यह है कि शराब और सपनों के अलावा
और बच्चों, सच्चाई कविताओं में भी निहित होती है।
यहां झूठ भी फैला हुआ है, और मैं शब्द नहीं बोलता।
वे निराशा के डर से जोर से बोलते हैं।
इस प्रकार, भावहीन होकर, मैं अपने सीधे मार्ग पर चलता हूँ।
और हवा में एक खामोश धुन गूंज उठी।
प्रेम और यादें, रहस्य और आंसू,
अनानास की अधिकता या आनंद की अधिकता,
साम्राज्यों का विचलन और वर्षों का वक्र,
इसे उसी हाथ से स्वीकार करो जिसने इसे तुम्हारे लिए तराशा है।
उन्होंने नीचे अपना नाम लिखा, तारीख लिखी, स्याही सूखने तक कविता को दोबारा पढ़ा, किताब के गहरे नीले और सुनहरे कवर को बंद किया, उसे पैक किया, सील किया और उसी दोपहर पंजीकृत डाक से ब्रह्मपुर

भेज दिया।

13.38

यह उम्मीद करना अतिशयोक्ति होगी कि दो दिन बाद जब प्राण के घर डाक पहुंचेगी तो श्रीमती रूपा मेहरा घर पर नहीं होंगी। सविता और बच्चे की देखभाल के चलते वह इन दिनों शायद ही कभी घर से बाहर निकलती थीं। यहां तक कि डॉक्टर किशन चंद सेठ को भी अगर उनसे मिलना होता था तो उन्हें विश्वविद्यालय आना पड़ता था।

जब अमित का पार्सल आया, लता रिहर्सल में थीं। श्रीमती रूपा मेहरा ने पार्सल पर हस्ताक्षर किए। चूंकि इन दिनों कलकत्ता से आने वाली चिट्ठियों में सिर्फ़ बुरी खबरें ही होती थीं, और पार्सल के अंदर क्या है, यह जानने की उनकी उत्सुकता (खासकर जब उन्होंने भेजने वाले का नाम देखा) इतनी प्रबल थी कि उन्होंने लगभग खुद ही पार्सल खोल दिया था। लेकिन लता, सविता और प्राण द्वारा संयुक्त रूप से निंदा किए जाने के डर ने ही उन्हें रोका।

जब लता लौटी, तब तक लगभग अंधेरा हो चुका था।

'तुम इतने समय से कहाँ थी? पहले वापस क्यों नहीं आई? मैं चिंता से पागल हो रही थी,' उसकी माँ ने कहा।

'मैं रिहर्सल में थी, माँ, आपको पता है। मैं रोज़ से ज़्यादा देर नहीं हुई हूँ। सब लोग कैसे हैं? लगता है बच्चा सो रहा है।'

'यह पैकेज दो घंटे पहले कलकत्ता से आया है। इसे तुरंत खोलिए।' श्रीमती रूपा मेहरा गुस्से से फट पड़ने वाली थीं।

लता विरोध करने ही वाली थी, लेकिन फिर अपनी माँ के चेहरे पर चिंता देखकर और दूसरे पदक की खबर मिलने के बाद से उनकी चंचलता और लगातार रोने की आदत को याद करके उसने फैसला किया कि अगर निजता के अपने अधिकार का इस्तेमाल करने से उसकी माँ को और

अधिक पीड़ा होती है, तो ऐसा करना उचित नहीं है। उसने पैकेज खोल दिया।

'यह अमित की किताब है,' उन्होंने प्रसन्नता से कहा: 'अमित चटर्जी की 'द फीवर बर्ड'। बहुत सुंदर—कितना खूबसूरत आवरण है!' श्रीमती रूपा मेहरा, अमित द्वारा उत्पन्न खतरे को एक पल के लिए भूलकर, किताब उठाई और मंत्रमुग्ध हो गईं। सादा नीला-सुनहरा आवरण, कागज, जो युद्ध के दौरान देखे गए कागज से कहीं बेहतर प्रतीत होता था, चौड़े हाशिये, स्पष्ट और विस्तृत छपाई, सब कुछ उन्हें बेहद आकर्षक लगा। उन्होंने एक बार एक किताबों की दुकान में इस किताब का छोटा और पुराना भारतीय संस्करण देखा था; जिन कविताओं पर उन्होंने सरसरी नजर डाली थी, वे उन्हें ज्यादा शिक्षाप्रद नहीं लगीं और उन्होंने किताब रख दी थी। श्रीमती रूपा मेहरा यह सोचे बिना नहीं रह सकीं कि काश यह खूबसूरत किताब खाली होती: यह उन कविताओं और विचारों के लिए एक बेहतरीन माध्यम बन सकती थी जिन्हें वह अक्सर लिखती थीं।

'कितना प्यारा है। इंग्लैंड में वाकई बहुत खूबसूरत चीजें बनती हैं,' उसने कहा।

उसने किताब खोली और उस पर लिखे लेख को पढ़ना शुरू किया। जैसे-जैसे वह किताब के अंत तक पहुंची, उसकी भौंहें और भी गहरी होती गईं।

'लता, इस कविता का क्या अर्थ है?' उसने पूछा।

'मैं कैसे बताऊं, माँ? आपने मुझे खुद पढ़ने का मौका ही नहीं दिया। मुझे इसे देखने दीजिए।'

लेकिन ये सारे अनानास यहाँ क्या कर रहे हैं?

'ओह, शायद यह रोज़ आयल्मर है,' लता ने कहा। 'उसने बहुत ज्यादा खा लिया था और उसकी मौत हो गई।'

'आपका मतलब है, "यादों और आहों की एक रात"? वही रोज़

आयल्मर?’

'हां मां।'

‘कितना दर्दनाक रहा होगा!’ श्रीमती रूपा मेहरा की नाक सहानुभूति से लाल होने लगी। तभी अचानक उनके मन में एक चिंताजनक विचार आया: ‘लता, ये कोई प्रेम कविता तो नहीं है? मुझे तो समझ ही नहीं आ रहा, ये कुछ भी हो सकता है। रोज़ आयल्मर से इनका क्या मतलब है? ये चटर्जी तो बड़े ही चतुर हैं!’

श्रीमती रूपा मेहरा के मन में चटर्जी परिवार के प्रति फिर से आक्रोश उमड़ आया था। उन्होंने गहनों की चोरी का सारा दोष मीनाक्षी की लापरवाही पर डाला। मीनाक्षी नौकरों के सामने ही संदूक खोलती थी और लोगों को लालच में डाल देती थी। ऐसा नहीं था कि श्रीमती रूपा मेहरा मीनाक्षी को लेकर चिंतित नहीं थीं (जो इस सदमे के बाद बहुत परेशान हुई होगी) और अपने तीसरे पोते को लेकर भी, जो इस बार निश्चित रूप से पोता ही होगा। दरअसल, अगर सविता का बच्चा न होता, तो वह मदद और सहानुभूति जताने के लिए कलकत्ता चली जातीं। इसके अलावा, अरुण के पत्र के बाद कलकत्ता में उन्हें कई बातों की जानकारी लेनी थी, खासकर हरेश का हालचाल और वह क्या कर रहा था। हरेश ने बताया था कि वह 'पर्यवेक्षक के पद पर कार्यरत है और प्राहापुर की यूरोपीय कॉलोनी में रहता है'। उसने यह नहीं बताया था कि वह सिर्फ एक फोरमैन है।

'मुझे शक है कि यह प्रेम कविता है, माँ,' लता ने कहा।

'और उसने नीचे "लव" या ऐसा कुछ नहीं लिखा है, सिर्फ अपना नाम लिखा है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने खुद को आश्वस्त करते हुए कहा।

'मुझे यह पसंद है, लेकिन मुझे इसे दोबारा पढ़ना होगा,' लता ने मन ही मन सोचा।

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'यह मेरी पसंद से ज़्यादा चालाकी भरा है। टैटू,

शराबी और न जाने क्या-क्या। ये आधुनिक कवि ऐसे ही होते हैं। और उन्होंने आपका नाम लिखने की शिष्टता तक नहीं दिखाई,' उन्होंने थोड़ा और आश्वस्त होते हुए कहा।

'खैर, यह लिफाफे पर लिखा है, और मुझे नहीं लगता कि वह हर किसी से अनानास के बारे में बात करता होगा,' लता ने कहा। लेकिन उसे भी यह थोड़ा अजीब लगा।

बाद में, अपने बिस्तर पर लेटे हुए, उसने फुर्सत में फिर से कविता पढ़ी। वह मन ही मन बहुत प्रसन्न थी कि उसके लिए कविता लिखी गई है, लेकिन उसमें बहुत कुछ तुरंत स्पष्ट नहीं था। जब उसने कहा कि वह अपने शांत और भावहीन मार्ग पर पंख फैलाता है, तो क्या उसका मतलब था कि उसकी कविताओं का तापमान ठंडा था? क्या वह शीर्षक में वर्णित पक्षी की आवाज़ में बोल रहा था लेकिन उसे बुखार नहीं था? या इसका अर्थ उसकी कल्पना की कोई निजी बात थी? या कुछ भी?

कुछ समय बाद, लता ने पुस्तक पढ़ना शुरू किया, कुछ हद तक पुस्तक के संदर्भ में, और कुछ हद तक शिलालेख का सुराग पाने के लिए। कविताएँ, कुल मिलाकर, अपनी जटिलता के अनुसार ही अस्पष्ट थीं; वे व्याकरणिक रूप से सही थीं, और लता इसके लिए आभारी थी। और उनमें से कुछ गहरी भावनाओं से भरी कविताएँ थीं, जो किसी भी तरह से भावहीन नहीं थीं, हालाँकि उनकी भाषा कभी-कभी औपचारिक थी। एक आठ पंक्तियों की प्रेम कविता थी जो उसे पसंद आई, और एक लंबी कविता, जो एक स्तुतिगान जैसी थी, पार्क स्ट्रीट कब्रिस्तान में अकेले घूमने के बारे में थी। कॉलेज स्ट्रीट पर किताबें खरीदने के बारे में एक हास्यपूर्ण कविता भी थी। लता को पढ़ी गई अधिकांश कविताएँ पसंद आईं, और इस बात से भावुक हो गई कि जब वह कलकत्ता में अकेली और खाली थी, तो अमित उसे उन जगहों पर ले गया था जो उसके लिए

बहुत मायने रखती थीं और जहाँ वह अक्सर अकेले जाया करता था।
अपनी भावनाओं के बावजूद, कविताओं का लहजा संयमित था—और कभी-कभी आत्म-निंदा से भरा हुआ भी। लेकिन शीर्षक कविता बिल्कुल भी संयमित नहीं थी, और उसमें प्रस्तुत व्यक्तित्व मानो उन्माद से ग्रस्त प्रतीत होता था। लता स्वयं भी अक्सर गर्मी की रातों में पापीहा (दिमागी बुखार पैदा करने वाला पक्षी) की आवाज़ से जागती रहती थीं, और इसी कारण से यह कविता उन्हें अत्यंत विचलित कर देती थी।

बुखार पक्षी
बुखार से पीड़ित पक्षी ने कल रात गाना गाया।
मुझे नींद नहीं आई, चाहे मैंने कितनी भी कोशिश की हो।
मेरा दिमाग दो हिस्सों में बँटा हुआ था, मेरी आत्मा अधमरी थी।
मैंने बगीचे में देखा,
अमलतास की छाया
चांदनी रात में घास पर हल्के से हिलाएं।
अदृश्य रूप से, पक्षी ने अपना दुख व्यक्त करते हुए चीख मारी।
इसका पागलपन, जिसका कोई निवारण नहीं:
तीन स्वर बार-बार दोहराए जाते हैं, पास-पास, ऊँचा,
ऊपर की ओर उड़ान भरना, फिर आग की तरह नीचे गिरना
केवल रात की सांस लेने और उड़ने के लिए,
पहले की तरह ही पागल, उतना ही हताश।
आधी रात की भीषण गर्मी में मैं कांप रहा था।
और मुझे उस पसीने की गंध आई जिससे मेरी चादर भीग गई थी।
और आज रात मुझे फिर से सुनाई दे रहा है
वो पुकार जो मेरे दिमाग को भेदती है,
वो पुकार, दिमागी रूप से बीमार तिहरा स्वर—

उसके गले में दर्द की एक हड्डी अटक गई थी।
मैं इतनी थक गई हूँ कि रोने का मन कर रहा है।
हे पागल चिड़िया, भगवान के लिए मुझे सोने दो।
तुम पागलों की तरह क्यों रोते हो?
आप कब आराम करेंगे? आप कब आराम करेंगे?
हर रात तब तक इंतजार क्यों करें जब तक मेरे अलावा बाकी सब न आ जाएं
घर में सोते हुए रोने लगना?
तुम मेरे कान में क्यों चिल्लाते हो?
वह बात जिसे मेरे अलावा कोई और नहीं सुन सकता?
लता के मन में छवियों और प्रश्नों का बवंडर चल रहा था, उसने इस कविता को पाँच-छह बार पढ़ा। यह पुस्तक की अधिकांश कविताओं से कहीं अधिक स्पष्ट थी, निश्चित रूप से उसके लिए लिखे गए पत्र से भी कहीं अधिक स्पष्ट, फिर भी यह कहीं अधिक रहस्यमय और परेशान करने वाली थी। वह पीले लेबर्नम के पेड़ को जानती थी, वह अमलतास का पेड़ जो बल्लीगंज के बगीचे में दीपांकर की ध्यान कुटिया के ऊपर खड़ा था, और वह कल्पना कर सकती थी कि अमित रात में उसकी शाखाओं को निहार रहा होगा। (उसने सोचा, उसने पेड़ के लिए बंगाली शब्द के बजाय हिंदी शब्द का प्रयोग क्यों किया—क्या यह केवल तुकबंदी के लिए था?) लेकिन जिस अमित को वह जानती थी—दयालु, व्यंग्यपूर्ण, हंसमुख—वह इस कविता के अमित से भी कहीं अधिक उस छोटी प्रेम कविता के अमित जैसा था जिसे उसने पढ़ा था और पसंद किया था।
क्या उसे यह कविता पसंद भी आई थी? लता सोचने लगी। अमित के पसीने से तरबतर होने का ख्याल उसे परेशान कर रहा था—वह उसके लिए एक निराकार और सुकून देने वाली आत्मा था, और यही बेहतर था

कि वह वैसा ही रहे। अब तक एक घंटे से ज़्यादा अंधेरा हो चुका था, और लता कल्पना कर सकती थी कि वह अपने बिस्तर पर लेटा हुआ है, पापीहा की त्रिपदी ध्वनि सुन रहा है, और बेचैनी से करवटें बदल रहा है।
उसने फिर से उस निजी संदेश को देखा। वह सोच रही थी कि उसने आखिरी पंक्ति में 'नक्काशी' शब्द का प्रयोग क्यों किया था। क्या यह महज़ पिछली पंक्ति के 'स्वेर्व' और 'कर्व' से मेल खाने के लिए था—हालांकि उसे लग रहा था कि यह थोड़ा अतिरंजित था? कविता को नक्काशी से तो नहीं गढ़ा जा सकता। लेकिन शायद यह महज़ काव्यात्मक स्वतंत्रता थी, जैसे चिड़िया के पंखों का टैटू की तरह फड़फड़ाना, या शब्दों के नशे में चूर होने का दावा।
फिर अचानक, और बिना किसी स्पष्ट कारण के (क्योंकि वह इस तरह की किसी अनोखी बात पर ध्यान नहीं दे रही थी), उसे एक साथ खुशी और निराशा का एहसास हुआ कि वह शिलालेख कितना नक्काशीदार और कितना व्यक्तिगत था, और आखिर उसने कविता के ऊपर उसका नाम क्यों नहीं लिखा था। यह अनानास के संदर्भ से कहीं आगे बढ़कर कब्रिस्तान में उनके द्वारा साझा किए गए उस पल तक पहुँच गया था। उसे बस चारों चौपाइयों की चारों पंक्तियों के पहले अक्षरों को देखना था, और वह समझ गई कि वह न केवल भावना से, बल्कि अमित की कविता की संरचना से भी कितनी गहराई से जुड़ी हुई थी।

भाग चौदह

14.1

महेश कपूर अगस्त की शुरुआत में मान के साथ रुधिया स्थित अपने खेत के लिए रवाना हो गए। मंत्री पद से हटने के बाद उनके पास अपने शौक

पूरे करने के लिए थोड़ा अधिक खाली समय था। खेत के काम की देखरेख के अलावा—जो इस समय मुख्य रूप से धान की रोपाई का काम था—ब्रह्मपुर छोड़ने के उनके दो और उद्देश्य थे। पहला यह देखना था कि क्या मान, जो बनारस में काम करने में उदासीन और असफल साबित हुए थे, खेत के कामकाज में अधिक खुश और प्रभावी ढंग से व्यस्त रह पाएंगे। दूसरा यह पता लगाना था कि आगामी आम चुनावों में विधानसभा सीट के लिए कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार को वे कहाँ से टक्कर दे सकते हैं—क्योंकि उन्होंने स्वयं कांग्रेस छोड़ दी थी और नवगठित किसान एवं मजदूर जन पार्टी (संक्षेप में केएमपीपी) में शामिल हो गए थे। सबसे उपयुक्त ग्रामीण क्षेत्र उनका खेत वाला निर्वाचन क्षेत्र था—जो रुधिया जिले के रुधिया उपखंड में स्थित था। अपने खेतों में घूमते हुए उनका ध्यान एक बार फिर दिल्ली और संघर्षों से घिरी कांग्रेस पार्टी के उन महान नेताओं की ओर गया, जो राष्ट्रीय स्तर पर सत्ता के लिए एक-दूसरे से होड़ कर रहे थे।

उत्तर प्रदेश के चतुर, धूर्त और विनोदी राजनेता रफी अहमद किदवई, जिन्होंने महेश कपूर समेत कांग्रेस से कई इस्तीफे करवाए थे, पार्टी के हिंदू-राष्ट्रवादी दक्षिणपंथी धड़े के लिए एक अभिशाप थे। इसका एक कारण उनका मुस्लिम होना था, और दूसरा कारण यह था कि उन्होंने दो बार पुरुषोत्तमदास टंडन के कांग्रेस अध्यक्ष बनने के प्रयासों का विरोध किया था। टंडन 1948 में मामूली अंतर से हार गए थे और 1950 में भी मामूली अंतर से जीते थे। यह चुनाव संदिग्ध परिस्थितियों में लड़ा गया था और इस तथ्य से और भी कड़वा हो गया था कि 1951 में कांग्रेस पार्टी की सत्ता पर जिसका भी नियंत्रण होगा, आगामी आम चुनावों के लिए उम्मीदवारों के चयन पर भी उसी का अधिकार होगा।

टंडन—जो नंगे पैर चलते थे, दाढ़ी रखते थे, संयमी और कुछ हद तक

असहिष्णु थे, नेहरू से सात साल बड़े थे और उनकी ही तरह इलाहाबाद से थे—अब कांग्रेस पार्टी के संगठन के प्रमुख बने। उन्होंने अपनी कार्यकारी समिति का चयन मुख्य रूप से राज्यों के पार्टी प्रमुखों और उनके समर्थकों में से किया था, क्योंकि अधिकांश राज्यों में पार्टी तंत्र पहले से ही रूढ़िवादियों के नियंत्रण में था। चूंकि टंडन ने इस बात पर जोर दिया था कि कांग्रेस अध्यक्ष को अपनी कार्यकारी समिति चुनने की पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए, इसलिए उन्होंने अपने पराजित प्रतिद्वंद्वी कृपलानी और किदवई, जिन्होंने कृपलानी के चुनाव अभियान की योजना बनाई थी, दोनों को शामिल नहीं किया—और वास्तव में शामिल करने से इनकार कर दिया था। प्रधानमंत्री नेहरू, जो टंडन के चुनाव से पहले ही नाराज थे, जिसे उन्होंने न केवल टंडन बल्कि अपने महान रूढ़िवादी प्रतिद्वंद्वी सरदार पटेल की जीत के रूप में सही ढंग से समझा था, ने पहले तो किदवई को बाहर रखने वाली कार्यकारी समिति में शामिल होने से इनकार कर दिया था। लेकिन एकता के हित में, क्योंकि वे कांग्रेस को भारतीय राजनीति के स्थानीयकृत और विभाजित ताने-बाने में एकमात्र एकजुट शक्ति के रूप में देखते थे, उन्होंने अपनी आपत्तियों को दरकिनार कर समिति में शामिल हो गए।

प्रधानमंत्री के रूप में नेहरू ने सक्रिय कांग्रेस अध्यक्ष के संभावित हमलों से अपनी नीतियों की रक्षा करने के लिए अपनी प्रत्येक प्रमुख नीति पर पार्टी प्रस्ताव पेश किए, जिन्हें पार्टी की सभा ने भारी बहुमत से पारित किया था। लेकिन सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करना एक बात थी, पार्टी के सदस्यों और उम्मीदवारों के चयन पर नियंत्रण रखना दूसरी बात। नेहरू को यह आशंका सता रही थी कि उनकी सरकार की नीतियों के प्रति जो दिखावटी समर्थन दिया जा रहा था, वह तब बदल जाएगा जब दक्षिणपंथी दल अपने विधायकों और सांसदों को संसद और राज्य विधानसभाओं में

भेज देंगे। नेहरू की अपार लोकप्रियता का इस्तेमाल चुनाव जीतने के लिए किया जाएगा, और फिर वे असहाय और शक्तिहीन रह जाएंगे।

टंडन के राष्ट्रपति चुने जाने के कुछ महीनों बाद सरदार पटेल के निधन से दक्षिणपंथी धड़े ने अपना सबसे बड़ा रणनीतिकार खो दिया था। लेकिन टंडन स्वयं भी एक मजबूत प्रतिद्वंद्वी साबित हुए। अनुशासन और एकता के नाम पर उन्होंने पार्टी के भीतर असंतुष्ट गुटों को दबाने का प्रयास किया, जैसे कि किदवई और कृपलानी द्वारा स्थापित लोकतांत्रिक मोर्चा (तथाकथित के-के समूह), जो उनके नेतृत्व की मुखर आलोचना करते थे। उन्हें चेतावनी दी गई थी कि वे पार्टी में रहें और कार्य समिति का समर्थन करें, अन्यथा बाहर निकल जाएं। अपने पूर्ववर्ती, जो उनके प्रति आज्ञाकारी थे, के विपरीत, टंडन ने इस बात पर भी जोर दिया कि पार्टी संगठन, जिसका प्रतिनिधित्व उसके अध्यक्ष करते हैं, को नेहरू के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार की नीतियों पर सलाह देने और वास्तव में उन्हें नियंत्रित करने का पूरा अधिकार है—यहाँ तक कि हाइड्रोजनीकृत खाना पकाने के तेल पर प्रतिबंध लगाने के मुद्दे पर भी। और हर महत्वपूर्ण मुद्दे पर उनके विचार नेहरू या उनके समर्थकों—कृपलानी और किदवई जैसे लोगों या ब्रह्मपुर के करीब महेश कपूर—के विचारों से बिल्कुल विपरीत थे।

आर्थिक मतभेदों के अलावा, नेहरूवादियों और टंडनवादियों का मुस्लिम मुद्दे पर नज़रिया पूरी तरह अलग था। पूरे साल भारत और पाकिस्तान के बीच सीमाओं पर लगातार तनाव बना रहा। कश्मीर मुद्दे पर कई बार युद्ध छिड़ने की आशंका भी जताई गई। नेहरू युद्ध को दोनों गरीब देशों के लिए एक विनाशकारी संभावना मानते थे और पाकिस्तानी प्रधानमंत्री लियाकत अली खान के साथ किसी तरह का समझौता करने की कोशिश भी की, वहीं उनकी पार्टी के कई असंतुष्ट सदस्य पाकिस्तान के साथ युद्ध के पक्ष में थे। उनके मंत्रिमंडल के एक सदस्य ने इस्तीफा दे दिया था, अपनी खुद

की हिंदू पुनरुत्थानवादी पार्टी बना ली थी और यहाँ तक कि पाकिस्तान को जीतकर उसे बलपूर्वक भारत में मिलाने की बात भी कर रहे थे। हालात और भी बदतर हो गए थे शरणार्थियों के लगातार आने से, जो मुख्य रूप से पूर्वी पाकिस्तान से बंगाल आ रहे थे, और इससे राज्य पर असहनीय बोझ पड़ रहा था। वे पाकिस्तान में दुर्व्यवहार और असुरक्षा के कारण भाग रहे थे, और भारत में कई कट्टरपंथियों ने बदले की भावना से यह सुझाव दिया कि पाकिस्तान से आने वाले प्रत्येक हिंदू प्रवासी के बदले एक मुस्लिम को भारत से निष्कासित कर दिया जाना चाहिए। वे इस मामले को हिंदू और मुस्लिम, सामूहिक अपराधबोध और सामूहिक प्रतिशोध के नज़रिए से देखते थे। दो-राष्ट्र सिद्धांत—विभाजन के लिए मुस्लिम लीग का औचित्य—उनके मन में इतनी सफलतापूर्वक जड़ जमा चुका था कि वे भारत के मुस्लिम नागरिकों को पहले मुसलमान और केवल संयोगवश भारतीय मानते थे; और दूसरे देश में अपने सहधर्मियों के कृत्यों के लिए उनके सिर पर दंड देने को तैयार थे।

ऐसी बातें नेहरू को खलती थीं। भारत को एक हिंदू राज्य के रूप में देखना, जहाँ अल्पसंख्यकों को द्वितीय श्रेणी के नागरिक माना जाता हो, उन्हें घृणित लगता था। यदि पाकिस्तान अपने अल्पसंख्यक नागरिकों के साथ बर्बरतापूर्ण व्यवहार करता है, तो भारत के लिए ऐसा करना कोई कारण नहीं है। विभाजन के बाद, उन्होंने व्यक्तिगत रूप से कई मुस्लिम सिविल सेवकों से भारत में ही रहने का आग्रह किया था। उन्होंने मुस्लिम लीग के कई नेताओं को कांग्रेस में शामिल किया था, भले ही उनका खुलेआम स्वागत न किया हो। मुस्लिम लीग भारत में लगभग विलुप्त हो चुकी थी। उन्होंने उन मुसलमानों को आश्वस्त करने का प्रयास किया था जो दुर्व्यवहार और असुरक्षा की भावना के कारण राजस्थान और अन्य सीमावर्ती राज्यों के रास्ते पश्चिमी पाकिस्तान की ओर पलायन कर रहे थे।

उन्होंने अपने हर भाषण में सांप्रदायिक शत्रुता के विरुद्ध उपदेश दिया था —और नेहरू भाषण देने के बहुत शौकीन थे। उन्होंने पाकिस्तान से विस्थापित हुए कई हिंदू और सिख शरणार्थियों, दक्षिणपंथी दलों और अपनी ही पार्टी के दक्षिणपंथी धड़े द्वारा उकसाए गए किसी भी प्रतिशोधात्मक कार्रवाई का समर्थन करने से इनकार कर दिया था। उन्होंने विस्थापित संपत्ति के संरक्षक-महानिदेशक के कुछ कठोर निर्णयों को नरम करने का प्रयास किया था, जो अक्सर विस्थापितों के हितों की बजाय विस्थापित संपत्ति पर कब्ज़ा करने वालों के हितों में अधिक कार्य करते थे। उन्होंने लियाकत अली खान के साथ एक समझौता किया था जिससे पाकिस्तान के साथ युद्ध की संभावना कम हो गई थी। इन सभी कार्यों ने उन लोगों को क्रोधित कर दिया जो नेहरू को जड़विहीन, अपनी जड़ों से कटे हुए भारतीय के रूप में देखते थे, जिनकी भावनात्मक विचारधारा मुस्लिम समर्थक धर्मनिरपेक्षता थी, और जो अपने ही हिंदू नागरिकों के बहुमत से कटे हुए थे।

उनके आलोचकों के लिए एकमात्र समस्या यह थी कि जनता उनसे प्रेम करती थी और लगभग निश्चित रूप से उन्हें ही वोट देती, जैसा कि 1930 के दशक में उनके महान दौरे के बाद से होता आया था, जब उन्होंने पूरे देश का भ्रमण किया था और विशाल जनसमूहों को मंत्रमुग्ध कर दिया था। महेश कपूर यह बात अच्छी तरह जानते थे—वास्तव में, राजनीतिक परिदृश्य की थोड़ी सी भी जानकारी रखने वाला हर व्यक्ति इसे जानता था।

अपने खेत में घूमते हुए, अपने प्रबंधक के साथ सिंचाई की समस्याओं पर चर्चा करते हुए, जब बारिश उम्मीद के मुताबिक नहीं हुई थी, महेश कपूर का मन अक्सर दिल्ली और उन महत्वपूर्ण घटनाओं की ओर चला जाता था, जिनके कारण उन्हें तीस वर्षों तक अपनी निष्ठा रखने वाली पार्टी को

छोड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था। कई अन्य लोगों की तरह, उन्हें भी उम्मीद थी कि नेहरू टंडन की गतिविधियों के सामने अपनी नीतियों को बनाए रखने के उनके प्रयासों की निरर्थकता को समझेंगे और कुछ ठोस कदम उठाएंगे; लेकिन नेहरू, हालांकि उनके अपने समर्थक उनकी पार्टी से दूर होते जा रहे थे क्योंकि पार्टी दक्षिणपंथी विचारधारा की ओर बढ़ रही थी, उन्होंने कांग्रेस छोड़ने या अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठकों में एकता और सुलह की अपील करने के अलावा कोई सकारात्मक कदम उठाने से इनकार कर दिया। उनके इस अनिश्चित रुख के कारण उनके समर्थक भी डगमगाने लगे। अंततः, गर्मियों के अंत तक, संकट की स्थिति आ गई थी।

जून में पटना में कांग्रेस पार्टी का एक विशेष सम्मेलन आयोजित किया गया। वहीं, एक समानांतर सम्मेलन में, नवगठित केएमपीपी की स्थापना कई नेताओं द्वारा की गई, जिनमें कृपलानी भी शामिल थे, जिन्होंने हाल ही में कांग्रेस से 'भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और पक्षपात' का आरोप लगाते हुए इस्तीफा दे दिया था। किदवई ने कांग्रेस से इस्तीफा दिए बिना ही केएमपीपी की कार्यकारी समिति में निर्वाचित हो गए। इस कदम ने उन्हें दक्षिणपंथियों के गुस्से का शिकार बना दिया; क्योंकि (जैसा कि उनमें से एक ने टंडन को लिखा) वे कांग्रेस सरकार में केंद्रीय मंत्री रहते हुए उस पार्टी की कार्यकारी समिति के सदस्य कैसे हो सकते थे जो उनकी सबसे मुखर विरोधियों में से एक थी—वह पार्टी जो वास्तव में कांग्रेस को ही उखाड़ फेंकने की उम्मीद रखती थी? कृपलानी ने टंडन को कांग्रेस पार्टी के सदस्य के रूप में अपना इस्तीफा सौंप दिया था, लेकिन किदवई ने नहीं। उनके आलोचकों का तर्क था कि उन्हें तुरंत ऐसा कर देना चाहिए।

जुलाई की शुरुआत में कार्यकारी समिति और फिर अखिल भारतीय

कांग्रेस समिति की बैठक बेंगलुरु में दोबारा हुई। कार्यकारी समिति ने किदवई से स्पष्टीकरण मांगा। उन्होंने गोलमोल जवाब देते हुए अपने सहज अंदाज में कहा कि उनका कांग्रेस से इस्तीफा देने का कोई तत्काल इरादा नहीं है, उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने केएमपीपी का अधिवेशन स्थगित कराने की कोशिश की थी लेकिन असफल रहे, और आशा व्यक्त की कि कांग्रेस के बेंगलुरु अधिवेशन से उनकी विरोधाभासी स्थिति और सामान्य तौर पर स्थिति स्पष्ट हो जाएगी।

लेकिन बैंगलोर अधिवेशन में ऐसा कुछ नहीं हुआ। नेहरू ने आखिरकार यह समझ लिया कि उनके समर्थन में पारित प्रस्ताव पर्याप्त नहीं हैं, इसलिए उन्होंने कुछ और ठोस मांग रखी: कांग्रेस की दो सबसे शक्तिशाली समितियों—कार्यकारी समिति और केंद्रीय चुनाव समिति—का पूर्ण पुनर्गठन, ताकि दक्षिणपंथी गुटों का इन पर प्रभुत्व कम हो सके। इस पर टंडन ने अपनी पूरी कार्यकारी समिति के साथ इस्तीफा देने की पेशकश की। कांग्रेस में स्थायी विभाजन के डर से नेहरू पीछे हट गए। कुछ और सुलह के प्रस्ताव पारित किए गए। कुछ एक दिशा में झुके, कुछ दूसरी दिशा में। एक ओर कांग्रेस ने अपने भीतर के गुटों को अस्वीकार किया; दूसरी ओर, उन 'अलगाववादियों' के लिए पार्टी में वापसी का खुला द्वार था जो कांग्रेस के सामान्य उद्देश्यों से सहमत थे। लेकिन कांग्रेस में फिर से शामिल होने के बजाय, दो सौ और कांग्रेसियों ने इस्तीफा दे दिया और बैंगलोर में केएमपीपी में शामिल हो गए। माहौल पहले की तरह ही अनिश्चित बना रहा, और रफी अहमद किदवई ने फैसला किया कि अब टालमटोल का समय बीत चुका है। लड़ाई लड़नी ही थी।

वे दिल्ली लौट आए और प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर संचार मंत्री पद से और कांग्रेस पार्टी से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि उन्होंने और उनके मित्र अजीत प्रसाद जैन, जो पुनर्वास मंत्री थे, ने इसलिए इस्तीफा

दिया है क्योंकि वे टंडन, उनकी नीतियों और उनके अलोकतांत्रिक कार्यशैली को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि नेहरू से उनका कोई मतभेद नहीं था। नेहरू ने उनसे अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने की विनती की, और उन्होंने ऐसा ही किया।

अगले दिन दोनों ने घोषणा की कि उन्होंने अंततः मंत्रिमंडल से इस्तीफा न देने का फैसला किया है। हालांकि, उन्होंने यह भी घोषणा की कि वे कांग्रेस के खिलाफ काम करना जारी रखेंगे, कम से कम कांग्रेस अध्यक्ष और उनके साथियों के खिलाफ, जिनके विचार और रणनीतियां पार्टी के हर महत्वपूर्ण प्रस्ताव या घोषणा के विपरीत थीं। उनके इस फैसले को समझाने वाला उनका बयान चौंकाने वाला था, क्योंकि यह सरकार के दो मंत्रियों की ओर से आया था।

क्या दुनिया में ऐसा कोई उदाहरण है जहाँ किसी संगठन का कार्यकारी प्रमुख, यानी अध्यक्ष, उस संगठन के सिद्धांतों के बिलकुल विपरीत हो? श्री पुरुषोत्तमदास टंडन और कांग्रेस की नीतियों—आर्थिक, सांप्रदायिक, अंतर्राष्ट्रीय और शरणार्थी—में क्या समानता है? यहाँ तक कि इस मोड़ पर भी जब हमारे रास्ते अलग हो गए, हम यही कामना और आशा करते थे कि कांग्रेस का कामकाज उसके आदर्शों के अनुरूप होगा।

टंडन और पुराने नेताओं ने, घोर विश्वासघात और अनुशासनहीनता से प्रेरित होकर, नेहरू से अपने मंत्रियों को नियंत्रण में लाने की मांग की। असंतुष्टों को मंत्री पद पर रहते हुए अपनी ही पार्टी को बदनाम करने की कोशिश करने देना असंभव था। नेहरू को मजबूरी में यह बात माननी पड़ी। जैन मंत्रिमंडल में बने रहे और उन्होंने आगे कोई भड़काऊ बयान न देने का वादा किया। किदवई इस बंधन को मानने में असमर्थ थे और उन्होंने एक बार फिर इस्तीफा देने की पेशकश की। इस बार नेहरू समझ गए कि अपने पुराने सहयोगी और मित्र से विनती करना व्यर्थ होगा, और

उन्होंने उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया।

नेहरू अब अपनी ही पार्टी में पहले से कहीं अधिक अलग-थलग पड़ चुके थे। प्रधानमंत्री पद के तमाम बोझों के साथ-साथ—खाद्य समस्या, सीमा के दोनों ओर युद्ध का माहौल, प्रेस विधेयक और हिंदू संहिता विधेयक तथा संसद में पारित होने वाले अनगिनत कानून, केंद्र और राज्यों के बीच संबंध (जो पंजाब में प्रत्यक्ष केंद्रीय शासन की घोषणा के साथ चरम पर पहुंच गए थे), प्रशासन का दैनिक संचालन, प्रथम पंचवर्षीय योजना का क्रियान्वयन, विदेश मामले (एक ऐसा क्षेत्र जिसने उन्हें विशेष रूप से परेशान किया), और अनगिनत आपात स्थितियों का सामना करते हुए—नेहरू इस कठोर वास्तविकता से दब गए थे कि उनकी पार्टी के वैचारिक विरोधियों ने अंततः उन्हें हरा दिया था। उन्होंने टंडन को निर्वाचित कर लिया था, उन्होंने नेहरू के समर्थकों को भारी संख्या में कांग्रेस छोड़ने और एक नई विपक्षी पार्टी बनाने के लिए मजबूर कर दिया था, उन्होंने जिला कांग्रेस समितियों, प्रदेश कांग्रेस समितियों, कार्य समिति और केंद्रीय चुनाव समिति पर कब्जा कर लिया था, उन्होंने उस मंत्री का इस्तीफा दिलवा दिया था जो उनकी विचारधारा के सबसे अधिक समर्थक थे, और वे आगामी आम चुनावों के लिए अपने रूढ़िवादी उम्मीदवारों का चयन करने के लिए तैयार थे। नेहरू पूरी तरह से हताश थे; और शायद उन्होंने यह सोचा होगा कि उनकी अपनी अनिर्णयता ने ही उन्हें इस स्थिति में पहुँचाया था।

14.2

महेश कपूर को तो ऐसा ही लगा। उनकी आदत थी कि वे अपने मन की बात सामने मौजूद किसी भी व्यक्ति से कह देते थे, और संयोग से वे मान के साथ खेतों का निरीक्षण करते हुए घूम रहे थे।

'नेहरू ने हम सबको खत्म कर दिया है—और इस प्रक्रिया में खुद को भी।'

मान, जो उस भेड़िये के शिकार के बारे में सोच रहा था जिसका उसने पिछली बार उस इलाके में आनंद लिया था, अपने पिता की आवाज में व्याप्त निराशा को सुनकर वास्तविकता में लौट आया।

'जी हां, बाओजी,' उसने कहा और सोचने लगा कि अब आगे क्या किया जाए। कुछ देर रुककर उसने आगे कहा, 'खैर, मुझे यकीन है कि कुछ न कुछ हल निकल आएगा। हालात इतने बिगड़ चुके हैं कि उन्हें खुद ही सुधरना होगा।'

उनके पिता ने संक्षिप्त में कहा, 'तुम मूर्ख हो।' उन्हें याद आया कि जब उन्होंने और उनके कुछ साथियों ने पार्टी से इस्तीफा देने की बात कही थी, तब एस.एस. शर्मा कितने नाराज़ और निराश हुए थे। मुख्यमंत्री अपनी पार्टी के अग्रवाल और कपूर गुटों को आपस में संतुलित रखना पसंद करते थे, ताकि उन्हें खुद अधिकतम स्वतंत्रता मिल सके; एक गुट के न होने से उनकी रणनीति डगमगा जाती थी और उनके निर्णय लेने की क्षमता स्वाभाविक रूप से सीमित हो जाती थी।

मान चुप था। वह सोचने लगा कि वह कैसे समय निकालकर अपने दोस्त, उपमंडल अधिकारी से मिलने जा सकता है, जिसने कुछ महीने पहले शिकार का आयोजन किया था।

उनके पिता ने कहा, 'यह सोचना कि एक बार अव्यवस्था फैलने के बाद चीजें फिर से पटरी पर आ जाएंगी, एक आशावादी और बचकाना भ्रम है।' उन्होंने कुछ देर रुककर आगे कहा, 'तुम्हें झूले के बारे में नहीं, बल्कि स्लाइड के बारे में सोचना चाहिए। अब नेहरू कांग्रेस को नियंत्रित नहीं कर सकते। और अगर वे इसे नियंत्रित नहीं कर सकते, तो मैं इसमें दोबारा शामिल नहीं हो सकता—न ही रफी साहब, न ही कोई और। बात इतनी ही सरल है।'

"जी बाओजी," मान ने अपनी छड़ी से एक लंबी घास पर हल्के से प्रहार

करते हुए कहा और उम्मीद की कि उसे विभिन्न पार्टी पदों के सही-गलत पर लंबा-चौड़ा प्रवचन नहीं सुनना पड़ेगा। उसकी किस्मत अच्छी थी। एक आदमी खेतों से दौड़ता हुआ आया और बताया कि उपमंडल अधिकारी संदीप लाहिड़ी की जीप खेत की ओर आती हुई दिखाई दी है।

पूर्व मंत्री ने गुस्से में कहा, "उसे बता दो कि मैं टहलने जा रहा हूँ।"

लेकिन कुछ मिनट बाद संदीप लाहिड़ी हरे-भरे धान के खेतों के बीच बनी छोटी-छोटी मेड़ों पर धीरे-धीरे चलते हुए (और अपने साथ आए पुलिसकर्मियों के बिना) दिखाई दिए। उनके सिर पर उनकी सोला टोपी थी, और उनकी कमजोर ठुड्डी के ऊपर एक घबराहट भरी मुस्कान थी।

उन्होंने महेश कपूर को महज 'गुड मॉर्निंग सर' कहकर अभिवादन किया और मान को, जिनसे मिलने की उन्हें उम्मीद नहीं थी, 'हैलो' कहकर अभिवादन किया।

महेश कपूर, जिन्हें अभी भी उनके पुराने नाम से संबोधित किए जाने की आदत थी, ने संदीप लाहिड़ी को कुछ गौर से देखा।

‘जी?’ उसने अचानक पूछा।

‘काफी सुहावना दिन रहा—’

महेश कपूर ने पूछा, 'क्या आप सिर्फ श्रद्धांजलि देने आए हैं?'

‘ओह, नहीं, सर,’ संदीप लाहिड़ी ने यह सोचकर भयभीत होकर कहा।

महेश कपूर ने पूछा, 'आप श्रद्धांजलि देने नहीं आए हैं?'

‘खैर, ऐसा नहीं है कि मना नहीं किया गया—लेकिन, खैर, मैं थोड़ी मदद और सलाह लेने आया हूँ, महोदय। मैंने सुना था कि आप अभी-अभी यहाँ आए हैं, इसलिए मैंने सोचा—’

‘हां, हां—’ महेश कपूर आगे बढ़ रहे थे और संदीप लाहिड़ी संकरे डिवाइडर पर लड़खड़ाते हुए उनके पीछे-पीछे चल रहे थे।

संदीप लाहिड़ी ने आह भरी और अपना सवाल पूछना शुरू किया। “बात

कुछ इस तरह है, महोदय। सरकार ने हमें—यानी एसडीओ को—स्वतंत्रता दिवस के छोटे से समारोह के लिए जनता से स्वैच्छिक दान के रूप में धन इकट्ठा करने का अधिकार दिया है, जो कि—खैर—अब बस कुछ ही दिन दूर है। क्या इन निधियों पर कांग्रेस पार्टी का कोई विशेष नियंत्रण है?"

'कांग्रेस पार्टी' शब्द सुनते ही महेश कपूर के मन में आक्रोश उमड़ आया। उन्होंने कहा, 'कांग्रेस पार्टी से मेरा कोई लेना-देना नहीं है। आप भली-भांति जानते हैं कि मैं अब मंत्री नहीं हूं।'

'जी सर,' संदीप लाहिड़ी ने कहा। 'लेकिन मुझे लगा था—'

'आपको बेहतर होगा कि आप झा से पूछें, वही वस्तुतः जिला कांग्रेस कमेटी चलाते हैं। वे कांग्रेस की ओर से बोल सकते हैं।'

झा विधान परिषद के अध्यक्ष थे, एक पुराने कांग्रेसी नेता जिन्होंने संदीप लाहिड़ी को तब से काफी परेशान किया था जब एसडीओ ने उनके भतीजे को गुंडागर्दी और मारपीट के आरोप में गिरफ्तार किया था। प्रशासन के हर फैसले में दखल देने के लिए मजबूर झा का अहंकार उन्हें बाध्य करता था और संदीप लाहिड़ी की आधी समस्याओं का कारण वही थे।

'लेकिन श्री झा तो—' संदीप लाहिड़ी ने बात शुरू की।

'जी हां, झा से पूछो। मेरा इससे कोई लेना-देना नहीं है।'

संदीप लाहिड़ी ने फिर आह भरी और फिर कहा:

'एक और समस्या है, महोदय—'

'हाँ?'

मुझे पता है कि आप अब राजस्व मंत्री नहीं हैं, और यह सीधे तौर पर आपकी चिंता का विषय नहीं है, लेकिन महोदय, जमींदारी अधिनियम पारित होने के बाद किरायेदारों को बेदखल करने की संख्या में वृद्धि हुई है —'

‘कौन कहता है कि यह मेरा मामला नहीं है?’ महेश कपूर ने पीछे मुड़ते हुए पूछा और संदीप लाहिड़ी से लगभग टकरा गए। ‘बताइए कौन कहता है ऐसा?’ अगर कोई एक विषय था जो महेश कपूर को सबसे ज़्यादा परेशान करता था, तो वह उनके पसंदीदा कानून का यह असहनीय दुष्प्रभाव था। जहाँ कहीं भी ज़मींदारी उन्मूलन विधेयक पारित हो रहे थे या हो चुके थे, वहाँ किसानों को उनके घरों और ज़मीनों से बेदखल किया जा रहा था। लगभग हर मामले में ज़मींदार का इरादा यह दिखाना था कि ज़मीन हमेशा से उसकी सीधी खेती के अधीन थी और उस पर उसके अलावा किसी और का कोई अधिकार नहीं था।

लेकिन, महोदय, आपने अभी-अभी कहा था—

‘मैंने अभी जो कहा उसे भूल जाइए। आप इस समस्या के बारे में क्या कर रहे हैं?’

संदीप लाहिड़ी के पीछे चल रहा मान भी रुक गया। पहले तो उसने अपने पिता और मित्र को देखा और उनकी आपसी असहजता का आनंद लिया। फिर, दूर क्षितिज में विलीन होते विशाल बादलों से भरे आकाश की ओर देखते हुए, उसे बैतर और देबरिया की याद आई और वह गंभीर हो गया।

'महोदय, समस्या का पैमाना कल्पना से परे है। मैं एक ही समय में हर जगह मौजूद नहीं हो सकता।'

महेश कपूर ने कहा, 'आंदोलन शुरू करो।'

संदीप लाहिड़ी का कमजोर जबड़ा लटक गया। एक सरकारी कर्मचारी होने के नाते उनके लिए किसी भी तरह का आंदोलन शुरू करना अकल्पनीय था—और यह बात तो और भी चौंकाने वाली थी कि एक पूर्व मंत्री ने ऐसा सुझाव दिया था। दूसरी ओर, बेदखल और बेसहारा किसानों के प्रति उनकी सहानुभूति ने उन्हें महेश कपूर से बात करने के लिए मजबूर कर दिया था, जिन्हें आम तौर पर उनका मसीहा माना जाता था।

उनकी यह गुप्त आशा थी कि महेश कपूर स्वयं उनकी पीड़ा की गंभीरता को समझकर इस आंदोलन में हलचल मचा देंगे।
महेश कपूर ने पूछा, 'क्या आपने झा से बात की है?'
'जी श्रीमान।'
और वह क्या कहता है?
'महोदय, यह कोई रहस्य नहीं है कि श्री झा और मेरे विचार आपस में नहीं मिलते। जो बात मुझे परेशान करती है, शायद उसी वजह से उन्हें खुशी होती है। और चूंकि उन्हें अपनी अधिकांश धनराशि जमींदारों से मिलती है —'
'ठीक है, ठीक है,' महेश कपूर ने कहा। 'मैं इस बारे में सोचूंगा। मैं अभी-अभी यहाँ पहुँचा हूँ। मुझे चीज़ों का जायज़ा लेने—अपने मतदाताओं से बात करने—के लिए मुश्किल से ही समय मिला है।'
'आपके क्षेत्र के लोग, महोदय?' संदीप लाहिड़ी इस बात से बेहद खुश थे कि महेश कपूर अपने नियमित शहरी निर्वाचन क्षेत्र के बजाय रुधिया उपमंडल सीट से चुनाव लड़ने के बारे में सोच रहे हैं।
महेश कपूर ने अचानक खुशमिजाज होकर कहा, 'कौन कह सकता है, कौन कह सकता है?' 'यह सब अभी बहुत जल्दबाजी है। अब जब हम घर पर हैं, तो चाय पी लीजिए।'
चाय पीते हुए संदीप और मान को बातचीत करने का मौका मिला। मान को यह जानकर निराशा हुई कि फिलहाल शिकार की कोई संभावना नहीं है। संदीप को शिकार में कोई रुचि नहीं थी और वह शिकार का आयोजन तभी करता था जब उसकी जिम्मेदारियाँ उसे ऐसा करने के लिए बाध्य करती थीं।
सौभाग्य से, उनके नज़रिए से, अब ऐसा नहीं था। बारिश से, हालांकि इस साल बारिश कम हुई थी, प्राकृतिक खाद्य श्रृंखला फिर से जीवित हो गई

थी और भेड़ियों का खतरा कम हो गया था। हालांकि, कुछ ग्रामीणों ने अपनी बढ़ी हुई सुरक्षा का श्रेय एसडीओ द्वारा भेड़ियों के साथ व्यक्तिगत हस्तक्षेप को दिया। इन सब बातों के साथ-साथ, उनके अधीन लोगों के प्रति उनकी स्पष्ट सद्भावना, न्यायिक कर्तव्यों के दौरान मामलों के तथ्यों का निर्धारण करने के उनके प्रभावी तरीके (भले ही इसका मतलब गांव के पेड़ के नीचे अदालत लगाना हो), राजस्व मामलों में उनकी निष्पक्षता, उनके संज्ञान में आने वाले अवैध बेदखली को बर्दाश्त न करना और अपने उपखंड में कानून-व्यवस्था पर उनकी मजबूत पकड़ ने संदीप लाहिड़ी को इलाके में एक लोकप्रिय व्यक्ति बना दिया था। हालांकि, उनकी सोला टोपी अभी भी कुछ युवाओं के लिए उपहास का विषय थी।

कुछ देर बाद संदीप ने जाने की अनुमति मांगी। 'श्रीमान, मेरी श्री झा से मुलाकात है, और उन्हें इंतजार करना पसंद नहीं है।'

पूर्व राजस्व मंत्री ने आगे कहा, 'बेदखली के बारे में, मैं इस क्षेत्र के लिए एक सूची देखना चाहूंगा।'

'लेकिन, महोदय—' संदीप लाहिड़ी ने कहना शुरू किया। वह सोच रहा था कि उसके पास ऐसी कोई सूची नहीं है, और यह भी सोच रहा था कि अगर होती भी तो क्या उसे नैतिक रूप से इसे साझा करना चाहिए।

'चाहे कितना भी अपर्याप्त हो, चाहे कितना भी अधूरा हो,' महेश कपूर ने कहा और इससे पहले कि वह युवक अपने मन में आई किसी नई शंका का जिक्र कर पाता, वह उसे दरवाजे तक छोड़ने के लिए उठ खड़े हुए।

14.3

संदीप लाहिड़ी का झा के कार्यालय का दौरा एक बड़ी विफलता साबित हुआ।

झा, एक महत्वपूर्ण राजनीतिक व्यक्ति, मुख्यमंत्री के मित्र और राज्य विधानमंडल के उच्च सदन के अध्यक्ष होने के नाते, सभी महत्वपूर्ण

मामलों पर एसडीओ द्वारा परामर्श किए जाने के आदी थे। दूसरी ओर, लाहिड़ी को नियमित प्रशासनिक मामलों में किसी पार्टी नेता से परामर्श करने की कोई आवश्यकता नहीं समझ में आती थी। वे कुछ समय पहले ही विश्वविद्यालय से लौटे थे, जहाँ उन्होंने संवैधानिक कानून के सामान्य सिद्धांतों, पार्टी और राज्य के पृथक्करण और लास्की के उदारवाद का गहन अध्ययन किया था। उन्होंने स्थानीय राजनेताओं से दूरी बनाए रखने की कोशिश की।

रुधिया में एक साल बिताने के बाद उन्हें यह यकीन हो गया था कि वरिष्ठ राजनीतिक नेताओं के सीधे बुलावे से बचना नामुमकिन है। जब झा उग्र होते, तो उन्हें जाना ही पड़ता था। वे ऐसी मुलाकातों को स्थानीय महामारी की तरह ही देखते थे: एक अप्रत्याशित और अवांछित घटना, लेकिन जिसमें उनकी उपस्थिति अनिवार्य थी। अगर इससे उनका समय और मानसिक तनाव कम होता था, तो यह उनके काम का एक अभिन्न अंग था।

पचपन वर्षीय झा से यह उम्मीद करना अतिशयोक्ति होती कि वे उस नौजवान के दफ्तर आएं, हालांकि शिष्टाचार के लिहाज़ से यही उचित था। लेकिन कांग्रेस पार्टी की नहीं, बल्कि उम्र के कारण जो उचित था, उसे समझते हुए एसडीओ उनसे मिलने गए। संदीप लाहिड़ी झा के असभ्य व्यवहार के आदी थे, इसलिए वे एक तरह का भोला-भाला चेहरा बनाकर आए थे, जिससे उनके मन की बात छिपी हुई थी। एक बार जब झा ने उन्हें बैठने के लिए सीट नहीं दी—ज़ाहिर तौर पर भूलवश, लेकिन शायद अपने मातहतों को राज्य के स्थानीय प्रतिनिधि से अपनी श्रेष्ठता का एहसास कराने के लिए—तो लाहिड़ी ने भी कुछ मिनटों बाद, उतनी ही अनमने ढंग से, झा को देखकर हल्की सी मुस्कान के साथ एक सीट ले ली।

हालांकि, झा आज काफी खुशनुमा मूड में थे। उनके चेहरे पर चौड़ी मुस्कान थी और उनके विशाल सिर पर लगी सफेद कांग्रेस टोपी थोड़ी टेढ़ी थी।

‘तुम भी बैठो, तुम भी बैठो,’ उसने संदीप से कहा। वे दोनों अकेले थे, और वहाँ किसी को प्रभावित करने की ज़रूरत नहीं थी।

संदीप ने राहत भरी सांस लेते हुए कहा, 'धन्यवाद सर।'

‘चाय पी लो।’

'धन्यवाद महोदय, मैं आमतौर पर ऐसा ही करता, लेकिन मैंने अभी-अभी कुछ खाया है।'

बातचीत घूमती रही, फिर अचानक रुक गई।

'मैंने वितरित किया गया परिपत्र देखा है,' झा ने कहा।

‘वृत्ताकार?’

‘स्वतंत्रता दिवस के लिए धन जुटाने के बारे में।’

‘जी हां,’ संदीप लाहिड़ी ने कहा। ‘मैं सोच रहा था कि क्या मैं इस संबंध में आपकी मदद मांग सकता हूं। महोदय, आप जैसे आदरणीय व्यक्ति, यदि आप लोगों को दान देने के लिए प्रोत्साहित करें, तो इसका काफी प्रभाव पड़ेगा। हम अच्छी खासी रकम इकट्ठा कर सकते हैं और एक शानदार आयोजन कर सकते हैं—मिठाई बांट सकते हैं, गरीबों को भोजन करा सकते हैं इत्यादि। दरअसल, महोदय, मैं आपकी मदद पर ही भरोसा कर रहा हूं।’

‘और मुझे आपकी मदद की उम्मीद है,’ झा ने चौड़ी मुस्कान के साथ कहा। ‘इसीलिए मैंने आपको बुलाया है।’

‘मेरी मदद?’ संदीप ने असहाय और सतर्क मुस्कान के साथ कहा।

जी हां, जी हां। देखिए, कांग्रेस के पास स्वतंत्रता दिवस के लिए भी योजनाएं हैं, और आप जो धनराशि एकत्र करेंगे, उसका आधा हिस्सा हम

एक अलग प्रदर्शनी के लिए इस्तेमाल करेंगे— एक बहुत ही अच्छी प्रदर्शनी जो लोगों की मदद करेगी, इत्यादि। तो यही मेरी अपेक्षा है। बाकी आधा हिस्सा आप अपनी इच्छानुसार इस्तेमाल कर सकते हैं,' उन्होंने उदारतापूर्वक कहा। 'स्वाभाविक रूप से, मैं लोगों को योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करूंगा।'

संदीप को ठीक इसी बात का डर था। हालांकि बड़े और छोटे, दोनों ने अब इसका ज़िक्र नहीं किया, लेकिन कुछ दिन पहले झा के कुछ गुर्गों ने संदीप से इसी तरह का प्रस्ताव रखा था; यह प्रस्ताव संदीप को बिलकुल नापसंद था और उसने उन्हें यह बात बता भी दी थी। अब भी वह एक अजीब सी मुस्कान लिए बैठा था। लेकिन उसकी चुप्पी से राजनेता परेशान था।

'तो फिर, मुझे आधी धनराशि चाहिए। ठीक है?' उसने थोड़ी घबराहट से कहा।

'हमें जल्द ही पैसों की जरूरत पड़ेगी, चीजों को व्यवस्थित करने के लिए हमें कुछ दिनों की जरूरत होगी, और आपने अभी तक चंदा इकट्ठा करना शुरू नहीं किया है।'

'खैर—' संदीप ने कहा और अपने हाथ ऊपर उठाते हुए इशारा किया कि अगर मामला उसके हाथ में होता, तो वह खुशी-खुशी अपनी सारी रकम झा को दे देता ताकि वह उसका जो चाहे कर सके, लेकिन अफसोस, ब्रह्मांड ने बेरहमी से उसे यह सुख प्राप्त करने से रोक दिया।

झा का चेहरा उतर आया।

संदीप ने बेबसी में अपने हाथों को अगल-बगल घुमाते हुए कहा, 'देखिए साहब, मेरे हाथ बंधे हुए हैं।'

झा घूरता रहा, फिर अचानक भड़क उठा।

'तुम्हारा क्या मतलब है?' वह लगभग चिल्लाया। 'किसी के हाथ बंधे नहीं हैं। कांग्रेस कहती है कि किसी के हाथ बंधे नहीं हैं। कांग्रेस तुम्हारे हाथ

खोल देगी।'

'सर, बात कुछ इस तरह है—' संदीप लाहिड़ी ने कहना शुरू किया।

लेकिन झा ने उन्हें बोलने नहीं दिया। झा ने तीखे स्वर में कहा, 'तुम सरकार के सेवक हो, और कांग्रेस पार्टी सरकार चला रही है। तुम वही करोगे जो हम तुमसे कहेंगे।' उन्होंने अपने सिर पर सफेद टोपी ठीक की और मेज के नीचे अपनी धोती समेट ली।

संदीप लाहिड़ी ने अनिर्णय भरी आवाज में कहा, 'हम्म,' और उनके चेहरे पर वैसी ही उलझन और मूर्खता का भाव था जैसी उनकी मुस्कान में थी।

जब झा को एहसास हुआ कि उनकी बात में कोई प्रगति नहीं हो रही है, तो उन्होंने सुलह और समझाने-बुझाने का तरीका अपनाया। उन्होंने कहा, 'कांग्रेस पार्टी स्वतंत्रता की पार्टी है। कांग्रेस के बिना स्वतंत्रता दिवस नहीं होता।'

'बिल्कुल सही, बिल्कुल सही,' उपमंडल अधिकारी ने संतुष्टि से सिर हिलाते हुए सहमति जताई। 'गांधी की पार्टी,' उन्होंने आगे कहा।

इस टिप्पणी से झा के विशाल शरीर में फिर से सौहार्द की भावना उमड़ आई। उन्होंने उत्सुकता से कहा, 'तो हम एक-दूसरे को समझ रहे हैं?'

संदीप लाहिड़ी ने उत्तर दिया, 'मुझे आशा है, महोदय, कि हम हमेशा ऐसा ही महसूस करेंगे—कि हमारे संबंधों में कभी कोई गलतफहमी न आ सके।'

कांग्रेस के चुनाव चिन्ह के बारे में सोचते हुए झा ने स्वप्निल भाव से कहा, 'हम एक ही जुए के दो बैल हैं। पार्टी और सरकार मिलकर काम कर रहे हैं।' 'हम्म,' संदीप लाहिड़ी ने कहा, और अपने लास्कियन संदेह को छिपाने के लिए उनके चेहरे पर फिर से वही खतरनाक मूर्खतापूर्ण मुस्कान आ गई।

झा ने भौंहें चढ़ा लीं। उन्होंने युवक से पूछा, 'तुम्हें क्या लगता है कि तुम

कितना पैसा इकट्ठा करोगे?'
'मुझे नहीं पता, महोदय, मैंने पहले कभी इस तरह का संग्रह नहीं किया है।'
मान लीजिए, पांच सौ रुपये। तो हमें ढाई सौ मिलेंगे, आपको ढाई सौ मिलेंगे—और सभी संतुष्ट हो जाएंगे।
संदीप लाहिड़ी ने बड़ी मुश्किल से बात स्वीकारते हुए कहा, 'सर, देखिए, मैं एक कठिन परिस्थिति में हूं।'
इस बार झा ने कुछ नहीं कहा, बस उस अभिमानी नौजवान को घूरता रहा।
संदीप लाहिड़ी ने आगे कहा, 'अगर मैं आपको कुछ पैसा दे दूं, तो सोशलिस्ट पार्टी भी कुछ चाहेगी, केएमपीपी भी—'
'जी हां, मुझे पता है कि आप महेश कपूर से मिलने गए थे। क्या उन्होंने आपसे पैसे मांगे थे?'
'नहीं, महोदय—'
तो फिर समस्या क्या है?
लेकिन, महोदय, निष्पक्षता से कहें तो—
'निष्पक्ष!' झा इस शब्द के प्रति अपनी घृणा को छुपा नहीं सके।
'ईमानदारी से कहें तो, महोदय, हमें इन सभी पार्टियों को बराबर राशि देनी होगी—कम्युनिस्ट पार्टी को, भारतीय जनसंघ को, राम राज्य परिषद को, हिंदू महासभा को, क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी को—'
'क्या!' झा चौंक उठा। 'क्या?' उसने घबराकर कहा। 'क्या? आप हमारी तुलना सोशलिस्ट पार्टी से कर रहे हैं?' उसने अपनी धोती एक बार फिर ऊपर खींची।
'जी हाँ, महोदय—'
'मुस्लिम लीग को?'

‘बिल्कुल, महोदय, क्यों नहीं? कांग्रेस तो कई पार्टियों में से एक है। इस लिहाज से तो वे सभी एक समान हैं।’

झा, बेहद आक्रोशित और स्तब्ध, मुस्लिम लीग की छवि दिवाली की आतिशबाजी की तरह उनके दिमाग में घूम रही थी, उन्होंने संदीप लाहिड़ी को घूरते हुए पूछा, 'क्या आप हमें अन्य पार्टियों के बराबर समझते हैं?' उनकी आवाज गुस्से से कांप रही थी, जो लगभग निश्चित रूप से वास्तविक था।

संदीप लाहिड़ी चुप रहे।

‘तो फिर,’ झा ने आगे कहा, ‘मैं तुम्हें दिखाऊंगा। मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि कांग्रेस का क्या मतलब होता है। मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि तुम एक पैसा भी न जुटा सको। तुम्हें एक पैसा भी नहीं मिलेगा। तुम देखोगे, तुम देखोगे।’

संदीप ने कुछ नहीं कहा।

‘अब मेरे पास कहने को कुछ नहीं है,’ झा ने अपनी बात जारी रखी, उनका दाहिना हाथ एक हल्के नीले रंग के कांच के अंडे को पकड़े हुए था जो पेपरवेट का काम कर रहा था। ‘लेकिन हम देखेंगे, हम देखेंगे।’ ‘जी हाँ, महोदय, हम देखेंगे,’ संदीप उठते हुए बोले। झा अपनी कुर्सी से नहीं उठे। दरवाजे की ओर मुड़कर संदीप ने गुस्से में भरे कांग्रेसी नेता की ओर सद्भावना दिखाने की आखिरी कोशिश में अपनी फीकी मुस्कान बिखेरी। कांग्रेसी नेता ने मुस्कुराकर जवाब नहीं दिया।

14.4

संदीप लाहिड़ी ने यह निर्णय लिया कि उनके पास ज्यादा समय नहीं है, और उन्हें आशंका थी कि झा का धन जुटाने की क्षमता का अनुमान शायद सही ही था। इसलिए वे उसी दोपहर खाकी कमीज और शॉर्ट्स पहने, सिर पर हेलमेट लगाए, रुधिया के बाजार में गए। उनके चारों ओर

एक छोटी सी भीड़ जमा हो गई क्योंकि यह स्पष्ट नहीं था कि वे वहां क्या कर रहे थे और वैसे भी एसडीओ का दौरा एक महत्वपूर्ण घटना थी।
जब कुछ दुकानदारों ने उनसे पूछा कि वे उनके लिए क्या कर सकते हैं, तो संदीप लाहिड़ी ने कहा, 'मैं स्वतंत्रता दिवस समारोह के लिए धन इकट्ठा कर रहा हूं, और मुझे जनता से चंदा मांगने का अधिकार दिया गया है। क्या आप कुछ योगदान देना चाहेंगे?'
दुकानदारों ने एक-दूसरे की ओर देखा और मानो पहले से ही सलाह-मशविरा कर लिया हो, सबने एक साथ पाँच-पाँच रुपये का नोट निकाल लिया। लाहिड़ी एक ईमानदार व्यक्ति के रूप में जाने जाते थे और उन्होंने किसी भी प्रकार का दबाव नहीं डाला था, लेकिन उन्होंने सोचा कि जब वह उनसे कुछ माँगें तो योगदान देना शायद सबसे अच्छा होगा, भले ही वह सरकारी कार्यक्रम में ही खर्च किया जाना हो।
एसडीओ ने कहा, 'अरे, यह तो बहुत ज्यादा है। मुझे लगता है कि मुझे प्रति व्यक्ति अधिकतम एक रुपया तय करना चाहिए। मैं नहीं चाहता कि लोग अपनी क्षमता से अधिक योगदान दें।'
दोनों दुकानदार बेहद खुश हुए और उन्होंने अपने पाँच रुपये के नोट जेब में रख लिए और बदले में उन्हें एक रुपये के सिक्के दे दिए। एसडीओ ने सिक्कों को देखा और फिर अनमने ढंग से उन्हें अपनी जेब में रख लिया।
बाज़ार में यह खबर फैल गई कि एसडीओ खुद स्वतंत्रता दिवस के लिए चंदा मांग रहे हैं, कि यह बच्चों और गरीबों के भोजन के लिए इस्तेमाल होगा, कि कोई ज़बरदस्ती नहीं है और उन्होंने हर चंदे के लिए अधिकतम एक रुपया तय किया है। इस खबर और उनकी लोकप्रियता ने जादू की तरह काम किया। रुधिया की गलियों में इत्मीनान से घूमते हुए संदीप—जिन्हें अपनी टूटी-फूटी हिंदी में भाषण देना पसंद नहीं था और चंदा मांगने में असहज महसूस करते थे—मुस्कुराते हुए चंदा देने वालों से घिर गए,

जिनमें से कुछ ने सुना था कि झा उनके एसडीओ के चंदा इकट्ठा करने के अभियान के खिलाफ थे। संदीप सोचने लगे कि स्वतंत्रता के इन शुरुआती वर्षों में, स्थानीय कांग्रेसी नेताओं ने अपनी भ्रष्टता, अहंकार और खुलेआम प्रभाव का इस्तेमाल करके खुद को काफी अलोकप्रिय बना लिया था, और राजनेताओं के साथ किसी भी संघर्ष में जनता की सहानुभूति पूरी तरह उनके साथ थी। अगर वे झा के खिलाफ चुनाव लड़ते, तो शायद अपने-अपने इलाकों के ज़्यादातर युवा एसडीओ की तरह जीत जाते। इसी बीच, झा के गुर्गे, जो लोगों को सरकार के जश्न के बजाय कांग्रेस के जश्न के लिए पैसे देने के लिए मनाने के लिए बड़ी संख्या में आए थे, उन्हें जनता के भारी विरोध का सामना करना पड़ा। कुछ लोग जिन्होंने पहले ही संदीप के खाते में एक रुपया जमा कर दिया था, उन्होंने दोबारा योगदान देने का फैसला किया और संदीप उन्हें रोकने के लिए कुछ नहीं कर सका। 'नहीं महोदय, यह मेरी पत्नी की ओर से है, और यह मेरे बेटे की ओर से है,' एक ही व्यक्ति ने तीन योगदानकर्ताओं में से एक के रूप में कहा।

जब संदीप की जेबें सिक्कों से भर गईं, तो उसने अपनी मशहूर सोला टोपी उतारी, जेबों के सारे सिक्के उसमें डाल दिए और उसे और चंदा इकट्ठा करने के लिए कटोरे की तरह इस्तेमाल किया। बीच-बीच में वह अपना माथा पोंछता रहा। सब लोग खुश थे। उसकी टोपी में पैसों की बारिश हो रही थी: कुछ लोगों ने उसे दो आने दिए, कुछ ने चार, कुछ ने आठ, कुछ ने एक रुपया। बाज़ार के सारे बच्चे उसके पीछे-पीछे कतार बनाकर चलने लगे। कुछ लोग 'एसडीओ साहब की जय!' चिल्ला रहे थे। बाकी लोग उसकी टोपी में जमा हो रहे सिक्कों के खजाने को टकटकी लगाए देख रहे थे—इतने सिक्के उन्होंने पहले कभी एक जगह नहीं देखे थे—और शर्त लगा रहे थे कि वह कितना इकट्ठा कर पाएगा।

वह दिन बहुत गर्म था, और संदीप बीच-बीच में सांस लेने के लिए एक

दुकान के चबूतरे पर रुकता था।
मान, जो गाड़ी चलाकर शहर में आया था, ने भीड़ देखी और यह पता लगाने के लिए उसमें घुस गया कि मामला क्या है।
‘तुम क्या कर रहे हो?’ उसने संदीप से पूछा।
संदीप ने आह भरी। 'खुद को समृद्ध कर रहा हूँ,' उसने कहा।
‘काश मुझे भी पैसे कमाना इतना आसान लगता,’ मान ने कहा। ‘तुम थके हुए लग रहे हो।’
'लो, मैं तुम्हारी मदद करता हूँ।' और उसने उससे सोला टोपी ले ली और चंदा मांगने के लिए उसे लोगों को दिखाने लगा।
संदीप ने कहा, 'मेरा कहना है कि आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। अगर झा को इसके बारे में पता चला तो वह खुश नहीं होंगे।'
‘बकवास झा,’ मान ने कहा।
‘नहीं, नहीं, नहीं, लो, मेरे दोस्त, इसे वापस दे दो,’ संदीप ने कहा, और मान ने उसे उसकी टोपी वापस दे दी।
आधे घंटे बाद, जब उसकी टोपी पैसों से भर गई और उसकी दोनों जेबें फिर से भर गईं, तो संदीप पैसे गिनने के लिए रुक गया।
उसने अकल्पनीय आठ सौ रुपये जमा कर लिए थे।
उन्होंने तुरंत अपना संग्रह बंद करने का फैसला किया, हालांकि कई लोग उत्सुकता से अपने सिक्के लेकर आगे बढ़ रहे थे। उनके पास स्वतंत्रता दिवस के लिए एक शानदार प्रदर्शन करने के लिए पर्याप्त सिक्के थे। उन्होंने एक छोटा सा भाषण दिया, जिसमें उन्होंने लोगों की उदारता के लिए धन्यवाद दिया और उन्हें आश्वासन दिया कि धन का सदुपयोग किया जाएगा; इस दौरान उन्होंने कई हिंदी संज्ञाओं का पुल्लिंग अर्थ में प्रयोग किया।
यह खबर पूरे बाजार में फैल गई और झा के कानों तक पहुंची, जो गुस्से

से लाल हो गए।
‘मैं उसे सबक सिखाऊंगा,’ उसने जोर से कहा और घर की ओर मुड़ गया। ‘मैं उसे दिखाऊंगा कि रुधिया में असली बॉस कौन है।’

14.5

जब महेश कपूर उनसे मिलने आए तब भी वह गुस्से से आग बबूला थे।
‘ओह, कपूर जी, कपूर जी, स्वागत है, मेरे गरीब घर में आपका स्वागत है,’ झा ने कहा। महेश कपूर ने उन्हें संक्षिप्त जवाब दिया। ‘आपका मित्र जोशी अपनी जमीन से किरायेदारों को बेदखल कर रहा है। उसे कहिए कि वह ऐसा करना बंद कर दे। मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूंगा।’
झा, जिनकी टोपी थोड़ी टेढ़ी थी, ने महेश कपूर की ओर चतुराई से देखते हुए कहा, 'मैंने इस तरह की कोई बात नहीं सुनी है। आपको यह जानकारी कहां से मिली?'
'इसकी चिंता मत करो, यह भरोसेमंद है। मैं नहीं चाहता कि इस तरह की घटना मेरे घर के पास घटित हो। इससे सरकार की बदनामी होती है।'
‘सरकार की बदनामी हो तो आपको क्या फर्क पड़ता है?’ झा ने चौड़ी मुस्कान के साथ कहा। ‘आप अब इसका हिस्सा नहीं हैं। अग्रवाल और शर्मा उस दिन मुझसे बात कर रहे थे। वे कह रहे थे कि आप किदवई और कृपलानी के साथ सिर्फ एक के-के-के ग्रुप बनाने के लिए जुड़े थे।’
'क्या तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो?' महेश कपूर ने गुस्से से कहा।
‘नहीं, नहीं, नहीं, नहीं—आप ऐसा कैसे कह सकते हैं?’
'क्योंकि अगर आप ऐसा सोचते हैं, तो मैं आपको बता दूं कि यदि आवश्यक हुआ तो मैं इस निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ने के लिए तैयार हूं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यहां के किसानों के साथ आपके मित्रों द्वारा दुर्व्यवहार न किया जाए।'
झा का मुंह थोड़ा खुला रह गया। वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि

महेश कपूर किसी ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ेंगे, क्योंकि सभी के मन में उनकी छवि पुराने ब्रह्मपुर से इतनी गहराई से जुड़ी हुई थी। महेश कपूर ने रुधिया के मामलों में शायद ही कभी दखल दिया था, और झा को उनकी यह नई सक्रिय भूमिका पसंद नहीं आई।

'क्या इसी वजह से आज आपका बेटा बाजार में भाषण दे रहा था?' झा ने चिड़चिड़े स्वर में कहा।

'कौन से भाषण?' महेश कपूर ने कहा।

'उस लड़के लाहिड़ी के साथ, उस आईएएस अधिकारी के साथ।'

महेश कपूर ने उपेक्षापूर्वक कहा, 'तुम किस बारे में बात कर रहे हो?' 'मैं...' मुझे इन सब बातों में कोई दिलचस्पी नहीं है। मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि आप जोशी को शांत कराएँ—वरना मैं उसके खिलाफ केस दर्ज करवा दूँगा। चाहे मैं सरकार में रहूँ या न रहूँ, मैं नहीं चाहता कि ज़मींदारी कानून बेअसर हो जाए, और ज़रूरत पड़ने पर मैं स्थानीय दंत चिकित्सक बनने के लिए भी तैयार हूँ।

'मेरे पास एक बेहतर सुझाव है, महेशजी,' झा ने आक्रामक ढंग से अपनी धोती समेटते हुए कहा। 'अगर आप ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ने के इतने इच्छुक हैं, तो सलीमपुर-कम-बैतार से चुनाव क्यों नहीं लड़ते? फिर आप यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि आपके मित्र नवाब साहब अपने किरायेदारों को बेदखल न करें, क्योंकि मुझे पता चला है कि वे ऐसा करने में माहिर हैं।'

'धन्यवाद, मैं आपके सुझाव पर ध्यान दूंगा,' महेश कपूर ने कहा।

'और मुझे बताइए, आपकी पार्टी, वो—उसका नाम क्या है?—इन वर्णमाला वाली पार्टियों को याद रखना इतना मुश्किल है जो लगातार उभरती रहती हैं—केएमपीपी—हाँ, केएमपीपी—को सौ वोट भी कब मिलते हैं, महेशजी,' झा ने कहा, जो इस बात से प्रसन्न थे कि कुछ ही

हफ़्ते पहले इतने शक्तिशाली रहे व्यक्ति से वे इस तरह बातचीत कर पा रहे थे। 'लेकिन आपने हम कांग्रेस वालों को अपनी उपस्थिति और ज्ञान से वंचित क्यों कर दिया? आपने नेहरू की पार्टी क्यों छोड़ दी? चाचा नेहरू, हमारे महान नेता—आप जैसे प्रबुद्ध विचारों वाले लोगों के बिना वे कैसे काम चलाएँगे? और उससे भी महत्वपूर्ण बात, आप उनके बिना कैसे काम चलाएँगे? जब वे लोगों से कांग्रेस को वोट देने के लिए कहेंगे, तो क्या आपको लगता है कि लोग उनकी बात सुनेंगे या आपकी?'

महेश कपूर ने गुस्से में कहा, 'आपको नेहरू का नाम लेने में शर्म आनी चाहिए। आप उनके किसी भी काम में विश्वास नहीं करते, फिर भी वोट पाने के लिए उनका इस्तेमाल करेंगे। झा साहब, नेहरू का नाम न होता तो आप कुछ भी न होते।'

'अगर। अगर,' झा ने विस्तार से कहा।

महेश कपूर ने कहा, 'मैंने बहुत बकवास सुन ली है। जोशी को बता दो कि मेरे पास उन किरायेदारों की सूची है जिन्हें उसने निकाल दिया है। मुझे यह सूची कैसे मिली, इससे न तो उसका संबंध है और न ही तुम्हारा। उसे स्वतंत्रता दिवस तक उन्हें वापस रखना ही होगा। मुझे बस इतना ही कहना है।'

महेश कपूर जाने के लिए उठे। जैसे ही वे कमरे से बाहर निकलने वाले थे, जोशी, जिनके बारे में वे बात कर रहे थे, अंदर आ गए। जोशी इतने चिंतित लग रहे थे कि उन्होंने महेश कपूर पर तब तक ध्यान नहीं दिया जब तक कि वे उनसे टकरा नहीं गए। उन्होंने ऊपर देखा—वे एक छोटे कद के व्यक्ति थे जिनकी सफेद मूंछें करीने से संवरी हुई थीं—और कहा: 'ओह, कपूर साहब, कपूर साहब, कितनी बुरी खबर है।'

महेश कपूर ने कहा, 'यह कितनी बुरी खबर है! क्या आपके किरायेदारों ने आपके पहुंचने से पहले ही पुलिस को रिश्वत दे दी?'

‘किरायेदार?’ जोशी ने भावहीन होकर कहा।
‘कपूरजी अपनी खुद की रामायण लिख रहे हैं,’ झा ने कहा।
‘रामायण?’ जोशी ने पूछा।
‘क्या तुम्हें सब कुछ दोहराना ही है?’ झा ने कहा, जो अपने दोस्त से चिढ़ने लगा था। ‘यह बुरी खबर क्या है? मुझे पता है कि इस लाहिड़ी ने लोगों से एक हजार रुपये ठग लिए हैं। क्या यही बताने आए हो तुम? मैं तुम्हें बता दूं कि मैं उससे अपने तरीके से निपटूंगा।’
‘नहीं, नहीं—’ जोशी को बोलने में कठिनाई हो रही थी, क्योंकि वह जो जानकारी लेकर जा रहे थे वह बहुत महत्वपूर्ण थी। ‘बात बस इतनी है कि नेहरू—’
उसका चेहरा दुख और घबराहट से कांप रहा था।
‘क्या?’ झा ने कहा।
'क्या वह मर गया है?' महेश कपूर ने सबसे बुरे की आशंका जताते हुए पूछा।
'नहीं, इससे भी कहीं ज्यादा बुरा—इस्तीफा दे दिया—इस्तीफा दे दिया —' जोशी हांफते हुए बोले।
महेश कपूर ने पूछा, 'प्रधानमंत्री के तौर पर? कांग्रेस से? आपका मतलब 'इस्तीफा' से क्या है?'
कांग्रेस कार्यकारी समिति से—और केंद्रीय
जोशी ने दुखी स्वर में कहा, ‘चुनाव समिति। वे कहते हैं कि वह कांग्रेस से पूरी तरह इस्तीफा देने और किसी दूसरी पार्टी में शामिल होने की सोच रहे हैं। भगवान जाने क्या होगा। अराजकता, अराजकता।’
महेश कपूर को तुरंत एहसास हो गया कि उन्हें परामर्श के लिए ब्रह्मपुर—और शायद दिल्ली भी—जाना पड़ेगा। कमरे से निकलते समय उन्होंने झा की ओर एक आखिरी नज़र डाली। झा का मुँह खुला हुआ था और उनके

हाथ उनकी सफेद कांग्रेस टोपी के दोनों किनारों को कसकर पकड़े हुए थे। वे अपने भीतर उमड़ रही तीव्र भावना को छिपाने में पूरी तरह असमर्थ थे। वे गहरे सदमे में थे।

14.6

नेहरू के पार्टी पदों से इस्तीफे की खबर मिलते ही जब उनके पिता ब्रह्मपुर के लिए रवाना हुए, तब मान खेत में ही रह गया था। कांग्रेस पार्टी में एक साल से अधिक समय से संकट की चर्चा चल रही थी, लेकिन अब यह स्पष्ट हो गया था कि संकट वास्तव में पार्टी के सामने आ चुका है। देश के प्रधानमंत्री ने वस्तुतः यह घोषणा कर दी थी कि उन्हें उस पार्टी के निर्वाचित नेतृत्व पर भरोसा नहीं है जिसका वे संसद में प्रतिनिधित्व करते हैं। और उन्होंने यह घोषणा स्वतंत्रता दिवस से ठीक कुछ दिन पहले की थी, जब प्रधानमंत्री के रूप में वे दिल्ली के लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित करने वाले थे।

इसी बीच, संदीप लाहिड़ी ने स्थानीय मैदान के किनारे बने एक मंच से रुधिया की इकट्ठी जनता को संक्षिप्त रूप से संबोधित किया। उन्होंने कस्बे के विभिन्न महिला संगठनों की मदद से गरीबों को भोजन कराने का जिम्मा लिया। उन्होंने अपने हाथों से बच्चों को मिठाई बांटी—यह काम उन्हें सुखद तो लगा, लेकिन थोड़ा असहज भी। उन्होंने बॉय स्काउट्स और पुलिस परेड में सलामी ली और राष्ट्रीय ध्वज फहराया, जिसे पहले से ही गेंदे के फूलों से सजाया गया था। जब उन्होंने हैरानी से ऊपर देखा तो गेंदे की पंखुड़ियां उन पर गिर पड़ीं।

झा उपस्थित नहीं थे। उन्होंने और उनके समर्थकों ने पूरे कार्यक्रम का बहिष्कार किया।

समारोह के अंत में, जब एक स्थानीय बैंड ने राष्ट्रगान बजाया और संदीप लाहिड़ी ने दो हज़ार लोगों की जय-जयकार के बीच 'जय हिंद!' का नारा

लगाया, तो और मिठाइयाँ बाँटी गईं। मान ने मिठाई बाँटने में उनकी मदद की और ऐसा लग रहा था कि वह संदीप से कहीं ज़्यादा आनंद ले रहा था। बच्चे बेकाबू होकर इधर-उधर भागने लगे थे और उनके घबराए हुए शिक्षकों को उन्हें रोकना पड़ा। इसी बीच, एक डाकिया एसडीओ के पास आया और उन्हें एक टेलीग्राम दिया। वे उसे यूँ ही अपनी जेब में रखने ही वाले थे कि उन्हें याद आया कि इसमें कुछ महत्वपूर्ण हो सकता है। लेकिन उनका हाथ जलेबियों से सना हुआ था, इसलिए उन्होंने मान से, जो इस परेशानी से बच गया था, टेलीग्राम खोलने और उसे पढ़कर सुनाने के लिए कहा।

मान ने लिफाफा खोला और उसे पढ़ा। पहले तो संदीप को संदेश पूरी तरह समझ नहीं आया, लेकिन फिर उसने भौंहें चढ़ाईं, और यह कोई बचकानी भौंहें नहीं थीं, बल्कि गहरी नाराजगी थी। ऐसा लग रहा था कि झा ने तेजी से कार्रवाई की थी। यह टेलीग्राम पूर्व प्रदेश के मुख्य सचिव ने भेजा था। इसमें श्री संदीप लाहिड़ी, आईएएस को सूचित किया गया था कि उनका रुधिया उपमंडल के उप-विभागीय अधिकारी के पद से तत्काल प्रभाव से ब्रह्मपुर स्थित खान विभाग में तबादला कर दिया गया है। उन्हें 16 अगस्त को अपने स्थान पर नियुक्त अधिकारी के आते ही पदभार त्यागना था और उसी दिन ब्रह्मपुर में रिपोर्ट करना था।

14.7

ब्रह्मपुर पहुँचने पर संदीप लाहिड़ी ने सबसे पहले मुख्य सचिव से मिलने का अनुरोध किया। कुछ महीने पहले ही मुख्य सचिव ने उन्हें पत्र लिखकर उनके उपमंडल में उनके उत्कृष्ट कार्य की प्रशंसा की थी और विशेष रूप से गाँवों में जाकर जाँच-पड़ताल के माध्यम से कई वर्षों से अनसुलझे प्रतीत हो रहे भूमि विवादों को सुलझाने में उनकी भूमिका की सराहना की थी। उन्होंने लाहिड़ी को पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया था। और अब, एक

तरह से, उन्होंने उनके पैरों तले से ज़मीन खींच ली थी।
मुख्य सचिव, हालांकि वे व्यस्त थे, ने उसी शाम उन्हें अपने घर पर साक्षात्कार के लिए समय दिया।
‘अब मुझे पता है कि तुम मुझसे क्या पूछने वाले हो, नौजवान, और मैं तुमसे बिल्कुल खुलकर बात करूंगा। लेकिन मुझे तुम्हें पहले ही बता देना चाहिए कि इस आदेश को रद्द करने का कोई सवाल ही नहीं उठता।’
'मैं समझ गया, महोदय,' संदीप ने कहा, जो रुधिया को बहुत पसंद करने लगा था और वहाँ अपना पूरा कार्यकाल बिताने की उम्मीद कर रहा था—या कम से कम उसे अपने उत्तराधिकारी को उन समस्याओं और चुनौतियों के बारे में बताने का समय दिया जाए—साथ ही उन सुखों के बारे में भी जिनका उसे सामना करना पड़ सकता था, और उन विभिन्न योजनाओं के बारे में भी जो उसने शुरू की थीं और जिन्हें उपेक्षित होते देखकर उसे दुख होगा।
‘देखिए, आपके मामले में आदेश सीधे मुख्यमंत्री से आए थे।’ ‘क्या इसमें झा का कोई हाथ था?’ संदीप ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।
‘झा? ओह, मैं समझ गया—झा, रुधिया से। मुझे खेद है कि मैं आपको बता नहीं सकता। यह बिल्कुल संभव है। मुझे लगने लगा है कि आजकल कुछ भी संभव है। क्या आपने उसे नाराज़ किया है?’
'मुझे लगता है मैंने किया है, महोदय—और उन्होंने मेरा किया है।'
संदीप ने मुख्य सचिव को उनके विवाद की पूरी जानकारी दी। मुख्य सचिव की निगाहें मेज पर इधर-उधर घूमने लगीं।
अंत में उन्होंने कहा, 'आपको यह एहसास तो है ही कि यह पदोन्नति समय से पहले हो गई है, है ना? आपको नाराज नहीं होना चाहिए।'
‘जी सर,’ संदीप ने कहा। और सचमुच, खान विभाग में अवर सचिव का पद, भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदानुक्रम में भले ही निम्न स्तर का हो,

एसडीओ के पद से कहीं अधिक उच्चतर था, जिसमें कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता और खुले वातावरण में काम करने का अवसर मिलता था। सामान्य परिस्थितियों में, छह महीने बाद उनका तबादला ब्रह्मपुर में डेस्क जॉब पर हो जाता।

'तो ठीक है?'

'क्या—खैर, महोदय, अगर मैं पूछ सकता हूँ—क्या आपने मुख्यमंत्री को मुझे पद से हटाने से रोकने के लिए कुछ कहा था?'

'लाहिरी, मैं चाहता हूँ कि तुम इस बात को इस नज़रिए से न देखो। किसी ने तुम्हें हटाया नहीं है, और न ही कोई ऐसा चाहता है। तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल है। मैं ज़्यादा विस्तार से नहीं बता सकता, लेकिन इतना ज़रूर कहूँगा कि मुख्यमंत्री के निर्देश मिलते ही—जो मुझे वाकई हैरान कर गए —मैंने सबसे पहले तुम्हारी फ़ाइल मंगवाई। तुम्हारा रिकॉर्ड बहुत अच्छा है, कई विषयों में अच्छे अंक हैं और सिर्फ़ एक में कम अंक हैं। मुख्यमंत्री तुम्हें रुधिया से बाहर क्यों भेजना चाहते हैं, इसका एकमात्र कारण जो मुझे समझ में आया, वो ये था कि कुछ महीनों में महात्मा गांधी की जयंती आ रही है। लगता है पिछले साल उस विवादित मामले में तुम्हारे फ़ैसले से वो नाराज़ हो गए थे; मुझे लगता है कि हाल ही में किसी बात ने उन्हें कुछ याद दिला दिया होगा, और उन्हें लगा होगा कि रुधिया में तुम्हारी मौजूदगी एक उकसावे का काम कर सकती है। खैर, अपने करियर की शुरुआत में कुछ समय ब्रह्मपुर में बिताना तुम्हारे लिए बुरा नहीं होगा,' उन्होंने सौहार्दपूर्ण लहजे में आगे कहा। मुख्य सचिव ने कुछ उदास स्वर में कहा, 'आप अपने कामकाजी जीवन का कम से कम एक तिहाई हिस्सा यहीं बिताएंगे, इसलिए बेहतर होगा कि आप राज्य की राजधानी की जटिल गलियों में कामकाज के तौर-तरीकों को देख लें। मेरी एकमात्र विशेष सलाह यही है कि आप सब्ज़ीपुर क्लब के बार में अक्सर नज़र न आएं।

शर्मा, सच्चे गांधीवादी होने के नाते, लोगों के शराब पीने को पसंद नहीं करते; जब भी उन्हें पता चलता है कि मैं क्लब में हूं, तो वे जानबूझकर मुझे देर शाम किसी आपातकालीन काम के लिए बुला लेते हैं।'

मुख्य सचिव ने कुछ देर पहले जिस घटना का जिक्र किया था, वह रुधिया स्थित रेलवे कॉलोनी से संबंधित थी, जहां पिछले साल रेलवे कर्मचारियों के कुछ युवा एंग्लो-इंडियन बेटों ने महात्मा गांधी के पोस्टर वाले नोटिस बोर्ड के सामने का शीशा तोड़ दिया था और फिर उसे विकृत कर दिया था। इसके जवाब में हंगामा हुआ था, और अपराधियों को गिरफ्तार कर पुलिस ने पीटा था और उन्हें न्यायमूर्ति संदीप लाहिड़ी के समक्ष पेश किया गया था। झा ने राजद्रोह के आधार पर या कम से कम जनता की धार्मिक भावनाओं को गंभीर रूप से आहत करने के आरोप में उन पर मुकदमा चलाने की मांग की थी। हालांकि, संदीप ने महसूस किया कि ये उग्र स्वभाव के युवक थे, लेकिन वास्तव में उनका इरादा बुरा नहीं था, और उन्हें अपने कार्यों के संभावित परिणामों का जरा भी अंदाजा नहीं था। उन्होंने उनके शांत होने का इंतजार किया और फिर उन्हें फटकार लगाने और सार्वजनिक रूप से माफी मंगवाने के बाद चेतावनी देकर छोड़ दिया। उन पर लगाए जाने वाले आरोपों के संबंध में उनका फैसला संक्षिप्त था:

यह स्पष्ट रूप से राजद्रोह का मामला नहीं है: गांधीजी, जिनकी स्मृति का हम कितना भी आदर करें, कोई सम्राट नहीं थे। न ही वे किसी धर्म के मुखिया थे, इसलिए लोगों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का आरोप भी उन पर लागू नहीं होता। जहां तक तोड़फोड़ के आरोप की बात है, तो टूटे हुए कांच और विकृत चित्र की कीमत आठ आने से अधिक नहीं है, और कानून के अनुसार छोटी-मोटी चीजों का कोई महत्व नहीं होता। आरोपियों को चेतावनी देकर रिहा किया जाता है।

संदीप काफी समय से इस लैटिन मुहावरे का इस्तेमाल करने के लिए

बेताब था, और अब उसे यह सुनहरा मौका मिल गया था: कानून छोटी-मोटी बातों पर ध्यान नहीं देता, और यह मामला कम से कम पैसों के लिहाज से तो मामूली था। लेकिन उसकी इस भाषाई खुशी की कीमत चुकानी पड़ी। मुख्यमंत्री को यह बात पसंद नहीं आई और उन्होंने पूर्व मुख्य सचिव को निर्देश दिया कि उसके चरित्र रिकॉर्ड में उसके खिलाफ काला निशान लगा दिया जाए। 'सरकार ने रुधिया में हाल ही में हुई अशांति के मामले में श्री लाहिड़ी के गलत फैसले पर विचार किया है। सरकार खेद के साथ यह नोट करती है कि उन्होंने कानून-व्यवस्था बनाए रखने के अपने कर्तव्य की कीमत पर अपनी उदारवादी सोच का प्रदर्शन करना चुना है।'

संदीप ने मुख्य सचिव से कहा, 'महोदय, अगर आप मेरी जगह होते तो क्या करते? भारतीय दंड संहिता के किस प्रावधान के तहत मैं उन मूर्ख युवकों के सिर काट सकता था, भले ही मैं ऐसा करना चाहता?'

मुख्य सचिव ने अपने पूर्ववर्ती की आलोचना करने से बचते हुए कहा, 'खैर, मैं इस सब में नहीं पड़ सकता। वैसे, जैसा कि आप कह रहे हैं, शायद झा के साथ हाल ही में हुए किसी विवाद के कारण आपका तबादला हुआ है, न कि उस पिछली घटना के कारण। मैं जानता हूँ कि आप क्या सोच रहे हैं: कि मुझे आपके लिए खड़ा होना चाहिए था। खैर, मैं खड़ा हुआ था। मैंने यह सुनिश्चित किया कि आपका तबादला सामान्य तबादला न हो, बल्कि पदोन्नति के साथ हो। मैं इससे बेहतर कुछ नहीं कर सकता था। मैं जानता हूँ कि मुख्यमंत्री से बहस करना कब उपयोगी होता है और कब नहीं—जो, उनकी योग्यता को देखते हुए, एक उत्कृष्ट प्रशासक हैं और अच्छे अधिकारियों को महत्व देते हैं। एक दिन, जब आप मेरी जैसी स्थिति में होंगे—और मुझे नहीं लगता कि आपकी क्षमता को देखते हुए आपको ऐसा क्यों नहीं होना चाहिए—आपको भी इसी तरह के समायोजन करने होंगे। अब, क्या मैं आपको एक पेय पेश करूँ?'

संदीप ने व्हिस्की स्वीकार कर ली। मुख्य सचिव उबाऊ ढंग से विस्तार से बातें करने लगे और पुरानी यादों में खो गए:

समस्या तो 1937 में शुरू हुई—जब प्रांतीय स्तर पर राजनीतिज्ञ सत्ता संभालने लगे। शर्मा को संरक्षित प्रांतों का मुख्यमंत्री चुना गया—हमारा राज्य तब इसी नाम से जाना जाता था। मुझे शुरू में ही यह स्पष्ट हो गया था कि पदोन्नति और तबादलों में योग्यता के अलावा अन्य बातों को भी महत्व दिया जाएगा। जब सत्ता का क्रम वायसराय से राज्यपाल, फिर आयुक्त और अंत में जिला मजिस्ट्रेट तक था, तब स्थिति स्पष्ट थी। भ्रष्टाचार तब शुरू हुआ जब विधायकों ने शीर्ष स्तर को छोड़कर बाकी सभी स्तरों पर अपना दबदबा बना लिया। भाई-भतीजावाद, सत्ता हथियाना, आंदोलन, राजनीति, जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों की चापलूसी: ये सब बातें आम हो गईं। अपना कर्तव्य तो निभाना ही था, लेकिन जो कुछ देखने को मिलता था, वह कभी-कभी निराशाजनक होता था। कुछ बल्लेबाज तो बाउंड्री के अंदर गेंद उछलने पर भी छक्का मार लेते थे। और कुछ को बाउंड्री के बाहर कैच आउट होने पर भी आउट घोषित कर दिया जाता था। आप समझ रहे हैं ना मेरा मतलब। वैसे, टंडन —जो कांग्रेस के खेल के नियमों पर जोर देकर नेहरू को राजनीति से बाहर करने की कोशिश कर रहे हैं—एक बेहतरीन क्रिकेटर थे—क्या आपको पता है?—जब वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय में थे। मुझे लगता है कि उन्होंने मुइर सेंट्रल कॉलेज की टीम की कप्तानी की थी। अब वे महाभारत के ऋषि की तरह दाढ़ी और नंगे पैर घूमते हैं, लेकिन एक समय वे क्रिकेटर थे। क्रिकेट को बहुत कुछ जवाब देना है। एक और?'

'जी नहीं, धन्यवाद।'

'एक बात ये भी है कि उन वर्षों में वो उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष थे। नियम, नियम और नाममात्र की छूट। मुझे हमेशा लगता था कि हम

नौकरशाह ही नियमों के पक्के होते हैं। खैर, देश जल रहा है और नेता लोग बेतुके ढंग से इधर-उधर हाथ-पैर मार रहे हैं। अब तो हमें ही सब कुछ संभालना है। लोहे का ढांचा तो जंग खा रहा है और टूट रहा है, मुझे कहना ही पड़ेगा। खैर, मेरा करियर लगभग खत्म होने वाला है, और मुझे इसका कोई अफसोस नहीं है। मुझे उम्मीद है कि आपको अपनी नई नौकरी पसंद आएगी, लाहिड़ी—खान है ना? मुझे जरूर बताना कि आपका काम कैसा चल रहा है।'

"धन्यवाद, महोदय," संदीप लाहिड़ी ने कहा और गंभीर भाव से उठ खड़े हुए। उन्हें अब धीरे-धीरे समझ आने लगा था कि चीजें कैसे काम करती हैं। क्या यह उनका भविष्य का स्वरूप ही था जिससे वे बात कर रहे थे? इस नई और बेहद अप्रिय जानकारी से उन्हें जो निराशा और, हाँ, यह कहना गलत नहीं होगा कि घृणा हुई, वह उसे छिपा नहीं सके।

14.8

जब महेश कपूर प्रेम निवास लौटे तो श्रीमती महेश कपूर ने अपने पति से कहा, 'शर्माजी आज सुबह आपसे मिलने आए थे।'

'क्या वह स्वयं आया था?' 'हाँ।'

'क्या उसने कुछ कहा?'

'वह मुझसे क्या कहेंगे?' श्रीमती महेश कपूर ने पूछा।

उनके पति ने झुंझलाहट में जीभ चटकाई। 'ठीक है,' उन्होंने कहा। 'मैं जाकर उनसे मिल लेता हूँ।' मुख्यमंत्री का स्वयं उनके घर आना शिष्टाचार से कहीं अधिक था, और महेश कपूर को अच्छी तरह पता था कि वे क्या चर्चा करना चाहते हैं। कांग्रेस का संकट अब पूरे देश में चर्चा का विषय था, न कि केवल पार्टी में। नेहरू के पार्टी के सभी पदों से इस्तीफे ने इस बात को पुख्ता कर दिया था।

महेश कपूर ने पहले ही फोन कर दिया था, फिर वे शर्मा के घर उनसे

मिलने गए। हालाँकि उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी थी, फिर भी वे वही सफेद टोपी पहने रहते थे जो उनके पहनावे का एक अभिन्न अंग बन चुकी थी। शर्मा बगीचे में सफेद बेंत की कुर्सी पर बैठे थे और उनके पास आते ही खड़े हो गए। उन्हें थका हुआ दिखना चाहिए था, लेकिन ऐसा नहीं था। गर्मी का मौसम था और वे अखबार से खुद को हवा दे रहे थे, जिसकी सुर्खियों में नेहरू को मनाने के नवीनतम प्रयासों का जिक्र था। उन्होंने अपने पूर्व सहयोगी को बैठने के लिए कुर्सी और चाय भेंट की।

मुख्यमंत्री ने कहा, 'मुझे बेवजह की कोशिशें करने की जरूरत नहीं है, कपूर साहब। मुझे नेहरू को कांग्रेस में वापस लाने के लिए आपकी मदद चाहिए।'

'लेकिन उन्होंने इसे कभी छोड़ा नहीं,' महेश कपूर ने मुस्कुराते हुए कहा, यह देखकर कि मुख्यमंत्री पहले से ही दो कदम आगे की सोच रहे थे।

मेरा मतलब था, कांग्रेस में पूर्ण भागीदारी से।

'मैं आपकी स्थिति समझता हूँ, शर्माजी; कांग्रेस पार्टी के लिए ये वाकई मुश्किल समय होगा। लेकिन मैं क्या कर सकता हूँ? मैं खुद अब पार्टी का सदस्य नहीं हूँ। मेरे कई दोस्त और सहकर्मी भी नहीं हैं।'

शर्मा ने थोड़ा उदास होकर सिर हिलाते हुए कहा, 'कांग्रेस ही आपका असली घर है। आपने इसके लिए सब कुछ न्योछावर कर दिया, आपने अपने जीवन के सबसे अच्छे साल इसके लिए कुर्बान कर दिए। आज भी आप विधानसभा में उसी पद पर बैठे हैं, जिस पर पहले बैठे थे। चाहे अब उस दल को केएमपीपी का नाम दिया जाए या कुछ और, मैं अब भी उसे स्नेह से देखता हूँ। मैं अब भी आपको अपना साथी मानता हूँ। आपमें मुझसे ज़्यादा आदर्शवादी लोग हैं।'

शर्मा को यह बताने की ज़रूरत नहीं थी कि उनका इशारा अग्रवाल जैसे लोगों की ओर था। महेश कपूर ने अपनी चाय हिलाई। उन्हें उस व्यक्ति के

प्रति गहरी सहानुभूति थी, जिनके मंत्रिमंडल से उन्होंने हाल ही में इस्तीफा दिया था। लेकिन उन्हें उम्मीद थी कि नेहरू कांग्रेस छोड़कर उस पार्टी में शामिल हो जाएँगे जिसमें वे स्वयं शामिल हुए थे, और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि शर्मा ने यह कैसे सोचा होगा कि वे, सब लोगों में से, उन्हें ऐसा करने से रोकने के लिए उत्सुक होंगे। वे थोड़ा आगे झुके और धीरे से बोले: 'शर्माजी, मैंने वे वर्ष किसी भी पार्टी से ज़्यादा अपने देश के लिए बलिदान किए। अगर कांग्रेस ने अपने आदर्शों के साथ विश्वासघात किया है, और अपने इतने पुराने समर्थकों को पार्टी छोड़ने पर मजबूर किया है —' वे रुक गए। 'खैर, मुझे पंडितजी के पार्टी छोड़ने का कोई तत्काल खतरा नहीं दिख रहा है।'

‘क्या आप नहीं हैं?’ शर्मा ने कहा।

उनके सामने दो पत्र पड़े थे, और उन्होंने उनमें से एक, जो लंबा पत्र था, महेश कपूर को सौंप दिया और अंत के कुछ अनुच्छेदों पर उंगली से निशान लगाया। महेश कपूर ने धीरे-धीरे पढ़ा, और पूरा पढ़ने तक ऊपर नहीं देखा। यह नेहरू द्वारा अपने मुख्यमंत्रियों को लिखे जाने वाले नियमित पाक्षिक पत्रों में से एक था और इस पर 1 अगस्त की तारीख थी—उनके मित्र किदवई द्वारा अपना इस्तीफा वापस लेने के दो दिन बाद, उन्होंने फिर से इस्तीफा दे दिया था। लंबे पत्र का अंतिम भाग, जिसमें विदेशी और घरेलू घटनाक्रमों का विस्तृत वर्णन था, इस प्रकार था:

24. हाल ही में प्रेस में केंद्रीय मंत्रिमंडल से इस्तीफों का जिक्र बार-बार हुआ है। मैं स्वीकार करता हूँ कि इस मामले से मैं बहुत चिंतित हूँ, क्योंकि संबंधित दोनों व्यक्ति मेरे मूल्यवान सहयोगी रहे हैं जिन्होंने सरकार में अपनी भूमिका को पूरी तरह से सार्थक किया है। सरकारी नीति के संबंध में मतभेद का कोई सवाल ही नहीं था। दिक्कतें राष्ट्रीय कांग्रेस से संबंधित अन्य मामलों को लेकर उत्पन्न हुईं। मैं इस विषय पर यहाँ कुछ नहीं

कहना चाहता क्योंकि संभवतः आपको जल्द ही प्रेस में कुछ ऐसे बयान देखने को मिलेंगे जो वर्तमान स्थिति को स्पष्ट करेंगे। यह स्थिति सरकार को केवल अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। मूल रूप से यह कांग्रेस के भविष्य का प्रश्न है। यह न केवल कांग्रेसियों के लिए बल्कि भारत में सभी के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि कांग्रेस की भूमिका बहुत बड़ी रही है।

25. संसद का अगला सत्र अगले सोमवार, 6 अगस्त से शुरू होगा। यह चुनावों से पहले का आखिरी सत्र है। इसमें काफी काम है, जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण हैं और सत्र के दौरान पारित किए जाने चाहिए। संभवतः यह सत्र लगभग दो महीने तक चलेगा।

सादर,

जवाहरलाल नेहरू

नेहरू द्वारा कांग्रेस कार्य समिति और केंद्रीय चुनाव समिति से एक सप्ताह से भी कम समय बाद इस्तीफा देने के संदर्भ में पत्र को पढ़ते हुए महेश कपूर समझ गए कि शर्मा—या कोई और—क्यों यह सोच सकता है कि ये इस्तीफे नेहरू के कांग्रेस से पूर्ण इस्तीफे की प्रारंभिक प्रक्रिया थे। 'क्योंकि कांग्रेस की भूमिका महान रही है' यह वाक्य अशुभ रूप से उदासीन प्रतीत होता था।

शर्मा ने अपना प्याला नीचे रख दिया था और महेश कपूर की ओर देख रहे थे। चूंकि महेश कपूर ने कोई टिप्पणी नहीं की, इसलिए उन्होंने कहा, 'उत्तर प्रदेश के कांग्रेसी नेहरू को अपना इस्तीफा वापस लेने के लिए मनाने की कोशिश करेंगे—या कम से कम नेहरू और टंडन को किसी तरह के समझौते पर लाने की कोशिश करेंगे। मुझे भी लगता है कि हमें उनसे बात करने के लिए एक समूह भेजना चाहिए। मैं खुद दिल्ली जाने को तैयार हूं। लेकिन मैं चाहता हूं कि आप मेरे साथ चलें।'

'मुझे खेद है, शर्मा जी,' महेश कपूर ने कुछ झुंझलाहट के साथ कहा।

शर्मा भले ही सुलह कराने में माहिर हों, लेकिन वे यह कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि वे विपक्ष के सदस्य रहे उन्हें इस तरह के आत्मघाती रुख के लिए मना लेंगे। 'मैं आपकी मदद नहीं कर सकता। पंडित जी आपका सम्मान करते हैं, और आप भी किसी से कम नहीं, बल्कि अपनी बात मनवाने में माहिर हैं। जहाँ तक मेरी बात है, मैं किदवई, कृपलानी और कांग्रेस छोड़ने वाले सभी अन्य लोगों की तरह आशा करता हूँ कि नेहरू जल्द ही हमारे साथ जुड़ जाएँगे। जैसा कि आप कहते हैं, हमारे भीतर आदर्शवाद के कुछ अंश हैं। शायद अब समय आ गया है कि राजनीति मुद्दों और आदर्शों पर आधारित हो, न कि पार्टी मशीनरी के नियंत्रण पर।'

शर्मा का सिर धीरे-धीरे हिलने लगा। एक चपरासी संदेश लेकर लॉन में आया, लेकिन उन्होंने उसे हाथ हिलाकर मना कर दिया। कुछ देर तक उन्होंने अपनी ठुड्डी हाथों पर टिकाए रखी, फिर अपनी नाक से निकलने वाली, लेकिन प्रभावशाली आवाज़ में बोले:

महेश जी, आप मेरे इरादों को लेकर, शायद मेरी सोच को लेकर भी, चिंतित होंगे। हो सकता है कि मैंने स्थिति को लेकर अपनी समझ स्पष्ट न की हो। मैं आपके सामने कुछ उदाहरण रखता हूँ। पहला: मान लीजिए नेहरू कांग्रेस छोड़ देते हैं। मान लीजिए कि मैं आगामी चुनावों में उनसे चुनाव नहीं लड़ना चाहता, शायद उनके प्रति मेरे सम्मान के कारण, शायद हारने के डर से, और एक बूढ़े व्यक्ति होने के नाते, अपने आत्मसम्मान की अधिक परवाह करने के कारण। किसी भी स्थिति में, मैं भी कांग्रेस से इस्तीफा दे देता हूँ। या यदि कांग्रेस से नहीं, तो राज्य के मामलों में सक्रिय भागीदारी से—सरकार से, मुख्यमंत्री पद से। राज्य को एक नए मुख्यमंत्री की आवश्यकता होगी। वर्तमान स्थिति में, जब तक पूर्व राजस्व मंत्री पार्टी में फिर से शामिल नहीं होते और अपने साथ पार्टी छोड़ने वालों को वापस आने के लिए राजी नहीं करते, तब तक मुख्यमंत्री पद के लिए केवल एक

ही दावेदार होगा।
महेश कपूर ने कठोर स्वर में कहा, "तुम अग्रवाल को मुख्यमंत्री नहीं बनने दोगे। तुम राज्य को उसके हाथों में नहीं सौंपोगे।" उन्होंने अपनी नाराजगी और सदमे को छिपाने का कोई प्रयास नहीं किया।
शर्मा ने बगीचे में चारों ओर नजर डाली। एक गाय मूली के खेत में घुस गई थी, लेकिन उन्होंने इस पर ध्यान नहीं दिया।
उन्होंने कहा, 'मैं तो बस काल्पनिक दृश्य बना रहा हूँ। चलिए एक और दृश्य बनाते हैं। मैं दिल्ली जाता हूँ। मैं नेहरू से बात करने की कोशिश करता हूँ, उन्हें अपना इस्तीफा वापस लेने के लिए मनाने की कोशिश करता हूँ। वे फिर से मुझ पर अपना वही पुराना हमला शुरू कर देते हैं। वे मुझे केंद्र में, मंत्रिमंडल में चाहते हैं—एक ऐसा मंत्रिमंडल जो पहले से ही इस्तीफों से खाली हो चुका है। हम दोनों जवाहरलाल को जानते हैं, हम जानते हैं कि वे कितने प्रभावशाली हो सकते हैं। वे कहेंगे कि कांग्रेस पार्टी से ज़्यादा ज़रूरी भारत का भला है, देश की सरकार है। वे केंद्र में अच्छे प्रशासक चाहते हैं, प्रतिष्ठित लोग, सिद्ध क्षमता वाले लोग। मैं तो बस उन्हीं मीठे शब्दों को दोहरा रहा हूँ जो वे मुझसे पहले ही कई बार कह चुके हैं। अब तक मैंने दिल्ली से वापस आने का कोई न कोई बहाना ढूंढ लिया है। लोग कहते हैं कि मैं महत्वाकांक्षी हूँ, कि मैं दिल्ली में सामंत बनने के बजाय ब्रह्मपुर का राजा बनना पसंद करता हूँ। वे शायद सही हों। लेकिन इस बार जवाहरलाल मुझसे कहते हैं: "तुम मुझसे देश के भले के लिए अपनी इच्छाओं के विरुद्ध काम करने को कह रहे हो, फिर भी तुम खुद ऐसा करने से इनकार करते हो।" यह एक ऐसा तर्क है जिसका कोई जवाब नहीं है। मैं कैबिनेट मंत्री के रूप में दिल्ली जाता हूं, और एल.एन. अग्रवाल पूर्व प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में पदभार संभालते हैं।'
महेश कपूर चुप रहे। कुछ देर बाद उन्होंने कहा, 'अगर ऐसा हुआ और यह

आदमी सत्ता में आ गया, तो यह सिर्फ कुछ महीनों के लिए ही होगा। जनता उसे आने वाले चुनावों में बाहर कर देगी।'

एस.एस. शर्मा ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मुझे लगता है कि आप गृह मंत्री को कम आंक रहे हैं। लेकिन अब मान लीजिए कि हम इस मुद्दे को पीछे छोड़ दें और व्यापक दृष्टिकोण से सोचें: देश के संदर्भ में। क्या आप या मैं उस तरह का संघर्ष चाहते हैं जो नेहरू के कांग्रेस छोड़ने पर होगा? यदि आपको याद हो कि टंडन के चुनाव जीतने पर कांग्रेस पार्टी के भीतर कितना कटु संघर्ष हुआ था—और यह कोई रहस्य नहीं है कि मैंने भी कृपलानी के बजाय उन्हें ही वोट दिया था—तो क्या आप आम चुनावों में उस कटु संघर्ष की कल्पना कर सकते हैं, यदि नेहरू एक तरफ हों और कांग्रेस दूसरी तरफ? जनता किसकी ओर रुख करेगी? सोचिए उनके दिल कैसे टूटेंगे, उनकी निष्ठाएँ कैसे बँट जाएँगी। आख़िरकार, कांग्रेस गांधीजी की पार्टी है, स्वतंत्रता की पार्टी है।'

महेश कपूर ने यह कहने से परहेज किया कि यह पार्टी भाई-भतीजावाद, भ्रष्टाचार, अक्षमता, आत्मसंतुष्टि जैसी कई और चीजों के लिए भी जानी जाती है—और स्वयं गांधीजी स्वतंत्रता के बाद इसे एक राजनीतिक शक्ति के रूप में भंग करना चाहते थे। उन्होंने कहा: 'खैर, अगर लड़ाई लड़नी ही है, तो इन चुनावों के दौरान ही लड़ी जानी चाहिए। अगर कांग्रेस नेहरू का इस्तेमाल अपने चुनावी मुकाबलों के लिए करती है और फिर उनके खिलाफ हो जाती है क्योंकि उसके दक्षिणपंथी धड़े ने अधिकांश विधायकों और सांसदों को अपने कब्जे में कर लिया है—तो यह कहीं ज्यादा बुरा होगा। जितनी जल्दी इस मामले को सुलझाया जाए, उतना ही अच्छा है। मैं सहमत हूं कि हम दोनों को एक ही पक्ष में रहकर लड़ना चाहिए। मेरी इच्छा है, शर्माजी, कि मैं आपको अपनी पार्टी में शामिल होने के लिए मना सकूं—और फिर आपको नेहरू को भी ऐसा करने के लिए

मनाने में सक्षम बना सकूं।'
मुख्यमंत्री ने महेश कपूर के हास्य प्रयास को समझकर मुस्कुरा दिया। फिर उन्होंने अपने सामने रखा दूसरा पत्र उठाया और कहा:
'मैं आपको जो दिखा रहा हूँ, वह पंडितजी के नियमित पाक्षिक पत्रों में से एक नहीं है, बल्कि मुख्यमंत्रियों को लिखा गया एक विशेष पत्र है। इसे गुप्त रखा जाना है। यह उस पत्र के कुछ दिनों बाद लिखा गया है, जब उन्होंने टंडनजी को अपना त्यागपत्र सौंपा था। अगर आप इसे पढ़ेंगे तो आपको समझ आएगा कि इस समय देश में विभाजन की संभावना को लेकर मैं इतना चिंतित क्यों हूँ।' उन्होंने महेश कपूर को पत्र सौंपते हुए कहा, 'मैंने इसे अभी तक किसी को नहीं दिखाया है, यहाँ तक कि अपने मंत्रिमंडल के किसी सदस्य को भी नहीं, हालाँकि मैंने अग्रवाल को इसे पढ़ने के लिए कहा है क्योंकि गृह मंत्री होने के नाते यह उनसे संबंधित है। और मैं स्वाभाविक रूप से मुख्य सचिव से इस पर चर्चा करूँगा। अगर इस पत्र की बातें सार्वजनिक हो गईं तो यह अच्छा नहीं होगा।'
फिर वह उठे और अपनी छड़ी के सहारे चलकर अपने माली को सब्जी के बगीचे से गाय को भगाने के लिए कहा, और महेश कपूर को पत्र पढ़ने के लिए वहीं छोड़ दिया। पत्र के कुछ अंश इस प्रकार हैं:
नई दिल्ली, 9 अगस्त, 1951
मेरे प्रिय मुख्यमंत्री जी,
भारत-पाकिस्तान स्थिति में सुधार के कोई संकेत नहीं दिख रहे हैं।
इतना तो कहा ही जा सकता है कि स्थिति और खराब नहीं हुई है, लेकिन हालात काफी बिगड़े हुए हैं। पाकिस्तान की तरफ युद्ध की तैयारियां ज़ोरों से चल रही हैं।
इस प्रश्न पर तार्किक रूप से विचार करें तो मुझे युद्ध की संभावना नहीं दिखती। लेकिन तर्क हर बात की व्याख्या नहीं कर सकता और किसी भी

स्थिति में हम अपने कार्यों को केवल तर्क पर आधारित नहीं कर सकते। तर्क पाकिस्तान से निकलने वाले घृणा और झूठ से भरे दुष्प्रचार की बाढ़ की व्याख्या नहीं कर सकता।

बगीचे के दूर छोर से एक दुखी लेकिन धैर्यपूर्ण गुनगुनाने की आवाज़ आई। महेश कपूर की नज़रें तेज़ी से पत्र पर पड़ीं। नेहरू अब भारतीय मुसलमानों के बारे में बात कर रहे थे:

...कभी-कभी यह कहा जाता है कि मुसलमानों में कुछ बुरे तत्व हो सकते हैं जो परेशानी पैदा कर सकते हैं। यह काफी हद तक संभव है, लेकिन मुझे लगता है कि उस तरफ से कोई बड़ी समस्या आने की संभावना बहुत कम है। रणनीतिक क्षेत्रों या महत्वपूर्ण स्थानों के संबंध में हमें निश्चित रूप से सतर्क रहना चाहिए।

मुझे लगता है कि परेशानी पैदा करने की संभावना हिंदू या सिख सांप्रदायिक तत्वों की ओर से अधिक है। वे इस अवसर का लाभ उठाकर मुसलमानों के साथ दुर्व्यवहार करना चाहेंगे। यदि ऐसा कुछ होता है, तो इसके बहुत बुरे परिणाम होंगे और इससे हम कमजोर हो जाएंगे। इसलिए, इस तरह की घटना को होने नहीं देना चाहिए। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है और हमें अपने अल्पसंख्यकों को पूरी सुरक्षा प्रदान करनी चाहिए। इसका अर्थ यह भी है कि हमें हिंदू या सिख सांप्रदायिक संगठनों द्वारा किसी भी प्रकार के ऐसे प्रचार की अनुमति नहीं देनी चाहिए, जो दूसरी ओर पाकिस्तान के प्रचार के समान हो। हाल ही में ऐसी कुछ घटनाएं हुई हैं, जिनमें हिंदू महासभा के लोगों ने मौलिकता की कमी के कारण पाकिस्तानियों की नकल करने की कोशिश की है। वे इसमें पूरी तरह सफल नहीं हुए। लेकिन यह पूरी तरह संभव है कि यदि हम लापरवाह रहे और कुछ घटनाएं घटित हुईं, तो सांप्रदायिक तत्व उनका फायदा उठा सकते हैं। इसलिए, मैं आपसे विशेष रूप से अनुरोध करता हूं कि आप

इस बात को ध्यान में रखें।
ये कुछ अटकलें हैं जो मैं आपके साथ साझा कर रहा हूँ। हमें हर तरह की आपात स्थिति के लिए तैयार रहना होगा और सैन्य दृष्टि से हम अब से पूरी तरह तैयार हैं। मुझे अब भी उम्मीद है और कुछ हद तक विश्वास भी है कि युद्ध नहीं होगा और मैं अपनी तरफ से ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहता जिससे युद्ध की स्थिति और बिगड़ जाए।
इसलिए मैं आपसे विनम्रतापूर्वक अनुरोध करता हूं कि युद्ध की तैयारी से संबंधित किसी भी सार्वजनिक गतिविधि में शामिल न हों और न ही दूसरों को ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करें, जबकि साथ ही साथ हमारा मन भी तैयार रहना चाहिए।
कृपया इस पत्र को पूरी तरह गुप्त रखें और इसे कुछ गिने-चुने लोगों को छोड़कर किसी और के साथ साझा न करें।
सादर,
जवाहरलाल नेहरू
14.9
जब शर्मा बगीचे के दूर वाले हिस्से से गाय को भगाकर लौटे, तो उन्होंने महेश कपूर को बेचैन और परेशान होकर इधर-उधर टहलते हुए पाया। शर्मा ने अपने विचारों में गहराई से उतरते हुए कहा, 'देखिए, आप समझ गए होंगे कि इस समय, खासकर इस समय, देश में किसी भी तरह के अनावश्यक मतभेद क्यों बर्दाश्त नहीं किए जा सकते। और इसीलिए मैं आपको कांग्रेस में वापस लाने के लिए इतना उत्सुक हूं। मुसलमानों के प्रति अग्रवाल का रवैया जगजाहिर है। चूंकि वे गृह मंत्री हैं, इसलिए मुझे कुछ मामले उन्हीं के हाथों में छोड़ने होंगे। और इस साल का कैलेंडर तो हालात को पहले से भी बदतर बना रहा है।'
इस आखिरी वाक्य ने महेश कपूर को चौंका दिया। 'कैलेंडर?' उन्होंने शर्मा

की ओर देखते हुए भौंहें चढ़ाकर पूछा।

'देखिए—मैं आपको दिखाता हूँ—' मुख्यमंत्री ने अपने कुर्ते की जेब से एक छोटी भूरी डायरी निकाली। उन्होंने अक्टूबर के पहले पन्ने की ओर इशारा किया। 'इस साल मुहर्रम के दस दिन और दशहरा से पहले के दस दिन लगभग एक साथ पड़ रहे हैं। और गांधी जयंती भी इसी दौरान है।' उन्होंने डायरी बंद की और बेजान हंसी हंसे। 'राम, मुहम्मद और गांधीजी भले ही शांति के दूत रहे हों—लेकिन इनका मेल बेहद विस्फोटक हो सकता है। और अगर इसके साथ ही पाकिस्तान से युद्ध छिड़ जाए, और भारत की एकमात्र एकजुट पार्टी अपने ही अंदरूनी कलह में फंस जाए—तो मैं सोचकर ही डर जाता हूँ कि पूरे देश में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच क्या होगा। हालात विभाजन के दंगों जितने ही खराब होंगे।'

महेश कपूर ने कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन वे इस बात से इनकार नहीं कर सके कि मुख्यमंत्री के तर्कों से वे गहरे प्रभावित हुए थे। जब उन्हें और चाय दी गई, तो उन्होंने स्वीकार कर ली और बेंत की कुर्सी पर बैठ गए। कुछ मिनट बाद उन्होंने अपने पूर्व प्रमुख से कहा, 'मैं आपकी बातों पर विचार करूंगा।' उनके हाथों में अब भी नेहरू का पत्र था। दरअसल, अनजाने में ही उन्होंने उसे लंबाई में दो-तीन बार मोड़ दिया था।

यह दुर्भाग्यपूर्ण था कि एल.एन. अग्रवाल ने मुख्यमंत्री से मिलने के लिए ठीक वही समय चुना। लॉन से गुजरते हुए उनकी नजर महेश कपूर पर पड़ी। महेश कपूर ने सिर हिलाकर अभिवादन किया, लेकिन उठकर उनका अभिवादन नहीं किया। उनका इरादा असभ्य होने का नहीं था, लेकिन उनके विचार कहीं और ही थे।

'पंडितजी के पत्र के बारे में-' एल.एन. ने शुरुआत की। अग्रवाल.

शर्मा ने पत्र लेने के लिए हाथ बढ़ाया, और महेश कपूर ने बेपरवाही से उसे उन्हें सौंप दिया। अग्रवाल ने भौंहें चढ़ाईं, जाहिर तौर पर इस बात से

नाराज़ थे कि पत्र महेश कपूर के साथ साझा किया गया था: शर्मा उनके साथ ऐसा व्यवहार कर रहे थे मानो वे अभी भी उनके मंत्रिमंडल के सदस्य हों, न कि एक बागी।

शायद उनके विचारों को भांपते हुए, एस.एस. शर्मा ने कुछ क्षमा याचना भरे लहजे में समझाना शुरू किया: 'मैं कपूर साहब से पंडितजी को कांग्रेस में पूर्ण भागीदारी में वापस लाने की आवश्यकता पर चर्चा कर रहा था। हम उनके बिना नहीं रह सकते, देश उनके बिना नहीं रह सकता, और हमें हर संभव प्रयास करके उन्हें मनाना होगा। यह एकजुट होने का समय है। क्या आप सहमत नहीं हैं?'

एल.एन. अग्रवाल के चेहरे पर धीरे-धीरे तिरस्कार का भाव उभर आया जब उन्होंने इस रवैये के बारे में सोचा: आश्रित, चापलूस, कमजोर।

अंत में उन्होंने कहा, 'नहीं। मैं सहमत नहीं हूँ। टंडनजी लोकतांत्रिक रूप से चुने गए हैं। उन्होंने अपनी कार्यकारी समिति का गठन किया है और यह कई महीनों से बहुत अच्छा काम कर रही है। नेहरू इसकी बैठकों में भाग लेते रहे हैं; अब उन्हें इसकी सदस्यता बदलने का कोई अधिकार नहीं है। यह उनका विशेषाधिकार नहीं है। वे खुद को लोकतांत्रिक कहते हैं; उन्हें सही काम करके इसे साबित करना चाहिए। वे पार्टी अनुशासन में विश्वास करने का दावा करते हैं; उन्हें इसका पालन करना चाहिए। वे एकता में विश्वास करने का दावा करते हैं; उन्हें अपने विश्वासों पर कायम रहना चाहिए।'

एस.एस. शर्मा ने अपनी आँखें बंद कर लीं। 'यह तो ठीक है,' उन्होंने धीरे से कहा। 'लेकिन अगर पंडितजी—'

एल.एन. अग्रवाल लगभग भड़क उठे। 'पंडितजी—पंडितजी—हर किसी को नेहरू के सामने गिड़गिड़ाते और गिड़गिड़ाते क्यों रहना चाहिए? हाँ, वह एक महान नेता हैं—लेकिन क्या कांग्रेस में कोई और महान नेता नहीं

हैं? क्या प्रसाद का कोई अस्तित्व नहीं है? क्या पंत का कोई अस्तित्व नहीं है? क्या पटेल का कोई अस्तित्व नहीं था?' सरदार पटेल के ख्याल आते ही उनकी आवाज भावनाओं से भर उठी। 'देखते हैं अगर वह हमें छोड़कर चले जाते हैं तो क्या होता है। उन्हें चुनाव प्रचार करने, चंदा इकट्ठा करने, उम्मीदवारों का चयन करने का जरा भी अंदाजा नहीं है। और प्रधानमंत्री के रूप में उनके पास देश में तूफान मचाने का समय नहीं होगा —यह तो बिल्कुल स्पष्ट है। पहले से ही उनके पास देश चलाने का बहुत काम है। उन्हें किदवई के साथ मिल जाने दीजिए—उन्हें मुस्लिम वोट तो मिल ही जाएंगे। लेकिन फिर देखते हैं उन्हें और क्या मिलता है।'

महेश कपूर उठे, मुख्यमंत्री को संक्षिप्त अभिवादन किया और जाने लगे। अग्रवाल के इस प्रचंड व्यवहार से दुखी और नाराज़ मुख्यमंत्री ने उन्हें रोकने का कोई प्रयास नहीं किया; अग्रवाल और कपूर का एक साथ होना सुखद नहीं था।

उन्होंने सोचा, यह दो जिद्दी बच्चों से निपटने जैसा है। लेकिन उन्होंने महेश कपूर को पुकारा:

'कपूर साहब, कृपया मेरी कही बातों पर विचार कीजिए। हम इस बारे में जल्द ही फिर बात करेंगे। मैं प्रेम निवास आऊंगा।'

फिर उन्होंने अग्रवाल की ओर मुड़कर नाराज़गी भरे लहजे में कहा, 'एक घंटे की मेहनत एक मिनट में बर्बाद हो गई। आप उसे नाराज़ करने के लिए बेवजह क्यों प्रयास कर रहे हैं?'

एल.एन. अग्रवाल ने सिर हिलाया। उन्होंने कहा, 'हर कोई अपने मन की बात कहने से डरता है।' उन्होंने इस बात पर विचार व्यक्त किया कि पूर्वा प्रदेश में अब हालात काफी स्पष्ट हो गए हैं, क्योंकि कांग्रेस के वामपंथियों और धर्मनिरपेक्षवादियों के पास महेश कपूर के शानदार कुर्ते का सहारा नहीं रहा।

इस आखिरी टिप्पणी की कठोरता पर नाराज़ होने के बजाय, एस.एस. शर्मा ने शांत स्वर में उनसे कहा: 'यह रहा पत्र। इसे पढ़िए और बताइए कि आपको क्या कदम उचित लगते हैं। बेशक, हम पाकिस्तान की सीमाओं के पास कहीं नहीं हैं। फिर भी, कुछ उत्तेजित समाचार पत्रों को नियंत्रित करने के लिए कुछ उपाय आवश्यक हो सकते हैं—मेरा मतलब है, घबराहट या उकसावे की स्थिति में।'

गृह मंत्री ने कहा, 'कुछ जुलूसों को नियंत्रित करने की भी आवश्यकता हो सकती है।'

मुख्यमंत्री ने कहा, 'देखते हैं, देखते हैं।'

14.10

ब्रह्मपुर में, विशाल संसार की अनिश्चितताओं के बीच, कैलेंडर की छोटी-छोटी निश्चितताएँ भी मौजूद थीं। स्वतंत्रता दिवस के ध्वजारोहण और भाषणों के दो दिन बाद—जो भारत द्वारा अब तक मनाए गए पाँचों स्वतंत्रता दिवसों में सबसे अधिक अस्थिरता भरा था—श्रावण माह की पूर्णिमा आई, और परिवार का सबसे कोमल त्योहार—जब भाई-बहन एक-दूसरे के प्रति अपने बंधन को मजबूत करते हैं।

श्रीमती महेश कपूर, जो आम तौर पर त्योहारों की शौकीन थीं, राखी को पसंद नहीं करती थीं और न ही इस पर विश्वास करती थीं। उनके लिए यह एक विशिष्ट पंजाबी त्योहार था। उनका वंश उत्तर प्रदेश के उस हिस्से से था, जहाँ उनके अनुसार, कम से कम खत्रियों में, भाई-बहनों के बीच अपने बंधन को सबसे अधिक मजबूती से निभाने का त्योहार भाई दूज था —जो आज से ढाई महीने बाद दिवाली के लगभग चाँद रहित आकाश के आसपास एकत्रित होने वाले छोटे-छोटे त्योहारों की भीड़ में शामिल होता है। लेकिन इस मामले में वह अकेली थीं; उनके दोनों समधीन उनसे सहमत नहीं थे, निश्चित रूप से न ही वृद्ध श्रीमती टंडन, जो अविभाजित

पंजाब के मध्य में लाहौर में रहती थीं और अपने सभी पड़ोसियों की तरह जीवन भर राखी मनाती रही थीं, और न ही श्रीमती रूपा मेहरा, जो हर कीमत पर और हर संभव अवसर पर भावनाओं में विश्वास करती थीं। श्रीमती रूपा मेहरा भी भाई दूज में विश्वास करती थीं और उस दिन भी अपने सभी भाइयों—जिनमें उनके पुरुष चचेरे भाई भी शामिल थे—को शुभकामनाएँ भेजती थीं, एक प्रकार से पुष्टि के रूप में।

श्रीमती महेश कपूर के व्रतों और त्योहारों से संबंधित विभिन्न विषयों पर स्पष्ट लेकिन रूढ़िवादी विचार नहीं थे: पुल मेले से जुड़ी पौराणिक कथाओं के बारे में भी उनके अपने विचार थे। हालांकि, उनकी बेटी के लिए लाहौर में टंडन परिवार के साथ रहने से कोई फर्क नहीं पड़ा था। प्राण के जन्म से ही वीना राखी मनाती आ रही थीं। श्रीमती महेश कपूर, इस त्योहार के बारे में चाहे जो भी सोचती हों, बचपन में रंगीन धागे और चमकीले फूलों के प्रति अपनी बेटी के उत्साह को कम करने की कोशिश कभी नहीं करती थीं। और जब प्राण और मान बच्चे के रूप में अपनी मां के पास आकर उन्हें अपनी बहन द्वारा दिए गए उपहार दिखाते थे, तो उनकी खुशी कभी बनावटी नहीं होती थी।

वीना सुबह प्रेम निवास गई प्राण की कलाई पर राखी बांधने। उसने एक साधारण राखी चुनी, लाल धागे पर चांदी का एक छोटा सा फूल। उसने प्राण को लड्डू खिलाया और आशीर्वाद दिया, और बदले में प्राण ने उसकी रक्षा का वादा किया, पाँच रुपये दिए और उसे गले लगाया। हालाँकि, जैसा कि इम्तियाज़ ने उसे बताया था, प्राण की हृदय की बीमारी पुरानी थी, फिर भी वीना ने देखा कि प्राण पहले से काफी बेहतर लग रहे थे; बेटी के जन्म ने उनके जीवन का तनाव बढ़ाने के बजाय उसे कम कर दिया था। उमा एक खुशमिजाज बच्ची थी; और सविता अपनी बेटी के जन्म के बाद के महीने में बहुत ज्यादा या लंबे समय तक उदास नहीं हुई, जैसा कि

उसकी माँ ने उसे चेतावनी दी थी। प्राण के स्वास्थ्य संकट ने उसे बहुत चिंतित कर दिया था, और कानून की पढ़ाई ने उसे इतना व्यस्त कर दिया था कि वह उदासी में डूबने का जोखिम नहीं उठा पाई। कभी-कभी वह मातृत्व की तीव्र भावना से भर जाती और खुशी से उसकी आँखों में आँसू आ जाते।

वीना भास्कर को अपने साथ लाई थी।

भास्कर ने सविता से पूछा, 'मेरी राखी कहां है?'

‘तुम्हारी राखी?’

'हां। बच्चे से।'

‘आप बिलकुल सही कह रही हैं,’ सविता ने मुस्कुराते हुए और अपनी ही नासमझी पर सिर हिलाते हुए कहा। ‘बिल्कुल सही। मैं अभी जाकर एक ले आती हूँ। या फिर, बेहतर होगा कि मैं खुद बना लूँ। माँ के थैले में सौ राखियाँ बनाने के लिए पर्याप्त कपड़ा तो होगा ही। और आप—मुझे उम्मीद है कि आप उनके लिए कोई उपहार लाई होंगी।’

‘ओह, जी हाँ,’ भास्कर ने कहा, जिन्होंने उमा के लिए एक ही कागज से एक चमकीला और बहुरंगी बारह-फलकीय आकृति काटी थी। इसे उसके पलंग के ऊपर लटकाना था ताकि वह घूमते हुए इसे अपनी आँखों से देख सके। ‘मैंने इसे खुद रंगा है। लेकिन मैंने कम से कम रंगों का इस्तेमाल करने की कोशिश नहीं की,’ उन्होंने माफी मांगते हुए कहा।

‘ओह, ठीक है,’ सविता ने कहा। ‘जितने ज़्यादा रंग हों, उतना अच्छा।’ और उसने भास्कर को चूमा। राखी बन जाने पर उसने उमा का हाथ अपने हाथों में थामे हुए भास्कर की दाहिनी कलाई पर राखी बाँध दी।

वीना हर साल की तरह इस साल भी बैतर हाउस गई, फिरोज और इम्तियाज की कलाई पर राखी बांधने के लिए। दोनों घर पर ही थे, क्योंकि वे वीना के आने का इंतजार कर रहे थे।

‘तुम्हारा दोस्त मान कहाँ है?’ उसने फ़िरोज़ से पूछा।
जैसे ही उसने बोलने के लिए अपना मुंह खोला, उसने उसके मुंह में एक मिठाई डाल दी।
‘तुम्हें पता होना चाहिए!’ फ़िरोज़ ने मुस्कुराते हुए कहा, उसकी आँखों में चमक आ गई। ‘वह तुम्हारा भाई है।’
वीना ने चिढ़कर कहा, ‘मुझे याद दिलाने की ज़रूरत नहीं है। राखी का दिन है, लेकिन वो घर पर नहीं है। उसे परिवार से कोई लगाव नहीं है। अगर मुझे पता होता कि वो अभी भी फार्म पर होगा, तो मैं उसे राखी भेज देती। वो सचमुच बहुत लापरवाह है। और अब बहुत देर हो चुकी है।’
इस बीच मेहरा परिवार ने कलकत्ता के लिए अपनी राखियाँ भेज दी थीं, और वे समय पर पहुँच गई थीं। अरुण ने अपनी बहनों को चेतावनी दी थी कि एक चाँदी के धागे से ज़्यादा अलंकृत राखी को सूट की आस्तीन के नीचे छिपाना उसके लिए नामुमकिन होगा, और इसलिए बेंटसेन प्राइस में काम पर पहनना तो बिल्कुल ही असंभव था। वरुण, मानो अपने बड़े भाई को चिढ़ाने के लिए अपने भड़कीले शौक का प्रदर्शन करने के लिए, हमेशा ऐसी अलंकृत राखियाँ पहनने पर ज़ोर देता था जो उसकी नंगी बांह के आधे हिस्से तक पहुँचती हों। सविता को इस साल अपने भाइयों से मिलने का मौका नहीं मिला था, और उसने उन्हें लंबे और प्यार भरे पत्र लिखे, जिनमें उसने अनुपस्थित चाचा होने के लिए उन्हें फटकारा। लता, ट्वेल्थ नाइट में व्यस्त होने के कारण, उन्हें संक्षिप्त लेकिन कोमल पत्र लिखती थी। राखी के दिन उसकी रिहर्सल थी। कई अभिनेत्रियों ने राखी बांध रखी थी, और ओलिविया और वियोला के बीच बातचीत के दौरान लता मुस्कुराए बिना नहीं रह सकीं, जब उन्हें यह ख्याल आया कि अगर एलिजाबेथ के इंग्लैंड में राखी का त्योहार होता, तो शेक्सपियर निश्चित रूप से इसे बहुत महत्व देते, शायद वियोला अपने जहाज दुर्घटना में मारे

गए भाई के लिए शोक व्यक्त कर रही होतीं, और कल्पना कर रही होतीं कि अगस्त के पूर्णिमा के चांद से जगमगाते किसी इलिरियन समुद्र तट पर उनके शरीर के बगल में उनकी निर्जीव, धागे से रहित, बिना सजावट वाली भुजा फैली हुई है।

14.11

उसे कबीर की भी याद आई, और संगीत कार्यक्रम में कही गई उसकी उस बात की भी—जो मानो बहुत पहले की बात थी—कि पिछले साल तक उसकी एक बहन थी। लता को अभी भी ठीक से पता नहीं था कि कबीर का उस बात से क्या मतलब था, लेकिन उसके मन में आने वाली हर व्याख्या से उसे कबीर के लिए गहरा दुख हुआ।

संयोगवश, कबीर उस रात भी उसके बारे में सोच रहा था और अपने छोटे भाई से उसके बारे में बात कर रहा था। वह रिहर्सल के बाद थका हुआ घर लौटा था और उसने रात का खाना ठीक से नहीं खाया था, और हाशिम उसे इतना थका हुआ देखकर दुखी था।

कबीर लता के साथ उस अजीबोगरीब स्थिति का वर्णन करने की कोशिश कर रहा था। वे साथ-साथ अभिनय करते थे, रिहर्सल के दौरान घंटों एक ही कमरे में बिताते थे, लेकिन वे एक-दूसरे से बात नहीं करते थे। कबीर को लगा कि लता अचानक भावुक से एकदम ठंडी पड़ गई थी—उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि यह वही लड़की है जो उस सुबह नाव में उसके साथ थी—धुंध भरे कोहरे में, भूरे रंग के स्वेटर में, और जिसकी आँखों में प्रेम की चमक थी।

इसमें कोई शक नहीं कि नाव समाज की धारा के विपरीत, बरसात महल की ओर विपरीत दिशा में जा रही थी; लेकिन निश्चित रूप से कोई न कोई उपाय तो होगा ही। क्या उन्हें और तेज़ी से चप्पू चलाना चाहिए, या धारा के साथ बहने देना चाहिए? क्या उन्हें किसी दूसरी नदी में चप्पू चलाना

चाहिए, या जिस नदी में वे हैं उसकी दिशा बदलने की कोशिश करनी चाहिए? क्या उन्हें नाव से कूदकर तैरने की कोशिश करनी चाहिए? या मोटर या पाल लगवा लेनी चाहिए? या नाविक किराए पर ले लेना चाहिए?

'तुम उसे सीधे समुद्र में क्यों नहीं फेंक देते?' हाशिम ने सुझाव दिया।

'मगरमच्छों के पास?' कबीर ने हंसते हुए कहा।

'जी हां,' हाशिम ने कहा। 'वह बहुत ही मूर्ख या भावनाहीन लड़की होगी —भाई-जान, वह आपको दुखी करने में क्यों आनंद लेती है? मुझे नहीं लगता कि आपको उस पर समय बर्बाद करना चाहिए। यह तर्कसंगत नहीं है।'

'मुझे पता है ऐसा नहीं है। लेकिन, जैसा कि कहते हैं, आप किसी को उस बात से नहीं मना सकते जो उसने कभी तर्क से मानी ही न हो।'

'लेकिन वो क्यों?' हाशिम ने कहा। 'ऐसी बहुत सी लड़कियां हैं जो तुम्हारे पीछे पागल हैं—कब्स, बदमाश!'

कबीर ने कहा, 'मुझे नहीं पता। यह बात मुझे समझ नहीं आती। शायद किताबों की दुकान में वो पहली मुस्कान ही थी—और मैं अब भी उस अर्थहीन याद में डूबा हुआ हूँ। मुझे तो लगता भी नहीं कि वो मुझ पर मुस्कुरा रही थी। मुझे नहीं पता। होली की शाम सईदा बाई ने तुम्हें ही क्यों गले लगाया था? मैंने तो सब कुछ सुना था।'

हाशिम शर्म से लाल हो गया। उसने कोई समाधान नहीं सुझाया।

'या अब्बा और अम्मी को ही देख लीजिए—क्या कभी उनसे बेहतर जोड़ी हुई है? और अब—'

हाशिम ने सिर हिलाया। 'मैं इस गुरुवार को आपके साथ आऊंगा। मैं, खैर, कल नहीं आ सका।'

अच्छा है। लेकिन, हाशिम, खुद पर ज्यादा दबाव मत डालो... मुझे नहीं

पता कि उसे तुम्हारी गैरमौजूदगी का एहसास भी होता है या नहीं।
लेकिन आपने कहा था कि उसे सामिया के बारे में कुछ अंदाजा था।
मुझे लगता है कि उसे इसका एहसास हो गया है।
'अब्बा ने उसे हद से ज़्यादा परेशान कर दिया। उन्होंने उसे न तो समय दिया, न सहानुभूति दिखाई, न ही सच्चा साथ दिया।'
'खैर, अब्बा तो अब्बा हैं, और उनके बारे में शिकायत करने का कोई फायदा नहीं है।'
जम्हाई लेते हुए उसने कहा, 'लगता है मैं थक गया हूँ।' 'अच्छा, शुभ रात्रि भाई-जान।'
'शुभ रात्रि, हाशिम।'
14.12
राखी के एक सप्ताह बाद जन्माष्टमी आई, जो कृष्ण का जन्मदिवस है। श्रीमती रूपा मेहरा इसे नहीं मनाती थीं (कृष्ण के प्रति उनके मन में मिली-जुली भावनाएँ थीं), लेकिन श्रीमती महेश कपूर मनाती थीं। प्रेम निवास के बगीचे में साधारण, खुरदुरे पत्तों वाला हरसिंगार का पेड़ खड़ा था, वही पेड़ जिसके बारे में कहा जाता है कि कृष्ण ने अपनी पत्नी रुक्मिणी के लिए इंद्र के स्वर्ग से चुराया था। अभी उसमें फूल नहीं खिले थे, और अगले दो महीने तक नहीं खिलने वाले थे, लेकिन श्रीमती महेश कपूर भोर होते ही एक मिनट के लिए पेड़ के सामने खड़ी रहीं, यह कल्पना करते हुए कि वह सुगंधित, तारे के आकार के, छोटे सफेद और नारंगी फूलों से ढका होगा जो केवल एक रात के लिए खिलते हैं और फिर नीचे लॉन में गिर जाते हैं। फिर वह अंदर गईं और वीणा और भास्कर को बुलाया। वे कुछ दिनों के लिए प्रेम निवास में ठहरे हुए थे, साथ ही वृद्ध श्रीमती टंडन भी। केदारनाथ दक्षिण में अगले सीजन के ऑर्डर लेने गए हुए थे, ऐसे समय में जब हवा में नमी के कारण ब्रह्मपुर में जूतों का उत्पादन सामान्य से धीमा

था। "हमेशा दूर, हमेशा दूर," वीना ने अपनी माँ से शिकायत की।
श्रीमती महेश कपूर ने पूजा का ऐसा समय चुना था जब उनके पति घर पर न हों और उनकी पूजा-अर्चना का मज़ाक न उड़ा सकें। अब वे उस छोटे से कमरे में गईं, जो बरामदे में पर्दे से अलग किया गया एक छोटा सा कोना था और जिसे उन्होंने पूजा के लिए अलग रखा था। उन्होंने फर्श पर लकड़ी के दो छोटे चबूतरे रखे, जिनमें से एक पर वे बैठ गईं। दूसरे पर उन्होंने मिट्टी का दीपक, पीतल के स्टैंड में एक मोमबत्ती, एक थाली, एक छोटी पीतल की घंटी, आधा पानी से भरा चांदी का कटोरा और एक चपटे कटोरे में थोड़े से कच्चे सफेद चावल और कुछ गहरे लाल रंग का पाउडर रखा। वे एक छोटी अलमारी के ऊपर बने एक छोटे से चबूतरे की ओर मुंह करके बैठीं। इस चबूतरे पर शिव और अन्य देवताओं की कई पीतल की मूर्तियाँ और बांसुरी बजाते हुए बाल कृष्ण का एक सुंदर चित्र रखा था।
उसने लाल पाउडर को गीला किया, फिर ध्यान से आगे झुकी और अपनी उंगली से देवताओं के माथे को छुआ, और फिर एक बार फिर आगे झुककर और अपनी आँखें बंद करके, थोड़ा सा पाउडर अपने माथे पर लगाया। धीमी आवाज़ में उसने कहा:
‘वीना, माचिस।’
भास्कर ने कहा, 'मैं उन्हें ले आऊंगा, नानी।'
'तुम यहीं रहो,' उसकी दादी ने कहा, जिन्होंने उसके लिए विशेष प्रार्थना करने की योजना बनाई थी।
वीना रसोई से माचिस की एक बड़ी डिब्बी लेकर लौटी। उसकी माँ ने दीपक और मोमबत्ती जलाई। प्रेम निवास में ठहरे अनगिनत मेहमान बाहर बरामदे में शोर मचाते हुए बातें कर रहे थे, लेकिन उनका ध्यान वीना की ओर नहीं गया। उसने दीपक और मोमबत्ती जलाई और उन्हें ट्रे पर रख दिया। बाएँ हाथ से घंटी बजाते हुए उसने दाएँ हाथ से ट्रे उठाई और कृष्ण

के चित्र के चारों ओर हवा में एक गति का वर्णन किया—वृत्त के रूप में नहीं, बल्कि कुछ बहुत ही अनियमित, मानो वह अपनी आँखों के सामने दिखाई दे रही किसी उपस्थिति की परिधि बना रही हो। फिर वह धीरे-धीरे और बड़ी तकलीफ से अपनी सीमित मुद्रा से उठी और कमरे में बिखरी हुई अन्य मूर्तियों और कैलेंडरों के साथ भी ऐसा ही किया: शिव की मूर्ति; लक्ष्मी और गणेश की एक साथ तस्वीर, जिसमें एक छोटा चूहा लड्डू कुतर रहा था; 'परमहंस एंड कंपनी, केमिस्ट्स एंड ड्रगिस्ट्स' का एक कैलेंडर जिसमें राम, सीता, लक्ष्मण और हनुमान को दर्शाया गया है और उनके सामने जमीन पर बैठे ऋषि वाल्मीकि एक स्क्रॉल पर उनकी कहानी लिख रहे हैं; और कई अन्य।

उसने उनसे प्रार्थना की और उनसे सांत्वना मांगी: अपने लिए कुछ नहीं, बस अपने परिवार के स्वास्थ्य, अपने पति की दीर्घायु, अपने दोनों पोते-पोतियों पर आशीर्वाद और दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए। प्रार्थना करते समय उसका मुंह मौन रूप से चलता रहा, उसे अपनी बेटी और पोते की उपस्थिति का जरा भी आभास नहीं था। वह लगातार घंटी को धीरे-धीरे बजाती रही।

अंततः पूजा समाप्त हो गई, और उसने अलमारी में सामान रखने के बाद बैठ गई।

उसने वीना की ओर मुड़कर उसे 'बेटा' के लिए स्नेहपूर्ण शब्द से संबोधित किया:

'बेटे, प्राण को फोन दो और उससे कहो कि मैं उसके साथ गंगा के उस पार स्थित राधाकृष्ण मंदिर जाना चाहता हूँ।'

यह एक चतुर चाल थी। अगर उसने प्राण को सीधे फोन किया होता, तो वह इससे बचने की कोशिश करता। लेकिन वीना, जो जानती थी कि प्राण जाने के लिए पूरी तरह स्वस्थ है, ने उसे सख्ती से कहा कि वह जन्माष्टमी

पर अपनी माता को दुखी नहीं कर सकता। इसलिए थोड़ी ही देर में वे सभी - प्राण, वीना, भास्कर, बूढ़ी श्रीमती टंडन और श्रीमती महेश कपूर - एक नाव में सवार होकर पानी पर आगे बढ़ रहे थे।

'सचमुच, अम्माजी,' प्राण ने कहा, जो अपने काम से घसीटे जाने से नाखुश था, 'अगर आप कृष्ण के चरित्र के बारे में सोचें—व्यभिचारी, व्यभिचारी, चोर—'

उसकी मां ने अपना हाथ ऊपर उठाया। वह अपने बेटे की बातों से नाराज होने के बजाय काफी परेशान थी।

'बेटा, तुम्हें इतना घमंड नहीं करना चाहिए,' उसने चिंता भरी निगाहों से उसकी ओर देखते हुए कहा। 'तुम्हें ईश्वर के सामने विनम्र होना चाहिए।'

प्राण ने सुझाव दिया, 'मैं पत्थर के सामने ही क्यों न झुक जाऊं? या... या आलू के सामने।'

उसकी माँ ने उसकी बातों पर गौर किया। नाविक के चप्पू की कुछ और आवाज़ों के बाद, उसने कोमल फटकार के साथ कहा: 'क्या तुम भगवान में विश्वास भी नहीं करते?'

'नहीं,' प्राण ने कहा। उसकी माँ चुप रही।

'लेकिन जब हम मर जाते हैं—' उसने कहा और फिर चुप हो गई।

प्राण ने बिना किसी स्पष्ट कारण के चिढ़ते हुए कहा, 'अगर मेरे सभी प्रियजन भी मर जाएं, तो भी मैं विश्वास नहीं करूंगा।'

भास्कर ने अचानक कहा, 'मैं भगवान में विश्वास करता हूँ। विशेषकर राम, सीता, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न में।' उनके मन में अभी तक देवताओं और नायकों के बीच कोई स्पष्ट अंतर नहीं था, और उन्हें उम्मीद थी कि इस साल के अंत में रामलीला में उन्हें पाँच स्वरूपों में से किसी एक की भूमिका मिल जाएगी। अगर नहीं, तो कम से कम वे वानर सेना में शामिल होकर लड़ने और मौज-मस्ती करने का मौका पाएँगे। 'यह क्या

है?' उन्होंने अचानक पानी की ओर इशारा करते हुए कहा।
मछली से कहीं अधिक विशाल किसी चीज की चौड़ी, धूसर-काली पीठ गंगा की सतह के नीचे से क्षण भर के लिए प्रकट हुई और फिर वापस पानी में चली गई।
'क्या बात है?' प्राण ने पूछा।
भास्कर ने दोबारा इशारा करते हुए कहा, 'वहाँ—वो—' लेकिन वो फिर से गायब हो गया था।
प्राण ने कहा, 'मैंने कुछ नहीं देखा।'
भास्कर ने कहा, 'लेकिन वह वहीं था, वह वहीं था, मैंने उसे देखा था। वह काला और चमकदार था, और उसका चेहरा लंबा था।'
जैसे ही मैंने ये कहा, मानो जादू से, नुकीली थूथन वाली तीन बड़ी नदी डॉल्फ़िन अचानक नाव के दाहिनी ओर प्रकट हुईं और पानी में खेलने लगीं। भास्कर खुशी से हंस पड़ा।
नाविक ने ब्रह्मपुरी लहजे में कहा: "यहाँ, पानी के इस हिस्से में डॉल्फ़िन हैं। वे अक्सर बाहर नहीं आतीं, लेकिन वे यहाँ ज़रूर हैं। वे डॉल्फ़िन ही तो हैं। कोई उनका शिकार नहीं करता, मछुआरे उनकी रक्षा करते हैं और इस हिस्से में मगरमच्छों को मार डालते हैं। इसीलिए बरसात महल के उस पार, उस मोड़ तक कोई मगरमच्छ नहीं है। आप उन्हें देखकर भाग्यशाली हैं। यात्रा के अंत में यह याद रखना।"
श्रीमती महेश कपूर मुस्कुराईं और उन्हें एक सिक्का दिया। उन्हें वह समय याद आया जब मंत्री साहब एक साल दिल्ली में रहे थे और वे कृष्ण द्वारा पवित्र किए गए क्षेत्र की तीर्थयात्रा पर गई थीं। वहाँ, गोकुल मंदिर के ठीक नीचे यमुना के गहरे पानी में, उन्होंने और अन्य तीर्थयात्रियों ने बड़े काले नदी के कछुओं को आलस्य से इधर-उधर तैरते हुए देखा था। उन्होंने उन्हें और इन डॉल्फ़िनों को अच्छे प्राणी, निर्दोष और धन्य समझा। निर्दोषों

की रक्षा करने, चाहे मनुष्य हो या पशु, संसार की बार-बार होने वाली बुराइयों को दूर करने और धर्म की स्थापना करने के लिए ही कृष्ण पृथ्वी पर अवतरित हुए थे। उन्होंने महाभारत के युद्धक्षेत्र में भगवद गीता में अपनी महिमा प्रकट की थी। प्राण का उनके बारे में तिरस्कारपूर्ण ढंग से बोलना—जैसे कि ईश्वर को विश्वास और पूजा के बजाय मानवीय मानकों से आंका जाना चाहिए—उन्हें विचलित और आहत करता था। उन्होंने स्वयं से पूछा, एक ही पीढ़ी में ऐसा क्या हुआ कि उनके तीन बच्चों में से केवल एक ही उस बात पर विश्वास करता रहा जिस पर उनके पूर्वजों ने सैकड़ों, बल्कि हजारों वर्षों से विश्वास किया था?

14.13

एक सुबह, जन्माष्टमी से कुछ सप्ताह पहले, पंडित जवाहरलाल नेहरू, जिनका ध्यान दिखावटी तौर पर अपनी फाइलों पर था, अपने बचपन के उन दिनों को याद कर रहे थे जब वे बहुत छोटे थे और अपनी माँ के तमाम दुलार और डांट-फटकार के बावजूद आधी रात तक जाग नहीं पाए थे, जब जेल की कोठरी में कृष्ण का जन्म हुआ था। ज़ाहिर है, उन्हें आधी रात से पहले शायद ही कभी नींद आती थी।

नींद! यह उनके सबसे प्रिय शब्दों में से एक था। अल्मोड़ा जेल में वे अक्सर अपनी पत्नी कमला की हालत के बारे में मिलने वाली खबरों से चिंतित रहते थे, और उनकी बेबसी उन्हें कुछ समय के लिए परेशान करती थी, लेकिन फिर भी वे पहाड़ी हवा में चैन से सो जाते थे। नींद के अंतिम क्षणों में वे अक्सर सोचते थे कि यह कितनी अद्भुत और रहस्यमयी चीज है। उन्हें इससे जागना क्यों चाहिए? मान लीजिए कि वे बिल्कुल भी न जागें। जब वे अपने पिता के बीमार पलंग के पास बैठे थे, तो उन्होंने उनकी मृत्यु को गहरी नींद समझ लिया था।

अब वह अपनी मेज पर बैठे थे, ठुड्डी हाथ पर टिकी हुई थी, और अपनी

पत्नी की तस्वीर पर एक-दो पल के लिए नज़र डाली, फिर अपना काम जारी रखा। हर दिन हज़ारों चिट्ठियाँ, लगातार काम करने वाले स्टेनोग्राफर, संसद में, साउथ ब्लॉक में अपने दफ्तरों में और घर पर अपने दफ्तर में अंतहीन काम, अंतहीन, अंतहीन, अंतहीन। उनका यह सिद्धांत था कि सोने से पहले कोई भी कागज़ अधूरा न छोड़ें, कोई भी चिट्ठी अनुत्तरित न छोड़ें। फिर भी उन्हें लग रहा था कि इस काम में एक तरह की दुविधा छिपी हुई है। हालाँकि वे अपने कागज़ी काम को पूरी सावधानी से निपटाते थे, लेकिन वे इतने आत्मविश्लेषणात्मक थे कि वे इस बात को समझ गए थे कि वे उन मामलों से निपटने से बचते थे जो ज़्यादा जटिल, ज़्यादा मानवीय, ज़्यादा कड़वाहट और संघर्ष से भरे होते थे—जैसे कि उनकी अपनी पार्टी में चल रहा मामला। व्यस्त होने पर अनिर्णायक होना आसान होता है।

जेल में रहने के अलावा वह हमेशा व्यस्त रहते थे। नहीं, यह भी सच नहीं था: उन्होंने अपनी अधिकांश पढ़ाई और लगभग सारा लेखन उन्हीं जेलों में किया था। उनकी तीनों पुस्तकें वहीं लिखी गई थीं। फिर भी, वहीं उन्हें पहली बार उन चीजों पर ध्यान देने का समय मिला था जिन पर अब उनका समय नहीं था: अलीपुर जेल की ऊंची दीवारों के ऊपर दिन-प्रतिदिन हरे-भरे होते पेड़, अल्मोड़ा में जिस विशाल लोहे के बाड़े में उन्हें रखा गया था, उसमें घोंसला बनाती गौरैया, और देहरादून में जब वार्डर एक-दो सेकंड के लिए उनकी कोठरी का गेट खोलते थे तो ताजे खेतों की झलक।

वह अपनी मेज से उठे और खिड़की के पास गए, जहाँ से उन्हें तीन मूर्ति हाउस के पूरे बगीचे का निर्बाध दृश्य दिखाई देता था। यह राज के समय में कमांडर-इन-चीफ का निवास स्थान हुआ करता था, और अब प्रधानमंत्री के रूप में उनका निवास स्थान था। मानसून के कारण बगीचा हरा-भरा

था। चार-पाँच साल का एक छोटा लड़का, शायद किसी नौकर का बच्चा, आम के पेड़ के नीचे उछल-कूद कर रहा था और एक नीची शाखा से कुछ तोड़ने की कोशिश कर रहा था। लेकिन क्या आमों का समय अब बीत चुका था?

कमला के बारे में सोचते हुए, उन्हें अक्सर लगता था कि उनकी कैद का असर उन पर पड़ने से कहीं ज़्यादा कमला पर पड़ा था। उनकी शादी बहुत कम उम्र में ही हो गई थी—उनके माता-पिता ने उनकी शादी तय कर दी थी—और उन्होंने कमला के लिए समय निकालना तभी शुरू किया जब उनकी बीमारी लाइलाज हो गई थी। उनकी आत्मकथा कमला को समर्पित थी—लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी और कमला को इसका पता भी नहीं चला था। जब कमला लगभग उनसे बिछड़ गई थीं, तभी उन्हें एहसास हुआ कि वे उनसे कितना प्यार करते हैं। उन्हें अपने निराशा भरे शब्द याद आए: 'क्या वह मुझे ऐसे समय में छोड़कर जा रही है जब मुझे उसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है? अरे, हमने तो अभी-अभी एक-दूसरे को ठीक से जानना और समझना शुरू किया था; हमारा साथ का जीवन अभी-अभी सही मायने में शुरू हुआ था। हम एक-दूसरे पर बहुत भरोसा करते थे, हमें साथ में बहुत कुछ करना था।'

खैर—ये सब तो बहुत पहले की बात थी। और अगर राजा के अतिथि के रूप में हिरासत में रहने के दौरान उन्हें पीड़ा, त्याग और लंबे समय तक अनुपस्थिति का सामना करना पड़ा था, तो कम से कम लड़ाई की रूपरेखा तो स्पष्ट थी। अब, सब कुछ अस्पष्ट हो गया था। पुराने साथी राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी बन गए थे। जिन उद्देश्यों के लिए उन्होंने संघर्ष किया था, वे कमजोर पड़ रहे थे और शायद इतने लंबे समय तक स्थिति को बिगड़ने देने के लिए वे स्वयं ही जिम्मेदार थे। उनके समर्थक कांग्रेस पार्टी छोड़ रहे थे, और पार्टी रूढ़िवादियों के हाथों में चली गई थी, जिनमें से कई

भारत को एक हिंदू राज्य के रूप में देखते थे जहाँ दूसरों को या तो अनुकूलन करना होगा या परिणाम भुगतने होंगे।

उन्हें सलाह देने वाला कोई नहीं था। उनके पिता का देहांत हो चुका था। गांधीजी का देहांत हो चुका था। कमला का देहांत हो चुका था। और वह मित्र, जिससे वे अपने मन की बात कह सकते थे, जिसके साथ उन्होंने स्वतंत्रता दिवस की आधी रात का जश्न मनाया था, बहुत दूर थी। स्वयं इतनी शालीन, वह अक्सर उनके पहनावे के प्रति अत्यधिक सजगता को लेकर उन्हें चिढ़ाती थीं। उन्होंने अपने सफेद सूती अचकन के बटनहोल में लगे लाल गुलाब को छुआ—इस मौसम में यह कश्मीर से आता था—और मुस्कुराए।

नंगे बदन वाला बच्चा कई बार चूकने के बाद अब फूलों की क्यारी के पास से कुछ ईंटें लेकर बड़ी मेहनत से अपने लिए एक छोटा सा चबूतरा बना रहा था। वह उस पर खड़ा हुआ और डाल की ओर हाथ बढ़ाया, लेकिन फिर भी असफल रहा। वह और ईंटें दोनों नीचे गिर पड़े।

नेहरू की मुस्कान और चौड़ी हो गई।

'सर?' स्टेनोग्राफर ने कहा, उसकी पेंसिल अभी भी तैयार थी।

'हां, हां, मैं सोच रहा हूं।'

भारी भीड़ और अकेलापन। जेल और प्रधानमंत्री पद। तीव्र गतिविधियाँ और शून्यता की लालसा। 'हम भी थक चुके हैं।'

लेकिन उन्हें कुछ करना ही होगा, और जल्द ही। चुनाव के बाद बहुत देर हो जाएगी। एक तरह से यह उनके द्वारा लड़ी गई अब तक की सबसे दुखद लड़ाई थी।

पंद्रह साल से भी अधिक समय पहले इलाहाबाद का एक दृश्य उनकी आँखों के सामने आ गया। वे लगभग पाँच महीने पहले जेल से बाहर आए थे और उन्हें किसी न किसी आरोप में दोबारा गिरफ्तार होने की आशंका

सता रही थी। उन्होंने और कमला ने चाय खत्म कर ली थी, पुरुषोत्तमदास टंडन अभी-अभी उनके साथ शामिल हुए थे और वे बरामदे में खड़े होकर बातें कर रहे थे। तभी एक कार आकर रुकी, एक पुलिस अधिकारी बाहर निकला और वे तुरंत समझ गए कि इसका क्या मतलब है। टंडन ने अपना सिर हिलाया और व्यंग्यात्मक मुस्कान दी, और नेहरू ने माफी माँगते हुए पुलिसकर्मी का व्यंग्यात्मक ढंग से आतिथ्य सत्कार करते हुए स्वागत किया: 'मैं लंबे समय से आपका इंतजार कर रहा था।'

अब लॉन में, छोटा लड़का ईंटों को एक अलग तरीके से एक के ऊपर एक करके ढेर कर रहा था और धीरे-धीरे ऊपर चढ़ने की कोशिश कर रहा था। उसने जान की बाजी लगाकर, डाल की ओर हाथ बढ़ाने के बजाय, फल को पकड़ने के लिए छलांग लगाई। लेकिन वह सफल नहीं हुआ। वह गिर गया, ईंटों से उसे चोट लगी, गीली घास पर बैठ गया और रोने लगा। आवाज सुनकर माली सतर्क हो गया और उसने तुरंत सब कुछ देख लिया। यह जानते हुए कि प्रधानमंत्री अपने कार्यालय की खिड़की से देख रहे हैं, वह गुस्से से चिल्लाते हुए बच्चे की ओर दौड़ा और उसके चेहरे पर ज़ोर से थप्पड़ मारा। बच्चा फिर से ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा।

पंडित नेहरू गुस्से से लाल-पीले होकर बगीचे में दौड़े, माली के पास गए और बच्चे पर हमला करने के आरोप में क्रोधित होकर उसे कई बार थप्पड़ मारे।

'लेकिन पंडितजी—' माली ने स्तब्ध होकर कहा, वह इतना भयभीत था कि उसने खुद को बचाने का कोई प्रयास नहीं किया। वह तो बस घुसपैठिए को सबक सिखा रहा था।

नेहरू, अब भी क्रोधित थे, उन्होंने गंदे और डरे हुए छोटे लड़के को अपनी बाहों में उठाया और उससे प्यार से बात करने के बाद उसे नीचे उतार दिया। उन्होंने माली को तुरंत बच्चे के लिए कुछ फल तोड़ने को कहा और

उसे मौके पर ही नौकरी से निकालने की धमकी दी।
लॉन से वापस लौटते हुए उसने मन ही मन बुदबुदाया, 'बर्बर!' और यह देखकर उसका चेहरा लाल हो गया कि उसकी सफेद अचकन पूरी तरह से कीचड़ से सनी हुई थी।
14.14
दिल्ली, 6 अगस्त, 1951
प्रिय प्रेसिडेंट महोदय,
मैं कांग्रेस कार्य समिति और केंद्रीय चुनाव बोर्ड की सदस्यता से अपना त्यागपत्र देना चाहता/चाहती हूं। यदि आप कृपा करके मेरा त्यागपत्र स्वीकार कर लें तो मैं आपका आभारी रहूंगा/रहूंगी।
सादर,
जवाहरलाल नेहरू
कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष श्री टंडन को लिखे गए इस औपचारिक त्यागपत्र के साथ एक पत्र भी था, जिसकी शुरुआत 'मेरे प्रिय पुरुषोत्तमदास' से होती है और अंत में यह लिखा होता है:
यदि मेरे इस्तीफे से आपको शर्मिंदगी हो तो कृपया मुझे क्षमा करें। लेकिन शर्मिंदगी तो हम दोनों और दूसरों के लिए पहले से ही मौजूद है, और इससे निपटने का सबसे अच्छा तरीका है इसके कारण को ही दूर करना।
आपका स्नेहपूर्वक,
जवाहरलाल नेहरू
श्री टंडन ने पत्र पढ़ते ही कुछ दिनों बाद जवाब दिया। अपने जवाब में उन्होंने लिखा:
आपने स्वयं राष्ट्र के नेता के रूप में सांसदों और देश से अपील की है कि वे हमारे सामने मौजूद बाहरी और आंतरिक परिस्थितियों का एकजुट होकर सामना करें। आपका प्रस्तावित कदम, अर्थात् कार्यकारी समिति

और संसदीय बोर्ड से इस्तीफा देना, एकजुटता की उस अपील के सीधे विरुद्ध है और इससे कांग्रेस में ऐसा विभाजन उत्पन्न होने की संभावना है जो देश के लिए अब तक के किसी भी विभाजन से कहीं अधिक हानिकारक होगा।

मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि वर्तमान समय में संकट उत्पन्न न करें और अपने इस्तीफे पर ज़ोर न दें। मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता। यदि आप इस पर अड़े रहते हैं, तो मेरे पास एकमात्र विकल्प यह होगा कि मैं इसे कार्यकारी समिति के समक्ष विचार के लिए रखूँ। मुझे विश्वास है कि आप किसी भी स्थिति में 11 तारीख को कार्यकारी समिति की बैठक में उपस्थित रहेंगे।

यदि आपको कार्यकारी समिति में बनाए रखने के लिए यह आवश्यक या वांछनीय हो कि मैं कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दूं, तो मैं अत्यंत प्रसन्नता और सद्भावना के साथ ऐसा करने के लिए तैयार हूं।

आपका स्नेहपूर्वक,

पुरुषोत्तमदास टंडन

पंडित नेहरू ने उसी दिन उत्तर दिया, जिसमें उन्होंने अपने मन की बात पहले से कहीं अधिक स्पष्ट रूप से बताई:

कुछ व्यक्तियों के रवैये से मैं लंबे समय से व्याकुल रहा हूँ, जिससे यह संकेत मिलता है कि वे उन लोगों को कांग्रेस से बाहर निकालना चाहते हैं जो उनके विचारों या उनकी सामान्य सोच से मेल नहीं खाते।

मुझे लगता है कि कांग्रेस अपनी जड़ों से तेज़ी से भटक रही है और इसमें गलत तरह के लोग, या यूं कहें कि गलत तरह के विचार रखने वाले लोग, बढ़ते प्रभाव में हैं। कांग्रेस की जन अपील लगातार कम होती जा रही है। हो सकता है कि वह चुनाव जीत जाए, और शायद जीत भी जाए। लेकिन इस प्रक्रिया में वह अपनी आत्मा को भी खो सकती है।

मैं अपने द्वारा उठाए जा रहे कदम के परिणामों और उसमें निहित जोखिमों से पूरी तरह अवगत हूं। लेकिन मुझे लगता है कि ये जोखिम उठाने ही पड़ेंगे, क्योंकि इसके अलावा कोई और रास्ता नहीं है।

देश को प्रतिदिन जिस गंभीर स्थिति का सामना करना पड़ता है, उससे मैं किसी और से कहीं अधिक अवगत हूं।

आपको कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह कोई व्यक्तिगत मामला नहीं है।

मुझे नहीं लगता कि कार्य समिति की बैठक में मेरा उपस्थित होना उचित होगा। मेरी उपस्थिति से मुझे और दूसरों को शर्मिंदगी होगी। मेरा मानना है कि बेहतर यही होगा कि जो भी प्रश्न उठें उन पर मेरी अनुपस्थिति में चर्चा की जाए।

श्री टंडन ने अगले दिन जवाब दिया, जो कांग्रेस कार्य समिति की वास्तविक बैठक से एक दिन पहले था। उन्होंने सहमति जताते हुए कहा, 'चुनाव जीतने का कोई फायदा नहीं अगर, जैसा कि आप कहते हैं, इस प्रक्रिया में कांग्रेस अपनी "आत्मा खो दे"।' लेकिन उनके पत्र से यह स्पष्ट था कि कांग्रेस की आत्मा को लेकर दोनों व्यक्तियों की अवधारणाएँ बहुत भिन्न थीं। टंडन ने लिखा कि वे अगले दिन नेहरू का त्यागपत्र कार्य समिति के समक्ष रखेंगे। 'लेकिन इससे आपको अन्य मामलों में भाग लेने से नहीं रोका जाना चाहिए। क्या मैं सुझाव दे सकता हूँ कि आप बैठक में आएँ, भले ही थोड़े समय के लिए ही सही, और आपसे संबंधित मामलों पर आपकी उपस्थिति में चर्चा न की जाए।'

*

नेहरू कार्य समिति की बैठक में उपस्थित हुए और अपने त्यागपत्र का स्पष्टीकरण दिया; इसके बाद वे बैठक से चले गए ताकि अन्य सदस्य उनकी अनुपस्थिति में इस पर चर्चा कर सकें। प्रधानमंत्री के अकल्पनीय

निधन से जूझ रही कार्य समिति ने उन्हें समायोजित करने का कोई रास्ता निकालने का प्रयास किया। लेकिन विवाद को सुलझाने के सभी तात्कालिक प्रयास विफल रहे। एक संभावित उपाय कार्य समिति का पुनर्गठन करना और कांग्रेस के नए महासचिवों की नियुक्ति करना था ताकि नेहरू को उनके साथ कम मतभेद महसूस हो। लेकिन यहाँ टंडन ने कड़ा विरोध जताया। उन्होंने कहा कि वे कांग्रेस अध्यक्ष के पद को प्रधानमंत्री के अधीन होने देने की बजाय इस्तीफा देना बेहतर समझते हैं। कार्य समिति की नियुक्ति प्रधानमंत्री की भूमिका का हिस्सा थी; प्रधानमंत्री की इच्छा से इसमें कोई बदलाव नहीं किया जा सकता था। कार्य समिति ने नेहरू और टंडन से संकट का समाधान निकालने के लिए बातचीत करने का आह्वान करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया, लेकिन इससे आगे कुछ नहीं किया जा सका।

कुछ दिनों बाद, स्वतंत्रता दिवस पर, मौलाना आजाद ने कांग्रेस कार्य समिति से इस्तीफा दे दिया। जिस प्रकार लोकप्रिय मुस्लिम नेता किदवई के कांग्रेस से इस्तीफे ने नेहरू को कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया था, उसी प्रकार विद्वान मौलाना के इस्तीफे ने उनकी कार्रवाई को और पुख्ता कर दिया। चूंकि विभाजन के बाद की अनिश्चितता में मुसलमान मुख्य रूप से राष्ट्रीय स्तर पर इन्हीं दो नेताओं की ओर देख रहे थे—किदवई अपनी अपार लोकप्रियता के कारण, न केवल मुसलमानों में बल्कि हिंदुओं में भी, और आजाद अपने सम्मान और नेहरू के करीबी होने के कारण—अब ऐसा प्रतीत होने लगा था कि कांग्रेस अपने मुस्लिम समर्थकों को पूरी तरह खोने के खतरे में है।

एस.एस. शर्मा ने नेहरू को टंडन के साथ बढ़ते टकराव से रोकने के लिए हर संभव प्रयास किया। इस मामले में शर्मा उन अनेक नेताओं में से एक थे, जिन्होंने उत्तर प्रदेश के पंत और पश्चिम बंगाल के बी.सी. रॉय जैसे

नेताओं से भी ऐसा ही करने की कोशिश की थी। लेकिन जब वे दिल्ली पहुँचे, तो उन्होंने नेहरू को हमेशा की तरह अपने रुख पर अड़ा पाया। हालांकि, इस बार एस.एस. शर्मा के अहंकार को थोड़ी ठेस पहुँची: नेहरू ने उन्हें दिल्ली आकर अपने मंत्रिमंडल में शामिल होने का प्रस्ताव नहीं दिया। संभवतः या तो उन्हें पता था कि शर्मा हमेशा की तरह मना कर देंगे —या वे पार्टी में दरारों को भरने के शर्मा के प्रयासों से प्रसन्न नहीं थे— या फिर उनके मन में कुछ और अधिक महत्वपूर्ण मामले चल रहे थे, जिसके कारण उन्होंने यह निमंत्रण नहीं दिया।

इनमें से एक मामला कांग्रेस पार्टी के सांसदों की बैठक थी, जिसे उन्होंने उस घटनाक्रम को समझाने के लिए बुलाया था जिसके कारण पार्टी में गंभीर मतभेद पैदा हुआ और उन्हें इस्तीफा देना पड़ा। उन्होंने सांसदों से विश्वास मत मांगा। उनकी राजनीतिक विचारधारा चाहे जो भी हो (और जैसा कि नेहरू को जल्द ही पता चला जब हिंदू कानून में सुधार का विधेयक संसद में पेश किया गया, उनमें कई कट्टर रूढ़िवादी भी थे), अधिकांश कांग्रेस सांसदों ने इस विवाद को मुख्य रूप से जनदल और संसदीय दल के बीच संघर्ष के रूप में देखा। वे इस विचार से सहमत नहीं थे कि कांग्रेस अध्यक्ष कांग्रेस के प्रस्तावों के माध्यम से उन पर नीति थोपने की कोशिश करेंगे, जैसा कि उन्होंने कई मौकों पर कहा था कि उन्हें ऐसा करने का अधिकार है। इसके अलावा, वे जानते थे कि नेहरू की राष्ट्रीय छवि के बिना कुछ ही महीनों में उनके लिए दोबारा चुनाव जीतना बहुत मुश्किल होगा। चाहे यह डर हो कि वे अपनी पहचान, अपनी सत्ता या चुनाव हार जाएंगे, उन्होंने भारी बहुमत से उनके पक्ष में विश्वास प्रस्ताव पारित कर दिया।

नेहरू पर विश्वास को लेकर कभी कोई सवाल नहीं उठा था, इसलिए टंडन के समर्थकों को यह कदम पसंद नहीं आया, जो किसी बड़े टकराव की

तैयारी जैसा लग रहा था। नेहरू के पीछे हटने, उनकी बात समझने, अप्रिय स्थिति को टालने या समझौता करने की अनिच्छा देखकर वे कुछ हद तक हैरान भी थे। अब वे 'दृष्टिकोण में बदलाव' और 'स्पष्ट निर्णय' की बात कर रहे थे। और ऐसी अफवाहें फैलने लगी थीं कि नेहरू प्रधानमंत्री पद के साथ-साथ कांग्रेस अध्यक्ष पद भी संभाल सकते हैं, जो एक बोझिल और कुछ मायनों में अशुभ संयोजन था, जिसका उन्होंने अतीत में सैद्धांतिक रूप से विरोध किया था। दरअसल, 1946 में उन्होंने प्रधानमंत्री बनने के लिए कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया था। लेकिन अब जब उनकी सत्ता के लिए मुख्य खतरा कांग्रेस पार्टी के भीतर से ही आ रहा था, तो उन्होंने इस मुद्दे पर अपना रुख बदल लिया था।

'मैं निश्चित रूप से मानता हूँ कि प्रधानमंत्री का कांग्रेस अध्यक्ष होना व्यावहारिक रूप से और अन्य मामलों में भी गलत है,' उन्होंने अगस्त के अंत में, दिल्ली में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की निर्णायक बैठक से ठीक एक सप्ताह पहले घोषणा की। 'लेकिन यह तो सामान्य नियम है, इसलिए मैं यह नहीं कह सकता कि विशेष परिस्थितियों में, जब कोई अंतराल उत्पन्न हो जाए या ऐसी ही कोई स्थिति हो, तो क्या करना अनिवार्य हो सकता है।'

उस वाक्य का विशिष्ट रूप से लचीला नेहरूवादी अंत, वाक्य के आश्चर्यजनक रूप से कठोर स्वरूप का पूरी तरह से प्रतिकार नहीं कर सका।

14.15

हालांकि, दिन बीतने के साथ-साथ यह स्पष्ट होता जा रहा था कि महीने भर से चले आ रहे गतिरोध का समाधान किसी अत्यावश्यक उपाय के बिना संभव नहीं था। टंडन ने नेहरू के कहने पर कार्य समिति का पुनर्गठन करने से इनकार कर दिया, और नेहरू ने समिति में पुनः शामिल होने के

लिए इससे कम किसी भी बात को अस्वीकार कर दिया।

6 सितंबर को, पूरी कार्य समिति ने नाटकीय ढंग से टंडन को अपना इस्तीफा सौंप दिया, इस उम्मीद में कि इससे उस स्थिति को सुधारा जा सकेगा जो खुले संघर्ष की स्थिति में उनके और उनके दोनों के लिए अपरिहार्य हो जाती। विचार यह था कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (जिसकी बैठक दो दिन बाद होनी थी) की कहीं अधिक बड़ी समिति अब एक प्रस्ताव पारित करे जिसमें नेहरू से अपना इस्तीफा वापस लेने का अनुरोध किया जाए, टंडन पर विश्वास व्यक्त किया जाए और उनसे चुनाव द्वारा कार्य समिति का पुनर्गठन करने का अनुरोध किया जाए। इसके बाद नेहरू और टंडन संयुक्त रूप से उम्मीदवारों की सूची तैयार कर सकते थे। टंडन अध्यक्ष बने रह सकते थे; वे प्रधानमंत्री को अपने किसी भी राष्ट्रपतीय विशेषाधिकार का त्याग नहीं करते; वे केवल एआईसीसी के एक प्रस्ताव को लागू करते, जैसा कि वे बाध्य थे।

कार्य समिति का मानना था कि यह बात नेहरू और टंडन दोनों को स्वीकार्य होनी चाहिए थी। लेकिन वास्तव में यह बात दोनों में से किसी को भी स्वीकार्य नहीं थी।

उस शाम नेहरू ने एक जनसभा में कहा कि वे चाहते हैं कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी यह स्पष्ट करे कि कांग्रेस को किस दिशा में जाना चाहिए और इसकी बागडोर किसके हाथ में होनी चाहिए। वे आक्रामक मूड में थे।

अगली शाम को टंडन ने भी एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में अपनी कार्यकारी समिति द्वारा प्रस्तावित प्रतिष्ठा बचाने वाले फॉर्मूले को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा: 'यदि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी मुझसे ए, बी या सी के परामर्श से कार्यकारी समिति का पुनर्गठन करने के लिए कहे, तो मैं एआईसीसी से निवेदन करूंगा कि वह इस अनुरोध पर जोर न दे, बल्कि

मुझे इस पद से मुक्त कर दे।'
उन्होंने इस संकट की पूरी जिम्मेदारी नेहरू के कंधों पर डाल दी।
नेहरू ने कार्यकारी समिति के पुनर्गठन के मुद्दे पर अपना इस्तीफा दे दिया था; और ऐसा करके उन्होंने इसके सदस्यों को भी इस्तीफा देने के लिए मजबूर कर दिया था।
टंडन ने कहा कि वे इन जबरन इस्तीफों को स्वीकार नहीं कर सकते। उन्होंने नेहरू के इस सुझाव को सिरे से खारिज कर दिया कि कांग्रेस कार्य समिति कांग्रेस के प्रस्तावों को लागू करने में विफल रही है। उन्होंने पंडित नेहरू को 'मेरे पुराने मित्र और भाई' कहकर संबोधित किया और कहा, 'नेहरू कार्य समिति के साधारण सदस्य नहीं हैं; वे आज किसी भी अन्य व्यक्ति से कहीं अधिक राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हैं।' लेकिन उन्होंने अपने सैद्धांतिक रुख पर दृढ़ता से जोर दिया और घोषणा की कि यदि मध्यस्थों द्वारा कोई स्वीकार्य समाधान नहीं निकाला जा सका, तो वे अगले दिन कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे देंगे।
और अगले दिन, उन्होंने बड़ी शालीनता से—प्रेस में उनके खिलाफ हुए कई व्यक्तिगत हमलों के बावजूद, नेहरू की रणनीति की अनुचितता के बावजूद, और लड़ाई की कड़वाहट और लंबे समय के बावजूद—यही किया।
एक नेक प्रयास के रूप में, जिसने किसी भी शेष कड़वाहट को काफी हद तक कम करने में मदद की, उन्होंने नव निर्वाचित कांग्रेस अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व वाली कार्यकारी समिति में शामिल हो गए।
यह वास्तव में एक तख्तापलट था; और नेहरू जीत गए थे। जाहिर तौर पर।

14.16

जीप के बैतर किले पहुंचते ही मान और फ़िरोज़ ने घोड़ों पर काठी कसी

और शिकार के लिए निकल पड़े। चिकने मुंशी ने उन्हें देखकर मुस्कुराते हुए वारिस को आवश्यक तैयारियां करने का आदेश दिया। मान ने बड़ी मुश्किल से अपनी भूख को काबू में किया।

'मैं उनके साथ चलूंगा,' वारिस ने कहा, जो पहले से भी ज्यादा खुरदुरा दिख रहा था, शायद इसलिए क्योंकि ऐसा लग रहा था कि उसने कुछ दिनों से दाढ़ी नहीं बनाई थी।

“लेकिन जाने से पहले थोड़ा खाना खा लो,” नवाब साहब ने कहा। दोनों अधीर युवकों ने इनकार कर दिया।

फ़िरोज़ ने कहा, 'हम रास्ते भर खाते-पीते रहे हैं। हम अंधेरा होने से पहले वापस आ जाएंगे।'

नवाब साहब ने महेश कपूर की ओर मुड़कर कंधे उचका दिए।

मुंशी महेश कपूर को उनके कमरों तक ले गए, उनकी चिंता लगभग बेतहाशा बढ़ गई थी। महान महेश कपूर, जिन्होंने कलम की एक ही चोट से विशाल जागीरों को भविष्य के नक्शे से मिटा दिया था, का स्वयं यहाँ उपस्थित होना अत्यंत महत्वपूर्ण था। शायद वे फिर से सत्ता में आ जाएँ और इससे भी बुरा करने की धमकी दें। और नवाब साहब ने न केवल उन्हें यहाँ आमंत्रित किया था, बल्कि उनके साथ बड़े सौहार्दपूर्ण ढंग से व्यवहार भी कर रहे थे। मुंशी ने अपनी बड़ी मूंछों के किनारे को चाटा और तीन सीढ़ियाँ चढ़ते हुए, अत्यंत सौहार्दपूर्ण शब्दों में बड़बड़ाते रहे। महेश कपूर ने कोई जवाब नहीं दिया।

“अब, मंत्री महोदय, मुझे निर्देश दिए गए थे कि आपको किले के सबसे अच्छे सुइट में ठहरना है। जैसा कि आप देख रहे हैं, यहाँ से आम के बाग और फिर जंगल का नज़ारा दिखता है—यहाँ कोई हलचल नहीं है, बैतर कस्बे का शोरगुल नहीं है, कुछ भी ऐसा नहीं है जो आपके ध्यान को भंग करे। और वहाँ, मंत्री महोदय, जैसा कि आप देख सकते हैं, आपका बेटा

और नवाबज़ादा बाग से होकर घोड़े पर सवार होकर जा रहे हैं। आपका बेटा कितनी अच्छी घुड़सवारी करता है! पिछली बार जब वह किले में आया था, तब मुझे उससे मिलने का मौका मिला था। कितना नेक और सभ्य नौजवान है। उसे देखते ही मैं समझ गया था कि वह किसी प्रतिष्ठित परिवार से होगा।"

'तीसरा कौन है?'

'वह, मंत्री साहब, वारिस है,' मुंशी ने कहा, और अपनी आवाज के लहजे से यह जताने में सफल रहा कि वह उस गंवार के बारे में कितना कम सोचता है।

महेश कपूर ने उस गंवार पर और ध्यान नहीं दिया।

'दोपहर का खाना कब है?' उसने अपनी घड़ी देखते हुए पूछा।

'एक घंटे में, मंत्री साहब,' मुंशी ने कहा। 'एक घंटे में। और मैं खुद किसी को भेजकर आपको समय की सूचना दे दूंगा। या शायद आप मैदान में टहलना चाहेंगे? नवाब साहब ने कहा कि आप अगले कुछ दिनों तक कम से कम परेशान होना चाहते हैं—आप शांत वातावरण में चिंतन करना चाहते हैं। लेकिन इस मौसम में बगीचा बहुत हरा-भरा है—शायद थोड़ा ज्यादा बढ़ गया है, बस इतना ही—लेकिन आजकल, नई आर्थिक तंगी के कारण—जैसा कि हुजूर जानते हैं, हमारे जैसे जागीरों के लिए यह सबसे शुभ समय नहीं है—लेकिन हम हर संभव प्रयास करेंगे, हर संभव प्रयास करेंगे कि आपका प्रवास सुखद और विश्रामपूर्ण हो, मंत्री साहब। जैसा कि हुजूर को पहले ही सूचित किया जा चुका होगा, उस्ताद मजीद खान आज दोपहर बाद ट्रेन से यहाँ पहुँचेंगे और आज और कल दोनों दिन हुजूर के मनोरंजन के लिए गीत गाएँगे। नवाब साहब ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि आपको विश्राम और चिंतन के लिए समय दिया जाए।'

चूंकि उनकी अतिशय बकवास का कोई जवाब नहीं मिला, इसलिए मुंशी

ने आगे कहा:

“मदर साहब, नवाब साहब स्वयं विश्राम और चिंतन में विश्वास रखते हैं। जब वे यहाँ होते हैं तो अपना अधिकांश समय पुस्तकालय में बिताते हैं। लेकिन अगर मैं आपको शहर के एक-दो दर्शनीय स्थलों के बारे में बता सकूँ जो हुज़ूर को रुचिकर लगें: लाल कोठी और, बेशक, अस्पताल, जिसकी स्थापना और विस्तार पूर्व नवाबों ने किया था, लेकिन जिसमें हम जनता की भलाई के लिए अपना योगदान जारी रखते हैं। मैंने पहले ही एक यात्रा की व्यवस्था कर दी है।”

‘बाद में,’ महेश कपूर ने कहा। उन्होंने मुंशी की ओर पीठ फेर ली और खिड़की से बाहर देखने लगे। तीनों घुड़सवार जंगल के रास्ते पर रुक-रुक कर दिखाई देते रहे, फिर उनका पीछा करना धीरे-धीरे मुश्किल होता चला गया।

महेश कपूर ने सोचा, अपने पुराने मित्र की जागीर में यहाँ रहना अच्छा है, प्रेम निवास और घर की चहल-पहल से दूर, पत्नी की हल्की-फुल्की दखलंदाज़ी से दूर, रुधिया से आने वाले रिश्तेदारों के लगातार दखल से दूर, रुधिया फार्म के प्रबंधन से दूर, और सबसे बढ़कर ब्रह्मपुर और दिल्ली की उलझी हुई राजनीति से दूर। दरअसल, असामान्य रूप से, वह फिलहाल राजनीति से तंग आ चुके थे। बेशक, वह रेडियो या अख़बारों के पुराने संस्करणों के ज़रिए घटनाओं की जानकारी रख सकते थे, लेकिन उन्हें साथी राजनेताओं और परेशान या ज़िद करने वाले मतदाताओं के साथ सीधे व्यक्तिगत संपर्क की उथल-पुथल से छुटकारा मिल गया था। सचिवालय में अब उनके पास कोई काम नहीं था; उन्होंने विधानसभा से कुछ दिनों की छुट्टी ले ली थी; और वे अपनी नई पार्टी की बैठकों में भी शामिल नहीं हो रहे थे, जिनमें से एक अगले सप्ताह मद्रास में होनी थी। उन्हें अब यह भी यकीन नहीं था कि वे वास्तव में उस पार्टी के सदस्य हैं,

भले ही नाममात्र के लिए ही सही। दिल्ली में टंडनवादियों पर नेहरू की शानदार जीत के बाद, महेश कपूर ने कांग्रेस के प्रति अपने दृष्टिकोण का पुनर्मूल्यांकन करना आवश्यक समझा। कई अन्य अलगाववादियों की तरह, वे भी इस बात से निराश थे कि नेहरू ने पार्टी को विभाजित नहीं किया और उनके साथ नहीं जुड़े। दूसरी ओर, कांग्रेस अब उनके विचारों के प्रति उतनी शत्रुतापूर्ण नहीं लग रही थी। वे विशेष रूप से यह देखने में रुचि रखते थे कि अगर नेहरू अलगाववादियों को वापस लौटने के लिए कहते हैं तो चंचल स्वभाव वाले रफी अहमद किदवई क्या प्रतिक्रिया देंगे। अब तक, किदवई हमेशा की तरह रहस्यमयी रवैया अपनाते रहे थे और विरोधाभासी बयानों की एक श्रृंखला के साथ अपने विकल्प खुले रख रहे थे। उन्होंने बंबई से घोषणा की थी कि वे नेहरू की जीत से प्रसन्न हैं, लेकिन कांग्रेस में अपनी वापसी की संभावना कम ही देखते हैं। उन्होंने कहा, "अब जब उन्हें एहसास हो गया है कि उनकी चुनावी संभावनाएं उज्ज्वल नहीं हैं, तो उन्होंने श्री टंडन का साथ छोड़ दिया है और पंडित नेहरू की उम्मीदवारी का समर्थन किया है। यह सरासर अवसरवादिता है। यदि ऐसी अवसरवादिता को बर्दाश्त किया गया तो देश का भविष्य अंधकारमय है।" हालांकि, चतुर श्री किदवई ने आगे कहा कि यदि पंडित नेहरू उत्तर प्रदेश, पूर्व प्रदेश, मध्य भारत और पंजाब जैसे राज्यों की कार्यकारिणी में अभी भी जमे हुए कुछ 'अवांछित तत्वों' को हटा दें, तो 'सब कुछ ठीक हो जाएगा'। मामले को और भी पेचीदा बनाने के लिए, उन्होंने उल्लेख किया कि केएमपीपी समाजवादी पार्टी के साथ चुनावी गठबंधन के बारे में सोच रही है, और तब 'अधिकांश राज्यों में पार्टी की सफलता की संभावनाएं बहुत उज्ज्वल हैं'। (समाजवादी पार्टी ने किसी के साथ गठबंधन करने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई।) कुछ दिनों बाद किदवई ने अपनी पार्टी को भंग करके कांग्रेस में फिर से शामिल होने की

शर्त के रूप में कांग्रेस में 'भ्रष्ट तत्वों' को निकालने का सुझाव दिया। हालांकि, के-के गठबंधन के दूसरे सदस्य कृपलानी ने जोर देकर कहा कि केएमपीपी को छोड़कर कांग्रेस में फिर से शामिल होने का कोई सवाल ही नहीं उठता, चाहे उसमें कोई भी आंतरिक फेरबदल क्यों न हो जाए।

किदवई एक तरह से नदी के डॉल्फिन जैसा था। उसे गाद वाले पानी में तैरने और अपने आसपास के मगरमच्छों को चकमा देने में मजा आता था।

इस बीच, अन्य सभी दल नेहरू द्वारा कांग्रेस में अपनी शक्ति को पुनः स्थापित करने पर अलग-अलग स्तर की तीखी प्रतिक्रिया दे रहे थे। समाजवादी नेताओं में से एक ने कांग्रेस अध्यक्ष और प्रधानमंत्री पद के संयोजन को तानाशाही का संकेत बताया; एक ने कहा कि यह कोई चिंताजनक संभावना नहीं है, क्योंकि नेहरू में तानाशाह बनने के लक्षण नहीं हैं; और एक ने बस इतना कहा कि एक रणनीतिक चाल के रूप में, कांग्रेस ने आम चुनावों में अपनी संभावनाओं को बेहतर बनाया है।

दाईं ओर, हिंदू महासभा के अध्यक्ष ने इसे 'तानाशाही की घोषणा' बताते हुए इसकी कड़ी निंदा की। उन्होंने आगे कहा: 'यद्यपि इस तानाशाही ने पंडित नेहरू को गौरव के सर्वोच्च शिखर तक पहुँचाया है, लेकिन इसमें उनके पतन के बीज भी निहित हैं।'

महेश कपूर ने अपने मन से विचारों और जानकारियों की इस उलझन को दूर करने का प्रयास किया और तीन सीधे-सादे सवालों पर विचार करने लगे। चूंकि वे राजनीति से ऊब चुके थे, तो क्या उन्हें राजनीति छोड़कर संन्यास ले लेना चाहिए? यदि नहीं, तो उनके लिए सबसे उपयुक्त पार्टी कौन सी होगी—या क्या उन्हें निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ना चाहिए? और यदि वे राजनीति में बने रहने और अगला चुनाव लड़ने का फैसला करते हैं, तो उनके लिए सबसे उपयुक्त जगह कौन सी होगी? वे

छत पर गए, जहां एक मीनार में बैठा उल्लू उनके आने से चौंक गया; वे गुलाब के बगीचे में गए, जहां बिना फूलों वाली झाड़ियाँ ताज़ी हरी घास के किनारे थीं; और वे किले के कुछ कमरों में घूमे, जिनमें नीचे स्थित विशाल इमामबाड़ा भी शामिल था। दूसरे बगीचे में शर्मा द्वारा कही गई बातें उनके मन में बार-बार गूंज रही थीं। लेकिन जब तक चिंतित मुंशी ने उन्हें ढूंढकर बताया कि नवाब साहब दोपहर के भोजन पर उनका इंतजार कर रहे हैं, तब तक वे किसी समाधान के करीब नहीं पहुंच पाए थे।

14.17

नवाब साहब पिछले एक घंटे से विशाल, गुंबददार, धूल से भरी लाइब्रेरी में हरे कांच की रोशनदान वाली खिड़की के पास बैठे थे और मस्त की कविताओं के अपने संस्करण पर काम कर रहे थे, जिनके कुछ दस्तावेज़ और पांडुलिपियाँ किले में ही रखी थीं। इस भव्य कमरे की बदहाली और इसमें रखी सामग्री की दयनीय स्थिति देखकर वे बहुत दुखी थे। उन्होंने इस यात्रा के अंत में मस्त की सभी सामग्री को अपने ब्रह्मपुर स्थित लाइब्रेरी में स्थानांतरित करने की योजना बनाई थी, साथ ही बैतर किले की लाइब्रेरी की कुछ अन्य बहुमूल्य सामग्री को भी। अपनी सीमित आर्थिक स्थिति के कारण, किले की लाइब्रेरी का रखरखाव करना उनके लिए असंभव होता जा रहा था—और धूल, अव्यवस्था और सिल्वरफिश का प्रकोप महीने दर महीने बदतर होता जा रहा था।

जब उन्होंने महारानी विक्टोरिया, राजा एडवर्ड सप्तम और नवाब साहब के पूर्वजों के धुंधले चित्रों से सजे विशाल, अंधकारमय भोजन कक्ष में अपने मित्र का अभिवादन किया, तो उनके मन में कुछ यही बात थी।

नवाब साहब ने कहा, 'मैं आपको दोपहर के भोजन के बाद पुस्तकालय ले जाऊंगा।'

'अच्छा,' महेश कपूर ने कहा। 'लेकिन मुझे याद है कि पिछली बार जब मैं

आपकी लाइब्रेरी में गया था, तो आपकी एक किताब नष्ट हो गई थी।'
नवाब साहब ने सोच-विचार करते हुए कहा, 'खैर, मुझे नहीं पता कि इनमें से कौन सी स्थिति बदतर है: मारह के राजा के मस्तिष्क के दौरे या सिल्वरफिश का कैंसर।'
महेश कपूर ने कहा, 'आपको अपनी किताबों को बेहतर ढंग से संभाल कर रखना चाहिए। यह देश के सबसे बेहतरीन निजी पुस्तकालयों में से एक है। अगर किताबें क्षतिग्रस्त हो गईं तो यह एक त्रासदी होगी।'
नवाब साहब ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, 'मुझे लगता है कि आप इसे राष्ट्रीय धरोहर कह सकते हैं।'
'हां,' महेश कपूर ने कहा।
लेकिन मुझे संदेह है कि राष्ट्रीय कोष इसके रखरखाव में मदद करने के लिए खुद को खोलेगा।
'नहीं।'
‘और, आप जैसे लुटेरों की वजह से, मैं अब ऐसा बिल्कुल नहीं कर सकता।’ महेश कपूर हँसे। ‘मैं सोच रहा था कि आपका इरादा क्या है।’
वैसे भी, अगर आप सुप्रीम कोर्ट में अपना केस हार भी जाते हैं, तो भी आप मुझसे कुछ हज़ार गुना ज़्यादा अमीर होंगे। और मैं अपनी रोज़ी-रोटी के लिए मेहनत करता हूँ, आपके विपरीत— आप तो बस एक शोपीस हैं।'
नवाब साहब ने बिरयानी उठाई। उन्होंने पलटवार करते हुए कहा, 'तुम निकम्मे हो। एक राजनेता आखिर करता क्या है, सिवाय दूसरों के लिए मुसीबत खड़ी करने के?'
'या फिर दूसरों द्वारा पैदा की गई परेशानियों का मुकाबला करें,' महेश कपूर ने कहा।
न तो उन्हें और न ही नवाब साहब को यह बताने की ज़रूरत थी कि वे

किस बारे में बात कर रहे थे। महेश कपूर, जब कांग्रेस में थे, तब पुनर्वास मंत्री को प्रधानमंत्री से संपर्क करने में सफल रहे थे ताकि सरकार नवाब साहब और बेगम आबिदा खान को ब्रह्मपुर स्थित उनकी संपत्ति पर स्थायी अधिकार देने वाले प्रमाण पत्र जारी कर सके। यह इसलिए ज़रूरी था ताकि बेगम आबिदा खान के पति के स्थायी रूप से विस्थापित होने के आधार पर जारी किए गए विस्थापित संपत्ति के संरक्षक-महानिदेशक के आदेश का खंडन किया जा सके। उनका मामला उन कई मामलों में से एक था जहाँ सरकारी स्तर पर इसी तरह की कार्रवाई की आवश्यकता पड़ी थी।

पूर्व राजस्व मंत्री ने आगे कहा, 'अच्छा, जब आपके आधे किराए गायब हो जाएंगे तो आप खर्च में कटौती कहां करेंगे? मुझे सच में उम्मीद है कि आपके पुस्तकालय को नुकसान नहीं होगा।'

नवाब साहब ने माथे पर शिकन डाली। 'कपूर साहब,' उन्होंने कहा, 'मुझे अपने घर से ज़्यादा उन लोगों की चिंता है जो मुझ पर निर्भर हैं। बैतर के लोग मुझसे उम्मीद करते हैं कि मैं हमारे त्योहारों, विशेषकर मुहर्रम के लिए, एक शानदार आयोजन करूँ। मुझे किसी न किसी तरह से इसे निभाना ही होगा। मेरे कुछ और भी खर्चे हैं— अस्पताल वगैरह, स्मारक, अस्तबल, उस्ताद मजीद खान जैसे संगीतकार जो साल में दो बार मुझसे कार्यक्रम की उम्मीद करते हैं, मुझ पर निर्भर कवि, विभिन्न दान-पत्र, पेंशन; भगवान—और मेरे मुंशी—न जाने क्या-क्या। कम से कम मेरे बेटे मुझसे इतनी माँग नहीं करते; वे शिक्षित हैं, उनके अपने पेशे हैं, वे मेरी स्थिति के अन्य लोगों के बेटों की तरह फिजूलखर्ची नहीं करते—'

वह अचानक रुक गया, मान और सईदा बाई के बारे में सोचते हुए।

'लेकिन मुझे बताओ,' उसने एक छोटे से विराम के बाद पूछा, 'तुम अपनी तरफ से क्या करने जा रहे हो?'

‘मैं?’ महेश कपूर ने कहा।
‘आप यहीं से चुनाव क्यों नहीं लड़ते?’
‘मैंने तुम्हारे साथ जो किया है उसके बाद—तुम चाहते हो कि मैं यहाँ से भाग जाऊँ?’
'नहीं, सचमुच, कपूर साहब, आपको ऐसा करना चाहिए।'
'मेरे पोते का यही कहना है।'
‘वीना का लड़का?’
'हां। उन्होंने यह पता लगा लिया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में से यह निर्वाचन क्षेत्र मेरे लिए सबसे अनुकूल है।'
नवाब साहब ने अपने मित्र को देखकर मुस्कुराया और अपने परदादा के चित्र की ओर देखा। महेश कपूर की टिप्पणी ने उन्हें अपने पोतों, हसन और अब्बास की याद दिला दी, जिनका नाम मुहर्रम के त्योहार के शहीद हुसैन के भाइयों के नाम पर रखा गया था। उन्होंने कुछ क्षण ज़ैनब और उसके वैवाहिक जीवन के दुख के बारे में भी सोचा। और क्षण भर के लिए, बड़े दुख के साथ, अपनी पत्नी को भी याद किया, जो किले के ठीक बाहर कब्रिस्तान में दफ़न थीं।
‘लेकिन आपको ऐसा क्यों लगता है कि यह इतना अच्छा विचार है?’ महेश कपूर पूछ रहे थे।
एक नौकर ने नवाब साहब को कुछ फल भेंट किए—जिनमें शरीफा भी शामिल थे, जिनका छोटा सा मौसम अभी शुरू ही हुआ था—लेकिन नवाब साहब ने उन्हें लेने से इनकार कर दिया। फिर उन्होंने अपना मन बदल लिया, तीन-चार शरीफा फल छूकर देखे और उनमें से एक चुन लिया। उन्होंने उस गांठदार फल को बीच से तोड़ा और चम्मच से उसका स्वादिष्ट सफेद गूदा निकाल लिया, और काले बीज (जो उन्होंने मुंह से चम्मच में डाल दिए) अपनी थाली के किनारे रख दिए। एक-दो मिनट तक

वे चुप रहे। महेश कपूर ने भी एक शरीफा फल खा लिया।

'कपूर साहब, बात कुछ इस तरह है,' नवाब साहब ने सोच-विचार करते हुए अपनी शरीफ़ा के दो बराबर कटे हुए हिस्सों को एक साथ रखा और फिर अलग कर दिया। 'अगर आप इस निर्वाचन क्षेत्र की आबादी देखें, तो यह लगभग मुसलमानों और हिंदुओं में बराबर बंटी हुई है। यह ठीक वैसी ही जगह है जहाँ हिंदू सांप्रदायिक पार्टियाँ लोगों को मुस्लिम-विरोधी दहशत में भड़का सकती हैं। उन्होंने ऐसा करना शुरू भी कर दिया है। और हर दिन हिंदुओं और मुसलमानों को एक-दूसरे से नफरत करना सीखने के नए-नए कारण मिलते हैं। अगर यह पाकिस्तान की कोई बेवकूफी नहीं है —कश्मीर पर कोई खतरा, सतलुज नदी के पानी को मोड़ने की कोई साजिश, चाहे वह वास्तविक हो या काल्पनिक, या शेख अब्दुल्ला को पकड़ने की या हिंदुओं पर कर लगाने की—तो यह हमारे अपने देश में ही पैदा हुई कोई बेवकूफी है, जैसे अयोध्या की उस मस्जिद को लेकर विवाद जो दशकों तक शांत रहने के बाद हाल ही में अचानक फिर से भड़क उठा है—या हमारा अपना ब्रह्मपुर वाला मामला, जो अलग है—लेकिन बहुत ज्यादा अलग नहीं है। बकरीद कुछ ही दिनों में आ रही है; कहीं न कहीं कोई बकरी की जगह गाय को जरूर मार देगा, और फिर नई मुसीबत खड़ी हो जाएगी। और सबसे बुरी बात यह है कि इस साल मुहर्रम और दशहरा एक ही दिन पड़ रहे हैं।

महेश कपूर ने सिर हिलाया, और नवाब साहब ने बोलना जारी रखा। 'मैं जानता हूँ कि यह घर मुस्लिम लीग के गढ़ों में से एक था। इस विषय पर मैं अपने पिता या भाई के विचारों से कभी सहमत नहीं रहा, लेकिन लोग इन मामलों में भेदभाव नहीं करते। अग्रवाल जैसे लोगों के लिए बैतर का नाम ही बैल के लिए लाल कपड़े—या शायद हरे कपड़े—के समान है। अगले हफ्ते वह विधानसभा में अपना हिंदी विधेयक जबरदस्ती पारित

करवाने की कोशिश करेगा, और उर्दू, मेरी भाषा, मस्त की भाषा, इस प्रांत के अधिकांश मुसलमानों की भाषा, पहले से कहीं अधिक बेकार हो जाएगी। हमारी और हमारी संस्कृति की रक्षा कौन कर सकता है? केवल आप जैसे लोग, जो हमें वैसे ही जानते हैं जैसे हम हैं, जिनके हमारे बीच मित्र हैं, जो हमारे बारे में पूर्वाग्रह नहीं रखते क्योंकि आप हमें अपने अनुभव से परख सकते हैं।'

महेश कपूर ने कुछ नहीं कहा, लेकिन नवाब साहब द्वारा उन पर जताए गए भरोसे से वे भावुक हो गए थे।

नवाब साहब ने माथे पर शिकन डाली, चम्मच से अपने काले शरीफा के दानों को दो अलग-अलग ढेरों में बाँटा और आगे बोले, "शायद देश के इस हिस्से में हालात बाकी जगहों से ज़्यादा खराब हैं। यह पाकिस्तान के संघर्ष का केंद्र था, यहीं पर बहुत सी कड़वाहट पैदा हुई, लेकिन हममें से जो लोग अपना वतन नहीं छोड़ पाए या जिन्होंने न छोड़ने का फैसला किया, वे अब एक ऐसे इलाके में अल्पसंख्यक हैं जहाँ ज़्यादातर हिंदू आबादी है। चाहे हमारे चारों ओर कितनी भी मुसीबतें क्यों न हों, मैं शायद किसी तरह अपना गुजारा कर लूँगा; फिरोज, इम्तियाज और ज़ैनब भी—जिनके पास साधन होते हैं, वे हमेशा किसी न किसी तरह गुज़ारा कर लेते हैं। लेकिन ज़्यादातर आम लोग जिनसे मैं बात करता हूँ, वे उदास और डरे हुए हैं; वे घिरे हुए महसूस करते हैं। वे बहुसंख्यकों पर भरोसा नहीं करते, और उन्हें लगता है कि बहुसंख्यक उन पर भरोसा नहीं करते। काश आप यहीं से लड़ते, कपूर साहब। मेरे समर्थन के अलावा, मैंने सुना है कि आपके बेटे ने सलीमपुर इलाके में अपनी लोकप्रियता बढ़ा ली है।" नवाब साहब मुस्कुराए। "आप क्या सोचते हैं?"

महेश कपूर ने पूछा, 'आप खुद चुनाव क्यों नहीं लड़ते?' महेश कपूर ने जवाब दिया, 'सच कहूँ तो, अगर मुझे चुनाव लड़ना ही पड़े, तो मैं अपने

पुराने शहरी निर्वाचन क्षेत्र मिसरी मंडी से चुनाव लड़ना पसंद करूँगा, भले ही उसकी सीमाएँ बदल गई हों—या फिर, अगर ग्रामीण क्षेत्र से ही चुनाव लड़ना पड़े, तो रुधिया पश्चिम से, जहाँ मेरा खेत है। सलीमपुर-सह-बैतार मेरे लिए अपरिचित है। यहाँ मेरा कोई व्यक्तिगत संबंध नहीं है—और न ही किसी से कोई व्यक्तिगत दुश्मनी है।' महेश कपूर ने झा के बारे में एक पल सोचा, फिर आगे कहा, 'आपको ही चुनाव लड़ना चाहिए। आप आसानी से जीत जाएँगे।'

नवाब साहब ने सिर हिलाया। उन्होंने धीरे से कहा, 'मैंने इस बारे में सोचा है। लेकिन मैं राजनीतिज्ञ नहीं हूँ। मेरा काम है—कम से कम साहित्यिक काम तो है ही। मुझे विधानसभा में बैठना अच्छा नहीं लगेगा। मैं वहाँ जा चुका हूँ और कार्यवाही सुन चुका हूँ, और सच कहूँ तो, मैं उस तरह के जीवन के लिए उपयुक्त नहीं हूँ। और मुझे यकीन नहीं है कि मैं आसानी से जीत जाऊँगा। सबसे पहले तो, हिंदू वोट मेरे लिए एक समस्या होगी। और सबसे महत्वपूर्ण बात, मैं बैतर और गाँवों में जाकर लोगों से वोट नहीं माँग सकता—कम से कम अपने लिए तो नहीं। मैं ऐसा करने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाऊँगा।'

उन्होंने थके हुए स्वर में दीवार पर लगी तलवार लिए तस्वीर की ओर फिर देखा और आगे बोले, "लेकिन मैं चाहता हूँ कि यहाँ से एक सभ्य, योग्य व्यक्ति जीते। हिंदू महासभा और उनके साथियों के अलावा, यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है जिसके प्रति मैंने अच्छा व्यवहार किया है और इसी वजह से वह मुझसे नफरत करता है। वह स्थानीय कांग्रेस का टिकट पाने की कोशिश कर रहा है, और अगर वह स्थानीय विधायक बन गया, तो वह मुझे बहुत नुकसान पहुँचा सकता है। मैंने पहले ही अपना एक उम्मीदवार नामित करने का फैसला कर लिया है जो इस व्यक्ति के कांग्रेस का नामांकन मिलने की स्थिति में निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव

लड़ेगा। लेकिन अगर आप चुनाव लड़ते हैं—चाहे इस केएमपीपी से हों, कांग्रेस से हों या निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में—तो मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि आपको मेरा और मेरे उम्मीदवार का समर्थन मिले।"

महेश कपूर ने मुस्कुराते हुए कहा, 'वह बहुत ही आज्ञाकारी उम्मीदवार होंगे। या फिर आत्म-त्यागी। राजनीति में ऐसा कम ही देखने को मिलता है।'

नवाब साहब ने कहा, 'जीप से उतरते समय आपकी उससे थोड़ी देर के लिए मुलाकात हुई थी। वह वारिस नाम का आदमी है।'

'वारिस!' महेश कपूर जोर से हँसे। 'तुम्हारा वो नौकर, वो दूल्हा या जो भी हो, वो बिना दाढ़ी वाला आदमी जो फिरोज और मेरे बेटे के साथ शिकार पर गया था?'

'जी हां,' नवाब साहब ने कहा।

'आपको क्या लगता है कि वह किस तरह का विधायक बनेगा?'

'उससे बेहतर जिसे वह विस्थापित करेगा।'

'तुम्हारा मतलब है, धूर्त होने से मूर्ख होना बेहतर है।'

'देहाती होना तो निश्चित रूप से बेहतर है।'

'आप वारिस को लेकर गंभीर नहीं हैं।'

नवाब साहब ने कहा, 'उसे कम मत समझना। वह थोड़ा रूखा हो सकता है, लेकिन काबिल और मजबूत है। वह हर बात को साफ-साफ देखता है, जो चुनाव प्रचार में बहुत मददगार साबित होता है। उसे प्रचार करना पसंद है, चाहे अपने लिए हो या आपके लिए। वह इस इलाके में काफी लोकप्रिय है। औरतें उसे आकर्षक मानती हैं। वह मेरे और परिवार के प्रति, खासकर फिरोज के प्रति पूरी तरह वफादार है। वह हमारे लिए कुछ भी कर सकता है। मैं सचमुच ऐसा कह रहा हूँ—वह हमें नुकसान पहुँचाने वालों को गोली मारने की धमकी देता रहता है।' महेश कपूर थोड़ा घबराए

हुए दिखे। नवाब साहब ने थोड़ी नाराज़गी और थोड़ी नरमी के साथ कहा, ‘वैसे, उसे मान पसंद है; जब वह यहाँ आया था तो उसे जागीर घुमाने ले गया था। और उसके दाढ़ी न बनाने का एकमात्र कारण यह है कि वह अमावस्या के दिखने से लेकर दस दिन बाद बकरीद तक दाढ़ी नहीं बनाता। ऐसा नहीं है कि वह बहुत धार्मिक है।’ लेकिन अगर उसे किसी कारणवश दाढ़ी नहीं बनानी पड़ती, तो उसे लगता है कि वह इस छूट का फायदा उठा सकता है।

‘हम्म,’ महेश कपूर ने कहा।

‘इस बारे में सोचो।’

‘मैं करूँगा। मैं इस बारे में सोचूँगा। लेकिन मेरा दृष्टिकोण क्या है, यह मेरे मन में मौजूद तीन सवालों में से एक है।’ ‘बाकी दो सवाल कौन से हैं?’

‘अच्छा—कौन सी पार्टी?’

नवाब साहब ने बिना किसी झिझक के उस पार्टी का नाम लिया जिसने उन्हें बेदखल करने के लिए इतना कुछ किया था, और कहा, 'कांग्रेस।'

‘क्या आपको ऐसा लगता है?’ महेश कपूर ने कहा। ‘क्या आपको ऐसा लगता है?’

नवाब साहब ने सिर हिलाया, अपनी थाली में बचे हुए टुकड़ों को देखा और फिर उठ खड़े हुए। 'और आपका तीसरा सवाल?'

‘क्या मुझे राजनीति में बने रहना चाहिए या नहीं।’

नवाब साहब ने अविश्वास भरी निगाहों से अपने पुराने दोस्त की ओर देखा। उन्होंने कहा, 'यह कुछ ऐसा है जो तुमने आज सुबह खाया है। या फिर मेरे कान में मोम का एक टुकड़ा फंसा हुआ है।'

14.18

इस बीच, वारिस किले में अपने नियमित कर्तव्यों और मुंशी की दखलंदाजी से दूर रहकर खूब आनंद ले रहा था। वह खुशी-खुशी घोड़े पर

सवार होकर जा रहा था; और यद्यपि उसके पास लाइसेंस वाली बंदूक थी, फिर भी उसने उसका इस्तेमाल नहीं किया, क्योंकि शिकार करना उसका अधिकार नहीं था। मान और फ़िरोज़ को शिकार के साथ-साथ घुड़सवारी का भी उतना ही आनंद आ रहा था; और उनके लिए पर्याप्त शिकार मौजूद था, जिसे वे देख या पीछा कर सकते थे, भले ही उन्होंने सक्रिय रूप से उसकी तलाश न की हो। जागीर का वह हिस्सा जहाँ से वे गुजर रहे थे, घने जंगल, पथरीली मिट्टी और इस मौसम में छिटपुट दलदल का मिश्रण था। दोपहर के समय, मान ने दूर दलदल के किनारे से नीलगाय के झुंड को पानी में छपछपाते हुए देखा। उसने निशाना साधा, गोली चलाई, लेकिन निशाना चूक गया, और उसने मन ही मन खुद को कोसा। बाद में, फ़िरोज़ को शानदार सींगों वाला एक बड़ा चित्तीदार हिरण मिला। वारिस ने उस जगह को नोट कर लिया, और जब वे पास ही एक छोटे से गाँव से गुजरे, तो उसने वहाँ के एक व्यक्ति से कहा कि वह उसे शाम तक बैलगाड़ी पर किले तक पहुँचा दे।

हिरण और जंगली सूअर, जो उन्हें कभी-कभार ही दिखाई देते थे, उनके अलावा जंगल में बड़ी संख्या में बंदर, विशेषकर लंगूर, और मोर सहित कई प्रकार के पक्षी बिखरे हुए थे। उन्होंने एक मोर को नाचते हुए भी देखा। मान आनंद से झूम उठा।

दिन सुहावना था, लेकिन छाया की कोई कमी नहीं थी, और वे बीच-बीच में आराम करते रहे। वारिस ने देखा कि दोनों युवक एक-दूसरे की संगति में कितने आनंदित थे, और जब भी उसका मन करता, वह भी उनकी हंसी-मजाक में शामिल हो जाता। उसे मान पहली नज़र में ही पसंद आ गया था, और फ़िरोज़ की उससे दोस्ती ने उसकी पसंद को और भी पुख्ता कर दिया।

दोनों युवा स्वामी, जो कुछ समय से ब्रह्मपुर में बंद थे, खुले में आकर खुश

थे। वे एक विशाल बरगद के पेड़ की छाया में बैठे बातें कर रहे थे।
‘क्या तुमने कभी मोर खाया है?’ वारिस ने मान से पूछा।
‘नहीं,’ मान ने कहा।
वारिस ने कहा, 'यह बेहतरीन मांस है।'
फिरोज ने कहा, 'चलो वारिस, नवाब साहब को जागीर में मोर का शिकार करना पसंद नहीं है।'
‘नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं,’ वारिस ने कहा। ‘लेकिन अगर गलती से उनमें से किसी एक को गोली मार दी, तो बेहतर है कि उसे खा ही लो। उसे गीदड़ों के लिए छोड़ने का कोई फायदा नहीं।’
‘गलती से!’ फिरोज ने कहा।
‘जी हां, जी हां,’ वारिस ने कुछ मनगढ़ंत कहानी सुनाने या याद करने की कोशिश करते हुए कहा। ‘एक बार जब मैं एक पेड़ के नीचे बैठा था—ठीक वैसे ही जैसे हम अभी बैठे हैं—तो अचानक झाड़ियों में सरसराहट हुई और मुझे लगा कि कोई जंगली सूअर है—तो मैंने उस पर गोली चला दी, लेकिन वह तो सिर्फ एक मोर था। बेचारा। बड़ा स्वादिष्ट था।’
फ़िरोज़ ने भौंहें चढ़ाईं। मान हँस पड़ा।
‘क्या मैं आपको अगली बार ऐसा करने पर बताऊँ?’ वारिस ने पूछा। ‘आपको पसंद आएगा, छोटे साहब, मैं आपको बताता हूँ। मेरी पत्नी बेहतरीन खाना बनाती है।’
'हां, मुझे पता है,' फ़िरोज़ ने कहा, जिसने कई बार उसके द्वारा पकाया गया जंगली मुर्गा खाया था।
वारिस ने कहा, 'छोटे साहब हमेशा सही काम करने में विश्वास रखते हैं। इसीलिए वे वकील हैं।'
'मुझे लगा कि यह अयोग्यता का कारण है,' मान ने कहा।
वारिस ने दावा किया, 'जल्द ही, अगर उन्हें न्यायाधीश बना दिया गया, तो

वे जमींदारी फैसलों को पलटवा देंगे।'

तीस फीट से भी कम दूरी पर झाड़ियों में अचानक हलचल हुई। एक विशाल जंगली सूअर, अपने नुकीले दांत नीचे किए हुए, उनकी ओर दौड़ता हुआ आया, मानो उनकी ओर या उनके पार जाने का इरादा रखता हो। बिना सोचे-समझे, मान ने अपनी राइफल उठाई और - बिना सचेत रूप से निशाना साधे - उस पर गोली चला दी जब वह मात्र बारह फीट की दूरी पर था।

सूअर वहीं गिर पड़ा। तीनों डर के मारे खड़े हो गए, फिर थोड़ी दूरी पर खड़े होकर उसकी गुर्राहट और चीखें सुनीं और उसे लगभग एक मिनट तक छटपटाते देखा, जबकि उसका खून आसपास के पत्तों और कीचड़ में फैल रहा था।

'हे भगवान—' फ़िरोज़ ने उस जानवर के विशाल दांतों को घूरते हुए कहा।

'बिल्कुल भी मोर नहीं,' वारिस ने टिप्पणी की।

मान ने थोड़ा सा नृत्य किया। वह थोड़ा हैरान और खुद से बहुत खुश लग रहा था।

फिरोज ने कहा, 'अच्छा, हम इसका क्या करेंगे?'

'बेशक, इसे खा लो,' मान ने कहा।

'बेवकूफ मत बनो—हम इसे नहीं खा सकते। हम इसे किसी न किसी को दे देंगे। वारिस बता सकता है कि कौन सा नौकर इसे खाने पर आपत्ति नहीं करेगा।' उन्होंने सूअर को वारिस के घोड़े पर लाद दिया। शाम होते-होते वे सब थक चुके थे। मान अपनी राइफल काठी पर टिकाए, लगाम बाएं हाथ में पकड़े और दाएं हाथ से पोलो के स्ट्रोक का अभ्यास कर रहा था। वे आम के बाग से कुछ सौ गज की दूरी पर आ चुके थे और शाम के भोजन से पहले आराम करने की उम्मीद कर रहे थे। हिरण उनसे पहले ही आ चुका होगा; शायद इस समय उसे पकाया जा रहा होगा। लगभग

सूर्यास्त हो चुका था। किले की मस्जिद से उन्हें मुअज़्ज़िन की सुरीली आवाज़ में शाम की अज़ान सुनाई दे रही थी। फ़िरोज़, जो सीटी बजा रहा था, रुक गया।

वे लगभग बाग की सीमा पर ही पहुँच गए थे कि आगे चल रहे मान ने रास्ते में एक जंगली बिल्ली देखी—लगभग दो फीट लंबी, फुर्तीली और लंबी टांगों वाली, जिसके बाल उसे लगभग सुनहरे लग रहे थे, और उसकी तीखी, हरी आँखें उस पर टकटकी लगाए, मानो क्रूरता से घूर रही हों। घोड़ा, जिसे सूअर के वजन या उसकी मौत की गंध से कोई फर्क नहीं पड़ा था, तुरंत रुक गया, और मान ने सहज रूप से फिर से अपनी राइफल उठा ली।

‘नहीं—नहीं—मत करो—’ फ़िरोज़ चिल्लाया।

जंगली बिल्ली रास्ते के दाहिनी ओर लंबी घास में उछलकर भाग गई। मान ने गुस्से से फ़िरोज़ की ओर रुख किया।

‘तुम्हारा मतलब क्या है—नहीं? मैं तो ले लेता।’

'यह कोई बाघ या तेंदुआ नहीं है - इनमें से किसी का भी शिकार करने में कोई वीरता नहीं है।'

वैसे भी, मेरे पिता उन जानवरों को मारना पसंद नहीं करते जिन्हें हम खा नहीं सकते—जब तक कि, ज़ाहिर है, कोई तत्काल खतरा न हो।'

‘चलो फिरोज, मुझे पता है तुमने पहले भी पैंथर का शिकार किया है,’ मान ने कहा।

‘वैसे, मैं जंगली बिल्लियों का शिकार नहीं करता। वे बहुत खूबसूरत और हानिरहित होती हैं। मुझे वे बहुत पसंद हैं।’

'तुम कितने बड़े मूर्ख हो,' मान ने पछतावे भरे स्वर में कहा।

फ़िरोज़ ने समझाया, “हम सभी को जंगली बिल्लियाँ पसंद हैं।” वह नहीं चाहता था कि उसका दोस्त नाराज़ रहे। “एक बार इम्तियाज़ ने एक

बिल्ली को गोली मार दी थी, और ज़ैनब ने कई दिनों तक उससे बात नहीं की।"

मान अब भी अपना सिर हिला रहा था। फ़िरोज़ उसके पास आया और उसके कंधे पर हाथ रख दिया। बाग पार करते-करते मान शांत हो गया।

'क्या हिरणों को ले जाने वाली कोई गाड़ी इस तरफ से गुजरी थी?' वारिस ने एक बूढ़े व्यक्ति से पूछा जो हाथ में छड़ी लेकर बगीचे से गुजर रहा था।

'नहीं साहब, मैंने ऐसा कुछ नहीं देखा,' बूढ़े ने कहा। 'लेकिन मैं यहाँ अभी कुछ ही समय से हूँ।' उसने बंधे हुए सूअर को घूरकर देखा, जिसका विशाल दाँतों वाला सिर वारिस के घोड़े के पिछले हिस्से पर लटका हुआ था।

साहब कहलाने से प्रसन्न वारिस मुस्कुराया और आशावादी स्वर में बोला:

'अब तक तो यह रसोई तक पहुँच गया होगा। और हमें शाम की नमाज़ के लिए देर हो जाएगी। बहुत बुरा हुआ,' उसने मुस्कुराते हुए कहा।

फिरोज ने कहा, 'मुझे नहाना है।' उसने वारिस से पूछा, 'क्या तुमने हमारा सामान मेरे कमरे में रखवा दिया है?' 'मान साहब मेरे कमरे में सो रहे हैं।'

'हां, मैंने निकलने से ठीक पहले आदेश दिए थे। पिछली बार भी वह वहीं सोया था,' वारिस ने कहा। 'लेकिन मुझे शक है कि वह आज रात सो पाएगा, क्योंकि वह भयानक उल्लू सुबह तक गरारे करता रहेगा। पिछली बार तो उल्लू ने गरारे किए थे।'

फ़िरोज़ ने मान से कहा, 'वारिस जितना है उससे कहीं ज़्यादा बेवकूफ़ होने का दिखावा करता है।' 'आज रात खाने के बाद उस्ताद मजीद खान गाना गाएंगे।'

'अच्छा,' मान ने कहा।

जब मैंने आपके पसंदीदा गायक को बुलाने का सुझाव दिया, तो मेरे पिता नाराज हो गए। ऐसा नहीं है कि मैं सचमुच गंभीर थी।

‘खैर, वीना खान साहब से संगीत सीखती है, इसलिए हमें इस तरह की गरारे करने की आदत है,’ मान ने कहा।
फिरोज ने घोड़े से उतरते हुए और अंगड़ाई लेते हुए कहा, 'हम यहाँ पहुँच गए हैं।'
14.19
शानदार भोजन में भुना हुआ हिरण का मांस भी शामिल था। उन्होंने अंधेरे पैनल वाले भोजन कक्ष में नहीं, बल्कि कई खुले आंगनों में से सबसे ऊंचे आंगन में, साफ आसमान के नीचे भोजन किया। दोपहर के भोजन के विपरीत, नवाब साहब रात के भोजन के दौरान काफी शांत रहे; वे अपने मुंशी के बारे में सोच रहे थे, जिसने उस्ताद मजीद खान द्वारा तय की गई फीस की राशि के बारे में शिकायत करके उन्हें नाराज कर दिया था। 'क्या? यह सब कुछ मामूली कीमत पर?' मुंशी का यही विचार था।
रात के खाने के बाद वे उस्ताद मजीद खान का प्रवचन सुनने के लिए इमामबाड़ा में चले गए। चूंकि मुहर्रम अभी कुछ सप्ताह दूर था, इसलिए इमामबाड़ा आम सभा कक्ष के रूप में इस्तेमाल होता रहा; दरअसल, नवाब साहब के पिता मुहर्रम के अलावा इसे एक तरह के दरबार के रूप में इस्तेमाल करते थे। हालांकि नवाब साहब आम तौर पर धार्मिक थे—उदाहरण के लिए, रात के खाने में पेय पदार्थ नहीं परोसे जाते थे—फिर भी इमामबाड़ा की दीवारों पर हुसैन की शहादत के दृश्यों को दर्शाने वाली कई पेंटिंग्स लगी हुई थीं। कला के चित्रण, विशेष रूप से धार्मिक चित्रण के संबंध में, सख्त नियमों का पालन करने वालों के प्रति सम्मान के कारण, इन पेंटिंग्स को सफेद कपड़े से ढक दिया गया था। हुसैन की कब्र की विभिन्न सामग्रियों से बनी प्रतिकृतियां—कुछ ताजिया—ऊंचे सफेद खंभों के पीछे एक छोर पर रखी थीं; कुछ मुहर्रम के भाले और झंडे एक कोने में रखे थे।

छत से लाल और सफेद रंग के झूमर झिलमिला रहे थे, लेकिन उनमें लगे बल्ब जले नहीं थे। ताकि जनरेटर की दूर से आती आवाज़ उन्हें परेशान न करे, हॉल में मोमबत्तियों की रोशनी की गई थी। उस्ताद मजीद खान अपनी कला के मामले में बेहद भावुक स्वभाव के थे। यह सच था कि वे अक्सर घर पर ही अभ्यास करते थे, जहाँ उनकी पत्नी की अत्यधिक सामाजिकता के कारण घर में भयानक शोरगुल होता था। लेकिन जब वे प्रस्तुति देते थे, तो जमींदारों और राजकुमारों के घटते संरक्षण से अपनी आजीविका कमाने की मजबूरी भी उन्हें अपने द्वारा मांगे गए गंभीर ध्यान और पूर्ण शांति से समझौता करने नहीं देती थी। अगर यह सच था, जैसा कि कहा जाता था, कि वे केवल अपने लिए और ईश्वर के लिए गाते थे, तो यह भी उतना ही सच था कि यह बंधन एक प्रशंसनीय श्रोताओं द्वारा मजबूत होता था और एक बेचैन श्रोताओं द्वारा तनावपूर्ण। नवाब साहब ने बैतर शहर से किसी भी अतिथि को आमंत्रित नहीं किया था, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि उन्हें वहाँ कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला था जो अच्छे संगीत की सराहना करता हो। संगीतकारों के अलावा वहां उनके अलावा, उनके दोस्त और उनके दो बेटों के अलावा कोई और नहीं था।

उस्ताद मजीद खान के साथ उनके अपने तबला वादक थे; और इशाक खान उनके साथ गायक के रूप में थे, सारंगी वादक के रूप में नहीं। महान संगीतकार अब उस मुकाम पर थे जहाँ वे इशाक को शिष्य या भतीजे की तरह नहीं, बल्कि बेटे की तरह मानते थे। इशाक में संगीत की वह सारी प्रतिभा थी जो उस्ताद मजीद खान एक शिष्य में चाहते थे; और इसके अलावा, उनमें अपने गुरुओं के प्रति वह गहरा आदर था—जिनमें उनके दिवंगत पिता भी शामिल थे—जिसकी वजह से पहले उनका अपने उस्ताद से मतभेद हुआ था। उनके बीच बाद में हुए सुलह ने दोनों को आश्चर्यचकित कर दिया था। उस्ताद ने इसमें ईश्वर का हाथ देखा था।

इशाक को समझ नहीं आ रहा था कि इसका श्रेय किसे दिया जाए, लेकिन वे बहुत आभारी थे। सारंगी वादक होने के नाते मुख्य कलाकार की शैली में ढलना उनके लिए स्वाभाविक था, इसलिए सुरीली आवाज वाले इशाक ने जल्दी ही अपने गुरु की शैली को अपना लिया; और चूंकि उनके गुरु की शैली ने उनके मन में एक विशेष प्रकार की सोच और रचनात्मकता को जन्म दिया, इसलिए उस्ताद मजीद खान से अपने पहले पाठ के कुछ ही महीनों के भीतर वे इतने आत्मविश्वास और सहजता से गाने लगे कि पहले तो उस्ताद चौंक गए, और फिर—उनके अपने अहंकार के बावजूद—उन्हें प्रसन्न कर दिया। अंततः उन्हें एक ऐसा शिष्य मिल गया जो इस नाम के योग्य था; और इतना ही नहीं, जिसने अतीत में उनके द्वारा किए गए किसी भी क्षणिक अपमान की भरपाई कर दी।

रात के खाने के बाद जब सब लोग बैठे तो काफी देर हो चुकी थी, और उस्ताद मजीद खान ने तुरंत, बिना किसी हल्के राग को गाए, राग दरबारी गाना शुरू कर दिया। नवाब साहब ने सोचा, यह राग माहौल के लिए कितना उपयुक्त है, और उनके पिता, जिनकी एकमात्र मोहक इच्छा संगीत थी, अगर जीवित होते तो इसे कितना पसंद करते। आलाप का राजसी धीमा विस्तार, तीसरे और छठे दर्जे पर व्यापक कंपन, बारी-बारी से उतार-चढ़ाव में गरिमामय अवरोह, खान साहब की आवाज़ की समृद्धि, जिसमें समय-समय पर उनके युवा शिष्य का साथ मिलता था, और तबले की स्थिर, शांत और ठोस थाप ने एक ऐसी भव्यता और पूर्णता का ढांचा तैयार किया जिसने संगीतकारों और श्रोताओं दोनों को मंत्रमुग्ध कर दिया। बहुत कम ही श्रोताओं ने किसी विशेष प्रतिभा पर 'वाह! वाह!' कहा। दो घंटे से अधिक और आधी रात के बाद जब उन्होंने गायन समाप्त किया।

नवाब साहब ने नौकर से धीमी आवाज़ में कहा, “मोमबत्तियों का ध्यान रखना, वे बुझ रही हैं। आज रात, खान साहब, आपने तो सारी हदें पार

कर दी हैं।"
उनकी और आपकी कृपा से।
'क्या आप थोड़ा आराम करेंगे?'
नहीं, मुझमें अभी भी जीवन बाकी है। और इस तरह के दर्शकों के सामने गाने की इच्छा भी है।
अब आप हमें क्या देंगे?
'क्या होगा?' उस्ताद मजीद खान ने इशाक की ओर मुड़ते हुए कहा। 'भटियार के लिए अभी बहुत जल्दी है, लेकिन मेरा मन कर रहा है, तो ईश्वर हमें माफ कर दे।' नवाब साहब, जिन्होंने इससे पहले कभी उस्ताद को इशाक के साथ गाते नहीं सुना था, और निश्चित रूप से खान साहब को कभी किसी से यह सलाह लेते हुए नहीं देखा था कि उन्हें क्या गाना चाहिए और क्या नहीं, आश्चर्यचकित रह गए और उन्होंने उस युवा गायक से परिचय कराने की इच्छा जताई।
मान को अचानक याद आया कि उसने इशाक खान को कहाँ देखा था।
सोचने का समय मिलने से पहले ही उसने कहा, 'हम पहले भी मिल चुके हैं।'
'सईदा बेगम के यहाँ, है ना? मैं यही पता लगाने की कोशिश कर रही हूँ। आप उनके सारंगी वादक थे, है ना?'
अचानक सन्नाटा छा गया। तबला वादक को छोड़कर वहाँ मौजूद सभी लोग मान को असहजता या सदमे भरी निगाहों से देख रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो इस जादुई पल में कोई भी उस दूसरी दुनिया की किसी भी बात को याद नहीं करना चाहता था। चाहे संरक्षक हो, कर्मचारी हो, प्रेमी हो, परिचित हो, साथी कलाकार हो या प्रतिद्वंद्वी, किसी न किसी रूप में उनमें से हर कोई सईदा बाई से जुड़ा हुआ था।
उस्ताद मजीद खान उठ खड़े हुए, जैसा कि उन्होंने कहा था, शौच के

लिए। नवाब साहब ने अपना सिर झुका लिया था। इशाक खान तबला वादक से धीमी आवाज़ में बात करने लगे थे। ऐसा लग रहा था मानो हर कोई इस अवांछित प्रेरणा को दूर भगाना चाहता हो।

उस्ताद मजीद खान लौट आए और राग भाटियार को इतनी खूबसूरती से गाया मानो कुछ हुआ ही न हो। बीच-बीच में वे पानी का घूंट पीने के लिए रुकते रहे। तीन बजे वे उठे और जम्हाई ली। मानो इसके जवाब में, बाकी सबने भी जम्हाई ली।

14.20

बाद में अपने कमरे में, मान और फिरोज बिस्तर पर लेटे हुए जम्हाई ले रहे थे और बातें कर रहे थे।

‘मैं बहुत थक गया हूँ। आज का दिन बहुत ही कठिन था,’ मान ने कहा।

'अच्छा हुआ कि मैंने रात के खाने से पहले अपनी स्कॉच की इमरजेंसी बोतल नहीं खोली, वरना हम भाटियार में खर्राटे ले रहे होते।'

कुछ देर का विराम रहा।

‘सईदा बाई का जिक्र करने में आखिर क्या गलत था?’ मान ने पूछा। ‘सब लोग जम गए। तुम भी।’

'क्या मैंने?' फ़िरोज़ ने अपनी बांह पर झुकते हुए और अपने दोस्त को बड़ी ध्यान से देखते हुए कहा।

‘हां।’ फ़िरोज़ सोच रहा था कि जवाब में क्या कहे, तभी मान ने आगे कहा: ‘मुझे वह तस्वीर बहुत पसंद है, खिड़की के पास वाली जिसमें आप और आपका परिवार हैं—आप तब भी बिल्कुल वैसे ही दिखते थे जैसे अब दिखते हैं।’

‘बकवास,’ फ़िरोज़ हँसते हुए बोला। ‘उस तस्वीर में मैं पाँच साल का हूँ। और अब मैं उससे कहीं ज़्यादा सुंदर दिखता हूँ,’ उसने बड़े ही सजीव अंदाज़ में कहा। ‘सच कहूँ तो, तुमसे भी ज़्यादा सुंदर।’

मान ने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा, 'मेरा मतलब यह था कि तुम्हारा चेहरा भी बिल्कुल वैसा ही दिखता है, सिर एक कोण पर झुका हुआ और भौंहें चढ़ाए हुए।'

'उस झुकाव को देखकर मुझे सिर्फ चीफ जस्टिस की याद आती है,' फिरोज ने कहा। थोड़ी देर बाद उसने कहा, 'कल क्यों जा रहे हो? कुछ दिन और रुक जाओ।' मान ने कंधे उचका दिए। 'मैं रुकना चाहता हूँ। मुझे तुम्हारे साथ समय बिताने का ज्यादा मौका नहीं मिलता। और मुझे तुम्हारा किला बहुत पसंद है। हम फिर से शिकार पर जा सकते हैं। दिक्कत ये है कि मैंने देबरिया में अपने कुछ जान-पहचान वालों से बकरीद पर वापस आने का वादा किया है। और मैंने सोचा था कि बाओजी को भी ये जगह दिखा दूँ। वो एक राजनेता हैं जो अपना निर्वाचन क्षेत्र तलाश रहे हैं, इसलिए जितना ज्यादा वो इसे देखेंगे उतना ही अच्छा होगा। वैसे भी, बैतर में बकरीद से ज्यादा मुहर्रम महत्वपूर्ण है, तुमने मुझे बताया था ना?' फिरोज ने फिर जम्हाई ली। 'हाँ, हाँ, सही कहा। लेकिन इस साल मैं यहाँ नहीं रहूँगा। मैं ब्रह्मपुर में रहूँगा।' 'क्यों?'

"इम्तियाज़ और मैं बारी-बारी से मुहर्रम मनाते हैं: एक साल बुर्रे साहिब, अगले साल छोटे साहिब। सच तो यह है कि अठारह साल की उम्र से हमने कभी एक साथ मुहर्रम नहीं मनाया है। हममें से एक को यहाँ होना पड़ता है और दूसरे को ब्रह्मपुर में जुलूसों में भाग लेने के लिए।'

'मुझे यह मत बताओ कि तुम अपनी छाती पीटती हो और खुद को कोड़े मारती हो,' मान ने कहा।

नहीं। लेकिन कुछ लोग ऐसा करते हैं। कुछ तो आग पर भी चलते हैं। इस साल आकर खुद देख लीजिए।

'शायद मैं करूँगा,' मान ने कहा। 'शुभ रात्रि। क्या लाइट का स्विच बिस्तर के आपके हिस्से की तरफ नहीं है?'

‘क्या आपको पता है कि सईदा बाई भी मोहर्रम के दौरान अपनी दुकान बंद रखती हैं?’ फिरोज ने पूछा।
‘क्या?’ मान ने थोड़ी होश में आकर कहा। ‘तुम्हें कैसे पता?’
फिरोज ने कहा, 'सब जानते हैं। वह बहुत धर्मनिष्ठ है। जाहिर है, मारह का राजा बहुत नाराज होगा। आमतौर पर वह दशहरा के आसपास खूब मौज-मस्ती करने की उम्मीद करता है।'
मान की प्रतिक्रिया एक घुरघुराहट थी।
फिरोज ने आगे कहा, 'लेकिन वह उसके लिए गाएगी नहीं, और न ही उसके साथ खेलेगी। वह केवल मर्सिया गाने को तैयार होती है, कर्बला की लड़ाई में शहीद हुए लोगों के लिए विलाप गीत। ये गीत बहुत उत्तेजक नहीं होते।'
'नहीं,' मान ने सहमति जताई।
फिरोज ने कहा, 'वह तुम्हारे लिए गाना भी नहीं गाएगी।'
'मुझे नहीं लगता,' मान ने थोड़ा निराश होकर कहा और सोचा कि फ़िरोज़ इतना निर्दयी क्यों हो रहा है।
और न ही तुम्हारे दोस्त के लिए।
‘मेरा दोस्त?’ मान ने पूछा।
‘द राजकुमार ऑफ मारह।’
मान हँस पड़ा। ‘ओह, वो!’ उसने कहा।
‘हां, वही,’ फिरोज ने कहा।
फिरोज की आवाज में कुछ ऐसा था जिसने मान को उनके बचपन के दिनों की याद दिला दी।
‘फिरोज!’ मान हंसते हुए उसकी ओर मुड़ा। ‘वो सब खत्म हो गया। हम तो बस बच्चे थे। मुझे ये मत कहना कि तुम जल रहे हो।’
'खैर, जैसा कि आपने एक बार कहा था, मैं आपको कभी कुछ नहीं

बताता।'

'ओह?' मान ने करवट बदलते हुए अपने दोस्त की ओर झुकते हुए कहा और उसे अपनी बाहों में भर लिया।

'मुझे लगा कि तुम नींद में हो,' फ़िरोज़ ने अंधेरे में खुद ही मुस्कुराते हुए कहा।

'हाँ, मैं हूँ,' मान ने कहा। 'लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता है?'

फ़िरोज़ धीरे से हंसने लगा। 'आपको लगेगा कि मैंने यह सब पहले से प्लान किया था।'

'खैर, शायद तुमने किया हो,' मान ने कहा। 'लेकिन मुझे कोई आपत्ति नहीं है,' उसने एक हल्की सी आह भरते हुए फिरोज के बालों में हाथ फेरा।

14.21

महेश कपूर और मान ने नवाब साहब से एक जीप उधार ली और देबरिया की ओर चल पड़े। गाँव की मुख्य सड़क से निकलने वाली कच्ची सड़क गड्ढों और पानी के जमाव से इतनी भरी हुई थी कि मानसून में वहाँ पहुँचना लगभग नामुमकिन था। लेकिन वे किसी तरह वहाँ पहुँच गए, कुछ हद तक इसलिए क्योंकि पिछले एक हफ्ते में ज्यादा बारिश नहीं हुई थी।

जिन लोगों से वे मिले, उनमें से अधिकांश मान को देखकर बहुत प्रसन्न हुए; और महेश कपूर—नवाब साहब की कही बातों के बावजूद—अपने आवारा बेटे की लोकप्रियता देखकर काफी हैरान थे। उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि एक राजनेता के लिए आवश्यक दो गुणों—मत जीतने की क्षमता और जीत के बाद जनादेश का सदुपयोग करने की क्षमता—में से मान में पहला गुण भरपूर मात्रा में मौजूद था, कम से कम इस निर्वाचन क्षेत्र में। देबरिया के लोगों ने उन्हें दिल से अपना लिया था।

रशीद, ज़ाहिर है, वहाँ नहीं था, क्योंकि स्कूल की छुट्टियाँ चल रही थीं,

लेकिन उसकी पत्नी और बेटियाँ कुछ दिनों के लिए उसके पिता के घर पर ही रह रही थीं। मेहर, गाँव के बच्चे और गंजे दिमाग वाला मोअज़्ज़म, सभी मान के आने से बहुत खुश थे। मान ने गाँव के चारों ओर खंभों और पेड़ों से बंधी हुई उन काली बकरियों से भी ज़्यादा मनोरंजन किया, जिनकी अगले दिन बलि दी जानी थी। मोअज़्ज़म, जो हमेशा से मान की घड़ी से मोहित था, उसे फिर से देखने की ज़िद करने लगा। यहाँ तक कि मिस्टर बिस्किट ने भी खाना रोककर अज़ान का एक अलग ही विजयी अंदाज़ में उच्चारण किया, जिसके बाद बाबा, उसकी नास्तिकता पर क्रोधित होकर, उसे फटकार लगाने लगे।

रूढ़िवादी बाबा, जिन्होंने मान को बकरीद के लिए वापस आने को कहा था, लेकिन उन्हें इस बात पर काफी संदेह था कि वह आएगा, वास्तव में मुस्कुराए तो नहीं—पर यह स्पष्ट था कि उन्हें उसे देखकर खुशी हुई। उन्होंने उसके पिता के सामने उसकी प्रशंसा की।

'वह एक अच्छा लड़का है,' बाबा ने महेश कपूर की ओर जोर से सिर हिलाते हुए कहा।

‘जी?’ महेश कपूर ने कहा।

जी हां, बिल्कुल, वह हमारे तौर-तरीकों का बहुत सम्मान करते हैं। उन्होंने अपनी सादगी से हमारा दिल जीत लिया है।

सादगी? महेश कपूर ने सोचा, लेकिन कुछ नहीं कहा।

जमींदारी उन्मूलन अधिनियम के सूत्रधार महेश कपूर का गाँव आना अपने आप में एक बड़ी घटना थी, और उनका नवाब साहब की जीप में आना भी बहुत महत्वपूर्ण था। रशीद के पिता की राजनीति पर कोई प्रबल राय नहीं थी, सिवाय इसके कि अगर कोई बात उनके हितों को ठेस पहुँचाती हो: ऐसी कोई भी राय साम्यवाद के विरुद्ध थी। लेकिन बाबा, जिनका आसपास के गाँवों में काफी प्रभाव था, महेश कपूर का सम्मान करते थे

क्योंकि उन्होंने लगभग उसी समय कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया था जब किदवई ने इस्तीफा दिया था। वे भी, कई अन्य लोगों की तरह, नवाब साहब के प्रति सहानुभूति रखते थे।

लेकिन अब, उनका मानना था—और उन्होंने महेश कपूर से यही कहा भी —कि सभी नेक इरादे वाले लोगों के लिए कांग्रेस में फिर से शामिल होना ही सबसे अच्छा होगा। उन्हें लगा कि नेहरू पूरी तरह से सत्ता में वापस आ चुके हैं, और नेहरू के साथ, किसी और की तुलना में, उनके समुदाय के लोग सबसे अधिक सुरक्षित महसूस करते थे। जब मान ने बताया कि उनके पिता सलीमपुर-सह-बैतार से चुनाव लड़ने के विकल्प पर विचार कर रहे हैं, तो बाबा ने उनका हौसला बढ़ाया।

लेकिन कांग्रेस का टिकट पाने की कोशिश करो। मुसलमान नेहरू को वोट देंगे—और चमार भी। बाकी के बारे में कौन जानता है: यह घटनाओं पर निर्भर करेगा—और आप अपना चुनाव प्रचार कैसे करते हैं। स्थिति बहुत अनिश्चित है।

यह एक ऐसा वाक्यांश था जिसे महेश कपूर आने वाले दिनों में बहुत बार सुनने, पढ़ने और इस्तेमाल करने वाले थे।

गाँव के ब्राह्मण और बनिया अलग-अलग उनसे मिलने आए, जब वे रशीद के पिता के घर के बाहर नीम के पेड़ के नीचे चारपाई पर बैठे थे। फुटबॉल विशेष रूप से खुशामद कर रहा था। उसने महेश कपूर को जबरन बेदखली के ज़रिए ज़मींदारी अधिनियम को नाकाम करने के बाबा के तरीकों के बारे में बताया (उसी दिशा में अपने खुद के प्रयासों का ज़िक्र किए बिना), और अगर महेश कपूर वहाँ से भागने का फैसला करते हैं तो इलाके में उनका सहायक बनने की पेशकश की। हालाँकि, महेश कपूर ने कोई स्पष्ट जवाब नहीं दिया। उन्हें फुटबॉल की चालाकी में कोई दिलचस्पी नहीं थी; वे जानते थे कि देबरिया में बहुत कम ब्राह्मण परिवार थे, सगल के जुड़वां

गाँव में तो कोई नहीं था और आसपास के गाँवों में भी ज़्यादा नहीं थे; और यह उनके लिए स्पष्ट था कि सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति प्राचीन और ऊर्जावान बाबा थे। उन्हें बेदखली के बारे में जो कुछ भी सुनने को मिला, वह उन्हें पसंद नहीं आया, लेकिन उन्होंने उन कष्टों पर ध्यान न देने की कोशिश की, जिनके बारे में वे जानते थे कि वे पैदा करते हैं। किसी के अतिथि और अभियोजक दोनों की भूमिका एक ही समय में निभाना मुश्किल था, खासकर यदि आप निकट भविष्य में उनकी मदद लेने की उम्मीद कर रहे थे।

बाबा ने चाय या शरबत पीते हुए उनसे कई सवाल पूछे।

आप कब तक हमें अपनी उपस्थिति का सम्मान प्रदान करते रहेंगे?

मुझे आज शाम को जाना होगा।

'क्या? क्या तुम बकरीद के लिए नहीं रुकोगे?'

'मैं नहीं आ सकता। मैंने सलीमपुर में रहने का वादा किया है। और अगर बारिश हुई तो जीप यहीं फंसी रहेगी, शायद कई दिनों तक। लेकिन मान बकरीद के लिए यहाँ जरूर आएगा।' महेश कपूर को यह बताने की जरूरत नहीं थी कि अगर वह भविष्य के लिए किसी गढ़ की तलाश कर रहे थे तो सलीमपुर का उपमंडल, जहाँ घनी आबादी रहती है, एक जरूरी पड़ाव था, और ईद समारोह में उनकी भागीदारी भविष्य में बहुत फायदेमंद साबित होगी। मान ने उन्हें बताया था कि कस्बे में उनका धर्मनिरपेक्ष रुख लोकप्रिय है।

महेश कपूर के आगमन को लेकर सबसे मिश्रित भावना रखने वाले एकमात्र व्यक्ति युवा नेताजी थे। जब उन्हें पता चला कि महेश कपूर गाँव में हैं, तो वे अपनी हार्ले डेविडसन बाइक पर सलीमपुर से तुरंत वापस आ गए। हाल ही में जिला कांग्रेस कमेटी के चुनाव में उम्मीदवार बने नेताजी को लगा कि संपर्क बनाने का यह अवसर इतना अच्छा है कि इस पर

विश्वास करना मुश्किल है। महेश कपूर का नाम और प्रभाव दोनों था, और चाहे यह प्रभाव कितना भी कम क्यों न हो, उन्हें उम्मीद थी कि शायद इसका कुछ हिस्सा उन्हें भी मिल जाए। दूसरी ओर, वे अब शक्तिशाली राजस्व मंत्री नहीं, बल्कि साधारण श्री महेश कपूर, विधायक थे, जो अब कांग्रेस के सदस्य नहीं थे, बल्कि एक ऐसी पार्टी के सदस्य थे जिसका भविष्य अनिश्चित था और जिसका नाम भी भुला दिया गया था, और जो अब भी इस बात पर असहमति से जूझ रही थी कि क्या उसे समाप्त कर दिया जाए। और जमीनी हकीकत से वाकिफ और हर बात पर नजर रखने वाले नेताजी के पास महेश कपूर की घटती ताकत और प्रभाव का ठोस सबूत था। उन्होंने महेश कपूर की अपनी तहसील रुधिया में झा के दबदबे के बारे में सुना था, और सलीमपुर स्टेशन के प्लेटफार्म पर उन्हें इतनी बुरी तरह से अपमानित करने वाले अभिमानी अंग्रेजी बोलने वाले एसडीओ के त्वरित तबादले की खबर से उन्हें विशेष संतुष्टि मिली थी।

महेश कपूर, मान और बाबा के साथ गाँव में टहल रहे थे—साथ ही नेताजी भी उनके साथ थे, जो उन पर हावी होने की कोशिश कर रहे थे। महेश कपूर बहुत खुश लग रहे थे; शायद प्रेम निवास से मिली छुट्टी ने उन्हें अच्छा महसूस कराया हो—या खुली हवा ने—या मजीद खान के गाने ने—या फिर बस इस बात ने कि उन्हें इस क्षेत्र में राजनीतिक संभावनाएं दिख रही थीं। उनके पीछे गाँव के बच्चों का एक समूह और एक छोटी, काली, लगातार मिमियाती हुई बकरी चल रही थी, जिसे एक बच्चा कीचड़ भरे रास्ते पर हांक रहा था—चमकीले सिर वाली बकरी, नुकीले छोटे सींगों, घनी काली भौहों और सौम्य, संशयपूर्ण पीली आँखों वाली। हर जगह मान का दोस्ताना और महेश कपूर का सम्मानपूर्वक स्वागत किया गया।

दोनों गांवों के ऊपर, बल्कि गंगा के मैदानी इलाकों के अधिकांश हिस्से में,

मानसून का विशाल आकाश बादलों से घिरा हुआ था, और लोग चिंतित थे कि कहीं अगले दिन, बकरीद के दिन ही बारिश न हो जाए और उत्सव खराब न हो जाए। महेश कपूर ने ज़्यादातर राजनीतिक चर्चाओं से परहेज किया। इस तरह की बातें चुनाव प्रचार के समय के लिए छोड़ी जा सकती थीं। अब उन्होंने बस इतना सुनिश्चित किया कि लोग उन्हें पहचानें। उन्होंने उचित समय पर नमस्ते या आदाब किया, चाय पी और हल्की-फुल्की बातचीत की।

'क्या मुझे सागल की भी परिक्रमा करनी चाहिए?' उसने बाबा से पूछा।

बाबा ने एक पल सोचा। 'नहीं, ऐसा मत करो। अफवाहों के जाल को अपना काम करने दो।'

अंत में, अपने चक्कर लगाने के बाद, महेश कपूर गाड़ी चलाकर चले गए, लेकिन जाने से पहले उन्होंने बाबा को धन्यवाद दिया और मान से कहा: 'शायद आप और भास्कर सही हैं। खैर, भले ही आपने ज्यादा उर्दू नहीं सीखी, लेकिन आपने अपना समय बर्बाद नहीं किया।'

मान को याद नहीं था कि उसके पिता ने आखिरी बार उसकी तारीफ कब की थी। वह बेहद खुश था, और थोड़ा हैरान भी। उसकी आँखों में आँसू आ गए! महेश कपूर ने अनदेखा करते हुए सिर हिलाया, आसमान की ओर देखा और जीप के आगे बढ़ते ही वहाँ मौजूद लोगों को हाथ हिलाकर अभिवादन किया।

14.22

बारिश की संभावना के चलते मान बरामदे में सो गया। वह देर से उठा, लेकिन उसे बाबा गुस्से में उसके ऊपर झुके हुए नहीं मिले, जो उससे सुबह की प्रार्थना में न आने का कारण पूछ रहे हों।

इसके बजाय बाबा ने कहा: 'तो तुम उठ गए, मैं देख रहा हूँ। क्या तुम ईदगाह में आओगे?'

‘हां,’ मान ने कहा। ‘क्यों नहीं?’

‘तो फिर तुम्हें जल्दी तैयार हो जाना चाहिए,’ उसने कहा और नीम के पेड़ के पास ध्यानमग्न होकर चर रही एक मोटी काली बकरी को थपथपाया।

परिवार के बाकी सदस्य उनसे पहले ही जा चुके थे, और अब बाबा और मान देबरिया से सगल तक खेतों को पार करते हुए पैदल चले। ईदगाह सगल में स्थित थी; यह झील के पास स्थित विद्यालय का हिस्सा थी। आसमान में अभी भी बादल छाए हुए थे, लेकिन हल्की धूप भी थी जो रोपित धान के हरे रंग को और भी खूबसूरत बना रही थी। धान के खेत में बत्तखें तैर रही थीं और कीड़े-मकोड़े ढूंढ रही थीं। सब कुछ ताजा और ताजगी भरा था।

उनके चारों ओर, अलग-अलग दिशाओं से ईदगाह की ओर आते हुए, पुरुष, महिलाएं और बच्चे थे, सभी उत्सव के परिधानों में सजे हुए थे—नए कपड़े, या—जिनके पास पैसे नहीं थे—उनके लिए बेदाग साफ और इस्त्री किए हुए कपड़े। वे केवल देबरिया और सगल से ही नहीं, बल्कि आसपास के सभी गांवों से स्कूल में आ रहे थे। अधिकांश पुरुष सफेद कुर्ता-पायजामा पहने हुए थे; लेकिन कुछ ने लुंगी पहनी हुई थी, और कुछ ने रंगीन कुर्ते भी पहने थे, हालांकि उनका रंग सादा था। मान ने देखा कि उनके सिर पर पहनी जाने वाली टोपियां अलग-अलग थीं, कुछ सफेद, चुस्त-दुरुस्त, बारीक कढ़ाई वाली थीं, तो कुछ काली, चमकदार थीं। महिलाएं और बच्चे चमकीले रंगों के कपड़े पहने हुए थे—लाल, हरा, पीला, गुलाबी, मैरून, नीला, इंडिगो, बैंगनी। अधिकांश महिलाओं द्वारा पहने गए काले या गहरे नीले बुर्के के नीचे भी मान उनकी रंगीन साड़ियों या सलवारों के किनारे और पैरों में पहनी हुई आकर्षक पायलें और चप्पलें देख सकता था, जिन पर चमकीली लाल मेहंदी लगी थी और मानसून की उमस भरी मिट्टी से सने हुए थे।

जब वे संकरी पगडंडियों पर चल रहे थे, तभी एक बूढ़ा, दुबला-पतला और भूखा सा दिखने वाला आदमी, जिसने केवल एक गंदी धोती पहनी हुई थी, बाबा के पास रुका और हाथ जोड़कर हताश स्वर में बोला:

‘खान साहब, मैंने ऐसा क्या किया है कि आप मेरे और मेरे परिवार के साथ ऐसा कर रहे हैं? अब हम कैसे गुजारा करेंगे?’

बाबा ने उसकी ओर देखा, एक पल सोचा और फिर बोले: 'क्या तुम अपने पैर तुड़वाना चाहते हो? अब मुझे तुम्हारी बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता। जब तुम कानूनगो (कानूनी सलाहकार) के पास शिकायत करने गए थे, तब क्या तुमने इस बारे में सोचा था?'

फिर वह सगल की ओर चलने लगा। मान उस आदमी की नज़र से इतना परेशान हो गया था—जिसमें विश्वासघात से उपजी आधी नफरत और आधी विनती थी—कि उसने उसके झुर्रियों से भरे चेहरे को घूरकर देखा और सारंगी वादक की तरह ही यह याद करने की कोशिश की कि उसने उसे पहले कहाँ देखा था।

‘इसके पीछे क्या कहानी है, बाबा?’ उसने पूछा।

बाबा ने कहा, 'कुछ नहीं। वह मेरी ज़मीन पर अपना लालची हाथ जमाना चाहता था, बस इतना ही।' उनकी आवाज़ से स्पष्ट था कि वे इस विषय को अपने दिमाग से निकालना चाहते थे।

जैसे ही वे स्कूल के पास पहुँचे, लाउडस्पीकर की आवाज़ सुनाई देने लगी, जिसमें ईश्वर की स्तुति दोहराई जा रही थी या लोगों को ईद की नमाज़ के लिए तैयार होने और मेले में ज़्यादा देर न रुकने के लिए कहा जा रहा था।

‘और, देवियों, कृपया सज-धज कर आइए; हम शुरू करने वाले हैं; कृपया जल्दी कीजिए, सब लोग।’

लेकिन छुट्टियों में आए लोगों की भीड़ को जल्दी करने के लिए मनाना मुश्किल था। कुछ लोग बेशक तालाब के किनारे स्नान कर रहे थे; लेकिन

उनमें से ज़्यादातर लोग स्कूल के गेट के ठीक बाहर मिट्टी के टीले पर बने अस्थायी बाज़ार और दुकानों के आसपास घूम रहे थे। गहने, चूड़ियाँ, शीशे, गुब्बारे—और सबसे अच्छी बात, आलू की टिक्की से लेकर छोले, गरमागरम जलेबी, बर्फी, लड्डू, गुलाबी रंग की मिठाई, पान, फल—हर तरह का खाना— वो सब कुछ जो मिस्टर बिस्किट अपनी कल्पनाओं में सोच सकते थे। दरअसल, मिस्टर बिस्किट हाथ में आधी बर्फी लिए एक स्टॉल के पास खड़े थे। मेहर, जिसे उसके दादाजी ने कुछ मिठाई दी थी, उसे दूसरे बच्चों के साथ बाँट रही थी। दूसरी ओर, मोअज्जम विभिन्न कमजोर बच्चों से दोस्ती करने में व्यस्त था—'उनके पैसों के लिए', जैसा कि मुंडे हुए लेकिन मूंछों वाले नेताजी ने मान को बताया था।

महिलाएं और लड़कियां स्कूल भवन के अंदर चली गईं, जहां से वे कार्यवाही देखेंगी और उसमें भाग लेंगी, जबकि पुरुष और लड़के बाहर परिसर में कपड़े के लंबे-लंबे गठ्ठों पर पंक्तियों में बैठ गए। वहां एक हजार से अधिक पुरुष मौजूद थे। मान ने उनमें से कई सगल के बुजुर्गों को देखा, जिन्होंने मस्जिद के बाहर रशीद को बहुत परेशान किया था, लेकिन उसे वह बीमार बूढ़ा आदमी नहीं दिखा, जिससे मिलने रशीद और वह गए थे —वैसे भी इतनी बड़ी भीड़ में यह निश्चित रूप से कहना संभव नहीं था कि कौन मौजूद नहीं है। उसे बरामदे के किनारे पर बैठने के लिए कहा गया, जहां उसके बगल में पी.पी. पुलिस के दो ऊबे हुए पुलिसकर्मी बैठे थे, जो हरे रंग की खाकी वर्दी में इधर-उधर घूम रहे थे और स्थिति का जायजा ले रहे थे। वे वहां व्यवस्था बनाए रखने और इमाम के उपदेश में किसी भी भड़काऊ बात के गवाह के रूप में मौजूद थे, लेकिन उनकी उपस्थिति से लोग नाराज़ थे, और उनके हावभाव से यह स्पष्ट था कि वे यह जानते थे।

इमाम ने नमाज़ शुरू की, और इस्लामी धार्मिक अनुष्ठान की अद्भुत एकता

के साथ लोग खड़े हुए और घुटने टेके। लेकिन नमाज़ के दो अंशों के बीच, दूर से गरजने की आवाज़ आई। जब तक इमाम ने अपना उपदेश शुरू किया, तब तक ऐसा लग रहा था कि नमाज़ में शामिल लोग उनके शब्दों की बजाय आसमान पर ज़्यादा ध्यान दे रहे थे।

हल्की-हल्की बारिश शुरू हो गई और लोग बेचैन होने लगे। आखिरकार वे शांत हो गए, लेकिन इमाम ने अपना उपदेश रोककर उन्हें फटकार लगाई। 'अरे! क्या अल्लाह की नज़र में तुममें ज़रा भी सब्र नहीं है—जिस दिन हम इब्राहीम और इस्माइल के बलिदान को याद करने के लिए इकट्ठा हुए हैं? तुम खेतों में बारिश सहन कर लेते हो, और इस दिन तुम ऐसे बर्ताव करते हो मानो पानी की कुछ बूँदें तुम्हें गला देंगी। क्या तुम्हें नहीं पता कि इस साल तीर्थयात्रा करने वाले अरब की झुलसा देने वाली रेत पर कितना कष्ट झेल रहे हैं? उनमें से कुछ तो लू लगने से मर भी गए—और तुम आसमान से गिरने वाली कुछ बूँदों से डर रहे हो। यहाँ मैं इब्राहीम की अपने बेटे की कुर्बानी देने की तत्परता की बात कर रहा हूँ, और तुम बस खुद को सूखा रखने की चिंता कर रहे हो—तुम अपने समय के कुछ मिनट भी कुर्बान नहीं करोगे। तुम उन अधीर लोगों की तरह हो जो व्यापारियों के आने पर नमाज़ पढ़ने नहीं आते। सूरह अल-बक़रह में, जिस सूरह के नाम पर इस त्योहार का नाम रखा गया है, लिखा है:

इसलिए कौन धर्म से विमुख होता है?
अब्राहम का क्या होगा, सिवाय इसके कि वह मूर्ख हो?

और बाद में यह कहता है:

हम तेरे परमेश्वर और तेरे पूर्वजों के परमेश्वर की सेवा करेंगे।
अब्राहम, इस्माइल और इसहाक, एक ही ईश्वर;
हम उसके समक्ष आत्मसमर्पण करते हैं।

क्या यही आपके समर्पण का स्वरूप है? रुकिए, रुकिए, भले लोगों; शांत

रहिए, और बेचैन मत होइए!
नि:संदेह, अब्राहम एक राष्ट्र था।
ईश्वर के प्रति आज्ञाकारी, शुद्ध आस्था वाला व्यक्ति
और कोई मूर्तिपूजक नहीं,
उनकी कृपाओं के लिए कृतज्ञता व्यक्त करना;
उसने उसे चुना और उसका मार्गदर्शन किया।
एक सीधे रास्ते पर।
और हमने उसे इस दुनिया में भलाई दी।
और आने वाले संसार में वह होगा
धर्मी लोगों के बीच।
फिर हमने तुम्हें यह बताया: "तुम हमारा अनुसरण करो।"
शुद्ध आस्थावान व्यक्ति अब्राहम का मत
और कोई मूर्तिपूजक नहीं।

इमाम अरबी में उद्धरण देते हुए काफी भावुक हो गए, लेकिन कुछ देर बाद वे उर्दू में अपने शांत प्रवचन पर लौट आए। उन्होंने ईश्वर और उसके पैगंबर की महानता के बारे में बात की, और बताया कि कैसे सभी को इब्राहिम और ईश्वर के अन्य पैगंबरों की भावना में अच्छा और धर्मनिष्ठ होना चाहिए।

जब यह सब समाप्त हो गया, तो सभी ने मिलकर ईश्वर से आशीर्वाद मांगा, और कुछ मिनटों के बाद, अपने-अपने गांवों की ओर चले गए, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे जिस रास्ते से आए थे, उससे अलग रास्ते से वापस लौटे।

"और कल, शुक्रवार होने के कारण, हमें एक और उपदेश सुनने को मिलेगा," उनमें से कुछ ने शिकायत की। लेकिन अन्य लोगों का मानना था कि इमाम ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया था।

14.23
जैसे ही वह वापस गांव की ओर बढ़ा, मान की मुलाकात फुटबॉल से हो गई, जिसने उसे एक तरफ खींच लिया।
‘तुम कहाँ थे?’ फुटबॉल ने पूछा।
‘ईदगाह के लिए।’
फुटबॉल खिलाड़ी नाखुश दिख रहा था। उसने कहा, 'यह हमारे लिए जगह नहीं है।'
'मुझे नहीं लगता,' मान ने उदासीनता से कहा। 'फिर भी, किसी ने भी मुझे अवांछित महसूस नहीं कराया।'
और अब, आप बकरियों के इस सारे क्रूर कारोबार को देखते रहेंगे?
‘अगर मुझे दिखेगा तो दिख जाएगा,’ मान ने कहा, जो मानता था कि शिकार करना भी उतना ही खूनी काम है जितना कि बकरी की बलि देना। इसके अलावा, वह फुटबॉल के साथ झूठी एकजुटता का कोई समझौता नहीं करना चाहता था, जिसकी उसे कोई खास परवाह नहीं थी।
लेकिन जब उसने बलिदान देखा, तो उसे उसमें आनंद नहीं आया।
देबरिया के कुछ घरों में, घर का मुखिया स्वयं बकरी या कभी-कभी भेड़ की बलि देता था। (ब्रिटिश काल से ही देबरिया में गाय की बलि देना प्रतिबंधित था, क्योंकि इससे धार्मिक दंगे भड़क सकते थे।) लेकिन अन्य घरों में, कसाई का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति आकर उस पशु की बलि देता था जो इब्राहीम के पुत्र के स्थान पर ईश्वर की दयालु कृपा का प्रतीक था। प्रचलित परंपरा के अनुसार, यह इस्माइल था, न कि इसहाक, हालांकि इस्लामी विद्वानों में इस मामले पर मतभेद था। गाँव की बकरियों को मानो आभास हो गया था कि उनका अंतिम समय निकट है, क्योंकि वे भयभीत और दयनीय स्वर में मिमियाने लगीं।
बच्चे, जो इस तमाशे का आनंद ले रहे थे, कसाई के पीछे-पीछे चक्कर

लगाते चले गए। आखिरकार वह रशीद के पिता के घर पहुँचा। गोल-मटोल काली बकरी को पश्चिम की ओर मुँह करके लिटाया गया। बाबा ने उस पर प्रार्थना की, जबकि नेताजी और कसाई ने उसे पकड़ रखा था। फिर कसाई ने अपना पैर उसकी छाती पर रखा, उसका मुँह पकड़ा और उसका गला काट दिया। बकरी गरगी और उसके गले के चीरे से चमकीला लाल खून और हरी, अधपची घास बह निकली।

मान ने मुंह फेर लिया और देखा कि मिस्टर बिस्किट, जिन्होंने गेंदे के फूलों की माला पहन रखी थी, जो उन्होंने शायद मेले से ही हासिल की होगी, एक शांत भाव से वध को देख रहे थे।

लेकिन सब कुछ तेज़ी से आगे बढ़ रहा था। सिर काट दिया गया। टांगों और पेट की खाल चीरकर चर्बी से पूरी खाल उतार दी गई। पिछले पैर घुटने से तोड़ दिए गए, फिर बांध दिए गए और बकरी को एक डाल से लटका दिया गया। पेट चीरकर खून और गंदगी से लथपथ आंतें बाहर निकाल दी गईं। जिगर, फेफड़े और गुर्दे निकाल दिए गए, अगले पैर काट दिए गए। अब वह बकरी, जो कुछ ही मिनट पहले डर से मिमिया रही थी और अपनी पीली आँखों से मान को घूर रही थी, बस एक शव थी, जिसे मालिकों, उनके परिवारों और गरीबों के बीच तीन हिस्सों में बाँट दिया जाना था।

बच्चे बड़ी उत्सुकता और उत्साह से देख रहे थे। उन्हें विशेष रूप से बलिदान और बाद में धूसर-गुलाबी रंग की आंतों को बाहर निकलते देखना अच्छा लग रहा था। अब वे देख रहे थे कि शरीर के अगले हिस्से परिवार के लिए अलग कर दिए गए थे, और बाकी शरीर को पसलियों के आर-पार काटकर बरामदे में तराजू पर रखा जा रहा था ताकि उसका वजन किया जा सके। रशीद के पिता वितरण का काम संभाल रहे थे।

गरीब बच्चे—जिन्हें मांस बहुत कम खाने को मिलता था—अपना हिस्सा

पाने के लिए आगे बढ़ पड़े। कुछ तराजू के चारों ओर जमा हो गए और मांस के टुकड़ों को पकड़ने लगे, कुछ ने कोशिश की लेकिन उन्हें पीछे धकेल दिया गया; अधिकांश लड़कियां चुपचाप एक जगह बैठी रहीं और अंततः उन्हें भी मांस परोसा गया। कुछ महिलाएं, जिनमें चमारों की पत्नियां भी शामिल थीं, बहुत शर्मीली लग रही थीं और मांस लेने के लिए आगे आने में उन्हें बहुत कठिनाई हो रही थी। अंततः वे मांस को अपने हाथों में या कपड़े या कागज के टुकड़ों पर रखकर ले गईं, खान साहब की उदारता की प्रशंसा और धन्यवाद करती रहीं या अपने हिस्से के बारे में शिकायत करती रहीं और अगले घर की ओर चल पड़ीं ताकि उन्हें भी कुर्बानी का अपना हिस्सा मिल सके।

14.24

बकरीद की तैयारियों के चलते पिछली शाम का खाना जल्दी-जल्दी खाया गया था; लेकिन आज दोपहर का खाना आराम से खाया गया। सबसे स्वादिष्ट व्यंजन उस बकरी के जिगर, गुर्दे और आंत से बना था जिसे अभी-अभी काटा गया था। फिर चारपाइयों को उस नीम के पेड़ के नीचे खिसका दिया गया जिसके नीचे बकरी कुछ देर पहले शांति से चर रही थी।

मान, बाबा और उनके दो बेटे, सलीमपुर के व्यंग्यकार शिक्षक कमर और रशीद के चाचा, भालू, सभी दोपहर के भोजन पर उपस्थित थे। बातचीत स्वाभाविक रूप से रशीद की ओर मुड़ गई। भालू ने मान से पूछा कि वह कैसा है।

'दरअसल, ब्रह्मपुर लौटने के बाद से मैंने उसे नहीं देखा है,' मान ने स्वीकार किया। 'मुझे लगता है कि वह अपने ट्यूशन में बहुत व्यस्त रहा है, और मैं भी किसी न किसी काम में व्यस्त रहा हूँ—'

यह एक कमजोर बहाना था, लेकिन मान ने जानबूझकर अपने दोस्त की

उपेक्षा नहीं की थी। बस उसकी जिंदगी में परिस्थितियाँ कुछ ऐसी ही बन गई थीं।

'मैंने सुना था कि वह छात्र समाजवादी पार्टी से जुड़ा हुआ था,' मान ने कहा। 'लेकिन रशीद के मामले में, इस बात का कोई डर नहीं है कि वह अपनी पढ़ाई की उपेक्षा करेगा।' मान ने रशीद के बारे में सईदा बाई की टिप्पणी का जिक्र नहीं किया।

मान ने गौर किया कि रशीद के बारे में सचमुच चिंतित केवल भालू ही था। कुछ देर बाद, और बातचीत के अन्य विषयों पर चले जाने के काफी देर बाद, उसने कहा: 'वह जो भी करता है, बहुत गंभीरता से करता है। अगर कोई उसे हंसना नहीं सिखाता, तो तीस साल की उम्र से पहले ही उसके बाल सफेद हो जाएंगे।'

रशीद के बारे में बात करते समय हर कोई संकोच में था। मान ने इसे गहराई से महसूस किया; लेकिन चूंकि किसी ने भी—यहाँ तक कि स्वयं रशीद ने भी—उसे यह नहीं बताया था कि उसने खुद को कितना अपमानित किया है, इसलिए वह इसे समझ नहीं पाया। जब रशीद ने उसे सईदा बाई का पत्र पढ़कर सुनाया, तो ब्रह्मपुर जल्दी लौटने से मना किए जाने पर मान इतना बेचैन हो गया था कि वह तुरंत ही यात्रा पर निकल पड़ा था। शायद उसकी अपनी ही व्यस्तता ने उसे अपने मित्र के परिवार में व्याप्त तनाव को देखने से अंधा कर दिया था।

14.25

नेताजी ने अगली रात एक दावत का आयोजन करने की योजना बनाई थी —जिसमें मांस का भोज होना था और जिसके लिए उनके पास एक और बकरी तैयार थी—उपमंडल के विभिन्न महत्वपूर्ण लोगों के सम्मान में, जिनमें पुलिस और छोटे प्रशासनिक अधिकारी आदि शामिल थे। वे कमर को सलीमपुर स्थित अपने स्कूल के प्रधानाध्यापक को आमंत्रित करने के

लिए मनाने की कोशिश कर रहे थे। कमर ने न केवल साफ इनकार कर दिया, बल्कि प्रभावशाली और प्रतिष्ठित लोगों को खुश करने के नेताजी के खुले प्रयासों के प्रति अपनी घृणा भी खुलकर जाहिर की। दोपहर भर कमर किसी न किसी तरह नेताजी को चिढ़ाता रहा। एक बार उसने नए-नए मित्रतापूर्ण भाव से मान की ओर मुड़कर कहा, 'मुझे लगता है कि जब तुम्हारे पिता यहाँ थे, तो वे हमारे नेताजी से पीछा नहीं छुड़ा पाए।'

'खैर,' मान ने मुस्कुराने की कोशिश करते हुए कहा, 'बाबा और उन्होंने बड़ी दयालुता से मेरे पिताजी को देबारिया घुमाया।'

कमर ने कहा, 'मुझे लगा था कि कुछ ऐसा ही होगा। वह सलीमपुर में मेरे साथ चाय पी रहे थे, तभी मेरे एक दोस्त ने, जो अचानक आ गया था, उन्हें बताया कि महान महेश कपूर उनके पैतृक गांव आ रहे हैं। बस, वहीं से मेरे साथ चाय का सिलसिला खत्म हो गया। नेताजी को पता होता है कि किस चाय में ज्यादा चीनी होती है। वह बाबा के थूक पर बैठी मक्खियों जितने ही समझदार हैं।'

नेताजी ने ऐसे भद्दे ताने-बाने से खुद को ऊपर दिखाने का दिखावा किया और अब भी इस उम्मीद में थे कि शायद वे प्रधानाध्यापक को अपने वश में कर लेंगे, इसलिए उन्होंने खुलकर नाराज़गी नहीं दिखाई और कमर निराश होकर लौट गए।

दोपहर के भोजन के कुछ ही समय बाद मान ने बैतर वापस जाने वाली ट्रेन पकड़ने के लिए सलीमपुर जाने के लिए एक रिक्शा लिया। वह फ़िरोज़ के जाने के बाद नहीं पहुँचना चाहता था। हालाँकि अपने पेशे के कारण फ़िरोज़ के लिए ब्रह्मपुर से निकलना इम्तियाज़ की तुलना में आसान था, लेकिन संभव था कि उसे अदालत में कोई पेशी हो या किसी वरिष्ठ अधिकारी का किसी सम्मेलन के लिए कोई ज़रूरी फ़ोन आ जाए जिससे उसकी यात्रा बीच में ही समाप्त हो जाए।

पैरों में मेहंदी लगी एक आकर्षक युवती स्थानीय लहजे में गुनगुना रही थी, तभी एक रिक्शा उसके पास से गुजरा। मान ने मुड़कर उसके खुले चेहरे को देखने की कोशिश की और गाने की कुछ पंक्तियाँ ही सुन पाया।

“ओह, पतिदेव, आप जा सकते हैं लेकिन मेले से मेरे लिए कुछ ले आना __”

बालों की मांग को भरने के लिए सिंदूर का इस्तेमाल करना है।

फिरोजाबाद की चूड़ियाँ, खाने के लिए गुड़—

और प्राहा द्वारा मेरे मेहंदी लगे पैरों के लिए बनाई गई सैंडल।

उसने मान को एक ऐसी निगाह से देखा जिसमें एक साथ हंसी और गुस्सा झलक रहा था, क्योंकि मान बिना किसी झिझक के उसे घूर रहा था, और उसकी उस निगाह की याद ने उसे सलीमपुर स्टेशन तक पूरे रास्ते खुशमिजाज बनाए रखा।

14.26

नेहरू की इस सफलता के बाद उनकी इच्छाओं के पूर्णतः अधीनता का दौर नहीं आया। दिल्ली में संसद में, सदन के सभी वर्गों के सांसदों, जिनमें उनके अपने वर्ग के सांसद भी शामिल थे, के विरोध ने उन्हें हिंदू संहिता विधेयक पारित करने का प्रयास छोड़ने के लिए विवश कर दिया। यह विधेयक प्रधानमंत्री और उनके विधि मंत्री डॉ. अंबेडकर के दिल के बेहद करीब था और इसका उद्देश्य विवाह, तलाक, उत्तराधिकार और संरक्षकता संबंधी कानूनों को अधिक तर्कसंगत और न्यायसंगत बनाना था, विशेषकर महिलाओं के लिए।

ब्रह्मपुर विधानसभा में रूढ़िवादी हिंदू विधायक भी किसी भी तरह से रक्षात्मक मुद्रा में नहीं थे। एल.एन. अग्रवाल ने एक विधेयक पेश किया था जिसके तहत नए साल की शुरुआत से हिंदी को राज्य भाषा बनाया जाना था, और मुस्लिम विधायक बारी-बारी से उठकर उनसे, मुख्यमंत्री से

और सदन से उर्दू की स्थिति की रक्षा करने की अपील कर रहे थे। महेश कपूर, जो ग्रामीण क्षेत्र से ब्रह्मपुर लौटे थे, ने बहस में सक्रिय रूप से भाग नहीं लिया, लेकिन उनके पूर्व संसदीय सचिव अब्दस सलाम ने कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ अवश्य कीं।

बेगम आबिदा खान, बेशक, अपने भाषण देने के कौशल में सर्वश्रेष्ठ थीं:

बेगम आबिदा खान: हिंदी के समर्थन में माननीय मंत्री जी का गांधीजी का नाम लेना तो ठीक है। मुझे हिंदी से कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन वे इस प्रांत की दूसरी भाषा और मुसलमानों की मातृभाषा उर्दू की स्थिति की रक्षा करने के लिए सहमत क्यों नहीं हैं? क्या माननीय मंत्री जी को लगता है कि राष्ट्रपिता, जिन्होंने अल्पसंख्यक समुदाय की रक्षा के लिए अपना प्राण त्याग दिए, वे इस तरह के विधेयक का समर्थन करेंगे, जो हमारे समुदाय, हमारी संस्कृति और हमारी आजीविका को धीरे-धीरे नष्ट कर देगा? देवनागरी लिपि में हिंदी को अचानक लागू करने से मुसलमानों के लिए सरकारी नौकरी के दरवाजे बंद हो गए हैं। वे उन लोगों से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते जिनकी भाषा हिंदी है। इससे मुसलमानों में एक गंभीर आर्थिक संकट पैदा हो गया है—जिनमें से कई अपनी आजीविका के लिए सरकारी सेवाओं पर निर्भर हैं। अचानक उन्हें लोक भाषा विधेयक की इस बेतुकी समस्या का सामना करना पड़ रहा है। इस संदर्भ में गांधीजी का नाम लेना पाप है। मैं आपकी मानवता से अपील करता हूं, आप जिन्होंने हमें हमारे घरों में गोली मारी और हमारा पीछा किया, कृपया हमारे लिए और अधिक दुखों के कारण न बनें।

माननीय गृह मंत्री (श्री एल.एन. अग्रवाल): मैं सदन की इस अंतिम टिप्पणी को अनदेखा करूँगा, जैसा कि मुझे पूरा विश्वास है कि सदन भी यही चाहेगा, और माननीय सदस्य को उनके हार्दिक सुझाव के लिए धन्यवाद दूँगा। यदि यह सुझाव भी उतना ही विचारणीय होता, तो इसे

स्वीकार करने का आधार हो सकता था। असल बात यह है कि सभी सरकारी कार्यों को दो भाषाओं, दो लिपियों में दोहराना पूरी तरह से अव्यावहारिक और असंभव है। बस यही बात है।

बेगम आबिदा खान: मैं माननीय मंत्री जी के कथनों के विरुद्ध अध्यक्ष से अपील नहीं करूंगी। वे पूरी दुनिया को बता रहे हैं कि वे सोचते हैं कि मुसलमानों के कोई अधिकार नहीं हैं और महिलाओं में बुद्धि नहीं है। मैं उनकी बेहतर भावनाओं को जगाने की कोशिश कर रही हूं, लेकिन मेरी उम्मीद क्या है? वे उर्दू को दबाने की इस सरकारी नीति के मुख्य सूत्रधार रहे हैं, जिसके कारण कई उर्दू प्रकाशन बंद हो गए हैं। उनके हाथों उर्दू के साथ यह सौतेला व्यवहार क्यों हो रहा है? दोनों भाई-बहनों की भाषाओं को एक साथ क्यों नहीं अपनाया जा सकता? बड़े भाई का कर्तव्य है कि वह छोटे भाई की रक्षा करे, न कि उसे सताए।

माननीय गृह मंत्री (श्री एल.एन. अग्रवाल): आप आज दो-भाषा सिद्धांत की मांग कर रहे हैं, कल आप दो-राष्ट्र सिद्धांत की मांग करेंगे।

श्री जैनेंद्र चंदला (समाजवादी पार्टी): माननीय मंत्री जी द्वारा बहस को दिए गए इस मोड़ से मुझे अत्यंत दुख हुआ है। बेगम आबिदा खान, जिनकी देशभक्ति पर कोई संदेह नहीं कर सकता, ने तो केवल यही कहा है कि उर्दू का दमन नहीं होना चाहिए, जबकि माननीय मंत्री जी बहस में दो-राष्ट्र सिद्धांत को घसीटने का प्रयास कर रहे हैं। मैं भी हिंदी की प्रगति से असंतुष्ट हूँ। अनेक प्रस्तावों और नियमों के बावजूद, कार्यालयों में सारा काम आज भी अंग्रेजी में ही होता है। हमें अंग्रेजी को विस्थापित करने के लिए प्रयास करना चाहिए, न कि एक-दूसरे की भाषाओं को।

श्री अब्दुस सलाम (कांग्रेस): मेरे निर्वाचन क्षेत्र के कुछ लोगों ने मेरा ध्यान इस ओर दिलाया है कि उर्दू पढ़ने वाले छात्रों के लिए पाठ्यक्रम में कठिनाइयाँ पैदा कर दी गई हैं, जिसके कारण उन्हें उर्दू पढ़ने का अवसर

नहीं मिल पा रहा है। यदि स्विट्जरलैंड जैसे छोटे देश में चार आधिकारिक भाषाएँ हो सकती हैं, तो इस राज्य में, जो आकार में कई गुना बड़ा है, उर्दू को कम से कम एक क्षेत्रीय भाषा के रूप में क्यों नहीं माना जाना चाहिए? विद्यालयों में उर्दू शिक्षण के लिए सुविधाएँ प्रदान की जानी चाहिए - और केवल नाममात्र की नहीं।

माननीय गृह मंत्री (श्री एल.एन. अग्रवाल): दुर्भाग्यवश, हमारे संसाधन असीमित नहीं हैं। राज्य भर में कई मदरसे और धार्मिक संस्थान हैं जहाँ उर्दू पढ़ाई जा सकती है। पूर्व प्रदेश राज्य की आधिकारिक भाषा के संबंध में, स्थिति को पूरी तरह स्पष्ट किया जाना चाहिए, ताकि कोई भ्रम न रहे और लोग बचपन से ही गलत राह पर न चलें, जिसके कारण उन्हें बाद में नुकसान उठाना पड़े।

बेगम आबिदा खान: माननीय मंत्री जी, आप सब कुछ स्पष्ट करने की बात कर रहे हैं। लेकिन भारत का संविधान भी राजभाषा के बारे में स्पष्ट नहीं है। इसमें लिखा है कि पंद्रह साल बाद केंद्र सरकार अंग्रेजी को राजभाषा से बदल देगी। लेकिन तब भी यह स्वतः नहीं होगा। एक आयोग नियुक्त किया जाएगा, जो इस पूरे मामले की जांच करेगा और सरकार को हिंदी की प्रगति के बारे में रिपोर्ट देगा। इसके बाद अंग्रेजी को पूरी तरह से राजभाषा से बदलने का निर्णय तर्कसंगत आधार पर लिया जाएगा, न कि किसी मनमानी या पूर्वाग्रह से। मुझे आश्चर्य होता है कि अगर अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा को इस तरह सहन किया जा सकता है, तो उर्दू को क्यों नहीं? यह हमारे प्रांत की शान है— यह हमारे महानतम कवि मस्त की भाषा है। यह मीर, ग़ालिब, दाग़, सौदा, इक़बाल और प्रेमचंद व फ़िराक़ जैसे हिंदू लेखकों की भाषा है। फिर भी, अपनी समृद्ध परंपरा के बावजूद, उर्दू हिंदी के बराबर दर्जा नहीं रखती। इसे किसी भी अन्य क्षेत्रीय भाषा की तरह माना जा सकता है। लेकिन इसे इस तरह से वंचित नहीं किया

जाना चाहिए जैसा कि किया जा रहा है।

माननीय गृह मंत्री (श्री एल.एन. अग्रवाल): जैसा कि माननीय सदस्य मान रहे हैं, उर्दू भाषा का हनन नहीं हो रहा है। देवनागरी लिपि सीखने वाले किसी भी व्यक्ति को इसे समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

बेगम आबिदा खान: क्या माननीय मंत्री जी पूरी ईमानदारी से इस सदन को बता सकते हैं कि लिपि के अलावा दोनों भाषाओं में कोई वास्तविक अंतर नहीं है?

माननीय गृह मंत्री (श्री एल.एन. अग्रवाल): चाहे यह हार्दिक हो या नहीं, गांधीजी की यही योजना थी: उनका लक्ष्य हिंदुस्तानी को आदर्श बनाना था, जो दोनों भाषाओं को अपने स्रोत के रूप में ग्रहण करेगा।

बेगम आबिदा खान: मैं आदर्शों या गांधीजी की योजनाओं की बात नहीं कर रही हूँ। मैं तथ्यों और हमारे चारों ओर जो हो रहा है, उसकी बात कर रही हूँ। ऑल इंडिया रेडियो सुनिए और उसके समाचार बुलेटिन समझने की कोशिश कीजिए। हमारे विधेयकों और कानूनों के हिंदी संस्करण पढ़िए—या अगर आप, मेरी और इस प्रांत के अन्य मुसलमानों और यहाँ तक कि कई हिंदुओं की तरह, उन्हें नहीं पढ़ सकते, तो उन्हें पढ़वा लीजिए। आपको तीन में से एक शब्द भी समझ नहीं आएगा। सब कुछ मूर्खतापूर्ण और बनावटी ढंग से संस्कृत में ढाला जा रहा है। पुराने धार्मिक ग्रंथों से अस्पष्ट शब्दों को निकालकर हमारी आधुनिक भाषा में फिर से दफना दिया जा रहा है। यह उन कट्टरपंथियों की साजिश है जो इस्लाम से जुड़ी किसी भी चीज से नफरत करते हैं, यहाँ तक कि अरबी या फारसी शब्दों से भी, जिनका इस्तेमाल ब्रह्मपुर के आम लोग सैकड़ों वर्षों से करते आ रहे हैं।

माननीय गृह मंत्री (श्री एल.एन. अग्रवाल): माननीय सदस्य की कल्पनाशीलता मुझे बेहद पसंद है। लेकिन हमेशा की तरह, वे दाएं से बाएं

की ओर सोच रही हैं।

बेगम आबिदा खान: तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ऐसी बोलने की? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? मैं चाहती हूँ कि पूर्ण विकसित संस्कृत को राज्य की आधिकारिक भाषा बना दिया जाए—तब तुम भी देखोगे! एक दिन तुम्हें भी पूर्ण विकसित संस्कृत पढ़ने और बोलने के लिए मजबूर किया जाएगा, और इससे तुम और भी ज़्यादा परेशान हो जाओगे। तब तुम्हें भी अपने ही देश में परदेसी जैसा महसूस होगा। इसलिए बेहतर यही होगा कि संस्कृत को आधिकारिक भाषा बना दिया जाए। तब हिंदू और मुस्लिम दोनों लड़कों को समान अवसर मिलेंगे और वे बराबरी के स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकेंगे।

बहस इसी तरह आगे बढ़ी, विरोध की लगातार लहरें एक अडिग दीवार को तोड़ती हुई आगे बढ़ रही थीं। अंततः, कांग्रेस पार्टी के एक सदस्य द्वारा समापन का प्रस्ताव रखा गया और सदन की कार्यवाही स्थगित कर दी गई।

14.27

सदन के ठीक बाहर महेश कपूर ने अपने पुराने संसदीय सचिव को पकड़ लिया।

‘तो, तुम बदमाश, अब भी कांग्रेस के साथ हो।’

अब्दुस सलाम अपने पूर्व मंत्री की आवाज सुनकर प्रसन्न होकर मुड़ गए। उन्होंने इधर-उधर थोड़ा देखते हुए कहा, 'हमें इस बारे में बात करनी चाहिए।'

'ऐसा लगता है कि हमने काफी समय से बात नहीं की है—जब से मैं विपक्ष में हूं तब से।'

‘ऐसा नहीं है, मंत्री महोदय—’

‘अरे, कम से कम आप मुझे मेरे पुराने पदनाम से तो बुलाते हैं।’

‘बिल्कुल। बात सिर्फ इतनी है कि आप बैतार में थे। मैंने सुना है कि आप जमींदारों के साथ मेलजोल कर रहे थे,’ अब्दस सलाम ने बिना कहे कहा।
‘क्या तुम आईडी बनवाने के लिए घर वापस नहीं गए थे?’
'हां, यह सच है। हम दोनों ही बाहर गए हुए थे। और उससे पहले मैं एआईसीसी की बैठक के लिए दिल्ली में था। लेकिन अब हम बात कर सकते हैं। चलिए कैंटीन चलते हैं।'
‘और वो भयानक, तैलीय समोसे खाओगे? तुम नौजवानों का पेट हमसे ज़्यादा मज़बूत है।’ इन सब बातों के बावजूद महेश कपूर अच्छे मूड में नज़र आ रहे थे।
अब्दुस सलाम को कैंटीन में मिलने वाले चिकने समोसे बहुत पसंद थे।
‘लेकिन मंत्री जी, हम और कहाँ जा सकते हैं? अफसोस, आपका दफ्तर ही तो है—’ उन्होंने अफसोस भरी मुस्कान के साथ कहा।
महेश कपूर हँसे। ‘जब मैंने मंत्रिमंडल छोड़ा था, तब शर्मा को आपको राज्य मंत्री बना देना चाहिए था। तब कम से कम आपका अपना कार्यालय तो होता। जब कोई सचिव ही न हो तो संसदीय सचिव बने रहने का क्या फायदा?’
अब्दुस सलाम भी धीरे से हंसने लगे। वे महत्वाकांक्षी होने के बजाय एक विद्वान व्यक्ति थे, और वे अक्सर सोचते थे कि वे राजनीति में कैसे आ गए और यहीं क्यों टिके रहे। लेकिन उन्हें पता चल गया था कि उनमें नींद में चलने वाले व्यक्ति जैसी प्रतिभा थी।
उन्होंने महेश कपूर की आखिरी टिप्पणी पर विचार किया। उन्होंने जवाब दिया, 'अगर कुछ और नहीं तो कम से कम एक मुद्दा तो है जिसे संभालना है। मुख्यमंत्री ने मुझे इसे संभालने की पूरी छूट दी है।'
महेश कपूर ने कहा, 'लेकिन जब तक सुप्रीम कोर्ट इस मामले पर फैसला नहीं सुना देता, तब तक आप कुछ नहीं कर सकते। और यहां तक कि

जब वे यह तय कर लेंगे कि पहला संशोधन वैध है या नहीं, तब भी इस अधिनियम के संबंध में उच्च न्यायालय के फैसले के खिलाफ जमींदारों की अपील पर फैसला करना होगा। और तब तक कोई भी कार्रवाई स्थगित रहेगी।'

'यह तो बस समय की बात है; हम दोनों मामले जीतेंगे,' अब्दस सलाम ने दूर कहीं देखते हुए कहा, जैसा कि वह अक्सर सोचते समय करते थे। 'और तब तक आप निस्संदेह फिर से राजस्व मंत्री बन चुके होंगे—या शायद इससे भी बेहतर किसी पद पर। कुछ भी हो सकता है। शर्मा को दिल्ली में कैबिनेट में पदोन्नत किया जा सकता है, और अग्रवाल को बेगम आबिदा खान की एक नजर से ही मार डाला जा सकता है। और चूंकि आप कांग्रेस में वापस आ चुके होंगे, इसलिए मुख्यमंत्री पद के लिए आप स्वाभाविक पसंद होंगे।'

महेश कपूर ने अपने शिष्य को तीखी निगाहों से देखते हुए कहा, 'क्या तुम्हें ऐसा लगता है? क्या तुम्हें ऐसा लगता है? अगर तुम्हें इससे बेहतर कुछ नहीं सूझ रहा, तो चलो घर चलते हैं और चाय पीते हैं। मुझे तुम्हारे ये सपने अच्छे लगते हैं।'

'हां, इन दिनों मुझे बहुत सपने आ रहे हैं और मैं बहुत सो रहा हूं,' अब्दस सलाम ने रहस्यमय ढंग से कहा।

प्रेम निवास की ओर चलते हुए वे लगातार बातें करते रहे।

'मंत्री साहब, आपने आज दोपहर की चर्चा में हस्तक्षेप क्यों नहीं किया?' अब्दस सलाम ने पूछा।

'क्यों? आप कारण भली-भांति जानते हैं। मैं हिंदी का एक शब्द भी नहीं पढ़ सकता, और मैं इस तथ्य पर ध्यान आकर्षित नहीं करना चाहता। मैं मुसलमानों के बीच काफी लोकप्रिय हूं—मुश्किल तो हिंदू वोटों को लेकर होगी।'

‘क्या आप कांग्रेस में दोबारा शामिल हो जाएं तो भी?’
‘भले ही मैं कांग्रेस में दोबारा शामिल हो जाऊं।’
क्या आपकी ऐसी कोई योजना है?
मैं इसी विषय पर आपसे बात करना चाहता हूं।
'शायद मैं इस बारे में बात करने के लिए सही व्यक्ति नहीं हूं।'
महेश कपूर ने पूछा, 'क्यों? आप इसे छोड़ने के बारे में तो नहीं सोच रहे होंगे?'
मैं इसी विषय पर आपसे बात करना चाहता हूं।
महेश कपूर ने सोच-समझकर कहा, 'खैर, इसके लिए कई कप चाय की जरूरत पड़ेगी।'
अब्दुस सलाम को हल्की-फुल्की बातचीत करना नहीं आता था, इसलिए चाय की चुस्की लेते ही वह सीधे सवाल पूछने में जुट गए।
क्या आपको सच में लगता है कि नेहरू फिर से सत्ता में आ गए हैं?
'क्या आपको वाकई इस पर शक है?' महेश कपूर ने पलटवार किया।
‘एक तरह से मैं सहमत हूँ,’ अब्दस सलाम ने कहा। ‘इस हिंदू कोड बिल को देखिए। यह उनके लिए एक बड़ी हार थी।’
महेश कपूर ने कहा, 'ऐसा जरूरी नहीं है। अगर वह अगला चुनाव जीत जाते हैं तो ऐसा नहीं होगा। तब वह इसे जनादेश मानेंगे। एक तरह से उन्होंने इसे सुनिश्चित कर लिया है, क्योंकि अब यह चुनावी मुद्दा बन गया है।'
‘आप यह नहीं कह सकते कि उनका ऐसा इरादा था। वह तो बस विधेयक को कानून बनाना चाहते थे।’
महेश कपूर ने अपने कप को हिलाते हुए कहा, 'मैं इससे असहमत नहीं हूं।'
‘और वो अपने ही सांसदों को एकजुट नहीं कर पाए, संसद को तो छोड़

ही दीजिए, इसे पारित करवाने के लिए। हर कोई जानता है कि भारत के राष्ट्रपति इस विधेयक के बारे में क्या सोचते हैं। अगर संसद इसे पारित कर भी देती, तो क्या वो इस पर हस्ताक्षर करते?'

महेश कपूर ने कहा, 'यह एक अलग मुद्दा है।'

'आप इस बारे में सही कह रहे हैं,' अब्दस सलाम ने स्वीकार किया। 'लेकिन मेरे मन में सवाल यह है कि इस विधेयक को पेश करने के लिए पर्याप्त समय और तर्क-वितर्क का मौका नहीं था। संसद में इसे पेश करने का क्या मतलब था जब इस पर बहस करने के लिए बहुत कम समय बचा था? कुछ चर्चाएँ, बहस में देरी, और यह विधेयक निश्चित रूप से खारिज हो जाता।'

महेश कपूर ने सिर हिलाया। वे किसी और बात के बारे में भी सोच रहे थे। यह श्राद्ध का पखवाड़ा था, जो मृत आत्माओं को प्रसन्न करने का अनुष्ठान है। महेश कपूर कभी भी इन अनुष्ठानों को करने के लिए राजी नहीं होते थे, और यह बात श्रीमती महेश कपूर को परेशान करती थी। और इस पखवाड़े के तुरंत बाद रामलीला की रातें शुरू होती थीं, जो दशहरा के भव्य उत्सव तक चलती थीं। यह हिंदुओं का महान त्योहारों का मौसम था, और यह दिवाली तक चलता था। हिंदू कानून को पलटने और हिंदू समाज को बदलने का प्रयास करने वाले विधेयक को पेश करने के लिए नेहरू ने मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इससे बुरा समय नहीं चुना होगा।

महेश कपूर के बोलने का इंतजार करने के बाद अब्दस सलाम ने आगे कहा:

आपने विधानसभा में जो देखा, उससे आपको पता चल जाएगा कि एल.एन. अग्रवाल जैसे लोग किस तरह अपना दबदबा बनाए हुए हैं। केंद्र में चाहे जो भी हो जाए, राज्यों में भी यही हाल रहने वाला है। कम से कम मुझे तो यही लगता है। मुझे ज्यादा बदलाव की उम्मीद नहीं है। पार्टी की

बागडोर जिनके हाथों में है—शर्मा और अग्रवाल जैसे लोग—नेहरू को आसानी से उनसे सत्ता छीनने नहीं देंगे। देखिए, वे कितनी जल्दी अपनी चुनाव समितियां बना रहे हैं और राज्यों में उम्मीदवारों का चयन शुरू कर रहे हैं। बेचारे नेहरू—वे उस धनी व्यापारी की तरह हैं, जो समुद्र पार करने के बाद एक छोटी सी नदी में डूब जाता है।

महेश कपूर ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा, 'आप आखिर किस चीज का हवाला दे रहे हैं?'

'आपके महाभारत के अनुवाद से, मंत्री महोदय।'

महेश कपूर ने चिढ़कर कहा, 'काश तुम ऐसा न करते। मुझे घर पर ही काफी कुछ सुनने को मिलता है, ऊपर से तुम—और वो भी तुम—इसमें शामिल हो जाओ।'

'मंत्री महोदय, मेरा कहने का मतलब सिर्फ यह था कि हमारे उदारवादी प्रधानमंत्री की बड़ी जीत के बावजूद, रूढ़िवादी ही सत्ता में हैं, न कि वे प्रधानमंत्री। या कम से कम मुझे तो यही लगता है।'

अब्दुस सलाम उस बात से बिल्कुल भी परेशान नहीं लग रहे थे, जिसने निस्संदेह उन्हें काफी परेशान किया होगा। बल्कि, वे हल्के-फुल्के लग रहे थे, मानो अपने परिदृश्य के तर्क को समझाने का आनंद ही उस गंभीर स्थिति को संतुलित कर रहा हो।

महेश कपूर ने उस नौजवान के रवैये पर थोड़ा आश्चर्य जताते हुए सोचा कि अगर हालात को साफ-साफ देखा जाए तो स्थिति काफी गंभीर थी। नेहरू द्वारा टंडन को हराने के एक हफ्ते से भी कम समय में—जिसके दो अहम प्रस्तावों में से एक पश्चिम बंगाल के एक पार्टी नेता द्वारा प्रायोजित किया गया था—पश्चिम बंगाल राज्य की कांग्रेस कार्यकारिणी और चुनाव समिति ने चमत्कारिक तेज़ी से उम्मीदवारों के नामांकन के आवेदनों पर कार्रवाई शुरू कर दी थी। उनका मकसद साफ था: शीर्ष नेतृत्व में किसी

भी बदलाव के असर को रोकना और केंद्र सरकार के सामने एक अंतिम निर्णय प्रस्तुत करना—आम चुनाव के लिए उम्मीदवारों की एक सूची तैयार रखना, ताकि कोई भी संभावित अलगाववादी कांग्रेस में वापस आकर उम्मीदवारी पेश न कर सके। कलकत्ता उच्च न्यायालय को राज्य कांग्रेस नेताओं को उनके मंसूबों को अंजाम देने से रोकना पड़ा था।

पूर्व प्रदेश में भी कांग्रेस की राज्य चुनाव समिति का चुनाव आश्चर्यजनक गति से हुआ था। कांग्रेस संविधान के अनुसार, इसमें राज्य कांग्रेस समिति के अध्यक्ष और अधिकतम आठ और न्यूनतम चार अन्य सदस्य होने चाहिए थे। यदि वास्तव में अत्यावश्यक प्रारंभिक कार्यों को निपटाने के लिए इतनी जल्दबाजी आवश्यक होती, तो सत्ताधारी दल कम से कम चार सदस्यों का चुनाव करके संतुष्ट हो सकते थे। लेकिन सभी आठ सदस्यों का चुनाव करके और भविष्य में कांग्रेस में लौटने वाले किसी भी सदस्य के लिए एक भी पद खाली न छोड़कर, उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि नेहरू की इच्छाओं का सम्मान करते हुए वे सार्वजनिक रूप से चाहे जो भी कहें, वे अलगाववादियों की वापसी के बारे में गंभीर नहीं थे। क्योंकि केवल चुनाव समिति की गतिविधियों के माध्यम से ही विभिन्न गुटों से संबंधित कांग्रेसी अपने उम्मीदवारों का उचित हिस्सा और उनके माध्यम से विशेषाधिकार और सत्ता का अपना हिस्सा पाने की आशा कर सकते थे।

महेश कपूर यह सब देख सकते थे, लेकिन फिर भी उन्हें विश्वास था—या शायद उनकी भावना को आशा कहना अधिक उचित होगा—कि नेहरू यह सुनिश्चित करेंगे कि वैचारिक रूप से उनके करीबी लोग राज्यों में विस्थापित और हाशिए पर न चले जाएं। यही बात उन्होंने अब्दुस सलाम को बताई। चूंकि नेहरू को पार्टी में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं दिख रहा था जो उनके लिए जरा भी खतरा पैदा कर सके, इसलिए वे निश्चित रूप से यह सुनिश्चित करेंगे कि अगले पांच वर्षों तक देश की विधानसभाओं में

ऐसे लोग न बैठें जो उनके आदर्शों का केवल दिखावा करते हों।

14.28

अब्दुस सलाम ने अपनी चाय को हिलाया और फिर धीरे से कहा, 'खैर, आपकी बातों से तो मुझे लगता है कि आप कांग्रेस में फिर से शामिल होने की ओर अग्रसर हो रहे हैं, मंत्री साहब।'

महेश कपूर ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मुझे बताइए, आपको इस बारे में इतना संदेह क्यों है? आप इतने आश्वस्त कैसे हो सकते हैं कि वह सत्ता पर फिर से पकड़ नहीं बना पाएगा? उसने पूरी पार्टी की दिशा बदल दी और उस समय सत्ता की बागडोर अपने हाथ में ले ली जब किसी को इसकी उम्मीद नहीं थी। वह हमें और भी चौंका सकता है।'

'जैसा कि आप जानते हैं, मैं दिल्ली में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में था,' अब्दस सलाम ने सहजता से कहा, और दूर किसी बिंदु पर ध्यान केंद्रित किया। 'मैंने उसे बहुत करीब से कमान संभालते हुए देखा। खैर, यह एक अद्भुत दृश्य था—क्या आप इसका प्रत्यक्ष विवरण सुनना चाहेंगे?'

'हाँ।'

"खैर, मंत्री महोदय, यह दूसरा दिन था। हम सब संविधान क्लब में थे। नेहरू पिछले दिन अध्यक्ष चुने गए थे— लेकिन ज़ाहिर है, उन्होंने वास्तव में पद स्वीकार नहीं किया था। उन्होंने कहा कि वे इस मामले पर विचार करने के लिए एक रात रुकना चाहते हैं। उन्होंने हमसे भी इस मामले पर विचार करने के लिए कहा। सभी ने इस मामले पर विचार किया, और अगली दोपहर हम उनके बोलने का इंतज़ार कर रहे थे। ज़ाहिर है, उन्होंने पद स्वीकार नहीं किया था, लेकिन वे अध्यक्ष पद पर थे। मंच पर नेताओं में टंडन भी थे, लेकिन अध्यक्ष पद नेहरू के पास था। पिछले दिन उन्होंने अध्यक्ष पद लेने से इनकार कर दिया था, लेकिन आज, शायद उन्हें लगा

कि इस तरह की अत्यधिक संवेदनशीलता का गलत अर्थ निकाला जा सकता है। या शायद टंडन ने अपना रुख स्पष्ट कर दिया था और उस जगह बैठने से इनकार कर दिया था जहाँ उनकी स्पष्ट रूप से ज़रूरत नहीं थी।" महेश कपूर ने स्वीकार किया, "टंडन उन कुछ लोगों में से थे जिन्होंने देश के विभाजन के फैसले का समर्थन करने से इनकार कर दिया था जब कांग्रेस पार्टी ने विभाजन के लिए मतदान किया था। कोई यह नहीं कहता कि वे सिद्धांतों के पक्के आदमी नहीं थे।"

'खैर,' अब्दुस सलाम ने चलते-चलते कहा, 'पाकिस्तान एक अच्छी बात थी।' महेश कपूर को हैरान देखकर उन्होंने कहा, 'एक बात तो यह है कि अविभाजित भारत में मुस्लिम लीग के पास इतनी शक्ति होने के कारण न तो आप मरह जैसी रियासतों से छुटकारा पा सकते थे और न ही जमींदारी प्रथा को जबरदस्ती खत्म करवा सकते थे। यह बात सब जानते हैं, फिर भी कोई कहता नहीं। लेकिन ये सब बीती बातें हैं, बीती बातें। तो हम वहाँ थे, मंत्री साहब, आदरपूर्वक मंच की ओर देखते हुए, विजेता से यह सुनने की उम्मीद कर रहे थे कि वह किसी की बकवास बर्दाश्त नहीं करेंगे, कि वह यह सुनिश्चित करेंगे कि पार्टी का तंत्र उनके इशारे पर चले, कि चुनाव में सभी उम्मीदवार उनके आदमी होंगे।'

और महिलाएं।

'जी हां। और महिलाएं। पंडितजी महिला प्रतिनिधित्व के प्रति बेहद उत्सुक हैं।'

'आगे बढ़ो, आगे बढ़ो, अब्दुस सलाम, मुद्दे पर आओ।'

"खैर, किसी कमांडर के युद्धघोष या व्यावहारिक योजना के बजाय, हमें दिल की एकता पर भाषण सुनने को मिला। हमें विभाजन, फूट और गुटबंदी से ऊपर उठकर सोचना चाहिए! हमें एक टीम, एक परिवार, एक बटालियन की तरह मिलकर काम करना चाहिए। प्रिय चाचा नेहरू, मेरा

मन किया कि कहूँ, यह भारत है, हिंदुस्तान है, भारत, वह देश जहाँ शून्य से पहले गुटबंदी का आविष्कार हुआ था। अगर दिल भी चार हिस्सों में बँट जाए तो क्या आप हमसे, भारतीयों से, चार सौ से कम हिस्सों में बँटने की उम्मीद कर सकते हैं?"

'लेकिन उन्होंने उम्मीदवारों के बारे में क्या कहा?' महेश कपूर ने पूछा।

अब्दुस सलाम का जवाब संतोषजनक नहीं था।

जवाहरलाल होने के नाते, वह क्या कहते? कि उन्हें पता ही नहीं था और उन्हें परवाह भी नहीं थी कि कौन किस गुट से है। कि वे टंडनजी से पूरी तरह सहमत थे कि उम्मीदवार चुनने का सही तरीका उस व्यक्ति को चुनना है जिसने उस पद के लिए आवेदन न किया हो। बेशक, वे यह भी जानते थे कि व्यवहार में यह हमेशा संभव नहीं हो सकता। और जब उन्होंने यह कहा, तो मेरे पास बैठे अग्रवाल स्पष्ट रूप से सहज हो गए—वे सहज हुए और मुस्कुराए। मैं आपको बता सकता हूँ, मंत्री महोदय, मुझे उनकी उस मुस्कान से कोई खास तसल्ली नहीं मिली।

महेश कपूर ने सिर हिलाकर कहा, 'और फिर पंडितजी ने राष्ट्रपति पद स्वीकार करने पर सहमति जताई?'

अब्दुस सलाम ने कहा, 'बिल्कुल नहीं। लेकिन उन्होंने कहा कि उन्होंने इस बारे में सोचा था। सौभाग्य से, उस रात उन्हें थोड़ी नींद आ गई थी। उन्होंने हमें बताया कि पिछले दिन, जब उनका नाम प्रस्तावित किया गया और तुरंत स्वीकार कर लिया गया, तो उन्हें ठीक से समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। उनके शब्द यही थे: "मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं।" लेकिन अब, इस बारे में सोचने के बाद, उन्होंने हमें बताया कि उन्हें एहसास हुआ कि इस ज़िम्मेदारी से बचना उनके लिए आसान नहीं है। बिलकुल भी आसान नहीं है।'

तो आप सभी ने राहत की सांस ली।

“मंत्री जी, यह बात सही है। लेकिन हमने जल्दबाजी कर दी। उनके मन में एक हल्का सा संदेह पैदा हो गया था। मामूली सा संदेह, पर जो उन्हें परेशान कर रहा था। वे सो गए थे और उन्होंने अपना मन बना लिया था। या लगभग, जी हाँ, लगभग अपना मन बना लिया था। लेकिन सवाल यह था: क्या हम भी सो गए थे और हमने फिर से अपना मन बना लिया था —या कम से कम अपना मन नहीं बदला था? और अगर हमने बदल लिया था, तो हम उन्हें कैसे दिखाते कि हम सच में ऐसा चाहते हैं? और हम उन्हें कैसे यकीन दिलाते?’

'तो फिर तुमने क्या किया?' महेश कपूर ने कुछ संक्षिप्त शब्दों में पूछा। उन्हें अब्दस सलाम की कहानी कहने की शैली कुछ ज्यादा ही धीमी लगी।

“खैर, हम क्या कर सकते थे? हमने फिर से हाथ उठाए। लेकिन यह काफी नहीं था। फिर हममें से कुछ ने दोनों हाथ उठाए। लेकिन उससे भी काम नहीं चला। पंडितजी को कोई औपचारिक प्रदर्शन नहीं चाहिए था, न ही हाथों या पैरों से कोई मतदान। उन्हें हमारे “मन और हृदय” का प्रदर्शन चाहिए था। तभी वे तय कर सकते थे कि हमारी विनती स्वीकार करें या नहीं।”

अब्दुस सलाम कुछ देर रुके, सुकरात के समान प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करते हुए, और महेश कपूर ने यह महसूस करते हुए कि इसके बिना बात आगे नहीं बढ़ेगी, वह प्रतिक्रिया प्रदान की।

उन्होंने कहा, 'इससे आप दुविधा में पड़ गए होंगे।'

‘हाँ, बिल्कुल,’ अब्दस सलाम ने कहा। ‘मैं यही सोचता रहा: सत्ता की बागडोर अपने हाथ में लो; अपने उम्मीदवारों का चयन करो। वह दिमाग और दिल की बातें करते रहे। मैंने देखा कि पंत, टंडन और शर्मा उन्हें हैरानी से देख रहे थे। और एल.एन. अग्रवाल मन ही मन अपनी उस टेढ़ी मुस्कान को मुस्कुराते रहे।’

‘आगे बढ़ो, आगे बढ़ो।’
‘तो फिर हमने ताली बजाई।’
लेकिन उससे भी कुछ नहीं हुआ?
नहीं, मंत्री जी, उससे भी बात नहीं बनी। तब हमने प्रस्ताव पारित करने का फैसला किया। लेकिन पंडित नेहरू इसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे। हम तब तक “पंडित नेहरू अमर रहें!” चिल्लाते रहते जब तक हमारी आवाज बैठ न जाती, लेकिन सबको पता था कि इससे उन्हें गुस्सा आ जाएगा। उन्हें व्यक्ति पूजा पसंद नहीं है। उन्हें चापलूसी पसंद नहीं है—चाहे वह खुली हो या ज़ोरदार। वे सच्चे मायने में लोकतंत्रवादी हैं।
'समस्या का समाधान कैसे हुआ, सलाम? क्या आप कृपया मुझे प्रश्न पूछने का इंतजार किए बिना अपनी कहानी बताएंगे?'
अब्दुस सलाम ने कहा, “खैर, इसे सुलझाने का एक ही तरीका था। थके-हारे और अब किसी भी बात पर दोबारा सोचने की अनिच्छा के साथ, हमने नेहरूजी से ही संपर्क किया। हमने बहुत सोच-विचार किया था और खुद को बेकार समझा था, लेकिन हमारी कोई भी बात उन्हें मंज़ूर नहीं हुई थी। शायद वे खुद ही हमें कोई सुझाव दे दें। ऐसी कौन सी बात होगी जिससे उन्हें यकीन हो जाएगा कि हमारा दिल और दिमाग उनके साथ है?” यह सुनकर हमारे सर्वोच्च नेता असमंजस में पड़ गए। उन्हें कुछ पता नहीं था।
‘उन्हें पता नहीं था?’ महेश कपूर आश्चर्य से बोले बिना नहीं रह सके।
‘उन्हें पता नहीं था।’ अब्दस सलाम के चेहरे पर नेहरू के जाने-माने उदास भाव उभर आए। ‘लेकिन कुछ मिनट सोचने के बाद उन्हें समस्या का हल मिल गया। हम सबको उनके साथ देशभक्ति का नारा लगाते हुए “जय हिंद!” कहना था। इससे उन्हें यह पता चलता कि हमारा इरादा नेक है।’
'तो तुमने यही किया?' महेश कपूर ने थोड़ी खेद भरी मुस्कान के साथ

पूछा।

“हमने यही किया। लेकिन हमारी पहली आवाज़ काफी बुलंद नहीं थी। पंडितजी नाखुश दिख रहे थे, और हम कांग्रेस और देश को अपनी आँखों के सामने ढहते हुए देख सकते थे। इसलिए हमने एक और ज़ोरदार आवाज़ लगाई, “जय हिंद!” का ऐसा नारा कि मानो कॉन्स्टिट्यूशन क्लब हमारे कानों के पास ही ढह गया हो। और जवाहरलाल मुस्कुराए। वे मुस्कुराए। सूरज निकला और सब ठीक हो गया।”

‘और बस इतना ही?’ ‘और बस इतना ही।’

14.29

हर साल श्राद्ध के समय, श्रीमती रूपा मेहरा का अपने बड़े बेटे से संघर्ष होता था, जिसमें वे किसी न किसी तरह जीत जाती थीं। हर साल, श्रीमती महेश कपूर का अपने पति से संघर्ष होता था, जिसमें वे हार जाती थीं। और श्रीमती टंडन का तो कोई संघर्ष ही नहीं था, सिवाय अपने पति की यादों के; क्योंकि केदारनाथ ने अपने पिता के अंतिम संस्कार पूरी निष्ठा से किए थे।

रघुबीर मेहरा की मृत्यु चंद्र पखवाड़े के दूसरे दिन हुई थी, और इसलिए, वार्षिक 'पूर्वजों के पखवाड़े' के दूसरे दिन, उनके सबसे बड़े बेटे के घर पर पंडितों को दावत और उपहार देने के लिए बुलाया जाना चाहिए था। लेकिन सनी पार्क स्थित अपने फ्लैट में मोटे, नंगे बदन, धोती पहने पंडितों का मंत्रोच्चार करना और चावल-दाल, पूरियां-हलवा, दही-खीर खाना अरुण को बिलकुल भी पसंद नहीं था। हर साल श्रीमती रूपा मेहरा उन्हें अपने पिता की आत्मा के लिए अनुष्ठान करने के लिए मनाने की कोशिश करती थीं। हर साल अरुण अंधविश्वास के इस पूरे झंझट को नकार देते थे। श्रीमती रूपा मेहरा ने फिर वरुण को राजी किया और उसे खर्चों के लिए आवश्यक धन भेजा, और वरुण मान गया—आंशिक रूप से

इसलिए क्योंकि वह जानता था कि इससे उसके भाई को बुरा लगेगा; कुछ हद तक अपने पिता के प्रति प्रेम के कारण (हालाँकि उन्हें यह विश्वास करना कठिन लग रहा था कि कढ़ी, जो उनके पिता के पसंदीदा व्यंजनों में से एक थी और जिसे पंडितों की दावत में शामिल करना अनिवार्य था, अंततः उन तक पहुँचेगी); लेकिन मुख्यतः इसलिए कि वे अपनी माँ से प्रेम करते थे और जानते थे कि यदि उन्होंने इनकार किया तो उन्हें कितना कष्ट होगा। वह स्वयं श्राद्ध नहीं कर सकती थीं; यह किसी पुरुष द्वारा ही किया जाना था। और यदि सबसे बड़े पुत्र द्वारा नहीं, तो सबसे छोटे पुत्र द्वारा—या, इस मामले में, छोटे पुत्र द्वारा।

'मैं इस घर में ऐसी कोई भी शरारत बर्दाश्त नहीं करूंगा, मैं आपको यह स्पष्ट कर देता हूं!' अरुण ने कहा।

वरुण ने आक्रामक लहजे में कहा, 'यह पापा की आत्मा के लिए है।'

'पिताजी की आत्मा! बिलकुल बकवास। अब तो हम आईएएस परीक्षा पास कराने के लिए मानव बलि भी देंगे।'

'पापा के बारे में इस तरह बात मत करो!' वरुण गुस्से से आग बबूला होकर और सहमकर चिल्लाया। 'क्या तुम माँ को थोड़ी सी भी मानसिक शांति नहीं दे सकते?'

'पागल? भावुक!' अरुण ने नाक सिकोड़ते हुए कहा।

वरुण ने कई दिनों तक अपने भाई से बात नहीं की और घर में चुपचाप इधर-उधर घूमता रहा, गुस्से से घूरता रहा; अपर्णा भी उसे खुश नहीं कर पाई। फोन बजते ही वह चौंक जाता। आखिरकार मीनाक्षी को भी इससे चिढ़ होने लगी और अंत में अरुण को भी, अपने रूढ़िवादी रवैये के बावजूद, थोड़ा शर्मिंदगी महसूस होने लगी।

अंततः वरुण को बगीचे में एक पंडित को भोजन कराने की अनुमति मिल गई। उसने शेष धन पास के एक मंदिर में दान कर दिया और निर्देश दिया

कि इसका उपयोग कुछ गरीब बच्चों को भोजन कराने के लिए किया जाए। और उसने ब्रह्मपुर को पत्र लिखकर अपनी माताजी को सूचित किया कि सभी अनुष्ठान विधिवत संपन्न हो गए हैं।

श्रीमती रूपा मेहरा ने अपनी समधिन को पत्र पढ़कर सुनाया और साथ-साथ उसका अनुवाद भी करती रहीं, उनकी आंखों में आंसू थे।

श्रीमती महेश कपूर ने उदास मन से सुना। उनकी वार्षिक लड़ाई बेटों से नहीं, बल्कि पति से होती थी। उनके माता-पिता का श्राद्ध हर साल उनके दिवंगत भाई के सबसे बड़े बेटे द्वारा संतोषजनक ढंग से संपन्न किया जाता था। अब उनकी इच्छा थी कि उनके ससुर और सास की आत्माओं को भी इसी प्रकार प्रसन्न किया जाए। लेकिन उनके बेटे को इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी और उसने हमेशा की तरह उन्हें फटकारा।

'ओह, हे प्रियतमा, तुम मुझसे तीन दशकों से अधिक समय से विवाहित हो और हर गुजरते वर्ष के साथ तुम और अधिक अज्ञानी होते जा रहे हो।'

श्रीमती महेश कपूर ने कोई जवाब नहीं दिया। इससे उनके पति का हौसला बढ़ा।

'ऐसी मूर्खता पर कैसे विश्वास किया जा सकता है? उन लालची पंडितों और उनके अंधविश्वास पर? "मैंने गाय के लिए इतना खाना अलग रखा है। कौवे के लिए इतना। कुत्ते के लिए इतना। और बाकी मैं खा लूँगा। और! और! और पूरियाँ, और हलवा।" फिर वे डकारते हैं और भीख माँगते हैं: "अपनी कृपा और दिवंगत आत्मा के प्रति अपने प्रेम के अनुसार दान करो। क्या? केवल पाँच रुपये? क्या यही तुम्हारा प्रेम है उनके लिए?" मैं तो ऐसे व्यक्ति को भी जानता हूँ जिसने एक पंडित की पत्नी को नसवार दे दी क्योंकि उसकी अपनी मरी हुई माँ को नसवार पसंद थी! खैर, मैं अपने माता-पिता की आत्मा को ऐसी उपहास से परेशान नहीं करूँगा। मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि आशा करता हूँ कि कोई मेरे लिए श्राद्ध

करने की हिम्मत न करे।'

इससे श्रीमती महेश कपूर को ठेस पहुंची और उन्होंने विरोध जताया। उन्होंने कहा, 'अगर प्राण आपके लिए श्राद्ध करने से इनकार करता है, तो वह मेरा बेटा नहीं रहेगा।'

महेश कपूर ने कहा, 'प्राण में बहुत समझदारी है। और मुझे लगने लगा है कि मान भी समझदार लड़का है। सिर्फ मेरी बात मत करो—वे तो तुम्हारे लिए यह प्रदर्शन भी नहीं करेंगे।'

महेश कपूर को अपनी पत्नी को चिढ़ाने और उसे दुख पहुँचाने में आनंद आता था या नहीं, यह कहना मुश्किल है, लेकिन वह खुद को रोक नहीं पाए। महेश कपूर की पत्नी, जो काफी सहनशील थीं, लगभग रोने लगीं। जब यह झगड़ा शुरू हुआ, तब वीना उनसे मिलने आई हुई थी, और उसकी माँ ने उससे कहा:

'जानवर।'

जी हां, अम्माजी।

'अगर ऐसा कुछ होता है, तो तुम भास्कर को बता देना कि वह मेरे लिए श्राद्ध करे। जरूरत पड़ने पर उसे जनेऊ पहना देना।'

'पवित्र धागा! भास्कर पवित्र धागा नहीं पहनेगा,' महेश कपूर ने कहा। 'वो इसका इस्तेमाल पतंग उड़ाने के लिए करेगा। या हनुमान की पूंछ की तरह।' उन्होंने इस अपवित्रता पर शरारती हंसी हंसते हुए कहा।

'यह फैसला उनके पिता को करना है,' श्रीमती महेश कपूर ने शांत स्वर में कहा।

'वह वैसे भी बहुत छोटा है।'

'इसका फैसला भी उनके पिता को ही करना है,' श्रीमती महेश कपूर ने कहा। 'वैसे भी, मैं अभी मर नहीं रही हूं।'

महेश कपूर ने कहा, 'लेकिन आप तो मरने के लिए पूरी तरह से दृढ़

संकल्पित लग रहे हैं। हर साल इस समय हम इसी तरह की बेवकूफी भरी बातें करते हैं।'
श्रीमती महेश कपूर ने कहा, 'बेशक मैं मरने के लिए दृढ़ संकल्पित हूँ। वरना मैं अपने पुनर्जन्मों को कैसे सहूँगी और अंततः उन्हें समाप्त करूँगी?' अपने हाथों की ओर देखते हुए उन्होंने कहा, 'क्या आप अमर होना चाहते हैं? अमर होने से बुरा मैं कुछ सोच ही नहीं सकती, इससे बुरा कुछ नहीं।'

भाग पंद्रह

15.1

अपने छोटे बेटे के पत्र के एक सप्ताह से भी कम समय बाद, श्रीमती रूपा मेहरा को अपने बड़े बेटे का पत्र मिला। हमेशा की तरह, वह पत्र अस्पष्ट था—इतना अस्पष्ट कि मानो किसी भी संभावित पाठक के प्रति अवमानना का भाव हो। हालाँकि, उसमें जो खबर थी वह महत्वपूर्ण थी; और टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं के जंगल में लिखे पत्रों के कुछ अंशों को समझने की श्रीमती रूपा मेहरा की बेताब कोशिशों ने उनके उच्च रक्तचाप को और भी बदतर बना दिया।
चौंकाने वाली खबर मुख्य रूप से चटर्जी बच्चों से जुड़ी थी। मीनाक्षी और काकोली, इन दो महिलाओं में से एक का गर्भ गिर गया था और दूसरी को मंगेतर मिल गया था। दीपांकर पुल मेले से अभी भी अनिश्चित अवस्था में लौटा था, 'लेकिन एक बेहतर स्तर पर'। युवा तपन ने घर एक दुखी लेकिन अस्पष्ट पत्र लिखा था - अरुण के अनुसार, यह किशोरावस्था की आम उदासी थी। और अमित ने एक शाम जब वह ड्रिंक के लिए आया था, तब उसने बातों-बातों में कह दिया था कि वह लता को पसंद करता है, जिसका, उसकी अत्यधिक चुप्पी को देखते हुए, केवल यही मतलब हो

सकता था कि वह उसमें 'रुचि' रखता है। अगले कुछ शब्दों को समझने की कोशिश करते हुए, श्रीमती रूपा मेहरा यह जानकर हैरान रह गईं कि अरुण को यह इतना बुरा विचार नहीं लगा। निश्चित रूप से, उसके अनुसार, इससे लता पूरी तरह से अनुपयुक्त हरेश के प्रभाव से बाहर निकल जाएगी। जब यह विचार वरुण के सामने रखा गया, तो उसने भौंहें चढ़ाकर कहा, 'मैं पढ़ाई कर रहा हूँ,' मानो उसकी बहन का भविष्य उसके लिए बिल्कुल भी मायने नहीं रखता हो। लेकिन, आईएएस परीक्षा की तैयारी के कारण वरुण का शमशुकरण कम होने लगा था, इसलिए उसका मूड दिन-ब-दिन बिगड़ता जा रहा था। उसने पापा के श्राद्ध के दौरान बेहद अजीब व्यवहार किया, सनी पार्क वाले घर को मोटे पुजारियों का अड्डा बनाने की कोशिश की, और यहाँ तक कि उनसे (मीनाक्षी ने सुन लिया था) पूछा कि क्या आत्महत्या के लिए भी श्राद्ध किया जा सकता है।

इंग्लैंड में होने वाले आम चुनावों के बारे में कुछ टिप्पणियों के साथ ('बेंटसेन प्राइस में हम इसे हॉब्सन की पसंद मानते हैं: एटली बचकाना है और चर्चिल बूढ़ा'), लेकिन भारतीय चुनावों के बारे में कोई टिप्पणी नहीं करते हुए, श्रीमती रूपा मेहरा को अपने ब्लड शुगर का ध्यान रखने की हल्की सी सलाह देते हुए, अपनी बहनों को प्यार देने के लिए कहते हुए, और सभी को आश्वस्त करते हुए कि मीनाक्षी ठीक है और उसे कोई स्थायी नुकसान नहीं हुआ है, अरुण ने अपनी बात समाप्त की।

श्रीमती रूपा मेहरा स्तब्ध बैठी थीं, उनका दिल बेतहाशा धड़क रहा था। उन्हें अपने पत्रों को दर्जनों बार पढ़ने की आदत थी, किसी ने किसी से किसी बात पर जो टिप्पणी की थी, उसे वे कई दिनों तक हर संभव कोण से परखती थीं। इतनी सारी खबरें—और वो भी अचानक और इतनी महत्वपूर्ण—एक साथ पचाना उनके लिए मुश्किल था। मीनाक्षी का

गर्भपात, काकोली-हंस का गठजोड़, अमित की धमकी, हरीश का ज़िक्र न होना, सिवाय एक हल्की-फुल्की टिप्पणी के, वरुण का परेशान करने वाला रवैया—श्रीमती रूपा मेहरा को समझ नहीं आ रहा था कि हँसें या रोएँ, और उन्होंने तुरंत एक गिलास नींबू पानी मंगवाया।

और उनकी लाडली अपर्णा का कोई अता-पता नहीं था। संभवतः वह ठीक ही होगी। श्रीमती रूपा मेहरा को अपर्णा की एक कही हुई बात याद आई, जो अब परिवार में मशहूर हो चुकी है: 'अगर इस घर में एक और बच्चा आया, तो मैं उसे सीधे कूड़ेदान में फेंक दूंगी।' आजकल बच्चों में होशियारी का बोलबाला था। उन्हें उम्मीद थी कि उमा भी अपर्णा की तरह प्यारी होगी, लेकिन कम कड़वी।

श्रीमती रूपा मेहरा सविता को उसके भाई का पत्र दिखाने के लिए बेताब थीं, लेकिन फिर उन्होंने फैसला किया कि बेहतर होगा कि उन्हें एक-एक करके सारी खबरें बताई जाएं। इससे सविता को कम परेशानी होगी और उसे अधिक जानकारी मिलेगी। अरुण के कड़े विचारों या वरुण की स्पष्ट उदासीनता को जाने बिना, अमित के मामले में सविता का अपना निर्णय क्या होगा? तो! श्रीमती रूपा मेहरा ने गंभीर भाव से सोचा: लता को अपनी समझ से परे कविताओं की किताब उपहार में देने के पीछे यही कारण रहा होगा।

लता की बात करें तो, इन दिनों उन्हें कविता में कुछ ज़्यादा ही दिलचस्पी हो गई थी, यहाँ तक कि वे कभी-कभार ब्रह्मपुर साहित्यिक समिति की बैठकों में भी शामिल हो जाती थीं। यह अच्छा संकेत नहीं था। यह सच था कि वे हरेश को पत्र लिख रही थीं, लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा को उन पत्रों की विषयवस्तु का ज्ञान नहीं था। लता अपनी निजता को लेकर हद से ज़्यादा सतर्क हो गई थीं। एक बार श्रीमती रूपा मेहरा ने उनसे पूछा था, 'क्या मैं तुम्हारी माँ हूँ या नहीं?' लता का निर्मम उत्तर था, 'अरे माँ, ऐसा

मत कहिए!'

और बेचारी मीनाक्षी! श्रीमती रूपा मेहरा ने सोचा। उन्हें तुरंत उसे पत्र लिखना चाहिए। उन्हें लगा कि एक मुलायम कागज़ की ज़रूरत है, और सहानुभूति से उनकी आँखें नम हो गईं, वे अपने बैग से कागज़ लेने चली गईं। मीनाक्षी की वह निर्मम, पत्थर पिघलाने वाली छवि कुछ पल के लिए श्रीमती रूपा मेहरा के तीसरे पोते की कोमल, नाजुक और टूटी हुई छवि में बदल गई, जिसके बारे में उन्हें लगता था कि वह लड़का ही होगा।

अगर श्रीमती रूपा मेहरा को मीनाक्षी की गर्भावस्था या उसके गर्भपात के बारे में सच्चाई पता होती, तो वे निश्चित रूप से सहानुभूति नहीं दिखातीं। मीनाक्षी इस बात से भयभीत थी कि कहीं उसका बच्चा अरुण का न हो —और साथ ही, दूसरी गर्भावस्था से उसके व्यक्तित्व और सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को लेकर भी चिंतित थी—इसलिए उसने तुरंत कार्रवाई करने का फैसला किया। जब उसके डॉक्टर—चमत्कार करने वाले डॉ. इवांस—ने उसकी मदद करने से इनकार कर दिया, तो वह अपनी करीबी सहेलियों से सलाह लेने गई, जो 'शैडी लेडीज़' समूह में थीं, और उनसे पहले गोपनीयता की शपथ ली। उसे पूरा यकीन था कि अगर अरुण को इस अवांछित बच्चे से छुटकारा पाने के उसके प्रयास के बारे में पता चला, तो वह उतना ही बेवजह क्रोधित होगा जितना वह तब हुआ था जब उसने अपने पिता के पदक से खुद को मुक्त किया था।

उसने हताशा से सोचा, कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि न तो गहनों की चोरी और न ही खंडेलवाल के कुत्तों ने उसके गर्भ में पल रहे भ्रूण को बाहर निकाला।

मीनाक्षी गर्भपात की दवाइयों, चिंता, विरोधाभासी सलाह और कष्टदायक कसरतों से बुरी तरह बीमार हो चुकी थी, लेकिन एक दोपहर, राहत की सांस लेते हुए, उसका मनचाहा गर्भपात हो गया। उसने तुरंत बिली को

फोन किया, फोन पर उसकी आवाज कांप रही थी; जब उसने घबराकर पूछा कि क्या वह ठीक है, तो उसने उसे आश्वस्त किया। यह अचानक और दर्द रहित था, हालांकि चिंताजनक और बेहद कष्टदायक था। बिली उसकी हालत देखकर बहुत दुखी लग रहा था।

और अरुण, अपनी ओर से, उसके प्रति कई दिनों तक इतना कोमल और सुरक्षात्मक रहा कि उसे लगने लगा कि इस पूरे दुखद घटनाक्रम में कम से कम कुछ तो अच्छा हो सकता है।

15.2

अगर इच्छाएं पूरी हो सकतीं, तो श्रीमती रूपा मेहरा इस समय कलकत्ता मेल में सवार होतीं और कलकत्ता और प्राहापुर में अपने सभी परिचितों से उनके हर काम, सोच, योजना और बयान के बारे में पूछताछ कर रही होतीं। लेकिन, यात्रा के खर्च के अलावा, उनके ब्रह्मपुर में रुकने के कुछ ठोस कारण थे। एक तो यह कि बच्ची उमा अभी बहुत छोटी थी और उसे दादी की देखभाल की ज़रूरत थी। जहाँ मीनाक्षी कभी अपर्णा को लेकर बहुत ज़्यादा सख़्त रहती थी तो कभी उसे नज़रअंदाज़ कर देती थी (अपनी सास को एक तरह से सुपर-आया मानकर कलकत्ता में घूमती-फिरती और लोगों से मिलती-जुलती रहती थी), वहीं सविता ने उमा को श्रीमती रूपा मेहरा (और जब श्रीमती महेश कपूर आती थीं तो उनके साथ भी) के साथ एक स्वाभाविक, बेटी के प्यार से बाँटा।

दूसरी बात—और मानो अरुण के पत्र में पहले से ही काफी नाटकीयता न हो—आज शाम को 'ट्वेल्थ नाइट' का मंचन था। यह वार्षिक दिवस समारोह और चाय पार्टी के तुरंत बाद विश्वविद्यालय सभागार में होना था, और उनकी अपनी लता भी उसमें अभिनय करेंगी—साथ ही मालती भी, जो उनके लिए बेटी के समान थी। (श्रीमती रूपा मेहरा इन दिनों मालती के प्रति काफी सकारात्मक थीं, उन्हें उसमें एक संरक्षक के रूप में देखती

थीं, न कि किसी साजिशकर्ता के रूप में।) वह लड़का 'के' भी अभिनय करेगा; लेकिन भगवान का शुक्र है, श्रीमती रूपा मेहरा ने सोचा, अब और पूर्वाभ्यास नहीं होंगे। और दशहरा की छुट्टी में विश्वविद्यालय का अवकाश बस कुछ ही दिनों में था, इसलिए परिसर में आकस्मिक मुलाकातों की भी कोई खास संभावना नहीं थी। फिर भी, श्रीमती रूपा मेहरा को लगा कि एहतियात के तौर पर उन्हें ब्रह्मपुर में ही रहना चाहिए। केवल जब क्रिसमस की छोटी छुट्टियों के लिए पूरा परिवार—प्राण, सविता, लता, लेडी बेबी और परिवार की मुखिया—कलकत्ता घूमने आएगा, तभी वह अपनी निगरानी ड्यूटी छोड़ेंगी।

हॉल छात्रों, पूर्व छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों और रिश्तेदारों से खचाखच भरा हुआ था, साथ ही ब्रह्मपुर समाज के कुछ जाने-माने लोग भी मौजूद थे, जिनमें कुछ साहित्यिक वकील और न्यायाधीश भी शामिल थे। श्रीमान और श्रीमती नौरोजी, कवयित्री मखीजानी और मुखर श्रीमती सुप्रिया जोशी भी उपस्थित थीं। हेमा की ताईजी भी वहां मौजूद थीं, साथ में हंसती हुई लड़कियों का एक समूह भी था, जिनमें से अधिकतर उनकी शिष्याएं थीं। प्रोफेसर और श्रीमती मिश्रा भी उपस्थित थे। परिवार में प्राण तो थे ही (क्योंकि उन्हें कोई रोक नहीं सकता था, और वे वास्तव में काफी बेहतर महसूस कर रहे थे), सविता (उमा शाम के लिए अपनी आया के साथ रह गई थीं), मान, भास्कर, डॉ. किशन चंद सेठ और पार्वती भी मौजूद थे।

श्रीमती रूपा मेहरा अत्यधिक उत्साहित थीं जब पर्दा उठा और दर्शकों में अचानक सन्नाटा छा गया, और सितार जैसी ध्वनि वाले वीणा के साथ ड्यूक ने शुरू किया: 'यदि संगीत प्रेम का भोजन है, तो बजाते रहो—'

वह जल्द ही नाटक के जादू में पूरी तरह खो गई। और वास्तव में, नाटक के पहले भाग में कुछ समझ से परे अश्लीलता और मसखरेपन के अलावा

कोई बड़ी गड़बड़ी नहीं थी। जब लता मंच पर आई, तो श्रीमती रूपा मेहरा को मुश्किल से विश्वास हुआ कि यह उनकी बेटी है।

उसके हृदय में गर्व का भाव उमड़ आया और उसकी आँखों में आँसू आ गए। प्राण और सविता, जो उसके दोनों ओर बैठे थे, लता की उपस्थिति के प्रति इतने उदासीन कैसे हो सकते थे?

'लता! देखो, लता!' उसने फुसफुसाते हुए उनसे कहा।

'जी मां,' सविता ने कहा। प्राण ने बस सिर हिलाया।

जब ओलिविया, जो वियोला से प्यार करती थी, ने कहा:

भाग्य, अपनी शक्ति दिखाओ। हम स्वयं के ऋणी नहीं हैं।

जो तय है वही होगा; और ऐसा ही हो!

रूपा मेहरा ने अपने जीवन में घटी कई घटनाओं पर दार्शनिक ढंग से विचार करते हुए दुख से सिर हिलाया। उन्होंने सोचा, शेक्सपियर को मानद भारतीय नागरिकता प्रदान करना कितना सत्य है!

इस बीच, मालती ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया था। सर टोबी के इस वाक्य, 'देखो, छोटा बदमाश आ गया है—अब क्या हाल है, मेरी भारत की बिच्छू बूटी?' पर सभी ने तालियाँ बजाईं, विशेषकर मेडिकल छात्रों के एक समूह ने। और मध्यांतर (जिसे श्री बरुआ ने तीसरे अंक के बीच में रखा था) पर मारिया और सर टोबी के लिए एक बार फिर जोरदार तालियाँ बजीं। श्रीमती रूपा मेहरा को लता और मालती को बधाई देने के लिए मंच के पीछे जाने से रोकना पड़ा। यहाँ तक कि कबीर-मालवोलियो का किरदार भी अब तक निर्दोष साबित हुआ था, और वह भी दर्शकों के साथ उसकी चुटकियों और मूर्खता पर हँस पड़ी थीं।

कबीर ने विश्वविद्यालय के दबंग और अलोकप्रिय रजिस्ट्रार का लहजा अपना लिया था, और चाहे इससे श्री बरुआ के भविष्य को फायदा हो या न हो, इससे छात्रों का आनंद और भी बढ़ गया। दरअसल, डॉ. किशन चंद

सेठ ही मालवोलियो के एकमात्र समर्थक थे, जिन्होंने मध्यांतर में ज़ोर-ज़ोर से कहा कि उनके साथ जो किया जा रहा है वह अनुचित है।
उन्होंने उग्र स्वर में कहा, 'अनुशासन की कमी ही पूरे देश की समस्या है।'
भास्कर नाटक से ऊब गया था। यह रामलीला जितना रोमांचक बिल्कुल नहीं था, जिसमें उसे हनुमान के वानर सैनिकों में से एक की भूमिका मिली थी। इस नाटक का अब तक का एकमात्र रोचक हिस्सा मालवोलियो द्वारा 'म, ओ, ए, आई' की प्रस्तुति ही थी।
दूसरा भाग शुरू हुआ। श्रीमती रूपा मेहरा ने सिर हिलाया और मुस्कुराईं। लेकिन जब उन्होंने अपनी बेटी को कबीर से यह कहते सुना, 'क्या तुम सोने जाओगे, मालवोलियो?' तो वह अपनी कुर्सी से लगभग उछल पड़ीं और मालवोलियो के घिनौने, निर्भीक जवाब पर उनकी सांसें थम गईं।
‘बस करो—तुरंत बंद करो!’ वह चिल्लाना चाहती थी। ‘क्या इसीलिए मैंने तुम्हें विश्वविद्यालय भेजा था? मुझे तुम्हें इस नाटक में अभिनय करने की अनुमति कभी नहीं देनी चाहिए थी। कभी नहीं। अगर पापा इसे देखते तो उन्हें तुम पर शर्म आती।’
‘माँ!’ सविता ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘क्या आप ठीक हैं?’
‘नहीं!’ उसकी माँ चिल्लाना चाहती थी। ‘मैं ठीक नहीं हूँ। और तुम अपनी छोटी बहन को ऐसी बातें कैसे कहने दे सकती हो? बेशर्म!’ शेक्सपियर की भारतीय नागरिकता तुरंत रद्द कर दी गई।
लेकिन उसने कुछ नहीं कहा।
हालांकि, श्रीमती रूपा मेहरा की बेचैन हरकतें दूसरे भाग में उनके पिता की गतिविधियों के सामने कुछ भी नहीं थीं। वह और पार्वती परिवार के बाकी सदस्यों से कुछ पंक्तियाँ दूर बैठे थे। उस दृश्य को देखकर वह बेकाबू होकर रोने लगे, जब बेदखल किए गए समुद्री कप्तान ने वियोला को उसका भाई समझकर उसे फटकारा।

क्या अब तुम मुझे मना कर दोगे?
क्या यह संभव है कि मैं तुम्हारे लिए उचित दंड भुगतूँ?
क्या समझाने-बुझाने की क्षमता में कमी हो सकती है? मेरी पीड़ा को मत बढ़ाओ।
कहीं ऐसा न हो कि इससे मैं इतना कुटिल मनुष्य बन जाऊं।
उन दयालुताओं के लिए आपको फटकार लगाने के लिए
मैंने यह तुम्हारे लिए किया है।
डॉ. किशन चंद सेठ जोर-जोर से रोने लगे। आश्चर्यचकित होकर सभी लोगों ने गर्दन घुमाकर उनकी ओर देखा—पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
मुझे थोड़ा बोलने दीजिए। यह युवक जिसे आप यहाँ देख रहे हैं।
मैंने मृत्यु के मुंह से उसका आधा हिस्सा छीन लिया।
उन्होंने प्रेम की ऐसी पवित्रता से उन्हें राहत दी,—
और उसकी छवि के लिए, जिसके बारे में मुझे लगा कि वह वादा करती है
मैंने अत्यंत आदरणीय भक्ति दिखाई।
तब तक डॉ. किशन चंद सेठ की सांसें लगभग अस्थमा के रोगी की तरह फूलने लगी थीं। उन्होंने अपनी तकलीफ कम करने के लिए अपनी छड़ी से ज़मीन पर ज़ोर-ज़ोर से मारना शुरू कर दिया।
पार्वती ने उससे वह चीज ले ली और काफी तीखे स्वर में कहा: 'किशी! यह दीदार नहीं है!'—और इससे वह बुरी तरह होश में आ गया।
लेकिन कुछ ही समय बाद, भीतरी कमरे में बंद मालवोलियो की पीड़ा—जो घबराहट से लगभग पागलपन की हद तक पहुँच गया था—और बढ़ गई, और वह इस तरह रोने लगा मानो उसका दिल टूट जाएगा। उसके आसपास मौजूद कई लोग हँसना बंद करके उसकी ओर देखने लगे।
इस पर पार्वती ने उसे उसकी छड़ी वापस देते हुए कहा, 'किशी, चलो अब चलते हैं। अभी! तुरंत!'

लेकिन किशी को यह सब मंजूर नहीं था। आखिरकार उसने खुद पर काबू पा लिया और नाटक के बाकी हिस्से को मंत्रमुग्ध होकर, लगभग बिना आँसू बहाए, बैठकर देखा। उसकी बेटी, जिसे मालवोलियो से ज़रा भी सहानुभूति नहीं थी, नाटक के प्रति धीरे-धीरे शांत होती जा रही थी, क्योंकि वह खुद को और भी मूर्ख साबित करता जा रहा था और अंत में उसने अपमानजनक ढंग से नाटक छोड़ दिया।

चूंकि नाटक का अंत तीन सुखद विवाहों के साथ हुआ (और भारतीय फिल्मों की तरह, चार गीतों में से अंतिम गीत के साथ समाप्त हुआ), इसलिए श्रीमती रूपा मेहरा की नज़र में यह एक सफल नाटक था, जो चमत्कारिक रूप से और सुविधाजनक ढंग से मालवोलियो और बिस्तर के बारे में सब कुछ भूल चुकी थीं। पर्दा गिरने के बाद और 'निर्माता! निर्माता!' की आवाज़ों के बीच शर्मीले श्री बरुआ के मंच पर आने के बाद, वह दौड़कर मंच के पीछे गईं और लता को गले लगाया, और मेकअप समेत उन्हें चूमते हुए कहा:

‘तुम मेरी लाडली बेटी हो। मुझे तुम पर बहुत गर्व है। और मालती पर भी। काश...’

वह रुक गई और उसकी आँखों में आंसू आ गए। फिर उसने खुद को संभालते हुए कहा, 'अब जल्दी से कपड़े बदल लो, चलो घर चलते हैं। बहुत देर हो गई है और इतनी बातें करने के बाद तुम थक गए होगे।'

उसने मालवोलियो को आसपास मंडराते हुए देखा था। वह कुछ अन्य अभिनेताओं से बातचीत कर रहा था, लेकिन अब लता और उसकी माँ की ओर मुड़ गया था। ऐसा लग रहा था कि वह लता का अभिवादन करना चाहता था, या कम से कम कुछ कहना चाहता था।

‘माँ—मैं नहीं आ सकती; मैं बाद में आप सबके साथ आ जाऊंगी,’ लता ने कहा।

‘नहीं!’ श्रीमती रूपा मेहरा ने अड़ियल रवैया अपनाते हुए कहा। ‘तुम्हें अभी आना होगा। तुम घर जाकर अपना मेकअप साफ कर सकती हो। सविता और मैं तुम्हारी मदद करेंगे।’

लेकिन चाहे यह उनका खुद का नया अभिनय आत्मविश्वास हो या ओलिविया के 'सहज, विवेकपूर्ण और स्थिर व्यवहार' की निरंतरता, लता ने शांत स्वर में बस इतना कहा:

‘माँ, मुझे माफ़ करना, कलाकारों के लिए एक पार्टी है और हम जश्न मनाने जा रहे हैं। मालती और मैंने इस नाटक पर महीनों काम किया है और ऐसे दोस्त बनाए हैं जिनसे हम दशहरा की छुट्टी के बाद ही मिल पाएंगे। और कृपया चिंता मत कीजिए, माँ; श्री बरुआ यह सुनिश्चित करेंगे कि मैं सुरक्षित घर पहुँच जाऊँ।’

श्रीमती रूपा मेहरा को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ।

फिर कबीर उसके पास आया और बोला:

‘श्रीमती मेहरा?’

'जी?' श्रीमती रूपा मेहरा ने आक्रामक लहजे में कहा, खासकर इसलिए क्योंकि कबीर अपने मेकअप और अजीबोगरीब पहनावे के बावजूद स्पष्ट रूप से आकर्षक था, और श्रीमती रूपा मेहरा आम तौर पर अच्छे रूप-रंग में विश्वास रखती थीं।

कबीर ने कहा, 'श्रीमती मेहरा, मैंने सोचा कि मैं अपना परिचय दे दूं। मैं कबीर दुर्रानी हूं।'

‘जी हां, मुझे पता है,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कुछ तीखे लहजे में कहा। ‘मैंने आपके बारे में सुना है। मैं आपके पिता से भी मिली हूं। क्या आपको कोई आपत्ति है अगर मेरी बेटी कास्टिंग पार्टी में न आए?’

कबीर का चेहरा लाल हो गया। 'नहीं, श्रीमती मेहरा, मैं—'

लता ने कबीर को तीखी निगाहों से देखते हुए कहा, 'मैं आना चाहती हूं।

इसका किसी और से कोई लेना-देना नहीं है।'
श्रीमती रूपा मेहरा को अचानक उन दोनों को दो जोरदार थप्पड़ मारने का मन हुआ। लेकिन इसके बजाय उन्होंने लता, कबीर और यहाँ तक कि मालती को भी घूरकर देखा, फिर बिना कुछ कहे मुड़कर चली गईं।
15.3
फिरोज ने कहा, 'दंगों की कई संभावनाएं हैं। शिया बनाम शिया, शिया बनाम सुन्नी, हिंदू बनाम मुसलमान—'
‘और हिंदू, हिंदुओं के साथ,’ मान ने आगे कहा।
‘ब्रह्मपुर में यह एक नई बात है,’ फिरोज ने कहा।
मेरी बहन कहती है कि इस साल जाटवों ने स्थानीय रामलीला समिति पर अपना दबाव बनाने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि पाँच स्वरूपों में से कम से कम एक का चयन अनुसूचित जाति के लड़के में से होना चाहिए। ज़ाहिर है, किसी ने उनकी बात नहीं मानी। लेकिन इससे परेशानी हो सकती है। मुझे उम्मीद है कि आप खुद बहुत सारे कार्यक्रमों में हिस्सा नहीं लेंगे। मैं आपके बारे में चिंता नहीं करना चाहती।
‘चिंता!’ फ़िरोज़ हँसते हुए बोला। ‘मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि तुम मेरे बारे में चिंता करोगे। लेकिन यह एक अच्छा विचार है।’
‘ओह?’ मान ने कहा। ‘लेकिन क्या आपको किसी न किसी मुहर्रम जुलूस के आगे नहीं आना पड़ता—एक साल आप, अगले साल इम्तियाज, मुझे लगा आपने यही कहा था?’
‘ऐसा सिर्फ आखिरी कुछ दिनों में होता है। मोहर्रम के दौरान मैं ज्यादातर समय चुपचाप ही रहता हूँ। और इस साल मुझे पता है कि मैं अपनी कम से कम दो शामें कहाँ बिताऊँगा।’ फ़िरोज़ ने जानबूझकर रहस्यमय लहजे में कहा।
'कहाँ?'

‘ऐसी जगह जहाँ आपको, एक अविश्वासी होने के नाते, प्रवेश नहीं दिया जाएगा; हालाँकि अतीत में आपने उस दरगाह में सजदा किया है।’

‘लेकिन मुझे लगा कि उसने ऐसा नहीं किया—’ मान ने कहना शुरू किया। ‘मुझे लगा कि उसने उन दस दिनों के दौरान खुद को गाने की अनुमति भी नहीं दी।’

फ़िरोज़ ने कहा, 'वह ऐसा नहीं करती। लेकिन वह अपने घर पर छोटे-छोटे आयोजन करती है जहाँ वह मर्सिया पढ़ती है और सोज़ करती है—यह वाकई अद्भुत होता है। मर्सिया तो उतना नहीं—लेकिन सोज़, जैसा मैंने सुना है, वाकई आश्चर्यजनक होता है।'

मान को रशीद के साथ कविता के अपने संक्षिप्त अध्ययन से पता था कि मर्सिया कर्बला की लड़ाई के शहीदों, विशेषकर पैगंबर के पोते हुसैन के लिए शोकगीत होते हैं। लेकिन उन्हें सोज़ के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

फ़िरोज़ ने कहा, 'यह एक तरह का संगीतमय विलाप है। मैंने इसे कुछ ही बार सुना है, और सईदा बाई के यहाँ कभी नहीं सुना। यह दिल को छू जाता है।'

सईदा बाई को तेरह सदियों पहले मर चुके किसी व्यक्ति के लिए भावुकता से रोते-बिलखते देखना मान के लिए हैरान करने वाला और साथ ही अजीब तरह से रोमांचक भी था। उसने पूछा, 'मैं क्यों नहीं जा सकता? मैं चुपचाप बैठकर देखूंगा—मेरा मतलब है, सुनूंगा। तुम्हें पता है, मैंने गांव में बकरीद मनाई थी।'

“क्योंकि तुम काफ़िर हो, बेवकूफ़। इन निजी समारोहों में सुन्नियों का भी स्वागत नहीं होता, हालाँकि वे कुछ जुलूसों में हिस्सा लेते हैं। मैंने सुना है कि सईदा बाई अपने श्रोताओं को नियंत्रित करने की कोशिश करती हैं, लेकिन उनमें से कुछ शोक में बह जाते हैं और पहले तीन खलीफ़ाओं को

कोसने लगते हैं क्योंकि उन्होंने अली के खलीफ़ा पद के अधिकार को छीन लिया था, और इससे स्वाभाविक रूप से सुन्नी भड़क उठते हैं। कभी-कभी गालियाँ बहुत ही अश्लील होती हैं।"

'और तुम इन सब माफ़ी मांगने वाले कार्यक्रमों में शामिल होगे। तुम इतने धार्मिक कब से हो गए?' मान ने पूछा।

फ़िरोज़ ने कहा, 'मैं ऐसा नहीं हूँ। असल में—और बेहतर होगा कि तुम किसी को मत बताना कि मैंने ऐसा कहा—लेकिन मैं हुसैन का कोई बड़ा प्रशंसक नहीं हूँ। और मुआविया, जिसने उन्हें मरवाया, उतना बुरा नहीं था जितना हम उसे बताते हैं। आख़िरकार, उससे पहले उत्तराधिकार काफ़ी गड़बड़ था, ज़्यादातर खलीफ़ाओं की हत्या कर दी गई थी। एक बार जब मुआविया ने वंशवादी व्यवस्था स्थापित कर दी, तो इस्लाम एक साम्राज्य के रूप में मज़बूत हो सका। अगर उसने ऐसा नहीं किया होता, तो सब कुछ छोटी-छोटी जनजातियों के आपसी झगड़ों में सिमट जाता और बहस करने के लिए कोई इस्लाम ही नहीं होता। लेकिन अगर मेरे पिता ने मुझे यह कहते हुए सुना तो वे मुझे बेदखल कर देंगे। और सईदा बाई मुझे अपने कोमल हाथों से टुकड़े-टुकड़े कर देंगी।'

'तो तुम सईदा बाई के यहाँ क्यों जा रहे हो?' मान ने कुछ तीखे और शंकालु लहजे में कहा। 'क्या तुमने यह नहीं कहा था कि जब तुम वहाँ गए थे तो तुम्हारा स्वागत ठीक से नहीं हुआ था?'

'वह मोहर्रम के दौरान शोक मनाने वाले को कैसे वापस भेज सकती है?'

'और आप वहाँ जाना ही क्यों चाहते हैं?' 'स्वर्ग के झरने से पानी पीने के लिए।'

'बहुत अजीब बात है।'

मेरा मतलब है, युवा तसनीम को देखने के लिए।

'अच्छा, तोते को मेरा प्यार देना,' मान ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। जब

फ़िरोज़ उठा, अपनी कुर्सी के पीछे खड़ा हुआ और मान के कंधों पर हाथ रखा, तब भी मान की भौंहें चढ़ी रहीं।

15.4

'क्या आप कल्पना कर सकते हैं,' बूढ़ी श्रीमती टंडन ने कहा: 'राम या भरत या सीता—एक चमार!'

पड़ोस के लोगों की भावनाओं के इस तरह के सीधे-सादे बयान से वीना असहज महसूस कर रही थी।

और सफाईकर्मी चाहते हैं कि रामलीला, राम के अयोध्या लौटने, भरत से मिलने और राज्याभिषेक के बाद भी जारी रहे। वे सीता से जुड़े उन सभी शर्मनाक प्रसंगों को भी शामिल करना चाहते हैं।

मान ने पूछा क्यों?

'अरे, आपको पता है, आजकल ये लोग खुद को वाल्मीकि कहते हैं और दावा करते हैं कि वाल्मीकि की रामायण, जिसमें इतने सारे प्रसंगों का लंबा-चौड़ा वर्णन है, रामायण का सच्चा ग्रंथ है,' बूढ़ी श्रीमती टंडन ने कहा। 'बस बेवजह की शरारत है।'

वीणा ने कहा: 'रामायण पर कोई विवाद नहीं है। लंका से लौटने के बाद सीता का जीवन वाकई कष्टमय रहा। लेकिन रामलीला हमेशा से तुलसीदास की रामचरितमानस पर आधारित रही है, न कि वाल्मीकि की रामायण पर। सबसे बुरी बात यह है कि केदारनाथ को दोनों पक्षों की इतनी सफाई देनी पड़ती है और उन्हें ही सबसे ज्यादा परेशानी झेलनी पड़ती है। अनुसूचित जातियों से उनके संपर्क के कारण ऐसा होता है।'

'और मुझे लगता है,' मान ने कहा, 'क्योंकि उनमें नागरिक कर्तव्य की भावना थी?'

वीना ने भौंहें चढ़ाकर सिर हिलाया, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या गैरजिम्मेदार मान उस पर व्यंग्य कर रहा था।

‘मुझे लाहौर के वो दिन याद हैं—इनमें से कुछ भी मुमकिन नहीं था,’ बूढ़ी श्रीमती टंडन ने कोमल यादों और आँखों में चमकती आस्था के साथ कहा। ‘लोगों ने बिना पूछे ही मदद की, नगर परिषद ने भी मुफ्त रोशनी मुहैया कराई, और रावण के जो पुतले हमने बनाए थे, वे इतने डरावने थे कि बच्चे अपनी माँ की गोद में चेहरा छिपा लेते थे। हमारे मोहल्ले में शहर की सबसे बेहतरीन रामलीला होती थी। और सारे स्वरूप ब्राह्मण लड़के थे,’ उन्होंने प्रशंसा भरे लहजे में कहा।

‘लेकिन ऐसा कभी नहीं चलेगा,’ मान ने कहा। ‘भास्कर तब कभी भी पात्र नहीं होते।’

‘नहीं, वो ऐसा नहीं करता,’ बूढ़ी श्रीमती टंडन ने सोच-विचार करते हुए कहा। यह पहली बार था जब उन्होंने इस मामले पर इस नजरिए से विचार किया था। ‘यह अच्छा नहीं होता। सिर्फ इसलिए कि हम ब्राह्मण नहीं हैं! लेकिन उस समय लोग पुराने ख्यालों के थे। कुछ चीजें बेहतर के लिए बदल रही हैं। भास्कर को अगले साल कोई न कोई भूमिका जरूर मिलेगी। उसे तो आधी भूमिकाएं पहले से ही याद हैं।’

15.5

केदारनाथ, अभिनेता-देवताओं या स्वरूपों के इस मामले में, यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि अछूतों के नेताओं में से एक रविदासपुर के जाटव जगत राम थे। जगत राम का स्थानीय आंदोलन से कोई संबंध होना उनके लिए कठिन था, क्योंकि वे एक शांत स्वभाव के व्यक्ति थे, जिन्होंने अपना पूरा ध्यान अपने काम और अपने बड़े परिवार पर केंद्रित रखा था; और मिसरी मंडी की हड़ताल में उन्होंने कोई सक्रिय भूमिका नहीं निभाई थी। लेकिन जगत राम, अपनी सापेक्ष समृद्धि (यदि इसे समृद्धि कहा जा सकता है) और कम से कम न्यूनतम साक्षर होने के कारण, अपने पड़ोसियों और सहकर्मियों के दबाव में आकर उनका प्रतिनिधित्व करने

लगे थे। वे इसे स्वीकार नहीं करना चाहते थे; हालाँकि, स्वीकार करने के बाद उन्होंने अपनी क्षमता के अनुसार काम किया। फिर भी, उन्हें दो मामलों में नुकसान महसूस हुआ। पहला, मिसरी मंडी में जो कुछ भी हुआ, उसमें उनका कोई हित होना केवल एक बहाना था। दूसरा, चूंकि उनकी आजीविका केदारनाथ और अन्य स्थानीय हस्तियों पर निर्भर थी, इसलिए वे जानते थे कि अपने परिवार की खातिर उन्हें सावधानी से आगे बढ़ना होगा।

केदारनाथ सैद्धांतिक रूप से अभिनेताओं के क्षेत्र को खोलने के सामान्य प्रश्न के प्रति उदासीन नहीं थे। लेकिन उनकी दृष्टि में रामलीला कोई प्रतियोगिता या राजनीतिक कृत्य नहीं, बल्कि समुदाय द्वारा आस्था का प्रदर्शन था। इसमें अभिनय करने वाले अधिकांश लड़के बचपन से एक-दूसरे को जानते थे, और प्रस्तुत किए गए दृश्यों को सैकड़ों वर्षों की परंपरा का समर्थन प्राप्त था। मिसरी मंडी की रामलीला पूरे शहर में प्रसिद्ध थी। राम के राज्याभिषेक के बाद के दृश्यों को जोड़ना उन्हें निरर्थक और आपत्तिजनक लगा—धर्म पर राजनीतिक आक्रमण, नैतिकता पर नैतिक आक्रमण। स्वरूपों के बीच किसी प्रकार की कोटा प्रणाली का विचार तो केवल राजनीतिक संघर्ष और कलात्मक आपदा को ही जन्म देगा।

जगत राम ने तर्क दिया कि चूंकि नायकों की भूमिकाओं पर ब्राह्मणों का वर्चस्व समाप्त हो चुका है और अन्य उच्च जातियों को ये भूमिकाएं मिल रही हैं, इसलिए तथाकथित निम्न जातियों और अनुसूचित जातियों को भी भाग लेने की अनुमति देना एक तार्किक कदम है। उन्होंने दर्शक के रूप में और कुछ हद तक योगदानकर्ता के रूप में भी रामलीला की सफलता में अपना योगदान दिया था; तो फिर कलाकार के रूप में क्यों नहीं? केदारनाथ ने उत्तर दिया कि इस वर्ष कुछ भी करने में स्पष्ट रूप से बहुत

देर हो चुकी है। वे अगले वर्ष रामलीला समिति के समक्ष यह मामला उठाएंगे। लेकिन उन्होंने सुझाव दिया कि रविदासपुर के लोग, जो मुख्य रूप से अनुसूचित जाति समुदाय के थे और जहां से यह दावा मुख्य रूप से उत्पन्न हुआ था, उन्हें भी अपनी रामलीला का प्रदर्शन करना चाहिए, ताकि इस मांग को दखलंदाजी और शरारतपूर्ण न समझा जाए, बल्कि इसे केवल उस संघर्ष को अन्य हथियारों से लंबा खींचने का एक तरीका न माना जाए, जिसका पहला चरम इस वर्ष की शुरुआत में हुई विनाशकारी हड़ताल में देखने को मिला था।

कुछ भी हल नहीं हुआ। सब कुछ अनिश्चितता में डूबा रहा। और जगत राम को इस बात पर कोई हैरानी नहीं हुई। राजनीति में यह उनका पहला कदम था, और उन्हें इसमें कोई आनंद नहीं आया था। गाँव में बीता उनका बचपन नरक जैसा था, कारखाने में उनकी किशोरावस्था क्रूरता से गुज़री, और अब जिस प्रतिस्पर्धा, दलालों, गरीबी और गंदगी की दुनिया में वे फंसे हुए थे, उसने उन्हें एक दार्शनिक बना दिया था। जंगल में जब हाथी उत्पात मचा रहे हों, तो उनसे बहस नहीं की जाती, चौक में जब गाड़ियाँ बेतहाशा भाग रही हों, तो उनसे बहस नहीं की जाती। बस रास्ते से हट जाओ और अपने परिवार को भी बचा लो। संभव हो तो, अपनी गरिमा को बचाए रखो। दुनिया क्रूरता और निर्दयता से भरी है, और उन जैसे लोगों को धार्मिक रीति-रिवाजों से वंचित रखना तो उसकी बर्बरता में सबसे छोटी बात है।

पिछले साल उनके ही गाँव के एक जाटव, जिन्होंने कुछ साल ब्रह्मपुर में बिताए थे, फसल कटाई के मौसम में घर लौट आए थे। शहर की अपेक्षाकृत आज़ादी के बाद, उन्होंने यह भ्रम पाल लिया था कि उन्हें उच्च जाति के ग्रामीणों की घृणा से मुक्ति मिल गई है। शायद अठारह साल की उम्र में उनमें युवावस्था का जोश भी था; खैर, उन्होंने अपनी कमाई से

खरीदी साइकिल पर गाँव में घूम-घूम कर फिल्मी गाने गाए। एक दिन प्यास लगने पर उन्होंने इतनी हिम्मत दिखाई कि घर के बाहर खाना बना रही एक उच्च जाति की महिला से पीने का पानी माँग लिया। उसी रात कुछ लोगों के गिरोह ने उन पर हमला कर दिया, उन्हें साइकिल से बाँध दिया और मानव मल खाने के लिए मजबूर किया। फिर उनके दिमाग और साइकिल को टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया। सभी लोग जानते थे कि इसके लिए कौन लोग ज़िम्मेदार थे, फिर भी किसी ने गवाही देने की हिम्मत नहीं की; और घटनाएँ इतनी भयानक थीं कि अखबारों में भी छापने की हिम्मत नहीं हुई।

गांवों में अछूत लगभग असहाय थे; उनमें से लगभग किसी के पास भी वह जमीन नहीं थी जो अंततः उनकी गरिमा और प्रतिष्ठा की गारंटी होती है। कुछ ही लोग किराएदार के रूप में जमीन पर काम करते थे, और उन किराएदारों में से भी बहुत कम लोग आगामी भूमि सुधारों की कागजी गारंटी का लाभ उठा पाते। शहरों में भी वे समाज के सबसे निचले तबके के थे। गांधी जी, अपने तमाम सुधारवादी विचारों और इस धारणा के घोर विरोध के बावजूद कि कोई भी इंसान जन्म से ही इतना घृणित और अपवित्र है कि उसे अछूत कहा जाए, मानते थे कि लोगों को अपने वंशानुगत पेशे में ही बने रहना चाहिए: एक मोची को मोची ही रहना चाहिए, एक सफाईकर्मी को सफाईकर्मी ही। 'जो सफाईकर्मी पैदा हुआ है, उसे सफाईकर्मी बनकर ही अपनी आजीविका कमानी चाहिए, और फिर जो चाहे वो कर सकता है। क्योंकि एक सफाईकर्मी भी अपनी मजदूरी का उतना ही हकदार है जितना कि एक वकील या आपका राष्ट्रपति। मेरे अनुसार, यही हिंदू धर्म है।'

जगत राम के लिए, हालांकि उन्होंने यह बात खुलकर नहीं कही होगी, यह सबसे भ्रामक तिरस्कार था। वे जानते थे कि शौचालय साफ़ करने या

दुर्गंधयुक्त चमड़ा धोने की भट्टी में खड़े होने में कोई जन्मजात पुण्य का काम नहीं था—और ऐसा करना इसलिए कर्तव्य था क्योंकि आपके माता-पिता ने ऐसा किया था। लेकिन अधिकांश हिंदू यही मानते थे, और यदि मान्यताएँ और कानून बदल रहे थे, तो कुछ और पीढ़ियाँ इस विशाल रथ के पहियों के नीचे कुचली जाती रहेंगी, इससे पहले कि यह अंततः रक्तरंजित होकर रुक जाए।

जगत राम ने बड़ी अनिच्छा से ही यह तर्क दिया था कि अनुसूचित जातियों को रामलीला में स्वरूप के रूप में शामिल किया जाना चाहिए। शायद, अंततः, यह तार्किक कदम से अधिक भावनात्मक कदम का प्रश्न था। शायद, जैसा कि नेहरू के कानून मंत्री डॉ. अंबेडकर, जो अछूतों के महान और लगभग पौराणिक नेता थे, ने कहा था, हिंदू धर्म के पास उन लोगों को देने के लिए कुछ भी नहीं बचा था जिन्हें उसने इतनी निर्दयता से अपने दायरे से बाहर निकाल दिया था। डॉ. अंबेडकर ने कहा था कि वे हिंदू पैदा हुए थे, लेकिन हिंदू के रूप में नहीं मरेंगे।

गांधी जी की हत्या के नौ महीने बाद, संविधान सभा द्वारा अस्पृश्यता को समाप्त करने वाला संवैधानिक प्रावधान पारित किया गया और उसके सदस्यों ने 'महात्मा गांधी की विजय' के नारे लगाते हुए जोरदार जयकार की। हालांकि व्यवहारिक दृष्टि से यह विधेयक प्रतीकात्मक दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण साबित हुआ, जगत राम का मानना था कि इसके निर्माण की जीत महात्मा गांधी की नहीं, जो शायद ही कभी ऐसे कानूनी दांव-पेचों में पड़ते थे, बल्कि एक अन्य और उतने ही साहसी व्यक्ति की थी।

15.6

2 अक्टूबर को, जो संयोगवश गांधीजी का जन्मदिन था, कपूर परिवार प्रेम निवास में दोपहर के भोजन के लिए इकट्ठा हुआ। कुछ अन्य मेहमान भी आए थे, जिन्हें उनके साथ शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया।

उनमें से एक संदीप लाहिड़ी थे, जो मान का हालचाल पूछने आए थे। दूसरे उत्तर प्रदेश के एक राजनेता थे, जो कांग्रेस से अलग होकर वापस कांग्रेस में शामिल हो गए थे और महेश कपूर को भी ऐसा करने के लिए मनाने की कोशिश कर रहे थे।

मान देर से पहुँचा। सार्वजनिक अवकाश था और उसने सुबह अपने दोस्त के साथ राइडिंग क्लब में पोलो खेलते हुए बिताई थी। वह इसमें काफी अच्छा हो रहा था। वह शाम सईदा बाई के साथ बिताना चाहता था। आखिर मुहर्रम का चाँद अभी तक दिखाई नहीं दिया था।

जब उसने सबको इकट्ठा देखा तो सबसे पहले उसने लता के अभिनय की तारीफ की। अचानक सबका ध्यान अपनी ओर खींच लेने पर लता शर्मा गई।

'शर्माओ मत,' मान ने कहा। 'नहीं, खूब शर्माओ। मैं तुम्हारी तारीफ नहीं कर रहा। तुम बहुत बढ़िया थे। भास्कर को बेशक नाटक पसंद नहीं आया, लेकिन इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं थी। मुझे तो यह बहुत अच्छा लगा। और मालती—वह भी शानदार थी। और ड्यूक। और मालवोलियो। और सर टोबी तो थे ही।'

मान ने लता की इतनी खुलकर तारीफ कर दी थी कि अब उसे असहज महसूस करने की कोई गुंजाइश नहीं थी। वह हंस पड़ी और बोली:

'आपने तीसरे नौकर को छोड़ दिया है।'

'बिल्कुल सही,' मान ने कहा। 'और चौथा हत्यारा।'

भास्कर ने पूछा, 'मान मामा, आप रामलीला में क्यों नहीं आए?'

'क्योंकि यह तो कल ही शुरू हुआ था!' मान ने कहा।

भास्कर ने कहा, 'लेकिन आप राम की जवानी और प्रशिक्षण को पहले ही खो चुके हैं।'

'ओह, ओह, सॉरी,' मान ने कहा।

'तुम्हें आज रात आना ही होगा, वरना मैं तुम्हें मार डालूँगी।'
'तुम अपने चाचा के साथ कुट्टी नहीं बन सकते,' मान ने कहा।
भास्कर ने कहा, 'हां, मैं कर सकता हूं। आज सीता की जीत का दिन है। जुलूस खिरकीवालन से शाही दरवाजा तक जाएगा। और हर कोई गलियों में जश्न मनाएगा।'
'जी मान, जरूर आना—हमें इसका बेसब्री से इंतजार रहेगा,' केदारनाथ ने कहा। 'और उसके बाद हमारे साथ रात का खाना खा लेना।'
'अच्छा, आज रात मैं—' मान रुक गया, यह महसूस करते हुए कि उसके पिता की निगाहें उस पर टिकी हैं। 'मैं तब आऊंगा जब रामलीला में बंदर पहली बार दिखाई देंगे,' उसने भास्कर के सिर पर थपथपाते हुए अपनी बात अधूरी छोड़ी। मान को लगा कि भास्कर मेंढक से ज़्यादा बंदर जैसा है।
'मुझे उमा को गोद में लेने दो,' श्रीमती महेश कपूर ने सविता की थकान भांपते हुए कहा। उन्होंने बच्ची को देखा और हज़ारवीं बार यह समझने की कोशिश की कि कौन से चेहरे के हाव-भाव उनके हैं, कौन से उनके पति के, कौन से श्रीमती रूपा मेहरा के और कौन से उस तस्वीर के जो श्रीमती रूपा मेहरा के बैग से अक्सर संदर्भ, तुलना या प्रदर्शन के लिए निकाली जाती है।
इसी बीच, उनके पति संदीप लाहिड़ी से कह रहे थे: 'मुझे पता चला है कि पिछले साल इसी समय गांधीजी की कुछ तस्वीरों को लेकर आप मुसीबत में पड़ गए थे?'
'जी हां,' संदीप ने कहा। 'दरअसल, एक ही तस्वीर थी। लेकिन खैर, चीजें अपने आप सुलझ गईं।'
'क्या उन्होंने खुद ही सब कुछ ठीक कर लिया? क्या झा ने अभी-अभी तुमसे छुटकारा नहीं पा लिया?'

‘खैर, मुझे पदोन्नति मिल गई है—’
‘जी हां, मेरा मतलब यही था,’ महेश कपूर ने अधीरता से कहा। ‘लेकिन रुधिया में आप सबके चहेते हैं। अगर आप आईएएस में न होते, तो मैं आपको अपना एजेंट बना लेता। मैं आसानी से चुनाव जीत जाता।’
संदीप ने पूछा, 'क्या आप रुधिया से चुनाव लड़ने की सोच रहे हैं?'
महेश कपूर ने कहा, 'इस समय मैं किसी चीज़ के बारे में नहीं सोच रहा हूँ। मेरे लिए सब लोग सोच रहे हैं। मेरा बेटा। मेरा पोता। मेरे मित्र नवाब साहब। मेरे संसदीय सचिव। रफी साहब। मुख्यमंत्री। और यह सबसे मददगार सज्जन,' उन्होंने उस राजनेता की ओर इशारा करते हुए कहा, जो कद में छोटा और शांत स्वभाव का था और कई साल पहले महेश कपूर के साथ एक ही जेल में बंद था।
‘मैं बस इतना कह रहा हूँ: हम सभी को गांधीजी की पार्टी में लौटना चाहिए,’ उस राजनेता ने कहा। ‘अपनी पार्टी बदलना जरूरी नहीं कि अपने सिद्धांतों को बदलना हो—या सिद्धांतहीन होना हो।’
‘आह, गांधीजी,’ महेश कपूर ने आगे बात न करते हुए कहा। ‘आज वो बयासी वर्ष के होते और बहुत दुखी होते। वो कभी भी एक सौ पच्चीस वर्ष जीने की अपनी इच्छा नहीं दोहराते। जहाँ तक उनकी आत्मा की बात है, हम साल में एक दिन उन्हें लड्डू खिलाकर तृप्त करते हैं और उनके श्राद्ध के बाद हम उन्हें पूरी तरह भूल जाते हैं।’
अचानक उसने अपनी पत्नी की ओर मुड़कर कहा, 'फुल्का बनाने में इतना समय क्यों लग रहा है? क्या हमें यहाँ चार बजे तक भूखे पेट बैठे रहना पड़ेगा? उस बच्चे को गोद में लेकर रुलाने के बजाय, उस बेवकूफ रसोइए से हमें खाना क्यों नहीं खिला देती?'
वीना ने अपनी मां से कहा, 'मैं जाती हूं,' और रसोई की ओर चली गई।
श्रीमती महेश कपूर ने एक बार फिर बच्चे पर अपना सिर झुकाया। उनका

मानना था कि गांधीजी एक संत थे, संत से भी बढ़कर, एक शहीद थे—और वे यह बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं कि उनके बारे में कोई भी बात कड़वाहट से कही जाए। आज भी उन्हें उनके आश्रम में इस्तेमाल होने वाले गीतों के संग्रह को गाना—या सुनना—बहुत पसंद था। उन्होंने अभी-अभी डाक एवं तार विभाग द्वारा उनकी स्मृति में जारी किए गए तीन पोस्टकार्ड खरीदे थे: एक में उनकी चरखा चलाते हुए तस्वीर थी, दूसरे में उनकी पत्नी कस्तूरबा के साथ और तीसरे में एक बच्चे के साथ।

लेकिन उनके पति की बात शायद सच थी। सक्रिय जीवन के अंत में सत्ता से हाशिए पर धकेल दिए जाने के बाद, उनकी उदारता और सुलह का संदेश, उनकी मृत्यु के चार साल के भीतर ही लगभग भुला दिया गया था। फिर भी, उन्हें लगता था कि वे जीना चाहते होंगे। उन्होंने पहले भी घोर निराशा के दौर देखे थे और धैर्य से उनका सामना किया था। वे एक अच्छे और निडर इंसान थे। यकीनन उनकी निडरता भविष्य में भी बनी रहती।

दोपहर के भोजन के बाद, महिलाएं बगीचे में टहलने गईं। यह साल बाकी सालों की तुलना में ज़्यादा गर्म था, लेकिन उस दिन सुबह की हल्की बारिश ने मौसम को थोड़ा सुकून दिया था। ज़मीन अभी भी थोड़ी नम थी और बगीचा खुशबू से महक रहा था। झूले के पास गुलाबी मधुमालती लता खिली हुई थी। हरसिंगार के पेड़ के नीचे मिट्टी में कई छोटे-छोटे सफेद और नारंगी फूल मिले हुए थे जो सुबह के समय गिर गए थे; उनमें अभी भी उनकी हल्की सी खुशबू बाकी थी। दो पेड़ों में से एक पर कुछ गार्डेनिया के फूल अभी भी खिले हुए थे, जिन पर कभी-कभार ही फल लगते थे। श्रीमती रूपा मेहरा—जो दोपहर के भोजन के दौरान बिल्कुल शांत थीं—अब बच्ची को गोद में लेकर झुला रही थीं, जो गहरी नींद में सो गई थी। वह हरसिंगार के पेड़ के पास एक बेंच पर बैठ गईं। उमा के बाएं

कान में एक बहुत ही नाजुक नस थी जो एक सुंदर पैटर्न में छोटी-छोटी शाखाओं में बँटी हुई थी। श्रीमती रूपा मेहरा ने कुछ देर तक उसे देखा, फिर आह भरी।

उन्होंने श्रीमती महेश कपूर से कहा, 'हरसिंगार जैसा कोई पेड़ नहीं है। काश हमारे बगीचे में भी एक होता।'

श्रीमती महेश कपूर ने सिर हिलाया। दिन में एक साधारण, बदसूरत सा दिखने वाला हरसिंगार का पेड़ रात में भव्य हो उठता था, मनमोहक सुगंध से भरा हुआ, मंत्रमुग्ध कीड़ों से घिरा हुआ। नारंगी रंग के छोटे-छोटे छह पंखुड़ियों वाले फूल भोर में नीचे गिरते थे। और आज रात यह फिर से फूलों से भर जाएगा, और सूर्योदय के साथ ही फूल फिर से नीचे गिरेंगे। पेड़ फूलों से भर जाता था, लेकिन अपने लिए कुछ भी नहीं रखता था।

'नहीं,' श्रीमती महेश कपूर ने गंभीर मुस्कान के साथ सहमति जताते हुए कहा। 'इसके जैसा कोई पेड़ है ही नहीं।' कुछ देर रुककर उन्होंने आगे कहा, 'मैं गजराज से प्राण के घर के पीछे वाले बगीचे में, नींबू के पेड़ के पास एक पौधा लगवा दूंगी। फिर वह हमेशा उमा जितना पुराना रहेगा। और ज़्यादा से ज़्यादा दो-तीन साल में उसमें फूल आ जाएंगे।'

15.7

जब बिब्बो ने नवाबजादा को देखा, तो उसने झट से एक पत्र उनके हाथों में थमा दिया।

‘तुम्हें कैसे पता चला कि मैं आज रात यहाँ आ रहा हूँगा? मुझे तो आमंत्रित नहीं किया गया था।’

बिब्बो ने कहा, 'आज रात किसी को भी आमंत्रित किए बिना नहीं छोड़ा जा सकता। मुझे लगा कि नवाबजादा इस अवसर को भांप लेंगे।'

फ़िरोज़ हँस पड़ा। बिब्बो को साज़िशें रचने में मज़ा आता था, और यह उसके लिए अच्छा ही था, क्योंकि अगर ऐसा न होता तो तसनीम से बात

करना उसके लिए नामुमकिन हो जाता। उसने तसनीम को सिर्फ़ दो बार देखा था, लेकिन वह उसे मोहित कर लेती थी; और उसे लगता था कि तसनीम भी उसके लिए कुछ न कुछ ज़रूर महसूस करती होगी, क्योंकि हालाँकि उसके पत्र सौम्य और गोपनीय होते थे, लेकिन अपनी बहन की जानकारी के बिना उन्हें लिखना ही हिम्मत का काम था।

‘और क्या नवाबजादा के पास बदले में कोई पत्र है?’ बिब्बो ने पूछा।

'जी हां, बिल्कुल; और इसके अलावा कुछ और भी,' फ़िरोज़ ने उसे एक पत्र और दस रुपये का नोट देते हुए कहा।

‘अरे, लेकिन इसकी तो कोई ज़रूरत ही नहीं है—’

“हाँ, मुझे पता है कि यह कितना अनावश्यक है,” फ़िरोज़ ने कहा। “यहाँ और कौन है?” उसने धीमी आवाज़ में पूछा। उसे ऊपर से विलाप गीत की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

बिब्बो ने बिलग्रामी साहब समेत कई नाम गिनाए। फ़िरोज़ को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उनमें कई सुन्नी भी थे।

‘सुन्नी भी?’

‘क्यों नहीं?’ बिब्बो ने कहा। ‘सईदा बेगम भेदभाव नहीं करतीं। कुछ धर्मपरायण महिलाएं भी आती हैं—नवजादा मानेंगे कि यह असामान्य है। और वह उन सभी शरारती गालियों को बर्दाश्त नहीं करतीं जो ज्यादातर सभाओं का माहौल खराब कर देती हैं।’

फिरोज ने कहा, 'अगर ऐसा होता तो मैं अपने दोस्त मान को साथ आने के लिए कहता।'

‘नहीं, नहीं,’ बिब्बो चौंकते हुए बोला। ‘दाग साहब हिंदू हैं; ऐसा तो बिल्कुल नहीं चलेगा। ईद हो सकती है, लेकिन मुहर्रम—यह कैसे संभव होगा? यह बिल्कुल अलग बात है। खुले जुलूसों में सभी लोग जा सकते हैं, लेकिन निजी समारोहों के लिए थोड़ा भेदभाव करना पड़ता है।’

खैर, उसने मुझसे कहा कि मैं उसका प्यार तोते को दे दूं।
‘ओह, वह बेचारा जीव—मेरा मन करता है कि मैं उसका गला घोंट दूं,’ बिब्बो ने कहा। स्पष्टतः हाल ही में हुई किसी घटना ने उसकी नज़र में उस पक्षी के प्रति प्रेम को कम कर दिया था।
और मान—मेरा मतलब दाग साहब से है—भी इस बात को लेकर हैरान थे—और मैं भी हैरान हूँ—कि सईदा बेगम ने कर्बला के वीरान इलाके में यात्रियों की प्यास अपने हाथों से बुझाई थी।
‘नवजादा को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि यह कोई किंवदंती नहीं है,’ बिब्बो ने अपनी मालकिन की धार्मिकता पर सवाल उठाए जाने से थोड़ा नाराज़ होते हुए कहा, लेकिन फिर अचानक दस रुपये के नोट को याद करके फ़िरोज़ को देखकर मुस्कुरा दी। ‘वह ताजिया निकाले जाने वाले दिन खिरकीवालन और कटरा मस्त के कोने पर खड़ी रहती है। उसकी माँ, मोहसिना बाई, भी ऐसा करती थीं, और वह खुद भी कभी नहीं भूलती। बेशक, आपको पता ही नहीं चलेगा कि वह कौन है; वह स्वाभाविक रूप से बुर्का पहनती है। लेकिन बीमार होने पर भी वह उस जगह पर खड़ी रहती है; वह बहुत ही धर्मनिष्ठ महिला है। कुछ लोग सोचते हैं कि एक बात दूसरी बात को नकारती है।’
फ़िरोज़ ने गंभीरता से कहा, 'मुझे आपकी बात पर कोई संदेह नहीं है। मेरा इरादा आपको ठेस पहुँचाने का नहीं था।'
नवाबजादा की इस तरह की विनम्रता से प्रसन्न होकर बिब्बो ने कहा:
'नवजादा को उनकी धार्मिकता का इनाम मिलने वाला है।'
और वह क्या है?
वह खुद ही देख लेगा।
और फिरोज ने वैसा ही किया। मान के विपरीत, उसने सीढ़ियों पर चढ़ते समय बीच में अपनी टोपी ठीक करने के लिए नहीं रुका। जैसे ही वह उस

कमरे में दाखिल हुआ जहाँ सईदा बाई - गहरे नीले रंग की साड़ी पहने, चेहरे या हाथों में एक भी गहना नहीं - अपना प्रवचन दे रही थीं, उसने कमरे के पीछे तसनीम को बैठे देखा - या यूँ कहें कि निहारा। उसने हल्के भूरे रंग का सलवार-कमीज़ पहना हुआ था। वह उतनी ही सुंदर और कोमल लग रही थी जितनी पहली बार उसने उसे देखा था। उसकी आँखों में आँसू भरे थे। फिरोज को देखते ही उसने अपनी आँखें नीचे कर लीं।

फिरोज को अंदर आते देख सईदा बाई ने अपने मर्सिये का एक भी शब्द नहीं रोका, हालांकि उनकी आँखों में एक अजीब सी चमक थी। श्रोता पहले से ही अत्यधिक उत्तेजित थे। पुरुष और महिलाएं समान रूप से रो रहे थे; कुछ महिलाएं अपने सीने पीट रही थीं और हुसैन के लिए विलाप कर रही थीं। सईदा बाई की आत्मा मानो मर्सिये में समा गई थी, लेकिन उसका एक हिस्सा सभा को देख रहा था और बैतर के नवाब के बेटे के प्रवेश को देख रहा था। इस परेशानी से उन्हें बाद में निपटना था; फिलहाल उन्हें इसे बस सहन करना था। लेकिन उनके भीतर की बेचैनी इमाम हुसैन के हत्यारे के प्रति उनके आक्रोश की शक्ति में तब्दील हो गई।

और जैसे ही उस शापित भाड़े के सैनिक ने खून से सना भाला बाहर निकाला

शहीदों के राजकुमार ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अपना सिर झुकाया।

निर्दयी और क्रूर शाम्र ने अपनी कटार निकाली और आगे बढ़ा—

ऐसे घृणित और निंदनीय कृत्यों को देखकर आकाश कांप उठा, धरती हिल गई।

मैं कैसे बताऊं कि शमर ने किस तरह खंजर उसकी गर्दन पर रखा—

ऐसा लग रहा था मानो उसने स्वयं पवित्र ग्रंथ को रौंद दिया हो!

'तोबा! तोबा!' 'या अल्लाह!' 'या हुसैन! या हुसैन!' श्रोतागण पुकार उठे।

कुछ लोग शोक से इतने व्याकुल थे कि वे कुछ बोल भी नहीं पा रहे थे, और जब अगले छंद में उनकी बहन ज़ैनब के शोक का वर्णन हुआ—उनका बेहोश हो जाना—जब उन्होंने आँखें खोलीं और अपने भाई का सिर, शहीदों के राजकुमार का सिर, भाले पर उठा हुआ देखा तो उन्हें गहरा सदमा लगा—तो श्रोतागण में सन्नाटा छा गया, मानो विलाप शुरू होने से पहले एक ठहराव आ गया हो। फ़िरोज़ ने तसनीम की ओर देखा; उसकी आँखें अभी भी झुकी हुई थीं, लेकिन उसके होंठ अपनी बहन द्वारा पढ़े जा रहे प्रसिद्ध शब्दों पर थिरक रहे थे।

'अनिस, तुम ज़ैनब के विलापों के बारे में इससे अधिक नहीं लिख सकते!'

हुसैन का शव वहां बिना दफनाए धूप में पड़ा था;

अफसोस की बात है कि पैगंबर को अपने अंतिम विश्राम स्थल पर शांति नहीं मिली!

उनके पवित्र वंशजों को कैद कर लिया गया और उनका घर जला दिया गया!

हुसैन की मौत ने कितने ही घरों को पूरी तरह से बर्बाद और उजाड़ कर दिया!

इस प्रकार, पैगंबर की संतानें उनके बाद कभी समृद्ध नहीं हुईं।

यहां सईदा बाई रुक गईं और कमरे में चारों ओर देखने लगीं। उनकी नज़रें एक पल के लिए फ़िरोज़ पर टिकीं, फिर तसनीम पर। थोड़ी देर बाद उन्होंने तसनीम से सहजता से कहा, "जाओ और तोते को दाना खिला दो, और बिब्बो को भी यहां बुला लो। उसे सोज़-ख्वानी में रहना अच्छा लगता है।" तसनीम कमरे से चली गई। बाकी लोग संभलने लगे और आपस में बातें करने लगे।

फ़िरोज़ का दिल बैठ गया। उसकी निगाहें तसनीम का पीछा करते हुए दरवाजे तक गईं। वह बेचैनी से व्याकुल था। उसने उसे इतना सुंदर पहले

कभी नहीं देखा था, बिना किसी आभूषण के, उसके गाल आँसुओं से भीगे हुए। चिंतन में डूबे होने के कारण, उसने शायद ही ध्यान दिया कि बिलग्रामी साहब ने उसे प्रणाम किया।

लेकिन बिलग्रामी साहब अब उन्हें उस समय के बारे में बता रहे थे जब उन्होंने मुहर्रम के उत्सव के दौरान बैतर का दौरा किया था - और फ़िरोज़ का मन अनजाने में किले और इमामबाड़े की ओर खिंचा चला गया, जिसमें लाल और सफेद झूमर, दीवार पर कर्बला के चित्र और सैकड़ों टिमटिमाती रोशनी के नीचे गाए जाने वाले मर्सिये थे।

नवाब साहब के सबसे बड़े नायक अल-हुर थे, जिन्हें पहले हुसैन को पकड़ने के लिए भेजा गया था; लेकिन अंत में वे तीस घुड़सवारों के साथ दुश्मन की मुख्य सेना से अलग हो गए और कमजोर पक्ष में शामिल होकर अपनी निश्चित मृत्यु का सामना किया। फ़िरोज़ ने एक-दो बार अपने पिता से इस बारे में बात करने की कोशिश की थी; लेकिन फिर हार मान ली। फ़िरोज़ को शक था कि उसके पिता को अपनी नाकामी से कुछ हद तक प्यार है, और वे इस मामले को लेकर बहुत गंभीर थे।

सईदा बाई ने अब एक छोटा सा मर्सिया गाना शुरू किया जो विशेष रूप से सोज़ के लिए उपयुक्त था। इसमें कोई भूमिका नहीं थी, नायक की शारीरिक सुंदरता का कोई वर्णन नहीं था, युद्ध के मैदान में नायक द्वारा अपने वंश, पराक्रम और कारनामों का कोई बखान नहीं था, न ही लंबे युद्ध दृश्य थे, न ही घोड़े या तलवार का कोई वर्णन था; लगभग कुछ भी नहीं था सिवाय कहानी के सबसे मार्मिक हिस्सों के: अपने प्रियजनों से विदाई के दृश्य, उसकी मृत्यु, स्त्रियों और बच्चों का विलाप। विलाप के समय सईदा बाई की आवाज एक विचित्र सिसकते हुए विलाप में गूंज उठी, जो अत्यंत मधुर और अत्यंत सुंदर थी।

फ़िरोज़ ने पहले भी 'सॉस' सुना था, लेकिन यह उसके सामने कुछ भी

नहीं था। उसने उस जगह की ओर देखा जहाँ तसनीम बैठी थी, और वहाँ उसने चंचल बिब्बो को देखा। उसके बाल बिखरे हुए थे, और वह फूट-फूटकर रो रही थी, अपना सीना पीट रही थी और आगे की ओर झुकी हुई थी मानो दुख से बेहोश होने वाली हो। उसके आसपास की कई औरतें भी यही कर रही थीं। बिलग्रामी साहब अपने रूमाल में सिसक रहे थे, जिसे उन्होंने प्रार्थना की मुद्रा में हाथों में पकड़ रखा था। सईदा बाई की आँखें बंद थीं; इस अत्यंत संयमित कलाकार के लिए भी, उनकी कला उनके संयम से परे हो गई थी। उनका शरीर, उनकी आवाज़ की तरह, दुख और पीड़ा से काँप रहा था। और फ़िरोज़, हालांकि उसे इसका एहसास नहीं था, खुद भी बेकाबू होकर रो रहा था।

15.8

'कल रात तुम क्यों नहीं आए?' भास्कर ने पूछा, जिसे आज रात अंगद (बंदर राजकुमार) की भूमिका निभाने के लिए पदोन्नत किया गया था, क्योंकि उस भूमिका को निभाने वाला लड़का बीमार पड़ गया था, शायद पिछली शामों में लगातार गुर्राते-चिल्लाते उसकी आवाज़ बैठ गई थी। भास्कर को अंगद के संवाद याद थे, लेकिन दुर्भाग्य से आज बोलने के लिए कुछ नहीं था—बस इधर-उधर भागना और लड़ना ही था।

'मैं सो रहा था,' मान ने कहा।

भास्कर ने कहा, 'सो रहे हो! तुम कुंभकरण की तरह हो। तुमने युद्ध का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा खो दिया। तुमने लंका तक पुल का निर्माण होते हुए नहीं देखा—जो मंदिर से लेकर वहाँ के घरों तक फैला हुआ था—और तुमने हनुमान को जादुई जड़ी बूटी लाने जाते हुए भी नहीं देखा—और तुमने लंका के जलने को भी नहीं देखा।'

'लेकिन अब मैं यहाँ हूँ,' मान ने कहा। 'अपने चाचा को थोड़ा श्रेय तो दो।'

और आज सुबह जब दादी हथियारों, कलमों और किताबों की पूजा कर

रही थीं, तब तुम कहाँ थे?

'खैर, मैं इन सब बातों में विश्वास नहीं करता,' मान ने बात को घुमाते हुए कहा। 'मैं हथियारों, गोलीबारी, शिकार और हिंसा में विश्वास नहीं करता। क्या वह तुम्हारी पतंगों की भी पूजा करती थी?'

'अरे, मान, मुझसे हाथ मिलाओ,' भीड़ में से एक जानी-पहचानी आवाज़ आई। मान मुड़ा। वह मरह के राजकुमार थे, उनके साथ वकील साहब का छोटा भाई भी था। मान राजकुमार को यहाँ, इस मोहल्ले की रामलीला में देखकर थोड़ा हैरान हुआ। उसने सोचा था कि वह किसी बड़ी, नीरस, औपचारिक रामलीला में अपने पिता के साथ होंगे। मान ने बड़े सौहार्द से उनसे हाथ मिलाया।

'थोड़ा पान खा लो।'

'धन्यवाद,' मान ने कहा, दो पान लिए और लगभग उसका गला चोक हो गया। पान में तंबाकू की मात्रा बहुत ज़्यादा थी। एक-दो मिनट के लिए वह बिल्कुल अवाक रह गया। उसने राजकुमार से पूछने की योजना बनाई थी कि पढ़ाई के अलावा आजकल वह क्या कर रहे हैं; लेकिन जब तक वह संभला, युवा गोयल, जो अपने साथ एक छोटे-मोटे शाही व्यक्ति को लेकर घूम रहा था, राजकुमार को जल्दी से खींचकर किसी और से मिलवाने ले गया।

मान मुड़ा और मूर्तियों को घूरने लगा। शाही दरवाज़े के चौक के पश्चिमी किनारे पर लकड़ी, बेंत और रंगीन कागज़ से बनी तीन विशाल मूर्तियाँ खड़ी थीं—भयंकर और ज्वलनशील—जिनकी आँखों में लाल बल्ब लगे थे। दस सिर वाले रावण को बीस बल्बों की आवश्यकता थी, जो उसके सेनापतियों के बल्बों से भी अधिक भयावह रूप से टिमटिमा रहे थे। वह साक्षात दुष्टता का अवतार था: उसके बीस हाथों में से प्रत्येक में एक हथियार था—बेंत के धनुष, चाँदी के कागज़ से बनी गदाएँ, लकड़ी की

तलवारें और चक्र, बाँस के भाले, यहाँ तक कि एक नकली पिस्तौल भी। रावण के एक ओर उसका नीच भाई कुंभकरण खड़ा था, जो मोटा, दुष्ट, आलसी और पेटू था; और दूसरी ओर मेघनाद खड़ा था, उसका साहसी और अभिमानी पुत्र जिसने ठीक एक दिन लक्ष्मण को सीने में भाला मारकर लगभग मार ही डाला था। सभी लोग इन पुतलों की तुलना पिछले वर्षों के पुतलों से कर रहे थे, और उत्साहपूर्वक शाम के चरमोत्कर्ष के रूप में उनके प्रज्वलन की प्रतीक्षा कर रहे थे: बुराई का विनाश, अच्छाई की विजय।

लेकिन इससे पहले कि ऐसा हो पाता, इन किरदारों को निभाने वाले अभिनेताओं को जनता की नजरों के सामने उचित क्रम में अपने अंजाम का सामना करना पड़ा।

सात बजे ऊपर लगे लाउडस्पीकरों से ढोल की कर्कश ध्वनि फूट पड़ी, और छोटे लाल चेहरे वाले बंदर, जिन्हें कला, नील और जस्ता ऑक्साइड की तमाम तकनीकों से भयंकर और योद्धा जैसा रूप दिया गया था, दुश्मन की तलाश में मंदिर भवन से बाहर निकल आए। उन्होंने दुश्मन को तुरंत ढूंढ लिया और उससे शोर मचाते हुए भिड़ गए। चीखें सुनाई दे रही थीं, साथ ही 'जय सियाराम!' के श्रद्धापूर्ण नारे और 'जय शंकर!' के राक्षसी स्वर भी। यहां तक कि रावण के महान संरक्षक भगवान शिव के नाम के स्वरों को भी उपहासपूर्ण और भयावह तरीके से लंबा खींच दिया गया था, जिससे ध्वनि 'जय शंकर!' जैसी सुनाई दे रही थी। इसके बाद हर बार रावण की विचित्र और भयानक हंसी सुनाई देती थी, जिससे अधिकांश दर्शकों के रोंगटे खड़े हो जाते थे, भले ही इससे अभिनेताओं के दोस्त हंस पड़ते थे।

स्थानीय पुलिस बल के दो खाकी वर्दीधारी पुलिसकर्मी इधर-उधर गश्त लगा रहे थे ताकि बंदरों और राक्षसों के झुंड को तय भौगोलिक सीमा के

भीतर ही रखा जा सके, लेकिन चूंकि बंदर और राक्षस कानून के बल से कहीं अधिक फुर्तीले थे, इसलिए उन्होंने थोड़ी देर बाद हार मान ली, एक पान की दुकान पर रुके और मुफ्त पान मांगने लगे। पुलिसकर्मी चौक के चारों ओर, अंदर-बाहर, अपने माता-पिता के पास से, जो उन्हें मुश्किल से पहचान पा रहे थे, और गलियों से होते हुए बंदर और राक्षस दौड़ते रहे, छोटी सी दुकान, दो मंदिरों, छोटी मस्जिद, बेकरी, ज्योतिषी के घर, सार्वजनिक शौचालय, बिजली के जंक्शन और घरों के दरवाजों के पास से; कभी-कभी रामलीला आयोजक उन्हें घरों के खुले आंगनों में खदेड़ देते और फिर बाहर निकाल देते। उनकी तलवारें, भाले और तीर गली के ऊपर लटके रंगीन झंडों में फंस गए और ऊपर लगे बैनर को फाड़ दिया जिस पर हिंदी में लिखा था: रामलीला कल्याण समिति आपका हार्दिक स्वागत करती है। अंततः, थक-हार कर, दोनों सेनाएं चौक में एकत्रित हुईं और एक-दूसरे को घूरने और गुर्राने लगीं।

वानरों की सेना (जिसमें कुछ भालू भी शामिल थे) का नेतृत्व राम, लक्ष्मण और हनुमान कर रहे थे। वे रावण का शिकार करने निकले थे, जबकि बारह वर्षीय बालक, जो सुंदर अपहृत सीता का रूप धारण किए हुए था, ऊपर एक बालकनी से यह सब देख रहा था—ऐसा प्रतीत होता था जैसे उसके चेहरे पर कोई भाव न हो। वानरों द्वारा परेशान और तंग किए जाने तथा अपने कट्टर शत्रु राम द्वारा तीर चलाए जाने से रावण भाग रहा था और जानना चाहता था कि उसका भाई कुंभकरण कहाँ चला गया है—वह लंका की रक्षा क्यों नहीं कर रहा है? जब उसने सुना कि कुंभकरण अभी भी भोग-विलास में लीन है, तो उसने उसे जगाने का आदेश दिया। राक्षसों और दानवों ने अपनी पूरी कोशिश की, उस विशाल, लेटे हुए शरीर पर भोजन और मिठाई तब तक परोसी जब तक कि उसकी सुगंध से वह नींद से जाग नहीं गया। वह दहाड़ा, अंगड़ाई ली और जो कुछ

भी उसे दिया गया था उसे चट कर गया। कई राक्षसों ने भी कुछ मिठाई खा ली। फिर युद्ध शुरू हुआ।

तुलसीदास की तुकबंदी वाली कविता, जो पंडित के लाउडस्पीकर पर शोरगुल के कारण मुश्किल से सुनाई दे रही थी:

भैंसों का भोज करने और शराब पीने के बाद कुंभकरण बिजली की तरह दहाड़ा। . . . जैसे ही शक्तिशाली बंदरों ने यह सुना, वे खुशी से झूम उठे। उन्होंने पेड़ और पहाड़ उखाड़कर कुंभकरण पर फेंके और लगातार दांत पीसते रहे। भालू और बंदरों ने हर बार उस पर अनगिनत पर्वत-शिखर फेंके। लेकिन न तो वह भयभीत हुआ और न ही अपनी जगह से हिला, बंदरों के उसे पीछे धकेलने के तमाम प्रयासों के बावजूद, मानो कोई हाथी सूर्य-पौधे के फलों से कुचला जा रहा हो। तब हनुमान ने उसे मुक्का मारा और वह जमीन पर गिर पड़ा, अपना सिर बुरी तरह पीटते हुए। उठकर उसने हनुमान को वापस मारा और हनुमान घूमकर तुरंत जमीन पर गिर पड़े। . . . बंदरों की सेना...

यहां तक कि भास्कर, जो अंगद की भूमिका निभा रहे थे, भी शक्तिशाली कुंभकरण के हाथों ढेर हो गए और उस पीपल के पेड़ के नीचे दयनीय रूप से कराहते हुए पड़े रहे जहां वह क्रिकेट खेला करते थे।

राम के बाणों के बावजूद, घायल राक्षस विचलित नहीं हुआ। 'वह भयंकर गर्जना करते हुए, लाखों-करोड़ों बंदरों को पकड़कर, अपने दस सिर वाले भाई की कसम खाते हुए, उन्हें एक विशाल हाथी की तरह जमीन पर पटक दिया।' बंदरों ने संकट में राम से प्रार्थना की; उन्होंने अपना धनुष उठाया और कुंभकरण पर और भी बाण चलाए। 'जैसे ही बाण उसे लगे, राक्षस क्रोध से जलता हुआ आगे बढ़ा; उसके दौड़ने से पहाड़ कांप उठे और धरती हिल गई।' उसने एक चट्टान को फाड़ दिया; लेकिन राम ने उसे पकड़े हुए उसकी भुजा काट दी। फिर वह अपने बाएं हाथ में चट्टान लेकर

आगे बढ़ा; लेकिन भगवान ने उसकी उस भुजा को भी काट दिया और वह जमीन पर गिर गई। . . . 'एक भयानक चीख निकालते हुए, वह मुंह खोले आगे बढ़ा। स्वर्ग में संत और देवता भयभीत होकर चिल्ला उठे, "हाय! हाय!"'

देवताओं की पीड़ा देखकर परम दयालु राम ने अंततः एक और बाण से कुंभकरण का सिर काट दिया और उसे भयभीत रावण के सामने जमीन पर गिरा दिया। सूंड तब तक बेतहाशा दौड़ती रही जब तक कि वह कट नहीं गई। फिर वह जमीन पर गिर पड़ी और अपने नीचे बंदरों, भालुओं और राक्षसों को कुचलती चली गई।

भीड़ चिल्लाई, जयकारे लगाए और तालियाँ बजाईं। मान भी उनके साथ जयकारे लगाने लगा; भास्कर कराहना बंद करके उठा और खुशी से चिल्ला उठा। मेघनाद के युद्ध में हुई बाद की मौतों और उसके कट्टर शत्रु की मृत्यु भी कुंभकरण की मृत्यु पर उमड़ी खुशी के आगे फीकी पड़ गई। कुंभकरण कई वर्षों से एक अनुभवी अभिनेता था और उसने खलनायकों और दर्शकों दोनों को डराने की कला में महारत हासिल कर ली थी। अंत में, जब सभी अभिनेता-राक्षस धूल में मिल गए और 'जय शेंकर!' की आवाजें सुनाई देना बंद हो गईं, तब आग लगाने का समय आ गया।

राक्षस की मूर्तियों के सामने लगभग पाँच हज़ार छोटे पटाखों की लाल कालीन बिछाई गई और उसे एक लंबी बत्ती से जलाया गया। शोर इतना तेज़ था कि संत और देवता भी 'हाय! हाय!' कहकर रो पड़ते। आग, चिंगारियाँ और राख ऊपर बालकनी तक पहुँच गई और श्रीमती महेश कपूर को साँस लेने में तकलीफ होने लगी, इससे पहले कि वह असहनीय तीखी हवा हवा के साथ उड़ जाए। राम ने कुंभकरण की दोनों भुजाओं पर एक-एक बाण चलाया और वे पीछे से प्रॉप-मैन द्वारा हेरफेर किए जाने पर गिर गईं। दर्शक फिर से स्तब्ध रह गए। लेकिन उसका सिर काटने के

बजाय, तेंदुए की खाल पहने सुंदर नीले रंग के पात्र ने अब अपने तरकश से एक रॉकेट निकाला और उसे कुंभकरण के भुजाहीन शरीर पर निशाना बनाया। रॉकेट शव से टकराया; वह आग की लपटों में घिर गया और कई ज़ोरदार विस्फोटों के साथ भस्म हो गया। कुंभकरण को पटाखों से भर दिया गया था, जो अब उसके चारों ओर तेज़ी से घूम रहे थे; उसकी नाक पर रखा एक हरा बम रंगीन चिंगारियों के फव्वारे के साथ फट गया। उनकी विशाल प्रतिमा ढह गई, रामलीला के आयोजकों ने अवशेषों को पीट-पीटकर राख कर दिया, और भीड़ ने राम के लिए जयकारे लगाए।

लक्ष्मण द्वारा मेघनाद के पुतले का वध करने के बाद, राम ने शाम को दूसरी बार दुष्ट रावण का संहार किया। लेकिन भीड़ में दहशत फैल गई क्योंकि जिस कागज, भूसे और बांस से उसे भरा गया था, वह जलने से इनकार कर रहा था। अब चारों ओर भय का माहौल छा गया, मानो यह अच्छाई की शक्तियों के लिए शुभ संकेत न हो। थोड़ी सी मिट्टी का तेल डालने के बाद ही रावण का अंततः नाश हुआ। और फिर, आयोजकों की लाठियों के कुछ प्रहारों और ऊपर की बालकनियों से जयजयकार करते लोगों द्वारा पानी से अच्छी तरह बुझाने के बाद, कभी दुष्ट माने जाने वाला दस सिर वाला पुतला राख और जले हुए बेंत में तब्दील हो गया।

राम, लक्ष्मण और हनुमान चौक के एक कोने में चले गए थे कि तभी भीड़ में से एक व्यंग्यात्मक आवाज ने उन्हें याद दिलाया कि वे सीता को बचाना भूल गए थे। वे राख से सनी ज़मीन पर, पाँच हज़ार पटाखों के जले हुए टुकड़ों पर से गुज़रते हुए तेज़ी से वापस भागे। पीली साड़ी पहने सीता, जो अब भी इस सब से कुछ ऊबी हुई लग रही थीं, को बिना किसी औपचारिकता के उनकी बालकनी से नीचे लाया गया और उनके पति के पास लौटा दिया गया।

अब, राम, लक्ष्मण, सीता और हनुमान के अंततः एक साथ होने और

बुराई की शक्तियों के अंततः पराजित होने के साथ, भीड़ ने पंडित के आग्रह पर उत्साहपूर्वक प्रतिक्रिया दी:

‘Raghupati Shri Ramchandra ji ki—’

'जय!'

‘Bol, Sita Maharani ki—’

'जय!'

‘Lakshman ji ki—’

'जय!'

‘Shri Bajrangbali ki—’

'जय!'

पंडित जी ने आगे कहा, ‘कृपापूर्वक याद रखें, हे जनमानस, कि भरत मिलाप समारोह कल, पोस्टरों पर घोषित समय पर, राम की राजधानी अयोध्या में होगा, जो हमारे लिए मिश्री मंडी के मंदिर के पास का छोटा सा चौक है। वहीं राम और लक्ष्मण अपने दीर्घकालीन वियोग से बिछड़े भाइयों भरत और शत्रुघ्न को गले लगाएंगे और उनकी माताओं के चरणों में गिरेंगे। कृपया इसे न भूलें। यह अत्यंत भावपूर्ण प्रस्तुति होगी और श्री राम के सभी सच्चे भक्तों की आंखों में आंसू ला देगी। यह रामलीला का वास्तविक चरमोत्कर्ष है, आज रात के आपके दर्शन से भी कहीं अधिक। और कृपया उन सभी को बताएं जिन्हें आज यहां उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है कि वे कल रात मिश्री मंडी अवश्य जाएं। अब फोटोग्राफर कहां है? मेला राम जी, कृपया आगे आएं।’

तस्वीरें खींची गईं, चांदी की थाली में दीपक और मिठाई रखकर कई बार आरती की गई, और बंदरों और भालुओं समेत सभी शुभ आकृतियों को भोजन कराया गया। अब वे सब गंभीर दिख रहे थे। भीड़ के कुछ उपद्रवी तत्व पहले ही तितर-बितर हो चुके थे। लेकिन अधिकांश दर्शक वहीं रुके

रहे और बची हुई मिठाई को पवित्र भेंट के रूप में ग्रहण किया। यहां तक कि राक्षसों को भी उनका हिस्सा मिला।

15.9

बैतर हाउस से शहर के इमामबाड़ा तक ताजिया जुलूस एक भव्य आयोजन होता था। बैतर हाउस का ताजिया प्रसिद्ध था: इसे कई साल पहले बनाया गया था और यह चांदी और क्रिस्टल से बना एक शानदार ताज था। हर साल मुहर्रम के नौवें दिन इसे शहर के इमामबाड़ा ले जाया जाता था, जहां इसे रात भर और अगली सुबह तक प्रदर्शित किया जाता था। फिर, दसवें दिन दोपहर को, इमाम हुसैन की कब्र की अन्य सभी प्रतिकृतियों के साथ, इसे एक भव्य जुलूस में 'करबला' ले जाया जाता था, जो ब्रह्मपुर के बाहर का वह मैदान था जिसे विशेष रूप से ताजियाओं को दफनाने के लिए निर्धारित किया गया था। लेकिन केवल कागज और कांच से बने ताजियाओं के विपरीत, चांदी के बैतर हाउस के ताजिया (कुछ अन्य समान रूप से कीमती ताजियाओं की तरह) को तोड़कर इस उद्देश्य के लिए खोदे गए खुले गड्ढे में दफनाया नहीं जाता था। इसे लगभग एक घंटे के लिए मैदान में छोड़ दिया जाता था, इसके अस्थायी आभूषण, जैसे टिनसेल, पतंग का कागज और अभ्रक, को दफना दिया जाता था, और ताजिया को नौकरों द्वारा वापस घर ले जाया जाता था।

इस वर्ष बैतर हाउस के जुलूस में फ़िरोज़ (सफ़ेद शेरवानी पहने हुए), दो ढोल वादक, छह युवक (दोनों ओर तीन-तीन) जो मजबूत लकड़ी के डंडों पर बड़ा ताजिया लिए हुए थे, घर के कुछ नौकर जो लयबद्ध ढंग से अपनी छाती पीटते हुए शहीदों के नाम पुकार रहे थे (लेकिन उन्होंने कोड़े या जंजीरों का इस्तेमाल नहीं किया), और कानून-व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करने के लिए दो कांस्टेबल शामिल थे। पसंद बाग से उनका रास्ता काफी लंबा था, इसलिए वे सुबह जल्दी निकल पड़े।

शाम होते-होते वे इमामबाड़ा के बाहर वाली गली में पहुँच गए, जो विभिन्न संघों, मोहल्लों और बड़े घरों के ताजिया जुलूसों का जमावड़ा स्थल था। यहाँ कम से कम साठ फीट ऊँचा एक विशाल खंभा खड़ा था, जिस पर हरे और काले रंग का झंडा लहरा रहा था। यहाँ हुसैन के वीर घोड़े की एक मूर्ति भी थी, जिसे मुहर्रम के दौरान फूलों और कीमती कपड़ों से सजाया जाता था। और यहीं, इमामबाड़ा के ठीक बाहर, एक स्थानीय संत के मंदिर के पास, एक चहल-पहल वाला मेला लगा था—जहाँ जुलूस में शामिल लोगों का मातम, छोटी-मोटी चीज़ें और पवित्र चित्र खरीदने-बेचने वाले लोगों के उत्सव के उत्साह और बच्चों द्वारा मिठाइयों, आइसक्रीम और कैंडीफ्लॉस सहित तरह-तरह के स्वादिष्ट स्ट्रीट फूड का आनंद लेने के साथ घुलमिल गया था—जो मुहर्रम के लिए न केवल गुलाबी बल्कि हरे रंग के भी थे।

अधिकांश ताजिया जुलूस नवाब साहब के परिवार के जुलूस की तुलना में कहीं कम शालीन होते थे: उनका शोक तीव्र था, ढोल की थाप कान फाड़ देने वाली थी, और वे आत्म-यातनाओं से लथपथ थे। फिर भी, वे शालीनता को निष्ठा से ऊपर नहीं रखते थे। उनकी भावनाओं का प्रज्वलित होना ही उन्हें आगे बढ़ाता था। नंगे पैर, कमर के ऊपर नग्न, पीठ पर जंजीरों से लथपथ, जिनसे उन्होंने खुद को कोड़े मारे थे, ताजिया जुलूस में शामिल पुरुष हांफते और कराहते हुए इमाम हुसैन और उनके भाई हसन का नाम बार-बार, लयबद्ध तरीके से, विलापपूर्ण या व्यथित स्वर में लेते थे। कुछ जुलूस जो सबसे अधिक जोशीले माने जाते थे, उनके साथ एक दर्जन तक पुलिसकर्मी भी होते थे।

ताज़िया जुलूसों के मार्गों को आयोजकों और पुलिस ने मिलकर बड़ी सावधानी से निर्धारित किया था। हिंदू बहुल क्षेत्रों, विशेष रूप से विवादित मंदिर क्षेत्र से यथासंभव परहेज किया गया था; पीपल के पेड़ों की नीची

शाखाओं की ऊँचाई को ताज़िया की ऊँचाई के साथ पहले से नाप लिया गया था, ताकि किसी को भी नुकसान न पहुँचे; जुलूस में शामिल लोगों को खलीफाओं को अपशब्द कहने से मना किया गया था; और समय का इस प्रकार मिलान किया गया था कि सूर्यास्त तक शहर भर के सभी जुलूस केंद्रीय गंतव्य पर पहुँच जाएँ।

समझौते के अनुसार, मान सूर्यास्त से कुछ देर पहले इमामबाड़ा के पास घोड़े की मूर्ति के नजदीक फिरोज से मिला।

'अरे, तो तुम आ ही गए, काफ़िर।' फ़िरोज़ अपनी सफ़ेद शेरवानी में बेहद आकर्षक लग रहा था।

'लेकिन सिर्फ वही करने के लिए जो सभी काफिर करते हैं,' मान ने उत्तर दिया।

और वह क्या है?

'तुम्हारे पास तुम्हारी नवाबी छड़ी क्यों नहीं है?' मान ने पूछा, जो फिरोज को ऊपर से नीचे तक देख रहा था।

फिरोज ने जवाब दिया, 'जुलूस के लिए यह उचित नहीं होता। मुझसे उम्मीद की जाती कि मैं इससे खुद को पीटूं, इसमें कोई शक नहीं। लेकिन आपने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।'

'अरे—यह क्या था?'

'ऐसा क्या है जो सभी काफिर करते हैं?'

'क्या यह कोई पहेली है?' मान ने पूछा।

फिरोज ने कहा, 'ऐसा नहीं है। तुमने अभी कहा कि तुम वही करने आए हो जो सभी काफिर करते हैं। और मैं तुमसे पूछ रहा हूँ कि वह क्या है।'

'काश मैं अपनी आदर्श के सामने नतमस्तक हो जाऊं। आपने कहा था कि वह यहाँ होंगी।'

"हाँ, वो रही," फ़िरोज़ ने पास के चौराहे की ओर हल्के से सिर हिलाते

हुए कहा। “मुझे पूरा यकीन है।”
काले बुर्के में लिपटी एक महिला एक स्टॉल पर खड़ी थी और ताजिया जुलूस में शामिल लोगों या अस्थायी बाज़ार में घूम रहे लोगों को शरबत बाँट रही थी। लोग शरबत पीते, गिलास वापस कर देते और भूरे बुर्के में लिपटी एक दूसरी महिला उन्हें पानी की बाल्टी में उलट देती और सरसरी तौर पर धोकर दोबारा इस्तेमाल कर लेती। यह स्टॉल बहुत लोकप्रिय था, शायद इसलिए कि लोग जानते थे कि काले बुर्के वाली महिला कौन है।
फिरोज ने आगे कहा, 'कर्बला की प्यास बुझाते हुए।'
‘आओ,’ मान ने कहा।
‘नहीं, नहीं, तुम जाओ। वैसे, वो दूसरी वाली बिब्बो है, भूरे रंग के बुर्के वाली। तसनीम नहीं।’
'मेरे साथ आओ, फ़िरोज़। प्लीज़। मुझे यहाँ होने की कोई ज़रूरत नहीं है। मुझे बहुत असहज महसूस होगा।'
'कल रात जब मैं उसकी सभा में गई थी, तब मुझे जितनी असहजता महसूस हुई, वैसी तो बिल्कुल नहीं। नहीं, मैं तो कतार में सजे ताजिया देखने जा रही हूँ। उनमें से ज़्यादातर आ चुके हैं, और हर साल कुछ न कुछ नया और अद्भुत देखने को मिलता है। पिछले साल एक ताजिया दो मंज़िला मोर के आकार का था, जिसका सिर औरत का था—और उसका आधा गुंबद ही यह बताने के लिए था कि वह एक मकबरा है। हम धीरे-धीरे हिंदू धर्म की ओर लौट रहे हैं।'
'अच्छा, अगर मैं आपके साथ ताजिया देखने चलूँ, तो क्या आप मेरे साथ शरबत की दुकान तक चलेंगी?'
'अरे ठीक है।'
मान जल्दी ही ताजियों से ऊब गया, चाहे वे कितनी भी शानदार क्यों न हों। उसके आसपास के सभी लोग इस बात पर गरमागरम बहस में लगे

हुए थे कि कौन सी ताजी सबसे सुंदर, सबसे अलंकृत और सबसे महंगी है। मान ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मैं इसे पहचानता हूँ; उसने इसे बैतर हाउस के इमामबाड़ा में देखा था।

फिरोज ने कहा, 'खैर, हम शायद इसे अगले पचास साल तक इस्तेमाल करेंगे। मुझे शक है कि हम दोबारा इस तरह की कोई चीज बनाने का खर्च उठा पाएंगे।'

'अब, अपना वादा निभाओ।'

'ठीक है।'

फिरोज और मान शरबत के स्टॉल की ओर चले गए।

'ये तो हद से ज़्यादा अस्वच्छ है, मान—तुम इन गिलासों से पानी नहीं पी सकते।'

लेकिन मान आगे बढ़ चुका था, भीड़ को चीरते हुए रास्ता बनाते हुए, और अब उसने शरबत का गिलास लेने के लिए हाथ बढ़ाया। काले कपड़े पहनी महिला ने उसे गिलास दे दिया, लेकिन आखिरी क्षण में, जैसे ही उसकी नज़र अचानक मान पर पड़ी, वह इतनी चौंक गई कि शरबत उसके हाथों पर गिर गया।

उसने गहरी सांस ली और धीमी आवाज में कहा, 'माफ़ कीजिए, महोदय। मैं आपके लिए एक और गिलास भर देती हूँ।'

उसकी आवाज़ में कोई शक नहीं था। 'नहीं, नहीं, महोदया,' मान ने विरोध किया। 'कृपया परेशान न हों। इस गिलास में जो बचा है, उससे मेरी प्यास पूरी तरह बुझ जाएगी, चाहे वह कितनी भी तेज़ क्यों न हो।'

भूरे रंग का बुर्का पहनी महिला उसकी आवाज़ सुनकर उसकी ओर मुड़ी। फिर दोनों महिलाएं एक-दूसरे की ओर मुड़ गईं। मान ने उनके बीच तनाव को भांप लिया और मुस्कुरा उठा।

बिब्बो को मान को देखकर शायद आश्चर्य नहीं हुआ होगा, लेकिन सईदा

बाई आश्चर्यचकित और नाराज़ दोनों थीं। जैसा कि मान ने अनुमान लगाया था, सईदा बाई को लगा कि मान का वहाँ होना उचित नहीं था; निश्चित रूप से वह शिया शहीदों के प्रति किसी प्रकार का स्नेह दिखाने का दिखावा नहीं कर सकता था। लेकिन उसकी मुस्कान ने सईदा बाई को और भी क्रोधित कर दिया। उन्होंने मान की बेपरवाह टिप्पणी की तुलना कर्बला के वीरों की भीषण प्यास से की—उनके पीछे उनके तंबू जल रहे थे, उनके सामने नदी का रास्ता रुका हुआ था—और इस बार अपनी आवाज़ और आक्रोश को छिपाने का कोई प्रयास न करते हुए, उन्होंने मान से कहा: 'मेरे पास सामान कम पड़ रहा है। आधा मील आगे एक ठेला है जहाँ मैं आपको यह गिलास खत्म करने के बाद जाने की सलाह दूंगी। उसे एक अत्यंत धर्मपरायण महिला चलाती है; वहाँ का शरबत मीठा है, और आपको वहाँ कम भीड़ मिलेगी।'

और इससे पहले कि मान सुलह का कोई उपयुक्त दोहा बोल पाता, वह दूसरे प्यासे पुरुषों की ओर मुड़ गई।

'तो?' फिरोज ने कहा।

मान ने अपना सिर खुजाया। 'नहीं, वह खुश नहीं थी।'

'कोई बात नहीं, चिंता मत करो; यह तुम पर जंचता नहीं है। चलो देखते हैं बाजार में क्या उपलब्ध है।'

मान ने अपनी घड़ी देखी। 'नहीं, मैं नहीं आ सकता। मुझे भरत मिलाप देखने जाना ही होगा, वरना मैं अपने भतीजे की नज़र में अपनी इज़्ज़त खो दूँगा। तुम भी क्यों नहीं साथ चलते? यह बहुत ही भावपूर्ण होता है। हर कोई गलियों में कतार बनाकर खड़ा होता है, जयकारे लगाता है, रोता है और जुलूस पर फूल बरसाता है। राम और उनके साथी बाईं ओर से, भरत और उनके साथी दाईं ओर से। और दोनों भाई बीच में गले मिलते हैं —अयोध्या शहर के ठीक बाहर।'

फिरोज ने कहा, 'खैर, मुझे लगता है कि मेरे बिना भी यहाँ काम चल जाएगा।' 'यह कितनी दूर है?'

'मिसरी मंडी—यहीं पर इस साल अयोध्या स्थित है। यहाँ से सिर्फ दस मिनट की पैदल दूरी पर—वीना के घर के बहुत करीब। वह आपको देखकर बहुत खुश होगी।'

फिरोज हँस पड़ा। 'तुम्हें यही लगा था कि सईदा बाई ऐसी ही होगी,' उसने कहा, और वे हाथ में हाथ डाले बाजार से होते हुए मिसरी मंडी की ओर चल पड़े।

15.10

भरत मिलाप की शोभायात्रा समय पर शुरू हुई। भरत को अपने भाई से मिलने के लिए केवल अपने शहर के बाहरी इलाके तक जाना था, इसलिए उन्होंने पंडित के संकेत का इंतजार किया; लेकिन राम को अयोध्या की पवित्र राजधानी तक लंबी यात्रा करनी थी—जहां वे कई वर्षों के वनवास के बाद विजयपूर्वक लौट रहे थे—और जैसे ही अंधेरा हुआ, वे उस मंदिर से अपनी यात्रा पर निकल पड़े जो उस मंच से लगभग आधा मील दूर स्थित था जहां अंततः दोनों भाई मिलने वाले थे।

इस मंच को चारों कोनों से उठते बांस के खंभों से लटकती फूलों की मालाओं से सजाया गया था; इसे लगभग पूरे पड़ोस ने मिलकर बड़ी सलाह और ढेर सारे गेंदे के फूलों की मदद से तैयार किया था; और गेंदे के फूल खाने की कोशिश करने वाली कई गायों को बंदरों की सेना ने भगा दिया था। आम तौर पर पड़ोस में गायों का स्वागत होता था—कम से कम उनकी आवाजाही में कोई रुकावट नहीं थी—और बेचारी भोली-भाली गायें ज़रूर हैरान होंगी कि उनकी लोकप्रियता में अचानक इतना बदलाव क्यों आया।

आज का दिन अत्यंत आनंद और उत्सव का दिन था; क्योंकि न केवल

राम और लक्ष्मण अपने भाइयों भरत और शत्रुघ्न से पुनर्मिलन करने वाले थे, बल्कि यह वह दिन था जब लोग अपने प्रभु को अपने पास लौटते हुए देखेंगे, जो उन पर शासन करेंगे और न केवल अयोध्या में बल्कि पूरे विश्व में पूर्ण धर्म की स्थापना करेंगे।

ढोल-नगाड़ों, शहनाइयों और एक जोशीले बैंड की धुन पर जुलूस मिसरी मंडी की संकरी गलियों से होते हुए आगे बढ़ने लगा। सबसे पहले जवाहरलाल लाइट हाउस की ओर से रोशनी की व्यवस्था की गई थी, वही कंपनी जिसने पिछली शाम राक्षसों की लाल आंखें लगाई थीं। उनके ऊपर लगी चमकदार बत्तियां जालीदार कपड़े से ढके बल्बों जैसी लग रही थीं और उनसे तीव्र सफेद रोशनी निकल रही थी।

महेश कपूर ने अपनी आंखों पर हाथ रख लिया। वह यहां आंशिक रूप से अपनी पत्नी की इच्छा से और आंशिक रूप से कांग्रेस पार्टी में फिर से शामिल होने के विचार से सहमत होते जा रहे थे और उन्हें लगा कि एहतियात के तौर पर उन्हें अपने पुराने निर्वाचन क्षेत्र से अपने संबंध फिर से मजबूत कर लेने चाहिए।

उन्होंने कहा, 'यह रोशनी बहुत तेज है—मेरी आंखें चौंधिया रही हैं। केदारनाथ, कुछ करो। तुम आयोजकों में से एक हो, है ना?'

'बाओजी, इन्हें जाने दीजिए। बाद में सब ठीक हो जाएगा,' उनके दामाद ने कहा, जो जानते थे कि एक बार जुलूस शुरू हो जाने के बाद वे कुछ नहीं कर सकते। श्रीमती महेश कपूर ने अपने कानों पर हाथ रख लिए थे, लेकिन मन ही मन मुस्कुरा रही थीं।

ब्रास बैंड का शोर कान फाड़ देने वाला था। कुछ फिल्मी गाने बजाने के बाद, वे धार्मिक धुनें बजाने लगे। सस्ते लाल पतलून, जिन पर सफेद पाइपिंग थी, और सुनहरे सूती कढ़ाई वाले नीले कुर्ते में वे बेहद आकर्षक लग रहे थे। उनके सारे तुरही, ट्रॉम्बोन और हॉर्न बेसुरा बज रहे थे।

फिर आए शोर मचाने वाले मुख्य ढोल वादक, जिन्होंने मंदिर के पास तीन छोटी-छोटी आग पर अपने वाद्ययंत्रों को सावधानीपूर्वक भूनकर उनकी ध्वनि और तीक्ष्णता को बढ़ाया था। वे ऐसे बजा रहे थे मानो पागल हो गए हों—अविश्वसनीय रूप से तेज़ और असहनीय शोर के साथ। वे रामलीला समिति के किसी भी सदस्य को पहचानते ही आक्रामक रूप से अपने वश में कर लेते थे, प्रदर्शन और ब्लैकमेल का मिलाजुला रूप अपनाते हुए, उनसे सिक्के और नोट छीन लेते थे। वे अपने कूल्हों को आगे की ओर धकेलते और कमर से अपने ढोलों को तिरछा आगे-पीछे हिलाते थे। ये ढोल वादकों के लिए अच्छे दिन थे: दशहरा मनाने वालों और मुहर्रम मनाने वालों, दोनों के बीच उनकी मांग थी।

महेश कपूर ने पूछा, 'ये लोग कहाँ से हैं?'

‘क्या?’ केदारनाथ ने पूछा।

मैंने पूछा, वे कहाँ से हैं?

‘इन घटिया ढोल बजाने वालों की वजह से मुझे आपकी आवाज सुनाई नहीं दे रही है।’

महेश कपूर ने अपने हाथों को जोड़कर अपने दामाद के कानों में चिल्लाते हुए कहा: 'मैंने पूछा, वे कहाँ से हैं? क्या वे मुसलमान हैं?'

‘ये बाजार से हैं—’ केदारनाथ चिल्लाया, जो इस बात को स्वीकार करने का एक तरीका था कि वे बाजार से ही हैं।

राम, लक्ष्मण और सीता स्वरूपों के अपने वैभव और वैभव में प्रकट होने से पहले ही, पटाखों के उस्ताद—जो अपने कंधे पर एक भारी बोरी उठाए हुए थे—एक बड़ा पैकेट लेकर आए, उस पर से रंगीन कागज़ फाड़ा, अंदर के गत्ते के डिब्बे को खोला और पाँच हज़ार पटाखों का एक और विशाल लाल कालीन बिछा दिया। जैसे ही पटाखे एक के बाद एक फूटे, लोग रोशनी और शोर से पीछे हट गए, उनके चेहरे उत्साह से लाल हो गए,

उन्होंने अपने कान हाथों से ढक लिए या उंगलियाँ कानों में डाल लीं। शोर इतना ज़बरदस्त था कि महेश कपूर ने फैसला किया कि अपने पुराने निर्वाचन क्षेत्र में दिखने का उनका दायित्व भी अपनी सुनने की शक्ति और मानसिक संतुलन खोने के लायक नहीं था।

'चलो,' उसने अपनी पत्नी को चिल्लाकर कहा, 'हम घर जा रहे हैं।'

श्रीमती महेश कपूर को उनकी एक भी बात सुनाई नहीं दी और वह मुस्कुराती रहीं।

भास्कर समेत बंदरों की सेना जुलूस में सबसे आगे थी, और दर्शकों में ज़बरदस्त उत्साह की लहर दौड़ गई; स्वरूप भी जल्द ही आने वाले थे। बच्चे ताली बजाने लगे; बुज़ुर्ग सबसे ज़्यादा उत्सुक थे, शायद अपने जीवनकाल में देखी गई अनगिनत रामलीलाओं को याद करके। कुछ बच्चे रास्ते में बनी एक नीची दीवार पर बैठ गए, कुछ कुशलता से घरों की छतों पर चढ़ गए, कहीं सहारा लेकर तो कहीं बड़ों का कंधा थामकर। एक पिता ने अपनी दो साल की बेटी के नंगे पैर को चूमते हुए उसे एक सजावटी खंभे के चपटे शिखर पर चढ़ा दिया और उसे वहीं पकड़े रखा ताकि वह बेहतर ढंग से देख सके।

और फिर अंत में भगवान राम प्रकट हुए; और सीता, पीली साड़ी में; और लक्ष्मण, मुस्कुराते हुए, जिनके तरकश बाणों से चमक रहे थे।

दर्शकों की आंखें खुशी के आंसुओं से भर आईं और वे स्वरूपों पर फूल बरसाने लगे। बच्चे अपनी जगहों से नीचे उतर आए और 'जय सियाराम' और 'रामचंद्र जी की जय!' के नारे लगाते हुए जुलूस के पीछे-पीछे चलने लगे, साथ ही उन पर गुलाब की पंखुड़ियां और गंगाजल छिड़कने लगे। ढोल बजाने वाले भी नए जोश के साथ अपने ढोल बजाने लगे।

महेश कपूर, जिनका चेहरा झुंझलाहट से लाल हो गया था, ने अपनी पत्नी का हाथ पकड़ा और उन्हें एक तरफ खींच लिया।

‘हम जा रहे हैं,’ उसने सीधे उसके कान में चिल्लाकर कहा। ‘क्या तुम मुझे सुन नहीं सकती? मेरा सब्र टूट गया है... वीना, तुम्हारी माँ और मैं जा रहे हैं।’

श्रीमती महेश कपूर ने अपने पति को आश्चर्य और लगभग अविश्वास भरी निगाहों से देखा। जब उन्हें समझ आया कि उन्होंने क्या कहा है, और उन्हें किस चीज़ से वंचित होना पड़ेगा, तो उनकी आँखों में आँसू भर आए। उन्होंने एक बार बनारस के नाटी इमली में भारत मिलाप देखा था और वह उसे कभी नहीं भूली थीं। उस अवसर की कोमलता—अयोध्या में रह रहे दोनों भाइयों का अपने दो लंबे समय से वनवास में रहे भाइयों के चरणों में गिरना—कम से कम एक लाख लोगों की भीड़—जब नन्हे-मुन्ने मंच पर आए तो सबकी आँखों में जो भक्ति थी—सब कुछ उन्हें याद आ गया। जब भी वह ब्रह्मपुर में भारत मिलाप देखतीं, तो उन्हें वह अवसर अपने पूरे आकर्षण, आश्चर्य और गरिमा के साथ याद आ जाता। वह कितना सरल और कितना अद्भुत था। और यह केवल लंबे समय से बिछड़े भाइयों का कोमल मिलन ही नहीं था, बल्कि राम राज्य का पहला चरण था, राम का शासन, जब इन गुटबाजी भरे, हिंसक और तुच्छ समय के विपरीत, धर्म के चार स्तंभ—सत्य, पवित्रता, दया और दान—संसार की इमारत को सहारा देंगे।

तुलसीदास के वे शब्द जो उसे लंबे समय से याद थे, उसे याद आ गए:

कर्तव्यनिष्ठ होकर, लोग वेदों के मार्ग पर चलते थे, प्रत्येक व्यक्ति अपनी जाति और जीवन के चरण के अनुसार, और भय, दुःख या बीमारी से मुक्त होकर पूर्ण सुख का आनंद लेते थे।

'कम से कम जुलूस के अयोध्या पहुंचने तक तो हम इंतजार कर लें,' श्रीमती महेश कपूर ने अपने पति से विनती की।

महेश कपूर ने झल्लाकर कहा, 'अगर तुम रुकना चाहो तो रुक जाओ। मैं

जा रहा हूँ।' और वह उदास होकर उनके पीछे चल पड़ी। लेकिन उसने निश्चय कर लिया था कि कल वह उन्हें राम के राज्याभिषेक के लिए आने के लिए नहीं मनाएगी। वह अकेले आएगी और उनकी हर बात नहीं मानेगी, बल्कि शुरू से अंत तक राज्याभिषेक देखेगी। वह उस दृश्य से फिर कभी दूर नहीं होना चाहेगी जिसके लिए उसकी आत्मा तरस रही थी। इसी बीच जुलूस मिसरी मंडी और आसपास के इलाकों की भूलभुलैयानुमा गलियों से होकर गुजर रहा था। लक्ष्मण जवाहरलाल लाइट हाउस के एक जले हुए बल्ब पर पैर रख बैठे और दर्द से चीख पड़े। चूंकि तुरंत पानी उपलब्ध नहीं था, इसलिए राम ने रास्ते में बिखरे हुए गुलाब की पंखुड़ियां उठाईं और उन्हें जले हुए हिस्से पर मसल दिया। भाईचारे की इस सहानुभूति को देखकर लोगों ने राहत की सांस ली और जुलूस आगे बढ़ गया। आतिशबाजी के मुखिया ने हरे रंग के कुछ रॉकेट छोड़े जो आसमान में ऊपर उठे और चिंगारियों के गुबार के साथ फट गए। यह देखकर हनुमान अपनी पूंछ हिलाते हुए आगे बढ़े, मानो उन्हें लंका में किए गए अपने ही प्रज्वलन की याद आ गई हो। उनके पीछे बंदरों का झुंड खुशी से चहचहाता और चिल्लाता हुआ चल रहा था; वे तीन मुख्य स्वरूपों से कुछ सौ गज पहले गेंदे के फूलों के मंच पर पहुंच गए। हनुमान, जो आज कल से भी अधिक लाल, गोल-मटोल और प्रसन्न थे, मंच पर कूद पड़े, कुछ सेकंड तक उछले-कूदे और नाचे, फिर नीचे उतर गए। अब भरत समझ गए कि राम और लक्ष्मण सरयू नदी और अयोध्या नगर की ओर आ रहे हैं, और वे भी दूसरी ओर से गली के रास्ते मंच की ओर बढ़ने लगे।

15.11

फिर अचानक रामा का जुलूस रुक गया, और अन्य ढोलों की आवाज़ के साथ-साथ भयानक शोक और विलाप की चीखें सुनाई देने लगीं। ढोल बजाने वालों के साथ लगभग बीस पुरुषों का एक समूह अपने ताजिया के

साथ इमामबाड़ा तक पहुँचने के लिए जुलूस को चीरने की कोशिश कर रहा था। कुछ लोग इमाम हुसैन के शोक में अपनी छाती पीट रहे थे; दूसरों के हाथों में छोटी चाकुओं और तेज धार वाले ब्लेड से युक्त जंजीरें और चाबुक थे जिनसे वे खुद को बेरहमी से, झटकेदार, विवश गतियों में कोड़े मार रहे थे। वे डेढ़ घंटे देरी से चल रहे थे—उनके ढोल बजाने वाले देर से आए थे, उनका दूसरे ताजिया जुलूस के साथ झगड़ा हो गया था—और अब वे अपनी मंजिल तक पहुँचने के लिए बेताब होकर जितनी जल्दी हो सके आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे थे। यह मुहर्रम की नौवीं रात थी। दूर से वे इमामबाड़ा के शिखर को रोशनी की लड़ियों से जगमगाते हुए देख सकते थे। वे आगे बढ़े, उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे—

'हाँ हसन! हाँ हुसैन!' 'हाँ हसन! हाँ हुसैन!' 'हसन! हुसैन!'

'हसन! हुसैन!'

वीना ने अपने बेटे से कहा, जिसने उसका हाथ पकड़ रखा था, 'भास्कर, तुरंत घर जाओ। तुरंत। दादी कहाँ हैं?'

लेकिन मैं देखना चाहता हूँ—

उसने उसके बंदर जैसे चेहरे पर एक ज़ोरदार थप्पड़ मारा। उसने अविश्वास भरी निगाहों से उसकी ओर देखा, फिर रोते हुए गली से बाहर निकल गया।

केदारनाथ ताजिया जुलूस के साथ आए दो पुलिसकर्मियों से बात करने के लिए आगे बढ़ीं। पड़ोसियों की परवाह किए बिना, वह उनके पास गईं, उनके हाथों को अपने हाथों में पकड़ा और कहा:

'चलो घर चलते हैं।'

लेकिन यहाँ मुसीबत है—मुझे बेहतर होगा—'

भास्कर बीमार हैं।

दो चिंताओं के बीच फंसा केदारनाथ ने सिर हिलाया।

ताजिया लेकर चलने वालों के साथ आए दो पुलिसकर्मियों ने उनके लिए रास्ता साफ करने की कोशिश की, लेकिन यह मिसरी मंडी के लोगों, अयोध्या के पवित्र शहर के उन नागरिकों के लिए असहनीय था, जिन्होंने भगवान राम के दर्शन के लिए इतने लंबे समय तक श्रद्धापूर्वक प्रतीक्षा की थी।

पुलिसकर्मियों को एहसास हुआ कि जो रास्ता एक घंटे पहले सुरक्षित था, अब सुरक्षित नहीं रहा। उन्होंने जुलूस को अपना रास्ता बदलने, रुकने या वापस लौटने का आदेश दिया, फिर उनसे विनती की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। हताश शोक संतप्त लोग खुशी से झूम रहे लोगों के बीच से जबरदस्ती आगे बढ़ते रहे।

यह घिनौना और हिंसक व्यवधान—यह उन्मादपूर्ण मातम, जिसने श्री रामचंद्र जी के अपने घर, अपने भाइयों, अपनी प्रजा के पास लौटकर अपना आदर्श शासन स्थापित करने के उत्सव का उपहास उड़ाया—सहन नहीं किया जा सकता था। जो बंदर अभी-अभी बेकाबू खुशी से उछल-कूद कर रहे थे, उन्होंने क्रोध में ताजिया पर फूल फेंके, आक्रामक ढंग से चिल्लाए और गुर्राए, और फिर राम, सीता और लक्ष्मण के मार्ग में जबरदस्ती घुसने की कोशिश कर रहे घुसपैठियों के चारों ओर धमकी भरे अंदाज में खड़े हो गए।

राम की भूमिका निभाने वाले अभिनेता ने एक ऐसी मुद्रा में आगे कदम बढ़ाया जो आधी आक्रामक और आधी विनम्र थी।

एक जंजीर ज़ोर से छूटी और वह लड़खड़ाकर पीछे गिर गया, और दर्द से कराहते हुए एक दुकान के चबूतरे पर जा गिरा। उसकी गहरे नीले रंग की त्वचा पर एक लाल धब्बा बन गया और फैल गया।

भीड़ बेकाबू हो गई। रावण की सारी सेनाएँ जो नहीं कर पाई थीं, वो काम इन खून के प्यासे मुसलमानों ने कर दिखाया था। वहाँ कोई युवा अभिनेता

नहीं, बल्कि स्वयं ईश्वर घायल पड़े थे।

घायल राम को देखकर पागल हुए पटाखे लिए हुए व्यक्ति ने आयोजकों में से एक से लाठी छीन ली और ताजिया जुलूस पर भीड़ को आक्रमण के लिए उकसाया। कुछ ही पलों में, कई हफ्तों की मेहनत से बने नाजुक कांच, अभ्रक और कागज की नक्काशी से सजा ताजिया जमीन पर चकनाचूर हो गया। उस पर पटाखे फेंके गए और उसे आग लगा दी गई। उन्मादी भीड़ ने उसे तब तक रौंदा और लाठियों से पीटा जब तक वह जलकर चूर-चूर नहीं हो गया। ताजिया के रक्षकों ने चाकू और जंजीरों से उन काफिरों पर हमला किया, जो महान शहादत की पूर्व संध्या पर बंदरों की तरह उछल-कूद कर रहे थे और जिन्होंने मकबरे की पवित्र प्रतिमा का अपमान करने का साहस किया था।

कुचली और काली पड़ी ताजिया को देखकर वे क्रोधित हो गए।

अब दोनों पक्ष हत्या की लालसा से भरे हुए थे—यदि वे भी शहादत झेलते तो क्या फर्क पड़ता?—शुद्ध बुराई पर आक्रमण करने के लिए, जो उन्हें प्रिय था उसकी रक्षा करने के लिए—यदि वे मर जाते तो क्या फर्क पड़ता?—चाहे कर्बला के जुनून को पुनर्जीवित करना हो या राम राज्य की पुनः स्थापना करना और दुनिया को हत्यारे, गौ-हत्यारे, ईश्वर को अपवित्र करने वाले राक्षसों से मुक्त करना हो।

'इन हरामखोरों को मार डालो—इनका खात्मा कर दो—पाकिस्तान की औलाद—'

'या हसन! या हुसैन!' यह अब एक युद्धघोष बन गया था।

जल्द ही विभाजन के समय की उन्मादी चीखें—'अल्लाह-उ-अकबर' और 'हर हर महादेव'—भी दर्द और आतंक की चीखों के बीच सुनाई देने लगीं। आस-पास के घरों से चाकू, भाले, कुल्हाड़ी और लाठियाँ निकल आईं और हिंदू-मुसलमान एक-दूसरे के अंगों, आँखों, चेहरों, आंतों और गले पर

वार करने लगे। दो पुलिसकर्मियों में से एक पीठ में घायल हो गया, दूसरा भागने में कामयाब रहा। लेकिन यह एक हिंदू इलाका था और कुछ भयानक मिनटों तक चले आपसी नरसंहार के बाद, मुसलमान गलियों में भाग गए, जिनमें से अधिकतर छोटी और अपरिचित थीं। कुछ को पकड़ कर मार डाला गया, कुछ बच निकले और उसी दिशा में वापस भाग गए जहाँ से वे आए थे, कुछ इमामबाड़ा की ओर टेढ़े-मेढ़े रास्तों से भागे—दूर से ही उसकी जगमगाती मीनार और रोशनी की झालरों से रास्ता पाते हुए। वे इमामबाड़ा की ओर ऐसे भागे जैसे कोई किसी शरणस्थल की ओर भागता है—जहाँ उन्हें अपने धर्म के लोगों के बीच सुरक्षा मिलेगी और ऐसे हृदय मिलेंगे जो उनके भय, घृणा, कड़वाहट और दुःख को समझ सकें—क्योंकि उन्होंने अपने मित्रों और रिश्तेदारों को मरते और घायल होते देखा था—और बदले में वे उनसे आहत हुए थे।

जल्द ही मुस्लिम भीड़ ब्रह्मपुर के अन्य हिस्सों में घूमकर हिंदू दुकानों में आग लगाने लगी और जो भी हिंदू उन्हें मिलता, उसकी हत्या कर देती। इसी बीच मिसरी मंडी में, भारत मिलाप के लिए किराए पर लिए गए तीन मुस्लिम ढोल वादक, जो शिया भी नहीं थे और जिन्हें राम की दिव्यता से अधिक ताजिया की परवाह नहीं थी, मंदिर की दीवार के पास मृत पड़े थे। उनके ढोल चकनाचूर कर दिए गए थे, उनके सिर आधे काट दिए गए थे, उनके शरीर पर केरोसिन डालकर आग लगा दी गई थी—निस्संदेह, यह सब ईश्वर की महिमा के लिए किया गया था।

15.12

मान और फ़िरोज़ कटरा मस्त की अंधेरी गली से होते हुए मिसरी मंडी की ओर टहल रहे थे कि मान अचानक रुक गया। जो आवाज़ें उसकी ओर आ रही थीं, वे वैसी नहीं थीं जैसी उसने सोची थीं। न तो ये किसी ताज़िया जुलूस की आवाज़ें थीं—और यकीनन ताज़िया जुलूस के लिए बहुत देर

हो चुकी थी—और न ही भारत मिलाप की खुशनुमा आवाज़ें। दोनों ओर ढोल की आवाज़ें बंद हो चुकी थीं—और न ही 'हसन! हुसैन!' या 'जय सियाराम!' सुनाई दे रही थीं। इसके बजाय उसे भीड़ की डरावनी, अस्पष्ट आवाज़ें सुनाई दीं, जो दर्द या आवेश की चीखों—या 'हर हर महादेव' के नारों—से टूटी हुई थीं। शिव का यह आक्रामक आह्वान कल तक तो ठीक लगता—लेकिन आज इसने उसके रोंगटे खड़े कर दिए।

उसने फ़िरोज़ का हाथ छोड़ा और उसे कंधों से पकड़कर घुमा दिया। 'भागो!' उसने डर से मुंह पोंछते हुए कहा। 'भागो!' उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। फ़िरोज़ उसे देखता रहा लेकिन हिला तक नहीं।

अब भीड़ गली में दौड़ रही थी। आवाज़ें करीब आती जा रही थीं। मान ने हताशा में चारों ओर देखा। सारी दुकानें बंद थीं, उनके शटर नीचे थे। आस-पास कोई गली भी नहीं थी।

'फिरोज, पीछे हटो—' मान कांपते हुए बोला। 'पीछे हटो—भागो! यहाँ छिपने की कोई जगह नहीं है—'

'क्या बात है—क्या यह जुलूस नहीं है?' मान की आँखों में भय देखकर फ़िरोज़ का मुँह खुला रह गया।

'मेरी बात सुनो,' मान हांफते हुए बोला—'जैसा मैं कहूँ वैसा करो। वापस भागो! इमामबाड़ा की ओर भागो। मैं उन्हें एक-दो मिनट के लिए रोक लूँगा। इतना काफी होगा। वे पहले मुझे ही रोक लेंगे।'

फिरोज ने कहा, 'मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जा रहा हूं।'

'फिरोज, तुम मूर्ख हो, ये तो हिंदुओं की भीड़ है। मुझे कोई खतरा नहीं है। लेकिन अगर मैं तुम्हारे साथ आया तो मैं ठीक नहीं रहूंगा। भगवान जाने वहां अब तक क्या हो रहा होगा। अगर वहां दंगे हो रहे हैं, तो वे वहां हिंदुओं को मार रहे होंगे।'

'नहीं-'

'हाय भगवान्-'

तब तक भीड़ लगभग उन तक पहुंच चुकी थी, और भागने में बहुत देर हो चुकी थी।

सबसे आगे एक युवक था, जो नशे में धुत लग रहा था। उसका कुर्ता फटा हुआ था और पसलियों पर लगे घाव से खून बह रहा था। उसके हाथ में खून से सनी लाठी थी और वह मान और फ़िरोज़ की ओर बढ़ा। उसके पीछे—हालांकि अंधेरा था और देखना मुश्किल था—लगभग बीस-तीस आदमी रहे होंगे, जिनके पास भाले, चाकू या मिट्टी के तेल में भीगी हुई जलती हुई मशालें थीं।

'मुसलमानों को भी मार डालो—'

'हम मुसलमान नहीं हैं,' मान ने फिरोज की ओर देखे बिना तुरंत कहा। उसने अपनी आवाज पर काबू रखने की कोशिश की, लेकिन डर के मारे उसकी आवाज तीखी हो गई थी।

'हम इसका पता जल्दी ही लगा लेंगे,' उस नौजवान ने चिढ़कर कहा। मान ने उसकी तरफ देखा—उसका चेहरा दुबला-पतला और साफ़ दाढ़ी वाला था—सुंदर चेहरा, लेकिन पागलपन, क्रोध और नफ़रत से भरा हुआ। वह कौन था? ये लोग कौन थे? अंधेरे में मान उनमें से किसी को भी नहीं पहचान पाया। क्या हुआ था? भारत मिलाप की शांति अचानक दंगे में कैसे बदल गई? और, डर से उसका दिमाग सुन्न हो गया, अब आगे क्या होने वाला था?

अचानक, मानो किसी चमत्कार से, उसके मन से भय का कोहरा छंट गया।

उन्होंने गहरी आवाज में कहा, 'यह जानने की कोई जरूरत नहीं है कि हम कौन हैं। हम डर गए थे क्योंकि पहले हमें लगा कि आप मुसलमान हो सकते हैं। हम सुन नहीं पा रहे थे कि आप क्या चिल्ला रहे थे।'

‘गायत्री मंत्र का जाप करो,’ युवक ने उपहास उड़ाते हुए कहा।
मान ने तुरंत कुछ पवित्र शब्द दोहराए। ‘अब जाओ—’ उसने कहा। ‘निर्दोष लोगों को धमकाओ मत। अपने रास्ते जाओ। जय सियाराम! हर हर महादेव!’ उसके स्वर में व्यंग्य झलक रहा था।
युवक हिचकिचाया।
भीड़ में से किसी ने चिल्लाकर कहा, 'दूसरा व्यक्ति मुसलमान है। वह इस तरह के कपड़े क्यों पहने हुए है?'
'हां, यह निश्चित है।'
‘उसकी फैंसी ड्रेस उतार दो।’
फ़िरोज़ फिर से कांपने लगा था। इससे उन्हें हौसला मिला।
‘देखो कि उसका खतना हुआ है या नहीं।’
‘उस क्रूर, गायों की हत्या करने वाले हरामजादे को मार डालो—उस बहनोई का गला काट दो।’
‘तुम कौन हो?’ युवक ने खून से सनी लाठी से फ़िरोज़ के पेट में धक्का देते हुए कहा। ‘जल्दी बोलो, इससे पहले कि मैं इसे तुम्हारे सिर पर चला दूँ—’
फ़िरोज़ सहम गया और कांपने लगा। लाठी पर लगा खून उसकी सफ़ेद शेरवानी पर दाग़ लगा रहा था। वैसे तो उसमें साहस की कमी नहीं थी, लेकिन अब—ऐसे बेकाबू और अतार्किक खतरे के सामने—उसकी आवाज़ ही बैठ गई थी। भला वह भीड़ से कैसे बहस कर सकता था? उसने घबराकर कहा, ‘मैं जैसा हूँ वैसा ही हूँ। इससे तुम्हें क्या लेना-देना?’
मान अपने चारों ओर हताशा से देख रहा था। वह जानता था कि बात करने का समय नहीं है। अचानक जलती हुई मशालों की तीक्ष्ण और भयानक रोशनी में उसकी नज़र किसी ऐसे व्यक्ति पर पड़ी जिसे वह पहचानता हुआ प्रतीत हुआ।

‘नंद किशोर!’ वह चिल्लाया। ‘तुम इस गिरोह में क्या कर रहे हो? क्या तुम्हें शर्म नहीं आती? तुम्हें तो शिक्षक होना चाहिए।’ नंद किशोर, एक अधेड़ उम्र का, चश्मा पहने हुए व्यक्ति, उदास दिख रहा था।

‘चुप रहो—’ युवक ने मान से गुस्से से कहा। ‘सिर्फ इसलिए कि तुम्हें खतना किए हुए लिंग पसंद हैं, क्या तुम्हें लगता है कि हम मुसलमान को जाने देंगे?’ उसने फिर से फ़िरोज़ को धक्का दिया और उसकी शेरवानी पर खून का एक और धब्बा लगा दिया।

मान ने उसकी बात अनसुनी कर दी और नंद किशोर से बात करता रहा। वह जानता था कि बातचीत का समय बहुत कम है। यह चमत्कार ही था कि वे आपस में बात कर पाए—कि वे अभी भी जीवित हैं।

“तुम मेरे भतीजे भास्कर को सिखाते हो। वह हनुमान की सेना का हिस्सा है। क्या तुम उसे निर्दोष लोगों पर हमला करना सिखाओगे? क्या तुम इसी तरह का राम राज्य स्थापित करना चाहते हो? हम किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचा रहे हैं। हमें अपने रास्ते जाने दो। आओ!” उसने फ़िरोज़ को कंधे से पकड़ते हुए कहा। “आओ।” फ़िरोज़ ने भीड़ को धकेलते हुए आगे बढ़ने की कोशिश की।

‘इतनी जल्दी नहीं। तुम जा सकते हो, बहन के साथ यौन संबंध बनाने वाले गद्दार—लेकिन तुम जा नहीं सकते,’ युवक ने कहा।

मान उस पर झपटा और अपनी लाठी को नजरअंदाज करते हुए अचानक गुस्से में आकर उसका गला पकड़ लिया।

‘तू कमीना!’ उसने दबी हुई गुर्राहट में उससे कहा, जो भीड़ में मौजूद हर आदमी तक पहुँच गई। ‘क्या तुझे पता है आज कौन सा दिन है? यह आदमी मेरा भाई है, मेरे भाई से भी बढ़कर, और आज हमारे मोहल्ले में भारत मिलाप मनाया जा रहा था। अगर तूने मेरे भाई के सिर का एक बाल भी लहूलुहान किया—अगर उसके सिर का एक बाल भी लहूलुहान

हुआ—तो भगवान राम तेरी घिनौनी आत्मा को छीनकर नरक में जला देंगे —और तू अगले जन्म में उसी घिनौने कृंतक के रूप में जन्म लेगा। घर जा और अपना खून चाट ले, कमीने, इससे पहले कि मैं तेरा गला तोड़ दूँ।' उसने उस युवक के हाथ से लाठी छीन ली और उसे भीड़ में धकेल दिया। क्रोध से लाल होते हुए, मान फिरोज को साथ लेकर भीड़ के बीच से निडरता से निकल पड़ा। भीड़ उसके शब्दों से थोड़ी सहमी हुई और अपने उद्देश्य को लेकर थोड़ी अनिश्चित प्रतीत हो रही थी। इससे पहले कि भीड़ दोबारा निकलने का रास्ता सोच पाती, मान ने फिरोज को आगे धकेलते हुए पचास गज का सफर तय किया और एक मोड़ पर मुड़ गया।

'अब भागो!' उसने कहा।

वह और फ़िरोज़ अपनी जान बचाने के लिए भागे। भीड़ अब भी खतरनाक थी। कुछ मिनटों के लिए वह एक तरह से नेतृत्वहीन हो गई और समझ नहीं पा रही थी कि क्या करे, लेकिन जल्द ही वह फिर से संगठित हो गई और अपने शिकार से वंचित महसूस करते हुए, और अधिक की तलाश में गलियों में आगे बढ़ गई।

मान जानता था कि उन्हें हर हाल में भारत मिलाप जुलूस के रास्ते से बचना होगा और किसी भी तरह अपनी बहन के घर पहुंचना होगा। कौन जाने रास्ते में उन्हें किन खतरों का सामना करना पड़ सकता है, किन-किन भीड़ या पागलों से उनका सामना हो सकता है।

फिरोज ने कहा, 'मैं इमामबाड़ा वापस जाने की कोशिश करूंगा।'

'अब बहुत देर हो चुकी है,' मान ने कहा। 'तुम अलग-थलग पड़ गए हो, और तुम्हें इस इलाके की जानकारी भी नहीं है। मेरे साथ चलो। हम मेरी बहन के घर जा रहे हैं। उसके पति रामलीला समिति में हैं, कोई उनके घर पर हमला नहीं करेगा।'

लेकिन मैं नहीं कर सकता। मैं कैसे कर सकता हूँ—'

‘चुप रहो!’ मान ने कांपती हुई आवाज़ में कहा। ‘तुमने हमें पहले ही बहुत खतरे में डाल दिया है। अब और कोई झिझक मत रखो। भगवान का शुक्र है कि हमारे परिवार में पर्दा प्रथा नहीं है। उस गेट से जाओ और ज़रा भी आवाज़ मत करना।’ फिर उसने फ़िरोज़ के कंधे पर हाथ रख दिया।

वह फ़िरोज़ को धोबियों की एक छोटी बस्ती से ले गया और वे उस संकरी गली में पहुँचे जहाँ केदारनाथ रहते थे। यह जगह भारत मिलाप के मंच से महज़ पचास गज की दूरी पर थी। उन्हें पास से ही चीखने-चिल्लाने की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। वीणा का घर लगभग पूरी तरह से हिंदू बहुल इलाके में था; यहाँ मुसलमानों की भीड़ नहीं आ सकती थी।

फिरोज खून से लथपथ सफेद शेरवानी पहने कमरे में लड़खड़ाते हुए दाखिल हुआ, और मान खून से सनी लाठी हाथ में लिए सब उसे घूर रहे थे। केदारनाथ आगे बढ़ा, बाकी तीनों पीछे हट गए। बूढ़ी श्रीमती टंडन ने अपने हाथों से अपना मुंह ढक लिया। 'हे राम! हे राम!' वह दहशत से कांपते हुए बोलीं।

मान ने बारी-बारी से उन सभी की ओर देखते हुए कहा, “फिरोज तब तक यहीं रहेगा जब तक हम उसे सुरक्षित बाहर नहीं निकाल लेते। यहाँ एक गिरोह घूम रहा है—और आगे और भी गिरोह आएंगे। लेकिन यहाँ सब सुरक्षित हैं। कोई भी इस घर पर हमला करने के बारे में नहीं सोचेगा।”

‘लेकिन ये खून—क्या तुम्हें चोट लगी है?’ वीना ने फ़िरोज़ की ओर मुड़ते हुए पूछा, उसकी आँखों में चिंता झलक रही थी।

मान ने फ़िरोज़ की शेरवानी और अपनी लाठी को देखा और अचानक हंस पड़ा। 'हां, इस लाठी ने ही तो यह किया है, मैंने नहीं—और यह उसका खून नहीं है।'

फिरोज ने अपने और उनके सदमे के बावजूद यथासंभव विनम्रतापूर्वक अपने मेजबानों का अभिवादन किया।

भास्कर, जिसकी आंखों में अभी भी आंसू थे, अपने माता-पिता पर इन सबका असर देखकर, मान की ओर अजीब तरह से देखने लगा, जिसने लंबी बांस की छड़ी को दीवार के सहारे टिका दिया और अपने भतीजे के माथे पर चुंबन किया।

'ये बैतर के नवाब साहब के छोटे बेटे हैं,' मान ने बूढ़ी श्रीमती टंडन से कहा। उन्होंने चुपचाप सिर हिलाया। उनका मन लाहौर के विभाजन के दिनों में खो गया था और उनकी यादें और विचार घोर आतंक से भरे हुए थे।

15.13

फ़िरोज़ ने जल्दी से अपना लंबा कोट उतारकर केदारनाथ का कुर्ता-पायजामा पहन लिया। वीना ने उनके लिए जल्दी से ढेर सारी चीनी डालकर चाय बनाई। थोड़ी देर बाद, मान और फ़िरोज़ छत पर चढ़ गए, छोटे से बगीचे में लगे गमलों और पौधों के पास। मान ने तुलसी का एक छोटा पत्ता मसलकर अपने मुँह में डाल लिया।

जब उन्होंने चारों ओर देखा तो पाया कि शहर में जगह-जगह आग लग चुकी थी। वे ब्रह्मपुर की कई मुख्य इमारतों को पहचान सकते थे: इमामबाड़ा का शिखर अभी भी रोशनी से जगमगा रहा था, बरसात महल की बत्तियाँ, विधान सभा का गुंबद, रेलवे स्टेशन और—सब्ज़ीपुर क्लब से काफी दूर, विश्वविद्यालय की हल्की रोशनी। लेकिन पुराने शहर में जगह-जगह आसमान में रोशनी नहीं, बल्कि आग की लपटें दिखाई दे रही थीं। इमामबाड़ा की दिशा से ढोल की धीमी आवाज़ें उन तक पहुँच रही थीं। दूर से आती चीखें, जो हवा के रुख बदलने पर कभी-कभी ज़्यादा स्पष्ट हो जाती थीं, उनके कानों तक पहुँच रही थीं, साथ ही कुछ ऐसी आवाज़ें भी थीं जो पटाखों की हो सकती थीं, लेकिन संभवतः पुलिस फायरिंग की आवाज़ें थीं।

फिरोज ने कहा, 'आपने मेरी जान बचाई।'
मान ने उसे गले लगा लिया। उससे पसीने और डर की गंध आ रही थी।
‘कपड़े बदलने से पहले नहा लेना चाहिए था,’ उसने कहा। ‘शेरवानी में इतना दौड़ने के बाद—भगवान का शुक्र है कि तुम सुरक्षित हो।’
‘मान, मुझे वापस जाना होगा। घर पर सब मेरे बारे में बहुत चिंतित होंगे। वे मुझे ढूंढने के लिए अपनी जान भी जोखिम में डाल देंगे...’
अचानक इमामबाड़ा की बत्तियाँ बुझ गईं।
फिरोज ने दबी हुई आशंका के साथ कहा: 'वहां क्या हो सकता था?'
मान ने कहा, 'कुछ नहीं।' वह सोच रहा था कि सईदा बाई पसंद बाग कैसे वापस आई होंगी। यकीनन वह इमामबाड़ा के पास सुरक्षित इलाके में ही रही होंगी।
रात गर्म थी, लेकिन हल्की हवा चल रही थी। कुछ देर तक दोनों में से किसी ने कुछ नहीं कहा।
पश्चिम दिशा में लगभग आधा मील दूर आकाश में एक तेज़ रोशनी फैल गई। यह एक प्रसिद्ध हिंदू व्यापारी का लकड़ी का गोदाम था, जो मुख्य रूप से मुस्लिम आबादी वाले इलाके में रहता था। इसके आसपास भी कई जगहों पर आग लग गई। ढोल की आवाज़ें अब शांत हो गई थीं, और रुक-रुक कर हो रही गोलियों की आवाज़ें साफ़ सुनाई दे रही थीं। मान इतना थका हुआ था कि उसे ज़रा भी डर नहीं लग रहा था। उस पर एक सुन्नपन और अलगाव व बेबसी का भयानक एहसास छा गया।
फ़िरोज़ ने अपनी आँखें बंद कर लीं, मानो जलते हुए शहर के भयानक दृश्य को अपने दिमाग से मिटाना चाहता हो। लेकिन उसके मन में और भी आग के दृश्य उमड़ रहे थे—मोहर्रम मेले के अग्नि-कलाकार; बैतर हाउस स्थित इमामबाड़ा के बाहर खोदी गई खाई की चिंगारियाँ जो दस दिनों तक लकड़ियों और झाड़ियों से जलती रहीं; किले स्थित इमामबाड़ा का वो तंबू

जो उस्ताद मजीद खान के राग दरबारी गाने के दौरान धधक रहा था और उसके पिता आनंद से सिर हिला रहे थे।

वह अचानक घबराकर उठ खड़ा हुआ।

पास की ही एक छत से किसी ने चिल्लाकर कहा कि कर्फ्यू लगा दिया गया है।

‘इसे घोषित कैसे किया जा सकता है?’ मान ने पूछा। ‘लोग अब तक घर नहीं पहुँच सकते थे।’ उसने धीरे से कहा, ‘फिरोज, बैठ जाओ।’

‘मुझे नहीं पता,’ उस आदमी ने चिल्लाते हुए कहा। ‘लेकिन अभी-अभी रेडियो पर घोषणा हुई है कि कर्फ्यू लगा दिया गया है और एक घंटे के भीतर पुलिस को देखते ही गोली मारने का आदेश मिल जाएगा। उससे पहले, वे केवल तभी गोली चलाएंगे जब उन्हें कोई वास्तविक हिंसा दिखाई देगी।’

'हां, यह बात समझ में आती है,' मान ने चिल्लाकर जवाब दिया, यह सोचते हुए कि अब क्या कुछ भी समझ में आता है।

‘तुम कौन हो? तुम्हारे साथ वो कौन है? केदारनाथ? क्या तुम्हारे परिवार में सब सुरक्षित हैं?’

‘यह केदारनाथ नहीं है—यह एक दोस्त है जो भारत मिलाप देखने आया है। मैं वीणा का भाई हूँ।’

“अच्छा, अगर तुम मुसलमानों के हाथों गला कटवाना या पुलिस की गोली का शिकार होना नहीं चाहते, तो आज रात हिलना मत। क्या रात है! आज रात तो वाकई भयानक है।”

फिरोज ने धीमी और जल्दबाजी भरी आवाज में कहा, 'मान, क्या मैं तुम्हारी बहन का फोन इस्तेमाल कर सकता हूँ?'

'उसके पास एक भी नहीं है,' मान ने कहा।

फ़िरोज़ ने उसे निराशा भरी नज़रों से देखा।

‘तो फिर किसी पड़ोसी के घर से। मुझे बैतर हाउस को खबर भेजनी होगी। अगर कर्फ्यू की खबर रेडियो पर आई, तो मेरे पिता को बैतर के किले में पता चल जाएगा और वे यहाँ जो हुआ है उसे देखकर बहुत डर जाएंगे। इम्तियाज वापस आकर कर्फ्यू पास लेने की कोशिश कर सकता है। मुझे क्या पता, मुर्तजा अली ने शायद पहले ही मेरी तलाश में दल भेज दिए हों, और ऐसे समय में यह बिल्कुल पागलपन होगा। क्या आप वीना की किसी सहेली के घर से फोन कर सकते हैं?’

‘हम नहीं चाहते कि किसी को पता चले कि तुम यहाँ हो,’ मान ने कहा। ‘लेकिन चिंता मत करो, मैं कोई रास्ता निकाल लूंगा,’ उसने अपने दोस्त के चेहरे पर घबराहट और बेचैनी देखकर कहा। ‘मैं वीना से बात करूंगा।’

वीना को भी लाहौर की यादें थीं; लेकिन उनकी सबसे ताज़ा यादें पुल मेले में भास्कर को खोने की थीं, और वह नवाब साहब की उस मानसिक पीड़ा को समझ सकती थीं जब उन्होंने सुना कि फिरोज घर नहीं लौटा है।

‘प्रिया अग्रवाल से मिलने की कोशिश क्यों नहीं करते?’ मान ने कहा। ‘मैं उसके घर जा सकता हूँ।’

‘मान, तुम कहीं नहीं जा रहे,’ उसकी बहन ने कहा। ‘क्या तुम पागल हो? गलियों से होकर पाँच मिनट का रास्ता है—मैंने तुम्हारी कलाई पर राखी इसलिए तो नहीं बाँधी थी।’ एक मिनट सोचने के बाद उसने कहा: ‘मैं उस पड़ोसी के पास जाती हूँ जिसका फ़ोन मैं आपात स्थिति में इस्तेमाल करती हूँ। वह बस दो छत दूर है। तुम उससे उस दिन मिले थे—वह अच्छी औरत है, बस दिक्कत ये है कि वो कट्टर मुस्लिम विरोधी है। मुझे सोचने दो। बैतर हाउस का नंबर क्या है?’

मान ने उसे बताया।

वीना उसके साथ छत पर आई, जुड़ी हुई छतों को पार किया और सीढ़ियों से उतरकर अपने पड़ोसी के घर चली गई।

वीना की लंबी-चौड़ी और बातूनी पड़ोसी, अपनी हमेशा की मित्रता और जिज्ञासा के चलते, वीना के फोन करते समय वहीं खड़ी रही। आखिर फोन तो उसके कमरे में ही था। वीना ने उसे बताया कि वह अपने पिता से संपर्क करने की कोशिश कर रही है।

लेकिन मैंने उसे अभी-अभी भारत मिलाप में, मंदिर के पास देखा था—'

'उसे घर जाना पड़ा। शोर उसके लिए असहनीय था। और धुआं मेरी मां के लिए भी अच्छा नहीं था। प्राण के फेफड़ों के लिए भी नहीं—वह नहीं आया। लेकिन मान यहां है—वह मुस्लिम भीड़ से बाल-बाल बच गया।'

महिला ने कहा, 'यह ईश्वर की कृपा ही होगी। अगर वे उसे पकड़ लेते तो...'

वह टेलीफोन डायल करने वाली मशीन नहीं थी; और वीना को ऑपरेटर को बैतर हाउस का नंबर देना पड़ा।

'ओह, आप प्रेम निवास को फोन नहीं कर रही हैं?' उस महिला ने कहा, जिसे वीना के पिछले फोन कॉल से वह नंबर पता था।

नहीं। बाओजी को आज शाम दोस्तों से मिलने जाना था।

जब फोन पर आवाज आई तो वीना ने कहा: 'मैं साहब से बात करना चाहती हूं।'

दूसरी तरफ से एक बुजुर्ग आवाज ने कहा, 'कौन से साहब? नवाब साहब या बुर्रे साहब या छोटे साहब?'

'कोई भी,' वीना ने कहा।

'लेकिन नवाब साहब, बुरे साहब के साथ बैतर में हैं, और छोटे साहब अभी तक इमामबाड़ा से घर नहीं लौटे हैं।' बूढ़े की आवाज़—यह गुलाम रसूल की आवाज़ थी—अटक-अटक कर और घबराई हुई थी। 'लोग कहते हैं कि शहर में कुछ गड़बड़ है, इस घर की छत से भी आग दिखाई दे रही है। मुझे अब जाना होगा। कुछ इंतज़ाम हैं—'

‘कृपया धैर्य रखें—’ वीना ने जल्दी से कहा। ‘मैं किसी से भी बात करूंगी —साहिब के सचिव को लाइन पर दीजिए—या किसी भी जिम्मेदार व्यक्ति को। कृपया किसी को भी—किसी को भी—लाइन पर बुलाइए। मैं महेश कपूर की बेटी वीना बोल रही हूं, और मुझे एक अत्यावश्यक संदेश देना है।’

कुछ सेकंड तक सन्नाटा छाया रहा, फिर मुर्तजा अली की युवा आवाज सुनाई दी। उनकी आवाज में शर्मिंदगी और अत्यधिक चिंता झलक रही थी। उन्हें आभास हो गया था कि शायद फ़िरोज़ के बारे में कोई खबर हो।

वीना ने अत्यंत सावधानी से शब्दों का चयन करते हुए कहा, 'मैं महेश कपूर की बेटी हूं। यह साहब के छोटे बेटे के बारे में है।'

‘नवाब साहब का छोटा बेटा? छोटा साहब?’

‘बिल्कुल सही। चिंता की कोई बात नहीं है। वह बिल्कुल सुरक्षित हैं और आज रात मिसरी मंडी में ही ठहरेंगे। कृपया साहब को इसकी सूचना दे दीजिएगा, कहीं उन्हें पूछताछ न करनी पड़े।’

‘ईश्वर दयालु है!’ शांत भाव से उत्तर आया।

‘कल कर्फ्यू हटने पर वह घर चला जाएगा। इस बीच, उसकी तलाश में कोई दल न भेजा जाए। किसी को भी कर्फ्यू पास लेने के लिए पुलिस स्टेशन न जाना चाहिए—न ही यहाँ आना चाहिए—और न ही किसी से उसके यहाँ होने के बारे में बात करनी चाहिए। बस इतना कह देना कि वह मेरे साथ—अपनी बहन के साथ—रह रहा है।’

'धन्यवाद महोदया, हमें बुलाने के लिए धन्यवाद—हम अभी-अभी एक सशस्त्र दल के साथ निकलने ही वाले थे—यह बहुत भयानक होता—हमने सबसे बुरे की कल्पना की थी—'

'मुझे अब जाना होगा,' वीना ने कहा, यह जानते हुए कि वह जितनी देर बात करेगी, सुरक्षात्मक अस्पष्टता बनाए रखना उतना ही मुश्किल होगा।

'हाँ, हाँ,' मुर्तज़ा अली ने कहा। 'खुदा हाफ़िज़.'
'खुदा हाफिज,' वीना ने बिना सोचे समझे जवाब दिया और फोन रख दिया।
उसकी पड़ोसी ने उसे अजीब नजरों से देखा।
उस जिज्ञासु महिला से और बातचीत करने की अनिच्छा जताते हुए, वीना ने बताया कि उसे तुरंत घर वापस जाना होगा क्योंकि भास्कर दौड़ते-भागते अपने टखने में मोच आ गई है; और मान और उसके पति को खाना खिलाना है; और पाकिस्तान की यादों में डूबी बूढ़ी श्रीमती टंडन घबराई हुई हैं और उन्हें शांत करने की आवश्यकता होगी।
15.14
लेकिन जब वह घर लौटी, तो उसने देखा कि उसकी सास नीचे थी और सदमे से लगभग बेसुध पड़ी थी। केदारनाथ रात में बाहर गया था, शायद उसका इरादा रास्ते में मिलने वाले लोगों को शांत करना था: ताकि वे दूसरों को नुकसान न पहुंचाएं और अगर उन्हें कर्फ्यू के बारे में पता न हो, तो खुद को भी नुकसान न पहुंचाएं।
वीना लगभग बेहोश हो गई। वह दीवार से टिक गई और सामने देखती रही। आखिरकार उसकी सास का रोना बंद हुआ और उसकी बातें उसे समझ आने लगीं।
'उन्होंने कहा कि इस इलाके में मुसलमानों से कोई खतरा नहीं होगा,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'उन्होंने मेरी बात नहीं सुनी। उन्होंने कहा कि यह लाहौर नहीं है—कि वे बहुत जल्द वापस आ जाएंगे,' उसने वीना के चेहरे की ओर सांत्वना भरी निगाहों से देखते हुए कहा। '"बहुत जल्द" उन्होंने कहा। उन्होंने कहा कि वे बहुत जल्द वापस आ जाएंगे।' ये शब्द सुनकर वह एक बार फिर फूट-फूट कर रो पड़ी।
वीना के होंठ कांपने लगे। यह वही वाक्यांश था जिसे केदारनाथ अपनी

अंतहीन बिक्री यात्राओं पर जाते समय अक्सर इस्तेमाल करते थे।
वीना के चेहरे पर बुढ़िया के लिए कोई तसल्ली नहीं थी। 'तुमने उसे क्यों नहीं रोका? मान ने उसे क्यों नहीं रोका?' वह रो पड़ी। अपने पति के इस स्वार्थी और गैरजिम्मेदाराना साहस पर वह गुस्से से आग बबूला थी। क्या उसके लिए वह, भास्कर और उसकी माँ का कोई अस्तित्व ही नहीं था?
'मान छत पर था,' बूढ़ी महिला ने कहा।
अब भास्कर सीढ़ियों से नीचे आया। जाहिर तौर पर कुछ समय से कोई बात उसे परेशान कर रही थी।
'फिरोज मामा के पूरे शरीर पर इतना खून क्यों लगा था?' उसने पूछा। 'क्या मान मामा ने उन्हें पीटा था? उन्होंने कहा कि नहीं पीटा। लेकिन लाठी तो उनके हाथ में थी।'
वीना ने बेबस स्वर में कहा, "चुप रहो, भास्कर। तुरंत ऊपर जाओ। ऊपर जाओ और वापस बिस्तर पर लेट जाओ। सब ठीक है। अगर तुम्हें मेरी ज़रूरत हो तो मैं यहीं हूँ।" उसने उसे गले लगा लिया।
भास्कर जानना चाहता था कि मामला क्या है। वीना ने कहा, 'कुछ नहीं। मुझे खाना बनाना है—मेरे रास्ते में मत आओ।' वह जानती थी कि अगर मान को पता चल गया तो वह तुरंत अपने बहनोई को ढूंढने निकल जाएगा और अपनी जान को बहुत बड़े खतरे में डाल देगा। केदारनाथ को कम से कम यह तो पता था कि हिंदू क्षेत्र कहाँ खत्म होते हैं। लेकिन वह उसके लिए बहुत चिंतित थी। भास्कर के आने से पहले वह खुद भी निकलने ही वाली थी। अब वह बस इंतजार कर रही थी—यह सबसे मुश्किल काम था।
उसने जल्दी से मान और फिरोज के लिए कुछ खाना गर्म किया और उसे लेकर ऊपर चली गई, सीढ़ियों पर रुककर शांत दिखने का नाटक किया। उसे देखकर मान मुस्कुरा उठा।

‘काफी गर्मी है,’ मान ने कहा। ‘हम छत पर साथ सोएंगे। बस हमें एक गद्दा और एक हल्की रजाई दे दो, हम ठीक रहेंगे। फ़िरोज़ को नहाने की ज़रूरत होगी, और मुझे भी। क्या कुछ गड़बड़ है?’

वीना ने सिर हिलाया। 'वह लगभग मरते-मरते बचा, फिर मुझसे पूछता है कि क्या कुछ गड़बड़ है।'

उसने एक संदूक से एक हल्की रजाई निकाली और उसकी तहों से सूखे नीम के पत्ते झाड़ दिए जिनका इस्तेमाल वह सर्दियों के कपड़ों को कीड़ों से बचाने के लिए करती थी।

'कभी-कभी छत पर खिलने वाले रात के फूल कीड़ों को आकर्षित करते हैं,' उसने उन्हें चेतावनी दी।

फिरोज ने कहा, 'हम ठीक रहेंगे। मैं आपका बहुत आभारी हूं।'

वीना ने सिर हिलाया। उसने कहा, 'अच्छी नींद लो।'

केदारनाथ कर्फ्यू से पांच मिनट पहले घर लौटा। वीना रोने लगी और उससे बात करने से इनकार कर दिया। उसने अपना चेहरा उसके ज़ख्मी हाथों में छिपा लिया।

लगभग एक घंटे तक मान और फ़िरोज़ जागते रहे। उन्हें ऐसा लग रहा था मानो उनके नीचे की दुनिया कांप रही हो। दूर से आती गोलियों की आवाज़ शायद कर्फ्यू लगने के कारण मंद पड़ गई थी, लेकिन आग की चमक, खासकर पश्चिम दिशा में, पूरी रात बनी रही।

15.15

शरद पूर्णिमा की रात, जो साल की सबसे चमकदार रात होती है, प्राण और सविता ने एक नाव किराए पर ली और बरसात महल देखने के लिए गंगा नदी में निकल पड़े। उस सुबह कर्फ्यू हट चुका था। श्रीमती रूपा मेहरा ने उन्हें न जाने की सलाह दी थी, लेकिन सविता ने कहा कि नदी में आग तो कोई नहीं लगा सकता।

'और यह प्राण के अस्थमा के लिए भी अच्छा नहीं है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, जिनका मानना था कि उसे अपने बिस्तर और आरामकुर्सी तक ही सीमित रहना चाहिए और खुद को ज्यादा थकावट नहीं देनी चाहिए।

प्राण वास्तव में अपनी बीमारी के सबसे बुरे दौर से धीरे-धीरे उबर रहे थे। वे अभी भी क्रिकेट नहीं खेल पा रहे थे, लेकिन पैदल चलकर अपनी ताकत बढ़ा रहे थे, पहले केवल बगीचे में, फिर कुछ सौ गज और अंत में कैंपस में या गंगा के किनारे। उन्होंने दशहरा के चकाचौंध भरे उत्सवों से दूरी बनाए रखी थी और दिवाली के पटाखों से भी उन्हें दूर रहना होगा। लेकिन उनकी परेशानी अपने गंभीर रूप में दोबारा नहीं उभरी थी और उन्होंने ज्यादातर समय इसे अपने शैक्षणिक कार्यों में बाधा नहीं बनने दिया था। कुछ दिन, जब वे कमजोर महसूस करते थे, तो वे बैठकर व्याख्यान देते थे। उनके छात्र उनका बहुत ख्याल रखते थे और अनुशासन समिति के उनके व्यस्त सहकर्मी भी उन्हें यथासंभव जिम्मेदारियों से मुक्त करने की कोशिश करते थे।

आज रात, विशेष रूप से, वह काफी बेहतर महसूस कर रहा था। उसने मान और फ़िरोज़ के चमत्कारिक रूप से बच निकलने—और वास्तव में केदारनाथ के भी—पर विचार किया और अपनी समस्याओं को कम करके आंकने का मन बनाया।

‘चिंता मत करो, माँ,’ उसने अपनी सास को दिलासा देते हुए कहा। ‘नदी की हवा से मुझे फायदा ही होगा। अभी भी काफी गर्मी है।’

'नदी पर गर्मी नहीं होगी। आप सब एक-एक शॉल या कंबल ले लें,' श्रीमती रूपा मेहरा ने बड़बड़ाते हुए कहा।

कुछ देर रुकने के बाद उसने लता से कहा: 'तुम ऐसे क्यों देख रही हो? क्या तुम्हें सिरदर्द है?'

‘नहीं माँ, मुझे नहीं पता, कृपया मुझे पढ़ने दीजिए।’

वह सोच रही थी: शुक्र है मान सुरक्षित है।
‘तुम क्या पढ़ रही हो?’ उसकी माँ ने बार-बार पूछा।
‘माँ!’
‘बाय लता, बाय मां,’ प्राण ने कहा। ‘अपनी बुनाई की सुइयां उमा के चंगुल से दूर रखना।’
श्रीमती रूपा मेहरा ने लगभग घुरघुराहट जैसी आवाज़ निकाली। उनका मानना था कि ऐसे अकल्पनीय खतरों का ज़िक्र नहीं करना चाहिए। वह ठंड के मौसम की तैयारी में बच्ची के लिए जूते बुन रही थीं।
प्राण और सविता नदी की ओर चल पड़े। प्राण मशाल लिए आगे-आगे चल रहा था और ढलान वाले रास्तों पर सविता को सहारा दे रहा था। उसने सविता को बरगद के पेड़ की जड़ों से सावधान रहने की चेतावनी दी।
धोबी घाट के पास से उन्होंने जिस नाविक को किराए पर लिया, वह वही था जिसने कुछ महीने पहले सुबह-सुबह लता और कबीर को बरसात महल दिखाया था। हमेशा की तरह उसने बहुत ज़्यादा किराया माँगा। प्राण ने कीमत थोड़ी कम करवाई, लेकिन आगे मोलभाव करने के मूड में नहीं था। उसे खुशी थी कि उमा उनके साथ आने के लिए बहुत छोटी थी; वह सविता के साथ एक-दो घंटे अकेले रहकर खुश था।
नदी में अभी भी पानी का स्तर ऊंचा था और एक सुहावनी हवा चल रही थी।
प्राण ने कहा, 'मां सही कह रही थीं—ठंड है—तुम्हें गर्मी के लिए मुझे पकड़ लेना चाहिए।'
'क्या आप मेरे लिए मस्त की कोई ग़ज़ल नहीं सुनाएंगे?' सविता ने घाटों और किले के पार बरसात महल की धुंधली आकृति की ओर देखते हुए पूछा।

‘माफ़ कीजिए, आपने गलत भाई से शादी कर ली है,’ प्राण ने कहा।
‘नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता,’ सविता ने कहा। उसने अपना सिर उसके कंधे पर टिका दिया। ‘बरसात महल के उस पार दीवारों और चिमनी वाली वह चीज़ क्या है?’
‘हम्म—मुझे नहीं पता—शायद चमड़ा कारखाना या जूता कारखाना,’ प्राण ने कहा। ‘लेकिन इस तरफ से सब कुछ अलग दिखता है, खासकर रात में।’
वे कुछ देर तक चुप रहे।
प्राण ने कहा, 'उस मामले में ताजा खबर क्या है?'
‘तुम्हारा मतलब हरेश से है?’
'हाँ।'
मुझे नहीं पता। लता कुछ छिपा रही है। लेकिन वह लिखता है और वह जवाब देती है। तुम ही हो जो उससे मिली हो। तुमने कहा था कि तुम्हें वह पसंद है।
प्राण ने कहा, 'खैर, किसी व्यक्ति को एक ही मुलाकात के आधार पर आंकना असंभव है।'
‘ओह, तो तुम ऐसा सोचते हो!’ सविता ने नखरे दिखाते हुए कहा और दोनों हंस पड़े। प्राण के मन में एक विचार आया।
उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि एक ही मुलाकात के आधार पर जल्द ही मेरा भी मूल्यांकन किया जाएगा।'
‘जल्द ही!’ सविता ने कहा।
‘खैर, आखिरकार चीजें वाकई आगे बढ़ रही हैं—’
'या कम से कम प्रोफेसर मिश्रा तो आपको यही आश्वासन देते हैं।'
नहीं, नहीं—ज्यादा से ज्यादा एक या दो महीने में उनके इंटरव्यू होंगे—रजिस्ट्रार कार्यालय में काम करने वाले किसी व्यक्ति ने मेरे पिताजी के

एक पूर्व सहायक कर्मचारी को इसके बारे में बताया था। तो देखते हैं, अभी अक्टूबर का मध्य चल रहा है—’
प्राण ने जलते हुए घाट की ओर देखा। वह अपने विचारों में खो गया।
‘शहर कितना शांत दिख रहा है,’ उसने कहा। ‘और जब आप सोचते हैं कि मान और फ़िरोज़ की हत्या की जा सकती थी—’
'नहीं।'
'माफ़ करना, प्रिये। वैसे, तुम क्या कह रही थी?'
'मैं भूल चुका हूं।'
'ओह अच्छा।'
सविता ने कहा, 'मुझे लगता है कि आप आत्मसंतुष्ट होने के खतरे में हैं।'
‘कौन—मैं?’ प्राण ने नाराज़गी के बजाय आश्चर्य से कहा। ‘मैं क्यों आत्मसंतुष्ट होऊं? एक कमज़ोर दिल वाला एक साधारण विश्वविद्यालय व्याख्याता, जिसे इस नाव यात्रा के अंत में चट्टान पर चढ़ना होगा।’
‘खैर, शायद नहीं,’ सविता ने कहा। ‘वैसे, पत्नी और बच्चे होने का एहसास कैसा होता है?’
'कैसा लगता है? बहुत अच्छा लगता है।'
सविता ने अंधेरे में मुस्कुराते हुए कहा। वह तारीफ पाने की कोशिश कर रही थी, और उसे तारीफ मिल गई।
नाविक ने अपनी लंबी छड़ी को नदी की तलहटी में गहराई तक गाड़ते हुए कहा, 'यहीं से आपको सबसे अच्छा नज़ारा मिलेगा। मैं धारा में और पीछे नहीं जा सकता। नदी में पानी बहुत अधिक है।'
‘और मुझे लगता है कि पति और बच्चा होना काफी सुखद होता होगा,’ प्राण ने आगे कहा।
‘हां,’ सविता ने सोच-विचार करते हुए कहा। ‘ऐसा ही है।’ थोड़ी देर बाद उसने कहा, ‘मीनाक्षी के बारे में सुनकर दुख हुआ।’

'हां। लेकिन आप उसे कभी ज्यादा पसंद नहीं करते थे, है ना?'
सविता ने कोई जवाब नहीं दिया।
प्राण ने कहा, 'क्या उसके गर्भपात ने आपको उसे और अधिक पसंद करने पर मजबूर कर दिया है?'
'क्या सवाल है! एक तरह से सही है। खैर, मुझे इसके बारे में सोचने दीजिए। जब मैं उससे दोबारा मिलूंगी तो मुझे तुरंत पता चल जाएगा।'
प्राण ने कहा, 'तुम्हें पता है, मुझे नए साल पर तुम्हारे भाई और भाभी के साथ रहने की कोई इच्छा नहीं है।' उसने अपनी आँखें बंद कर लीं; नदी पर हल्की और सुहावनी हवा चल रही थी।
सविता ने कहा, 'मुझे यकीन नहीं है कि सनी पार्क में हम सबके लिए जगह भी होगी। मां और लता हमेशा की तरह उनके साथ रह सकती हैं। और तुम और मैं बगीचे में कैंप लगा सकते हैं। रॉक-ए-बाय बेबी पेड़ की चोटी पर लटक सकता है।'
प्राण हंस पड़ा। 'अच्छा हुआ कि बच्ची तुम्हारे भाई जैसी नहीं निकली, जैसा कि मुझे डर था।'
'कौन सा?'
'दोनों में से कोई भी। लेकिन मेरा मतलब अरुण से था। खैर, उन्हें हमें कहीं तो ठहराना ही पड़ेगा—शायद चटर्जी के घर। मुझे वो लड़का पसंद था, उसका नाम क्या था—'
'अमित?'
नहीं, दूसरा वाला—वह पवित्र व्यक्ति जिसे स्कॉच बहुत पसंद था।
'दीपांकर।'
'हां, बस यही बात है. . . . खैर, दिसंबर में जब हम कलकत्ता जाएंगे तो आप उनसे मिल लेंगे,' प्राण ने कहा।
'लेकिन मैं उनसे पहले ही मिल चुकी हूं,' सविता ने बताया। 'हाल ही में

पुल मेले में।'
मेरा मतलब हरेश से था। आप फुर्सत में उसका मूल्यांकन कर सकते हैं। लेकिन आप तो अभी दीपांकर के बारे में ही बात कर रहे थे।
'क्या मैं था, प्रिय?'
'सच में, प्राण, काश तुम अपनी बातचीत पर ध्यान देते। यह बहुत भ्रामक है। मुझे यकीन है कि तुम इस तरह से व्याख्यान नहीं देते।'
प्राण ने कहा, 'मैं काफी अच्छा व्याख्यान देता हूँ, भले ही मैं खुद ऐसा कह रहा हूँ। लेकिन मेरी बात पर विश्वास मत करो। मालती से पूछ लो।'
'मेरा मलाती से यह पूछने का कोई इरादा नहीं है कि आप कैसे व्याख्यान देते हैं। पिछली बार जब उसने आपको सुना था, तो आप इतने भावुक हो गए थे कि बेहोश हो गए थे।'
नाव चलाने वाला धारा के विपरीत अपनी नाव को स्थिर रखने से थक रहा था। उसने पूछा, 'क्या आप बात करना चाहते हैं या बरसात महल देखना चाहते हैं?' 'आप मुझे यहाँ आने के लिए अच्छे खासे पैसे दे रहे हैं।'
'हां, हां, बिल्कुल,' प्राण ने अस्पष्ट स्वर में कहा।
नाविक ने कहा, 'तुम्हें तीन रात पहले यहाँ आना चाहिए था—वहाँ चारों ओर आग जल रही थी। देखने में बहुत सुंदर लग रहा था, और गंगा पर तो उसकी गंध भी नहीं आ रही थी। और अगले दिन वहाँ घाट पर बहुत सारी लाशें पड़ी थीं। एक घाट के लिए इतनी लाशों को संभालना मुश्किल था। नगरपालिका कई सालों से एक और श्मशान घाट बनाने की योजना बना रही है, लेकिन वे कभी तय नहीं कर पा रहे कि वह कहाँ होगा।'
'क्यों?' प्राण ने पूछे बिना नहीं रह सका।
'अगर यह ब्रह्मपुर की तरफ है तो इसका मुख उत्तर की ओर होगा, जैसा कि इस वाले का है। वैसे तो इसका सही मुख दक्षिण की ओर, यम की दिशा में होना चाहिए। लेकिन इससे यह दूसरे किनारे पर चला जाएगा,

और फिर शवों और यात्रियों को नाव से पार ले जाना पड़ेगा।'
'वे? आपका मतलब आप हैं।'
मुझे लगता है ऐसा ही है। मुझे कोई शिकायत नहीं होगी।
प्राण और सविता कुछ देर तक बरसात महल को देखते रहे, जो पूर्णिमा के चांद की रोशनी में जगमगा रहा था। वैसे तो यह महल अपने आप में ही सुंदर था, लेकिन रात में इसकी परछाईं इसे और भी मनमोहक बना रही थी। चांद पानी पर धीरे-धीरे कांप रहा था। नाविक ने आगे कुछ नहीं कहा।
एक और नाव उनके पास से गुजरी। पता नहीं क्यों प्राण सिहर उठा।
'क्या बात है, प्रिय?'
'कुछ नहीं।'
सविता ने अपने पर्स से एक छोटा सिक्का निकाला और प्राण के हाथ में रख दिया।
मैं तो यही सोच रहा था कि यह सब कितना शांत दिखता है।
सविता ने अंधेरे में खुद को सिर हिलाकर अभिवादन किया। प्राण को अचानक एहसास हुआ कि वह रो रही है।
'क्या बात है, प्रिय? मैंने क्या कह दिया?'
कुछ नहीं। मैं बहुत खुश हूँ। मैं बस खुश हूँ।
प्राण ने उसके बालों पर हाथ फेरते हुए कहा, 'तुम कितनी अजीब हो।'
नाविक ने अपना डंडा छोड़ दिया और उसके हल्के मार्गदर्शन में नाव फिर से धारा के साथ बहने लगी। वे चुपचाप उस शांत और पवित्र नदी में आगे बढ़ते गए, जो धरती पर इसलिए आई थी ताकि उसका जल उन लोगों की अस्थियों पर बह सके जो बहुत पहले मर चुके थे, और जो मानव जाति के घृणा और ज्ञान के बल पर स्वयं को नष्ट कर देने के बाद भी बहती रहेगी।
15.16
पिछले कुछ हफ्तों से महेश कपूर दुविधा में थे—उनके मन में अनिश्चितता

और परेशानी थी—कि क्या उन्हें कांग्रेस पार्टी में वापस लौटना चाहिए। जो व्यक्ति हमेशा निश्चित और अक्सर आलोचनात्मक राय रखने के लिए जाना जाता था, वह अब अनिश्चितता के बवंडर में फंस गया था।

उसके दिमाग में बहुत सारे कारक एक साथ घूम रहे थे और हर बार जब वे स्थिर होते तो एक नया स्वरूप बना लेते थे।

मुख्यमंत्री ने उनके बगीचे में उनसे जो कहा था; नवाब साहब ने किले में उनसे जो कहा था; उत्तर प्रदेश से अलग होकर कांग्रेस में फिर से शामिल हुए नेता का प्रेम निवास का दौरा; देबरिया में बाबा की सलाह; नेहरू का तख्तापलट; रफी साहब की अप्रत्यक्ष वापसी; उनके अपने प्रिय कानून जिन्हें वे सुनिश्चित करना चाहते थे कि वे केवल कागजों की किताबों में ही न दब जाएं; और हैरानी की बात यह है कि इस पूरे मामले पर उनकी पत्नी का अनकहा लेकिन स्पष्ट विचार भी: इन सभी बातों ने उन्हें उस पार्टी में वापस जाने के लिए प्रेरित किया जो उनके धीरे-धीरे लेकिन पूरी तरह से मोहभंग होने तक निस्संदेह उनका घर थी।

उस निराशा के बाद हालात निस्संदेह बहुत बदल चुके थे। फिर भी, जब उन्होंने इस बारे में गहराई से सोचा, तो उन्हें समझ आया कि वास्तव में कितना बदलाव आया था? क्या वे ऐसी पार्टी का हिस्सा बन सकते थे जिसमें मौजूदा गृह मंत्री जैसे लोग हों—क्या वे ऐसी सरकार का हिस्सा बन सकते थे जिसका संचालन संभवतः मौजूदा गृह मंत्री जैसे लोग कर रहे हों? राज्य में कांग्रेस उम्मीदवारों की जो सूची तैयार की जा रही थी, उससे उनकी निराशा कुछ कम नहीं हुई। अपने पुराने संसदीय सचिव से बातचीत के बाद, वे ईमानदारी से यह दावा भी नहीं कर सकते थे कि नेहरू में उन्हें कोई नया दृढ़ निश्चय दिखाई दिया। नेहरू तो संसद में अपना पसंदीदा विधेयक भी पारित नहीं करवा पाए थे। समझौता और अव्यवस्था का ही बोलबाला था, और आगे भी यही स्थिति बनी रहेगी।

महेश कपूर ने सोचा, एक बार दल-बदल करने के बाद, क्या वह वापस लौटकर वही अनिर्णय नहीं दिखा रहे होंगे जिसकी वे आमतौर पर निंदा करते थे? दशकों तक एक ही पार्टी के प्रति वफादारी निभाने के बाद, सिद्धांतों और दृढ़ता में विश्वास रखने वाला व्यक्ति कुछ ही महीनों में दो बार पाला बदल लेता। किदवई भले ही लौट आए हों, लेकिन कृपलानी नहीं लौटे। किसका रास्ता अधिक सम्मानजनक था?

अपनी असामान्य हिचकिचाहट पर खुद से नाराज़ महेश कपूर ने मन ही मन कहा कि उनके पास ऐसे बीस मामलों पर फैसला करने के लिए काफी समय और सलाह थी। चाहे जो भी फैसला हो, उसके कुछ पहलू ऐसे होंगे जिन्हें स्वीकार करना उनके लिए मुश्किल होगा। उन्हें चिंता करना बंद कर देना चाहिए, मामले की तह तक जाना चाहिए और अंत में हां या ना कह देना चाहिए।

लेकिन असल मुद्दा क्या था?

क्या यह जमींदारी कानून था? क्या यह सांप्रदायिक नफरत और हिंसा का उनका डर था? क्या यह वास्तविक और आकर्षक संभावना थी कि अग्रवाल नहीं, बल्कि वे स्वयं मुख्यमंत्री बन सकते हैं? क्या यह डर था कि अगर वे कांग्रेस से बाहर रहे तो अपनी सीट खो देंगे—कि वे अपनी पवित्रता केवल एकांत में ही बनाए रख सकते हैं? निश्चित रूप से ये सभी बातें एक ही दिशा की ओर इशारा कर रही थीं। आखिर उन्हें रोक क्या रहा था, सिवाय अनिश्चितता और अहंकार के?

वह अपने छोटे से दफ्तर से प्रेम निवास के बगीचे की ओर बिना देखे घूरता रहा।

उनकी पत्नी ने उनके लिए चाय भिजवाई; वह ठंडी हो गई।

वह उनसे पूछने आई कि क्या वह ठीक हैं और उनके लिए खुद एक और कप लेकर आई। उसने कहा: 'तो आपने कांग्रेस में लौटने का फैसला कर

लिया है? यह अच्छी बात है।'
उसने झुंझलाहट भरे लहजे में जवाब दिया: 'मैंने कुछ भी फैसला नहीं किया है। आपको ऐसा क्यों लगता है कि मैंने फैसला कर लिया है?'
'मान और फ़िरोज़ के लगभग...'
'मान और फ़िरोज़ का इससे कोई लेना-देना नहीं है। मैं इस मामले पर हफ़्तों से सोच रहा हूँ, लेकिन किसी नतीजे पर नहीं पहुँच पाया हूँ।' उसने हैरानी से उसकी तरफ देखा।
उसने एक बार फिर उसकी चाय को हिलाया और उसे मेज पर रख दिया, जो इन दिनों करना आसान था, क्योंकि मेज फाइलों से ढकी नहीं थी।
महेश कपूर ने इसे पिया और कुछ नहीं कहा।
कुछ देर बाद उसने कहा, 'मुझे अकेला छोड़ दो। मैं इस मामले पर तुमसे बात नहीं करने वाला। तुम्हारी मौजूदगी मेरा ध्यान भटका रही है। मुझे नहीं पता कि तुम्हारी ये बेतुकी धारणाएँ कहाँ से आती हैं। लेकिन ये ज्योतिष से भी ज़्यादा गलत और संदिग्ध हैं।'
15.17
ब्रह्मपुर दंगों के एक सप्ताह से भी कम समय बाद, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री लियाकत अली खान को रावलपिंडी में एक जनसभा को संबोधित करते समय गोली मार दी गई। भीड़ ने हत्यारे को मौके पर ही मार डाला।
उनकी मृत्यु की खबर मिलते ही ब्रह्मपुर में सभी सरकारी झंडे आधे झुका दिए गए। विश्वविद्यालय न्यायालय ने शोक व्यक्त करने के लिए एक बैठक बुलाई। एक ऐसे शहर में जहां दंगे की घटना को अभी एक सप्ताह ही बीता था, इस घटना का काफी गंभीर प्रभाव पड़ा।
नवाब साहब जब यह खबर सुनकर ब्रह्मपुर में थे, तब उन्हें यह पता चला। वे लियाकत अली को अच्छी तरह जानते थे, क्योंकि उनके पिता के समय

में बैतर हाउस और बैतर फोर्ट दोनों ही मुस्लिम लीग के नेताओं के सम्मेलन स्थल हुआ करते थे। उन्होंने उन सम्मेलनों की कुछ पुरानी तस्वीरें देखीं और अपने पिता और लियाकत अली के बीच हुए कुछ पुराने पत्रों को पढ़ा। उन्हें एहसास हुआ—हालांकि उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे इस बारे में क्या कर सकते हैं—कि वे धीरे-धीरे अतीत में ही जीने लगे हैं।

नवाब साहब के लिए विभाजन एक बहुआयामी त्रासदी थी: उनके कई परिचित, मुस्लिम और हिंदू दोनों, उस दौर के आतंक में मारे गए, घायल हुए या बुरी तरह प्रभावित हुए; उन्होंने अपने देश के दो हिस्से खो दिए; पलायन के कारण उनका परिवार बिखर गया; विस्थापित संपत्ति कानूनों में हेरफेर के कारण बैतर हाउस पर हमला हुआ; बैतर किले के आसपास की अधिकांश विशाल संपत्ति जमींदारी कानूनों के तहत उनसे छीन ली जानी थी, जिन्हें एकीकृत भारत में पारित करना लगभग असंभव होता; उनके पूर्वजों और प्रिय कवियों की भाषा खतरे में थी; और उन्हें इस बात का भी एहसास था कि उनके कई परिचित अब उनकी देशभक्ति को आसानी से स्वीकार नहीं करते थे। उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया कि उनके पास महेश कपूर जैसे मित्र थे जो उन्हें समझते थे; और उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया कि उनके बेटे के पास महेश कपूर के बेटे जैसे मित्र थे। लेकिन वे अपने आसपास हो रही घटनाओं से घिरे और परेशान महसूस कर रहे थे; और उन्होंने सोचा कि अगर उन्हें ऐसा महसूस हो रहा है, तो उनके धर्म के उन लोगों की स्थिति कहीं अधिक खराब होगी जो दुनिया की कठिनाइयों से उनसे कम अछूते हैं।

मुझे लगता है मैं बूढ़ा हो रहा हूँ, उन्होंने मन ही मन कहा और चिड़चिड़ापन बुढ़ापे का एक आम लक्षण है। फिर भी, वे सुसंस्कृत और शांत स्वभाव वाले लियाकत अली के लिए शोक मनाए बिना नहीं रह सके, जिन्हें वे व्यक्तिगत रूप से पसंद करते थे। हालाँकि एक समय उन्हें पाकिस्तान का

विचार बिल्कुल पसंद नहीं था, लेकिन अब जब वह वास्तव में अस्तित्व में आ चुका था, तो वे उससे मुंह नहीं मोड़ सकते थे। जब नवाब साहब पाकिस्तान के बारे में सोचते थे, तो उनका ध्यान पश्चिम पाकिस्तान पर जाता था। उनके कई पुराने दोस्त, रिश्तेदार और कई ऐसी जगहें थीं, जिनसे उनकी सुखद यादें जुड़ी थीं। जिन्ना का पाकिस्तान के गठन के पहले वर्ष में और लियाकत अली का पाँचवें वर्ष की शुरुआत में निधन होना उस देश के लिए शुभ संकेत नहीं था, जिसे किसी भी चीज़ से ज़्यादा नेतृत्व में अनुभव और शासन में संयम की आवश्यकता थी, और अब ऐसा प्रतीत होता था कि वह इन दोनों से वंचित है।

हाल की घटनाओं से दुखी और खुद को दुनिया में अजनबी महसूस कर रहे नवाब साहब ने महेश कपूर को फोन करके अगले दिन दोपहर के भोजन पर आमंत्रित किया।

'कृपया श्रीमती महेश कपूर को भी आने के लिए मना लें। मैं उनके लिए बाहर से खाना ले आऊंगा, बिल्कुल।'

'मैं नहीं कर सकता। वो पागल औरत कल मेरी सेहत के लिए व्रत रखेगी। कल करवा चौथ है, और वो सूर्योदय से लेकर चंद्रोदय तक कुछ भी नहीं खा सकती। न ही पानी की एक बूंद पी सकती है। अगर उसने ऐसा किया तो मैं मर जाऊंगा।'

'यह दुर्भाग्यपूर्ण होगा, कपूर साहब। आजकल बहुत ज्यादा हत्याएं और मौतें हो रही हैं,' नवाब साहब ने कहा। 'वैसे, मान कैसा है?' उन्होंने स्नेहपूर्वक पूछा।

'लगभग वैसा ही। लेकिन हाल ही में मैंने उसे दिन में तीन बार बनारस लौटने के लिए कहना बंद कर दिया है। उस लड़के में कुछ तो बात है।'

नवाब साहब ने कहा, 'इस लड़के के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है।'

‘अरे, अगर स्थिति उलट होती तो भी यही होता,’ महेश कपूर ने कहा। ‘खैर, मैं अपने बेटे की निर्वाचन क्षेत्रों के बारे में दी गई सलाह पर विचार कर रहा हूं। और आपकी सलाह पर भी, बेशक।’

और मुझे उम्मीद है कि पार्टियों के बारे में भी।

फोन पर काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा।

‘जी हां, मैंने कांग्रेस में दोबारा शामिल होने का फैसला कर लिया है। आपको यह बात सबसे पहले पता चली है,’ महेश कपूर ने कहा।

नवाब साहब प्रसन्न प्रतीत हुए।

‘बैतर से लड़ो, कपूर साहब,’ उन्होंने कहा। ‘बैतर से लड़ो। इंशाल्लाह, तुम जीतोगे—और अपने दोस्तों की मदद से।’

देखते हैं, देखते हैं।

तो क्या आप कल दोपहर के भोजन के लिए आएंगे?

जी हां, क्या अवसर है?

‘कोई खास अवसर नहीं है। बस मुझ पर यह एहसान कीजिए कि आप भोजन के दौरान चुपचाप बैठें और मेरी इस शिकायत को सुनें कि पुराने दिन कितने बेहतर थे।’

'ठीक है।'

नवाब साहब ने कहा, ‘मान की माताजी को मेरा प्रणाम कहिएगा।’ वे थोड़ी देर रुके। ‘प्राण की माताजी’ या ‘वीना की माताजी’ कहना ज़्यादा उचित होता। उन्होंने अपनी दाढ़ी सहलाई और फिर आगे कहा, ‘लेकिन कपूर साहब, क्या उनकी वर्तमान सेहत को देखते हुए उनका उपवास करना उचित होगा?’

महेश कपूर ने जवाब दिया, 'समझदारी! समझदारी! मेरे प्यारे नवाब साहब, आप उनसे ऐसी भाषा में बात कर रहे हैं जो उन्हें समझ नहीं आती।'

15.18

यह भाषा संभवतः श्रीमती रूपा मेहरा के लिए भी अपरिचित थी, जिन्होंने करवा चौथ के दिन बच्चे के जूते बुनना बंद कर दिया था। दरअसल, उन्होंने अपनी बुनाई की सुइयाँ घर में पड़ी सिलाई और रफू करने वाली सभी सुइयों के साथ बंद कर दीं। उनका कारण सीधा-सा था। सविता अपने पति के स्वास्थ्य और दीर्घायु के लिए चंद्रोदय तक व्रत रख रही थीं, और उस दिन गलती से भी सुई को छूना अशुभ हो सकता था।

एक वर्ष एक अभागी युवती, व्रत के दौरान भूख से व्याकुल थी। उसके चिंतित भाइयों ने उसे यह कहकर बहलाया कि चाँद निकल आया है, जबकि उन्होंने बस पेड़ के पीछे आग जलाकर चाँदनी का आभास कराया था। उसने थोड़ा सा खा लिया था कि तभी उसे इस चाल का पता चला, और जल्द ही उसे अपने पति की अचानक मृत्यु की खबर मिली। उसके शरीर में हजारों सुइयाँ चुभी हुई थीं। अनेक तपस्याएँ और देवियों को अनेक अर्पण करने के बाद, उस युवती ने अंततः उनसे यह वचन प्राप्त किया कि यदि वह अगले वर्ष विधिवत व्रत रखेगी तो उसका पति जीवित हो उठेगा। पूरे वर्ष वह प्रतिदिन अपने पति के निर्जीव शरीर से एक-एक करके सुइयाँ निकालती रही। लेकिन अंतिम सुइ करवा चौथ के दिन ही एक दासी ने निकाली, ठीक उसी समय जब उसके स्वामी जीवित हो उठे। चूंकि आँखें खोलने के बाद वह पहली महिला थी जिसे उन्होंने देखा, इसलिए उन्हें विश्वास हो गया कि उसी के कष्टों के कारण उनका जीवन संभव हुआ है। उनके पास अपनी पत्नी को त्यागकर उससे विवाह करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। इसलिए करवा चौथ पर सुई को छूना अत्यंत अशुभ माना जाता था: सुई को छूने से पति खो जाता था।

कानून की किताबों से तर्क में सशक्त और अपने बच्चे से वास्तविकता से परिचित सविता इन सब बातों के बारे में क्या सोचती थी, यह स्पष्ट नहीं

था। लेकिन उसने करवा चौथ का पूरी निष्ठा से पालन किया, यहाँ तक कि उसने उगते हुए चाँद को छलनी से भी देखा।

दूसरी ओर, कलकत्ता के साहिब और मेमसाहिब करवा चौथ को घोर मूर्खता मानते थे और श्रीमती रूपा मेहरा की इस बात पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते थे कि मीनाक्षी—भले ही परिवार से ब्रह्म समाज की हो—को करवा चौथ अवश्य मनाना चाहिए। 'सच में, अरुण,' मीनाक्षी ने कहा। 'तुम्हारी माँ तो हर बात पर बहुत ज़ोर देती है।'

एक-एक करके हिंदू त्योहार आते गए, कुछ धूमधाम से मनाए गए, कुछ में कोई उत्साह नहीं था, कुछ का बस जिक्र किया गया, और कुछ को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया गया। अक्टूबर के अंत के आसपास लगातार पांच दिनों तक धनतेरस, हनुमान जयंती, दिवाली, अन्नकूटम और भाई दूज आए। इसके ठीक अगले दिन प्राण ने अत्यंत श्रद्धा से मनाया, जो घंटों रेडियो पर कान लगाए बैठा रहा: यह क्रिकेट सत्र के पहले टेस्ट मैच का पहला दिन था, जो दिल्ली में इंग्लैंड के खिलाफ खेला जा रहा था।

एक सप्ताह बाद, देवता अंततः अपनी चार महीने की नींद से जागे, जो एक बेहद उबाऊ और धीमी गति से चल रहे ड्रॉ मैच के दौरान बुद्धिमानी से सोते रहे।

15.19

लेकिन हालांकि भारत बनाम इंग्लैंड का मैच बेहद नीरस था, वही बात उस रविवार को विश्वविद्यालय के क्रिकेट मैदान में खेले गए यूनिवर्सिटी बनाम ओल्ड ब्रह्मपुरियंस के मैच के बारे में नहीं कही जा सकती थी।

कुछ खिलाड़ियों के चोटिल होने के कारण विश्वविद्यालय की टीम उतनी अच्छी नहीं थी जितनी हो सकती थी। ओल्ड ब्रह्मपुरियंस भी कमजोर नहीं थे, क्योंकि उनकी टीम में न केवल इधर-उधर से जुटाए गए नियमित

खिलाड़ी थे, बल्कि दो ऐसे खिलाड़ी भी थे जिन्होंने पिछले दस वर्षों में विश्वविद्यालय की कप्तानी की थी।

हालांकि, घायलों में मान भी शामिल था। जो लोग सुरक्षित थे उनमें कबीर भी था। और प्राण अंपायरों में से एक था।

नवंबर की शुरुआत का दिन बेहद सुहाना, साफ और ताजी था, और घास अभी भी ताज़ी और हरी थी। माहौल खुशनुमा था, और परीक्षा व अन्य चिंताओं से कोसों दूर, छात्र बड़ी संख्या में मैदान पर उतरे थे। वे जयकारे लगा रहे थे, हूटिंग कर रहे थे, मैदान के चारों ओर खड़े होकर फील्डरों से बातें कर रहे थे और मैदान के बाहर भी उतना ही उत्साह पैदा कर रहे थे जितना मैदान पर। उनमें कुछ शिक्षक भी नज़र आ रहे थे।

इनमें से एक थे डॉ. दुर्रानी; उन्हें क्रिकेट बेहद ज्ञानवर्धक लगता था। इस समय, भले ही उनके बेटे ने मान को लेग-ब्रेक गेंद से आउट कर दिया था, फिर भी वे षट्कोणीय, अष्टक, दशमलव और द्वादशीय प्रणालियों के बारे में सोच रहे थे और उनके विभिन्न लाभों को समझने का प्रयास कर रहे थे।

उन्होंने अपने एक सहकर्मी की ओर रुख किया:

'दिलचस्प बात है, है ना, पटवर्धन, कि संख्या छह, जो कि "परिपूर्ण" होने के बावजूद, गणित में लगभग नगण्य अस्तित्व रखती है—सिवाय ज्यामिति के, बेशक—क्रिकेट की सर्वोपरि देवी होनी चाहिए, है ना?'

सुनील पटवर्धन ने सिर हिलाया लेकिन कुछ नहीं बोले। उनकी निगाहें पिच पर टिकी हुई थीं। अगला खिलाड़ी क्रीज पर आते ही आउट हो गया; कबीर की अगली ही गेंद पर, इस बार गुगली पर, वह पवेलियन लौट आया। दर्शकों में खुशी की एक जोरदार गर्जना गूंज उठी।

'एक ओवर में छह गेंदें, क्या तुम नहीं देखते, पटवर्धन, एक चौके के लिए छह रन, एक ऊंचा चौका, बिल्कुल, और, मैदान पर छह स्टंप!'

नए खिलाड़ी को पैड पहनने का भी समय नहीं मिला था। पिछला बल्लेबाज पवेलियन लौट चुका था, जब वह मैदान पर पहुंचा, तो उसने अपना बल्ला गुस्से और बेचैनी से हिलाया। वह दोनों पूर्व कप्तानों में से एक था, और वह कबीर को हैट्रिक लेने का मौका बिल्कुल नहीं देना चाहता था। वह मैदान में घुसा और गुस्से से घूरने लगा, उसकी नज़रें न सिर्फ तनावग्रस्त लेकिन चौकन्ने गेंदबाज पर थीं, बल्कि उसके अपने बल्लेबाज साथी, सामने के स्टंप, अंपायर और कुछ बेगुनाह मैना पक्षियों पर भी थीं।

जैसे अर्जुन अदृश्य पक्षी की आँख पर बाण साधते हैं, वैसे ही कबीर ने अपने प्रतिद्वंदी के अदृश्य मध्य स्टंप पर एकाग्रता से टकटकी लगा रखी थी। गेंद पिच पर सीधी आ रही थी, लेकिन इस बार धोखे से धीमी गति से। बल्लेबाज ने उसे खेलने की कोशिश की। वह चूक गया; और गेंद के उसके पैड से टकराने की धीमी सी आवाज किसी दबी हुई तबाही की आवाज जैसी थी।

ग्यारह आवाजों ने विजयी प्रसन्नता से अपील की, और प्राण ने मुस्कुराते हुए अपनी उंगली हवा में उठाई।

उसने कबीर की ओर सिर हिलाकर अभिवादन किया, जो चौड़ी मुस्कान के साथ अपने साथियों की बधाई स्वीकार कर रहा था।

दर्शकों की जयजयकार एक मिनट से अधिक समय तक शांत नहीं हुई और कबीर के ओवर के बाकी समय तक रुक-रुक कर जारी रही। सुनील ने खुशी से कुछ तेज कदम उठाए—एक तरह का कथक नृत्य। उसने डॉक्टर दुर्रानी की ओर देखा कि उनके बेटे की जीत का उन पर क्या प्रभाव पड़ा है।

डॉ. दुर्रानी एकाग्रता में लीन थे और उनकी भौहें ऊपर-नीचे हो रही थीं।

'यह बात अजीब है ना, पटवर्धन, कि संख्या, छह, प्रकृति की सबसे

खूबसूरत आकृतियों में से एक में समाहित है: मेरा तात्पर्य बेंजीन वलय से है, जिसमें एकल और दोहरे कार्बन बंध होते हैं। लेकिन क्या यह सचमुच सममित है, पटवर्धन, या असममित? या शायद असममित रूप से सममित, जैसे पेर्गोलेसी लेम्मा के उप-अतिसंचालन... न कि परितारिका के कुछ असंतोषजनक पंखुड़ियों की तरह। अजीब है ना...?'
'यह तो बेहद दिलचस्प है,' सुनील ने सहमति जताई।
*
सविता फिरोज से बात कर रही थी:
"बेशक, फ़िरोज़, तुम्हारे लिए यह अलग है। मेरा मतलब यह नहीं है कि तुम पुरुष हो, बल्कि इसलिए कि तुम्हारे पास कोई बच्चा नहीं है जो तुम्हें अपने मुवक्किलों से विचलित करे। या शायद बात वही है... मैं पिछले दिनों जया सूद से बात कर रही थी, और उन्होंने मुझे बताया कि हाई कोर्ट के बाथरूम में चमगादड़ हैं—और मेरा मतलब क्रिकेट के बल्ले से नहीं है! जब मैंने उनसे कहा कि मैं यह सोच भी नहीं सकती, तो उन्होंने कहा, "अगर तुम्हें चमगादड़ों से डर लगता है, तो तुमने वकालत की पढ़ाई क्यों की?" लेकिन, तुम्हें पता है, हालांकि मैंने कभी सोचा भी नहीं था, मुझे अब वकालत वाकई दिलचस्प लगती है, बहुत दिलचस्प। इस उबाऊ खेल की तरह नहीं। पिछले दस मिनट से कोई दौड़ नहीं लगी है... अरे नहीं, मेरी तो कमर में एक गांठ सी उतर गई है, मुझे धूप में हमेशा नींद आती है..." मुझे समझ नहीं आता कि प्राण को इसमें क्या अच्छा लगता है, या वो पाँच दिन तक रेडियो पर कान लगाए हम सबको नज़रअंदाज़ करने पर क्यों अड़ा रहता है, या रेफरी बनकर पूरे दिन धूप में क्यों खड़ा रहता है, लेकिन क्या आपको लगता है कि मेरे विरोध का कोई असर होता है? "धूप में खड़ा रहना मेरे लिए अच्छा है," वो कहता है... या मान, वैसे भी। लंच से पहले वो एक विकेट से दूसरे विकेट तक सात बार दौड़ता है, और

अब लंच के बाद वो मैदान के किनारे-किनारे ज़्यादा से ज़्यादा कुछ मिनट ही दौड़ता है, और बस: पूरा रविवार निकल गया! फ़िरोज़, पोलो खेलना तुम्हारा अच्छा फैसला है—कम से कम वो तो एक घंटे में खत्म हो जाता है—और तुम्हें थोड़ी कसरत भी मिल जाती है।

फ़िरोज़ मान के बारे में सोच रहा था:

मेरे प्यारे, प्यारे मान, तुमने मेरी जान बचाई है और मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ, लेकिन अगर तुम लता से बकबक करते रहे, तो तुम्हारा कप्तान तुम्हारी जान गंवा देगा।

मान लता से बात कर रहा था:

नहीं, नहीं, बात करने में कोई बुराई नहीं है, मेरे पास तो कभी कोई गेंद आती ही नहीं। उन्हें पता है मैं कितना शानदार खिलाड़ी हूँ, इसलिए उन्होंने मुझे यहाँ बाउंड्री पर रखा है जहाँ मैं कोई कैच नहीं छोड़ सकता, न ही गेंद को गलत तरीके से फेंक सकता हूँ। और अगर मैं सो भी जाऊँ तो कोई बात नहीं। पता है, मुझे लगता है तुम आज बहुत खूबसूरत लग रही हो, नहीं, मुँह मत बनाओ। मैंने हमेशा से ऐसा ही सोचा है—हरा रंग तुम पर खूब जँचता है। तुम घास में ऐसे घुलमिल जाती हो जैसे... एक अप्सरा! स्वर्ग में एक परी... नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं, मुझे लगता है हम बहुत अच्छा खेल रहे हैं। इतनी खराब शुरुआत के बाद 219 रन पर ऑल आउट होना बुरा नहीं है, और अब हमने उन्हें 157 रन पर 7 विकेट पर रोक दिया है। उनके बैटिंग ऑर्डर के निचले क्रम में तो बिल्कुल बेकार लोग हैं। मुझे नहीं लगता कि उनके पास कोई मौका है... ओल्ड ब्रह्मपुरियंस ने एक दशक से जीत हासिल नहीं की है, इसलिए यह एक बड़ी जीत होगी! एक ही खतरा है ये मनहूस दुर्रानी, जो अभी भी बल्लेबाजी कर रहा है... स्कोरबोर्ड पर क्या लिखा है? 68... एक बार उसे पवेलियन से बाहर कर देंगे तो हम सुरक्षित हो जाएंगे...

लता कबीर के बारे में सोच रही थी:

हे प्रेम की आत्मा! तू कितनी जीवंत और ताजगीमय है!

तुम्हारी क्षमता के बावजूद

यह समुद्र की तरह ग्रहण करता है, इसमें कुछ भी प्रवेश नहीं करता।

किस वैधता और स्तर का सोए'एर

लेकिन यह छूट और कम कीमत के कारण प्रभावित होता है।

कुछ मैनाएं मैदान पर बैठी थीं, उनके चेहरे बल्लेबाजों की ओर थे, और हल्की, गर्म धूप उस पर पड़ रही थी। बल्ले और गेंद की आवाज दोपहर ढलते-ढलते धीमी गति से गूंज रही थी—बीच-बीच में किसी के उत्साहवर्धक नारे सुनाई दे रहे थे। उसने घास की एक पत्ती तोड़ी और उसे धीरे-धीरे अपनी बांह पर ऊपर-नीचे फेरने लगी।

कबीर प्राण से बात कर रहा था:

'धन्यवाद; नहीं, रोशनी ठीक है, डॉ. कपूर... ओह, धन्यवाद—खैर, आज सुबह बस एक संयोग हो गया था...'

प्राण सविता के बारे में सोच रहा था:

मुझे पता है कि हमारा पूरा रविवार इसी में निकल गया है, प्रिय, लेकिन अगले रविवार मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी करूँगी। वादा करती हूँ। अगर तुम चाहो, तो मैं ऊन का एक बड़ा गोला पकड़ लूँगी, और तुम बच्चे के लिए बीस जूते बुन लेना।

*

कबीर बल्लेबाजी क्रम में सामान्य से ऊपर चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करने आए थे, लेकिन उन्होंने वहां अपनी भूमिका को बखूबी निभाया। उन्होंने दर्शकों में लता को देखा था, लेकिन अजीब बात यह है कि इससे उनके हौसले पस्त हुए—या यूं कहें कि उनका दृढ़ संकल्प और बढ़ गया। उनका स्कोर बढ़ता गया, मुख्य रूप से चौकों की बदौलत, जिनमें से कई मान को

चकमा देकर निकल गए, और अब उनका स्कोर नब्बे के पार पहुंच गया था।

एक-एक करके उनके साथी आउट होते चले गए, और विकेटों का गिरना खुद ही कहानी बयां कर रहा था: 140 रन पर 4 विकेट, 143 रन पर 5 विकेट, 154 रन पर 6 विकेट, 154 रन पर 7 विकेट, 183 रन पर 8 विकेट, और अब 190 रन पर 9 विकेट। टाई के लिए 29 रन और जीत के लिए 30 रन बनाने थे, और उनका नया साथी बेहद घबराया हुआ विकेटकीपर था! कबीर ने सोचा, "कितना बुरा हुआ। वह स्टंप के पीछे इतना लंबा समय बिता चुका है कि स्टंप के सामने आकर उसे समझ ही नहीं आता कि क्या करे।" शुक्र है कि ओवर की शुरुआत है। फिर भी, बेचारा पहली ही गेंद पर आउट हो जाएगा। यह सब नामुमकिन सा लग रहा है, लेकिन मैं सोच रहा हूँ कि क्या मैं कम से कम अपना शतक तो बना पाऊँगा।

विकेटकीपर ने शानदार सहायक भूमिका निभाई और कबीर ने रणनीतिक एकल लेकर गेंदबाजी जारी रखी। जब यूनिवर्सिटी का स्कोर 199 था और कबीर का स्कोर 98 था, तब खेल समाप्त होने से तीन मिनट पहले, आखिरी ओवर की आखिरी गेंद पर उन्होंने अपना सामान्य एकल लेने की कोशिश की। जब वे और उनके साथी एक-दूसरे के पास से गुजरे, तो उन्होंने कहा: 'हम अभी भी मैच ड्रॉ करा सकते हैं!'

जब वे दौड़ रहे थे तभी 200 रन पूरे होने पर खुशी की लहर दौड़ गई। फील्डर ने कबीर के विकेट की ओर गेंद फेंकी। गेंद बाल-बाल चूक गई, लेकिन इतनी तेज़ी से आगे बढ़ी कि बेचारे मान, जो जोश में ताली बजाने लगे थे, को बहुत देर से समझ आया कि क्या हो रहा है। जब वह गेंद की ओर दौड़े, तब भी बहुत देर हो चुकी थी, और जब गेंद उनकी पूरी लंबाई को पार करते हुए बाउंड्री की ओर निकल गई, तब भी उन्होंने उसे पकड़ने

की बहुत देर से कोशिश की।

विश्वविद्यालय के छात्रों में जोरदार जयकार गूंज उठी—लेकिन यह जयकार कबीर के एक ही गेंद पर बनाए गए पांच रनों के लिए थी, या उनके शतक के लिए, या विश्वविद्यालय के दोहरे शतक के लिए, या इस तथ्य के लिए कि अंतिम ओवर में जीत के लिए बीस के बजाय सोलह रन चाहिए थे, जिससे उन्हें अचानक लगा कि उनके पास अभी भी जीतने का मौका है, यह कोई नहीं कह सकता था।

छावनी से आए एक मेजर, ओल्ड ब्रह्मपुरियंस के कप्तान ने मान को घूरकर देखा।

लेकिन अब, तालियों, हूटिंग और शोर के बीच, कबीर ने आखिरी ओवर खेला। उन्होंने एक शानदार कवर ड्राइव लगाकर चौका मारा, अगली गेंद को लॉन्ग ऑन के ऊपर से उठाकर एक और चौका लगाया, और तीसरी गेंद का सामना दोनों पक्षों के दर्शकों की पूर्ण सन्नाटे भरी खामोशी के बीच किया।

अच्छी लेंथ की गेंद थी। उन्होंने इसे मिड-विकेट की तरफ मारा, लेकिन जैसे ही उन्हें एहसास हुआ कि इससे सिर्फ एक रन मिलेगा, उन्होंने अपने साथी को तुरंत वापस आने का इशारा किया।

उन्होंने अगली गेंद पर दो रन बनाए।

अब बस एक गेंद पहले वाली आखिरी गेंद थी, टाई के लिए पाँच रन और जीत के लिए छह रन चाहिए थे। किसी की साँसें थम सी गई थीं। कबीर क्या करने वाले थे, इसका किसी को ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था—और न ही गेंदबाज़ का इरादा। कबीर ने अपने लहराते बालों में दस्ताने वाला हाथ फेरा। प्राण को लगा कि क्रीज़ पर कबीर कुछ ज़्यादा ही शांत दिख रहे थे। शायद गेंदबाज तनाव और हताशा के आगे हार मान गया था, क्योंकि आश्चर्यजनक रूप से उसकी अगली गेंद फुल-टॉस थी। कबीर ने चेहरे पर

मुस्कान और दिल में खुशी लिए हुए पूरी ताकत से गेंद को हवा में उछाला और जीत की ओर शांत परवलयिक ढंग से उड़ती हुई गेंद को देखता रहा। वह आकाश में बहुत ऊँचा, बहुत ऊँचा, बहुत ऊँचा उठता गया, अपने साथ विश्वविद्यालय की सारी खुशियाँ, आशाएँ और आशीर्वाद लिए हुए। चारों ओर एक हल्की फुसफुसाहट उठी, जो अभी जयजयकार नहीं थी, और फिर विजय की गर्जना में बदल गई।

लेकिन कबीर की निगाहों के बीच एक भयानक घटना घटी। मान, जो लाल गेंद को ऊपर जाते और फिर नीचे आते देख रहा था और जिसका मुंह विस्मय से खुला हुआ था, अचानक खुद को बाउंड्री के बिल्कुल किनारे पर, लगभग पीछे की ओर झुका हुआ पाया। और, उसके अत्यंत आश्चर्य के साथ, गेंद उसके हाथों में थी।

जयकारे अचानक सन्नाटे में बदल गए, फिर एक सामूहिक आह सुनाई दी, जिसके बाद पुराने ब्रह्मपुरियनों ने जीत की खुशी में हैरानी से चिल्लाना शुरू कर दिया। एक उंगली आसमान की ओर उठी। बेल्स गिरा दी गईं। खिलाड़ी मैदान में स्तब्ध खड़े थे, हाथ और सिर हिला रहे थे। और मान ने दर्शकों की ओर खुशी से पांच बार कलाबाजी मारी।

*

लता ने मान को देखते हुए सोचा, "कितना बेवकूफ है!" शायद मुझे अगले साल 1 अप्रैल को उसके साथ भाग जाना चाहिए।

‘कैसा लगा? कैसा लगा? कैसा लगा?’ मान ने फिरोज को गले लगाते हुए पूछा, और फिर दिन के हीरो के रूप में तालियों की गड़गड़ाहट के लिए अपनी टीम के पास वापस दौड़ गया।

फ़िरोज़ ने देखा कि सविता ने अपनी भौहें ऊपर उठाईं। उसने भी उसकी ओर देखकर अपनी भौहें ऊपर उठाईं; वह सोच रहा था कि उस सुस्त कर देने वाले चरमोत्कर्ष के बारे में उसने क्या सोचा होगा।

कुछ मिनट बाद जब प्राण मैदान से बाहर आया तो सविता ने मुस्कुराते हुए कहा, 'अभी भी जाग रहा हूँ—बस किसी तरह।'

प्राण ने कबीर को अपने दोस्तों से अलग होकर उनकी ओर जाते हुए और बल्ला बगल में दबाए हुए देखकर सोचा, "अच्छा लड़का है—मुश्किल हालात में भी हिम्मतवाला।" अफसोस...

पवेलियन लौटते समय लता के पास से गुजरते हुए कबीर ने लगभग दबी आवाज़ में घृणा से बुदबुदाया, 'बस संयोग से कैच मिल गया।'

15.20

हिंदू त्योहारों का मौसम लगभग समाप्त हो चुका था। लेकिन ब्रह्मपुर में एक त्योहार, जिसे भारत के लगभग सभी हिस्सों की तुलना में कहीं अधिक श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है, कार्तिक पूर्णिमा का त्योहार अभी भी बाकी था। कार्तिक की पूर्णिमा स्नान के लिए विशेष रूप से पवित्र तीन महीनों में से एक का समापन करती है; और चूंकि ब्रह्मपुर सबसे पवित्र नदी के किनारे बसा है, इसलिए कई श्रद्धालु पूरे महीने प्रतिदिन स्नान करते हैं, एक ही भोजन करते हैं, तुलसी के पौधे की पूजा करते हैं और दिवंगत आत्माओं को आकाश में मार्गदर्शन देने के लिए बांस के डंडों के सिरों पर छोटी टोकरियों में दीपक लटकाते हैं। पुराणों में कहा गया है: 'पूर्ण युग में सौ वर्षों की तपस्या से जो फल प्राप्त हुआ, वह सब कार्तिक माह में पंच नदियों में स्नान करने से प्राप्त होता है।'

यह भी संभव है कि ब्रह्मपुर शहर का इस त्योहार पर विशेष अधिकार हो, क्योंकि इस शहर का नाम उसी देवता के नाम पर रखा गया है। सत्रहवीं शताब्दी के महाभारत के एक टीकाकार ने लिखा था: 'ब्रह्मा का त्योहार सभी मनाते हैं और यह शरद ऋतु में मनाया जाता है, जब अनाज उगना शुरू हो जाता है।' पुष्कर में, जो पूरे भारत में ब्रह्मा का सबसे बड़ा जीवित तीर्थस्थल है (वास्तव में, गया और संभवतः ब्रह्मपुर के अलावा एकमात्र

महत्वपूर्ण तीर्थस्थल), कार्तिक पूर्णिमा के दिन ही ऊंटों का भव्य मेला लगता है और हजारों तीर्थयात्री यहाँ आते हैं। वहाँ के विशाल मंदिर में ब्रह्मा की प्रतिमा को उनके भक्त अन्य देवताओं की तरह ही नारंगी रंग से रंगते हैं और उस पर झालर लगाते हैं। शायद ब्रह्मपुर में इस त्योहार का इतना धूमधाम से मनाया जाना उस समय की परंपरा का अवशेष है, जब ब्रह्मा की पूजा यहाँ भी, उनके अपने शहर में, भक्ति के देवता के रूप में की जाती थी, इससे पहले कि शिव या विष्णु के किसी अवतार ने इस भूमिका में उनकी जगह ले ली।

हालांकि, यह मात्र एक अवशेष मात्र है, क्योंकि वर्ष के अधिकांश समय ब्रह्मपुर में ब्रह्मा की उपस्थिति का कोई आभास ही नहीं होता। त्रयी के उनके प्रतिद्वंद्वी—या सहयोगी—ही प्रमुखता से दिखाई देते हैं। पुल मेला या चंद्रचूड़ मंदिर शिव की शक्ति का प्रमाण हैं, चाहे वे गंगा के स्रोत के रूप में हों या लिंग द्वारा प्रतीक महान कामुक तपस्वी के रूप में। विष्णु की बात करें तो, अनेक कृष्ण भक्तों (जैसे सनकी बाबा) की उल्लेखनीय उपस्थिति और जन्माष्टमी का उत्साहपूर्ण उत्सव (श्रीमती महेश कपूर जैसे लोगों द्वारा) कृष्ण के रूप में उनकी उपस्थिति का प्रमाण है; और राम के रूप में उनकी उपस्थिति न केवल वर्ष के आरंभ में रामनवमी के दौरान बल्कि दशहरा तक चलने वाली नौ रातों के दौरान भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जब ब्रह्मपुर बंगाल से गुजरात तक फैले देवी-देवताओं की पूजा के सागर में राम पूजा के एक द्वीप का हिस्सा बन जाता है।

स्वयंभू या अंड से जन्मा ब्रह्मा, यज्ञों का निरीक्षक, परम सृष्टिकर्ता, त्रिविध जगत की रचना करने वाला चार मुखों वाला प्राचीन देवता, सदियों से क्यों उपेक्षित रहा, यह स्पष्ट नहीं है। महाभारत में एक समय शिव भी उनके सामने दबे हुए दिखाए गए हैं; और ब्रह्मा के ही एक मूल से न केवल 'ब्राह्मण' बल्कि 'ब्रह्मण' (विश्व आत्मा) शब्द भी उत्पन्न हुए हैं। लेकिन

पुराणों के उत्तरार्ध तक, और आधुनिक काल की तो बात ही छोड़िए, उनका प्रभाव लगभग नगण्य हो गया था।

शायद इसका कारण यह था कि—शिव, राम, कृष्ण, दुर्गा या काली के विपरीत—उनका संबंध कभी यौवन, सौंदर्य या भय से नहीं जोड़ा गया, जो व्यक्तिगत भक्ति के स्रोत होते हैं। शायद इसका कारण यह था कि वे दुख और पीड़ा से इतने ऊपर थे कि हृदय की उस लालसा को संतुष्ट नहीं कर पाते थे जो किसी पहचान योग्य मानवीय आदर्श या मध्यस्थ की तलाश में होती है—शायद कोई ऐसा व्यक्ति जो पृथ्वी पर शेष मानव जाति के साथ दुख भोगने के लिए आया हो ताकि धर्म की स्थापना हो सके। शायद इसका कारण यह था कि उनसे जुड़ी कुछ मिथक—उदाहरण के लिए अपनी ही पुत्री के साथ यौन संबंध से मानव जाति की उत्पत्ति—लंबे समय तक और बदलते रीति-रिवाजों के साथ लगातार अनुयायियों के लिए स्वीकार करना बहुत कठिन था।

या शायद ऐसा हुआ होगा कि प्रार्थनाओं के लिए बार-बार प्रार्थना करने पर भी ब्रह्मा नल की तरह चालू-बंद होने से इनकार करते हुए अंततः लाखों उठे हाथों द्वारा माँगी गई प्रार्थना को पूरा करने से इनकार कर दिया और इस प्रकार कृपा से वंचित हो गए। धार्मिक भावना का पूर्णतः पारलौकिक होना दुर्लभ है, और हिंदू भी, अन्य लोगों की तरह, बल्कि शायद उनसे भी अधिक, सांसारिक आशीर्वादों के लिए उत्सुक रहते हैं, न कि केवल परलोक के आशीर्वादों के लिए। हम विशिष्ट परिणाम चाहते हैं, चाहे बच्चे को रोगमुक्त करना हो या उसके आईएएस परीक्षा परिणाम सुनिश्चित करना हो, चाहे पुत्र का जन्म सुनिश्चित करना हो या पुत्री के लिए उपयुक्त वर खोजना हो। हम यात्रा से पहले अपने चुने हुए देवता से आशीर्वाद लेने मंदिर जाते हैं और काली या सरस्वती से अपने खाते की पुस्तकों को पवित्र करवाते हैं। दिवाली पर, हर नई सफेदी की हुई दुकान की दीवारों

पर 'शुभ लाभ' लिखा दिखाई देता है; जबकि अधिष्ठाता देवी लक्ष्मी अपने कमल पर विराजमान, शांत और सुंदर, मुस्कुराते हुए, अपनी चार भुजाओं में से एक से सोने के सिक्के बरसाती हुई दिखाई देती हैं।

यह स्वीकार करना होगा कि कुछ लोग, विशेषकर शैव और वैष्णव, यह दावा करते हैं कि ब्रह्मपुर का ब्रह्मा देवता से कोई संबंध नहीं है—कि यह नाम बहरामपुर, ब्राह्मणपुर, बरहमपुर या इसी तरह के किसी अन्य नाम का बिगड़ा हुआ रूप है, चाहे वह इस्लामी हो या हिंदू। लेकिन किसी न किसी कारण से इन सिद्धांतों को खारिज किया जा सकता है। सिक्कों, शिलालेखों, ऐतिहासिक अभिलेखों और यात्रियों के वृत्तांतों (हुएन त्सांग से अल-बिरूनी तक, बाबर से टैवर्नियर तक) के प्रमाण, साथ ही ब्रिटिश यात्रियों के वृत्तांत भी, शहर के प्राचीन नाम के पर्याप्त प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

यह उल्लेख करना आवश्यक है कि ब्रुमपोर की वर्तनी, जिसे अंग्रेजों ने शहर पर थोपने पर जोर दिया था, को संरक्षित प्रांत (नाम परिवर्तन) आदेश, 1949 के तहत राज्य का नाम बदलकर पूर्व प्रदेश किए जाने पर उसके अधिक ध्वन्यात्मक रूप में परिवर्तित कर दिया गया था, जो संविधान के लागू होने से कुछ महीने पहले प्रभावी हुआ था। हालांकि, ब्रुमपोर वर्तनी के प्रचलन के दो शताब्दियों के दौरान शौकिया व्युत्पत्तिविदों द्वारा कई गलतियाँ की गईं।

कुछ गुमराह लोग तो यह भी दावा करते हैं कि ब्रह्मपुर नाम भ्रमपुर का ही एक रूप है—भ्रम या भ्रम का शहर। लेकिन इस परिकल्पना का उचित उत्तर यह है कि हमेशा ऐसे लोग मौजूद होते हैं जो किसी भी बात पर, चाहे वह कितनी भी अविश्वसनीय क्यों न हो, केवल विरोध करने के लिए विश्वास करने को तैयार रहते हैं।

15.21

‘प्राण डार्लिंग, कृपया वह लाइट बंद कर दो।’
स्विच दरवाजे के पास था।
प्राण को जम्हाई आई। उसने जवाब दिया, 'ओह, मुझे बहुत नींद आ रही है।'
'लेकिन मैं इसे पहनकर सो नहीं सकती,' सविता ने कहा।
‘अगर मैं दूसरे कमरे में बैठकर देर रात तक काम कर रहा होता तो क्या होता? क्या आप इसे खुद नहीं कर पाते?’
‘हां, बिल्कुल, प्यारे,’ सविता ने जम्हाई लेते हुए कहा, ‘लेकिन तुम दरवाजे के ज्यादा करीब हो।’
प्राण बिस्तर से उठा, लाइट बंद की और लड़खड़ाते हुए वापस चला गया। उन्होंने कहा, 'प्राण डार्लिंग के आते ही उसका कोई न कोई उपयोग मिल जाता है।'
‘प्राण, तुम बहुत प्यारे हो,’ सविता ने कहा।
‘बिल्कुल! कोई भी जो सेवक की सेवा करता है, वह ऐसा ही महसूस करेगा। लेकिन जब मालती त्रिवेदी मुझे प्यारा समझने लगे...’
जब तक आपको वह प्यारी न लगे. . .
और वे सो गए।
सुबह के दो बजे फोन की घंटी बजी।
लगातार बजने वाली दोहरी घंटी ने उनके सपनों को भेद दिया। प्राण अचानक चौंककर जाग गया। बच्ची भी जाग उठी और रोने लगी। सविता ने उसे चुप कराया।
‘हे भगवान! ये कौन हो सकता है?’ सविता चौंककर बोली। ‘इससे पूरा घर जाग जाएगा—और—क्या समय हुआ है?—मुझे उम्मीद है कि कुछ गंभीर नहीं होगा—’
प्राण लड़खड़ाते हुए कमरे से बाहर निकल गया था।

‘हेलो?’ उसने रिसीवर उठाते हुए कहा। ‘हेलो, प्राण कपूर बोल रहा हूं।’
दूसरी तरफ से भारी साँसों की आवाज़ आई। फिर एक कर्कश आवाज़ निकली:
‘अच्छा! यह मार्ह है।’
‘जी?’ प्राण ने धीमी आवाज में कहा। सविता बिस्तर से उठ चुकी थी। उसने उसे आश्वस्त करने के लिए अपना सिर हिलाया कि यह कोई गंभीर बात नहीं है और जब वह बिस्तर पर वापस चली गई तो उसने भोजन कक्ष का दरवाजा बंद कर दिया।
‘यह मारह है! मारह का राजा।’
'जी हां, मैं समझ गया। जी महाराज, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?'
आप अच्छी तरह जानते हैं कि आप मेरे लिए क्या कर सकते हैं।
मुझे खेद है, महाराज, लेकिन अगर यह आपके बेटे के निष्कासन के बारे में है, तो मैं आपको कुछ नहीं बता सकता। आपको विश्वविद्यालय से एक पत्र मिला है—’
‘तुम—तुम—क्या तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ?’
‘बिल्कुल ठीक है, महाराज। अब कुछ देर हो चुकी है—’
'मेरी बात सुनो, अगर तुम नहीं चाहते कि तुम्हारे साथ—या तुम्हारे किसी करीबी के साथ—कुछ बुरा हो, तो तुम वह आदेश रद्द कर दो।'
‘महामहिम, मैं—’
‘महज़ किसी शरारत की वजह से—और मैं जानता हूँ कि तुम्हारा भाई भी उतना ही शरारती है—मेरे बेटे ने मुझे बताया कि उसने उसे उल्टा लटका दिया और जुआ खेलते समय उसकी जेब से पैसे निकाल लिए—तुम अपने भाई को बताओ—और अपने ज़मीन हड़पने वाले पिता को—’
‘मेरे पिता?’
‘आपके पूरे परिवार को सबक सिखाने की जरूरत है—’

बच्चा फिर से रोने लगा। मारह के राजा की आवाज में क्रोध का भाव आ गया।

क्या यह तुम्हारा बच्चा है?

प्राण चुप रहा।

'तुमनें मुझे सुना?'

'महामहिम, मैं इस बातचीत को भूलना चाहता हूँ। लेकिन अगर आप बिना किसी कारण के इस समय मुझे फिर से फोन करते हैं, या अगर मुझे आपकी ओर से कोई और धमकी मिलती है, तो मुझे पुलिस को मामले की सूचना देनी होगी।'

'बिना कारण के?—आप मेरे बेटे को एक शरारत के लिए निष्कासित कर रहे हैं—'

'महामहिम, यह कोई मज़ाक नहीं था। विश्वविद्यालय अधिकारियों ने आपको लिखे पत्र में तथ्यों को स्पष्ट कर दिया था। सांप्रदायिक दंगे में भाग लेना कोई मज़ाक नहीं है। आपका बेटा भाग्यशाली है कि वह अभी भी जीवित है और जेल से बाहर है।'

'उसे स्नातक होना ही होगा। उसे होना ही होगा। उसने गंगा में स्नान किया है—अब वह एक स्नातक है।'

प्राण ने अपनी आवाज़ में तिरस्कार का भाव छिपाने की कोशिश करते हुए कहा, 'यह कुछ जल्दबाजी थी। और इस मामले पर आपकी नाराज़गी समिति के फैसले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण नहीं हो सकती। शुभ रात्रि, महाराज।'

'इतनी जल्दी नहीं! अब मेरी बात सुनो—मुझे पता है कि तुमने उसे निष्कासित करने के लिए वोट दिया था।'

'यह बात न तो यहाँ की है और न वहाँ की, महाराज—मैंने उसे पहले भी एक बार मुसीबत से बचाया था, लेकिन—'

‘यह बात इधर-उधर बहुत फैली हुई है। जब मेरा मंदिर पूरा हो जाएगा—क्या आप जानते हैं कि मेरा पुत्र, मेरा वह पुत्र जिसे आप शहीद बनाने की कोशिश कर रहे हैं, वही समारोहों का नेतृत्व करेगा—और शिव का प्रकोप—’

प्राण ने फोन नीचे रख दिया। वह एक-दो मिनट के लिए डाइनिंग टेबल पर बैठ गया, उसे घूरता रहा और अपना सिर हिलाता रहा।

जब वह बिस्तर पर लौटा तो सविता ने पूछा, 'वह कौन था?'

‘अरे नहीं, कोई पागल आदमी था जो अपने बेटे को विश्वविद्यालय में दाखिला दिलाना चाहता था,’ प्राण ने कहा।

15.22

कांग्रेस पार्टी अपने उम्मीदवारों के चयन में जी-तोड़ मेहनत कर रही थी। अक्टूबर और नवंबर के महीनों में राज्य चुनाव समितियां काम करती रहीं, त्योहार आते-जाते रहे, अशांतियां भड़कती और शांत होती रहीं, और भोर में सफेद और नारंगी रंग के फूल टहनियों से नीचे गिरते रहे।

उन्होंने ज़िलावार उन उम्मीदवारों का चयन किया जिन्हें वे विधानसभा और संसद के लिए कांग्रेस का टिकट देने के योग्य समझते थे। पूर्व प्रदेश में एल.एन. अग्रवाल के नेतृत्व वाली इस समिति ने तथाकथित अलगाववादियों को चुनाव से बाहर रखने की पूरी कोशिश की। इसके लिए उन्होंने हर संभव हथकंडा अपनाया—प्रक्रियात्मक, तकनीकी और व्यक्तिगत। हर टिकट के लिए औसतन छह आवेदक थे, इसलिए बिना किसी स्पष्ट पक्षपात के अपने राजनीतिक विचारों वाले उम्मीदवारों के पक्ष में निर्णय लेने के पर्याप्त कारण थे। समिति ने कड़ी मेहनत की और इसके अच्छे परिणाम मिले। यह समिति हफ़्तों तक लगातार दस घंटे प्रतिदिन बैठक करती रही। इसने जाति और स्थानीय रुतबे, धन शक्ति और ब्रिटिश जेलों में बिताए गए वर्षों को ध्यान में रखा। सबसे बढ़कर, इसने इस बात

पर विचार किया कि कोई आवेदक किस गुट से संबंधित है और उसकी (या, कभी-कभी, महिला की) चुनावी सफलता की क्या संभावना है। एल.एन. अग्रवाल इस सूची से पूरी तरह संतुष्ट थे। एस.एस. शर्मा भी संतुष्ट थे, जो लोकप्रिय महेश कपूर की वापसी से खुश थे, लेकिन इस बात को लेकर चिंतित थे कि वे अपने साथ बहुत सारे समर्थकों को लेकर दोबारा शामिल न हों।

अंत में, प्रधानमंत्री और दिल्ली की उन समितियों की मंजूरी पाने के उद्देश्य से, जो उनकी सूची की जांच करेंगी, पी.पी. चुनाव समिति ने दलबदलुओं के प्रति सांकेतिक रुख अपनाते हुए उनके तीन प्रतिनिधियों (जिनमें महेश कपूर भी शामिल थे) को अपनी बैठकों के अंतिम दो दिनों में आमंत्रित किया। जब दलबदलुओं ने समिति द्वारा तैयार की गई सूची देखी, तो वे स्तब्ध रह गए। सूची में उनके गुट का लगभग कोई भी सदस्य नहीं था। यहां तक कि अल्पसंख्यक गुट के मौजूदा विधायकों को भी उम्मीदवार के रूप में हटा दिया गया था। महेश कपूर को स्वयं उनके शहरी निर्वाचन क्षेत्र से वंचित कर दिया गया था और उन्हें बताया गया था कि उन्हें रुधिया सीट भी नहीं मिल सकती - यह सीट एक ऐसे सांसद को देने का वादा किया गया था जो विधानसभा में पुनः शामिल होने के लिए राज्य लौट रहे थे। समिति के अनुसार, यदि महेश कपूर ने कांग्रेस नहीं छोड़ी होती, तो वे उनकी सीट नहीं देते; लेकिन जब तक वे पार्टी में पुनः शामिल हुए, तब तक बहुत देर हो चुकी थी और वे कुछ नहीं कर सकते थे। लेकिन उन्हें अपनी पसंद की सीट स्वीकार करने के लिए मजबूर करने के बजाय, वे उदार रुख अपनाते हुए उन्हें अभी तक खाली पड़ी कुछ सीटों में से एक चुनने का विकल्प देंगे।

दूसरे दिन सुबह अलगाववादियों के तीनों प्रतिनिधि बैठक से नाराज़ होकर बाहर चले गए। उन्होंने कहा कि चयन प्रक्रिया के अंतिम चरण में, जब

सूची लगभग पूरी हो चुकी थी, तब शत्रुतापूर्ण और पक्षपातपूर्ण माहौल में आयोजित ये बैठकें समय की बर्बादी थीं—दिल्ली को यह विश्वास दिलाने के लिए किया गया एक नाटक था कि उनसे परामर्श किया गया था। चुनाव बोर्ड ने प्रेस को अपना बयान जारी कर कहा कि उसने अलगाववादियों की राय पूरी ईमानदारी और सुलह की भावना से मांगी थी। बोर्ड ने उन्हें सहयोग और सलाह के लिए हर संभव अवसर दिया था।

केवल अलगाववादी ही असंतुष्ट नहीं थे। चयनित प्रत्येक पुरुष या महिला के बदले पांच अन्य लोगों को अस्वीकार कर दिया गया था, और उनमें से कई ने दिल्ली में सूचियों की जांच के लिए गठित जांच समितियों के समक्ष अपने प्रतिद्वंद्वियों के नाम बदनाम करने की जल्दी की।

अलग हुए कांग्रेसी भी अपना मामला दिल्ली ले गए; वहाँ भी कड़वाहट जारी रही। नेहरू समेत कई लोग सत्ता की खुली लालसा, दूसरों को नुकसान पहुँचाने की प्रवृत्ति और पार्टी पर पड़ने वाले प्रभाव की परवाह न करने की प्रवृत्ति से लगभग परेशान थे, जो जाँच-पड़ताल और अपील की प्रक्रिया में साफ झलक रही थी। दिल्ली स्थित कांग्रेस कार्यालयों में हर तरह के आवेदक और समर्थक उमड़ पड़े, जो प्रभावशाली लोगों को याचिकाएँ थमाते और उन पर बेधड़क कीचड़ उछालते थे। यहाँ तक कि पुराने और भरोसेमंद कांग्रेस कार्यकर्ता, जिन्होंने वर्षों जेल में बिताए थे और अपने देश के लिए सब कुछ कुर्बान कर दिया था, अब चुनाव कार्यालय में जूनियर क्लर्कों के सामने गिड़गिड़ाते हुए सीट पाने की कोशिश कर रहे थे।

नेहरू अलगाववादियों के पक्ष में थे, लेकिन सारा मामला अहंकार, लोभ और महत्वाकांक्षा से इतना दूषित हो चुका था कि उनकी संशयवादी प्रवृत्ति ने उन्हें उनका ठीक से समर्थन करने, सत्ता तंत्र में स्थापित शक्तियों से सीधे भिड़ने से रोक दिया। अलगाववादी कभी चिंतित तो

कभी आशावादी होते रहे। कभी उन्हें लगता था कि नेहरू, अपने पिछले संघर्षों से थककर, राजनीति को पूरी तरह छोड़कर आराम से अपने बगीचे में बैठकर पढ़ने में मग्न हो जाएंगे। तो कभी नेहरू राज्य की सूचियों पर जमकर प्रहार करते थे। एक समय ऐसा लगा कि पूर्व प्रदेश के अलगाववादियों द्वारा प्रस्तुत वैकल्पिक सूची वास्तव में राज्य चुनाव समिति द्वारा प्रस्तुत आधिकारिक सूची को हटा देगी। लेकिन एस.एस. शर्मा से बातचीत के बाद नेहरू ने अपना विचार फिर बदल दिया। बुद्धिमान मनोवैज्ञानिक शर्मा ने नेहरू की इच्छा के अनुसार उस सूची को स्वीकार करने और यहां तक कि उसके लिए प्रचार करने की पेशकश की, लेकिन उन्होंने शर्त रखी कि उन्हें मुख्यमंत्री या सरकार के किसी अन्य पद से मुक्त कर दिया जाए। नेहरू समझ गए थे कि ऐसा कभी नहीं चलेगा। एस.एस. शर्मा के व्यक्तिगत जनसमर्थन और गठबंधन बनाने और चुनाव प्रचार करने की उनकी कुशलता के बिना, पूर्वा प्रदेश में कांग्रेस पार्टी गहरे संकट में होती।

उम्मीदवारों के चयन की प्रक्रिया हर स्तर पर इतनी जटिल और लंबी खिंच गई थी कि पूर्व प्रदेश में नामांकन दाखिल करने की अंतिम तिथि से ठीक दो दिन पहले ही दिल्ली में कांग्रेस पार्टी की सूचियाँ अंतिम रूप दी गईं। जीपें पूरे इलाके में दौड़ रही थीं, तार लगातार बज रहे थे, उम्मीदवार घबराकर दिल्ली से ब्रह्मपुर या ब्रह्मपुर से अपने आवंटित निर्वाचन क्षेत्रों की ओर भाग रहे थे। उनमें से दो तो समय सीमा चूक गए, एक इसलिए क्योंकि उनके समर्थक स्टेशन जाते समय उन्हें गेंदे के फूलों की मालाओं से इतना घेर रहे थे कि उनकी ट्रेन छूट गई। दूसरे दो बार गलत सरकारी दफ्तर में घुस गए, आखिरकार उन्हें सही दफ्तर मिला और वे अपने नामांकन पत्र लहराते हुए अंदर घुस गए। तीन बजे की समय सीमा से दो मिनट अधिक हो चुके थे। वे फूट-फूट कर रोने लगे।

लेकिन ये तो सिर्फ दो निर्वाचन क्षेत्र थे। पूरे देश में लगभग चार हजार निर्वाचन क्षेत्र थे। इन निर्वाचन क्षेत्रों के लिए उम्मीदवारों का चयन हो चुका था, नामांकन दाखिल हो चुके थे, पार्टी के चिन्ह चुने जा चुके थे और पार्टी की पूरी ताकत दिखाई जा चुकी थी। प्रधानमंत्री पहले ही कांग्रेस पार्टी के समर्थन में जगह-जगह संक्षिप्त दौरे कर चुके थे; और जल्द ही पूर्वा प्रदेश में भी चुनाव प्रचार पूरी गंभीरता से शुरू हो जाएगा।
और अंत में, मायने तो मतदाताओं का ही था, आम जनता, संशयवादी और भोली, जिन्हें सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार प्राप्त था, और जिनकी संख्या 1946 में मतदान करने वालों की तुलना में छह गुना अधिक थी। वास्तव में, यह पृथ्वी पर अब तक का सबसे बड़ा चुनाव होने वाला था। इसमें इसकी एक-छठी आबादी शामिल थी।
मिसरी मंडी और रुधिया (पश्चिम) से सीट न मिलने के बावजूद महेश कपूर कम से कम सलीमपुर-कम-बैतर से कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में चुने जाने में कामयाब रहे थे। कुछ महीने पहले तक उन्होंने ऐसे नतीजे की कल्पना भी नहीं की थी। अब मान, एल.एन. अग्रवाल, नवाब साहब, नेहरू, भास्कर, एस.एस. शर्मा, झा और शायद सौ अन्य ज्ञात-अज्ञात एजेंटों की वजह से उन्हें एक ऐसे निर्वाचन क्षेत्र से अपने राजनीतिक जीवन और आदर्शों के लिए लड़ना था, जहाँ वे लगभग अजनबी थे। उनकी घबराहट को कम करके आंकना भी ठीक नहीं होगा।

भाग सोलह

16.1

मालती को ब्लू डेन्यूब में प्रवेश करते देख कबीर का चेहरा खिल उठा। वह पहले ही दो कप कॉफी पी चुका था और तीसरे का ऑर्डर दे चुका था।

धुंधले शीशे के बाहर नबीगंज की स्ट्रीटलाइटें तेज लेकिन धुंधली रोशनी बिखेर रही थीं और राहगीरों की धुंधली आकृतियाँ इधर-उधर घूम रही थीं।
‘अरे, तो तुम आ गए।’
'जी हां। बिल्कुल। मुझे आज सुबह आपका संदेश मिला।'
'क्या मैंने आपके लिए गलत समय नहीं चुना है?'
‘बाकी किसी से भी बदतर नहीं,’ मालती ने कहा। ‘ओह, यह तो बुरा लग रहा है। मेरा मतलब यह था कि ज़िंदगी इतनी भागदौड़ भरी है कि मुझे समझ नहीं आता कि मैं बस टूट क्यों नहीं जाती। जब मैं नैनीताल में थी और अपने सभी परिचितों से दूर थी, तब मुझे बहुत शांति मिली थी।’
'मुझे उम्मीद है कि आपको कोने में बैठने में कोई आपत्ति नहीं होगी? हम जगह बदल सकते हैं।'
नहीं, मुझे यह पसंद है।
कबीर ने पूछा, 'अच्छा, तुम क्या लोगे?'
‘अरे, बस एक कप कॉफी, और कुछ नहीं। मुझे एक शादी में जाना है। इसीलिए मैंने इतने ज्यादा कपड़े पहने हैं।’
मालती ने गहरे हरे और सुनहरे रंग के चौड़े बॉर्डर वाली हरे रंग की रेशमी साड़ी पहनी हुई थी। वह बेहद खूबसूरत लग रही थी। उसकी आँखें सामान्य से भी ज़्यादा गहरे हरे रंग की थीं।
कबीर ने प्रभावित होकर कहा, 'मुझे तुम्हारा पहनावा बहुत पसंद आया। हरा और सुनहरा रंग - बेहद आकर्षक। और वह हार जिसमें हरे रंग की छोटी-छोटी आकृतियाँ और पैस्ले पैटर्न है।'
'वो छोटी-छोटी हरी चीजें पन्ना हैं,' मलाती ने थोड़ा नाराज होकर लेकिन खुशी से हंसते हुए कहा।
'ओह, खैर, देखिए, मुझे इन सब चीजों की आदत नहीं है। वैसे, ये देखने में बहुत सुंदर लग रहा है।'

कॉफ़ी आ गई। उन्होंने उसे पीते हुए आपस में नाटक की तस्वीरों के बारे में बातें कीं, जो अच्छी आई थीं, उन पहाड़ी इलाकों के बारे में जहाँ वे दोनों जा चुके थे, स्केटिंग और घुड़सवारी के बारे में, हाल की राजनीति और धार्मिक दंगों सहित अन्य घटनाओं के बारे में। मालती यह देखकर हैरान थी कि कबीर से बात करना कितना आसान था, वह कितना मिलनसार था और कितना सुंदर था। अब जब वह मालवोलियो नहीं रहा था, तो उसे गंभीरता से लेना आसान हो गया था। दूसरी ओर, चूंकि वह कभी मालवोलियो रह चुका था, इसलिए उसे उसके साथ एक तरह की एकजुटता का भाव महसूस हो रहा था।

क्या आपको पता है कि ध्रुवों को छोड़कर दुनिया में कहीं और की तुलना में भारत में अधिक बर्फ और हिम है?

'सच में?' मलाती ने कहा। 'नहीं, मुझे नहीं पता।' उसने अपनी कॉफी को हिलाया। 'लेकिन मुझे बहुत सी बातें नहीं पता। जैसे कि, उदाहरण के लिए, यह बैठक किस बारे में है।'

कबीर को अंत में सीधे मुद्दे पर आना पड़ा।

'यह लता के बारे में है।'

मुझे भी ऐसा ही लगा था।

'वह मुझसे मिलना नहीं चाहती, मेरे संदेशों का जवाब नहीं देती। ऐसा लगता है जैसे वह मुझसे नफरत करती है।'

'बिल्कुल नहीं, इतना भावुक मत बनो,' मलाती हंसते हुए बोली। 'मुझे लगता है वो तुम्हें पसंद करती है,' उसने गंभीरता से कहा। 'लेकिन तुम्हें पता है असली समस्या क्या है।'

कबीर ने चम्मच को प्याले में घुमाते हुए कहा, 'मैं उसके बारे में सोचना बंद नहीं कर पा रहा हूँ। मैं हमेशा सोचता रहता हूँ कि वह कब किसी और से मिलेगी, ठीक वैसे ही जैसे वह मुझसे मिली थी—जिसे वह मुझसे

ज़्यादा पसंद करने लगेगी। तब तो मेरे पास कोई मौका ही नहीं बचेगा। मैं बस उसके बारे में सोचना बंद नहीं कर पा रहा हूँ। और मैं बहुत अजीब तरह से उदास महसूस कर रहा हूँ, ये कोई मज़ाक नहीं है। कल मैं कॉलेज के मैदान में पाँच बार चक्कर लगा चुका हूँ, ये सोचते हुए कि वो यहाँ है—या नहीं है—बेंच पर, नदी की ओर ढलान पर, परीक्षा हॉल की सीढ़ियों पर, क्रिकेट मैदान पर, सभागार में—वो मुझे सच में परेशान कर रही है। इसीलिए मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी मदद करो।'

'मुझे?'

'हाँ। किसी से इतना प्यार करना तो पागलपन ही होगा। पागलपन नहीं, खैर...' कबीर ने नीचे देखा, फिर धीरे से बोला। 'समझाना मुश्किल है, मालती। उसके साथ मुझे एक अलग ही आनंद का अनुभव हुआ—ऐसी खुशी, जो मुझे कम से कम एक साल से नहीं मिली थी। लेकिन वो पल भर में ही खत्म हो गई। अब वो मेरे प्रति बिल्कुल उदासीन है। उससे कहो कि अगर वो चाहे तो मैं उसके साथ भाग जाऊँगा—नहीं, ये तो बेवकूफी है, उससे कहो—वो ऐसा कैसे कर सकती है—वो तो धार्मिक भी नहीं है।' वो रुका। 'जब उसे पता चला कि मैं मालवोलियो हूँ, तो उसके चेहरे का वो भाव मैं कभी नहीं भूल पाऊँगा! वो गुस्से से आग बबूला हो गई थी!' वो हँसने लगा, फिर गंभीर हो गया। 'तो अब सब कुछ तुम पर निर्भर है।'

'मैं क्या कर सकती हूँ?' मालती ने उसका सिर थपथपाते हुए पूछा। वह अपनी उलझन में यह मान रहा था कि लता पर उसका असीम अधिकार है, जो कि काफी सुखद था।

आप मेरी ओर से उससे सिफारिश कर सकते हैं।

लेकिन वह अभी-अभी अपने परिवार के साथ कलकत्ता गई है।

'ओह।' कबीर सोचने लगा। 'फिर से कलकत्ता? अच्छा, तो उसे पत्र लिखो।'

‘तुम उससे इतना प्यार क्यों करते हो?’ मालती ने उसे हैरानी से देखते हुए पूछा। एक साल के भीतर लता के चाहने वालों की संख्या शून्य से बढ़कर कम से कम तीन हो गई थी। इस रफ्तार से तो अगले साल तक यह संख्या दो अंकों तक पहुंच जाएगी।

‘क्यों?’ कबीर ने हैरानी से मालती की तरफ देखा। ‘क्यों? क्योंकि उसके छह अंगूठे हैं। मुझे खुद नहीं पता कि मैं उससे प्यार क्यों करता हूँ, मालती —खैर, ये बात मायने नहीं रखती। क्या तुम मेरी मदद करोगी?’

'ठीक है।'

कबीर ने बिना धन्यवाद दिए अपनी बात जारी रखते हुए कहा, ‘इन सब का मेरी बल्लेबाजी पर बहुत ही अजीब असर पड़ रहा है। मैं छक्के ज्यादा लगा रहा हूं, लेकिन जल्दी आउट भी हो रहा हूं। लेकिन जब मुझे पता था कि वह देख रही है, तब मैंने ओल्ड ब्रह्मपुरियंस के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन किया। अजीब है ना?’

'बहुत अजीब,' मालती ने अपनी मुस्कान को अपनी आंखों तक सीमित रखने की कोशिश करते हुए कहा।

‘मैं बिल्कुल भी मासूम नहीं हूँ,’ कबीर ने उसकी हंसी पर थोड़ा चिढ़ते हुए कहा।

‘मुझे उम्मीद है ऐसा नहीं होगा!’ मालती ने हंसते हुए कहा। ‘अच्छा, मैं कलकत्ता को लिख दूंगी। तुम बस क्रीज पर बने रहो।’

16.2

अरुण अपनी मां की जन्मदिन की पार्टी को उनसे गुप्त रखने में कामयाब रहा। उसने चाय पर कुछ बुजुर्ग महिलाओं को आमंत्रित किया था—उनकी कलकत्ता की सहेलियाँ जिनके साथ वह कभी-कभी रमी खेलती थीं—और उसने उदारतापूर्वक चटर्जी परिवार को आमंत्रित नहीं किया था।

लेकिन वरुण ने आखिरकार राज़ खोल दिया, जो आईएएस परीक्षा देने के

बाद से ही यह महसूस कर रहा था कि उसने दस साल के लिए पर्याप्त कर्तव्य निभा लिया है। सर्दी का मौसम शुरू हो चुका था और घोड़ों के सरपट दौड़ने की आवाज़ उसके कानों में गूंज रही थी।

एक दिन उसने रेसिंग फॉर्म से नज़रें उठाकर कहा: 'लेकिन मैं उस दिन नहीं जा पाऊंगा, क्योंकि उस दिन आपकी पार्टी है—ओह!'

श्रीमती रूपा मेहरा, जो '3, 6, 10, 3, 6, 20' गिन रही थीं, उन्होंने बुनाई से नज़रें उठाकर कहा, 'यह क्या है, वरुण? ... तुमने मेरी गिनती में खलल डाल दिया। कौन सी पार्टी?'

'ओह,' वरुण ने कहा, 'मैं खुद से ही बातें कर रहा था, माँ। मेरे दोस्त, आप जानती ही हैं, पार्टी दे रहे हैं और इससे रेस-मीटिंग में बाधा आएगी।' वह राहत महसूस कर रहा था कि उसने अपनी बात को इतनी अच्छी तरह से छिपा लिया था।

श्रीमती रूपा मेहरा ने आखिरकार तय किया कि उन्हें आश्चर्य ही चाहिए, इसलिए उन्होंने इस मामले को आगे नहीं बढ़ाया। लेकिन अगले कुछ दिनों तक वह दबी हुई उत्सुकता में डूबी रहीं।

अपने जन्मदिन की सुबह उसने अपने सारे कार्ड खोले (जिनमें से लगभग दो-तिहाई पर गुलाब के चित्र बने थे) और लता, सविता, प्राण, अपर्णा और बच्चे को एक-एक करके पढ़कर सुनाया। (मीनाक्षी भाग निकलने में कामयाब हो गई थी।) फिर उसने आँखों में थकान की शिकायत की और लता से उन्हें दोबारा पढ़ने को कहा। पार्वती की ओर से भेजा गया कार्ड इस प्रकार था:

मेरी प्यारी रूपा,

आपके पिता और मैं आपको जन्मदिन की ढेरों खुशियाँ देते हैं और आशा करते हैं कि आप कलकत्ता में अच्छे से स्वस्थ हो रहे हैं। किशी भी आपको नए साल की अग्रिम शुभकामनाएँ देती है।

अत्यंत स्नेह के साथ,
पार्वती सेठ
‘और मुझे किस चीज से उबरना है?’ श्रीमती रूपा मेहरा ने पूछा। ‘नहीं, मैं नहीं चाहती कि इसे दोबारा पढ़ा जाए।’
शाम को अरुण काम से जल्दी निकल गया। उसने फ्लूरी की दुकान से मंगवाया हुआ केक और ढेर सारी पेस्ट्री और पैटीज़ लीं। एक चौराहे पर इंतज़ार करते हुए उसने देखा कि एक आदमी दर्जन भर गुलाब बेच रहा है। अरुण ने अपनी गाड़ी की खिड़की नीचे की और उससे कीमत पूछी। लेकिन उस आदमी ने जो कीमत बताई, वह इतनी चौंकाने वाली थी कि अरुण उस पर चिल्ला उठा और खिड़की ऊपर करने लगा। वह आदमी माफी मांगते हुए सिर हिला रहा था और फूलों को खिड़की के शीशे से सटा रहा था, फिर भी अरुण उसे घूरता रहा।
लेकिन अब जब गाड़ी चलने लगी थी, अरुण को फिर से अपनी माँ की याद आ गई और उसका मन हुआ कि वह ड्राइवर को गाड़ी रोकने के लिए कह दे। लेकिन नहीं! फूल बेचने वाले के पास वापस जाकर उससे मोलभाव करना असहनीय होता। वह बुरी तरह गुस्से में था और अब भी बहुत गुस्से में था।
उन्हें अपने पिता के एक सहकर्मी की याद आई, जो उनसे लगभग दस साल बड़े थे और सेवानिवृत्ति के तुरंत बाद गुस्से में आकर खुद को गोली मार ली थी। एक शाम उनके पुराने नौकर ने उनका पेय ऊपर लाया था, और ट्रे न होने के कारण वे भड़क उठे थे। उन्होंने नौकर पर चिल्लाया, अपनी पत्नी को बुलाया और उसे तुरंत नौकरी से निकालने को कहा। इस तरह की घटनाएँ पहले भी कई बार हो चुकी थीं, और उनकी पत्नी ने नौकर को नीचे जाने को कहा। फिर उन्होंने अपने पति से कहा कि वह सुबह नौकर से बात करेंगी, और इस बीच वे अपनी व्हिस्की पी लें। 'तुम्हें

सिर्फ अपने नौकरों की परवाह है,' उन्होंने अपनी पत्नी से कहा। वह नीचे गईं और अपनी आदत के अनुसार रेडियो चालू कर दिया।

कुछ मिनट बाद, गोली चलने की आवाज़ से वह चौंक गई। जैसे ही वह ऊपर गई, उसे एक और गोली चलने की आवाज़ सुनाई दी। उसने अपने पति को खून के तालाब में पड़ा पाया। पहली गोली सीधे उसके सिर पर लगी थी, जो कान को छूकर निकल गई थी। दूसरी गोली उसके गले को भेद गई थी।

मेहरा परिवार में किसी और को, जब उन्होंने यह चौंकाने वाली खबर सुनी, तो इसकी वजह समझ में नहीं आई, खासकर स्तब्ध श्रीमती रूपा मेहरा को, जो उस व्यक्ति को जानती थीं; लेकिन अरुण को लगा कि वह इसे अच्छी तरह समझता है। क्रोध का यही हाल होता है। कभी-कभी वह इतना क्रोधित हो जाता था कि उसका मन करता था कि वह खुद को या किसी और को मार डाले, और उसे इस बात की परवाह नहीं होती थी कि वह क्या कह रहा है या क्या कर रहा है।

अरुण ने एक बार फिर सोचा कि अगर उसके पिता जीवित होते तो उसका जीवन कैसा होता। उसने सोचा कि आज की तुलना में कहीं अधिक चिंतामुक्त होता—सबका आर्थिक सहारा होता, जैसा कि उसे अब करना पड़ रहा है; वरुण को किसी तरह नौकरी दिलवानी पड़ती, क्योंकि उसका आईएएस परीक्षा में उत्तीर्ण होना तय था; लता की शादी किसी योग्य व्यक्ति से हो जाती, इससे पहले कि माँ उसकी शादी इस हरीश से करवा देती।

अब तक वह घर पहुँच चुका था। उसने मिठाई को पीछे के रास्ते से रसोई में भिजवाया। फिर गुनगुनाते हुए उसने अपनी माँ का फिर से अभिवादन किया। उसकी आँखों में आँसू भर आए और उसने उसे गले लगा लिया। 'तुम मेरे लिए इतनी जल्दी वापस आ गए,' उसने कहा। उसने देखा कि

उसकी माँ ने अपनी खूबसूरत हल्के भूरे रंग की रेशमी साड़ी पहनी हुई थी, जिससे वह थोड़ा हैरान हुआ। लेकिन जब मेहमान आए, तो उसने बड़ी संतुष्टि भरी हैरानी और खुशी दिखाई।

‘और मैंने ठीक से कपड़े भी नहीं पहने हैं—मेरी साड़ी पूरी तरह से सिकुड़ गई है! ओह, आशा दीदी, आपका आना कितना अच्छा लगा—अरुण ने आपको आमंत्रित किया, यह कितना अच्छा लगा—और मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था, बिलकुल भी नहीं!’ उसने कहा।

संयोगवश, आशा दी अरुण की पुरानी प्रेमिकाओं में से एक की माँ थीं, और मीनाक्षी ने उन्हें यह बताने पर जोर दिया कि अरुण कितना घरेलू हो गया है। 'अरे, वह तो अपनी आधी शामें फर्श पर अपर्णा के साथ जिगसॉ पज़ल सुलझाते हुए बिताता है।'

सभी ने खूब आनंद उठाया। श्रीमती रूपा मेहरा ने अपने डॉक्टर की सलाह से कहीं अधिक चॉकलेट केक खाया। अरुण ने उन्हें बताया कि घर लौटते समय उसने उनके लिए कुछ गुलाब लाने की कोशिश की थी, लेकिन सफल नहीं हो पाया।

मेहमानों के चले जाने के बाद, श्रीमती रूपा मेहरा ने अपने उपहार खोलना शुरू किया। इसी बीच, अरुण ने मीनाक्षी से बस एक शब्द कहा और फूल बेचने वाले को फिर से ढूंढने के लिए अपनी ऑस्टिन कार में सवार होकर निकल गया।

लेकिन जब उसने अरुण और मीनाक्षी का उपहार खोला तो वह फूट-फूटकर रोने लगी। यह एक बहुत ही महंगा जापानी लाख का डिब्बा था, जो किसी ने मीनाक्षी को दिया था, और जिसे मीनाक्षी ने एक बार अपनी सास के सामने ही "बेहद बदसूरत" बताया था, लेकिन उसने कहा था कि "मैं इसे किसी को दे सकती हूँ।"

श्रीमती रूपा मेहरा ड्राइंग रूम से बाहर निकलकर अपने छोटे से बेडरूम में

अपने बिस्तर पर बैठी थीं और उनके चेहरे पर डरावने भाव थे।
'क्या बात है मां?' वरुण ने कहा।
'लेकिन ये डिब्बा बहुत सुंदर है, माँ,' सविता ने कहा।
'आप लाख का डिब्बा रख लीजिए, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता,' श्रीमती रूपा मेहरा सिसकते हुए बोलीं। 'मुझे इस बात की परवाह नहीं कि मेरे पास फूल हैं या नहीं, मैं जानती हूँ कि वह क्या महसूस कर रहा था, मेरे लिए उसके दिल में कितना प्यार था, आप जो चाहें कह लें, लेकिन मैं जानती हूँ। आप जो चाहें कह लें, अब आप सब चले जाइए, मैं अकेले रहना चाहती हूँ।'
वे अविश्वास भरी निगाहों से उसकी ओर देख रहे थे—ऐसा लग रहा था मानो गार्बो ने पुल मेला में शामिल होने का फैसला कर लिया हो।
'ओह, मां बेवजह नखरे कर रही हैं। अरुण उनके साथ मुझसे कहीं बेहतर व्यवहार करता है,' मीनाक्षी ने कहा।
'लेकिन, माँ—' लता ने कहा।
'तुम भी अब जाओ। मैं उसे जानती हूँ, वो अपने पिता जैसा है। अपने सारे गुस्से, नखरों, भड़कने और नखरेबाज़ी के बावजूद, उसका दिल बहुत बड़ा है। लेकिन मीनाक्षी, अपने सारे अंदाज़, धन्यवाद, विदाई, मनमोहक हँसी, लाख के डिब्बों और बल्लीगंज चटर्जी के बावजूद, किसी की परवाह नहीं करती। और मेरी तो बिलकुल भी नहीं।'
'हाँ, माँ—' मीनाक्षी ने कहा। 'अगर पहली बार में सफलता न मिले, तो रोओ, फिर से रोओ।'
असंभव! उसने मन ही मन सोचा और बेडरूम से बाहर निकल गई।
'लेकिन, माँ—' सविता ने अपने हाथों में डिब्बे को घुमाते हुए कहा।
श्रीमती रूपा मेहरा ने अपना सिर हिलाया।
धीरे-धीरे, असमंजस भरे चेहरों के साथ, उसके बच्चे बाहर निकल गए।

श्रीमती रूपा मेहरा फिर से रोने लगीं और उन्हें किसी बात का एहसास भी नहीं था। उन्हें कोई नहीं समझता था, उनके बच्चे भी नहीं, कोई भी नहीं, लता भी नहीं। वह चाहती थीं कि उनका अगला जन्मदिन कभी न आए। उनके पति, जिनसे वह इतना प्यार करती थीं, आखिर क्यों चले गए? अब कोई उन्हें वैसे गले नहीं लगाएगा जैसे कोई पुरुष किसी स्त्री को गले लगाता है, कोई उन्हें वैसे खुश नहीं करेगा जैसे कोई बच्चे को खुश करता है। उनके पति को मरे हुए आठ साल हो गए थे, और जल्द ही अठारह साल और फिर अट्ठाईस साल पूरे हो जाएंगे।

जवानी में वह ज़िंदगी में खूब मौज-मस्ती करना चाहती थी। लेकिन उसकी माँ का देहांत हो गया और उसे छोटे बच्चों की देखभाल करनी पड़ी। उसके पिता हमेशा से ही मुश्किल भरे स्वभाव के थे। उसने शादीशुदा ज़िंदगी के कुछ खुशहाल साल बिताए, फिर रघुबीर का देहांत हो गया। जीवन ने उस पर गहरा दबाव डाल दिया, एक विधवा के रूप में उस पर ढेरों ज़िम्मेदारियाँ आ गईं।

वह अपने दिवंगत पति के प्रति क्रोध से ग्रस्त थी, जो हर जन्मदिन पर उसके लिए लाल गुलाबों का एक गुच्छा लाया करता था, और भाग्य के प्रति, और भगवान के प्रति भी क्रोध से भरी हुई थी।

उसने कहा, इस दुनिया में न्याय कहाँ है, जब मुझे हर साल अपने जन्मदिन और शादी की सालगिरह अकेलेपन में मनानी पड़ती है, जिसे मेरे बच्चे भी नहीं समझ सकते? उसने प्रार्थना की, मुझे जल्द से जल्द इस भयानक दुनिया से ले जाओ। बस मुझे इस मूर्ख लता की शादी होते हुए और वरुण को नौकरी मिलते हुए देखने दो, और मेरे पहले पोते को देखने दो, फिर मैं खुशी से मर जाऊंगी।

16.3

लगभग एक घंटे ध्यान करने के बाद दीपांकर बगीचे में बनी अपनी कुटिया

से बाहर निकले। उन्होंने अपने जीवन के अगले कदम के बारे में निर्णय ले लिया था। यह निर्णय अटल था, जब तक कि वे अपना विचार न बदल लें।

बूढ़ा माली और उसका छोटा, सांवला, हंसमुख युवक गुलाबों के बीच काम कर रहे थे। दीपांकर उनसे बात करने के लिए रुका और उसे कुछ परेशान करने वाली शिकायतें सुनने को मिलीं। ड्राइवर का दस साल का बेटा फिर से तोड़फोड़ कर रहा था; उसने नौकरों के क्वार्टर को छिपाने वाली लता-ढकी बाड़ के पास खिल रहे कुछ गुलदाउदी के फूलों की कलियाँ काट दी थीं। दीपांकर, अपने अहिंसा और ध्यान के बावजूद, उस लड़के को थप्पड़ मारने को बेताब था। यह कितना व्यर्थ और मूर्खतापूर्ण था। लड़के के पिता से बात करने का कोई फायदा नहीं हुआ। ड्राइवर ने बस नाराज़गी दिखाई। असलियत यह थी कि घर में माँ का ही राज चलता था और वह लड़के को मनमानी करने देती थी।

कडल्स कर्कश स्वर में भौंकते हुए दीपांकर की ओर दौड़ा। दीपांकर का ध्यान कहीं और था, फिर भी उसने उसे एक छड़ी फेंक दी। कडल्स वापस उछल पड़ा और स्नेह की मांग करने लगा: वह एक अजीब कुत्ता था, कभी हिंसक तो कभी स्नेही। एक मैली-कुचैली मैना ने कडल्स पर झपटने की कोशिश की; कडल्स ने मानो इसे सहजता से सहन कर लिया।

'दादा, क्या मैं इसे सैर पर ले जा सकता हूँ?' तपन ने कहा, जो अभी-अभी बरामदे की सीढ़ियों से नीचे आया था। तपन, जैसा कि सर्दियों की छुट्टियों के लिए लौटने के बाद से हमेशा होता था, लंबी ट्रेन यात्रा के बाद सामान्य से भी ज़्यादा भ्रमित लग रहा था।

'जी हाँ, बिल्कुल। उसे पिलो के रास्ते से दूर रखो। . . . क्या हुआ तपन? तुम्हें लौटे हुए दो हफ्ते हो गए हैं, और तुम अब भी उदास लग रहे हो। मुझे पता है कि पिछले एक हफ्ते से तुम माँ और बाबा को "मैडम" और

“सर” नहीं कह रहे हो—’

तपन मुस्कुराया।

“लेकिन तुम अब भी सबसे दूर ही रहती हो। अगर तुम्हें समझ नहीं आ रहा कि क्या करो, तो बगीचे में आकर मेरी मदद करो, पर अपने कमरे में बैठकर कॉमिक्स मत पढ़ो। माँ कहती हैं कि उन्होंने तुमसे बात करने की कोशिश की, लेकिन तुम कहती हो कि कुछ नहीं हुआ, बस स्कूल छोड़ना चाहती हो और कभी वापस नहीं आना चाहती। अच्छा, क्यों? झील को क्या हुआ है? मुझे पता है कि पिछले कुछ महीनों से तुम्हें कई बार माइग्रेन हुआ है, और वो बहुत दर्दनाक होता है, लेकिन ऐसा कहीं भी हो सकता है।”

तपन ने कडल्स के मुलायम सफेद सिर पर मुट्ठी रगड़ते हुए कहा, 'कुछ नहीं। अलविदा, दादा। दोपहर के भोजन पर मिलते हैं।'

दीपांकर को जम्हाई आई। ध्यान करने से अक्सर उस पर यही असर होता था। 'तो क्या हुआ अगर तुम्हारी रिपोर्ट खराब आई है? पिछले सेमेस्टर की रिपोर्ट भी कुछ खास अच्छी नहीं थी, और तब तुम ऐसे बर्ताव नहीं कर रहे थे। तुमने तो अपने कलकत्ता वाले दोस्तों के साथ एक दिन भी नहीं बिताया है।'

'मेरी रिपोर्ट देखकर बाबा बहुत सख्त हो गए थे।'

न्यायमूर्ति चटर्जी की सौम्य फटकार का परिवार के लड़कों पर गहरा प्रभाव पड़ा। मीनाक्षी और कुकू के लिए तो यह बात बिलकुल सहज थी।

दीपांकर ने भौंहें चढ़ाईं। 'शायद आपको थोड़ा ध्यान करना चाहिए।'

तपन के चेहरे पर अरुचि के भाव फैल गए। उसने कहा, 'मैं कडल को सैर पर ले जा रहा हूँ। वह बेचैन लग रहा है।'

‘आप मुझसे बात कर रहे हैं,’ दीपांकर ने कहा। ‘मैं आपका अमित दा नहीं हूँ; आप मुझे बहाने बनाकर टाल नहीं सकते।’

‘माफ़ करना दादा। हाँ।’ तपन घबरा गया।
‘मेरे कमरे में आओ।’ दीपांकर कभी झील स्कूल में प्रीफेक्ट रह चुका था, और एक हद तक वह अधिकार का प्रयोग करना जानता था—हालांकि अब वह इसे एक तरह के स्वप्निल अंदाज में करता था।
'ठीक है।'
जैसे ही वे सीढ़ियों से ऊपर चढ़े, दीपांकर ने कहा:
‘और बहादुर के पसंदीदा व्यंजन भी आपको पसंद नहीं आते। कल वह कह रहा था कि आपने उस पर गुस्सा किया। वह एक बूढ़ा नौकर है।’
‘मुझे माफ करना।’ तपन सचमुच दुखी लग रहा था, और अब जब वह दीपांकर के कमरे में था, तो लगभग फँस गया था।
कमरे में कोई कुर्सी नहीं थी, बस एक पलंग, कई तरह की चटाइयाँ (जिनमें बौद्ध प्रार्थना की चटाइयाँ भी शामिल थीं), और कुकू द्वारा बनाई गई सुंदरबन के दलदलों की एक बड़ी पेंटिंग थी। एकमात्र किताबों की अलमारी में धार्मिक पुस्तकें, अर्थशास्त्र की कुछ पाठ्यपुस्तकें और एक लाल बांसुरी रखी थी—जिसे दीपांकर, जब मन करता, तो बहुत बेसुरा और जोश से बजाता था।
दीपांकर ने बीच में बैंगनी और पीले रंग के गोलाकार डिज़ाइन वाली एक वर्गाकार नीली कपड़े की चटाई की ओर इशारा करते हुए कहा, 'उस चटाई पर बैठ जाओ। अब ये क्या है? मुझे पता है कि इसका स्कूल से कुछ लेना-देना है, और ये रिपोर्ट तो नहीं है।'
तपन ने हताशा से कहा, 'कुछ नहीं है। दादाजी, मैं वहां से क्यों नहीं जा सकता? मुझे वहां रहना अच्छा नहीं लगता। अमित दा की तरह मैं कलकत्ता के सेंट जेवियर्स में क्यों नहीं दाखिला ले सकता? उन्हें तो झील जाना ही नहीं पड़ा।'
‘ठीक है, अगर आप चाहें तो—’ दीपांकर ने कंधे उचकाते हुए कहा।

उन्होंने याद किया कि अमित के सेंट जेवियर्स में अच्छी तरह से स्थापित हो जाने के बाद ही न्यायमूर्ति चटर्जी के कुछ सहयोगियों ने उन्हें झील स्कूल की सिफारिश की थी - वास्तव में इतनी दृढ़ता से कि उन्होंने अपने दूसरे बेटे को भी वहीं भेजने का फैसला किया। दीपांकर को वहां अच्छा लगा और उसने अपने माता-पिता की अपेक्षा से बेहतर प्रदर्शन किया; और इसलिए तपन ने भी उनका अनुसरण किया।

जब मैंने माँ को बताया कि मैं जाना चाहती हूँ, तो वह नाराज़ हो गईं और बोलीं कि मुझे बाबा से बात करनी चाहिए—लेकिन मैं बाबा से बात नहीं कर सकती। वह मुझसे कारण पूछेंगे। और मेरे पास कोई कारण नहीं है। मुझे बस इससे नफ़रत है, बस इतना ही। इसीलिए मुझे सिरदर्द होता है। इसके अलावा, मैं अयोग्य या ऐसी कोई बात नहीं हूँ।

'क्या तुम्हें घर की याद आ रही है?' दीपांकर ने पूछा।

'नहीं—मेरा मतलब है, मैं वास्तव में—' तपन ने अपना सिर हिलाया।

क्या कोई आपको धमकाने की कोशिश कर रहा है?

'मुझे अभी जाने दीजिए, दादा। मैं इसके बारे में बात नहीं करना चाहती।'

"अच्छा, अगर मैं तुम्हें अभी जाने दूं तो तुम मुझे कभी नहीं बताओगे। तो क्या बात है? तपन, मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूं, लेकिन तुम्हें मुझे बताना होगा कि क्या हुआ। मैं वादा करता हूं कि मैं किसी को नहीं बताऊंगा।"

तपन को रोते देख दीपांकर को बहुत दुख हुआ; और अब वह खुद पर क्रोधित होकर अपने आंसू पोंछ रहा था और अपने बड़े भाई को गुस्से से देख रहा था। तेरह साल की उम्र में रोना, वह जानता था, शर्म की बात होती है। दीपांकर ने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा; लेकिन तपन ने गुस्से से उसे झटक दिया। लेकिन धीरे-धीरे, अचानक हुई चीखों, लंबे मौन और सिसकियों के बीच, कहानी सामने आई, और यह दीपांकर के लिए

भी सुखद नहीं थी, जो कई साल पहले झील स्कूल जा चुका था और बहुत कुछ झेलने के लिए तैयार था।

तीन वरिष्ठ लड़कों का एक गिरोह तपन को तंग कर रहा था। उनका सरगना हॉकी कप्तान था, जो हाउस कैप्टन के अलावा हाउस का सबसे वरिष्ठ प्रीफेक्ट था। वह तपन के प्रति यौन रूप से आसक्त था और उसे हर रात घंटों तक लंबे बरामदे में कलाबाज़ी करने के लिए मजबूर करता था। उसका कहना था कि यह उसके स्टडी रूम में चार बार नग्न होकर कलाबाज़ी करने का विकल्प था। तपन जानता था कि वह क्या चाहता है और उसने मना कर दिया था। कभी-कभी उसे सभा में कलाबाज़ी करने के लिए मजबूर किया जाता था क्योंकि उसके जूतों पर धूल का एक काल्पनिक धब्बा होता था, कभी-कभी उसे झील (जिसके नाम पर स्कूल का नाम रखा गया था) के चारों ओर एक घंटे या उससे अधिक समय तक तब तक दौड़ाया जाता था जब तक कि वह लगभग गिर न जाए—सिर्फ प्रीफेक्ट की सनक के लिए। विरोध करना व्यर्थ था, क्योंकि अवज्ञा करने पर सज़ा मिलती थी। हाउस कैप्टन से बात करना भी बेकार था; सरगनाओं की एकजुटता से उसकी यातना और बढ़ जाती। घर के मुखिया से बात करना, जो अपने कुत्तों, खूबसूरत पत्नी और आरामदेह, शांत जीवन शैली के साथ एक मिलनसार लेकिन नासमझ व्यक्ति था, तपन को एक धूर्त व्यक्ति का लेबल लगा देता—और उसे उन लोगों द्वारा भी बहिष्कृत और सताया जाता जो अब उसके प्रति सहानुभूति रखते थे। और अक्सर उसके साथी भी उसकी शक्तिशाली प्रशंसक के जुनून के बारे में उसे चिढ़ाने से खुद को रोक नहीं पाते थे, और यह संकेत देते थे कि तपन चुपके से इसका आनंद लेता था।

तपन शारीरिक रूप से मजबूत था और अपनी रक्षा के लिए मुक्के या अपनी तीखी जुबान का इस्तेमाल करने के लिए हमेशा तैयार रहता था;

लेकिन छोटी-बड़ी क्रूरताओं के लगातार हमलों ने उसे तोड़ दिया था। वह इन सभी के संचयी बोझ और अपने अकेलेपन से कुचल गया था। सभा में गाए गए एक टैगोर गीत के अलावा उसे यह बताने वाला कोई नहीं था कि वह सही था, और इसी बात ने उसके अकेलेपन को और भी गहरा कर दिया था।

दीपांकर सुनते हुए गंभीर दिख रहा था; उसे इस व्यवस्था का अनुभव था और वह समझ गया था कि एक तेरह वर्षीय लड़का तीन सत्रह वर्षीय किशोरों के सामने कितनी दयनीय स्थिति में रह सकता है, जिन्हें एक क्रूर राज्य की पूर्ण शक्ति प्राप्त थी। लेकिन उसे आने वाली विपत्ति का कोई अंदाजा नहीं था; और तपन ने जब सबसे भयावह घटनाओं का वर्णन किया तो वह लगभग असंतुलित हो गया।

प्रीफेक्ट के गिरोह का एक रात्रिकालीन खेल उनके घर की छत के नीचे घूमने वाली सिवेट बिल्लियों का शिकार करना था। वे उनके सिर फोड़कर उनकी खाल उतार लेते थे, फिर रात के चौकीदार की मिलीभगत से उन्हें पकड़कर उनकी खाल और गंध ग्रंथियों के लिए बेच देते थे। चूंकि उन्हें पता चला कि तपन इन बिल्लियों से बहुत डरता है, इसलिए उन्हें उसे उन संदूकों को खोलने के लिए मजबूर करने में खास मजा आता था जिनमें मरी हुई बिल्लियां पड़ी होती थीं। वह आपा खो बैठता, वरिष्ठ लड़कों पर चिल्लाता हुआ दौड़ता और उन्हें मुक्कों से पीटता। उन्हें यह बहुत मजेदार लगता था, खासकर इसलिए क्योंकि वे उसी समय उसे छू भी सकते थे।

एक मामले में उन्होंने एक जीवित सिवेट बिल्ली का गला घोंट दिया, तपन को यह सब देखने के लिए मजबूर किया, एक लोहे की छड़ को गर्म किया और उससे उसका गला एक तरफ से दूसरी तरफ तक काट दिया। फिर उन्होंने उसके स्वरयंत्र के साथ खिलवाड़ किया।

दीपांकर लगभग स्तब्ध होकर अपने भाई को देखता रहा। तपन कांप रहा

था और उसे उल्टी आने जैसी बेचैनी हो रही थी।
'मुझे वहाँ से निकालो, दादा—मैं वहाँ एक और सत्र नहीं बिता सकता—मैं ट्रेन से कूद जाऊँगा, मैं आपको बता रहा हूँ—हर बार जब सुबह की घंटी बजती है तो मैं चाहता हूँ कि मैं मर जाऊँ।'
दीपांकर ने सिर हिलाया और अपना हाथ उसके कंधे पर रख दिया। इस बार उसने हाथ नहीं हटाया।
तपन ने इतनी नफरत से कहा, 'एक दिन मैं उसे मार डालूंगा,' कि दीपांकर कांप उठा। 'मैं उसका नाम कभी नहीं भूलूंगा, मैं उसका चेहरा कभी नहीं भूलूंगा। मैं उसके किए को कभी नहीं भूलूंगा। कभी नहीं।'
दीपांकर का मन अपने स्कूली दिनों की ओर लौट गया। कई अप्रिय घटनाएं हुई थीं, लेकिन इस मनोरोगी और लगातार क्रूरता ने उसे स्तब्ध कर दिया था।
'तुमने मुझे क्यों नहीं बताया—क्यों?—कि स्कूल ऐसा था?' तपन हांफते हुए बोला। उसकी आँखों में दुख और आरोप साफ झलक रहे थे।
दीपांकर ने कहा: 'लेकिन—लेकिन मेरे लिए स्कूल ऐसा नहीं था—कुल मिलाकर मेरे स्कूली दिन इतने बुरे नहीं थे। खाना खराब था, आमलेट तो छिपकली की लाश जैसे होते थे, लेकिन—' वह रुका, फिर बोला, 'मुझे माफ़ करना, तपन... मैं दूसरे हाउस में था, और खैर, समय बदलता है... लेकिन तुम्हारे उस हाउस मास्टर को तुरंत निकाल देना चाहिए। और उन लड़कों की बात करें तो— उन्हें—'
उसने बड़ी मुश्किल से खुद पर काबू पाया, फिर आगे बढ़ा:
'मेरे समय में भी गिरोह जूनियर लड़कों को आतंकित करते थे, लेकिन यह —' उसने अपना सिर हिलाया। 'क्या दूसरे लड़कों की हालत भी इतनी ही खराब है?'
'नहीं—' तपन ने कहा, फिर खुद को सुधारते हुए बोला। 'उसने पहले एक

दूसरे लड़के को परेशान किया था, लेकिन एक हफ्ते के इलाज के बाद वह लड़का मान गया और अपने अध्ययन कक्ष में चला गया।'

Dipankar nodded.

'ऐसा कब से चल रहा है?'

'एक साल से ज़्यादा हो गया है, लेकिन जब से उसे प्रीफेक्ट बनाया गया है, तब से हालात और भी बदतर हो गए हैं। पिछले दो कार्यकालों में—'

'आपने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?'

तपन चुप रहा। फिर अचानक वह जोश से भर उठा:

'दादा, मुझसे वादा कीजिए, कृपया मुझसे वादा कीजिए कि आप किसी और को नहीं बताएंगे।'

'मैं वादा करता हूँ,' दीपांकर ने कहा। उसकी मुट्ठियाँ भींची हुई थीं। 'नहीं, रुकिए; मुझे अमित दा को बताना होगा।'

'नहीं!'

तपन अमित का बहुत आदर करता था और वह यह बर्दाश्त नहीं कर सकता था कि अमित को उसके साथ हुए अपमान और अत्याचारों के बारे में पता चले।

'तपन, ये सब मुझ पर छोड़ दो,' दीपांकर ने कहा। 'हमें माँ और बाबा को बिना बताए तुम्हें स्कूल से निकालने के लिए मनाना होगा। मैं अकेले ये नहीं कर सकता। अमित दा और मैं मिलकर शायद कर पाएँ। मैं उन्हें बता दूँगा, लेकिन किसी और को नहीं।' उन्होंने तपन को दया, स्नेह और निराशा भरी नज़रों से देखा। 'ठीक है? सिर्फ़ अमित दा? किसी और को नहीं। मैं वादा करता हूँ।'

तपन ने सिर हिलाया और उठ खड़ा हुआ, फिर रोने लगा और दोबारा बैठ गया।

क्या आप अपना चेहरा धोना चाहते हैं?

तपन ने सिर हिलाया और बाथरूम जाने के लिए निकल गया।

16.4

अमित ने चिढ़कर कहा, 'मैं लिख रहा हूँ। चले जाओ।' उसने अपनी फोल्डिंग डेस्क से दीपांकर की ओर देखा और फिर नज़रें नीचे कर लीं।

‘दादा, अपनी प्रेरणा को कहो कि वह चली जाए और हमारे काम खत्म होने के बाद वापस आए।’

अमित ने भौंहें चढ़ाईं। दीपांकर शायद ही कभी इतना रूखा व्यवहार करता था। ज़रूर कोई बात है। लेकिन उसे महसूस हो रहा था कि उसकी प्रेरणा क्षीण हो रही है, और वह इससे खुश नहीं था।

“अरे, क्या बात है, दीपांकर? जैसे कुकू का दखल काफी नहीं था। वो मुझे हंस की किसी बेहद प्यारी बात के बारे में बताने आई थी। मुझे अब याद भी नहीं आ रहा कि क्या बात थी। पर उसे किसी को तो बताना ही था, और तुम अपनी झोपड़ी में थे। अच्छा, क्या बात है?”

‘पहले अच्छी खबर,’ दीपांकर ने चतुराई से कहा। ‘मैंने एक बैंक में नौकरी करने का फैसला किया है। इसलिए आपकी प्रेरणा आपसे मिलती रहेगी।’

अमित अपनी डेस्क से उछलकर खड़ा हो गया और अपने हाथों को पकड़ लिया।

‘तुम मजाक कर रहे हो!’

'हां। आज जब मैंने ध्यान किया तो सब कुछ मेरे लिए स्पष्ट हो गया। एकदम स्पष्ट। यह अटल है।'

अमित को इतनी राहत मिली कि उसने दीपांकर से कारण पूछना तक नहीं चाहा। वैसे भी, उसे पूरा यकीन था कि कारण अस्पष्ट और जटिल भाषा में ही होंगे।

और यह कब तक अपरिवर्तनीय रहेगा?

दीपांकर दुखी लग रहे थे।

अमित ने कहा, 'अच्छा, मुझे खेद है। और मुझे बताने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।' उसने भौंहें चढ़ाकर कलम का ढक्कन बंद किया। 'आप ये सब मेरे लिए तो नहीं कर रहे हैं? साहित्य की वेदी पर बलिदान?' अमित कुछ शर्मिंदा और आभारी सा लग रहा था।

'नहीं,' दीपांकर ने कहा। 'बिल्कुल नहीं।' लेकिन यह पूरी तरह सच नहीं था; अमित के जीवन पर उनके फैसले का असर उनके मन में काफी हद तक आ चुका था। 'लेकिन मैं आपसे तपन के बारे में बात करना चाहता हूँ। क्या आपको कोई आपत्ति है?'

नहीं, अब जब तुमने मुझे पहले ही घेर लिया है। वह इन दिनों बहुत खुश नहीं दिख रहा है।

'ओह, तो आपने ध्यान दिया?'

अपने उपन्यास के गहन लेखन में डूबे अमित, अपने पात्रों की भावनाओं के प्रति जितनी संवेदनशील थी, अपने परिवार की भावनाओं के प्रति उतनी ही असंवेदनशील थी। 'हाँ, मैंने देखा है। और माँ कहती है कि वह स्कूल छोड़ना चाहता है।'

'आप जानते हैं क्यों?'

'नहीं।'

'अच्छा, मैं इसी बारे में आपसे बात करना चाहता हूँ। क्या आपको बुरा लगेगा अगर मैं दरवाजा बंद कर दूं? कुकू—'

'कुकु किसी भी दरवाजे से आसानी से निकल सकती है; दरवाजे कुकु के लिए कोई बाधा नहीं हैं। लेकिन अगर आप चाहें तो निकल सकते हैं।'

दीपांकर ने दरवाजा बंद किया और खिड़की के पास एक कुर्सी पर बैठ गया।

उसने अमित को वही बताया जो तपन ने उसे बताया था। अमित सुनता रहा, बीच-बीच में सिर हिलाता रहा, और उसे बहुत बुरा लगा। पहले तो

वह भी मुश्किल से बोल पा रहा था।
अंत में उसने पूछा, 'तपन को यह सब कब से सहना पड़ रहा है?'
‘कम से कम एक साल।’
‘यह सब देखकर मेरा पेट खराब हो जाता है—क्या आपको यकीन है कि वह—मतलब—इसमें से कुछ बातों की कल्पना तो नहीं कर रहा है? ऐसा लगता है—’
‘वह कुछ भी कल्पना नहीं कर रहा है, दादा।’
‘वह स्कूल अधिकारियों के पास क्यों नहीं गया?’
‘यह कोई डे स्कूल नहीं है, दादा, लड़के उसकी जिंदगी को और भी बदतर बना देते—अगर आप इसकी कल्पना कर सकते हैं।’
‘यह बहुत भयानक है। यह सचमुच बहुत भयानक है। वह अब कहाँ है? क्या वह ठीक है?’
'मेरे कमरे में। या हो सकता है कि वह कडल्स के साथ टहलने गया हो।'
अमित ने दोहराया, 'क्या वह ठीक है?'
'हां,' दीपांकर ने कहा। 'लेकिन अगर उसे एक महीने में झील वापस जाना पड़ा तो वह ठीक नहीं रहेगा।'
अमित ने कहा, 'अजीब बात है। मुझे इस सब का जरा भी अंदाजा नहीं था। बिल्कुल भी नहीं। बेचारा तपन। उसने कभी कुछ बताया ही नहीं।'
‘अच्छा, दादाजी—’ दीपांकर ने कहा। ‘क्या सच में ये उसकी गलती है? उसे शायद लगेगा कि हम इस पर एक शेर बना देंगे। हमारे परिवार में कोई किसी से बात नहीं करता, हम बस एक-दूसरे से ज्ञान की बातें करते हैं।’
अमित ने सिर हिलाया।
क्या वह किसी दूसरे बोर्डिंग स्कूल में जाना चाहता है?
'मुझे ऐसा नहीं लगता। झील भी बाकी झीलों जितनी ही अच्छी या बुरी है; ये सभी झीलें या तो रूढ़िवादी लोगों को जन्म देती हैं या फिर दादागिरी

करने वालों को।'
अमित ने कहा, 'खैर, झील ने तुम्हें पाला-पोसा है।'
‘मैं सामान्य प्रवृत्ति की बात कर रही हूँ, दादा, अपरिवर्तनीय प्रभावों की नहीं। लेकिन कुछ करना हमारी ज़िम्मेदारी है। मेरा मतलब है हम दोनों की। अगर माँ को इन सब बातों का पता चला तो वो सदमे में चली जाएँगी। और तपन बाबा का सामना नहीं कर पाएगा अगर उसे लगा कि उसने सुन लिया है। जहाँ तक कुकू की बात है, उसके कभी-कभी अच्छे विचार होते हैं, लेकिन उस पर भरोसा करना मूर्खता होगी कि वह चुप रहेगी। और मीनाक्षी तो ज़ाहिर सी बात है, बात ही नहीं बनेगी: मेहरा परिवार को पल भर में पता चल जाएगा, और अरुण की माँ को आज जो पता है, वो कल पूरी दुनिया को पता चल जाएगा। तपन से बात करना ही बहुत मुश्किल था। और मैंने उससे वादा किया था कि मैं सिर्फ़ आपको ही बताऊँगी।’
और उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी?
दीपांकर एक पल के लिए हिचकिचाया। 'नहीं,' उसने कहा।
अमित ने अपनी कलम का ढक्कन फिर से खोला और अपनी लिखी हुई कविता पर एक छोटा सा गोला बनाया। "इस स्तर पर उसे कहीं और दाखिला मिलना मुश्किल नहीं होगा क्या?" उसने गोले को आंखें और दो बड़े कान बनाकर देखते हुए पूछा।
'नहीं, अगर आप सेंट जेवियर्स में किसी से बात करें तो ऐसा नहीं होगा,' दीपांकर ने जवाब दिया। 'यह आपका पुराना स्कूल है, और वे हमेशा आपको बताते रहते हैं कि उन्हें आप पर कितना गर्व है।'
अमित ने सोच-समझकर कहा, 'सच है। और मैंने इस साल की शुरुआत में वहाँ एक भाषण और कविता पाठ भी दिया था, जो मैं बहुत कम करता हूँ। तो मुझे लगता है कि मैं ऐसा कर सकता हूँ—लेकिन मैं क्या कारण

बताऊँगा? उसकी सेहत तो नहीं; आपने कहा था कि वह उस झील को तैरकर पार कर सकता है। उसके सिरदर्द? खैर, अगर वे यात्रा की वजह से हैं, तो शायद। वैसे भी, मैं जो भी सोचूँ, उसे अस्थायी रूप से किसी दूसरे स्कूल में दाखिला दिलवाने से माँ की एक संभावित आपत्ति तो दूर हो ही जाएगी। एक तरह से यह एक तयशुदा बात होगी।'

'खैर,' दीपांकर ने धीमी आवाज़ में कहा, 'जैसा कि बाबा कहते हैं, कोई भी काम तब तक पूरा नहीं होता जब तक वह हो न जाए।'

अमित को तपन की पीड़ा याद आ गई और वह अपनी कविता लिखना भूल गया।

उन्होंने कहा, 'मैं दोपहर के भोजन के बाद जाऊंगा। क्या कार को कुकू कर दिया गया है?'

'मुझें नहीं पता।'

'और हम मां को कैसे मनाएंगे?' अमित ने चिंतित और लगभग गंभीर दिखते हुए पूछा।

'यही तो समस्या है,' दीपांकर ने कहा। बैंक में नौकरी करने के उनके फैसले ने उन्हें लगभग एक घंटे तक हर मामले में काफी दृढ़ बना दिया था, लेकिन अब इसका असर कम हो रहा था। 'कलकत्ता में वह ऐसा क्या कर सकता है जो झील जैसे बोर्डिंग स्कूल में नहीं कर सकता? मुझे लगता है कि उसे अचानक खगोल विज्ञान में रुचि तो नहीं हो सकती, है ना, और वह छत पर लगे टेलीस्कोप के बिना रह ही न पाए। ज्ञान की प्यास, वगैरह। फिर तो उसे घर पर ही रहना होगा और डे स्कूल जाना होगा।'

अमित मुस्कुराया। 'मुझे नहीं लगता कि माँ को यह बात पसंद आएगी: एक कवि, एक संत और एक खगोलशास्त्री। माफ कीजिए, बैंकर-सह-संत।'

‘सिरदर्द?’
‘सिरदर्द?’ अमित ने पूछा। ‘ओह, मैं समझ गया, उसे माइग्रेन है। हाँ, ठीक है, इससे मदद मिलेगी, लेकिन—चलिए तपन के बारे में नहीं, बल्कि माँ के बारे में सोचने की कोशिश करते हैं…’
कुछ मिनट बाद, दीपांकर ने सुझाव दिया: 'बंगाली संस्कृति के बारे में क्या ख्याल है?'
‘बंगाली संस्कृति?’
‘हाँ, आपको पता है, झील स्कूल की गीत पुस्तिका में टैगोर का एक तुच्छ गीत है, और बंगाली सिखाने का कोई प्रावधान नहीं है, और—’
‘दीपांकर, तुम तो जीनियस हो।’
‘Yes,’ Dipankar agreed.
“बिल्कुल सही। तपन भारतीय संवेदनशीलता के दलदल में अपनी बंगाली आत्मा खो रहा है।” वह कुछ दिन पहले ही उसकी बंगाली भाषा को लेकर शिकायत कर रही थी। बेशक, एक बार कोशिश करके देखना चाहिए। लेकिन आप जानते हैं, मुझे नहीं लगता कि बात यहीं खत्म हो जाएगी। अगर झील में यही हाल है, तो हमें प्रधानाध्यापक से शिकायत करनी चाहिए, और ज़रूरत पड़ने पर इस मामले को और आगे बढ़ाना चाहिए।”
दीपांकर ने सिर हिलाया। ‘मुझे डर है कि अगर बाबा इसमें दखल देंगे तो ठीक यही होगा। और इस समय मुझे झील में हो रही क्रूरताओं को रोकने से ज़्यादा तपन की चिंता है। लेकिन दादा, तपन से बात कीजिए। उसके साथ थोड़ा समय बिताइए। वह आपका बहुत सम्मान करता है।’
अमित ने अपने छोटे भाई की अप्रत्यक्ष फटकार को स्वीकार कर लिया। कुछ क्षणों की चुप्पी के बाद उसने कहा, 'खैर, मैं हम दोनों से प्रभावित हूँ। हम एक बहुत ही व्यावहारिक टीम साबित होंगे। काम करने वाले और समस्याओं को सुलझाने वाले। कानून और अर्थशास्त्र का व्यापक

अनुभव। तुरंत समाधान: निडर, तत्काल और अचूक।'
दीपांकर ने उसकी बात काटते हुए कहा, 'दादा, मैं चाय के समय माँ से बात करूँगा। तपन को महीनों से यह सब सहना पड़ रहा है, उसे एक और दिन भी यह सब नहीं सहना चाहिए। अगर हम सब मिलकर—और मुझे उम्मीद है, माँ भी—एकजुट होकर बात करें, और तपन झील में इतना दुखी है, तो बाबा मान जाएँगे। वैसे भी, उन्हें तपन के कलकत्ता में होने से कोई आपत्ति नहीं होगी; जब वह दूर होता है तो उन्हें उसकी बहुत याद आती है। वह उनके बच्चों में इकलौता ऐसा बच्चा है जो कोई परेशानी नहीं है—सिर्फ़ उसकी रिपोर्ट कार्ड को छोड़कर।'
अमित ने सिर हिलाया। 'अच्छा, उसके ज़िम्मेदारी की उम्र तक पहुँचने का इंतज़ार करो, इससे पहले कि वह अपनी ही तरह की गैर-जिम्मेदारी दिखाए। अगर वह चटर्जी है, तो वह ऐसा ज़रूर करेगा।'

16.5

'लेकिन मुझे लगा कि आप उसे शंभू कहकर बुलाते थे,' श्रीमती चटर्जी ने अपने माली से कहा। वह उसके युवा सहायक की बात कर रही थीं जो शाम पांच बजे के कुछ देर बाद काम से छुट्टी लेकर गया था।
‘जी हां,’ बूढ़े आदमी ने सिर हिलाते हुए जवाब दिया। ‘मेमसाहिब, गुलदाउदी के बारे में—’
'लेकिन मैंने अभी-अभी आपको उसके जाने के बाद उसे तिरु कहते हुए सुना,' श्रीमती चटर्जी ने जोर देकर कहा। 'क्या वह शंभू है या तिरु? मुझे लगा उसका नाम शंभू था।'
जी हां, मेमसाहिब, यही है।
‘तो फिर तिरु क्या है?’
माली ने स्पष्टवादिता से आगे कहा, 'अब वह उस नाम, मेमसाहिब, का इस्तेमाल नहीं करता। वह पुलिस से भाग रहा है।'

श्रीमती चटर्जी आश्चर्यचकित रह गईं।

‘पुलिस?’

जी हां, मेमसाहिब। उन्होंने कुछ नहीं किया है। पुलिस ने उन्हें बेवजह परेशान करने का फैसला किया है। मुझे लगता है कि यह उनके राशन कार्ड से जुड़ा मामला है। हो सकता है कि राशन कार्ड पाने के लिए उन्हें कुछ गैरकानूनी काम करना पड़ा हो, क्योंकि वे विदेश से हैं।

श्रीमती चटर्जी ने पूछा, 'क्या वह बिहार या कहीं और से नहीं हैं?'

“हां, मेमसाहिब। या पूर्व प्रदेश। या शायद पूर्वी उत्तर प्रदेश भी। लगता है वो इसके बारे में बात करने से कतरा रहा है। पर अच्छा लड़का है, आप देख सकते हैं कि उसमें कोई बुराई नहीं है।” उसने कुदाल से उस क्यारी की ओर इशारा किया जिसमें तिरु निराई कर रहा था।

लेकिन यहाँ क्यों?

‘मेमसाहिब, उन्हें लगा कि जज का घर सबसे सुरक्षित होगा।’

श्रीमती चटर्जी इस तर्क को समझ नहीं पाईं। ‘लेकिन—’ उन्होंने कहना शुरू किया, फिर अपना विचार बदल दिया। ‘आप गुलदाउदी के बारे में क्या कह रहे थे?’

माली ड्राइवर के बेटे की करतूतों के बारे में बता रहा था, लेकिन श्रीमती चटर्जी बिना सुने सिर हिलाती रहीं। उन्होंने मन ही मन सोचा, "कितनी उलझन वाली बात है! मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं अपने पति को बताऊं या नहीं। अरे, दीपांकर तो है। मैं उससे पूछती हूं।" उन्होंने दीपांकर को इशारा किया।

दीपांकर वहां आया। उसने कुर्ता-पायजामा पहना हुआ था और वह काफी गंभीर दिख रहा था।

‘दीपांकर, कुछ असाधारण घटना घटी है,’ उसकी माँ ने कहा। ‘मुझे तुम्हारी सलाह चाहिए।’

‘और ये तो पेड़ों के साथ भी ऐसा ही करता है, मेमसाहिब,’ माली ने अपने साथी को पास आते देख कहा। ‘उसने सारे लीची तोड़ दिए, फिर अमरूद तोड़ दिए, फिर पीछे वाले पेड़ से सारे छोटे कटहल तोड़ दिए। मुझे बहुत गुस्सा आया। पेड़ का दर्द तो सिर्फ एक माली ही समझ सकता है। हम उसकी देखभाल करते हैं, उसे फलते-फूलते देखते हैं, और फिर ये राक्षस उन्हें डंडों और पत्थरों से तोड़ देता है। मैंने ये सब ड्राइवर को दिखाया और उसने क्या कहा? न गुस्सा, न थप्पड़, बस “बेटा, ऐसा नहीं करते।” अगर मेरा बच्चा उसकी बड़ी सफेद कार को नुकसान पहुंचा दे,’ माली ने ज़ोर से सिर हिलाते हुए कहा, ‘तो उसे कुछ महसूस होगा।’

‘जी हां, बहुत दुख की बात है,’ श्रीमती चटर्जी ने अस्पष्ट स्वर में कहा। ‘दीपांकर, प्यारे, क्या तुम्हें पता है कि बगीचे में काम करने वाला वह सांवला युवक पुलिस से भाग रहा है?’

‘ओह?’ दीपांकर ने दार्शनिक अंदाज में कहा।

लेकिन क्या आप परेशान नहीं हैं?

‘अभी नहीं। क्यों?’

'खैर, हम सभी की हत्या हमारे बिस्तरों में ही हो सकती है।'

उसने क्या किया है?

‘कुछ भी हो सकता है। माली का कहना है कि यह राशन कार्ड से जुड़ा मामला है। लेकिन उसे पक्का पता नहीं है। मुझे क्या करना चाहिए? अगर तुम्हारे पिता को पता चला कि हमने एक भगोड़े को पनाह दी है तो वे बहुत नाराज़ होंगे। और जैसा कि तुम जानती हो, वह बंगाल का भी नहीं है।’

‘खैर, ये शंभू तो अच्छा आदमी है—’

‘शंभू नहीं, तिरु। जाहिर तौर पर उन्हें इसी नाम से पुकारा जाता है।’

‘खैर, हमें बाबा को नाराज करने की जरूरत नहीं है—’

लेकिन एक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश—जिनके गुलदाउदी के फूलों पर एक वांछित अपराधी काम कर रहा हो—’

दीपांकर ने अपनी झोपड़ी से परे दूर क्यारी में खिले बड़े-बड़े सफेद गुलदाउदी के फूलों की ओर देखा—वे कुछ फूल जो मौसम और ड्राइवर के बेटे ने बचाए रखे थे। उन्होंने कहा, ‘मैं तो यही सलाह दूंगा कि कुछ न करें। तपन के झील छोड़ने के बाद बाबा के पास पहले से ही बहुत काम होगा।’

श्रीमती चटर्जी ने आगे कहा: 'बेशक, ऐसा नहीं है कि पुलिस हमेशा—क्या? आपने क्या कहा?'

और सेंट जेवियर्स में दाखिला लेना। यह एक समझदारी भरा फैसला है। और शायद, फिर, माँ, वह शांतिनिकेतन जा सके।

‘शांतिनिकेतन?’ श्रीमती चटर्जी समझ नहीं पा रही थीं कि इस पवित्र शब्द का इस मामले से क्या संबंध है। उनके मन में वृक्षों की छवि उभर आई—विशाल वृक्ष जिनके नीचे बैठकर उन्होंने अपने गुरुदेव, बंगाल की संस्कृति के उद्यान के सींचने वाले गुरुदेव से शिक्षा प्राप्त की थी।

‘बंगाल की मिट्टी से अलग होना ही उसे इतना दुखी कर रहा है। वह एक विखंडित आत्मा है, क्या आप नहीं देख सकतीं, माँ?’

श्रीमती चटर्जी ने बातचीत के गलत मोड़ पर जाते हुए कहा, 'अच्छा, उसके तो दो नाम हैं। लेकिन तपन और सेंट जेवियर्स के बारे में ये सब क्या है?'

दीपांकर भावुक हो गए। उनकी आवाज में एक शांत उदासी भर गई, उन्होंने कहा:

‘मैं तपन की बात कर रहा था, मागो। उसे झील की झील नहीं चाहिए, उसे तो “तुम्हारे गहरे तालाब, आधी रात के आकाश की तरह प्रेममय और शीतल” की याद आ रही है। इसीलिए वो इतना उदास है। इसीलिए

उसकी रिपोर्ट इतनी खराब आई हैं। और यही—और टैगोर के गीतों के लिए उसकी तड़प—कुकू और तुम्हारा शाम ढलते समय, गोमांस के समय, रवींद्रसंगीत गाना...' दीपांकर ने दृढ़ विश्वास के साथ कहा, क्योंकि उसने खुद को आश्वस्त कर लिया था। अब उसने जादुई शब्द दोहराए:

अंततः मेरी घर की याद इतनी प्रबल हो गई कि मैं उसका विरोध नहीं कर सका।

मैं नमन करता हूँ, मैं अपनी खूबसूरत मातृभूमि बंगाल को नमन करता हूँ!

तुम्हारी नदी-तटों को, तुम्हारी शीतलता और शांति प्रदान करने वाली हवाओं को;

तुम्हारे मैदान, जिनकी धूल को आकाश झुककर चूमता है;

आपके छायादार गाँव, जो छाया और शांति के आशियाने हैं;

आपके हरे-भरे आम के जंगल, जहाँ चरवाहे खेलते हैं;

तुम्हारे गहरे तालाब, आधी रात के आकाश की तरह प्रेमपूर्ण और शीतल;

आपकी दयालु स्त्रियाँ पानी लेकर घर लौट रही हैं;

जब मैं आपको माँ कहकर पुकारती हूँ तो मेरा मन काँप उठता है और मैं रोने लगती हूँ।

श्रीमती चटर्जी अपने बेटे के साथ उन शब्दों को दोहरा रही थीं। वे अत्यंत भावुक थीं। दीपांकर भी अत्यंत भावुक था।

(ऐसा नहीं है कि कलकत्ता में उपर्युक्त विशेषताओं में से कोई भी मौजूद थी।)

उन्होंने सीधे-सादे शब्दों में कहा, 'इसीलिए वह रोता है।'

श्रीमती चटर्जी ने कहा, 'लेकिन वह रो नहीं रहा था। बस गुस्से से घूर रहा था।'

'यह आपको और बाबा को दुख से बचाने के लिए है कि वह आपके

सामने नहीं रोते। लेकिन, माँ, मैं अपनी जान की कसम खाकर कहती हूँ कि वह आज रो रहे थे।'

'सच में, दीपांकर!' श्रीमती चटर्जी ने उनके उत्साह पर आश्चर्यचकित होते हुए कहा, हालांकि वह पूरी तरह से प्रसन्न नहीं थीं। फिर उन्हें तपन की याद आई, जिसकी बंगाली झील जाने के बाद सचमुच बिगड़ गई थी; और उसकी उदासी का ख्याल उनके मन में घर कर गया।

'लेकिन इस स्तर पर कौन सा स्कूल उसे स्वीकार करेगा?' उसने पूछा।

'अरे, वो बात?' दीपांकर ने मामूली आपत्ति को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा। 'मैं बताना भूल गया था कि अमित दा ने सेंट ज़ेवियर्स को उसे दाखिला देने के लिए मना लिया है। बस उसकी माँ की सहमति बाकी है... "माँ, जब मैं तुम्हें पुकारता हूँ तो मेरा दिल काँप उठता है और मैं रोने लगता हूँ,"' उसने फिर से मन ही मन बुदबुदाया।

'मां' शब्द सुनते ही श्रीमती चटर्जी, हालांकि वह एक अच्छी ब्रह्म पुरुष थीं, ने अपने आंसू पोंछ लिए।

उसके मन में एक ख्याल आया। 'लेकिन बाबा?' उसने कहा। वह अभी भी घटनाओं से अभिभूत थी—वास्तव में उसे यकीन नहीं था कि उसने सब कुछ समझ लिया है। 'यह सब इतना अचानक कैसे हो गया—और स्कूल की फीस—क्या वह सच में रो रहा था? और इससे उसकी पढ़ाई पर कोई असर नहीं पड़ेगा?'

दीपांकर ने एकतरफा बयान देते हुए कहा, 'अमित दा जरूरत पड़ने पर तपन को खुद कोचिंग देने के लिए तैयार हो गए हैं।' उन्होंने आगे कहा, 'कुकू उसे हर हफ्ते टैगोर का एक गीत सिखाएगा। और आप उसकी बंगाली लिखावट में सुधार कर सकते हैं।'

'और तुम?' उसकी माँ ने पूछा।

'मैं?' दीपांकर ने कहा। 'मैं? मेरे पास उसे कुछ भी सिखाने का समय नहीं

होगा, क्योंकि मैं अगले महीने से ग्रिंडलेज़ में काम करने जा रहा हूँ।'
उसकी मां ने हैरानी से उसकी ओर देखा, उसे यकीन करना मुश्किल हो रहा था कि उसने क्या सुना है।

16.6

बल्लीगंज स्थित घर में लंबी अंडाकार मेज पर सात चटर्जी और सात गैर-चटर्जी लोग रात के खाने के लिए बैठे थे।
सौभाग्य से, अमित और अरुण एक-दूसरे के बहुत करीब नहीं थे। दोनों के अपने-अपने विचार थे, अमित के कुछ विषयों पर, अरुण के सभी विषयों पर; और अमित घर पर होने के कारण उतना संकोची नहीं था जितना वह आम तौर पर होता। संगति भी वैसी ही थी जिसमें वह सहज महसूस करता था: सात गैर-चटर्जी लोग भी परिवार का हिस्सा थे—या बनने वाले थे। वे थे श्रीमती रूपा मेहरा और उनके चार बच्चे, प्राण (जो स्वस्थ दिख रहा था) और युवा जर्मन राजनयिक जो काकोली का सफल प्रेमी था। मीनाक्षी मेहरा, जब बल्लीगंज में होती थीं, तो चटर्जी परिवार में गिनी जाती थीं। बूढ़े श्री चटर्जी ने संदेश भेजा था कि वे उनके साथ नहीं आ पाएंगे।
'कुछ नहीं,' तपन ने कहा, जो अभी-अभी बगीचे से लौटा था। 'शायद वह बंधे रहने से ऊब गया है। क्यों न मैं उसे आज़ाद कर दूं? आस-पास और कोई मशरूम तो नहीं हैं।'
'क्या? और उससे फिर से हंस को कटवाएं?' श्रीमती चटर्जी ने कहा। 'नहीं, तपन।'
हंस गंभीर और थोड़ा हैरान दिख रहा था।
'मशरूम?' हंस ने पूछा। 'कृपया, इस संदर्भ में मशरूम क्या है?'
अमित ने कहा, 'तुम्हें पता होना ही चाहिए। जब से कडल्स ने तुम्हें काटा है, तुम हमारे लिए लगभग खून के भाई जैसे हो गए हो। या कहें लार के

भाई जैसे। मशरूम वो नौजवान है जो कुकू पर फिदा है। ये हर जगह उग आते हैं। कुछ पर फूल होते हैं, कुछ बस उदास और निराश रहते हैं। उससे शादी करते समय सावधान रहना। मुझे किसी भी मशरूम पर भरोसा नहीं है, चाहे वो खाने लायक हो या नहीं।'

'नहीं, बिलकुल नहीं,' हैंस ने कहा।

'कृष्णन कैसा है, कुकू?' मीनाक्षी ने पूछा, जो बातचीत को आंशिक रूप से ही सुन रही थी।

कुकू ने कहा, 'वह सब कुछ बहुत अच्छे से संभाल रहा है।' उसने दृढ़ता से आगे कहा, 'वह हमेशा मेरे दिल में एक खास जगह रखेगा।'

हंस का चेहरा और भी गंभीर दिख रहा था।

'अरे, तुम्हें इसकी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, हंस,' अमित ने कहा। 'इसका कोई खास मतलब नहीं है। कुकू के दिल में उसके लिए खास जगहें आरक्षित हैं।'

'ऐसा नहीं है,' कुकू ने कहा। 'और तुम्हें बोलने का कोई अधिकार नहीं है।'

'मैं?' अमित ने कहा।

'हां, तुम। तुम बिलकुल निर्दयी हो; हैंस को स्नेह के बारे में ये सब हल्की-फुल्की बातें बहुत बुरी लगती हैं। उसकी आत्मा बहुत पवित्र है।'

मीनाक्षी, जिसने कुछ ज्यादा ही शराब पी ली थी, धीरे से बोली:

'जिन सज्जनों को मैं आकर्षित करती हूँ,

वे हमेशा शुद्ध विचार रखते हैं।

हंस का चेहरा लाल हो गया।

'बकवास है, कुकू,' अमित ने कहा। 'हंस एक मजबूत आदमी है और कुछ भी सह सकता है। उसके हाथ मिलाने से ही पता चल जाता है।'

हंस सहम गया।

श्रीमती चटर्जी को हस्तक्षेप करना आवश्यक लगा। 'हंस, तुम्हें अमित की

बातों को गंभीरता से नहीं लेना चाहिए।'
‘हां,’ अमित ने सहमति जताते हुए कहा। ‘सिर्फ वही जो मैं लिखता हूं।’
जब उसकी लेखन प्रक्रिया खराब चल रही होती है तो वह इस तरह के मूड में आ जाता है। क्या आपको अपनी बहन से कोई खबर मिली है?
'नहीं, लेकिन मुझे किसी भी दिन उससे खबर मिलने की उम्मीद है,' हैंस ने कहा।
‘क्या तुम्हें लगता है कि हम एक आम परिवार हैं, हंस?’ मीनाक्षी ने कहा।
हंस ने विचार किया, फिर कूटनीतिक ढंग से उत्तर दिया: 'मैं कहूंगा कि आप एक असामान्य रूप से सामान्य परिवार हैं।'
‘क्या यह आम तौर पर असामान्य नहीं है?’ अमित ने सुझाव दिया।
'वह हमेशा ऐसा नहीं रहता,' कुकू ने लता से कहा।
‘क्या वो नहीं है?’ लता ने पूछा।
‘अरे नहीं—वह तो बहुत कम है—’
‘किस बात में कमी?’ अमित ने पूछा।
‘थोड़ा स्वार्थी बनो!’ कुकू ने चिढ़कर कहा। वह लता के सामने अमित का बचाव करने की कोशिश कर रही थी। लेकिन अमित शायद ऐसे मूड में था जैसे उसे किसी की भावनाओं की परवाह ही न हो।
अमित ने कहा, 'अगर मैं और अधिक निस्वार्थ बनने की कोशिश करूं, तो मैं उन सभी गुणों को खो दूंगा जो मुझे दूसरों को खुशी देने वाला बनाते हैं।'
श्रीमती रूपा मेहरा ने अमित की ओर देखा, मानो वह काफी अचंभित थीं।
अमित ने समझाया: 'मेरा मतलब था, माँ, कि मैं पूरी तरह से अपनी बहन के इशारों पर चलने वाला और आज्ञाकारी बन जाऊँगा, और फिर मेरे लेखन पर इसका बुरा असर पड़ेगा, और चूंकि मेरा लेखन उन लोगों से कहीं अधिक लोगों को आनंद देता है जिनसे मैं वास्तव में मिलता हूँ,

इसलिए ब्रह्मांड को कुल मिलाकर नुकसान होगा।'
यह बात श्रीमती रूपा मेहरा को बेहद अहंकारी लगी। उन्होंने पूछा, 'क्या आप इसे अपने आसपास के लोगों के साथ बुरा बर्ताव करने का बहाना बना सकते हैं?'
'ओह, हाँ, मुझे ऐसा ही लगता है,' अमित ने अपने तर्क की प्रबलता से प्रेरित होकर कहा। 'बिल्कुल, मैं अजीब समय पर भोजन की मांग करता हूँ, और मैं कभी भी समय पर पत्रों का जवाब नहीं देता। कभी-कभी, जब मैं प्रेरणा के चरम पर होता हूँ, तो मैं महीनों तक उनका जवाब नहीं देता।'
श्रीमती रूपा मेहरा के लिए यह घोर दुष्टता थी। पत्रों का उत्तर न देना अक्षम्य था। यदि यह रवैया फैल गया, तो उनके अनुसार सभ्य जीवन का अंत हो जाएगा। उन्होंने लता की ओर देखा, जो बातचीत का आनंद लेती हुई प्रतीत हो रही थी, हालांकि वह उसमें कोई योगदान नहीं दे रही थी।
श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'मुझे पूरा यकीन है कि मेरे बच्चे ऐसा कभी नहीं करेंगे। मेरे घर से दूर रहने पर भी मेरा वरुण मुझे हर हफ्ते पत्र लिखता है।' वह कुछ सोच में डूबी हुई लग रही थीं।
'मुझे पूरा यकीन है कि वे ऐसा नहीं करेंगे, माँ,' कुकू ने कहा। 'बात बस इतनी है कि हमने अमित को इतना लाड़-प्यार दिया है कि उसे लगता है कि वह कुछ भी कर सकता है और बच निकलेगा।'
'बिल्कुल सही,' अमित के पिता ने मेज के दूसरे छोर से कहा। 'सविता अभी मुझे बता रही थी कि उसे कानून कितना दिलचस्प लगता है और वह इसे अपनाने के लिए कितनी उत्सुक है। अगर आप योग्यता का कोई उपयोग ही न करें तो उसे हासिल करने का क्या फायदा?'
अमित चुप हो गया।
न्यायमूर्ति चटर्जी ने सहमति जताते हुए कहा, 'अब दीपांकर आखिरकार सेटल हो गया है। बैंक ही उसके लिए बिल्कुल सही जगह है।'

‘एक नदी का किनारा,’ कुकु ने बिना रुके कहा। ‘एक आदर्श के साथ जो उसे स्कॉच पिलाए और उसके विचारों को टाइप करे।’

न्यायमूर्ति चटर्जी ने कहा, 'बहुत मनोरंजक।' वे इन दिनों दीपांकर से काफी खुश थे।

‘और तुम, तपन, डॉक्टर बनने जा रहे हो, है ना?’ अमित ने व्यंग्यात्मक स्नेह के साथ कहा।

‘मुझे ऐसा नहीं लगता, दादा,’ तपन ने कहा, जो काफी खुश दिख रहा था।

‘दादा, क्या आपको लगता है कि मैंने सही फैसला लिया है?’ दीपांकर ने अनिश्चितता से पूछा। उसने अचानक ही यह निर्णय ले लिया था, क्योंकि उसे यह अहसास हुआ था कि संसार से दूर जाने से पहले संसार का हिस्सा बनना पड़ता है; लेकिन अब वह अपने विचार बदलने लगा था।

‘अच्छा—’ अमित ने अपने उपन्यास के भविष्य के बारे में सोचते हुए कहा।

'तो? क्या आपको यह पसंद आया?' दीपांकर ने अपनी पकी हुई सब्जियों से सजी खूबसूरत शंख के आकार की थाली को बड़ी एकाग्रता से देखते हुए कहा।

‘ओह, हाँ,’ अमित ने कहा। ‘लेकिन मैं तुम्हें यह नहीं बताने वाला कि मैं ऐसा करता हूँ।’

'ओह।'

अमित ने आगे कहा, ‘क्योंकि, ऐसा करने से आपको लगेगा कि आप पर दबाव डाला जा रहा है—और फिर आप अपना मन बदल लेंगे। लेकिन—अगर इससे कुछ मदद मिलती है—तो निश्चित रूप से आजकल आप कम पलकें झपका रहे हैं।’

न्यायमूर्ति चटर्जी ने मुस्कुराते हुए कहा, 'यह सच है। मुझे लगता है, हैंस,

आपको हमारा परिवार बहुत ही विचित्र लगता होगा।'
'ऐसा नहीं है,' हंस ने विनम्रता से कहा। 'यह कोई अजीब बात नहीं है।'
उसने और काकोली ने स्नेह भरी निगाहों का आदान-प्रदान किया।
न्यायमूर्ति चटर्जी ने आगे कहा, 'हमें उम्मीद है कि आप रात के खाने के बाद गाएंगे।'
'अहा। हाँ। शुबर्ट की कोई रचना?'
'वहाँ और कौन है?' काकोली ने कहा।
'अच्छा—' हैंस ने कहना शुरू किया।
काकोली ने उत्साह से कहा, 'मेरे लिए शुबर्ट के अलावा और कोई नहीं हो सकता। शुबर्ट ही मेरे जीवन के एकमात्र पुरुष हैं।'
टेबल के दूसरे छोर पर सविता वरुण से बात कर रही थी, जो उदास दिख रहा था। जैसे-जैसे उनकी बातचीत आगे बढ़ी, वह स्पष्ट रूप से खुश हो गया।
इसी बीच प्राण और अरुण राजनीति पर चर्चा कर रहे थे। अरुण प्राण को देश के भविष्य के बारे में उपदेश दे रहा था और बता रहा था कि भारत को तानाशाही की ज़रूरत है। प्राण की भावनाओं की परवाह किए बिना, वह बोलता रहा, 'इन बेवकूफ राजनेताओं में से किसी को भी नहीं। हम वेस्टमिंस्टर मॉडल की सरकार के लायक नहीं हैं। और न ही अंग्रेज। हम अब भी एक प्रगतिशील समाज हैं - जैसा कि हमारे धोती वाले हमें बताया करते रहते हैं।'
'हां, हमारे समाज में लोग हमेशा ही आगे बढ़ने की कोशिश करते रहते हैं,' मीनाक्षी ने आंखें ऊपर की ओर घुमाते हुए कहा।
चिड़िया खिलखिला उठी।
अरुण ने घूरकर धीमी आवाज में कहा, 'मीनाक्षी, जब तुम नशे में हो तो समझदारी भरी चर्चा करना नामुमकिन है।'

मीनाक्षी को अपने माता-पिता के घर में किसी बाहरी व्यक्ति द्वारा डांटे जाने की इतनी आदत नहीं थी कि वह चुप हो गई।

रात के खाने के बाद, जब सब लोग कॉफी के लिए ड्राइंग रूम में चले गए, तो श्रीमती चटर्जी अमित को एक तरफ ले गईं और उससे बोलीं: 'मीनाक्षी और कुकू सही कह रही हैं। वह अच्छी लड़की है, हालांकि वह ज्यादा बोलती नहीं है। मुझे लगता है कि वह तुम्हें पसंद आने लगेगी।'

अमित ने कहा, 'मैगो, तुम उसे फफूंद की तरह बता रहे हो। मुझे दिख रहा है कि कुकू और मीनाक्षी ने तुम्हें अपनी सोच से प्रभावित कर लिया है। खैर, मैं सिर्फ इसलिए उससे बात करना बंद नहीं करूंगा क्योंकि तुम चाहते हो। मैं दीपांकर नहीं हूं।'

'किसने कहा था कि तुम इतनी अच्छी हो, प्यारी?' श्रीमती चटर्जी ने कहा। 'काश तुम रात के खाने पर थोड़ा और विनम्र होतीं।'

अमित ने निर्भीक भाव से कहा, 'खैर, जिसे भी मैं पसंद करता हूं, उसे मुझे मेरे सर्वश्रेष्ठ रूप में देखने का मौका मिलना चाहिए।'

'मुझे नहीं लगता कि चीजों को देखने का यह कोई बहुत उपयोगी तरीका है, प्रिय।'

अमित ने स्वीकार किया, 'सच है। लेकिन चीजों को उपयोगी नजरिए से देखना भी शायद उपयोगी न हो। आप श्रीमती मेहरा से थोड़ी देर बात क्यों नहीं कर लेते? रात के खाने पर वह कुछ शांत थीं। उन्होंने अपनी मधुमेह का जिक्र तक नहीं किया। और मैं उनकी बेटी से बात करके अपने असभ्य व्यवहार के लिए माफी मांग लूंगा।'

'एक अच्छे लड़के की तरह।'

'एक अच्छे लड़के की तरह।'

16.7

अमित लता के पास गया, जो मीनाक्षी से बातें कर रही थी।

मीनाक्षी कह रही थी, 'कभी-कभी वह बिना किसी कारण के बेहद असभ्य व्यवहार करता है।'

‘मेरे बारे में बात कर रहे हो?’ अमित ने कहा।

लता ने कहा, 'नहीं, मेरे भाई के बारे में, उसके भाई के बारे में नहीं।'

‘आह,’ अमित ने कहा।

‘लेकिन यही बात निश्चित रूप से आप पर भी लागू होती है,’ मीनाक्षी ने आगे कहा। ‘आप या तो कुछ अजीब लिख रहे हैं या कुछ अजीब पढ़ रहे हैं। मैं बता सकती हूँ।’

“हाँ, आप सही कह रही हैं, मैंने ऐसा किया है। मैं लता को कुछ किताबें दिखाने के लिए बुलाने वाली थी, जो मैंने उसे उधार देने का वादा किया था लेकिन भेज नहीं पाई। लता, क्या अभी ठीक समय है? या हमें इन्हें किसी और समय देखना चाहिए?”

‘अरे नहीं, यह तो अच्छा समय है,’ लता ने कहा। ‘लेकिन वे गाना कब शुरू करेंगे?’

‘मुझे अगले पंद्रह मिनट तक सोचना नहीं चाहिए. . . . मुझे खेद है कि मैं रात के खाने पर इतना असभ्य था।’

'तुम थे?'

‘क्या मैं नहीं था? क्या आपको ऐसा नहीं लगता था? शायद मैं नहीं था। अब मुझे यकीन नहीं है।’

वे उस कमरे के पास से गुजर रहे थे जहाँ कडल्स को कैद किया गया था, और उसने गुर्राहट निकाली।

अमित ने कहा, 'उस कुत्ते के कर्ण का वर्ग कर देना चाहिए।'

‘क्या उसने सचमुच हैंस को काटा था?’

“ओह, हाँ, काफी ज़ोर से। जितना ज़ोर से उसने अरुण को काटा था, उससे भी ज़्यादा ज़ोर से। वैसे भी, गोरी त्वचा पर हर चीज़ ज़्यादा

भयानक दिखती है। लेकिन हंस ने इसे एक मर्द की तरह सहा। हमारे ससुराल वालों के लिए यह एक तरह की रस्म है।"

'ओह। क्या मैं काटने योग्य सीमा के भीतर हूँ?'

मुझे पक्का नहीं पता। क्या तुम चाहते हो कि कडल्स तुम्हें काटे?

ऊपर, लता ने अमित के कमरे को एक नए नजरिए से देखा। उसने सोचा, यही वह कमरा था जहाँ 'द फीवर बर्ड' लिखी गई थी; और जहाँ उसने उसके प्रति अपनी निष्ठा को व्यक्त किया होगा। कागज पिछली बार की तुलना में कहीं अधिक अव्यवस्थित ढंग से बिखरे पड़े थे। और उसके बिस्तर पर कपड़ों और किताबों के ढेर लगे थे।

'आधी रात की भीषण गर्मी में मैं कांप रही थी,' लता ने सोचा। उसने जोर से कहा: 'यहाँ से उस अमलतास का कैसा नजारा दिखता है?'

अमित ने खिड़की खोली। 'नज़ारा बहुत अच्छा नहीं है। इसके लिए दीपांकर का कमरा सबसे अच्छा है; वह उसकी झोपड़ी के ठीक ऊपर है। लेकिन उसकी परछाई देखने के लिए काफी है—'

चांदनी रात में घास पर हल्के से हिलाओ।

'जी हां।' अमित को आम तौर पर अपनी कविताएं सुनना पसंद नहीं था, लेकिन लता के साथ उसे कोई आपत्ति नहीं थी। 'खूब, खिड़की पर आओ, रात की हवा कितनी मीठी है।'

वे कुछ देर तक वहीं साथ खड़े रहे। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था और अमलतास के पेड़ की छाया बिल्कुल भी नहीं हिल रही थी। उसकी शाखाओं से गहरे रंग के पत्ते और लंबी, काली फली लटक रही थीं, लेकिन पीले फूलों के गुच्छे नहीं थे।

'क्या उस कविता को लिखने में आपको बहुत समय लगा?'

नहीं। मैंने इसे एक ही मसौदे में लिख डाला था जब उस चिड़िया की वजह से मेरी नींद उड़ गई थी। एक बार, मैंने सोलह बेचैन तिगुने शब्दों को गिना

जो बढ़ते-बढ़ते चरम पर पहुँच रहे थे। सोचिए: सोलह। इसने मुझे पागल कर दिया था। और फिर मैंने अगले कुछ दिनों में इसे तराशा। मैं सच में इसे देखना नहीं चाहती थी, और बहाने बनाती रही। मैं हमेशा ऐसा ही करती हूँ। मुझे लिखना पसंद नहीं है, आप जानते हैं।

'तुम—क्या—?' लता उसकी ओर मुड़ी। अमित कभी-कभी उसे सचमुच उलझन में डाल देता था। 'तो फिर तुम लिखते क्यों हो?' उसने पूछा।

अमित के चेहरे पर चिंता झलकने लगी। 'अपने पिता और दादा की तरह वकालत करने में जीवन बिताने से तो यह बेहतर है। और इसका मुख्य कारण यह है कि काम पूरा होने पर मुझे अक्सर अच्छा लगता है—बस काम करने की प्रक्रिया ही उबाऊ होती है। छोटी कविता में तो प्रेरणा मिलती ही है। लेकिन इस उपन्यास के लिए मुझे खुद को मजबूर करके डेस्क पर बैठना पड़ता है—काम करो, काम करो, मैकबेथ तो काम से जी चुराता है।'

लता को याद आया कि अमित ने उपन्यास की तुलना बरगद के पेड़ से की थी। अब यह तुलना कुछ भयावह सी लगने लगी। 'शायद आपने बहुत ही गंभीर विषय चुन लिया है,' उसने कहा।

'हाँ। और शायद बहुत हाल की बात है।' बंगाल का अकाल दस साल से भी कम समय पहले हुआ था, और उन दिनों को जी चुके हर किसी को उसकी यादें आज भी ताज़ा थीं। 'लेकिन खैर, अब मैं वापस नहीं जा सकता,' अमित ने आगे कहा। 'वापस लौटना उतना ही उबाऊ है जितना आगे जाना—मैं दो-तिहाई रास्ता तय कर चुका हूँ। दो-तिहाई, दो-तिहाई; ये बुखार वाले पक्षी। अब, वो किताबें जो मैंने आपको दिखाने का वादा किया था—' अमित अचानक रुक गया। 'आपकी मुस्कान बहुत प्यारी है।'

लता हंस पड़ी। 'यह अफसोस की बात है कि मैं इसे देख नहीं सकती।'

‘अरे नहीं,’ अमित ने कहा। ‘तुम्हारे लिए यह व्यर्थ होगा। तुम इसकी कद्र करना नहीं जान पाओगे—निश्चित रूप से उतना नहीं जितना मैं कर सकता हूँ।’

'तो आप मुस्कानों के पारखी हैं,' लता ने कहा।

‘बिल्कुल नहीं,’ अमित अचानक उदास होकर बोला। ‘तुम्हें पता है, कुकू सही कह रही है; मैं बहुत स्वार्थी हूँ। मैंने तुमसे तुम्हारे बारे में एक भी सवाल नहीं पूछा, हालाँकि मैं जानना चाहता हूँ कि किताब के लिए धन्यवाद देने के बाद से क्या हुआ है। तुम्हारा नाटक कैसा रहा? पढ़ाई कैसी रही? गायन कैसा रहा? और तुमने कहा था कि तुमने “मेरे प्रभाव में” एक कविता लिखी थी। तो वो कहाँ है?’

लता ने अपना पर्स खोलते हुए कहा, 'मैं इसे साथ ले आई हूँ। लेकिन कृपया इसे अभी मत पढ़िए। यह बहुत निराशाजनक है और इससे मुझे शर्मिंदगी ही होगी। ऐसा सिर्फ इसलिए है क्योंकि आप एक पेशेवर हैं—'

‘ठीक है,’ अमित ने सिर हिलाया। वह अचानक पूरी तरह से अवाक हो गया था। उसने लता के प्रति अपने स्नेह का कुछ इज़हार या संकेत करने की उम्मीद की थी, और उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे।

कुछ सेकंड बाद लता ने पूछा, 'क्या आपने हाल ही में कोई कविता लिखी है?' वे खिड़की से दूर हट चुके थे।

‘ये लो एक कविता,’ अमित ने कागजों के ढेर में से देखते हुए कहा। ‘एक ऐसी कविता जो मेरे दिल की बात नहीं बताती। ये एक पारिवारिक मित्र के बारे में है—हो सकता है कि पिछली बार जब आप कलकत्ता में थे, उस पार्टी में आपकी उनसे मुलाकात भी हुई हो। कुकू ने उन्हें अपनी पेंटिंग दिखाने के लिए ऊपर बुलाया, और तभी अचानक उन्हें कविता की पहली दो पंक्तियाँ सूझीं। वो थोड़े मोटे हैं। इसलिए उन्होंने वहाँ के कवि से एक कविता लिखवाई।’

लता ने कविता को देखा, जिसका शीर्षक था 'रोली पॉली':
रोली पॉली मिस्टर कोहली
धीरे-धीरे सीढ़ियों पर चढ़ते हुए।
पवित्र आत्मा श्रीमती कोहली
उसे अचानक पकड़ने की कोशिश करता है।
उंगली हिलाना, क्रोध करना, भौंहें चढ़ाना:
‘तुमने प्रार्थना क्यों नहीं की?’
इस उतार-चढ़ाव का क्या मतलब है?
सीढ़ियों में क्या जादू है?
श्री कोहली प्रोफेसर हैं।
हमेशा जटिल गणनाएँ करना।
हमलावर को हल्के ढंग से जवाब देता है।
'सिद्धांत सीढ़ियों पर ही आता है।'
‘यह सब बकवास है। यह जोड़-घटाव बंद करो।’
आओ और खा लो। तुम्हारा खाना ठंडा हो गया है।
‘अभी-अभी मैं आ रहा हूँ,’
उसके पति ने कहा, जो सोने के समान विनम्र है।
लता मुस्कुराए बिना नहीं रह सकी, हालाँकि उसे यह बहुत मूर्खतापूर्ण लगा। उसने पूछा, 'क्या उसकी पत्नी इतनी गुस्सैल है?'
‘अरे नहीं,’ अमित ने कहा, ‘यह तो बस काव्यात्मक स्वतंत्रता है। कवि अपनी सुविधा के अनुसार पत्नियों का निर्माण कर सकते हैं। कुकू को लगता है कि केवल पहले छंद में ही वास्तविक प्रभाव है, और उसने अपना दूसरा छंद बना लिया है, जो मेरे छंद से कहीं बेहतर है।’
‘क्या तुम्हें याद है?’ लता ने पूछा।
‘अच्छा—तुम्हें कुकु से इसे सुनाने के लिए कहना चाहिए।’

लता ने कहा, 'लगता है मैं कुछ समय तक ऐसा नहीं कर पाऊंगी। उसने खेलना शुरू कर दिया है।'
नीचे से पियानो की ध्वनि ऊपर की ओर तैरती हुई आई, और उसके पीछे-पीछे हैंस की भारी आवाज सुनाई दी।
अमित ने कहा, 'हमें भी उनके साथ जाकर शामिल हो जाना चाहिए। धीरे-धीरे सीढ़ियों से नीचे उतरना होगा।'
'ठीक है।'
कडल्स की ओर से कोई आवाज़ नहीं आई। शायद संगीत या नींद ने उसे सुला दिया था। वे ड्राइंग रूम में दाखिल हुए। श्रीमती रूपा मेहरा ने उनके प्रवेश को देखकर भौंहें चढ़ा लीं।
कुछ गाने गाने के बाद, हैंस और कुकू ने झुककर अभिवादन किया और दर्शकों ने तालियाँ बजाईं।
अमित ने कहा, 'मैं आपको किताबें दिखाना भूल गया था।'
लता ने कहा, 'मैं भी उनके बारे में भूल गई थी।'
खैर, आप यहाँ कुछ समय के लिए ही हैं। काश आप 24 तारीख को आ जाते, जैसा कि आपने योजना बनाई थी। मैं आपको सेंट पॉल कैथेड्रल में मध्यरात्रि की प्रार्थना में ले जा सकता था। यह लगभग इंग्लैंड में वापस आने जैसा है - बेचैनी भरा।
'मेरे दादाजी की तबीयत कुछ ठीक नहीं थी, इसलिए हमने आने का कार्यक्रम स्थगित कर दिया।'
‘अच्छा, लता, क्या तुम कल कुछ कर रही हो? मैंने तुमसे बॉटनिकल गार्डन दिखाने का वादा किया था। अगर तुम खाली हो तो मेरे साथ बरगद का पेड़ देखने चलो—’
‘मुझे नहीं लगता कि मैं कुछ कर रही हूँ—’ लता ने कहना शुरू किया।
‘प्रहापोरे।’ यह उनके पीछे से श्रीमती रूपा मेहरा की आवाज थी।

‘माँ?’ लता ने कहा।

‘प्रहापुर। वह कल पूरे परिवार के साथ प्रहापुर जा रही है,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने अमित से कहा। फिर लता की ओर मुड़कर उन्होंने कहा: ‘तुम इतनी लापरवाह कैसे हो सकती हो? हरेश ने हमारे लिए प्रहापुर में दोपहर के भोजन का आयोजन किया है, और तुम बॉटनिकल गार्डन घूमने की सोच रही हो।’

‘मैं भूल गया था, माँ—मुझे तारीख याद नहीं आ रही थी। मैं किसी और चीज़ के बारे में सोच रहा था।’

‘भूल गए!’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। ‘भूल गए। अगली बार तुम अपना नाम भी भूल जाओगे।’

16.8

हरेश को नौकरी मिलने के बाद से, बल्कि चेयरमैन के बंगले में अरुण और मीनाक्षी से मुलाकात के बाद से ही, प्राहापुर में बहुत कुछ बदल चुका था। वह अपने काम में पूरी तरह से जुट गया था और चेक लोगों की तरह ही, वह भी दिल से प्राहापुर का निवासी बन गया था—हालाँकि उनके बीच अब भी कोई खास मेलजोल नहीं था।

उन्होंने अपने खोए हुए प्रबंधकीय पद पर शोक नहीं जताया क्योंकि वे पीछे मुड़कर देखने वाले व्यक्ति नहीं थे, और वैसे भी करने के लिए बहुत काम था—और उन्हें सबसे ज़्यादा पसंद था लड़ाइयाँ लड़ना, चुनौतियों पर विजय पाना। एक फोरमैन के रूप में उन्हें गुडइयर वेल्डेड लाइन का प्रभार सौंपा गया था, जो कारखाने की सबसे प्रतिष्ठित लाइन थी; हेवेल, कुरिल्ला और अन्य लोग जानते थे कि वे अपने कुशल हाथों से इस असाधारण जूते को बिल्कुल शुरुआत से बना सकते हैं, और इसलिए उत्पादन और गुणवत्ता नियंत्रण में आने वाली अधिकांश समस्याओं का निदान करने में सक्षम होंगे।

लेकिन हरीश को लगभग तुरंत ही समस्याओं का सामना करना पड़ा। सीएलएफसी में अपने अनुभव के बाद, वह आम तौर पर बंगालियों के प्रति मित्रवत नहीं थे, और अब उन्होंने जल्दी ही यह निष्कर्ष निकाल लिया कि बंगाली कामगार बंगाली मालिकों से भी बदतर थे। उनका नारा, जिसे वे छिपाते नहीं थे, था, 'चकरी चाय, काज चाय ना': हमें रोजगार चाहिए, काम नहीं। उनकी दैनिक उत्पादन क्षमता के मुकाबले बहुत कम थी, और इसके पीछे एक तर्क था। वे प्रतिदिन लगभग 200 जोड़ी का कम कार्य मानक स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे ताकि उन्हें इससे अधिक प्रोत्साहन राशि मिल सके—या कम से कम चाय, गपशप, समोसे, पान और तंबाकू का आनंद लेने का समय मिल सके।

उन्हें इस बात का भी डर था, जो काफी हद तक जायज था, कि कहीं वे अत्यधिक काम करके अपनी नौकरी न गंवा बैठें।

हरेश उत्पादन लाइन के पास अपनी मेज पर बैठा रहा और कुछ हफ्तों तक इंतज़ार करता रहा। उसने देखा कि पूरी लाइन पर काम करने वाले मजदूर अक्सर बेकार बैठे रहते थे, क्योंकि कोई न कोई मशीन ठीक से काम नहीं कर रही होती थी—या कम से कम वे ऐसा ही कहते थे। एक फोरमैन होने के नाते, उसे यह अधिकार था कि जब वे कुछ न कर रहे हों, तब भी वह उनसे कन्वेयर बेल्ट और मशीनों की सफाई करवाए। लेकिन मशीनों के चमकने के बाद, मजदूर बेपरवाही से उसके पास से गुजरते और समूहों में खड़े होकर बातें करने लगते—जबकि प्राहा और उत्पादन दोनों प्रभावित होते रहे। इससे हरेश बहुत परेशान हो गया।

इसके अलावा, लगभग सभी कामगार बंगाली थे और बंगाली बोलते थे, और उसे बंगाली ज़्यादा समझ नहीं आती थी। हालाँकि, जब उसका अपमान किया जाता था, तो वह ज़रूर समझ जाता था, क्योंकि 'सला' जैसे अपशब्द हिंदी और बंगाली दोनों में आम हैं। अपने गुस्सैल स्वभाव के

बावजूद, उसने इस बात को मुद्दा न बनाने का फैसला किया।
एक दिन उन्होंने निश्चय किया कि हताशा में दांत पीसने और मशीनरी विभाग से किसी को बुलाकर खराब मशीन की मरम्मत करवाने या उसे फोर्कलिफ्ट से बाहर निकलवाने के बजाय, वे स्वयं मशीनरी विभाग का दौरा करेंगे। यहीं से गुडइयर वेल्डेड लाइन की लड़ाई की शुरुआत हुई, जो कई मोर्चों पर लड़ी गई, जिसमें चेक लोगों सहित विभिन्न स्तरों के विरोध का सामना करना पड़ा।
मैकेनिक हरेश को देखकर बहुत खुश हुए। आम तौर पर फोरमैन उन्हें अपनी मशीनें ठीक करने के लिए पर्ची भेजते थे। अब एक फोरमैन, और वो भी वही मशहूर फोरमैन जो चेक परिसर के सफेद गेट के अंदर रहता था, उनसे मिलने आता था, बराबरी का व्यवहार करता था और उनके साथ तंबाकू भी पीता था। वो उनके साथ स्टूल पर बैठकर बातें करता, मज़ाक करता, अपने अनुभव साझा करता और मशीनों के अंदर देखता, चाहे उसके हाथ ग्रीस से गंदे हो जाएं। और वो उनकी उम्र और काबिलियत का सम्मान करते हुए उन्हें 'दादा' कहकर पुकारता था।
पहली बार उन्हें यह एहसास हुआ कि वे उत्पादन की मुख्यधारा का हिस्सा हैं, न कि प्राहा के किसी सुनसान कोने में स्थित एक मामूली सहायक इकाई। अधिकांश कुशल मैकेनिक मुसलमान थे और उर्दू बोलते थे, इसलिए हरेश को भाषा की कोई समस्या नहीं हुई। वह अच्छे कपड़े पहने हुए था, उसने अपने हिसाब से एक खास तरह का काम करने वाला ओवरऑल पहना हुआ था - बिना आस्तीन और बिना कॉलर वाला, जो घुटने से नीचे तक ही आता था - ताकि गर्मी से बचाव हो सके और उसकी क्रीम रंग की रेशमी कमीज का सामने का हिस्सा (कम से कम) ढका रहे - शायद कारखाने में यह एक दिखावटी चीज़ थी। लेकिन जब वह उनसे बात कर रहा था तो उसमें कोई घमंड नहीं था, और इससे वे खुश हुए।

अपने काम के अनुभव को आपस में बाँटने की खुशी से हरेश को मशीनों की कार्यप्रणाली में रुचि हो गई: वे कैसे काम करती हैं, उन्हें अच्छी हालत में कैसे रखा जा सकता है, और वह उनके प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए छोटे-मोटे बदलाव कैसे कर सकता है।

मैकेनिकों ने हंसते हुए उससे कहा कि उसकी कन्वेयर बेल्ट पर काम करने वाले मजदूर उसे नाचने पर मजबूर कर रहे हैं। दस में से नौ बार तो मशीनों में कोई खराबी होती ही नहीं थी।

इससे हरेश को पूरी तरह आश्चर्य नहीं हुआ। लेकिन उसने उनसे पूछा कि वह इसके बारे में क्या कर सकता है? चूंकि अब तक वे दोस्त बन चुके थे, इसलिए उन्होंने कहा कि अगर सच में कुछ गड़बड़ होगी तो वे उसे बता देंगे—और ऐसी स्थिति में वे सबसे पहले उसकी मशीनों की मरम्मत करेंगे।

अब चूंकि मशीनें कम समय के लिए बंद रहती थीं, उत्पादन प्रतिदिन 180 जोड़ी से बढ़कर लगभग 250 हो गया, लेकिन यह अभी भी 600 की संभावित संख्या या हरेश के 400 के लक्ष्य से बहुत कम था। यहां तक कि 400 जोड़ी का उत्पादन भी उनके बॉस को आश्चर्यचकित कर देता; हरेश को पूरा विश्वास था कि यह संभव है, और वह इसे कर दिखाने में सक्षम व्यक्ति हैं।

लेकिन मजदूर 250 जोड़ी काम से बिल्कुल भी खुश नहीं थे और उन्होंने कन्वेयर बेल्ट को रोकने का एक नया तरीका खोज निकाला। पुरुषों को शौच के लिए बेल्ट से पाँच मिनट के लिए उतरने की अनुमति दी गई। अब वे बारी-बारी से शौच करते थे और व्यवस्थित तरीके से बाथरूम जाते थे—जिससे कन्वेयर बेल्ट कभी-कभी आधे घंटे के लिए रुक जाती थी। इस समय तक, हरेश को पता चल गया था कि गिरोह के सरगना कौन थे—वे आमतौर पर सबसे आरामदायक काम करने वाले लोग थे। अपने गुस्सैल

स्वभाव के बावजूद, उसने उनके प्रति कोई अभद्र व्यवहार नहीं किया, लेकिन एक स्पष्ट रेखा खींच दी गई थी और दोनों पक्ष एक-दूसरे की ताकत का आकलन कर रहे थे। नौकरी शुरू करने के कुछ महीनों बाद, जब उत्पादन घटकर 160 रह गया, तो हरेश ने फैसला किया कि अब अपनी चाल चलने का समय आ गया है।

एक सुबह उन्होंने मजदूरों को बैठक में बुलाया और हिंदी और टूटी-फूटी बंगाली के मिश्रण में उन्हें वह बात समझाई जो पिछले कुछ महीनों से उनके भीतर सुलग रही थी।

'मैं आपको सिद्धांत और इन मशीनों के साथ काम करने के अनुभव दोनों के आधार पर बता सकता हूं कि उत्पादन प्रतिदिन 400 जोड़ी से कम नहीं होना चाहिए। मैं इस उत्पादन उत्पादन से यही देखना चाहता हूं।'

'अरे?' जूतों पर तलवे चिपकाने वाले आदमी ने कहा—जो कि सबसे आसान काम था—'कृपया हमें दिखाइए, महोदय।' और उसने अपने बाईं ओर बैठे ऑपरेटर को इशारा किया—बिहार का एक हट्टा-कट्टा आदमी जो सबसे कठिन काम करता था, यानी जूते के तले में वेल्ट की सिलाई करना।

'जी हाँ, हमें दिखाइए, महोदय,' सोल-पेस्टर से प्रेरणा लेकर कई अन्य कामगारों ने कहा। 'हमें दिखाइए कि यह किया जा सकता है।'

'खुद ?'

'और कैसे, महोदय?'

हरेश कुछ देर तक गुस्से से उबलता रहा, फिर सोचने लगा कि ऐसे किसी भी प्रदर्शन से पहले उसे यह सुनिश्चित करना होगा कि मजदूर उत्पादन बढ़ाने से बचने की कोशिश न करें। उसने गिरोह के कुछ सरगनाओं को बुलाया और कहा:

'उत्पादकता के खिलाफ आपकी क्या समस्या है? क्या आपको सचमुच

डर है कि उत्पादन बढ़ाने पर आपको निकाल दिया जाएगा?'
उनमें से एक मुस्कुराया और बोला: "'उत्पादकता' एक ऐसा शब्द है जिसे प्रबंधन बहुत पसंद करता है। हमें यह शब्द इतना पसंद नहीं है। क्या आप जानते हैं कि पिछले साल श्रम कानून लागू होने से पहले, नोवाक कभी-कभी लोगों को अपने कार्यालय में बुलाकर उन्हें बताता था कि उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया है और बस उनके हाजिरी कार्ड फाड़ देता था? बात खत्म। और उसका कारण बहुत सीधा-सादा होता था: "हम कम लोगों के साथ भी वही काम कर सकते हैं। हमें अब आपकी ज़रूरत नहीं है।"
'मेरे समय से बहुत पहले हुई घटनाओं के बारे में बात मत करो,' हरेश ने अधीरता से कहा। 'अब आपके पास नए श्रम कानून हैं, और आप अभी भी जानबूझकर उत्पादन कम कर रहे हैं।'
'विश्वास कायम करने में समय लगेगा,' सोल-पेस्टर ने दार्शनिक और चिड़चिड़े अंदाज में कहा।
'अच्छा, आपको अधिक उत्पादन करने के लिए क्या प्रेरित करेगा?' हरेश ने पूछा।
'आह।' उस व्यक्ति ने अपने साथी ऑपरेटरों की ओर देखा।
काफी अप्रत्यक्ष चर्चा के बाद, हरेश इस भावना के साथ बैठक से बाहर आया कि यदि श्रमिकों को दो आश्वासन मिल जाएं - कि किसी को भी नौकरी से नहीं निकाला जाएगा और उन्हें वर्तमान कमाई से काफी अधिक पैसा मिलेगा - तो वे उत्पादन बढ़ाने के लिए अनिच्छुक नहीं होंगे।
इसके बाद वह अपने पुराने प्रतिद्वंद्वी, कार्मिक विभाग के चालाक प्रमुख नोवाक से मिलने गया। उसने पूछा कि क्या उसकी लाइन के कामगारों को उत्पादन बढ़ाकर 400 करने पर उच्च श्रेणी—और इस प्रकार अधिक आय—प्राप्त करना संभव होगा? नोवाक ने उसे ठंडे लहजे में देखा और

कहा, 'प्राहा किसी विशेष लाइन के लिए श्रेणी नहीं बढ़ा सकता।'
'क्यों नहीं?' हरेश ने पूछा।
इससे बाकी दस हजार मजदूरों में असंतोष पैदा होगा। ऐसा नहीं किया जा सकता।
हरेश को प्राहा की जटिल, पवित्र पदानुक्रम प्रणाली के बारे में पता चला था— यह सरकारी सेवा से भी बदतर थी: कामगारों के लिए अठारह अलग-अलग श्रेणियां थीं। लेकिन उसे लगा कि ब्रह्मांड को अस्त-व्यस्त किए बिना, इसमें थोड़ा-बहुत बदलाव किया जा सकता है।
उन्होंने खंडेलवाल को एक पत्र लिखकर अपनी योजना समझाई और उनकी स्वीकृति मांगी। योजना में चार बिंदु थे। श्रमिक गुडइयर वेल्डेड लाइन पर प्रतिदिन कम से कम 400 जोड़ी जूते बनाएंगे। प्रबंधन इन श्रमिकों का ग्रेड एक स्तर ऊपर करेगा और इस प्रकार उनका साप्ताहिक वेतन बढ़ाएगा। 400 जोड़ी जूतों से अधिक उत्पादन होने पर, अतिरिक्त उत्पादन के अनुपात में प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। और किसी को भी बर्खास्त करने के बजाय, उन स्थानों पर कुछ नए श्रमिकों को नियुक्त किया जाएगा जहां 400 जोड़ी जूतों का उत्पादन करना वास्तव में कठिन था।
लगभग एक महीने पहले, खंडेलवाल ने एक श्रम सुलह मामले को सुलझाने में मदद के लिए हरेश को दो दिवसीय कानपुर भेजा था। घाटे में चल रहे डिपो का आकार कम किया जाना था और कुछ कर्मचारियों की छंटनी होनी थी। हालांकि प्राहा नई श्रम नियमावली का सख्ती से पालन कर रही थी, फिर भी उन्हें परेशानी का सामना करना पड़ा; सभी कर्मचारी हड़ताल पर चले गए थे। खंडेलवाल जानते थे कि खन्ना सीएलएफसी में काम कर चुके थे और कानपुर के मामलों से परिचित थे। इसलिए उन्होंने उन्हें मामले को सुलझाने में मदद के लिए भेजा; और वे अंतिम परिणाम

से प्रसन्न थे। हरेश ने छंटनी किए जाने वाले कर्मचारियों से कहा कि उन्हें प्राहा का प्रस्ताव स्वीकार कर लेना चाहिए। उन्होंने संक्षेप में कहा: 'तुम मूर्ख हो, तुम्हें समझौते के रूप में अच्छा पैसा मिल रहा है; इसे स्वीकार करो और अपना जीवन फिर से शुरू करो। कोई तुम्हें धोखा देने की कोशिश नहीं कर रहा है।' सीएलएफसी के कर्मचारी, जो हरेश पर भरोसा करते थे और उनके जाने से दुखी थे, ने प्राहा डिपो के कर्मचारियों से बात की; और मामला सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझ गया।

हरेश जानता था कि उसे चेयरमैन से बात करने का मौका मिल गया है, और उसने तुरंत इसका फायदा उठाने का फैसला किया। वह एक सुबह कलकत्ता गया (इससे पहले कि खंडेलवाल क्लब में अपनी व्हिस्की पी पाते) और उनके सामने एक कागज का टुकड़ा रख दिया। खंडेलवाल ने उसे देखा, कीमतों, लागतों, योजना के फायदों, उत्पादन न बढ़ने पर ग्राहकों के नुकसान और कामगारों को उच्च श्रेणी देने की आवश्यकता पर गौर किया। दो मिनट बाद उन्होंने हरेश से कहा:

'क्या आपका मतलब यह है कि आप वास्तव में उत्पादन को दोगुना कर सकते हैं?'

हरेश ने सिर हिलाया। 'मुझे ऐसा ही लगता है। खैर, आपकी अनुमति से मैं कोशिश कर सकता हूँ।'

खंडेलवाल ने कागज के ऊपर दो शब्द लिखे—‘हां। कोशिश करो।’—और उसे हरेश को वापस दे दिया।

16.9

उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा; खासकर चेक लोगों से, विशेष रूप से नोवाक से। नोवाक को दरकिनार करते हुए—जिसकी कीमत उन्हें बाद में चुकानी पड़ी—उन्होंने एक अप्रत्याशित कदम उठाया: वे यूनियन कार्यालय गए और प्राहापुर के शीर्ष यूनियन नेताओं से मिले। उन्होंने उनसे

कहा, ‘मेरे विभाग में एक समस्या है, और मैं इसे हल करने में आपकी मदद चाहता हूँ।’ यूनियन के महासचिव मिलोन बासु, जो भ्रष्ट होने के बावजूद बेहद बुद्धिमान थे, ने हरेश को संदेह की नज़र से देखा।

उन्होंने कहा, 'आप क्या प्रस्ताव रखते हैं?'

हरेश ने उसे केवल इतना बताया कि उसने अगले दिन यूनियन कार्यालयों में अपने कर्मचारियों के साथ एक बैठक का प्रस्ताव रखा है। लेकिन जब तक कोई हल नहीं निकल जाता, तब तक नोवाक को इस मामले का उल्लेख करना आवश्यक नहीं था।

अगला दिन शनिवार था, छुट्टी का दिन। मजदूर संघ कार्यालय में एकत्रित हुए।

“सज्जनों,” हरेश ने कहा, “मुझे पूरा विश्वास है कि आप प्रतिदिन 600 जोड़ी बना सकते हैं। यह निश्चित रूप से आपकी मशीनों की क्षमता के भीतर है। मैं मानता हूँ कि आपको कुछ महत्वपूर्ण समयों पर कुछ अतिरिक्त कर्मचारियों की आवश्यकता हो सकती है। अब बताइए—यहाँ कौन कहता है कि वह 600 जोड़ी नहीं बना सकता?”

पेशेवर वक्ता, जो इकलौता प्लास्टर करने वाला था, आक्रामक लहजे में बोला: ‘अरे, राम लखन यह नहीं कर सकता।’ उसने तगड़े, मूंछों वाले, मिलनसार बिहारी की ओर इशारा किया जो सिलाई का काम करता था। कन्वेयर पर और अन्य जगहों पर भी, सारे मुश्किल काम बिहारी ही करते थे। वे भट्टियों में ईंधन डालते थे; वे रात की ड्यूटी पर पुलिसवाले होते थे।

हरेश ने मिलन बसु की ओर मुड़कर कहा: 'मैं किसी पेशेवर वक्ता की राय नहीं मांग रहा हूँ। अभी जिसने बात की है, वह तो मोजे को जूते के तले से चिपकाने का काम करता है—बाकी सभी विभागों में उसका काम प्रतिदिन 900 जोड़ी जूते बनाना है। उसे बस उन्हें सीमेंट से चिपकाकर जूते में लगाना होता है। जो व्यक्ति इससे प्रभावित है, उसे बोलने दीजिए।

अगर राम लखन प्रतिदिन 600 जोड़ी जूते नहीं बना सकता, तो अब उसे ही बोलना चाहिए।'
राम लखन हँसे और बोले, 'साहिब, आप 600 जोड़ी की बात कर रहे हैं। मेरा मानना है कि 400 भी असंभव है।'
हरेश ने कहा: 'और कोई?'
किसी ने कहा: 'आउटसोल स्टिचर की क्षमता पर्याप्त नहीं है।'
हरेश ने कहा, 'मैं यह बात पहले ही मान चुका हूं। हम वहां एक अतिरिक्त खिलाड़ी लगा देंगे। कोई और?'
कुछ सेकंड की चुप्पी के बाद, हरेश ने राम लखन से कहा, जो उससे लगभग एक फुट लंबा था: 'अच्छा, राम लखन—अगर मैं खुद 400 जोड़ी बनाऊं, तो तुम कितनी बनाओगे?'
राम लखन ने सिर हिलाया। 'आप कभी भी 400 जोड़ी नहीं बना पाएंगे, साहब।'
लेकिन अगर मैं ऐसा करूं तो?
'अगर तुम ऐसा करोगे तो मैं 450 बना दूंगा।'
और अगर मैं 500 बनाऊं तो?
‘मैं 550 रन बनाऊंगा।’ उसके जवाब में एक तरह की बेपरवाही थी और चुनौती को लेकर एक तरह का नशा सा था। सब लोग चुप हो गए।
और अगर मैं 600 बनाऊं तो?
‘650.’
हरेश ने हाथ उठाकर कहा—‘ठीक है! काम हो गया! चलो युद्ध के मैदान में चलते हैं!’ इस बातचीत में कोई तर्क नहीं था, बस नाटकीयता का भाव था, लेकिन यह बहुत प्रभावशाली थी, और असल में मामला निर्णायक रूप से सुलझ गया था।
“मामला तय हो चुका है,” हरेश ने कहा। “सोमवार सुबह मैं अपनी वर्दी

पहनकर आपको दिखाऊंगा कि क्या किया जा सकता है। लेकिन अभी के लिए हम सिर्फ 400 की बात करते हैं। मैं अभी यहीं खड़े होकर आपको यह बताने को तैयार हूं कि अगर हमारा उत्पादन उस स्तर तक पहुंच जाता है, तो किसी को भी नौकरी से नहीं निकाला जाएगा। और जिस हफ्ते आप नियमित रूप से प्रतिदिन 400 जोड़ी जूते बनाएंगे, मैं आप सभी को एक ग्रेड ऊपर पदोन्नति दिलाने के लिए संघर्ष करूंगा। और अगर ऐसा नहीं हुआ तो मैं इस्तीफा देने को तैयार हूं।"

अविश्वास की लहर दौड़ गई। यहां तक कि मिलन बसु को भी लगा कि हरेश सचमुच मूर्ख है। लेकिन उन्हें उन दो आश्वस्त करने वाले शब्दों के बारे में पता नहीं था—'हां। कोशिश करो।'—जो चेयरमैन के हाथ से हरेश की जेब में पड़े कागज पर लिखे हुए थे।

16.10

अगले सोमवार को, हरेश ने अपने पूरे ओवरऑल पहने, न कि वो साफ-सुथरे, छोटे ओवरऑल जो वो आमतौर पर अपनी क्रीम रंग की रेशमी कमीज के साथ पहनता था, और अपनी लाइन के कामगारों को सिलाई के लिए तैयार जूतों को ढेर लगाने को कहा। आठ घंटे के दिन में छह सौ जूते सिलने का मतलब था लगभग नब्बे जूते प्रति घंटा और फिर भी एक घंटा बच जाता था। हर कन्वेयर रैक में जूतों के पाँच जोड़े होते थे। यानी अठारह रैक प्रति घंटा। कामगार उसके चारों ओर जमा हो गए, और दूसरी लाइनों के लोग भी उसकी सफलता की संभावनाओं पर शर्त लगाने से खुद को रोक नहीं पाए।

समय पूरा होने से पहले ही नब्बे जोड़े आए और चले गए। जब सब कुछ समाप्त हो गया, तो हरेश ने अपने माथे से पसीना पोंछा और राम लखन से कहा: 'अब मैंने कर दिखाया है—क्या तुम अपना वादा निभाओगे?'

राम लखन ने फटे हुए जूतों के ढेर को देखा और कहा: 'साहिब, आपने तो

एक घंटे के लिए यह काम किया है। लेकिन मुझे तो हर घंटे, हर दिन, हर हफ्ते, हर साल यह काम करना पड़ता है। अगर मैं इसी रफ्तार से काम करता रहा तो मैं पूरी तरह थककर चूर हो जाऊंगा।'

'अच्छा, तो तुम मुझसे क्या करवाना चाहते हो जिससे यह साबित हो जाए कि तुम ऐसा नहीं कर पाओगे?' हरेश ने कहा। 'मुझे दिखाओ कि तुम इसे पूरे दिन तक कर सकते हो।'

ठीक है। लेकिन मैं उत्पादन लाइन को एक दिन के लिए बंद नहीं करने वाला। हम कन्वेयर को नहीं रोकेंगे। सभी लोग एक ही गति से काम करेंगे। क्या यह बात आपको मंज़ूर है?

कन्वेयर चालू किया गया और काम जारी रहा। ऑपरेटर इस सब की असामान्य प्रकृति पर सिर हिला रहे थे, लेकिन उन्हें मज़ा आ रहा था और वे पूरी लगन से काम कर रहे थे। उस दिन 450 से कुछ ज़्यादा जोड़ी जूते बने। हरेश पूरी तरह से थक चुका था। तेज़ गति से अंदर-बाहर हो रही सुई के सहारे हर तैयार जूते को पकड़ने के कारण उसके हाथ काँप रहे थे। लेकिन उसने इंग्लैंड की एक फैक्ट्री में लोगों को एक हाथ से ऐसा करते देखा था, वे मशीन पर जूते को बड़ी आसानी से घुमा देते थे, और उसे पता था कि यह किया जा सकता है।

‘अच्छा, राम लखन? हमने 450 रन बना लिए हैं। अब बेशक तुम 500 रन बना लोगे?’

‘मैंने ऐसा कहा था,’ राम लखन ने अपनी मूंछों पर हाथ फेरते हुए कहा। ‘मैं अपने इस रुख से पीछे नहीं हटूंगा।’

कुछ हफ्तों बाद, हरेश ने राम लखन के महत्वपूर्ण ऑपरेशन में सहायता करने के लिए एक अतिरिक्त व्यक्ति को नियुक्त किया - मुख्य रूप से उसे जूते पकड़ाने के लिए ताकि उसे उन्हें लेने के लिए हाथ न बढ़ाना पड़े - और उत्पादन स्तर 600 के अंतिम आंकड़े तक पहुंच गया।

हरेश के मन में गुडइयर वेल्टेड की लड़ाई जीतने का भाव था। प्राहा में उत्पादन और मुनाफे का स्तर ऊंचा उठ रहा था—और हरेश का नामोनिशान भी बढ़ गया था। वह खुद से बहुत खुश था।

16.11

लेकिन हर कोई ऐसा नहीं था। इस पूरे मामले का एक नतीजा—और खासकर इस तथ्य का कि हरेश ने नोवाक को दरकिनार कर दिया था—यह हुआ कि लगभग सभी चेक लोग उसे शक की नज़र से देखने लगे। उसके बारे में तरह-तरह की अफवाहें पूरे इलाके में फैलने लगीं। उसे अपने घर में एक ड्राइवर को बैठने की इजाज़त देते हुए देखा गया था—उसे एक बराबर के तौर पर कुर्सी पर बैठने दिया गया था। वह दिल से कम्युनिस्ट था। वह यूनियन का जासूस था, असल में यूनियन के अखबार 'अमदेर बिप्लोब' का गुप्त संपादक था। हरेश को महसूस हो रहा था कि लोग उसे नज़रअंदाज़ कर रहे हैं, लेकिन वह कुछ नहीं कर सकता था। उसने पहले के 900 के बजाय 3,000 जोड़ी जूते प्रति सप्ताह बनाना जारी रखा—और अपनी मशीनों की सफाई तक, अपने सीधे नियंत्रण वाले हर काम में अपनी पूरी ऊर्जा लगा दी। और चूंकि उसने अपना सब कुछ संगठन को समर्पित कर दिया था, इसलिए उसे विश्वास था कि प्राहा भी—शायद जान टोमिन के रूप में—देर-सवेर उसके साथ न्याय करेगा।

उसे एक बड़ा झटका लगने वाला था।

एक दिन वह डिज़ाइन सेंटर में कुछ सुझाव देने गया, जिनसे उसके पर्यवेक्षण में जूतों के डिज़ाइन और उत्पादन को सुव्यवस्थित करने में मदद मिल सके। उसने अपने विचारों पर विभाग के दूसरे नंबर के भारतीय अधिकारी से चर्चा की। तभी डिज़ाइन सेंटर के प्रमुख श्री ब्रातिंका अंदर आए और उसे घूरने लगे।

‘तुम यहाँ क्या कर रहे हो?’ उसने बिना किसी शिष्टाचार का प्रयास किए

कहा, मानो हरेश अपने अनुयायियों में विद्रोह का वायरस फैलाना चाह रहा हो।

'आपका क्या मतलब है, श्रीमान ब्रातिंका?' हरेश ने पूछा।

‘आप बिना अनुमति के यहां क्यों हैं?’

मुझे उत्पादकता बढ़ाने के लिए किसी की अनुमति की आवश्यकता नहीं है।

'चले जाओ।'

‘श्रीमान भाई?’

'चले जाओ!'

श्री ब्रातिंका के सहायक ने यह सुझाव देने का साहस किया कि श्री खन्ना के सुझावों में कुछ सच्चाई हो सकती है।

'चुप रहो,' श्री ब्रातिंका ने कहा।

ब्रातिंका और हरेश दोनों बेहद गुस्से में थे। हरेश ने खंडेलवाल द्वारा स्थापित शिकायतों के निवारण हेतु सार्वजनिक शिकायत पुस्तिका में शिकायत दर्ज कराई। वहीं ब्रातिंका ने हरेश की शिकायत अपने वरिष्ठ अधिकारियों से कर दी।

नतीजा यह हुआ कि हरेश को महाप्रबंधक और चार अन्य सदस्यों की एक समिति के सामने पेश किया गया: यह एक नियमित चेक पूछताछ थी जिसमें डिजाइन सेंटर में बिना अनुमति के मौजूद होने के अलावा कई तरह के अजीब आरोप लगाए गए थे।

‘खन्ना,’ पावेल हेवेल ने कहा, ‘तुम मेरे ड्राइवर से बात कर रहे थे।’

जी हाँ, मैंने देखा है। वह अपने बेटे की शिक्षा से संबंधित एक मामले के बारे में मुझसे मिलने आए थे। पावेल हावेल का ड्राइवर शांत स्वभाव का, बेहद विनम्र व्यक्ति था, जो हमेशा साफ-सुथरे कपड़े पहनता था: हरेश के अनुसार, वह हर मायने में एक सज्जन व्यक्ति था।

‘वह आपके पास क्यों आया?’
‘मुझे नहीं पता। शायद इसलिए क्योंकि उन्हें लगा होगा कि एक भारतीय होने के नाते मैं सहानुभूति दिखाऊंगा—या कम से कम एक युवा व्यक्ति के करियर की कठिनाइयों को समझूंगा।’
'इसका क्या मतलब है?' कुरिल्ला ने कहा, जिसकी मिडलहैम्पटन में हरेश के साथ दोस्ती ने उसे पहली बार नौकरी पाने में मदद की थी।
मैंने जो कहा, वही सही है। शायद उसे लगा होगा कि मैं उसकी मदद कर सकता हूँ।
और आपकी खिड़कियों से यह दिखाई दे रहा था कि वह बैठा हुआ था।
“हाँ, वो खड़े थे,” हरेश ने चिढ़ते हुए कहा। “वो एक भले आदमी हैं और मुझसे उम्र में काफी बड़े हैं। जब वो खड़े हुए तो मैंने उनसे बैठने को कहा। उन्हें थोड़ी असहजता हुई, लेकिन मैंने ज़ोर देकर कहा कि वो बैठ जाएँ। फिर हमने इस मामले पर चर्चा की। उनके बेटे को कारखाने में दिहाड़ी मज़दूरी पर अस्थायी काम मिलता है, और मैंने सुझाव दिया कि उसके भविष्य को बेहतर बनाने के लिए उसे रात्रि कक्षाओं में जाना चाहिए। मैंने उसे कुछ किताबें उधार दीं। बस इतनी ही बात है।”
नोवाक ने कहा: 'क्या आपको लगता है कि भारत यूरोप है, श्री खन्ना? कि यहाँ प्रबंधकों और कर्मचारियों के बीच समानता है? कि सभी एक ही स्तर पर हैं?'
‘श्री नोवाक, मैं आपको याद दिला दूं कि मैं प्रबंधक नहीं हूं। और न ही मैं कम्युनिस्ट हूं, अगर आप यही सोच रहे हैं। श्री हेवेल, आप अपने ड्राइवर को जानते हैं। मुझे यकीन है कि आप उसे भरोसेमंद आदमी मानते हैं। उससे पूछिए कि क्या हुआ था।’
पावेल हावेल थोड़ा शर्मिंदा दिख रहा था, मानो उसने यह संकेत दिया हो कि हरेश भरोसेमंद नहीं है। और उसने आगे जो कहा, उससे यह बात और

भी पुख्ता साबित हो गई।
‘खैर, आपके यूनियन अखबार के संपादक होने की अफवाहें चल रही हैं।’ हरेश ने आश्चर्य से अपना सिर हिलाया।
‘तुम कहते हो कि तुम नहीं हो?’ यह नोवाक था।
'मैं नहीं हूं। मुझे तो लगता भी नहीं कि मैं यूनियन का सदस्य हूं—जब तक कि मैं स्वतः ही सदस्य न बन गया होऊं।'
‘आप यूनियन के लोगों को हमारी पीठ पीछे काम करने के लिए उकसा रहे हैं।’
‘मैंने नहीं देखा। तुम्हारा क्या मतलब है?’
‘आपने उनके कार्यालयों का दौरा किया और उनसे गुप्त रूप से बैठक की। मुझे इसकी जानकारी नहीं थी।’
‘यह एक खुली बैठक थी। इसमें कुछ भी गुप्त रूप से नहीं किया गया था। मैं एक ईमानदार व्यक्ति हूं, श्री नोवाक, और मुझे ये आरोप पसंद नहीं हैं।’
‘तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इस तरह बोलने की?’ कुरिल्ला भड़क उठा। ‘तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ये सब करने की? हम भारतीयों को रोजगार देते हैं, और अगर तुम्हें यह काम और हमारे कामकाज का तरीका पसंद नहीं है, तो तुम फैक्ट्री छोड़ सकते हो।’
यह देखकर हरेश को बहुत गुस्सा आया और कांपती हुई आवाज में बोला: श्री कुरिल्ला, आप न केवल भारतीयों को बल्कि अन्य लोगों को भी रोजगार प्रदान करते हैं।
आप स्वयं। जहाँ तक आपके दूसरे बिंदु का सवाल है, मैं भले ही कारखाना छोड़ दूं, लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप मुझसे पहले भारत छोड़ देंगे।'
कुरिल्ला लगभग भड़क उठे। एक जूनियर छात्र का शक्तिशाली चेक

प्राहामेन के सामने खड़े हो जाना समझ से परे और अभूतपूर्व था। पावेल हावेल ने उन्हें शांत किया और हरेश से कहा: 'मुझे लगता है कि यह पूछताछ समाप्त हो गई है। हमने सभी बिंदुओं पर चर्चा कर ली है। मैं आपसे बाद में बात करूंगा।'

एक दिन बाद उन्होंने हरेश को अपने कार्यालय में बुलाया और उसे पहले की तरह काम जारी रखने को कहा। उन्होंने आगे कहा कि वे उसके काम से, खासकर उत्पादन के मामले में, संतुष्ट हैं। हरेश ने सोचा, शायद उन्होंने अपने ड्राइवर से बात की होगी।

हैरानी की बात यह है कि इस घटना के बाद चेक लोग, विशेषकर कुरिल्ला, हरेश के प्रति काफी दोस्ताना हो गए। एक तरह से, इससे माहौल साफ हो गया था। अब जब उन्हें यकीन हो गया था कि वह न तो कम्युनिस्ट है और न ही आंदोलनकारी, तो वे न तो घबराए हुए थे और न ही नाराज़। वे मूल रूप से निष्पक्ष लोग थे जो परिणामों में विश्वास रखते थे, और उत्पादन में उनकी तिगुनी वृद्धि, जब आधिकारिक मासिक आंकड़ों में दिखाई दी, तो उन पर वैसा ही प्रभाव पड़ा जैसा कि हरेश द्वारा बनाए गए गुडइयर वेल्डेड जूतों की जोड़ी का पड़ा था - और संयोग से, महाप्रबंधक के कार्यालय में उनकी पूछताछ के दौरान उन्हीं जूतों का सामना करना पड़ा था।

16.12

जब मालती सोशलिस्ट पार्टी की बैठक में जाने के लिए विश्वविद्यालय पुस्तकालय से बाहर निकल रही थी, तभी उसकी एक सहेली - हरिदास कॉलेज में गायन की पढ़ाई करने वाली एक लड़की - उससे बातचीत करने लगी।

गपशप के दौरान, दोस्त ने बताया कि कबीर को कुछ ही दिन पहले रेड फॉक्स रेस्टोरेंट में एक लड़की के साथ जीवंत और अंतरंग बातचीत करते

देखा गया था। उन्हें देखने वाली लड़की पूरी तरह से विश्वसनीय थी, और उसने कहा था—

लेकिन मालती ने उसे बीच में ही रोक दिया। 'मुझे कोई दिलचस्पी नहीं है!' उसने आश्चर्यजनक जोश के साथ कहा। 'मेरे पास सुनने का समय नहीं है। मुझे एक मीटिंग में जाना है।' और वह गुस्से से भरी आँखों से मुँह फेरकर चली गई।

उसे ऐसा लगा जैसे उसका व्यक्तिगत रूप से अपमान हुआ हो। उसकी सहेली की जानकारी हमेशा सही होती थी, इसलिए उस पर शक करने का कोई मतलब नहीं था। मालती को सबसे ज़्यादा गुस्सा इस बात पर आया कि कबीर की मुलाकात इस लड़की से रेड फॉक्स में उसी समय हुई होगी जब वह ब्लू डेन्यूब में अमर प्रेम का इज़हार कर रहा था। यह बात उसे भयंकर क्रोधित करने के लिए काफी थी।

इससे पुरुषों के बारे में उसकी अब तक की सभी धारणाएं पुष्ट हो गईं। विश्वासघात।

16.13

उनकी मुलाकात से एक शाम पहले, जब लता बल्लीगंज में थीं, तब हरेश अगले दिन अपने मेहमानों के स्वागत के लिए प्राहापुर ऑफिसर्स क्लब में अंतिम तैयारियां कर रहे थे। क्रिसमस के मौसम के लिए पूरा स्थान रंग-बिरंगे क्रेप से सजाया गया था।

'तो खुशवंत,' हरेश ने हिंदी में कहा, 'अगर हमें आधा घंटा भी देर हो जाए तो कोई दिक्कत नहीं होगी? वे कलकत्ता से आ रहे हैं और किसी वजह से उन्हें देरी हो सकती है।'

'कोई बात नहीं, श्री खन्ना। मैं पिछले पांच सालों से क्लब चला रहा हूँ और दूसरों के शेड्यूल के हिसाब से ढलने का मुझे अब कोई अनुभव नहीं है।' खुशवंत एक वेटर से रसोइया-सह-वेटर और फिर क्लब के लगभग

मैनेजर बन चुके थे।
‘शाकाहारी व्यंजन बनाने में कोई दिक्कत नहीं होगी? मुझे पता है कि क्लब में ऐसा आमतौर पर नहीं होता है।’
'कृपया चिंता न करें।'
और ब्रांडी सॉस के साथ क्रिसमस पुडिंग।
'हां हां।'
‘या आपको लगता है कि यह एप्पल स्ट्रूडेल होना चाहिए?’
'नहीं, क्रिसमस पुडिंग ज़्यादा खास है।' खुशवंत को कई तरह की चेक मिठाइयाँ और व्यंजन बनाना आता था।
खर्च में कोई कमी नहीं की जाएगी।
'श्री खन्ना, सात रुपये प्रति व्यक्ति के बजाय अठारह रुपये प्रति व्यक्ति होने पर ऐसी बातों का उल्लेख करने की कोई आवश्यकता नहीं है।'
'यह बहुत दुख की बात है कि साल के इस समय स्विमिंग पूल में पानी नहीं है।'
खुशवंत मुस्कुराया नहीं, लेकिन उसने सोचा कि श्री खन्ना का इस तरह की बातों को लेकर इतना चिंतित होना उनकी आदत के विपरीत था। वह सोच रहा था कि आखिर यह कौन सी खास पार्टी थी जिसके लिए उसे खानपान की व्यवस्था करने को कहा गया था—एक ऐसा लंच जो दो घंटे में ही श्री खन्ना की दो सप्ताह की तनख्वाह खर्च कर देगा।
हरेश गुडइयर वेल्टेड लाइन के बारे में सोचने के बजाय अगली सुबह की मीटिंग के बारे में सोचते हुए घर लौटा। कॉलोनी में उसे जो छोटा सा फ्लैट दिया गया था, वहाँ तक पैदल दो मिनट का रास्ता था। अपने कमरे में पहुँचकर वह कुछ देर अपनी मेज पर बैठा रहा। उसके सामने एक छोटी सी फ्रेम वाली तस्वीर थी; यह लता की वह तस्वीर थी जो श्रीमती रूपा मेहरा ने उसे कानपुर में दी थी।

उसने उसे देखा और मुस्कुराया, फिर उसे उस दूसरी तस्वीर की याद आई जो उसके साथ हुआ करती थी। वह तस्वीर चांदी के फ्रेम में ही थी, लेकिन बड़े प्यार और अफसोस के साथ एक दराज में रख दी गई थी। और हरेश ने सिमरन के पत्रों में से कुछ पैराग्राफ और वाक्य अपनी छोटी, तिरछी लिखावट में लिखकर उसके सारे पत्र उसे वापस भेज दिए थे। उसे लगा कि उन्हें अपने पास रखना ठीक नहीं होगा।

अगले दिन दोपहर ठीक समय पर, दो कारें (चटर्जी परिवार की सफेद हंबर, जिसे मीनाक्षी ने उस दिन के लिए किराए पर लिया था, और अरुण की छोटी नीली ऑस्टिन) प्राहापुर ऑफिसर्स कॉलोनी के सफेद गेट से अंदर आईं और पंक्ति 3 के मकान नंबर 6 पर रुकीं। दोनों कारों से श्रीमती रूपा मेहरा अपने दो बेटों, दामाद और दो बेटियों और बहू के साथ निकलीं। पूरे मेहरा परिवार का हरेश ने स्वागत किया और उन्हें अपने छोटे से तीन कमरों वाले फ्लैट में ऊपर ले गया।

हरेश ने सुनिश्चित कर लिया था कि सभी को खुश रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में बियर, स्कॉच (व्हाइट हॉर्स, ब्लैक डॉग नहीं) और जिन के साथ-साथ नींबू पानी और अन्य शीतल पेय भी उपलब्ध हों। उसका नौकर लगभग सत्रह साल का एक लड़का था, जिसे बताया गया था कि यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवसर है; मेहमानों को पेय परोसते समय वह मुस्कुराए बिना नहीं रह सका।

प्राण और वरुण ने बियर पी, अरुण ने स्कॉच और मीनाक्षी ने टॉम कॉलिन्स। श्रीमती रूपा मेहरा और उनकी दोनों बेटियों ने नींबू पानी मांगा। हरेश ने श्रीमती रूपा मेहरा की देखभाल में काफी समय बिताया। लता से अपनी पहली मुलाकात के विपरीत, वह काफी घबराया हुआ था। शायद खंडेलवाल के घर अरुण और मीनाक्षी से हुई मुलाकात ने उसे यह एहसास दिलाया था कि वे उसकी आलोचना कर रहे हैं। अब तक उसने

और लता ने इतने पत्र लिखे थे कि उसे लगने लगा था कि लता ही उसके लिए सही स्त्री है। उसकी नौकरी छूटने की घोषणा के बाद लता ने उसे सबसे स्नेहपूर्ण पत्र लिखा था; और इससे वह बहुत भावुक हो गया था।

हरेश ने ब्रह्मपुर और भास्कर के बारे में कुछ पूछताछ की और प्राण से कहा कि वह बहुत अच्छा दिख रहा है। वीणा, केदारनाथ और भास्कर कैसे हैं? सुनील पटवर्धन कैसे हैं? उसने सविता और वरुण से थोड़ी शिष्टाचारपूर्ण बातचीत की, जिनसे वह पहले कभी नहीं मिला था, और लता से बात न करने की कोशिश की, क्योंकि उसे लगा कि वह भी उतनी ही घबराई हुई है, शायद थोड़ी गुमसुम भी है।

हरेश को इस बात का पूरा एहसास था कि परिवार की कड़ी निगरानी में वह हैं, लेकिन उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि इससे कैसे निपटा जाए। यह कोई चेक इंटरव्यू नहीं था जहाँ वह व्यावहारिक मुद्दों और उत्पादन के बारे में खुलकर बात कर सकें। कुछ न कुछ सूक्ष्मता आवश्यक थी, और हरेश सूक्ष्मता में माहिर नहीं थे।

उन्होंने कानपुर के बारे में थोड़ी बात की, तभी अरुण ने प्रांतीय औद्योगिक शहरों के बारे में कुछ अपमानजनक कह दिया। मिडिलहैम्प्टन में भी उन्हें वैसी ही प्रतिक्रिया मिली। खंडेलवाल के यहाँ मिली हार के बाद अरुण का आत्मसम्मान और अपनी राय को अडिग रखने की आदत स्पष्ट रूप से फिर से लौट आई थी।

हरेश ने देखा कि लता उसके सह-प्रतिभागी के जूतों को लगभग अरुचि भरे भाव से देख रही थी। लेकिन जैसे ही उसने लता की ओर देखा, वह थोड़ा शर्मिंदा होकर हार्डी के उपन्यासों के मैरून जिल्द वाले संग्रह से भरी उसकी छोटी सी किताबों की अलमारी की ओर मुड़ गई। हरेश थोड़ा उदास हो गया; उसने क्या पहनना है, इस बारे में बहुत सोचा था।

लेकिन भव्य भोज अभी बाकी था, और उसे पूरा यकीन था कि खुशवंत

द्वारा तैयार किए गए शानदार भोजन और प्राहापुर ऑफिसर्स क्लब के लगभग पूरे परिसर में फैले लकड़ी के फर्श वाले विशाल हॉल को देखकर मेहरा परिवार बेहद प्रभावित होगा। शुक्र है कि वह उन दरवाजों के बाहर नहीं रह रहा था जहाँ बाकी फोरमैन रहते थे। उन साधारण कमरों का अरुण के भूरे सूट की जेब में टंगे गुलाबी रेशमी रूमाल, मीनाक्षी की मधुर हंसी और बाहर खड़ी सफेद हंबर कार के साथ मेल खाना बेहद खतरनाक होता।

जब आठ लोगों का दल सर्दियों की सुहावनी धूप में क्लब की ओर चल रहा था, तब तक हरेश का आत्मविश्वास फिर से जाग उठा था। उन्होंने बताया कि परिसर की दीवारों के पार हुगली नदी बहती है और जिस ऊँची बाड़ के पास से वे गुजर रहे थे, वह महाप्रबंधक हावेल के घर की सीमा बनाती है। वे बच्चों के एक छोटे से खेल के मैदान और एक चैपल के पास से गुजरे। चैपल को भी क्रिसमस के लिए सजाया गया था।

हरीश ने अरुण से उत्साहपूर्वक कहा, "चेक लोग दिल से अच्छे लोग हैं। वे परिणाम में विश्वास रखते हैं, किसी बात को बताने के बजाय उसे करके दिखाना पसंद करते हैं। मुझे विश्वास है कि वे ब्रह्मपुर में ब्रोक्स बनाने की मेरी योजना से भी सहमत हो जाएंगे—और वह भी प्राहा कारखाने में नहीं, बल्कि छोटे पैमाने के निर्माताओं द्वारा। वे बंगालियों की तरह नहीं हैं, जो हर बात पर खुलकर चर्चा करना चाहते हैं और जितना हो सके उतना कम काम करना चाहते हैं। चेक लोगों ने जो कुछ बनाया है, वह वाकई अद्भुत है—और वह भी बंगाल में।"

लता ने हरेश की बात सुनी, उसकी स्पष्टवादिता से वह काफी हैरान थी। बंगालियों के बारे में उसकी भी कुछ ऐसी ही राय थी, लेकिन जब उनका परिवार चटर्जी परिवार से जुड़ गया, तो वह इस तरह के सामान्यीकरण आसानी से नहीं करती थी। और क्या हरेश को यह एहसास नहीं था कि

मीनाक्षी बंगाली थी? जाहिर तौर पर नहीं, क्योंकि वह फिर भी बोलता रहा।

“उनके लिए यह बहुत मुश्किल है, और निश्चित रूप से होगा, घर से इतनी दूर रहना और वापस न लौट पाना। उनके पास पासपोर्ट भी नहीं हैं। बस जिन्हें वे 'सफेद कागज़' कहते हैं, वही हैं, जिसकी वजह से उनके लिए यात्रा करना मुश्किल हो जाता है। वे ज्यादातर स्व-शिक्षित हैं, हालांकि कुरिल्ला मिडिलहैम्पटन जा चुका है—और कुछ दिन पहले नोवाक भी क्लब में पियानो बजा रहा था।”

लेकिन हरेश ने यह नहीं बताया कि ये दोनों सज्जन कौन थे; उसने मान लिया कि बाकी सब लोग उन्हें जानते होंगे। लता को चमड़ा कारखाने में दिए गए उसके स्पष्टीकरण याद आ गए।

अब तक वे क्लब पहुंच चुके थे, और हरेष, जो अब एक अभिमानी प्रहमान बन चुका था, उन्हें मालिकाना हक जताते हुए क्लब घुमा रहा था। उसने स्विमिंग पूल की ओर इशारा किया—जिसे खाली करके हल्के नीले रंग से रंगा गया था—और पास ही में बच्चों के लिए बने छोटे स्विमिंग पूल की ओर भी। उसने दफ्तरों, गमलों में लगे ताड़ के पेड़ों और उन मेजों की ओर भी इशारा किया जहाँ कुछ चेक लोग छतरियों के नीचे बैठकर खाना खा रहे थे। क्लब के विशाल हॉल के अलावा और कुछ दिखाने लायक नहीं था। कलकत्ता क्लब की सादगी भरी शान-शौकत का आदी अरुण, हरेश के इस घमंडी आत्मविश्वास को देखकर दंग रह गया।

वे सजे-धजे हॉल में दाखिल हुए; बाहर की रोशनी के मुकाबले अंदर काफी अंधेरा था; इधर-उधर कुछ समूह दोपहर का भोजन करने बैठे थे। दूर वाली दीवार के पास आठ लोगों के लिए उनकी अपनी मेज थी, जिसे तीन छोटी चौकोर मेजों को जोड़कर बनाया गया था।

“इस हॉल का इस्तेमाल हर काम के लिए होता है,” हरेश ने कहा। “खाने-

पीने के लिए, नाचने-गाने के लिए, सिनेमा हॉल के तौर पर, और यहाँ तक कि ज़रूरी बैठकों के लिए भी। जब श्री टॉमिन—और यहाँ हरेश की आवाज़ में थोड़ा आदर झलक रहा था—"पिछले साल यहाँ आए थे, तो उन्होंने इसी मंच से भाषण दिया था। लेकिन आजकल इसका इस्तेमाल डांस बैंड के लिए होता है।"

'बेहद दिलचस्प,' अरुण ने कहा।

'कितना अद्भुत है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने राहत भरी सांस लेते हुए कहा।

16.14

श्रीमती रूपा मेहरा सभी व्यवस्थाओं से बहुत प्रभावित हुईं। एक मोटा सफेद मेज़पोश और नैपकिन, चाकू और कांटे के कई सेट, अच्छे गिलास और बर्तन, और मीठे मटर के फूलों की तीन सजावटें।

हरेश और उनके साथियों के आते ही, दो वेटर मेज़ के पास आए और उस पर कुछ ब्रेड रख दी, साथ ही एंकर बटर की तीन कटोरियाँ भी। ब्रेड खुशवंत की देखरेख में पकाई गई थी; उन्होंने यह तकनीक चेक लोगों से सीखी थी। वरुण, जो थोड़ा लड़खड़ाते हुए चल रहा था, उसे बहुत भूख लग रही थी। कुछ मिनट बाद, जब सूप अभी तक नहीं आया था, उसने एक टुकड़ा उठाया। वह स्वादिष्ट था। उसने एक और टुकड़ा उठाया।

'वरुण, इतनी रोटी मत खाओ,' उसकी माँ ने उसे डांटते हुए कहा। 'क्या तुम्हें नहीं दिख रहा कि यहाँ कितने व्यंजन हैं?'

'हम्म, माँ,' वरुण ने मुँह भरकर कहा, उसका ध्यान कहीं और था। जब उसे और बीयर दी गई, तो उसने तुरंत स्वीकार कर ली।

'फूलों की सजावट कितनी प्यारी है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। उनके दिल में गुलाब की जगह मीठे मटर कभी नहीं ले सकते थे, लेकिन वे भी एक सुंदर फूल थे। उन्होंने हवा को सूंघा और नाजुक रंगों को महसूस किया: हल्का गुलाबी, सफेद, बैंगनी, गहरा बैंगनी, लाल, मैरून, गहरा

गुलाबी।
लता सोच रही थी कि मीठे मटर का संयोजन कुछ अजीब सा लग रहा था।
अरुण ने रोटी के विषय में अपनी विशेषज्ञता का प्रदर्शन किया। उन्होंने जीरा, राई और पम्परनिकेल ब्रेड के बारे में बात की। 'लेकिन अगर आप मुझसे पूछें,' उन्होंने कहा (हालांकि किसी ने पूछा नहीं था), 'स्वादिष्टता के मामले में भारतीय नान की कोई बराबरी नहीं है।'
हरेश सोच रहा था कि नान की और कौन-कौन सी किस्में होती हैं।
सूप (एस्पैरगस क्रीम) के बाद पहला कोर्स आया, जो तली हुई मछली थी। खुशवंत ने कई चेक व्यंजन बनाए, लेकिन अंग्रेजी व्यंजनों में केवल सबसे सरल और प्रचलित व्यंजन ही परोसे। श्रीमती रूपा मेहरा को पता चला कि उन्हें दो दिनों में दूसरी बार पनीर से ढकी सब्जी बेक परोसी जा रही है।
'स्वादिष्ट,' उसने हरेष की ओर मुस्कुराते हुए कहा।
'मुझे समझ नहीं आ रहा था कि खुशवंत से आपके लिए क्या बनवाऊं, मां; लेकिन उसे लगा कि यह अच्छा विचार होगा। और उसने कहा कि दूसरे व्यंजन में उसके पास एक खास पकवान है।'
हरेश की दयालुता और सहानुभूति को याद करके श्रीमती रूपा मेहरा की आँखों में आँसू आ गए। पिछले कुछ दिनों से उन्हें इसकी कमी खल रही थी। सनी पार्क किसी चिड़ियाघर जैसा लग रहा था और इसी वजह से अरुण का गुस्सा भी बढ़ गया था। वे सब एक ही छोटे से घर में साथ रह रहे थे, कुछ लोग रात में ड्राइंग रूम में बिछाए गद्दों पर सोते थे। चटर्जी परिवार ने कपूर परिवार को बालीगंज में ठहराने का प्रस्ताव दिया था, लेकिन सविता को लगा कि उमा और अपर्णा को एक-दूसरे से जान-पहचान करने का मौका मिलना चाहिए। साथ ही, उन्होंने बड़ी नासमझी से

दार्जिलिंग के पुराने दिनों या रेलवे के शराबखानों जैसा माहौल फिर से बनाने की इच्छा जताई थी, जब चारों भाई-बहन अपने माता-पिता के साथ एक ही छत के नीचे, तंग कमरों में आराम से रहते थे।

राजनीति पर चर्चा हुई। जिन राज्यों में जल्दी चुनाव हुए थे, वहां से नतीजे आने शुरू हो गए थे। प्राण के अनुसार, कांग्रेस चुनाव में क्लीन स्वीप करेगी। अरुण ने पिछली शाम की तरह इस मुद्दे पर कोई आपत्ति नहीं जताई। मछली के भोजन के अंत तक राजनीति की चर्चा समाप्त हो चुकी थी।

दूसरे सत्र में हरेश ने प्राहा के इतिहास और उत्पादन से जुड़े विभिन्न तथ्यों से उपस्थित लोगों को प्रभावित किया। उन्होंने बताया कि पावेल हावेल ने उनकी 'कड़ी मेहनत' की प्रशंसा की थी। हालांकि हरेश कम्युनिस्ट नहीं थे, फिर भी उनमें एक हंसमुख स्टाखानोवाइट श्रम नायक की झलक थी। उन्होंने गर्व से बताया कि वे इस बस्ती में आने वाले दूसरे भारतीय थे, और उन्होंने प्रति सप्ताह 3,000 जोड़ी जूतों के उत्पादन में हुई वृद्धि का जिक्र किया। अपनी उपलब्धि का बखान करते हुए उन्होंने कहा, 'मैंने इसे तीन गुना कर दिया।' उन्होंने आगे कहा, 'वेल्ट-स्टिचिंग का काम ही असली बाधा थी।'

हरेश के चमड़ा कारखाने के दौरे की एक बात लता के मन में अटक गई थी। 'बाकी सभी प्रक्रियाएं—चमक चढ़ाना, तख्ता लगाना, इस्त्री करना वगैरह—बेशक वैकल्पिक हैं।' उसे यह बात फिर याद आई और उसके सामने भिगोने के गड्ढे दिखाई दिए, जहाँ नारंगी रबर के दस्ताने पहने पतले-दुबले आदमी हुक की मदद से गाढ़े तरल में से फूली हुई खालें निकाल रहे थे। उसने अपने भुने हुए मुर्गे की स्वादिष्ट खाल पर नज़र डाली। मैं उससे शादी तो कभी नहीं कर सकती, उसने सोचा।

दूसरी ओर, श्रीमती रूपा मेहरा, एक स्वादिष्ट मशरूम वोल-औ-वेंट के

सहारे, विपरीत दिशा में कई मील आगे बढ़ चुकी थीं। उन्होंने न केवल यह तय कर लिया था कि हरेश लता के लिए एक आदर्श पति साबित होगा, बल्कि यह भी कि प्राहापुर, अपने खेल के मैदान, मीठे मटर और सुरक्षात्मक दीवारों के साथ, उनके पोतों के पालन-पोषण के लिए आदर्श स्थान था।

'लता कह रही थीं कि वो आपको आपके नए आलीशान घर में देखने के लिए कितनी बेताब थीं,' श्रीमती रूपा मेहरा ने झूठ बोलते हुए कहा। 'और अब जब हमने आपका घर देख लिया है, तो आपको नव वर्ष के दिन सनी पार्क स्थित हमारे घर पर रात के खाने पर ज़रूर आना चाहिए,' उन्होंने सहज भाव से कहा। अरुण की आँखें चौड़ी हो गईं, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। 'और आपको मुझे यह भी बताना कि आपको खाने में क्या खास पसंद है। मुझे खुशी है कि आज एकादशी नहीं है, वरना मुझे पेस्ट्री खाने की इजाज़त नहीं मिलती। आपको दोपहर में आना, इससे आपको लता से बात करने का मौका मिलेगा। क्या आपको क्रिकेट पसंद है?'

"हां," हरेश ने बातचीत को समझने की कोशिश करते हुए कहा। "लेकिन मैं अच्छा खिलाड़ी नहीं हूं।" उसने हैरानी से अपना हाथ माथे पर फेरा।

'ओह, मैं खेलने की बात नहीं कर रही,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। 'अरुण तुम्हें सुबह टेस्ट मैच दिखाने ले जाएगा। उसके पास कई टिकट हैं। प्राण को भी क्रिकेट बहुत पसंद है,' उन्होंने आगे कहा। 'और फिर तुम दोपहर में घर आ सकती हो।' उन्होंने लता की ओर देखा, जो किसी अज्ञात कारण से काफी परेशान लग रही थी।

श्रीमती रूपा मेहरा ने चिढ़ते हुए सोचा, "इस लड़की को क्या हो गया है? यह तो चिड़चिड़ी है। यह तो अपनी अच्छी किस्मत की हकदार नहीं है।"

शायद उसने ऐसा नहीं किया। लता मन ही मन सोचने लगी कि इस समय उसका भाग्य कुछ मिला-जुला सा था। तात्कालिक रूप से देखा जाए तो

उसमें मांस की करी और चावल थे; दूसरी मेज से आती हुई चेक भाषा की कुछ पंक्तियाँ और उसके बाद एक ज़ोरदार हंसी; ब्रांडी सॉस के साथ क्रिसमस पुडिंग जिसे अरुण ने दो बार और श्रीमती रूपा मेहरा ने तीन बार खाया, अपनी मधुमेह की बीमारी के बावजूद ('लेकिन यह एक खास दिन है'); कॉफी; वरुण चुपचाप झूम रहा था; मीनाक्षी अरुण के साथ छेड़छाड़ कर रही थी और श्रीमती खंडेलवाल के कुत्तों की वंशावली पर चर्चा करके हरेश को उलझन में डाल रही थी; अचानक यह कहना कि उसका मायके का नाम चटर्जी था, जिससे हरेश चौंक गया—जिससे उबरकर वह प्राहा की बातें करने लगा; प्राहा और श्रीमान हावेल, ब्रातिंका, कुरिल्ला, नोवाक की बहुत ज़्यादा बातें; एक मोटी सफेद मेज़पोश के नीचे दबे हुए सह-प्रतिभागी के जूतों का आभास; अचानक एक प्यारी सी मुस्कान का दिखना—जिससे हरेश की आँखें लगभग गायब हो गईं। अमित ने कुछ दिन पहले—कल, शायद कल—उसकी मुस्कान के बारे में कुछ कहा था। लता का मन दीवार के उस पार हुगली नदी, उसके किनारे बसे वनस्पति उद्यान, बरगद के पेड़, गंगा में तैरती नावों, प्राहा की एक और फैक्ट्री के पास एक और दीवार, बाँसों से घिरे खेत और बल्ले से गेंद टकराने की हल्की आवाज़ की ओर भटक गया। . . . अचानक उसे बहुत नींद आने लगी।

'क्या तुम ठीक हो?' यह हरीश था, जो स्नेह से मुस्कुरा रहा था।

'Yes, thanks, Haresh,' said Lata unhappily.

हमें बात करने का मौका नहीं मिला है।

'कोई बात नहीं। हम नए साल के दिन मिल रहे हैं।' लता ने मुस्कुराने की कोशिश की। उसे खुशी थी कि हरेश को लिखे उसके हालिया पत्रों में कोई स्पष्ट बात नहीं लिखी थी। दरअसल, वह इस बात के लिए शुक्रगुजार थी कि हरेश ने उससे मुश्किल से ही बात की थी। आखिर वे किस बारे में

बात करते? कविता? संगीत? नाटक? आम दोस्त या परिचित या परिवार के सदस्य? उसे इस बात की राहत थी कि प्राहापुर कलकत्ता से पंद्रह मील दूर था।

'आपने जो सैल्मन-गुलाबी रंग की साड़ी पहनी है, वह बहुत प्यारी है,' हरेश ने कहा।

लता हंसने लगी। उसकी साड़ी हल्के हरे रंग की थी। वह खुशी और राहत के मारे हंस रही थी।

बाकी सब लोग हैरान थे। आखिर हरेश को क्या हो गया था और लता को क्या हो गया था?

'सैल्मन-गुलाबी!' लता ने खुशी से कहा। 'मुझे लगता है कि सिर्फ "गुलाबी" कहना काफी नहीं है।'

'ओह,' हरेश ने अचानक असहज होते हुए कहा। 'यह हरा तो नहीं है, है ना?'

वरुण ने तिरस्कार भरी आवाज निकाली, और लता ने उसे मेज के नीचे लात मार दी।

'क्या आपको रंग पहचानने में दिक्कत होती है?' उसने मुस्कुराते हुए हरेश से पूछा।

'मुझे डर है कि ऐसा ही है,' हरेश ने कहा। 'लेकिन मैं दस में से नौ रंगों को सही-सही देख सकता हूँ।'

लता ने कहा, 'अगली बार जब हम मिलेंगे तो मैं गुलाबी रंग के कपड़े पहनूंगी। तब आप बिना किसी झिझक के इसकी तारीफ कर सकते हैं।'

दोपहर के भोजन के बाद हरेश ने दोनों कारों को विदा किया। वह जानता था कि अगले पंद्रह मील तक चर्चा का विषय वही रहेगा। उसे उम्मीद थी कि हर कार में उसका कम से कम एक समर्थक ज़रूर होगा। उसे एक बार फिर एहसास हुआ कि न तो अरुण और न ही मीनाक्षी उससे कोई वास्ता

रखना चाहते थे, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि उन्हें मनाने के लिए वह और क्या कर सकता था।

लता के बारे में वह पूरी तरह आशावादी था। उसे किसी प्रतिद्वंदी का कोई ज्ञान नहीं था। शायद दोपहर का भोजन कुछ ज़्यादा ही हो गया था, उसने सोचा; वह थोड़ी सुस्त लग रही थी। लेकिन सब कुछ उम्मीद के मुताबिक ही हुआ। जहाँ तक उसके रंग-अंधेपन की बात है, उसे इसके बारे में देर-सवेर पता चलना ही था। उसे खुशी थी कि उसने उन्हें पान के लिए अपने फ्लैट पर वापस आने के लिए नहीं कहा था—कल्पना गौर ने उसे एक पत्र में चेतावनी दी थी कि मेहरा परिवार पान पसंद नहीं करता। वह लता को इतना पसंद करने लगा था कि काश उसे उससे बात करने के लिए और समय मिल पाता। लेकिन वह जानता था कि आज के अभ्यास का निशाना वह नहीं बल्कि उसका परिवार—और विशेष रूप से माँ—थी।

'1951 को अपने जीवन का निर्णायक वर्ष बनाओ,' उसने साल की शुरुआत में अपने लिए लिखे एक कार्य बिंदु में लिखा था। नए साल में केवल तीन दिन बचे थे। उसने अपनी समय सीमा एक या दो सप्ताह बढ़ाने का फैसला किया, उस समय तक जब लता ब्रह्मपुर में अपनी पढ़ाई फिर से शुरू करेगी।

16.15

सविता ऑस्टिन कार की आगे वाली सीट पर बैठ गई थी; अरुण गाड़ी चला रहा था और वह उससे कुछ बात करना चाहती थी। मीनाक्षी पीछे बैठी थी। बाकी लोग हंबर कार में बैठकर कलकत्ता वापस चले गए।

‘अरुण भाई,’ सौम्य सविता ने कहा, ‘आपने ऐसा व्यवहार करके क्या मतलब निकाला?’

मुझे आपकी बात समझ नहीं आ रही। बेवकूफ मत बनो।

परिवार में सविता ही एकमात्र ऐसी सदस्य थी जो अरुण की दादागिरी

भरी हरकतों से नहीं डरती थी। बहस को यूं ही खत्म करने का कोई इरादा नहीं था।

‘तुमने हरेश के साथ अप्रिय व्यवहार करने के लिए इतनी मेहनत क्यों की?’

'शायद आपको उनसे यह सवाल पूछना चाहिए।'

मुझे नहीं लगता कि उसने आपके साथ कोई खास बुरा बर्ताव किया।

'खैर, उन्होंने निश्चित रूप से कहा कि प्राहा भारत में एक जाना-माना नाम है और बेंटसेन प्राइस के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता।'

यह एक तथ्य है।

'उन्हें ऐसा कहने का कोई अधिकार नहीं था, भले ही यह सच हो।'

सविता हंस पड़ी। ‘अरुण भाई, उसने ऐसा सिर्फ इसलिए कहा क्योंकि आप चेक लोगों और उनके असभ्य तौर-तरीकों के बारे में लगातार बोलते जा रहे थे। यह आत्मरक्षा थी।’

मुझे लगता है कि आप उसका पक्ष लेने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं।

‘मैं इसे इस तरह नहीं देखती। कम से कम आप सभ्य क्यों नहीं हो सकते? क्या आपको मां या लता की भावनाओं की कोई परवाह नहीं है?’

‘मैं बिल्कुल ऐसा ही सोचता हूँ,’ अरुण ने बड़े घमंड से कहा। ‘इसीलिए तो मुझे लगता है कि इस मामले को शुरू में ही खत्म कर देना चाहिए। वह बिलकुल गलत तरह का आदमी है। परिवार में एक मोची!’

अरुण मुस्कुराया। जब उसके पिता के एक पूर्व सहकर्मी की सिफारिश पर उसे बेंटसेन प्राइस में साक्षात्कार के लिए बुलाया गया, तो उन्होंने तुरंत ही यह समझ लिया कि वह इस पद के लिए उपयुक्त व्यक्ति है। अरुण ने मन ही मन सोचा, या तो आप उपयुक्त होते हैं या नहीं।

सविता ने सौम्य लहजे में कहा, 'जूते बनाने में मुझे कोई बुराई नहीं दिखती। हमें तो उन्हें इस्तेमाल करने में खुशी होती है।'

अरुण ने घुरघुराहट की आवाज निकाली।
मीनाक्षी ने कहा, 'मुझे लगता है कि मुझे थोड़ा सिरदर्द हो रहा है।'
‘हां, हां,’ अरुण ने आगे कहा। ‘मैं पूरी रफ्तार से गाड़ी चला रहा हूं, क्योंकि मेरा ध्यान मेरे साथ बैठे यात्री की वजह से भटक रहा है। हम जल्द ही घर पहुंच जाएंगे।’
सविता कुछ मील तक शांत रही।
‘अच्छा, अरुण भाई, आपको उससे क्या शिकायत है जो प्राण से नहीं थी? जब आप पहली बार प्राण से मिले थे, तब भी आपने उसके लहजे के बारे में ज्यादा कुछ नहीं कहा था।’
अरुण जानता था कि वह यहाँ एक खतरनाक राह पर चल रहा है, और सविता अपने पति के बारे में किसी भी तरह की बकवास बर्दाश्त नहीं करेगी।
‘प्राण ठीक है,’ अरुण ने स्वीकार किया। ‘वह परिवार के तौर-तरीकों को समझने लगा है।’
सविता ने कहा, 'वह हमेशा से ठीक ही रहा है। बस परिवार को उसके हिसाब से ढलना पड़ा है।'
‘ठीक है,’ अरुण ने कहा। ‘मुझे बस शांति से गाड़ी चलाने दो। या फिर तुम चाहते हो कि मैं गाड़ी रोककर यह बहस जारी रखूँ? मीनाक्षी को सिरदर्द है।’
‘अरुण भाई, यह कोई बहस नहीं है। मुझे माफ़ करना मीनाक्षी, मुझे उससे 'मा' पर काम शुरू करने से पहले कुछ बातें सुलझानी हैं,’ सविता ने कहा। ‘आपको हरेश से क्या शिकायत है? कि वह “हममें से एक” नहीं है?’
‘खैर, वो बिल्कुल भी ऐसा नहीं है,’ अरुण ने कहा। ‘वो सह-प्रतिवादी के जूतों में सजे-धजे, मुस्कुराते हुए नौकर और बड़े सिर वाले एक सजग-धज

आदमी हैं। मैंने शायद ही कभी किसी को इतना अभिमानी, अपनी राय पर अड़ा रहने वाला या आत्मसंतुष्ट देखा हो—और उसके पास ऐसा होने का कोई कारण भी नहीं है।'

सविता ने जवाब में सिर्फ मुस्कुरा दिया। इससे अरुण को जवाब से भी ज्यादा गुस्सा आया।

कुछ क्षणों की चुप्पी के बाद उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं पता कि आप इस चर्चा से क्या हासिल करने की उम्मीद करते हैं।'

'मैं बस इतना नहीं चाहती कि तुम लता के अवसरों को बर्बाद करो,' सविता ने गंभीरता से कहा। 'वह खुद भी चीजों को लेकर ज्यादा आश्वस्त नहीं है, और मैं चाहती हूं कि वह अपना फैसला खुद ले, न कि बिग ब्रदर उसके लिए सब कुछ तय करे और हमेशा की तरह नियम थोपे।'

मीनाक्षी ने पीछे से हंसते हुए कहा: एक चांदी जैसी, थोड़ी सी दृढ़ हंसी।

दूसरी तरफ से एक विशाल लॉरी उनकी ओर आ रही थी, जिससे वे लगभग संकरी सड़क से बाहर धकेल दिए गए। अरुण ने गाड़ी मोड़ी और गालियां दीं।

उन्होंने पूछा, 'क्या आपको कोई आपत्ति होगी अगर हम यह सम्मेलन घर पर जारी रखें?'

सविता ने कहा, "घर पर सैकड़ों लोग हैं। इतनी सारी रुकावटों के बीच आपको समझाना नामुमकिन होगा। क्या आपको यह एहसास नहीं है, अरुण भाई, कि शादी के प्रस्ताव हर दिन आसमान से नहीं गिरते? आप इस प्रस्ताव को क्यों रोकना चाहते हैं?"

'लता में दिलचस्पी रखने वाले और भी लोग जरूर हैं—जैसे मीनाक्षी का भाई।'

'अमित? क्या आपका मतलब सचमुच अमित से है?'

'हां, अमित। मेरा मतलब सचमुच अमित से ही है।'

सविता को तुरंत लगा कि अमित इस रिश्ते के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त होगा, लेकिन उसने ऐसा कहा नहीं। 'खैर, लता को खुद फैसला करने दो,' उसने कहा। 'उसे ही यह सब करने दो।'

'माँ के लगातार दखलंदाज़ी करने से वो अपना फैसला खुद नहीं ले पाएगी,' अरुण ने कहा। 'और जैसा कि सब देख सकते हैं, माँ को फोरमैन ने खूब लुभाया है। पूरे दोपहर में उसके पास किसी और के लिए एक मिनट भी नहीं था। मैंने गौर किया कि उसने तुमसे ज़्यादा बात नहीं की।'

सविता ने कहा, 'मुझे कोई आपत्ति नहीं थी। मुझे वह पसंद था। और मैं चाहती हूं कि तुम नए साल के दिन शालीनता से पेश आओ।'

अरुण ने मां द्वारा हरेश को अचानक और बिना सलाह के दिए गए निमंत्रण के बारे में सोचकर अपना सिर हिलाया।

मीनाक्षी ने अचानक कहा, 'कृपया मुझे न्यू मार्केट पर उतार दीजिए। मैं बाद में आपसे मिल जाऊंगी।'

लेकिन तुम्हारा सिरदर्द, प्रिय?

कोई बात नहीं। मुझे कुछ चीजें खरीदनी हैं। मैं टैक्सी से घर आ जाऊंगी।

'क्या आपको यकीन है?'

'हाँ।'

'क्या हमने आपको नाराज तो नहीं किया?'

'नहीं।'

जब मीनाक्षी नीचे उतर गई, तो अरुण ने सविता की ओर रुख किया:

आपने मेरी पत्नी को बेवजह परेशान कर दिया है।

"अरे अरुण भाई, ऐसी बेवकूफी मत करो—और मीनाक्षी को 'मेरी पत्नी' मत कहो। मुझे लगता है कि वो घर जाकर इतने सारे लोगों के बीच रहने से घबरा रही है। और मैं उसे दोष नहीं देता। सनी पार्क में हम लोग पहले

से ही बहुत ज्यादा हैं। क्या आपको लगता है कि प्राण, उमा और मुझे चटर्जी परिवार का निमंत्रण स्वीकार कर लेना चाहिए?"

'यह एक अलग बात है। बंगालियों के बारे में उस तरह से बात करने का उनका क्या मतलब था?'

'मुझे नहीं पता,' सविता ने कहा। 'लेकिन तुम तो हमेशा ऐसा करते हो।'

अरुण चुप था। कोई बात उसे परेशान कर रही थी।

'क्या आपको लगता है कि वह इसलिए नीचे उतरी क्योंकि उसे लगा कि हम अमित के बारे में चर्चा करने वाले हैं?'

मीनाक्षी की ओर से इस तरह की अप्रत्याशित कोमलता के विचार पर सविता मुस्कुराई, लेकिन उसने बस इतना कहा, 'नहीं।'

'खैर,' अरुण ने कहा, इस बात से अभी भी आहत था कि हरेश के मामले में सविता इतनी अडिग थी, और परिणामस्वरूप थोड़ा अनिश्चित महसूस कर रहा था, 'तुम्हें मुझसे अदालती कार्यवाही का काफी अभ्यास मिल रहा है।'

'जी हां,' सविता ने हंसने से इनकार करते हुए कहा। 'अब मुझसे वादा करो कि तुम दखल नहीं दोगे।'

अरुण ने बड़े भाई के स्नेहपूर्ण अंदाज़ में हंसते हुए कहा, 'खैर, हम सबकी अपनी-अपनी राय होती है—तुम्हारी अपनी, मेरी अपनी। और मां जो चाहे ले सकती है। और लता भी, बेशक। चलो बात यहीं खत्म करते हैं, ठीक है?'

सविता ने सिर हिलाया, लेकिन कुछ नहीं कहा।

अरुण जीतने की कोशिश कर रही थी, लेकिन वह जीत नहीं पाई।

16.16

मीनाक्षी सीधे फेयरलॉन होटल की ओर रवाना हुई, जहां बिली अपने कमरे में अधीरता और अनिश्चितता के मिले-जुले भावों के साथ उसका इंतजार

कर रहा था।
‘मीनाक्षी, तुम्हें पता है, इस बात से मुझे बहुत घबराहट होती है,’ बिली ने कहा। ‘मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं है।’
मीनाक्षी ने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि इससे आपको चिंता होती है। निश्चित रूप से इतनी चिंता नहीं होती कि इससे आपकी अद्भुतता पर कोई असर पड़े।'
‘—प्रदर्शन?’ बिली ने बात पूरी की।
‘प्रदर्शन। बस एक शब्द। चलो प्रदर्शन करते हैं। लेकिन मेरे साथ नरमी से पेश आना, बिली। मुझे देर होने के लिए माफ़ करना। मेरा दिन बहुत खराब बीता है और मेरे सिर में इतना तेज़ दर्द हो रहा है जितना बडेनब्रूक्स का।’
‘सिरदर्द?’ बिली चिंतित हो गया। ‘क्या मैं उनसे कहूँ कि आपके लिए दो एस्पिरिन ले आएँ?’
‘नहीं, बिली,’ मीनाक्षी ने उसके बगल में बैठते हुए कहा। ‘मुझे लगता है मेरे पास इससे बेहतर इलाज है।’
बिली ने उसकी साड़ी ठीक करने में मदद करते हुए कहा, 'मुझे लगा था कि महिलाओं को कहना चाहिए, "आज रात नहीं, प्रिय, मुझे सिरदर्द है।"'
मीनाक्षी ने कहा, 'शायद कुछ महिलाएं। क्या शिरीन ऐसा कहती है?'
बिली ने कड़े स्वर में कहा, 'मैं शिरीन के बारे में बात नहीं करना चाहता।'
अब बिली मीनाक्षी को ठीक करने के लिए उतना ही उत्सुक था जितना कि मीनाक्षी खुद ठीक होने के लिए। लगभग पंद्रह मिनट बाद, वह हांफता हुआ और सुखद रूप से थका हुआ मीनाक्षी के ऊपर लेटा था, उसका सिर मीनाक्षी की गर्दन से सटा हुआ था। प्रेम करते समय मीनाक्षी किसी भी अन्य समय की तुलना में कहीं अधिक मधुर थी। वह लगभग स्नेहपूर्ण थी!
बिली धीरे-धीरे पीछे हटने लगा।

‘नहीं, बिली, तुम यहीं रहो,’ मीनाक्षी ने आह भरते हुए कहा। ‘तुम्हारे साथ बहुत अच्छा लग रहा है।’ बिली अपने कोमल और फुर्तीले रूप में था।
‘ठीक है,’ बिली ने सहमति जताई।
हालांकि कुछ मिनटों बाद, जब उसका आत्मविश्वास कम हुआ, तो उसे पीछे हटना पड़ा।
‘ओह!’ बिली ने कहा।
मीनाक्षी ने कहा, 'यह बहुत अच्छा था। वह "हूप्स" किस लिए था?'
‘मुझे माफ करना, मीनाक्षी—लेकिन वह चीज फिसल गई है। वह अभी भी तुम्हारे अंदर है।’
‘लेकिन ऐसा हो ही नहीं सकता! मुझे इसका एहसास नहीं हो रहा है।’
'खैर, यह मेरे ऊपर नहीं है, और मुझे महसूस हुआ कि यह फिसल गया है।'
‘बिली, ऐसी बकवास मत करो,’ मीनाक्षी ने तीखे स्वर में कहा। ‘ऐसा पहले कभी नहीं हुआ—और क्या तुम्हें लगता है कि अगर वो अभी भी होता तो मुझे महसूस नहीं होता?’
बिली ने कहा, 'मुझे इसके बारे में पता नहीं है। मुझे लगता है कि आपको जाकर पता कर लेना चाहिए।'
मीनाक्षी नहाने गई और गुस्से में बाहर आई।
‘तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?’ उसने कहा।
‘मेरी हिम्मत कैसे हुई?’ बिली ने परेशान होकर जवाब दिया।
‘तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इसे हाथ से फिसलने देने की! मैं दोबारा उस सब से नहीं गुजरूंगी,’ मीनाक्षी ने कहा और फूट-फूटकर रोने लगी। कितना घिनौना है, उसने सोचा।
बेचारा बिली अब बहुत परेशान हो गया था। उसने उसके भीगे कंधों पर हाथ रखकर उसे दिलासा देने की कोशिश की, लेकिन उसने गुस्से से उसे

झटक दिया। वह यह समझने की कोशिश कर रही थी कि क्या आज का दिन उसके सबसे नाजुक सप्ताह में आता है। बिली सचमुच मूर्ख था।

'मीनाक्षी, मैं इस तरह की चीजों को और बर्दाश्त नहीं कर सकता,' वह कह रहा था।

'ओह, चुप रहो, मुझे सोचने दो। मेरा सिरदर्द फिर से शुरू हो गया है,' मीनाक्षी ने कहा।

बिली ने पश्चाताप से सिर हिलाया। मीनाक्षी फिर से अपनी साड़ी पहन रही थी—काफी ज़ोर से।

जब तक उसे यह समझ आया कि वह शायद सुरक्षित है, तब तक उसका बिली को छोड़ने का कोई मन नहीं था। उसने बिली को यह बात बता भी दी।

'लेकिन शिरीन और मेरी शादी के बाद—' बिली ने कहना शुरू किया।

'इसमें शादी का क्या लेना-देना है?' मीनाक्षी ने पूछा। 'मैं शादीशुदा हूँ, है ना? आपको भी मजा आता है, मुझे भी आता है; बस इतना ही है। अगले गुरुवार को मिलते हैं।'

लेकिन मीनाक्षी—

'बिली, घूरना बंद करो। इससे तुम मछली जैसे दिखते हो। मैं समझदारी से काम लेने की कोशिश कर रहा हूँ।'

लेकिन मीनाक्षी—

मीनाक्षी ने अपने चेहरे को अंतिम रूप देते हुए कहा, 'मैं इस सब पर चर्चा करने के लिए नहीं रुक सकती। मुझे घर जाना चाहिए। बेचारा अरुण सोच रहा होगा कि आखिर मुझे क्या हो गया है।'

16.17

बाथरूम से बाहर आते ही रूपा मेहरा ने लता से कहा, 'लाइट बंद कर दो। बिजली पेड़ों पर नहीं उगती।'

श्रीमती रूपा मेहरा बेहद नाराज़ थीं। नव वर्ष की पूर्व संध्या थी और लता को अपनी माँ के साथ समय बिताने के बजाय, एक युवा लड़की की तरह व्यवहार करते हुए अरुण और मीनाक्षी के साथ पार्टियों में घूमने निकल गई थी। कुछ गड़बड़ ज़रूर थी, और श्रीमती रूपा मेहरा को इसका आभास हो गया था।

'क्या अमित तुम्हारे साथ जाएगा?' उसने मीनाक्षी से पूछा।

'खैर, माँ, मुझे उम्मीद है—और कुकू और हंस को भी, अगर हम उन्हें मना सकें,' मीनाक्षी ने बहाने के तौर पर कहा।

श्रीमती रूपा मेहरा धोखे में नहीं आईं। उन्होंने कहा, 'अच्छा, तो वरुण के भी साथ जाने पर आपको कोई आपत्ति नहीं होगी।' उन्होंने तुरंत अपने छोटे बेटे को उनके साथ चलने का निर्देश दिया। उन्होंने उसे सख्ती से चेतावनी देते हुए कहा, 'और एक पल के लिए भी पार्टी छोड़कर मत जाना।'

वरुण इस स्थिति से बिल्कुल भी खुश नहीं था। उसने नया साल साजिद, जेसन, हॉट-एंड्स और अपने अन्य शमशुइंग और जुआ खेलने वाले दोस्तों के साथ मनाने की उम्मीद की थी। लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा की आँखों में कुछ ऐसा था जो किसी भी तरह की दबी आवाज बर्दाश्त नहीं कर सकता था। जब श्रीमती रूपा मेहरा को वरुण से थोड़ी देर के लिए अकेले मिलने का मौका मिला, तो उन्होंने कहा, 'मैं लता को अकेले जाने नहीं देना चाहती। मुझे तुम्हारे भाई और मीनाक्षी पर भरोसा नहीं है।'

'अरे, क्यों नहीं?' वरुण ने पूछा।

'वे लोग लता पर नज़र रखने के बजाय बहुत ही मौज-मस्ती में डूबे होंगे,' श्रीमती रूपा मेहरा ने टालमटोल करते हुए कहा।

वरुण ने उदास और चिढ़कर कहा, 'मुझे लगता है कि मुझे खुद भी अच्छा समय नहीं बिताना चाहिए।'

नहीं। अगर तुम्हारी बहन का भविष्य दांव पर लगा हो तो नहीं। तुम्हारे पिता क्या कहेंगे?

अपने पिता की याद आते ही वरुण को अचानक वैसी ही नाराजगी महसूस हुई जैसी अक्सर अरुण के प्रति होती थी। फिर, लगभग तुरंत ही, उसे अपने इस गुस्से पर पछतावा हुआ और वह अपराधबोध से घिर गया। मैं किस तरह का बेटा हूँ? उसने सोचा।

श्रीमती रूपा मेहरा और परिवार के शेष सदस्य—प्राण, सविता, अपर्णा और उमा—उस शाम बालीगंज जाने वाले थे, ताकि वरिष्ठ चटर्जी परिवार, जिनमें बूढ़े श्री चटर्जी भी शामिल थे, के साथ नव वर्ष की पूर्व संध्या मना सकें। दीपांकर और तपन भी घर पर ही होंगे। श्रीमती रूपा मेहरा ने सोचा कि यह एक शांत पारिवारिक शाम होगी, न कि आजकल के इस अंतहीन फिजूलखर्ची वाले माहौल जैसी। मीनाक्षी और काकोली के लिए तो यही शब्द बिल्कुल सही था; और उनकी यह फिजूलखर्ची कलकत्ता जैसे गरीब शहर में शर्मनाक थी—खासकर उस शहर में जहाँ पंडित नेहरू कांग्रेस, स्वतंत्रता संग्राम और समाजवाद पर चर्चा करने के लिए अभी-अभी आए थे। श्रीमती रूपा मेहरा ने मीनाक्षी को साफ-साफ बता दिया कि वह क्या सोचती हैं।

मीनाक्षी का जवाब एक दोहे के रूप में था जिसे 'डेक द हॉल विद बॉज़ ऑफ होली' के रूप में प्रस्तुत किया गया था, जिसकी रेडियो पर हाल ही में बहुत अधिक प्रस्तुति हुई थी:

साल का अंत मौज-मस्ती और हल्के-फुल्के मनोरंजन के साथ करें।

फा-ला-ला-ला-ला, ला-ला-ला-ला!

बाकी सब नीरस और निरर्थक है।

फ़ा-ला-ला-ला-ला, ला-ला-ला-ला!'

‘मीनाक्षी, तुम बहुत ही गैरजिम्मेदार लड़की हो, मैं तुम्हें बता सकती हूँ,’

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे सामने इस तरह गाने की?'

लेकिन श्रीमती अरुण मेहरा इतनी खुश थीं कि अपनी सास के चिड़चिड़े स्वभाव से विचलित नहीं हुईं और आश्चर्यजनक रूप से अचानक ही उन्होंने नव वर्ष के उपलक्ष्य में उन्हें चुंबन दिया। मीनाक्षी में स्नेह का ऐसा प्रदर्शन दुर्लभ था, और श्रीमती रूपा मेहरा ने इसे उदास भाव से स्वीकार किया।

फिर अरुण, मीनाक्षी, वरुण और लता मौज-मस्ती करने के लिए तेजी से निकल पड़े।

वे कई पार्टियों में गए और अंत में ग्यारह बजे के बाद बिश्वनाथ भादुरी के घर पहुंचे, जहां मीनाक्षी ने बिली के सिर का पिछला हिस्सा देखा।

'बिली!' मीनाक्षी ने कमरे के आधे हिस्से से मधुर और कंपन भरी आवाज में कहा।

बिली ने चारों ओर देखा और उसका चेहरा उतर गया। लेकिन मीनाक्षी कमरे में इधर-उधर घूमी और बड़ी बेशर्मी और नखरेबाज़ी से उसे शिरीन से अलग करने में कामयाब हो गई। जब वह उसे एक कोने में अकेला ले गई, तो उसने कहा:

'बिली, मैं गुरुवार को नहीं आ सकता। शैडी लेडीज़ ने अभी-अभी फोन करके बताया है कि उनकी एक विशेष बैठक है।'

बिली के चेहरे पर राहत के भाव थे। उसने कहा, 'ओह, मुझे बहुत खेद है।' तो यह बुधवार को ही करना होगा।

'मैं नहीं कर सकता!' बिली ने गिड़गिड़ाते हुए कहा। फिर वह चिढ़ गया।

'तुमने मुझे मेरे दोस्तों से दूर क्यों कर दिया?' उसने कहा। 'शिरीन मुझ पर शक करने लगेगी।'

'वो ऐसा नहीं करेगी,' मीनाक्षी ने खुशी से कहा। 'लेकिन अच्छा है कि इस समय तुम्हारी पीठ उसकी तरफ है। अगर वो तुम्हें इतना गुस्से में देखती,

तो ज़रूर करती। और तुम पर गुस्सा जताना शोभा नहीं देता। असल में, तुम पर कुछ भी शोभा नहीं देता। सिवाय तुम्हारे नग्न शरीर के। शरमाना मत, बिली, वरना मुझे नए साल के चुंबन से एक घंटा पहले ही तुम्हें जोश से चूमना पड़ेगा। ठीक है, बुधवार को। अपनी गैर-जिम्मेदारियों से मत भागो।'

बिली बेहद दुखी था, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे।

'क्या तुमने आज का टेस्ट मैच देखा?' मीनाक्षी ने विषय बदलते हुए पूछा। बेचारा बिली, वह बहुत उदास लग रहा था।

'तुम्हें क्या लगता है?' बिली ने उस याद से खुश होते हुए कहा। भारत ने पहली पारी में इंग्लैंड को 342 रनों पर ऑल आउट करके कुछ खास बुरा प्रदर्शन नहीं किया था।

'तो तुम कल वहाँ रहोगी?' मीनाक्षी ने कहा।

"ओह, हाँ। मैं यह देखने के लिए उत्सुक हूँ कि हजारे उनकी गेंदबाजी का क्या हाल करेंगे। एमसीसी ने भारत में एक घटिया टीम भेजी है, और मैं उन्हें सबक सिखाते हुए देखना चाहूँगा। खैर, नए साल का दिन बिताने का यह एक सुखद तरीका होगा।"

मीनाक्षी ने कहा, 'अरुण के पास कुछ टिकट हैं। मुझे लगता है मैं कल मैच देखने जाऊंगी।'

'लेकिन आपको क्रिकेट में कोई दिलचस्पी नहीं है—' बिली ने विरोध जताया।

'अरे—एक और महिला आपको हाथ हिला रही है,' मीनाक्षी ने कहा। 'आप दूसरी महिलाओं से तो नहीं मिल रहे हैं?'

'मीनाक्षी!' बिली ने इतनी गहरी हैरानी से कहा कि मीनाक्षी को उस पर विश्वास करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

'अच्छा, मुझे खुशी है कि तुम अब भी वफादार हो। वफादारी के साथ

बेवफा,' मीनाक्षी ने कहा। 'या बेवफा वफादारी के साथ। नहीं, वह मुझे इशारा कर रही है। क्या मैं तुम्हें शिरीन के पास वापस छोड़ दूं?'
'जी हां, कृपया,' बिली ने धीमी आवाज में कहा।
16.18
वरुण और लता कमरे के दूसरे हिस्से में डॉ. इला चट्टोपाध्याय से बात कर रहे थे। डॉ. इला चट्टोपाध्याय को हर तरह के लोगों की संगति पसंद थी—और उनकी युवाता उनकी नज़र में कोई बाधा नहीं थी। वास्तव में, यह अंग्रेज़ी शिक्षिका के रूप में उनकी एक खूबी थी। दूसरी खूबी थी उनकी असाधारण बुद्धिमत्ता। डॉ. इला चट्टोपाध्याय अपने छात्रों के साथ उतनी ही बेबाक और मुखर थीं जितनी अपने सहकर्मियों के साथ। वास्तव में, वह अपने छात्रों का अपने सहकर्मियों से कहीं अधिक सम्मान करती थीं। उनका मानना था कि छात्र बौद्धिक रूप से कहीं अधिक भोले और कहीं अधिक ईमानदार थे।
लता सोच रही थी कि वह इस पार्टी में क्या कर रही है: क्या वह किसी की देखरेख भी कर रही है? अगर ऐसा है, तो वह अपनी ज़िम्मेदारी को लापरवाही से निभा रही है। इस समय वह वरुण के साथ बातचीत में पूरी तरह मग्न थी।
'नहीं, नहीं,' वह कह रही थी, 'आईएएस में शामिल मत होइए—यह भी उन दिखावटी पेशों में से एक है, और आप अपने घृणित भाई का ही एक रूप बन जाएंगे।'
'लेकिन मैं क्या करूँ?' वरुण कह रहा था। 'मैं किसी काम का नहीं हूँ।'
'किताब लिखो! रिक्शा चलाओ! जियो! बहाने मत बनाओ,' डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने पूरे जोश के साथ अपने सफेद बालों को झटकते हुए कहा। 'दीपांकर की तरह दुनिया का त्याग कर दो। नहीं, वो तो बैंक में नौकरी कर रहा है, है ना? वैसे तुम्हारी परीक्षा कैसी रही?' उन्होंने आगे कहा।

‘बहुत बुरा!’ वरुण ने कहा।
लता ने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि तुमने इतना बुरा किया है। मैं हमेशा सोचती हूं कि मैंने असलियत से कहीं ज्यादा बुरा किया है। यह मेहरा परिवार की आदत है।'
‘नहीं, मैंने सच में बहुत बुरा प्रदर्शन किया है,’ वरुण ने उदास चेहरा बनाते हुए और अपनी व्हिस्की गटकते हुए कहा। ‘मुझे पूरा यकीन है कि मैं असफल हो गया हूँ। मुझे साक्षात्कार के लिए बिल्कुल नहीं बुलाया जाएगा।’
डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने कहा: 'चिंता मत करो। हालात इससे कहीं बदतर हो सकते थे। मेरी एक अच्छी दोस्त की बेटी की टीबी से मौत हो गई है।'
लता ने इला चट्टोपाध्याय को हैरानी से देखा। फिर वो बोलेगी: 'अब चिंता मत करो। ज़रा सोचो—हालात इससे कहीं बदतर हो सकते थे। मेरी एक बहन के दो साल के तीन बच्चों का उसके शराबी पति ने सिर काट दिया है।'
उनके साथ शामिल हुए अमित ने कहा, 'आपके चेहरे पर सबसे असाधारण भाव हैं।'
‘ओह, अमित! हेलो,’ लता ने कहा। उसे देखकर अच्छा लगा।
आप क्या सोच रहे थे?
कुछ नहीं—बिल्कुल कुछ नहीं।
डॉ. इला चट्टोपाध्याय वरुण को बता रही थीं कि कलकत्ता विश्वविद्यालय ने बी.ए. स्तर पर हिंदी को अनिवार्य विषय बनाकर कितनी बड़ी मूर्खता की है। अमित भी थोड़ी देर के लिए चर्चा में शामिल हो गया। उसे लगा कि लता के विचार अभी भी कहीं दूर हैं। वह उससे उसकी कविता के बारे में थोड़ी बात करना चाहता था। लेकिन तभी एक महिला ने आकर कहा, 'मैं आपसे बात करना चाहती हूँ।'

'ठीक है, मैं यहाँ हूँ,' अमित ने कहा।
लगभग चालीस वर्ष की दिखने वाली उस महिला ने कहा, 'मेरा नाम बेबी है।'
‘अच्छा, मेरा नाम अमित है।’
‘मुझे पता है, मुझे पता है, सबको पता है,’ महिला ने कहा। ‘क्या तुम अपनी विनम्रता से मुझे प्रभावित करने की कोशिश कर रही हो?’ वह झगड़ालू मूड में थी।
‘नहीं,’ अमित ने कहा।
मुझे आपकी किताबें बहुत पसंद हैं, खासकर 'द फीवर ट्री'। मैं रात भर उसी के बारे में सोचती रहती हूँ। मेरा मतलब है 'द फीवर बर्ड'। आप अपनी तस्वीरों से छोटी दिखती हैं। आपकी टांगें बहुत लंबी होंगी।
'आप क्या करती हैं?' अमित ने पूछा, क्योंकि उसे उसके आखिरी कुछ शब्दों का अर्थ समझ नहीं आ रहा था।
उस महिला ने दृढ़ता से कहा, 'मुझे आप पसंद हैं। मुझे पता है कि मैं किसे पसंद करती हूँ। बॉम्बे में मुझसे मिलने आइए। मुझे सब जानते हैं। बस बेबी के नाम से बुला लीजिएगा।'
‘ठीक है,’ अमित ने कहा। उसका बॉम्बे जाने का कोई इरादा नहीं था।
बिश्वनाथ भादुरी अमित से मिलने आए। उन्होंने लता को लगभग पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिया। उन्होंने तो उस चालाक बेबी को भी अनदेखा कर दिया। वे किसी नई महिला के बारे में बात कर रहे थे, जिसकी ओर उन्होंने इशारा करते हुए कहा: कोई महिला जिसने काले और चांदी के रंग के कपड़े पहने थे।
बिश ने कहा, 'ऐसा लगता है कि उसकी आत्मा बहुत सुंदर है।'
अमित ने कहा, 'इसे दोहराओ।'
बिश्वनाथ भादुरी पीछे हट गए। उन्होंने कहा, 'कोई ऐसी बातें दोहराने के

लिए नहीं कहता।'

'अरे, लेकिन ऐसी बातें तो अक्सर सुनने को नहीं मिलतीं।' 'तुम इसे अपने उपन्यास के लिए इस्तेमाल करोगे। तुम्हें पता है, ऐसा नहीं करना चाहिए।' 'क्यों नहीं करना चाहिए?'

'ये तो बस कलकत्ता की हल्की-फुल्की गपशप है।'

'यह कोई गपशप नहीं है—यह काव्यात्मक है; बेहद काव्यात्मक; संदेहजनक रूप से काव्यात्मक।'

'तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो,' बिश्वनाथ भादुरी ने कहा। उन्होंने चारों ओर देखा। 'एक ड्रिंक की जरूरत है,' उन्होंने धीरे से कहा।

अमित ने लता से धीमी आवाज़ में कहा, 'एक को भागना होगा। दो को भागना होगा।'

'मैं नहीं कर सकता। मेरे साथ एक सहायक है।'

'कौन?'

लता की निगाहें वरुण की ओर गईं। वह कुछ युवकों से बात कर रहा था, जो उसकी बातों को ध्यान से सुन रहे थे।

अमित ने कहा, 'मुझे लगता है हम उसे चकमा दे सकते हैं। मैं तुम्हें पार्क स्ट्रीट की रोशनी दिखाऊंगा।'

वरुण के पीछे चलते हुए उन्होंने उसे कहते सुना: 'गैटविक के लिए मैरीवॉलेस, और होपफुल के लिए सिमाइल। हाज़रा के बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है। और बेरेसफोर्ड कप के लिए माय लेडी जीन को चुनना सबसे अच्छा रहेगा। . . .'

वे आसानी से उससे बच निकले और हंसते हुए सीढ़ियों से नीचे उतर गए।

16.19

किसने टैक्सी बुलाई?

अमित ने कहा, 'पार्क स्ट्रीट।'

लता ने हंसते हुए पूछा, 'बॉम्बे क्यों नहीं? बेबी से मिलने के लिए।'
अमित ने अपने घुटनों को तेजी से हिलाते हुए कहा, 'वह मेरे गले का कांटा है।'
'तुम्हारी गर्दन में?'
'जैसा कि बिस्वास बाबू कहा करते थे।'
लता हंस पड़ी। उसने पूछा, 'वह कैसा है? हर कोई उसके बारे में बात करता है, लेकिन मैं उससे कभी नहीं मिली।'
'वह मुझसे शादी करने के लिए कह रहे हैं—ताकि, उनकी उम्मीद है, चटर्जी न्यायाधीशों की चौथी पीढ़ी पैदा हो सके। मैंने सुझाव दिया कि अपर्णा आधी चटर्जी है और अपनी प्रतिभा के कारण आसानी से न्यायाधीश बन सकती है। उन्होंने कहा कि यह एक अलग ही बात है।'
लेकिन उनकी सलाह का आप पर कोई असर नहीं हुआ।
'बिलकुल तो।'
वे चौरंगी सड़क पर गाड़ी चला रहे थे, जिसके कुछ हिस्से रोशनी से जगमगा रहे थे— खासकर बड़े स्टोर, ग्रैंड होटल और फ़िरपो। अब वे पार्क स्ट्रीट के चौराहे पर थे। यहाँ, सांता क्लॉज़ और स्लेज के साथ एक विशाल बारहसिंगा बड़े रंगीन बल्बों से जगमगा रहा था। मैदान के पास चौरंगी सड़क के किनारे कई लोग टहल रहे थे और उत्सव के माहौल का आनंद ले रहे थे। जैसे ही टैक्सी पार्क स्ट्रीट में मुड़ी, लता इसकी असाधारण चमक देखकर दंग रह गई। दोनों ओर, दुकानों और रेस्तरां के सामने बहुरंगी रोशनी की लड़ियाँ और चमकीले रंग के क्रेप के झालर लटके हुए थे: फ्लूरीज़, क्वालिटी, पेइपिंग, मैग्नोलिया। यह बहुत सुंदर था, और लता ने खुशी और कृतज्ञता से अमित की ओर देखा। जब वे पेट्रोल पंप के पास ऊँचे क्रिसमस ट्री के पास पहुँचे तो उसने कहा:
'बिजली पेड़ों पर उग रही है।'

‘यह क्या था?’ अमित ने कहा।
‘ओह, ये तो माँ हैं। “लाइट बंद करो। बिजली पेड़ों पर नहीं उगती।””
अमित हँस पड़ा। उसने कहा, 'आपको दोबारा देखकर बहुत अच्छा लगा।'
लता ने कहा, 'मुझे भी ऐसा ही लगता है। कुछ बदलावों के साथ।'
अमित ने हैरानी से उसकी तरफ देखा। 'मैंने यह बात आखिरी बार इन्स ऑफ कोर्ट में सुनी थी।'
‘ओह,’ लता ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘मैंने इसे सविता से ही सीखा होगा। वह हमेशा बच्चे से ऐसे ही प्यारे-प्यारे वाक्य बोलती रहती है।’
‘वैसे, जब मैंने आप और वरुण की बातचीत में दखल दिया, तब आप क्या सोच रहे थे?’ अमित ने पूछा।
लता ने उन्हें डॉ. इला चट्टोपाध्याय की टिप्पणी के बारे में बताया।
अमित ने सिर हिलाया और फिर कहा: 'आपकी कविता के बारे में।'
‘जी?’ लता घबरा गई। वह इसके बारे में क्या कहने वाला था?
'गहरे दुख के क्षणों में कभी-कभी मुझे यह जानकर सांत्वना मिलती है कि दुनिया को कुल मिलाकर कोई परवाह नहीं है।'
लता चुप रही। यह एक अजीब भावना थी, हालांकि प्रासंगिक थी। थोड़ी देर बाद उसने कहा: 'क्या आपको यह पसंद आया?'
‘जी हां,’ अमित ने कहा। ‘कविता के रूप में।’ उसने कुछ पंक्तियाँ सुनाईं।
लता ने कहा, 'कब्रिस्तान इसी सड़क पर है, है ना?'
'हाँ।'
‘दूसरे छोर से बिल्कुल अलग।’
'बहुत।'
'रोज आयल्मर की समाधि पर एक विचित्र प्रकार का सर्पिल स्तंभ था।'
क्या आप इसे रात में देखना चाहते हैं?
नहीं! इतने सारे तारे देखना अजीब होगा। यादों और आहों से भरी एक

रात।
अमित ने कहा, 'मुझे दिन के समय ही आपको इनके बारे में बता देना चाहिए था।'
‘किस बात की ओर इशारा किया?’
‘तारे।’
'दिन होने तक?'
“जी हाँ। मैं आपको दिन के समय विभिन्न तारों की स्थिति का अंदाज़ा बता सकता हूँ। क्यों नहीं? वे अभी भी आकाश में हैं। सूरज की रोशनी से वे हमें दिखाई नहीं देते। आधी रात हो चुकी है। क्या मैं बता सकता हूँ?”
और इससे पहले कि वह विरोध कर पाती, अमित ने उसे चूम लिया।
वह इतनी हैरान थी कि उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। वह थोड़ी नाराज़ भी थी।
अमित ने कहा, 'नया साल मुबारक हो।'
‘नया साल मुबारक हो,’ उसने झुंझलाहट छुपाते हुए जवाब दिया। आखिरकार, उसने अपने साथ आए व्यक्ति से बचने की साजिश रची थी।
‘तुमने इसकी योजना तो नहीं बनाई थी, है ना?’
'बिल्कुल नहीं। क्या आप चाहती हैं कि मैं आपको वरुण के पास वापस छोड़ दूं? या हम विक्टोरिया मेमोरियल के पास टहलें?'
‘दोनों में से कोई नहीं। मुझे थकान महसूस हो रही है। मैं सोना चाहती हूँ।’
कुछ देर रुककर उसने कहा: ‘1952: कितना नया लगता है। मानो हर अंक को पॉलिश किया गया हो।’
‘लीप वर्ष।’
'मुझे पार्टी में वापस जाना चाहिए। अगर वरुण को पता चला कि मैं वहां नहीं हूं तो वह सच में घबरा जाएगा।'
मैं तुम्हें घर वापस छोड़ दूंगा, फिर खुद पार्टी में जाकर वरुण को बता

दूंगा। कैसा रहेगा?
वरुण को जब यह एहसास हुआ कि उसका साथी उड़ गया है, तो उसके चेहरे के भावों के बारे में सोचकर लता मुस्कुरा उठी।
'ठीक है। धन्यवाद, अमित।'
'क्या आप मुझसे नाराज नहीं हैं? नए साल का लाइसेंस। मैं कुछ नहीं कर सकता था।'
'बशर्ते कि अगली बार आप काव्यात्मक स्वतंत्रता का दावा न करें।'
अमित हँस पड़ा, और रिश्ते फिर से सुधर गए।
लेकिन मुझे कुछ महसूस क्यों नहीं हो रहा? उसने खुद से पूछा। वह जानती थी कि अमित उसे पसंद करता है, लेकिन चुंबन के बाद उसकी मुख्य भावना आश्चर्य की ही थी।
कुछ ही मिनटों में वह घर पहुँच गई। श्रीमती रूपा मेहरा अभी तक नहीं लौटी थीं। जब वह आधे घंटे बाद लौटीं तो उन्होंने लता को सोते हुए पाया। लता बेचैन लग रही थी—उसका सिर तकिए पर इधर-उधर घूम रहा था।
वह एक चुंबन का सपना देख रही थी—लेकिन वह कबीर का सपना देख रही थी, जो अनुपस्थित था, जिससे उसे सबसे ज्यादा नहीं मिलना चाहिए था, जो उन सभी लड़कों में सबसे अनुपयुक्त था।
16.20
1952: सुबह का अखबार खोलते ही प्राण की आंखों में चमकते हुए नए अंक उभर आए। 1 जनवरी के आते ही अतीत के सारे पर्दे हट गए और भविष्य की सारी संभावनाएं उसके सामने जगमगा उठीं, मानो किसी रहस्यमयी कोको से निकलकर सामने आ रही हों। उसने अपने दिल, अपने बच्चे और भास्कर के मौत के मुंह से बाल-बाल बचने के बारे में सोचा, बीते साल की मिली-जुली यादें। और वह सोचने लगा कि क्या

आने वाला साल उसे उसके पाठकों का साथ देगा—और एक नया साला —और शायद उसके पिता को पूर्व प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेते हुए भी देख पाएगा। यह तो नामुमकिन नहीं था। जहां तक मान की बात है, उसे तो देर-सवेर शादी करनी ही पड़ेगी।

हालांकि छह बजे उनके और श्रीमती रूपा मेहरा के अलावा कोई और नहीं जागा था, लेकिन सात बजे अचानक चहल-पहल मच गई। दोनों बाथरूमों में इस्तेमाल का समय बहुत सीमित था, और सभी लोग साढ़े आठ बजे तक पूरी तरह तैयार हो चुके थे और नाश्ता भी कर चुके थे। महिलाओं ने चटर्जी के घर पर दिन बिताने का फैसला किया था—शायद वे थोड़ी खरीदारी भी कर लें। यहां तक कि मीनाक्षी, जो पहले क्रिकेट मैच देखने के लिए उत्सुक दिख रही थी, उसने भी आखिरी क्षण में अपना इरादा बदल दिया।

अमित और दीपांकर नौ बजे हंबर स्टेडियम पहुंचे, और अरुण, वरुण और प्राण उनके साथ तीसरे टेस्ट के तीसरे दिन का मैच देखने के लिए ईडन गार्डन्स चले गए। स्टेडियम के ठीक बाहर, पहले से तय योजना के अनुसार, उनकी मुलाकात हरीश से हुई, और वे छहों अपनी-अपनी सीटों की ओर चल पड़े।

वह एक शानदार सुबह थी। आसमान बिल्कुल साफ नीला था और मैदान पर ओस की बूँदें चमक रही थीं। हरे-भरे घास के मैदान, आसपास के पेड़ों, विशाल स्कोरबोर्ड और नए रणजी स्टेडियम ब्लॉक के साथ ईडन गार्डन्स का नजारा बेहद खूबसूरत था। स्टेडियम खचाखच भरा हुआ था, लेकिन सौभाग्य से बेंटसेन प्राइस में अरुण के एक अंग्रेज सहकर्मी, जिन्होंने अपने परिवार के लिए कई सीजन टिकट खरीदे थे, घूमने निकले हुए थे और उन्होंने अरुण को अपनी सीटें दे दीं। उनकी सीटें पवेलियन सेक्शन के ठीक बगल में थीं, जहाँ वीआईपी और बंगाल क्रिकेट

एसोसिएशन के सदस्य बैठते थे, और वहाँ से मैदान का बेहतरीन नजारा दिखाई दे रहा था।

भारत के सलामी बल्लेबाज़ क्रीज़ पर डटे हुए थे। चूंकि भारत ने इस सीरीज़ की पिछली दो पारियों में 418 और 485 रन बनाए थे, और इंग्लैंड अपनी पहली पारी में 342 रन पर ऑल आउट हो गया था, इसलिए मेज़बान टीम के लिए मैच में कुछ कर दिखाने की अच्छी संभावना थी। कोलकाता की भीड़—जो भारत में किसी भी अन्य जगह की तुलना में अधिक जानकार और समझदार थी—बेहद उत्सुकता से इस मैच का इंतज़ार कर रही थी।

ओवरों के बीच बढ़ती हुई बातचीत, हर बार गेंदबाज के आने पर कम हो जाती थी, लेकिन पूरी तरह से शांत नहीं होती थी। लीडबीटर ने रॉय के खिलाफ गेंदबाजी की शुरुआत एक मेडन ओवर से की, और रिडग्वे ने दूसरे छोर से मांकड़ को गेंदबाजी करते हुए आक्रमण का समर्थन किया। फिर, अगले ओवर के लिए, लीडबीटर को जारी रखने के बजाय, इंग्लैंड के कप्तान हॉवर्ड ने स्टैथम को गेंदबाज़ी के लिए बुलाया।

इससे छह लोगों के समूह में काफी चर्चा छिड़ गई। सभी इस बात पर अटकलें लगाने लगे कि लीडबीटर को एक ओवर के लिए क्यों बुलाया गया था। अमित ने अकेले कहा कि इसका कोई मतलब नहीं है। शायद, क्योंकि भारतीय समय इंग्लैंड से कई घंटे आगे था, लीडबीटर 1952 की पहली अंग्रेजी गेंद फेंकना चाहते थे और हॉवर्ड ने उन्हें इसकी अनुमति दे दी थी।

‘सच में, अमित,’ प्राण ने हंसते हुए कहा। ‘क्रिकेट इस तरह की काव्यात्मक सनक से नहीं चलता।’

अमित ने कहा, 'अफसोस की बात है। कार्डस की पुरानी रिपोर्टें पढ़कर मुझे हमेशा यही लगता है कि यह कविता का ही एक रूप है—छह-पंक्ति

वाले छंदों में।'

‘पता नहीं बिली कहाँ है,’ अरुण ने नशे से भरी आवाज़ में कहा। ‘वह कहीं नज़र नहीं आ रहा।’

अमित ने कहा, 'अरे, वह तो यहाँ जरूर होगा। मुझे नहीं लगता कि वह टेस्ट मैच का एक भी दिन मिस करेगा।'

दीपांकर ने कहा, 'हमारी शुरुआत काफी धीमी रही है। मुझे उम्मीद है कि यह पिछले दो टेस्ट मैचों की तरह एक और निराशाजनक ड्रॉ नहीं होगा।'

'मुझे लगता है कि हम उन्हें सबक सिखाएंगे।' यह हरेश का आशावादी आकलन था।

प्राण ने कहा, 'हो सकता है। लेकिन हमें इस विकेट पर सावधान रहना चाहिए। यह गेंदबाजों के लिए वरदान है।'

और ऐसा ही साबित हुआ।

कप्तान समेत तीन सर्वश्रेष्ठ भारतीय विकेटों के जल्दी-जल्दी गिरने से स्टेडियम में सन्नाटा छा गया। जब अमरनाथ, जिन्हें पैड पहनने का भी समय नहीं मिला था, टैटर्सॉल का सामना करने के लिए मैदान पर आए, तो पूरी तरह सन्नाटा छा गया। यहां तक कि महिला दर्शक भी एक पल के लिए अपनी सर्दियों की बुनाई रोक बैठीं।

उसी घातक ओवर में वह शून्य पर आउट हो गए।

भारतीय टीम ताश के पत्तों की तरह बिखर रही थी। अगर यही उथल-पुथल जारी रही तो दोपहर के भोजन से पहले ही भारत ऑल आउट हो सकता था। जीत की उम्मीदें शर्मनाक हार के डर में बदल गईं।

वरुण ने उदास स्वर में कहा, “बिल्कुल हमारी तरह। हम एक देश के रूप में असफल हैं। हम हमेशा जीत को हार में तब्दील कर लेते हैं। मैं दोपहर में घुड़दौड़ देखने जा रहा हूँ।” उसने झुंझलाहट भरे लहजे में आगे कहा। उसे चालीस रुपये के सीज़न टिकट वाली सीटों पर बैठने के बजाय, रेस

ट्रैक के चारों ओर लगी बाड़ के पीछे से ही अपने घोड़ों को देखना पड़ेगा, लेकिन कम से कम इस बात की संभावना तो रहेगी कि उसका घोड़ा जीत जाए।

अमित ने कहा, 'मैं अपने पैरों को थोड़ा आराम देने के लिए उठ रहा हूं।'

भारत के घटिया प्रदर्शन से नाराज़ हरेश ने कहा, 'मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। अरे—वो आदमी कौन है—नीले ब्लेज़र और मैरून स्कार्फ़ वाला—क्या आप में से कोई उसे जानता है? मुझे लगता है मैंने उसे कहीं देखा है।'

प्राण ने पवेलियन सेक्शन की ओर देखा और पूरी तरह से अचंभित रह गया।

'ओह, मालवोलियो!' उसने कहा, मानो उसने मालवोलियो की जगह बैंको को देख लिया हो।

'यह क्या था?' हरेश ने कहा।

'कुछ नहीं। मुझे अचानक कुछ याद आ गया जो मुझे अगले सत्र में पढ़ाना है। क्रिकेट की गेंदें, महाराज। बस यूं ही कुछ याद आ गया। नहीं, मैं—मैं पक्का नहीं कह सकता कि मैं उसे पहचानता हूं—मुझे लगता है कि आपको कलकत्ता वालों से पूछना चाहिए।' प्राण छल करने में माहिर नहीं था, लेकिन वह किसी भी कीमत पर हरेश और कबीर की मुलाकात नहीं करवाना चाहता था। इससे कई तरह की दिक्कतें खड़ी हो सकती थीं, जिनमें कबीर का सनी पार्क आना भी शामिल था।

सौभाग्य से, किसी और ने उसे नहीं पहचाना।

'मुझे यकीन है कि मैंने उसे कहीं देखा है,' हरेश ने ज़िद करते हुए कहा। 'मुझे कभी न कभी याद आ ही जाएगा। दिखने में अच्छा है। तुम्हें पता है, मेरे साथ भी लता के मामले में ऐसा ही हुआ था। मुझे लगा कि मैंने उसे पहले देखा है—और—मुझे पूरा यकीन है कि मैं गलत नहीं हूँ। मैं जाकर

उससे मिलूंगा।'
प्राण इससे ज्यादा कुछ नहीं कर सका। ओवरों के बीच अमित और हरीश इधर-उधर घूमते हुए आए और हरीश ने कबीर से कहा: 'सुप्रभात। क्या हम पहले कहीं मिल चुके हैं?'
कबीर ने उनकी तरफ देखा और मुस्कुराया। वह खड़ा हो गया। उसने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि हमारे पास ऐसा कुछ है।'
'शायद काम पर—या कानपुर में?' हरेश ने कहा। 'मुझे ऐसा लग रहा है —खैर, मैं हरेश खन्ना हूं, प्राग से।'
'आपसे मिलकर खुशी हुई, महोदय।' कबीर ने उनसे हाथ मिलाया और मुस्कुराया। 'शायद हम ब्रह्मपुर में मिले हों, अगर आप काम के सिलसिले में ब्रह्मपुर आए हों तो।'
हरेश ने सिर हिलाया। 'मुझे नहीं लगता,' उसने कहा। 'क्या आप ब्रह्मपुर से हैं?'
'हां,' कबीर ने कहा। 'मैं ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय का छात्र हूं। मुझे क्रिकेट का शौक है, इसलिए मैं टेस्ट मैच देखने के लिए कुछ समय के लिए यहां आया हूं। बहुत ही निराशाजनक प्रदर्शन रहा।'
'खैर, यह ओस से भीगी हुई पिच है,' अमित ने बचाव करते हुए कहा।
कबीर ने हंसमुख अंदाज में कहा, 'ओस वाली विकेट की तो बात ही छोड़ो। हम हमेशा खुद के लिए बहाने बनाते रहते हैं। रॉय को वो गेंद काटनी ही नहीं चाहिए थी। उमरीगर ने भी वही किया। और हजारे और अमरनाथ का एक ही ओवर में आउट हो जाना तो वाकई बहुत बुरा हुआ। उन्होंने ऐसी टीम भेजी है जिसमें हटन, बेडसर, कॉम्पटन, लेकर या मे जैसे खिलाड़ी नहीं हैं - और फिर भी हम खुद को शर्मिंदा कर लेते हैं। हमने एमसीसी के खिलाफ कभी टेस्ट मैच नहीं जीता है, और अगर ये मैच भी हार गए तो हम जीतने के लायक ही नहीं हैं। मुझे लगने लगा है कि कल

सुबह कोलकाता से निकलना अच्छा ही है। वैसे भी, कल छुट्टी का दिन है।'

“अरे, तुम कहाँ जा रहे हो?” हरेष हँसते हुए बोला, जिसे उस युवक का जोश बहुत पसंद आया। “ब्रह्मपुर वापस?”

नहीं—मुझे अंतर-विश्वविद्यालय प्रतियोगिता के लिए इलाहाबाद जाना है।

‘क्या आप विश्वविद्यालय की टीम में हैं?’

‘जी हां।’ कबीर ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। ‘लेकिन मुझे माफ करना, मैंने अपना परिचय नहीं दिया। मेरा नाम कबीर है। कबीर दुर्रानी।’

“आह,” हरेश ने कहा, उसकी आँखें गायब हो गईं। “तुम प्रोफेसर दुर्रानी के बेटे हो।”

कबीर ने हरेश को हैरानी से देखा।

'हमारी मुलाकात बस एक मिनट के लिए हुई थी,' हरीश ने कहा। 'एक दिन मैं युवा भास्कर टंडन को आपके पिता से मिलवाने आपके घर लाया था। दरअसल, अब जब मैं इस बारे में सोचता हूं, तो आप क्रिकेट के कपड़े पहने हुए थे।'

कबीर ने कहा: 'हे भगवान! मुझे लगता है अब याद आ गया। मुझे बहुत खेद है। लेकिन क्या आप बैठेंगे? ये दो कुर्सियाँ खाली हैं—मेरे दोस्त कॉफी लेने गए हैं।'

हरेश ने अमित का परिचय कराया और वे सभी बैठ गए।

अगले ओवर के बाद कबीर ने हरीश की ओर मुड़कर कहा: 'मुझे लगता है कि तुम जानते हो कि पुल मेले में भास्कर के साथ क्या हुआ था?'

जी हाँ, बिल्कुल। यह जानकर खुशी हुई कि अब वह ठीक है।

'अगर वह यहां होता, तो हमें उस शानदार ऑस्ट्रेलियाई शैली के स्कोरबोर्ड की जरूरत नहीं पड़ती।'

'नहीं,' हरीश ने मुस्कुराते हुए कहा। 'प्राण का भतीजा,' उसने अमित को

अधूरी जानकारी देते हुए कहा।
कबीर ने चिढ़कर कहा, 'काश महिलाएं मैच में बुनाई का सामान न लातीं। हज़ारे बुनाई नहीं। सादा बुनाई। उमरीगर बुनाई नहीं। पर्ल बुनाई। ये तो 'दो शहरों की कहानी' जैसा हो जाता है।'
अमित उस हंसमुख नौजवान की तुलना पर हँस पड़ा, लेकिन उसे अपने शहर का बचाव करना पड़ा। उसने कहा, “खैर, स्टेडियम के हमारे हिस्सों को छोड़कर, जहाँ लोग देखने के साथ-साथ दिखने के लिए भी आते हैं, कलकत्ता क्रिकेट के लिए एक अच्छी जगह है। चार रुपये वाली सीटों पर बैठे दर्शक क्रिकेट के बारे में अच्छी तरह जानते हैं। और वे पिछली रात नौ बजे से ही दिन के टिकटों के लिए लाइन लगाना शुरू कर देते हैं।”
कबीर ने सिर हिलाया। 'हाँ, तुम सही कह रहे हो। और यह एक खूबसूरत स्टेडियम है। मैदान की हरियाली आँखों को लगभग चुभती है।'
हरेश ने एक पल के लिए रंगों के बारे में अपनी गलती पर विचार किया और सोचा कि क्या इससे उसे कोई नुकसान हुआ था।
गेंदबाजी एक बार फिर मैदान छोर से हाई कोर्ट छोर पर स्थानांतरित हो गई।
अमित ने हरीश से कहा, 'जब भी मैं हाई कोर्ट के अंत के बारे में सोचता हूं तो मुझे अपराधबोध होता है।' अपने प्रतिद्वंदी से बातचीत करना उसे परखने का एक तरीका था।
हरेश, जिसे इस बात का जरा भी आभास नहीं था कि उसका कहीं कोई प्रतिद्वंदी भी है, ने मासूमियत से जवाब दिया: 'क्यों? क्या आपने कानून के खिलाफ कुछ किया है? ओह, मैं भूल रहा हूँ, आपके पिता न्यायाधीश हैं।'
‘और मैं एक वकील हूँ, यही मेरी समस्या है। उनके अनुसार मुझे काम करना चाहिए—राय लिखनी चाहिए, कविताएँ नहीं।’

कबीर आश्चर्य से अमित की ओर आधा मुड़ा।
‘आप अमित चटर्जी तो नहीं हैं?’
अमित को पता चल गया था कि शर्म करने से पहचाने जाने पर मामला और बिगड़ जाता है। 'जी हां, बिल्कुल,' उसने कहा। 'वही।'
‘अरे वाह—मैं—कितना अद्भुत—मुझे आपकी रचनाएँ पसंद हैं—बहुत सी—मैं यह नहीं कह सकता कि मैं सब कुछ समझता हूँ।’
नहीं, मैं भी नहीं।
कबीर के मन में अचानक एक विचार आया। 'आप ब्रह्मपुर आकर क्यों नहीं पढ़ते? ब्रह्मपुर साहित्य समाज में आपके बहुत सारे प्रशंसक हैं। लेकिन मैंने सुना है कि आप कभी पाठ नहीं करते।'
‘खैर, ऐसा नहीं है कि मैं कभी नहीं जाता,’ अमित ने सोच-विचार करते हुए कहा। ‘मैं आमतौर पर नहीं जाता—लेकिन अगर मुझे ब्रह्मपुर आने के लिए कहा जाए, और मैं अपनी प्रेरणा से छुट्टी ले सकूँ, तो मैं ज़रूर आऊँगा। मैंने अक्सर सोचा है कि वह शहर कैसा है: बरसात महल, आप जानते हैं, और किला—और, खैर, अन्य सुंदर और दिलचस्प जगहें भी हैं। मैं पहले कभी वहाँ नहीं गया।’ वह रुका। ‘अच्छा, क्या आप सीज़न टिकट धारकों के बीच हमारे साथ वहाँ आना चाहेंगे? लेकिन मुझे लगता है कि ये सीटें बेहतर हैं।’
कबीर ने कहा, ‘ऐसी बात नहीं है। बस मैं दोस्तों के साथ हूँ—उन्होंने मुझे बुलाया है—और आज शहर में मेरा आखिरी दिन है। बेहतर होगा कि मैं न जाऊँ। लेकिन आपसे मिलकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। और—अच्छा—क्या आपको ब्रह्मपुर आने का न्योता बुरा नहीं लगेगा? क्या इससे आपके लेखन में कोई बाधा नहीं आएगी?’
‘नहीं,’ अमित ने नरमी से कहा। ‘ब्रह्मपुर नहीं। बस मेरे प्रकाशकों को लिख दीजिए। वे इसे मुझे भेज देंगे।’

खेल पहले से थोड़ा अधिक स्थिर गति से चल रहा था। जल्द ही दोपहर के भोजन का समय होने वाला था। कोई और विकेट नहीं गिरा था, जो राहत की बात थी, लेकिन भारत अभी भी संकट में था।

अमित ने कहा, 'हजारे के बारे में सुनकर बहुत दुख हुआ। बॉम्बे में सिर पर लगी उस चोट के बाद से उनका फॉर्म पूरी तरह से बिगड़ गया है।'

कबीर ने कहा, 'खैर, आप उसे पूरी तरह से दोष नहीं दे सकते। रिडग्वे की बाउंसरें खतरनाक हो सकती हैं—और आखिर उसने शतक बनाया था। वह बुरी तरह से स्तब्ध रह गया था। मुझे नहीं लगता कि चयन समिति के अध्यक्ष को उसे पवेलियन से वापस बुलाना चाहिए था। कप्तान को वापस बुलाना अपमानजनक है—और इससे सभी का मनोबल गिरता है।' वह लगभग सपने में खोए हुए से बोले: 'मुझे लगता है हजारे अनिर्णायक हैं—पिछले टेस्ट में उन्हें बल्लेबाजी करने या फील्डिंग करने का फैसला करने में पंद्रह मिनट लग गए थे। लेकिन, खैर, मुझे पता चल रहा है कि मैं खुद भी काफी अनिर्णायक हूं, इसलिए मैं उनकी स्थिति समझता हूं। जब से मैं कलकत्ता आया हूं, तब से किसी से मिलने के बारे में सोच रहा हूं, लेकिन मिल नहीं पा रहा हूं। मुझे लगता है कि मैं बस नहीं मिल सकता। मुझे नहीं पता कि मुझे किस तरह की गेंदबाजी का सामना करना पड़ेगा,' उन्होंने थोड़ी कड़वी हंसी के साथ कहा। 'लोग कहते हैं कि उसने हिम्मत खो दी है, और मुझे लगता है मैंने भी अपनी हिम्मत खो दी है!' कबीर की ये बातें किसी खास व्यक्ति को संबोधित नहीं थीं, लेकिन अमित को बिना किसी ठोस कारण के उसके लिए गहरी सहानुभूति महसूस हुई।

यदि अमित ने उसे मीनाक्षी के काल्पनिक वर्णन के 'एज़ यू लाइक इट के अकबर' के रूप में पहचाना होता, तो शायद उसे इतनी सहानुभूति महसूस नहीं होती।

16.21

प्राण ने अमित और हरीश दोनों से कबीर के साथ हुई मुलाकात के बारे में कोई सवाल नहीं किया। वह इस बात का इंतज़ार कर रहा था कि उनमें से कोई एक बताए कि कबीर उसे या अरुण को जानता है या उनके बारे में सुना है; लेकिन चूंकि बातचीत में किसी का भी नाम नहीं आया, इसलिए बताने लायक कुछ था ही नहीं। उसने राहत की सांस ली। ज़ाहिर है कबीर सनी पार्क नहीं आएगा और उनकी बनाई योजनाओं को बिगाड़ेगा नहीं।

सैंडविच और कॉफी के हल्के-फुल्के नाश्ते के बाद, भारत की अचानक हार से अभी भी स्तब्ध और दोपहर के खेल को लेकर आशावादी न दिख रहे छह लोगों का समूह कारों और टैक्सियों में सवार होकर निकल पड़ा। उन्हें मैदान में पंडित नेहरू का भाषण सुनने के लिए जमा हुई भारी भीड़ के बीच से रास्ता बनाना पड़ा। प्रधानमंत्री—या यूं कहें कि कांग्रेस अध्यक्ष —अपने तूफानी चुनावी दौरों में से एक पर थे। ठीक एक दिन पहले ही उन्होंने खड़गपुर, आसनसोल, बर्दवान, चिनसुराह और सेरामपुर में भाषण दिए थे; और उससे ठीक पहले वे असम में प्रचार कर रहे थे।

वरुण ने रेस ट्रैक के चारों ओर जमा छोटी, लेकिन उतनी ही उत्सुक भीड़ के पास उतरने की गुजारिश की और अपने दोस्तों को ढूंढने लगा। थोड़ी देर बाद उसे लगा कि शायद उसे नेहरू का भाषण ही सुन लेना चाहिए। लेकिन थोड़ी देर की जद्दोजहद के बाद, 'माई लेडी जीन' और 'विंडी वोल्ड' ने 'फ्रीडम फाइटर' को कई कदम पीछे छोड़ दिया। उसने मन ही मन सोचा, मैं इसके बारे में अखबारों में पढ़ ही लूंगा।

इस बीच, हरेश अपने उन दूर के रिश्तेदारों से मिलने कलकत्ता गया था, जिनसे उसके पालक पिता ने उसे मिलने को कहा था। प्राहापुर में प्रोडक्शन के काम में इतना व्यस्त होने के कारण उसे समय ही नहीं मिल पा रहा था; लेकिन अब उसके पास कुछ घंटे खाली थे। जब वह अपने रिश्तेदारों के घर पहुँचा, तो उसने देखा कि वे सब रेडियो पर क्रिकेट कमेंट्री

सुन रहे थे। उन्होंने मेहमाननवाज़ी दिखाने की कोशिश की, लेकिन उनका ध्यान कहीं और ही था। हरेश भी उनके साथ रेडियो के पास बैठ गया।
दिन का खेल समाप्त होने पर भारत का स्कोर 257 रन पर 6 विकेट था। कम से कम शर्मनाक हार टल गई थी।
इसलिए हरीश अच्छे मूड में था जब वह चाय के समय सनी पार्क पहुँचा। वहाँ उसकी मुलाकात अपर्णा से हुई, जिसे खुश करने की उसने कोशिश की, लेकिन अपर्णा ने उससे दूरी बनाए रखी, और उमा से भी हुई, जिसने उसे एक सहज मुस्कान दी जिससे वह प्रसन्न हो गया।
'क्या तुम शिष्टाचार निभा रहे हो, हरीश?' सविता ने स्नेहपूर्वक पूछा। 'तुम तो कुछ खा ही नहीं रहे हो। इस परिवार में शिष्टाचार का कोई मूल्य नहीं है। अरुण, पेस्ट्री लाओ।'
अरुण ने हरीश से कहा, 'मुझे माफ़ी मांगनी चाहिए। मुझे आज सुबह ही इसका ज़िक्र कर देना चाहिए था, लेकिन मैं पूरी तरह से भूल गया। मीनाक्षी और मैं आज रात खाने के लिए बाहर जा रहे हैं।'
"ओह," हरेश ने हैरानी से कहा। उसने श्रीमती रूपा मेहरा की ओर देखा। वह लाल चेहरे और परेशान लग रही थीं।
जी हां। हमें तीन हफ्ते पहले निमंत्रण मिला था, और हम आखिरी समय में इसे रद्द नहीं कर सके। लेकिन मां और बाकी सब तो आएंगे ही। और वरुण समारोह का संचालन करेंगे। मीनाक्षी और मैं दोनों ही इसके लिए बहुत उत्सुक थे, यह कहने की जरूरत नहीं है, लेकिन जब हम उस दिन प्राहापुर से घर लौटे, तो हमने अपनी डायरी देखी और—बस, वहीं पर यह खबर छपी हुई है।
मीनाक्षी ने हंसते हुए कहा, 'हमें बहुत बुरा लग रहा है। एक चीज़ स्ट्रॉ जरूर पीजिए।'
"धन्यवाद," हरेश ने थोड़ा उदास होकर कहा। लेकिन कुछ मिनट बाद

उसका उत्साह वापस लौट आया। लता कम से कम उसे देखकर खुश तो लग रही थी। उसने वाकई गुलाबी साड़ी पहनी हुई थी। या तो वह गुलाबी साड़ी पहने थी या फिर वह बहुत निर्दयी थी! आज उसे उससे बात करने का मौका ज़रूर मिलेगा। और सविता, उसे महसूस हुआ, दयालु, स्नेहशील और हौसला बढ़ाने वाली थी। शायद यह कोई बुरी बात नहीं थी कि अरुण रात के खाने पर नहीं था, हालाँकि मेज़बान की अनुपस्थिति में उसकी मेज़ पर बैठना—और वह भी पहली बार—अजीब लगता। हरेश को उसकी ओर से, और कुछ हद तक गहरे रंग की मीनाक्षी से भी, दबी हुई दुश्मनी की भावना महसूस हो रही थी, और वह उनकी संगति में पूरी तरह सहज महसूस नहीं कर पाता। लेकिन यह निश्चित रूप से उसके द्वारा दी गई मेहमाननवाज़ी पर एक अजीब प्रतिक्रिया थी।

वरुण असामान्य रूप से खुश दिख रहा था। उसने घुड़दौड़ में आठ रुपये जीते थे।

'खैर, हमने आखिरकार इतना बुरा भी नहीं किया,' हरेश ने उससे कहा।

'मुझे माफ़ करें?'

'आज सुबह के बाद, मेरा मतलब है।'

‘ओह, हाँ, क्रिकेट। समापन स्कोर क्या था?’ वरुण ने उठते हुए पूछा।

प्राण ने आश्चर्य से कहा, '257 रन पर 6 विकेट,' यह देखकर कि वरुण इस पर ध्यान नहीं दे रहा था।

‘हम्म,’ वरुण ने कहा और ग्रामोफोन की ओर चला गया।

‘नहीं!’ अरुण गरजते हुए बोला।

‘क्या न करें, अरुण भाई?’

‘उस घटिया मशीन को चालू मत करो। वरना मैं तुम्हारे नशे में धुत्त कानों पर घूंसे मार दूँगा।’

वरुण बेहद डरपोक होकर पीछे हट गया। भाइयों के बीच हुई बातचीत को

देखकर हरीश चौंक गया। उस दिन प्राहापुर में वरुण ने लगभग कुछ भी नहीं कहा था।

‘अपर्णा को यह पसंद है,’ उसने नाराज़गी भरे लहजे में कहा, अरुण की ओर देखने की हिम्मत न करते हुए। ‘और उमा को भी।’ हालांकि यह अटपटा लग रहा था, पर सच था। सविता, जब भी उसे लगता कि लैटिन भाषा से उमा नहीं सो रही है, तो उसे झुलाते हुए यह गाना गाती थी।

अरुण का चेहरा लाल हो गया और उसने कहा, 'मुझे परवाह नहीं कि किसे क्या पसंद है। तुम इसे बंद करोगे। और अभी के अभी।'

वरुण ने दबी हुई जीत के भाव से कहा, 'मैंने तो इसे चालू ही नहीं किया था।'

लता ने जल्दबाजी में हरेश से पहला सवाल पूछा जो उसके दिमाग में आया: 'क्या तुमने दीदार को देखा है?'

‘ओह, जी हाँ,’ हरेश ने कहा। ‘तीन बार। एक बार अकेले, एक बार दिल्ली में दोस्तों के साथ और एक बार लखनऊ में सिमरन की बहन के साथ।’

कुछ सेकंड के लिए सन्नाटा छा गया।

लता ने कहा, 'आपको फिल्म जरूर पसंद आई होगी।'

'हां,' हरेश ने कहा। 'मुझे फिल्में पसंद हैं। जब मैं मिडिलहैम्पटन में था, तो कभी-कभी एक दिन में दो फिल्में देखता था। हालांकि मैंने कोई नाटक नहीं देखा,' उन्होंने कुछ अनावश्यक रूप से कहा।

‘नहीं—मुझे तो ऐसा नहीं लगता था,’ अरुण ने कहा। ‘मेरा मतलब है—जैसा कि आपने पहले कहा था, अवसर बहुत कम हैं। खैर, अगर आप हमें अनुमति दें, तो हम तैयार हो जाते हैं।’

‘जी हां,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा। ‘आप तैयार हो जाइए। और हमें कुछ काम करने हैं। सविता को बच्चे को सुलाना है और मुझे नए साल के कुछ पत्र लिखने हैं, और प्राण—प्राण—’

‘क्या उसके पास पढ़ने के लिए कोई किताब है?’ प्राण ने सुझाव दिया।
‘जी हां,’ श्रीमती रूपा मेहरा ने सहमति जताते हुए कहा। ‘और हरेश और लता बगीचे में जा सकते हैं।’ उन्होंने हनीफ को बगीचे की बत्ती जलाने को कहा।

16.22

अभी पूरी तरह अंधेरा नहीं हुआ था। दोनों छोटे से बगीचे में कुछ देर घूमे, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहें। ज़्यादातर फूल मुरझा चुके थे, लेकिन बेंच के पास एक कोने में सफेद फूलों की खुशबू अभी भी फैली हुई थी।
'क्या हम बैठ जाएं?' हरेश ने पूछा।
‘हाँ। क्यों नहीं?’
'खैर, हमें मिले हुए काफी समय हो गया है,' हरेश ने कहा।
‘क्या आप प्राहापुर क्लब को नहीं गिनते?’ लता ने कहा।
'ओह, वह तो आपके परिवार के लिए था। आप और मैं तो वहां मुश्किल से ही मौजूद थे।'
लता ने मुस्कुराते हुए कहा, 'हम सभी बहुत प्रभावित हुए।' बेशक, भले ही लता वहां मौजूद न रही हो, लेकिन हरेश की उपस्थिति स्पष्ट थी।
'मुझे उम्मीद थी कि तुम ऐसा ही करोगे,' हरेश ने कहा। 'लेकिन मुझे नहीं पता कि तुम्हारा बड़ा भाई इस सब के बारे में क्या सोचता है। क्या वह मुझसे बच रहा है? आज सुबह उसने आधा समय अपने एक दोस्त को ढूंढने में बिताया, और अब वह बाहर जा रहा है।'
‘अरे, वो तो बस अरुण की तरह ही व्यवहार कर रहा है। अभी जो कुछ हुआ उसके लिए मुझे खेद है; वो भी उसका आम स्वभाव है। लेकिन वो कभी-कभी बहुत स्नेह दिखाता है। बस ये कभी पता नहीं चलता कि कब ऐसा हो जाए। आपको इसकी आदत पड़ जाएगी।’

आखिरी वाक्य अनायास ही निकल गया था। लता खुद पर हैरान और नाराज़ थी। वह हरेश को पसंद तो करती थी, लेकिन उसे कोई झूठी उम्मीद नहीं देना चाहती थी। उसने झट से कहा, 'उसके सभी सहकर्मियों की तरह।' लेकिन इससे बात और बिगड़ गई; यह बेहद दूरी भरा और कुछ हद तक अतार्किक लग रहा था।

‘उम्मीद है मैं उनका सहकर्मी नहीं बनूँगा!’ हरेश मुस्कुराते हुए बोला। वह लता का हाथ पकड़ना चाहता था, लेकिन उसे एहसास हुआ कि—भले ही स्टॉक की महक आ रही थी और श्रीमती रूपा मेहरा उनकी इस बातचीत को मौन स्वीकृति दे रही थीं—यह सही समय नहीं था। हरेश थोड़ा असमंजस में था। अगर वह सिमरन के साथ होता, तो उसे पता होता कि क्या बात करनी है; वैसे भी वे हिंदी, पंजाबी और अंग्रेजी के मिश्रण में बात कर रहे होते। लेकिन लता से बात करना अलग था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। पत्र लिखना कहीं ज्यादा आसान था। थोड़ी देर बाद उसने कहा:

‘मैं हार्डी की एक-दो किताबें फिर से पढ़ रहा हूँ।’ यह उनकी गुडइयर वेल्टेड किस्म की चाय या चेक लोग नए साल की पूर्व संध्या पर कितना पीते हैं, इस बारे में बात करने से बेहतर था।

लता ने कहा, “क्या आपको वह थोड़ा निराशावादी नहीं लगता?” वह भी बातचीत शुरू करने की कोशिश कर रही थी। शायद उन्हें एक-दूसरे को पत्र लिखते रहना चाहिए था।

'खैर, मैं एक आशावादी व्यक्ति हूं - कुछ लोग कहते हैं कि मैं बहुत ज्यादा आशावादी हूं - इसलिए मेरे लिए कुछ ऐसा पढ़ना अच्छा है जो इतना आशावादी न हो।'

'यह एक दिलचस्प विचार है,' लता ने कहा।

हरेश असमंजस में था। वे शाम की ठंडी हवा में बगीचे की बेंच पर उसकी

माँ और उसके पालक पिता के आशीर्वाद से बैठे थे, और वे मुश्किल से ही कोई बातचीत कर पा रहे थे। मेहरा परिवार एक जटिल परिवार था और कुछ भी वैसा नहीं था जैसा दिखता था।

'तो क्या मुझे आशावादी होने का कोई कारण है?' उसने मुस्कुराते हुए पूछा। उसने खुद से वादा किया था कि वह जल्द ही स्पष्ट जवाब हासिल करेगा। लता ने कहा था कि पत्र-व्यवहार एक-दूसरे को जानने का अच्छा तरीका है, और उसे लगा कि उनके पत्रों-व्यवहार से बहुत कुछ पता चला है। ब्रह्मपुर से लिखे उसके आखिरी दो पत्रों में शायद उसे थोड़ी दूरी महसूस हुई थी, लेकिन उसने छुट्टियों में उसके साथ जितना हो सके उतना समय बिताने का वादा किया था। हालांकि, वह समझ सकता था कि वह वास्तविक मुलाकात को लेकर घबरा सकती है, खासकर अपने बड़े भाई की कड़ी निगरानी में।

लता कुछ देर चुप रही। फिर, हरेश के साथ बिताए गए सारे समय के बारे में सोचते हुए—जो उसे भोजन, ट्रेन और कारखानों के सिलसिलेवार समय जैसा ही लग रहा था—उसने कहा: 'हरेश, मुझे लगता है कि अंतिम निर्णय लेने से पहले हमें थोड़ा और मिलना और बात करनी चाहिए। यह मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय है। मुझे पूरी तरह से आश्वस्त होना ज़रूरी है।'

"हाँ, मुझे पूरा यकीन है," हरेश ने दृढ़ स्वर में कहा। "मैंने तुम्हें अब तक पाँच अलग-अलग जगहों पर देखा है, और समय के साथ तुम्हारे लिए मेरी भावनाएँ और गहरी होती गई हैं। मैं अपनी बात अच्छे से व्यक्त नहीं कर पाता—"

लता ने कहा, 'बात वो नहीं है,' हालाँकि वो जानती थी कि कम से कम आंशिक रूप से तो वो बात थी ही। आख़िरकार, वे अपनी बाकी ज़िंदगी में किस बारे में बात करेंगे?

'खैर, मुझे पूरा यकीन है कि आपके मार्गदर्शन से मैं बेहतर हो जाऊंगा,' हरेश ने प्रसन्नतापूर्वक कहा।

लता ने कहा, 'पांचवां स्थान क्या है?'

'पांचवां स्थान क्या?'

'आपने कहा था कि हम पाँच जगहों पर मिले थे। प्राहापुर, अभी का कलकत्ता, कानपुर, लखनऊ में बहुत थोड़े समय के लिए जब आपने स्टेशन पर हमारी मदद की थी... पाँचवीं जगह कौन सी है? आप दिल्ली में सिर्फ मेरी माँ से मिले थे।'

'Brahmpur.'

'लेकिन-'

'हमारी मुलाकात ठीक से नहीं हुई थी, लेकिन मैं उस समय प्लेटफार्म पर था जब आप कलकत्ता ट्रेन में चढ़ रही थीं। इस बार नहीं—कुछ महीने पहले की बात है। आपने नीली साड़ी पहनी हुई थी, और आपके चेहरे पर एक बहुत ही गंभीर और गहन भाव था, मानो किसी बात ने—हाँ, एक बहुत ही गंभीर और गहन भाव।'

'क्या आपको यकीन है कि वह नीली साड़ी ही थी?' लता ने मुस्कुराते हुए कहा।

'हाँ,' हरेश ने मुस्कुराते हुए कहा।

'तुम वहां क्या कर रहे थे?' लता ने आश्चर्य से पूछा; उसका मन एक बार फिर उस प्लेटफॉर्म और उस समय उसे जो महसूस हो रहा था, उस पर लौट आया था।

'कुछ नहीं। बस कानपुर के लिए निकल रहे थे। और फिर, हमारी ठीक से मुलाकात के कुछ दिनों बाद तक मैं सोचता रहा, "मैंने उसे पहले कहाँ देखा है?" जैसे आज टेस्ट मैच में उस युवा दुर्रानी के साथ।'

लता सपने से बाहर आई। उसने कहा, 'दुर्रानी?'

हां, लेकिन मुझे ज्यादा सोचने की जरूरत नहीं पड़ी। उससे बात करने के कुछ ही मिनटों में मुझे पता चल गया कि मैंने उसे कहां देखा था। वह भी ब्रह्मपुर में ही था। मैं भास्कर को उसके पिता से मिलवाने ले गया था। ब्रह्मपुर में तो सब कुछ होता ही है!

लता चुप थी लेकिन उसे देख रही थी, और उसे लगा कि आखिरकार वह उसमें काफी दिलचस्पी ले रही है।

“सुंदर लड़का है,” हरेश ने उत्साहित होकर कहा। “क्रिकेट के बारे में बहुत अच्छी जानकारी रखता है। और विश्वविद्यालय की टीम में भी है। वह कल कहीं अंतर-विश्वविद्यालय स्तर के टूर्नामेंट के लिए रवाना हो रहा है।”

‘क्रिकेट मैच में?’ लता ने कहा। ‘क्या तुम कबीर से मिले थे?’

'क्या तुम उसे जानते हो?' हरेश ने थोड़ा भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।

‘हां,’ लता ने अपनी आवाज़ पर काबू रखते हुए कहा। ‘हमने साथ में ‘ट्वेल्थ नाइट’ में अभिनय किया था। कितनी अजीब बात है। वह कलकत्ता में क्या कर रहा था? वह यहां कितने समय से है?’

‘मुझे नहीं पता,’ हरीश ने जवाब दिया। ‘शायद क्रिकेट के लिए ही। लेकिन तीन दिन के टेस्ट मैच के बाद जाना दुख की बात है। वैसे भी इस मैच में किसी भी टीम की जीत की कोई संभावना नहीं है। और हो सकता है कि वह किसी काम से भी आए हों। उन्होंने किसी से मिलने की इच्छा जताई थी, लेकिन मिलने पर उनके स्वागत को लेकर उन्हें अनिश्चितता थी।’

‘ओह,’ लता ने कहा। ‘क्या वह अंततः उससे मिला?’

नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। खैर, हम किस बारे में बात कर रहे थे? हाँ, पाँच शहर। ब्रह्मपुर, प्राहापुर, कलकत्ता, लखनऊ, कानपुर।

लता ने थोड़ी झुंझलाहट के साथ कहा, 'काश आप इसे कानपुर न कहते।'

‘मैं इसे क्या नाम दूं?’

कानपुर।

‘ठीक है। और अगर आप चाहें तो मैं कलकत्ता को कोलकाता कह दूंगा।’
लता ने कोई जवाब नहीं दिया। यह सोचकर उसकी आँखों में जलन होने लगी कि कबीर अभी भी शहर में है, कलकत्ता में कहीं है, लेकिन उससे संपर्क नहीं हो पा रहा है, और वह कल चला जाएगा। वह यहीं, उसी बेंच पर बैठी थी जहाँ उसने कबीर का पत्र पढ़ा था—और वह भी हरेश के साथ। बेशक, अगर हरेश के साथ उसकी मुलाकातें खाने-पीने से शुरू होती थीं, तो कबीर के साथ उसकी मुलाकातें बेंचों पर बैठकर होती थीं। उसे हँसी भी आ रही थी और रोना भी।
‘क्या कोई बात है?’ हरेश ने थोड़ी झिझकते हुए कहा।
नहीं, चलो अंदर चलते हैं। थोड़ी ठंड लग रही है। अगर अरुण भाई अब तक चले गए हैं तो वरुण से कुछ फिल्मी गाने बजवाने में ज्यादा मुश्किल नहीं होनी चाहिए। मेरा मन गाने सुनने का कर रहा है।
मुझे लगा था कि आपको शास्त्रीय संगीत ज्यादा पसंद है।
लता ने उत्साह से कहा, 'मुझे सब कुछ पसंद है, लेकिन अलग-अलग समय पर। और वरुण आपको पीने के लिए कुछ देगा।'
हरेश ने एक बियर मांगी। वरुण ने दीदार फिल्म का एक गाना चलाया और फिर ड्राइंग रूम से बाहर चला गया; उसकी माँ ने उसे रास्ते से हटने का निर्देश दिया था। लता की नज़र मिस्र की पौराणिक कथाओं की किताब पर पड़ी।
हरेश उसके बदलते मिजाज से काफी हैरान था। इससे उसे बेचैनी होने लगी। उसने अपने पत्रों में जो लिखा था कि उसे उससे प्यार हो गया है, वह सच था। उसे पूरा यकीन था कि वह भी उससे प्यार करती है। अब वह उसके साथ अजीब तरह से पेश आ रही थी।
रिकॉर्ड तीन मिनट तक चलता रहा। लता इसे बदलने के लिए नहीं उठीं। कमरा शांत था। उन्होंने हल्के-फुल्के अंदाज़ में कहा, 'मैं कलकत्ता से थक

गई हूँ। अच्छा हुआ कि मैं कल वनस्पति उद्यान जा रही हूँ।'
'लेकिन मैंने कल का दिन तुम्हारे लिए रखा था। मैंने तुम्हारे साथ दिन बिताने की योजना बनाई थी,' हरेश ने कहा।
'तुमने मुझे कभी नहीं बताया, हरेश।'
'तुमने कहा था—तुमने लिखा था—कि तुम मेरे साथ जितना हो सके उतना समय बिताना चाहते हो।' बातचीत में एक मोड़ पर कुछ बदल गया था। उसने अपना हाथ माथे पर फेरा और भौंहें सिकोड़ीं।
लता ने कहा, 'खैर, मेरे ब्रह्मपुर जाने से पहले अभी भी पांच दिन बाकी हैं।'
'मेरी छुट्टी कल खत्म हो रही है। अपनी वनस्पति विज्ञान की यात्रा रद्द कर दो। मैं ज़ोर दे रहा हूँ!' वह मुस्कुराया और उसका हाथ पकड़ लिया।
'अरे, इतनी बुरी बातें मत करो—' लता ने कहा।
उसने तुरंत उसका हाथ छोड़ दिया। 'मैं निर्दयी नहीं हूँ,' उसने कहा।
लता ने उसकी ओर देखा। उसके चेहरे का रंग उड़ गया था, और हंसी भी गायब हो गई थी। वह अचानक बहुत गुस्से में आ गया था। 'मैं बुरा इंसान नहीं हूँ,' उसने दोहराया। 'मुझे पहले कभी किसी ने ऐसा नहीं कहा। मेरे लिए फिर कभी उस शब्द का इस्तेमाल मत करना। मैं—मैं अब जा रहा हूँ।' वह उठ खड़ा हुआ। 'मैं स्टेशन तक अपना रास्ता ढूंढ लूंगा। कृपया अपने परिवार को मेरी तरफ से धन्यवाद कहना। मैं रात के खाने के लिए नहीं रुक सकता।'
लता पूरी तरह से स्तब्ध दिख रही थी, लेकिन उसने उसे रोकने की कोशिश नहीं की। 'अरे, इतनी बुरी बातें मत करो!' सोफिया कॉन्वेंट की लड़कियाँ एक-दूसरे से दिन में बीस बार ऐसा ही कहती होंगी। कुछ शब्द —खासकर कुछ खास मनोदशाओं में—उसकी आज की बातचीत में भी आ गए थे। इसका कोई खास आहत करने वाला अर्थ नहीं था, और वह इस समय समझ नहीं पा रही थी कि वह इतना आहत क्यों था।

लेकिन हरेश, जो पहले से ही किसी ऐसी बात से परेशान था जिसे वह ठीक से समझ नहीं पा रहा था, उसे बहुत गहरा आघात लगा। उसे 'कमीना'—अनुदार, नीच, घटिया—कहना, और वह भी उस स्त्री द्वारा जिससे वह प्रेम करता था और जिसके लिए वह इतना कुछ करने को तैयार था—वह कुछ बातें तो बर्दाश्त कर सकता था, लेकिन यह बर्दाश्त नहीं कर सकता था। वह अनुदार नहीं था—उसके उस लापरवाह भाई से कहीं कम अनुदार था जिसने कुछ दिन पहले उसके प्रयासों की सराहना में एक शब्द भी नहीं कहा था और जिसमें इतनी भी शालीनता नहीं थी कि उसकी मेहमाननवाज़ी का बदला चुकाने के लिए उसके साथ एक शाम बिता सके। नीच होने की बात करें तो, हो सकता है कि उसके लहजे में उनकी जैसी शालीनता न हो और न ही उसके शब्दों में उनकी जैसी सुंदरता हो, लेकिन वह उन्हीं के जैसे अच्छे खानदान से था। वे अपना अंग्रेज़ी लहजा बनाए रख सकते थे। 'कमीना' कहलाना असहनीय था। वह ऐसे लोगों से कोई वास्ता नहीं रखना चाहता था जो उसके बारे में ऐसा सोचते थे।

16.23

हरेश के चले जाने की खबर सुनकर श्रीमती रूपा मेहरा लगभग सदमे में आ गईं। उन्होंने कहा, 'यह तो बहुत ही बुरा बर्ताव था,' और फूट-फूटकर रोने लगीं। फिर उन्होंने अपनी बेटी पर गुस्सा करते हुए कहा, 'तुमने ज़रूर कुछ ऐसा किया होगा जिससे वह नाराज़ हो गया हो। वरना वह कभी नहीं जाता। वह बिना अलविदा कहे कभी नहीं जाता।'

सविता ने उसे शांत किया। फिर, यह देखकर कि लता पूरी तरह सदमे में है, वह उसके पास बैठ गई और उसका हाथ पकड़ लिया। उसे खुशी थी कि अरुण वहाँ नहीं था जो आग में लकड़ी का बुरादा डालता। धीरे-धीरे उसे समझ आने लगा कि क्या हुआ था और हरेश ने लता के कहने का

क्या गलत अर्थ निकाला होगा।
लता ने कहा, 'लेकिन अगर हम बोलते समय भी एक-दूसरे को समझ नहीं पाते, तो हम एक साथ किस तरह का भविष्य बना सकते हैं?'
‘अभी इसकी चिंता मत करो,’ सविता ने कहा। ‘सूप पी लो।’
जब सब कुछ विफल हो जाए, तो लता ने सोचा, सूप तो हमेशा होता ही है।
'और कुछ सुकून देने वाली चीज पढ़ें,' सविता ने आगे कहा।
‘जैसे कोई कानून की किताब?’ उसकी आँखों में अभी भी आँसू थे, लेकिन वह मुस्कुराने की कोशिश कर रही थी।
‘जी हां,’ सविता ने कहा। ‘या फिर—चूंकि सोफिया कॉन्वेंट ही इस सारी उलझन की जड़ है—तो क्यों न आप स्कूल से अपनी ऑटोग्राफ बुक पढ़ लें? उसमें पुराने दोस्तों और अमर विचारों की भरमार है। जब मेरा मन उदास होता है, तो मैं अक्सर अपनी ऑटोग्राफ बुक देखती हूं। मैं सच कह रही हूं। मैं सिर्फ मां की बात दोहरा नहीं रही हूं।’
यह अच्छी सलाह थी। गरमा गरम सब्जी का सूप आ गया, और लता, सुझाए गए उपाय की मूर्खता पर थोड़ी हँसी के साथ, अपनी किताब देखने लगी। गुलाबी, क्रीम और हल्के नीले रंग के छोटे पन्नों पर, अंग्रेज़ी में और (उसकी चाचियों से, और एक बार वरुण से राष्ट्रवादी भावना में) हिंदी में, और यहाँ तक कि चीनी में भी (उसकी सहपाठी यूलिया वोंग का एक अपठनीय लेकिन सुंदर लेख), अलग-अलग स्याही और अलग-अलग लिखावट में लिखी गई शिक्षाप्रद, मार्मिक, मनोरंजक या मज़ाकिया पंक्तियाँ उसकी यादों को ताज़ा कर रही थीं और उसकी उलझन को कम कर रही थीं। उसने अपने पिता के एक पत्र का एक छोटा सा टुकड़ा भी चिपकाया था, जो चार छोटे बंदरों के एक मोटे पेंसिल स्केच के साथ समाप्त होता था, जिन्हें वह अपने 'बंदर-लोग' कहा करते थे। अब वह उन्हें

पहले से कहीं ज़्यादा याद कर रही थी। उसने अपनी माँ का लिखा हुआ पढ़ा, जो किताब में पहला था:

जब दुनिया निर्दयी हो गई हो, जब जीवन की परेशानियाँ आपके मन को अंधकारमय कर दें,

बैठ कर मुंह मत सिकोड़ो, आहें मत भरो, उदास मत हो जाओ और मायूस मत हो जाओ।

चौक पर टहलें, ईश्वर की ताजी हवा में अपने फेफड़े भरें।

फिर सीटी बजाते हुए काम पर वापस जाओ, मुस्कुराओ और उम्मीद रखो।

याद रखना, लता प्रिय, कि प्रत्येक पुरुष (और स्त्री) का भाग्य स्वयं उसके हाथों में होता है।

आपका सदा प्रेम करने वाला,

एमए

अगले पृष्ठ पर एक मित्र ने लिखा था:

लता—

प्रेम वह तारा है जिसकी ओर पुरुष चलते समय देखते हैं, और विवाह वह गड्ढा है जिसमें वे गिर पड़ते हैं।

प्यार और ढेर सारी शुभकामनाएँ।

अनुराधा

किसी और ने सुझाव दिया था:

प्रेम की आवश्यकता पूर्ण लोगों को नहीं बल्कि अपूर्ण लोगों को होती है।

एक अन्य व्यक्ति ने नीले रंग के पन्ने पर थोड़ी पीछे की ओर झुकी हुई लिखावट में लिखा था:

कठोर शब्द एक कोमल हृदय को उसी प्रकार तोड़ देते हैं जैसे सर्दियों की पहली बर्फ क्रिस्टल के फूलदान को पिघला देती है। झूठा मित्र सूर्यघड़ी

की उस छाया के समान है जो सुहावने मौसम में तो दिखाई देती है लेकिन बादल आते ही गायब हो जाती है।
लता के मन में यह विचार आया कि पंद्रह साल की लड़कियाँ जीवन को गंभीरता से लेती हैं। सविता का बहन के रूप में योगदान यह था:
जीवन महज झाग और बुलबुले जैसा है।
दो बातें पत्थर की तरह अटल हैं:
दूसरों की मुसीबत में सहानुभूति दिखाना,
हमें खुद में साहस रखना होगा।
खुद को आश्चर्यचकित करते हुए, उसकी आँखें फिर से नम हो गईं।
लता ने मन ही मन सोचा, पच्चीस साल की उम्र से पहले ही मैं माँ जैसी बन जाऊँगी। यह सोचते ही उसके आँसू तुरंत रुक गए।
फोन की घंटी बजी। लता के लिए अमित का फोन था।
उन्होंने कहा, 'कल के लिए सब कुछ तैयार है। तपन हमारे साथ आ रहा है। उसे बरगद का पेड़ पसंद है। तुम माँ को बता देना कि मैं तुम्हारा अच्छे से ख्याल रखूँगा।'
'अमित, मेरा मूड बहुत खराब है। मैं तुम्हारे साथ बिल्कुल भी नहीं रहूंगी। चलो किसी और दिन चलते हैं।' उसकी आवाज़, जो अभी पूरी तरह स्पष्ट नहीं थी, उसे खुद भी अजीब लग रही थी, लेकिन अमित ने इस पर कोई टिप्पणी नहीं की।
'यह फैसला मुझे करना है,' उसने कहा। 'या यूं कहें कि हम दोनों को। अगर कल जब मैं तुम्हें लेने आऊं, और तुम जाने से मना कर दो, तो मैं तुम पर दबाव नहीं डालूंगा। कैसा रहेगा? तपन और मैं अकेले ही चले जाएंगे। मैंने उससे वादा कर दिया है—और मैं उसे निराश नहीं करना चाहता।'
लता सोच रही थी कि क्या कहे, तभी अमित ने कहा, 'अरे, मुझे भी

अक्सर ऐसा होता है: सुबह के नाश्ते के समय उदासी, दोपहर के भोजन के समय निराशा, रात के खाने के समय सुस्ती। लेकिन अगर आप कवि हैं, तो यही आपकी रचना सामग्री है। मुझे लगता है कि जो कविता आपने मुझे दी है, उसकी उत्पत्ति भी कुछ इसी तरह हुई होगी।'

'ऐसा नहीं हुआ!' लता ने कुछ नाराजगी के साथ कहा।

'बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया, तुम ठीक हो रहे हो,' अमित हँसते हुए बोला।

'मुझे पता है।' उसने फोन काट दिया।

रिसीवर पकड़े हुए लता के मन में यह विचार रह गया कि कुछ लोग उसे बहुत कम समझते हैं और कुछ लोग उसे बहुत ज्यादा समझते हैं।

16.24

मेरी प्यारी लता,

जब से तुम दूर हो, मैं तुम्हारे बारे में बहुत सोच रही हूँ, लेकिन तुम जानती हो कि मैं छुट्टियों में भी हमेशा कितनी व्यस्त रहती हूँ। फिर भी, कुछ ऐसा हुआ है जिसके बारे में मुझे लगता है कि मुझे तुम्हें लिखना चाहिए। मैं तुम्हें बताऊँ या नहीं, इस बारे में बहुत सोच-विचार कर रही थी, लेकिन मुझे लगता है कि सबसे अच्छा यही होगा कि मैं तुम्हें बता दूँ। तुम्हारा पत्र पाकर मुझे बहुत खुशी हुई और तुम्हें दुखी करने के ख्याल से ही मुझे डर लग रहा है। शायद चुनाव के पत्रों और क्रिसमस की भागदौड़ में यह पत्र देर से मिले या फिर गुम ही हो जाए। मुझे नहीं लगता कि मुझे इसका अफसोस होगा।

मुझे खेद है कि मेरे विचार इतने बिखरे हुए हैं। मैं बस आवेग में आकर लिख रही हूँ। कल मैं अपने कागज़ात देख रही थी और मुझे वो चिट्ठी मिली जो तुमने मुझे नैनीताल में लिखी थी, जिसमें तुमने बताया था कि तुम्हें वो सूखा फूल फिर से मिल गया है। मैंने उसे दो बार पढ़ा और अचानक मुझे चिड़ियाघर वाला वो दिन याद आ गया, और मैंने याद करने

की कोशिश की कि मैंने तुम्हें वो फूल क्यों दिया था! मुझे लगता है कि अनजाने में ही वो हमारी दोस्ती की मुहर थी। उसमें तुम्हारे लिए मेरी भावनाएँ व्यक्त हुई थीं, और मुझे खुशी है कि मैं अपनी खुशियाँ और दुख इस अद्भुत, स्नेही इंसान के साथ बाँट सकती हूँ जो मुझसे इतनी दूर है फिर भी इतनी करीब है।

वैसे तो कलकत्ता ज़्यादा दूर नहीं है, लेकिन दोस्त हमेशा मायने रखते हैं, और यह जानकर अच्छा लगा कि तुम मुझे भूली नहीं हो। मैं अपने मन में चल रही बातों को सुलझाते हुए नाटक की तस्वीरें दोबारा देख रही थी, और सोच रही थी कि तुमने कितनी शानदार एक्टिंग की थी। उस समय भी मैं हैरान थी और आज भी हैरान हूँ—खासकर उस जैसी शांत स्वभाव की लड़की से, जो अपने डर, कल्पनाओं, सपनों, चिंताओं, प्यार और नफरत के बारे में ज़्यादा बात नहीं करती—और जिसे मैं शायद कभी जान ही नहीं पाती अगर किस्मत से हम दोनों एक ही अस्पताल के कमरे—माफ़ करना! हॉस्टल के कमरे—में न मिले होते।

खैर, मैंने इस विषय को काफी देर तक टाल दिया है, और मैं आपके चिंतित चेहरे को देख सकता हूँ। मुझे आपको जो खबर देनी है, वह K के बारे में है, और खैर, मुझे बस यही बता देना चाहिए और बात खत्म कर देनी चाहिए। मुझे उम्मीद है कि आप मुझे माफ कर देंगे। मैं बस एक दोस्त होने का अपना अप्रिय कर्तव्य निभा रहा हूँ।

आपके कैलिफोर्निया जाने के बाद, के ने मुझे एक नोट भेजा और हम ब्लू डेन्यूब में मिले। वह चाहता था कि मैं आपसे उसकी बात करवाऊं या आपको उसे पत्र लिखवाऊं। उसने आपके लिए अपने प्यार, रातों की नींद हराम होने, बेचैनी भरी यात्राओं, प्रेम की पीड़ाओं, और भी बहुत कुछ के बारे में बताया। उसकी बातें बहुत ही विश्वसनीय थीं, और मुझे उस पर तरस आया। लेकिन वह इस तरह की बातों में माहिर होगा, क्योंकि

लगभग उसी दिन वह रेड फॉक्स में किसी और लड़की से मिल रहा था। आपने मुझे बताया था कि उसकी कोई बहन नहीं है, और वैसे भी, मेरे भरोसेमंद सूत्र से यह स्पष्ट है कि वह भाई जैसा व्यवहार नहीं कर रहा था। यह सुनकर मुझे कितना गुस्सा आया, यह जानकर मैं हैरान थी, लेकिन एक तरह से मुझे खुशी भी हुई कि इससे सब कुछ साफ हो गया। मैंने उससे आमने-सामने बात करने का मन बना लिया था, लेकिन पता चला कि वह किसी विश्वविद्यालय क्रिकेट दौरे पर शहर से गायब हो गया है, और वैसे भी अब मुझे नहीं लगता कि इस तरह के तनाव और परेशानी का कोई फायदा है।

लता, कृपया इसे अपने पुराने ज़ख्मों को कुरेदने मत दीजिए। इसे बस अपने चुने हुए रास्ते की पुष्टि समझिए। मुझे यकीन है कि हम औरतें बेवजह की बातों पर सोचते-सोचते अपनी मुश्किलें और भी बढ़ा लेती हैं। यह मेरी पेशेवर राय भी है। थोड़ा-बहुत प्यार जताना ठीक है, लेकिन बेवजह उसके लिए तड़पना बंद कीजिए! लता, वह इसके लायक नहीं है, और यह बात इसे साबित करती है। अगर मैं आपकी जगह होती, तो उसे चम्मच से मसलकर आलू की तरह मसल देती और उसे पूरी तरह भूल जाती।

अब अन्य समाचारों की बात करते हैं।

चुनाव नज़दीक आ रहे हैं, इसलिए यहाँ हर तरफ हलचल मची हुई है और समाजवादी पार्टी भी नीतियों, रणनीतियों, पाखंडों और जादू-टोने की योजना बनाने में लगी है। मैं सभी बैठकों में शामिल होता हूँ, प्रचार करता हूँ और चुनाव प्रचार में हिस्सा लेता हूँ, लेकिन मैं निराश हो चुका हूँ। हर कोई अपने फायदे के लिए नारे लगा रहा है, वादे कर रहा है और इस बात की परवाह नहीं कर रहा कि इन वादों को पूरा करने के लिए पैसे कहाँ से मिलेंगे, उन्हें लागू करने की तो बात ही छोड़िए। समझदार लोग भी जैसे

पागल हो गए हैं। यहाँ एक आदमी पहले बहुत समझदारी की बातें करता था, लेकिन अब वह इतना ज़्यादा बड़बड़ाता है और आँखें इतनी बड़ी-बड़ी करता है कि मुझे यकीन है कि अब वह पूरी तरह से पागल हो गया है।

और हाँ, महिलाओं को फिर से पहचान मिली है: चुनावी उन्माद का एक सुखद परिणाम। 'वह समय आ गया है जब महिलाओं को प्राचीन भारत में प्राप्त स्थान को पुनः प्राप्त करना होगा: हमें अतीत और वर्तमान, पश्चिम और पूर्व के सर्वोत्तम तत्वों को मिलाना होगा...' लेकिन यहाँ हमारी प्राचीन विधि-पुस्तक, मनुस्मृति है। एक गहरी साँस लें:

'दिन-रात, महिलाओं को अपने परिवार के पुरुषों के अधीन रखा जाना चाहिए। बचपन में, एक महिला को अपने पिता के अधीन, जवानी में अपने पति के अधीन और बुढ़ापे में अपने बेटे के अधीन रहना चाहिए; एक महिला को कभी स्वतंत्र नहीं होना चाहिए क्योंकि वह जन्म से ही झूठ की तरह अपवित्र है। ... ईश्वर ने स्त्री को कामुकता, क्रोध, बेईमानी, द्वेष और बुरे आचरण से परिपूर्ण बनाया है।' (और, दुख की बात है, अब, वोट का अधिकार भी।)

मुझे नहीं लगता कि सत्र शुरू होने से पहले कोई भी चीज़ आपको यहाँ वापस ला पाएगी, लेकिन मैं आपको बहुत याद करता हूँ, हालाँकि जैसा कि मैंने कहा, मैं इतना व्यस्त हूँ कि मुझे आधे-अधूरे विचार पर भी सोचना मुश्किल लगता है।

आपको ढेर सारा प्यार, और माँ, प्राण, सविता और बच्चे को भी—लेकिन अगर आपको डर है कि वे सब आपसे मेरे पत्र के बारे में पूछने लगेंगे, तो उन्हें मेरा प्यार देने की ज़रूरत नहीं है। खैर, आप उमा को मेरा प्यार दे सकते हैं।

बीमार

पुनश्च: जन्नत में रहने वालों में औरतें अल्पसंख्यक होंगी, और जहन्नम में

बहुसंख्यक। मैंने निष्पक्ष रहने का सोचा और आपको हदीस का एक उद्धरण भी दे दिया। 'सच या झूठ': संक्षेप में, यही हर धर्म में औरतों के प्रति दृष्टिकोण है।

पी.पी.एस. चूंकि मुझे उद्धरण देने का मन कर रहा है, इसलिए यहां एक महिला पत्रिका में छपी एक छोटी कहानी का अंश है, जो उन लक्षणों का वर्णन करता है जिनसे मैं चाहती हूं कि आप बचें: 'वह एक अपाहिज, एक मुरझाए फूल जैसी हो गई... उसके पीले चाँद जैसे चेहरे पर निराशा का बादल छाया हुआ था... उसके भीतर से एक लाल और उग्र क्रोध उबल रहा था। यह उसके दिल में पनप रहे सिरदर्द से उपजा था... एक विनम्र सम्राट की तरह, अपना सिर झुकाकर, कार पीछे हट गई, उसके पीछे उड़ती धूल उसके भावों को दर्शा रही थी।'

पी.पी.पी.एस. यदि आप उनके प्रति अपने अंतर्मन को गीत के माध्यम से मिटाने का निर्णय लेते हैं, तो मैं आपको सलाह दूंगा कि आप श्री, ललित, तोड़ी, मारवा आदि जैसे अपने पसंदीदा 'गंभीर' रागों से बचें और बेहाग, कमोद या केदार जैसे अधिक मधुर राग गाएं।

पी.पी.पी.पी.एस. बस इतना ही, मेरी प्यारी लता। अच्छी नींद लो।

16.25

लता को ठीक से नींद नहीं आई। वह घंटों जागती रही, ईर्ष्या इतनी तीव्र थी कि मानो उसकी सांस ही रुक गई हो, और इतना गहरा दुख था कि उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि यह सब उसे महसूस हो रहा है। घर में कहीं भी एकांत नहीं था—कहीं भी एकांत नहीं था—जहाँ वह एक सप्ताह के लिए अकेले जा सके और कबीर की उस छवि को मिटा सके जिसे उसने अनजाने में ही अपनी सबसे अनमोल यादों में संजो कर रखा था। मालती ने इस औरत के बारे में कुछ नहीं बताया था कि वह कौन थी, कैसी दिखती थी, उन्होंने क्या कहा था, उन्हें किसने देखा था। क्या वे

संयोग से मिले थे, जैसे वह खुद उससे मिली थी? क्या वह उसे बरसात महल में सुबह की सैर के लिए ले जा रहा था? क्या उसने उसे चूमा था? नहीं, वह ऐसा नहीं कर सकता था, वह उसे चूम नहीं सकता था, यह विचार असहनीय था।

मलाती ने यौन संबंध के बारे में जो बातें उससे कही थीं, उनके विचार उसे बार-बार परेशान करने लगे।

आधी रात हो चुकी थी, लेकिन नींद आना नामुमकिन था। चुपचाप, ताकि माँ या घर के बाकी लोगों को परेशानी न हो, वह छोटे से बगीचे में चली गई। वहाँ वह उस बेंच पर बैठ गई जहाँ गर्मियों में वह मकड़ी जैसे फूलों के बीच बैठकर उसका पत्र पढ़ा करती थी। एक घंटे बाद उसे ठंड से कंपकंपी होने लगी, पर उसे इसकी परवाह नहीं थी।

वह ऐसा कैसे कर सकता है?—उसने सोचा, हालाँकि उसे यह मानना ही पड़ा कि उसने उसे ज़रा भी प्रोत्साहन या दिलासा नहीं दिया था। और अब बहुत देर हो चुकी थी। वह कमज़ोर और थकी हुई महसूस कर रही थी, और आखिरकार वापस जाकर अपने बिस्तर पर लेट गई। वह सो गई, लेकिन उसके सपने शांत नहीं थे। उसने कल्पना की कि कबीर उसे अपनी बाहों में थामे हुए है, उसे प्यार से चूम रहा है, उससे प्रेम कर रहा है, और वह परमानंद में डूबी हुई है। लेकिन अचानक यह विचलित कर देने वाला परमानंद भय में बदल गया। क्योंकि अब उसका चेहरा श्री सहगल के विक्षिप्त चेहरे जैसा था, और वह उसके ऊपर हाँफते हुए लगभग खुद से फुसफुसा रहा था: 'तुम एक अच्छी लड़की हो, बहुत अच्छी लड़की। मुझे तुम पर बहुत गर्व है।'

भाग सत्रह

17.1

सविता का लता को सलाह देने और विवाह के मुद्दे पर अरुण का विरोध करने के लिए कलकत्ता आना कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। यह एक पारिवारिक विवाद का विषय था।

दिसंबर के मध्य में, प्राण ने एक सुबह बिस्तर पर सविता से कहा था: 'मुझे लगता है, प्रिय, कि हमें ब्रह्मपुर में ही रहना चाहिए। बाओजी इन दिनों चुनाव प्रचार में बहुत व्यस्त हैं, और उन्हें हर तरह की मदद की ज़रूरत है।'

उमा अपनी चारपाई पर सो रही थी। इससे प्राण को एक और विचार आया।

उन्होंने आगे कहा, 'इसके अलावा, क्या बच्चे के लिए अभी यात्रा पर जाना बुद्धिमानी होगी?'

सविता को अभी भी नींद आ रही थी। प्राण की बातें उसे जैसे-तैसे समझ आ रही थीं। उसने प्राण के सुझाव के परिणामों के बारे में थोड़ा सोचा और कहा, 'इस बारे में बाद में बात करेंगे।'

प्राण, जो अब अपनी असहमति व्यक्त करने के तरीके से काफी परिचित हो चुकी थी, चुप रही। थोड़ी देर बाद मतीन चाय लेकर आया। सविता ने कहा: 'और शायद आपको भी लगता है कि इस समय आपको यात्रा नहीं करनी चाहिए?'

‘नहीं, शायद नहीं,’ प्राण ने कहा, उसे खुशी थी कि सब कुछ उसके पक्ष में जा रहा था। ‘और वैसे भी, अम्माजी की तबीयत ठीक नहीं है। मुझे उनकी चिंता है। मुझे पता है तुम्हें भी है, प्रिय।’

सविता ने सिर हिलाया। लेकिन उसे लगा कि प्राण बहुत जल्दी ठीक हो गया है और अब यात्रा करने के लिए पूरी तरह स्वस्थ है। इसके अलावा, उसे छुट्टी और नए माहौल की सख्त जरूरत थी। उसे लगा कि उसके सख्त

मिजाज पिता का उस पर बोझ नहीं पड़ना चाहिए। कलकत्ता में बच्चे की अच्छी देखभाल हो जाएगी। सविता की सास की बात करें तो, यह सच था कि उनकी तबीयत बहुत अच्छी नहीं थी, लेकिन फिर भी वह महिलाओं के बीच चुनाव प्रचार में उसी जोश के साथ हिस्सा ले रही थीं, जिस जोश के साथ उन्होंने कुछ साल पहले पंजाब से आए शरणार्थियों के लिए राहत कार्य किया था।

'तो आप क्या कहते हैं?' प्राण ने कहा। 'ये चुनाव तो पाँच साल में एक बार ही होते हैं, और मुझे पता है कि बाओजी चाहते हैं कि मैं उनकी मदद करूं।'

'मान के बारे में क्या ख्याल है?'

'खैर, बिल्कुल, वह मदद करेगा।'

'और वीना?'

'तुम्हें पता है उसकी सास क्या कहेगी।'

दोनों ने चाय की चुस्की ली। बिस्तर पर ब्रह्मपुर क्रॉनिकल बिना खुला पड़ा था।

'लेकिन आप मेरी मदद कैसे कर सकती हैं?' सविता ने पूछा। 'मैं आपको जीपों और ट्रेनों में बैतर, सलीमपुर और अन्य बर्बर स्थानों की यात्रा नहीं करने दूंगी, जहाँ धूल और धुआँ आपके फेफड़ों में भर जाए। इससे तो आप फिर से बीमार पड़ जाएँगी।'

प्राण ने सोचा कि शायद वह अपने पिता के निर्वाचन क्षेत्र में नहीं जा पाएगा, लेकिन फिर भी वह उनके किसी काम आ सकता है। उसने सविता से कहा, 'मैं ब्रह्मपुर में ही रह सकता हूँ, प्रिय, और यहाँ के सारे काम संभाल सकता हूँ। वैसे भी, मुझे थोड़ी चिंता है कि मिश्रा मेरी संभावनाओं को खराब करने के लिए क्या करेंगे। चयन समिति की बैठक एक महीने में है।'

यह स्पष्ट था कि प्राण कलकत्ता जाने के लिए उत्सुक नहीं था। लेकिन उसने इतने सारे कारण बताए कि सविता यह तय नहीं कर पाई कि उसे सबसे ज़्यादा चिंता अपने पिता की, अपनी माँ की, अपने बच्चे की या खुद की।

‘मेरा क्या ख्याल है?’ सविता ने कहा।

‘तुम, डार्लिंग?’ प्राण ने हैरानी से पूछा।

'अच्छा, अगर लता की सगाई ऐसे आदमी से हो जाए जिसे मैंने कभी देखा भी न हो, तो मुझे कैसा लगेगा?'

प्राण ने जवाब देने से पहले थोड़ा रुककर कहा, "अच्छा, तुम्हारी सगाई एक ऐसे आदमी से हुई है जिसे लता ने कभी देखा भी नहीं था।"

'वह मामला बिल्कुल अलग था,' सविता ने दोनों मामलों में स्पष्ट अंतर बताते हुए कहा।

‘लता मेरी बड़ी बहन नहीं है। मेरा उसके प्रति दायित्व है। अरुण और वरुण सबसे अच्छे सलाहकार नहीं हैं।’

प्राण ने कुछ देर सोचा, फिर कहा: 'अच्छा, प्रिय, तुम क्यों नहीं चली जाती? मुझे तुम्हारी याद तो आएगी ही, लेकिन यह सिर्फ दो सप्ताह या उससे कुछ अधिक समय के लिए ही होगा।'

सविता ने प्राण की ओर देखा। ऐसा लग रहा था कि उनके अलग होने की बात से वह ज़्यादा परेशान नहीं है। सविता को थोड़ी झुंझलाहट हुई। उसने कहा, 'अगर मैं जाऊंगी तो बच्चा भी जाएगा। और अगर मैं और बच्चा दोनों जाएंगे तो तुम भी जाओगे। और क्या तुम टेस्ट मैच के बारे में भूल गए हो?'

इसलिए वे तीनों लता और श्रीमती रूपा मेहरा के साथ कलकत्ता गए।

डॉक्टर किशन चंद सेठ के बीमार पड़ने के कारण ब्रह्मपुर से उनका प्रस्थान कुछ दिनों के लिए टल गया। और अचानक और विनाशकारी घटनाओं के

कारण ब्रह्मपुर की उनकी वापसी कुछ दिनों पहले ही हो गई। लेकिन ये घटनाएँ पूरी तरह से अप्रत्याशित थीं, और न तो चुनाव प्रचार के कारण हुईं, न ही किसी की बीमारी के कारण, और न ही प्रोफेसर मिश्रा की चालों के कारण। इन घटनाओं में मान शामिल था; और परिणामस्वरूप परिवार फिर कभी पहले जैसा नहीं रहा।

17.2

दिसंबर के पहले सप्ताह में मान ब्रह्मपुर में ही था। उसका बनारस वापस जाने का कोई इरादा नहीं था। उसकी नज़र में तो पूरा शहर—घाट, मंदिर, दुकानें, मंगेतर, देनदार, लेनदार, सब कुछ—गंगा में समा जाए तो भी नदी में कोई हलचल नहीं होगी। वह ब्रह्मपुर में बड़े आनंद से घूमता रहा, कभी-कभार पुराने शहर से बरसात महल तक टहलने निकल जाता, रास्ते में तरबूज का बाज़ार भी आता। वह राजकुमार के विश्वविद्यालय के दोस्तों से एक-दो शाम पोकर खेलने के लिए मिला। राजकुमार खुद निष्कासन के बाद कुछ समय के लिए ब्रह्मपुर से गायब हो गया था और मारह लौट गया था।

मान प्रेम निवास और बैतर हाउस में भोजन के समय अनियमित रूप से दिखाई देते थे, और उनकी हंसमुख उपस्थिति उनकी मां के लिए किसी वरदान से कम नहीं थी। वे वीणा, केदारनाथ और भास्कर से मिलने जाते थे। उन्होंने फिरोज के साथ भी थोड़ा समय बिताया, हालांकि उतना नहीं जितना वे चाहते थे: फिरोज ने जमींदारी मामले में अपने काम के बाद काफी सफलता हासिल कर ली थी। मान ने अपने पिता और नवाब साहब के साथ भी चुनाव प्रचार की रणनीति पर चर्चा की, जिन्होंने महेश कपूर को उनकी उम्मीदवारी में अपना समर्थन देने का वादा किया था। और जब भी संभव होता, वे सईदा बाई से मिलने जाते थे।

एक शाम ग़ज़लों के बीच मान ने उससे कहा:

‘मुझे किसी दिन अब्दुर रशीद से मिलना ही होगा, सईदा। लेकिन मुझे पता चला है कि वह अब यहां नहीं आते।’

सईदा बाई ने थोड़ा सिर एक तरफ झुकाकर मान को ध्यान से देखा। उन्होंने सरल शब्दों में कहा, 'वह पागल हो गया है। मैं उसे यहाँ नहीं रख सकती।'

मान हँसा और उसके विस्तार से बताने का इंतज़ार करने लगा। उसने कुछ नहीं बताया।

‘पागल का क्या मतलब है?’ उसने आखिरकार कहा। ‘तुमने मुझे पहले बताया था कि तुम्हें लगता है कि उसे तसनीम में दिलचस्पी है, लेकिन—ज़रूर—’

सईदा बाई ने कुछ स्वप्निल भाव से हारमोनियम पर एक अलंकरण बजाया, फिर कहा:

‘वह तसनीम, दाग साहब को अजीबोगरीब चिट्ठियां भेज रहा है, जिन्हें मैं स्वाभाविक रूप से लड़की को पढ़ने नहीं देती। वे आपत्तिजनक हैं।’

मान को यकीन नहीं हो रहा था कि रशीद, जिसे वह एक नेक इंसान मानता था, खासकर महिलाओं के मामले में और अपने कर्तव्य के प्रति समर्पित, तसनीम को इस तरह के आपत्तिजनक पत्र लिख सकता है। सईदा बाई, जिसकी एक खासियत बातों को बढ़ा-चढ़ाकर कहने की आदत थी, मान के अनुसार अपनी बहन के प्रति ज़रूरत से ज़्यादा सुरक्षात्मक व्यवहार कर रही थी। हालांकि, उसने यह बात कही नहीं।

‘आखिर आप उससे मिलना क्यों चाहती हैं?’ सईदा बाई ने पूछा।

मान ने कहा, 'मैंने उनके परिवार से वादा किया था। और मैं उनसे चुनाव के बारे में भी बात करना चाहता हूं। मेरे पिता उस निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ेंगे जिसमें उनका गांव शामिल है।'

अब सईदा बाई गुस्से से भड़क उठीं। उन्होंने कहा, ‘क्या इस पूरे शहर का

दिमाग खराब हो गया है? चुनाव! चुनाव! क्या दुनिया में कागज़ और बक्सों के सिवा कुछ बचा ही नहीं है?'

दरअसल, ब्रह्मपुर में इसके अलावा और किसी बात की चर्चा नहीं हो रही थी। चुनाव प्रचार शुरू हो चुका था; अधिकांश उम्मीदवार नामांकन पत्र दाखिल करने के बाद अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों में ही रुक गए थे और तुरंत प्रचार में जुट गए थे। महेश कपूर ने ब्रह्मपुर में कुछ सप्ताह रुकने का फैसला किया था। चूंकि वे फिर से राजस्व मंत्री बन गए थे, इसलिए उन्हें कुछ काम करना था।

माफ़ी मांगते हुए मान ने कहा, 'सईदा, तुम जानती हो कि मुझे इन चुनावों में अपने पिता की मदद करनी है। मेरे बड़े भाई की तबीयत ठीक नहीं है और इसके अलावा, उन्हें पढ़ाना भी है। और मैं अपने निर्वाचन क्षेत्र को अच्छी तरह जानता हूँ। लेकिन इस बार मेरा निर्वासन थोड़े समय के लिए ही होगा।'

सईदा बाई ने ताली बजाई और बिब्बो को बुलाया।

बिब्बो दौड़ता हुआ आया।

'बिब्बो, क्या हम पसंद बाग के लिए मतदान सूची में हैं?' उसने पूछा।

बिब्बो को पता नहीं था, लेकिन उसे लगा कि वे नहीं हैं। 'क्या मुझे पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए?' उसने पूछा।

नहीं। यह आवश्यक नहीं है।

'आप जो कहें, बेगम साहिबा।'

'आज दोपहर तुम कहाँ थे? मैं तुम्हें हर जगह ढूंढ रहा था।'

'मैं बाहर गई थी, बेगम साहिबा, माचिस खरीदने के लिए।'

क्या माचिस खरीदने में एक घंटा लगता है?

सईदा बाई का गुस्सा बढ़ता जा रहा था।

बिब्बो चुप रही। वह सईदा बाई को, जो रशीद को लेकर इतनी परेशान

थी, यह बताने की हिम्मत नहीं कर सकती थी कि वह चुपके से फिरोज और तसनीम के बीच चिट्ठियाँ पहुँचा रही थी।

सईदा बाई ने अब तेज़ी से मान की ओर मुड़कर पूछा, 'तुम यहाँ क्यों रुके हुए हो? इस सदन में वोट मिलने का कोई चांस नहीं है।'

'सईदा बेगम—' मान ने विरोध जताया।

सईदा बाई ने बिब्बो से तीखी आवाज में कहा, 'तुम क्या घूर रहे हो? क्या तुमने मुझे जाने के लिए कहते हुए नहीं सुना?'

बिब्बो मुस्कुराया और चला गया। अचानक सईदा बाई उठी और अपने कमरे में चली गई। वह रशीद द्वारा तसनीम को भेजे गए तीन पत्रों के साथ लौटी।

'इन पर उसका पता लिखा है,' उसने मान से कहा और उन्हें छोटी मेज पर फेंक दिया। मान ने अपनी टूटी-फूटी उर्दू लिपि में पता लिख लिया, लेकिन उसने देखा कि रशीद की लिखावट उसकी याददाश्त से कहीं ज्यादा खराब थी।

सईदा बाई ने कहा, 'उसके दिमाग में कुछ गड़बड़ है। चुनावी प्रयासों में वह आपके लिए एक बोझ साबित होगा।'

शाम का बाकी हिस्सा सफल नहीं रहा। सार्वजनिक जीवन ने उनके कमरे में प्रवेश कर लिया था, और इसके साथ ही सईदा बाई की तसनीम के लिए सारी आशंकाएं भी सामने आ गईं।

कुछ देर बाद वह फिर से एक तरह की स्वप्निल अवस्था में लौट आई।

'तुम कब जा रहे हो?' उसने मान से उदासीनता से पूछा।

'तीन दिनों में, इंशाल्लाह,' मान ने यथासंभव प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया।

'इंशाल्लाह,' तोते ने एक बार फिर दोहराया, मानो वह उस वाक्य को पहचान रहा हो। मान उसकी ओर मुड़ा और भौंहें चढ़ा लीं। वह उस मंदबुद्धि पक्षी से बात करने के मूड में नहीं था। उस पर एक बोझ सा आ

पड़ा था; ऐसा लग रहा था मानो सईदा बाई को इस बात की परवाह ही न हो कि वह रुके या चला जाए।

'मैं थक गई हूँ,' सईदा बाई ने कहा।

क्या मैं अपने प्रस्थान की पूर्व संध्या पर आपसे मिलने आ सकता हूँ?

ग़ालिब की पंक्तियाँ उद्धृत करते हुए सईदा बाई ने मन ही मन बुदबुदाया, 'अब मुझे बगीचे में घूमने की इच्छा नहीं रही।'

वह मान और आम तौर पर पुरुषों की चंचलता का जिक्र कर रही थी, लेकिन मान को लगा कि वह खुद का जिक्र कर रही है।

17.3

अगले दिन मान रशीद के कमरे में गया। उसका कमरा पुराने शहर के एक बदहाल और भीड़भाड़ वाले इलाके में था, जहाँ संकरी, जर्जर गलियाँ थीं और खराब जल निकासी की बदबू फैली हुई थी। रशीद अकेला रहता था। ब्रह्मपुर में अपने परिवार को साथ रखने का खर्च वहन करना उसके लिए संभव नहीं था। जब भी संभव होता, वह अपने लिए खाना बनाता, ट्यूशन पढ़ाता, पढ़ाई करता, समाजवादी पार्टी के लिए कुछ काम करता और इस्लाम में धर्मनिरपेक्षता की वैधता और अर्थ पर एक पुस्तिका लिखने की कोशिश कर रहा था—जो आधी लोकप्रिय और आधी विद्वतापूर्ण थी। उसने महीनों तक अपना जीवन भोजन और स्नेह के बजाय दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर चलाया था। जब रशीद ने मान को अपने दरवाजे पर देखा तो वह आश्चर्यचकित और चिंतित लग रहा था। मान ने यह देखकर चौंक गया कि उसके बाल और भी सफेद हो गए थे। उसका चेहरा मुरझाया हुआ था, लेकिन उसकी आँखों में अभी भी एक अलग ही चमक थी।

'चलो टहलने चलते हैं,' रशीद ने सुझाव दिया। 'एक घंटे में मेरी ट्यूशन है। यहाँ बहुत सारी मक्खियाँ हैं। कर्ज़न पार्क रास्ते में ही है। हम वहाँ बैठकर

बातें कर सकते हैं।'

दिसंबर की हल्की धूप में वे पार्क में एक बड़े, छोटे पत्तों वाले फिकस के पेड़ के नीचे बैठे थे। जब भी कोई उनके पास से गुजरता, रशीद अपनी आवाज़ धीमी कर लेता। वह बेहद थका हुआ लग रहा था, लेकिन लगभग बिना रुके बोलता रहा। बातचीत की शुरुआत में ही मान को यह स्पष्ट हो गया कि रशीद किसी भी तरह से अपने पिता की मदद नहीं करने वाला है। वह सलीमपुर-सह-बैतर निर्वाचन क्षेत्र में समाजवादी पार्टी का समर्थन करने वाला था और उसने कहा कि वह विश्वविद्यालय की छुट्टियों के दौरान कांग्रेस के खिलाफ़ अथक रूप से उनके लिए प्रचार करेगा। वह सामंतवाद, अंधविश्वास, समाज की दमनकारी संरचना और विशेष रूप से बैतर के नवाब साहब की इस व्यवस्था में भूमिका के बारे में लगातार बोलता रहा। उसने कहा कि कांग्रेस पार्टी के नेता—और संभवतः महेश कपूर—बड़े जमींदारों के साथ मिले हुए थे, इसीलिए जमींदारों को उन जमीनों के लिए मुआवजा दिया जाएगा जो राज्य द्वारा अधिग्रहित की जानी थीं। 'लेकिन जनता को बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता,' उसने कहा। 'वे सब कुछ अच्छी तरह समझते हैं।'

अब तक रशीद ने बड़े विश्वास के साथ, शायद थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर, और शायद जिले के उस बड़े जमींदार के प्रति अत्यधिक द्वेष के साथ बात की थी, जिसे वह जानता था कि मान का दोस्त है; लेकिन उसके बोलने के तरीके या तर्क में कुछ भी अजीब नहीं था। हालाँकि, 'धोखा दिया' शब्द ने उसके भाषण में एक तरह की खामी या दरार पैदा कर दी। वह अचानक मान की ओर मुड़ा और तीखे स्वर में बोला:

'बेशक, जो लोग धोखा खाते हैं वे आपकी सोच से कहीं ज्यादा समझदार होते हैं।'

'बिल्कुल,' मान ने विनम्रता से सहमति जताई, हालाँकि वह थोड़ा निराश

था। उसने सोचा कि रशीद देबरिया के आसपास के इलाके में, और शायद सलीमपुर कस्बे में भी, उसके पिता के लिए बहुत मददगार साबित होता। अगर रशीद न होता, तो वह खुद उस जगह के बारे में कुछ भी नहीं जानता।

'सच कहूँ तो,' रशीद ने कहा, 'मैं इस बात से इनकार नहीं करूँगा कि जब मुझे पता चला कि तुम क्या करने की कोशिश कर रहे थे, तो मुझे भी तुमसे और दूसरों से नफरत हुई थी।'

'मैं?' मान ने कहा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि इसमें उसका क्या लेना-देना है, सिवाय इसके कि वह अपने पिता का बेटा था। और वैसे भी, नफरत क्यों?

'लेकिन मैंने वो सब बातें भुला दी हैं,' रशीद ने आगे कहा। 'नफरत से कुछ हासिल नहीं होता। लेकिन अब मुझे आपकी मदद चाहिए। चूंकि आप भी कुछ हद तक जिम्मेदार हैं, इसलिए आप मेरी मदद करने से इनकार नहीं कर सकते।'

'तुम किस बारे में बात कर रहे हो?' मान ने अचंभित होकर पूछा। बकरीद के दिन जब वह गाँव गया था, तब उसे आभास हुआ था कि रशीद को लेकर कुछ तनाव है, लेकिन उसका इससे क्या लेना-देना था?

'कृपया अनभिज्ञता का नाटक न करें,' रशीद ने कहा। 'आप मेरे परिवार को जानते हैं; आप मेहर की माँ से मिल भी चुके हैं—और फिर भी आपने इन आयोजनों और योजनाओं पर ज़ोर दिया। आप स्वयं बड़ी बहन से जुड़े हुए हैं।'

सईदा बाई ने मान से जो कहा था, वह अब उसके दिमाग में स्पष्ट हो गया। 'तसनीम?' उसने पूछा। 'क्या आप सईदा बाई और तसनीम के बारे में बात कर रहे हैं?'

रशीद के चेहरे पर एक कठोर भाव आ गया—जैसे मान ने खुद उसके

अपराध की पुष्टि कर दी हो। 'अगर तुम्हें पता है, तो उसका नाम लेने की क्या ज़रूरत है?' उसने पूछा।

'लेकिन मुझे नहीं पता कि यह क्या है,' बातचीत में आए इस अचानक मोड़ से अचंभित होकर मान ने विरोध जताया।

रशीद ने समझदारी दिखाने की कोशिश करते हुए कहा: 'मुझे पता है कि आप, सईदा बाई और सरकार के अहम लोगों समेत बाकी सब मेरी शादी उससे करवाने की कोशिश कर रहे हैं। और उसने मुझे ही चुन लिया है। उसने जो चिट्ठी लिखी—जिस तरह से उसने मुझे देखा—अचानक एक दिन क्लास के बीच में उसने एक ऐसी बात कही जिसका सिर्फ एक ही मतलब हो सकता है। मैं चिंता से सो नहीं पा रहा, तीन हफ़्तों से एक पल भी नहीं सोया। मैं ऐसा नहीं करना चाहता, लेकिन मुझे उसकी मानसिक स्थिति की चिंता है। अगर मैं उसका प्यार स्वीकार नहीं करूंगा तो वह पागल हो जाएगी। लेकिन अगर मैं यह कदम उठाता भी हूं—जो मुझे इंसानियत के नाते उठाना ही पड़ेगा—भले ही मैं यह कदम उठाऊं, मुझे अपनी पत्नी और बच्चों की सुरक्षा का इंतजाम करना होगा। आपको सईदा बेगम से इस बारे में पूरी पुष्टि लेनी होगी। मैं कुछ स्पष्ट शर्तों पर ही मानूंगा।'

'तुम किस बारे में बात कर रहे हो?' मान ने थोड़ी झुंझलाहट के साथ कहा। 'मैं किसी साजिश का हिस्सा नहीं हूँ—'

रशीद ने उसकी बात काट दी। वह इतना क्रोधित था कि कांप रहा था। लेकिन उसने खुद को संभालने की कोशिश की। उसने कहा, 'कृपया ऐसा मत कहो। जब तुम मेरे सामने इस तरह की बातें कहते हो तो मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। मुझे सब पता है। मैं पहले ही कह चुका हूं कि अब मुझे तुमसे कोई नफरत नहीं है। मैंने खुद को समझाया है कि तुम्हारी मंशा चाहे कितनी भी गलत क्यों न हो, तुम मेरे भले के लिए ही ऐसा कर रहे थे।

लेकिन क्या तुमने मेरी पत्नी और बच्चों के बारे में कभी सोचा भी नहीं?'
'मुझे सईदा बेगम के बारे में तो नहीं पता,' मान ने कहा, 'लेकिन मुझे शक है कि वह तसनीम की शादी तुमसे करवाना चाहती होंगी। जहाँ तक मेरी बात है, मुझे इसके बारे में पहली बार पता चला है।'
रशीद के चेहरे पर एक धूर्तता भरी मुस्कान आ गई। 'तो फिर तुमने एक मिनट पहले उसका नाम क्यों लिया?'
मान ने भौंहें चढ़ाते हुए सोचने की कोशिश की। 'सईदा बेगम ने तुम्हारी कुछ चिट्ठियों के बारे में बताया जो तुमने उसकी बहन को भेजी थीं,' उसने कहा। 'मैं तुम्हें अब और चिट्ठियाँ न लिखने की सलाह दूंगा। उनसे वह और परेशान ही होगी। और,' उसने खुद भी चिढ़ते हुए कहा, लेकिन अपने गुस्से पर काबू रखने की कोशिश की—क्योंकि आखिर वह अपने शिक्षक से बात कर रहा था, जो भले ही युवा थे और गाँव में उसके मेज़बान भी रह चुके थे—'मैं चाहता हूँ कि तुम यह न सोचो कि मैं किसी साज़िश का हिस्सा हूँ।'
'ठीक है,' रशीद ने दृढ़ता से कहा। 'ठीक है। मैं इसका ज़िक्र नहीं करूँगा। जब तुम मेरे परिवार के साथ पटवारी के पास गए थे, तो क्या मैंने कभी तुम्हारी आलोचना की थी? चलो इस मामले को यहीं खत्म करते हैं। मैं तुम पर कोई आरोप नहीं लगाऊँगा, और तुम भी कृपया ये विरोध या इनकार मत करना। ठीक है?'
'लेकिन मैं तो इसे नकार ही दूंगा—' मान ने कहा, उसे ज़रा भी हैरानी नहीं हुई कि इस सब में एक पटवारी कहाँ से घुस गया। 'मैं तुम्हें बता दूं, रशीद, कि तुम पूरी तरह गलत हो। मैंने हमेशा तुम्हारा बहुत सम्मान किया है, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम्हें ये विचार कहाँ से आए। तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि तसनीम को तुममें ज़रा भी दिलचस्पी है?'
'मुझे नहीं पता,' रशीद ने अनुमान लगाते हुए कहा। 'शायद यह मेरी सूरत

है, या मेरा ईमानदार स्वभाव, या फिर यह कि मैंने जीवन में अब तक बहुत कुछ किया है और एक दिन मैं मशहूर हो जाऊंगा। वह जानती है कि मैंने कितने लोगों की मदद की है।' उसने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए कहा, 'मैंने किसी तरह का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश नहीं की। मेरा जीवन के प्रति धार्मिक दृष्टिकोण है।' उसने आह भरी। 'लेकिन मैं कर्तव्य का अर्थ जानता हूं। मुझे उसकी मानसिक शांति के लिए जो आवश्यक है वह करना ही होगा।' वह अचानक थकावट से सिर झुकाकर आगे की ओर झुक गया।

कुछ देर बाद मान ने हैरानी भरे अंदाज़ में उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा, 'मुझे लगता है कि तुम्हें अपना बेहतर ख्याल रखना चाहिए—या फिर अपने परिवार को रखने दो। छुट्टियां शुरू होते ही या उससे पहले ही गांव वापस चले जाओ—और मेहर की मां को तुम्हारा ख्याल रखने दो। आराम करो। सो जाओ। ठीक से खाओ। पढ़ाई मत करो। और किसी भी पार्टी के लिए प्रचार करके खुद को थकाओ मत।'

रशीद ने अपना सिर उठाया और मान को व्यंग्य भरी नज़रों से देखा। उसने कहा, 'तो यही तुम चाहते हो?' 'फिर रास्ता साफ़ हो जाएगा। फिर तुम मेरे खेत में दोबारा खेती कर सकते हो। फिर तुम पुलिस को भेजकर लाठी से मेरा सिर फोड़ सकते हो। मुझे कुछ परेशानियाँ झेलनी पड़ सकती हैं, लेकिन मैं जो ठान लेता हूँ, उसे करके ही रहता हूँ। मैं समझता हूँ कि चीज़ें आपस में कैसे जुड़ी होती हैं। मुझे धोखा देना आसान नहीं है, खासकर तब जब तुम्हारा ज़मीर तुम्हें कचोट रहा हो।'

'तुम पहेलियों में बात कर रहे हो,' मान ने कहा। 'और मुझे लगता है कि तुम्हारी ट्यूशन के लिए देर हो रही है। वैसे भी, मैं इस विषय पर और कुछ नहीं सुनना चाहता।'

आपको इसकी पुष्टि या खंडन करना होगा।

‘क्या, भगवान के लिए?’ मान ने झुंझलाहट में चिल्लाकर कहा।
जब आप अगली बार सईदा बेगम से मिलने जाएं, तो उनसे कहिएगा कि अगर वो चाहती हैं कि मैं ये सब करूं, तो मैं उनके घर में खुशियां बांटने को तैयार हूं। मैं एक साधारण समारोह में शादी कर लूंगी, लेकिन मेरी दूसरी शादी से जो भी बच्चे होंगे, वो मेरे पहले से मौजूद बच्चों के अधिकारों को नहीं छीन सकते। और तसनीम से मेरी शादी को गुप्त रखना होगा, यहां तक कि मेरे परिवार के बाकी सदस्यों से भी। कोई अफवाह नहीं फैलनी चाहिए—आखिर वो मेरी बहन हैं—मेरी और मेरे परिवार की इज्जत है। सिर्फ उन्हीं लोगों को पता चले जो पहले से जानते हैं...।
वह सो गया।
मान उठ खड़ा हुआ, रशीद को हैरानी से देखते हुए उसने अपना सिर हिलाया। उसने आह भरी, फिर पेड़ के तने से टिक गया और अपने पूर्व शिक्षक और मित्र को घूरता रहा। फिर उसने ज़मीन की ओर देखा और कहा:
‘मैं सईदा बेगम के पास वापस नहीं जा रहा हूँ, न ही मैं तुम्हारे खिलाफ कोई साजिश रच रहा हूँ। मुझे किसी का सिर फोड़ने में कोई दिलचस्पी नहीं है। मैं कल अपने पिता के साथ सलीमपुर के लिए रवाना हो रहा हूँ। तुम सईदा बेगम को अपने संदेश भेज सकते हो, लेकिन मैं तुमसे विनती करता हूँ कि ऐसा मत करो। मुझे तुम्हारी बातों का एक चौथाई भी समझ नहीं आ रहा है। लेकिन अगर तुम चाहो, रशीद, तो मैं तुम्हारे गाँव—या तुम्हारी पत्नी के गाँव—तक तुम्हारे साथ चलूँगा और यह सुनिश्चित करूँगा कि तुम वहाँ सुरक्षित पहुँच जाओ।’
रशीद टस से मस नहीं हुआ। उसने अपना दाहिना हाथ अपने माथे पर दबा लिया।
‘तो फिर क्या कहते हो?’ मान ने चिंता और गुस्से से पूछा। उसने जाने से

पहले सईदा बाई के घर जाने का प्लान बनाया था। अब उसे लगा कि रशीद से हुई मुलाकात और उसके बिगड़ते हालात के बारे में सईदा को बताना उसका फर्ज है। उसे पूरी उम्मीद थी कि इससे कुछ बुरा न हो और उसकी विदाई की शाम खराब न हो।

कुछ देर बाद रशीद ने कहा, 'मैं यहीं बैठूंगा और सोचूंगा।'

उन्होंने उस शब्द को अत्यंत अशुभ ढंग से प्रस्तुत किया।

17.4

मान रशीद की गतिविधियों पर नज़र नहीं रख रहा था। पटवारी के बारे में उसकी बातों से वह परेशान था, हालाँकि अब उसे धुंधला-सा याद आ रहा था कि किसी ने—रशीद के पिता या दादा ने—एक बार उससे पटवारी के बारे में कुछ कहा था। वह जानता था कि रशीद गाँव के गरीब लोगों के लिए दया और आक्रोश से भर गया था; मान का मन उस बूढ़े, बेसहारा और मरणासन्न व्यक्ति की ओर चला गया, जिससे मिलने रशीद गया था, और जिसके कारण उसने मस्जिद के बाहर बड़ों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया था। लेकिन रशीद इतना कठोर था, दूसरों से और खुद से इतनी अपेक्षाएँ रखता था, इतना क्रोध और अहंकार में प्रतिक्रिया करता था, जिस भी दिशा में मुड़ता, इतनी ज़ोरदार प्रतिक्रिया करता था कि—दूसरों को नाराज़ करने के अलावा—वह खुद को पूरी तरह से थका चुका होगा। क्या उसे कोई ऐसा विशेष आघात लगा था जिसके कारण वह इस तरह टूट गया—इतना समझदारी से व्यवहार करता था—कम से कम शुरुआत में—और फिर भी इतना भ्रमित? वह अब भी ट्यूशन देता था; क्या वह अब भी अपना गुजारा चला पाता था? उनकी हालत बेहद खराब लग रही थी। क्या वे अब भी वही सख्त और सतर्क शिक्षक थे, जो एकदम सटीक और अडिग अलिफ़ पर ज़ोर देते थे? उनके छात्र और उनके परिवार उनके बारे में क्या सोचते थे?

और रशीद के परिवार का क्या विचार था? क्या उन्हें पता था कि उसके साथ क्या हुआ है? अगर उन्हें पता था, तो वे उसकी दयनीय हालत के प्रति उदासीन कैसे रह सकते थे? मान ने तय किया कि जब वह देबरिया जाएगा, तो वह उनसे सीधे पूछेगा कि उन्हें क्या पता है और उन्हें बताएगा कि उन्हें क्या नहीं पता। और रशीद की पत्नी और बच्चे कहाँ थे?

बेहद परेशान होकर उसने सईदा बाई को अपने मन की कुछ बातें बताईं। उसे समझ नहीं आ रहा था कि रशीद की नफरत और उसकी सशर्त माफी उसे कैसे मिली। रशीद की छवि और उसकी बेतुकी कल्पनाएँ हफ्तों तक मान को सताती रहीं।

सईदा बाई तसनीम की सुरक्षा को लेकर इतनी चिंतित हो गईं कि उन्होंने चौकीदार को बुलाया और उससे कहा कि किसी भी हालत में तसनीम के पुराने अरबी शिक्षक को घर में प्रवेश नहीं दिया जाना चाहिए। जब मान ने तसनीम से रशीद के इस विश्वास का जिक्र किया कि उसकी मर्जी के खिलाफ उससे शादी कराने की साजिश रची जा रही है, तो सईदा बाई ने गुस्से और घृणा भरे स्वर में रशीद के एक पत्र का अंश पढ़कर सुनाया, जिससे मान को यह आभास हुआ कि रशीद पूरी तरह से वासना में डूबा हुआ था। उसने तसनीम को लिखा था कि वह अपना चेहरा उसके बालों में छिपाना चाहता है, इत्यादि। यहां तक कि उसकी लिखावट, जिसके प्रति वह पहले बहुत सतर्क रहता था, भावनाओं के आवेश में आकर बेतरतीब हो गई थी। सईदा बाई द्वारा पढ़े गए अंश से यह स्पष्ट था कि पत्र चिंताजनक था। जब उसने इसमें एक पूरी साजिश की विचित्र अवधारणा और उसके सभी पहलुओं को जोड़ दिया, जिनके बारे में सईदा बाई अब तक अनजान थीं, तो मान को सईदा की बेचैनी और किसी और चीज़ पर ध्यान केंद्रित न कर पाने की असमर्थता पर सहानुभूति हुई—संगीत पर, उस पर, खुद पर। उसने व्यर्थ ही उसका ध्यान भटकाने की कोशिश की।

सईदा उसे इतनी कमजोर लग रही थी कि उसका मन करता था कि उसे अपनी बाहों में भर ले—लेकिन उसे एहसास था कि सईदा की कमजोरी एक अस्थिर और विस्फोटक कमजोरी है और उसे ठुकराए जाने पर उसे गहरा दुख होगा।

उन्होंने सईदा बाई से कहा, 'अगर मैं कभी भी कुछ कर सकूँ, तो बस मुझे बुला लेना। मुझे नहीं पता कि क्या करना है या क्या सलाह देनी है। मैं रुधिया जिले में रहूँगा, लेकिन नवाब साहब के घर पर मेरी निगरानी रखी जाएगी।' मान ने प्रेम निवास का ज़िक्र नहीं किया क्योंकि सईदा बाई अब वहाँ कोई खास शख्सियत नहीं थीं।

सईदा बाई का चेहरा पीला पड़ गया।

'नवाब साहब ने मेरे पिता के चुनाव अभियान में सहायता करने का वादा किया है,' मान ने बताया।

"बेचारी बच्ची, बेचारी बच्ची," सईदा बाई ने धीरे से कहा। "हे भगवान, यह कैसी दुनिया है। अब जाइए, दाग साहब, और ईश्वर आपकी रक्षा करे।"

'क्या आपको यकीन है-'

'हाँ।'

'सईदा, मैं तुम्हारे सिवा किसी और चीज़ के बारे में सोच ही नहीं पाऊंगा,' मान ने कहा। 'जाने से पहले कम से कम मुझे एक मुस्कान तो दे दो।'

सईदा बाई ने उसे मुस्कुरा कर देखा, लेकिन उसकी आँखों में अब भी उदासी थी। "सुनो, मान," उसने उसका नाम लेकर कहा, "बहुत सी बातों पर विचार करो। अपनी खुशी कभी किसी एक व्यक्ति के भरोसे मत रखो। अपने प्रति न्यायप्रिय रहो। और अगर प्रेम निवास में होली के उत्सव में मुझे गाने का निमंत्रण न भी मिले, तो भी यहाँ आना, मैं तुम्हारे लिए गाऊँगी।"

‘लेकिन होली तो अभी तीन महीने से भी ज्यादा दूर है,’ मान ने कहा। ‘अरे, मैं तुमसे तीन हफ्ते से भी कम समय में मिलूंगा।’

सईदा बाई ने सिर हिलाया। ‘जी हाँ, जी हाँ,’ उन्होंने अनमने भाव से कहा। ‘बिल्कुल सही, एकदम सही।’ उन्होंने धीरे-धीरे दो-तीन बार सिर हिलाया और आँखें बंद कर लीं। ‘पता नहीं क्यों मैं इतनी थकी हुई हूँ, दाग साहब। मुझे मियां मिठू को दूध पिलाने का भी मन नहीं कर रहा। भगवान आपको सलामत रखें।’

17.5

सलीमपुर-सह-बैतार के मतदाताओं में लगभग 70,000 लोग शामिल थे, जिनमें से लगभग आधे हिंदू और आधे मुस्लिम थे।

अपने नाम में शामिल दो छोटे कस्बों के अलावा, इस निर्वाचन क्षेत्र में सौ से अधिक गाँव शामिल थे, जिनमें रशीद का परिवार जिन गाँवों, सगल और देबरिया में रहता था, वे भी शामिल थे। यह एक सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्र था: मतदाताओं द्वारा विधानसभा के लिए केवल एक ही उम्मीदवार चुना जाना था। कुल मिलाकर दस उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे थे: छह दलों के प्रतिनिधि थे और चार निर्दलीय थे। निर्दलीय उम्मीदवारों में से एक राजस्व मंत्री महेश कपूर थे, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उम्मीदवार थे। निर्दलीय उम्मीदवारों में से एक वारिस मोहम्मद खान थे, जिन्हें बैतर के नवाब साहब ने अपने दोस्त के लिए एक दिखावटी उम्मीदवार के रूप में खड़ा किया था, ताकि अगर उनके दोस्त को कांग्रेस का टिकट न मिले या वे चुनाव न लड़ें या किसी कारण से दौड़ से हट जाएं तो वे उनकी जगह ले सकें।

वारिस उम्मीदवार बनकर बहुत खुश था, हालांकि वह जानता था कि उससे महेश कपूर का पूरा समर्थन करने की उम्मीद की जाएगी। रिटर्निंग ऑफिसर के कार्यालय के बाहर वैध रूप से नामांकित उम्मीदवारों की

सूची में अपना नाम देखकर ही उसके चेहरे पर गर्व की मुस्कान आ गई। सूची में खान का नाम कपूर के ठीक नीचे था, और सूची अंग्रेजी वर्णमाला के क्रम में व्यवस्थित थी। वारिस ने इसे महत्वपूर्ण समझा: दोनों सहयोगी लगभग एक ही ब्रैकेट में एक साथ रखे जा सकते थे। हालांकि चुनाव में उसकी भूमिका सबको पता थी, लेकिन जिले के कुछ जाने-माने नागरिकों - बल्कि पूरे राज्य के - के साथ एक ही सूची में उसका नाम होने से वारिस को किले में एक खास रुतबा मिल गया था। मुंशी उसे आदेश देता रहा, लेकिन पहले से कहीं ज्यादा चतुराई से। और जब वारिस ने उसकी बात नहीं मानी, तो उसके पास चुनाव के काम में व्यस्त होने का बहाना तैयार रहता था।

जब मान और उसके पिता बैतर किले पहुंचे, तो वारिस ने उन्हें आश्वस्त किया:

“अब, मंत्री साहब, मान साहब, बैतर क्षेत्र का सारा काम मुझ पर छोड़ दीजिए। मैं सब कुछ व्यवस्थित करूँगा—परिवहन, सभाएँ, ढोल, गायक, सब कुछ। बस कांग्रेस वालों से कह दीजिए कि वे हमें नेहरू के ढेरों पोस्टर और कांग्रेस के झंडे भेजें। हम यह सुनिश्चित करेंगे कि वे हर जगह लग जाएँ। और हम एक महीने तक किसी को सोने नहीं देंगे,” उन्होंने खुशी से आगे कहा। “नारों के कारण उन्हें अज़ान भी सुनाई नहीं देगी। जी हाँ। और मैंने यह सुनिश्चित कर लिया है कि आपके नहाने का पानी गर्म हो। कल सुबह मैंने कुछ गाँवों के दौरे का इंतज़ाम किया है, और शाम को हम सभा के लिए शहर लौटेंगे। और अगर मान साहब शिकार करना चाहें—लेकिन मुझे डर है कि इसके लिए समय नहीं मिलेगा। नीलगाय से पहले वोट। लेकिन पहले मुझे यह सुनिश्चित करना होगा कि आज शाम समाजवादी पार्टी की सभा में हमारे कई समर्थक पहुँचें ताकि उन्हें ठीक से खरी-खोटी सुनाई जा सके। वे हरामज़ादे तो यह भी नहीं सोचते कि हमारे

नवाब साहब को उस ज़मीन के लिए मुआवज़ा मिलना चाहिए जो उनसे छीनी जाने वाली है—ज़रा सोचिए!" यह तो पहले से ही कितना बड़ा अन्याय है। और अब ये जले पर नमक छिड़कना चाहते हैं—' वारिस अचानक रुक गया, उसे एहसास हुआ कि वह उस काले कानून के रचयिता को ही संबोधित कर रहा है। 'मेरा मतलब है—' उसने मुस्कुराते हुए अपनी बात पूरी की और अपना सिर ज़ोर से हिलाया, मानो उस विचार को अपने दिमाग से निकाल रहा हो। वे अब तो सहयोगी थे ही।

'अब मुझे कुछ काम निपटाने होंगे,' उसने कहा और कुछ देर के लिए गायब हो गया।

मान ने आराम से स्नान किया और जब वह नीचे आया तो देखा कि उसके पिता बेसब्री से उसका इंतज़ार कर रहे हैं। उन्होंने उम्मीदवारों, विभिन्न क्षेत्रों, धर्मों और जातियों के लोगों से मिलने वाले संभावित समर्थन, महिलाओं और अन्य विशिष्ट समूहों के प्रति उनकी रणनीति, चुनाव खर्च और उसे पूरा करने के तरीकों, और इस संभावना पर चर्चा शुरू की कि क्या नेहरू जनवरी के मध्य में पूर्व प्रदेश के अपने संक्षिप्त दौरे के दौरान इस निर्वाचन क्षेत्र में भाषण देने के लिए राजी हो सकते हैं। मान को सबसे ज़्यादा खुशी इस बात से हुई कि उसके पिता हमेशा की तरह उसे कम महत्व दे रहे थे। मान के विपरीत, वह इस निर्वाचन क्षेत्र में नहीं रहे थे, लेकिन मान को उम्मीद थी कि वे रुधिया फार्म के अपने अनुभवों को इस उत्तरी उपखंड पर भी लागू कर सकते हैं। लेकिन महेश कपूर, हालांकि वे जाति में विश्वास नहीं करते थे और धर्म को ज़्यादा महत्व नहीं देते थे, फिर भी चुनावी नतीजों को भली-भांति समझते थे और इस जटिल क्षेत्र की जनसांख्यिकीय विशेषताओं के बारे में मान के विवरण को ध्यान से सुन रहे थे।

स्वतंत्र उम्मीदवारों में—वकील वारिस को छोड़कर—कोई भी ऐसा नहीं

था जो महेश कपूर को कड़ी टक्कर दे सके। और पार्टी उम्मीदवारों में, चूंकि वे कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार थे—भले ही वे एक अपरिचित निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ने को लेकर चिंतित थे—उन्हें शुरुआत में ही जबरदस्त बढ़त मिल गई थी। कांग्रेस स्वतंत्रता की पार्टी थी और नेहरू की पार्टी थी, और यह अन्य पार्टियों की तुलना में कहीं अधिक वित्तपोषित, कहीं अधिक संगठित और कहीं अधिक तेजी से मान्यता प्राप्त थी। इसका झंडा—केसरिया, सफेद और हरा, जिसके बीच में चरखा बना था—राष्ट्रीय ध्वज से मिलता-जुलता था। कांग्रेस पार्टी के लगभग हर गांव में एक-दो कार्यकर्ता थे—ये कार्यकर्ता पिछले कुछ वर्षों में सामाजिक सेवा में सक्रिय रहे थे, और आने वाले कुछ महीनों में चुनाव प्रचार में भी काफी सक्रिय रहेंगे।

अन्य पांच पार्टियों ने मिली-जुली प्रतिक्रिया दी।

जनसंघ ने 'भारतीय संस्कृति की सर्वोच्च परंपराओं के प्रसार और विस्तार की वकालत' करने का वादा किया: यह शब्द भारतीय संस्कृति के बजाय हिंदू संस्कृति के लिए एक अप्रत्यक्ष संकेत था। कश्मीर के मुद्दे पर यह पाकिस्तान के साथ युद्ध करने के लिए भी तत्पर था। इसने भारत में जबरन पलायन करने वाले हिंदुओं की संपत्ति के लिए पाकिस्तान से मुआवजे की मांग की। और इसने एक ऐसे एकीकृत भारत का समर्थन किया जिसमें पाकिस्तान का क्षेत्र भी शामिल था; संभवतः इसका मतलब जबरन पुनर्मिलित भारत था।

राम राज्य परिषद देखने में अधिक शांतिपूर्ण प्रतीत होती थी, हालांकि वास्तविकता से काफी दूर थी। इसने घोषणा की कि इसका उद्देश्य देश में राम के आदर्श युग जैसी स्थिति स्थापित करना है। प्रत्येक नागरिक से 'धर्मी और धार्मिक' होने की अपेक्षा की जाएगी; वनस्पति घी (एक प्रकार का हाइड्रोजनीकृत वनस्पति तेल) जैसे कृत्रिम खाद्य पदार्थों पर प्रतिबंध

लगाया जाएगा, साथ ही अश्लील और भद्दी फिल्मों और गायों के वध पर भी रोक लगाई जाएगी। प्राचीन हिंदू चिकित्सा प्रणाली को 'राष्ट्रीय प्रणाली के रूप में आधिकारिक मान्यता' दी जाएगी। और हिंदू संहिता विधेयक कभी पारित नहीं होगा।

कांग्रेस के वामपंथी धड़े की तीन पार्टियां, जो इस निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ रही थीं, वे थीं केएमपी (वह पार्टी जिसमें महेश कपूर शामिल हुए और फिर अलग हो गए (जिसका चिन्ह एक झोपड़ी था); सोशलिस्ट पार्टी (जिसका चिन्ह एक बरगद का पेड़ था); और कम्युनिस्ट पार्टी (जिसका चिन्ह एक हंसिया और कुछ भुट्टे थे)। अनुसूचित जाति संघ, डॉ. अंबेडकर की पार्टी (जिन्होंने हाल ही में मतभेदों और हिंदू संहिता विधेयक के विफल होने के कारण नेहरू के मंत्रिमंडल से इस्तीफा दिया था), ने समाजवादियों के साथ चुनावी गठबंधन किया था; इस सीट से उनका अपना कोई उम्मीदवार नहीं था। उन्होंने मुख्य रूप से उन दो सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया जहां अनुसूचित जाति से कम से कम एक सदस्य का विधानमंडल में निर्वाचित होना कानूनन अनिवार्य था।

महेश कपूर ने कहा, 'अगर आपकी मां यहां होतीं तो अच्छा होता।' 'यह मेरे पुराने निर्वाचन क्षेत्र की तुलना में इस जगह पर और भी ज्यादा महत्वपूर्ण है— यहां तो और भी ज्यादा महिलाएं पर्दा प्रथा का पालन करती हैं।'

‘कांग्रेस की महिला समूहों के बारे में क्या ख्याल है?’ मान ने पूछा।

महेश कपूर ने अधीरता से अपनी जीभ चटकाई। उन्होंने कहा, 'कांग्रेस की महिला स्वयंसेवकों का होना ही काफी नहीं है। हमें एक सशक्त महिला वक्ता की जरूरत है।'

‘अम्माजी एक प्रभावशाली वक्ता नहीं हैं,’ मान ने मुस्कुराते हुए कहा। उसने अपनी माँ को मंच पर खड़े होने की कल्पना करने की कोशिश की,

लेकिन असफल रहा। उनकी खासियत पर्दे के पीछे चुपचाप काम करना था, मुख्य रूप से लोगों की मदद करना, लेकिन कभी-कभी—जैसे चुनावों में—लोगों को मनाना भी।

'नहीं, लेकिन वह परिवार से है, और इसी से सारा फर्क पड़ता है।'

मान ने सिर हिलाया। उसने कहा, 'मुझे लगता है हमें वीना को मदद के लिए बुलाने की कोशिश करनी चाहिए। लेकिन इसके लिए आपको बूढ़ी श्रीमती टंडन से बात करनी होगी।'

महेश कपूर ने अपने बेटे से कहा, 'बुजुर्ग महिला को मेरा नास्तिक रवैया पसंद नहीं है। हमें तुम्हारी मां से उससे बात करवानी होगी। तुम अगले हफ्ते वापस जाकर उसे बता देना। और साथ ही, केदारनाथ से कहना कि वह रविदासपुर में अपने जान-पहचान के जाटवों से बात करे और इस इलाके के अनुसूचित जातियों से संपर्क करे। जाति, जाति!' बेटे ने सिर हिलाया। 'हां, और एक बात और। पहले कुछ दिन हम साथ-साथ घूमेंगे। फिर हम अलग-अलग होकर ज्यादा लोगों को कवर कर सकते हैं। किले में दो जीप हैं। तुम वारिस के साथ घूम सकते हो और मैं मुंशी के साथ।'

'जब फ़िरोज़ आए, तो तुम्हें उसके साथ घूमना चाहिए,' मान ने कहा, जिसे मुंशी से ज़्यादा मतलब नहीं था और उसे लगता था कि इससे उसके पिता के वोट कम हो सकते हैं। 'इससे हर जीप में एक हिंदू-मुस्लिम जोड़ी हो जाएगी।'

महेश कपूर ने अधीरता से पूछा, 'अच्छा, उसे क्या रोक रहा है? अगर वह हमें बैतर घुमा देता तो बहुत अच्छा होता। मैं समझ सकता हूँ कि इम्तियाज ब्रह्मपुर क्यों नहीं छोड़ सकता।'

'हाल ही में उसके पास बहुत काम था,' मान ने अपने दोस्त के बारे में सोचते हुए कहा। हमेशा की तरह उसे किले में ऊपर फिरोज का कमरा दिया गया था। 'और नवाब साहब?' उसने पलटकर पूछा। 'उन्होंने हमें

क्यों छोड़ दिया?'
महेश कपूर ने संक्षिप्त में कहा, 'उन्हें चुनाव पसंद नहीं हैं। असल में, उन्हें राजनीति बिल्कुल पसंद नहीं है। और देश को बांटने में उनके पिता की भूमिका को देखते हुए, मैं उन्हें दोष नहीं देता। खैर, उन्होंने सब कुछ हमारे लिए खोल दिया है। कम से कम हम कहीं भी आ-जा सकते हैं। ज़रा सोचिए, इन सड़कों पर मेरी कार चलाना या बैलगाड़ियों पर घूमना कैसा होगा?'
'हमारे पास आने-जाने के लिए पर्याप्त साधन हैं,' मान ने कहा। 'दो जीप, दो बैल और एक साइकिल।' दोनों हंस पड़े। दो बैल कांग्रेस का चिन्ह था, और वारिस का चिन्ह साइकिल।
'आपकी मां के बारे में सुनकर बहुत दुख हुआ,' महेश कपूर ने दोहराया।
मान ने आशावादी भाव से कहा, "चुनाव में अभी काफी समय है, और मुझे पूरा यकीन है कि एक-दो हफ़्ते में वह ठीक हो जाएगी और हमारी मदद कर सकेगी।" वह अपने पिता द्वारा सुझाए गए ब्रह्मपुर लौटने के लिए उत्सुक था।
उसे ऐसा लगा कि अपने जीवन में लगभग पहली बार उसके पिता उस पर भरोसा कर रहे थे; वास्तव में, कुछ मायनों में, उस पर निर्भर भी थे।
वारिस ने आकर बताया कि वे शहर में सोशलिस्ट पार्टी की बैठक में जा रहे हैं। क्या मंत्री साहब या मान साहब साथ आना चाहेंगे?
महेश कपूर को लगा कि अगर वारिस ने हंगामा खड़ा किया है तो उनका जाना उचित नहीं होगा। लेकिन मान को ऐसी कोई हिचक नहीं थी। वह सब कुछ देखना चाहता था।
17.6
सोशलिस्ट पार्टी की बैठक बैतर के सरकारी स्कूल के खेल मैदान में एक विशाल लाल-हरे रंग के शामियाने के नीचे पैंतालीस मिनट देरी से शुरू

हुई, जहाँ कस्बे की अधिकांश महत्वपूर्ण बड़ी बैठकें आयोजित की जाती थीं। मंच पर खड़े कुछ लोग भीड़ का मनोरंजन करने और उन्हें धैर्य बनाए रखने की कोशिश कर रहे थे। कई लोगों ने वारिस का अभिवादन किया और वह सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करके बहुत खुश हुए। उन्होंने मान का परिचय कराते हुए और आदाब, नमस्ते या पीठ थपथपाते हुए लोगों का अभिवादन किया। उन्होंने इतने जोश से घोषणा की, 'यह वही व्यक्ति है जिसने नवाबजादा की जान बचाई,' कि तंदुरुस्त मान भी शर्मिंदा हो गए।

शहर से गुजर रहा समाजवादी जुलूस कहीं रुक गया था। लेकिन अब ढोल की आवाजें करीब आने लगीं और जल्द ही उम्मीदवार अपने दल के साथ मंच पर आ गए। वे एक अधेड़ उम्र के शिक्षक थे जो कई वर्षों से जिला बोर्ड के सदस्य थे। वे न केवल स्वयं एक कुशल वक्ता के रूप में जाने जाते थे, बल्कि किसी ने यह झूठी अफवाह भी फैला दी थी कि महान समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायण बैतर में भाषण देने आ सकते हैं—इसलिए फुटबॉल मैदान में भारी भीड़ जमा थी। शाम के सात बज रहे थे और ठंड बढ़ने लगी थी; लगभग पूरी तरह से पुरुष श्रोता, जिनमें शहरवासी और ग्रामीण दोनों शामिल थे, अपने साथ शॉल और कंबल लाए थे ताकि खुद को ढक सकें। आयोजकों ने धूल और ओस से बचाव के लिए जमीन पर सूती दरी बिछा दी थी।

कई स्थानीय ख्यातिप्राप्त व्यक्ति मंच पर बैठे थे, जो कई चमकदार सफेद बत्तियों से जगमगा रहा था। उनके पीछे कपड़े की दीवार पर बरगद के पेड़ की एक विशाल छवि थी, जो समाजवादियों का प्रतीक है। वक्ता, जो शायद अपनी कक्षा में शोर-शराबे को नियंत्रित करने के आदी थे, उनकी आवाज इतनी दमदार थी कि माइक्रोफोन की लगभग आवश्यकता ही नहीं थी। फिर भी, माइक्रोफोन कभी ठीक से काम करता था तो कभी बंद हो

जाता था। समय-समय पर, विशेषकर जब वक्ता जोश में आ जाते थे, तो माइक्रोफोन से एक कर्कश आवाज निकलती थी। परिचय और पुष्पांजलि के बाद, वे जल्द ही शुद्ध हिंदी भाषण देने लगे।

और बात यहीं खत्म नहीं होती। यह कांग्रेस सरकार हमारे टैक्स के पैसे से पीने के लिए साफ पानी की पाइपलाइन नहीं बिछाएगी, बल्कि बेकार की चीजों पर बेहिसाब पैसा खर्च करेगी। आप सब शहर के चौक में गांधीजी की उस बदसूरत मूर्ति के पास से गुजरे होंगे। मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि हम उस महान व्यक्ति का कितना भी सम्मान करते हों, चाहे कितनी ही श्रद्धा रखते हों, जिनकी यह मूर्ति बनाई गई है, फिर भी जनता के पैसे का यह शर्मनाक दुरुपयोग है। यह महान आत्मा हमारे दिलों में बसी है; हमें बाजार में यातायात का संचालन करने के लिए उनकी मूर्ति की क्या जरूरत है? लेकिन इस राज्य की सरकार से कोई कैसे बहस कर सकता है? वे सुनने को तैयार नहीं थे, उन्हें अपना काम करना ही था। इसलिए सरकार ने यह पैसा एक बेकार मूर्ति पर खर्च कर दिया, जिस पर सिर्फ कबूतर ही बीट करेंगे। अगर हमने यह पैसा सार्वजनिक शौचालयों पर खर्च किया होता, तो हमारी माताओं और बहनों को खुले में शौच नहीं करना पड़ता। और इस सारे अनावश्यक खर्च से यह निकम्मा सरकार और भी बेकार नोट छापती है, जिससे बदले में उन सभी वस्तुओं, उन सभी आवश्यक वस्तुओं की कीमतें बढ़ जाती हैं जिन्हें हम गरीब लोगों को खरीदना पड़ता है।' उनकी आवाज पीड़ा से भर उठी। 'हम कैसे गुजारा करें? हममें से कुछ, जैसे शिक्षक और क्लर्क, की निश्चित तनख्वाह है, कुछ लोग ईश्वर की कृपा पर निर्भर हैं। हम इस कमरतोड़ खर्च—इस मुद्रास्फीति—को कैसे सहन करें, जो पिछले चार वर्षों में कांग्रेस द्वारा इस देश के लोगों को दिया गया सच्चा उपहार है। राशन में कटौती, कपड़ों की घटती आपूर्ति, निराशा के प्रकोप, भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद के इस

विकट समय में जीवन की नदी पार करने में हमारी मदद कौन करेगा? मैं अपने छात्रों को देखकर रो पड़ता हूँ—’

'अब हमें दिखाओ कि तुम कैसे रोते हो! एक, दो, तीन, परीक्षण!' भीड़ के पीछे से एक आवाज आई।

मैं पीछे बैठे अपने आदरणीय और कथित तौर पर बुद्धिमान भाइयों से विनती करता हूँ कि वे बीच में दखल न दें। हम जानते हैं कि वे कहाँ से आते हैं, किस ऊँचे घोंसले से उतरकर इस जिले के लोगों पर अत्याचार करने में मदद करते हैं। ... मैं अपने छात्रों को देखता हूँ और रोता हूँ। और क्यों? हाँ, मैं आपको बताता हूँ, अगर पीछे बैठे पटाखे फोड़ने वालों ने मुझे अनुमति दी हो। क्योंकि ये बेचारे छात्र काम नहीं पा सकते, चाहे वे कितने भी अच्छे, कितने भी सभ्य, कितने भी बुद्धिमान, कितने भी मेहनती क्यों न हों। यही कांग्रेस ने किया है, यही उसने अर्थव्यवस्था को इस हालत में पहुँचाया है। सोचो, मेरे दोस्तों, सोचो। हममें से कौन माँ के प्यार को नहीं जानता? और फिर भी आज, वही माँ, जिसकी आँखों से आँसू बह रहे थे, जिसने अपने खानदानी गहनों, शादी की चूड़ियों, यहाँ तक कि अपने मंगलसूत्र को आखिरी बार देखा—वे अनमोल चीज़ें जो उसे जान से भी ज़्यादा प्यारी थीं—जिन्होंने अपने बेटे की शिक्षा के लिए उन्हें बेच दिया—और जिसने अपने बेटे को स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई पूरी करवाई, इस उम्मीद के साथ कि वह जीवन में कुछ सार्थक करेगा—अब उसे पता चलता है कि उसे सरकारी क्लर्क की नौकरी भी किसी जान-पहचान वाले या रिश्वत दिए बिना नहीं मिल सकती। क्या हमने अंग्रेजों को इसी के लिए देश से निकाला था? क्या जनता इसी की हकदार है? ऐसी सरकार जो अपनी जनता को भोजन उपलब्ध नहीं करा सकती, जो अपने छात्रों को रोज़गार नहीं दिला सकती, ऐसी सरकार को शर्म से मर जाना चाहिए, ऐसी सरकार को मुट्ठी भर पानी में डूब जाना चाहिए।

वक्ता ने सांस लेने के लिए विराम लिया, और आयोजकों ने एक साथ जोर से चिल्लाने का इंतजाम किया:

'बैतार के विधायक को कैसा होना चाहिए?'

भीड़ में मौजूद उनके समर्थकों ने तुकबंदी में जवाब दिया:

'रामलाल सिन्हा, उनके जैसा एक शख्स!'

रामलाल सिन्हा ने विनम्रतापूर्वक हाथ उठाकर नमस्ते किया। 'लेकिन मेरे मित्रों, मेरे भाइयों, मेरी बहनों, मुझे और बोलने दीजिए, मुझे अपने दिल में बसी सारी कड़वाहट को बाहर निकालने दीजिए, जो मैंने कांग्रेस के कुशासन के इन चार वर्षों में सहन की है—मैं कठोर भाषा का प्रयोग करने वाला व्यक्ति नहीं हूँ, लेकिन मैं आपसे कहता हूँ कि यदि हमें इस देश में हिंसक क्रांति को रोकना है, तो हमें कांग्रेस को सत्ता से बाहर करना होगा। हमें इसे जड़ से उखाड़ फेंकना होगा। यह वृक्ष जिसकी जड़ें इतनी गहरी हो गई हैं, जिसने इस मिट्टी से सारा पानी सोख लिया है, यह वृक्ष सड़ कर खोखला हो गया है—और यह हमारा कर्तव्य है—मेरे मित्रों, हममें से प्रत्येक का कर्तव्य है कि हम इस सड़े और खोखले वृक्ष को भारत माता की मिट्टी से उखाड़ फेंकें और इसे फेंक दें—और इसके साथ ही उन अशुभ और लालची उल्लुओं को भी, जिन्होंने इसमें अपने गंदे घोंसले बना लिए हैं!'

'पेड़ हटाओ! पेड़ को वोट मत दो!' पीछे से एक आवाज आई। मान और वारिस ने एक-दूसरे को देखा और हंस पड़े, और दर्शकों में भी खूब हंसी गूंजी, जिनमें समाजवादी पार्टी के समर्थक भी शामिल थे। रामलाल सिन्हा को अपनी गलती का एहसास हुआ और उन्होंने मेज पर हाथ पटकते हुए चिल्लाकर कहा: 'यह हंगामा कांग्रेस की गुंडागर्दी का एक विशिष्ट उदाहरण है।'

फिर, यह समझते हुए कि क्रोध करना उल्टा पड़ सकता है, उन्होंने शांत

स्वर में कहा: 'यह तो आम बात है, मेरे दोस्तों, बिल्कुल आम। हम इस तरह के प्रतिकूल हालात और इस तरह के साये में ये चुनाव लड़ रहे हैं। पूरी सरकारी मशीनरी कांग्रेस पार्टी के हाथों में है। प्रधानमंत्री सरकारी खर्चे पर हवाई जहाज में घूमते हैं। डीएम और एसडीओ कांग्रेस के इशारों पर नाचते हैं। वे हमारी सभाओं में बाधा डालने के लिए उपद्रवी किराए पर लेते हैं। लेकिन हमें इन सबसे ऊपर उठना होगा और उन्हें यह दिखाना होगा कि वे चाहे जितना चिल्ला लें, हम फिर भी नहीं झुकेंगे। यह कोई मामूली पार्टी नहीं है जिससे वे निपट रहे हैं, यह समाजवादी पार्टी है, जयप्रकाश नारायण की पार्टी है, आचार्य नरेंद्र देव की पार्टी है, निडर देशभक्तों की पार्टी है, न कि भ्रष्ट गुंडों की। हम अपना मतपत्र उस पेटी में डालेंगे जिस पर बरगद का चिन्ह अंकित है, जो समाजवादी पार्टी का सच्चा प्रतीक है।' यह बलवान वृक्ष है, फैला हुआ वृक्ष है, वह वृक्ष जो न खोखला है और न सड़ा हुआ है, वह वृक्ष जो हमारे इस देश की शक्ति, उदारता, सुंदरता और गौरव का प्रतीक है—बुद्ध और गांधी की भूमि, कबीर और नानक की भूमि, अकबर और अशोक की भूमि, हिमालय और गंगा की भूमि, वह भूमि जो हम सभी की समान रूप से है, हिंदू, मुसलमान, सिख और ईसाई, जिसके बारे में इकबाल के अमर शब्दों में सचमुच कहा गया है,

हमारा यह हिंदुस्तान पूरी दुनिया से बेहतर है।
हम इसके बुलबुल हैं, यह हमारा गुलाबों का बगीचा है।'

रामलाल सिन्हा अपने भाषण से अभिभूत होकर दो बार खांसे और आधा गिलास पानी पिया।

एक आवाज ने चिल्लाकर कहा, 'क्या बुलबुल की अपनी कोई नीतियां हैं, या वह केवल ऊपर से कांग्रेस की छवि को धूमिल करना चाहती है?'

मेरी कक्षा से बाहर निकलो! रामलाल सिन्हा का मन चिल्लाने का कर रहा

था। लेकिन उन्होंने शांत रहते हुए कहा:

मुझे खुशी है कि पीछे बैठे उस बेवकूफ भैंस ने यह सवाल पूछा है। यह सवाल ऐसे व्यक्ति से आया है जिसका प्रतीक दो बैलों की जगह दो भैंसें होनी चाहिए। हर कोई देख सकता है कि राजस्व मंत्री ने इस पूरे जिले के सबसे बड़े जमींदार से किस तरह हाथ मिला लिया है। अगर कांग्रेस पार्टी और जमींदारों के बीच मिलीभगत का सबूत चाहिए था, तो यह रहा। देखिए, वे साइकिल के दो पहियों की तरह एक साथ काम कर रहे हैं! देखिए, सरकार द्वारा दिए जाने वाले मुआवजे से जमींदार और भी अमीर और मोटे होते जा रहे हैं। नवाब साहब जनता का सामना करने के लिए यहां क्यों नहीं हैं? क्या वे जनता के गुस्से से डरते हैं? या वे अपने वर्ग के लोगों की तरह बहुत घमंडी हैं—या गरीबों के पैसे, जनता की उस उदारता से शर्मिंदा हैं जो जल्द ही उनके हाथों में आ जाएगी? आप मुझसे हमारी नीतियों के बारे में पूछते हैं। अगर आप मुझे अनुमति दें तो मैं आपको बताता हूं। समाजवादी पार्टी ने कृषि समस्या पर किसी भी अन्य पार्टी की तुलना में कहीं अधिक विचार किया है। हम केएमपीपी की तरह कांग्रेस पार्टी की सिर्फ असंतुष्ट पूंछ नहीं हैं। हम कम्युनिस्टों की तरह विदेशियों के सैद्धांतिक औजार नहीं हैं। नहीं, सज्जनों, हमारे अपने स्वतंत्र विचार हैं, हमारी अपनी नीतियां हैं।

जैसे-जैसे वह अपनी उंगलियों पर बिंदुओं को गिनता गया, वैसे-वैसे उसकी आवाज़ भी बुलंद होती गई: 'किसी भी किसान परिवार को आर्थिक जोत के तीन गुना से अधिक भूमि रखने की अनुमति नहीं दी जाएगी। जो व्यक्ति स्वयं खेती में भाग नहीं लेता, उसे भूमि रखने की अनुमति नहीं दी जाएगी। भूमि किसान की होगी। किसी को भी—न नवाब को, न महाराजा को, न वक्फ को, न मंदिर ट्रस्ट को—सौ एकड़ से अधिक अधिग्रहित भूमि के लिए मुआवजा नहीं दिया जाएगा। संविधान में

निहित संपत्ति का अधिकार समाप्त करना होगा: यह धन के न्यायसंगत वितरण में बाधा है। श्रमिकों को हम सामाजिक सुरक्षा का वादा करते हैं जिसमें विकलांगता, बीमारी, बेरोजगारी और वृद्धावस्था से सुरक्षा शामिल होगी। महिलाओं को हम समान काम के लिए समान वेतन, प्रभावी सार्वभौमिक शिक्षा और एक नागरिक संहिता की गारंटी देते हैं जो उन्हें समान अधिकार प्रदान करेगी।'

'क्या आप हमारी महिलाओं को परदे से बाहर निकालना चाहते हैं?' एक आक्रोशित आवाज ने पूछा।

मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए; बिना तैयारी के तोप मत चलाइए। मेरी बात ध्यान से सुनिए, फिर मैं आपके सभी सवालों के जवाब सहर्ष दूंगा। अल्पसंख्यकों से मैं कहना चाहता हूं: हम आपकी भाषा, आपकी लिपि और आपकी संस्कृति की पूर्ण सुरक्षा का आश्वासन देते हैं, मैं दोहराता हूं, पूर्ण सुरक्षा। और हमें अंग्रेजों से अपने सभी संबंध तोड़ देने चाहिए। हम अंग्रेजी समर्थक नेहरू के प्रिय औपनिवेशिक और साम्राज्यवादी राष्ट्रमंडल में नहीं रह सकते, जिसके मुखिया, राजा जॉर्ज के नाम पर उन्हें अक्सर गिरफ्तार किया गया था, और जिसके तलवे अब वे चाटना चाहते हैं। आइए पुराने तौर-तरीकों को हमेशा के लिए खत्म कर दें। आइए लालच और भाई-भतीजावाद की पार्टी, कांग्रेस, जिसने देश को तबाही के कगार पर ला खड़ा किया है, को हमेशा के लिए राख कर दें। मेरे मित्रों, अगर आप अभी भी खर्च कर सकते हैं तो अपना घी और चंदन ले आइए, या बस आप और आपके परिवार 30 जनवरी को, इस निर्वाचन क्षेत्र में मतदान के दिन, श्मशान घाट पर आएं और उस राक्षसी पार्टी के शव को हमेशा के लिए वहीं जला दें। जय हिंद।

'जय हिंद!' भीड़ ने जोर से जयकार की।

मंच से कोई चिल्लाया, 'बैतर का विधायक कैसा हो?'

‘Ramlal Sinha jaisa ho!’ shouted the crowd.
यह प्रतिध्वनि मंत्रोच्चार कुछ मिनटों तक चलता रहा, इस दौरान उम्मीदवार ने सम्मानपूर्वक हाथ जोड़कर दर्शकों को प्रणाम किया।
मान ने वारिस की ओर देखा, लेकिन वारिस हंस रहा था और जरा भी चिंतित नहीं दिख रहा था।
वारिस ने कहा, 'शहर तो एक बात है। असली चुनौती तो गांवों में है, जहां हम उन्हें हराएंगे। कल से हमारा काम शुरू होगा। मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि आपको अच्छा खाना मिले।'
उसने मान की पीठ पर थप्पड़ मारा।
17.7
सोने से पहले, मान ने फ़िरोज़ की मेज़ पर रखी तस्वीर देखी: नवाब साहब, उनकी पत्नी और उनके तीन बच्चों की तस्वीर, जिसमें फ़िरोज़ खास तौर पर सिर झुकाकर कैमरे की ओर बड़ी ध्यान से देख रहे थे। उल्लू की आवाज़ ने मान को अभी-अभी सुने भाषण की याद दिला दी। उन्हें हल्के से झटका लगा कि वे अपने साथ व्हिस्की लाना भूल गए थे। फिर भी, कुछ ही मिनटों में वे गहरी नींद में सो गए।
अगला दिन लंबा, धूल भरा और थका देने वाला था। वे जीप से गड्ढों और संकरी पटरियों पर अनगिनत गांवों की ओर बढ़े, जहां वारिस ने उन्हें अनगिनत मुखियाओं, कांग्रेस पार्टी के ग्राम-स्तरीय कार्यकर्ताओं, जातिगत बिरादरियों या समुदायों के प्रमुखों, इमामों, पंडितों और स्थानीय प्रभावशाली लोगों से मिलवाया। महेश कपूर की बोलने की शैली, जिस राजनीतिक चापलूसी से उन्हें घृणा थी, उसके विपरीत संक्षिप्त, तीखी, कुछ हद तक अभिमानी, लेकिन सीधी-सादी थी; उनसे मिलने वाले अधिकांश लोगों को यह शैली बुरी नहीं लगी। उन्होंने विभिन्न मुद्दों पर संक्षिप्त भाषण दिए और उन्हें सुनने के लिए एकत्रित हुए ग्रामीणों के

प्रश्नों के उत्तर दिए। उन्होंने बहुत ही सरल शब्दों में उनका वोट मांगा। मान, वारिस और उन्होंने अनगिनत प्याले चाय और शरबत पी। कभी महिलाएं बाहर आतीं, कभी अंदर रहतीं और दरवाजे के पीछे से झांकतीं। लेकिन वे जहां भी जाते, उनका जुलूस गांव के बच्चों के लिए एक शानदार नजारा होता। वे हर गांव में उनका पीछा करते थे, और यहां तक कि जब जीप अगले गांव के लिए रवाना होती थी तो उन्हें गांव के बाहरी इलाके तक जीप में लिफ्ट भी मिल जाती थी।

विशेषकर कुर्मी जाति के पुरुष इस बात से बेहद चिंतित थे कि नेहरू द्वारा प्रस्तावित हिंदू संहिता विधेयक के तहत महिलाओं को संपत्ति विरासत में मिलेगी। ये मेहनती किसान नहीं चाहते थे कि उनकी ज़मीनें छोटे-छोटे, पूरी तरह से अलाभकारी टुकड़ों में बँट जाएँ। महेश कपूर ने स्वीकार किया कि वे विधेयक के पक्ष में थे, लेकिन उन्होंने यथासंभव स्पष्ट किया कि उन्हें यह विधेयक क्यों आवश्यक लगता है।

कई मुसलमान अपने स्थानीय स्कूलों की स्थिति, अपनी भाषा और धार्मिक स्वतंत्रता को लेकर चिंतित थे; उन्होंने ब्रह्मपुर और अयोध्या में हाल ही में हुई अशांति के बारे में पूछा। वारिस ने उन्हें आश्वस्त किया कि महेश कपूर में उन्हें एक ऐसा मित्र मिला है जो उर्दू पढ़ और लिख सकता है, जो नवाब साहब का निजी मित्र है, और जिसका बेटा—और यहाँ उन्होंने बड़े स्नेह और गर्व से मान की ओर इशारा किया—वास्तव में मुहर्रम के दौरान एक धार्मिक दंगे में छोटे नवाबजादा की जान बचाई थी।

कुछ किरायेदार किसानों ने ज़मींदारी प्रथा के उन्मूलन के बारे में पूछा, लेकिन बहुत ही संकोच के साथ, क्योंकि नवाब साहब का खास आदमी वारिस वहाँ मौजूद था। इससे चारों ओर काफी असहजता का माहौल बन गया, लेकिन महेश कपूर ने स्थिति को संभाला और नए कानून के तहत लोगों के अधिकारों के बारे में बताया। उन्होंने कहा, 'लेकिन इसे अब

किराया न देने का बहाना नहीं समझना चाहिए। उत्तर प्रदेश, पूर्व प्रदेश, मध्य भारत और बिहार से जुड़े चार अलग-अलग मामले इस समय सर्वोच्च न्यायालय में विचाराधीन हैं, और न्यायालय जल्द ही फैसला करेगा कि नए ज़मींदारी कानून वैध हैं और उन्हें लागू किया जा सकता है या नहीं। इस बीच, किसी को भी उसकी ज़मीन से जबरन बेदखल नहीं किया जाएगा। और किसी को भी लाभ पहुँचाने के लिए, चाहे वह ज़मींदार हो या किरायेदार, भूमि अभिलेखों में छेड़छाड़ करने पर कड़ी सजा का प्रावधान है। कांग्रेस सरकार की योजना है कि गाँव के पटवारियों को हर तीन साल में स्थानांतरित किया जाए, ताकि वे एक ही जगह पर अपनी जड़ें न जमा सकें और लाभ कमा सकें। हर पटवारी को यह पता होना चाहिए कि अगर वह रिश्वत लेकर कोई गलत काम करता है तो उसे कड़ी सजा दी जाएगी।'

पूरी तरह से भूमिहीन मजदूरों को, जिनमें से अधिकांश इतने भयभीत थे कि वे बोलने की तो बात ही दूर, उपस्थित होने की भी हिम्मत नहीं कर पाते थे, महेश कपूर ने वादा किया कि जहां संभव होगा, अतिरिक्त अनुपयोगी भूमि का वितरण किया जाएगा। लेकिन इन सबसे दुर्भाग्यशाली लोगों के लिए वह जानते थे कि वह प्रत्यक्ष रूप से बहुत कम सहायता कर सकते हैं—क्योंकि उनका जमींदारी उन्मूलन अधिनियम इन लोगों तक पहुंचता ही नहीं था।

कुछ जगहों पर लोग इतने गरीब, कुपोषित और बीमार थे कि वे फटे-पुराने कपड़ों में जंगली लोगों जैसे दिखते थे। उनकी झोपड़ियाँ जर्जर थीं, उनके पशु अधमरे थे। वहीं दूसरी ओर, उनकी स्थिति बेहतर थी और वे एक शिक्षक को नियुक्त करने और एक छोटे निजी स्कूल के लिए एक-दो कमरे बनवाने का खर्च भी उठा सकते थे।

कुछ मौकों पर महेश कपूर से जब पूछा गया कि क्या यह सच है कि

एस.एस. शर्मा को दिल्ली बुलाया जाएगा और उन्हें खुद पूर्व प्रदेश का अगला मुख्यमंत्री चुना जाएगा, तो वे हैरान रह गए। उन्होंने पहली अफवाह का खंडन किया और कहा कि अगर यह सच भी है, तो दूसरी बात जरूरी नहीं कि सच हो। वे आश्वस्त रह सकते हैं कि वे लगभग निश्चित रूप से मंत्री बनेंगे, लेकिन वे लोगों से सिर्फ इसलिए वोट देने का अनुरोध नहीं कर रहे थे क्योंकि वे उनके विधायक हैं। इस मामले में वे पूरी तरह ईमानदार थे और उनकी बात लोगों को बहुत पसंद आई।

कुल मिलाकर, यहाँ तक कि जिन ग्रामीणों को जमींदारी प्रथा के उन्मूलन से लाभ होने वाला था, उन्होंने भी नवाब साहब और उनकी इच्छाओं के प्रति सम्मान का भाव बनाए रखा। वारिस ने हर जगह कहा, 'याद रखना, नवाब साहब आपसे मेरा नाम लेकर नहीं, बल्कि मंत्री साहब के नाम लेकर वोट मांग रहे हैं। इसलिए अपना मतपत्र दो बैलों वाले डिब्बे में डालो, साइकिल वाले डिब्बे में नहीं। और याद रखना, इसे डिब्बे के ऊपर बने छेद से ही डालना है। इसे सिर्फ डिब्बे के ऊपर मत रखना, वरना बूथ में आने वाला अगला व्यक्ति आपका मतपत्र अपनी मर्जी से किसी भी डिब्बे में डाल देगा। समझे?'

कांग्रेस के स्वयंसेवक और ग्राम-स्तरीय कार्यकर्ता, जो महेश कपूर को देखकर अत्यंत प्रसन्न और सम्मानित महसूस कर रहे थे और बार-बार उन्हें माला पहना रहे थे, ने उन्हें बताया कि वे किन-किन गांवों में प्रचार करने जा रहे हैं और उन्हें कहां और कब उपस्थित होना चाहिए, चाहे वारिस के साथ या उनके बिना (और उन्होंने संकेत दिया कि वारिस के बिना उपस्थित होना बेहतर होगा)। नवाब साहब के किसी भी सेवक से मुक्त होने के कारण, वे जमींदारी उन्मूलन अधिनियम के लेखक से भी कहीं अधिक उग्र तरीके से जमींदारी विरोधी अभियान चला सके। वे चार-पांच के समूहों में गांव-गांव घूमते रहे, उनके पास सिर्फ एक लाठी, पानी

की बोतल और मुट्ठी भर सूखा अनाज होता था। वे संभावित मतदाताओं को इकट्ठा करते, पार्टी, देशभक्ति और भक्ति गीत गाते और कांग्रेस पार्टी की स्थापना से लेकर अब तक की महान उपलब्धियों के बारे में उन सभी को बताते जो सुनने को तैयार थे। वे गांवों में ही रात बिताते थे, ताकि महेश कपूर के निजी कोष से कोई पैसा खर्च न हो। उन्हें सिर्फ एक बात से निराशा हुई कि उनकी जीप कांग्रेस के पोस्टरों और झंडों से लदी नहीं थी, और उन्होंने महेश कपूर से बड़ी संख्या में ये उपलब्ध कराने का वादा लिया। उन्होंने महेश कपूर को कुछ खास गांवों से जुड़े महत्वपूर्ण घटनाक्रमों और मुद्दों, विभिन्न क्षेत्रों की विशिष्ट जातिगत संरचनाओं और सबसे महत्वपूर्ण बात, स्थानीय चुटकुलों और संदर्भों के बारे में भी बताया जो उन्हें पसंद आएंगे।

समय-समय पर वारिस भीड़ को उत्तेजित करने के लिए लगभग बेतरतीब ढंग से विभिन्न नामों को चिल्लाता था:

'नवाब साहब—'

'Zindabad!'

'जवाहरलाल नेहरू—'

'Zindabad!'

'मंत्री महेश कपूर साहब--'

'Zindabad!'

'कांग्रेस पार्टी—'

'Zindabad!'

'जय-'

'हिंड!'

सर्दी, गर्मी और धूल में कई दिनों तक चुनाव प्रचार करने के बाद, सबकी आवाज़ बुरी तरह बैठ गई थी। आखिरकार, उचित समय पर बैतर क्षेत्र में

लौटने का वादा करके, महेश कपूर और उनके बेटे ने वारिसों को अलविदा कहा और किले से एक जीप लेकर सलीमपुर क्षेत्र के लिए रवाना हो गए। यहाँ उनका मुख्यालय एक स्थानीय कांग्रेस पार्टी के पदाधिकारी का घर था, और यहाँ उन्होंने फिर से उस छोटे से कस्बे के जाति नेताओं से मुलाकात की: हिंदू और मुस्लिम सुनार जो आभूषण बाजार के मुखिया थे, खत्री जो कपड़ा बाजार चलाते थे, और कुर्मी जो सब्जी विक्रेताओं के प्रवक्ता थे। नेताजी, जो स्थानीय कांग्रेस कमेटी में अपनी जगह बना चुके थे, कांग्रेस के झंडों और चिन्हों से सजी अपनी मोटरसाइकिल पर मान और उनके पिता से मिलने आए। उन्होंने मान को एक पुराने दोस्त की तरह गले लगाया। उनके पहले सुझावों में से एक यह था कि चमारों के नेताओं को कांग्रेस के प्रति उनकी रुचि बढ़ाने के लिए स्थानीय रूप से बनी शराब के दो बड़े डिब्बे भेजे जाएं। महेश कपूर ने ऐसा कुछ भी करने से इनकार कर दिया। नेताजी ने महेश कपूर को हैरानी से देखा और सोचने लगे कि इतनी कम समझदारी के साथ वह इतना बड़ा नेता कैसे बन गया।

उस रात महेश कपूर ने अपने बेटे से ये बात कही:

'यह कैसा देश है जिसमें जन्म लेने का मुझे दुर्भाग्य मिला है? यह चुनाव पिछले सभी चुनावों से बदतर है। जाति, जाति, जाति, जाति। हमें मताधिकार का विस्तार कभी नहीं करना चाहिए था। इसने स्थिति को सौ गुना बदतर बना दिया है।'

मान ने सांत्वना देते हुए कहा कि वह समझता है कि अन्य बातें भी मायने रखती हैं, लेकिन वह देख सकता था कि उसके पिता अपनी जीत की संभावनाओं से नहीं, जो लगभग निर्विवाद थीं, बल्कि दुनिया की स्थिति से बहुत परेशान थे। दिन बीतने के साथ-साथ मान का अपने पिता के प्रति सम्मान बढ़ता जा रहा था। महेश कपूर ने अपने चुनाव प्रचार में उतनी ही

मेहनत, स्पष्टता और बेबाकी से काम किया, जितनी उन्होंने जमींदारी विधेयक के विभिन्न प्रावधानों पर किया था। उन्होंने चतुराई से काम किया, लेकिन सिद्धांतों का पालन करते हुए। और यह काम, सचिवालय के काम की तुलना में कहीं अधिक शारीरिक रूप से थकाने वाला था, जो सुबह शुरू होता था और अक्सर आधी रात के बाद समाप्त होता था। कई बार उन्होंने कहा कि काश मान की मां उनकी मदद के लिए वहां होतीं; एक-दो बार तो उन्होंने उनके स्वास्थ्य के बारे में भी चिंता व्यक्त की। लेकिन उन्होंने कभी इस बात की शिकायत नहीं की कि परिस्थितियों ने उन्हें पुराने ब्रह्मपुर स्थित अपने निर्वाचन क्षेत्र की सुरक्षा छोड़कर एक ऐसे ग्रामीण जिले में जाने के लिए मजबूर कर दिया था, जहां वे पहले शायद ही कभी गए थे, खेती करना तो दूर की बात है।

17.8

अगर बकरीद के दौरान महेश कपूर मान की लोकप्रियता देखकर हैरान हुए थे, तो न सिर्फ वे बल्कि मान खुद भी सलीमपुर के आसपास के इलाके में अपनी लोकप्रियता देखकर दंग रह गए थे। बैतर अखबार में मुंशी पर उनके हमले की कोई खबर नहीं फैली थी, लेकिन साल की शुरुआत में देबरिया में मान का प्रवास एक तरह से अफवाह और फिर मिथक बन चुका था, और उनकी यात्रा से जुड़ी कई ऐसी बातें उन्हें सुनाई गईं जिन पर उन्हें यकीन करना मुश्किल था। सलीमपुर में उन्होंने दुबले-पतले और व्यंग्य करने वाले स्कूल शिक्षक कमर से मुलाकात की और उन्हें अपने पिता से मिलवाया। कमर ने महेश कपूर से संक्षिप्त शब्दों में कहा कि वे उनके वोट पर भरोसा कर सकते हैं। इस बातचीत में मान को जो बात कुछ अजीब लगी, वह यह थी कि न तो महेश कपूर और न ही मान ने उनसे अभी तक वोट मांगा था। उन्हें नहीं पता था कि नेताजी ने कमर से महेश कपूर के चमारों को शराब पिलाने के रवैये का जिक्र बड़े ही

तिरस्कारपूर्ण ढंग से किया था, और कमर ने तुरंत कहा था कि महेश कपूर, भले ही हिंदू हों, वही व्यक्ति हैं जिन्हें वे वोट देंगे।

बकरीद के मौके पर महेश कपूर की सलीमपुर की संक्षिप्त यात्रा को भुलाया नहीं जा सका। हालांकि वे बाहरी थे, लेकिन लोगों को लगा कि वे केवल वोटों के लिए ही उनमें दिलचस्पी नहीं रखते थे, बल्कि चुनाव के समय ही दिखाई देने वाले चंचल प्रवासी पक्षी की तरह नहीं थे।

मान को लोगों से मिलना और अपने पिता की ओर से वोट मांगना अच्छा लगता था। कई बार तो उसे अपने पिता की बहुत परवाह भी होती थी। महेश कपूर के नाराज़ होने पर भी, जैसा कि कभी-कभी थकान के कारण हो जाता था, मान उसे सहजता से ले लेता था। शायद मैं भी एक राजनेता बन जाऊँगा, उसने सोचा। बेशक, मुझे यह बाकी सभी कामों से ज़्यादा पसंद है। लेकिन अगर मैं विधायक या सांसद बन भी गया, तो वहाँ पहुँचने के बाद क्या करूँगा?

जब भी मान बेचैन होता, वह ड्राइवर से कमान संभाल लेता और रंग-बिरंगे झंडों से सजी जीप को उन सड़कों पर बेतहाशा दौड़ाता, जो बैलगाड़ियों के लिए ही बनी थीं। इससे उसे आज़ादी का एक रोमांचक एहसास होता और बाकी सब शारीरिक और मानसिक रूप से चौंक जाते। जीप, जिसमें आगे दो और पीछे ज़्यादा से ज़्यादा चार यात्री बैठ सकते थे, अक्सर दस-बारह लोगों, खाने-पीने का सामान, मेगाफोन, पोस्टर और तरह-तरह की दूसरी चीज़ों से भरी रहती थी। उसका हॉर्न लगातार बजता रहता और वह धूल और शान के बड़े-बड़े बादल उड़ाती हुई आगे बढ़ती। एक बार जब उसके रेडिएटर से पानी रिसने लगा, तो ड्राइवर ने उसे डांटा और पानी में थोड़ी हल्दी मिला दी। इससे चमत्कारिक रूप से रिसाव बंद हो गया।

एक सुबह, वे देबरिया और सगल के जुड़वां गांवों की ओर चल पड़े, जो उस दिन के कार्यक्रम में शामिल थे। जैसे ही वे गांव के पास पहुंचे, मान

अचानक उदास हो गया। पिछले कुछ दिनों में उसे रशीद की याद बार-बार आ रही थी, और उसे खुशी थी कि वे इतने व्यस्त थे कि रशीद की याद उसे और ज्यादा परेशान नहीं कर रही थी। लेकिन अब वह सोच रहा था कि उसे रशीद के परिवार से क्या कहना होगा। शायद वे उसके बारे में पहले से ही जानते हों। निश्चित रूप से, न तो नेताजी और न ही कमर ने उसके बारे में पूछा था। लेकिन जब वे मिले थे, तब पूछताछ करने का बहुत कम समय था।

मान के मन में कुछ और सवाल उठे और गाड़ी चलाते समय ग़ज़ल गुनगुनाने की बजाय वह चुप हो गया। क्या रशीद ने समाजवादी पार्टी के लिए प्रचार करने की बात सच में कही थी? तसनीम के बारे में उसके मन में जो भ्रम और उलझन पैदा हुई थी, वह किस वजह से थी? उसे फिर से वह दिन याद आया जब वे सगल में उस बूढ़े और बीमार आदमी से मिलने गए थे। उसे लगा कि रशीद दिल से अच्छा इंसान था, सईदा बाई की कल्पना में बसा वह शातिर और क्रूर इंसान नहीं।

साल लगभग खत्म होने वाला था, और मान ने सईदा बाई को दो हफ़्तों से नहीं देखा था। दिन में वह इतना व्यस्त रहता था कि सईदा का ख्याल भी उसके मन में नहीं आता था। लेकिन रात में, चाहे वह कितना भी थका हुआ क्यों न हो, और नींद आने से ठीक पहले, उसका मन सईदा बाई की तरफ़ मुड़ जाता था। वह सईदा के कठोर नखरों के बारे में नहीं, बल्कि उसकी कोमलता और सौम्यता के बारे में, तसनीम को लेकर उसकी उदासी के बारे में, गुलाब के इत्र की खुशबू के बारे में, उसके होठों पर बनारसी पान के स्वाद के बारे में, और उसके दो कमरों के मदहोश कर देने वाले माहौल के बारे में सोचता था। कितना अजीब है, उसने सोचा, कि उन दो कमरों के अलावा वह उससे कभी कहीं और नहीं मिला था—सिर्फ़ दो बार। प्रेम निवास में होली की शाम को नौ महीने बीत चुके थे, जब

उसने पहली बार हल्के-फुल्के मज़ाक में सईदा को 'दाग' की कविता सुनाई थी। और ऐसा लग रहा था जैसे सदियों से उसने सईदा के हाथों से शरबत नहीं चखा था। जिन महिलाओं के साथ उसके संबंध रहे थे, उनमें से लगभग सभी के प्रति उसके मन में कोमल भावनाएं बनी रहती थीं, फिर भी मान के लिए एक ही महिला के प्रति इतने लंबे समय तक यौन और भावनात्मक रूप से आसक्त रहना एक नया अनुभव था।

'भगवान के लिए, मान, सीधे गाड़ी चलाओ। क्या तुम चुनाव रद्द करवाना चाहते हो?' उसके पिता ने कहा। एक नियम था कि यदि कोई उम्मीदवार मतदान से पहले मर जाता है, तो चुनाव रद्द कर दिया जाएगा और नए सिरे से चुनाव घोषित किए जाएंगे।

'जी हां, बाओजी,' मान ने कहा। 'माफ़ करना।'

दरअसल, मान को रशीद के बारे में किसी से ज्यादा कुछ कहने की जरूरत नहीं पड़ी।

बाबा, जिनकी मुलाकात पिछली यात्रा के दौरान महेश कपूर से हुई थी, गांव पहुंचते ही उन्होंने सारी बागडोर संभाल ली।

उन्होंने मंत्री से कहा, 'तो आपने कांग्रेस में दोबारा शामिल हो गए हैं।'

'हां, मैंने किया है,' महेश कपूर ने कहा। 'आपने मुझे अच्छी सलाह दी थी।'

बाबा को खुशी हुई कि महेश कपूर को याद था।

"खैर," बाबा ने युवक पर निगाहें गड़ाते हुए कहा, "इस निर्वाचन क्षेत्र में आपको बड़े अंतर से जीतने में कोई दिक्कत नहीं होगी, भले ही नेहरू न जीतें।" उन्होंने लाल रंग की थूक की एक बूंद जमीन पर थूक दी।

महेश कपूर ने पूछा, 'क्या आपको नहीं लगता कि मुझे कोई खतरा है?'

'यह सच है कि जिन राज्यों में समय से पहले चुनाव हुए हैं, उन सभी में कांग्रेस को भारी बहुमत से जीत मिल रही है।'

बाबा ने कहा, 'बिल्कुल कोई खतरा नहीं। बिलकुल नहीं। मुसलमान

आपके साथ हैं और कांग्रेस के साथ भी, अनुसूचित जाति के लोग कांग्रेस के साथ हैं, चाहे वे आपके साथ हों या न हों, कुछ उच्च जाति के हिंदू जनसंघ और उस दूसरी पार्टी को वोट देंगे जिसका नाम मुझे याद नहीं, लेकिन वे आबादी का बड़ा हिस्सा नहीं हैं। वामपंथी तीन गुटों में बंटे हुए हैं। और निर्दलीय उम्मीदवारों का कोई खास महत्व नहीं है। क्या आप सचमुच चाहते हैं कि मैं आपको इन गांवों में घुमाऊं?'

'जी हां, अगर आपको कोई आपत्ति न हो,' महेश कपूर ने कहा। 'अगर सब कुछ तय हो ही गया है, तो कम से कम मुझे अपने भावी समूह से मिलने और उनकी जरूरतों के बारे में जानने का मौका तो दे दीजिए।'

'बहुत खूब, बहुत खूब,' बाबा ने कहा। 'तो मान, बकरीद के बाद से तुम क्या कर रहे हो?'

'कुछ नहीं,' मान ने कहा, यह सोचते हुए कि सारा समय कहाँ गायब हो गया।

बाबा ने अस्पष्ट लेकिन दृढ़ स्वर में कहा, 'तुम्हें कुछ करना होगा। कुछ ऐसा जिससे दुनिया पर असर पड़े—कुछ ऐसा जिसके बारे में लोग सुनें और बात करें।'

'जी बाबा,' मान ने सहमति जताई।

'मुझे लगता है कि आप हाल ही में नेताजी से मिले होंगे,' बूढ़े व्यक्ति ने अपने छोटे बेटे की उपाधि पर जोर देते हुए कहा।

मान ने सिर हिलाया।

'सलीमपुर में। उन्होंने हमारे साथ हर जगह आने और सबके लिए सब कुछ करने की पेशकश की।'

'लेकिन तुम उसके साथ यात्रा नहीं कर रहे हो?' बाबा ने हंसते हुए कहा।

'नहीं, मुझे लगता है कि वह बाओजी को नाराज कर देता है।'

'अच्छा, अच्छा। उसकी मोटरसाइकिल के पीछे बहुत धूल है और उसकी

निस्वार्थता के पीछे बहुत अहंकार छिपा है।'
मान हंस पड़ा।
बाबा ने सहमति जताते हुए कहा, “अब नवाब साहब की जीप चलाओ। वो तेज़ और सुरक्षित है।” बाबा इस अप्रत्यक्ष संबंध से प्रसन्न थे। इससे गाँव के लोग उनके प्रति आदर बनाए रखेंगे और उन्हें यह स्पष्ट हो जाएगा कि मंत्री कुछ जमींदारों के साथ समझौता करने से भी पीछे नहीं हटेंगे।
मान ने अपने पिता की ओर देखा, जो उस समय पान खा रहे थे और रशीद के पिता से बात कर रहे थे; उसने सोचा कि अगर उन्हें बाबा की टिप्पणी के निहितार्थ समझ में आ जाते, तो वे इसे कैसे लेते।
‘बाबा—’ उसने अचानक कहा। ‘क्या आप रशीद के बारे में जानते हैं?’
‘जी हां,’ बूढ़े ने सख्ती से कहा। ‘उसे घर से निकाल दिया गया है। हमने उसे घर में प्रवेश करने से मना कर दिया है।’ मान के भयभीत चेहरे को देखकर उसने आगे कहा: ‘लेकिन चिंता मत करो। वह भूखा नहीं रहेगा। उसका चाचा उसे हर महीने कुछ पैसे भेजता है।’
मान कुछ देर तक चुप रहा, फिर अचानक बोल पड़ा: 'लेकिन बाबा—उनकी पत्नी? और उनके बच्चे?'
‘ओह, वे यहाँ हैं। वह खुशनसीब है कि हम मेहर और मेहर की माँ को इतना पसंद करते हैं। जब उसने खुद को शर्मिंदा किया, तब उसने उनके बारे में नहीं सोचा। और न ही वह अब उनके बारे में सोचता है: क्या वह कभी अपनी पत्नी की भावनाओं के बारे में सोचता है? उसने जीवन में पहले ही बहुत दुख झेला है।’
मान को बाबा की बात का आखिरी हिस्सा ठीक से समझ नहीं आया, लेकिन उन्होंने उसे स्पष्टीकरण मांगने का मौका ही नहीं दिया। बाबा आगे बोले, “हमारे परिवार में हम एक साथ चार महिलाओं से शादी नहीं करते, हम एक-एक करके करते हैं। एक की मृत्यु हो जाए, तो दूसरी से शादी

कर लेते हैं: हम इंतजार करने की शालीनता रखते हैं। लेकिन अब वह दूसरी औरत की बात कर रहा है, और अपनी पत्नी से समझने की उम्मीद कर रहा है। वह उसे पत्र लिखकर कहता है कि वह दोबारा शादी करना चाहता है, लेकिन पहले उसकी सहमति चाहता है। धिक्कार है! मैं कहता हूँ, उससे शादी कर लो, भगवान के लिए, लेकिन अनुमति मांगकर अपनी पत्नी को परेशान मत करो। वह कौन है, यह वह नहीं लिखता। हमें यह भी नहीं पता कि वह किस परिवार से है। वह हर काम में बहुत गुप्त हो गया है। बचपन में वह इतना चालाक कभी नहीं था।"

बाबा के आक्रोश के बावजूद मान ने रशीद का बचाव करने की कोशिश नहीं की, जिसके बारे में अब उसके मन में भी मिली-जुली भावनाएँ थीं; और न ही उसने रशीद द्वारा उस पर लगाए गए षड्यंत्र के बेबुनियाद आरोपों का जिक्र किया।

'बाबा,' उसने कहा, 'अगर उसे इस तरह की परेशानी है, तो उसके लिए अपने दरवाजे बंद करने से क्या फायदा होगा?'

बूढ़ा आदमी कुछ देर रुका, मानो अनिश्चित हो। उसने मान के चेहरे को देखते हुए कहा, 'यह उसका एकमात्र अपराध नहीं है। वह तो पूरी तरह से कम्युनिस्ट बन चुका है।'

'समाजवादी।'

'जी हां, जी हां,' बाबा ने इस तरह की बहस से चिढ़ते हुए कहा। 'वह बिना मुआवजे के मेरी जमीन छीनना चाहता है। मैंने कैसा पोता पैदा किया है? जितना पढ़ता है, उतना ही मूर्ख बनता जाता है। अगर वह सिर्फ एक किताब पढ़ता, तो उसका दिमाग ज्यादा तेज होता।'

लेकिन बाबा, ये तो बस उनके विचार हैं।

'सिर्फ उनके विचार? क्या आप नहीं जानते कि उन्होंने उन्हें अमल में लाने की कोशिश कैसे की?'

मान ने सिर हिलाया। बाबा ने उसके चेहरे पर कोई छल-कपट न देखकर एक बार फिर गहरी साँस ली और कुछ बुदबुदाया। महेश कपूर से बात कर रहे अपने बेटे की ओर देखते हुए उन्होंने मान से कहा:

'रशीद के पिता कहते हैं कि आप उन्हें अपने बड़े बेटे की याद दिलाते हैं।'

वह कुछ पल सोच में पड़ गया, फिर बोला: 'मुझे लगता है कि आपको इस दुखद मामले के बारे में कुछ नहीं पता। मैं बाद में सब कुछ समझा दूंगा। लेकिन अभी मुझे आपके पिता को गाँव घुमाना है। आप भी आइए। हम खाने के बाद बात करेंगे।'

'बाबा, बाद में समय नहीं मिलेगा,' मान ने कहा, क्योंकि वह महेश कपूर की जल्द से जल्द ज्यादा से ज्यादा काम निपटाने की बेचैनी को जानता था। 'बाओजी रात के खाने से बहुत पहले ही आगे बढ़ना चाहेंगे।'

बाबा ने इस बात को अनसुना कर दिया। गाँव का भ्रमण शुरू हुआ। मोअज़्ज़म (जो अपने से छोटे किसी भी व्यक्ति को धक्का देकर रास्ता साफ़ कर रहा था, जिसने आगे बढ़ने में बाधा डालने की हिम्मत की), मिस्टर बिस्किट (जो 'जय हिंद!' चिल्ला रहे थे) और दौड़ते-भागते, चिल्लाते गाँव के बच्चों के एक समूह ने रास्ता बनाया। वे नकली डर में 'शेर, शेर!' चिल्ला रहे थे। बाबा और महेश कपूर आगे-आगे तेज़ी से चल रहे थे, उनके बेटे पीछे-पीछे धीरे-धीरे चल रहे थे। रशीद के पिता मान के प्रति काफ़ी दोस्ताना थे, लेकिन लंबी बातचीत से बचने के लिए उन्होंने अपने पान का सहारा लिया। हालाँकि सभी ने मान का स्नेह और मित्रता से अभिवादन किया, लेकिन उसका ध्यान बाबा की कही बातों और अपनी आने वाली बातों पर था।

परिक्रमा पूरी करने के बाद बाबा ने महेश कपूर से साफ-साफ कहा, 'मैं तुम्हें आज रात सलीमपुर लौटने नहीं दूंगा। तुम हमारे साथ खाना खाओगे और यहीं सोओगे। तुम्हारे बेटे ने यहां एक महीना बिताया, तुम्हें सिर्फ एक

दिन बिताना होगा।'
महेश कपूर को पता था कि उनका सामना एक श्रेष्ठ शक्ति से हो रहा है, और उन्होंने शालीनता से सहमति दे दी।
17.9
रात के खाने के बाद बाबा मान को एक तरफ ले गए। गाँव में निजता नाम की कोई चीज़ नहीं थी, खासकर तब जब किसी मंत्री के आने जैसी इतनी बड़ी घटना हो रही हो। बाबा ने एक टॉर्च ली और मान को गर्म कपड़े पहनने को कहा। वे स्कूल की ओर चल पड़े और रास्ते भर बातें करते रहे। बाबा ने मान को पटवारी वाली घटना के बारे में संक्षेप में बताया, कि कैसे परिवार ने मिलकर रशीद को चेतावनी दी थी, कैसे उसने उनकी बात नहीं मानी, कैसे उसने कुछ चमारों और अन्य किरायेदारों को पटवारी से ऊपर के राजस्व अधिकारियों के पास मामला ले जाने के लिए उकसाया था, और कैसे उसकी योजनाएँ उल्टी पड़ गईं। जिसने भी आज्ञापालन के मार्ग से भटकने की हिम्मत की थी, उसे उसकी ज़मीन से बेदखल कर दिया गया था। बाबा ने कहा कि रशीद ने उनके कुछ सबसे वफादार चमारों को भी उपद्रवी बना दिया था, और इस विश्वासघात को भड़काने में उसे कोई हिचक नहीं थी। परिवार के पास उसे अलग करने के अलावा कोई चारा नहीं था।
‘कच्छेरु भी—क्या तुम्हें याद है वो?’ बाबा ने कहा। ‘वो आदमी जो तुम्हारे नहाने के लिए पानी पंप करता था—’
अफसोस, मान को अब अच्छी तरह याद आ गया कि बकरीद के दिन उससे क्या छूट गया था, उस आदमी की पहचान जिसे बाबा ने ईदगाह जाते समय रास्ते में धक्का देकर अलग कर दिया था।
बाबा ने उदास होकर आगे कहा, “स्थायी लोग मिलना आसान नहीं है। युवाओं को खेती करना मुश्किल लगता है। कीचड़, मेहनत, धूप। लेकिन

बड़े-बुजुर्ग बचपन से ही यह काम करते आ रहे हैं।”

वे अब विद्यालय के पास स्थित बड़े तालाब तक पहुँच चुके थे। तालाब के दूसरी ओर दोनों गाँवों के मृतकों के लिए एक छोटा कब्रिस्तान था। रात में सफेदी से पुती हुई कब्रें स्पष्ट रूप से दिखाई देती थीं। बाबा और मान दोनों कुछ देर तक चुप रहे।

रशीद की कही बात याद करते हुए कि पीढ़ी दर पीढ़ी शरारत करने में लगी रहती है, मान ने कड़वी मुस्कान के साथ मन ही मन बुदबुदाया: 'इस गांव के असभ्य पूर्वज सो रहे हैं।'

बाबा ने उसकी ओर देखा और भौंहें चढ़ा लीं। उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा, ‘मुझे अंग्रेज़ी समझ नहीं आती। हम यहाँ सीधे-सादे लोग हैं। हम ज़्यादा पढ़े-लिखे नहीं हैं। लेकिन रशीद हमसे ऐसे बर्ताव करता है जैसे हम बिल्कुल अनपढ़ हों। वह हमें चिट्ठियाँ लिखता है, हमें धमकाता है और अपने मानवतावाद का बखान करता है। सब कुछ खत्म हो गया है— तर्क, सम्मान, शालीनता; लेकिन उसका घमंड और अहंकार पागलों की तरह अभी भी बाकी है। जब मैं उसकी चिट्ठियाँ पढ़ता हूँ तो रो पड़ता हूँ।’ उन्होंने स्कूल की ओर देखा। ‘उसका एक सहपाठी डाकू बन गया। वह तो अपने परिवार को भी रशीद से ज़्यादा सम्मान देता है।’

कुछ देर बाद, स्कूल के पीछे सागल की ओर देखते हुए उसने आगे कहा, “वह कहता है कि हम भ्रम में हैं, हमारा भगवान पैसा है, धन और जमीन ही हमारी एकमात्र रुचि है। वह बीमार आदमी जिससे वह तुम्हारे साथ मिलने गया था, रशीद हमसे कहता था कि हमें उसकी मदद करनी चाहिए, उसके कानूनी अधिकारों का समर्थन करना चाहिए, उसे अपने भाइयों के खिलाफ अदालत में मुकदमा दायर करने के लिए मजबूर करना चाहिए। ऐसी मूर्खता, ऐसे अवास्तविक विचार—दूसरों के पारिवारिक मामलों में दखल देना और बेवजह झगड़ा पैदा करना। सोचो अगर हमने

उसकी सलाह मान ली होती तो क्या होता। वह आदमी अब मर चुका है लेकिन गांवों के बीच का झगड़ा हमेशा चलता रहता।"

मान कुछ नहीं बोला; मानो उसका दिमाग सुन्न हो गया हो। उसे इस मृत्यु की खबर का ज़रा भी एहसास नहीं हुआ। उसके विचार अब भी उस मेहनत से थके हुए आदमी पर अटके हुए थे, जो बड़ी शांति और प्रसन्नता से उसके नहाने के लिए पानी भरा करता था। यह सोचना अजीब था कि उसकी मामूली कमाई भी किस वजह से बर्बाद हो गई? शायद मान के अपने पिता की वजह से। दोनों एक-दूसरे को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते थे, लेकिन कछेरू उस कानून के तहत किए गए अत्याचारों का सबसे दुखद उदाहरण था, और महेश कपूर उसकी इस भयानक बर्बादी, उसे भूमिहीन मज़दूर की लाचारी में धकेलने के लिए लगभग प्रत्यक्ष रूप से ज़िम्मेदार था। हालाँकि दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए थे - कछेरू का अपराधबोध और कछेरू की निराशा - लेकिन मान ने सोचा कि अगर वे सड़क पर एक-दूसरे से मिलें, तो दोनों एक-दूसरे को पहचान नहीं पाएँगे। ज़मींदारी अधिनियम का प्रभाव निस्संदेह काफी अच्छा होगा, लेकिन इससे कछेरू को कोई मदद नहीं मिलेगी। मान ने अपने स्वभाव से कहीं अधिक गंभीरता से महसूस किया कि वह इस बारे में कुछ भी नहीं कर सकता। बाबा से हस्तक्षेप करना असंभव होगा, और अपने पिता से इस बारे में बात करना विश्वासघात के समान होगा। किले में उस बूढ़ी औरत की मदद करना - यह बिल्कुल अलग बात थी।

और रशीद? निंदाशील, दयनीय, थका हुआ, पारिवारिक शर्म और पारिवारिक गौरव के बीच फंसा हुआ, वफादारी और न्याय के बीच, विश्वास और दया के बीच चुनाव करने के लिए विवश, उसने क्या-क्या झेला होगा? क्या वह भी ग्रामीण इलाकों की त्रासदी, स्वयं देश की त्रासदी का शिकार नहीं था? मान ने उस पर पड़े दबाव और पीड़ा की

कल्पना करने की कोशिश की।

लेकिन बाबा मानो मान के मन की बात पढ़ रहे थे और कह रहे थे, "जानते हो, लड़का बहुत परेशान है। मैं इसके बारे में सोचना भी नहीं चाहता। जहाँ तक हमें पता है, शहर में उसके लगभग कोई दोस्त नहीं हैं, उन कम्युनिस्टों के अलावा उससे बात करने वाला कोई नहीं है। तुम उससे बात क्यों नहीं करते और उसे समझाते क्यों नहीं? हमें नहीं पता कि वह इतना अजीब, इतना उलझा हुआ क्यों हो गया है। किसी ने कहा था कि प्रदर्शन के दौरान उसके सिर पर चोट लगी थी। फिर हमें पता चला कि ऐसा नहीं था। लेकिन शायद, जैसा कि उसके चाचा कहते हैं, तात्कालिक कारण महत्वपूर्ण नहीं है। देर-सवेर, जो झुकता नहीं, वह टूट ही जाता है।"

मान ने अंधेरे में सिर हिलाया। बूढ़े आदमी ने ध्यान दिया हो या न दिया हो, उसने आगे कहा: 'मैं उस लड़के के खिलाफ नहीं हूँ। अगर वह अब भी सुधर जाए और पश्चाताप करे तो हम उसे वापस ले लेंगे। ईश्वर को दयालु और कृपालु यूँ ही नहीं कहा जाता। वह हमें बुराई से मुँह मोड़ने वालों को क्षमा करने के लिए कहता है। लेकिन रशीद—आप जानते हैं—अगर उसका मन बदल गया, तो वह दक्षिण की ओर भी उतना ही उग्र हो जाएगा जितना उत्तर की ओर था।' वह मुस्कुराया। 'वह मेरा प्रिय था। जब वह दस साल का था, तब मुझमें ज़्यादा ऊर्जा थी। मैं उसे अपने कबूतरखाने की छत पर ले जाता था, और वह गर्व से हमारी सारी ज़मीनें दिखाता था, ठीक-ठीक बताता था कि कौन-कौन सी ज़मीनें हमारी हैं, और वे कब हमारे परिवार में आईं। और फिर भी यही लड़का...' बूढ़ा आदमी चुप रहा। फिर, लगभग व्यथित स्वर में, उसने कहा: 'इस दुनिया में कोई किसी को नहीं जानता, कोई किसी के दिल की बात नहीं पढ़ सकता, कोई नहीं जानता कि किस पर विश्वास करना है और किस पर

भरोसा करना है।'
देबरिया से दूर से एक धीमी सी आवाज सुनाई दी, जिसके बाद पास से सागल से एक और आवाज आई।
बाबा ने कहा, 'यह रात की नमाज़ की अज़ान है। चलो वापस चलते हैं। मुझे नमाज़ छोड़नी नहीं चाहिए और मैं इस सगल मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ना चाहता। चलो, उठो, उठो।'
मान को देबरिया में अपनी पहली सुबह याद आई, जब वह उठा तो बाबा ने उसे प्रार्थना के लिए जाने को कहा था। तब तो उसने अपने धर्म का बहाना बनाया था। अब उसने कहा, 'बाबा, अगर ठीक हो तो मैं थोड़ी देर यहीं बैठ जाता हूँ। मैं वापस जाने का रास्ता खुद ढूंढ लूंगा।'
'क्या तुम अकेले रहना चाहते हो?' बाबा ने हैरानी से पूछा, उनकी आवाज़ में इस असामान्य अनुरोध पर आश्चर्य झलक रहा था, खासकर मान की ओर से। 'लो, मशाल ले लो। नहीं, नहीं, ले लो, ले लो। मैं तो इसे सिर्फ़ तुम्हें रास्ता दिखाने के लिए लाया था। मैं ईद की अमावस्या की रात को आँखें बंद करके भी इन खेतों को पार कर सकता हूँ। खैर, मैं अपनी प्रार्थनाओं में उसका ज़िक्र ज़रूर करूँगा। शायद इससे उसे कुछ लाभ हो।'
मान अकेले बैठकर जलप्रपात को निहार रहा था। उसके अंधकार में तारों का प्रतिबिंब पड़ रहा था। उसने भालू के बारे में सोचा, और यह भी कि उसने रशीद की मदद के लिए कुछ ठोस कदम उठाया था, और उसे अपनी निष्क्रियता पर शर्म आ रही थी। मान ने सिर हिलाते हुए सोचा, रशीद तो कभी भी अपने प्रयासों से विश्राम नहीं करता था, जबकि वह स्वयं केवल परिश्रम ही करता था; या कम से कम करना चाहता था। उसने स्वयं से वादा किया कि जब वह कुछ दिनों की छुट्टी के लिए ब्रह्मपुर लौटेगा तो उससे मिलने जरूर जाएगा, चाहे यह मुलाकात कितनी भी कठिन क्यों न हो। पिछली मुलाकात से वह बहुत विचलित था, और उसे नहीं पता था

कि बाबा ने जो बताया था उससे उसकी उलझन बढ़ी थी या कम हुई थी। शांत दिखने वाली सतह के नीचे बहुत कुछ छिपा था, बहुत पीड़ा और खतरा। रशीद उसका सबसे करीबी दोस्त तो नहीं था, लेकिन उसे लगता था कि वह उसे जानता और समझता है। मान को भरोसा करने और भरोसा पाने की आदत थी, लेकिन जैसा कि बाबा ने कहा था, शायद कोई कभी भी इंसान के दिल की गहराई को नहीं पढ़ सकता।

रशीद के बारे में मान को लगता था कि उसके भले के लिए उसे दुनिया की सारी बुराइयों को अधिक सहनशील नज़रिए से देखना सिखाना ज़रूरी था। यह सच नहीं था कि प्रयास, दृढ़ता और इच्छाशक्ति से सब कुछ बदला जा सकता है। उसकी दीवानगी के बावजूद तारे अपनी राह पर चलते रहे और गाँव की दुनिया पहले की तरह चलती रही, बस उससे बचने के लिए थोड़ा सा ही रास्ता बदलती रही।

17.10

दो दिन बाद वे कुछ देर आराम करने के लिए ब्रह्मपुर लौट आए। श्रीमती महेश कपूर ने आँखों में असामान्य आँसू लिए उनका स्वागत किया। उन्होंने ब्रह्मपुर में स्थानीय कांग्रेस उम्मीदवारों के लिए महिलाओं के बीच प्रचार में थोड़ी मदद की थी। महेश कपूर को यह जानकर गुस्सा आया कि उन्होंने एल.एन. अग्रवाल के निर्वाचन क्षेत्र में भी प्रचार किया था। अब प्राण, सविता और उमा कलकत्ता में थे, और वीना और केदारनाथ दोनों व्यस्त थे और बहुत कम ही आ पाते थे, इसलिए उन्हें काफी अकेलापन महसूस हो रहा था। उनकी तबीयत भी ठीक नहीं थी। लेकिन उन्होंने अपने पति और छोटे बेटे के बीच रिश्ते की नई गर्माहट को तुरंत महसूस किया, और इससे उन्हें बहुत खुशी मिली। थोड़ी देर में वे रसोई में गईं और मान की पसंदीदा तहरी खुद बनाने लगीं; और बाद में, स्नान करने के बाद, पूजा करने और उनकी सुरक्षित वापसी के लिए धन्यवाद देने गईं।

हालाँकि श्रीमती महेश कपूर में हास्यबोध की कोई खास समझ नहीं थी, फिर भी हाल ही में उन्होंने अपनी पूजा सामग्री में एक वस्तु जोड़ी थी जिसे देखकर उनके चेहरे पर मुस्कान आ जाती थी। यह पीतल का एक कटोरा था जो हरसिंगार के फूलों और कुछ पत्तों से भरा हुआ था। कटोरा पतले कागज से बने कांग्रेस के झंडे पर रखा था, और श्रीमती महेश कपूर एक के बाद एक सभी को प्रसन्नता से देखती रहीं, पहले इसके और फिर उसके केसरिया, सफेद और हरे रंग की प्रशंसा करती रहीं, और साथ ही अपनी छोटी पीतल की घंटी को सभी देवताओं के चारों ओर बजाकर आशीर्वाद देती रहीं।

अगली सुबह मान ने अपनी माँ और बहन को आँगन में मटर छीलते हुए पाया। उसने फिर से ताहिरी माँगी थी, और वे उसकी बात मान रही थीं। उसने एक मोरहा खींची और उनके साथ बैठ गया। उसे याद आया कि बचपन में वह अक्सर आँगन में—उसके लिए आरक्षित एक छोटे से मोरहे पर—बैठकर अपनी माँ को मटर छीलते हुए देखता था, जब वह उसे देवताओं और उनके कारनामों के बारे में कोई न कोई कहानी सुनाती थी। लेकिन अब बातें सांसारिक विषयों पर हो रही थीं।

‘कैसा चल रहा है, मान?’

मान को एहसास हुआ कि शायद यही पहली बार होगा जब उसकी माँ को नए निर्वाचन क्षेत्र के बारे में सही जानकारी मिलेगी। अगर उसने उसके पिता से पूछा होता, तो वे उसकी बात को नज़रअंदाज़ कर देते और कुछ सामान्य बातें बताकर टाल देते। मान ने उसे यथासंभव विस्तृत जानकारी दी।

अंत में उसने आह भरते हुए कहा: 'काश मैं मदद कर पाती।'

‘अम्माजी, आपको अपना ख्याल रखना चाहिए,’ मान ने कहा, ‘ज्यादा मेहनत मत कीजिए। महिला मतदाताओं को जुटाने का काम वीना को

करना चाहिए। पुराने शहर की दुर्गंधयुक्त गलियों के बाद ग्रामीण हवा उसके लिए अच्छी रहेगी।'

'मुझे ये बहुत पसंद आया!' वीना ने कहा। 'ये आखिरी बार है जब आप हमारे घर आ रहे हैं। बदबूदार गलियाँ। और ऐसा लगता है जैसे आपको ताज़ी ग्रामीण हवा से गला खराब हो गया है। मैं जानती हूँ कि महिलाओं के बीच प्रचार करना कैसा होता है। अंतहीन शरमाती हुई हँसी, और सवाल कि मेरे कितने बच्चे हैं, और मैं पर्दा क्यों नहीं करती? आपको भास्कर को साथ ले जाना चाहिए, मुझे नहीं। वो तो सबको गिनने के लिए बहुत उत्सुक है। और वो बच्चों के वोटों में भी मदद कर सकता है,' उसने हँसते हुए कहा।

मान भी हंस पड़ा। 'ठीक है, मैं उसे साथ ले चलता हूँ। लेकिन तुम भी हमारी मदद क्यों नहीं कर सकते? क्या केदारनाथ की माँ को सच में इतनी आपत्ति है?' उसने एक मटर छीली और उसे अंगूठे से चबाकर मुँह में डाल लिया। 'स्वादिष्ट।'

वीना ने अपनी माँ की ओर हल्के से इशारा करते हुए नाराज़गी भरे लहजे में कहा, 'मान, प्राण और सविता कलकत्ता में हैं और 8 जनवरी तक वहीं रहेंगे। ब्रह्मपुर में अब कौन बचा है?'

श्रीमती महेश कपूर ने तुरंत कहा: 'मुझे बहाना मत बनाओ, वीना। मैं अपना ख्याल खुद रख सकती हूं। तुम्हें अपने पिता को वोट दिलाने में मदद करनी चाहिए।'

खैर, शायद एक-दो हफ़्ते में आप अपना ख्याल रख सकेंगी—और प्राण भी वापस आ जाएगा। लेकिन अभी मैं नहीं जा रही। सविता की माँ भी अपने पिता की बीमारी के समय कलकत्ता नहीं गई थीं। वैसे, निर्वाचन क्षेत्र में सब कुछ बहुत अच्छा दिख रहा है।

'हां, ऐसा ही है,' मान ने सहमति जताते हुए कहा। 'लेकिन तुम्हारे न जाने

का असली कारण यह है कि तुम बहुत आलसी हो। शादीशुदा जिंदगी लोगों को ऐसा ही बना देती है।'

'आलसी!' वीना हंसते हुए बोली। 'घड़ा बर्फ के टुकड़े को काला कह रहा है,' उसने अंग्रेजी में कहा। 'और मैंने देखा है कि तुम छीलने से ज्यादा खा रहे हो,' उसने हिंदी में आगे कहा।

'हाँ, मैं भी ऐसा ही हूँ,' मान ने आश्चर्य से कहा। 'लेकिन ये तो बहुत ताज़े और मीठे हैं।'

'बेटा, थोड़ा और खा लो,' श्रीमती महेश कपूर ने कहा। 'उसकी बात मत सुनो।'

वीना ने कहा, 'मान को थोड़ा आत्मसंयम बरतना सीखना चाहिए।'

'क्या मुझे खाना चाहिए?' मान ने कुछ और मटर के दाने मुंह में डालते हुए पूछा। 'मैं स्वादिष्ट चीजों का विरोध नहीं कर सकता।'

'क्या यह बीमारी है या निदान?' उसकी बहन ने पूछा।

'मैं बदल गया हूँ,' मान ने कहा। 'यहाँ तक कि बाओजी भी मेरी तारीफ कर रहे हैं।'

'जब मैं खुद सुनूंगी तभी इस पर विश्वास करूंगी,' वीना ने अपने भाई के मुंह में कुछ और मटर के दाने डालते हुए कहा।

17.11

उस शाम मान सैर करते हुए सईदा बाई के घर गया। उसने बाल कटवा लिए थे और नहा लिया था। शाम ठंडी थी, इसलिए उसने कुर्ते के ऊपर एक बुंदी पहनी हुई थी; बुंदी की जेब में व्हिस्की की आधी बोतल थी; और सिर पर कड़क सफेद टोपी थी जिस पर सफेद कढ़ाई थी।

वापस आकर अच्छा लगा। बेशक, गाँव की कच्ची सड़कों का अपना अलग ही आकर्षण था, लेकिन वह तो शहर का आदमी था। उसे शहर पसंद था—कम से कम यह शहर। और उसे गलियाँ भी पसंद थीं—कम

से कम यह गली, जहाँ सईदा बाई का घर था—और उस घर में, उसे सईदा बाई के दो कमरे खास तौर पर पसंद थे। और उन दो कमरों में, उसे अंदर वाला कमरा खास तौर पर पसंद था।

आठ बजने के कुछ देर बाद, वह द्वार पर पहुँचा, चौकीदार को परिचित अंदाज़ में हाथ हिलाया और उसे अंदर जाने दिया गया। बिब्बो ने दरवाज़े पर उसका स्वागत किया, उसे देखकर आश्चर्यचकित हुआ और उसे सईदा बाई के कमरे तक ले गया। मान का दिल खुशी से उछल पड़ा जब उसने देखा कि सईदा बाई उसी किताब को पढ़ रही थीं जो उसने उन्हें दी थी, ग़ालिब की सचित्र रचनाएँ। वह बेहद आकर्षक लग रही थीं, उनकी पीली गर्दन और कंधे आगे की ओर झुके हुए थे, हाथ में किताब थी, बाईं ओर फलों का कटोरा और पानी का छोटा कटोरा रखा था, और दाईं ओर उनका हारमोनियम था। कमरा गुलाब के इत्र से महक रहा था। सुंदरता, सुगंध, संगीत, भोजन, कविता और जेब में नशा: आह, मान ने महसूस किया, जैसे ही उनकी नज़रें मिलीं, यही तो खुशी का मतलब है।

उसे देखकर वह भी हैरान रह गई, और मान सोचने लगा कि कहीं चौकीदार ने उसे गलती से अंदर तो नहीं आने दिया। लेकिन उसने जल्दी से किताब पर नज़र डाली और यूं ही कुछ पन्ने पलट दिए।

‘आओ, दाग साहब, आओ, बैठो, कितना समय हुआ है?’

‘आठ बजने के ठीक बाद, सईदा बेगम, लेकिन साल कुछ दिन पहले ही बदल गया।’

सईदा बाई ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मुझे इसकी जानकारी थी। यह एक दिलचस्प साल होगा।'

‘ऐसा क्यों कह रही हो?’ मान ने पूछा। ‘पिछले साल मेरे लिए काफी दिलचस्प रहा।’ उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया और सईदा बाई का हाथ थाम लिया। फिर उसने सईदा बाई के कंधे पर चुंबन किया। सईदा बाई ने

न तो विरोध किया और न ही कोई प्रतिक्रिया दी।
मान दुखी लग रहा था। उसने कहा, 'क्या कोई बात है?'
‘दाग साहब, ऐसी कोई बात नहीं है जिसमें आप मेरी मदद कर सकें। क्या आपको याद है कि पिछली बार जब हम मिले थे तो मैंने क्या कहा था?’
'मुझे कुछ-कुछ याद है,' मान ने कहा—लेकिन उसे बातचीत का सार ही याद था, सटीक शब्द नहीं: तसनीम के लिए उसकी चिंता, उसकी कमजोरी भरी नज़र।
‘खैर,’ सईदा बाई ने विषय बदलते हुए कहा, ‘आज शाम मेरे पास आपके साथ ज्यादा समय नहीं है। थोड़ी देर में मुझे किसी के आने की उम्मीद है। भगवान जाने, मुझे कुरान पढ़नी चाहिए थी, ग़ालिब नहीं, लेकिन कौन जानता है कि अगले ही पल इंसान क्या कर बैठेगा।’
'मैं रशीद के परिवार से मिला,' मान ने कहा, जो इस बात से परेशान था कि आज शाम उसे सईदा बाई के साथ समय बिताने का मौका नहीं मिलेगा, और वह सईदा बाई को सूचित करने के अपने अप्रिय कर्तव्य को जल्द से जल्द खत्म करना चाहता था।
‘जी?’ सईदा बाई ने लगभग उदासीनता से कहा।
मान ने कहा, 'ऐसा लगता है कि उन्हें उसके दिमाग में क्या चल रहा है, इसके बारे में कुछ भी पता नहीं है। न ही उन्हें इसकी परवाह है। उन्हें बस इस बात की चिंता है कि उसकी राजनीति से उन्हें कोई आर्थिक नुकसान न हो। बस इतना ही। उसकी पत्नी—'
मान रुक गया। सईदा बाई ने सिर उठाया और बोलीं, “जी हां, मुझे पता है कि उसकी एक पत्नी पहले से है। और आप जानते हैं कि मुझे पता है। लेकिन मुझे इन सब बातों में कोई दिलचस्पी नहीं है। मुझे माफ कीजिए, अब मुझे आपसे जाने के लिए कहना होगा।”
‘सईदा—लेकिन मुझे बताओ क्यों—’

सईदा बाई ने किताब की ओर देखा और अनमने ढंग से उसके पन्ने पलटने लगीं।

'एक पन्ना फट गया है,' मान ने कहा।

‘हां,’ सईदा बाई ने अनमने ढंग से उत्तर दिया। ‘मुझे इसे और बेहतर तरीके से ठीक करवाना चाहिए था।’

‘मैं आपके लिए कर देता हूँ,’ मान ने कहा। ‘मैं इसे करवा सकता हूँ। ये फटा कैसे?’

‘दाग साहब, क्या आपको मेरी हालत दिखाई नहीं देती? मैं सवालों के जवाब नहीं दे सकती। जब आप अंदर आए, तब मैं आपकी किताब पढ़ रही थी। आपको यह क्यों नहीं लगता कि मैं आपके बारे में सोच रही थी?’

‘सईदा,’ मान ने बेबसी से कहा। ‘मैं इस बात पर यकीन कर सकता हूँ। लेकिन जब मैं यहाँ नहीं हूँ तो तुम्हारे मेरे बारे में सोचने का क्या फायदा? मैं देख सकता हूँ कि तुम किसी बात से परेशान हो। लेकिन किस बात से? मुझे क्यों नहीं बताती? मुझे समझ नहीं आ रहा। मैं समझ ही नहीं सकता —और मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ। क्या तुम किसी और से मिल रही हो?’ उसने अचानक महसूस किया कि उसकी बेचैनी परेशानी के साथ-साथ उत्तेजना के कारण भी हो सकती है। ‘बस यही बात है? बस यही बात है?’

‘दाग साहब,’ सईदा बाई ने शांत, थकी हुई आवाज़ में कहा। ‘अगर आपके पास एक से ज़्यादा साकी होती तो आपको इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मैंने आपको पिछली बार भी यही बताया था।’

‘मुझे याद नहीं कि तुमने पिछली बार क्या कहा था,’ मान ने ईर्ष्या से भरते हुए कहा। ‘मुझे यह मत बताओ कि मुझे कितनी साकी पीनी चाहिए। तुम मेरे लिए सब कुछ हो। पिछली बार क्या कहा गया था, मुझे इसकी परवाह नहीं है। मैं जानना चाहता हूँ कि इस बार तुम इतनी कम

शिष्टाचार दिखाकर मुझे क्यों ठुकरा रही हो—' वह रुक गया, भावनाओं से अभिभूत होकर, फिर उसकी ओर देखा और ज़ोर-ज़ोर से साँस लेने लगा। 'तुमने ऐसा क्यों कहा था कि यह साल तुम्हारे लिए बहुत दिलचस्प होगा? तुमने ऐसा क्यों कहा था? मेरे जाने के बाद से क्या हुआ है?'

सईदा बाई ने अपना सिर थोड़ा सा झुकाया। 'ओह, वो?' उन्होंने हल्के व्यंग्यपूर्ण, यहाँ तक कि आत्म-व्यंग्यपूर्ण अंदाज़ में मुस्कुराते हुए कहा। 'बावन ताश के पत्तों का अंक है। सब कुछ पूरा हो गया है। इस साल भाग्य ने सब कुछ बड़े ही सलीके से किया है। अब तक मुझे जो दो पत्ते मिले हैं, उनमें से मैंने केवल दो ही उठाए हैं, एक रानी और एक गुलाम: एक बेगम और एक गुलाम।'

'किस वर्ग के?' मान ने सिर हिलाते हुए पूछा। गुलाम का अर्थ या तो एक युवक हो सकता है या एक दास। 'क्या वे एक ही वर्ग के हैं या एक-दूसरे के विरोधी हैं?'

'शायद पान,' सईदा बाई ने दिल का नाम लेते हुए कहा। 'कम से कम मैं देख सकती हूँ कि दोनों लाल हैं। मुझे इससे ज़्यादा कुछ नहीं दिख रहा। लेकिन मुझे इस बातचीत में कोई दिलचस्पी नहीं है।'

'मैं भी नहीं,' मान ने गुस्से से कहा। 'कम से कम इस साल तो किसी तुरुप के पत्ते की कोई गुंजाइश नहीं है।'

अचानक सईदा बाई बेतहाशा हंसने लगीं। फिर उन्होंने अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया। 'अब आप जो चाहें सोचें। सोचिए कि मैं भी पागल हो गई हूँ। मुझे नहीं पता कि क्या बात है।' उनके चेहरा खोलने से पहले ही मान समझ गया कि वह रो रही हैं।

'सईदा बेगम—सईदा—मुझे माफ़ कर दो—'

'माफी मत मांगो। यह रात का सबसे आसान हिस्सा है मेरे लिए। मुझे तो आगे आने वाली चीजों से डर लग रहा है।'

‘क्या यह मारह का राजा है?’ मान ने कहा।

‘मरह का राजा?’ सईदा बाई ने धीरे से कहा, उनकी नज़र किताब पर टिकी हुई थी। ‘हाँ, हाँ, शायद। कृपया मुझे अकेला छोड़ दें।’ फलों का कटोरा सेब, नाशपाती, संतरे और कुछ बेमौसम, मुरझाए हुए अंगूरों से भरा हुआ था। अचानक ही उन्होंने एक छोटा गुच्छा तोड़ा और मान को दे दिया। ‘यह तुम्हें इससे मिलने वाली चीज़ों से ज़्यादा पोषण देगा,’ उन्होंने कहा।

मान ने बिना सोचे-समझे एक अंगूर मुँह में डाल लिया, फिर अचानक उसे प्रेम निवास में सुबह मटर खाने की याद आ गई। न जाने क्यों, इससे उसे बहुत गुस्सा आया। उसने बचे हुए अंगूरों को हाथ से मसलकर पानी के कटोरे में डाल दिया। उसका चेहरा लाल हो गया, वह उठा, दहलीज के बाहर कदम रखा, जूतियाँ पहनीं और सीढ़ियों से नीचे चला गया। वहाँ रुककर उसने अपना चेहरा हाथों से ढक लिया। आखिरकार वह बाहर निकला और घर की ओर चलने लगा। लेकिन सौ गज भी नहीं चला था कि वह फिर रुक गया। वह एक विशाल इमली के पेड़ से टिक गया और सईदा बाई के घर की ओर पीछे मुड़कर देखा।

17.12

उसने अपनी जेब से व्हिस्की की बोतल निकाली और पीने लगा। उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसका दिल चूर-चूर हो गया हो। दो हफ़्तों से हर रात वह उसके बारे में सोचता था। हर सुबह जब वह उठता, चाहे किले में हो या सलीमपुर में, कुछ मिनट बिस्तर पर लेटा रहता, यह कल्पना करते हुए कि वह उसके साथ है। निस्संदेह उसके सपने भी उसी के थे। और अब, इन पंद्रह दिनों की जुदाई के बाद, उसने उसे अपने जीवन के पंद्रह मिनट दिए थे, और मानो उसे यह एहसास दिलाया था कि कोई और उसके लिए उससे कहीं ज़्यादा मायने रखता है। लेकिन यकीनन मारह के उस घमंडी

राजा से ज़्यादा नहीं।

फिर भी, सईदा बाई की बातों में इतना कुछ था कि वह उसे ज़रा भी समझ नहीं पा रहा था, जबकि सईदा बाई आम तौर पर बहुत कम ही बोलती थीं, सीधे इशारों में ही बात करती थीं। अगर वह खुद ही वह गुलाम या युवक था जिसका ज़िक्र वह कर रही थीं, तो फिर क्या? डर से उनका क्या मतलब था? घर कौन आने वाला था? मारह के राजा का इस सब में क्या रोल था? और रशीद का क्या? मान ने अब तक इतना पी लिया था कि उसे इस बात की परवाह ही नहीं थी कि वह क्या कर रहा है। वह वापस सईदा बाई के घर की ओर आधा रास्ता चलकर ऐसी जगह खड़ा हो गया जहाँ चौकीदार उसे देख न सके, लेकिन यह देख सके कि कोई अंदर तो नहीं जा रहा है।

हालांकि अभी रात नहीं हुई थी, सड़क लगभग सुनसान थी; वैसे भी यह कस्बे का शांत इलाका था। एक-दो कारें, कुछ साइकिलें और तांगे सड़क से गुजर रहे थे, और कभी-कभार कोई पैदल यात्री भी दिख जाता था। ऊपर आसमान में एक उल्लू शांति से बोल रहा था। मान आधे घंटे तक वहीं खड़ी रही। उसके घर के पास कोई कार या तांगा नहीं रुका। न कोई अंदर आया, न कोई बाहर गया। कभी-कभार चौकीदार बाहर टहल रहा था, या अपने भाले का निचला हिस्सा फुटपाथ पर जोर से पटक रहा था, या ठंड से बचने के लिए अपने पैर पटक रहा था। हल्की धुंध छाने लगी, जिससे कभी-कभी उसकी नज़र धुंधली हो जाती थी। मान को लगने लगा कि अब कोई नहीं है—न बिलग्रामी, न राजा, न रशीद, न कोई रहस्यमय दूसरा—जिससे सईदा बाई को मिलना था। बात बस इतनी थी कि वह उससे कोई वास्ता नहीं रखना चाहती थी। वह उससे ऊब चुकी थी। अब उसका उसके लिए कोई महत्व नहीं रह गया था।

एक और राहगीर विपरीत दिशा से सईदा बाई के घर की ओर बढ़ा, द्वार

पर रुका और उसे तुरंत अंदर जाने दिया गया। मान सदमे से जम गया। पहले तो वह इतनी दूर था कि उसे ठीक से देख नहीं पाया था। फिर धुंध थोड़ी छटी और उसे लगा कि उसने फ़िरोज़ को पहचान लिया है।

मान देखता रह गया। दरवाजा खुला और एक आदमी अंदर आया। क्या यह फिरोज था? इतनी दूरी से तो वह बिल्कुल फिरोज जैसा ही लग रहा था। उसका हावभाव बिल्कुल उसके दोस्त जैसा था। वह छड़ी लिए खड़ा था, लेकिन उसका अंदाज़ किसी नौजवान जैसा था। उसकी चाल भी फिरोज जैसी ही थी। अविश्वास और दुख से व्याकुल मान आगे बढ़ा, फिर रुक गया। यकीन नहीं हो रहा, यकीन नहीं हो रहा, यह फिरोज तो हो ही नहीं सकता।

और अगर फिरोज ही होता, तो क्या वह अपनी छोटी बहन से मिलने नहीं आया होता, जिससे वह इतना मोहित लग रहा था? यकीनन कोई और भी समय आने पर सईदा बाई से मिलने आएगा। लेकिन मिनट बीतते गए, और कोई भी घर नहीं आया। और मान को एहसास हुआ कि जो भी अंदर आया होगा, उसे तसनीम से मिलने की इजाज़त नहीं मिली होगी। वह सिर्फ सईदा बाई से ही मिलने जा रहा होगा। मान ने फिर से अपने चेहरे को हाथों से ढक लिया।

उसने अपनी व्हिस्की की आधी से ज़्यादा बोतल पी ली थी। उसे ठंड का एहसास नहीं था, उसे यह भी पता नहीं था कि वह क्या कर रहा है। वह फिर से दरवाज़े पर जाना चाहता था, अंदर जाकर यह पता लगाना चाहता था कि अंदर कौन गया था और किस मकसद से। यह फ़िरोज़ तो नहीं हो सकता, उसने मन ही मन सोचा। फिर भी, इतनी दूरी से वह आदमी बिल्कुल फ़िरोज़ जैसा ही दिख रहा था। धुंध, स्ट्रीटलाइट्स, दरवाज़ा खुलते ही अचानक आई रोशनी: मान ने कुछ मिनट पहले जो हुआ था, उसे फिर से याद करने की कोशिश की। लेकिन कुछ भी साफ़ नहीं हुआ।

कोई और अंदर नहीं गया। न ही कोई बाहर आया। आधे घंटे बाद, मान का सब्र टूट गया। वह सड़क पार करके चला गया। जब वह गेट पर पहुँचा तो उसने चौकीदार से वही बात कह दी जो उसके दिमाग में सबसे पहले आई: 'नवजादा ने मुझे अपना बटुआ अंदर लाने और उन्हें एक संदेश देने के लिए कहा है।'

चौकीदार चौंक गया, लेकिन मान द्वारा फ़िरोज़ की उपाधि का ज़िक्र सुनकर उसने दरवाज़ा खटखटाया। मान बिब्बो के अनुमति मांगे बिना ही अंदर चला गया। उसने चौकीदार से कहा, “बहुत ज़रूरी है। क्या नवाबज़ादा आ गए हैं?”

जी कपूर साहब, वो कुछ देर पहले अंदर गए थे। लेकिन क्या मैं नहीं जा सकता—?

‘नहीं। मुझे इसे स्वयं पहुंचाना होगा,’ मान ने कहा।

वह सीढ़ियों पर चढ़ गया, बिना आईने में देखे। अगर वह देखता, तो अपने चेहरे के भाव देखकर चौंक जाता। शायद आईने में एक नज़र डालने से जो कुछ होने वाला था, वह टल जाता।

दरवाजे के बाहर जूते नहीं थे। सईदा बाई अपने कमरे में अकेली थीं। वह प्रार्थना कर रही थीं।

‘उठो,’ मान ने कहा।

वह उसकी ओर मुड़ी और खड़ी हो गई, उसका चेहरा पीला पड़ गया था। 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?' उसने कहना शुरू किया। 'तुम्हें अंदर किसने आने दिया? मेरे कमरे में अपने जूते उतारो।'

‘वह कहाँ है?’ मान ने धीमी आवाज़ में कहा।

‘कौन—’ सईदा बाई ने गुस्से से कांपती आवाज में कहा। ‘तोता? जैसा कि आप देख सकते हैं, उसका पिंजरा ढका हुआ है।’

मान ने कमरे में चारों ओर जल्दी से नज़र घुमाई। कोने में फिरोज की

लाठी देखकर उसे बहुत गुस्सा आया। बिना कुछ कहे उसने शयनकक्ष का दरवाजा खोल दिया। अंदर कोई नहीं था।

'निकल जाओ!' सईदा बाई ने कहा। 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ऐसा सोचने की—फिर कभी यहाँ मत आना—निकल जाओ, इससे पहले कि मैं बिब्बो को बुला लूँ—'

'फिरोज कहाँ है?'

'वह यहाँ नहीं आया है।'

मान ने छड़ी की ओर देखा। सईदा बाई की निगाहें भी उसी ओर गईं।

'वह चला गया,' उसने घबराई हुई और अचानक भयभीत होकर फुसफुसाया।

'वह क्यों आया? तुम्हारी बहन से मिलने? क्या वह तुम्हारी बहन से प्यार करता है?'

अचानक, सईदा बाई हंसने लगीं मानो उन्होंने जो कहा था वह विचित्र और हास्यास्पद दोनों था।

मान यह बर्दाश्त नहीं कर सका। उसने उसे कंधों से पकड़कर हिलाना शुरू कर दिया। वह उसकी ओर देखती रही, उसकी आँखों में क्रोध का भाव देखकर भयभीत थी— लेकिन फिर भी वह अपनी भद्दी, व्यंग्यात्मक हंसी को रोक नहीं पाई।

'तुम क्यों हंस रहे हो? चुप रहो—चुप रहो—' मान चिल्लाया। 'बताओ वो तुम्हारी बहन से मिलने आया था—'

'नहीं—' सईदा बाई ने हांफते हुए कहा।

'वह तुम्हारी बहन के बारे में तुमसे मिलने आया था—'

'मेरी बहन! मेरी बहन!' सईदा बाई मान के चेहरे पर ऐसे हंस पड़ीं मानो उसने कोई पागलपन भरा मजाक किया हो। 'वह मेरी बहन से प्यार नहीं करता—वह मेरी बहन से प्यार नहीं करता—' उन्होंने मान को ज़ोर से

धक्का देकर दूर करने की कोशिश की। वे ज़मीन पर गिर पड़े और सईदा बाई चीख पड़ीं क्योंकि मान ने उनका गला पकड़ लिया था। कटोरे का पानी छलक गया। फलों का कटोरा उलट गया। मान ने इनमें से किसी बात पर ध्यान नहीं दिया। उनका मन गुस्से से लाल था। जिस औरत से वह प्यार करते थे, उसने उनके दोस्त के साथ उन्हें धोखा दिया था, और अब वह उनके प्यार और उनकी तकलीफ का मज़ाक उड़ा रही थी।

उसके हाथ उसके गले पर कस गए। 'मुझे पता था,' उसने कहा। 'मुझे बताओ वो कहाँ है। वो अभी भी यहीं है। वो कहाँ छिपा है?'

सईदा बाई ने हांफते हुए कहा, 'दाग साहब-'

'कहाँ है वह?'

'मदद करना-'

'कहाँ है वह?'

सईदा बाई ने अपने दाहिने हाथ से फल काटने वाले चाकू को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन मान ने उसका गला छोड़ दिया और चाकू उसके हाथ से छीन लिया।

वे अभी भी फर्श पर पड़े थे। उसने चाकू को घूर कर देखा।

सईदा बाई मदद के लिए चीखने लगीं। नीचे से दरवाजा खुलने की आवाज आई, डरी हुई आवाजें सुनाई दीं, लोग ऊपर की ओर भागे। मान उठ खड़ा हुआ। फिरोज सबसे पहले दरवाजे तक पहुंचा। बिब्बो उसके पीछे था।

'मान—' फ़िरोज़ ने तुरंत ही दृश्य को समझते हुए कहा। सईदा बाई तकिए पर सिर रखकर दोनों हाथों से अपना गला पकड़े हुए थीं। वह हांफ रही थीं और उनकी छाती ज़ोर-ज़ोर से ऊपर-नीचे हो रही थी। उनके गले से उल्टी करने जैसी भयानक आवाज़ें आ रही थीं।

मान ने फ़िरोज़ के दोषी और उत्तेजित चेहरे को देखा और तुरंत समझ गया कि सबसे बुरी बात सच है। वह एक बार फिर गुस्से से भर उठा।

‘देखो मान,’ फ़िरोज़ धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ते हुए बोला। ‘क्या बात है? चलो आराम से बात करते हैं—शांति से—’

अचानक वह आगे बढ़ा और मान को निहत्था करने की कोशिश की। लेकिन मान उससे कहीं ज़्यादा फुर्तीला था। फ़िरोज़ ने अपना पेट पकड़ लिया। खून से उसकी जैकेट लथपथ होने लगी और वह ज़मीन पर गिर पड़ा। दर्द से चीख उठा। ज़मीन पर बिछी सफ़ेद चादर पर खून की बूँदें गिरीं। मान ने उसे एक अचंभित बैल की तरह देखा, फिर अपने हाथों में पकड़े चाकू को देखा।

एक मिनट तक किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा। सईदा बाई की सांस लेने की कोशिशों, फिरोज की दर्द भरी दबी हुई चीखों और मान के लंबे और कड़वे सिसकियों के अलावा कोई आवाज नहीं थी।

'इसे मेज पर रख दो,' बिब्बो ने धीरे से कहा।

मान ने चाकू नीचे रख दिया और फिरोज के पास घुटनों के बल बैठ गया।

‘तुरंत निकल जाओ,’ बिब्बो ने कहा।

लेकिन एक डॉक्टर—

‘तुरंत निकल जाओ। हम सब संभाल लेंगे। ब्रह्मपुर छोड़ दो। तुम आज शाम इस घर में नहीं आए हो। जाओ।’

‘फिरोज—’

फिरोज ने सिर हिलाया।

‘क्यों?’ मान ने टूटी हुई आवाज में कहा।

‘जल्दी जाओ’ फिरोज ने कहा।

मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? मैंने क्या किया है?

'जल्दी-'

मान ने कमरे में आखिरी बार नज़र घुमाई और दौड़कर नीचे की ओर निकल गया। चौकीदार बाहरी द्वार के बाहर चक्कर लगा रहा था। उसे

कोई ऐसी बात सुनाई नहीं दी थी जिससे वह घबराया हो। उसने मान का चेहरा देखा और कहा: 'क्या बात है साहब?'
मान ने कोई जवाब नहीं दिया।
‘क्या कोई बात है? मैंने कुछ आवाजें सुनीं—क्या वे मुझे चाहते हैं?’
‘क्या?’ मान ने कहा।
‘क्या वे मुझे चाहते हैं, साहब? मेरा मतलब है, अंदर।’
‘चाहिए? नहीं, नहीं—शुभ रात्रि।’
‘शुभ रात्रि, साहब,’ चौकीदार ने कहा। मान कोहरे में तेजी से चला गया, तो चौकीदार ने कुछ बार पैर पटके।
17.13
तसनीम सईदा बाई के कमरे के दरवाजे पर प्रकट हुई।
‘क्या हुआ, आपा? हे भगवान—’ वह चीखी, उसकी आँखें उस भयानक दृश्य को देख रही थीं: खून, कुचले हुए फल, फैला हुआ पानी, उसकी बहन सोफे पर झुकी हुई हांफ रही थी, फिरोज फर्श पर घायल पड़ा था, और चाकू मेज पर पड़ा था।
फिरोज ने उसे देखा और उसे लगा जैसे वह बेहोश होने वाला है। तभी उस शाम जो कुछ भी हुआ था, उसकी भयावहता उसके दिमाग में कौंध गई।
उन्होंने किसी खास व्यक्ति से नहीं कहा, "मैं जा रहा हूँ।"
सईदा बाई बोलने में असमर्थ थीं। बिब्बो ने कहा, 'नवजादा को इस हालत में नहीं छोड़ा जा सकता। उन्हें गंभीर चोट लगी है। उन्हें डॉक्टर की जरूरत है।'
फिरोज बड़ी मुश्किल से उठा। दर्द से उसकी सांस फूल गई। उसने कमरे में चारों ओर देखा और सिहर उठा। उसे अपनी छड़ी दिखाई दी।
‘बिब्बो, मुझे छड़ी दो।’
‘नवजादा को ऐसा नहीं करना चाहिए—’

‘छड़ी।’
उसने उसे वह चीज़ दे दी।
‘अपनी रखैल का ख्याल रखना। अपनी रखैलों का,’ उसने कड़वाहट से कहा।
‘मैं सीढ़ियों से नीचे उतरने में आपकी मदद करती हूँ,’ तसनीम ने कहा।
फ़िरोज़ ने भावहीन निगाहों से उसके चेहरे को देखा। 'नहीं,' उसने धीरे से कहा।
'तुम्हें मदद की जरूरत है,' उसने कांपते होंठों से कहा।
‘नहीं!’ वह अचानक उग्रता से चिल्लाया।
बिब्बो ने देखा कि फ़िरोज़ अपनी बात मनवाने पर तुला हुआ है। ‘बेगम साहिबा— वो शॉल?’ उसने पूछा। सईदा बाई ने सिर हिलाया, और बिब्बो ने फ़िरोज़ के कंधों पर शॉल डाल दी। वह उसके साथ नीचे दरवाजे तक गई। बाहर अभी भी धुंध छाई हुई थी। फ़िरोज़ अपनी छड़ी के सहारे खड़ा था, किसी बूढ़े आदमी की तरह आगे की ओर झुका हुआ। वह मन ही मन कह रहा था: ‘मैं यहाँ नहीं रह सकता। मैं यहाँ नहीं रह सकता।’
बिब्बो ने चौकीदार से कहा, “तुरंत डॉक्टर बिलग्रामी के पास जाओ। उन्हें बताओ कि बेगम साहिबा और एक और व्यक्ति बीमार पड़ गए हैं।”
चौकीदार ने फ़िरोज़ को घूर कर देखा।
‘जाओ। जल्दी जाओ, बेवकूफ—’ बिब्बो ने अधिकारपूर्वक कहा।
चौकीदार गुस्से में पैर पटकते हुए चला गया।
फ़िरोज़ फाटक की ओर बढ़ने लगा। रात घने कोहरे से ढकी हुई थी।
‘नवजादा की हालत जाने लायक नहीं है—कृपया, कृपया यहीं रुकिए— रात को देखिए और खुद को देखिए। मैंने डॉक्टर को बुला लिया है। वह किसी भी पल यहाँ आ जाएँगे,’ बिब्बो ने उसे रोकते हुए कहा।
‘तुम नहीं जा सकते—’ इस बार तसनीम उसे जाने से रोकने के लिए

दौड़कर नीचे आई थी। वह अपने जीवन में पहली बार खुले दरवाजे पर खड़ी थी, लेकिन आगे जाने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी। अगर कोहरा न होता तो वह सड़क से दिखाई देती।

चलते समय वह दर्द और सदमे के आंसू नहीं रोक पा रहा था।

मान ने उसे चाकू क्यों मारा था—मान और सईदा बाई के बीच क्या हुआ था—वह सोच भी नहीं पा रहा था। लेकिन पहले जो हुआ था, उससे बुरा कुछ नहीं था। सईदा बाई ने उसका एक पत्र रोक लिया था और उसे बुलाया था। उसने सख्ती से उसे तसनीम को पत्र लिखने से, उससे किसी भी तरह का संबंध रखने से मना कर दिया था। जब उसने विरोध किया, तो उसने उसे सच बता दिया था।

उसने यथासंभव स्पष्ट शब्दों में कहा था, 'तसनीम मेरी बहन नहीं है। वह तुम्हारी बहन है।'

फिरोज ने खौफ भरी निगाहों से उसे देखा। 'जी हां,' सईदा बाई ने आगे कहा। 'वह मेरी बेटी है, भगवान मुझे माफ करे।'

फिरोज ने अपना सिर हिलाया।

"और ईश्वर तुम्हारे पिता को क्षमा करे," उसने आगे कहा। "अब शांति से जाओ। मुझे अपनी प्रार्थना करनी है।"

घृणा से अवाक और विश्वास एवं अविश्वास के बीच फंसा हुआ फिरोज, उसके कमरे से निकल गया। नीचे जाकर उसने बिब्बो से कहा कि उसे तसनीम से मिलना है।

'नहीं—' बिब्बो ने कहा। 'नहीं—नवजादा ऐसा कैसे मान सकते हैं—'

उसने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, 'तुम यह सब पहले से ही जानती थी।'

'क्या पता?' बिब्बो ने उसे झटकते हुए विरोध जताया।

फिरोज ने कहा, 'अगर आपको इसके बारे में पता नहीं था, तो यह सच

नहीं हो सकता। यह एक क्रूर झूठ है। यह सच नहीं हो सकता।'
'सच? सच?' बिब्बो ने कहा। 'नवजादा का दिमाग खराब हो गया है।'
'मुझे तसनीम से मिलना ही होगा। मुझे उससे मिलना ही होगा,' फिरोज ने हताशा में चिल्लाते हुए कहा था।
उसका नाम सुनते ही तसनीम अपने कमरे से बाहर आ गई और उसे देखने लगी। वह उसके पास गया और तब तक उसके चेहरे को देखता रहा जब तक शर्म और दुख के आंसू उसकी आंखों से बहने लगे।
'क्या बात है? नवाबजादा मुझे इस तरह क्यों देख रहे हैं?' उसने अपना चेहरा दूसरी तरफ मोड़ते हुए बिब्बो से पूछा।
'अपने कमरे में वापस जाओ वरना तुम्हारी बहन तुमसे बहुत नाराज़ होगी,' बिब्बो ने कहा। तसनीम वापस मुड़ चुकी थी।
फिरोज ने बिब्बो के पीछे-पीछे दूसरे कमरे में जाते हुए कहा, 'मुझे आपसे बात करनी है।'
'तो अपनी आवाज़ धीमी रखो,' बिब्बो ने रूखेपन से कहा। लेकिन उसके सवाल इतने अटपटे और अजीब थे—और अपराधबोध और शर्म से इतने भरे हुए थे—कि वह उसे सचमुच हैरानी से देखने लगी थी। 'मुझे किसी से कोई समानता नहीं दिखती—ज़ैनब से, मेरे पिता से—' उसने कहा था। वह अभी उसके शब्दों को समझने की कोशिश ही कर रही थी कि तभी उन्हें ऊपर से आवाज़ें सुनाई दीं—किसी के गिरने की और सईदा बाई के मदद के लिए चिल्लाने की।
रात बेहद ठंडी हो गई थी। फ़िरोज़ रुका, चला, फिर रुक गया। धुंध कहीं-कहीं छंटती, फिर उसे घेर लेती। शॉल खून से लथपथ थी। उसके विचार, उसका दर्द, धुंध, सब कुछ उसके चारों ओर बेतरतीब ढंग से बिखरता और इकट्ठा होता रहा। उसके हाथ खून से गीले थे जहाँ उसने अपनी कमर पकड़ रखी थी। उसके हाथ से छड़ी फिसल गई। उसे नहीं पता था कि वह

इस हालत में घर पहुँच पाएगा या नहीं। और अगर पहुँच भी गया, तो उसने सोचा, वह अपने पिता के बूढ़े और प्यारे चेहरे को कैसे देख पाएगा? वह मुश्किल से सौ गज ही चला था कि उसे लगा कि वह अब और नहीं चल पाएगा। खून की कमी, शारीरिक पीड़ा और मन में व्याप्त भयानक विचारों ने उसे लगभग बेहोश कर दिया था। तभी कोहरे में से एक तांगा अचानक दिखाई दिया। उसने अपनी छड़ी उठाई और उसे आवाज़ देने की कोशिश की, और तभी वह फुटपाथ पर गिर पड़ा।

17.14

पसंद बाग पुलिस स्टेशन में वह एक शांत रात थी, और स्टेशन हाउस ऑफिसर, जो एक सब-इंस्पेक्टर थे, जम्हाई ले रहे थे, रिपोर्ट लिख रहे थे, चाय पी रहे थे और अपने अधीनस्थों के साथ मजाक कर रहे थे।

'हेमराज, ये बहुत पेचीदा मामला है, इसलिए ध्यान से सुनो,' उन्होंने दैनिक डायरी में प्रविष्टि कर रहे एक लेखक-कांस्टेबल से कहा। 'दो मालिकों ने कहा कि उनका नौकर दूसरे के नौकर से ज्यादा बेवकूफ है। इसलिए उन्होंने शर्त लगाई। एक ने अपने नौकर को बुलाया और कहा: "बुधु राम, नबीगंज की एक दुकान में एक बुइक कार बिक रही है। ये लो दस रुपये। जाओ और मेरे लिए खरीद लाओ।" तो बुध राम ने दस रुपये लिए और बाहर चला गया।'

कुछ कांस्टेबल जोर से हंस पड़े, और सब-इंस्पेक्टर ने उन्हें चुप कराया। 'मैंने अभी चुटकुला सुनाना शुरू ही किया है और तुम बेवकूफ हंसने लगे हो। चुप हो जाओ और सुनो...' तो दूसरे मालिक ने कहा: "तुम्हें यह बेवकूफी लग सकती है, लेकिन मेरा नौकर, उल्लू चंद, इससे भी ज्यादा बेवकूफ है। मैं साबित कर दूंगा।" उसने उल्लू चंद को बुलाया और कहा: "अब सुनो, उल्लू चंद, मैं चाहता हूं कि तुम सब्जीपुर क्लब जाओ और देखो कि मैं वहां हूं या नहीं। यह बहुत जरूरी है।" उल्लू चंद तुरंत आदेश

का पालन करने चला गया।
कांस्टेबल बेकाबू होकर हंसने लगे। उनमें से एक लोटपोट होते हुए बोला, 'देखो मैं वहां हूं या नहीं—देखो मैं वहां हूं या नहीं।'
‘चुप रहो, चुप रहो,’ सब-इंस्पेक्टर ने कहा। ‘मेरी बात अभी खत्म नहीं हुई है।’ कांस्टेबल तुरंत चुप हो गए। सब-इंस्पेक्टर ने अपना गला साफ किया। ‘रास्ते में, एक नौकर दूसरे से मिला और कहा—’
एक व्याकुल तांगावाला कमरे में दाखिल हुआ और स्पष्ट रूप से व्याकुल होकर बुदबुदाया: 'दारोगा साहब—'
‘अरे, चुप रहो, चुप रहो,’ सब-इंस्पेक्टर ने विनम्रता से कहा। ‘तो एक नौकर दूसरे से मिला और बोला: “अरे, उल्लू चंद, मेरा मालिक तो बिलकुल बेवकूफ है। उसने मुझे दस रुपये दिए और कहा कि एक बुइक कार खरीद लो। लेकिन क्या उसे यह नहीं पता कि आज रविवार है और दुकानें बंद हैं?”’
इस पर सब लोग, यहाँ तक कि सब-इंस्पेक्टर भी, ज़ोर से हँस पड़े। लेकिन उनकी बात अभी खत्म नहीं हुई थी, और जब हँसी थम गई, तो उन्होंने आगे कहा:
और दूसरे नौकर ने कहा: “ठीक है, बुधु राम, यह मूर्खतापूर्ण हो सकता है, लेकिन मेरे मालिक की मूर्खता के आगे यह कुछ भी नहीं है। उन्होंने मुझे तुरंत पता लगाने को कहा कि क्या वह क्लब में हैं। लेकिन अगर यह इतना ज़रूरी था, तो वह सीधे दूसरे कमरे में जाकर टेलीफोन का इस्तेमाल क्यों नहीं कर लेते?”
इस पर पूरा कमरा ठहाकों और हंसी की चीखों से गूंज उठा, और सब-इंस्पेक्टर, बहुत खुश होकर, चाय का एक घूंट जोर से पिया, जिससे कुछ चाय उनकी मूंछों पर भीग गई। 'जी हां, क्या चाहिए?' उन्होंने कांपते हुए तांगेवाले को देखकर कहा।

‘दारोगा साहब, कॉर्नवालिस रोड पर फुटपाथ पर एक शव पड़ा है।’
इंस्पेक्टर ने कहा, 'आज रात बहुत बुरी है। लगता है कोई बेचारा ठंड से मर गया होगा।' 'लेकिन कॉर्नवालिस रोड पर?'
तांगावाले ने कहा, ‘वह ज़िंदा है। उसने मुझे आवाज़ देने की कोशिश की, फिर गिर पड़ा। वह खून से लथपथ है। मुझे लगता है उसे चाकू मारा गया है। वह देखने में अच्छे परिवार का लगता है। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उसे वहीं छोड़ दूं या अस्पताल ले जाऊं या पुलिस को। कृपया जल्दी आइए। क्या मैंने सही किया?’
‘अरे बेवकूफ!’ सब-इंस्पेक्टर चिल्लाया। ‘तुम इतनी देर से यहीं खड़े हो। पहले क्यों नहीं बोले?’ उसने बाकी लोगों से कहा: ‘कुछ पट्टियाँ ले आओ। और तुम, हेमराज, रात के क्लिनिक में सरकारी डॉक्टर को फोन करो। पुलिस किट जल्दी से तैयार करो, और कुछ अतिरिक्त टॉर्च भी ले आओ। और तुम’—उसने तांगावाले से कहा—‘हमारे साथ आओ और हमें दिखाओ कि वह कहाँ लेटा है।’
‘क्या मैंने सही काम किया?’ तांगा बेचने वाले ने डरते हुए पूछा।
'जी हां, जी हां, जी—आपने उसे परेशान तो नहीं किया, है ना?'
'नहीं, दारोगा साहब, मैंने तो बस उसे पलटकर देखा था—यह देखने के लिए कि वह जीवित है या नहीं।'
‘भगवान के लिए, इतनी देर क्यों लग रही है?’ सब-इंस्पेक्टर ने अधीरता से अपने अधीनस्थों से कहा। ‘जल्दी करो। यहाँ से कितनी दूर है?’
बस दो मिनट की दूरी पर।
‘तो हम तुम्हारे तांगे में चलेंगे। हेमराज, पुलिस जीप का इस्तेमाल करके डॉक्टर को बुला लाना। दैनिक डायरी में एक लाइन से ज़्यादा मत लिखना। बाकी मैं बाद में कर लूंगा। अगर वो अभी भी ज़िंदा है तो शायद मैं तांगे वाले से नहीं बल्कि उससे ही एफआईआर दर्ज करवा लूँ। मैं

बिहारी को अपने साथ ले जा रहा हूँ। मेरे जाने के बाद दूसरा सहायक सब-इंस्पेक्टर थाने का काम संभाल लेगा।'

दो मिनट के भीतर वे फ़िरोज़ के पास पहुँच गए। वह अर्ध-चेतन अवस्था में था और खून बह रहा था। सब-इंस्पेक्टर को तुरंत समझ आ गया कि अगर उसकी जान बचानी है तो प्राथमिक उपचार और पट्टियों का कोई सवाल ही नहीं उठता। समय अत्यंत महत्वपूर्ण था। उसे तुरंत अस्पताल ले जाना चाहिए।

'बिहारी, जब डॉक्टर आए, तो उसे सिविल अस्पताल जल्दी जाने के लिए कहना। हम तांगे से जा रहे हैं। हाँ, मुझे पट्टियाँ दे दो—मैं रास्ते में खून रोकने के लिए जो भी कर सकता हूँ, देख लूँगा। ओह, हाँ, अगर हो सके तो खून का पीछा करना: दो टॉर्च रखना, मैं एक ले लेता हूँ। मैं तांगे वाले और घायल आदमी के बयान ले लूँगा। छड़ी में छिपे हुए ब्लेड की जाँच करना। देखना कि हथियार कहीं पड़ा तो नहीं है, वगैरह। उसका बटुआ उसके पास है—ऐसा नहीं लगता कि उसे लूटा गया है। लेकिन हो सकता है किसी ने उसे लूटने की कोशिश की हो और वह भागने में कामयाब हो गया हो। कॉर्नवॉलिस रोड पर!' सब-इंस्पेक्टर ने अपना सिर हिलाया, अपनी मूंछों के दाहिनी ओर चाटा और सोचने लगा कि ब्रह्मपुर का क्या हाल होने वाला है।

उन्होंने फ़िरोज़ को तांगे में बिठाया और खुद भी उसमें बैठ गए, और तांगा कोहरे में सरपट दौड़ पड़ा। सब-इंस्पेक्टर ने टॉर्च की रोशनी से फ़िरोज़ के चेहरे पर ध्यान से देखा। टॉर्च की टिमटिमाती रोशनी में भी, उसके पीले और विकृत चेहरे पर चमकते हुए भी, फ़िरोज़ का चेहरा जाना-पहचाना लग रहा था। इंस्पेक्टर ने देखा कि उसने एक महिला का शॉल ओढ़ा हुआ है और उनका चेहरा सिकुड़ गया। फिर उन्होंने अपना बटुआ खोला और ड्राइविंग लाइसेंस पर लिखा नाम और पता देखा; और उनका सिकुड़ना

चिंता में बदल गया। उन्होंने धीरे से अपना सिर हिलाया। यह मामला मुसीबत का सबब बनने वाला था और इसे सावधानी से संभालना होगा। अस्पताल पहुँचते ही और फ़िरोज़ को आपातकालीन वार्ड के कर्मचारियों के हवाले करते ही, सब-इंस्पेक्टर ने पुलिस अधीक्षक को फ़ोन किया, जिन्होंने बैतर हाउस को सूचित करने का जिम्मा लिया।

17.15

आपातकालीन वार्ड—जिसका नाम हाल ही में बदलकर हताहत विभाग कर दिया गया था—में अव्यवस्था का माहौल था। एक महिला कोने में पेट पकड़े दर्द से चीख रही थी। दो पुरुषों को ट्रक दुर्घटना में सिर में चोट लगने के कारण लाया गया था—वे जीवित तो थे, लेकिन उनके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। कुछ लोगों को मामूली चोटें आई थीं, जिनसे कम या ज्यादा खून बह रहा था।

दो युवा गृह सर्जनों ने फ़िरोज़ की जांच की। सब-इंस्पेक्टर ने उन्हें उसके बारे में सारी जानकारी दी: वह कहाँ मिला था, उसका नाम और पता।

उनमें से एक ने कहा, 'ये डॉक्टर इम्तियाज खान के भाई ही होंगे। क्या पुलिस ने उन्हें सूचित कर दिया है? हम उन्हें अपने साथ रखना चाहेंगे, खासकर अगर ऑपरेशन के लिए अनुमति की आवश्यकता हो। वे प्रिंस ऑफ वेल्स कॉलेज अस्पताल में काम करते हैं।'

सब-इंस्पेक्टर ने उन्हें बताया कि एसपी बैतर हाउस से संपर्क कर रहे हैं। क्या इस बीच वे मरीज से बात कर सकते हैं? उन्हें प्रथम सूचना रिपोर्ट (FIR) दर्ज करानी थी।

डॉक्टरों ने कहा, 'अभी नहीं, अभी नहीं।' उन्होंने फ़िरोज़ की नाड़ी जाँची, जो धीमी और अनियमित थी, रक्तचाप कम था, साँस तेज़ चल रही थी और आँखों की पुतलियाँ सामान्य थीं। वह पीला पड़ गया था और उसका माथा पसीने से तर था। उसने बहुत खून खो दिया था और सदमे में लग

रहा था। वह अभी भी कुछ शब्द बोल रहा था, लेकिन वे अस्पष्ट थे। सब-इंस्पेक्टर, जो एक बुद्धिमान व्यक्ति था, ने जितना हो सका, उन्हें समझने की कोशिश की। विशेष रूप से उसने सईदा बाई का नाम, 'प्रेम निवास' शब्द और एक या एक से अधिक बहनों का कई बार व्याकुल उल्लेख नोट किया। इनसे उसे घटना का पता लगाने में मदद मिल सकती थी।

उसने डॉक्टरों की ओर मुड़कर पूछा, 'आपने बताया था कि उसका एक भाई है। क्या उसकी एक बहन भी है?'

एक डॉक्टर ने संक्षिप्त जवाब देते हुए कहा, 'मुझे तो इसकी जानकारी नहीं है।'

दूसरे ने कहा, 'मुझे लगता है वो करता है। लेकिन वो ब्रह्मपुर में नहीं रहती। उसका बहुत खून बह चुका है। बहन, ड्रिप तैयार रखो। नॉर्मल सलाइन।'

उन्होंने फिरोज की शॉल हटा दी और उसके कुर्ते और बनियान का कुछ हिस्सा काट दिया। उसके सारे कपड़े खून से सने हुए थे।

पुलिसकर्मी ने धीमी आवाज़ में कहा: 'मुझे आपसे एक मेडिकल रिपोर्ट लिखवानी पड़ेगी।'

सब-इंस्पेक्टर की बात अनसुनी करते हुए एक डॉक्टर ने कहा, 'बांह में नस नहीं मिल रही। हमें चीरा लगाना पड़ेगा।' उन्होंने फ़िरोज़ के टखने में नस काटी, थोड़ा सा खून निकाला और ड्रिप लगाई। 'बहन, कृपया इसे जांच और ग्रुपिंग व मैचिंग के लिए लैब में ले जाइए। शॉल बहुत सुंदर है। रंगाई से इसकी सुंदरता नहीं बढ़ेगी।'

कुछ मिनट बीत गए। फ़िरोज़ के घाव से खून रिस रहा था, और उसकी अस्पष्ट और अस्पष्ट बातें भी कम होती जा रही थीं। ऐसा लग रहा था कि वह गहरे सदमे में डूबता जा रहा है।

‘घाव के आसपास थोड़ी गंदगी है,’ अस्पताल के एक सर्जन ने कहा। ‘हमें

उसे टिटनेस का इंजेक्शन लगा देना चाहिए।' फिर वह पुलिसकर्मी की ओर मुड़ा। 'क्या आपको हथियार मिला? वह कितना लंबा था? क्या उसमें जंग लगी थी?'

'हमें हथियार बरामद नहीं हुआ है।'

'सिस्टर साहब, कृपया आयोडीन और सेटावलॉन से घाव के आसपास की जगह को साफ कीजिए।' वह अपने सहकर्मी की ओर मुड़े। 'मुंह में खून है। यह अंदरूनी चोट होनी चाहिए: शायद पेट में या ऊपरी आंत में। हम इसे संभाल नहीं सकते। बेहतर होगा कि रजिस्ट्रार को फोन करके ड्यूटी पर मौजूद वरिष्ठ सर्जन को सूचित कर दें। और सिस्टर साहब, कृपया लैब से खून की रिपोर्ट, खासकर हीमोग्लोबिन की मात्रा, जल्दी मंगवाइए।'

जब वरिष्ठ सर्जन नीचे आए, तो उन्होंने फिरोज और लैब रिपोर्ट पर एक नजर डाली और कहा: 'हमें तुरंत एक एक्सप्लोरेटरी लैपरोटॉमी करनी होगी।'

'मुझे एफआईआर दर्ज करानी है—' सब-इंस्पेक्टर ने आक्रामक लहजे में कहा और अपनी मूंछों को मुट्ठी के पिछले हिस्से से धक्का दिया। प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) अक्सर मामले का सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज होता था, और एक पुख्ता एफआईआर होना जरूरी था, खासकर पीड़ित के मुंह से।

वरिष्ठ सर्जन ने अविश्वास भरी ठंडी निगाहों से उसकी ओर देखा। "यह आदमी अभी बोलने की हालत में नहीं है, और बेहोशी की दवा दिए जाने के बाद अगले बारह घंटों तक भी नहीं बोल पाएगा। और उसके बाद भी —अगर वह बच भी जाता है—तो आपको कम से कम चौबीस घंटों तक उसकी जांच करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। जिसने भी उसे पाया है, उससे एफआईआर ले लीजिए। वरना इंतज़ार कीजिए। और अगर आप चाहें तो उम्मीद रखिए।"

सब-इंस्पेक्टर डॉक्टरों के असभ्य व्यवहार से परिचित थे, क्योंकि ब्रह्मपुर के अधिकांश पुलिसकर्मियों की तरह उनका भी कभी न कभी डॉ. किशन चंद सेठ से सामना हुआ था। उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी। वे जानते थे कि डॉक्टर और पुलिसकर्मी मामलों को अलग-अलग नजरिए से देखते हैं। इसके अलावा, वे यथार्थवादी थे। उन्होंने तांगे वाले को बाहर इंतजार करने को कहा था। अब जब उन्हें पता चल गया था कि फ़िरोज़ आगे कुछ नहीं बोल पाएगा, तो उन्होंने फैसला किया कि वे अपनी प्रथम सूचना रिपोर्ट उसी व्यक्ति से लेंगे जिसने वास्तव में उन्हें पहली सूचना दी थी।

“अच्छा, डॉक्टर साहब, सलाह के लिए धन्यवाद,” सब-इंस्पेक्टर ने कहा। “अगर पुलिस डॉक्टर आएँ, तो क्या वे मरीज़ की जाँच करके मेडिकल रिपोर्ट तैयार कर सकते हैं?”

वरिष्ठ सर्जन ने चिढ़कर कहा, ‘हम ये सब खुद कर लेंगे। मरीज़ को बचाना है, न कि अंतहीन जांच। फॉर्म यहीं छोड़ दीजिए।’ उन्होंने सिस्टर से पूछा, ‘ड्यूटी पर एनेस्थेटिस्ट कौन है? डॉ. असकारी? मरीज़ सदमे में है, इसलिए बेहतर होगा कि हम एनेस्थीसिया से पहले एट्रोपिन का इस्तेमाल करें। हम उसे अभी ऑपरेशन थिएटर में ले जा रहे हैं। चीरा लगाने की प्रक्रिया किसने की?’

‘जी हां, श्रीमान,’ घर के एक सर्जन ने गर्व से कहा।

वरिष्ठ सर्जन ने स्पष्ट शब्दों में कहा, 'काम बहुत अव्यवस्थित है। क्या डॉक्टर खान आ गए हैं? या नवाब साहब? हमें उन अनुमतियों पर हस्ताक्षर चाहिए।'

फिरोज का भाई और पिता दोनों अभी तक नहीं आए थे।

वरिष्ठ सर्जन ने कहा, 'अब और इंतजार नहीं कर सकते।' और फिरोज को सिविल अस्पताल के गलियारों से होते हुए ऑपरेशन थिएटर में ले जाया गया।

नवाब साहब और इम्तियाज इतनी देर से पहुंचे कि वे उन्हें व्हीलचेयर पर अंदर आते हुए नहीं देख पाए। नवाब साहब खुद भी सदमे की स्थिति में थे।

‘मुझे उसे देखने दो,’ उसने इम्तियाज से कहा।

इम्तियाज़ ने अपने पिता के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, 'अब्बा-जान, ऐसा मुमकिन नहीं है। वो ठीक हो जाएंगे, मुझे पता है। भाटिया ऑपरेशन कर रहे हैं। असकारी बेहोशी की दवा देने वाले हैं। दोनों ही बहुत अच्छे हैं।'

‘फिरोज के साथ ऐसा कौन करना चाहेगा?’ बूढ़े आदमी ने कहा।

इम्तियाज ने कंधे उचका दिए। उसका चेहरा गंभीर था। उसने अपने पिता से पूछा, 'उसने आपको यह नहीं बताया कि वह आज शाम कहाँ जा रहा है?'

‘नहीं,’ नवाब साहब ने कहा। थोड़ी देर रुककर उन्होंने कहा, ‘लेकिन मान शहर में है। उसे शायद पता हो।’

‘सब कुछ सही समय पर होगा, अब्बा-जान। आप परेशान मत होइए।’

नवाब साहब ने अविश्वास से कहा, 'कॉर्नवालिस रोड पर।' फिर उन्होंने अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया और धीरे-धीरे रोने लगे। थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा, 'हमें ज़ैनब को बताना चाहिए।'

‘सब कुछ सही समय पर होगा, अब्बा-जान, सब कुछ सही समय पर होगा। ऑपरेशन खत्म होने तक इंतजार करते हैं और देखते हैं कि सब कुछ कैसा रहा।’

लगभग आधी रात हो चुकी थी। वे दोनों ऑपरेशन थिएटर के बाहर खड़े रहे। अस्पताल की बदबू से नवाब साहब घबराने लगे थे। कभी-कभार कोई सहकर्मी वहाँ से गुज़रता और इम्तियाज़ को नमस्कार करता या उसके और उसके पिता के प्रति सहानुभूति जताता। फ़िरोज़ पर हुए हमले की खबर फैल चुकी थी, क्योंकि आधी रात के ठीक बाद ब्रह्मपुर

क्रॉनिकल का एक रिपोर्टर वहाँ पहुँच गया। इम्तियाज़ का मन हुआ कि उसे भगा दे, लेकिन उसने कुछ संक्षिप्त सवालों के जवाब देने का फैसला किया। उसने सोचा कि फ़िरोज़ को जितनी ज़्यादा पब्लिसिटी मिलेगी, उतनी ही ज़्यादा संभावना है कि जिसने भी कुछ देखा होगा, वह कोई सुराग लेकर सामने आएगा।

लगभग एक बजे, डॉक्टर ऑपरेशन थिएटर से बाहर निकले।

वे थके हुए लग रहे थे। डॉ. भाटिया के चेहरे के भावों को समझना असंभव था। लेकिन जब उन्होंने इम्तियाज को देखा, तो उन्होंने गहरी सांस ली और कहा:

'आपको देखकर अच्छा लगा, डॉक्टर खान। आशा है सब ठीक हो जाएगा। ऑपरेशन के समय वह गंभीर सदमे में थे, लेकिन हम इंतजार नहीं कर सकते थे। और यह अच्छा ही हुआ कि हमने इंतजार नहीं किया। हमने सामान्य लैपरोटॉमी की। छोटी आंत में गंभीर घाव था, और हमें पेट की सफाई के अलावा कई जोड़ लगाने पड़े। इसीलिए हमें इतना समय लगा।' उन्होंने नवाब साहब की ओर मुड़कर कहा, 'आपके सुंदर बेटे के चेहरे पर अब सात इंच का एक सुंदर निशान है। आशा है वह ठीक हो जाएंगे। मुझे खेद है कि हम एनेस्थीसिया देने और ऑपरेशन करने के लिए आपकी अनुमति का इंतजार नहीं कर सके।'

'क्या मैं—' नवाब साहब ने कहना शुरू किया।

इम्तियाज ने साथ ही कहा, 'क्या होगा अगर—'

भाटिया ने इम्तियाज से पूछा, 'किस बारे में?'

'सेप्सिस और पेरिटोनिटिस के खतरे के बारे में क्या?'

"खैर, उम्मीद है कि ऐसा नहीं हुआ। अंदर काफी अफरा-तफरी मच गई थी। लेकिन हम कड़ी निगरानी रखेंगे। हमने उन्हें पेनिसिलिन दे दी है। मुझे माफ करना, नवाब साहब, आप क्या कहने वाले थे?"

‘क्या मैं उनसे बात कर सकता हूँ?’ बूढ़े व्यक्ति ने हिचकिचाते हुए कहा। ‘मुझे पता है कि वे मुझसे बात करना चाहेंगे।’

डॉ. भाटिया मुस्कुराए। “खैर, वह अभी भी क्लोरोफॉर्म के असर में है। अगर वह कुछ कहता भी है, तो शायद आपको उसका मतलब पूरी तरह समझ में न आए। लेकिन आपको दिलचस्प लग सकता है। दरअसल, लोगों को खुद भी अंदाजा नहीं होता कि बेहोशी की हालत में वे कितनी दिलचस्प बातें कह देते हैं। आपका बेटा अपनी बहन के बारे में ही बात करता रहा।”

नवाब साहब ने कहा, 'इम्तियाज, तुम्हें ज़ैनब को बुलाना होगा।'

‘मैं यह तुरंत कर दूंगा, अब्बा। डॉ. भाटिया, हम आपका जितना भी धन्यवाद करें कम है।’

'बिल्कुल नहीं, बिलकुल नहीं। मुझे बस यही उम्मीद है कि जिसने भी ये किया है, उसे पकड़ लिया जाए। एक छोटा सा चीरा, बस एक सेकंड का काम, और मैं आपको बता दूं, डॉक्टर खान, अगर वे उसे सीधे हमारे पास नहीं लाते, तो हम उसे बचा नहीं पाते। सच में—' वह रुक गया।

‘सचमुच, क्या?’ इम्तियाज ने तीखे स्वर में कहा।

'सचमुच, यह अजीब बात है कि जो काम एक व्यक्ति एक सेकंड में कर देता है, उसे ठीक करने में हम सात लोगों को - और इन सभी को - तीन घंटे लग जाते हैं।'

डॉ. भाटिया के विदा लेने के बाद नवाब साहब ने इम्तियाज से पूछा, ‘उन्होंने क्या कहा? फिरोज के साथ उन्होंने क्या किया?’

इम्तियाज़ ने दिलासा देने की कोशिश करते हुए कहा, 'कुछ खास नहीं हुआ, अब्बा। उन्होंने उसकी आंतों के क्षतिग्रस्त हिस्सों को काटकर स्वस्थ हिस्सों को फिर से जोड़ दिया है। लेकिन हमारे पास बहुत सारा मटेरियल है, इसलिए फ़िरोज़ को नुकसान का कोई एहसास नहीं होगा।'

दरअसल, उनका जवाब लापरवाही भरा लगा और उनके पिता को इससे कोई तसल्ली नहीं मिली।

'तो वो ठीक है?' नवाब साहब ने इम्तियाज के चेहरे को निहारते हुए कहा।

इम्तियाज़ थोड़ी देर रुके, फिर बोले: 'उनके ठीक होने की पूरी संभावना है, अब्बा। कोई जटिलता नहीं है। अब बस संक्रमण की चिंता है, और हम कुछ साल पहले की तुलना में अब इससे कहीं बेहतर तरीके से निपट सकते हैं। चिंता मत कीजिए। मुझे पूरा यकीन है कि वे ठीक हो जाएंगे। इंशाल्लाह।'

17.16

अगर फिरोज के खून के निशान सईदा बाई के गेट से कुछ ही गज की दूरी तक न पहुंचे होते, तो सब-इंस्पेक्टर अगली सुबह फिरोज की बातों का पीछा करते। जब उन्हें इसकी सूचना मिली, तो उन्होंने तुरंत कार्रवाई करने का फैसला किया। बिहारी और एक अन्य कांस्टेबल के साथ वे सईदा बाई के दरवाजे पर पहुंचे। चौकीदार, जिससे पुलिसकर्मियों ने पहले धमकी भरे लहजे में पूछताछ की थी और जो खुद उस रात की घटनाओं से परेशान और चिंतित था, ने स्वीकार किया कि उसने शाम को प्रेम निवास से नवाबजादा और कपूर साहब के साथ-साथ डॉ. बिलग्रामी को भी देखा था।

सब-इंस्पेक्टर ने कहा, 'हमें सईदा बाई से बात करनी होगी।'

'दारोगा साहब, सुबह तक इंतजार क्यों न करें?' चौकीदार ने सुझाव दिया।

'क्या तुमने मुझे सुना नहीं?' सब-इंस्पेक्टर ने फिल्मी खलनायक की तरह अपनी मूंछें संवारते हुए कहा।

चौकीदार ने दरवाजा खटखटाया और इंतजार किया। कोई जवाब नहीं आया। उसने अपने भाले के कुंद सिरे से दरवाजे पर कुछ बार खटखटाया।

बिब्बो बाहर आया, पुलिस को देखा, तुरंत दरवाजा बंद किया और कुंडी लगा दी।

सब-इंस्पेक्टर ने कहा, 'हमें तुरंत अंदर आने दो, वरना हम दरवाजा तोड़ देंगे। हमें आपसे एक हत्या के बारे में पूछताछ करनी है।'

बिब्बो ने दोबारा दरवाजा खोला। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। 'हत्या?' उसने कहा।

"हाँ, हमने कोशिश की थी। आप जानते हैं हम किस बारे में बात कर रहे हैं। इसे नकारने का कोई फायदा नहीं। हमारी त्वरित कार्रवाई के कारण नवाब का बेटा अब तक मर चुका होता। वैसे भी, हमें नहीं पता कि वह मर चुका होता। हम आपसे बात करना चाहते हैं।"

'मुझे कुछ नही पता-'

'वह आज शाम यहां थे, और कपूर भी।'

'ओह—दाग साहब,' बिब्बो ने चौकीदार को घूरते हुए कहा, जिसने कंधे उचका दिए।

'क्या सईदा बाई जाग रही हैं?'

'सईदा बेगम आराम कर रही हैं, जैसा कि ब्रह्मपुर का कोई भी सम्मानित नागरिक रात के इस समय करता है।'

सब-इंस्पेक्टर हँस पड़ा। 'किसी भी सभ्य नागरिक की तरह—' वह फिर हँसा, और कांस्टेबल भी उसके साथ हँसने लगे। 'उसे जगाओ। हमें उससे यहीं बात करनी है। जब तक कि वह पुलिस स्टेशन न आना चाहे।'

बिब्बो ने तुरंत फैसला लिया। उसने दरवाजा फिर से बंद किया और गायब हो गई। लगभग पांच मिनट बाद, जब सब-इंस्पेक्टर ने चौकीदार से कुछ सवाल पूछे, वह फिर बाहर आई।

'सईदा बेगम ऊपर आकर आपसे मिलेंगी। लेकिन उनका गला खराब है, इसलिए वह बोल नहीं सकतीं।' सईदा बाई का कमरा हमेशा की तरह

एकदम साफ-सुथरा था, फर्श पर एक साफ सफेद चादर बिछी हुई थी। न तो फलों का कटोरा था, न ही फल काटने वाला चाकू। तीनों खाकी वर्दी गुलाब के इत्र की खुशबू से बिल्कुल मेल नहीं खा रही थीं।

सईदा बाई ने जल्दी से हरे रंग की साड़ी पहन ली थी। उनके गले में दुपट्टा लिपटा हुआ था। उनकी आवाज कर्कश थी और वे बोलने से बचने की कोशिश कर रही थीं। उनकी मुस्कान हमेशा की तरह मनमोहक थी।

पहले तो उसने झगड़े की बात से इनकार किया। लेकिन जब सब-इंस्पेक्टर ने कहा कि फ़िरोज़ ने प्रेम निवास का ज़िक्र किया था, और सईदा बाई के घर पर उसकी मौजूदगी की पुष्टि न केवल चौकीदार ने की थी, जिसने घर से निकलते समय उसके लंगड़ेपन का वर्णन किया था, बल्कि खून के अनियमित निशान के भौतिक साक्ष्य से भी हुई थी, तो उसे समझ आ गया कि इनकार करना बेकार है। उसने लड़ाई होने की बात मान ली।

‘यह घटना कहाँ घटी?’

‘इसी कमरे में।’

‘यहाँ खून क्यों नहीं है?’

सईदा बाई ने कोई जवाब नहीं दिया।

‘वह हथियार क्या था?’

सईदा बाई चुप रहीं।

कृपया इन सवालों के जवाब दें। अन्यथा, पुलिस स्टेशन आकर अपना बयान दर्ज कराएं। किसी भी स्थिति में, हम आपसे कल इन बयानों की लिखित पुष्टि करने के लिए कहेंगे।

‘यह फल काटने वाला चाकू था।’

'कहाँ है?'

वह इसे अपने साथ ले गया।

‘किसने किया? हमलावर ने या पीड़ित ने?’
‘दाग साहब,’ उसने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा। उसके हाथ उसके गले पर चले गए और उसने पुलिसकर्मी की ओर गिड़गिड़ाती नज़रों से देखा।
‘प्रेम निवास के बारे में यह सब क्या है?’
बिब्बो ने बीच में दखल देते हुए कहा: 'कृपया सब-इंस्पेक्टर साहब, सईदा बेगम मुश्किल से बोल पा रही हैं। उन्होंने बहुत गाया है और पिछले कुछ दिनों से मौसम इतना खराब है, धूल और धुंध के कारण, कि उनका गला बहुत खराब हो गया है।'
‘प्रेम निवास के बारे में यह सब क्या है?’ सब-इंस्पेक्टर ने जोर देकर पूछा।
सईदा बाई ने अपना सिर हिलाया।
‘क्या कपूर वहीं रहता है?’
सईदा बाई ने सिर हिलाया।
‘यह मंत्री साहब का घर है,’ बिब्बो ने आगे कहा।
‘और यह सब बहन के बारे में क्या है?’ सब-इंस्पेक्टर ने पूछा।
सईदा बाई का शरीर एक पल के लिए अकड़ गया और वह कांपने लगी। बिब्बो ने उसे तीखी और हैरान निगाहों से देखा। सईदा बाई ने मुंह फेर लिया था। उसके कंधे हिल रहे थे और वह रो रही थी। लेकिन उसने एक शब्द भी नहीं कहा।
‘बहन के बारे में यह सब क्या है?’ पुलिसकर्मी ने जम्हाई लेते हुए दोहराया।
सईदा बाई ने अपना सिर हिलाया।
‘क्या तुम्हारा बस नहीं हुआ?’ बिब्बो चिल्लाया। ‘क्या सईदा बेगम को सताना बंद नहीं हुआ? सुबह तक इंतज़ार क्यों नहीं कर सकते? हम एसपी से इसकी शिकायत करेंगे। भले और सम्मानित नागरिकों को परेशान करना...’

सब-इंस्पेक्टर ने इस बात का ज़िक्र नहीं किया कि एसपी ने उन्हें इस मामले को अन्य मामलों की तरह ही निपटाने के लिए कहा था, लेकिन अधिक तत्परता और शीघ्रता से। उन्होंने कोई व्यंग्यात्मक टिप्पणी भी नहीं की, हालाँकि उनके मन में यह विचार आया था कि सभ्य और सम्मानित नागरिक अपने सैलून में एक-दूसरे को चाकू मार रहे हैं।

लेकिन शायद इस तरह की पूछताछ सुबह तक टाली जा सकती थी, उन्होंने सोचा। भले ही मामला पूरी तरह से स्पष्ट न हो, लेकिन अब यह उनके लिए काफी हद तक साफ हो चुका था कि महेश कपूर के छोटे बेटे मान कपूर ने नवाबजादा पर हमला किया था। लेकिन सब-इंस्पेक्टर इस बात को लेकर दुविधा में थे कि क्या उन्हें आज रात ही उसे गिरफ्तार करने की कोशिश करनी चाहिए। एक तरफ, प्रेम निवास, बैतर हाउस की तरह, पसंद बाग के प्रतिष्ठित घरों में से एक था, और महेश कपूर प्रांत के बड़े नामों में से एक थे। एक मामूली सब-इंस्पेक्टर का इतनी सुबह उस प्रतिष्ठित परिवार को जगाने के बारे में सोचना—और वह भी ऐसे उद्देश्य से —सबसे बड़ी गुस्ताखी और अपमान माना जा सकता था। लेकिन दूसरी तरफ, मामला बेहद गंभीर था। भले ही पीड़ित बच जाए, लेकिन तथ्यों से हत्या के प्रयास, संभवतः हत्या के प्रयास और निश्चित रूप से गंभीर चोट की ओर इशारा मिलता था।

उन्होंने रात में पहले ही एसपी को फोन करने के लिए कई अधिकारियों से संपर्क किया था। अब वे एसपी को जगाकर आगे के निर्देश नहीं मांग सकते थे। सब-इंस्पेक्टर के मन में एक और बात आई और उसी से उनके निर्णय का निर्धारण हुआ। ऐसे मामलों में अपराधी के घबराकर भाग जाने का खतरा होता है। उन्होंने तुरंत गिरफ्तारी करने का फैसला किया।

17.17

'घबराकर भाग जाना' वास्तव में मान की हरकत का सटीक वर्णन था।

वह घर पर नहीं था। प्रेम निवास स्थित घर के सभी लोग सुबह तीन बजे उठे। महेश कपूर अभी-अभी शहर लौटे थे और थके-हारे और चिड़चिड़े थे। पहले तो उन्होंने पुलिस को घर से बाहर निकालने का मन बना लिया। लेकिन फिर उनका गुस्सा अविश्वास में बदल गया और अंत में चिंता में। वे मान को बुलाने गए, लेकिन वह अपने कमरे में नहीं मिला। श्रीमती महेश कपूर—फिरोज के साथ हुई घटना से उतनी ही भयभीत थीं और अपने बेटे के लिए चिंतित थीं—घर में इधर-उधर भटकती रहीं, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि अगर वह मिल भी जाए तो क्या करेंगी। हालांकि, उनके पति का मन बिल्कुल स्पष्ट था। वे पुलिस के साथ सहयोग करेंगे। उन्हें आश्चर्य था कि कोई वरिष्ठ अधिकारी मान को ढूंढने उनके घर क्यों नहीं आया, लेकिन शायद देर रात और अचानक हुई घटनाओं के कारण ऐसा हुआ होगा।

उसने पुलिसकर्मी को मान के कमरे की तलाशी लेने की अनुमति दी। बिस्तर पर कोई सोया नहीं था। वहाँ किसी भी प्रकार के हथियार का कोई निशान नहीं मिला।

'क्या आपको कुछ दिलचस्प मिला?' श्री महेश कपूर ने पूछा। वे ब्रिटिश शासन के दौरान अपने और प्रेम निवास के साथ हुई तलाशी और गिरफ्तारियों के बारे में सोचते रहे।

सब-इंस्पेक्टर ने जल्दी से चारों ओर देखा, बार-बार माफी मांगी और चले गए। उन्होंने कहा, 'अगर श्रीमान कपूर वापस आते हैं, तो क्या मंत्री साहब उनसे पसंद बाग पुलिस स्टेशन आने के लिए कहेंगे? पुलिस के दोबारा यहां आने से बेहतर होगा।' महेश कपूर ने सिर हिलाया। वह हैरान थे, लेकिन शांत और व्यंग्यात्मक भाव से भरे हुए लग रहे थे।

उनके जाने के बाद, महेश कपूर ने अपनी पत्नी को यह कहकर दिलासा देने की कोशिश की कि शायद कोई गलती हो गई हो। लेकिन श्रीमती

महेश कपूर को पूरा यकीन था कि वाकई कोई भयानक घटना घटी है—और मान ने अपनी उतावलेपन में किसी तरह उसे अंजाम दिया है। वह तुरंत सिविल अस्पताल जाकर फिरोज का हालचाल जानना चाहती थीं, लेकिन महेश कपूर ने कहा कि सुबह तक इंतजार करना बेहतर होगा। वैसे भी, उनकी सेहत को देखते हुए शायद यही बेहतर था कि वह फिरोज से न मिलें।

उन्होंने कहा, 'अगर वह घर वापस आ जाता है, तो हम उसे छोड़ नहीं सकते।'

महेश कपूर ने अधीरता से कहा, 'बेवकूफी मत करो।' फिर उन्होंने सिर हिलाया। 'अब तुम्हें सोने जाना चाहिए।'

मुझे नींद नहीं आएगी।

‘अच्छा, तो फिर प्रार्थना करो,’ महेश कपूर ने अधीरता से कहा। ‘लेकिन खुद को ढके रखना। तुम्हारी छाती में कुछ गड़बड़ लग रही है। मैं सुबह डॉक्टर को बुला लूंगा।’

‘उसके लिए वकील बुलाइए, मेरे लिए डॉक्टर नहीं,’ महेश कपूर की पत्नी रोते हुए बोलीं। ‘क्या हम उसे जमानत नहीं दिलवा सकते?’

महेश कपूर ने कहा, 'उसे अभी तक गिरफ्तार नहीं किया गया है।' तभी उनके मन में एक विचार आया। आधी रात का समय होने के बावजूद उन्होंने चश्मा पहने हुए बनर्जी को फोन किया और उनसे अग्रिम जमानत के बारे में पूछा। वकील को इस अजीब समय पर जगाए जाने पर थोड़ी झुंझलाहट हुई, लेकिन जब उन्होंने महेश कपूर की आवाज पहचानी और पुलिस द्वारा बताई गई घटना का ब्यौरा सुना, तो उन्होंने मामले को समझाने की पूरी कोशिश की।

‘समस्या यह है, कपूर साहब, कि न तो हत्या का प्रयास और न ही खतरनाक हथियार से गंभीर चोट पहुँचाना जमानती अपराध है। क्या यह

संभव है कि आरोप को सामान्य गंभीर चोट या गैर इरादतन हत्या के प्रयास के रूप में माना जाए? ये तो जमानती आरोप हैं।'
'मैं समझ गया,' महेश कपूर ने कहा।
या फिर सिर्फ मामूली चोट?
नहीं, मुझे नहीं लगता कि यह संभव है।
'आपने कहा कि घर पर एक सब-इंस्पेक्टर आया था। इंस्पेक्टर भी नहीं। मैं तो हैरान हूँ।'
'हाँ, वही था।'
'शायद आपको मामले को स्पष्ट करने के लिए पुलिस उपाधीक्षक या एसपी से बात करनी चाहिए।'
महेश कपूर ने असहमति जताते हुए कहा, 'आपके स्पष्टीकरण और सुझाव के लिए धन्यवाद। मुझे खेद है कि मैंने आपको इस समय जगा दिया।'
दूसरी तरफ से थोड़ी देर की खामोशी छा गई। 'बिल्कुल नहीं, बिल्कुल नहीं। आप जब चाहें मुझे फोन कर सकते हैं।'
जब महेश कपूर अपने कमरे में लौटे तो उन्होंने अपनी पत्नी को प्रार्थना करते हुए पाया और उनका मन हुआ कि काश वे भी प्रार्थना कर पाते। वे हमेशा से अपने बेपरवाह बेटे को बहुत पसंद करते थे, लेकिन पिछले कुछ हफ्तों में ही उन्हें एहसास हुआ कि वे उससे कितना प्यार करते हैं।
तुम कहाँ हो? उसने चिढ़कर और परेशान होकर सोचा। भगवान के लिए, जो तुमने पहले ही कर दिया है, उससे भी ज़्यादा मूर्खतापूर्ण कुछ मत करना। इस विचार के साथ ही उसकी चिड़चिड़ाहट गायब हो गई और उसकी जगह अपने बेटे और अपने दोस्त के बेटे दोनों के लिए गहरी चिंता ने ले ली।
17.18
मान कोहरे में गायब हो गया और ब्रह्मपुर रेलवे स्टेशन पर फिर प्रकट

हुआ। वह जानता था कि उसे ब्रह्मपुर से निकलना है। वह नशे में था, और उसे यह भी नहीं पता था कि उसे भागना क्यों पड़ रहा है। लेकिन फ़िरोज़ ने उसे ऐसा करने को कहा था, और बिब्बो ने भी। उसने अपने मन में उस दृश्य की कल्पना की। यह भयानक था। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसने क्या किया है। उसके हाथ में चाकू था। और फिर उसका दोस्त ज़मीन पर घायल पड़ा था, खून बह रहा था। घायल? लेकिन फ़िरोज़—फ़िरोज़—वह और सईदा बाई—मान ने अपनी भावनाओं की पीड़ा को फिर से महसूस किया। उसे सबसे ज़्यादा परेशान करने वाली बात धोखा था। 'वह मेरी बहन से प्यार नहीं करता'—उसने लगभग उन्मादी शब्दों के बारे में सोचा और महसूस किया कि सईदा बाई फ़िरोज़ के प्रति कितनी आसक्त रही होंगी। और फिर उसने खुद को अपने प्यार के जाल में फँसने के लिए फटकारा, जो उसने सईदा बाई और अपने दोस्त के लिए किया था। ओह, मैं कितना मूर्ख हूँ, उसने सोचा। ओह, कितना मूर्ख। उसने अपने कपड़ों पर नज़र डाली। कहीं भी खून का निशान नहीं था—यहां तक कि उसकी बुंदी पर भी नहीं। उसने अपने हाथों को देखा।

उसने बनारस का टिकट खरीदा। वह काउंटर पर लगभग रो रहा था, और क्लर्क उसे अजीब नजरों से देख रहा था।

ट्रेन में उसने अपनी व्हिस्की की बोतल में बची हुई थोड़ी सी व्हिस्की डिब्बे में जाग रहे एक युवक को दे दी। उस युवक ने सिर हिलाकर मना कर दिया। मान ने अलार्म के हैंडल के पास लगे साइन को देखा—ट्रेन रोकने के लिए चेन खींचें—और बुरी तरह कांपने लगा। बनारस पहुंचते-पहुंचते वह सो गया। उस युवक ने उसे जगाया और यह सुनिश्चित किया कि वह ट्रेन से उतर जाए।

'मैं आपकी दयालुता को कभी नहीं भूलूंगा—कभी नहीं—' ट्रेन के रवाना होते ही मान ने कहा।

भोर हो रही थी। वह घाटों पर टहलते हुए एक भजन गा रहा था जो उसकी माँ ने उसे दस साल की उम्र में सिखाया था। फिर वह उस घर गया जहाँ उसकी मंगेतर रहती थी और दरवाजा पीटने लगा। वे भले लोग घबरा गए। जब उन्होंने मान को वहाँ देखा, तो वे बहुत क्रोधित हुए: उन्होंने उसे वहाँ से चले जाने और खुद को सबके सामने शर्मिंदा न करने के लिए कहा। इसके बाद वह उन लोगों के पास गया जिन्हें उसने पैसे उधार दिए थे। वे उससे मिलने के लिए बिल्कुल भी उत्सुक नहीं थे। मान ने उनसे कहा, 'मैंने अपने दोस्त को मार डाला है।' उन्होंने जवाब दिया, 'बकवास।'

'देख लेना—यह सब अखबारों में छपेगा,' मान ने व्याकुल होकर कहा। 'कृपया मुझे कुछ दिनों के लिए छुपा दो।'

उन्हें यह एक शानदार मजाक लगा। उन्होंने कहा, 'आप बनारस में क्या कर रहे हैं? क्या आप यहाँ व्यापार के सिलसिले में आए हैं?'

'नहीं,' मान ने कहा।

अचानक वह इसे और सहन नहीं कर सका। वह स्थानीय पुलिस स्टेशन गया और खुद को पुलिस के हवाले कर दिया।

'मैं ही वो आदमी था—मैं—' उसने कहा, उसकी आवाज़ में स्पष्टता की कमी थी।

पुलिसकर्मियों ने कुछ देर तक उसकी बात को हल्के में लिया, फिर उन्हें गुस्सा आ गया और अंत में उन्हें शक होने लगा कि कहीं उसकी बातों में कुछ सच्चाई तो नहीं है। उन्होंने ब्रह्मपुर फोन करने की कोशिश की लेकिन संपर्क नहीं हो पाया। फिर उन्होंने एक अर्जेंट टेलीग्राम भेजा। उन्होंने मान से कहा, 'कृपया प्रतीक्षा करें। अगर संभव हुआ तो हम आपको गिरफ्तार कर लेंगे।'

'हां—हां—' मान ने कहा। उसे बहुत भूख लग रही थी। उस दिन उसने बस कुछ कप चाय ही पी थी।

अंततः पुलिस को सूचना मिली कि बैतर के नवाब साहब का छोटा बेटा ब्रह्मपुर के कॉर्नवालिस रोड पर गंभीर रूप से घायल अवस्था में मिला है और मुख्य संदिग्ध मान कपूर है। पुलिस ने मान को पागल समझकर गिरफ्तार कर लिया। कुछ ही घंटों में उसे हथकड़ी पहनाकर दो कांस्टेबलों की सुरक्षा में ब्रह्मपुर वापस जाने वाली ट्रेन में बिठा दिया गया।

'मुझे हथकड़ी क्यों पहनानी है? मैंने क्या किया है?' मान ने कहा।

थाने का सिपाही मान से इतना तंग आ चुका था, उसके द्वारा पैदा किए गए बेवजह के काम से इतना परेशान था, और उसके नवीनतम और सबसे हास्यास्पद विरोध से इतना चिढ़ गया था कि वह उसे पीट-पीट कर मारना चाहता था। उसने कहा, 'ये नियम हैं।'

मान का व्यवहार कांस्टेबलों के साथ बेहतर था।

उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि अगर मैं भाग जाऊं तो आपको बहुत सतर्क रहना होगा। कहीं ऐसा न हो कि मैं खुद को छुड़ाकर ट्रेन से कूद जाऊं।'

कांस्टेबल हंस पड़े। उन्होंने कहा, 'तुम बच नहीं पाओगे। तुम्हें कैसे पता?'

उनमें से एक ने कहा, 'अरे नहीं, आप ऐसा नहीं कर सकते। हमने चाबी के छेद ऊपर की तरफ रखे हैं, ताकि आप हथकड़ी को खिड़की की सलाखों पर मारकर न खोल सकें। लेकिन अगर आपको बाथरूम जाना है, तो हमें बता दीजिए।'

दूसरे ने कहा, 'हम अपनी हथकड़ियों को लेकर बहुत सावधान रहते हैं।'

'हां, जब वे उपयोग में नहीं होते हैं तो हम उन्हें अनलॉक कर देते हैं। अन्यथा स्प्रिंग कमजोर हो सकते हैं।'

दूसरे कांस्टेबल ने कहा, 'ऐसा नहीं हो सकता।' उसने उत्सुकता से पूछा, 'तुमने खुद को पुलिस के हवाले क्यों कर दिया? क्या तुम सचमुच किसी मंत्री के बेटे हो?'

मान ने हताशा से अपना सिर हिलाया। 'हां, हां,' उसने कहा और सोने चला गया।

उसने सपने में एक विशाल और घनी नसों वाली विक्टोरिया को देखा, ठीक वैसी ही जैसी बैतर किले के भोजन कक्ष में लगी तस्वीर में थी। वह अपने राजसी वस्त्रों की परतें उतारती जा रही थी और उसे मोहक ढंग से पुकार रही थी। वह कह रही थी, 'मैंने कुछ पीछे छोड़ दिया है। मुझे वापस जाना होगा।' सपना असहनीय रूप से परेशान करने वाला था। वह जाग गया। दोनों कांस्टेबल सो रहे थे, हालांकि शाम का समय ही हुआ था। जब ट्रेन ब्रह्मपुर के पास पहुंची, तो वे सहज रूप से जाग गए और उसे पसंद बाग पुलिस स्टेशन के उन पुलिसकर्मियों के हवाले कर दिया जो प्लेटफार्म पर इंतजार कर रहे थे।

'तुम क्या करोगे?' मान ने अपने अंगरक्षकों से पूछा।

उन्होंने जवाब दिया, 'हम अगली ट्रेन से वापस आ जाएंगे।'

उनमें से एक ने कहा, 'जब आप अगली बार बनारस में हों तो हमसे जरूर मिलें।'

मान ने अपने नए अंगरक्षकों को देखकर मुस्कुराया, लेकिन वे उसकी बात मानने को तैयार नहीं थे। खासकर मूंछों वाला सब-इंस्पेक्टर बहुत गंभीर दिख रहा था। जब वे पुलिस स्टेशन पहुँचे, तो उसे एक पतला सा भूरा कंबल दिया गया और लॉकअप में डाल दिया गया। वह एक छोटी, ठंडी, गंदी कोठरी थी—बंद कमरे में फर्श पर जूट के कुछ टुकड़ों के अलावा कुछ नहीं था—न पुआल, न गद्दा, न तकिया। वहाँ बदबू आ रही थी। शौचालय की जगह कोने में एक बड़ा मिट्टी का बर्तन रखा था। कोठरी में बंद दूसरा आदमी टीबी का मरीज लग रहा था और नशे में था। उसकी आँखें लाल थीं। वह पुलिस को घूर रहा था और जब दरवाजा ज़ोर से बंद हुआ, तो उसने मान को देखा।

सब-इंस्पेक्टर ने मान से संक्षिप्त लहजे में माफी मांगी। उन्होंने कहा, 'आपको आज रात यहीं रुकना होगा। कल हम तय करेंगे कि आपको न्यायिक हिरासत में भेजा जाए या नहीं। अगर हमें आपसे सही बयान मिल जाता है तो हमें आपको यहां ज्यादा देर तक रखने की जरूरत नहीं पड़ेगी।'

मान जूट की चटाई पर ज़मीन पर बैठ गया और अपने हाथों से अपना सिर ढक लिया। एक पल के लिए उसे गुलाब के इत्र की खुशबू का एहसास हुआ और वह फूट-फूटकर रोने लगा। उसे सबसे ज़्यादा इस बात का अफ़सोस था कि आखिरी दिन आया ही क्यों। काश, वह अनभिज्ञ ही रहता, उसने सोचा। काश, उसे पता ही न होता।

17.19

फिरोज के अलावा, जो अभी भी बेहोश था, वार्ड के कमरे में दो लोग बैठे थे। एक सहायक सब-इंस्पेक्टर थे, जो ऊंघ रहे थे क्योंकि उनके पास नोट करने के लिए कुछ नहीं था; पुलिस ने उनकी उपस्थिति पर जोर दिया था और अस्पताल ने भी उनकी उपस्थिति स्वीकार कर ली थी। दूसरे नवाब साहब थे। इम्तियाज, क्योंकि वह एक डॉक्टर थे, उन्हें अंदर आने से नहीं रोका गया और वे समय-समय पर आते-जाते रहे। लेकिन नवाब साहब ही अपने बेटे के बिस्तर के पास पहरा दे रहे थे। उनके नौकर गुलाम रसूल को छुट्टी दी गई थी ताकि वह नवाब साहब के लिए भोजन और कपड़े ला सकें। रात में नवाब साहब उसी कमरे में एक पलंग पर सोते थे; उनका कहना था कि उन्हें इससे कोई परेशानी नहीं है। यहां तक कि सर्दियों में भी वे एक ही कंबल ओढ़कर सोने के आदी थे। तय समय पर, वे फर्श पर एक छोटी चटाई बिछाकर प्रार्थना करते थे।

पहले दिन फिरोज को मुलाकात के समय में भी किसी से मिलने की इजाजत नहीं थी। इम्तियाज किसी तरह ज़ैनब को अस्पताल ले जाने में

कामयाब हो गया; वह परदे में थी। जब उसने फिरोज को देखा—उसका चेहरा पीला पड़ गया था, उसके घने घुंघराले बाल माथे पर चिपके हुए थे, और उसके दाहिने हाथ के मोड़ में सलाइन ड्रिप की नली लगी हुई थी (जिसे टखने से हटाकर यहाँ लगाया गया था)—तो वह इतनी परेशान हो गई कि उसने फैसला किया कि जब तक वह ठीक नहीं हो जाता, तब तक वह अपने बच्चों को उससे मिलने नहीं लाएगी। दादाजी को इस तरह हताश और रोते हुए देखना बच्चों के लिए अच्छा भी नहीं होता। लेकिन परेशान होने के बावजूद, उसे पूरा भरोसा था कि फिरोज ठीक हो जाएगा। आमतौर पर आशावादी रहने वाला इम्तियाज ही था जो सभी संभावित जटिलताओं के बारे में सोच रहा था और चिंतित था।

ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मी की जगह आने वाला हर व्यक्ति थाने से नवाब साहब के लिए कोई न कोई खबर जरूर लाता था। अब तक उन्हें पता चल चुका था कि फिरोज को सड़क पर किसी अजनबी ने चाकू नहीं मारा था, बल्कि सईदा बाई के घर पर मान और फिरोज के बीच झगड़ा हुआ था और मान ने ही लगभग फिरोज को मार डाला था। पहले तो उन्हें इस बात पर यकीन नहीं हुआ था। लेकिन मान गिरफ्तार हो चुका था और उसने अपना जुर्म कबूल कर लिया था, इसलिए अब इस पर यकीन न करने का कोई सवाल ही नहीं था।

कभी-कभी वह उठकर तौलिए से फ़िरोज़ का माथा पोंछते। वह उसका नाम लेते, उसे जगाने के लिए नहीं, बल्कि खुद को तसल्ली देने के लिए कि नाम का मतलब अभी भी किसी जीवित व्यक्ति से है। उन्हें फ़िरोज़ का बचपन याद आता और अपनी पत्नी के बारे में सोचते, जिनके चेहरे-मोहरे उनसे बहुत मिलते-जुलते थे। ज़ैनब से भी ज़्यादा, फ़िरोज़ ही उनसे उनका जुड़ाव थे। फिर वह खुद को कोसने लगते कि उन्होंने फ़िरोज़ को सईदा बाई के यहाँ जाने से क्यों नहीं रोका। उन्हें अपनी जवानी के अनुभव

से पता होना चाहिए था कि ऐसी जगहों का आकर्षण कितना गहरा होता है। लेकिन पत्नी की मृत्यु के बाद से उनके लिए अपने बच्चों से बात करना मुश्किल हो गया था; उनकी लाइब्रेरी ने उनकी दुनिया पर पूरी तरह से कब्ज़ा कर लिया था। सिर्फ़ एक बार उन्होंने अपने सचिव को आदेश दिया था कि फ़िरोज़ को वहाँ जाने का कोई आसान बहाना न दें। काश, उन्होंने सोचा, उन्होंने फ़िरोज़ को वहाँ जाने से साफ़ मना कर दिया होता। लेकिन इससे क्या फ़ायदा होता? उन्होंने सोचा। मान की संगति में वह शायद बिना सोचे-समझे चले जाते—वह नासमझ नौजवान अपने दोस्त के पिता के आदेशों की उतनी ही परवाह नहीं करता जितनी अपने पिता की।

डॉक्टरों की बातें सुनते हुए और उनसे सलाह लेते समय इम्तियाज़ के चिंतित चेहरे को देखकर नवाब साहब को कभी-कभी ऐसा लगता था कि वे अपने बेटे को खो देंगे। फिर वे घोर निराशा से भर जाते और मन ही मन में कड़वाहट भर लेते हुए मान के लिए, यहाँ तक कि उसके परिवार के लिए भी, हर तरह की पीड़ा और कष्ट की कामना करते। वे चाहते थे कि मान को भी उतना ही कष्ट सहना पड़े जितना उन्होंने अपने बेटे को दिया था। वे समझ ही नहीं पा रहे थे कि फ़िरोज़ ने ऐसा क्या किया होगा कि जिस दोस्त को वे अपना प्रिय समझते थे, उसी ने उसे चाकू से गोद दिया। प्रार्थना करते समय उन्हें इन भावनाओं पर शर्म आती थी, लेकिन वे इन्हें नियंत्रित नहीं कर पाते थे। मान ने एक बार उनके बेटे की जान बचाई थी, यह तथ्य इतना धुंधला और वर्तमान खतरे से इतना दूर प्रतीत होता था कि लगभग अप्रासंगिक हो गया था।

सईदा बाई के साथ उनका अपना संबंध भी उनके मन में इतना गहरा बैठ गया था कि वे अब उनके बारे में खुद से कोई संदर्भ नहीं रखते थे। उन्हें नहीं पता था कि इन घटनाओं में उनकी क्या भूमिका थी और कैसे। उनके मन में उनके लिए बस हल्की सी चिंता थी, अतीत के किसी भी खुलासे

की कोई संभावना नहीं थी। उनके और उनकी बेटी, जिसे सईदा बाई अपनी बेटी मानती थीं, के लिए उन्होंने जो व्यवस्था की थी, उसे वे एक कर्तव्य मानकर स्वीकार करते थे, एक पुराने और लगभग भूले हुए पाप का आंशिक प्रायश्चित। और यह भी तय था कि सईदा बाई की ओर से लगभग चालीस साल के एक विवाहित पुरुष और पंद्रह साल की लड़की के बीच बीस साल पहले जो कुछ हुआ था, उसके बारे में किसी को कुछ नहीं बताया जाएगा। बाद में जन्मी बच्ची को कभी नहीं बताया गया कि वह सईदा बाई की छोटी बहन के अलावा कुछ और है; या कम से कम नवाब साहब को यही बताया गया था। सईदा बाई के अलावा केवल उनकी माँ ही जानती थीं कि वास्तव में क्या हुआ था, और उनकी मृत्यु को बहुत समय हो चुका था।

फिरोज अब कुछ शब्द बोल रहा था, और भले ही वे अस्पष्ट थे, लेकिन उसके पिता के लिए वे किसी चमत्कार से कम नहीं थे, मानो किसी मरे हुए व्यक्ति के शब्द हों। उन्होंने अपनी कुर्सी बिस्तर के पास खींची और फिरोज का बायां हाथ पकड़ लिया। वह हाथ गर्म और सुकून देने वाला था। पुलिसकर्मी भी सतर्क हो गया। 'नव साहब, आपका बेटा क्या कह रहा है?' उसने पूछा।

नवाब साहब ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मुझे नहीं पता, लेकिन मुझे तो यह एक अच्छा संकेत लगता है।'

'मुझे लगता है कि उसकी बहन के बारे में कुछ है,' पुलिसकर्मी ने कहा, उसकी पेंसिल एक नए पन्ने पर टिकी हुई थी।

नवाब साहब ने कहा, "आपके सत्ता संभालने से पहले वह यहाँ थी। लेकिन बेचारी, उसे उन्हें इस हालत में देखकर बहुत दुख हुआ और वह ज्यादा देर नहीं रुकी।"

'तसनीम—' यह फिरोज की आवाज थी।

नवाब साहब ने सुना और चौंक गए। यह उसका नाम था, सईदा बाई की बेटी का नाम। उन्होंने यह नाम अत्यंत कोमल भाव से बोला था।

पुलिसकर्मी फिरोज की कही हर बात को लिखता रहा।

नवाब साहब अचानक भयभीत होकर ऊपर देखने लगे। एक छिपकली अनियमित रूप से रेंगते हुए, रुक-रुक कर दीवार पर चढ़ रही थी। वे उसे टकटकी लगाकर देखते रह गए।

'तसनीम—'

नवाब साहब ने बड़ी धीमी आह भरी, मानो साँस लेना और छोड़ना अचानक कष्टदायक हो गया हो। उन्होंने फ़िरोज़ का हाथ छोड़ा और अनजाने में अपने दोनों हाथ आपस में जोड़ लिए। फिर उन्हें अपने बगल में गिरा दिया।

डर के मारे उसने शब्दों को जोड़ने की कोशिश की। उसे सबसे पहले लगा कि फ़िरोज़ को किसी तरह सच का पता चल गया है, या सच का कुछ हिस्सा पता चल गया है। इस विचार से उसे इतना दर्द हुआ कि उसे कुर्सी पर पीछे झुककर आँखें बंद करनी पड़ीं। वह अपने बेटे के आँखें खोलने और उसे अपने पास बैठे देखने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था। लेकिन अब यह सोच ही डरावनी लग रही थी। जब उसकी आँखें खुलेंगी और वह मुझे यहाँ बैठा पाएगा, तो वह मुझसे क्या कहेगा या मैं उससे क्या कहूँगा?

फिर उसे पुलिसकर्मी के कर्तव्यपरायणतापूर्वक नोट्स बनाने का ख्याल आया। अगर कभी कोई और सच्चाई के टुकड़ों को जोड़कर देख ले तो क्या होगा? या अगर उन्हें उस अतीत के बारे में पता चल जाए जिसने फ़िरोज़ को इसके बारे में बताया था? लंबे समय से मृत बातें कब्र से उठ खड़ी होंगी; और वे बातें जो इतनी कम जानी जाती थीं कि लगभग अपना अस्तित्व खो चुकी थीं, पूरी दुनिया के लिए चर्चा का विषय बन जाएंगी।

लेकिन शायद किसी ने कुछ कहा ही नहीं था। शायद फ़िरोज़ को कुछ पता ही नहीं था। नवाब साहब ने सोचा कि शायद अपने ही अपराधबोध में उन्होंने कुछ निर्दोष टुकड़ों को जोड़कर एक भयानक कहानी बना दी थी। शायद फ़िरोज़ की मुलाक़ात सईदा बाई के यहाँ ही हुई थी।

'अल्लाह के नाम पर, जो अत्यंत दयालु और कृपालु है,' उसने जल्दी से कहना शुरू किया।

समस्त प्राणियों के स्वामी, ईश्वर की स्तुति हो।

अत्यंत दयालु, अत्यंत करुणामय,

विनाश के दिन का स्वामी।

हम केवल तेरी ही सेवा करते हैं; केवल तुझसे ही सहायता की प्रार्थना करते हैं।

हमें सीधे रास्ते पर ले चलो—

नवाब साहब रुक गए। अगर सच में फ़िरोज़ को पता नहीं था, तो इसमें राहत की कोई बात नहीं थी। उसे पता होना ही था। उसे बताया जाना ही था। दूसरा विकल्प सोचना भी बहुत भयानक था। और उसे बताने की ज़िम्मेदारी उन्हीं की थी।

17.20

वरुण स्टेट्समैन अखबार में रेसिंग के नतीजे बड़े चाव से पढ़ रहा था। सविता की गोद में बैठी उमा ने उसके बालों का एक गुच्छा पकड़ रखा था और उसे खींच रही थी, लेकिन इससे उसका ध्यान नहीं भटका। उसकी जीभ होठों के बीच से बाहर निकली हुई थी।

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'बड़ी होकर ये चुगलखोर बनेगी। छोटी सी चुगलखोर। हम किसकी चुगली करेंगे? किसकी चुगली करेंगे? इसकी छोटी सी जीभ तो देखो।'

'आह!' वरुण ने कहा।

‘अरे नहीं, उमा,’ सविता ने हल्के से डांटते हुए कहा। ‘माँ, मुझे वो बहुत परेशान करती है। वैसे तो वो बहुत अच्छे स्वभाव की है, पर कल रात तो लगातार रोती रही। फिर आज सुबह मैंने देखा कि वो भीगी हुई थी। उसके नखरे और असली आँसू में फर्क कैसे किया जाए?’

श्रीमती रूपा मेहरा उमा के खिलाफ कुछ भी सुनने को तैयार नहीं थीं। उन्होंने कहा, 'कुछ बच्चे दो साल की उम्र तक रात में कई बार रोते हैं। शिकायत करने का अधिकार केवल उनके माता-पिता को है।'

अपर्णा ने अपनी मां से कहा: 'मैं रोने वाली बच्ची तो नहीं हूं, हूं क्या?'

‘नहीं, प्यारे,’ मीनाक्षी ने इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज़ के पन्ने पलटते हुए कहा। ‘अब बच्चे के साथ खेलो, क्यों नहीं?’

मीनाक्षी जब भी इस मामले पर विचार करती, तब भी वह यह नहीं समझ पाती थी कि उमा इतनी चुस्त-दुरुस्त कैसे हो गई, जबकि उसका जन्म ब्रह्मपुर के एक अस्पताल में हुआ था, जो मीनाक्षी के अनुसार सेप्टीसीमिया से बुरी तरह ग्रस्त था।

अपर्णा ने अपना सिर एक तरफ झुकाया, जिससे उसकी दोनों आंखें एक सीधी रेखा में आ गईं। यह देखकर बच्ची को हंसी आ गई और उसने बड़ी सी मुस्कान दी। साथ ही उसने वरुण के बाल एक बार फिर खींचे।

वरुण ने मन ही मन बुदबुदाते हुए कहा, 'क्रैकनेल ने फिर कमाल कर दिया। ईस्टर्न सी ने किंग जॉर्ज VI कप में जीत हासिल की। सिर्फ आधे लेंथ से।'

उमा ने कागज को पकड़ा और उसका एक हिस्सा अपनी ओर खींच लिया। वरुण ने उसकी पकड़ छुड़ाने की कोशिश की। उमा ने उसकी एक उंगली पकड़ ली।

प्राण ने पूछा, 'क्या तुमने विजेता पर दांव लगाया था?'

‘नहीं,’ वरुण ने उदास स्वर में कहा। ‘क्या पूछने की ज़रूरत है? बाकी सब

तो भाग्यशाली हैं। मेरा घोड़ा ऑर्केड्स और फेयर रे के बाद चौथे स्थान पर आया।'

लता ने कहा, 'कितने अजीब नाम हैं!'

मीनाक्षी ने आलस भरे लहजे में कहा, 'ओर्केड्स ओरिएंट लाइन की नावों में से एक है। मैं इंग्लैंड जाने के लिए बहुत उत्सुक हूँ। मैं ऑक्सफोर्ड में अमित के कॉलेज का दौरा करूंगी। और एक ड्यूक से शादी करूंगी।'

अपर्णा ने अपना सिर सीधा किया। वह सोचने लगी कि ड्यूक आखिर होता क्या है।

श्रीमती रूपा मेहरा मीनाक्षी की बेवकूफी भरी हरकतों को बिल्कुल पसंद नहीं करती थीं। उनका मेहनती बड़ा बेटा परिवार का भरण-पोषण करने के लिए दिन-रात मेहनत कर रहा था, और उसकी अनुपस्थिति में उसकी नासमझ पत्नी भद्दे मजाक कर रही थी। लता पर उसका बुरा प्रभाव पड़ रहा था।

'आप तो पहले से ही शादीशुदा हैं,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा।

'ओह, हाँ, मैं कितनी मूर्ख थी,' मीनाक्षी ने कहा। उसने आह भरी। 'काश कुछ रोमांचक घटित होता। कहीं कुछ नहीं होता। और मैं 1952 में कुछ होने की बहुत उम्मीद कर रही थी।'

'खैर, यह एक लीप वर्ष है,' प्राण ने उत्साहपूर्वक कहा।

वरुण रेसिंग के नतीजे पढ़कर दूसरे पन्ने पर पहुंचा। अचानक वह इतने हैरान होकर बोला, 'हे भगवान!' कि सब लोग उसकी तरफ मुड़ गए।

'प्राण, तुम्हारे भाई को गिरफ्तार कर लिया गया है।'

प्राण की पहली प्रतिक्रिया इसे एक और घटिया मज़ाक समझने की थी, लेकिन वरुण की आवाज़ में कुछ ऐसा था जिसने उसे कागज़ उठाने के लिए मजबूर कर दिया। उमा ने भी उसे छीनने की कोशिश की, लेकिन सविता ने उसे रोक दिया। जैसे ही प्राण ने 'ब्रह्मपुर, 5 जनवरी' की कुछ

पंक्तियाँ पढ़ीं, उसका चेहरा तनावग्रस्त हो गया।
'यह क्या है?' सविता, लता और श्रीमती रूपा मेहरा ने लगभग एक साथ पूछा। मीनाक्षी ने भी हैरानी से अपना सिर उठाया।
प्राण ने घबराहट में अपना सिर इधर-उधर हिलाया। उसने चुपचाप फिरोज पर हुए हमले के बारे में पढ़ा और यह भी कि उसकी हालत अभी भी गंभीर है। खबर उसकी कल्पना से भी कहीं ज़्यादा बुरी थी। लेकिन ब्रह्मपुर से उसे सूचित करने, चेतावनी देने या बुलाने के लिए कोई फ़ोन या टेलीग्राम नहीं आया था। शायद उसके पिता अभी भी अपने निर्वाचन क्षेत्र में चुनाव प्रचार कर रहे हों। नहीं, प्राण ने सोचा। उन्हें कुछ ही घंटों में खबर मिल जाती और वे ब्रह्मपुर वापस आ जाते। या शायद उन्होंने कलकत्ता में फ़ोन करने की कोशिश की हो और असफल रहे हों।
उन्होंने सविता से कहा, 'हमें तुरंत ब्रह्मपुर के लिए निकलना होगा।'
'लेकिन आखिर हुआ क्या है, डार्लिंग?' सविता ने बहुत घबराकर पूछा। 'उन्होंने मान को गिरफ्तार नहीं किया? और किसलिए? इसका क्या मतलब है?'
प्राण ने कुछ पंक्तियाँ ज़ोर से पढ़ीं, अपने माथे पर हथेली मारी और बोला: 'बेवकूफ—बेचारा, नासमझ, पागल बेवकूफ! बेचारी अम्माजी। बाओजी हमेशा कहते आए हैं—' वह रुक गया। 'माँ, लता—आप दोनों यहीं रहें—'
'बिल्कुल नहीं, प्राण,' लता ने बड़ी चिंता से कहा। 'वैसे भी हमें कुछ दिनों में वापस लौटना था। हम सब साथ-साथ यात्रा करेंगे। कितना बुरा हुआ। बेचारा मान—मुझे यकीन है कि कोई न कोई वजह जरूर होगी—वह ऐसा नहीं कर सकता था। जरूर कोई न कोई कारण होगा—'
श्रीमती रूपा मेहरा, पहले श्रीमती महेश कपूर और फिर नवाब साहब के बारे में सोचते हुए, उनकी आँखों में आँसू आ गए। लेकिन वे जानती थीं

कि आँसू बहाने से कोई फायदा नहीं होगा, इसलिए उन्होंने बड़ी मुश्किल से खुद को संभाला।

प्राण ने कहा, 'हम सीधे स्टेशन जाएंगे और ब्रह्मपुर मेल का टिकट लेने की कोशिश करेंगे। हमारे पास सामान पैक करने के लिए सिर्फ डेढ़ घंटा है।'

उमा खुशी से झूम उठी और एक निरर्थक गीत गाने लगी। मीनाक्षी ने सामान पैक करते समय उसे पकड़ने और ऑफिस में अरुण को फोन करने की जिम्मेदारी ली।

17.21

जब फ़िरोज़ को बेहोशी का असर खत्म हुआ, तो उसके पिता सो रहे थे। पहले तो उसे समझ नहीं आया कि वह कहाँ है—फिर वह हिला, और उसके पेट में तेज़ दर्द हुआ। उसने अपनी बांह में लगी नली देखी। उसने अपना सिर दाईं ओर घुमाया। वहाँ खाकी वर्दी पहने एक पुलिसकर्मी उसके बगल में एक नोटबुक लिए कुर्सी पर सो रहा था। एक धुंधली बत्ती की रोशनी उसके सोते हुए चेहरे पर पड़ रही थी।

फ़िरोज़ ने अपने होंठ दबाए और इस दर्द, इस कमरे और यहाँ होने के कारण को समझने की कोशिश की। कोई लड़ाई हुई थी—मान के पास चाकू था—उसे चाकू मारा गया था। तसनीम भी कहीं न कहीं इसमें शामिल थी। किसी ने उसे शॉल से ढक दिया था। उसकी छड़ी खून से लथपथ थी। फिर कोहरे में से एक तांगा निकला। बाकी सब कुछ अंधेरा था।

लेकिन अपने पिता का चेहरा देखकर वह बहुत विचलित हो गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा है। किसी ने कुछ कहा था—क्या कहा था, यह उसे उस समय याद नहीं आ रहा था—उसके पिता के बारे में कुछ। जो कुछ हुआ था, उसकी याददाश्त किसी अनछुए महाद्वीप के नक्शे जैसी थी—किनारे केंद्र से ज़्यादा साफ़ थे। फिर भी उस केंद्र में

कुछ ऐसा था जिससे वह पास आते ही पीछे हट जाता था। सोचना उसके लिए एक प्रयास था, और वह बार-बार एक शांत अंधेरे में डूब जाता और फिर वर्तमान में लौट आता।

पीठ के बल लेटे हुए फ़िरोज़ ने अपने सामने की दीवार के ऊपरी हिस्से पर एक छिपकली देखी—जो इस वार्ड के स्थायी निवासियों में से एक थी। फ़िरोज़ सोचने लगा कि छिपकली होना कैसा होता होगा—यह कैसी अजीब सतहों पर रहती होगी, और इसे एक दिशा में चलने के लिए दूसरी दिशा की तुलना में ज़्यादा मेहनत करनी पड़ती होगी। वह अभी भी छिपकली को ही घूर रहा था कि उसने पुलिसकर्मी को कहते सुना, 'अरे साहब, आप जाग गए।'

'हां,' फ़िरोज़ ने खुद को कहते सुना। 'मैं जाग गया हूँ।'

क्या आप बयान देने के लिए पर्याप्त रूप से स्वस्थ महसूस कर रहे हैं?

'बयान?' फ़िरोज़ ने कहा।

'जी हां,' पुलिसकर्मी ने कहा। 'आपके हमलावर को गिरफ्तार कर लिया गया है।'

फ़िरोज़ ने दीवार की ओर देखा। उसने कहा, 'मैं थक गया हूँ। मुझे लगता है कि मैं थोड़ी देर और सो जाऊँगा।'

नवाब साहब अपने बेटे की आवाज सुनकर जाग गए थे। उन्होंने चुपचाप फिरोज की ओर देखा, और फिरोज ने उनकी ओर। पिता अपने बेटे से विनती करते प्रतीत हो रहे थे, जबकि बेटा असंतुष्ट भाव से ध्यान मग्न था। फिर उसने कुछ देर के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं, जिससे नवाब साहब अचंभित और व्याकुल रह गए।

पुलिसकर्मी ने कहा, 'मुझे लगता है कि वह एक घंटे में स्पष्ट रूप से बोल पाएगा। जल्द से जल्द बयान लेना महत्वपूर्ण है।'

नवाब साहब ने कहा, 'कृपया उन्हें परेशान न करें। वे बहुत थके हुए लग

रहे हैं और उन्हें आराम करने की जरूरत है।'
नवाब साहब को नींद नहीं आई। थोड़ी देर बाद वे उठ गए और कमरे में इधर-उधर टहलने लगे। फ़िरोज़ गहरी नींद में सो रहा था और उसने किसी का नाम नहीं लिया। लगभग एक घंटे बाद वह फिर जाग गया।
'अब्बा—' उसने कहा।
'जी हां, बेटे।'
'अब्बा—कुछ तो है—'
उनके पिता चुप रहे।
'यह सब क्या है?' फिरोज ने अचानक कहा। 'क्या मान ने मुझ पर हमला किया?'
'ऐसा लगता है। उन्होंने आपको कॉर्नवालिस रोड पर पाया। क्या आपको याद है कि क्या हुआ था?'
मैं कोशिश कर रहा हूँ—
पुलिसकर्मी ने बीच में ही टोकते हुए कहा: 'क्या आपको याद है कि सईदा बाई के यहाँ क्या हुआ था?'
फ़िरोज़ ने देखा कि नाम सुनते ही उसके पिता चौंक गए, और अचानक उसे वह तीखापन दिखाई दिया जिसे वह छूने, समझने और याद करने की कोशिश कर रहा था। वह अपने पिता की ओर मुड़ा और दर्द और निंदा भरे भाव से उन्हें देखा, जो उसके दिल को चीर गया। बूढ़ा उसकी निगाहें नहीं मिला सका और मुँह फेर लिया।
17.22
सईदा बाई विपत्ति के समय चुप नहीं बैठी थीं। मान के हमले से उन पर और फ़िरोज़ पर हुए भयानक आघात और सदमे के बावजूद, शुरुआती सदमे और प्रतिक्रिया के बाद उन्होंने और बिब्बो ने भी अपना धैर्य बनाए रखा। घर की रक्षा करना ज़रूरी था और मान को उसके कर्मों के परिणाम

से बचाना था। कानून चाहे जो भी फैसला करे, सईदा बाई जानती थीं कि मान अपराधी नहीं था। और उन्होंने मान की इस दुखद हिंसक घटना के लिए खुद को और अपनी उत्तेजना को भी दोषी ठहराया।

डॉ. बिलग्रामी द्वारा जांच किए जाने के बाद, तसनीम लगभग अपनी चिंता भूल गई थी। वह जानती थी कि वह जीवित रहेगी; उसकी आवाज का क्या होगा, यह ईश्वर के हाथों में था। लेकिन तसनीम को एक ठंडे डर का साया महसूस हो रहा था। जिस बच्ची को उसने भय में गर्भ धारण किया था, शर्म से पाला था और पीड़ा सहकर जन्म दिया था, उसे उस स्वर्गिक झरने का नाम दिया गया था जो अतीत को मिटाकर पीड़ा को शांति में बदल सकता था। फिर भी अब वही अतीत और वही पीड़ा वर्तमान के द्वार पर दस्तक दे रही थी। सईदा बाई एक बार फिर अपनी माँ की सलाह और उनके सहारे के लिए तरस रही थी। मोहसिना बाई सईदा से कहीं अधिक दृढ़ और स्वतंत्र महिला थीं; उनके साहस और दृढ़ता के बिना सईदा बाई अब तक तरबूज के बाजार की एक बूढ़ी और गरीब वेश्या बनकर रह जातीं—और तसनीम उसी का एक युवा रूप।

उस पहली रात, पुलिस के आने या नवाब साहब के संदेश की आधी उम्मीद में, और भय व पीड़ा से व्याकुल होकर, वह घर में ही रही, यह सुनिश्चित करते हुए कि उसके कमरे में, खून से सनी सीढ़ियों पर, वास्तव में घर में हर जगह सब कुछ ठीक है। उसने खुद से कहा, सो जाओ; सो जाओ; और अगर नींद न आए, तो बिस्तर पर लेटे रहो और ऐसा दिखावा करो कि यह बस एक और रात है। लेकिन वह बेचैन थी। अगर संभव होता, तो वह घुटनों के बल बैठकर अपने दरवाजे तक जाने वाली सड़क पर खून की हर एक बूंद को साफ कर देती।

जिस आदमी के शरीर से यह खून बहा था, और जिसका चेहरा उसे उसकी माँ की याद नहीं दिलाता था, जिसे उसने कभी नहीं देखा था,

बल्कि सबसे ज़्यादा परेशान करने वाली बात यह थी कि उसके पिता की याद दिलाता था, सईदा बाई को उसके लिए कुछ भी महसूस नहीं हुआ, बस एक ठंडक सी महसूस हुई, भले ही वह उसकी बेटी का सौतेला भाई था। उसे इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं थी कि वह ज़िंदा रहे या मर जाए, सिवाय इसके कि इससे मान पर क्या असर पड़ेगा। फिर भी, जब पुलिस आई थी, तो वह डर के मारे गवाही देने पर मजबूर हो गई थी, जो —अब उसे यह बात साफ़-साफ़ समझ आ रही थी—उसके प्यारे दाग साहब को फांसी तक ले जा सकती थी।

मान, जिसने लगभग उसे मार ही डाला था, के लिए उसकी चिंता, उसकी भयभीत कोमलता की कोई सीमा नहीं थी—पर वह क्या कर सकती थी? और अब वह अपनी माँ की तरह सोचने लगी। वह किसे जानती थी? और कितना जानती थी? और वे किसे जानते थे? और कितना जानते थे? जल्द ही बिलग्रामी साहब सईदा बाई से एक उभरते हुए राज्य मंत्री, गृह विभाग के एक संयुक्त सचिव और ब्रह्मपुर के कोतवाल तक अप्रत्यक्ष संदेशों के दूत बन गए। और बिलग्रामी साहब ने स्वयं अपने संपर्कों का विवेकपूर्ण और निरंतर उपयोग अपने प्रतिद्वंद्वी को बचाने के उदार प्रयास में किया—निरंतर इसलिए, क्योंकि मान के साथ कुछ भयानक होने पर उन्हें सईदा बाई के स्वास्थ्य और मनोबल की चिंता थी, और विवेकपूर्ण इसलिए, क्योंकि उन्हें डर था कि सईदा बाई अपने प्रभाव के जाल को बहुत अधिक फैलाने के प्रयास में किसी विरोधी शक्ति को इसे पूरी तरह से नष्ट करने के लिए उकसा सकती हैं।

17.23

'प्रिया, मुझसे वादा करो कि तुम अपने पिता से बात करोगी।'

इस बार वीना ने छत पर जाने का सुझाव दिया था। नीचे गोयल परिवार में उसे जो संतुष्टि, घृणा और दया भरी निगाहों का सामना करना पड़ा था,

वह उन्हें सहन नहीं कर पा रही थी। दोपहर का समय सर्द था और दोनों ने शॉल ओढ़ रखी थी। आसमान स्लेटी रंग का था, सिवाय गंगा के उस पार के एक हिस्से के जहाँ हवा से उड़कर रेत एक गंदी पीली-भूरी धुंध में तब्दील हो गई थी। वीना फूट-फूटकर रो रही थी और प्रिया से विनती कर रही थी।

‘लेकिन इससे क्या फायदा होगा?’ प्रिया ने अपनी सहेली और खुद के चेहरे से आंसू पोंछते हुए कहा।

'अगर इससे मान की जान बच जाती है तो दुनिया की सारी खुशियां भी।'

‘तुम्हारे पिताजी क्या कर रहे हैं?’ प्रिया ने पूछा। ‘क्या उन्होंने किसी से बात नहीं की?’

वीना ने कड़वाहट से कहा, “मेरे पिता को अपने परिवार से ज़्यादा अपने उसूलों वाले आदमी की छवि की फ़िक्र है। मैंने उनसे बात की; आपको क्या लगता है उसका कोई असर हुआ? उन्होंने मुझसे कहा कि मुझे अपनी माँ के बारे में सोचना चाहिए, मान के बारे में नहीं। अब जाकर मुझे समझ आया कि वो असल में कितने बेरहम इंसान हैं। मान को आठ बजे फाँसी दी जाएगी और वो नौ बजे अपनी फाइलों पर हस्ताक्षर कर रहे होंगे। मेरी माँ बहुत परेशान हैं। प्रिया, मुझसे वादा करो कि तुम अपने पिता से बात करोगी, वादा करो। तुम उनकी इकलौती संतान हो, वो तुम्हारे लिए कुछ भी करेंगे।”

‘मैं उससे बात करूंगी,’ प्रिया ने कहा। ‘मैं वादा करती हूं।’

वीना को जो पता नहीं था—और प्रिया उसे जो बताने की हिम्मत नहीं कर पाई—वह यह था कि वह अपने पिता से पहले ही बात कर चुकी थी, और गृह मंत्री ने उसे बताया था कि वे इस मामले में दखल नहीं देंगे। उनके शब्दों में, यह एक मामूली मामला था: एक कुख्यात प्रतिष्ठान में एक बदमाश दूसरे को जान से मारने की कोशिश कर रहा था। उनके पिता जो

थे, उसका इस मामले से कोई लेना-देना नहीं था। यह किसी राजकीय मामले से संबंधित नहीं था; इसमें दखल देने का कोई बहाना नहीं था; स्थानीय पुलिस और मजिस्ट्रेट इसे ठीक से संभाल सकते थे। उन्होंने अपनी बेटी को इस तरह से अपने प्रभाव का इस्तेमाल करने की कोशिश करने के लिए हल्के से फटकार भी लगाई थी, और प्रिया, जिसे अपने पिता से फटकार सुनने की आदत नहीं थी, दुखी और शर्मिंदा दोनों महसूस कर रही थी।

17.24

महेश कपूर फोन पर दिए गए सुझाव को मानने को तैयार नहीं थे: जांच अधिकारी, यानी पसंद बाग पुलिस स्टेशन के प्रभारी सब-इंस्पेक्टर पर सीधे या ऊपर से दबाव डालने की कोशिश करना। ऐसा करना उनके स्वभाव के विपरीत था। दरअसल, उनके अपने जमींदारी उन्मूलन और भूमि सुधार अधिनियम का न्यायसंगत कार्यान्वयन इस बात पर निर्भर करता था कि वे जमींदारों को ग्राम अभिलेखपालों और स्थानीय अधिकारियों पर अपना प्रभाव डालने से कितना रोक पाते हैं। उन्हें यह बिल्कुल पसंद नहीं था कि राजनेता झा रुधिया कस्बे के पास प्रशासन को कमजोर कर रहे थे, और वे खुद कभी भी ऐसा करने के लिए प्रेरित नहीं होना चाहते थे। इसलिए जब उनकी पत्नी ने उनसे पूछा कि क्या वे 'किसी से, यहां तक कि अग्रवाल से भी बात नहीं कर सकते', तो महेश कपूर ने उन्हें अचानक चुप रहने को कहा।

पिछले दो दिनों का सदमा और दुख उनके लिए असहनीय था। जब उन्हें फिरोज के अस्पताल में भर्ती होने और मान के पुलिस लॉकअप में होने की याद आती, तो उन्हें नींद नहीं आती थी। फिरोज के होश में आने के बाद, उन्हें कुछ ही लोगों से मिलने की अनुमति दी गई थी—जिनमें उनकी चाची आबिदा और बहन ज़ैनब शामिल थीं। श्रीमती महेश कपूर ने अपने

पति से नवाब साहब से बात करने की गुहार लगाई थी—ताकि वे अपना दुख और खेद व्यक्त कर सकें और फिरोज से मिलने की अनुमति मांग सकें।

उन्होंने ऐसा करने की कोशिश की थी। लेकिन नवाब साहब अस्पताल में थे, इसलिए फोन पर उपलब्ध नहीं थे। उनके क्षमाप्रार्थी, शर्मिंदा और बेहद विनम्र सचिव मुर्तजा अली ने स्पष्ट कर दिया था कि नवाब साहब ने अपने शब्दों से संकेत दिया था कि इस समय मान के परिवार का आना स्वीकार्य नहीं होगा।

इस बीच, अफवाहों का बाजार गर्म था। कलकत्ता के अखबारों में छपा महज़ एक पैराग्राफ ब्रह्मपुर के प्रेस और चर्चा का मुख्य विषय बन गया था, और चुनाव और चुनाव प्रचार की चकाचौंध के बावजूद, यह सिलसिला कई दिनों तक जारी रहा। पुलिस को अभी भी सईदा बाई के प्रतिष्ठान और नवाब साहब के प्रतिष्ठान के बीच संबंध की जानकारी नहीं थी। उन्हें मासिक भत्ते के बारे में भी पता नहीं चला था। लेकिन बिब्बो को धीरे-धीरे सब समझ आने लगा था, और वह तसनीम के वंश के बारे में कुछ गुप्त और गोपनीय बातें अपने कुछ करीबी दोस्तों को बताने से खुद को रोक नहीं पाई। और हिंदी प्रेस का एक पत्रकार, जो सनसनीखेज खबरें फैलाने के लिए मशहूर था, उसने एक बूढ़ी और सेवानिवृत्त वेश्या से पूछताछ की, जो सईदा बाई की मां को उन दिनों से जानती थी जब वे तरबूज का बाजार में एक संयुक्त प्रतिष्ठान चलाती थीं। इस बूढ़ी औरत को पैसे और और अधिक पैसे के लालच में सईदा बाई के शुरुआती जीवन के बारे में सब कुछ बताने के लिए राजी कर लिया गया। उसके कुछ तथ्य सही थे, कुछ बढ़ा-चढ़ाकर बताए गए थे, कुछ गलत थे, लेकिन पत्रकार के लिए लगभग सभी रोचक थे। उसने शांत और अधिकारपूर्वक कहा कि सईदा बाई ने चौदह या पंद्रह वर्ष की आयु में एक शराबी

प्रतिष्ठित नागरिक द्वारा बलात्कार किए जाने पर अपनी कौमार्यता खो दी थी; यह बात सईदा बाई की माँ ने उसे बताई थी। इस विशेष कथन को कुछ हद तक विश्वसनीय बनाने वाली बात यह थी कि उस बूढ़ी महिला ने स्वीकार किया कि वह उस व्यक्ति को नहीं जानती थी। बस, उसके अपने विचार थे।

छपे हुए हर तथ्य या काल्पनिक तथ्य के लिए, दस अफवाहें थीं जो सड़े हुए आम पर मंडराने वाले ततैयों की तरह मंडराती रहती थीं। दोनों परिवार फुसफुसाहट भरी आवाज़ों और उन उंगलियों के इशारों से नहीं बच पाए जो हर जगह उनका पीछा करती थीं।

वीना, कुछ हद तक इस कठिन समय में अपनी माँ के साथ रहने के लिए और कुछ हद तक अपने दयालु लेकिन लालची पड़ोसियों से बचने के लिए, कुछ दिनों के लिए प्रेम निवास में रहने चली गई। उसी शाम प्राण और कलकत्ता के लोग ब्रह्मपुर लौट गए।

गिरफ्तारी के चौबीस घंटे के भीतर ही मान को स्थानीय मजिस्ट्रेट के सामने पेश कर दिया गया। उसके पिता ने जमानत या कम से कम लॉक-अप से किसी उचित जेल में स्थानांतरण के लिए जिला न्यायालय के वकील को नियुक्त किया था, लेकिन जिन आरोपों की जांच चल रही थी, उनके आधार पर जमानत संभव नहीं थी और पुलिस ने इसका विरोध किया। जांच अधिकारी, जो हथियार न मिलने और मान की इस और अन्य विवरणों के बारे में भूलने की प्रवृत्ति से निराश थे, ने आगे पूछताछ के लिए मान को कुछ और दिनों तक पुलिस हिरासत में रखने का अनुरोध किया। मजिस्ट्रेट ने पुलिस को उसे दो और दिनों तक लॉक-अप में रखने की अनुमति दे दी, जिसके बाद उसे जिला जेल की अपेक्षाकृत बेहतर व्यवस्था में स्थानांतरित कर दिया जाएगा।

महेश कपूर मान से दो बार पुलिस स्टेशन में मिलने गए थे। मान ने अपनी

कोठरी में गंदगी, असुविधा या ठंड जैसी किसी भी बात की शिकायत नहीं की। वह इतना सदमे में और इतना पश्चाताप से भरा हुआ लग रहा था कि उसके पिता उसे अपने किए पर, फिरोज के लिए, नवाब साहब के लिए और वास्तव में महेश कपूर के भविष्य के लिए भी, और आगे फटकार लगाने की हिम्मत नहीं कर पाए।

मान फिरोज के बारे में जानकारी मांगता रहा—उसे डर था कि कहीं उसकी मौत न हो जाए। उसने अपने पिता से पूछा कि क्या वे अस्पताल में उससे मिलने गए थे, और महेश कपूर को यह स्वीकार करना पड़ा कि उन्हें इसकी अनुमति नहीं थी।

महेश कपूर ने अपनी पत्नी से कहा था कि जब तक मान जेल में न हो, तब तक वह उससे मिलने न जाए— उन्हें लगा कि पुलिस लॉकअप की हालत देखकर उनकी पत्नी बहुत परेशान हो जाएंगी। लेकिन आखिरकार श्रीमती महेश कपूर से और बर्दाश्त नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि अगर ज़रूरी हुआ तो वह अकेले ही चली जाएंगी। आखिरकार गुस्से में आकर उनके पति मान गए और प्राण से उन्हें वहां ले जाने को कहा।

उसने मान को देखा और रो पड़ी। उसके जीवन में बीते कुछ दिनों का अपमान उसके सामने फीका पड़ गया था। प्रेम निवास के दरवाजे पर पुलिस, सबूतों की तलाश, उसके प्रियजन की गिरफ्तारी—ये सब बातें उसे ब्रिटिश शासन के समय से ही पता थीं। लेकिन जिस व्यक्ति को राजनीतिक कैदी बनाकर जेल भेजा गया था, उस पर उसे ज़रा भी शर्म नहीं आई। न ही उसे कभी ऐसी गंदगी और बदहाली सहनी पड़ी थी।

उसके लिए सबसे अधिक पीड़ादायक बात यह थी कि उसे फ़िरोज़ से मिलने और उसके प्रति और उसके परिवार के प्रति महसूस किए जाने वाले भयानक अपराधबोध और दुख को अपने स्नेह से कुछ हद तक व्यक्त करने की अनुमति नहीं दी गई थी।

मान अब उसके सुंदर बेटे जैसा नहीं दिखता था, बल्कि एक गंदा और अस्त-व्यस्त आदमी जैसा दिखता था, जिसकी शक्ल शर्म और हताशा बयां करती थी।

उसने उसे गले लगाया और ऐसे रोई जैसे उसका दिल टूट जाएगा। मान भी रोने लगा।

17.25

अपने पछतावे और पश्चाताप के बीच भी, मान को सईदा बाई से मिलना ज़रूरी लग रहा था। वह अपने पिता से इस बारे में बात नहीं कर सकता था, और उसे समझ नहीं आ रहा था कि किससे सईदा बाई को संदेश पहुँचाने को कहे। उसे लगा कि सिर्फ़ फ़िरोज़ ही समझ सकता है। जब उसकी माँ कार से प्रेम निवास लौटी, तो प्राण कुछ मिनटों के लिए वहीं रुका रहा। मान ने उससे कहा कि वह किसी भी तरह सईदा बाई को उससे मिलवाए। प्राण ने समझाने की कोशिश की कि यह नामुमकिन है: वह इस मामले में अहम गवाह होंगी, और उन्हें उससे मिलने की इजाज़त नहीं होगी।

मान को अपनी जान का खतरा शायद ही समझ आ रहा था—और न ही इस बात का कि हत्या का प्रयास या किसी खतरनाक हथियार से गंभीर चोट पहुँचाने पर अधिकतम सज़ा आजीवन कारावास हो सकती है। उसे लगता था कि सईदा बाई से उसे दूर रखना सरासर अन्याय है। उसने प्राण से कहा कि वह सईदा बाई को उसके गहरे खेद और अटूट प्रेम का संदेश दे दे। उसने उर्दू में कुछ पंक्तियाँ लिखकर दीं। प्राण अपने इस काम से बहुत दुखी था, लेकिन उसने इसे करने की सहमति दी और एक घंटे के भीतर वह पत्र चौकीदार को दे दिया।

जब वह दोपहर बाद प्रेम निवास लौटा, तो उसने अपनी माँ को बरामदे में सोफे पर लेटे हुए देखा। उनका मुख बगीचे की ओर था, जो शुरुआती

फूलों से भरा हुआ था: पैंसी, कैलेंडुला, जरबेरा, साल्विया, कॉसमॉस, फ्लॉक्स और कुछ कैलिफोर्निया पॉपी। लॉन से मिलने वाली क्यारियों के किनारों पर स्वीट एलिसम लगी हुई थी। पोमेलो के पेड़ पर खिले नींबू जैसी सुगंध वाले पहले कुछ फूलों के आसपास मधुमक्खियाँ भिनभिना रही थीं, और एक छोटा, चमकदार, नीले-काले रंग का सनबर्ड उसकी शाखाओं पर फुदक रहा था।

प्राण एक पल के लिए पोमेलो के पेड़ के पास रुका और उसकी सुगंध को महसूस किया। इससे उसे अपना बचपन याद आ गया; और वह वीना, खुद और मान के जीवन में उन अनिश्चित लेकिन अपेक्षाकृत चिंतामुक्त दिनों के बाद आए नाटकीय बदलावों के बारे में उदास होकर सोचने लगा। वीना का पति अब पाकिस्तान से आया एक गरीब शरणार्थी बन चुका था, प्राण खुद हृदय रोगी था, और मान आरोप पत्र का इंतजार करते हुए जेल में पड़ा था। फिर उसने भास्कर के चमत्कारिक रूप से बच निकलने, उमा के जन्म, सविता के साथ बिताए अपने जीवन, अपनी माँ की अटूट दयालुता और इस बगीचे की निरंतर शांति के बारे में सोचा; और वह थोड़ा-बहुत यह मानने को तैयार हो गया कि किसी न किसी रूप में कुछ अच्छा हुआ है या बरकरार रहा है।

वह धीरे-धीरे लॉन पार करके बरामदे की ओर बढ़ा। उसकी माँ अभी भी सोफे पर लेटी हुई थी और बगीचे की ओर देख रही थी।

'आप लेटी क्यों हैं, अम्माजी?' उसने पूछा। आम तौर पर वह उससे बात करने के लिए बैठ जाती थीं। 'क्या आपको थकान महसूस हो रही है?'

वह तुरंत उठ बैठी।

'क्या मैं आपके लिए कुछ लाऊं?' उसने पूछा। उसने देखा कि वह कुछ कहने की कोशिश कर रही थी, लेकिन वह समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या कह रही है। उसका मुंह खुला हुआ था और एक तरफ झुका हुआ

था। उसने बड़ी मुश्किल से समझा कि वह चाय चाहती है।
अब चिंतित होकर उसने वीना को पुकारा। नौकर ने बताया कि वह उसके पिता के साथ कार में कहीं बाहर गई है। प्राण ने चाय मंगवाई। चाय आने पर उसने अपनी माँ को पीने के लिए दी। चाय पीते ही उसकी माँ खाँसने लगी और प्राण समझ गया कि उसे किसी तरह का दौरा पड़ा है।
सबसे पहले उन्होंने बैतर हाउस में इम्तियाज से संपर्क करने का सोचा। फिर उन्होंने सविता के दादाजी से संपर्क करने का फैसला किया। डॉ. किशन चंद सेठ दोनों ही जगह नहीं थे। प्राण ने उनके लिए एक संदेश छोड़ा कि उनकी मां बीमार हैं और डॉ. सेठ को लौटते ही प्रेम निवास को तुरंत फोन करना चाहिए। उन्होंने कुछ और डॉक्टरों से भी संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन किसी से भी बात नहीं हो पाई। वे अस्पताल जाकर किसी से मिलने के लिए टैक्सी मंगवाने ही वाले थे कि डॉ. सेठ ने वापस फोन किया। प्राण ने उन्हें सारी बात बताई।
डॉ. किशन चंद सेठ ने कहा, 'मैं आ रहा हूँ। लेकिन डॉ. जैन को बुला लेना —वो इस तरह के मामलों के विशेषज्ञ हैं। उनका फ़ोन नंबर 873 है। उन्हें बता देना कि मैंने उन्हें तुरंत आने के लिए कहा है।'
जब वे पहुंचे, तो डॉ. सेठ ने कहा कि उन्हें लगता है कि यह चेहरे के लकवे का मामला है, और उन्होंने श्रीमती महेश कपूर को सीधा लेटने के लिए कहा। 'लेकिन यह मेरे विशेषज्ञता क्षेत्र से बिल्कुल अलग है,' उन्होंने आगे कहा।
लगभग सात बजे वीना और उसके पिता वापस लौटे। श्रीमती महेश कपूर की आवाज लड़खड़ा रही थी, लेकिन वह बात करने की कोशिश कर रही थीं।
‘क्या यह मान के बारे में है?’ उसके पति ने पूछा।
उसने अपना सिर हिलाया। थोड़ी देर में वे समझ गए कि वह अपना खाना

चाहती थी।

उसने सूप पीने की कोशिश की। कुछ सूप गले से नीचे उतर गया, लेकिन कुछ उसने खांसकर बाहर निकाल दिया। उन्होंने उसे चावल और दाल खिलाने की कोशिश की। उसने थोड़ा सा मुंह में लिया, चबाया और वीना से थोड़ा और देने को कहा। लेकिन जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि वह उसे मुंह में ही रख रही थी, निगल नहीं रही थी। बहुत धीरे-धीरे, पानी के घूंट लेते हुए, वह उसे निगलने में कामयाब हुई।

डॉ. जैन लगभग आधे घंटे बाद पहुंचे। उन्होंने उसकी अच्छी तरह से जांच की और कहा: 'देखिए, यह एक गंभीर स्थिति है। मुझे चिंता है कि उसकी सातवीं, दसवीं और बारहवीं नसें प्रभावित हैं।'

'जी हां, जी हां—' महेश कपूर ने हताशा में कहा। 'इन सबका मतलब क्या है?'

डॉ. जैन ने कहा, "देखिए, ये नसें मस्तिष्क के मुख्य भाग से जुड़ी हुई हैं। मुझे चिंता है कि मरीज की निगलने की क्षमता खत्म हो सकती है। या फिर दूसरा स्ट्रोक भी आ सकता है। वह तो अंत होगा। मेरा सुझाव है कि मरीज को तुरंत अस्पताल ले जाया जाए।"

श्रीमती महेश कपूर ने 'अस्पताल' शब्द सुनते ही तीखी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने जाने से इनकार कर दिया। उनकी वाणी लड़खड़ा रही थी और उनकी इंद्रियां कुछ सुस्त पड़ गई थीं, लेकिन उनके इरादे में कोई संदेह नहीं था। उन्होंने सबको यह स्पष्ट कर दिया कि यदि उन्हें मरना ही है, तो वे घर पर ही मरना चाहती हैं। वीना ने 'सुंदर कांड' शब्द सुना। वह चाहती थीं कि रामायण का उनका पसंदीदा भाग उन्हें पढ़कर सुनाया जाए।

'मर रही हो!' उसके पति ने अधीरता से कहा। 'तुम्हारे मरने का तो सवाल ही नहीं उठता।'

लेकिन श्रीमती महेश कपूर ने एक बार अपने पति की अवज्ञा की और

उसी रात उनकी मृत्यु हो गई।

17.26

वीना अपनी मां के कमरे में सो रही थी तभी उसने अचानक अपनी मां की दर्द भरी चीख सुनी। उसने बत्ती जलाई। श्रीमती महेश कपूर का चेहरा बुरी तरह विकृत हो गया था और उनका पूरा शरीर ज़ोर से कांप रहा था। वीना दौड़कर अपने पिता को बुलाने गई। वे आ गए। थोड़ी ही देर में घर के सभी लोग जाग उठे। प्राण और डॉक्टरों को बुलाया गया और केदारनाथ के पड़ोसियों से कहा गया कि वे प्राण को तुरंत आने के लिए कहें। प्राण को मामले की गंभीरता का पूरा अंदाज़ा था। उन्होंने सविता, लता और श्रीमती रूपा मेहरा को बताया कि उन्हें लगता है कि उनकी मां मर रही हैं। वे सब आ गईं। सविता बच्ची को भी साथ ले आई, ताकि दादी उसे देख सकें।

आधे घंटे के भीतर ही सब लोग इकट्ठा हो गए। भास्कर बेचैनी से देख रहा था। उसने अपनी माँ से पूछा कि क्या नानी सचमुच मर रही हैं, और उन्होंने रोते हुए जवाब दिया कि उन्हें भी ऐसा ही लगता है, हालाँकि सब कुछ भगवान के हाथ में है। डॉक्टर ने कहा कि कुछ नहीं किया जा सकता। श्रीमती महेश कपूर ने भी अस्पष्ट आवाज़ों और इशारों से भास्कर को अपने पास लाने का अनुरोध किया था, और अब उन्होंने इशारा किया कि उन्हें पलंग से नीचे ज़मीन पर उतारा जाए। यह सुनकर सभी महिलाएँ रोने लगीं। श्री महेश कपूर, क्रोधित, निराश और दुखी होकर, अपनी पत्नी के शांत चेहरे को चिढ़ भरी मोहब्बत से देखने लगे—जैसे कि उन्होंने जानबूझकर उन्हें धोखा दिया हो। एक छोटा सा मिट्टी का दीपक जलाकर उनकी हथेली पर रख दिया गया। बूढ़ी श्रीमती टंडन ने रमा का नाम लिया, और श्रीमती रूपा मेहरा ने गीता का पाठ किया। कुछ देर बाद श्रीमती महेश कपूर ने एक शब्द बोलने की कोशिश की जो 'माँ—' जैसा

लग रहा था। उनका मतलब या तो अपनी माँ से हो सकता था, जिनका निधन बहुत पहले हो चुका था, या अपने छोटे बेटे से, जिसे वे अपने आस-पास जमा लोगों के बीच नहीं देख पा रही थीं। उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं। उसकी पलकों के कोनों पर कुछ आंसू आ गए, लेकिन फिर से उसका चेहरा, जो पहले इतना विकृत लग रहा था, शांत हो गया। थोड़ी देर बाद, लगभग उसी समय जब वह जागती थी, उसकी मृत्यु हो गई।

सुबह-सुबह कई लोग अंतिम श्रद्धांजलि देने के लिए घर आए। उनमें महेश कपूर के कई सहकर्मी भी शामिल थे, जो चाहे उनके बारे में कुछ भी सोचते हों, इस शालीन, दयालु और स्नेहशील महिला के प्रति स्नेह रखते थे। वे उन्हें एक शांत, लेकिन सक्रिय पत्नी के रूप में जानते थे, जो अथक और गर्मजोशी से मेहमाननवाज़ी करती थीं और अपने पति के कठोर स्वभाव को भी अपनी कोमलता से संतुलित कर लेती थीं।

अब वह चादर पर ज़मीन पर लेटी थी, उसकी नाक और मुँह रुई से हल्के से बंद थे, और पट्टी से उसका सिर उसके जबड़े से बंधा था। उसने लाल रंग के वस्त्र पहने थे, जैसे उसने कई साल पहले अपनी शादी में पहने थे, और उसकी मांग में सिंदूर लगा था। उसके पैरों के पास एक कटोरे में अगरबत्ती जल रही थी। सविता और लता समेत सभी महिलाएं उसके पास बैठी थीं, और कुछ रो रही थीं, श्रीमती रूपा मेहरा भी सबसे ज़्यादा रो रही थीं।

एस.एस. शर्मा ने अपने जूते उतारे और अंदर आए। उनका सिर थोड़ा कांप रहा था। उन्होंने हाथ जोड़े, कुछ सांत्वना भरे शब्द कहे और चले गए। प्रिया ने वीना को सांत्वना दी। उसके पिता, एल.एन. अग्रवाल, प्राण को एक तरफ ले गए और बोले:

‘अंतिम संस्कार कब है?’

'ग्यारह बजे घाट पर।'

‘आपके छोटे भाई के बारे में क्या?’
प्राण ने अपना सिर हिलाया। उसकी आँखों में आँसू भर आए।
गृह मंत्री ने फोन का इस्तेमाल करने की अनुमति मांगी और पुलिस अधीक्षक को फोन किया। यह सुनकर कि मान को उसी दोपहर पुलिस हिरासत से न्यायिक हिरासत में स्थानांतरित किया जाना था, उन्होंने कहा: ‘उन्हें कहो कि वे यह काम आज सुबह ही कर लें और उसे श्मशान घाट के पास से ले जाएं। उसका भाई पुलिस स्टेशन जाकर सुरक्षा दल में शामिल हो जाएगा। कैदी के भागने का कोई खतरा नहीं है, इसलिए हथकड़ी लगाने की जरूरत नहीं होगी। दस बजे तक सारी औपचारिकताएं पूरी कर लें।’
अधीक्षक ने कहा: 'ऐसा ही होगा, मंत्री महोदय।'
एल.एन. अग्रवाल फोन रखने ही वाले थे कि तभी उन्हें कुछ और सूझा। उन्होंने कहा, 'और, क्या आप थाने के अधिकारी से कह सकते हैं कि जरूरत पड़ने पर नाई का इंतजाम कर दें—लेकिन युवक को इस बारे में कुछ न बताएं। उसका भाई यह काम कर देगा।'
जब प्राण मान से मिलने लॉक-अप में गया, तो उसे एक शब्द भी बोलने की ज़रूरत नहीं पड़ी। अपने भाई का मुंडा सिर देखकर मान को अंतर्ज्ञान से पता चल गया कि उसकी माँ की मृत्यु हो गई है। वह फूट-फूटकर रोने लगा और अपनी कोठरी की सलाखों पर अपना सिर पटकने लगा।
चाबियां लिए पुलिसकर्मी यह सब देखकर स्तब्ध रह गया; सब-इंस्पेक्टर ने उससे चाबियां छीन लीं और मान को बाहर निकाल दिया। वह प्राण की बाहों में गिर पड़ा और दुख से कराहते हुए जानवरों जैसी भयानक आवाजें निकालने लगा।
कुछ देर बाद प्राण ने लगातार और विनम्रता से उससे बात करके उसे शांत किया। उसने पुलिस अधिकारी की ओर मुड़कर कहा:

‘मुझे पता चला है कि आपने मेरे भाई का सिर मुंडवाने के लिए यहाँ एक नाई को बुलाया है। हम जल्द ही घाट के लिए रवाना होंगे।’

सब-इंस्पेक्टर ने माफी मांगी। एक समस्या खड़ी हो गई थी। ब्रह्मपुर रेलवे स्टेशन के एक टिकट क्लर्क को जेल में पहचान परेड के दौरान मान को पहचानने के लिए कहा जाने वाला था। इन परिस्थितियों में, वह मान का सिर मुंडवाने की अनुमति नहीं दे सकता था।

प्राण ने पुलिसकर्मी की मूंछों को देखते हुए कहा, 'यह तो हास्यास्पद है।' उसे खुद भी लगा कि पुलिसकर्मी के बाल कुछ ज़्यादा ही हैं। 'मैंने गृह मंत्री को खुद यह कहते सुना था—'

सब-इंस्पेक्टर ने कहा, 'मैंने दस मिनट पहले एसपी से बात की थी।' स्पष्टतः, उनके लिए एसपी प्रधानमंत्री से भी अधिक महत्वपूर्ण थे।

वे ग्यारह बजे घाट पर पहुँचे। पुलिसकर्मी कुछ दूरी पर खड़े थे। सूरज काफी ऊपर था, दिन असामान्य रूप से गर्म था। वहाँ केवल पुरुष ही थे। चेहरे से रुई हटाई गई, अर्थी से पीला कपड़ा और फूल हटा दिए गए, शव को दो लंबे लट्ठों पर रखा गया और अन्य लट्ठों से ढक दिया गया।

उनके पति ने पंडित जी के मार्गदर्शन में सभी आवश्यक अनुष्ठान संपन्न किए। घी, चंदन, स्वाहा और चिता पर काम कर रहे डोमों की मांगों के बारे में उनके भीतर के तर्कवादी के विचार उनके चेहरे पर जरा भी प्रकट नहीं हुए। चिता का धुआं घुटन भरा था, लेकिन उन्हें इसका जरा भी आभास नहीं हुआ। गंगा से कोई हवा नहीं चल रही थी जो धुएं को जल्दी से दूर कर सके।

मान अपने भाई के बगल में खड़ा था, जिसे लगभग उसे सहारा देना पड़ रहा था। उसने देखा कि लपटें उठ रही हैं और उसकी माँ के चेहरे को अपनी चपेट में ले रही हैं—और धुआँ उसके पिता के चेहरे को ढक रहा है। ये सब मेरी ही गलती है, अम्माजी, उसने मन ही मन सोचा, हालांकि

किसी ने उससे ऐसा कुछ नहीं कहा था। मैंने जो किया है, उसी की वजह से ये सब हुआ है। मैंने वीना, प्राण और बाओजी का क्या बिगाड़ा है? मैं खुद को कभी माफ नहीं कर पाऊंगा और परिवार में कोई भी मुझे कभी माफ नहीं करेगा।

17.27

राख और हड्डियाँ, श्रीमती महेश कपूर अब बस राख और हड्डियाँ ही थीं, अभी भी गर्म, लेकिन जल्द ही ठंडी होकर, एकत्रित होकर ब्रह्मपुर की गंगा में विसर्जित हो जाएँगी। हरिद्वार में क्यों नहीं, जैसा कि उनकी इच्छा थी? क्योंकि उनके पति व्यावहारिक व्यक्ति थे। क्योंकि हड्डियाँ और राख क्या हैं, जीवन के चले जाने पर मांस, रक्त और ऊतक का क्या अर्थ? क्योंकि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, गंगा का जल गंगोत्री, हरिद्वार, प्रयाग, बनारस, ब्रह्मपुर, यहाँ तक कि सागर में भी एक समान है, जहाँ वह आकाश से गिरने के क्षण से ही मिल रहा था। श्रीमती महेश कपूर मर चुकी थीं, और उन्हें कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था, उनकी यह राख, चंदन और साधारण लकड़ी श्मशान घाट पर डोमों के लिए छोड़ी जा सकती थी, ताकि वे उन कुछ गहनों को छान सकें जो उनके शरीर के साथ पिघल गए थे और अधिकार से उनके थे। वसा, स्नायुबंधन, मांसपेशी, रक्त, बाल, स्नेह, दया, निराशा, चिंता, बीमारी: सब कुछ समाप्त हो गया था। वह विलीन हो गई थीं। वह प्रेम निवास का बगीचा थी (जिसे जल्द ही वार्षिक पुष्प प्रदर्शनी में शामिल किया जाना था), वह वीणा का संगीत प्रेम, प्राण का अस्थमा, मान की उदारता, चार साल पहले कुछ शरणार्थियों का जीवित रहना, प्रेम निवास के बड़े जस्ता बक्सों में रखी रजाईयों को सुरक्षित रखने वाले नीम के पत्ते, किसी तालाब के बगुले का झड़ता पंख, एक छोटी सी बिना बजी पीतल की घंटी, एक अभद्र समय में शालीनता की स्मृति, भास्कर के परपोतों का स्वभाव। वास्तव में, राजस्व

मंत्री की उसके प्रति तमाम अधीरता के बावजूद, वह उनका खेद थी। और यह उचित ही था कि वह ऐसा बनी रहे, क्योंकि उन्हें उसके जीवित रहते उसके साथ बेहतर व्यवहार करना चाहिए था, बेचारी, अज्ञानी, दुखी मूर्ख।

17.28

तीन दिन बाद दोपहर में प्रेम निवास के लॉन में एक छोटे से मंडप के नीचे चौथा का आयोजन किया गया। पुरुष गलियारे के एक तरफ और महिलाएं दूसरी तरफ बैठीं। मंडप के नीचे का क्षेत्र जल्दी ही भर गया, फिर गलियारा भी भर गया, और अंत में लोग लॉन में फैल गए, कुछ लोग फूलों की क्यारियों तक पहुँच गए। महेश कपूर, प्राण और केदारनाथ ने बगीचे के प्रवेश द्वार पर उनका स्वागत किया। महेश कपूर यह देखकर आश्चर्यचकित थे कि उनकी पत्नी के चौथा में इतने सारे लोग आए थे, जिन्हें वे हमेशा एक नासमझ, अंधविश्वासी और संकीर्ण सोच वाली महिला समझते थे। विभाजन के दिनों में राहत शिविरों में उन्होंने जिन शरणार्थियों की मदद की थी, उनके परिवार, वे सभी जिन्हें उन्होंने दिन-प्रतिदिन दया और आश्रय दिया था, न केवल रुधिया के रिश्तेदार बल्कि रुधिया के आम किसानों का एक बड़ा समूह, कई राजनेता जो शायद उनके निधन पर केवल औपचारिक या दिखावटी श्रद्धांजलि अर्पित करते, और अनगिनत लोग जिन्हें न तो वे और न ही प्राण पहचानते थे, सभी ने महसूस किया कि उन्हें उनकी स्मृति में इस सेवा में शामिल होना चाहिए। उनमें से कई लोगों ने शामियाने के एक छोर पर बने लंबे सफेद चबूतरे पर मेज पर गेंदे के फूलों की माला से सजी उनकी तस्वीर के सामने सम्मानपूर्वक हाथ जोड़ लिए। कुछ लोगों ने शोक व्यक्त करने के लिए कुछ शब्द कहने की कोशिश की, लेकिन वे स्वयं भावुक हो गए। जब महेश कपूर स्वयं बैठे, तो उनका हृदय पिछले चार दिनों की तुलना में और भी अधिक व्याकुल था।

नवाब साहब के परिवार से कोई भी चौथा नहीं आया। फ़िरोज़ की हालत बिगड़ गई थी। उसे हल्का संक्रमण हो गया था और उसे नियंत्रित करने के लिए पेनिसिलिन की अधिक खुराक दी जा रही थी। इम्तियाज़—इलाज के इस अपेक्षाकृत नए तरीके की संभावनाओं और सीमाओं दोनों से भली-भांति परिचित था—बेहद चिंतित था; और उसके पिता, अपने बेटे की बीमारी को अपने पापों का दंड मानते हुए, दिन में पाँच से अधिक बार ईश्वर से प्रार्थना करते थे कि फ़िरोज़ को बचा लें और बदले में अपनी जान ले लें।

शायद, वह उन अफवाहों का सामना भी नहीं कर सका जो अब हर जगह उसका पीछा करती थीं। शायद वह उस परिवार का सामना नहीं कर सका, जिसके साथ दोस्ती ने उसे इतना दुख पहुंचाया था। खैर, वह नहीं आया।

और न ही मान उपस्थित हो सका।

पंडित जी एक लंबे कद के व्यक्ति थे, जिनका चेहरा भरा हुआ और आयताकार था, घनी भौहें थीं और आवाज बुलंद थी। उन्होंने संस्कृत में कुछ श्लोक सुनाने शुरू किए, विशेषकर ईशा उपनिषद और यजुर्वेद से, और उनका अर्थ जीवन और धार्मिक कर्मों के मार्गदर्शन के रूप में बताया। उन्होंने कहा कि ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है, ब्रह्मांड के प्रत्येक कण में; कोई भी चीज स्थायी रूप से नष्ट नहीं होती; इसे स्वीकार करना चाहिए। उन्होंने दिवंगत आत्मा के बारे में बात की और बताया कि वह कितनी अच्छी और ईश्वर से डरने वाली थीं और उनकी आत्मा न केवल उन्हें जानने वालों की स्मृतियों में, बल्कि उनके आस-पास की दुनिया में भी जीवित रहेगी—उदाहरण के लिए, इस बगीचे में; इस घर में।

कुछ देर बाद पंडित ने अपने युवा सहायक को कार्यभार संभालने के लिए कहा।

सहायक ने दो भक्ति गीत गाए। पहले गीत के दौरान श्रोता मौन बैठे रहे, लेकिन जब उन्होंने धीमे और गरिमामय गीत 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव' ('आप हमारे माता-पिता दोनों हैं') गाना शुरू किया, तो लगभग सभी लोग उनके साथ गाने लगे।

पंडित जी ने लोगों से आगे बढ़ने को कहा ताकि पीछे खड़े लोग मंडप के नीचे आ सकें। फिर उन्होंने पूछा कि क्या सिख गायक आ गए हैं। श्रीमती महेश कपूर को उनका संगीत बहुत पसंद था, और वीणा ने अपने पिता को मना लिया था कि वे उन्हें चौथा पर गाने के लिए कहें। जब पंडित जी को बताया गया कि वे रास्ते में हैं, तो उन्होंने अपना कुर्ता ठीक किया और एक कहानी सुनाना शुरू किया, जो उन्होंने पहले भी कई बार सुनाई थी और जो इस प्रकार थी:

एक समय की बात है, गाँव में एक व्यक्ति बहुत गरीब था, इतना गरीब कि उसके पास अपनी बेटी की शादी के लिए पैसे नहीं थे और न ही उसके पास उधार लेने के लिए कुछ था। वह हताश था। अंत में किसी ने कहा: 'दो गाँव छोड़कर एक साहूकार है जो मानवता में विश्वास रखता है। उसे किसी जमानत या संपत्ति की आवश्यकता नहीं होगी। आपका वचन ही आपका बंधन होगा। वह लोगों को उनकी आवश्यकता के अनुसार उधार देता है, और वह जानता है कि किस पर भरोसा करना है।'

वह व्यक्ति आशा से चल पड़ा और दोपहर तक साहूकार के गाँव पहुँच गया। गाँव के बाहरी इलाके में उसने एक बूढ़े व्यक्ति को खेत जोतते हुए और एक स्त्री को, जिसका चेहरा ढका हुआ था, उसके लिए भोजन लाते हुए देखा। वह अपने बर्तन सिर पर रखे हुए थी। उसकी चाल से वह समझ गया कि वह एक युवती है और उसने युवती के स्वर में उसे कहते सुना: “बाबा, यह आपके लिए भोजन है। इसे खा लीजिए और फिर घर आ जाइए। आपका पुत्र अब इस दुनिया में नहीं है।” उस व्यक्ति ने आकाश

की ओर देखकर कहा: “जैसा ईश्वर की इच्छा हो।” फिर वह भोजन खाने बैठ गया।

इस बातचीत से हैरान और परेशान ग्रामीण ने इसका मतलब समझने की कोशिश की। उसने मन ही मन सोचा: अगर वह बूढ़े आदमी की बेटी थी, तो उसने उसके सामने अपना चेहरा क्यों ढका? वह उसकी बहू ही होगी। लेकिन फिर उसे मरे हुए आदमी की पहचान को लेकर चिंता सताने लगी। यकीनन, अगर उसके पति के भाइयों में से किसी की मृत्यु हुई होती, तो वह उसे 'जेठजी' या 'देवरजी' कहकर पुकारती, न कि 'आपके बेटे'। इसलिए, यह उसका पति ही होना चाहिए जिसकी मृत्यु हुई है। पिता और पत्नी दोनों ने जिस शांत भाव से उसकी मृत्यु को स्वीकार किया, वह असामान्य था, बल्कि चौंकाने वाला था।

बहरहाल, ग्रामीण ने अपने उद्देश्यों और अपनी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए साहूकार की दुकान पर जाने का फैसला किया। साहूकार ने उससे पूछा कि उसे क्या चाहिए। ग्रामीण ने बताया कि उसे अपनी बेटी की शादी के लिए कुछ पैसों की ज़रूरत है और उसके पास गिरवी रखने के लिए कुछ भी नहीं है।

साहूकार ने उसके चेहरे की ओर देखते हुए कहा, 'कोई बात नहीं। तुम्हें कितने पैसे चाहिए?'

‘काफी ज्यादा,’ उस आदमी ने कहा। ‘दो हजार रुपये।’

'ठीक है,' साहूकार ने कहा और अपने लेखाकार को तुरंत पैसे गिनने का आदेश दिया।

जब लेखाकार पैसे गिन रहा था, तो उस गरीब ग्रामीण ने बातचीत शुरू करने की इच्छा जताई। उसने कृतज्ञतापूर्वक कहा, “आप बहुत अच्छे आदमी हैं, लेकिन आपके गाँव के बाकी लोग मुझे अजीब लगते हैं।” फिर उसने अपने देखे और सुने हुए किस्से सुनाए।

साहूकार ने कहा, 'अच्छा, तुम्हारे गांव के लोग ऐसी खबर सुनकर कैसी प्रतिक्रिया देते?'

“खैर, जाहिर सी बात है,” उस गरीब आदमी ने कहा, “पूरा गाँव शोक मनाने के लिए परिवार के घर गया होता। शव का अंतिम संस्कार होने तक खेतों की जुताई का तो सवाल ही नहीं उठता, खाने-पीने की तो बात ही छोड़िए। लोग विलाप कर रहे होते और अपने सीने पीट रहे होते।”

साहूकार ने लेखाकार की ओर मुड़कर उसे पैसे गिनना बंद करने को कहा। उसने कहा, 'इस आदमी को कुछ भी उधार देना सुरक्षित नहीं है।' यह सुनकर वह आदमी घबरा गया और साहूकार की ओर मुड़ा। उसने पूछा, 'मैंने ऐसा क्या किया है?'

साहूकार ने उत्तर दिया, “यदि तुम ईश्वर द्वारा धरोहर के रूप में दी गई वस्तु को लौटाने में इतना रोते-बिलखते हो, तो किसी साधारण मनुष्य द्वारा धरोहर के रूप में दी गई वस्तु को लौटाने में प्रसन्न नहीं होगे।”

पंडित जी द्वारा यह कहानी सुनाते समय सन्नाटा छाया रहा। किसी को नहीं पता था कि आगे क्या होगा, और कहानी के अंत में उन्हें लगा जैसे उनके दुःख के लिए उन्हें फटकारा गया हो। प्राण को सांत्वना मिलने की बजाय व्यथित होना पड़ा: उसने सोचा कि पंडित जी ने जो कहा वह शायद सच था, लेकिन वह चाहता था कि सिख रागी पहले आ जाते।

फिर भी, वे तीनों अब यहाँ मौजूद थे, काले और घनी दाढ़ी वाले, उनकी सफेद पगड़ियाँ नीली पट्टी से सजी हुई थीं। उनमें से एक तबला बजा रहा था, बाकी दो हारमोनियम, और तीनों ने आँखें बंद कर लीं और नानक और कबीर के गीत गाए।

प्राण ने उन्हें पहले भी सुना था; उसकी माँ साल में एक बार प्रेम निवास में रागियों को गाने के लिए बुलाती थी। लेकिन अब वह उनके गायन की सुंदरता या संतों के शब्दों के बारे में नहीं सोच रहा था, बल्कि उस

आखिरी बार के बारे में सोच रहा था जब उसने प्रेम निवास में तबला और हारमोनियम सुना था: पिछले साल होली की शाम को सईदा बाई ने गाया था। उसने महिलाओं की ओर देखा। सविता और लता साथ बैठी थीं, जैसे उस शाम भी बैठी थीं। सविता की आँखें बंद थीं। लता महेश कपूर को देख रही थीं, जो एक बार फिर से चल रही बातों से खुद को अलग कर रहे थे। उन्होंने कबीर को नहीं देखा था, जो उनसे काफी पीछे, ढके हुए स्थान के पिछले हिस्से में बैठे थे।

उसके विचार प्राण की माँ के जीवन की ओर भटक गए थे, जिन्हें वह बहुत पसंद करती थी लेकिन जिनके बारे में उसे ज़्यादा जानकारी नहीं थी। क्या उनका जीवन परिपूर्ण था? क्या उनके विवाह को सुखी, सफल या परिपूर्ण कहा जा सकता है? और यदि हाँ, तो इन शब्दों का क्या अर्थ है? उनके विवाह का केंद्र क्या था: उनके पति, उनके बच्चे, या वह छोटा सा पूजा कक्ष जहाँ वह हर सुबह प्रार्थना करती थीं, और नियमित दिनचर्या और भक्ति को अपने दैनिक और वार्षिक जीवन में एक उद्देश्य और व्यवस्था का आधार बनाती थीं? यहाँ कई लोग बैठे थे जो उनकी मृत्यु से प्रभावित थे, और वहाँ उनके पति, मंत्री साहब, लंबी कार्यवाही से स्पष्ट रूप से चिंतित बैठे थे। वह पंडित जी को यह बताने की कोशिश कर रहे थे कि अब बहुत हो गया है, लेकिन उनकी नज़रें उन तक नहीं पहुँच पा रही थीं।

पंडित जी ने कहा, “मुझे लगता है कि महिलाएं अब कुछ गीत गाना चाहेंगी।” कोई आगे नहीं आया। वे फिर बोलने ही वाले थे कि बूढ़ी श्रीमती टंडन ने कहा, “वीना, आगे आओ, यहाँ बैठो।” पंडित जी ने उन्हें उस चबूतरे पर बैठने को कहा जहाँ रागी गा रहे थे, लेकिन वीना ने कहा, “नहीं; यहीं नीचे।” वह बहुत ही सादे कपड़े पहने हुए थीं, जैसे उनकी सहेली प्रिया और एक और युवती। वीना ने काले बॉर्डर वाली सफेद सूती

साड़ी पहनी हुई थी। उनके गले में एक पतली सोने की चेन थी, जिसे वह बार-बार छू रही थीं। उनका गहरा लाल टीका थोड़ा धुंधला था। उनके गालों पर, खासकर उनकी आंखों के नीचे गहरे, सूजे हुए घेरों में, आंसू के निशान दिख रहे थे। उनका गोल-मटोल चेहरा उदास और अजीब तरह से शांत लग रहा था। उन्होंने एक छोटी सी किताब निकाली और वे गाने लगीं। वह साफ-साफ गा रही थीं और बीच-बीच में गीत के बोलों के अनुसार अपना हाथ थोड़ा हिला रही थीं। उनकी आवाज स्वाभाविक और बहुत ही भावपूर्ण थी। पहला गीत समाप्त होते ही उसने बिना रुके अपनी माँ का पसंदीदा भजन, 'उठ, जाग, मुसाफिर' गाना शुरू कर दिया:

'उठो, यात्री, आकाश प्रकाश से भरा है।'

तुम क्यों सो रहे हो? अभी रात नहीं हुई है।

सोने वाले खो देते हैं, और उनकी नींद व्यर्थ जाती है।

जाग उठो, और लाभ के लिए उठो।

अपनी पलकें खोलो, तुम जो सिर हिलाते हो।

हे लापरवाह, ईश्वर की ओर ध्यान दो।

क्या यही आपका प्यार जताने का तरीका है?

तुम नीचे सोते हो, वह ऊपर जागता है।

तुमने जो किया है, उसका परिणाम तुम्हें भुगतना होगा।

तो फिर पाप में आनंद कहाँ है, कहाँ है?

जब तुम्हारे सिर पर तुम्हारे गहरे पाप का बोझ हो,

तुम अपना सिर पकड़कर क्यों रो रहे हो?

कल का काम, आज ही पूरा करो।

आज ही तुरंत करें; देरी न करें।

जब पक्षियों ने खड़ी फसल को चट कर लिया हो

व्यर्थ में हाथ मलने से क्या फायदा?

दूसरे श्लोक के बीच में कहीं उसने गाना बंद कर दिया—बाकी लोग गाते रहे—और चुपचाप रोने लगी। उसने रोने से खुद को रोकने की कोशिश की, पर रोक नहीं पाई। उसने अपनी साड़ी के पल्लू से आंसू पोंछने शुरू किए और फिर हाथों से ही पोंछ लिए। आगे बैठे केदारनाथ ने अपना रुमाल निकालकर उसकी गोद में फेंक दिया, पर उसने ध्यान नहीं दिया। उसने धीरे से ऊपर देखा, उसकी नज़रें भीड़ से थोड़ी ऊपर थीं, और उसने गाना जारी रखा। एक-दो बार उसे खांसी भी आई। जब वह पहला श्लोक दोबारा गा रही थी, तब उसकी आवाज़ साफ थी; लेकिन अब उसके चिड़चिड़े पिता की आंखों में आंसू थे।

महात्मा गांधी के आश्रम की भजन-पुस्तिका से लिया गया यह गीत, उनके उस अवास्तविक दुख को और भी गहराई से उनके सामने प्रकट कर गया। गांधी जी का देहांत हो चुका था, और उनके साथ ही उनके आदर्श भी। अहिंसा के जिस उपदेशक का उन्होंने अनुसरण किया था और जिनका वे आदर करते थे, उनकी मृत्यु हिंसक तरीके से हुई थी, और अब महेश कपूर का अपना पुत्र—जो अपने ही खतरे में होने के कारण और भी प्रिय था—हिंसा के आरोप में जेल में बंद था। फिरोज, जिसे वे बचपन से जानते थे, शायद मर जाए। नवाब साहब के साथ उनकी दोस्ती, जो इतने लंबे समय से कायम थी, दुख और अफवाहों के अचानक प्रकोप से चकनाचूर हो गई थी। नवाब साहब आज यहाँ नहीं थे, और उन्होंने उन दोनों को फिरोज से मिलने से रोक दिया था। यह मुलाकात मृत महिला के लिए बहुत मायने रखती। इसके अभाव ने उनके दुख को और बढ़ा दिया था और—कौन जानता है कि दुख मस्तिष्क पर क्या प्रभाव डालता है?—शायद उनकी मृत्यु को शीघ्र कर दिया हो।

बहुत देर हो चुकी थी, और शायद उसके आस-पास के सभी लोगों के उसके प्रति स्पष्ट प्रेम के कारण, उसे धीरे-धीरे एहसास होने लगा कि उसने

क्या खोया है, वास्तव में, किसे खोया है—और कितनी अचानक। करने को बहुत कुछ था, और उसकी मदद करने वाला, उसे शांति से सलाह देने वाला, उसकी अधीरता को शांत करने वाला कोई नहीं था। उसके बेटे का जीवन और उसका अपना भविष्य, दोनों ही उसे निराशाजनक स्थिति में लग रहे थे। वह हार मानकर दुनिया को अपने हाल पर छोड़ देना चाहता था। लेकिन वह मान को जाने नहीं दे सकता था; और राजनीति ही उसका जीवन थी।

वह हमेशा की तरह मदद के लिए मौजूद नहीं होगी। पक्षियों ने खड़ी फसल को चट कर लिया था, और वह खाली हाथ बैठा था। वह उससे क्या कहती? सीधे तौर पर कुछ नहीं, लेकिन शायद कुछ घुमा-फिराकर दिलासा देने वाले शब्द, कुछ ऐसा जो कुछ दिनों या हफ्तों बाद उसकी निराशा को कुछ हद तक कम कर देता। क्या वह उसे चुनाव से हटने के लिए कहती? वह उससे अपने बेटे के बारे में क्या करने को कहती? उसके कई कर्तव्यों—या कर्तव्य की अवधारणाओं—में से वह किसका पालन करने की अपेक्षा करती या करती, और किसका पालन करने की वह उससे अपेक्षा करती? भले ही आने वाले हफ्तों में उसे यह बात स्पष्ट हो जाए, उसके पास वे हफ्ते नहीं, बल्कि केवल दिन थे, और वास्तव में, वे भी बहुत कम थे।

17.29

अंतिम संस्कार के बाद जब मान को जेल में भर्ती कराया गया, तो उसे अपने कपड़े और शरीर धोने के लिए कहा गया और उसे एक कप और एक प्लेट दी गई। चिकित्सा अधिकारी ने उसकी जांच की और उसका वजन किया। उसके बाल और दाढ़ी की स्थिति का भी नोट बनाया गया। चूंकि उस पर कोई पूर्व आपराधिक रिकॉर्ड नहीं था, इसलिए उसे उन विचाराधीन कैदियों से अलग रखा जाना था जिन पर पहले से आपराधिक

रिकॉर्ड था। लेकिन जिला जेल में बहुत भीड़ थी, और उसे एक ऐसे वार्ड में रखा गया जिसमें कुछ विचाराधीन कैदी थे जिन्हें जेल जीवन का अनुभव था और वे दूसरों को इसके बारे में सिखाने में जुट गए। वे मान को एक बड़े आश्चर्य के रूप में देखते थे। अगर वह सचमुच किसी मंत्री का बेटा था - और जिस एक अखबार को उन्हें पढ़ने की अनुमति थी उसने इसकी पुष्टि की - तो वह वहां क्या कर रहा था? वह किसी न किसी बहाने से जमानत क्यों नहीं ले पाया? अगर जांच के दायरे में आया आरोप गैर-जमानती था, तो पुलिस को आरोप कम करने के लिए क्यों नहीं कहा गया?

अगर मान की मानसिक स्थिति थोड़ी भी सामान्य होती, तो वह अपने कुछ साथियों से दोस्ती कर लेता। अब तो उसे उनकी मौजूदगी का भी एहसास नहीं होता था। वह उन लोगों के अलावा किसी और के बारे में नहीं सोच पाता था जिन्हें वह देख नहीं सकता था: उसकी माँ, फ़िरोज़ और सईदा बाई। उसका जीवन आसान तो नहीं था, लेकिन जेल के मुकाबले कहीं बेहतर था। उसे प्रेम निवास से खाना और कपड़े मिलते थे; उसे दाढ़ी बनाने और व्यायाम करने की भी अनुमति थी। जेल अपेक्षाकृत साफ थी। चूंकि वह 'उच्च श्रेणी' का कैदी था, इसलिए उसकी कोठरी में एक छोटी मेज, एक पलंग और एक दीपक था। उसे संतरे भेजे जाते थे, जिन्हें वह मदहोशी में खाता था। प्रेम निवास से उसे ठंड से बचाने के लिए किंगफिशर नीले रंग का एक कंबल भेजा गया था। यह कंबल उसे ठंड से बचाता था और उसे सुकून देता था, साथ ही उसे घर की याद दिलाता था —और उन सभी चीजों की याद दिलाता था जिन्हें उसने नष्ट कर दिया था या खो दिया था।

एक बार फिर, उच्च श्रेणी के कैदी होने के नाते, उसे जेल जीवन की सबसे बुरी यातनाओं से बचाया गया था—उन तंग कोठरियों और बैरकों

से जहाँ कैदी एक-दूसरे पर तरह-तरह के अत्याचार करते थे। जेल अधीक्षक को यह भी पता था कि वह किसका बेटा है, और वह उस पर कड़ी नज़र रखता था। वह उसे मिलने-जुलने की अनुमति देने में उदार था। प्राण, वीना और उसके पिता से मिलने गए, फिर दुखी मन से अपने निर्वाचन क्षेत्र में चुनाव प्रचार के लिए लौट आए। मान से बात करने के लिए कोई नहीं सूझ रहा था। जब उसके पिता ने उससे पूछा कि क्या हुआ, तो मान कांपने लगा और कुछ बोल नहीं पाया। जब प्राण ने कहा, 'लेकिन क्यों, मान, क्यों?' तो उसने डरी हुई निगाहों से उसकी ओर देखा और मुंह फेर लिया।

वहाँ ज्यादा सुरक्षित विषय नहीं थे। कभी-कभी वे क्रिकेट की बात करते थे। इंग्लैंड ने सीरीज के चौथे टेस्ट मैच में भारत को हराया था, यह पहला मैच था जो ड्रॉ पर समाप्त नहीं हुआ था। लेकिन प्राण तो नींद में भी क्रिकेट की बातें कर सकता था, वहीं मान कुछ ही मिनटों में जम्हाई लेने लगा।

कभी-कभी वे भास्कर या प्राण के बच्चे के बारे में बात करते थे, लेकिन ये बातचीत भी दर्दनाक मोड़ ले लेती थी।

मान जेल की दिनचर्या के बारे में सबसे आसानी से बात करता था। उसने कहा कि वह थोड़ा काम करना चाहता है, हालाँकि यह अनिवार्य नहीं था: शायद जेल के सब्जी के बगीचे में। उसने प्रेम निवास के बगीचे के बारे में पूछा, लेकिन जब वीना ने उसका वर्णन करना शुरू किया तो वह रोने लगा।

वह बातचीत के दौरान बिना किसी कारण के बहुत ज्यादा जम्हाई लेता था, कभी-कभी तो तब भी जब वह थका हुआ नहीं होता था।

उसके पिता द्वारा उससे मिलने भेजा गया वकील अक्सर निराश होकर लौटता था। मान से जब भी कुछ पूछा जाता, वह कहता कि उसने पुलिस

से सब कुछ बता दिया है और वह इस बारे में दोबारा बात नहीं करेगा। लेकिन यह सच नहीं था। जब सब-इंस्पेक्टर और कुछ अन्य पुलिसकर्मी उससे पूछताछ करने और उसके कबूलनामे के बारे में विस्तार से जानने के लिए जेल आए, तो उसने जोर देकर कहा कि उसे उनसे भी कुछ और नहीं कहना है। उन्होंने उससे चाकू के बारे में पूछा। उसने कहा कि उसे याद नहीं है कि उसने उसे सईदा बाई के घर छोड़ा था या अपने साथ ले गया था; उसे लगता है कि वह उसे अपने साथ ले गया था। इसी बीच, बयानों और परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर उसके खिलाफ मामला मजबूत होता चला गया।

फिरोज से मिलने आने वाले किसी ने भी उसकी बिगड़ती हालत का ज़िक्र नहीं किया, लेकिन उसे इसकी जानकारी वार्ड के अख़बार, स्थानीय हिंदी अख़बार 'आदर्श' से मिली। कैदियों के बीच होने वाली गपशप से उसे नवाब साहब और सईदा बाई के बारे में फैली अफवाहों का भी पता चला। वह लगभग आत्महत्या करने की हद तक दुखी हो जाता था, और जेल के रीति-रिवाजों ने उसे सबसे बुरे दौर से बचाए रखा।

दिनचर्या ने उनके दिनों को अपने नियंत्रण में ले लिया। जेल नियमावली, जिसका ब्रह्मपुर जिला जेल लगभग पालन करती थी, इस प्रकार थी:

सुबह के स्नान आदि करने के लिए:

सुबह 7 बजे तक ताला खोलने के बाद।

परिसर में परेड के लिए उपस्थित होने का समय: सुबह 7 बजे से 9 बजे तक।

कोठरी या बैरक में बंद रहना: सुबह 9 बजे से 10 बजे तक।

स्नान करने और दोपहर का भोजन करने का समय: सुबह 10 बजे से 11 बजे तक।

कोठरी या बैरक में बंद रहना: सुबह 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक।

व्यायाम करने के लिए, शाम का भोजन करने के लिए,
और तलाशी ली जाएगी और दोपहर 3 बजे से ताला लगाने तक बंद कर दिया जाएगा।
वह एक आदर्श कैदी था और कभी किसी बात की शिकायत नहीं करता था। कभी-कभी वह अपनी कोठरी में मेज पर बैठकर एक कागज के टुकड़े को देखता रहता था जिस पर वह फ़िरोज़ को पत्र लिखने की योजना बना रहा था। लेकिन वह कभी उसे शुरू ही नहीं कर पाता था। इसके बजाय वह कुछ भी उकेरने लगता था। लॉक-अप में मुश्किल से सो पाने के कारण वह अपनी कोठरी में घंटों सोता रहता था।
एक बार उन्हें पहचान परेड के लिए कतार में खड़ा किया गया, लेकिन उन्हें यह नहीं बताया गया कि यह उनके लिए है या किसी अन्य कैदी के लिए। जब उन्होंने देखा कि उनका वकील मौजूद है, तब उन्हें एहसास हुआ कि यह उनके लिए ही है। लेकिन उन्होंने उस अहंकारी दिखने वाले क्लर्क को नहीं पहचाना जो कतार में आगे बढ़ा और उनके पास आकर थोड़ी देर रुका। और उन्हें इस बात की परवाह भी नहीं थी कि उनकी पहचान हुई है या नहीं।
एक अनुभवी कैदी ने हास्यबोध के साथ कहा, 'अगर उसकी मौत हो गई, तो तुम्हें फांसी हो सकती है। अगर ऐसा हुआ तो हम सब सुबह तक जेल में बंद रहेंगे, इसलिए मैं तुमसे इस असुविधा से बचने की उम्मीद कर रहा हूं।'
मान ने सिर हिलाया।
चूंकि उसे संतोषजनक जवाब नहीं मिल रहा था, कैदी ने आगे पूछा, 'क्या आप जानते हैं कि हर फांसी के बाद वे रस्सियों का क्या करते हैं?'
मान ने अपना सिर हिलाया।
'वे उन्हें चिकना बनाए रखने के लिए मोम और घी से लेप करते हैं।'

एक अन्य कैदी ने पूछा, 'किस अनुपात में?'
‘ओह, आधा-आधा,’ जानकार ने कहा। ‘और कीड़े-मकोड़ों को दूर रखने के लिए वे मिश्रण में थोड़ा सा कार्बोलिक एसिड मिलाते हैं। अगर दीमक या सिल्वरफिश उन्हें कुतर दें तो बहुत दुख होगा। तुम्हारा क्या ख्याल है?’ उसने मान से पूछा।
सभी लोग मान की ओर देखने लगे।
लेकिन मान ने सुनना बंद कर दिया था। न तो उस आदमी के हास्यबोध ने उसे प्रसन्न किया था और न ही उसकी क्रूरता ने उसे विचलित किया था।
विशेषज्ञ ने आगे कहा, ‘और चूहों से बचाने के लिए, वे पाँच रस्सियों को —इस जेल में पाँच रस्सियाँ हैं, मुझसे मत पूछो क्यों—एक मिट्टी के बर्तन में रखते हैं, ऊपर से बंद कर देते हैं, और उसे भंडारगृह की छत से लटका देते हैं। ज़रा सोचो। पाँच मनीला रस्सियाँ, एक इंच व्यास की, घी और खून पर पली-बढ़ी, बर्तन में साँपों की तरह रेंगती हुई, अपने अगले शिकार का इंतज़ार करती हुई—’
वह खुशी से हँसा और मान की ओर देखा।
17.30
मान ने भले ही अपनी गर्दन पर मंडरा रहे किसी भी खतरे पर ध्यान न दिया हो, लेकिन सईदा बाई के लिए अपनी गर्दन पर हुए हादसे से बेखबर रहना नामुमकिन था। कई दिनों तक वह मुश्किल से ही बोल पाती थीं, बस कांपती हुई सी आवाज में बोल पाती थीं। उनकी दुनिया बिखर गई थी: उनकी अपनी दुनिया, जिसमें बारीकियां और आकर्षण थे, और उनकी बेटी की दुनिया, जिसमें मासूमियत और सुरक्षा थी।
तसनीम अब अफवाहों के दाग से घिरी हुई थी। वह खुद भी इन अफवाहों से पूरी तरह वाकिफ नहीं थी; यह उसकी बुद्धि की कमी के कारण नहीं था, बल्कि इसलिए था क्योंकि बाहरी दुनिया से उसका संपर्क एक बार

फिर टूट चुका था। बिब्बो, जिसे साज़िश और गपशप का इतना शौक था कि वह पहले ही काफी नुकसान पहुंचा चुकी थी, उसे भी तसनीम पर तरस आया और उसने ऐसा कुछ नहीं कहा जिससे उसे ठेस पहुंचे। लेकिन नवाबज़ादा के साथ तसनीम की आंखों के सामने जो कुछ हुआ था, वही एकमात्र व्यक्ति था जिसके लिए उसके दिल में कभी गहरी भावना थी, उसके बाद उसे लगा कि खुद में सिमट जाना, उपन्यासों में खो जाना और घर के कामों में व्यस्त हो जाना ही सबसे सुरक्षित है। नवाबज़ादा अभी भी गंभीर खतरे में थे; बिब्बो के जवाबों से वह समझ गई थी कि उनकी जान खतरे में है। वह उनके लिए कुछ नहीं कर सकती थी; वह एक दूर और डूबते तारे की तरह थे। उसने अनुमान लगाया कि शराबी मान को निहत्था करने की कोशिश में उन्हें चोट लगी होगी, लेकिन उसने यह नहीं पूछा कि मान इतना शराबी और हिंसक क्यों हो गया था। जिन अन्य पुरुषों ने उसमें रुचि दिखाई थी, उनके बारे में उसने कुछ नहीं सुना था, और न ही वह कुछ सुनना चाहती थी। मजीद खान के बढ़ते प्रभाव में आकर, इशाक इस विवाद से पीछे हट गया और न तो उसने पत्र लिखा और न ही मिलने आया। रशीद ने उसे एक और बेतुका पत्र लिखा; लेकिन सईदा बाई ने तसनीम तक पहुँचने से पहले ही उसे फाड़ दिया।

सईदा बाई ने पहले से कहीं अधिक उग्रता से तसनीम की रक्षा करने और उसे परेशान करने की कोशिश की। कभी कोमल तो कभी क्रोधित, उसने एक बार फिर अपनी बेटी की बहन होने की पीड़ा को फिर से महसूस किया, अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति वाली माँ को अपने जीवन और उस जीवन की दिशा तय करते हुए सहने के दर्द को झेला, जिसे सईदा को शर्म और पीड़ा के साथ अपनी माँ को सौंपने के लिए मजबूर होना पड़ा था।

सईदा बाई अब गा नहीं सकती थीं, और उन्हें ऐसा लग रहा था कि उनका गला ठीक होने पर भी वे शायद फिर कभी गा न सकें। लेकिन तोता,

उनकी पीड़ा से बेखबर, अचानक बोलने लगा। उसने घर की मालकिन की नकल करते हुए एक अजीब सी कर्कश आवाज निकाली। यह सईदा बाई के लिए एक सांत्वना थी। दूसरी सांत्वना बिलग्रामी साहब थे, जिन्होंने न केवल उनकी चिकित्सकीय सहायता की, बल्कि प्रेस और पुलिस के इस कठिन दौर में, भय, संकट और पीड़ा के समय में भी उनका साथ दिया।
अब उसे एहसास हुआ कि वह मान से प्यार करती है।
जब उसके द्वारा लिखे गए उर्दू के दो अधूरे वाक्य उसके सामने आए, तो वह फूट-फूटकर रोने लगी, बिलग्रामी साहब की भावनाओं से बेखबर, जो उसके पास ही थे। उसने उसकी कैद के अपराधबोध और सदमे की कल्पना की, और यह सोचकर भयभीत हो गई कि इसका अंत कहाँ होगा। जब उसने उसकी माँ की मृत्यु के बारे में सुना, तो वह फिर रो पड़ी। वह उस तरह की महिला नहीं थी जो दुर्व्यवहार सहती हो या उन लोगों को महत्व देती हो जो उसका अपमान करते हैं, और वह समझ नहीं पा रही थी कि मान के हमले ने उसे ऐसा क्यों महसूस कराया। लेकिन शायद इसने उसे केवल उस बात का एहसास कराया जो वह पहले महसूस करती थी, लेकिन जानती नहीं थी। उसके पत्र में केवल यही लिखा था कि उसे कितना अफ़सोस है और वह अब भी उससे कितना प्यार करता है।
बैतर हाउस से जब वजीफे की अगली किस्त आई, तो सईदा बाई, जिन्हें पैसों की सख्त जरूरत थी, ने उसे बिना खोले ही लौटा दिया। जब सईदा ने बिलग्रामी साहब को अपनी गलती बताई, तो उन्होंने कहा कि वे ऐसा करने की सलाह नहीं देते, लेकिन आपने सही किया। अब उन्हें किसी भी चीज की जरूरत हो, तो वे उन पर भरोसा कर सकती हैं। सईदा ने उनकी मदद स्वीकार कर ली। उन्होंने एक बार फिर सईदा से उनकी पत्नी बनने और गायन और अपने पेशे को छोड़ने का अनुरोध किया। हालांकि सईदा

को नहीं पता था कि उनकी आवाज कभी वापस आएगी या नहीं, फिर भी उन्होंने एक बार फिर उनका अनुरोध ठुकरा दिया।

जैसा कि बिलग्रामी साहब को आशंका थी, प्रभाव का इस्तेमाल करने के उनके प्रयास ने मारह के राजा का ध्यान आकर्षित कर लिया, जिन्होंने खुलेआम पत्रकारों को इस घोटाले के बारे में हर संभव जानकारी जुटाने के लिए पैसे देना शुरू कर दिया—और विशेष रूप से मान के दोस्तों और परिवार द्वारा न्याय के किसी भी उल्लंघन को रोकने का प्रयास किया। उन्होंने महेश कपूर के खिलाफ चुनाव लड़ रहे कुछ निर्दलीय उम्मीदवारों को भी आर्थिक सहायता देने का प्रयास किया था, लेकिन यह निवेश उतना सफल नहीं रहा।

एक रात मारह का राजा तीन अंगरक्षकों के साथ आया और लगभग जबरदस्ती सईदा बाई के घर में घुस गया। वह हाल की घटनाओं से प्रसन्न था। महेश कपूर, जिसने उसकी जायदाद लूट ली थी और उसके भव्य मंदिर का अपमान किया था, अपमानित हो चुका था; मान—जिसे वह अपना प्रतिद्वंद्वी और अपने पुत्र को निष्कासित करने वाले का भाई मानता था—सुरक्षित रूप से कैद था; नवाब साहब—जिसके धर्म और उच्च सांस्कृतिक आडंबरों से उसे समान रूप से घृणा थी—शर्मिंदगी, भय और अपने पुत्र के लिए शोक से व्याकुल थे; और सईदा बाई दुनिया के सामने और भी अपमानित हो चुकी थीं और निस्संदेह मारह के राजा के आदेशों का पालन करेंगी।

'गाओ!' उसने उसे आदेश दिया। 'गाओ! मैंने सुना है कि जब से तुम्हारी गर्दन मरोड़ी गई है, तुम्हारी आवाज़ में मधुरता आ गई है।'

यह उनके और सईदा बाई दोनों के लिए सौभाग्य की बात थी कि चौकीदार ने पुलिस को सूचना दे दी थी। पुलिस आई और उन्हें वहां से जाने के लिए मजबूर होना पड़ा। उन्हें न तो तब और न ही बाद में पता

चला कि वे उस अच्छी तरह से धुले हुए फल काटने वाले चाकू के दूसरे शिकार बनने से कितने बाल-बाल बचे थे।

17.31

फिरोज कई दिनों तक जीवन और मृत्यु के बीच जूझता रहा। अंततः नवाब साहब इतने थक गए कि उनके बड़े बेटे ने उन्हें घर लौटने का आदेश दिया।

फिरोज की मौत के डर ने ही आखिरकार महेश कपूर जैसे ईमानदार और कानून का पालन करने वाले व्यक्ति को पुलिस अधीक्षक से बात करने के लिए मजबूर कर दिया। वह जानता था कि वह क्या कर रहा है: उसने जानबूझकर ऐसा किया, और उसे शर्म भी आई, लेकिन उसने ऐसा किया। उसने अपनी पत्नी को खो दिया था, वह अपने बेटे को खोने का दर्द सहन नहीं कर सकता था।

अगर फ़िरोज़ की मौत हो जाती है, और जांच अधिकारी और मजिस्ट्रेट उचित समझते हैं, तो मान पर भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत मुकदमा चलाया जा सकता है—और यह विचार इतना भयावह—और उनके अनुसार अन्यायपूर्ण—था कि वे इसे सहन नहीं कर सकते थे। एसपी, अपनी ओर से, एक ऐसे व्यक्ति थे जो रोटी पर मक्खन लगाने के कई तरीके जानते थे। उन्होंने कहा कि अब जब मामला प्रेस में इतनी खुलेआम फैल चुका है, तो यह एक मुश्किल समस्या है, लेकिन वे अपनी तरफ से हर संभव प्रयास करेंगे। उन्होंने कई बार दोहराया कि वे महेश कपूर का हमेशा से बहुत सम्मान करते रहे हैं। महेश कपूर ने भी, हालांकि उनके शब्दों से उनकी अपनी ईमानदारी को ठेस पहुंची, दोहराया कि एसपी के प्रति उनकी भावनाएँ भी कुछ ऐसी ही थीं।

वह एक बार फिर जेल में मान से मिलने गया। एक बार फिर, पिता और पुत्र के बीच ज्यादा बातचीत नहीं हुई। इसके बाद वह कुछ दिनों के लिए

सलीमपुर चला गया। उसने किसी को भी अपने किए के बारे में नहीं बताया और उसने अपने किए पर और पहले न किए जाने पर भी खुद को कोसा।

मान ने जेल के बगीचे में काम करना शुरू कर दिया था, और इससे उसे कुछ हद तक राहत मिली। अब भी, भाई-बहन की मुलाक़ातें उसके लिए कष्टदायक थीं। एक बार उसने प्राण से रशीद को गुमनाम रूप से कुछ पैसे भेजने को कहा और उसे अपना पता भी दे दिया। एक बार उसने प्रेम निवास के बगीचे से कुछ हरसिंगार के फूल मांगे, तो वीना ने बताया कि मौसम खत्म हो चुका है। ज़्यादातर समय मान को समझ नहीं आता था कि उनसे क्या कहे। उसे अब भी लगता था कि उसके अपराध के सदमे ने उनकी माँ को मार डाला है, और वे भी ऐसा ही महसूस करते हैं। लेकिन समय बीतता गया, और थकान ने उसके मन को शांत कर दिया।

फ़िरोज़ की हालत भी सुधर गई। पिछले दस वर्षों में चिकित्सा क्षेत्र में हुई प्रगति ने उसकी जान बचाई, लेकिन बड़ी मुश्किल से। अगर ब्रह्मपुर में एंटीबायोटिक्स उपलब्ध न होते, या डॉक्टर उन्हें देने में कुशल न होते, तो वह शायद उस छिपकली को दोबारा न देख पाता। लेकिन घाव और संक्रमण के बावजूद, चाहे उसकी इच्छा हो या न हो, वह जीवित रहा।

अपने दोस्त के धीरे-धीरे ठीक होने के साथ ही मान में भी बदलाव आ गया। ऐसा लगा जैसे वह अपनी मृत्यु के साये से बाहर आ गया हो। अगर खुद के खतरे ने सईदा बाई को यह एहसास दिलाया था कि वह उससे कितना प्यार करती हैं, तो फिरोज के खतरे ने उसे भी वैसा ही एहसास दिलाया था। प्राण ने जब उसे बताया कि फिरोज आखिरकार पूरी तरह से ठीक हो रहा है, तो वह खुश हो गया। उसकी भूख वापस आ गई। उसने प्रेम निवास से कुछ खास तरह का खाना मंगवाया। उसने रम चॉकलेट के बारे में मज़ाक किया, जो एक दोस्त कलकत्ता से लाया था, और कहा कि

जेल में शराब की तस्करी के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता था। उसने कुछ खास लोगों से मिलने की इच्छा जताई: अपने परिवार के सदस्यों से नहीं, बल्कि ऐसे लोगों से जो उसे कुछ अलग एहसास दिला सकें: लता (अगर वह उससे मिलने आ सकें) और उसकी एक पुरानी प्रेमिका, जिसकी अब शादी हो चुकी थी। दोनों लगातार दो दिनों में आईं: एक प्राण के साथ (श्रीमती रूपा मेहरा की आपत्तियों को दूर करने के बाद), और दूसरी अपने पति के साथ (उनके पति की आपत्तियों को दूर करने के बाद)।

लता, उदास और कुछ मायनों में भयावह माहौल के बावजूद, मान को देखकर खुश थी। यह सच था कि उनकी दुनियाएँ आपस में बहुत कम मिलती थीं। उसे इस बात पर हैरानी हुई थी कि प्राण पिछले अप्रैल फूल के दिन उसकी माँ को उनके भाग जाने की बात पर कैसे यकीन दिला पाया था। लेकिन उसे मान हमेशा की तरह हंसमुख और स्नेही याद था, और उसे यह सोचकर खुशी हुई कि मान को भी वह याद है। वह जानबूझकर खुश नहीं थी, लेकिन वह देख सकती थी कि उससे बात करने से मान को अच्छा लग रहा था। उन्होंने कलकत्ता, खासकर चटर्जी परिवार के बारे में बात की, और - कुछ हद तक इसलिए कि वह मान की दिलचस्पी बनाए रखना चाहती थी - उसने उससे सामान्य से कहीं अधिक खुलकर बात की, जितना वह आमतौर पर प्राण से करती थी। जेल अधिकारी थोड़ी दूरी पर बैठे थे, लेकिन जब वे ज़ोर से हँसे तो उन्होंने उत्सुकता से उनकी ओर देखा। वे मुलाक़ात कक्ष में ऐसी आवाज़ सुनने के आदी नहीं थे।

अगले दिन भी उन्हें वही खबर मिली। मान से उसकी पुरानी दोस्त सरला और उसका पति मिलने आए, जिसे उसके सभी दोस्त किसी कारणवश कबूतर कहकर बुलाते थे। सरला, जिसने मान को महीनों से नहीं देखा था,

ने उसे उस नए साल की पार्टी का किस्सा सुनाया जिसमें वह और कबूतर गए थे। यह पार्टी कबूतर के दोस्तों ने आयोजित की थी।
सरला ने कहा, "समारोह में थोड़ा रोमांच जोड़ने के लिए, उन्होंने इस साल कुछ साहसिक करने का फैसला किया और तरबूज का बाजार के एक सस्ते होटल से एक कैबरे डांसर को किराए पर लिया - उन होटलों में से एक जो हर हफ्ते एक नई सलोमी के साथ स्ट्रिपटीज का विज्ञापन करता है और जिस पर पुलिस लगातार छापे मारती रहती है।"
'अपनी आवाज़ धीमी करो,' मान हँसते हुए बोला।
सरला ने कहा, "खैर, वह नाची, अपने कुछ कपड़े उतारे, और फिर नाची —और यह सब इतना उत्तेजक और कामुक था कि औरतें दंग रह गईं। पुरुषों की तो मिली-जुली भावनाएँ थीं। उदाहरण के लिए, पिजन।"
'नहीं—नहीं,' कबूतर ने कहा।
'पिजन, वह तुम्हारी गोद में बैठ गई, और तुमने उसे रोका नहीं।'
'मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ?' कबूतर ने कहा।
'हां, वह सही कह रहा है—यह आसान नहीं है,' मान ने कहा।
सरला ने मान को एक नज़र देखा और आगे कहा: "खैर, फिर वह माला और गोपू के पास गई और गोपू को तरह-तरह से सहलाने लगी। गोपू नशे में था और उसने कोई आपत्ति नहीं जताई। लेकिन तुम जानती हो कि माला अपने पति को लेकर कितनी अधिकार जताती है। उसने गोपू को छुड़ाने की कोशिश की। लेकिन उस दूसरी औरत ने उसे वापस खींच लिया। बिलकुल बेशर्म। अगले दिन गोपू को खूब डांट पड़ी और सभी पत्नियों ने कसम खाई: अब कभी नहीं।"
मान जोर से हंस पड़ा, सरला भी हंसने लगी और यहां तक कि पिजन भी थोड़ा शर्मिंदा होकर मुस्कुराया।
'लेकिन असली मज़ा तो तुमने सुना ही नहीं,' सरला ने कहा। 'एक हफ़्ते

बाद पुलिस ने उस तरबूज़ का बाज़ार होटल पर छापा मारा और पता चला कि कैबरे डांसर एक लड़का था! उसके बाद तो हमने उन दोनों को खूब चिढ़ाया! मुझे अब भी यकीन नहीं होता। उसने हम सबको बेवकूफ बना दिया था—आवाज़, आँखें, चाल, पूरा माहौल—और असल में वो एक लड़का था!'

'मुझे शुरू से ही इस बात का शक था,' पिजन ने कहा।

सरला ने कहा, 'तुम्हें कुछ शक नहीं हुआ। अगर तुम्हें शक होता और फिर भी तुमने ऐसा बर्ताव किया होता तो मुझे और भी ज्यादा चिंता होती।'

'खैर, हमेशा से ऐसा नहीं था,' पिजन ने कहा।

सरला ने कहा, 'उसे खूब मजा आया होगा। हमें इस तरह बेवकूफ बनाकर। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि वह इतनी बेशर्मी से पेश आ सका। कोई लड़की ऐसा नहीं करती!'

'अरे नहीं,' पिजन ने व्यंग्यपूर्वक कहा। 'कोई लड़की ऐसा नहीं करेगी। सरला तो सभी महिलाओं को आदर्श मानती है।'

'खैर, पुरुषों की तुलना में तो हम निश्चित रूप से बेहतर हैं,' सरला ने कहा। 'मुसीबत ये है, कबूतर, कि तुम हमारी कद्र नहीं करते। खैर, तुममें से ज्यादातर लोग नहीं करते। मान अपवाद है; वो हमेशा से करता आया है। मान, बेहतर होगा कि तुम जल्दी जेल से बाहर आओ और मुझे बचाओ। क्या कहते हो, कबूतर?'

समय पूरा होने पर उसके पति को जवाब सोचने से मुक्ति मिल गई। लेकिन उनके जाने के आधे घंटे बाद तक, मान अपनी कोठरी में उस दृश्य की कल्पना करता रहा जो उसने अपने मन में गढ़ा था और खुद ही हंसता रहा। उसके साथी कैदी समझ नहीं पा रहे थे कि उसे क्या हो गया है।

17.32

जनवरी के अंत में मान का मामला मजिस्ट्रेट के समक्ष सुनवाई के लिए

आया। मुख्य प्रश्न यह था कि यदि कोई आरोप लगाए जाने हैं तो वे क्या होंगे।

स्पष्टतः, आरोप पत्र दाखिल करना आवश्यक था; कोई भी पुलिसकर्मी, चाहे वह अपने कर्तव्य का उल्लंघन करने या अपने विवेक का दुरुपयोग करने के लिए कितना भी समर्पित क्यों न हो, इतनी आसानी से मामले को बिगाड़ नहीं सकता था कि 'अंतिम रिपोर्ट' जारी की जाए, जिसमें यह कहा गया हो कि कोई मामला बनता ही नहीं है। सब-इंस्पेक्टर शायद गवाहों को अपने पक्ष में करने का प्रयास कर सकता था, लेकिन जांच अधिकारी के रूप में उसने अपना काम बखूबी किया था; और वह पहले से ही इस बात से काफी असंतुष्ट था कि उसके वरिष्ठ अधिकारी उसकी जांच में हस्तक्षेप कर रहे थे। वह जानता था कि मामला अभी भी जनता की नजरों में है, और वह यह भी जानता था कि न्याय प्रक्रिया में किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप की आशंका होने पर किसे बलि का बकरा बनाया जाएगा।

मान और उनके वकील दोनों ही सुनवाई की कार्यवाही में मौजूद थे।

सब-इंस्पेक्टर ने कमिटमेंट मजिस्ट्रेट के सामने खड़े होकर उन घटनाओं का वर्णन किया जिनके कारण जांच शुरू हुई, जांच का सारांश प्रस्तुत किया, मामले से संबंधित दस्तावेज प्रस्तुत किए, बताया कि पीड़ित अब निश्चित रूप से खतरे से बाहर है, और अंत में जोर देकर कहा कि मान पर स्वेच्छा से गंभीर चोट पहुंचाने का आरोप लगाया जाना चाहिए।

मजिस्ट्रेट असमंजस में पड़ गया।

‘हत्या के प्रयास के बारे में क्या?’ उसने पुलिसकर्मी की आंखों में देखते हुए और मान की आंखों से नज़रें बचाते हुए कहा।

‘हत्या का प्रयास?’ पुलिसकर्मी ने असंतुष्ट होकर अपनी मूंछों को थोड़ा खींचते हुए कहा।

मजिस्ट्रेट ने कहा, 'या कम से कम जानबूझकर हत्या का प्रयास। लेकिन इन बयानों से मुझे यकीन नहीं है कि पहला आरोप साबित नहीं हो सकता। भले ही गंभीर और अचानक उकसावा हुआ हो, पीड़ित ने इसकी जानकारी नहीं दी है। न ही प्रथम दृष्टया यह प्रतीत होता है कि घाव गलती या दुर्घटना से लगा था।'

पुलिसकर्मी चुप रहा, लेकिन उसने अपना सिर हिलाया।

मान के वकील ने मान के कान में फुसफुसाते हुए कहा कि उन्हें लगता है कि वे मुसीबत में हैं।

मजिस्ट्रेट ने आगे पूछा, 'और धारा 326 की जगह धारा 325 क्यों?'

पहली धारा गंभीर चोट से संबंधित थी; जब मामले की सुनवाई हुई, तो अधिकतम सात वर्ष की सजा हो सकती थी; लेकिन फिलहाल मान को जमानत पर रिहा किया जा सकता था। दूसरी धारा भी गंभीर चोट से संबंधित थी, लेकिन खतरनाक हथियार से किए गए अपराध के लिए। यह जमानती नहीं था, और अधिकतम सजा आजीवन कारावास थी।

सब-इंस्पेक्टर ने हथियार के न मिलने के बारे में कुछ बुदबुदाया।

मजिस्ट्रेट ने उसे घूरकर देखा। 'क्या आपको लगता है कि ये चोटें'—उन्होंने मेडिकल सर्टिफिकेट की ओर देखते हुए कहा—'आंतों में ये घाव वगैरह किसी लाठी से हुए हैं?'

सब-इंस्पेक्टर ने कुछ नहीं कहा।

मजिस्ट्रेट ने कहा, 'मुझे लगता है कि आपको और अधिक जांच करनी चाहिए। आपको अपने ही सबूतों और उन आरोपों की फिर से जांच करनी चाहिए जो सामने आते हैं।'

मान के वकील ने यह तर्क देने के लिए खड़े होकर कहा कि ऐसे मामले जांच अधिकारी के विवेकाधिकार के अंतर्गत आते हैं।

कार्यवाही से नाराज़ मजिस्ट्रेट ने तीखे स्वर में कहा, 'मुझे इसकी जानकारी

है। मैं उसे यह नहीं बता रहा कि वह क्या आरोप लगाए।' उन्होंने सोचा कि अगर मेडिकल सर्टिफिकेट न होता, तो सब-इंस्पेक्टर शायद मामूली चोट का आरोप लगाता।

मान की ओर देखते हुए मजिस्ट्रेट ने गौर किया कि वह घटनाओं से काफी अप्रभावित दिख रहा था। संभवतः वह उन अपराधियों में से एक था जो अपने अपराधों से कुछ नहीं सीखते।

मान के वकील ने जमानत की अर्जी दी, क्योंकि उन पर लगा एकमात्र आरोप जमानती था। मजिस्ट्रेट ने यह अर्जी मंजूर कर ली, लेकिन यह स्पष्ट था कि वे बहुत नाराज थे। उनकी नाराजगी का एक कारण वकील द्वारा 'अपने मुवक्किल की मां के निधन के कारण हुए गहरे दुख' का जिक्र करना था।

मान के वकील ने दबी आवाज़ में कहा: 'भगवान का शुक्र है कि आपका मुकदमा उसके द्वारा नहीं चलाया जाएगा।'

मान, जिसने अपने बचाव में दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया था, ने कहा: 'क्या मैं आज़ाद हूँ?'

'हां; फिलहाल के लिए।'

मुझ पर क्या आरोप लगाए जाएंगे?

मुझे खेद है कि यह स्पष्ट नहीं है। यह मजिस्ट्रेट किसी कारणवश आपकी जान के प्यासे हैं, और आपको गंभीर चोट पहुँचाने पर तुले हुए हैं।

लेकिन मजिस्ट्रेट को मान के खून में कोई दिलचस्पी नहीं थी, बल्कि उनका एकमात्र उद्देश्य कानून का पालन करना था। वे प्रभावशाली लोगों द्वारा न्याय के उल्लंघन में भागीदार नहीं बनना चाहते थे, और उन्हें संदेह था कि यह भी वैसा ही है। वे ऐसे न्यायालयों के बारे में जानते थे जहाँ ऐसा संभव हो सकता था, लेकिन उनका न्यायालय उनमें से एक नहीं था।

17.33

'कोई भी व्यक्ति किसी भी चुनाव में तब तक मतदान नहीं कर सकता जब तक वह किसी जेल में बंद हो, चाहे वह कारावास या निर्वासन की सजा के तहत हो या किसी अन्य कारण से, या पुलिस की वैध हिरासत में हो।'

लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 में इस संबंध में स्पष्ट प्रावधान थे, और इसी कारण मान उन महत्वपूर्ण आम चुनावों में मतदान नहीं कर सके जिनके लिए उन्होंने इतनी मेहनत से चुनाव लड़ा था। उनका पंजीकरण पसंद बाग में हुआ था, और विधानसभा के लिए ब्रह्मपुर (पूर्व) निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव 21 जनवरी को हुए थे।

दिलचस्प बात यह है कि यदि वह सालिमपुर-सह-बैतार के निवासी होते, तो वे मतदान करने में सफल हो जाते; क्योंकि प्रशिक्षित कर्मियों की कमी के कारण, विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान चरणबद्ध तरीके से हुआ था, और वहां विधानसभा चुनाव 30 जनवरी को हुए थे।

अब लड़ाई बेहद कड़वी हो गई थी। वारिस महेश कपूर के उतने ही कट्टर प्रतिद्वंद्वी थे जितने कि कभी उनके प्रबल समर्थक रहे थे। सब कुछ बदल चुका था; ज़मींदारी कानून, अफवाहें और घोटाले, कांग्रेस समर्थक और विरोधी भावनाएँ, धर्म, चुनाव से पहले हुए इस भयंकर संघर्ष में किसी भी मुद्दे को अछूता नहीं छोड़ा गया।

नवाब साहब ने सीधे तौर पर यह नहीं कहा था कि वारिस महेश कपूर के खिलाफ चुनाव लड़ें, लेकिन यह स्पष्ट था कि वे नहीं चाहते थे कि वारिस उनका समर्थन करें। वारिस, जो मान को अब रक्षक नहीं बल्कि युवा नवाबजादा की हत्या का प्रयास करने वाला मानते थे, ने उनके और उनके पिता, उनके कबीले, उनके धर्म और उनकी पार्टी की जमकर निंदा की। जब स्थानीय कांग्रेस कार्यालय ने देरी से बैतर किले में बड़ी संख्या में पोस्टर और झंडे भेजे, तो उन्होंने उन्हें जला दिया।

वारिस बेहद उत्तेजित थे और उन्होंने ज़ोरदार भाषण दिया। इलाके में पहले से ही लोकप्रिय, वे अब लोकप्रियता की एक विशाल लहर पर सवार हो गए थे। वे नवाब साहब के रक्षक थे, और उनके घायल बेटे के भी रक्षक थे, जो (जैसा कि दावा करना सुविधाजनक था) अपने तथाकथित मित्र के विश्वासघात के कारण मृत्यु के कगार पर था। वारिस का दावा था कि नवाब साहब को ब्रह्मपुर में ही रहना पड़ा, लेकिन अगर वे चुनाव प्रचार कर पाते, तो वे जिले के हर मंच से लोगों से आग्रह करते कि वे उनकी मेहमाननवाज़ी के नमक के साथ विश्वासघात करने वाले, नीच महेश कपूर और उसके सभी आदर्शों को उस क्षेत्र से बाहर निकाल दें, जहाँ वह अभी-अभी रेंगकर पहुँचा था।

और महेश कपूर और कांग्रेस किस बात के लिए खड़े थे? वारिस ने आगे पूछा, जो एक राजनीतिक और सामंती नेता के रूप में अपनी भूमिका का आनंद लेने लगे थे। उन्होंने जनता को क्या दिया था? नवाब साहब और उनका परिवार पीढ़ियों से जनता के लिए काम करता रहा था, कांग्रेस की स्थापना से बहुत पहले ही उन्होंने अंग्रेजों के विद्रोह में लड़ाई लड़ी थी, वीरतापूर्वक शहीद हुए थे, जनता के दुखों को सहा था, उनकी गरीबी पर दया दिखाई थी, और हर संभव तरीके से उनकी मदद की थी। वारिस ने कहा, नवाब साहब के पिता और दादा द्वारा स्थापित बिजली स्टेशन, अस्पताल और स्कूलों को देखिए। उनके द्वारा स्थापित या दान किए गए धार्मिक ट्रस्टों को देखिए। मुहर्रम के भव्य जुलूसों के बारे में सोचिए - बैतर वर्ष के उत्सवों का भव्य समापन - जिसका खर्च नवाब साहब ने जनहित और निजी दान के रूप में अपनी जेब से उठाया था। और फिर भी नेहरू और उनके जैसे लोग इतने प्रिय व्यक्ति को नष्ट करने की कोशिश कर रहे थे, और उनकी जगह किसे लाना चाहते थे? छोटे-मोटे सरकारी अधिकारियों के एक लालची समूह को, जो जनता का खून चूस लेंगे। जो

लोग जमींदारों द्वारा जनता के शोषण की शिकायत करते थे, उन्हें उन्होंने सुझाव दिया कि वे बैतर एस्टेट के किसानों की स्थिति की तुलना पास के एक गाँव के किसानों से करें, जहाँ वे घोर गरीबी में डूबे हुए थे, जिसे देखकर दया नहीं आती थी, बल्कि भय उत्पन्न होता था। वहाँ के किसान —विशेषकर भूमिहीन चमार—इतने गरीब थे कि वे खलिहान में बैलों के गोबर में से बचा हुआ अनाज छानते थे—उसे धोते, सुखाते और खाते थे। फिर भी कई चमार कांग्रेस को आँख बंद करके वोट देने जा रहे थे, उस सरकार को जिसने उन्हें इतने लंबे समय तक सताया था। उन्होंने अपने अनुसूचित जाति के भाइयों से आग्रह किया कि वे सच्चाई को समझें और उस साइकिल के लिए वोट दें जिसकी वे आकांक्षा कर सकते हैं, न कि बैलों की जोड़ी के लिए, जो उन्हें केवल उन अपमानजनक दृश्यों की याद दिलाएगी जिन्हें वे भली-भांति जानते हैं।

महेश कपूर खुद को पूरी तरह से रक्षात्मक स्थिति में पा रहे थे। वैसे भी, उनका दिल अब ब्रह्मपुर में ही बसा था: जेल की कोठरी में, अस्पताल के वार्ड में, प्रेम निवास के उस कमरे में जहाँ उनकी पत्नी अब नहीं सोती थीं। यह संघर्ष, जो एक विशाल चमकते बिंदु (उनका अपना) वाले दस-नुकीले तारे की तरह शुरू हुआ था, धीरे-धीरे दो व्यक्तियों के बीच की लड़ाई में बदल गया था: एक वह व्यक्ति जो खुद को नवाब साहब के उम्मीदवार के रूप में पेश करने की कोशिश कर रहा था और दूसरा वह व्यक्ति जिसने महसूस किया कि उसकी जीत का एकमात्र मौका अपनी व्यक्तिगत पहचान को दबाकर जवाहरलाल नेहरू के उम्मीदवार के रूप में खुद को प्रस्तुत करने में है।

अब वे अपने बारे में नहीं, बल्कि कांग्रेस पार्टी के बारे में बात कर रहे थे। लेकिन हर सभा में उनका विरोध किया जाता और उनसे उनके बेटे के कार्यों के बारे में स्पष्टीकरण मांगा जाता। क्या यह सच था कि उन्होंने

अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके उसे बचाने की कोशिश की थी? अगर युवा नवाबजादा की मृत्यु हो जाती तो क्या होता? क्या यह मुसलमानों के नेताओं को एक-एक करके खत्म करने की साजिश थी? जिस व्यक्ति ने अपना जीवन सांप्रदायिक सद्भाव के लिए संघर्ष करते हुए बिताया हो, उसके लिए ऐसे आरोप सहना मुश्किल था। अगर उनका दिल दुखी न होता, तो वे आक्रामक मूर्खता के सामने हमेशा की तरह उग्रता से जवाब देते, और इससे उन्हें और भी नुकसान होता।

न तो जानबूझकर इशारे में और न ही गुस्से में आकर उन्होंने नवाब साहब के बारे में फैल रही अफवाहों का ज़िक्र किया। लेकिन अब ये अफवाहें भी सलीमपुर, बैतर और इन दोनों छोटे कस्बों के आसपास के इलाकों में फैलने लगीं। ये अफवाहें महेश कपूर से जुड़ी अफवाहों से कहीं ज़्यादा नैतिक रूप से नुकसानदायक थीं, भले ही इन पर लगाए गए आरोप दो दशक पुराने थे; और हिंदू सांप्रदायिक दलों ने इनका भरपूर फायदा उठाने की कोशिश की।

लेकिन कई लोग, विशेषकर बैतर के आसपास के लोग, नाजायज संतान और बलात्कार की इन अफवाहों पर विश्वास करने से इनकार करते थे। और कुछ लोग, जिन्होंने इन अफवाहों पर विश्वास किया, उनका मानना था कि नवाब साहब को अपने बेटे के शोक के कारण ईश्वर ने पर्याप्त दंड दे दिया है; और दानशीलता यह दर्शाती है कि पापों की भी एक समय सीमा होती है।

व्यवहारिक दृष्टि से भी महेश कपूर की हालत बहुत खराब थी। उनके पास अब दो जीप नहीं थीं, बल्कि कांग्रेस कार्यालय द्वारा दी गई एक खस्ताहाल गाड़ी ही बची थी। उनका बेटा भी अब उनके साथ नहीं था, जो उनकी मदद कर सके, उन्हें लोगों से मिलवा सके। उनकी पत्नी, जो उनकी सहायता कर सकती थीं, जो निर्वाचन क्षेत्र की शर्मीली महिलाओं से बात

कर सकती थीं, अब इस दुनिया में नहीं थीं। एक समय उन्हें उम्मीद थी कि जवाहरलाल नेहरू पूर्व प्रदेश के अपने तूफानी दौरे में समय निकालकर सलीमपुर आ सकते हैं, लेकिन उनकी जीत इतनी निश्चित लग रही थी कि उन्होंने इस बारे में ज्यादा जोर नहीं दिया। और अब ऐसा लग रहा था कि नेहरू के आने से ही उनकी स्थिति सुधर सकती है। उन्होंने दिल्ली और ब्रह्मपुर को टेलीग्राम भेजकर अनुरोध किया कि नेहरू का लंबा सफर कुछ घंटों के लिए उनकी ओर मोड़ दिया जाए; लेकिन वे जानते थे कि प्रांत के आधे से ज्यादा कांग्रेस उम्मीदवार इसी तरह की गुहार लगा रहे थे, और उनके राजी होने की संभावना बहुत कम थी।

वीना और केदारनाथ कुछ दिनों के लिए मदद करने आए। वीना को लगा कि उसके पिता को मान से ज़्यादा उसकी ज़रूरत है, जिससे वह ज़्यादा से ज़्यादा हर दूसरे दिन कुछ मिनटों के लिए ही मिल पाती थी। उसके आने का असर कस्बों में, विशेषकर सलीमपुर में, देखने को मिला। उसका सरल लेकिन जीवंत चेहरा, उसका स्नेही स्वभाव और उसकी माँ, उसके भाई और उसके संकटग्रस्त पिता के लिए उसके दुख की गरिमा ने कई महिलाओं के दिलों को छू लिया। जब वह बोलती, तो वे सार्वजनिक सभाओं में भी शामिल होतीं। मताधिकार के विस्तार के कारण, अब वे मतदाताओं का आधा हिस्सा थीं।

कांग्रेस के ग्राम स्तरीय कार्यकर्ताओं ने जी-जान से प्रचार किया, लेकिन उनमें से कई को लगने लगा था कि हालात उनके खिलाफ पूरी तरह से बदल चुके हैं और वे अपनी निराशा को छिपा नहीं पा रहे थे। उन्हें अनुसूचित जाति के वोटों को लेकर भी कोई निश्चितता नहीं थी क्योंकि समाजवादी दल डॉ. अंबेडकर की पार्टी के साथ अपने चुनावी गठबंधन का ढिंढोरा पीट रहे थे।

रशीद समाजवादियों के लिए प्रचार करने अपने गाँव लौट आया था। वह

बेचैन और उत्तेजित था, और यहाँ तक कि अस्थिर भी लग रहा था। हर दूसरे दिन वह सलीमपुर के लिए निकल पड़ता था। लेकिन रामलाल सिन्हा के चुनाव प्रचार में वह मददगार साबित हुआ या बोझ, यह तय करना मुश्किल था। वह मुसलमान और धार्मिक था, जिससे उसे मदद मिली; लेकिन देबरिया गाँव में लगभग सभी ने उसे त्याग दिया था—बाबा से लेकर नेताजी तक—और कहीं भी उसकी कोई खास हैसियत नहीं थी। विशेष रूप से सगल के बड़े-बुजुर्ग उसके दिखावे का मज़ाक उड़ाते थे। एक मज़ाक खूब प्रचलित था कि 'अब्द-उर-रशीद' या 'निर्देशक का गुलाम' सोचता है कि उसने अपने नाम का मुखिया खो दिया है, जबकि उसने सिर्फ अपना ही चेहरा खोया था। सगल वारिस खान के स्वतंत्रतावादी खेमे में पूरी तरह से शामिल हो गया था।

देबरिया में स्थिति कुछ ज़्यादा जटिल थी। इसका एक कारण यह था कि वहाँ हिंदुओं की संख्या काफ़ी अधिक थी: ब्राह्मणों और बनियों का एक छोटा समूह और जाटवों तथा अन्य अनुसूचित जातियों का एक बड़ा समूह। कांग्रेस, केएमपीपी, समाजवादी, कम्युनिस्ट और हिंदू दल, हर पार्टी को यहाँ वोट मिलने की उम्मीद थी। मुसलमानों के बीच, नेताजी की अनियमित उपस्थिति के कारण मामला और भी पेचीदा हो गया था। उन्होंने लोगों से संसद के लिए कांग्रेस उम्मीदवार को वोट देने का आग्रह किया, जिससे विधानसभा चुनाव का सवाल खुला रह गया; लेकिन परिणामस्वरूप होने वाले मतदान में कुछ न कुछ प्रभाव पड़ना तय था। एक ग्रामीण जिसने अपना संसदीय मतपत्र हरे रंग के उस डिब्बे में डाला जिस पर जुते हुए बैलों का चिन्ह था, उसके दूसरे मतपत्र को उसी चिन्ह वाले भूरे रंग के डिब्बे में डालने की पूरी संभावना थी।

जब महेश कपूर, प्रचार के लंबे और धूल भरे घंटों के बाद, एक शाम केदारनाथ के साथ देबरिया पहुंचे, तो बाबा ने उनका स्वागत किया और

आतिथ्य सत्कार किया, लेकिन उन्हें स्पष्ट रूप से बताया कि स्थिति में बहुत बदलाव आ चुका है।

महेश कपूर ने पूछा, 'और आपका क्या विचार है? क्या आप बदल गए हैं? क्या आप मानते हैं कि बेटे के अपराध के लिए पिता को दंडित किया जाना चाहिए?'

बाबा ने कहा: 'मैंने ऐसा कभी नहीं माना। लेकिन मैं यह जरूर मानता हूं कि बेटे के व्यवहार के लिए पिता जिम्मेदार होता है।'

महेश कपूर ने यह कहने से परहेज किया कि नेताजी बाबा के लिए कोई बड़ी उपलब्धि साबित नहीं हुए थे। यह मुद्दा अप्रासंगिक था और उनमें बहस करने की ऊर्जा भी नहीं थी। शायद उसी क्षण उन्हें सबसे अधिक गहराई से यह एहसास हुआ कि वे लड़ाई हार चुके हैं।

जब वे देर रात सलीमपुर लौटे, तो उन्होंने अपने दामाद से कहा कि वे अकेले रहना चाहते हैं। कमरे में बिजली कम थी, बल्ब मंद और टिमटिमा रहे थे। उन्होंने अकेले ही भोजन किया और अपने जीवन के बारे में सोचा, अपने पारिवारिक जीवन को सार्वजनिक जीवन से अलग करने का प्रयास किया और बाद वाले पर ध्यान केंद्रित किया। अब उन्हें पहले से कहीं अधिक महसूस हो रहा था कि उन्हें 1947 में ही राजनीति छोड़ देनी चाहिए थी। अंग्रेजों से लड़ते समय उनमें जो दृढ़ संकल्प था, वह स्वतंत्रता की अनिश्चितताओं और कमजोरियों में लुप्त हो गया था।

रात के खाने के बाद उन्होंने अपनी डाक देखी। उन्होंने स्थानीय मतदाता सूचियों का विवरण देने वाला एक बड़ा लिफाफा उठाया। फिर उन्होंने एक और स्थानीय पत्र उठाया और उस पर लगे डाक टिकट पर राजा जॉर्ज VI का चेहरा देखकर चौंक गए।

एक मिनट तक वह उसे घूरता रहा, मानो पूरी तरह से व्याकुल हो गया हो, मानो उसे कोई अपशगुन दिख गया हो। उसने बड़ी सावधानी से लिफाफे

को नीचे रखे पोस्टकार्ड पर रख दिया: एक पोस्टकार्ड जिस पर गांधीजी का चित्र था। उसे ऐसा लगा जैसे उसने अनजाने में ही अपने सबसे अच्छे दांव को मात दे दी हो। उसने एक बार फिर डाक टिकट को देखा।

इसका एक सीधा-सा जवाब था, पर उन्हें समझ नहीं आया। चुनाव संबंधी डाक की भारी मांग और संभावित कमी की आशंका के चलते डाक एवं तार विभाग ने निर्देश जारी किए थे कि किंग जॉर्ज श्रृंखला के पुराने स्टॉक डाकघरों में बिक्री के लिए रखे जाएं। बस इतना ही। किंग जॉर्ज VI ने लंदन में अपनी बीमारी के बिस्तर से रात के अंधेरे में महेश कपूर से मिलने जाकर यह भविष्यवाणी नहीं की थी कि वे उनसे फिलिप्पी में फिर मिलेंगे।

17.34

अगली सुबह महेश कपूर भोर से पहले उठे और अभी तक जागे न शहर में टहलने निकल पड़े। आसमान अभी भी तारों से भरा था। कुछ पक्षियों ने अभी-अभी गाना शुरू किया था। कुछ कुत्ते भौंक रहे थे। अज़ान की धीमी आवाज़ के बीच एक मुर्गे ने बांग दी। फिर से सब कुछ शांत हो गया, सिवाय कभी-कभार पक्षियों के चहचहाने के।

'उठो, यात्री, आकाश प्रकाश से भरा है।'

तुम क्यों सो रहे हो? अभी रात नहीं हुई है।

उसने गुनगुनाया और उसे एक नई ऊर्जा का अहसास हुआ, आशा का नहीं तो कम से कम दृढ़ संकल्प का।

उसने रफी साहब द्वारा दी गई घड़ी को देखा, तारीख के बारे में सोचा और मुस्कुरा दिया।

उसी सुबह बाद में, जब वह चुनाव प्रचार के लिए निकलने ही वाले थे, तभी सालिमपुर के उप-विभागीय अधिकारी बड़ी जल्दी में उनके पास आए।

‘महोदय, प्रधानमंत्री जी कल दोपहर यहाँ आ रहे हैं। मुझे फोन पर आपको

सूचित करने का निर्देश दिया गया था। वे बैतर और सलीमपुर में भाषण देंगे।'

महेश कपूर ने अधीरता से पूछा, 'क्या आप निश्चित हैं? क्या आप बिल्कुल निश्चित हैं?' वह आश्चर्यचकित लग रहे थे, मानो उनके मूड में सुधार से ही उनकी किस्मत में भी सुधार आ गया हो।

जी जी, बिल्कुल। मुझे पूरा यकीन है।' एसडीओ उत्साहित और बेहद चिंतित दोनों लग रहे थे। 'मैंने कोई व्यवस्था नहीं की है। बिलकुल भी नहीं।'

एक घंटे के भीतर ही यह असाधारण खबर पूरे शहर में फैल गई और दोपहर तक गांवों तक भी पहुंच गई।

62 वर्ष की आयु में भी आश्चर्यजनक रूप से युवा दिखने वाले जवाहरलाल नेहरू, निर्वाचन क्षेत्र की सड़कों की धूल से रंगे हुए अचकन पहने हुए, बैतर स्थित सर्किट हाउस में महेश कपूर और कांग्रेस के संसदीय उम्मीदवार से मिले। महेश कपूर को अब भी इस पर मुश्किल से ही विश्वास हो रहा था।

नेहरू ने कहा, 'कपूर साहब, उन्होंने मुझसे कहा था कि मुझे यहाँ नहीं आना चाहिए क्योंकि यह एक हारी हुई लड़ाई थी। इससे मेरा आने का इरादा और भी पक्का हो गया।' उन्होंने पास खड़े एक आदमी से चिड़चिड़ाते हुए कहा, 'ये चीजें हटाओ,' और गर्दन झुकाकर सात गेंदे के फूलों की मालाएँ उतार दीं। 'फिर उन्होंने मुझे आपके बेटे के किसी झमेले के बारे में कुछ बेतुकी बातें बताईं। मैंने पूछा कि क्या इसका आपसे कोई लेना-देना है—और साफ तौर पर नहीं था। इस देश में लोग बेवजह की बातों पर ज्यादा ध्यान देते हैं।'

'पंडितजी, मैं आपका जितना भी धन्यवाद करूं कम है,' महेश कपूर ने कृतज्ञता और गरिमा के साथ कहा; वह बहुत भावुक थे।

‘धन्यवाद? मुझे धन्यवाद देने की कोई ज़रूरत नहीं है। वैसे, श्रीमती कपूर के बारे में सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ। मुझे याद है कि मैं उनसे इलाहाबाद में मिली थी—लेकिन वह तो—क्या?—पांच साल पहले की बात होगी।’

'ग्यारह।'

‘ग्यारह! क्या बात है? व्यवस्था करने में इतना समय क्यों लग रहा है? मुझे सलीमपुर पहुँचने में देर हो जाएगी।’ उन्होंने एक गोली मुँह में डाली। ‘ओह, मैं आपको बताना भूल गया था। मैं शर्मा को अपने मंत्रिमंडल में शामिल होने के लिए कह रहा हूँ। वह मुझे बार-बार मना नहीं कर सकते। मुझे पता है कि उन्हें मुख्यमंत्री बनना पसंद है, लेकिन मुझे दिल्ली में भी एक मजबूत टीम की ज़रूरत है। इसीलिए यह बहुत ज़रूरी है कि आप यहाँ जीतें और पूर्व प्रदेश में मामलों को संभालने में मदद करें।’

महेश कपूर ने आश्चर्य और प्रसन्नता के साथ कहा, 'पंडितजी, मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करूंगा।'

नेहरू ने किले की ओर इशारा करते हुए कहा, ‘और ज़ाहिर है, हम प्रतिक्रियावादी ताकतों को संवेदनशील सीटों पर जीत हासिल नहीं करने दे सकते।’ उन्होंने अधीरता से आगे कहा, ‘भूषण कहाँ हैं—क्या उनका यही नाम है? क्या वे कुछ भी व्यवस्थित नहीं कर सकते?’ वे बरामदे में गए और रसद व्यवस्था के प्रभारी जिला कांग्रेस कमेटी के अधिकारी को आवाज़ लगाई। उन्होंने कहा, ‘अगर हम एक माइक्रोफोन, एक मंच और कुछ पुलिसकर्मियों का इंतज़ाम नहीं कर सकते, तो हम देश कैसे चला सकते हैं?’ जब उन्हें पता चला कि झंझट भरे और अंतहीन सुरक्षा इंतज़ाम आखिरकार हो गए हैं, तो वे सर्किट हाउस की सीढ़ियों से दो-दो सीढ़ियाँ उतरकर कार में कूद पड़े।

हर सौ गज पर उमड़ती भीड़ जुलूस को रोक रही थी। जब वे उस स्थान

पर पहुँचे जहाँ उन्हें भाषण देना था, तो वे फूलों से सजे मंच की सीढ़ियों पर दौड़कर नीचे एकत्रित विशाल जनसमूह को नमस्कार करने लगे। कस्बे और गाँव के निवासी, दोनों ही दो घंटे से अधिक समय से उनका बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। उनके आने का आभास होते ही, उन्हें देखने से पहले ही, विशाल और उत्साहित जनसमूह में एक बिजली सी दौड़ गई और वे चिल्ला उठे:

'Jawaharlal Nehru Zindabad!'

'Jai Hind!'

'Congress Zindabad!'

'Maharaj Jawaharlal ki jai!'

यह आखिरी बात नेहरू के लिए असहनीय थी।

'बैठ जाओ, बैठ जाओ, चिल्लाओ मत!' वह चिल्लाया।

भीड़ खुशी से हंस पड़ी और जयकारे लगाती रही। नेहरू नाराज हो गए, किसी के रोकने से पहले ही मंच से नीचे कूद गए और लोगों को धक्का देकर गिराने लगे। 'जल्दी करो, बैठ जाओ, हमारे पास समय नहीं है।'

एक व्यक्ति ने अपने दोस्तों से गर्वपूर्वक कहा, 'उसने मुझे धक्का दिया—जोरदार धक्का!'

वह इसके बारे में हमेशा शेखी बघारता रहेगा।

जब वह मंच पर वापस लौटे, तो कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता ने मंच पर मौजूद किसी अन्य व्यक्ति का परिचय देना और उसका समर्थन करना शुरू कर दिया।

नेहरू ने कहा, 'बस बहुत हो गया, बहुत हो गया, बैठक शुरू करो।'

फिर किसी ने जवाहरलाल नेहरू के बारे में बात करना शुरू कर दिया, कि वे उन्हें अपने साथ पाकर कितने सम्मानित, गौरवान्वित, सौभाग्यशाली और भाग्यशाली महसूस करते हैं, कि वे कांग्रेस की आत्मा, भारत का

गौरव, जनता के जवाहर और लाल, उनके रत्न और उनके प्रिय हैं।
इन सब बातों से नेहरू बहुत क्रोधित हो गए। उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा, 'अरे, क्या तुम्हारे पास करने के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं है?' वे महेश कपूर की ओर मुड़े और बोले, 'जितना ज़्यादा वे मेरे बारे में बात करेंगे, उतना ही कम मैं तुम्हारे लिए—न कांग्रेस के लिए—न जनता के लिए उपयोगी रहूँगा। उनसे कहो कि चुप रहें।'
महेश कपूर ने वक्ता को चुप करा दिया, जो आहत प्रतीत हो रहा था; और नेहरू ने तुरंत हिंदी में पैंतालीस मिनट का भाषण देना शुरू कर दिया।
उन्होंने भीड़ को मंत्रमुग्ध कर दिया। यह कहना मुश्किल था कि वे उन्हें समझ पाए या नहीं, क्योंकि वे एक विचार से दूसरे विचार पर बेतरतीब ढंग से बोलते रहे, और उनकी हिंदी भी बहुत अच्छी नहीं थी, लेकिन फिर भी वे उन्हें ध्यान से सुनते रहे और विस्मय और श्रद्धा से उन्हें देखते रहे।
उनका भाषण कुछ इस प्रकार था:
अध्यक्ष महोदय, इत्यादि—भाइयों और बहनों—हम यहाँ एक कठिन समय में एकत्रित हुए हैं, लेकिन यह आशा का समय भी है। गांधीजी हमारे साथ नहीं हैं, इसलिए यह और भी महत्वपूर्ण है कि आप राष्ट्र और स्वयं पर विश्वास रखें।
दुनिया भी मुश्किल दौर से गुज़र रही है। कोरिया संकट है, फारस की खाड़ी में संकट है। आपने शायद अंग्रेजों द्वारा मिस्रियों को धमकाने की कोशिश के बारे में सुना होगा। इससे देर-सवेर मुसीबतें तो आएंगी ही। यह बुरी बात है, और हम इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते। दुनिया को शांति से जीना सीखना होगा।
अपने देश में भी हमें शांति से रहना चाहिए। सहिष्णु होने के नाते हमें सहिष्णु होना चाहिए। हमने कई साल पहले अपनी स्वतंत्रता इसलिए खो दी क्योंकि हम एकजुट नहीं थे। हमें इसे दोबारा नहीं होने देना चाहिए।

यदि धार्मिक कट्टरपंथी और हर तरह के सांप्रदायिक लोग अपनी मनमानी करते रहे तो देश पर विपत्ति आ जाएगी।

हमें अपनी सोच में बदलाव लाना होगा। यही सबसे महत्वपूर्ण है। हिंदू संहिता विधेयक एक महत्वपूर्ण कदम है जिसे पारित किया जाना चाहिए। विभिन्न राज्यों के जमींदारी विधेयकों को लागू किया जाना चाहिए। हमें दुनिया को नए नजरिए से देखना होगा।

भारत प्राचीन परंपराओं की समृद्ध भूमि है, लेकिन आज की ज़रूरत इन परंपराओं को विज्ञान से जोड़ना है। चुनाव जीतना ही काफी नहीं है, हमें उत्पादन की लड़ाई जीतनी होगी। हमें विज्ञान और अधिक विज्ञान, उत्पादन और अधिक उत्पादन चाहिए। हर हाथ को हल चलाना होगा और हर कंधे को काम में लगाना होगा। हमें विशाल बांधों की सहायता से अपनी शक्तिशाली नदियों की शक्ति का दोहन करना होगा। विज्ञान और आधुनिक सोच के ये स्मारक हमें सिंचाई के लिए पानी और बिजली भी प्रदान करेंगे। हमें गांवों में पीने का पानी, भोजन, आवास, दवा और साक्षरता हर जगह उपलब्ध करानी होगी। हमें प्रगति करनी होगी, अन्यथा हम पीछे रह जाएंगे।

कभी नेहरू भावुक हो जाते, कभी काव्यात्मक लहजे में बात करते, कभी जोश में आकर भीड़ को फटकार लगाते। जैसा कि उनके पहले के नारों से स्पष्ट था, वे एक दबंग लोकतंत्रवादी थे। लेकिन लोग उनकी हर बात पर तालियाँ बजाते थे, चाहे वे कुछ भी कहें। भाखरा बांध के आकार पर भी लोग जयकार करते थे, जब वे कहते थे कि अमेरिकियों को कोरिया पर अत्याचार नहीं करना चाहिए—चाहे कोरिया कोई भी देश हो—तब भी लोग जयकार करते थे। और सबसे ज़्यादा जयकार तब होती थी जब वे उनका समर्थन मांगते थे, जो उन्होंने लगभग सहज भाव से किया था। अपनी जनता की नज़रों में नेहरू—स्वतंत्रता के राजकुमार और नायक,

महात्मा गांधी के उत्तराधिकारी—कोई गलती कर ही नहीं सकते थे।
अपने भाषण के आखिरी दस मिनट में ही वे लोगों से वोट माँगते थे—कांग्रेस के लिए, उस पार्टी के लिए जिसने देश को आजादी दिलाई थी और जो अपनी तमाम कमियों के बावजूद भारत को एकजुट रखने वाली एकमात्र पार्टी थी; कांग्रेस के संसदीय उम्मीदवार के लिए, जो 'एक नेक इंसान' थे (नेहरू उनका नाम भूल गए थे); और अपने पुराने साथी महेश कपूर के लिए, जिन्होंने महत्वपूर्ण जमींदारी कानून बनाकर पूरे राज्य के लिए इतना बड़ा काम किया था। उन्होंने गणतंत्रवाद के युग में मौजूद कुछ ऐसे लोगों की याद दिलाई जो सामंती निष्ठाओं का दुरुपयोग अपने निजी स्वार्थों के लिए करने की कोशिश कर रहे थे। उनमें से कुछ तो निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ रहे थे। उनमें से एक, जिसके पास एक विशाल जागीर थी, साधारण साइकिल को ही अपना चुनाव चिन्ह बना रहा था। (यह स्थानीय संदर्भ लोगों को खूब पसंद आया।) लेकिन ऐसे कई लोग थे, और सबक एक आम संदेश था। उन्होंने श्रोताओं से आग्रह किया कि वे ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों के आदर्शवाद और विनम्रता के वर्तमान दावों पर विश्वास न करें, बल्कि उनकी तुलना उनके घिनौने अतीत से करें, जो जनता पर अत्याचार और अपने ब्रिटिश आकाओं की वफादारी से सेवा करने का इतिहास है, जिन्होंने उनकी जागीरों, उनके करों और उनके कुकर्मों की रक्षा की थी। कांग्रेस ऐसे सामंतवादियों और प्रतिक्रियावादियों से कोई संबंध नहीं रखेगी और उनसे लड़ने के लिए उसे जनता के समर्थन की आवश्यकता है।
जब भीड़ उत्साह में बहकर 'कांग्रेस जिंदाबाद!' या उससे भी बदतर, 'जवाहरलाल नेहरू जिंदाबाद!' के नारे लगाने लगी, तो नेहरू ने उन्हें करारा जवाब दिया और इसके बजाय 'जय हिंद!' के नारे लगाने को कहा।
और इस तरह उनकी बैठकें समाप्त हुईं, और वे अगली बैठक के लिए

रवाना हो गए, हमेशा देर से, हमेशा अधीर, एक ऐसा व्यक्ति जिसकी महान हृदयता ने दूसरों का दिल जीत लिया, और आपसी सहिष्णुता के लिए उनकी घुमावदार अपीलों ने एक अस्थिर देश को, न केवल उन शुरुआती और सबसे खतरनाक वर्षों में बल्कि अपने पूरे जीवनकाल में, कम से कम धार्मिक कट्टरता के व्यवस्थित चंगुल से सुरक्षित रखा।

17.35

जवाहरलाल नेहरू ने जिले में जो कुछ घंटे बिताए, उनका वहां के सभी चुनावी अभियानों पर गहरा असर पड़ा, और सबसे ज़्यादा असर महेश कपूर के अभियान पर हुआ। इससे उन्हें नई उम्मीद मिली और कांग्रेस कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ा। लोग भी पहले से ज़्यादा मित्रवत हो गए। अगर नेहरू, जिन्हें आम जनता कांग्रेस की आत्मा और भारत का गौरव मानती थी, ने अपने 'पुराने साथी' को अपना समर्थन दिया था, तो भला उनकी काबिलियत पर शक करने वाले कौन होते? अगर चुनाव दो हफ्ते बाद के बजाय अगले दिन ही हो जाते, तो शायद महेश कपूर नेहरू की धूल भरी अचकन पर सवार होकर भारी बहुमत से घर लौटते।

नेहरू को सांप्रदायिक आलोचना का भी कुछ हद तक सामना करना पड़ा। क्योंकि देशभर के मुसलमानों में उन्हें ही अपना सच्चा रक्षक और मसीहा माना जाता था। विभाजन के समय, दिल्ली में पुलिस की जीप से कूदकर निहत्थे ही हिंसक भीड़ के बीच घुस गए थे, ताकि हिंदू या मुसलमान, किसी की भी जान बचाई जा सके। नवाबों के खिलाफ़ चाहे वे कितनी भी तीखी आलोचना करते हों, उनके पहनावे में ही नवाबों की संस्कृति झलकती थी। नेहरू अजमेर स्थित महान सूफी संत मोइनुद्दीन चिश्ती के दरगाह गए थे और उन्हें एक वस्त्र भेंट किया गया था; वे अमरनाथ भी गए थे, जहाँ हिंदू पुजारियों ने उनकी पूजा-अर्चना की थी। भारत के राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद अमरनाथ तो गए थे, लेकिन मोइनुद्दीन चिश्ती नहीं गए थे।

प्रधानमंत्री द्वारा इन दोनों में कोई अंतर न देखने से अल्पसंख्यकों को थोड़ी राहत मिली थी।

स्वतंत्रता के बाद मुसलमानों में सबसे प्रमुख नेता मौलाना आजाद भी नेहरू के सूर्य के सामने फीके पड़ गए; उनकी चमक काफी हद तक प्रतिबिंब मात्र थी। दरअसल, लोकप्रियता और राष्ट्रीय शक्ति नेहरू में ही निहित थी—भले ही वे लोकप्रियता के प्रति आसक्त न हों और न ही उन्होंने इसका सबसे प्रभावी उपयोग किया हो।

कुछ लोग—हिंदू और मुसलमान दोनों—मज़ाक में यह भी कहते थे कि वह मुसलमानों के लिए जिन्ना से बेहतर नेता साबित होते। जिन्ना को मुसलमानों से कोई हमदर्दी नहीं थी—उनकी अपनी मर्ज़ी से ही वे उनके वश में थे और पाकिस्तान की ओर अग्रसर हुए थे। लेकिन यह व्यक्ति सहानुभूति से ओतप्रोत था, और अपने देश के विभाजन से ज़रा भी दुखी न होकर, दूसरों के विपरीत, मुसलमानों के साथ—चाहे वे किसी भी धर्म के हों या किसी भी धर्म के न हों—स्नेह और सम्मान का व्यवहार करता रहा। अगर दिल्ली में कोई और शासन कर रहा होता, तो मुसलमान कहीं ज़्यादा असुरक्षित और भयभीत महसूस करते।

लेकिन, जैसा कि कहावत है, दिल्ली बहुत दूर है। और ब्रह्मपुर भी—और रुधिया का जिला मुख्यालय भी। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, स्थानीय निष्ठाएँ, स्थानीय झगड़े, स्थानीय मुद्दे और जाति एवं धर्म की स्थानीय संरचनाएँ एक बार फिर अपना प्रभाव दिखाने लगीं। महेश कपूर के बेटे और नवाबजादा के बारे में, सईदा बाई और नवाब साहब के बारे में गपशप सलीमपुर की छोटी सी नाई की दुकान पर—जो दुकान से ज़्यादा फुटपाथ पर बनी एक छोटी सी दुकान थी—सब्जी मंडी में, गाँव के आँगन में शाम को हुक्का पीते हुए, और जहाँ भी लोग मिलते और बातें करते, होती रहती थी।

कई उच्च जाति के हिंदुओं ने यह मान लिया कि मान ने उस मुस्लिम वेश्या के साथ संबंध बनाकर और उससे प्रेम करके अपनी जाति खो दी है। और मान की जाति खो जाने के साथ ही उसके पिता का उनके वोट पर अधिकार भी समाप्त हो गया। दूसरी ओर, समय बीतने के साथ, कई गरीब मुसलमानों ने - और उनमें से अधिकांश वास्तव में गरीब थे - इस प्रश्न पर पुनर्विचार किया कि उनके हित किस ओर हैं। यद्यपि उनकी नवाब साहब के प्रति पारंपरिक निष्ठा थी, फिर भी उन्हें इस बात का भय सताने लगा कि यदि उन्होंने उनके आदमी वारिस को विधानसभा के लिए चुन लिया तो क्या होगा। क्या होगा यदि न केवल वह बल्कि अन्य सामंती निर्दलीय भी निर्वाचित हो जाएं? क्या होगा यदि कांग्रेस को स्पष्ट बहुमत न मिले? क्या तब जमींदारी अधिनियम - या कम से कम उसका कार्यान्वयन - खतरे में नहीं पड़ जाएगा, भले ही वह सर्वोच्च न्यायालय की बाधा को पार कर ले? मुंशी और उसके गुंडों के क्रूर नियंत्रण में स्थायी किरायेदारी का खतरा, अपनी जमीन के स्वतंत्र स्वामित्व की संभावना की तुलना में कम आकर्षक था, चाहे वह कितना भी बोझिल क्यों न हो।

इस बीच, केदारनाथ को सलीमपुर और आसपास के गांवों के जाटवों के बीच कुछ सफलता मिली; अधिकांश उच्च जाति या यहां तक कि अपेक्षाकृत निम्न जाति के हिंदुओं के विपरीत, उन्होंने उनके साथ भोजन करने से इनकार नहीं किया, और ब्रह्मपुर में उनके रिश्तेदारों या परिचितों, जैसे रविदासपुर के जगत राम, के माध्यम से वे जानते थे कि वे मिसरी मंडी के उन गिने-चुने जूते-चप्पल व्यापारियों में से एक थे जो उनके जाति-भाई-बंधुओं के साथ अच्छा व्यवहार करते थे। न ही महेश कपूर ने, एल.एन. अग्रवाल के विपरीत, पुलिस चार्ज लगाकर कांग्रेस के प्रति उनकी स्वाभाविक निष्ठा को कम करने के लिए कुछ किया था। वीना ने कांग्रेस महिला समितियों के साथ घर-घर और गांव-गांव जाकर अपने

पिता के लिए प्रचार करना जारी रखा। वह काम से खुश थी, और इस बात से भी खुश थी कि उसके पिता एक बार फिर अपने चुनाव प्रचार में जुट गए थे। इससे उनका ध्यान उन बातों से हट गया था जिनके बारे में सोचना भी उनके लिए बहुत कष्टदायक होता। इन दिनों श्रीमती टंडन प्रेम निवास चला रही थीं, और भास्कर वहीं रह रहे थे। वीना उन्हें याद करती थी, लेकिन वह कुछ कर भी नहीं सकती थी।

अब यह मुकाबला लगभग नेहरू के पुराने साथी और प्रतिक्रियावादी नवाब साहब के चापलूस के बीच सीधा था; या, उतनी ही संभावना के साथ, कुख्यात मान के पिता और बलवान और वफादार वारिस के बीच था।

बैतर और सलीमपुर दोनों की दीवारें नेहरू के चित्र वाले पर्चों से भरी हुई थीं, जिनमें से कई पर एक बड़ी हरी साइकिल बनी हुई थी, जिसके दो पहिए नेहरू की दोनों आँखों को ढके हुए थे। वारिस नेहरू द्वारा अपने आदर में रखे गए गुरु के बारे में की गई टिप्पणियों से स्तब्ध थे और उन्होंने नेहरू के उस शाब्दिक हमले और वीर फ़िरोज़ पर मान द्वारा किए गए शारीरिक हमले का बदला लेने का निश्चय कर लिया था। उन्होंने अपने तरीकों में कोई नरमी नहीं बरती। जहाँ तक संभव था, उन्होंने वैध साधनों का प्रयोग किया, और जहाँ नहीं, वहाँ उन्होंने कोई भी दूसरा तरीका अपनाया। उन्होंने कंजूस मुंशी से पैसे निकलवाए, दावतें दीं और मिठाई-शराब बांटी, जहाँ तक हो सका, उन्होंने दबाव डाला और फुसलाया, जो भी आवश्यक था, उन्होंने वादा किया, उन्होंने नवाब साहब और ईश्वर का नाम लिया, इस विश्वास के साथ कि वे दोनों की ओर से बोल रहे हैं और भविष्य में उनकी नाराज़गी की परवाह किए बिना। मान, जिसे उन्होंने कभी सहज रूप से पसंद किया था और जो एक झूठा और खतरनाक मित्र साबित हुआ था, अब उनका कट्टर शत्रु था। लेकिन अब, नेहरूवादी शासन के विनाशकारी प्रभाव के बाद, वारिस को यकीन नहीं था कि वह

अपने पिता को हरा पाएगा।

चुनाव से ठीक एक दिन पहले, जब किसी भी प्रभावी खंडन के लिए बहुत देर हो चुकी थी, एक छोटा सा उर्दू पर्चा छपा, जो पतले गुलाबी कागज पर हजारों की संख्या में छपा था। उस पर काली किनारी थी। ऐसा प्रतीत होता था कि उसका कोई लेखक नहीं था। नीचे मुद्रणकर्ता का नाम भी नहीं था। उसमें घोषणा की गई थी कि फिरोज का पिछली रात निधन हो गया है, और सभी वफादार लोगों से, उनके शोक संतप्त पिता के नाम पर, इस महान दुर्भाग्य के लिए जिम्मेदार व्यक्ति के खिलाफ अपना आक्रोश व्यक्त करने के लिए अपना वोट डालने का आह्वान किया गया था। हत्यारा अभी भी ब्रह्मपुर की सड़कों पर जमानत पर खुला घूम रहा है, और अधिक असहाय मुस्लिम महिलाओं का गला घोंटने और मुस्लिम पुरुषों के गौरव का वध करने के लिए स्वतंत्र है। कांग्रेस राज के तहत ऐसी घिनौनी हरकत, न्याय के आदर्शों का ऐसा अपमान और कहाँ हो सकता है? ऐसा कहा जा रहा था कि कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में चुनाव में कोई भी खड़ा हो—चाहे वह एक लैंप पोस्ट हो या एक कुत्ता—वह अवश्य जीतेगा। लेकिन इस निर्वाचन क्षेत्र के लोगों को उस बेशर्म लैंप पोस्ट या उस गंदे कुत्ते को वोट नहीं देना चाहिए। उन्हें यह याद रखना चाहिए कि अगर महेश कपूर सत्ता में आ गए, तो किसी की भी जान या इज्जत सुरक्षित नहीं रहेगी।

वह घातक पर्चा—वास्तव में उसे घातक ही माना जा रहा था—अपनी कमज़ोरी के कारण हवा में उड़ता हुआ प्रतीत हुआ; क्योंकि उस शाम तक, जब सभी प्रत्यक्ष चुनाव प्रचार समाप्त हो चुका था, वह निर्वाचन क्षेत्र के लगभग हर गाँव तक पहुँच चुका था। अगले दिन मतदान था, और झूठ को दबाने या उसका खंडन करने में बहुत देर हो चुकी थी।

17.36

सालिमपुर के कई मतदान केंद्रों में से एक पर पीठासीन अधिकारी संदीप लाहिड़ी ने पूछा, 'आप किसकी पत्नी हैं?'
बुर्का पहनी महिला ने हैरानी से फुसफुसाते हुए पूछा, 'मैं उसका नाम कैसे ले सकती हूँ?' 'उस पर्ची पर लिखा है जो मैंने अभी कमरे से निकलने से पहले आपको दी थी।'
संदीप ने कागज की पर्ची पर नजर डाली, फिर एक बार फिर मतदाता सूची पर। 'फखरुद्दीन? आप फखरुद्दीन की पत्नी हैं? नूरपुर खुर्द गांव से?'
'हां हां।'
आपके चार बच्चे हैं, है ना?
'हां हां हां।'
संदीप ने सख्ती से कहा, 'बाहर निकलो!' वह पहले ही पता लगा चुका था कि असल महिला के दो बच्चे हैं। नियम के अनुसार, उसे महिला को पुलिस के हवाले कर देना चाहिए था, लेकिन उसे लगा कि उसका अपराध इतना गंभीर नहीं है कि उसके खिलाफ इतनी कड़ी कार्रवाई की जाए। इस चुनाव में उसने सिर्फ एक बार पुलिस की मदद ली थी। वह घटना कुछ दिन पहले हुई थी जब रुधिया में एक शराबी ने उसकी मतदान टीम के एक सदस्य को धमकाया था और मतदाता सूची फाड़ने की कोशिश की थी।
संदीप को ब्रह्मपुर से दूर रहना अच्छा लग रहा था। खान विभाग में उनका काम उपमंडल में उनकी पिछली जिम्मेदारियों की तुलना में नीरस और डेस्क पर बैठकर करने वाला था। यह चुनावी कार्य—हालांकि ज्यादातर समय डेस्क पर बैठकर ही करना पड़ा—एक ताजगी भरा अवकाश था, और उन्हें उन क्षेत्रों को एक बार फिर देखने का मौका मिला, जिनसे, उनकी पिछड़ी स्थिति के बावजूद, उन्हें गहरा लगाव हो गया था। उन्होंने कमरे में भारत के एक फटे हुए नक्शे और हिंदी वर्णमाला के चार्ट पर

नजर डाली। मतदान केंद्र संयोगवश एक स्थानीय विद्यालय में था।
बगल के क्लासरूम से, जहाँ पुरुषों का मतदान केंद्र था, बहस की आवाज़ें आ रही थीं। संदीप यह पता लगाने के लिए उठा कि मामला क्या है और उसे एक अजीब नज़ारा देखने को मिला। एक बिना हाथों वाला भिखारी अपना वोट डालने पर तुला हुआ था, और वह भी बिना किसी की मदद के। उसने पर्दे वाले क्षेत्र में जाने से इनकार कर दिया और ज़िद करने लगा कि अधिकारी उसे बताएगा कि उसने किसे वोट दिया है। मतदान अधिकारी उससे बहस कर रहा था, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, और क्लासरूम के बाहर मतदाताओं का आना-जाना रुक गया, जबकि अंदर से तीखी आवाज़ें उठ रही थीं। भिखारी ने कहा कि मतदान अधिकारी उसका मतपत्र मोड़कर उसके दाँतों के बीच रख दे। फिर वह खुद पर्दे के पीछे जाकर उसे अपनी पसंद के बॉक्स में डाल देगा।
अधिकारी ने कहा, 'मैं ऐसा नहीं कर सकता।'
‘क्यों नहीं?’ भिखारी ने ज़िद करते हुए कहा। ‘मैं तुम्हें अपने साथ अंदर क्यों आने दूं? मुझे कैसे पता चलेगा कि तुम नवाब साहब के जासूस नहीं हो? या मंत्री के?’ उसने जल्दी से पूछा।
संदीप ने मतदान अधिकारी को इशारे से यह संकेत दिया कि वह उस व्यक्ति की विनती मान लें। भिखारी ने संसद और विधानसभा दोनों के लिए अपना चुनावी कर्तव्य निभाया। जब वह दूसरी बार बाहर आया, तो उसने अधिकारी को तिरस्कारपूर्ण ढंग से घुरघुराया। अधिकारी काफी नाराज़ हो गया।
दूसरे अधिकारी ने कहा, 'एक मिनट रुकिए। हम आपको स्याही से चिह्नित करना भूल गए।'
‘अगर तुम मुझे दोबारा देखोगे तो मुझे पहचान जाओगे,’ भिखारी ने कहा।
'हां, लेकिन आप कहीं और वोट डालने की कोशिश कर सकते हैं। यह

एक नियम है। हर किसी को अपनी बाईं तर्जनी उंगली पर निशान लगाना होगा।'

भिखारी ने फिर से जोर से सांस ली। उसने कहा, 'मेरी बाईं तर्जनी उंगली ढूंढो।'

ऐसा लग रहा था मानो पूरी मतदान टीम को एक ही व्यक्ति ने रोक रखा हो। संदीप ने मुस्कुराते हुए अपने अधिकारी से कहा, 'मेरे पास इसका जवाब है,' फिर उसने अपने निर्देशों का एक पृष्ठ खोला और पढ़कर सुनाया:

इस नियम या नियम 23 में किसी मतदाता की बाईं तर्जनी उंगली का कोई भी संदर्भ, यदि मतदाता की बाईं तर्जनी उंगली गायब है, तो उसके बाएं हाथ की किसी अन्य उंगली के संदर्भ के रूप में समझा जाएगा, और यदि उसके बाएं हाथ की सभी उंगलियां गायब हैं, तो उसके दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली या किसी अन्य उंगली के संदर्भ के रूप में समझा जाएगा, और यदि उसके दोनों हाथों की सभी उंगलियां गायब हैं, तो उसके बाएं या दाहिने हाथ के उस छोर के संदर्भ के रूप में समझा जाएगा जो उसके पास मौजूद है।

उसने कांच की छड़ को स्याही की शीशी में डुबोया और भिखारी पर कमजोर सी मुस्कान बिखेरी, जो विधि मंत्रालय के राज-प्रशिक्षित मसौदाकारों के जटिल दिमाग से पराजित होकर, बड़े ही अनादर के साथ अपना बायां ठूंठ आगे बढ़ा रहा था।

मतदान काफी तेजी से हुआ। दोपहर तक, मतदाता सूची में से लगभग हर दस में से तीन नामों पर निशान लग चुका था। दोपहर के भोजन के लिए एक घंटे के विराम के बाद दूसरा चार घंटे का मतदान सत्र शुरू हुआ। शाम पांच बजे मतदान समाप्त होने तक, उस मतदान केंद्र पर मतदान के योग्य लगभग पचपन प्रतिशत लोगों ने अपने मत डाल दिए थे। संदीप के

अनुसार, यह बहुत अच्छा मतदान था। पिछले कुछ दिनों के अपने अनुभव से वह जानता था कि - उसकी उम्मीदों के विपरीत - अधिकांश क्षेत्रों में शहरी मतदान ग्रामीण मतदान की तुलना में कम था।

शाम पांच बजे स्कूल के गेट बंद कर दिए गए और कतार में खड़े लोगों को हस्ताक्षरित पर्चियां दी गईं। जब उन्होंने भी अपना वोट डाल दिया, तो मतपेटियों के छेदों को कागज की सील से बंद कर दिया गया और उस पर लाख की लाल मुहर लगा दी गई। विभिन्न उम्मीदवारों के मतदान एजेंटों ने अपनी-अपनी मुहरें भी लगाईं। संदीप ने मतपेटियों को रात भर स्कूल के कमरे में बंद रखने की व्यवस्था की और उनकी सुरक्षा के लिए एक गार्ड तैनात कर दिया। अगले दिन इन पेटियों को, अन्य पेटियों के साथ, सालिमपुर के एसडीओ की देखरेख में रुधिया स्थित कलेक्ट्रेट ले जाया गया, जहां उन्हें जिले भर से आने वाली मतपेटियों के साथ सरकारी खजाने में बंद कर दिया गया।

क्योंकि मतदान अलग-अलग चरणों में हुआ था, इसलिए मतगणना भी अलग-अलग चरणों में हुई, यानी जिन निर्वाचन क्षेत्रों में पहले मतदान हुआ था, उनकी मतगणना पहले हुई। कुछ मतदान दल अब मतगणना दल बन गए। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप, 1952 के आम चुनावों में पूर्वा प्रदेश के एक सामान्य निर्वाचन क्षेत्र में मतदान और मतगणना के बीच आमतौर पर सात से दस दिन का समय लगा।

ये वो दिन थे जब चुनाव जीतने की उम्मीद रखने वाले हर उम्मीदवार के लिए बेहद चिंताजनक स्थिति थी। वारिस खान के लिए तो निश्चित रूप से यही स्थिति थी, हालांकि किसी ने इसके विपरीत सोचा भी नहीं था। लेकिन अपनी तमाम अन्य चिंताओं के बावजूद, महेश कपूर के लिए भी यही सच था।

भाग अठारह

18.1

जनवरी की नाटकीय घटनाओं में लता की कोई सक्रिय भागीदारी नहीं थी। फिर भी, उन्होंने मीनाक्षी की नव वर्ष में होने वाली रोमांचक घटनाओं की भविष्यवाणी, या कम से कम अपेक्षा पर विचार किया। यदि ब्रह्मपुर कलकत्ता होता और सविता का परिवार उनका अपना होता, तो मीनाक्षी घटनाओं से पूरी तरह निराश नहीं होतीं: चाकूबाजी, घोटाला, मृत्यु, एक क्रूर चुनाव—और यह सब एक ऐसे परिवार में हुआ जो आमतौर पर माँ और बेटी के बीच तीखी नोकझोंक—या पिता और बेटे के बीच तीखी नोकझोंक—से ज़्यादा रोमांचक कुछ नहीं देखता था।

यह वो सत्र था जिसका अंत लता की अंतिम परीक्षाओं से होने वाला था। लता हर दिन अपनी कक्षाओं में जाती थी, उसका ध्यान पुराने उपन्यासों और नाटकों पर आधा ही रहता था। मालती समेत उसके ज़्यादातर सहपाठी अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे रहे थे; पाठ्येतर गतिविधियाँ बहुत कम थीं, नाटक या समय देने लायक कोई और गतिविधि तो थी ही नहीं। ब्रह्मपुर साहित्यिक समिति की साप्ताहिक बैठकें पहले की तरह ही चलती रहीं, लेकिन लता का उनमें जाने का मन नहीं करता था। मान हाल ही में ज़मानत पर जेल से रिहा हुआ था, जो राहत की बात थी, लेकिन ऐसा लग रहा था कि अंतिम आरोपपत्र उनकी उम्मीदों से कहीं ज़्यादा गंभीर होने वाला है।

लता को उमा की देखभाल करना बहुत अच्छा लगता था, जो एक बेहद आज्ञाकारी बच्ची थी और जिसकी मुस्कान देखकर लता यह भूल जाती थी कि उसके आसपास एक दुख भरी और परेशान दुनिया भी है। बच्ची में

असीम ऊर्जा थी और जीवन, अपने परिवेश और आस-पास की हर चीज को पकड़ने की उसकी प्रबल इच्छा थी। उसे गाना गाने की आदत पड़ गई थी और वह अपनी बेंत की चारपाई के किनारे को जोर-जोर से थपथपाती रहती थी।

लता ने गौर किया कि उमा का सविता और प्राण पर भी शांत करने वाला प्रभाव था। जब प्राण उसे अपनी गोद में झुलाते थे, तो कुछ क्षणों के लिए वे अपने पिता के बारे में भूल जाते थे—जो दुःख और क्रोध के बीच उलझे रहते थे; या अपने भाई के बारे में, जो प्रेम और कानून दोनों के जाल में फँसे रहते थे; या अपनी पत्नी के बारे में; या अपनी दिवंगत माँ के बारे में; या अपने स्वास्थ्य, काम और महत्वाकांक्षाओं के बारे में। प्राण को 'द लेडी बेबी' कविता कंठस्थ थी और वह समय-समय पर उमा को सुनाता रहता था। श्रीमती रूपा मेहरा, जिन्होंने सर्दियों के लिए बहुत सारा कपड़ा बुनने का काम किया था, प्राण के कविता पाठ शुरू करते ही आधी प्रसन्नता और आधी शंका के साथ ऊपर देखती थीं।

कबीर ने कलकत्ता में लता से संपर्क करने का कोई प्रयास नहीं किया था। ब्रह्मपुर में भी उनकी मुलाकात लता से नहीं हुई। उन्होंने लता को चौथा पर देखा था, और एक बार कॉलेज परिसर में दूर से। वह शांत और पहुँच से बाहर लग रही थीं। प्रेस में हाल ही में मचे हंगामे को देखते हुए, वह समझ सकते थे कि प्राण की तरह, लता भी दोस्तों, परिचितों और अजनबियों से मिलने वाली सहानुभूति और जिज्ञासा की अंतहीन अभिव्यक्तियों से बच नहीं पाएंगी।

उसने दुखी मन से सोचा कि उनकी मुलाकातों में हमेशा कुछ अतार्किक, अपूर्ण और सारहीनता का भाव रहता था। वे हमेशा बहुत कम समय के लिए मिलते थे, पकड़े जाने के खतरे से लगातार वाकिफ रहते थे, और इसलिए, साथ बिताए संक्षिप्त समय में भी, वे एक-दूसरे के साथ बेहद

असहज महसूस करते थे। कबीर लता को छोड़कर बाकी सभी से सीधी-सादी बातें करता था, और उसे आश्चर्य होता था कि क्या लता भी उसके साथ होने पर सबसे जटिल और मुश्किल स्वभाव की हो जाती है।

अब उन्हें उम्मीद नहीं थी कि वह उनके बारे में ज्यादा सोच रही होंगी। भले ही वह इतनी सारी परेशानियों और उलझनों के बीच न होतीं, तब भी उन्हें इसकी उम्मीद नहीं होती। उन्हें यह पता नहीं था कि उन्हें पता चल गया था कि वह कलकत्ता में थे और उनसे मिलना चाहते थे। उन्हें मालती के पत्र के बारे में भी कोई जानकारी नहीं थी। वह भी अपनी पढ़ाई में व्यस्त थे, और उनके भी अपने निजी दुख और सांत्वनाएं थीं। अपनी मां से मिलने के लिए हर हफ्ते जाना उनके लिए एक अपरिहार्य दुख था—और वह अपनी रुचियों में ही अपना सुकून ढूंढते थे: उदाहरण के लिए, क्रिकेट खेलना, या इंग्लैंड के साथ टेस्ट सीरीज की खबरें पढ़ना, जिसका आखिरी मैच अभी मद्रास में खेला जाना बाकी था। हाल ही में, श्री नौरोजी के उत्साह से, उन्होंने कवि अमित चटर्जी को ब्रह्मपुर साहित्यिक समाज की एक बैठक में अपनी रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के लिए ब्रह्मपुर आने का इंतजाम किया था। यह बैठक फरवरी के पहले सप्ताह में होनी थी। उन्हें उम्मीद थी, लेकिन यह पक्का नहीं था कि लता वहां होंगी। उसने मान लिया कि उसने चटर्जी के काम के बारे में सुना होगा।

निर्धारित दिन के सवा पाँच बजे, 20 हेस्टिंग्स रोड पर बड़े उत्साह का माहौल था। फूलों की छपाई वाली गद्देदार कुर्सियाँ भरी हुई थीं। मेज पर लेस की डोरियों से ढके पानी के गिलास रखे थे, जहाँ से श्री नौरोजी वक्ता का परिचय देंगे और अमित अपनी कविता सुनाएंगे। श्रीमती नौरोजी के स्वादिष्ट पकवान पास के कमरे में रखे थे। ढलती धूप श्री नौरोजी की पारदर्शी त्वचा पर हल्की पड़ रही थी, जब वे उदासी से कांपते हुए अपनी धूपघड़ी को देख रहे थे और सोच रहे थे कि कवि चटर्जी अभी

तक क्यों नहीं आए। कबीर कमरे के पीछे बैठे थे। उन्होंने सफेद कपड़े पहने थे, क्योंकि वे अभी-अभी इतिहास विभाग और पूर्वी भारत रेलवे क्रिकेट क्लब के बीच एक दोस्ताना मैच खेलकर आए थे। वे साइकिल से आए थे और अभी भी पसीने से भीगे हुए थे। बुलंद आवाज़ वाली कवयित्री, श्रीमती सुप्रिया जोशी, ने बड़ी नज़ाकत से हवा को सूंघा।
उन्होंने देशभक्त कवि श्री मखीजानी की ओर रुख किया।
‘मुझे हमेशा ऐसा लगता है, श्री मखीजानी,’ उसने अपनी गूंजती हुई आवाज में बुदबुदाते हुए कहा, ‘मुझे हमेशा ऐसा लगता है—’
‘जी हां, जी हां,’ श्री मखीजानी ने उत्साहपूर्वक कहा। ‘यही तो कुंजी है। व्यक्ति को महसूस करना चाहिए। बिना भावना के, प्रेरणा कहां से आएगी?’
श्रीमती सुप्रिया जोशी ने आगे कहा: 'मैं हमेशा महसूस करती हूं कि कविता को पवित्रता की भावना से पढ़ना चाहिए। मन में ताजगी और शरीर में स्वच्छता होनी चाहिए। स्वयं को चमकीले झरनों में स्नान करना चाहिए—'
‘Lave—ah, yes, lave,’ said Mr Makhijani.
‘प्रतिभा भले ही निन्यानवे प्रतिशत परिश्रम हो, लेकिन निन्यानवे प्रतिशत परिश्रम प्रतिभा का विशेषाधिकार है।’ वह अपने इस कथन से संतुष्ट दिखीं।
कबीर ने श्रीमती सुप्रिया जोशी की ओर मुड़कर कहा, 'मुझे बहुत खेद है। मैं बस एक मैच खेल रहा था।'
'ओह,' श्रीमती सुप्रिया जोशी ने कहा।
‘मैं कहना चाहूँगा कि कुछ महीने पहले जब आपने अपनी अद्भुत कविताएँ पढ़ीं, तब मैं जहाँ था, वहाँ रहकर मुझे बहुत खुशी हुई।’ कबीर ने मुस्कुराते हुए उनकी ओर देखा; वह मुग्ध लग रही थीं। उन्होंने राजनयिक सेवा में

शामिल होने की योजना बनाई थी, और यह व्यर्थ नहीं था। उनके पसीने की गंध अचानक कामोत्तेजक बन गई थी। श्रीमती सुप्रिया जोशी ने सोचा, वाकई, यह युवक बहुत सुंदर और बहुत विनम्र है।

'आह—' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'देखो, छोटे मालिक आ रहे हैं।' अमित लता और प्राण के साथ अभी-अभी अंदर आया था। श्री नवरोजी तुरंत अमित से गंभीरतापूर्वक और दबी आवाज़ में बात करने लगे।

कबीर ने देखा कि लता भीड़ भरे कमरे में बैठने की जगह ढूंढ रही थी। उसे देखकर लता इतनी खुश और हैरान थी कि उसने यह सोचा ही नहीं कि वह अमित के साथ क्यों आई है।

वह खड़ा हो गया। उसने कहा, 'यहाँ एक जगह है।'

लता का मुंह थोड़ा खुला और उसने गहरी सांस ली। उसने प्राण की ओर देखा, लेकिन उसकी पीठ उसकी ओर थी। बिना कुछ कहे, वह कबीर के पास जाकर खड़ी हो गई और श्रीमती सुप्रिया जोशी के बीच में जगह बना ली, जो बिल्कुल भी प्रसन्न नहीं लग रही थीं। लता ने सोचा, वह कुछ ज़्यादा ही विनम्र हैं।

18.2

श्री नौरोजी, जो अब विशिष्ट अतिथि और विशिष्ट श्रोताओं (जिनमें प्रॉक्टर श्री सोराबजी और प्रख्यात प्रोफेसर मिश्रा शामिल थे) को देखकर सर्द मौसम में राहत भरी मुस्कान बिखेर रहे थे, ने अमित और अपना कपड़ा हटाया और बैठक शुरू करने से पहले पानी का एक घूंट पिया।

उन्होंने वक्ता का परिचय देते हुए कहा, 'वे उन लोगों में से एक हैं जिन्होंने पश्चिम की ऊर्जा को विशिष्ट भारतीय संवेदनशीलता के साथ एकीकृत किया है' और फिर उन्होंने श्रोताओं को 'संवेदनशीलता' शब्द पर विवेचनात्मक व्याख्यान दिया। 'संवेदी' शब्द के कई अर्थों पर चर्चा करने के बाद, उन्होंने अन्य विशेषणों की ओर रुख किया: संवेदनशील,

संवेदनहीन, संवेदी, कामुक और कामुक। श्रीमती सुप्रिया जोशी बेचैन हो गईं। उन्होंने श्री मखीजानी से कहा:

उन्हें इतने लंबे-लंबे भाषण देना बहुत पसंद है।

उनकी आवाज दूर तक सुनाई दी, और श्री नौरोजी के गाल, जो पिछले दो विशेषणों पर चर्चा के परिणामस्वरूप पहले से ही लाल हो गए थे, शर्मिंदगी के गहरे रंग में रंग गए।

'लेकिन मैं अपनी तुच्छ बातों से अमित चटर्जी की प्रतिभा से आपको वंचित नहीं करना चाहता,' उन्होंने दुखी भाव से कहा, और इस तरह उन्होंने अंग्रेजी में भारतीय कविता के संक्षिप्त इतिहास पर अपना भाषण रद्द कर दिया (जिसका समापन 'हमारी महान कवयित्री तोरू दत्त' को समर्पित एक त्रयी के साथ होना था)। श्री नौरोजी ने आगे कहा: 'श्री चटर्जी अपनी चुनिंदा कविताएँ पढ़ेंगे और फिर अपने काम के बारे में सवालों के जवाब देंगे।'

अमित ने ब्रह्मपुर में आकर अपनी खुशी जाहिर करते हुए अपनी बात शुरू की। उन्हें क्रिकेट मैच के दौरान निमंत्रण मिला था; उन्होंने देखा कि श्री दुर्रानी, जिन्होंने उन्हें आमंत्रित किया था, अभी भी क्रिकेट की पोशाक में थे।

लता अचंभित दिखीं। अमित ने कलकत्ता से आने पर उन्हें बताया था कि उन्हें साहित्यिक समिति ने आमंत्रित किया है, और लता ने बस यही मान लिया था कि श्री नवरोजी ने ही इसकी पहल की होगी। उन्होंने कबीर की ओर देखा और उसने कंधे उचका दिए। उसके शरीर से पसीने की गंध आ रही थी, जिससे उन्हें वह दिन याद आ गया जब उन्होंने उसे नेट पर अभ्यास करते देखा था। वह बहुत ही शांत व्यवहार कर रहा था। क्या वह इस दूसरी महिला के साथ भी ऐसा ही व्यवहार करता है? खैर, लता ने मन ही मन सोचा, दो महिलाओं के साथ भी शांत रहना संभव है।

अमित ने उन दोनों के बीच हुई इस अनजाने और अंतरंग नज़र को भांपते हुए महसूस किया कि लता कबीर को अच्छी तरह जानती होंगी। एक पल के लिए वह अपने विचारों में खो गए और क्रिकेट और कविता की समानता पर कुछ बेतुकी बातें बोल बैठे। फिर उन्होंने अपनी बात जारी रखी, जो यह थी कि बरसात महल और उर्दू कवि मस्त के नाम से जुड़े शहर में पाठ करना उनके लिए सम्मान की बात है। शायद यह बात ज़्यादा लोगों को पता नहीं थी कि मस्त ग़ज़लों के प्रसिद्ध लेखक होने के साथ-साथ एक व्यंग्यकार भी थे। हाल के चुनावों के बारे में उनकी क्या राय होती, यह कहना मुश्किल है, लेकिन जिस बेईमानी से ये चुनाव कराए गए, खासकर पूर्व प्रदेश में, उस पर उनकी ज़रूर टिप्पणी होती। अमित खुद ब्रह्मपुर क्रॉनिकल के सुबह के अंक को पढ़कर एक छोटी कविता लिखने के लिए प्रेरित हुए थे। 'वंदे मातरम' या ऐसे किसी देशभक्ति गीत के बजाय, वह अपनी कविता को इस श्रोताओं के सामने उनके चुने हुए या जल्द चुने जाने वाले शासकों के लिए विजय गीत के रूप में प्रस्तुत करेंगे।

उसने अपनी जेब से एक कागज निकाला और लिखना शुरू किया।

‘पत्थरों के देवता, हमारी मदद करो, अब मतदान समाप्त हो चुका है।’

छोटी रिश्वतें ठुकराने के बजाय विशाल रिश्वतें हथिया लेना,

सही कारण पर हमला करना, गलत का बचाव करना,

असहायों का शोषण करना और बलवानों की रक्षा करना।

हमारी अटकलों और हमारे पीड़ितों को भी इसमें जोड़ें।

हे सर्वशक्तिमान प्रभु, हम आपसे प्रार्थना करते हैं, हमें बहुत बुरा बना दीजिए...

तीन और छंद थे, जिनमें अन्य बातों के अलावा कुछ स्थानीय प्रतियोगिताओं का जिक्र था जिनके बारे में अमित ने अखबार में पढ़ा था -

जिनमें से एक ने प्राण और लता दोनों को चौंका दिया: इसमें एक भूस्वामी और एक भू-हड़पने वाले का हल्के-फुल्के अंदाज में जिक्र किया गया था जो पहले एक साथ आए और फिर वोट हासिल करने के चक्कर में बिलियर्ड गेंदों की तरह अलग हो गए।

अधिकांश श्रोताओं ने कविता का आनंद लिया, विशेषकर स्थानीय संदर्भों का, और खूब हँसे। हालाँकि, श्री मखीजानी को यह कविता अच्छी नहीं लगी।

'वह हमारे संविधान का मजाक उड़ा रहा है। वह मजाक उड़ा रहा है,' देशभक्त कवि ने कहा।

अमित ने एक दर्जन कविताएँ पढ़ीं, जिनमें 'द फीवर बर्ड' भी शामिल थी, जिसने लता को पहली बार पढ़ने पर बहुत प्रभावित किया था। प्रोफेसर मिश्रा को भी यह कविता बहुत अच्छी लगी, उन्होंने ध्यान से सुना और सहमति में सिर हिलाया।

अमित ने जो कविताएँ पढ़ीं, उनमें से कई उनकी किताबों में नहीं थीं; अधिकतर कविताएँ हाल ही में लिखी गई थीं। हालाँकि, उनकी एक बूढ़ी चाची की मृत्यु पर लिखी गई एक कविता, जो लता को बहुत भावुक कर गई, कुछ समय पहले रची गई थी। अमित ने उसे संभाल कर रखा था और शायद ही कभी पढ़ते थे। लता ने देखा कि प्राण कविता सुनते समय सिर झुकाए बैठे थे, और वास्तव में पूरा श्रोतागण बिल्कुल शांत था।

पाठ और तालियों के बाद, अमित ने कहा कि उन्हें किसी भी प्रश्न का उत्तर देने में खुशी होगी।

'तुम अपनी मातृभाषा बंगाली में क्यों नहीं लिखते?' एक चुनौती भरी आवाज़ ने पूछा। बोलने वाला युवक काफी गुस्से में लग रहा था।

अमित से यह सवाल कई बार पूछा जा चुका था—और उन्होंने खुद से भी यह सवाल कई बार पूछा था। उनका जवाब था कि उनकी बंगाली इतनी

अच्छी नहीं थी कि वे अंग्रेजी की तरह बंगाली में खुद को अच्छे से व्यक्त कर सकें। यह उनकी पसंद का सवाल नहीं था। जिस व्यक्ति ने जीवन भर सितार बजाना सीखा हो, वह अपनी विचारधारा या अंतरात्मा की प्रेरणा से सारंगी वादक नहीं बन सकता। अमित ने आगे कहा, 'इसके अलावा, हम सब इतिहास की देन हैं और हमें बिना ज्यादा चिंता किए वही करना चाहिए जिसमें हम सबसे अच्छे हैं। संस्कृत भी भारत में बाहर से आई है।'

मुक्त छंद की गायिका श्रीमती सुप्रिया जोशी अब खड़ी हुईं और बोलीं: 'तुम तुकबंदी का प्रयोग क्यों करती हो? चाँद, जून, चाँद, जून? एक कवि को स्वतंत्र होना चाहिए—एक पक्षी की तरह स्वतंत्र—एक जोशीले पक्षी की तरह।' मुस्कुराते हुए वह बैठ गई।

अमित ने कहा कि वह तुकबंदी इसलिए करते थे क्योंकि उन्हें अच्छा लगता था। उन्हें तुकबंदी की ध्वनि पसंद थी, और इससे शब्दों को सारगर्भित और यादगार बनाने में मदद मिलती थी, अन्यथा वे अस्पष्ट हो सकते थे। उन्हें तुकबंदी से उतना ही कोई बंधन महसूस नहीं होता था जितना किसी संगीतकार को राग के नियमों से।

श्रीमती सुप्रिया जोशी, जो आश्वस्त नहीं थीं, ने श्री मखीजानी से कहा: 'उनकी कविताओं में सब कुछ तुकबंदी और लयबद्धता से भरा है, जैसे नवरोजी की त्रिक कविताएँ।'

प्रोफेसर मिश्रा ने अमित पर पड़े प्रभावों के बारे में एक सवाल पूछा: क्या उन्हें उनकी रचनाओं में एलियट की झलक दिखाई देती है? उन्होंने अमित की कविता की कई पंक्तियों का जिक्र किया और उनकी तुलना अपने पसंदीदा आधुनिक कवि की पंक्तियों से की।

अमित ने यथासंभव अच्छे से प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास किया, लेकिन उसने सोचा कि एलियट उसके प्रमुख प्रेरणा स्रोतों में से एक नहीं थे।

क्या आपको कभी किसी अंग्रेज़ लड़की से प्यार हुआ है?
अमित अचानक उठ बैठा, फिर शांत हो गया। कमरे के पीछे से एक प्यारी, थोड़ी चिंतित बूढ़ी महिला आई थी।
उन्होंने कहा, 'खैर, मुझे नहीं लगता कि मैं दर्शकों के सामने इसका जवाब दे सकता हूं।' 'जब मैंने सवाल पूछे थे, तो मुझे यह भी जोड़ देना चाहिए था कि मैं किसी भी सवाल का जवाब दूंगा, बशर्ते वे बहुत निजी न हों—या फिर बहुत सार्वजनिक भी न हों। उदाहरण के लिए, सरकारी नीति से संबंधित सवाल इसमें शामिल नहीं होंगे।'
एक उत्सुक युवा छात्र, प्रशंसा से पलकें झपकाते हुए और अपनी आवाज में घबराहट को रोक न पाने के कारण, बोला: 'आपकी दो प्रकाशित पुस्तकों में मौजूद 863 पंक्तियों की कविता में से इकत्तीस पंक्तियों में वृक्षों का जिक्र है, बाईस पंक्तियों में "प्रेम" या "प्यार करना" शब्द है, और अठारह पंक्तियों में केवल एक अक्षर के शब्द हैं। इसका क्या महत्व है?'
लता ने कबीर को मुस्कुराते हुए देखा; वह भी मुस्कुरा उठी। अमित ने अभी-अभी कही गई बातों से एक सार्थक प्रश्न निकालने का प्रयास किया और अपने विचारों के विषय पर थोड़ी बात की। उसने पूछा, 'क्या इससे प्रश्न का उत्तर मिल गया?'
‘ओह, जी हाँ,’ युवक ने खुशी से सिर हिलाया।
एक दृढ़ निश्चयी महिला शिक्षाविद ने पूछा, 'क्या आप संपीड़न के गुण में विश्वास करते हैं?'
‘जी हाँ,’ अमित ने सावधानी से कहा। वह महिला काफी मोटी थी।
‘तो फिर ऐसी अफवाह क्यों फैली है कि आपका आगामी उपन्यास—जिसकी कहानी, जैसा कि मुझे पता चला है, बंगाल में आधारित होगी—इतना लंबा होगा? एक हजार पन्नों से भी ज्यादा!’ उसने तिरस्कारपूर्ण लहजे में कहा, मानो वह किसी भावी शोध लेखक की मानसिक थकावट

के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार हो।

'अरे, पता नहीं ये इतनी लंबी कैसे हो गई,' अमित ने कहा। 'मैं बहुत अनुशासनहीन हूँ। लेकिन मुझे भी लंबी किताबें पसंद नहीं हैं: चाहे अच्छी हों या बुरी। अगर वो बुरी हों, तो बस कुछ मिनटों के लिए उन्हें हाथ में पकड़े रहने से ही मेरी सांस फूल जाती है। लेकिन अगर वो अच्छी हों, तो मैं कई दिनों तक सामाजिक रूप से मंदबुद्धि हो जाता हूँ, अपने कमरे से बाहर निकलने से मना कर देता हूँ, बीच में टोकने पर गुस्सा करता हूँ और बड़बड़ाता हूँ, शादियों और अंत्येष्टि में शामिल होने से कतराता हूँ, और दोस्तों को दुश्मन बना लेता हूँ। मिडिलमार्च के घाव अब भी मुझ पर हैं।'

'प्रूस्ट के बारे में क्या ख्याल है?' एक खोई-खोई सी दिखने वाली महिला ने पूछा, जिसने कविताएँ समाप्त होते ही बुनाई शुरू कर दी थी।

अमित को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि ब्रह्मपुर में कोई प्रॉस्ट पढ़ता है। उसे अचानक बहुत खुशी महसूस होने लगी, मानो उसने बहुत अधिक ऑक्सीजन ले ली हो।

उन्होंने जवाब दिया, 'मुझे यकीन है कि मुझे प्रॉस्ट बहुत पसंद आते, अगर मेरा दिमाग सुंदरबन की तरह होता: घुमावदार, सब कुछ सोखने वाला, अंतहीन, मतलब, सूक्ष्म रूप से व्यवस्थित। लेकिन अभी तो प्रॉस्ट मुझे बोरियत से रुलाते हैं, रुलाते हैं, रुलाते हैं।' उन्होंने आगे कहा। वे रुके और आह भरी। 'रुलाते हैं, रुलाते हैं, रुलाते हैं,' उन्होंने ज़ोर देकर कहा। 'मैं प्रॉस्ट को पढ़ते समय रोता हूँ, और मैंने उनकी बहुत कम रचनाएँ पढ़ी हैं।'

वहाँ सन्नाटा छा गया: आखिर किसी को किसी बात पर इतनी तीव्र भावना क्यों होनी चाहिए? प्रोफेसर मिश्रा के आने से सन्नाटा टूटा।

'यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि साहित्य के कई सबसे स्थायी स्मारक काफी विशाल हैं।' उन्होंने अमित की ओर मुस्कुराते हुए कहा। 'शेक्सपियर न केवल महान हैं बल्कि भव्य भी हैं।'

‘लेकिन सिर्फ नाममात्र का,’ अमित ने कहा। ‘वह सिर्फ भारी-भरकम दिखने में ही बड़ा लगता है। और मेरे पास उस भारीपन को कम करने का अपना तरीका है,’ उसने बताया। ‘आपने शायद गौर किया होगा कि शेक्सपियर के किसी भी आम संग्रह में सभी नाटक दाहिनी ओर से शुरू होते हैं। कभी-कभी संपादक उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर करने के लिए बाईं ओर एक तस्वीर डाल देते हैं। खैर, मैं क्या करता हूँ कि अपनी कलम-चाकू से पूरी किताब को लगभग चालीस छोटे-छोटे हिस्सों में काट देता हूँ। इस तरह मैं हैमलेट या टिमोन को मोड़कर अपनी जेब में रख सकता हूँ। और जब मैं इधर-उधर घूम रहा होता हूँ—जैसे किसी कब्रिस्तान में—तो मैं उन्हें निकालकर पढ़ सकता हूँ। यह दिमाग और कलाई दोनों के लिए आरामदायक है। मैं इसे सबको सुझाता हूँ। मैंने यहाँ ट्रेन में सिम्बेलाइन को ठीक इसी तरह पढ़ा; और अगर ऐसा न होता तो मैं कभी नहीं पढ़ता।’

कबीर मुस्कुराया, लता जोर से हंस पड़ी, प्राण स्तब्ध रह गया, श्री मखीजानी का मुंह खुला रह गया और श्री नौरोजी ऐसे लग रहे थे मानो वे बेहोश होने वाले हों।

अमित इस परिणाम से प्रसन्न प्रतीत हुआ।

इसके बाद जो सन्नाटा छाया, उसमें काले सूट पहने एक अधेड़ उम्र का आदमी खड़ा हो गया। श्री नौरोजी थोड़ा कांपने लगे। उस आदमी ने दो-तीन बार खांसा।

‘तुम्हारी पढ़ाई के फलस्वरूप मैंने एक अवधारणा विकसित की है,’ उन्होंने अमित से कहा। ‘इसका संबंध परमाणु युग, कविता के स्थान और बंगाल के प्रभाव से है। युद्ध के बाद से बेशक बहुत कुछ बदल गया है। मैं एक घंटे से भारत की जीवंतता को सुन रहा था, यही मैंने अपने विचार को विकसित करते समय स्वयं से कहा था...’

खुद पर बेहद प्रसन्न होकर, वह लगभग छह पैराग्राफ के बराबर मौखिक भाषण देता रहा, बीच-बीच में 'समझे?' पूछता रहा। अमित ने सिर हिलाया, लेकिन हर बार उसका लहजा कम सौहार्दपूर्ण होता गया। कुछ लोग उठ खड़े हुए, और श्री नौरोजी ने अपनी व्यथा में मेज पर एक काल्पनिक हथौड़ा पटका।

अंत में उस व्यक्ति ने अमित से कहा: 'क्या आप इस पर कुछ टिप्पणी करना चाहेंगे?'

अमित ने कहा, 'नहीं, धन्यवाद।' 'लेकिन आपके विचारों को हमारे साथ साझा करने के लिए धन्यवाद। क्या आपके कोई और प्रश्न हैं?' उन्होंने अंतिम शब्द पर जोर देते हुए पूछा।

लेकिन अब कोई सवाल नहीं बचा था। श्रीमती नवरोजी की चाय और उनके मशहूर छोटे केक का समय हो गया था, जो दंत चिकित्सकों के लिए बेहद स्वादिष्ट होते हैं।

18.3

अमित लता से थोड़ी बात करना चाहता था, लेकिन भीड़ ने उसे घेर लिया। उसे किताबों पर हस्ताक्षर करने पड़े, किसी को नाराज़ न करने के डर से केक खाना पड़ा, और एक बार नाकाम हो चुकी उस प्यारी बुढ़िया ने उससे फिर से पूछा कि क्या उसे कभी किसी अंग्रेज़ लड़की से प्यार हुआ था। 'अब जवाब दे सकते हो, अब कोई सुनने वाला नहीं है,' उसने कहा। कई अन्य लोगों ने भी उसकी बात से सहमति जताई। लेकिन अमित बच गया: श्री नवरोजी ने धीरे से कहा कि कविता के प्रति उसका बचाव बहुत उत्साहवर्धक था और वह स्वयं कविता का निर्भीक भक्त है। उन्होंने अमित के हाथ में दबी हुई कविता थमा दी और उसे पढ़ने और अपनी राय बताने को कहा। 'अब, कृपया पूरी ईमानदारी से जवाब दें। आपकी जैसी ईमानदारी बहुत ताज़गी देने वाली है, और केवल ईमानदारी

ही काम आएगी,' श्री नवरोजी ने कहा। अमित ने श्री नवरोजी की पतली, छोटी, सावधानीपूर्वक और सीधी लिखावट में लिखी कविता को देखा:

बंगाल की गायिका के लिए एक त्रिक
किस्मत ने प्यारी तोरू दत्त को हमसे छीन लिया।
बाईस वर्ष की कोमल आयु में।
कैसुआरिना का पेड़ काट दिया गया।
भाग्य ने प्यारी तोरू दत्त को हमसे छीन लिया।
इसकी शाखाओं पर कोई बुलबुल नहीं आती, लेकिन
उनकी कविताएँ आज भी मुझे और आपको प्रभावित करती हैं।
किस्मत ने प्यारी तोरू दत्त को हमसे छीन लिया।
बाईस वर्ष की कोमल आयु में।

इसी बीच, प्रोफेसर मिश्रा कमरे के दूसरे कोने में प्राण से बात कर रहे थे। वे कह रहे थे, 'मेरे प्यारे बच्चे, मेरी संवेदनाएँ शब्दों से परे हैं। तुम्हारे अभी भी इतने छोटे बालों को देखकर मुझे उस निर्मम रूप से समाप्त हुए जीवन की याद आ जाती है...'

इसे जमा हुआ ही लें।

'आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। शोक और पारिवारिक चिंता के इस समय में आपको कोई नई चुनौती नहीं लेनी चाहिए। आपके बेचारे भाई, आपके बेचारे भाई,' प्रोफेसर मिश्रा ने कहा। 'केक खा लीजिए।'

'धन्यवाद, प्रोफेसर,' प्राण ने कहा।

'तो आप सहमत हैं?' प्रोफेसर मिश्रा ने कहा। 'बैठक अभी बहुत जल्दी है, और आपको साक्षात्कार के लिए आमंत्रित करना ठीक नहीं होगा—'

'किस बात पर सहमत?' प्राण ने कहा।

"बेशक, आपकी उम्मीदवारी वापस लेने के लिए। चिंता मत करो, प्यारे

बेटे, मैं सारी औपचारिकताएँ पूरी कर लूँगा। जैसा कि आप जानते हैं, चयन समिति की बैठक गुरुवार को है। तारीख तय करने में बहुत समय लग गया," उन्होंने आगे कहा। "लेकिन आखिरकार, जनवरी के मध्य में, मैं एक तारीख तय करने में सफल रहा। और अब, अफसोस— लेकिन आप एक नौजवान हैं, और आपको ब्रह्मपुर में या कहीं और तरक्की के कई और अवसर मिलेंगे।"

प्राण ने कहा, 'आपकी चिंता के लिए धन्यवाद, प्रोफेसर मिश्रा, लेकिन मुझे विश्वास है कि मैं उपस्थित होने के लिए पूरी तरह से स्वस्थ महसूस करूंगा।' उन्होंने आगे कहा, 'आपने इलियट के बारे में जो सवाल पूछा वह दिलचस्प था।'

प्रोफेसर मिश्रा, प्राण के इस असभ्य रवैये पर अभी भी नाराज़गी से अपना पीला पड़ा चेहरा लिए, और लगभग अंत्येष्टि में परोसे जाने वाले भुने हुए मांस का ज़िक्र करने को बेताब, कुछ देर चुप रहे। फिर उन्होंने खुद को संभाला और कहा: 'जी हां, मैंने कुछ महीने पहले यहां "एलियट: किधर?" शीर्षक से एक शोध पत्र प्रस्तुत किया था। खेद है कि आप उपस्थित नहीं हो सके।'

प्राण ने कहा, 'मुझे इसके बारे में बाद में पता चला। मुझे कई हफ्तों तक इसका पछतावा रहा। प्रोफेसर मिश्रा, केक जरूर खा लीजिए। आपकी थाली अब खाली है।'

इसी बीच लता और कबीर बातें कर रहे थे।

लता ने कहा, "तो आपने कलकत्ता आने पर उन्हें आमंत्रित किया था? क्या वे आपकी अपेक्षाओं पर खरे उतरे?"

'जी हां,' कबीर ने कहा। 'मुझे उनकी कविताएं पसंद हैं। लेकिन आपको कैसे पता चला कि मैं कलकत्ता गया था?'

लता ने कहा, 'मेरे पास अपने सूत्र हैं।' 'और आप अमित को कैसे जानते

हैं?'
‘अमित, है ना?’
‘श्री चटर्जी, अगर आप चाहें तो। आप उन्हें कैसे जानते हैं?’
कबीर ने खुद को सुधारते हुए कहा, 'मैं नहीं जानता—मेरा मतलब है, मैंने नहीं बताया था।' 'हमारी मुलाकात किसी ने करवाई थी।'
‘By Haresh Khanna?’
कबीर ने लता की आंखों में सीधे देखते हुए कहा, 'तुम्हारे पास वाकई अच्छे सूत्र हैं। शायद तुम मुझे बताना चाहोगी कि मैं आज दोपहर क्या कर रहा था।'
लता ने कहा, 'यह तो आसान है। तुम क्रिकेट खेल रहे थे।'
कबीर हँस पड़ा। उसने कहा, 'यह तो बहुत आसान था। कल दोपहर?'
लता ने कहा, 'मुझे नहीं पता।' उसने आगे कहा, 'मैं सचमुच यह केक नहीं खा सकती।'
कबीर ने कहा, 'पहले भी मैं तुम्हें देखने की उम्मीद में इस केक का कुछ हिस्सा बर्दाश्त कर चुका हूँ। लेकिन तुम टूटे हुए इनेमल की किसी भी मात्रा से कहीं ज़्यादा कीमती हो।'
"बहुत ही आकर्षक," लता ने ठंडे स्वर में सोचा और कोई जवाब नहीं दिया। कबीर की तारीफ कुछ ज्यादा ही सतही लग रही थी।
‘तो आप अमित को कैसे जानते हैं—मेरा मतलब है श्री चटर्जी को?’ कबीर ने अपनी बात जारी रखी। उसकी आवाज़ में थोड़ी कड़वाहट थी।
‘यह क्या है, कबीर, पूछताछ है क्या?’
'नहीं।'
तो फिर यह क्या है?
कबीर ने कहा, 'यह एक सामान्य प्रश्न था, जिसका उत्तर शायद इसी तरह दिया जाना चाहिए था। मैंने तो बस जिज्ञासावश पूछा था। क्या आप

चाहते हैं कि मैं इसे वापस ले लूं?'
लता ने सोचा कि प्रश्न का लहजा सभ्य नहीं था। वह ईर्ष्यापूर्ण था। अच्छा!
'नहीं। इसे ऐसे ही रहने दो,' उसने कहा। 'वह मेरा जीजा है। मेरा मतलब है,'—और यहाँ उसका चेहरा लाल हो गया—'वह मेरा सगा जीजा नहीं है, बल्कि मेरे भाई का जीजा है।'
और मुझे लगता है कि आपको कलकत्ता में उनसे मिलने के कई मौके मिले होंगे।
कलकत्ता शब्द एक उकसावे की तरह था।
'कबीर, तुम आखिर कहना क्या चाह रहे हो?' लता ने गुस्से से कहा।
'मैंने पिछले कुछ मिनटों से और पढ़ने के दौरान भी उसे देखा है, और वह जो कुछ भी करता है, ऐसा लगता है कि वह तुम्हें ही निशाना बनाकर कर रहा है।'
'बकवास।'
अब उसे देखो।
लता ने सहज ही मुड़ी; और अमित, जो नौरोजी के ट्रायोलेट पर टिप्पणी करने की कोशिश करते हुए आधी नज़र लता पर रखे हुए था, ने उसे मुस्कुराकर देखा। लता ने भी हल्की सी मुस्कान दी। हालाँकि, अमित जल्द ही प्रोफेसर मिश्रा के भारी-भरकम शरीर में ओझल हो गया।
और मुझे लगता है कि आप टहलने भी जाते हैं?
'कभी-कभी-'
'कब्रिस्तानों में एक-दूसरे को तिमोन पढ़कर सुनाना।'
'बिल्कुल नहीं।'
और मुझे लगता है कि आप भोर में नाव से हुगली नदी में ऊपर-नीचे यात्रा करते हैं।

‘कबीर—तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई, तुम ही की तो—’
‘और मुझे लगता है कि वह तुम्हें पत्र भी लिखता है?’ कबीर ने आगे कहा, जो उसे झकझोर कर हिलाना चाहता था।
‘अगर उसने ऐसा किया तो?’ लता ने कहा। ‘अगर उसने किया तो? लेकिन उसने नहीं किया। यह दूसरा आदमी है जिससे तुम मिली थी, हरेश, जो मुझे पत्र लिखता है—और मैं उसे जवाब देती हूँ।’
कबीर के चेहरे का रंग उड़ गया। उसने उसका दाहिना हाथ पकड़ा और कसकर थाम लिया।
‘छोड़ दो,’ लता ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘मुझे तुरंत छोड़ दो। वरना मैं ये थाली गिरा दूंगी।’ ‘गिरा दो,’ कबीर ने कहा। ‘गिरा दो। ये शायद नवरोजी खानदानी चीज़ है।’ ‘प्लीज़—’ लता की आँखों में आँसू आ गए। वह उसे शारीरिक रूप से चोट पहुँचा रहा था, लेकिन उसे अपने आँसुओं पर बहुत गुस्सा आ रहा था। ‘प्लीज़ ऐसा मत करो, कबीर—’
उसने उसका हाथ छोड़ दिया।
‘अरे, मालवोलियो का बदला—’ श्री बरुआ उनके पास आते हुए बोले। ‘तुमने ओलिविया को क्यों रुलाया?’ उन्होंने कबीर से पूछा।
कबीर ने कहा, 'मैंने उसे रुलाया नहीं है। किसी पर रोने का कोई दबाव नहीं होता। उसका रोना पूरी तरह से उसकी अपनी इच्छा है।'
और इतना कहकर वह चला गया।

18.4

लता ने श्री बरुआ को कुछ भी समझाने से इनकार कर दिया और चेहरा धोने चली गई। वह तब तक कमरे में नहीं लौटी जब तक उसे यह यकीन नहीं हो गया कि अब किसी को पता नहीं चलेगा कि वह रो रही थी। लेकिन भीड़ कम हो चुकी थी और प्राण और अमित जाने के लिए तैयार थे।

अमित सेवानिवृत्त पुलिस अधीक्षक श्री मैत्रा के घर पर ठहरे हुए थे; लेकिन वे प्राण, सविता, श्रीमती रूपा मेहरा, लता, मालती और मान के साथ रात का खाना खा रहे थे।

हालांकि मान जमानत पर रिहा होकर एक बार फिर प्रेम निवास में रह रहा था, पर उसे वहां खाना खाने की इच्छा नहीं होती थी। चुनाव समाप्त हो चुके थे और उसके पिता ब्रह्मपुर लौट आए थे। वे क्रोधित और दुखी थे और चाहते थे कि मान हर समय उनके साथ रहे। उन्हें नहीं पता था कि उचित आरोपपत्र दाखिल होने के बाद उनके बेटे का क्या होगा। महेश कपूर के सामने सब कुछ बिखरता जा रहा था। उन्हें उम्मीद थी कि कम से कम राजनीति में उनकी पकड़ बनी रहेगी। लेकिन अगर वे अपनी सीट भी नहीं जीत पाए, तो वे जानते थे कि इससे उनके समर्थकों की संख्या कितनी बुरी तरह कम हो जाएगी।

उनके पास फिलहाल कोई ऐसा काम नहीं था जिसमें वे अपना समय और ऊर्जा बिता सकें। कुछ दिन वे आगंतुकों से मिलते थे; कुछ दिन वे चुपचाप बगीचे को देखते हुए बैठे रहते थे। नौकर जानते थे कि वे परेशान होना नहीं चाहते। वीना उनके लिए चाय लाती थी। उनके निर्वाचन क्षेत्र के वोटों की गिनती कुछ दिनों में होनी थी; वे एक दिन के लिए रुधिया जाएंगे। 6 फरवरी की शाम तक उन्हें पता चल जाएगा कि वे जीते हैं या हारे हैं।

मान प्राण के घर रात के खाने के लिए तांगे पर सवार होकर जा रहा था, तभी उसकी नज़र मालती त्रिवेदी पर पड़ी। उसने मालती को नमस्कार किया। मालती ने भी नमस्ते कहा, फिर अचानक असहज सी हो गई।

'क्या बात है?' मान ने कहा। 'मुझे अभी तक दोषी नहीं ठहराया गया है। और प्राण ने कहा है कि आप हमारे साथ रात का खाना खा रहे हैं। अंदर आ जाइए।'

अपनी झिझक पर शर्मिंदा महसूस करते हुए, मालती आखिरकार गाड़ी में

बैठ गई, और वे दोनों साथ में विश्वविद्यालय की ओर चल पड़ीं, जो दो इतने बहिर्मुखी लोगों के लिए कोई बड़ी बात नहीं थी।

मान चटर्जी परिवार के तीन सदस्यों—मीनाक्षी, काकोली और दीपांकर—से अलग-अलग समय पर मिल चुका था। उसे मीनाक्षी सबसे ज़्यादा याद थी: प्राण की शादी में वह बेहद खूबसूरत लग रही थी—और उसने अस्पताल के कमरे को भी अपनी दमदार उपस्थिति से एक भव्य पृष्ठभूमि में बदल दिया था। अब वह उनके भाई से मिलने के लिए उत्सुक था, जिसका ज़िक्र लता ने जेल में उससे मुलाक़ात के दौरान किया था। अमित ने सहानुभूति और जिज्ञासा भरे अंदाज़ में उसका अभिवादन किया।

मान थका हुआ लग रहा था और उसे इस बात का एहसास भी था। कभी-कभी उसे अभी भी यकीन नहीं होता था कि वह कहाँ था; तो कभी-कभी उसे यकीन नहीं होता था कि वह कम से कम कुछ समय के लिए फिर से आज़ाद हो गया है।

'इन दिनों हमारी मुलाकातें मुश्किल से ही होती हैं,' लता ने कहा, जो पिछले एक घंटे से बातचीत पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रही थी।

मान हंसने लगा। 'नहीं, हम ऐसा बहुत कम करते हैं,' उसने कहा।

मालती समझ गई थी कि लता के साथ कुछ गड़बड़ है। उसने इसका कारण कवि की उपस्थिति को माना। मालती लता के भावी दूल्हे अमित को परखने के लिए उत्सुक थी। उसने पाया कि अमित कुछ खास प्रभावशाली नहीं था: वह सिर्फ फालतू की बातें करने में लगा रहता था। मोची, जिसे (जैसा कि मालती को बताया गया था) कंजूस कहे जाने पर गुस्सा आ जाता था, कहीं अधिक जोशीला था—भले ही, उसने सोचा, वह थोड़ा सनकी किस्म का था।

मालती को यह नहीं पता था कि अमित, खासकर अपनी कविताएँ पढ़ने या कोई गंभीर कविता लिखने के बाद, अक्सर एकदम अलग मिजाज में

चला जाता था: व्यंग्यपूर्ण और कभी-कभी तुच्छ बातें करने वाला। उसमें गंभीरता का कोई दिखावा नहीं रह गया था। हालाँकि आज शाम उसके मुँह से कोई कुक्कू-दोहे तो नहीं निकले, लेकिन उसने निर्वाचित राजनेताओं और उनके द्वारा अपने और अपने परिवार के लिए लाभ प्राप्त करके व्यवस्था को भ्रष्ट करने के तरीकों के बारे में हल्के-फुल्के अंदाज में बात करना शुरू कर दिया। श्रीमती रूपा मेहरा, जो राजनीति की बात होते ही चुप हो जाती थीं, उमा को सुलाने के लिए दूसरे कमरे में चली गई थीं।

अमित ने कहा, 'श्री मैत्रा, जिनके साथ मैं ठहरा हुआ हूँ, मुझे आदर्श समाज के लिए अपना नुस्खा समझा रहे हैं। देश का शासन उन इकलौते बच्चों द्वारा चलाया जाना चाहिए—अविवाहित इकलौते बच्चे—जिनके माता-पिता मर चुके हों। उनका कहना है कि कम से कम सभी मंत्री निःसंतान होने चाहिए।'

यह देखकर कि कोई भी इस विषय पर बात नहीं कर रहा है, अमित ने आगे कहा: 'नहीं तो, ज़ाहिर है, वे अपने बच्चों को उन सभी मुसीबतों से निकालने की कोशिश करेंगे जिनमें वे खुद फंस गए हैं।' वह अचानक रुक गया, उसे एहसास हुआ कि वह क्या कह रहा है।

चूंकि सभी लोग बिना कुछ बोले उनकी ओर देख रहे थे, इसलिए उन्होंने तुरंत कहा: 'बेशक, इला काकी कहती हैं कि इस तरह की चीजें केवल राजनीति में ही नहीं होतीं—शिक्षा जगत भी उतना ही बुरा है—भले ही वह—जैसा कि उन्होंने कहा था?—"घिनौने भाई-भतीजावाद और शत्रुता" से भरा हुआ है। यह बिल्कुल साहित्यिक जगत जैसा लगता है।'

'Ila?' said Pran.

'ओह, इला चट्टोपाध्याय!' अमित ने राहत की सांस लेते हुए कहा कि पटरियों पर पॉइंट्स बदल दिए गए हैं। 'डॉ. इला चट्टोपाध्याय।'

'वह व्यक्ति जो डोने के बारे में लिखता है?' प्रान ने पूछा।

'हां। क्या आप कलकत्ता में उनसे नहीं मिले थे? हमारे घर पर भी नहीं? मुझे लगता है नहीं। खैर, वह मुझे किसी विश्वविद्यालय में पाठ्यपुस्तक घोटाले के बारे में बता रही थीं, जहां एक प्रोफेसर ने छद्म नाम से लिखी गई पुस्तक को अनिवार्य पाठ्यपुस्तक के रूप में निर्धारित करवा लिया था। वह इस पूरे मामले को लेकर बेहद उत्साहित थीं।'

'क्या वह ऐसा नहीं करती?' लता ने मुस्कुराते हुए पूछा।

'ओह, जी हाँ,' अमित ने लता के बातचीत में शामिल होने पर खुशी जताते हुए कहा। 'जी हाँ, वो आती हैं। संयोग से वो कुछ दिनों में ब्रह्मपुर आ रही हैं, तो आपको उनसे मिलने का मौका मिल जाएगा,' उसने प्राण से कहा। 'मैं उनसे कहूँगा कि वो आपसे मिलें। आपको वो बहुत दिलचस्प लगेंगी।'

कमरे में लौटते हुए श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'बच्चा सो रहा है। बहुत गहरी, बहुत मीठी नींद सो रहा है।'

'खैर, मुझे तो डॉन पर लिखी उनकी किताब बहुत अच्छी लगी,' प्रान ने कहा। 'वह यहाँ किसलिए आ रही हैं?'

अमित ने कहा, 'वह किसी न किसी समिति में हैं—मुझे नहीं लगता कि उन्होंने इसका जिक्र किया था।' 'और मुझे यकीन नहीं है, उनके अनियमित स्वभाव को देखते हुए, कि उन्हें खुद भी याद होगा।'

श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा: 'जी हां, वह इन बेहद बुद्धिमान महिलाओं में से एक हैं। उनके विचार बहुत आधुनिक हैं। वह लता को शादी न करने की सलाह दे रही थीं।'

प्राण ने हिचकिचाते हुए कहा, 'क्या यह संयोगवश कोई चयन समिति थी?'

अमित ने याद करने की कोशिश की। 'मुझे लगता है ऐसा ही था। मुझे पक्का यकीन नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि यही बात थी। हाँ, वह ज्यादातर उम्मीदवारों की घटिया काबिलियत के बारे में बात कर रही थी,

इसलिए यही बात रही होगी।'
‘ऐसे में मुझे नहीं लगता कि मुझे उससे मिलना चाहिए,’ प्राण ने कहा। ‘शायद वही मेरे भविष्य का फैसला करेगी। मुझे लगता है कि मैं उन्हीं उम्मीदवारों में से एक हूं जिनका जिक्र वह कर रही थी।’
परिवार जिस संकट में फंसा हुआ था, उसमें प्राण की संभावित पदोन्नति और भी महत्वपूर्ण हो गई थी। यहां तक कि इस घर पर उसका अधिकार बनाए रखना भी, जो उसे काफी अनौपचारिक रूप से दिया गया था, काफी हद तक इसी पर निर्भर था।
‘तुम्हारा भाग्य! यह तो बहुत नाटकीय लगता है,’ अमित ने कहा। ‘मुझे लगता है कि प्रोफेसर मिश्रा के पूरी तरह से तुम्हारे साथ होने पर, भाग्य तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार करने से पहले दो बार सोचेगा।’
सविता उत्सुकता से आगे झुकी। 'आपने क्या कहा? प्रोफेसर मिश्रा?'
‘जी हां, बिलकुल,’ अमित ने कहा। ‘जब मैंने उन्हें बताया कि मैं यहां रात का खाना खा रहा हूं, तो उन्होंने प्राण के बारे में बहुत ही प्रशंसा भरी बातें कीं।’
‘लो, प्यारे,’ सविता ने कहा।
प्राण ने कहा: 'अगर मैं तिलचट्टा होता, तो मैं ये नहीं सोचता: "चयन समिति क्या फैसला करेगी?", "भारत का क्या हो रहा है?", "क्या चेक डाक से आया है?", "क्या मैं अपनी बेटी को बड़ा होते देख पाऊंगा?" आखिर मैं इन सब बातों को लेकर इतना चिंतित क्यों हूं?'
अमित को छोड़कर बाकी सभी ने प्राण को अलग-अलग स्तर के आश्चर्य और चिंता के साथ देखा।
‘क्या तुम्हें मेरी परवाह नहीं?’ मान ने अचानक पूछा।
‘हां, मुझे परवाह है,’ प्राण ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा। ‘लेकिन मुझे शक है कि एक तिलचट्टे को इस बात की परवाह होगी कि

उसके भाई के साथ क्या हुआ। या उसके पिता के साथ भी।'
'या फिर माँ,' मान ने तुरंत उठकर जाते हुए कहा। ऐसा लग रहा था मानो वह अब और ऐसी बातें बर्दाश्त नहीं कर सकता।
'मान,' सविता ने कहा, 'इसे इस तरह मत लो। प्राण भी बहुत तनाव में है। और उस टिप्पणी से उसका कोई बुरा इरादा नहीं था। प्यारे, कृपया इस तरह बात मत करो। यह कहना बहुत अजीब था, और यह तुम्हारे स्वभाव के बिल्कुल विपरीत है; मुझे आश्चर्य नहीं है कि मान परेशान है।'
प्राण ने थकी हुई स्नेह भरी नज़र से जम्हाई लेते हुए कहा: 'मैं अपने घर में और अपने परिवार के साथ जो कुछ भी बोलता हूँ, उसके बारे में सावधान रहने की कोशिश करूँगा।'
सविता के चेहरे पर दुख देखकर उसे लगा कि काश उसने दूसरा वाक्य न कहा होता। आख़िरकार, वह बिना किसी बंधन के, बिना अपनी सहजता खोए, सावधानी बरतने में कामयाब रही थी। उसने उसे कभी भी पूरी तरह स्वस्थ नहीं देखा था। बच्चे के जन्म से पहले ही, वह उसके कदमों की खामोशी से, उस कमरे में जहाँ वह सो रहा होता था, उसकी मोहब्बत का एहसास कर सकता था—कभी-कभी गुनगुनाना शुरू करके अचानक चुप हो जाना। वह इसे कभी भी बंधन नहीं मानती। कभी-कभी वह जागते हुए भी अपनी आँखें बंद रखता था—सिर्फ़ इस एहसास की खुशी के लिए कि कोई उसकी इतनी परवाह करता है। उसे लगा कि वह सही कह रही थी: उसकी बात नासमझी भरी थी। शायद बचकानी भी।
लता सविता को देख रही थी और सोच रही थी: सविता शादी के लिए ही बनी है। वह घर और परिवार की सभी जिम्मेदारियों को खुशी-खुशी निभाती है, जीवन की सभी छोटी-छोटी और गंभीर बातों को। उसने वकालत की पढ़ाई तो प्राण की खराब सेहत की वजह से मजबूरी में की है। तभी उसके मन में यह ख्याल आया कि सविता जिससे भी शादी

करती, उसे प्यार करती, चाहे वह कितना भी मुश्किल स्वभाव का हो, चाहे वह प्राण से कितना भी अलग हो।

18.5

'तुम क्या सोच रही थी?' अमित ने रात के खाने के बाद लता से पूछा, अपनी कॉफी का आनंद लेते हुए। प्राण और सविता बाकी मेहमानों को दरवाजे तक छोड़ने जा रहे थे, और श्रीमती रूपा मेहरा कुछ मिनटों के लिए अपने कमरे में चली गई थीं।

लता ने कहा, 'मुझे आपका पाठ बहुत पसंद आया। यह बहुत ही भावपूर्ण था। और मुझे बाद में प्रश्नोत्तर सत्र भी बहुत अच्छा लगा। विशेष रूप से सांख्यिकीय परिशिष्ट—और किताबों को फाड़ना। आपको सविता को भी अपनी कानून की किताबों के साथ इतना ही कठोर व्यवहार करने की सलाह देनी चाहिए।'

अमित ने कहा, 'मुझे नहीं पता था कि आप युवा दुर्रानी को जानते हैं।'

मुझे नहीं पता था कि उसने आपको आमंत्रित किया है।

कुछ सेकंड का विराम रहा। फिर अमित ने कहा: 'मेरा मतलब था, तुम अभी क्या सोच रहे थे?'

'कब?' लता ने कहा।

'जब आप प्राण और सविता को देख रहे थे। हलवा खाते हुए।'

'ओह।'

'अच्छी तरह से क्या?'

लता ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मुझे याद नहीं है।'

अमित हंस पड़ा।

'तुम क्यों हंस रही हो?' लता ने पूछा।

'मुझे लगता है कि मुझे आपको असहज महसूस कराना अच्छा लगता है।'

'ओह क्यों?'

‘—या तो खुश—या फिर हैरान—बस तुम्हारे मूड में आए बदलाव को देखकर। कितना मजा आता है। मुझे तुम पर तरस आता है!’
‘क्यों?’ लता ने चौंककर कहा।
क्योंकि आपको कभी पता ही नहीं चलेगा कि आपकी संगति में रहना कितना सुखद होता है।
लता ने कहा, 'ऐसे बोलना बंद करो। माँ किसी भी पल आ जाएँगी।' 'तुम बिल्कुल सही कह रही हो। तो फिर: क्या तुम मुझसे शादी करोगी?'
लता के हाथ से प्याला गिर गया। वह ज़मीन पर गिरा और टूट गया। उसने टूटे हुए टुकड़ों को देखा—खुशकिस्मती से, प्याला खाली था—और फिर अमित की तरफ देखा।
अमित ने कहा, 'जल्दी करो! इससे पहले कि वे दौड़कर देखने आएं कि क्या हुआ है।'
हा बोलना।'
लता घुटनों के बल बैठ गई थी; वह प्याले के टुकड़ों को इकट्ठा कर रही थी और उन्हें नीले और सुनहरे रंग की नाजुक नक्काशी वाली तश्तरी पर रख रही थी।
अमित भी उसके साथ ज़मीन पर बैठ गया। उसका चेहरा अमित से बस कुछ ही इंच दूर था, लेकिन मानो उसका ध्यान कहीं और था। वह उसे चूमना चाहता था, पर उसे एहसास हुआ कि ऐसा संभव नहीं है। उसने एक-एक करके चीनी मिट्टी के टूटे हुए टुकड़े उठा लिए।
अमित ने पूछा, 'क्या यह कोई पारिवारिक धरोहर थी?'
‘क्या? मुझे माफ़ करना—’ लता ने शब्दों से चौंककर अपनी तंद्रा तोड़ते हुए कहा। ‘खैर, मुझे लगता है कि मुझे इंतज़ार करना पड़ेगा। मुझे उम्मीद थी कि इस तरह अचानक से यह बात कहकर मैं आपको चौंका दूंगी और आप मान जाएँगे।’

‘काश—’ लता ने टूटे हुए कप के आखिरी टुकड़े को तश्तरी पर रखते हुए कहा।

‘क्या?’ अमित ने पूछा।

काश, मैं एक दिन जागूं और पाऊं कि मेरी शादी किसी से हुई थी।

या फिर मेरा किसी के साथ बेकाबू अफेयर था और मैंने कभी शादी ही नहीं की। बिल्कुल मलाती की तरह।'

अमित ने कहा, 'ऐसा मत कहो। मां किसी भी पल आ सकती हैं। वैसे भी, मैं मालती के साथ अफेयर करने की सलाह नहीं दूंगा।'

लता ने कहा, 'अमित, बेवकूफी करना बंद करो। तुम इतने बुद्धिमान हो, क्या तुम्हें इतना मूर्ख भी होना जरूरी है? मुझे तुम्हें सिर्फ काले और सफेद रंग में ही गंभीरता से लेना चाहिए।'

‘बीमारी और सेहत दोनों में।’

लता हंस पड़ी। उसने आगे कहा, 'अच्छे के लिए भी और बुरे के लिए भी।'

'मुझे लगता है कि बुरे के लिए कहीं ज्यादा बुरा।'

अमित की आँखें चमक उठीं। 'तुम्हारा मतलब हाँ है?'

‘नहीं, मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है,’ लता ने कहा। ‘मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है। और मुझे लगता है कि तुम्हारा भी नहीं है। लेकिन हम यहाँ जापानी गुड़ियों की तरह एक-दूसरे के सामने घुटने टेककर क्यों बैठे हैं? उठो, उठो। माँ आ रही हैं, जैसा तुमने कहा था।’

18.6

हालांकि, रूपा मेहरा का अमित के प्रति रवैया उतना तीखा नहीं था जितना उसने उम्मीद की थी, क्योंकि वह हरेश के बारे में दोबारा सोच रही थीं।

अपने फैसले पर सवाल उठने के डर से उसने अपने विचार खुलकर नहीं बोले। लेकिन वह दिखावा करने में माहिर नहीं थी; और अगले कुछ दिनों में, जब अमित ब्रह्मपुर से चला गया, तो हरेश की आलोचना करने के

बजाय उसके प्रति उत्साह की कमी ने लता को यह संकेत दिया कि उसके पूर्व प्रियतम के बारे में उसके मन में सब कुछ ठीक नहीं था।

लता द्वारा उसे 'नीच' कहे जाने पर हरेश इतना परेशान हो गया था, यह देखकर श्रीमती रूपा मेहरा हैरान रह गईं। दूसरी ओर, उन्होंने सोचा कि इसमें लता की भी कुछ न कुछ गलती ज़रूर रही होगी। उन्हें यह बात समझ नहीं आ रही थी कि हरेश ने अपनी होने वाली सास, श्रीमती रूपा मेहरा को अलविदा क्यों नहीं कहा। झगड़े और ब्रह्मपुर लौटने के बीच कई दिन बीत चुके थे; फिर भी इस दौरान उसने न तो उनसे मुलाकात की, न फोन किया और न ही चिट्ठी लिखी। यह ठीक नहीं था; उन्हें दुख हुआ था; और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वह उनके साथ इतना असंवेदनशील व्यवहार क्यों करता रहा। काश उसने फोन किया होता, तो वह उसे तुरंत और आँसू बहाते हुए माफ कर देतीं। अब उनका माफ़ करने का कोई मन नहीं था।

उसे यह भी याद आया कि जब उसने अपने कुछ दोस्तों को बताया था कि हरेश जूतों के व्यापार में शामिल है, तो उन्होंने कुछ इस तरह की बातें कही थीं, 'खैर, आजकल चीजें बदल गई हैं,' और 'ओह! प्यारी रूपा—लेकिन सब कुछ अच्छे के लिए ही होता है, और प्राहा तो प्राहा ही है।' शुरुआती रोमांटिक भावनाओं में, ऐसी दबी हुई या सांत्वना भरी टिप्पणियों का उस पर कोई असर नहीं हुआ था। लेकिन अब उनकी याद आते ही उसे शर्मिंदगी का दौरा पड़ गया। भला किसने सोचा होगा कि रेलवे बोर्ड के भावी अध्यक्ष की बेटी का संबंध चमड़े के एक निम्नवर्गीय परिवार से होगा?

'लेकिन यही तो नसीब है,' श्रीमती रूपा मेहरा ने मन ही मन कहा; और इसी विचार ने उनके मन में एक विचार को जन्म दिया, जिसे अगली सुबह के ब्रह्मपुर क्रॉनिकल में छपे एक विज्ञापन ने अमल में ला दिया। वहाँ

उन्होंने 'राज ज्योतिषी' शीर्षक के अंतर्गत एक मोटे-ताज़े, मुस्कुराते हुए अधेड़ उम्र के व्यक्ति की तस्वीर देखी, जिसके बाल छोटे कटे हुए थे और बीच से बँधे हुए थे। उसके नीचे ये शब्द लिखे थे:

सर्वोत्कृष्ट ज्योतिषी, हस्तरेखा विशेषज्ञ और तांत्रिक। पंडित कांति प्रसाद चतुर्वेदी, ज्योतिषतीर्थ, तांत्रिकाचार्य, सरकारी ज्योतिष अध्ययन बोर्ड के परीक्षक। अनगिनत प्रशंसाओं से परिपूर्ण और सम्मानित। अत्यंत शीघ्र परिणाम देने वाले।

बहुत जल्दी—दरअसल उसी दोपहर—श्रीमती रूपा मेहरा ज्योतिषी-राजकक्ष के पास पहुँच गईं। वे इस बात से नाराज़ थे कि उन्हें हरेश के जन्म का स्थान और तिथि तो पता थी, लेकिन जन्म का सही समय नहीं। लेकिन उन्होंने वादा किया कि वे कुछ कर सकते हैं। इसके लिए कुछ अतिरिक्त अनुमान, कुछ अतिरिक्त गणनाएँ और यहाँ तक कि यूरेनस के समायोजन कारक का उपयोग भी करना होगा, जो भारतीय ज्योतिष में मानक नहीं है; और यूरेनस का उपयोग निःशुल्क नहीं था। श्रीमती रूपा मेहरा ने भुगतान कर दिया और उन्होंने उन्हें दो दिन बाद आने को कहा।

इन सब बातों को लेकर वह काफी दोषी महसूस कर रही थी। आखिर, जब श्रीमती महेश कपूर ने सविता की कुंडली मांगी थी, तब उसने लता से शिकायत की थी: 'मैं इस सब मिलान में विश्वास नहीं करती। अगर यह सच होता, तो मेरे पति और मैं...' लेकिन अब उसने खुद को समझाया कि शायद गलती कुछ ज्योतिषियों के कौशल की कमी में थी, न कि स्वयं ज्योतिष विज्ञान में। और राजसी ज्योतिषी ने तो उसे बहुत ही समझाने में कामयाबी हासिल की थी। उन्होंने समझाया था कि उनकी सोने की शादी की अंगूठी 'बृहस्पति की शक्ति को मजबूत और केंद्रित' करेगी; उन्होंने उन्हें गार्नेट पहनने की सलाह दी थी क्योंकि यह राहु के ग्रहण बिंदु को नियंत्रित करेगा और मानसिक शांति प्रदान करेगा; उन्होंने उनकी बुद्धिमत्ता

की प्रशंसा की थी, जो उनकी हथेली और उनके चेहरे के भावों से स्पष्ट थी; और उनकी मेज पर ग्राहकों की ओर मुख किए हुए चांदी के फ्रेम में लगी एक बड़ी तस्वीर में उन्हें स्वयं राज्यपाल से हाथ मिलाते हुए दिखाया गया था।

अगली मुलाकात में जब वे मिले, तो राजज्योतिषी ने कहा: 'देखिए, इस व्यक्ति के सातवें भाव में बृहस्पति पर मंगल की दृष्टि है। कुल मिलाकर पीला और लाल रंग दिखाई देता है, जो संयोजन में नारंगी या सुनहरा रंग हो सकता है, इसलिए उसकी पत्नी बहुत सुंदर होगी। फिर देखिए, चंद्रमा कई ग्रहों से घिरा हुआ है, यह भी इसी बात का संकेत है। लेकिन सातवें भाव में मेष राशि है, जो बहुत जिद्दी होती है, और बृहस्पति है, जो बलवान होता है, जिससे उसकी जिद्दीपन और बढ़ जाएगी। इसलिए वह एक सुंदर लेकिन कठिन स्वभाव वाली महिला से विवाह करेगा। क्या आपकी बेटी ऐसी ही है?'

श्रीमती रूपा मेहरा ने कुछ सेकंड के लिए इस मामले पर विचार किया, फिर कहीं और बेहतर भाग्य की उम्मीद करते हुए कहा: 'लेकिन बाकी सभी घरों का क्या होगा?'

'सातवां घर पत्नी का घर है।'

लेकिन क्या इसमें कोई समस्या नहीं है? मेरा मतलब है, दोनों कुंडली के मिलान में?' उसकी आँखें बहुत तीक्ष्ण थीं, और उसे मजबूर होकर उसके बालों की बीच की मांग पर ध्यान केंद्रित करना पड़ा।

राजसी ज्योतिषी ने कुछ क्षण तक उन्हें देखा, मुस्कुराते हुए अनुमान लगाया और फिर कहा: 'जी हां, कुछ समस्याएं अवश्य हैं। मैंने आपकी बेटी और भावी दूल्हे दोनों की जानकारी को ध्यान में रखते हुए पूरी स्थिति का विश्लेषण किया है। मैं कहूंगा कि यह काफी समस्याजनक है। कृपया आज शाम आकर समस्या से संबंधित विवरण ले जाएं। मैं उन्हें लिख

लूंगा।'
‘और यूरेनस?’ श्रीमती रूपा मेहरा ने पूछा। ‘यूरेनस क्या कहता है?’
‘इसका कोई खास असर नहीं हुआ,’ राज ज्योतिषी ने कहा। ‘लेकिन गणना तो करनी ही थी,’ उन्होंने जल्दबाजी में आगे कहा।
18.7
जब वे दोनों एक साथ हरिदास संगीत महाविद्यालय में दाखिल हुए, तो मालती की सहेली ने कहा: 'खैर, अब तक तो उस जानवर को कहीं नहीं देखा गया है। लेकिन अगर कहीं देखा भी गया, तो मैं तुम्हें सूचित करती रहूंगी।'
‘तुम क्या बक-बक कर रही हो?’ मलाती ने पूछा। ‘उम्मीद है कि बहुत देर नहीं हुई है।’ उस्ताद मजीद खान इन दिनों काफी अधीर थे।
'ओह, आपको पता है, वह महिला जिससे वह ब्लू डेन्यूब में मिला था।'
‘कौन-कौन मिले?’
‘बेशक कबीर।’
मालती रुकी और अपनी सहेली की ओर मुड़ी:
लेकिन आपने लाल लोमड़ी का नाम लिया था।
उसकी सहेली ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'क्या मैंने ऐसा किया? शायद किया हो। यह काफी उलझन भरा है। लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता है कि आप किसी को चौक में गोली मारते हैं या मिसरी मंडी में? ... तुम्हें क्या हो गया है?'
क्योंकि मालती ने अपनी सहेली का हाथ पकड़ लिया था; उसका चेहरा पीला पड़ गया था।
‘वह महिला कैसी थी? उसने क्या पहना हुआ था?’ उसने पूछा।
‘अद्भुत! तब तो तुम कुछ जानना ही नहीं चाहते थे, लेकिन अब—’
'जल्दी बताओ।'

‘खैर, मैं तो वहाँ नहीं थी, लेकिन पूर्णिमा नाम की यह लड़की—मुझे नहीं लगता कि आप उसे जानते होंगे, वह पटना से है और इतिहास की पढ़ाई कर रही है—उसी ने उन्हें देखा था। हालाँकि, वह कुछ टेबल दूर बैठी थी, और आप जानते ही हैं कि इन मंद रोशनी में कैसा लगता है—’
लेकिन उसने क्या पहना था? मेरा मतलब उस महिला से है, न कि इस बेचारी लड़की से।
‘मलाती, तुम्हें क्या हुआ है? कई हफ्ते बीत गए हैं—’
‘उसने क्या पहना था?’ मालती ने हताशा से पूछा।
‘एक हरी साड़ी। रुको, मुझे इस बार रंगों का सही चुनाव करना होगा, वरना तुम मुझे मार डालोगी। हाँ, पूर्णिमा ने कहा था कि उसने हरी साड़ी पहनी है—और ढेर सारे चमकीले पन्ना रत्न। और वह लंबी और काफी गोरी थी—बस इतना ही—’
‘ओह, मैंने क्या कर दिया—’ मालती ने कहा। ‘ओह, बेचारा कबीर। कितनी बड़ी गलती हो गई। मैंने क्या कर दिया, मैंने क्या कर दिया?’
*

उस्ताद मजीद खान ने कहा, ‘मलाती, तानपुरा को आदरपूर्वक, दोनों हाथों से उठाओ। यह बिल्ली का बच्चा तो नहीं है। तुम्हें क्या हो गया है?’

*
‘तुम्हें क्या हुआ है?’ लता ने पूछा, तभी मालती अचानक उसके कमरे में घुस आई।
‘वह मेरे साथ था—’ मलाती ने कहा।
'कौन?'
‘कबीर—उस दिन रेड फॉक्स में, मेरा मतलब ब्लू डेन्यूब में था।’

लता के मन में ईर्ष्या की एक लहर दौड़ गई।
‘नहीं—मुझे इस पर विश्वास नहीं है। तुम पर तो बिलकुल नहीं!’
चीख इतनी तेज थी कि मालती चौंक गई। उसे लगभग डर लग रहा था कि लता उस पर हमला कर देगी।
‘मेरा मतलब वो नहीं था—मेरा मतलब बिल्कुल भी वो नहीं था,’ मलाती ने कहा। ‘मेरा मतलब ये था कि वो किसी और लड़की से नहीं मिल रहा था। वो किसी और से नहीं मिल रहा था। मुझे गलत जगह का नाम बताया गया था। मुझे और जानकारी का इंतज़ार करना चाहिए था। लता, मैं खुद को दोषी मानती हूँ। ये पूरी तरह मेरी गलती है। मैं समझ सकती हूँ कि तुम किस दौर से गुज़री हो। लेकिन प्लीज़, प्लीज़ मेरी गलती का दोष उस पर—और खुद पर—मत डालो।’
लता एक मिनट तक चुप रही। मालती को उम्मीद थी कि वह राहत या निराशा के आँसू बहाएगी, लेकिन एक भी आँसू नहीं आया। फिर उसने कहा: 'मैं नहीं रोऊँगी। लेकिन मालू, खुद को दोष मत दो।'
'हां, हां। बेचारा—वह तो शुरू से ही पूरी तरह ईमानदार था।'
लता ने कहा, 'नहीं। नहीं। नहीं। मुझे खुशी है कि कबीर तुमसे झूठ नहीं बोल रहा था—मैं तुम्हें बता नहीं सकती कि मुझे कितनी खुशी है। लेकिन —खैर, इस सारी पीड़ा के परिणामस्वरूप मैंने कुछ सीखा है—हाँ, मालू, मैंने सचमुच सीखा है—अपने बारे में—और, खैर, उसके लिए मेरी भावनाओं की ताकत—वास्तव में, उनकी विचित्रता के बारे में।'
उसकी आवाज आशा और निराशा के बीच की किसी अनिश्चित जगह से आती हुई प्रतीत हो रही थी।

18.8

प्रोफेसर मिश्रा इस बात से निराश थे कि प्राण ने न तो अपना प्रोफेसर पद का आवेदन वापस लिया और न ही पाठ्यक्रम सुधार की अपनी निरर्थक

योजनाएँ छोड़ीं। फिर भी, वे इस बात से खुश थे कि उनके पिता के लिए हालात बिल्कुल भी अच्छे नहीं थे। प्रेस में उनके विरोधियों द्वारा अपनाए गए तरीकों की कड़ी आलोचना हो रही थी, लेकिन चुनाव में उनकी जीत या हार के सवाल पर अधिकांश लोग इस बात पर सहमत थे कि उनकी हार लगभग निश्चित है। प्रोफेसर मिश्रा राजनीति में गहरी रुचि रखते थे, और उनके लगभग सभी मुखबिरों ने उन्हें बताया था कि उन्हें यह मानकर चलना चाहिए कि प्रोफेसर पद के मामले में प्राण के पिता के पास अपने बेटे के साथ हुए किसी भी अन्याय को दूर करने या उसका बदला लेने की पर्याप्त शक्ति नहीं होगी।

प्रोफेसर मिश्रा इस बात से भी प्रसन्न थे कि चयन समिति की बैठक तक उन्हें इस तथ्य की निश्चित जानकारी हो जाएगी। महेश कपूर के निर्वाचन क्षेत्र में मतगणना 6 फरवरी को होनी थी और चयन समिति की बैठक 7 फरवरी को होनी थी। इस प्रकार, उन्हें इस बात का पूरा भरोसा था कि वे उस युवा व्याख्याता को निश्चिंत होकर हटा सकते हैं जो विभाग के सुचारू संचालन में बाधा बन रहा था।

साथ ही, चूंकि संभावित उम्मीदवारों में से एक, और वह किसी भी तरह से सबसे खराब उम्मीदवार नहीं था, मुख्यमंत्री का भतीजा था, इसलिए प्रोफेसर मिश्रा इस छोटी सी बात में एस.एस. शर्मा की मदद करके उनकी नजरों में और भी बेहतर हो सकते थे। प्रोफेसर मिश्रा को उम्मीद थी कि सरकार में, विशेष रूप से (लेकिन जरूरी नहीं कि केवल शिक्षा के क्षेत्र में), जब भी किसी समिति में कोई पद खाली होगा, तो तत्कालीन सेवानिवृत्त प्रोफेसर ओ.पी. मिश्रा के नाम पर सत्ताधारी अधिकारियों द्वारा सकारात्मक रूप से विचार किया जाएगा।

अगर एस.एस. शर्मा को दिल्ली बुलाया जाता, जैसा कि अफवाह थी कि नेहरू ने न केवल अनुरोध किया था बल्कि लगभग अनिवार्य रूप से उन्हें

बुलाया था, तो क्या होता? प्रोफेसर मिश्रा ने विचार व्यक्त किया कि नेहरू भी एस.एस. शर्मा जैसे चतुर राजनीतिज्ञ को उनके सुखी गढ़ से हटाने में सफल नहीं हो पाते। और अगर वे दिल्ली जाकर किसी मंत्रालय का कार्यभार संभाल लेते, तो दिल्ली से भी लाभ मिल सकते थे, न कि केवल ब्रह्मपुर स्थित सचिवालय से।

अगर एस.एस. शर्मा दिल्ली चले जाते और महेश कपूर ब्रह्मपुर से मुख्यमंत्री बन जाते तो क्या होता? यह संभावना भयावह थी, लेकिन इसकी संभावना बहुत कम थी। हर चीज़ इसके खिलाफ थी: उनके बेटे से जुड़ा घोटाला, हाल ही में विधवा होना, और यह तथ्य कि जैसे ही यह खबर फैलती और प्रकाशित होती कि वे अपनी सीट हार गए हैं, उनकी राजनीतिक विश्वसनीयता को गहरा धब्बा लग जाता। यह सच था कि नेहरू उन्हें पसंद करते थे; और ज़मींदारी अधिनियम पर उनके काम से विशेष रूप से प्रभावित थे। लेकिन नेहरू तानाशाह नहीं थे, और पूर्व प्रदेश के कांग्रेस विधायक अपना मुख्यमंत्री खुद चुन लेंगे।

यह बात अब पूरी तरह स्पष्ट हो चुकी थी कि देश और राज्य में सत्ता संभालने वाली पार्टी वही विशाल, अव्यवस्थित और गुटों में बंटी हुई कांग्रेस पार्टी होगी। जवाहरलाल नेहरू की लोकप्रियता के बल पर कांग्रेस देश भर में भारी बहुमत से जीत हासिल कर रही थी। हालांकि, पार्टी को देश भर में कुल वोटों का आधे से भी कम मिल रहा था। लेकिन अधिकांश निर्वाचन क्षेत्रों में कांग्रेस का विरोध इतना बिखरा हुआ और अव्यवस्थित था कि शुरुआती नतीजों से ऐसा लग रहा था कि संसद की लगभग तीन-चौथाई सीटों पर और विभिन्न राज्य विधानसभाओं की लगभग दो-तिहाई सीटों पर कांग्रेस को पहली जीत मिलेगी।

महेश कपूर की उम्मीदवारी उनके निर्वाचन क्षेत्र और परिवार से जुड़े निजी और विशेष कारणों से विफल हो गई, जिनमें उस व्यक्ति की अत्यधिक

लोकप्रियता भी शामिल थी जिसके एजेंट का वे विरोध कर रहे थे। चुनाव के बाद यह बात उनके लिए मददगार साबित नहीं होगी। बल्कि, उन्हें सफलताओं के सागर में असाधारण चुनावी विफलताओं में से एक माना जाएगा। राजनीति में हारने वालों के प्रति सहानुभूति का कोई महत्व नहीं होता। प्रोफेसर मिश्रा पूरी श्रद्धा से आशा करते थे कि महेश कपूर का करियर समाप्त हो जाएगा; और उनका उद्दंड, जॉयस-प्रेमी, प्रोफेसरों को चिढ़ाने वाला बेटा समय आने पर समझ जाएगा कि इस क्षेत्र में उसका कोई भविष्य नहीं है—ठीक वैसे ही जैसे उसके छोटे भाई का सभ्य समाज में कोई भविष्य नहीं है।

और फिर भी—क्या प्रोफेसर मिश्रा की योजनाओं में कुछ गड़बड़ हो सकती थी? पाँच सदस्यीय चयन समिति में स्वयं प्रोफेसर मिश्रा (विभागाध्यक्ष के रूप में), विश्वविद्यालय के कुलपति (जो समिति के अध्यक्ष थे), कुलाधिपति द्वारा नामित व्यक्ति (जो उस वर्ष इतिहास के एक प्रतिष्ठित लेकिन कुछ हद तक कमज़ोर सेवानिवृत्त प्रोफेसर थे), और अकादमिक परिषद द्वारा अनुमोदित विशेषज्ञों के पैनल से दो बाहरी विशेषज्ञ शामिल थे। प्रोफेसर मिश्रा ने पैनल का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया और दो नामों का चयन किया, जिन्हें कुलपति ने बिना किसी चर्चा या आपत्ति के स्वीकार कर लिया। उन्होंने प्रोफेसर मिश्रा को प्रोत्साहित करते हुए कहा, 'आप जानते हैं कि आप क्या कर रहे हैं।' दोनों के हित एक ही दिशा में थे।

उस समय अलग-अलग दिशाओं से ब्रह्मपुर आ रहे दो विशेषज्ञ प्रोफेसर जयकुमार और डॉ. इला चट्टोपाध्याय थे। प्रोफेसर जयकुमार मद्रास के एक शांत स्वभाव के व्यक्ति थे, जिनकी विशेषज्ञता शेली में थी। वे शेली के विपरीत, ब्रह्मांड की स्थिरता और विभागीय कलह के अभाव में दृढ़ विश्वास रखते थे। जिस दिन प्राण की अचानक मृत्यु हुई थी, उस दिन

प्रोफेसर मिश्रा ने उन्हें विभाग का दौरा कराया था।

डॉ. इला चट्टोपाध्याय के साथ कोई समस्या नहीं थी; वह प्रोफेसर मिश्रा की आभारी थीं। प्रोफेसर मिश्रा उस समिति के सदस्य थे जिसने कुछ साल पहले उन्हें विश्वविद्यालय की रीडर बनाया था, और उन्होंने तुरंत बाद और कई बार बाद में भी उन्हें इस बात पर जोर दिया था कि इस प्रक्रिया में उनकी कितनी अहम भूमिका रही है। उन्होंने डॉने पर उनके काम की बड़ी चापलूसी और लगन से प्रशंसा की थी। उन्हें पूरा विश्वास था कि वह उनकी बात मान लेंगी। जब उनकी ट्रेन ब्रह्मपुर स्टेशन पर पहुंची, तो प्रोफेसर मिश्रा उन्हें लेने और ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय के गेस्ट हाउस तक ले जाने के लिए वहां मौजूद थे।

रास्ते में उन्होंने बातचीत को समय से पहले ही अगले दिन के कामकाज की ओर मोड़ने की कोशिश की। लेकिन डॉ. इला चट्टोपाध्याय पहले से ही विभिन्न उम्मीदवारों पर चर्चा करने के लिए बिल्कुल भी उत्सुक नहीं दिखीं, जिससे प्रोफेसर मिश्रा निराश हो गईं। उन्होंने सुझाव दिया, 'क्यों न हम साक्षात्कार तक इंतजार करें?'

'बिल्कुल सही, बिल्कुल सही, प्रिय महोदया, मैं भी यही सुझाव देता। लेकिन पृष्ठभूमि के बारे में—मुझे यकीन था कि आपको इसके बारे में जानकारी देना अच्छा लगेगा—अहा, लीजिए।'

डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने चारों ओर देखते हुए कहा, 'मैं बहुत थक गई हूँ। यह कितनी भयानक जगह है।'

जो व्यक्ति पहले भी ऐसी जगहों पर अक्सर जा चुका हो, उसके लिए कमरे में कुछ भी असाधारण रूप से भयानक नहीं होना चाहिए था, लेकिन प्रोफेसर मिश्रा को यह मानना पड़ा कि यह वास्तव में काफी निराशाजनक था। विश्वविद्यालय का गेस्ट हाउस एक गलियारे से जुड़े अंधेरे कमरों की एक श्रृंखला थी। कालीनों के बजाय नारियल की चटाई बिछी थी, और

मेजें इतनी नीची थीं कि उन पर लिखना मुश्किल था। एक पलंग, दो कुर्सियाँ, कुछ खराब बत्तियाँ, एक नल जो बंद होने पर भी बहुत पानी देता था, और एक फ्लश जो ज़ोर से खींचने पर भी कम पानी देता था: ये कुछ सामग्रियाँ थीं। मानो इसकी भरपाई के लिए, हर जगह बहुत सारी मैली और अनावश्यक लेस लटकी हुई थी: खिड़कियों पर, लैंपशेड पर, कुर्सियों की पीठ पर।

प्रोफेसर मिश्रा ने धीमी आवाज़ में कहा, 'श्रीमती मिश्रा और मुझे बहुत खुशी होगी अगर आप हमारे घर रात के खाने पर आएं। यहां खाने-पीने की व्यवस्था बस कामचलाऊ ही है।'

डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने सिर हिलाते हुए कहा, 'मैंने खाना खा लिया है। और मैं बहुत थक गई हूँ। मुझे एक एस्पिरिन लेकर सीधे बिस्तर पर जाना होगा। चिंता मत करो, मैं कल उस घटिया समिति में जरूर शामिल होऊंगी।'

प्रोफेसर मिश्रा, डॉ. इला चट्टोपाध्याय के असाधारण रवैये से काफी परेशान होकर चले गए।

अगर इस बात को गलत न समझा जाता तो वह उसे अपने घर पर ठहरने के लिए आमंत्रित करता। जब प्रोफेसर जयकुमार वहाँ पहुँचे, तो उन्होंने ठीक वैसा ही किया।

प्रोफेसर जयकुमार ने कहा, 'यह बेहद ही दयालुतापूर्ण है।'

प्रोफेसर मिश्रा थोड़ा सहम गए, जैसा कि वे अपने सहकर्मी से बात करते समय लगभग हमेशा करते थे। प्रोफेसर जयकुमार ने दोनों क्रियाविशेषणों के आगे 'y' लगा दिया था। येनार्की का मुखौटा! प्रोफेसर मिश्रा ने सोचा।

‘बिल्कुल नहीं, बिल्कुल नहीं,’ उन्होंने अपने मेहमान को बड़ी सहजता से आश्वस्त किया। ‘आप हमारे विभाग की भावी स्थिरता के भंडार हैं, और हम कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं कि आपका स्वागत करें।’

'जी हां, आपका स्वागत है, आपका स्वागत है,' श्रीमती मिश्रा ने विनम्रतापूर्वक और तेजी से नमस्ते करते हुए कहा।

प्रोफेसर मिश्रा ने हंसमुख लहजे में कहा, 'मुझे यकीन है कि आपने उम्मीदवारों के आवेदनों आदि की जांच कर ली होगी।'

प्रोफेसर जयकुमार थोड़े से आश्चर्यचकित दिखे। उन्होंने कहा, 'जी हां, बिल्कुल।'

'अच्छा, अगर मैं कुछ सुझाव देना चाहूँ, जिससे कल की प्रक्रिया सुगम हो जाए और सभी का काम आसान हो जाए—' प्रोफेसर मिश्रा ने कहना शुरू किया। 'कार्यवाही का एक संक्षिप्त परिचय। बस समय और परेशानी बचाने के लिए। मुझे पता है कि आपको कल रात सात बजे की ट्रेन पकड़नी है।'

प्रोफेसर जयकुमार ने कुछ नहीं कहा। शिष्टाचार और मर्यादा उनके मन में कशमकश कर रहे थे। प्रोफेसर मिश्रा ने उनकी चुप्पी को सहमति मान लिया और अपना काम जारी रखा। प्रोफेसर जयकुमार बीच-बीच में सिर हिलाते रहे, लेकिन कुछ नहीं बोले।

'तो—' प्रोफेसर मिश्रा ने अंत में कहा।

'धन्यवाद, धन्यवाद, बहुत मददगार,' प्रोफेसर जयकुमार ने कहा। 'अब मुझे साक्षात्कारों के लिए पहले से ही जानकारी मिल गई है और मैं पूरी तरह तैयार हूं।' प्रोफेसर मिश्रा आखिरी शब्द सुनकर थोड़ा सहम गए। 'जी हां—बहुत मददगार,' प्रोफेसर जयकुमार ने अनिश्चित भाव से कहा। 'अब मुझे थोड़ी पूजा करनी चाहिए।'

'बिल्कुल, बिल्कुल।' प्रोफेसर मिश्रा इस अचानक दिखाई देने वाली धार्मिकता से अचंभित रह गए। उन्हें उम्मीद थी कि यह कोई शुद्धिकरण अनुष्ठान नहीं होगा।

अगली सुबह ग्यारह बजे से कुछ पहले समिति कुलपति के भव्य और सुसज्जित कार्यालय में एकत्रित हुई। रजिस्ट्रार भी उपस्थित थे, हालांकि वे बैठक में भागीदार नहीं थे। कुछ उम्मीदवार पहले से ही बाहर प्रतीक्षा कक्ष में बैठे थे। चाय, बिस्कुट, काजू और थोड़ी अनौपचारिक बातचीत के बाद, कुलपति ने अपनी घड़ी देखी और रजिस्ट्रार को इशारा किया। पहले उम्मीदवार को अंदर लाया गया।

प्रोफेसर मिश्रा प्रारंभिक कार्यवाही की गति से पूरी तरह संतुष्ट नहीं थे। डॉ. इला चट्टोपाध्याय के अलावा, जिन्होंने आज सुबह भी अपना तीखा लहजा बरकरार रखा था, एक और बात थी जो उन्हें परेशान कर रही थी। उन्हें अभी तक यह पक्का पता नहीं था कि प्राण के पिता का क्या हुआ था। उन्हें पता था कि किसी कारणवश पिछली शाम रेडियो पर स्थानीय समाचार प्रसारित होने तक मतगणना पूरी नहीं हुई थी, क्योंकि अगर पूरी हो जाती तो विजयी उम्मीदवार का नाम घोषित हो चुका होता। लेकिन उन्हें बस इतना ही पता था, और वे अपने सूचना देने वाले से संपर्क नहीं कर पाए थे। उन्होंने घर पर निर्देश दिए थे कि इस मामले में कोई भी खबर मिलते ही उन्हें सूचित किया जाए। कोई भी बहाना चलेगा; और यदि आवश्यक हो तो सूचना को लिखकर, एक लिफाफे में बंद करके उन्हें भेजा जा सकता है। इसमें कुछ भी असामान्य नहीं होगा। स्वयं कुलपति, जो एक व्यस्त व्यक्ति थे और इस बात पर गर्व करते थे, अक्सर समिति की बैठकों में फोन कॉल लेने के लिए बाधा डालते थे, और कभी-कभी तो चपरासियों द्वारा लाए गए पत्रों पर हस्ताक्षर भी कर देते थे।

साक्षात्कार जारी रहे। खिड़की से आती फरवरी की साफ धूप ने कार्यालय के भव्य लेकिन निराशाजनक माहौल को कुछ हद तक हल्का कर दिया। साक्षात्कार देने वाले तेरह पुरुष और दो महिलाएं, सभी व्याख्याता थे, जिन्हें कुलपति ने ज्यादातर सहकर्मी नहीं बल्कि याचिकाकर्ता की तरह

माना; वहीं दूसरी ओर, मुख्यमंत्री के भतीजे के साथ कुलपति और प्रोफेसर मिश्रा दोनों ने अत्यधिक सम्मान का व्यवहार किया। बीच-बीच में फोन की घंटी बजने से कार्यवाही बाधित हो जाती थी। एक समय पर डॉ. इला चट्टोपाध्याय को यह कहना आवश्यक लगा:

'कुलपति महोदय, क्या आप अपना फोन डिस्कनेक्ट नहीं कर सकते?'

कुलपति पूरी तरह से अचंभित दिखाई दिए।

'मेरी प्रिय महिला,' प्रोफेसर मिश्रा ने कहा।

डॉ. इला ने कहा, 'हम यहां तक पहुंचने के लिए काफी लंबी दूरी तय करके आए हैं।'

चट्टोपाध्याय। 'हममें से कम से कम दो लोगों को तो यह अनुभव हुआ है। ये चयन समितियाँ कर्तव्य हैं, आनंद नहीं। मुझे अभी तक एक भी अच्छा उम्मीदवार नहीं मिला है। हमें आज रात वापस जाना है, लेकिन इस गति से तो मुझे नहीं लगता कि हम जा पाएँगे। मुझे समझ नहीं आता कि इन अंतहीन रुकावटों से हमारी पीड़ा को और क्यों बढ़ाया जाए।'

उसके गुस्से का असर हुआ। अगले एक घंटे तक, कुलपति ने फोन करने वाले हर व्यक्ति को यही बताया कि वह एक अत्यावश्यक बैठक में व्यस्त हैं।

कुलपति के कार्यालय से सटे एक कमरे में दोपहर का भोजन परोसा गया और थोड़ी-बहुत अकादमिक गपशप हुई। प्रोफेसर मिश्रा ने घर जाने की अनुमति मांगी। उन्होंने कहा कि उनके एक बेटे की तबीयत ठीक नहीं है। प्रोफेसर जयकुमार थोड़ा हैरान दिखे।

घर पहुँचते ही प्रोफेसर मिश्रा ने अपने मुखबिर को फोन किया।

'क्या बात है, बद्री नाथ?' उसने अधीरता से कहा। 'तुमने मुझसे संपर्क क्यों नहीं किया?'

'जॉर्ज छठे की वजह से, बिल्कुल।'

‘तुम क्या बात कर रहे हो? जॉर्ज द सिक्स्थ की मृत्यु हो गई है। क्या तुम समाचार नहीं सुनते?’

‘लो, ये लो।’ दूसरी तरफ से ठहाके की आवाज आई।

‘बद्री नाथ जी, मुझे आपकी बात समझ नहीं आ रही। जी हाँ, मैंने सुना है। जॉर्ज द सिक्स्थ की मृत्यु हो गई है। मुझे पता है। मैंने समाचारों में सुना है, और सभी झंडे आधे झुके हुए हैं। लेकिन इससे मेरा क्या लेना-देना है?’

‘उन्होंने गिनती रोक दी है।’

‘वे ऐसा नहीं कर सकते!’ प्रोफेसर मिश्रा ने हैरानी से कहा। यह तो पागलपन था।

‘हां—वे कर सकते हैं। उन्होंने मतगणना देर से शुरू की—मुझे लगता है डीएम की जीप खराब हो गई थी—इसलिए वे आधी रात तक मतगणना पूरी नहीं कर पाए। और आधी रात को उन्होंने मतगणना रोक दी। पूरे देश में। सम्मान के तौर पर।’ यह विचार बद्री नाथ को हास्यास्पद लगा और वे फिर खिलखिला उठे।

प्रोफेसर मिश्रा को यह जरा भी हास्यास्पद नहीं लगा। भारत के पूर्व सम्राट का इस समय मरना बिल्कुल भी उचित नहीं था।

उन्होंने पूछा, 'गणना में वे कितनी दूर तक पहुंचे?'

बद्री नाथ ने कहा, 'मैं यही पता लगाने की कोशिश कर रहा हूं।'

'अच्छा, कृपया पता लगाइए। और मुझे रुझान बताइए।'

‘कौन सा रुझान?’

‘क्या आप कम से कम मुझे यह तो बता सकते हैं कि दौड़ में कौन आगे है?’

'इसमें आगे या पीछे जैसा कुछ नहीं है, मिश्रा जी। वे मतदान केंद्र के हिसाब से वोटों की गिनती नहीं करते। वे पहले उम्मीदवार के सभी वोटों

की गिनती पहले करते हैं, और फिर क्रम में आगे बढ़ते हैं।'
'ओह।' प्रोफेसर मिश्रा के सिर में तेज दर्द होने लगा था।
'चिंता मत करो—वह हार चुका है। मेरी बात मानो। मेरे सभी सूत्रों का यही कहना है। मैं इसकी गारंटी देता हूं,' बद्री नाथ ने कहा।
प्रोफेसर मिश्रा पूरे दिल से उस पर विश्वास करना चाहते थे। लेकिन मन में दबी हुई किसी शंका ने उन्हें यह कहने पर मजबूर कर दिया: 'कृपया मुझे शाम चार बजे कुलपति के कार्यालय में फोन करें। उनका नंबर 623 है। उम्मीदवारों पर चर्चा शुरू करने से पहले मुझे यह जानना जरूरी है कि क्या हो रहा है।'
'किसने सोचा होगा!' बद्री नाथ ने हंसते हुए कहा। 'अंग्रेज अभी भी हमारे जीवन को नियंत्रित करते हैं।'
प्रोफेसर मिश्रा ने फोन रख दिया। उन्होंने अपनी पत्नी से ठंडे स्वर में पूछा, 'मेरा दोपहर का भोजन कहाँ है?'
'आपने कहा था कि आप—' उसने कहना शुरू किया, फिर उसके चेहरे पर भाव देखकर बोली, 'मैं कुछ तैयार कर लेती हूँ।'
18.10
प्राण का साक्षात्कार दोपहर के शुरुआती समय में निर्धारित था। कुलपति ने उनसे भारत में अंग्रेजी पढ़ाने की प्रासंगिकता के बारे में सामान्य प्रश्न पूछे। प्रोफेसर जयकुमार ने उनसे स्क्रूटिनी और एफ.आर. लीविस के बारे में सावधानीपूर्वक प्रश्न पूछा। प्रोफेसर मिश्रा ने स्नेहपूर्वक उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछा और अकादमिक जगत के भारी बोझ के बारे में चिंता व्यक्त की। कुलपति द्वारा नामित इतिहास के वरिष्ठ प्रोफेसर ने कुछ भी नहीं कहा।
प्राण की डॉ. इला चट्टोपाध्याय से खूब बनती थी। उन्होंने प्राण को 'द विंटर्स टेल' के विषय में चर्चा के लिए प्रेरित किया, जो प्राण का पसंदीदा

नाटक था। दोनों ही नाटक की अविश्वसनीयताओं, कुछ दृश्यों की कल्पना करने की कठिनाइयों, यहाँ तक कि उनके अभिनय की कठिनाइयों और बेतुके लेकिन बेहद मार्मिक क्लाइमेक्स पर खुलकर बातें करने लगे। दोनों का मानना था कि यह नाटक हर पाठ्यक्रम में होना चाहिए। वे एक-दूसरे से खुलकर सहमत भी होते थे और बड़े आनंद से असहमत भी। एक समय पर डॉ. चट्टोपाध्याय ने सीधे-सीधे कह दिया कि प्राण बकवास कर रहे हैं, और प्रोफेसर मिश्रा के परेशान चेहरे पर मुस्कान आ गई। लेकिन भले ही उन्हें प्राण की बात बकवास लगी हो, फिर भी यह स्पष्ट रूप से बहुत ही दिलचस्प बकवास थी; उनका पूरा ध्यान इसका खंडन करने में लगा हुआ था।

प्राण का साक्षात्कार—या यूं कहें कि उनके साथ हुई बातचीत—उन्हें आवंटित समय से दुगनी लंबी चली। लेकिन, जैसा कि डॉ. चट्टोपाध्याय ने टिप्पणी की, कुछ अन्य उम्मीदवारों का चयन तो पाँच मिनट में ही हो गया था, और वह प्राण जैसे ही योग्य अन्य उम्मीदवारों की प्रतीक्षा कर रही थीं।

चार बजे तक साक्षात्कार समाप्त हो गए और वे थोड़ी देर के लिए चाय के लिए अलग हो गए। चाय लाने वाला चपरासी कुलपति के अलावा किसी के प्रति विनम्र नहीं था। इससे प्रोफेसर मिश्रा चिढ़ गए, जिनकी दोपहर की चाय आमतौर पर थोड़ी चापलूसी से मीठी होती थी।

प्रोफेसर जयकुमार ने कहा, 'प्रोफेसर मिश्रा, आप बहुत उदास लग रहे हैं।'

‘चिंतित?’

'हाँ, वास्तव में।'

‘खैर, मैं सोच रहा था कि भारतीय शिक्षाविद इतना कम क्यों प्रकाशित करते हैं। हमारे उम्मीदवारों में से बहुत कम लोगों के नाम पर सार्थक प्रकाशन हैं। डॉ. चट्टोपाध्याय, बेशक, एक उल्लेखनीय अपवाद हैं। बहुत

समय पहले, मेरी प्रिय महोदया,'—वह उनकी ओर मुड़े—'मुझे याद है कि मैं आपके तत्वमीमांसा संबंधी कार्यों को पढ़कर कितना प्रभावित हुआ था। यह उस समिति में बैठने से बहुत पहले की बात है जो—'

डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'खैर, हम दोनों अब जवान नहीं हैं, और हम दोनों ने पिछले दस वर्षों में कुछ भी महत्वपूर्ण प्रकाशित नहीं किया है। मुझे आश्चर्य है कि ऐसा क्यों है।'

प्रोफेसर मिश्रा अभी उस टिप्पणी से उबर ही रहे थे कि प्रोफेसर जयकुमार ने एक ऐसी व्याख्या प्रस्तुत की जिससे उन्हें एक अलग ही तरह का दर्द हुआ। उन्होंने कहना शुरू किया, 'हमारे आम युवा विश्वविद्यालय शिक्षक पर काम का बोझ इतना अधिक होता है कि वे कनिष्ठ अवस्था में ही अतिभारित हो जाते हैं—उन्हें प्रारंभिक गद्य और अनिवार्य अंग्रेज़ी-अंग्रेजी पढ़ानी पड़ती है। अगर वे स्वभाव से कर्तव्यनिष्ठ हैं भी, तो उनके पास किसी और चीज़ के लिए समय नहीं बचता। तब तक तो उनकी ऊर्जा खत्म हो चुकी होती है—'

'अगर यह कभी वहां था भी,' डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने आगे कहा।

"परिवार बढ़ रहा है, आय कम है, और गुजारा करना मुश्किल है। सौभाग्य से," प्रोफेसर जयकुमार ने आगे कहा, "मेरी पत्नी मितव्ययी थीं, और मुझे इंग्लैंड जाने का अवसर मिला और इसी तरह शेली में मेरी रुचि विकसित हुई।"

प्रोफेसर मिश्रा, जिनका ध्यान प्रोफेसर जयकुमार द्वारा खतरनाक स्वरों से शुरू होने वाले शब्दों के लगभग सहज चयन से भटक गया था, ने कहा: 'हाँ, लेकिन मुझे वास्तव में समझ नहीं आता कि जब हमारे पास अधिक परिपक्व अकादमिक अनुभव और अधिक अवकाश होगा तो ऐसा क्यों होगा—'

'लेकिन तब तक हमारे पास इस तरह की महत्वपूर्ण समितियाँ होंगी

जिनमें हमारा समय लग जाएगा,' प्रोफेसर जयकुमार ने बताया। 'और तब तक हम शायद बहुत कुछ जान चुके होंगे और लिखने की कोई खास प्रेरणा नहीं होगी। लेखन अपने आप में एक खोज है। व्याख्या ही अन्वेषण है।' प्रोफेसर मिश्रा मन ही मन सिहर उठे जबकि उनके सहकर्मी ने आगे कहा: 'परिपक्वता ही सब कुछ नहीं है। शायद, उम्र में परिपक्व होकर और यह सोचकर कि अब उन्हें अकादमिक रूप से सब कुछ पता है, हमारे विश्वविद्यालय के शिक्षक ज्ञान से उस धर्म की ओर मुड़ जाते हैं जो ज्ञान से परे है— ज्ञान से भक्ति की ओर। भारतीय मानस पर तर्कशक्ति की पकड़ बहुत कमजोर है।' (उन्होंने इसे बाइक से तुकबंदी की।) 'यहाँ तक कि महान शंकराचार्य, आदि-शंकराचार्य, जिन्होंने अपने अद्वैत में कहा था कि महान अनंत विचार ब्रह्म का है— जिसे नासमझ मनुष्य द्वारा मात्र ईश्वर तक लाना आवश्यक है, वे किसकी प्रार्थना करते थे?' दुर्गा को!' प्रोफेसर जयकुमार ने कमरे में मौजूद सभी लोगों और विशेष रूप से डॉ. इला चट्टोपाध्याय की ओर सिर हिलाया। 'दुर्गा को!'

'जी हां,' डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने कहा। 'लेकिन मुझे ट्रेन पकड़नी है।'

कुलपति ने कहा, 'ठीक है। तो चलिए अब हम अपना निर्णय लेते हैं।' डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने कहा, 'इसमें हमें ज्यादा समय नहीं लगेगा।'

'वह दुबला-पतला, सांवला लड़का, प्रेम खन्ना, बाकियों से कहीं बेहतर है।'

प्रोफेसर मिश्रा ने बड़े ही नखरे भरे लहजे में अक्षरों का उच्चारण करते हुए उन्हें 'प्राण कपूर' कहकर सुधारा।

'हां, प्रेम, प्राण, प्रेम, प्राण: मैं हमेशा ऐसी चीजों में गलती कर देता हूं। सच में, कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि मेरे दिमाग को क्या हो गया है। लेकिन आप जानते हैं कि मैं किसके बारे में बात कर रहा हूं।'

'बिल्कुल।' प्रोफेसर मिश्रा ने अपने होंठ सिकोड़े। 'खैर, इसमें कुछ

दिक्कतें आ सकती हैं। आइए, अन्य उम्मीदवारों के साथ न्याय करने के लिए कुछ और संभावनाओं पर विचार करें।'

'क्या कठिनाइयाँ?' डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने सीधे-सीधे कहा, जाली और नारियल के रेशों के बीच एक और रात बिताने की संभावना के बारे में सोचते हुए, और यह तय करते हुए कि वह इस चर्चा को ज्यादा लंबा नहीं चलने देंगी।

हाल ही में उनके परिवार में एक दुखद घटना घटी है। उनकी बेचारी माँ। वह इस स्थिति में नहीं होंगे कि यह सब संभाल सकें—

"खैर, उन्होंने आज दोपहर द्वंद्वयुद्ध के दौरान अपनी मृत मां के ख्याल को बिल्कुल भी बाधा नहीं बनने दिया।"

'हां, जब उन्होंने कहा था कि शेक्सपियर अविश्वसनीय थे,' प्रोफेसर मिश्रा ने अपने होंठ सिकोड़ते हुए कहा, जिससे यह संकेत मिलता है कि प्राण के विचार कितने बेतुके और यहां तक कि अपवित्र भी थे।

'बकवास!' डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने बेहद गुस्से में कहा। 'उन्होंने कहा कि 'द विंटर्स टेल' की कहानी अविश्वसनीय है। और ऐसा ही है। लेकिन गंभीरता से कहें तो, कर्तव्य और शोक का यह सवाल निश्चित रूप से हमारी चिंता का विषय नहीं है।'

'प्रिय महोदया,' प्रोफेसर मिश्रा ने झुंझलाहट भरे लहजे में कहा, 'इस विभाग को चलाने की जिम्मेदारी मेरी है। मुझे यह सुनिश्चित करना होगा कि हर कोई अपना कर्तव्य निभाए। मुझे पूरा विश्वास है कि प्रोफेसर जयकुमार भी इस बात से सहमत होंगे कि किसी भी तरह की गड़बड़ी नहीं होनी चाहिए।'

डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने कहा, 'और मेरा मानना है कि जिन्हें कप्तान प्रथम श्रेणी के आवास के लिए अनुपयुक्त समझता है, उन्हें हर संभव तरीके से निचले पायदान पर ही रखा जाना चाहिए।'

उन्हें आभास हो गया था कि प्रोफेसर मिश्रा प्राण को पसंद नहीं करते थे। बाद में हुई तीखी बहस में उन्हें पता चला कि प्रोफेसर मिश्रा और कुलपति का एक पसंदीदा उम्मीदवार था, जिसे उन्होंने बहुत साधारण समझा था, लेकिन उन्हें याद आया कि साक्षात्कार के दौरान वे उसके प्रति अत्यधिक विनम्र थे।

कुलपति की सहायता से और कुलाधिपति के नामित व्यक्ति की मौन सहमति से, प्रोफेसर मिश्रा ने इस उम्मीदवार के पक्ष में तर्क तैयार किए। प्राण अकादमिक रूप से ठीक-ठाक थे, लेकिन विभाग के संचालन में बहुत सहयोगी नहीं थे। उन्हें परिपक्व होने की आवश्यकता थी। शायद, दो साल बाद, उन पर फिर से विचार किया जा सकता था। यह दूसरा उम्मीदवार भी उतना ही अच्छा था और विभाग के लिए अधिक मूल्यवान साबित हुआ। इसके अलावा, प्राण के पाठ्यक्रम के बारे में विचार बिल्कुल अटपटे थे। उनका मानना था कि जॉयस—जी हाँ, जॉयस—को जबरदस्ती पढ़ाया जाना चाहिए। उनका भाई एक बिगड़ैल व्यक्ति था और विभाग का नाम खराब कर सकता था; बाहरी लोगों को ये बातें मामूली लग सकती हैं, लेकिन कुछ मर्यादाओं का पालन करना आवश्यक था। उनका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं था; वे कक्षाओं में देर से आते थे; स्वयं प्रोफेसर जयकुमार ने एक बार उन्हें व्याख्यान के बीच में गिरते हुए देखा था। और उनके एक छात्रा के साथ संबंध होने की शिकायतें भी थीं। स्वाभाविक रूप से, इन शिकायतों के ठोस सबूत की अपेक्षा करना अनुचित होगा, लेकिन इन पर विचार करना आवश्यक था।

'हां, और मुझे लगता है कि वह शराब भी पीते हैं?' डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने कहा। 'मैं सोच रही थी कि पास होने, क्लास पास करने और चश्मा पीने वाली बहस कब शुरू होगी।'

'सचमुच!' कुलपति ने हैरानी से कहा। 'क्या आपको प्रोफेसर मिश्रा के

इरादों पर संदेह पैदा करने की ज़रूरत है? आपको इसे शालीनता से स्वीकार करना चाहिए—'

डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने कहा, 'मैं इस शर्मनाक बात को बर्दाश्त नहीं करूंगी। मुझे नहीं पता कि क्या चल रहा है, लेकिन कुछ तो गड़बड़ है, और मैं इसका हिस्सा नहीं बनूंगी।' बौद्धिक गंदगी और अकादमिक मैल को पहचानने की उनकी क्षमता उतनी ही पैनी थी जितनी कि खराब पाइपलाइन को।

प्रोफेसर मिश्रा गुस्से से उसे घूर रहे थे। उनके प्रति उसकी विश्वासघाती कृतघ्नता अविश्वसनीय थी।

'मुझे लगता है कि आपको मामले पर शांत होकर चर्चा करनी चाहिए,' वह झिझकते हुए बोला।

'इतने शांत?' डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने हैरानी से कहा। 'इतने शांत? अगर कोई एक चीज़ है जो मुझे बिल्कुल बर्दाश्त नहीं है, तो वह है बदतमीज़ी!' यह देखकर कि प्रोफ़ेसर मिश्रा इस टिप्पणी से स्तब्ध रह गए हैं, उन्होंने आगे कहा: 'और अगर कोई एक चीज़ है जिसे मैं नकार नहीं सकती, तो वह है योग्यता। उस नौजवान में योग्यता है। वह अपने विषय का ज्ञाता है। मुझे पूरा विश्वास है कि वह एक बहुत ही प्रेरक शिक्षक बनेगा। और उसकी कार्यसूची, जिन समितियों में वह शामिल है और जिन पाठ्येतर गतिविधियों में वह भाग लेता है, उससे मुझे ऐसा बिल्कुल नहीं लगता कि वह विभाग या विश्वविद्यालय में अपना योगदान नहीं दे रहा है। बल्कि इसके विपरीत। उसे यह पद मिलना चाहिए। प्रोफ़ेसर जयकुमार और मेरे जैसे बाहरी पैनलिस्ट यहाँ अकादमिक—' वह 'बदतमीज़ी' कहने ही वाली थीं, लेकिन बीच में ही उन्होंने इसे बदलकर 'गैरजिम्मेदारी' कर दिया —'मुझे माफ़ करना, मैं बहुत मूर्ख महिला हूँ, लेकिन एक बात जो मैंने सीखी है वह यह है कि जब बोलना आवश्यक हो, तो बोलना ही चाहिए।'

यदि हम किसी उचित निर्णय पर नहीं पहुँच पाते हैं और आप अपने उम्मीदवार को जबरदस्ती आगे बढ़ाते हैं, तो मैं इस बात पर जोर दूंगा कि आप अपनी रिपोर्ट में यह लिखें कि विशेषज्ञ आपसे असहमत थे।

प्रोफेसर जयकुमार भी स्तब्ध रह गए। उन्होंने तमिल में मन ही मन बुदबुदाया, "आत्मसंयम स्वर्ग की ओर ले जाता है, परन्तु अनियंत्रित वासना अनंत अंधकार का मार्ग है।" इन मामलों पर कभी मतदान नहीं होता था। निर्णय सर्वसम्मति से लिए जाते थे। मतदान का अर्थ था कि निर्णय के लिए मामला विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद के समक्ष प्रस्तुत करना होगा, और कोई भी ऐसा नहीं चाहता था। यह व्यवस्था को पूरी तरह से बिगाड़ने जैसा था। इसका अर्थ होता सारी स्थिरता, सारी व्यवस्था का अंत। प्रोफेसर मिश्रा ने डॉ. इला चट्टोपाध्याय को ऐसे देखा मानो उन्हें तुरंत बाहर निकाल देने में उन्हें कोई आपत्ति न हो—और आशा की कि पानी में जेलीफिश भरी हों।

'अगर मैं कुछ कहूँ तो—' यह प्रोफेसर जयकुमार थे, जो वास्तव में बीच में ही टोक रहे थे, जो कि वे लगभग कभी नहीं करते थे। 'मुझे नहीं लगता कि बाहरी विशेषज्ञों द्वारा अल्पमत रिपोर्ट की आवश्यकता है। लेकिन एक उचित निर्णय होना चाहिए।' वे रुक गए। वे एक सच्चे विद्वान और गंभीर, सरल स्वभाव के व्यक्ति थे, और पिछली शाम अपने मेज़बान के साथ हुई बातचीत से वे बहुत परेशान थे। उन्होंने उसी समय तय कर लिया था कि वे जिसे भी चुनेंगे, वह वह व्यक्ति नहीं होगा जिसकी सिफारिश उन्हें इतनी अनियमित रूप से की गई थी। 'क्या हमें तीसरे उम्मीदवार के बारे में नहीं सोचना चाहिए?'

'बिल्कुल नहीं,' डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने कहा, जिनके भीतर अब लड़ाई का जोश चरम पर था: 'जब हमारे पास एक प्रथम श्रेणी का व्यक्ति मौजूद है तो किसी तीसरे दर्जे के व्यक्ति को समझौता क्यों करें?'

‘निश्चित रूप से, यह सच है,’ प्रोफेसर जयकुमार ने कहा, ‘जैसा कि तिरुक्कुरल में कहा गया है’—और यहाँ वे अनुवाद करने के लिए रुके —‘कि यह आकलन करने के बाद कि यह व्यक्ति अपनी योग्यता और उपयोग करने योग्य उपकरण के कारण यह कार्य कर सकता है, वह कार्य उस व्यक्ति को सौंपा जाना चाहिए। लेकिन यह भी कहता है: “संसार के तौर-तरीकों के अनुरूप चलना बुद्धिमत्ता का एक हिस्सा है।” लेकिन एक और जगह यह कहता है—’

टेलीफोन की घंटी बजी। प्रोफेसर मिश्रा चौंककर उठ खड़े हुए। कुलपति ने फोन उठाया। ‘कुलपति बोल रहा हूँ... क्षमा करें, मैं एक बैठक में हूँ... ओह, यह आपके लिए है, प्रोफेसर मिश्रा। क्या आप किसी कॉल की उम्मीद कर रहे थे?’

'जी हां, मैंने डॉक्टर से मुझे फोन करने के लिए कहा था—जी हां—मिश्रा बोल रहा हूं।'

18.11

‘अरे बूढ़े सियार!’ बद्री नाथ ने फोन पर कहा। ‘मैंने सब कुछ सुन लिया।’

‘जी हां, डॉक्टर साहब, क्या खबर है?’ प्रोफेसर मिश्रा ने हिंदी में कहा।

'खराब।'

प्रोफेसर मिश्रा का मुंह खुला का खुला रह गया। सब लोग उनकी तरफ देखने लगे। कमरे में मौजूद बाकी लोगों ने बोलने की कोशिश की, लेकिन उनके लिए उनकी बात को अनसुना करना नामुमकिन था।

‘मैं समझ गया। कितना बुरा है?’

‘गिनती वर्णमाला क्रम में हुई। यह कपूर के बाद और खान से ठीक पहले रुक गई।’

‘तो फिर आपको कैसे पता चलेगा कि कौन—’

'महेश कपूर को 15,575 वोट मिले हैं। वारिस खान के पास उन्हें हराने

के लिए पर्याप्त वोट नहीं बचे हैं। महेश कपूर की जीत निश्चित है।'
प्रोफेसर मिश्रा का खाली हाथ उनके माथे पर चला गया। उस पर पसीने की बूंदें जमा होने लगीं।
'आपका क्या मतलब है? आपको कैसे पता? क्या आप मेरे लिए थोड़ा धीरे-धीरे समझा सकते हैं? मुझे इन शब्दों की आदत नहीं है।'
'ठीक है, प्रोफेसर। आपको कुलपति से कलम और कागज मांगना होगा।'
बद्री नाथ, हालांकि अपनी पूछताछ के परिणाम से स्पष्ट रूप से नाखुश थे, फिर भी वे इस स्थिति से जितना संभव हो उतना आनंद लेने की कोशिश कर रहे थे।
'ये मेरे पास हैं,' प्रोफेसर मिश्रा ने कहा। उन्होंने अपनी जेब से एक कलम और एक लिफाफा निकाला। 'कृपया धीरे-धीरे करें।'
बद्री नाथ ने आह भरी। उन्होंने पूछा, 'आप मेरी बात को सीधे-सीधे क्यों नहीं मान लेते?'
प्रोफेसर मिश्रा ने बुद्धिमानी से जवाब देने से परहेज किया: 'क्योंकि आपने आज सुबह ही मुझसे कहा था कि मैं मान लूं कि वह हार गया है, और अब आप मुझसे कह रहे हैं कि मैं मान लूं कि वह जीत गया है।' उन्होंने कहा: 'मैं जानना चाहता हूं कि आप इस निष्कर्ष पर कैसे पहुंचे।'
बद्री नाथ मान गए। एक और आह भरने के बाद, उन्होंने बहुत धीरे और सावधानी से कहा:
'कृपया ध्यान से सुनिए, प्रोफेसर साहब। कुल 66,918 मतदाता हैं। देश के इस हिस्से में मतदान प्रतिशत बहुत अधिक, मान लीजिए पचपन प्रतिशत, को देखते हुए, इसका मतलब होगा कि चुनाव में कुल 37,000 वोट डाले गए। क्या मैं आगे बताऊं? पहले पांच उम्मीदवारों के वोटों की गिनती हो चुकी है। उनका कुल योग 19,351 है। इससे अंतिम पांच उम्मीदवारों के लिए लगभग 18,700 वोट बचते हैं। वारिस खान के

अलावा, बाकी चार उम्मीदवारों को कम से कम 5,000 वोट तो मिलने ही हैं: इनमें समाजवादी और जनसंघ के उम्मीदवार के साथ-साथ एक लोकप्रिय और अच्छी तरह से वित्त पोषित निर्दलीय उम्मीदवार भी शामिल हैं। तो वारिस खान के लिए कितने वोट बचते हैं, प्रोफेसर साहब? 14,000 से भी कम। और महेश कपूर को तो पहले ही 15,575 वोट मिल चुके हैं।' वे रुके, फिर बोले: 'बहुत बुरा हुआ। चाचा नेहरू के दौरे ने पासा पलट दिया। क्या आप चाहते हैं कि मैं आंकड़े दोहराऊं?'

नहीं, नहीं, धन्यवाद। यह कब दोबारा शुरू होगा?

'क्या कब दोबारा शुरू होगा? आपका मतलब मतगणना से है?'

'हां। इलाज।'

'कल।'

'धन्यवाद। क्या मैं आज शाम आपको कॉल कर सकता हूँ?'

'जी हां, बिल्कुल। मैं आपातकालीन विभाग में रहूंगा,' बद्री नाथ खिलखिलाते हुए बोला और फोन रख दिया।

प्रोफेसर मिश्रा भारी मन से अपनी कुर्सी पर बैठ गए।

प्रोफेसर जयकुमार ने कहा, 'उम्मीद है बुरी खबर नहीं है। कल आपके दोनों बेटे बिल्कुल स्वस्थ दिख रहे थे।'

'नहीं, नहीं—' प्रोफेसर मिश्रा ने साहसपूर्वक माथे से पसीना पोंछते हुए कहा। 'हम सभी को अपने-अपने निजी दुख झेलने पड़ते हैं। लेकिन हमें अपना कर्तव्य निभाना ही होगा। आप सभी को इतना इंतजार कराने के लिए मुझे बहुत खेद है।'

'बिल्कुल नहीं,' डॉ. इला चट्टोपाध्याय ने कहा, यह सोचते हुए कि उन्होंने उस बेचारे सीधे-सादे आदमी के साथ कुछ ज़्यादा ही सख्ती बरती थी, जिसने कभी उन्हें प्रोत्साहित किया था। लेकिन, उन्होंने मन ही मन सोचा, उसे इस तरह बख्शा नहीं जा सकता।

लेकिन अब ऐसा प्रतीत हो रहा था कि प्रोफेसर मिश्रा प्राण के मुखर विरोधी नहीं रहे। उन्होंने प्राण के बारे में एक-दो अच्छी बातें भी कह दीं। डॉ. इला चट्टोपाध्याय को आश्चर्य हुआ कि क्या अल्पसंख्यक असहमति और संभावित घोटाले के डर से वे बस अपरिहार्य स्थिति के आगे झुक गए थे—या शायद उनके बेटे की खराब सेहत ने उन्हें अपने ही अनिश्चित मन का सामना करने पर मजबूर कर दिया था।

बैठक के अंत तक, प्रोफेसर मिश्रा ने अपनी कुछ हद तक शांति का भाव वापस पा लिया था; हालांकि, घटनाओं के इस मोड़ से वे अभी भी स्तब्ध थे।

'आप अपने टेलीफोन नंबर यहीं छोड़ गए हैं,' प्रोफेसर जयकुमार ने कहा और दरवाजे की ओर जाते हुए उन्हें उनका लिफाफा सौंप दिया।

'ओह, जी हाँ—' प्रोफेसर मिश्रा ने कहा। 'धन्यवाद।'

बाद में, जब प्रोफेसर जयकुमार ट्रेन के लिए जल्दी-जल्दी अपना सामान पैक कर रहे थे, तो वे प्रोफेसर मिश्रा के दोनों बेटों को बाहर खेलते हुए देखकर चौंक गए, जो पहले की तरह ही चुस्त-दुरुस्त दिख रहे थे।

स्टेशन पर प्रोफेसर जयकुमार को अनायास ही याद आया कि ब्रह्मपुर में टेलीफोन नंबरों में पांच नहीं बल्कि तीन अंक होते हैं।

उसने मन ही मन कहा, "कितना अजीब है!" लेकिन वह इन दोनों रहस्यों को कभी सुलझा नहीं पाया।

प्रोफेसर मिश्रा ने पूर्व नियुक्ति का हवाला देते हुए प्राण के साथ रेलवे स्टेशन तक नहीं गए। इसके बजाय, कुलपति से कुछ निजी बातचीत के बाद, वे प्राण के घर चले गए। उन्होंने प्राण को बधाई देने का मन बना लिया था।

'मेरे प्यारे बेटे,' उन्होंने प्राण के दोनों हाथ अपने हाथों में लेते हुए कहा। 'यह बहुत करीबी मामला था, बेहद करीबी। कुछ अन्य उम्मीदवार सचमुच

उत्कृष्ट थे, लेकिन, खैर, मुझे लगता है कि हम दोनों के बीच एक समझ है, एक तरह का रिश्ता है, और—खैर, मुझे यह बात तुम्हें तब तक नहीं बतानी चाहिए जब तक अकादमिक परिषद में हमारे निर्णय वाले लिफाफे की सील न खुल जाए—ऐसा नहीं है कि तुम्हारे उत्कृष्ट प्रदर्शन ने हमारे निर्णय में उतना ही योगदान दिया जितना कि तुम्हारे लिए मेरे विनम्र शब्दों ने—' प्रोफेसर मिश्रा ने आह भरी और आगे कहा: 'विरोध था। कुछ लोगों ने कहा कि तुम बहुत छोटे हो, अनुभवहीन हो। "युवा होने का घिनौना अपराध..." इत्यादि। लेकिन योग्यता के प्रश्न से परे, तुम्हारे परिवार के लिए ऐसे दुखद समय में, एक कर्तव्य का बोध होता है, एक कर्तव्य का बोध होता है। मैं मानवता की अतिशयोक्ति करने वालों में से नहीं हूँ, लेकिन, खैर—क्या यह महान वर्ड्सवर्थ ही नहीं थे जिन्होंने "दया और प्रेम के उन छोटे, गुमनाम, भुला दिए गए कार्यों" के बारे में बात की थी?

प्राण ने धीरे-धीरे और आश्चर्य से कहा, 'मुझे लगता है ऐसा ही था,' और उसने प्रोफेसर मिश्रा के पीले और पसीने से तर हाथों को हिलाया।

18.12

जब सलीमपुर-सह-बैतर चुनाव के लिए मतगणना शुरू हुई, तब महेश कपूर रुधिया स्थित कलेक्ट्रेट में मौजूद थे। वे देर से पहुंचे थे, लेकिन जिला मजिस्ट्रेट को भी अपरिहार्य कारणों से देरी हो गई थी: उनकी जीप के इग्निशन में खराबी आ गई थी। मतगणना अधिकारियों ने सभी उम्मीदवारों के मतपेटियों को एक साथ इकट्ठा करने के बाद, निर्दलीय उम्मीदवार इकबाल अहमद से मतगणना शुरू की। उन्होंने इकबाल अहमद की एक-एक मतपेटी को कई मेजों पर खाली किया और सभी उम्मीदवारों के मतगणना एजेंटों की सावधानीपूर्वक निगरानी में एक साथ उनके वोटों की गिनती शुरू की।

शामियाने के नीचे सभी को गोपनीयता का पालन करने का आदेश दिया

गया था, लेकिन ज़ाहिर है कुछ भी गुप्त नहीं था, और जल्द ही यह खबर फैल गई कि इकबाल अहमद का प्रदर्शन उम्मीद के मुताबिक ही खराब रहा। पहले आम चुनाव में मतपत्रों पर मतदाता की मुहर नहीं लगाई जाती थी, बल्कि उन्हें सीधे उम्मीदवार के पेटी में डाल दिया जाता था, इसलिए बहुत कम मतपत्र खराब घोषित किए गए थे। मतगणना तेज़ी से जारी रही, और अगर यह समय पर शुरू होती, तो आधी रात तक पूरी हो जानी चाहिए थी। लेकिन अब ग्यारह बज चुके थे, सभी थक चुके थे, और कांग्रेस उम्मीदवार के मतपेटियों की गिनती अभी पूरी नहीं हुई थी। वह अप्रत्याशित रूप से अच्छा प्रदर्शन कर रहे थे: 14,000 से अधिक वोट, और अभी कई पेटियों की गिनती बाकी थी।

महेश कपूर के कुछ मतपेटियों में, आश्चर्यजनक रूप से, मतपत्रों के अतिरिक्त, थोड़ा सा लाल पाउडर और कुछ सिक्के भी मिले। संभवतः, कुछ धर्मनिष्ठ किसानों ने, उनकी मतपेटी पर चित्रित पवित्र पशुओं को देखकर, अपने वोट के साथ ही छोटी-मोटी भेंट भी उस पात्र में डाल दी होगी।

जिला मजिस्ट्रेट और उपमंडल अधिकारी की सावधानीपूर्वक निगरानी में मतगणना जारी रहने के दौरान, महेश कपूर बहुत चिंतित दिख रहे वारिस के पास गए और बोले: 'आदाब अर्ज़, वारिस साहब।'

वारिस ने आक्रामक लहजे में जवाब दिया, 'अदाब अर्ज़।' 'साहिब' ने ज़रूर व्यंग्य किया होगा।

‘क्या फ़िरोज़ के साथ सब ठीक है?’

यह बात बिना किसी द्वेष के कही गई थी, लेकिन वारिस को शर्मिंदगी का गहरा एहसास हुआ; उसे तुरंत गुलाबी रंग के पर्चे याद आ गए।

‘तुम क्यों पूछ रहे हो?’ उसने पूछा।

महेश कपूर ने उदास स्वर में कहा, 'मैं जानना चाहता था। मुझे उनके बारे

में बहुत कम जानकारी है, और मुझे लगा कि आपको भी होगी। नवाब साहब कहीं नजर नहीं आ रहे हैं। क्या उनका आने का कोई इरादा है?'
वारिस ने साफ-साफ कहा, 'वह उम्मीदवार नहीं हैं।' 'हां, फिरोज ठीक हैं।' उन्होंने अपनी निगाहें नीचे कर लीं, महेश कपूर की ओर देखने में असमर्थ थे।
महेश कपूर ने कहा, 'मुझे खुशी है।' वे अपनी शुभकामनाएं देने ही वाले थे कि फिर उन्होंने अपना इरादा बदल दिया और मुँह फेर लिया।
आधी रात से कुछ ही पहले, परिणाम इस प्रकार थे:
1. इकबाल अहमद: स्वतंत्र:
608:
2. Mir Shamsher Ali: Independent:
481:
3. मोहम्मद हुसैन: केएमपीपी:
1,533:
4. Shanti Prasad Jha: Ram Rajya Parishad: 1,154:
5. महेश कपूर: कांग्रेस:
15,575:
आधी रात को, महेश कपूर के सभी मतपेटियों की गिनती पूरी होने के तुरंत बाद, जिला मजिस्ट्रेट ने, रिटर्निंग ऑफिसर के रूप में, किंग जॉर्ज VI के प्रति राष्ट्रव्यापी सम्मान के प्रतीक के रूप में मतदान को अस्थायी रूप से स्थगित घोषित कर दिया। उन्होंने उम्मीदवारों और उनके मतगणना एजेंटों को कुछ घंटे पहले ही इस संबंध में आदेश दे दिए थे और उनसे धैर्य रखने का अनुरोध किया था। स्थिति बेहद तनावपूर्ण थी, खासकर इसलिए क्योंकि वारिस खान का नाम वर्णमाला क्रम में महेश कपूर के ठीक बाद था; लेकिन समय पर दी गई चेतावनी के कारण कोई विरोध नहीं हुआ।

उन्होंने गिने गए मतपेटियों और बिना गिने गए मतपेटियों को कोषागार में अपनी मुहर के साथ अलग-अलग बंद करवा दिया और घोषणा की कि उन्हें 8 फरवरी को खोला जाएगा और मतगणना फिर से शुरू होगी।

अब तक आए नतीजे सामने आने ही थे, और ब्रह्मपुर और निर्वाचन क्षेत्र दोनों जगह अधिकांश लोगों ने वही आकलन किया जो प्रोफेसर मिश्रा के मुखबिर ने किया था। महेश कपूर भी आशावादी थे। वे रुधिया स्थित अपने फार्म में ही रहे और गेहूँ के खेतों में घूमते हुए अपने फार्म मैनेजर से बातें करते रहे।

आठ तारीख की सुबह, वह ताजगी और कृतज्ञता की भावना के साथ जागा, एक ऐसी भावना के साथ कि कम से कम उसके कंधों से एक बोझ उतर गया है।

18.13

मतगणना एक बार फिर शुरू हुई, और जब तक वारिस के वोटों की संख्या 10,000 तक पहुंची, तब तक यह स्पष्ट होने लगा था कि मुकाबला वास्तव में कांटे का होगा। जाहिर तौर पर, बैतार कस्बे के आसपास के क्षेत्रों में मतदान दर पचपन प्रतिशत से कहीं अधिक थी - जो कि सप्ताह की शुरुआत में घोषित अन्य चुनावों के परिणामों को देखते हुए अपने आप में बहुत अधिक थी।

जब तक मतों की संख्या 14,000 तक पहुंच गई और अभी भी कई मतपेटियों की गिनती बाकी थी, कांग्रेस खेमे में गहरी बेचैनी छा गई। जिला मजिस्ट्रेट को सभी को शांत रहने और मतगणना करने वाले कर्मचारियों को आगे बढ़ने देने के लिए कहना पड़ा; अन्यथा उन्हें दोबारा मतगणना रोकनी पड़ती।

इसका कुछ असर तो हुआ, लेकिन जब तक वोटों की गिनती 15,000 तक पहुंची, तब तक जबरदस्त हंगामा मच गया था। कुछ जोशीले कांग्रेस

कार्यकर्ताओं ने तो पूरे-पूरे मतपेटियों को चुनौती देना शुरू कर दिया था। महेश कपूर ने उन्हें सख्ती से अपनी हरकतें बंद करने को कहा। लेकिन उनके चेहरे पर निराशा साफ झलक रही थी, क्योंकि अब उन्हें अपनी हार का डर सता रहा था। दूसरी तरफ के लोग जादुई आंकड़े को पार करने की उम्मीद में खुशी मनाने लगे थे। उन्हें ज्यादा देर इंतजार नहीं करना पड़ा।

जब गिनती 15,576 तक पहुंची, तब भी वारिस के कई बक्सों की गिनती बाकी थी। वारिस खुशी से झूमते हुए मेज पर चढ़ गए। उनके समर्थकों ने उन्हें कंधों पर उठा लिया और जिला मुख्यालय के बाहर वे उसी जाने-माने अंदाज में नारे लगाने लगे:

'बैतार से विधायक कौन होना चाहिए?'

'वारिस खान साहब, उनके जैसा कोई!'

जीत से प्रसन्न, अपने नाम के आगे 'खान साहब' जुड़ जाने से प्रसन्न और युवा नवाबजादा का बदला लेने से प्रसन्न वारिस, जीत के उल्लास में पोस्टरों वाली अपनी गंदी चाल को भूलकर मुस्कुरा रहा था।

जिला मजिस्ट्रेट ने जल्द ही उन्हें करारा जवाब दिया और धमकी दी कि अगर उनके समर्थक हंगामा बंद नहीं करते तो उन्हें कलेक्ट्रेट से निकाल दिया जाएगा। वारिस ने अपने समर्थकों को शांत किया और उनमें से एक-दो से कहा, 'देखते हैं, देखते हैं, अब जब मैं विधायक बन गया हूं, तो कलेक्ट्रेट से पहले किसे निकाला जाएगा, उसे या मुझे?'

कई कांग्रेसी नेताओं ने महेश कपूर से, जिन्होंने अब तक कोई शिकायत या चुनाव याचिका दर्ज नहीं कराई थी, तुरंत ऐसा करने और चुनाव परिणाम को चुनौती देने का आग्रह किया। यह स्पष्ट था कि, भले ही अन्य जगहों पर नहीं, बैतर कस्बे के भीतरी इलाकों में फिरोज की मौत की घोषणा करने वाले झूठे और भ्रामक पोस्टरों का लोगों पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा था और वे अपनी झोपड़ियों और घरों से निकलकर वारिस को

वोट देने के लिए प्रेरित हुए थे।
लेकिन महेश कपूर, जो बेहद निराश और हताश थे और आगे कोई कड़वाहट पैदा नहीं करना चाहते थे, उन्होंने चुनाव याचिका दायर करने से इनकार कर दिया। वारिस को 16,748 वोट मिले थे; वोटों का अंतर इतना ज़्यादा था कि दोबारा गिनती का अनुरोध करना भी उचित नहीं था। कुछ देर बाद वे अपने प्रतिद्वंद्वी को बधाई देने गए; वे बेहद दुखी लग रहे थे, खासकर उस सुबह के पूर्वाभास के कारण। वारिस ने शालीनता और शांति से उनकी बधाई स्वीकार की। जीत ने उनके शर्म के भाव को मिटा दिया था।
सभी उम्मीदवारों के मतों की गिनती पूरी होने के बाद ही जिला मजिस्ट्रेट ने वारिस खान को विजेता घोषित किया। रेडियो पर शाम को यह खबर प्रसारित की गई। अंतिम परिणाम इस प्रकार था:
SALIMPUR-CUM-BAITAR (District Rudhia, Purva Pradesh)
विधानसभा चुनाव
सीटों की संख्या: 1
उम्मीदवारों की कुल संख्या: 10
चुनाव लड़ रहे हैं: 10
मतदाताओं की संख्या: 66,918
कुल वैध वोटों की संख्या: 40,327
मतदान दर: 60.26%
द्वारा सूचीबद्ध
नाम (अंग्रेजी वर्णमाला क्रम में):
पार्टी/ निर्दलीय: वोट: वोटों का प्रतिशत
1. इकबाल अहमद: स्वतंत्र:

608: (1.51%)
2. Mir Shamsher Ali: Independent:
481: (1.19%)
3. मोहम्मद हुसैन: केएमपीपी:
1,533: (3.80%)
4. Shanti Prasad Jha: Ram Rajya Parishad: 1,154: (2.86%)
5. महेश कपूर: कांग्रेस:
15,575: (38.62%)
6. वारिस मोहम्मद खान: स्वतंत्र:
16,748: (41.53%)
7. महमूद नासिर: कम्युनिस्ट:
774: (1.92%)
8. मदन मोहन पांडे: निर्दलीय:
1,159: (2.87%)
9. रामलाल सिन्हा: समाजवादी:
696: (1.73%)
10. Ramratan Srivastava: Jan Sangh:
1,599: (3.97%)
सफल उम्मीदवार का नाम: वारिस मोहम्मद खान
18.14
उस रात बैतर किले में जश्न का माहौल था।
वारिस ने मैदान में एक विशाल अलाव जलवाया, एक दर्जन भेड़ें और एक दर्जन बकरियों को बलि देने का आदेश दिया, उन सभी को दावत में आमंत्रित किया जिन्होंने उसकी मदद की थी या उसके लिए मतदान किया

था, और फिर कहा कि यहाँ तक कि वे नाजायज संतानें भी शामिल हो सकती हैं जिन्होंने उसके खिलाफ मतदान किया था। उसने शराब परोसने से परहेज किया, लेकिन खुद नशे में धुत होकर शाही अंदाज में अपने मेहमानों का स्वागत किया, और एक भाषण दिया - वह अब भाषण देने में निपुण हो चुका था - जिसमें उसने बैतार के घराने की महानता, मतदाताओं की श्रेष्ठता, ईश्वर की महिमा और वारिस के चमत्कार का वर्णन किया।

राज्य विधानसभा में वह क्या करने की योजना बना रहे थे, इस बारे में वह चुप रहे; लेकिन अपने मन में उन्हें पूरा विश्वास था कि जिस शीघ्रता से उन्होंने चुनावी दांव-पेच सीखे थे, उसी शीघ्रता से वह विधायी प्रक्रियाओं को भी सीख लेंगे।

चिकने मुंशी ने अपनी माँगी सभी खर्चों को मंज़ूरी दे दी, किले के भव्य मेहराब को फूलों से सजाया और आँखों में आँसू लिए हाथ जोड़कर वारिस का स्वागत किया। वह हमेशा से वारिस से प्रेम करता था, वह हमेशा से उसके भीतर छिपी महानता को जानता था, और अब अंततः उसके लिए उसकी प्रार्थनाएँ पूरी हो गई थीं। वह उसके चरणों में गिर पड़ा और वारिस से आशीर्वाद माँगा, और वारिस ने लड़खड़ाती आवाज़ में, लेकिन दयालुता से कहा:

'ठीक है, कमीने, मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ। अब उठो वरना मैं तुम पर उल्टी कर दूँगा।'

18.15

मतगणना के कुछ दिनों बाद, एक दोपहर महेश कपूर प्रेम निवास स्थित अपने बगीचे में बैठे थे। वे अब्दस सलाम से बात कर रहे थे। वे बहुत थके हुए लग रहे थे। अपनी हार के अनेक परिणाम उन्हें स्पष्ट रूप से समझ आ रहे थे। उन्हें लग रहा था कि उनका पेशा छिन गया है, वह चीज़ जिसने

उनके जीवन को ऊर्जा, दिशा और अच्छे कार्य करने की क्षमता दी थी। राज्य कांग्रेस पार्टी के उनके गुट को विधानसभा में उनके मार्गदर्शन के बिना ही काम चलाना पड़ेगा। सत्ता खोने से न केवल उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुंची, बल्कि उनके बेटे की मदद करने की उनकी क्षमता पर भी असर पड़ेगा, जिस पर जल्द ही अज्ञात आरोप लगने वाले थे। नवाब साहब के साथ उनकी मित्रता का टूटना एक और गहरा आघात था; फिरोज और स्वयं नवाब साहब के साथ जो हुआ था, उस पर उन्हें दुख और शर्मिंदगी महसूस हो रही थी। और प्रेम निवास में, विशेषकर बगीचे में बिताया गया हर पल, उन्हें अपनी पत्नी के खोने की याद दिलाता रहता था।

उन्होंने अपने हाथ में पकड़े कागज को देखा; उस पर उनके द्वारा लड़े गए चुनाव से संबंधित विभिन्न आंकड़े लिखे थे। कुछ मिनटों तक वे अब्दस सलाम के साथ उन आंकड़ों पर चर्चा करने में सफल रहे, जिसमें उनकी पुरानी रुचि और निष्पक्षता झलक रही थी। यदि केएमपीपी भंग होकर कांग्रेस में फिर से शामिल हो जाती, जैसा कि महेश कपूर ने स्वयं किया था, तो उनके संयुक्त वोट वारिस को हरा देते। यदि उनकी पत्नी उनकी मदद कर पातीं, तो वे वही शांत अंतर ला सकती थीं जो वे हमेशा लाती थीं—कुछ हज़ार वोट, शायद इससे भी अधिक। यदि फ़िरोज़ के बारे में पोस्टर प्रकाशित न हुआ होता, या तथ्यों से खंडन करने में देर न हुई होती तब प्रकाशित हुआ होता, तो भी वे जीत जाते। महेश कपूर ने अपने मित्र के बारे में चाहे जो भी अफवाहें मान ली हों, उन्होंने यह मानने से इनकार कर दिया कि नवाब साहब ने उस पोस्टर को मंजूरी दी थी। वह वारिस का काम था और केवल वारिस का ही; ऐसा होना ही था।

लेकिन उनके विश्लेषण का हर पहलू, चाहे उन्होंने उसे वस्तुनिष्ठ बनाने का कितना भी प्रयास किया हो, उन्हें वापस उनकी अपनी दुखद स्थिति की

ओर ले जाता था। कुछ देर बाद उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं और कुछ नहीं बोले।

अब्दुस सलाम ने कहा, 'वारिस एक दिलचस्प घटना है। 'मैं जानता हूं कि क्या नैतिक है, फिर भी मुझे उसकी ओर झुकाव नहीं है, और मैं जानता हूं कि क्या अनैतिक है, फिर भी मुझे उससे घृणा नहीं है'—जैसा कि दुर्योधन ने कृष्ण से कहा था।'

महेश कपूर के चेहरे पर झुंझलाहट के कुछ अंश दिखाई दिए। उन्होंने आंखें खोलते हुए कहा, 'नहीं, वारिस एक अलग तरह का आदमी है। उसमें बुराई या अनैतिकता जैसी कोई भावना नहीं है। मैं उसे जानता हूं। मैं उसके साथ और उसके खिलाफ लड़ता रहा हूं। वह उस तरह का आदमी है जो किसी औरत, जमीन, पानी या किसी झगड़े के लिए किसी की हत्या कर देगा—और फिर खुद को पुलिस के हवाले कर देगा, शेखी बघारते हुए कहेगा, "मैंने उसे खत्म कर दिया!"—और उम्मीद करेगा कि हर कोई इसे समझे।'

अब्दुस सलाम ने भविष्यवाणी की, 'आप राजनीति में बने रहेंगे।'

महेश कपूर थोड़ी देर हँसे। उन्होंने कहा, ‘क्या आपको ऐसा लगता है?’

‘जवाहरलाल से हुई बातचीत के बाद तो मुझे लगा था कि मैं मुख्यमंत्री भी बन सकता हूँ। कितनी महत्वाकांक्षाएँ! मैं तो विधायक भी नहीं हूँ। खैर, मुझे उम्मीद है कि आप उन्हें आपको किसी छोटे-मोटे पद से बहलाने नहीं देंगे; आप भले ही युवा हों, लेकिन आपने बेहतरीन काम किया है और यह आपका दूसरा कार्यकाल है। और वे मंत्रिमंडल में दो या तीन मुस्लिम ज़रूर चाहेंगे, चाहे मुख्यमंत्री शर्मा हों या अग्रवाल।’

‘हां, मुझे लगता है ऐसा ही है,’ अब्दस सलाम ने कहा। ‘लेकिन मुझे नहीं लगता कि अग्रवाल मुझे संगीन के बल पर भी चुनेंगे।’

‘तो आखिरकार शर्मा दिल्ली जा रहे हैं?’ महेश कपूर ने लॉन पर कुछ

मैनाओं को घूमते हुए देखा।

'किसी को नहीं पता,' अब्दस सलाम ने जवाब दिया। 'मुझे तो बिल्कुल नहीं पता। हर अफवाह के लिए एक और अफवाह होती है।' उन्हें खुशी थी कि महेश कपूर राजनीति में कम से कम कभी-कभार ही सही, दिलचस्पी दिखा रहे थे। 'आप कुछ दिनों के लिए दिल्ली क्यों नहीं चले जाते?' उन्होंने सुझाव दिया।

'मैं यहीं रुकूंगा,' महेश कपूर ने बगीचे की ओर देखते हुए धीरे से कहा। अब्दस सलाम को मान की याद आ गई, और उन्होंने कुछ नहीं कहा।

कुछ देर बाद उन्होंने कहा, 'आपके दूसरे बेटे और उसकी पदोन्नति का क्या हुआ?'

महेश कपूर ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'वह आज सुबह मेरी पोती के साथ यहां आए थे। मैंने उनसे पूछा। उन्होंने कहा कि उन्हें लगता है कि साक्षात्कार काफी अच्छा रहा, बस इतना ही।'

प्राण को डर था कि प्रोफेसर मिश्रा कुछ नापाक चाल चल रहे होंगे, और उनकी रिपोर्ट पर विश्वास करने की हिम्मत न करते हुए उसने फैसला किया था कि वह समिति द्वारा अपने कथित चयन के बारे में किसी को नहीं बताएगा—यहाँ तक कि सविता को भी नहीं। उसे डर था कि अगर यह खुशखबरी झूठी निकली तो उसके परिवार को और भी ज्यादा निराशा होगी। हालाँकि, वह चाहता था कि काश वह अपने पिता को बता पाता। उनके इस उदास मन में शायद इससे उन्हें थोड़ा सुकून मिलता।

अब्दुस सलाम ने कहा, 'अच्छा, अब तुम्हारे साथ कुछ अच्छा होना चाहिए। ईश्वर दुखियों को राहत देता है।'

ईश्वर के लिए स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त अरबी शब्द 'अब्दुस सलाम' ने महेश कपूर को याद दिला दिया कि उनके अपने चुनाव अभियान में धर्म का किस तरह दुरुपयोग किया गया था। उन्होंने फिर से अपनी आँखें बंद

कर लीं और कुछ नहीं कहा। उनका मन बहुत दुखी था।
अब्दुस सलाम ने बड़ी चतुराई से उसके मन की बात भांप ली, या कम से कम उसकी अगली टिप्पणी से तो यही संकेत मिला। उसने कहा, 'वारिस का चुनाव पूर्वाग्रह से प्रेरित था। धर्म के नाम पर किसी को भड़काने वाला एक शब्द भी कहना शर्म की बात होती। वारिस शायद शुरू में सिर्फ एक वफादार आदमी था, लेकिन उस पोस्टर के इस्तेमाल से मुझे कहना पड़ेगा कि वह एक बुरा आदमी बन गया।'
महेश कपूर ने फिर आह भरी। 'यह एक बेकार की अटकलबाजी है। वैसे भी, "बुरा" कहना बहुत कड़ा शब्द है। वह फिरोज को पसंद करता है, बस इतना ही। उसने पूरी जिंदगी उस परिवार की सेवा की है।'
अब्दुस सलाम ने कहा, 'समय आने पर वह भी अपने पद को लेकर उतना ही भावुक हो जाएगा। मुझे जल्द ही सदन में उसका सामना करना पड़ेगा। लेकिन मुझे इस बात की जिज्ञासा है कि वह नवाब साहब के खिलाफ अपना रुख कब तक स्पष्ट करेगा?'
कुछ देर बाद महेश कपूर ने कहा, 'खैर, मुझे नहीं लगता कि वह ऐसा करेगा। लेकिन अगर उसने ऐसा किया भी तो कुछ नहीं किया जा सकता। अगर वह बुरा है, जैसा कि आप कह रहे हैं, तो वह बुरा ही होगा।'
अब्दुस सलाम ने कहा: 'वैसे भी, समस्या बुरे लोगों के पूर्वाग्रह नहीं हैं।'
'अरे, तो फिर समस्या क्या है?' महेश कपूर ने हल्की मुस्कान के साथ कहा।
'अगर सिर्फ बुरे लोग ही पूर्वाग्रही होते, तो इसका इतना गहरा प्रभाव नहीं पड़ता। अधिकांश लोग उनका अनुकरण नहीं करना चाहेंगे—और इसलिए, ऐसे पूर्वाग्रहों का बहुत अधिक प्रभाव नहीं होता—सिवाय असाधारण परिस्थितियों के। अच्छे लोगों के पूर्वाग्रह ही इतने खतरनाक होते हैं।'

महेश कपूर ने कहा, 'यह बहुत ही सूक्ष्म तरीका है। जहां दोष बनता है, वहां दोष देना चाहिए। भड़काऊ बातें करना ही गलत है।'
लेकिन ज्वलनशील पौधों में से कई वैसे तो अच्छे होते हैं।
मैं तुमसे बहस नहीं करूंगा।
'मैं चाहता हूं कि तुम यही करो।'
महेश कपूर ने अधीरता भरी आवाज निकाली लेकिन कुछ नहीं कहा।
'कांग्रेस पी.पी. की 70 प्रतिशत विधानसभा सीटों पर जीत हासिल करेगी। आप जल्द ही उपचुनाव में वापसी करेंगे,' अब्दस सलाम ने कहा। 'मुझे लगता है कि लोग इस बात से हैरान हैं कि आप सलीमपुर के नतीजों के खिलाफ चुनाव याचिका दायर नहीं कर रहे हैं।'
'लोग क्या सोचते हैं—' महेश कपूर ने कहना शुरू किया, फिर अपना सिर हिलाया।
अब्दुस सलाम ने अपने गुरु को उनकी उदासीनता से जगाने का अंतिम प्रयास किया। उन्होंने अपने चिंतन का सिलसिला शुरू किया, आंशिक रूप से इसलिए कि उन्हें इसमें आनंद आता था, और मुख्य रूप से इसलिए कि वे मंत्री साहब में कुछ उत्साह जगाना चाहते थे।
उन्होंने कहा, 'यह देखना दिलचस्प है कि आजादी के महज चार साल बाद ही कांग्रेस में कितना बदलाव आ गया है। जिन लोगों ने आजादी के लिए लड़ते हुए अपनी जान गंवाई, वे अब एक-दूसरे को ही नुकसान पहुंचा रहे हैं। और इस धंधे में नए लोग भी आ गए हैं। उदाहरण के लिए, अगर मैं एक अपराधी होता और बिना ज्यादा मुश्किल के फायदे के साथ राजनीति में आ पाता, तो मैं यह नहीं कहता: "मैं हत्या या ड्रग्स का धंधा कर सकता हूं, लेकिन राजनीति पवित्र है।" यह मेरे लिए वेश्यावृत्ति से ज्यादा पवित्र नहीं होती।'
उन्होंने महेश कपूर की ओर देखा, जिन्होंने अपनी आँखें फिर से बंद कर

ली थीं। अब्दस सलाम बोलते रहे: 'चुनाव लड़ने के लिए अधिकाधिक धन की आवश्यकता होती है, और राजनेता व्यापारियों से अधिकाधिक धन की माँग करने के लिए विवश होंगे। फिर, स्वयं भ्रष्ट होने के कारण, वे सिविल सेवा में भ्रष्टाचार को समाप्त नहीं कर पाएंगे। वे ऐसा करना चाहेंगे भी नहीं। देर-सवेर न्यायाधीशों, चुनाव आयुक्तों, शीर्ष सिविल सेवकों और पुलिसकर्मियों की नियुक्तियाँ इन्हीं भ्रष्ट लोगों द्वारा तय की जाएँगी, और हमारी सभी संस्थाएँ ध्वस्त हो जाएँगी। अब्दस सलाम ने राजद्रोहपूर्ण लहजे में आगे कहा, 'एकमात्र आशा यही है कि अब से दो चुनाव बाद कांग्रेस का सफाया हो जाएगा।'

जैसे किसी संगीत कार्यक्रम में राग की सीमा से बाहर गाया गया एक भी गलत सुर किसी सोए हुए श्रोता को जगा सकता है, वैसे ही अब्दस सलाम के आखिरी कथन ने महेश कपूर की आंखें खोल दीं।

'अब्दुस सलाम, मैं आपसे बहस करने के मूड में नहीं हूँ। व्यर्थ की बातें न करें।'

मैंने जो कुछ भी कहा है, वह सब संभव है। मैं कहूंगा कि यह काफी हद तक संभावित है।

'कांग्रेस का सफाया नहीं होगा।'

'क्यों नहीं, मंत्री महोदय? हमें पचास प्रतिशत से भी कम वोट मिले हैं। अगली बार हमारे विरोधी चुनावी गणित को बेहतर ढंग से समझेंगे और एकजुट हो जाएंगे। और नेहरू, जो हमारे वोट बटोरने वाले नेता हैं, तब तक या तो मर चुके होंगे या सेवानिवृत्त हो चुके होंगे। वे इस पद पर पाँच साल और नहीं टिक पाएंगे। वे थक चुके होंगे।'

महेश कपूर ने कहा, 'नेहरू मुझसे और शायद तुमसे भी ज़्यादा जिएंगे।'

इस पर अब्दस सलाम ने कहा, 'क्या हमें इस पर शर्त लगानी चाहिए?'

महेश कपूर बेचैनी से हिलने लगे। उन्होंने कहा, 'क्या तुम मुझे गुस्सा

दिलाने की कोशिश कर रहे हो?'

'बस एक दोस्ताना शर्त।'

'अब कृपया जाइए।' 'ठीक है, मंत्री जी। मैं कल फिर इसी समय आऊंगा।' महेश कपूर ने कुछ नहीं कहा।

कुछ देर बाद उन्होंने बगीचे की ओर देखा। कचनार का पेड़ खिलना शुरू ही हुआ था: कलियाँ लंबी हरी फली जैसी लग रही थीं, जिनमें हल्के गहरे बैंगनी रंग की झलक थी जहाँ फूल खिलने वाले थे। कई छोटी गिलहरियाँ या तो इधर-उधर दौड़ रही थीं या पेड़ पर एक-दूसरे से खेल रही थीं। सनबर्ड हमेशा की तरह पोमेलो के पेड़ पर आ-जा रही थी; और कहीं से एक बारबेट चिड़िया लगातार चहचहा रही थी। महेश कपूर को अपने आसपास के पक्षियों और फूलों के हिंदी या अंग्रेजी नाम नहीं पता थे, लेकिन शायद अपनी वर्तमान मनस्थिति में उन्हें बगीचे का आनंद और भी अधिक मिल रहा था। यह उनका एकमात्र आश्रय था, एक नामहीन, शब्दहीन आश्रय, जहाँ केवल पक्षियों का मधुर गीत सुनाई देता था—और जब उन्होंने अपनी आँखें बंद कीं, तो वहाँ सबसे सरल इंद्रिय—गंध—की अनुभूति हावी थी।

जब उनकी पत्नी जीवित थीं, तब वे कभी-कभी नया क्यारी बनाने या नया पेड़ लगाने से पहले उनसे राय लेती थीं। इससे महेश कपूर को चिढ़ ही आती थी। वे गुस्से में कहते थे, 'जो चाहो करो। क्या मैं तुमसे अपनी फाइलों पर राय मांगूं?' कुछ समय बाद उनकी पत्नी ने उनसे सलाह लेना बंद कर दिया।

लेकिन श्रीमती महेश कपूर की अपार प्रसन्नता और उनके कई प्रभावशाली प्रतिद्वंद्वियों की निराशा के बीच, जो संसाधनों, विशेषज्ञता या विदेशी बीजों के मामले में उनसे कहीं अधिक श्रेष्ठता को समझ नहीं पा रहे थे, प्रेम निवास के बगीचे ने पुष्प प्रदर्शनी में साल दर साल कई पुरस्कार

जीते थे; और इस वर्ष भी इसे प्रथम पुरस्कार मिलेगा, पहली बार और, कहने की आवश्यकता नहीं है, अंतिम बार।

18.16

प्राण के घर की सामने वाली दीवार पर पीली चमेली खिलने लगी थी। अंदर, श्रीमती रूपा मेहरा बुदबुदा रही थीं, 'प्लेन, पर्ल, प्लेन, पर्ल। लता कहाँ है?'

'वह किताब खरीदने बाहर गई है,' सविता ने कहा।

‘कौन सी किताब?’

मुझे नहीं लगता कि उसे अभी तक पता है। शायद कोई उपन्यास।

उसे उपन्यास नहीं पढ़ने चाहिए बल्कि अपनी परीक्षाओं के लिए पढ़ाई करनी चाहिए।

संयोगवश, लगभग उसी समय पुस्तक विक्रेता लता को यही बात कह रहा था। सौभाग्य से, उसके व्यवसाय के लिए, छात्र शायद ही कभी उसकी सलाह मानते थे।

उसने एक हाथ से किताब की ओर हाथ बढ़ाया और दूसरे हाथ से अपने कान से मैल निकाला।

लता ने नाटकीय अंदाज़ में कहा, 'मैंने बहुत पढ़ाई कर ली है, बलवंतजी। मैं अपनी पढ़ाई से थक चुकी हूँ। असल में, मैं हर चीज़ से थक चुकी हूँ।'

बलवंत ने कहा, 'जब तुम ऐसा कहती हो तो बिल्कुल नरगिस जैसी दिखती हो।'

मुझे खेद है कि मेरे पास केवल पांच रुपये का नोट है।

बलवंत ने कहा, 'चिंता मत करो। तुम्हारी दोस्त मालतीजी कहाँ है?' उसने आगे पूछा। 'मैं उसे इन दिनों देखता ही नहीं।'

लता ने कहा, 'ऐसा इसलिए है क्योंकि वह उपन्यास खरीदने में अपना समय बर्बाद नहीं कर रही है। वह मन लगाकर पढ़ाई कर रही है। मैं खुद

भी उसे मुश्किल से ही देख पाती हूं।'
कबीर काफी खुशमिजाज होकर दुकान में दाखिल हुआ। उसने लता को देखा और रुक गया।
लता की आंखों के सामने उनकी पिछली मुलाकात की सारी बातें कौंध गईं—और उसके तुरंत बाद, किताबों की दुकान में हुई उनकी पहली मुलाकात भी। कुछ पल तक दोनों ने एक-दूसरे को देखा, फिर लता ने 'हैलो' कहकर चुप्पी तोड़ी।
कबीर ने जवाब दिया, 'नमस्ते। लगता है आप जा रहे हैं।' यह एक और संयोगवश हुई मुलाकात थी, और निस्संदेह इसमें कुछ असहजता भी थी।
‘हां,’ लता ने कहा। ‘मैं वुडहाउस की किताब खरीदने आई थी, लेकिन मैंने उसके बदले जेन ऑस्टेन की किताब खरीद ली।’
‘मैं चाहूँगा कि आप मेरे साथ ब्लू डेन्यूब में कॉफी पिएं।’ यह एक अनुरोध से अधिक एक बयान था।
लता ने कहा, 'मुझे वापस जाना होगा। मैंने सविता से कहा था कि मैं एक घंटे में वापस आ जाऊंगी।'
'सविता इंतजार कर सकती है। मैं एक किताब खरीदने जा रही थी, लेकिन वह भी इंतजार कर सकती है।'
‘कौन सी किताब?’ लता ने पूछा।
कबीर ने जवाब दिया, 'इससे क्या फर्क पड़ता है?' 'मुझे नहीं पता। मैं तो बस ऐसे ही कुछ देखने जा रहा था। लेकिन कविता या गणित में नहीं,' उसने आगे कहा।
‘ठीक है,’ लता ने बेपरवाही से कहा।
'अच्छा। कम से कम केक तो बेहतर होगा। वैसे, अगर कोई आपका परिचित अंदर आ जाए तो आप क्या बहाना बनाएंगे, यह मुझे नहीं पता।'
लता ने कहा, 'मुझे परवाह नहीं है।'

'अच्छा।'
नीली डेन्यूब नदी नाबीगंज से कुछ सौ गज की दूरी पर ही स्थित थी।
वे बैठ गए और अपना ऑर्डर दे दिया।
दोनों में से किसी ने कुछ नहीं कहा। अंत में लता ने कहा:
क्रिकेट के बारे में अच्छी खबर।
'शानदार।' भारत ने मद्रास में इंग्लैंड के खिलाफ पांचवां टेस्ट मैच एक पारी और आठ रन से जीत लिया था, और किसी को भी इस पर यकीन नहीं हो रहा था।
कुछ देर बाद कॉफी आ गई। उसे धीरे-धीरे हिलाते हुए कबीर ने कहा: 'क्या आप सच में ऐसा कह रहे थे?'
'किस बारे मेँ?'
‘आप इस आदमी को पत्र लिख रहे हैं?’
'हाँ।'
‘यह कितना गंभीर है?’
'मां चाहती हैं कि मैं उससे शादी कर लूं।'
कबीर ने कुछ नहीं कहा, बल्कि अपनी दाहिनी हथेली को देखता रहा जो लगातार कॉफी को हिला रही थी।
‘क्या तुम कुछ नहीं कहोगे?’ उसने उससे पूछा।
उसने कंधे उचका दिए।
लता ने पूछा, 'क्या तुम मुझसे नफरत करते हो? क्या तुम्हें इस बात की परवाह नहीं कि मैं किससे शादी करूं?'
‘बेवकूफी मत करो।’ कबीर की आवाज़ में लता के लिए झुंझलाहट थी। ‘और ये आंसू रोक लो। इनसे न तो तुम्हारी कॉफ़ी अच्छी होगी और न ही मेरी भूख।’ हालांकि लता को इसका एहसास नहीं था, फिर भी उसकी आँखों में धीरे-धीरे आंसू भर आए थे और एक-एक करके उसके गालों पर

बह रहे थे। उसने उन्हें पोंछने की कोशिश नहीं की, न ही कबीर के चेहरे से अपनी नज़र हटाई। उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि वेटर या कोई और क्या सोचेगा। या फिर कबीर खुद भी।

वह परेशान चेहरे के साथ अपनी कॉफी को लगातार हिलाता रहा।

‘मुझे दो मिश्रित विवाहों के बारे में पता है—’ उन्होंने कहना शुरू किया।

‘हमारा तरीका काम नहीं करेगा। कोई और इसे काम नहीं करने देगा। और अब तो मुझे खुद पर भी भरोसा नहीं रहा।’

‘तो फिर तुम मेरे साथ यहां क्यों बैठे हो?’ उसने कहा।

'मुझें नहीं पता।'

और तुम क्यों रो रही हो?

लता ने कुछ नहीं कहा।

कबीर ने कहा, 'मेरा रुमाल गंदा है। अगर आप रुमाल नहीं लाए हैं, तो उस नैपकिन का इस्तेमाल कर लीजिए।'

लता ने अपनी आंखों को पोंछा।

चलो, केक खा लो, इससे तुम्हें अच्छा लगेगा। मुझे तो ठुकराया गया है, और मैं अपने छोटे से दिल का दर्द रो-रोकर नहीं बयां कर रही।

उसने सिर हिलाया। ‘अब मुझे जाना होगा,’ उसने कहा। ‘धन्यवाद।’

कबीर ने उसे समझाने की कोशिश नहीं की।

उन्होंने कहा, 'अपनी किताब पीछे मत छोड़ना। मैन्सफील्ड पार्क? मैंने वह नहीं पढ़ी है। मुझे बताना अगर वह अच्छी हो।'

लता के दरवाजे की ओर चलने पर उनमें से किसी ने भी एक-दूसरे की ओर मुड़कर नहीं देखा।

18.17

कबीर से मुलाकात के बाद लता इतनी बेचैन हो गई थीं—लेकिन कबीर से मुलाकात के बाद वह कब बेचैन नहीं होती थीं? उन्होंने सोचा—कि वह

बरगद के पेड़ के पास लंबी सैर पर निकल गईं। वह पेड़ की विशाल, टेढ़ी-मेढ़ी जड़ पर बैठ गईं, अपने पहले चुंबन को याद किया, कुछ कविताएँ पढ़ीं, बंदरों को दाना खिलाया और ख्यालों में खो गईं।

उसने कड़वाहट से सोचा, "टहलना ही मेरी रामबाण दवा है; और किसी भी निर्णायक कार्रवाई का मेरा विकल्प है।"

लेकिन अगले दिन, उसने सबसे निर्णायक कदम उठाया।

सुबह डाक से लता के लिए दो पत्र आए। वह पीले चमेली के लच्छों से सजे बरामदे में बैठी और दोनों लिफाफे खोल दिए। जब पत्र आए तब श्रीमती रूपा मेहरा घर पर नहीं थीं, वरना वे लिफाफों की लिखावट पहचान लेतीं और पूछतीं कि उनमें क्या खबर है।

पहले लिफाफे में आठ पंक्तियाँ और एक शीर्षक था, जो टाइप किया हुआ था और उस पर हस्ताक्षर नहीं थे:

एक विनम्र प्रस्ताव

जैसा कि आपने ब्लैक एंड व्हाइट मांगा है,
क्या मैं ये पंक्तियाँ आपको भेज सकता हूँ?
इस मौन आशा में कि आप शायद
कम से कम मेरी बात को सच मान लें।
इस दूरी को मिटने दो
और हमारे दिल दूर से करीब आते हैं
जब तक हम इतने करीब न आ जाएं
हम भी एक्रोस्टिक की तरह ही हैं।

लता हंसने लगी। कविता थोड़ी घिसी-पिटी थी, लेकिन कुशलता से लिखी गई थी और पूरी तरह से व्यक्तिगत थी, और उसे अच्छी लगी। उसने याद करने की कोशिश की कि उसने वास्तव में क्या कहा था; क्या उसने सचमुच काले और सफेद रंग की बात कही थी या अमित से सिर्फ इतना

कहा था कि वह बस इतना ही मानती है? और यह 'मामूली' प्रस्ताव कितना गंभीर था? इस पर विचार करने के बाद, उसे लगा कि यह गंभीर था; और परिणामस्वरूप, उसे अब उतना अच्छा नहीं लगा।

क्या वह चाहती कि यह कविता जानबूझकर गंभीर और भावुक हो—या फिर इसे लिखा ही न जाए? क्या भावुक प्रस्ताव अमित की शैली के अनुरूप होता—या कम से कम उसके साथ उसके व्यवहार के अनुरूप होता? उसकी कई कविताएँ किसी भी अर्थ में हल्की नहीं थीं, लेकिन ऐसा लगता था मानो वह अपने उस पहलू को उससे छिपाता था, इस डर से कि उस अंधकारमय, निराशावादी व्यंग्य को देखने से वह बहुत परेशान हो जाएगी और उससे दूर हो जाएगी।

फिर भी, उसने उसकी अपनी कविता के बारे में क्या कहा था, उस निराशा भरी कविता के बारे में जो उसने हिचकिचाते हुए उसे दिखाई थी? कि उसे वह पसंद आई थी—लेकिन, उसने संकेत दिया था, केवल एक कविता के रूप में। अगर उसे उदासी नापसंद थी, तो वह कवि बनकर क्या कर रहा था? क्या वह—कम से कम अपने भले के लिए—वकालत के व्यावहारिक पेशे में कहीं बेहतर नहीं होता? लेकिन शायद वह स्वयं में या दूसरों में उदासी को नापसंद नहीं करता था, बल्कि केवल उस पर व्यर्थ ध्यान देने को नापसंद करता था—जिसका दोषी, उसे मानना पड़ा, उसकी कविता थी। स्पष्ट रूप से, अमित की सबसे सशक्त कविताओं में जो उदासी या बेचैनी थी, वह उसके दैनिक व्यवहार की नहीं, बल्कि कुछ गहन क्षणों की विशेषता थी। फिर भी, लता को लगा कि ऊंचे पहाड़ शायद ही कभी मैदानों से सीधे और अलग-थलग उठते हैं, और 'द फीवर बर्ड' के कवि और अमित चटर्जी के बीच, जैसा कि वह उन्हें जानती थी, कोई गहरा जैविक संबंध अवश्य था, जितना कि वह स्वयं उसे या दूसरों को विश्वास दिलाने के लिए प्रोत्साहित करते थे।

और ऐसे आदमी से शादी करना कैसा होगा? लता उठी और बरामदे में बेचैनी से इधर-उधर घूमने लगी। वह उसके बारे में गंभीरता से कैसे सोच सकती थी—मीनाक्षी और कुकू का भाई, कलकत्ता में उसका दोस्त और मार्गदर्शक, अनानास बेचने वाला, कडल्स को डांटने वाला? वह तो बस अमित था—उसे पति बनाना बेतुका था—यह सोचकर लता मुस्कुराई और सिर हिलाया। लेकिन फिर वह बैठ गई, और फिर से कविता पढ़ी, और उसने बाड़ के पार परिसर की ओर देखा, जहाँ से परीक्षा कक्ष की ढलान वाली और स्लेट की छत दूर से दिखाई दे रही थी। उसे एहसास हुआ कि कविता उसे कंठस्थ हो चुकी थी—जैसे उसकी पिछली एक्रोस्टिक, और 'द फीवर बर्ड', और अन्य कविताएँ। बिना किसी प्रयास के ही वे उसके भीतर समा गई थीं।

18.18

दूसरा पत्र हरेश की ओर से था।

मेरी प्यारी लता,

आशा है आप और आपका परिवार कुशल मंगल होंगे। पिछले कुछ हफ्तों से मैं काम में इतना व्यस्त था कि घर आकर थका हुआ महसूस करता था, और मेरी मानसिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि मैं आपसे बात कर सकूँ। लेकिन गुडइयर वेल्डेड लाइन की तरक्की लगातार हो रही है, और मैंने प्रबंधन को अपनी एक नई योजना अपनाने के लिए भी मना लिया है, जिसके तहत पूरे ऊपरी हिस्से को बाहर बनाया जा सकता है और फिर प्राहा में अंतिम निर्माण के लिए असेंबल किया जा सकता है। बेशक, यह योजना ब्रोग्स जैसी अन्य लाइनों में भी लागू होगी। कुल मिलाकर, मुझे लगता है कि मैंने उन्हें यह साबित कर दिया है कि मुझे काम पर रखना कोई गलती नहीं थी, और मैं श्री खंडेलवाल द्वारा उन पर थोपा गया कोई व्यक्ति मात्र नहीं हूँ।

मेरे पास आपको एक खुशखबरी देनी है। मुझे जल्द ही ग्रुप फोरमैन के पद पर पदोन्नत करने की बात चल रही है। अगर ऐसा हुआ तो यह मेरे लिए बहुत अच्छा होगा, क्योंकि मुझे अपने खर्चों पर लगाम लगाना मुश्किल हो रहा है। मैं स्वभाव से थोड़ा खर्चीला हूँ, और अगर कोई मेरी इस आदत को कम करने में मदद करे तो बहुत अच्छा होगा। अगर ऐसा हुआ तो यह कहावत बिल्कुल सच साबित होगी कि दो लोग एक से कम खर्च में रह सकते हैं।

मैंने अरुण और मीनाक्षी से कई बार फोन पर बात की है, हालांकि प्राहापुर से कोलकाता का नेटवर्क उतना अच्छा नहीं है जितना होना चाहिए। दुर्भाग्यवश वे विभिन्न कामों में व्यस्त रहे हैं, लेकिन उन्होंने वादा किया है कि वे निकट भविष्य में कभी न कभी रात के खाने पर आने के लिए समय निकालेंगे।

मेरा परिवार ठीक है। मेरे संशय में रहने वाले उमेश चाचा मेरी इस तरह की नौकरी इतनी जल्दी मिलने से बहुत प्रभावित हुए हैं। मेरी पालक माँ, जो मेरे लिए सचमुच माँ जैसी हैं, भी खुश हैं। मुझे याद है जब मैं पहली बार इंग्लैंड गया था, तो उन्होंने कहा था: 'बेटा, लोग इंग्लैंड डॉक्टर, इंजीनियर, वकील बनने जाते हैं। तुम्हें इतनी दूर जाकर मोची बनने की क्या ज़रूरत है?' उस समय तो मुझे हँसी आ गई थी, और अब भी जब मैं उस बात को याद करता हूँ तो मुस्कुरा देता हूँ। फिर भी, मैं खुश हूँ कि मैं उन पर बोझ नहीं हूँ, मैं अपने पैरों पर खड़ा हूँ, और मेरा काम अपने दायरे में उपयोगी है।

आपको यह जानकर खुशी होगी कि मैंने पान खाना छोड़ दिया है। कल्पना ने मुझे बताया था कि आपके परिवार को यह पसंद नहीं है, और चाहे मैं इसके बारे में कुछ भी सोचूं, मैंने इस मामले में समझौता करने का फैसला किया है। मुझे उम्मीद है कि मेहरा बनने के मेरे इन सभी प्रयासों से आप

प्रभावित होंगे।

एक बात है जिसका ज़िक्र मैंने अपने पिछले दो पत्रों में नहीं किया, और अच्छा हुआ कि आपने उसका ज़िक्र नहीं किया। जैसा कि आप जानते हैं, आपके द्वारा इस्तेमाल किए गए एक शब्द से मैं बहुत नाराज़ थी, जिसे अब मुझे समझ में आ रहा है कि आपका इरादा वैसा नहीं था जैसा मैंने समझा। मैंने उसी शाम कल्पना को इस बारे में लिखा, क्योंकि मुझे अपना मन हल्का करना ज़रूरी लगा। किसी कारण से मैं वैसे भी बेचैन थी। उसने मेरी 'बेहद संवेदनशील' होने पर मुझे फटकारा (कॉलेज में भी वह शब्दों का अच्छा इस्तेमाल करती थी) और कहा कि मुझे तुरंत माफ़ी मांग लेनी चाहिए और अड़ियल नहीं होना चाहिए। खैर, मुझे कोई अफ़सोस नहीं था, इसलिए मैंने पत्र नहीं लिखा। लेकिन अब जैसे-जैसे सप्ताह बीतते जा रहे हैं, मुझे एहसास हो रहा है कि मैं गलत थी।

मैं एक व्यावहारिक व्यक्ति हूँ और मुझे इस बात पर गर्व है—लेकिन कभी-कभी मेरे सामने ऐसी परिस्थितियाँ आ जाती हैं जिन्हें मैं अपने सुविचारित विचारों के बावजूद संभालना नहीं जानता, और तब मुझे एहसास होता है कि शायद मुझे जितना गर्व करना चाहिए था, उतना नहीं है। इसलिए लता, कृपया मेरी क्षमा स्वीकार करें और नए साल के दिन का इस अप्रिय अंत के लिए मुझे माफ़ कर दें।

मुझे उम्मीद है कि जब हमारी शादी होगी—मुझे उम्मीद है कि ऐसा होगा, न कि होगा या नहीं—जब भी मैं किसी ऐसी बात को गलत समझ लूं जो बुरे इरादे से न कही गई हो, तो आप अपनी उस प्यारी, शांत मुस्कान के साथ मुझे जरूर बताएंगी।

बाओजी मुझसे मेरी शादी की योजनाओं के बारे में पूछते रहे हैं, लेकिन इस बारे में मैं अभी तक उन्हें आश्वस्त नहीं कर पाई हूँ। जैसे ही आपको पूरा यकीन हो जाए कि मैं आपके लिए सही पति साबित होऊँगी, कृपया

मुझे बता दीजिएगा। मैं हर दिन शुक्रगुजार हूँ कि मेरी मुलाकात आपसे हुई और हम दोनों को बातों और मुलाकातों के जरिए एक-दूसरे को जानने का मौका मिला। आपके लिए मेरी भावनाएँ दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही हैं, और मेरे जूतों की तरह, ये कभी आराम नहीं करतीं। कहने की जरूरत नहीं है, मेरी मेज पर आपकी फ्रेम की हुई तस्वीर रखी है, और उसे देखकर मुझे आपकी प्यारी यादें ताजा हो जाती हैं।

कलकत्ता के अखबारों में कभी-कभार जो खबरें आती हैं, उनके अलावा केदारनाथ के साथ कुछ व्यापारिक सौदों के दौरान मुझे कपूर परिवार के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी मिली है, और मेरी गहरी सहानुभूति उन सभी के साथ है। यह सबके लिए बहुत कठिन समय होगा। वह कहते हैं कि वीणा और भास्कर बहुत परेशान हैं, लेकिन वे अपनी चिंताओं को हल्के में लेते हैं। मैं यह भी समझ सकता हूँ कि प्राण के लिए यह कितना मुश्किल होगा, जब उसके भाई की मुश्किलें और उसकी माँ का निधन एक साथ हो गए हैं। यह अच्छी बात है कि सविता के पास उसका बच्चा और कानून की पढ़ाई है, जिससे उसे सोचने के लिए और भी कुछ मिलता है, लेकिन ध्यान केंद्रित करना आसान नहीं होगा, खासकर कानून जैसे कठिन विषय पर। मुझे नहीं पता कि मैं किस तरह से मदद कर सकता हूँ, लेकिन अगर मैं कुछ कर सकता हूँ, तो कृपया मुझे बताएं। मुझे लगता है कि कुछ चीजें - नवीनतम कानून की किताबें आदि - कलकत्ता में ब्रह्मपुर की तुलना में अधिक आसानी से उपलब्ध हैं।

मुझे उम्मीद है कि इन सब मुश्किलों के बावजूद तुम किसी तरह पढ़ाई कर रही हो। मैं तुम्हारे लिए दुआ कर रही हूँ और मुझे पूरा भरोसा है, मेरी लता, कि तुम बहुत अच्छे नंबरों से पास होगी।

माँ को मेरा प्यार, जिनके लिए मैं मन ही मन आपको कानपुर लाने का धन्यवाद करती हूँ, और प्राण, सविता और बच्चे को भी। अगर आपकी

मुलाकात केदारनाथ से हो तो उन्हें बता देना कि मैं उन्हें बहुत जल्द, शायद इसी हफ्ते, कुछ ज़रूरी सलाह-मशवरों के बाद पत्र लिखूँगी।
मेरे सारे प्यार के साथ,
अपनी खुद की,
Haresh
18.19
लता पढ़ते-पढ़ते बीच-बीच में मुस्कुरा रही थी। उन्होंने 'कानपुर' की जगह 'कांवपुर' लिख दिया था। जब वह अंत तक पहुंची तो उसने एक बार फिर पढ़ा। उमेश अंकल और उनके सुलझे हुए संदेहों के बारे में पढ़कर उसे खुशी हुई। वह कल्पना कर सकती थी कि हरेश के पिता भी अपने लिए इसी तरह का समाधान चाहते होंगे।
बीते महीनों में उसकी दुनिया में उन लोगों की मौजूदगी बढ़ती जा रही थी जिनका ज़िक्र हरेश लगातार करता रहता था। उसे सिमरन की भी याद आने लगी थी; शायद हरेश ने सिमरन की भावनाओं को ठेस पहुँचाने के डर से इस पत्र में उसका ज़िक्र नहीं किया था। लेकिन लता को अचानक एहसास हुआ कि हरेश को पसंद करने के बावजूद, उसे सिमरन से जलन नहीं थी।
और ये लोग असल में कौन थे? उसने हरेश के बारे में सोचा: उदार, मजबूत, आशावादी, अधीर, जिम्मेदार। वह प्राहापुर में खड़ा था, गुडइयर वेल्डेड जूतों की तरह मजबूत, अपने पत्र के पन्नों से स्नेह भरी निगाहों से उसे देख रहा था और जितना हो सके उसे बता रहा था कि उसके बिना वह कितना अकेला है।
लेकिन हरेश अकेला खड़ा था: उमेश अंकल, सिमरन, उसके पालक पिता, ये सभी लोग जिन्हें वह जानती हुई महसूस करती थी, उसकी कल्पना से बिल्कुल अलग हो सकते थे। और उसका रूढ़िवादी पुरानी

दिल्ली का खत्री परिवार: वह उनके साथ वैसा व्यवहार कैसे कर सकती थी जैसा वह कुकू, दीपांकर या न्यायमूर्ति चटर्जी के साथ करती थी? वह चेक लोगों से क्या बात करती? लेकिन एक ऐसे व्यक्ति के साथ, जिस पर उसे भरोसा था और जिसकी वह प्रशंसा करने लगी थी—और जो उसकी इतनी गहराई से और लगातार परवाह करता था—एक अनजान दुनिया में पूरी तरह खो जाने में कुछ रोमांच था। उसने बिना पान के, अपनी खुली मुस्कान के साथ मुस्कुराते हुए हरेश के बारे में सोचा; उसने उसे मेज पर इस तरह बैठाया कि वह उसके सह-प्रतिवादी के जूते न देख सके; उसने उसके बालों को थोड़ा सा सहलाया, और—वाह, वह कितना आकर्षक था! वह उसे पसंद करती थी। शायद, समय और भाग्य के साथ, वह उससे प्यार करना भी सीख सकती थी।

18.20

अरुण का एक पत्र दोपहर की डाक से आया और उससे उसके विचारों को स्पष्ट करने में मदद मिली:

मेरी प्यारी लता,

अगर मैं बड़े भाई होने के नाते आपको पत्र लिखूं, जो आपके और परिवार के भविष्य के लिए बेहद महत्वपूर्ण है, तो आपको कोई आपत्ति नहीं होगी। हम, जैसा कि अक्सर होता है, एक बेहद करीबी परिवार हैं, और शायद पिताजी के निधन के कारण हम और भी करीब आ गए हैं। उदाहरण के लिए, अगर पिताजी जीवित होते, तो मैं ये सारी जिम्मेदारियां नहीं उठाता। वरुण शायद मेरे साथ नहीं रहता, और न ही मैं उसे जीवन में सही दिशा चुनने के बारे में सलाह देना अपना कर्तव्य समझता, क्योंकि मुझे डर है कि वह खुद ऐसा करने से कतराता। और न ही मुझे ये एहसास होता कि मैं एक तरह से आपका अभिभावक हूं।

मुझे लगता है कि आप समझ गए होंगे कि मैं किस बारे में बात कर रहा

हूँ। संक्षेप में कहूँ तो, मैंने इस विषय पर हर संभव पहलू से विचार किया है और इस मामले पर माँ के निर्णय से मैं सहमत नहीं हूँ। इसीलिए यह पत्र लिख रहा हूँ। माँ भावनाओं में बहुत जल्दी बह जाती हैं और ऐसा लगता है कि उन्हें हरेश से बेवजह बहुत लगाव हो गया है—साथ ही अन्य लोगों से उनकी तीव्र घृणा है—चाहे वह बेवजह ही क्यों न हो। मैंने अपने विवाह के प्रति भी उनके रवैये में कुछ ऐसा ही अनुभव किया है, जो उनकी अपेक्षाओं के विपरीत, आपसी स्नेह और विश्वास पर आधारित एक सुखमय विवाह साबित हुआ है। मेरा मानना है कि इसके परिणामस्वरूप मुझे आपके सामने मौजूद विकल्पों का अधिक वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण प्राप्त हुआ है।

ब्रह्मपुर के एक व्यक्ति के प्रति आपके क्षणिक आकर्षण को छोड़कर, जिसके बारे में जितना कम कहा जाए उतना ही अच्छा है, आपको जीवन की उलझनों का ज़्यादा अनुभव नहीं है, और न ही आपको बिना किसी मार्गदर्शन के विकल्पों को परखने का कोई मानदंड विकसित करने का अवसर मिला है। इसी संदर्भ में मैं आपको सलाह दे रहा हूँ।

मेरा मानना है कि हरीश में कुछ उत्कृष्ट गुण हैं। वह मेहनती है, एक तरह से आत्मनिर्भर है, और उसने भारत के अच्छे कॉलेजों में से एक से शिक्षा प्राप्त की है—या कम से कम डिग्री प्राप्त की है। सभी जानकारियों के अनुसार, उसने जो पेशा चुना है उसमें वह कुशल है। उसमें आत्मविश्वास है, और वह अपने मन की बात कहने से नहीं डरता। हमें इस व्यक्ति की सराहना करनी चाहिए। फिर भी, मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मेरा मानना है कि वह हमारे परिवार के लिए उपयुक्त सदस्य नहीं होगा, और इसके निम्नलिखित कारण हैं:

1. सेंट स्टीफंस में अंग्रेजी की पढ़ाई करने और दो साल इंग्लैंड में रहने के बावजूद, अंग्रेजी भाषा पर उनका नियंत्रण बहुत कमजोर है। यह कोई

मामूली बात नहीं है। पति-पत्नी के बीच संवाद ही सच्चे आपसी समझ पर आधारित विवाह का आधार है। उन्हें संवाद करने में सक्षम होना चाहिए, यानी एक ही सोच का होना चाहिए। हरेश आपसे—या हममें से किसी से भी—एक ही सोच का नहीं है। यह केवल उनके उच्चारण का मामला नहीं है, जिससे तुरंत पता चलता है कि अंग्रेजी उनकी मातृभाषा नहीं है; यह उनकी भाषा शैली और उच्चारण का मामला है, कभी-कभी तो उनके द्वारा कही गई बातों को समझने की क्षमता का भी। मुझे खुशी है कि जब 'मीन' शब्द को लेकर वह बेतुका झगड़ा हुआ, तब मैं घर पर मौजूद नहीं थी, लेकिन जैसा कि आप जानती हैं, मीनाक्षी और मेरे घर लौटते ही माँ ने मुझे (बहुत आँसू बहाते हुए और विस्तार से) सारी घटना बताई। अगर आप यह मानकर चलती हैं कि माँ ही सब जानती हैं, और इस आदमी से सगाई करती हैं, तो आपको लगातार इस तरह की पीड़ादायक और बेतुकी स्थितियों का सामना करना पड़ेगा।

2. दूसरा, और इससे संबंधित एक और महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि हरेश हमारे जैसे सामाजिक दायरे में नहीं आता-जाता, और न ही कभी आशय रख सकता है। एक फोरमैन कोई अनुबंधित सहायक नहीं होता, और प्राहा बेंटसेन प्राइस जैसा कोई व्यक्ति नहीं है। चमड़े की गंध इस नाम से कुछ ज़्यादा ही जुड़ी हुई है; उसके मालिक चेक लोग तकनीशियन हैं, जो कभी-कभी मुश्किल से अंग्रेज़ी जानते हैं, इंग्लैंड के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों से स्नातक नहीं हैं। एक तरह से, सेंट स्टीफंस से स्नातक होने के बाद पेशे के बजाय एक व्यापार चुनकर, हरेश ने खुद को नीचा कर लिया है। मुझे आशा है कि आपके भविष्य की खुशियों से जुड़े इतने महत्वपूर्ण विषय पर मेरी खुलकर बोलने से आपको कोई आपत्ति नहीं होगी। समाज मायने रखता है, और समाज कठोर और क्रूर होता है; श्रीमती खन्ना होने के कारण आप खुद को कुछ खास दायरों से अलग-थलग पाएँगी।

न तो हरेश की पृष्ठभूमि और न ही उसका व्यवहार प्राहा परिवार की पहचान को कम कर सकता है। मीनाक्षी या अमित के विपरीत, जिनके पिता और दादा उच्च न्यायालय के न्यायाधीश रह चुके हैं, उसका परिवार पुरानी दिल्ली का साधारण परिवार है, और सीधे शब्दों में कहें तो, बिल्कुल साधारण है। बेशक, उसने जिस मुकाम तक खुद को पहुंचाया है, वह उसकी उपलब्धि है; लेकिन, एक स्व-निर्मित व्यक्ति होने के नाते, उसमें आत्मसंतुष्टि की प्रवृत्ति है—वास्तव में, थोड़ा घमंड भी। मैंने देखा है कि यह अक्सर छोटे कद के लोगों में होता है; शायद इसी वजह से उसमें कुछ अहंकार भी है। मुझे पता है कि माँ उसे एक अनगढ़ हीरा समझती हैं। मैं बस इतना ही कह सकती हूँ कि पत्थर की तराशी और पॉलिश मायने रखती है। कोई भी शादी की अंगूठी में अनगढ़ हीरा—या टूटा-फूटा हीरा—नहीं पहनता।

साफ़ शब्दों में कहूँ तो, परिवार का प्रभाव हमेशा बना रहता है। यह हरेश के पहनावे, पान-तंबाकू के प्रति उसके लगाव और इंग्लैंड में रहने के बावजूद सामाजिक शिष्टाचार की कमी से ज़ाहिर होता है। सविता और प्राण की सगाई के समय मैंने माँ को उसके पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में चेतावनी दी थी, लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं मानी; और सामाजिक दृष्टि से इसका परिणाम यह हुआ कि हमारे ज़रिए एक कैदी के परिवार का एक न्यायाधीश के परिवार से शर्मनाक संबंध जुड़ गया। यही एक और कारण है कि मुझे लगता है कि इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, आपसे बात करना मेरा कर्तव्य है।

3. आपकी भावी पारिवारिक आय से शायद आप अपने बच्चों को उस तरह के स्कूल में नहीं भेज पाएँगे, जैसे कि सेंट जॉर्ज, सेंट सोफिया, झील, मायो, लोरेटो या दून, जहाँ हमारे बच्चे—मीनाक्षी और मेरे—पढ़ेंगे। इसके अलावा, भले ही आप खर्च उठा सकें, हरेश के अपने बच्चों के

पालन-पोषण या शिक्षा पर खर्च होने वाले पारिवारिक बजट के अनुपात को लेकर आपसे बहुत अलग विचार हो सकते हैं। सविता के पति के बारे में, क्योंकि वे एक शिक्षाविद हैं, मुझे इस बारे में कोई चिंता नहीं है। लेकिन हरेश के बारे में मुझे चिंता है, और मुझे यह बात आपसे कहनी ही होगी। मैं चाहता हूँ कि परिवार एकजुट रहे, वास्तव में, मैं इस एकजुटता को बनाए रखने के लिए खुद को जिम्मेदार महसूस करता हूँ; और हमारे बच्चों के पालन-पोषण में मतभेद समय के साथ हमें अलग कर देंगे, और आपको बहुत दुख भी पहुँचाएँगे।

मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि इस पत्र को निजी पत्र समझें; इसके विषयवस्तु के अनुरूप इस पर गहराई से विचार करें, लेकिन इसे परिवार में न दिखाएँ। माँ को यह बात बुरी लगेगी, और मुझे लगता है कि सविता को भी। इस पत्र के विषय में मैं बस इतना ही कहूँगा कि वह हमें मेहमाननवाज़ी के प्रस्ताव देकर परेशान कर रहा है; हम उसके प्रति उदासीन रहे हैं, और अब तक प्राहापुर में एक और भव्य भोज के लिए जाने से बचते रहे हैं। हमारा मानना है कि जब तक वह वास्तव में परिवार का हिस्सा न बन जाए, तब तक उसे परिवार का हिस्सा नहीं माना जाना चाहिए। कहने की आवश्यकता नहीं है, चुनाव आपका है, और हम आपके पति का, चाहे वह कोई भी हो, निजी तौर पर स्वागत करेंगे। लेकिन अगर आप खुलकर बोल नहीं सकते तो अच्छे इरादे का कोई फायदा नहीं, और यही मैंने इस पत्र में किया है।

समाचार और फालतू की बातों को जोड़ने के बजाय, जिन्हें किसी और अवसर पर किया जा सकता है, मैं सीधे आपके प्रति अपने प्यार और भविष्य की खुशियों के लिए हार्दिक शुभकामनाओं के साथ अपनी बात समाप्त करूंगा। मीनाक्षी, जो मेरी सभी बातों से सहमत है, वह भी ऐसा ही करती है।

आपका, अरुण भाई

लता ने पत्र को कई बार पढ़ा, पहली बार—खासकर अरुण की अनियमित लिखावट के कारण—बहुत धीरे-धीरे; और निर्देशानुसार, उसने पत्र की सामग्री पर गहराई से विचार किया। उसकी पहली इच्छा सविता, मालती या अपनी माँ—या उनमें से हर एक—से खुलकर बात करने की थी। फिर उसने फैसला किया कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा और अगर कुछ होगा तो वह उसे और भी उलझन में डाल देगा। यह फैसला उसे खुद करना था।

उसी शाम उसने हरेश को पत्र लिखकर, कृतज्ञता और वास्तव में, गर्मजोशी के साथ, उसके बार-बार दोहराए जाने वाले विवाह के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

18.21

'नहीं!' मालती ने लता को घूरते हुए कहा। 'नहीं! मैं इस पर विश्वास नहीं कर सकती। क्या तुमने चिट्ठी पोस्ट कर दी है?'

'हां,' लता ने कहा।

वे पुल मेला की रेत पर किले की छाया में बैठे थे और गर्म, धूसर गंगा नदी को देख रहे थे, जो सूर्य की रोशनी में चमक रही थी।

'तुम पागल हो—बिल्कुल पागल। तुमने ऐसा कैसे किया?'

'मेरी माँ की तरह मत बनो—"ओह मेरी बेचारी लता, ओह मेरी बेचारी लता!"'

'क्या यही उसकी प्रतिक्रिया थी? मुझे लगा कि वह हरेश में दिलचस्पी रखती है,' मालती ने कहा।

मुझे तुम पर पूरा भरोसा था कि तुम वही करोगी जो मम्मी कहती हैं। लेकिन लता, मैं ऐसा नहीं होने दूंगी, तुम इस तरह अपनी जिंदगी बर्बाद नहीं कर सकती।

लता ने गुस्से में कहा, 'मैं अपनी ज़िंदगी बर्बाद नहीं कर रही हूँ। और हाँ, हो सकता है उसकी यही प्रतिक्रिया हो। पता नहीं क्यों, वो हरेश से नाराज़ है। और अरुण तो शुरू से ही उसके खिलाफ रहा है। लेकिन नहीं, मम्मी ने कुछ नहीं कहा। असल में, मम्मी को पता भी नहीं है। मैं सबसे पहले तुम्हें बता रही हूँ, और तुम्हें मुझे दुखी करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।'

'मुझे करना चाहिए। मुझे करना चाहिए। मुझे उम्मीद है कि तुम बहुत दुखी होगे,' मालती ने हरी आग जैसी चमकती आँखों से कहा। 'तब शायद तुम्हें अक्ल आएगी और तुम अपनी गलती सुधार लोगे। तुम कबीर से प्यार करती हो, और तुम्हें उससे शादी करनी ही चाहिए।'

'इसमें कोई मजबूरी नहीं है। जाओ और खुद उससे शादी कर लो,' लता ने लाल गालों के साथ कहा। 'नहीं—नहीं! नहीं! मैं तुम्हें कभी माफ नहीं करूंगी। कृपया कबीर के बारे में बात मत करो, मालू, कृपया।'

'तुम्हें इसका बहुत पछतावा होगा,' मलाती ने कहा। 'मैं तुम्हें बता रही हूँ।'

'खैर, ये तो मेरी जिम्मेदारी है,' लता ने खुद को काबू में रखने की कोशिश करते हुए कहा।

'फैसला लेने से पहले तुमने मुझसे क्यों नहीं पूछा?' मालती ने पूछा। 'तुमने किससे सलाह ली? या तुमने अपना मूर्खतापूर्ण निर्णय खुद ही ले लिया?'

लता ने शांत भाव से कहा, 'मैंने अपने बंदरों से सलाह ली।'

ऐसे समय में लता द्वारा किए गए मूर्खतापूर्ण चुटकुलों के लिए मालती को उसे थप्पड़ मारने की तीव्र इच्छा हो रही थी।

'और एक कविता संग्रह,' लता ने आगे कहा।

'कविता!' मालती ने तिरस्कार भरे लहजे में कहा। 'कविता ने ही तो तुम्हारा सारा दिमाग बर्बाद कर दिया है। तुम्हारे पास इतना अच्छा दिमाग है कि उसे अंग्रेजी साहित्य पर बर्बाद करना ठीक नहीं है। नहीं, शायद

ऐसा नहीं है।'
लता ने कहा, 'तुम ही पहले व्यक्ति थे जिसने मुझे उसे छोड़ देने के लिए कहा था। तुमने ही तो कहा था। या तुम वह सब भूल गए हो?'
'मैंने अपना इरादा बदल लिया,' मलाती ने कहा। 'आप जानते हैं मैंने ऐसा किया। मैं गलत थी, बहुत गलत थी। इस तरह के रवैये से दुनिया को होने वाले खतरे को देखिए—'
'तुम्हें क्या लगता है कि मैं उसे क्यों छोड़ रही हूँ?' लता ने अपनी सहेली की ओर मुड़ते हुए पूछा।
क्योंकि वह मुसलमान है।
लता ने कुछ देर तक कोई जवाब नहीं दिया। फिर उसने कहा:
'ऐसा नहीं है। सिर्फ यही नहीं है। इसका कोई एक कारण नहीं है।'
इस दयनीय बहाने पर मलाती ने घृणा से भरी एक घुरघुराहट भरी आवाज निकाली।
लता ने आह भरी। 'मलाती, मैं इसे बयान नहीं कर सकती—उसके लिए मेरी भावनाएँ बहुत उलझी हुई हैं। जब मैं उसके साथ होती हूँ तो मैं खुद नहीं रहती। मैं खुद से पूछती हूँ कि ये कौन है—ये ईर्ष्यालु, जुनूनी औरत जो एक आदमी को अपने दिमाग से निकाल ही नहीं सकती—मैं खुद को इस तरह क्यों तकलीफ दे रही हूँ? मुझे पता है कि अगर मैं उसके साथ रही तो हमेशा ऐसा ही रहेगा।'
'अरे लता—अंधी मत बनो—' मालती ने हैरानी से कहा। 'इससे पता चलता है कि तुम उससे कितना बेइंतहा प्यार करती हो—'
लता रोते हुए बोली, 'मैं ऐसा नहीं करना चाहती। मैं ऐसा नहीं करना चाहती। अगर जुनून का यही मतलब है, तो मुझे यह नहीं चाहिए। देखो जुनून ने परिवार का क्या हाल कर दिया है। मान टूट चुका है, उसकी माँ मर चुकी है, उसके पिता हताश हैं। जब मुझे पता चला कि कबीर किसी

और से मिल रहा है, तो मुझे जो महसूस हुआ, वह जुनून से नफरत करने के लिए काफी था। पूरी शिद्दत से और हमेशा के लिए।'

'यह मेरी गलती है,' मालती ने कड़वाहट से कहा और अपना सिर इधर-उधर हिलाया। 'काश मैंने कलकत्ता को वह पत्र कभी न लिखा होता। और तुम भी यही चाहोगे।'

'ऐसा नहीं है, मलाती। और मैं भी नहीं हूँ। शुक्र है तुमने ऐसा किया।'

मलाती ने उदास निगाहों से लता की ओर देखा। 'लता, तुम्हें अंदाज़ा भी नहीं है कि तुम क्या खो रही हो। तुम गलत आदमी को चुन रही हो। कुछ समय के लिए अविवाहित रहो। फिर से फैसला करने के लिए समय लो। या फिर अविवाहित ही रहो—इसमें कोई दुख की बात नहीं है।'

लता चुप थी। जिस तरफ मालती उसे नहीं देख सकती थी, उस तरफ उसने मुट्ठी भर रेत अपनी उंगलियों से फिसलने दी।

'उस दूसरे लड़के का क्या हुआ?' मालती ने कहा। 'वह कवि अमित? उसने खुद को दौड़ से बाहर कैसे कर लिया?'

अमित के बारे में सोचकर लता मुस्कुरा उठी। 'खैर, जैसा कि आपने कहा, वह मुझे बर्बाद तो नहीं करेगा, लेकिन मैं खुद को उसकी पत्नी के रूप में बिल्कुल नहीं देखती। हम दोनों बहुत एक जैसे हैं। उसका मिजाज भी मेरी तरह ही बहुत तेजी से बदलता रहता है। सोचिए हमारे बेचारे बच्चों की जिंदगी कैसी होगी? और अगर उसका मन किसी किताब में डूबा हो तो मुझे नहीं पता कि उसके पास मेरे लिए समय होगा भी या नहीं। संवेदनशील लोग अक्सर बहुत असंवेदनशील होते हैं - मुझे पता है। असल में, उसने अभी-अभी मुझे शादी का प्रस्ताव दिया है।'

मालती हैरान और गुस्से में दिख रही थी।

'तुम मुझे कभी कुछ नहीं बताते!'

लता ने अपनी कमीज़ की जेब से अमित की कविता निकाली और कहा,

'कल अचानक सब कुछ हो गया। मैं इसे साथ लाई हूँ, क्योंकि आपको आमतौर पर मामले से जुड़े दस्तावेज़ देखना पसंद होता है।'
मलाती ने इसे चुपचाप पढ़ा, फिर कहा: 'जो भी मुझे यह लिखकर देगा, मैं उससे शादी कर लूंगी।'
'खैर, वो अभी भी उपलब्ध है,' लता हंसते हुए बोली। 'और मैं उस शादी का विरोध नहीं करूंगी।' उसने मालती के कंधे पर हाथ रखते हुए आगे कहा, 'मेरे लिए अमित से शादी करना पागलपन होगा। बाकी सब बातों को छोड़ दें तो, मुझे अपने भाई अरुण का साथ काफी मिलता है। उससे पांच मिनट की दूरी पर रहना तो हद से ज्यादा बेवकूफी होगी!'
आप कहीं और रह सकते हैं।
'अरे नहीं—' लता ने अमित की कल्पना करते हुए कहा, जो अपने कमरे में खिले हुए लेबर्नम के फूलों को देख रहा था। 'वह कवि और उपन्यासकार है। उसे सब कुछ आसानी से मिल जाए, यही तो चाहिए। खाना, गर्म पानी, घर का सारा काम-काज, एक कुत्ता, एक लॉन, एक प्रेरणास्रोत। और क्यों नहीं? आखिर उसने 'द फीवर बर्ड' लिखा ही तो है! लेकिन अगर उसे अपने परिवार से दूर रहकर खुद ही अपना गुजारा करना पड़े तो वह लिख नहीं पाएगा। वैसे भी, आप हरेश को छोड़कर बाकी सबके साथ खुश दिखती हैं। क्यों? आप उसके इतने खिलाफ क्यों हैं?'
'क्योंकि मुझे तुम दोनों में कुछ भी, कुछ भी, बिल्कुल कुछ भी समानता नहीं दिखती,' मालती ने कहा। 'और यह बिल्कुल स्पष्ट है कि तुम उससे प्यार नहीं करती। लता, क्या तुमने इस बारे में ठीक से सोचा है, या तुम बस किसी सम्मोहन में आकर फैसला ले रही हो? जैसे वो नन वाली बात जो माँ बार-बार सुनाती रहती है। सोचो। क्या तुम्हें इस आदमी के साथ अपनी संपत्ति बाँटने का विचार अच्छा लगता है? क्या उसके साथ प्रेम संबंध बनाने का? क्या वो तुम्हें आकर्षित करता है? क्या तुम उसकी उन

बातों को सहन कर सकती हो जो तुम्हें परेशान करती हैं—कानपुर, पान और ये सब? प्लीज़, प्लीज़, लता, मूर्ख मत बनो। अक्ल का इस्तेमाल करो। उस सिमरन नाम की औरत के बारे में क्या? क्या वो तुम्हें परेशान नहीं करती? और शादी के बाद तुम क्या करना चाहती हो? या तुम बस चेक लोगों से भरे एक चारदीवारी वाले घर में गृहिणी बनकर संतुष्ट हो?'

लता ने एक बार फिर चिढ़कर अपना हाथ हटाते हुए कहा, 'क्या तुम्हें लगता है कि मैंने इन सब बातों के बारे में सोचा ही नहीं? या यह कि मैंने यह कल्पना करने की कोशिश ही नहीं की कि उसके साथ जीवन कैसा होगा? मुझे लगता है, यह दिलचस्प होगा। हरेश व्यावहारिक है, दृढ़ निश्चयी है, और संशयवादी नहीं है। वह काम को अंजाम देता है और बिना किसी दिखावे के लोगों की मदद करता है। उसने केदारनाथ और वीणा की बहुत मदद की है।'

तो क्या हुआ? ... क्या वह तुम्हें पढ़ाने देगा?

'हां वो करेगा।'

'क्या तुमने उससे पूछा है?' मलाती ने जोर देकर पूछा।

'नहीं। यह सबसे अच्छा विचार नहीं है,' लता ने कहा। 'लेकिन मुझे पूरा यकीन है। मुझे लगता है कि मैं

अब तक तो मैं उसे अच्छी तरह जान चुका हूँ। उसे किसी की भी प्रतिभा बर्बाद होते देखना पसंद नहीं। वह उन्हें प्रोत्साहित करता है। और वह लोगों के बारे में सचमुच चिंतित रहता है—मेरे बारे में, मान के बारे में, सविता और उसकी पढ़ाई के बारे में, भास्कर के बारे में—'

'—जो संयोगवश आज कबीर की वजह से ही जीवित हैं,' मालती ने बीच में टोकने से खुद को रोक नहीं पाईं।

'मैं इससे इनकार नहीं करती।' लता ने गहरी सांस ली और चारों ओर फैली गर्म रेत को देखा।

कुछ देर तक दोनों में से किसी ने कुछ नहीं कहा। फिर मालती बोली।
‘लेकिन उसने ऐसा क्या किया है, लता?’ उसने धीमी आवाज़ में कहा। ‘उसने ऐसा क्या गलत किया है कि उसके साथ ऐसा बर्ताव किया जाए? वह तुमसे प्यार करता है और उस पर कभी शक नहीं किया जाना चाहिए था। क्या यह उचित है? ज़रा सोचो, क्या यह उचित है?’
‘मुझे नहीं पता,’ लता ने धीरे से कहा, दूर किनारे की ओर देखते हुए। ‘नहीं, मुझे लगता है ऐसा नहीं है। लेकिन जीवन हमेशा न्याय का प्रश्न नहीं होता, है ना? वह कहावत क्या है?—“हर इंसान को उसके कर्मों के अनुसार सजा दो, और कोड़े खाने से कौन बचेगा?” लेकिन यह बात दूसरी तरफ भी सच है। हर इंसान को उसके कर्मों के अनुसार सजा दो, वरना तुम पूरी तरह से भावनात्मक रूप से दिवालिया हो जाओगे।’
'दुनिया को देखने का यह बहुत ही संकीर्ण दृष्टिकोण है,' मलाती ने कहा।
'मुझे मतलबी मत कहो,' लता ने भावुक होकर कहा।
मालती ने हैरानी से उसकी ओर देखा।
लता कांप उठी। ‘मेरा मतलब सिर्फ इतना था, मालती, कि जब मैं कबीर के साथ होती हूँ, या उससे दूर भी होती हूँ लेकिन उसके बारे में सोचती हूँ, तो मैं बिल्कुल बेकार हो जाती हूँ। मुझे लगता है कि मैं बेकाबू हो गई हूँ—जैसे कोई नाव चट्टानों की ओर जा रही हो—और मैं बर्बाद नहीं होना चाहती।’
तो क्या आप खुद को यह निर्देश देने जा रहे हैं कि आप उसके बारे में न सोचें?
'अगर मैं कर सकती हूं,' लता ने लगभग खुद से कहा।
'तुमने क्या कहा? बोलो,' मालती ने उसे झकझोर कर समझाने की कोशिश करते हुए कहा।
लता ने कहा, 'अगर मैं कर सकती हूं तो।'

‘तुम खुद को इस तरह कैसे धोखा दे सकते हो?’
लता चुप रही।
कुछ देर बाद उसने कहा, ‘मालू, मैं तुमसे झगड़ा नहीं करने वाली। मैं तुम्हारी उतनी ही परवाह करती हूँ जितनी इन सभी पुरुषों की, और हमेशा करती रहूँगी। लेकिन मैं अपने किए को नहीं बदलूँगी। मैं हरेश से प्यार करती हूँ, और—’
‘क्या?’ मालती चिल्लाई, लता को ऐसे देखते हुए जैसे वह कोई मूर्ख हो।
'मैं करता हूं।'
'आज तो तुम मुझे चौंका ही रही हो,' मलाती ने गुस्से में कहा।
और, खैर, आप अविश्वास से भरे हुए हैं। लेकिन मैं करता हूँ। या मुझे लगता है कि मैं करता हूँ। शुक्र है कि कबीर के लिए मेरे मन में ऐसी भावनाएँ नहीं हैं।
मुझे तुम्हारी बात पर यकीन नहीं है। तुम बस मनगढ़ंत बातें बना रहे हो।
'तुम्हें ज़रूर करना चाहिए। वो मुझे पसंद आने लगा है, सच में। मुझे वो अनाकर्षक नहीं लगता। और एक और बात है—मुझे नहीं लगता कि मैं उसके साथ खुद को बेवकूफ बना रही हूँ—खासकर सेक्स के मामले में।'
मालती उसे घूरती रही। ये कैसी बेवकूफी भरी बात है!
और कबीर के साथ?
‘कबीर के साथ—मुझे बस पता नहीं—’
मालती ने कुछ नहीं कहा। उसने लता की ओर देखे बिना धीरे से अपना सिर हिलाया, मानो वह अपने ही विचारों में खोई हुई हो।
लता ने कहा: 'क्या आपको क्लॉ की वो पंक्तियाँ याद हैं जिनमें कहा गया है: "मेरा मानना है कि मानवीय आकर्षण दो अलग-अलग प्रकार के होते हैं"?'
फिर से मालती ने कुछ नहीं कहा, बस अपना सिर हिलाया।

खैर, वे कुछ इस तरह हैं:
मेरे विचार से, मानवीय आकर्षण दो अलग-अलग प्रकार के होते हैं।
एक ऐसी चीज जो केवल उत्तेजित करती है, बेचैन करती है और आपको असहज महसूस कराती है;
दूसरा यह कि—
खैर, मुझे ठीक से याद नहीं है, लेकिन वो एक शांत, कम उन्मादी प्रेम की बात करते हैं, जो आपको वहीं आगे बढ़ने में मदद करता है जहाँ आप पहले से ही बढ़ रहे थे, "जहाँ मैं अब तक उदास था वहाँ जीने में"—मैंने इसे कल ही पढ़ा है, यह अभी तक मेरे दिमाग में पूरी तरह से नहीं बैठा है, लेकिन इसमें वो सब कुछ कहा गया है जिसे मैं खुद व्यक्त नहीं कर सकता। क्या आप समझ रहे हैं मेरा मतलब? . . . मालती?'
मलाती ने कहा, 'मैं बस इतना समझती हूँ कि दूसरों की बातों पर जीना मुमकिन नहीं। तुम सोने और चाँदी दोनों के ताबूत फेंक रही हो, और तुम्हें लगता है कि काँसे के ताबूत से भी तुम्हें उतनी ही किस्मत मिलेगी जितनी अंग्रेजी साहित्य में लिखी बातों से मिलती है। खैर, मुझे उम्मीद है कि तुम्हें मिलेगी, सचमुच उम्मीद है। लेकिन ऐसा नहीं होगा। बिल्कुल नहीं।'
'मालू, तुम्हें भी वो पसंद आने लगेगा।'
मलाती ने कोई जवाब नहीं दिया।
लता ने मुस्कुराते हुए आगे कहा, 'तुम उससे मिली भी नहीं हो। और मुझे याद है कि पहले तो तुमने प्राण को पसंद करने से इनकार कर दिया था।'
'मुझे उम्मीद है कि आप सही हों।' मालती की आवाज़ थकी हुई थी। लता और कबीर दोनों के लिए उसका दिल दुखी था।
लता ने उसे खुश करने की कोशिश करते हुए कहा, 'ये पोर्टिया और बासानियो से ज़्यादा नाला और दमयंती जैसी लगती हैं। हरेश के पैर ज़मीन को छूते हैं, उसके शरीर पर धूल, पसीना और एक परछाई है।

बाकी दोनों कुछ ज़्यादा ही ईश्वरीय और अलौकिक हैं, इसलिए मेरे लिए ठीक नहीं हैं।'

'तो तुम निश्चिंत हो,' मालती ने अपनी सहेली के चेहरे को निहारते हुए कहा। 'तुम खुद से संतुष्ट हो। और तुम्हें पता है कि तुम क्या करने वाली हो। अच्छा, मुझे जिज्ञासावश ही बता दो, उसे पूरी तरह से नकारने से पहले, क्या तुम कम से कम कबीर को एक पत्र तो लिखोगी?'

लता के होंठ कांपने लगे।

'मैं चैन से नहीं हूँ—बिल्कुल नहीं—' वह रोते हुए बोली। 'यह आसान नहीं है—मालू, तुम कैसे सोच सकती हो कि यह आसान है? मुझे खुद भी ठीक से नहीं पता कि मैं कौन हूँ या क्या कर रही हूँ—मैं इन दिनों न तो पढ़ सकती हूँ और न ही सोच सकती हूँ—सब कुछ मुझ पर हावी हो रहा है। मैं उसके साथ होते हुए भी असहनीय हो जाती हूँ, और उसे देखे बिना भी नहीं रह सकती। मुझे कैसे पता चलेगा कि मुझे क्या करना चाहिए और क्या नहीं? मैं बस यही उम्मीद करती हूँ कि मुझमें अपने फैसले पर अडिग रहने का साहस हो।'

18.22

मान घर पर या बगीचे में अपने पिता के साथ बैठा रहता था या प्राण या वीना से मिलने जाता था। इसके अलावा वह बहुत कम ही कुछ करता था। जेल में रहते हुए वह सईदा बाई से मिलने के लिए बहुत उत्सुक था, लेकिन अब जेल से बाहर आने के बाद उसने पाया कि उसकी यह उत्सुकता अचानक गायब हो गई है। सईदा ने उसे एक पत्र भेजा, जिसका उसने कोई जवाब नहीं दिया। फिर सईदा ने उसे एक और पत्र भेजा, जो पहले से ज़्यादा ज़रूरी था, जिसमें उसने सईदा को छोड़ने के लिए फटकार लगाई, लेकिन इसका भी कोई असर नहीं हुआ।

मान को पढ़ने का ज़्यादा शौक नहीं था, लेकिन इन दिनों वह पूरी सुबह

अखबारों के साथ बिताता था, अंतरराष्ट्रीय खबरों से लेकर विज्ञापनों तक सब कुछ पढ़ता था। अब जब फ़िरोज़ खतरे से बाहर था, तो उसे अपनी और आरोपपत्र तैयार होने के बाद उसके साथ क्या होगा, इस बात की चिंता सताने लगी थी।

फिरोज लगभग बीस दिनों तक अस्पताल में भर्ती रहे, जिसके बाद डॉक्टरों ने उन्हें बैतर हाउस वापस ले जाने की अनुमति दी। वे शारीरिक रूप से कमजोर थे, लेकिन उनकी हालत में सुधार हो रहा था। इम्तियाज ने उनकी देखभाल का जिम्मा संभाला, ज़ैनब ब्रह्मपुर में रहकर उनकी सेवा करती रहीं, और नवाब साहब उन पर नजर रखते हुए उनके पूर्ण स्वस्थ होने की प्रार्थना करते रहे। उनका दिमाग अभी भी भ्रमित और बेचैन था, और वे कभी-कभी नींद में भी चिल्ला उठते थे। उनके मुंह से निकली ये अधूरी बातें, जिनका पहले किसी को कोई मतलब नहीं होता था, अब उनके पास बैठे किसी भी व्यक्ति के लिए अफवाहों के संदर्भ में समझ में आ जाती थीं।

नवाब साहब ने लगभग दो दशक पहले धर्म की ओर रुख किया था। इसका एक कारण यह था कि शराब के नशे में चूर होने के बाद उन्हें अपने किए पर गहरा पछतावा हुआ था, और दूसरा कारण उनकी पत्नी का शांत स्वभाव था। उन्हें हमेशा से विद्वतापूर्ण और विश्लेषणात्मक कार्यों में रुचि थी, लेकिन कामुक स्वभाव के कारण उन्होंने अपनी ज़रूरतों और सुखों को नज़रअंदाज़ कर दिया था। उनके जीवन में यह बदलाव अचानक आया था; और वे अपने बच्चों को उन पापों और पश्चाताप से बचाना चाहते थे जिनसे वे स्वयं गुज़रे थे। उनके बच्चे जानते थे कि उन्हें शराब पीना पसंद नहीं था, इसलिए वे उनकी उपस्थिति में कभी शराब नहीं पीते थे। जहाँ तक उनके पोते-पोतियों की बात है, वे उन्हें कभी भी एक युवा या यहाँ तक कि अधेड़ उम्र के व्यक्ति के रूप में कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

उन्होंने अपने नाना-जान को जीवन भर एक शांत, धर्मनिष्ठ बूढ़े व्यक्ति के रूप में जाना था, जिन्हें केवल वे ही उनकी लाइब्रेरी में परेशान कर सकते थे—और जिन्हें भूत-प्रेत की कहानी सुनाकर आसानी से सोने से पहले आराम करने के लिए मनाया जा सकता था। नवाब साहब अपने पिता की बेवफ़ाइयों को भली-भांति समझते थे और जहाँ एक ओर उन्हें अपनी बेटी के लिए बहुत सहानुभूति थी, वहीं दूसरी ओर उन्हें अपने जीवन में अपनी पत्नी को पहुँचाए गए कष्टों की याद आ गई। ज़ैनब नहीं चाहती थी कि वह उसके पति से बात करें। उसे सांत्वना की ज़रूरत थी, लेकिन राहत की उम्मीद नहीं थी।

नवाब साहब को एक बार फिर कष्ट सहना पड़ा, लेकिन इस बार न केवल अतीत की यादों से, बल्कि दुनिया की मौजूदा राय से भी, और सबसे बुरी बात यह थी कि उनके बच्चे उनके बारे में क्या सोचते होंगे। सईदा बाई को दी जा रही उनकी आर्थिक सहायता को ठुकराए जाने का उन्हें कोई अर्थ समझ नहीं आ रहा था। राहत से ज़्यादा उन्हें इस बात से परेशानी हो रही थी। वे तसनीम को अपनी बेटी नहीं मानते थे, न ही इस अदृश्य प्राणी के लिए उनके मन में कोई स्नेह था, लेकिन वे नहीं चाहते थे कि उसे कष्ट हो। न ही वे चाहते थे कि सईदा बाई अब दुनिया के सामने अपनी सुविधानुसार कुछ भी प्रकाशित करने के लिए स्वतंत्र हों। उन्होंने ईश्वर से इस चिंता के अयोग्य होने के लिए क्षमा मांगी, लेकिन वे इसे भुला नहीं पा रहे थे।

पिछले एक महीने में वह अपनी लाइब्रेरी में और भी सिमटकर बैठ गए थे, लेकिन फ़िरोज़ के बिस्तर के पास जाना और भोजन के समय उनके सामने आना उनके लिए बेहद कष्टदायक था। हालाँकि, उनके बच्चे यह बात समझते थे और पहले की तरह ही उनके प्रति सम्मानजनक व्यवहार करते रहे। फ़िरोज़ की बीमारी या बीते समय की घटनाओं को परिवार के बंधन को तोड़ने नहीं दिया गया। प्रार्थना की गई, मांस का स्टू परोसा

गया, कबाब परोसे गए, और औपचारिक शिष्टाचार के साथ उठने की अनुमति ली गई। उन्हें कुछ भी ऐसा नहीं कहा गया या दिखाया गया जिससे उनकी बेचैनी और बढ़ जाए। उन्हें अभी तक फ़िरोज़ के निधन की सूचना देने वाले पर्चे नहीं मिले थे।

और अगर मैं मर जाता, तो फिरोज़ ने मन ही मन सोचा, इस ब्रह्मांड को क्या फर्क पड़ता? मैंने किसी के लिए क्या किया है? मैं एक साधारण सा आदमी हूँ, दिखने में सुंदर, लेकिन आसानी से भुला दिया जाने वाला। इम्तियाज़ एक समझदार आदमी है, दुनिया के लिए कुछ काम का है। मेरे पीछे बस एक छड़ी, मेरे परिवार का दुख और मेरे दोस्त के लिए भयानक खतरा ही रह जाता।

उसने मान से एक-दो बार मिलने की गुहार लगाई थी, लेकिन प्रेम निवास तक यह संदेश किसी ने नहीं पहुँचाया था। इम्तियाज़ को इस मुलाकात से न तो अपने भाई को और न ही अपने पिता को कोई लाभ नज़र आ रहा था। वह मान को इतना अच्छी तरह जानता था कि उसे पता था कि हमला अचानक, बिना सोचे-समझे, लगभग अनजाने में हुआ था। लेकिन उसके पिता इसे इस तरह नहीं देखते थे; और इम्तियाज़ उन्हें किसी भी अनावश्यक भावनात्मक आघात, घृणा या आरोप-प्रत्यारोप से बचाना चाहता था। इम्तियाज़ का मानना था कि श्रीमती महेश कपूर की मृत्यु वास्तव में उनके दोनों घरों में घटी अचानक और भयानक घटनाओं के कारण ही हुई थी। वह अपने पिता को ऐसी किसी भी बात से और अपने भाई को मान के बारे में या उस रात की यादों के ताज़ा होने से तसनीम के बारे में किसी भी तरह की बेचैनी से बचाना चाहता था।

तसनीम, हालांकि वह निस्संदेह इम्तियाज की सौतेली बहन थी, इम्तियाज के लिए उसका कोई महत्व नहीं था। ज़ैनब भी, हालांकि जिज्ञासु थी, समझ गई थी कि व्याख्या के द्वार बंद करने में ही बुद्धिमत्ता निहित है।

अंत में, फ़िरोज़ ने मान के लिए एक पत्र लिखा, जिसमें बस इतना लिखा था: 'प्रिय मान, कृपया मुझसे मिलने आओ। मैं तुमसे मिलने के लिए ठीक हूँ। फ़िरोज़।' उसे अपने भाई पर ज़रूरत से ज़्यादा लाड़-प्यार करने का शक था, और वह इससे तंग आ चुका था। उसने वह पत्र गुलाम रसूल को दिया और उससे कहा कि वह यह सुनिश्चित करे कि यह प्रेम निवास तक पहुँच जाए।

मान को दोपहर बाद चिट्ठी मिली और उसने ज़रा भी संकोच नहीं किया। अपने पिता को बिना बताए, जो एक बेंच पर बैठकर कुछ विधायी दस्तावेज़ पढ़ रहे थे, वह बैतर हाउस की ओर चल पड़ा। शायद यह बुलावा, किसी मजिस्ट्रेट की अदालत का समन नहीं, वही था जिसका वह अपनी निष्क्रियता और तनाव की स्थिति में लंबे समय से इंतज़ार कर रहा था। जैसे ही वह भव्य मुख्य द्वार के पास पहुँचा, उसने सहज रूप से चारों ओर देखा, उसे उस मादा बंदर की याद आ गई जिसने कुछ देर पहले उस पर हमला किया था। इस बार उसके पास कोई लाठी नहीं थी।

एक नौकर ने उसे अंदर आने के लिए कहा। लेकिन तभी नवाब साहब के सचिव मुर्तजा अली वहाँ से गुजर रहे थे और उन्होंने बड़ी सख्ती से पूछा कि वे यहाँ क्या कर रहे हैं। उन्हें महेश कपूर के परिवार के किसी भी सदस्य को अंदर न आने देने का सख्त आदेश दिया गया था। मान, जिसका कुछ समय पहले तक मन उसे फांसी लगाने के लिए कहता, जेल के जीवन से इतना हिल गया था कि उसने अपने से निचले दर्जे के लोगों के आदेश मान लिए। उसने फिरोज का पत्र उन्हें दिखाया।

मुर्तजा अली चिंतित दिखे लेकिन उन्होंने तुरंत सोच-विचार किया। इम्तियाज अस्पताल में थे, ज़ैनब ज़नाना में थीं और नवाब साहब नमाज़ पढ़ रहे थे। नोट में स्पष्ट संदेश था। उन्होंने गुलाम रसूल को मान को कुछ मिनटों के लिए फ़िरोज़ से मिलने ले जाने को कहा और मान से पूछा कि

क्या वह कुछ पीना चाहेंगे।
मान को खुद को तरोताजा करने के लिए एक गैलन व्हिस्की चाहिए थी।
'नहीं, धन्यवाद,' उसने जवाब दिया।
अपने दोस्त को देखकर फ़िरोज़ का चेहरा खिल उठा। उसने कहा, 'तुम आ गए! मुझे यहाँ जेल में होने जैसा लग रहा है। मैं एक हफ्ते से तुम्हारा इंतज़ार कर रहा था, लेकिन अधीक्षक ने संदेश भेजने पर रोक लगा दी। उम्मीद है तुम मेरे लिए थोड़ी व्हिस्की लाए होगे।'
मान रोने लगा। फ़िरोज़ का चेहरा इतना पीला पड़ गया था मानो वह अभी-अभी मौत के मुंह से लौटा हो।
'मेरे निशान को देखो,' फ़िरोज़ ने माहौल को हल्का करने की कोशिश करते हुए कहा। उसने चादर नीचे सरकाई और अपना कुर्ता ऊपर खींच लिया।
'शानदार,' मान ने रोते हुए कहा। 'कनखजूरा।'
वह फिरोज के बिस्तर के पास गया और अपने दोस्त के चेहरे को छुआ।
उन्होंने कुछ मिनट तक बात की, दोनों ने एक-दूसरे को ठेस पहुंचाने वाली किसी भी बात से बचने की कोशिश की, सिवाय इसके कि वे ऐसा तरीका अपनाएं जिससे दर्द कम होने की संभावना अधिक हो।
'तुम अच्छे दिख रहे हो,' मान ने कहा।
फिरोज ने कहा, 'तुम झूठ बोलने में कितने खराब हो। मैं तुम्हें ग्राहक के रूप में नहीं लूंगा... आजकल मेरी एकाग्रता भंग हो गई है। मेरा मन भटकता रहता है।' उसने मुस्कुराते हुए कहा, 'यह काफी दिलचस्प है।'
वे एक मिनट तक चुप रहे। मान ने अपना माथा फ़िरोज़ के माथे से लगाया और दर्द भरी आह भरी। उसने अपने किए पर खेद व्यक्त नहीं किया।
वह फिरोज के पास बैठ गया।
'क्या दर्द हो रहा है?' उसने पूछा।

'हां, कभी-कभी।'

‘क्या घर पर सब ठीक हैं?’

‘जी हां,’ फ़िरोज़ ने कहा। ‘आपके पिताजी कैसे हैं?’

'उम्मीद के मुताबिक,' मान ने कहा।

फिरोज ने मान की मां के बारे में अपने दुख को व्यक्त नहीं किया, बल्कि अफसोस से अपना सिर हिलाया, और मान समझ गया।

कुछ देर बाद वह उठ गया।

फिरोज ने कहा, 'फिर आना।'

‘कब? कल?’

नहीं—दो या तीन दिनों में।

‘आपको मुझे एक और पत्र भेजना होगा,’ मान ने कहा। ‘वरना मुझे बाहर निकाल दिया जाएगा।’

फिरोज ने मुस्कुराते हुए कहा, 'ये लीजिए, मुझे पुराना नोट दीजिए। मैं इसे दोबारा सत्यापित कर दूंगा।'

जब मान घर की ओर चल रहा था, तो उसे यह बात समझ में आई कि उन्होंने सईदा बाई या तसनीम या जेल के उसके अनुभव या उसके खिलाफ आने वाले मामले के बारे में सीधे बात करने से परहेज किया था, और वह खुश था।

18.23

उस शाम, डॉक्टर बिलग्रामी प्रेम निवास में मान से मिलने आए। उन्होंने मान को बताया कि सईदा बाई उनसे मिलना चाहती हैं। डॉक्टर बिलग्रामी थके हुए लग रहे थे, और मान उनके साथ जाने के लिए राजी हो गया। यह मुलाकात काफी कष्टदायक रही।

सईदा बाई की आवाज़ अभी भी पहले जैसी नहीं थी, हालांकि उनके चेहरे पर पहले जैसी रौनक लौट आई थी। उन्होंने मान को जेल से रिहा होने के

बाद से न मिलने पर फटकार लगाई। क्या वह इतना बदल गया था? उन्होंने मुस्कुराते हुए पूछा। क्या वह खुद बदल गई थीं? क्या उसे उनके पत्र नहीं मिले थे? किस बात ने उसे दूर रखा था? वह बीमार थीं, वह उससे मिलने के लिए बेताब थीं। उनकी आवाज़ भर्रा गई। वह उसके बिना पागल हो रही थीं। उन्होंने अधीरता से डॉक्टर बिलग्रामी को विदा किया और चाहत और दया से मान की ओर मुड़ीं। वह कैसा है? वह बहुत दुबला-पतला लग रहा था। उन्होंने उसके साथ क्या किया था?

‘दाग साहब—आपको क्या हो गया है? आपका क्या होगा?’

'मुझें नहीं पता।'

उसने कमरे में चारों ओर देखा। 'खून?' उसने पूछा।

‘कौन सा खून?’ उसने पूछा। एक महीना बीत चुका था।

कमरे में गुलाबों के इत्र और सईदा बाई की महक फैली हुई थी। उदास और मोहक अंदाज़ में वह दीवार के सहारे लगे कुशनों पर पीछे की ओर झुक गई। लेकिन मान को लगा जैसे उसके चेहरे पर एक निशान है, और उसका चेहरा मानो वैरिकाज़ नसों वाली विक्टोरिया की तस्वीर बन गया।

उनकी मां की मृत्यु, फ़िरोज़ का खतरा, उनकी अपनी बदनामी और घोर अपराधबोध ने उन्हें इतना झकझोर दिया था कि उनके मन में खुद के और सईदा बाई के प्रति तीव्र घृणा उत्पन्न होने लगी थी। शायद वे सईदा बाई को भी पीड़ित समझने लगे थे। लेकिन घटनाओं की बेहतर समझ होने के बावजूद, वे अपनी भावनाओं पर अधिक नियंत्रण नहीं कर पाए। जो कुछ हुआ था, उससे वे बुरी तरह आहत हो चुके थे और सईदा बाई का वर्तमान रूप उन्हें भयभीत कर रहा था। वे सईदा बाई के चेहरे को घूरते रहे।

उसने सोचा, मैं रशीद जैसा बनता जा रहा हूँ। मुझे ऐसी चीजें दिखाई दे रही हैं जिनका कोई अस्तित्व नहीं है।

वह खड़ा हुआ, उसका चेहरा पीला पड़ गया था। उसने कहा, 'मैं जा रहा

हूँ।'
'आपकी तबीयत ठीक नहीं है,' उसने कहा।
'नहीं—नहीं, मैं नहीं हूँ,' उसने कहा।
उसके व्यवहार से आहत और निराश होकर, वह उसे उसके रवैये, उसके घर, उसकी प्रतिष्ठा और तसनीम के साथ किए गए दुर्व्यवहार के लिए फटकार लगाने ही वाली थी। लेकिन उसके हैरान चेहरे को देखकर उसे समझ आ गया कि इसका कोई फायदा नहीं होगा। वह किसी और ही दुनिया में था—उसके स्नेह या आकर्षण से परे। उसने अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया।
'क्या तुम ठीक हो?' मान ने अनिश्चितता से पूछा, मानो वह अतीत की किसी बात को याद करने की कोशिश कर रहा हो। 'जो कुछ भी हुआ है, उसके लिए मैं ही जिम्मेदार हूँ।'
'तुम मुझसे प्यार नहीं करते—मुझे यह मत बताओ कि तुम करते हो—मैं इसे देख सकती हूँ—' वह रोते हुए बोली।
'प्यार—' मान ने कहा। 'प्यार?' अचानक उसकी आवाज़ में क्रोध झलकने लगा।
'और वो शॉल भी जो मेरी मां ने मुझे दी थी—' सईदा बाई ने कहा।
उसकी बातें उसे बिल्कुल समझ नहीं आ रही थीं।
"उन्हें तुम्हें कुछ मत करने देना—" उसने ऊपर देखे बिना कहा, वह नहीं चाहती थी कि वह उसके आँसू देखे। मान ने नज़रें फेर लीं।
18.24
29 फरवरी को मान को उसी मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया, जिसके सामने वह पहले पेश हुआ था। पुलिस ने सबूतों के आधार पर अपने रुख पर पुनर्विचार किया था। मान का इरादा फिरोज को जान से मारने का नहीं था, लेकिन पुलिस का मानना था कि उसका इरादा 'ऐसी शारीरिक

चोट पहुँचाने का था जो सामान्य परिस्थितियों में मृत्यु का कारण बन सकती है'। यह उसे हत्या के प्रयास से संबंधित धारा के दायरे में लाने के लिए पर्याप्त था। मजिस्ट्रेट जांच के नतीजों से संतुष्ट थे और उन्होंने आरोप तय कर दिए।

मैं, सुरेश माथुर, ब्रह्मपुर स्थित प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट, एतद्द्वारा आपको, मान कपूर, पर निम्नलिखित आरोप लगाता हूँ:

कि आपने 4 जनवरी, 1952 को या उसके आसपास ब्रह्मपुर में एक ऐसा कृत्य किया, अर्थात् आपने बैतर निवासी नवाबजादा फिरोज अली खान पर चाकू से वार किया, इस जानकारी और परिस्थितियों में कि यदि उस कृत्य से आपकी मृत्यु हो जाती, तो आप हत्या के दोषी होते और आपने उक्त कृत्य द्वारा बैतर निवासी नवाबजादा फिरोज अली खान को चोट पहुंचाई, और इस प्रकार भारतीय दंड संहिता की धारा 307 के तहत दंडनीय अपराध किया, जो सत्र न्यायालय के संज्ञान में आता है।

और मैं एतद्द्वारा निर्देश देता हूं कि उक्त न्यायालय द्वारा उक्त आरोप पर आपका मुकदमा चलाया जाए।

मजिस्ट्रेट ने मान पर घातक हथियार से गंभीर चोट पहुंचाने का आरोप भी लगाया। इन दोनों अपराधों में आजीवन कारावास की सजा हो सकती थी। दोनों ही जमानती नहीं थे, इसलिए मजिस्ट्रेट ने जमानत रद्द कर दी। मान को मुकदमे की सुनवाई तक जेल में ही रहने का आदेश दिया गया।

18.25

29 फरवरी को ही, ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में रीडर के पद पर प्राण के चयन की पुष्टि अकादमिक परिषद द्वारा कर दी गई। लेकिन वह, उनका परिवार और उनके पिता इतने गहरे शोक में डूबे हुए थे कि इस खबर से उन्हें जरा भी राहत नहीं मिली।

प्राण, जिसके मन में इन दिनों मृत्यु का ही ख्याल छाया रहता था, एक

बार फिर पुल मेले में रामजप बाबा द्वारा उसकी माता से कही गई बात पर सोचने लगा। यदि उसकी पाठक संख्या वास्तव में किसी मृत्यु के कारण थी, तो बाबा का तात्पर्य किसकी मृत्यु से था? निश्चित रूप से, उसकी माता का निधन हो चुका था; लेकिन यह बात चयन समिति को प्रभावित नहीं कर सकती थी। या क्या प्रोफेसर मिश्रा ने सचमुच यही कहा था कि उन्होंने प्राण के परिवार के प्रति सहानुभूति के कारण उसके हितों का ध्यान रखा था?

प्राण ने सोचा, मैं भी अंधविश्वासी होता जा रहा हूँ। अगला नंबर मेरे पिता का होगा।

लेकिन सौभाग्य से, उनके पिता की मानसिक स्थिति को देखते हुए, अगले कुछ दिनों में उनके पास मान के बचाव को व्यवस्थित करने की कोशिश करने के अलावा कुछ और काम था जिसमें वे व्यस्त रह सकते थे।

18.26

मार्च की शुरुआत में, महेश कपूर, चुनाव हारने के बावजूद, एक बार फिर विधायक के रूप में अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने के लिए कहा गया। पूर्व प्रदेश की विधानसभा का चुनाव हो चुका था, लेकिन उच्च सदन, विधान परिषद के अप्रत्यक्ष चुनाव अभी नहीं हुए थे। इसलिए विधानमंडल पूर्ण नहीं था। संविधान के अनुसार, विधानमंडल के सत्रों के बीच छह महीने का अंतराल नहीं होना चाहिए था, और इसलिए पुराने विधानमंडल को संक्षिप्त सत्र के लिए विवश होना पड़ा। इसके अलावा, बजट का समय था; और यद्यपि औचित्य के अनुसार बजट को नए विधानमंडल द्वारा पारित किया जाना आवश्यक था, वित्तीय प्रक्रियाओं को किसी न किसी तरह से सुचारू रखना था। यह आगामी वित्तीय वर्ष के पहले एक तिहाई, अप्रैल से जुलाई 1952 तक के महीनों के लिए 'अधिसूचित

मतदान' के माध्यम से किया जाना था। इस अधिसूचित मतदान को पुराने, जल्द ही भंग होने वाले विधानमंडल द्वारा पारित किया जाना था, जिसके महेश कपूर सदस्य थे।

मार्च की शुरुआत में, विधानसभा के दोनों सदन राज्यपाल का भाषण सुनने के लिए संयुक्त सत्र में मिले। राज्यपाल को धन्यवाद प्रस्ताव के बाद हुई चर्चा कांग्रेस सरकार पर ही एक तीखी और तीखी बहस में बदल गई: सरकार की नीतियों और चुनाव कराने के तरीके, दोनों पर ही सवाल उठे। सबसे मुखर होने वालों में वे लोग थे जो चुनाव हार चुके थे और जिनकी आवाज़ इस विशाल कक्ष में अब शायद ही सुनाई देगी—या कम से कम अगले पाँच वर्षों तक तो नहीं। चूंकि राज्यपाल राज्य के संवैधानिक (और काफी हद तक औपचारिक) प्रमुख थे, इसलिए उनका भाषण अधिकतर मुख्यमंत्री एस.एस. शर्मा द्वारा लिखा गया था।

राज्यपाल के भाषण में हाल की घटनाओं, सरकार की उपलब्धियों और भविष्य की योजनाओं का संक्षेप में उल्लेख किया गया। कांग्रेस पार्टी ने निचले सदन में तीन-चौथाई सीटें जीती थीं और (अप्रत्यक्ष चुनाव प्रणाली के कारण) ऊपरी सदन में भी उसे भारी बहुमत मिलना तय था। चुनावों पर चर्चा करते हुए राज्यपाल ने कहा, 'मुझे पूरा विश्वास है कि यह आपके लिए भी उतना ही संतोष का कारण होगा जितना मेरे लिए है, कि मेरे लगभग सभी मंत्री नई विधानसभा में फिर से चुने गए हैं।' इस बिंदु पर सदन में उपस्थित कई लोगों ने महेश कपूर की ओर देखा।

राज्यपाल ने खेद व्यक्त करते हुए कहा कि पूर्व प्रदेश जमींदारी एवं भूमि सुधार अधिनियम को लागू करने में देरी हो रही है, जिसके कारण मेरी सरकार के नियंत्रण से बाहर हैं। उनका तात्पर्य यह था कि इस अधिनियम की संवैधानिकता पर सर्वोच्च न्यायालय द्वारा अभी निर्णय लिया जाना बाकी है। उन्होंने आगे कहा, “लेकिन मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूं

कि जैसे ही कानूनी रूप से संभव होगा, इसे लागू करने में जरा भी देरी नहीं की जाएगी।"

बाद की बहस में बेगम आबिदा खान ने इन दोनों मुद्दों को उठाया। उन्होंने तीखे शब्दों में कहा कि यह सर्वविदित है कि सरकार ने चुनाव जीतने के लिए अनुचित तरीकों का इस्तेमाल किया था—जिसमें मंत्रियों की यात्रा के लिए सरकारी कारों का उपयोग भी शामिल था; और इस दुरुपयोग के बावजूद, जनता की नज़र में ज़मींदारों की ज़मीन हड़पने के सबसे बड़े दोषी माने जाने वाले मंत्री का अपनी सीट हारना बिलकुल उचित था। बेगम आबिदा खान ने अपनी सीट जीत ली थी, लेकिन उनकी पार्टी के अधिकांश अन्य सदस्य हार गए थे, और वे बेहद क्रोधित थीं।

उनके बयानों से हंगामा मच गया। कांग्रेस के सदस्य उनके द्वारा पारित कानून को फिर से उठाने के प्रयास से नाराज थे। यहां तक कि एल.एन. अग्रवाल, जो महेश कपूर के चुनाव न जीतने से मन ही मन खुश थे, ने भी उस चुनाव में कांग्रेस द्वारा नहीं बल्कि 'कट्टर सांप्रदायिकों' द्वारा अपनाए गए तरीकों की निंदा की। इस पर बेगम आबिदा खान ने हत्या के प्रयास और 'हमारे साझा प्रांत की धरती से अल्पसंख्यक समुदाय को मिटाने की एक जघन्य साजिश' का जिक्र करना शुरू कर दिया। अंत में अध्यक्ष को उन्हें इस तरह बोलने से रोकना पड़ा। उन्होंने पहले तो यह बताया कि जिस मामले का जिक्र वह कर रही थीं, वह विचाराधीन है, और दूसरा यह कि यह पूरा मुद्दा इस सवाल से असंबद्ध है कि सदन को राज्यपाल के भाषण के लिए धन्यवाद देने हेतु मतदान करना चाहिए या नहीं।

महेश कपूर सिर झुकाए, चुपचाप और बिना कोई प्रतिक्रिया दिए यह सब सुनते रहे। वे वहाँ इसलिए उपस्थित थे क्योंकि यह उनका कर्तव्य था। वे लगभग कहीं और होना चाहते थे। बेगम आबिदा खान, अपने भतीजे को मृत्युशय्या पर लेटे हुए देखकर, स्पीकर से ईश्वर से न्याय की प्रार्थना करते

हुए ज़ोर से बोलीं कि उसके इस जघन्य घाव के लिए ज़िम्मेदार हत्यारे को उचित दंड दिया जाए। नाटकीय ढंग से उन्होंने महेश कपूर की ओर उंगली उठाई और फिर उसे आकाश की ओर कर दिया। महेश कपूर ने अपनी आँखें बंद कर लीं और जेल में मान की छवि देखी; वे अच्छी तरह जानते थे कि अगर उनके पास कभी अपने बेटे को बचाने की शक्ति या प्रभाव था भी, तो अब नहीं था।

धन्यवाद प्रस्ताव उम्मीद के मुताबिक भारी बहुमत से पारित हो गया। विधायी कार्यवाही के अन्य कई पहलुओं पर भी विचार किया गया—जैसे राष्ट्रपति या राज्यपाल द्वारा विभिन्न विधेयकों को मंजूरी की घोषणा, निर्वाचित सांसदों के इस्तीफे और विधानमंडल के सत्र में न होने के कारण आवश्यक हो चुके विभिन्न अध्यादेशों को सदन में पेश करना। इसके बाद होली के लिए सत्र कुछ दिनों के लिए स्थगित कर दिया गया, जिसके बाद विधेयक पर मतदान हुआ और संक्षिप्त बहस के बाद इसे पारित कर दिया गया।

18.27

इस साल प्रेम निवास में होली बिल्कुल नहीं मनाई गई, न ही प्राण के घर पर। भांग के नशे में चूर मान और इम्तियाज, प्रोफेसर मिश्रा को गुलाबी पानी से भरे एक बड़े टब में धकेल रहे थे; रंग में लथपथ सविता हंस-हंसकर रो रही थी और बदला लेने की कसम खा रही थी; श्रीमती महेश कपूर यह सुनिश्चित कर रही थीं कि रुधिया से आए उनके सभी पोते-पोतियों को उनकी मनपसंद मिठाइयाँ मिलें; गहनों से सजी सईदा बाई मंत्रमुग्ध पुरुषों के सामने ग़ज़लें गा रही थीं, जबकि उनकी पत्नियाँ बालकनी से उत्सुकता भरी नापसंदगी से उन्हें देख रही थीं: ये दृश्य किसी भी याद रखने वाले के लिए किसी अवास्तविक कल्पना की तरह प्रतीत होते होंगे।

प्राण ने थोड़ा सा सूखा गुलाबी और हरा पाउडर लिया और अपनी बेटी के माथे पर थोड़ा सा लगा दिया, बस इतना ही। यह उसकी पहली होली थी, और उसने दुनिया में व्याप्त अंधकार और दुख से अनजान होने के लिए उसे आशीर्वाद दिया। लता ने पढ़ने की कोशिश की, लेकिन वह पढ़ नहीं पाई। उसका दिल भरा हुआ था, मान और उसके परिवार के गहरे दुख के साथ-साथ अपनी आने वाली शादी की चिंता से भी। श्रीमती रूपा मेहरा, जब लता के हरेश को पत्र लिखने के एकतरफा फैसले के बारे में सुना, तो वह क्रोधित और प्रसन्न दोनों हुईं। लता ने असली खबर सुनाने से पहले ही अपनी माँ के लिए हरेश का प्रेम संदेश और खेद के शब्द बता दिए थे। अपनी बेटी को गले लगाने और उससे सलाह न लेने के लिए उसे कम से कम एक जोरदार थप्पड़ मारने के बीच फंसी श्रीमती रूपा मेहरा फूट-फूट कर रो पड़ीं।

कहने की जरूरत नहीं है, शादी होने का तो कोई सवाल ही नहीं था।

प्रेम निवास। हरेश के बारे में अरुण के विचारों को देखते हुए, लता ने सनी पार्क से भी शादी करने से इनकार कर दिया था। बालीगंज स्थित चटर्जी का घर कई कारणों से शादी के लिए उपयुक्त नहीं था। ऐसे में केवल डॉ. किशन चंद सेठ का घर ही बचा था।

अगर डॉ. किशन चंद सेठ श्रीमती रूपा मेहरा की जगह होते, तो वे लता को ज़रूर थप्पड़ मार देते। आख़िरकार, उन्होंने अरुण के एक साल का होने पर श्रीमती रूपा मेहरा को थप्पड़ मारा था क्योंकि उन्हें लगा था कि वह बच्चे को ठीक से संभाल नहीं रही थीं। उन्होंने अक्षमता या अनुशासनहीनता को कभी बर्दाश्त नहीं किया था। अब उन्होंने अपनी पोती की शादी को, जिसमें उनसे शुरू से सलाह नहीं ली गई थी, मंज़ूरी देने से ही साफ़ इनकार कर दिया, मदद करने की तो बात ही छोड़िए। उन्होंने श्रीमती रूपा मेहरा से कहा कि उनका घर कोई होटल या धर्मशाला नहीं

है, और उन्हें कहीं और देखना होगा।
उन्होंने आगे कहा, 'और बस यही बात है।'
श्रीमती रूपा मेहरा ने आत्महत्या करने की धमकी दी।
'जी हां, ऐसा ही करो,' उसके पिता ने अधीरता से कहा। वह जानते थे कि वह जीवन से बहुत प्यार करती थी, खासकर तब जब वह जायज रूप से दुखी हो सकती थी।
‘और मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देख पाऊंगी,’ उसने आगे कहा। ‘पूरी जिंदगी में कभी नहीं। मुझे अलविदा कह दो,’ वह सिसकते हुए बोली, ‘क्योंकि यह आखिरी बार है जब तुम अपनी बेटी को देख रहे हो।’ इतना कहकर वह रोते हुए उसकी बाहों में गिर पड़ी।
डॉ. किशन चंद सेठ लड़खड़ाकर पीछे हट गए और लगभग अपनी छड़ी गिरा ही दी। उनकी भावनाओं और इस खतरे की गंभीरता से अभिभूत होकर वे भी फूट-फूटकर रोने लगे और अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उन्होंने कई बार अपनी छड़ी ज़मीन पर पटकी। देखते ही देखते सब कुछ शांत हो गया।
श्रीमती रूपा मेहरा ने हांफते हुए कहा, 'मुझे उम्मीद है पार्वती को बुरा नहीं लगेगा। वह बहुत अच्छी है—बहुत अच्छी—।'
‘अगर उसने ऐसा किया तो मैं उसे निकाल दूंगा,’ डॉ. किशन चंद सेठ चिल्लाए। ‘पत्नी को तो तलाक दिया जा सकता है—लेकिन बच्चों को कभी नहीं!’ ये शब्द—जो उन्हें कहीं पहले भी सुनाई दिए थे—उन्हें फिर से फूट-फूटकर रोने पर मजबूर कर दिया।
कुछ मिनट बाद जब पार्वती खरीदारी करके लौटी और गुलाबी रंग की ऊंची एड़ी के जूते दिखाते हुए बोली, 'किशी डार्लिंग, देखो मैं लवली से क्या लाई हूं,' तो उसके पति ने कमजोर सी मुस्कान दी, क्योंकि वह उसे उस असुविधा के बारे में बताने से डर रहा था जो उसने अभी-अभी अपने

ऊपर ले ली थी।

18.28

नवाब साहब को महेश कपूर द्वारा वारिस से फिरोज के स्वास्थ्य के बारे में पूछे गए प्रश्न की जानकारी थी। उन्हें यह भी पता था कि मतगणना समाप्त होने के बाद महेश कपूर ने पुनर्गणना से इनकार कर दिया था। बाद में उन्हें अपने मुंशी से पता चला कि उन्होंने चुनाव याचिका दायर करने से भी इनकार कर दिया था।

'लेकिन वह चुनाव याचिका क्यों दायर करना चाहेंगे? और किसके खिलाफ?' नवाब साहब ने कहा।

'वारिस के खिलाफ,' मुंशी ने कहा और उसे घातक गुलाबी रंग के कुछ पर्चे थमा दिए।

नवाब साहब ने एक पोस्टर पढ़ा और गुस्से से उनका चेहरा पीला पड़ गया। पोस्टर में मौत का इतना बेशर्मी भरा और अधार्मिक इस्तेमाल किया गया था कि उन्हें आश्चर्य हुआ कि भगवान का क्रोध वारिस पर, या उन पर, या फिरोज पर क्यों नहीं उतरा, जो इस अत्याचार का निर्दोष पात्र था। मानो दुनिया की नजरों में उनकी छवि पहले से ही काफी खराब न हुई हो, अब महेश कपूर उनके बारे में क्या सोचते होंगे?

फिरोज—चाहे वह अपने पिता के बारे में कुछ भी सोचता हो—ईश्वर की कृपा से अंततः खतरे से बाहर था। वहीं महेश कपूर का बेटा जेल में पड़ा था और कई वर्षों तक उसकी आजादी छिनने का खतरा मंडरा रहा था। नवाब साहब ने सोचा, हालात कितनी अजीब तरह से पलट गए थे, और मान का संकट और महेश कपूर का दुख—जिनके लिए उन्होंने कभी बड़े दुख से प्रार्थना की थी—अब उन्हें कितना कम संतोष दे रहे थे।

श्रीमती महेश कपूर के चौथे में शामिल न होने पर उन्हें शर्मिंदगी महसूस हुई। उस समय फ़िरोज़ को संक्रमण हो गया था और उनकी हालत गंभीर

थी—लेकिन अब नवाब साहब ने खुद से पूछा कि क्या उनके बेटे को इतना गंभीर खतरा था कि वे आधा घंटा भी नहीं निकाल सकते थे और दुनिया की निगाहों का सामना करते हुए कम से कम अंतिम संस्कार में अपना चेहरा नहीं दिखा सकते थे? बेचारी, वह ज़रूर इस डर से मर गई होंगी कि न तो उनका बेटा और न ही उनका बेटा गर्मियों तक जीवित रह पाएगा, और यह जानते हुए कि मान कम से कम उनके अंतिम समय में भी नहीं आ पाएगा। यह जानना कितना दर्दनाक रहा होगा; और उनकी अच्छाई और उदारता इसके लायक बिल्कुल नहीं थी।

कभी-कभी वो अपनी लाइब्रेरी में बैठते-बैठते थकान से सो जाते थे। गुलाम रसूल उन्हें दोपहर या रात के खाने के लिए जगा देते थे, जब भी ज़रूरी होता। गर्मी भी बढ़ रही थी। बाहर अंजीर के पेड़ से तांबे का काम करने वाले की छोटी-छोटी लगातार आवाज़ें आने लगी थीं। यहाँ लाइब्रेरी में, धर्म, दर्शन या खगोल विज्ञान के चिंतन में खोए हुए, दुनिया भी छोटी लगने लगती थी, निजी संपत्ति और महत्वाकांक्षाओं, दुखों और अपराधबोध की तो बात ही छोड़िए। या फिर, मस्त की कविताओं के अपने प्रस्तावित संस्करण में खोए हुए, वो अपने आसपास की दुनिया के शोर को भूल जाते। लेकिन नवाब साहब ने पाया कि वो किसी भी चीज़ को एकाग्रता से नहीं पढ़ पा रहे थे। वो खुद को एक पन्ने को घूरते हुए पाते, और सोचते कि पिछले एक घंटे से वो कहाँ थे।

एक सुबह उन्होंने ब्रह्मपुर क्रॉनिकल में आबिदा खान द्वारा सदन में की गई अपमानजनक व्यक्तिगत टिप्पणियों के बारे में पढ़ा, और यह भी कि महेश कपूर ने बचाव या स्पष्टीकरण के तौर पर एक शब्द भी नहीं कहा। उन्हें अपने दोस्त के लिए बहुत दुख हुआ। उन्होंने अपनी भाभी को फोन किया।

‘अबीदा, मैंने जिन चीजों के बारे में पढ़ा है, उन्हें कहने की क्या

आवश्यकता थी?’

अबिदा हंस पड़ी। उसका देवर कमज़ोर और हद से ज़्यादा सतर्क था, और लड़ने में कभी कामयाब नहीं हो सकता था। उसने कहा, 'अरे, उस आदमी से आमने-सामने लड़ने का यह मेरा आखिरी मौका था। अगर वह न होता, तो क्या आपको लगता है कि आपकी और आपके बेटों की विरासत इतने खतरे में होती? और विरासत की बात ही छोड़िए, आपके बेटे की जान का क्या?'

‘अबीदा, हर चीज की एक सीमा होती है।’

'जब मैं वहां पहुंच जाऊंगा, तो मैं रुक जाऊंगा। और अगर मैं नहीं रुका, तो मैं किनारे से नीचे गिर जाऊंगा। यही मेरी चिंता है।'

‘अबिदा, दया करो—’

‘दया? उस आदमी के बेटे को फ़िरोज़ पर कैसी दया आई? या उस बेबस औरत पर—’ आबिदा अचानक रुक गई। शायद उसे लगा कि उसकी सहनशक्ति खत्म हो गई है। काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। आखिरकार उसने चुप्पी तोड़ते हुए कहा: ‘ठीक है, मैं इस मामले में आपकी सलाह मान लूंगी। लेकिन मुझे उम्मीद है कि वह कसाई जेल में सड़ जाए।’ उसने नवाब साहब की पत्नी के बारे में सोचा, जो उसके जीवन में ज़नाना की इकलौती रोशनी थी, और उसने आगे कहा: ‘कई सालों तक।’

नवाब साहब को पता था कि मान फिर से जेल जाने से पहले बैतर हाउस में फिरोज से मिलने दो बार आया था। मुर्तजा अली ने उन्हें यह बात बताई थी और यह भी बताया था कि फिरोज ने ही उसे आने के लिए कहा था। अब नवाब साहब ने अपने मन में यह सवाल उठाया: अगर फिरोज ने अपने दोस्त को माफ करने का फैसला किया था, तो ऐसा कौन सा कानून था जो उसकी जान लेने पर अड़ा रहा?

उस रात वह फ़िरोज़ के साथ अकेले भोजन कर रहे थे। यह आमतौर पर बहुत कष्टदायक होता था: वे एक-दूसरे से बात करने की कोशिश करते थे, लेकिन वास्तव में कुछ भी नहीं बोलते थे। लेकिन आज रात उन्होंने अपने बेटे की ओर मुड़कर कहा: 'फ़िरोज़, उस लड़के के विरुद्ध क्या सबूत हैं?'

‘सबूत, अब्बा?’

मेरा मतलब है, अदालत के दृष्टिकोण से।

उसने पुलिस के सामने अपना जुर्म कबूल कर लिया है।

क्या उसने मजिस्ट्रेट के सामने अपना अपराध स्वीकार किया है?

फ़िरोज़ को थोड़ा आश्चर्य हुआ कि यह कानूनी विचार उसके पिता के मन में आया, न कि उसके मन में। ‘आप सही कह रहे हैं, अब्बा,’ उसने कहा। ‘लेकिन बाकी सारे सबूत तो हैं—उसका भाग जाना, उसकी पहचान, हम सबके बयान—मेरे और वहाँ मौजूद बाकी लोगों के।’ उसने अपने पिता को ध्यान से देखा, यह सोचते हुए कि उनके लिए अपनी चोट या उससे जुड़े दूसरे मामले के बारे में इशारों में भी बात करना कितना मुश्किल होगा। थोड़ी देर बाद उसने कहा: ‘जब मैंने बयान दिया था, मैं बहुत बीमार था; मेरा दिमाग़ उलझन में हो सकता था, ज़ाहिर है। शायद अभी भी उलझन में है—यह सब मुझे सोचना चाहिए था, आपको नहीं।’

एक मिनट तक दोनों में से कोई चुप नहीं रहा। फिर फ़िरोज़ ने बोलना शुरू किया: 'अगर मैं चाकू पर गिर जाता—मान लो ठोकर खाकर—और वह उसके हाथ में होता, तो नशे में होने के कारण वह सोच सकता था कि उसने ही ऐसा किया है—और ऐसा हो भी सकता था—ऐसा हो भी सकता था—'

'अन्य लोग।'

‘हाँ—बाकी लोग। इससे उनके बयानों और उसके गायब होने की बात

समझ में आ जाएगी,' फ़िरोज़ ने बोलना जारी रखा, मानो पूरा दृश्य एक बार फिर उसकी आँखों के सामने बहुत स्पष्ट रूप से, बहुत धीरे-धीरे गुजर रहा हो। लेकिन जो दृश्य पहले स्पष्ट था, उसके कुछ सेकंड अब धुंधले पड़ने लगे थे।

उनके पिता ने कहा, 'प्रेम निवास में पहले ही बहुत कुछ हो चुका है। और तथ्यों के एक ही समूह की कई तरह से व्याख्या की जा सकती है।'

इस आखिरी टिप्पणी ने उन सभी के मन में अलग-अलग विचार उत्पन्न किए।

'जी अब्बा,' फ़िरोज़ ने शांत और कृतज्ञता भरे स्वर में कहा, और उसके हृदय में पुराने सम्मान की भावना फिर से जागृत हो गई।

18.29

मान का मुकदमा दो सप्ताह बाद जिला एवं सत्र न्यायाधीश के समक्ष पेश होना था। नवाब साहब और महेश कपूर दोनों ही छोटे से न्यायालय में उपस्थित थे। फिरोज पहले गवाहों में से एक था। अभियोजन पक्ष का वकील, पुलिस को दिए गए उसके बयान के वाक्यों को शांत आत्मविश्वास के साथ फिरोज से पढ़वा रहा था, तभी फिरोज ने कहा:

'और फिर मैं लड़खड़ाकर चाकू पर गिर पड़ा।'

वकील ने कहा, 'मुझे खेद है। आपने क्या कहा?'

मैंने कहा, 'मैं लड़खड़ा गया और उस चाकू पर गिर पड़ा जो उसने अपने हाथ में पकड़ रखा था।'

सरकारी वकील पूरी तरह से स्तब्ध रह गया। लाख कोशिश करने के बावजूद, वह फ़िरोज़ के बयान को नकार नहीं सका। उसने अदालत में शिकायत की कि गवाह राज्य के प्रति शत्रुतापूर्ण हो गया है और उससे जिरह करने की अनुमति मांगी। उसने फ़िरोज़ से कहा कि उसका बयान पुलिस को दिए गए उसके बयान से मेल नहीं खाता। फ़िरोज़ ने जवाब

दिया कि बयान देते समय वह बीमार था और उसकी याददाश्त धुंधली थी। ठीक होने के बाद ही उसकी याददाश्त साफ हुई। अभियोजक ने फ़िरोज़ को याद दिलाया कि वह खुद एक वकील है और उसने शपथ ली है। फ़िरोज़, जो अभी भी पीला दिख रहा था, मुस्कुराते हुए बोला कि वह इस बात से भली-भांति परिचित है, लेकिन वकीलों की याददाश्त भी पूरी तरह से सही नहीं होती। उसने उस दृश्य को कई बार याद किया था और अब उसे यकीन था कि वह किसी चीज़ से टकराया था—उसे लगा कि वह तकिया रहा होगा—और उस चाकू पर गिर गया था जिसे मान ने अभी-अभी सईदा बाई से छीना था। 'वह बस वहीं खड़ा रहा।' फिरोज ने मददगार लहजे में कहा, 'मुझे लगता है कि उसे लगा था कि उसने ही यह किया है,' हालांकि वह सुनी-सुनाई बातों या दूसरों की मानसिक स्थिति की व्याख्या पर आधारित साक्ष्यों की सीमाओं से पूरी तरह अवगत था।

मान कटघरे में बैठा अपने दोस्त को घूर रहा था, पहले तो उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि आखिर हो क्या रहा है। धीरे-धीरे उसके चेहरे पर बेचैनी और हैरानी के भाव फैल गए।

इसके बाद सईदा बाई की पूछताछ हुई। वह गवाह के कटघरे में खड़ी थीं, उनके चेहरे पर बुर्का था जो दिखाई नहीं दे रहा था, और उन्होंने धीमी आवाज़ में बात की। उन्होंने बचाव पक्ष के वकील की इस दलील को सहर्ष स्वीकार कर लिया कि उन्होंने जो देखा वह घटनाक्रम की इस व्याख्या से मेल खाता है। बिब्बो भी सहमत थे। अन्य सबूत—शॉल पर फ़िरोज़ का खून, रेलवे क्लर्क द्वारा मान की पहचान, चौकीदार की याददाश्त, इत्यादि—उन दो-तीन महत्वपूर्ण, लगभग घातक, पलों के दौरान क्या हुआ था, इस सवाल पर कोई प्रकाश नहीं डाल पाए। और अगर मान ने फ़िरोज़ को चाकू नहीं मारा था, अगर फ़िरोज़ बस उसके हाथ में पकड़े चाकू पर गिर गया था, तो 'ऐसी शारीरिक चोट पहुँचाने का

इरादा' का सवाल ही बेमानी हो जाता है जो सामान्य तौर पर मृत्यु का कारण बन सकती है।

न्यायाधीश को यह समझ में नहीं आया कि इतनी बुरी तरह घायल व्यक्ति जानबूझकर उसे चोट पहुंचाने वाले व्यक्ति की रक्षा करने के लिए क्यों अपनी जान जोखिम में डालेगा। गवाहों के बीच मिलीभगत का कोई सबूत नहीं था, न ही बचाव पक्ष द्वारा किसी को रिश्वत देने का कोई प्रयास किया गया था। न्यायाधीश इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि मान निर्दोष था।

उन्होंने मान को दोनों आरोपों से बरी कर दिया और उन्हें तुरंत रिहा करने का आदेश दिया।

महेश कपूर ने अपने बेटे को गले लगाया। वह भी स्तब्ध रह गए। उन्होंने अदालत की ओर रुख किया, जो अब शोरगुल से भरी हुई थी, और नवाब साहब को फ़िरोज़ से बात करते देखा। उनकी नज़रें एक पल के लिए मिलीं। महेश कपूर की आँखों में हैरानी और कृतज्ञता का भाव था।

नवाब साहब ने जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ते हुए हल्के से सिर हिलाया और अपने बेटे से बात करने के लिए फिर से मुड़ गए।

18.30

प्राण का यह अनुमान गलत था कि उसके पिता अंधविश्वासी हो जाएंगे। हालांकि, महेश कपूर ने अंधविश्वास को स्वीकार करने की दिशा में एक अस्थिर कदम जरूर उठाया। मार्च के अंत में, रामनवमी से कुछ दिन पहले, उन्होंने वीणा और श्रीमती टंडन के अनुरोध पर परिवार और कुछ मित्रों के लिए प्रेम निवास में रामचरितमानस का पाठ आयोजित करने की सहमति दी।

वह क्यों मान गए, यह बात उन्हें खुद भी स्पष्ट नहीं थी। उनकी पत्नी ने पिछले साल पाठ करने का अनुरोध किया था और उन्होंने उस अनुरोध को उनसे जोड़ लिया था। उनकी पत्नी ने तो यहाँ तक कहा था कि उनकी

मृत्युशय्या पर उन्हें रामचरितमानस का एक भाग—लंका में हनुमान जी का प्रसंग—पढ़ाया जाए। शायद महेश कपूर को इस बात का पछतावा था कि उन्होंने पहले उनकी पत्नी को मना कर दिया था—या शायद वह अब किसी को भी मना करने की हिम्मत खो चुके थे। या शायद—हालाँकि यह संभावना कम ही है कि वह कभी ऐसा कारण स्वीकार करते—शायद वह अपने से परे किसी दयालु और रहस्यमय शक्ति का आभार व्यक्त करना चाहते थे जिसने उनके बेटे को तब सुरक्षित रखा था जब उसका जाना लगभग असंभव लग रहा था और नवाब साहब के साथ उनकी मित्रता की आशा को तब फिर से जगाया था जब वह लगभग टूट चुकी थी।

तीन समधीनों के समूह में से केवल बुजुर्ग श्रीमती टंडन ही उपस्थित थीं। श्रीमती रूपा मेहरा कलकत्ता में थीं और शादी की खरीदारी में व्यस्त थीं। और श्रीमती महेश कपूर की छोटी पीतल की घंटी अब उस छोटे से आले में नहीं बजती थी जहाँ वे पूजा करती थीं।

एक सुबह, जब पाठ चल रहा था, तभी एक सफेद उल्लू उस कमरे में आ गया जहाँ श्रोता बैठे थे। वह कुछ मिनटों तक वहीं रुका, फिर धीरे से बाहर चला गया। दिन के समय इस अशुभ पक्षी की उपस्थिति से सभी घबरा गए और इसे अपशगुन समझने लगे। लेकिन वीणा इससे सहमत नहीं थीं। उन्होंने कहा कि सफेद उल्लू, लक्ष्मी का वाहन होने के कारण, बंगाल में सौभाग्य का प्रतीक है। हो सकता है कि यह परलोक से भेजा गया कोई दूत हो जो उनके लिए सौभाग्य लेकर आया हो और अच्छी खबर लेकर गया हो।

18.31

जब मान जेल में था, तो उसका मन अक्सर रशीद के पीड़ादायक पागलपन और भ्रम में डूबा रहता था। दोनों ही समाज से बहिष्कृत थे, भले ही उसका अपना भ्रम अस्थायी रहा हो। मान को लगता था कि दोनों

में यही अंतर था कि शारीरिक कैद के बावजूद, कम से कम उसे अपने परिवार का प्यार तो मिला था।

उसने प्राण से रशीद को कुछ पैसे भेजने को कहा था, प्रायश्चित करने के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि उसे लगा कि यह व्यावहारिक रूप से उपयोगी हो सकता है। उसे याद था कि कर्ज़न पार्क में उस दिन वह कितना दुबला-पतला और कमजोर दिख रहा था, और वह सोच रहा था कि उसके चाचा द्वारा भेजे गए पैसे और रशीद की कमाई से किराया और खाने का खर्च पूरा होगा या नहीं। मान को डर था कि देर-सवेर ट्यूशन भी बंद हो जाएगी।

जब वह ज़मानत पर बाहर आया, तो उसने रशीद से मुलाक़ात नहीं की, बल्कि गुमनाम रूप से डाक से कुछ और पैसे भेजे। उसे लगा कि उसके लिए, जिस पर एक जघन्य अपराध का आरोप लगा हो, रशीद से व्यक्तिगत रूप से मिलना अप्रत्याशित परिणाम ला सकता है। किसी भी हालत में, इससे रशीद की मानसिक शांति को कोई फ़ायदा नहीं होता।

जब मान निर्दोष पाया गया और अंततः रिहा हो गया, तो उसके विचार एक बार फिर अपने पुराने शिक्षक और पुराने मित्र की ओर मुड़ गए। लेकिन फिर से उसे यह निश्चित नहीं था कि उससे मिलना उचित होगा या नहीं, इसलिए उसने पहले एक पत्र लिखा। उसे कोई जवाब नहीं मिला।

जब दूसरे पत्र का भी न तो उत्तर मिला और न ही वह वापस आया, तो मान ने सोचा कि कम से कम उसे अस्वीकृति तो नहीं मिली। वह रशीद के पते पर गया, लेकिन रशीद वहाँ नहीं था। उसने मकान मालिक और उसकी पत्नी से बात की और उन्हें बताया कि वह उनका दोस्त है। उसे लगा कि वे खुश नहीं हैं। उसने उनसे रशीद का नया पता पूछा, तो उन्होंने कहा कि उन्हें नहीं पता। जब उसने कहा कि उसने हाल ही में रशीद को दो पत्र लिखे थे और पूछा कि वे कहाँ हैं, तो मकान मालिक ने अपनी पत्नी

की ओर देखा, मानो कोई निर्णय लिया हो, अंदर से पत्र निकाले और दोनों मान को दे दिए। वे पत्र खुले नहीं थे।

मान को पता नहीं था कि रशीद को उसके भेजे हुए पैसे मिले थे या नहीं। उसने मकान मालिक से पूछा कि रशीद कब गया था और क्या उसे पहले कोई चिट्ठी मिली थी। उन्होंने बताया कि वह कुछ समय पहले चला गया था, लेकिन मान इससे ज़्यादा सटीक जानकारी नहीं ले सका। वे नाराज़ लग रहे थे, लेकिन रशीद से नाराज़ थे या मान से, यह उसे नहीं पता था।

मान चिंतित होकर प्राण से इतिहास विभाग या रजिस्ट्रार कार्यालय के माध्यम से रशीद का पता लगाने को कहा। दोनों को ही उसके ठिकाने का पता नहीं था। रजिस्ट्रार कार्यालय के एक क्लर्क ने बताया कि रशीद ने विश्वविद्यालय से नाम वापस ले लिया था; उसने कहा था कि जब देश के हित में प्रचार करने की आवश्यकता थी, तब उसने व्याख्यानों में भाग लेने से इनकार कर दिया था।

इसके बाद मान ने बाबा और रशीद के पिता को अपनी सीधी-सादी उर्दू लिपि में पत्र लिखकर रशीद का हालचाल और पता पूछा। मान ने सुझाव दिया कि शायद भालू को पता हो कि वह कहाँ है। उसे संक्षिप्त और सहानुभूतिपूर्ण उत्तर मिला। बाबा ने बताया कि देबरिया में सभी लोग उसके बरी होने से बहुत प्रसन्न हैं और उन्होंने उसके पिता को भी अपनी संवेदनाएँ भेजी हैं। इसके अलावा, भालू और गुप्पी दोनों ने उनसे मान को उनकी संवेदनाएँ भेजने का अनुरोध किया है। अदालत में हुए नाटकीय घटनाक्रम की खबरों से गुप्पी इतना प्रभावित हुआ था कि वह मान के पक्ष में अपने पेशे से सेवानिवृत्त होने की सोच रहा था।

रशीद के बारे में उन्हें कोई खबर नहीं थी, न ही उनका कोई पता। उन्हें आखिरी बार चुनाव प्रचार के दौरान देखा गया था, जब उन्होंने अपने बेबुनियाद आरोपों और अपमानों से लोगों को और भी नाराज कर दिया

था और अपनी ही पार्टी को नुकसान पहुंचाया था। उनकी पत्नी बहुत परेशान थीं, और अब उनके गायब हो जाने से वह बेहद दुखी थीं। मेहर ठीक थी, सिवाय इसके कि—और यहाँ बाबा को थोड़ी नाराजगी हुई—उसके नाना उसे अपने गाँव में अपनी माँ और छोटी बहन के साथ रहने के लिए कह रहे थे।

बाबा ने कहा कि अगर मान को रशीद के बारे में कोई खबर हो तो उसे जल्द से जल्द उन्हें बता देना चाहिए। वे बहुत आभारी होंगे। फिलहाल, दुख की बात है कि भालू को भी कोई खबर नहीं है।

18.32

सईदा बाई संक्षिप्त पेशी के बाद अदालत से चली गई थीं, लेकिन फैसले के आधे घंटे के भीतर ही उन्हें पता चल गया था कि मान सुरक्षित है। उन्होंने उसे बचाने के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया। यह बात वह अपने अनुभव और समझ से समझ गई थीं कि वह अब उनके साथ नहीं रहेगा, लेकिन यह जानकर कि उसकी जवानी कैद और दुख में नहीं बीतेगी, उनके दिल से एक भारी बोझ उतर गया। उन्होंने मान को उसकी सभी कमियों के साथ देखा, लेकिन फिर भी उसे अपने प्यार से अलग नहीं कर सकीं।

शायद सईदा बाई के जीवन में यह पहली बार था जब उन्होंने एकतरफा प्यार किया था। बार-बार उन्हें मान वैसे ही दिखाई देते थे जैसे पहली बार दिखाई दिए थे: प्रेम निवास में उस पहली शाम के उत्साही दाग साहब, जीवंतता, आकर्षण, ऊर्जा और स्नेह से परिपूर्ण।

कभी-कभी उनका मन नवाब साहब की ओर, अपनी माँ की ओर, और अपने उस युवावस्था के दिनों की ओर चला जाता, जब वे पंद्रह साल की उम्र में माँ बन चुकी थीं। “मधुमक्खी को बगीचे में मत आने दो,” वे प्रसिद्ध पंक्ति बुदबुदाती थीं, “ताकि पतंगा बेवजह न मारा जाए।” फिर भी,

कारण और प्रभाव के ये विचित्र और नाजुक संबंध कभी-कभी लाभकारी भी हो सकते थे। क्योंकि उनकी युवावस्था के अपमान और दुर्व्यवहार से ही उनकी प्रिय तसनीम का जन्म हुआ था।

बिब्बो ने सईदा बाई को इन दिनों अंतरिक्ष में इतना समय बिताने के लिए फटकारा। 'कम से कम कुछ गाओ तो सही!' उसने कहा। 'तोते भी मेरे उदाहरण से गूंगे होते जा रहे हैं।'

'चुप रहो, बिब्बो!' सईदा बाई ने अधीरता से कहा। और बिब्बो, अपनी मालकिन से कम से कम एक बार तो कुछ प्रतिक्रिया पाकर खुश हुई और उसने हमला जारी रखा।

बिब्बो ने कहा, 'बिलग्रामी साहब के लिए शुक्र अदा करो। उनके बिना हम सब कहाँ होते?'

सईदा बाई ने जीभ चटकाकर और इशारा करते हुए बात को खारिज कर दिया।

'अपने सबसे बड़े प्रशंसक को भी धन्यवाद दें, जिसने हाल ही में हम पर ध्यान नहीं दिया है,' बिब्बो ने आगे कहा।

सईदा बाई ने गुस्से से देखा। मारह के राजा जाहिरा तौर पर निष्क्रिय इसलिए थे क्योंकि वे प्राचीन शिवलिंग की स्थापना के साथ अपने मंदिर को पवित्र करने की योजनाओं में व्यस्त थे।

'बेचारा मिया मित्थू,' बिब्बो ने उदास स्वर में कहा। 'वह "व्हिस्की!" चिल्लाना भूल जाएगा।'

एक दिन, बिब्बो की निरर्थक बकवास को रोकने के लिए, जो उसकी अपेक्षा से कहीं अधिक कष्टदायक थी, सईदा बाई ने उसे अपना हारमोनियम लाने को कहा और उसे मोती की चाबियों पर उंगलियां फिराने को कहा। लेकिन वह अपने विचारों पर उतना ही नियंत्रण रख पा रही थी जितना कि अपने शयनकक्ष में, जहाँ मान की किताब की तस्वीर

दीवार पर टंगी उसे घूर रही थी। उसने अब उस किताब को मंगवाया और उसे हारमोनियम पर रख दिया, उसके पन्ने एक-एक करके पलटने लगी, कविताओं पर कम और चित्रों पर ज्यादा ध्यान देने लगी। उसकी नज़र कब्रिस्तान में शोकग्रस्त महिला के चित्र पर पड़ी।

उसने सोचा, "मैंने एक महीने से अपनी माँ की कब्र पर दर्शन नहीं किए हैं। एक ठुकराई हुई प्रेमिका के रूप में अपनी इस नई नादानी में मैं एक बेटी के रूप में अपने कर्तव्यों की उपेक्षा कर रही हूँ।" लेकिन जितना अधिक वह अपने बारे में और मान के लिए अपने प्यार की निराशा के बारे में सोचने से बचने की कोशिश करती, उतना ही यह उसे परेशान करता।

और तसनीम का क्या? उसने सोचा। सईदा बाई ने मन ही मन सोचा कि तसनीम की हालत उससे भी बदतर है। बेचारी, वो उस बदकिस्मत तोते से भी ज़्यादा खामोश हो गई थी। इशाक, रशीद, फ़िरोज़—तीन आदमी उसकी ज़िंदगी में आए, हर एक पिछले वाले से ज़्यादा नाइंसाफी भरा, और हर मामले में उसने चुपचाप अपना प्यार पनपने दिया, और उनके अचानक चले जाने को भी चुपचाप सहा। उसने फ़िरोज़ को ज़ख्मी देखा था, अपनी बहन को लगभग गला घोंटते हुए देखा था; उसने शायद अपने बारे में फैली अफवाहों के बारे में सुना भी था, हालाँकि उसकी अजीब खामोशी से इसका कोई संकेत नहीं मिलता था। अब वो मर्दों के बारे में क्या सोचती? या सईदा बाई के बारे में, अगर वो सुनी-सुनाई बातों पर यकीन करती?

सईदा बाई ने सोचा, मैं उसकी मदद के लिए क्या कर सकती हूँ? लेकिन कुछ भी संभव नहीं था। तसनीम से किसी भी महत्वपूर्ण विषय पर बात करना नामुमकिन था।

हालांकि शाम हो चुकी थी और आकाश में कुछ तारे दिखने शुरू हो गए थे, सईदा बाई मन ही मन मिनाई की उस कविता की पंक्तियाँ गुनगुनाने

लगीं, जो भोर के आगमन की घोषणा करती थी। यह उन्हें प्रेम निवास के उस सुखद शाम के बगीचे और उसके बाद के सभी दुख और पीड़ा की याद दिला रही थी। उनकी आवाज़ में आँसू थे, लेकिन उनकी आँखों में नहीं। बिब्बो आकर सुनने लगीं, और तसनीम भी चुपचाप अपने कमरे से ऊपर आईं, ताकि वह सुन सकें जो अब बहुत कम सुनने को मिलता था। उन्हें स्वयं कविता कंठस्थ थी, लेकिन अपनी बहन की आवाज़ में खो जाने के कारण उन्होंने उसे गुनगुनाया तक नहीं।

बैठक समाप्त हो गई है; पतंगे
मोमबत्ती की रोशनी को अलविदा कहो।
प्रस्थान का समय आकाश में अंकित है।
रात में बस कुछ ही तारे दिखाई देते हैं।
जो बचा है वह नहीं बचेगा:
वे भी जल्द ही गायब हो जाएंगे।
यह दुनिया का तरीका है, हालांकि हम,
दुनिया से बेखबर, यहीं सो रहा हूँ।

18.33

रशीद बरसात महल की प्राचीर पर चल रहा था, भूख और भ्रम के कारण उसके विचार धुंधले पड़ गए थे।

अंधकार, नदी और ठंडी संगमरमर की दीवार।
एक ऐसी जगह जहाँ कोई अस्तित्व नहीं है।
न पिता, न माता, न संतान, न पत्नी।
पानी के ऊपर एक रत्न की तरह। वह प्राचीर, वह बगीचा जिसके नीचे से एक नदी बहती है।
न शैतान, न ईश्वर, न इबलीस, न जिब्राईल।
अनंत, अनंत, अनंत, अनंत, गंगा का जल।

ऊपर और नीचे के तारे।
...और कुछ लोग चीख-पुकार में फंस गए, और कुछ
हमने धरती को निगलने के लिए बनाया, और कुछ हम
डूब गए; भगवान उनके साथ कभी अन्याय नहीं करेंगे, लेकिन
उन्होंने खुद को ही नुकसान पहुंचाया।
शांति। कोई प्रार्थना नहीं। अब और प्रार्थना नहीं।
प्रार्थना करने से बेहतर सोना है।
हे मेरे प्यारे प्राणी, तुमने अपना प्राण बहुत जल्दी त्याग दिए। मैंने तुम्हारे लिए स्वर्ग में प्रवेश करना निषिद्ध कर दिया है।
स्वर्ग में एक झरना।
हे भगवान, हे भगवान।

18.34
गंगा के आगे के हिस्से में, धूमधाम और व्यावहारिकता के साथ, अन्य तैयारियां चल रही थीं।
विशाल शिवलिंग लगभग उतना ही बड़ा था जितना पुजारी के मंत्रों में बताया गया था, और गंगा के नीचे लगभग उसी स्थान पर था। लेकिन रेत और गाद की परतों ने उसे ढक रखा था। कुछ दिनों बाद आखिरकार वह गंदे पानी के नीचे से दिखाई दिया, और कुछ और दिनों बाद उसे चरखी की मदद से उठाकर श्मशान घाट की पहली चौड़ी सीढ़ी पर पानी के स्तर से ऊपर लाया गया। वहाँ वह गंगा के किनारे पड़ा रहा, जिसमें वह सदियों से समाया हुआ था, पहले तो केवल मिट्टी और कंकड़ से ढका हुआ, फिर पानी, दूध और घी से धोया गया, जिससे उसका काला ग्रेनाइट जैसा पिंड सूर्य की रोशनी में चमकने लगा।
दूर-दूर से लोग इसे निहारने, इसकी प्रशंसा करने और इसकी पूजा करने

आते थे। वृद्ध स्त्रियाँ पूजा करने आती थीं: गीत गाने, मंत्र पढ़ने, फूल चढ़ाने और खानदानी पुजारी के सिर पर चंदन का लेप लगाने आती थीं। यह एक शुभ संयोग था: शिवलिंग और उनकी जटाओं से निकली नदी।

मारह के राजा ने इतिहासकारों, इंजीनियरों, ज्योतिषियों और पुजारियों को बुलाया था, क्योंकि अब श्मशान घाट की भव्य सीढ़ियों से होते हुए, पुराने ब्रह्मपुर की घनी गलियों से गुजरते हुए, चौक के खुले मैदान में और फिर वहां से उसके अंतिम, विजयी, पुनः प्रतिष्ठित विश्राम स्थल: पूर्ण मंदिर के गर्भगृह तक लिंग की यात्रा की तैयारी करनी थी।

इतिहासकारों ने अन्य समान परियोजनाओं की रसद व्यवस्था के बारे में जानकारी जुटाने का प्रयास किया, उदाहरण के लिए, फिरोज शाह द्वारा अशोक स्तंभ को अंबाला के पास से दिल्ली ले जाना। एक मुस्लिम राजा द्वारा बौद्ध स्तंभ को स्थानांतरित करना मारह के राजा के प्रति घोर तिरस्कार का भाव दर्शाता था। इंजीनियरों ने गणना की कि पच्चीस फुट लंबा, दो फुट व्यास का और छह टन से अधिक वजनी पत्थर के इस बेलनाकार स्तंभ को घाट की खड़ी सीढ़ियों से सुरक्षित रूप से ऊपर ले जाने के लिए दो सौ आदमियों की आवश्यकता होगी। (राजा ने इस अनूठे और भव्य समारोह के लिए चरखी या पुली के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया था।) ज्योतिषियों ने शुभ मुहूर्त निकाला और राजा को सूचित किया कि यदि यह कार्य एक सप्ताह में नहीं हुआ, तो उन्हें चार महीने और प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। नए चंद्रचूड़ मंदिर के नव नियुक्त पुजारियों ने मार्ग में शुभ अनुष्ठानों और उसके गंतव्य पर एक भव्य और उत्सवपूर्ण स्वागत समारोह की योजना बनाई, जो उस स्थान के बहुत करीब था जहाँ वह औरंगजेब के समय में स्थित था।

मुसलमानों ने आलमगिरी मस्जिद हिफाज़त समिति के माध्यम से पश्चिमी दीवार के पीछे अपवित्र शिलाशिम की स्थापना के विरुद्ध निषेधाज्ञा प्राप्त

करने का प्रयास किया था, लेकिन वे सफल नहीं हुए। जिस भूमि पर मंदिर स्थित था, उस पर राजा का स्वामित्व कानूनी रूप से स्पष्ट था। यह भूमि अब लिंग रक्षक समिति द्वारा संचालित और उनके प्रभुत्व वाले एक ट्रस्ट को हस्तांतरित कर दी गई थी।

हिंदुओं में भी कुछ ऐसे लोग थे जो मानते थे कि लिंग को श्मशान घाट के पास ही छोड़ देना चाहिए—क्योंकि वहीं दस पीढ़ियों के पुजारियों ने दुःख और दरिद्रता में इसकी पूजा की थी, और जहाँ यह भक्तों को न केवल शिव महादेव की सृजन शक्ति बल्कि उनकी विनाश शक्ति की भी याद दिलाता था। वंशानुगत पुजारी ने एक प्रकार के परमानंद में दृश्य लिंग की पूजा करने के बाद दावा किया कि इसे अपना उचित स्थान मिल गया है। इसे उस नीची, चौड़ी सीढ़ी पर स्थापित किया जाना चाहिए जहाँ यह संयोगवश पड़ा था, और जहाँ लोगों ने इसे एक बार फिर देखा और पूजा की थी—और जैसे गंगा ऋतुओं के साथ ऊपर-नीचे होती है, वैसे ही यह भी डूबता या उठता हुआ प्रतीत होना चाहिए।

लेकिन मारह के राजा और लिंग रक्षक समिति को यह मंजूर नहीं था। पुजारी ने सूचना देने का अपना कर्तव्य पूरा कर दिया था। लिंग मिल चुका था; उसे स्थापित किया जा चुका था; और उसे आगे भी स्थापित किया जाना था। ऐसे महान कार्य में एक साधारण, भावुक पुजारी का दखल देना उचित नहीं था।

गोल आकार के लट्ठों को नावों द्वारा स्थल पर लाया गया और घाट की सीढ़ियों पर चढ़ाकर दस फुट चौड़े चार समानांतर रोलर का एक मार्ग बनाया गया। डेढ़ सौ फुट ऊपर, जहाँ मार्ग चौड़ी सीढ़ियों से दाहिनी ओर मुड़कर एक संकरी गली में जाता था, वहाँ लट्ठों को इस तरह से रखा गया था कि एक हल्का घुमावदार मार्ग बन सके। यहाँ से लिंग को तिरछे ले जाना था, और इसकी स्थिति बदलने के लिए एक सटीक और विस्तृत

प्रक्रिया तैयार करना आवश्यक था।

निर्धारित दिन पर पक्षियों के चहचहाने से बहुत पहले ही शंख अपनी भव्य, विलापपूर्ण और मंत्रमुग्ध कर देने वाली ध्वनि से गूंजने लगे। लिंग को एक बार फिर स्नान कराया गया और पहले रेशम-सूती कपड़े में और फिर जूट की चटाई में लपेटा गया। मोटी भूरी जूट की चटाई पर बड़ी-बड़ी रस्सियाँ बाँधी गईं, जिनसे अलग-अलग लंबाई की छोटी रस्सियाँ निकली हुई थीं। हजारों गेंदे के फूल चटाई पर बिखेरे गए या उसमें गाड़े गए, और चटाई गुलाब की पंखुड़ियों से ढकी हुई थी। शिव का छोटा ढोल, डमरू, अपनी ऊँची, सम्मोहक थाप से बजने लगा, और पुजारी घंटों तक लाउडस्पीकर के माध्यम से भीड़ के शोरगुल के बीच एक निरंतर मंत्रोच्चार करते रहे।

दोपहर के समय, दिन की भीषण गर्मी में, जो कि सबसे कठिन तपस्या का समय होता है, एक महान शैव अखाड़े के दो सौ नंगे पैर और नंगे पीठ वाले युवा शिष्य, बीस सीढ़ियों में से प्रत्येक पर लगे रोलर्स के दोनों ओर पाँच-पाँच की संख्या में, रस्सियों के कंधों में चुभन के बावजूद आगे की ओर बल लगाते हुए, विशाल लिंग को हिलाने लगे। लट्ठे चरमराए, लिंग धीरे-धीरे, बिना किसी शिकायत के ऊपर की ओर लुढ़का, और जप, गीत, प्रार्थना और कानाफूसी करती भीड़ से विस्मय की एक गहरी आह निकली।

डोम लोग श्मशान घाट पर अपना काम छोड़कर धीरे-धीरे दूर जाते हुए लिंग को आश्चर्य से देखने लगे, और शव बिना किसी देखभाल के जलते रहे।

केवल बेदखल पुजारी और भक्तों के एक छोटे समूह ने ही दुख में गुहार लगाई।

लिंग को धीरे-धीरे ऊपर की ओर लुढ़काया गया, जिसे ऊपर से नियंत्रित झटकों से खींचा जा रहा था। कुछ लोग लोहे की छड़ों से उसे नीचे से

धकेल भी रहे थे। थोड़ी-थोड़ी देर में वे उसके नीचे कीलें गाड़ देते थे ताकि लिंग को खींचने वाले लोग थोड़ी देर आराम कर सकें।

घाट की खड़ी, ऊबड़-खाबड़ सीढ़ियों पर उनके पैरों के तलवे जल रहे थे, ऊपर से सूरज की तेज गर्मी पड़ रही थी और वे मेहनत और प्यास से हांफ रहे थे। लेकिन उनकी लय स्थिर बनी रही और एक घंटे बाद लिंग गंगा से सत्तर फीट ऊपर उठ गया।

सीढ़ियों पर ऊँचाई पर खड़े मारह के राजा ने संतुष्टि से नीचे की ओर देखा और 'हर हर महादेव!' के ऊंचे, आनंदमय, लगभग गर्जनापूर्ण स्वर में जयकारे लगाए। भीषण गर्मी के बावजूद उन्होंने सफेद रेशमी दरबारी पोशाक पहनी हुई थी, उनका भारी शरीर मोतियों और पसीने से लथपथ था, और उन्होंने अपने दाहिने हाथ में एक विशाल स्वर्ण त्रिशूल धारण किया हुआ था।

अपने पिता के समान घमंडी मुस्कान लिए, युवा राजकुमार मारह ने आवेश में आकर 'तेज़! तेज़!' चिल्लाया। रस्सियों के नीचे से रिसने लगे युवा शिष्यों के कंधों पर लगे खून को देखकर वह अत्यधिक उत्तेजित हो गया और उनकी पीठ थपथपाने लगा।

उन आदमियों ने तेज़ी से चलने की कोशिश की। उनकी चाल और भी अनियमित हो गई।

उनके कंधों पर बंधी रस्सियां, पसीने और खून से लथपथ होकर फिसलन भरी हो गई थीं और उनकी पकड़ कुछ हद तक कमजोर पड़ने लगी थी।

मोड़ पर जहाँ सीढ़ियाँ संकरी होकर एक गली में बदल जाती थीं, वहाँ लिंग को एक तरफ घुमाना पड़ता था। इसके आगे से गंगा नदी दिखाई नहीं देती थी।

मोड़ के बाहरी किनारे पर एक रस्सी टूट गई और एक आदमी लड़खड़ा गया। झटके से असमान तनाव की लहर दौड़ गई और लिंग थोड़ा हिल

गया। एक और रस्सी टूटी, फिर एक और, और लिंग हिलने लगा। और अब दहशत की एक लहर पूरे समूह में फैल गई।

'वेजेज डालें—वेजेज डालें!'

'छोड़ना मत—'

'वहीं रहो—इंतजार करो—हमें मत मारो—'

'बाहर निकलो—बाहर निकलो—हम इसे रोक नहीं सकते—'

'पीछे हटो—एक कदम पीछे हटो—तनाव कम करो—' 'रस्सी खींचो—'

'रस्सियाँ छोड़ दो—तुम नीचे खींच लिए जाओगे—' 'हर हर महादेव—'

'भागो—अपनी जान बचाकर भागो—'

'वेजेज—वेजेज—'

एक रस्सी टूटी, फिर दूसरी, जैसे ही लिंग धीरे-धीरे नीचे खिसका, पहले इस तरफ, फिर उस तरफ। आगे खड़े लोगों की चीखें, जिनके शरीर पीछे की ओर सीढ़ियों पर गिर पड़े, विशाल शिलाखंड के खिसकने और फिसलने की धीमी लेकिन फिर भी अधिक भयानक आवाज़ों और नीचे लगे रोलर्स की चरमराहट के साथ मिल गईं। नीचे खड़े लोग इधर-उधर भागने लगे। ऊपर खड़े लोगों ने अपनी रस्सियों को खून से लथपथ उलझा हुआ छोड़ दिया, अपने सदमे में डूबे और घायल साथियों को एक तरफ खींच लिया, और नारंगी रंग के लिंग को घूरने लगे, जिस पर गेंदे के फूल अब तक पूरी तरह से कुचल चुके थे। ढोल की थाप रुक गई। भीड़ दहशत में चीखते हुए तितर-बितर हो गई। लिंग के नीचे घाट की सीढ़ियाँ अचानक सुनसान हो गईं, और बहुत नीचे, डोम भी घाट से भाग गए—साथ ही जलकर मरे हुए लोगों के रिश्तेदार भी।

लिंग ने जल्दबाजी में लगाए गए वेजेज का विरोध किया। लेकिन आधे मिनट के लिए, अगर वह थोड़ा सा भी हिला, तो वह हलचल नगण्य थी।

फिर उसमें हलचल हुई। एक कील खिसक गई। उसमें फिर हलचल हुई

और बाकी कीलें भी खिसक गईं और वह धीरे-धीरे उसी रास्ते से लुढ़कने लगी जिससे वह आई थी।
विशाल लिंग लुढ़कता हुआ, अगली सीढ़ी, फिर अगली, और फिर अगली सीढ़ी को पार करता हुआ, गति बढ़ाता गया। उसके भार से वृक्षों के तने चटक गए, वह बाएँ-दाएँ मुड़ा, लेकिन लुढ़कता ही रहा, नीचे, नीचे, गंगा की ओर तेज़ी से बढ़ता हुआ, अपने रास्ते में बाहें ऊपर उठाए खड़े पुजारी को कुचलते हुए, श्मशान घाट की जलती चिताओं से टकराकर, अंत में गंगा के जल में, उसकी डूबी हुई पत्थर की सीढ़ियों से नीचे, और उसके कीचड़ भरे तल में समा गया।
शिवलिंग एक बार फिर गंगा के तल पर विराजमान हो गया, मैला पानी उसके ऊपर से बहता रहा और उसके रक्त के धब्बे धीरे-धीरे धुलते चले गए।

भाग उन्नीस

19.1

प्रिय कल्पना,
यह पत्र जल्दबाजी में लिखा जा रहा है क्योंकि वरुण फरवरी के अंत में आईएएस साक्षात्कार के लिए दिल्ली आ रहा है, और हमें उम्मीद है कि आप और आपके पिताजी उसे कुछ दिनों के लिए अपने यहाँ ठहरा सकते हैं। यह एक सपने के सच होने जैसा है, हालांकि सिविल सेवा के लिए साक्षात्कार देने वाले पाँच लड़कों में से केवल एक का ही चयन होता है। हम केवल आशा और प्रार्थना कर सकते हैं, क्योंकि ऐसी चीजें पूरी तरह से ईश्वर के हाथ में हैं। लेकिन वरुण ने पहली बाधा पार कर ली है, क्योंकि आईएएस और आईएफएस की लिखित परीक्षा में हजारों लड़के

बैठते हैं और उनमें से बहुत कम को दिल्ली बुलाया जाता है।
जब वरुण को साक्षात्कार की सूचना देने वाला पत्र आया, तो अरुण को इस पर विश्वास ही नहीं हुआ और उसने नाश्ते की मेज पर अपर्णा और नौकरों के सामने, जो मुझे लगता है कि उसकी हर बात समझ गए थे, कुछ अपशब्द कहे। उसने कहा कि ज़रूर कोई गलती हुई होगी, लेकिन यह सच था। लता और हरीश की खुशखबरी के समय मैं ब्रह्मपुर में थी, इसलिए वहाँ नहीं थी। लेकिन जब वरुण ने मुझे पत्र भेजा, तो मैंने प्राण के घर से कलकत्ता तक फोन बुक कराने का खर्च भी उठाया ताकि अपने प्यारे बेटे को बधाई दे सकूँ। मैंने वरुण से सारी बातें और उसकी प्रतिक्रियाएँ पूछीं, जो वह बता सका क्योंकि अरुण और मीनाक्षी घर पर नहीं थे, वे हमेशा की तरह एक पार्टी में गए हुए थे। वह काफी हैरान लग रहा था, लेकिन मैंने उससे कहा कि जीवन में वही मिलता है जो कोई करता है। अब डी.वी., वह साक्षात्कार में हमें एक बार फिर चौंका देगा। प्रिय कल्पना, यह सब तुम पर निर्भर है कि वह अच्छे से खाए, घबराए नहीं, अच्छे से पेश आए और अच्छे कपड़े पहने। साथ ही, वह बुरी संगत और शराब से दूर रहे, हालांकि मुझे यह कहते हुए खेद हो रहा है कि वह इन चीजों के प्रति थोड़ा संवेदनशील है। मुझे पता है कि आप उसका ख्याल रखेंगे, उसे प्रोत्साहन की बहुत जरूरत है।
मैं अब और कोई खबर नहीं लिख रही हूँ क्योंकि मैं जल्दी में हूँ और पिछले पत्र में मैंने आपको लता और हरेश के खुशखबरी के बारे में बताया था, जिसका अभी तक मुझे कोई जवाब या बधाई नहीं मिली है। लेकिन मुझे पता है कि आप अपने पिताजी के कूल्हे के ऑपरेशन में व्यस्त होंगी। मुझे उम्मीद है कि अब वे पूरी तरह से ठीक हो गए होंगे। उनके लिए यह मुश्किल रहा होगा, वे बीमारी से बहुत परेशान हो जाते हैं, और अब वे खुद इसका सामना कर रहे हैं। और आपको भी अपना ख्याल रखना चाहिए।

स्वास्थ्य सचमुच सबसे अनमोल है।
आप दोनों को ढेर सारा प्यार।
आपका,
एमए
(श्रीमती रूपा मेहरा)
पुनश्च: साक्षात्कार समाप्त होने के बाद कृपया मुझे एक टेलीग्राम भेज दें, अन्यथा मुझे नींद नहीं आएगी।
*
वरुण ने घबराकर अपने सहयात्रियों की ओर देखा, क्योंकि दिल्ली के आसपास का ठंडा, सूखा, सपाट ग्रामीण इलाका ट्रेन की खिड़कियों से तेज़ी से गुज़र रहा था। किसी को भी इस बात का एहसास नहीं था कि यह यात्रा उसके लिए कितनी महत्वपूर्ण थी। टाइम्स ऑफ इंडिया के दिल्ली संस्करण को उसने पहले पन्ने से लेकर आखिरी पन्ने तक पूरा पढ़ लिया था—क्योंकि कौन जानता था कि लालची साक्षात्कारकर्ता उससे समसामयिक मामलों के बारे में क्या सवाल पूछ लेंगे?—उसने चुपके से एक विज्ञापन पर नज़र डाली जो मानो उसकी ओर उछल पड़ा था:
डॉ. दुगले को उनके सामाजिक कार्यों (देश और विदेश में) के लिए कई प्रख्यात व्यक्तियों, राजाओं, महाराजाओं और सरदारों द्वारा अत्यधिक सम्मानित और संरक्षण प्राप्त है। डॉ. दुगले भारत के अग्रणी विशेषज्ञ हैं, जिन्हें तंत्रिका दुर्बलता, असमय वृद्धावस्था, क्षीणता, शक्तिहीनता और इसी प्रकार की तीव्र बीमारियों जैसे दीर्घकालिक रोगों में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है। परामर्श पूर्ण गोपनीयता के साथ दिया जाता है।
वरुण अपनी अनगिनत सामाजिक, बौद्धिक और अन्य कमियों के बारे में उदास मन से सोचने लगा। तभी एक और विज्ञापन ने उसका ध्यान आकर्षित किया।

अपने बालों को ब्रायलक्रीम के क्रीमी तेलों से संवारें।
क्रीमयुक्त तेल क्यों? ब्रायलक्रीम टॉनिक तेलों का एक क्रीमयुक्त मिश्रण है। यह
लगाने में आसान, इस्तेमाल करने में साफ-सुथरा और इसकी क्रीमी बनावट सही मात्रा प्रदान करती है।
हर बार ब्रायलक्रीम के सभी अवयवों का उपयोग करें। ब्रायलक्रीम आपको मुलायम, कोमल और चमकदार त्वचा प्रदान करता है।
उन बालों की बात हो रही है जिनकी कई महिलाएं प्रशंसा करती हैं।
आज ही ब्रायलक्रीम खरीदें।
वरुण अचानक बहुत दुखी हो गया। उसे शक होने लगा कि ब्रायलक्रीम लगाने से भी महिलाएं उसकी तारीफ नहीं करेंगी। उसे पता था कि इंटरव्यू में भी वह बाकी सब बातों की तरह ही खुद को मूर्ख साबित करेगा।

*

'नौकर आधे घंटे में आ रहे हैं,' कल्पना गौर ने कोमल स्वर में फुसफुसाते हुए वरुण को धीरे से अपने बिस्तर से उठाया।
'ओह।'
और बेहतर होगा कि आप आधे घंटे के लिए अपने बिस्तर पर सो जाएं, ताकि उन्हें कोई हैरानी न हो।
वरुण ने हैरानी से उसकी ओर देखा। उसने मातृत्व भाव से मुस्कुराते हुए, अपने गले में लिपटी हल्की हरी रजाई को उसके चेहरे पर लपेटा हुआ था।
और फिर आपको नाश्ते और इंटरव्यू के लिए तैयार हो जाना चाहिए। आज आपका बड़ा दिन है।
‘आह।’ वरुण अवाक रह गया।
वरुण, अब चुप मत रहो, इससे काम नहीं चलेगा—कम से कम आज तो

बिल्कुल नहीं। तुम्हें उन्हें प्रभावित करना है और उन्हें मोहित करना है। मैंने तुम्हारी माँ से वादा किया था कि मैं तुम्हारा अच्छे से ख्याल रखूँगी और तुम्हारा आत्मविश्वास बढ़ाऊँगी। क्या तुम्हें आत्मविश्वास महसूस हो रहा है?
वरुण शरमा गया, फिर हल्की सी मुस्कान दी। 'हे हे,' वह घबराकर हँसा, यह सोचकर कि बिना शर्मिंदा हुए बिस्तर से कैसे उठेगा। और कलकत्ता की तुलना में दिल्ली में कितनी ठंड थी! सुबहें तो कड़ाके की ठंड से भरी होती थीं।
'बहुत ठंड है,' उसने धीरे से कहा।
'जानते हो,' कल्पना गौर ने कहा, 'मुझे अक्सर पैरों में जलन महसूस होती है जिससे रात भर परेशानी होती है, लेकिन कल रात मुझे ऐसा कुछ भी महसूस नहीं हुआ। वरुण, तुम कमाल के थे। अब याद रखना, अगर इंटरव्यू के दौरान कभी भी तुम्हें घबराहट महसूस होने लगे, तो कल रात को याद करना और खुद से कहना: "मैं भारत का लौह स्तंभ हूँ।"'
वरुण अब भी स्तब्ध लग रहा था, हालांकि वह दुखी नहीं था।
'मेरी ड्रेसिंग गाउन का इस्तेमाल करो,' कल्पना गौर ने सुझाव दिया।
वरुण ने कृतज्ञता और हैरानी भरी नजरों से उसे देखा।
कुछ घंटों बाद, नाश्ते के बाद, उसने उसके रूप-रंग का बारीकी से निरीक्षण किया, उसकी जेबें टटोलीं, उसकी धारीदार टाई को ठीक किया, उसके बालों में लगी अतिरिक्त ब्रायलक्रीम को पोंछा और फिर से कंघी की।
'लेकिन—' वरुण ने विरोध किया।
अब मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि आप सही समय पर सही जगह पहुंचें।
वरुण ने झगड़ा न खड़ा करने की इच्छा से कहा, 'इसकी कोई जरूरत नहीं है।'
'यह अस्पताल जाते समय मेरे रास्ते में ही है।'

'अह, जब तुम वहाँ पहुँचो तो अपने पिताजी को मेरा प्रणाम कहना।'
'बिल्कुल।'
‘कल्पना?’
‘जी हां, वरुण?’
'तुम्हारी उस रहस्यमयी बीमारी का क्या हुआ जिसके बारे में मां हमें बार-बार बताती रहती थी? उनके अनुसार, वह सिर्फ खुजली वाले धब्बे ही नहीं थे, बल्कि उससे कहीं ज्यादा गंभीर बीमारी थी।'
‘ओह, वो बात?’ कल्पना सोच में पड़ गई। ‘मेरे पिताजी को अस्पताल ले जाते ही सब कुछ अपने आप सुलझ गया। हम दोनों का बीमार होना समझ से परे था।’
संघ लोक सेवा आयोग कनॉट प्लेस में एक अस्थायी इमारत में साक्षात्कार आयोजित कर रहा था, जिसे युद्ध के दौरान बनाया गया था और अभी तक हटाया नहीं गया था। टैक्सी में कल्पना गौर ने वरुण का हाथ हल्के से दबाया। उन्होंने कहा, 'इतने हैरान मत दिखो। और याद रखना, कभी भी 'मुझे नहीं पता' मत कहना; हमेशा कहना, 'मुझे अफसोस है कि मुझे कोई जानकारी नहीं है।' वरुण, तुम बहुत अच्छे दिख रहे हो। अपने भाई से कहीं ज्यादा सुंदर।
वरुण ने हैरानी और कोमलता के मिले-जुले भाव से उसकी ओर देखा और बाहर निकल गया।
प्रतीक्षा कक्ष में उन्होंने कुछ उम्मीदवारों को देखा जो दक्षिण भारतीय लग रहे थे। वे कांप रहे थे। वे दिल्ली के मौसम के लिए उनसे भी कम तैयार थे, और वह दिन विशेष रूप से ठंडा था। उनमें से एक दूसरे से कह रहा था: 'और लोग कहते हैं कि यूपीएससी के अध्यक्ष आपको किताब की तरह पढ़ सकते हैं। जैसे ही आप दरवाजे से अंदर आते हैं, वे आपका आकलन कर लेते हैं। आपके व्यक्तित्व की हर कमजोरी पल भर में

उजागर हो जाती है।'

वरुण के घुटने कांपने लगे। वह बाथरूम गया, अपने पास छिपाकर रखी एक छोटी बोतल निकाली और जल्दी से दो घूंट पी लिए। उसके घुटने शांत हो गए और उसे लगने लगा कि आखिरकार वह शानदार तरीके से व्यवहार करेगा।

'मुझे सच में कोई अंदाजा नहीं है,' उसने अपने आप से दोहराया।

कुछ देर रुकने के बाद उनके एक साथी उम्मीदवार ने पूछा, 'किस बारे में?'

वरुण ने कहा, 'मुझे नहीं पता। मेरा मतलब है, मुझे डर है कि मैं सचमुच आपको नहीं बता सकता।'

*

'फिर मैंने कहा "सुप्रभात", और सबने सिर हिलाया, लेकिन चेयरमैन, जो एक तरह से अड़ियल स्वभाव के व्यक्ति थे, ने "नमस्ते" कहा। मैं एक पल के लिए काफी चौंक गया, लेकिन किसी तरह मैंने इसे स्वीकार कर लिया।'

'और फिर?' कल्पना ने उत्सुकता से पूछा।

फिर उन्होंने मुझे बैठने को कहा। वह एक गोल मेज थी, मैं एक छोर पर बैठा था और वह हट्टा-कट्टा आदमी दूसरे छोर पर। वह मुझे ऐसे देख रहा था मानो मेरे मन में जो भी विचार आए, वह उसे मेरे सोचने से पहले ही पढ़ लेता हो। श्री चटर्जी— नहीं, श्री बैनर्जी, वे उन्हें इसी नाम से बुलाते थे। और वहाँ एक कुलपति और विदेश मंत्रालय से कोई व्यक्ति भी था, और—

'लेकिन कैसा रहा?' कल्पना ने पूछा। 'क्या आपको लगता है कि सब ठीक रहा?'

'मुझे नहीं पता। उन्होंने मुझसे शराबबंदी के बारे में एक सवाल पूछा था,

और मैं अभी-अभी शराब पीकर आया था, इसलिए स्वाभाविक रूप से मैं घबराया हुआ था—'

'तुम अभी-अभी क्या थे?'

'ओह,' वरुण ने शर्मिंदगी भरे लहजे में कहा। 'एक-दो घूंट। फिर किसी ने मुझसे पूछा कि क्या मुझे कभी-कभार सामाजिक तौर पर शराब पीना पसंद है, और मैंने कहा, हाँ। लेकिन मुझे महसूस हुआ कि मेरा गला सूख रहा है, और वह हट्टा-कट्टा आदमी मुझे देखता ही रहा, उसने हल्की सी सूंघ ली और एक पैड पर कुछ लिख लिया। फिर उसने कहा, श्री मेहरा, अगर आपकी पोस्टिंग बॉम्बे जैसे राज्य या कानपुर जैसे जिले में हो, जहाँ शराबबंदी हो, तो क्या आप कभी-कभार सामाजिक तौर पर शराब पीने से परहेज़ करेंगे? तो मैंने कहा, बिल्कुल करूँगा। फिर मेरे दाहिनी ओर बैठे किसी और ने कहा, अगर आप कलकत्ता में दोस्तों से मिलने गए हों, और आपको शराब पेश की जाए, तो क्या आप उसे मना कर देंगे—एक शराबबंदी वाले इलाके के प्रतिनिधि के तौर पर? और मैं देख सकता था कि वे मुझे घूर रहे हैं, दस जोड़ी आँखें, और फिर अचानक मुझे ख्याल आया, मैं तो आयरन फ्रेम हूँ, आखिर ये सब लोग हैं क्या? और मैंने कहा, नहीं, मुझे कोई कारण नहीं दिखता, बल्कि मैं तो उसे अपने पिछले संयम से बढ़े हुए आनंद के साथ पीऊँगा—यही मैंने कहा। "मेरे पिछले संयम से बढ़ा हुआ आनंद।"'

कल्पना हंस पड़ी।

'हां,' वरुण ने संदेह भरे लहजे में कहा। 'ऐसा लगता है कि उन्हें भी यह बात पसंद आई। मुझे नहीं लगता कि मैं उन सभी सवालों के जवाब दे रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे किसी अरुण ने मुझ पर कब्ज़ा कर लिया हो। शायद इसलिए क्योंकि मैंने उसकी टाई पहनी हुई थी।'

उन्होंने और क्या पूछा?

“रेगिस्तानी द्वीप पर मैं अपने साथ कौन सी तीन किताबें ले जाऊँगा, क्या मुझे पता था कि एम.आई.टी. का पूरा नाम क्या है, क्या मुझे लगता था कि पाकिस्तान के साथ युद्ध होगा—और मुझे सच में कुछ याद नहीं है, कल्पना, सिवाय इसके कि उस बुलडॉग जैसे आदमी के पास दो घड़ियाँ थीं, एक कलाई के अंदर और एक बाहर। बड़ी मुश्किल से मैं उसे घूरने से खुद को रोक पा रहा था। शुक्र है कि यह सब खत्म हो गया,” उसने उदास स्वर में कहा। “यह पैंतालीस मिनट तक चला और इसने मेरी उम्र का एक साल कम कर दिया।”

‘क्या आपने पैंतालीस मिनट कहा?’ कल्पना गौर ने उत्साह से कहा।

'हाँ।'

मुझे तुम्हारी माँ को तुरंत एक टेलीग्राम भेजना होगा। और मैंने तय किया है कि तुम्हें दो दिन और दिल्ली में रहना होगा। तुम्हारा यहाँ रहना मेरे लिए बहुत अच्छा है।

‘सच में?’ वरुण ने शर्म से लाल होते हुए कहा।

उसे आश्चर्य हुआ कि क्या यह ब्रायलक्रीम की वजह से हुआ होगा।

*

वरुण बूस्टेड का साक्षात्कार समाप्त हुआ, उम्मीद है कि पिता और कल्पना के बीच प्रेम संबंध सुधरेंगे।

श्रीमती रूपा मेहरा ने मन ही मन प्रसन्नता से कहा, "कल्पना पर हमेशा जरूरत पड़ने पर काम करने के लिए भरोसा किया जा सकता है।"

19.2

कलकत्ता में श्रीमती रूपा मेहरा एक बवंडर की तरह घूमती रहीं, साड़ियाँ खरीदती रहीं, अपने परिवार को सम्मेलनों में ले जाती रहीं, अपने होने वाले दामाद से सप्ताह में दो बार मिलने जाती रहीं, अपनी खरीदारी और

दोस्तों से मिलने के लिए कारों (जिसमें चटर्जी परिवार की बड़ी सफेद हंबर भी शामिल थी) का इंतजाम करती रहीं, अपने सभी रिश्तेदारों को लंबे पत्र लिखती रहीं, निमंत्रण कार्ड डिजाइन करती रहीं, काकोली की तरह फोन पर छाई रहती रहीं और अपनी बेटी की शादी की संभावना पर खुशी, शादी की रात अपनी बेटी के लिए चिंता और इस बात के दुख से बारी-बारी से रोती रहीं कि दिवंगत रघुबीर मेहरा शादी में मौजूद नहीं होंगे। पार्क स्ट्रीट की एक किताबों की दुकान में उसने वैन डे वेल्डे की किताब 'आदर्श विवाह' की एक प्रति देखी और हालाँकि उसमें लिखी बातें उसे शर्मिंदा कर गईं, फिर भी उसने दृढ़ निश्चय से उसे खरीद लिया। 'यह मेरी बेटी के लिए है,' उसने दुकानदार को बताया, जिसने जम्हाई ली और सिर हिलाया।

अरुण ने लता को शादी के निमंत्रण पत्र में गुलाब का डिज़ाइन जोड़ने से रोक दिया। उसने कहा, 'माँ, ऐसी बेवकूफी मत करो। जब लोगों को यह निमंत्रण पत्र मिलेगा, तो वे इसके बारे में क्या सोचेंगे? मैं इसे कभी नहीं भूल पाऊंगा। डिज़ाइन को सादा ही रहने दो।' वह इस बात से बहुत दुखी था कि लता ने उसका आपत्तिजनक पत्र मिलने के बाद उसके घर में शादी करने से इनकार कर दिया था, और वह अपने अधिकार के हनन की भरपाई करने के लिए शादी की सभी व्यावहारिक व्यवस्थाओं को अपने हाथ में लेने की कोशिश कर रहा था—कम से कम वे व्यवस्थाएँ जो कलकत्ता में की जा सकती थीं। लेकिन उसे अपनी माँ और दादाजी के दबदबे का सामना करना पड़ रहा था, जिनके अपने-अपने विचार थे कि क्या ज़रूरी है।

इस बीच, हालांकि हरेश के बारे में उनका दृष्टिकोण नहीं बदला था, उन्होंने अपरिहार्य स्थिति को स्वीकार किया—या कम से कम सहमति में सिर हिलाया—और शालीनता दिखाने का प्रयास किया। उन्होंने एक बार फिर

चेक लोगों के साथ दोपहर का भोजन किया, और इसके साथ ही सनी पार्क में वापसी का निमंत्रण भी स्वीकार किया।

जब श्रीमती रूपा मेहरा ने हरेश से शादी की तारीख पूछी, तो उसने खुशी से झूमते हुए कहा, 'जितनी जल्दी हो उतना अच्छा।' लेकिन लता की परीक्षाओं और इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि उसके पालक माता-पिता हिंदू पंचांग के अशुभ अंतिम महीने में शादी के लिए सहमत नहीं थे, शादी की तारीख अप्रैल की शुरुआत के बजाय अंत में तय की गई।

हरेश के माता-पिता ने लता की कुंडली भी मांगी ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उसके नक्षत्र और ग्रह उसके पति के नक्षत्रों और ग्रहों से मेल खाते हों। उन्हें विशेष रूप से इस बात की चिंता थी कि लता मंगलिक न हो—खगोल विज्ञान की कुछ परिभाषाओं के अनुसार 'मंगल ग्रह की निवासी'—क्योंकि यदि ऐसा हुआ तो हरेश जैसे गैर-मंगलिक व्यक्ति का उससे विवाह करना निश्चित रूप से उसकी असमय मृत्यु का कारण बनेगा।

जब हरेश ने यह अनुरोध आगे बढ़ाया, तो श्रीमती रूपा मेहरा नाराज हो गईं। उन्होंने कहा, 'अगर इन सभी जन्म कुंडली में कोई सच्चाई होती, तो कोई भी युवा विधवा नहीं होती।'

'मैं आपसे सहमत हूँ,' हरेश ने कहा। 'ठीक है, मैं उन्हें बता दूँगा कि लता की कुंडली आज तक किसी ने नहीं बनाई है।'

लेकिन इसके परिणामस्वरूप लता की जन्म तिथि, समय और जन्म स्थान की जानकारी मांगी गई। हरेश के माता-पिता स्वयं लता की कुंडली बनवाने वाले थे।

हरेश लता के जन्मस्थान और जन्मतिथि की जानकारी लेकर कलकत्ता के एक ज्योतिषी के पास गया और उनसे जन्म का ऐसा शुभ समय पूछा जिससे लता के नक्षत्र हरेश के नक्षत्रों से मेल खा सकें। ज्योतिषी ने उसे

दो-तीन समय बताए, जिनमें से एक हरेश ने अपने माता-पिता को भेज दिया। सौभाग्य से, उनके माता-पिता भी उन्हीं सिद्धांतों और गणनाओं का पालन करते थे। इस तरह उनकी चिंता दूर हो गई।

अमित को ज़ाहिर तौर पर निराशा हुई, लेकिन उतनी नहीं जितनी हो सकती थी। चटर्जी परिवार की दौलत संभालने की चिंता से मुक्त होने के बाद, उनका उपन्यास अच्छा चल रहा था, और उनके जीवन की तुलना में उनके उपन्यास में कहीं अधिक महत्वपूर्ण घटनाएँ घट रही थीं। वे उपन्यास में और भी गहराई से डूब गए, और ऐसा करने पर खुद से थोड़ी नाराज़गी जताते हुए, अपनी निराशा और उदासी का इस्तेमाल एक ऐसे किरदार को चित्रित करने के लिए किया जो संयोगवश उनके सामने मौजूद था।

उसने लता को बधाई देने के लिए एक संक्षिप्त पत्र लिखा, कविता में नहीं, और खेल भावना से पेश आने की कोशिश की। लेकिन रूपा मेहरा ने उसे किसी और तरह से व्यवहार करने की अनुमति नहीं दी। चटर्जी के बच्चे, चटर्जी की कार की तरह, लता के प्रभाव में आ गए। अमित, कुकू, दीपांकर और यहाँ तक कि तपन (जब भी उसे सेंट जेवियर्स में अपने होमवर्क से थोड़ा समय मिलता था) को अलग-अलग काम सौंपे गए: मेहमानों की सूची बनाना, उपहारों का चयन करना, दुकानों से मंगाई गई वस्तुओं को इकट्ठा करना। शायद लता जानती थी कि उससे प्रेम करने वाले तीन पुरुषों में से केवल अमित ही ऐसा था जिसे ठुकराने पर उसकी दोस्ती नहीं टूटती।

19.3

एक दोपहर जब श्रीमती रूपा मेहरा ने मीनाक्षी से कहा कि वह उनके साथ ज्वैलर्स के पास चले और हरेश के लिए शादी की अंगूठी खरीदने या कम से कम चुनने में उनकी मदद करे, तो मीनाक्षी ने आलस से अपनी गर्दन झुकाई और कहा:

‘ओह, लेकिन माँ, मुझे आज दोपहर कहीं जाना है।’
लेकिन तुम्हारा कैनास्टा कल है।
‘खैर,’ मीनाक्षी ने धीमी और कुछ हद तक बिल्ली जैसी मुस्कान के साथ कहा, ‘जिंदगी सिर्फ कैनास्टा और रमी ही नहीं है।’
‘तुम कहाँ जा रही हो?’ उसकी सास ने पूछा।
‘ओह, मैं इधर-उधर जा रही हूँ,’ मीनाक्षी ने अपर्णा से कहा और आगे बोली, ‘डार्लिंग, कृपया मेरे बाल छोड़ दो।’
श्रीमती रूपा मेहरा, इस बात से अनभिज्ञ थीं कि उन्हें अभी-अभी काकोली शैली का एक दोहा सुनाया गया था, और इसी वजह से वह नाराज हो गईं।
लेकिन ये वही ज्वैलर्स हैं जिनकी आपने सिफारिश की थी। अगर आप मेरे साथ आएँगी तो मुझे बेहतर सेवा मिलेगी। अगर आप मेरे साथ नहीं आएँगी तो मुझे लोक्खी बाबू के पास जाना पड़ेगा।
‘अरे नहीं माँ, आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। जौहरी की दुकान पर जाइए; उन्होंने ही तो मेरे छोटे सुनहरे नाशपाती बनाए थे।’ मीनाक्षी ने अपनी बीच वाली उंगली के लाल नाखून से कान के ठीक नीचे अपनी गर्दन सहलाई।
इस आखिरी टिप्पणी से श्रीमती रूपा मेहरा बेहद क्रोधित हो गईं। उन्होंने कहा, 'ठीक है, अगर आपको अपनी भाभी की शादी की इतनी ही परवाह है, तो जाओ शहर में मौज-मस्ती करो। मेरा वरुण मेरे साथ आएगा।'
जब वे दुकान पर पहुँचे, तो श्रीमती रूपा मेहरा को श्री जौहरी को प्रभावित करने में ज़रा भी कठिनाई नहीं हुई। दो मिनट के भीतर ही उन्हें बेंटसेन प्राइस, आईएएस और हरेश की प्रशंसाओं के बारे में सब कुछ पता चल गया। जब उन्होंने रूपा को आश्वस्त किया कि वे उनकी इच्छानुसार कुछ भी बना सकते हैं और तीन सप्ताह में उसे तैयार करके दे सकते हैं, तो

उन्होंने एक सोने का चंपकाली हार ('यह खोखली कलियों के साथ बहुत सुंदर है और लता के लिए ज़्यादा भारी भी नहीं है') और एक जयपुर कुंदन सेट - कांच, सोने और तामचीनी से बना एक हार और झुमके - का ऑर्डर दिया।

श्रीमती रूपा मेहरा अपनी बेटी के बारे में खुशी-खुशी बातें कर रही थीं, तभी मिलनसार स्वभाव के श्री जौहरी ने भी अपनी टिप्पणियाँ और शुभकामनाएँ दीं। जब उन्होंने अपने दिवंगत पति का जिक्र किया, जो रेलवे में कार्यरत थे, तो श्री जौहरी ने सेवा में आई गिरावट पर खेद व्यक्त किया। कुछ देर बाद, जब सब कुछ संतोषजनक ढंग से सुलझ गया, तो उन्होंने कहा कि उन्हें जाना होगा। उन्होंने अपना मोंट ब्लैंक पेन निकाला और अपना नाम, पता और टेलीफोन नंबर लिख दिया।

श्री जौहरी चौंक गए।

'आह,' उसने उपनाम और पते को पहचानते हुए कहा।

'जी हां,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'मेरी बहू पहले भी यहां आ चुकी है।'

'श्रीमती मेहरा—क्या यह आपके पति का पदक था जो उन्होंने मुझे अपनी चेन और झुमके बनवाने के लिए दिया था? सुंदर—बिल्कुल छोटे नाशपाती जैसे?'

'जी हां,' श्रीमती रूपा मेहरा ने आंसू रोकने की कोशिश करते हुए कहा। 'मैं तीन सप्ताह में वापस आ जाऊंगी। कृपया इस आदेश को अत्यावश्यक समझें।'

श्री जौहरी ने कहा, "महोदया, मैं अपने कैलेंडर और ऑर्डर देख लेता हूँ। शायद मैं इन्हें आपको ढाई सप्ताह में दे सकूँ।" यह कहकर वे दुकान के पिछले हिस्से में चले गए। वापस आकर उन्होंने काउंटर पर एक छोटा सा लाल डिब्बा रखा और उसे खोला।

अंदर, सफेद रेशम के तकिये पर रघुबीर मेहरा का इंजीनियरिंग का स्वर्ण

पदक रखा हुआ था।

19.4

उस महीने श्रीमती रूपा मेहरा ने दो बार कलकत्ता और ब्रह्मपुर के बीच यात्रा की।

वह पदक वापस पाकर इतनी प्रसन्न हुई ('दरअसल, महोदया, मैं इसे पिघला नहीं सकती थी।') कि उसने तुरंत अपनी बचत से आवश्यक धन निकालकर उसे वापस खरीद लिया और शादी के आवश्यक खर्चों में थोड़ी और बचत करने की कोशिश की। कम से कम कुछ दिनों के लिए तो वह मीनाक्षी और उसके तौर-तरीकों से पूरी तरह संतुष्ट हो गई थी। क्योंकि अगर मीनाक्षी ने श्री जौहरी को यह पदक न दिया होता, तो यह सनी पार्क स्थित घर से बाकी गहनों के साथ चोरी हो जाता और भौतिकी के पदक की तरह हमेशा के लिए गायब हो जाता। मीनाक्षी भी जब जहाँ से लौटी, तो खुश और संतुष्ट दिखी और अपनी सास और वरुण के साथ बहुत ही सौहार्दपूर्ण व्यवहार किया। पदक के बारे में सुनकर उसने तुरंत ही घटनाओं का श्रेय लेने का दावा किया और उसकी सास ने इस पर कोई आपत्ति नहीं जताई।

जब श्रीमती रूपा मेहरा ब्रह्मपुर पहुंचीं तो वह अपने साथ पदक लेकर आईं और परिवार के सभी सदस्यों को गर्वपूर्वक दिखाया, और सभी उनकी अच्छी किस्मत से प्रसन्न हुए।

'लता, तुम्हें खूब मन लगाकर पढ़ाई करनी होगी, अब बस कुछ ही दिन बचे हैं'—श्रीमती रूपा मेहरा ने अपनी बेटी को चेतावनी देते हुए कहा —'वरना तुम अपने पापा जैसी शैक्षणिक सफलता कभी हासिल नहीं कर पाओगी। अपनी शादी और बाकी बातों को अपने ध्यान भटकाने मत दो।' और इतना कहकर उन्होंने लाल और सुनहरे रंग के लिबास में लिपटी हुई किताब 'आदर्श विवाह' उसके हाथों में थमा दी।

‘यह किताब आपको पुरुषों के बारे में सब कुछ सिखाएगी,’ उसने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए कहा। ‘हमारी सीता और सावित्री को भी इन अनुभवों से गुज़रना पड़ा था।’

‘धन्यवाद, माँ,’ लता ने थोड़ी झिझक के साथ कहा।

श्रीमती रूपा मेहरा अचानक शर्मिंदा हो गईं और अपने पिता को फोन करने का बहाना बनाकर अगले कमरे में चली गईं।

लता ने झटपट पैकेज खोला और अपनी पढ़ाई भूलकर डच यौन विशेषज्ञ की सलाह पढ़ने लगी। वह उनकी बातों से जितनी आकर्षित हुई, उतनी ही घृणा भी महसूस कर रही थी।

विभिन्न परिस्थितियों में पुरुष और स्त्री की उत्तेजना के स्तर को दर्शाने वाले कई ग्राफ़ थे, उदाहरण के लिए, संभोग में रुकावट और जिसे लेखक ने 'आदर्श मिलन' कहा था। विभिन्न अंगों के बहुरंगी, विस्तृत रूप से अंकित, लेकिन देखने में कुछ खास आकर्षक न लगने वाले क्रॉस-सेक्शन भी थे। पुस्तक के उपसंहार में लिखा था, 'विवाह एक विज्ञान है। (एच. डी. बाल्ज़ाक)', और डॉ. वैन डी वेल्डे ने स्पष्ट रूप से इस कहावत को न केवल अपने चित्रों में बल्कि अपने वर्गीकरण में भी गंभीरता से लिया था। उन्होंने जिसे वे संकोचपूर्वक अपना ‘सिनोसियोलॉजी’ कहते थे, उसे उन्होंने दो प्रकारों में विभाजित किया: समवर्ती और विपरीत। फिर उन्होंने इन्हें आगे तीन प्रकारों में बाँटा: अभ्यस्त या मध्यकालीन मुद्रा, विस्तार की पहली मुद्रा, विस्तार की दूसरी मुद्रा (निलंबित करने वाली), मोड़ने की मुद्राएँ (उनके अनुसार, चीनी लोगों द्वारा पसंद की जाने वाली), घुड़सवारी की मुद्रा (जिसमें मार्टियल ने हेक्टर और एंड्रोमाचे का वर्णन किया था), स्थिर मुद्रा, अग्र-पार्श्व मुद्रा, उदर मुद्रा, पश्च-पार्श्व मुद्रा, विपरीत मोड़ने की मुद्रा और पश्च-स्थिर मुद्रा। लता इन संभावनाओं को देखकर चकित रह गईं: उन्होंने तो केवल एक ही प्रकार के बारे में सोचा था। (वास्तव में,

मलाती ने भी केवल एक ही प्रकार का उल्लेख किया था।) उन्होंने सोचा कि सेंट सोफिया की ननें इस तरह की पुस्तक के बारे में क्या सोचेंगी।
फुटनोट में निम्नलिखित लिखा था:
डॉ. वैन डे वेल्डे की जेली ('यूगम'): स्नेहक, गर्भनिरोधक और गर्भधारण बढ़ाने वाली दवा के निर्माण की व्यवस्था कर ली गई है। इनका निर्माण मेसर्स हरमन फ्रीज़, 32 ग्रेट डोवर स्ट्रीट, लंदन, एस.ई.1 द्वारा किया जाता है, जो लेखक की अन्य दवाओं और पेसरीज़ ('गैमोफाइल') के भी निर्माता हैं, जिनका उल्लेख 'विवाह में प्रजनन क्षमता और बांझपन' में किया गया है।
समय-समय पर डॉ. वैन डे वेल्डे ने डच कवि कैट्स के उद्धरणों की प्रशंसा की, जिनकी लोक-बुद्धि अनुवाद में अच्छी तरह से व्यक्त नहीं हो पाई थी:
सुनो मेरे दोस्त, और इसका कारण जानो:
सारी सुंदरता देखने वाले की दृष्टि में निहित है।
लेकिन इन सब बातों के बावजूद, लता खुश थी कि उसकी माँ ने उसकी इतनी परवाह की कि अपनी झिझक को दरकिनार करते हुए यह किताब उसके हाथों में दे दी। उसके पास अभी भी जीवन के लिए खुद को तैयार करने के लिए कुछ सप्ताह बाकी थे।
लता खाने के दौरान ज्यादातर समय सोच में डूबी रहीं, प्राण और सविता की ओर देखती रहीं और सोचती रहीं कि क्या सविता को भी अपनी शादी से पहले एक आदर्श विवाह का अनुभव हुआ था। मिठाई के रूप में जेली थी, और श्रीमती रूपा मेहरा और बाकी सभी के आश्चर्य के बीच, लता हंसने लगीं और उन्होंने इसका कारण नहीं बताया।

19.5

लता ने अपनी अंतिम परीक्षाएँ मानो किसी सम्मोहन में बैठकर दीं: कभी-कभी उसे ऐसा लगता था कि वह स्वयं से भिन्न कोई और है। उसे लगा

कि उसने अच्छा प्रदर्शन किया है, लेकिन इसके साथ ही एक अजीब, अलग-थलग सी अनुभूति भी थी—पिछले वर्ष की घबराहट जैसी नहीं, बल्कि ऐसा एहसास जैसे वह अपने शरीर से ऊपर तैर रही हो और ऊँचाई से उसे देख रही हो। एक बार, परीक्षा समाप्त होने के बाद, वह परीक्षा कक्ष से नीचे उतरी और गुलमोहर के पेड़ के नीचे वाली बेंच पर बैठ गई। एक बार फिर, उसके पैरों के नीचे गहरे नारंगी रंग के फूल घनी मात्रा में बिखरे हुए थे। क्या उससे मिले हुए केवल एक वर्ष ही बीता था?

अगर आप उससे इतना प्यार करते हैं, तो क्या आप उसे दुखी छोड़कर खुश रह सकते हैं?

वह कहाँ था? भले ही उसकी परीक्षाएँ उसी इमारत में हो रही थीं, लेकिन परीक्षा के बाद वह सीढ़ियों पर नहीं खड़ा हुआ। वह बेंच के पास से भी नहीं गुजरा।

आखिरी अखबार के तुरंत बाद उस्ताद मजीद खान का संगीत कार्यक्रम था, जिसमें वह मालती के साथ गई थी। कबीर कहीं नजर नहीं आया।

अमित ने उसे बधाई का एक छोटा सा नोट लिखा था, लेकिन किताबों की दुकान और कॉफी हाउस में उनके कुछ पलों के बाद कबीर लगभग गायब ही हो गया था।

मैं किसकी जिंदगी जी रही हूँ? लता ने सोचा। क्या मेरी स्वीकृति महज एक प्रतिक्रिया थी?

हरेश के उत्साहवर्धक पत्रों और लता के स्वयं के हंसमुख जवाबों के बावजूद, लता अनिश्चित और बहुत अकेलापन महसूस करने लगी।

कभी-कभी वह बरगद की जड़ पर बैठ जाती और गंगा को निहारती, उन बातों को याद करती जिन्हें याद करना व्यर्थ था। क्या वह उसके साथ खुश रहती? या वह उसके साथ? वह अब इतना ईर्ष्यालु, इतना उग्र, इतना हिंसक हो गया था, उस सहज क्रिकेटर से बिल्कुल अलग जिसे

उसने एक साल पहले हंसते-खेलते और नेट पर अभ्यास करते देखा था। वह अब उस योद्धा से कितना अलग था जिसने उसे गुलमोहर की बेंच और श्री नवरोजी के चंगुल से बचाया था।

और मैं? उसने खुद से पूछा। उसकी जगह मैं होती तो कैसा व्यवहार करती? क्या मैं सौहार्दपूर्ण मित्रता का प्रयास करती? अभी भी मुझे लगभग ऐसा लगता है कि वही मुझे छोड़कर चला गया है—और मैं इसे सहन नहीं कर सकती।

उसने सोचा, दो हफ्ते और, और मैं गुडइयर वेल्टेड की दुल्हन बन जाऊंगी।

ओह कबीर, कबीर—वह रो पड़ी।

मुझे भाग जाना चाहिए, उसने सोचा।

मुझे भाग जाना चाहिए, उसने सोचा, हरेश से दूर, कबीर से दूर, अरुण और वरुण और मां और पूरे चटर्जी परिवार से दूर, प्राण और मान और हिंदुओं और मुसलमानों से दूर और तीव्र प्रेम और तीव्र घृणा और सभी शोरगुल से दूर—बस मैं और मालती और सविता और बच्चा।

हम गंगा के उस पार रेत पर बैठेंगे और एक-दो साल के लिए सो जाएंगे।

19.6

शादी की तैयारियां बड़े उत्साह और काफी विवादों के साथ आगे बढ़ीं। श्रीमती रूपा मेहरा, मालती, डॉ. किशन चंद सेठ और अरुण, सभी ने घर के मुखिया की भूमिका निभाने की कोशिश की।

डॉ. किशन चंद सेठ ने सईदा बाई से शादी में गाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, 'जब सईदा बाई ब्रह्मपुर में हैं, तो भला और किससे गाने को कहा जा सकता है? कहते हैं कि गला घोंटने की वजह से उनका गला खुल गया है।'

जब उन्हें एहसास हुआ कि प्रेम निवास के सभी लोग शादी का बहिष्कार

करेंगे, तभी वे माने। लेकिन तब तक वे किसी और बात में उलझ चुके थे: आमंत्रितों की सूची बहुत लंबी थी। उनका दावा था कि सूची बहुत लंबी है: इससे उनका बगीचा बर्बाद हो जाएगा, उनकी जेब खाली हो जाएगी।

सभी ने उन्हें आश्वस्त किया कि वे अपनी निमंत्रण सूची को बढ़ाने में सावधानी बरतेंगे, और फिर सभी ने आगे बढ़कर अपने संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति को आमंत्रित कर दिया। डॉ. किशन चंद सेठ की बात करें तो, वे सबसे बड़े दोषी थे: सब्ज़ीपुर क्लब के आधे सदस्यों और ब्रह्मपुर के आधे डॉक्टरों को आमंत्रित किया गया था, और लगभग हर उस व्यक्ति को जिसने कभी उनके साथ ब्रिज खेला था। उन्होंने रहस्यमय ढंग से समझाया, 'शादी हमेशा हिसाब-किताब बराबर करने का समय होता है।'

अरुण कुछ दिन पहले ही आ गया और अपने दादाजी से कार्यक्रमों का प्रबंधन अपने हाथ में लेने की कोशिश करने लगा। लेकिन पार्वती, जो शायद समझ गई थीं कि उनके पति के लिए उत्साह में डूबकर थक जाना कितना अच्छा है, ने उसकी इस कोशिश को नाकाम कर दिया। उन्होंने नौकरों के सामने अरुण पर खूब चिल्लाया, और वह उस झगड़ालू औरत के सामने झुक गया।

दिल्ली से बारात के आने से उत्साह और उलझनें दोनों ही बढ़ गईं। हरेश के पालक माता-पिता ज्योतिष के लिहाज़ से संतुष्ट थे; लेकिन उसकी माँ ने अपने खाने की तैयारी को लेकर कई सावधानियाँ बरतने पर ज़ोर दिया। उन्हें यह जानकर गहरा सदमा लगा होगा कि प्राण के घर, जहाँ उन्होंने एक दिन खाना खाया था, वहाँ रसोइया मुसलमान था। इसलिए, कुछ समय के लिए उसका नाम मतीन से बदलकर मतादीन कर दिया गया।

हरेश के दो सौतेले भाई और उनकी पत्नियाँ बारात के साथ आए, साथ ही संशय में डूबे उमेश चाचा भी। उनकी अंग्रेज़ी बहुत खराब थी और समय की पाबंदी का तो नामोनिशान भी नहीं था, और कुल मिलाकर

उन्होंने अरुण के सबसे बुरे डर को सच साबित कर दिया। हालांकि, श्रीमती रूपा मेहरा ने महिलाओं को साड़ियाँ दीं और उनसे घंटों बातें करती रहीं।

उन्होंने लता को पसंद किया।

हरेश को लता से मिलने की इजाज़त नहीं थी। वह सुनील पटवर्धन के साथ रहता था, और सेंट स्टीफंस के छात्र शाम को उसके आसपास इकट्ठा होकर उसे चिढ़ाते और वैवाहिक जीवन के दृश्य अभिनय करते थे। विशालकाय सुनील अक्सर सिकुड़ती हुई दुल्हन की भूमिका निभाते थे।

हरेश मिसरी मंडी स्थित केदारनाथ के घर गए। उन्होंने वीना को श्रीमती महेश कपूर की मृत्यु की खबर सुनकर बहुत दुख व्यक्त किया और बताया कि परिवार को कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ा है। बुजुर्ग श्रीमती टंडन और भास्कर उनके आने से प्रसन्न हुए। हरेश को यह बताते हुए भी बहुत खुशी हुई कि प्राहापुर से जूतों का ऑर्डर एक सप्ताह के भीतर आ जाएगा, साथ ही सामान खरीदने के लिए अल्पकालिक ऋण भी मिल जाएगा।

19.7

एक सुबह हरीश भी रविदासपुर गए। वे अपने साथ जगत राम के बच्चों के लिए कुछ केले, प्राहा संप्रदाय की खुशखबरी और उनकी शादी का निमंत्रण लेकर गए थे।

यह फल एक विलासिता की वस्तु थी; रविदासपुर में कोई फल विक्रेता नहीं थे। मोची के नंगे पैर वाले बेटों ने संदेह और अनिच्छा से केले स्वीकार किए और उन्हें बड़े चाव से खाया, फिर उनके छिलके घर के बगल से बहने वाली नाली में फेंक दिए।

प्राहा के आदेश की खबर से संतोष का माहौल था, और कच्चे माल की खरीद के लिए ऋण मिलने की खबर से तो गहरी राहत मिली। हरेश ने

सोचा कि जगत राम कुछ उदास लग रहे थे। उन्हें तो खुशी की उम्मीद थी। जगत राम ने हरेश के शादी के निमंत्रण पर स्पष्ट हैरानी जताई, इसलिए नहीं कि हरेश शादी कर रहा था, और वह भी ब्रह्मपुर में, बल्कि इसलिए कि उन्हें उसे आमंत्रित करने के बारे में सोचना भी चाहिए था।

भावुक होने के बावजूद, उन्हें मना करना पड़ा। दो दुनियाएँ आपस में नहीं मिल सकती थीं। वे यह जानते थे; यह जीवन की सच्चाई थी। रविदासपुर के एक जाटव का डॉ. किशन चंद सेठ के घर शादी में अतिथि के रूप में उपस्थित होना सामाजिक कलह का कारण बनेगा, जिसका केंद्र वे नहीं बनना चाहते थे। इससे उनकी गरिमा को ठेस पहुँचेगी। क्या पहनना है और क्या उपहार देना है, जैसी व्यावहारिक समस्याओं के अलावा, वे जानते थे कि उस अवसर पर उपस्थित होने से उन्हें कोई खुशी नहीं होगी, बल्कि केवल अत्यधिक असहजता महसूस होगी।

हरेश ने, उसके मन की बात को पूरी तरह समझकर, बड़े ही रूखेपन और चतुराई से कहा: 'आपको कोई उपहार नहीं लाना है। मैं शादियों में उपहार देने का समर्थक नहीं रहा हूँ। लेकिन आपको आना ही होगा। हम सहकर्मी हैं। मैं आपके न आने की बात बर्दाश्त नहीं करूँगा। और अगर आप चाहें तो आपकी पत्नी के लिए भी निमंत्रण है।'

जगत राम ने बड़ी अनिच्छा से सहमति दी। इस बीच, लाल और सुनहरे रंग का निमंत्रण पत्र लड़कों के बीच एक-दूसरे को पास किया जा रहा था।

'क्या उन्होंने तुम्हारी बेटी के लिए कुछ नहीं छोड़ा?' हरेश ने पूछा, जैसे ही केले का आखिरी टुकड़ा भी गायब हो गया।

‘ओह, उसकी धूल बह गई है,’ जगत राम ने धीमी आवाज़ में कहा।

'क्या?' हरेश ने चौंककर कहा।

जगत राम ने अपना सिर हिलाया। ‘मैं जो कहना चाहता हूँ—’ उसने कहना शुरू किया, और उसकी आवाज़ भर्रा गई।

‘आखिर हुआ क्या?’

'उसे संक्रमण हो गया था। मेरी पत्नी ने कहा कि मामला गंभीर है, लेकिन मैंने सोचा कि बच्चों को तेज बुखार इतनी जल्दी आता है और इतनी ही जल्दी उतर भी जाता है। इसलिए मैंने देरी की। पैसों का भी मामला था; और यहाँ के डॉक्टर, खैर, हमारे साथ बहुत सख्ती से पेश आते हैं।'

‘तुम्हारी बेचारी पत्नी—’

‘मेरी पत्नी ने कुछ नहीं कहा, उसने मेरे खिलाफ कुछ नहीं कहा। वह क्या सोचती है, मुझे नहीं पता।’ कुछ देर रुकने के बाद उन्होंने दो पंक्तियाँ सुनाईं:

'प्यार के धागे को मत तोड़ो,' रहीम ने कहा है।

जो टूटता है, वह जुड़ता नहीं; अगर जुड़ भी जाए तो धागे में गांठ पड़ जाती है।

जब हरेश ने सहानुभूति जताई, तो जगत राम ने केवल अपने दांतों के बीच से सांस अंदर खींची और फिर से अपना सिर हिला दिया।

19.8

जब हरेश सुनील के घर लौटा, तो उसने पाया कि उसके पिता बेसब्री से उसका इंतजार कर रहे थे।

‘तुम कहाँ थे?’ उसने नाक सिकोड़ते हुए हरेश से पूछा। ‘लगभग दस बज गए हैं। रजिस्ट्रार कुछ ही मिनटों में डॉ. सेठ के घर पर होंगे।’

‘ओह!’ हरेश ने हैरानी से कहा। ‘मुझे जल्दी से नहा लेना चाहिए।’

वह नागरिक विवाह समारोह के समय के बारे में भूल गया था, जिसे श्रीमती रूपा मेहरा ने शादी से ठीक एक दिन पहले कराने पर जोर दिया था। उन्हें लगा कि उन्हें अपनी बेटी को पारंपरिक हिंदू कानून के अन्याय से बचाना होगा; रजिस्ट्रार के समक्ष संपन्न विवाह ऐसे कानूनों द्वारा शासित होते थे जो महिलाओं के लिए कहीं अधिक न्यायसंगत थे।

हालांकि, नागरिक विवाह समारोह इतना संक्षिप्त और नीरस था कि लगभग किसी ने भी इसे कोई महत्व नहीं दिया, हालांकि इसके समाप्त होते ही हरेश और लता कानूनी रूप से पति-पत्नी बन गए थे। इसमें केवल लगभग एक दर्जन लोग ही शामिल हुए, और हरेश को देर से आने के लिए उसकी माँ ने फटकार लगाई।

पिछले एक सप्ताह से लता कभी शांत आशावाद से भरी रहती थी तो कभी अनिश्चितता के भयानक दौर से गुज़रती थी। नागरिक समारोह समाप्त होने के बाद, वह शांत और लगभग खुश महसूस कर रही थी, और हरेश के प्रति उसका स्नेह पहले से कहीं अधिक बढ़ गया था। बीच-बीच में वह उसे देखकर मुस्कुराता था, मानो उसे ठीक-ठीक पता हो कि उसे सबसे ज़्यादा आश्वासन की ज़रूरत कब थी।

19.9

अमित, काकोली, दीपांकर, मीनाक्षी, तपन, अपर्णा, वरुण और यहां तक कि हंस भी उस सुबह कलकत्ता से एक साथ आए थे और नागरिक समारोह में उपस्थित थे। प्राण का घर खचाखच भरा हुआ था। डॉ. किशन चंद सेठ का घर भी पूरी तरह से भरा हुआ था। केवल प्रेम निवास, जहां उसकी मालकिन नहीं थी, लगभग खाली था।

डॉक्टर किशन चंद के घर में हर तरह के जाने-पहचाने और अनजान लोग आते-जाते रहते थे। चूंकि उनका यह मानना था कि जिसे वे नहीं पहचानते, उसे या तो किसी और ने बुलाया होगा, या फिर वह रोशनी या खानपान की व्यवस्था में शामिल होगा, इसलिए वे बहुत कम लोगों को अपनी लाठी से धमकाते थे। पार्वती उन पर नजर रखती थी और सुनिश्चित करती थी कि किसी को कोई नुकसान न पहुंचे।

वह दिन बहुत गर्म था। कुछ पक्षी—मैना, बब्बलर, गौरैया, बुलबुल और बारबेट—शोरगुल भरे और व्यस्त इंसानों की भीड़ से परेशान होकर अपने

घोंसले बना रहे थे। बगीचे की क्यारियों में बीज आ गए थे; कुछ तंबाकू के फूलों को छोड़कर, ज़मीन पर कुछ भी खिला नहीं था। लेकिन चंपा, जैकारांडा और सीता अशोक के पेड़ सफेद, बैंगनी या लाल फूलों से लदे हुए थे, और नारंगी, लाल, गुलाबी और मैजेंटा रंग के बोगनविलिया के फूल घर की दीवारों और पेड़ों के तनों पर बड़ी संख्या में लटके हुए थे। बारबेटों के लगातार शोर के बीच, कभी-कभी दूर से किसी चिड़िया की तेज़, तीखी और स्पष्ट आवाज़ सुनाई देती थी।

लता अन्य महिलाओं के साथ एक भीतरी कमरे में गायन और मेहंदी की रस्मों के लिए बैठी थीं। कुकू और मीनाक्षी, मालती और सविता, श्रीमती रूपा मेहरा, वीना, हेमा और उनकी ताईजी, सभी विवाह गीत गाकर, कुछ सीधे-सादे, कुछ तीखे, और ढोलक की थाप पर नाचकर अपना मनोरंजन कर रही थीं और लता का ध्यान भटका रही थीं। एक बुज़ुर्ग महिला उन्हें उनकी पसंद की कांच की चूड़ियाँ पहना रही थीं—जिनके बारे में उन्होंने दावा किया कि वे फिरोज़ाबाद से लाई गई थीं—और दूसरी महिला उनके हाथों और पैरों पर मेहंदी की सुंदर लेकिन आकर्षक डिज़ाइन बना रही थी। लता ने अपने हाथों को देखा, जो अब नम, सुंदर डिज़ाइनों से ढके हुए थे, और रोने लगीं।

वह सोच रही थी कि इसे जमने में कितना समय लगेगा। सविता ने एक रुमाल निकाला और उसके आंसू पोंछ दिए।

वीना ने जल्दी से अपने कोमल हाथों के बारे में एक गीत गाना शुरू किया और बताया कि वह सार्वजनिक कुएँ से पानी नहीं भर सकती। वह अपने ससुर की लाडली थी; उन्हें उस पर दया आई थी और उन्होंने घर के बगीचे में उसके लिए एक कुआँ बनवाया था। वह अपने पति के बड़े भाई की भी लाडली थी; उन्होंने उसे पानी के लिए सोने का बर्तन दिया था। वह अपने पति के छोटे भाई की भी लाडली थी; उन्होंने उसे बाल्टी के लिए रेशम की

रस्सी दी थी। वह अपने पति की प्रिय थी, और उन्होंने उसके लिए दो पानी ढोने वाले रखे थे। लेकिन उसके पति की बहन और माँ उससे ईर्ष्या करती थीं, और उन्होंने चुपके से जाकर कुएँ को ढक दिया था।

एक अन्य गीत में, ईर्ष्यालु सास नवविवाहित दुल्हन के बगल में सोती है ताकि उसका पति रात में उससे मिलने न आ सके। श्रीमती रूपा मेहरा को ये गीत हमेशा की तरह बेहद पसंद थे, शायद इसलिए कि उनके लिए खुद को ऐसी किसी भूमिका में देखना असंभव था।

मालती—अपनी माँ के साथ, जो अचानक ब्रह्मपुर में प्रकट हुई थी—गायी, 'हे मोटे, तुम मसाले पीस दो, हम खाएँगे!'

काकोली ने मेहंदी के हरे और नम होने पर ही जोर से ताली बजाई और उसे पूरी तरह से मिटा दिया। संगीत में उनका योगदान 'रोली पॉली मिस्टर कोहली' का एक रूपांतर था, जिसे उन्होंने अपनी माँ की अनुपस्थिति में टैगोर के एक गीत की धुन पर गाया।

'रोली पॉली मिस्टर कोहली'
धीरे-धीरे सीढ़ियों पर चढ़ते हुए।
पवित्र आत्मा श्रीमती कोहली
वह आता है और उसे अचानक पकड़ लेता है।
श्री कोहली, नीच और घटिया,
चोली को घूरता है, वासना के सपने देखता है,
पवित्र श्रीमती कोहली के रूप में
अपने पल्लू से उसने अपनी छाती को छुपा रखा है।

19.10

अगले दिन सूर्यास्त से पहले ही शहनाई की ध्वनि के बीच मेहमान लॉन में इकट्ठा होने लगे।

परिवार के पुरुष द्वार पर खड़े होकर उनका स्वागत कर रहे थे। अरुण और

वरुण चिकन कढ़ाई वाले उत्तम, कड़क सफेद कुर्ता-पायजामे में सजे हुए थे। प्राण ने वही सफेद शार्क की चमड़ी की शेरवानी पहनी थी जो उन्होंने अपनी शादी में पहनी थी—हालांकि तब सर्दी का मौसम था।

श्रीमती रूपा मेहरा के भाई हमेशा की तरह मद्रास से आए थे, लेकिन चूड़ी समारोह के लिए बहुत देर से पहुँचे, जिसमें उन्हें मदद करनी थी। वे जिन लोगों से मिल रहे थे, उनमें से लगभग किसी को भी नहीं जानते थे, और उनमें से कुछ ही उन्हें परिचित लग रहे थे, शायद सविता की शादी के समय से। उन्होंने बगीचे में प्रवेश करते समय सभी का शालीनता से अभिवादन किया। दूसरी ओर, डॉ. किशन चंद सेठ, बेहद तंग काले अचकन के कारण गर्मी से परेशान थे, इस अंतहीन मुलाकात और अभिवादन से कुछ देर बाद अधीर हो गए, अपने बेटे पर चिल्लाए, जिसे उन्होंने एक साल से अधिक समय से नहीं देखा था, कुछ बटन ढीले किए और किसी काम की देखरेख करने के लिए चले गए। उन्होंने समारोहों में अपने दिवंगत दामाद की जगह लेने से यह कहकर इनकार कर दिया था कि चुपचाप बैठे रहना और पुजारियों को सुनना उनके रक्त संचार और शांति दोनों को भंग कर देगा।

श्रीमती रूपा मेहरा ने सुनहरे बॉर्डर वाली बेज रंग की शिफॉन साड़ी पहनी हुई थी—यह साड़ी उनकी बहू का उपहार थी, जिसने उन्हें लाख की पेटी वाली घटना पूरी तरह भुला दी थी। वह जानती थीं कि भगवान नहीं चाहते होंगे कि वे अपनी छोटी बेटी की शादी के दिन विधवा की तरह सजें-संवरें।

दूल्हे के बाराती पहले ही पंद्रह मिनट देरी से आ रहे थे। श्रीमती रूपा मेहरा को बहुत भूख लगी थी: उन्हें अपनी बेटी का कन्यादान करने से पहले कुछ भी खाने की अनुमति नहीं थी, और उन्हें इस बात की खुशी थी कि ज्योतिषियों ने शादी का सही समय आठ बजे तय किया था, न कि ग्यारह बजे।

'वे कहाँ हैं?' उसने मान से पूछा, जो संयोगवश पास ही खड़ा था और द्वार की दिशा में देख रहा था।

‘माँ, मुझे माफ़ करना,’ मान ने कहा। ‘आप किसकी बात कर रही हैं?’ वह फ़िरोज़ की तलाश कर रहा था।

‘बेशक, बारात।’

‘ओह, हाँ, बारात—वे किसी भी मिनट आ सकते हैं। क्या उन्हें अब तक यहाँ नहीं होना चाहिए था?’

'जी हां,' श्रीमती रूपा मेहरा ने जलते हुए डेक पर खड़े लड़के की तरह अधीर और चिंतित होकर कहा। 'जी हां, बिल्कुल उन्हें ऐसा करना चाहिए।'

अंततः बारात दिखाई दी और सब लोग द्वार की ओर उमड़ पड़े। एक बड़ी, गहरे लाल रंग की, फूलों से सजी शेवरले कार आई। वह बाल-बाल डॉ. किशन चंद सेठ की ग्रे रंग की ब्यूक कार से टकराने से बची, जो प्रवेश द्वार के पास थोड़ी बाधा उत्पन्न करते हुए खड़ी थी। हरेश बाहर निकला। उसके साथ उसके माता-पिता और भाई थे, और उसके पीछे-पीछे उसके कॉलेज के दोस्तों की भीड़ भी थी। अरुण और वरुण उसे बरामदे तक ले गए। लता घर के अंदर से निकलीं, लाल और सुनहरी साड़ी पहने हुए, और दुल्हन की तरह उनकी नज़रें झुकी हुई थीं। उन्होंने एक-दूसरे को माला पहनाई। सुनील पटवर्धन ने ज़ोरदार जयकार की और फोटोग्राफर ने तस्वीरें खींचनी शुरू कर दीं।

वे लॉन पार करके गुलाब और कंदगुला से सजे विवाह मंच पर पहुँचे और स्थानीय आर्य समाज मंदिर के युवा पुजारी के सामने बैठ गए। पुजारी ने अग्नि प्रज्वलित की और समारोह शुरू किया। हरेश के पालक माता-पिता हरेश के पास बैठे, श्रीमती रूपा मेहरा लता के पास बैठीं और अरुण और वरुण उनके पीछे बैठे।

अरुण ने वरुण से कहा, 'सीधे बैठो।'
'मैं सीधा बैठा हूँ!' आईएएस वरुण मेहरा ने गुस्से से जवाब दिया। उन्होंने देखा कि लता के बाएं कंधे से माला खिसक गई थी। उन्होंने उसे ठीक करने में मदद की और अपने भाई को घूरकर देखा।
शादी के माहौल के विपरीत, मेहमान पुजारी द्वारा अनुष्ठान संपन्न कराए जाने के दौरान शांत और ध्यान से सुन रहे थे। श्रीमती रूपा मेहरा संस्कृत पाठ के दौरान सिसक रही थीं, सविता भी रो रही थीं, और जल्द ही लता भी रोने लगीं। जब उनकी मां ने उनका हाथ थामकर गुलाब की पंखुड़ियों से भर दिया और कहा, 'हे दूल्हे, इस सुशोभित दुल्हन लता को स्वीकार कीजिए,' तो पुजारी के कहने पर हरेश ने उनका हाथ मजबूती से अपने हाथ में लिया और दोहराया: 'मैं आपका धन्यवाद करता हूं, और सहर्ष उन्हें स्वीकार करता हूं।'
उन्होंने अंग्रेज़ी में कहा, 'हिम्मत रखो। मुझे उम्मीद है कि तुम्हें दोबारा इस दौर से नहीं गुज़रना पड़ेगा।' और लता, चाहे उनके इस विचार से हो या उनकी आवाज़ के लहजे से, सचमुच खुश हो गईं।
सब कुछ ठीक रहा। लता और हरेश के परिक्रमा करने पर उनके भाई उनके हाथों पर मुरमुरे डालकर आग में डाल देते थे। उनके दुपट्टों के बीच गांठ बांधी गई और हरेश द्वारा उन्हें पहनाई जाने वाली सोने की अंगूठी से लता के बालों की मांग में चमकीला लाल सिंदूर लगाया गया। इस अंगूठी की रस्म से पुजारी थोड़ा असमंजस में पड़ गए (यह आर्य समाजी रीति-रिवाजों के उनके विचार से मेल नहीं खाती थी), लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा के आग्रह पर उन्होंने इसे मान लिया।
एक-दो बच्चे गुलाब की कुछ पंखुड़ियों पर अधिकार को लेकर रोते हुए आपस में झगड़ रहे थे; और एक ज़िद में डूबी बूढ़ी औरत ने पुजारी से अपनी पूजा-अर्चना के दौरान खन्ना परिवार के कुल देवता बाबे लालू का

ज़िक्र करवाने की नाकाम कोशिश की; इसके अलावा, सब कुछ सौहार्दपूर्ण ढंग से चल रहा था।

लेकिन जब वहां जमा हुए लोगों ने साक्षी अग्नि के सामने गायत्री मंत्र का तीन बार जाप किया, तो प्राण ने मान की ओर देखते हुए पाया कि उसका सिर झुका हुआ था और होंठ कांप रहे थे, जैसे वह मंत्र बुदबुदा रहा हो। अपने बड़े भाई की तरह, वह भी उस आखिरी बार को नहीं भूल पाया था जब प्राचीन मंत्रों का जाप उसकी उपस्थिति में, और एक अलग अग्नि के सामने किया गया था।

19.11

वह एक सुहावनी शाम थी, और सविता की शादी की तुलना में यहाँ रेशम कम और महीन सूती वस्त्र अधिक थे। लेकिन आभूषण उतने ही शानदार ढंग से जगमगा रहे थे। मीनाक्षी की छोटी नाशपाती के आकार की बालियाँ, वीना का नवरतन और मालती के पन्ना बगीचे में चमक रहे थे, मानो एक-दूसरे को अपने स्वामियों की कहानियाँ सुना रहे हों।

चटर्जी परिवार के युवा सदस्य बड़ी संख्या में मौजूद थे, लेकिन राजनेता बहुत कम थे, और रुधिया के बच्चे इधर-उधर बेतहाशा दौड़ते हुए नज़र नहीं आ रहे थे। हालांकि, ब्रह्मपुर स्थित छोटे प्राहा कारखाने के कुछ अधिकारी और ब्रह्मपुर शू मार्ट के कुछ बिचौलिए उपस्थित थे।

जगत राम भी आ गए थे, लेकिन उनकी पत्नी नहीं आई थीं। वे कुछ देर अकेले खड़े रहे, तभी केदारनाथ ने उन्हें देखा और अपने साथ आने का इशारा किया।

जब उनका परिचय बूढ़ी श्रीमती टंडन से कराया गया, तो वह अपनी असहजता को छिपा नहीं सकीं। उन्होंने उन्हें ऐसे देखा मानो उनसे बदबू आ रही हो, और उन्हें एक कमजोर सा नमस्ते किया।

जगत राम ने केदारनाथ से कहा, “मुझे अब जाना होगा। क्या आप इसे

हरीश साहब और उनकी दुल्हन को दे देंगे?" उन्होंने केदारनाथ को भूरे कागज से ढका हुआ एक छोटा सा डिब्बा जैसा दिखने वाला सामान दिया।

लेकिन क्या आप उन्हें बधाई नहीं देंगे?

जगत राम ने अपनी मूंछों को थोड़ा खींचते हुए कहा, "अरे, यहाँ तो लंबी लाइन लगी है। कृपया मेरी तरफ से उन्हें बधाई दे दीजिएगा।"

बुजुर्ग श्रीमती टंडन ने हरेश के माता-पिता की ओर रुख किया और उनसे नील दरवाजा के बारे में बात करने लगीं, जहाँ वे बचपन में जाया करती थीं। उन्होंने उन्हें बधाई दी और बातचीत के दौरान यह भी कह दिया कि लता को संगीत का कुछ ज्यादा ही शौक है।

"ओह, अच्छा," हरेश के पालक पिता ने कहा। "हमें भी संगीत बहुत पसंद है।" बूढ़ी श्रीमती टंडन नाखुश थीं और उन्होंने कुछ और न कहने का फैसला किया। इस बीच, मालती संगीतकारों से बात कर रही थीं, जिनमें एक शहनाई वादक भी शामिल था, जिसे उनका संगीतकार मित्र जानता था, और तबला वादक मोटू चंद भी थे।

मोटू, जिन्हें हरिदास संगीत महाविद्यालय में मलाती के साथ प्रस्तुति देने का दिन याद था, ने उनसे उस्ताद मजीद खान और उनके प्रसिद्ध शिष्य इशाक के बारे में पूछा, जिनसे आजकल उनकी मुलाकात बहुत कम होती थी। मलाती ने उन्हें हाल ही में आयोजित अपने संगीत कार्यक्रम के बारे में बताया, इशाक की संगीत प्रतिभा की प्रशंसा की और कहा कि वे उस्ताद मजीद खान द्वारा इशाक को दी जाने वाली उदारता से बहुत प्रभावित हुई थीं: उदाहरण के लिए, जब इशाक गा रहे होते थे, तो वे शायद ही कभी बीच में अपनी धुन बजाकर उन्हें प्रभावित करते थे। पेशेवर ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा से भरे इस दौर में, जहाँ गुरु-शिष्य के बीच भी प्रतिस्पर्धा होती है, उन दोनों ने जिस तालमेल के साथ प्रस्तुति दी, वह देखना अद्भुत था।

इशाक के बारे में यह कहा जाने लगा था - और वह भी अपने उस्ताद के सामने पहली बार तानपुरा बजाने के एक साल के भीतर ही - कि उनमें अपने समय के महान गायकों में से एक बनने की क्षमता है।

'खैर,' मोटू चंद ने कहा, 'मेरे काम करने की जगह पर उसके बिना सब कुछ पहले जैसा नहीं रहा।' उन्होंने आह भरी, फिर मालती को थोड़ा हैरान देखकर कहा: 'क्या तुम पिछले साल होली पर प्रेम निवास में नहीं थीं?'

'नहीं,' मालती ने कहा, उसके सवाल से यह समझते हुए कि मोटू सईदा बाई का तबला वादक होगा। 'और हाँ, इस साल तो है ही...'

'बिल्कुल,' मोटू ने उदास स्वर में कहा। 'बहुत बुरा, बहुत बुरा... और अब उस रशीद की आत्महत्या... वो सईदा बाई की बहन को सिखाता था, आप जानते ही हैं... लेकिन उसने इतना हंगामा मचाया कि चौकीदार को बुलाकर उसकी पिटाई करवानी पड़ी... और फिर बाद में हमें पता चला... खैर, दुनिया में मुसीबत के सिवा कुछ नहीं है, बस मुसीबत ही मुसीबत है —' वह तबले के चारों ओर लगे छोटे लकड़ी के सिलेंडरों पर हथौड़े से ठोकने लगा ताकि पट्टियों को कस सके और स्वर को ठीक कर सके। शहनाई वादक ने उसकी ओर सिर हिलाया।

'तुम जिस रशीद की बात कर रही हो—' मलाती ने अचानक खुद काफी परेशान होकर पूछा। 'वह समाजवादी तो नहीं है ना?—इतिहास का छात्र —'

'हां, मुझे ऐसा ही लगता है,' मोटू ने अपनी गद्देदार उंगलियों को हिलाते हुए कहा; और तबला और शहनाई फिर से बजने लगे।

19.12

मौसम के अनुकूल कुर्ता-पायजामा पहने मान थोड़ी दूरी पर खड़ा था और उसने इस बातचीत को बिल्कुल नहीं सुना। वह उदास और लगभग उदासीन लग रहा था।

एक पल के लिए उन्हें आश्चर्य हुआ कि हरसिंगार का पेड़ कहाँ है, फिर उन्हें एहसास हुआ कि वे बिल्कुल अलग बगीचे में हैं। फ़िरोज़ उनके पास आया और वे कुछ देर तक चुपचाप खड़े रहे। कहीं से एक-दो गुलाब की पंखुड़ियाँ नीचे गिरीं। दोनों में से किसी ने भी उन्हें हटाने की ज़हमत नहीं उठाई। थोड़ी देर बाद इम्तियाज़ भी उनके साथ आ गया, फिर नवाब साहब और महेश कपूर भी।

महेश कपूर ने कहा, 'कुल मिलाकर यह सब अच्छे के लिए ही हुआ है। अगर मैं विधायक होता, तो अग्रवाल को मुझे अपने मंत्रिमंडल में शामिल होने के लिए कहना पड़ता, और मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर पाता।'

नवाब साहब ने कहा, 'खैर, चाहे हालात अच्छे हों या बुरे, वे ऐसे ही हैं।'

कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। सभी लोग आपस में दोस्ताना व्यवहार कर रहे थे, लेकिन किसी को समझ नहीं आ रहा था कि किस बारे में बात करें। हर विषय किसी न किसी कारण से बंद सा लग रहा था। न तो कानून का ज़िक्र हुआ, न डॉक्टरों का, न अस्पतालों का, न बाग-बगीचों का, न संगीत का, न भविष्य की योजनाओं का, न अतीत की यादों का, न राजनीति का, न धर्म का, न मधुमक्खियों का, न कमलों का।

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश इस बात पर सहमत थे कि जमींदारी अधिनियम संवैधानिक थे; वे अपना फैसला लिखने की प्रक्रिया में थे, जिसे कुछ ही दिनों में पूरी दुनिया के सामने घोषित किया जाएगा।

एस.एस. शर्मा को दिल्ली बुलाया गया था। पूर्व प्रदेश के कांग्रेस विधायकों ने एल.एन. अग्रवाल को मुख्यमंत्री चुना था। आश्चर्यजनक रूप से, पदभार ग्रहण करने के बाद उनके पहले कार्यों में से एक यह था कि उन्होंने मारह के राजा को एक कड़ा पत्र भेजकर लिंगम को बचाने के किसी भी प्रयास के लिए सरकारी या पुलिस सुरक्षा देने से इनकार कर दिया था।

बनारस के लोगों ने फैसला कर लिया था कि मान अब उपयुक्त लड़का नहीं रहा; उन्होंने महेश कपूर को अपने इस फैसले की जानकारी दे दी थी। ये सभी विषय, और इनके अलावा भी कई अन्य विषय, सबके मन में थे —लेकिन किसी की जुबान पर नहीं थे।

कुख्यात मान को देखते ही मीनाक्षी और काकोली शिफॉन की चमकती पोशाक में लिपट गईं, और महेश कपूर भी उनके द्वारा किए गए इस ध्यान भटकाने के प्रयास से नाखुश नहीं थे। हालांकि, उनके पहुंचने से पहले ही, मान—जिसने प्रोफेसर मिश्रा को आसपास मंडराते हुए देख लिया था—गायब हो गया।

जब मीनाक्षी और काकोली को पता चला कि फिरोज और इम्तियाज जुड़वा हैं, तो वे बेहद खुश हुईं।

कुकु ने कहा, 'अगर मेरे जुड़वां बच्चे हुए, तो मैं उनका नाम प्रबोधिनी और शायनी रखूंगी। तब एक सो सकेगी जबकि दूसरी जागती रहेगी।'

'कितनी बेवकूफी वाली बात है, कुकू,' मीनाक्षी ने कहा। 'इस तरह तो तुम्हें कभी नींद ही नहीं आएगी। और वे दोनों कभी एक-दूसरे को जान भी नहीं पाएंगे। बताओ, तुम दोनों में से बड़ा कौन है?'

इम्तियाज ने कहा, 'मैं हूं।'

'नहीं, तुम नहीं हो,' मीनाक्षी ने कहा।

'मैं आपको आश्वस्त करता हूँ, श्रीमती मेहरा, मैं हूँ। मेरे पिता से यहाँ पूछ लीजिए।'

मीनाक्षी ने कहा, 'उन्हें पता नहीं होगा। एक बहुत ही भले आदमी ने, जिसने मुझे एक सुंदर सा छोटा लाख का डिब्बा दिया था, एक बार मुझसे कहा था कि जापानियों के अनुसार, जो बच्चा दूसरे नंबर पर पैदा होता है, वह बड़ा होता है, क्योंकि वह अपने छोटे भाई को पहले बाहर आने देकर अपनी शिष्टता और परिपक्वता साबित करता है।'

फिरोज ने हंसते हुए कहा, 'श्रीमती मेहरा, मैं आपका जितना भी धन्यवाद करूं कम है।'

'ओह, मुझे मीनाक्षी कहिएगा। कितना प्यारा विचार है, है ना? अब अगर मेरे जुड़वाँ बच्चे हुए तो मैं उन्हें एटा और इटावा कहूँगी! या कुंभ और करण। या बेंटसेन और प्राइस। या कुछ ऐसा जो बिल्कुल अविस्मरणीय हो। इटावा मेहरा—कितना अनोखा और मनमोहक नाम है। अपर्णा कहाँ चली गई? और बताइए, अरुण और हंस से बात कर रहे वे दो विदेशी कौन हैं?' उसने आलस से अपनी लंबी गर्दन झुकाई और मेहंदी से सजे अपने हाथ की लाल नेल पॉलिश लगी उंगली से इशारा किया।

महेश कपूर ने कहा, 'ये स्थानीय प्राहा कारखाने से हैं।'

'अरे बाप रे!' कुकु चिल्लाई। 'वे शायद चेकोस्लोवाकिया पर जर्मन आक्रमण के बारे में बात कर रहे हैं। या कम्युनिस्टों के बारे में? मुझे उन्हें तुरंत अलग करना होगा। या कम से कम उनकी बातें सुननी होंगी। मैं बहुत ऊब गई हूँ। ब्रह्मपुर में कभी कुछ होता ही नहीं। आओ, मीनाक्षी। और हमने अभी तक माँ और लुट्स को दिल से बधाई नहीं दी है। वैसे भी वे इसके लायक नहीं हैं। अमित से शादी न करके उसने कितनी बड़ी बेवकूफी की। अब मुझे यकीन है कि वह कभी किसी से शादी नहीं करेगा और कडल्स की तरह चिड़चिड़ा हो जाएगा। लेकिन हाँ, उनके बीच कभी न कभी प्रेम प्रसंग तो चल ही सकता है,' उसने उम्मीद से कहा।

और पलक झपकते ही बिना पीठ वाली चोलियों में लिपटे चटर्जी गायब हो गए।

19.13

'उसने गलत आदमी से शादी कर ली है,' मलाती ने अपनी मां से कहा। 'और यह देखकर मेरा दिल टूट रहा है।'

'मलाती,' उसकी माँ ने कहा, 'हर किसी से गलतियाँ होती हैं। तुम्हें इतना

यकीन क्यों है कि यह गलती है?'

'हाँ, हाँ, मुझे पता है!' मालती ने जोश से कहा। 'और उसे जल्द ही पता चल जाएगा।' वह लता को कबीर को कम से कम एक पत्र लिखने के लिए राजी करने पर तुली हुई थी। यकीनन, हरेष, जिसके आसपास सिमरन का साया मंडरा रहा था, इस बात को वाजिब मान लेगा।

'मालती,' उसकी माँ ने शांत भाव से कहा, 'किसी और की शादी में दखल मत दो। खुद शादी कर लो। नैनीताल में जिन पाँच लड़कों के पिता से तुम मिली थी, उनका क्या हुआ?'

लेकिन मालती भीड़ के पार वरुण की ओर देख रही थी, जो कल्पना गौर को देखकर कमजोर और स्नेहपूर्ण मुस्कान बिखेर रहा था।

उसने अपनी माँ से पूछा, 'क्या आप चाहती हैं कि मैं एक आईएएस अधिकारी से शादी करूँ? सबसे प्यारे, कमज़ोर इरादों वाले और मूर्ख आईएएस अधिकारी से, जिनसे मैं आज तक मिली हूँ?'

उसकी मां ने कहा, 'मैं चाहती हूं कि तुम्हारी शादी किसी चरित्रवान व्यक्ति से हो। तुम्हारे पिता जैसा कोई। कोई ऐसा जिस पर तुम दबाव न डाल सको। और तुम भी यही चाहती हो।'

श्रीमती रूपा मेहरा भी कल्पना गौर और वरुण को हैरानी से देख रही थीं। बिलकुल नहीं! बिलकुल नहीं!—उन्होंने सोचा। कल्पना, जो उनके लिए बेटी जैसी थी: वह उनके बेचारे बेटे पर कैसे मोहित हो सकती थी? क्या मैं कुछ गलत सोच रही हूँ? उन्होंने सोचा। लेकिन वरुण इतना भोला था—या यूँ कहें कि भोला बनने की कोशिश में भी इतना नाकाम था कि उसके मोह के लक्षण साफ दिख रहे थे।

यह कैसे और कब हुआ होगा?

'हां, हां, धन्यवाद, धन्यवाद,' श्रीमती रूपा मेहरा ने बधाई देने वाले व्यक्ति से अधीरता से कहा।

ऐसी विपत्ति को रोकने के लिए क्या किया जा सकता था? कल्पना वरुण से उम्र में काफी बड़ी थी, और भले ही वह उसके लिए बेटी जैसी थी, श्रीमती रूपा मेहरा की उसे बहू के रूप में स्वीकार करने की कोई इच्छा नहीं थी।

लेकिन अब मालती ('वह लड़की जो सिर्फ शरारत करती है') वरुण के पास गई और अपनी अद्वितीय हरी आँखों से उसकी आँखों में गहराई से देखने लगी। वरुण का जबड़ा थोड़ा नीचे गिर गया और वह हकलाने लगा। लता और हरीश को उनके हाल पर छोड़कर, श्रीमती रूपा मेहरा वरुण के पास गईं।

'नमस्ते माँ,' कल्पना गौर ने कहा। 'बहुत-बहुत बधाई हो। कितनी प्यारी शादी थी। और एक तरह से मैं इसके लिए खुद को जिम्मेदार महसूस करने से खुद को रोक नहीं पा रही हूँ।'

'हां,' श्रीमती रूपा मेहरा ने संक्षिप्त रूप से कहा।

'नमस्ते माँ,' मालती ने कहा। 'जी हाँ, मेरी तरफ से भी आपको बधाई हो।' कोई तत्काल प्रतिक्रिया न मिलने पर, उसने बिना सोचे समझे कहा, 'ये गुलाब जामुन बहुत स्वादिष्ट हैं। आपको भी एक बार ज़रूर चखना चाहिए।'

वर्जित मिठाइयों के इस जिक्र से श्रीमती रूपा मेहरा और भी चिढ़ गईं। उन्होंने कुछ पल के लिए उन मिठाइयों को घूरकर देखा।

'क्या बात है, मालती?' उसने थोड़ी सख्ती से पूछा। 'तुम अभी भी थोड़ी अस्वस्थ लग रही हो—इतनी भागदौड़ कर रही हो, इसमें कोई हैरानी की बात नहीं—और कल्पना, भीड़ के बीच में खड़े रहना तुम्हारे बुखार के लिए अच्छा नहीं है; जाओ और तुरंत उस बेंच पर बैठ जाओ, वहाँ ज्यादा ठंडक है। अब मुझे वरुण से बात करनी होगी, जो मेजबान के तौर पर अपना फर्ज नहीं निभा रहा है।'

और उसने उसे एक तरफ ले जाकर खड़ा कर दिया।
'तुम भी उसी लड़की से शादी करोगे जिसे मैं चुनूंगी,' श्रीमती रूपा मेहरा ने अपने छोटे बेटे से दृढ़ता से कहा।
'लेकिन—लेकिन, माँ—' वरुण एक पैर से दूसरे पैर पर हिलने लगा।
'तुम्हारे लिए एक उपयुक्त लड़की, मैं यही चाहती हूँ,' श्रीमती रूपा मेहरा ने चेतावनी भरे स्वर में कहा। 'तुम्हारे पिताजी भी यही चाहते। एक उपयुक्त लड़की, और कोई अपवाद नहीं।'
जब वरुण उस आखिरी वाक्य के निहितार्थों को समझने की कोशिश कर रहा था, तभी अरुण भी उनके साथ आ गया, साथ में अपर्णा भी थी, जिसने एक हाथ में अपने पिता का हाथ और दूसरे हाथ में आइसक्रीम कोन पकड़ रखा था।
'पिस्ता नहीं, पापा,' उसने निराशा से कहा।
श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'चिंता मत करो, प्यारी बच्ची, कल हम तुम्हारे लिए ढेर सारी पिस्ता आइसक्रीम लाएंगे।'
चिड़ियाघर में।
'हां, चिड़ियाघर में,' श्रीमती रूपा मेहरा ने अनमने ढंग से कहा। उन्होंने माथे पर शिकन डालते हुए कहा, 'प्यारे, चिड़ियाघर जाने के लिए बहुत गर्मी है।'
'लेकिन आपने वादा किया था,' अपर्णा ने कहा।
'क्या मैंने किया था, प्रियतमा? कब?'
'अभी-अभी! अभी-अभी!'
श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'तुम्हारे पापा तुम्हें ले जाएंगे।'
'तुम्हारे वरुण चाचा तुम्हें ले जाएंगे,' अरुण ने कहा।
वरुण ने कहा, 'और कल्पना आंटी भी हमारे साथ आएंगी।'
'नहीं,' श्रीमती रूपा मेहरा ने कहा, 'मैं कल उनसे पुराने समय और अन्य

मामलों के बारे में बात करूंगी।'
‘लता बुआ हमारे साथ क्यों नहीं आ सकतीं?’ अपर्णा ने पूछा।
वरुण ने कहा, 'क्योंकि वह कल हरीश फूफा के साथ कोलकाता जा रही है।'
‘क्योंकि वे शादीशुदा हैं?’
क्योंकि वे शादीशुदा हैं।
‘ओह। और भास्कर भी हमारे साथ आ सकते हैं, और तपन मामा भी।’
'वे बिल्कुल कर सकते हैं। लेकिन तपन का कहना है कि वह सिर्फ कॉमिक्स पढ़ना और सोना चाहता है।'
और लेडी बेबी।
वरुण ने कहा, ‘उमा चिड़ियाघर का आनंद लेने के लिए बहुत छोटी है।’
‘और सांप उसे डरा देंगे। वे उसे निगल भी सकते हैं।’ वह शरारती हंसी हंसा और अपना पेट सहलाने लगा, जिससे अपर्णा बहुत खुश हुई।
उमा इस समय स्वयं आनंद और प्रशंसा का पात्र थी। सविता की चाचियाँ उस पर प्यार जता रही थीं; वे बेहद खुश थीं कि उनकी भविष्यवाणियों के विपरीत, वह अपने पिता की तरह काली नहीं निकली। यह बात उन्होंने प्राण के सामने कही, जिस पर प्राण हँस पड़ा। हरेश की त्वचा के रंग की वे केवल प्रशंसा ही कर रही थीं; यह लता के रंग की खामी को दूर कर देगा।
लखनऊ, कानपुर, बनारस और मद्रास की चाचियों ने मेंडेलियन युग के ऐसे ही महत्वपूर्ण मामलों में अपना समय व्यतीत किया।
प्राण ने कहा, 'लता का बच्चा निश्चित रूप से काला ही पैदा होगा। परिवार में सब कुछ संतुलित हो जाता है।'
‘Chhi, chhi, how can you say such things?’ said Mrs Kakkar.

सविता ने कहा, 'प्राण के दिमाग में बस बच्चे ही बच्चे हैं।'
प्राण मुस्कुराया—सविता को लगा कि उसकी मुस्कान कुछ बचकानी सी थी।
इस साल 1 अप्रैल को उन्हें एक फोन कॉल आया जिसने उन्हें खुशी से झूमते हुए नाश्ते की मेज पर वापस भेज दिया। पता चला कि पार्वती गर्भवती थीं। श्रीमती रूपा मेहरा ने यह सुनकर घोर निराशा व्यक्त की।
तारीख याद आने के बावजूद भी वह प्राण से नाराज़ रही। उसने पूछा, 'जब सब कुछ इतना दुखद है, तो तुम इस साल मज़ाक कैसे कर सकते हो?' लेकिन प्राण की राय में, चाहे हालात कितने भी दुखद क्यों न हों, खुश रहने की कोशिश करना ही बेहतर है। और वैसे भी, उसे लगा कि अगर पार्वती और किशी का बच्चा हो जाए तो कोई बड़ी बात नहीं होगी। फिलहाल तो दोनों एक-दूसरे पर हावी हैं। बच्चा होने से समीकरण बदल जाएगा।
प्राण ने चाचियों की सभा से कहा, ‘बच्चों के बारे में सोचने में क्या बुराई है? वीना गर्भवती है, और भास्कर और केदारनाथ इससे काफी खुश लग रहे हैं। इस दुख भरे साल में यह एक अच्छी खबर है। और उमा को भी देर-सवेर एक भाई और एक बहन की जरूरत होगी। मेरी नई तनख्वाह से गुजारा इतना तंग नहीं होगा।’
‘बिल्कुल सही,’ चाचियों ने सहमति जताते हुए कहा। ‘जब तक कम से कम तीन बच्चे न हों, तब तक उसे परिवार नहीं कहा जा सकता।’
'यदि अनुबंध और अपकृत्य इसकी अनुमति देते हैं, तो बिल्कुल,' सविता ने कहा। कानून से अप्रभावित, वह नीले और चांदी के रंग की साड़ी में हमेशा की तरह प्यारी और सौम्य लग रही थी।
‘जी हां, प्रिय,’ प्राण ने कहा। ‘यदि अनुबंध और अपकृत्य इसकी अनुमति देते हैं।’

उनके पीछे से एक बेहद धीमी आवाज आई, 'डॉ. कपूर को हमारी ओर से हार्दिक बधाई।'

प्राण ने खुद को साहित्य जगत के कुछ दिग्गज हस्तियों के छोटे समूह के बीच पाया: श्री बरुआ, श्री नवरोजी और सुनील पटवर्धन।

'ओह, धन्यवाद,' प्राण ने कहा, 'लेकिन मेरी शादी को डेढ़ साल हो चुके हैं।'

श्री नौरोजी के चेहरे पर एक क्षणिक और सर्द मुस्कान दिखाई दी।

'मेरा मतलब था, बेशक, आपकी हाल ही में हुई पदोन्नति पर बधाई हो'—उन्होंने उदास मुस्कान के साथ कहा—'यह वाकई बहुत ही योग्य है। और मैं आपको कई महीनों से बताना चाह रहा था कि मुझे आपका 'ट्वेल्थ नाइट' का पाठ कितना पसंद आया। लेकिन आप चटर्जी के पाठ से बहुत जल्दी गायब हो गए। मैंने देखा कि वह आज शाम यहाँ हैं—मैंने उन्हें एक महीने पहले विलेनेल्स की एक पुस्तिका भेजी थी, लेकिन अभी तक कोई जवाब नहीं मिला है; क्या आपको लगता है कि मुझे उन्हें याद दिलाने के लिए परेशान करना चाहिए?'

प्राण ने जवाब दिया, 'इस साल निर्माता श्री बरुआ थे, श्री नवरोजी। मेरे निर्माता जूलियस सीज़र थे, उससे पिछले साल।'

'ओह, बिल्कुल, बिल्कुल, हालांकि शेक्सपियर के बारे में अक्सर आश्चर्य होता है— जैसा कि मैंने ई.एम. फोर्स्टर से कहा था—क्या यह 1913 था?—'

'तो, कमीने, तुमने आखिरकार जॉयस को पाठ्यक्रम में शामिल करवा ही लिया,' सुनील पटवर्धन ने बीच में कहा। 'बहुत बुरा फैसला, बहुत बुरा फैसला। मैं अभी प्रोफेसर मिश्रा से बात कर रहा था। वो बहुत दुखी लग रहे थे।'

सुनील, गणित पर ही ध्यान दो।

सुनील ने कहा, 'मैं ऐसा करने की योजना बना रहा हूँ।' उन्होंने श्री बरुआ और श्री नवरोजी की ओर मुड़ते हुए पूछा, 'क्या आपने क्रिकेट बल्ले की आवाज़ पर जॉयस की रचनाएँ पढ़ी हैं?' "पिक, पैक, पॉक, पक: जैसे फव्वारे में पानी की बूँदें धीरे-धीरे भरे हुए कटोरे में गिरती हैं।" और यह तो जॉयस के शुरुआती दिनों की रचनाएँ थीं! क्या मैं फिन्नेगन के जागने की नकल करूँ?'

'नहीं,' प्राण ने कहा। 'हमें इस खुशी से बचाओ।'

19.14

बगीचे के अंतिम छोर पर भोजन परोसा गया और मेहमान इधर-उधर घूमते हुए एक-दूसरे से मिले, अपनी थालियों में खाना भरते रहे और दूल्हा-दुल्हन और उनके परिवारों को बधाई देते रहे। उपहार और पैसों से भरे लिफाफे उस सजे हुए झूले के पास जमा हो गए जहाँ वे दोनों अब बैठे थे। लता एक-एक करके उन लोगों से मिली जिनसे वह पहले कभी नहीं मिली थी।

कल्पना गौर ने कहा, 'मुझे नहीं पता कि मैं कौन हूं - मुझे नहीं पता कि मैं दूल्हे के पक्ष का हिस्सा हूं या दुल्हन के पक्ष का।'

'हां,' हरेश ने कहा, 'यह एक समस्या है। एक गंभीर समस्या। हमारे वैवाहिक जीवन की पहली समस्या।'

जहां हरेश अपने सभी दोस्तों के साथ हंसता-मजाक करता रहा और उनके उत्साहपूर्ण हास्य और बधाई को स्वीकार करता रहा, वहीं लता ने बहुत कम बातें कीं।

जब लखनऊ से आए उनके चाचा श्री सहगल एक घृणित मुस्कान के साथ उनके पास आए, तो उसने हरेश का हाथ कसकर पकड़ लिया।

'क्या बात है?' हरेश ने पूछा।

'कुछ नहीं,' लता ने कहा।

लेकिन अवश्य ही होना चाहिए—

श्री सहगल ने हरीश को बधाई देने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। उन्होंने कहा, 'मुझे आपको बधाई देनी ही चाहिए। मैंने शुरू से ही देख लिया था कि आप दोनों की शादी होगी—यह होना ही था—लता के पिता को भी यह रिश्ता पसंद आता। वह बहुत ही अच्छी लड़की है।' लता ने अपनी आँखें बंद कर ली थीं। उन्होंने लता के चेहरे, उसके होठों पर लगी लिपस्टिक को हल्के से तिरस्कार भरी मुस्कान के साथ देखा और फिर वहाँ से चले गए।

दूसरी ओर, डॉ. दुर्रानी, मग्न भाव से कुल्फी खाते हुए प्राण, केदारनाथ, वीना और भास्कर से बातें कर रहे थे। 'तो, उह, दिलचस्प बात है, जैसा कि मैं आपके बेटे से कह रहा था, संख्या सात पर यह ज़ोर... सात, उह, कदम, और सात, उह, आग के चारों ओर सात चक्कर। सात उह, पैमाने पर स्वर, मापांक के संदर्भ में, और सात दिन, उह, सप्ताह में।' उन्हें अचानक कुछ याद आया और वे भौंहें चढ़ाते हुए थोड़ा सा ऊपर उठा लिया। 'मुझे माफ़ी मांगनी होगी, आज गुरुवार है, आप जानते हैं, इसलिए मेरा बेटा, मेरा उह, बड़ा बेटा, उपस्थित नहीं हो सका। उसे, उह, उह, कहीं और जाना है—'

श्रीमती रूपा मेहरा की नज़र में दुर्रानी को भेजा गया निमंत्रण एक बहुत बड़ी गलती थी—और एक बार भेज देने के बाद उसे वापस लेना नामुमकिन था। डॉ. किशन चंद सेठ ने ब्रिज खेलते हुए उनसे कहा था, 'ज़रूर आइएगा—और हां, अपने परिवार को भी साथ लाना,' लेकिन डॉ. सेठ निराश थे कि उनकी पागल पत्नी और दुष्ट बेटा नहीं आए। डॉ. दुर्रानी खुद इतने अस्पष्ट और सीधे-सादे थे कि वे अपनी ही शादी में दूल्हे को ढूंढने में असमर्थ थे।

इसी बीच, अमित पर दो बुजुर्ग महिलाओं ने हमला कर दिया, जिनमें से

एक ने अपनी छाती पर एक चमकते तारे की तरह एक शानदार माणिक का पेंडेंट पहन रखा था।

उसने कहा: 'उस आदमी ने हमें बताया कि आप न्यायमूर्ति चटर्जी के पुत्र हैं।'

अमित ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मैं हूँ।'

'हम आपके पिता को दार्जिलिंग के दिनों से बहुत अच्छी तरह जानते हैं। वे हर साल पूजा की छुट्टियों में आते थे।'

वह अब भी कोशिश करता है।

'हां, लेकिन अब हम वहां नहीं हैं। आपको उसे हमारी याद दिलानी होगी। अब, मुझे बताओ, क्या तुम चतुर हो?'

'हां,' अमित ने हताशा से कहा। 'मैं ही होशियार हूं।'

इससे वह खूबसूरत महिला बेहद प्रसन्न हुई।

'मैं तुम्हें तब से जानती हूँ जब तुम इतने होशियार थे,' उसने हैरानी से कहा। 'तुम तब भी बहुत होशियार थे, इसलिए मुझे आश्चर्य नहीं है कि तुमने इतनी सारी किताबें लिखी हैं।'

'ओह?' अमित ने कहा।

पीछे न रहने की होड़ में, दूसरी महिला ने दावा किया कि वह उसे तब से जानती है जब वह एक मोटा-ताज़ा इंसान था।

'लेकिन दिमागी तौर पर बहुत प्रतिभाशाली, इसमें कोई शक नहीं,' अमित ने कहा।

'अब बस करो,' महिला ने कहा।

द्वार पर हंगामा मच गया। पाँच उभयलिंगी लोगों का एक समूह, शादी की खबर सुनकर वहाँ आ गया था और नाच-गाना करते हुए पैसे माँग रहा था। उनकी हरकतें इतनी बेशर्म थीं कि आस-पास के मेहमान सदमे से मुँह फेर रहे थे, लेकिन सुनील पटवर्धन अपने दोस्तों के साथ मज़ा लेने के

लिए दौड़ पड़े। डॉ. किशन चंद सेठ अपनी लाठी लहराते हुए उन्हें भगाने की कोशिश कर रहे थे; लेकिन वे लाठी और उनके बारे में अश्लील बातें कर रहे थे। उन्हें भगाने के लिए पैसे देने ही पड़ेंगे। उन्होंने उन्हें बीस रुपये दिए, तो उनके सरदार ने कहा कि वह इतने में भी उनकी सेवा नहीं करेगा। डॉ. किशन चंद सेठ गुस्से से उछल पड़े, लेकिन कुछ नहीं कर सके। उन्होंने पचास रुपये माँगे और उन्हें मिल गए।

डॉ. किशन चंद सेठ ने गुस्से से कहा, 'यह तो ब्लैकमेल है। सरासर ब्लैकमेल।' वह इस शादी की मेजबानी करते-करते थक चुके थे। वे अंदर जाकर लेट गए और अपना दिमाग शांत करने लगे, और जल्द ही सो गए।

रूपा मेहरा ने व्रत तो तोड़ लिया था, लेकिन हमेशा की तरह पूरे उत्साह से नहीं, क्योंकि उन्हें बधाई स्वीकार करनी थी, लोगों का एक-दूसरे से परिचय कराना था, हरेश और लता का ध्यान रखना था, वरुण पर नज़र रखनी थी और खानपान का भी निरीक्षण करना था। फिर भी, उनकी खुशी के आँसू बह रहे थे, और जब उन्होंने चारों ओर देखा तो प्राण को प्रोफेसर मिश्रा से बात करते, नवाब साहब को महेश कपूर से बात करते और मान और फिरोज को एक साथ हँसते देखकर उन्हें और भी खुशी हुई।

Sunil Patwardhan came up to her.

'श्रीमती मेहरा को बहुत-बहुत बधाई।'

'बहुत-बहुत धन्यवाद, सुनील। मुझे बहुत खुशी है कि आप यहाँ हैं। आपने मेरे पिताजी को कहीं नहीं देखा, है ना?'

'मुझे डर है कि नहीं—द्वार पर हुई उस कहासुनी के बाद तो बिलकुल नहीं। . . . श्रीमती मेहरा, मुझे एक छोटी सी समस्या है। . . . हरीश अपने कफ़लिंक मेरे घर पर छोड़ गया है, और उसने मुझे उन्हें उस कमरे में रखने को कहा है जहाँ वह आज रात रुकेगा।' सुनील ने अपनी पतलून की जेब

से एक जोड़ी कफ़लिंक निकाली। 'अगर आप मुझे बता दें कि मुझे उन्हें कहाँ रखना चाहिए—'

लेकिन श्रीमती रूपा मेहरा इतनी आसानी से मूर्ख बनने वाली नहीं थीं। उन्हें सुनील पटवर्धन की शरारतों और मज़ाक के बारे में पहले ही चेतावनी दी गई थी, और वह अपनी बेटी की आदर्श वैवाहिक रात को खराब नहीं होने देने वाली थीं।

'मुझे दे दो,' उसने दृढ़ता से कहा और उससे कफ़लिंक ले लिए। 'मैं सुनिश्चित करूँगी कि उसे ये मिल जाएँ।' और परिणामस्वरूप, हरीश को एक जोड़ी काले ओनेक्स कफ़लिंक मिल गए और सुनील को एक जोड़ी कम हो गए।

19.15

कबीर शादी में आने की हिम्मत नहीं जुटा पाया था। गुरुवार की रात होने के बावजूद वह अपनी मां से मिलने भी नहीं गया था। इसके बजाय वह गंगा के किनारे टहलने निकल गया: बरगद के पेड़ के पास से होते हुए, धोबी घाट के किनारे, किले के नीचे पुल मेले की रेत के पास से, पुराने शहर के तट के किनारे, मीलों तक काले पानी का पीछा करते हुए वह बरसात महल तक पहुंचा।

दीवार की छाया में, वह एक घंटे तक रेत पर बैठा रहा, अपना सिर हाथों में थामे हुए।

फिर वह उठकर दोबारा चलने लगा, ऊंची सीढ़ियों से ऊपर चढ़कर, दीवार को पार करके दूसरी तरफ चला गया।

कुछ देर बाद वह एक कारखाने के पास पहुँचा, जिसकी दीवारें गंगा नदी तक जाती थीं और उसे आगे जाने से रोक रही थीं। लेकिन वह वैसे भी बहुत थका हुआ था। उसने अपना सिर दीवार से टिका लिया।

उसने सोचा कि अब तक समारोह समाप्त हो चुके होंगे।

उसने एक नाविक को बुलाया और नाव से नदी के रास्ते विश्वविद्यालय और अपने पिता के घर वापस चला गया।

19.16

शादी के अगले दिन सुबह, नाश्ते के दौरान हरेश ने अचानक फैसला किया कि चूंकि वह संयोगवश ब्रह्मपुर में है, इसलिए उसे स्थानीय प्राहा कारखाने का दौरा करना चाहिए।

‘लेकिन आप मुझे ऐसे छोड़कर नहीं जा सकते,’ लता ने हैरानी से अपना चाय का कप नीचे रखते हुए कहा। वे उसके दादा के घर में दुल्हन के शयनकक्ष में एक छोटी सी मेज पर बैठे थे।

‘नहीं,’ हरेश ने कहा। ‘मैं नहीं आ सकता। तुम भी क्यों नहीं आते? शायद तुम्हें मज़ा आए।’

'मुझे लगता है मैं सविता के घर जाऊंगी,' लता ने कहा और अपना कप फिर से उठा लिया।

'वो जूतों का डिब्बा क्या है?' हरेश ने पूछा और उसे खोला।

अंदर लकड़ी की बनी एक छोटी सी बिल्ली थी, जिसके चेहरे पर एक समझदारी भरी मुस्कान थी।

लता ने उसे उठाया और बड़े चाव से उसकी जांच-पड़ताल की।

'यह उस मोची से है जिससे मुझे आज बाद में मिलना है,' हरेश ने कहा।

लता ने कहा, 'मुझे यह पसंद है।'

हरेश ने उसे चूमा और चला गया।

कुछ देर बाद लता खिड़की के पास गई और बाहर बोगनविलिया के फूलों को देखने लगी, थोड़ा असमंजस में। वैवाहिक जीवन की शुरुआत का यह एक अजीब तरीका था। लेकिन फिर उसने इस बारे में सोचा और फैसला किया कि अच्छा ही हुआ कि हरेश ने उसके साथ ब्रह्मपुर में दिन नहीं बिताया—विश्वविद्यालय, घाट, बरसात महल नहीं गए। चूंकि वे एक नया

जीवन शुरू करने जा रहे थे, इसलिए इसे कहीं और से शुरू करना ही बेहतर था।

हरेश का परिवार उसी दिन दिल्ली के लिए रवाना हो गया, और अरुण, वरुण और बाकी लोग कलकत्ता के लिए निकल गए। अगले दिन लता और हरेश खुद कलकत्ता जाने वाली ट्रेन में सवार हो गए। काम के दबाव के कारण हरेश तुरंत हनीमून पर नहीं जा सके, लेकिन उन्होंने जल्द ही जाने का वादा किया। कानपुर से लखनऊ की यात्रा के दौरान जितना ध्यान उन्होंने लता पर रखा था, अब उससे भी ज़्यादा ध्यान रख रहे थे। लता मुस्कुराईं और उनसे कहा कि अब इतना ध्यान रखना बंद करें, लेकिन उन्हें यह अच्छा लग रहा था।

उनकी मां सविता और प्राण के साथ उन्हें रेलवे स्टेशन पर छोड़ने आई थीं। बहुत गर्मी और शोर था। श्रीमती रूपा मेहरा ने पहले अपने माथे पर और फिर अपनी आंखों पर इत्र से भीगे रूमाल से पसीना पोंछा। अपनी दोनों बेटियों और उनके पतियों के बीच प्लेटफार्म पर खड़ी होकर, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे उनके बिना कैसे रह पाएंगी। अचानक उनका मन लता और हरेश के साथ जाने का हुआ, लेकिन सौभाग्यवश उन्होंने अपना इरादा बदल लिया।

इसके बजाय, उसने यह सुनिश्चित किया कि उनके पास यात्रा के लिए पर्याप्त भोजन हो; वह अतिरिक्त सामान लाई थी, ताकि अगर वे खुद इसके बारे में न सोचें तो उन्हें काम आ सके, जिसमें शिव मार्केट: बेहतरीन मिठाइयाँ लिखा हुआ एक बड़ा गत्ते का डिब्बा और ठंडी कॉफी से भरा एक थर्मस शामिल था।

उसने हरेश को गले लगाया और लता से ऐसे लिपट गई मानो वह उसे फिर कभी नहीं देख पाएगी। दरअसल, उसने 20 जून को कलकत्ता लौटने की योजना बनाई थी—जो उसकी एक प्रिय मित्र का जन्मदिन था

—और उसी दिन प्राहापुर जाने का इरादा रखती थी। उसे इस बात की बेहद खुशी थी कि उसे एक और घर जाने का मौका मिल रहा था।

ब्रह्मपुर जंक्शन से ट्रेन के निकलते ही लता ने खिड़की से हाथ हिलाया। हरेश शांत और खुश दिख रहा था, और यह देखकर लता को भी खुशी हुई। अपनी मां से बिछड़ने के ख्याल से उसकी आंखों में आंसू आ गए। उसने एक पल के लिए हरेश को देखा, फिर सामने के नज़ारे की ओर मुड़ गई। कुछ ही मिनटों में वे ग्रामीण इलाके में पहुंच जाएंगे।

लगभग एक घंटे बाद, एक छोटे रेलवे स्टेशन पर रुकने के दौरान, उसने बंदरों का एक छोटा झुंड देखा। उन्हें एहसास हुआ कि वह उन्हें देख रही है और, एक दयालु प्राणी की उम्मीद में, वे उसकी खिड़की के पास आ गए। उसने हरीश पर एक नज़र डाली: वह झपकी ले रहा था। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह जब चाहे और जहाँ चाहे दस-बीस मिनट के लिए कैसे सो जाता था।

उसने उन्हें कुछ बिस्कुट फेंके: वे चारों ओर जमा हो गए, चहचहाते हुए और ज़िद करते हुए। उसने एक-दो पल अपने मेहंदी लगे हाथों को देखा, एक मुसम्मी निकाली, सावधानी से उसका मोटा हरा छिलका उतारा और उसके टुकड़े बाँटने लगी। बंदर उन्हें झट से खा गए। सीटी बजने पर लता ने देखा कि एक बूढ़ा बंदर चबूतरे के लगभग अंत में अकेला बैठा है।

वह उसे ध्यानपूर्वक और बिना किसी अपेक्षा के देख रहा था।

जैसे ही ट्रेन चलने लगी, लता ने झटपट फलों के थैले में हाथ डालकर एक और मुसम्मी निकाली और उसकी ओर फेंक दी। वह उसकी ओर बढ़ा, लेकिन उसे लुढ़कते देख बाकी लोग भी उसकी ओर दौड़ने लगे; और इससे पहले कि वह देख पाती कि उसका क्या हुआ, ट्रेन स्टेशन से निकल चुकी थी। **********